पश्चिम की यात्रा

वू चेंग-एन

पश्चिम की यात्रा

विषयसूची

पश्चिम की

यात्रा.....
वू चेंग-
एन.....
अध्याय
1.....
अध्याय
2.....
अध्याय
3.....
अध्याय
4.....
अध्याय
5.....
अध्याय
6.....
अध्याय
7.....
अध्याय
8.....
अध्याय
9.....
अध्याय
10.....
अध्याय
11.....
अध्याय
12.....
अध्याय
13.....

अध्याय 14.....
अध्याय 15.....
अध्याय 16.....
अध्याय 17.....
अध्याय 18.....
अध्याय 19.....
अध्याय 20.....
अध्याय 21.....
अध्याय 22.....
अध्याय 23.....
अध्याय 24.....
अध्याय 25.....
अध्याय 26.....
अध्याय 27.....
अध्याय

28.....
अध्याय
29.....
अध्याय
30.....
अध्याय
31.....
अध्याय
32.....
अध्याय
33.....
अध्याय
34.....
अध्याय
35.....
अध्याय
36.....
अध्याय
37.....
अध्याय
38.....
अध्याय
39.....
अध्याय
40.....
अध्याय
41.....
अध्याय
42.....

अध्याय
43.....
अध्याय
44.....
अध्याय
45.....
अध्याय
46.....
मैं
पश्चिम की यात्रा
विषयसूची
पश्चिम की यात्रा
अध्याय
47.....
अध्याय
48.....
अध्याय
49.....
अध्याय
50.....
अध्याय
51.....
अध्याय
52.....
अध्याय
53.....
अध्याय
54.....
अध्याय

55.....
अध्याय
56.....
अध्याय
57.....
अध्याय
58.....
अध्याय
59.....
अध्याय
60.....
अध्याय
61.....
अध्याय
62.....
अध्याय
63.....
अध्याय
64.....
अध्याय
65.....
अध्याय
66.....
अध्याय
67.....
अध्याय
68.....
अध्याय
69.....

अध्याय
70.....
अध्याय
71.....
अध्याय
72.....
अध्याय
73.....
अध्याय
74.....
अध्याय
75.....
अध्याय
76.....
अध्याय
77.....
अध्याय
78.....
अध्याय
79.....
अध्याय
80.....
अध्याय
81.....
अध्याय
82.....
अध्याय
83.....
अध्याय

84.....
अध्याय
85.....
अध्याय
86.....
अध्याय
87.....
अध्याय
88.....
अध्याय
89.....
अध्याय
90.....
अध्याय
91.....
अध्याय
92.....
अध्याय
93.....
द्वितीय
पश्चिम की यात्रा
विषयसूची
पश्चिम की यात्रा
अध्याय
94.....
अध्याय
95.....
अध्याय
96.....

अध्याय
97.....
अध्याय
98.....
अध्याय
99.....
अध्याय
100.....
तृतीय
पश्चिम की यात्रा
वू चेंग-एन
यह पृष्ठ 2005 ब्लैकमास्क ऑनलाइन प्रारूप में तैयार किया गया है।
http://www.blackmask.com
डब्ल्यूजेएफ जेनर के अनुवाद (बीजिंग, 1955) से कोलिंसन फेयर द्वारा रूपांतरित।
कॉपीराइट 2005, सिल्क पैगोडा।

•

अध्याय 1

दिव्य मूल गर्भ धारण करता है और वसंत फूट पड़ता है
जैसे-जैसे हृदय का स्वभाव विकसित होता है, वैसे-वैसे महान मार्ग प्रकट होता है।
अराजकता के विभाजन से पहले, स्वर्ग और पृथ्वी एक थे;
सब कुछ एक आकारहीन धुंधलापन था, और कोई भी पुरुष दिखाई नहीं दिया था।
एक बार पैन गु ने विशाल अस्पष्टता को नष्ट कर दिया
शुद्ध और अशुद्ध का पृथक्करण शुरू हुआ।
जीवित प्राणियों का झुकाव हमेशा से ही मानवता की ओर रहा है;
उनकी उत्पत्ति के बाद से सभी प्राणी बेहतर होते जाते हैं।
यदि आप सृष्टि और समय के बारे में जानना चाहते हैं,

पश्चिम की यात्रा में हल हुई कठिनाइयों को पढ़ें।
ब्रह्मांड के गणित में, 129,600 वर्ष एक चक्र बनाते हैं। प्रत्येक चक्र को बारह चरणों में विभाजित किया जा सकता है: पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा, सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ, दसवाँ, ग्यारहवाँ और बारहवाँ, ये बारह शाखाएँ हैं। प्रत्येक चरण 10,800 वर्षों तक चलता है।
अब एक ही दिन के भीतर, सकारात्मकता समय 1 से शुरू होती है; 2 पर मुर्गा बांग देता है; 3 पर पूरी तरह से उजाला नहीं होता है; 4 पर
सूर्योदय होता है; पाँचवाँ दिन नाश्ते के बाद का समय होता है; और छठे दिन लोग व्यापार करते हैं। सातवाँ दिन दोपहर का समय होता है; आठवें दिन सूरज पश्चिम की ओर ढलने लगता है; नौवाँ दिन दोपहर ढलने का समय होता है; दसवें दिन सूरज डूब जाता है; ग्यारहवाँ दिन गोधूलि बेला का समय होता है; और बारहवें दिन लोग रात के लिए सोने चले जाते हैं।
यदि इसकी तुलना बड़ी संख्याओं से की जाए, तो ग्यारहवें चरण के अंत में स्वर्ग और पृथ्वी एक ही थे, और कोई भी प्राणी प्रकट नहीं हुआ था। 5,400 वर्ष बाद बारहवें चरण का आरंभ हुआ, जब चारों ओर अंधकार था और कोई मनुष्य या अन्य प्राणी नहीं थे; इसी कारण इसे अराजकता कहा गया। 5,400 वर्ष बाद बारहवां चरण समाप्त होने वाला था और एक नया चक्र शुरू होने वाला था। जैसे-जैसे नए युग का पहला चरण निकट आया, धीरे-धीरे अध्याय 1
3
पश्चिम की यात्रा
प्रकाश था। जैसा कि शाओ योंग ने कहा,
"जब सर्दी का मौसम पहले चरण के मध्य बिंदु पर पहुँचता है
स्वर्ग का हृदय अविचलित रहता है।
जहां सकारात्मकता सबसे पहले प्रकट होती है
अभी तक कुछ भी जीवित नहीं हुआ है।"
इस समय, स्वर्ग की नींव रखी गई। 5,400 वर्ष बाद, प्रथम चरण के मध्य में, प्रकाश और पवित्रता ऊपर उठी, और सूर्य, चंद्रमा, तारे और नक्षत्रों का निर्माण हुआ। इन्हें चार प्रतिमाएँ कहा गया। इसीलिए यह कहावत प्रचलित है कि स्वर्ग की उत्पत्ति प्रथम में हुई।

लगभग 5,400 वर्षों बाद, जब प्रथम चरण अपने अंत के निकट था और द्वितीय चरण का आरंभ होने वाला था, तब चीजें धीरे-धीरे ठोस होने लगीं। जैसा कि परिवर्तन की पुस्तक में कहा गया है, "सकारात्मक महान है; नकारात्मक दूरगामी है! सभी चीजें स्वर्ग के अनुसार ही उत्पन्न और निर्मित हुई हैं।" इसी समय पृथ्वी का जमना शुरू हुआ। 5,400 वर्षों के बाद द्वितीय चरण अपने चरम पर पहुंचा, जब भारी और अशुद्ध पदार्थ ठोस हो गए, और जल, अग्नि, पर्वत, पत्थर और पृथ्वी अस्तित्व में आए। इन पांचों को पंच-गतिशील कहा गया। इसलिए कहा जाता है कि पृथ्वी की रचना द्वितीय चरण में हुई थी।

इसके 5,400 वर्षों बाद, द्वितीय चरण के अंत और तृतीय चरण के प्रारंभ में, सजीव प्राणियों की रचना हुई। कैलेंडर की पुस्तक के शब्दों में, "आकाश का सार नीचे आया और पृथ्वी का सार ऊपर गया। स्वर्ग और पृथ्वी आपस में मिल गए, और सभी प्राणियों का जन्म हुआ।" तब स्वर्ग उज्ज्वल था और पृथ्वी निर्मल थी, और सकारात्मकता नकारात्मकता से मिल गई। 5,400 वर्षों बाद, जब तृतीय चरण अपने चरम पर था, मनुष्य, पक्षी और पशु-पशुओं की रचना हुई। इस प्रकार तीनों शक्तियाँ —स्वर्ग, पृथ्वी और मनुष्य—अपने-अपने स्थान पर स्थापित हो गईं। इसलिए कहा जाता है कि मनुष्य की रचना तृतीय चरण में हुई।

पान गु की रचना से प्रेरित होकर, तीनों सम्राटों ने विश्व को व्यवस्थित किया और पाँच शासकों ने नैतिक संहिता निर्धारित की। इसके बाद विश्व को चार महान महाद्वीपों में विभाजित किया गया: पूर्वी महाद्वीप (श्रेष्ठ शरीर), पश्चिमी महाद्वीप (पशु-दान), दक्षिणी महाद्वीप (जंबू) और उत्तरी महाद्वीप (कुरु)।

यह पुस्तक केवल पूर्वी महाद्वीप के बारे में है। समुद्रों के पार आओलाई नामक एक देश है। यह देश एक महासागर के निकट स्थित है, और महासागर के मध्य में पुष्प और फल पर्वत नामक एक प्रसिद्ध द्वीप है। यह पर्वत दस महाद्वीपों की जनक धमनी है, तीन द्वीपों का उद्गम स्थल है; इसका निर्माण तब हुआ जब शुद्ध और अशुद्ध अलग हुए और विशाल अस्पष्टता विभाजित हुई। यह वास्तव में एक शानदार पर्वत है और इसके प्रमाण के रूप में कुछ श्लोक भी हैं: यह अपनी शक्ति से महासागर को शांत कर देता है।

यह हरे रंग के सागर को शांत कर देता है।

यह अपनी शक्ति से सागर को शांत कर देता है:

ज्वार इसकी चांदी जैसी ढलानों को धो देता है और मछलियाँ इसकी गुफाओं में तैरती हुई चली जाती हैं।
अध्याय 1
4
पश्चिम की यात्रा
यह हरे सागर को शांत कर देता है:
बर्फीली लहरों के बीच से समुद्री सर्प गहरे समुद्र से निकलता है।
यह दुनिया के उस कोने में ऊँचाई पर स्थित है जहाँ अग्नि और लकड़ी मिलती हैं;
इसका शिखर पूर्वी सागर के ऊपर स्थित है।
लाल चट्टानें और विचित्र पत्थर;
ऊबड़-खाबड़ चट्टानें और नुकीली चोटियाँ।
लाल चट्टानों पर फीनिक्स पक्षी जोड़े में गाते हैं;
विशाल चट्टानों के सामने अकेले यूनिकॉर्न लेटे हुए हैं।
पहाड़ों की चोटियों पर तीतरों की आवाज सुनाई देती है;
गुफाओं में ड्रैगन आते-जाते रहते हैं।
जंगलों में दीर्घायु हिरण और जादुई लोमड़ियाँ पाई जाती हैं;
पेड़ों पर चमत्कारिक पक्षी और काले सारस।
वहाँ हरे रंग के फूल हैं और ऐसे विचित्र पौधे हैं जो कभी मुरझाते नहीं हैं;
हरे चीड़ और नीले सरू के पेड़ हमेशा पत्तों से भरे रहते हैं।
जादुई आड़ू हमेशा फलते-फूलते रहते हैं।
बादल ऊंचे बांस के चारों ओर जमा हो जाते हैं।
पहाड़ी झरने के चारों ओर विस्टेरिया की लताएँ घनी रूप से उगती हैं।
और आसपास के किनारे नए फूलों से रंग-बिरंगे हो गए हैं।
यह स्वर्ग को सहारा देने वाला स्तंभ है जहाँ सभी नदियाँ मिलती हैं।
पृथ्वी की जड़, जो असंख्य युगों से अपरिवर्तित है।
एक समय इस पर्वत की चोटी पर एक जादुई पत्थर था, जिसकी ऊँचाई छत्तीस फीट पाँच इंच और गोलाई चौबीस फीट थी। इसकी ऊँचाई छत्तीस फीट पाँच इंच आकाश के 365 डिग्री के अनुरूप थी, और गोलाई चौबीस फीट सौर कैलेंडर के चौबीस भागों के अनुरूप थी। इसके ऊपर नौ छिद्र और आठ छेद थे, जो नौ महलों और आठ

त्रिकोणों के लिए थे। इसके चारों ओर छाया देने के लिए कोई पेड़ नहीं थे, लेकिन जादुई कवक और ऑर्किड इसकी भुजाओं से चिपके हुए थे। सृष्टि की शुरुआत से ही यह अध्याय 1 था।

5

पश्चिम की यात्रा

स्वर्ग के सत्य, पृथ्वी की सुंदरता, सूर्य के सार और चंद्रमा की चमक को ग्रहण करते हुए, और इनसे लंबे समय तक प्रभावित रहने के कारण, इसमें चमत्कारी शक्तियां आ गईं। इसने एक जादुई गर्भ विकसित किया, जो एक दिन फट कर खुल गया और उसमें से गेंद के आकार का एक पत्थर का अंडा निकला।

जब हवा इस अंडे पर चली तो यह पांचों इंद्रियों और चार अंगों वाले पत्थर के बंदर में बदल गया।

जब पत्थर का बंदर रेंगना और चलना सीख गया, तो उसने चारों दिशाओं को प्रणाम किया। उसकी आँखों के हिलते ही, सुनहरी रोशनी की दो किरणें ध्रुव तारा महल की ओर बढ़ीं और स्वर्ग के नीले गुंबद के परम दयालु जेड सम्राट, जो सुनहरे द्वार वाले बादल महल के चमत्कारी कोहरे के हॉल में अपने सिंहासन पर अपने अमर मंत्रियों से घिरे बैठे थे, को चौंका दिया। जब उन्होंने चकाचौंध भरी सुनहरी रोशनी देखी, तो उन्होंने हजार मील की आँख और हवा के साथ चलने वाले कान को स्वर्ग का दक्षिणी द्वार खोलने और देखने का आदेश दिया। दोनों अधिकारी शाही आदेश का पालन करते हुए द्वार से बाहर गए, और एक ने देखा कि क्या हो रहा है जबकि दूसरे ने ध्यान से सुना। कुछ ही देर बाद उन्होंने वापस आकर सूचना दी:

"शाही आदेश का पालन करते हुए, आपकी प्रजा ने सुनहरे प्रकाश के स्रोत को देखा और सुना।"

हमने पाया कि ओलाई देश की सीमा पर, जो पूर्वी महाद्वीप के समुद्र के पूर्व में स्थित है, एक द्वीप है जिसे पुष्प और फल पर्वत कहा जाता है। इस पर्वत की चोटी पर एक जादुई पत्थर से एक जादुई अंडा निकला, और जब हवा उस अंडे पर चली तो वह एक पत्थर के बंदर में बदल गया जो चारों दिशाओं को प्रणाम करता था। जब वह अपनी आँखें घुमाता था, तो ध्रुव तारा महल की ओर सुनहरी रोशनी निकलती थी; लेकिन अब जब वह खा-पी रहा है, तो सुनहरी रोशनी धीरे-धीरे फीकी पड़ रही है।

अपनी दयालुता और करुणा में, जेड सम्राट ने कहा, "धरती के प्राणी स्वर्ग और पृथ्वी

के सार से उत्पन्न होते हैं: उनमें कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है।"
पहाड़ पर पहुँचकर बंदर जल्द ही दौड़ने-कूदने, पेड़-पौधों से भोजन करने, झरनों और जलधाराओं से पानी पीने, पहाड़ी फूल तोड़ने और फल खोजने में सक्षम हो गया। उसने भेड़ियों से दोस्ती कर ली, बाघों और तेंदुओं के साथ घूमता-फिरता था, हिरणों से उसके अच्छे संबंध थे, और अन्य बंदरों और लंगूरों से भी उसके संबंध थे। रात में वह चट्टानों के नीचे सोता था और दिन में चोटियों और गुफाओं में घूमता था। जैसा कि कहावत बिल्कुल सही है, "पहाड़ों में कोई कैलेंडर नहीं होता, और जब सर्दी खत्म हो जाती है तो आपको साल का समय पता ही नहीं चलता।" गर्म सुबहों में वह और बाकी सभी बंदर गर्मी से बचने के लिए चीड़ के पेड़ों की छाया में खेलते थे। ज़रा इन सबको देखिए:
पेड़ों पर चढ़ना, फूल तोड़ना, फल खोजना;
छर्रे फेंकना, नक्कलबोन्स खेलना;
रेतीले गड्ढों के चारों ओर दौड़ते हुए, पत्थर के शिवालयों का निर्माण करना;
ड्रैगनफ्लाई का पीछा करना और टिड्डियों को पकड़ना;
आकाश की पूजा करना और बोधिसत्वों के दर्शन करना;
लताओं को उखाड़कर और भूसे की टोपियाँ बुनकर;
पिस्सू पकड़ना और फिर उन्हें अपने दांतों और उंगलियों से फोड़ना; अपने फर को संवारना और अपने नाखूनों को तेज करना;
मारना, खरोंचना, धक्का देना, कुचलना, फाड़ना और खींचना;

पश्चिम की यात्रा
चीड़ के पेड़ों के नीचे इधर-उधर खेलते हुए;
वे हरी-भरी धारा के किनारे खुद को धो रहे थे।
खेलने के बाद, बंदर नदी में नहाने जाते थे, जो पहाड़ों से बहने वाली एक तेज़ धारा थी और लुढ़कते हुए तरबूजों की तरह बहती थी। एक पुरानी कहावत है, "पक्षियों की अपनी भाषा होती है और जानवरों की अपनी बोली होती है।"
सभी बंदरों ने आपस में कहा, "पता नहीं यह पानी कहाँ से आता है। आज हमारे पास करने को और कुछ नहीं है, तो क्यों न नदी के ऊपरी हिस्से में जाकर इसका स्रोत

ढूँढ़ें?" एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ वे सब दौड़ पड़े, अपने बच्चों को साथ लेकर और अपने भाइयों को पुकारते हुए। वे नदी के किनारे पहाड़ पर चढ़ते गए जब तक कि वे उसके स्रोत तक नहीं पहुँच गए, जहाँ एक झरने से जलप्रपात नीचे गिर रहा था। उन्होंने देखा

एक सफेद इंद्रधनुष धनुषाकार रूप में,
उड़ती हुई बर्फ की हजारों बूंदें,
समुद्री हवाओं से अप्रभावित,
अभी भी वहीं चांद की रोशनी में।
ठंडी हवा हरी-भरी चट्टानों को अलग करती है।
पानी की बूंदों से पर्वतीय ढलान नम हो जाती है;
एक भव्य जलप्रपात बहता है,
पर्दे की तरह लटका हुआ।

बंदरों ने ताली बजाई और खुशी से बताया, "कितना प्यारा पानी है! यह पहाड़ की तलहटी तक जाता होगा और समुद्र की लहरों में मिल जाता होगा।"

फिर एक बंदर ने सुझाव दिया: "अगर कोई इतना चतुर हो कि झरने के अंदर जाकर, स्रोत का पता लगाकर, सही सलामत बाहर आ जाए, तो उसे अपना राजा बना लेते हैं।" जब यह चुनौती तीन बार दोहराई गई, तो पत्थर का बंदर भीड़ से बाहर कूदा और ज़ोर से चिल्लाकर बोला, "मैं जाऊंगा, मैं जाऊंगा।" वाह, क्या बंदर है!

वास्तव में:

आज वह अपना नाम रोशन करेगा;
कल उसकी नियति की जीत होगी।
उसका भाग्य यहीं रहने का लिखा है;

एक राजा के रूप में वह अमरों के महल में प्रवेश करेगा।

उसे देखो, वह अपनी आँखें बंद करता है, झुकता है और उछलकर सीधे झरने में कूद जाता है। जब उसने अपनी आँखें खोलीं और चारों ओर देखने के लिए अपना सिर उठाया, तो उसे न तो पानी दिखाई दिया और न ही लहरें। उसके सामने एक पुल खड़ा

था, मानो जीवंत हो। वह रुका, खुद को शांत किया, करीब से देखा और पाया कि पुल लोहे का बना था। उसके नीचे से बहता पानी चट्टानों में एक दरार से बाहर निकल रहा था, जो पुल के प्रवेश द्वार को ढक रहा था। वह पुल की ओर चलने लगा और देखते ही उसे एक घर जैसा कुछ दिखाई दिया। यह वाकई एक अच्छी जगह थी। उसने देखा:
नीले रंग के ढेरों में पन्ना रंग की काई जमा हो गई थी,
बहते हुए हरे रंग के समान सफेद बादल,
रंगीन धुंध की हल्की-हल्की परतों के बीच प्रकाश टिमटिमा रहा था।
शांत खिड़कियों वाला एक शांत घर,
चिकनी बेंच पर फूल उग रहे हैं;
ताकों में लटके हुए ड्रैगन मोती,
चारों ओर विदेशी फूल खिले हुए हैं।
चूल्हे के पास आग के निशान,
मेज के पास रखे बर्तनों में भोजन के बचे हुए टुकड़े।
मनमोहक पत्थर की कुर्सियाँ और पलंग,
पत्थर की बनी प्लेटें और कटोरे तो और भी बेहतर हैं।
एक या दो लंबे बांस,
बेर के फूलों की तीन या चार टहनियाँ,
कुछ चीड़ के पेड़ जो हमेशा बारिश को आकर्षित करते हैं,
सब कुछ बिल्कुल असली घर जैसा है।
उसने ध्यान से देखा और फिर पुल के बीचोंबीच भाग गया, जहाँ उसे एक पत्थर की पट्टिका दिखाई दी। पट्टिका पर बड़े चौकोर अक्षरों में खुदा हुआ था: पहाड़ों की खुशहाल भूमि।
फूल और फल, जल के पर्दे से घिरा गुफा जैसा स्वर्ग। पत्थर का बंदर खुशी से फूला नहीं समा रहा था। वह दौड़कर गया, अपनी आँखें बंद कीं, दुबका और झरने के बीच से वापस छलांग लगा दी।
अध्याय 1
8
पश्चिम की यात्रा
"हमारी किस्मत अच्छी है, हमारी किस्मत अच्छी है," उसने हंसते हुए कहा। बाकी सभी

बंदर उसके चारों ओर जमा हो गए और पूछने लगे,
"अंदर कैसा है? पानी कितना गहरा है?"
"यहाँ पानी नहीं है, बिलकुल भी नहीं," पत्थर के बंदर ने उत्तर दिया। "यहाँ एक लोहे का पुल है, और पुल के दूसरी ओर एक घर है जो स्वर्ग और पृथ्वी द्वारा बनाया गया होगा।"
"तुम्हें वहाँ घर कैसे दिखाई दिया?" दूसरे बंदरों ने पूछा। पत्थर के बंदर ने फिर खिलखिलाकर हँस दिया।
"यहाँ पानी पुल के नीचे से और चट्टानों के बीच से आता है, और पुल के प्रवेश द्वार को छिपा देता है। पुल के किनारे फूल और पेड़ हैं, और एक पत्थर का घर भी है। घर के अंदर पत्थर के कमरे, पत्थर का चूल्हा, पत्थर के कटोरे, पत्थर की थालियाँ, पत्थर के पलंग और यहाँ तक कि पत्थर की बेंच भी हैं। इन सबके बीच में एक पट्टिका है जिस पर लिखा है 'फूलों और फलों के पहाड़ की सुखी भूमि, जल के पर्दे का गुफा स्वर्ग'। यह हमारे बसने के लिए बिल्कुल सही जगह है - वहाँ हजारों लोगों के लिए जगह है। चलो हम सब वहाँ चले जाते हैं, फिर हमें स्वर्ग से आने वाली किसी भी बकवास को बर्दाश्त नहीं करना पड़ेगा।
हम वहां हवा से छिप सकते हैं।
और बारिश से बचाव के लिए आश्रय,
पाले और बर्फ से डरने की कोई बात नहीं है,
और कभी भी गरजने की कोई आवाज नहीं आई।
रंगीन धुंधें तेज चमक रही हैं
और उस जगह से सौभाग्य की खुशबू आती है।
चीड़ और बांस हमेशा खूबसूरत रहेंगे।
और हर दिन दुर्लभ फूल खिलते हैं।"
यह सुनकर बाकी बंदर इतने खुश हुए कि उन्होंने कहा, "तुम पहले जाओ और हमें भी अपने साथ ले चलो।"
पत्थर के बंदर ने अपनी आँखें बंद कीं, दुबक गया और फिर से कूद पड़ा, चिल्लाते हुए, "मेरे पीछे आओ, मेरे पीछे आओ।" बहादुर बंदर सब कूदकर अंदर चले गए। डरपोक बंदर आगे झाँकते, पीछे हटते, अपने कान रगड़ते, गाल खुजाते, चिल्लाते और ज़ोर-ज़ोर से चीखते हुए अंदर गए, सब एक-दूसरे से चिपक गए। पुल पार करने के

बाद वे सब थालियाँ पकड़ने लगे, कटोरियाँ छीनने लगे, चूल्हे गठ्ठियों में भरने लगे और पलंगों के लिए लड़ने लगे, और सब कुछ इधर-उधर कर दिया। बंदर जन्म से ही शरारती होते हैं और जब तक वे चीज़ों को इधर-उधर करते-करते थक नहीं गए, तब तक एक पल भी चुप नहीं रह सके।

पत्थर का बंदर मुख्य आसन पर बैठ गया और बोला, "महोदय, जो व्यक्ति अपना वचन तोड़ता है, वह किसी काम का नहीं। अभी आपने कहा था कि अगर कोई इतना चतुर हो कि यहाँ आकर सही सलामत वापस चला जाए, तो आप उसे राजा बना देंगे। ठीक है, तो मैं आ चुका हूँ, जा चुका हूँ, जा चुका हूँ और फिर आ चुका हूँ। मैंने आप सज्जनों के लिए एक गुफा जैसा स्वर्ग खोज निकाला है जहाँ आप शांति से सो सकते हैं और सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आपने मुझे राजा क्यों नहीं बनाया?" यह सुनकर सभी बंदरों ने सिर झुकाकर प्रणाम किया, अवज्ञा करने का साहस न करते हुए।

वे आयु क्रमानुसार समूहों में खड़े हुए और दरबार की तरह ही उन्हें सम्मानपूर्वक प्रणाम किया, सभी ने उन्हें "हजार वर्षों का महान राजा" कहकर उनका अभिनंदन किया। फिर पत्थर के बंदर ने सिंहासन ग्रहण किया, "पत्थर" शब्द को वर्जित घोषित कर दिया और स्वयं को सुंदर बंदर राजा घोषित किया। इसे प्रमाणित करने वाली एक कविता है: सभी चीजें तीन सकारात्मक तत्वों से उत्पन्न होती हैं;

वह जादुई पत्थर सूर्य और चंद्रमा के सार से भरपूर था।

महान मार्ग को पूरा करने के लिए एक अंडे को बंदर में बदल दिया गया;

उन्हें एक नाम दिया गया ताकि अमृत पूर्ण हो सके।

भीतर देखने पर उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता क्योंकि उसका कोई आकार नहीं है।

बाहर वह अपनी बुद्धि का उपयोग दृश्य वस्तुएं बनाने के लिए करता है।

पुरुष हमेशा से ऐसे ही रहे हैं:

जिन्हें राजा और ऋषि कहा जाता है, वे अपनी इच्छा के अनुसार ही कार्य करते हैं।

अपने बंदरों, लंगूरों, गिब्बनों और अन्य प्राणियों के समूह पर नियंत्रण रखते हुए, सुंदर बंदर राजा ने उन्हें शासकों और प्रजा, सहायकों और अधिकारियों में विभाजित किया।

सुबह वे फूलों और फलों के पर्वत पर विचरण करते और शाम को जल परदे की गुफा में रात बिताने के लिए ठहरते। उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि वे न तो पक्षियों की श्रेणी में शामिल होंगे और न ही भागते हुए जानवरों के साथ जाएंगे। उनका अपना राजा था, और वे खूब आनंद लेते थे।

वसंत ऋतु में वे खाने-पीने के लिए फूल तोड़ते थे।

गर्मी के मौसम में वे फल खाकर अपना गुजारा करते थे।

शरद ऋतु में वे जंगली घास और शाहबलूत इकट्ठा करते थे।

उन्होंने सोलोमन की सील पर सवार होकर सर्दी का मौसम बिताया।

सुंदर बंदर राजा का भोला-भाला उत्साह, बेशक, तीन या चार सौ साल तक नहीं टिक सकता था।

एक दिन अपने बंदर मेजबानों के साथ भोज के दौरान वह अचानक उदास हो गया और रोने लगा। चौंके हुए बंदर उसके चारों ओर जमा हो गए, उसे प्रणाम किया और पूछा, "महाराज, क्या बात है?"

"हालाँकि मैं अभी खुश हूँ, लेकिन मुझे भविष्य की चिंता है। यही बात मुझे परेशान कर रही है।" बंदरों के राजा ने उत्तर दिया।

दूसरे बंदर हँसे और बोले, "महाराज, आप लालची हो रहे हैं। हम तो हर दिन पार्टियाँ मनाते हैं; हम एक पर्वतीय स्वर्ग में, एक प्राचीन गुफा में, एक दिव्य महाद्वीप में रहते हैं। हम गेंडों के शासन से मुक्त हैं, अध्याय 1।"

10

पश्चिम की यात्रा

फीनिक्स पक्षियों का प्रभुत्व और मानव राजाओं की पाबंदियाँ। हम अपनी मर्जी से कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र हैं—हम असीम रूप से भाग्यशाली हैं। भविष्य की चिंता करके खुद को दुखी क्यों करना?

इस पर वानर राजा ने उत्तर दिया, “हाँ, हमें मनुष्य राजाओं के नियमों और कानूनों का पालन नहीं करना पड़ता, और न ही हम पक्षियों और पशुओं की शक्ति से भयभीत रहते हैं। परन्तु वह समय आएगा जब हम बूढ़े और दुर्बल हो जाएँगे, और पाताल लोक पर नरक के राजा का शासन होगा। जब हमारी मृत्यु का समय आएगा, तब हम धन्य लोगों के बीच नहीं रह पाएँगे, और हमारा जीवन व्यर्थ हो जाएगा।” सभी वानरों ने अपने चेहरे ढक लिए और मृत्यु के विचार से रोने लगे।

अचानक एक गिब्बन उनकी कतार से कूदकर निकला और तीखी आवाज में चीखा, "महाराज, यदि आप इतनी दूर की सोच रहे हैं, तो यह ज्ञानोदय की शुरुआत है। अब पाँच प्राणियों में से केवल तीन ही ऐसे हैं जो नरक के राजा के अधिकार क्षेत्र में नहीं आते।"

"क्या तुम जानते हो कि वे कौन से हैं?" बंदरों के राजा ने पूछा।

“जी हां,” बंदर ने उत्तर दिया। “वे बुद्ध हैं, अमर हैं और ऋषि हैं। वे पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हैं। उनका जन्म नहीं होता और न ही उनकी मृत्यु होती है। वे स्वर्ग और पृथ्वी, पहाड़ों और नदियों की तरह शाश्वत हैं।”

"वे कहाँ रहते हैं?" बंदरों के राजा ने पूछा।

"केवल मानव जगत में," बंदर ने उत्तर दिया, "जादुई पहाड़ों पर स्थित प्राचीन गुफाओं में।" यह सुनकर बंदर राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ।

“मैं कल तुम सबको छोड़कर पहाड़ से नीचे उतरूँगा। अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं सागरों के कोने-कोने तक और आकाश की सीमाओं तक जाकर इन तीन प्रकार के प्राणियों को ढूँढूँगा और उस शाश्वत यौवन के रहस्य को खोजूँगा जो हमें नरक के राजा के चंगुल से हमेशा के लिए बचाएगा।” हे भगवान! इन्हीं शब्दों के कारण उन्हें पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाने और स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि बनने का मार्ग सीखना था।

सभी बंदरों ने ताली बजाकर अपनी सहमति जताई और कहा, "वाह! वाह! कल हम पूरे पहाड़ पर चढ़कर ढेर सारे फल लाएंगे ताकि महाराज को विदाई देने के लिए एक भव्य भोज दे सकें।"

अगले दिन बंदर जादुई आड़ू तोड़ने, दुर्लभ फल इकट्ठा करने, शकरकंद खोदने और सुलेमान की मुहर काटने के लिए निकल पड़े। जादुई कवक और सुगंधित ऑर्किड एकत्र किए गए, और सब कुछ पत्थर की बेंचों और पत्थर की मेजों पर परी शराब और व्यंजनों के साथ सजाया गया। वहाँ सोने की गोलियाँ और मोती के दाने दिखाई दे रहे थे।

चटख लाल और गोल-मटोल पीले।

सुनहरी गोलियां और मोती जैसे दाने सर्दियों की चेरी थे, सुंदर और मीठे; चटपटे लाल और रसीले पीले रंग के बेर पके हुए थे, स्वादिष्ट और तीखे।

ताजे, मीठे गूदे वाले पतले छिलके वाले लॉन्गान फल।

लाल बोरी में छोटे-छोटे पत्थरों के साथ तीखी लीची।

जंगली सेबों की शाखाएँ एक के बाद एक,

पीले छिलके वाले लोकाट, जिन पर पत्तियां लगी हुई हैं।
खरगोश के सिर वाले नाशपाती और मुर्गी के दिल वाले बेर
आपकी प्यास बुझाने, आपकी चिंताओं को दूर करने और आपको होश में लाने के लिए।
सुगंधित आड़ू और कोमल खुबानी,
जेड वाइन की तरह मीठी और स्वादिष्ट।
कुरकुरे बेर और अर्बुटस,
चमकदार दही की तरह तीखा।
पके हुए खरबूजे जिनके छिलके लाल और बीज काले होते हैं।
पीले छिलके वाले बड़े, चार भागों में बंटे हुए परसिमन फल।
अनार फूटते हुए:
सिंदूर के बीज आग की तरह चमक रहे थे - क्रिस्टल के मोतियों की तरह।
खुले हुए सिंघाड़े
सुनहरे अगेट की तरह ठोस, गोल मांसल शरीर।
चाय के साथ खाने के लिए अखरोट और जिन्को फल;
नारियल और अंगूर से शराब बनाई जाती है।
पाइन कोन, यू नट्स, फिलबर्ट और क्रैब एप्पल से भरी प्लेटें; मेज पर टैंगरीन, गन्ने और संतरे सजे हुए थे।
गरम भुने हुए शकरकंद,
कोमल उबला हुआ सोलोमन का सील।
पिसी हुई चीनी मिट्टी की जड़ और अय्यूब के आंसू।
पत्थर के बर्तन में धीमी आंच पर पकाया गया सूप।
हालांकि हम मनुष्यों के पास खाने के लिए दुर्लभ व्यंजन हैं,
हम पहाड़ों में रहने वाले उन बंदरों से ज्यादा खुश नहीं हैं।

12

पश्चिम की यात्रा

बंदरों के समूह ने सुंदर बंदर राजा को सम्मान के सिंहासन तक पहुँचाया और उम्र के अनुसार उनके नीचे बैठ गए। बारी-बारी से सभी बंदर उनके लिए शराब, फूल और फल लाते रहे और पूरे दिन जमकर पीते रहे। अगली सुबह सुंदर बंदर राजा जल्दी उठे और आदेश दिया, "बच्चों, कुछ पुराने चीड़ के पेड़ काट दो और मेरे लिए एक बेड़ा बना दो। चलाने के लिए एक बांस का डंडा ढूंढो और उसे फलों से भर दो। मैं जा रहा हूँ।" वे अकेले ही बेड़े पर सवार हुए, अपनी पूरी ताकत से उसे धकेला और समुद्र की लहरों की ओर बह गए। उनका इरादा हवा के साथ बहते हुए दक्षिणी जंबू महाद्वीप को पार करने का था।

स्वर्ग से जन्मा वह बंदर, जिसका आचरण इतना नेक था,
उसने अपना द्वीप स्वर्ग की हवाओं के साथ बहने के लिए छोड़ दिया।
उसने अमरता का मार्ग खोजने के लिए महासागरों और समुद्रों की यात्रा की।
एक महान कार्य करने के लिए दृढ़ संकल्पित।
जिस व्यक्ति का भाग्य निर्धारित हो, उसे तुच्छ इच्छाओं से बचना चाहिए;
वह बिना किसी चिंता या फिक्र के मूल सत्य को प्राप्त कर सकता है।
उसे अवश्य ही कोई हमसफर मिल जाएगा।
उत्पत्ति और प्रकृति के नियमों की व्याख्या करने के लिए।

उसने अपनी यात्रा के लिए बिल्कुल सही समय चुना था। अपनी नाव पर सवार होने के बाद, दक्षिण-पूर्वी हवा कई दिनों तक लगातार तेज़ चलती रही और उसे दक्षिणी महाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी तट पर ले गई। उसने अपनी छड़ी से पानी की गहराई नापी तो पाया कि वह उथला है, इसलिए उसने नाव छोड़ दी और किनारे पर कूद गया। उसने तट पर मनुष्यों को मछली पकड़ते, हंसों का शिकार करते, सीपियाँ इकट्ठा करते और नमक निकालते देखा। वह उनके पास उछल-कूद करने और मुँह बनाने लगा, जिससे वे इतने डर गए कि उन्होंने अपनी टोकरियाँ और जाल गिरा दिए और जितनी तेज़ी से हो सके, इधर-उधर भाग गए। बंदर राजा ने उनमें से एक को पकड़ लिया जो दौड़ने में कमज़ोर था, उसके कपड़े उतार दिए और खुद मनुष्य की तरह कपड़े पहन लिए। वह प्रांतों और प्रान्तों में अकड़ते हुए घूमता रहा, बाज़ारों में मनुष्यों का व्यवहार और भाषा सीखता रहा। चाहे वह नाश्ता कर रहा हो या रात को सोने जा रहा हो, वह

हमेशा बुद्धों, अमर देवताओं और ऋषियों के बारे में पूछता रहता था और शाश्वत यौवन का रहस्य खोजता रहता था।
उन्होंने पाया कि दुनिया के लोग प्रसिद्धि और धन-दौलत को लेकर इतने चिंतित थे कि उन्हें अपने भाग्य में कोई दिलचस्पी नहीं थी।
यश और धन के लिए यह संघर्ष कब समाप्त होगा?
सुबह से शाम तक परिश्रम करना, कभी भी खुद को खुश न करना।
जो लोग गधों की सवारी करते हैं, वे घोड़ों की चाह रखते हैं।
प्रधानमंत्री हमेशा राजकुमार बनना चाहते हैं।
उन्हें केवल इस बात की चिंता रहती है कि उन्हें खाने या कपड़े पहनने के लिए काम रोकना पड़ेगा;
अध्याय 1
13
पश्चिम की यात्रा
उन्हें कभी इस बात का डर नहीं रहता कि नरक का राजा उन्हें लेने आएगा।
अपने बेटों और पोतों को अपनी संपत्ति और सत्ता विरासत में दिलाने की कोशिश में, उनके पास रुककर सोचने का समय नहीं होता।
हालाँकि उसने अमर लोगों के मार्ग के बारे में पूछा, लेकिन वानर राजा उनमें से किसी से भी मिलने में असमर्थ रहा। उसने दक्षिणी जांबू महाद्वीप में आठ या नौ वर्ष बिताए, उसकी विशाल दीवारों को पार किया और उसके छोटे-छोटे क्षेत्रों का दौरा किया।
जब उसने पाया कि वह विशाल पश्चिमी महासागर तक पहुँच गया है, तो उसने सोचा कि इसके दूसरी ओर अवश्य ही ऋषि और अमर होंगे, इसलिए उसने पिछली नाव जैसी ही एक और नाव बनाई और पश्चिमी महासागर को पार करते हुए तब तक यात्रा की जब तक वह मवेशी-उपहार के पश्चिमी महाद्वीप तक नहीं पहुँच गया। वह तट पर उतरा और विस्तृत और लंबी पूछताछ की, यहाँ तक कि एक दिन वह एक ऊँचे और सुंदर पर्वत पर पहुँचा, जिसकी निचली ढलानें घने जंगलों से ढकी हुई थीं। भेड़ियों से न डरते हुए, और बाघों या तेंदुओं से भी बेखौफ होकर, वह दृश्य देखने के लिए शिखर पर चढ़ गया। वह वास्तव में एक शानदार पर्वत था।
हजारों चोटियाँ भाले लहरा रही हैं,
दस हजार माप की ऊँची स्क्रीन।

सूर्य के प्रकाश में पर्वतीय धुंध में हल्की नीली झलक दिखाई देती है; बारिश के बाद काली चट्टानें ठंडी हरी दिखाई देती हैं।
मुरझाई हुई लताएँ प्राचीन वृक्षों के चारों ओर लिपटी हुई हैं।
और वह पुराना जलमार्ग रहस्यमय सीमा का प्रतीक है।
विचित्र फूल और अनमोल पौधे,
चारों मौसमों में फलता-फूलता हुआ, किसी परीलोक को टक्कर देता हुआ।
पास ही छिपे हुए पक्षी की आवाज सुनाई दी,
स्प्रिंग का सुचारू रूप से बहना।
मशरूम और ऑर्किड की घाटियों की भरमार,
चट्टानों पर हर जगह लाइकेन उगती है।
यह पर्वत श्रृंखला अजगर जैसी भव्यता के साथ ऊपर-नीचे होती है।
यहां जरूर कोई महान संन्यासी होंगे।
जब वह दृश्य का आनंद ले रहा था, तभी बंदरों के राजा को जंगल की गहराई से एक मानवीय आवाज सुनाई दी।
वह पेड़ों की ओर दौड़ा, और जब उसने ध्यान से सुनने के लिए कान लगाए तो उसे एक गीत सुनाई दिया: अध्याय 1
14
पश्चिम की यात्रा
शतरंज का खेल देखते हुए मैंने सड़ी हुई चीजों को दरकिनार कर दिया।
पेड़ काटना, डिंग, डिंग,
बादलों के किनारे और घाटी के मुहाने पर टहलते हुए, मैं शराब खरीदने के लिए लकड़ियाँ बेचता हूँ।
खिलखिलाती हंसी और बेहद खुश।
मैं चीड़ की जड़ पर तकिया बनाकर बैठ जाता हूँ और चाँद को देखता हूँ।
जब मैं उठता हूँ तो उजाला होता है।
पुराने जंगल को पहचानना
मैं चट्टानों पर चढ़ता हूँ और पर्वत श्रृंखलाओं को पार करता हूँ।
मैं अपनी कुल्हाड़ी से सूखी लताओं को काट रहा हूँ।
जब मैंने एक टोकरी भर इकट्ठा कर लिया है

मैं गीत गाते हुए बाजार की ओर चल पड़ता हूँ।
और इसके बदले में तीन पाइंट चावल ले लें।
मेरे साथ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं करता।
इसलिए कीमतें स्थिर हैं।
मैं अटकलें नहीं लगाता और न ही चालाकी भरी हरकतें करने की कोशिश करता हूं।
मुझे इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं है कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं।
शांतिपूर्वक अपने दिनों को लंबा कर रहा हूँ।
जिन लोगों से मैं मिलता हूँ
क्या ताओवादी और अमर हैं?
चुपचाप बैठकर पीली अदालत की व्याख्या करना।"
यह सुनकर बंदरों का राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने हर्षपूर्वक कहा, "तो अमर लोग यहीं छिपे हुए थे।" वह करीब से देखने के लिए जंगल में और अंदर चला गया और उसने देखा कि गायक एक लकड़हारा था जो लकड़ियाँ काट रहा था। उसने अत्यंत विचित्र वस्त्र पहने हुए थे:
अध्याय 1
15
पश्चिम की यात्रा
उसने अपने सिर पर टोपी पहन रखी थी
इसे बांस की नई कोंपलों द्वारा उतारी गई पहली छाल से बुना जाता है।
उसके शरीर पर मौजूद कपड़े
ये जंगली कपास के पेड़ से प्राप्त शकरकंद से बने थे।
उसकी कमर के चारों ओर बेल्ट
यह एक पुराने रेशम के कीड़े से प्राप्त रेशम का बना हुआ था।
उसके पैरों के नीचे भूसे की चप्पलें थीं
सड़े हुए साबूदाने के पेड़ों से पट्टियाँ फाड़ी गई थीं।
उसके हाथ में एक लोहे की कुल्हाड़ी थी।
उसने अपनी पीठ पर भांग की रस्सी लाद रखी थी।
चीड़ के पेड़ों पर चढ़ने और सूखे पेड़ों को काटने में,
इस लकड़हारे का मुकाबला कौन कर सकता था?

बंदरों का राजा पास आया और उसे पुकारा, "वृद्ध अमर, आपका शिष्य आपको प्रणाम करता है।"

लकड़हारा अचरज से अपनी कुल्हाड़ी नीचे गिराकर मुड़ा और बोला, "नहीं, नहीं। मेरे पास तो खाने-पीने के लिए भी पर्याप्त नहीं है, तो मैं तुम्हें मुझे अमर कहने की इजाज़त कैसे दे सकता हूँ?"

"अगर तुम अमर नहीं हो," बंदर राजा ने कहा, "तो तुम अमर की तरह क्यों बोलते हो?"

"मैं अमर की तरह बात नहीं करता," लकड़हारा ने कहा।

“अभी जंगल के किनारे पर,” बंदर राजा ने उत्तर दिया, “मैंने तुम्हें यह कहते सुना, ‘जिन लोगों से मैं मिलता हूँ वे ताओवादी और अमर हैं, जो चुपचाप बैठकर मंटिंगफांग का उपदेश दे रहे हैं।’ मंटिंगफांग में मार्ग का सत्य समाहित है, तो यदि तुम अमर नहीं हो, तो तुम क्या हो?” लकड़हारा हँस पड़ा।

"यह बिल्कुल सच है कि इस गीत का नाम 'मंटिंगफैंग की सुगंध' है, और इसे मेरी कुटिया के पास रहने वाले एक अमर व्यक्ति ने मुझे सिखाया था। उन्होंने कहा कि उन्होंने देखा कि मुझे कितनी मेहनत करनी पड़ती है और मैं हमेशा चिंतित रहती हूँ, इसलिए जब मैं उदास होती थी तो वे मुझे यह गीत गाने के लिए कहते थे। यह मेरी चिंताओं को कम करता है और मेरी थकान को भुला देता है। मैं अभी इसे गा रही थी क्योंकि मेरे मन में कुछ परेशानियाँ थीं, और मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप इसे सुन रहे होंगे।"

"यदि आपका पड़ोसी कोई अमर व्यक्ति है, तो आपको उससे अपने आचरण को सुधारने का तरीका सीखना चाहिए और उससे शाश्वत यौवन का नुस्खा जानना चाहिए।"

अध्याय 1

16

पश्चिम की यात्रा

“मेरा जीवन बहुत कठिन रहा है,” लकड़हारा बोला। “मेरे माता-पिता ने मुझे लगभग आठ साल की उम्र तक पाला-पोसा, और जब मैं जीवन के बारे में थोड़ा-बहुत समझने लगा था, तभी मेरे पिता का देहांत हो गया। मेरी माँ विधवा ही रहीं, और मेरा कोई भाई-बहन नहीं था। क्योंकि मैं इकलौता बच्चा था, इसलिए मुझे सुबह-शाम अपनी माँ

की देखभाल करनी पड़ती थी। अब वह इतनी बूढ़ी हो गई हैं कि मैं उन्हें छोड़कर नहीं जा सकता। हमारी ज़मीन इतनी झाड़ियों से भरी है कि मैं हम दोनों के लिए पर्याप्त भोजन और वस्त्र नहीं उगा पाता, इसलिए मुझे लकड़ी के कुछ गट्ठे काटकर बाज़ार में बेचने पड़ते हैं ताकि मुझे कुछ पैसे मिल सकें और मैं अपने और अपनी माँ के लिए थोड़े से चावल पका सकूँ। इसीलिए मैं अपने आचरण में सुधार नहीं कर पाता।"

"तुम्हारी बातों से तो यही लगता है कि तुम आज्ञाकारी पुत्र और सज्जन हो—एक दिन तुम्हें इसका फल अवश्य मिलेगा। लेकिन अगर तुम मुझे बता सको कि वह अमर कहाँ रहता है, तो मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा, ताकि मैं जाकर उसे प्रणाम कर सकूँ।"

लकड़हारा बोला, "यह यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है। यह पर्वत आत्मा की मीनार, हृदय पर्वत है, और इसमें अस्त होते चाँद और तीन तारों की गुफा है। उस गुफा में कुलपति सुभूति नामक एक अमर व्यक्ति निवास करते हैं। मुझे नहीं पता कि उन्होंने कितने शिष्यों को प्रशिक्षित किया है—इस समय तीस-चालीस शिष्य उनके साथ आचरण साधना कर रहे हैं। अगर आप उस रास्ते से दक्षिण की ओर दो-तीन मील चलेंगे तो आप उनके घर पहुँच जाएँगे।"

बंदरों के राजा ने लकड़हारे को खींचते हुए कहा, "मुझे वहाँ ले चलो, बड़े भाई। अगर मुझे इससे कुछ भी मिलता है, तो मैं आपकी दयालुता को नहीं भूलूंगा।"

"अरे बेवकूफ," लकड़हारे ने जवाब दिया, "क्या तुम्हें मेरी बात समझ नहीं आई? अगर मैं तुम्हारे साथ गया तो मेरी रोजी-रोटी छिन जाएगी, और फिर मेरी बूढ़ी माँ की देखभाल कौन करेगा? मुझे अपना लकड़हारा का काम करना है। तुम अकेले जाओ।"

यह सुनकर वानर राजा को विदा लेनी पड़ी। वह जंगल से बाहर आया और उसे एक रास्ता मिला, जो दो-तीन मील तक पहाड़ की ढलान पर जाता था, तभी उसे गुफा दिखाई दी। उसने गुफा को देखने के लिए खुद को पूरी ऊंचाई तक उठाया और वह वास्तव में एक शानदार जगह थी।

धुंध भरे बादलों ने रंग बिखेर दिए,
सूर्य और चंद्रमा चमकते हुए दिखाई दिए।
एक हजार प्राचीन सरू के पेड़,
दस हजार ऊंचे बांस।
एक हजार प्राचीन सरू के पेड़,
आसमान से बरसती बारिश को अपनी ओर खींचती हुई कोमल हरी छाया।

दस हजार ऊंचे बांस,
और धुंध से ढकी घाटी का रंग नीला है।
द्वार के बाहर दुर्लभ फूल रेशमी आवरण की तरह फैले हुए हैं;
पुल के किनारे हरे रंग के फूलों की खुशबू फैली हुई है।
चट्टानी टीले उभरे हुए हैं, जो हरी काई से चमकदार हैं;

लटकती हुई चट्टानों पर नीली लाइकेन उगती है।
कभी-कभी सारस की आवाज सुनाई देती है
और अक्सर आप फीनिक्स पक्षी को ऊँची उड़ान भरते हुए देखते हैं।
सारस की पुकार
नौवें स्वर्ग और आकाशगंगा से परे की गूँज।
जब फीनिक्स पक्षी उड़ान भरता है,
इसके पंखों की चमक बादलों को रंगीन बना देती है।
काले बंदर और सफेद हिरणों को मुश्किल से पहचाना जा सकता है;
सुनहरे शेर और हरे हाथी छुपकर रहना पसंद करते हैं।
अगर आप इस खुशहाल भूमि को गौर से देखें,
आप देखेंगे कि यह स्वर्ग के समकक्ष है।

उसने देखा कि गुफा के दरवाजे मजबूती से बंद थे, और सब कुछ शांत था, किसी भी इंसान का कोई निशान नहीं था। वह मुड़ा और उसने देखा कि चट्टान की चोटी पर लगभग तीस फीट ऊँची और आठ फीट चौड़ी एक पत्थर की शिला थी। उस पर बड़े अक्षरों में खुदा हुआ था: आत्मा-शिखर हृदय पर्वत, गुफा

अस्त होता चाँद और तीन तारे। बंदर राजा ने प्रसन्नता से कहा, "यहाँ के लोग सचमुच ईमानदार हैं। पहाड़ और गुफा सचमुच मौजूद हैं।" उसने अच्छी तरह से छानबीन की, लेकिन दरवाजा खटखटाने की हिम्मत नहीं की। वह एक चीड़ की शाखा के सिरे पर चढ़ गया और अपना मनोरंजन करने के लिए कुछ चीड़ के बीज खा लिए।

कुछ ही क्षण में गुफा के द्वार चरमराते हुए खुले और एक अमर बालक बाहर आया। अपने गरिमामय आचरण और असाधारण पवित्र चेहरे के कारण वह एक साधारण

बालक से बिलकुल भिन्न था।
उसके बाल रेशम की दो पट्टियों से बंधे हुए थे।
उनके लंबे गाउन में दो चौड़ी आस्तीनें थीं।
उनका चेहरा और शरीर स्वाभाविक रूप से सुशोभित थे;
उसका मन और चेहरा दोनों ही खाली थे।
कई वर्षों तक भौतिक जगत से परे एक अतिथि के रूप में,
पहाड़ों के बीच एक शाश्वत बालक,
धूल के एक कण से भी अछूता,
अध्याय 1
18
पश्चिम की यात्रा
उसने वर्षों को यूं ही बीतने दिया।
जब वह लड़का बाहर आया तो उसने चिल्लाकर कहा, "यहां इतना शोर कौन मचा रहा है?"
वानर राजा पेड़ से नीचे उतरा, उसके पास गया और प्रणाम करते हुए बोला, "हे अमर बालक, मैं एक शिष्य हूँ जो मार्ग के बारे में पूछने और अमर गुरु से शिक्षा प्राप्त करने आया हूँ। मैं यहाँ हंगामा क्यों करूँ?" बालक हँस पड़ा।
"तो आप मार्ग के बारे में पूछने आए हैं, है ना?"
"हां," बंदरों के राजा ने उत्तर दिया।
“हमारे गुरुजी अभी उठे हैं,” लड़के ने कहा, “और अब उपदेश देने के लिए मंच पर चढ़ गए हैं। उत्पत्ति के बारे में बताना शुरू करने से पहले उन्होंने मुझे दरवाजा खोलने को कहा। उन्होंने कहा, 'बाहर कोई है जो अपने आचरण में सुधार करना चाहता है। जाओ और उसका स्वागत करो।' मुझे लगता है कि उनका मतलब आपसे ही रहा होगा।”
"हां, उसका मतलब मुझसे ही था," बंदरों के राजा ने मुस्कुराते हुए कहा।
"मेरे साथ आओ," लड़के ने कहा।
वानर राजा ने अपने वस्त्र समेटे और उस बालक के पीछे-पीछे गुफा की गहराई में चले गए। उन्होंने लाल जेड के भव्य मंडप और मीनारें, मोती के महल और कौड़ी के द्वार, और अनगिनत मौन कक्ष और एकांत कोठरियाँ देखीं जो अंततः एक चबूतरे तक जाती

थीं। उन्होंने देखा कि कुलपति सुभूति चबूतरे पर बैठे हैं और छत्तीस लघु अमर उनके नीचे खड़े हैं।

एक स्वर्णिम अमर, महान ज्ञान से परिपूर्ण, मैल से मुक्त,
सुभूति, पश्चिमी जगत का एक अजूबा।
न तो मरते हैं और न ही जन्म लेते हैं, वे त्रिविध ध्यान का अभ्यास करते हैं।
उनकी आत्मा और मन पूरी तरह परोपकारी थे।
वह तटस्थ भाव से परिवर्तनों का अनुसरण करता है;
अपने वास्तविक स्वरूप को पा लेने के बाद वह उसे स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होने देता है।
स्वर्ग के समान शाश्वत और भव्य शरीर वाला,
धर्म के महान शिक्षक युगों-युगों के दौरान ज्ञान प्राप्त करते हैं।

जैसे ही सुंदर बंदर राजा ने उसे देखा, उसने झुककर कई बार अपना सिर जमीन पर पटका और कहा, "गुरुजी, गुरुजी, आपका शिष्य आपको हार्दिक प्रणाम करता है।"

“तुम कहाँ से हो?” कुलपति ने पूछा। “मेरे शिष्य बनने से पहले तुम्हें अपना नाम और पता बताना होगा।”

"मैं पूर्वी महाद्वीप के ओलाई देश में स्थित पुष्प एवं फल पर्वत में जल परदे की गुफा से आया हूँ," बंदर राजा ने उत्तर दिया।

“उसे बाहर निकाल दो,” कुलपति गरजते हुए बोले। “वह झूठा और धोखेबाज है, और अगर वह अपने आचरण को सुधारने की कोशिश भी करे तो भी उसे कोई सफलता नहीं मिलेगी।”

बंदरों का राजा हताशा में अपना सिर ज़मीन पर पटकता रहा और बोला, "आपके शिष्य ने सच कहा। मैं कसम खाता हूँ कि मैं झूठ नहीं बोल रहा था।"

कुलपति ने पूछा, "यदि तुम सच कह रहे थे, तो तुमने यह क्यों कहा कि तुम श्रेष्ठ शरीर के पूर्वी महाद्वीप से आए हो? यहाँ और पूर्वी महाद्वीप के बीच दो समुद्र और दक्षिणी जंबू महाद्वीप हैं, तो तुम वहाँ से यहाँ कैसे आ सकते हो?"

बंदर राजा, अब भी प्रणाम करते हुए, बोला, "यहाँ पहुँचने से पहले मैंने दस साल से

अधिक समय तक समुद्रों और महासागरों को पार किया, सीमाओं को लांघा और कई देशों में भटका।"

“तो आप यहाँ धीरे-धीरे आए हैं,” कुलपति ने टिप्पणी की। “आपका उपनाम क्या है?”

"मैं चिड़चिड़ा नहीं हूँ," बंदरों के राजा ने उत्तर दिया। "अगर लोग मुझे अपशब्द कहते हैं तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, और अगर वे मुझे मारते हैं तो भी मुझे गुस्सा नहीं आता। मैं बस उनके साथ विनम्रता से पेश आता हूँ, बस। मैं कभी चिड़चिड़ा नहीं रहा।"

"मैंने यह नहीं पूछा कि तुम चिड़चिड़े हो या नहीं। मैं तो यह जानना चाहता था कि तुम्हें अपने माता-पिता से कौन सा उपनाम विरासत में मिला है।"

"मेरे कोई माता-पिता नहीं थे," बंदर राजा ने उत्तर दिया।

"अगर आपके माता-पिता नहीं थे, तो क्या आप पेड़ पर पले-बढ़े?"

"मैं पेड़ पर नहीं, बल्कि पत्थर में पला-बढ़ा," बंदरों के राजा ने उत्तर दिया। "मुझे बस इतना याद है कि पुष्प और फल पर्वत की चोटी पर एक जादुई पत्थर था, और एक साल वह पत्थर फट गया और मेरा जन्म हुआ।"

इस बात पर अपनी खुशी छुपाते हुए कुलपति ने कहा, "दूसरे शब्दों में, तुम स्वर्ग और पृथ्वी से उत्पन्न हुए हो। थोड़ी देर इधर-उधर घूमो और मुझे तुम्हें देखने दो।" वानर राजा उछलकर खड़ा हो गया और दो-तीन चक्कर लगाए।

कुलपति मुस्कुराए और बोले, "यद्यपि तुम्हारा शरीर कुछ हद तक साधारण सा है, तुम चीड़ के बीज खाने वाले रीसस बंदरों में से एक लगते हो, और मुझे तुम्हें तुम्हारी शक्ल के अनुरूप उपनाम देना चाहिए और तुम्हें हू ('मकाक') कहना चाहिए। हू शब्द के तत्व हैं 'पशु', 'पुराना' और 'चंद्रमा'। जो पुराना है वह प्राचीन है, और चंद्रमा नकारात्मक सिद्धांत का प्रतीक है, और जो प्राचीन और नकारात्मक है उसे बदला नहीं जा सकता। लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें सूर्य ('बंदर') कहना ज़्यादा बेहतर होगा। 'पशु' तत्व के अलावा, सूर्य शब्द का एक भाग पुरुष और एक भाग शिशु का संकेत देता है, जो बच्चों के बारे में मेरे बुनियादी सिद्धांतों से मेल खाता है। तुम्हारा उपनाम सूर्य होगा।"

जब बंदरों के राजा ने यह सुना तो वह प्रसन्नता से सिर झुकाकर बोला, "वाह! वाह! अब मेरा एक उपनाम भी है।"

हे स्वामी, आपकी दया और करुणा के लिए मैं सदा आपका आभारी रहूंगा। आपसे

निवेदन है कि मुझे मेरे नए उपनाम के साथ एक व्यक्तिगत नाम भी प्रदान करें, इससे मुझे संबोधित करना बहुत आसान हो जाएगा।
कुलपति ने कहा, "मेरे संप्रदाय में बारह शब्द हैं, जिन्हें मैं नाम के रूप में देता हूँ। तुम मेरे शिष्यों की दसवीं पीढ़ी से संबंधित हो।"
अध्याय 1
20
पश्चिम की यात्रा
"ये बारह शब्द क्या हैं?" बंदरों के राजा ने पूछा।
"विशाल, महान, ज्ञान, बुद्धि, सत्य, समानता, प्रकृति, समुद्र, उज्ज्वल, जागृत, पूर्ण और ज्ञानोदय।"
अगर हम शिष्यों की पीढ़ियों का हिसाब लगाएं, तो आपके नाम में 'वू' ('जागृत') होना चाहिए। इसलिए हम आपको धर्म-नाम सन वुकॉन्ग दे सकते हैं, जिसका अर्थ है 'शून्यता के प्रति जागृत बंदर'। क्या यह चलेगा?
मुस्कुराते हुए बंदर राजा ने कहा, "अद्भुत, अद्भुत! अब से मेरा नाम सन वुकॉन्ग होगा।"
वास्तव में:
जब महान अस्पष्टता अलग हुई तो कोई उपनाम नहीं थे; मूर्खतापूर्ण शून्यता को नष्ट करने के लिए उसे शून्यता के प्रति जागृत होना पड़ा।
यदि आप यह जानना चाहते हैं कि अपने आचरण को सुधारने में उन्हें कितनी सफलता मिली, तो आपको अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को अवश्य सुनना चाहिए।
अध्याय दो
उन्हें ज्ञानोदय के अद्भुत सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है।
राक्षस का वध करके वह अपनी आत्मा-प्रकृति को प्रकट करता है।
कथा आगे बताती है कि नाम मिलने पर सुंदर वानर राजा खुशी से उछल पड़ा और सुभूति को प्रणाम करके धन्यवाद व्यक्त किया। तब कुलपति ने अन्य लोगों को आदेश दिया कि वे सुन वुकॉन्ग को दोहरे द्वार से बाहर ले जाएं और उसे पानी छिड़कना, फर्श साफ करना, आदेशों का पालन करना और उचित आचरण सिखाएं। सभी अमर इस आदेश का पालन करते हुए बाहर चले गए। जब सुन वुकॉन्ग द्वार के बाहर पहुंचा, तो उसने अपने सभी आध्यात्मिक वृहद भाइयों को प्रणाम किया और बरामदे में अपना पलंग बिछाया। अगली सुबह और उसके बाद हर दिन वह अपने आध्यात्मिक वृहद

भाइयों के मार्गदर्शन में भाषा और आचरण का अध्ययन करता, शास्त्रों की व्याख्या करता, मार्ग पर चर्चा करता, सुलेख का अभ्यास करता और धूप जलाता। जब भी उसे खाली समय मिलता, वह मैदान साफ करता, सब्जी का बगीचा खोदता, फूल उगाता, पेड़ों की देखभाल करता, जलाने की लकड़ी ढूंढता, आग जलाता, पानी लाता और सोयाबीन लाता। उसकी हर जरूरत पूरी होती थी। इस प्रकार गुफा में छह या सात साल बीत गए और उसे पता भी नहीं चला। एक दिन कुलपति ने मंच पर अपना स्थान ग्रहण किया, सभी अमर लोगों को एक साथ बुलाया और महान मार्ग की व्याख्या करना शुरू कर दिया।

स्वर्गिक फूल बहुतायत से गिरे।

तभी धरती से सुनहरे कमल खिल उठे।

उन्होंने तीन वाहनों के सिद्धांत को बड़ी कुशलता से समझाया।

दस हजार धर्मों को उनके सभी विवरणों के साथ प्रस्तुत करना।

जैसे ही उसने धीरे-धीरे अपनी झाड़ू हिलाई, उसके मुंह से रत्न गिरने लगे।

अध्याय दो

21

पश्चिम की यात्रा

गरज की तरह गूंजते हुए और नौ आकाशों को हिलाते हुए।

अब मार्ग का प्रचार करते हुए,

अब ध्यान सिखाना,

उन्होंने यह सिद्ध किया कि तीनों मान्यताएँ मूलतः एक ही हैं।

एक शब्द की व्याख्या करते हुए उन्होंने व्यक्ति को सत्य की ओर वापस ला दिया।

और उन्होंने जन्म से बचने और अपने स्वभाव को समझने के रहस्य सिखाए।

बंदर एक तरफ बैठकर व्याख्या सुन रहा था और इतना खुश था कि वह अपना कान खींच रहा था, गाल खुजा रहा था और मुस्कुरा रहा था। वह अपने हाथ हिलाने और पैर पटकने से खुद को रोक नहीं पा रहा था। जब कुलपति ने यह देखा तो उन्होंने बंदर से कहा, "पाठ सुनने के बजाय तुम कक्षा में पागलों की तरह क्यों उछल-कूद कर रहे हो?"

"आपका शिष्य पूरी एकाग्रता से प्रवचन सुन रहा है, लेकिन आपके अद्भुत शब्दों ने मुझे इतना प्रसन्न कर दिया कि मैं अनजाने में ही उछलने-कूदने लगा। कृपया मुझे

क्षमा कर दीजिए।"
इस पर कुलपति ने उत्तर दिया, "यदि तुम सचमुच मेरे अद्भुत शब्दों को समझते हो, तो इस प्रश्न का उत्तर दो। तुम मेरी गुफा में कितने समय से हो?"
“तुम्हारा शिष्य तो जन्म से ही मूर्ख है,” बंदर ने उत्तर दिया, “इसलिए मुझे पता ही नहीं कि मैं यहाँ कितने समय से हूँ। मुझे बस इतना पता है कि जब भी चूल्हे की आग बुझ जाती है, मैं पहाड़ के दूसरी तरफ लकड़ियाँ लेने जाता हूँ और वहाँ मुझे आड़ू के सुंदर पेड़ों से ढकी एक पहाड़ी दिखाई देती है। मैंने वहाँ सात बार भरपेट आड़ू खाए हैं।”
"उस पहाड़ी को टेंडर पीच हिल कहते हैं। अगर आपने वहां सात बार खाना खाया है तो आप यहां सात साल से रह रहे होंगे। आप मुझसे किस तरह का तरीका सीखना चाहते हैं?"
"यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप मुझे क्या सिखाते हैं, गुरुजी। जब तक मुझे इसमें थोड़ी सी भी सफलता की झलक मिलेगी, आपका शिष्य इसे सीख जाएगा।"
“इस मार्ग के तीन सौ साठ उपप्रवेश द्वार हैं, और वे सभी एक सच्चे परिणाम की ओर ले जाते हैं,” कुलपति ने कहा। “आप किस शाखा का अध्ययन करना चाहेंगे?”
"मैं वही करूंगा जो आपको सबसे अच्छा लगे, स्वामी," बंदर ने उत्तर दिया।
"क्या मैं तुम्हें जादू की कला सिखा सकता हूँ?"
"'जादुई कलाओं का मार्ग' का क्या अर्थ है?"
कुलपति ने उत्तर दिया, "जादुई कलाओं में अमर प्राणियों को बुलाना, जादुई सैंडबोर्ड का उपयोग करना और मिलफ़ॉइल से भविष्यवाणी करना शामिल है। इनके द्वारा सौभाग्य प्राप्त करना और आपदा को टालना सीखा जा सकता है।"
"क्या इस तरह अमरता प्राप्त की जा सकती है?" बंदर ने पूछा।
"नहीं, बिलकुल नहीं," कुलपति ने उत्तर दिया।
"नहीं। मैं इसे नहीं सीखूंगा।"
अध्याय दो
22
पश्चिम की यात्रा
"क्या मैं तुम्हें संप्रदायों का मार्ग सिखाऊं?" कुलपति ने पूछा।
"संप्रदायों के सिद्धांत क्या हैं?" बंदर ने पूछा।

"संप्रदायों की शाखा के अंतर्गत कन्फ्यूशियसवाद, बौद्ध धर्म, ताओवाद, नकारात्मक और सकारात्मक का अध्ययन, मोहवाद, चिकित्सा, शास्त्रों का अध्ययन और बुद्ध के नाम का जाप शामिल हैं। इस शाखा के माध्यम से आप अमर आत्माओं और ऋषियों का आह्वान भी कर सकते हैं।"

"क्या इस तरह अमरत्व प्राप्त किया जा सकता है?" बंदर ने पूछा।

कुलपति ने उत्तर दिया, "उस तरह अमरत्व प्राप्त करने का प्रयास करना, 'दीवार में खंभा लगाने' के समान है।"

“गुरुजी,” बंदर ने कहा, “मैं एक सीधा-सादा आदमी हूँ और मुझे आपकी तकनीकी शब्दावली समझ नहीं आती। ‘दीवार में खंभा लगाना’ से आपका क्या मतलब है?”

"जब कोई व्यक्ति घर बनाता है और उसे मजबूत बनाना चाहता है तो वह दीवार में एक खंभा लगाता है। लेकिन जब कभी उसके महल के गिरने का दिन आता है तो वह खंभा सड़ने लगता है।"

"तुम्हारी बातों से तो यही लगता है," बंदर ने कहा, "यह शाश्वत नहीं है। नहीं। मैं इसे नहीं सीखूंगा।"

"क्या मैं तुम्हें मौन का मार्ग सिखाऊं?" तब कुलपति ने पूछा।

"चुप रहने से वास्तव में क्या परिणाम मिल सकता है?" बंदर ने कहा।

"इसमें अनाज का सेवन न करना, अपने सार को संरक्षित रखना, मौन रहना, निष्क्रियता, ध्यान, वाणी का त्याग, शाकाहारी भोजन करना, सोते समय या खड़े होकर कुछ विशेष व्यायाम करना, समाधि में जाना और पूर्ण एकांत में दीवारों के अंदर बंद रहना शामिल है।"

"क्या यह अमर होने का एक तरीका है?" बंदर ने पूछा।

"यह तो भट्टी के ऊपरी हिस्से को धूप में सुखाई गई ईंटों से बनाने जैसा है," कुलपति ने उत्तर दिया।

"आप बोलते रहिए, गुरुजी," सन वुकॉन्ग ने कहा। "मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि मुझे आपकी तकनीकी शब्दावली समझ नहीं आती।"

'भट्टी के ऊपर धूप में सुखाई गई ईंटों से निर्माण करना' का क्या अर्थ है?

"यदि आप भट्टी के ऊपरी हिस्से को धूप में सुखाई गई ईंटों से बनाते हैं, तो वे देखने में ठीक लग सकती हैं, लेकिन यदि उन्हें आग और पानी से कठोर नहीं किया गया है, तो वे पहली ही तेज बारिश में ढह जाएंगी।"

"तो फिर उसमें भी कुछ शाश्वत नहीं है," बंदर ने उत्तर दिया। "नहीं। मैं वह नहीं सीखूंगा।"
"तो क्या मैं तुम्हें कर्म का मार्ग सिखाऊं?" कुलपति ने पूछा।
"यह कैसा होता है?" बंदर ने पूछा।
"इसमें अभिनय करना और करना, नकारात्मकता को दूर करना और सकारात्मकता को बढ़ाना, धनुष खींचना और धनुष में तीर भरना, सूक्ष्म रसों को प्रवाहित करने के लिए नाभि को रगड़ना, सूत्रों के अनुसार अमृत तैयार करना, कड़ाही के नीचे आग जलाना, 'लाल सीसा' का सेवन करना, 'शरद ऋतु के पत्थर' को शुद्ध करना और महिलाओं का दूध पीना शामिल है।"
"क्या ऐसा करने से मैं अमर हो सकता हूँ?" बंदर ने पूछा।
अध्याय दो
23
पश्चिम की यात्रा
"इस तरह अमरत्व प्राप्त करने का प्रयास करना 'चाँद को पानी से बाहर निकालने' के समान है।"
"चाँद को पानी से बाहर निकालने का क्या अर्थ है?"
कुलपति ने उत्तर दिया, "चंद्रमा आकाश में है, और पानी में केवल उसका प्रतिबिंब दिखाई दे रहा है। यद्यपि आप उसे वहाँ देख सकते हैं, लेकिन उसे बाहर निकालने का आपका प्रयास व्यर्थ होगा।"
"नहीं। मैं वह नहीं सीखूंगा," बंदर ने कहा।
जब कुलपति ने यह सुना तो वे चौंक गए और अपने आसन से नीचे उतर आए। अपनी छड़ी से सन वुकॉन्ग की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, "तुम न यह पढ़ोगे, न वह पढ़ोगे, तो तुम्हें क्या चाहिए, बंदर?" वे बंदर के पास गए और उसके सिर पर तीन बार प्रहार किया, फिर अपने हाथ पीछे करके अंदर चले गए और मुख्य द्वार बंद कर दिया, उन सबको वहीं छोड़कर। कक्षा स्तब्ध रह गई और सबने सन वुकॉन्ग को दोषी ठहराया।
"अरे बदतमीज़ बंदर, तुझे तमीज़ नहीं आती। गुरु तुझे मार्ग सिखा रहे थे, तो तू उनसे सीखने के बजाय उनसे बहस क्यों कर रहा था? अब तूने उन्हें नाराज़ कर दिया है, पता नहीं वो कब बाहर आएंगे।" वे सब उससे बहुत नाराज़ थे और उसे घृणा और तिरस्कार

भरी नज़रों से देख रहे थे। लेकिन सन वुकॉन्ग को ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ा और उसके चेहरे पर मुस्कान छाई हुई थी।

बंदर राजा पहेली को समझ गया था और उसका उत्तर उसके मन में छिपा हुआ था। इसलिए उसने दूसरों से बहस नहीं की और चुपचाप सब कुछ सहन कर लिया। जब कुलपति ने उसे तीन बार मारा, तो वह उसे तीसरे पहर में ध्यान देने के लिए कह रहा था; और जब वह अपने हाथ पीछे करके अंदर गया और मुख्य द्वार बंद कर लिया, तो उसने बंदर राजा को पीछे के दरवाजे से अंदर जाने और गुप्त रूप से मार्ग सीखने के लिए कहा।

प्रसन्न सन वुकॉन्ग ने उस दिन का शेष समय अन्य लोगों के साथ त्रिसितारा गुफा के सामने बिताया, आकाश को निहारते हुए और रात होने का बेसब्री से इंतज़ार करते हुए। शाम ढलते ही वह अन्य सभी की तरह बिस्तर पर चला गया, आँखें बंद करने का नाटक किया, अपनी साँसों को नियंत्रित किया और खुद को शांत किया। पहाड़ों में कोई भी पहर का पहर नहीं देखता या घंटे नहीं बताता, इसलिए उसके पास अपनी नाक से आने-जाने वाली साँसों को नियंत्रित करने के अलावा समय जानने का कोई तरीका नहीं था। जब उसने अनुमान लगाया कि लगभग तीसरा पहर हो गया है, तो वह बहुत चुपचाप उठा, कपड़े पहने और अन्य लोगों से दूर सामने के दरवाजे से चुपके से बाहर निकल गया। बाहर आकर उसने ऊपर देखा और पाया कि चाँद चमकीला, साफ और ठंडा था।

आठों बिंदुओं का विशाल क्षेत्र धूल से मुक्त था।
घने पेड़ों के बीच एक पक्षी छिपा सो रहा था।
जब झरने से पानी बह रहा था।
जुगनुओं ने अपनी रोशनी बिखेर दी
और बादलों के ऊपर हंसों की एक कतार फैली हुई थी।
यह ठीक तीसरी बार पहरा था।
मार्ग के बारे में पूछने का सही समय।

अध्याय दो

24

पश्चिम की यात्रा

बंदर राजा को देखो, वह पुराने रास्ते से पीछे के दरवाजे की ओर बढ़ता है, जो उसे

थोड़ा खुला मिलता है। "कुलपति ने दरवाजा खुला छोड़ दिया है, इसलिए वे सचमुच मुझे मार्ग सिखाने का इरादा रखते हैं," वह प्रसन्नता से बोला। वह दबे पांव दरवाजे की ओर बढ़ा, बगल से अंदर गया और कुलपिता के बिस्तर तक गया, जहाँ उसने कुलपिता को कमरे के अंदर की ओर मुंह करके सिकुड़कर सोते हुए देखा। उन्हें परेशान करने की हिम्मत न करते हुए, सन वुकॉन्ग बिस्तर के सामने घुटनों के बल बैठ गया। थोड़ी देर बाद कुलपिता जाग गए, अपने दोनों पैर फैलाए और अपने आप से कुछ बुदबुदाए:

"यह बहुत कठिन है, बहुत कठिन, बहुत कठिन। यह मार्ग बहुत अस्पष्ट है।"

सोने और सिंदूर को हल्के में मत लो।

पूर्ण पुरुष के अलावा किसी और को चमत्कारी मंत्र सिखाना,

आवाज थकाना और जीभ सुखाना व्यर्थ है।"

सुन वुकॉन्ग ने जवाब में कहा, "गुरुजी, आपका शिष्य काफी देर से यहां घुटने टेककर बैठा है।"

जब कुलपति ने सुना कि यह सन वुकॉन्ग बोल रहा है, तो उसने जल्दी से कपड़े पहने, पालथी मारकर बैठ गया और चिल्लाया, "यह वही बंदर है। बाहर सोने के बजाय मेरे कमरे में क्यों आ गए हो?"

"गुरुजी, आपने कल वेदी के सामने सार्वजनिक रूप से मुझसे कहा था कि आपका शिष्य तीसरे पहर में पिछले द्वार से यहाँ आए, क्योंकि आप मुझे मार्ग सिखाने वाले थे। इसीलिए मैंने इतनी हिम्मत करके अपने गुरु के पलंग के पास आकर उन्हें प्रणाम किया।"

कुलपति यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और मन ही मन बोले, "यह दुष्ट सचमुच स्वर्ग और पृथ्वी से उत्पन्न हुआ है। अन्यथा वह मेरे गूढ़ संदेश को समझ नहीं पाता।"

सन वुकॉन्ग ने कहा, "इस कमरे में कोई तीसरा व्यक्ति नहीं है; यहाँ केवल आपका शिष्य ही है। हे गुरु, आशा है कि आप अपनी अपार कृपा से मुझे अमरता का मार्ग सिखाएँगे। यदि आप ऐसा करेंगे, तो मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।"

“तुम पूर्वनियोजित हो,” कुलपति ने कहा, “इसलिए मुझे तुम्हें यह बताने में खुशी होगी। चूंकि तुमने मेरा गूढ़ संदेश समझ लिया है, इसलिए इधर आओ और ध्यान से सुनो जब मैं तुम्हें अमरता का चमत्कारी मार्ग सिखाता हूँ।” सन वुकॉन्ग ने कृतज्ञता से प्रणाम किया और पलंग के सामने घुटने टेककर पूरी एकाग्रता से सुनने लगा। कुलपति

ने कहा:
"सच्चे मंत्र, रहस्यों को उजागर करने वाले और सर्वशक्तिमान,
अपने जीवन की रक्षा करने का यही एकमात्र निश्चित तरीका है।
ये सभी सार, वाष्प और आत्मा से उत्पन्न होते हैं।
इसे सुरक्षित रूप से संग्रहित किया जाना चाहिए और कभी भी किसी को नहीं बताया जाना चाहिए।
अध्याय दो
25
पश्चिम की यात्रा
इसका खुलासा कभी नहीं किया जाना चाहिए और इसे शरीर में ही संग्रहित रखा जाना चाहिए।
तब जिस मार्ग का मैं तुम्हें उपदेश देता हूँ, वह स्वतः ही फलेगा-फूलेगा।
मंत्र सीखने के अनेक लाभ हैं:
वे बुरी इच्छाओं से रक्षा करते हैं और व्यक्ति को पवित्र बनाते हैं।
एक को चकाचौंध भरी चमक से शुद्ध बनाओ
जैसे सिंदूर के टावर पर चमकता हुआ चाँद।
चंद्रमा पर जेड खरगोश है, सूर्य पर सुनहरा कौआ है।
कछुआ और सांप हमेशा एक दूसरे से लिपटे रहते हैं।
हमेशा परस्पर जुड़े रहने पर ही जीवन स्थिर होता है।
और आग में सुनहरे कमल के फूल लगाए जा सकते हैं।
पांचों तत्वों को पकड़ें और उन्हें उल्टा कर दें।
और जब आप सफल हो जाते हैं तो आप बुद्ध या अमर बन सकते हैं।"
कुलपति की व्याख्या विषय की तह तक गई, और सुन वुकॉन्ग का हृदय आनंद से भर गया, उसने मंत्रों को याद कर लिया। उसने कुलपति को प्रणाम करके अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त की और पीछे के द्वार से बाहर देखने गया। उसने देखा कि पूर्व दिशा में हल्की सफेदी थी, जबकि पश्चिम में चंद्रमा का सुनहरा प्रकाश चमक रहा था। वह पुराने रास्ते से होते हुए सामने के द्वार पर गया, उसे धीरे से खोला और अंदर चला गया।
वह वहीं बैठ गया जहाँ वह पहले सो रहा था, अपने बिस्तर को झटका दिया और ज़ोर से बोला, "भोर हो गई है, भोर हो गई है। उठो।" बाकी सब सो रहे थे, उन्हें सुन

वुकॉन्ग के सौभाग्य का पता नहीं था। भोर होते ही वह उठा और दिनभर किसी तरह काम करता रहा, साथ ही मन ही मन बताए गए निर्देशों का पालन करता रहा। दोपहर और शाम को उसने अपनी साँसों को नियमित किया।

इस प्रकार तीन वर्ष बीत जाने के बाद, कुलपति एक बार फिर अपने प्रवचन सिंहासन पर विराजमान हुए और छात्रों को धर्म का उपदेश देने लगे। उन्होंने प्रसिद्ध कहावतों और दृष्टांतों का वर्णन किया और बाहरी घटनाओं और बाहरी दिखावे पर चर्चा की।

बिना किसी चेतावनी के उसने पूछा, "सन वुकॉन्ग कहाँ है?" सन वुकॉन्ग आगे बढ़ा, घुटनों के बल बैठ गया और जवाब दिया,

"आपका शिष्य उपस्थित है।"

"यहाँ आने के बाद से आपने कौन सा मार्ग अपनाया है?"

अध्याय दो

26

पश्चिम की यात्रा

"आपका शिष्य अब धर्म से काफी अच्छी तरह परिचित हो चुका है," सन वुकॉन्ग ने उत्तर दिया, "और मेरी शक्ति धीरे-धीरे मजबूत होती जा रही है।"

“यदि आप धर्म से परिचित हैं और स्रोत के बारे में जानते हैं,” कुलपति ने उत्तर दिया, “और यदि आत्मा पहले ही आप में प्रवाहित हो चुकी है, तो आपको ‘तीन विपत्तियों’ से सावधान रहना चाहिए।”

सन वुकॉन्ग ने काफी देर तक सोचा, फिर कहा, "कुलपति, आप बकवास कर रहे हैं। मैंने अक्सर सुना है कि यह मार्ग महान है और इसकी शक्ति असीम है, यह स्वर्ग के समान शाश्वत है, यह अग्नि और जल पर विजय प्राप्त कर सकता है और सभी बीमारियों को उत्पन्न होने से रोक सकता है, तो फिर 'तीन आपदाएँ' कैसे हो सकती हैं?"

इस पर कुलपति ने उत्तर दिया, "यह सामान्य मार्ग नहीं है: इसमें स्वर्ग और पृथ्वी की रचना को ही छीनना और सूर्य और चंद्रमा की गुप्त क्रियाओं पर अतिक्रमण करना शामिल है। एक बार अमृत बन जाने पर, शैतान और आत्माएँ इसे सहन नहीं कर सकतीं। यद्यपि यह आपके चेहरे की युवावस्था को बनाए रखेगा और आपके जीवन को लंबा करेगा, पाँच सौ वर्षों में स्वर्ग आप पर वज्रपात करेगा। आपको स्वभाव और मन से स्पष्ट दृष्टि वाला होना चाहिए, ताकि आप इसके आने से पहले ही इससे छिप सकें।

यदि आप इससे बचने में सफल होते हैं, तो आप स्वर्ग के समान दीर्घायु होंगे; और यदि आप नहीं होते हैं, तो यह आपको मार डालेगा। पाँच सौ वर्षों के बाद स्वर्ग आपको अग्नि से जला देगा। यह अग्नि न तो स्वर्गीय अग्नि होगी और न ही सामान्य अग्नि, बल्कि 'गुप्त अग्नि' होगी। यह आपको पैरों के तलवों से लेकर सिर के मुकुट तक जला देगी; आपके पाँचों आंतरिक अंग राख हो जाएँगे, आपके चारों अंग नष्ट हो जाएँगे, और हज़ार वर्षों का तपस्या व्यर्थ हो जाएगा। फिर पाँच सौ वर्षों के बाद एक हवा आप पर बहेगी। यह..." चाहे यह उत्तर, दक्षिण, पूर्व या पश्चिम की हवा हो, न ही उत्तर-पश्चिम से आने वाली गर्म, सुगंधित हवा होगी; न ही यह फूलों, विलो, चीड़ और बांस के बीच बहने वाली हवा होगी। यह एक 'भयानक हवा' होगी। यह आपके सिर के ऊपरी भाग से होकर आपके छह आंतरिक अंगों तक बहेगी। यह आपकी नाभि के नीचे स्थित सिंदूर क्षेत्र से होकर आपके नौ छिद्रों में प्रवेश करेगी। आपका मांस और हड्डियाँ नष्ट हो जाएँगी और आपका शरीर गलकर चूर-चूर हो जाएगा। इसलिए आपको इन तीनों आपदाओं से बचना चाहिए।

यह सुनकर सन वुकॉन्ग के रोंगटे खड़े हो गए और उन्होंने प्रणाम करते हुए कहा, "हे स्वामी, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझ पर दया करें और मुझे इन तीन विपत्तियों से बचने का तरीका सिखाएँ। यदि आप ऐसा करेंगे तो मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।"

कुलपति ने उत्तर दिया, "यह आसान होता, लेकिन बात यह है कि आप अन्य लोगों से अलग हैं - जिसका मतलब है कि मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"मेरा सिर आकाश की ओर है और मेरे पैर धरती पर टिके हैं," सन वुकॉन्ग ने कहा। "मेरे नौ छिद्र और चार अंग हैं, पाँच आंतरिक अंग और छह आंतें हैं। मैं दूसरों से किस प्रकार भिन्न हूँ?"

"हालांकि तुम बाकी लोगों की तरह दिखते हो, लेकिन तुम्हारे गाल बहुत छोटे हैं।" बंदर का चेहरा अजीब था, उसके गाल अंदर की ओर धंसे हुए थे और ठुड्डी नुकीली थी।

सन वुकॉन्ग ने इसे अपने हाथ से महसूस किया और हंसते हुए जवाब दिया, "गुरुजी, आपने सब कुछ ध्यान में नहीं रखा।"

हालांकि मेरा जबड़ा थोड़ा छोटा है, लेकिन इसकी भरपाई के लिए मेरे पास दूसरों की तुलना में अधिक गलफड़े हैं।"

"तो फिर," कुलपति ने कहा, "आप इनमें से क्या सीखना पसंद करेंगे: छत्तीस स्वर्गीय रूपांतरण या बहत्तर सांसारिक रूपांतरण?"

"आपका शिष्य इससे जितना हो सके उतना लाभ उठाना चाहता है, इसलिए मैं बहत्तर सांसारिक विद्याओं को सीखना चाहूंगा।"

“अगर यही तुम चाहते हो,” कुलपति ने उत्तर दिया, “यहाँ आओ और मैं तुम्हें मंत्र सिखाऊँगा।” फिर उन्होंने सुन वुकॉन्ग के कान में कुछ फुसफुसाया, और कौन जाने उन्होंने उसे कौन से चमत्कारी मंत्र सिखाए? वानर राजा उस प्रकार का व्यक्ति था जो थोड़ा सा भी बताया जाए तो सब कुछ समझ जाता था, और उसने मंत्र तुरंत सीख लिए। उसने अभ्यास और प्रशिक्षण किया जब तक कि उसने सभी बहत्तर रूपांतरणों में महारत हासिल नहीं कर ली। एक दिन कुलपति और उनके सभी शिष्य तीन सितारा गुफा के बाहर सूर्यास्त का आनंद ले रहे थे।

अध्याय दो

27

पश्चिम की यात्रा

कुलपति ने सन वुकॉन्ग से पूछा, "क्या तुम सफल हो गए हो?"

सन वुकॉन्ग ने उत्तर दिया, "हे गुरु, आपकी असीम कृपा से आपके शिष्य का परिणाम उत्तम रहा है, और अब मैं बादलों पर चढ़कर उड़ सकता हूँ।"

"देखते हैं तुम कैसे उड़ते हो," कुलपति ने कहा। सन वुकॉन्ग ने अपनी कुशलता का प्रदर्शन करते हुए कई कलाबाजियां कीं, जिससे वह पचास-साठ फीट ऊपर हवा में उछल गया, फिर उसने बादलों पर उतनी देर तक सैर की जितनी देर में खाना खाया जाता है।

वह लगभग एक मील की दूरी तय करके कुलपति के सामने उतरा, अपनी बाहों को छाती पर बांधकर बोला, "गुरुजी, यह तो सचमुच बादलों में उड़ने जैसा है।" कुलपति हँस पड़े।

"यह बादलों पर उड़ना नहीं है—यह तो बस उन पर चढ़ना है। एक पुरानी कहावत है कि 'एक अमर व्यक्ति सुबह उत्तरी सागर और शाम को कांग्वू जाता है'। लेकिन एक मील जाने में इतना समय लगाना, बादलों पर चढ़ना नहीं कहलाता।"

"सुबह उत्तरी सागर और शाम को कांग्वू की यात्रा करना कैसे संभव हो सकता है?" सन वुकॉन्ग ने पूछा।

"सभी आकाश-यात्री सुबह-सुबह उत्तरी सागर से उड़ान भरते हैं, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी सागरों का भ्रमण करते हैं और फिर कांगवु लौट आते हैं; लिंगलिंग भाषा में

उत्तरी सागर को कांगवु कहा जाता है। जब आप एक ही दिन में चारों सागरों को पार कर लेते हैं, तभी आप स्वयं को आकाश-यात्री मान सकते हैं।"
"लेकिन यह बहुत मुश्किल होगा," सन वुकॉन्ग ने कहा।
कुलपति ने उत्तर दिया, "जहां चाह होती है, वहां राह होती है।"
"हे गुरुजी, मैं कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ता," सन वुकॉन्ग ने झुककर और प्रणाम करते हुए उत्तर दिया। "आपकी असीम कृपा से, मैं आपसे बादलों में उड़ने की कला सिखाने की विनती करता हूँ। मैं वादा करता हूँ कि मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।"
कुलपति ने कहा, "अमर लोग अपने पैरों को पटककर उड़ान भरते हैं, लेकिन तुम इसे अलग तरीके से करते हो—अभी मैंने तुम्हें खुद को ऊपर खींचते हुए देखा। चूंकि तुम ऐसा करते हो, मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि इसे अपने तरीके से कैसे करना है और तुम्हें सिखाऊंगा..."
"'समसाकी बादल'।" सन वुकॉन्ग ने फिर से झुककर उनसे ऐसा करने की विनती की, और कुलपति ने उन्हें मंत्र सिखाया।
कुलपति ने कहा, "इस तरह के बादल के लिए, जादू करने के लिए अपने हाथों को विशेष तरीके से जोड़ें, मंत्र के शब्द बोलें, मुट्ठी कसें, खुद को हिलाएं और कूदें। एक ही कलाबाजी में आप साठ हजार मील की दूरी तय कर सकते हैं।" यह सुनकर बाकी सब खिलखिलाकर हंस पड़े।
"भाग्यशाली बूढ़े सन वुकॉन्ग! ऐसी जादूगरी से तो वो सरकारी चिट्ठियाँ और रिपोर्टें पहुँचाने वाला संदेशवाहक बन सकता था, और उसे कभी खाने की कमी नहीं होती।"
अंधेरा होने पर कुलपति और उनके शिष्य गुफा में लौट आए। उस रात सन वुकॉन्ग ने अपनी आत्मा को गतिमान किया, तकनीक का अभ्यास किया और बादल पर कलाबाजी में महारत हासिल कर ली। तब से वो हर बंधन से मुक्त हो गया और अमरता के सुखों का आनंद लेते हुए अपनी इच्छा अनुसार इधर-उधर भटकने लगा।
जिस दिन वसंत ऋतु ग्रीष्म ऋतु में परिवर्तित हो रही थी, और सभी छात्र काफी देर से कुछ देवदार के पेड़ों के नीचे बैठकर व्याख्यान सुन रहे थे, उन्होंने कहा, "सन वुकॉन्ग, आपने किस जीवन में अपना वर्तमान भाग्य अर्जित किया?"
पिछले दिन हमारे शिक्षक ने तुम्हारे कान में फुसफुसाकर बताया था कि तीन आपदाओं से बचने के लिए रूपांतरण कैसे किए जाते हैं। क्या तुम वे सभी कर सकते हो?
"यह सच है, भाइयों," सन वुकॉन्ग ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं ये सब कर सकता हूँ।

पहली बात तो यह है कि हमारे गुरु ने मुझे सिखाया है; और दूसरी बात यह है कि मैंने दिन-रात इनका अभ्यास किया है।"

अध्याय दो

28

पश्चिम की यात्रा

"यह आपके लिए प्रदर्शन करने का अच्छा समय होगा।" इस सुझाव पर सन वुकॉन्ग ने अपना कौशल दिखाने के लिए हौसला जुटाया।

"भाइयों, क्या बनना है? मुझे बताओ कि तुम मुझे किस रूप में देखना चाहते हो।"

"देवदार के पेड़ में बदल जाओ," उन सभी ने कहा। सन वुकॉन्ग ने अपनी मुट्ठी भींची, जादुई शब्द कहे, खुद को झटका दिया और एक देवदार के पेड़ में बदल गया। यह सचमुच अद्भुत था।

चारों मौसमों में हरियाली और धुंध छाई रहती है।

अपनी सीधी खड़ी सुंदरता को बादलों तक ले जाते हुए।

किसी राक्षसी बंदर जैसा बिलकुल भी नहीं।

एक ऐसा पेड़ जो पाले और बर्फ का सामना कर सकता है।

जब छात्रों ने यह देखा तो वे ताली बजाने लगे और जोर से हंसते हुए कहने लगे, "अच्छा बंदर, अच्छा बंदर।" उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि उनके शोर मचाने से कुलपति परेशान हो गए थे, जो अपनी छड़ी घसीटते हुए दरवाजे से बाहर भाग गए।

"यहाँ शोर कौन मचा रहा है?" उसने पूछा। छात्र जल्दी से संभले, अपने कपड़े ठीक किए और उसके पास चले गए।

सन वुकॉन्ग, जो अब अपने असली रूप में वापस आ गया था, ने जंगल से कहा, "गुरुजी, हम यहाँ चर्चा कर रहे थे, और कोई बाहरी व्यक्ति शोर नहीं मचा रहा था।"

“इस तरह चिल्लाना और शोर मचाना,” कुलपति ने क्रोधित होकर गरजते हुए कहा, “अपने आचरण को सुधारने वालों के लिए व्यवहार का सही तरीका नहीं है। यदि आप अपने आचरण को सुधार रहे हैं, तो मुंह खोलते ही सूक्ष्म वाष्प निकल जाती है, और ज़बान चलाने से मुसीबत शुरू हो जाती है। ये सब हंसना और चिल्लाना किस बात का था?”

"अभी-अभी सन वुकॉन्ग ने मजे के लिए अपना रूप बदला। हमने उसे खुद को एक चीड़ के पेड़ में बदलने के लिए कहा, और उसने ऐसा ही किया।"

हम सबने उनकी प्रशंसा और सराहना की, इसीलिए हमने शोर मचाकर आपको परेशान किया, स्वामी जी। कृपया हमें क्षमा करें।

कुलपति ने सन वुकॉन्ग को छोड़कर बाकी सभी को विदा कर दिया और उससे कहा, "इधर आओ। क्या यही अपनी आत्मा का उपयोग करने का तरीका है? चीड़ के पेड़ में बदलना? क्या यह कोई ऐसा कौशल है जिसे तुम्हें लोगों के सामने दिखाना चाहिए? अगर तुम किसी और को ऐसा करते देखते, तो क्या तुम उससे सिखाने के लिए नहीं कहते? अगर दूसरे लोग तुम्हें ऐसा करते देखेंगे, तो वे तुमसे सिखाने के लिए जरूर कहेंगे, और अगर तुम मुसीबत से बचना चाहते हो तो तुम्हें ऐसा करना ही होगा; नहीं तो वे तुम्हें नुकसान पहुंचा सकते हैं, और फिर तुम्हारी जान खतरे में पड़ जाएगी।"

सन वुकॉन्ग ने प्रणाम करते हुए कहा, "कृपया मुझे क्षमा करें, स्वामी जी।"

कुलपति ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें दंडित नहीं करूंगा, लेकिन तुम्हें जाना होगा।" सन वुकॉन्ग की आँखों में आँसू भर आए।

"गुरुजी, मुझे कहाँ जाना चाहिए?"

अध्याय दो

29

पश्चिम की यात्रा

"वापस वहीं जाओ जहाँ से तुम आए हो।" सन वुकॉन्ग को अचानक ज्ञान प्राप्त हुआ और उसने कहा, "मैं पूर्वी महाद्वीप के आओलाई देश में स्थित पुष्प और फल पर्वत पर जल परदे की गुफा से आया हूँ।"

कुलपति ने उत्तर दिया, "यदि तुम जल्दी वापस वहाँ जाओगे, तो तुम अपनी जान बचा पाओगे। यदि तुम यहाँ रुके रहे, तो ऐसा करना बिलकुल असंभव होगा।" सन वुकॉन्ग ने अपना दंड स्वीकार कर लिया।

“जी, स्वामी जी,” उसने कहा। “मैं बीस साल से घर से दूर हूँ और मुझे पुराने दिन, अपने बच्चे और पोते-पोतियों की बहुत याद आती है। लेकिन जब मुझे याद आता है कि मैंने अभी तक आपकी अपार उदारता का बदला नहीं चुकाया है, तो मेरा जाने का मन नहीं करता।”

"अगर तुम यहीं रुकते हो तो तुम मुझ पर किस तरह की कृपा करोगे? अगर तुम मुझे अपनी वजह से होने वाली किसी भी मुसीबत से बचाओगे तो मैं खुश हो जाऊंगी।"

जब उसे लगा कि इसके अलावा कोई और विकल्प नहीं है, तो सन वुकॉन्ग ने झुककर

उससे विदा ली और बाकी सभी छात्रों को अलविदा कहा।
“अब जब तुम जा ही रहे हो,” कुलपति ने कहा, “मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारा जीवन अच्छा नहीं होगा। चाहे तुम कितनी भी आपदाएँ खड़ी करो और कितने भी अपराध करो, मैं तुम्हें किसी भी हालत में अपना शिष्य कहने से मना करता हूँ। अगर तुमने ज़रा सा भी इशारा किया, तो मुझे तुरंत पता चल जाएगा, और मैं तुम्हारी बंदर जैसी खाल नोंच डालूँगा, तुम्हारी हड्डियाँ टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा, और तुम्हारी आत्मा को नौवें अंधकार में भेज दूँगा। मैं तुम्हें दस हज़ार युगों तक बाहर नहीं निकलने दूँगा।”
"मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारे नाम का एक अक्षर भी किसी को नहीं बताऊंगा," सन वुकॉन्ग ने कहा। "मैं बस इतना कहूंगा कि मैंने यह नाम खुद से सीखा है।"
सन वुकॉन्ग ने विदा ली और चले गए। मुट्ठी बांधकर मंत्र का जाप करते हुए वे सिर के बल कूदे, एक कलाबाजी वाला बादल बनाया और पूर्वी महाद्वीप की ओर लौट गए। दो घंटे के भीतर ही उन्हें पुष्प और फल पर्वत पर जल परदे की गुफा दिखाई दी। सुंदर वानर राजा इतना प्रसन्न हुआ कि उसने मन ही मन कहा:
"जब मैंने यहां से विदा ली तो मेरा नश्वर शरीर और हड्डियां भारी थीं,
लेकिन अब मुझे वह मार्ग मिल गया है जिससे मेरा शरीर हल्का हो गया है।
दुनिया में किसी के पास भी सच्चा दृढ़ संकल्प नहीं है।
दृढ़ इच्छाशक्ति के सामने छिपी हुई बातें भी स्पष्ट हो जाती हैं।
जब मैंने आखिरी बार समुद्र पार किया था तो लहरें मेरे रास्ते में बाधा बन गई थीं।
लेकिन अब मेरी वापसी की यात्रा आसान है।
विदाई के वो शब्द अब भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं;
मैं पूर्वी महासागर को दोबारा कब देख पाऊंगा?
अध्याय दो
30
पश्चिम की यात्रा
सन वुकॉन्ग ने अपना बादल हटाया और सीधे फूलों और फलों के पर्वत की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे सारसों की पुकार और बंदरों की चीखें सुनाई दीं। सारसों की पुकार आकाशगंगा से भी आगे तक गूंज रही थी, और बंदरों की चीखें अत्यंत दयनीय थीं।
सन वुकॉन्ग चिल्लाया, "बच्चों, मैं वापस आ गया हूँ।"
चट्टानों की गुफाओं से, घास और फूलों से, और पेड़ों से हजारों-हजारों बड़े और छोटे

बंदर उछलते-कूदते हुए आए। वे सब सुंदर बंदर राजा के चारों ओर जमा हो गए, प्रणाम किया और बोले, "महाराज, आप तो बड़े ही महान हैं। आप इतने लंबे समय तक हमसे दूर कैसे रहे, हमें यहाँ अकेला छोड़कर? हम आपके लौटने के लिए बेताब थे। एक राक्षस हम पर बहुत अत्याचार कर रहा था। उसने हमारी जल गुफा पर कब्जा कर लिया था, और हम उससे अपनी जान बचाने के लिए लड़ रहे थे। हाल ही में वह हमारी चीजें चुरा रहा था और हमारे कई बच्चों को अगवा कर रहा था। हमें अपने परिवारों की रक्षा के लिए रात भर जागना पड़ा। शुक्र है आप लौट आए! महाराज, आपके बिना एक और साल बीत गया तो हम सब उसके कब्जे में हो जाएंगे, गुफा समेत।"

सन वुकॉन्ग क्रोधित हो उठा, "यह राक्षस कौन है? कितना घिनौना काम है! मुझे इसके बारे में सब कुछ बताओ, फिर मैं जाकर इसे इसके कर्मों का फल दूंगा।"

बंदर मेजबान ने फिर से प्रणाम किया और कहा, "महाराज, वह दुष्ट स्वयं को भ्रम का दानव राजा कहता है। वह यहाँ से उत्तर की ओर रहता है।"

"उसका ठिकाना कितनी दूर है?" सन वुकॉन्ग ने पूछा।

"वह बादलों और कोहरे में हवा और बारिश के साथ आता-जाता रहता है, या फिर गरज और बिजली के साथ, इसलिए हमें नहीं पता कि वह कितनी दूर है।"

"अगर ऐसा है तो," सन वुकॉन्ग ने जवाब दिया, "चिंता मत करो। जब तक मैं जाकर उसे ढूंढता हूँ, तब तक तुम लोग अपना मनोरंजन करते रहो।"

शानदार बंदर राजा हवा में उछला, और उत्तर की ओर कलाबाजी करते हुए उसने एक ऊँचा और खड़ी ढलान वाला पर्वत देखा। यह एक अद्भुत दृश्य था:

लंबवत शिखर सीधे ऊपर की ओर निकले हुए,
गहरे पानी में डूबी घुमावदार धाराएँ।
सीधी खड़ी चोटियाँ आकाश को भेदती हुई प्रतीत होती थीं;
गहरी जलधाराएँ घुमावदार रास्तों से होकर पाताल लोक की ओर जाती थीं।
चट्टानों के जोड़ों पर पौधे विचित्रता में प्रतिस्पर्धा करते हैं;
अन्य स्थानों पर चीड़ के पेड़ हरियाली के मामले में बांस से प्रतिस्पर्धा करते हैं।
बाईं ओर शांत स्वभाव के ड्रैगन हैं,
दाईं ओर पालतू बाघ हैं।
लोहे के बैलों द्वारा हल चलाना एक आम दृश्य है।

अध्याय दो

31

पश्चिम की यात्रा

सोने के सिक्के हमेशा बीज के रूप में बोए जाते हैं।
छिपे हुए पक्षी सुंदर गीत गाते हैं।
लाल फीनिक्स पक्षी धूप में खड़े हैं।
पत्थरों पर दौड़ती, साफ लहरें
एक प्रचंड धारा में मुड़ना और झुकना।
विश्व में कई प्रसिद्ध पर्वत हैं,
और उन पर कई फूल खिलते हैं और मुरझा जाते हैं।
लेकिन यह दृश्य शाश्वत है,
चारों मौसमों में अपरिवर्तित रहता है।
यह वास्तव में वह पर्वत है जिससे तीनों लोकों की उत्पत्ति हुई है।
जल के गर्भ में स्थित वह गुफा जो पंच तत्वों का पोषण करती है।

जब सुंदर बंदर राजा चुपचाप इस दृश्य को निहार रहे थे, तभी उन्हें कुछ आवाजें सुनाई दीं। जब वे पहाड़ की ढलान पर नीचे देखने गए तो उन्हें चट्टान के सामने जलमग्न गुफा दिखाई दी। गुफा के दरवाजों के सामने कई छोटे राक्षस नाच रहे थे, और जैसे ही उन्होंने सन वुकॉन्ग को देखा, वे भाग गए।

"एक पल रुकिए," सन वुकॉन्ग ने कहा। "मैं चाहता हूँ कि आप मेरे लिए एक संदेश ले जाएं। मैं यहाँ से ठीक दक्षिण में स्थित पुष्प और फल पर्वत में जल परदे वाली गुफा का राजा हूँ। मैं आपके उस भ्रम के दानव, या जो भी उसका नाम है, जिसने मेरे बच्चों और पोते-पोतियों के साथ दुर्व्यवहार किया है, को ढूंढने आया हूँ और उससे हिसाब चुकता करने आया हूँ।"

छोटे राक्षस गुफा में घुस गए और बोले, "महाराज, एक आपदा आ गई है।"

"विपदा से तुम्हारा क्या मतलब है?" राक्षस राजा ने पूछा।

“गुफा के बाहर एक बंदर है,” छोटे राक्षसों ने बताया, “जो कहता है कि वह फूलों और फलों के पहाड़ पर स्थित जल-पर्दे वाली गुफा का राजा है। वह कहता है कि तुम उसके बच्चों और पोते-पोतियों को तंग कर रहे हो, और वह तुमसे हिसाब बराबर करने के लिए खास तौर पर तुम्हें ढूंढने आया है।” राक्षस राजा हँस पड़ा।

"वे बंदर जैसे शैतान हमेशा अपने एक राजा के बारे में बात करते रहते हैं जिसने अपने आचरण को सुधारने के लिए संसार का त्याग कर दिया था; मुझे लगता है कि वही यहाँ अभी है। क्या तुमने देखा कि उसने कैसे कपड़े पहने थे या उसके पास कौन से हथियार थे?"

उसके पास कोई हथियार नहीं है। उसका सिर ढका हुआ नहीं है, और उसने पीले रेशमी कमरबंद से बंधा लाल गाउन और काले जूते पहने हुए हैं। वह न तो साधु की तरह, न ही आम आदमी की तरह, और न ही किसी अमर की तरह कपड़े पहने हुए है। उसके हाथ खाली हैं और वह दरवाजों के बाहर खड़ा चिल्ला रहा है।

यह सुनकर दानव राजा ने कहा, "मेरे कवच और हथियार लाओ।" छोटे दानवों ने तुरंत उन्हें लाकर दे दिया, और कवच पहनने के बाद वह सभी दानवों के साथ दरवाजे से बाहर निकल गया, उसकी तलवार अध्याय 2 में है।

32

पश्चिम की यात्रा

उसके हाथ।

"जल परदे वाली गुफा का राजा कौन है?" उसने गरजते हुए पूछा। सन वुकॉन्ग ने उस पर एक नज़र डाली और देखा कि उसके सिर पर गहरे सुनहरे रंग का हेलमेट था।

सूर्य की रोशनी में चमकता हुआ।

उन्होंने अपने शरीर पर काले रेशमी रंग का गाउन पहना हुआ था।

हवा में लहराता हुआ।

उसके नीचे उसने काले धातु का कवच पहन रखा था।

चमड़े की बेल्ट से कमरबंद।

उसने पैरों में पैटर्न वाले जूते पहन रखे थे।

किसी फील्ड मार्शल के वस्त्र की तरह ही शानदार।

उसकी कमर दस फीट चौड़ी थी।

और उसकी लंबाई तीस क्यूबिट थी।

उसके हाथ में तलवार थी।

चमकदार नोक और धार के साथ।

उसने स्वयं को भ्रम का दानव राजा कहा।

और उनका रूप-रंग सचमुच चकाचौंध कर देने वाला था।

"अहंकारी राक्षस," वानर राजा चिल्लाया। "तेरी आँखें भले ही बड़ी हों, लेकिन तू मुझे पहचान नहीं सकता।"
राक्षस राजा उस पर हँसा। "तुम अभी ज़मीन से चार फीट भी नहीं खड़े हो, तुम्हारी उम्र अभी बीस के आसपास है, और तुम्हारे हाथ में कोई हथियार भी नहीं है। किस तरह के पागलपन भरे साहस से तुम मुझे युद्ध के लिए चुनौती दे रहे हो?"
"अहंकारी राक्षस," सन वुकॉन्ग ने जवाब दिया, "तुम कितने अंधे हो। तुम मुझे छोटा समझते हो, लेकिन मैं आसानी से बड़ा हो सकता हूँ। तुम मुझे निहत्था समझते हो, लेकिन मैं अपने दोनों हाथों से चाँद को आकाश से नीचे खींच सकता हूँ।"
चिंता मत करो, बूढ़ा सन वुकॉन्ग तुम्हें एक घूंसा मार देगा।" सन वुकॉन्ग उछला और हवा में कूदकर उसके चेहरे पर एक जोरदार मुक्का मारा।
राक्षस राजा ने उसे रोकने के लिए अपना हाथ बढ़ाया और कहा, "देखो मैं कितना बड़ा हूँ, बौने। अगर तुम मुक्के चलाओगे, तो मैं तलवार चलाऊँगा। लेकिन तलवार से तुम्हें मारना मेरे लिए हास्यास्पद होगा। रुको, जब मैं अपनी तलवार नीचे रख दूँ, तब मैं तुम्हें मुक्केबाजी का प्रदर्शन दिखाऊँगा।"
अध्याय दो
33
पश्चिम की यात्रा
“वाह! क्या कहा!” सन वुकॉन्ग ने कहा, “मर्द की तरह बात की। चलो फिर।” दानव राजा ने मुक्का मारने के लिए अपना बचाव कम कर दिया, और सन वुकॉन्ग उस पर टूट पड़ा, मुक्के और लात बरसाते हुए। जब उसने अपना हाथ फैलाया तो वह बहुत विशाल था, और जब उसने अपनी मुट्ठी भींची तो वह बहुत कठोर थी। सन वुकॉन्ग ने दानव राजा की पसलियों पर वार किया, उसकी पीठ पर लात मारी, और उसके कई जोड़ों को चकनाचूर कर दिया। दानव राजा ने अपनी लोहे की तलवार उठाई जो एक तख्ते जितनी बड़ी थी, और उसे सन वुकॉन्ग की खोपड़ी पर घुमाया। सन वुकॉन्ग वार से बच गया, और तलवार केवल हवा में ही फट गई। दानव राजा को इतना बदसूरत देखकर, सन वुकॉन्ग ने अतिरिक्त शरीर प्राप्त करने की अपनी जादुई कला का प्रयोग किया। उसने अपने बालों में से एक बाल निकाला, उसे अपने मुंह में डाला, चबाया, और हवा में फूंकते हुए चिल्लाया,
"बदलाव!" वह दो-तीन सौ छोटे बंदरों में बदल गया, जो सभी उसके चारों ओर जमा

हो गए।
सन वुकॉन्ग के पास अब एक अमर शरीर था, और ऐसा कोई जादुई रूपांतर नहीं था जिसे वह करने में असमर्थ था।
क्योंकि उसने मार्ग का अनुसरण किया था, इसलिए वह अपने शरीर के चौरासी हजार बालों में से प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार किसी भी रूप में बदल सकता था। छोटे बंदर तलवार या भाले के लिए बहुत फुर्तीले और चुस्त थे।
उन्हें देखो, वे आगे-पीछे उछलते हुए, दानव राजा को घेरने के लिए दौड़ पड़े, उसे जकड़ लिया, उसकी पीठ में गुदगुदी की, उसके पैर खींचे, उसे घूंसे मारे, लात मारी, उसके बाल नोच लिए, उसकी आंखें नोच लीं, उसकी नाक मरोड़ दी, सब मिलकर उसे उठाकर जमीन पर पटक दिया। वे तब तक ऐसा करते रहे जब तक उन्होंने उसे बुरी तरह पीट-पीट कर अधमरा नहीं कर दिया। सन वुकॉन्ग ने उससे उसकी तलवार छीन ली, उन छोटे बंदरों को रास्ते से हटने को कहा और तलवार उसके सिर पर मारी, जिससे उसका सिर दो टुकड़ों में बंट गया।
फिर उसने अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए गुफा में धावा बोला, जहाँ उन्होंने सभी राक्षसों, बड़े और छोटे, का संहार कर दिया। उसने अपने बाल झटककर वापस अपने शरीर पर बाँध लिए। जो बंदर उसके शरीर पर वापस नहीं बाँधे गए थे, वे वही छोटे बंदर थे जिन्हें राक्षस राजा जल परदे वाली गुफा से ले गया था। सन वुकॉन्ग ने उनसे पूछा कि वे वहाँ कैसे पहुँचे।
वे तीस-चालीस लोग थे, और उन्होंने आँखों में आँसू लिए उत्तर दिया, "महाराज के अमर बनने के बाद की बात है। वह पिछले दो वर्षों से हमसे लड़ रहा है। वह हम सबको जबरदस्ती यहाँ लाया है। यहाँ की सारी चीज़ें—पत्थर के कटोरे और थालियाँ —उस दरिंदे ने हमारी गुफा से चुरा ली थीं।"
"अगर ये हमारा सामान है, तो सब कुछ बाहर निकाल लो," सन वुकॉन्ग ने कहा। फिर उसने जलमग्न गुफा में आग लगा दी और उसे जलाकर राख कर दिया।
"मेरे साथ वापस आओ," उसने बंदरों को आदेश दिया।
"महाराज," उन्होंने उत्तर दिया, "जब हम यहाँ आए तो हमारे कानों में हवा की तेज़ आवाज़ के अलावा और कुछ सुनाई नहीं दिया, जो हमें यहाँ तक उड़ाकर ले आई, इसलिए हमें रास्ता नहीं पता। हम वापस कैसे जाएँगे?"
"उसने जो जादू किया, उसमें कुछ भी नहीं है," सन वुकॉन्ग ने कहा। "मैं भी ऐसा कर

सकता हूँ, क्योंकि अब मुझे किसी भी चीज़ के बारे में बस थोड़ी सी जानकारी ही काफी होती है, जिससे मैं उसे पूरी तरह समझ जाता हूँ। अपनी आँखें बंद करो और चिंता मत करो।"

शानदार बंदर राजा। उसने एक मंत्र पढ़ा, उन्हें एक बवंडर पर सवार होकर ले गया, और फिर बादल को जमीन पर उतार दिया।

“अपनी आँखें खोलो और देखो, बच्चों!” उसने चिल्लाकर कहा। बंदरों के पैर ज़मीन पर पड़ते ही उन्होंने अपना घर पहचान लिया। खुशी से झूमते हुए वे सब गुफा की ओर जाने वाले जाने-पहचाने रास्ते पर दौड़ पड़े, और गुफा में रुके हुए बंदर भी अंदर घुस गए। उन्होंने उम्र के हिसाब से समूह बनाए और बंदर राजा को प्रणाम किया। जश्न मनाने के लिए शराब और खाना परोसा गया, और उन्होंने उससे पूछा कि उसने राक्षस राजा को कैसे हराया और उनके बच्चों को कैसे बचाया। जब सुन वुकॉन्ग ने उन्हें पूरी कहानी सुनाई तो बंदर प्रशंसा से भर उठे।

"महाराज, आपने ये कलाएँ कहाँ से सीखीं?" उन्होंने आग्रहपूर्वक पूछा।

अध्याय दो

34

पश्चिम की यात्रा

“जब मैंने तुम्हें छोड़ा,” सन वुकॉन्ग ने उत्तर दिया, “मैं लहरों और धाराओं का अनुसरण करते हुए पूर्वी महासागर पार करके दक्षिणी जंबू महाद्वीप पर पहुँच गया। यहाँ मैंने मनुष्य रूप धारण करना और ये वस्त्र और जूते पहनना सीखा। मैं आठ-नौ वर्षों तक इधर-उधर भटकता रहा, परन्तु मुझे कभी मार्ग नहीं मिला, इसलिए मैं पश्चिमी महासागर पार करके पशु-दान के पश्चिमी महाद्वीप पर चला गया। लंबे समय तक खोजबीन के बाद सौभाग्य से मेरी मुलाकात एक पूजनीय अमर व्यक्ति से हुई, जिन्होंने मुझे सच्चा फल सिखाया, जो मुझे स्वर्ग के समान अमर बनाता है, और शाश्वत यौवन का महान धर्म द्वार भी बताता है।” सभी बंदरों ने उन्हें बधाई दी और कहा कि उनके जैसा कोई अरबों वर्षों में भी नहीं मिल सकता।

सन वुकॉन्ग हँसते हुए बोला, "बच्चों, हमें उपनाम होने पर खुद को बधाई देनी चाहिए।"

"महाराज का उपनाम क्या है?" बंदरों के समूह ने पूछा।

"मेरा उपनाम अब सन है, और मेरा बौद्ध नाम वुकॉन्ग है।"

सभी बंदरों ने खुशी से ताली बजाई और कहा, "महाराज, आप पुराने सूर्य हैं, और हम

दूसरे सूर्य, तीसरे सूर्य, पतले सूर्य, छोटे सूर्य हैं - सूर्यों का एक परिवार, सूर्यों का एक राष्ट्र, सूर्यों का एक ठिकाना।" उन्होंने नारियल की ताड़ी, अंगूर की शराब, जादुई फूल और जादुई फल से भरी बड़ी थालियों और छोटे कटोरे लाकर पुराने सूर्य को अपना सम्मान अर्पित किया।

पूरा परिवार खुश था। वाह!

एक ही उपनाम से एकजुट होकर

वे अमर लोगों के रजिस्टर में स्थानांतरित होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अगर आपको नहीं पता कि इसका अंत कैसे हुआ और आप वहां उनके शेष जीवन के बारे में जानना चाहते हैं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 3

चारों समुद्र और हजार पर्वत सब झुकते हैं

नौवें नरक में दसवीं श्रेणी का उल्लेख नहीं किया गया है। हमने बताया है कि कैसे सुंदर बंदर राजा वैभवशाली होकर घर लौटे, और अपने साथ एक बड़ी तलवार लाए जो उन्होंने भ्रम के दानव राजा को मारकर जीती थी। तब से वे प्रतिदिन सैन्य कलाओं का अभ्यास करते थे। उन्होंने छोटे बंदरों को भाले बनाने के लिए बांस काटने, लकड़ी से तलवारें तराशने और झंडे व सीटी बजाना सीखने को कहा। उन्होंने आगे बढ़ना और पीछे हटना सीखा, और चारों ओर बाड़ लगाकर एक शिविर बनाना सीखा।

उन्होंने इसमें काफी समय बिताया।

एक बार सुन वुकॉन्ग ध्यान मुद्रा में बैठे थे, तभी उनके मन में यह विचार आया: "अगर हमारे खेल को ही असली खेल समझ लिया जाए तो हमारा क्या होगा? अगर इससे किसी मानव राजा को चिंता हो जाए या किसी पक्षी या पशु जाति के राजा को ठेस पहुँचे तो क्या होगा? वे शायद कहें कि हम विद्रोह की तैयारी कर रहे हैं और अपनी सेनाओं के साथ हम पर हमला कर दें। बाँस के भाले और लकड़ी की तलवारों से तो हम उनका मुकाबला नहीं कर पाएँगे। हमारे पास तो वाकई तेज़ तलवारें और भाले होने चाहिए। हम क्या करें?"

जब बंदरों ने यह सुना तो वे सब घबराकर बोले, "महाराज, आपकी दूरदर्शिता तो अद्भुत है, लेकिन हम उन्हें कहीं नहीं ले जा सकते।" जब चार बड़े बंदरों की बोलने की बारी आई—दो नंगे नितंब वाले बंदर और दो अध्याय 3

गिब्बन आगे आए और बोले, "महाराज, यदि आपको धारदार हथियार चाहिए तो वे बहुत आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं।"
"यह इतना आसान कैसे हो सकता है?" सन वुकॉन्ग ने पूछा।
“हमारे पर्वत के पूर्व में,” उन्होंने उत्तर दिया, “लगभग सत्तर मील चौड़ी एक झील है जो आओलाई देश की सीमा है। उस देश की एक राजसी राजधानी है, और शहर में बड़ी संख्या में सैनिक और नागरिक रहते हैं। वहाँ सोने, चांदी, पीतल और लोहे के कारखाने अवश्य होंगे। महाराज, यदि आप वहाँ जाएँ, तो आप या तो हथियार खरीद सकते हैं या बनवा सकते हैं; फिर आप हमें हमारे पर्वत की रक्षा में उनका उपयोग करने का प्रशिक्षण दे सकते हैं। इससे हमें दीर्घकालिक सुरक्षा प्राप्त होगी।” सन वुकॉन्ग इस सुझाव से प्रसन्न हुए।
"जब तक मैं वहां जाता हूं, तुम यहीं इंतजार करो," उसने कहा।
शानदार बंदर राजा! वह अपने कलाबाज बादल पर उछला, सत्तर मील लंबी झील को पार किया, और देखा कि दूसरी तरफ वास्तव में एक शहर की दीवार, एक खाई, सड़कें, बाजार, दस हजार घर, एक हजार द्वार और लोग धूप में आते-जाते हुए थे।
"यहाँ ज़रूर तैयार हथियार होंगे," सन वुकॉन्ग ने सोचा, "और जादू से कुछ हथियार हासिल करना उन्हें खरीदने से कहीं बेहतर होगा।" इसलिए उसने मुट्ठी से जादू किया और मंत्र बोला, दक्षिण-पूर्व से कुछ हवा अंदर खींची और ज़ोर से बाहर निकाल दी। वह हवा एक भयानक आंधी में बदल गई, जो अपने साथ रेत और पत्थर उड़ा ले गई।
जहां गरजते बादल उठते हैं, वहां प्रकृति में अफरा-तफरी मच जाती है;
धूल से भरी काली धुंध धरती को अंधेरे में ढक लेती है।
नदियों और समुद्रों का उबलता पानी केकड़ों और मछलियों को भयभीत करता है;
पर्वतीय जंगलों में पेड़ कटने से बाघ और भेड़िये भाग जाते हैं।
वाणिज्य की किसी भी शाखा में कोई व्यापार नहीं किया जाता है;
और कोई भी किसी भी प्रकार का व्यापार नहीं कर रहा है।
महल में राजा अपने भीतरी कक्ष में चले गए हैं;
और सीढ़ियों के सामने खड़े अधिकारी अपने कार्यालयों में लौट गए हैं।
सभी राजकुमारों के सिंहासन उड़ गए हैं;
पांच फीनिक्स स्तंभों की नींव तक हिल गई है।

जहां तूफान आया, वहां आओलाई का राजकुमार डर के मारे भाग गया, और सड़कों और बाजारों के द्वार बंद हो गए। किसी की भी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं हुई। सन वुकॉन्ग ने अपना बादल उतारा और सीधे महल के द्वार से होकर शस्त्रागार और सैन्य भंडार में पहुंचा, दरवाजे खोले और अनगिनत हथियार देखे: तलवारें, भाले, कृपाण, कुल्हाड़ी, बिल, कृपाण, गदा, त्रिशूल, गदा, धनुष, क्रॉसबो, कांटे और बरछी सब वहां मौजूद थे।

अध्याय 3

36

पश्चिम की यात्रा

उन्हें देखकर उसने खुशी से कहा, "मैं इनमें से कितनों को अकेले उठा सकता हूँ? बेहतर होगा कि मैं अपने शरीर को विभाजित करने के लिए जादू का इस्तेमाल करूँ।" शानदार बंदर राजा। उसने अपने शरीर से एक बाल तोड़ा, उसे चबाया, थूक दिया, मुट्ठी से जादू किया, मंत्र बोला और चिल्लाया "बदलो!" वह बाल सैकड़ों-हजारों छोटे बंदरों में बदल गया, जो बेतहाशा हथियार छीनने के लिए इधर-उधर भागने लगे। बलवान बंदरों ने छह-सात हथियार उठाए और कमजोर बंदरों ने दो-तीन, और उन्होंने मिलकर सारे हथियार छीन लिए। वह वापस बादलों पर चढ़ गया, जादू से आंधी खड़ी की और सारे छोटे बंदरों को अपने साथ घर ले गया।

पुष्प और फल पर्वत के छोटे-बड़े सभी बंदर गुफा के द्वार के बाहर खेल रहे थे, तभी उन्हें हवा की आहट सुनाई दी। असंख्य बंदरों को हवा में उड़ते देख वे भागे और छिप गए। कुछ ही क्षण बाद, सुंदर बंदर राजा ने अपने बादल को उतारा, अपने कोहरे को हटाया, खुद को झटककर अपने बालों को संवारा और सभी हथियारों को पर्वत के किनारे ढेर कर दिया।

“बच्चों,” उसने चिल्लाकर कहा, “आओ और अपने हथियार ले लो।” जब बंदरों के झुंड ने देखा तो उन्हें सन वुकॉन्ग एक समतल ज़मीन पर अकेले खड़े नज़र आए। वे सब उनके पास दौड़कर गए, प्रणाम किया और पूछा कि क्या हुआ था। सन वुकॉन्ग ने उन्हें पूरी कहानी सुनाई कि कैसे उसने आंधी चलाई और हथियार उठाए। सभी बंदरों ने उसे धन्यवाद दिया और फिर उन्होंने कृपाण, तलवारें, कुल्हाड़ियाँ छीन लीं, भाले छीनने के लिए आपस में भिड़ गए, धनुष खींचे, धनुष लहराए, चिल्लाए, शोर मचाया और इस तरह दिन भर मनोरंजन करते रहे।

अगले दिन उन्होंने हमेशा की तरह जुलूस निकाला। सन वुकॉन्ग ने सभी बंदरों की सेना को इकट्ठा किया, जिनकी संख्या सैंतालीस हज़ार से अधिक थी। इससे पहाड़ के सभी अजीबोगरीब जानवर - भेड़िये, राक्षस, बाघ, तेंदुए, हिरण, मुंटजैक, नदी-हिरण, लोमड़ी, जंगली बिल्लियाँ, बिज्जू, रैकून, शेर, हाथी, घोड़े, ओरंगुटान, भालू, बारहसिंगा, जंगली सूअर, पहाड़ी मवेशी, मृग, गैंडे, छोटे कुत्ते, बड़े कुत्ते - घबरा गए। विभिन्न प्रकार के राक्षसों के बहत्तर राजा, सभी बंदर राजा को प्रणाम करने आए। वे हर साल भेंट चढ़ाते थे और चारों ऋतुओं में दरबार में उपस्थित होते थे। वे अभ्यास में भी भाग लेते थे और अपने मौसमी अनाज कर अदा करते थे। सब कुछ इतना व्यवस्थित था कि फूलों और फलों का पहाड़ लोहे की बाल्टी या कांसे की दीवार की तरह सुरक्षित था। राक्षसों के राजाओं ने बड़ी मात्रा में घंटे, ढोल, रंगीन झंडे, हेलमेट और कवच भेजे, और हर दिन सैन्य अभ्यास होते थे।

एक दिन, इस सारी सफलता के बीच, सुंदर बंदर राजा ने अचानक अन्य बंदरों से कहा, "तुम अब धनुष और धनुष चलाने में माहिर हो गए हो, और अन्य हथियारों में भी अत्यधिक कुशल हो; लेकिन मेरी यह तलवार मुझे पसंद नहीं है। मैं इसके बारे में क्या करूँ?"

चारों अनुभवी बंदर आगे आए और एक सुझाव दिया: "महाराज अमर हैं, इसलिए मनुष्यों के हथियार आपके लिए पर्याप्त नहीं हैं। हम जानना चाहते हैं कि क्या महाराज पानी के अंदर यात्रा कर सकते हैं।"

"मार्ग के बारे में जानने के बाद," सन वुकॉन्ग ने उत्तर दिया, "मैंने बहत्तर सांसारिक रूपांतरणों में महारत हासिल कर ली है। मेरे कलाबाज़ी करने वाले बादल में असाधारण जादुई शक्तियाँ हैं। मैं स्वयं को छुपाना और गायब होना जानता हूँ। मैं मंत्र बना सकता हूँ और उन्हें समाप्त कर सकता हूँ। मैं आकाश तक पहुँच सकता हूँ और पृथ्वी में अपना रास्ता खोज सकता हूँ। मैं सूर्य या चंद्रमा के नीचे बिना छाया छोड़े यात्रा कर सकता हूँ या धातु या पत्थर से होकर आसानी से गुजर सकता हूँ। मैं पानी में डूब नहीं सकता और न ही आग से जल सकता हूँ।"

ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ मैं नहीं जा सकता।

"अगर महाराज के पास ये जादुई शक्तियां हैं, तो हमारे लोहे के पुल के नीचे की धारा पूर्वी सागर के ड्रैगन महल तक जाती है। अगर आप वहां जाने को तैयार हैं, तो जाइए और ड्रैगन राजा को ढूंढिए और उनसे अपनी मनचाही कोई भी हथियार मांगिए। क्या

यह आपको पसंद नहीं आएगा?"
"मेरे वापस आने तक इंतजार करो," सन वुकॉन्ग ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया।
अध्याय 3
37
पश्चिम की यात्रा
शानदार बंदर राजा। वह पुल के अंत तक छलांग लगाकर पहुंचा और पानी को दूर भगाने के लिए अपनी मुट्ठी से एक मंत्र बोला।
फिर वह लहरों में कूद गया और पूर्वी सागर की तलहटी तक पहुँचने के लिए पानी को चीरता हुआ आगे बढ़ा। अपनी यात्रा के दौरान उसने एक यक्ष राक्षस को समुद्र में गश्त करते देखा।
यक्ष ने उसका रास्ता रोकते हुए पूछा, "तुम कौन से ऋषि या देवता हो जो पानी को इस तरह हटा रहे हो?"
कृपया मुझे बताएं ताकि मैं एक रिपोर्ट बना सकूं और आपको वह सामग्री ठीक से मिल जाए।"
"मैं पुष्प और फल पर्वत से आया स्वर्ग-जन्म ऋषि सन वुकॉन्ग हूँ, और तुम्हारे पुराने ड्रैगन राजा का निकट पड़ोसी हूँ। तुम मुझे कैसे नहीं जानते?"
जब यक्ष ने यह सुना तो वह तुरंत क्रिस्टल महल लौट आया और सूचना दी, "महाराज, सूर्य वुकॉन्ग, जो पुष्प और फल पर्वत से स्वर्ग में जन्मे ऋषि हैं और स्वयं को आपका पड़ोसी बताते हैं, आपके महल में आ रहे हैं।" पूर्वी सागर के वृद्ध ड्रैगन राजा, आओ गुआंग, उछलकर खड़े हो गए और अपने ड्रैगन पुत्रों और पोतों, अपने झींगा सैनिकों और अपने केकड़ा सेनापतियों के साथ सूर्य वुकॉन्ग से मिलने के लिए निकल पड़े।
“अंदर आइए, परम पूज्य अमर,” उन्होंने कहा और सन वुकॉन्ग को महल में ले गए जहाँ उन्होंने अपना परिचय दिया, उन्हें सम्मान के स्थान पर बैठाया और चाय पिलाई। फिर ड्रैगन राजा ने उनसे पूछा, “परम पूज्य अमर, आपको यह मार्ग कब मिला और आपने कौन-कौन सी जादुई कलाएँ अर्जित कीं?”
"जन्म के बाद," सन वुकॉन्ग ने कहा, "मैंने संसार का त्याग कर दिया और अपने आचरण को सुधारा, जिससे मुझे अमर और अविनाशी शरीर प्राप्त हुआ। हाल ही में मैंने अपने बेटों और पोतों को हमारी गुफा की रक्षा करने का प्रशिक्षण दिया है, लेकिन दुर्भाग्य से मुझे अभी तक अपने लिए कोई हथियार नहीं मिला है। मैंने बहुत समय से

सुना है कि मेरे प्रतिष्ठित पड़ोसी कौड़ी के द्वार-मीनारों वाले जेड महल का आनंद लेते हैं, और मुझे विश्वास था कि आपके पास कुछ जादुई हथियार होंगे, इसलिए मैं विशेष रूप से आपमें से किसी एक से विनती करने आया हूँ।"

इस अनुरोध को अस्वीकार न करने की इच्छा से, ड्रैगन किंग ने कमांडर पर्च को एक बड़ी तलवार लाने और उसे सन वुकॉन्ग को भेंट करने के लिए भेजा।

"मुझे तलवार चलाना नहीं आता," सन वुकॉन्ग ने कहा, "तो क्या आप मुझे कुछ और दे सकते हैं?" तब बूढ़े ड्रैगन राजा ने कर्नल मैकरेल और गार्ड कमांडर ईल को नौ नोक वाला भाला लाने के लिए भेजा।

सन वुकॉन्ग अपनी सीट से कूदकर नीचे उतरे, उसे उठाया, आजमाया और फिर उसे नीचे फेंकते हुए बोले, "यह बहुत हल्का है, हद से ज्यादा हल्का; और यह मुझे शोभा नहीं देता। कृपया मुझे दूसरा दे दीजिए।"

ड्रैगन किंग ने मुस्कुराते हुए कहा, "महान अमर, क्या आप नहीं देखते कि इसका वजन तीन हजार छह सौ पाउंड है?"

"यह मुझे शोभा नहीं देता, यह मुझे बिल्कुल भी शोभा नहीं देता," सन वुकॉन्ग ने विरोध किया।

ड्रैगन किंग अब भयभीत होकर, प्रांतीय कमांडर ब्रीम और गैरीसन कमांडर कार्प को सात हजार दो सौ पाउंड वजन का एक अलंकृत दिव्य भाला लाने का आदेश दिया, जो मंत्रों से बचाव के लिए था।

जैसे ही उसने उसे देखा, सन वुकॉन्ग उसे लेने के लिए आगे बढ़ा। उसने उससे कुछ मुद्राएँ और प्रहार आजमाए, फिर उसे उन दोनों के बीच ज़मीन में गाड़ दिया। "अभी भी बहुत हल्का है, बहुत ही हल्का।"

ड्रैगन राजा, जो अब सचमुच भयभीत था, बोला, "महान अमर, वह भाला मेरे महल का सबसे भारी हथियार है।"

"जैसा कि पुरानी कहावत है," सन वुकॉन्ग ने मुस्कुराते हुए कहा, "'कभी यह मत सोचो कि ड्रैगन राजा के पास खजाने नहीं हैं।' एक बार फिर देख लो, और अगर तुम्हें कुछ अच्छा मिलता है तो मैं तुम्हें उसके लिए अच्छी कीमत दूंगा।"

अध्याय 3

"मेरे पास वास्तव में और कुछ नहीं है," ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया।
जब वह बोल ही रहा था, तभी उसकी ड्रैगन पत्नी और ड्रैगन बेटियाँ महल के पीछे से आईं और बोलीं,
महाराज, इन्हें देखकर तो लगता है कि ये ऋषि वाकई कोई महान व्यक्ति हैं। आकाशगंगा को स्थिर रखने वाला चमत्कारिक लोहे का टुकड़ा पिछले कुछ दिनों से गुलाबी रंग की सुंदर चमक बिखेर रहा है और एक अत्यंत शुभ वातावरण बना रहा है। शायद ये इस ऋषि का स्वागत करने के लिए चमकने लगा है।
“लोहे का वह चमत्कारी टुकड़ा उन कीलों में से एक है जिनका इस्तेमाल महान यु ने नदियों और समुद्रों की गहराई को नियंत्रित करने के लिए किया था जब उन्होंने जल को वश में किया था,” ड्रैगन राजा ने कहा। “इसका क्या उपयोग हो सकता है?”
“इसकी उपयोगिता हो या न हो, कोई बात नहीं,” उसकी पत्नी ने उत्तर दिया। “बस इसे उसे दे दो और उसे इससे जो चाहे करने दो। कम से कम तुम उसे महल से तो बाहर निकाल लोगे।”
ड्रैगन राजा ने उसके सुझाव के अनुसार ही किया और लोहे के उस टुकड़े का वर्णन सन वुकॉन्ग को किया, जिसने कहा, "इसे बाहर लाओ और मुझे देखने दो।"
"इसे हिलाया नहीं जा सकता। हे परम पूज्य, आपको स्वयं जाकर इसे देखना होगा।"
"यह कहाँ है? मुझे वहाँ ले चलो," सन वुकॉन्ग ने कहा।
ड्रैगन राजा उसे समुद्र के खजाने के बीचोंबीच ले गया, जहाँ अचानक उन्हें दस हजार सुनहरी किरणें दिखाई दीं। उसकी ओर इशारा करते हुए ड्रैगन राजा ने कहा, "यहीं से सारी रोशनी आ रही है।"
सन वुकॉन्ग ने अपने कपड़े समेटे और उसे छूकर देखने गया। उसने पाया कि वह लोहे का एक खंभा था, जिसकी मोटाई अनाज के एक पेक के बराबर और लंबाई लगभग बीस फीट थी। दोनों हाथों से उसे पकड़कर उसने कहा, "यह बहुत मोटा और बहुत लंबा है। अगर यह थोड़ा छोटा और पतला होता तो ठीक रहता।" उसके मुंह से ये शब्द निकलते ही लोहे का वह कीमती टुकड़ा कई फीट छोटा और कुछ इंच पतला हो गया।
सन वुकॉन्ग ने उसे अपने हाथों में उछालते हुए कहा कि अगर यह और पतला होता तो और भी अच्छा होता। इसके बाद कीमती लोहा और भी पतला हो गया। सन वुकॉन्ग उसे समुद्र के खजाने से निकालकर देखने ही वाला था कि उस पर सोने की दो पट्टियाँ थीं, जबकि बीच का हिस्सा काले लोहे का बना था। पट्टियों के पास जड़े हुए अक्षरों में

लिखा था कि यह 'इच्छानुसार ठंडी पट्टियों वाला डंडा' है: वजन 13,500 पाउंड।
सन वुकॉन्ग बहुत खुश था, हालांकि उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। "मुझे लगता है कि यह नन्हा सा प्यारा सा खिलौना मेरी हर इच्छा पूरी करेगा।" चलते-चलते उसने उसे हाथ में तौला और सोचते हुए कहा, "अगर यह और भी छोटा होता तो एकदम सही होता।" जब तक वह उसे बाहर ले गया, तब तक वह बीस फीट लंबा और चावल के कटोरे जितना मोटा हो चुका था।
उसे देखिए कि वह अपनी जादुई शक्तियों का उपयोग करते हुए क्रिस्टल महल के चारों ओर घूमते हुए कुछ करतब दिखाने की कोशिश कर रहा है।
बूढ़ा ड्रैगन राजा भय से कांप रहा था, और छोटे ड्रैगन बुरी तरह डर गए थे।
टेरापिन, मीठे पानी के कछुए, खारे पानी के कछुए और मगरमच्छों ने अपने सिर अंदर कर लिए, जबकि मछलियों, झींगों, लॉबस्टर्स और विशाल कछुओं ने अपने चेहरे छुपा लिए।
अपने खजाने को हाथों में लिए हुए, सन वुकॉन्ग क्रिस्टल महल के मुख्य हॉल में बैठ गया और ड्रैगन किंग से मुस्कुराते हुए कहा, "हे सम्मानित पड़ोसी, आपकी महान उदारता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।"
वृद्ध ड्रैगन राजा ने विनम्रतापूर्वक धन्यवाद स्वीकार किया, और सन वुकॉन्ग ने आगे कहा, "लोहे का यह टुकड़ा बहुत उपयोगी होगा, लेकिन एक और बात है जो मैं पूछना चाहता हूं।"
"हे परम पूज्य अमर, वह क्या हो सकता है?" ड्रैगन राजा ने पूछा।
अध्याय 3
39
पश्चिम की यात्रा
"अगर मेरे पास यह गदा न होती, तो बात यहीं खत्म हो जाती, लेकिन चूंकि यह मेरे पास है, समस्या यह है कि मेरे पास इसके साथ पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं। अब हम क्या करें? अगर आपके पास यहाँ कोई कवच है, तो कृपया मुझे एक कवच दे दीजिए, मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।" ड्रैगन राजा ने कहा कि उनके पास कोई कवच नहीं है।
"किसी अतिथि को दो मेजबानों को परेशान नहीं करना चाहिए," सन वुकॉन्ग ने कहा। "मैं एक के बिना नहीं जाऊंगा।"

"हे परम पूजनीय अमर, कृपया किसी अन्य समुद्र में प्रयास करें—शायद आपको वहां कोई मिल जाए।"
"तीन घरों में घूमने से बेहतर है एक ही घर में रहना।" मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे एक सूट दे दीजिए।
"सचमुच मेरे पास ऐसा कुछ नहीं है," ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया। "अगर होता तो मैं तुम्हें भेंट कर देता।"
"अगर तुमने सच में ऐसा नहीं किया है, तो मैं इस लाठी से तुम पर वार करके देखूंगा।"
"हे महान अमर, मुझे मत मारो, मुझे मत मारो," ड्रैगन राजा ने भयभीत होकर विनती की। "मुझे देखने दो कि क्या मेरे भाइयों के पास कोई ऐसा है जो वे तुम्हें दे सकें।"
"तुम्हारे भाई कहाँ रहते हैं?"
"वे हैं आओ किन, दक्षिणी सागर के ड्रैगन राजा, आओ शुन, उत्तरी सागर के ड्रैगन राजा, और आओ रन, दक्षिणी सागर के ड्रैगन राजा।"
मैं तो लानत है वहाँ जाने का: जैसा कि कहावत है, 'जेब में दो होना तीन कर्ज से बेहतर है।' तो भले आदमी बनो और मुझे एक दे दो।'
“हे महान अमर, आपको जाने की कोई आवश्यकता नहीं है,” ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया, “मेरे पास एक लोहे का ढोल और एक पीतल की घंटी है। आपात स्थिति में हम उन्हें बजाकर अपने भाइयों को पल भर में यहाँ बुला सकते हैं।”
“तो फिर,” सन वुकॉन्ग ने कहा, “जल्दी करो और उन्हें बजाओ।” और सचमुच एक मगरमच्छ सेनापति ने घंटी बजाई जबकि एक कछुआ सरदार ने ढोल बजाया। घंटी और ढोल की आवाज़ से बाकी तीन ड्रैगन राजा चौंक गए, जो पल भर में बाहर आकर इंतज़ार कर रहे थे।
उनमें से एक, आओ किन ने कहा, "बड़े भाई, क्या बात है? ढोल और घंटी क्यों बजा रहे हैं?"
“भाई, यह बताते हुए मुझे बहुत दुख हो रहा है,” बूढ़े ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया। “फूलों और फलों के पर्वत से एक तथाकथित स्वर्ग-जन्मा ऋषि आज सुबह यहाँ आया और कहने लगा कि मैं उसका पड़ोसी हूँ, फिर उसने एक हथियार की माँग की। मैंने उसे लोहे का भाला दिया, लेकिन उसने कहा कि वह बहुत छोटा है, और एक नक्काशीदार हलबर्ड भी दी, जो बहुत हल्की थी। फिर उसने आकाशगंगा को स्थिर रखने वाले चमत्कारी लोहे को उठाया और उससे कुछ चालें चलने की कोशिश की। अब वह महल

में बैठा है और कवच की माँग कर रहा है, लेकिन हमारे पास कवच नहीं है।”
इसीलिए मैंने घंटी और ढोल का इस्तेमाल करके तुम्हें यहाँ बुलाया। तुम तीनों के पास कवच तो होना ही चाहिए। कृपया उसे एक कवच दे दो, फिर हम उससे छुटकारा पा सकते हैं।
जब आओ किन ने यह सुना तो वह क्रोधित होकर बोला, "भाइयों, हथियार उठाओ। अपराधी को गिरफ्तार करो।"
“नहीं! नहीं! यह नामुमकिन है,” बूढ़े ड्रैगन राजा ने कहा। “अगर उसका लोहे का डंडा तुम्हें लग गया तो तुम्हारा काम तमाम, अगर वह तुम्हें छू भी गया तो तुम्हारी मौत, अगर वह तुम्हारे करीब भी आया तो तुम्हारी खाल फट जाएगी, और अगर वह तुम्हें जरा सा भी छू गया तो तुम्हारी नसें चूर-चूर हो जाएंगी।”
पश्चिमी सागर के ड्रैगन राजा आओ रन ने कहा, "दूसरे भाई, तुम उस पर हमला मत करो। इसके बजाय हमें उसके लिए कवच तैयार करना चाहिए और फिर उसे विदा कर देना चाहिए। हम इसके बारे में स्वर्ग को सूचना भेज सकते हैं, फिर स्वर्ग निश्चित रूप से उसे दंडित करेगा।"
अध्याय 3
40
पश्चिम की यात्रा
"तुम सही कह रहे हो," उत्तरी सागर के ड्रैगन राजा आओ शुन ने कहा। "मेरे पास कमल की जड़ से बने बादल-जैसे चलने वाले जूते हैं।"
पश्चिमी सागर के ड्रैगन राजा आओ रन ने कहा, "मैं सोने की चेन मेल का एक सूट लाया हूँ।"
"और मेरे पास एक फीनिक्स पंखों वाला बैंगनी सोने का हेलमेट है," दक्षिणी सागर के ड्रैगन राजा आओ किन ने कहा। बूढ़ा ड्रैगन राजा बहुत प्रसन्न हुआ और वह उन्हें महल में सन वुकॉन्ग से मिलवाने और उन्हें ये उपकरण भेंट करने के लिए ले गया।
सन वुकॉन्ग ने स्वर्णिक हेलमेट, कवच और बादल पर चलने वाले जूते पहने, फिर अपना डंडा लहराते हुए बाहर निकला और ड्रैगनों से कहा, "आपको परेशान करने के लिए क्षमा चाहता हूँ।" चारों ड्रैगन राजा बहुत क्रोधित हुए, लेकिन हम उनके द्वारा स्वर्ग को भेजे गए विरोध संदेश पर हुई चर्चा में नहीं जाएंगे।
बंदरों के राजा को देखिए, वह पानी को चीरते हुए सीधे लोहे के पुल पर वापस चले

जाते हैं, जहाँ चार वरिष्ठ बंदर उनके दल के मुखिया के रूप में उनका इंतजार कर रहे होते हैं। अचानक, सन वुकॉन्ग बिना पानी की एक बूँद के, सोने की तरह चमकते हुए लहरों से बाहर निकल आते हैं।

जैसे ही वह पुल पार करके आया, बंदर इतने चकित हो गए कि वे घुटनों के बल गिर पड़े और बोले, "महाराज, आप कितने शानदार दिख रहे हैं! कितने शानदार!" युवा जोश से चमकते हुए सन वुकॉन्ग अपने सिंहासन पर चढ़े और उनके बीच अपनी गदा गाड़ दी। मूर्ख बंदरों ने उस खजाने को हथियाने की कोशिश की, लेकिन यह उतना ही व्यर्थ था जितना कि एक मक्खी लोहे के पेड़ को हिलाने की कोशिश कर रही हो: वे उसे जरा सा भी हिला नहीं पाए।

अपनी उंगलियां काटते हुए और जीभ बाहर निकालते हुए उन्होंने कहा, "दादाजी, यह इतना भारी है, आप इसे कैसे उठा सकते हैं?"

सन वुकॉन्ग पास गया, उसे एक हाथ से उठाया और हंसते हुए उनसे कहा, "हर चीज़ का अपना सही मालिक होता है। यह छोटा सा खजाना न जाने कितने हज़ारों सालों से समुद्र के खजाने में पड़ा था, लेकिन संयोग से इसी साल चमकने लगा। ड्रैगन राजा ने इसे साधारण लोहे का टुकड़ा समझा और कहा कि यह वह चमत्कारी खजाना है जो आकाशगंगा के आधार को थामे हुए है। उसके कोई भी आदमी इसे हिला नहीं सके, इसलिए उसे मुझे इसे खुद लाने के लिए कहना पड़ा। तब यह बीस फीट से भी ज़्यादा लंबा और एक पेक जितना मोटा था। जब मैंने इसे उठाया तो मुझे लगा कि यह बहुत बड़ा है, और यह सिकुड़कर कई गुना छोटा हो गया। मैंने इसे और छोटा होने को कहा, और यह वैसा ही हो गया; फिर मैंने इसे और छोटा होने को कहा, और यह कई गुना छोटा हो गया। मैं इसे देखने के लिए जल्दी से दिन के उजाले में बाहर आया, और मैंने देखा कि इस पर एक शिलालेख था जिस पर लिखा था 'जैसा आप चाहें, सोने की पट्टी वाला' लाठी: वजन 13,500 पाउंड। हट जाओ, मैं इसे फिर से बदल दूंगा।

अपने खजाने को हाथ में पकड़े हुए उसने कहा, "सिकुड़ो, सिकुड़ो, सिकुड़ो," और वह कढ़ाई की सुई जितना छोटा हो गया, इतना छोटा कि उसके कान में छिपाया जा सके।

"महाराज," बंदरों ने आश्चर्य से चिल्लाकर कहा, "इसे बाहर निकालिए और इसके साथ फिर से खेलिए।"

तो बंदर राजा ने उसे फिर से अपने कान से निकाला, अपनी हथेली पर रखा और कहा, "बढ़ो, बढ़ो, बढ़ो।" वह फिर से एक चोंच जितना मोटा और बीस फीट लंबा हो

गया। अब जब वह सचमुच आनंद ले रहा था, तो वह पुल के ऊपर से कूदकर गुफा से बाहर निकल गया। अपने खजाने को थामे हुए उसने अपनी स्वर्ग और पृथ्वी की जादुई शक्ति का प्रयोग किया, प्रणाम किया और चिल्लाया, "बढ़ो।"
वह एक लाख फीट लंबा हो गया; उसका सिर पहाड़ जितना विशाल था, उसकी कमर पहाड़ियों की श्रृंखला जितनी, उसकी आँखें बिजली की तरह चमक रही थीं, उसका मुँह खून से भरे कटोरे जैसा लग रहा था, और उसके दाँत तलवारों और भाले जैसे थे; उसके हाथों में मौजूद गदा तैंतीसवें स्वर्ग तक और अठारहवें नरक तक पहुँच रही थी। बाघ, तेंदुए और भेड़िये, पहाड़ के जानवर और बहत्तर राक्षस राजाओं ने उसके सामने सिर झुकाया और अध्याय 3
41
पश्चिम की यात्रा
वे भय से सिर झुकाए, इतना कांप रहे थे कि मानो अपना होश खो बैठे हों। क्षण भर में वह अपने वास्तविक आकार में लौट आया, अपने खजाने को कढ़ाई की सुई में बदल दिया, उसे अपने कान में छिपा लिया और गुफा में वापस चला गया। भयभीत राक्षसों के सभी राजा उसे बधाई देने आए।
झंडे और ढोल की भव्य प्रदर्शनी लगी थी, और चारों ओर घंटियों और घंटों की आवाज़ गूंज रही थी। तरह-तरह के स्वादिष्ट पकवान बड़ी मात्रा में परोसे गए थे, नारियल की ताड़ी और अंगूर की शराब से प्याले लबालब भरे थे, और वानर राजा ने अपने लोगों के साथ लंबे समय तक दावत की और शराब का आनंद लिया। फिर प्रशिक्षण पहले की तरह जारी रहा।
वानर राजा ने चार वरिष्ठ वानरों को अपने चार वीर सेनापति नियुक्त किया: उन्होंने दो नंगे नितंब वाले वानरों को मार्शल मा और मार्शल लियू नाम दिया, और दो गिब्बनों को जनरल बेंग और जनरल बा कहा। उन्होंने किलेबंदी, अनुशासन और पुरस्कार संबंधी मामलों का जिम्मा इन्हीं चारों को सौंपा। इस प्रकार चिंताओं से मुक्त होकर, वे बादलों पर सवार हुए और कोहरे में विचरण करते हुए चारों समुद्रों की परिक्रमा करते रहे और हजार पर्वतों का आनंद लेते रहे। उन्होंने युद्ध कला का अभ्यास किया, अनेक वीरों से मुलाकात की, अपनी जादुई शक्तियों का प्रयोग किया और मित्रों का एक विस्तृत और प्रतिष्ठित दायरा बनाया। वे अपने छह शपथबद्ध भाइयों से मिले: बैल दानव राजा, सैलामैंडर दानव राजा, रोक दानव राजा, ऊंट राजा, मकाक राजा और शेर राजा। उन्हें

मिलाकर वे सात हो गए। वे दिनों तक राजनीति और युद्ध पर चर्चा करते रहे, प्याला एक-दूसरे को देते रहे, गिटार बजाते रहे, गाते रहे, बांसुरी बजाते रहे, नाचते रहे, साथ में घूमने जाते रहे और हर संभव तरीके से आनंद लेते रहे। हजारों मील की यात्रा उन्हें आंगन में टहलने मात्र जैसी लगी। यह कहा जा सकता है कि उन्होंने सिर हिलाने में लगने वाले समय में ही हजार मील की दूरी तय कर ली और कमर हिलाते ही तीन सौ मील का फासला तय कर लिया।

एक दिन उसने अपने चार पराक्रमी सेनापतियों को अन्य छह राजाओं के लिए एक भोज आयोजित करने का आदेश दिया। बैल और घोड़े काटे गए, स्वर्ग और पृथ्वी को बलि चढ़ाई गई, और एकत्रित राक्षस नाचते-गाते और खूब शराब पीते रहे। जब उसने छह राजाओं को विदा कर दिया और अपने वरिष्ठ और कनिष्ठ अधिकारियों को रिश्वत दे दी, तो सन वुकॉन्ग पुल के किनारे चीड़ के पेड़ों की छाया में लेट गया और पल भर में सो गया। चारों पराक्रमी सेनापतियों ने बाकी सेनापतियों को उसके चारों ओर खड़े होकर उसकी रक्षा करने का आदेश दिया, और सभी ने अपनी आवाज़ धीमी रखी।

अपनी नींद में, सुंदर वानर राजा ने देखा कि दो आदमी उसके पास आ रहे हैं, जिनके हाथों में एक कागज़ का टुकड़ा है जिस पर "सन वुकॉन्ग" लिखा है। बिना कोई स्पष्टीकरण दिए, उन्होंने उसकी आत्मा को बांध दिया और उसे घसीटते हुए तब तक ले गए जब तक वे एक शहर की दीवार तक नहीं पहुँच गए। वानर राजा, जो धीरे-धीरे अपने नशे से उबर रहा था, ने ऊपर देखा और दीवार पर एक लोहे की प्लेट देखी जिस पर "विश्व" लिखा हुआ था।

बड़े अक्षरों में लिखा हुआ: अंधकार।

अचानक ही उसे यह बात समझ में आई और उसने कहा, "अंधकार लोक वह स्थान है जहाँ यमराज रहते हैं। मैं यहाँ क्यों आया हूँ?"

"अब इस दुनिया में आपका जीवन समाप्त होने वाला है," उनके अंगरक्षकों ने कहा, "और हमें आपको लाने का आदेश दिया गया है।"

इस पर वानर राजा ने उत्तर दिया, "मैं तीनों लोकों से परे जा चुका हूँ, और अब मैं पंच तत्वों के अधीन नहीं हूँ। मैं यमराज के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता। तुम मूर्खों की हिम्मत कैसे हुई मुझे पकड़ने की?" लेकिन मृतकों को लाने वाले उसे घसीटते हुए अंदर ले जाने के लिए दृढ़ संकल्पित थे।

बंदरों के राजा को गुस्सा आ गया, उसने अपने कान से खजाना निकाला और उसे

हिलाया। वह चावल के कटोरे जितना मोटा हो गया। उसकी बांह के एक हल्के से इशारे से ही मुर्दों को लाने वाले दोनों चूर-चूर हो गए। उसने अपने बंधन खोले, हाथ छुड़ाए और अपने डंडे को घुमाते हुए शहर में घुस गया, जिससे बैल के सिर वाले और घोड़े के चेहरे वाले राक्षस इतने भयभीत हो गए कि वे जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे।

सभी राक्षस सैनिक सेनलुओ महल की ओर दौड़े और सूचना दी, "महाराज, विपत्ति, विपत्ति! एक बालदार चेहरे वाला गर्जन-देवता हम पर हमला कर रहा है।"

दस महलों में विराजमान, मृतकों के आपराधिक मामलों का फैसला करने वाले दस राजा घबराकर जल्दी से अपने वस्त्र समेटकर बाहर देखने गए। जब उन्होंने उसका भयंकर चेहरा देखा, तो वे कतार में खड़े हो गए और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाए, "हे परम पूज्य, कृपया हमें अपना नाम बताइए।"

अध्याय 3

42

पश्चिम की यात्रा

"अगर तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ," बंदर राजा ने उत्तर दिया, "तो तुमने मुझे यहाँ लाने के लिए आदमी क्यों भेजे?"

"हम ऐसा करने की हिम्मत नहीं करेंगे। दूतों से जरूर कोई गलती हुई होगी।"

"मैं सन वुकॉन्ग हूं, फूलों और फलों के पर्वत पर स्थित जल परदे की गुफा का स्वर्ग से जन्मा ऋषि।"

आपकी पोस्ट क्या हैं?

"हम दस राजा हैं।"

"अगर आप मार नहीं खाना चाहते तो मुझे तुरंत अपने नाम बता दीजिए।"

इस पर दस राजाओं ने उत्तर दिया, "हम किंगुआंग के राजा, चुजियांग के राजा, सोंगडी के राजा, वुगुआन के राजा, यम के राजा, निष्पक्ष राजा, ताई पर्वत के राजा, महानगरीय राजा, बियानचेंग के राजा और सदा घूमने वाले चक्र के राजा हैं।"

इस पर सन वुकॉन्ग ने उत्तर दिया, "आप सब राजा हैं और गूढ़ ज्ञान रखते हैं, तो फिर आप इतना क्यों नहीं जानते? मैं, सन वुकॉन्ग, अमरता का मार्ग अपना चुका हूँ और स्वर्ग के समान दीर्घायु होऊंगा। मैं तीनों लोकों से परे और पंच तत्वों से भी ऊपर उठ चुका हूँ, तो फिर आपने मुझे पकड़ने के लिए अपने आदमियों को क्यों भेजा?"

"हे महान अमर, क्रोधित न हों," दस राजाओं ने कहा। "दुनिया में बहुत से लोगों का नाम एक जैसा है, इसलिए शायद मृतकों को लाने वाले गलत जगह चले गए हों।"
"बकवास, बकवास। जैसा कि कहावत है, 'न्यायाधीश गलत हो सकता है, सार्जेंट गलत हो सकता है, लेकिन जो आदमी तुम्हें पकड़ने आता है वह कभी गलत नहीं होता।' जाओ और मेरे देखने के लिए जीवन और मृत्यु का रजिस्टर ले आओ।" दस राजाओं ने उसे महल में आने और उसे देखने के लिए आमंत्रित किया।
सन वुकॉन्ग अपने हाथ में गदा लिए सेनलुओ महल में दाखिल हुए और दक्षिण की ओर मुख करके हॉल के मध्य में बैठ गए। दस राजाओं ने पीठासीन न्यायाधीश को रजिस्टर लाने का आदेश दिया, और न्यायाधीश शीघ्रता से अपने कार्यालय गए और पाँच-छह दस्तावेज़ और दस रजिस्टर लेकर आए। उन्होंने एक-एक करके उन सभी को देखा, लेकिन उन्हें सन वुकॉन्ग का नाम बालरहित प्राणियों, बालयुक्त प्राणियों, पंखयुक्त प्राणियों, कीड़ों या पपड़ीदार प्राणियों के अनुभागों में नहीं मिला। फिर उन्होंने बंदरों वाले अनुभाग को देखा। अब, यद्यपि बंदर मनुष्य जैसे दिखते थे, फिर भी उन्हें मनुष्यों के अंतर्गत नहीं रखा गया था; यद्यपि वे बालरहित प्राणियों के समान थे, फिर भी वे उनकी सीमाओं के भीतर नहीं रहते थे; यद्यपि वे दौड़ने वाले जानवरों के समान थे, फिर भी वे एक सींग वाले जानवर के अधिकार क्षेत्र में नहीं थे; और यद्यपि वे पक्षियों के समान थे, फिर भी वे एक सींग वाले पक्षी के अधीन नहीं थे। एक और रजिस्टर था, और सन वुकॉन्ग ने स्वयं उसे देखा। "आत्मा संख्या 1350" के अंतर्गत सन वुकॉन्ग का नाम था, जो स्वर्ग में जन्मा पत्थर का बंदर था, जिसे 342 वर्ष की आयु तक जीवित रहने और एक अच्छी मृत्यु प्राप्त करने के लिए नियत किया गया था।
"मैं वर्षों की कोई संख्या नहीं लिखूंगा," सन वुकॉन्ग ने कहा। "मैं बस अपना नाम मिटा दूंगा और बात खत्म।"
मुझे एक ब्रश लाओ।" जज ने जल्दी से उसे एक ब्रश और गाढ़ी, काली स्याही थमा दी।
सन वुकॉन्ग ने रजिस्टर उठाया, बंदरों वाले सेक्शन में सभी नाम काट दिए और उसे ज़मीन पर फेंकते हुए कहा, "खाता बंद हो गया है। बात यहीं खत्म होती है। अब हम तुम्हारे नियंत्रण में नहीं रहेंगे।" फिर वह गदा से अंधकार लोक से निकल गया। दस राजाओं की हिम्मत नहीं हुई कि वे उसके पास जाएँ, और वे सभी नीले बादल महल में

बोधिसत्व क्षितिगर्भ को प्रणाम करने और स्वर्ग को भेजी जाने वाली रिपोर्ट पर चर्चा करने के लिए चले गए। लेकिन हम इस बारे में विस्तार से चर्चा नहीं करेंगे।

शहर की दीवार तोड़कर बाहर निकलने के बाद बंदरों का राजा घास के एक गुच्छे से टकराकर गिर पड़ा। उसने अपना संतुलन बनाने की कोशिश की और अचानक जाग गया। यह सब एक सपना था। अंगड़ाई लेते ही उसने अपने चार वीर सेनापतियों और अन्य बंदरों को कहते सुना, "महाराज, उठने का समय हो गया है। आपने बहुत ज्यादा पी लिया और पूरी रात सोते रहे।"

अध्याय 3

43

पश्चिम की यात्रा

"मेरी नींद की चिंता मत करो। मैंने सपना देखा कि दो आदमी मुझे लेने आए। वे मुझे अंधकार लोक की दीवार तक घसीटकर ले गए, जहाँ मुझे होश आया। मैंने उन्हें अपनी जादुई शक्तियाँ दिखाईं और चिल्लाते हुए सेनलुओ महल तक गई, जहाँ मेरी उन दस राजाओं से बहस हुई और मैंने हम सब के जीवन और मृत्यु के रजिस्टर को देखा। रजिस्टर में जहाँ भी तुम्हारे नाम लिखे थे, मैंने उन्हें काट दिया। अब हम उन मूर्खों के अधिकार क्षेत्र में नहीं आएंगे।"

सभी बंदरों ने कृतज्ञतापूर्वक उसके सामने सिर झुकाया। उस समय से लेकर अब तक इतने सारे पहाड़ी बंदर बूढ़े क्यों नहीं हुए, इसका कारण यह है कि उनके नाम पाताल लोक के अधिकारियों के रिकॉर्ड में दर्ज नहीं हैं।

जब सुंदर बंदर राजा ने अपनी कहानी समाप्त कर ली, तो चारों वीर सेनापतियों ने अन्य राक्षस राजाओं को इसकी सूचना दी, और सभी उन्हें बधाई देने आए। कुछ दिनों बाद उनके छह शपथधारी भाई भी उन्हें बधाई देने आए, और सभी यह सुनकर प्रसन्न हुए कि उन्होंने किस प्रकार सभी के नाम मिटा दिए थे। इसके बाद होने वाले दैनिक भोजों का वर्णन हम नहीं करेंगे।

इसके बजाय हम वर्णन करेंगे कि कैसे एक दिन परम दिव्य ऋषि, स्वर्ग के नीले गुंबद के अत्यंत दयालु जेड सम्राट, स्वर्ण द्वार वाले बादल महल के चमत्कारी धुंध के हॉल में अपने सिंहासन पर बैठे थे, सुबह के दरबार में अपने अमर नागरिक और सैन्य अधिकारियों से घिरे हुए थे, तभी अमर किउ होंगजी ने सूचना दी, "महाराज, पूर्वी सागर के ड्रैगन राजा, आओ गुआंग ने सार्वभौमिक चमक के हॉल के बाहर एक ज्ञापन

प्रस्तुत किया है, और आपके शाही महामहिम से बुलावा आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"
जेड सम्राट ने उसे बुलाने का आदेश दिया, और ड्रैगन राजा चमत्कारी धुंध के हॉल में आया।
जब उन्होंने प्रणाम किया, तो एक अमर सेवक बगल से उनका ज्ञापन लेने आया। जेड सम्राट ने उसे पूरा पढ़ा। उसमें लिखा था:
आपका विषय आओ गुआंग है,
पूर्वी महाद्वीप के पूर्वी सागर का विनम्र ड्रैगन, निम्न जलमय क्षेत्रों में स्थित श्रेष्ठ शरीर वाला
नीले स्वर्ग के गुंबद के जेड सम्राट को रिपोर्ट करता है
हाल ही में, सन वुकॉन्ग नामक एक अमर राक्षस, जो पुष्प और फल पर्वत पर जन्मा था और अब जल परदे की गुफा में रहता है, ने इस विनम्र अजगर को धमकाया और मेरे जलमग्न घर पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया। उसने अपनी जादुई शक्ति का प्रदर्शन करके हथियार की मांग की; उसने अपनी दुष्ट शक्तियों का प्रदर्शन करके कवच पर जोर दिया। उसने जलमग्न जनजाति को भयभीत कर दिया और कछुओं और मगरमच्छों को आतंकित करके भगा दिया। दक्षिणी सागर का अजगर कांप उठा, पश्चिमी सागर का अजगर दुखी हो गया, उत्तरी सागर के अजगर को अपना सिर झुकाकर आत्मसमर्पण करना पड़ा, और मैं, आपका प्रजाजन आओ गुआंग, उसके सामने नतमस्तक हो गया। हमें उसे एक चमत्कारी लोहे का डंडा, एक स्वर्ण फीनिक्स-पंख वाला हेलमेट, एक चेन मेल और बादलों पर चलने वाले जूते भेंट करने पड़े; और हमने उसे विनम्रतापूर्वक बाहर निकाल दिया।
वह अपने मार्शल आर्ट और जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करता रहा, और उसने बस इतना ही कहा, "आपको परेशान करने के लिए क्षमा चाहता हूँ।" उसका सचमुच कोई मुकाबला नहीं है, और वह बेकाबू है। आपका यह प्रज्ञाकार अब यह निवेदन प्रस्तुत करता है, और आपके विवेकपूर्ण निर्णय की प्रतीक्षा करता है। मैं विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि इस दुष्ट राक्षस को गिरफ्तार करने के लिए स्वर्ग से सैनिक भेजे जाएँ, ताकि समुद्र और पर्वत शांत रहें, और सागर में शांति बनी रहे।
अध्याय 3
44
पश्चिम की यात्रा

जब जेड सम्राट ने इसे पूरा पढ़ लिया, तो उन्होंने आदेश दिया, "ड्रैगन देवता को समुद्र में वापस जाने दो; हम दानव को गिरफ्तार करने के लिए सेनापतियों को भेजेंगे।" वृद्ध ड्रैगन राजा ने सिर झुकाकर प्रणाम किया और विदा ले ली।

तब परम पूज्य अमर गे, जो एक दिव्य गुरु थे, ने सूचना दी, "महाराज, पाताल लोक के मंत्रियों में से एक, किंगुआंग के राजा, बोधिसत्व क्षितिगर्भ की ओर से एक पत्र लेकर आए हैं।" एक देवदूत कन्या उस पत्र को लेकर आई, जिसे देवदूत सम्राट ने पढ़ा। उसमें लिखा था: अंधकार के क्षेत्र पृथ्वी का नकारात्मक भाग हैं। स्वर्ग में देवता हैं जबकि पृथ्वी पर राक्षस; सकारात्मक और नकारात्मक एक निरंतर चक्र में हैं। पक्षी और पशु जन्म लेते हैं और मरते हैं; नर और मादा बारी-बारी से आते हैं।

जीवन का सृजन होता है और परिवर्तन होता है; नर और मादा गर्भ धारण करते हैं और जन्म लेते हैं; यही प्रकृति का नियम है, और इसे बदला नहीं जा सकता। अब वह दुष्ट आत्मा, पुष्प और फल पर्वत पर स्थित जल परदे की गुफा का स्वर्ग से जन्मा बंदर, अपनी दुष्ट प्रकृति को पूर्ण रूप से फल-फूल रहा है, हत्याएं कर रहा है और अनुशासन का पालन करने से इनकार कर रहा है। उसने अपने जादू से नौवें नरक के शैतान दूतों को मार डाला और अपनी शक्ति से पाताल लोक के दस दयालु राजाओं को भयभीत कर दिया। उसने सेनलुओ महल में उपद्रव मचाया और बलपूर्वक कुछ नाम मिटा दिए। उसने बंदरों की जाति को पूरी तरह से अनियंत्रित कर दिया है और मकाक बंदरों को अमर जीवन प्रदान किया है। उसने पुनर्जन्म के नियम को निरस्त कर दिया है और उन्हें जन्म और मृत्यु से परे कर दिया है। मैं, एक दरिद्र भिक्षु, इस निराधार निवेदन के द्वारा स्वर्ग की शक्ति से प्रार्थना करता हूँ।

मैं नतमस्तक होकर प्रार्थना करता हूँ कि इस राक्षस को वश में करने, सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा को पुनः व्यवस्थित करने और पाताल लोक को स्थायी सुरक्षा प्रदान करने के लिए स्वर्गीय सैनिकों को भेजा जाए।

जब जेड सम्राट ने इसे पूरा पढ़ लिया, तो उन्होंने आदेश दिया, "अंधकार के स्वामी को पाताल लोक में वापस भेज दो। हम सेनापतियों को भेजकर राक्षस को गिरफ्तार करवाएंगे।" इसके बाद किंगुआंग के राजा ने सिर झुकाकर प्रणाम किया और विदा ली।

तब परम पूज्य महाराज ने अपने सभी नागरिक और सैन्य अधिकारियों से पूछा, "यह बंदर राक्षस कब पैदा हुआ था?"

उसकी उत्पत्ति क्या है, जिससे उसे ऐसी शक्तियां प्राप्त हुई हैं?
उसके बोलने से पहले ही, हजार मील की आँख और हवा के साथ चलने वाले कान अधिकारियों की कतार से आगे आए और बोले, "यह दानव बंदर वही पत्थर का बंदर है जो तीन सौ साल पहले स्वर्ग से पैदा हुआ था। उस समय किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया था, और हम नहीं जानते कि हाल के वर्षों में उसने कहाँ स्वयं को परिष्कृत किया और अमर बन गया, जिससे वह बाघों और अजगरों को अपने अधीन करने और मृतकों की सूची से अपना नाम मिटाने में सक्षम हो गया।"
"उसे पकड़ने के लिए किस दिव्य सेनापति को भेजा जाएगा?" जेड सम्राट ने पूछा, और उनके बोलने से पहले ही महान श्वेत ग्रह आगे बढ़ा, झुककर प्रणाम किया और कहा, "ऊपरी लोकों में रहने वाले सभी प्राणी जिनके नौ छिद्र होते हैं, अमर हो सकते हैं। इस बंदर का शरीर स्वर्ग और पृथ्वी द्वारा निर्मित और सूर्य और चंद्रमा द्वारा गर्भित है। इसका सिर आकाश को छूता है और इसके पैर पृथ्वी पर टिके हैं; यह ओस पीता है और कोहरा खाता है। यदि इसने अमरता का मार्ग अपना लिया है और यह ड्रैगन और बाघों को वश में कर सकता है, तो यह मनुष्यों से कैसे भिन्न है? मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपनी जीवनदायिनी दया को याद रखें और क्षमा और भर्ती का एक ऋषि आदेश जारी करें, इसे इस ऊपरी लोक में बुलाएँ और इसका नाम पदाधिकारियों की सूची में अंकित करें, इस प्रकार इसे यहाँ नियंत्रण में रखें। यदि यह आपके दिव्य आदेशों का पालन करता है, तो इसे बाद में पदोन्नत किया जा सकता है; और यदि यह अवज्ञा करता है, तो इसे गिरफ्तार किया जा सकता है। इससे सैन्य अभियानों से बचा जा सकेगा और एक अमर को अपने वश में करने का भी तरीका होगा।"
इस सुझाव से प्रसन्न होकर जेड सम्राट ने इसे लागू करने का आदेश दिया। उन्होंने वेनकु तारा अधिकारी को अध्यादेश तैयार करने का निर्देश दिया और महान श्वेत ग्रह को बंदर को अध्याय 3 स्वीकार करने के लिए राजी करने का आदेश दिया।
45
पश्चिम की यात्रा
माफीनामा।
महान श्वेत ग्रह दक्षिणी द्वार से स्वर्ग से निकला और अपने शुभ बादल को जल परदे की गुफा में लेकर आया, जहाँ उसने छोटे बंदरों से कहा, "मैं स्वर्ग से आया हुआ दूत हूँ

और तुम्हारे महान राजा को ऊपरी लोक में आमंत्रित करने वाला एक दिव्य आदेश लेकर आया हूँ। जाओ और उसे तुरंत बता दो।"
बाहर खड़े नन्हे बंदरों ने एक-एक करके गुफा की गहराई में संदेश पहुंचाया: "महाराज, बाहर एक बूढ़ा आदमी अपनी पीठ पर एक दस्तावेज़ लिए खड़ा है। वह कहता है कि वह स्वर्ग से आपके लिए निमंत्रण लेकर आया है।" सुंदर बंदर राजा प्रसन्न हो गया।
उन्होंने कहा, "मैं पिछले कुछ दिनों से स्वर्ग जाकर एक नजरिया लेने के बारे में सोच रहा था, और अब एक स्वर्गीय दूत मुझे आमंत्रित करने आया है।"
"उसे तुरंत अंदर बुलाओ," उसने चिल्लाते हुए जल्दी से अपने कपड़े ठीक किए और दूत से मिलने के लिए बाहर चला गया।
वह ग्रह सीधे अंदर आया, दक्षिण की ओर मुख करके खड़ा हुआ और बोला, "मैं पश्चिम का महान श्वेत ग्रह हूँ, और मैं जेड सम्राट की ओर से क्षमादान और भर्ती का फरमान लेकर पृथ्वी पर आया हूँ ताकि आपको स्वर्ग में आमंत्रित कर सकूँ और आपको अमर का पद प्रदान कर सकूँ।"
"हे आदरणीय ग्रह, यहाँ आने की कृपा करने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ," सन वुकॉन्ग ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया; फिर उन्होंने अपनी प्रजा को आगंतुक के स्वागत के लिए भोज तैयार करने का आदेश दिया।
"मुझे खेद है कि मैं देरी नहीं कर सकता," ग्रह ने उत्तर दिया, "क्योंकि मैं एक दिव्य आदेश लेकर आया हूँ, इसलिए क्या मैं आपसे अनुरोध कर सकता हूँ कि आप अभी मेरे साथ वापस चलें? आपके शानदार उत्थान के बाद हम आराम से बात कर सकते हैं।"
"आने के लिए धन्यवाद," सन वुकॉन्ग ने कहा। "मुझे खेद है कि आप जाने से पहले कुछ जलपान नहीं कर सके।"
फिर उन्होंने अपने चार वीर सेनापतियों को बुलाया और उन्हें आदेश दिया, "मेरे पुत्रों और पोतों को अच्छी तरह से प्रशिक्षित करो। जब मैं स्वर्ग का दर्शन कर लूँगा, तो तुम सबको अपने साथ वहाँ ले जाऊँगा।" चारों वीर सेनापतियों ने उनके आदेश स्वीकार कर लिए, और वानर राजा ने अपने बादल को बादलों के ऊपर ले जाने का आदेश दिया। उन्हें स्वर्ग में एक उच्च पद पर आसीन किया गया।
बादलों में विराजमान दरबारियों में सूचीबद्ध।
अगर आपको नहीं पता कि उन्हें कौन सा पद दिया गया था, तो अगली कड़ी में इसका

स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 4
घोड़ों के संरक्षक नियुक्त किए जाने से असंतुष्ट
स्वर्ग के समतुल्य होने की उपाधि से संतुष्ट नहीं
विशाल श्वेत ग्रह सुंदर बंदर राजा के साथ गुफा की गहराई से बाहर निकला और वे दोनों अपने-अपने बादलों पर सवार होकर ऊपर चढ़ गए। सन वुकॉन्ग का कलाबाजी करता बादल असाधारण रूप से तेज था, इसलिए वह सबसे पहले स्वर्ग के दक्षिणी द्वार पर पहुँच गया और विशाल श्वेत ग्रह को बहुत पीछे छोड़ दिया। जैसे ही वह अंदर जाने के लिए अपना बादल समेटने लगा, तभी स्वर्ग के रक्षक विरुधका और उनके शक्तिशाली स्वर्गीय सैनिकों लियू, गौ, बी ने उसका रास्ता रोक दिया। (अध्याय 4)

डेंग, शिन, झांग और ताओ ने अपने भालों और तलवारों से स्वर्ग का द्वार अवरुद्ध कर दिया और उसे अंदर आने से रोक दिया।
"यह पुराना महान श्वेत ग्रह धोखेबाज है," सन वुकॉन्ग ने कहा। "इसने मुझे यहाँ आमंत्रित किया है, इसलिए मुझे भाले और तलवारों से दूर रखने का इसे कोई अधिकार नहीं है।" जैसे ही वह हंगामा कर रहा था, अचानक वह ग्रह प्रकट हो गया।
सन वुकॉन्ग ने उस पर आरोप लगाते हुए कहा: "तुमने मेरे साथ यह चाल क्यों चली, बूढ़े? तुमने मुझसे कहा था कि तुम जेड सम्राट की क्षमादान की चिट्ठी लेकर मुझे यहाँ आमंत्रित करने आए हो, तो तुमने इन लोगों को स्वर्ग के द्वार से मुझे अंदर न जाने देने का इंतजाम क्यों किया?" महान श्वेत ग्रह हँस पड़ा।
"महामहिम, क्रोधित न हों। आप पहले कभी यहाँ नहीं आए हैं, आपका नाम यहाँ के अभिलेखों में दर्ज नहीं है, और स्वर्ग के सैनिकों ने आपसे कभी मुलाकात नहीं की है। बेशक, वे आपको मात्र अनुरोध पर अंदर नहीं आने दे सकते। लेकिन जब आप परम पूज्य के दर्शन कर लेंगे और अमर लोगों के बीच पद प्राप्त कर लेंगे, तब आप अपनी इच्छानुसार आ-जा सकेंगे, और कोई भी आपको रोकने का प्रयास नहीं करेगा।"
"जो भी हो," सन वुकॉन्ग ने कहा, "मैं अंदर नहीं जाऊंगा।" लेकिन विशाल श्वेत ग्रह ने उसे जाने नहीं दिया और हर हाल में उसे अपने साथ अंदर चलने के लिए कहा।
जैसे ही वे द्वार के पास पहुँचे, ग्रह ने पुकारा, "स्वर्ग के द्वारों के अधिकारियों, सार्जेंटों

और सैनिकों, हमें अंदर आने दो। मैं निम्न लोक से आया एक अमर प्राणी हूँ, और मैं जेड सम्राट का एक आदेश लेकर आया हूँ जिसमें उसे यहाँ बुलाया गया है।" तभी स्वर्ग के राजा ज़ेंगझांग और उनके सैनिकों ने अपने हथियार वापस ले लिए और पीछे हट गए। अब वानर राजा को महान श्वेत ग्रह पर भरोसा होने लगा। वह धीरे-धीरे उसके साथ अंदर गया और नज़ारे को देखा। सचमुच यह उसका ही था।
ऊपरी दुनिया में पहली चढ़ाई,
स्वर्ग में अचानक प्रवेश।
दस हजार सुनहरी रोशनी की किरणें लालिमा लिए चमक उठीं;
शुभ वाष्प की हजारों लकीरों से बैंगनी धुंध निकली।
स्वर्ग का दक्षिणी द्वार देखो,
गहरा हरा,
क्रिस्टलीय,
चमकीला,
रत्नों से जड़ा हुआ।
दोनों ओर दर्जनों दिव्य सेनापति खड़े थे।
छत की कड़ियों जितना लंबा, खंभों के बगल में,
धातु की नोक वाले धनुष और झंडे पकड़े हुए।
चारों ओर सुनहरे कवच पहने देवता खड़े थे।
अध्याय 4
47
पश्चिम की यात्रा
अपने डंडे और भाले लहराते हुए,
वे अपनी कटारें और तलवारें लहरा रहे थे।
बाहरी हिस्सा काफी उल्लेखनीय था।
लेकिन अंदर का नजारा देखकर वह दंग रह गया।
यहां कई विशाल स्तंभ थे,
जिसके चारों ओर भूरी दाढ़ी वाले अजगर कुंडली मारकर बैठे थे, जिनकी सुनहरी खाल सूरज की रोशनी में चमक रही थी।
वहाँ लंबे पुल थे,

जहां चमकीले पंखों और चमकदार लाल कलगी वाले फीनिक्स पक्षी इतराते थे।
एक गुलाबी चमक दिव्य प्रकाश से जगमगा उठी;
घने हरे कोहरे ने ध्रुव तारे को ढक लिया था।
इस स्वर्ग में तैंतीस स्वर्गीय महल हैं:
बादलों के विलीन होने का महल, वैश्रवण महल, पंच विद्याओं का महल, सूर्य महल, पुष्पमय आनंद का महल,
हर महल की छत पर सोने के जानवरों की आकृतियाँ बनी होती थीं।
तब बहत्तर अनमोल कक्ष थे:
सुबह की सभा का हॉल, अंतरिक्ष में उदय का हॉल, अनमोल प्रकाश का हॉल, स्वर्ग के राजाओं का हॉल, चमत्कारों के स्वामी का हॉल,
प्रत्येक स्तंभ पर जेड यूनिकॉर्न।
दीर्घायु के तारे की छत पर
ऐसे फूल उगे जो कभी मुरझाते नहीं।
अमृत का काढ़ा बनाने के लिए चूल्हे के बगल में,
ये ऐसी जड़ी-बूटियाँ थीं जो हमेशा हरी रहती हैं।
फेसिंग द सेज पवेलियन के सामने
गहरे लाल रंग के जालीदार कपड़े तारों की तरह चमक रहे थे;
कमल की टोपियाँ
सोने और जेड से जगमगा रहा था।
अध्याय 4
48
पश्चिम की यात्रा
जेड से बनी हेयरपिन और मोतियों से सिले जूते,
बैंगनी डोरियों पर सुनहरी मुहरें।
जैसे ही सुनहरी घंटी बजी,
तीनों वर्गों के देवत्वों ने सीढ़ियों के पास जाकर ज्ञापन प्रस्तुत किए।
जैसे ही दिव्य ढोल बजाया गया,
दस हजार ऋषि राजा जेड सम्राट की सेवा में उपस्थित थे।
फिर वे चमत्कारी धुंध के हॉल में प्रवेश कर गए।

जहां जेड के दरवाजों पर सोने की जड़ाई की गई थी,
और फीनिक्स पक्षी लाल रंग के द्वारों के सामने नृत्य कर रहे थे।
घुमावदार मेहराब,
हर जगह जालीदार नक्काशी की गई है;
छज्जे की परतें दर परतें
उड़ते हुए ड्रैगन और फीनिक्स पक्षियों के साथ।
सबसे ऊपर एक शानदार बैंगनी रंग का था,
चमकदार,
बिल्कुल गोल,
और चकाचौंध
सुनहरे लौकी के आकार का शीर्ष भाग;
नीचे, स्वर्गदूतों के हाथों से पंखे लटके हुए थे।
जबकि जेड की अप्सराओं ने जादुई वस्त्र पेश किए।
भयंकर
दरबार की रक्षा करने वाले स्वर्गीय सेनापति;
आलीशान
सिंहासन की रक्षा करने वाले अमर अधिकारी।
बीच में क्रिस्टल की प्लेटें रखी हुई थीं।
ग्रेट मोनाड पिल्स से लबालब भरा हुआ;
अध्याय 4
49
पश्चिम की यात्रा
एगेट जार
जिसमें टेढ़े-मेढ़े मूंगे के पेड़ खड़े थे।
स्वर्ग की सभी अद्भुत चीजें वहां मौजूद थीं।
इनमें से कोई भी पृथ्वी पर नहीं देखा जाता है:
सोने के द्वार, चांदी के रथ और एक बैंगनी महल;
बहुमूल्य पौधे, जेड के फूल और जैस्पर की पंखुड़ियाँ।
दरबार में राजकुमारों के हरे रंग के खरगोश वेदी के सामने से दौड़ते हुए निकले;

उपस्थित ऋषियों के सुनहरे कौवे नीचे की ओर उड़ गए।
बंदर राजा का स्वर्ग जाना तय था।
नश्वर संसार से कलंकित होने के बजाय।
विशाल श्वेत ग्रह ने सुंदर बंदर राजा को चमत्कारी धुंध के हॉल के बाहर तक पहुँचाया। वह बिना बुलाए ही सीधे शाही उपस्थिति में चले गए और सिंहासन के समक्ष प्रणाम किया।
सन वुकॉन्ग उसके बगल में एकदम सीधा खड़ा था, दरबारी शिष्टाचार की परवाह किए बिना, बल्कि केवल महान श्वेत ग्रह द्वारा जेड सम्राट को दी जा रही रिपोर्ट को ध्यान से सुन रहा था: "दिव्य आदेश के अनुपालन में, आपके प्रजाजन ने दानव अमर को यहाँ लाया है।"
जेड सम्राट ने अपना पर्दा गिराया और पूछा, "और तुममें से कौन दानव अमर है?"
"मैं," सन वुकॉन्ग ने थोड़ा झुकते हुए जवाब दिया।
अधिकारियों के चेहरे भय से सफेद पड़ गए और वे चिल्लाए, "यह कैसा जंगली बंदर है! इसमें इतनी धृष्टता है कि यह 'मैं' कहकर जवाब दे रहा है, और वह भी बिना पहले प्रणाम किए! इसे मरना ही होगा!"
इसके जवाब में जेड सम्राट ने घोषणा की, "सन वुकॉन्ग निम्न लोक का एक दानव अमर है जिसने अभी-अभी मानव रूप धारण किया है, इसलिए वह दरबारी प्रक्रियाओं से परिचित नहीं है। हम उसे इस बार क्षमा कर देते हैं।"
अमर मंत्रियों ने कहा, "हम आपकी दया के लिए आभारी हैं।" तभी सन वुकॉन्ग ने झुककर और ज़ोर से "ना-आ-आ" का उच्चारण करके अपना आदर व्यक्त किया। जेड सम्राट ने अपने अमर नागरिक और सैन्य अधिकारियों को आदेश दिया कि वे सन वुकॉन्ग के लिए किसी विभाग में रिक्ति खोजें।
स्टार लॉर्ड वुक्वु बगल से आगे बढ़े और सूचना दी, "शाही अस्तबल में एक अधीक्षक के पद को छोड़कर स्वर्ग के किसी भी महल, हॉल और विभाग में कोई रिक्त पद नहीं है।"
“तो फिर उसे घोड़ों का रक्षक बना दो,” जेड सम्राट ने आदेश दिया। सभी मंत्रियों ने उनकी दया के लिए धन्यवाद दिया, सिवाय सन वुकॉन्ग के, जिसने केवल ज़ोर से “ना-आ-आ” कहकर अपना आदर व्यक्त किया। फिर जेड सम्राट ने लकड़ी ग्रह को उसे शाही अस्तबल ले जाने का आदेश दिया।

अध्याय 4

50

पश्चिम की यात्रा

वन ग्रह के निवासी प्रसन्न बंदर राजा के साथ उनके पद तक गए और फिर महल लौट आए। बंदर राजा ने अपने विभाग के कर्तव्यों के बारे में जानने के लिए उप-अधीक्षक, सहायक अधीक्षक, लेखापाल, घोड़ों की देखभाल करने वाले और सभी उच्च-निम्न अधिकारियों को बुलाया। उन्हें पता चला कि उन्हें एक हजार दिव्य घोड़ों की देखभाल करनी है।

शाहबलूत और घोड़े,
कर्सर और चार्जर:
ड्रैगन और बैंगनी निगल,
पेगासस और सुशुन,
जुएटी और सिल्वर,
याओनियाओ और फ्लाइंग येलो,
ताओतु और पंख,
रेड हेयर और फास्टर दैन लाइट
डैज़लर और होराइजन,
मिस्ट-सोअरर और विक्ट्री;
हवा का पीछा करने वाला और बेजोड़,
उड़ता पंख और सरपट दौड़ता कोहरा,
आलसी बवंडर और लाल बिजली,
ब्रॉन्ज़ कप और ड्रिफ्टिंग क्लाउड
स्क्यूबाल्ड और टाइगर-स्ट्राइप,
धूल रहित और बैंगनी रंग के शल्क,
फरगाना के चार घोड़े,
आठ चार्जर और नौ गैलपर,
ऐसे विमान जो तीन सौ मील की दूरी तय कर सकते हैं– –
ये सभी बेहतरीन घोड़े थे
हवा में हिनहिनाते हुए, बिजली का पीछा करते हुए, आत्मा में शक्तिशाली; कोहरे को

चीरते हुए, बादलों पर चढ़ते हुए, अपनी शक्ति में महान।
अध्याय 4
51
पश्चिम की यात्रा
बंदरों के राजा ने रजिस्टर देखा और घोड़ों की गिनती की। अस्तबलों में, लेखापाल चारे का ऑर्डर देने के लिए ज़िम्मेदार था, मुख्य अस्तबल का कर्मचारी घोड़ों की देखभाल, चारा काटने और पकाने, और उन्हें पानी पिलाने का काम करता था; उप अधीक्षक और उसका सहायक काम की देखरेख में मदद करते थे। घोड़ों का रक्षक दिन-रात सोए बिना अपने घोड़ों की देखभाल करता था। यह सच है कि वह दिन में मौज-मस्ती करता था, लेकिन रात में वह जानवरों की बड़ी लगन से देखभाल करता था, जब भी वे सो जाते थे तो उन्हें जगाकर खाना खिलाता था, और जो अभी भी चल रहे होते थे उन्हें चारागाह तक ले जाता था। उसे देखते ही स्वर्ग के घोड़े अपने कान खड़े कर लेते और ज़मीन पर पैर पटकने लगते, और वे मोटे-ताज़े हो जाते। इस तरह आधा महीना बीत गया।
एक दिन सुबह जब छुट्टी का दिन था, अस्तबल के सभी अधिकारियों ने घोड़ों के रक्षक का स्वागत और अभिनंदन करने के लिए एक भोज का आयोजन किया।
पार्टी के बीच में ही बंदर राजा ने अचानक अपना प्याला नीचे रख दिया और पूछा, "यह किस तरह का कार्यालय है?"
'घोड़ों का रक्षक?'
"नाम से जो पता चलता है, बस वही बात है।"
"इसका आधिकारिक ग्रेड क्या है?"
"अवर्गीकृत।"
"'अवर्गीकृत' का क्या अर्थ है?"
"सबसे निचला पद," बाकी लोगों ने जवाब दिया और आगे समझाया, "यह बहुत ही नीचा और महत्वहीन पद है, और इसमें आपका काम सिर्फ घोड़ों की देखभाल करना है। यहां तक कि अगर कोई व्यक्ति आपकी तरह लगन से काम करे और घोड़ों को इतना मोटा-ताज़ा कर दे, तो उसे 'अच्छा' कहने से ज़्यादा कुछ इनाम नहीं मिलेगा; और अगर कुछ भी गड़बड़ हुई तो आपको ज़िम्मेदार ठहराया जाएगा, और अगर नुकसान गंभीर हुआ तो आप पर जुर्माना लगाया जाएगा और सज़ा दी जाएगी।"

यह सुनकर बंदरों का राजा भड़क उठा, उसने दांत पीसे और भयंकर क्रोध से बोला, "उनकी हिम्मत कैसे हुई मेरे साथ ऐसा अपमानजनक व्यवहार करने की? मैं पुष्प और फल पर्वत का राजा और मुखिया हूँ। उसकी हिम्मत कैसे हुई मुझे यहाँ अपने घोड़ों को चारा खिलाने के लिए बुलाने की? यह काम तो नौजवानों का है, मेरा नहीं। मैं यह नहीं करूँगा, बिलकुल नहीं।"

मैं वापस जा रहा हूँ।" उसने मेज को धड़ाम से गिरा दिया, अपने कान से अपना खजाना निकाला और उसे हिलाया। वह चावल के कटोरे जितना मोटा हो गया, और उसे लहराते हुए वह शाही अस्तबल से निकलकर स्वर्ग के दक्षिणी द्वार की ओर दौड़ पड़ा। चूंकि स्वर्ग के रक्षकों को पता था कि उसका नाम अमर अधिकारियों की सूची में दर्ज है, इसलिए उन्होंने उसका रास्ता रोकने की हिम्मत नहीं की और उसे द्वार से बाहर जाने दिया।

वह बादल से उतरा और पलक झपकते ही फूलों और फलों के पर्वत पर वापस आ गया। वहाँ चारों वीर सेनापतियों और सभी राक्षसों के राजाओं को अपनी सेनाओं का प्रशिक्षण करते देख उसने तीखी आवाज में चिल्लाया,

"बच्चों, मैं वापस आ गया हूँ।" सभी बंदरों ने उन्हें प्रणाम किया, उन्हें गुफा के भीतरी भाग में ले गए और उन्हें उनके सिंहासन पर बैठने के लिए कहा, जबकि उन्होंने उनके स्वागत के लिए एक भोज तैयार किया।

"महामहिम, आपको बहुत-बहुत बधाई," उन सभी ने कहा। "वहाँ एक दर्जन से अधिक वर्षों के बाद, आप निश्चित रूप से गौरव और विजय के साथ लौट रहे होंगे।"

"तुम्हारा मतलब क्या है, एक दर्जन से ज़्यादा साल?" बंदरों के राजा ने पूछा। "मैं तो बस दो हफ्ते के लिए ही दूर गया था।"

"महामहिम, आपने स्वर्ग में समय बीतने का अनुभव नहीं किया होगा। स्वर्ग में एक दिन उतना ही लंबा होता है जितना पृथ्वी पर एक वर्ष।"

क्या हम आपसे पूछ सकते हैं कि आपने कौन सा पद संभाला था?

अध्याय 4

52

पश्चिम की यात्रा

"यह बात आपको बताते हुए मुझे दुख हो रहा है," बंदरों के राजा ने हाथ हिलाते हुए उत्तर दिया। "मैं पूरी तरह से अपमानित महसूस कर रहा हूँ।"

उस जेड सम्राट को अच्छे आदमी का सही इस्तेमाल करना नहीं आता। मुझ जैसे आदमी का—'घोड़ों का रक्षक'। इसका मतलब था कि मुझे उसके जानवरों को चारा खिलाना पड़ता था और मुझे कोई आधिकारिक पदवी भी नहीं दी गई थी। पहले तो मुझे यह पता नहीं था, इसलिए मैं शाही अस्तबल में समय बर्बाद करता रहा, आज तक जब तक कि मुझे अपने साथियों से पता नहीं चला कि यह काम कितना नीचा है। मुझे इतना गुस्सा आया कि मैंने मेज पलट दी और नौकरी छोड़ दी। इसीलिए मैं वापस आया हूँ।

“बिल्कुल सही,” दूसरे बंदरों ने कहा। “महाराज हमारे गुफाओं वाले स्वर्ग में राजा बन सकते हैं और जितना चाहें उतना सम्मान और आनंद ले सकते हैं, तो फिर उनके सेवक बनने की क्या ज़रूरत है?” फिर उन्होंने राजा को प्रसन्न करने के लिए तुरंत शराब लाने का आदेश दिया।

जब वे शराब पी रहे थे तभी कोई अंदर आकर सूचना देने लगा, "महाराज, बाहर दो सींग वाले शैतान राजा हैं जो आपसे मिलना चाहते हैं।"

"उन्हें अंदर बुलाओ," बंदर राजा ने कहा, और औपचारिक पोशाक पहने दोनों राक्षस राजा गुफा में जल्दी से घुस गए और प्रणाम किया।

“तुम मुझसे मिलने क्यों आए हो?” सुंदर बंदर राजा ने पूछा; और उन्होंने उत्तर दिया, “हमने बहुत समय से सुना है कि महाराज प्रतिभाशाली पुरुषों की तलाश में हैं, लेकिन हम आपसे पहले मिल नहीं पाए। अब जब महाराज को स्वर्ग का पद मिल गया है और आप विजयी होकर वापस आ गए हैं, तो हम आपको बधाई के प्रतीक के रूप में यह पीला वस्त्र भेंट करना चाहते हैं। हमें आशा है कि आप हमें अस्वीकार नहीं करेंगे, यद्यपि हम दीन और अयोग्य हैं, बल्कि हमारी विनम्र सेवाओं को स्वीकार करेंगे।” प्रसन्न बंदर राजा ने पीला वस्त्र धारण किया और उनकी प्रसन्न प्रजा ने वरीयता क्रम में उन्हें प्रणाम किया। दोनों राक्षस राजाओं को अग्रभूमि का सेनापति नियुक्त किया गया, और बंदर राजा को धन्यवाद देने के बाद उन्होंने पूछा, “जब आप इतने समय तक स्वर्ग में थे, तब आपने कौन सा पद संभाला था?”

“जाद सम्राट प्रतिभा का सम्मान नहीं करता,” बंदर राजा ने उत्तर दिया। “उसने मुझे कुछ ऐसा दिया जिसे कहते हैं

'घोड़ों का रक्षक।'

"महाराज, आपके पास तो ऐसी चमत्कारी शक्तियां हैं: आपको तो उनके घोड़ों को

चारा नहीं खिलाना चाहिए था। आपको तो 'स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि' बनाया जाना चाहिए था, है ना?" इस सुझाव से वानर राजा अत्यंत प्रसन्न हो उठा और बार-बार इसकी प्रशंसा करने लगा।

“तुरंत एक झंडा बनवाओ जिस पर बड़े अक्षरों में ‘स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि’ लिखा हो, और उसे टांगने के लिए एक खंभा लगाओ,” उसने अपने चार वीर सेनापतियों को आदेश दिया। “अब से मुझे ‘स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि’ कहा जाएगा, न कि ‘महामहिम’ या ‘राजा’। यह आदेश सभी अन्य राक्षसी राजाओं को भी पहुंचा दो।” हम यहीं पर अपनी बात समाप्त करते हैं।

अगले दिन जब जेड सम्राट ने सुबह अपना दरबार लगाया, तो स्वर्गीय शिक्षक झांग ने शाही अस्तबल के उप-अधीक्षकों और सहायक अधीक्षकों को लाल रंग की सीढ़ियों पर ले जाकर, झुककर प्रणाम किया और बताया, "महाराज, घोड़ों के नए रक्षक, सन वुकॉन्ग, कल स्वर्ग छोड़कर चले गए क्योंकि उन्हें लगा कि उनका पद बहुत ही तुच्छ है।"

जब वह बोल ही रहे थे कि स्वर्ग के रक्षक विरुधका अपने दिव्य सैनिकों के साथ स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से आए और सूचना दी, "घोड़ों के रक्षक द्वार से बाहर चले गए हैं। हमें नहीं पता कि क्यों।"

यह सुनकर जेड सम्राट ने आदेश दिया, "दोनों दिव्य अधिकारियों को अपने-अपने पदों पर वापस भेज दो; हम इस शैतान को पकड़ने के लिए स्वर्गीय सैनिकों को भेजेंगे।"

अध्याय 4

53

पश्चिम की यात्रा

पैगोडा धारण किए हुए स्वर्ग के राजा ली जिंग और राजकुमार नेझा, उपस्थित लोगों की कतारों से आगे बढ़े और उन्होंने विनती की, "महाराज, हम आपसे निवेदन करते हैं कि आप हमें, अपने अयोग्य सेवकों को, इस राक्षस को वश में करने का आदेश दें।" सम्राट इस सुझाव से प्रसन्न हुए और उन्होंने पैगोडा धारण किए हुए स्वर्ग के राजा को दानव संहार का उच्च सेनापति और राजकुमार नेझा को सागरों का महान देवता नियुक्त किया। उन्होंने उन्हें तुरंत अपनी सेनाओं को पाताल लोक में ले जाने का आदेश दिया।

स्वर्ग के राजा ली और नेझा ने प्रणाम किया, विदा ली, सीधे अपने महल लौट गए

और अपनी सेना, सेनापतियों और अधिकारियों को इकट्ठा किया। उन्होंने शक्तिशाली चमत्कारिक देवता को अग्रिम पंक्ति का नेतृत्व सौंपा, जनरल फिशबेली को पीछे की कमान दी, जबकि जनरल यक्ष को सहायक बनाया गया। पलक झपकते ही वे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के बाहर थे और सीधे पुष्प-फल पर्वत की ओर चल पड़े। उन्होंने एक समतल और खुली जगह चुनी जहाँ उन्होंने एक किलेबंद शिविर का निर्माण किया और शक्तिशाली चमत्कारिक देवता को युद्ध की चुनौती देने का आदेश दिया। यह आदेश मिलते ही शक्तिशाली चमत्कारिक देवता ने अपना कवच मजबूती से पहना और अपने पुष्प-प्रसारित युद्ध-कुल्हाड़ी को पकड़े हुए जल-परदे की गुफा की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने गुफा के छोटे से प्रवेश द्वार के बाहर बड़ी संख्या में राक्षसों—भेड़ियों, बाघों और तेंदुओं—को भाले चलाते, तलवारें लहराते, उछलते-कूदते, आपस में लड़ते और शोर मचाते देखा।

“शापित प्राणियों,” सर्वशक्तिमान चमत्कारिक देवता ने गरजते हुए कहा, “घोड़ों के रक्षक को तुरंत बता दो कि मैं स्वर्ग का सेनापति हूँ, जो जेड सम्राट के आदेश पर उसे वश में करने आया हूँ। यदि तुम उसे तुरंत बाहर आकर आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दोगे, तो तुम सब विनाश से बच जाओगे।”

शैतान दौड़ते हुए गुफा में घुस गए और बोले, "विपदा, विपदा।"

"कौन सी आपदा?" बंदरों के राजा ने पूछा।

"बाहर एक दिव्य सेनापति है जो कहता है कि वह जेड सम्राट के आदेश पर तुम्हें वश में करने आया है। अगर तुम तुरंत बाहर जाकर आत्मसमर्पण कर दोगे, तो वह कहता है कि वह हमारी जान बख्श देगा।"

“मेरा कवच लाओ,” बंदर राजा ने कहा। फिर उसने अपना सुनहरा हेलमेट पहना, अपना सुनहरा कवच बांधा, अपने बादल पर चलने वाले जूते पहने और अपने हाथ में अपनी इच्छा के अनुरूप सोने की पट्टी वाली गदा उठाई। वह अपनी सेना को गुफा से बाहर ले गया और उन्हें युद्ध की पंक्ति में खड़ा किया। शक्तिशाली चमत्कारिक देवता ने उत्कृष्ट बंदर राजा को बड़ी-बड़ी आँखों से देखा:

उसके शरीर पर चमकीला सुनहरा कवच था।

उसके सिर पर एक चमकदार सुनहरा हेलमेट था।

उसके हाथ में सोने की पट्टी वाली गदा थी।

उसके पैरों में मैचिंग क्लाउड-वॉकिंग शूज़ की एक जोड़ी थी।

उसकी शैतानी आंखें तारों की तरह चमक रही थीं।
उसके कान लंबे और सख्त थे।
उसके मजबूत शरीर को इच्छानुसार रूपांतरित किया जा सकता था।
उनकी आवाज घंटी की तरह स्पष्ट सुनाई दी।
नुकीले मुंह वाला, बाहर निकले दांतों वाला घोड़ा रक्षक
अध्याय 4
54
पश्चिम की यात्रा
मैं स्वर्ग के समान ऋषि बनना चाहता था।
सर्वशक्तिमान चमत्कारिक देवता ने कठोर स्वर में चिल्लाकर कहा, "अहंकारी बंदर! क्या तू मुझे पहचानता नहीं?"
महान ऋषि सन वुकॉन्ग ने तुरंत उत्तर दिया, "मैं तुमसे पहले कभी नहीं मिला। मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम कौन से तुच्छ देवता हो? मुझे अपना नाम तुरंत बताओ।"
"मैं तुम्हें सबक सिखाऊंगा, घमंडी बंदर। तो तुम्हें नहीं पता मैं कौन हूँ? मैं स्वर्ग का महापुरुष शक्तिशाली चमत्कार हूँ, स्वर्ग के राजा ली, शिवालय-वाहक के अग्रिम दस्ते का सेनापति। मैं जेड सम्राट के आदेश पर तुम्हारा आत्मसमर्पण स्वीकार करने आया हूँ। तुरंत अपना कवच उतार दो और स्वर्ग की दया के आगे झुक जाओ, वरना मैं पहाड़ के हर जानवर को नष्ट कर दूंगा। और अगर तुमने इनकार करने का जरा सा भी इशारा किया, तो मैं तुम्हें चूर-चूर कर दूंगा।"
"बड़ी-बड़ी बातें करना बंद करो, निकम्मे देवता," क्रोधित वानर राजा ने उत्तर दिया, "और अपनी उस लंबी ज़बान को आराम दो। मेरा मन करता है कि मैं तुम्हें अपने इस डंडे से मार डालूँ, लेकिन अगर मैंने ऐसा किया तो मेरा संदेश पहुँचाने वाला कोई नहीं होगा, इसलिए मैं तुम्हारी जान बख्श रहा हूँ। जल्दी स्वर्ग लौट जाओ और उस जेड सम्राट को बता दो कि उसे अच्छे आदमी का इस्तेमाल करना नहीं आता। उसने मुझे अपनी असीम शक्तियाँ उसके घोड़ों को खिलाने में क्यों बर्बाद करवाईं? मेरे ध्वज पर क्या लिखा है, उसे देखो। अगर वह मुझे आधिकारिक तौर पर यह उपाधि देने को तैयार है, तो मैं अपनी सेना वापस बुला लूँगा और स्वर्ग और पृथ्वी को शांति से रहने दूँगा; लेकिन अगर वह इनकार करता है तो मैं चमत्कारी धुंध के हॉल में आकर उसे उसके अजगर सिंहासन से उतार दूँगा।" जब शक्तिशाली चमत्कारिक देवता ने यह

सुना तो उसने गौर से देखा कि गुफा के प्रवेश द्वार के बाहर एक लंबा खंभा गाड़ा गया था, जिस पर 'महान ऋषि' लिखा हुआ एक बैनर लटका हुआ था।
स्वर्ग के समान।
"हेह, हेह, हेह," उसने उपहास उड़ाते हुए कहा, "अज्ञानी बंदर! 'स्वर्ग के समर्थ महान ऋषि' बनने की चाहत रखना कितनी बेशर्मी है! ले लो!" उसने अपनी कुल्हाड़ी से बंदर राजा पर प्रहार किया, जो बिल्कुल भी विचलित हुए बिना अपने सोने की पट्टी वाले डंडे से वार को रोकते रहे। यह एक शानदार लड़ाई थी।
उस लाठी का नाम 'जैसा चाहो' था।
उस कुल्हाड़ी का नाम 'फूल फैलाने वाली' रखा गया था।
जैसे ही दोनों मिले,
यह बताना मुश्किल था कि कौन सा बेहतर था:
कुल्हाड़ी और गदा
आपस में जुड़े हुए।
एक व्यक्ति अपनी जादुई शक्तियों को छिपा रहा था।
उनमें से एक बड़ा-बड़ा शेखीबाज था।
उन्होंने अपने जादू का इस्तेमाल किया
धुंध और बादल को बाहर निकालना;
अध्याय 4
55
पश्चिम की यात्रा
जब उन्होंने अपने हाथ खोले
उन्होंने रेत और धूल बिखेर दी।
वह दिव्य सेनापति जादू का उस्ताद था;
बंदर राजा अनगिनत बदलाव कर सकता था।
जब लाठी उठाई गई तो ऐसा लगा जैसे कोई अजगर पानी में खेल रहा हो; जब कुल्हाड़ी नीचे आई तो ऐसा लगा जैसे कोई फीनिक्स फूलों के बीच खिल उठा हो।
हालांकि चमत्कार की प्रसिद्धि पूरी दुनिया में फैली हुई थी,
उसकी कुशलता उसके दुश्मन के सामने कुछ भी नहीं थी।
यदि महान ऋषि ने अपनी गदा को हल्के से घुमाया,

महज छूने भर से ही लकवा मार जाता था।
शक्तिशाली चमत्कारिक देवता अपने प्रतिद्वंद्वी के सामने टिक नहीं पाए। उन्होंने बंदर राजा के पहले वार को रोकने के लिए अपनी कुल्हाड़ी से तुरंत हमला किया, जो चटकने की आवाज़ के साथ दो टुकड़ों में टूट गई। वे अपनी जान बचाने के लिए तेज़ी से भागे, और बंदर राजा ने उपहास करते हुए कहा, "अरे मवाद के थैले, इस बार मैं तुझे छोड़ रहा हूँ। मेरा संदेश लेकर जल्दी लौट आना, और इस बार तेज़ी से आना।"
शक्तिशाली चमत्कारिक देवता अपने शिविर में लौटे, सीधे शिवालय धारण किए हुए स्वर्ग के राजा ली जिंग के पास गए, उनके सामने घुटने टेके और एक अजीब सी हंसी के साथ बोले, "घोड़ों के रक्षक के पास सचमुच अद्भुत जादुई शक्तियां हैं। मैं उनका मुकाबला नहीं कर सका। उन्होंने मुझे हरा दिया, और अब मैं अपना दंड भुगतने आया हूँ।"
"इस मूर्ख ने हमारा मनोबल गिरा दिया है," स्वर्ग के राजा ली ने क्रोध में कहा। "इसे यहाँ से ले जाओ और इसका सिर काट दो।"
राजकुमार नेझा, जो एक तरफ खड़े थे, आगे बढ़े, प्रणाम किया और बोले, "महाराज, क्रोधित न हों। सर्वशक्तिमान चमत्कारिक देवता को क्षमा कर दीजिए और मुझे युद्ध में जाने दीजिए; तब पता चलेगा कि कौन श्रेष्ठ है।" स्वर्ग के राजा ने उनकी सलाह मान ली और सर्वशक्तिमान चमत्कारिक देवता को आदेश दिया कि वे वापस जाकर शिविर की देखरेख करें, जबकि वे अपने दंड की प्रतीक्षा कर रहे थे।
कवच और हेलमेट पहनने के बाद, राजकुमार नेझा शिविर से सीधे जल परदे की गुफा की ओर दौड़ा। सुन वुकॉन्ग, जो अपनी सेना को वापस बुलाने ही वाला था, ने उसके आक्रमण की भयंकरता देखी।
वह कितना उत्तम राजकुमार था!
उसके सिर के बाल गुच्छों में हैं और मुश्किल से ही उसकी खोपड़ी को ढक पाते हैं।
उसका लबादा उसके कंधों पर नहीं था।
उनकी बुद्धिमत्ता कितनी अद्भुत है!
अध्याय 4
56
पश्चिम की यात्रा
उनका अंदाज़ कितना शालीन है!

वास्तव में वह स्वर्ग में एक यूनिकॉर्न की संतान है;
वास्तव में वह बादलों से आया एक अमर फीनिक्स है।
ड्रैगन की नस्ल आम ड्रैगनों से अलग होती है;
यह प्रतिभाशाली युवक आम मनुष्यों जैसा बिल्कुल नहीं है।
वह अपने साथ छह दिव्य हथियार रखता है;
हवा में उड़ते हुए उसके रूप-परिवर्तन अनंत हैं।
अब उन्हें जेड सम्राट के मुख से एक फरमान प्राप्त हुआ है।
उन्हें जनमानस के तीनों मंदिरों का सेनापति बनाया गया।
सन वुकॉन्ग उसके पास गया और पूछा, "तुम किसके छोटे लड़के हो? मेरे दरवाजे पर आने का तुम्हारा क्या मतलब है?"
"बदबूदार बंदर राक्षस," राजकुमार नेझा चिल्लाया, "क्या तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ? मैं नेझा हूँ, शिवालय धारण करने वाले स्वर्ग के राजा का तीसरा पुत्र, और मुझे जेड सम्राट ने यहाँ आकर तुम्हें गिरफ्तार करने का आदेश दिया है।"
“तुम बड़ी-बड़ी बातें करते हो, है ना नन्हे राजकुमार,” सन वुकॉन्ग ने उस पर हंसते हुए कहा। “लेकिन चूंकि तुम्हारे अभी भी सारे दूध के दांत हैं और तुम अभी नासमझ हो, इसलिए मैं तुम्हारी जान बख्श दूंगा और तुम्हें मारूंगा नहीं। क्या तुम मेरे झंडे पर लिखा देख रहे हो? जाओ और जेड सम्राट से कहो कि अगर वह मुझे वह उपाधि दे दें, तो मैं अपनी सेना वापस बुला लूंगा और एक बार फिर उनके सामने आत्मसमर्पण कर दूंगा। लेकिन अगर वह मेरी बात नहीं मानते, तो मैं चमत्कारी धुंध के हॉल पर जरूर हमला करूंगा।” नेझा ने ऊपर देखा और उसे “महान ऋषि स्वर्ग के समान” शब्द दिखाई दिए।
"अरे दुष्ट बंदर! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई खुद को ऐसी उपाधि देने की, चाहे तुम्हारी जादुई शक्तियां कुछ भी हों!"
चिंता मत करो, तुम्हें सिर्फ मेरी तलवार मिलेगी।"
"तो मुझे कुछ वार करने दो," सन वुकॉन्ग ने जवाब दिया, "मैं हिलूंगा नहीं।"
"बदलो!" नेझा ने क्रोध में चिल्लाते हुए कहा और देखते ही देखते उसके तीन सिर और छह भुजाएँ हो गईं, जिससे वह अत्यंत भयंकर दिखने लगा। उसके हाथों में छह हथियार थे: एक राक्षस-काटने वाली तलवार, एक राक्षस-काटने वाली कटार, एक राक्षस-बांधने वाली रस्सी, एक राक्षस-शांत करने वाला मूसल, एक कढ़ाईदार गेंद और

एक अग्नि-चक्र। इन सभी हथियारों को चलाते हुए वह सीधे सन वुकॉन्ग की ओर दौड़ा।

उसे देखते ही सन वुकॉन्ग आश्चर्य से बोला, "वाह, मेरे बालक, तुम तो वाकई एक-दो तरकीबें जानते हो। लेकिन बस संभलकर रहो और देखो मैं क्या कर सकता हूँ।" हमारे प्रिय महान ऋषि ने "रूप बदलो" कहा और उनके भी तीन सिर और छह भुजाएँ हो गईं। उन्होंने अपनी सोने की पट्टी वाली गदा हिलाई और वह तीन गदाओं में बदल गई, जिन्हें उन्होंने अपने छह हाथों से पकड़कर नेझा के वारों को रोका। यह एक भयंकर युद्ध था, जिससे धरती काँप उठी और पहाड़ थरथरा उठे।

अध्याय 4

57

पश्चिम की यात्रा

छह भुजाओं वाला राजकुमार नेझा
स्वर्ग से जन्मा बंदर राजा:
बराबरी के प्रतिद्वंद्वी,
दोनों एक ही कक्षा में हैं।
एक व्यक्ति को किसी मिशन पर निचले लोक में भेजा गया,
दूसरा खुद को लड़ाकू बैल समझता था।
राक्षस का सिर काटने वाली तलवार की नोक तेजी से हिलती है।
और दुष्ट आत्माएं दानवों को चीरने वाली तलवार से डरती हैं।
राक्षस को बांधने वाली रस्सी अजगर की तरह उड़ती है,
जबकि राक्षस-नाशक मूसल का सिर भेड़िये जैसा है,
अग्निचक्र बिजली की तरह चमकता है।
और कढ़ाई वाली गेंद हर जगह जाती है।
महान ऋषि के तीन "जैसा चाहो" वाले डंडे
अत्यंत कुशलता से बचाव और प्रहार करें।
हालांकि कई कड़े मुकाबले अनिर्णायक साबित होते हैं,
राजकुमार ने युद्ध रद्द करने से इनकार कर दिया;
अपने छह हथियारों की संख्या में कई गुना वृद्धि करते हुए,
वह लाखों की संख्या में उन्हें बंदर राजा के सिर पर फेंक देता है।

लेकिन निडर बंदर राजा जोर से हंसता है।
जैसे ही उसके लोहे के क्लब घूमने लगते हैं और अपने आप सोचने लगते हैं।
एक हजार हो जाता है; एक हजार, दस;
उनका उग्र नृत्य आकाश को ऐसे भर देता है मानो उसमें अजगर भरे हों।
सभी राक्षस राजाओं ने भयवश अपने द्वार बंद कर लिए;
पहाड़ पर रहने वाला हर जिन्न छिपने के लिए कोई न कोई जगह ढूंढ ही लेता है।
आकाशीय सेनाओं का क्रोध बादलों की तरह काला था;
हवा की तरह सीटी बजाते हुए, सोने की पट्टियों वाले डंडे।
अध्याय 4
58
पश्चिम की यात्रा
एक तरफ,
स्वर्गदूतों की रक्तरंजित कर देने वाली युद्ध-घोषणाएँ।
दूसरे पर,
बंदरों के उन दुष्टों के रोंगटे खड़े कर देने वाले झंडे।
दोनों पक्षों में लड़ने का साहस बराबर है;
इनमें से किसी को भी विजेता नहीं कहा जा सकता।
राजकुमार नेझा और सन वुकॉन्ग दोनों ने अपनी दैवीय शक्तियों का पूरा इस्तेमाल करते हुए तीस दौर तक लड़ाई लड़ी। जब राजकुमार के छह हथियार हजारों और लाखों में बदल गए, तो सन वुकॉन्ग की सोने की पट्टी वाली गदा भी उसी तरह बदल गई। हवा में मानो बारिश की बूँदें या टूटते तारे बरस रहे थे, और यह बताना असंभव था कि कौन जीत रहा है। सन वुकॉन्ग अपने कुशल हाथों और तेज निगाहों के कारण, लड़ाई के बीच में ही अपने शरीर से एक बाल खींचकर चिल्लाया, "रूप बदलो!" वह बाल उसके ही हमशक्ल में बदल गया ताकि नेझा को गुमराह कर सके, जबकि उसका असली रूप उछलकर उसके पीछे आ गया और उसके बाएं कंधे पर वार किया। नेझा एक मंत्र का जाप कर रहा था जब उसने गदा की सीटी सुनी और जितनी जल्दी हो सके मुड़ गया। लेकिन वह वार से बच नहीं सका और घायल होकर भागना पड़ा। उसने अपना जादू समाप्त किया, अपने छह हथियार रख दिए, अपने असली रूप में लौट आया और हार मानकर युद्ध का मैदान छोड़ दिया।

यह सब स्वर्ग के राजा ली ने देखा था, जो अतिरिक्त सेना भेजने ही वाले थे कि तभी उनका पुत्र उनके सामने प्रकट हुआ और भयभीत एवं कांपते हुए बोला, "पिताजी, घोड़ों का रक्षक बहुत शक्तिशाली है। मेरी जादूगरी उससे कमतर साबित हुई और उसने मुझे कंधे में घायल कर दिया है।"

भयभीत स्वर्गिक राजा के चेहरे का रंग उड़ गया और उसने कहा, "अगर उस प्राणी के पास ऐसी जादुई शक्तियां हैं, तो हम उसे कैसे हराएंगे?"

"गुफा के द्वार के बाहर," राजकुमार ने आगे बताया, "एक खंभे पर एक बैनर लगा है जिस पर लिखा है 'महान ऋषि जो स्वर्ग के समान हैं'। उसने शेखी बघारी कि अगर जेड सम्राट उसे यह उपाधि दे दें तो वह सब कुछ रद्द कर देगा; अन्यथा उसने कहा कि वह चमत्कारी धुंध के हॉल पर हमला करेगा।"

“तो फिर,” स्वर्ग के राजा ने कहा, “हम अभी पीछे हटते हैं, स्वर्ग लौटते हैं और इस दुष्ट को पकड़ने के लिए और अधिक स्वर्गीय सेना भेजने का अनुरोध करते हैं। अभी बहुत समय है।” दर्द से कराहते और आगे लड़ने में असमर्थ राजकुमार स्वर्ग के राजा के साथ स्वर्ग लौट गया और यह अनुरोध किया, लेकिन फिलहाल इसके बारे में और कुछ नहीं कहा गया।

देखिए कैसे बंदरों का राजा विजय के साथ पर्वत पर लौटता है और वहां उसे 72 राक्षस राजाओं और उसके छह शपथधारी भाइयों से बधाई मिलती है। गुफा के स्वर्ग में खूब दावत और गीत-संगीत का माहौल था। सन वुकॉन्ग ने अपने छह शपथधारी भाइयों से कहा, "जिस प्रकार मैंने स्वयं को स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि कहा है, तुम सब भी स्वयं को महान ऋषि कह सकते हो।"

"माननीय भाई, आप सही कह रहे हैं," बैल दानव राजा दहाड़ा। "मैं स्वयं को महान ऋषि (स्वर्ग के अनुरूप) कहूंगा।"

"मैं समुद्र को उलट देने वाला महान ऋषि बनूंगा," सैलामैंडर दानव राजा ने कहा।

"मैं वह महान ऋषि बनूंगा जो स्वर्ग में अफरा-तफरी मचा देगा," रोक दानव राजा ने कहा।

अध्याय 4

59

पश्चिम की यात्रा

"मैं पहाड़ों को हिलाने वाला महान ऋषि बनूंगा," ऊंट दानव राजा ने कहा।

"मैं वह महान ऋषि बनूंगा जो हवा के साथ यात्रा करता है," मकाक राजा ने कहा।
"और मैं देवताओं को भगाने वाला महान ऋषि बनूंगा," शेर राजा ने कहा। फिर सातों महान ऋषियों ने अपनी इच्छा अनुसार स्वयं को उपाधियाँ दे दीं और दिन भर मौज-मस्ती करने के बाद घर चले गए।
स्वर्गिक राजा ली और राजकुमार नेझा अपनी सेनाओं के साथ सीधे चमत्कारिक धुंध के महल में पहुँचे और यह निवेदन किया: "हम, आपकी प्रजा, आपके दिव्य आदेश के तहत अमर राक्षस सन वुकॉन्ग को वश में करने के लिए अपनी सेनाओं को पाताल लोक में लाए थे। लेकिन हमें आश्चर्य हुआ कि उसकी जादुई शक्तियाँ इतनी व्यापक थीं कि हम उसे परास्त नहीं कर सके। इसलिए हम आशा करते हैं कि महाराज आपको उसे नष्ट करने के लिए और अधिक सैनिक भेजेंगे।"
"एक साधारण बंदर जैसे राक्षस के पास इतनी महान शक्तियां कैसे हो सकती हैं कि आपको वास्तव में और अधिक सैनिकों की आवश्यकता पड़े?" जेड सम्राट ने पूछा।
इसके बाद राजकुमार नेझा आगे आए और उन्होंने विनती की, "हम आपसे विनती करते हैं कि हमें उन मौतों से बचाएं जिनके हम हकदार हैं।"
उस बंदर जैसे दुष्ट के पास लोहे का डंडा है जिससे उसने शक्तिशाली चमत्कारिक देवता को हराया था और मुझे कंधे पर घायल कर दिया था। उसने अपनी गुफा के प्रवेश द्वार के बाहर एक बैनर लगाया है जिस पर लिखा है 'महान ऋषि स्वर्ग के समान', और वह कहता है कि यदि आप उसे यह पद दे देंगे तो वह लड़ना बंद कर देगा और आत्मसमर्पण कर देगा; अन्यथा वह चमत्कारिक धुंध के हॉल पर हमला कर देगा।
जब जेड सम्राट ने यह सुना तो वह भयभीत होकर बोला, "उस बंदर जैसे दुष्ट की इतनी अभद्र बातें करने की हिम्मत कैसे हुई? सभी सेनापतियों को भेजकर उसे तुरंत मार डालो।"
जैसे ही उसने बोलना शुरू किया, महान श्वेत ग्रह अधिकारियों की कतारों से आगे बढ़ा। उसने सुझाव दिया, "वह बंदर जैसा दुष्ट बोलना तो जानता है, पर उसे असली शक्ति का कोई ज्ञान नहीं है। अगर उससे लड़ने के लिए और सैनिक भेजे गए, तो शायद वे उसे एक बार में हरा न पाएं और उनकी सारी ऊर्जा व्यर्थ हो जाएगी। लेकिन अगर महाराज, आप अपनी अपार दया दिखाएं, तो आप उसे क्षमादान भेजकर उसे स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि बना सकते हैं। यह केवल एक खोखली उपाधि होगी, एक मानद नियुक्ति।"

"मानद नियुक्ति से आपका क्या तात्पर्य है?" जेड सम्राट ने पूछा।
"उन्हें स्वर्ग के समर्थ महान ऋषि कहा जाएगा, लेकिन उन्हें कोई जिम्मेदारी नहीं दी जाएगी और न ही कोई वेतन दिया जाएगा। उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी के बीच रखा जाएगा, जहाँ उनकी दुष्टता नियंत्रण में रहेगी और उन्हें दुष्टता से दूर रखा जाएगा। इस प्रकार स्वर्ग और पृथ्वी में शांति बनी रहेगी, और समुद्र और आकाश में भी सुकून रहेगा।" जेड सम्राट ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया और आदेश दिया कि महान श्वेत ग्रह को एक नया फरमान जारी किया जाए।
विशाल श्वेत ग्रह एक बार फिर स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से निकला और सीधे पुष्प और फल पर्वत पर स्थित जल परदे की गुफा को देखने चला गया। यह पहले से बिलकुल अलग था। वहाँ का वातावरण विस्मयकारी और रोंगटे खड़े कर देने वाला था, और हर तरह के राक्षस मौजूद थे। वे अपनी तलवारों, भालों, कटारों और लाठियों के साथ दहाड़ रहे थे और उछल-कूद कर रहे थे। विशाल श्वेत ग्रह को देखते ही वे सब उस पर टूट पड़े।
"क्या आपके सेनापति कृपया आगे आएंगे?" ग्रह ने कहा। "मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप अपने महान ऋषि को सूचित करें कि मैं जेड सम्राट द्वारा भेजा गया एक दिव्य दूत हूं, और मैं उनके लिए एक दिव्य आदेश और निमंत्रण लेकर आया हूं।"
अध्याय 4
60
पश्चिम की यात्रा
दुष्ट आत्माएं अंदर घुसकर सूचना देने लगीं, "बाहर एक बूढ़ा आदमी है जो कहता है कि वह स्वर्ग से तुम्हारे लिए निमंत्रण पत्र लेकर आया है।"
जब सन वुकॉन्ग ने यह सुना तो उसने कहा, "मुझे खुशी है कि वह आ गया है। मुझे लगता है कि वह वही महान श्वेत ग्रह है जो पहले आया था। पिछली बार जब मैं स्वर्ग गया था तो मुझे कोई अच्छा काम तो नहीं मिला, लेकिन मैं वहाँ पहुँच गया और वहाँ के तौर-तरीके सीख लिए। अगर वह फिर से वही है, तो उसकी मंशा अच्छी ही होगी।" उसने अपने सेनापतियों को आदेश दिया कि वे भव्य झंडे और ढोल बजाएँ और उसका स्वागत करने के लिए एक सम्मान-पहचान पत्र तैयार करें।
तब महान ऋषि, अपने हेलमेट, कवच के ऊपर पीले वस्त्र और बादलों पर चलने वाले जूते पहने हुए, अपने वानर दल के आगे-आगे गुफा से बाहर निकले, प्रणाम किया और

ऊँची आवाज़ में बोले, "कृपया अंदर आइए, आदरणीय ग्रह। आपका स्वागत करने के लिए यहाँ उपस्थित न होने के लिए मुझे क्षमा करें।"

ग्रह सीधे गुफा में दाखिल हुआ, दक्षिण की ओर मुख करके खड़ा हुआ और बोला, "महान ऋषि, जब आपने शाही अस्तबल इसलिए छोड़ा क्योंकि आपको वह पद बहुत छोटा लगा, तो उस विभाग के अधिकारियों ने स्वाभाविक रूप से यह बात जेड सम्राट को बता दी। जेड सम्राट ने आदेश दिया कि सभी अधिकारियों को निचले स्तर से ही ऊपर उठना होगा, और उन्होंने पूछा कि आपको उस पद के छोटे होने पर आपत्ति क्यों थी। इसके बाद स्वर्ग के राजा ली ने नेझा को आपके साथ युद्ध करने के लिए पाताल लोक में भेजा। हे महान ऋषि, आपकी दिव्य शक्तियाँ उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक थीं, और उन्हें हार का सामना करना पड़ा। स्वर्ग लौटने पर उन्होंने बताया कि आपने एक ध्वज फहराया था और 'स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि' बनना चाहते थे। सभी सेनापति आपको दंडित करना चाहते थे; लेकिन मैंने, हे महान ऋषि, दंड का जोखिम उठाते हुए सुझाव दिया कि सेनाओं को न बुलाया जाए, और इसके बजाय आपको एक पद दिया जाए।"

जेड सम्राट ने मेरे ज्ञापन को मंजूरी दे दी है, और इसीलिए मैं आपको आमंत्रित करने यहां आया हूं।"

"मैंने आपको पहले जो परेशानी दी थी, उसके बाद इस सम्मान के लिए मैं बहुत आभारी हूं," सन वुकॉन्ग ने उत्तर दिया, "लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि ऊपरी दुनिया में 'स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि' जैसी कोई उपाधि है या नहीं।"

"इस उपाधि के लिए शाही स्वीकृति प्राप्त करने के बाद," ग्रह ने कहा, "मैं एक फरमान लेकर आया हूँ। अगर कुछ भी गलत होता है, तो मैं जिम्मेदारी उठाऊंगा।"

अत्यंत प्रसन्न सूर्य वुकॉन्ग ने ग्रह को भोज में रुकने के लिए मनाने का भरसक प्रयास किया, लेकिन असफल रहे, इसलिए वे शुभ बादल के सहारे उनके साथ स्वर्ग के दक्षिणी द्वार तक गए। स्वर्ग के सभी सेनापतियों और सैनिकों ने आदरपूर्वक हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया, और वे सीधे चमत्कारिक धुंध के हॉल में चले गए।

महान श्वेत ग्रह ने प्रणाम किया और कहा, "शाही फरमान के पालन में आपके प्रजाजन ने घोड़ों के रक्षक सन वुकॉन्ग को बुलाया है, और वह उपस्थित हैं।"

“सन वुकॉन्ग आगे आओ,” जेड सम्राट ने कहा। “हम तुम्हें स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि घोषित करते हैं। तुम्हारा पद अब बहुत ऊँचा है। अब तुम कोई शरारत न करो।”

बंदर ने बस इतना ही कहा।
सम्राट को धन्यवाद व्यक्त करने के लिए उन्होंने "ना-आ-आ" कहा। इसके बाद जेड सम्राट ने लोक निर्माण विभाग के दो अधिकारियों, झांग और लू को आदेश दिया कि वे आड़ू के बाग के बाईं ओर स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि के लिए एक निवास स्थान का निर्माण करें। निवास स्थान में दो कार्यालय होने थे: एक शांति कार्यालय और एक शांत दैवीयता कार्यालय। इन दोनों कार्यालयों में अमर क्लर्क और वरिष्ठ एवं कनिष्ठ सहायक होने थे। फिर उन्होंने पंचम नक्षत्र के तारा स्वामियों को सन वुकॉन्ग को उनके पद तक ले जाने का आदेश दिया, और इसके अतिरिक्त उन्हें शाही शराब की दो बोतलें और दस सुनहरे फूल दिए, और उन्हें शांत रहने और किसी भी प्रकार की शरारत से दूर रहने की चेतावनी दी। वानर राजा ने आदेश स्वीकार कर लिया और उसी दिन पंचम नक्षत्र के तारा स्वामियों के साथ अपने निवास स्थान पर गए, जहाँ उन्होंने शराब की बोतलें खोलीं और वहाँ उपस्थित सभी लोगों की मदद से उन्हें पूरी तरह से पी लिया। फिर उन्होंने तारा अधिकारियों को विदा किया और अपने महल लौट आए। तब से वे सुख और संतोष में रहे, और महल में असीमित आनंद का अनुभव किया।
सचमुच,
उनका अमर नाम शाश्वत जीवन के रजिस्टर में हमेशा के लिए अंकित हो गया,
अध्याय 4
61
पश्चिम की यात्रा
पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होकर, दस हजार युगों तक प्रसारित होने के लिए।
अगर आपको नहीं पता कि आगे क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 5
आड़ू के बीच अफरा-तफरी के बाद महान ऋषि ने गोलियां चुरा लीं
स्वर्ग के विरुद्ध विद्रोह में देवताओं ने राक्षसों को पकड़ लिया
कथा आगे बताती है कि स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि, जो अंततः एक साधारण बंदर राक्षस थे, इस बात से पूर्णतः संतुष्ट थे कि उनका नाम कार्यालय रजिस्टर में दर्ज था, उन्हें अपने पद, प्रतिष्ठा या वेतन की कोई परवाह नहीं थी। उनके निवास में स्थित दो कार्यालयों में अमर क्लर्क उनकी सेवा में तत्पर रहते थे, उन्हें दिन में तीन बार भोजन

और रात में सोने के लिए बिस्तर मिलता था, और वे चिंतामुक्त होकर स्वतंत्र और सुखमय जीवन व्यतीत करते थे। अपने खाली समय में वे अन्य महलों का भ्रमण करते, अपने पुराने मित्रों से मिलते और नए मित्र बनाते। जब वे तीन पवित्र पुरुषों को देखते, तो उन्हें "आदरणीय" कहकर संबोधित करते, और जब वे चार सम्राटों से मिलते, तो उन्हें "महाराज" कहते। नौ तेजस्वी देवताओं, पंच लोकों के सेनापतियों, अट्ठाईस नक्षत्रों, चार महान स्वर्गीय राजाओं, बारह शाखाओं के देवताओं, पंच लोकों के पांच प्राचीनों, संपूर्ण आकाश के तारा मंत्रियों और आकाशगंगा के असंख्य देवताओं के साथ उनके सौहार्दपूर्ण संबंध थे। आज वह पूरब की ओर भटकता, और कल पश्चिम की ओर जाता, बादलों के सहारे आता-जाता, और कभी भी कहीं भी लंबे समय तक नहीं ठहरता।

एक दिन जब जेड सम्राट सुबह की सभा कर रहे थे, तो जिंगयांग के अमर शू अधिकारियों के समूह से आगे आए, प्रणाम किया और सुझाव दिया, "स्वर्ग के समान महान ऋषि अपना समय व्यर्थ यात्रा में व्यतीत कर रहे हैं और आकाश के सभी तारों से जान-पहचान बना रहे हैं, उन्हें उनके पद की परवाह किए बिना अपना मित्र कह रहे हैं। उन्हें कुछ जिम्मेदारी देना बेहतर होगा, ताकि उनकी यह निष्क्रियता बाद में परेशानी का कारण न बने।"

इस सुझाव पर जेड सम्राट ने तुरंत बंदर राजा को बुलवाया। वह प्रसन्न मन से आया और पूछा, "महाराज, आपने मुझे यहाँ किस पदोन्नति और पुरस्कार के लिए बुलाया है?"

“देखकर कि तुम खाली बैठे हो और तुम्हारे पास करने को कुछ नहीं है,” जेड सम्राट ने उत्तर दिया, “हम तुम्हें एक काम दे रहे हैं। तुम्हें आड़ू के बाग की देखरेख करनी है और दिन-रात इस पर ध्यान देना है।” महान ऋषि अत्यंत प्रसन्न हुए और धन्यवाद व्यक्त करने तथा “ना-आ-आ” का जाप करने के बाद वे चले गए।

काम पर जाने की उत्सुकता में वह सीधे आड़ू के बाग का जायजा लेने चला गया। वहाँ पहुँचकर उसे एक स्थानीय संरक्षक देवता ने रोक लिया और पूछा, "हे महान ऋषि, आप कहाँ जा रहे हैं?"

"मुझे जेड सम्राट द्वारा आड़ू के बाग का प्रभारी बनाया गया है, और मैं इसका निरीक्षण करने आया हूँ।" स्थानीय देवता ने औपचारिक रूप से उनका अभिवादन करने के लिए जल्दी की, और उन्होंने खरपतवार निकालने वाले, पानी लाने वाले, पेड़ों की देखभाल

करने वाले और मैदानों की सफाई करने वाले लोगों को बुलाया और महान ऋषि के सामने प्रणाम करने को कहा। जब सन वुकॉन्ग को अंदर ले जाया गया तो उन्होंने यह देखा:

आकर्षक,

हर पेड़।

पूर्ण रूप से खिले हुए फूल बेहद आकर्षक और भव्य होते हैं;

हर पेड़ फलों से लदा हुआ था।

फलों से लदी शाखाएँ कताई के धनुष की तरह झुक जाती हैं;

खिले हुए पेड़ पाउडर और रूज से ढके हुए हैं।

वे सदा खिलते रहते हैं, सदा फलते-फूलते रहते हैं; वे हजार वर्षों तक परिपक्व रहते हैं; उन्हें न गर्मी का पता होता है, न सर्दी का, बल्कि वे हमेशा के लिए बने रहते हैं।

जल्दी पकने वाले

चेहरा लाल और नशे में धुत दिखें;

जो अभी भी बढ़ रहे हैं

इनके तने और छिलके हरे रंग के होते हैं।

जब ओस पड़ती है, तो उनकी त्वचा पर हल्का नीलापन आ जाता है।

जब सूरज उनकी सिंदूरी सुंदरता को निखारता है।

पेड़ों के नीचे विदेशी फूल उगते हैं।

साल भर चमकीला और कभी फीका न पड़ने वाला।

दोनों ओर मीनारें और मंडप खड़े हैं।

और इंद्रधनुष हमेशा आकाश में एक चाप बनाता है।

ये डार्क अर्थ कैपिटल की आम नस्लें नहीं हैं।

लेकिन उनकी देखभाल जेड पूल की महारानी करती हैं।

इसे अच्छी तरह देखने के बाद महान ऋषि ने स्थानीय देवता से पूछा, "ये पेड़ कितने हैं?"

स्थानीय देवता ने उत्तर दिया, “कुल मिलाकर तीन हज़ार छह सौ हैं। आगे उगने वाले

पौधों में छोटे-छोटे फूल और फल होते हैं, और वे हर तीन हज़ार साल में पकते हैं। जो कोई भी इन्हें खाता है, वह अमर हो जाता है और मार्ग को समझ लेता है, और उसका शरीर हल्का और बलवान हो जाता है। बीच में उगने वाले बारह सौ पौधों में अनेक फूल और मीठे फल होते हैं, और वे हर छह हज़ार साल में पकते हैं; जो कोई भी इन्हें खाता है, वह उड़ सकता है और शाश्वत यौवन का आनंद ले सकता है। पीछे उगने वाले बारह सौ पौधे बैंगनी रंग की धारियों वाले हैं और उनमें हल्के पीले रंग की गुठलियाँ होती हैं।"

ये फल नौ हज़ार वर्षों में एक बार पकते हैं, और जो कोई भी इन्हें खाता है, वह स्वर्ग और पृथ्वी के समान शाश्वत, सूर्य और चंद्रमा के समान दीर्घायु हो जाता है।" यह जानकर महान ऋषि आनंद से भर उठे, और उस दिन उन्होंने वृक्षों की संख्या जाँची और अपने निवास स्थान पर लौटने से पहले बाग में इमारतों का निरीक्षण किया। तब से वे हर तीन-चार दिन में उन्हें निहारने जाते थे। उन्होंने अपने मित्रों को छोड़ दिया, और अध्याय 5

63

पश्चिम की यात्रा

इसके बाद उन्होंने कोई और मनोरंजक यात्रा नहीं की।

एक दिन उसने देखा कि एक पुराने पेड़ की शाखाओं के सिरे पर लगे आड़ू लगभग पक चुके थे, और उसका मन हुआ कि वह एक चख ले; लेकिन स्थानीय देवता, मजदूर और उसके घर के अमर क्लर्क उसके पीछे पड़े थे, इसलिए यह असंभव था। अचानक उसे एक विचार आया, और उसने कहा, "जाओ, मैं इस ग्रीष्मकालीन घर में थोड़ी देर आराम कर लूँ, तुम द्वार के बाहर मेरा इंतज़ार करो।"

तब सभी देवता वहाँ से चले गए, और वानर राजा ने अपनी राजसी टोपी और वस्त्र उतार दिए, एक बड़े पेड़ पर चढ़ गया और कुछ बड़े, पके हुए आड़ू तोड़ लिए। जब उसने काफी सारे आड़ू तोड़ लिए, तो वह आराम से डालियों पर बैठ गया और उन्हें जी भर कर खाया, फिर पेड़ से नीचे कूद गया, अपनी टोपी लगाई, अपने वस्त्र पहने और अपने सभी सेवकों को अपने साथ वापस चलने का आदेश दिया। दो-तीन दिन बाद उसने कुछ और आड़ू चुराने की एक और तरकीब सोची और उन्हें भी जी भर कर खाया।

एक दिन महारानी माँ ने एक भोज का आयोजन किया, जिसमें जेड पूल के किनारे

आड़ू की दावत के लिए कई कीमती मंडप खोले गए। उन्होंने लाल परी, नीली परी, सफेद परी, काली परी, बैंगनी परी, पीली परी और हरी परी को दावत के लिए आड़ू तोड़ने के लिए उनकी टोकरियों के साथ आड़ू के बाग में भेजा। सातों परियाँ सीधे बाग के द्वार पर पहुँचीं, जहाँ बाग के मजदूर और समता स्वर्ग निवास के दो कार्यालयों के अमर अधीक्षक द्वार की रखवाली कर रहे थे।

परियां उनके पास गईं और बोलीं, "हम महारानी मां के आदेश पर एक दावत के लिए आड़ू तोड़ने आई हैं।"

स्थानीय देवता ने कहा, "कृपया एक क्षण रुकिए, अमर सुंदरियों। इस वर्ष परिस्थितियाँ भिन्न हैं। जेड सम्राट ने स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि को इस उद्यान का संरक्षक नियुक्त किया है, और उद्यान को आपके लिए खोलने से पहले हमें उनसे अनुमति लेनी होगी।"

"महान ऋषि कहाँ हैं?" परियों ने पूछा, और स्थानीय देवता ने उत्तर दिया, "बाग के अंदर। थकान महसूस होने के कारण वे एक ग्रीष्मकालीन कुटिया में अकेले झपकी ले रहे हैं।"

"तो फिर, कृपया उसे बिना देर किए ढूंढ निकालिए," परियों ने विनती की, और स्थानीय देवता उन्हें बगीचे में ले गए। लेकिन ग्रीष्मगृह में उन्हें उसका केवल टोपी और कपड़े ही मिले। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वह कहाँ गया होगा, और उन्होंने हर जगह खोजा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। दरअसल, महान ऋषि ने मजे में कुछ आड़ू खा लिए थे और उनका कद घटकर केवल दो इंच रह गया था, और वह एक बड़े पेड़ की चोटी पर एक बड़े पत्ते के नीचे सो रहे थे।

"हम आदेश से आए हैं, और हम खाली हाथ वापस नहीं जा सकते, भले ही महान ऋषि कहीं नहीं मिल रहे हों," परियों ने कहा।

पास ही खड़े अमर अधीक्षकों में से एक ने उत्तर दिया, "चूंकि आप अमर सुंदरियों, महारानी माँ के आदेश से आई हैं, इसलिए हमें आपको रोकना नहीं चाहिए। हमारे महान ऋषि अक्सर भ्रमण करते रहते हैं, इसलिए मुझे लगता है कि वे अपने कुछ मित्रों से मिलने गए हैं। आप बेहतर होगा कि आड़ू तोड़ लें; अगर हम उन्हें सूचित कर दें तो कोई बात नहीं।"

परियों ने उसकी सलाह मानी और आड़ू तोड़ने के लिए बगीचे में चली गईं। पहले उन्होंने आगे के पेड़ों से दो टोकरियाँ भरीं, फिर बीच के पेड़ों से तीन टोकरियाँ तोड़ीं;

लेकिन जब वे पीछे के पेड़ों पर पहुँचीं, तो उन्होंने देखा कि आड़ू और फूल बहुत कम थे। केवल कुछ कच्चे फल बचे थे, जिन पर रोएँदार डंठल और हरी छाल थी। सारे पके हुए फल बंदर राजा खा गए थे। सातों परियों ने हर जगह देखा, लेकिन उन्हें दक्षिणी शाखा पर केवल एक लाल और सफेद आड़ू दिखाई दिया। नीली परी ने शाखा को नीचे खींचा, लाल परी ने आड़ू तोड़ा, और फिर उन्होंने शाखा को छोड़ दिया। इससे महान ऋषि जाग गए, जो इस शाखा पर झपकी लेने के लिए खुद को इस आड़ू में बदल चुके थे।

अध्याय 5

64

पश्चिम की यात्रा

उसने अपना असली रूप धारण किया, अपने कान से सोने की पट्टी वाली लाठी निकाली, उसे तब तक हिलाया जब तक वह चावल के कटोरे जितनी मोटी न हो गई, और उन पर चिल्लाया, "तुम कहाँ से आए हो, चोर शैतानों?" सातों परियाँ घबराकर घुटनों के बल गिर पड़ीं।

"हे महान ऋषि, कृपया हमसे क्रोधित न हों। हम राक्षस नहीं हैं, बल्कि पश्चिम की महारानी माँ द्वारा अमरता के आड़ू चुनने और यहाँ के अनमोल कक्षों को आड़ू की दावत के लिए खोलने के लिए भेजी गई सात परियाँ हैं।"

जब हम यहाँ पहुँचे तो हमने स्थानीय देवता और अन्य देवी-देवताओं के दर्शन किए, लेकिन हे महान ऋषि, आप हमें नहीं मिले। महारानी माँ के आदेशों का पालन करने में हम देरी नहीं कर सकते थे, इसलिए हम आपके आने का इंतज़ार किए बिना ही आगे बढ़ गए और आड़ू तोड़ लिए। हमें पूरी उम्मीद है कि आप हमें क्षमा कर देंगे।

इन शब्दों ने महान ऋषि के खराब मूड को अच्छे मूड में बदल दिया और उन्होंने कहा, "कृपया उठिए, सुंदरियों। महारानी माँ इस भोज में किसे आमंत्रित कर रही हैं?"

"इस उत्सव में कौन-कौन शामिल होगा, इसके लिए पुराने नियम हैं: पश्चिमी स्वर्ग के बुद्ध, बोधिसत्व, पवित्र भिक्षु, अर्हत, दक्षिणी ध्रुव की गुआनयिन, पूर्वी ध्रुव के दयालु और ऋषि सम्राट, दस महाद्वीपों और तीन द्वीपों के पूजनीय अमर, उत्तरी ध्रुव के रहस्यमय देवता, और केंद्र में पीले ध्रुव के महान पीले सींग वाले अमर। ये पाँच क्षेत्रों के पाँच पूजनीय हैं। पाँच नक्षत्रों के तारा स्वामी भी होंगे; तीन शुद्ध आत्माएँ, चार सम्राट और आठ उच्च गुफाओं से महान एकेश्वरवादी स्वर्गीय अमर; जेड सम्राट, नौ

टीलों के अमर, और आठ निचली गुफाओं से समुद्र और पर्वतों के देवता और पाताल लोक के शासक; और पार्थिव देवता। सभी हॉल और महलों के सभी प्रमुख और गौण देवता आड़ू के उत्सव में आएंगे।"

"क्या मुझे आमंत्रित किया जाएगा?" महान ऋषि ने विनम्र मुस्कान के साथ पूछा।

"हमने तो ऐसा नहीं सुना है," परियों ने जवाब दिया।

"मैं स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि हूं, तो मुझसे क्यों न पूछा जाए?" महान ऋषि ने कहा।

"पहले ऐसा ही हुआ था: इस बार के बारे में हमें नहीं पता," परियों ने जवाब दिया।

"आप सही कह रहे हैं," उसने कहा। "आप यहीं इंतजार कीजिए, मैं जाकर पता लगाता हूं कि मुझे आमंत्रित किया गया है या नहीं।"

हे महान ऋषि, शानदार! उन्होंने अपने हाथों से जादू करते हुए मंत्र के शब्द बोले और परियों से कहा,

"वहीं रहो! वहीं रहो!" यह एक स्थिर करने वाला मंत्र था, इसलिए सातों परियाँ आड़ू के पेड़ के नीचे आँखें फाड़कर अचेत खड़ी रह गईं, तभी महान ऋषि कलाबाज़ी करते हुए बादल पर सवार होकर बगीचे से निकले और जेड पूल की ओर चल पड़े। जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, उन्होंने देखा कि आकाश शुभ प्रकाश से जगमगा रहा था।

उस पर अनेक रंगों के बादल छाए हुए थे।

सफेद सारस की चीख से आकाश कांप उठा;

बैंगनी एस्फोडेल के पेड़ पर एक हजार पत्तियां उग आईं।

इन सबके बीच एक अमर प्राणी प्रकट हुआ।

ईश्वर प्रदत्त शालीनता के साथ,

अध्याय 5

65

पश्चिम की यात्रा

जैसे ही वह आकाशगंगा के आवरण में लिपटे इंद्रधनुष पर नृत्य कर रहा था,

जन्म और मृत्यु से बचाव के लिए कमर पर एक ताबीज बांधे हुए।

उनका नाम नंगे पैर अमर था।

और वह दीर्घायु प्रदान करने वाले आड़ुओं के भोज में जा रहा था।

जैसे ही नंगे पैर वाले अमर ने उसे देखा, महान ऋषि ने अपना सिर झुकाया और अमर

को धोखा देकर स्वयं भोज में शामिल होने की योजना बनाने लगे।
"आप कहाँ जा रहे हैं, आदरणीय महोदय?" उसने पूछा; और अमर व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मैं महारानी माँ के निमंत्रण पर पीच बैंक्वेट में जा रहा हूँ।"
“हे आदरणीय महोदय, एक बात है जो आप नहीं जानते,” महान ऋषि ने कहा। “चूंकि मेरा कलाबाजी करने वाला बादल बहुत तेज गति से चलता है, इसलिए जेड सम्राट ने मुझे आप सभी सज्जनों को यह बताने के लिए भेजा है कि भोज में जाने से पहले सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में एक समारोह में शामिल हों।”
क्योंकि वह अमर व्यक्ति खुले दिल का और ईमानदार था, उसने इस झूठ को सच मान लिया, लेकिन सोचने लगा, "शुक्रिया समारोह आमतौर पर जेड पूल के पास होता है, तो हम भोज के लिए जेड पूल जाने से पहले सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में समारोह क्यों कर रहे हैं?" फिर भी, उसने अपने शुभ बादल को मोड़ा और सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल की ओर चल पड़ा।
महान ऋषि ने अपने बादल पर सवार होकर एक मंत्र पढ़ा, स्वयं को झटककर नंगे पैर वाले अमर का रूप धारण किया और जेड पूल की ओर चल पड़े। एक क्षण में वे वहाँ बने मंडप में पहुँचे, अपना बादल रोका और चुपचाप अंदर चले गए। उन्होंने देखा
शानदार सुगंधों का जाल,
शुभ बादलों का एक समूह;
रंगों से जड़ा हुआ जेड का टावर,
धुंध बिखेरते हुए अनमोल मंडप;
फीनिक्स पक्षी इतनी ऊंचाई तक उड़ता है कि लगभग नजरों से ओझल हो जाता है।
और रत्नजड़ित फूल उठते-गिरते प्रतीत होते हैं।
नौ फीनिक्स स्क्रीन के ऊपर
आठ अनमोल वस्तुओं से बनी इंद्रधनुषी रंग की चौकी,
एक रंगीन सुनहरी मेज,
हरे जेड पत्थर के कटोरे जिन पर हजारों फूल बने हुए हैं।

मेज पर अजगर के जिगर और फीनिक्स पक्षी की हड्डी का मज्जा रखा था।

भालू के पंजे और बंदरों के होंठ – –
सौ तरह के व्यंजन, और सभी स्वादिष्ट;
दुर्लभ फल और उत्तम व्यंजन, हर एक अद्वितीय।
सब कुछ करीने से सजा हुआ था, लेकिन अभी तक कोई अमर देवता नहीं आया था। महान ऋषि ने अभी देखना भी पूरा नहीं किया था कि उन्हें शराब की गंध आई; और जैसे ही वे घूमे, उन्होंने दाहिनी ओर एक बरामदे के नीचे कई अमर अधिकारियों को शराब बनाने के काम में देखा। उनके साथ कुछ मजदूर थे जो तलछट को हिला रहे थे, कुछ नौसिखिए थे जो पानी ला रहे थे और कुछ लड़के थे जो आग की देखभाल कर रहे थे। वे बर्तनों को धो रहे थे और रगड़कर साफ कर रहे थे, उन्होंने जेड रंग की शराब और तलछट का सुगंधित किण्वन तैयार कर लिया था। महान ऋषि अपने मुंह में पानी आने से खुद को नहीं रोक पाए, और उन्हें थोड़ी शराब पीने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन दुर्भाग्य से वे सभी लोग वहाँ मौजूद थे। इसलिए उन्होंने अपने शरीर से कुछ बाल खींचे, उन्हें चबाया, थूका, जादुई शब्द बोले और "बदलो" चिल्लाया; जिसके बाद वे बाल नींद के कीड़ों में बदल गए, जो सभी शराब बनाने वालों के चेहरों पर उड़ गए। देखो कैसे उनके हाथ ढीले पड़ जाते हैं, उनके सिर झुक जाते हैं, उनकी आँखें बंद हो जाती हैं, और वे अपने पद के प्रतीक गिरा देते हैं और सभी सो जाते हैं। इसके बाद महान ऋषि ने दुर्लभ व्यंजनों और विदेशी खाद्य पदार्थों को उठाया, फिर बरामदे के नीचे गए और बर्तनों और कुंडों से तब तक पीते रहे जब तक कि वे पूरी तरह से मदहोश नहीं हो गए।
तभी उसे ख्याल आया, "यह बिल्कुल भी ठीक नहीं है। जब मेहमान दावत के लिए आएंगे तो वे मुझसे बहुत नाराज़ होंगे, और अगर मैं पकड़ा गया तो मेरी खैर नहीं। बेहतर होगा कि मैं जितनी जल्दी हो सके निवास स्थान पर वापस जाऊं और सोकर अपना नशा उतार लूं।"
हमारे प्रिय ऋषि शराब के नशे में लड़खड़ाते और डगमगाते हुए इधर-उधर भटक रहे थे और गलत रास्ते पर जा रहे थे। वे समता के स्वर्ग निवास पर नहीं, बल्कि तुशिता स्वर्ग महल पर पहुँच गए। इसे देखते ही वे होश में आए और मन ही मन बोले, "तुशिता महल तैंतीस स्वर्गों में सर्वोच्च है, जहाँ महान एकेश्वरवाद के स्वामी लाओ ज़ी विराजमान हैं। मैं यहाँ कैसे आ गया? कोई बात नहीं, मैं हमेशा से उस बूढ़े व्यक्ति को देखना चाहता था, और मैं पहले कभी यहाँ नहीं आ पाया। अब जब मैं इस रास्ते से

गुजर ही रहा हूँ, तो क्यों न जाकर उन्हें देख लूँ।"
उन्होंने अपने वस्त्र समेटे और अंदर भागे, लेकिन उन्हें भगवान लाओ ज़ी नहीं दिखे। वहाँ किसी का कोई आभास नहीं था। ऐसा इसलिए था क्योंकि लाओ ज़ी और प्राचीन बुद्ध दीपमकारा एक त्रिमंजिला मंडप में लाल मंच से मार्ग का उपदेश दे रहे थे, और सभी अमर बालक, सेनापति, अधिकारी और छोटे-मोटे पदाधिकारी दाएं-बाएं खड़े होकर प्रवचन सुन रहे थे। महान ऋषि सीधे उस कमरे में गए जहाँ अमृत रखा था, और यद्यपि उन्हें वहाँ लाओ ज़ी नहीं मिले, उन्होंने देखा कि चूल्हे के बगल में एक छोटी सी आग जल रही थी जिस पर गोलियाँ बनाई जाती थीं। चूल्हे के दोनों ओर पाँच-पाँच लौकी रखी थीं, जो शुद्ध अमृत की सुनहरी गोलियों से भरी थीं।
“यह अमरों का सबसे बड़ा खजाना है,” उसने प्रसन्नता से कहा। “जबसे मैंने मार्ग को समझा और गूढ़ और बाह्य के बीच संबंध के सिद्धांत में महारत हासिल की है, तबसे मैं इन सुनहरी गोलियों को परिष्कृत करके लोगों को बचाना चाहता था, लेकिन मुझे कभी यहाँ आने का समय नहीं मिला। आज मेरी किस्मत अच्छी है—मुझे ये मिल गई हैं। चूंकि लाओ ज़ी यहाँ नहीं हैं, मैं कुछ गोलियां खाकर देखूंगा।” उसने लौकी को खाली किया और सारी गोलियां ऐसे खा लीं जैसे वह तली हुई फलियाँ खा रहा हो।
कुछ ही देर में वह गोलियों के नशे में चूर हो गया और उसका नशा उतर गया। "यह तो भयानक है," उसने सोचा, "यह तो बहुत बड़ी आपदा है। अगर जेड सम्राट को इससे झटका लगा, तो मेरा काम तमाम हो जाएगा। मुझे यहाँ से निकलना होगा। मैं परलोक में राजा बनकर कहीं ज्यादा बेहतर रहूँगा।"
वह तुशिता महल से अपने सामान्य मार्ग को छोड़कर तेजी से बाहर निकला। खुद को अदृश्य करने के लिए एक मंत्र का प्रयोग करते हुए, वह स्वर्ग के पश्चिमी द्वार से निकला और सीधे बादल के सहारे फूलों और फलों के पर्वत की ओर नीचे चला गया। जब वह अध्याय 5 में पहुंचा।
67
पश्चिम की यात्रा
वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि झंडे, बैनर, भाले और हलबर्ड सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे: चार पराक्रमी सेनापति और राक्षसों के बहत्तर राजा सैन्य अभ्यास कर रहे थे।
"बच्चों, मैं वापस आ गया हूँ," महान ऋषि ने ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, और सभी राक्षस अपने हथियार छोड़कर घुटनों के बल गिर पड़े।

“आपको परवाह नहीं है, है ना, महान ऋषि?” उन्होंने कहा। “आपको हमें छोड़े हुए बहुत समय हो गया है, और आप हमसे मिलने कभी वापस नहीं आए।”

“मुझे ज्यादा समय नहीं हुआ है, मुझे ज्यादा समय नहीं हुआ है,” महान ऋषि ने कहा, और बात करते-करते वे गुफा के सबसे भीतरी हिस्से में चले गए। जब चारों वीर सेनापतियों ने जगह को साफ-सुथरा कर दिया और उन्हें बिठा दिया, तो उन्होंने उनके सामने सिर झुकाकर पूछा, “हे महान ऋषि, स्वर्ग में अपने एक शताब्दी से अधिक के समय में आपने कौन सा पद संभाला था?”

महान ऋषि हँसे और बोले, "जहाँ तक मुझे याद है, यह केवल छह महीने ही थे, तो आप क्यों कहते हैं कि यह एक सदी से अधिक था?"

"स्वर्ग में एक दिन पृथ्वी पर एक वर्ष के बराबर होता है," उन महान सेनापतियों ने उत्तर दिया।

“इस बार मैं भाग्यशाली रहा,” महान ऋषि ने कहा। “जेड सम्राट मुझ पर मोहित हो गए और मुझे स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि की उपाधि से सम्मानित किया। उन्होंने मेरे लिए स्वर्ग के समतुल्य एक निवास बनवाया, जिसमें शांति कार्यालय और शांत दैवीय कार्यालय के साथ अमर पदाधिकारी, सेवक और रक्षक भी थे। बाद में, जब उन्होंने देखा कि मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं है, तो उन्होंने मुझे आड़ू के बाग का प्रभारी बना दिया। हाल ही में महारानी ने आड़ू की दावत दी, लेकिन उन्होंने मुझे आमंत्रित नहीं किया। निमंत्रण की प्रतीक्षा करने के बजाय, मैं जेड तालाब गया और वहाँ से सारा अमर भोजन और पेय चुरा लिया। जेड तालाब से लड़खड़ाते हुए मैं भगवान लाओ ज़ी के महल में पहुँच गया और वहाँ मैंने उनकी अमरता की पाँच लौकियाँ खा लीं। फिर मैं स्वर्ग के द्वार से बाहर निकलकर यहाँ आ गया क्योंकि मुझे डर था कि जेड सम्राट मुझे दंडित करेंगे।”

सभी दुष्ट आत्माएं यह सुनकर प्रसन्न हुईं और उन्होंने उसके स्वागत के लिए शराब और फलों का इंतजाम किया।

उन्होंने एक पत्थर के कटोरे में नारियल की ताड़ी भरकर उन्हें दी, लेकिन जब उन्होंने उसका स्वाद चखा तो महान ऋषि ने मुंह बनाया और कहा, "यह बहुत खराब है, बहुत खराब है।"

उनके दो वीर सेनापतियों, बेंग और बा ने समझाया, "हे महान ऋषि, आपने स्वर्गलोक में अमर पेय और अमर भोजन का सेवन किया है, इसलिए आपको नारियल की ताड़ी

उतनी स्वादिष्ट नहीं लगती। लेकिन कहावत है, 'मीठी हो या न हो, घर का पानी तो है ही।'"

इस पर महान ऋषि ने उत्तर दिया, "और तुम सब, चाहे मेरे रिश्तेदार हो या न हो, मेरे घर से हो। आज जब मैं जेड कुंड के किनारे आनंद ले रहा था, तो मैंने वहाँ एक बरामदे के नीचे जेड मदिरा से भरे कई घड़े देखे। क्योंकि तुममें से किसी ने भी इसे कभी नहीं चखा है, मैं जाकर तुम्हारे लिए कुछ घड़े चुरा लाऊँगा; फिर तुम सब थोड़ा-थोड़ा पी सकते हो और अमर हो सकते हो।" सभी बंदर खुशी से झूम उठे। फिर महान ऋषि गुफा से बाहर निकले, कलाबाजी मारी, खुद को अदृश्य कर लिया और सीधे आड़ू भोज में चले गए। जेड कुंड के द्वार से गुजरते हुए उन्होंने देखा कि शराब बनाने वाले, तलछट हिलाने वाले, पानी लाने वाले और आग की देखभाल करने वाले लोग अभी भी खर्राटे ले रहे थे। उन्होंने शराब के दो बड़े घड़े अपनी बाहों के नीचे दबाए, दो और घड़े अपने हाथों में लिए, फिर अपना बादल घुमाया और गुफा में बंदरों के समूह के साथ अमर मदिरा का भोज करने के लिए वापस चले गए।

उन सभी ने कई कप चाय पी और बहुत खुश थे, लेकिन हम इस बारे में विस्तार से चर्चा नहीं करेंगे।

कहानी फिर से सात परियों की ओर लौटती है, जो सन वुकॉन्ग द्वारा जादू से स्थिर किए जाने के पूरे एक दिन बाद ही खुद को मुक्त कर पाईं। उन्होंने अपनी टोकरियाँ उठाईं और महारानी माँ को यह बताने के लिए वापस गईं कि उन्हें देर हो गई क्योंकि स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि ने उन्हें जादू से वहीं रोक रखा था।

अध्याय 5

68

पश्चिम की यात्रा

"तुमने कितने आड़ू तोड़े?" महारानी माँ ने पूछा।

"छोटे बच्चों की दो टोकरियाँ और मध्यम आकार के बच्चों की तीन टोकरियाँ थीं। लेकिन जब हम पीछे पहुँचे तो हमें एक भी बड़ा बच्चा नहीं मिला; हमें लगता है कि उन सभी को महान ऋषि ने खा लिया था। जब हम कुछ बच्चों को ढूंढ रहे थे, तभी अचानक महान ऋषि प्रकट हुए और उन्होंने हमें पीट-पीटकर और यातना देकर यह जानने की कोशिश की कि भोज में किसे आमंत्रित किया गया था। जब हमने उन्हें बता दिया, तो उन्होंने हमें वहीं बांध दिया और हमें नहीं पता कि वे कहाँ गए। हमें अभी कुछ

देर पहले ही होश आया और हमने खुद को छुड़ाया।"
यह सुनकर महारानी माता जेड सम्राट से मिलने गईं और उन्हें सारी घटना का ब्योरा दिया। उनके बोलने से पहले ही, शराब बनाने वाले अपने अमर अधिकारियों के साथ वहाँ पहुँचे और बताया कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने भव्य आड़ू भोज में गड़बड़ी कर दी है और जेड शराब के साथ-साथ सौ तरह के स्वादों से सजी कीमती मिठाइयाँ भी चुरा ली हैं। फिर चार दिव्य गुरुओं ने आकर घोषणा की कि मार्ग के सर्वोच्च गुरु, लाओ ज़ी, आ गए हैं।
जेड सम्राट महारानी के साथ उनसे मिलने गए और प्रणाम करने के बाद लाओ ज़ी ने कहा, "मैंने महाराज के साथ एक औषधि भोज के लिए अपने महल में नौ रूपांतरणों की कुछ स्वर्ण गोलियां तैयार की थीं, लेकिन एक चोर ने उन्हें चुरा लिया है। यही बात मैं महाराज को बताने आया हूँ।" यह खबर सुनकर जेड सम्राट भय से कांप उठे।
कुछ ही समय बाद समता स्वर्ग निवास के अमर प्रशासक प्रणाम करने और यह सूचना देने आए: "महान ऋषि सन वुकॉन्ग कल अपना पद छोड़कर कहीं चले गए थे। वे अभी तक वापस नहीं आए हैं और हमें नहीं पता कि वे कहाँ गए हैं।" जेड सम्राट, जो अब पहले से कहीं अधिक संदेह में थे, ने तब नंगे पैर वाले अमर को अपना सिर जमीन पर झुकाते हुए देखा।
"आपका सेवक महारानी माँ के बुलावे पर भोज में जा रहा था, तभी मेरी मुलाक़ात स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि से हुई। हे दस हज़ार वर्षों के स्वामी, उन्होंने मुझे बताया कि आपने एक आदेश जारी किया है जिसमें उन्हें हम सभी को भोज में जाने से पहले सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में एक समारोह में शामिल होने के लिए कहने को कहा गया है। आपका सेवक उनके कहे अनुसार सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में वापस चला गया, लेकिन बाहर मुझे शाही ड्रैगन और फीनिक्स रथ दिखाई नहीं दिया, इसलिए मैं आदेश की प्रतीक्षा में यहाँ आ गया।"
“इस नीच ने फर्जी फरमान जारी करने और प्रतिष्ठित मंत्रियों को धोखा देने की धृष्टता की है,” जेड सम्राट ने क्रोध और आश्चर्य से कहा। “चमत्कारी अन्वेषक को तुरंत पता लगाना होगा कि वह क्या कर रहा है।”
चमत्कारी अन्वेषक ने आदेश का पालन करते हुए महल छोड़ दिया और गहन पूछताछ करके उसने घटना के सभी विवरणों का पता लगाया।
उन्होंने बताया, "स्वर्गिक महल को नष्ट करने वाला सन वुकॉन्ग था," और उन्होंने आगे

पूरी जानकारी दी।
जेड सम्राट अत्यंत क्रोधित हुए और उन्होंने चार महान स्वर्गीय राजाओं, स्वर्गीय राजा ली और राजकुमार नेझा को आदेश दिया कि वे अट्ठाईस नक्षत्रों, नौ तेजस्वी देवताओं, बारह शाखाओं के बारह देवताओं, पांच क्षेत्रों के सत्य प्रकटकर्ताओं, चार कर्तव्य देवताओं, पूर्व और पश्चिम के नक्षत्रों, उत्तर और दक्षिण के देवताओं, पांच पर्वतों और चार नदियों के देवताओं, समस्त स्वर्ग के तारा सेवकों और कुल एक लाख स्वर्गीय सैनिकों को एकत्रित करें। उन्हें अठारह स्वर्ग-पृथ्वी जालों के साथ पाताल लोक में उतरना था, पुष्प-फल पर्वत को घेरना था और उस दुष्ट को दंड देने के लिए पकड़ना था। देवताओं ने तुरंत अपने सैनिकों को बुलाया और स्वर्गीय महल छोड़ दिया।
तेज हवाओं के कारण आए रेतीले तूफान ने आसमान को ढक लिया।
अध्याय 5
69
पश्चिम की यात्रा
बैंगनी रंग के कोहरे ने धरती को अंधेरे में डुबो दिया।
सिर्फ इसलिए कि उस बंदर जैसे राक्षस ने सर्वोच्च सम्राट को नाराज कर दिया।
स्वर्ग की सेनाओं को नश्वर मिट्टी में भेजा गया।
चार महान स्वर्गीय राजा,
पांचों लोकों के सत्य को प्रकट करने वाले।
चार महान स्वर्गीय राजाओं के पास सर्वोच्च कमान थी।
और रिवीलर्स सैनिकों की गतिविधियों को नियंत्रित करते थे।
ली द पगोडा कैरियर ने केंद्रीय कोर की कमान संभाली थी।
घातक नेझा वैन का नेतृत्व कर रहा था।
राहु नक्षत्र ने प्रमुख रैंडों का आदेश दिया।
और केतु तारा उनके पीछे विशाल रूप में दिखाई दे रहा था।
सूर्य ने अपनी दिव्यता प्रकट की।
और चंद्रमा से प्रकाश की किरणें निकल रही थीं।
पंच तत्वों के सितारे पराक्रमी थे।
और नौ तेजस्वी योद्धाओं को युद्ध का शौक था।
ज़ि, वू, माओ और यू शाखाओं के सितारे,

वे सभी महान स्वर्गीय योद्धा थे।
पूर्व और पश्चिम में पांच विपत्तियाँ और पांच पर्वत बनाए गए, जबकि छह डिंग और छह जिया दाएं और बाएं ओर बढ़े।
चारों नदियों के ड्रैगन देवता ऊपर और नीचे विराजमान थे।
और अट्ठाईस नक्षत्रों को पंक्तिबद्ध तरीके से व्यवस्थित किया गया था: सींग, गले, आधार और कक्ष कमानधारी अधिकारी थे।
स्ट्राइडर, हार्वेस्टर, स्टमक और मेन ने चक्कर लगाए और उड़ान भरी;
डिपर, ऑक्स, वुमन, बैरेंस, रूफ, हाउस और वॉल, हार्ट, टेल और विन्नोवर—ये सभी सक्षम सितारे हैं—
खैर, घोस्ट, विलो, स्प्रेड, व्हिग और एक्सल ट्री
अध्याय 5
70
पश्चिम की यात्रा
उन्होंने अपनी तलवारें और भाले लहराए, अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।
उन्होंने अपने बादलों को रोक दिया और धुंध में उतरकर नश्वर दुनिया में आ गए, और फूलों और फलों के पर्वत के सामने डेरा डाला।
एक कविता है जो इस प्रकार है:
स्वर्ग से जन्मे बंदर राजा के अनेक रूपान्तरण
गोलियां और शराब चुराने के बाद वह अपने ठिकाने में खुश था।
सिर्फ इसलिए कि उसने आड़ू की दावत बर्बाद कर दी,
अब एक लाख दिव्य सैनिकों ने अपने जाल बिछा दिए।
स्वर्ग के राजा ली ने दिव्य सैनिकों को डेरा डालने और पुष्प एवं फल पर्वत के चारों ओर जलरोधी घेरा बनाने का आदेश दिया। ऊपर और नीचे उन्होंने अठारह आकाश-पृथ्वी जाल बिछाए, और नौ तेजस्वी योद्धाओं को युद्ध शुरू करने के लिए भेजा गया। वे अपने सैनिकों को गुफा के बाहर ले गए, जहाँ उन्होंने छोटे-बड़े बंदरों को उछलते-कूदते और मस्ती करते देखा।
शीर्ष अधिकारियों ने कठोर स्वर में चिल्लाते हुए कहा, "छोटे शैतानों, तुम्हारा वह महान ऋषि कहाँ है? हम देवता हैं, जो तुम्हारे विद्रोही महान ऋषि को वश में करने के लिए ऊपरी लोक से भेजे गए हैं। उसे तुरंत आत्मसमर्पण करने के लिए कहो—और अगर

उसने ज़रा सा भी 'ना' कहा, तो हम तुममें से एक-एक का सफाया कर देंगे।"
छोटे बंदर दौड़ते हुए अंदर गए और खबर दी, "हे महान ऋषि, विपत्ति आ गई, विपत्ति आ गई। बाहर नौ दुष्ट देवता हैं जो कह रहे हैं कि उन्हें आपको वश में करने के लिए ऊपरी लोक से भेजा गया है।"
उस महान ऋषि ने, जो उस समय राक्षसों के बहत्तर राजाओं और अपने चार वीर सेनापतियों के साथ अमर पेय साझा कर रहे थे, इस रिपोर्ट पर कोई ध्यान नहीं दिया और कहा:
"आज हमारे पास शराब है, इसलिए आज हम जश्न मनाते हैं।"
गेट के बाहर जो कुछ भी हो रहा है, उससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है।
लेकिन उसके मुंह से ये शब्द निकलने से पहले ही शैतानों का एक और समूह अंदर आ गया। उन्होंने घोषणा की, "वे नौ दुष्ट देवता हमें युद्ध के लिए चुनौती देने के लिए अभद्र और भड़काऊ भाषा का प्रयोग कर रहे हैं।"
"उनकी परवाह मत करो," महान ऋषि ने हंसते हुए कहा।
अध्याय 5
71
पश्चिम की यात्रा
"आज हम कविता और शराब के साथ खुश हैं;"
हमें इस बात की परवाह कब होगी कि शोहरत हमें कब मिलेगी?
लेकिन इससे पहले कि ये शब्द उसके मुंह से निकलते, शैतानों का एक और समूह अंदर आ गया। "महोदय, उन नौ दुष्ट देवताओं ने द्वार तोड़ दिए हैं और अंदर घुस रहे हैं।"
“ये बदबूदार देवता!” महान ऋषि क्रोधित हो उठे! “कितनी हिम्मत है! मैं इनसे लड़ना नहीं चाहता था, तो ये यहाँ आकर हमें क्यों परेशान कर रहे हैं?” उन्होंने एक सींग वाले राक्षस राजा को बहत्तर राक्षस राजाओं का नेतृत्व करते हुए युद्ध में जाने का आदेश दिया, जबकि वे स्वयं चार वीर सेनापतियों के साथ उनके पीछे-पीछे चले। राक्षस राजा ने जल्दी से अपने दानव सैनिकों को इकट्ठा किया और शत्रु से भिड़ने के लिए आगे बढ़े। नौ तेजस्वी योद्धाओं ने उन सभी को रोक दिया और लोहे के पुल के शीर्ष को इस तरह से पकड़ लिया कि कोई भी अंदर या बाहर नहीं जा सकता था।
उस अफरा-तफरी के दौरान महान ऋषि घटनास्थल पर आए और "रास्ता बनाओ!"

चिल्लाते हुए उन्होंने अपनी लोहे की लाठी उठाई, उसे तब तक हिलाया जब तक वह कटोरे जितनी मोटी और बारह फीट लंबी नहीं हो गई, और जैसे ही वे आगे बढ़े, उन्होंने प्रहार किया और बचाव किया।

नाइन ब्राइट शाइनर्स, जो उसका मुकाबला नहीं कर सके, पीछे हट गए।

"घोड़ों के इस लापरवाह रक्षक," उन्होंने अपनी सुरक्षित जगह पर वापस आकर चिल्लाकर कहा।

“तुमने सबसे जघन्य अपराध किए हैं। तुमने आड़ू और शराब चुराई, आड़ू भोज को तहस-नहस कर दिया, और भगवान लाओ ज़ी की अमरता की गोलियां चुरा लीं। इन सबके अलावा, तुमने चुराई हुई अमरता की शराब भी यहाँ वापस ला दी। क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि तुमने एक के बाद एक अपराध किए हैं?” महान ऋषि हँसे।

"यह सच है, यह सच है," उसने कहा, "लेकिन आप इसके बारे में क्या करने वाले हैं?"

"जेड सम्राट के एक सुनहरे फरमान का पालन करते हुए," नौ तेजस्वी चमकने वालों ने उत्तर दिया, "हम तुम्हें वश में करने के लिए अपनी सेना लेकर यहाँ आए हैं। तुरंत आत्मसमर्पण करो, अन्यथा तुम्हारे ये सभी प्राणी अपनी जान देकर इसकी कीमत चुकाएंगे। यदि तुमने इनकार किया, तो हम इस पर्वत को रौंद कर तुम्हारी गुफा को उलट-पुलट कर देंगे।"

"हे बालों वाले देवताओं," महान ऋषि क्रोध में दहाड़े, "तुम्हारे पास कौन सी जादुई शक्तियां हैं जो तुम्हें इतनी बड़ी-बड़ी बातें करने की इजाजत देती हैं?"

"यहाँ से हट जाओ, वरना मैं तुम्हें अपने गदा का स्वाद चखाऊँगा।" नौ तेजस्वी योद्धाओं ने एक साथ युद्ध नृत्य किया, जिससे सुंदर वानर राजा ज़रा भी भयभीत नहीं हुआ। उसने अपने स्वर्ण-पट्टी वाले गदा को घुमाते हुए, दाएं-बाएं वार करते हुए, नौ तेजस्वी योद्धाओं से तब तक युद्ध किया जब तक उनकी मांसपेशियां कमजोर और उनकी शक्ति समाप्त नहीं हो गई; फिर उनमें से प्रत्येक अपनी पंक्ति तोड़कर अपने हथियार घसीटते हुए भाग गया। वे केंद्रीय सेना के कमान केंद्र पर पहुंचे और शिवालय धारण करने वाले स्वर्ग के राजा ली को सूचना दी कि वानर राजा इतना भयंकर था कि वे उसे हराने में असमर्थ होकर युद्ध के मैदान से भाग गए। तब स्वर्ग के राजा ली ने चार स्वर्ग के राजाओं और अट्ठाईस नक्षत्रों को युद्ध में भेजा। महान ऋषि, इससे बिल्कुल भी भयभीत नहीं हुए, उन्होंने एक सींग वाले दानव राजा, 72 राक्षस राजाओं और चार पराक्रमी जनरलों को गुफा के द्वार के बाहर अपनी युद्ध पंक्ति बनाने का

आदेश दिया। इसके बाद जो झड़प हुई वह सचमुच भयावह थी।
तेज हवाएं,
काले, भयावह बादल।
एक तरफ रंग-बिरंगे झंडे और ध्वज लहरा रहे हैं,
दूसरी ओर भाले और कुल्हाड़ी की चमक दिखाई दे रही थी।
अध्याय 5
72
पश्चिम की यात्रा
गोल हेलमेट चमकते हैं,
परतदार कवच चमक रहा है।
चमकदार गोल हेलमेट सूर्य की रोशनी को प्रतिबिंबित करते हैं।
आकाश की ओर बढ़ते चांदी के शिलाखंडों की तरह;
दीवार में कवच की चमकदार परतें बनी हुई हैं।
जैसे बर्फ का पहाड़ धरती को दबा रहा हो।
लंबी मूठ वाली तलवारें
बादलों को चीरते हुए बिजली की तरह चमकना;
कागज़-सफेद भाले
धुंध और कोहरे को भेदना;
स्वर्ग के आकार के भाले,
टाइगर-आई चेन,
भांग के खेत की तरह कांटेदार;
कांस्य की तलवारें,
और चार चमकते भाले
घने जंगल की तरह फैला हुआ।
धनुष और धनुष, चील के पंखों से बने तीर,
छोटे डंडे और सांप जैसे भाले जो आत्मा को भयभीत कर दें।
अपनी एकमात्र "जैसा चाहो" वाली लाठी लहराते हुए,
महान ऋषि स्वर्ग के देवताओं से युद्ध करते हैं।
यह इतना भीषण नरसंहार है कि इसके ऊपर से कोई पक्षी भी नहीं उड़ सकता;

और बाघ और भेड़िये भय से भाग जाते हैं।
घूमते हुए पत्थर और रेत के बादल हर जगह अंधेरा कर देते हैं।
धूल और मिट्टी से आसमान ढक जाता है।
हथियारों की खड़खड़ाहट से ब्रह्मांड स्तब्ध रह जाता है
जैसे-जैसे युद्ध देवताओं और राक्षसों के मन में भय उत्पन्न करता है।
अध्याय 5
73
पश्चिम की यात्रा
युद्ध सुबह शुरू हुआ और पश्चिम में पहाड़ों के पीछे सूरज डूबने तक चलता रहा। तब तक एक सींग वाले दानव राजा और 72 राक्षस राजाओं को स्वर्ग की सेनाओं ने पकड़ लिया था। केवल चार वीर सेनापति और बंदर ही बच निकले थे और वे जल परदे की गुफा के सबसे भीतरी हिस्से में छिपे हुए थे। महान ऋषि के अकेले गदा ने आकाश में मौजूद चारों स्वर्ग राजाओं, ली (शिला-वाहक) और राजकुमार नेझा को खदेड़ दिया था। लंबे समय तक चले युद्ध के बाद महान ऋषि ने देखा कि रात होने वाली है, इसलिए उन्होंने अपने बालों में से एक बाल नोचा, उसे चबाया, उसके टुकड़े थूक दिए और चिल्लाए, "रूप बदलो!" वे हजारों महान ऋषियों में बदल गए, सभी के पास सोने की पट्टियों वाले गदा थे, जिन्होंने राजकुमार नेझा और पांचों स्वर्ग राजाओं को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।
इस विजय को प्राप्त करने के बाद महान ऋषि ने अपने बाल समेटे और जल्दी से गुफा में वापस चले गए, जहां चारों वीर सेनापतियों ने तुरंत बंदरों को बाहर लाकर लोहे के पुल के शीर्ष पर प्रणाम करवाया ताकि उनका स्वागत किया जा सके।
वे तीन बार रोए और फिर तीन बार हँसे।
"मुझे देखकर तुम क्यों हंस रहे हो और रो रहे हो?" महान ऋषि ने पूछा।
“आज सुबह जब हमने सभी सेनापतियों को लेकर स्वर्ग के राजाओं के विरुद्ध युद्ध किया,” पराक्रमी सेनापतियों ने उत्तर दिया, “राक्षसों के बहत्तर राजा और एक सींग वाला दानव राजा सभी देवताओं द्वारा बंदी बना लिए गए, और हमें अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। इसीलिए हम रोए थे। हम हँसे क्योंकि हे महान ऋषि, आप विजयी और सुरक्षित लौट आए हैं।”
इस पर महान ऋषि ने उत्तर दिया, "जीत और हार, दोनों ही सैनिक के भाग्य में लिखी

बातें हैं। जैसा कि प्राचीन काल में कहा गया है, 'शत्रु के दस हज़ार सैनिकों को मारने के लिए अपने तीन हज़ार सैनिकों को खोना पड़ता है।' वैसे भी, हमारे जो अधिकारी बंदी बनाए गए थे, वे सभी बाघ, तेंदुए, भेड़िये, बिज्जू, नदी-हिरण, लोमड़ी और रैकून-कुत्ते थे। हमारे अपने किसी भी सैनिक को चोट नहीं आई, इसलिए हमें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हालांकि मैंने जादू से अपने शरीर को विभाजित करके शत्रु को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया, फिर भी वे हमारे पर्वत की तलहटी में डेरा डाले हुए हैं, इसलिए हमें सतर्क रहना होगा। इस बीच हमें अच्छा भोजन करना चाहिए और ऊर्जा जुटाने के लिए अच्छी नींद लेनी चाहिए। कल सुबह मैं शक्तिशाली जादू का उपयोग करके उन दिव्य सेनापतियों को पकड़ लूंगा और अपने लोगों का बदला लूंगा।" चारों वीर सेनापतियों और अन्य वानर सेनापतियों ने कई प्याले नारियल की ताड़ी पी ली और चिंता मुक्त होकर सो गए।

जब चारों स्वर्गिक राजाओं ने अपनी सेनाएँ वापस बुला लीं और युद्ध समाप्त कर दिया, तो जिन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था, उन्होंने अपने कार्यों की रिपोर्ट दी। कुछ ने बाघ और तेंदुए पकड़े थे, कुछ ने शेर और हाथी, और अन्य ने भेड़िये और रैकून-कुत्ते, लेकिन एक भी बंदर-दानव नहीं पकड़ा गया था। फिर उन्होंने अपने शिविर के चारों ओर एक मजबूत बाड़ा बनाया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सेनापतियों को पुरस्कृत किया गया, और स्वर्ग-पृथ्वी के जाल में शामिल सैनिकों को घंटियाँ बजाते और जयकार करते हुए, अगले दिन होने वाले एक बड़े युद्ध के लिए तैयार होकर, पुष्प और फल पर्वत को घेरने का आदेश दिया गया। प्रत्येक व्यक्ति ने आदेश सुना, और उनका कड़ाई से पालन किया गया। वास्तव में:

एक दुष्ट बंदर ने अराजकता फैला दी, जिससे आकाश और पृथ्वी हिल गए।
इसलिए उन्होंने अपने जाल बिछाए और दिन-रात पहरा देते रहे।
अगली कड़ी सुनें और जानें कि अगली सुबह उसके साथ क्या किया गया।

अध्याय 5

74

पश्चिम की यात्रा

अध्याय 6

गुआनयिन भोज में आती है और कारण पूछती है

लघु ऋषि ने अपनी शक्ति का प्रयोग करके महान ऋषि को पराजित किया।

हम फिलहाल घेराबंदी कर रहे स्वर्गीय सेनापतियों और गहरी नींद में सो रहे महान ऋषि की बात यहीं छोड़ते हैं। कहानी आगे बताती है कि कैसे करुणा और दया से भरे चमत्कारी दुख-मुक्तिदाता, दक्षिणी सागर में स्थित पोटारका पर्वत की बोधिसत्व गुआनयिन को महारानी माँ ने आड़ू भोज में आमंत्रित किया, जिसके बाद वे अपने महान शिष्य हुइआन के साथ जेड तालाब के कीमती मंडपों में गईं।

उसने उस स्थान को सुनसान पाया और भोज बर्बाद हो चुका था। उपस्थित कुछ ही अमर देव अपनी-अपनी जगहों पर नहीं बैठे थे, बल्कि आपस में उलझी हुई चर्चाएँ कर रहे थे। अभिवादन समाप्त होने पर अमर देवों ने बोधिसत्व को सारी घटना का ब्यौरा दिया।

“यदि कोई भोज और भोज नहीं होगा,” बोधिसत्व ने कहा, “तो बेहतर होगा कि तुम सब मेरे साथ जेड सम्राट के पास चलो।” अमर लोग प्रसन्नतापूर्वक उनके पीछे चलने को तैयार हो गए, और जब वे सर्वव्यापी प्रकाश के हॉल के सामने पहुँचे तो चारों स्वर्गीय गुरु, नंगे पैर वाले अमर और कई अन्य लोग बोधिसत्व का स्वागत करने के लिए वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने बोधिसत्व को बताया कि जेड सम्राट ने राक्षस को पकड़ने के लिए स्वर्गीय सेनाएँ भेजी थीं, लेकिन वे अभी तक वापस नहीं लौटी हैं।

बोधिसत्व ने कहा, "मैं जेड सम्राट से मिलना चाहता हूँ, इसलिए क्या आप मेरी ओर से उन्हें सूचित कर सकते हैं?"

इसके बाद दिव्य गुरु क्वी होंगजी चमत्कारिक धुंध के हॉल में गए, और बोधिसत्व को अंदर आमंत्रित किया गया। उन्होंने पाया कि भगवान लाओ ज़ी वहाँ सम्मान के स्थान पर विराजमान थे, और उनके पीछे महारानी माँ थीं।

बोधिसत्व अन्य लोगों के आगे-आगे प्रवेश कर गईं, और जेड सम्राट को प्रणाम करने के बाद उन्होंने लाओ ज़ी और महारानी माँ का अभिवादन किया। सबके बैठ जाने के बाद उन्होंने पूछा कि पीच भोज में क्या हुआ था।

"यह भोज हर साल आयोजित होता है, और आमतौर पर यह एक बहुत ही खुशी का अवसर होता है," जेड सम्राट ने उत्तर दिया, "लेकिन इस साल उस बंदर राक्षस ने इसे बर्बाद कर दिया, इसलिए आपका निमंत्रण व्यर्थ हो गया।"

बोधिसत्व ने पूछा, "यह बंदर जैसा राक्षस कहाँ से आया है?"

"उसका जन्म पूर्वी महाद्वीप के आओलाई देश में स्थित पुष्प और फल पर्वत पर एक पत्थर के अंडे से हुआ था," जेड सम्राट ने उत्तर दिया। जब उसका जन्म हुआ, तो

उसकी आँखों से सुनहरी किरणें निकलीं जो तारा महल तक पहुँचीं। पहले तो हमने उस पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन बाद में वह एक आत्मा बन गया, जिसने ड्रैगन और बाघों को वश में किया और मृत्यु के रिकॉर्ड से अपना नाम मिटा दिया। पाताल लोक के ड्रैगन राजाओं और यमराज ने हमें इस बारे में पत्रों में सूचित किया, और हम उसे पकड़ना चाहते थे, लेकिन दीर्घायु के तारे ने यह उल्लेख किया कि तीनों लोकों में नौ छिद्रों वाले सभी प्राणी अमर हो सकते हैं। इसलिए हमने उसे ऊपरी लोक में बुलाकर और शाही अस्तबल में घोड़ों का रक्षक नियुक्त करके योग्य को शिक्षा प्रदान की। लेकिन यह उस दुष्ट के लिए पर्याप्त नहीं था, जिसने स्वर्ग के विरुद्ध विद्रोह किया। हमने स्वर्ग के राजा ली और राजकुमार नेझा को उसका आत्मसमर्पण स्वीकार करने के लिए भेजा, उसे क्षमादान दिया और उसे वापस ऊपरी लोक में बुला लिया। हमने उसे 'स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि' बनाया, हालाँकि इसके लिए कोई वेतन नहीं मिलता था। चूंकि उसके पास करने के लिए कुछ नहीं था, वह इधर-उधर भटकता रहता था, और इस डर से कि इससे कोई परेशानी न हो, हमने उसे आड़ू के बाग की देखभाल करो। उसने एक बार फिर पुराने पेड़ों से सारे बड़े-बड़े आड़ू चुराकर और खाकर कानून का उल्लंघन किया। जब भोज का आयोजन होना था, तो उसे आमंत्रित नहीं किया गया क्योंकि उसका पद केवल मानद था; इसलिए उसने नंगे पैर वाले अमर पर एक चाल चली, उन्हीं की तरह बनकर भोज में गया, अमरों के सारे व्यंजन खाए और अमरों की सारी शराब पी ली। इसके अलावा, उसने भगवान लाओ ज़ी की अमरता की गोलियां और कुछ शाही शराब चुरा ली, जिसे वह बंदरों के लिए अपने पहाड़ पर ले गया। इससे हमें बहुत गुस्सा आया, इसलिए हमने अध्याय 6 को फैलाने के लिए एक लाख स्वर्गीय सैनिकों को भेजा।

75

पश्चिम की यात्रा

हम आकाश और पृथ्वी के जाल बिछाकर उसे वश में कर लेंगे। लेकिन आज हमें कोई खबर नहीं मिली है, इसलिए हम नहीं जानते कि हमें विजय मिली है या नहीं।

जब बोधिसत्व ने यह सुना, तो उन्होंने नौसिखिए हुइआन से कहा, "जल्दी स्वर्ग से पुष्प और फल पर्वत पर उतरकर सैन्य स्थिति का पता लगाओ। यदि तुम्हें किसी तरह के विरोध का सामना करना पड़े, तो तुम मदद कर सकते हो, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम एक सटीक रिपोर्ट लेकर आओ।" नौसिखिए हुइआन ने अपने वस्त्र

समेटे, अपनी लोहे की छड़ी उठाई, बादलों के सहारे महल से निकले और सीधे पर्वत की ओर चल दिए। उन्होंने देखा कि आकाश और पृथ्वी के जालों की कई परतों से, और शिविर के द्वारों पर घंटियाँ बजाते और मंत्र बोलते हुए पुरुषों द्वारा पर्वत के चारों ओर घेरा एकदम सुरक्षित था।

हुइआन रुका और पुकारा, "शिविर के द्वार पर स्थित स्वर्गीय सैनिकों, मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि मैं, मोक्ष, स्वर्गीय राजा ली का द्वितीय पुत्र, जिसे हुइआन के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिणी सागर की गुआनयिन का वरिष्ठ शिष्य, सैन्य स्थिति के बारे में जानकारी लेने आया हूँ।" तब शिविर के भीतर स्थित पंच पर्वतों के दिव्य सैनिक मुख्यालय के द्वार से अंदर गए, जहाँ चूहा, मुर्गा, घोड़ा और खरगोश नक्षत्रों ने केंद्रीय कोर के कमांडर को समाचार दिया। स्वर्गीय राजा ली ने आदेश के साथ एक ध्वज भेजा कि हुइआन को अंदर आने देने के लिए स्वर्ग और पृथ्वी के जाल खोले जाएँ। पूर्व दिशा में अभी उजाला होना शुरू ही हुआ था कि हुइआन ध्वज के पीछे-पीछे अंदर गया और स्वर्गीय राजा ली और अन्य चार स्वर्गीय राजाओं को प्रणाम किया।

"मेरे पुत्र, तुम कहाँ से आए हो?" स्वर्ग के राजा ली ने पूछा।

"तुम्हारा मूर्ख पुत्र बोधिसत्व के साथ आड़ू भोज में गया था, और जब उसने भोज को खाली और जेड कुंड पर किसी को नहीं पाया, तो वह मुझे और अन्य अमरों को जेड सम्राट से मिलने ले गई। जेड सम्राट ने उसे बताया कि हे पिता, तुम और अन्य राजा इस वानर राक्षस को पकड़ने के लिए पाताल लोक गए हो। चूंकि जेड सम्राट को दिन भर युद्ध के परिणाम के बारे में कोई खबर नहीं मिली, इसलिए बोधिसत्व ने मुझे यहाँ यह पता लगाने के लिए भेजा है कि क्या हुआ है।"

“हम कल यहाँ पहुँचे और डेरा डाला,” स्वर्ग के राजा ली ने उत्तर दिया, “फिर हमने नौ तेजस्वी योद्धाओं को शत्रु को युद्ध के लिए चुनौती देने भेजा, लेकिन उस दुष्ट ने इतनी जबरदस्त जादुई शक्तियों का प्रयोग किया कि नौ तेजस्वी योद्धा सभी पराजित होकर लौट आए। फिर हमने अपने सैनिकों को युद्ध में उतारा, और उस दुष्ट ने भी अपनी युद्ध पंक्ति तैयार कर ली। हमारे एक लाख स्वर्गीय सैनिकों ने उसके साथ शाम तक अनिर्णायक लड़ाई लड़ी, जब उसने एक जादू का प्रयोग करके अपने शरीर को दो भागों में बाँट लिया और हमें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। जब हमने अपनी सेनाओं को वापस बुलाकर जाँच की, तो हमने पाया कि हमने केवल भेड़िये, बाघ, तेंदुए आदि

को ही पकड़ा था, और एक भी बंदर राक्षस को नहीं पकड़ा था। हमने आज अभी तक युद्ध नहीं किया है।"

उनके बोलने से पहले ही मुख्यालय के द्वार के बाहर कोई प्रकट हुआ और सूचना दी कि महान ऋषि बंदर आत्माओं की भीड़ के साथ युद्ध के लिए ललचाते हुए बाहर हैं। अन्य चार स्वर्गिक राजा, स्वर्गिक राजा ली और राजकुमार नेझा सभी अपनी सेनाओं को युद्ध में उतारने के पक्ष में थे, लेकिन मोक्सा ने कहा,

"पिताजी, जब बोधिसत्व ने आपके मूर्ख पुत्र को यहाँ आकर समाचार जानने का निर्देश दिया था, तो मुझे भी बताया गया था कि यदि कोई युद्ध हो तो मैं भी सहायता कर सकता हूँ। क्या मैं जाकर देख सकता हूँ कि वह 'महान ऋषि' किस प्रकार का है?"

वह है, भले ही मैं प्रतिभाहीन हूँ?

"मेरे बालक," स्वर्ग के राजा ली ने कहा, "तुम कुछ वर्षों से बोधिसत्व के साथ अपने आचरण का अभ्यास कर रहे हो, इसलिए मुझे लगता है कि तुमने कुछ जादुई शक्तियां प्राप्त कर ली होंगी, लेकिन बहुत सावधान रहना।"

शानदार राजकुमार मोक्ष ने अपने कढ़ाईदार वस्त्रों को समेटा और मुख्यालय के द्वार से बाहर निकलकर दोनों हाथों में अपनी लोहे की छड़ी लहराते हुए चिल्लाया, "तुममें से कौन स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि है?"

“मैं हूँ,” महान ऋषि ने अपनी ‘जैसा चाहो’ वाली लाठी लहराते हुए उत्तर दिया। “लेकिन तुम खुद को क्या समझते हो, जो इस तरह का सवाल पूछ रहे हो?”

अध्याय 6

76

पश्चिम की यात्रा

"मैं राजकुमार मोक्ष हूं, स्वर्ग के राजा ली का दूसरा पुत्र, और मैं अब बोधिसत्व गुआनयिन के सिंहासन के समक्ष एक शिष्य और रक्षक हूं। मेरा बौद्ध नाम हुइआन है।"

"दक्षिणी सागर में रहकर अपने आचरण को सुधारने के बजाय तुम मुझसे मिलने यहाँ क्यों आए हो?"

महान ऋषि ने पूछा, और मोक्ष ने उत्तर दिया, "मेरे गुरु ने मुझे यहाँ की सैन्य स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा था, लेकिन अब जब मैंने तुम्हारी बर्बरता देख ली है, तो मैं तुम्हें पकड़ने आया हूँ।"

"तुम बड़ी-बड़ी बातें करते हो, है ना?" महान ऋषि ने कहा।

"अच्छा, तो जाओ मत, मेरे डंडे का स्वाद चखो।" मोक्सा, ज़रा भी भयभीत हुए बिना, अपने लोहे के डंडे से उस पर प्रहार किया। मुख्यालय के द्वार के बाहर पहाड़ की ढलान पर आधे रास्ते में, दोनों के बीच ज़बरदस्त लड़ाई हुई।
तख्ते एक जैसे थे, लेकिन अलग-अलग लोहे से बने थे;
हथियारों में टकराव हुआ, लेकिन उनके स्वामी एक जैसे नहीं थे।
उनमें से एक पथभ्रष्ट अमर व्यक्ति था जिसे महान ऋषि के नाम से जाना जाता था।
दूसरा व्यक्ति गुआनयिन का सच्चा ड्रैगन शिष्य था।
लोहे की छड़ी, जिसे हजारों हथौड़ों से पीटा गया था,
इसे डिंग और जिया की कला द्वारा गढ़ा गया था।
एक समय था जब "जैसा तुम चाहो" का सिद्धांत आकाशगंगा को स्थिर रखता था:
समुद्र को शांत करने वाले खजाने की तरह इसकी जादुई शक्ति भी बहुत अधिक थी।
जब दोनों मिले तो वे सचमुच एक-दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे।
और वे एक दूसरे पर लगातार वार करते और हमला करते रहे।
वह भयावह लाठी, असीम रूप से हत्यारी,
यह हवा की तरह तेजी से आपकी कमर के चारों ओर घूम सकता है।
भाला पकड़ने वाली छड़ी,
कभी भी मौका न छोड़ते हुए,
वह बेहद प्रभावशाली था, दाएं-बाएं वार करता रहा।
एक तरफ झंडे और बैनर लहरा रहे हैं,
दूसरी ओर ऊंटों के ढोल बजते हैं।
दस हजार दिव्य सेनापति अनेक घेरे में;
बंदर जैसे शैतानों की एक गुफा, जिसमें वे घनी आबादी में एक साथ रहते हैं।
अध्याय 6
77
पश्चिम की यात्रा
भयानक कोहरे और भयावह बादलों ने पृथ्वी को ढक लिया है।
जब भीषण युद्ध का धुआं आकाश में उठ रहा था।
कल की लड़ाई काफी भीषण थी;
आज का संघर्ष तो और भी बदतर है।

बंदर राजा के प्रशंसनीय कौशल

मोक्सा को पूरी तरह पराजित करके भागने पर मजबूर कर दिया।

लगभग पचास-साठ दौर की लड़ाई के बाद, हुआन की बांह और कंधे सुन्न पड़ गए थे और उनमें दर्द होने लगा था, और वह महान ऋषि का और अधिक विरोध नहीं कर सका। उसने अपनी छड़ी को धोखे से लहराते हुए पीछे मुड़कर भाग गया। तब महान ऋषि ने अपने वानर सैनिकों को वापस बुला लिया और गुफा के द्वार के बाहर डेरा डाल दिया।

दूसरे शिविर के द्वार पर मौजूद बड़े और छोटे दिव्य सैनिकों ने हुआन का स्वागत किया और उसे सीधे मुख्यालय जाने दिया, जहाँ वह हाँफते हुए चारों दिव्य राजाओं, पगोडा-वाहक ली और अपने भाई राजकुमार नेझा से बोला, "क्या महान ऋषि हैं! क्या महान ऋषि हैं! उनकी जादुई शक्तियाँ मेरे लिए बहुत अधिक हैं। उन्होंने मुझे हरा दिया।" यह खबर सुनकर दिव्य राजा ली चौंक गए और उन्होंने अतिरिक्त सैनिकों की मांग करते हुए बलवान दानव राजा और राजकुमार मोक्ष को स्वर्ग में आत्मसमर्पण करने के लिए भेज दिया।

एक पल भी बर्बाद न करते हुए, दोनों दूत आकाश-पृथ्वी के जालों से होकर निकले और अपने शुभ बादलों पर सवार हो गए। क्षण भर में वे सर्वव्यापी प्रकाश के हॉल के बाहर पहुँचे, जहाँ उन्होंने चार दिव्य गुरुओं का अभिवादन किया, जिन्होंने उन्हें चमत्कारिक धुंध के हॉल में ले जाकर उनका ज्ञापन सौंप दिया। राजकुमार मोक्ष, या हुइआन ने बोधिसत्व को प्रणाम किया, जिन्होंने उनसे पूछा कि उन्होंने क्या पता लगाया है।

"जैसा आपने मुझे निर्देश दिया था, मैं पुष्प और फल पर्वत पर गई," हुइआन ने बताया, "मैंने उनसे स्वर्ग-पृथ्वी जाल के द्वार खोलने को कहा, अपने पिता से मिली और उन्हें आपके दिए गए आदेश बताए। मेरे पिता ने कहा कि उन्होंने कल वानर राजा से युद्ध किया, लेकिन एक भी वानर आत्मा को नहीं पकड़ पाए—केवल बाघ, तेंदुए, शेर, हाथी आदि ही पकड़े। जब वे मुझे यह बता रहे थे, तभी वानर राजा ने फिर से युद्ध की मांग की, इसलिए आपके शिष्य ने अपने लोहे के डंडे से उसके विरुद्ध लगभग पचास-साठ बार युद्ध किया, लेकिन मैं उसका मुकाबला नहीं कर सकी। उसने मुझे हरा दिया और शिविर में वापस भेज दिया। इसीलिए मेरे पिता ने मुझे और बलवान दानव राजा को स्वर्ग में सहायता मांगने के लिए भेजा है।" बोधिसत्व ने गहरी सोच में

अपना सिर झुका लिया।
जेड सम्राट ने ज्ञापन खोला और देखा कि उसमें मदद की गुहार लिखी हुई है। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "इस असहनीय बंदर आत्मा के पास एक लाख स्वर्गीय सैनिकों से लड़ने के लिए पर्याप्त चालें हैं।"
"स्वर्गीय राजा ली ने अतिरिक्त सैनिकों की मांग की है। मुझे उनके पास कौन से स्वर्गीय सैनिक भेजने चाहिए?"
उसके मुंह से ये शब्द निकलने से पहले ही, गुआनयिन ने अपने हाथ जोड़कर कहा, "चिंता मत कीजिए, महाराज। मैं इस बंदर को पकड़ने के लिए एक देवता की सिफारिश कर सकती हूँ।"
"कौन सा देवता?" जेड सम्राट ने पूछा, और बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "महाराज के भतीजे, प्रख्यात ऋषि और सच्चे भगवान एरलांग, जो वर्तमान में गुआंगझोउ के गुआनजियांगकौ में रह रहे हैं और निम्न प्राणियों द्वारा उनके लिए जलाई जाने वाली धूप का आनंद ले रहे हैं। अतीत में उन्होंने छह राक्षसों का संहार किया था। उनके पास बेर पहाड़ी के भाई और बारह सौ भूसे के सिर वाले देवता हैं, और उनकी जादुई शक्तियां अपार हैं। वे यहाँ आने के लिए बुलावे का पालन न करने के बावजूद भेजे जाने के लिए सहमत होंगे, इसलिए महाराज कृपया एक आदेश जारी करें जिसमें उन्हें अपनी सेना के साथ बचाव के लिए भेजा जाए।" जेड सम्राट ने तब ऐसा आदेश जारी किया और बलवान ऋषि को भेजा।

राजा इसे पहुंचाएगा।
शैतान राजा ने फरमान लिया, अपने बादल पर सवार हुआ और सीधे गुआनजियांगकौ चला गया। वह एक घंटे के भीतर सच्चे प्रभु के मंदिर में पहुँच गया। जब द्वारपालों पर पहरा दे रहे दानव न्यायाधीश यह सूचना देने अंदर गए कि स्वर्ग से एक दूत शाही फरमान लेकर बाहर खड़ा है, तो एरलांग अपने भाइयों के साथ फरमान लेने के लिए द्वारपाल के बाहर गया, और फरमान पढ़ते समय धूप जलाई गई।
स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि, पुष्प और फल पर्वत के वानर राक्षस ने विद्रोह कर दिया है।
क्योंकि उसने स्वर्ग में रहते हुए आड़ू, शराब और गोलियां चुराईं और आड़ू भोज को

तहस-नहस कर दिया, इसलिए हमने एक लाख स्वर्गीय सैनिकों और अठारह स्वर्ग-पृथ्वी जालों को पर्वत को घेरने और उसे आत्मसमर्पण करने के लिए भेजा है, लेकिन हम अभी तक सफल नहीं हुए हैं। इसलिए अब हम विशेष रूप से अपने योग्य भतीजे और उसके शपथ लिए हुए भाइयों को पुष्प और फल पर्वत पर भेजकर उसे नष्ट करने में सहायता करने का आदेश देते हैं। जब आप सफल होंगे, तो आपको बड़े पुरस्कार और उच्च पद प्राप्त होंगे।

एर्लांग बहुत प्रसन्न हुआ। उसने स्वर्ग से आए दूत को वापस जाकर यह सूचना देने को कहा कि वह अपनी तलवार सम्राट की सेवा में समर्पित करेगा। हमें यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि शैतान राजा ने स्वर्ग को क्या सूचना दी।

सच्चे स्वामी एरलांग ने बेर पहाड़ी के छह शपथधारी भाइयों - मार्शल कांग, झांग, याओ और ली, और सेनापति क्वो शेन और झी जियान - को सभाघर में बुलाया। उन्होंने कहा, "जेड सम्राट ने अभी-अभी हमें फूलों और फलों के पर्वत पर एक बंदर राक्षस को वश में करने का आदेश दिया है। तुम सब मेरे साथ आ रहे हो।"

सभी भाई जाने के लिए उत्सुक थे, और अपनी दिव्य सेना को इकट्ठा करके उन्होंने एक भयंकर तूफान ला दिया। पलक झपकते ही वे पूर्वी महासागर को पार कर गए, चीलों पर सवार होकर और कुत्तों को साथ लेकर, अपने धनुष और धनुष खींचते हुए, और फूलों और फलों के पर्वत पर पहुँच गए।

स्वर्ग-पृथ्वी के जालों की कई परतों को अभेद्य पाकर एरलांग ने पुकार कर कहा, "सुनो, स्वर्ग-पृथ्वी के जालों के प्रभारी सभी सेनापतियों। मैं सच्चा भगवान और प्रख्यात ऋषि एरलांग हूँ, और मुझे जेड सम्राट ने वानर राक्षस को पकड़ने के लिए यहाँ भेजा है। शिविर के द्वार खोलो और मुझे तुरंत अंदर आने दो।" जाल बनाने वाले देवताओं की प्रत्येक पंक्ति ने उन्हें अंदर जाने दिया, और अन्य चार स्वर्गिक राजा और स्वर्गिक राजा ली सभी मुख्यालय के बाहर उनका स्वागत करने आए। परिचय समाप्त होने पर उन्होंने पूछा कि युद्ध कैसा रहा, और स्वर्गिक राजाओं ने उन्हें घटना का पूरा विवरण दिया।

“अब जब मैं, छोटा ऋषि, यहाँ आ गया हूँ, तो मुझे उससे कुछ रूपांतरणों का मुकाबला करना होगा,” एरलांग ने मुस्कुराते हुए कहा। “मुझे आशा है कि आप सभी सज्जन अपने आकाश-पृथ्वी जालों से कड़ी घेराबंदी बनाए रखेंगे, लेकिन पर्वत की चोटी को मत ढकिएगा; तभी मैं उससे लड़ पाऊँगा। अगर वह मुझे हरा देता है, तो मुझे

आप सज्जनों की मदद की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि मेरे भाई मेरा साथ देंगे; और अगर मैं उसे हरा देता हूँ, तो मुझे उसे बाँधने के लिए आपको परेशान नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि मेरे भाई यह कर सकते हैं। मैं बस स्वर्ग के राजा ली से अनुरोध करना चाहता हूँ कि वे आकाश में खड़े होकर इस राक्षस-पहचानने वाले दर्पण का संचालन करें। मुझे डर है कि अगर वह हार गया, तो वह कहीं छिप सकता है, इसलिए आपको मुझे उसका स्पष्ट दृश्य देना होगा और उसे भागने नहीं देना होगा।" स्वर्ग के राजा चारों दिशाओं में तैनात रहे, और सभी स्वर्गीय सैनिक अपनी युद्ध स्थितियों में तैनात थे।
सच्चे भगवान एरलांग चार सेनापतियों और दो जनरलों (स्वयं सहित सात शपथबद्ध भाई) के नेतृत्व में शत्रु को युद्ध के लिए चुनौती देने निकले; और उन्होंने अपने अन्य अधिकारियों को शिविर की दृढ़ता से रक्षा करने और चीलों और कुत्तों को नियंत्रण में रखने का आदेश दिया। सभी भूसे के सिर वाले देवताओं ने आदेश का पालन किया। फिर एरलांग जल परदे की गुफा के बाहर गए, जहाँ उन्होंने बंदरों के झुंड को कुंडलित अजगर की युद्ध पंक्ति में व्यवस्थित रूप से खड़े देखा; केंद्रीय दल के बीच में एक खंभा खड़ा था जिस पर एक ध्वज लगा था जिस पर लिखा था "महान ऋषि स्वर्ग के समान।"

पश्चिम की यात्रा

"उस घिनौने राक्षस को स्वर्ग के बराबर खुद को कहने का क्या अधिकार है?" एरलांग ने पूछा; और बेर पहाड़ी के छह शपथधारी भाइयों ने उत्तर दिया, "उसकी प्रशंसा करना बंद करो और उसे युद्ध के लिए चुनौती दो।" जब उनके शिविर के द्वार पर मौजूद छोटे बंदरों ने सच्चे स्वामी एरलांग को देखा तो वे सूचना देने के लिए वापस दौड़ पड़े, जिसके बाद बंदर राजा ने अपनी सोने की पट्टी वाली गदा उठाई, अपने सुनहरे कवच को ठीक किया, अपने बादल पर चलने वाले जूते पहने, अपने सुनहरे हेलमेट को महसूस किया और शिविर के द्वार से बाहर कूद गया। उसने पहली ही नज़र में देखा कि एरलांग कितना शांत और अद्भुत दिख रहा था, और उसने कितने सुरुचिपूर्ण ढंग से कपड़े पहने थे। वास्तव में:

उनका व्यवहार परिष्कृत था, उनका चेहरा उदात्त था।
उसके कान कंधों तक लटक रहे थे और उसकी आंखें चमक रही थीं।

उसके सिर पर जो टोपी थी, उसमें तीन शिखर थे और उड़ते हुए फीनिक्स पक्षी बने हुए थे।
और उनका वस्त्र हल्के हंस के पीले रंग का था।
उसके जूते सोने के कपड़े से बने थे; उसकी मोजों पर अजगर लिपटे हुए थे; उसकी जेड की कमरबंद आठ रत्नों से सजी थी।
उसकी कमर पर चंद्रमा की तरह घुमावदार धनुष था।
उसके हाथ में दोधारी त्रिशूल था।
अपनी मां को बचाते समय उसकी कुल्हाड़ी ने पीच माउंटेन को चीर दिया था, उसके धनुष ने ज़ोंग्लुओ के जुड़वां फीनिक्सों को मार डाला था।
आठ बोगीज़ को मारने के लिए उनकी प्रसिद्धि व्यापक रूप से फैली हुई थी।
और वह प्लम हिल के सात ऋषियों में से एक बन गया था।
उसका हृदय इतना ऊँचा था कि वह स्वर्ग में अपने रिश्तेदारों को स्वीकार नहीं कर सका; अपने अहंकार में वह गुआनजियांग में देवता बनने के लिए वापस चला गया।
वह लाल नगर के दयालु और चमत्कारी ऋषि थे।
एर्लांग, जिनके रूपांतरणों की कोई संख्या नहीं थी।
जब महान ऋषि ने उसे देखा तो वह प्रसन्नता से हँसे, अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी उठाई और चिल्लाए, "तुम कहाँ से आए हो, छोटे सेनापति, जो मुझे चुनौती देने का साहस करते हो?"
"अगर तुम मुझे पहचान नहीं सकते, तो तुम अंधे ही होगे। मैं जेड सम्राट का भतीजा हूँ, और मेरी उपाधि है दयालु और चमत्कारी राजा एरलांग। मैं शाही आदेश पर तुम्हें गिरफ्तार करने आया हूँ, घोड़ों के रक्षक, तुम स्वर्ग के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हो, तुम लापरवाह बंदर हो।"
अध्याय 6
80
पश्चिम की यात्रा
“अब मुझे याद आया कि तुम कौन हो,” महान ऋषि ने उत्तर दिया। “कुछ वर्ष पूर्व जेड सम्राट की छोटी बहन नश्वर बनना चाहती थी और पाताल लोक में आई, जहाँ उसने श्री यांग से विवाह किया और एक पुत्र को जन्म दिया, जिसने अपनी कुल्हाड़ी से पीच पर्वत को चीर डाला। क्या तुम वही हो? मुझे सचमुच तुम्हें कुछ श्राप देने

चाहिए, लेकिन मेरा तुमसे कोई झगड़ा नहीं है; और तुम्हें अपनी गदा से मारना दया का काम होगा। तो क्यों न तुम जल्दी वापस जाओ, युवक, और अपने उन चारों स्वर्गीय राजाओं को बाहर आने के लिए कहो?"

जब सच्चे भगवान एरलांग ने यह सुना तो वे क्रोधित होकर बोले, "अरे बंदर! तेरी तमीज़ कहाँ है? मेरी इस तलवार से देख! " महान ऋषि ने वार से बचते हुए तुरंत अपना सोने की पट्टी वाला गदा उठाकर पलटवार किया।

उन दोनों के बीच एक शानदार मुकाबला हुआ:

दयालु ईश्वर एरलांग,

महान ऋषि जो स्वर्ग के समतुल्य हैं:

एक है सुंदर बंदर राजा, जो अपने शत्रुओं को छल से छलित करने में माहिर है; दूसरा है सच्चा स्तंभ, जो अज्ञात विजयदाता है।

जब दोनों मिले

वे दोनों ही लड़ने के मूड में थे।

जो पहले कभी सम्मान नहीं करता था

आज मैंने अनुपात का बोध सीखा।

लोहे की छड़ी उड़ने वाले ड्रैगनों के साथ दौड़ लगा रही थी।

वह दिव्य गदा नाचते हुए फीनिक्स पक्षी की तरह प्रतीत हो रही थी।

बाईं ओर बचाव करते हुए, दाईं ओर प्रहार करते हुए,

वार का सामना करने के लिए आगे बढ़ते हुए, पीछे से चमकता हुआ।

प्लम हिल के भाई एक पक्ष की ताकत को और बढ़ाते हैं।

जबकि दूसरे के पास आदेशों को प्रसारित करने के लिए चार दिग्गज जनरल हैं।

जैसे ही झंडे लहराते हैं और ढोल बजते हैं, दोनों पक्ष एक हो जाते हैं;

युद्धघोष और घंटियों की आवाजें सभी का मनोबल बढ़ाती हैं।

दोनों लोहे की तलवारें अपने-अपने मौके की प्रतीक्षा कर रही हैं।

लेकिन उनके आने-जाने से कोई भी रास्ता नहीं खुलता।

सोने की पट्टी वाली लाठी, समुद्र से मिला खजाना,

यह उड़ सकता है और जीत हासिल करने के लिए खुद को रूपांतरित कर सकता है।

एक पल की देरी और जान चली जाती है;
एक गलती आखिरी गलती साबित होगी।
एर्लांग और महान ऋषि के बीच तीन सौ से अधिक दौर तक चले युद्ध का परिणाम अभी भी अनिश्चित था। एर्लांग ने स्वयं को तैयार किया और एक झटके में दस हजार फ़ैदम लंबा हो गया; उसके हाथों में उसका दोधारी त्रिशूल माउंट हुआ की चोटियों जैसा लग रहा था। उसका चेहरा काला था, उसके दाँत लंबे थे और उसके बाल चमकीले लाल थे: वह भयंकर रूप से दुष्ट लग रहा था। उसने महान ऋषि के सिर पर प्रहार किया। महान ऋषि ने भी जादू का सहारा लेते हुए अपना शरीर एर्लांग के समान विशाल और चेहरा उतना ही डरावना बना लिया; और एर्लांग के प्रहार को रोकने के लिए उसने अपनी इच्छा-युक्त स्वर्ण-पट्टी वाली गदा उठाई, जो अब कुनलुन पर्वत की चोटी पर स्थित स्वर्ग के स्तंभ के समान थी। इससे दो वानर सेनापति मा और लियू इतने भयभीत हो गए कि वे अपने झंडे भी नहीं लहरा सके, जबकि गिब्बन सेनापति सेंग और बा अपनी तलवारें चलाने से भी डर गए। दूसरी ओर, कांग, झांग, याओ, ली, गुओ शेन और झी जियान ने भूसे के सिर वाले देवताओं को जल परदे की गुफा पर हमला करने के लिए उकसाया, उनके कुत्तों और चीलों को खुला छोड़ दिया और उनके धनुष और क्रॉसबो खींच लिए।
इस हमले से चारों वानर सेनापति भाग निकले और दो-तीन हज़ार वानरों को पकड़ लिया गया। वानरों ने अपने भाले फेंक दिए, कवच उतार दिए, तलवारें और भाले त्याग दिए और चीखते-चिल्लाते भाग गए। कुछ पहाड़ पर चढ़ गए और कुछ गुफा में लौट आए, जैसे उल्लू से डरे हुए पक्षी या आकाश में बिखरे तारे। शपथ लिए हुए भाइयों की इस विजय के बारे में बस इतना ही कहा जा सकता है।
कहानी आगे बताती है कि कैसे सच्चे भगवान एरलांग और महान ऋषि, जिन्होंने स्वयं को स्वर्ग और पृथ्वी के आकार में रूपांतरित कर लिया था, युद्ध में उलझे हुए थे, तभी अचानक महान ऋषि ने देखा कि उनके शिविर में मौजूद वानर राक्षस भय से तितर-बितर हो गए हैं। उन्होंने अपना जादुई रूप त्याग दिया और हाथ में गदा लिए भाग निकले। उन्हें जाते देख सच्चे भगवान एरलांग भी लंबे-लंबे कदमों से उनके पीछे दौड़ पड़े।
“तुम कहाँ जा रहे हो?” उसने पूछा। “अगर तुम तुरंत आत्मसमर्पण कर दोगे, तो

तुम्हारी जान बच जाएगी।" महान ऋषि, जिनका लड़ने का मन नहीं बचा था, जितनी तेज़ी से दौड़ सकते थे, दौड़ रहे थे। जैसे ही वे गुफा के प्रवेश द्वार के पास पहुँचे, उनका सामना सेनापतियों कांग, झांग, याओ और ली के साथ-साथ सेनापतियों गुओ शेन और झी जियान से हुआ, जो अपनी सेनाओं के साथ उनका रास्ता रोक रहे थे।

"कहाँ जा रहे हो, धिक्कार है बंदर?" उन्होंने पूछा, और महान ऋषि ने जल्दी से अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी को इतना छोटा कर लिया कि वह कढ़ाई की सुई के आकार की हो गई और उसे अपने कान में छिपा लिया। फिर उन्होंने खुद को झटका दिया, गौरैया का रूप धारण किया, एक पेड़ पर उड़ गए और उसकी एक शाखा पर बैठ गए। उन छह शपथधारी भाइयों ने उसे बहुत ढूंढा लेकिन वह कहीं नहीं मिला, इसलिए वे सब एक साथ चिल्लाए,

"बंदर राक्षस भाग गया है, बंदर राक्षस भाग गया है।"

जब वे चिल्ला रहे थे तभी सच्चे भगवान एरलांग वहाँ आ गए और उनसे पूछा, "भाइयों, जब वह गायब हुआ तो तुम उसका पीछा करते हुए कहाँ गए थे?"

"अभी-अभी हमने उसे चारों ओर से घेर लिया था, लेकिन वह गायब हो गया।" एरलांग ने अपनी फीनिक्स जैसी आँखें पूरी तरह खोलीं और चारों ओर देखा। उसने देखा कि महान ऋषि ने अपना रूप बदलकर एक चिड़िया का रूप धारण कर लिया था और एक शाखा पर बैठे थे; इसलिए उसने अपना जादुई रूप त्याग दिया, अपना दिव्य त्रिशूल नीचे फेंक दिया और अपनी कमर से तीर-धनुष निकाल लिया। फिर उसने अपना रूप बदलकर चील का रूप धारण किया, अपने पंख फैलाए और हमला करने के लिए झपट्टा मारा।

जैसे ही महान ऋषि ने यह देखा, वे तुरंत एक विशाल जलकौवा में परिवर्तित होकर आकाश में उड़ गए। एरलांग ने उन्हें देखा और अपने पंखों को झटकते हुए और शरीर को घुमाते हुए एक सारस में परिवर्तित हो गए और बादलों को चीरते हुए उन्हें पकड़ने की कोशिश की। महान ऋषि एक पहाड़ी झरने पर उतरे और मछली में परिवर्तित होकर पानी में गोता लगा लिया। एरलांग, जो उनका पीछा करते हुए झरने के किनारे तक आया था, उन्हें कहीं भी नहीं देख सका।

“वह बंदर ज़रूर पानी में गया होगा और किसी मछली या झींगे में बदल गया होगा,” उसने सोचा। “मैं फिर से अपना रूप बदलूंगा, फिर उसे पकड़ लूंगा।” वह एक मछली-बाज में बदल गया और नदी के निचले हिस्से और समुद्र की पहली लहरों के ऊपर उड़ गया। वह वहाँ कुछ देर रुका। इसी बीच, मछली के रूप में मौजूद महान ऋषि नदी के साथ बहते रहे, तभी उनकी नज़र अपने ऊपर एक पक्षी पर पड़ी। वह पक्षी बिल्कुल नीली चील जैसा था, बस उसके पंख नीले नहीं थे; वह बिल्कुल बगुले जैसा था, बस उसके सिर पर कलगी नहीं थी; और वह बिल्कुल सारस जैसा था, बस उसके पैर लाल नहीं थे।

"ज़रूर एरलांग ने मेरा इंतज़ार करते हुए खुद को इसी रूप में बदल लिया होगा," उसने सोचा, तेज़ी से मुड़ा और चला गया।

“यह मछली जो पलट गई,” एरलांग ने यह देखकर सोचा, “यह कार्प मछली जैसी दिखती है, लेकिन इसकी पूंछ लाल नहीं है; यह मैंडरिन मछली जैसी दिखती है, लेकिन इसके शल्कों पर कोई पैटर्न नहीं दिख रहा; यह स्नेकहेड मछली जैसी दिखती है, लेकिन इसके सिर पर तारा नहीं है; और ब्रीम मछली जैसी दिखती है, लेकिन इसके गलफड़ों पर सुइयां नहीं हैं। मुझे देखते ही यह क्यों पलट गई? यह ज़रूर वही बंदर होगा जो रूप बदल चुका है।” वह झपटा और अपनी चोंच से महा ऋषि पर हमला किया। महा ऋषि पानी से बाहर उछले, जल-सांप में बदल गए, किनारे तक तैरकर गए और घास में घुस गए। अपनी चोंच से मछली को पकड़ने में असफल रहने पर, एरलांग ने पानी से एक सांप को बाहर निकलते देखा और समझ गया कि यह महा ऋषि ही हैं। वह तुरंत एक लाल कलगी वाले भूरे सारस में परिवर्तित हो गया और अपनी लंबी चोंच, जो नुकीले चिमटों जैसी थी, को पानी के सांप को खाने के लिए फैला दिया। सांप उछल पड़ा और एक बस्टर्ड बन गया जो स्मार्टवीड से ढके किनारे पर अकड़ा हुआ खड़ा था। जब एरलांग ने देखा कि वह इतने नीच प्राणी में परिवर्तित हो गया है—क्योंकि बस्टर्ड सबसे नीच और व्यभिचारी पक्षी है, जिसे इस बात की परवाह नहीं होती कि वह फीनिक्स, चील या कौवे के साथ संभोग करता है—तो उसने दूरी बनाए रखी, अपने शरीर में वापस आ गया, अपना पेलेट धनुष लाने और उसे लोड करने के लिए चला गया और एक ही शॉट में उसे उड़ा दिया।

महान ऋषि ने खाई से नीचे लुढ़कते हुए इस अवसर का लाभ उठाया और वहीं छिपकर अपने आप को एक स्थानीय देवता के मंदिर में रूपांतरित कर लिया। उन्होंने

अपना मुँह चौड़ा खोलकर मंदिर का प्रवेश द्वार बना लिया और अपने दाँतों को द्वार बना दिया; उन्होंने अपनी जीभ को देवता की मूर्ति और अपनी आँखों को खिड़कियाँ और जाली बना दिया। वे अपनी पूंछ को अंदर नहीं कर सके, इसलिए उन्होंने उसे अपने पीछे एक ध्वजदंड की तरह खड़ा कर दिया। जब एरलांग खाई के तल पर पहुँचा तो उसे वह बस्टर्ड पक्षी दिखाई नहीं दिया जिसके ऊपर से वह कूदा था, और घबराकर अपनी फीनिक्स जैसी आँखें खोलकर उसने चारों ओर ध्यान से देखा और पीछे एक ध्वजदंड वाला मंदिर देखा।

"ज़रूर वो बंदर होगा," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "वो फिर से मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा है। मैंने पहले भी मंदिर देखे हैं, लेकिन पीछे झंडे वाला मंदिर कभी नहीं देखा। मुझे यकीन है कि वही शैतान फिर से अपनी चाल चल रहा है। अगर वो मुझे अंदर ले जाने में कामयाब हो जाता, तो एक ही बार में काट कर मुझे मार डालता। मैं अंदर तो बिल्कुल नहीं जाऊंगा। मैं उसकी खिड़कियां मुक्के से तोड़ दूंगा, फिर उसका दरवाजा भी तोड़ दूंगा।"

“बहुत ही क्रूर, सचमुच क्रूर,” महान ऋषि ने यह सुनकर भयभीत होकर सोचा। “ये दरवाजे मेरे दांत हैं और ये खिड़कियां मेरी आंखें; और अगर वह मेरे दांत तोड़ दे और मेरी आंखें फोड़ दे, तो मेरी क्या हालत होगी?” एक बाघ जैसी छलांग लगाकर वह आकाश में गायब हो गया।

सच्चे स्वामी एरलांग ने बेतहाशा इधर-उधर भाग-दौड़ की, लेकिन उन्हें केवल अपने छह शपथ लिए हुए भाई ही दिखाई दिए, जो उनके चारों ओर जमा हो गए और पूछने लगे, "बड़े भाई, क्या आपने महान ऋषि को पकड़ लिया?"

"उस बंदर ने मुझे बेवकूफ बनाने के लिए खुद को मंदिर में बदल लिया," उसने हंसते हुए जवाब दिया। "ठीक उसी समय जब मैं उसकी खिड़कियां तोड़ने और दरवाजा लात मारकर खोलने ही वाला था, वह उछला और बिना किसी निशान के गायब हो गया। अजीब, बहुत अजीब।"

वे सभी आश्चर्यचकित थे, और उन्होंने चारों ओर देखा लेकिन उन्हें उसका कोई निशान नहीं मिला।

"भाइयों, तुम लोग इस इलाके में गश्त करो जबकि मैं ऊपर जाकर उसकी तलाश करता हूँ," एर्लांग ने कहा, और एक झटके में छलांग लगाकर वह हवा में एक बादल पर सवार हो गया।

जब उन्होंने स्वर्ग के राजा ली को दानव-पहचानने वाले दर्पण को ऊँचा उठाए हुए और नेझा के साथ एक बादल के किनारे पर खड़े देखा, तो सच्चे भगवान ने पूछा, "हे स्वर्ग के महाराज, क्या आपने उस बंदर राजा को देखा है?"

अध्याय 6

83

पश्चिम की यात्रा

"वह यहाँ नहीं आया है—मैं इस दर्पण से उस पर नज़र रख रहा था," स्वर्ग के राजा ने उत्तर दिया।

तब सच्चे भगवान एरलांग ने उसे बताया कि कैसे उसने रूपान्तरण और जादू का उपयोग करके बंदरों के झुंड को बंदी बनाया था।

“वह एक मंदिर में बदल गया,” एरलांग ने आगे कहा, “लेकिन जैसे ही मैं उस पर प्रहार करने वाला था, वह भाग निकला।” यह सुनकर स्वर्ग के राजा ली ने राक्षस-पहचानने वाले दर्पण को चारों दिशाओं में घुमाया और फिर हंसते हुए कहा, “जल्दी जाइए, सच्चे प्रभु, जल्दी जाइए। बंदर ने खुद को अदृश्य कर लिया और घेरा तोड़कर आपके स्थान, गुआनजियांगकौ चला गया है।” एरलांग ने अपना दिव्य त्रिशूल उठाया और उसका पीछा करते हुए गुआनजियांगकौ लौट गया।

महान ऋषि वहाँ पहुँच चुके थे, उन्होंने अपने शरीर को झटककर देवता एरलांग का रूप धारण कर लिया, अपना बादल हटाया और मंदिर में प्रवेश किया। दानव न्यायाधीश उन्हें पहचान नहीं पाए, इसलिए सभी ने उनका स्वागत करने के लिए प्रणाम किया। वे मंदिर के मध्य में बैठ गए और भेंटों का निरीक्षण करने लगे: ली हू द्वारा भेंट किया गया गोमांस, भेड़ का मांस और सूअर का मांस, झांग लोंग द्वारा वादा किया गया मन्नत का प्रसाद, झाओ जिया का पुत्र प्राप्ति का पत्र और कियान बिंग की बीमारी से ठीक होने की प्रार्थना। जब वे चारों ओर देख रहे थे, तभी यह घोषणा हुई कि एक और देवता एरलांग आ गए हैं। सभी दानव न्यायाधीश उन्हें देखने के लिए दौड़े और वे सभी आश्चर्यचकित रह गए।

सच्चे भगवान एरलांग ने पूछा, "क्या स्वर्ग के समतुल्य तथाकथित महान ऋषि यहाँ आए हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हमने किसी महान ऋषि को नहीं देखा है, केवल एक और देवता को देखा है जो अंदर की ओर देख रहा है।"

सच्चे भगवान द्वार से अंदर आ गए, और जैसे ही महान ऋषि ने उन्हें देखा, वे अपने असली रूप में लौट आए और बोले, "चिल्लाने का कोई फायदा नहीं है, महाराज। यह मंदिर अब मेरा है।"

सच्चे भगवान ने अपना दोधारी त्रिशूल उठाया और वानर राजा के सिर पर प्रहार किया, लेकिन वानर राजा ने जादू से वार को चकमा दिया, अपनी कढ़ाई की सुई ली, उसे तब तक हिलाया जब तक वह कटोरे जितनी मोटी नहीं हो गई, और हमले का सामना करने के लिए आगे बढ़े। चिल्लाते-चिल्लाते, वे द्वार से बाहर निकल आए और कोहरे और बादलों से लड़ते हुए फूलों और फलों के पर्वत तक वापस चले गए। चारों स्वर्गिक राजा और उनके सभी सैनिक इतने चिंतित हो गए कि उन्होंने और भी कड़ी सुरक्षा कर ली। सेनापति कांग और झांग और अन्य लोग सच्चे भगवान से मिलने आए और सुंदर वानर राजा को घेरने के लिए एकजुट हो गए। लेकिन अभी के लिए बस इतना ही।

शक्तिशाली दानव राजा ने जब सच्चे भगवान एरलांग और उनके छह शपथित भाइयों को उनकी सेनाओं के साथ उस राक्षस को पकड़ने के लिए भेजा, तो वह रिपोर्ट देने के लिए स्वर्ग लौट गया। वहाँ उसने जेड सम्राट, बोधिसत्व गुआनयिन, महारानी माँ और अपने सभी अमर मंत्रियों को एक सम्मेलन में पाया।

"हालांकि एरलांग लड़ाई में शामिल हो गया है, लेकिन हमें पूरे दिन इसके बारे में कोई रिपोर्ट नहीं मिली है," जेड सम्राट ने कहा।

गुआनयिन ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया, "क्या मैं सुझाव दे सकती हूँ कि महाराज, आप स्वयं देखने के लिए भगवान लाओ ज़ी के साथ स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से बाहर जाएँ कि क्या हो रहा है।"

“अच्छा विचार है,” सम्राट ने कहा और वे लाओ ज़ी, महारानी माँ और सभी अमर मंत्रियों के साथ रथ पर सवार होकर स्वर्ग के दक्षिणी द्वार की ओर चल पड़े। वहाँ उनका स्वागत कई दिव्य सैनिकों और बलवान पुरुषों ने किया। जब द्वार खुले और उन्होंने दूर तक देखा तो पाया कि दिव्य सेना चारों ओर एक जाल में फैली हुई थी; स्वर्ग के राजा ली और नेझा राक्षस-पहचानने वाले दर्पण के साथ हवा में खड़े थे, और एरलांग घेरे के भीतर महान ऋषि से संघर्ष कर रहा था।

बोधिसत्व ने लाओ ज़ी से पूछा, "मैंने जिस देवता एरलांग की सिफ़ारिश की थी, उसके बारे में आपका क्या विचार है? उसके पास सचमुच दिव्य शक्तियाँ हैं। उसने उस महान

ऋषि को घेर लिया है, और अब उसे बस उसे पकड़ना है। अगर मैं अभी उसकी थोड़ी मदद कर दूँ तो वह निश्चित रूप से ऐसा कर पाएगा।"

अध्याय 6

84

पश्चिम की यात्रा

"बोधिसत्व, आप किस हथियार का प्रयोग करेंगे? आप उसकी सहायता कैसे कर सकते हैं?" लाओ ज़ी ने पूछा।

"मैं विलो की टहनियों से बना वह पवित्र फूलदान बंदर के सिर पर गिरा दूंगा। भले ही इससे उसकी जान न जाए, लेकिन वह अपना संतुलन खो देगा और नन्हे ऋषि को उसे पकड़ने में मदद मिलेगी।"

"तुम्हारा वह फूलदान चीनी मिट्टी का बना है," लाओ ज़ी ने उत्तर दिया, "और अगर तुम निशाने पर मारोगे तो ठीक रहेगा। लेकिन अगर वह उसके सिर से चूककर उसके लोहे के क्लब से टकरा गया, तो वह चकनाचूर हो जाएगा। तुम अपना हाथ थामे रहो, मैं उसकी थोड़ी मदद करता हूँ।"

"तुम्हारे पास किस प्रकार का हथियार है?" बोधिसत्व ने पूछा, और भगवान लाओ ज़ी ने उत्तर दिया, "मेरे पास एक हथियार है।"

उसने अपनी आस्तीन ऊपर की और अपने दाहिने हाथ से एक कंगन उतार लिया।

“यह हथियार,” उसने कहा, “कठोर इस्पात से बना है जिसमें मैंने जादुई औषधि मिलाई है। यह मेरे चमत्कारी सार को सुरक्षित रखता है, रूप बदल सकता है, आग और पानी से अप्रभावित रहता है, और किसी भी चीज़ को जकड़ सकता है। इसका एक नाम डायमंड जेड है और दूसरा डायमंड नूज़। कुछ साल पहले जब मैं हान दर्रे से होकर एक विदेशी बनने और बुद्ध बनने के लिए निकला था, तब मुझे इसके लिए बहुत आभारी होना पड़ा। यह हर समय सबसे अच्छी सुरक्षा है। बस देखते रहिए, मैं इसे नीचे फेंककर उसे कैसे मारता हूँ।”

जैसे ही उसने बोलना समाप्त किया, उसने उसे स्वर्ग के द्वार के बाहर से नीचे फेंक दिया, और वह पुष्प और फल पर्वत पर स्थित शिविर में जा गिरा और वानर राजा के सिर पर ठीक से जा लगा। वानर राजा सात ऋषियों से युद्ध करने में इतना मग्न था कि उसे स्वर्ग से गिरते हुए इस हथियार का पता ही नहीं चला, और जब वह उसके माथे पर लगा तो उसका संतुलन बिगड़ गया और वह लड़खड़ा गया, फिर उठा और भागने

लगा। देवता एरलांग के दुबले-पतले कुत्ते ने उसे पकड़ लिया और उसकी पिंडली पर काट लिया, जिससे वह फिर से गिर गया। जमीन पर पड़े हुए उसने कुत्ते को कोसना शुरू कर दिया।

"तुम अपने स्वामी को परेशान नहीं करते, धिक्कार है तुम पर; मुझे काटने के लिए क्यों चुन रहे हो?" वह लुढ़क गया और उठने की असफल कोशिश की, लेकिन सातों ऋषियों ने उसे पकड़कर नीचे दबा दिया, रस्सी से बांध दिया और उसे और रूप बदलने से रोकने के लिए उसकी कॉलरबोन के चारों ओर हंसिया के आकार का ब्लेड लगा दिया।

इसके बाद लॉर्ड लाओ ज़ी ने अपना हीरा जेड वापस प्राप्त किया और जेड सम्राट, गुआनयिन, महारानी माँ और सभी अमर मंत्रियों को चमत्कारिक धुंध के हॉल में वापस आने का निमंत्रण दिया। नीचे, स्वर्ग के राजा ली और अन्य चार स्वर्ग के राजाओं ने अपनी सेनाएँ एकत्रित कीं और किलेबंदी को तोड़ दिया। वे नन्हे ऋषि को बधाई देने गए और बोले, "यह सब आपकी कृपा से ही संभव हुआ, नन्हे ऋषि।"

"नहीं, यह परम पूज्य भगवान के महान आशीर्वाद और सभी देवताओं की शक्ति के कारण था - इसमें मेरा कोई योगदान नहीं था," नन्हे ऋषि ने उत्तर दिया।

"बड़े भाई, अभी बात करने का समय नहीं है," चारों सेनापतियों कांग, झांग, याओ और ली ने कहा। "चलिए इस दुष्ट को स्वर्ग ले चलते हैं, जहाँ जेड सम्राट से मिलकर हम उनसे पूछते हैं कि इसके साथ क्या किया जाना चाहिए।"

“हे योग्य भाइयों,” एरलांग ने उत्तर दिया, “आपको कोई स्वर्गीय आदेश प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए आपके लिए जेड सम्राट से मिलना उचित नहीं होगा। स्वर्गीय सैनिक उन्हें सुरक्षा प्रदान करेंगे, जबकि मैं स्वर्ग के राजाओं के साथ ऊपर जाकर रिपोर्ट दूंगा। आप अपने सैनिकों के साथ इस पर्वत की छानबीन करें, और जब यह कार्य पूरा हो जाए तो गुआनजियांगकोऊ लौट आएं। जब मैं अपने पुरस्कार मांग लूंगा, तब वापस आऊंगा और हम सब मिलकर जश्न मनाएंगे।” चारों सेनापतियों और दोनों जनरलों ने उनके आदेश स्वीकार कर लिए, और बाकी सभी अपने-अपने बादलों पर सवार होकर विजय गीत गाते हुए स्वर्ग की ओर चल दिए। कुछ ही क्षणों में वे सर्वव्यापी प्रकाश के हॉल के बाहर थे। स्वर्गीय शिक्षकों ने सिंहासन को सूचना दी कि चारों महान स्वर्गीय राजाओं और बाकी सभी ने वानर राक्षस, स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि को पकड़ लिया है, और अब वे बुलावे की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जेड सम्राट ने तब एक फरमान

जारी किया जिसमें बलवान दानव राजा और स्वर्गीय सैनिकों को उसे दानव-सिर कलम करने वाले टॉवर तक ले जाने का आदेश दिया गया, जहाँ उस दुष्ट के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाने थे। वाह!

अध्याय 6

85

पश्चिम की यात्रा

अब उस गुंडे और धोखेबाज को कड़ी सजा मिलेगी।

अब इस वीरतापूर्ण भावना का अंत होना ही है।

अगर आपको नहीं पता कि बंदर राजा के जीवन में आगे क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 7

महान ऋषि अष्टग्राम भट्टी से बच निकले

द माइंड-एप इज़ फिक्स्ड बिनीथ फाइव एलिमेंट्स माउंटेन

धन और सम्मान, यश और प्रसिद्धि,

भाग्य द्वारा पूर्वनिर्धारित हैं:

किसी को भी अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध जाकर इनमें से किसी भी चीज की लालसा नहीं करनी चाहिए।

दूरगामी और गहरा

ये सच्चे ज्ञान और निष्ठा के अच्छे परिणाम हैं।

स्वर्ग सभी बुरे और दुष्ट कर्मों को दंडित करता है।

अगर तुरंत नहीं तो बाद में।

पूर्व के स्वामी से इसका कारण पूछो।

अब उस पर विपत्तियां आ पड़ती हैं।

क्योंकि उनकी महत्वाकांक्षा बहुत ऊंची थी, उनकी योजनाएं दूरगामी थीं,

उन्होंने सत्ता का सम्मान नहीं किया और परंपराओं को तोड़ दिया।

कहानी आगे बताती है कि कैसे स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि को स्वर्गदूतों की सेना द्वारा दानव-शाप काटने वाले टॉवर तक ले जाया गया और दानव-वशीकरण स्तंभ से बांध दिया गया। उन्होंने उन पर कृपाणों से वार किए, कुल्हाड़ियों से उन्हें काटा, भालों से उन पर आक्रमण किया और तलवारों से उन्हें घायल किया, लेकिन वे उन पर एक

भी घाव नहीं कर सके। दक्षिणी सप्तर्षि ने क्रोधित होकर अग्नि विभाग के सभी देवताओं को उन्हें आग लगाकर जला देने का आदेश दिया, लेकिन वे प्रज्वलित नहीं हुए। उन्होंने गर्जन विभाग के देवताओं को उन पर गर्जन की पट्टियाँ ठोकने के लिए कहा, लेकिन उनके हर प्रयास के बावजूद वे उनके शरीर के एक बाल को भी नुकसान नहीं पहुंचा सके। बलवान दानव राजा और बाकी सभी ने इसकी सूचना सिंहासन को दी।

उन्होंने कहा, "महाराज, इस महान ऋषि ने कहीं न कहीं जादू के जरिए अपनी रक्षा करना सीख लिया है।"

अध्याय 7

86

पश्चिम की यात्रा

यद्यपि तुम्हारे सैनिकों ने उस पर तलवारों से वार किए, कुल्हाड़ियों से उसे चीर डाला, बिजली से उसे मारा और आग से उसे जलाने की कोशिश की, फिर भी हम उसके शरीर के एक बाल को भी नुकसान नहीं पहुंचा सके। अब हम क्या करें?

"हम इस नीच व्यक्ति से कैसे निपट सकते हैं?" जेड सम्राट ने पूछा, और भगवान लाओ ज़ी ने एक ज्ञापन में इसका उत्तर दिया: "उस बंदर ने अमरता के आड़ू खा लिए हैं, शाही मदिरा पी ली है, और अमृत की गोलियाँ चुरा ली हैं। उसने मेरी पाँचों लौकी की गोलियाँ निगल ली हैं, ताज़ी और पकी हुई दोनों। अब हमने उस पर समाधि की अग्नि का प्रयोग किया है, जिससे उसका शरीर कठोर होकर हीरे जैसा हो गया है जिसे कोई क्षति नहीं पहुँचा सकता। सबसे अच्छा उपाय यह होगा कि मैं उसे ले जाऊँ और उसे अपनी अष्टत्रिग्राम भट्टी में डाल दूँ, जहाँ मैं नागरिक और मार्शल अग्नि से अपना अमृत शुद्ध कर सकूँ और साथ ही उसे राख में बदल दूँ।" जेड सम्राट ने तब छह डिंग और छह जिया को उसे खोलकर भगवान लाओ ज़ी को सौंपने का आदेश दिया, जिन्होंने शाही आदेश का पालन करते हुए उसे अपने साथ ले लिया। उसी समय जेड सम्राट ने प्रख्यात ऋषि एरलांग को अपने समक्ष बुलाया और उन्हें सौ सोने के फूल, सौ कलश शाही मदिरा, सौ अमृत की गोलियाँ और दुर्लभ वस्तुएँ भेंट कीं। अपने वफादार भाइयों के साथ बांटने के लिए उसने रत्न, चमकीले मोती, जई, कढ़ाई और अन्य उपहार भेजे। सच्चे स्वामी एरलांग ने उदारता के लिए उनका धन्यवाद किया और गुआनजियांगकोऊ लौट गए।

तुशिता महल पहुँचते ही, भगवान लाओ ज़ी ने महान ऋषि को बंधन मुक्त कराया, उनकी कमर से हुक निकाला, उन्हें अष्टम त्रिभुज भट्टी में धकेल दिया और भट्टी के प्रभारी पुजारियों और अग्नि-सेवकों को आग को और तेज़ करने का आदेश दिया ताकि उन्हें शुद्ध किया जा सके। यह भट्टी अष्टम त्रिभुजों - कियान, कान, जेन, झेन, सन, ली, कुन और दुई - से बनी थी, इसलिए उन्होंने स्वयं को "सूर्य के महल" में समाहित कर लिया, क्योंकि सूर्य वायु का प्रतीक था, और जहाँ वायु होती है वहाँ अग्नि नहीं हो सकती। परिणामस्वरूप, वायु ने धुएँ को उड़ा दिया, जिससे उनकी दोनों आँखें लाल हो गईं और वे "सुनहरी पुतलियों वाली अग्नि आँखें" नामक बीमारी से कुछ हद तक अंधे हो गए।

समय जल्दी बीत गया, और उन्हें पता भी नहीं चला कि सात गुना सात, यानी उनतालीस दिन बीत चुके थे, और भगवान लाओ ज़ी की अग्नि अपेक्षित तापमान तक पहुँच गई थी और पर्याप्त समय तक जलती रही थी। एक दिन अमृत निकालने के लिए भट्टी खोली गई। महान ऋषि, जो दोनों हाथों से अपनी आँखों को ढके हुए थे और अपने आँसू पोंछ रहे थे, ने भट्टी के ऊपर एक आवाज़ सुनी। उन्होंने ध्यान से देखा और दिन का उजाला देखा; और वहाँ एक पल भी और सहन न कर पाने के कारण, भट्टी से बाहर कूद गए, उसे लात मारकर गिरा दिया और भाग गए। इसके बाद मची अफरा-तफरी में अग्नि-सेवक, भट्टी के रखवाले, डिंग और जिया सभी ने उन्हें पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने उन सभी को गिरा दिया। वे एक पागल सफेद भौंह वाले बाघ की तरह थे, एक सींग वाले पागल अजगर की तरह।

भगवान लाओ ज़ी उसे पकड़ने के लिए दौड़े, लेकिन महान ऋषि ने खुद को छुड़ा लिया और वे बुरी तरह गिर पड़े। उन्होंने अपने कान से 'जैसा चाहो' वाला डंडा निकाला और उसे हवा में तब तक हिलाया जब तक वह कटोरे जितना मोटा नहीं हो गया, और एक बार फिर स्वर्ग के महल में पूरी तरह से अराजकता फैला दी, उन्हें इस बात की जरा भी परवाह नहीं थी कि वे क्या कर रहे हैं। उन्होंने इतना प्रहार किया कि नौ तेजस्वी देवताओं ने अपने दरवाजे और खिड़कियां बंद कर लीं, और चारों स्वर्ग के राजाओं का कोई नामोनिशान नहीं था।

अद्भुत बंदर की आत्मा! जैसा कि कविता में कहा गया है,

उसका आदिम शरीर एक पूर्व स्वर्ग से मेल खाता है।

दस हजार युगों से पूरी तरह प्राकृतिक;

विशाल और निष्क्रिय, महान एकेश्वरवाद के साथ मिश्रित;
हमेशा स्थिर रहने वाला, जिसे परम रहस्य के रूप में जाना जाता है।
भट्टी में इतनी शुद्धिकरण प्रक्रिया के बाद भी वह सीसा या पारा नहीं है; अध्याय 7
87
पश्चिम की यात्रा
सामान्य जीवन से बहुत दूर लंबा जीवन जीने के कारण वह जन्मजात अमर है।
उनके बदलाव अंतहीन हैं, और अभी भी उनके पास और भी बहुत कुछ है।
इसलिए तीन शरणों या पांच परहेजों के बारे में कुछ न कहें।
एक अन्य कविता कहती है:
प्रकाश की एक अकेली किरण पूरे अंतरिक्ष को रोशन कर सकती है;
इसी प्रकार उनके कर्मचारी भी:
उसकी जरूरतों के अनुसार, लंबाई कम या ज्यादा हो सकती है।
सीधा हो या क्षैतिज, यह सिकुड़ या बढ़ सकता है।
एक और कविता इस प्रकार है:
बंदर के अमर शरीर के अनुरूप मनुष्य का मन होता है:
यह कहना कि मन एक वानर है, अत्यंत अर्थपूर्ण है।
यह बिलकुल सच था कि महान ऋषि स्वर्ग के समान थे:
घोड़े के संरक्षक के रूप में नियुक्ति में विवेक का अभाव था।
घोड़ा और बंदर मिलकर मन और विचार का निर्माण करते हैं;
इन्हें आपस में मजबूती से बांध लें, और कहीं और न तलाशें।
जब सभी घटनाओं को सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो वे एक ही पैटर्न का अनुसरण करती हैं; जैसे तथागत ने दो वृक्षों के नीचे निर्वाण प्राप्त किया था।
इस बार वानर राजा ने ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं किया और अपने लोहे के गदा से पूरब-पश्चिम दिशा में प्रहार किया। किसी भी देवता ने उसका विरोध नहीं किया। वह चमत्कारिक धुंध के हॉल के बाहर स्थित सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में घुस गया, जहाँ सौभाग्य से सहायक ऋषि और सच्चे स्वामी का सहायक, राजसी आत्मा अधिकारी, ड्यूटी पर मौजूद था। जब उसने महान ऋषि को आगे बढ़ते देखा, तो उसने अपना स्वर्ण गदा उठाया और उसका प्रतिरोध करने के लिए आगे बढ़ा।
अध्याय 7

“कहाँ जा रहे हो, कमीने बंदर?” उसने पूछा। “अगर तू बेकाबू हुआ तो मुझे इसका सामना करना पड़ेगा।” महान ऋषि उससे बहस करने की स्थिति में नहीं थे, इसलिए उन्होंने उसे मारने के लिए अपना गदा उठाया। आत्मा अधिकारी ने अपना गदा उठाया और उसका सामना करने के लिए आगे बढ़ा। यह एक ज़बरदस्त लड़ाई थी:
उस वीर और वफादार अधिकारी की प्रसिद्धि महान थी।
बुराई उस विद्रोही का नाम है जिसने स्वर्ग को धमकाया।
निम्न स्तर वाला और उच्च स्तर वाला आपस में अच्छी तरह मेल खाते थे;
वीर नायक आपस में लड़ रहे हैं।
लोहे का डंडा बहुत क्रूर होता है।
जल्दी से स्वर्ण गदा लाओ।
दोनों ही सीधे-सादे, निर्दयी और भयानक थे।
उनमें से एक देवता महान मोनाड की गर्जना से निर्मित है;
दूसरा है बंदर की आत्मा, जो स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि है।
चाहे सोने का गदा हो या लोहे का डंडा, हर कोई उसमें माहिर है;
ये दोनों ही देवताओं के महलों के हथियार हैं।
आज वे चमत्कारी धुंध के हॉल में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेंगे।
साहस और कौशल का एक अद्भुत प्रदर्शन।
एक अपनी मूर्खता में सप्तर्षि और बैल के महल पर कब्जा करना चाहता है, जबकि दूसरा देवताओं की दुनिया को बनाए रखने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा रहा है।
यह लड़ाई इतनी कठिन है कि इसमें जादू का प्रयोग करना संभव नहीं है।
जब गदा और लाठी से किए गए प्रहारों का कोई परिणाम नहीं निकला।
जब दोनों लड़ाइयाँ बिना किसी के विजयी हुए समाप्त हुईं, तो सच्चे भगवान ने एक अधिकारी को गर्जन महल में संदेश भेजकर छत्तीस गर्जन सेनापतियों को महान ऋषि को घेरने का आदेश दिया। यद्यपि वे सभी अत्यंत उग्रता से लड़े, महान ऋषि जरा भी भयभीत नहीं हुए, और अपनी इच्छा-आधारित गदा से दाएं-बाएं वार रोकते रहे, आगे-पीछे से अपने विरोधियों का प्रतिरोध करते रहे। कुछ ही क्षण में उन्होंने पाया कि गर्जन सेनापतियों की कृपाणों, भालों, तलवारों, हलबर्ड, गदाओं, रस्सियों, हथौड़ों,

कुल्हाड़ियों, युद्ध कुल्हाड़ियों, पकड़, ध्वज-युक्त हुक और चंद्रमा के आकार की चोंचों का दबाव असहनीय हो गया है; इसलिए उन्होंने स्वयं को झटककर तीन सिर और छह भुजाएँ उगा लीं। फिर उसने अपनी 'जैसा चाहो' वाली गदा को हिलाकर तीन गदाओं में बदल दिया, और अपने छह हाथों में उन तीन गदाओं को थामे हुए वह घेरे के अंदर घूमते हुए पहिये की तरह चक्कर लगाने लगा। कोई भी गर्जना सेनापति अध्याय 7 के पास भी नहीं पहुँच सका।

89

पश्चिम की यात्रा

उसे। वास्तव में,

बिल्कुल गोल,

चमकीला,

पुरुष अमर जीवन जीना कैसे सीख सकते हैं?

वह बिना जले आग में प्रवेश कर सकता है।

और पानी में जाओ, लेकिन डूबो मत।

वह मणि मोती की तरह चमकीला है।

तलवारें और भाले उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकते।

वह अच्छे काम करने में सक्षम है।

और बुराई करने में सक्षम:

जब उसे अच्छाई और बुराई के बीच चुनाव करना पड़े तो वह दोनों में से कोई भी कर सकता है।

यदि वह अच्छा है तो वह बुद्ध या अमर बन जाता है।

अगर वह बुरा बर्ताव करता है, तो उसके शरीर पर बाल और सींग उग आते हैं।

अपने असीम रूपांतरणों से उसने स्वर्ग के महल को नष्ट कर दिया, और न ही गर्जना करने वाले सेनापति और दिव्य सेनाएँ उसे हरा सकती हैं।

यद्यपि देवताओं ने महान ऋषि को घेर लिया था, फिर भी वे उनके पास नहीं पहुँच सके। चीख-पुकार और लड़ाई के शोर ने जेड सम्राट को पहले ही सतर्क कर दिया था, जिन्होंने चमत्कारिक अधिकारी यूयी को सहायक ऋषि और सच्चे भगवान के साथ पश्चिम की ओर जाने और बुद्ध से उन्हें वश में करने का अनुरोध करने का आदेश दिया। जब इन दोनों ऋषियों को आदेश मिला, तो वे चमत्कारी पर्वत की अद्भुत भूमि पर गए,

जहाँ उन्होंने वज्र मठ के समक्ष चारों वज्रपाणियों और आठ बोधिसत्वों को प्रणाम किया और उनसे अपना संदेश आगे पहुँचाने का अनुरोध किया। देवता कमल आसन के चरणों में तथागत को सूचित करने गए, जिन्होंने दोनों ऋषियों को अपने समक्ष आमंत्रित किया। ऋषियों द्वारा बुद्ध को त्रिविध प्रणाम करने के बाद वे सिंहासन के नीचे उपस्थित रहे।

बुद्ध ने पूछा, "जाद सम्राट ने तुम दोनों ऋषियों को यहाँ आने की कष्ट क्यों दी?"

उन्होंने बताया, "फूलों और फलों के पर्वत पर जन्मा एक बंदर अपनी जादुई शक्तियों का उपयोग करके सभी बंदरों को एकजुट कर दुनिया में अराजकता फैला रहा है। जेड सम्राट ने क्षमादान का फरमान जारी कर उसे घोड़ों का रक्षक नियुक्त किया, लेकिन यह भी उसके लिए पर्याप्त नहीं था, इसलिए वह फिर से स्वर्ग छोड़कर चला गया।"

जब स्वर्ग के राजा ली और राजकुमार नेझा उन्हें पकड़ने में असफल रहे, तो जेड सम्राट ने उन्हें 'स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि' के रूप में नियुक्त करके एक और क्षमादान भेजा। प्रारंभ में यह नियुक्ति अध्याय 7

उसका पद केवल नाममात्र का था, लेकिन बाद में उसे आड़ू के बाग की देखभाल करने का काम सौंपा गया। उसने आड़ू चुरा लिए और फिर जेड पूल में जाकर स्वादिष्ट व्यंजन और शराब चुरा ली और भोज को तहस-नहस कर दिया। नशे में धुत होकर वह तुशिता महल में लड़खड़ाते हुए घुस गया, भगवान लाओ ज़ी की अमरता की गोलियां चुरा लीं और फिर से स्वर्ग से भाग गया। जेड सम्राट ने एक लाख स्वर्गीय सैनिकों को भेजा, लेकिन वे फिर भी उसे वश में नहीं कर सके। तब गुआनयिन ने सच्चे भगवान एरलांग और उनके शपथ लिए हुए भाइयों को बंदर का पीछा करने की सलाह दी, और उन्होंने कई बार रूप परिवर्तन किया, अंततः भगवान लाओ ज़ी द्वारा अपने हीरे के जेड से वार किए जाने के बाद वे बंदर को पकड़ने में सफल रहे। बंदर को शाही दरबार में लाया गया और उसके मृत्युदंड का आदेश दिया गया। लेकिन तलवारों से वार किए जाने, कुल्हाड़ियों से काटे जाने, आग से जलाए जाने और बिजली गिरने के बावजूद, उसे कोई क्षति नहीं हुई; इसलिए भगवान लाओ ज़ी ने उसे ले जाकर अग्नि में तपाने की अनुमति मांगी।

लेकिन उनतालीस दिनों के बाद जब कड़ाहा खोला गया, तो वह अष्टत्रिग्राम भट्टी से

बाहर कूद गया, दिव्य सैनिकों को पराजित किया और सीधे चमत्कारिक धुंध के हॉल के सामने स्थित सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में चला गया। यहाँ उसे राजसी आत्मा अधिकारी, सहायक ऋषि के लेफ्टिनेंट और सच्चे भगवान एरलांग ने रोक लिया और भयंकर युद्ध में उलझा दिया। उसे घेरने के लिए वज्र सेनापतियों को भेजा गया; लेकिन कोई भी उसके पास नहीं पहुँच सका। इस संकट की घड़ी में जेड सम्राट आपसे, तथागत, अपने सिंहासन की रक्षा करने की विशेष विनती करते हैं।

यह सुनकर तथागत ने उपस्थित बोधिसत्वों से कहा, "आप लोग इस धर्म कक्ष में शांतिपूर्वक बैठे रहें और अपने-अपने ध्यान आसनों पर संयमित रहें, जबकि मैं राक्षस से निपटने और सिंहासन को बचाने के लिए जाता हूँ।"

तथागत बुद्ध ने पूज्य आनंद और पूज्य कश्यप को अपने साथ आने का आदेश देकर गर्जन मठ छोड़ दिया और सीधे चमत्कारिक कोहरे वाले हॉल के द्वार पर गए, जहाँ छत्तीस गर्जन सेनापतियों द्वारा महा ऋषि को घेर लिए जाने की गर्जना की आवाज़ से उनके कान दहला गए। बुद्ध ने एक आदेश जारी किया, जिसमें लिखा था: "इन गर्जन सेनापतियों को युद्ध रोकने, अपना शिविर खोलने और उस महा ऋषि को बाहर आने के लिए कहो, ताकि मैं उनसे उनकी दिव्य शक्तियों के बारे में पूछ सकूँ।"

इसके बाद सेनापति पीछे हट गए, और फिर महान ऋषि ने अपना जादुई रूप त्याग दिया और अपने असली रूप में सामने आए। वे उग्र रूप से क्रोधित थे और उन्होंने पूछा, "तुम कहाँ से आए हो? तुम तो अच्छे आदमी हो। लड़ाई रोककर मुझसे सवाल करने की तुम्हारी हिम्मत तो देखो!"

"मैं परम आनंद के पश्चिमी लोक से पूज्य शाक्यमुनि हूँ," बुद्ध ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "मैंने तुम्हारे उग्र और असभ्य व्यवहार और स्वर्ग के विरुद्ध तुम्हारे बार-बार के विद्रोहों के बारे में सुना है, और मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ, तुम्हें मार्ग कब मिला, और तुम इतने क्रूर क्यों रहे हो।"

"मैं हूँ," महान ऋषि ने कहा।

"स्वर्ग और पृथ्वी से जन्मा एक चमत्कार करने वाला अमर प्राणी,"

फूलों और फलों के पहाड़ से आया एक बूढ़ा बंदर।

मेरा घर वाटर कर्टेन गुफा में है।

मैंने मित्र और शिक्षक खोजे, और इस प्रकार मुझे महान रहस्य का ज्ञान हुआ।

मैंने शाश्वत जीवन प्राप्त करने के अनेक तरीके आजमाए हैं, मैंने अनगिनत रूपांतरण

सीखे हैं।
अध्याय 7
91
पश्चिम की यात्रा
इसीलिए मुझे नश्वर संसार बहुत तंग लगा।
और उन्होंने जेड स्वर्ग में रहने का फैसला किया।
चमत्कारी धुंध के हॉल में कोई भी हमेशा के लिए राज नहीं कर सकता;
इतिहास में राजाओं को अपनी सत्ता अगली पीढ़ी को सौंपनी पड़ती थी।
बलवान व्यक्ति का सम्मान किया जाना चाहिए—उसे मेरे लिए रास्ता छोड़ देना चाहिए:
यही एकमात्र कारण है कि मैं अपना वीरतापूर्ण संघर्ष लड़ रहा हूँ।"
बुद्ध ने उपहासपूर्ण ढंग से हँसते हुए कहा।
"अरे दुष्ट! तू तो बस एक बंदर की आत्मा है और तुझे इतनी धृष्टता कैसे हुई कि तू जेड सम्राट का सिंहासन हथियाना चाहता है। उन्होंने बचपन से ही साधना की है और एक हज़ार सात सौ पचास कल्पों तक कष्ट सहे हैं। प्रत्येक कल्प 129,600 वर्ष का होता है, तो तू स्वयं ही हिसाब लगा ले कि इस महान और अनंत मार्ग का आनंद लेने में उन्हें कितना समय लगा होगा। लेकिन तू तो एक जानवर है जो अभी-अभी पहली बार मनुष्य बना है। तेरी इतनी बड़ी-बड़ी बातें करने की हिम्मत कैसे हुई? तू मनुष्य नहीं है, मनुष्य भी नहीं! मैं तेरा जीवनकाल छोटा कर दूँगा। मेरी शिक्षा तुरंत स्वीकार कर ले और ऐसी बकवास करना बंद कर! अन्यथा तू मुसीबत में पड़ जाएगा और तेरा जीवन बहुत जल्द समाप्त हो जाएगा; और तेरे मूल रूप का भी यही हाल होगा।"
“यद्यपि उसने बचपन से ही लंबे समय तक प्रशिक्षण लिया है, फिर भी उसे इस पद पर हमेशा के लिए रहने का कोई अधिकार नहीं है,” महान ऋषि ने कहा। “जैसा कि कहावत है, ‘सम्राट बारी-बारी से बनते हैं; अगले साल शायद मैं बनूँ।’”
अगर उसे राजी करके मेरे लिए स्वर्ग छोड़कर जाने के लिए राजी किया जा सके, तो ठीक रहेगा। लेकिन अगर वह मेरे पक्ष में पद नहीं छोड़ता, तो मैं निश्चित रूप से उसके लिए मुश्किलें खड़ी कर दूंगी, और उसे फिर कभी शांति और सुकून नहीं मिलेगा।"
बुद्ध ने पूछा, "अमरता और स्वयं को रूपांतरित करने की क्षमता के अलावा तुम्हारे पास ऐसा क्या है जो तुम्हें स्वर्ग के महल पर कब्जा करने का साहस देता है?"

“मैं वाकई कई करतब दिखा सकता हूँ,” महान ऋषि ने उत्तर दिया। “मैं बहत्तर रूपान्तरण कर सकता हूँ, और दस हजार कल्पों तक अपनी युवावस्था बनाए रख सकता हूँ। मैं एक ऐसे बादल पर सवार हो सकता हूँ जो मुझे एक ही छलांग में छत्तीस हजार मील की दूरी तय करा देता है। तो फिर मुझे स्वर्ग के सिंहासन पर क्यों नहीं बैठना चाहिए?”

बुद्ध ने कहा, “तो मैं तुमसे शर्त लगाता हूँ। अगर तुम एक ही कलाबाजी में मेरी दाहिनी हथेली से निकल जाओ, तो तुम जीत जाओगे, और फिर हथियारों या लड़ाई की कोई ज़रूरत नहीं रहेगी: मैं जेड सम्राट को पश्चिम में आकर रहने का निमंत्रण दूँगा और वह स्वर्गलोक तुम्हें सौंप देगा। लेकिन अगर तुम मेरी हथेली से नहीं निकल पाए, तो तुम्हें राक्षस बनकर पाताल लोक में जाना होगा और फिर से बहस करने से पहले कई कल्पों तक प्रशिक्षण लेना होगा।”

यह प्रस्ताव सुनकर महान ऋषि मन ही मन मुस्कुराए और सोचने लगे, "यह बुद्ध तो बिलकुल मूर्ख हैं। मैं छत्तीस हजार मील की दूरी एक कलाबाजी से तय कर सकता हूँ, तो भला मैं उनके हाथ की हथेली से कूदने में कैसे असफल हो सकता हूँ, जो एक फुट से भी कम चौड़ी है?"

यह बात ध्यान में रखते हुए उसने उत्सुकता से पूछा, "क्या आप स्वयं इसकी गारंटी देते हैं?"

अध्याय 7

92

पश्चिम की यात्रा

"जी हाँ," बुद्ध ने उत्तर दिया और अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, जो कमल के पत्ते के आकार का प्रतीत होता था। अपनी इच्छा-आधारित गदा को एक तरफ रखकर, महान ऋषि ने अपनी सभी दिव्य शक्तियों को समेटा, बुद्ध की हथेली में कूद पड़े और बोले, "मैं चलता हूँ।" उन्हें प्रकाश की एक लकीर की तरह जाते हुए और पूरी तरह से गायब होते हुए देखें। बुद्ध, जो अपनी ज्ञान भरी आँखों से उन्हें देख रहे थे, ने बंदर राजा को पवनचक्की की तरह आगे बढ़ते हुए देखा और तब तक नहीं रुके जब तक कि उन्होंने गहरे धुएँ से ढके हुए पाँच मांसल गुलाबी खंभे नहीं देख लिए।

“यही मेरा अंतिम पड़ाव है,” उसने कहा, “तो अब मैं वापस जाऊँगा। बुद्ध साक्षी होंगे, और चमत्कारिक धुंध का हॉल मेरा होगा।” फिर उसने दोबारा सोचा, “एक पल रुको।

बुद्ध से बात करते समय अपनी बात साबित करने के लिए मैं यहाँ अपना निशान छोड़ दूँगा।" उसने एक बाल खींचा, उस पर अपनी जादुई साँस छोड़ी और चिल्लाया।
"परिवर्तन।" यह स्याही में डूबी एक लेखन ब्रश में बदल गया, और उससे उन्होंने लिखा "महान ऋषि समतुल्य"।
मध्य स्तंभ पर बड़े अक्षरों में लिखा था, "स्वर्ग यहीं था।" यह काम पूरा होने पर उसने अपने बाल वापस लगा लिए और अपनी गरिमा को दरकिनार करते हुए स्तंभ के नीचे बंदर के पेशाब का एक छोटा सा तालाब बना दिया। फिर उसने एक कलाबाजी मारी और वापस वहीं चला गया जहाँ से उसने शुरुआत की थी।
"मैं गया था, और अब वापस आ गया हूँ। जेड सम्राट से कहो कि वह स्वर्ग महल मुझे सौंप दें," उसने बुद्ध की हथेली में खड़े होकर कहा।
"मैंने तुम्हें पकड़ लिया है, हे बंदर की आत्मा!" बुद्ध उस पर गरजते हुए बोले। "तुम कभी मेरी हथेली से बाहर नहीं निकले।"
“आप गलत हैं,” महान ऋषि ने उत्तर दिया। “मैं स्वर्ग के सबसे दूर के छोर तक गया, जहाँ मैंने पाँच मांसल गुलाबी स्तंभ देखे जिनके ऊपर गहरे रंग की भाप छाई हुई थी। मैंने वहाँ अपना निशान छोड़ा है: क्या आप मेरे साथ आकर उसे देखने की हिम्मत करते हैं?”
“जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। बस नीचे देखो।” महान ऋषि ने अपनी सुनहरी पुतलियों वाली अग्नि जैसी आँखों से नीचे देखा और बुद्ध के दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली पर “स्वर्ग के समान महान ऋषि यहाँ उपस्थित थे” लिखा हुआ पाया। उंगली के निचले हिस्से की तह से बंदर के पेशाब की दुर्गंध आ रही थी।
“यह कैसी घटना है!” महान ऋषि ने आश्चर्य से कहा। “मैंने इसे आकाश को सहारा देने वाले एक स्तंभ पर लिखा था, तो अब यह उसकी उंगली पर कैसे हो सकता है? उसने ज़रूर ज्योतिष का प्रयोग करके यह जान लिया होगा कि मैं क्या करने वाला हूँ। मुझे विश्वास नहीं हो रहा। मैं इस पर विश्वास करने से इनकार करता हूँ! मैं वहाँ जाऊँगा और वापस आ जाऊँगा।”
प्रिय ऋषि ने जल्दी से कूदने की तैयारी की, लेकिन बुद्ध ने अपना हाथ पलटकर वानर राजा को स्वर्ग के पश्चिमी द्वार से बाहर धकेल दिया। उन्होंने अपनी पाँच उंगलियों को धातु, लकड़ी, जल, अग्नि और पृथ्वी तत्वों की पर्वत श्रृंखला में परिवर्तित कर दिया, उनका नाम पंचतत्व पर्वत रखा और धीरे से उसे नीचे उतार दिया।

सभी गर्जन देवता और उनके शिष्य आनंद और कश्यप ने बुद्ध की स्तुति में अपने हाथ जोड़े:
बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया!
एक अंडे ने आदमी बनना सीख लिया।
उन्होंने अपने आचरण को सुधारा और सफलता का मार्ग प्राप्त किया।
हजार कल्पों से स्वर्ग में कोई अशांति नहीं थी।
एक दिन आत्माएं और देवता तितर-बितर हो गए।
"स्वर्ग के विरुद्ध विद्रोह करने वाला, उच्च पद की चाह रखने वाला,

अमर लोगों का अपमान किया, गोलियां चुराईं और नैतिकता को नष्ट कर दिया।
आज उसके भयानक पापों का दंड मिल रहा है।
कौन जाने वह कब दोबारा उठ खड़ा हो पाएगा?
जब उन्होंने बंदर राक्षस का वध कर दिया, तो बुद्ध ने आनंद और कश्यप को अपने साथ पश्चिमी स्वर्ग में लौटने के लिए कहा। उसी क्षण तियान पेंग और तियान यू चमत्कारिक धुंध के हॉल से जल्दी से बाहर निकलकर बोले,
"हम तथागत से विनती करते हैं कि वे एक क्षण प्रतीक्षा करें क्योंकि जेड सम्राट का रथ आ रहा है।"
बुद्ध ने मुड़कर ऊपर देखा, और क्षण भर में उन्होंने एक आठ-चमकदार शाही रथ और नौ रत्नों से जड़ा हुआ चंदवा देखा, जो विचित्र और मधुर संगीत और असंख्य पवित्र श्लोकों के उच्चारण के साथ प्रकट हुआ। कीमती फूल बिखेरे गए और धूप जलाई गई।
जेड सम्राट सीधे बुद्ध के पास गए और बोले, "राक्षस का नाश करने के लिए हम महान बुद्ध की शक्तियों के अत्यंत ऋणी हैं, और हम आशा करते हैं कि तथागत एक दिन यहाँ व्यतीत करेंगे ताकि हम सभी अमर देवताओं को धन्यवाद भोज में आमंत्रित कर सकें।"
बुद्ध ने मना करने का साहस नहीं किया, इसलिए हाथ जोड़कर उन्होंने उत्तर दिया, "यह वृद्ध भिक्षु केवल आपके आदेश का पालन करते हुए यहाँ आया है। मैं किस

प्रकार की जादुई शक्तियों का दावा कर सकता हूँ? यह सब आपके और अन्य देवताओं के अद्भुत सौभाग्य के कारण हुआ है। मैं आपको धन्यवाद देने की अनुमति कैसे दे सकता हूँ?"

इसके बाद जेड सम्राट ने गर्जन विभाग के सभी देवताओं को आदेश दिया कि वे अलग-अलग होकर तीन शुद्धजनों, चार सम्राटों, पांच प्राचीनों, छह अधीक्षकों, सात मुख्य तारों, आठ दिशाओं, नौ तेजस्वी, दस प्रमुखों, हजार अमरों और दस हजार ऋषियों को बुद्ध की कृपा के लिए धन्यवाद भोज में आमंत्रित करें। फिर उन्होंने चार महान स्वर्गीय शिक्षकों और नौ स्वर्गीय कन्याओं को जेड राजधानी, महान रहस्य महल और टोंग यांग जेड महल के स्वर्ण द्वार खोलने, तथागत को सात बहुमूल्य वस्तुओं के सिंहासन पर बैठने के लिए आमंत्रित करने, सभी विभिन्न अतिथि समूहों के लिए स्थान व्यवस्थित करने और ड्रैगन का जिगर, फीनिक्स अस्थि मज्जा, जेड मादक पेय और जादुई आड़ू परोसने का आदेश दिया।

कुछ ही समय में मूल दिव्य जेड शुद्ध पुरुष, उच्च दिव्य अनमोल शुद्ध पुरुष, मार्ग के स्वर्गीय दिव्य शुद्ध पुरुष, पंच दोषों के सच्चे स्वामी, पंच नक्षत्रों के तारा स्वामी, तीन अधिकारी, चार ऋषि, बाएँ सहायक, दाएँ सहायक, स्वर्ग के राजा, नेझा और संपूर्ण ब्रह्मांड ने जादुई रूप से भेजे गए निमंत्रणों का उत्तर दिया। उनके ध्वज और छत्र दो-दो करके आए और वे चमकते मोती, दुर्लभ रत्न, दीर्घायु के फल और विदेशी फूल लेकर आए और उन्हें बुद्ध को प्रणाम करके भेंट किया।

हम तथागत को उनकी असीम शक्तियों से वानर राक्षस को पराजित करने के लिए धन्यवाद देते हैं। परम पूज्य तथागत ने हम सभी को अपने भोज में आमंत्रित किया है ताकि हम अपना आभार व्यक्त कर सकें। हम तथागत से निवेदन करते हैं कि वे इस भोज को कोई नाम दें।

बुद्ध ने इस कार्य को स्वीकार किया और कहा, "चूंकि आप इसके लिए एक नाम चाहते हैं, तो हम इसे 'स्वर्ग में शांति का उत्सव मनाने का भोज' कह सकते हैं।"

"वाह, स्वर्ग में शांति का उत्सव मनाने का भोज, वाह!" सभी अमर देवों ने एक स्वर में कहा, और फिर वे सब अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए, अपने बालों में फूल लगाए और वीणा बजाने लगे। यह सचमुच एक भव्य भोज था, और इसे प्रमाणित करने के लिए कुछ छंद यहाँ दिए गए हैं:

अध्याय 7

94
पश्चिम की यात्रा
स्वर्ग में शांति का उत्सव मनाने वाला भोज कहीं अधिक श्रेष्ठ है।
बंदर द्वारा बर्बाद की गई आड़ू की दावत।
ड्रैगन के झंडों और शाही रथों से प्रकाश की चमक निकलती है;
शुभ वाष्प झंडों और राजसी प्रतीकों के ऊपर तैर रही है।
परी संगीत की मधुरता और रहस्यमय गीतों की मिठास;
फीनिक्स बांसुरी और जेड पाइप की तेज आवाज सुनाई देती है।
आकाश में शांतिपूर्वक एकत्रित अमर लोगों के चारों ओर दुर्लभतम सुगंध फैली हुई है।
ब्रह्मांड को शांत करने के लिए न्यायालय को बधाई देने हेतु।
जब सभी देवता भोज का आनंद ले रहे थे, तब महारानी माँ और परियों, सुंदरियों और अप्सराओं का एक समूह नृत्य करते हुए वायु में तैरता हुआ बुद्ध की ओर बढ़ा। प्रणाम करने के बाद महारानी माँ ने कहा, "उस दुष्ट बंदर ने मेरे आड़ू भोज को बर्बाद कर दिया था, और स्वर्ग में शांति का यह भोज इसलिए दिया जा रहा है क्योंकि तथागत ने अपनी महान शक्तियों का प्रयोग करके उस दुष्ट बंदर को जंजीरों में जकड़ दिया है। मेरे पास कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए और कुछ नहीं बचा था, इसलिए मैंने अपने पवित्र हाथों से अमरता के कुछ आड़ू भेंट किए हैं।" वे आधे लाल, आधे हरे, मीठी सुगंध वाले सुंदर आड़ू थे।
अमर जड़ों से हर दस हजार साल में उगने वाला पौधा।
वुलिंगयुआन के आड़ू हास्यास्पद लगते हैं:
वे स्वर्ग के लोगों से कैसे तुलना कर सकते हैं?
बैंगनी नसों वाला और कोमल, आकाश में भी दुर्लभ।
पीले बीज वाले और अपनी मिठास के लिए पृथ्वी पर अद्वितीय।
वे शरीर को अनुकूलित करने और उसे अमर बनाने में सक्षम हैं;
जो लोग इन्हें खाने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं, वे साधारण प्राणी नहीं होते।
अध्याय 7
95
पश्चिम की यात्रा
बुद्ध ने महारानी माँ को धन्यवाद देने के लिए अपने हाथ जोड़े, जिन्होंने परियों और हूरों

को फिर से गाने और नाचने का निर्देश दिया, और उनके प्रदर्शन की पूरी सभा ने प्रशंसा की। वास्तव में: धुंधली दिव्य सुगंध से कमरा भर गया;
दिव्य पंखुड़ियों और फूलों का एक अराजक दृश्य।
जेड नगरी और स्वर्ण द्वारों की भव्यता महान है।
ये विचित्र खजाने और दुर्लभ रत्न अनमोल हैं।
दो-दो करके, स्वर्ग के समकालीन,
जोड़ी दर जोड़ी, दस हजार कल्पों से भी अधिक समय तक जीवित रहते हुए:
भले ही भूमि और समुद्र अपनी जगह बदल लें
वे न तो आश्चर्यचकित होंगे और न ही भयभीत होंगे।
रानी माँ द्वारा परियों और अप्सराओं को गाने और नाचने का आदेश देने के तुरंत बाद,
जब शराब के प्याले और चॉपस्टिक इधर-उधर लहरा रहे थे, अचानक
एक अजीब सी गंध उनकी नाक तक पहुंची।
हॉल में मौजूद तारों और तारामंडलों को चौंकाते हुए।
अमर लोगों और बुद्ध ने अपने प्याले नीचे रख दिए।
उनमें से प्रत्येक ने देखने के लिए अपना सिर उठाया।
आकाशगंगा के बीचोंबीच एक बूढ़ा व्यक्ति प्रकट हुआ।
एक पवित्र मशरूम को पकड़े हुए।
उनकी लौकी में दस हजार साल पुराना अमृत समाहित है।
पवित्र ग्रंथों में उनका नाम शाश्वत जीवन के रूप में अंकित है।
उसकी गुफा में स्वर्ग और पृथ्वी स्वतंत्र हैं।
अध्याय 7
96
पश्चिम की यात्रा
उनकी बोतल में सूर्य और चंद्रमा की रचना हुई।
जब वह पूर्ण आलस्य में चारों समुद्रों में विचरण करता है
दस महाद्वीपों में सुकून से घूमते हुए, वहां की चहल-पहल का आनंद लेते हुए।
जब वह पीच बैंक्वेट्स में जाता था तो अक्सर नशे में धुत हो जाता था।
लेकिन जब उसे होश आया, तो चंद्रमा पहले की तरह ही चमकीला था।
लंबा सिर, बड़े कान और छोटा शरीर,

दक्षिणी ध्रुव से दीर्घायु के रूप में जाना जाता है।
दीर्घायु का तारा आ चुका था। उसने जेड सम्राट और बुद्ध को प्रणाम करने के बाद धन्यवाद भाषण दिया।
“जब मैंने सुना कि भगवान लाओ ज़ी ने उस वानर राक्षस को अपने तुषिता महल में शुद्धिकरण के लिए ले गए हैं, तो मैंने सोचा कि इससे शांति बहाल हो जाएगी,” उन्होंने कहा, “और मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि वह फिर से विद्रोह करेगा। सौभाग्य से तथागत ने उस राक्षस को शांत कर दिया, और इसलिए जब मैंने सुना कि उन्हें धन्यवाद देने के लिए यह भोज दिया जा रहा है, तो मैं तुरंत आ गया। मेरे पास भेंट करने के लिए और कुछ नहीं है, इसलिए मैं अपने साथ बैंगनी जादुई मशरूम, जैस्पर जड़ी-बूटियाँ, हरे रंग की जेड कमल की जड़ और अमरता की सुनहरी गोलियाँ लाया हूँ: मैं इन्हें विनम्रतापूर्वक भेंट करता हूँ।” कविता कहती है, “शाक्यमुनि को जेड कमल की जड़ और सुनहरी गोलियाँ अर्पित करते हुए।”
उसे गंगा की रेत के कणों के बराबर वर्ष देने के लिए।
शांति और शाश्वत आनंद तीनों वाहनों को सुशोभित करते हैं;
समृद्धि और अमर जीवन नौ श्रेणियों के अमरों को गौरवशाली बनाते हैं।
निराकार घटनाओं के द्वार के भीतर ही सच्चा नियम विराजमान है;
शून्यता के स्वर्ग के ऊपर ही उसका अमर निवास है।
स्वर्ग और पृथ्वी दोनों ही उन्हें अपना पूर्वज मानते हैं।
उनका स्वर्णिम शरीर आशीर्वाद और दीर्घायु प्रदान करता है।
बुद्ध ने सहर्ष उनका धन्यवाद स्वीकार किया, और दीर्घायु के सितारे के अपने स्थान पर आसीन होने के बाद मदिरा के प्याले एक बार फिर से घूमने लगे। फिर नंगे पैर वाले अमर प्रकट हुए, उन्होंने जेड सम्राट को प्रणाम किया, और अध्याय 7

बुद्ध को धन्यवाद दिया।
"आपने अपनी दिव्य शक्तियों से उस बंदर राक्षस को वश में कर लिया, इसके लिए मैं आपका हार्दिक आभारी हूँ। मेरे पास अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए और कुछ नहीं है, इसलिए मैं आपको दो जादुई नाशपाती और कई खजूर भेंट करता हूँ।"
नंगे पैर वाले अमर के नाशपाती और खजूर मीठे होते हैं।

और जिस बुद्ध को ये भेंट किए जाते हैं, उनका जीवन दीर्घायु होगा।
सात रत्नों का कमलमय आसन पर्वत के समान दृढ़ है, उनका हजार स्वर्ण पुष्पों का सिंहासन रेशम के समान भव्य है।
स्वर्ग और पृथ्वी के समकालीन—यह कोई झूठ नहीं है;
यह सच है कि उनकी कृपा बाढ़ से भी कहीं अधिक है।
उनका पश्चिमी स्वर्ग, विश्राम और आनंद से भरपूर।
यह वास्तव में वह सभी दीर्घायु और आशीर्वाद प्रदान करता है जिसकी कोई व्यक्ति आशा कर सकता है।
बुद्ध ने भी उनका धन्यवाद किया और आनंद और कश्यप को सभी भेंटें एकत्र करने के लिए कहकर वे भोज के लिए धन्यवाद देने के लिए जेड सम्राट के पास गए। जब सभी अतिथि पूरी तरह से नशे में धुत हो गए, तो चमत्कारिक गश्ती अधिकारी ने सूचना दी कि महान ऋषि ने अपना सिर बाहर निकाला था।
"कोई बात नहीं," बुद्ध ने कहा और अपनी आस्तीन से एक कागज़ की पट्टी निकाली जिस पर सुनहरे अक्षरों में 'ओम मणि पद्मे हम' लिखा था। उन्होंने यह कागज़ का टुकड़ा आनंद को दिया और उसे पर्वतों की चोटी पर चिपकाने को कहा। पूज्य आनंद उसे स्वर्ग के द्वार से ले गए और पंच तत्व पर्वत की चोटी पर स्थित एक चौकोर पत्थर पर मजबूती से चिपका दिया। ऐसा करने पर पर्वत की जड़ें फैल गईं और उसके सभी जोड़ जुड़ गए। वानर राजा अभी भी सांस ले पा रहा था और अपने हाथ बाहर निकालकर हिला भी पा रहा था। आनंद स्वर्ग लौट गए और उन्होंने बताया कि उन्होंने कागज़ को सही जगह पर चिपका दिया है।
इसके बाद बुद्ध ने जेड सम्राट और अन्य सभी देवताओं से विदा ली। जब वे और उनके दो शिष्य स्वर्ग के द्वार से बाहर निकले, तो उनके दयालु हृदय ने उन्हें एक मंत्र का जाप करने के लिए प्रेरित किया, जिसमें उन्होंने स्थानीय संरक्षक देवता और पंच लोकों के सत्य के ज्ञाताओं को पर्वत पर निवास करने और उनकी रक्षा करने का आदेश दिया। जब उन्हें भूख लगे तो उन्हें लोहे के गोले खिलाए जाएँ और जब उन्हें प्यास लगे तो उन्हें पिघला हुआ तांबा पिलाया जाए। जब उनकी सजा का समय समाप्त हो जाएगा, तो कोई आकर उन्हें बचा लेगा।
वास्तव में:
वह बंदर राक्षस स्वर्ग के खिलाफ विद्रोह करने के लिए काफी साहसी था।

लेकिन तथागत के हाथों वश में कर लिया गया।
अध्याय 7

वह महीनों और वर्षों तक प्यास बुझाने के लिए पिघला हुआ तांबा पीता रहता है, और लोहे की गोलियों से अपनी भूख मिटाता है, इस तरह वह अपनी सजा काटता है।
स्वर्ग के प्रहारों को सहते हुए, वह पीड़ा झेलता है।
लेकिन सबसे कठिन समय में भी एक सुखद भविष्य प्रतीक्षा कर रहा होता है।
यदि कोई नायक उसके लिए संघर्ष करने को तैयार हो,
एक वर्ष के लिए वह बुद्ध की सेवा में पश्चिम की ओर जाएगा।
एक और कविता इस प्रकार है:
जैसे-जैसे उसने शक्तिशाली लोगों को पराजित किया, उसकी महान शक्ति बढ़ती गई।
उसने अपनी दुष्ट प्रतिभाओं का इस्तेमाल बाघों और ड्रैगनों को वश में करने के लिए किया।
वह स्वर्ग में घूमते हुए आड़ू और शराब चुरा ले गया।
उन्हें बड़े ही सम्मानपूर्वक जेड कैपिटल में पद प्रदान किया गया।
जब उसकी दुष्टता हद से अधिक बढ़ गई तो उसके शरीर को कष्ट सहना पड़ा।
लेकिन उनकी अच्छाई की जड़ें नहीं टूटी थीं, और उनकी सांसें अब भी चल रही थीं।
वह बुद्ध के हाथों से बच निकलेगा।
और तब तक प्रतीक्षा करें जब तक तांग राजवंश से कोई संत भिक्षु उत्पन्न न हो जाए।
यदि आपको नहीं पता कि किस वर्ष के किस महीने में उनके कष्टों का अंत हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 8
हमारे बुद्ध ने शास्त्रों की रचना की और पूर्ण आनंद का प्रसार किया।
गुआनयिन ने एक आदेश का पालन किया और चांगआन चली गईं
यदि आप ध्यान के बारे में पूछने का प्रयास करते हैं
अध्याय 8

या असंख्य की जांच करें
आप अपना जीवन व्यर्थ कर देंगे और कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे।
दर्पण बनाने के लिए ईंटों को पॉलिश करना,
या फिर बर्फ को इकट्ठा करके उसे अनाज में बदलना...
आपने इस तरह कितने साल बर्बाद किए हैं?
एक बाल में सागर समाया हो सकता है।
एक सरसों के दाने में पहाड़ समा सकता है।
और स्वर्णिम कश्यप केवल मुस्कुराते हैं।
जब आप जागृत हो जाएंगे तो आप दस अवस्थाओं और तीन वाहनों को पार कर जाएंगे, और चार प्रकार के जन्म और छह प्रकार के पुनर्जन्म को रोक देंगे।
किसने कभी सुना है, विचारों की खाई के मिटने से पहले, उस पेड़ के नीचे जिसकी कोई छाया नहीं है?
वसंत ऋतु की सुबह कोयल की आवाज़?
काओ नदी के किनारे का रास्ता खतरनाक है।
गिद्ध शिखर बादलों में काफी ऊंचाई पर स्थित है:
यहां पूर्वजों की आवाज एक रहस्य थी।
दस हजार फीट ऊँची चट्टान पर
पांच पत्तियों वाले कमल खिलते हैं
जैसे ही पुरानी हवेली के शटरों के चारों ओर सुगंध का घेरा बनता है।
उस समय
आपका ज्ञान विचारों की सभी धाराओं को ध्वस्त कर देता है;
ड्रैगन किंग और तीन खजाने देखे जा सकते हैं।
यह गीतात्मक कविता सु वू मान की धुन पर आधारित है। हमारी कथा आगे बढ़ती है कि कैसे हमारे बुद्ध, तथागत, जेड सम्राट को छोड़कर वज्र मठ लौट आए, जहाँ उन्होंने गिद्ध शिखर की तलहटी में साल के वृक्षों के युग्मों के नीचे तीन हजार बुद्धों, पाँच सौ अर्हतों, आठ महान वज्रपाणियों और असंख्य बोधिसत्वों को ध्वज, छत्र, रत्न और जादुई फूल धारण किए हुए देखा। तथागत ने अपने शुभ बादल को रोककर उन्हें इस प्रकार संबोधित किया:

"मेरी गहरी अंतर्दृष्टि के साथ
मैंने तीनों लोकों का सर्वेक्षण किया।
प्रकृति की उत्पत्ति
अंततः यह शून्यता ही है।
जैसे विशाल शून्य,
जिसमें कुछ भी नहीं है।
इस दुष्ट बंदर को वश में करना
यह एक ऐसी रहस्यमय घटना थी जो समझ से परे थी।
इसे जीवन और मृत्यु का आरंभ कहा जाता है:
हालात कुछ ऐसे ही दिखते हैं।
उनके बोलते ही एक पवित्र प्रकाश से आकाश भर गया और उत्तर एवं दक्षिण को जोड़ने वाले बयालीस इंद्रधनुष दिखाई दिए। उन्हें देखने वाले सभी लोगों ने प्रणाम किया, और क्षण भर बाद बुद्ध ने कुछ शुभ बादलों को एकत्रित किया और सर्वोच्च कमल सिंहासन पर चढ़कर विराजमान हो गए।
तब तीन हजार बुद्ध, पांच सौ अर्हत, आठ वज्रपाणि और चार बोधिसत्व आगे आकर हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम करने लगे और पूछने लगे, "स्वर्गिक महल को किसने नष्ट किया और आड़ू भोज को किसने बर्बाद किया?"
बुद्ध ने उत्तर दिया, “वह दुष्ट पुष्प और फल पर्वत पर जन्मा एक बंदर राक्षस था, जिसके घोर अपराधों का वर्णन करना असंभव है। स्वर्ग के कोई भी सेनापति उसे वश में नहीं कर सके, और जब एरलांग ने उसे पकड़ लिया, तो भगवान लाओ ज़ी ने उसे अग्नि से परिष्कृत किया, तब भी वह अप्रभावित रहा। जब मैं वहाँ गया, तो वह गर्जन सेनापतियों के बीच में था, अपनी युद्ध कला और साहस का भव्य प्रदर्शन कर रहा था। मैंने युद्ध रोककर उससे पूछा कि यह सब क्या है। उसने कहा कि उसके पास दिव्य शक्तियाँ हैं, वह रूप परिवर्तन कर सकता है, और एक ही छलांग में छत्तीस हज़ार मील तक बादल पर कलाबाज़ी कर सकता है। मैंने उससे शर्त लगाई कि वह मेरे हाथ से नहीं छूट सकता, फिर मैंने उसे पकड़ लिया, अपनी उंगलियों को पंच तत्व पर्वत में बदल दिया, और उसे उसके नीचे कैद कर दिया। जेड सम्राट ने जेड महल के सुनहरे

द्वार खोल दिए, और मुझे धन्यवाद देने के लिए आयोजित स्वर्ग में शांति के उत्सव भोज में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। उसके बाद मैंने उनसे विदा ली और वापस आ गया। यहां।" वे सभी इस खबर से प्रसन्न हुए और उन्होंने उन्हें दिल खोलकर बधाई दी, जिसके बाद वे समूह-दर-समूह चले गए, प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए रवाना हो गया क्योंकि सभी दिव्य सत्य में आनंदित थे। वास्तव में:

स्वर्ग में शुभ वाष्प भर गई।

अध्याय 8

101

पश्चिम की यात्रा

पूज्य देव के चारों ओर इंद्रधनुष मंडरा रहे हैं।

पश्चिमी स्वर्ग, जिसे सर्वश्रेष्ठ के रूप में जाना जाता है,

इस पर निराकारता के धर्म राजा का शासन है।

काले बंदर हमेशा फल देते रहते हैं।

हिरण अपने मुंह में फूल पकड़े हुए हैं;

नीले फीनिक्स नाचते हैं,

रंग-बिरंगे पक्षी पुकारते हैं;

पवित्र कछुए लंबी आयु प्रदान करते हैं।

अमर सारस जादुई मशरूम भेंट करते हैं।

यहां वे शांतिपूर्वक जेतवन पार्क की पवित्र भूमि और ड्रैगन पैलेस के अनंत क्षेत्रों का आनंद लेते हैं।

हर दिन फूल खिलते हैं,

फल हमेशा पके रहते हैं।

मौन का अभ्यास करने से वे सत्य की ओर लौटते हैं।

चिंतन के माध्यम से वास्तविकता की प्राप्ति।

न तो जन्म है और न ही मृत्यु;

वे न तो बढ़ते हैं और न ही घटते हैं।

उनके आने-जाने पर कोहरा उनका पीछा करता है;

न गर्मी न सर्दी से अप्रभावित, उन्हें वर्षों का एहसास ही नहीं होता।

एक दिन, जब बुद्ध गिद्ध शिखर पर स्थित वज्र मठ में निवास कर रहे थे, उन्होंने अन्य सभी बुद्धों, अर्हतों, संरक्षक देवताओं, बोधिसत्वों, वज्रपाणियों, भिक्षुओं और भिक्षुणियों को बुलाया और कहा, "चूंकि हम समय से परे हैं, मुझे नहीं पता कि धूर्त बंदर को वश में किए और स्वर्ग को शांत किए हुए कितना समय बीत चुका है, लेकिन सांसारिक गणना के अनुसार लगभग पाँच सौ वर्ष हो चुके होंगे। आज शरद ऋतु का सुहाना दिन है और मेरे पास सौ प्रकार के दुर्लभ फूलों और हज़ार प्रकार के विदेशी फलों से भरा एक अनमोल कटोरा है, तो क्या आप हमारे साथ उल्लाम्बना भोज करने के बारे में कुछ कहेंगे?" सभी ने हाथ जोड़कर तीन बार उनके चारों ओर परिक्रमा की और आभार व्यक्त किया। फिर बुद्ध ने आनंद को फूलों और फलों का कटोरा पकड़ने का आदेश दिया, जबकि कश्यप ने उन्हें सजाया। मेजबान कृतज्ञता से भर गए, जिसे उन्होंने छंदों में व्यक्त किया।

खुशी पर लिखी कविता कुछ इस प्रकार थी:

अध्याय 8

102

पश्चिम की यात्रा

परम पूज्य के समक्ष सुख का तारा उज्ज्वल रूप से चमकता है;

खुशियों के उपहार दूर-दूर तक और गहराई तक फैलते हैं, और अधिक समृद्ध होते जाते हैं।

भाग्य असीम है और पृथ्वी के अस्तित्व तक ही रहता है;

सौभाग्यशाली व्यक्ति का संबंध स्वर्ग से होता है।

खुशियों के खेत व्यापक रूप से बोए जाते हैं और हर साल फलते-फूलते हैं;

खुशियों का सागर विशाल और गहरा है, जो कभी नहीं बदलता।

आनंद स्वर्ग और पृथ्वी को भर देता है, आनंद की विरासत छोड़ जाता है। आनंद असीम रूप से बढ़ता है, शाश्वत रूप से पूर्ण होता है।

आधिकारिक पद पर लिखी कविता इस प्रकार थी:

पर्वत के समान उच्च पदवी वाले रंगीन फीनिक्स पक्षी पुकारते हैं;

जैसे-जैसे पदचिह्न बढ़ता जाता है, हम संध्या तारे की प्रशंसा करते हैं।

वेतन बढ़ाकर दस हजार बुशेल कर दिया गया, और एक स्वस्थ शरीर प्राप्त हुआ;

वेतन बढ़ाकर एक हजार टन कर दिया गया, और दुनिया में शांति स्थापित हो गई।

पद और वेतन स्वर्ग के बराबर और शाश्वत भी;
पद और प्रसिद्धि समुद्र के समान विशाल और उससे भी अधिक स्पष्ट हैं।
सदा के लिए पद और कृपा का निरंतर बने रहना, अत्यंत प्रशंसनीय है;
असीमित पद और कुलीनता, मानो दस हजार राज्य हों।
दीर्घायु पर लिखी कविता कुछ इस प्रकार थी:
दीर्घायु का तारा बुद्ध की ओर चमकता है;
दीर्घायु की भूमि की महिमा यहीं से शुरू होती है।
दीर्घायु के फल प्यालों में भरे हुए हैं, जो शुभ संकेत से जगमगा रहे हैं;
अध्याय 8
103
पश्चिम की यात्रा
दीर्घायु के फूल ताजे तोड़े गए हैं और कमल के सिंहासन पर रखे गए हैं।
दीर्घायु की कविताएँ, शुद्ध और सुरुचिपूर्ण, दुर्लभ कल्पनाओं से परिपूर्ण,
दीर्घायु के गीत अत्यंत प्रतिभा के साथ गाए गए।
जीवन सूर्य और चंद्रमा जितना लंबा हो,
ऐसा जीवन जो पहाड़ों और समुद्रों दोनों से भी अधिक समय तक कायम रहेगा।
जब बोधिसत्वों ने सभी काव्य प्रस्तुत कर दिए, तो उन्होंने बुद्ध से उनके मूल सिद्धांतों की व्याख्या करने का अनुरोध किया। तब तथागत ने अपने उत्तम मुख से महान धर्म और उसके फलस्वरूप का उपदेश दिया। उन्होंने तीन वाहन शास्त्रों और सुरंगमा सूत्र में वर्णित पंच स्कंधों के सिद्धांत का वर्णन किया; देवता और नाग चारों ओर एकत्रित हो गए और प्रचुर मात्रा में पुष्पों की वर्षा होने लगी। सचमुच: ध्यानमग्न हृदय हजारों नदियों में चंद्रमा के समान चमकता है; सच्चा स्वरूप दस हजार मील के आकाश को समाहित करता है।
बुद्ध ने अपना उपदेश समाप्त करने के बाद मेज़बान से कहा, “मैंने देखा है कि चारों महाद्वीपों के जीवों का नैतिक आचरण भिन्न-भिन्न है। पूर्वी महाद्वीप (परम शरीर) में वे स्वर्ग और पृथ्वी की पूजा करते हैं, उनका मन शांत और सौम्य है। उत्तरी कुरु महाद्वीप में वे जीवों की हत्या करते हैं, लेकिन केवल अपने भोजन के लिए; वे स्वभाव से मूर्ख और आलसी हैं, लेकिन दूसरों पर अधिक अत्याचार नहीं करते। हमारे पश्चिमी महाद्वीप (पशु-दान) में ऐसे लोग हैं जो न तो लोभ करते हैं और न ही हत्या करते हैं। वे प्राण

तत्व का पोषण करते हैं और आत्मा को लीन रखते हैं; और यद्यपि वे उच्च कोटि के संत उत्पन्न नहीं करते, फिर भी वे सभी दीर्घायु होते हैं। लेकिन दक्षिणी जंबु महाद्वीप में वे लालची और व्यभिचारी हैं और दूसरों के कष्टों में आनंद लेते हैं; वे बहुत अधिक हत्या और झगड़े करते हैं। उस महाद्वीप को सत्यतः ज़ुबानों और मुखों का दुष्ट मैदान, विवादों का बुरा सागर कहा जा सकता है। अब मेरे पास सच्चे शास्त्रों के तीन भंडार हैं जिनसे वे लाभान्वित हो सकते हैं।" अच्छा बनने के लिए राजी किया गया।"

यह सुनकर सभी बोधिसत्वों ने हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक पूछा, "तथागत के पास सच्चे शास्त्रों के कौन-से तीन भंडार हैं?"

मेरे पास विनय (स्वर्ग से संबंधित विधि) का एक भंडार है; शास्त्रों (पृथ्वी से संबंधित व्याख्याओं) का एक भंडार है; और सूत्रों (भूतों से मुक्ति दिलाने वाले शास्त्रों) का एक भंडार है। इन तीनों भंडारों में पैंतीस श्रेणियों में पंद्रह हजार एक सौ चौवालीस ग्रंथ हैं। ये सत्य की साधना के लिए शास्त्र हैं और वास्तविक सद्गुण का द्वार हैं। मैं इन्हें पूर्वी देशों में भेजना चाहता हूँ क्योंकि यह असहनीय है कि उस क्षेत्र के सभी प्राणी इतने मूर्ख और दुष्ट हों जो सत्य की निंदा और अपमान करते हैं, मेरे विधि का सार नहीं समझते और रूढ़िवादी योगाचार संप्रदाय से विमुख हो गए हैं। मैं ऐसे किसी व्यक्ति को कैसे खोजूँ जिसके पास पूर्व जाने की जादुई शक्ति हो, जो एक योग्य अनुयायी का चयन करे और उसे शास्त्रों की खोज में एक हजार पर्वत और दस हजार नदियों को पार करने का कठिन मार्ग दिखाए, जब तक कि वह अंततः मेरे इस निवास पर आकर उन्हें प्राप्त न कर ले? जब वह आएगा, तो उन्हें पूर्व में हमेशा के लिए भेज दिया जाएगा ताकि सभी प्राणियों का धर्मांतरण हो सके, जो एक आशीर्वाद होगा। पहाड़ जितना विशाल, समुद्र जितना गहरा बधाई का पात्र। क्या कोई उसे ढूंढने जाने को तैयार है?

अध्याय 8

104

पश्चिम की यात्रा

बोधिसत्व गुआनयिन कमल सिंहासन पर विराजमान हुईं और बुद्ध के तीन चक्कर लगाकर प्रणाम करने के बाद बोलीं, "आपका प्रतिभाहीन शिष्य पूर्व की ओर जाकर किसी ऐसे व्यक्ति को खोजना चाहता है जो आकर शास्त्रों को लाए।" वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने बोधिसत्व की ओर सिर उठाकर देखा: उनकी समझ चारों गुणों से

परिपूर्ण थी।
ज्ञान से उसका सुनहरा शरीर परिपूर्ण था।
उसके हार से मोती और जेड लटक रहे हैं।
उसका कंगन हीरों से बना है।
उसके बाल काले बादलों की तरह हैं जिन्हें कुंडली मारे हुए अजगरों की तरह कुशलतापूर्वक समेटा गया है; उसकी कढ़ाई वाली कमरबंद हल्के से लहराती है, मानो किसी फीनिक्स पक्षी का पंख हो।
समुद्री हरे रंग के जेड बटन,
सफेद रेशमी जालीदार कपड़े का गाउन,
पवित्र प्रकाश से नहाया हुआ;
ब्रोकेड स्कर्ट,
सोने की कमरबंद,
शुभ वाष्पों से सुरक्षित।
अर्धचंद्राकार भौंहें,
आंखें तारों की जोड़ी जैसी।
दिव्य आनंद से परिपूर्ण एक सुंदर चेहरा,
लाल रंग के होंठों पर लालिमा की हल्की सी झलक।
उसकी मीठी ओस की पवित्र बोतल हमेशा भरी रहती है।
इसमें विलो की टहनियाँ हमेशा हरी रहती हैं।
वह आठ आपदाओं से मुक्ति दिलाती है।
सभी जीवित प्राणियों को बचाता है,
उनकी करुणा अपार है।
वह माउंट ताई पर रहती है।
दक्षिणी सागर में रहता है।

जब वह उनकी चीखें सुनती है तो वह पीड़ा से मुक्ति दिलाती है।
हर कॉल का जवाब देने में कभी असफल नहीं होते।

असीम दिव्य और चमत्कारी।
उसका दिल बैंगनी बांस की प्रशंसा करता है;
उसकी ऑर्किड जैसी प्रकृति को यह सुगंधित लता बहुत पसंद है।
वह पोटारका द्वीप की दयालु शासक है।
टाइड गुफा की जीवित गुआनयिन।
बुद्ध उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए।
उन्होंने कहा, "इस मिशन के लिए केवल आदरणीय गुआनयिन ही उपयुक्त होंगी, जिनकी दिव्य शक्तियां इतनी महान हैं।"
"पूर्व की यात्रा पर जाने के लिए आपके पास अपनी शिष्या के लिए क्या निर्देश हैं?" गुआनयिन ने पूछा।
बुद्ध ने कहा, “तुम्हें पूरे रास्ते ध्यान से देखना होगा। तुम आकाशगंगा से होकर नहीं जा सकते, लेकिन यदि आवश्यक हो तो तुम थोड़े बादल या धुंध का सहारा ले सकते हो। पहाड़ों और नदियों को पार करते समय दूरियों को ध्यानपूर्वक नोट करना ताकि तुम शास्त्रों को लेने आने वाले व्यक्ति को पूर्ण निर्देश दे सको। परन्तु मुझे खेद है कि उस सच्चे विश्वासी की यात्रा कठिन होगी, इसलिए मैं तुम्हें उसके लिए पाँच अनमोल वस्तुएँ देता हूँ।” बुद्ध ने आनंद और कश्यप को एक रेशमी चोगा और नौ कुंडलियों वाली भिक्षु की छड़ी लाने का आदेश दिया।
“शास्त्र लेने आने वाले को यह वस्त्र और छड़ी दे दो; ये उसके उपयोग के लिए हैं। यदि वह यहाँ आने के लिए दृढ़ निश्चयी है, तो इस वस्त्र को धारण करके वह पुनर्जन्म के चक्र से बच सकता है, और इस छड़ी को धारण करने से वह बुराई से मुक्त हो जाएगा।” बोधिसत्व ने प्रणाम किया और उन्हें ग्रहण कर लिया। फिर बुद्ध ने तीन पट्टियाँ निकालीं।
“इन अनमोल वस्तुओं को ‘कसने वाली पट्टियाँ’ कहते हैं,” उन्होंने बोधिसत्व को ये पट्टियाँ सौंपते हुए कहा। “यद्यपि ये तीनों एक जैसी दिखती हैं, लेकिन इनके उपयोग अलग-अलग हैं। मेरे पास तीन पट्टियाँ कसने के मंत्र भी हैं। यदि यात्रा के दौरान आपको कोई महान जादुई शक्तियों वाला राक्षस मिले, तो उसे सुधार लाने और शास्त्रों को लेने आने वाले तीर्थयात्री का शिष्य बनने के लिए प्रेरित करें। यदि वे ऐसा न करें, तो इन पट्टियों को उनके सिर पर डाल दें, जहाँ वे स्वतः ही शरीर में जड़ जमा लेंगी। यदि प्रत्येक पट्टी के लिए उपयुक्त मंत्र का जाप किया जाए, तो पीड़ित की

आँखें बाहर निकल आएंगी, उसका सिर दुखने लगेगा और उसका माथा फट जाएगा। इस प्रकार वह निश्चित रूप से हमारे धर्म को अपना लेगा।"

जब उन्होंने बोलना समाप्त किया तो बोधिसत्व ने श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और चली गईं। उन्होंने शिष्य हुआन को अपने साथ चलने को कहा, और हुआन अपने साथ एक हजार पाउंड वजनी लोहे का डंडा ले गया ताकि वह बोधिसत्व के लिए राक्षस-नाशक बलवान के रूप में कार्य कर सके। बोधिसत्व ने चोगा को एक गठरी में लपेटकर उसे ले जाने के लिए दे दिया। फिर उन्होंने सोने की पट्टियों को सुरक्षित रख दिया और डंडा हाथ में लिए गिद्ध शिखर से नीचे उतर गईं। इस यात्रा के परिणाम होने वाले थे:

बुद्ध का शिष्य अपनी मूल प्रतिज्ञा पर लौट आता है;

अध्याय 8

106

पश्चिम की यात्रा

आदरणीय स्वर्ण झींगुर चंदन के वस्त्रों से सुसज्जित है।

जब बोधिसत्व पर्वत की तलहटी में पहुँचीं, तो जेड सत्य मंदिर के स्वर्ण सिर वाले अमर देव ने उन्हें मंदिर के द्वार पर रोककर चाय पीने का निमंत्रण दिया। लेकिन वे अधिक देर तक रुक नहीं सकीं, इसलिए उन्होंने कहा, "मुझे तथागत द्वारा पूर्व दिशा में जाकर शास्त्रों को लाने वाले व्यक्ति को खोजने का पवित्र आदेश दिया गया है।"

"वह कब आएगा?" अमर ने पूछा।

"यह निश्चित नहीं है," बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "परन्तु वह दो-तीन वर्षों में यहाँ पहुँच जाएगा।" उसने अमर देव से विदा ली और बादलों और कोहरे के बीच यात्रा करते हुए दूरियों का अनुमान लगाया। इसे प्रमाणित करने वाले कुछ श्लोक भी हैं:

उसे उसे ढूंढने के लिए दस हजार मील की यात्रा की कोई परवाह नहीं थी, बल्कि वह सही आदमी को ढूंढने को लेकर चिंतित थी।

उस आदमी को ढूंढना बेहद जोखिम भरा लग रहा था।

लेकिन यह महज एक संयोग कैसे हो सकता है?

जो व्यक्ति गलत इरादों से मार्ग का उपदेश देता है, वह उसे विकृत कर देगा; जो व्यक्ति बिना आस्था के उसकी व्याख्या करता है, उसका उपदेश व्यर्थ होगा।

जो कोई भी अपने पूरे मन से इसे जानने का प्रयास करेगा,

उसका भविष्य उज्ज्वल होना तय है।

जब शिक्षिका और उनकी शिष्या अपनी यात्रा पर थीं, तो उन्होंने अचानक एक हजार मील तक बहने वाले कमजोर जल को देखा, जो बहती रेत की नदी थी।
बोधिसत्व ने कहा, "हे शिष्य, शास्त्रों को लेने आने वाले व्यक्ति के लिए इसे पार करना कठिन होगा, क्योंकि वह अशुद्ध अस्थियों और नश्वर शरीर का बना होगा। वह इसे कैसे पार करेगा?"
"गुरुजी, आपको यह नदी कितनी चौड़ी दिखती है?" हुइआन ने पूछा। बोधिसत्व ने जाँच करने के लिए अपना बादल रोक दिया। उसने देखा:
पूर्व की ओर स्थित रेगिस्तानों से जुड़ते हुए,
पश्चिम में स्थित विदेशी राज्यों तक पहुँचकर,
अध्याय 8
107
पश्चिम की यात्रा
दक्षिण में वूगे
उत्तर में रहने वाले तातार लोग।
यह लगभग तीन सौ मील चौड़ा था।
और यह 30 लाख मील लंबा है।
जैसे-जैसे पानी बहता गया, ऐसा लगा मानो धरती पलट रही हो।
लहरें उठते हुए पहाड़ों की तरह थीं।
विस्तृत और असीम,
विशाल और शक्तिशाली:
तीन मील की दूरी से भी भीषण बाढ़ की आवाज सुनाई देती है।
अमर लोगों की नावें यहाँ तक नहीं पहुँचतीं।
इस पर कमल के पत्ते तैर नहीं सकते।
मुरझाए पौधों से छनकर आती सूरज की किरणें टेढ़े-मेढ़े किनारे को रोशन करती हैं; भूरे बादल इसकी रोशनी को रोककर लंबे किनारे को अंधेरा कर देते हैं।
व्यापारी इस रास्ते से कैसे गुजर सकते थे?
क्या कभी कोई मछुआरा यहाँ आकर रुका है?
रेत के टीलों पर कोई हंस नहीं उतरते।
लेकिन दूर किनारे पर बंदर रोते हैं।

इसका रंग प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले लाल स्मार्टवीड से आता है।
जबकि नाजुक सफेद बत्तख घास एक साथ बह रही है।
जब बोधिसत्व उस दृश्य का जायजा ले रही थी, तभी उसे पानी में छपछपाहट की आवाज सुनाई दी और उसने लहरों से एक भयानक राक्षस को कूदते हुए देखा।
वह था
वास्तव में नीला नहीं,
वास्तव में काला नहीं,
एक भयावह चेहरे के साथ;
अध्याय 8
108
पश्चिम की यात्रा
न तो लंबा,
न ही संक्षिप्त,
नंगे पैर और मांसल शरीर।
उसकी आँखों में चमक आ गई
कछुए की खोल से बनी दो लालटेन की तरह;
उसके मुख के कोने उतने ही भयावह थे
जैसे कसाई का कड़ाहा।
तलवारों की तरह उभरे हुए नुकीले दांत,
लाल बाल, उलझे हुए और बिखरे हुए।
वह बिजली की कड़क की तरह दहाड़ा।
और वह हवा की गति से लहरों पर दौड़ पड़ा।
यह राक्षस अपने हाथों में एक डंडा लेकर बोधिसत्व को पकड़ने के लिए नदी के किनारे चढ़ गया, लेकिन हुइआन की लाठी ने उसे रोक दिया।
"भागो मत," ह्युआन चिल्लाया जब राक्षस उसकी ओर बढ़ा। उनके बीच जो लड़ाई छिड़ी वह बेहद भयानक थी:
मोक्सा अपने लोहे के डंडे के साथ,
अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करते हुए बोधिसत्व की रक्षा करना;
राक्षस अपने दानव-नाशक डंडे के साथ

उन्होंने अपनी वीरता का प्रदर्शन हर उस चीज के लिए किया जिसके वे हकदार थे।
नदी किनारे नाचते हुए चांदी के दो अजगर;
नदी के किनारे दो पवित्र भिक्षु युद्ध कर रहे हैं।
एक व्यक्ति ने अपनी कुशलता का उपयोग करके बहती रेत की नदी को नियंत्रित किया।
दूसरे ने गुआनयिन की रक्षा करने में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था।
वह लहरों को उछाल और घुमा सकता था,
दूसरा कोहरा और तेज हवाएं उगल सकता था।
अध्याय 8
109
पश्चिम की यात्रा
जब लहरें उछलती और लुढ़कती थीं, तो आकाश और पृथ्वी अंधकारमय हो जाते थे; कोहरे और तूफानों में सूर्य और चंद्रमा धुंधले पड़ जाते थे।
राक्षस-दमन ध्रुव
ऐसा लग रहा था मानो कोई सफेद बाघ पहाड़ से नीचे उतर रहा हो;
लोहे का क्लब
वह एक दुबके हुए पीले अजगर जैसा था।
जब कोई कार्रवाई में उतरता है
यह झाड़ियों को पीटकर सांपों को आकर्षित करता है;
जब दूसरा व्यक्ति आक्रामक हो जाता है,
यह चीड़ के पेड़ों को काटकर बाज को भगाता है।
वे तब तक लड़ते हैं जब तक आसमान अंधेरा नहीं हो जाता।
और तारे टिमटिमाते हैं।
फिर कोहरा उठता है,
और धरती और आकाश धुंधले हैं।
कमजोर जलक्षेत्र में इसकी श्रेष्ठता लंबे समय से बनी हुई है;
दूसरा व्यक्ति हमेशा से वल्चर पीक का हीरो रहा है।
जब उन दोनों के बीच कई दर्जन दौर तक अनिर्णायक लड़ाई चली, तो राक्षस ने अपने प्रतिद्वंद्वी के लोहे के डंडे को रोक दिया और पूछा, "तुम कहाँ से आए हो, भिक्षु, जो

मुझसे भिड़ने की हिम्मत करते हो?"
“मैं राजकुमार मोक्सा हूँ, शिवालय धारण करने वाले स्वर्ग के राजा ली का दूसरा पुत्र,” दूसरे ने उत्तर दिया। “मैं नौसिखिया हुइआन भी हूँ। मैं अभी अपनी गुरु की रक्षा कर रहा हूँ जो पूर्व की यात्रा पर उस व्यक्ति को खोजने जा रही हैं जो शास्त्रों को लाएगा। तुम कौन से राक्षस हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमारे रास्ते में खड़े होने की?” तब उस राक्षस को अपनी असलियत का एहसास हुआ।
उन्होंने कहा, "मुझे याद है, तुम बैंगनी बांस के जंगल में दक्षिणी सागर की गुआनयिन के साथ अपने आचरण का अभ्यास करती थीं। तुम यहाँ क्यों आई हो?"
"क्या आपको मेरे शिक्षक किनारे पर खड़े नहीं दिख रहे?"
जब राक्षस ने यह सुना तो उसने आदर दिखाने के लिए कई बार "ना-आ-आ" का जाप किया, अपना डंडा पीछे खींच लिया और मोक्ष को उसे पकड़ने दिया। फिर उसने गुआनयिन को प्रणाम किया और कहा, "मुझे क्षमा करें, बोधिसत्व, और मेरी बात सुनें। मैं कोई दानव नहीं हूँ, बल्कि वह सेनापति हूँ जो चमत्कारिक धुंध के हॉल में शाही रथ के पास सेवा करता था। केवल इसलिए कि मैंने गलती से आड़ू भोज में एक क्रिस्टल की थाली तोड़ दी थी, जेड सम्राट ने मुझे आठ सौ कोड़े लगवाए, मुझे पाताल लोक में निर्वासित कर दिया, और मुझे अध्याय 8 में डाल दिया।"

मैं ऐसा दिखता हूँ। और इन सबके ऊपर, हर सात दिन में वह एक उड़ती हुई तलवार यहाँ भेजता है जो मेरी छाती पर सौ से ज़्यादा बार वार करती है, फिर वापस चली जाती है। यह असहनीय पीड़ा है। मुझे इतनी असहनीय ठंड और भूख लगती है कि मुझे हर दो-तीन दिन में लहरों से बाहर निकलकर किसी यात्री को खाना पड़ता है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि अपनी अज्ञानता में मैं आज दयालु बोधिसत्व का अपमान करूँगा।
"तुम्हें स्वर्ग के विरुद्ध अपराध करने के लिए यहाँ निर्वासित किया गया था, लेकिन अब तुम जीवों को हानि पहुँचाकर अपने अपराध को और गहरा कर रहे हो। मैं बुद्ध के आदेश पर शास्त्रों को लाने वाले व्यक्ति को ढूँढ़ने के लिए पूर्व की ओर जा रहा हूँ। तुम भी हमारे साथ क्यों नहीं जुड़ जाते और तीर्थयात्री के शिष्य बनकर उसके साथ पश्चिम स्वर्ग जाकर बुद्ध को प्रणाम करके शास्त्रों की खोज करके भविष्य में अपने

लिए अच्छा प्रायश्चित सुनिश्चित क्यों नहीं कर लेते? मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि उड़ती हुई तलवार तुम्हें भेदने न आए, और जब तुम सफल हो जाओगे तो तुम्हारे सारे अपराध क्षमा कर दिए जाएँगे और तुम्हारा पुराना काम तुम्हें वापस दे दिया जाएगा। इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"

“मैं सत्य की ओर लौटने को तैयार हूँ,” राक्षस ने उत्तर दिया, फिर पास आकर बोला, “बोधिसत्व, मैंने यहाँ कितने लोगों को खाया है, इसकी गिनती भूल गया हूँ, और मैंने कुछ तीर्थयात्रियों को भी खा लिया है जो शास्त्र लाने की कोशिश कर रहे थे। मैं अपने सभी शिकारों के सिर नदी में फेंक देता हूँ, और वे सब डूब जाते हैं क्योंकि इस पानी पर हंस के पंख भी नहीं तैरते। लेकिन उन नौ तीर्थयात्रियों के कंकाल तैरते रहे और डूबे नहीं। मैं इससे इतना प्रभावित हुआ कि मैंने उन्हें रस्सी से एक साथ पिरो दिया और अपने खाली समय में उनसे खेलता हूँ।”

लेकिन मुझे डर है कि शास्त्रों को लाने वाला व्यक्ति शायद इतनी दूर तक न पहुंच पाए, जिससे मेरा भविष्य बर्बाद हो जाएगा।"

"वह ज़रूर आएगा," बोधिसत्व ने उत्तर दिया। "तुम्हें उन कंकालों को अपने सिर पर लटकाकर उसका इंतज़ार करना चाहिए। वे काम आएंगे।"

“तो फिर,” राक्षस ने कहा, “मैं आपके निर्देशों की प्रतीक्षा करूँगा।” बोधिसत्व ने तब उसके सिर पर हाथ रखकर उसे मठवासी नियमों का उपदेश दिया, उसका उपनाम शा (“रेत”) रखा और उसे बौद्ध नाम वूज़िंग (“शुद्धता का ज्ञान प्राप्त करने वाला”) दिया। फिर उसने भिक्षु जीवन में प्रवेश किया और बोधिसत्व को नदी पार कराया। उसने अपने हृदय को शुद्ध किया, अपने विचारों को पवित्र किया और जीवित प्राणियों की हत्या करना बंद कर दिया। अब वह केवल उस तीर्थयात्री की प्रतीक्षा करता था जो शास्त्रों को लेने आएगा।

उसे विदा करने के बाद बोधिसत्व और हुइआन पूर्व दिशा की ओर तेज़ी से बढ़े। काफ़ी देर चलने के बाद उन्होंने एक ऊँचा पर्वत देखा जो घने कोहरे से ढका हुआ था, और वे पैदल उस पर चढ़ने में असमर्थ थे। जब वे बादल के सहारे पर्वत पार करने की योजना बना रहे थे, तभी अचानक तेज़ हवा चली और एक राक्षस प्रकट हुआ। वह भी देखने में अत्यंत भयानक था।

उसकी आंतें उसके मुंह से लटक रही थीं, मुड़ी हुई और गांठदार थीं;
उसके कान पंखे जैसे थे, उसकी आंखें सोने की तरह चमक रही थीं।

उसके दांत लोहे की फाइल की तरह तेज थे।
और जब उसने अपना मुंह खोला तो वह किसी अंगीठी की तरह था।
उसका सुनहरा हेलमेट उसके गालों पर कसकर बंधा हुआ था;
रेशमी कमरबंद से बंधा उसका कवच अजगर की उतारी हुई केंचुली से बना था।
उसके हाथों में अजगर के पंजे जैसी कीलों से जड़ी एक कुदाल थी।
उसकी कमर पर अर्धचंद्र के आकार का एक घुमावदार धनुष लटका हुआ था।
अध्याय 8
111
पश्चिम की यात्रा
उनकी युद्ध शक्ति ने वर्ष ग्रह को भयभीत कर दिया;
उसके अहंकारी स्वभाव ने स्वर्ग के देवताओं को भी खतरे में डाल दिया था।
वह उन पर झपटा और बिना सोचे समझे अपने रेक से बोधिसत्व पर प्रहार किया।
नौसिखिए मोक्ष ने उसके वार को रोका और ज़ोर से चिल्लाया, "अपनी तमीज़ याद रख, दुष्ट राक्षस, और मेरे डंडे से सावधान हो जा।"
"भिक्षु," दूसरे ने उत्तर दिया, "तुम्हें खुद को संभालना नहीं आता। मेरी बात मानो!"
पहाड़ की तलहटी में दोनों एक-दूसरे पर टूट पड़े और वर्चस्व के लिए संघर्ष करने लगे।
यह एक शानदार लड़ाई थी: क्रूर और हत्यारा राक्षस;
हुइआन, प्रभावशाली और सक्षम।
लोहे का डंडा दिल को चूर-चूर कर सकता था;
रेक चेहरे पर लगा।
उड़ती धूल ने आकाश और पृथ्वी को अंधकारमय कर दिया;
उड़ती हुई रेत और पत्थरों ने देवताओं और भूतों को चौंका दिया।
नौ दांतों वाला रेक
चमका और झिलमिलाया
जैसे ही इसकी दो घंटियाँ गूंज उठीं;
अकेला कर्मचारी
वह भयावह रूप से काला था
जैसे ही वह अपने मालिक के हाथों में घूमने लगा।
उनमें से एक स्वर्ग के राजा का उत्तराधिकारी था।

एक व्यक्ति ने पोटारका द्वीप पर कानून का बचाव किया।
दूसरा एक पहाड़ी गुफा में रहने वाला दुष्ट राक्षस था।
वर्चस्व की लड़ाई में,
किसी को नहीं पता था कि विजेता कौन होगा।
अध्याय 8
112
पश्चिम की यात्रा
जब लड़ाई वाकई रोमांचक मोड़ पर पहुँच रही थी, तभी गुआनयिन ने हवा में से एक कमल का फूल फेंककर दोनों हथियारों को अलग कर दिया। यह देखकर राक्षस चौंक उठा और बोला, "तुम कहाँ से आए हो, भिक्षु? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे 'आँखों के सामने फूल' से धोखा देने की?"
"मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, हे बदबूदार, मांसल आँखों वाले मनुष्य," मोक्ष ने उत्तर दिया। "मैं दक्षिणी सागर की बोधिसत्व का शिष्य हूँ, और यह कमल उन्हीं ने नीचे फेंका था। क्या तुम यह नहीं जानते?"
"दक्षिणी सागर के बोधिसत्व से आपका तात्पर्य गुआनयिन से है, जो तीन विपत्तियों का निवारण करती हैं और आठ आपदाओं से बचाती हैं?" राक्षस ने पूछा।
"मेरा मतलब और किससे हो सकता है?" मोक्सा ने पलटकर जवाब दिया। राक्षस ने अपना फावड़ा नीचे फेंक दिया, उसे प्रणाम किया और पूछा,
"बड़े भाई, बोधिसत्व कहाँ हैं? क्या आप मुझे उनसे मिलवा सकते हैं?" मोक्ष ने ऊपर देखा और इशारा किया।
“वह रही,” उसने कहा। राक्षस ने उसके सामने सिर झुकाया और तीखी आवाज में चिल्लाया, “मुझे क्षमा कर दीजिए, बोधिसत्व, मुझे क्षमा कर दीजिए।” गुआनयिन ने अपने बादल को धरती पर उतारा, उसके पास गई और पूछा, “क्या तुम जंगली सूअर से शैतान बने हो या सूअर से राक्षस? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरा रास्ता रोकने की?”
"मैं न तो जंगली सूअर हूँ और न ही सुअर," राक्षस ने उत्तर दिया। "मैं आकाशगंगा में मार्शल तियान पेंग हुआ करता था।"
क्योंकि मैंने चंद्र कन्या को बहकाने के लिए शराब पी ली थी, इसलिए जेड सम्राट ने मुझे दो हजार हथौड़ों के प्रहार और नश्वर लोक में निर्वासन की सजा सुनाई। मेरी आत्मा को रहने के लिए एक कोख ढूंढनी पड़ी, लेकिन मैं रास्ता भटक गया और एक

सूअरनी की कोख में प्रवेश कर गया। इसीलिए मैं ऐसा दिखता हूँ। मैंने अपनी माँ सूअरनी को खा डाला, बाकी सभी सूअरों को भगा दिया और इस पर्वत पर कब्जा कर लिया, जहाँ मैं मनुष्यों को खाकर अपना जीवन यापन करता हूँ। बोधिसत्व, मेरा आपको ठेस पहुँचाने का कोई इरादा नहीं था।

मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, मैं तुमसे विनती करता हूँ।"

"इस पर्वत का नाम क्या है?" बोधिसत्व ने पूछा।

इसे आशीर्वाद पर्वत कहा जाता है, और इसमें स्थित गुफा को बादल पथ गुफा कहते हैं। दूसरी बहन लुआन, जो वहाँ रहती थीं, ने देखा कि मैं युद्ध करना जानता हूँ और उन्होंने मुझे अपने घर का मुखिया बनने के लिए कहा, लेकिन एक साल के भीतर ही उनकी मृत्यु हो गई और उनकी सारी संपत्ति मेरी हो गई। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास अपना गुजारा करने का कोई साधन नहीं है, इसलिए मुझे पहले की तरह ही लोगों को खाकर अपना पेट भरना पड़ा। हे बोधिसत्व, कृपया मेरे पापों को क्षमा करें।

बोधिसत्व ने उत्तर दिया, “एक पुरानी कहावत है, ‘यदि आप भविष्य चाहते हैं, तो ऐसा कोई काम न करें जिसमें कोई भविष्य न हो।’ आपने परलोक में नियम तोड़ा, और तब से आपका दुष्ट स्वभाव नहीं सुधरा है। आपने जीवन लेकर एक और पाप किया है, इसलिए निश्चित रूप से आपको दुगना दंड मिलेगा।”

“भविष्य!” राक्षस क्रोधित होकर बोला। “तुम्हारे अनुसार तो मुझे हवा पर ही जीवित रहना चाहिए था! कहावत है, ‘सरकार के कानून से तो पीट-पीटकर मार डाला जाता है, और बुद्ध के कानून से भूख से मर जाते हो।’ दफा हो जाओ! दफा हो जाओ! अगर नहीं गए तो मैं इस तीर्थयात्री को पकड़कर इस मोटी-ताज़ी बूढ़ी औरत को खा जाऊंगा। मुझे परवाह नहीं कि यह दो बार पाप है, तीन बार पाप है, या हज़ार बार या दस हज़ार बार पाप है।”

बोधिसत्व ने कहा, “यदि कोई व्यक्ति अच्छा बनना चाहता है, तो स्वर्ग उसे अवश्य ही अच्छा बनने देगा। यदि तुम सत्य के प्रति समर्पित हो, तो स्वयं को तृप्त करने के कई तरीके हैं। पाँच प्रकार के अनाज हैं, जो भूख मिटाने के लिए पर्याप्त हैं, तो फिर जीवित रहने के लिए मनुष्यों को क्यों खाना?”

जब राक्षस ने ये शब्द सुने तो ऐसा लगा जैसे वह किसी सपने से जागा हो, और उसने बोधिसत्व से कहा, "मैं सुधरना तो चाहता हूँ, लेकिन क्या यह सच नहीं है कि 'स्वर्ग के

विरुद्ध पाप करने वाले को प्रार्थना करने के लिए कोई जगह नहीं मिलती?'"
"मैं बुद्ध के आदेश पर पूर्व की ओर जा रही हूँ, ताकि उस व्यक्ति को ढूंढ सकूँ जो शास्त्रों को लेकर आएगा," उसने उत्तर दिया।
"तुम उसके शिष्य बन सकते हो और पश्चिमी स्वर्ग की यह यात्रा कर सकते हो; इस प्रकार तुम पुण्य कमाओगे और अपने अपराधों का प्रायश्चित करोगे, और मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि तुम विपत्ति से मुक्त हो जाओ।"
अध्याय 8
113
पश्चिम की यात्रा
“मैं उसके साथ चलूँगा, मैं उसके साथ चलूँगा,” राक्षस बार-बार दोहराता रहा। बोधिसत्व ने तब उसके सिर पर हाथ रखा और उसने मठ के नियमों को स्वीकार कर लिया। उसके रूप-रंग के कारण उन्होंने उसे झू (“सूअर”) उपनाम दिया और बौद्ध नाम झू वुनेन्ग (“शक्ति से जागृत सूअर”) रखा। उन्होंने उसे सत्य का पालन करने और केवल शाकाहारी भोजन करने का आदेश दिया, जिसमें पाँच तीखी सब्जियाँ और तीन वर्जित वस्तुएँ - जंगली हंस, कुत्ता और मछली - त्यागने को कहा। अब उसे एकाग्र मन से उस तीर्थयात्री की प्रतीक्षा करनी थी जो शास्त्रों को लेने आएगा।
बोधिसत्व और मोक्ष ने शक्ति से जागृत सूअर से विदा ली और निम्न ऊंचाई वाले बादलों के बीच से अपना मार्ग जारी रखा। यात्रा के दौरान उन्होंने आकाश में एक हरे रंग के अजगर को उन्हें पुकारते हुए सुना।
"तुम कौन से ड्रैगन हो?" बोधिसत्व ने उसके पास जाते हुए पूछा। "और तुम्हें यहाँ दंड क्यों भुगतना पड़ रहा है?"
"मैं पश्चिमी सागर के ड्रैगन राजा आओ रन का पुत्र हूँ। महल में चमकीले मोतियों को जलाने के कारण मेरे पिता ने मुझे विद्रोही बताकर स्वर्ग के दरबार में शिकायत कर दी। जेड सम्राट ने मुझे हवा में लटकाकर तीन सौ कोड़े मारे हैं, और किसी भी दिन मुझे मृत्युदंड दिया जा सकता है। हे बोधिसत्व, मैं आपसे मुझे बचाने की विनती करता हूँ।"
जब उसने उसकी विनती सुनी तो बोधिसत्व मोक्ष के साथ स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से अंदर चली गई। वहाँ उनकी मुलाकात स्वर्ग के गुरु किउ और झांग से हुई, जिन्होंने उनसे पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं?"
“मैं जेड सम्राट से मिलना चाहता/चाहती हूँ।” दोनों दिव्य गुरुओं ने जल्दी से आकर

उनके आने की सूचना दी, और जेड सम्राट उनका स्वागत करने के लिए अपने महल से बाहर आए। बोधिसत्व ने आगे बढ़कर उनका अभिवादन किया और कहा, “बुद्ध के आदेश पर शास्त्रों को लाने वाले व्यक्ति को खोजने के लिए पूर्व की ओर जाते समय, मुझे एक दुष्ट अजगर हवा में लटका हुआ मिला। मैं विशेष रूप से आपसे विनती करने आया/आई हूँ कि आप उसकी जान बख्श दें और उसे मुझे सौंप दें ताकि मैं उसे तीर्थयात्री की सेवा करना सिखा सकूँ।” यह सुनकर जेड सम्राट ने उन्हें क्षमा करने का आदेश जारी किया, और उन्होंने एक दिव्य सेनापति को उसे छुड़ाने और बोधिसत्व को सौंपने के लिए भेजा। बोधिसत्व ने उनकी उदारता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और चले गए। युवा अजगर ने अपनी जान बख्शे जाने के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए प्रणाम किया, और उसने आज्ञाकारी रूप से बोधिसत्व के आदेश का पालन किया। बोधिसत्व उसे एक गहरी खाई में ले गईं, जहाँ उसे तीर्थयात्री के आने तक प्रतीक्षा करनी थी। ऐसा होने पर उसे एक सफेद घोड़े में परिवर्तित होना था और पश्चिमी स्वर्ग जाकर पुण्य कमाना था। आदेश मिलते ही युवा ड्रैगन छिप गया।

बोधिसत्व ने भिक्षु मोक्ष को इस पर्वत के पार ले जाकर पूर्व दिशा की ओर अग्रसर किया। आगे बढ़ने से पहले ही उन्होंने अचानक दस हजार सुनहरी रोशनी की किरणें और हजार शुभ वाष्प के गुच्छे देखे।

"गुरुजी," मोक्ष ने कहा, "वह स्थान जहाँ से सारा प्रकाश आ रहा है, वह पंच तत्व पर्वत है, जहाँ तथागत का निषेध आदेश लगा हुआ है।"

"ऐसा इसलिए होना चाहिए क्योंकि स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि, जिन्होंने आड़ू भोज को नष्ट कर दिया और स्वर्ग महल में अराजकता फैला दी, वहीं कैद हैं।"

"हाँ, बिल्कुल," मोक्ष ने उत्तर दिया, और गुरु और शिष्य कागज देखने के लिए एक साथ पहाड़ पर चढ़ गए। उस पर सही शब्द 'ओम मणि पद्मे बम' लिखे थे, और जब बोधिसत्व ने उन्हें देखा तो उन्होंने गहरी साँस ली और एक कविता रची जो इस प्रकार थी:

"उस दुष्ट बंदर पर दया करो जिसने स्वामी की आज्ञा का पालन नहीं किया।"

पुराने समय में वह अपने अहंकार में आकर अपनी वीरता का प्रदर्शन करता था।

अपनी मूर्खता में उसने पीच बैंक्वेट को बर्बाद कर दिया।
और तुशिता महल में पाप करने का उसका दुस्साहस था।
एक लाख सैनिकों की सेना में कोई भी उसका मुकाबला नहीं कर सकता था; उसकी शक्ति नौ गुना आकाश से भी ऊपर महसूस की जाती थी।
लेकिन अब वह हमारे तथागत, बुद्ध द्वारा पकड़ा गया है:
क्या वह कभी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर पाएगा और और अधिक प्रसिद्धि हासिल कर पाएगा?
गुरु और शिष्य के बीच की बातचीत से ऋषि विचलित हो गए और पर्वत की जड़ों के नीचे से चिल्लाकर बोले, "ऊपर कौन है?" यह सुनकर बोधिसत्व उनसे मिलने के लिए तुरंत पर्वत से नीचे उतर आईं। पर्वत की तलहटी में स्थानीय देवता, पर्वत देवता और ऋषि की रक्षा कर रहे सभी सेनापति बोधिसत्व को प्रणाम करके उनके पास ले गए। उन्होंने देखा कि बोधिसत्व एक पत्थर के बक्से में दबे हुए थे, जिससे वे बोल तो सकते थे लेकिन अपना शरीर हिला नहीं सकते थे।
"बंदर," बोधिसत्व ने कहा, "क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?" महान ऋषि ने अपनी सुनहरी पुतलियों वाली तेजस्वी आँखें चौड़ी कर लीं, सिर हिलाया और ज़ोर से चिल्लाए, "हाँ, मैं तुम्हें पहचानता हूँ। ईश्वर की कृपा से, तुम सर्व-दयालु, दुखों से मुक्ति दिलाने वाले, दक्षिणी सागर के पोटारका द्वीप से आए बोधिसत्व गुआनयिन हो। तुम्हारा बहुत स्वागत है। यहाँ हर दिन एक साल जैसा लगता है, और मेरे जानने वालों में से कोई भी मुझसे मिलने नहीं आया। तुम कहाँ से आए हो?"
"मुझे बुद्ध से पूर्व की ओर जाकर उस व्यक्ति को खोजने का आदेश मिला है जो शास्त्रों को लेकर आएगा।"
उसने जवाब दिया, "और जब मैं इस रास्ते से गुजर रही थी तो मैंने सोचा कि आकर आपसे मिल लूं।"
"बुद्ध ने मुझे धोखा दिया और इस पर्वत के नीचे कुचल दिया—मैं पाँच सौ वर्षों से हिल-डुल भी नहीं पा रहा हूँ। हे बोधिसत्व, मैं आपसे अत्यंत आशा करता हूँ कि आप कृपा करके मेरी सहायता करेंगे।"
"तुम नीच आदमी," उसने जवाब दिया, "तुम्हारा आपराधिक रिकॉर्ड इतना भयावह है कि मुझे डर है कि अगर मैंने तुम्हें रिहा कर दिया तो तुम और भी ज्यादा मुसीबत खड़ी कर दोगे।"

उन्होंने कहा, "मैंने पश्चाताप कर लिया है और आशा करता हूँ कि आप मुझे सही मार्ग दिखाएँगे। मैं अपने आचरण में सुधार लाना चाहता हूँ।" वास्तव में:
जब किसी व्यक्ति के मन में कोई विचार जन्म लेता है
यह बात स्वर्ग और पृथ्वी में सर्वविदित है।
यदि अच्छाई और बुराई को पुरस्कृत और दंडित नहीं किया जाता है
दुनिया का बुरा समय आना तय है।
अध्याय 8
115
पश्चिम की यात्रा
बोधिसत्व ने उसकी बातें सुनकर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की।
“पवित्र शास्त्रों में लिखा है,” उसने उत्तर दिया, “यदि किसी के शब्द अच्छे हों, तो उनका उत्तर हज़ार मील दूर से भी सुनाई देगा; यदि वे बुरे हों, तो उनका विरोध भी उतनी ही दूरी से होगा।” यदि यही तुम्हारी मानसिकता है, तो प्रतीक्षा करो, मैं पूर्व की ओर जाकर उस व्यक्ति को ढूंढती हूँ जो शास्त्रों को लाएगा; मैं उससे कहूँगी कि वह तुम्हें बचाए।
आप उनके शिष्य बन सकते हैं, उनके धर्म का पालन और पालन कर सकते हैं, बुद्ध के धर्म में प्रवेश कर सकते हैं और भविष्य में अपने लिए अच्छे कर्मों का फल प्राप्त कर सकते हैं। इस बारे में आपका क्या कहना है?
"मैं जाऊंगा, मैं जाऊंगा," महान ऋषि बार-बार यही दोहराते रहे।
"जैसा कि तुमने सुधार किया है," उसने कहा, "मैं तुम्हें एक बौद्ध नाम दूंगी।"
“मैंने नाम रख लिया है। मेरा नाम है सन वुकॉन्ग।” बोधिसत्व अत्यंत प्रसन्न होकर बोले, “मैंने पहले ही दो लोगों को धर्मांतरित किया है, और उन दोनों के नामों में ‘वू’ (‘जागृत’) शब्द था। आपको और कोई निर्देश देने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए मैं चलती हूँ।” महान ऋषि, अब अपने बुद्ध स्वरूप से अवगत होकर, बुद्ध के धर्म में परिवर्तित हो गए; और बोधिसत्व ने श्रद्धापूर्वक एक संत भिक्षु की खोज जारी रखी।
उस स्थान को छोड़कर वह और हुआन सीधे पूर्व की ओर चले गए और कुछ ही समय में वे महान तांग की राजधानी चांगआन पहुँच गए। अपने धुंध और बादलों को हटाकर, गुरु और शिष्य ने खुजलीदार घुमंतू भिक्षुओं का रूप धारण किया और चांगआन शहर में प्रवेश किया। अंधेरा हो चुका था, और बड़े बाज़ार के किनारे उन्होंने एक स्थानीय

संरक्षक देवता का मंदिर देखा और अंदर चले गए। उन्हें देखकर स्थानीय देवता भ्रमित हो गए, और उनके राक्षस सैनिक भय से कांप उठे; वे जानते थे कि वह एक बोधिसत्व हैं, और उन्होंने प्रणाम करके उनका अभिवादन किया। तब स्थानीय देवता नगर देवता, वेदी के स्वामी और चांगआन के अन्य सभी मंदिरों के देवताओं को सूचित करने के लिए दौड़ पड़े। जब उन्हें पता चला कि बोधिसत्व आ गई हैं, तो वे सभी उन्हें सूचित करने गए और बोले, "बोधिसत्व, आपका स्वागत करने में देरी के लिए हमें क्षमा करें।" “इस बात की ज़रा भी चर्चा बाहर नहीं फैलनी चाहिए,” उसने कहा। “मैं बुद्ध के आदेश पर यहाँ आई हूँ ताकि शास्त्रों को लाने के लिए किसी को ढूँढ़ सकूँ। जब तक मुझे यह सच्चा भिक्षु नहीं मिल जाता, मैं कुछ दिनों के लिए आपके मंदिर में रहूँगी और फिर वापस चली जाऊँगी।” सभी देवता अपने-अपने मंदिरों में लौट गए और वे स्थानीय देवता को नगर देवता के मंदिर में ले गए। गुरु और शिष्य ने अपना असली रूप छिपा लिया। अगर आपको नहीं पता कि शास्त्रों को लाने के लिए वे किसे लाए थे, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 9

चेन गुआंगरुई को अपने पद पर जाते समय दुख का सामना करना पड़ा

नदी की धारा का भिक्षु अपने माता-पिता का बदला लेता है

कहानी आगे बताती है कि शांक्सी की महान भूमि में स्थित चांगआन शहर पीढ़ियों से सम्राटों और राजाओं की राजधानियों का केंद्र रहा है। झोउ, किन और हान राजवंशों के समय से ही, तीनों प्रांत रेशमी वस्त्रों की तरह समृद्ध थे, और आठ नदियाँ इसकी दीवारों के चारों ओर बहती थीं। यह वास्तव में एक प्रसिद्ध देश था। उस समय महान तांग राजवंश के सम्राट ताइज़ोंग सिंहासन पर विराजमान थे। उन्होंने अपने शासनकाल का नाम बदलकर झेनगुआन रख दिया था और तेरह वर्षों से शासन कर रहे थे। वर्ष जी सी था और विश्व में शांति थी; आठों दिशाओं से भेंट भेजी जा रही थी, और चारों समुद्रों के भीतर स्थित सभी स्वयं को प्रजा मानते थे।

एक दिन ताइज़ोंग सिंहासन पर विराजमान हुए और उन्होंने अपने सभी सैन्य एवं नागरिक अधिकारियों को एकत्रित किया। अभिवादन समाप्त होने के बाद, मंत्री वेई झेंग अधिकारियों की कतार से आगे आए और निवेदन किया, "चूंकि अब विश्व में शांति है और आठों दिशाएँ स्थिर हैं, इसलिए प्राचीन काल की प्रथा के अनुसार एक परीक्षा आयोजित की जानी चाहिए। इस प्रकार हम बुद्धिमान विद्वानों की भर्ती कर

सकते हैं और अध्याय 9 के लिए प्रतिभावान पुरुषों का चयन कर सकते हैं।"

हमारे सभ्यता निर्माण अभियान में मदद करें।"
सम्राट ने कहा, "हमारे बुद्धिमान मंत्री का सुझाव सही है," और पूरे साम्राज्य में योग्य पुरुषों को परीक्षा में भाग लेने के लिए आमंत्रित करने वाले नोटिस जारी किए गए। प्रत्येक प्रान्त, जिले और काउंटी में नागरिक या सैन्य सेवा में कार्यरत सभी कन्फ्यूशियस विद्वानों को, जिन्होंने साहित्य की समझ के लिए तीन चरणों की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था, अंतिम परीक्षा के लिए चांगआन जाना था।
जब यह सूचना हाइझोऊ जिले में पहुँची तो इसे चेन ई नामक एक व्यक्ति ने देखा, जिसका शिष्टाचार नाम गुआंगरुई था। वह घर लौटा और अपनी माँ, मैडम झांग से कहा, "अदालत ने एक पीली सूचना जारी की है जिसमें कहा गया है कि बुद्धिमान और प्रतिभाशाली व्यक्तियों के चयन के लिए चांसलरी में परीक्षा आयोजित की जाएगी।" आपका बच्चा जाना चाहता है और हिस्सा लेना चाहता है। अगर मुझे कोई आधिकारिक पद मिल जाए तो इससे मुझे प्रसिद्धि मिलेगी और हमारा परिवार गौरवान्वित होगा; मेरी पत्नी को उपाधि मिलेगी, मेरे बेटों को विशेष सुविधाएँ मिलेंगी; और इससे हमारे घर का नाम रोशन होगा। यही मेरी इच्छा है; और मैं आपको यह बताने आया हूँ, माँ, कि मैं जा रहा हूँ।
“तुम विद्वान हो, मेरे पुत्र,” उसकी माता ने उत्तर दिया, “और यह सत्य है कि ‘जो बचपन में अध्ययन करता है, उसे वयस्क होने पर यात्रा करनी चाहिए’। परन्तु परीक्षा के लिए जाते समय सावधान रहना, और यदि तुम्हें कोई पद मिले, तो यथाशीघ्र घर लौट आना।” तब चेन गुआंगरुई ने अपने सेवकों को अपना सामान इकट्ठा करने का आदेश दिया, माता से विदा ली और अपनी यात्रा पर निकल पड़े। जब वे चांगआन पहुँचे, तो परीक्षा स्थल खुला था और वे अंदर चले गए। इस परीक्षा में सफल होने पर, वे तीन प्रश्नों की परीक्षा के लिए महल गए। तांग सम्राट ने स्वयं उन्हें प्रथम स्थान से सम्मानित किया, और उन्हें तीन दिनों तक घोड़े पर सवार होकर सड़कों पर घुमाया गया।
ऐसा हुआ कि जब जुलूस मंत्री यिन काइशान के द्वार से गुजर रहा था, तभी मंत्री की अविवाहित बेटी वेनकियाओ, जिसका दूसरा नाम मान-तांग-कियाओ (पूरे हॉल में

सुंदरता) था, घर की सजावट कर रही थी और यह देखने के लिए कढ़ाई वाली गेंद फेंक रही थी कि उसका भावी पति कौन होगा।

जब चेन गुआंगरुई नीचे से गुज़रे तो उसने तुरंत देखा कि वह बेहद सुंदर हैं, और वह जान गई कि उन्होंने हाल ही में हुई परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वह उन पर पूरी तरह मोहित हो गईं, और जब उन्होंने अपनी कढ़ाई वाली गेंद गिराई तो वह सीधे उनकी काली टोपी पर जा गिरी। बांसुरी और पाइपों की ध्वनि के साथ लगभग एक दर्जन नौकरानियाँ और महिलाएँ जल्दी से नीचे गईं और चेन गुआंगरुई के घोड़े का सिर पकड़कर उन्हें मंत्री के महल में उनकी बेटी से विवाह करने के लिए आमंत्रित किया। मंत्री और उनकी पत्नी मुख्य हॉल में आए, और जब उन्होंने समारोह के संचालक को बुलाया तो उन्होंने अपनी बेटी का विवाह गुआंगरुई से कर दिया। दूल्हा और दुल्हन ने स्वर्ग, पृथ्वी और एक-दूसरे को प्रणाम करने के बाद दुल्हन के माता-पिता को भी प्रणाम किया।

मंत्री ने भोज का आयोजन किया और पूरी रात दावत और जश्न का माहौल रहा। दूल्हा और दुल्हन हाथ में हाथ डालकर दुल्हन के कमरे में दाखिल हुए।

अगली सुबह पांचवीं घड़ी के तीसरे पहर में सम्राट ताइज़ोंग स्वर्ण रथ कक्ष में अपने सिंहासन पर विराजमान हुए, और नागरिक और सैन्य अधिकारी दरबार में आए।

“परीक्षाओं में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले चेन गुआंगरुई को कौन सा पद दिया जाना चाहिए?” सम्राट ने पूछा। मंत्री वेई झेंग ने उत्तर दिया, “महाराज ने प्रांतों और कमांडरी की सूची देखी है और पाया है कि जियांगझोऊ जिले को एक प्रीफेक्ट की आवश्यकता है। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि उन्हें यह पद प्रदान करें।” इसलिए सम्राट ने उन्हें जियांगझोऊ का प्रीफेक्ट नियुक्त किया और उन्हें अपना सामान पैक करके रवाना होने का आदेश दिया क्योंकि उन्हें निर्धारित तिथि तक वहाँ पहुँचना था। चेन गुआंगरुई ने सम्राट की कृपा के लिए धन्यवाद दिया और चले गए। वे मंत्री के महल में वापस गए और अपनी पत्नी से परामर्श किया, फिर उन्होंने अपने सास-ससुर से विदा ली और उनके साथ जियांगझोऊ में अपने पद के लिए रवाना हो गए।

जब उन्होंने अपनी यात्रा की शुरुआत में चांगआन छोड़ा, तब वसंत ऋतु का अंतिम समय था। गर्म हवाएं विलो के पेड़ों को हरा रंग दे रही थीं और हल्की बारिश से फूल लाल रंग के हो रहे थे। चेन गुआंगरुई रास्ते में अपने घर रुक सके, ताकि वे और उनकी दुल्हन अपनी माता, श्रीमती झांग को श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें।

"बधाई हो, मेरे बेटे," उसने कहा। "और तुम अपने साथ दुल्हन भी लेकर आए हो।"
अध्याय 9
117
पश्चिम की यात्रा
"मेरी माँ के आशीर्वाद से, आपके बेटे ने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया," उसने उत्तर दिया, "और महाराज के आदेश पर उसे सड़कों पर जुलूस के रूप में निकाला गया। जब मैं मंत्री यिन के निवास के द्वार से गुजर रहा था, तभी संयोगवश एक कढ़ाईदार गेंद मुझे लग गई, और मंत्री जी ने कृपा करके मुझे अपनी बेटी का हाथ थमा दिया।"
अदालत ने मुझे जियांगझोऊ का प्रीफेक्ट नियुक्त किया है, इसलिए मैं आपको लेने आया हूँ, माँ, और आपको अपने साथ अपने पद पर ले जाने आया हूँ।" मैडम झांग बेहद खुश हुईं और उन्होंने अपना सामान पैक किया और उनके साथ यात्रा पर निकल पड़ीं।
एक रात, कई दिनों तक सड़क पर रहने के बाद, वे लियू द्वितीय के दस हजार फूलों के सराय में ठहरे, जहाँ अचानक मैडम झांग बीमार पड़ गईं।
“मेरी तबीयत ठीक नहीं है,” उसने अपने बेटे से कहा, “मुझे दो दिन इसी सराय में रुककर ठीक हो जाना चाहिए, उसके बाद ही आगे जाना चाहिए।” चेन गुआंगरुई ने उसकी बात मान ली। अगली सुबह उसने सराय के सामने एक आदमी को सुनहरे रंग की कार्प मछली बेचते देखा और उससे कुछ तांबे के सिक्के देकर वह मछली खरीद ली, ताकि उसे अपनी माँ के लिए हल्का तल सके। तभी उसने देखा कि मछली पलकें झपका रही है।
"कहते हैं कि अगर कोई मछली या सांप पलकें झपकाता है तो वह कोई साधारण प्राणी नहीं होता," उसने सोचा। उसने मछुआरे से पूछा कि उसने उसे कहाँ पकड़ा था।
"हांगजियांग नदी में, प्रांतीय राजधानी से पांच मील दूर," मछुआरे ने उत्तर दिया। चेन गुआंगरुई मछली को वापस हांगजियांग नदी में छोड़ने के लिए ले गया, फिर अपनी माँ को सारी घटना बताने के लिए सराय लौट गया।
“जीव-सृजन को मुक्त करना अच्छा है,” उसकी माँ ने कहा, “और मुझे बहुत खुशी है।” फिर चेन गुआंगरुई ने कहा, “हम तीन दिन से इस सराय में हैं, और मुझे बहुत कम समय दिया गया है, इसलिए मुझे कल सुबह निकलना होगा। क्या आप ठीक हैं,

माँ?”

“मेरी तबीयत अभी भी ठीक नहीं है,” उसकी माँ ने जवाब दिया, “और इस समय इतनी गर्मी है कि मुझे डर है कि कहीं मेरी तबीयत और खराब न हो जाए। बेहतर होगा कि आप मेरे लिए दो कमरे बुक कर लें और मुझे कुछ पैसे दे दें; मैं फिलहाल यहीं रहूँगी।”

आप दोनों अपने-अपने पद पर जा सकते हैं। शरद ऋतु में, जब मौसम ठंडा हो जाए, तो मुझे लेने वापस आ जाना।" अपनी पत्नी से इस बारे में बात करने के बाद, उन्होंने उसके लिए एक कमरा किराए पर लिया और उसे कुछ पैसे दिए, फिर उन्होंने उससे विदा ली और चल दिए।

यह एक कठिन यात्रा थी, हर दिन सुबह होते ही निकल पड़ते और सूर्यास्त तक नहीं रुकते थे। देखते ही देखते वे होंगजियांग नदी के मुहाने पर पहुँच गए। उन्होंने दो नाविकों, लियू होंग और ली बियाओ को अपनी नाव किनारे पर लाते देखा। यही वह विपत्ति थी, यही वे शत्रु थे जिनसे चेन गुआंगरुई का जन्म से पहले ही मिलना तय था। उसने अपने नौकर को सामान नाव पर रखने को कहा, जबकि वह और उसकी पत्नी शांति से नाव में चढ़ गए। लियू होंग ने मिस यिन को निहारा और पाया कि उनका चेहरा पूर्णिमा के चाँद जैसा, आँखें शरद ऋतु की लहरों जैसी, होंठ चेरी जैसे और कमर विलो वृक्ष जैसी कोमल थी; उनके आकर्षण से मछलियाँ डूब जातीं और जंगली हंस आकाश से गिर पड़ते, उनकी सुंदरता चाँद और फूलों को भी शरमा देती। उसके मन में बुरे विचार उमड़ आए और उसने ली बियाओ के साथ मिलकर नाव को एक धुंधले और सुनसान स्थान पर ले जाने की योजना बनाई और आधी रात तक इंतज़ार करने का निश्चय किया, जब वे पहले नौकर को और फिर चेन गुआंगरुई को मार डालेंगे। उन्होंने दोनों शवों को नदी में धकेल दिया और चले गए।

जब युवती ने अपने पति को मृत देखा तो उसने खुद को पानी में फेंकने की कोशिश की, लेकिन लियू होंग ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और कहा, "अगर तुम मेरे साथ आओगी तो तुम ठीक रहोगी; लेकिन अगर नहीं आओगी तो मैं तुम्हें दो टुकड़ों में काट दूंगा।" कोई और रास्ता न सूझने के कारण, युवती को कम से कम कुछ समय के लिए लियू होंग के साथ रहने के लिए सहमत होना पड़ा।

हत्यारा नाव को दक्षिणी तट पर ले गया और उसे ली बियाओ को सौंप दिया। फिर उसने चेन गुआंगरुई के कपड़े पहने और मृतक के पहचान पत्रों के साथ उस युवती के

साथ जियांगझोउ में अपना पदभार संभालने चला गया।
मृत सेवक का शव धारा के साथ बह गया, लेकिन चेन गुआंगरुई का शरीर सीधे तल में डूब गया और हिला तक नहीं। हांगजियांग मुहाने पर तैनात गश्ती यक्ष राक्षस ने उसे देखा और उसकी ओर दौड़ा। अध्याय 9
118
पश्चिम की यात्रा
सीधे ड्रैगन महल में रिपोर्ट करने के लिए वापस गया। वह ठीक उसी समय पहुँचा जब ड्रैगन राजा सिंहासन कक्ष में प्रवेश कर रहा था।
“किसी ने होंगजियांग नदी के मुहाने पर एक विद्वान सज्जन की हत्या कर दी है और शव को नदी में फेंक दिया है,” उसने सूचना दी। ड्रैगन राजा ने शव को मंगवाया और अपने सामने रखवाया। ध्यानपूर्वक जांच करने के बाद उन्होंने कहा, “यह वही उपकारी हैं जिन्होंने मेरी जान बचाई: इनकी हत्या क्यों की गई? जैसा कि कहावत है,
"हमेशा उपकार का बदला चुकाओ। मुझे आज उसकी जान बचानी होगी ताकि अतीत में उसने मुझ पर जो उपकार किया था, उसका बदला चुका सकूँ।" उसने एक ज्ञापन लिखा और उसे एक यक्ष के साथ हांगझोऊ के नगर देवता और स्थानीय देवता के पास भेजा, जिसमें विद्वान की आत्मा माँगी गई ताकि उसकी जान बचाई जा सके। नगर देवता और स्थानीय देवता ने एक कनिष्ठ राक्षस को चेन गुआंगरुई की आत्मा यक्ष को देने का आदेश दिया, जो उसे क्रिस्टल महल में वापस ले गया और ड्रैगन राजा को सूचना दी।
“हे विद्वान, तुम्हारा नाम क्या है?” ड्रैगन राजा ने पूछा। “तुम कहाँ से आए हो? यहाँ क्यों आए हो, और तुम्हें क्यों मारा गया?”
चेन गुआंगरुई ने उन्हें प्रणाम किया और उत्तर दिया, "मेरा नाम चेन ई है और मेरा शिष्टाचार नाम गुआंगरुई है। मैं हाइझोऊ प्रांत के होंगनोंग काउंटी से आया हूँ। हाल ही में हुई परीक्षाओं में मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया था और अपनी पत्नी के साथ जियांगझोऊ के प्रान्त प्रमुख के रूप में अपना पदभार ग्रहण करने जा रहा था, तभी हमने इस नदी के किनारे एक नौका पकड़ी। नाविक लियू होंग मेरी पत्नी पर बुरी नज़र रखता था, इसलिए उसने मुझे मार डाला और नदी में फेंक दिया। महाराज, मैं आपसे मुझे बचाने की विनती करता हूँ।"
“तो स्थिति कुछ इस प्रकार है,” ड्रैगन राजा ने कहा। “मैं वही सुनहरा कार्प हूँ जिसे

आपने मुक्त किया था। आपने तब मेरी रक्षा की थी, इसलिए अब जब आप मुसीबत में हैं, तो मुझे आपकी मदद करनी चाहिए।" उन्होंने गुआंगरुई के शरीर को एक दीवार के पास रखवाया और उसके मुँह में एक "चेहरा संरक्षित करने वाला मोती" रख दिया ताकि वह सड़ने से बच जाए और भविष्य में उसकी आत्मा उसमें वापस आ सके और वह अपना बदला ले सके। "चूँकि अब आप एक सच्ची आत्मा हैं, इसलिए आप कुछ समय के लिए मेरे महल में सेनापति के रूप में रहेंगे," ड्रैगन राजा ने आगे कहा। चेन गुआंगरुई ने धन्यवाद में प्रणाम किया, और ड्रैगन राजा ने उनके स्वागत में एक भोज का आयोजन किया।

मिस यिन को दुष्ट लियू होंग से इतनी घृणा थी कि वह चाहती थी कि उसका मांस खा जाए और उसकी खाल उतारकर अपने बिस्तर पर बिछा ले, लेकिन गर्भवती होने और बच्चे के जन्म न होने के कारण उसे मजबूरी में उसके साथ जाना पड़ा। पलक झपकते ही वे जियांगझोऊ पहुँच गए। सभी क्लर्क और कांस्टेबल उसका स्वागत करने के लिए उमड़ पड़े, और प्रांत के अधीनस्थ अधिकारियों ने उसके कार्यालय के मुख्य हॉल में उसके लिए भोज का आयोजन किया।

"अब जबकि मैं, आपका छात्र, यहाँ आ गया हूँ, मैं पूरी तरह से आप सभी सज्जनों के समर्थन पर निर्भर रहूँगा।"

लियू होंग ने कहा।

"महामहिम, आप एक महान प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं," अधिकारियों ने उत्तर दिया, "आप स्वाभाविक रूप से जनता को अपने बच्चों के समान मानते हैं, जिससे मुकदमेबाजी कम होगी और सजा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हम सभी आप पर भरोसा कर सकते हैं—आपकी अत्यधिक विनम्रता अनावश्यक है।" भोज समाप्त होने पर वे सभी चले गए।

समय तेजी से बीत गया। एक दिन, जब लियू होंग आधिकारिक काम से दूर थीं, तो युवती सरकारी आवास में बने एक ग्रीष्मकालीन घर में अपनी सास और पति के बारे में सोचकर उदास होकर आहें भर रही थीं।

अचानक उसे कमजोरी महसूस हुई और उसके पेट में दर्द होने लगा। वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी और देखते ही देखते उसने एक बेटे को जन्म दिया। उसके कानों में एक आवाज सुनाई दी, "मान-तांग-कियाओ, तुम्हें वही करना होगा जो मैं तुमसे कहता हूँ। मैं दक्षिणी ध्रुव तारे का स्वामी हूँ और बोधिसत्व गुआनयिन के आदेश पर तुम्हें यह

पुत्र देने आया हूँ। एक दिन वह असाधारण रूप से प्रसिद्ध होगा। जब दुष्ट लियू वापस आएगा तो वह निश्चित रूप से इस लड़के को मारना चाहेगा, इसलिए तुम्हें उसकी बहुत देखभाल करनी होगी। तुम्हारे पति को ड्रैगन राजा ने बचा लिया है; एक दिन तुम उससे और अपने बेटे से फिर से मिलोगी और तुम्हारे सारे दुख समाप्त हो जाएँगे।"
मेरी बात याद रखना। जाग जाओ, जाग जाओ!
जब युवती को होश आया तो उसे उसके कहे हुए सारे शब्द याद आ गए, लेकिन जब उसने बच्चे को कपड़ों में कसकर लपेटा तो उसे समझ नहीं आया कि क्या करे। जब लियू हांग वापस आया तो वह बच्चे को डुबो देना चाहता था। (अध्याय 9)

जैसे ही उसने उसे देखा, लेकिन युवती ने कहा, "अंधेरा हो चुका है: हम उसे कल नदी में फेंक सकते हैं।"
सौभाग्यवश, अगले दिन लियू हांग को अत्यावश्यक कार्य से काफी दूर जाना पड़ा।
“अगर मैं उस दुष्ट के लौटने का इंतज़ार करूँगी तो मेरा बेटा मारा जाएगा,” उस युवती ने सोचा, “इसलिए सबसे अच्छा यही होगा कि उसे जल्द से जल्द नदी में छोड़ दूँ और भाग्य को तय करने दूँ कि वह जिएगा या मरेगा। अगर ईश्वर की कृपा हुई तो कोई न कोई उस लड़के को बचा लेगा और उसका पालन-पोषण करेगा, और हम एक दिन फिर मिलेंगे।” फिर, इस डर से कि कहीं वह उसे पहचान न पाए, उसने अपनी उंगली काटकर खून से एक पत्र लिखा जिसमें उसने उसके माता-पिता और पृष्ठभूमि का पूरा विवरण दिया। फिर उसने बच्चे के बाएं पैर की छोटी उंगली को पहचान चिह्न के रूप में काट लिया, उसे अपने एक कपड़े में लपेटा और जब कोई नहीं देख रहा था तब उसे सरकारी आवास से बाहर ले गई। सौभाग्य से आवास नदी के किनारे से ज़्यादा दूर नहीं था। जब वह वहाँ पहुँची तो कुछ देर रोई और उसे नदी में फेंकने ही वाली थी कि उसने किनारे पर एक तख्ता तैरता हुआ देखा। युवती ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सिर झुकाया और बच्चे को अपनी कमरबंद से तख्ते से बाँध दिया, और खून से लिखा पत्र उसकी छाती के पास रख दिया। फिर उसने उसे नदी में धकेल दिया ताकि वह जहाँ चाहे वहाँ जा सके और रोते हुए यामेन (एक प्रकार का तालाब) में लौट आई।
लड़का तख्ते पर बहता हुआ जिनशान मंदिर के नीचे आकर रुक गया। इस मंदिर के

मठाधीश फामिंग नाम के एक भिक्षु थे, जिन्होंने सत्य का अभ्यास करके और मार्ग का ज्ञान प्राप्त करके पुनर्जन्म से बचने का रहस्य खोज लिया था। जब वे ध्यान में बैठे थे, तभी उन्हें एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी और वे बेचैनी से नदी किनारे देखने गए। उन्होंने देखा कि एक बच्चा किनारे पर एक तख्ते पर लेटा हुआ है और उन्होंने उसे जितनी जल्दी हो सके पानी से बाहर निकाला। जब उन्होंने बच्चे की छाती पर खून से लिखा पत्र पढ़ा, तो उन्हें समझ आ गया कि वह वहाँ क्यों है। उन्होंने बच्चे का नाम जियांगलिउ रखा, जिसका अर्थ है "नदी की धारा", और उसके लिए एक पालक माता का प्रबंध किया। उन्होंने खून से लिखे पत्र को एक बहुत ही सुरक्षित स्थान पर रख दिया। समय तीर की तरह बीतता गया और दिन-महीने शटल की तरह तेज़ी से गुज़रते गए। जब जियांगलिउ सत्रह वर्ष के हुए, तो मठाधीश ने उन्हें सिर मुंडवाने और धार्मिक जीवन में प्रवेश करने के लिए कहा। उन्हें बौद्ध नाम शुआनज़ैंग देकर, उन्होंने उनके सिर पर हाथ रखकर उन्हें मठवासी अनुशासन का पालन करने का निर्देश दिया। शुआनज़ैंग ने मार्ग का अनुसरण करने का दृढ़ निश्चय किया।

बसंत ऋतु के अंत में एक दिन, पूरा समुदाय कुछ चीड़ के पेड़ों की छाया में शास्त्रों की व्याख्या करने, ध्यान करने और आंतरिक रहस्यों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हुआ। एक शराबी, मांसाहारी भिक्षु, जो ज़ुआनज़ैंग से एक वाद-विवाद में हार गया था, क्रोधित हो गया और उसे अपशब्द कहने लगा: "अरे जानवर, तुझे अपना उपनाम या अपने माता-पिता का नाम भी नहीं पता। यहाँ अपनी कोई चालाकी मत दिखाओ।" इस अपमान से आहत होकर, ज़ुआनज़ैंग मंदिर में गया और अपने गुरु के सामने घुटने टेककर बैठ गया, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

“स्वर्ग और पृथ्वी के बीच जन्म लेने वाले सभी मनुष्य, जो सकारात्मक, नकारात्मक और पंच तत्वों से संपन्न हैं—सभी का एक पिता होता है और एक माता द्वारा उनका पालन-पोषण होता है,” उन्होंने कहा। “ऐसा कोई मनुष्य कैसे हो सकता है जिसके माता-पिता न हों?” उन्होंने बार-बार अपने माता-पिता के नाम जानने की विनती की।

“अगर तुम सचमुच अपने माता-पिता के बारे में जानना चाहते हो, तो मेरे साथ मेरी कोठरी में आओ,” मठाधीश ने कहा, और वे दोनों साथ-साथ वहाँ चले गए। मठाधीश ने एक विशाल बीम के ऊपर से एक छोटा सा बक्सा नीचे उतारा, उसे खोला, उसमें से खून से लिखा एक पत्र और एक कमीज़ निकाली, और उन्हें ज़ुआनज़ैंग को दे दिया, जिसने पत्र को खोलकर पढ़ा। अंततः उसे अपने माता-पिता और उनके साथ हुए

अन्याय के बारे में पता चला।
जब उसने इसे पढ़ा तो वह फूट-फूटकर रोने लगा और चिल्लाते हुए बोला, "अगर मैं अपने माता-पिता का बदला नहीं लूँगा तो मैं कैसे मर्द बनूँगा? सत्रह साल से मैंने अपने माता-पिता को नहीं जाना, लेकिन अब मुझे पता है कि मेरी एक माँ है। हे गुरु, अगर आपने मुझे बचाया और पाला-पोसा न होता तो मैं आज जीवित न होता। कृपया मुझे मेरी माँ से मिलने दीजिए, फिर मैं अपने सिर पर धूपदान रखूँगा और आपके द्वारा मुझ पर दिखाई गई इस महान कृपा का ऋण चुकाने के लिए मंदिर का पुनर्निर्माण करूँगा।"
"अगर तुम अपनी मां को ढूंढने जाना चाहते हो तो बेहतर होगा कि खून से लिखा हुआ पत्र और वो कमीज अपने साथ ले जाओ। अगर तुम जियांगझोऊ के प्रीफेक्ट के निजी आवास पर जाओगे तो तुम्हें अपनी मां मिल जाएगी।"
अध्याय 9
120
पश्चिम की यात्रा
शुआनज़ैंग ने अपने गुरु के कहे अनुसार ही किया और भिक्षु बनकर जियांगझोऊ चले गए। संयोगवश, लियू होंग व्यापारिक यात्रा पर बाहर थीं, और ईश्वर की इच्छा से माता-पिता का मिलन हुआ, इसलिए शुआनज़ैंग सीधे उनके निवास के द्वार पर भिक्षा मांगने चले गए। श्रीमती यिन ने पिछली रात स्वप्न में देखा था कि चंद्रमा ग्रहण के बाद फिर से पूर्ण रूप में आ गया।
"मेरी सास से मुझे कभी कोई खबर नहीं मिली," उसने सोचा, "और मेरे पति की हत्या उस दुष्ट व्यक्ति ने की थी।"
मेरे बेटे को नदी में छोड़ दिया गया था, और अगर उसे बचा लिया जाता और पाला-पोसा जाता, तो वह अब सत्रह साल का होता। कौन जाने, शायद आज स्वर्ग हमें मिलवा दे। जब वह अपने विचारों में डूबी हुई थी, तभी उसने अपने घर के सामने किसी को शास्त्र पढ़ते और भिक्षा मांगते सुना, तो उसने सोचा कि वह बाहर जाकर उससे पूछे कि वह कहाँ से आया है, और उसने उत्तर दिया, "मैं जिनशान मंदिर के मठाधीश फामिंग का शिष्य हूँ।"
"क्या आप जिनशान मंदिर के मठाधीश फामिंग के शिष्य हैं?" उसने कहा। उसने उसे अंदर बुलाया और शाकाहारी भोजन परोसा, साथ ही उसके चलने-फिरने और बात करने के तरीके को ध्यान से देखती रही।

वह देखने में उसके पति जैसा ही लग रहा था, इसलिए उसने नौकरों को भेज दिया और पूछा, "बताइए, युवा शिक्षक, क्या आप बचपन से ही भिक्षु रहे हैं या बाद में बने? आपका नाम क्या है? क्या आपके माता-पिता हैं?"

“मैं न तो बचपन में भिक्षु बना और न ही बुढ़ापे में,” उन्होंने उत्तर दिया। “मुझे आपको बताना होगा कि एक भयानक अन्याय के कारण मेरे मन में समुद्र जितनी गहरी घृणा है। मेरे पिता की हत्या कर दी गई और मेरी माँ को एक दुष्ट व्यक्ति अगवा कर ले गया। मेरे गुरु, मठाधीश फामिंग ने मुझे जियांगझोऊ के प्रीफेक्ट के निवास पर आकर मेरी माँ को खोजने के लिए कहा था।”

"तुम्हारी माँ का नाम क्या है?" उसने पूछा।

"मेरी माँ का नाम यिन वेनकियाओ है," उसने उत्तर दिया। "मेरे पिता का नाम चेन गुआंगरुई था। मेरा दूध का नाम जियांगलियू था, और मेरा बौद्ध नाम ज़ुआनज़ैंग है।"

"मैं यिन वेनकियाओ हूँ," उसने कहा, फिर बोली, "क्या आपके पास कोई सबूत है?"

जब ज़ुआनज़ैंग को पता चला कि वह उसकी माँ है, तो वह घुटनों के बल गिर पड़ा और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

“माँ,” उसने कहा, “अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो ये सबूत देखिए—खून से लिखा पत्र और वो बदलाव।” जैसे ही उसने देखा कि ये असली सबूत हैं, वह और उसका बेटा एक-दूसरे को गले लगाकर रोने लगे।

फिर उसने कहा, "तुरंत चले जाओ।"

"मां, मैं आपको उस दिन छोड़कर नहीं जा सकता, जिस दिन सत्रह साल बाद, जब मुझे अपने माता-पिता के बारे में पता भी नहीं था, मैंने आपको देखा है," उसने कहा।

“मेरे बच्चे, तुम्हें जितनी जल्दी हो सके यहाँ से चले जाना चाहिए,” उसने उत्तर दिया। “दुष्ट लियू अगर वापस आया तो वह तुम्हें निश्चित रूप से मार डालेगा। कल मैं बीमार होने का बहाना बनाऊंगी और कहूंगी कि मैंने एक बार सौ जोड़ी भिक्षुओं के वस्त्र दान करने की प्रतिज्ञा की थी।”

जूते। मैं मन्नत पूरी करने के लिए आपके मंदिर आऊँगी और तब आपसे बात करूँगी।" ज़ुआनज़ैंग ने आज्ञाकारी भाव से उसे प्रणाम किया और चली गई।

अपने बेटे को देख लेने के बाद मिस यिन चिंतित और खुश दोनों थीं। एक दिन उन्होंने कहा कि वह बीमार हैं और बिस्तर पर लेटकर खाना-पीना भी छोड़ दिया। जब लियू होंग वापस आया और पूछा कि क्या बात है, तो उन्होंने कहा,

"जब मैं छोटा था, तब मैंने एक बार प्रतिज्ञा की थी कि मैं भिक्षुओं के जूतों के सौ जोड़े दान करूँगा। पाँच दिन पहले मैंने सपना देखा कि एक भिक्षु हाथ में तेज तलवार लिए जूते माँगने आया, और तब से मेरी तबीयत ठीक नहीं है।"

अध्याय 9

121

पश्चिम की यात्रा

"यह तो आसानी से हो जाएगा," लियू होंग ने कहा। "आपने पहले इसका ज़िक्र क्यों नहीं किया?" वह आधिकारिक हॉल में अपनी जगह पर बैठा और यामेन के सहायकों वांग और ली को निर्देश दिया कि जियांगझोऊ शहर में रहने वाले प्रत्येक परिवार को भिक्षुओं के जूतों की एक जोड़ी बनानी है और उसे पांच दिनों के भीतर जमा करना है। जब आम लोगों ने सारे जूते सौंप दिए, तो मिस यिन ने लियू होंग से कहा, "अब जबकि जूते बन गए हैं, यहाँ कौन से मंदिर हैं जहाँ मैं उन्हें ले जाकर अपनी मन्नत पूरी कर सकती हूँ?"

"जियांगझोउ में हमारे पास जिनशान मंदिर और जियाओशान मंदिर हैं; आप अपनी पसंद के अनुसार किसी भी मंदिर में जा सकते हैं," लियू होंग ने उत्तर दिया।

“मैंने बहुत समय से सुना है कि जिनशान मंदिर बहुत अच्छा है, इसलिए मैं वहीं जाऊंगी,” उसने कहा। लियू होंग ने यामेन के सहायकों वांग और ली को नाव का इंतज़ाम करने को कहा। मिस यिन एक भरोसेमंद नौकर के साथ नाव पर सवार हुईं, नाविक ने नाव चलाई और वे जिनशान मंदिर की ओर चल पड़े।

मंदिर लौटकर शुआनज़ैंग ने मठाधीश फ़ामिंग को सारी घटना विस्तार से बताई। मठाधीश बहुत प्रसन्न हुए। अगले दिन एक दासी मंदिर में यह बताने आई कि उसकी मालकिन मन्नत पूरी करने आई है, और सभी भिक्षु उसका स्वागत करने के लिए बाहर आ गए। जब श्रीमती यिन मंदिर में आईं, तो उन्होंने बोधिसत्व से प्रार्थना की, भिक्षुओं को भरपेट भोजन कराया और प्रत्येक को दान दिया, और अपनी दासी को जूते और मोज़े दान पेटी में रखने को कहा। फिर वह बुद्ध-कक्ष में गईं और अत्यंत श्रद्धा से पूजा की। जब उन्होंने जाने को कहा, तो मठाधीश फ़ामिंग भिक्षुओं को दान बांटने चले गए। शुआनज़ैंग ने देखा कि सभी भिक्षु जा चुके हैं और बुद्ध-कक्ष में कोई और नहीं है, इसलिए वह अपनी माँ के पास गए और घुटने टेक दिए। उनकी माँ ने उन्हें जूते और मोज़े उतारने को कहा और देखा कि उनके बाएँ पैर की एक उंगली सचमुच गायब

थी। दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया और फिर से रोने लगे, फिर उन्होंने लड़के के पालन-पोषण में दिखाई गई दयालुता के लिए मठाधीश को धन्यवाद देने के लिए उनके सामने सिर झुकाया।

मठाधीश ने कहा, "मुझे चिंता है कि खलनायक को आपके पुनर्मिलन के बारे में पता चल सकता है, इसलिए मुसीबत से बचने के लिए जितनी जल्दी हो सके वापस चले जाओ।"

“मेरे बेटे,” मिस यिन ने कहा, “मैं तुम्हें चंदन का कंगन दूंगी। तुम्हें हांगझोऊ के उत्तर-पश्चिम में स्थित दस हजार फूलों के सराय नामक स्थान पर जाना होगा, जो यहाँ से लगभग पाँच सौ मील दूर है। यहीं हमने तुम्हारी दादी, मैडम झांग को छोड़ा था। मैं तुम्हें एक पत्र भी लिखूंगी जिसे तुम्हें तांग सम्राट की राजधानी में महल के बाईं ओर स्थित मंत्री यिन काइशान के घर ले जाना है। वह मेरे पिता हैं। उन्हें यह पत्र देना और उनसे तांग सम्राट को एक निवेदन करने के लिए कहना कि वे उस डाकू को पकड़ने या मारने के लिए घुड़सवार और पैदल सेना भेजें। तब तुम्हारे पिता का बदला लिया जाएगा और तुम्हारी माँ को बचाया जाएगा। मुझे अब और नहीं रुकना चाहिए क्योंकि मुझे डर है कि अगर मैं देर से लौटी तो वह दुष्ट व्यक्ति शक कर सकता है।” वह मंदिर से निकलकर अपनी नाव में वापस चली गईं।

शुआनज़ैंग रोते हुए मंदिर लौटा और मठाधीश से कहा कि वह तुरंत हांगझोऊ के लिए रवाना हो रहा है। जब वह दस हज़ार फूलों के सराय में पहुँचा तो उसने सराय मालिक लियू द्वितीय से कहा, "तुम्हारे सराय में ठहरी जियांगझोऊ के प्रीफेक्ट चेन की माँ कैसी हैं?"

“वह यहाँ रहती थी,” सराय मालिक ने उत्तर दिया। “वह अंधी हो गई थी, और तीन-चार साल तक किराया न देने के कारण अब वह दक्षिणी द्वार के पास एक खंडहर हो चुके टाइल भट्ठे में रहती है और अपना पेट भरने के लिए हर दिन सड़कों पर भीख मांगती है। वह अधिकारी बहुत समय पहले चला गया और आज तक उससे कोई संपर्क नहीं हुआ है, हालांकि मुझे नहीं पता क्यों।” यह जानकर उसने दक्षिणी द्वार पर स्थित खंडहर हो चुके टाइल भट्ठे का रास्ता पूछा और अपनी दादी को पाया।

"तुम्हारी आवाज मेरे बेटे चेन गुआंगरुई जैसी लगती है," उसकी दादी ने कहा।

"मैं चेन गुआंगरुई नहीं हूँ, मैं उनका बेटा हूँ। मेरी माँ का नाम मिस यिन वेनकियाओ है।"

अध्याय 9

122

पश्चिम की यात्रा

“तुम्हारे माता-पिता क्यों नहीं आए?” उसने पूछा; और उसने उत्तर दिया, “मेरे पिता की हत्या एक डाकू ने कर दी थी और मेरी माँ को उसकी पत्नी बनने के लिए मजबूर किया गया था। मेरे पास यहाँ मेरी माँ का एक पत्र और चंदन का कंगन है।” उसकी दादी ने पत्र और कंगन लिया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। “मेरा बेटा यहाँ यश और यश के लिए आया था। मैंने सोचा था कि वह शिष्टाचार और कृतज्ञता की सारी भावनाएँ भूल गया है; मुझे कभी यह ख्याल भी नहीं आया कि उसकी हत्या हो सकती है। यह कितना बड़ा आशीर्वाद है कि ईश्वर ने अपनी दया से मेरे बेटे के वंश को समाप्त नहीं किया, ताकि अब मेरा पोता मुझसे मिलने आए।”

"दादी, आप अंधी कैसे हो गईं?" ज़ुआनज़ैंग ने पूछा।

“मैं हमेशा तुम्हारे पिता के बारे में सोचती रहती थी और हर दिन उनके लौटने की कामना करती थी,” उसने कहा, “लेकिन क्योंकि वे कभी नहीं लौटे, मैं इतना रोई कि मेरी दोनों आँखों की रोशनी चली गई।” ज़ुआनज़ैंग घुटनों के बल गिर पड़ा और ईश्वर से प्रार्थना करने लगा।

“यद्यपि मैं सत्रह वर्ष का हूँ,” उसने कहा, “मैं अपने माता-पिता का बदला नहीं ले पाया। आज मैं अपनी माँ के आदेश पर आया हूँ और अपनी दादी को ढूँढ़ लाया हूँ; यदि ईश्वर मेरी सच्ची प्रार्थना से प्रभावित हो, तो मेरी दादी की आँखें फिर से देखने लगें।” प्रार्थना करने के बाद उसने अपनी जीभ की नोक से उनकी आँखों को चाटा। चाटने से उनकी आँखें तुरंत खुल गईं और वे फिर से देख सकीं।

उसकी दादी ने नन्हे भिक्षु को प्रसन्नता और उदासी के मिले-जुले भाव से देखा और कहा, "तुम सचमुच मेरे पोते हो—तुम मेरे पुत्र गुआंगरुई की हूबहू छवि हो।" ज़ुआनज़ैंग ने उसे भट्टी से बाहर निकाला और उसे द्वितीय लियू के सराय में फिर से बसाया, जहाँ उसने उसके लिए एक कमरा किराए पर लिया, उसे रहने के लिए कुछ पैसे दिए और उससे कहा कि वह एक महीने के भीतर वापस आ जाएगा।

अपनी दादी से विदा लेकर वह सीधे राजधानी की ओर चल पड़ा, जहाँ उसे शाही शहर के पूर्वी मार्ग पर मंत्री यिन का घर मिला। उसने द्वारपाल से कहा, "मैं मंत्री जी का रिश्तेदार हूँ और उनसे मिलना चाहता हूँ।"

जब द्वारपाल ने यह बात मंत्री को बताई, तो उन्होंने कहा, "मेरा किसी भिक्षु से कोई संबंध नहीं है।" लेकिन उनकी पत्नी ने कहा,

"मुझे कल रात सपना आया कि हमारी बेटी मान-तांग-कियाओ घर आई है; शायद उसके पास हमारे दामाद का कोई पत्र हो।"

मंत्री जी उस युवा भिक्षु को मुख्य सभागार में ले आए, और जब भिक्षु ने मंत्री जी और उनकी पत्नी को देखा तो वह रोने लगा और उनके सामने ज़मीन पर सिर झुका लिया, फिर उसने अपनी छाती से एक लिफाफा निकाला और मंत्री जी को सौंप दिया। मंत्री जी ने पत्र खोला और उसे पूरा पढ़ा, फिर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे।

“क्या बात है, महाराज?” उनकी पत्नी ने पूछा, और मंत्री ने उत्तर दिया, “यह भिक्षु हमारा पोता है। हमारे दामाद चेन गुआंगरुई की एक डाकू ने हत्या कर दी, जिसने मान-तांग-कियाओ को जबरन अपनी पत्नी बना लिया।” यह खबर सुनकर उनकी पत्नी भी फूट-फूटकर रोने लगी।

“पत्नी, परेशान मत होइए,” मंत्री ने कहा। “मैं कल सुबह दरबार में जाकर अपने सम्राट से सेना का नेतृत्व करने की अनुमति मांगूंगा। मैं अपने दामाद का बदला जरूर लूंगा।”

अगले दिन मंत्री दरबार में गए और तांग सम्राट को एक ज्ञापन में लिखा: "आपके प्रजाजन, शीर्ष स्नातक चेन गुआंगरुई की हत्या नाविक लियू होंग ने उस समय कर दी जब वह अपने परिवार के साथ जियांगझोउ में अपना पदभार ग्रहण करने जा रहे थे, और मेरी बेटी को जबरन उसकी पत्नी बना दिया गया। इस लियू होंग ने कई वर्षों तक मेरे दामाद होने का ढोंग करके सत्ता हथिया ली है। यह राजद्रोह है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि इस विद्रोही डाकू को नष्ट करने के लिए तुरंत घुड़सवार और पैदल सेना भेजें।"

यह पढ़कर तांग सम्राट इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने मंत्री यिन को शाही अंगरक्षकों के साठ हजार सैनिकों के साथ रवाना होने का आदेश दिया। मंत्री आदेश लेकर दरबार से निकले और जियांगझोऊ के लिए रवाना होने से पहले सैनिकों को इकट्ठा करने के लिए परेड ग्राउंड गए। प्रतिदिन भोर में निकलकर और रात तक बिना रुके, वे टूटते तारे या उड़ते पक्षी की तरह तेज़ गति से यात्रा करते हुए, देखते ही देखते अध्याय 9 तक पहुँच गए।

जियांगझोऊ में, जहाँ मंत्री यिन की सेना उत्तरी तट पर डेरा डाले हुए थी। उस रात उन्होंने एक संदेशवाहक को सोने से खुदी हुई पट्टिका के साथ जियांगझोऊ के उप-प्रीफेक्ट और जिला न्यायाधीश को बुलाने के लिए भेजा। मंत्री टिन ने उन्हें स्थिति समझाई और उनसे अपनी सेना को मदद के लिए बुलाने को कहा। वे सब एक साथ नदी पार करके भोर से पहले लियू होंग के यामेन (घर) को घेर लिया। लियू होंग, जो अभी भी सपने में था, ने तोपों की आवाज और ढोल-घंटियों की आवाज सुनी; जब सैनिक उसके घर पर टूट पड़े तो वह असहाय था और जल्द ही पकड़ा गया। मंत्री ने आदेश दिया कि लियू होंग और उसके साथियों को बांधकर फांसी के मैदान में ले जाया जाए, जबकि सेना को शहर की दीवारों के बाहर डेरा डालना था।

मंत्री यामेन के मुख्य हॉल में गए और अपनी बेटी को बाहर आकर उनसे मिलने के लिए कहा। उनकी बेटी, जो बाहर जाने के लिए तरस रही थी, अपने पिता का सामना करने में बहुत शर्म महसूस कर रही थी और इसलिए उसने खुद को फांसी लगाने की ठान ली थी।

जब शुआनज़ैंग को इस बात का पता चला तो वह उसे बचाने के लिए जितनी जल्दी हो सके दौड़ा, घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "तुम्हारा बेटा और मेरे दादाजी मेरे पिता का बदला लेने के लिए सेना लेकर यहाँ आए हैं। वह डाकू गिरफ्तार हो चुका है, इसलिए तुम्हें खुद को मारने की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर तुम मर गई माँ, तो मैं भी जीवित नहीं रह पाऊँगा।" मंत्री भी उसे समझाने के लिए घर में आया।

“लोग कहते हैं कि एक स्त्री का जीवन में केवल एक ही पति होना चाहिए,” उसने उनसे कहा। “उस डाकू के हाथों मेरे पति की मृत्यु से मैं बहुत दुखी थी, और उसके हत्यारे से विवाह करने का कलंक सहन नहीं कर सकती थी; लेकिन चूंकि मैं अपने पति के बच्चे को गर्भ में लिए हुए थी, इसलिए मुझे जीवित रहने की शर्म सहनी पड़ी। अब, ईश्वर का धन्यवाद, मेरा बेटा बड़ा हो गया है और मेरे पिता मेरे पति का बदला लेने के लिए सेना लेकर आए हैं, लेकिन मुझमें आप लोगों से मिलने की हिम्मत कैसे हुई? अपने पति के प्रति प्रायश्चित करने का एकमात्र तरीका है कि मैं स्वयं को मार डालूँ।”

“मेरी बच्ची,” मंत्री ने कहा, “यह भौतिक लाभ के लिए नैतिकता का त्याग करने का मामला नहीं था। तुमने मजबूरी में यह काम किया, और इसमें शर्मिंदा होने जैसी कोई

बात नहीं है।" पिता और पुत्री ने एक-दूसरे को गले लगाया और रोने लगे, जबकि ज़ुआनज़ैंग भी सिसक रहा था। "तुम दोनों को इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं है," मंत्री ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा। "आज मैंने अपने दुश्मन, उस विद्रोही को पकड़ लिया है, और अब मुझे उससे निपटना होगा।" वह उठा और फाँसी के मैदान की ओर चल पड़ा।

जियांगझोऊ के सहायक प्रान्ताध्यक्ष ने दूसरे समुद्री डाकू ली बियाओ को गिरफ्तार करने के लिए कांस्टेबल भेजे थे और वे उसे पकड़ लाए। मंत्री बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने आदेश दिया कि लियू होंग और ली बियाओ को कड़ी निगरानी में रखा जाए। दोनों को भारी डंडे से सौ-सौ कोड़े मारे गए और उनसे चेन गुआंगरुई की हत्या करने के कारण और तरीके के बारे में बयान लिए गए। फिर ली बियाओ को लकड़ी के गधे पर कीलें ठोककर बाजार ले जाया गया, जहाँ उसके हजार टुकड़े कर दिए गए और उसके सिर को सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए लटका दिया गया। लियू होंग को होंगजियांग नदी के मुहाने पर ले जाया गया जहाँ उसने चेन गुआंगरुई की हत्या की थी। मंत्री, उनकी बेटी और शुआनज़ैंग नदी किनारे गए, जहाँ उन्होंने शून्य को अर्पण किया और लियू होंग के जीवित रहते हुए ही उसका हृदय और जिगर निकालकर चेन गुआंगरुई को अर्पित कर दिया। उन्होंने एक शोक संदेश भी जलाया।

उन तीनों के तीखे विलाप से जलमग्न महल स्तब्ध रह गया। गश्त लगा रहे एक यक्ष राक्षस ने ड्रैगन राजा को अंतिम संस्कार का पत्र सौंपा। जब ड्रैगन राजा ने उसे पढ़ा, तो उसने मार्शल टर्टल को चेन गुआंगरुई को उससे मिलने के लिए बुलाने का आदेश दिया।

"बधाई हो, महाराज, बधाई हो," ड्रैगन राजा ने कहा। "आपकी पत्नी, आपका पुत्र और आपके ससुर सभी तट पर आपको बलि दे रहे हैं। मैं अब आपकी आत्मा आपको लौटाता हूँ और आपको एक मनचाहा मोती, दो लुढ़कते मोती, दस रेशमी कपड़े और मोतियों से जड़ी हुई जेड की बेल्ट देता हूँ। आज आप अपनी पत्नी, अपने पुत्र और अपनी माता से फिर से मिलेंगे।" चेन गुआंगरुई ने कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए बार-बार प्रणाम किया। फिर ड्रैगन राजा ने एक यक्ष को चेन गुआंगरुई के शरीर को नदी के मुहाने पर ले जाने का आदेश दिया, जहाँ उसे आत्मा लौटानी थी; और यक्ष आज्ञाकारी होकर चला गया।

अध्याय 9

अपने पति के लिए विलाप करने और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, मिस टिन ने खुद को डुबोने के लिए पानी में कूदने की कोशिश की, लेकिन शुआनज़ैंग ने बड़ी मुश्किल से उन्हें पकड़ लिया। ठीक इसी तनावपूर्ण क्षण में उन्होंने किनारे की ओर तैरता हुआ एक शव देखा। मिस यिन यह देखने के लिए दौड़ीं कि वह कौन है, उन्होंने उसे अपने पति के रूप में पहचान लिया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। अब बाकी सब भी देखने के लिए आ गए थे, और उन्होंने देखा कि चेन गुआंगरुई ने अपनी मुट्ठी खोली और अपना पैर फैलाया, और उनका शरीर धीरे-धीरे हिलने लगा। अचानक, वे सब आश्चर्यचकित होकर उठ बैठे। उन्होंने अपनी आँखें खोलीं, और सबसे पहले उन्होंने अपनी पत्नी, अपने ससुर और युवा भिक्षु को अपने पास रोते हुए देखा।

"तुम सब यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने पूछा।

“आपके मारे जाने के बाद मैंने इस पुत्र को जन्म दिया,” उसकी पत्नी ने उत्तर दिया, “और सौभाग्य से उसका पालन-पोषण जिनशान मंदिर के मठाधीश ने किया। जब वह मुझे ढूंढने आया तो मैंने उसे अपने पिता के पास भेज दिया; और जब मेरे पिता को सब पता चला तो उन्होंने दरबार में याचिका दायर की और आपके हत्यारे को गिरफ्तार करने के लिए सेना भेजी, जिसका हृदय और जिगर हमने अभी-अभी उसके जीवित शरीर से निकालकर आपको अर्पित किया है। लेकिन हे पतिदेव, आपकी आत्मा आपको कैसे लौट आई?”

"यह सब इसलिए हुआ क्योंकि जब हम 'दस हज़ार फूल सराय' में ठहरे थे, तब हमने उस सुनहरी कार्प मछली को खरीदा और पानी में छोड़ दिया था: पता चला कि वह कार्प मछली ही स्थानीय ड्रैगन राजा थी। जब उस गद्दार हत्यारे ने मुझे पानी में धकेल दिया, तो ड्रैगन राजा ने मुझे बचाया, जिसने मेरी आत्मा मुझे वापस लौटा दी और मेरे पास मौजूद सभी खजाने मुझे दे दिए। मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि तुमने इस बेटे को जन्म दिया है, या मेरे ससुर ने मेरा बदला लिया है। अब हमारे सारे दुख खत्म हो गए हैं। यह सचमुच बहुत खुशी का पल है।"

जब अन्य अधिकारियों को घटना की खबर मिली तो वे सभी बधाई देने आए, और मंत्री ने अपने सभी अधीनस्थों को धन्यवाद देने के लिए एक भोज का आयोजन किया। सेना उसी दिन अपनी वापसी यात्रा पर रवाना हो गई।

जब वे दस हज़ार फूलों के सराय में पहुँचे, तो मंत्री ने उन्हें डेरा डालने का आदेश दिया, जबकि गुआंगरुई और ज़ुआनज़ैंग उस बूढ़ी महिला को खोजने के लिए सराय में गए। पिछली रात उसने सपने में देखा था कि एक सूखा पेड़ फिर से खिल उठा है और इमारत के पीछे मैगपाई पक्षी शोर मचा रहे हैं।

"शायद मेरा पोता आ गया है," उसने सोचा, और जब ये शब्द अभी उसके दिमाग में ही थे, तभी उसने गुआंगरुई और उसके बेटे को सराय के द्वार पर देखा।

“क्या ये मेरी दादी नहीं हैं?” छोटे भिक्षु ने कहा; और जैसे ही गुआंगरुई ने अपनी बूढ़ी माँ को देखा, उसने उन्हें प्रणाम किया। माँ और पुत्र गले मिले और उनकी आँखों में आँसू थे; फिर उसने उन्हें सारी घटना बताई। सराय मालिक का हिसाब-किताब हो गया और वे राजधानी के लिए रवाना हो गए। जब वे मंत्री के निवास पर पहुँचे, तो गुआंगरुई, उनकी पत्नी, उनकी माँ और ज़ुआनज़ैंग सभी मंत्री की पत्नी से मिलने गए, जो खुशी से अभिभूत हो गईं और उन्होंने नौकरों को जश्न मनाने के लिए एक भव्य भोज आयोजित करने का आदेश दिया।

मंत्री जी ने कहा, "आज के भोज को हम 'पुनर्मिलन भोज' कह सकते हैं," और सचमुच पूरा परिवार खुश था।

अगली सुबह जब तांग सम्राट सिंहासन कक्ष में पहुँचे, तो मंत्री यिन ने आगे बढ़कर एक ज्ञापन प्रस्तुत किया जिसमें हुई घटना का विस्तृत विवरण था और चेन गुआंगरुई को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अनुशंसित किया गया था जिनकी प्रतिभा का भरपूर उपयोग किया जा सकता था। तांग सम्राट ने ज्ञापन को स्वीकार कर लिया और आदेश दिया कि चेन गुआंगरुई को दरबार के प्रशासन में भाग लेने के लिए एक विद्वान नियुक्त किया जाए। चूंकि शुआनज़ैंग ने ध्यानमग्न जीवन जीने का निर्णय लिया था, इसलिए उन्हें होंगफू मंदिर में अपने आचरण को सुधारने के लिए भेजा गया। बाद में श्रीमती यिन ने शांतिपूर्वक और सम्मानजनक तरीके से अपने प्राण त्याग दिए, और शुआनज़ैंग मठाधीश फामिंग को सूचना देने के लिए जिनशान मंदिर लौट गए। यदि आप इसके बाद क्या हुआ, यह नहीं जानते हैं, तो अगली कड़ी में इसका विवरण सुनें।

अध्याय 9

125

पश्चिम की यात्रा

अध्याय 10

एक मूर्खतापूर्ण योजना के साथ ड्रैगन राजा स्वर्ग के नियमों का उल्लंघन करता है।
मंत्री वेई ने नरक के एक अधिकारी को पत्र भेजा
हम इस बात पर चर्चा नहीं करेंगे कि चेन गुआंगरुई ने अपने कर्तव्यों का निर्वाह कैसे किया या ज़ुआनज़ैंग ने अपने आचरण को कैसे निखारा; इसके बजाय हम चांगआन शहर के बाहर जिंग नदी के किनारे रहने वाले दो बुद्धिमान व्यक्तियों के बारे में बात करेंगे। एक थे झांग शाओ नाम के एक बूढ़े मछुआरे और दूसरे थे ली डिंग नाम के एक लकड़हारा। वे दोनों ही उच्च कोटि के विद्वान थे जिन्होंने कभी आधिकारिक परीक्षा नहीं दी थी, पहाड़ों के पढ़े-लिखे लोग थे। एक दिन, जब ली डिंग ने चांगआन शहर में अपनी लकड़ियों का गट्ठा बेच दिया और झांग शाओ ने अपनी टोकरी भर कार्प मछली बेच दी, तो वे एक सराय में गए, खूब शराब पी और फिर धीरे-धीरे जिंग नदी के किनारे-किनारे अपने घर की ओर चल पड़े, दोनों के हाथों में एक-एक बोतल थी।
"भाई ली," झांग शाओ ने कहा, "मुझे लगता है कि जो लोग प्रसिद्धि के लिए संघर्ष करते हैं, वे इसके लिए आत्महत्या कर लेते हैं; जो लाभ के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, वे इसके लिए मर जाते हैं; जो सम्मान स्वीकार करते हैं, वे अपनी बाहों में बाघ लेकर सोते हैं; और जो शाही कृपा प्राप्त करते हैं, वे अपनी आस्तीनों में सांप लेकर घूमते हैं। कुल मिलाकर, हम अपने स्वच्छ जल और नीली पहाड़ियों के बीच स्वतंत्र रूप से रहना कहीं अधिक बेहतर समझते हैं: हम अपनी गरीबी में आनंदित होते हैं और अपने भाग्य का अनुसरण करते हैं।"
"आप सही कह रहे हैं, भाई झांग," ली डिंग ने कहा, "लेकिन आपके स्वच्छ जल मेरे नीले पहाड़ों के सामने कुछ भी नहीं हैं।"
"तुम्हारी नीली पहाड़ियाँ मेरे स्वच्छ जल के सामने कुछ भी नहीं हैं," झांग शाओ ने जवाब दिया, "और इसे साबित करने के लिए 'तितली फूलों से प्यार करती है' की धुन पर एक गीत प्रस्तुत है:
लहरों के धुंध भरे विस्तार के बीच नाव बहुत छोटी सी दिखाई देती है;
मैं शांति से इकलौते पाल के सहारे झुक जाता हूँ।
खूबसूरत शीशी की आवाज सुनना।
मेरे विचार और मन निर्मल हैं; मेरे पास न तो धन है और न ही प्रसिद्धि।
मैं जलीय खरपतवार और सरकंडों के साथ खेल रहा हूँ।
कुछ सीगल पक्षियों को गिनने से यात्रा सुखद हो जाती है।

सरकंडों से घिरी घुमावदार जगह में, विलो के पेड़ों के किनारे के नीचे,
मेरी पत्नी और बच्चे मेरे साथ मुस्कुराते हैं।
जैसे ही मुझे नींद आती है, हवा और लहरें शांत हो जाती हैं;
न कोई यश, न कोई अपमान, और न ही कोई चिंता।
अध्याय 10
126
पश्चिम की यात्रा
"तुम्हारा निर्मल जल मेरी नीली पहाड़ियों के सामने फीका पड़ जाता है," ली डिंग ने कहा, "और इसे साबित करने के लिए इसी धुन पर एक और गीत है। वह इस प्रकार है:
बादलों से घिरे जंगल चीड़ के फूलों से ढके हुए हैं।
चुप रहो! ओरिओल पक्षी का गीत सुनो!
मानो वह अपनी धूर्त ज़ुबान से बांसुरी बजा रहा हो।
लाल रंग की झलक और भरपूर हरे रंग के साथ वसंत का मौसम सुहावना है;
मौसम बदलने के साथ ही अचानक गर्मी का मौसम आ गया है।
"जब शरद ऋतु आती है तो चीजों का स्वरूप बदल जाता है;"
सुगंधित गुलदाउदी
यह मेरे संतोष के लिए काफी है।
जल्द ही भीषण सर्दी सब कुछ उखाड़ फेंकती है।
मैं चारों मौसमों में स्वतंत्र हूं, किसी के इशारों पर नहीं चलता।
मछुआरे ने उत्तर दिया, "तुम्हारे नीले पहाड़ों में जो सुख-सुविधाएँ हैं, वो तुम्हें नहीं मिलतीं, जो मुझे अपने स्वच्छ जल में मिलती हैं, और मैं इसे 'द पार्ट्रिज हेवन' की धुन पर एक और गीत से साबित कर सकता हूँ: इस जादुई भूमि में हम धुंधले पानी से अपना जीवन यापन करते हैं।"
चप्पू के एक झटके से नाव घर बन जाती है।
हम जीवित मछली को काटकर हरे कछुए को तलते हैं।
बैंगनी केकड़े से भाप निकलती है और लाल झींगे बुलबुले बनाते हैं।
हरी नरकट की कोंपलें,
जल लिली के अंकुर,

इससे भी बेहतर, सिंघाड़ा और गॉर्गन फल।
नाजुक लोट्स की जड़ें और बीज, कोमल अजवाइन,
एरोहेड, रीड-हार्ट्स और बर्ड-ग्लोरी ब्लॉसम।"
अध्याय 10
127
पश्चिम की यात्रा
"जब अच्छे गुणों की बात आती है तो तुम्हारे स्वच्छ जल की तुलना मेरी नीली पहाड़ियों से नहीं की जा सकती," लकड़हारे ने कहा, और मैं सबूत के तौर पर 'द पार्ट्रिज हेवन' धुन के एक और बोल का हवाला दे सकता हूँ: विशाल चट्टानें और ऊँचे शिखर आकाश तक पहुँचते हैं;
घास की झोपड़ी या फूस की कुटिया ही मेरा घर है।
अचार में पका हुआ चिकन और बत्तख कछुए या केकड़े से बेहतर होते हैं।
हिरण, जंगली सूअर, हिरण का मांस और खरगोश, मछली और झींगा से बेहतर होते हैं।
स्वर्ग के वृक्ष के पत्ते,
पीले चाइनाबेरी के अंकुर,
और इससे भी बेहतर, बांस के अंकुर और जंगली चाय।
बैंगनी बेर और लाल आड़ू, पके हुए बेर और खुबानी,
मीठे नाशपाती, तीखे बेर और ओसमंथस के फूल।"
"तुम्हारी नीली पहाड़ियाँ मेरे स्वच्छ जल के सामने कुछ भी नहीं हैं," मछुआरे ने उत्तर दिया, "और 'स्वर्गीय अमर' धुन का एक और बोल है:
अपनी छोटी सी नाव में मैं जहाँ चाहूँ वहाँ रह सकता हूँ।
असंख्य धुंध भरी लहरों से बिल्कुल भी भयभीत न होना।
कांटा डालो, जाल फैलाओ, ताजी मछली पकड़ने के लिए:
बिना तेल या सॉस के भी,
इनका स्वाद बहुत अच्छा होता है।
जब पूरा परिवार एक साथ भोजन करता है।
"जब मेरे पास अतिरिक्त मछलियाँ होती हैं तो मैं उन्हें चांगआन बाजार में बेच देता हूँ ताकि अच्छी शराब खरीद सकूँ और थोड़ा नशा कर सकूँ।"

घास की चादर ओढ़े मैं शरद ऋतु की नदी पर सोता हूँ।
अध्याय 10
128
पश्चिम की यात्रा
खर्राटे लेते हुए
बिना किसी परवाह के,
मान-सम्मान और यश की मुझे कोई परवाह नहीं।
"तुम्हारा निर्मल जल भी मेरे नीले पहाड़ों जितना अच्छा नहीं है," लकड़हारा ने जवाब दिया, "और मेरे पास भी इसे साबित करने के लिए एक दिव्य अमर गीत है।"
जहां मैंने पहाड़ी के नीचे एक छोटी सी फूस की झोपड़ी बनाई।
बांस, ऑर्किड, बेर और चीड़ के पेड़ बहुत ही सुंदर हैं।
मैं सूखी जलाऊ लकड़ी की तलाश में जंगलों और पहाड़ों को पार करता हूँ
कोई भी अटपटे सवाल नहीं पूछता।
और मैं बेच सकता हूँ
दुनिया जितना चाहे उतना या कम।
मैं पैसे शराब पर खर्च करता हूं और मैं खुश हूं।
मैं अपने मिट्टी के कटोरे और चीनी मिट्टी के जग से संतुष्ट हूँ।
जब मैं पूरी तरह से नशे में धुत हो जाता हूँ, तो मैं चीड़ के पेड़ की छाया में लेट जाता हूँ।
कोई चिंता नहीं,
हिसाब-किताब रखने की कोई जरूरत नहीं;
मुझे सफलता या असफलता से क्या फर्क पड़ता है?
मछुआरे ने कहा, "भाई ली, पहाड़ियों में तुम्हारी कमाई उतनी आसान नहीं है जितनी मेरी पानी में, और मैं इसे 'द मून ऑन द वेस्ट रिवर' की धुन के बोलों से साबित कर सकता हूँ: स्मार्टवीड के फूल चाँद द्वारा चुने जाते हैं।"
जबकि सरकंडे की उलझी हुई पत्तियां हवा में लहरा रही हैं।
नीला आकाश दूर तक साफ और निर्मल है, चू नदी निर्जीव बहती है:
पानी को हिलाओ, और तारे नाचने लगते हैं।
अध्याय 10

बड़ी मछलियाँ झुंड में जाल में तैरकर आ जाती हैं;
छोटे-छोटे जीव झुंड में हुक निगल जाते हैं;
चाहे उबले हों या तले हुए, इनका स्वाद लाजवाब होता है।
मैं गरजती नदी और झील को देखकर हंसता हूं।
"भाई झांग," लकड़हारे ने उत्तर दिया, "पहाड़ों में मेरा जीवन यापन करना पानी पर आपके जीवन यापन से कहीं अधिक आसान है, और मैं इसे 'पश्चिमी नदी पर चंद्रमा' गीत के एक अन्य बोल से साबित कर सकता हूँ: सूखे और पत्तों से रहित बेंत रास्तों को भर देते हैं।"
पहाड़ी की ढलान पर टूटे हुए सिरों वाले पुराने बांस फैले हुए हैं।
जहां लताएं और लताएं आपस में उलझकर ऊपर चढ़ती हैं
मैं अपने बंडलों को बांधने के लिए उनमें से कुछ निकाल लेता हूँ।
एल्म और विलो के पेड़ सड़न से खोखले हो गए हैं।
तेज हवाओं से चीड़ और देवदार के पेड़ फट गए—
मैं उन्हें सर्दियों की ठंड से बचाने के लिए ढेर लगा देता हूँ।
और चाहे इन्हें शराब के बदले बेचा जाए या पैसों के बदले, यह मुझ पर निर्भर करता है।"
"हालाँकि पहाड़ियों में आपका जीवन कुछ बुरा नहीं है, लेकिन पानी पर मेरा जीवन जितना शानदार है, उतना आपका जीवन नहीं है," मछुआरे ने कहा, "जैसा कि मैं 'द इमॉर्टल बाय द रिवर' की धुन पर कुछ पंक्तियाँ गाकर दिखा सकता हूँ।"
जैसे ही ज्वार का रुख बदलता है, मेरी अकेली नाव रवाना हो जाती है;
मैं रात में चप्पू चलाने से आराम करते हुए गाता हूँ।
भूसे से बने लबादे के नीचे से घटता हुआ चंद्रमा शांतिपूर्ण प्रतीत होता है।
सो रही सीगलें परेशान नहीं होतीं।
जैसे ही आकाश के अंत में बादल छंटते हैं।
थका हुआ, मैं सरकंडों के द्वीप पर लेटा हूँ, मेरे पास करने को कुछ नहीं है।
और जब सूरज ऊँचा होता है, मैं वहीं लेटा रहता हूँ।

मैं सब कुछ अपनी सुविधा के अनुसार व्यवस्थित करता हूँ:
अदालत का अधिकारी मेरी सहजता की तुलना कैसे कर सकता है?
क्या वह सुबह-सुबह ठंड में किसी से मिलने की प्रतीक्षा कर रहा है?
"पानी पर तुम्हारा जीवन भले ही शानदार हो, लेकिन मेरे जीवन के मुकाबले कुछ भी नहीं," लकड़हारे ने उत्तर दिया, "और मेरे पास इस बात को साबित करने के लिए कुछ पंक्तियाँ हैं।"
शरद ऋतु के एक दिन मैं अपनी कुल्हाड़ी लेकर हरे-भरे रास्ते पर चलता हूँ।
शाम की ठंडी हवा में बोझ वापस लाते हुए,
अलग दिखने के लिए बालों में जंगली फूल लगा रही हूँ।
मैं बादलों को हटाते हुए घर का रास्ता ढूंढता हूँ।
और जब मैं उन्हें दरवाजा खोलने के लिए कहता हूं, तब चांद निकला होता है।
मेरी सीधी-सादी पत्नी और मासूम बेटे ने मुस्कुराते हुए मेरा अभिवादन किया।
और मैं घास और लकड़ी के तकिये से बने अपने बिस्तर पर लेट जाता हूँ।
मेरे सामने उबले हुए बाजरा और नाशपाती परोसे गए हैं।
जब नई शराब बर्तन में गर्म हो रही हो: यह वास्तव में सभ्य तरीका है।"
"यह सब हमारी आजीविका और हमारे भरण-पोषण के तरीकों के बारे में है," मछुआरे ने कहा। "मैं आपको एक कविता से यह साबित कर सकता हूँ कि आपका खाली समय मेरे खाली समय के मुकाबले कहीं भी अच्छा नहीं है: मैं खाली समय में सफेद सारसों को आकाश में उड़ते हुए देखता हूँ;
जैसे ही मैंने नाव को नदी के किनारे बांधा, एक नीले दरवाजे ने मुझे छाया प्रदान की।
पाल पर झुककर मैं अपने बेटे को मछली पकड़ने की डोरी मोड़ना सिखाता हूँ।
जब नाव चलाना खत्म हो जाता है तो मैं अपनी पत्नी के साथ जालों को सुखाता हूँ।
शांत स्वभाव वाला व्यक्ति ही वास्तव में लहरों की शांति को जान सकता है;
स्थिर शरीर भी हवा के हल्के झोंके को महसूस करता है।
हमेशा हरे रंग का भूसे का लबादा और नीले रंग की भूसे की टोपी पहनें।

यह दरबार के बैंगनी वस्त्रों से बेहतर है।"
"तुम्हारा खाली समय मेरे खाली समय के बराबर नहीं है," लकड़हारे ने उत्तर दिया, "जैसा कि यह कविता दर्शाती है जिसे मैं अब सुनाने जा रहा हूँ: दूर सफेद बादलों पर एक आलसी नज़र के साथ,
मैं एक छप्पर वाली झोपड़ी में अकेला बैठता हूँ, फिर बांस का दरवाजा बंद कर लेता हूँ।
जब मेरे पास करने को कुछ नहीं होता तो मैं अपने बेटे को पढ़ना सिखाता हूँ;
कभी-कभी कोई मेहमान आता है और हम शतरंज का खेल खेलते हैं।
जब मैं खुश होता हूँ तो मैं अपनी छड़ी लेकर रास्तों पर गाते हुए चलता हूँ, या अपना वीणा लेकर पन्ना जैसी हरी पहाड़ियों पर चढ़ जाता हूँ।
घास के बने जूते जिनमें भांग की पट्टियाँ लगी हों, और मोटे कपड़े का एक लबादा।
मन को शांत रखना: रेशम पहनने से भी बेहतर है।"
दूसरे ने कहा, "ली डिंग, हमारे बारे में यह कहना कितना सच है कि 'कुछ छंदों का पाठ करने से हम घनिष्ठ मित्र बन जाते हैं: सोने के शराब के प्यालों और चंदन की मेज की क्या आवश्यकता है?' लेकिन केवल छंदों का पाठ करने में कोई असाधारण बात नहीं है; अगर हम दोहे बनाएं जिनमें हम दोनों मछुआरे और लकड़हारे के रूप में अपने जीवन के बारे में एक-एक पंक्ति लिखें तो तुम क्या कहोगे?"
"भाई झांग," ली डिंग ने कहा, "यह एक बेहतरीन सुझाव है। आप ही शुरुआत कीजिएगा।" ये रहे उनके दोहे:
मेरी नाव धुंधली लहरों के बीच हरे पानी में बंधी हुई है;
मेरा घर घने पहाड़ों के बीचोंबीच, बीहड़ में है।
मुझे वसंत ऋतु में पुल के नीचे बहती हुई उफनती धारा कितनी अच्छी लगती है; भोर में बादलों से ढकी पर्वत चोटी देखना मुझे बेहद प्रसन्न करता है।
ड्रैगन के आकार की ताज़ी कार्प मछली जिसे किसी भी समय पकाया जा सकता है;
सूखी, सड़ी हुई लकड़ी हमेशा शरीर को गर्म रखती है।
वृद्धावस्था में सहारा देने के लिए हुक और जालों का पूरा जखीरा;
लकड़ी ढोने और रस्सी बनाने का काम मुझे मरने तक सहारा देगा।

एक छोटी सी नाव में आराम से लेटकर उड़ते हुए हंसों को देखना;
घास से ढकी पगडंडी के किनारे लेटकर जंगली हंसों की आवाज सुनना।
भाषाओं के बाज़ार में मेरी कोई दुकान नहीं है;
मैंने विवादों के सागर में अपना कोई निशान नहीं छोड़ा है।
नदी के किनारे सूखने के लिए टांगे गए जाल रेशमी कपड़े जैसे दिखते हैं;
चट्टान पर अच्छी तरह से तराशी गई कुल्हाड़ी भाले से कहीं अधिक तेज होती है।
शरद ऋतु के चमकते चांद की रोशनी में मैं अक्सर अकेले मछली पकड़ने जाता हूँ;
वसंत ऋतु में उस एकांत पर्वत पर मुझे कोई नहीं मिलता।
मैं अपनी अतिरिक्त मछलियों के बदले शराब लेता हूँ और उसे अपनी पत्नी के साथ पीता हूँ;
जब मेरे पास अतिरिक्त लकड़ी होती है तो मैं एक बोतल खरीदता हूं और उसे अपने बेटों के साथ बांटता हूं।
मैं अपने मन में गाते और सोचते हुए जितना चाहूँ उतना बेफिक्र हो सकता हूँ;
लंबे गीत, लंबी आहें, मैं खुद को पागल होने दे सकता हूँ।
मैं अपने भाइयों, चचेरे भाइयों और साथी नाविकों को आमंत्रित करता हूँ;
अपने दोस्तों का हाथ पकड़कर चलते हुए मेरी मुलाकात जंगल के बूढ़े आदमी से हुई।
जैसे ही हम अनुमान लगाने वाली उंगलियों का खेल खेलते हैं, कप तेजी से उड़ते हैं;
जब हम पहेलियाँ बनाते हैं तो प्याले धीरे-धीरे घूमने लगते हैं।
भुना हुआ या उबला हुआ केकड़ा हर सुबह एक आनंददायक व्यंजन होता है;
प्रतिदिन राख में पकाई गई भरपूर मात्रा में तली हुई बत्तख और चिकन।
जब मेरी सरल स्वभाव वाली पत्नी चाय बनाती है, तो मेरा मन प्रसन्न हो जाता है;
जब मेरा पर्वतीय साथी रात का खाना बना रहा होता है, तब मेरा मन शांत रहता है।
भोर होते ही मैं अपनी छड़ी को लहरों में धोता हूँ;
सूरज उगने पर मैं सड़क के उस पार लकड़ियाँ ढोकर ले जाता हूँ।
बारिश के बाद मैंने जिंदा कार्प मछली पकड़ने के लिए अपना लबादा पहन लिया;
मैं हवा के सामने अपनी कुल्हाड़ी चलाता हूँ और एक सूखे हुए चीड़ के पेड़ को काट डालता हूँ।

मैं अपने सारे निशान मिटा देता हूँ और दुनिया से छिप जाता हूँ, मूर्ख होने का नाटक करता हूँ; मैं अपना नाम बदल लेता हूँ और बहरा और गूंगा होने का दिखावा करता हूँ।
अध्याय 10
133
पश्चिम की यात्रा
"भाई ली," झांग शाओ ने कहा। "मैंने अभी अनुचित रूप से पहली पंक्तियाँ लिख लीं, इसलिए अब पहली पंक्तियाँ लिखने की आपकी बारी है और मैं आपके पीछे-पीछे लिखूंगा।" इस प्रकार उन्होंने आगे लिखना जारी रखा:
पहाड़ों का वह आदमी जो हवा और चांदनी में पागलपन का अभिनय कर रहा था;
नदी का अभिमानी और अवांछित बूढ़ा व्यक्ति।
उसे कुछ समय आराम करने का भी मौका मिलता है, और वह पूरी तरह से स्वतंत्र रहने में सक्षम है;
शांति में डूबे होने के कारण उनकी आवाज में कोई ध्वनि नहीं थी।
चांदनी रातों में वह घास-फूस की झोपड़ी में सुरक्षित रूप से सोता है;
वह संध्याकाल में सरकंडे के वस्त्रों से खुद को हल्के से ढक लेता है।
अपनी वासना शांत होने पर, वह चीड़ और बेर के पेड़ों से मित्रता करने लगता है;
वह जलकौवा और समुद्री चिड़िया का साथी बनकर खुश है।
उनके मन में प्रसिद्धि और लाभ का कोई महत्व नहीं है;
उसके कानों ने कभी हथियारों की खड़खड़ाहट नहीं सुनी थी।
एक व्यक्ति हमेशा ताजा चावल की शराब परोसता रहता है।
दूसरे व्यक्ति को हर भोजन के साथ जंगली सब्जियों का सूप मिलता है।
एक व्यक्ति दो गठ्ठियों में लकड़ियाँ भरकर अपना गुजारा करता है;
दूसरा व्यक्ति छड़ी और रस्सी के सहारे अपना गुजारा करता है।
एक व्यक्ति लापरवाही से अपने भोले-भाले बेटे से कहता है कि लोहे की कुल्हाड़ी को तेज करो;
दूसरा चुपचाप अपने मंदबुद्धि बच्चे को जाल ठीक करने के लिए कहता है।
वसंत ऋतु में विलो के पेड़ों को हरा होते देखना अच्छा लगता है;
जब ऋतुएं बदलती हैं तो दूसरा व्यक्ति सरकंडों के नीले रंग का आनंद लेता है।
गर्मी से बचने के लिए, नए बांस की छंटाई की जाती है;

दूसरा व्यक्ति जुलाई की ठंडी शामों में सिंघाड़े इकट्ठा करता है।
जब पाला पड़ना शुरू होता है, तो प्रतिदिन स्वस्थ मुर्गियों को मार दिया जाता है;
शरद ऋतु के मध्य में केकड़े अपने सर्वोत्तम रूप में होते हैं और हमेशा बर्तन में मौजूद रहते हैं।
अध्याय 10
134
पश्चिम की यात्रा
जब सर्दियों में सूरज उगता है, तब भी एक व्यक्ति सो रहा होता है;
दूसरा वाला गर्मियों के भीषण गर्मी के दिनों में भी ठंडा रखता है।
साल भर पहाड़ों में इंसान अपनी मर्जी से सब कुछ करता है;
चारों मौसमों में दूसरा व्यक्ति झील पर खुश रहता है।
लकड़ी इकट्ठा करके आप अमर बन सकते हैं;
मछली पकड़ने में सांसारिकता जैसी कोई बात नहीं है।
मेरे दरवाजे के बाहर उगने वाले जंगली फूलों की मीठी खुशबू;
हरी लहरें मेरी नाव से टकरा रही हैं और चिकनी हैं।
एक संतुष्ट व्यक्ति कभी भी उच्च सम्मानों की बात नहीं करता;
एक स्थिर प्रकृति शहर की दीवार से भी अधिक शक्तिशाली होती है।
शत्रु सेनाओं का प्रतिरोध करने के लिए शहर की दीवार से भी ऊँचा;
उच्च पद धारण करने और शाही फरमान सुनने से कहीं अधिक गौरवशाली।
पहाड़ों और नदियों से संतुष्ट रहने वाले लोग वास्तव में बहुत कम हैं;
ईश्वर का धन्यवाद, पृथ्वी का धन्यवाद और आत्माओं का धन्यवाद।
जब दोनों ने अपने-अपने श्लोक सुनाए और दोहे मिला लिए, तो वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ से उनके रास्ते अलग होते थे और एक-दूसरे को प्रणाम करके विदा हुए। झांग शाओ ने कहा, "भाई ली, घर जाते समय अपना ध्यान रखना और पहाड़ियों में बाघों से सावधान रहना। अगर कोई दुर्घटना हो गई तो कल रास्ते में एक पुराना दोस्त लापता हो जाएगा।" यह सुनकर ली डिंग क्रोधित हो गया।
"तुम बदमाश हो," उसने कहा, "मैं तुम्हारा दोस्त हूँ; मैं तुम्हारे लिए जान दे सकता हूँ। तुम मुझ पर ऐसा श्राप कैसे दे सकते हो? अगर मुझे बाघ मार डाले, तो तुम लहर में डूब जाओगे।"

"मैं कभी नहीं डूबूंगा!" झांग शाओ ने पलटवार किया।
"प्रकृति में अप्रत्याशित तूफान आते हैं और जीवन में अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव आते हैं," ली डिंग ने उद्धृत किया, "तो आप कैसे सुनिश्चित हो सकते हैं कि आपके साथ कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी?"
"भाई झांग," मछुआरे ने उत्तर दिया, "आपने अभी जो कहा उसके बावजूद, आपका जीवन असुरक्षित है, जबकि मेरा जीवन निश्चित है: मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे साथ कोई दुर्घटना नहीं होगी।"
लकड़हारा ने कहा, "पानी पर तुम्हारा जीवन बहुत खतरनाक और असुरक्षित है, तो तुम इतने निश्चित कैसे हो सकते हो?"
"ऐसा कुछ है जो आप नहीं जानते," झांग शाओ ने कहा। "मैं हर दिन चांगआन के वेस्ट गेट स्ट्रीट पर एक ज्योतिषी को एक सुनहरी कार्प मछली देता हूँ, और वह मेरी आस्तीन में एक पर्ची डाल देता है जिसमें लिखा होता है कि अगर मैं सही जगह जाऊँ तो हर बार कुछ न कुछ ज़रूर पकड़ूँगा। आज मैं उससे एक भविष्यवाणी खरीदने गया था, और उसने मुझे बताया कि अगर मैं अपना अध्याय 10 डालूँ तो..."
135
पश्चिम की यात्रा
मैंने जिंग नदी के मोड़ के पूर्व में जाल बिछाए और पश्चिमी किनारे पर अपनी लाइनें डालीं, मुझे यकीन था कि मैं ढेर सारी मछलियाँ और झींगे घर ले जाऊँगा। कल मैं इन्हें बेचने के लिए शहर जाऊँगा और फिर हम अपनी बातचीत जारी रख सकते हैं, भाई।" इतना कहकर वे अलग हो गए।
यह बात कितनी सच है कि अगर आप सड़क पर बात करेंगे तो घास में कोई न कोई आपकी बात सुन रहा होगा। जिंग नदी महल से गश्त कर रहे एक यक्ष ने झांग शाओ की मछली पकड़ने की आदत के बारे में कही गई बात सुन ली और तुरंत क्रिस्टल महल लौटकर ड्रैगन राजा को आपदा की तत्काल सूचना दी।
“क्या विपत्ति?” ड्रैगन राजा ने पूछा, और यक्ष ने उत्तर दिया, “आपका सेवक नदी के किनारे पानी में गश्त कर रहा था, तभी मैंने एक मछुआरे और एक लकड़हारे को बात करते सुना। जब वे विदा हो रहे थे, तब उनकी बातें बहुत खतरनाक लग रही थीं। मछुआरे ने बताया कि चांगआन शहर के पश्चिम द्वार मार्ग पर एक ज्योतिषी है, जिसकी भविष्यवाणियाँ बहुत सटीक होती हैं। मछुआरा उसे प्रतिदिन एक सुनहरी कार्प मछली

देता है, और वह उसे एक पर्ची देता है जिस पर लिखा होता है कि वह हर बार मछली पकड़ेगा। यदि उसकी गणनाएँ इतनी सटीक हैं, तो क्या हम सभी जलवासी नष्ट नहीं हो जाएँगे? क्या हम जल महल को मजबूत करें, या महाराज की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ ऊंची लहरें बनाएँ?"

ड्रैगन राजा ने भयंकर क्रोध में अपनी तलवार उठा ली और सीधे चांगआन शहर जाकर उस ज्योतिषी को नष्ट करने का इरादा किया, लेकिन तभी उनके ड्रैगन पुत्रों और पोतों, झींगा अधिकारियों, केकड़ा सैनिकों, शैड जनरलों, मंदारिन-मछली मंत्रियों और कार्प प्रधान मंत्री ने एक संयुक्त ज्ञापन प्रस्तुत किया जिसमें लिखा था: "महामहिम, हम आपसे विनती करते हैं कि आप क्रोध में आकर कोई कार्य न करें। जैसा कि कहावत है, 'सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं किया जा सकता।' यदि महाराज अभी जाएँगे तो आपको बादलों के साथ जाना होगा और बारिश की सहायता लेनी होगी; और यदि इससे चांगआन के आम लोग भयभीत होते हैं, तो स्वर्ग को आपत्ति हो सकती है। महाराज सभी प्रकार के रूप परिवर्तन करने और अप्रत्याशित रूप से प्रकट और लुप्त होने में सक्षम हैं; इसलिए चांगआन की इस यात्रा के लिए आप एक विद्वान का वेश धारण कर लें। यदि यह सच साबित होता है, तो आप उसे आराम से दंडित कर सकेंगे; और यदि यह झूठ साबित होता है, तो आप एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या करने से बच जाएँगे।" उनकी सलाह मानकर, ड्रैगन राजा ने अपनी तलवार एक तरफ रख दी, और बिना बादल या बारिश लाए वह घोड़े की पीठ पर चढ़ गया, खुद को झाड़ा और सफेद वस्त्र पहने एक विद्वान में परिवर्तित हो गया। वह सुंदर और कुलीन था।

बादलों तक ऊँचा उठता हुआ।

उसकी चाल राजसी थी

और उन्होंने आचरण के नियमों का पालन किया।

अपने भाषण में उन्होंने कन्फ्यूशियस और मेन्सियस के प्रति अपना सम्मान दिखाया, उनका व्यवहार झोउ के ड्यूक और वेन के राजा जैसा था।

उन्होंने हरे रंग के रेशम का गाउन पहना हुआ था।

उसके सिर पर लापरवाही से लिपटा हुआ एक कपड़ा।

सड़क पर आते ही वह सीधे चांगआन शहर के वेस्ट गेट स्ट्रीट की ओर बढ़ा, जहाँ उसने धक्का-मुक्की और शोर मचाती भीड़ देखी। उनमें से एक व्यक्ति बड़े ही जोशीले अंदाज़ में कह रहा था, "जो ड्रैगन के प्रभाव में पैदा हुआ है, उसका टकराव टाइगर के

प्रभाव में पैदा हुए व्यक्ति से होगा। हालाँकि चक्रीय चरित्रों में सामंजस्य होना चाहिए, मुझे डर है कि वर्ष ग्रह सूर्य से नाराज़ हो सकता है।" यह सुनते ही ड्रैगन अध्याय 10
136
पश्चिम की यात्रा
राजा जानता था कि यह वह स्थान है जहाँ भविष्यवाणियाँ की जाती हैं, इसलिए वह अंदर देखने के लिए भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ा।
उसने देखा:
मोतियों से ढकी चार दीवारें,
रेशमी कढ़ाई से भरा एक कमरा,
धूपदान से लगातार उठती हुई सुगंध,
चीनी मिट्टी के बर्तन में साफ पानी।
दोनों ओर वांग वेई की पेंटिंग थीं;
आसन के ठीक ऊपर डेविल वैली हर्मिट की एक तस्वीर लटकी हुई थी।
दुआनक्सी काउंटी का एक स्याही का पत्थर,
"सुनहरा धुआँ" स्याही,
जिस पर महीन बालों से बना एक बड़ा ब्रश टिका हुआ था;
चमकीले मोतियों का जंगल,
गुओ पु की भविष्यवाणी,
उन्होंने बड़ी लगन से उनकी तुलना ताई झेंग शिन जिंग से की।
उन्हें आरेखों की छह रेखाओं का गहन ज्ञान था।
आठ त्रिकोणों के एक महान विशेषज्ञ।
उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी के सिद्धांतों की समझ थी।
और उसने देवताओं और राक्षसों की भावनाओं को भांप लिया।
उन्हें चक्रीय संख्याओं के बारे में पूरी जानकारी थी।
और तारामंडलों की स्पष्ट तस्वीर थी।
उसने भविष्य की घटनाओं को देखा।
अतीत की घटनाएँ,
जैसे किसी दर्पण में।
कौन सा सदन उठेगा?

वह दिव्य अंतर्दृष्टि से यह जान सकता था।
उसे पता था कि कब अच्छा और कब बुरा होने वाला है।
मृत्यु और जीवन की भविष्यवाणी कर सकता है।
उनके शब्दों ने हवा और बारिश को तेज कर दिया;
जब वह अपनी कलम चलाता था, तो देवता और शैतान कांप उठते थे।
उसका नाम एक साइनबोर्ड पर लिखा हुआ था:
अटकल के मास्टर युआन शाउचेंग।
वह कौन था? वह युआन शौचेंग था, जो शाही ज्योतिषी युआन तियानगांग का चाचा था। वह पूरे देश में प्रसिद्ध था और चांगआन में अपने पेशे का अग्रणी व्यक्ति था। ड्रैगन राजा उससे मिलने गया, और अभिवादन के बाद उसने ड्रैगन राजा को बैठने के लिए कहा, जबकि एक नौकर चाय लेकर आया।
“महाराज, आप किसलिए आए हैं?” ज्योतिषी ने पूछा, और ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया, “मैं आपसे आकाश के रहस्यों को उजागर करने की विनती करता हूँ।” ज्योतिषी ने अपनी आस्तीन से एक पर्ची निकालकर उसे दी और कहा,
"बादलों ने पर्वत शिखर को ढक लिया है, कोहरे ने वृक्षों की चोटियों को ढक लिया है। अगर बारिश होनी है तो वह कल जरूर होगी।"
ड्रैगन राजा ने पूछा, "कल बारिश कब होगी और कितनी इंच बारिश होगी?"
"कल सुबह मध्य में बादल घिरेंगे; सुबह के अंत में गरज होगी; दोपहर में बारिश शुरू होगी; और दोपहर के शुरुआती समय में बारिश समाप्त हो जाएगी, जब तक कि 3 फीट 3.48 इंच बारिश हो चुकी होगी," भविष्यवक्ता ने उत्तर दिया।
“मुझे विश्वास है कि तुम मुझे धोखा नहीं दे रहे हो,” ड्रैगन राजा ने कहा। “अगर कल ठीक समय पर और ठीक मात्रा में बारिश हुई, जैसा तुमने अनुमान लगाया है, तो मैं तुम्हें पचास सोने के सिक्के दूंगा। अगर बारिश नहीं हुई, या ठीक समय पर और ठीक मात्रा में बारिश नहीं हुई, तो मैं तुम्हें साफ-साफ कह रहा हूँ कि मैं तुम्हारी दुकान तोड़ दूंगा, तुम्हारा बोर्ड उखाड़ दूंगा और तुम्हें चांगआन से भगा दूंगा ताकि तुम एक पल भी

लोगों को धोखा न दे सको।”
"यह पूरी तरह से आप पर निर्भर है," दूसरे ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया। "बारिश के बाद हम कल फिर मिलेंगे।"
ड्रैगन राजा ने चांगआन से विदा ली और अपने जलमहल में लौट गए। बड़े और छोटे जलदेवों ने उनका स्वागत करते हुए पूछा, "महाराज, ज्योतिषी से आपकी मुलाकात कैसी रही?"
“सब ठीक था,” उसने जवाब दिया, “लेकिन वह एक मीठी-मीठी बातें करने वाला ज्योतिषी था। जब मैंने उससे पूछा कि बारिश कब होगी, तो उसने कहा कल। जब मैंने पूछा कि किस समय होगी और कितनी बारिश होगी, तो उसने कहा कि सुबह के मध्य में बादल घिरेंगे, सुबह के अंत में गरज होगी, दोपहर में बारिश शुरू होगी और दोपहर के शुरुआती समय में बारिश रुक जाएगी। उसने यह भी कहा कि 3 फीट 3.48 इंच बारिश होगी। मैंने उससे शर्त लगाई कि अगर उसकी भविष्यवाणी सच हुई, तो मैं उसे पचास औंस सोना दूंगा; लेकिन अगर वह जरा भी गलत हुआ, तो मैं उसकी दुकान तोड़ दूंगा और उसे बाहर निकाल दूंगा, ताकि वह जनता को फिर कभी धोखा न दे सके। जलपरी जनजाति हँसी और बोली, “महाराज, आप आठ नदियों के महाअधीक्षक और वर्षा के महान ड्रैगन देवता हैं, इसलिए केवल आप ही जान सकते हैं कि बारिश होगी या नहीं। उसकी हिम्मत कैसे हुई ऐसी बकवास करने की?” वह ज्योतिषी निश्चित रूप से हारेगा, बिलकुल हारेगा।
अध्याय 10
138
पश्चिम की यात्रा
जब सभी ड्रैगन पुत्र और पोते मछली मंत्रियों और केकड़ा सैनिकों के साथ इस बारे में हंसते-हंसते बातें कर रहे थे, तभी आकाश से एक आवाज सुनाई दी: "जिंग नदी के ड्रैगन राजा, शाही फरमान प्राप्त करने के लिए तैयार हो जाइए।" सभी ने ऊपर देखा और सुनहरे वस्त्र पहने एक योद्धा को जलमहल की ओर आते हुए देखा, जिसके हाथों में जेड सम्राट का फरमान था। इससे ड्रैगन राजा सतर्क हो गए, उन्होंने अपने वस्त्र समेटे, गंभीरता से खड़े हुए, अगरबत्ती जलाई और फरमान प्राप्त किया। सुनहरे वस्त्र पहने योद्धा आकाश में लौट गए। शाही कृपा के लिए धन्यवाद देते हुए ड्रैगन राजा ने पत्र खोला और पढ़ा:

"हम आठ नदियों के अधीक्षक को आदेश देते हैं कि वे गरज और बिजली के साथ यात्रा करें और चांगआन शहर को बारिश से सहायता प्रदान करें।"
फरमान में समय और राशि ठीक वही थी जो भविष्यवक्ता ने बताई थी, जिससे ड्रैगन राजा इतना चौंक गया कि वह बेहोश हो गया। थोड़ी देर बाद जब उसे होश आया तो उसने जलपरी जनजाति से कहा,
"इस नश्वर संसार में इतनी शक्तियों वाला व्यक्ति कैसे हो सकता है? वह वास्तव में स्वर्ग और पृथ्वी के बारे में सब कुछ जानता है - मैं उससे अवश्य ही पराजित हो जाऊंगा।"
"महाराज, चिंता न करें," जनरल शाद ने एक ज्ञापन में कहा। "उसे हराने में कोई कठिनाई नहीं होगी। आपके पास एक सरल योजना है, जिसकी मैं गारंटी दे सकता हूँ कि वह उस बदमाश का मुँह बंद कर देगी।" जब ड्रैगन राजा ने योजना पूछी, तो जनरल ने उत्तर दिया, "गलत समय पर और पर्याप्त बारिश न करवाएँ, ताकि उसकी भविष्यवाणियाँ गलत साबित हों, और फिर आप निश्चित रूप से उसे हरा देंगे। उसके चिन्ह को चकनाचूर करने और उसे शहर से बाहर निकालने से आपको कोई नहीं रोक पाएगा।" ड्रैगन राजा ने उसकी सलाह मान ली और चिंता करना छोड़ दिया।
अगले दिन उसने विस्काउंट विंड, ड्यूक थंडर, क्लाउड यूथ और मदर लाइटनिंग को चांगआन शहर के ऊपर आकाश में जाने का आदेश दिया। उसने सुबह देर तक बादलों को फैलाने का इंतज़ार किया, दोपहर में गरज शुरू की, दोपहर के शुरुआती समय में बारिश शुरू की और देर दोपहर में उसे रोक दिया, जब केवल तीन फीट और 0.4 इंच बारिश हुई थी। इस प्रकार उसने समय को दो घंटे आगे बढ़ा दिया और बारिश की मात्रा को कम कर दिया।
0.08 इंच। बारिश के बाद उसने अपने जनरलों और सेना को छुट्टी दे दी और अपने बादलों को हटा दिया; फिर वह सफेद वस्त्र पहने विद्वान के वेश में वापस आया और वेस्ट गेट स्ट्रीट पर युआन शौचेंग के भविष्य बताने वाले स्टॉल में घुस गया।
बिना कोई स्पष्टीकरण मांगे ही उसने युआन का साइनबोर्ड, उसका ब्रश, उसकी स्याही की बोतल और बाकी सब कुछ तोड़ डाला, जबकि ज्योतिषी बिना हिले-डुले शांति से अपनी कुर्सी पर बैठा रहा।
ड्रैगन राजा ने दरवाज़ा हवा में लहराया, मानो उसे मारने के लिए तैयार हो, और उस पर अपशब्दों की बौछार करने लगा: "अरे दुष्ट, आशीर्वाद और विपत्ति के बारे में अपनी

बेतुकी बातों से सबको परेशान कर रहे हो; जनता को धोखा देने वाले घिनौने आदमी। तुम्हारी भविष्यवाणियाँ झूठी हैं, और तुम बकवास करते हो। तुमने आज की बारिश का समय और मात्रा बिल्कुल गलत बताई, फिर भी तुम इतने ऊँचे और शक्तिशाली बने बैठे हो। अगर तुम अपनी जान बख्शना चाहते हो तो तुरंत निकल जाओ।" युआन शौचेंग, जो हमेशा की तरह शांत और निडर था, व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ आकाश की ओर देखने लगा।

“मैं डरता नहीं,” उसने कहा, “मैं डरता नहीं। मैंने कोई गंभीर अपराध नहीं किया है, लेकिन मुझे डर है कि तुमने किया है। तुम शायद दूसरों को बेवकूफ बना सकते हो, लेकिन मुझे नहीं। मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो। तुम कोई विद्वान नहीं हो; तुम जिंग नदी के ड्रैगन राजा हो। तुमने बारिश का समय बदलकर और उसकी मात्रा कम करके जेड सम्राट के आदेश का उल्लंघन किया है, जो स्वर्ग के नियमों के विरुद्ध अपराध है। मुझे डर है कि तुम ड्रैगन-काटने वाले फंदे पर जल्लाद की तलवार के पात्र हो। क्या तुम मेरे साथ यह अत्याचार जारी रखोगे?”

यह सुनकर ड्रैगन राजा भय से कांप उठा और उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसने तुरंत दरवाजा गिरा दिया, अपने कपड़े समेटे और आज्ञाकारी भाव से भविष्यवक्ता के सामने घुटने टेकते हुए कहा, "कृपया मुझसे नाराज न हों, महाराज; मैं तो बस मजाक कर रहा था। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि इसे गंभीरता से लिया जाएगा। अगर मैंने स्वर्ग के नियमों को तोड़ दिया है तो मैं क्या करूँ? मैं आपसे विनती करता हूँ, महाराज, मुझे बचा लीजिए। अगर आप मुझे नहीं बचाएंगे तो मैं अपने दसवें अध्याय के बाद आपको परेशान करूँगा।"

मौत।"

"मैं तुम्हें बचा नहीं सकता," युआन शौचेंग ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं एक ऐसा तरीका बता सकता हूँ जिससे शायद तुम अपनी जान बचा सको।"

"मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे बताइए," ड्रैगन राजा ने आग्रह किया।

"कल दोपहर डेढ़ बजे आपको कार्मिक प्रभारी अधिकारी वेई झेंग के कार्यालय में जाकर अपना सिर कलम करवाना होगा। अगर आप जीवित रहना चाहते हैं तो आपको तुरंत वर्तमान तांग सम्राट ताइज़ोंग को सूचना देनी होगी, क्योंकि वेई झेंग उनका मंत्री

है; और अगर आप उन्हें अपने लिए सिफारिश करने के लिए मना लेते हैं, तो आप बच जाएंगे।" ड्रैगन राजा ने आँखों में आँसू लिए ज्योतिषी से विदा ली और चला गया। पश्चिम में सूर्य अस्त हो रहा था और चंद्रमा और तारे निकल रहे थे।

जैसे ही पहाड़ों के चारों ओर बादल छा जाते हैं, कौवे वापस अपने घोंसलों में उड़ जाते हैं, लंबी यात्रा पर निकले यात्री रात बिताने के लिए सराय ढूंढ लेते हैं।

लौटते हुए हंस नदी पार करने के स्थान के पास एक रेतीले टीले पर सो जाते हैं।

जैसे ही आकाशगंगा दिखाई देती है।

जैसे-जैसे समय बीतता जाता है

सुनसान गांव में एक दीपक मुश्किल से ही जल रहा है।

हवा में सरकंडे के धुएं के लहराने की तरह ही मठ पवित्र है;

तितली के सपने में पुरुष गायब हो जाते हैं।

जैसे-जैसे चंद्रमा डूबता है, फूलों की छाया रेल की पटरियों पर फैलती जाती है।

तारे प्रकाश का एक अव्यवस्थित समूह हैं।

समय बीत चुका है,

रात आधी बीत चुकी है।

जिंग नदी का ड्रैगन राजा अपने जलमहल में नहीं लौटा, बल्कि सुबह तड़के तक आकाश में ही रहा। फिर उसने अपना बादल और कोहरे का सींग त्याग दिया और सीधे शाही महल के द्वार पर चला गया। ठीक उसी समय तांग सम्राट ने स्वप्न देखा कि वह महल के द्वार से बाहर निकलकर चांदनी रात में फूलों के बीच टहल रहा है। ड्रैगन राजा ने तुरंत मानव रूप धारण किया, उसके पास गया और उसके सामने घुटने टेककर प्रणाम करते हुए बोला, "हे महाराज, मेरी रक्षा कीजिए, मेरी रक्षा कीजिए।"

"तुम कौन हो कि हम तुम्हें बचाएं?" ताइज़ोंग ने पूछा।

"महाराज, आप एक सच्चे अजगर हैं," अजगर राजा ने उत्तर दिया, "और मैं एक दुष्ट अजगर हूँ। मैंने स्वर्ग के नियमों का उल्लंघन किया है, इसलिए महाराज के प्रतिष्ठित मंत्री वेई झेंग, जो कार्मिक प्रभारी अधिकारी हैं, द्वारा मेरा सिर कलम किया जाना तय है, इसलिए मैं आपसे मुझे बचाने की विनती करने आया हूँ।"

"अगर वेई झेंग द्वारा तुम्हारा सिर कलम किया जाना तय है, तो हम तुम्हें बचा सकते हैं, इसलिए निश्चिंत हो जाओ और अब चलो," तांग सम्राट ने कहा। ड्रैगन राजा, जो अत्यंत प्रसन्न हुआ, ने धन्यवाद में सिर झुकाया और चला गया।

जब ताइज़ोंग जागा तो उसे अपना सपना याद आ गया। सुबह के साढ़े चार बज रहे थे, इसलिए ताइज़ोंग ने उपस्थित नागरिक और सैन्य अधिकारियों के समक्ष सभा आयोजित की।

महल के द्वार धुंध से घिरे हुए थे।

अगरबत्ती की सुगंध अजगर के टावरों तक उठी।

झिलमिलाती रोशनी में रेशमी पर्दा हिलता है,

जैसे ही बादल छंटते हैं, शाही वैभव फैल जाता है।

याओ और शुन की तरह ही सम्राट और प्रजा दोनों ही समान रूप से वफादार थे।

झोउ और हान राजवंशों के समकक्ष प्रभावशाली संगीत और अनुष्ठान।

पन्ने लालटेन पकड़े हुए हैं,

महल की महिलाएं पंखे पकड़े हुए हैं।

शानदार जोड़ियों में।

तीतर के लिए जालीदार स्क्रीन,

यूनिकॉर्न हॉल,

हर तरफ जगमगाहट।

जैसे ही "सम्राट अमर रहें" का नारा गूंजता है,

महारानी को हजार शरद ऋतुओं की शुभकामनाएं।

जब मौन की छड़ी तीन बार नीचे आती है,

वर्दीधारी अधिकारी सम्राट को प्रणाम करते हैं।

रंग-बिरंगे महल के फूलों में एक दिव्य सुगंध होती है;

नदी के किनारे उगे कोमल विलो वृक्ष राजसी गीत गाते हैं।

मोती के पर्दे,

जेड के पर्दे,

सुनहरे हुकों से ऊँचाई पर लटकाए गए हैं;

पश्चिम की यात्रा
ड्रैगन और फीनिक्स के प्रशंसकों,
लैंडस्केप के शौकीन,
राजसी रथ के पास विश्राम करें।
सरकारी अधिकारी अत्यंत सुरुचिपूर्ण होते हैं।
सेनापति बहुत ही ऊर्जावान थे।
शाही मार्ग से ऊँच-नीच का विभाजन होता है;
वे महल की सीढ़ियों के नीचे पदक्रमानुसार खड़े हैं।
बैंगनी रंग की डोरी वाली मुहर पहने मंत्री तीन हाथियों पर सवार हैं।
सम्राट की आयु आकाश और पृथ्वी के समान दीर्घायु हो!
जब सभी अधिकारियों ने प्रणाम कर लिया, तो वे अपने-अपने समूहों में बँट गए। तांग सम्राट ने अपनी नाग और हंस जैसी आँखों से एक-एक करके उन पर नज़र डाली। नागरिक अधिकारियों में उन्होंने फांग ज़ुआनलिंग, डू रुहुई, जू शिजी, जू जिंगज़ोंग, वांग गुई और अन्य को देखा; और सैन्य अधिकारियों में उन्होंने मा सानबाओ, दुआन झिक्सियन, यिन काइशान, चेंग याओजिन, लियू होंगजी, हू जिंगडे और किन शुबाओ को देखा। उनमें से प्रत्येक वहाँ गंभीरता और गरिमा के साथ खड़ा था, लेकिन उन्हें उनमें मंत्री वेई झेंग दिखाई नहीं दिए।
उन्होंने शू शिजी को महल के हॉल में बुलाया और उनसे कहा, "कल रात हमने एक अजीब सपना देखा जिसमें एक आदमी हमारे पास आया और हमें प्रणाम करते हुए दावा किया कि वह जिंग नदी का ड्रैगन राजा है। उसने स्वर्ग के नियमों का उल्लंघन किया था और कार्मिक विभाग के अधिकारी वेई झेंग द्वारा उसका सिर कलम किया जाना था। उसने हमसे उसे बचाने की विनती की और हम मान गए। आज दरबार में केवल वेई झेंग ही क्यों अनुपस्थित है?"
“यदि यह सपना सच है,” जू शिजी ने उत्तर दिया, “वेई झेंग को महल में बुलाया जाना चाहिए, और महाराज उन्हें बाहर नहीं जाने देना चाहिए। आज का दिन समाप्त होते ही ड्रैगन किंग बच जाएंगे।” तांग सम्राट अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने वेई झेंग को दरबार में बुलाने का आदेश देकर एक निजी सहायक को भेजा।
उस रात मंत्री वेई झेंग अपने निवास पर नक्षत्रों का अध्ययन कर रहे थे और कीमती अगरबत्ती जला ही रहे थे कि उन्हें आकाश में सारस की आवाज सुनाई दी। स्वर्ग से

एक दूत आया था, जिसके पास जेड सम्राट का एक आदेश था, जिसमें उन्हें अगले दिन दोपहर डेढ़ बजे सपने में जिंग नदी के ड्रैगन राजा का सिर कलम करने का निर्देश दिया गया था। मंत्री ने स्वर्ग की कृपा के लिए धन्यवाद दिया, उपवास किया और स्नान किया, अपनी बुद्धि का अभ्यास किया और आत्मिक साधना की। इसीलिए वे दरबार नहीं गए। जब शाही सहायक उन्हें बुलावा लेकर आया तो वे भयभीत और स्तब्ध रह गए; लेकिन अपने सम्राट के आदेश का पालन करने में वे विलंब करने का साहस नहीं कर सके, इसलिए उन्होंने जल्दी से अपने कपड़े ठीक किए, कमर कसी और बुलावा लेकर महल चले गए। उन्होंने सम्राट के सामने सिर झुकाया और अपनी गलती स्वीकार की।

“हम तुम्हें क्षमा करते हैं,” सम्राट ने कहा। अधिकारी अभी तक गए नहीं थे, इसलिए सम्राट ने परदे गिराने का आदेश दिया और उन्हें विदा कर दिया। उनमें से केवल वेई झेंग को ही उन्होंने रोका, जिसे उन्होंने स्वर्ण रथ पर सवार होकर अपने निजी कक्ष में आने का आदेश दिया, जहाँ उन्होंने देश में शांति और स्थिरता लाने की नीतियों पर चर्चा की।

दोपहर के करीब उन्होंने महल की महिलाओं को एक बड़ा वीकी शतरंज सेट लाने का आदेश दिया और कहा, "अब हम शतरंज का खेल खेलेंगे।" शाही रखैलें शतरंज का बोर्ड लेकर आईं और उसे सम्राट की मेज पर रख दिया। (अध्याय 10)

तांग सम्राट की कृपा से, वेई झेंग ने उनके साथ खेलना शुरू किया। बारी-बारी से चाल चलते हुए उन्होंने अपनी-अपनी युद्धपंक्ति बनाई। यह ठीक वैसा ही था जैसा शतरंज के क्लासिक ग्रंथ में कहा गया है: शतरंज का तरीका:

सबसे अच्छी जगह बोर्ड का मध्य भाग है।
सबसे बुरा पक्ष है,
और आने वाले न तो अच्छे हैं और न ही बुरे।
यह शतरंज का शाश्वत नियम है।
कानून कहता है:
"एक टुकड़ा खोना बेहतर है।"
पहल खोने से बेहतर है।

जब आपको बाईं ओर से चोट लगे, तो दाईं ओर देखें।
जब पीछे से हमला हो, तो सामने की ओर नजर रखें।
कभी-कभी नेता वास्तव में पीछे रह जाता है।
कभी-कभी पिछड़ने वाला वास्तव में आगे होता है।
यदि आपके पास दो 'लाइव' क्षेत्र हैं तो उन्हें अलग न होने दें;
अगर आप अपनी मौजूदा स्थिति में जीवित रह सकते हैं, तो किसी से संपर्क न करें।
अपने कामों को बहुत ज्यादा न फैलाएं।
अपने पौधों को बहुत पास-पास न रखें।
अपनी रचनाओं में कंजूसी करने के बजाय,
उन्हें हराओ और खेल जीत जाओ।
बिना किसी कारण के स्थानांतरित होने के बजाय,
अपनी स्थिति मजबूत करना बेहतर है।
जब उसके पास बहुत कुछ हो और आपके पास कम हो,
जीवित रहने पर ध्यान केंद्रित करें;
जब आपके पास बहुत कुछ हो और उसके पास कम हो,

अपने रुख का विस्तार करें।
जो व्यक्ति जीतने में माहिर होता है, उसे संघर्ष नहीं करना पड़ता;
जो व्यक्ति अच्छी रणनीति बनाता है उसे लड़ना नहीं पड़ता;
जो अच्छी तरह से लड़ता है, वह कभी नहीं हारता;
जो व्यक्ति हार को गरिमापूर्ण ढंग से स्वीकारता है, वह भ्रम में नहीं पड़ता।
अपने खेल की शुरुआत पारंपरिक दांव-पेचों से करें।
और अंत में अचानक हमले करके जीत हासिल करें।
जब शत्रु बिना किसी स्पष्ट कारण के स्वयं को मजबूत कर लेता है,
वह आप पर हमला करने और आपको अलग-थलग करने की योजना बना रहा है।
जब वह छोटे-छोटे इलाकों को छोड़ देता है और उन्हें बचाने का काम नहीं करता
उनकी महत्वाकांक्षाएं बहुत बड़ी हैं।

वह व्यक्ति जो अपनी कलाकृतियों को बेतरतीब ढंग से रखता है
कोई योजना नहीं है;
वह व्यक्ति जो बिना सोचे समझे जवाब देता है
हार की ओर अग्रसर है।
गीत-संगीत की पुस्तक कहती है:
"सावधान और सतर्क रहें।"
जैसे मानो आप किसी खाई के किनारे पर चल रहे हों।'
इसका यही मतलब है।
एक कविता है जो इस प्रकार है:
बोर्ड पृथ्वी है, शतरंज की मोहरें स्वर्ग हैं।
सकारात्मक और नकारात्मक रंग
जब आप उस सूक्ष्म अवस्था तक पहुँच जाते हैं जब सभी परिवर्तन स्पष्ट हो जाते हैं, तब आप शतरंज खेलने वाले अमर खिलाड़ियों के बारे में हंस सकते हैं और शेखी बघार सकते हैं।
अध्याय 10
144
पश्चिम की यात्रा
सम्राट और मंत्री शतरंज खेल रहे थे तभी डेढ़ बज गया। खेल अभी खत्म नहीं हुआ था, लेकिन वेई झेंग मेज के पास धंसकर गहरी नींद में सो गया और खर्राटे लेने लगा। “महामहिम मंत्री जी,” ताइज़ोंग ने मुस्कुराते हुए कहा, “आपने देश को मजबूत करने में अपना दिमाग खपा दिया है और साम्राज्य के निर्माण में भी थक गए हैं; इसीलिए आपको पता ही नहीं चला कि आप सो गए हैं।” सम्राट ने और कुछ नहीं कहा और उन्हें सोने दिया। कुछ देर बाद वेई झेंग जागे, ज़मीन पर लेट गए और बोले, “महाराज दस हज़ार मौत के लायक हैं। मैं बिना सोचे-समझे सो गया था, और महाराज, मैं आपसे अपने राजा के प्रति किए गए इस घोर असभ्य कृत्य के लिए क्षमा चाहता हूँ।” “तुमने कौन सा आपराधिक अभद्रता का कार्य किया है?” सम्राट ने पूछा। “उठो और मोहरों को बोर्ड से हटाओ ताकि हम फिर से शुरू कर सकें।” वेई झेंग ने उनकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया और मोहरों को हाथ में लेते ही उसने महल के द्वार के बाहर चिल्लाने की आवाज सुनी। किन शुबाओ, जू माओगोंग और कुछ अन्य लोग खून से

लथपथ एक अजगर का सिर लेकर आए, उसे सम्राट के सामने जमीन पर फेंक दिया और बताया, “महाराज, समुद्र उफान पर हैं और नदियाँ सूख गई हैं।”
लेकिन ऐसा नजारा पहले कभी किसी इंसान ने नहीं देखा था।"
सम्राट और वेई झेंग उठ खड़े हुए और पूछा कि यह कहाँ से आया था।
"हजार गज के बरामदे के अंत में चौराहे पर एक बादल से इस अजगर का सिर गिरा, और आपकी विनम्र प्रजा ने इसकी सूचना देने में कोई कसर नहीं छोड़ी," किन शुबाओ और जू माओगोंग ने कहा।
"इसका क्या मतलब है?" तांग सम्राट ने आश्चर्य से वेई झेंग से पूछा।
"तुम्हारे विषय ने अभी सपने में उसका सिर काट दिया," वेई झेंग ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया।
"लेकिन जब तुम ऊंघ रहे थे, तब मैंने तुम्हें अपना हाथ या शरीर हिलाते हुए कभी नहीं देखा," हैरान सम्राट ने कहा, "और तुम्हारे पास तलवार भी नहीं थी, तो तुम उसका सिर कैसे काट सकते थे?"
"मेरे स्वामी," वेई झेंग ने उत्तर दिया, "आपका प्रजाजन
मैं शारीरिक रूप से आपकी उपस्थिति में था।
लेकिन बहुत दूर, मेरे सपने में।
मैं शारीरिक रूप से आपकी उपस्थिति में खेल के अंत के करीब था।
जब मैंने अपनी आंखें बंद कीं और मुझे नींद आने लगी;
मैं सपने में बहुत दूर चला गया, एक जादुई बादल पर सवार होकर।
ऊर्जा से भरपूर।
अध्याय 10
145
पश्चिम की यात्रा
वह अजगर
ड्रैगन-स्लाइसिंग मचान पर था
जहां उसे स्वर्ग के अधिकारियों और सैनिकों द्वारा बांध दिया गया था।
तब आपके मंत्री ने कहा,
'तुमने स्वर्ग के नियमों का उल्लंघन किया है।'
और वे मृत्युदंड के पात्र हैं।

मुझे ईश्वरीय आदेश प्राप्त है।
तुम्हारा सिर कलम कर दूंगा।'
जब अजगर ने यह सुना तो वह बहुत दुखी हुआ;
आपके विषय ने अपने मनोबल को जुटाया।
जब अजगर ने यह सुना तो वह बहुत दुखी हुआ।
उसने अपने पंजे अंदर खींच लिए, अपनी खाल नीचे रख दी और खुशी-खुशी मरने के लिए तैयार हो गया।
आपके विषय ने अपने मनोबल को जुटाया,
उसने अपने कपड़े ऊपर खींचे, आगे बढ़ा और तलवार उठा ली।
एक झनझनाहट के साथ तलवार नीचे आ गिरी।
और अजगर का सिर शून्य में गिर गया।
यह सुनकर सम्राट ताइज़ोंग की भावनाएँ मिश्रित थीं। एक ओर वे प्रसन्न थे, क्योंकि उन्हें वेई झेंग जैसे कुशल मंत्री पर गर्व था; उनके दरबार में वेई झेंग जैसा वीर सेवक होने से साम्राज्य की सुरक्षा को लेकर उन्हें कोई चिंता नहीं थी। दूसरी ओर वे व्यथित थे, क्योंकि सपने में उन्होंने अजगर को बचाने का वादा किया था, लेकिन वह पूरा नहीं हुआ। उनके पास स्वयं को संभालने और किन शुबाओ को आदेश देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था कि चांगआन के आम लोगों को चेतावनी देने के लिए अजगर का सिर बाज़ार में लटका दिया जाए। उन्होंने वेई झेंग को पुरस्कृत भी किया और फिर सभी अधिकारी अपने-अपने स्थान पर चले गए।
उस शाम जब सम्राट महल लौटे, तो वे उदास थे क्योंकि उन्हें याद आया कि सपने में अजगर कितनी बुरी तरह रोया था और अपनी जान बचाने की गुहार लगा रहा था। फिर भी अजगर अपने अंत को टाल नहीं सका था।
काफी देर तक इस बारे में सोचते रहने के बाद वह और भी ज्यादा थका हुआ और बेचैन महसूस करने लगा। रात के दूसरे पहर में उसने महल के द्वार के बाहर रोने की आवाज सुनी, जिससे वह पहले से कहीं ज्यादा भयभीत हो गया। जब वह बेचैन नींद में था, तभी जिंग नदी का ड्रैगन राजा फिर से प्रकट हुआ, इस बार उसके हाथों में खून से लथपथ एक सिर था।
"तांग वंश के सम्राट ताइज़ोंग," वह चिल्लाया, "मेरी जान बचाओ, मेरी जान बचाओ। कल रात तुमने मुझे बचाने के बड़े-बड़े वादे किए थे, तो कल तुमने मेरे साथ धोखा

क्यों किया और कर्मियों के प्रभारी अधिकारी वेई झेंग को मेरा सिर कलम करने का आदेश क्यों दिया? बाहर आओ, बाहर आओ, और हम नरक के राजा के स्थान पर जाकर अध्याय 10 पढ़ेंगे।"

"इसे बाहर निकालो।" वह सम्राट के कपड़े खींचने लगा और लगातार चिल्लाता रहा। ताइज़ोंग कुछ कह नहीं पा रहा था और उससे दूर भागने के लिए इतना संघर्ष कर रहा था कि वह पसीने से तरबतर हो गया था। ठीक इसी असहज क्षण में उसने दक्षिण की ओर सुगंधित बादल और रंगीन धुंध देखी। एक नश्वर स्त्री आगे आई और उसने विलो की एक टहनी लहराई, जिसे देखकर सिर कटा अजगर उत्तर-पश्चिम की ओर दयनीय ढंग से रोता हुआ चला गया। यह नश्वर स्त्री बोधिसत्व गुआनयिन थीं, जो बुद्ध के आदेश का पालन करते हुए शास्त्रों को लाने वाले व्यक्ति को खोजने के लिए पूर्व में आई थीं। वह अब चांगआन के संरक्षक देवता के मंदिर में ठहरी हुई थीं, और जब उन्होंने राक्षसी गर्जना सुनी तो वे दुष्ट अजगर को भगाने के लिए आईं। तब अजगर पूरी रिपोर्ट देने के लिए नरक में चला गया।

जब ताइज़ोंग की नींद खुली तो वह चिल्लाया, "भूत, भूत!" तीनों महलों की महारानियाँ, छह परिसरों की शाही पत्नियाँ और रखैलें, सेवक और हिजड़े सभी इससे इतने भयभीत हो गए कि वे पूरी रात काँपते रहे। कुछ ही देर में साढ़े चार बज गए और सभी सैन्य एवं नागरिक अधिकारी महल के द्वार के बाहर सुबह के दरबार की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब भोर हुई और सम्राट अभी भी दरबार में नहीं आए तो वे इतने भयभीत हो गए कि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।

सूरज ढलने के बाद ही एक फरमान जारी किया गया, जिसमें लिखा था, "हमारा मन शांत नहीं है, इसलिए सभी अधिकारियों को दरबार में आने से छूट दी जाती है।" छह-सात दिन जल्दी ही बीत गए, और सभी अधिकारी इतने चिंतित थे कि वे सम्राट से मिलने और उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछने के लिए महल के द्वार पर दौड़ना चाहते थे, लेकिन हुआ यह कि महारानी ने एक फरमान जारी कर शाही डॉक्टरों को दवा देने के लिए महल में बुलाया। अधिकारियों की भीड़ महल के द्वार पर खबर की प्रतीक्षा में जमा हो गई, और जब डॉक्टर थोड़ी देर बाद बाहर आए तो उन्होंने पूछा कि क्या बात है।

"महामहिम की नब्ज़ सामान्य नहीं है: यह धीमी और तेज़ है। वे बेहोशी की हालत में भूत देखने की बात बड़बड़ा रहे हैं। उनकी नब्ज़ हर दस धड़कन पर रुक जाती है। उनके पांचों अंगों में जान नहीं है, और मुझे डर है कि सात दिनों के भीतर स्थिति और भी बदतर हो सकती है।" अधिकारी सदमे से पीले पड़ गए।

इस अफरा-तफरी के बीच यह पता चला कि ताइज़ोंग ने जू माओगोंग, ड्यूक प्रोटेक्टर किन शुबाओ और लॉर्ड युची जिंगडे को बुलवाया था। जब तीनों लॉर्ड्स को फरमान मिला तो वे तुरंत महल के निचले तल पर चले गए।

जब उन्होंने उसके सामने सिर झुकाया, तो गंभीर चेहरे वाले ताइज़ोंग ने उनसे ज़ोरदार ढंग से बात की।

उन्होंने कहा, "महान मंत्रियों, हमने उन्नीस वर्ष की आयु में सेना का नेतृत्व करना शुरू किया और तब से लेकर अब तक हमने कई वर्षों तक कठिन युद्ध लड़े, उत्तर और दक्षिण पर विजय प्राप्त की, पूर्व में रक्षा की और पश्चिम में अपने शत्रुओं का सफाया किया; लेकिन हमने कभी भी कुछ अशुभ या बुरा नहीं देखा। फिर भी अब हमें भूत दिखाई दे रहे हैं।"

"महाराज, आपने एक साम्राज्य की स्थापना की है और अनगिनत लोगों का वध किया है, तो आपको भूतों से क्यों डरना चाहिए?" लॉर्ड युची ने पूछा।

सम्राट ने उत्तर दिया, "तुम्हें हमारी बात पर यकीन नहीं होगा, लेकिन रात में हमारे शयनकक्ष के दरवाजे के बाहर ईंटें और टाइलें उड़ती हैं और भूत-प्रेत चीखते हैं। यह सचमुच भयानक है। दिन में तो गुजारा हो जाता है, लेकिन रातें असहनीय होती हैं।"

"महाराज, चिंता न करें," किन शुबाओ ने कहा। "आज रात मैं और युची जिंगडे महल के दरवाजों की रखवाली करेंगे, यह देखने के लिए कि कोई भूत है या नहीं।" ताइज़ोंग ने उनके सुझाव पर सहमति जताई और उनकी दयालुता के लिए धन्यवाद देते हुए, जू माओगोंग और अन्य दो सेनापति चले गए। उस शाम, दोनों ने अपने साजो-सामान पहने और महल के द्वार के बाहर पूर्ण कवच और हेलमेट में, हाथों में सोने के गदा और कुल्हाड़ियाँ लिए हुए, अपनी-अपनी जगह ले ली। देखो ये शानदार सेनापति कैसे सजे हुए थे: उनके सिर पर चमकीले सोने के हेलमेट थे।

उनके शरीर पर अजगर की खाल जैसी कवच थी।

उनके हृदय-रक्षक दर्पणों के सामने जादुई बादल चमकते हैं; उनके शेर के कवच कसकर बंधे हुए हैं।
उनकी कढ़ाई वाली बेल्टों के रंग एकदम ताज़गी भरे हैं।
एक अपनी फीनिक्स जैसी आंखों से आकाश की ओर देखता है, और तारे कांप उठते हैं; दूसरे की आंखों में बिजली चमकती है और चांदनी फीकी पड़ जाती है।
ये सच्चे नायक और प्रतिष्ठित मंत्री
हजार वर्षों तक इन्हें द्वारपाल कहा जाएगा
और दस हजार युगों तक द्वार-देवताओं के रूप में सेवा करें।
दोनों सेनापति रात के अंधेरे में भी द्वार के पास खड़े रहे, लेकिन उन्हें एक भी राक्षस दिखाई नहीं दिया। उस रात ताइज़ोंग महल में चैन से सोए और कुछ भी नहीं हुआ। सुबह होते ही उन्होंने दोनों सेनापतियों को बुलाया और उन्हें भरपूर पुरस्कार दिए।
“बीमार पड़ने के बाद से हम कई दिनों से सो नहीं पाए थे,” उन्होंने कहा, “लेकिन पिछली रात आप दोनों सेनापतियों की अद्भुत शक्ति के कारण बहुत शांति से गुज़री। कृपया अब आप आराम कर लीजिए ताकि आप आज रात फिर से हमारी रक्षा कर सकें।” दोनों सेनापतियों ने उन्हें धन्यवाद दिया और चले गए। अगली दो-तीन रातों तक वे पहरा देते रहे और सब शांत रहा; लेकिन सम्राट की तबीयत बिगड़ने लगी और उन्होंने कम खाना शुरू कर दिया। दोनों सेनापतियों को और अधिक परेशानी में न डालते हुए, उन्होंने उन्हें दु रुहुई और फांग ज़ुआनलिंग के साथ महल में बुलाया।
उन्होंने उन्हें ये निर्देश दिए: "यद्यपि पिछले दो दिनों से शांति बनी हुई है, फिर भी जनरल किन और युची पर थोपी गई रात भर की यातनाओं से हम दुखी हैं। इसलिए हम दो कुशल चित्रकारों को इन दोनों जनरलों के सटीक चित्र बनाने का आदेश देना चाहते हैं, जिन्हें दरवाजों पर चिपकाया जा सके ताकि उन्हें परेशानी से बचाया जा सके। आपका क्या विचार है?" शाही आदेश का पालन करते हुए अधिकारियों ने दो ऐसे व्यक्तियों को चुना जो हूबहू चित्र बना सकते थे, और चित्र बनाते समय दोनों जनरलों ने पहले की तरह ही अपने कवच पहने हुए थे। फिर चित्रों को दरवाजों पर चिपकाया गया, और उस रात कोई परेशानी नहीं हुई।
अगले दो-तीन दिन भी शांतिपूर्ण रहे, लेकिन फिर सम्राट ने होउ ज़ाई द्वार पर ईंटों और टाइलों के टूटने-फूटने की आवाज़ें दोबारा सुनीं। उन्होंने भोर होते ही अपने अधिकारियों

को बुलाया और कहा, "शुक्र है, पिछले कई दिनों से मुख्य द्वारों पर कोई परेशानी नहीं हुई है, लेकिन पिछली रात पीछे के द्वारों पर ऐसी आवाज़ें आईं कि मैं लगभग मर ही गया था।" जू माओगोंग ने आगे बढ़कर यह सुझाव दिया: "जब मुख्य द्वारों पर परेशानी हुई थी, तब युची जिंगडे और किन शुबाओ ने महाराज की रक्षा की थी। अब पीछे के द्वारों पर परेशानी है, तो वेई झेंग को पहरा देने का आदेश दिया जाना चाहिए।"
ताइज़ोंग ने उनके सुझाव को स्वीकार कर लिया और वेई झेंग को उस रात पिछले द्वार पर पहरा देने का आदेश दिया। वेई झेंग ने आदेश प्राप्त किया और उस रात उन्होंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, कमरबंद कसकर बांधा और होउ ज़ाई द्वार के बाहर पहरा देने लगे। वह सचमुच एक नायक थे।
उसके माथे के चारों ओर रेशम की एक काली पट्टी थी।
जेड से बनी ढीली बेल्ट वाला ब्रोकेड गाउन।
अध्याय 10
148
पश्चिम की यात्रा
उसकी हुड और लहराती हुई आस्तीनों पर पाला और ओस जम गई थी।
और वह भूत-प्रेत भगाने वालों शेनशु और युल टी से भी अधिक क्रूर प्रतीत होता था।
स्थिर गति के लिए उसने अपने पैरों में काले जूते पहन रखे थे;
उसके हाथ में एक धारदार तलवार थी जिसे वह अत्यंत क्रूरता से चला रहा था।
उसने तीखी निगाहों से चारों ओर देखा:
कौन सी दुष्ट आत्मा यहाँ आने की हिम्मत कर सकती थी?
पूरी रात कोई शैतान नज़र नहीं आया, लेकिन आगे-पीछे के द्वारों पर कुछ भी न होने के बावजूद सम्राट की हालत बिगड़ती चली गई। एक दिन महारानी ने अंतिम संस्कार की व्यवस्था पर चर्चा करने के लिए अधिकारियों को बुलाने का आदेश जारी किया। ताइज़ोंग ने जू माओगोंग को बुलवाया और उन्हें राजकीय मामलों के बारे में आदेश देते हुए निर्देश दिया कि वे सिंहासन के उत्तराधिकारी की देखभाल उसी तरह करें जैसे शू के शासक लियू बेई ने झूगे लियांग को निर्देश दिया था।
जब उनकी बात समाप्त हुई तो उन्हें नहलाया गया और साफ कपड़े पहनाए गए। अब उन्हें बस अंत की प्रतीक्षा करनी थी। तभी वेई झेंग अंदर आए, उन्होंने उनके ड्रैगन वस्त्रों को पकड़ लिया और कहा, "महाराज, चिंता न करें। मैं आपकी दीर्घायु सुनिश्चित

कर सकता हूँ।"
सम्राट ने उत्तर दिया, "बीमारी मेरे दिल तक पहुंच चुकी है, और मेरी जिंदगी किसी भी क्षण समाप्त हो सकती है, तो आप इसे कैसे बचा सकते हैं?"
"आपके पास एक पत्र है," वेई झेंग ने कहा, "जिसे मैं महाराज को भेंट कर रहा हूं ताकि आप इसे अपने साथ पाताल लोक ले जाकर फेंगडू के न्यायाधीश कुई जुए को दे दें।"
"यह कुई जुए कौन है?" सम्राट ने पूछा।
"वह महाराज के परम पूज्य पूर्ववर्ती के अधिकारियों में से एक थे। सिझोऊ के मजिस्ट्रेट से पदोन्नत होकर वे रीति-रिवाज मंत्रालय के उपाध्यक्ष बने। जब वे जीवित थे, तब हम घनिष्ठ मित्र थे। अब उनकी मृत्यु हो चुकी है और वे परलोक में फेंगदू के न्यायाधीश के रूप में जन्म और मृत्यु के रजिस्टरों के प्रभारी हैं, और वे अक्सर मेरे सपनों में आते हैं। यदि आप इस पत्र को अपने साथ यात्रा पर ले जाकर उन्हें दे दें, तो वे आपके प्रति सहानुभूति दिखाते हुए महाराज को वापस आने की अनुमति अवश्य देंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि महाराज की आत्मा सूर्य के प्रकाश में लौट आएगी, और ड्रैगन का मुखमंडल निश्चित रूप से शाही राजधानी में वापस आएगा।"
ताइज़ोंग ने पत्र लिया और उसे अपनी आहुति में रख लिया, फिर उन्होंने मृत्यु को गले लगा लिया। तीनों महलों और छह परिसरों की महारानियाँ, रानियाँ और शाही रखैलें, महल के सेवक, सिंहासन के उत्तराधिकारी और नागरिक एवं सैन्य अधिकारी सभी शोक में डूबे और शोक वस्त्र धारण किए। शाही ताबूत को श्वेत बाघ हॉल में रखा गया।
अगर आपको नहीं पता कि ताइज़ोंग कैसे दोबारा जीवित हुआ, तो अगले अध्याय में दी गई व्याख्या को सुनें।
अध्याय 11
पाताल लोक की यात्रा के बाद, ताइज़ोंग फिर से जीवित हो उठता है।
कद्दू भेंट करके लियू क्वान ने अपना वैवाहिक जीवन जारी रखा।

सौ साल पानी की तरह बह जाते हैं;

जीवन भर का करियर एक बुलबुले से ज्यादा कुछ नहीं है।
वह चेहरा जो कल आड़ू के फूल के रंग जैसा था
आज बर्फ की हल्की परत जमी हुई है।
जब दीमकों की युद्ध रेखा ध्वस्त हो जाती है, तो सब कुछ भ्रम मात्र रह जाता है;
"पश्चाताप करो, पश्चाताप करो," कोयल की यही पुकार है।
जो व्यक्ति गुप्त रूप से भलाई के कार्य करता है, वह हमेशा अपने जीवन को लंबा कर सकता है;
जो दया की भीख नहीं मांगता, स्वर्ग उसकी रक्षा करता है।
ताइज़ोंग स्तब्ध रह गया और उसकी आत्मा सीधे पंचमस्तिष्क के टावर की ओर चली गई, जिसके सामने उसने शाही रक्षक दल के घुड़सवारों को देखा, जिन्होंने उसे अपने साथ शिकार पर चलने का निमंत्रण दिया। ताइज़ोंग खुशी-खुशी चला गया और वे दूर चले गए; लेकिन कुछ समय बाद उसने खुद को एक बंजर भूमि में अकेला पाया: सभी घुड़सवार गायब हो चुके थे। जैसे ही उसे घबराहट के साथ पता चला कि वह रास्ता नहीं ढूंढ पा रहा है, तभी थोड़ी दूर पर एक आदमी चिल्लाता हुआ दिखाई दिया।
"महान तांग सम्राट, इधर आइए, इधर आइए।" यह सुनकर ताइज़ोंग ने ऊपर देखा और उसे पाया: काले रेशमी पगड़ी पहने हुए,
गैंडे के सींगों की एक पट्टी।
काली रेशमी पगड़ी की पट्टियाँ हवा में लहरा रही हैं;
गैंडे के सींग की बेल्ट में सोने की फिटिंग लगी हुई है।
उनके हाथों में हाथीदांत की एक शिला थी, जो शुभ रूप से चमक रही थी;
उनका पतला रेशमी गाउन उनके दिव्य प्रकाश को छुपाता है।
वह सफेद तलवों वाले जूते पहनता है।
जैसे ही वह बादलों पर चढ़ता है और कोहरे को पकड़ता है,
जीवन और मृत्यु के रजिस्टर को अपने सीने से लगाए हुए,
जीवित और मृत लोगों को नोट करना।
उसके उलझे हुए बाल उसके कानों के आसपास उड़ रहे हैं;
उसकी मूंछें उसके गालों के पास नाचती और उड़ती हैं।

पश्चिम की यात्रा

एक समय वह तांग राजवंश के मंत्री हुआ करते थे।

लेकिन अब वह नरक के राजा के लिए मुकदमों का फैसला करता है।

जब ताइज़ोंग उसके पास पहुंचा, तो वह रास्ते के किनारे घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "महाराज, कृपया अपने इस प्रजाजन को क्षमा कर दीजिए कि वह आपसे मिलने के लिए इतनी दूर तक नहीं आया।"

सम्राट ने पूछा, "तुम कौन हो? और मुझसे मिलने क्यों आए हो?"

"दो हफ्ते पहले आपके विनम्र सेवक ने सुना था कि जिंग नदी के ड्रैगन राजा ने सेनलुओ महल में आपके खिलाफ मामला दायर किया था क्योंकि आपके द्वारा उन्हें बचाने के वादे के बावजूद उन्हें फांसी दे दी गई थी," दूसरे ने उत्तर दिया।

प्रथम महल के किंगुआंग राजा ने तीन वर्गों - मानव वर्ग, पाताल लोक वर्ग और जल वर्ग - के बीच होने वाले मामले की सुनवाई के दौरान महाराज को तत्काल उपस्थित होने के लिए शैतान दूतों को भेजा था। यह सुनकर मैं महाराज से मिलने यहाँ आया। मुझे देर हो गई, इसलिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

"आपका नाम और पद क्या है?" ताइज़ोंग ने पूछा।

“जब आपका विनम्र सेवक जीवित था, तब मैं महाराज की सेवा करता था। मैं सिझोऊ का मजिस्ट्रेट था, और बाद में रीति-रिवाज मंत्रालय का उपाध्यक्ष बना। मेरा नाम कुई जुए है। अब मुझे पाताल लोक में फेंगदू में मामलों के प्रभारी न्यायाधीश के रूप में पद दिया गया है।” यह जानकर ताइज़ोंग अत्यंत प्रसन्न हुए और उनके पास जाकर अपने शाही हाथों से उन्हें सहारा देते हुए बोले, “महोदय, आपने एक लंबी और थका देने वाली यात्रा की है।”

हमारे मंत्री वेई झेंग ने आपके लिए एक पत्र दिया है; कितनी अच्छी बात है कि हमारी मुलाकात हो गई।” न्यायाधीश ने उन्हें धन्यवाद दिया और पत्र के बारे में पूछा। ताइज़ोंग ने उसे अपनी आस्तीन से निकाला और कुई जुए को सौंप दिया, जिसने झुककर उसे ग्रहण किया। जब उसने पत्र खोला तो उसमें निम्नलिखित लिखा था:

महामहिम, मेट्रोपॉलिटन जज और आदरणीय बड़े भाई कुई, हमारी पुरानी मित्रता को याद करते हुए; मैं आज भी आपको ऐसे देखता और सुनता हूँ जैसे आप जीवित हों; परन्तु आपके पवित्र उपदेश प्राप्त किए हुए अनेक वर्ष बीत चुके हैं। पर्वों पर मैं आपके लिए कुछ शाकाहारी व्यंजन अर्पित करता हूँ, परन्तु यह जान पाना मेरे लिए संभव नहीं

कि आप उन्हें ग्रहण करते हैं या नहीं। सौभाग्य से आपने मुझे त्यागा नहीं है और आप मेरे स्वप्नों में प्रकट हुए हैं, इसलिए अब मैं जानता हूँ कि मेरे महान बड़े भाई का स्वर्गवास हो चुका है। परन्तु, अफ़सोस, अंधकार और प्रकाश के संसारों के बीच एक बहुत बड़ी खाई है, और हम एक दूसरे से मिल नहीं सकते क्योंकि हम दोनों ब्रह्मांड के अलग-अलग छोरों पर हैं।

जैसा कि हाल ही में सुसंस्कृत सम्राट ताइज़ोंग का अचानक बीमारी से निधन हो गया है, ऐसा प्रतीत होता है कि उनके मामले पर तीनों संप्रदायों में चर्चा होगी, इसलिए उनका आपसे मिलना निश्चित है, हे बड़े भाई। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप अपने जीवनकाल के दौरान बनी मित्रता को याद रखें और महामहिम को ऐसी सहायता प्रदान करें जिससे वे फिर से स्वस्थ हो सकें। यह मेरे लिए बहुत बड़ा उपकार होगा, और मैं आपको धन्यवाद देने के लिए पुनः पत्र लिखूंगा। मैं यहाँ मामले के सभी विवरणों का उल्लेख नहीं कर सकता।

आपका छोटा भाई आपके सामने सिर झुकाता है।

स्नेह के साथ,

वेई झेंग.

अध्याय 11

151

पश्चिम की यात्रा

पत्र पढ़कर न्यायाधीश बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, “मुझे पता है कि कार्मिक विभाग के अधिकारी वेई ने परसों सपने में अजगर का सिर काट दिया था, और यह खबर सुनकर मुझे बहुत प्रशंसा हुई। उन्होंने हमेशा मेरे बेटों और पोतों का ख्याल रखा है, और अब जब मुझे उनका पत्र मिल गया है, तो महाराज को चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपका विनम्र सेवक महाराज को प्रकाश में वापस लाने का दायित्व लेता है, जहाँ आप एक बार फिर सिंहासन पर आसीन होंगे।” ताइज़ोंग ने उन्हें धन्यवाद दिया।

जब वे बातें कर रहे थे, तभी काले वस्त्र पहने दो नौकर लड़के झंडे और एक कीमती चंदवा लिए हुए प्रकट हुए। उन्होंने चिल्लाकर कहा, "यमराज का निमंत्रण है!" ताइज़ोंग और न्यायाधीश कुई उनके साथ चल दिए। उनके सामने एक शहर की दीवार प्रकट हुई, और उसके द्वारों के ऊपर एक बड़ी पट्टिका लटकी हुई थी जिस पर लिखा

था, "शैतान द्वार।"
सुनहरे अक्षरों में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, "अंधकार का संसार।" दोनों लिक्टरों ने अपने झंडे लहराए और ताइज़ोंग को शहर में ले जाकर उसकी गलियों में घुमाया। सड़क के किनारे उसने अपने पिता और पूर्ववर्ती ली युआन, साथ ही अपने मृत भाइयों जैनचेंग और युआनजी को देखा, जो उसके पास आए और उसका नाम लेकर बोले, "शिमिन यहाँ है, शिमिन यहाँ है।" उन्होंने उसे पकड़ लिया और पीटते हुए अपनी जान वापस माँगी; और चूंकि ताइज़ोंग उनसे बच नहीं सका, इसलिए उन्होंने उसे तब तक पकड़े रखा जब तक कि न्यायाधीश कुई ने भयानक दाँतों वाले नीले चेहरे वाले एक शैतान को उन्हें भगाने का आदेश नहीं दिया। तभी ताइज़ोंग उनके चंगुल से बच निकला। लगभग एक मील आगे जाने पर उसने अपने सामने एक हरे रंग की टाइलों से बनी मीनार को भव्य रूप से उठते देखा।
इसके चारों ओर धुंध के असंख्य रंग के आवरण तैर रहे थे,
लाल धुंध के हजारों हल्के-हल्के बादल मंद रूप से दिखाई देने लगे।
उड़ते हुए छज्जों के सिरों पर राक्षस थे।
पांचों छतों की एक जैसी टाइलें चमक रही थीं।
दरवाजों में सोने के कीलों की कतारें ठोंकी गई थीं।
प्रत्येक दहलीज पर सबसे सफेद जेड पत्थर का एक टुकड़ा रखा गया था।
जब खिड़कियों पर प्रकाश पड़ता था तो वे भोर की तरह चमक उठती थीं;
जाली और पर्दों से लाल बिजली चमक उठी।
टावर नीले आकाश में ऊँचाई तक पहुँच गया।
जबकि बरामदे भव्य आंगनों की ओर ले जाते थे।
पशुओं के आकार के अंगीठियों से निकलने वाली अगरबत्ती की सुगंध शाही वस्त्रों में घुल रही थी; बैंगनी रंग के जालीदार लालटेनों से निकलने वाली रोशनी महल के पंखों पर पड़ रही थी।
बाईं ओर भयंकर बैल के सिर वाले राक्षसों की एक पंक्ति है;
दाईं ओर भयानक घोड़े के चेहरे वाले शैतान थे।
मृतकों की आत्माओं को ले जाने वालों के पास सोने की पट्टियाँ थीं; अध्याय 11

आत्माओं को बुलाने वाले लोग सफेद बोरी के वस्त्र पहनते थे।
इस स्थान को पाताल लोक की सभा कहा जाता था।
नरक के राजा यम का महल।
जब ताइज़ोंग बाहर से इसे देख रहे थे, तो अधिकारियों की कमरबंदों से लटकते जेड आभूषणों की झंकार सुनाई दे रही थी और दुर्लभ सुगंधों की महक आ रही थी। आगे लालटेन लिए दो परिचारक चल रहे थे, और उनके पीछे पाताल लोक के दस पीढ़ियों के राजा सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे। ये दस राजा थे: किंगुआंग के राजा, चुजियांग के राजा, सोंगदी के राजा, वुगुआन के राजा, यम के राजा, निष्पक्ष राजा, ताई पर्वत के राजा, महानगर के राजा, बियानचेंग के राजा और सदा घूमने वाले चक्र के राजा। वे सेनलुओ महल से बाहर आए और ताइज़ोंग को प्रणाम किया। ताइज़ोंग ने अपने विनम्र स्वभाव के कारण आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं की।
"महामहिम प्रकाश के संसार में सम्राट हैं, लेकिन हम तो केवल अंधकार के संसार में राजा हैं। इसलिए यह करना बिल्कुल उचित है, तो फिर इस अत्यधिक विनम्रता की क्या आवश्यकता है?"
“हमने महाराज का अपमान किया है,” ताइज़ोंग ने उत्तर दिया, “तो हम प्रकाश और अंधकार, या मनुष्य और भूतों के संदर्भ में बात करने का साहस कैसे कर सकते हैं?”
बहुत विनम्रता दिखाने के बाद ताइज़ोंग सेनलुओ महल में चले गए, और एक-दूसरे को प्रणाम करने के बाद वे मेज़बान और अतिथि की तरह बैठ गए।
कुछ क्षण बाद किंगुआंग के राजा ने अपने हाथ जोड़कर कहा, "जिंग नदी के प्रेत ड्रैगन ने महाराज के खिलाफ मुकदमा क्यों दायर किया है, यह कहते हुए कि उसे बचाने के आपके वादे के बावजूद उसे मार डाला गया?"
“मैंने सपना देखा कि एक बूढ़ा अजगर मुझसे उसे बचाने की गुहार लगाने आया,” ताइज़ोंग ने उत्तर दिया, “और मैंने वास्तव में उससे वादा किया कि उसे कोई नुकसान नहीं होगा; लेकिन जैसा कि पता चला, उसका अपराध इतना गंभीर था कि कार्मिक विभाग के मंत्री वेई झेंग द्वारा उसका सिर कलम किया जाना था। हमने वेई झेंग को महल में शतरंज खेलने के लिए बुलाया, और मुझे सपने में ही पता चल गया कि उसने अजगर का सिर कलम कर दिया है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह अधिकारी चमत्कारिक रूप से आ-जा सकता है, और इसलिए भी क्योंकि अजगर राजा ने ऐसा अपराध किया था जिसके लिए वह मृत्युदंड का पात्र था। उसकी मृत्यु के लिए हम

किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं थे।"

जब दस राजाओं ने उसका कथन सुना, तो उन्होंने झुककर उत्तर दिया, "उस अजगर के जन्म से पहले ही दक्षिणी ध्रुव तारे के अभिलेखों में लिखा था कि उसकी मृत्यु एक कार्मिक मंत्री के हाथों होनी तय है, जैसा कि हम बहुत पहले से जानते हैं। लेकिन क्योंकि वह इस मामले पर बहस कर रहा था, इसलिए हमें महाराज को बुलाना पड़ा। जब तीनों पक्षों के बीच इस मामले पर बहस हो जाएगी, तो हम उसे पुनर्जन्म के लिए प्रार्थना-चक्र में भेज देंगे। हमें आशा है कि महाराज हमें आपको उपस्थित होने के लिए विवश करने के लिए क्षमा करेंगे।" फिर उन्होंने जन्म और मृत्यु अभिलेखों के प्रभारी न्यायाधीश को आदेश दिया कि वे तुरंत उन्हें बुलाएँ ताकि पता चल सके कि महाराज कितने समय तक जीवित रहेंगे। न्यायाधीश कुई जल्दी से अपने कार्यालय गए और पृथ्वी के सभी देशों के राजाओं को स्वर्ग द्वारा दी गई शासनकाल की अवधि का सामान्य रजिस्टर निकाला। जब वे उसे देख रहे थे, तो उन्होंने भयभीत होकर देखा कि दक्षिणी जांबू महाद्वीप के महान तांग वंश के सम्राट ताइज़ोंग का निधन उनके शासनकाल के 13वें वर्ष में होना तय था। उसने जल्दी से स्याही में भीगा हुआ एक बड़ा ब्रश उठाया, 13 को 33 में बदल दिया, फिर उसने रजिस्टर ऊपर दे दिया। दस राजाओं ने शुरू से पढ़ना शुरू किया और तब तक पढ़ते रहे जब तक उन्हें यह नहीं पता चला कि ताइज़ोंग का शासनकाल तैंतीस वर्षों का था।

"महाराज, आप कब से सिंहासन पर हैं?" नरक के स्तब्ध राजाओं ने पूछा।

"मेरे सिंहासन पर बैठने के तेरह साल हो चुके हैं," ताइज़ोंग ने उत्तर दिया।

अध्याय 11

153

पश्चिम की यात्रा

"महाराज, चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है," राजा यम ने कहा। "आपके सामने बीस वर्ष का जीवन है। अब जब आपने इन आरोपों का संतोषजनक उत्तर दे दिया है, तो कृपया प्रकाश लोक में लौट आइए।"

यह सुनकर ताइज़ोंग ने झुककर दस राजाओं को धन्यवाद दिया, जिन्होंने न्यायाधीश कुई और सेनापति झू को ताइज़ोंग की आत्मा लौटाने का आदेश दिया। सेनलुओ महल से निकलते समय ताइज़ोंग ने हाथ उठाकर दस राजाओं को अभिवादन किया और अपने महल में अपने परिवार के सभी सदस्यों के भविष्य के बारे में पूछा।

“अच्छा,” उन्होंने उत्तर दिया, “सिवाय इसके कि महाराज की छोटी बहन के जीवित रहने की संभावना कम ही लगती है।” ताइज़ोंग ने धन्यवाद व्यक्त करने के लिए एक बार फिर सिर झुकाया।

"जब हम वापस दिन के उजाले में लौटेंगे तो हमारे पास कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए फल और खरबूजे के अलावा कुछ भी नहीं होगा।"

"हमारे पास यहाँ लौकी, पूर्वी खरबूजे और पश्चिमी खरबूजे, या तरबूज तो हैं, लेकिन कद्दू नहीं हैं, दक्षिणी खरबूजे नहीं हैं," दस राजाओं ने कहा।

"जब हम जीवितों की दुनिया में लौटेंगे तो हम कुछ लोगों को भेजेंगे," ताइज़ोंग ने उत्तर दिया, और इतना कहकर उन्होंने एक दूसरे के सामने अपने जुड़े हुए हाथ उठाए, प्रणाम किया और विदा हो गए।

हाथ में मार्गदर्शक ध्वज लिए मार्शल आगे-आगे चल रहा था, और न्यायाधीश कुई ताइज़ोंग के साथ अंधकार के कार्यालय से बाहर निकल रहे थे। ताइज़ोंग ने ऊपर देखा और पाया कि वे जिस रास्ते से आए थे, उस रास्ते से वापस नहीं जा रहे थे।

“क्या हमने गलत रास्ता चुन लिया है?” उसने न्यायाधीश से पूछा, जिस पर न्यायाधीश ने उत्तर दिया, “नहीं। पाताल लोक में आप केवल जा सकते हैं; आप कभी वापस नहीं आ सकते। हम अब महाराज को घूमते हुए प्रार्थना-चक्र से बाहर ले जा रहे हैं; इस प्रकार आप जीवन में वापस जाते समय पाताल लोक का भ्रमण कर सकेंगे।” ताइज़ोंग के पास उनके पीछे चलने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि वे रास्ता दिखा रहे थे।

एक-दो मील चलने के बाद उसने एक ऊंचे पहाड़ को देखा जो नीचे तक काले बादलों से ढका हुआ था, जबकि काले कोहरे ने आकाश को ढक रखा था।

"श्री कुई, वह सामने कौन सा पहाड़ है?" उसने पूछा; और न्यायाधीश ने उत्तर दिया, "वह पाताल लोक का अंधकारमय पर्वत है।"

"हम इसे कैसे पार करेंगे?" ताइज़ोंग ने डरते हुए पूछा।

"महाराज, चिंता न करें; आपकी प्रजा आगे-आगे चलेगी," न्यायाधीश ने उत्तर दिया। ताइज़ोंग कांपते-कांपते उनके पीछे-पीछे चला, और जब वे पहाड़ पर चढ़ गए तो उसने चारों ओर देखा। उसने देखा कि वह जैग्ड था।

तीव्र,

सिचुआन पर्वतमाला जितनी ऊँची,

भव्य और हरा-भरा।
यह प्रकाश की दुनिया की कोई प्रसिद्ध चोटी नहीं है।
लेकिन पाताल लोक की एक चट्टान।
अध्याय 11
154
पश्चिम की यात्रा
कंटीले झाड़ियों में छिपे हुए राक्षस,
चट्टानों के पीछे दुष्ट राक्षस छिपे हुए हैं।
आपके कानों को जानवरों या पक्षियों की कोई आवाज सुनाई नहीं देती।
आंखें केवल दुष्ट प्राणियों को ही देख सकती हैं।
एक काली हवा गरज रही है,
जैसे-जैसे काला कोहरा फैलता है।
वह काली हवा जो गरजती है
क्या जादुई सैनिकों के मुंह से निकलने वाला धुआं है?
फैलता हुआ काला कोहरा
क्या यह भाप छिपे हुए ट्रोल्स द्वारा उगली जाती है?
जिधर भी देखो, स्थिति भयावह ही प्रतीत होती है;
आपके बाएं या दाएं चारों ओर केवल बेलगाम बुराई ही दिखाई देती है।
बेशक, यहाँ पहाड़ियाँ हैं।
चोटियाँ,
रेंज,
गुफाएँ,
और नालियाँ।
लेकिन पहाड़ियों पर घास नहीं उगती।
इन चोटियों के स्पर्श के लिए कोई आकाश नहीं है।
कोई भी यात्री इन पर्वत श्रृंखलाओं को पार नहीं करता।
इन गुफाओं में बादल नहीं हैं।
नालों में पानी नहीं बहता।
चट्टानों के सामने केवल जिन्न ही हैं।

नीचे दी गई श्रेणियों के नीचे ट्रोल मौजूद हैं।
खूंखार भूत गुफाओं में शरण लेते हैं।
बुरी आत्माएं नालों में छिपी रहती हैं।
अध्याय 11
155
पश्चिम की यात्रा
पहाड़ के चारों ओर
बैल के सिर और घोड़े के चेहरे वाले राक्षस चीखते और दहाड़ते हैं;
आधा छिपा हुआ,
भूखे प्रेत और हताश आत्माएं एक-दूसरे से सिसकते हुए बातें करती हैं।
वह न्यायाधीश जो लोगों की जान लेता है
पत्र पहुंचाने का बेसब्री से इंतजार है;
आत्माओं का पीछा करने वाला मार्शल,
वह अपने दस्तावेजों के साथ तेजी से आगे बढ़ते हुए चीखता-चिल्लाता और दहाड़ता है।
तेज कदमों वाले
बवंडर की तरह घूमते हुए आगे बढ़ना;
आत्माओं को पकड़ने वाले
बादलों की तरह घने खड़े रहो।
न्यायाधीश की सुरक्षा के बदौलत ही ताइज़ोंग ने डार्क माउंटेन को पार किया।
जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, वे कई आंगनों के पास से गुजरे, और उनमें से प्रत्येक से भयावह आवाजें उनके कानों में पड़ीं, जबकि वहां के दुष्ट प्रेतों ने उनके दिल में दहशत पैदा कर दी।
"यह कौन सी जगह है?" ताइज़ोंग ने पूछा।
न्यायाधीश ने उत्तर दिया, "अंधेरे पर्वत के पीछे नरक की अठारह परतें हैं।"
"ये अठारह परतें क्या हैं?" ताइज़ोंग ने पूछा।
"सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ," न्यायाधीश ने उत्तर दिया।
"नसों से लटकाए जाने वाला नरक, अन्याय का नरक और आग के गड्ढे का नरक।"
अकेलापन और निराशा,

दुख और पीड़ा।
यहां उपस्थित सभी लोगों ने हजार निम्नतर पाप किए थे।
और मृत्यु के बाद उन्हें दंड के रूप में यहाँ भेजा गया था।
अध्याय 11
156
पश्चिम की यात्रा
फेंगडू नरक, जीभ निकालने वाला नरक, खाल उतारने वाला नरक: चीखना-चिल्लाना, अत्यंत पीड़ा।
उन्होंने निष्ठावान या माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी न होकर स्वर्ग के विरुद्ध अपराध किया;
उनके मुख बुद्ध के समान हैं लेकिन हृदय सर्प के समान हैं, इसलिए वे यहाँ गिर पड़े।
पीसने की नरकट, पीटने की नरकट, टुकड़े-टुकड़े करने की नरकट।
त्वचा और मांस फटकर टुकड़े-टुकड़े हो गए।
होंठ तब तक घिसे जब तक दांत दिखाई न देने लगे।
अपने हृदय की अंधता में उन्होंने बुरे काम किए;
अपनी मीठी बातों के बावजूद, वे चुपके से दूसरों को नुकसान पहुंचाते थे।
बर्फीली नरक, त्वचा उतारने वाली नरक, आंतें चीर देने वाली नरक।
गंदे चेहरे और उलझे हुए बाल,
माथे पर शिकन और उदास आंखें।
उन सभी ने मूर्खों को धोखा देने के लिए झूठे उपायों का इस्तेमाल किया।
इस प्रकार वे अपने लिए विपत्तियों का अंबार लगा लेते हैं।
तेल के कड़ाहे का नरक, अंधकार का नरक, चाकुओं के पहाड़ का नरक।
कंपकंपी और थरथराहट के साथ,
असहनीय पीड़ा में;
क्योंकि उन्होंने अच्छे लोगों के खिलाफ हिंसा का इस्तेमाल किया
वे पीड़ा में दुबक जाते हैं और अपने कंधे झुका लेते हैं।
रक्त के कुंड का नरक, अविची का नरक, स्टीलयार्ड बीम का नरक, जहाँ चमड़ी हड्डियों से अलग हो जाती है।
हाथ टूट गए हैं और नसें कट गई हैं।

क्योंकि उन्होंने लाभ के लिए हत्या की थी।
जीवित प्राणियों का वध करना,
वे ऐसी यातनाओं में पड़ गए जो हज़ार वर्षों तक भी समाप्त नहीं होंगी; अध्याय 11
157
पश्चिम की यात्रा
वे हमेशा यहीं पड़े रहेंगे, कभी भाग नहीं पाएंगे।
उनमें से प्रत्येक कसकर बंधा हुआ है।
गांठदार और रस्सी से बंधा हुआ।
लाल चेहरे वाले राक्षस,
और काले चेहरे वाले राक्षस,
उन्हें उनके लंबे भाले और छोटी तलवारों के साथ भेजा जाता है।
बैल के सिर वाले राक्षस।
और घोड़े के चेहरे वाले राक्षस,
लोहे के डंडों और पीतल के हथौड़ों से,
उन्हें तब तक पीटें जब तक उनके दर्द से कराहते चेहरे खून से लथपथ न हो जाएं।
वे स्वर्ग और पृथ्वी से प्रार्थना करते हैं, लेकिन उन्हें कोई उत्तर नहीं मिलता।
किसी भी जीवित व्यक्ति को किसी प्रकार का भ्रम नहीं होना चाहिए:
शैतान अपने आदेशों का पालन करते हैं और किसी को रिहा नहीं करते।
अच्छाई और बुराई दोनों को हमेशा पुरस्कृत किया जाएगा:
यह तो बस समय की बात है।
आगे बढ़ने से पहले ही, झंडे लिए शैतान सैनिकों का एक समूह सड़क के किनारे घुटने टेककर बैठ गया और बोला, "पुलों के आयुक्त आपका स्वागत करते हैं।" न्यायाधीश ने उन्हें उठने का आदेश दिया और ताइज़ोंग को एक सुनहरे पुल के पार ले गए। ताइज़ोंग ने देखा कि उसके बगल में एक चांदी का पुल था, जिस पर कुछ वफादार, आज्ञाकारी, नेक, न्यायप्रिय और ईमानदार लोग झंडे लिए हुए गुजर रहे थे। दूसरी ओर एक तीसरा पुल था, जिस पर बर्फीली हवा ज़ोर से बह रही थी और नीचे लगातार चीख-पुकार और विलाप के बीच खून की लहरें उबल रही थीं।
“उस पुल का नाम क्या है?” ताइज़ोंग ने पूछा, और न्यायाधीश ने उत्तर दिया, “महाराज, उसका नाम दंड का पुल है, और जब आप जीवितों की दुनिया में लौटेंगे तो

आपको लोगों को इसके बारे में बताना होगा। पुल के नीचे हैं...”
एक संकरा, खड़ी ढलान वाला रास्ता
एक विशाल, प्रचंड नदी के ऊपर।
यह यांग्त्से नदी के ऊपर बिछी कपड़े की पट्टी की तरह है।
अध्याय 11
158
पश्चिम की यात्रा
या फिर स्वर्ग की ओर उठती हुई एक धधकती हुई खाई।
बर्फीली भाप से हड्डियां तक जम जाती हैं;
दुर्गंध से नाक में घिन आती है।
आपको ले जाने के लिए कोई नाव नहीं है
तेज़ लहरों के पार।
जो भी प्रकट होते हैं, वे पापी प्रेत हैं।
नंगे पैर और उलझे हुए बालों के साथ।
यह पुल कई मील लंबा है।
और केवल तीन उंगल चौड़ी;
यह सौ फीट की ऊंचाई से गिरता है।
पानी असीम रूप से गहरा है।
ऊपर सहारे के लिए कोई रेलिंग नहीं है।
ट्रोल नीचे से अपने शिकार को पकड़ लेते हैं।
कैंग्यूज़ और बॉन्ड्स में
उन्हें दंड की नदी द्वारा खतरनाक मार्ग पर धकेल दिया जाता है।
पुल के पास खड़े दिव्य सेनापतियों की क्रूरता को देखो;
देखो कैसे दुष्टों की आत्माएं नदी में कष्ट भोगती हैं।
शाखाओं वाले पेड़ों पर
नीले, लाल, पीले और बैंगनी रंग के रेशमी कपड़े टांगें;
खाई के सामने
नीच और निर्लज्ज महिलाएं जो अपने सास-ससुर को गालियां देती थीं।
तांबे के सांप और लोहे के कुत्ते उन्हें अपनी इच्छानुसार खा जाते हैं।

वे लगातार नदी में गिरते रहते हैं, और कभी बाहर नहीं निकल पाते।
एक कविता है जो इस प्रकार है:
अध्याय 11
159
पश्चिम की यात्रा
जैसे भूत विलाप करते हैं और आत्माएं चीखती हैं
रक्त की लहरें बहुत ऊंची उठती हैं।
बैल और घोड़ों के सिर वाले अनगिनत पिशाच
पुल की पूरी सख्ती से रक्षा करो।
जब वह बोल रहा था, तब तक पुलों के आयुक्त जा चुके थे। ताइज़ोंग का हृदय एक बार फिर भय से भर गया, और उसने अपना सिर हिलाया और अपनी पीड़ा में चुपचाप आह भरी, फिर न्यायाधीश और मार्शल के पीछे चल दिया। कुछ ही देर में उन्होंने दंड की भयानक नदी पार की और रक्त के कटोरे के आतंक से गुज़रे।
फिर वे अन्यायपूर्वक मारे गए लोगों के शहर में पहुँचे। शोरगुल के बीच, "ली शिमिन यहाँ है, ली शिमिन यहाँ है" की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जिससे ताइज़ोंग भयभीत हो गया। उसने देखा कि उसका रास्ता कटे-फटे और सिर कटे प्रेतों की भीड़ ने रोक रखा था।
वे सब चिल्ला रहे थे, "हमें हमारी जान वापस दो, हमें हमारी जान वापस दो।" घबराया हुआ ताइज़ोंग छिपने की कोशिश कर रहा था और चिल्ला रहा था, "मदद करो, जज कुई, मदद करो, मदद करो।"
"महाराज," न्यायाधीश ने उत्तर दिया, "ये चौंसठ विद्रोही समूहों और बहत्तर डाकू टुकड़ियों के राजाओं और सरदारों की आत्माएं हैं। इन सभी को अन्यायपूर्वक मार डाला गया था, और किसी ने भी इन्हें आश्रय नहीं दिया और न ही इनकी देखभाल की। इनके पास यात्रा के लिए धन नहीं है, इसलिए ये पुनर्जन्म नहीं ले सकते और उपेक्षित, ठंडे और भूखे भूत हैं। यदि महाराज इन्हें कुछ धन दे सकें, तो मैं आपकी जान बचा सकता हूँ।"
"मैं यहाँ खाली हाथ आया हूँ," ताइज़ोंग ने जवाब दिया, "तो मुझे पैसे कहाँ से मिल सकते हैं?"
"महामहिम," न्यायाधीश ने उत्तर दिया, "प्रकाश के लोक में एक व्यक्ति है जिसने

पाताल लोक में कुछ धनराशि जमा की है। यदि महाराज एक वचन पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार हैं, तो मैं उस पर मुहर लगा दूंगा, और हम उसकी धनराशि उधार लेकर इन भूखे प्रेतों में बाँट सकते हैं; तब हम अपनी यात्रा जारी रख सकेंगे।"

"यह आदमी कौन है?" ताइज़ोंग ने पूछा।

“वह हेनान के कैफ़ेंग का रहने वाला है,” न्यायाधीश ने उत्तर दिया, “उसका नाम शियांग लियांग है। उसके पास यहाँ सोने-चांदी के तेरह भंडार हैं, और यदि महाराज इन्हें उधार लें, तो आपको प्रकाश लोक में लौटने पर इन्हें चुकाना होगा।” ताइज़ोंग बहुत प्रसन्न हुआ और एक भंडार उधार लेने के लिए उत्सुक हो गया। उसने एक वचन पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

उसने तुरंत उसे जज को दे दिया, फिर एक सामान उधार लिया, जिसे उसने मार्शल को बांटने के लिए दे दिया।

“तुम्हें यह सोना और चांदी बाँटना है और अपने महान तांग स्वामी को जाने देना है,” न्यायाधीश ने कहा। “चूँकि उनके जीवन का यह प्रारंभिक चरण है, मुझे दस राजाओं से आदेश मिला है कि मैं उनकी आत्मा को लौटा दूँ और उनसे कहूँ कि जब वे प्रकाश के लोक में लौटें तो एक भव्य प्रार्थना सभा आयोजित करें ताकि तुम सब पुनर्जन्म ले सको, इसलिए अब और कोई उपद्रव मत करो।”

जब भूतों ने उसकी बातें सुनीं और उन्हें सोना-चांदी दे दी गई, तो वे सब आज्ञाकारी सहमति जताते हुए धीरे-धीरे पीछे हट गए। तब न्यायाधीश ने मार्शल को अपना आत्मा-मार्गदर्शक ध्वज लहराने का आदेश दिया, और ताइज़ोंग को अन्यायपूर्वक मारे गए लोगों के शहर से बाहर ले जाया गया और वह राजमार्ग पर तैरते हुए दिन के उजाले की ओर चला गया।

बहुत समय तक यात्रा करने के बाद वे अस्तित्व के छह पथों के चक्र तक पहुँचे। कुछ लोग गुलाबी धुंध के आवरण ओढ़े बादलों में उड़ रहे थे। दूसरों को सुनहरे चिन्हों से सुसज्जित पद दिए जा रहे थे, जिन्हें वे अपनी कमर पर लटकाते थे। भिक्षु और भिक्षुणियाँ, पादरी और आम लोग, मैदान के जानवर और आकाश के पक्षी, भूत और राक्षस—सभी चक्र के नीचे से गुजर रहे थे और प्रत्येक अपने निर्धारित मार्ग पर चल रहा था।

"यह सब क्या है?" तांग सम्राट ने पूछा।

अध्याय 11

“महाराज, आप गहरी समझ वाले व्यक्ति हैं,” न्यायाधीश ने उत्तर दिया। “आपको यह सब अवश्य याद रखना चाहिए और जीवित लोगों को इसके बारे में बताना चाहिए। इसे छह पथों का चक्र कहते हैं। अच्छे कर्म करने वाले अमरत्व के पथ पर उठते हैं; वफादार रहने वाले सम्मान के पथ पर पुनर्जन्म लेते हैं; माता-पिता के प्रति कर्तव्य निभाने वाले सुख के पथ पर अगला जीवन व्यतीत करते हैं; न्यायप्रिय रहने वाले मनुष्य के पथ पर लौटते हैं; पुण्य कमाने वाले धन के पथ पर पुनर्जन्म लेते हैं; और दुष्ट लोग शैतान के पथ पर गिर जाते हैं।” यह सुनकर तांग सम्राट ने सिर हिलाया और आह भरते हुए कहा:
"उत्कृष्ट, सचमुच उत्कृष्ट।"
गुणी लोगों को कोई हानि नहीं होती।
नेक हृदय वाला व्यक्ति हमेशा सचेत रहता है।
अच्छाई का मार्ग हमेशा खुला रहता है।
"बुरे विचारों को उत्पन्न न होने दें;"
इस प्रकार आप सभी परेशानियों से बच जाएंगे।
यह मत कहो कि प्रतिशोध नहीं होगा;
आप देवता बनेंगे या भूत, यह सब भाग्य पर निर्भर करता है।
न्यायाधीश ताइज़ोंग को सीधे सम्मान के मार्ग पर स्थित पुनर्जन्म द्वार तक ले गए, उन्हें प्रणाम किया और कहा, "महाराज, यही बाहर निकलने का रास्ता है, जहाँ से मुझे विदा लेनी होगी और वापस जाना होगा। मार्शल झू आपकी यात्रा के अगले चरण के लिए आपका साथ देंगे।"
"महाराज, मैंने आपको बहुत दूर तक आने में मदद की है," तांग सम्राट ने धन्यवाद देते हुए कहा।
“महाराज, जब आप जीवितों की दुनिया में लौटेंगे, तो आपको उन बेसहारा आत्माओं के पुनर्जन्म के लिए एक भव्य प्रार्थना सभा अवश्य आयोजित करनी होगी,” न्यायाधीश ने उत्तर दिया। “किसी भी कीमत पर यह मत भूलिएगा कि पृथ्वी पर शांति तभी संभव है जब पाताल लोक में प्रतिशोध लेने वाली आत्माएं न हों। हर एक गलत काम को सुधारना होगा। सभी लोगों को अच्छाई सिखाइए, तभी आप अपने वंश की

निरंतरता और अपने साम्राज्य की शाश्वत सुरक्षा सुनिश्चित कर पाएंगे।”
तांग सम्राट ने उनके सभी प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया और उनसे विदा लेकर मार्शल झू के साथ द्वार से बाहर चले गए। द्वार के भीतर एक उत्तम घोड़ा तैयार खड़ा और काठीबंद देखकर मार्शल ने ताइज़ोंग को अपने सहायकों की सहायता से उस पर सवार होने के लिए कहा। घोड़ा तीर की तरह तेज था और जल्द ही वह वेई नदी के किनारे पहुँच गया, जहाँ पानी में सुनहरी कार्प मछलियों का एक जोड़ा खेलता हुआ दिखाई दे रहा था। ताइज़ोंग इस दृश्य को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए, उन्होंने अपने घोड़े की लगाम खींची और उन्हें निहारने लगे।
“महाराज,” सेनापति ने कहा, “चलते रहिए। हमें शहर में जल्दी प्रवेश करना है।” लेकिन तांग सम्राट तो बस देखना चाहते थे। जब उन्होंने हिलना बंद कर दिया, तो सेनापति ने उनके पैर पकड़कर चिल्लाते हुए कहा, “चलिए। किस बात का इंतज़ार कर रहे हो?” और उन्हें घोड़े से धक्का देकर वेई नदी में गिरा दिया। ताइज़ोंग अब पाताल लोक से मुक्त होकर जीवितों की दुनिया में लौट आए थे।
अध्याय 11
161
पश्चिम की यात्रा
तांग दरबार के नागरिक और सैन्य अधिकारी, जू माओगोंग, किन शुबाओ, युची जिंगडे, दुआन झिक्सियन, मा सानबाओ, चेंग याओजिन, गाओ शिलियन, ली शिजी, फांग जुआनलिंग, डू रुहुई, शियाओ यू, फू यी, झांग दाओयुआन, झांग शिहेंग, वांग गुई और अन्य, साथ ही महारानियाँ, शाही पत्नियाँ और रखैलें, और सेवक सभी श्वेत बाघ हॉल में उपस्थित थे। वे इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि क्या विश्व को सूचित करने के लिए शोक का फरमान जारी किया जाए ताकि उत्तराधिकारी को सिंहासन पर बिठाया जा सके।
वेई झेंग कह रहे थे, "महोदय, यह चर्चा बंद कीजिए। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। अगर देश में दहशत फैल गई तो कुछ भी हो सकता है। अगर हम एक दिन और इंतज़ार करेंगे तो हमारे स्वामी का फिर से जीवित हो जाना तय है।" तभी निचले स्तर से आगे बढ़कर जू जिंगज़ोंग ने विरोध करते हुए कहा, "मंत्री वेई बकवास कर रहे हैं। पुरानी कहावत है, 'बिखरा पानी फिर से नहीं उठता और मरा हुआ फिर से जीवित नहीं हो सकता।' इन निराधार दावों से भ्रम फैलाने का आपको क्या अधिकार है?"

"श्रीमान जू," वेई झेंग ने उत्तर दिया, "मैं सच कह सकता हूँ कि मुझे बचपन से ही जादू-टोने की शिक्षा दी गई है और मेरी भविष्यवाणियाँ अत्यंत सटीक होती हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने महाराज को मृत्यु से बचाया है।"
जब वे बहस कर रहे थे, तभी ताबूत से "तुम मुझे डुबो रहे हो, तुम मुझे डुबो रहे हो" की तेज़ आवाज़ें सुनाई दीं। नागरिक अधिकारी और सेनापति दहशत से कांप उठे; महारानियाँ और उनकी रानियाँ थरथरा उठीं। उनमें से हर एक के मन में डर बैठ गया था।
शरद ऋतु के बाद शहतूत के पत्ते की तरह पीला पड़ा चेहरा,
कमर इतनी कमजोर जैसे वसंत ऋतु से पहले विलो का पौधा होता है।
उत्तराधिकारी के घुटने कांपने लगे।
वह पूर्ण शोक में डूबा खड़ा था, अपने डंडे को थामने में असमर्थ था;
सेवकों की आत्माएं उड़ गईं:
अगर वे शोक की टोपी और कपड़े पहनें तो कैसा रहेगा?
रानियां और रखैलें बेहोश हो गईं।
महल की सुंदरियों को लेटना पड़ा।
जब रानियाँ और रखैलें बेहोश हो गईं,
यह ऐसा था मानो तेज हवा मुरझाए हुए कमलों को गिरा रही हो।
जब महल की सुंदरियाँ लेट गईं
यह ऐसा था मानो तेज बारिश से नन्हे कमलों को कुचल दिया गया हो।
सभी मंत्री भयभीत थे।
और उनके अंग सुन्न हो गए;
वे कांप रहे थे और थरथरा रहे थे।

स्तब्ध और मूर्ख हो गया।
व्हाइट टाइगर हॉल एक ढहते हुए पुल की तरह था।
और ताबूत के चारों ओर फैली अफरा-तफरी
ऐसा लग रहा था जैसे कोई मंदिर गिर रहा हो।

महल की सभी महिलाएं भाग गईं, क्योंकि उनमें से किसी की भी हिम्मत शाही ताबूत के पास जाने की नहीं हुई। सौभाग्य से, नेक दिल जू माओगोंग, भरोसेमंद वेई झेंग, बहादुर किन शुबाओ और प्रखर युची जिंगडे ने आगे बढ़कर ताबूत पर हाथ रखा और चिल्लाकर कहा, "महाराज, ऐसी क्या बात है जो आपको परेशान कर रही है और जिसके कारण आप हमसे बात कर रहे हैं? हमें बताइए, हमें डराइए मत और शाही परिवार को भयभीत मत कीजिए।"

वेई झेंग ने कहा, "महामहिम हमें परेशान नहीं कर रहे हैं। वे पुनर्जीवित हो गए हैं। तुरंत औजार लाओ।"

उन्होंने ताबूत खोला और पाया कि ताइज़ोंग अंदर बैठा हुआ था और अभी भी चिल्ला रहा था, "तुम मुझे डुबो रहे हो। कोई मुझे बचाओ।" जू माओगोंग और अन्य लोगों ने उसे उठने में मदद की और कहा, "महाराज, घबराने की कोई बात नहीं है। हम सब आपकी रक्षा के लिए यहाँ हैं।" तब तांग सम्राट ने अपनी आँखें खोलीं और कहा, "हमारा बहुत बुरा समय चल रहा है: पाताल लोक के दुष्ट राक्षसों से बच निकलने के बाद, हम डूब गए थे।"

“महाराज, चिंता न करें, घबराने की कोई बात नहीं है। आप डूब कैसे सकते थे?” मंत्रियों ने कहा। “हम वेई नदी के किनारे घोड़े पर सवार होकर मछलियों को खेलते हुए देख रहे थे, तभी उस धूर्त मार्शल झू ने हमें घोड़े से धक्का देकर नदी में गिरा दिया, जहाँ हम लगभग डूब ही गए थे।”

"महाराज, आपमें अभी भी भूत का अंश बाकी है," वेई झेंग ने कहा, और उन्होंने शाही चिकित्सा अकादमी को आदेश दिया कि वे आत्मा को शांत करने और मन को तुरंत स्थिर करने के लिए औषधियाँ भेजें; उन्होंने कुछ पतला दलिया भी मंगवाया। दवा की एक-दो खुराक के बाद सम्राट सामान्य हो गए और उन्हें पूरी चेतना प्राप्त हो गई। तांग सम्राट तीन दिन और तीन रात तक मृत रहने के बाद एक बार फिर जीवितों की दुनिया पर शासन करने के लिए लौट आए थे। इसका प्रमाण एक कविता में मिलता है:

प्राचीन काल से ही सत्ता में परिवर्तन होते रहे हैं;

राजवंशों का उत्थान और पतन हमेशा से होता आया है।

प्राचीन काल के राजाओं का कौन सा कार्य इसकी तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण था?

क्या तांग सम्राट फिर से जीवित हो उठे हैं?

तब तक शाम हो चुकी थी, इसलिए मंत्रियों ने सम्राट से सोने के लिए कहा और वे सभी चले गए।

अगले दिन उन सभी ने अपने शोक वस्त्र उतार दिए और रंगीन कपड़े पहन लिए। लाल चोगे और काली टोपी पहने, और कमर पर बैंगनी रिबन से लटकी अपनी राजसी मुहरें लिए, वे दरबार के द्वार के बाहर बुलावे की प्रतीक्षा में खड़े थे। जहाँ तक ताइज़ोंग की बात है, उन्होंने मन को शांत करने और शांति पाने के लिए दवा ली और कुछ पतला दलिया पिया, जिसके बाद उनके मंत्री उन्हें उनके शयनकक्ष तक ले गए। वे पूरी रात चैन से सोए, अपनी ऊर्जा का संचय किया, और भोर होते ही उठे। देखिए, उन्होंने अपने अधिकार का आह्वान करते हुए किस प्रकार वस्त्र धारण किए थे:

उसके सिर पर एक टोपी थी जो आकाश की ओर उठी हुई थी;

उसके शरीर पर गहरे पीले रंग का चोला था।

लैंटियन जेड की बेल्ट से कमरबंद;

उनके पैरों में सफलता के जूते थे।

उनके आचरण की गरिमा

अदालत में वह बाकी सभी से श्रेष्ठ है।

उनकी अद्भुत महिमा

आज इसे पुनर्स्थापित कर दिया गया है।

कितने शांतिप्रिय और बुद्धिमान महान तांग सम्राट थे!

राजा का नाम ली था, जो मरकर फिर से जीवित हो सकता था।

तांग सम्राट सिंहासन कक्ष में दाखिल हुए, और जब नागरिक और सैन्य अधिकारियों के दोनों समूहों ने उनका अभिनंदन कर दिया, तो वे अपने-अपने पदों के अनुसार अलग-अलग समूहों में विभाजित हो गए। जब उन्होंने यह फरमान सुना, "जिनका कोई काम हो, वे अपने-अपने समूहों से आगे आकर ज्ञापन प्रस्तुत करें, और जिनका कोई काम न हो, वे पीछे हट जाएं," तो पूर्वी तरफ से जू माओगोंग, वेई झेंग, वांग गुई, डू रुहुई, फांग जुआनलिंग, युआन तियानगांग, ली चुनफेंग, जू जिंगजोंग और अन्य लोग आगे आए; और पश्चिमी तरफ से यिन काइशान, लियू होंगजी, मा सानबाओ, दुआन

झिक्सियन, चेंग याओजिन, किन शुबाओ, युची जिंगडे, ज़ू रेंगुई और अन्य लोग भी आगे आए।

वे एक साथ आगे बढ़े, सफेद जेड की सीढ़ियों के सामने झुककर प्रणाम किया और एक प्रार्थना में पूछा, "महाराज, आपको उस दिन अपने सपने से जागने में इतना समय क्यों लगा?"

इस पर ताइज़ोंग ने उत्तर दिया, "पिछले दिन हम वेई झेंग का पत्र लेकर गए और ऐसा लगा जैसे हमारी आत्मा महल से निकल रही हो। शाही रक्षक दल के घुड़सवारों ने हमें अपने साथ शिकार पर चलने को कहा, और जैसे ही हम जा रहे थे, वे सभी लोग और उनके घोड़े गायब हो गए। महाराज और हमारे मृत भाई प्रकट हुए और झगड़ालू लहजे में हम पर चिल्लाने लगे। स्थिति बहुत अजीब हो रही थी जब हमने काले रंग की टोपी और चोगा पहने एक व्यक्ति को देखा जो न्यायाधीश कुई जुए निकला। जब उसने मेरे मृत भाइयों पर चिल्लाकर उन्हें भगा दिया, तो हमने उसे वेई झेंग का पत्र दे दिया। जब वह पत्र पढ़ रहा था, तो काले वस्त्र पहने कुछ नौकर, जिनके हाथों में झंडे थे, हमें अंदर ले गए और हमें सेनलुओ महल ले गए, जहाँ नरक के दस राजा बैठे थे। उन्होंने कहा कि जिंग नदी के अजगर ने हमें जानबूझकर मारने का झूठा आरोप लगाया था, जबकि हमने उसे बचाने का वादा किया था, इसलिए हमने उन्हें वह सब कुछ बताया जो हमने आपको पहले बताया था। उन्होंने कहा कि अब तीनों पक्षों के बीच मामला सुलझ गया है, और जन्म और मृत्यु के रजिस्टर तुरंत लाने का आदेश दिया ताकि वे देख सकें कि हम कितने समय से वहाँ थे। हमें जीवित रहना था। न्यायाधीश कुई ने रजिस्टर सौंप दिया, और उन्होंने उसमें देखा कि हमें तैंतीस वर्षों तक शासन करना था, जिसका अर्थ था कि हमारे सामने अभी बीस वर्ष का जीवन शेष था। उन्होंने मार्शल झू और न्यायाधीश कुई को हमें वापस ले जाने के लिए कहा। हमने दस राजाओं से विदा ली और उन्हें धन्यवाद के प्रतीक के रूप में कुछ कद्दू और फल भेजने का वादा किया। सेनलुओ महल छोड़ने के बाद हमने पाताल लोक में देखा कि कैसे विश्वासघाती, माता-पिता का अनादर करने वाले, शिष्टाचार के नियमों का पालन न करने वाले, अनाज बर्बाद करने वाले, गुंडे, धोखेबाज, गलत तरीके से माप करने वाले, व्यभिचारी, लुटेरे, पाखंडी, छल करने वाले, व्यभिचारी, ठग और अध्याय 11

जैसे कि पीसने, जलाने, कूटने और काटने की पीड़ा सहना, और तलने, उबालने, हवा में लटकाने और खाल उतारने की यातनाएँ झेलना। उनकी संख्या हजारों में थी, इतनी अधिक कि हमारी आँखें उन्हें देख नहीं सकती थीं। फिर हम अन्यायपूर्वक मारे गए लोगों के शहर से गुज़रे, जहाँ गलत तरीके से मारे गए लोगों के अनगिनत भूत थे, और वे सभी, चौंसठ विद्रोही समूहों के सरदार और बहत्तर विद्रोही गिरोहों की आत्माएँ, हमारा रास्ता रोक रही थीं। सौभाग्य से, न्यायाधीश कुई ने हमारे गारंटर के रूप में काम किया और हमें हेनान के श्री जियांग के सोने-चांदी के भंडार में से एक दिया, जिससे हम उन्हें खरीदकर अपना रास्ता जारी रख सके।

न्यायाधीश कुई ने हमें बताया कि जब हम जीवितों की दुनिया में लौटेंगे तो हमारा यह अनिवार्य दायित्व होगा कि हम एक विशाल प्रार्थना सभा आयोजित करें ताकि उन सभी बेसहारा आत्माओं का पुनर्जन्म हो सके, और इन निर्देशों के साथ उन्होंने विदा ली। जब मैं अस्तित्व के छह पथों के चक्र के नीचे से बाहर आया तो मार्शल झू ने हमें घोड़े पर सवार होने के लिए आमंत्रित किया। यह घोड़ा मानो उड़ता हुआ वेई नदी के किनारे पहुंचा, जहां मैंने पानी में दो मछलियों को खेलते देखा। जैसे ही हम इस दृश्य का आनंद ले रहे थे, मार्शल ने हमारे पैर पकड़े और हमें पानी में धकेल दिया, और इस तरह हम जीवन में वापस आ गए।

जब मंत्रियों ने यह सुना तो उन सभी ने उन्हें बधाई दी और उन्होंने इसका एक रिकॉर्ड संकलित किया; और साम्राज्य के सभी प्रांतों और जिलों ने बधाई के ज्ञापन भेजे।

ताइज़ोंग ने साम्राज्य के सभी दोषी अपराधियों के लिए माफी का फरमान जारी किया और गंभीर आरोपों में जेल में बंद सभी लोगों के मामलों की जांच का आदेश दिया। निरीक्षकों ने सिंहासन को चार सौ से अधिक अपराधियों के नाम सौंपे, जिन्हें दंड मंत्रालय द्वारा सिर कलम करने या गला घोंटने की सजा सुनाई गई थी। ताइज़ोंग ने उनकी फांसी पर रोक लगा दी और उन्हें अपने परिवार से मिलने और अपनी संपत्ति अपने रिश्तेदारों को देने के लिए घर जाने की अनुमति दी; अगले वर्ष उसी दिन उन्हें अधिकारियों के समक्ष अपनी सजा के क्रियान्वयन के लिए पेश होना था। अपराधियों ने उनकी दया के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और चले गए। उन्होंने अनाथों के लिए दान के संबंध में एक सूचना भी जारी की और सभी उम्र की तीन हजार महिलाओं को सेना के सदस्यों से विवाह करने के लिए महल से रिहा कर दिया। तब से महल के अंदर और बाहर सब कुछ ठीक हो गया। इसका प्रमाण एक कविता है: महान तांग सम्राट

की दया विशाल है;
लोगों को समृद्ध बनाने में वह याओ और शुन से भी आगे निकल जाता है।
चार सौ दोषी कैदियों ने अपनी जेलें छोड़ दीं।
महल से तीन हजार पीड़ित महिलाओं को रिहा कर दिया गया।
साम्राज्य के सभी अधिकारी सम्राट के दीर्घायु की घोषणा करते हैं; दरबार के मंत्री महान ड्रैगन को बधाई देते हैं।
स्वर्ग नेक हृदय के विचारों का उत्तर देता है।
इसका आशीर्वाद उसके सत्रह उत्तराधिकारियों की रक्षा करेगा।
जब उसने महिलाओं को महल से रिहा कर दिया और सजा पाए पुरुषों को जेल से छोड़ दिया, तो उसने एक सूचना जारी की जिसे पूरे साम्राज्य में फैला दिया गया। उसमें लिखा था:
"आकाश और पृथ्वी महान हैं;"
अध्याय 11
165
पश्चिम की यात्रा
सूर्य और चंद्रमा स्पष्ट रूप से चमक रहे हैं।
यद्यपि ब्रह्मांड विशाल है,
धरती और आकाश में बुरी साजिशों के लिए कोई जगह नहीं है।
यदि आप लोगों को धोखा देने के लिए अपनी बुद्धि और कौशल का उपयोग करते हैं,
तुम्हें इसी जीवन में इसका प्रतिफल मिलेगा;
यदि आप देने में अच्छे हैं और बदले में कम ही लेते हैं,
आपको अपने भविष्य के जीवन से पहले ही कोई न कोई पुरस्कार अवश्य मिलेगा।
एक हजार चालाक योजनाएँ
भाग्य के अनुसार जीवन जीने की तुलना इससे नहीं की जा सकती;
दस हजार प्रकार के लुटेरे
जो लोग सादगी से जीवन यापन करते हैं और अपने भाग्य को स्वीकार कर लेते हैं, उनके सामने वे टिक नहीं पाते।
यदि आप विचारों और कर्मों में अच्छे और दयालु हैं,
शास्त्रों को पढ़ने की क्या आवश्यकता है?

यदि आपका मन दूसरों के प्रति द्वेष से भरा हुआ है,
बुद्ध के संपूर्ण ग्रंथों को पढ़ना समय की बर्बादी होगी।
उसके बाद से देश के सभी लोग अच्छे कर्म करने लगे। एक और सूचना जारी की गई जिसमें एक योग्य व्यक्ति को कद्दू लेकर पाताल लोक जाने का आह्वान किया गया, और उसी समय ई के ड्यूक युची जिंगडे को हेनान के कैफ़ेंग भेजा गया ताकि वे शियांग लियांग से मिलें और उन्हें गहनों और सोने-चांदी का खजाना लौटा दें। सूचना जारी होने के कुछ दिनों बाद, जुंझोऊ से लियू क्वान नामक एक योग्य व्यक्ति कद्दू देने के लिए आगे आया। वह दस हजार मालाओं की संपत्ति वाले परिवार से था। जब उसकी पत्नी ली कुइलियन ने द्वार पर एक भिक्षु को भेंट के रूप में देने के लिए अपने बालों से एक सोने की पिन निकाली, तो लियू क्वान ने उसे व्यभिचारी पत्नी होने और महिलाओं के कमरे में न रहने का श्राप दिया। ली कुइलियन को इससे बहुत गुस्सा आया और उसने फांसी लगा ली, जिससे एक छोटा लड़का और लड़की पीछे छूट गए जो तब से दिन-रात रोते रहे। लियू क्वान इसे और सहन नहीं कर सका और केवल अपनी जान देना चाहता था और अपने परिवार और बच्चों को छोड़ जाना चाहता था। इसी कारण उसने मरने के बाद कद्दू पहुँचाने की स्वेच्छा से पेशकश की और हाथ में शाही सूचना लेकर तांग सम्राट के पास आया। सम्राट ने उसे स्वर्ण मंडप में जाने का आदेश दिया, जहाँ उसे अपने सिर पर दो कद्दू और अपनी आस्तीन में कुछ सोना रखकर विष पीना था।

अध्याय 11

पश्चिम की यात्रा

लियू क्वान ने विष पी लिया और उसकी मृत्यु हो गई। पल भर में उसकी आत्मा सिर पर कद्दू लिए शैतान द्वार पर प्रकट हुई। द्वार पर मौजूद दानव अधिकारी ने पूछा, "तुम कौन हो और यहाँ कैसे आए?"

"मैं महान तांग सम्राट ताइज़ोंग के आदेश पर नरक के दस राजाओं को कुछ कद्दू भेंट करने आया हूँ।" अधिकारी ने उन्हें अंदर आने की अनुमति देते हुए बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की और वे सीधे सेनलुओ महल चले गए। जब उन्हें नरक के राजाओं से मिलने का अवसर मिला, तो उन्होंने उन्हें कद्दू भेंट किए और कहा, "मैं तांग सम्राट के आदेश का पालन करते हुए इन कद्दूओं को इतनी दूर से लाया हूँ। सम्राट आप दोनों की ओर

से उन पर की गई महान कृपा के लिए आभार व्यक्त करना चाहते हैं।"
"तांग सम्राट का अपने वचन का पालन करना कितना शानदार है!" दस प्रसन्न राजाओं ने कद्दू स्वीकार करते हुए कहा। फिर उन्होंने उनसे उनका नाम और वे कहाँ से आए हैं, पूछा।
“मैं जुनझोऊ शहर का एक आम नागरिक हूँ,” उसने उत्तर दिया, “मेरा नाम लियू क्वान है। मेरी पत्नी सुश्री ली ने आत्महत्या कर ली और एक लड़के और एक लड़की को अकेला छोड़ दिया, जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। इसलिए मैं अपने परिवार और बच्चों को त्यागकर अपने देश के लिए प्राण बलिदान करना चाहता था, और इसलिए मैं अपने राजा की ओर से कद्दू का यह उपहार लाया हूँ, जो आपकी महान दया के लिए आपको धन्यवाद देना चाहते हैं।” यह सुनकर दस राजाओं ने लियू क्वान की पत्नी, सुश्री ली की खोज का आदेश दिया। शैतानी दूत शीघ्र ही उन्हें सेनलुओ महल ले आए, जहाँ लियू क्वान उनसे फिर मिले। उन्होंने दस राजाओं को उनकी दयालुता के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें अपने द्वारा कहे गए कठोर शब्दों के बारे में बताया। जन्म और मृत्यु के रजिस्टरों से परामर्श करने पर, राजाओं को पता चला कि वे अमर होने के लिए नियत थे, इसलिए उन्होंने दानव अधिकारियों को उन्हें तुरंत वापस ले जाने का आदेश दिया। हालाँकि, दानव अधिकारियों ने एक रिपोर्ट में पूछा, “चूँकि ली कुइलियन की मृत्यु कुछ समय पहले हो चुकी है, उनका शरीर नष्ट हो चुका है, तो उनकी आत्मा किससे जुड़ी है?”
"तांग सम्राट की बहन ली युयिंग की आज अचानक मृत्यु होने वाली है," नरक के राजाओं ने कहा, "इसलिए हम ली कुइलियन की आत्मा को वापस लाने के लिए उसके शरीर का उपयोग कर सकते हैं।" यह आदेश मिलते ही दानव अधिकारियों ने लियू क्वान और उसकी पत्नी को पाताल लोक से निकालकर पुनर्जीवित करने के लिए ले गए। यदि आप नहीं जानते कि वे कैसे पुनर्जीवित हुए, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 12
तांग सम्राट ने आस्था बनाए रखी और एक विशाल सामूहिक प्रार्थना सभा का आयोजन किया।
गुआनयिन पुनर्जन्मित सुनहरे टिड्डे के सामने प्रकट होती है
जब शैतानी अधिकारी लियू क्वान और उसकी पत्नी को लेकर पाताल लोक से

निकले, तो एक तेज़ और घूमती हुई हवा उन्हें सीधे महान राजधानी चांगआन ले गई, जहाँ लियू क्वान की आत्मा को स्वर्ण मंडप में और ली कुइलियन की आत्मा को महल के भीतरी प्रांगण में भेज दिया गया। वहाँ राजकुमारी युयिंग कुछ खिले हुए पेड़ों की छाया में काई के किनारे धीरे-धीरे टहलती हुई दिखाई दीं। अचानक शैतानी अधिकारियों ने उनके सीने पर ज़ोरदार प्रहार किया और उन्हें गिरा दिया; उन्होंने उनके शरीर से आत्मा छीन ली और उसकी जगह ली कुइलियन की आत्मा को शरीर में डाल दिया। इसके साथ ही वे पाताल लोक लौट गए।

जब महल की सेविकाओं ने उसे मरते हुए देखा, तो वे तीनों महारानियों को यह सूचना देने के लिए सिंहासन कक्ष की ओर दौड़ीं कि राजकुमारी की मृत्यु हो गई है। स्तब्ध महारानियों ने यह खबर ताइज़ोंग को दी, जिसने आह भरकर कहा, "हमें इस पर पूरा विश्वास हो गया है। जब हमने नरक के दस स्वामियों से पूछा कि क्या हमारे महल में सभी युवा और वृद्ध स्वस्थ रहेंगे, तो उन्होंने उत्तर दिया कि सभी स्वस्थ रहेंगे, सिवाय इसके कि हमारी छोटी बहन की अचानक मृत्यु होने वाली है। यह कितना सच था!"

वह और महल में मौजूद सभी लोग बड़े दुःख के साथ पेड़ों के नीचे लेटी हुई उसे देखने गए, तो उन्होंने पाया कि वह बहुत धीमी साँसें ले रही थी।

अध्याय 12

167

पश्चिम की यात्रा

तांग सम्राट ने कहा, "विलाप मत करो, विलाप मत करो; इससे वह घबरा सकती है।" फिर उन्होंने अपने हाथ से उसका सिर उठाया और कहा, "जाग जाओ, बहन, जाग जाओ।"

अचानक राजकुमारी उठ बैठी और बोली, "पतिदेव, इतनी जल्दी मत जाओ। मेरा इंतजार करो।"

"बहन, हम यहाँ तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं," सम्राट ने कहा।

राजकुमारी ने अपना सिर उठाया, आँखें खोलीं और उसकी ओर देखा। "तुम कौन हो?" उसने पूछा। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हम पर हाथ उठाने की?"

"यह आपके आदरणीय भाई हैं, राजसी बहन," ताइज़ोंग ने उत्तर दिया।

राजकुमारी ने कहा, “मेरा इन महाराज और महाराज से कोई संबंध नहीं है। मेरा मायके का नाम ली है और पूरा नाम ली कुइलियन है। मेरे पति का नाम लियू क्वान है

और हम दोनों जुनझोऊ से हैं। तीन महीने पहले जब मैंने द्वार पर एक भिक्षु को सोने की बाली दी थी, तब मेरे पति ने मुझे महिलाओं के कमरे से बाहर निकलने और एक अच्छी पत्नी की तरह व्यवहार न करने के लिए बहुत बुरा-भला कहा था। मुझे इतना गुस्सा आया और दुख हुआ कि मैंने सफेद रेशमी कमरबंद से लटककर आत्महत्या कर ली। मेरे पीछे एक लड़का और एक लड़की रह गए जो रात-दिन रोते रहे। तांग सम्राट ने मेरे पति को कुछ कद्दू लाने के लिए पाताल लोक भेजा था, इसलिए नरक के राजाओं को हम पर दया आ गई और उन्होंने हम दोनों को फिर से जीवित कर दिया। वह आगे चले गए, लेकिन मैं पीछे रह गई। जब मैंने उनका पीछा करने की कोशिश की तो मैं गिर पड़ी। आप सब मुझे इस तरह सताने के लिए बहुत बेशर्म हैं। मैं तो आप लोगों के नाम तक नहीं जानती।"

"हमें लगता है कि महारानी गिरने के बाद बेहोश हो गई हैं और उन्हें कुछ होश नहीं है," ताइज़ोंग ने महल की महिलाओं से कहा। उन्होंने चिकित्सा अकादमी को कुछ औषधियाँ मंगवाने का आदेश भेजा और युयिंग को महल में ले गए।

जब तांग सम्राट अपने सिंहासन कक्ष में वापस आए, तो उनके सहायकों में से एक दौड़ता हुआ आया और सूचना दी, "महाराज, कद्दू पहुंचाने वाला व्यक्ति, लियू क्वान, महल के द्वार के बाहर आपके बुलावे की प्रतीक्षा कर रहा है।"

चौंके हुए ताइज़ोंग ने तुरंत लियू क्वान को बुलवाया, जिसने सिंहासन की लाल सीढ़ियों के सामने प्रणाम किया।

"जब आपने कद्दू भेंट किए तो क्या हुआ?" तांग सम्राट ने पूछा।

"आपका सेवक कद्दू सिर पर रखकर सीधे शैतान द्वार पर गया। मुझे सेनलुओ महल ले जाया गया जहाँ मैंने नरक के दस राजाओं को देखा, जिन्हें मैंने कद्दू भेंट किए और बताया कि मेरे सम्राट कितने आभारी हैं। नरक के राजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने महाराज के सम्मान में सिर झुकाया और कहा, 'तांग सम्राट का अपने वचन का पालन करना कितना शानदार है!'"

"तुमने पाताल लोक में क्या देखा?" सम्राट ने पूछा।

मैं वहां ज्यादा दूर नहीं गया था, इसलिए मैंने ज्यादा कुछ नहीं देखा। लेकिन जब राजाओं ने मुझसे पूछा कि मैं कहां से आया हूं और मेरा नाम क्या है, तो मैंने उन्हें सब कुछ बताया कि कैसे मेरी पत्नी ने फांसी लगा ली थी, इसलिए मैंने अपने परिवार और बच्चों को छोड़कर कद्दू पहुंचाने का काम स्वेच्छा से किया था। उन्होंने तुरंत दानव

अधिकारियों को मेरी पत्नी को लाने का आदेश दिया, और हम सेनलुओ महल के बाहर फिर से मिल गए। इसी बीच उन्होंने जन्म और मृत्यु के रजिस्टर की जांच की और पाया कि मेरी पत्नी और मैं दोनों अमर होने वाले थे, इसलिए उन्होंने हमें वापस लाने के लिए शैतान अधिकारियों को भेजा। मैं आगे चला गया और मेरी पत्नी मेरे पीछे-पीछे आई, और हालांकि मैं सौभाग्य से फिर से जीवित हो गया, मुझे नहीं पता कि उसकी आत्मा कहां गई है।

"नरक के राजाओं ने तुम्हारी पत्नी के बारे में तुमसे क्या कहा?" आश्चर्यचकित सम्राट ने पूछा।

"उन्होंने कुछ नहीं कहा," लियू क्वान ने उत्तर दिया, "लेकिन मैंने एक दानव अधिकारी को यह कहते सुना, 'चूंकि ली कुइलियन की मृत्यु को कुछ समय हो गया है, इसलिए उसका शरीर सड़ गया है।' इस पर नरक के राजाओं ने कहा, 'तांग वंश की ली युयिंग का अध्याय 12 आने वाला है।'"

आज ही मर जाओ, ताकि हम उसके शरीर का इस्तेमाल करके ली कुइलियन की आत्मा को वापस उसमें डाल सकें।' चूंकि मुझे नहीं पता कि यह तांग का घर कहां है या वह कहां रहती है, इसलिए मैं अभी तक उसे ढूंढने नहीं जा पाया हूं।

अब बेहद प्रसन्न हुए तांग सम्राट ने अपने अधिकारियों से कहा, "जब हम नरक के राजाओं से विदा ले रहे थे, तो हमने उनसे अपने परिवार के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि मेरी बहन को छोड़कर परिवार के सभी सदस्य ठीक हैं। वह कुछ खिले हुए पेड़ों की छाया में गिर पड़ी और उसकी मृत्यु हो गई। जब हम उसे सहारा देने के लिए दौड़े, तो वह होश में आई और चिल्लाई, 'पतिदेव, इतनी जल्दी मत जाओ। मेरा इंतज़ार करो।' उस समय हमें लगा कि वह बेहोशी के बाद बड़बड़ा रही है, लेकिन जब हमने उससे और जानकारी मांगी, तो उसकी कहानी हूबहू लियू क्वान की कहानी से मेल खाती थी।"

"अगर महारानी की अचानक मृत्यु हो गई और कुछ ही समय बाद उन्हें इस तरह होश आया, तो इसका मतलब है कि लियू क्वान की पत्नी ने उनका शरीर उधार लेकर पुनर्जीवित किया होगा," वेई झेंग ने कहा। "ऐसी घटनाएं होती रहती हैं।"

राजकुमारी को बाहर आने के लिए कहा जाना चाहिए ताकि हम उनकी बात सुन सकें।

“हमने अभी-अभी शाही चिकित्सा अकादमी को कुछ दवा भेजने का आदेश दिया है, इसलिए हमें नहीं पता कि यह संभव होगा या नहीं,” तांग सम्राट ने कहा और फिर अपनी एक पत्नी को महल में भेजकर राजकुमारी को बाहर आने के लिए कहा। इस बीच, राजकुमारी महल के अंदर ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी, “मैं तुम्हारी कोई दवा नहीं लूंगी। यह मेरा घर नहीं है। मेरा घर एक साधारण टाइलों वाला मकान है, इस पीले-पीले रंग के, चमकीले दरवाजों वाले घर जैसा नहीं। मुझे बाहर निकालो, मुझे बाहर निकालो।”

जब वह चिल्ला रही थी तभी चार-पांच महिला अधिकारी और दो-तीन हिजड़े प्रकट हुए और उसे सीधे सिंहासन कक्ष में ले जाने में मदद की, जहाँ तांग सम्राट ने पूछा, "अगर तुम अपने पति को देखोगी तो क्या उसे पहचान पाओगी?"

"यह कैसी बात पूछ रही हो! हमारी शादी बचपन से हुई है, और मैंने उसे एक बेटा और एक बेटी दी है, तो ज़ाहिर है मैं उसे पहचान लूँगी।" सम्राट ने अपने सेवकों को उसे नीचे उतारने का आदेश दिया और वह सिंहासन कक्ष से नीचे उतर गई। जैसे ही उसने सफेद जेड की सीढ़ियों के सामने लियू क्वान को देखा, उसने उसे पकड़ लिया।

"पतिदेव!" वह चिल्लाई, "आप कहाँ चले गए थे? आपने मेरा इंतज़ार क्यों नहीं किया? मैं ठोकर खाकर गिर गई और ये सारे निर्लज्ज लोग मुझे घेर कर मुझ पर चिल्लाने लगे। क्या यह चौंकाने वाला नहीं था?" हालाँकि लियू क्वान को अपनी पत्नी की आवाज़ सुनाई दे रही थी, लेकिन वह किसी और जैसी लग रही थी, इसलिए उसने उसे अपनी पत्नी के रूप में पहचानने की हिम्मत नहीं की।

"जी हां," सम्राट ने कहा।

कभी-कभी पहाड़ ढह जाते हैं और धरती फट जाती है।

लेकिन बहुत कम लोग ऐसे होंगे जो दूसरे के लिए अपनी जान देने के लिए अपना जीवन छोटा कर लेंगे।"

क्योंकि वह एक नेक और बुद्धिमान सम्राट थे, उन्होंने राजकुमारी के सभी वस्त्र, कपड़े और गहने लियू क्वान को दहेज की तरह दे दिए, उन्हें आजीवन श्रम सेवा से मुक्त करने का फरमान जारी किया और राजकुमारी को अपने साथ घर ले जाने को कहा। पति-पत्नी ने सीढ़ियों पर खड़े होकर उनका धन्यवाद किया और अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक घर लौट आए। इसका प्रमाण एक कविता में मिलता है:

जीवन और मृत्यु पूर्वनिर्धारित हैं;

कुछ लोगों के पास कई वर्षों का अनुभव है, जबकि अन्य के पास कुछ ही वर्षों का। जब लियू क्वान कद्दू लेने के बाद वापस होश में आया, तो ली कुइलियन एक उधार के शरीर में फिर से जीवित हो उठी।

सम्राट से विदा लेने के बाद वे दोनों सीधे जुनझोउ शहर लौट गए, जहाँ उन्होंने पाया कि उनके परिवार और बच्चे सभी स्वस्थ थे। उन्होंने अपने सद्गुणों के फल का प्रचार कैसे किया, इस पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है।

कहानी लॉर्ड युची की ओर मुड़ती है, जो हेनान के कैफ़ेंग में सोने-चांदी का खजाना लेकर शियांग लियांग के लिए गए थे। शियांग लियांग अपनी पत्नी (जिनका मायके का नाम झांग था) के साथ घर के द्वार पर पानी बेचकर और काले बर्तनों व मिट्टी के पात्रों का व्यापार करके अपना जीवन यापन करते थे। जब वे कुछ पैसे कमा लेते थे, तो वे अपने दैनिक खर्चों के लिए ही पर्याप्त धन रखते थे और बाकी भिक्षुओं को दान कर देते थे या उससे सोने-चांदी की कागजी सिल्लियां खरीदते थे, जिन्हें वे पाताल लोक में विभिन्न भंडारों में जमा करके जला देते थे। यही कारण था कि अब उन्हें इतना अच्छा इनाम मिलने वाला था। यद्यपि वे इस लोक में केवल एक धर्मनिष्ठ भिखारी थे, परलोक में उनके पास जेड और सोने के पहाड़ थे। जब लॉर्ड युची उनके लिए सोना-चांदी लेकर आए, तो श्रीमान और श्रीमती शियांग भयभीत हो गए। उनके स्वामी के अलावा, स्थानीय सरकारी कार्यालय के अधिकारी भी मौजूद थे, और उनके साधारण से घर के बाहर घोड़े और गाड़ियां ठसाठस भरी हुई थीं। वे दोनों अवाक होकर घुटनों के बल गिर पड़े और प्रणाम करने लगे।

“कृपया उठिए,” लॉर्ड युची ने कहा। “यद्यपि मैं मात्र एक शाही आयुक्त हूँ, फिर भी मैं महाराज से सोना और चांदी आपके लिए लाया हूँ।” कांपते और थरथराते हुए जियांग लियांग ने उत्तर दिया, “मैंने न तो चांदी उधार दी है और न ही सोना, तो मैं इस रहस्यमय धन को स्वीकार करने का साहस कैसे कर सकता हूँ?”

“मैं जानता हूँ कि आप एक गरीब आदमी हैं,” भगवान युची ने कहा, “लेकिन आपने भिक्षुओं को उनकी ज़रूरत की हर चीज़ दी है और सोने-चाँदी की कागज़ की सिल्लियाँ खरीदी हैं जिन्हें आपने पाताल लोक में भेजकर जला दिया, इस प्रकार

आपने वहाँ बड़ी मात्रा में धन जमा कर लिया है। जब सम्राट ताइज़ोंग तीन दिन तक मृत रहे और फिर जीवित हो उठे, तो उन्होंने आपके पाताल लोक में जमा सोने-चाँदी के भंडार में से एक हिस्सा उधार लिया था, जिसे वे अब आपको पूरा चुका रहे हैं। कृपया इसकी जाँच कर लें ताकि मैं वापस जाकर रिपोर्ट कर सकूँ कि मैंने अपने निर्देशों का पालन किया है।" जियांग लियांग और उनकी पत्नी ने स्वर्ग को प्रणाम किया और सोना-चाँदी लेने से इनकार कर दिया।

"अगर हम जैसे साधारण लोग यह सारा सोना-चांदी ले लेते, तो जल्द ही हमारा अंत हो जाता। हालांकि हमने कुछ कागज़ जलाकर अलग-अलग भंडारों में रख दिए थे, लेकिन यह एक रहस्य था। वैसे भी, इसका क्या सबूत है कि महाराज—उनकी आयु दस हजार वर्ष हो—ने नीचे से सोना-चांदी उधार लिया था? हम इसे मानने से इनकार करते हैं।"

"सम्राट ने कहा कि जब उन्होंने आपसे धन उधार लिया था तब न्यायाधीश कुई उनके गारंटर थे, और इसकी पुष्टि की जा सकती है, इसलिए कृपया इसे स्वीकार करें," लॉर्ड युची ने उत्तर दिया।

"ऐसा करने की बजाय मैं मरना पसंद करूंगा," जियांग लियांग ने कहा।

जब युची ने देखा कि जियांग लियांग ने कितनी गंभीरता से इनकार किया, तो उन्हें एक व्यक्ति को विस्तृत रिपोर्ट के साथ सिंहासन पर भेजना पड़ा। इस रिपोर्ट को पढ़कर कि जियांग लियांग ने सोना और चांदी लेने से इनकार कर दिया है, ताइज़ोंग ने कहा, "वह सचमुच एक धर्मनिष्ठ बूढ़ा है।" उन्होंने युची जिंगडे को आदेश भेजा कि वह उनके नाम पर एक मंदिर बनवाएं, उनके लिए एक स्मारक स्थापित करें और भिक्षुओं को उनकी ओर से अच्छे कर्म करने के लिए आमंत्रित करें: यह सोना और चांदी वापस करने के बराबर होगा। जिस दिन यह आदेश युची जिंगडे तक पहुंचा, वह सम्राट को धन्यवाद देने के लिए महल की ओर मुड़े और इसे सबके सुनने के लिए जोर से पढ़ा। फिर उन्होंने शहर के भीतर एक ऐसी जगह पर पचास म्यू जमीन खरीदी जो नागरिक या सैन्य दोनों ही दृष्टि से बाधा न बने, और यहाँ एक मठ का निर्माण शुरू किया गया जिसे शाही रूप से स्थापित जियांग क्वो मठ कहा गया। इसके बाईं ओर श्रीमान और श्रीमती जियांग के लिए एक स्मारक बनाया गया।

एक शिलालेखित पट्टिका पर लिखा था, "भगवान युची की देखरेख में निर्मित।" यही वर्तमान महान जियांग गुओ मठ है।

जब ताइज़ोंग को कार्य पूर्ण होने की सूचना मिली तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने अनेक अधिकारियों को एकत्रित करके एक सूचना जारी की जिसमें भिक्षुओं को पाताल लोक में विलीन आत्माओं के पुनर्जन्म के लिए एक भव्य प्रार्थना सभा आयोजित करने हेतु आमंत्रित किया गया। सूचना पूरे साम्राज्य में फैलते ही, सभी स्थानीय अधिकारियों ने पवित्र और आदरणीय भिक्षुओं को इस सेवा के लिए चांगआन जाने की अनुशंसा की। महीने के अंत तक साम्राज्य के विभिन्न भागों से अनेक भिक्षु चांगआन पहुँच चुके थे। सम्राट ने एक आदेश जारी कर उप-इतिहासकार फू यी को बौद्ध अनुष्ठान संपन्न करने हेतु कुछ आदरणीय भिक्षुओं का चयन करने का निर्देश दिया। यह आदेश सुनकर फू यी ने एक ज्ञापन भेजा जिसमें शिवालयों के निर्माण पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध किया गया और यह कहा गया कि कोई बुद्ध नहीं हैं। ज्ञापन में लिखा था:

पश्चिमी व्यवस्था के अनुसार, शासक और प्रजा तथा पिता और पुत्र में कोई भेद नहीं है; तीन मार्ग और छह सड़कें मूर्खों को धोखा देने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं; अतीत के पापों को मिटाकर भविष्य के आशीर्वाद प्राप्त किए जाते हैं; और दंड से बचने के लिए संस्कृत प्रार्थनाएँ पढ़ी जाती हैं। अब जन्म, मृत्यु और जीवन की अवधि वास्तव में प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है; और दंड, पुण्य, शक्ति और आशीर्वाद मनुष्य के स्वामी से प्राप्त होते हैं।

लेकिन आजकल अज्ञानी अनुयायी सत्य को तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं और कहते हैं कि ये सब बुद्ध से उत्पन्न हुए हैं। प्राचीन काल के पाँच सम्राटों और तीन राजाओं के समय में बुद्ध का अस्तित्व नहीं था, फिर भी शासक प्रबुद्ध थे, प्रजा वफादार थी और समृद्धि वर्षों तक बनी रही। जब हान राजवंश के सम्राट मिंग के समय में पहली बार विदेशी देवताओं की स्थापना हुई, तो पश्चिम के श्रमणों ने अपने धर्म का प्रचार करना शुरू कर दिया। वास्तव में यह चीन पर एक विदेशी अतिक्रमण है, और इस पर विश्वास करना उचित नहीं है।

यह सुनकर ताइज़ोंग ने इसे अन्य अधिकारियों के बीच चर्चा के लिए रख दिया। मंत्री श्याओ यू आगे बढ़े, प्रणाम किया और बोले, "बुद्ध का धर्म कई राजवंशों से फलता-फूलता रहा है, और अच्छाई फैलाकर और बुराई को रोककर यह राज्य को अप्रत्यक्ष

सहायता प्रदान करता है; इसे समाप्त करने का कोई कारण नहीं है। बुद्ध एक ऋषि थे। जो ऋषियों का इनकार करते हैं वे कानून का उल्लंघन करते हैं। मैं निवेदन करता हूँ कि उन्हें कड़ी सजा दी जाए।" फू यी ने श्याओ यू से बहस करते हुए कहा कि सही आचरण माता-पिता और राजा की सेवा से प्राप्त होता है, जबकि बुद्ध ने अपने माता-पिता से मुंह मोड़ लिया, एक साधारण मनुष्य होते हुए भी स्वर्ग के पुत्र का विरोध किया, और अपने माता-पिता द्वारा दिए गए शरीर से ही उनके विरुद्ध विद्रोह किया। श्याओ यू किसी निर्जन शहतूत के वृक्ष में जन्म नहीं लिया था, लेकिन उन्होंने एक ऐसे धर्म का सम्मान किया जो पिता को नकारता है; यह वास्तव में सिद्ध करता है कि जिसमें पितृभक्ति का भाव नहीं है, वह अपने पिता का इनकार करता है।

श्याओ यु ने बस अपने हाथ जोड़कर कहा, "नरक तो ऐसे ही लोगों के लिए बना होगा।"

ताइज़ोंग ने उच्च चैंबरलेन झांग दाओयुआन और सचिवालय के प्रमुख झांग शिहेंग को यह पूछने के लिए बुलवाया कि बौद्ध अनुष्ठान कितनी प्रभावी ढंग से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

“बुद्ध पवित्रता, परोपकार और दया में निवास करते हैं,” दोनों अधिकारियों ने उत्तर दिया, “और सच्चा परिणाम बुद्ध-शून्यता है। उत्तरी झोऊ राजवंश के सम्राट वू ने तीन शिक्षाओं को एक क्रम में व्यवस्थित किया। चान गुरु दाहुई ने दूरस्थ और रहस्यमय की प्रशंसा में एक कविता लिखी। यदि जनता भिक्षुओं का समर्थन करे, तो कुछ भी हो सकता है। पांच कुलपति अपनी माताओं के गर्भ में अवतरित हुए, और बोधिधर्म प्रकट हुए।”

प्राचीन काल से ही सर्वप्रसिद्ध यह कहा जाता रहा है कि तीनों शिक्षाएँ अत्यंत पूजनीय हैं और इन्हें नष्ट या समाप्त नहीं किया जा सकता। हम आपसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करते हैं कि आप हमें अपना विवेकपूर्ण निर्णय दें।

"आपकी बात समझ में आती है," प्रसन्न होकर ताइज़ोंग ने कहा। "यदि कोई और टिप्पणी करेगा, तो उसे दंडित किया जाएगा।" फिर उन्होंने वेई झेंग, शियाओ यू और झांग दाओयुआन को सभी भिक्षुओं को आमंत्रित करने और उनमें से एक गुणी भिक्षु को समारोह का संचालक चुनने का आदेश दिया। सभी भिक्षुओं ने उन्हें धन्यवाद देते हुए प्रणाम किया और चले गए। तब से एक नया नियम लागू हुआ: जो कोई भी भिक्षु को चोट पहुँचाएगा या बुद्ध की निंदा करेगा, उसकी भुजा काट दी जाएगी।

अध्याय 12

171

पश्चिम की यात्रा

अगले दिन तीनों दरबारी अधिकारियों ने नदियों और पहाड़ियों के बीच बने वेदी पर सभी भिक्षुओं को इकट्ठा किया और एक-एक करके उन सभी की जाँच की। उनमें से उन्होंने एक आदरणीय और गुणी भिक्षु को चुना। क्या आप जानते हैं कि वह कौन था?

बुनियादी रहस्य में पूर्ण रूप से पारंगत होने के कारण, उन्हें स्वर्णिम चिड़िया की उपाधि प्राप्त थी; लेकिन क्योंकि वे बुद्ध के उपदेश सुनना नहीं चाहते थे।

वह कष्ट भोगने के लिए नश्वर संसार में स्थानांतरित हो गया।

आम इंसानों के बीच पैदा हुआ और जाल में फंस गया।

गर्भ में प्रवेश करने के क्षण से ही उसका सामना बुराई से हुआ।

वहां से निकलने से पहले उसका सामना बदमाशों के एक गिरोह से हुआ।

उनके पिता हैज़ोऊ विश्वविद्यालय के शीर्ष स्नातक चेन थे।

उनके दादा एक वरिष्ठ शाही सेनापति थे।

उसके जन्म से पानी में गिरी उल्कापिंड को भी ठेस पहुंची।

वह धारा के साथ बहता चला गया और लहरों का अनुसरण करता रहा।

जिनशान द्वीप का भाग्य महान था:

उसका पालन-पोषण मठाधीश कियानआन ने किया था।

सत्रह साल की उम्र में ही उनकी मुलाकात अपनी मां से हुई थी।

और अपने दादा को ढूंढने के लिए राजधानी जाओ।

सेनापति यिन काइशान ने एक विशाल सेना खड़ी की।

हांगझोऊ में डाकुओं का सफाया कर उन्हें दंडित किया गया।

स्नातक चेन गुआंगरुई स्वर्गीय जाल से बच निकला,

और पिता-पुत्र का सुखद पुनर्मिलन हुआ।

निमंत्रण स्वीकार करते हुए, उन्हें एक बार फिर सम्राट की कृपा प्राप्त होती है, और जैसे ही वे ऊंचे टावर पर चढ़ते हैं, उनकी प्रसिद्धि फैल जाती है।

पद ग्रहण करने से इनकार करते हुए वह भिक्षु बनना चाहता है।

इसलिए हांगफू मंदिर के श्रमण के रूप में वह मार्ग के बारे में सीखता है।

और उन्होंने चेन ज़ुआनज़ैंग का धर्म-नाम धारण किया।
उस दिन पूज्य शुआनज़ैंग को सभी भिक्षुओं में से चुना गया। वे बचपन से ही भिक्षु थे और जन्म से ही शाकाहारी भोजन करते थे तथा सभी नियमों का पालन करते थे। उनके नाना, यिन काइशान, शाही सेनापति थे। उनके पिता चेन गुआंगरुई ने राजमहल परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया था और उन्हें शाही पुस्तकालय में मुख्य सचिव नियुक्त किया गया था। हालांकि, शुआनज़ैंग को मान-सम्मान और यश में कोई रुचि नहीं थी, उनका एकमात्र आनंद निर्वाण की साधना करना था। जांच से पता चला कि उनका वंश उत्तम था और उनके गुण महान थे; हज़ार सूत्रों और दस हज़ार पवित्र ग्रंथों में से एक भी ऐसा नहीं था जो उन्हें ज्ञात न हो; वे सभी बौद्ध मंत्र गा सकते थे और सभी धार्मिक संगीत जानते थे। तीनों अधिकारी उन्हें शाही दरबार में ले गए, जहाँ उन्होंने नृत्य किया और खूब शोर मचाया। प्रणाम करने के बाद उन्होंने बताया, "आपके प्रजाजन शियाओ यू और हम सभी ने शाही आदेश का पालन करते हुए चेन शुआनज़ैंग नामक एक पूज्य भिक्षु को चुना है।"
उसका नाम सुनकर ताइज़ोंग ने काफी देर तक गहराई से सोचा और फिर पूछा, "क्या यह वही ज़ुआनज़ैंग है जो ग्रैंड सेक्रेटरी चेन गुआंगरुई का बेटा है?"
"तुम्हारा विषय वह है," ज़ुआनज़ैंग ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया।
“तो आपका चुनाव वाकई उचित था,” सम्राट ने संतोषपूर्वक कहा। “आप सचमुच सदाचारी और ध्यान में लीन भिक्षु हैं। मैं आपको पुरोहितों के बाएं नियंत्रक, पुरोहितों के दाएं नियंत्रक और साम्राज्य के प्रमुख का पद प्रदान करता हूँ।” ज़ुआनज़ैंग ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए प्रणाम किया और पद स्वीकार कर लिए। सम्राट ने उन्हें बहुरंगी स्वर्ण वस्त्र और वैरोचना मुकुट भेंट किया, और उनसे कहा कि वे नियमित रूप से ज्ञानी भिक्षुओं से मिलते रहें, तथा उन्हें सर्वोच्च पद प्रदान किया। उन्होंने उन्हें लिखित आदेश दिया कि वे हुआशेंग मंदिर जाकर शास्त्रों के पाठ प्रारंभ करने के लिए शुभ दिन और समय चुनें।
शुआनज़ैंग ने प्रणाम किया, आदेश लिया और हुआशेंग मंदिर गए, जहाँ उन्होंने कई भिक्षुओं को इकट्ठा किया, ध्यान के लिए आसन बनवाए, सामूहिक प्रार्थना की तैयारी

की और संगीत का चयन किया। उन्होंने बारह सौ उच्च और विनम्र प्रबुद्ध भिक्षुओं का चयन किया, जिन्हें उन्होंने ऊपरी, मध्य और निचले हॉल में विभाजित किया। सभी पवित्र वस्तुएँ सभी बुद्धों के सामने सुव्यवस्थित रूप से रखी गईं। उस वर्ष के नौवें महीने का तीसरा दिन सात दिनों की महान भूमि और जल प्रार्थना के प्रारंभ के लिए शुभ दिन चुना गया।

यह सब राजमहल को सूचित किया गया, और नियत समय पर ताइज़ोंग, उच्च नागरिक और सैन्य अधिकारी तथा शाही परिवार धूप जलाने और उपदेश सुनने के लिए उपस्थित हुए। इसका प्रमाण एक कविता है जो इस प्रकार है:

झेन गुआन के तेरहवें वर्ष में ड्रैगन सभा में
सम्राट ने धर्मग्रंथों पर चर्चा करने के लिए एक बड़ी सभा बुलाई।
सभा में उन्होंने उस अथाह कानून की व्याख्या करना शुरू किया।
उस विशाल मंदिर के ऊपर बादल चमक रहे थे।
सम्राट ने अपनी कृपा से एक मंदिर के निर्माण का आदेश दिया;
सुनहरा सिकाडा पश्चिम को शिक्षित करने के लिए अपनी त्वचा उतारता है।

वह यह संदेश फैलाता है कि अच्छे कर्मों का फल बुरे कर्मों से बचाता है।
अतीत और भविष्य के तीन बुद्धों के सिद्धांतों का प्रचार करना।

झेन गुआन के तेरहवें वर्ष (जिसी) में, नौवें महीने के तीसरे दिन (जियाक्सू) को, महाधर्माध्यक्ष चेन ज़ुआनज़ैंग ने चांगआन शहर के हुआशेंग मंदिर में बारह सौ पूजनीय भिक्षुओं को सभी पवित्र ग्रंथों के पाठ के लिए एकत्रित किया। सुबह की सभा समाप्त होने के बाद, सम्राट अपने ड्रैगन और फीनिक्स रथ पर सवार होकर, कई नागरिक और सैन्य अधिकारियों के साथ सिंहासन कक्ष से निकले और अगरबत्ती जलाने के लिए मंदिर गए।

शाही रथ कैसा दिखता था?
शुभ वाष्प से आकाश भर गया
वह दस हजार पवित्र प्रकाश की किरणों से जगमगा रहा था।
हल्की-हल्की हवा धीरे-धीरे बह रही थी।

सूर्य की रोशनी विचित्र रूप से सुंदर थी।
कमर में जेड जड़े हुए एक हजार अधिकारी विधिवत क्रम में आगे बढ़े।
दोनों ओर पांचों रक्षकों के झंडे फहराए गए हैं।
सुनहरे लौकी पकड़े हुए,
युद्ध कुल्हाड़ी लहराते हुए,
वे जोड़े में खड़े होते हैं;
बैंगनी रंग के जालीदार लैंप,
शाही धूपदान,
भव्य बादल बनाओ।
ड्रैगन उड़ते हैं और फीनिक्स नाचते हैं।
ओस्प्रे और चीलें आसमान में उड़ती हैं।
स्वर्ग का प्रबुद्ध पुत्र सत्य है।
उनके न्यायप्रिय और वफादार मंत्री अच्छे हैं।
समृद्धि का यह युग शुन और यू के काल से भी आगे है;
उन्होंने जो शाश्वत शांति प्रदान की है, वह याओ और तांग द्वारा दी गई शांति से कहीं बढ़कर है।
घुमावदार हैंडल वाली छतरी के नीचे
अध्याय 12
174
पश्चिम की यात्रा
ड्रैगन का चोला लहराता हुआ आता है,
बेहद चमकदार।
आपस में जुड़े हुए जेड के छल्ले,
रंगीन फीनिक्स पंखे,
जादुई चमक से जगमगाएं।
मोती के मुकुट और जेड की बेल्ट,
बैंगनी डोरियों पर सोने की मुहरें।
एक हजार सैनिकों की टुकड़ियां शाही रथ की रक्षा करती हैं, जनरलों की दो पंक्तियाँ शाही कुर्सी को ले जाती हैं।

स्नान करने के बाद श्रद्धापूर्वक सम्राट बुद्ध की पूजा करने आते हैं।
सच्ची उपलब्धि के प्रति समर्पण करते हुए वह प्रसन्नतापूर्वक अगरबत्ती जलाता है।
जब तांग सम्राट का रथ मंदिर पहुँचा, तो आदेश दिया गया कि संगीत बंद कर दिया जाए क्योंकि वे रथ से उतरे और अपने अधिकारियों के साथ बुद्ध को प्रणाम करने और अगरबत्ती जलाने के लिए आगे बढ़े। तीन बार ऐसा करने के बाद उन्होंने ऊपर देखा और पाया कि वह कितना भव्य जमावड़ा था: नाचते हुए झंडे,
उड़ने वाली छतरियां।
जब झंडे नाच रहे थे
आकाश रेशमी बादलों से कांप उठा;
जब छतरियां उड़ गईं
लाल बिजली चमकने के साथ ही सूरज की रोशनी भी दमक उठी।
पूज्य व्यक्ति की प्रतिमा की छवि को परिपूर्ण करें।
अर्हतों के चेहरों की भव्यता अत्यंत महान है।
फूलदान में जादुई फूल,
चंदन और लाका जलाने वाली धूपदानियाँ।
जैसे ही परी के फूल गुलदस्तों में खड़े होते हैं

रेशमी वस्त्रों जैसे वृक्ष अपनी चमक से मंदिर को भर देते हैं।
जैसे ही धूपदानों में चंदन और लाका जलते हैं
नीले आकाश में धूप के धुएं के बादल उठते हैं।
मौसम के ताजे फल सिंदूरी रंग की थालियों में सजाए जाते हैं।
रेशम से ढकी मेजों पर तरह-तरह की स्वादिष्ट मिठाइयाँ सजी हुई हैं।
पवित्र भिक्षुओं की कतारें सुर्रास का जाप करती हैं
परित्यक्त आत्माओं को पीड़ा से बचाने के लिए।
ताइज़ोंग और उनके सभी नागरिक एवं सैन्य अधिकारियों ने अगरबत्ती जलाई, भगवान बुद्ध के स्वर्णिम शरीर को प्रणाम किया और अर्हतों को सम्मान दिया। इसके बाद, धर्माध्यक्ष चेन ज़ुआनज़ैंग ने सभी भिक्षुओं को सम्राट को प्रणाम करने के लिए प्रेरित

किया, और जब यह सब समाप्त हो गया, तो वे अपने-अपने समूहों में विभाजित होकर अपने ध्यान स्थलों पर चले गए, जबकि धर्माध्यक्ष ने सम्राट को एकाकी प्रेतों के उद्धार के बारे में सूचना दिखाई। उसमें लिखा था:

रहस्य ही परम सद्गुण है, और ध्यान का मार्ग निर्वाण की ओर ले जाता है। सत्य की पवित्रता सर्वज्ञ है; यह ब्रह्मांड के तीनों क्षेत्रों में व्याप्त है। अपने असंख्य परिवर्तनों के माध्यम से यह नकारात्मक और सकारात्मक को नियंत्रित करता है; शाश्वत वास्तविकता के अनंत स्वरूप हैं। उन विरहित आत्माओं पर विचार करते हुए व्यक्ति को गहरा दुख होना चाहिए। ताइज़ोंग के पवित्र आदेश पर हमने कुछ चुने हुए भिक्षुओं को ध्यान और उपदेश के लिए एकत्रित किया है। उन्होंने ज्ञान के द्वार खोल दिए हैं और दया की नाव को दूर तक चलाया है, दुख के सागर में सभी प्राणियों को बचाया है, और उन लोगों को मुक्ति दिलाई है जो लंबे समय से अस्तित्व के छह मार्गों से पीड़ित थे। उन्हें सही मार्ग पर वापस लाया जाएगा और वे महान अराजकता में आनंदित होंगे; कर्म और निष्क्रियता में वे आदिम सरलता के साथ एक हो जाएंगे। इस अद्भुत कारण से उन्हें पवित्र राजधानी के बैंगनी द्वार देखने के लिए आमंत्रित किया जाता है, और हमारी सभा के माध्यम से वे नरक की सीमाओं से बचकर आनंद के लोक में चढ़ेंगे और पश्चिम के स्वर्ग में अपनी इच्छा अनुसार विचरण करने के लिए स्वतंत्र होंगे। कविता इस प्रकार है: दीर्घायु का धूपदान जलाने वाला,

पुनर्जन्म प्राप्त करने के लिए कुछ मंत्र।

अनंत नियम की घोषणा की जाती है,

स्वर्ग की असीम दया प्रकट होती है।

जब सारे पाप धुल जाते हैं,

उपेक्षित आत्माएं नरक से निकल जाती हैं।

हम अपने देश की रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं;

यह शांति और आशीर्वाद से भरा रहे।

यह पढ़कर तांग सम्राट का हृदय प्रसन्नता से भर गया और उन्होंने भिक्षुओं से कहा, "अपनी निष्ठा पर दृढ़ रहो और बुद्ध की सेवा में एक क्षण की भी ढिलाई मत करो। बाद

में, जब सभा समाप्त हो जाएगी, तो तुम्हें आशीर्वाद प्राप्त होगा और हम तुम्हें भरपूर पुरस्कार देंगे। तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं जाएगा।" बारह सौ भिक्षुओं ने उन्हें धन्यवाद देने के लिए प्रणाम किया। दिन के तीन शाकाहारी भोजन समाप्त होने पर तांग सम्राट महल लौट गए। उन्हें सातवें दिन एक बार फिर अगरबत्ती जलाने के लिए भव्य सभा में वापस आने का निमंत्रण दिया गया। जैसे-जैसे शाम ढलने लगी, सभी अधिकारी चले गए। वह एक सुहावनी शाम थी।

असीम आकाश में एक हल्की सी चमक फैल गई;
कुछ कौवे अपने बसेरे ढूंढने में देर कर गए।
पूरे शहर में दीपक जल उठे और सब कुछ शांत हो गया;
भिक्षुओं के लिए समाधि में प्रवेश करने का यही सही समय था।

हम उस रात का वर्णन नहीं करेंगे और न ही इस बात का वर्णन करेंगे कि अगली सुबह जब उनके गुरु दोबारा अपनी जगह पर बैठे तो भिक्षुओं ने शास्त्रों का पाठ कैसे किया। दक्षिणी सागर के पोटारका द्वीप की बोधिसत्व गुआनयिन, बुद्ध के आदेश पर शास्त्रों को लाने वाले व्यक्ति की तलाश में लंबे समय से चांगआन में थीं, लेकिन उन्हें अभी तक कोई वास्तव में गुणी व्यक्ति नहीं मिला था। तभी उन्हें पता चला कि ताइज़ोंग में सच्ची सिद्धि का प्रचार हो रहा है और एक भव्य सभा के लिए आदरणीय भिक्षुओं का चयन किया जा रहा है। जब उन्होंने देखा कि समारोह के संचालक भिक्षु जियांगलिउ हैं, जो वास्तव में परम आनंद के लोकों से अवतरित बुद्ध के पुत्र हैं, एक ऐसे वरिष्ठ भिक्षु जिन्हें उन्होंने स्वयं उनकी सांसारिक माता के गर्भ में जन्म दिया था, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुईं। उन्होंने अपने शिष्य मोक्ष और बुद्ध द्वारा दिए गए खजाने को लेकर सड़क पर बिक्री के लिए पेश किया।

क्या आप जानते हैं कि ये अनमोल वस्तुएँ क्या थीं? एक कीमती जकूज़ी का चोगा और नौ छल्ले वाली एक मठवासी छड़ी थी। उसके पास वे तीन सोने के छल्ले भी थे, लेकिन उसने उन्हें भविष्य में उपयोग के लिए सुरक्षित रख दिया था; वह केवल चोगा और छड़ी बेच रही थी।

चांगआन शहर में एक भिक्षु इतना मूर्ख था कि उसे सेवा के लिए नहीं चुना जा सका, फिर भी उसके पास कुछ अवैध रूप से अर्जित नोट थे। जब उसने गंजे, खुरदुरे, नंगे पैर वाले व्यक्ति को फटे-पुराने वस्त्र पहने देखा—जो बोधिसत्व का रूप था—और वह अपनी बेहद खूबसूरत पोशाक बेचने की पेशकश कर रहा था, तो वह उसके पास गया

और पूछा, "इस पोशाक के लिए तुम कितने पैसे चाहते हो, खुरदुरे भिक्षु?"
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, “चोगा की कीमत पाँच हज़ार औंस चाँदी है और लाठी की कीमत दो हज़ार औंस है।” मूर्ख भिक्षु ज़ोर से हँस पड़ा।
"तुम ज़रूर पागल हो, स्कैबी, या फिर बेवकूफ। ये दोनों बेकार चीज़ें इतनी कीमती नहीं हैं, जब तक कि ये तुम्हें अमरता न दे दें और तुम्हें बुद्ध न बना दें। सौदा नहीं। इन्हें ले जाओ।"
बहस करने की जहमत न उठाते हुए, बोधिसत्व मोक्ष के साथ आगे बढ़ गए। काफी देर चलने के बाद वे महल के डोंगहुआ द्वार के सामने पहुँचे, जहाँ मंत्री श्याओ यू सुबह की सभा से घर लौट रहे थे। अध्याय 12 में सभी को चिल्लाकर बुलाने वाले दरबारियों की भीड़ को अनदेखा करते हुए, उन्होंने आगे बढ़ना जारी रखा।
177
पश्चिम की यात्रा
रास्ते से हटकर, बोधिसत्व शांत भाव से अपने हाथों में चोगा लिए सड़क के बीचोंबीच चली गईं और सीधे मंत्री की ओर बढ़ गईं। जब मंत्री ने देखने के लिए अपने घोड़े की लगाम खींची, तो उन्होंने चोगा को चमकता हुआ देखा और एक सेवक को उसकी कीमत पूछने के लिए भेजा।
बोधिसत्व ने कहा, "मुझे चोगा के लिए पांच हजार औंस चांदी और छड़ी के लिए दो हजार औंस चांदी चाहिए।"
"इस चोगे में ऐसी क्या खासियत है कि इसकी इतनी कीमत है?" ज़ियाओ यू ने पूछा।
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "एक ओर तो यह अच्छा है और दूसरी ओर नहीं। एक ओर इसकी कीमत है और दूसरी ओर नहीं।"
मंत्री ने पूछा, "इसमें क्या अच्छा है और क्या बुरा?"
जो कोई भी मेरा यह वस्त्र धारण करेगा, वह न तो कीचड़ में डूबेगा, न नरक में गिरेगा, न बुराई के जाल में फँसेगा और न ही बाघ या भेड़िये के प्रकोप का सामना करेगा: ये इसके गुण हैं। परन्तु मूर्ख भिक्षु जो लालची और व्यभिचारी है, दूसरों के कष्टों में आनंद लेता है, शाकाहारी भोजन नहीं करता और मठ के नियमों का उल्लंघन करता है; या सामान्य गृहस्थ जो शास्त्रों को हानि पहुँचाता है और बुद्ध की निंदा करता है—ऐसे लोगों को मेरा यह वस्त्र देखने में भी बड़ी कठिनाई होती है: यही इसकी हानि है।
मंत्री ने अपने प्रश्न जारी रखते हुए पूछा, "आपने यह कहकर क्या मतलब निकाला कि

इसकी कीमत भी है और नहीं भी है?"

“जो कोई बुद्ध के नियमों का पालन नहीं करता या तीन रत्नों का आदर नहीं करता, फिर भी चोगा और लाठी खरीदना चाहता है, उसे इसके लिए सात हजार औंस (लगभग 1 ग्राम) देने होंगे: उस स्थिति में इनकी कीमत चुकानी होगी। लेकिन जो कोई तीन रत्नों का आदर करता है, सत्त्व में प्रसन्न रहता है और हमारे बुद्ध में विश्वास रखता है, और इन्हें प्राप्त करना चाहता है, तो मैं उसे चोगा और लाठी उपहार में दूंगा। उस स्थिति में इनकी कोई कीमत नहीं होगी।” श्याओ यु के गाल लाल हो गए, जिससे पता चला कि वह एक नेक इंसान था, और वह बोधिसत्व का अभिवादन करने के लिए घोड़े से उतर गया।

"महान विधि के वरिष्ठ," उन्होंने कहा, "मुझे क्षमा करें। हमारे महान तांग सम्राट सद्गुणों के सच्चे प्रेमी हैं, और उनके दरबार के सभी नागरिक और सैन्य अधिकारी धार्मिकता का पालन करते हैं। यह वस्त्र धर्माध्यक्ष, मास्टर चेन ज़ुआनज़ैंग के लिए इस समय आयोजित हो रहे महान भूमि और जल समारोह में पहनने के लिए बिल्कुल उपयुक्त होगा।"

हम दोनों महाराज से मिलने महल में जाएंगे।

बोधिसत्व ने प्रसन्नतापूर्वक उसका अनुसरण किया, जैसे ही वह मुड़ा और सीधे डोंगहुआ द्वार से अंदर चला गया। हिजड़ों ने उनके आने की सूचना दी, और उन्हें सिंहासन कक्ष में बुलाया गया। श्याओ यू उन दोनों खुरदुरे भिक्षुओं को अंदर ले गया, और वे सिंहासन की सीढ़ियों के नीचे खड़े हो गए।

“क्या सूचना देने आए हो, श्याओ यु?” सम्राट ने पूछा। श्याओ यु सीढ़ियों के सामने झुककर बोला, “जब आपका सेवक डोंगहुआ द्वार से बाहर निकला, तो मुझे दो भिक्षु मिले जो एक चोगा और एक लाठी बेच रहे थे। मुझे लगा कि यह चोगा गुरु शुआनज़ैंग के लिए उपयुक्त होगा। इसलिए मैं इन भिक्षुओं को महाराज से मिलवाने लाया हूँ।” प्रसन्न होकर ताइज़ोंग ने पूछा कि चोगे की कीमत कितनी है। सीढ़ियों के नीचे खड़े-खड़े, बिना कोई शिष्टाचार का भाव दिखाए, बोधिसत्व और मोक्ष ने उत्तर दिया, “चोगे की कीमत पाँच हज़ार चाँदी है, और लाठी की कीमत दो हज़ार।”

सम्राट ने पूछा, "इस चोगे में ऐसी क्या खूबियां हैं कि यह इतना कीमती है?" इस पर बोधिसत्व ने उत्तर दिया:

"यह चोगा

इसमें ड्रैगन के लबादे का एक टुकड़ा है।
रॉक द्वारा खाए जाने से बचने के लिए,
और एक सारस की जैकेट का धागा,
मृत्यु से मुक्ति दिलाकर संतत्व की ओर ले जाना।
जब कोई बैठता है
दस हजार आत्माएं श्रद्धांजलि अर्पित करने आती हैं;
आपके सभी कार्यों में
सात बुद्ध आपके साथ रहेंगे।
"यह चोगा विशाल बर्फीले कीड़ों से निकाले गए रेशम से बना है, जिसे कुशल कारीगरों द्वारा धागे में बुना गया है।"
परियों द्वारा बुना गया,
देवियों द्वारा पूर्ण किया गया।
कपड़े की पट्टियों को कढ़ाईदार सिलाई से जोड़ा गया है।
प्रत्येक टुकड़ा ब्रोकेड से भरपूर है।
जालीदार नक्काशी में फूलों का पैटर्न बना हुआ है।
रंगों से जगमगाता हुआ, रत्नों जैसी सुंदरता से चमकता हुआ।
चोगा पहनने वाला व्यक्ति लाल धुंध से घिरा हुआ है।
और जब इसे हटाया जाता है, तो रंगीन बादल उड़ने लगते हैं।
इसका आदिम प्रकाश स्वर्ग के तीन द्वारों से होकर निकला, जादुई वाष्प पांच पवित्र शिखरों के सामने उठी।
इस पर परत दर परत पैशन फ्लावर की कढ़ाई की गई है।
और यह मोतियों से जगमगाता है जो तारों की तरह चमकते हैं।
चारों कोनों पर रात में चमकने वाले मोती हैं।
सबसे ऊपर एक पन्ना जड़ा हुआ है।
हालांकि यह मूल शरीर को पूरी तरह से प्रकाशित नहीं करता है

यह आठ रत्नों के प्रकाश से जगमगाता है।
"यह चोगा
इसे सामान्यतः मोड़कर रखा जाता है।
और इसे केवल एक ऋषि ही धारण करेगा।
जब इसे मोड़कर रखा जाता है,
इसके हजारों आवरणों के बीच से एक इंद्रधनुष चमक रहा है;
जब इसे कोई ऋषि धारण करता है,
यह स्वर्गदूतों को चकित कर देगा और सभी राक्षसों को डरा देगा।
सबसे ऊपर एक मनचाहा मोती है,
एक मणि मोती,
धूल को दूर भगाने वाला मोती,
और हवा को शांत करने वाला एक मोती;
लाल अगेट भी है।
बैंगनी मूंगा,
रात में चमकने वाले मोती,
और बुद्ध के अवशेष।
वे चंद्रमा की सफेदी चुरा लेते हैं।
लाल रंग में सूर्य को टक्कर देता है।
उनकी जादुई शक्ति आकाश को भर देती है,
उनकी शुभ ज्योति ऋषि का सम्मान करती है।
उनकी जादुई शक्ति आकाश को भर देती है,
स्वर्ग के द्वारों से प्रकाशमान;
उनकी शुभ रोशनी ऋषि का सम्मान करती है।
पूरी दुनिया को रोशन करना।
पहाड़ों और नदियों पर चमकते हुए,

इसका सार बाघों और तेंदुओं को भयभीत करता है;
महासागरों और द्वीपों को रोशन करते हुए,
इस रोशनी से मछलियाँ और ड्रैगन चौंक जाते हैं।
किनारों पर सोने की परत चढ़े हुकों की दो पंक्तियाँ हैं।
गर्दन पर सबसे सफेद जेड के लूप लगे हैं।"
एक कविता है जो इस प्रकार है:
"तीनों रत्न महान हैं, और मार्ग आदरणीय है।"
जीवन के चार प्रकार और छह मार्ग, इन सभी की व्याख्या की गई है।
जो कोई मनुष्य और स्वर्ग के नियम को जानता और सिखाता है,
जब वह अपने मूल स्वरूप को पहचान लेता है, तब वह ज्ञान का दीपक दूसरों को सौंप सकता है।
यह शरीर की रक्षा करता है और उसे सोने की दुनिया बना देता है।
यह शरीर और मन को बर्फ से भरे जेड के जार की तरह शुद्ध कर देता है।
जब से बुद्ध ने अपना चोगा बनाया
कोई भी कभी भी पुरोहिती को समाप्त करने का साहस नहीं करेगा।"
जब तांग सम्राट ने अपने सिंहासन कक्ष में ये शब्द सुने तो वे आनंद से भर गए और उन्होंने एक और प्रश्न पूछा: "भिक्षु, आपकी नौ-वलय वाली छड़ी में ऐसी क्या अद्भुत बात है?"
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "मेरी यह छड़ी तांबे से जड़ी हुई नौ छल्ले वाली लोहे की छड़ी है।"
अमरता को शाश्वत बनाए रखने के लिए नौ खंडों वाली एक छड़ी।
हाथ में पकड़ने पर यह हड्डी के समान हल्का लगता है।
जैसे-जैसे आप पहाड़ से नीचे उतरते हैं, सफेद बादल दिखाई देने लगते हैं।
अध्याय 12

पांचवें कुलपति ने इसे स्वर्ग के द्वारों से होकर ले गए;
जब लो बू अपनी मां की तलाश कर रहा था, तो उसने इसका इस्तेमाल पृथ्वी के द्वार

तोड़ने के लिए किया।
नश्वर धूल की गंदगी से अछूता,
यह परम पूज्य भिक्षु के साथ खुशी-खुशी जेड पर्वत पर चढ़ता है।
तब तांग सम्राट ने उस वस्त्र को खोलने का आदेश दिया। ऊपर से नीचे तक उसकी जांच करने पर उन्होंने पाया कि वह वास्तव में एक उत्तम वस्तु थी।
“हे धर्मगुरु,” उन्होंने कहा, “मैं आपको सत्यपूर्वक बताता हूँ कि मैं इस समय सुसमाचार का प्रचार कर रहा हूँ और आशीर्वाद के बीज बो रहा हूँ। इस समय कई भिक्षु हुआशेंग मठ में सुर्रा पाठ के लिए एकत्रित हैं। उनमें से एक असाधारण गुणवान भिक्षु हैं जिनका बुद्ध नाम शुआनज़ैंग है, और हम आपके उन दो अनमोल रत्नों को खरीदकर उन्हें देना चाहते हैं। तो आपकी कीमत क्या है?”
बोधिसत्व और मोक्ष ने हाथ जोड़कर बुद्ध का नाम जपा और प्रणाम किया। "यदि वह सचमुच एक गुणी भिक्षु हैं," उसने कहा, "तो मैं उन्हें ये वस्तुएँ दे दूँगी, और इनके बदले कोई धन स्वीकार नहीं करूँगी।"
इतना कहकर वह मुड़ी और चली गई।
सम्राट ने तुरंत शियाओ यू को रोकने का आदेश दिया और स्वयं खड़े होकर बोले, "तुमने हमसे कहा था कि तुम्हें चोगा के लिए पाँच हज़ार औंस और छड़ी के लिए दो हज़ार औंस चाहिए, लेकिन अब जब हमने कहा है कि हम इन्हें खरीद लेंगे, तो तुम पैसे लेने से इनकार कर रही हो। क्या तुम यह कहना चाहती हो कि मैंने तुम्हारी चीज़ें ज़ब्त करने के लिए अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया? हम ऐसा कभी सपने में भी नहीं सोचेंगे। हम तुम्हारी माँगी हुई कीमत चुकाएँगे, और कोई इनकार स्वीकार नहीं करेंगे।"
बोधिसत्व ने हाथ उठाकर कहा, "मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं इन्हें उन सभी को नि:शुल्क दूंगी जो तीन रत्नों का आदर करते हैं, सत्त्व में प्रसन्न रहते हैं और हमारे बुद्ध में विश्वास रखते हैं। अब मैंने देखा है कि महाराज हमारे बौद्ध धर्म के अच्छे और सदाचारी अनुयायी हैं, और मैंने सुना है कि एक सदाचारी भिक्षु हैं जो महाधर्म का प्रचार करते हैं, इसलिए यह उचित ही है कि मैं इन्हें उन्हें अर्पित करूँ; मुझे इनके बदले कोई धन नहीं चाहिए।"
मैं अपना सामान यहीं छोड़ रही हूँ। अलविदा।” तांग सम्राट भिक्षु की ईमानदारी से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने शाही रसोई में उनके धन्यवाद के रूप में एक भव्य शाकाहारी भोज का आदेश दिया। बोधिसत्व ने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया

और सहज भाव से चली गईं। स्थानीय देवता के मंदिर में अपने गुप्त स्थान पर लौटने का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है।

ताइज़ोंग ने दोपहर में एक दरबार आयोजित करने की व्यवस्था की और वेई झेंग को शुआनज़ैंग को उपस्थित होने का आदेश देकर भेजा। जब वे सुर्रा और गाथा के पाठ के लिए मंच पर चढ़े, तो उन्होंने देखा कि मठ का अधिकारी भिक्षुओं को इकट्ठा कर रहा था। आदेश सुनते ही वे मंच से नीचे उतरे, अपने वस्त्र ठीक किए और वेई झेंग के साथ शाही दरबार में चले गए।

"अब तक हमारे पास आपके पुण्य कर्मों के लिए धन्यवाद देने का कोई उपयुक्त साधन नहीं था, महाराज। आज सुबह श्याओ यू दो भिक्षुओं से मिले जिन्होंने आपको एक अनमोल जटाधारी वस्त्र और नौ कुंडलियों वाली भिक्षु की छड़ी भेंट करने का वचन दिया है। इसलिए, हे गुरु, हमने आपको इन्हें ग्रहण करने के लिए बुलाया है," सम्राट ने कहा। ज़ुआनज़ैंग ने धन्यवाद में प्रणाम किया।

"अगर आप इसे अस्वीकार नहीं करते, महाराज, तो आइए देखें कि यह आप पर कैसा लगता है।" ज़ुआनज़ैंग ने उसे खोलकर अपने कंधों पर डाला, हाथ में छड़ी ली और सिंहासन की सीढ़ियों के सामने आदरपूर्वक खड़े हो गए। सम्राट और उनके सभी मंत्री अत्यंत प्रसन्न हुए। वह सचमुच तथागत के पुत्र थे। उन्हें देखिए: अध्याय 12

उनके प्रभावशाली चेहरे की सुंदरता कितनी मनमोहक है;
उनके बुद्ध वस्त्र ऐसे फिट बैठते थे मानो वे उन्हीं के लिए बनाए गए हों।
उनसे निकलने वाली चमक स्वर्ग और पृथ्वी को भर देती है।
जब आकाश में रंग स्थिर होने लगते हैं।
ऊपर और नीचे चमकते मोतियों की कतारें,
आगे और पीछे के हिस्से को जोड़ने वाले सुनहरे धागों की परतें।
ब्रोकेड से किनारीदार हुड,
दस हजार विचित्र डिजाइनों से कढ़ाई की गई।
आठ रत्नों के पैटर्न बटनों के धागों को थामे हुए हैं, जबकि सोने का हार मखमली कुंडी से बंधा हुआ है।
बुद्ध-स्वर्गों को उनकी श्रेष्ठता के क्रम में व्यवस्थित किया गया है।

जबकि बाईं और दाईं ओर ऊंचे और विनम्र तारे हैं।
विधि के स्वामी ज़ुआनज़ैंग का भाग्य महान है।
इस समय इस उपहार को स्वीकार करने के योग्य कौन है?
वह तो मानो साक्षात अर्हत हैं।
पश्चिम के प्रबुद्ध व्यक्ति से भी श्रेष्ठ।
भिक्षु की छड़ी पर नौ छल्ले खनकते हैं।
और वैरोचना का मुकुट भव्यता से चमक रहा है।
यह कितना सत्य है कि वह बुद्ध का पुत्र है;
यह झूठ नहीं है कि उन्होंने ज्ञानोदय की अवस्था को पार कर लिया है।
अध्याय 12
183
पश्चिम की यात्रा
सभी नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने प्रशंसा से स्वर भर दिया, और सम्राट प्रसन्न हुए। उन्होंने विधि के स्वामी को चोगा ठीक से पहनने और राजदंड धारण करने का आदेश दिया, और उन्हें दो दल के औपचारिक सेवक प्रदान किए तथा कई अधिकारियों को महल से विदा करके उनके मठ तक ले जाने का आदेश दिया। यह ठीक वैसा ही था जैसे महल की परीक्षा में शीर्ष उत्तीर्ण छात्र का जुलूस निकलता है। ज़ुआनज़ैंग ने सम्राट को धन्यवाद देने के लिए एक बार फिर प्रणाम किया और फिर शान से राजमार्ग पर चल पड़े। चांगआन शहर के सभी व्यापारी, दुकानदार, फैशनेबल युवक, पेशेवर लेखक, पुरुष और महिलाएं, युवा और वृद्ध, उन्हें देखने और उनकी प्रशंसा करने के लिए होड़ लगा रहे थे।
“क्या महान धर्मगुरु हैं!” उन्होंने कहा। “वे पृथ्वी पर अवतरित अर्हत हैं, साक्षात बोधिसत्व हैं जो हम मनुष्यों से मिलने आए हैं।” शुआनज़ैंग सीधे अपने मठ गए, जहाँ सभी भिक्षु उनका स्वागत करने के लिए अपने ध्यान स्थल छोड़कर आ गए। जब उन्होंने शुआनज़ैंग का वस्त्र और हाथ में राजदंड देखा, तो सभी ने कहा कि राजा क्षितिगर्भ आए हैं, उन्हें प्रणाम किया और दाएं-बाएं खड़े हो गए। मुख्य हॉल में चढ़कर, शुआनज़ैंग ने अगरबत्ती जलाई और बुद्ध की आराधना की, और जब उन्होंने सम्राट के पद का वर्णन कर दिया, तो सभी ध्यान के लिए अपने-अपने स्थानों पर लौट गए। किसी ने ध्यान नहीं दिया कि सूर्य का लाल चक्र अब पश्चिम में डूब रहा था।

जैसे-जैसे सूरज डूबता है, पेड़-पौधे कोहरे की चादर में लिपट जाते हैं।
राजधानी में घंटियों और ढोल की गूंज सुनाई दे रही है।
घंटी की तीन आवाजें बजने के बाद भी कोई नहीं हिलता:
पूरे शहर की सड़कें सुनसान हैं।
मठ अपने दीपों की रोशनी से जगमगा रहा है;
यह गांव सुनसान और शांत है।
चान भिक्षु समाधि की अवस्था में प्रवेश करते हैं और क्षतिग्रस्त सूत्रों की मरम्मत करते हैं।
बुराई से खुद को शुद्ध करने और अपने सच्चे स्वभाव को पोषित करने का यह एक अच्छा तरीका है।
समय पलक झपकते ही बीत गया और सातवें दिन विशेष सभा का समय आ गया, इसलिए ज़ुआनज़ैंग ने तांग सम्राट को आमंत्रित करते हुए एक ज्ञापन लिखा और धूप जलाने का निमंत्रण दिया। उनकी धार्मिकता की ख्याति अब पूरे साम्राज्य में फैल चुकी थी। इसलिए ताइज़ोंग ने बड़ी संख्या में नागरिक और सैन्य अधिकारियों तथा अपनी महारानियों, पत्नियों और उनके परिवारों को रथों के जुलूस में उस सुबह मंदिर तक पहुंचाया। शहर में हर कोई, चाहे युवा हो या वृद्ध, साधारण हो या शक्तिशाली, उपदेश सुनने के लिए मंदिर पहुंचा।
बोधिसत्व ने मोक्ष से कहा, "आज भूमि और जल के महान समूह का विशेष दिन है, जो इस पहले सातवें दिन से सातवें सातवें दिन तक, जैसा कि उचित है, चलेगा। हम दोनों तीन कारणों से भीड़ में शामिल होने जा रहे हैं: पूजा देखने के लिए, हमारे खजाने को धारण करने के आशीर्वाद का आनंद लेते हुए स्वर्णिम टिड्डे को देखने के लिए, और यह सुनने के लिए कि वह शास्त्रों की किस शाखा पर उपदेश देता है।" वे दोनों मंदिर गए। उनका अपने पुराने परिचित से मिलना नियति थी, ठीक वैसे ही जैसे ज्ञान अपने उपदेश स्थल पर लौट आया था। जब वे मठ के भीतर गए, तो उन्होंने देखा कि यह महान और दिव्य वंश संसार के किसी भी अन्य वंश से श्रेष्ठ था; अध्याय 12

जबकि जेतवन मठ और श्रावण इस मंदिर के सामने कुछ भी नहीं थे। बुद्ध नामों के उच्चारण के बीच भी पवित्र संगीत स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहा था। जब बोधिसत्व

उपदेश मंच के पास पहुँचीं, तो उन्होंने शुआनज़ैंग में बुद्धिमान सुनहरे टिट्टे की छवि देखी। जैसा कि कविता में कहा गया है:
हर तस्वीर में शुद्धता, धूल के एक कण से भी मुक्त।
महान शुआनज़ैंग अपने ऊंचे मंच पर बैठे थे।
जिन एकाकी आत्माओं को मुक्ति मिली है, वे गुप्त रूप से आती हैं।
जबकि कुलीन वर्ग के लोग कानून की सुनवाई के लिए आते हैं।
उपयुक्त विधियों का चयन करने में उनकी बुद्धिमत्ता महान है;
उन्होंने अपना पूरा जीवन धर्मग्रंथों के द्वार खोलने में व्यतीत किया है।
जब वे उसे अनंत नियम का उपदेश देते हुए देखते हैं,
बच्चों और बड़ों, सभी के कान आनंद से भर जाते हैं।
जब गुआनयिन मंदिर के उपदेश कक्ष की ओर गईं
उसकी मुलाकात एक पुराने परिचित से हुई जो कोई साधारण व्यक्ति नहीं था।
उन्होंने हर समसामयिक विषय पर बात की।
और उन्होंने कई युगों की उपलब्धियों का उल्लेख किया।
धर्म के बादल हर पर्वत पर छा जाते हैं।
शिक्षा का जाल पूरे आकाश में फैल जाता है।
यदि कोई मनुष्यों में मौजूद धार्मिक विचारों की संख्या गिने तो
वे लाल फूलों पर गिरने वाली बारिश की बूंदों की तरह असंख्य हैं।
अपने मंच पर, धर्मगुरु ने जीवनदान और मृत्युदंड मुक्ति सूत्र का पाठ किया, देश की रक्षा के लिए दिव्य मंत्र पर चर्चा की और पुण्य कमाने के उपदेश पर प्रवचन दिया। बोधिसत्व मंच पर चढ़ीं, उसे पटका और ज़ोर से चिल्लाईं, "हे भिक्षु, आप केवल लघुयान के सिद्धांत के बारे में ही क्यों बात कर रहे हैं? क्या आप महायान के बारे में भी प्रवचन दे सकते हैं?"

ये प्रश्न सुनकर प्रसन्न होकर शुआनज़ैंग उपदेश मंच से नीचे कूद पड़े, बोधिसत्व को प्रणाम किया और बोले, "आदरणीय गुरुदेव, आपके शिष्य ने आपको न पहचानकर घोर पाप किया है। हम भिक्षु जो आपके समक्ष खड़े हैं, केवल लघुयान के नियम का

उपदेश देते हैं, और महायान के सिद्धांत के बारे में हमें कुछ भी ज्ञान नहीं है।"
"तुम्हारे उस लघुयान के सिद्धांत से कभी भी मृतकों का पुनर्जन्म नहीं होगा; यह केवल सतही ज्ञान प्राप्ति के लिए ही पर्याप्त है। अब मेरे पास बुद्ध के महायान के तीन स्रोत हैं जो मृतकों को स्वर्ग तक पहुंचाएंगे, व्यथियों को उनके कष्टों से मुक्ति दिलाएंगे और आत्माओं को शाश्वत जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त करेंगे।"
जब बोधिसत्व प्रवचन दे रहे थे, तभी मंदिर में गश्त लगाने वाले अधिकारी, धूपदान के स्वामी ने तांग सम्राट को तत्काल सूचना दी कि जब धर्म के स्वामी अद्भुत धर्म का उपदेश दे रहे थे, तभी दो बदरंग भिक्षुओं ने उन्हें घसीटकर नीचे गिरा दिया और उनसे उग्र बहस करने लगे। सम्राट ने उन्हें गिरफ्तार कर अपने समक्ष लाने का आदेश दिया, और बड़ी संख्या में लोगों ने उन्हें मठ के पिछले भाग में धकेल दिया।
जब उन्होंने ताइज़ोंग को देखा तो उन्होंने न तो अभिवादन में हाथ उठाए और न ही सिर झुकाया, बल्कि उनकी आंखों में देखकर कहा, "महाराज, आप हमसे क्या पूछना चाहते हैं?"
उन्हें पहचानते हुए सम्राट ने पूछा, "क्या आप वही भिक्षु नहीं हैं जिन्होंने हमें यह चोगा दिया था?"
"बिल्कुल सही," बोधिसत्व ने उत्तर दिया।
ताइज़ोंग ने कहा, "अगर तुम यहाँ उपदेश सुनने आए हो तो तुम्हें कुछ खाने से ही संतुष्ट हो जाना चाहिए था। तुमने धर्मगुरु पर चिल्लाना क्यों शुरू कर दिया, धर्मग्रंथ कक्ष में अशांति क्यों फैलाई और बुद्ध की सेवा में बाधा क्यों डाली?"
“तुम्हारे गुरु तो केवल लघुयान के सिद्धांत का उपदेश दे रहे थे, जो मृतकों को स्वर्ग नहीं पहुंचाता,” बोधिसत्व ने उत्तर दिया। “मेरे पास बुद्ध के महायान के तीन भंडार हैं, जो मृतकों का उद्धार करते हैं, दुखों से मुक्ति दिलाते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि शरीर बिना किसी हानि के सदा जीवित रहे।” बिना क्रोध का कोई संकेत दिखाए, ताइज़ोंग ने गंभीरता से पूछा कि बुद्ध का महायान कहाँ है।
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "यह पश्चिम में भारत की भूमि में स्थित थंडर मठ में है, जहाँ हमारे बुद्ध निवास करते हैं, और यह सभी अन्याय की गांठों को खोल सकता है और निर्दोषों को आपदा से बचा सकता है।"
सम्राट ने पूछा, "क्या आपको याद है?" बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "हाँ।" तब ताइज़ोंग ने आदेश दिया कि इस धर्मगुरु को मंच पर ले जाया जाए और उपदेश देने के लिए

आमंत्रित किया जाए।
बोधिसत्व और मोक्ष उड़कर चबूतरे पर पहुँचे, फिर जादुई बादलों पर सवार होकर आकाश में विलीन हो गए। वह दुख से मुक्ति दिलाने वाली देवी के रूप में प्रकट हुईं, उनके हाथ में एक फूलदान में विलो की टहनी थी, और मोक्ष उनके बगल में हियन के रूप में खड़े थे, उनके हाथ में एक छड़ी थी और वे ऊर्जा से भरपूर थे। तांग सम्राट इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने स्वर्ग को प्रणाम किया, जबकि उनके सभी नागरिक और सैन्य अधिकारी घुटने टेककर अगरबत्ती जलाने लगे। मंदिर में उपस्थित सभी लोग—भिक्षु, भिक्षुणियाँ, पुरोहित, गृहस्थ, विद्वान, श्रमिक और व्यापारी—सभी ने सिर झुकाकर प्रार्थना की।
"हे बोधिसत्व, हे बोधिसत्व।" उनके स्वरूप का वर्णन इस प्रकार है: उनके चारों ओर पवित्र प्रकाश चमक रहा है।
पवित्र प्रकाश उसके धर्म शरीर की रक्षा करता है।
अध्याय 12
186
पश्चिम की यात्रा
सर्वोच्च स्वर्ग की महिमा में
एक महिला अमर प्राणी प्रतीत होती है।
बोधिसत्व
उसने अपने सिर पर पहना था
शानदार मोती के गुच्छे
सुनहरे क्लिप के साथ,
फ़िरोज़ा से जड़ा हुआ,
और चमकीला सुनहरा।
उसने अपने शरीर पर पहना हुआ था
उड़ते हुए फीनिक्स पक्षियों के चित्र वाला एक सादा नीला वस्त्र,
हल्के रंग का,
बहते पानी के पैटर्न से सजा हुआ,
जिस पर सुनहरे रंग के घुमावदार अजगर बने हुए थे।
इससे पहले कि उसके स्तन लटकते

चाँदनी से जगमगाता हुआ,
हवा में नृत्य करना,
मोती जड़े हुए,
सुगंध से भरपूर जेड जड़ा हुआ मुकुट।
उसकी कमर के चारों ओर था
जेड पूल से प्राप्त कढ़ाई और ब्रोकेड से बनी एक स्कर्ट
बर्फ के रेशम के कीड़ों के रेशम से बना,
सुनहरी सिलाई के साथ,
वह रंगीन बादलों पर सवार था।
उसके जाने से पहले
सफेद और पीले रंग का लाल चोंच वाला तोता,
पूर्वी महासागर के पार उड़ान भरने के लिए,
अध्याय 12
187
पश्चिम की यात्रा
और पूरी दुनिया में
कृतज्ञता और कर्तव्य की भावना से।
उसके हाथ में जो कलश था, वह कृपा और मुक्ति प्रदान करता था।
और फूलदान में एक टहनी थी
कोहरे को दूर भगाने के लिए रोने वाला विलो वृक्ष,
आकाश पर जल बिखेरते हुए,
सभी बुराइयों का निवारण।
जेड के छल्ले ब्रोकेड बटनों पर लिपटे हुए थे
और उसके सुनहरे कमल जैसे चरण छिपे हुए थे।
वह तीनों स्वर्गों की यात्रा करने में सक्षम थी।
क्योंकि वह गुआनयिन थी, दुखों से मुक्ति दिलाने वाली देवी।
ताइज़ोंग इतना मुग्ध हो गया कि वह अपने साम्राज्य के बारे में सब कुछ भूल गया; मंत्री और सेनापति इतने मोहित हो गए कि वे दरबारी शिष्टाचार के बारे में सब कुछ भूल गए; और जनता ने एक स्वर में कहा, "बोधिसत्व गुआनयिन की जय हो।"

ताइज़ोंग ने आदेश दिया कि एक कुशल चित्रकार बोधिसत्व का हूबहू चित्र बनाए, और उनके बोलते ही देवताओं और अमर प्राणियों के प्रतिभाशाली और प्रबुद्ध चित्रकार वू दाओज़ी को चुन लिया गया। बाद में उन्होंने ही बादल भेदन मंडप में प्रतिष्ठित मंत्रियों के चित्र बनाए।

अपनी चमत्कारी कलम से उसने मौके पर ही बोधिसत्व की हूबहू छवि बना दी। बोधिसत्व का जादुई बादल धीरे-धीरे दूर चला गया, और एक क्षण बाद सुनहरा प्रकाश दिखना बंद हो गया। केवल आकाश से एक संदेश नीचे आता हुआ दिखाई दिया, जिस पर छंदों में लिखा हुआ यह संक्षिप्त संदेश पढ़ा जा सकता था:

"महान तांग राजवंश के स्वामी को मेरा नमस्कार।"
पश्चिम में चमत्कारिक ग्रंथ मौजूद हैं।
हालांकि यह सड़क साठ हजार मील लंबी है,
महान वाहन अपनी सहायता प्रदान करेगा।
जब ये धर्मग्रंथ आपके देश में वापस लाए जाएंगे
वे शैतानों को बचाएंगे और जनता का उद्धार करेंगे।
अगर कोई इन्हें लेने के लिए तैयार हो,
उसका पुरस्कार एक स्वर्णमय शरीर होगा।"

इन पंक्तियों को पढ़कर ताइज़ोंग ने भिक्षुओं की सभा को आदेश दिया: "जब तक हम किसी को महायान के शास्त्रों को लाने के लिए नहीं भेज देते, तब तक इस सेवा को स्थगित कर दें, और फिर आप एक बार फिर अच्छे कर्मों का फल पाने के लिए पूरी निष्ठा से प्रयास करें।" सभी भिक्षुओं ने उनके निर्देशों का पालन किया। सम्राट ने तब मठ में उपस्थित लोगों से पूछा, "बुद्ध से मिलने और शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जाने का हमारा आदेश कौन स्वीकार करना चाहता है?"

उनके प्रश्न समाप्त होने से पहले ही, विधि के मास्टर आगे आए, प्रणाम करते हुए झुके और बोले,

"यद्यपि मुझमें योग्यता की कमी है, फिर भी मैं महाराज के लिए सच्चे धर्मग्रंथ लाने का विनम्र प्रयास करना चाहता हूँ, जिससे आपके साम्राज्य की शाश्वत सुरक्षा सुनिश्चित हो

सके।" यह सुनकर तांग सम्राट अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें उठाकर खड़ा कर दिया।
"गुरुजी," उसने कहा, "यदि आप यात्रा की लंबाई या पार करने वाली नदियों और पहाड़ों से भयभीत हुए बिना, अपनी निष्ठा और बुद्धिमत्ता का पूर्ण प्रदर्शन करने के लिए तैयार हैं, तो मैं आपको अपना शपथबद्ध भाई बना लूंगा।"
शुआनज़ैंग ने उन्हें धन्यवाद देने के लिए प्रणाम किया। तांग सम्राट वास्तव में ज्ञान और सद्गुणों से परिपूर्ण थे, इसलिए वे मठ में बुद्ध के सामने जाकर शुआनज़ैंग को चार बार प्रणाम किया और उन्हें "छोटे भाई" और "पवित्र भिक्षु" कहकर पुकारा। शुआनज़ैंग ने भी उनका हार्दिक धन्यवाद किया।
“महाराज,” उसने कहा, “मुझमें ऐसा कोई गुण या प्रतिभा नहीं है जो मुझे आपके रिश्तेदार कहलाने के पवित्र सम्मान के योग्य बनाए। इस यात्रा में मैं अपना सर्वस्व समर्पित कर दूंगा और सीधे पश्चिमी स्वर्ग की ओर जाऊंगा। यदि मैं वहां पहुंचने में या सच्चे शास्त्रों को प्राप्त करने में असफल रहा, तो मैं मृत्यु के बाद भी इस देश में वापस नहीं लौटूंगा और अनंतकाल के लिए नरक में गिर जाऊंगा।” उसने इस प्रतिज्ञा के प्रतीक के रूप में बुद्ध के सामने धूप जलाई। प्रसन्न सम्राट ने अपने रथ को उसे महल वापस ले जाने का आदेश दिया; बाद में एक शुभ दिन चुना जाएगा जिस दिन शुआनज़ैंग को पासपोर्ट दिया जाएगा और वह यात्रा पर निकलेगा। इतना कहकर वह लौट आया और सभी लोग चले गए।
शुआनज़ैंग हांगफू मठ लौट आए, जहाँ कई भिक्षुओं और उनके कुछ निजी शिष्यों को पहले ही पता चल चुका था कि वे धर्मग्रंथ लेने जा रहे हैं। वे उनसे पूछने आए कि क्या यह सच है कि उन्होंने पश्चिमी स्वर्ग जाने की प्रतिज्ञा की थी। शुआनज़ैंग द्वारा यह बताए जाने पर कि यह सचमुच सच है, उनके शिष्यों ने कहा, "गुरुजी, हमने सुना है कि पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा लंबी है, और रास्ते में कई बाघ, तेंदुए, राक्षस और दानव हैं। हमें डर है कि कहीं आप अपनी जान न गंवा दें और कभी वापस न लौटें।"
“मैंने एक बड़ी प्रतिज्ञा ली है कि यदि मुझे सच्चे शास्त्र नहीं मिले तो मैं अनन्त नरक में जाऊँगा,” शुआनज़ैंग ने उत्तर दिया। “इसके अलावा, जैसा कि महाराज ने मुझ पर इतनी कृपा की है, मुझे देश को उनके सम्मान का प्रतिफल देने के लिए अपनी पूरी निष्ठा दिखानी होगी। लेकिन यह एक अनजानी यात्रा होगी, और कोई नहीं कह सकता कि मेरा भाग्य क्या होगा। मेरे शिष्यों,” उन्होंने आगे कहा, “मेरे प्रस्थान करने के दो या तीन साल बाद, या शायद छह या सात साल बाद, मठ के द्वार के भीतर वह चीड़ का

पेड़ पूर्व दिशा की ओर मुड़ जाएगा, जिसका अर्थ होगा कि मैं वापस आ रहा हूँ। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो आप निश्चित रूप से जान लें कि मैं वापस नहीं लौटूँगा।" उनके सभी शिष्यों ने उनके शब्दों को अत्यंत सावधानीपूर्वक याद कर लिया।

अगली सुबह दरबार में ताइज़ोंग ने अपने नागरिक और सैन्य अधिकारियों को इकट्ठा किया और ज़ुआनज़ैंग के लिए शास्त्रों को लाने हेतु आवश्यक दस्तावेज़ तैयार किया, जिस पर उन्होंने स्वतंत्र यात्रा का अधिकार देने वाली शाही मुहर लगाई। जब एक शाही ज्योतिषी ने बताया कि लंबी यात्रा पर निकलने के लिए आज का दिन शुभ नक्षत्रों के प्रभाव में है, तो तांग सम्राट अत्यंत प्रसन्न हुए। एक हिजड़ा अधिकारी ने सूचना दी, "राजकीय लघु भाई, विधि के स्वामी, महल के द्वार के बाहर बुलावे की प्रतीक्षा कर रहे हैं।" उन्हें सिंहासन कक्ष में बुलाकर ताइज़ोंग ने कहा, "भाई, आज यात्रा शुरू करने के लिए शुभ दिन है, और यह वह पास है जो आपको चौकियों से गुजरने देगा। मैं आपको एक सोने का कटोरा भी दे रहा हूँ जिससे आप यात्रा के दौरान भोजन की भीख मांग सकते हैं, साथ ही आपके साथ दो अनुभवी यात्री भी भेज रहा हूँ और आपकी लंबी यात्रा के लिए एक घोड़ा भी भेंट कर रहा हूँ। अब आप प्रस्थान कर सकते हैं।" यह सुनकर ज़ुआनज़ैंग अत्यंत प्रसन्न हुए, उन्होंने सम्राट को धन्यवाद दिया और उपहार स्वीकार किए। अब वे पहले से कहीं अधिक उत्सुक थे। ताइज़ोंग और कई अधिकारी एक गाड़ी में बैठकर उनके साथ चेकपॉइंट तक गए। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने पाया कि अध्याय 12

हांगफू मठ के भिक्षु और शुआनज़ैंग के शिष्य उनके ग्रीष्म और शीतकालीन वस्त्र लेकर बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे। यह देखते ही तांग सम्राट ने वस्त्रों को पैक करने और घोड़ों की व्यवस्था करने का आदेश दिया, फिर एक अधिकारी को थोड़ी शराब डालने को कहा। अपना प्याला उठाते हुए उन्होंने पूछा, "भाई, आपका शिष्टाचार नाम क्या है?"

“चूंकि मैं संसार का नहीं हूं, इसलिए मेरा कोई नाम नहीं है,” शुआनज़ैंग ने उत्तर दिया। “बोधिसत्व ने कल कहा था कि पश्चिमी स्वर्ग में शास्त्रों के तीन भंडार (सोन ज़ांग) हैं। भाई, आपको इनमें से कोई शिष्टाचार नाम रखना चाहिए। सान्ज़ांग कैसा रहेगा?”

सम्राट की दयालुता के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए, उन्होंने शराब का प्याला स्वीकार

करते हुए कहा, "महाराज, शराब उन चीजों में से पहली है जिनसे एक भिक्षु को परहेज करना चाहिए, और इसलिए मैंने इसे कभी नहीं पिया है।"
“आज की यात्रा असाधारण है,” ताइज़ोंग ने उत्तर दिया, “और वैसे भी, यह शराब नहीं है, इसलिए आप इसे पी लें और हमें यह महसूस करने दें कि हमने आपको ठीक से विदाई दी है।” और अधिक इनकार न कर पाने पर, सान्ज़ांग ने शराब ले ली, और उसे पीने ही वाला था कि उसने देखा कि ताइज़ोंग नीचे झुका, अपनी उंगलियों में एक चुटकी धूल ली और उसे अपने प्याले में डाल दिया। सान्ज़ांग की हैरानी देखकर, ताइज़ोंग हँसा और बोला,
"प्रिय भाई, आप पश्चिमी स्वर्ग की इस यात्रा से कब लौटेंगे?"
"मैं तीन साल के भीतर इस देश में वापस आ जाऊँगा," संज़ंग ने उत्तर दिया। "दिन और साल लंबे होंगे, पहाड़ ऊँचे होंगे, और रास्ता तुम्हें बहुत दूर ले जाएगा," ताइज़ोंग ने कहा, "इसलिए तुम्हें यह शराब पीनी चाहिए ताकि तुम यह दिखा सको कि तुम्हें अपने घर की एक चुटकी धूल से हज़ारों औंस विदेशी सोने से भी ज़्यादा प्यार है।"
तभी संजांग को धूल की एक चुटकी का महत्व समझ आया, और सम्राट को एक बार फिर धन्यवाद देते हुए उसने प्याला खाली किया, उनसे विदा ली और चौकी से बाहर निकल गया। सम्राट महल लौट गए।
अगर आपको नहीं पता कि यात्रा के दौरान क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 13
वह बाघ की मांद में गिर जाता है और शुक्र ग्रह द्वारा बचाया जाता है। दोहरी शाखा वाली चोटी पर बोकिन पुजारी का मनोरंजन करता है।
महान तांग सम्राट ने एक फरमान जारी किया।
संजंग को ध्यान की शिक्षा सीखने के लिए भेजा जा रहा है।
वह दृढ़ता और धैर्य के साथ अजगर की मांद की तलाश करता है।
वह गिद्ध शिखर पर चढ़ने तक अपना प्रयास जारी रखने के लिए दृढ़ संकल्पित है।
अपनी लंबी यात्रा में वह कई देशों का दौरा करेगा;
उसके सामने हजारों बादलों से ढके पर्वत फैले हुए हैं।
अब वह सम्राट को छोड़कर पश्चिम की ओर चल पड़ता है।
आस्था पर अडिग रहते हुए, और उस महान शून्य के प्रति सचेत रहते हुए।

यह पहले ही बताया जा चुका है कि झेन गुआन के तेरहवें वर्ष के नौवें महीने के बारहवें दिन चांगआन के बाहर चौकी पर तांग सम्राट और कई अधिकारियों ने संजांग को विदाई दी थी। दो दिनों तक उनके घोड़े के खुर लगातार चलते रहे और वे जल्द ही फा मेन मठ पहुँच गए, जहाँ मठाधीश पाँच सौ से अधिक भिक्षुओं के साथ दो पंक्तियों में खड़े होकर उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए। संजांग को अंदर ले जाकर उन्होंने उनका अभिवादन किया, उन्हें चाय पिलाई और फिर उन्हें मठ का भोजन कराया। भोजन समाप्त होने तक रात हो चुकी थी।

जैसे ही यह आकाशगंगा के पास पहुंचा,
चंद्रमा पर धूल का कोई नामोनिशान नहीं था।
जंगली हंस ने दूर से आ रहे यात्री को पुकारा।
कपड़े धोने के तख्तों की आवाज पड़ोसियों को सुनाई दे रही थी।
सूखे पेड़ों पर पक्षी बसेरा करते हैं;
ध्यानमग्न भिक्षु संस्कृत संगीत का पाठ करते हैं।
सरकंडे की गद्दी के साथ अपनी सीटों पर बैठे हुए
वे आधी रात तक बैठे रहते हैं।

दीपक की रोशनी में भिक्षु बौद्ध धर्म की सच्ची शिक्षाओं और शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जाने के कारणों पर चर्चा कर रहे थे। कुछ का कहना था कि रास्ते में चौड़ी नदियाँ और ऊँचे पहाड़ पार करने होंगे, कुछ का कहना था कि रास्ते में कई बाघ और तेंदुए मिलेंगे, कुछ का कहना था कि ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं और चट्टानों को पार करना कठिन होगा, और कुछ का कहना था कि दुष्ट राक्षस और दुष्ट आत्माएँ मिलेंगी जिन्हें वश में करना मुश्किल होगा।

संजांग ने अपने होंठ बंद रखे; उसने कुछ नहीं कहा, बस अपने दिल की ओर इशारा किया और कभी-कभार सिर हिलाया।

भिक्षु, उनकी बात समझ न पाने के कारण, हाथ जोड़कर पूछने लगे, "गुरुजी, आप अपने हृदय की ओर इशारा करके सिर क्यों हिलाते हैं?"

“जब तक हृदय और मन जीवित रहते हैं,” संज़ंग ने उत्तर दिया, “हर प्रकार की बुराई

जीवित रहती है; परन्तु जब वे बुझ जाते हैं, तो बुराई भी बुझ जाती है। मैंने हुआशेंग मठ में बुद्ध से प्रतिज्ञा की थी कि यदि मैं इस मिशन को पूरा करने में असफल भी हो जाऊं, तो यह प्रयास की कमी के कारण नहीं होगा। मैं पश्चिमी स्वर्ग तक पहुंचने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं, जहां मैं बुद्ध के दर्शन कर सकूं और शास्त्रों का अनुरोध कर सकूं, ताकि धर्मचक्र चलता रहे और हमारे ऋषि सम्राट को शाश्वत सुरक्षा प्राप्त हो।"
उनकी बातें सुनकर सभी भिक्षुओं ने अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हुए मानो एक स्वर में कहा, "कितने निष्ठावान और वीर धर्मगुरु हैं!" प्रशंसा के स्वरों में डूबे हुए ही उन्होंने गुरु को सोने के लिए आमंत्रित किया और उन्हें सुखद नींद की कामना की।

अध्याय 13

191

पश्चिम की यात्रा

कुछ ही देर में बांस की घंटियाँ बजने लगीं, जो चंद्रमा के डूबने का संकेत दे रही थीं, और मुर्गों ने बांग देकर सूर्योदय का स्वागत किया। सभी भिक्षु उठ गए और चाय-नाश्ता तैयार करने लगे। संज़ंग ने अपना चोगा पहना और मुख्य हॉल में बुद्ध की पूजा करने चले गए।

“आपका शिष्य चेन सान्ज़ांग,” उन्होंने कहा, “शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहा है, लेकिन मेरी सांसारिक दृष्टि इतनी कमजोर है कि मैं जीवित बुद्ध के सच्चे स्वरूप को नहीं देख सकता। मैं अब प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब भी मैं अपनी यात्रा में किसी मंदिर के पास से गुजरूँ, तो अगरबत्ती जलाऊँगा; जब भी मुझे बुद्ध की कोई प्रतिमा दिखाई दे, तो मैं उसकी पूजा करूँगा; और जब भी मैं किसी स्तूप के पास से गुजरूँ, तो मैं उसकी सफाई करूँगा। मेरी एकमात्र इच्छा है कि बुद्ध अपनी कृपा से शीघ्र ही अपने स्वर्णमय शरीर में मुझे दर्शन दें और मुझे सच्चे शास्त्र प्रदान करें ताकि मैं उन्हें वापस ले जाकर पूर्वी देश में उनका प्रचार कर सकूँ।” प्रार्थना करने के बाद वे नाश्ते के लिए मठाधीश के कमरे में लौट गए। नाश्ते के बाद उनके दो सेवकों ने घोड़े पर काठी कसी और अच्छी गति से चल पड़े। मठ के द्वार पर सान्ज़ांग ने भिक्षुओं से विदा ली, जो उनसे विदा होने के लिए इतने अनिच्छुक थे कि वे लगभग तीन मील तक उनके साथ गए और फिर आँखों में आँसू लिए वापस लौट गए, जबकि सान्ज़ांग पश्चिम की ओर आगे बढ़ गए। मौसम शरद ऋतु का था।

गांव के पेड़ पत्तों से रहित हो गए हैं, और सरकंडों के फूल झड़ गए हैं;

मेपल और विलो के पेड़ों से लाल पत्ते झड़ चुके थे।
रास्ता धुंध भरा और नम था, और रास्ते में उसे बहुत कम दोस्त मिले।
पीले गुलदाउदी के फूल कितने सुंदर हैं!
पर्वतीय चोटियाँ नाजुक होती हैं;
कमल को मुरझाया हुआ देखकर दुख हुआ, अब पानी ठंडा हो गया था।
सफेद डकवीड और लाल स्मार्टवीड पाले के कारण बर्फ में बदल गए।
बादलों से अकेली बत्तखें नीचे आ रही थीं, आकाश से गिर रही थीं, जहाँ हल्के और पतले बादल सरपट दौड़ रहे थे।
अबाबीलें जा चुकी थीं।
प्रवासी हंस यहाँ थे।
और उनके हॉर्न की तेज आवाज ने रात की शांति भंग कर दी।
कई दिनों तक यात्रा करने के बाद जब गुरु और उनके सेवक गोंगझोऊ शहर पहुँचे, तो वहाँ सभी स्थानीय अधिकारी उनका स्वागत करने और उन्हें शहर में ले जाने के लिए प्रतीक्षारत थे। एक रात आराम करने के बाद वे अगली सुबह फिर से चल पड़े। वे भूख लगने पर भोजन करते और प्यास लगने पर पानी पीते, दिन में यात्रा करते और रात में विश्राम करते। दो-तीन दिन बाद वे हेझोऊ के सैन्य नगर पहुँचे, जो महान तांग साम्राज्य की सीमा पर स्थित था। सैन्य सेनापति और स्थानीय बौद्ध भिक्षुओं और पुजारियों ने सुना था कि धर्म के गुरु, सम्राट के छोटे भाई, महाराज के आदेश पर बुद्ध के दर्शन के लिए पश्चिम जा रहे हैं, इसलिए वे सभी बहुत आदरपूर्वक उपस्थित थे। भिक्षुओं के निदेशक उन्हें शहर में ले गए (अध्याय 13)।

उन्हें उनकी सभी ज़रूरतें पूरी की गईं और उन्हें फुयुआन मठ में रात बिताने के लिए आमंत्रित किया गया। मठ के सभी भिक्षु उनसे मिलने आए और भोजन समाप्त करने के बाद उन्होंने अपने सेवकों से कहा कि घोड़े को अच्छी तरह से चारा खिला दें क्योंकि वे भोर से पहले ही निकल पड़ेंगे। जैसे ही मुर्गों ने बांग देना शुरू किया, उन्होंने अपने सेवकों को बुलाया, जिससे भिक्षुओं की नींद टूट गई और वे उनके लिए चाय और भोजन लेकर आए।
खाना खाने के बाद उसने सीमा पार कर ली।

अपनी अधीरता में संज़ंग समय से पहले ही उठ गया था। पतझड़ का मौसम होने के कारण मुर्गे बहुत जल्दी बांग दे चुके थे और अभी भी लगभग दो बजे थे। वे तीनों—घोड़े समेत चार लोग—ठंड में लगभग बारह मील का सफर चाँदनी में रास्ता ढूँढते हुए तय करते रहे, जब तक कि उन्हें अपने सामने एक विशाल पर्वत दिखाई नहीं दिया। उन्हें रास्ता ढूँढते हुए झाड़ियों को हटाना पड़ा और रास्ता बेहद ऊबड़-खाबड़ और मुश्किल था। जब वे सोच रहे थे कि कहीं वे रास्ता न भटक गए हों, तभी वे तीनों और घोड़ा ठोकर खाकर एक गड्ढे में गिर पड़े।

संज़ंग दहशत में आ गया, और उसके सेवक भय से कांप रहे थे। तभी उनकी दहशत में और इजाफा हुआ जब उन्होंने अंदर से गर्जना और "पकड़ो उन्हें! पकड़ो उन्हें!" की तेज़ आवाज़ें सुनीं। हवा के एक भयंकर झोंके के साथ पचास-साठ राक्षसों की भीड़ उन पर टूट पड़ी और उन्हें बाहर घसीट ले गई। जब कांपते और थरथराते हुए धर्मगुरु ने चुपके से देखा तो उन्होंने पाया कि एक अत्यंत दुष्ट दानव राजा उनके ऊपर बैठा है। सचमुच वह कद में बहुत शक्तिशाली था।

चेहरे का उग्र भाव।

उसकी आंखें बिजली की तरह चमक उठीं।

उनकी गरजती हुई आवाज से चारों दिशाएं हिल गईं।

उभरे हुए, आरी जैसे नुकीले दांत;

नुकीले दांतों को छेनी की तरह बाहर निकाला।

उसका शरीर जटाधारी वस्त्रों से ढका हुआ था।

और उसकी पीठ पर उसी के पैटर्न बने हुए थे।

लोहे जैसी घनी दाढ़ी से उसका चेहरा ढका हुआ था।

नुकीले, कांटेदार पंजे, पाले की तरह तेज:

दक्षिणी पर्वत का श्वेत भौंहों वाला राजा,

पूर्वी सागर के पीले स्वामी को उससे डर लगता था।

उसे देखकर संज़ंग बुरी तरह डर गया और उसके दोनों सेवकों की हड्डियाँ काँपने लगीं और मांसपेशियाँ सुन्न पड़ गईं। जब दानव राजा ने उन्हें बाँधने का आदेश दिया, तो उन

दुष्टों ने उन्हें रस्सी से बाँध दिया। वह उन्हें निगलने ही वाला था कि बाहर से एक ज़ोरदार आवाज़ आई और पर्वत स्वामी भालू और साधु बैल के आने की सूचना मिली। संज़ंग ने ऊपर देखा तो पाया कि उनमें से एक काले रंग का था। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि वह कैसा दिखता होगा?

एक महान साहस का नायक,
शरीर से हल्का और मजबूत,
नदियों को पार करने में शक्तिशाली,
वह जंगल में दौड़ते हुए अपनी अद्भुत शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है।
हमेशा सौभाग्यशाली सपनों से धन्य,
अब उन्होंने अपनी अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन किया।
वह हरे पेड़ को जड़ से उखाड़कर तोड़ सकता था।
और जब वह ठंड में चला जाता था तो वह मौसम को बदल सकता था।

स्पष्ट रूप से वह अपनी चमत्कारी शक्तियों का प्रदर्शन करता है, जिसके कारण वह पर्वतीय स्वामी के रूप में जाना जाता है।

उसके पीछे संजांग ने एक मोटे आदमी को देखा। क्या तुम जानते हो कि वह कैसा दिखता था?

दो ऊंचे सींगों वाली टोपी,
उसके कंधे बिल्कुल सीधे खड़े थे।
उन्हें फीके रंगों के कपड़े पहनना पसंद था।
और उसकी चाल हमेशा धीमी रहती थी।
उनके पुरुष पूर्वजों को बुल कहा जाता था;
उनकी मां को काऊ के नाम से जाना जाता था।
क्योंकि वह किसानों के लिए काम कर सकता था,
उनका नाम हरमिट ऑक्स था।

जब ये दोनों अकड़ते हुए अंदर आए, तो दानव राजा उनका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़ा। "जनरल यिन," पर्वत स्वामी भालू ने कहा, "मुझे आपको बधाई देनी चाहिए:

आप हमेशा इतने सफल रहते हैं।"
"महाराज यिन," ऋषि बैल ने कहा, "सदा विजयी होने पर मेरी हार्दिक बधाई।"
"हाल ही में आप दोनों सज्जनों के साथ चीजें कैसी चल रही हैं?" राक्षस राजा ने पूछा।
"लगभग हमेशा की तरह," माउंटेन लॉर्ड ने उत्तर दिया।
“मेरा काम चल जाता है,” साधु ने उत्तर दिया। ये औपचारिक बातें समाप्त होने के बाद, तीनों बैठकर एक साथ हँसने-हँसाने लगे।
इस बीच, संजांग के दोनों सेवक अपनी बेड़ियों में जकड़े हुए दयनीय ढंग से विलाप कर रहे थे।
"ये तीनों यहाँ कैसे पहुँचे?" उस सांवले आदमी ने पूछा।
"वे स्वयं ही मुख्य द्वार पर आ पहुँचे," दानव राजा ने उत्तर दिया।
"क्या आप इन्हें अपने दोस्तों को परोसेंगे?" साधु ने मुस्कुराते हुए पूछा।
"मुझे यह अवसर पाकर गर्व होगा," राक्षस राजा ने उत्तर दिया।
"हमें इन सबकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी," पर्वत स्वामी ने कहा। "हम दो खा सकते हैं और तीसरा रख सकते हैं।"
आज्ञाकारिता की "ना-आ-आ" ध्वनि करते हुए राक्षस राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे दोनों सेवकों के पेट चीरकर उनके हृदय निकाल लें और उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दें। उसने दोनों मेहमानों को सिर, हृदय और जिगर परोसे, स्वयं अंगों को खा लिया और शेष मांस और हड्डियों को राक्षसों में बाँट दिया। केवल एक कुरकुरेपन और चबाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी जो बिल्कुल बाघों द्वारा मेमनों को खाने जैसी थी, और कुछ ही क्षणों में सब कुछ खा लिया गया। संज़ंग भय से लगभग मर ही गया था, फिर भी यह उसकी पहली विपत्ति थी, जो चांगआन छोड़ने के तुरंत बाद ही आई थी।
अपनी निराशा में डूबे हुए उसने देखा कि पूरब में उजाला होने लगा है, और भोर होते ही दोनों राक्षस यह कहते हुए चले गए, "आज हमारा बहुत अच्छा सत्कार हुआ है, और हम किसी और दिन आपके आतिथ्य का पूरा बदला चुकाएंगे।" इतना कहकर वे दोनों दौड़ पड़े। कुछ ही क्षण बाद लाल सूरज आकाश में ऊँचा चढ़ गया, लेकिन संज़ंग इतना भ्रमित था कि उसे पता ही नहीं चल रहा था कि वह कहाँ है। ठीक जब सब कुछ खोया हुआ सा लग रहा था, तभी एक बूढ़ा व्यक्ति छड़ी के सहारे उसकी ओर बढ़ता हुआ प्रकट हुआ। वह संज़ंग के पास आया, अपने हाथ के इशारे से उसके सारे बंधन

तोड़ दिए, और उसके चेहरे पर फूँक मारकर उसे होश में ला दिया। संज़ंग घुटनों के बल गिर पड़ा और उसे प्रणाम करते हुए बोला, "हे आदरणीय वृद्ध, मेरी जान बचाने के लिए आपका धन्यवाद।"

बूढ़े आदमी ने अपना धनुष लौटाते हुए कहा, "उठो। क्या तुम्हारा कुछ खो गया है?"

"मेरे सेवकों को राक्षसों ने खा लिया है, और मुझे नहीं पता कि मेरा सामान या मेरा घोड़ा कहाँ है," संजांग ने उत्तर दिया।

बूढ़े आदमी ने अपनी छड़ी से इशारा करते हुए पूछा, "क्या वह सामने दो सामान से लदे हुए घोड़े जैसा नहीं है?" जब संजांग ने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उसका सामान खोया नहीं था, जिससे उसकी चिंता कुछ हद तक कम हो गई।

“आदरणीय महोदय,” उसने पूछा, “यह स्थान क्या है, और आप यहाँ कैसे पहुँचे?”

"यह दो शाखाओं वाला पहाड़ है, जहाँ बाघ और तेंदुए अपने ठिकाने बनाते हैं। तुम यहाँ कैसे गिर पड़े?"

"मैंने मुर्गे की बांग के समय ही हेझोऊ के छावनी शहर में सीमा पार कर ली, मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि मैं बहुत जल्दी उठ गया था।"

संज़ंग ने उत्तर दिया, "ठंड और ओस से भरे रास्ते से गुज़रते हुए हम अचानक इस गड्ढे में गिर पड़े। एक भयानक और क्रूर दानव राजा प्रकट हुआ और उसने मुझे और मेरे सेवकों को बांध दिया। तभी पर्वत स्वामी भालू नामक एक काले रंग का और साधु बैल नामक एक मोटा-ताज़ा दानव राजा जनरल यिन बनकर आए। उन तीनों ने मेरे दोनों सेवकों को खा डाला और उनका यह सिलसिला भोर होते-होते खत्म हुआ। मुझे समझ नहीं आता कि मेरी किस्मत में आपको मुझे बचाने का सौभाग्य क्यों मिला, आदरणीय महोदय।"

“सन्यासी एक जंगली बैल की आत्मा है, पर्वत स्वामी एक भालू की आत्मा है, और सेनापति यिन एक बाघ की आत्मा है,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया। “उसकी सेवा करने वाले राक्षस पर्वतीय आत्माएँ, वृक्ष राक्षस, दानव और भेड़िये हैं। उन्होंने तुम्हें इसलिए नहीं खाया क्योंकि तुम्हारा मूल स्वभाव प्रबुद्ध है। मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊँगा।” कृतज्ञता से भर कर, संज़ंग ने अपने घोड़े पर सामान लादा और लगाम

पकड़कर बूढ़े व्यक्ति के पीछे-पीछे गड्ढे से बाहर निकलकर मुख्य सड़क पर चल पड़ा। सड़क के किनारे एक झाड़ी से घोड़े को बाँधकर, वह बूढ़े व्यक्ति को प्रणाम करने और धन्यवाद देने के लिए मुड़ा, लेकिन बूढ़ा व्यक्ति हवा के झोंके में बदल गया और एक लाल चोंच वाले सफेद सारस की पीठ पर सवार होकर आकाश में उड़ गया। बस एक कागज़ का टुकड़ा हवा में नीचे गिरता हुआ दिखाई दे रहा था जिस पर कविता की चार पंक्तियाँ लिखी थीं:

मैं पश्चिमी आकाश का शुक्र ग्रह हूँ।
जो तुम्हारी जान बचाने आया था।
आगे की यात्रा में आपको दिव्य शिष्य मिलेंगे:
अपनी परेशानियों में शास्त्रों से क्रोधित मत हो।

यह पढ़कर संजांग ने स्वर्ग की आराधना की और कहा, "हे ग्रह, मुझे इस खतरे से बचाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।" इतना करने के बाद, वह अपने कठिन सफर पर आगे बढ़ा, घोड़े को साथ ले जाते हुए उसे बहुत अकेलापन महसूस हो रहा था। इस पर्वत पर थे...

ठंडी बारिश और पेड़ों में गरजती हवाएँ,
नालों में पानी शोर मचाता हुआ बह रहा था,
सुगंधित जंगली फूल,
चट्टानों और शिलाखंडों की परतें।
हिरण और बंदर कर्कश आवाजें निकालने लगे।
हिरण और मुंटजैक झुंड में चलते थे।
पक्षियों के गीत अनेक थे।
लेकिन वहां मनुष्य का कोई निशान नहीं था।

वह कांप रही थी और बेचैन थी;
उसका घोड़ा
वह अपने खुरों को मुश्किल से उठा पा रहा था।

पर्वतीय चोटियों के बीच आगे बढ़ते हुए संज़ंग ने अपनी जान की परवाह नहीं की। वह कई घंटों से बिना किसी मानव बस्ती के आगे बढ़ रहा था; उसे भूख लग रही थी और चलना उसके लिए बहुत कठिन होता जा रहा था। ठीक इसी नाजुक क्षण में उसने अपने सामने दो भयंकर बाघों को दहाड़ते हुए देखा, जबकि दो लंबे सांप उसके पीछे कुंडली मारकर बैठे थे। उसके बाईं ओर विषैले सरीसृप थे, और दाईं ओर भयानक राक्षस। अकेला होने और बचने का कोई रास्ता न सूझने पर, संज़ंग ने अपने मन और शरीर को त्यागने और ईश्वर की इच्छा पर निर्भर रहने का निश्चय कर लिया।

इसके अलावा, घोड़े की पीठ इतनी थक चुकी थी और उसके पैर इतने मुड़ चुके थे कि वह घुटनों के बल जमीन पर गिर पड़ा और ढेर हो गया। संजांग उसे न तो मार कर और न ही लगाम खींचकर हिला सका।

कानून के बेचारे प्रोफेसर, जिनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं थी, बेहद दुखी थे और उन्हें यकीन था कि मौत से उन्हें कोई नहीं बचा सकता। लेकिन जब उनकी मुसीबतें सबसे बदतर थीं, तभी कोई उनकी मदद के लिए आया।

जब सब कुछ खोया हुआ सा लग रहा था, तभी उसने विषैले सरीसृपों और दुष्ट राक्षसों को भागते देखा, जबकि बाघ और सांप छिप गए। संज़ंग ने ऊपर देखा और एक आदमी को हाथ में इस्पात का त्रिशूल और कमर पर धनुष-बाण लिए पहाड़ी से आते हुए देखा। ज़रा देखो, वह कितना शानदार आदमी था: उसके सिर पर
आर्टेमिसिया पैटर्न वाली तेंदुए की खाल की टोपी:
उसके शरीर पर
ऊनी कपड़े का कोट।
उसकी कमर पर शेर के आकार की बेल्ट बंधी हुई थी।
उसके पैरों में हिरण की खाल के जूते थे।
उसकी आंखें किसी दुष्ट आत्मा की तरह गोल थीं;
उसकी घुंघराली दाढ़ी चंद्रमा के दुष्ट देवता की दाढ़ी जैसी थी।
उसकी कमर से विषैले बाणों से लैस धनुष लटका हुआ था।
और उसके हाथ में लोहे की नोक वाला त्रिशूल था।
उसकी आवाज की गर्जना से जंगली जानवर भी कांप उठते थे।
और उसकी क्रूरता ने तीतरों को भयभीत कर दिया।

उसे पास आते देख, संजांग रास्ते के किनारे घुटनों के बल बैठ गया, हाथ जोड़कर ज़ोर से चिल्लाया, "मुझे बख्श दो, डाकुओं के सरदार, मुझे बख्श दो।" वह आदमी उसके पास गया, अपना त्रिशूल नीचे रखा और उसे उठाकर खड़ा कर दिया।

"आदरणीय भिक्षु, भयभीत न हों," उसने कहा, "मैं बुरा आदमी नहीं हूँ; मैं इन पहाड़ों में रहने वाला एक शिकारी हूँ। मेरा नाम लियू बोकिन है और मैं पर्वत का रक्षक कहलाता हूँ। मैं यहाँ खाने के लिए कुछ जानवर लेने आया था। मुझे उम्मीद नहीं थी कि आपसे यहाँ मुलाकात होगी—शायद मैंने आपको नाराज कर दिया है।"

"मैं महान तांग सम्राट द्वारा भेजा गया एक भिक्षु हूँ, जो पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध से मिलने और शास्त्र मांगने आया हूँ," संज़ंग ने उत्तर दिया। "मैं अभी यहाँ पहुँचा ही था कि मैंने खुद को भेड़ियों, बाघों, साँपों और अन्य जीवों से पूरी तरह घिरा पाया, जिसका मतलब था कि मैं आगे नहीं जा सकता था। तभी अचानक आप प्रकट हुए, उच्च रक्षक, और मेरी जान बचाई। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

“हम जो यहाँ रहते हैं,” लियू बोकिन ने उत्तर दिया, “हम केवल बाघों और भेड़ियों को मारकर, और साँपों और अन्य सरीसृपों को पकड़कर ही अपना भरण-पोषण कर सकते हैं, इसीलिए वे सभी जानवर मुझसे डरकर भाग जाते हैं। क्योंकि आप तांग साम्राज्य से हैं, इसलिए हम एक ही देश के हैं। यह अभी भी महान तांग का क्षेत्र है, और मैं एक तांग नागरिक हूँ। हम दोनों अपने भोजन और पेय के लिए सम्राट की भूमि और नदियों पर निर्भर हैं, और हम एक ही देश के निवासी हैं, इसलिए डरने की कोई बात नहीं है। आपको मेरे साथ मेरी कुटिया में चलना होगा, और आपका घोड़ा आराम कर सकता है। मैं आपको कल आपके रास्ते पर छोड़ दूँगा।” यह सुनकर संज़ंग प्रसन्न हुआ, उसने उसे धन्यवाद दिया और घोड़े को आगे-आगे ले जाते हुए उसके पीछे चल दिया।

जब वे पर्वतमाला पार कर चुके थे, तो उन्हें हवा के चलने जैसी आवाज़ सुनाई दी। बोकिन ने कहा, "हे आदरणीय भिक्षु, यहीं बैठ जाइए और हिलिए मत। हवा जैसी यह आवाज़ बताती है कि एक पहाड़ी बिल्ली आ रही है। बस एक पल रुकिए, मैं उसे पकड़ लेता हूँ, फिर उसे घर ले जाकर आपको खिलाऊँगा।" यह खबर सुनकर संज़ंग इतना भयभीत हो गया कि वह हिलने की हिम्मत नहीं कर पाया। उच्च रक्षक अपने

त्रिशूल को लहराते हुए जानवर का सामना करने के लिए आगे बढ़ रहा था, तभी उसके सामने एक धारीदार बाघ प्रकट हुआ। लियू बोकिन को देखते ही जानवर भागने लगा, लेकिन उच्च रक्षक ने गरजते हुए कहा, "तू कहाँ जा रहा है, दुष्ट?" जब बाघ को एहसास हुआ कि लियू बोकिन उसका पीछा कर रहा है, तो वह मुड़ा और अपने पंजे दिखाते हुए उस पर हमला कर दिया। उच्च रक्षक ने अपने प्रतिद्वंद्वी का सामना करने के लिए अपना त्रिशूल उठाया। यह सब देखकर संज़ंग डर से कांपते हुए घास पर गिर पड़ा; उसने अपने पूरे जीवन में कभी इतना भयानक दृश्य नहीं देखा था। पहाड़ के नीचे बाघ और उच्च सुरक्षा अधिकारी के बीच एक शानदार लड़ाई हुई।

क्रोध से भड़कते हुए,
क्रोध से पागल।
क्रोध से भड़कते हुए,
वार्डन बेहद गुस्से से भड़क उठा।
क्रोध से पागल,
धारीदार बाघ ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए लाल धूल उगली।
एक ने अपने दांत दिखाए और अपने पंजे लहराए।
दूसरा मुड़ता-फिरता रहा।
त्रिशूल ने आकाश पर प्रहार किया और सूर्य को ढक लिया; अध्याय 13

पैटर्न वाली पूंछ ने धुंध और बादलों को हिला दिया।
एक ने छाती पर बेतहाशा वार किए,
दूसरे ने सिर पर वार किया।
उन चोटों से बचना ही एक नया जीवन प्राप्त करने के समान था;
किसी को चोट पहुँचाना नरक के राजा से मिलने का सीधा मौका था।
केवल बाघ की दहाड़ ही सुनाई दे रही थी।
और उच्च वार्डन चिल्ला रहा था।
जब बाघ दहाड़ा,
पहाड़ों और नदियों में भयानक दरारें पड़ गईं, जिससे पक्षियों और जानवरों में दहशत फैल गई।

उच्च वार्डन की चीखों पर,
आकाश फट गया और तारे दिखाई देने लगे।
बाघ की सुनहरी आंखें क्रोध से फूली हुई थीं।
शिकारी का वीर हृदय क्रोध से भर गया था।
पर्वत के उच्च रक्षक लियू कितने प्रशंसनीय थे!
धरती के पशु-पक्षियों का स्वामी कितना शानदार है!
मनुष्य और बाघ के बीच विजय के लिए संघर्ष
जो भी कमजोर पड़ेगा, उसे अपनी जान गंवानी पड़ेगी।
लगभग दो घंटे तक दोनों के बीच लड़ाई के बाद, बाघ थकने लगा और उसके पंजे ढीले पड़ने लगे। तभी उच्च रक्षक ने अपने त्रिशूल से उसकी छाती पर ज़ोरदार प्रहार किया। त्रिशूल की नोकें जानवर के जिगर और हृदय को भेद गईं, यह एक दयनीय दृश्य था। पल भर में ज़मीन उसके खून से लथपथ हो गई, क्योंकि शिकारी उसे कानों से पकड़कर रास्ते पर घसीटता हुआ ले गया। वाह! बिना हांफे और चेहरे पर कोई भाव बदले, उसने संज़ंग से कहा, "कितनी अच्छी किस्मत है! यह पहाड़ी बिल्ली तुम्हारे लिए पूरे दिन का भोजन बन जाएगी!" संज़ंग ने उसकी खूब प्रशंसा की।
"हाई वार्डन, आप सचमुच एक पर्वतीय देवता हैं।"
“कुछ नहीं था,” लियू बोकिन ने कहा, “इसलिए इसे बढ़ा-चढ़ाकर मत समझो। यह सब तुम्हारे आशीर्वाद का फल है। चलो, हम जल्दी से इसकी खाल उतारकर इसका मांस पकाते हैं ताकि तुम्हें खिला सकें।” एक हाथ में त्रिशूल पकड़े और दूसरे हाथ से बाघ को घसीटते हुए वह आगे-आगे चलने लगा, जबकि संज़ंग अपने घोड़े को लेकर उसके पीछे-पीछे चल रहा था। जैसे ही वे पहाड़ पर आगे बढ़े, अचानक एक कुटिया दिखाई दी। उसके द्वार के सामने ये दृश्य थे: अध्याय 13

पश्चिम की यात्रा
आकाश को छूते प्राचीन वृक्ष,
जंगली लताएँ रास्ते को ढके हुए हैं।
घाटियों में हवा और धूल ठंडी थी।
चट्टानों के चारों ओर अजीबोगरीब वाष्प का घेरा बन गया था।
पूरे रास्ते में जंगली फूलों की खुशबू फैली हुई थी।

बांसों का हरा रंग गहरा, गहरा है।
एक फूस की छत वाला प्रवेशद्वार,
एक बाड़ से घिरा हुआ आंगन,
दोनों ही बेहद खूबसूरत हैं।
एक पत्थर का पुल,
सफेदी की हुई मिट्टी की दीवारें:
मनमोहक सादगी।
शरद ऋतु का अकेलापन,
हवादार एकांत।
रास्ते के किनारे पीले पत्ते गिरे पड़े थे।
पर्वत चोटियों के ऊपर सफेद बादल मंडरा रहे थे।
पर्वतीय पक्षी जंगलों में गा रहे थे।
गेट के बाहर एक पिल्ला भौंक रहा था।

जब वह द्वार पर पहुँचा, तो उच्च रक्षक लियू बोकिन ने बाघ को नीचे फेंक दिया और चिल्लाया, "तुम कहाँ हो, लड़कों?" अजीब और घिनौने दिखने वाले तीन-चार नौकर बाहर आए और बड़ी मुश्किल से खींचते-खींचते बाघ को अंदर ले आए। बोकिन ने उन्हें तुरंत उसकी खाल उतारने और उसे अपने मेहमान को भेंट करने के लिए तैयार करने को कहा, फिर मुड़कर संज़ंग का स्वागत किया। औपचारिक अभिवादन के बाद संज़ंग ने बोकिन को प्रणाम किया और दया दिखाने और उसकी जान बचाने के लिए उनका धन्यवाद किया।

"मुझे धन्यवाद देने की क्या ज़रूरत है? हम तो एक ही देश के हैं।" जब संज़ंग को बैठने के लिए जगह दी गई और चाय परोसी गई, तो एक बूढ़ी औरत उनका अभिवादन करने के लिए बाहर आई, उसके पीछे एक जवान औरत भी थी। लियू बोकिन ने बताया कि वे उसकी माँ और पत्नी हैं।

"महोदया, कृपया सबसे ऊँची सीट पर बैठ जाइए, मैं आपको प्रणाम करता हूँ," संजांग ने कहा।

"हे आदरणीय भिक्षु, आप दूर से आए अतिथि हैं, इसलिए हम दोनों अपनी गरिमा बनाए रखें और एक दूसरे के सामने न झुकें।"
बूढ़ी औरत ने जवाब दिया।
“माँ,” लियू बोकिन ने कहा, “तांग सम्राट ने उन्हें बुद्ध के दर्शन करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग भेजा है। मेरी उनसे पर्वत पर मुलाकात हुई थी, और मैंने सोचा कि चूंकि हम देशवासी हैं, इसलिए कल उन्हें रवाना करने से पहले उन्हें घर पर विश्राम करने के लिए आमंत्रित कर लेना चाहिए।” बुढ़िया प्रसन्न हो गई।
“अच्छा, अच्छा,” उसने कहा। “लेकिन अगर आप उनसे कुछ और दिन रुकने के लिए कहें तो और भी अच्छा होगा। कल आपके पिता की पुण्यतिथि है, और मैं आदरणीय भिक्षु से उनके लिए कुछ प्रार्थनाएँ और एक सूत्र पढ़ने का अनुरोध करना चाहूँगी; आप उन्हें परसों विदा कर सकते हैं।” हालाँकि यह बोकिन एक बाघ-शिकारी और पर्वत का उच्च रक्षक था, फिर भी वह एक आज्ञाकारी पुत्र था, और जब उसने यह सुझाव सुना तो उसने कागज़ और अगरबत्ती तैयार की और संज़ंग से रुकने का अनुरोध किया।
बातचीत करते-करते उन्हें शाम ढलने का पता ही नहीं चला। नौकरों ने मेज और कुर्सियाँ लगाईं, फिर कई तरह के नरम बाघ के मांस के व्यंजन लाए, जिन्हें गरमागरम मेज पर रख दिया गया। चावल परोसते समय लियू बोकिन ने सान्ज़ांग से कहा कि वह स्वयं ही ले लें। सान्ज़ांग ने अपने हाथ सीने पर जोड़कर उत्तर दिया, "यह तो अद्भुत है, लेकिन मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूँ कि मैं जन्म से ही भिक्षु हूँ, इसलिए मैं मांस नहीं खा सकता।" बोकिन ने कुछ देर सोचने के बाद उत्तर दिया, "आदरणीय भिक्षु, हमारे परिवार में पीढ़ियों से शाकाहारी भोजन नहीं होता आया है। जब हम बांस काटते हैं, मशरूम तोड़ते हैं, सुखाने के लिए जंगली सब्जियाँ इकट्ठा करते हैं, या टोफू बनाते हैं, तो हम उन्हें हमेशा हिरण, बाघ या तेंदुए की चर्बी में पकाते हैं, इसलिए वे भी पूरी तरह शाकाहारी नहीं होते; और हमारे दोनों बर्तन चर्बी से भरे हुए हैं, तो हम क्या करें? मुझे खेद है कि आपसे यहाँ पूछना मेरी गलती थी।"
"चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है," संज़ंग ने उत्तर दिया। "आप बेझिझक खाना खा सकते हैं। मैं चार-पाँच दिन बिना भोजन के रह सकता हूँ, या भूखा भी रह सकता हूँ, लेकिन शाकाहारी भोजन के बारे में मठ के नियम को नहीं तोड़ूँगा।"
"लेकिन हम तुम्हें भूख से मरते हुए नहीं देख सकते," लियू बोकिन ने विरोध किया।
"हे उच्च रक्षक महोदय, आपकी अपार कृपा से मैं बाघों और भेड़ियों के झुंड से बच

गया। भूख से मरना भी बाघों का भोजन बनने से बेहतर होता।"
ल्यू बोकिन की मां, जो उनकी बातचीत सुन रही थी, बोली, "बेटा, बकवास मत करो। मेरे पास कुछ शाकाहारी व्यंजन हैं जो हम उसे दे सकते हैं।"
“ये आपको कहाँ से मिले?” लियू बोकिन ने पूछा, जिस पर माँ ने उत्तर दिया, “कैसे मिले, ये मुझे मिल गए।” उन्होंने अपनी बहू से कहा कि वह छोटा सा खाना पकाने का बर्तन नीचे उतारे, उसमें से चर्बी निकाल दे, उसे अच्छी तरह से रगड़कर कई बार धोए और फिर उसे चूल्हे पर रख दे। फिर उन्होंने बर्तन में आधा उबलता हुआ पानी भरा, जिसे उन्होंने बाद में फेंक दिया। इसके बाद उन्होंने पहाड़ी एल्म के पत्तों पर उबलता हुआ पानी डालकर चाय बनाई, बाजरा उबाला और कुछ सूखी सब्जियां पकाईं। फिर इन सबको दो कटोरियों में डालकर मेज पर रख दिया गया। तब बुढ़िया ने संजांग से कहा, “कृपया भोजन करें, आदरणीय भिक्षु। यह पूरी तरह से शुद्ध चाय और भोजन है जो मैंने और मेरी बहू ने तैयार किया है।” संजांग ने उन्हें धन्यवाद दिया और सम्मान की सीट पर बैठ गए। लियू बोकिन के लिए एक और स्थान तैयार किया गया, जहाँ बाघ, हिरण, साँप, लोमड़ी और खरगोश के मांस से भरे कटोरे और थालियाँ रखी थीं, साथ ही सूखा हिरण का मांस भी था, जिसे बिना नमक या चटनी के पकाया गया था। यह सब बोकिन को तब खाना था जब सान्ज़ांग अपना शाकाहारी भोजन कर रहे थे। बोकिन अभी बैठे ही थे और अपनी चॉपस्टिक उठाने ही वाले थे कि उन्होंने देखा कि सान्ज़ांग कुछ शास्त्र का पाठ करने के लिए अपने हाथ जोड़ रहे हैं। यह देखकर बोकिन इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने चॉपस्टिक उठाने के बजाय उनके बगल में खड़े हो गए। जब सान्ज़ांग ने कुछ पंक्तियाँ पढ़ लीं, तो उन्होंने बोकिन से भोजन करने का आग्रह किया।
"तो क्या आप लघु सूत्र भिक्षु हैं?" बोकिन ने पूछा।
"वह कोई सूत्र नहीं था, वह भोजन से पहले की प्रार्थना थी।"
अध्याय 13
201
पश्चिम की यात्रा
"तुम तरह-तरह की शरारतें करते हो। भोजन के समय सूत्र पढ़ना तो देखो!" बोकिन ने टिप्पणी की।
खाना खत्म होने और बर्तन हटा दिए जाने के बाद, लियू बोकिन ने संज़ंग को अंधेरे में

पीछे टहलने के लिए बुलाया। वे एक गली से गुज़रे और एक फूस की झोपड़ी के पास पहुँचे। दरवाज़ा खोलकर अंदर जाते ही संज़ंग ने दीवारों पर धनुष और धनुष लटके देखे और तीरों से भरे तरकश देखे। शहतीरों से दो खून से लथपथ और बदबूदार बाघ की खालें लटकी हुई थीं, और दीवार के नीचे कई भाले, तलवारें, त्रिशूल और गदाएँ रखी थीं। बीच में दो कुर्सियाँ थीं। लियू बोकिन ने संज़ंग को बैठने के लिए कहा, लेकिन संज़ंग उस भयानक गंदगी के बीच ज़्यादा देर तक नहीं रुक सका, इसलिए वह बाहर चला गया। पीछे की ओर और आगे जाने पर वे एक बड़े बगीचे में पहुँचे जो पीले गुलदाउदी के गुच्छों और लाल मेपल के पेड़ों से भरा हुआ था।

फिर एक तेज हिनहिनाहट की आवाज के साथ लगभग एक दर्जन मोटे-ताज़े हिरण और नर हिरणों का एक बड़ा झुंड बाहर भागा; वे शांत थे और मनुष्यों को देखकर बिल्कुल भी भयभीत नहीं हुए।

"क्या उन हिरणों और बारहसिंगों को आपने पाला था?" संजांग ने पूछा।

“हाँ,” बोकिन ने उत्तर दिया। “जब आप चांगआन के लोगों के पास पैसा होता है तो आप कीमती चीजें खरीदते हैं, और जब आपके पास जमीन होती है तो आप अनाज जमा करते हैं; लेकिन हम शिकारी तो बस कुछ जंगली जानवरों को ही रख पाते हैं ताकि जरूरत पड़ने पर काम आ सकें।” उनकी बातों का पता ही नहीं चला और शाम ढल गई, अब वे सोने के लिए घर वापस चले गए।

अगली सुबह सवेरे पूरा परिवार, जवान और बूढ़े, उठ गए और भिक्षु के लिए शाकाहारी भोजन तैयार किया, फिर उनसे सूत्र पाठ शुरू करने का अनुरोध किया। संज़ंग ने अपने हाथ धोए, उच्च संरक्षक के पारिवारिक मंदिर में गए, वहाँ अगरबत्ती जलाई और पूजा की, फिर अपनी "लकड़ी की मछली" को पीटते हुए पहले अपने मुख को शुद्ध करने की प्रार्थना की, फिर अपने शरीर और मन को शुद्ध करने के लिए एक पवित्र मंत्र का जाप किया, और अंत में मृतकों को मुक्ति दिलाने वाले सूत्र का पाठ किया।

जब उनका पाठ समाप्त हो गया, तो बोकिन ने उनसे मृत व्यक्ति के लिए परिचय पत्र लिखने और हीरा सूत्र तथा गुआनयिन सूत्र का पाठ करने को कहा। संजांग ने उन्हें ऊँची और स्पष्ट आवाज़ में पढ़ा और फिर दोपहर का भोजन किया, जिसके बाद उन्होंने कमल सूत्र, अमिताभ सूत्र के कई अध्याय और मयूर सूत्र का एक अध्याय पढ़ा तथा भिक्षु के शुद्धिकरण की कथा सुनाई। तब तक अंधेरा हो चुका था, और जब

उन्होंने सभी देवताओं के लिए तरह-तरह की धूप, कागज़ी मुद्रा और कागज़ी घोड़े जला दिए तथा मृत व्यक्ति के लिए परिचय पत्र भी जला दिया, तो पूजा समाप्त हो गई और सभी लोग अपने-अपने बिस्तर पर चले गए और चैन से सो गए।

बोकिन के पिता की आत्मा, जो अब डूबे हुए भूत होने से मुक्त हो चुकी थी, उस रात घर में आई और परिवार के सभी सदस्यों को सपने में दिखाई दी।

“मैंने लंबे समय तक पाताल लोक में कष्ट सहा, मुक्ति नहीं मिली,” उसने कहा, “परन्तु अब उस संत भिक्षु ने शास्त्रों का पाठ करके मेरे पापों को मिटा दिया है। यमराज ने मुझे समृद्ध देश चीन में एक प्रतिष्ठित परिवार में पुनर्जन्म के लिए वापस भेज दिया है। आपको उन्हें भरपूर पुरस्कार देना चाहिए, कोई कंजूसी नहीं। अब मैं जा रहा हूँ।”

वास्तव में:

इस महान कानून का महत्व बहुत अधिक है।

इससे मृतकों को पीड़ा और दलदल से मुक्ति मिलती है।

जब वे सब अपने सपनों से जागे, तब तक पूरब में सूरज निकल चुका था। बोकिन की पत्नी ने कहा, "वरदान, कल रात आपके पिता सपने में मेरे पास आए थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने पाताल लोक में बहुत कष्ट सहा और उन्हें मुक्ति नहीं मिली। अब जब संत भिक्षु ने कुछ शास्त्रों का पाठ करके उनके पापों को धो डाला है, तो यमराज ने उन्हें चीन की समृद्ध भूमि में एक प्रतिष्ठित परिवार में पुनर्जन्म लेने के लिए वापस भेज दिया है। उन्होंने हमसे कहा कि हम उनका दिल खोलकर धन्यवाद करें, कोई कंजूसी न करें। यह कहकर वे दरवाजे से बाहर चले गए और कहीं खो गए। जब मैंने उन्हें पुकारा तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और मैं उन्हें रोक भी नहीं सकी। फिर मैं जाग उठी और मुझे एहसास हुआ कि यह एक सपना था।"

“मुझे भी तुम्हारे जैसा ही सपना आया था,” लियू बोकिन ने जवाब दिया। “चलो माँ को इसके बारे में बताते हैं।” जैसे ही वे ऐसा करने वाले थे, उन्होंने उसकी माँ को चिल्लाते हुए सुना, “इधर आओ, मेरे बेटे बोकिन। मुझे तुमसे कुछ कहना है।” वे दोनों अंदर गए और देखा कि बूढ़ी औरत पलंग पर बैठी है।

“मेरे बच्चे, मुझे कल रात एक सुखद सपना आया। तुम्हारे पिता घर आए और बताया कि पूज्य भिक्षु द्वारा उद्धार किए जाने के कारण उनके पाप धुल गए हैं और वे चीन की समृद्ध भूमि में एक प्रतिष्ठित परिवार में पुनर्जन्म लेने गए हैं।” पति-पत्नी खुशी से हंस पड़े और बेटे ने कहा, “मुझे और मेरी पत्नी दोनों को यही सपना आया था, और हम आपको बताने ही वाले थे कि आपने हमें बुला लिया। अब पता चला कि आपको भी यही सपना आया है।” उन्होंने घर के सभी लोगों को उठकर संजांग को धन्यवाद देने और उनके घोड़े को तैयार करने के लिए कहा। सभी ने उन्हें प्रणाम किया और उन्होंने कहा, “पूज्य भिक्षु, मेरे पिता को उनके कष्टों से मुक्ति और पुनर्जन्म दिलाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। हम इस कृतज्ञता को कभी नहीं चुका सकते।”

"मेरे पास ऐसी कौन सी शक्ति है कि तुम मुझे धन्यवाद दो?" संजांग ने उत्तर दिया।

बोकिन ने उसे बताया कि उन तीनों को सपने में क्या-क्या बताया गया था, और संज़ंग भी प्रसन्न हुआ। फिर उन्होंने उसे नाश्ता दिया और कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में एक औंस चांदी दी, लेकिन उसने उसमें से एक पैसा भी नहीं लिया, हालांकि पूरे परिवार ने उससे ऐसा करने की विनती की।

उन्होंने कहा, "यदि आप अपनी कृपा से मुझे मेरी यात्रा के अगले चरण तक ले जा सकें तो मैं अत्यंत आभारी रहूंगा।"

उस समय बोकिन, उसकी माँ और उसकी पत्नी के पास बस इतना ही था कि वे उसके लिए मोटे गेहूं के आटे से कुछ स्कोन तैयार करें और यह सुनिश्चित करें कि बोकिन उसे लंबी दूरी तक साथ ले जाए। संजांग ने खुशी-खुशी भोजन ग्रहण किया। उसकी माँ के आदेश पर उच्च रक्षक ने दो-तीन नौकरों को शिकार का सामान लाने को कहा और वे साथ-साथ सड़क पर चल पड़े। उन्हें अंतहीन पर्वतीय दृश्य दिखाई दिए।

कुछ देर यात्रा करने के बाद उन्हें अपने सामने एक पर्वत दिखाई दिया, जो ऊँचा और खड़ी ढलान वाला था और नीले आकाश तक फैला हुआ था। थोड़ी ही देर में वे उसके आधार तक पहुँच गए। उच्च रक्षक ने उस पर ऐसे चढ़ाई की मानो वह समतल भूमि पर चल रहा हो, और जब वे आधे रास्ते तक पहुँच गए तो वह मुड़ा, रास्ते के किनारे खड़ा हुआ और बोला, "आदरणीय भिक्षु, मुझे आपसे निवेदन है कि आप यहाँ से आगे बढ़ें। मुझे वापस जाना है।" यह सुनकर संज़ंग अपने घोड़े से गिर पड़ा और बोला, "कृपा करके, कृपया मुझे एक और पड़ाव तक ले चलें, उच्च रक्षक।"

“लगता है तुम्हें पता नहीं कि इसे दोहरी सीमा वाला पर्वत कहते हैं,” उच्च रक्षक ने

कहा। पूर्वी भाग हमारे महान तांग वंश का है, लेकिन पश्चिमी भाग तातार क्षेत्र है। उस तरफ के बाघ और भेड़िये मेरे वश में नहीं हैं, इसीलिए मैं सीमा पार नहीं कर सकता। तुम्हें स्वयं ही जाना होगा। यह सुनकर भिक्षु इतना भयभीत हो गया कि उसने अपने हाथ हिलाए और शिकारी के कपड़े और आस्तीन पकड़कर रोने लगा और उसे छोड़ने से इनकार कर दिया। जब अंत में संज़ंग बार-बार झुककर शिकारी से विदा ले रहा था, तभी पर्वत के नीचे से गरजती हुई आवाज़ आई: "मेरे गुरुजी आ गए हैं, मेरे गुरुजी आ गए हैं।"

यह आवाज सुनकर संजांग डर से जम गया, और बोकिन को उसे सहारा देना पड़ा। अगर आपको नहीं पता कि यह आवाज किसने लगाई थी, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 14

मन-बंदर सत्य की ओर लौटता है

छह डाकू बिना किसी निशान के गायब हो गए।

बुद्ध मन है, मन बुद्ध है।

मन और बुद्ध को हमेशा से ही चीजों की आवश्यकता रही है।

अध्याय 14

जब आपको यह पता चल जाए कि न तो कोई वस्तु है और न ही कोई मन है

तब आप सच्चे मन और धर्ममय शरीर वाले बुद्ध हैं।

धर्ममय शरीर वाले बुद्ध का कोई रूप नहीं होता;

एक ही दिव्य प्रकाश में दस हजार छवियां समाहित हैं।

देहहीन शरीर ही सच्चा शरीर है।

छवि रहित छवि ही वास्तविक छवि है।

यह भौतिक नहीं है, खाली नहीं है, और न ही गैर-खाली है;

यह न तो आता है, न जाता है, और न ही लौटता है।

यह न तो भिन्न है और न ही समान, यह न तो है और न ही नहीं है।

इसे न तो फेंका जा सकता है, न पकड़ा जा सकता है, न ही देखा या सुना जा सकता है।

आंतरिक और बाह्य दिव्य प्रकाश सर्वत्र एक समान हैं;
एक रेत के कण में भी बुद्ध-राज्य समाहित हो सकता है।
रेत के एक कण में हजारों दुनिया समा सकती हैं;
एक ही शरीर और मन में, सभी धर्म एक समान हैं।
ज्ञान के लिए, मन की शांति का रहस्य अत्यंत आवश्यक है।
निर्मल और अवरोधरहित होना ही कर्मों से शुद्ध होना है।
जब तुम न तो कोई अच्छा काम करते हो और न ही कोई बुरा काम करते हो,
आप कश्यप बुद्ध बन जाते हैं।
भयभीत लियू बोकिन और सान्ज़ांग ने फिर "मेरे स्वामी आ गए हैं" की एक और चीख सुनी।
"जहाँ तक कि यह चिल्लाने की आवाज़ उस बूढ़े बंदर की है जो इस पहाड़ के नीचे एक पत्थर की कोठरी में रहता है," नौकरों ने कहा।
"जी हां," उच्च वार्डन ने कहा।
अध्याय 14
204
पश्चिम की यात्रा
"कौन सा बूढ़ा बंदर?" संज़ंग ने पूछा, और उच्च रक्षक ने उत्तर दिया, "इस पर्वत को पहले पंच तत्व पर्वत कहा जाता था, और इसका नाम बदलकर द्विसीमा पर्वत तब रखा गया जब हमारे महान तांग सम्राट ने देश को शांत करने के लिए अपना पश्चिमी अभियान चलाया। मैंने एक बार एक बूढ़े व्यक्ति को यह कहते सुना था कि जब वांग मांग ने हान सिंहासन पर कब्जा किया था, तब स्वर्ग ने इस पर्वत को नीचे भेजा और इसके नीचे एक बंदर को कुचल दिया।"
इस बंदर को न गर्मी की परवाह है, न सर्दी की, न वह कुछ खाता है और न पीता है। इसकी रक्षा एक स्थानीय संरक्षक देवता करते हैं, जो भूख लगने पर इसे लोहे की गोलियां और प्यास लगने पर पिघला हुआ तांबा देते हैं। हालांकि यह प्राचीन काल से यहीं है, लेकिन आज तक न तो ठंड से मरा है और न ही भूख से। ज़रूर वही चिल्ला रहा होगा, "हे पूज्यवर, आपको डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। चलिए नीचे जाकर देखते हैं।" संज़ंग को उसके पीछे-पीछे जाना पड़ा और वह अपने घोड़े को पहाड़ से नीचे ले गया।

एक या दो मील बाद उन्होंने देखा कि सचमुच एक बंदर पत्थर की कोठरी से अपना सिर बाहर निकाल रहा था और अपने फैले हुए हाथों से बेताब इशारे करते हुए चिल्ला रहा था, "मालिक, आप पहले क्यों नहीं आए?"

शुक्र है तुम यहाँ हो, शुक्र है। अगर तुम मुझे यहाँ से निकाल दोगे तो मैं गारंटी देता हूँ कि तुम पश्चिमी स्वर्ग पहुँच जाओगे।

क्या आप जानते हैं कि जब उस पूजनीय भिक्षु ने करीब से देखने के लिए आगे कदम बढ़ाया तो उन्हें क्या दिखाई दिया?

नुकीला मुंह और धंसे हुए गाल,
सुनहरी पुतलियों वाली ज्वलंत आंखें।
उसका सिर काई से भरा हुआ था।
और उसके कानों से लताएं उग आईं।
उसकी कनपटी पर थोड़े बाल थे लेकिन बहुत सारी घास उगी हुई थी।
उसकी ठुड्डी के नीचे दाढ़ी की जगह सरकंडा उग आया था।
उसकी भौहों के बीच गंदगी,
और उसकी नाक पर कीचड़ लगा हुआ था
उसने उसे पूरी तरह से अस्त-व्यस्त कर दिया;
उसकी खुरदरी उंगलियों पर
और मोटी हथेलियाँ
वहाँ गंदगी की भरमार थी।
वह इतना खुश था कि उसने अपनी आँखें घुमा लीं।
और उन्होंने सुखद आवाजें निकालीं।
हालांकि उसकी जुबान बहुत फुर्तीली थी,
वह अपने शरीर को हिला नहीं पा रहा था।

अध्याय 14

205

पश्चिम की यात्रा

वे पांच सौ वर्ष पूर्व के महान ऋषि थे।

आज कौन स्वर्ग के जाल से नहीं बच सका?

उच्च वार्डन लियू ने उसके पास जाकर, उसकी कनपटी के पास उग रही घास और

ठुड्डी के नीचे उगी सरकंडे को हटाकर, और यह पूछने में बहुत साहस दिखाया, "तुम्हें क्या कहना है?"
बंदर ने जवाब दिया, "मेरे पास कहने को कुछ नहीं है। आप बस उस साधु को इधर बुला लीजिए, मैं उससे एक सवाल पूछ लेता हूँ।"
"तुम मुझसे क्या सवाल पूछना चाहते हो?" संजांग ने कहा।
"क्या तुम वही व्यक्ति हो जिसे पूर्वी सम्राट ने धर्मग्रंथ लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग में भेजा है?" बंदर ने पूछा।
"हां, मैं हूं," संजांग ने जवाब दिया। "आप क्यों पूछ रहे हैं?"
मैं वो महान ऋषि हूँ जो स्वर्ग के समतुल्य हैं और जिन्होंने पाँच सौ वर्ष पूर्व स्वर्गलोक का विनाश किया था। भगवान बुद्ध ने मुझे मेरे आपराधिक अवज्ञा के कारण इस पर्वत के नीचे रखा था। कुछ समय पहले बोधिसत्व गुआनयिन बुद्ध के आदेश पर शास्त्रों को लाने वाले किसी व्यक्ति को खोजने के लिए पूर्व की ओर गईं। जब मैंने उनसे मुझे बचाने की विनती की, तो उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे बुराई का त्याग करना होगा, बुद्ध के धर्म का पालन करना होगा और उस यात्री की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करना होगा जो बुद्ध की उपासना करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जाएगा; उन्होंने कहा कि ऐसा करने पर मुझे भी कुछ लाभ मिलेगा। तब से मैं दिन-रात उत्सुकतापूर्वक आपके आने और मुझे बचाने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, हे गुरु। मैं शास्त्रों को लाने के आपके मार्ग में आपकी रक्षा करने और आपका शिष्य बनने की शपथ लेता हूँ।
यह सुनकर संजांग प्रसन्न हुआ और बोला, "यद्यपि अब तुम्हारे मन में ये उत्तम इरादे हैं और बोधिसत्व की शिक्षाओं के फलस्वरूप तुम भिक्षु बनना चाहते हो, लेकिन मेरे पास न तो कुल्हाड़ी है और न ही छेनी, तो मैं तुम्हें बाहर कैसे निकालूँ?"
"कुल्हाड़ी या छेनी की कोई ज़रूरत नहीं है। जब तक तुम मुझे बचाने के लिए तैयार हो, मैं खुद बाहर निकल सकता हूँ," बंदर ने जवाब दिया।
"मैं तुम्हें बचाने को तैयार हूँ," संजांग ने कहा, "लेकिन तुम बाहर कैसे निकलोगे?"
"इस पर्वत की चोटी पर तथागत बुद्ध का एक निरोध आदेश सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ है। अगर तुम पर्वत पर चढ़कर उसे फाड़ दोगे, तो मैं तुरंत रिहा हो जाऊंगा।" उसका सुझाव मानते हुए, संजांग ने मुड़कर लियू बोकिन से पूछा कि क्या वह उसके साथ पर्वत पर चढ़ेगा।
बोकिन ने कहा, "मुझे नहीं पता कि वह सच कह रहा है या नहीं," जिस पर बंदर ने

जोर से चिल्लाकर कहा, "यह सच है। मैं इस बारे में झूठ बोलने की हिम्मत नहीं करूंगा।"

इसलिए लियू बोकिन ने अपने सेवकों को घोड़े को आगे ले जाने का आदेश दिया, जबकि वह स्वयं संज़ंग को पर्वत पर चढ़ाने में सहायता करने गया। लताओं का सहारा लेकर वे शिखर तक पहुँचने में सफल रहे, जहाँ उन्होंने एक विशाल, वर्गाकार चट्टान से अनगिनत सुनहरी किरणें और हजारों शुभ वाष्प निकलते हुए देखे। उस चट्टान पर सुनहरे अक्षरों में 'ओम मणि पद्मे हम' लिखा हुआ एक कागज़ का मुहर चिपका हुआ था। संज़ंग ऊपर गया और चट्टान के सामने घुटने टेक दिए, फिर सुनहरे अक्षरों को पढ़ा और कई बार अपना सिर ज़मीन पर झुकाया।

उन्होंने पश्चिम की ओर देखा और प्रार्थना की, "मैं वह भक्त हूँ जिसे चेन ज़ुआनज़ैंग ने शाही आदेश पर धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा था। यदि मुझे शिष्य मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो, तो क्या मैं उन सुनहरे शब्दों को फाड़कर दिव्य अध्याय 14 को प्रकट कर सकूँ?"

"बंदर को मेरे साथ गिद्ध शिखर पर चलने को कहो। यदि मेरा भाग्य शिष्य होना नहीं है, और यह बंदर एक दुष्ट राक्षस है जिसने मुझे धोखा दिया है और मेरा कोई भला नहीं करेगा, तो मैं इसे अपने साथ न ले जा सकूँ।" प्रार्थना करने के बाद उन्होंने फिर से प्रणाम किया, फिर ऊपर गए और धीरे से कागज की मुहर फाड़ दी।

एक सुगंधित हवा उसके चेहरे पर लगी और कागज को आकाश में उड़ा ले गई, तभी एक आवाज ने पुकारा, "मैं महान ऋषि का रक्षक हूँ। अब जब उनके कष्ट समाप्त हो गए हैं, मैं तथागत से मिलने और यह मुहर उन्हें सौंपने जा रहा हूँ।"

चौंके हुए संजांग, लियू बोकिन और बाकी सभी ने स्वर्ग को प्रणाम किया, फिर पहाड़ से नीचे पत्थर की कोठरी में गए, जहाँ उन्होंने बंदर से कहा, "प्रतिबंध आदेश फाड़ दिया गया है, इसलिए तुम बाहर आ सकते हो।"

प्रसन्न बंदर ने कहा, "मालिक, कृपया मुझसे दूर खड़े हो जाइए ताकि जब मैं बाहर आऊं तो आपको डरा न दूं।"

यह सुनकर लियू बोकिन, संज़ंग और बाकी लोगों को लेकर पूर्व की ओर चल पड़ा। जब वे लगभग दो-तीन मील चले, तो उन्हें बंदर की आवाज़ सुनाई दी, "और आगे,

और आगे!" इसलिए संज़ंग और आगे चला गया, यहाँ तक कि वह पहाड़ से नीचे उतर गया। तभी ज़ोरदार आवाज़ हुई और पहाड़ फट गया।

जब वे सब भय से कांप रहे थे, तभी बंदर सान्ज़ांग के घोड़े के सामने नग्न अवस्था में घुटनों के बल बैठा प्रकट हुआ और बोला, "स्वामी जी, मैं जा रहा हूँ।" उसने सान्ज़ांग को चार बार प्रणाम किया, फिर उछलकर खड़ा हुआ और लियू बोकिन को आदरपूर्वक संबोधित करते हुए कहा, "बड़े भाई, मेरे स्वामी को सुरक्षित लाने के लिए आपका धन्यवाद, और मेरे चेहरे से घास हटाने के लिए भी धन्यवाद।" फिर उसने सामान उठाया और घोड़े की पीठ पर रख दिया। उसे देखते ही घोड़ा इतना कमजोर और कांपने लगा कि वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं रह सका। क्योंकि बंदर कभी घोड़ों का रक्षक था और स्वर्ग के ड्रैगन घोड़ों की देखभाल करता था, इसलिए नश्वर घोड़े उसे देखते ही भयभीत हो जाते थे।

यह देखकर कि उसकी मंशा वाकई अच्छी थी और वह सचमुच अब बौद्ध बन गया था, संजांग ने उससे उसका उपनाम पूछा।

"मेरा उपनाम सूर्य है," बंदर राजा ने उत्तर दिया।

"मैं तुम्हें एक बौद्ध नाम दूंगा जिससे मैं तुम्हें पुकार सकूंगा," संजांग ने कहा।

"तुम्हें परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है," बंदर राजा ने कहा, "मेरे पास पहले से ही एक है: सन वुकॉन्ग - शून्यता के प्रति जागृत बंदर।"

भिक्षु ने कहा, "यह हमारे संप्रदाय के लिए बिल्कुल सही है। तुम एक युवा नवोदित भिक्षु जैसे दिखते हो, इसलिए मैं तुम्हें एक और नाम दूंगा और तुम्हें 'भाई बंदर' कहकर पुकारूंगा। क्या यह ठीक रहेगा?"

"हां, हां, हां," सन वुकॉन्ग ने कहा, और तब से उन्हें भाई बंदर या नौसिखिया सन भी कहा जाने लगा।

जब उच्च रक्षक ने देखा कि बंदर भाई जाने के लिए दृढ़ संकल्पित है, तो उसने संजांग की ओर मुड़कर आदरपूर्वक एक ध्वनि उत्पन्न की और कहा, "हे आदरणीय महोदय, आपको इतना अच्छा शिष्य पाकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। वह निश्चित रूप से यात्रा करेगा। अब मुझे विदा लेनी चाहिए।"

संजांग ने कृतज्ञतापूर्वक उन्हें प्रणाम करते हुए कहा, "मैंने आपको यहाँ तक पहुँचाया है, और मैं आपका बहुत ऋणी हूँ।"

जब आप घर लौटें तो कृपया अपनी आदरणीय माता और पत्नी को मेरा प्रणाम

कहिएगा; मैंने उन्हें बहुत कष्ट दिया, और आशा है कि मैं लौटकर उनसे मिलकर उनका धन्यवाद कर सकूंगा।" बोकिन ने प्रणाम किया और वे विदा हो गए।
बंदर भाई ने संजांग से घोड़े पर बैठने को कहा और खुद नग्न अवस्था में सामान पीठ पर लादकर आगे बढ़ गया। थोड़ी ही देर में वे दोहरी सीमा पर्वत को पार कर गए।
अध्याय 14
207
पश्चिम की यात्रा
अचानक एक भयंकर बाघ दहाड़ता हुआ और अपनी पूंछ को ज़ोर से पटकता हुआ उनकी ओर दौड़ा। घोड़े पर सवार संज़ंग भयभीत हो गया। रास्ते के किनारे खड़ा बंदर भाई अपना सामान नीचे रखकर खुशी से बोला, "महोदय, डरिए मत, यह तो बस मेरे कपड़े ला रहा है।" उसने अपने कान से एक सुई निकाली और उसे हवा में झटक दिया, जिससे वह कटोरे जितनी मोटी लोहे की लाठी बन गई।
उन्होंने इसे हाथ में पकड़े हुए कहा, "मैंने इस अनमोल वस्तु का इस्तेमाल पांच सौ साल से भी अधिक समय से नहीं किया है। आज मैं इसे अपने लिए कुछ कपड़े निकालने के लिए निकाल रहा हूँ।"
बस देखते रहिए कि वह बाघ पर झपटते हुए चिल्लाता है, "तू कहाँ जा रहा है, नीच?" बाघ धूल में दुबका रहा, हिलने की हिम्मत नहीं कर रहा था, तभी लाठी उसके सिर पर जा लगी।
हजारों लाल दिमाग की बूंदें और दांत के कई मोती जैसे टुकड़े चारों ओर उड़ गए, जिससे संजांग इतना भयभीत हो गया कि वह घोड़े की पीठ से गिर पड़ा, अपनी उंगली चबाते हुए रोते हुए बोला, "हे भगवान! उस दिन तो उच्च रक्षक को धारीदार बाघ को मारने के लिए सदियों तक लड़ना पड़ा था, लेकिन इस सन वुकॉन्ग ने एक ही वार में बाघ को चकनाचूर कर दिया। यह सचमुच बहुत ही ताकतवर है।"
"मालिक, थोड़ी देर के लिए बैठ जाइए, मैं यात्रा के दौरान पहनने के लिए इसके कपड़े उतार देता हूँ," बंदर भाई ने बाघ को घसीटते हुए कहा।
"लेकिन उसके पास तो कपड़े ही नहीं हैं," संजांग ने विरोध जताया।
"चिंता मत करो, मुझे पता है इससे कैसे निपटना है।" शानदार बंदर राजा ने अपने शरीर से एक बाल निकाला, उस पर जादुई साँस छोड़ी और कहा "बदल जाओ!", जिसके बाद वह एक गाय के कान के आकार के नुकीले चाकू में बदल गया। बाघ के

पेट की खाल को काटते हुए, उसने एक ही झटके में पूरी खाल उतार दी, सिर और पंजे काट दिए, फिर खाल के चौकोर टुकड़े को उठाकर उसके आकार का अंदाज़ा लगाया।

“ये काफी बड़ा है,” उसने कहा, “तो मैं इससे दो स्कर्ट बना सकता हूँ,” और ये कहते हुए उसने चाकू उठाया और उसे दो टुकड़ों में काट दिया। एक टुकड़ा उसने अलग रख दिया और दूसरे को अपनी कमर के चारों ओर लपेटकर अपने शरीर के निचले हिस्से को ढक लिया और रास्ते के किनारे से तोड़ी गई एक लता से उसे कसकर बांध दिया।

“चलिए, मालिक, चलिए चलते हैं,” उसने कहा। “सिलाई का काम तब तक रुक सकता है जब तक हम किसी ऐसे घर न पहुँच जाएँ जहाँ से हमें सुई और धागा मिल जाए।” उसने अपने लोहे के डंडे को इतना छोटा कर लिया कि वह फिर से सुई जैसा पतला हो गया, उसे वापस अपने कान में रख लिया, सामान अपनी पीठ पर लादा और संज़ांग से घोड़े पर चढ़ने को कहा।

जब वे दोनों आगे बढ़ रहे थे, तब आदरणीय भिक्षु ने घोड़े की पीठ से पूछा, "वुकोंग, बाघ को मारने के लिए तुमने जिस लोहे के डंडे का इस्तेमाल किया था, वह कहाँ गायब हो गया?"

“मालिक, जो बात आप नहीं जानते,” बंदर भाई ने हंसते हुए उत्तर दिया, “वह यह है कि मैंने इसे पूर्वी सागर के ड्रैगन महल से प्राप्त किया है, और इसे आकाशगंगा के तल को स्थिर रखने वाला जादुई लोहा कहा जाता है।”

'इच्छानुसार सोने की पट्टी वाली लाठी'। पुराने समय में जब मैंने स्वर्ग के खिलाफ अपना बड़ा विद्रोह किया था, तब इसने मेरा बहुत साथ दिया था। यह किसी भी रूप में बदल सकती है और इसका आकार मेरी इच्छा के अनुसार हो सकता है। अभी मैंने इसे कढ़ाई की सुई में बदल दिया और अपने कान में रख लिया। मैं इसे तभी निकालती हूँ जब मुझे इसकी ज़रूरत होती है।

यह सुनकर अपनी खुशी छुपाते हुए, संजांग ने आगे पूछा, "जब उस बाघ ने तुम्हें देखा तो वह हिला तक क्यों नहीं?"

आखिर इसने तुम्हें इसे मारने क्यों दिया?

"मैं आपको पूरी सच्चाई से बता सकता हूँ, स्वामी, कि न केवल बाघ बल्कि अजगर भी मुझसे मिलने पर अपना सबसे अच्छा व्यवहार करते हैं। मैं उन्हें उनकी औकात दिखाने के कुछ तरीके जानता हूँ और नदियों को उल्टी दिशा में बहाने और समुद्रों को

मथने की शक्ति रखता हूँ। मैं केवल दिखावे से ही चीजों की असलियत बता सकता हूँ और कही गई बातों के पीछे की सच्चाई को परख सकता हूँ। जब मैं खुद को विशाल बनाना चाहता हूँ तो मैं खुद को ब्रह्मांड के सापेक्ष मापता हूँ, और जब मैं छोटा होता हूँ तो मुझे एक मुलायम बाल पर भी रखा जा सकता है। मेरे द्वारा किए जा सकने वाले रूपांतरणों की कोई सीमा नहीं है, और कोई भी अध्याय 14 को नहीं तोड़ सकता।"

बता दो कि मैं कब गायब होऊंगा या कब दोबारा प्रकट होऊंगा। उस बाघ की खाल उतारने में कोई खास बात नहीं थी। रुको, मैं तुम्हें कुछ चीज़ें दिखा देता हूँ।" इससे संज़ंग के मन से बहुत बड़ा बोझ उतर गया और उसने अपने घोड़े को चाबुक से दौड़ाया। गुरु और शिष्य बातें करते हुए आगे बढ़ रहे थे कि सूरज पश्चिम में डूबने लगा और उन्होंने देखा:

ढलते सूरज की तेज रोशनी में
बादल आकाश और समुद्र के छोरों की ओर लौट जाते हैं।
हजारों पहाड़ों पर पक्षी चहचहाते और पुकारते हैं,
रात बिताने के लिए झुंड में उड़कर जंगल की ओर चले जाते हैं।
जंगली जानवर दो-दो करके जाते हैं;
सभी प्रजातियाँ अपने मांद में लौट आती हैं।
शाम के धुंधलके को चीरते हुए एक अर्धचंद्राकार चंद्रमा निकलता है,
जैसे अनगिनत तारों की रोशनी के बिंदु झिलमिलाते हैं।

“मालिक, आपको जल्दी करनी चाहिए, क्योंकि बहुत देर हो चुकी है,” बंदर ने कहा। “उस पेड़ों के झुंड में ज़रूर कोई घर होगा, इसलिए हमें जल्द से जल्द वहाँ पहुँचकर रात वहीं बितानी चाहिए।” संज़ंग ने अपने घोड़े को चाबुक मारा और तेज़ी से घर की ओर दौड़ा, जहाँ वह घोड़े से उतर गया।

बंदर भाई ने सामान नीचे रखा, फाटक तक गया और चिल्लाया, "खोल दो, खोल दो।" एक बूढ़ा आदमी बाँस के सहारे बाहर आया और जैसे ही उसने फाटक खोला, चरमराहट की आवाज़ आई। बंदर का बदसूरत चेहरा और उसके शरीर पर लिपटी बाघ की खाल देखकर, जिससे वह गर्जन के देवता जैसा लग रहा था, बूढ़ा इतना भयभीत हो गया कि उसके पैर काँपने लगे और शरीर सुन्न पड़ गया।

"एक शैतान... एक शैतान," वह बेहोशी की हालत में बुदबुदाया।
संजांग ने उसका समर्थन करते हुए कहा, "डरो मत, वृद्ध उपकारी। वह कोई शैतान नहीं है, वह मेरा शिष्य है।"
जब बूढ़े व्यक्ति ने ऊपर देखा और संजांग का निर्मल चेहरा देखा तो वह तुरंत अपने पैरों पर स्थिर हो गया, और उसने पूछा कि संजांग किस मठ से था, और वह उस दुष्ट दिखने वाले प्राणी को उसके घर क्यों लाया था।
"मैं तांग राजवंश से आया हूँ, और बुद्ध से मिलने और शास्त्रों की माँग करने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहा हूँ। सूर्यास्त के समय इस रास्ते से गुजरते हुए हम आपके महल में, हे कृपालु स्वामी, एक रात ठहरने की व्यवस्था करने आए हैं। हम कल सुबह होने से पहले ही निकल जाएँगे। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप हमारी सहायता कर सकेंगे।"
"तुम भले ही तांग जनजाति के होगे," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, "लेकिन वह बदसूरत दरिंदा निश्चित रूप से तांग जनजाति का नहीं है।"
“तुम्हारे सिर में आंखें नहीं हैं, मूर्ख बूढ़े आदमी,” बंदर भाई चीखा। “वह मेरे गुरु हैं और मैं उनका शिष्य हूँ। मैं कोई तांग या स्पाइक नहीं हूँ, मैं स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि हूँ। अध्याय 14 में रहने वाले कुछ लोग...”

यह घर मुझे जरूर जानता होगा, और मैंने तुम्हें पहले भी देखा है।"
"तुमने मुझे कहाँ देखा है?" बूढ़े आदमी ने पूछा।
"क्या तुम बचपन में मेरे सामने लकड़ियाँ नहीं इकट्ठा करते थे और मेरे गालों से जंगली सब्जियाँ नहीं तोड़ते थे?" सन वुकॉन्ग ने कहा।
"बकवास," बूढ़े आदमी ने जवाब दिया।
"जब मुझे तुम्हारे सामने लकड़ियाँ और जंगली सब्जियाँ इकट्ठा करनी होती थीं, तब तुम कहाँ रहते थे और मैं कहाँ रहता था?"
“बकवास तो तुम ही कर रहे हो, मेरे बच्चे,” सन वुकॉन्ग ने उत्तर दिया। “तुम मुझे नहीं जानते, पर मैं दोहरी सीमा पर्वत के नीचे पत्थर की कोठरी में रहने वाला महान ऋषि हूँ। एक बार फिर देखो और देखो कि क्या अब तुम मुझे पहचान पाते हो।” बूढ़े व्यक्ति को अंततः समझ आ गया कि वह कौन है और उसने कहा, “मुझे लगता है कि तुम कुछ-कुछ उनके जैसे दिखते हो, पर तुम बाहर कैसे निकले?” सन वुकॉन्ग ने उसे पूरी

कहानी सुनाई कि कैसे बोधिसत्व ने उसे परिवर्तित किया था और उसे तब तक प्रतीक्षा करने को कहा जब तक तांग पुजारी आकर मुहर न हटा दें और उसे मुक्त न कर दें। बूढ़ा व्यक्ति घुटनों के बल बैठ गया और सिर झुकाकर तांग पुजारी को अंदर आने का निमंत्रण दिया और अपनी पत्नी और बच्चों को भी मिलने के लिए बुलाया; जब उन्होंने सब कुछ सुना तो वे सब बहुत प्रसन्न हुए।

चाय पीने के बाद उन्होंने सन वुकॉन्ग से पूछा, "हे महान ऋषि, आपकी आयु कितनी है?"

"तो तुम्हारी उम्र कितनी है?" सन वुकॉन्ग ने कहा।

"बुढ़ापे के कारण मेरी उम्र एक सौ तीस तक पहुंच गई है।"

"तो तुम मेरे दूर के वंशज हो सकते हो," भाई बंदर ने कहा। "मुझे याद नहीं कि मेरा जन्म कब हुआ था, लेकिन मैंने उस पहाड़ के नीचे पाँच सौ से अधिक वर्ष बिताए हैं।"

“सच है, सच है,” बूढ़े ने कहा, “मुझे याद है मेरे दादाजी कहते थे कि यह पहाड़ स्वर्ग से गिरा था और एक जादुई बंदर को कुचलने के लिए आया था, और तुम अब तक बाहर नहीं निकल पाए थे। जब मैंने तुम्हें बचपन में देखा था, तुम्हारे सिर पर घास उगी हुई थी और चेहरे पर मिट्टी लगी थी, इसलिए मुझे तुमसे डर नहीं लगता था। लेकिन अब जब मिट्टी और घास हट गई है, तो तुम पतले दिखते हो, और तुम्हारी कमर पर बाघ की खाल तुम्हें शैतान के जितना करीब बना देती है।”

इस बातचीत से सब लोग खिलखिलाकर हंस पड़े, और चूंकि वह एक दयालु बुजुर्ग थे, उन्होंने शाकाहारी भोजन परोसा। भोजन समाप्त होने पर संजांग ने उनसे उनका उपनाम पूछा।

“चेन,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया। यह सुनकर, संजांग ने अभिवादन में हाथ उठाकर कहा, “आदरणीय उपकारक, आप मेरे ही कुल के हैं।”

"गुरुजी," बंदर भाई ने विरोध करते हुए कहा, "आपका नाम तांग है, है ना, तो आप उसी कबीले के कैसे हो सकते हैं?"

"मेरा सांसारिक उपनाम चेन है, और मैं तांग साम्राज्य के हैझोऊ प्रांत के होंगनोंग जिले के जुक्सियन गांव का निवासी हूं। मेरा बौद्ध नाम चेन ज़ुआनज़ैंग है। लेकिन चूंकि हमारे महान तांग सम्राट ताइज़ोंग ने मुझे अपना छोटा भाई कहा और मुझे तांग उपनाम दिया, इसलिए मैं तांग पुजारी के नाम से जाना जाता हूं।" यह सुनकर वह बुजुर्ग व्यक्ति बहुत प्रसन्न हुआ कि उनका उपनाम एक ही है।

“चेन, मेरे दोस्त,” बंदर ने कहा, “मुझे खेद है कि इससे आपके परिवार को परेशानी होगी, लेकिन मैंने पाँच सौ वर्षों से स्नान नहीं किया है, इसलिए क्या आप मेरे और मेरे स्वामी के लिए कुछ पानी उबाल सकते हैं ताकि हम अध्याय 14 से पहले स्नान कर सकें?”

क्या हम फिर से चलें? धन्यवाद।" बूढ़े व्यक्ति ने पानी उबालने और एक टब लाने का निर्देश दिया और उसने दीपक जलाया।

जब गुरु और शिष्य ने स्नान कर लिया तो वे दीपक के पास बैठ गए, और बंदर भाई ने एक बार फिर पूछा, "बूढ़े चेन, मुझे आपसे एक और बात पूछनी है: क्या आप मुझे एक सुई और धागा उधार दे सकते हैं?"

"जी हां, बिल्कुल," बूढ़े आदमी ने जवाब दिया और अपनी पत्नी को उन्हें लाने के लिए भेजा और फिर उन्हें बंदर को सौंप दिया।

बंदर की तेज़ नज़रों ने देखा कि उसके मालिक ने एक छोटा सा सफ़ेद सूती कुर्ता उतारा, जिसे उसने दोबारा नहीं पहना। इसलिए बंदर ने उसे झट से उठाकर खुद पहन लिया। फिर उसने अपनी बाघ की खाल उतारी, उसे मोड़कर अपनी कमर के चारों ओर लपेटा, एक लता से बाँधा, अपने मालिक के पास गया और पूछा, "पहले जो कपड़े मैंने पहने थे, उनकी तुलना में ये कैसे हैं?"

"बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया," संज़ंग ने उत्तर दिया, "इससे आप बिल्कुल असली भिक्षु जैसे दिखते हैं। अगर आपको त्यागे हुए वस्त्रों से कोई आपत्ति नहीं है,"

उन्होंने आगे कहा, "तुम यह कुर्ता पहने रह सकते हो।" सुन वुकॉन्ग ने आज्ञाकारिता में "ना-आ-आ" का उच्चारण किया और उन्हें धन्यवाद दिया, फिर घोड़े के लिए कुछ घास लाने चले गए। जब सारे काम पूरे हो गए, तो गुरु और शिष्य सोने चले गए।

अगली सुबह जल्दी उठकर सन वुकॉन्ग ने अपने स्वामी से चलने को कहा। संज़ंग ने कपड़े पहने और बंदर को बिस्तर और बाकी सामान पैक करने को कहा। वे निकलने ही वाले थे कि तभी एक बूढ़ा आदमी प्रकट हुआ। उसने नहाने के लिए गर्म पानी और नाश्ता तैयार रखा था। नाश्ते के बाद वे चल पड़े, संज़ंग घोड़े पर सवार था और बंदर भाई आगे-आगे चल रहा था। भूख लगने पर वे खाते और प्यास लगने पर पानी पीते, दिन में यात्रा करते और रात में आराम करते। इसी तरह वे चलते रहे जब तक उन्हें

एहसास नहीं हुआ कि सर्दी का मौसम शुरू हो चुका है।
जब पाला पड़ने से लाल पत्ते नष्ट हो जाते हैं तो जंगल विरल हो जाते हैं;
पहाड़ी की चोटी पर केवल चीड़ और सरू के पेड़ ही पनपते हैं।
अधपकी बेर की कलियों से एक गहरी सुगंध निकलती है।
छोटे दिनों में गर्मी बढ़ने से,
वसंत ऋतु का एक स्पर्श।
जब गुलदाउदी और कमल के फूल खिलना बंद हो जाते हैं, तब जंगली चाय के फूल खिलते हैं।
ठंडे पुल और प्राचीन वृक्षों के पास पक्षी शाखाओं के लिए आपस में झगड़ते हैं।
घुमावदार घाटी में झरने का पानी कम बहता है।
आसमान में हल्के बर्फीले बादल तैर रहे हैं।
उत्तर दिशा से तेज हवा चल रही है।
अपनी आस्तीन खींचते हुए:
शाम के समय की ठंड कौन सहन कर सकता है?
अध्याय 14
211
पश्चिम की यात्रा
जब गुरु और शिष्य काफी देर तक यात्रा करते रहे, तो उन्हें रास्ते के किनारे से एक सीटी की आवाज सुनाई दी, और छह आदमी भाले, तलवारें, कटारें और मजबूत धनुष लेकर बाहर दौड़े।
“तुम कहाँ जा रहे हो, भिक्षु?” वे गरजे। “अगर तुम हमें अपना घोड़ा और सामान दे दोगे तो हम तुम्हारी जान बख्श देंगे।” संजांग डर के मारे घोड़े से गिर पड़ा, वह कुछ बोल भी नहीं पा रहा था। बंदर भाई ने उसे उठने में मदद की और कहा, “चिंता मत करो, गुरुजी, कुछ गंभीर नहीं है। वे हमारे लिए कुछ कपड़े और यात्रा खर्चा लेकर आए हैं।”
"क्या तुम बहरे हो, वुकॉन्ग?" दूसरे ने पूछा। "उन्होंने हमसे हमारा घोड़ा और सामान देने को कहा था, तो तुम उनसे कपड़े और पैसे कैसे मांग सकते हो?"
"तुम कपड़ों, सामान और घोड़े का ध्यान रखना, मैं जाकर उन पर हाथ आज़माता हूँ। देखते हैं क्या होता है।"

"एक अच्छा हाथ दो मुट्ठियों का मुकाबला नहीं कर सकता," संज़ैंग ने कहा, "और दो मुट्ठियाँ चार हाथों का मुकाबला नहीं कर सकतीं। वे छह बड़े आदमी हैं और तुम अकेले हो। तुममें उनसे लड़ने की हिम्मत नहीं हो सकती।"

बहादुर बंदर भाई बहस करने के लिए नहीं रुका। इसके बजाय वह आगे बढ़ा, अपनी बाहों को अपनी छाती पर बांध लिया, छह डाकुओं को प्रणाम किया और कहा, "आप लोग हमारा रास्ता क्यों रोक रहे हैं?"

"हम शक्तिशाली लुटेरे बादशाह हैं, पहाड़ों के दयालु स्वामी हैं। हम बहुत समय से प्रसिद्ध हैं, हालाँकि लगता है आपने हमारे बारे में नहीं सुना है। अगर आप तुरंत अपना सामान छोड़ देते हैं, तो हम आपको जाने देंगे; लेकिन अगर आपने ज़रा भी 'ना' कहा, तो हम आपके मांस को कीमा बना देंगे और आपकी हड्डियों को चूर-चूर कर देंगे।"

"मैं भी एक वंशानुगत लुटेरा राजा हूँ, और कई वर्षों से एक पहाड़ पर शासन कर रहा हूँ, लेकिन मैंने आप सज्जनों के बारे में कभी नहीं सुना।"

"चूंकि तुम हमारे नाम नहीं जानते, इसलिए मैं तुम्हें बता देता हूँ: आँखों से देखने वाला सुख, कानों से सुनने वाला क्रोध, नाक से सूंघने वाला प्रेम, जीभ से चखने वाला विचार, मन से उत्पन्न इच्छा और शरीर से उत्पन्न दुःख।" सन वुकॉन्ग उन पर हँसा। "तुम तो बस कुछ छोटे-मोटे बदमाश हो। तुम यह नहीं देख सकते कि मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, भले ही मैं एक भिक्षु हूँ, और तुममें हमारे रास्ते में आने की हिम्मत कैसे हुई? तुमने जो भी रत्न चुराए हैं, उन्हें बाहर निकालो, हम सातों उन्हें बराबर बाँट लेंगे। मैं तुम्हें इस बात पर माफ़ कर देता हूँ।"

इससे डाकू क्रमशः प्रसन्न, क्रोधित, प्रेममय, विचारशील, लालसापूर्ण और दुखी हो गए, और वे सब उस पर टूट पड़े, चिल्लाते हुए बोले, "अरे साधु, तुम्हारी हिम्मत तो देखो! तुम्हारे पास खजाने में डालने के लिए कुछ नहीं है, फिर भी तुम हमारा सामान बाँटना चाहते हो।" अपने भाले और तलवारें लहराते हुए वे उस पर टूट पड़े और उसके चेहरे पर बेतहाशा वार करने लगे। सत्तर-अस्सी वार उस पर पड़े, लेकिन वह बस बीच में खड़ा रहा, सब कुछ अनसुना करते हुए।

"वाह, क्या साधु है!" डाकुओं ने कहा। "यह तो सचमुच बहुत ही साहसी है।"

"मुझे लगता है हमने काफी कुछ देख लिया है," भाई बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "इतनी मार-पीट के बाद तुम्हारे हाथ थक गए होंगे। अब मेरी बारी है कि मैं अपनी सुई निकालूं और थोड़ा मज़ा करूं।"

डाकुओं ने कहा, "यह भिक्षु ज़रूर एक्यूपंक्चरिस्ट रहा होगा। हमें कोई बीमारी नहीं है। यह सुइयों के बारे में क्यों बात कर रहा है?"
भाई बंदर ने अपने कान से कढ़ाई की सुई निकाली और उसे हवा में झटक दिया, जिससे वह चावल के कटोरे जितनी मोटी लोहे की लाठी बन गई। इसे हाथ में लेकर उसने कहा, "जब तक मैं अपनी लाठी चला कर देख लेता हूँ, यहीं रुको।" डरे हुए डाकू चारों दिशाओं में भागने लगे, लेकिन बंदर उनके पीछे दौड़ा, उन सबको पकड़ लिया और मार डाला। (अध्याय 14)

उनमें से हर एक को। फिर उसने उनके कपड़े उतार दिए, उनका पैसा ले लिया और मुस्कुराते हुए वापस चला गया।
"चलिए, मालिक; मैंने उन डाकुओं का सफाया कर दिया है," उसने कहा।
"भले ही वे लुटेरे थे, तुम सचमुच मुसीबत मोल ले रहे हो," संज़ंग ने जवाब दिया। "अगर उन्हें गिरफ्तार करके अधिकारियों के हवाले भी कर दिया जाता, तो भी उन्हें मौत की सज़ा नहीं मिलती। तुम्हें कुछ तरकीबें पता होंगी, लेकिन बेहतर होता कि तुम उन्हें भगा देते। तुम्हें उन सबको मारना ही क्यों पड़ा? गलती से भी किसी की जान लेना किसी को भिक्षु बनने से रोकने के लिए काफी है।
वह फर्श साफ करते समय चींटियों को छोड़ देता है।
दीयों को ढककर रखने से पतंगों को बचाया जा सकता है।
तुम्हें उन सबको मारने का क्या हक था, बिना यह परवाह किए कि उनमें से कौन दोषी था और कौन निर्दोष? तुम्हारे अंदर जरा भी दया या अच्छाई नहीं है। इस बार यह घटना जंगल में हुई है, जहाँ कोई भी अपराध का पता नहीं लगा पाएगा। मान लो किसी ने शहर में तुम्हें अपमानित किया और तुम वहाँ हत्यारे बन गए। मान लो तुमने अपने उस डंडे से बेकाबू होकर लोगों को मार डाला और घायल कर दिया। मैं खुद भी इसमें शामिल होता, भले ही मैं पूरी तरह निर्दोष हूँ।
"लेकिन अगर मैंने उन्हें नहीं मारा होता, तो वे आपको मार डालते, स्वामी," सन वुकॉन्ग ने विरोध किया।
"मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूँ, और मैं हत्या करने के बजाय मरना पसंद करूँगा," संज़ंग ने कहा। "अगर मैं मर जाता, तो केवल मैं ही मरता, लेकिन तुमने उनमें से छह को मार

डाला, जो घोर अन्याय है। अगर मामला अदालत में जाता, तो तुम अपने पिता के सामने भी अपनी दलीलों से बच नहीं पाते।"

"सच कहूँ तो, गुरुजी, जब मैं फूलों और फलों के पर्वत पर राज करने वाला राक्षस था, तब मैंने न जाने कितने लोगों को मारा था," सन वुकॉन्ग ने कहा, "लेकिन अगर मैंने आपके तरीके से काम किया होता तो मैं कभी भी स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि नहीं बन पाता।"

"पांच सौ साल पहले तुम इसीलिए मुसीबत में पड़े थे क्योंकि तुमने मनुष्यों के बीच इतनी क्रूरता से अत्याचार किया और स्वर्ग के विरुद्ध सबसे जघन्य अपराध किए। लेकिन अब जब तुमने धर्म अपना लिया है, तो तुम कभी पश्चिमी स्वर्ग तक नहीं पहुंच पाओगे और कभी भिक्षु नहीं बन पाओगे, जब तक तुम हत्या करने की अपनी आदत नहीं छोड़ते। तुम बहुत दुष्ट हो, बहुत दुष्ट।"

बंदर, जिसने कभी खुद को किसी के दबाव में नहीं आने दिया था, संजांग की लगातार बकबक से भड़क उठा।

"अगर तुम कहते हो कि मैं कभी भिक्षु नहीं बनूंगा और कभी पश्चिमी स्वर्ग तक नहीं पहुंचूंगा, तो मुझसे इस तरह की बातें करना बंद करो। मैं वापस जा रहा हूं।"

संज़ंग के जवाब देने से पहले ही, बंदर गुस्से में उछल पड़ा और चिल्लाया, "मैं जा रहा हूँ।" संज़ंग ने जल्दी से ऊपर देखा, लेकिन वह पहले ही नज़रों से ओझल हो चुका था। केवल पूरब से आती सीटी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। अकेले रह जाने पर, पुजारी ने सिर हिलाया और गहरी उदासी और आक्रोश के साथ आह भरी।

"वह न सुधरने वाला दुष्ट," उसने मन ही मन सोचा। "सिर्फ इसलिए कि मैंने उसे थोड़ी सी डांट दी, वह गायब हो गया और घर वापस चला गया। बस, बात खत्म। लगता है मेरी किस्मत में कोई शिष्य या अनुयायी नहीं है। मुझे अध्याय 14 नहीं मिला।"

अब तो मैं चाहकर भी उससे बात नहीं कर सकता, और अगर मैं उसे फोन करूं तो वो जवाब भी नहीं देगा। मुझे अब निकलना ही होगा। इसलिए उसे पश्चिम तक पहुँचने के लिए अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ी, और अकेले ही अपना ख्याल रखना पड़ा क्योंकि उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था।

संज़ंग के पास सामान समेटकर घोड़े पर बांधने के अलावा कोई चारा नहीं था। अब

वह घोड़े पर सवार नहीं हुआ। इसके बजाय, एक हाथ में अपनी मठवासी छड़ी पकड़े और दूसरे हाथ से लगाम खींचकर, वह पश्चिम की ओर अपने अकेले रास्ते पर चल पड़ा। कुछ ही दूर चलने के बाद उसने अपने सामने पहाड़ी रास्ते पर एक बूढ़ी औरत को देखा। उसके हाथ में कढ़ाईदार वस्त्र था और उस पर एक डिज़ाइनदार टोपी रखी थी। जैसे ही वह उसकी ओर आई, उसने जल्दी से घोड़े को रास्ते के किनारे रोक दिया ताकि वह गुजर सके।

"आप कहां से आए हैं, आदरणीय भिक्षु?" वृद्ध महिला ने पूछा, "क्या आप अकेले ही यात्रा कर रहे हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे पूर्व के महान राजा ने पश्चिम में बुद्ध से मिलने और उनसे सच्चे धर्मग्रंथ मांगने के लिए भेजा है।"

"पश्चिम के बुद्ध भारत की धरती पर स्थित महान गर्जन मठ में निवास करते हैं, जो यहाँ से छत्तीस हजार मील दूर है। आप वहाँ अकेले, केवल अपने घोड़े के साथ, बिना किसी साथी या शिष्य के कभी नहीं पहुँच सकते।"

"मेरा एक शिष्य था, लेकिन उसका स्वभाव इतना दुष्ट था कि उसने मेरे द्वारा दी गई थोड़ी सी फटकार को भी स्वीकार नहीं किया और अचानक गायब हो गया," संजांग ने कहा।

“मेरे पास यहाँ एक कढ़ाईदार कुर्ता और सुनहरे पैटर्न से जड़ी एक टोपी है जो मेरे बेटे की हुआ करती थी,” महिला ने कहा, “लेकिन वह केवल तीन दिन भिक्षु रहने के बाद ही चल बसा। मैं अभी उसके मठ में उसके शोक में और उसके गुरु को अंतिम विदाई देने गई थी, और मैं इस कुर्ते और टोपी को उस लड़के की याद के तौर पर घर ला रही थी। लेकिन चूंकि आपका एक शिष्य है, आदरणीय भिक्षु, मैं इन्हें आपको दे दूंगी।”

"आपकी अपार उदारता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, लेकिन चूंकि मेरा शिष्य पहले ही जा चुका है, इसलिए मैं इन्हें स्वीकार नहीं कर सका।"

"वह कहां गया है?"

"जब वह पूरब की ओर वापस गया तो मुझे केवल सीटी की आवाज सुनाई दी।"

“मेरा घर यहाँ से पूर्व दिशा में ज़्यादा दूर नहीं है,” उसने कहा, “इसलिए मुझे लगता है कि वह वहीं गया होगा। मेरे पास एक मंत्र है जिसे ‘मन को शांत करने वाले सच्चे शब्द’ या ‘बंधन कसने वाला मंत्र’ कहते हैं। तुम्हें इसे गुप्त रूप से सीखना होगा और इसे किसी को भी नहीं बताना। इसे कभी किसी को मत बताना। मैं जाकर उसे पकड़

लूँगी और उसे तुम्हारे पास वापस भेज दूँगी, और तुम उसे वह कुर्ता और टोपी पहनने के लिए दे देना। अगर वह फिर से अवज्ञा करे, तो तुम्हें बस चुपचाप मंत्र का जाप करना है। इससे वह फिर कभी हत्या नहीं करेगा या भाग नहीं जाएगा।"

संजांग ने झुककर उन्हें धन्यवाद दिया, जिसके बाद वह सुनहरी रोशनी की किरण में परिवर्तित हो गईं और पूर्व दिशा की ओर लौट गईं।

उन्हें अपने मन में यह अहसास हुआ कि यह बोधिसत्व गुआनयिन ने ही उन्हें मंत्र दिया होगा, इसलिए उन्होंने एक चुटकी मिट्टी ली, मानो धूप जला रहे हों, और पूर्व दिशा की ओर अत्यंत श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। फिर उन्होंने अपना वस्त्र और टोपी अपने थैले में रखी, मार्ग के किनारे बैठ गए, और मन को शांत करने वाले सच्चे वचनों का बार-बार जाप किया, जब तक कि वे उन्हें भली-भांति याद न कर लें और उन्हें अपने स्मरण में समाहित न कर लें।

आइए अब सुन वुकॉन्ग की कहानी सुनें, जो अपने गुरु को छोड़कर सीधे अपने कलाबाज़ी करते बादल पर सवार होकर पूर्वी महासागर में लौट आया। बादल को रोककर उसने जल को चीरते हुए सीधे क्रिस्टल के जलमग्न महल की ओर प्रस्थान किया। उसके आने से ड्रैगन राजा सतर्क हो गया और उसका स्वागत करने के लिए बाहर आकर उसे महल में ले गया, जहाँ वे बैठ गए।

जब उन्होंने शिष्टाचार का आदान-प्रदान कर लिया, तो ड्रैगन राजा ने कहा, "मुझे खेद है कि मैं आकर आपको आपके कष्टों के अंत पर बधाई नहीं दे सका, महान ऋषि। मेरा मानना है कि आप अपने अमर पर्वत को पुनः व्यवस्थित करने के लिए अपनी पुरानी गुफा में लौट रहे हैं।"

अध्याय 14

214

पश्चिम की यात्रा

"मैं भी यही करना चाहता था," बंदर ने जवाब दिया। "लेकिन इसके बजाय मैं भिक्षु बन गया।"

"एक भिक्षु? कैसे?" ड्रैगन राजा ने पूछा।

"दक्षिण सागर की बोधिसत्व ने मेरा धर्म परिवर्तन कराया। उन्होंने मुझे सिखाया कि बाद में अच्छे फल के लिए पूर्व के तांग पुजारी के साथ पश्चिम जाकर, बुद्ध के दर्शन करके और भिक्षु बनकर कर्म करना चाहिए। और मेरा नाम बदलकर 'भाई बंदर' रख

दिया गया है।"

“बधाई हो, बधाई हो,” ड्रैगन राजा ने कहा। “तुमने अपना जीवन बदल लिया है और अच्छा बनने का फैसला किया है। लेकिन अगर ऐसा है तो पश्चिम जाने के बजाय पूर्व की ओर क्यों लौट आए?” बंदर हँस पड़ा।

"क्योंकि उस तांग पुजारी को इंसानी स्वभाव की समझ नहीं है। उसने मेरे द्वारा मारे गए कुछ छोटे-मोटे लुटेरों के बारे में मुझे ताने मारना शुरू कर दिया और कहा कि मुझमें सब कुछ गलत है। आप जानते ही हैं कि मुझे किसी का मुझे परेशान करना कितना बुरा लगता है, इसलिए मैं उसे छोड़कर अपने पहाड़ पर घर आ गया। मैं पहले आपसे मिलने आया था, बस एक कप चाय मांगने के लिए।"

"कृपा करके मुझे खुशी होगी," ड्रैगन राजा ने कहा, और उनके ड्रैगन पुत्र और पोते कुछ सुगंधित चाय लेकर आए और उन्होंने उसे बंदर को भेंट किया।

जब उसने अपनी चाय पी ली, तो बंदर ने पीछे मुड़कर देखा और उसे अपने पीछे की दीवार पर "यी पुल पर जूता भेंट करना" नामक एक चित्र टंगा हुआ दिखाई दिया।

"यह किस चीज़ का नज़ारा है?" बंदर ने पूछा।

“तुम्हें इसके बारे में पता नहीं होगा क्योंकि यह तुम्हारे समय के बाद हुआ,” ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया। “इसे कहते हैं

"यी पुल पर तीन बार जूता प्रस्तुत करना।"

"यह सब क्या है?" बंदर ने पूछा।

“अमर देवता येलो स्टोन हैं, और यह लड़का झांग लियांग है, जो हान काल में रहता था,” ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया। “येलो स्टोन देवता पुल पर बैठे थे, तभी अचानक उनका एक जूता पुल के नीचे गिर गया और उन्होंने झांग लियांग को उसे लाने के लिए कहा। लड़के झांग लियांग ने तुरंत ऐसा किया और घुटने टेककर उन्हें जूता भेंट किया।”

लॉर्ड येलो स्टोन ने ऐसा तीन बार किया, और चूंकि झांग लियांग ने कभी भी अहंकार या अनादर का कोई संकेत नहीं दिखाया, इसलिए लॉर्ड येलो स्टोन उनकी लगन से प्रभावित हुए। एक रात उन्होंने झांग लियांग को कुछ दिव्य ग्रंथ दिए और उन्हें हान साम्राज्य का समर्थन करने के लिए कहा। बाद में उन्होंने अपने तम्बू की चारदीवारी के भीतर अपनी गणनाओं के माध्यम से सैकड़ों मील दूर विजय प्राप्त की। जब शांति आई तो उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और मास्टर रेड पाइन के साथ अपने

पर्वत पर विचरण करने और ज्ञान के माध्यम से अमरता का मार्ग प्राप्त करने के लिए वापस चले गए। "महान ऋषि, यदि आप तांग पुजारी की पूरी शक्ति से रक्षा नहीं करते हैं, और यदि आप उनके निर्देश को अस्वीकार करते हैं, तो बेहतर होगा कि आप भविष्य में अच्छे पुरस्कार प्राप्त करने का प्रयास करना छोड़ दें, क्योंकि इसका अर्थ होगा कि आप अंततः केवल एक दुष्ट अनैतिक व्यक्ति हैं।"

बंदर ने कुछ बुदबुदाया, लेकिन कुछ नहीं बोला।

“महान ऋषि,” ड्रैगन राजा ने कहा, “आपको अपना निर्णय लेना होगा। अभी के आसान जीवन के लिए अपना भविष्य बर्बाद मत करो।”

"बस इतना ही काफी है। मैं वापस जाकर उसका ख्याल रखूंगा," सन वुकॉन्ग ने जवाब दिया। ड्रैगन राजा बहुत खुश हुआ।

"तो फिर मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा। मैं तुमसे दया करके विनती करता हूं कि तुम अपने स्वामी को अधिक देर तक प्रतीक्षा न कराओ।" इस प्रकार जाने के लिए विवश होकर, बंदर ने समुद्री महल छोड़ दिया, अपने बादल पर सवार हुआ और ड्रैगन राजा से विदा ली।

रास्ते में उनकी मुलाकात बोधिसत्व गुआनयिन से हुई। "तुम यहाँ क्या कर रहे हो, सुन वुकॉन्ग?" उन्होंने पूछा। "तुमने तांग पुजारी की शिक्षा को क्यों ठुकरा दिया और उनकी रक्षा करना क्यों छोड़ दिया?" भाई बंदर ने अध्याय 14 से उनके सामने व्याकुलतापूर्वक प्रणाम किया।

उसने बादल में बैठकर उत्तर दिया, "जैसा कि आपने भविष्यवाणी की थी, बोधिसत्व, तांग साम्राज्य से एक भिक्षु आया जिसने मेरी मुहर हटा दी, मुझे बचाया और मुझे अपना शिष्य बना लिया। मैं उससे भाग गया क्योंकि वह मुझे दुष्ट और सुधरने योग्य नहीं समझता था, लेकिन अब मैं उसकी रक्षा के लिए वापस जा रहा हूँ।"

"तो जल्दी करो, और अब और बुरे विचार मत लाओ।" इतना कहकर वे सब अपने-अपने रास्ते चले गए।

कुछ देर बाद बंदर ने तांग पुजारी को रास्ते के किनारे उदास बैठे देखा। वह उनके पास गया और बोला,

"आप यात्रा क्यों नहीं कर रहे हैं, गुरुजी? आप अभी भी यहाँ किसलिए हैं?" संजांग ने

ऊपर देखा।
"तुम कहाँ थे?" उसने पूछा। "मैं तुम्हारे बिना हिल भी नहीं सकता था, इसलिए मुझे यहीं बैठकर तुम्हारे वापस आने का इंतजार करना पड़ा।"
"मैं पूर्वी सागर के बूढ़े ड्रैगन राजा से चाय मांगने गया था," बंदर ने जवाब दिया।
"शिष्य, एक धार्मिक व्यक्ति को झूठ नहीं बोलना चाहिए। तुम यह कैसे कह सकते हो कि तुम ड्रैगन राजा के यहाँ चाय पीने गए थे, जबकि तुम्हें गए हुए दो घंटे भी नहीं हुए हैं?"
बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मैं तुम्हें बिल्कुल सच बता सकता हूँ कि मैं अपने कलाबाज़ी करने वाले बादल से एक ही छलांग में छत्तीस हज़ार मील की दूरी तय कर सकता हूँ। इसी तरह मैं वहाँ गया और वापस आया।"
"जब मैंने तुमसे थोड़ी सख्ती से बात की तो तुम्हें बुरा लगा और तुम नाराज़ होकर चले गए," संज़ंग ने कहा। "तुम्हारे जैसे चतुर व्यक्ति के लिए तो ठीक था—तुमने अपने लिए चाय मंगवा ली। लेकिन मैं नहीं जा सका और मुझे यहीं भूखा रहना पड़ा।"
आपको मेरे लिए खेद होना चाहिए।
"अगर आपको भूख लगी है, स्वामी, तो मैं जाकर आपसे कुछ खाना मांग लूंगा," बंदर ने सुझाव दिया।
“कोई ज़रूरत नहीं,” उसके मालिक ने जवाब दिया, “मेरे बंडल में अभी भी कुछ सूखा राशन बचा है जो उच्च वार्डन की माँ ने मुझे दिया था। वह कटोरा लो और थोड़ा पानी ले आओ। जब हम थोड़ा खा लेंगे तो हम चल पड़ेंगे।”
बंडल खोलने पर बंदर भाई को मोटे आटे से बने कुछ स्कोन मिले, जिन्हें उसने निकालकर अपने स्वामी को दे दिया। उसने चमकदार ब्रोकेड की कमीज और सोने की नक्काशी वाली टोपी भी देखी।
"क्या तुम ये कुर्ता और टोपी पूरब से अपने साथ लाए हो?" उसने पूछा। संजांग को तुरंत कुछ बहाना बनाना पड़ा।
"मैं बचपन में इन्हें पहना करता था। उस टोपी को पहनकर आप बिना सीखे भी धर्मग्रंथों का पाठ कर सकते हैं, और उस चोगे को पहनकर आप बिना किसी अभ्यास के भी अनुष्ठान कर सकते हैं।"
"प्रिय स्वामी, कृपया मुझे इन्हें पहनने दीजिए," बंदर ने विनती की।
"मुझे नहीं पता कि ये तुम्हें फिट आएंगे या नहीं, लेकिन अगर तुम इन्हें पहन सकते हो,

तो पहन लो।" बंदर ने पुराना सफेद कुर्ता उतारकर उसकी जगह जकूज़ी वाला कुर्ता पहन लिया और पाया कि वह उसे बिल्कुल फिट आ रहा है। फिर उसने टोपी अपने सिर पर रख ली।

टोपी पहनते ही संजांग ने खाना बंद कर दिया और चुपचाप पट्टी कसने का मंत्र जपने लगा।

“मेरा सिर दुख रहा है, मेरा सिर दुख रहा है,” बंदर भाई चिल्लाया, लेकिन उसके गुरु ने मंत्र का जाप कई बार दोहराया। दर्द से कराहते हुए बंदर ने टोपी को फाड़ डाला, और संजांग ने सोने की पट्टी टूटने के डर से मंत्र पढ़ना बंद कर दिया। जैसे ही मंत्र रुका, दर्द भी खत्म हो गया। अपना सिर छूकर बंदर ने महसूस किया कि उसके सिर पर सोने के तार जैसी कोई चीज इतनी कसकर जकड़ी हुई है कि वह उसे न तो खींच सकता है और न ही तोड़ सकता है। वह वहां जड़ जमा चुकी थी। उसने कान से सुई निकाली, उसे पट्टी के अंदर डाला और जोर से खींचा। संजांग, फिर से पट्टी टूटने के डर से, मंत्र का जाप करने लगा। इस बार दर्द इतना तेज था कि बंदर सिर के बल खड़ा हो गया, कलाबाजियां करने लगा और उसका चेहरा लाल हो गया। (अध्याय 14)

उसके कान फटे जा रहे थे। उसकी आँखें फटी रह गईं और उसका शरीर सुन्न हो गया। उसकी हालत देखकर संजांग को रुकना पड़ा, और दर्द भी फिर से रुक गया।

"गुरुजी," बंदर ने कहा, "आपने मुझ पर कैसा श्राप दिया है कि मुझे ऐसा सिरदर्द हो रहा है।"

"मैंने तुम पर कोई श्राप नहीं दिया, मैंने बंधन कसने का मंत्र पढ़ा," संजांग ने उत्तर दिया।

"इसे फिर से कहो और देखो क्या होता है," बंदर ने कहा, और जब संज़ांग ने उसकी बात मानी, तो बंदर के सिर में फिर से दर्द होने लगा। "रुको, रुको," वह चिल्लाया, "जैसे ही तुमने इसे पढ़ना शुरू किया, मेरे सिर में दर्द होने लगा। तुमने ऐसा क्यों किया?"

"क्या अब तुम मेरा निर्देश मानोगे?" संजांग ने पूछा।

"हां," बंदर ने उत्तर दिया।

"क्या तुम भविष्य में फिर से दुर्व्यवहार करोगे?"
"मैं बिल्कुल नहीं करूंगा," बंदर ने कहा।
हालांकि उसने मौखिक वादा किया था, फिर भी उसके मन में बुरे विचार पनप रहे थे, और उसने अपनी सुई को हवा में तब तक हिलाया जब तक वह चावल के कटोरे जितनी मोटी नहीं हो गई। उसने तांग पुजारी पर हमला किया, और उसे खत्म करने ही वाला था कि भयभीत संजांग ने मंत्र को दो-तीन बार और दोहराया।
बंदर ने अपना डंडा गिरा दिया और ज़मीन पर गिर पड़ा, वह अपना हाथ उठाने में असमर्थ था। "मालिक," वह चिल्लाया, "मुझे प्रकाश दिखाई दिया है। मंत्र बोलना बंद करो, कृपया बंद करो।"
"तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि तुमने मुझे जान से मारने की कोशिश की?" संजांग ने पूछा।
"मैं तो कभी हिम्मत ही नहीं करता," भाई बंदर ने कहा, और फिर पूछा, "गुरुजी, आपको यह मंत्र किसने सिखाया?"
"अभी-अभी मेरी मुलाकात एक बूढ़ी औरत से हुई," संजांग ने जवाब दिया। बंदर गुस्से से भड़क उठा।
"मुझे और कुछ मत बताओ," उसने कहा। "मुझे पूरा यकीन है कि वह बुढ़िया वही गुआनयिन थी। वह मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकती है? बस तुम इंतज़ार करो। मैं उसे मारने के लिए दक्षिणी सागर जा रहा हूँ।"
“क्योंकि उसने ही मुझे यह मंत्र सिखाया है,” संज़ंग ने उत्तर दिया, “वह स्वयं भी इसे जानती होगी। अगर तुम उसके पीछे गए और उसने यह मंत्र पढ़ डाला, तो तुम्हारा अंत हो जाएगा।” संज़ंग की बात में दम देखकर बंदर ने अपना इरादा बदल दिया और जाने का विचार त्याग दिया। वह घुटनों के बल बैठ गया और दयनीय स्वर में गिड़गिड़ाया, “गुरुजी, उसने मुझे पश्चिम जाने के लिए मजबूर करने के लिए इस मंत्र का प्रयोग किया है। मैं उसके लिए मुसीबत खड़ी करने नहीं जाऊंगा, और आपको हर समय यह मंत्र पढ़ने के बजाय शास्त्रों का पाठ करना चाहिए। मैं आपकी रक्षा करने का वचन देता हूं, और मैं हमेशा इस वचन का पालन करूंगा।”
“तो फिर बेहतर होगा कि तुम मुझे घोड़े पर वापस चढ़ने में मदद करो,” संज़ंग ने उत्तर दिया। निराशा में डूबे मंकी ने हिम्मत जुटाई, अपनी जटाधारी कमीज़ की बेल्ट कसी, घोड़े को तैयार किया, सामान इकट्ठा किया और पश्चिम की ओर तेज़ी से चल पड़ा।

अगर आप इस यात्रा से जुड़ी अन्य कहानियाँ जानना चाहते हैं, तो अगली कड़ी में इसका विवरण सुनें।

अध्याय 15

कुंडलित सर्प पर्वत पर देवता गुप्त सहायता प्रदान करते हैं

ईगल के दुख की घाटी में विचार-घोड़े को लगाम कस दी जाती है

अध्याय 15

217

पश्चिम की यात्रा

पश्चिम की ओर जाते समय बंदर तांग पुजारी की देखभाल कर रहा था। वे साल के बारहवें महीने में कई दिनों से यात्रा कर रहे थे, जहाँ बर्फीली उत्तरी हवाएँ और कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। उनका रास्ता ऊँची-नीची चट्टानों और खड़ी पहाड़ियों से होकर गुज़रता था, और वे खतरनाक पहाड़ों की कई श्रृंखलाओं को पार करते गए। एक दिन संज़ंग को चलते-चलते पानी की आवाज़ सुनाई दी, और वह मुड़कर चिल्लाया, "बंदर, पानी की आवाज़ कहाँ से आ रही है?"

"जहां तक मुझे याद है, कुंडलित सर्प पर्वत में इस जगह को ईगल का दुख का दर्रा कहते हैं। ज़रूर दर्रे में पानी ही इसका कारण होगा।" उसके बोलने से पहले ही घोड़ा दर्रे के किनारे पहुँच गया। संज़ंग ने लगाम खींची और देखा। उसने देखा:

बादलों को चीरती हुई एक पतली ठंडी धारा,

सूर्य की रोशनी में चमकती हुई गहरी, साफ लहरें।

वह ध्वनि रात की बारिश को हिला देती है और शांत घाटी में सुनाई देती है, उसका रंग सुबह की धुंध को जन्म देता है जो आकाश को ढक लेती है।

हजारों अथाह गहराई में फैली उड़ती लहरें हरे रंग के पत्थर उगलती हैं;

तेज हवा में जलप्रपात की गर्जना गूंज रही है।

धारा समुद्र की धुंधली लहरों को जन्म देती है;

बगुला और जलकौवा कभी किसी मछुआरे के पास नहीं मिलते।

जब गुरु और शिष्य देख रहे थे, तभी उन्हें घाटी में एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। लहरों से एक अजगर निकला, चट्टान पर कूदा और संज़ंग को पकड़ लिया। घबराकर बंदर ने अपना सामान गिरा दिया, संज़ंग को घोड़े से नीचे उतारा, मुड़ा और भाग गया। अजगर उसे पकड़ नहीं पाया और एक ही झटके में सफेद घोड़े को काठी समेत निगल

गया, फिर पानी की सतह के नीचे गायब हो गया। बंदर ने अपने गुरु को एक ऊँची चोटी पर बिठा दिया और घोड़ा और सामान लाने वापस चला गया। जब उसने देखा कि घोड़ा गायब है और केवल सामान बचा है, तो वह सामान उठाकर अपने गुरु के पास ले गया और उनके सामने रख दिया।

"गुरुजी," उसने कहा, "वह दुष्ट अजगर बिना किसी निशान के गायब हो गया है। उसने हमारे घोड़े को इतना डरा दिया कि वह भाग गया।"

"लेकिन हम घोड़े को कैसे ढूंढेंगे, शिष्य?"

"चिंता मत करो, चिंता मत करो, यहीं इंतजार करो, मैं जाकर उसे ढूंढता हूँ।"

वह सीटी बजाते हुए आकाश में उछल पड़ा। अपनी सुनहरी पुतलियों वाली धधकती आँखों को हाथ से ढकते हुए उसने नीचे चारों ओर देखा, लेकिन घोड़े का कोई निशान नहीं दिखा। उसने अपना बादल हटाया और कहा, "मालिक, हमारा वह घोड़ा अजगर ने खा लिया होगा—मुझे वह कहीं नहीं दिख रहा।"

"शिष्य," संज़ंग ने विरोध करते हुए कहा, "उस बेचारे प्राणी का मुँह इतना बड़ा कैसे हो सकता है कि वह इतने बड़े घोड़े को काठी समेत निगल जाए? मुझे लगता है कि घोड़ा घबराकर लगाम से छूटकर उस घाटी में भाग गया होगा। जाओ और ज़रा ध्यान से देखो।"

अध्याय 15

"तुम्हें मेरी शक्तियों के बारे में पता नहीं है," बंदर ने जवाब दिया। "मेरी ये आँखें तीन सौ मील दूर तक की चीज़ें देख सकती हैं, और उस दायरे में मैं एक उड़न तंबू को भी अपने पंख फैलाते हुए देख सकता हूँ। ऐसे विशाल घोड़े को मैं कैसे नहीं देख पाऊँगा?"

"लेकिन हम उन हज़ारों पहाड़ों और नदियों को कभी पार नहीं कर पाएंगे।" बोलते-बोलते उसके आंसू बारिश की तरह गिरने लगे। उसे रोते देख बंदर भाई भड़क उठा और चिल्लाया, "मालिक, इतनी बेवकूफी मत करो। यहीं बैठो और इंतज़ार करो, मैं उस बदमाश को ढूंढकर उससे हमारा घोड़ा वापस दिलवाता हूँ।"

"तुम्हें नहीं जाना चाहिए," संज़ंग ने उसे पकड़ते हुए कहा। "मुझे डर है कि वह फिर से चुपके से बाहर आएगा और इस बार मुझे मार डालेगा। तब मैं और घोड़ा दोनों मर

जाएंगे, और यह बहुत भयानक होगा।"
इससे बंदर पहले से भी ज्यादा क्रोधित हो गया और गरजते हुए बोला, "तुम बिलकुल निकम्मे हो, पूरी तरह से निकम्मे। तुम्हें सवारी के लिए घोड़ा चाहिए, पर मुझे जाने नहीं दे रहे। इस तरह तुम जीवन भर सामान को देखते हुए बैठे रहोगे।"
जब वह भयंकर क्रोध में चिल्ला रहा था, तभी आकाश में एक आवाज सुनाई दी, "हे महान ऋषि, क्रोधित मत होइए; हे तांग सम्राट के छोटे भाई, रोना बंद कीजिए। हम बोधिसत्व गुआनयिन द्वारा भेजे गए देवता हैं जो शास्त्रों को लाने वाले तीर्थयात्री को गुप्त सुरक्षा प्रदान करने आए हैं।"
ये शब्द सुनते ही संजांग ने तुरंत सिर झुकाया, लेकिन बंदर ने कहा, "तुम सब मुझे अपने नाम बताओ।"
"हम छह डिंग, छह जिया, पांच क्षेत्रों के सत्य के प्रकटकर्ता, चार कर्तव्य देवता और धर्म के अठारह रक्षक हैं; हम प्रतिदिन बारी-बारी से उपस्थित रहेंगे।"
"आज से कौन शुरू कर रहा है?"
"डिंग और जिया, चार कर्तव्य देवता और धर्म के रक्षक बारी-बारी से आएंगे। पांचों लोकों के रहस्योद्घाटकों में से स्वर्ण सिर वाला रहस्योद्घाटक दिन-रात हमेशा आपके साथ रहेगा।"
“ठीक है,” बंदर ने कहा, “आपमें से जो भी ड्यूटी पर नहीं हैं, वे चले जाएं। छह डिंग स्वर्गीय सेनापति, दिन के कर्तव्य देवता और सत्य के प्रकटकर्ता मेरे स्वामी की रक्षा के लिए यहीं रहेंगे, जबकि मैं घाटी में उस दुष्ट अजगर को ढूंढने जाऊंगा और उससे हमारा घोड़ा वापस ले लूंगा।” सभी देवताओं ने वैसा ही किया जैसा उन्हें कहा गया था, और संजांग, अब बहुत राहत महसूस करते हुए, चट्टान पर बैठ गया और बंदर को विस्तृत निर्देश दिए।
“चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है,” शानदार बंदर राजा ने अपनी जरीदार कमीज़ की कमर कसते हुए, बाघ की खाल से बनी स्कर्ट को समेटते हुए, अपना डंडा पकड़ते हुए, खाई के किनारे जाकर, पानी के ऊपर बादलों और कोहरे के बीच खड़े होकर कहा। “हमें हमारा घोड़ा वापस दे दो, कीचड़ के जीव, हमें हमारा घोड़ा वापस दे दो,” वह चिल्लाया।
जब अजगर ने संज़ंग के सफेद घोड़े को खा लिया, तो वह नदी में छिपकर अपनी चमत्कारी शक्तियों को छुपाते हुए अपनी शक्ति का पोषण कर रहा था। जब उसने

किसी को चिल्लाते और उसे कोसते हुए तथा घोड़ा वापस माँगते हुए सुना, तो वह अपना क्रोध रोक नहीं पाया।
लहरों के बीच से उछलते हुए उसने पूछा, "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतनी बेइज्जती करने की?"
जैसे ही बंदर ने उसे देखा, वह दहाड़ा, "जाओ मत! हमारा घोड़ा वापस दो!" और उसने अपनी लाठी अजगर के सिर पर घुमा दी। अजगर ने अपने नुकीले दांत दिखाते हुए और पंजे लहराते हुए उस पर हमला कर दिया। खाई के किनारे उन दोनों के बीच एक शानदार लड़ाई हुई।
अजगर ने अपने नुकीले पंजे फैलाए।
अध्याय 15
219
पश्चिम की यात्रा
बंदर ने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी उठाई।
एक की दाढ़ी सफेद जेड के धागों से लटकी हुई थी।
दूसरे की आंखें सुनहरे दीपों की तरह चमक रही थीं।
अजगर की दाढ़ी में लगे मोतियों से रंगीन धुंध निकल रही थी।
दूसरे के हाथों में लोहे का डंडा बवंडर की तरह नाच रहा था।
उनमें से एक दुष्ट पुत्र था जिसने अपने माता-पिता के साथ अन्याय किया था;
पिता, वह दुष्ट आत्मा जिसने स्वर्ग के सेनापतियों को भी पराजित कर दिया था।
दोनों ने ही कष्ट और पीड़ा झेली थी।
और अब उन्हें योग्यता हासिल करने के लिए अपनी क्षमताओं का उपयोग करना था।
आना-जाना, लड़ना-झगड़ना, चक्कर लगाना-घूमना, ये सब बहुत देर तक चलता रहा, जब तक कि अजगर की सारी ताकत खत्म नहीं हो गई और उसकी मांसपेशियां सुन्न नहीं हो गईं। और प्रतिरोध करने में असमर्थ होकर, वह मुड़ा, पानी में गोता लगाया और नदी की तलहटी में लेट गया। जब बंदर राजा ने उसे कोसना और गालियां देना शुरू किया, तो उसने बहरा होने का नाटक किया और फिर कभी बाहर नहीं निकला।
बंदर कुछ नहीं कर सका, इसलिए उसे संजांग को बताना पड़ा, "गुरुजी, मैंने उस राक्षस को तब तक गालियां दीं जब तक वह बाहर नहीं आ गया, और मुझसे काफी देर तक लड़ने के बाद वह डर के मारे भाग गया। अब वह पानी में है और बाहर नहीं आ

रहा है।"
"क्या आपको यकीन है कि इसने सचमुच हमारे घोड़े को खा लिया?" संजांग ने पूछा।
"यह कैसी बात है," बंदर ने कहा। "अगर इसने घोड़े को न खाया होता, तो यह मुझसे एक शब्द भी बोलने या मुझसे लड़ने की हिम्मत न करता।"
"जब तुमने उस बाघ को मारा था, तब तुमने कहा था कि तुम अजगरों और बाघों को भी अपने वश में कर सकते हो, तो आज तुम इसे क्यों नहीं हरा पाए?" बंदर को उकसावा बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होता था, इसलिए जब इस बार संजांग ने उसका मजाक उड़ाया, तो उसने अपनी दिव्य शक्ति का कुछ अंश दिखाया।
"बस करो, बस करो। मैं एक और कोशिश करूंगा और फिर देखेंगे कि कौन जीतता है।"
बंदर राजा खाई के किनारे पर कूद गया, और नदियों और समुद्रों में हलचल मचाने की जादुई शक्ति का प्रयोग करते हुए, ईगल के दुख की घाटी के तल में मौजूद निर्मल जल को पीली नदी की उफनती लहरों की तरह उग्र बना दिया। पानी की गहराई में छिपे दुष्ट अजगर की शांति भंग हो गई, और उसने सोचा, "यह कितना सच है कि आशीर्वाद कभी जोड़े में नहीं आते और मुसीबतें कभी अकेले नहीं आतीं। स्वर्ग के नियमों को तोड़ने के लिए मृत्युदंड से बच निकलने के बाद से यहाँ अपनी नियति को स्वीकार करते हुए मुझे एक साल से भी कम समय हुआ है, फिर भी मुझे इस खूंखार शैतान से टकराना ही था।"
जैसे-जैसे वह इसके बारे में सोचता गया, उसका गुस्सा बढ़ता गया, और अपमान को एक पल भी सहन न कर पाने के कारण वह नदी से बाहर कूद गया और कोसते हुए बोला, "तुम कहाँ से आए हो, कमीने, यहाँ आकर मुझे परेशान कर रहे हो?"
"मैं कहाँ से हूँ, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," बंदर ने जवाब दिया। "मैं तुम्हारी जान तभी बख्शूंगा जब तुम मुझे वह घोड़ा वापस दे दोगे।"
अध्याय 15

"तुम्हारा वो घोड़ा मेरे पेट में है, और मैं उसे उल्टी करके बाहर नहीं निकाल सकता, है ना? मैं उसे वापस नहीं देने वाला, तो फिर क्या हुआ?"
"अगर तू इसे वापस नहीं देगा, तो इसे ले ले! मैं तुझे सिर्फ घोड़े की जान की कीमत

चुकाने के लिए मार रहा हूँ।" पहाड़ के नीचे उन दोनों के बीच एक और भयंकर संघर्ष शुरू हो गया, और कुछ ही दौरों के बाद छोटा अजगर और अधिक देर तक टिक नहीं सका। उसने अपने शरीर को झटक कर पानी के साँप में बदल लिया और झाड़ियों में रेंगकर गायब हो गया।

बंदर राजा ने अपने हाथों में गदा लिए उसका पीछा किया, लेकिन जब उसने घास हटाकर साँप को ढूँढा तो उसके शरीर के भीतर मौजूद तीनों देवता फट पड़े और उसके सात छिद्रों से धुआँ निकलने लगा। उसने जादुई शब्द 'ओम' का उच्चारण किया, जिससे स्थानीय संरक्षक देवता और पर्वत देवता प्रकट हुए, जो दोनों उसके सामने घुटने टेककर बैठ गए और अपने आने की सूचना दी।

"अपनी एड़ियों को बाहर निकालो," बंदर ने कहा, "मैं अपना गुस्सा शांत करने के लिए तुम दोनों को अपनी लाठी से पांच-पांच कोड़े मारूंगा।"

दोनों देवताओं ने प्रणाम किया और दयनीय भाव से विनती की, "हम महान ऋषि से प्रार्थना करते हैं कि हमें, इन तुच्छ देवताओं को, गवाही देने की अनुमति दें।"

"तुम्हें क्या कहना है?" बंदर ने पूछा।

उन्होंने कहा, “हे महान ऋषि, हमें पता नहीं चला कि आप अपने लंबे कष्टों के बाद कब प्रकट हुए, इसीलिए हम आपसे मिलने नहीं आए। हम क्षमा मांगते हैं।”

"तो फिर," बंदर ने कहा, "मैं तुम्हें मारूंगा नहीं, लेकिन इसके बजाय तुमसे यह पूछूंगा: ईगल के दुख की घाटी में वह शैतानी अजगर कहाँ से आया है, और उसने मेरे मालिक के सफेद घोड़े को क्यों पकड़ा और खा लिया?"

"हे महान ऋषि, आपका कभी कोई स्वामी नहीं था," दोनों देवताओं ने कहा, "और आप एक परम अमर थे जिनकी आत्मा अविचलित थी और जो स्वर्ग या पृथ्वी के अधीन नहीं होते थे, तो फिर इस स्वामी के घोड़े का क्या लेना-देना है?"

“तुम दोनों को यह भी नहीं पता,” बंदर ने उत्तर दिया। “स्वर्ग के विरुद्ध अपराध करने के कारण मुझे पाँच सौ वर्षों तक कष्ट भोगना पड़ा। अब बोधिसत्व गुआनयिन ने मेरा धर्म परिवर्तन कर दिया है और उन्होंने तांग साम्राज्य से एक पुजारी को मुझे बचाने के लिए भेजा है। उन्होंने मुझे उनका शिष्य बनने और पश्चिमी स्वर्ग जाकर बुद्ध से मिलने और शास्त्र मांगने के लिए कहा है। इस रास्ते से गुजरते समय हमने अपने गुरु का सफेद घोड़ा खो दिया।”

“अरे, तो ये बात है,” देवताओं ने कहा। “इस नदी में पहले कभी कोई दुष्ट प्राणी नहीं

रहते थे। यह नदी चौड़ी और गहरी थी, और इसका पानी इतना शुद्ध था कि कौवे और चिड़िया भी इसे पार करने की हिम्मत नहीं करते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि वे पानी में अपनी परछाई को अपने ही जैसे दूसरे पक्षी समझ लेते थे और अक्सर पानी में गिर जाते थे। इसीलिए इसे 'ईगल का दुःख का दर्रा' कहा जाता है। पिछले साल, जब बोधिसत्व गुआनयिन शास्त्रों को लाने के लिए किसी पुरुष की तलाश में जा रही थीं, तो उन्होंने एक काले अजगर को बचाया और उसे यहाँ तीर्थयात्री का इंतज़ार करने के लिए छोड़ दिया, बिना कोई परेशानी पैदा किए। लेकिन जब उसे भूख लगती है, तो वह किनारे पर आकर कुछ पक्षियों या हिरणों को पकड़ लेता है। हम समझ नहीं पा रहे हैं कि वह इतना अज्ञानी कैसे हो सकता है कि महान ऋषि से भिड़ जाए।"

"पहली बार जब हम दोनों के बीच तलवारबाजी हुई, तो हम कुछ देर तक एक-दूसरे के चारों ओर घूमते रहे," बंदर भाई ने जवाब दिया। "दूसरी बार मैंने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई, लेकिन वह बाहर नहीं आया। इसलिए मैंने एक ऐसा मंत्र पढ़ा जिससे नदियाँ और समुद्र उफान पर आ जाते हैं। इसके बाद वह बाहर आया और मुझसे फिर लड़ने की कोशिश करने लगा। उसे मेरी लाठी की ताकत का अंदाजा नहीं था और वह उसे रोक भी नहीं सका, इसलिए उसने अपना रूप बदलकर एक जल सर्प बना लिया और झाड़ियों में छिप गया। मैंने उसका पीछा किया और उसे ढूंढा, लेकिन वह बिना किसी निशान के गायब हो गया।"

"हे महान ऋषि, शायद आपको यह जानकारी न हो कि इस घाटी में हजारों आपस में जुड़ी हुई सुरंगें हैं, यही कारण है कि यहाँ पानी इतना गहरा है। यहाँ आसपास एक सुरंग का प्रवेश द्वार भी है जिसमें वह फिसलकर गिर सकता था।"

हे महान ऋषि, आपको क्रोधित होने या उसे खोजने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि आप उस प्राणी को पकड़ना चाहते हैं, तो आपको बस गुआनयिन को यहाँ आने के लिए कहना होगा, और वह स्वतः ही आत्मसमर्पण कर देगी।

अध्याय 15

221

पश्चिम की यात्रा

यह सुझाव मिलने पर बंदर ने स्थानीय देवता और पर्वत देवता से कहा कि वे उसके साथ संजांग से मिलने चलें और उसे पहले हुई सारी घटना के बारे में बताएँ। उसने पूछा, "अगर आप बोधिसत्व को यहाँ बुलाने के लिए जाते हैं, तो आप कब वापस

आएँगे?" उसने आगे कहा, "मुझे बहुत ठंड लग रही है और भूख भी बहुत है।"
उसके मुंह से शब्द निकलने से पहले ही, आकाश से स्वर्ण-शीर्ष बोधिसत्व की आवाज सुनाई दी, "महान ऋषि, आपको हिलने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं जाकर बोधिसत्व को यहाँ आने के लिए कहता हूँ।" बंदर प्रसन्न हुआ और बोला, "इससे आपको बहुत परेशानी होगी, लेकिन कृपया जितनी जल्दी हो सके आ जाइए।" फिर बोधिसत्व अपने बादल पर सवार होकर दक्षिणी सागर की ओर चल पड़े। बंदर ने पर्वत देवता और स्थानीय देवता से अपने स्वामी की रक्षा करने को कहा और दिन के कर्तव्य देवता को कुछ शाकाहारी भोजन लाने के लिए भेजा, जबकि वह स्वयं घाटी के किनारे गश्त करने लगा।
स्वर्ण सिर वाले प्रकाशदाता ने जैसे ही अपने बादल पर सवार होकर दक्षिणी सागर का रुख किया, वे वहाँ पहुँच गए। अपनी शुभ आभा को त्यागकर वे सीधे पोटारका द्वीप पर स्थित बैंगनी बांस के वन में गए, जहाँ उन्होंने स्वर्ण कवचधारी देवताओं और मोक्ष से बोधिसत्व से मिलने का अनुरोध किया।
"तुम किसलिए आए हो?" बोधिसत्व ने पूछा।
“तांग पुरोहित,” रहस्योद्घाटक ने उत्तर दिया, “ईगल के दुख की घाटी में अपना घोड़ा खो बैठा है, और महान ऋषि सन वुकॉन्ग हताश हैं, क्योंकि वे न तो आगे जा सकते हैं और न ही पीछे। जब महान ऋषि ने स्थानीय देवता से प्रार्थना की, तो उन्हें बताया गया कि बोधिसत्व, आपने जिस दुष्ट अजगर को घाटी में भेजा था, उसने घोड़े को निगल लिया है, इसलिए उन्होंने मुझे आपसे यह विनती करने के लिए भेजा है कि आप उस अजगर को वश में करें और उससे घोड़ा वापस दिलवाएं।”
"वह दुष्ट प्राणी पश्चिमी सागर के ड्रैगन राजा आओ रन का पुत्र था, जिसके पिता ने महल के रत्नों को जलाने के लिए उसकी अवज्ञा की शिकायत की थी। स्वर्ग की अदालत ने उसे इसके लिए मृत्युदंड दिया था, लेकिन मैं स्वयं जेड सम्राट से मिलने गई और उनसे अनुरोध किया कि वे उस ड्रैगन को तांग पुजारी की सेवा में बोझ ढोने वाले जानवर के रूप में नीचे भेज दें। आखिर किस बात ने उसे तांग पुजारी का घोड़ा खाने पर मजबूर किया? मुझे जाकर इसकी जाँच करनी चाहिए।" बोधिसत्व अपने कमल सिंहासन से उतरीं, अपनी जादुई गुफा से बाहर निकलीं और दक्षिणी सागर को पार करते हुए, शुभ प्रकाश में बोधिसत्व के साथ यात्रा की। इस विषय पर एक कविता है: बुद्ध के वचनों में शहद है जो शास्त्रों के तीन भंडारों को भरते हैं, बोधिसत्व

की अच्छाई चीन की महान दीवार से भी लंबी है।
महायान के अद्भुत शब्द स्वर्ग और पृथ्वी को भर देते हैं।
प्रज्ञा का सत्य भूत-प्रेतों और आत्माओं का उद्धार करता है।
इससे गोल्डन सिकाडा को एक बार फिर अपना कोकून उतारना पड़ा।
और उसने शुआनज़ैंग को अपने आचरण को और अधिक सुव्यवस्थित करने का आदेश दिया।
क्योंकि ईगल्स सॉरो गॉर्ज में सड़क कठिन थी,
अजगर का पुत्र सच्चाई की ओर लौट आया और घोड़े में परिवर्तित हो गया।
अध्याय 15
222
पश्चिम की यात्रा
कुछ ही क्षणों में बोधिसत्व और रहस्योद्घाटक कुंडलित नाग पर्वत पर पहुँच गए, और अपने बादल को हवा में रोककर उन्होंने नीचे देखा तो पाया कि भाई बंदर खाई के किनारे पर गाली-गलौज और चिल्ला रहा था। जब बोधिसत्व ने बंदर को बुलाने के लिए कहा, तो रहस्योद्घाटक ने अपने बादल को खाई के किनारे पर उतार दिया।
संजांग से पहले मिलने जाने के बजाय, उसने बंदर से कहा, "बोधिसत्व यहाँ हैं।"
बंदर अपने बादल पर सवार होकर सीधे हवा में उछला और अपनी पूरी आवाज में उस पर चिल्लाया, "सात बुद्धों की गुरु, हमारे धर्म की दयालु मुखिया, आपने मुझे चोट पहुंचाने का यह तरीका क्यों सोचा?"
"मैं तुम्हें पकड़ लूंगी, तुम बदतमीज़ बंदर, तुम लाल नितंब वाले लंगूर," उसने जवाब दिया। "मैं उस तीर्थयात्री को लाने के तरीके को लेकर दो-तीन बार बुरी तरह परेशान हो गई थी, और मैंने उसे तुम्हारी जान बचाने के लिए कहा था। लेकिन तुम्हें बचाने के लिए धन्यवाद देने के बजाय, अब तुम मुझ पर चिल्लाने की हिम्मत कर रहे हो।"
“मुझे कहना ही पड़ेगा, आप मेरे प्रति बहुत दयालु रहे हैं,” बंदर ने जवाब दिया। “अगर आप मुझे अपनी मर्ज़ी से घूमने-फिरने और आनंद लेने देते, तो सब ठीक होता। उस दिन जब आप मुझसे समुद्र के ऊपर मिले थे, तब मैं ठीक था। आपने कुछ कठोर शब्द कहे थे और मुझे तांग पुजारी की हर संभव मदद करने को कहा था। लेकिन आपने उसे वह टोपी क्यों दी, जिसे उसने मुझे धोखे से पहनाकर मुझे यातना दी? आपने मेरे सिर में यह पट्टी क्यों बंधवा दी? आपने उसे वह पट्टी कसने वाला मंत्र क्यों सिखाया?

आपने उस बूढ़े भिक्षु से उसे बार-बार क्यों पढ़वाया, जिससे मेरा सिर दर्द से भर गया? आप मुझे मारना चाहते होंगे।" बोधिसत्व मुस्कुराए।

"अरे बंदर! तू धर्म के आदेशों का पालन नहीं करता, और तू सच्चा इनाम भी स्वीकार नहीं करेगा। अगर तू इस तरह नियंत्रण में न होता, तो तू फिर से स्वर्ग के विरुद्ध विद्रोह कर सकता था या किसी भी प्रकार की बुराई में लिप्त हो सकता था। अगर तूने पहले की तरह मुसीबत खड़ी कर ली, तो तेरी देखभाल कौन करेगा? इस भयानक सिर के बिना, तू कभी भी हमारे योगाकाटिन धर्म में प्रवेश करने को तैयार नहीं होता।"

"ठीक है," बंदर ने जवाब दिया, "चलिए इसे मेरा भयानक सिर मान लेते हैं। लेकिन आपने उस अपराधी और दुष्ट अजगर को यहाँ राक्षस बनने और मेरे मालिक के घोड़े को खाने के लिए क्यों भेजा? दुष्ट प्राणियों को इस तरह उत्पात मचाने देना एक बुरा काम है।"

बोधिसत्व ने कहा, "मैंने स्वयं जेड सम्राट से अनुरोध किया था कि वे तीर्थयात्री के वाहन के रूप में इस अजगर को यहाँ स्थापित करें।"

"क्या आपको लगता है कि एक साधारण घोड़ा हजारों पहाड़ों और नदियों को पार करके गिद्ध शिखर पर स्थित बुद्ध-भूमि तक पहुँच पाएगा? केवल एक ड्रैगन घोड़ा ही ऐसा कर पाएगा।"

"लेकिन वह मुझसे इतना डरा हुआ है कि वह नीचे दुबका हुआ है और बाहर नहीं आ रहा है, तो अब क्या किया जाए?" बंदर ने पूछा।

बोधिसत्व ने ज्ञानदाता से कहा कि वह खाई के किनारे जाकर पुकारे, "राजकुमार जेड ड्रैगन, ड्रैगन राजा आओ रन के पुत्र, बाहर आओ, दक्षिणी सागर के बोधिसत्व के दर्शन करने के लिए," जिसके बाद संतान प्रकट होगी। ज्ञानदाता खाई के किनारे गया और दो बार यह पुकारा, तुरंत ही युवा ड्रैगन लहरों के बीच से उछलकर मानव रूप धारण कर लिया, एक बादल पर कदम रखा और हवा में ही बोधिसत्व का अभिवादन किया।

"बोधिसत्व, आपने मेरी जान बचाई, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मैं यहाँ बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहा हूँ, लेकिन मुझे अभी तक उस तीर्थयात्री के बारे में कोई खबर नहीं मिली है जो शास्त्रों को लेने जा रहा है।" बोधिसत्व ने बंदर भाई की ओर इशारा करते हुए कहा, "क्या वह उस तीर्थयात्री का महान शिष्य नहीं है?"

"वह मेरा दुश्मन है," युवा ड्रैगन ने उसकी ओर देखते हुए उत्तर दिया। "कल भूख से बेहाल होकर मैंने उसका घोड़ा खा लिया था, इसलिए उसने अपनी शक्तियों का

इस्तेमाल करके मुझसे तब तक लड़ाई की जब तक मैं थककर चूर और भयभीत होकर वापस नहीं आ गया। फिर उसने मुझे इतनी गालियां दीं कि मुझे डर के मारे खुद को कमरे में बंद करना पड़ा। उसने धर्मग्रंथ लाने के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा।"
"तुमने मुझसे मेरा नाम कभी पूछा ही नहीं, तो मैं तुम्हें कैसे बता सकता था?" बंदर ने पलटकर जवाब दिया।
अध्याय 15
223
पश्चिम की यात्रा
मैंने तुमसे पूछा, 'तुम कहाँ से हो, कमीने?' और तुमने चिल्लाकर कहा, 'मैं कहाँ से हूँ, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, बस मुझे मेरा घोड़ा वापस दे दो।' तुमने ज़रा भी 'टैंग' शब्द नहीं बोला।
बोधिसत्व ने कहा, "अरे बंदर, तुम अपनी ताकत पर इतना घमंड करते हो कि कभी किसी और के लिए एक अच्छा शब्द भी नहीं बोलते।"
"आपकी यात्रा में बाद में और भी लोग आपसे जुड़ेंगे, और जब वे आपसे कोई सवाल पूछें, तो सबसे पहले आपको धर्मग्रंथों को लाने का जिक्र करना चाहिए। अगर आप ऐसा करेंगे, तो आपको बिना किसी परेशानी के उनकी मदद मिल जाएगी।"
बंदर ने उनसे निर्देश ग्रहण करने में प्रसन्नता दिखाई। फिर बोधिसत्व आगे बढ़ीं, अजगर के सिर से कुछ मोती तोड़े, अपनी विलो की टहनी के सिरे को अपनी बोतल में रखी मीठी ओस में भिगोया, उसे अजगर के शरीर पर छिड़का और उस पर जादुई श्वास फूंकी, जोर से चिल्लाईं, और अजगर हूबहू अपने मूल घोड़े के रूप में बदल गया।
“तुम्हें अपने पिछले पापों को मिटाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए,” उसने उससे कहा, “और जब तुम सफल हो जाओगे, तो तुम साधारण ड्रैगनों से ऊपर उठ जाओगे और तुम्हें तुम्हारा सुनहरा शरीर पुरस्कार के रूप में वापस मिल जाएगा।” युवा ड्रैगन ने उसकी बात को दिल से मान लिया। बोधिसत्व ने सन वुकॉन्ग से कहा कि वह उसे संज़ंग से मिलने ले जाए क्योंकि वह दक्षिणी सागर लौट रही थी। बंदर उससे लिपट गया और उसे छोड़ने से इनकार कर दिया।
“मैं नहीं जा रहा,” उसने कहा, “मैं नहीं जा रहा। अगर पश्चिम की यात्रा इतनी कठिन है, तो मैं इस नश्वर पुजारी को सुरक्षित नहीं रख पाऊंगा, और अगर ऐसी और भी कई मुश्किलें और परेशानियां हैं, तो मुझे खुद को जीवित रखने में ही काफी परेशानी होगी।

मुझे भला कोई इनाम कैसे मिलेगा? मैं नहीं जा रहा, मैं नहीं जा रहा।"
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "पुराने समय में, मनुष्य बनने से पहले, तुम अपने आत्मज्ञान के लिए पूरी शक्ति से प्रयासरत थे। परन्तु अब जब तुम स्वर्ग से आई विपत्ति से मुक्त हो गए हो, तो आलसी हो गए हो। क्या बात है? हमारे धर्म में निर्वाण प्राप्त करने के लिए अच्छे फल में विश्वास रखना आवश्यक है। भविष्य में यदि तुम्हें कोई चोट या कष्ट आए, तो तुम्हें केवल स्वर्ग और पृथ्वी से प्रार्थना करनी है; और यदि तुम किसी सचमुच निराशाजनक स्थिति में पड़ जाओ, तो मैं स्वयं तुम्हें बचाने आऊंगा। इधर आओ, मेरे पास तुम्हें देने के लिए एक और शक्ति है।"
बोधिसत्व ने विलो की टहनी से तीन पत्ते तोड़े, उन्हें भाई बंदर के सिर के पीछे रखा और "बदलो" चिल्लाया, जिसके बाद वे तीन जीवनरक्षक बालों में बदल गए। उन्होंने कहा, "जब समय आएगा और कोई तुम्हारी मदद नहीं करेगा, तो ये पत्ते तुम्हें विपत्ति से बचाने के लिए जो भी आवश्यक होगा, उसमें बदल जाएंगे।"
इन सभी मधुर शब्दों को सुनने के बाद, बंदर ने अंततः सर्वकृपालु बोधिसत्व से विदा ली, जो सुगंधित हवाओं और रंगीन धुंध के बीच पोटारका लौट गए।
बंदर ने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा और अजगर घोड़े को उसकी गर्दन से पकड़कर संज़ंग के पास ले गया। उसने कहा, "गुरुजी, हमें हमारा घोड़ा मिल गया है।" संज़ंग ने उसे देखते ही खुशी से झूम उठा।
"यह पहले से ज़्यादा मज़बूत क्यों है?" उसने पूछा। "यह तुम्हें कहाँ मिला?"
"गुरुजी, आप सपना देख रहे होंगे। स्वर्णमस्तिष्क ने बोधिसत्व को यहाँ बुलाया था, और उन्होंने घाटी में मौजूद अजगर को हमारे सफेद घोड़े में बदल दिया। रंग तो वही है, लेकिन इस पर काठी या लगाम नहीं है, इसीलिए मुझे इसे घसीटकर यहाँ लाना पड़ा।" संज़ंग चकित रह गया।
"बोधिसत्व कहाँ हैं? मुझे जाकर उनकी पूजा करनी चाहिए," उन्होंने कहा।
"वह अब तक दक्षिणी सागर में वापस आ चुकी होगी, इसलिए चिंता मत करो," बंदर ने उत्तर दिया। संज़ांग ने अगरबत्ती जलाने के अंदाज़ में एक चुटकी मिट्टी ली, घुटने टेके और दक्षिण की ओर प्रणाम किया। प्रणाम करने के बाद वह उठा और बंदर को यात्रा के लिए सामान समेटने में मदद की। बंदर ने पर्वत देवता और स्थानीय देवता को विदा किया। (अध्याय 15)

उसने रहस्योद्घाटक और कर्तव्य देवताओं को आदेश दिए और अपने स्वामी को घोड़े पर सवार होने के लिए आमंत्रित किया।

"मैं इस पर सवारी नहीं कर सकता—इसमें न तो काठी है और न ही लगाम," उसके मालिक ने उत्तर दिया, "लेकिन जब हमें नदी पार करने के लिए नाव मिल जाएगी, तब हम इसका समाधान निकाल लेंगे।"

"मालिक, लगता है आपमें बिल्कुल भी अक्ल नहीं है। इन बीहड़ पहाड़ों में नाव कहाँ मिलेगी? यह घोड़ा यहाँ बहुत समय से रह रहा है और इसे धाराओं की जानकारी तो होगी ही, इसलिए आप इस पर सवार होकर इसे नाव की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।" सान्ज़ांग के पास बंदर के सुझाव को मानने के अलावा कोई चारा नहीं था और वह घोड़े पर बिना काठी के सवार होकर नदी के किनारे तक गया जबकि बंदर ने उसका सामान उठाया।

नदी के ऊपरी हिस्से में एक बूढ़ा मछुआरा दिखाई दिया, जो धारा के साथ एक बेड़ा धकेल रहा था। बंदर ने उसे देखते ही हाथ हिलाकर चिल्लाया, "इधर आओ, मछुआरे, इधर आओ। हम पूरब से आए हैं और धर्मग्रंथ लेने जा रहे हैं। मेरे स्वामी को नदी पार करने में परेशानी हो रही है, इसलिए आओ और उन्हें नदी पार करा दो।"

मछुआरा पूरी तेज़ी से उनकी ओर नाव लेकर बढ़ा, जबकि बंदर ने संज़ांग को घोड़े से उतरने के लिए कहा और उसे बेड़ा पर चढ़ने में मदद की। फिर उसने घोड़े को आगे बढ़ाया और सामान लादा, जिसके बाद मछुआरे ने नाव को धकेला और तीर की गति से आगे बढ़ने लगा। देखते ही देखते वे ईगल्स सॉरो गॉर्ज को पार कर पश्चिमी तट पर पहुँच गए।

जब संज़ंग ने भाई बंदर से कहा कि वह गठ्ठा खोलकर उसमें से कुछ महान तांग के सिक्के और नोट निकालकर मछुआरे को दे दे, तो बूढ़े ने "मुझे तुम्हारा पैसा नहीं चाहिए, मुझे तुम्हारा पैसा नहीं चाहिए" कहते हुए अपनी नाव किनारे से दूर धकेल दी और नदी के बीचोंबीच बह गया। संज़ंग बहुत दुखी हुआ, लेकिन हाथ जोड़कर धन्यवाद देने के अलावा वह कुछ नहीं कर सका।

“उन्हें धन्यवाद देने की कोई आवश्यकता नहीं है, स्वामी,” बंदर ने कहा। “क्या आप नहीं देख सकते कि वह कौन है? वह इस नदी के जल देवता हैं, और मुझे उनका स्वागत करने न आने के लिए उन्हें सबक सिखाना चाहिए था। उन्हें तो खुद को

भाग्यशाली समझना चाहिए कि वे मार से बच गए—वे भला पैसे की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?" उसका स्वामी, जो केवल आधा ही आश्वस्त था, एक बार फिर बिना काठी वाले घोड़े पर सवार हुआ और बंदर के पीछे मुख्य मार्ग पर चल पड़ा, और फिर वे पश्चिम की ओर तेज़ी से बढ़ गए।

महान सत्य दूसरे किनारे पर आकर गिरा।

सच्चे हृदय और पूर्ण स्वभाव वाले व्यक्ति ने गिद्ध शिखर पर चढ़ाई की।

जैसे-जैसे शिष्य और गुरु साथ-साथ आगे बढ़ते गए, सूरज पश्चिम में डूबता चला गया और शाम का समय आ गया।

फीके और फटे-पुराने बादल,

पहाड़ों के ऊपर मंद-मंद चाँद,

जैसे ही आसमान में ठंडी बर्फ छा जाती है,

और हवा की गर्जना शरीर को चीर देती है।

उस इकलौते पक्षी के चले जाने के बाद, धूसर द्वीप विशाल प्रतीत होता है;

जहां सूर्यास्त की रोशनी चमकती है, वहां दूर स्थित पहाड़ नीचे दिखाई देते हैं।

विरल जंगलों में हजारों पेड़ विलाप करते हैं,

सुनसान चोटी पर एक अकेला बंदर चीखता है।

यह रास्ता लंबा है, और इस पर कोई पदचिह्न नहीं हैं।

जैसे-जैसे नाव रात के अंधेरे में हजारों मील का सफर तय करती है।

जब संजांग अपने घोड़े की पीठ पर बैठकर दूर तक देख रहा था, तो उसने रास्ते के किनारे एक फार्महाउस देखा।

"बंदर," उसने कहा, "चलो आज रात आगे वाले घर में रुकते हैं और सुबह निकलेंगे।"

बंदर ने ऊपर देखकर उत्तर दिया, "मालिक, यह कोई फार्महाउस नहीं है।"

"क्यों नहीं?"

"एक फार्महाउस की छत पर इतनी सारी सजावटी मछलियाँ और जानवर नहीं होंगे। यह ज़रूर कोई मंदिर या नन का मठ होगा।"

बातचीत करते-करते वे द्वार पर पहुँच गए, और जब संजांग घोड़े से उतरा तो उसने वहाँ

"मंदिर" शब्द देखे।
द्वार के ऊपर बड़े अक्षरों में 'वार्ड वेदी' लिखा हुआ था और वह अंदर चला गया।
तभी गले में मोतियों की माला पहने एक बूढ़ा व्यक्ति हाथ जोड़कर उनका अभिवादन करने के लिए बाहर आया और बोला, "कृपया बैठ जाइए, स्वामी जी।" संज़ंग ने तुरंत उनका अभिवादन स्वीकार किया और मुख्य भवन में प्रवेश करके प्रतिमा को प्रणाम किया। बूढ़े व्यक्ति ने एक नौकर को चाय लाने को कहा, और चाय पीने के बाद संज़ंग ने बूढ़े व्यक्ति से पूछा कि यह मंदिर वार्ड वेदी को क्यों समर्पित है।
“यह स्थान कामी के पश्चिमी क्षेत्र में है,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, “और मंदिर के पीछे वह धर्मनिष्ठ किसान परिवार रहता है जिसने इसे बनवाया था। ‘वार्ड’ का अर्थ है गाँव का इलाका, और वेदी स्थानीय संरक्षक देवता की वेदी है। वसंत ऋतु में खेत जोतते समय, ग्रीष्म ऋतु में निराई करते समय, शरद ऋतु में फसल काटते समय और शीत ऋतु में फसल भंडारण करते समय, वे सभी वेदी पर मांस, फूल और फल अर्पित करते हैं। वे ऐसा चारों ऋतुओं में सौभाग्य, पाँचों अनाजों की भरपूर फसल और छह प्रकार के पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए करते हैं।”
यह सुनकर संजांग ने सिर हिलाया और सहमति जताते हुए कहा, "यह कहावत कितनी सच है कि 'घर से तीन मील दूर जाओ, तो तुम किसी दूसरी दुनिया में पहुँच जाते हो।' हमारे देश में इससे बेहतर कुछ नहीं है।" तब बूढ़े व्यक्ति ने उससे पूछा कि उसका घर कहाँ है।
“मैं पूर्व में स्थित महान तांग वंश से आया हूँ,” संज़ंग ने उत्तर दिया, “मुझे पश्चिम में बुद्ध की आराधना करने और शास्त्रों की माँग करने के लिए शाही आदेश प्राप्त हुए हैं। हमारी यात्रा हमें इस मार्ग पर ले आई है और लगभग रात हो चुकी है, इसलिए हम इस पवित्र मंदिर में एक रात ठहरने के लिए आए हैं। हम भोर होते ही प्रस्थान करेंगे।”
यह सुनकर वह वृद्धाश्रम अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने आतिथ्य सत्कार में अपनी चूक के लिए क्षमा मांगी तथा सेवक को भोजन तैयार करने का आदेश दिया। भोजन करने के बाद संज़ंग ने उस वृद्धाश्रम का धन्यवाद किया।
बंदर की तेज़ नज़र इमारत की छत के नीचे लटकी कपड़े सुखाने की रस्सी पर पड़ी। वह पास गया, उसे उखाड़ दिया और उससे घोड़े को बांध दिया। बूढ़े आदमी ने मुस्कुराते हुए पूछा, "तुमने यह घोड़ा कहाँ से चुराया?"
अध्याय 15

"तुम्हें कुछ पता नहीं है," बंदर ने जवाब दिया। "हम पवित्र भिक्षु हैं जो बुद्ध के दर्शन करने जा रहे हैं, तो हम भला घोड़ा कैसे चुरा सकते हैं?"
"अगर तुमने इसे चुराया नहीं है," बूढ़े आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा, "तो फिर मेरी कपड़े सुखाने वाली रस्सी को तोड़ने की क्या ज़रूरत है क्योंकि इसमें काठी, लगाम या रस्सी नहीं है?"
संज़ंग ने बंदर की ओर से माफी मांगते हुए उससे कहा, "तुम बहुत अधीर हो, शरारती बंदर। तुम बूढ़े सज्जन से घोड़े को बांधने के लिए रस्सी का एक टुकड़ा मांग सकते थे। उनकी कपड़े सुखाने वाली रस्सी को तोड़ने की कोई जरूरत नहीं थी। कृपया संदेह न करें, महोदय," संज़ंग ने बूढ़े व्यक्ति से कहा। "मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह घोड़ा चोरी का नहीं है। कल जब हम ईगल्स सॉरो गॉर्ज पहुँचे, तो मैं काठी और लगाम समेत एक सफेद घोड़े पर सवार था। हमें नहीं पता था कि नदी में एक दुष्ट अजगर रहता है जो आत्मा बन चुका है, और उस अजगर ने मेरे घोड़े की काठी, लगाम और सब कुछ एक ही झटके में निगल लिया। सौभाग्य से मेरे इस शिष्य के पास कुछ विशेष शक्तियाँ हैं, और वह बोधिसत्व गुआनयिन को घाटी के किनारे ले आया, जहाँ उन्होंने अजगर को पकड़ लिया और उसे बिल्कुल मूल घोड़े की तरह एक सफेद घोड़े में बदल दिया, ताकि वह मुझे पश्चिम स्वर्ग में बुद्ध के दर्शन के लिए ले जा सके। उस नदी को पार करने से लेकर आपके पवित्र मंदिर तक पहुँचने में एक दिन से भी कम समय हुआ है, महोदय, और हमने अभी तक इस पर काठी या लगाम नहीं लगाई है।"
“कृपा करके क्रोधित न हों, पिताजी। मैं तो बस मज़ाक कर रहा था,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया। “मैंने कभी नहीं सोचा था कि आपका आदरणीय शिष्य इसे गंभीरता से ले लेगा। जब मैं जवान था, मेरे पास कुछ पैसे थे और मुझे अच्छे घोड़े की सवारी करने का शौक था, लेकिन कई वर्षों के कष्टों और शोक ने मेरा उत्साह खत्म कर दिया है, और अंत में मुझे धूप की देखभाल करने वाले एक सेवक के रूप में इस दयनीय स्थिति में आना पड़ा है। सौभाग्य से, यहाँ पीछे स्थित खेत के मालिक परोपकारी व्यक्ति मुझे जीवन की आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करते हैं। संयोग से, मेरे पास अभी भी काठी और लगाम है—मुझे पुराने दिनों में उनसे इतना लगाव था कि मैं उन्हें कभी बेच नहीं पाया, चाहे मैं कितना भी गरीब क्यों न हो जाऊँ। अब जब मैंने सुना है, आदरणीय गुरुजी,

कि कैसे बोधिसत्व ने दिव्य अजगर को बचाया और उसे आपको ले जाने के लिए घोड़े में बदल दिया, तो मुझे लगता है कि मुझे भी मदद करनी चाहिए, इसलिए मैं कल आपके लिए वह काठी और लगाम लेकर आऊँगा ताकि आप उस पर सवारी कर सकें। मैं आपसे विनती करता हूँ कि कृपा करके उन्हें स्वीकार करें।"

संज़ंग ने उनका दिल से शुक्रिया अदा किया। नौकर तब तक शाम का खाना परोस चुका था, और खाना खत्म होने के बाद उन्होंने अपने बिस्तर बिछाए, हाथ में दीपक लिए, और सब सो गए।

अगली सुबह जब बंदर उठा तो उसने कहा, "मालिक, उस बूढ़े चपरासी ने कल रात हमें काठी और लगाम देने का वादा किया था। आपको उस पर अड़े रहना होगा और उसे मना नहीं करना होगा।" उसके मुंह से ये शब्द निकलने से पहले ही, बूढ़ा आदमी काठी और लगाम, साथ ही काठी का कपड़ा, काठी का गद्दी, लगाम, मुंह पर बांधने वाला पट्टा और घोड़े के लिए बाकी सभी सामान लेकर आ गया। कोई भी सामान गायब नहीं था।

जब उसने सब कुछ बरामदे के सामने रख दिया, तो उसने कहा, "स्वामी, मैं विनम्रतापूर्वक यह काठी और लगाम अर्पित करता हूँ।" जब संज़ंग ने उन्हें देखा, तो उसने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। फिर उसने बंदर से कहा कि वह उन्हें घोड़े पर रखकर देखे कि वे उस पर ठीक बैठते हैं या नहीं। बंदर गया और एक-एक करके उन्हें उठाकर देखा: वे सभी उत्तम वस्तुएँ थीं। इस बात को सिद्ध करने वाले कुछ श्लोक भी हैं।

बारीकी से तराशी गई काठी चांदी के तारों से जगमगा रही है।

रत्नजड़ित रकाब सुनहरी रोशनी से जगमगा रहे हैं।

सैडल पैड की कई परतें ऊन से बनी होती हैं।

रस्सी बैंगनी रेशम से बुनी गई है।

लगाम पर चमकते हुए फूलों की जड़ाई की गई है।

आंखों की सुरक्षा के लिए इस्तेमाल होने वाले इन ब्लिंकरों पर सोने की आउटलाइन में नाचते हुए जानवरों की आकृतियां बनी हुई हैं।

यह बिट टेम्पर स्टील से बना है।
और दोनों सिरों से ऊनी लटकनें लटक रही हैं।
बंदर, जो मन ही मन बहुत प्रसन्न था, ने घोड़े पर काठी और लगाम रखी और पाया कि वे बिल्कुल फिट बैठ रही थीं मानो नाप से ही बनाई गई हों। संज़ंग ने घुटने टेककर बूढ़े व्यक्ति को धन्यवाद दिया, जिस पर बूढ़ा व्यक्ति आगे बढ़ा और बोला, "नहीं, नहीं, मैं तुम्हें धन्यवाद कैसे देने दे सकता हूँ?" बूढ़े व्यक्ति ने उन्हें एक पल भी नहीं रोका और संज़ंग को घोड़े पर चढ़ने का आदेश दिया। द्वार से बाहर निकलते ही संज़ंग काठी पर चढ़ गया, जबकि बंदर ने सामान उठाया। फिर बूढ़े व्यक्ति ने अपनी आस्तीन से एक चाबुक निकाली और सड़क के किनारे खड़े संज़ंग को भेंट की। इसका हैंडल चमड़े से बंधा हुआ बेंत का था और इसकी डोरी बाघ की नस से बनी थी, जिसका सिरा रेशम से बंधा हुआ था।
“हे पवित्र भिक्षु,” उन्होंने कहा, “मैं आपके जाने के समय आपको यह भेंट भी देना चाहता हूँ।” संजांग ने घोड़े पर बैठे-बैठे ही इसे ग्रहण किया और उस वृद्ध व्यक्ति की उदारता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।
जैसे ही संज़ंग उनसे विदा लेने के लिए हाथ जोड़ने ही वाले थे कि वह बूढ़ा व्यक्ति गायब हो गया, और जब भिक्षु ने मुड़कर मंदिर की ओर देखा, तो उसे केवल खाली ज़मीन का एक विस्तार ही दिखाई दिया। उन्होंने आकाश में एक आवाज़ सुनी, "पवित्र भिक्षु, हमने आपके साथ बहुत कठोर व्यवहार किया है। हम पर्वत देवता और पोटारका द्वीप के स्थानीय देवता हैं, और हमें बोधिसत्व गुआनयिन ने आपको काठी और लगाम देने के लिए भेजा है।"
अब आप दोनों को जितनी जल्दी हो सके पश्चिम की ओर बढ़ना है, और एक पल के लिए भी अपनी गति धीमी नहीं करनी है।"
संज़ंग घबराकर घोड़े की पीठ से गिर पड़ा और आकाश की ओर देखते हुए बोला, "मेरी मांसल आँखों और नश्वर शरीर ने मुझे आपको पहचानने से रोक दिया, हे महान देवताओं; मुझे क्षमा करें। कृपया बोधिसत्व को उनकी कृपा के लिए मेरा आभार व्यक्त करें।" उसे देखिए, वह अनगिनत बार आकाश के सामने प्रणाम कर रहा है। सुंदर वानर राजा, महान ऋषि सन वुकॉन्ग, रास्ते के किनारे हँसी से लोटपोट होकर खड़े थे और आनंद से फूले नहीं समा रहे थे। वे पास गए और तांग पुजारी को खींच लिया।

"गुरुजी," उसने कहा, "उठिए। वे पहले ही इतनी दूर जा चुके हैं कि वे आपकी प्रार्थनाएँ या आपके प्रणाम नहीं सुन सकते, तो आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?"
"शिष्य," संजांग ने उत्तर दिया, "रास्ते के किनारे खड़े होकर मेरा उपहास उड़ाने और एक बार भी प्रणाम न करने का तुम्हारा क्या मतलब है, जबकि मैंने इतने सारे प्रणाम किए हैं?"
"तुम्हें कुछ नहीं पता," बंदर ने पलटकर जवाब दिया। "ऐसे धोखेबाज़ जोड़े को तो मार पड़नी ही चाहिए। मैंने बोधिसत्व के सम्मान में उन्हें छोड़ दिया। बस इतना ही काफी है: वे मुझसे यह उम्मीद तो नहीं कर सकते थे कि मैं भी उनके सामने झुकूँ, है ना?"
मैं बचपन से ही एक सख्त मिजाज इंसान रहा हूं, और मैं किसी के सामने नहीं झुकता। यहां तक कि जब मैं जेड सम्राट या सर्वोच्च भगवान लाओ ज़ी से मिलता हूं, तब भी मैं बस 'ना-आ-आ' का जाप करता हूं, बस इतना ही।
"अरे निर्दयी जानवर," संज़ंग ने कहा, "ऐसी बकवास बंद करो। जल्दी करो और हमें एक पल भी मत रोको।" इतना कहकर संज़ंग उठ खड़ा हुआ और वे पश्चिम की ओर चल पड़े।
अगले दो महीनों की यात्रा शांतिपूर्ण रही, और उन्हें केवल लुओलुओस, हुईहुई, भेड़िये, राक्षस, बाघ और तेंदुए ही मिले। समय तेज़ी से बीत गया, और अब वसंत ऋतु की शुरुआत हो चुकी थी। उन्होंने पहाड़ों और जंगलों को पन्ना रंग की चादर से ढका हुआ देखा, क्योंकि पेड़-पौधों में हरी कोंपलें निकल रही थीं; और जब सारे बेर के फूल झड़ गए, तो विलो के पेड़ों पर नए पत्ते आने लगे। गुरु और शिष्य वसंत ऋतु की सुंदरता का आनंद लेते हुए आगे बढ़ते रहे, और उन्होंने अध्याय 15

उसने देखा कि सूरज पश्चिम में डूब रहा है। संजांग ने अपने घोड़े की लगाम खींची और दूर तक देखने लगा, और एक पहाड़ की गोद में उसे धुंधले ढंग से मीनारें और महल दिखाई दिए।
"वुकोंग," उसने कहा, "क्या तुम देख सकते हो कि वहाँ कोई ऐसी जगह है जहाँ हम जा सकें?" बंदर ने देखा और कहा, "यह ज़रूर कोई मंदिर या मठ होगा। चलो जल्दी से वहाँ चलते हैं और रात वहीं बिताते हैं।" संज़ंग तुरंत मान गया और अपने ड्रैगन घोड़े को पूरी लगाम देकर उसकी ओर सरपट दौड़ पड़ा। अगर आपको नहीं पता कि वे

किस तरह की जगह पर जा रहे थे, तो अगली कड़ी में इसका पूरा विवरण सुनें।
अध्याय 16
गुआनयिन मठ के भिक्षुओं ने खजाने पर कब्जा करने की साजिश रची
काली हवा वाले पर्वत का राक्षस चोगा चुरा लेता है
गुरु ने अपने घोड़े को चाबुक मारा और अपने शिष्य के साथ मंदिर के द्वार की ओर दौड़ पड़े। उन्होंने देखा कि वह वास्तव में एक मठ था।
एक के ऊपर एक हॉल,
एक के बाद एक मठ।
तीन द्वारों के पार
असंख्य रंग-बिरंगे बादल एकत्रित हैं;
पांच आशीर्वादों के हॉल के सामने
लाल धुंध के हजारों गुच्छों को कुंडलित करें।
चीड़ और बांस की दो पंक्तियाँ,
बबूल और सरू के पेड़ों का जंगल।
चीड़ और बांस की दो पंक्तियाँ
अपनी सुरुचिपूर्ण पवित्रता में वे कालातीत हैं;
टिड्डी और सरू के पेड़ों का जंगल
इसमें रंग और सुंदरता है।
देखो ढोल और घंटी के टावर कितने ऊंचे हैं।
यह पैगोडा कितना ऊंचा है?
शांतिपूर्ण ध्यान में भिक्षु अपने स्वभाव को दृढ़ करते हैं।
बाहर पेड़ों पर पक्षी चहचहा रहे हैं।

पश्चिम की यात्रा
नश्वर शरीर से परे की शांति ही सच्ची शांति है;
मार्ग के साथ शून्यता ही वास्तविक शून्यता है।
जैसा कि कविता में कहा गया है,
हरी-भरी घाटी में छिपा हुआ एक उत्कृष्ट जेतवन,

विश्व में बेजोड़ प्राकृतिक दृश्यों के बीच स्थित एक मठ।
पृथ्वी पर ऐसे पवित्र भूभाग दुर्लभ हैं;
अधिकांश प्रसिद्ध पर्वतों पर भिक्षु निवास करते हैं।
संज़ंग घोड़े से उतरा, मंकी ने अपना बोझ नीचे रख दिया, और वे अंदर जाने ही वाले थे कि भिक्षुओं की भीड़ बाहर आ गई। वे इस प्रकार के वस्त्र पहने हुए थे:
उन्होंने अपने सिर पर बाईं ओर पिन से बंधी हुई टोपियाँ पहन रखी थीं।
उनके शरीर पर पवित्रता के वस्त्र थे।
उनके कानों में तांबे की बालियां लटकी हुई थीं।
और उनकी कमर पर रेशमी बेल्ट बंधी हुई थीं।
वे धीरे-धीरे भूसे की चप्पलों पर चलने लगे।
उनके हाथों में लकड़ी की ताली थी।
वे अपने मुखों से हमेशा मंत्रोच्चार करते रहते थे।
ज्ञान के प्रति उनकी निष्ठा।
जब संजांग ने उन्हें देखा तो वह सम्मानपूर्वक द्वार के पास खड़े हो गए और उनका अभिवादन किया। एक भिक्षु ने तुरंत उनका अभिवादन लौटाया और पहले उन्हें न देख पाने के लिए क्षमा मांगी।
उन्होंने पूछा, "आप कहाँ से हैं? कृपया मठाधीश के कमरे में आइए और चाय पीजिए।"

"मुझे पूर्व से एक शाही मिशन पर थंडर मठ में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र मांगने के लिए भेजा गया है," संजांग ने उत्तर दिया, "और चूंकि लगभग रात हो चुकी है, इसलिए हम यहां आकर एक रात ठहरने की व्यवस्था करना चाहेंगे।"
“अंदर आओ और बैठो, अंदर आओ और बैठो,” भिक्षु ने कहा। जब संजांग ने बंदर को घोड़े को लाने के लिए कहा, तो भिक्षु उसे अचानक देखकर भयभीत हो गया और पूछा, “घोड़े को लाने वाली वह चीज़ क्या है?”
"अपनी आवाज़ धीमी रखो," संज़ंग ने आग्रह किया, "अपनी आवाज़ धीमी रखो। उसका स्वभाव बहुत गुस्सैल है, और अगर उसने तुम्हें उसे 'वह चीज़' कहते हुए सुना, तो वह भड़क उठेगा। वह मेरा शिष्य है।"

भिक्षु कांप उठा और अपनी उंगली काटते हुए बोला, "ऐसे बेहद बदसूरत प्राणी को शिष्य बनाना कितनी अजीब बात है।"
"हो सकता है कि वह देखने में ऐसा न लगे," संजांग ने जवाब दिया, "लेकिन बदसूरत होने के बावजूद, उसके अपने फायदे हैं।"
भिक्षु के पास संजांग और बंदर के साथ मठ के द्वार से अंदर जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, और अंदर उन्होंने मुख्य हॉल पर बड़े अक्षरों में 'गुआनयिन का चान मठ' लिखा हुआ देखा। संजांग बेहद प्रसन्न हुई।
“मैं अक्सर बोधिसत्व की दिव्य कृपा का लाभार्थी रहा हूँ,” उसने कहा, “परन्तु अभी तक उनके सामने नतमस्तक होकर धन्यवाद नहीं दे पाया हूँ। इस मठ में उनकी आराधना करना उनके साक्षात दर्शन के समान ही सुखदायी होगा।” यह सुनकर भिक्षु ने एक गृहस्थ भाई को द्वार खोलने का आदेश दिया और संज़ंग को अंदर आकर आराधना करने के लिए आमंत्रित किया। बंदर ने घोड़े को बाँधा, सामान नीचे रखा और संज़ंग के साथ हॉल में गया। संज़ंग ने स्वर्ण प्रतिमा के सामने प्रणाम किया और अपना सिर ज़मीन पर रख दिया। जब भिक्षु ढोल बजाने के लिए आगे बढ़ा, तो बंदर घंटी बजाने लगा। संज़ंग प्रतिमा के सामने लेटकर पूरे मन से प्रार्थना करने लगा और प्रार्थना समाप्त होने पर भिक्षु ने ढोल बजाना बंद कर दिया। लेकिन बंदर घंटी बजाने में इतना मग्न था कि कभी तेज़ तो कभी धीमे, वह बहुत देर तक बजाता रहा।
एक आम भाई ने कहा, "उन्होंने अपनी प्रार्थना पूरी कर ली है, तो आप अभी भी घंटी क्यों बजा रहे हैं?"
बंदर ने घंटी का हथौड़ा नीचे फेंक दिया और मुस्कुराते हुए बोला, "तुम लोग बड़े अज्ञानी हो, है ना? 'जो भी एक दिन के लिए भिक्षु बनता है, वह एक दिन के लिए घंटी बजाता है': वो मैं ही हूँ।" तब तक मठ के सभी भिक्षु, वरिष्ठ और कनिष्ठ, साथ ही मठाधीश और उनके सहायक भी, घंटी की तेज़ आवाज़ से इतने चौंक गए थे कि वे सब बाहर आकर पूछने लगे कि कौन सा जंगली आदमी घंटी और ढोल से इतना शोर मचा रहा है। बंदर उछलकर बाहर आया और उन्हें कोसते हुए बोला, "तुम्हारे दादा सन वुकॉन्ग मजे कर रहे थे।"
उसे देखते ही सभी भिक्षु सदमे से गिर पड़े और जमीन पर घुटने टेकते हुए बोले, "हे गर्जन के देवता, हे गर्जन के देवता।"
“गरज के देवता मेरे परपोते हैं,” बंदर ने उत्तर दिया। “उठो, उठो, तुम्हें डरने की कोई

ज़रूरत नहीं है। मैं पूर्व में स्थित महान तांग साम्राज्य की भूमि का स्वामी हूँ।" सभी भिक्षुओं ने उन्हें प्रणाम किया और जब तक संज़ंग प्रकट नहीं हुए, तब तक उन्हें चैन नहीं मिला।

"कृपया मेरे कमरों में चाय पीजिए," मठ के मठाधीश ने कहा। घोड़े से सामान उतारा गया और उसे ले जाया गया, जबकि वे मुख्य हॉल के चारों ओर घूमकर पीछे के एक कमरे में गए जहाँ वे अपनी वरिष्ठता के अनुसार बैठ गए।

मठाधीश ने उन्हें चाय पिलाई और भोजन मंगवाया, और भोजन के बाद भी अभी सुबह का समय था। जब संज़ंग धन्यवाद व्यक्त कर रहे थे, तभी दो नौकर उनके पीछे एक वृद्ध भिक्षु को उठाए हुए दिखाई दिए। वे कुछ इस प्रकार दिखते थे:

उसके सिर पर वैरोचना का मुकुट
चमकदार बिल्ली की आंख के आकार के रत्न से सजा हुआ।
उसके शरीर पर जटाधारी वस्त्र था।
सोने की परत चढ़े किंगफिशर के पंखों से किनारीदार।
अष्टम रत्नों से जड़े हुए साधुओं के जूतों की एक जोड़ी,
बादलों और तारों से जड़ी एक छड़ी।
झुर्रियों से ढका चेहरा,
जैसे ली पर्वत की प्राचीन देवी;
एक जोड़ी अंधी आँखें,
पूर्वी सागर के ड्रैगन राजा की तरह।
उसके दांत चले जाने के कारण उसका मुंह हवा को रोक नहीं पाता;
उसकी पीठ झुकी हुई है क्योंकि उसकी मांसपेशियां अकड़ी हुई हैं।

“कुलपति आ गए हैं,” सभी भिक्षुओं ने कहा। संज़ंग ने प्रणाम करते हुए उन्हें प्रणाम किया और कहा, “हे आदरणीय मठाधीश, आपका शिष्य आपको प्रणाम करता है।” वृद्ध भिक्षु ने भी प्रणाम किया और दोनों बैठ गए।

उन्होंने कहा, "युवाओं ने अभी-अभी मुझे बताया है कि पूर्व में स्थित तांग साम्राज्य से सज्जन आए हैं, इसलिए मैं आपसे मिलने आया हूं।"

"आपके मठ में इतनी असभ्यता से प्रवेश करने के लिए कृपया हमें क्षमा करें," संजांग ने उत्तर दिया।
"ऐसा मत कहो," बूढ़े भिक्षु ने कहा और फिर पूछा, "पूर्वी देशों से यहाँ तक की यात्रा में कितना समय लगता है?"
"चांगआन से डबल बाउंड्री माउंटेन तक की दूरी सोलह सौ मील से अधिक थी, जहाँ मैंने इस शिष्य को अपना शिष्य बनाया," संज़ंग ने उत्तर दिया। "हम दोनों ने मिलकर कामी की भूमि से यात्रा की, और इसमें दो महीने लगे, इसलिए यहाँ पहुँचने से पहले हमने लगभग दो हज़ार मील की दूरी तय कर ली होगी।"
"तीन हजार मील से भी अधिक," वृद्ध भिक्षु ने कहा। "मैंने अपना पूरा जीवन धार्मिकता में व्यतीत किया है और कभी मठ के द्वार से बाहर नहीं निकला, इसलिए आप वास्तव में कह सकते हैं कि मैं 'कुएं की तलहटी से स्वर्ग को देख रहा था' और मेरे जीवन को व्यर्थ कह सकते हैं।"
"आपकी आयु कितनी है, आदरणीय मठाधीश?" संजांग ने पूछा।
"अपनी मूर्खता के कारण मैं दो सौ सत्तर वर्ष तक जीवित रहा," बूढ़े भिक्षु ने उत्तर दिया।
अध्याय 16

"तो तुम मेरे दस हजारवें परपोते हो," बंदर ने कहा।
"ठीक से बात करो," संजांग ने उसे घूरते हुए कहा। "इतने असभ्य और बदतमीज़ मत बनो।"
"आपकी उम्र कितनी है, महाराज?" वृद्ध भिक्षु ने पूछा।
“मैं इसका ज़िक्र करने की हिम्मत नहीं करता,” बंदर ने उत्तर दिया। तब बूढ़े भिक्षु ने सोचा कि वह शायद बड़बड़ा रहा है, इसलिए उन्होंने इस बात को नज़रअंदाज़ कर दिया, इस बारे में और कुछ नहीं कहा और उनके लिए चाय लाने का आदेश दिया। एक युवा सेवक मटन की चर्बी के रंग की जेड ट्रे पर तीन क्लोइज़न चाय के प्याले लेकर आया, और दूसरा सफेद मिश्र धातु की चायदानी लेकर आया जिससे उसने तीन प्याले सुगंधित चाय डाली। उसका रंग अनार के फूल से भी सुंदर था और उसकी सुगंध कैसिया से भी उत्तम थी। जब संज़ंग ने यह सब देखा तो वह प्रशंसा से भर उठा।

उन्होंने कहा, "क्या शानदार चीजें हैं, क्या शानदार चीजें हैं। शानदार बर्तनों में शानदार चाय।"

“ये देखने लायक नहीं हैं,” बूढ़े भिक्षु ने उत्तर दिया। “आखिरकार, महाराज, आप एक उच्च और दिव्य दरबार से आए हैं, और अपनी व्यापक यात्राओं में आपने कई दुर्लभ वस्तुएँ देखी हैं; तो आप ऐसी चीजों की इतनी अतिरंजित प्रशंसा कैसे कर सकते हैं? आप अपने श्रेष्ठ देश से कौन से खजाने लाए हैं जिन्हें मैं देख सकूँ?”

मुझे खेद है कि हमारे पूर्वी देश में कोई बड़ा खजाना नहीं है, और अगर होता भी तो मैं इतनी लंबी यात्रा पर उसे लाने में असमर्थ होता।

"गुरुजी," उनके बगल में बैठे बंदर ने कहा, "क्या वह चोगा, जो मैंने उस दिन हमारे गठ्ठे में देखा था, एक अनमोल खजाना नहीं है? क्यों न मैं उसे निकालकर उन्हें दिखाऊं?" जब भिक्षुओं ने उसे चोगे का जिक्र करते सुना, तो वे भयावह मुस्कान के साथ मुस्कुराए।

"तुम किस बात पर मुस्कुरा रहे हो?" बंदर ने पूछा।

“जब आपने कहा कि चोगा एक खजाना है, तो हमें बहुत हंसी आई,” मठ के मठाधीश ने उत्तर दिया। “मेरे जैसे पद के एक पुजारी के पास दो-तीन दर्जन होते हैं, और हमारे कुलपति, जो यहाँ ढाई-साठ वर्षों से भिक्षु हैं, उनके पास सात-आठ सौ हैं।” उन्होंने उन्हें बाहर लाकर प्रदर्शित करने का आदेश दिया। बूढ़ा भिक्षु, जो इस खेल में शामिल था, ने गृहस्थों को भंडारगृह खोलने को कहा, जबकि भिक्षु बारह संदूक आँगन में ले गए और उन्हें खोला। फिर उन्होंने कपड़े टांगने के फ्रेम लगाए, चारों ओर रस्सी बांधी, एक-एक करके चोगे खोले और उन्हें संज़ंग को दिखाने के लिए लटका दिया। वास्तव में, पूरा भवन जकूज़ी से भरा हुआ था, और चारों दीवारें रेशम से ढकी हुई थीं।

बंदर ने एक-एक करके उनकी जांच की और पाया कि कुछ ब्रोकेड से बने थे और कुछ पर सोने की कढ़ाई की गई थी।

"बस करो, बस करो, बस करो," उसने कहा। "इन्हें हटा दो, हटा दो। मैं अपने वाले बाहर लाता हूँ ताकि तुम उन्हें देख सको।"

संजांग ने बंदर को एक तरफ खींचकर उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, "शिष्य, कभी भी दूसरों के धन से प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश मत करो, तुम और मैं इस परदेस में अकेले हैं, और मुझे डर है कि कहीं कोई मुसीबत न आ जाए।"

"उसे चोगा देखने देने से क्या परेशानी हो सकती है?" बंदर ने पूछा।

“तुम समझते नहीं हो,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “पुराने समय में लोग कहते थे, ‘लालची और कपटी लोगों को दुर्लभ या मनोरंजक चीज़ें देखने मत दो।’ अगर उसकी नज़र उस पर पड़ जाए, तो उसका मन विचलित हो जाएगा, और अगर उसका मन विचलित हो जाए, तो वह ज़रूर कोई न कोई साज़िश रचने लगेगा। अगर तुम सावधान होते, तो उसे तभी देखने देते जब वह ज़िद करता; लेकिन अब यह कोई मामूली बात नहीं है, और शायद यही हमारा अंत हो जाए।”

अध्याय 16

233

पश्चिम की यात्रा

“चिंता मत करो, चिंता मत करो,” बंदर भाई ने कहा, “मैं सब संभाल लूंगा।” देखो, बिना कुछ कहे वह झट से भागा और बंडल खोला, जो पहले से ही एक चमकदार रोशनी बिखेर रहा था। उस पर अभी भी तेल लगे कागज की दो परतें लिपटी हुई थीं, और जब उसने उन्हें हटाकर चोगा निकाला और उसे हिलाकर खोला, तो हॉल लाल रोशनी से नहा गया और आंगन में रंगीन धुएं के बादल छा गए। भिक्षुओं ने जब उसे देखा तो उनके दिल खुशी से भर गए और उनके मुंह प्रशंसा से भर गए। यह सचमुच एक बेहतरीन चोगा था।

अद्वितीय गुणवत्ता वाले मोतियों से सुसज्जित,
अत्यंत दुर्लभ बौद्ध धरोहरों से सुशोभित।
ऊपर और नीचे अजगर की दाढ़ी चमक रही है,
ब्रोकेड से किनारीदार घास के कपड़े पर।
इसे धारण करने से सभी राक्षस नष्ट हो जाते हैं;
इसे धारण करने पर सभी राक्षस नरक में चले जाते हैं।
इसे स्वर्ग के अमर देवताओं के हाथों से बनाया गया था।
और इसे पहनने का साहस केवल एक सच्चे भिक्षु को ही करना चाहिए।

जब वृद्ध भिक्षु ने इस अनमोल खजाने को देखा, तो उनका हृदय अत्यंत व्याकुल हो गया। वे संजांग के पास गए और उनके सामने घुटने टेक दिए। "मेरा भाग्य सचमुच बहुत बुरा है," उन्होंने विलाप करते हुए कहा, उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

संजांग ने उन्हें फिर से उठने में मदद की और पूछा, "आप ऐसा क्यों कहते हैं, आदरणीय कुलपति?"

"हे महाराज, आपने अपना यह खजाना शाम के समय खोला है, जिससे मेरी आंखें इतनी कमजोर हो गई हैं कि मैं इसे ठीक से देख नहीं पा रहा हूँ। इसीलिए मैं कहता हूँ कि मेरा भाग्य खराब है।"

"एक मोमबत्ती मंगवाओ और दोबारा देखो," संजांग ने सुझाव दिया।

"मेरे स्वामी, आपका बहुमूल्य वस्त्र पहले से ही बहुत चमक रहा है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि मोमबत्ती जलाने से भी मुझे और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देगा," वृद्ध भिक्षु ने उत्तर दिया।

"तो आप इसे किस नजरिए से देखना चाहेंगे?" संजांग ने पूछा।

"अगर आप दया करके अपने डर को एक तरफ रख दें और मुझे इसे रात में अपने कमरे में ले जाकर बारीकी से जांचने दें, तो मैं इसे सुबह आपको लौटा दूंगा ताकि मैं इसे पश्चिम ले जा सकूं। इस पर आपका क्या कहना है?" इस अनुरोध से संजांग चौंक गया और उसने बंदर भाई पर चिल्लाते हुए कहा, "यह सब तुम्हारी गलती है, सब तुम्हारी गलती है।"

"उससे डरने की कोई बात नहीं है," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "मैं इसे पैक कर दूंगा और उसे कह दूंगा कि वह इसे ले जाकर देख ले। अगर कुछ गड़बड़ हुई तो मैं ज़िम्मेदार होऊंगा।"

चूंकि उसे रोकने के लिए वह कुछ नहीं कर सकता था, इसलिए संजांग ने बूढ़े भिक्षु को चोगा देते हुए कहा,

"मैं तुम्हें इसे ले जाने देता हूँ, लेकिन तुम्हें इसे कल सुबह इसी हालत में मुझे वापस देना होगा। मैं अध्याय 16 नहीं करूँगा।"

क्या आप इसे बिल्कुल भी गंदा कर रहे हैं?

वृद्ध भिक्षु ने प्रसन्नतापूर्वक अपने सेवक को चोगा अपने कमरे में ले जाने का आदेश दिया और अन्य भिक्षुओं को सामने के ध्यान कक्ष की सफाई करने, दो बेंत अंदर लाने, उन पर चादर बिछाने और दोनों सज्जनों को रात वहीं बिताने के लिए आमंत्रित करने का निर्देश दिया। उन्होंने उनके लिए नाश्ते की व्यवस्था भी की और अगली सुबह उन्हें विदा भी कर दिया। फिर सभी लोग सोने चले गए। संजांग और उनके शिष्य ने ध्यान कक्ष के दरवाजे बंद कर लिए और सो गए।

बूढ़े भिक्षु ने धोखे से भिक्षुओं से चोगा ले लिया और फिर उसे लेकर पिछले कमरे में दीपक के नीचे रोने-बिलखने लगा। इससे भिक्षु इतने भयभीत हो गए कि उनमें से कोई भी उसके सोने से पहले सोने की हिम्मत नहीं कर पाया।

युवा सेवक को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, इसलिए वह दूसरे भिक्षुओं को बताने गया, "दादाजी अभी भी रो रहे हैं, जबकि लगभग ग्यारह बज चुके हैं।" दो कनिष्ठ भिक्षु, जो बूढ़े व्यक्ति के प्रिय थे, उनके पास जाकर पूछने लगे कि वे क्यों रो रहे हैं।

“मैं इसलिए रो रहा हूँ क्योंकि मेरी बदनसीब किस्मत मुझे तांग पुजारी का खजाना देखने नहीं दे रही,” उसने कहा; जिस पर उन्होंने जवाब दिया, “दादाजी, बुढ़ापे में आपको सफलता मिली है। उनका वस्त्र आपके सामने रखा है, आपको बस अपनी आँखें खोलकर देखना है। आँसू बहाने की कोई ज़रूरत नहीं है।”

“पर मैं इसे ज़्यादा देर तक नहीं देख सकता,” बूढ़े भिक्षु ने उत्तर दिया। “इस साल मेरी उम्र 270 वर्ष हो गई है, और मैंने सैकड़ों वस्त्र व्यर्थ ही जमा किए हैं। भला मैं उसका वह वस्त्र कैसे प्राप्त करूँ? भला मैं तांग युग के पुजारी जैसा कैसे बनूँ?”

"गुरुजी, आप पूरी तरह गलत हैं," कनिष्ठ भिक्षु ने कहा। "तांग पुरोहित अपने घर से दूर एक तीर्थयात्री हैं। आपको अपनी वरिष्ठता और धन-दौलत से संतुष्ट रहना चाहिए; आप उनके जैसा तीर्थयात्री क्यों बनना चाहेंगे?"

“यद्यपि मैं घर पर रहता हूँ और अपने जीवन के अंतिम वर्षों का आनंद ले रहा हूँ, फिर भी मेरे पास उनके जैसा वस्त्र पहनने के लिए नहीं है,” वृद्ध भिक्षु ने उत्तर दिया। “यदि मुझे इसे एक दिन के लिए पहनने का अवसर मिल जाए, तो मैं शांति से अपनी आँखें बंद कर लूँगा। मैं उतना ही प्रसन्न होऊंगा जितना कि अपने अगले जन्म में भिक्षु होने पर होता।”

"यह सब बकवास है," कनिष्ठ भिक्षुओं ने कहा। "अगर तुम उसका चोगा पहनना चाहते हो, तो इसमें कोई समस्या नहीं होगी।"

हम इसे कल एक और दिन के लिए रखेंगे, और आप इसे एक और दिन पहन सकते हैं। या हम इसे दस दिनों के लिए रख सकते हैं और आप इसे दस दिनों के लिए पहन सकते हैं। तो फिर इस बात पर इतना परेशान क्यों हो रहे हैं?

“अगर हम उसे एक साल के लिए भी अपने पास रखें,” बूढ़े भिक्षु ने उत्तर दिया, “तो मैं इसे केवल एक साल के लिए ही पहन पाऊंगा, जिससे मुझे कोई यश नहीं मिलेगा।

मुझे फिर भी उसके जाने पर इसे उसे ही देना होगा: मैं उसे हमेशा के लिए यहाँ नहीं रख सकता।”

जब वे बात कर रहे थे तभी ब्रॉड विजडम नाम के एक युवा भिक्षु ने कहा, "दादाजी, अगर आप इसे लंबे समय के लिए चाहते हैं, तो इसका इंतजाम करना भी आसान है।"

"बच्चे, तुम्हारे दिमाग में क्या शानदार विचार आया है?" बूढ़े भिक्षु ने उत्साह से पूछा।

"वह तांग पुजारी और उसका शिष्य अपनी यात्रा के बाद इतने थक गए थे कि वे दोनों अब सो रहे हैं।"

ब्रॉड विजडम ने उत्तर दिया। अगर हम कुछ बलवान भिक्षुओं को तलवारों और भालों से लैस करके ध्यान कक्ष में घुसाकर उन्हें मार डालें, तो उन्हें पिछवाड़े के बगीचे में दफनाया जा सकता है, और हमारे अलावा किसी को पता भी नहीं चलेगा। इस तरह हमें उनका सफेद घोड़ा, उनका सामान और साथ ही उनका चोगा भी मिल जाएगा, जो मठ की धरोहर बन जाएगा।

हम यह आने वाली पीढ़ियों के लिए कर रहे हैं।" बूढ़ा भिक्षु इस सुझाव से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुए कहा, "बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया, एक शानदार योजना।"

ब्रॉड विजडम के सहपाठी ब्रॉड प्लान्स नामक एक अन्य युवा भिक्षु आगे आया और बोला, "यह योजना अच्छी नहीं है। अगर हमें उन्हें मारना है, तो हमें उन पर कड़ी नज़र रखनी होगी। वह बूढ़ा पीला चेहरा वाला तो आसान लगता है, लेकिन बालदार चेहरे वाला पेचीदा हो सकता है; और अगर किसी भी तरह हम उसे मारने में असफल रहे, तो हम गहरे संकट में पड़ जाएँगे।"

परेशानी। मेरे पास एक ऐसा तरीका है जिसमें हथियारों का इस्तेमाल नहीं करना पड़ता, लेकिन मुझे नहीं पता कि आप इसके बारे में क्या सोचेंगे।"

"मेरे बच्चे, तुम्हारा क्या सुझाव है?" बूढ़े भिक्षु ने पूछा।

“मेरी विनम्र राय में,” उन्होंने उत्तर दिया, “हमें सभी मठों के वरिष्ठ और कनिष्ठ भिक्षुओं को इकट्ठा करना चाहिए और सभी को ध्यान कक्ष के बाहर लकड़ियों का एक गट्ठा रखने के लिए कहना चाहिए। जब उसमें आग लगाई जाएगी, तो उन दोनों के बचने का कोई रास्ता नहीं होगा और वे अपने घोड़े सहित जलकर मर जाएंगे। यदि इस

पर्वत के आसपास रहने वाले लोग भी आग की लपटें देखेंगे, तो वे यही सोचेंगे कि उन दोनों ने लापरवाही से आग लगाकर ध्यान कक्ष को जला दिया है।"
इस तरह वे दोनों जलकर मर जाएंगे और किसी को पता भी नहीं चलेगा कि यह कैसे हुआ। फिर वह चोगा हमेशा के लिए हमारे मठ का खजाना बन जाएगा।" वहां मौजूद सभी भिक्षु इस सुझाव से प्रसन्न हुए और खुशी से बोले,
"वाह वाह वाह वाह; इससे भी बढ़िया योजना!" हर कुटिया के मुखिया को लकड़ियाँ लाने का आदेश दिया गया। यह योजना आदरणीय और वृद्ध भिक्षु की मृत्यु और गुआनयिन मठ को राख में तब्दील करने के लिए बनाई गई थी। मठ में सत्तर-अस्सी कुटियाएँ थीं और दो सौ से अधिक कनिष्ठ और वरिष्ठ भिक्षु थे। उन्होंने रात भर लकड़ियाँ लांघीं, ध्यान कक्ष के चारों ओर ढेर लगा दिया ताकि बाहर निकलने का कोई रास्ता न रहे, और आग लगाने की तैयारी करने लगे।
हालाँकि संज़ंग और वह सो चुके थे, जादुई बंदर की आत्मा सतर्क रही और सोते समय भी उसकी आँखें आधी खुली रहीं। बाहर लोगों के आने-जाने की आवाज़ और हवा में लकड़ियों की सरसराहट से उसे शक हुआ। "रात के सन्नाटे में मुझे कदमों की आहट क्यों सुनाई दे रही है?" उसने सोचा। "शायद डाकू हमें मारने की योजना बना रहे हैं।" वह बिस्तर से उछल पड़ा और दरवाजा खोलकर देखने ही वाला था कि उसे याद आया कि इससे उसके स्वामी को परेशानी हो सकती है, इसलिए उसने अपनी चमत्कारी शक्तियों का उपयोग करते हुए अपने शरीर को झटककर खुद को एक मधुमक्खी में बदल लिया।
उसका मुख मीठा और उसकी पूंछ विषैली थी।
उसकी कमर पतली और शरीर हल्का था।
वह तीर की तरह उड़ता हुआ, विलो के पेड़ों और फूलों के बीच से निकलता हुआ चला गया।
वे टूटते तारे की तरह अपने अमृत की तलाश में निकलते हैं।
एक छोटा सा शरीर जो भारी भार सहन कर सकता था।
अपने नर्म और फड़फड़ाते पंखों से हवा में उड़ता हुआ।
इस प्रकार वह छत की कड़ियों के नीचे से निकला।
देखने जा रहा हूँ।
उसने देखा कि भिक्षुओं ने ध्यान कक्ष के चारों ओर लकड़ियों और भूसे का ढेर लगा

रखा था और उसे आग लगा रहे थे।
मन ही मन मुस्कुराते हुए उसने सोचा, "तो मेरे मालिक सही थे। यही उनकी योजना है। वे हमें मारना चाहते हैं और हमारा चोगा अपने पास रखना चाहते हैं। काश मैं उन्हें अपने डंडे से पीट पाता। अगर मुझे डंडा चलाने की मनाही न होती, तो मैं उन सबको मार डालता; लेकिन मालिक तो उन सबको मारने पर मुझसे नाराज़ ही हो जाते। अफसोस। मुझे बस जैसे-जैसे मौके मिलेंगे, वैसे-वैसे उन्हें खत्म करना होगा।"
शानदार बंदर ने एक ही कलाबाजी के साथ स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से छलांग लगाई, जिससे स्वर्गीय योद्धा पांग, लियू, गौ और बी चौंककर सिर झुकाने पर मजबूर हो गए, और मा, झाओ, वेन और गुआन भी नीचे झुक गए। (अध्याय 16)

सबने कहा, "अरे नहीं, अरे नहीं! जिसने स्वर्ग को उलट-पुलट कर दिया था, वह फिर से यहाँ आ गया है।"
"शिष्टाचार दिखाने या घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है, सज्जनों," बंदर ने हाथ हिलाते हुए कहा, "मैं विशाल दृष्टि वाले स्वर्गीय राजा को खोजने आया हूँ।"
उसके मुंह से शब्द निकलने से पहले ही स्वर्ग के राजा वहाँ आ गए और बंदर का अभिवादन करते हुए बोले, "तुम्हें तो सालों से देखा ही नहीं। मैंने सुना था कि बोधिसत्व गुआनयिन, जेड सम्राट से मिलने आए थे ताकि वे चार कर्तव्य देवताओं, छह डिंग और जिया तथा सत्य के प्रकटकर्ताओं को उधार ले सकें, ताकि वे तांग पुजारी की पश्चिमी स्वर्ग की तीर्थयात्रा में शास्त्रों को लाने में उनकी सहायता कर सकें। वे यह भी कह रहे थे कि तुम उनके शिष्य हो, तो फिर तुम्हें यहाँ आने का समय कैसे मिल गया?"
“हंसी बंद करो,” बंदर ने कहा। “तांग पुरोहित का कुछ बदमाशों से सामना हो गया है जिन्होंने उन्हें जलाकर मार डालने के लिए आग लगा दी है। मामला बहुत गंभीर है, इसीलिए मैं आपसे आपकी अग्निरोधी कवच उधार लेने आया हूँ ताकि उन्हें बचाया जा सके। इसे तुरंत ले आओ; मैं इसे तुरंत वापस ले आऊंगा।”
"तुमने सब कुछ गलत समझा है," स्वर्ग के राजा ने उत्तर दिया। "अगर दुष्ट उसे जलाने की कोशिश कर रहे हैं, तो तुम्हें उसे पानी से बचाना चाहिए। तुम्हें मेरे अग्निरोधी कवच की क्या ज़रूरत है?"

“तुम समझते नहीं हो,” बंदर ने आगे कहा। “अगर मैं उसे पानी से बचाने की कोशिश करूँ, तो जलने के बावजूद भी उसे चोट लग सकती है। मैं उसे तभी बचा सकता हूँ जब तुम मुझे वो कंबल दो; और उसके बाद चाहे कितना भी जला दो, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। हिम्मत रखो, हिम्मत रखो! शायद बहुत देर हो चुकी है। नीचे मुझे जो काम करना है, उसमें दखल मत दो।”

स्वर्ग के राजा ने हंसते हुए कहा, "अरे बंदर, तुम पहले की तरह ही दुष्ट हो, केवल अपने बारे में सोचते हो और दूसरों के बारे में कभी नहीं सोचते।"

“जल्दी करो, जल्दी करो,” बंदर ने विनती की। “बड़बड़ाते रहे तो सब कुछ बर्बाद हो जाएगा।” स्वर्ग के राजा, अब और मना न कर पाने के कारण, ढक्कन बंदर को दे दिया।

मंकी ने आवरण लेकर अपने बादल पर दबाव डाला और सीधे ध्यान कक्ष की छत पर चला गया, जहाँ उसने तांग पुजारी, ड्रैगन घोड़े और सामान पर आवरण फैला दिया। फिर वह वृद्ध भिक्षु के कमरे की छत पर जाकर उनके वस्त्र की रक्षा करने लगा। जैसे ही उसने उन्हें आग जलाते देखा, वह लगातार एक मंत्र का जाप करता रहा और दक्षिण-पश्चिम दिशा में जादुई साँस छोड़ी, जिससे एक हवा चली और लपटें भयंकर रूप से भड़क उठीं। क्या आग थी!

काला धुआं फैलाते हुए,

उछलती हुई लाल लपटें;

फैलते हुए काले धुएं ने आकाश के सभी तारों को ढक लिया, उठती हुई लाल लपटों ने सैकड़ों मील तक धरती को लाल रंग से जगमगा दिया।

जब यह शुरू हुआ

वह एक चमकीला सुनहरा सांप था;

बाद में

अध्याय 16

237

पश्चिम की यात्रा

वह एक जोशीला घोड़ा था।

दक्षिण की तीन आत्माओं ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।

अग्नि देवता हुइलु ने अपनी जादुई शक्ति का प्रयोग किया।

सूखी लकड़ियाँ भयंकर रूप से जलने लगीं।
जैसे सम्राट सुइरेन ने आग जलाने के लिए लकड़ी में छेद किए थे।
दरवाजों के सामने उबलते तेल से लपटें उठ रही थीं।
जब भगवान लाओ ज़ी अपनी भट्टी खोलते हैं, उससे भी अधिक चमकदार।
जैसे-जैसे यह क्रूर आग फैलती है,
इस सुनियोजित हत्या को कौन रोक सकता है?
आपदा से निपटने के बजाय
उन्होंने इसमें सहयोग किया।
जैसे हवा ने आग को और भड़का दिया।
आग की लपटें कई मील की ऊंचाई तक उठीं;
जैसे-जैसे हवा के बल से आग बढ़ती गई,
नौ आकाशों में चिंगारियां फूट पड़ीं।
चटकने और टकराने की आवाजें,
जैसे साल के अंत में पटाखे फोड़े जाते हैं;
चटकना और फूटना,
जैसे युद्ध में तोपों की मार।
बुद्ध की कोई भी प्रतिमा आग की चपेट से नहीं बच सकी।
और पूर्वी दरबार में मौजूद संरक्षक देवताओं के पास छिपने की कोई जगह नहीं थी।
यह रेड क्लिफ पर हुए अग्नि हमले से भी कहीं अधिक भीषण था।
या फिर एपांग महल का जल जाना।

एक चिंगारी से मैदान में आग लग सकती है। कुछ ही पलों में तेज़ हवा ने आग को भयंकर रूप से भड़का दिया और पूरा गुआनयिन मठ लाल हो गया। भिक्षुओं को देखिए, वे बक्से और टोकरियाँ हटा रहे हैं, मेज़ें उठा रहे हैं और खाना पकाने के बर्तन अपने सिर पर ढो रहे हैं। पूरा मठ अध्याय 16 की आवाज़ से गूंज रहा था।

चीख-पुकार और रोने की आवाजें आ रही थीं। भाई बंदर ने पीछे मठाधीश के कमरों की रक्षा की, और अग्निरोधक कवच ने सामने ध्यान कक्ष को ढक रखा था; बाकी सभी जगह आग भयंकर रूप से भड़क रही थी, उसकी लाल लपटें आकाश में

प्रतिबिंबित हो रही थीं और उसकी चकाचौंध भरी रोशनी दीवार से छनकर आ रही थी। जब आग लगी तो पहाड़ के सभी जानवर और राक्षस विचलित हो गए। गुआनयिन मठ से सात मील दक्षिण में काला पवन पर्वत था, जिस पर एक काला पवन गुफा थी। इस गुफा में एक राक्षस जागा और बैठ गया। अपनी खिड़की से आती रोशनी को देखकर उसने सोचा कि भोर हो गई होगी, लेकिन जब वह ध्यान से देखने के लिए उठा तो उसने उत्तर दिशा में आग की लपटें देखीं।

“अरे बाप रे!” राक्षस ने हैरानी से कहा, “उन लापरवाह भिक्षुओं ने ही गुआनयिन मठ में आग लगा दी होगी। मुझे जाकर उनकी मदद करनी चाहिए।” वह नेक राक्षस एक बादल पर सवार होकर नीचे उतरा और आसमान तक उठते धुएं और लपटों के बीच पहुँच गया। सामने के सभी हॉल खाली थे, और दोनों ओर के गलियारों में आग तेज़ जल रही थी। वह लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ा और पानी के लिए पुकार ही रहा था कि उसने देखा कि पीछे के कमरे नहीं जल रहे थे क्योंकि छत पर कोई हवा को रोक रहा था। जैसे ही उसे इसका एहसास हुआ और वह अंदर देखने के लिए दौड़ा, उसने मेज पर रखे काले मखमल के एक बंडल से जादुई चमक और शुभ वाष्प निकलते हुए देखी। उसे खोलने पर उसने पाया कि उसमें एक जकूज़ी का चोगा था, जो बौद्ध धर्म का एक दुर्लभ खजाना था। इस कीमती वस्तु को देखकर उसका मन विचलित हो गया, वह आग बुझाने या पानी के लिए पुकारने के बारे में भूल गया और चोगा उठाकर भाग गया। फिर वह सीधे बादल के सहारे अपनी गुफा में वापस चला गया।

आग भोर तक धधकती रही और फिर अपने आप बुझ गई। नग्न भिक्षु राख में पीतल और लोहे की तलाश करते हुए और राख में सोना और चांदी ढूंढते हुए चीखते-चिल्लाते रहे। उनमें से कुछ ने इमारतों के ढांचों के बचे हुए हिस्सों में घास-फूस की झोपड़ियाँ बनाईं, और अन्य खुली दीवारों के आधार पर खाना पकाने के लिए बर्तन लगा रहे थे। हम रोने, चिल्लाने और शोरगुल का वर्णन नहीं करेंगे।

भाई बंदर ने अग्निरोधक आवरण उठाया, एक ही कलाबाजी में उसे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार तक ले गया और धन्यवाद के साथ उसे विशाल दृष्टि वाले स्वर्ग के राजा को लौटा दिया। स्वर्ग के राजा ने उसे स्वीकार करते हुए कहा, "महान ऋषि, आपने अपना वचन निभाया। मुझे बहुत चिंता थी कि अगर आपने मेरा खजाना वापस नहीं किया, तो मैं आपको ढूंढ नहीं पाऊंगा और आपसे उसे वापस नहीं ले पाऊंगा। शुक्र है आपने इसे

लौटा दिया।"
"क्या मैं उस तरह का आदमी हूँ जो किसी के सामने ही धोखा दे?" बंदर ने पूछा। "आखिरकार, 'अगर आप उधार ली हुई चीज़ को सही तरीके से लौटा देते हैं, तो अगली बार उसे उधार लेना आसान हो जाएगा।'"
"क्योंकि हम इतने लंबे समय से नहीं मिले हैं, तो क्यों न आप कुछ देर के लिए महल में आ जाएं?" स्वर्ग के राजा ने कहा।
“मैं अब वो आदमी नहीं रहा जो ‘बेंच पर बैठकर, उसे सड़ने तक, ब्रह्मांड के बारे में बातें करता रहे’,” बंदर ने उत्तर दिया। “मैं अब इतना व्यस्त हूँ कि मुझे तांग भिक्षु की देखभाल करनी है। कृपया मुझे क्षमा करें।” पूरी तेज़ी से निकलते हुए, वह अपने बादल पर सवार होकर नीचे उतरा और देखा कि सूर्य उग रहा है। वह सीधे ध्यान कक्ष की ओर गया, जहाँ उसने खुद को झटककर मधुमक्खी का रूप धारण किया और अंदर उड़ गया। अपने असली रूप में लौटने पर उसने देखा कि उसका गुरु अभी भी गहरी नींद में सो रहा है।
"गुरुजी, उठिए, भोर हो गई है," उसने पुकारा।
संज़ंग जागा, करवट बदली और बोला, "हाँ, ऐसा ही है।" कपड़े पहनकर उसने दरवाज़े खोले, बाहर गया और देखा कि दीवारें लाल रंग से रंगी हुई और खंडहर हो चुकी हैं, और हॉल व मीनारें गायब हो चुकी हैं। "हे भगवान!" वह बड़े आश्चर्य से बोला, "ये सारी इमारतें कहाँ गायब हो गईं? यहाँ लाल दीवारों के सिवा कुछ क्यों नहीं है?"
"तुम अभी भी सो रहे हो," बंदर ने जवाब दिया। "कल रात आग लगी थी।"
"मुझे इसके बारे में क्यों नहीं पता था?" संजांग ने पूछा।
अध्याय 16

"मैं ध्यान कक्ष की रक्षा कर रहा था, और जैसा कि मैंने देखा कि आप सो रहे थे, गुरुजी, मैंने आपको परेशान नहीं किया।"
बंदर ने जवाब दिया।
"यदि आप ध्यान कक्ष की रक्षा करने में सक्षम थे, तो आपने अन्य भवनों में लगी आग को क्यों नहीं बुझाया?"
संजांग ने पूछा। बंदर हँस पड़ा।

"मैं आपको बताता हूँ, स्वामी जी। आपने जो भविष्यवाणी की थी, वही सच हुई। उन्हें हमारा वह चोगा पसंद आ गया और उन्होंने हमें जलाकर मार डालने की योजना बनाई। अगर मैंने ध्यान न दिया होता, तो अब तक हम कंकाल और राख बन चुके होते।"
"क्या उन्होंने आग लगाई?" यह जानकर संजांग भयभीत हो गया और उसने पूछा।
"और कौन?" बंदर ने उत्तर दिया।
"क्या आपको यकीन है कि आपने यह सब इसलिए नहीं गढ़ा क्योंकि उन्होंने आपके साथ बदतमीजी की थी?" संजांग ने पूछा।
"मैं इतना बदमाश नहीं हूँ कि ऐसा कुछ करूँ," बंदर ने कहा। "सच कहूँ तो, आग उन्होंने ही लगाई थी। ज़ाहिर है, जब मैंने देखा कि वे कितने हिंसक थे, तो मैंने आग बुझाने में मदद नहीं की। बल्कि मैंने हल्की हवा से उनकी मदद की।"
"हे भगवान! हे भगवान! आग लगने पर पानी लाना चाहिए, हवा नहीं।"
"आपको यह पुरानी कहावत तो पता ही होगी - 'अगर लोग बाघों को नुकसान नहीं पहुंचाते, तो बाघ भी लोगों को नुकसान नहीं पहुंचाते।' अगर उन्होंने आग नहीं लगाई होती, तो मैं हवा नहीं पैदा करता।"
"वह चोगा कहाँ है? कहीं वह भी जल तो नहीं गया?"
"सब ठीक है; यह जला नहीं है। जिस मठाधीश के कक्ष में इसे रखा गया था, उसमें आग नहीं लगी।"
"मुझे परवाह नहीं कि तुम क्या कहते हो। अगर इससे तुम्हें कोई नुकसान हुआ है, तो मैं तब तक वह मंत्र पढ़ूंगा जब तक तुम मर न जाओ।"
“ऐसा मत करो,” बंदर ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, “मैं वादा करता हूँ कि मैं वह चोगा तुम्हारे लिए वापस लाऊँगा। रुको, मैं उसे तुम्हारे लिए लाता हूँ, फिर हम चलेंगे।”
संजांग घोड़े को आगे-आगे चला रहा था और बंदर सामान उठाए हुए था, वे ध्यान कक्ष से बाहर निकले और सीधे पीछे स्थित मठाधीश के आवास की ओर चल दिए।
जब शोकग्रस्त मठ के भिक्षुओं ने अचानक गुरु और शिष्य को घोड़े और सामान के साथ ध्यान कक्ष से निकलते देखा तो वे बुरी तरह भयभीत हो गए और चिल्लाए, "उनके प्रतिशोधी भूत हमारी जान लेने आए हैं।"
"तुम्हारा क्या मतलब है, बदला लेने वाले भूत तुम्हारी जान लेने आ रहे हैं?" बंदर चिल्लाया। "हमें हमारा चोगा तुरंत वापस दो।"
सभी भिक्षु घुटनों के बल गिर पड़े और प्रणाम करते हुए बोले, "गुरुजी, अन्याय का

बदला हमेशा लिया जाता है और कर्ज़ हमेशा चुकाना पड़ता है। अगर आप जान बचाना चाहते हैं, तो इसमें हमारा कोई हाथ नहीं है; यह बूढ़े भिक्षु और ब्रॉड प्लान्स ने मिलकर आपकी हत्या की साजिश रची थी। कृपया हमें दंडित न करें।"

बंदर गुस्से से गुर्राया और दहाड़ा, "मैं तुम्हें देख लूंगा, तुम सब जानवरो। किसी की जान किसने मांगी? बस अपना चोगा निकालो और हम चल पड़ेंगे।"

भिक्षुओं में से दो बहादुर पुरुषों ने कहा, "गुरुजी, आप ध्यान कक्ष में जलकर मर गए थे, और अब आप चोगा मांगने वापस आए हैं। क्या आप मनुष्य हैं या भूत?"

अध्याय 16

240

पश्चिम की यात्रा

“अरे मूर्खों,” बंदर ने ताना मारते हुए कहा, “आग तो लगी ही नहीं थी। जाओ ध्यान कक्ष देख लो, फिर हम देखेंगे कि तुम्हें क्या कहना है।” भिक्षु उठ खड़े हुए और आगे जाकर देखने पर उन्होंने पाया कि दरवाजे और खिड़की के चौखटों पर जलने का जरा सा भी निशान नहीं था। अब भयभीत होकर भिक्षु समझ गए कि संजांग एक दिव्य पुजारी था और बंदर एक संरक्षक देवता।

वे सब उन दोनों के सामने सिर झुकाकर बोले, "हमारी आँखें अंधी हो गई हैं। हम स्वर्ग से भेजे गए संतों को पहचान नहीं पाए। आपका चोगा पीछे मठाधीश के कमरों में है।"

संज़ंग कई टूटी-फूटी दीवारों और इमारतों के पास से गुज़रते हुए लगातार आहें भरते रहे और उन्होंने देखा कि पीछे मठाधीश के कमरे सचमुच जले नहीं थे। सभी भिक्षु चिल्लाते हुए अंदर दौड़े। "दादाजी, तांग पुरोहित संत हैं, और जलकर मरने के बजाय उन्होंने हमारा घर तहस-नहस कर दिया है। चोगा तुरंत बाहर लाएँ और उन्हें वापस दे दें।"

अब बूढ़ा भिक्षु अपना चोगा नहीं ढूंढ पा रहा था, जिससे मठ के विनाश के बाद उसकी चिंता और बढ़ गई थी। जब भिक्षुओं ने उससे चोगा मांगा, तो वह जवाब नहीं दे सका। अपनी दुविधा से निकलने का कोई रास्ता न देखकर, उसने अपना सिर नीचे झुकाया और दीवार पर दे मारा। उसकी खोपड़ी चकनाचूर हो गई और उसका खून फर्श पर फैल गया और उसकी मृत्यु हो गई। इस बारे में कुछ छंद हैं: हाय, बूढ़े भिक्षु ने अपनी मूर्खता में...

इतनी लंबी जिंदगी व्यर्थ ही जी ली।

वह उस चोगे को मठ के लिए एक विरासत के रूप में रखना चाहता था।
यह भूल जाना कि बुद्ध की वस्तुएँ नश्वर वस्तुओं के समान नहीं हैं।
क्योंकि उसने परिवर्तनशील को शाश्वत मान लिया,
उनका दुखद अंत बिल्कुल अपरिहार्य था।
व्यापक ज्ञान और व्यापक योजनाओं का क्या उपयोग था?
लाभ के लिए दूसरों को नुकसान पहुंचाना हमेशा असफल रहता है।
अन्य भिक्षु हताशा में चिल्लाने लगे, "हमारे कुलपति ने अपना सिर फोड़ लिया है, और हमें उनका वस्त्र नहीं मिल रहा है, तो अब हम क्या करें?"
“मुझे लगता है तुमने इसे कहीं छिपा दिया है,” बंदर ने कहा। “तुम सब बाहर आओ और मुझे सारे रजिस्टर लाकर दो। मैं जाँच करूँगा कि तुम सब यहाँ हो।” वरिष्ठ और कनिष्ठ मठाधीश दो रजिस्टर लाए जिनमें सभी भिक्षुओं, नौसिखियों, सेवकों और नौकरों के नाम दर्ज थे। उनमें कुल 230 नाम थे। अपने स्वामी को सम्मान के स्थान पर बैठने के लिए कहकर, बंदर ने नाम पुकारा और एक-एक करके नाम चिह्नित किए, जिससे भिक्षुओं को अपने वस्त्र खोलने के लिए कहा गया। जब उसने हर एक की सावधानीपूर्वक जाँच की, तो उसे चोगा कहीं नहीं मिला। फिर उसने आग से बचाए गए सभी बक्सों और टोकरियों में ध्यान से तलाशी ली, लेकिन फिर भी उसे उसका कोई सुराग नहीं मिला। अब भाई बंदर पर बेहद क्रोधित संजांग, ऊँची जगह पर बैठकर मंत्र जपने लगा।
बंदर दर्द से कराहते हुए जमीन पर गिर पड़ा, अपना सिर पकड़कर गिड़गिड़ाने लगा, "रुको, रुको, मैं कसम खाता हूँ कि मैं तुम्हारा चोगा लौटा दूँगा।" यह देखकर भिक्षु काँप उठे और उससे रुकने की विनती की, और तभी उसने अपना मुँह बंद किया और रुक गया।
अध्याय 16
241
पश्चिम की यात्रा
बंदर उछलकर खड़ा हो गया, अपने कान के पीछे से लोहे का डंडा निकाला और भिक्षुओं पर वार करने ही वाला था कि संजांग चिल्लाया, "अरे बंदर, क्या तुम्हें फिर से सिरदर्द का डर नहीं है? क्या तुम फिर से बदतमीजी करोगे? अपना हाथ मत हिलाओ और किसी को चोट मत पहुँचाओ। मैं चाहता हूँ कि तुम उनसे फिर से पूछताछ करो।"

सभी भिक्षुओं ने उसके सामने सिर झुकाया और बड़ी दयनीयता से उससे अपनी जान बख्शने की भीख मांगी। "हमने सचमुच उसे नहीं देखा। यह सब उस मरे हुए बूढ़े कमीने की गलती है। कल शाम जब उसने आपका चोगा देखा तो वह देर रात तक रोता रहा, उसे देखना भी नहीं चाहता था क्योंकि वह एक ऐसी योजना बना रहा था जिससे वह हमेशा के लिए मठ का हो जाए। वह आपको जलाकर मार डालना चाहता था, गुरुजनों, लेकिन जब आग लगी तो तेज हवा चलने लगी और हम सब आग बुझाने और जो भी सामान बचा सकते थे उसे हटाने में व्यस्त हो गए। हमें नहीं पता कि चोगा कहाँ गया।"

बंदर भयंकर क्रोध में मठाधीश के कमरे में घुस गया और आत्महत्या करने वाले बूढ़े भिक्षु का शव बाहर ले आया। जब उसने शव के वस्त्र उतारे तो उसे वहाँ कोई खजाना नहीं मिला, इसलिए उसने कमरे का फर्श तीन फीट तक खोदा, लेकिन फिर भी उसे भिक्षु का वस्त्र नहीं मिला। बंदर ने कुछ देर सोचा और फिर पूछा, "क्या यहाँ आसपास कोई प्रेत आत्माएँ हैं?"

“अगर आपने पूछा न होता, महाराज, तो मुझे कभी पता ही नहीं चलता कि आप जानना चाहते हैं,” मठाधीश ने उत्तर दिया। “यहाँ से ठीक दक्षिण में एक पर्वत है जिसे काला पवन पर्वत कहते हैं, और उस पर स्थित काली पवन गुफा में एक महान काला राजा रहता है। हमारा वह बूढ़ा मरा हुआ कमीना हमेशा उससे मार्ग के बारे में चर्चा करता रहता था। उसके अलावा वहाँ कोई और दुष्ट आत्मा नहीं है।”

"पहाड़ यहाँ से कितनी दूर है?" बंदर ने पूछा।

"लगभग सात मील ही दूर है," मठाधीश ने उत्तर दिया। "वह पहाड़ तो आप वहाँ देख ही सकते हैं।"

बंदर मुस्कुराया और संजांग से बोला, "चिंता मत करो, गुरुजी, अब और सवाल पूछने की कोई जरूरत नहीं है। इसमें कोई शक नहीं: इसे उस काले राक्षस ने ही चुराया होगा।"

"लेकिन उसका घर यहाँ से सात मील दूर है, तो आप कैसे यकीन कर सकते हैं कि वह वही था?" संजांग ने पूछा।

"कल रात तुमने आग नहीं देखी," बंदर भाई ने पलटकर जवाब दिया। "लपटें सैकड़ों मील ऊंची उठ रही थीं, और उनकी चमक तीनों आकाशों को भेद रही थी। तुम उसे सत्तर मील दूर से भी देख सकते थे, सात मील दूर से तो दूर की बात है।"

मुझे पूरा यकीन है कि उसने तेज रोशनी देखी और चुपके से यहाँ आने का मौका ढूंढ लिया। जब उसने देखा कि हमारा चोगा एक अनमोल वस्तु है, तो उसने अफरा-तफरी में उसे चुरा लिया होगा। बस थोड़ा इंतजार करो, मैं जाकर उसे ढूंढता हूँ।

"अगर तुम जाओगे तो मेरी रक्षा कौन करेगा?" संजांग ने पूछा।

"चिंता मत करो, देवता गुप्त रूप से तुम्हारी रक्षा कर रहे हैं, और प्रत्यक्ष रूप से मैं इन भिक्षुओं को तुम्हारी सेवा में लगा दूंगा।" इतना कहकर उसने सभी भिक्षुओं को बुलाया और कहा, "मैं चाहता हूं कि तुममें से कुछ लोग उस पुराने भूत को दफनाएं, और कुछ लोग मेरे स्वामी की सेवा करें और हमारे सफेद घोड़े की देखभाल करें।" सभी भिक्षुओं ने आज्ञाकारी भाव से सहमति दी, और बंदर ने आगे कहा, "मैं नहीं चाहता कि तुम अभी आसानी से मान जाओ और मेरे जाने के बाद उनकी सेवा न करो। जो लोग मेरे स्वामी की देखभाल करते हैं, उन्हें अपने चेहरे पर प्रसन्नता का भाव रखना चाहिए, और जो लोग घोड़े को चारा खिलाते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसे पर्याप्त मात्रा में घास और पानी मिले। अगर जरा सी भी गलती हुई, तो मैं तुम्हें इस तरह मारूंगा।" उसने अपना डंडा निकाला और आग में पकी ईंट की दीवार को चकनाचूर कर दिया; इस झटके से सात-आठ और दीवारें गिर गईं। यह देखकर भिक्षुओं की हड्डियां कांप उठीं, और वे घुटनों के बल बैठकर उसके सामने झुक गए और उनकी आंखों से आंसू बहने लगे।

"चिंता मत करो, स्वामी जी, आप जा सकते हैं—हम उसका ख्याल रखेंगे। हम वादा करते हैं कि हम किसी भी प्रकार का अनादर नहीं करेंगे।" इसके बाद वह शानदार बंदर कलाबाजी करते हुए बादल की छलांग लगाकर सीधे काले पवन पर्वत की ओर चल पड़ा, ताकि उस चोगे को खोज सके।

अध्याय 16

242

पश्चिम की यात्रा

गोल्डन सिकाडा सच्चाई की तलाश में राजधानी से निकल गया।

वह अपनी लाठी का सहारा लेते हुए सुदूर पश्चिम की ओर चल पड़ा।

उसके रास्ते में बाघ, तेंदुए और भेड़िये थे;

जिन कारीगरों, व्यापारियों या विद्वानों से वह मिले, वे बहुत कम थे।

परदेस में उसकी मुलाकात एक मूर्ख और लालची भिक्षु से हुई।

और यह पूरी तरह से स्वर्ग के समान महान ऋषि पर निर्भर था।
जब आग और हवा ने मठ को नष्ट कर दिया,
एक रात एक काला भालू रेशमी चोगा चुराने आया।
यदि आपको नहीं पता कि इस यात्रा के दौरान वह चोगा मिला था या आगे क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 17
भाई बंदर काली हवा वाले पहाड़ पर मुसीबत खड़ी करता है
गुआनयिन ने भालू की आत्मा को वश में किया
जैसे ही बंदर ने कलाबाजी करते हुए छलांग लगाई, वरिष्ठ और कनिष्ठ भिक्षुओं, नौसिखियों, सेवकों और मठ के सभी नौकरों ने आकाश की ओर झुककर प्रणाम किया और कहा, "गुरुजी, आप स्वर्ग से उतरे हुए बादल पर सवार अमर देवता हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आग आपको जला नहीं सकती। धिक्कार है हमारे उस मूर्ख कंजूस को: उसने अपनी ही चालों से अपना ही विनाश कर लिया।"
“कृपया खड़े हो जाइए, सज्जनों,” संज़ंग ने उत्तर दिया, “उससे घृणा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि मेरा शिष्य चोगा ढूंढ लेता है तो हमारी सारी मुसीबतें दूर हो जाएंगी; लेकिन यदि वह उसे नहीं ढूंढ पाता है, तो उसका स्वभाव बहुत ही उग्र है और मुझे डर है कि आप में से कोई भी अपनी जान बचाकर नहीं निकल पाएगा।” यह चेतावनी सुनकर भिक्षुओं के दिल दहल गए और उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह चोगा ढूंढ ले और उनकी जान बख्श दे।
एक बार आकाश में पहुँचकर, महान ऋषि सन वुकॉन्ग ने अपनी कमर को एक झटके में घुमाकर ब्लैक विंड माउंटेन पर पहुँच गए। उन्होंने अपने बादल को रोककर चारों ओर सावधानीपूर्वक देखा और पाया कि यह वास्तव में एक सुंदर पर्वत था। यह वसंत ऋतु का दिन था।
असंख्य घाटियों की धाराएँ आपस में प्रतिस्पर्धा करती हैं,
हजारों चट्टानी कगार सुंदरता में प्रतिस्पर्धा करते हैं।
जहां पक्षी पुकारते हैं, वहां कोई मनुष्य नहीं होता;
जब फूल झड़ जाते हैं, तब भी पेड़ सुगंधित रहते हैं।

पश्चिम की यात्रा
बारिश के बाद, आकाश और नीचे की ओर ढलान वाली चट्टान नम हो जाती है;
जब चीड़ के पेड़ हवा में झुकते हैं, तो वे एक हरे रंग की चादर फैला देते हैं।
पहाड़ों में जड़ी-बूटियां उगती हैं,
जंगली फूल खिलते हैं,
ऊँची-नीची चट्टानों के ऊपर मंडराते हुए;
जंगली अंजीर खूब फलता-फूलता है
और उत्तम वृक्ष फलते-फूलते हैं।
ऊबड़-खाबड़ पर्वत श्रृंखला और सपाट चोटी वाली पहाड़ी पर।
आपको यहाँ कोई संन्यासी नहीं मिलेगा।
और उन्हें लकड़हारा भी नहीं मिल रहा है।
नदी के किनारे दो सारस पानी पी रहे हैं।
और जंगली बंदर चट्टानों पर उछल-कूद करते हैं।
सीप के खोल जैसी चोटियाँ, चमकदार काली,
धुंध के बीच से चमकते हुए वे ऊंचे और हरे-भरे दिखाई देते हैं।
बंदर जब पहाड़ के नज़ारे को देख रहा था, तभी उसे घास के मैदान के सामने से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। वह चुपके से चट्टान के नीचे छिप गया और छुपकर देखने लगा। उसने देखा कि तीन राक्षस ज़मीन पर बैठे हैं।
सबसे आगे एक सांवला व्यक्ति था, उसके बाईं ओर एक ताओवादी था, और उसके दाईं ओर सफेद वस्त्र पहने एक विद्वान था, और वे सभी उच्च और व्यापक विषयों पर बात कर रहे थे: तिपाई और कड़ाही से सिंदूर और पारा को परिष्कृत करने के बारे में; और सफेद बर्फ, पारा, पीले अंकुर, सीसा और अन्य गूढ़ शिक्षाओं के बारे में।
इसी बीच उस सांवले व्यक्ति ने कहा, "चूंकि कल मेरा जन्मदिन है, मुझे उम्मीद है कि आप दोनों सज्जन मेरे साथ आकर मुझे सम्मानित करेंगे।"
सफेद वस्त्रधारी विद्वान ने उत्तर दिया, "महाराज, हम हर साल आपका जन्मदिन मनाते हैं, इसलिए निश्चित रूप से हम इस वर्ष भी आएंगे।"
"मुझे कल रात एक अनमोल वस्तु मिली," उस सांवले व्यक्ति ने आगे कहा, "बुद्ध की मूर्ति के लिए जकूज़ी का एक वस्त्र, और यह एक अद्भुत वस्तु है। मैं परसों इसके लिए एक भव्य भोज आयोजित करने जा रहा हूँ और मैं आप सभी पर्वतीय अधिकारियों को

आमंत्रित कर रहा हूँ कि आप आकर मुझे बधाई दें, इसीलिए मैं इसे 'बुद्ध का वस्त्र भोज' कह रहा हूँ।"
"बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया," ताओवादी ने मुस्कुराते हुए कहा। "कल मैं आपको जन्मदिन की बधाई देने आऊंगा, और परसों भोज के लिए फिर आऊंगा।"
जैसे ही बंदर ने बुद्ध के वस्त्र का जिक्र सुना, उसे यकीन हो गया कि वही उनका खजाना है, और गुस्से को रोक न पाने के कारण वह चट्टान से कूद पड़ा और अपने सोने की पट्टी वाले डंडे को दोनों हाथों से लहराते हुए चिल्लाने लगा। अध्याय 17

"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, तुम शैतानों के गिरोह। तुमने हमारा चोगा चुराया है, और अब तुम सोचते हो कि तुम 'बुद्ध के वस्त्रों का भोज' करोगे। इसे तुरंत मुझे वापस कर दो।"
"हिलो मत," उसने लाठी घुमाते हुए और राक्षस के सिर पर वार करते हुए गरजा। वह काला प्राणी डर के मारे हवा में बदल गया और ताओवादी एक बादल पर सवार होकर चला गया; इसलिए बंदर केवल लाठी के एक ही वार से सफेद वस्त्रधारी विद्वान को मार सका। जब उसने शव को घसीटकर देखा, तो उसने पाया कि वह एक सफेद पैटर्न वाला सर्प आत्मा था। क्रोध में आकर उसने शव को उठाया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए, फिर उस काले प्राणी की तलाश में पहाड़ की गहराई में चला गया। एक नुकीली चोटी को पार करते हुए और एक खतरनाक खाई को पार करते हुए, उसने चट्टान में एक गुफा महल देखा:
घने, धुंध भरे बादल,
सरू और चीड़ के पेड़ों से घना।
घने और धुंध भरे बादल द्वारों को रंगों से भर देते हैं;
सरू और चीड़ के घने जंगल दरवाजे को हरियाली से घेरे हुए हैं।
पुल के लिए एक सूखा हुआ लट्ठा है।
और जंगली अंजीर पहाड़ों की चोटियों के चारों ओर लिपट जाती है।
पक्षी लाल पंखुड़ियाँ लेकर बादलों से भरी घाटी में जाते हैं;
पत्थर के टावर पर चढ़ते समय हिरण सुगंधित झाड़ियों पर पैर रखते हैं।
द्वार के सामने मौसम फूलों को खिला देता है,
जैसे हवा उनकी सुगंध को बिखेरती है।

तटबंध पर लगे विलो वृक्षों के आसपास सुनहरे ओरिओल पक्षी चक्कर लगाते हैं;
नदी के किनारे लगे आड़ू के पेड़ों के बीच तितलियाँ मंडरा रही हैं।
यह साधारण दृश्य अभी भी प्रतिस्पर्धा कर सकता है
परीलोक में कम नज़ारे देखने को मिलते हैं।
जब बंदर द्वार पर पहुँचा तो उसने देखा कि वे बहुत मज़बूती से बंद थे, और उनके ऊपर एक पत्थर की पट्टिका थी जिस पर बड़े अक्षरों में "काली हवा पर्वत की काली हवा गुफा" लिखा हुआ था। उसने अपनी लाठी लहराई और चिल्लाया, "खोल दो!" यह सुनकर द्वार पर खड़े छोटे शैतान ने द्वार खोल दिए और पूछा,
"तुम कौन हो, और तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमारे अमर लोगों की गुफा पर हमला करने की?"
"अरे कुत्ते!" बंदर उस पर चिल्लाया। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस जगह को 'अमरों की गुफा' कहने की? तुम्हें 'अमर' शब्द का इस्तेमाल करने का क्या हक है? अंदर जाओ और अपने उस काले साथी से कहो कि अगर वह मेरा चोगा तुरंत लौटा दे, तो मैं तुम्हारी जान बख्श दूंगा।"
अध्याय 17

छोटा शैतान अंदर भागा और बोला, "महाराज, 'बुद्ध वस्त्र भोज' रद्द हो गया है। द्वार के बाहर बालदार चेहरे वाला गर्जन देवता है जो चोगा मांग रहा है।"
काले रंग के उस व्यक्ति ने, जिसे दरवाज़े बंद करने का भी समय नहीं मिला था और भाई बंदर द्वारा घास के मैदान से भगाए जाने के बाद वह ठीक से बैठ भी नहीं पाया था, यह खबर सुनकर सोचा, "यह बदमाश न जाने कहाँ से आया है, और अब मेरे दरवाज़ों पर चिल्लाने की हिम्मत कर रहा है।" उसने अपना कवच मंगवाया, कमर कसी और काले झालरदार भाले को हाथों में लिए दरवाज़ों से बाहर निकल गया। बंदर लोहे का डंडा लिए दरवाज़ों के बाहर प्रकट हुआ और उस भयंकर दिखने वाले राक्षस को घूर रहा था।
उसका कटोरे के आकार का लोहे का हेलमेट आग की तरह चमक रहा था;
उसका काला कांस्य कवच चमक रहा था।
लहराती आस्तीनों वाला एक काला रेशमी गाउन,

झालरों वाली गहरे हरे रंग की रेशमी कमरबंद।
उसके हाथों में काले झालरों वाला एक भाला था।
उसके पैरों में गहरे रंग के चमड़े के जूते थे।
उसकी सुनहरी आंखों से बिजली की चमक निकली;
वह वास्तव में पहाड़ों का काला पवन राजा था।
"यह बेचारा तो ईंट-महल या कोयला खोदने वाले जैसा दिखता है," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा। "इतना काला है कि लगता है यहाँ का कोई काला रंगसाज़ होगा।"
"तुम्हें यहाँ इतना बड़ा बनने की हिम्मत कहाँ से आती है, साधु, और तुम हो कौन यहाँ से? " राक्षस ने अपनी पूरी आवाज़ में चिल्लाते हुए कहा।
बंदर ने अपनी लाठी लेकर उस पर झपट्टा मारा और दहाड़ते हुए कहा, "चुप हो जाओ, और मुझे तुरंत मेरा चोगा वापस दे दो, बच्चे।"
आप किस मठ से आए हैं? आपने अपना चोगा कहाँ खोया? यहाँ आकर उसे क्यों माँग रहे हैं?
"मेरा चोगा यहाँ से उत्तर की ओर स्थित गुआनयिन मठ में मठाधीश के पिछले कमरे में था। जब मठ में आग लगी, तो तुमने उस अफरा-तफरी का फायदा उठाकर लूटपाट की और उसे यहाँ ले आए, नीच कहीं के, और अब तुम 'बुद्ध के वस्त्रों का भोज' आयोजित करने की योजना बना रहे हो। ढिठाई मत बरतो। इसे तुरंत लौटा दो, मैं तुम्हारी जान बख्श दूँगा, लेकिन अगर तुमने ज़रा भी 'ना' कहा, तो मैं काली हवा के पहाड़ को गिरा दूँगा, तुम्हारी गुफा को चपटा कर दूँगा, और तुम सभी दुष्टों को नूडल्स बना दूँगा।"
राक्षस ने दुष्टतापूर्वक हंसते हुए उत्तर दिया, "तुम्हारी हिम्मत तो देखो। कल रात आग तुमने ही लगाई थी।"
तुम मठाधीश के आवास की छत पर बैठे थे और हालात और बिगाड़ने के लिए हवा को उकसा रहे थे। अगर मैं पादरी का चोगा पहन लूँ तो तुम्हें क्या फर्क पड़ता है? तुम कहाँ से हो? तुम कौन हो? अगर इतनी बड़ी-बड़ी बातें करने की हिम्मत करते हो तो तुम्हारे पास ज़रूर बहुत सारे हथकंडे होंगे।

“तुम अपने दादा को पहचान नहीं सकते,” बंदर भाई ने जवाब दिया। “मैं, तुम्हारा दादा, महामहिम कुलपति संज़ंग का शिष्य हूँ, जो महान तांग सम्राट के छोटे भाई हैं। मेरा नाम सुन वुकॉन्ग भाई है। अगर तुम मेरी चालों के बारे में जानना चाहते हो, तो बस मुझे बता दो। मैं तुम्हें यहीं मार डालूँगा और तुम्हारी आत्माओं को हवा में उड़ा दूँगा।”

"मैंने तुम्हारे इन करतबों के बारे में कभी नहीं सुना, इसलिए बेहतर होगा कि तुम मुझे इनके बारे में बताओ।"

"शांत खड़े रहो और मेरी बात सुनो, मेरे बच्चे," बंदर ने उत्तर दिया और आगे कहा:

"बचपन से ही मेरी जादुई शक्तियां बहुत प्रबल रही हैं;
हवा के रुख के साथ बदलते हुए, मैं अपनी ताकत दिखाता हूँ।
अपनी प्रकृति का पोषण करना और सत्य का पोषण करना,
मैंने दिन और महीने जी लिए हैं,
पुनर्जन्म के चक्र से बाहर निकलकर मैंने अपनी जान बचाई।
मैंने एक बार सच्चे मन से मार्ग की खोज की थी।
औषधीय जड़ी-बूटियाँ चुनने के लिए स्पिरिट टेरेस पर्वत पर चढ़ना।
उस पर्वत पर एक प्राचीन अमर प्राणी निवास करता है।
एक लाख आठ हजार वर्ष पुराना।
मैंने उसे अपना गुरु मान लिया।
मुझे उम्मीद थी कि वह मुझे अमरता का मार्ग दिखाएगा।
उन्होंने कहा कि अमृत स्वयं व्यक्ति के शरीर में ही मौजूद है।
इसे बाहर ढूंढना व्यर्थ का प्रयास है।
मैंने अमरता का एक महान मंत्र सीखा।
इसके बिना मेरा जीवित रहना लगभग असंभव था।
मैंने अपनी निगाहें अंतर्मन की ओर मोड़ीं और बैठकर अपने मन को शांत किया।
जब मेरे शरीर में सूर्य और चंद्रमा आपस में मिल गए।
संसार के मामलों को नजरअंदाज करते हुए, मैंने अपनी इच्छाओं को संयमित कर लिया।
जब इंद्रियां, शरीर और मन शुद्ध हो गए, तब मेरा शरीर दृढ़ हो गया।

फिर समय को पीछे ले जाकर युवावस्था में लौटना आसानी से संभव हो जाता है;
अध्याय 17
247
पश्चिम की यात्रा
अमरत्व और ऋषित्व का मार्ग लंबा नहीं था।
तीन साल में मुझे एक जादुई शरीर मिल गया,
वह आम जानवरों की तरह पीड़ित नहीं हुआ।
मैंने दस महाद्वीपों और तीन द्वीपों की यात्रा की।
समुद्र के कोने और आकाश का किनारा।
मुझे तीन सौ साल से अधिक जीने की उम्मीद थी।
लेकिन अभी तक नौ स्वर्गों तक उड़ान भरने में असमर्थ था।
मुझे समुद्री ड्रैगन को वश में करने का एक असली खजाना मिला है:
सोने की जिल्द वाली लोहे की लाठी।
फूलों और फलों के पहाड़ पर
मैं सर्वोच्च कमांडर था;
जल परदे की गुफा में
मैंने उन दुष्ट सेनाओं को इकट्ठा किया।
महान जेड सम्राट ने मुझे एक फरमान भेजा।
उच्च पद और 'स्वर्ग के समर्थ' की उपाधि प्रदान करना।
मैंने एक से अधिक बार चमत्कारी धुंध के हॉल को तहस-नहस कर दिया,
और उसने कई बार महारानी माँ के आड़ू चुराए।
एक लाख दिव्य सैनिक कतारबद्ध होकर खड़े हैं।
मुझे मारने के लिए वे भाले और तलवारें लेकर आए थे।
मैंने स्वर्ग के राजाओं को पराजित करके वापस ऊपर भेज दिया।
उसने नाझा को अपने आदमियों के साथ दर्द से कराहते हुए भागने पर मजबूर कर दिया।
रूपांतरण में निपुण सच्चे भगवान एरलांग,
लाओ ज़ी, गुआनिन और जेड सम्राट
उन्होंने स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से मुझे वश में किए जाने का दृश्य देखा।

क्योंकि उन्हें लॉर्ड लाओ ज़ी से कुछ मदद मिली थी,
एर्लांग ने मुझे मोहित कर लिया और मुझे स्वर्ग ले गया।
अध्याय 17
248
पश्चिम की यात्रा
मैं दानव-वशीकरण स्तंभ से बंधा हुआ था,
और दिव्य सैनिकों को मेरा सिर काटने का आदेश दिया गया था।
तलवारों से काटे जाने और हथौड़ों से पीटे जाने के बावजूद
मैं सुरक्षित रहा।
फिर मुझ पर बिजली गिरी और मैं आग से झुलस गया।
क्योंकि मेरे पास सचमुच जादुई शक्तियां हैं,
मुझे जरा भी डर नहीं था।
वे मुझे शुद्धिकरण के लिए लाओ ज़ी की भट्टी में ले गए।
सिक्स डिंग्स ने मुझे दिव्य अग्नि से धीरे-धीरे भून दिया।
जब समय पूरा हो गया और भट्टी का दरवाजा खुला, तो मैं कूदकर बाहर निकल गया।
और मैं अपने हाथ में लाठी लिए स्वर्ग की ओर दौड़ पड़ा।
मुझे हर जगह उपद्रव मचाने से कोई नहीं रोक सकता था।
और मैंने तैंतीस स्वर्गों में अराजकता फैला दी।
तब तथागत बुद्ध ने अपनी धर्म शक्ति का प्रयोग किया।
और मैंने पंच तत्वों के पर्वत को अपनी पीठ पर गिरा दिया।
वहाँ मुझे पूरे पाँच सौ वर्षों तक कुचला गया।
जब तक संजांग तांग वंश से नहीं आया था।
अब मैंने अपना मार्ग बदल लिया है और मैं पश्चिम की ओर जा रहा हूँ।
थंडर पीक पर चढ़कर बुद्ध प्रतिमा के दर्शन करने के लिए।
चारों समुद्रों, आकाश और पृथ्वी में पूछताछ करो:
आपको पता चलेगा कि मैं अब तक का सबसे बड़ा राक्षस हूँ।
यह सुनकर राक्षस हँसा और बोला, "तो तुम ही हो घोड़ों के रक्षक, जिन्होंने स्वर्ग को तहस-नहस कर दिया?"
बंदर, जिसे इस उपाधि से पुकारे जाने पर किसी भी अन्य बात से अधिक गुस्सा आता

था, क्रोधित हो उठा। "तुम दुष्ट राक्षस। तुम पादरी का वस्त्र चुराते हो और उसे वापस देने से इनकार करते हो, और इसके ऊपर तुम अपने स्वामी का अपमान करते हो।" इसे पकड़ो और देखो तुम्हें मेरा गदा कैसा लगता है।" उस काले आदमी ने वार से खुद को बचाया और फिर अपने भाले से पलटवार किया।
उन दोनों ने शानदार लड़ाई लड़ी।
अध्याय 17
249
पश्चिम की यात्रा
एक मनमानी लाठी,
एक काले गुच्छेदार भाले,
और दो आदमी एक गुफा के मुहाने पर अपनी बहादुरी का प्रदर्शन कर रहे हैं।
एक वार दिल और चेहरे पर होता है,
दूसरा व्यक्ति हाथ और सिर पर हमला करने की कोशिश करता है।
यह लाठी से चालाकी से वार करता है।
वह व्यक्ति तीन तीव्र गतियों में अपना भाला लहराता है।
सफेद बाघ अपने पंजे गड़ाने के लिए पहाड़ पर चढ़ता है;
सड़क पर लेटा हुआ पीला अजगर तेजी से मुड़ता है।
रंगीन धुंध उगलते हुए,
प्रकाश की किरणें उगलते हुए,
इन दो अमर राक्षसों में से किसी एक को चुनना कठिन है:
एक तो वह ऋषि है जो स्वर्ग के समान है और जिसने सत्य की साधना की है;
दूसरा है महान काला राजा जो एक आत्मा बन गया है।
पहाड़ों में स्थित इस युद्धक्षेत्र में
वे दोनों पादरी के वस्त्र के लिए आपस में लड़ते हैं।
उस राक्षस ने बंदर के साथ लगभग दस दौर तक अनिर्णायक लड़ाई लड़ी, और जैसे-जैसे सूरज आसमान की ओर बढ़ता जा रहा था, उस काले रंग के प्राणी ने लोहे के डंडे को रोकने के लिए अपना भाला उठाया और कहा, "भाई बंदर, चलो हथियार डाल देते हैं। मैं खाना खाने के बाद वापस आकर तुमसे फिर लड़ूंगा।"
“अरे शापित जानवर,” बंदर ने उत्तर दिया, “तुम खुद को असली मर्द कैसे कह सकते

हो? अगर तुम होते, तो आधे दिन में ही तुम्हें खाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। मैंने पहाड़ के नीचे बिताए उन पाँच सौ सालों में एक बार पानी तक नहीं पिया, लेकिन मुझे भूख नहीं लगी। बहाने बनाना बंद करो और मत जाओ। अगर तुम मुझे मेरा चोगा वापस दे दोगे, तो मैं तुम्हें खाना खाने दूँगा।" उस राक्षस ने अपना भाला लहराया, गुफा में वापस चला गया और दरवाज़े ज़ोर से बंद कर लिए। अपने छोटे जिन्नों को बुलाकर उसने दावत का इंतज़ाम किया और पहाड़ के सभी शैतान राजाओं को दावत में आने के लिए निमंत्रण पत्र लिखे।

बंदर ने द्वारों पर धावा बोला, लेकिन उन्हें खोलने में असमर्थ रहा, इसलिए उसे गुआनयिन मठ लौटना पड़ा, जहाँ भिक्षुओं ने पुराने कुलपति को दफनाया था और अब सभी मठाधीश के कक्ष में तांग पुजारी की सेवा में लगे हुए थे। नाश्ता हो चुका था और दोपहर का भोजन लाया जा रहा था। जैसे ही वे सूप और गर्म पानी ला रहे थे, बंदर आकाश से नीचे उतरा। सभी भिक्षुओं ने झुककर उसे मठाधीश के कमरे में ले गए ताकि वे अध्याय 17 देख सकें।

"अरे, तुम वापस आ गए, वुकॉन्ग," उसने कहा। "उस चोगे का क्या हुआ?"

मुझे जवाब मिल गया है। हमने इन भिक्षुओं को गलत समझा था। दरअसल, इसे काले पवन पर्वत के एक दुष्ट ने चुरा लिया था। मैं चुपके से उसकी तलाश में गया और उसे घास के मैदान के सामने एक सफेद वस्त्रधारी विद्वान और एक बूढ़े ताओवादी से बात करते हुए पाया। वह खुद को राक्षस मानता है, और उसने अपने मुँह से कहा कि वह कल अपने जन्मदिन के जश्न में सभी दुष्ट आत्माओं को आमंत्रित कर रहा है, और क्योंकि उसे कल रात एक रेशमी बुद्ध का वस्त्र मिला था, इसलिए वह उसका भी जश्न मनाना चाहता था, इसलिए वह एक भव्य भोज देने जा रहा था जिसे उसने 'बुद्ध के वस्त्र के उत्सव और प्रशंसा के लिए सभा' नाम दिया था। मैं उस पर झपटा और अपनी गदा से उस पर वार किया, लेकिन वह काला प्राणी हवा के झोंके में बदल गया और भाग गया। ताओवादी भी गायब हो गया, और मैं केवल सफेद वस्त्रधारी विद्वान को ही मार सका, जो एक सफेद साँप से आत्मा बन गया था। मैं जितनी जल्दी हो सके उसकी गुफा के मुँह पर गया और उसे बाहर आने को कहा और मुझसे लड़ो।

उसने कबूल किया कि वह इसे ले गया था। हम आधे दिन तक लड़ते रहे, लेकिन हममें से कोई भी नहीं जीता, और फिर राक्षस दोपहर के भोजन के लिए अपनी गुफा में वापस चला गया और अपने पीछे पत्थर के द्वार बंद कर लिए। वह इतना डरा हुआ था कि दोबारा बाहर नहीं आया, इसलिए मैं आपको यह खबर देने वापस आया हूँ, स्वामी। अब हमें पता है कि चोगा कहाँ है, चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है कि वह इसे वापस नहीं देगा।

यह सुनकर भिक्षुओं ने हाथ जोड़कर या प्रणाम करके अमिताभ बुद्ध का आह्वान किया और कहा, "उन्होंने वह स्थान ढूंढ लिया है - हम बच गए हैं।"

"इतना खुश मत होइए," बंदर ने चेतावनी दी, "मुझे अभी तक वो मिला नहीं है, और मेरे स्वामी ने अभी तक आपके मठ को नहीं छोड़ा है। जब तक मैं चोगा वापस नहीं ला देता और मेरे स्वामी को यहाँ से ठीक से विदा नहीं कर देता, तब तक आप खुद को सुरक्षित नहीं समझ सकते। और अगर ज़रा सी भी गलती हुई, तो याद रखिएगा कि मैं बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता हूँ। क्या आपने मेरे स्वामी को सबसे अच्छा खाना और चाय दी है? क्या आपने मेरे घोड़े को सबसे अच्छा चारा दिया है?"

"जी हां, जी हां," भिक्षुओं ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा। "हमने परम पूज्य की देखभाल में किसी भी तरह की कोई चूक नहीं की है।"

"जब आप सुबह से बाहर थे, तब मैंने तीन बार चाय पी और दो बार खाना खाया, और उन्होंने मेरे साथ ज़रा भी लापरवाही नहीं बरती," संज़ंग ने समझाया। "आपको वापस जाकर उस चोगे को वापस लाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।"

“इतनी जल्दी मत करो,” बंदर ने जवाब दिया। “मुझे पता है वो कहाँ है, और मैं गारंटी देता हूँ कि मैं उस बदमाश को पकड़कर तुम्हें वो चोगा लौटा दूँगा। चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।”

जब वह बात कर रहा था, तभी वरिष्ठ मठाधीश अंदर आए, शाकाहारी भोजन परोसा और स्वामी बंदर को खाने के लिए आमंत्रित किया। कुछ निवाले निगलने के बाद बंदर एक बार फिर अपने जादुई बादल पर सवार होकर शिकार पर निकल पड़ा। रास्ते में उसने एक छोटे जिन्न को मुख्य मार्ग पर अपनी बाईं भुजा के नीचे एक लकड़ी का बक्सा लिए जाते देखा। यह अनुमान लगाते हुए कि बक्से में कोई पत्र होगा, बंदर ने अपनी लाठी उठाई और उसके सिर पर वार किया। इस प्रहार से जिन्न न केवल मरा, बल्कि उसका चेहरा बर्गर जैसा हो गया। उसके अवशेषों को एक तरफ फेंककर, भाई

बंदर ने बक्सा खोला और देखा कि उसमें एक निमंत्रण पत्र था: आपका शिष्य भालू, स्वर्ण कुंड के परम पूज्य और आदरणीय, आपको विनम्र प्रणाम प्रस्तुत करता है।
मुझे आपसे बार-बार प्राप्त हुई अपार कृपा के लिए हार्दिक आभार है। कल रात जब मैंने आग देखी तो मैं उसे बुझाने में असफल रहा, लेकिन मुझे विश्वास है कि इससे आपकी दिव्य बुद्धि को कोई हानि नहीं हुई होगी। चूंकि आपके शिष्य को बुद्ध का वस्त्र प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है, इसलिए मैं एक भोज दे रहा हूँ, जिसमें मुझे आशा है कि आप भी शामिल होंगे। अध्याय 17
251
पश्चिम की यात्रा
मुझे यह वस्त्र पसंद आएगा। यदि आप निर्धारित समय पर उपस्थित होकर मुझे सम्मानित करेंगे तो मैं आपका अत्यंत आभारी रहूंगा। यह पत्र दो दिन पहले लिखा गया था।
यह पढ़कर बंदर जोर से हँस पड़ा और बोला, "वह कुटिल बूढ़ा साधु। उसे तो मरना ही चाहिए था। लगता है वो दुष्ट आत्माओं के साथ मिला हुआ था? अजीब बात है कि वो 270 साल तक जी गया। मुझे लगता है उस दुष्ट आत्मा ने उसे अपनी प्राण शक्ति को नियंत्रित करने के कुछ गुर सिखाए होंगे, इसीलिए वो इतने लंबे समय तक जीवित रहा। मुझे उसका चेहरा याद है, तो मैं उसी का रूप धारण करके उस गुफा में जाता हूँ। इस तरह मैं देख पाऊँगा कि उसने अपना चोगा कहाँ रखा है, और अगर किस्मत अच्छी रही तो मैं वापस आकर बहुत सारी मुसीबतों से बच जाऊँगा।"
महान संत ने एक मंत्र पढ़ा, हवा की ओर मुख किया और स्वयं को बिल्कुल उस बूढ़े भिक्षु के समान बना लिया। उन्होंने अपनी गदा छिपा ली, सीधे गुफा के प्रवेश द्वार की ओर चले और चिल्लाकर कहा, "खुल जाओ।"
छोटे जिन्न ने मुंह खोला और जैसे ही उसने उसे देखा, वह दौड़कर वापस आया और सूचना दी, "महाराज, स्वर्ण कुंड के मुखिया यहाँ हैं।" राक्षस चकित रह गया।
मैंने अभी-अभी एक नौजवान को उसके लिए निमंत्रण पत्र देकर भेजा है, और संदेश अभी तक उस तक नहीं पहुँचा होगा। वह इतनी जल्दी यहाँ कैसे पहुँच गया? नौजवान उससे मिला भी नहीं होगा। ज़ाहिर है, भाई बंदर ने उसे यहाँ पादरी का चोगा माँगने के लिए भेजा है। सेवक, उस चोगे को कहीं ऐसी जगह छुपा दो जहाँ वह उसे देख न सके।

जैसे ही बंदर मुख्य द्वार पर पहुँचा, उसने देखा कि आँगन बाँस और सरू के पेड़ों से हरा-भरा था, जबकि आड़ू और बेर के पेड़ खिलते हुए झाड़ियों और सुगंधित ऑर्किड के बीच सुंदरता की होड़ कर रहे थे। यह एक गुफा जैसा स्वर्ग था। उसने द्वार पर खुदा हुआ एक दोहा भी देखा, जिसमें लिखा था:

पहाड़ियों की गहराई में शांतिपूर्ण सेवानिवृत्ति में, व्यक्ति सांसारिक चिंताओं से मुक्त होता है; एक जादुई गुफा में शांति से निवास करते हुए, दिव्य सादगी में प्रसन्न रहता है।

“यह दुष्ट संसार की गंदगी और धूल से बच निकला है,” बंदर ने सोचा, “और यह एक ऐसा शैतान है जो जीवन को समझता है।” द्वार से होते हुए वह और अंदर गया और एक तिहरे द्वार से गुजरा। यहाँ नक्काशीदार और रंगे हुए बीम, रोशन खिड़कियाँ और रंगीन दरवाजे थे। उसने देखा कि वह काला आदमी गहरे हरे रंग का रेशमी कुर्ता पहने हुए था, जिसके ऊपर काले रंग का पैटर्न वाला रेशमी लबादा लटका हुआ था; उसके सिर पर एक मुलायम काली टोपी थी और पैरों में गहरे रंग के हिरण की खाल के जूते थे।

बंदर को आते देख उसने अपने कपड़े समेटे और सीढ़ियों से नीचे उतरकर उसका अभिवादन करते हुए कहा, "गोल्डन पूल, मैं कई दिनों से आपसे मिलने का इंतज़ार कर रहा था। कृपया बैठ जाइए।" बंदर ने भी शिष्टाचारवश उसका अभिवादन किया और अभिवादन समाप्त होने के बाद वे बैठ गए और चाय पी। फिर दुष्ट आत्मा ने झुककर कहा, "मैंने अभी-अभी आपको एक पत्र भेजा था जिसमें आपको परसों आने के लिए कहा था। पुराने मित्र, आप आज ही मुझसे मिलने क्यों आए हैं?"

"मैं आपसे मिलने के लिए यहाँ आ रहा था, तभी मुझे आपका संदेश मिला कि आप 'बुद्ध के वस्त्र भोज' का आयोजन कर रहे हैं, इसलिए मैं जल्दी से यहाँ आया और आपसे एक झलक देखने की अनुमति मांगी।"

"तुमने गलत समझा, मेरे पुराने दोस्त," दुष्ट राक्षस ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "यह तांग पुजारी का चोगा है, और चूंकि वह तुम्हारे घर पर ठहरे हुए थे, तुमने इसे वहीं देखा होगा। इसे देखने के लिए यहाँ क्यों आए हो?"

“जब मैंने इसे उधार लिया था,” बंदर ने कहा, “रात बहुत हो चुकी थी, इसलिए मैं इसे देख नहीं पाया। उसके बाद, मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि महाराज ने इसे ले लिया। इसके अलावा, मठ जलकर राख हो गया और मैंने अपना सब कुछ खो दिया। तांग पुजारी का वह शिष्य तो बड़ा साहसी था, लेकिन उसे भी यह कहीं नहीं मिला। मैं इसे देखने यहाँ आया हूँ क्योंकि महाराज को इसे वापस पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।”
जब वे बातें कर रहे थे, तभी पहाड़ पर गश्त कर रहा एक छोटा जिन्न अंदर आया और बोला, "महाराज, एक भयानक घटना घटी है। भाई बंदर ने उस लेफ्टिनेंट को मार डाला है जो मुख्य मार्ग से निमंत्रण स्वीकार कर रहा था, और उसने खुद को स्वर्ण कुंड के बड़े देवता के रूप में दिखाने का मौका उठाया है ताकि वह यहाँ आकर आपसे बुद्ध का वस्त्र छीन सके।"
“मुझे आश्चर्य हो रहा था कि आज वह बुजुर्ग क्यों आए हैं,” राक्षस ने सोचा, “और इतनी जल्दी क्यों आए हैं, और अब मुझे पता चल गया है कि वे सचमुच वही हैं।” वह उछलकर खड़ा हुआ, अपना भाला उठाया और बंदर पर वार किया। बंदर ने पलक झपकते ही अपने कान से भाला निकाला, अपने असली रूप में लौट आया, भाले के वार को रोका, मुख्य कमरे से आंगन में कूद गया और सामने के द्वार से लड़ते हुए बाहर निकल गया। इससे गुफा में मौजूद सभी राक्षस भयभीत हो गए, और बूढ़े-जवान सभी बुरी तरह डर गए। पहाड़ पर जो भीषण लड़ाई हुई, वह पिछली लड़ाई से भी कहीं बेहतर थी।
वीर वानर राजा अब एक भिक्षु बन चुका था।
उस धूर्त काले आदमी ने बुद्ध के वस्त्र को छिपा दिया था।
शब्दों का मिलान करने में वे दोनों माहिर थे;
अवसरों का भरपूर लाभ उठाने में उन दोनों के बीच कोई अंतर नहीं था।
चाहे कितनी भी इच्छा हो, पादरी का वस्त्र दिखाई नहीं दे सकता था;
छिपा हुआ खजाना सचमुच एक अद्भुत चीज है।
जब पर्वतीय गश्त पर तैनात कनिष्ठ दानव ने आपदा की घोषणा की, तो क्रोधित बूढ़े राक्षस ने अपने क्रोध में आकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।
बंदर ने अपना रूप बदला और गुफा से बाहर निकलने के लिए संघर्ष किया, जबकि भाला और गदा इस मुद्दे को सुलझाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।
लाठी ने जोरदार आवाज के साथ लंबे भाले को रोक दिया;

लोहे के डंडे को रोकते हुए भाला चमक उठा।
सन वुकॉन्ग के रूप परिवर्तन पृथ्वी पर दुर्लभ थे;
उस दुष्ट राक्षस के जादू का मुकाबला कुछ ही लोग कर सकते थे।
एक व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त करने के लिए वह वस्त्र धारण करना चाहता था;
सम्मान के साथ लौटने के लिए पादरी का वस्त्र पहनना आवश्यक था।
अध्याय 17
253
पश्चिम की यात्रा
यह कड़वी लड़ाई खत्म होने वाली नहीं थी;
यहां तक कि जीवित बुद्ध भी इसे हल नहीं कर सकते थे।
गुफा के मुँह से वे दोनों लड़ते हुए पहाड़ की चोटी तक पहुँचे, और पहाड़ की चोटी से बादलों के पार तक अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े। उन्होंने हवा और कोहरा उगला, रेत और पत्थर उड़ाए, और पश्चिम में लाल सूरज डूबने तक संघर्ष करते रहे, लेकिन मुकाबला अभी भी अनिर्णायक था। तभी राक्षस ने कहा, "बंदर, अभी रुक जाओ। आज रात लड़ना बहुत देर हो चुकी है। चले जाओ, चले जाओ। कल वापस आना, और हम देखेंगे कि हममें से कौन जीवित रहेगा और कौन मरेगा।"
“मत जाओ, मेरे बच्चे,” बंदर ने चिल्लाकर जवाब दिया। “अगर लड़ना ही है तो ठीक से लड़ो। दिन के समय को बहाना बनाकर लड़ाई से मत भागो।” इतना कहकर उसने उस काले आदमी पर बेतहाशा हमला किया, जो हवा के झोंके में बदल गया, अपनी गुफा में वापस गया और पत्थर के दरवाज़े कसकर बंद कर लिए।
बंदर के पास गुआनयिन मठ लौटने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उसने अपने बादल को नीचे उतारा और अपने स्वामी को पुकारा, जो बेसब्री से उसका इंतजार कर रहे थे, और अचानक उनके सामने प्रकट हो गए।
संजांग बहुत खुश हुआ, लेकिन जब उसने देखा कि बंदर के हाथों में कोई चोगा नहीं है, तो उसकी खुशी डर में बदल गई।
"इस बार भी तुमने पादरी का चोगा क्यों नहीं पहना है?" उसने पूछा।
भाई बंदर ने अपनी आस्तीन से निमंत्रण पत्र निकाला और संज़ंग को देते हुए कहा, "गुरुजी, वह दुष्ट उस मरे हुए बदमाश का दोस्त था। उसने एक छोटे जिन्न को यह निमंत्रण पत्र देकर भेजा है और उसे एक जगह जाने के लिए कहा है।"

'बुद्ध के वस्त्रों का भोज'। मैंने गोब्लिन को मार डाला, खुद को बूढ़े भिक्षु के रूप में बदल लिया, गुफा में गया और उनसे धोखे से एक प्याला चाय ले ली। मैंने उनसे चोगा दिखाने को कहा, लेकिन उन्होंने उसे नहीं दिखाया। फिर जब हम वहाँ बैठे थे, तभी एक पहाड़ी गश्ती दल के किसी व्यक्ति ने भेद खोल दिया, और उसने मुझसे लड़ना शुरू कर दिया। हम अभी तक लड़ते रहे, और हममें से कोई भी जीत नहीं पाया था। जब उसने देखा कि बहुत देर हो चुकी है, तो वह वापस अपनी गुफा में चला गया और अपने पीछे पत्थर के दरवाजे बंद कर लिए। इसका मतलब था कि मुझे फिलहाल वापस आना पड़ेगा।

"तुम्हारे करतब उसके करतबों से कितने मिलते-जुलते हैं?" संजांग ने पूछा।

"मैं उससे कुछ खास बेहतर नहीं हूँ," बंदर ने जवाब दिया, "और मैं बस अपना काम ठीक से कर सकता हूँ।" संज़ांग ने निमंत्रण पढ़ा और उसे धर्माधिकारी को सौंप दिया।

"क्या ऐसा हो सकता है कि आपके पूर्वज एक दुष्ट आत्मा थे?" उसने कहा।

धर्माधिकारी जितनी जल्दी हो सके घुटनों के बल बैठ गए और बोले, "महाराज, वह मनुष्य थे। लेकिन क्योंकि वह महान अश्वेत राजा मानवता के मार्ग का अनुसरण कर रहे थे, इसलिए वे अक्सर हमारे मंदिर में हमारे कुलपति के साथ धर्मग्रंथों पर चर्चा करने आते थे और उन्हें दिव्य शक्ति का पोषण करने और प्राण शक्ति को नियंत्रित करने की कुछ कलाएँ सिखाते थे। इसीलिए उनके बीच मैत्रीपूर्ण संबंध थे।"

"इनमें से किसी भी भिक्षु में शैतानी तत्व नहीं है," बंदर ने कहा। "इन सभी का सिर हवा में और पैर ज़मीन पर हैं, और ये मुझसे ज़्यादा लंबे और मोटे हैं। ये बुरी आत्माएँ नहीं हैं। क्या तुमने निमंत्रण पत्र पर 'तुम्हारा शिष्य भालू' लिखा देखा? वह ज़रूर कोई काला भालू होगा जो आत्मा बन गया है।"

इस पर संज़ांग ने कहा, "एक पुरानी कहावत है कि 'भालू और बबून एक जैसे होते हैं'। अगर वे सभी जानवर हैं, तो वे आत्मा कैसे बन सकते हैं?" बंदर हँसते हुए बोला, "मैं भी एक जानवर हूँ, लेकिन मैं स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि बन गया हूँ। मैं बिल्कुल उनके जैसा ही हूँ। स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी प्राणी जिनके शरीर में नौ छिद्र होते हैं, वे अपने आचरण को सुधारकर अमर बन सकते हैं।"

अध्याय 17

“अभी तुमने कहा था कि उसकी क्षमताएँ तुम्हारी ही हैं, तो तुम उसे कैसे हराओगे और अपना चोगा वापस कैसे लोगे?” संज़ंग ने पूछा। “चिंता मत करो, चिंता मत करो,” मंकी ने जवाब दिया, “मैं संभाल लूँगा।” जब वे बात कर रहे थे, भिक्षु उनके लिए शाम का भोजन लाए और उन्हें खाने के लिए आमंत्रित किया। संज़ंग ने एक दीपक माँगा और पहले की तरह सामने वाले ध्यान कक्ष में सोने चले गए। सभी भिक्षु दीवारों से सटी घास-फूस की झोपड़ियों में सोए, और पीछे वाले मठाधीश के कमरे वरिष्ठ और कनिष्ठ धर्माध्यक्षों के लिए छोड़ दिए। वह एक शांतिपूर्ण रात थी।

आकाशगंगा साफ दिखाई दे रही थी।

धूल रहित हरा आकाश।

आकाश जगमगाते तारों से भरा हुआ था।

एक ही लहर ने सारे निशान मिटा दिए।

सभी आवाजें शांत हो गईं।

और हजारों पहाड़ियों पर पक्षी चुप थे।

नदी के किनारे मछुआरे की बत्ती बुझ गई थी।

पगोडा में स्थित बुद्ध-दीपक की रोशनी मंद पड़ गई।

कल रात मठाधीश की घंटी और ढोल बजे थे;

आज शाम चारों ओर रोने की आवाजें गूंज रही थीं।

उस रात उसने मठ में सोकर बिताई। हालाँकि, संजांग को चोगे के बारे में सोचते-सोचते नींद नहीं आ रही थी।

वह करवट बदलकर खिड़की के बाहर आसमान में उजाला होते देख तुरंत बिस्तर से उठ खड़ा हुआ और बोला, "बंदर, उजाला हो गया है, जाओ और चोगा ले आओ।" भाई बंदर बिस्तर से उछलकर बाहर निकला और देखते ही देखते कई भिक्षु गर्म पानी लेकर हाज़िर हो गए।

"मेरे मालिक का ठीक से ख्याल रखना," उसने कहा। "मैं जा रहा हूँ।"

संजांग बिस्तर से उठा और उसे पकड़ लिया। "तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने पूछा।

बंदर ने कहा, "मैं सोच रहा था कि इस पूरे मामले के लिए बोधिसत्व गुआनयिन ही ज़िम्मेदार हैं। हालाँकि यह उनका मठ है और सभी भिक्षु उनकी पूजा करते हैं, फिर भी वे उस दुष्ट आत्मा को आस-पास रहने देती हैं। मैं उन्हें ढूंढने और उनसे यहाँ स्वयं आकर उस दुष्ट आत्मा से हमारा चोगा वापस लेने के लिए दक्षिणी सागर जा रहा हूँ।"

"तुम कब वापस आओगे?" संजांग ने पूछा।
"नाश्ता खत्म होने के बाद, और ज़्यादा से ज़्यादा दोपहर तक, मैं अपना काम पूरा कर लूँगा। उन भिक्षुओं को आपका अच्छे से ख्याल रखना चाहिए। मैं अब जा रहा हूँ।"
अध्याय 17
255
पश्चिम की यात्रा
उसके मुंह से ये शब्द निकलते ही वह बिना किसी निशान के गायब हो गया और दक्षिणी सागर तक पहुँच गया। बादल को रोककर उसने देखा:
समुद्र का एक विशाल विस्तार,
जलधाराएँ दूर-दूर तक फैली हुई थीं, जहाँ वे आकाश से मिल जाती थीं।
शुभ प्रकाश से आकाश भर गया।
पहाड़ों और नदियों पर शुभ वाष्प छाई हुई थी।
बर्फ से ढकी हजारों लहरें नीले आकाश पर गरज रही थीं,
असंख्य धुंधली लहरें आकाश की ओर उठीं।
पानी चारों दिशाओं में उड़ गया।
हर जगह से पानी की तेज धारा बह निकली।
पानी चारों दिशाओं में उड़ने लगा और उसकी गूंज गरज की तरह सुनाई दी;
जब जलप्रपात हर जगह बहने लगा तो वह टकराया और गरजा।
चलो समुद्र को छोड़ दें।
और इस बात पर विचार करें कि इसमें क्या निहित था:
धुंधले रंगों में लिपटा एक अनमोल पर्वत— —
लाल, पीला, बैंगनी, काला, हरा और नीला।
तब उसने गुआनयिन की सुंदर भूमि देखी।
दक्षिणी सागर में स्थित पोटारका द्वीप।
घूमने के लिए कितनी शानदार जगह है!
ऊँची चोटियाँ
आकाश को चीरते हुए,
उनके नीचे हजारों प्रकार के अनोखे फूल खिले हुए हैं,
और हर प्रकार की जादुई जड़ी-बूटी।

तेज हवा से अनमोल पेड़ हिल गए।
सूर्य की रोशनी सुनहरे कमल पर पड़ रही थी।
अध्याय 17
256
पश्चिम की यात्रा
गुआनयिन के महल की छत चमकदार टाइलों से ढकी हुई थी।
टाइड गुफा के द्वार कछुए की खोल से बने हुए थे।
हरी विलो वृक्षों की छाया में तोते चहचहा रहे थे।
बैंगनी बांस के बीच मोर चहचहा रहे थे।
संगमरमर के पत्थर पर
रक्षक देवता अत्यंत कठोर हैं;
एगेट स्ट्रैंड से पहले
शक्तिशाली मोक्ष का उदय हुआ।
इस अद्भुत दृश्य को निहारने के लिए एक पल भी न रुकते हुए, बंदर ने अपने बादल को सीधे बांस के झुरमुट के नीचे उतारा। कई देवता पहले से ही उसका स्वागत करने के लिए वहाँ मौजूद थे, और उन्होंने कहा, "बोधिसत्व ने हमें कुछ समय पहले बताया था कि हे महान ऋषि, आपका धर्म परिवर्तन हो गया है, और उन्होंने आपकी बहुत प्रशंसा की थी। लेकिन यदि आप अब तांग पुजारी की रक्षा कर रहे हैं, तो आपको यहाँ आने का समय कैसे मिला?"
"क्योंकि जब मैं उनकी यात्रा में उनका साथ दे रहा था, तब कुछ घटित हुआ है। कृपया जाकर बोधिसत्व को बता दीजिए कि मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।" जब देवता यह सूचना देने गुफा में गए, तो गुआनयिन ने उन्हें अंदर बुलाया। बंदर ने आज्ञा का पालन किया और कमल के सिंहासन के नीचे उन्हें प्रणाम किया।
"तुम किसलिए आए हो?" बोधिसत्व ने पूछा।
“मेरे स्वामी की यात्रा उन्हें आपके एक मठ में ले आई है,” बंदर ने उत्तर दिया, “और मैंने पाया है कि यद्यपि आप यहाँ के भिक्षुओं से धूप स्वीकार करते हैं, फिर भी आप आस-पास एक काले भालू की आत्मा को रहने देते हैं, और उसे मेरे स्वामी का चोगा चुराने देते हैं। मैंने कई बार उनसे चोगा वापस लेने की कोशिश की, लेकिन असफल रहा, इसलिए अब मैं आपसे उनसे चोगा वापस लेने के लिए कहने आया हूँ।”

“क्या बकवास है, बंदर! चाहे किसी भालू की आत्मा ने ही क्यों न तेरा चोगा चुरा लिया हो, तुझे मुझसे उसे वापस लाने के लिए कहने का क्या हक? यह सब तूने इसलिए किया क्योंकि तू इसे दिखावे के लिए इस्तेमाल करना चाहता था, हे घमंडी और दुष्ट बंदर, छोटे दिमाग वाले लोगों के सामने। इतना ही नहीं, तूने अपनी दुष्टता में हवा को बुलाकर आग फैलाई जिससे मेरा मठ जल गया। और अब तू यहाँ भी अपनी चाल चलने की हिम्मत कर रहा है।”

बोधिसत्व के इन शब्दों से बंदर को यह अहसास हुआ कि वह अतीत और भविष्य के बारे में सब कुछ जानती है, इसलिए उसने आदरपूर्वक प्रणाम किया और विनती की, "बोधिसत्व, अपने शिष्य के पापों को क्षमा करें, आप जो कुछ भी कहते हैं वह सत्य है। फिर भी, मेरे गुरु उस मंत्र का पुनः जाप करेंगे क्योंकि वह राक्षस मेरा वस्त्र वापस नहीं दे रहा है, और मैं असहनीय सिरदर्द सहन नहीं कर पा रहा हूँ। इसीलिए मैं आपसे प्रार्थना करने आया हूँ, बोधिसत्व। मैं आपसे दयापूर्वक विनती करता हूँ कि उस दुष्ट आत्मा को पकड़ने में मेरी सहायता करें, मेरा वस्त्र वापस दिलाएँ और पश्चिम की ओर आगे बढ़ने में मेरी मदद करें।"

“उस राक्षस की जादुई शक्तियाँ निश्चित रूप से तुम्हारी शक्तियों से कमज़ोर नहीं हैं,” बोधिसत्व ने कहा। “ठीक है, तांग पुजारी का आदर करते हुए मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।” बंदर ने उन्हें धन्यवाद दिया और फिर से प्रणाम किया, उन्हें बाहर आने के लिए कहा और उन्हीं के साथ उसी जादुई बादल पर सवार हो गया। देखते ही देखते वे काले पवन पर्वत पर पहुँच गए, जहाँ उन्होंने बादल को उतारा और पैदल गुफा की ओर चल पड़े।

अध्याय 17

257

पश्चिम की यात्रा

जब वे रास्ते में थे, तभी पहाड़ की ढलान पर एक ताओवादी पुजारी प्रकट हुआ। उसके हाथ में एक कांच की थाली थी जिस पर अमरत्व के अमृत की दो गोलियां रखी थीं। बंदर को तुरंत उस पर शक हुआ और उसने लोहे के डंडे से सीधे उसके सिर पर वार किया, जिससे मस्तिष्क और छाती से खून बहने लगा।

"क्या तुम अब भी इतने ही जंगली हो, बंदर?" बोधिसत्व ने चौंककर पूछा। "उसने तुम्हारा वस्त्र नहीं चुराया, तुम उसे जानते भी नहीं थे, और वह तुम्हारा कोई शत्रु भी नहीं था। फिर उसे क्यों मार रहे हो?"

"बोधिसत्व, आप शायद उन्हें नहीं जानते होंगे," बंदर ने उत्तर दिया, "लेकिन वह काले भालू की आत्मा के मित्र थे।"

कल वे और सफेद वस्त्र पहने एक विद्वान हरे-भरे पहाड़ी ढलान के सामने बैठकर बातें कर रहे थे। आज काले आत्मा का जन्मदिन है, और कल वह 'बुद्ध के वस्त्र भोज' में आ रहा था। इसीलिए मैंने उसे पहचान लिया। मुझे पूरा यकीन है कि वह उस राक्षस को उसके जन्मदिन पर बधाई देने आ रहा था।

“अगर ऐसा है तो ठीक है,” बोधिसत्व ने कहा। फिर बंदर ने ताओवादी को उठाकर देखा और पाया कि वह एक भूरा भेड़िया था। उसके बगल में रखी कांच की थाली के नीचे एक शिलालेख था। उस पर लिखा था, “शून्यता के स्वामी द्वारा निर्मित”।

बंदर भाई हँसा और बोला, "कितनी अच्छी किस्मत है! इससे मुझे भी मदद मिलेगी और आपको भी परेशानी से बचाएगा, बोधिसत्व। इस राक्षस ने अपनी मर्जी से कबूल किया है, और वहाँ मौजूद दूसरे राक्षस का भी आज ही सफाया किया जा सकता है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?" बोधिसत्व ने पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "मेरी एक कहावत है, 'उसे उसी के खेल में हराओ'। क्या आप मुझे अपने तरीके से काम करने देंगे?"

"मुझे इसके बारे में बताओ," बोधिसत्व ने कहा।

“उस थाली पर अमरता की जो दो गोलियाँ दिख रही हैं, वही हम उसे भेंट करने ले जाएँगे,” बंदर ने कहा, “और उसके नीचे खुदे हुए शब्द—‘शून्यता के स्वामी द्वारा निर्मित—प्राप्त’—वह चारा है जो हम उसके लिए बिछाएँगे। अगर तुम मेरी बात मानोगे, तो मेरे पास तुम्हारे लिए एक योजना है जिसमें बल प्रयोग या लड़ाई की ज़रूरत नहीं है। वह राक्षस हमारी आँखों के सामने गिर पड़ेगा, और बुद्ध का वस्त्र प्रकट हो जाएगा। अगर तुम मुझे ऐसा नहीं करने दोगे, तो तुम पश्चिम जाओ, मैं पूर्व जाऊँगा, हम बुद्ध के वस्त्र को अलविदा कह देंगे, और संज़ांग मुसीबत में पड़ जाएगा।”

"तुम्हारी तो ढिठाई है, बंदर!" बोधिसत्व ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

"नहीं, नहीं, मेरे पास सच में एक योजना है," बंदर ने विरोध किया।

"तो मुझे इसके बारे में बताओ," गुआनयिन ने कहा।

"तुम्हें पता है थाली पर लिखा है, 'शून्यता के स्वामी द्वारा निर्मित', तो शायद उनका नाम शून्यता के स्वामी ही होगा। बोधिसत्व, अगर तुम मुझे अपनी इच्छा पूरी करने दोगे, तो स्वयं को उस ताओवादी में बदल लो। मैं उन गोलियों में से एक खाऊंगा और

फिर खुद को गोली में बदल लूंगा, हालांकि मैं थोड़ा मोटा हो जाऊंगा। तुम दो गोलियों वाली थाली लेकर उस दुष्ट को जन्मदिन की शुभकामनाएं देने जाओ। उसे बड़ी वाली गोली दे देना, और जब वह मुझे निगल लेगा, तो मैं उसके अंदर समा जाऊंगा। अगर वह तब भी अपना चोगा नहीं लौटाता, तो मैं उसकी आंतों से एक नकली चोगा बना लूंगा।"

बोधिसत्व ने केवल सहमति में सिर हिलाया।

"तो फिर क्या हुआ?" हंसते हुए बंदर ने कहा, और इस पर बोधिसत्व ने अपनी महान दया से अपनी असीम दिव्य शक्ति और रूपांतरण की अनंत क्षमता का उपयोग करते हुए अपने हृदय से अपनी इच्छा और अपने शरीर से अपनी इच्छा को नियंत्रित किया - पल भर में वह परम शून्यता में परिवर्तित हो गई।

अध्याय 17

258

पश्चिम की यात्रा

अमरता की हवा उनके गाउन के चारों ओर बह रही थी।

जैसे ही वह हवा में मंडरा रहा था, मानो शून्यता की ओर उठने ही वाला हो।

उसके गहरे रंग-रूप सरू के पेड़ जितने पुराने थे।

उनकी सुरुचिपूर्ण अभिव्यक्ति समय के साथ बेजोड़ हो गई।

जाते हुए भी कहीं ठहरना नहीं,

समान लेकिन अद्वितीय।

अंततः सब कुछ एक ही कानून पर आकर टिक जाता है।

जिससे वह केवल एक दुष्ट शरीर द्वारा अलग है।

यह नजारा देखकर बंदर भाई ने हैरानी से कहा, "वाह वाह! क्या आप दुष्ट आत्मा के वेश में बोधिसत्व हैं, या फिर आप सचमुच दुष्ट आत्मा हैं?"

"बंदर," उसने हंसते हुए उत्तर दिया, "दुष्ट आत्मा और बोधिसत्व अंततः एक ही हैं - दोनों ही अस्तित्वहीनता से संबंधित हैं।" अचानक इस ज्ञान से प्रेरित होकर, बंदर सिकुड़ गया और स्वयं को अमरता की गोली में परिवर्तित कर लिया।

प्लेट पर लुढ़क रहा है लेकिन अस्थिर नहीं है।

बिना कोनों के गोल और चमकदार।

डबल श्री को गे होंग ने बनाया था।

डबल सिक्स का आविष्कार शाओ वेंग ने किया था।
सुनहरी लौ के कंकड़,
दिन के उजाले में चमकते मोती।
बाहरी परत पर सीसा और पारा लगा हुआ था।
लेकिन मैं फॉर्मूला नहीं बता सकता।
जिस गोली में उसने अपना रूप बदला था, वह वाकई दूसरी गोली से थोड़ी बड़ी थी।
बोधिसत्व ने यह देखा और कांच की थाली लेकर राक्षस की गुफा के प्रवेश द्वार पर गईं। वहाँ उन्होंने अध्याय 17 देखा।
259
पश्चिम की यात्रा
ऊँची-ऊँची चट्टानें और विशाल खाइयाँ,
जहां चोटियों पर बादल उगते हैं;
नीले सरू और हरे चीड़ के पेड़
जहां जंगल में हवा सरसराती है।
ऊँची-ऊँची चट्टानों और विशाल खाइयों पर
शैतान आते-जाते रहते हैं, और बहुत कम लोग जीवित रह पाते हैं।
नीले सरू और हरे चीड़ के पेड़
अमर आत्माओं को गुप्त मार्ग का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करें।
पहाड़ों में खाइयाँ हैं,
इन घाटियों में झरने हैं।
जिसका कलकल करता जल गिटार की तरह गाता है,
कानों को ताज़गी प्रदान करना।
इसके किनारों पर हिरण,
जंगलों में सारस
जहां मौन अमर की बांसुरी अनायास ही बजाई जाती है
दिल को प्रसन्न करने के लिए।
यहां एक दुष्ट आत्मा भी ज्ञान प्राप्त कर सकती है।
और बुद्ध की असीम प्रतिज्ञा अपनी कृपा बरसाती है।
जब बोधिसत्व ने यह देखा तो उसने सोचा, "अगर उस जानवर ने इस गुफा को चुना

है, तो उसके लिए कुछ उम्मीद जरूर होगी।" और तब से उसे उस पर दया आने लगी। जब वह गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँची, तो द्वार पर खड़े छोटे जिन्नों ने उसका स्वागत इन शब्दों से किया,

"स्वागत है, अमर वयोवृद्ध शून्यता-पहुँच गई।" जैसे ही उनमें से कुछ लोग उनका स्वागत करने के लिए अंदर दौड़े, राक्षस द्वार से बाहर आकर उनसे मिलने और यह कहने के लिए आया, "स्वयं शून्यता-पहुँच गई स्वामी, आपने जो कष्ट सहा, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। यह मेरे लिए सम्मान की बात है।"

“मैं आपको यह जादुई गोली भेंट करना चाहती हूँ, जिसके बारे में मेरा विश्वास है कि यह आपको अमरता प्रदान करेगी,” बोधिसत्व ने उत्तर दिया। अभिवादन समाप्त होने पर दोनों बैठ गए और राक्षस ने पिछले दिन की घटनाओं के बारे में बताना शुरू कर दिया। बोधिसत्व ने थाली उसे देते हुए तुरंत विषय बदल दिया और कहा, “कृपया मेरे इस स्नेह के प्रतीक को स्वीकार करें।” उन्होंने देखा कि कौन सी थाली बड़ी है और उसे देते हुए कहा, “महाराज, मैं आपको शाश्वत जीवन की कामना करती हूँ।”

अध्याय 17

260

पश्चिम की यात्रा

राक्षस ने दूसरी गोली उसे देते हुए कहा, "हे परमानंदित स्वामी, आशा है कि आप इसे मेरे साथ बाँटेंगी।" जब उन्होंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया, तो राक्षस ने गोली उठाई और निगलने ही वाला था कि वह लुढ़ककर उसके मुँह में चली गई। तभी बंदर ने अपना असली रूप धारण कर लिया और कुछ कलाबाजियाँ दिखाईं, जिससे राक्षस ज़मीन पर गिर पड़ा। बोधिसत्व ने भी अपना असली रूप धारण कर लिया और राक्षस से बुद्ध का वस्त्र माँगा। चूंकि बंदर अब राक्षस के नथुनों से बाहर आ चुका था, इसलिए उसे चिंता हुई कि दुष्ट आत्मा फिर से दुर्व्यवहार न करे, इसलिए उसने उसके सिर पर एक पट्टी डाल दी। वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया, भाले से उन्हें छेदने के लिए तैयार था, लेकिन बंदर और बोधिसत्व पहले ही हवा में थे, जहाँ उसने मंत्र का जाप शुरू कर दिया। जैसे ही राक्षस के सिर में दर्द होने लगा, उसने भाला गिरा दिया और दर्द से कराहते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। सुंदर बंदर राजा हंसते-हंसते आकाश में गिर पड़ा, जबकि काला भालू का भूत पृथ्वी पर पीड़ा से लोटने लगा।

"जानवर, क्या अब तुम सत्य की ओर लौटोगे?" बोधिसत्व ने पूछा।

"मैं कसम खाता हूँ, मैं कसम खाता हूँ, अगर तुम मेरी जान बख्श दोगे," राक्षस बार-बार दोहराता रहा।
बंदर उसे बिना देर किए खत्म करना चाहता था, लेकिन बोधिसत्व ने उसे तुरंत रोक दिया: "उसे मत मारो—मुझे उसका उपयोग करना है।"
"उस जानवर को मारने के बजाय उसे जिंदा रखने का क्या फायदा?" बंदर ने पूछा।
"मेरे पोटारका द्वीप के पिछले हिस्से की देखभाल करने वाला कोई नहीं है," उसने उत्तर दिया, "इसलिए मैं उसे अपने साथ द्वीप के रक्षक देवता के रूप में वापस ले जाऊंगी।"
बंदर हंसते हुए बोला, "आप सचमुच सर्वदयालु मुक्तिदाता हैं जो किसी भी जीव को नष्ट नहीं होने देते। अगर मुझे आपके जैसा कोई मंत्र पता होता, तो मैं उसे हज़ार बार दोहराता और जितने भी काले भालू मिलते, उन सबको मार डालता।"
हालांकि भालू की आत्मा होश में आ गई थी और जादू का असर खत्म हो गया था, फिर भी वह बहुत पीड़ा में था। वह जमीन पर घुटने टेककर दयनीय स्वर में गिड़गिड़ाया, "मेरी जान बख्श दो और मैं वादा करता हूँ कि मैं सत्य के मार्ग पर लौट आऊँगा।" बोधिसत्व प्रकाश की किरण बनकर अवतरित हुईं, उन्होंने अपने हाथ उसके सिर पर रखे और उसे भिक्षु का अनुशासन सिखाया; फिर उन्होंने उसे अपना भाला उठाने और उनके साथ चलने को कहा। उस दिन से काले भालू के बुरे इरादे समाप्त हो गए और उसकी असीम दुष्टता का अंत हो गया।
बोधिसत्व ने आदेश दिया, "सन वुकॉन्ग, अब वापस जाओ। तांग पुजारी की अच्छी तरह सेवा करो, आलसी मत बनो और कोई झगड़ा शुरू मत करो।"
“बोधिसत्व, इतनी दूर आने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ, और मुझे आपको घर तक पहुँचाना है,” बंदर ने कहा। “इसकी कोई आवश्यकता नहीं है,” उसने उत्तर दिया।
बंदर ने चोगा लिया, उसे प्रणाम किया और चला गया। बोधिसत्व भालू को वापस समुद्र में ले गए, और इसका प्रमाण एक कविता में मिलता है:
सुनहरी छवि के चारों ओर एक जादुई चमक फैल रही है।
प्रकाश की हजार किरणें।
वह अपनी दया से सभी पुरुषों को बचाती है।
संपूर्ण ब्रह्मांड का सर्वेक्षण करते हुए स्वर्णिम कमल को प्रकट करना।

अब बहुत से लोग शास्त्रों का अर्थ समझाएंगे।
और उसमें कोई त्रुटि नहीं होगी।
एक राक्षस को वश में करके और उसे सत्य की ओर लाकर, वह समुद्र में लौट जाती है; शून्यता के धर्म ने रेशमी वस्त्र को पुनः प्राप्त कर लिया है।
अगर आपको नहीं पता कि घटनाएँ कैसे घटीं, तो अगले अध्याय में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।
अध्याय 18
गुआनयिन मंदिर में तांग पुरोहित को बचाया गया
महान ऋषि ने गाओ गांव से एक राक्षस को भगाया
बोधिसत्व से विदा लेकर बंदर ने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा, अपना चोगा नानमू के पेड़ पर टांगा, अपनी गदा निकाली और काली हवा की गुफा में घुस गया, लेकिन वहाँ उसे एक भी जिन्न नहीं मिला। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि बोधिसत्व के अपने असली रूप में प्रकट होने से वे इतने भयभीत हो गए थे कि वे सभी दिशाओं में भाग गए थे। बंदर भाई के मन में बुरे विचार उमड़ आए और उसने बहुमंजिला द्वार के चारों ओर सूखी लकड़ियाँ जमा करके उसमें आग लगा दी, जिससे काली हवा की गुफा लाल हवा की गुफा में बदल गई। फिर वह जादुई प्रकाश की किरण पर सवार होकर उत्तर की ओर लौट गया।
संजंग, जो बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहा था, सोचने लगा कि वह वापस क्यों नहीं आया। क्या बोधिसत्व ने बुलाए जाने पर भी नहीं आए, या बंदर ने बचने के लिए झूठी कहानी बना ली? इन निराशाजनक विचारों से जूझते हुए, अचानक आकाश में एक चमकता हुआ बादल प्रकट हुआ और बंदर नीचे आकर उसके सामने घुटने टेक दिए।
"गुरुजी, यह रहा चोगा," उसने घोषणा की, जिससे संजांग को बहुत खुशी हुई।
मंदिर के सभी भिक्षु भी प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा, "वाह, वाह, आखिरकार हमारी जान बच गई।"
"बंदर," संज़ंग ने उससे चोगा लेते हुए कहा, "आज सुबह जब तुम निकले थे, तो तुमने सोचा था कि इसमें केवल भोजन के समय तक या ज़्यादा से ज़्यादा दोपहर तक का समय लगेगा। तुम अब सूर्यास्त के समय क्यों लौटे हो?" जब बंदर ने उन्हें विस्तार से बताया कि उसने बोधिसत्व से राक्षस को वश में करने के लिए अपना रूप बदलने का

अनुरोध कैसे किया था, तो संज़ंग ने एक धूपदानी लगाई और दक्षिण की ओर झुककर प्रणाम किया। इतना करने के बाद, उन्होंने कहा,
"शिष्य, अब जबकि हमारे पास बुद्ध का वस्त्र है, तो हमारा सामान जितनी जल्दी हो सके पैक कर दो।"
“इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं,” बंदर ने जवाब दिया। “शाम हो चुकी है, अब निकलने में बहुत देर हो चुकी है। चलो कल सुबह निकलते हैं।”
सभी भिक्षु घुटने टेककर बोले, "मंदिर सही कह रहे हैं। एक तो बहुत देर हो चुकी है, और दूसरा हमने एक प्रतिज्ञा ली थी। अब जब सब ठीक हो गया है और खजाना मिल गया है, तो हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते हैं और आपको धन्यवाद भोज में आमंत्रित करना चाहते हैं। कल सुबह हम आपको पश्चिम की ओर विदा करेंगे।"
“हाँ, हाँ,” बंदर ने आग्रह किया। फिर भिक्षुओं ने अपने थैले खाली कर दिए और आग से बचा हुआ सारा सामान निकालकर भोजन का अर्पण किया। फिर उन्होंने आशीर्वाद के लिए कुछ कागज़ जलाए और अध्याय 18

आपदा से बचाव के लिए कुछ सूत्रों का पाठ किया गया। उसी शाम समारोह समाप्त हो गए।
अगली सुबह घोड़े की मालिश की गई और सामान पैक किया गया, फिर वे चल पड़े। भिक्षुओं ने उन्हें काफी दूर तक साथ ले जाकर वापस लौटने का फैसला किया, जिसके बाद बंदर आगे-आगे चलने लगा। अब वसंत ऋतु की शुरुआत हो चुकी थी।
घास घोड़े के खुरों को आराम देती है।
विलो के सुनहरे रेशों से नए पत्ते निकलते हैं।
खुबानी सुंदरता के मामले में आड़ू से प्रतिस्पर्धा करती है;
रास्ते के किनारे उगने वाले जंगली अंजीर के पेड़ जीवन से भरपूर हैं।
सूर्य की गर्मी से तपती रेतीली ढलानों पर मंदारिन बत्तखें सोती हैं;
फूलों की सुगंध से भरी घाटी में तितलियाँ शांत हैं।
शरद ऋतु, शीत ऋतु और वसंत ऋतु के आधे भाग के बाद,
कौन जाने कब यह यात्रा समाप्त होगी जब उन्हें सच्चा शब्द मिल जाएगा?
एक शाम, छह-सात दिनों तक सुनसान रास्ते पर यात्रा करने के बाद, गुरु और शिष्य

को दूर एक गाँव दिखाई दिया। संज़ंग ने कहा, "बंदर, क्या तुम्हें वह गाँव दिखाई दे रहा है जो थोड़ी दूर है? चलो वहाँ जाकर उनसे रात भर रुकने की व्यवस्था करने को कहते हैं; हम कल सुबह फिर से निकल पड़ेंगे।"
"जब तक मैं यह सुनिश्चित न कर लूँ कि सब ठीक है, तब तक निर्णय मत लेना।" बंदर ने जवाब दिया, गाँव की ओर देखते हुए जब उसके स्वामी ने रेशमी लगाम खींची। उसने देखा
पास-पास लगाए गए बांस की बाड़,
कई फूस की छतें।
द्वार के बाहर ऊंचे-ऊंचे पेड़ खड़े हैं;
पुल के नीचे पानी में घरों का प्रतिबिंब दिखाई देता है।
सड़क के किनारे हरे-भरे विलो के पेड़ उग रहे हैं।
बगीचों में सुगंधित फूल खिलते हैं।
पश्चिम में सूरज डूबते समय
घने जंगलों वाली पहाड़ियों में पक्षी गाते हैं।
शाम के समय चूल्हों से धुआं उठता है

इन रास्तों पर भेड़ें और मवेशी चरते हैं।
अच्छी तरह से पोषित मुर्गियां और सूअर छज्जे के नीचे सोते हैं।
जबकि बगल वाले घर में शराबी बूढ़ा अपना गाना गा रहा है।
जब उसने आसपास का जायजा लिया, तो बंदर भाई ने कहा, "चलिए, स्वामी जी। यह वाकई एक अच्छा गाँव है। हम यहाँ रात बिता सकते हैं।" संज़ंग ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और कुछ ही पलों में वे मुख्य सड़क के आरंभ में पहुँच गए। एक युवक रेशमी पगड़ी, नीली जैकेट, टखनों पर बंधी पतलून और भूसे की चप्पल पहने हुए दिखाई दिया। उसके हाथ में छाता और पीठ पर एक थैला था। वह तेज़ी से सड़क पर चलते हुए देखने में आकर्षक लग रहा था। बंदर ने उसे पकड़ लिया और पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं? मुझे आपसे कुछ पूछना है—यह जगह कहाँ है?"
खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहे उस व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा, "मुझसे क्यों पूछ

रहे हो? मैं इस गांव में अकेला नहीं हूँ।"

“महोदय, क्रोधित मत होइए,” बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “दूसरों की मदद करना स्वयं की मदद करना है। मुझे उस जगह का नाम बताने में क्या हर्ज है? शायद हम आपकी मुसीबतें दूर कर सकें।” लाख कोशिश करने के बावजूद वह बंदर खुद को छुड़ा नहीं सका, जिससे वह गुस्से में उछलने-कूदने लगा।

"धिक्कार है, धिक्कार है," वह चिल्लाया, "बूढ़े आदमी से मुझे हद से ज़्यादा बदसलूकी झेलनी पड़ती है, और अब तुमसे भी सामना हो गया, गंजे। तुम भी मुझसे दुश्मनी रखते हो।"

"अगर तुम किसी काम के हो, तो मेरी पकड़ से छूट जाओ," बंदर ने कहा। "ऐसा करो, मैं तुम्हें छोड़ दूंगा।" युवक छटपटाया, लेकिन वह खुद को छुड़ा नहीं सका—ऐसा लग रहा था जैसे उसे किसी चिमटे में जकड़ लिया गया हो। गुस्से में आकर उसने अपना छाता और गठरी फेंक दी और बंदर को दोनों हाथों से पकड़कर उससे अलग होने की कोशिश करने लगा।

बंदर एक हाथ में सामान पकड़े हुए था और दूसरे हाथ से उस युवक को काबू में रखे हुए था। युवक चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, वह उसे पकड़ नहीं पा रहा था। लेकिन अब बंदर ने उसे पहले से भी ज़्यादा मज़बूती से पकड़ रखा था और वह क्रोध से उबल रहा था।

"बंदर," संजांग ने कहा, "तुम पूछ सकते हो कि कोई और आ रहा है। उसे इतनी सख्ती से क्यों पकड़े हुए हो? उसे जाने दो।"

“आप नहीं समझते, स्वामी,” बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “किसी और से पूछने में कोई फायदा नहीं होगा। मुझे उससे ही पूछना होगा कि क्या इससे कुछ लाभ होगा।” यह देखकर कि बंदर उसे जाने नहीं देगा, वह बोलने लगा।

"यह स्टुबेट काउंटी में स्थित पुराना गाओ गाँव है, और इसे यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि यहाँ लगभग सभी लोगों का उपनाम गाओ है। अब मुझे जाने दीजिए।"

"तुम्हारे पहनावे से तो लगता है कि तुम किसी लंबी यात्रा पर जा रहे हो," बंदर ने आगे कहा। "मुझे बताओ कि तुम कहाँ जा रहे हो और क्या करने वाले हो, फिर मैं तुम्हें जाने दूंगा।"

बेचारे के पास मंकी को सच बताने के अलावा कोई चारा नहीं था। "मैं स्क्वाइर गाओ के परिवार से गाओ काई हूँ। उनकी सबसे छोटी बेटी बीस साल की है और अभी तक

उसकी शादी नहीं हुई है, लेकिन तीन साल पहले एक दुष्ट आत्मा आई और उसे ले गई। वह तीन साल से हमारे साथ रह रहा है, और बूढ़ा आदमी बिल्कुल भी खुश नहीं है। वह कहता है कि एक लड़की की शादी एक दुष्ट आत्मा से होने में कोई भविष्य नहीं है। यह हमारे परिवार को बर्बाद कर रहा है, और हमारे ससुराल वाले मिलने नहीं आते। वह हमेशा से उस दुष्ट आत्मा से छुटकारा पाना चाहता था, लेकिन वह जाने से इनकार करता है। अब उसने लड़की को लगभग एक साल से पीछे वाले कमरे में बंद कर रखा है, और वह परिवार के किसी भी सदस्य को उससे मिलने नहीं देता। मेरे बूढ़े ने मुझे दो औंस चांदी दी और मुझे उस राक्षस को पकड़ने के लिए एक पुजारी को खोजने भेजा। मैं बहुत समय से इस काम में लगा हुआ हूँ, और अध्याय 18 के तीन या चार लोगों से मदद मांगी है।"

मैंने उनसे बात की, लेकिन वे सब निकम्मे भिक्षु या ताओवादियों के नाम पर फुंसी जैसे थे—उनमें से कोई भी उसे काबू नहीं कर सका। बूढ़ा आदमी मुझे बिलकुल बेवकूफ कह रहा था, मुझे यात्रा खर्च के तौर पर पाँच औंस चाँदी और दी, और कहा कि मैं एक अच्छा पुजारी ढूंढूँ जो इस राक्षस से निपट सके। फिर तुमने मुझे पकड़ लिया, हे दुष्ट सितारे, और इसी वजह से मुझे पहले से भी ज़्यादा देर हो गई। कोई आश्चर्य नहीं कि मैंने तुम पर चिल्लाया: घर पर भी मुझे धक्के लगते हैं और बाहर भी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम इतने अच्छे पहलवान होगे कि मैं तुम्हारी पकड़ से छूट नहीं पाऊँगा। अब मुझे जाने दो—मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है।

“आपकी किस्मत अच्छी है—हम यही काम करते हैं,” बंदर ने जवाब दिया। “यह तो बहुत सुविधाजनक है; आपको कहीं जाने या पैसे खर्च करने की ज़रूरत नहीं है। हम कोई निकम्मे साधु या ताओवादी नहीं हैं। हमारे पास सचमुच जादुई शक्तियां हैं और हम बुरी आत्माओं से निपटना जानते हैं। इससे हम दोनों को कुछ फायदा होगा। वापस जाकर अपने घर के मुखिया को बता दीजिए कि मेरे गुरु एक संत साधु हैं और पूर्वी सम्राट के छोटे भाई हैं, जिन्होंने उन्हें पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध से मिलने और शास्त्रों की खोज करने के लिए भेजा है। हम राक्षसों को वश में करने और दानवों को पकड़ने में माहिर हैं।”

“मुझसे झूठ मत बोलो,” युवक ने उत्तर दिया। “मैं धक्के खाने से तंग आ चुका हूँ।

अगर तुम मुझे धोखा दे रहे हो, तो तुम्हारे पास कोई विशेष शक्तियाँ नहीं हैं, और तुम उस दुष्ट को पकड़ नहीं सकते, तुम मुझे पहले से भी ज़्यादा मुसीबत में डाल दोगे।”
"मैं कसम खाता हूँ, मैं तुम्हें बेवकूफ नहीं बना रहा हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "हमें अपने घर के दरवाजे का रास्ता दिखाओ।"
युवक ने देखा कि उसके पास अपने गठरी और छाते को उठाने, मुड़ने और उन दोनों को अपने द्वार तक ले जाने के अलावा कोई चारा नहीं था। वहाँ उसने उनसे कहा, "महोदय महोदय, क्या आप थोड़ी देर के लिए यहाँ बरामदे में बैठेंगे, जब तक मैं अंदर जाकर स्वामी को बता देता हूँ?" तभी बंदर ने उसे छोड़ा, डंडा नीचे रखा, घोड़े की लगाम पकड़ी और अपने स्वामी के पास खड़ा हो गया, जो द्वार के पास बैठ गया था।
वह युवक फाटक से अंदर गया और सीधे मुख्य हॉल में पहुंचा, जहां उसकी मुलाकात स्क्वाइर गाओ से हुई।
"अरे, तुम जाहिल, किसी को ढूंढने जाने के बजाय वापस क्यों आ गए?" स्क्वाइर गाओ ने पूछा।
अपना गठ्ठा और छाता नीचे रखते हुए उस युवक ने उत्तर दिया, "मुझे आपको यह बताना है, महोदय, कि मैं गली के अंत तक पहुँचते ही दो भिक्षुओं से मिला। एक घोड़े पर सवार था और दूसरे के कंधे पर एक डंडा था। उसने मुझे पकड़ लिया और मुझे जाने नहीं दिया, और मुझसे पूछा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैंने कई बार बताने से इनकार किया, लेकिन उसने मुझे ऐसी पकड़ में जकड़ लिया था जिससे मैं छूट नहीं पा रहा था, इसलिए मुझे उसे उस मिशन के बारे में सब कुछ बताना पड़ा जो आपने मुझे सौंपा था, महोदय। जब उसने इसके बारे में सुना तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और हमारे लिए उस राक्षस को पकड़ना चाहता था।"
"वे कहाँ से आए हैं?" स्क्वाइर गाओ ने पूछा। "उसका कहना है कि उसका गुरु एक संत भिक्षु है, जो पूर्वी सम्राट का छोटा भाई है, जिसने उसे पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध से मिलने और शास्त्रों की खोज करने के लिए भेजा है।"
युवक ने उत्तर दिया।
"लेकिन भले ही वे दूर-दराज से आए भिक्षु हों, हो सकता है कि वे वास्तव में कुछ भी करने में सक्षम न हों। वे अब कहाँ हैं?"
"द्वार के बाहर प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"
बूढ़े व्यक्ति ने जल्दी से अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और उस युवक के साथ उनका

अभिवादन करने के लिए बाहर गया, और उन्हें इस प्रकार संबोधित किया:
"आदरणीय बुजुर्गों।" यह सुनकर संजांग ने झट से पीछे मुड़कर देखा और पाया कि वे उसके सामने खड़े हैं।
उस बुजुर्ग व्यक्ति ने काले रेशमी रंग की पगड़ी, सिचुआन ब्रोकेड का प्याज के रंग जैसा सफेद चोला, बिना पॉलिश किए चावल के रंग के बछड़े की खाल के जूते और काले रेशम की बेल्ट पहन रखी थी।
वह आगे आया और मुस्कुराते हुए बोला, "प्रशंसा, आदरणीय बुजुर्गों," और उसने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। संजांग ने भी प्रणाम किया, लेकिन बंदर वहीं स्थिर खड़ा रहा। भाई बंदर का बदसूरत चेहरा देखकर बूढ़े ने उसे प्रणाम न करने का फैसला किया।
अध्याय 18
265
पश्चिम की यात्रा
"तुम मुझे प्रणाम क्यों नहीं करोगे?" बंदर ने पूछा, जिस पर बूढ़ा आदमी थोड़ा डरकर उस युवक से बोला, "तुम मेरी जान ले लोगे, छोटे बदमाश। हमारे घर में पहले से ही एक भयानक राक्षस दामाद है जिससे हम छुटकारा नहीं पा सकते, तो फिर तुमने इस गर्जन देवता को यहाँ लाकर हमें बर्बाद करने की क्या ज़रूरत थी?"
"गाओ, बूढ़े, तुम इतने सालों से कुछ नहीं कर रहे—तुम्हें अभी तक अक्ल नहीं आई। लोगों को उनके चेहरे से आंकना बिलकुल गलत है। मैं भले ही सुंदर न दिखूं, पर बहुत चालाक हूं। मैं तुम्हारे लिए उस दुष्ट आत्मा को पकड़ लूंगी, उस राक्षस को छुड़ा लूंगी, तुम्हारे दामाद को पकड़ लूंगी और तुम्हारी बेटी को तुम्हें वापस दिला दूंगी। मैं तुम्हारा भला कर रही हूं, इसलिए मेरे रूप-रंग की चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।" बूढ़ा आदमी, जो अब डर से कांप रहा था, खुद को संभालकर अंदर आने को कहा। बंदर ने घोड़े की लगाम पकड़ी, युवक को सामान उठाने को कहा और संजांग के साथ अंदर चला गया। अपने हमेशा के बेपरवाह अंदाज में उसने घोड़े को एक खुले मंडप के खंभे से बांध दिया, एक चमकदार पॉलिश की हुई कुर्सी खींची और अपने मालिक को बैठने को कहा। फिर वह अपने लिए भी एक कुर्सी ले आया और उसके बगल में बैठ गया।
"युवा आदरणीय बुजुर्ग ने तो पहले ही खुद को घर जैसा सहज महसूस कर लिया है," स्क्वाइर गाओ ने टिप्पणी की।
"अगर आप छह महीने तक हमारा मनोरंजन करें तो मुझे यहां घर जैसा महसूस होगा,"

भाई बंदर ने जवाब दिया।
जब वे सब बैठ गए तो बूढ़े आदमी ने कहा, "लड़के ने मुझे अभी थोड़ी देर पहले बताया था कि तुम पूरब से आए हो।"
“जी हां,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “राज दरबार ने मुझे पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र मांगने के लिए भेजा है। चूंकि हम अपनी यात्रा के दौरान इस मार्ग से गुजर रहे हैं, इसलिए हम कल सुबह अपनी यात्रा जारी रखने से पहले आज रात यहीं ठहरना चाहेंगे।”
"अगर आप दोनों सज्जन सिर्फ यहां रात बिताना चाहते हैं, तो राक्षसों को पकड़ने के बारे में इतनी बातें क्यों कर रहे हैं?"
"चूंकि हम आज रात यहीं रुकने वाले हैं," बंदर ने कहा, "हमने सोचा कि क्यों न कुछ राक्षसों को पकड़ लिया जाए? क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपके घर में कितने राक्षस हैं?"
"हे भगवान!" बूढ़े आदमी ने हैरानी से कहा, "आपको कितने चाहिए? हमारे पास तो बस यह दामाद है जो किसी राक्षस जैसा है, और इसने हमारी जिंदगी बर्बाद कर दी है।"
"मुझे इस राक्षस के बारे में शुरू से सब कुछ बताओ," बंदर ने कहा। "अगर मुझे उसे तुम्हारे लिए पकड़ना है, तो मुझे उसकी जादुई शक्तियों के बारे में जानना ही होगा।"
इस गाँव में पहले कभी भूत-प्रेतों, राक्षसों या बुरी आत्माओं का कोई प्रकोप नहीं हुआ था। मेरा दुर्भाग्य था कि मेरा कोई बेटा नहीं था, और तीन बेटियाँ थीं, जिनमें सबसे बड़ी का नाम सुगंधित ऑर्किड, दूसरी का जेड ऑर्किड और तीसरी का नीला ऑर्किड है। बाकी दोनों की सगाई गाँव के ही लड़कों से हो गई थी और उनकी शादी हो चुकी है। मैं चाहती थी कि तीसरी बेटी की शादी ऐसे लड़के से हो जो यहीं रहकर बुढ़ापे में मेरा सहारा बने, घर की देखभाल करे और घर के काम करे। लगभग तीन साल पहले एक सुंदर युवक आया, जिसने बताया कि उसका नाम झू है और वह आशीर्वाद पर्वत से आया है। उसने मुझे बताया कि उसके माता-पिता या भाई नहीं हैं और वह शादी करके अपने ससुराल वालों के साथ रहना चाहता है। क्योंकि उस पर कोई पारिवारिक ज़िम्मेदारी नहीं थी, इसलिए मैंने अपनी बेटी का हाथ उसे दे दिया, मैं कितनी नासमझ थी! और जब से वह हमारे परिवार का सदस्य बना, उसने बहुत मेहनत की। वह बिना बैल या औजारों के खेत जोतता था; उसे न तो दरांती की ज़रूरत पड़ती थी और न ही

लाठी की। फसल काटने के लिए। दिन बीतते गए, उसमें कोई खराबी नहीं आई, सिवाय इसके कि वह अलग दिखने लगा था।

"कैसे?" बंदर ने पूछा।

"शुरू में वह एक मोटा-ताज़ा, सांवला आदमी था, लेकिन बाद में वह लंबी नाक और बड़े कानों वाला एक मूर्ख बन गया, जिसके सिर के पीछे से घने काले बाल लटक रहे थे और उसका शरीर बड़ा और मोटा था। उसका चेहरा बिल्कुल सूअर जैसा है। उसकी भूख भी बहुत ज़्यादा है। उसे हर मुख्य भोजन में कई बुशेल अनाज चाहिए होता है, और अध्याय 18 के लिए सौ से ज़्यादा तवे पर पके केक चाहिए होते हैं।"

नाश्ता। सौभाग्य से वह शाकाहारी है। अगर वह मांस और शराब खाता तो छह महीने में ही हमें बर्बाद कर देता।

"उसे इतना ज्यादा खाना पड़ता है क्योंकि वह बहुत मेहनत करता है," संजांग ने टिप्पणी की।

“लेकिन मुख्य बात यह नहीं है,” स्क्वाइर गाओ ने आगे कहा। “वह हवा भी चला सकता है, बादल और कोहरा ला-ले जा सकता है, और कंकड़-पत्थर उड़ा सकता है। उसने हमारे पड़ोसियों को डरा दिया है, जो अब यहाँ रहना सुरक्षित नहीं समझते! उसने मेरी बेटी को पीछे वाले भवन में बंद कर दिया है, और छह महीने से किसी ने उसे नहीं देखा है। हमें यह भी नहीं पता कि वह ज़िंदा है या नहीं। इसी से हमें पता चलता है कि वह एक दुष्ट राक्षस है, और इसीलिए हम चाहते हैं कि कोई पुजारी आकर उसे भगा दे।”

"कोई दिक्कत नहीं है," बंदर ने जवाब दिया। "चिंता मत करो, दोस्त, मैं गारंटी देता हूँ कि मैं उसे आज रात पकड़ लूँगा, उससे तुम्हारी बेटी को तलाक देने का दस्तावेज़ लिखवा लूँगा और उसे तुम्हारे पास वापस ले आऊँगा। इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है?"

"क्योंकि मुझे लगा कि उसे अपनी बेटी देने में कोई हर्ज नहीं है, इसलिए मैंने अपनी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिला दी और अपने सभी रिश्तेदारों से नाता तोड़ लिया," स्क्वाइर गाओ ने जवाब दिया। "अगर आप उसे पकड़ सकते हैं, तो तलाक के दस्तावेज़ की क्या ज़रूरत है? कृपया उसे मेरे लिए खत्म कर दीजिए।"

"आराम से, आराम से," बंदर ने कहा। "मैं उसे आज रात पकड़ लूंगा।"
बूढ़ा आदमी बहुत खुश हुआ। उसने मेज और कुर्सियाँ लगवाकर उन्हें अच्छी तरह साफ करवाया और शाकाहारी भोजन मंगवाया। भोजन समाप्त होने और सोने जाने से पहले बूढ़े ने पूछा, "आपको कौन से हथियार और कितने आदमियों की आवश्यकता होगी? मैं समय रहते सब कुछ तैयार करवा लूँगा।"
"मेरे पास हथियार है," बंदर ने जवाब दिया।
“तुम दोनों सज्जनों के पास तो बस मठवासी लाठियाँ हैं—तुम उनसे उस राक्षस को कैसे मारोगे?” बूढ़े ने पूछा। बंदर ने अपने कान से कढ़ाई की सुई निकाली, उसे उंगलियों के बीच पकड़ा और हवा में झटक दिया। वह चावल के कटोरे जितनी मोटी सोने की पट्टी वाली लाठी में बदल गई। बंदर ने सरदार गाओ की ओर मुड़कर पूछा, “यहाँ तुम्हारे पास जो हथियार हैं, उनके मुकाबले यह लाठी कैसी है? क्या इससे राक्षस को मारा जा सकेगा?”
"तो तुम्हारे पास हथियार तो है," बूढ़े आदमी ने आगे कहा, "लेकिन आदमियों का क्या?"
“मैं यह काम अकेले कर सकता हूँ,” बंदर ने उत्तर दिया, “हालाँकि मैं चाहूँगा कि कुछ सम्मानित बुजुर्ग सज्जन आकर मेरे स्वामी का साथ दें जब मैं उनसे दूर रहूँ। जब मैं राक्षस को पकड़ लूँगा, तो वे उसके कबूलनामे के गवाह बन सकते हैं, इससे पहले कि मैं उसे आपके सामने मार डालूँ।” इस पर बूढ़े व्यक्ति ने अपने नौकरों को कुछ पुराने मित्रों को बुलाने के लिए भेजा, और थोड़ी ही देर में वे सभी आ गए। परिचय के बाद बंदर ने कहा, “स्वामी, आप यहाँ बैठिए और चिंता मत कीजिए। मैं जा रहा हूँ।”
बंदर को देखिए, वह अपने हाथ में लाठी लिए बूढ़े आदमी को पकड़ता है और कहता है, "मुझे पीछे वाली इमारत में ले चलो। मैं देखना चाहता हूँ कि यह दुष्ट आत्मा कहाँ रहती है।" सरदार गाओ उसे पीछे वाली इमारत के दरवाजे तक ले गया, और बंदर ने उससे चाबी तुरंत लाने को कहा। बूढ़े आदमी ने जवाब दिया, "देखिए, अगर चाबी से काम बन जाता, तो मुझे आपकी मदद की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।"
"क्या तुम्हें अपनी उम्र में यह नहीं समझ आता कि कोई मज़ाक कर रहा है?" बंदर ने पूछा। "मैं तो बस मज़ाक कर रहा था। तुम्हें मेरी बात को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए था।" उसने ताला छूकर देखा तो उसमें पिघला हुआ तांबा भरा हुआ था, इसलिए उसने अपने डंडे से उस पर ज़ोरदार प्रहार किया और उसे चकनाचूर कर दिया। दरवाज़े

खोलकर उसने देखा कि अंदर घोर अंधेरा था।
"अपनी बेटी का नाम पुकारो, ओल्ड गाओ, पता करो कि वह यहाँ है या नहीं," उसने कहा।
बूढ़े ने हिम्मत जुटाकर उसका नाम पुकारा, और बेटी ने अपने पिता की आवाज़ पहचानकर धीमी आवाज़ में कहा, "पिताजी, मैं यहीं हूँ।" अपनी सुनहरी पुतलियों को घुमाते हुए बंदर ने अंधेरे में झाँका और अध्याय 18 पढ़ा।

उसे ध्यान से देखो। क्या तुम जानते हो कि वह कैसी थी?
उसके बादल जैसे बाल उलझे हुए और बिखरे हुए थे।
उसका चेहरा मैला और बिना धुला हुआ था।
उसका पवित्र हृदय पहले की तरह ही शुद्ध था।
लेकिन उसकी सुंदरता चकनाचूर हो चुकी थी।
उसके गुलाबी होंठों में न तो खून था और न ही जीवन।
और उसके अंग टेढ़े-मेढ़े और मुड़े हुए थे।
उसके माथे पर उदासी की लकीरें थीं।
उसकी भौहें पीली पड़ गई थीं;
कमजोर और भयभीत,
केवल फुसफुसाने की हिम्मत।
जब वह बाहर आई और उसने अपने पिता को देखा, तो उसने उन्हें पकड़ लिया, अपना हाथ उनके सिर के चारों ओर रखा और रोने लगी।
"रो मत," बंदर ने कहा, "रो मत। राक्षस कहाँ चला गया?"
मुझे नहीं पता। आजकल वह सुबह तड़के ही निकल जाता है और आधी रात को ही लौटता है।
आसमान में इतने बादल और धुंध छाई रहती है कि मुझे पता ही नहीं चलता कि वो कहाँ जाता है। उसे पता है कि मेरे पिता उसका भूत भगाना चाहते हैं, इसलिए वो हमेशा सतर्क रहता है। इसीलिए वो देर से लौटता है और सुबह होते ही निकलता है।
“ज़रूर आएगा,” बंदर ने कहा और बोला, “बूढ़े, लड़की को सामने वाली इमारत में ले चलो। तुम दोनों आराम से देर तक बातें कर सकते हो; मैं यहाँ राक्षस का इंतज़ार

करूँगा। अगर वो न आए तो हैरान मत होना; लेकिन अगर आया तो मैं उसे तुम्हारे लिए मार डालूँगा।" बूढ़ा आदमी खुशी-खुशी अपनी बेटी को सामने वाली इमारत में ले गया।

फिर बंदर ने अपनी कुछ जादुई शक्तियों का प्रयोग करते हुए अपने शरीर को हिलाकर खुद को उस लड़की के समान रूप में बदल लिया। फिर वह उस दुष्ट आत्मा का इंतजार करने के लिए कमरे में बैठ गया। कुछ ही देर में एक अद्भुत हवा चली जिससे पत्थर और धूल उड़ने लगे।

पहले तो हल्की हवा चल रही थी,

वह धीरे-धीरे एक भयंकर आंधी में बदल गया।

जब हल्की हवा चलती थी, तो वह आकाश और पृथ्वी को भर देती थी;

जब यह बढ़ा, तो कोई भी चीज इसका सामना नहीं कर सकी।

अध्याय 18

268

पश्चिम की यात्रा

इसने फूलों को नोच डाला और विलो के पेड़ों को भांग की डंडियों की तरह तोड़ दिया, जंगलों को ऐसे उखाड़ दिया मानो वह सब्जियां चुन रहा हो।

इसने नदियों और समुद्रों में उथल-पुथल मचा दी, जिससे देवता और शैतान क्रोधित हो गए, और स्वर्ग और पृथ्वी ने भय से देखते हुए चट्टानों और पहाड़ों को चीर दिया।

फूल खाने वाले हिरण रास्ता भटक गए।

फल तोड़ने वाले बंदरों को पता नहीं था कि वे कहाँ हैं।

सात मंजिला लोहे के शिवालय बुद्ध के सिर पर गिर पड़े।

मंदिर में लगी झालरें रत्नजड़ित चंदोवे पर गिर पड़ीं।

सोने की किरणें और जेड के खंभे अपनी जड़ों से हिल गए, छत से टाइलें अबाबील पक्षियों की तरह उड़ने लगीं।

जैसे ही नाविक ने अपना चप्पू उठाया, उसने एक प्रतिज्ञा की।

गाड़ी चलाते हुए उसने जल्दी से एक सुअर और एक बकरी की बलि दी।

नगर क्षेत्र के संरक्षक देवता ने अपना मंदिर त्याग दिया।

चारों समुद्रों के ड्रैगन राजाओं ने स्वर्ग को प्रणाम किया।

यक्ष राक्षसों की नावें तट पर आकर टूट गईं।

और चीन की महान दीवार का आधा हिस्सा उड़ गया।
जैसे ही यह तेज़ हवा गुज़री, एक दुष्ट आत्मा हवा में प्रकट हुई। उसका काला चेहरा, बिखरे बाल, लंबी नाक और बड़े कान देखकर वह सचमुच बदसूरत लग रहा था। उसने काले और नीले रंग के बीच का सूती कुर्ता पहना हुआ था और कमर पर डिज़ाइनदार सूती कपड़ा बंधा था। "तो ये है वो," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा और बिना उसे नमस्कार किए या कुछ पूछे, वह बिस्तर पर लेट गया, ज़ोर-ज़ोर से साँस लेते हुए बीमार होने का नाटक करने लगा। यह न जानते हुए कि ये कौन है, राक्षस सीधे अंदर आया, उसे बाहों में भर लिया और उसे चूमने लगा।
बंदर मन ही मन हँस पड़ा, "तो ये सच में मुझसे संबंध बनाना चाहता है।" फिर उसने राक्षस की लंबी नाक के नीचे हाथ डालकर उसे असंतुलित कर दिया। राक्षस बिस्तर से गिर पड़ा।
अध्याय 18
269
पश्चिम की यात्रा
जैसे ही राक्षस उठा, वह बिस्तर के किनारे पर झुक गया और बोला, "प्रिय, आज तुम मुझसे इतनी नाराज़ क्यों हो? क्या इसलिए कि मुझे देर हो गई है?"
"मैं गुस्सा नहीं हूँ," बंदर ने जवाब दिया, "बिल्कुल भी गुस्सा नहीं हूँ।"
"अगर तुम मुझसे नाराज़ नहीं हो, तो तुमने मुझे गिराया क्यों?"
"तुम्हें थोड़ा संभलकर रहना चाहिए था और मुझे गले लगाने और चूमने की कोशिश नहीं करनी चाहिए थी। आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। अगर मैं ठीक होती तो दरवाज़े पर तुम्हारा इंतज़ार कर रही होती। अपने कपड़े उतारो और बिस्तर पर आ जाओ।" उसे पता ही नहीं था कि वह क्या करने वाला है, राक्षस ने अपने कपड़े उतार दिए। बंदर बिस्तर से कूदकर बर्तन पर बैठ गया, जबकि राक्षस वापस बिस्तर पर चला गया और लड़की को ढूंढने के लिए इधर-उधर टटोलने लगा।
"तुम कहाँ चली गई थी, प्रिये?" उसने पूछा। "अपने कपड़े उतारो और बिस्तर पर आ जाओ।"
“सो जाओ,” बंदर ने जवाब दिया, “मैं शौच करने जा रहा हूँ।” राक्षस ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। बंदर ने आह भरी और कहा,
"कितनी बुरी किस्मत है।"

"तुम किस बात से इतनी परेशान हो?" राक्षस ने पूछा। "तुम्हारा 'बदकिस्मती' से क्या मतलब है? तुमसे शादी करने के बाद मैंने कुछ खाना खाया और चाय पी होगी, लेकिन मैं खाली भी नहीं बैठा रहा। मैंने तुम्हारे परिवार के लिए झाड़ू लगाई है और गड्ढे खोदे हैं, ईंटें और टाइलें हटाई हैं, तुम्हारे लिए दीवारें बनाई हैं, तुम्हारे खेतों की जुताई और निराई की है, तुम्हारा गेहूँ बोया है और तुम्हारे धान की रोपाई की है। मैंने तुम्हारे परिवार की दौलत बनाई है। आजकल तुम रेशमी कपड़े पहनती हो और बालों में सोने की पिन लगाती हो। तुम्हारे पास चारों मौसमों में फल और फूल होते हैं, और साल भर खाने के लिए सब्जियां होती हैं। लेकिन इसके बावजूद तुम संतुष्ट नहीं हो, ऐसे ही बड़बड़ाती और अपनी 'बदकिस्मती' की शिकायत करती रहती हो।"

"मेरा मतलब वो नहीं था," बंदर ने जवाब दिया। "आज मैं दीवार के उस पार से अपने माता-पिता की आवाजें सुन सकता था। वे ईंटें और टाइलें तोड़ रहे थे और मुझे गाली देने और पीटने का नाटक कर रहे थे।"

"वे ऐसा क्यों करना चाहेंगे?" राक्षस ने पूछा।

उन्होंने कहा कि जब से हमारी शादी हुई है और तुम उनके दामाद बन गए हो, तब से सारी इज्जत मिट्टी में मिल गई है। वे तुम्हारे जैसे बदसूरत आदमी के आसपास रहने और तुम्हारे किसी देवर या रिश्तेदार से कभी न मिलने की शिकायत कर रहे थे। इसके अलावा, जब भी तुम आते-जाते हो, उस हवा और बादलों के कारण, वे सोचते हैं कि आखिर तुम हो कौन और तुम्हारा नाम क्या है। तुम उनकी इज्जत खराब कर रहे हो और परिवार को बदनाम कर रहे हो। इसीलिए वे इतने गुस्से में थे कि उन्होंने मुझे पीटने और गाली देने का नाटक किया।

“मैं देखने में थोड़ा भद्दा हो सकता हूँ,” राक्षस ने कहा, “लेकिन अगर आप मुझे सुंदर बनाना चाहते हैं तो मैं इसे आसानी से ठीक कर सकता हूँ। जब मैं पहली बार आया था तो मैंने आपके पिता से बात की थी, और उन्होंने अपनी मर्ज़ी से शादी के लिए सहमति दी थी। अब वो इस तरह क्यों बोल रहे हैं?” मेरा घर माउंट ऑफ ब्लेसिंग पर स्थित क्लाउड पाथवे गुफा में है। मेरा उपनाम झू है, जो मेरे चेहरे की तरह ही सूअर जैसा है—और मेरा असली नाम झू गैंगली है, यानी लोहे के बालों वाला सूअर।

अगर वे आपसे दोबारा पूछें तो आप उन्हें यह सब बता देना।

"वह तो एक ईमानदार राक्षस है," बंदर ने प्रसन्नता से सोचा। "अगर उसने बिना यातना झेले यह सब बता दिया तो।"

अब मुझे पता है कि वह कौन है और कहां से है, मुझे यकीन है कि मैं उसे पकड़ लूंगा।"
"उसने एक पुजारी को बुलवाया है ताकि वह आकर तुम्हें पकड़ ले," बंदर ने जोर से कहा।
"सो जाओ, सो जाओ और उसे भूल जाओ," राक्षस हँसते हुए बोला। "मैं हल की तरह कई रूप बदल सकता हूँ, और मेरे पास नौ दाँतों वाला रेक भी है, तो मुझे पुजारियों, भिक्षुओं या ताओवादियों से क्या डर है? भले ही तुम्हारा बूढ़ा आदमी इतना पवित्र हो कि वह दानव-नाशक कुलपति को बुला ले..." (अध्याय 18)

नौवें स्वर्ग से आया वह मेरा एक पुराना दोस्त है और वह मुझे नुकसान पहुंचाने के लिए कुछ भी नहीं करेगा।"
"मेरे पिता ने कहा कि उन्होंने सूर्य नाम के उस व्यक्ति से, जो स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि हैं और जिन्होंने लगभग पांच सौ साल पहले स्वर्ग महल में इतना हंगामा मचाया था, तुम्हें पकड़ने के लिए कहा था।"
यह नाम सुनकर राक्षस थोड़ा चौंक गया और बोला, "तो फिर मैं चलता हूँ। हमारा काम खत्म हो गया।"
"तुम ऐसे ही नहीं जा सकते," मंकी ने कहा।
“तुम्हें पता नहीं होगा,” राक्षस ने उत्तर दिया, “लेकिन घोड़ों का वह रक्षक जिसने स्वर्ग महल में इतना हंगामा मचाया था, वह वाकई एक कुशल योद्धा है। शायद मैं उसे हरा न पाऊं, और इससे मेरी प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी।” ये कहते हुए उसने अपने कपड़े पहने, दरवाजा खोला और जैसे ही वह बाहर जाने लगा, बंदर ने उसे पकड़ लिया, अपना चेहरा रगड़ा और अपने असली रूप में वापस आ गया।
“तुम कहाँ जा रहे हो, मेरे प्यारे राक्षस?” वह दहाड़ा और बोला, “देखो मैं कौन हूँ।” राक्षस मुड़ा और उसने बंदर के उभरे हुए दाँत, पिचका हुआ चेहरा, सुनहरी पुतलियों वाली धधकती आँखें, गंजा सिर और बालों वाला चेहरा देखा। इस साक्षात गर्जन देवता को देखते ही उसके हाथ सुन्न पड़ गए और पैर लकवाग्रस्त हो गए; फिर एक ज़ोरदार चीर-फाड़ की आवाज़ के साथ वह अपने कपड़े फाड़ते हुए आज़ाद हुआ और एक बवंडर के रूप में भाग गया।

बंदर उसके पीछे दौड़ा, अपना लोहे का डंडा उठाया और हवा पर वार किया। तभी वह राक्षस दस हज़ार चिंगारियों में बदल गया और सीधे अपने पहाड़ पर लौट गया। बंदर अपने बादल पर सवार होकर उसके पीछे चिल्लाते हुए गया, "तुम्हें क्या लगता है तुम कहाँ जा रहे हो? अगर तुम स्वर्ग जाओगे, तो मैं तुम्हारा पीछा सप्तर्षि और बैल महल तक करूँगा, और अगर तुम धरती में जाओगे, तो मैं तुम्हारा पीछा अन्याय से मारे गए लोगों के नरक तक करूँगा।"

हे भगवान! अगर आपको नहीं पता कि उसने राक्षस का कितनी दूर तक पीछा किया, या अंत में कौन जीता, तो अगले अध्याय में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।

अध्याय 19

क्लाउड पाथवे गुफा में सन वुकॉन्ग ने झू बाजी पर विजय प्राप्त की।

पैगोडा पर्वत पर ज़ुआनज़ैंग को हृदय सूत्र प्राप्त हुआ

दैत्य चिंगारियों की धारा बनकर आगे बढ़ा, उसके पीछे रंगीन बादल पर सवार महान ऋषि थे। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहा था, बंदर ने अपने सामने एक विशाल पर्वत को प्रकट होते देखा। वहाँ पहुँचकर दैत्य ने चिंगारियों को पुनः समेटकर स्वयं को फिर से संगठित किया, एक गुफा में घुस गया और हाथ में नौ नोकों वाला रेक लेकर युद्ध करने के लिए बाहर आया।

"अभागे," बंदर चिल्लाया, "तू कहाँ से आया है? तू मेरा नाम कैसे जानता है, तू दुष्ट राक्षस? तेरे पास कौन सी शक्तियाँ हैं? मुझे सच-सच बता, मैं तेरा जीवन बख्श दूँगा।"

“तुम्हें नहीं पता मैं क्या कर सकता हूँ,” राक्षस ने उत्तर दिया। “थोड़ा और पास आओ और स्थिर खड़े रहो जब तक मैं तुम्हें बताता हूँ: मैं जन्म से ही मूर्ख हूँ।”

एक आलसी और कामचोर।

मैंने कभी अपनी प्रकृति का पोषण नहीं किया और न ही सत्य का विकास किया।

पश्चिम की यात्रा

लेकिन मैंने अपना समय आदिम अज्ञानता में व्यतीत किया।

फिर संयोगवश मेरी मुलाकात एक सच्चे अमर व्यक्ति से हुई,

जो मेरे साथ बैठ गया और मौसम के बारे में बातचीत करने लगा,

मुझे सुधार करने की सलाह दी गई, न कि मनुष्यों के बीच डूबने की।

क्योंकि किसी की जान लेना एक जघन्य पाप था।
एक दिन, जब मेरे जीवन का अंत हो गया,
आगे आने वाली सजाओं पर पछताने में बहुत देर हो जाएगी।
उनके शब्दों ने मुझे सुधार की राह तलाशने के लिए प्रेरित किया।
और मेरा दिल चमत्कारी मंत्रों के लिए तरस रहा था।
मुझे सौभाग्य से उन्हें अपना शिक्षक पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ;
उन्होंने मुझे स्वर्ग और पृथ्वी के द्वार दिखाए।
उन्होंने मुझे नौ परिवर्तन और सिंदूर की महान वापसी सिखाई, क्योंकि हम बिना आराम किए दिन-रात काम करते थे।
मेरे दिमाग में यह बात मिट्टी के गोले वाले महल तक पहुंच गई थी।
और मेरे पैरों में बहते हुए झरने तक।
शरीर में प्रवाहित होने वाला जादुई तरल मेरी जीभ के नीचे स्थित पुष्पकुंड तक पहुँच गया, और मेरे पेट में स्थित सिंदूरी क्षेत्र को अतिरिक्त गर्माहट मिली।
शिशु (सीसा) और लड़की (पारा) का विवाह हो गया।
और आपस में मिलकर वे सूर्य और चंद्रमा में विभाजित हो गए।
ड्रैगन और टाइगर में सामंजस्य स्थापित हो गया था।
पवित्र कछुए ने सुनहरे कौवे का खून पिया।
तीनों फूल ऊपर एकत्रित हुए और जड़ की ओर लौट गए।
पांचों सार तत्व मूल की ओर उन्मुख होकर सभी दिशाओं में प्रवाहित हुए।
जब उनका काम पूरा हो गया, तब मैं उड़ सकता था।
और स्वर्ग के अमर देवता दो-दो करके मेरा अभिवादन करने आए।
मेरे पैरों के नीचे रंगीन बादल उग आए,
अध्याय 19
272
पश्चिम की यात्रा
जब मैं हल्के और मजबूत शरीर के साथ स्वर्गिक महल के द्वार की ओर बढ़ा।
जेड सम्राट ने सभी अमर देवताओं के लिए एक भोज का आयोजन किया।
और सभी अपनी-अपनी ग्रेड के अनुसार कतार में खड़े हो गए।
मुझे आकाशगंगा का फील्ड मार्शल बनाया गया था।

आकाश में स्थित उस नदी पर सभी नाविकों को आदेश देते हुए।
जब महारानी माँ ने आड़ू की दावत दी,
उन्होंने जेड पूल में कई मेहमानों को आमंत्रित किया।
उस दिन नशे के कारण मेरा दिमाग सुन्न हो गया था,
मैं लड़खड़ाते हुए इधर-उधर भटकने लगा।
जब मैं नशे में चूर होकर गर्व से कूल ब्रॉड पैलेस में घुस गया
मेरा स्वागत एक अत्यंत सुंदर अमर कन्या ने किया।
उसकी सुंदरता देखकर मेरा मन मोहित हो गया।
और मैं अपनी पुरानी नश्वर वासनाओं को दबा नहीं सका।
पद और गरिमा का सारा बोध खो देना,
मैंने उस खूबसूरत लड़की को पकड़ा और उससे मेरे साथ सोने के लिए कहा।
उसने तीन बार, चार बार मना किया।
वह अपनी परेशानी को छिपाने और बचने की कोशिश कर रही थी।
मेरी वासना में बहुत साहस था, और मैं गरज की तरह दहाड़ा।
मानो स्वर्ग के द्वार ही हिल रहे हों।
चमत्कारी निरीक्षण अधिकारी ने जेड सम्राट को सूचना दी, और उस दिन से मेरा अभिशाप तय हो गया।
कूल ब्रॉड पैलेस चारों ओर से घिरा हुआ था।
मैं न तो आगे बढ़ सकता था और न ही पीछे हट सकता था: भागना असंभव था।
फिर मुझे देवताओं ने गिरफ्तार कर लिया।
लेकिन चूंकि मैं अभी भी नशे में था, इसलिए मुझे डर नहीं लगा।
मुझे चमत्कारी धुंध के हॉल में जेड सम्राट से मिलने के लिए ले जाया गया (अध्याय 19)

और पूछताछ के बाद, उसे मौत की सजा सुनाई गई।
सौभाग्य से महान श्वेत ग्रह
आगे बढ़कर, सिर झुकाकर, उन्होंने विनती की।
मेरी सजा को दो हजार कोड़ों की सजा में बदल दिया गया, जिससे मेरा मांस छिद

गया और मेरी हड्डियां लगभग चकनाचूर हो गईं।
मुझे जीवित रिहा कर दिया गया और स्वर्ग से निष्कासित कर दिया गया।
इसलिए मैंने माउंट ऑफ ब्लेसिंग पर रहकर जीविका कमाने की कोशिश की।
मेरे पापों के कारण मुझे गलत गर्भ से पुनर्जन्म लेना पड़ा।
और अब मुझे लोहे के बालों वाला सुअर के नाम से जाना जाता है।"
यह सुनकर बंदर भाई ने कहा, "तो तुम मार्शल तियान पेंग के सांसारिक पुनर्जन्म हो। इसीलिए तो तुम मेरा नाम जानते हो।"
"हा," राक्षस ने गुस्से से गुर्राते हुए कहा। "घोड़ों के रक्षक, तुम्हारे इस पागलपन भरे विद्रोह ने हममें से बहुतों के लिए मुसीबत खड़ी कर दी। क्या तुम फिर से यहाँ अपनी धौंस जमाने आए हो? मैं तुम्हें कुछ तमीज़ सिखाऊँगा। ये लो!"
इसके बाद बंदर उसे बख्शने के मूड में नहीं था, और उसने अपनी लाठी से राक्षस के सिर पर वार किया। उन दोनों ने उस पहाड़ी पर आधी रात को एक शानदार लड़ाई लड़ी: बंदर की सुनहरी पुतलियाँ बिजली की तरह चमक उठीं;
राक्षस की धधकती आंखों से चांदी जैसी चमक निकली।
एक रंगीन धुंध निकली,
दूसरे ने लाल बादल उगले।
लाल बादलों ने रात को रोशन कर दिया;
रंग-बिरंगी धुंध ने अंधेरे को रोशन कर दिया।
सोने की पट्टी वाली लाठी,
नौ दांतों वाला रेक,
और दो शानदार नायक।
एक महान ऋषि मनुष्यों के बीच आए,
दूसरा एक ऐसा सेनापति था जिसे स्वर्ग से निष्कासित कर दिया गया था।
अध्याय 19
274
पश्चिम की यात्रा
एक व्यक्ति अपने सम्मान से वंचित हो गया था और एक राक्षस बन गया था।
दूसरे व्यक्ति की जान तब बच गई जब उसने एक पादरी के यहाँ सेवा करना शुरू किया।

जब रेक ने हमला किया, तो ऐसा लगा जैसे कोई अजगर अपने पंजे फैला रहा हो; लाठी ने उसे उतनी ही फुर्ती से रोका जैसे कोई फीनिक्स फूलों के बीच से उड़ रहा हो।
सुअर ने कहा,
"मेरी शादी को बर्बाद करके तुम्हारा अपराध उतना ही बड़ा है जितना कि पितृहत्या।"
बंदर ने उत्तर दिया,
"उस युवती के साथ बलात्कार करने के लिए तुम्हें गिरफ्तार किया जाना चाहिए।"
इन आदान-प्रदानों के बीच
और बेतहाशा चीखें,
लाठी और रेक आपस में टकरा गए।
वे सुबह होने तक एक दूसरे से लड़ते रहे।
और उस राक्षस की भुजाएँ पूरी तरह से थक चुकी थीं।
रात के दूसरे पहर से लेकर पूरब में उजाला होने तक उनकी लड़ाई जारी रही। राक्षस अपने शत्रु का सामना करने में असमर्थ होकर भाग निकला और फिर से एक बवंडर में परिवर्तित हो गया। वह सीधे अपनी गुफा में गया, द्वार बंद कर लिए और बाहर नहीं निकला। बंदर ने गुफा के बाहर एक पत्थर की शिला देखी जिस पर 'बादल मार्ग गुफा' लिखा हुआ था। राक्षस फिर बाहर नहीं आया और अब दिन का उजाला हो चुका था, इसलिए बंदर ने सोचा कि शायद उसका स्वामी उसका इंतजार कर रहा हो, तो बेहतर होगा कि वह उससे मिलने वापस चला जाए। वह बाद में राक्षस को पकड़ने के लिए वापस आ सकता है। उसने अपने बादल को एक लात मारी और पलक झपकते ही पुराने गाओ गाँव में वापस पहुँच गया।
इस बीच, संज़ंग पूरी रात बड़ों के साथ प्राचीन और आधुनिक विषयों पर बातें करता रहा और उसे ज़रा भी नींद नहीं आई। जब उसे लगने लगा कि भाई बंदर वापस नहीं आएगा, तभी बंदर आँगन में प्रकट हुआ, अपनी लोहे की गदा एक तरफ रखी, अपने कपड़े समेटे और मुख्य कमरे में चला गया।
अध्याय 19

"गुरुजी, मैं यहाँ हूँ," उसने घोषणा की, जिससे बूढ़े लोग इतने आश्चर्यचकित हो गए कि वे सभी घुटनों के बल गिर पड़े और उसके प्रयासों के लिए उसे धन्यवाद दिया।

"बंदर, तुम पूरी रात बाहर रहे हो," संजांग ने कहा। "तुम्हें वह बुरी आत्मा कहाँ से लगी?"

“वह कोई साधारण भूत नहीं है, स्वामी,” बंदर ने उत्तर दिया, “और न ही वह कोई साधारण जंगली जानवर है जो राक्षस बन गया हो। वह मार्शल तियान पेंग है, जिसे नश्वर लोक में निर्वासित कर दिया गया था। गलत गर्भ में जन्म लेने के कारण उसका चेहरा जंगली सूअर जैसा है, लेकिन उसने अपना मूल दिव्य स्वरूप बरकरार रखा है। वह कहता है कि उसका नाम उसके रूप के कारण पड़ा है और उसे झू गंगली, यानी लोहे के बालों वाला सूअर कहा जाता है। मैं उसे पीछे वाली इमारत में मारने जा रहा था, लेकिन वह एक तूफान में बदल गया और भाग गया। जब मैंने उस तूफान पर प्रहार किया, तो वह चिंगारियों में बदल गया, सीधे अपनी गुफा में वापस चला गया, नौ नोकों वाला रेक लेकर बाहर आया और पूरी रात मुझसे लड़ता रहा। भोर होते ही वह डर के मारे लड़ाई छोड़कर अपनी गुफा में बंद हो गया। मैं गुफा के द्वार तोड़कर उससे भिड़ने वाला था, लेकिन तभी मुझे ख्याल आया कि शायद आप इतने लंबे समय तक मेरा इंतजार करते-करते चिंतित हो गए होंगे, इसलिए मैं पहले आपको सारी बात बताने के लिए वापस आ गया।”

मंकी द्वारा अपनी रिपोर्ट देने के बाद, स्क्वाइर गाओ उनके पास आए और उनके सामने घुटने टेककर बोले, "आदरणीय महोदय, मुझे खेद है कि यद्यपि आपने उसे भगा दिया है, वह आपके जाने के बाद वापस आ जाएगा; इसलिए यह कोई वास्तविक समाधान नहीं है।"

कृपया, मैं आपसे विनती करता हूँ, इसे मेरे लिए पकड़ लें और इसे जड़ से खत्म कर दें ताकि बाद में कोई परेशानी न हो। मैं आपसे वादा करता हूँ कि अगर आप मेरे लिए ऐसा करेंगे तो मैं कोई कसर नहीं छोड़ूंगा, और इसके बदले में आपको भरपूर इनाम मिलेगा। मैं अपने रिश्तेदारों और दोस्तों की गवाही में एक दस्तावेज़ लिखूंगा, जिसमें मैं अपनी आधी संपत्ति और ज़मीन आपको दे दूंगा। कृपया, कृपया इस बुराई को जड़ से उखाड़ फेंकें और परिवार की इज्जत बचा लें।

“बुजुर्ग, तुम्हें तो शिष्टाचार की कोई समझ ही नहीं है,” बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “उसने मुझे बताया कि भले ही उसने तुम्हारा बहुत सारा चावल और चाय खा लिया हो, लेकिन उसने तुम्हारा बहुत भला भी किया है। पिछले कुछ सालों में तुमने बहुत धन-दौलत जमा कर ली है, और यह सब उसकी मेहनत की बदौलत है। वह

कहता है कि उसने खाली समय में तुम्हारा खाना नहीं खाया है, और वह जानना चाहता है कि तुम उसे भूत-प्रेत से मुक्त क्यों करवाना चाहते हो। उसका दावा है कि वह स्वर्ग से आया एक अमर प्राणी है जो तुम्हारे परिवार की सेवा करता आया है और उसने तुम्हारी बेटी को कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। मेरा मानना है कि वह तुम्हारे लिए बहुत ही उपयुक्त दामाद है, जो तुम्हारे परिवार का नाम खराब नहीं करेगा। तुम्हें उसे अपने पास ही रखना चाहिए।”

“आदरणीय महोदय,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, “हो सकता है उसने कभी कोई बुरा काम न किया हो, लेकिन उसके जैसा दामाद होना हमारी प्रतिष्ठा के लिए अच्छा नहीं है। चाहे वह कुछ करे या न करे, लोग कहते हैं कि गाओ परिवार ने एक राक्षस को अपने परिवार में शादी के लिए बुलाया है, और मैं ऐसी बात सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकता।”

"जाओ और उससे खुलकर बात करो, फिर हम देखेंगे कि क्या करना है," संजांग ने कहा।

"इस बार मैं उस पर एक चाल चलूंगा," बंदर ने जवाब दिया। "मैं गारंटी देता हूं कि इस बार मैं उसे आपके देखने के लिए वापस लाऊंगा।"

लेकिन उससे नाराज मत होइए।

“बूढ़े गाओ,” उसने बूढ़े व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा, “मेरे मालिक का अच्छे से ख्याल रखना। मैं जा रहा हूँ।”

उसके मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि वो गायब हो गया। वो पहाड़ पर उछल पड़ा और अपनी लाठी के एक ही वार से गुफा के दरवाज़े चकनाचूर कर दिए, चिल्लाते हुए बोला, "बाहर आकर लड़ो बंदर, तुम भूसा खाने वाले मूर्ख हो।" अंदर सो रहा राक्षस दरवाज़े के टूटने की आवाज़ और उस अपमानजनक "भूसा खाने वाले मूर्ख" को सुनकर क्रोध से पागल हो गया।

अपना फावड़ा उठाते हुए और हिम्मत जुटाते हुए, वह बाहर भागा और चीखा, "घोड़ों के निर्लज्ज रक्षक! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि तुमने मेरे द्वार तोड़ दिए? बेहतर होगा कि तुम कानून की किताब देख लो: जबरदस्ती घुसने पर मौत की सजा है।"

"अरे मूर्ख," बंदर हँसते हुए बोला, "तुम्हारे द्वार तोड़ने का मेरे पास बहुत अच्छा कारण है - तुमने बिना किसी मध्यस्थ या गवाह के, बिना उचित उपहार दिए या विधि का पालन किए एक लड़की का जबरन अपहरण किया था।"

समारोह। तुम तो बड़े ही चालाक हो, ऐसे व्यक्ति हो जिसके बारे में बात करने के लिए तुम्हारा सिर काट देना चाहिए।"
"ऐसी बकवास करना बंद करो और देखो कि मेरा यह अय्याश तुम्हें कैसा लगता है," राक्षस ने जवाब दिया।
अपने डंडे से वार रोकते हुए बंदर ने पलटवार किया, "क्या यह वही रेक है जिसका इस्तेमाल तुम गाओ लोगों के लिए खेतों की जुताई और सब्जियां उगाते समय करते थे? इसमें ऐसी क्या खास बात है कि मुझे तुमसे डरना चाहिए?"
“तुम्हें इस बात का एहसास नहीं है कि यह कोई साधारण हथियार नहीं है,” राक्षस ने जवाब दिया। “बेहतर होगा कि तुम मेरी बात ध्यान से सुनो:
इसे दिव्य बर्फ-लोहे से परिष्कृत किया गया था।
उसे तब तक पॉलिश किया गया जब तक वह चमकदार सफेद न हो गया।
स्वयं लॉर्ड लाओ ज़ी द्वारा हथौड़े से पीटा गया,
जबकि यिंग हुआ ने कोयले की धूल से आग को और गर्म किया।
पांचों क्षेत्रों के पांचों सम्राटों ने इस पर विचार-विमर्श किया, छह डिंग और छह जिया ने इसके लिए बहुत प्रयास किए।
उन्होंने जेड पत्थर के नौ दांत बनाए।
उनके नीचे लटकाने के लिए सोने की दो अंगूठियां बनाइए।
शरीर को छह तेजस्वी पिंडों और पांच ग्रहों से सुशोभित किया गया, इसे चार ऋतुओं और आठ विभाजनों के अनुसार डिजाइन किया गया।
ऊपर और नीचे की लंबाई आकाश और पृथ्वी के बराबर है।
धनात्मक और ऋणात्मक किरणें क्रमशः बाएँ और दाएँ थीं, जो सूर्य और चंद्रमा को विभाजित कर रही थीं।
दिव्य संहिता का पालन करते हुए, भविष्यवाणी रेखाओं के छह दिव्य सेनापति वहां मौजूद हैं; आठ त्रिकोणों के नक्षत्र क्रमानुसार व्यवस्थित हैं।
इसका नाम 'सर्वोच्च कीमती सोने से परिपूर्ण रेक' रखा गया था।
और यह जेड सम्राट के महल के द्वारों की रक्षा के लिए तैनात था।
क्योंकि मैं एक महान अमर बन गया था,

अब मुझे शाश्वत जीवन का आनंद प्राप्त हो रहा था।
और उन्हें मार्शल तियान पेंग के रूप में नियुक्त किया गया।
अध्याय 19
277
पश्चिम की यात्रा
इस रेक से मैं अपने शाही पद की शुरुआत करूंगा।
जब मैं इसे उठाता हूँ, तो आग और प्रकाश की धारा प्रवाहित होती है;
जब मैं इसे नीचे करता हूं, तो बर्फीला तूफान चलने लगता है।
इससे स्वर्ग के सेनापति भी भयभीत हो जाते हैं।
और इससे नरक का राजा भी भय से कांप उठता है।
पृथ्वी पर इसके जैसा कोई दूसरा हथियार नहीं है।
और न ही विश्व भर में इसके समकक्ष कोई लोहा है।
यह मेरी पसंद के किसी भी रूप में बदल जाता है।
और जब भी मैं मंत्र बोलता हूँ, वह उछल-कूद करने लगता है।
मैं इसे कई सालों से अपने साथ लिए घूमता रहा हूँ।
मैं इसे हर दिन अपने साथ रखता हूँ।
मैं इसे खाने के लिए भी नीचे नहीं रखूंगा।
और न ही मुझे रात को सोते समय ऐसा महसूस होता है।
मैं इसे अपने साथ पीच बैंक्वेट में ले गया था।
और उसे स्वर्ग के दरबार में ले गए।
जब मैंने नशे में धुत होकर घमंड में पाप किया,
मैंने इसका इस्तेमाल अपनी बुरी इच्छा को पूरा करवाने के लिए किया।
जब स्वर्ग ने मुझे नश्वर मिट्टी में भेज दिया,
मैंने यहाँ हर तरह के बुरे काम किए।
मैं इस गुफा में लोगों को खा जाता था।
जब तक मुझे प्यार नहीं हुआ और मैंने गाओ गांव में शादी नहीं कर ली।
यह रेक समुद्र की गहराई में डूब गया है, जिससे ड्रैगन जागृत हो गए हैं।
और उन्होंने बाघों की मांदों को नष्ट करने के लिए ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ाई की।
किसी अन्य ब्लेड का उल्लेख करना उचित नहीं है।

मेरे रेक के अलावा, जो अब तक का सबसे धारदार हथियार है।
इससे लड़ाई जीतने के लिए किसी प्रयास की आवश्यकता नहीं होती;

बेशक, इससे मुझे हमेशा गौरव प्राप्त होता है।
"भले ही तुम्हारा दिमाग लोहे का हो, सिर पीतल का हो और शरीर फौलादी हो, यह प्रहार तुम्हारी आत्माओं को बिखेर देगा और तुम्हारी आत्मा को उड़ा ले जाएगा।"
बंदर ने अपना डंडा एक तरफ रख दिया और बोला, "बकवास बंद करो, बेवकूफ। मैं अब तुम्हारे सामने अपना सिर रख रहा हूँ। देखते हैं तुम मेरी आत्माओं को कैसे बिखेरते हो और मेरी रूहों को कैसे उड़ाते हो।" राक्षस ने अपना रेक उठाया और पूरी ताकत से वार किया, लेकिन आग की लपटें तो उठीं, पर बंदर के सिर पर खरोंच तक नहीं आई।
राक्षस के हाथ-पैर भय से कांपने लगे और वह चिल्लाया, "क्या गजब का सिर है, क्या गजब का सिर है।"
“तुम्हें पता नहीं होगा,” बंदर ने उत्तर दिया। “जब मुझे नन्हे ऋषि ने स्वर्ग महल को नष्ट करने, अमरता की गोलियाँ और दिव्य आड़ू चुराने और शाही शराब चुराने के आरोप में पकड़ा था, तब मुझे सप्तर्षि और बैल महल के बाहर एक जगह ले जाया गया था, जहाँ स्वर्ग के सभी देवताओं ने कुल्हाड़ियों से मुझ पर वार किए, गदाओं से मुझे मारा, तलवारों से मुझे घायल किया, खंजरों से मुझ पर वार किए, बिजली से मुझे जलाने की कोशिश की और गरज से मुझे कुचल दिया; लेकिन मुझे ज़रा भी चोट नहीं पहुँची। फिर मुझे महान उच्च स्वामी लाओ ने वहाँ से ले जाकर अष्टकोण भट्टी में डाल दिया, जहाँ मुझे दिव्य अग्नि से शुद्ध किया गया, जिससे अब मेरी आँखें अग्निमय, पुतलियाँ सुनहरी, सिर पीतल का और कंधे लोहे के हो गए हैं। अगर तुम्हें विश्वास नहीं होता, तो कुछ और वार करके देखो कि तुम मुझे चोट पहुँचा सकते हो या नहीं।”
“मुझे तुम याद हो, बंदर,” राक्षस ने उत्तर दिया। “जब तुमने स्वर्ग में उपद्रव मचाया था, तब तुम दिव्य विजय महाद्वीप के आओलाई देश में फूलों और फलों के पर्वत पर स्थित जल परदे की गुफा में रहते थे। बहुत समय से तुम्हारी कोई खबर नहीं मिली। तुम यहाँ क्यों आए हो, और मेरे ही द्वार के सामने मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? मेरे

ससुर ने तुम्हें यहाँ बुलाने के लिए इतनी दूर तो नहीं भेजा होगा?"
"नहीं," बंदर ने कहा, "उसने ऐसा नहीं किया। मैंने बुराई से मुंह मोड़ लिया है और अच्छाई की राह पर चल पड़ा हूँ। मैंने ताओवाद त्याग दिया है और बौद्ध धर्म अपना लिया है। मैं महान तांग सम्राट के छोटे भाई, कुलपति संज़ंग की रक्षा कर रहा हूँ, जो बुद्ध से मिलने और शास्त्र मांगने के लिए पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा पर हैं। संयोगवश, जब हम गाओ गाँव आए तो हमने एक रात ठहरने का अनुरोध किया, और बातचीत के दौरान बूढ़े गाओ ने मुझसे अपनी बेटी को बचाने और तुम्हें, हे भूसे खाने वाले मूर्ख, पकड़ने के लिए कहा।"
राक्षस ने अपना रेक जमीन पर गिरा दिया, आदरपूर्वक "ना-आ-आ" का उच्चारण किया और कहा, "यह तीर्थयात्री कहाँ है?"
कृपया मुझे उनसे मिलवा दीजिए।
"तुम उससे किसलिए मिलना चाहते हो?" बंदर ने पूछा।
"गुआनयिन ने मुझे धर्म परिवर्तन कराया और मुझसे कहा कि मैं मठ के नियमों का पालन करूं और यहाँ शाकाहारी भोजन करूं, जब तक कि मैं उस तीर्थयात्री के साथ न जा सकूँ, जो बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र मांगने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहा है। इस नेक काम से मैं अपने पापों का प्रायश्चित कर सकूँगी और अच्छा फल पाऊँगी। मैं वर्षों से उसका इंतज़ार कर रही हूँ, लेकिन अब तक उसकी कोई खबर नहीं मिली है। अगर तुम उसके शिष्य हो, तो शास्त्र लाने के बारे में पहले क्यों नहीं बताया, मेरे ही घर में मुझ पर इस तरह का क्रूर हमला क्यों किया?"
"यह मुझे बहलाने और तुम्हें जाने देने की कोई चाल तो नहीं है," बंदर ने कहा। "अगर तुम सचमुच तांग पुजारी की रक्षा करना चाहते हो और मुझे बेवकूफ नहीं बना रहे हो, तो बेहतर होगा कि तुम स्वर्ग से वादा करो, और मैं तुम्हें अपने गुरु से मिलवा दूँगा।"
राक्षस धड़ाम से घुटनों के बल गिर पड़ा, और इतनी बार आकाश की ओर प्रणाम किया कि वह चावल के मूसल जैसा लग रहा था।
अध्याय 19
279
पश्चिम की यात्रा
"अमिताभ बुद्ध," वह चिल्लाया, "यदि मैं पूरी तरह से ईमानदार नहीं हूँ, तो स्वर्ग के नियमों को तोड़ने के लिए मुझे दस हजार टुकड़ों में काट दो।"

उसकी कसम सुनकर बंदर बोला, "ठीक है, तो अब एक मशाल जलाओ और अपनी इस जगह को जलाकर राख कर दो। अगर तुम ऐसा करोगे, तो मैं तुम्हें ले चलूँगा।" राक्षस ने कुछ सरकंडे और झाड़ियाँ इकट्ठा कीं, एक मशाल जलाई और क्लाउड पाथवे गुफा में आग लगा दी; वह इतनी तेज़ी से जली जैसे कोई बेकाबू ईंट भट्ठा जल रहा हो। "मुझे कोई आपत्ति नहीं है," उसने कहा, "तो कृपया मुझे उससे मिलने ले चलो।"

“अपना वह रेक मुझे दो,” बंदर ने आदेश दिया, और राक्षस ने आज्ञाकारी होकर उसे दे दिया। फिर बंदर ने एक बाल निकाला, उस पर जादुई साँस फूंकी और चिल्लाया, “बदलो!” वह बाल तीन लंबे भांग के धागों में बदल गया, जिनसे उसने राक्षस के हाथ पीछे बाँध दिए; राक्षस ने विनम्रता से अपने हाथ पीछे कर लिए और बंदर को उसे बाँधने दिया। फिर बंदर ने उसका कान पकड़ा और “जल्दी चलो” कहते हुए उसे अपने साथ ले गया।

"आराम से," राक्षस ने विनती की। "तुम इतनी जोर से खींच रहे हो कि मेरे कान में दर्द हो रहा है।"

“ऐसा नहीं हो सकता,” बंदर ने उत्तर दिया। “मैं तुम पर कोई एहसान नहीं कर सकता। जैसा कि पुरानी कहावत है, 'अच्छे सूअर के साथ भी सख्ती से पेश आना पड़ता है।' मेरे स्वामी से मिलने तक प्रतीक्षा करो। यदि तुम सचमुच ईमानदार हो, तो तुम्हें तब रिहा कर दिया जाएगा।” वे दोनों बादलों और कोहरे से होते हुए गाओ गाँव वापस चले गए, और एक कविता इस बात का प्रमाण है: स्वर्ण वज्र लकड़ी से अधिक शक्तिशाली है।

माइंड एप लकड़ी के ड्रैगन को वश में कर सकता था।

जब धातु ने आज्ञा का पालन किया और लकड़ी को वश में कर लिया गया, तब वे एक हो गए;

जब वुड स्नेही था और मेटल दयालु, तब उन्होंने साथ मिलकर काम किया।

एक मेजबान और एक मेहमान, जिनके बीच कोई भी चीज उन्हें अलग नहीं कर सकती।

तीनों के सामंजस्य में होने से उनमें एक रहस्यमय शक्ति उत्पन्न हो गई थी।

प्रकृति और भावनाएं दोनों ही सर्वोच्च सिद्धांत में विलीन होकर आनंदित हुईं; दोनों ने बिना किसी संकोच के पश्चिम जाने का वादा किया।

पल भर में वे वापस गाँव पहुँच गए। एक हाथ में राक्षस का रेक पकड़े और दूसरे हाथ

से उसका कान मरोड़ते हुए उसने कहा, "क्या तुम जानते हो कि मुख्य हॉल में सीधा बैठा हुआ कौन है? वह मेरा स्वामी है।"
जब बूढ़े गाओ और उनके सभी मित्रों और रिश्तेदारों ने बंदर को बंधे हुए राक्षस का कान खींचते हुए आते देखा, तो वे सब आंगन में आए और खुशी से बोले, "आदरणीय महोदय, यह तो आपका दामाद ही है।" राक्षस आगे बढ़ा, घुटनों के बल बैठ गया और अपने हाथ पीछे करके संजांग को प्रणाम किया।
“गुरुजी,” वह चिल्लाया, “आपके शिष्य ने आपका स्वागत नहीं किया। हे गुरुजी, यदि मुझे पता होता कि आप मेरे ससुर के घर में ठहरे हुए हैं, तो मैं आपका स्वागत करने और आपको प्रणाम करने आता और इस सारी पीड़ा से बच जाता।”
"तुमने उसे कैसे राजी किया और उसे तुम्हारे सामने झुकने और श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए राजी किया?" संजांग ने बंदर से पूछा।

फिर बंदर ने राक्षस को छोड़ दिया, उसे रेक के हैंडल से मारा और चिल्लाया, "उसे बता, मूर्ख।" तब राक्षस ने संजांग को बोधिसत्व द्वारा परिवर्तित होने की पूरी कहानी सुनाई।
संजांग इतना प्रसन्न हुआ कि उसने स्क्वाइर गाओ से अगरबत्ती रखने की मेज मंगवाने को कहा, जिसे तुरंत मंगवा लिया गया।
इसके बाद संज़ंग ने हाथ धोए, अगरबत्ती जलाई, दक्षिण दिशा की ओर झुककर प्रणाम किया और कहा, "बोधिसत्व की दिव्य कृपा के लिए धन्यवाद।" अन्य पादरियों ने भी अगरबत्ती जलाकर प्रणाम किया। यह सब हो जाने पर संज़ंग ने सभागार में सम्मान के आसन पर बैठकर बंदर को राक्षस को खोलने का आदेश दिया। बंदर ने अपने बाल पीछे खींचने के लिए शरीर को झटका दिया और रस्सियाँ स्वतः ही खुल गईं। राक्षस ने एक बार फिर संज़ंग को प्रणाम किया और उनके साथ पश्चिम जाने का वचन दिया। फिर उसने बंदर को अपना बड़ा भाई मानकर प्रणाम किया क्योंकि बंदर पहले उसके शिष्य बना था, और तब से उसे "बड़ा भाई" कहकर पुकारने लगा। "यदि तुम मेरे शिष्य बनकर मेरे साथ जाकर अच्छा प्रतिफल पाना चाहते हो, तो मैं तुम्हें एक बौद्ध नाम दूंगा जिससे तुम मुझे पुकार सको।"

"गुरुजी," उसने उत्तर दिया, "जब बोधिसत्व ने मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे निषेधों का पालन करने को कहा, तो उन्होंने मुझे एक बौद्ध नाम दिया - झू वुनेन्ग, यानी शक्ति से जागृत सुअर।"

"वाह, वाह," भाई बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "मेरा नाम वुकॉन्ग है, यानी शून्यता का ज्ञान प्राप्त करने वाला, और आपका नाम शक्ति का ज्ञान प्राप्त करने वाला है। इससे हम बौद्ध धर्म के एक ही संप्रदाय के सदस्य बन जाते हैं।"

"गुरुजी," सुअर ने कहा, "बोधिसत्व ने मुझे निर्देश दिया है और मैं पाँच दुर्गंधयुक्त खाद्य पदार्थ और तीन वर्जित मांस—जंगली हंस, कुत्ता और नागकोष—कभी नहीं खाता। मैंने अपने ससुर के घर में शाकाहारी भोजन किया है और कभी दुर्गंधयुक्त खाद्य पदार्थों को हाथ नहीं लगाया; लेकिन अब जब मैं आपसे मिला हूँ, गुरुजी, तो मैं इन प्रतिबंधों से मुक्त हो गया हूँ।"

"तुम नहीं हो," संज़ंग ने उत्तर दिया। "तुम्हें पाँच दुर्गंधयुक्त खाद्य पदार्थ और तीन वर्जित मांस नहीं खाने हैं, और मैं तुम्हें एक और नाम दे रहा हूँ: आठ निषेध, या बाजी।"

"मैं अपने स्वामी के आदेश का पालन करूंगा," मंदबुद्धि ने खुशी से उत्तर दिया, और तब से उसे झू बाजी, या आठ निषेधों वाला सुअर के नाम से जाना जाने लगा।

स्क्वायर गाओ यह देखकर पहले से कहीं अधिक प्रसन्न थे कि वह बुराई से अच्छाई की ओर मुड़ गया है, और उन्होंने अपने सेवकों को तांग पुजारी को धन्यवाद देने के लिए भोज तैयार करने का आदेश दिया। सुअर स्क्वायर गाओ के पास गया, उनका कोट खींचा और कहा,

"महोदय, क्या मेरी पत्नी बाहर आकर इन दोनों सज्जनों को अपना सम्मान व्यक्त कर सकती हैं?"

“भाई,” बंदर हँसते हुए बोला। “अब तुम चर्च में प्रवेश कर चुके हो और भिक्षु बन गए हो। अब कभी पत्नी की बात मत करना। केवल ताओवादी पुजारी ही परिवार रख सकते हैं—हम बौद्ध भिक्षु कभी विवाह नहीं करते। चलो सब बैठकर शाकाहारी भोजन करें, फिर कल सुबह जल्दी पश्चिम की यात्रा पर निकलेंगे।” सरदार गाओ ने मेज और कुर्सियाँ लगाईं और संज़ंग को सम्मान की सीट पर बैठने को कहा। बंदर और सुअर उसके बाएँ और दाएँ बैठे, और सभी रिश्तेदार उनके नीचे बैठे। सरदार गाओ ने शराब का एक बर्तन खोला, उसमें से एक प्याला भरा और स्वर्ग और पृथ्वी को आहुति देते

हुए उसे संज़ंग को दे दिया।
"सच कहूँ तो, महोदय," संजांग ने कहा, "मैं जन्म से ही शाकाहारी हूँ, और मैंने अपने बचपन से ही तेज स्वाद वाला भोजन नहीं खाया है।"
"आदरणीय गुरुदेव, मुझे पता है कि आप शाकाहारी हैं," स्क्वाइर गाओ ने उत्तर दिया, "इसीलिए मैंने आपको मांस या तेज़ स्वाद वाला कोई भोजन नहीं परोसा है। लेकिन यह शराब वनस्पति से बनी है, इसलिए इसका एक प्याला पीने से कोई नुकसान नहीं होगा।"
"मैं भी शराब नहीं पीता," संजांग ने समझाया, "क्योंकि शराब पुरोहित वर्ग के निषेधों में से पहला है।"
"मालिक," सूअर ने जल्दबाजी में कहा, "मैं शाकाहारी हो सकता हूँ, लेकिन मैंने शराब पीना नहीं छोड़ा है।"

"और हालांकि मुझे इस तरह की चीजों की ज्यादा आदत नहीं है और मैं इसका पूरा जार खत्म नहीं कर सकती, फिर भी मैंने इसे छोड़ा नहीं है।"
बंदर ने जोड़ा।
"तो फिर तुम दोनों को थोड़ा पी लेना चाहिए; लेकिन ज़्यादा नशे में मत धुत हो जाना और सब कुछ बर्बाद मत कर देना," संज़ंग ने कहा। फिर उन दोनों ने पहला प्याला लिया, जिसके बाद शाकाहारी व्यंजन परोसे जाने पर सभी लोग फिर से बैठ गए।
शब्दों में भरे हुए प्यालों, अच्छी तरह से भरी हुई थालियों और शानदार भोजन का वर्णन नहीं किया जा सकता था।
जब गुरु और शिष्यों ने भोजन कर लिया, तो स्क्वाइर गाओ एक लाल लाख की थाली में दो सौ औंस वजन के सोने और चांदी के टुकड़े लेकर आए और तीनों तीर्थयात्रियों को उनकी यात्रा के खर्चों में मदद के लिए भेंट किए। फिर उन्होंने तीन जकूज़ी कॉलर वाले गाउन निकाले जो ओवरकोट का काम कर सकते थे। संज़ंग ने कहा, "हम भिक्षु हैं, जो गांवों और अन्य स्थानों से गुजरते हुए भीख मांगकर भोजन प्राप्त करते हैं, इसलिए हम सोना, चांदी या कपड़ा स्वीकार नहीं कर सकते।"
फिर बंदर आगे बढ़ा और मुट्ठी भर पैसे उठा लिए। उसके बाद उसने युवक गाओ काई

से बात की।

“कल,” उसने कहा, “मैंने तुम्हें अपने गुरु को यहाँ लाने के लिए परेशान किया था, और आज उन्होंने एक और शिष्य को भर्ती कर लिया है, लेकिन हम अपना आभार व्यक्त नहीं कर पाए। इसलिए हमें मार्गदर्शन देने के बदले में ये सोने-चांदी के सिक्के ले लो, और अपने लिए एक जोड़ी पुआल की चप्पल खरीद लो। भविष्य में यदि तुम्हें फिर से किसी बुरी आत्मा से निपटना पड़े, और तुम हमारी मदद करो, तो हम और भी अधिक आभार व्यक्त कर सकेंगे।” युवक गाओ काई ने सोना-चांदी ले लिया और फिर धन्यवाद व्यक्त करने के लिए प्रणाम किया।

"यदि आप सोना या चांदी नहीं लेंगे," स्क्वाइर गाओ ने कहा, "कृपया हमारी कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में इन खुरदुरे कपड़ों को स्वीकार करने की कृपा करें।"

"यदि हम भिक्षुओं ने एक भी धागा स्वीकार किया, तो हमें हजार युगों तक उसका प्रायश्चित करना पड़ेगा," संजांग ने उत्तर दिया।

"अगर हम बचे हुए पैनकेक और फल अपने साथ यात्रा के लिए ले जाएं तो काफी होगा।"

उनके बगल में खड़े सुअर ने कहा, "मालिक, बड़े भाई, आप दोनों इन्हें मना कर सकते हैं, लेकिन मैं कई वर्षों तक इस परिवार का दामाद रहा हूँ, और मुझे तीन बुशेल अनाज ले जाने का हक है। जी हाँ, ससुर जी, कल बड़े भाई ने मेरी कमीज़ फाड़ दी और मेरे जूते भी फट गए हैं, इसलिए कृपया मुझे एक काला जटा और एक जोड़ी नए जूते दे दीजिए।" बूढ़े सरदार गाओ, जो इस अनुरोध को मना नहीं कर सके, ने उनके पुराने जूतों और कमीज़ के बदले उन्हें नए जूते और कमीज़ दे दी।

पिग अकड़ते हुए ओल्ड गाओ के पास गया, सम्मान में "ना-आ-आ" का उच्चारण किया और बोला, "कृपया मेरी सास, मेरी साली, मेरे देवर और मेरे मामाओं को सूचित कर दीजिए कि मैं आज भिक्षु बन गया हूँ, और उनसे व्यक्तिगत रूप से विदाई न ले पाने के लिए क्षमा मांगिए। ससुर जी, मेरी पत्नी का अच्छे से ख्याल रखिएगा। अगर हमें शास्त्र नहीं मिले, तो मैं गृहस्थ जीवन में लौट जाऊंगा और आपके दामाद के रूप में फिर से काम करूंगा।"

बंदर चिल्लाया, "मूर्ख, बकवास करना बंद करो।"

"मैं ऐसा कुछ नहीं कर रहा हूँ," पिग ने जवाब दिया। "मैं सोच रहा हूँ कि अगर चीजें गलत हो गईं तो एक भिक्षु के रूप में मेरा समय व्यर्थ जाएगा, और मेरी पत्नी का

विवाह भी व्यर्थ ही बर्बाद हो जाएगा।"
“बहुत हो गई तुम्हारी बेकार की बातें,” संज़ंग ने कहा, “चलो अब चलते हैं।” उनका सामान सूअर के कंधों पर एक डंडे से लटका हुआ था। जब सफेद घोड़े पर काठी कसी गई, तो संज़ंग उस पर सवार हो गया, और बंदर अपने कंधे पर लोहे का डंडा रखे आगे-आगे चलने लगा। इस प्रकार वे तीनों स्क्वाइर गाओ, उसके रिश्तेदारों और उसके दोस्तों को पीछे छोड़कर पश्चिम की ओर चल पड़े। इस बात को साबित करने के लिए एक कविता है: पेड़ धुंधली धरती से ऊपर उठते हैं।
अध्याय 19

जैसे बुद्ध के तांग शिष्य परिश्रम और कष्ट सहते हैं।
जब उन्हें भूख लगती है, तो वे हजारों घरों से भोजन मांगते हैं;
ठंड के मौसम में वे हजारों पैच वाले लबादे पहनते हैं।
विचार-घोड़े को बेलगाम न होने दें।
और जिद्दी मन-बंदर को मनमर्जी से चिल्लाने न दें।
जब वासनाएं शांत हो जाती हैं और स्वभाव दृढ़ हो जाता है, तो सभी नियतियां सामंजस्य में आ जाती हैं; जब चिंतन की पूर्णिमा आ जाती है, तब आप शुद्ध हो जाते हैं।
एक महीने तक पश्चिम की ओर शांतिपूर्ण यात्रा करने के बाद, तीनों ने स्टुबेट के क्षेत्र को छोड़ दिया और अपने सिर के ऊपर एक ऊँचा पर्वत देखा। संज़ंग ने अपने घोड़े को चाबुक मारना बंद कर दिया, उसे लगाम से बांधा और कहा,
"बंदर, बंदर, हमारे सामने एक ऊँचा पहाड़ है, इसलिए कृपया जाओ और उसका जायजा लो।"
"कोई ज़रूरत नहीं," पिग ने कहा। "इसे पगोडा पर्वत कहते हैं, और वहाँ एक कौवे का घोंसला जैसा साधु रहता है जो वहाँ अपने आचरण का अभ्यास करता है। मैं उससे मिल चुका हूँ।"
"वह क्या करता है?" संजांग ने पूछा।
“उसके पास कुछ शक्तियां हैं,” पिग ने उत्तर दिया। “उसने एक बार मुझे अपने आचरण में सुधार करने के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन मैं नहीं गया।” गुरु और

शिष्य बात करते-करते जल्द ही पहाड़ पर पहुँच गए। वह एक शानदार पहाड़ था: उसके दक्षिण में नीले चीड़ और हरे-भरे बबूल के पेड़ थे।
उत्तर दिशा में हरे विलो वृक्ष और लाल आड़ू के फूल थे।
जोर-जोर से कांव-कांव करते हुए,
जंगली पक्षी आपस में बातें कर रहे थे;
खूबसूरती से ऊपर उठते हुए,
सारस एक साथ उड़ गए।
सुगंध से भरपूर
वे हजारों प्रकार के फूल थे;
हल्का गहरा
जड़ी-बूटियों की अनगिनत किस्में थीं।
घाटियों में हरे रंग की धाराएँ कलकल करती बह रही थीं।

चट्टानें शुभ बादलों से घिरी हुई थीं।
यह वास्तव में एक दुर्लभ और मनमोहक दृश्य था।
एकांत, जहां न कोई आता-जाता था।
जब स्वामी ने घोड़े पर सवार होकर दृश्य का जायजा लिया, तो उसने सुगंधित बबूल के पेड़ के सामने घास की एक झोपड़ी देखी। उसके बाईं ओर डेविड के हिरण थे जिनके मुँह में फूल थे, और दाईं ओर बंदर फल भेंट किए हुए थे, जबकि कई रंगों के फीनिक्स पक्षी पेड़ की चोटी के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे, जहाँ सारस और सुनहरे तीतर इकट्ठे थे। पिग ने इशारा करते हुए कहा, "यह कौवे का घोंसला है, साधु का।" संजांग ने अपने घोड़े की लगाम पकड़ी, उसे चाबुक मारा और सीधे पेड़ की तलहटी की ओर चल दिया।
जब साधु ने उन तीनों को आते देखा तो वह अपने घोंसले से नीचे कूद गया। संजांग भी घोड़े से उतरा और उसे प्रणाम किया, तब साधु ने उसे उठाते हुए कहा, "कृपया उठिए, पूज्य पुरोहित। मुझे खेद है कि मैंने आपका ठीक से स्वागत नहीं किया।"
"आदरणीय साधु, नमस्कार," पिग ने कहा।

"क्या तुम आशीर्वाद पर्वत से आए लोहे के बालों वाले सूअर नहीं हो? तुम्हें एक पवित्र भिक्षु के साथ यात्रा करने का इतना बड़ा सौभाग्य कैसे मिला?"
पिग ने उत्तर दिया, "पिछले साल, बोधिसत्व गुआनयिन ने मुझे परिवर्तित कर दिया था, और मैंने शपथ ली थी कि मैं उनके शिष्य के रूप में उनके साथ जाऊंगा।"
"अद्भुत, अद्भुत," प्रसन्न साधु ने कहा, और फिर बंदर की ओर इशारा करते हुए पूछा, "यह सज्जन कौन हैं?"
बंदर ने कहा, "बूढ़े साधु, आप उसे जानते हैं लेकिन मुझे नहीं पहचान पाए, ऐसा कैसे हो सकता है?"
"मेरी अज्ञानता के लिए क्षमा करें," साधु ने उत्तर दिया।
"वह सन वुकॉन्ग हैं, मेरे शिष्यों में वरिष्ठ," संजांग ने समझाया।
"मैं अपनी असभ्यता के लिए क्षमा चाहता हूँ," संन्यासी ने कहा।
संज़ंग ने फिर से प्रणाम किया और उससे पश्चिमी स्वर्ग में स्थित महान गर्जन मठ का मार्ग पूछा। दूसरे ने उत्तर दिया, "बहुत दूर है, बहुत दूर। यात्रा लंबी है और रास्ते में कई बाघ और तेंदुए मिलेंगे। यह कठिन होगा।"
"कितनी दूर है?" संजांग ने बड़ी उत्सुकता से पूछा। "हालांकि यात्रा लंबी है," साधु ने उत्तर दिया।
“अंत में तुम वहाँ अवश्य पहुँच जाओगे। परन्तु रास्ते में तुम्हें कुछ बुरी शक्तियों का सामना करना पड़ेगा, जिन्हें दूर करना तुम्हारे लिए कठिन होगा। मेरे पास एक हृदय सूत्र है, जिसमें 54 वाक्यों में कुल 270 शब्द हैं, और जब भी तुम्हें बुरी शक्तियों का सामना करना पड़े, यदि तुम इसका पाठ करोगे, तो तुम्हें कोई हानि नहीं होगी।” संज़ंग ने ज़मीन पर लेटकर साधु से इसे बताने की विनती की, और साधु ने उसे यह सुनाया। यह इस प्रकार था:
जब बोधिसत्व अवलोकितेश्वर गहन प्रज्ञा-पारमिता का ध्यान कर रहे थे, तब उन्होंने यह अनुभव किया कि सभी पांच स्कंध शून्य और खाली हैं, और इस प्रकार वे सभी दुखों और विपत्तियों से मुक्त हो गए।
अध्याय 19
284
पश्चिम की यात्रा
सारिपुत्र, पदार्थ शून्यता से भिन्न नहीं है और शून्यता पदार्थ से भिन्न नहीं है: पदार्थ ही

शून्यता है और शून्यता ही पदार्थ है। यही बात संवेदना, बोध, विवेक और चेतना के संदर्भ में भी लागू होती है।

सारिपुत्र, ये सभी वस्तुएँ स्वभाव से शून्य हैं, न इनका कोई आरंभ है, न अंत, न शुद्ध हैं, न अशुद्ध, न इनमें कोई वृद्धि है, न घटती। अतः शून्यता में न पदार्थ है, न संवेदना, न बोध, न भेद और न चेतना; न आँख है, न कान, न नाक, न जीभ, न शरीर और न मन; न दृष्टि है, न ध्वनि, न गंध, न स्वाद, न स्पर्श और न ही मानसिक प्रक्रिया; न आँख का कोई वर्ग है, न चेतना का; न अज्ञान है, न अज्ञान का निवारण; न वृद्धावस्था है, न मृत्यु, न वृद्धावस्था और मृत्यु का निवारण; न दुख है, न दुख के कारण हैं, न दुख का निवारण है, न दुख के निवारण का मार्ग है; न ज्ञान है, न कुछ प्राप्त करने योग्य है। क्योंकि इससे कुछ भी लाभ नहीं होता, प्रज्ञा-पारमिता पर निर्भर रहने वाला बोधिसत्व मन से मुक्त हो जाता है, और मन से मुक्त होने के कारण वह भयमुक्त हो जाता है, अवास्तविकता के स्वप्निल विचारों से मुक्त हो जाता है और परम निर्वाण का आनंद लेता है। प्रज्ञा-पारमिता के माध्यम से, भूतकाल, वर्तमान और भविष्य के सभी बुद्ध अनुत्तर-सम्यक-संबोधि को प्राप्त करते हैं। इसलिए, हम जानते हैं कि प्रज्ञा-पारमिता एक महान, दिव्य मंत्र है, एक महान ज्ञानवर्धक मंत्र है, एक सर्वोच्च मंत्र है, और एक अद्वितीय मंत्र है, जो सभी दुखों को निश्चित रूप से दूर कर सकता है। इस प्रकार हम प्रज्ञा-परमिता मंत्र का पाठ करते हैं और कहते हैं: द्वार, द्वार, परागते, परसंगते, बोधि, स्वाहा!

तांग वंश के कुलपति के भीतर ही ज्ञान का मूल तत्व विद्यमान था, इसलिए वे केवल एक बार सुनने के बाद ही हृदय सूत्र को याद कर सके, और यह सूत्र आज तक पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। यह सूत्र सत्य की साधना का सार है, और बुद्ध बनने का द्वार है। जब साधु ने इसका पाठ किया, तो वे बादल के सहारे अपने कौवे के घोंसले की ओर उठने लगे, लेकिन संजांग ने उन्हें खींचकर कहा कि वे पश्चिमी स्वर्ग का मार्ग जानना चाहते हैं। इस पर साधु ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया:

यह यात्रा कठिन नहीं होगी।

यदि आप मेरे निर्देशों का पालन करने का प्रयास करते हैं।

वहाँ हज़ार पर्वत होंगे, हज़ार गहरी नदियाँ होंगी।

अनेक बुरी वातें और अनेक शैतान।

यदि आप आकाश के छोर तक पहुँच जाते हैं

चिंता मत करो और डरो मत।
यदि आप खड़ी चट्टान पर आते हैं
अपने पैरों को बगल में रखकर चलें।
ब्लैक पाइन के जंगल में सावधान रहें।
जहां कई दुष्ट लोमड़ियां आपका रास्ता रोक सकती हैं।
राजधानियाँ उत्साह से भरी होंगी।
और दानवों के राजा पहाड़ों में निवास करेंगे।
टाइगर्स संगीत कक्षों में बैठेंगे।
अध्याय 19
285
पश्चिम की यात्रा
खातों का प्रबंधन वॉल्व्स टीम करेगी।
शेर और हाथी सभी राजा बनेंगे।
मंत्रियों के पद पर बाघ और तेंदुए हैं।
एक जंगली सूअर आपका सामान ढोएगा।
एक जलराशि मार्ग का नेतृत्व करेगी।
एक बहुत पुराना पत्थर का बंदर
उसे गुस्सा होने का कोई कारण नहीं है।
अपने उन दोस्तों से पूछो – –
उन्हें पश्चिम की ओर जाने का रास्ता पता है।
बंदर ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा, "चलो चलते हैं। उससे पूछने की ज़रूरत नहीं; तुम मुझसे पूछ सकते हो।" संज़ंग को उसकी बात समझ नहीं आई। साधु ने अपना रूप सुनहरे प्रकाश की किरण में बदल लिया और अपने घोंसले की ओर चल पड़ा, जबकि आदरणीय संज़ंग ने कृतज्ञतापूर्वक उसे प्रणाम किया। अब क्रोधित बंदर ने अपना लोहे का डंडा उठाया और जैसे ही वह उस स्थान को नष्ट करने के लिए आगे बढ़ा, तभी दस हज़ार कमल के फूल प्रकट हुए, जो हज़ार चमत्कारी धुंध से सुरक्षित थे। "भाई बंदर, तुम सागर को मथने या नदी को उलट-पुलट करने में सक्षम हो; लेकिन उस घोंसले की एक टहनी को छूने का सपना भी मत देखना!" जब संज़ंग ने देखा कि वह क्या करने जा रहा है, तो उसने उसे पकड़ लिया और कहा, "वुकोंग, इस

बोधिसत्व के घोंसले को नष्ट करने की कोशिश करने का तुम्हारा क्या मतलब है?"
"उसने हम दोनों शिष्यों का अपमान किया," बंदर ने उत्तर दिया।
"उसने तुम्हारा अपमान नहीं किया," संजांग ने कहा। "वह पश्चिमी स्वर्ग के मार्ग के बारे में बात कर रहा था।"
"तुम समझ नहीं पाओगे," बंदर ने कहा। "जब उसने कहा, 'एक जंगली सूअर तुम्हारा सामान ढोएगा,' तो वह सूअर का अपमान कर रहा था; और 'एक बहुत बूढ़ा पत्थर का बंदर' मेरा अपमान था। ज़ाहिर है, तुम उसका मतलब नहीं समझ पाए।"
"गुस्सा मत हो," सुअर ने कहा। "वह साधु अतीत और भविष्य दोनों के बारे में जानता है। हमें अभी यह नहीं पता कि जल राक्षस के मार्ग दिखाने की उसकी बात सच होगी या नहीं। उसे छोड़ दो।"
बंदर ने कमल के फूल खिलते देखे और घोंसले के चारों ओर चमत्कारिक धुंध को घेरते हुए देखा, और वह अपने स्वामी से घोड़े पर सवार होकर पश्चिम की ओर पहाड़ से नीचे जाने के लिए कहने के अलावा कुछ नहीं कर सका। इस यात्रा में, यद्यपि उन्हें पृथ्वी पर दुर्लभ आशीर्वाद प्राप्त हुए,
उस पहाड़ी पर कई राक्षस और आपदाएँ थीं।
अगर आपको नहीं पता कि उनके लिए आगे क्या होने वाला है, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 19

अध्याय 20
पीली हवा की पहाड़ी पर तांग पुजारी मुसीबत में फंस जाता है
पहाड़ की आधी चढ़ाई पर सुअर ने महारत हासिल कर ली
धर्म मन में उत्पन्न होता है।
और बदले में मन द्वारा नष्ट हो जाता है।
जीवन और मृत्यु की उत्पत्ति किससे होती है?
अपने लिए तय करें।
अगर यह सब आपके अपने दिमाग की उपज है,
आपको दूसरों से यह जानने की ज़रूरत क्यों है?

आपको बस कड़ी मेहनत करनी है।
लोहे से खून निचोड़ना।
अपनी नाक में रेशम की रस्सी पिरोएं।
और स्वयं को शून्यता से बांध लो।
इसे निष्क्रियता के वृक्ष से जोड़ दें,
इसे ढहने से बचाने के लिए।
डाकुओं को अपने बेटों के रूप में स्वीकार मत करो।
अन्यथा तुम धर्म और मन दोनों को भूल जाओगे।
दूसरों के बहकावे में न आएं।
पहले उन्हें एक घूंसे से मार गिराओ।
जब मन प्रकट होता है तो उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।
जब धर्म प्रकट होता है, तो वह समाप्त हो जाता है।
जब लड़का और बैल दोनों गायब हो जाते हैं,
आसमान बिल्कुल साफ और नीला है।
सब कुछ शरद ऋतु के चंद्रमा की तरह गोल है।
अध्याय 20
287
पश्चिम की यात्रा
और अब इसमें और उसमें अंतर करना असंभव हो गया है।
इस गाथा में बताया गया है कि कैसे कुलपति ज़ुआनज़ैंग को हृदय सूत्र का ज्ञान और समझ प्राप्त हुई और इस प्रकार उन्होंने द्वार खोल दिया। जब उस आदरणीय बुजुर्ग ने निरंतर इसका पाठ किया, तो चमत्कारिक प्रकाश की एक किरण उन तक पहुंची।
खुले में खाते-पीते और सोते हुए, वे तीनों आगे बढ़ते रहे, और जल्द ही उन पर गर्मी का मौसम आ गया।
फूल खिलना बंद हो गए थे, तितलियों का जोश थम चुका था।
ऊंचे पेड़ों पर झींगुर चीख रहे थे।
अनार के फूलों के बीच जंगली रेशम के कीड़े कोकून बुन रहे थे।
जैसे ही तालाब में कमल के फूल खिले।
एक शाम जब वे यात्रा कर रहे थे, तो उन्होंने सड़क के किनारे एक झोपड़ी देखी।

संज़ंग ने कहा, "देखो, सूरज पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे डूब रहा है, अपनी अग्नि-प्रतिबिंब को छुपा रहा है, और चंद्रमा पूर्वी सागर से निकलकर अपना बर्फीला चक्र दिखा रहा है। कितना सौभाग्य है कि हमारे रास्ते में एक परिवार रहता है। चलो आज रात यहीं रुकते हैं और कल सुबह फिर से निकल पड़ते हैं।"
"बिल्कुल सही कहा," पिग ने कहा। "मुझे थोड़ी भूख लगी है, और अगर हम उस घर से कुछ खाना मांग लें तो सामान उठाने की ताकत मुझमें ज़्यादा होगी।"
"घर की याद सताने वाले भूत," बंदर भाई ने टिप्पणी की, "तुम कुछ ही दिनों से घर से दूर हो, लेकिन तुम्हें अभी से आने का पछतावा हो रहा है।"
"बड़े भाई," सुअर ने उत्तर दिया, "मैं आपकी तरह हवा और कोहरे पर जीवित नहीं रह सकता। आप यह समझ भी नहीं सकते कि इन दिनों जब से मैं अपने स्वामी का अनुसरण कर रहा हूँ, भूख मेरे पेट को कैसे कुतर रही है।"
"सूअर," संजांग ने कहा, "अगर तुम्हारा मन अभी भी घर पर है, तो तुम धार्मिक जीवन के लिए नहीं बने हो, और बेहतर होगा कि तुम वापस चले जाओ।"
वह मूर्ख सुअर घुटनों के बल गिर पड़ा और गिड़गिड़ाते हुए बोला, "गुरुजी, कृपया मेरे बड़े भाई की बातों पर ध्यान न दें: यह मेरा अपमान है। वह कहता है कि काश मैं न आया होता, लेकिन वास्तव में मुझे कोई पछतावा नहीं है। मैं मूर्ख हो सकता हूँ, लेकिन मैं सच्चा हूँ। मैंने बस इतना कहा कि मुझे भूख लगी है और मैं भोजन माँगना चाहता हूँ, और वह मुझे घर की याद सताने वाला भूत कहने लगा। लेकिन बोधिसत्व ने मुझे निषेधों के बारे में बताया था, और आप मुझ पर बहुत मेहरबान रहे हैं; इसलिए मैं वास्तव में पश्चिम की आपकी यात्रा में आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मुझे कभी कोई पछतावा नहीं होगा, मैं कसम खाता हूँ। इसे ही 'कठिन तरीके से आचरण सुधारना' कहते हैं। आपको क्या अधिकार है यह कहने का कि मुझे भिक्षु नहीं बनना चाहिए?"
"ठीक है," संजांग ने कहा, "उठो।"
वह मूर्ख उछल पड़ा और लगातार बड़बड़ाते हुए सामान ढोने वाला डंडा उठा लिया। फिर वह दृढ़ता से आगे बढ़ा। थोड़ी ही देर में वे सड़क किनारे वाले घर पर पहुँच गए, जहाँ संजांग घोड़े से उतर गया, बंदर ने लगाम पकड़ी और सुअर ने अध्याय 20 को आगे बढ़ाया।

अपना बोझ उतारते हुए। वे सभी हरी छाया में खड़े थे। संज़ंग ने अपनी नौ-वलय वाली मठवासी छड़ी उठाई, अपनी बेंत की टोपी सीधी की और द्वार की ओर तेज़ी से बढ़े, जहाँ उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति को बाँस के पलंग पर लेटे हुए बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करते देखा।

जोर से चिल्लाने की इच्छा न रखते हुए, संजांग ने धीमी आवाज में कहा, "प्रशंसा हो, उपकारक।"

बूढ़ा आदमी झट से खड़ा हो गया, अपने कपड़े ठीक किए और अभिवादन का जवाब देने के लिए फाटक से बाहर आ गया।

"मेरी असभ्यता के लिए क्षमा करें, आदरणीय महोदय," उन्होंने कहा और आगे पूछा, "आप कहाँ से हैं, और आप मेरे इस साधारण से घर में क्यों आए हैं?"

"मैं पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश का भिक्षु हूँ," संज़ंग ने उत्तर दिया, "मुझे थंडर मठ में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्रों की प्रार्थना करने का शाही आदेश प्राप्त हुआ है। चूंकि हम सूर्यास्त के समय इस क्षेत्र में हैं, इसलिए यदि आप हमें अपने महल में रात बिताने की अनुमति दें तो मैं आपका अत्यंत आभारी रहूंगा।"

“तुम वहाँ कभी नहीं पहुँच पाओगे,” बूढ़े ने हाथ हिलाते हुए और सिर झुकाते हुए कहा। “पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाना असंभव है। अगर तुम्हें शास्त्र चाहिए तो पूर्वी स्वर्ग जाना बेहतर होगा।”

संज़ंग कुछ नहीं बोला, वह मन ही मन सोच रहा था कि जब बोधिसत्व ने उन्हें पश्चिम जाने का निर्देश दिया था, तो वह बूढ़ा उन्हें पूर्व जाने के लिए क्यों कह रहा था। उसने मन ही मन सोचा कि पूर्व में शास्त्र कैसे प्राप्त हो सकते हैं? शर्मिंदगी के मारे उसके पास शब्द नहीं थे, इसलिए उसने कोई जवाब नहीं दिया।

बंदर, जो स्वभाव से ही उग्र था, यह सब बर्दाश्त नहीं कर सका, इसलिए वह बूढ़े आदमी के पास गया और चिल्लाया, "बूढ़े, आप भले ही बहुत बूढ़े हों, पर आप बिलकुल मूर्ख हैं। हम दूर-दूर से आए हुए साधु-संतों से रहने की जगह माँग रहे हैं, लेकिन आप हमें टालने की कोशिश ही कर रहे हैं। अगर आपका घर बहुत छोटा है और उसमें हमारे सोने की जगह नहीं है, तो हम पूरी रात पेड़ों के नीचे बैठे रहेंगे और आपको परेशान नहीं करेंगे।" बूढ़े आदमी ने संज़ंग को पकड़ लिया और कहा, "गुरुजी, आपने मुझे यह नहीं बताया कि आपका एक शिष्य है जिसका चेहरा इतना विकृत है, ठुड्डी भी नहीं है, और लाल आँखों के साथ वह किसी गर्जन देवता जैसा दिखता है।

आपको ऐसे रोगग्रस्त राक्षस को मुझ जैसे बूढ़े व्यक्ति को डराने और अपमानित करने नहीं देना चाहिए।"

"बुजुर्ग, तुममें बिल्कुल भी समझदारी नहीं है," बंदर ने हंसते हुए कहा। "ये सुंदर लड़के देखने में तो अच्छे लगते हैं, लेकिन कहते हैं ना, इनका स्वाद अच्छा नहीं होता। मैं भले ही छोटा हूँ, पर बहुत ताकतवर हूँ, और मेरी चमड़ी के नीचे सब कुछ मांसपेशियाँ ही हैं।"

"मुझे लगता है कि तुम्हारे पास कुछ शक्तियां होंगी," बूढ़े व्यक्ति ने टिप्पणी की।

"शेखी बघारने की इच्छा न रखते हुए, मैं अपना काम चला सकता हूँ," बंदर ने उत्तर दिया।

"तुम्हारा घर कहाँ है?" बूढ़े आदमी ने पूछा, "और तुमने अपना सिर क्यों मुंडवाया और भिक्षु क्यों बन गए?"

"मेरा पैतृक घर, ओलाई देश में स्थित पुष्प और फल पर्वत पर जल परदे वाली गुफा है, जो पूर्वी महाद्वीप के पूर्व में समुद्र के पार स्थित है। मैंने बचपन से ही दुष्ट राक्षस बनना सीखा और मेरा नाम वुकॉन्ग था, जिसका अर्थ है शून्यता का ज्ञान प्राप्त करना। मैंने अपनी क्षमताओं का उपयोग करके स्वयं को स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि बनाया, लेकिन जब मैंने स्वर्गीय पद को अस्वीकार कर दिया और स्वर्ग महल के विरुद्ध एक बड़ा विद्रोह किया, तो मैंने अपने ऊपर विपत्ति ला दी। अब मेरे कष्ट समाप्त हो गए हैं। मैंने बौद्ध धर्म अपना लिया है और भविष्य में अच्छे प्रतिफल की कामना कर रहा हूँ, जिसके लिए मैं अपने गुरु, महामहिम तांग महामहिम को बुद्ध से मिलने के लिए पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा पर ले जा रहा हूँ। मुझे खड़ी ढलानों वाले ऊँचे पहाड़ों या विशाल लहरों वाली चौड़ी नदियों से डर नहीं लगता। मैं राक्षसों को पकड़ सकता हूँ और दानवों को वश में कर सकता हूँ, बाघों या अजगरों को पकड़ सकता हूँ, आकाश में चल सकता हूँ या धरती में सुरंग बना सकता हूँ। जब तक आपके महल में कुछ टूटी हुई ईंटें और टाइलें, एक गाने का बर्तन और एक खुला स्थान हो, तब तक मैं आपका आभारी हूँ।" दरवाजा खोलकर मैं यहां चैन से सो सकूंगा।

यह भाषण सुनने के बाद, बूढ़े व्यक्ति ने हंसते हुए कहा, "तो आप एक ऐसे भिक्षु हैं जिनके पास वाक्पटुता का वरदान है और अचानक उनकी किस्मत बदल गई है।"

"तुम ही बकबक कर रहे हो, मेरे बच्चे," बंदर ने जवाब दिया। "मैं अपने स्वामी के साथ यात्रा की थकान के कारण इतना थक गया हूँ कि बात नहीं कर सकता।"
“अच्छा हुआ कि तुम हो,” बूढ़े ने जवाब दिया, “वरना तुम मुझे बोलते-बोलते मार डालते। अगर तुम्हारे पास ये सारी शक्तियां हैं तो तुम पश्चिम तक पहुँच सकते हो। तुम कितने लोग हो? कृपया रात के लिए मेरी कुटिया में आ जाओ।”
"उस पर गुस्सा न करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद," संजांग ने कहा। "हम तीन लोग हैं।"
"तीसरा कहाँ है?" बूढ़े आदमी ने पूछा।
"तुम्हारी आंखें बहुत कमजोर हैं, बूढ़े आदमी," बंदर ने इशारा करते हुए कहा, "क्या तुम उसे वहां छाया में खड़ा नहीं देख सकते?"
जब बूढ़े व्यक्ति ने, जिसकी आंखें वाकई धुंधली हो गई थीं, ध्यान से देखा और सुअर का चेहरा देखा तो वह इतना भयभीत हो गया कि वह चिल्लाते हुए घर के अंदर भागा, "द्वार बंद करो, द्वार बंद करो, यहां एक राक्षस है।"
बंदर उसके पीछे दौड़ा और उसे पकड़ लिया। "डरो मत, बूढ़े दोस्त," उसने कहा, "वह कोई दुष्ट राक्षस नहीं है, वह मेरा एक साथी शिष्य है।"
"ठीक है," बूढ़े व्यक्ति ने जवाब दिया, जो बुरी तरह कांप रहा था, "लेकिन भिक्षु होना कितना घिनौना प्राणी है।"
जब बूढ़ा आदमी द्वार के सामने तीन भिक्षुओं से बात कर रहा था, तभी खेत के दक्षिणी छोर पर दो युवक प्रकट हुए जो एक बूढ़ी औरत और तीन-चार बच्चों को धान के पौधे रोपकर वापस ला रहे थे, इसी वजह से उनके कपड़े ऊपर की ओर मुड़े हुए थे और उनके पैर नंगे थे।
जब उन्होंने सफेद घोड़े और सामान से लदे डंडे को देखा और अपने घर के द्वार पर शोर सुना, तो उन्हें समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है, इसलिए वे दौड़कर आगे बढ़े और पूछा, "तुम क्या कर रहे हो?" सुअर मुड़ा, अपने कान फड़फड़ाए और अपनी थूथन उनकी ओर बढ़ाई, जिसे देखकर वे सब डर के मारे गिर पड़े या भाग गए।
उस अफरा-तफरी में संजांग बार-बार पुकार रहा था, "डरो मत, डरो मत, हम अच्छे लोग हैं, हम भिक्षु हैं जो शास्त्र लेने जा रहे हैं।" तभी बूढ़ा आदमी फिर बाहर आया और उसने बूढ़ी औरत को उठने में मदद की।

“उठो पत्नी,” उसने कहा, “घबराने की कोई बात नहीं है। ये संत तांग राजवंश से हैं, और यद्यपि इनके शिष्य थोड़े बदसूरत हैं, लेकिन उनके हृदय शुद्ध हैं। कृपया बच्चों को अंदर ले जाओ।” बूढ़ी औरत बूढ़े आदमी से लिपट गई जबकि दोनों युवक बच्चों को अंदर ले गए।

द्वारगृह में बांस की कुर्सी पर बैठे हुए संजांग ने आक्रोश से कहा, "शिष्यों, तुम दोनों देखने में बदसूरत हो और तुम्हारी भाषा बहुत ही भद्दी है। तुमने उस पूरे परिवार को बुरी तरह डरा दिया और मुझे मुसीबत में डाल दिया।"

"मैं आपको सच बता रहा हूँ, स्वामी," सुअर ने उत्तर दिया, "कि जब से मैं आपका अनुसरण कर रहा हूँ, मैं और अधिक सुंदर हो गया हूँ।"

जब मैं गाओ गांव में रहता था, तो मेरा चेहरा इतना भयानक दिखता था कि मैं अक्सर मुंह बनाकर और कान हिलाकर बीस-तीस लोगों को डरा देता था।"

"अतिशयोक्ति मत करो, बेवकूफ," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "और अपने उस बदसूरत चेहरे को थोड़ा साफ कर लो।"

"बंदर, तुम क्या बकवास कर रहे हो," संजांग ने कहा। "वह तो ऐसे ही पैदा हुआ था, तो तुम उससे अपना चेहरा साफ करने की उम्मीद कैसे कर सकते हो?"

अध्याय 20

"वह अपनी टेढ़ी-मेढ़ी थूथन को अपनी छाती में दबा सकता था और उसे बाहर नहीं निकालता; और वह अपने पंखे के आकार के कानों को अपने सिर के पीछे झुका सकता था और उन्हें हिलाता नहीं। इससे उसका रूप-रंग सलीकेदार हो जाता।" फिर सुअर ने अपनी थूथन अंदर कर ली और अपने कान पीछे कर लिए, और सिर झुकाए संजांग के बगल में खड़ा हो गया। भाई बंदर सामान अंदर ले गया और सफेद घोड़े को एक खंभे से बांध दिया।

बूढ़ा आदमी एक युवक के साथ फिर बाहर आया, जिसके हाथ में चाय के तीन प्याले रखी एक थाली थी। चाय पी जाने के बाद उसने शाकाहारी भोजन तैयार करने के निर्देश दिए। फिर युवक एक पुरानी, टूटी-फूटी और बिना पॉलिश की हुई मेज और टूटे हुए ऊपरी भाग वाली दो बेंचें लेकर आया, जिन्हें उसने ठंडी जगह पर रखा और तीनों को बैठने के लिए कहा। इसके बाद संजांग ने बूढ़े आदमी से उसका उपनाम पूछा, तो

उसे बताया गया, "आपके विनम्र सेवक का उपनाम वांग है।"
"तुम्हारे कितने वंशज हैं?"
"दो बेटे और तीन पोते-पोतियां।"
"बधाई हो, बधाई हो," संजांग ने कहा; फिर उसने बूढ़े आदमी से उसकी उम्र पूछी।
"मैं अपनी मूर्खता में ही इकसठ वर्ष की आयु तक जी चुका हूँ।"
"बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया, आपने एक नया चक्र शुरू कर दिया है," संज़ंग ने कहा।
"हे उपकारक," उन्होंने आगे कहा, "आपने पहले यह क्यों कहा था कि पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्रों को लाना असंभव होगा?"
“शास्त्रों को प्राप्त करने में कोई समस्या नहीं है,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, “बस यात्रा बहुत कठिन होगी। यहाँ से लगभग बारह मील पश्चिम में एक पर्वत है जिसे तीन सौ मील लंबी पीली हवा की पर्वत श्रृंखला कहा जाता है, और यह दुष्ट राक्षसों से भरा हुआ है। इसीलिए मैंने कहा था कि शास्त्रों को प्राप्त करना असंभव होगा। लेकिन जैसा कि यह युवक कहता है कि उसके पास बहुत सारी जादुई शक्तियाँ हैं, आप वहाँ पहुँच सकेंगे।”
"बिल्कुल, बिल्कुल," बंदर ने कहा। "मेरे, मेरे गुरु और मेरे साथी शिष्य के साथ, कोई भी शैतान, चाहे वह कितना भी क्रूर क्यों न हो, हमें उकसाने की हिम्मत नहीं करेगा।"
जैसे ही वह बोल रहा था, युवक खाना लेकर आया और मेज पर रखते हुए बोला, "कृपया खा लीजिए।" संज़ंग ने हाथ जोड़कर प्रार्थना शुरू कर दी। तब तक पिग एक कटोरा भर खाना खा चुका था, और उस मूर्ख ने छोटी सी प्रार्थना खत्म होने से पहले ही तीन और कटोरे चट कर दिए।
"यह तो भूसा खाने वाला जीव है," बंदर ने कहा। "लगता है हमारा सामना किसी भूखे भूत से हो गया है।"
लेकिन बूढ़े वांग को सुअर के खाने की रफ़्तार बहुत मज़ेदार लगी और उन्होंने कहा, "यह आदरणीय सज्जन ज़रूर बहुत भूखे होंगे। इन्हें तुरंत और चावल दीजिए।" उस मूर्ख प्राणी का पेट वाकई बड़ा था। उसे देखिए, सिर नीचे करके वह कम से कम एक दर्जन कटोरे चट कर गया। संज़ांग और बंदर दो कटोरे भी खत्म नहीं कर पाए थे, लेकिन वह बेवकूफ रुका नहीं और खाता ही रहा। "यह कोई बढ़िया खाना तो नहीं है, इसलिए मैं आप पर ज़्यादा दबाव नहीं डाल सकता, लेकिन कृपया एक और निवाला लीजिए।"

"हमने पेट भर खाना खा लिया है," संजांग और बंदर ने कहा; लेकिन सुअर ने कहा, "तुम किस बारे में बात कर रहे हो, बूढ़े दोस्त?"

तुम्हारा भविष्य कौन बता रहा है? क्या इसीलिए तुम इतना सवाल पूछ रहे हो? खैर, जब तक चावल हैं, मुझे और दे दो।" एक ही बार में उस मूर्ख ने घर के सारे चावल खा लिए, और फिर भी कहा कि उसका पेट आधा ही भरा है। फिर मेज हटा दी गई, उनके लिए द्वारगृह में बांस के बिस्तर लगाए गए, और वे सो गए।

अगली सुबह भोर होते ही बंदर घोड़े पर काठी कसने चला गया जबकि सुअर सामान पैक करने लगा। बूढ़े वांग ने अपनी पत्नी से उनके लिए कुछ पेस्ट्री और गर्म पानी तैयार करने को कहा, जिसके बाद तीनों ने उन्हें धन्यवाद दिया और विदा ली। बूढ़े ने कहा, "अगर आपकी यात्रा में कुछ गड़बड़ हो जाए, तो आप हमारे यहाँ जरूर आना।"

अध्याय 20

291

पश्चिम की यात्रा

"इतना हतोत्साहित मत हो, दोस्त," बंदर ने कहा। "हम समर्पित हैं, और हमारे लिए पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं है।"

इतना कहकर उन्होंने घोड़े को चाबुक मारा, सामान ढोने वाली छड़ी उठाई और पश्चिम की ओर चल पड़े।

अफसोस! उनकी यात्रा में पश्चिम की ओर जाने का कोई अच्छा रास्ता नहीं था, और निस्संदेह उनके लिए राक्षस और भयंकर विपत्तियाँ इंतज़ार कर रही थीं। आधा दिन चलने के भीतर ही वे पहाड़ पर पहुँच गए। वह पहाड़ बेहद खड़ी ढलान वाला था। संज़ंग एक चट्टान के किनारे तक घोड़े पर सवार होकर गया, फिर नीचे उतरकर देखने लगा।

पर्वत बहुत ऊँचा था।

चट्टानी पर्वतमाला;

खड़ी चट्टानें,

गहरी घाटियाँ।

झरनों की आवाज सुनाई दे रही थी।

और फूलों से मीठी सुगंध आ रही थी।

क्या वह पहाड़ बहुत ऊंचा था?

इसका शिखर नीले आकाश को छूता था।
क्या वे घाटियाँ गहरी थीं?
उनके तल में पाताल लोक दिखाई देता था।
पहाड़ के सामने
सफेद बादल उमड़ रहे थे,
और विशाल चट्टानें।
वहाँ अनगिनत अथाह, आत्मा को झकझोर देने वाली चट्टानें थीं।
जिनमें ड्रैगन के लिए घुमावदार गुफाएँ थीं,
पानी टपकते स्टैलेक्टाइट्स से भरी गुफाएँ।
उसने शाखाओं वाले सींगों वाले हिरण देखे।
और नदी के किनारे रहने वाले हिरण टकटकी लगाए देख रहे थे,
कुंडलीदार, लाल रंग के शल्क वाले अजगर,
और शरारती, सफेद चेहरे वाले बंदर।
शाम के समय बाघ अपनी मांदों की तलाश में पहाड़ियों पर चढ़ जाते थे;
अध्याय 20
292
पश्चिम की यात्रा
भोर होते ही लहरों से अजगर निकले।
भयंकर गर्जना करते हुए उनकी गुफाओं में प्रवेश करने के लिए।
घास में उड़ते पक्षी
तेजी से गुलाब;
जंगल में घूमते जानवर
जल्दबाजी में इधर-उधर भागना।
अचानक भेड़ियों का एक झुंड दौड़ता हुआ निकल गया।
भय से दिल की धड़कन तेज हो जाना।
यह एक ऐसी जगह है जहां गुफाएं आपस में जुड़ी हुई हैं।
और पहाड़ पहाड़ों के साथ खड़े हैं।
चोटी की हरी-भरी हरियाली उसे दस हजार फीट ऊंचे जेड पत्थर के समान बना रही थी।

उसके ऊपर असंख्य बादल नीले रंग के जालीदार आवरण की तरह जमे हुए थे।
जब संज़ंग अपने चांदी जैसे घोड़े को धीरे-धीरे आगे बढ़ा रहा था, बंदर अपने बादल पर सवार होकर आगे बढ़ रहा था और सुअर डंडा लिए धीरे-धीरे चल रहा था। जैसे ही उन्होंने पहाड़ की ओर देखा, उन्हें एक बवंडर के उठने की आवाज़ सुनाई दी और संज़ंग घबरा गया।
"वुकोंग," उसने कहा, "एक बवंडर आने वाला है।"
बंदर ने कहा, "हवा से डरने की क्या बात है? आखिर ये तो सिर्फ मौसम है, और इससे डरने की कोई जरूरत नहीं है।"
"लेकिन यह बहुत ही खतरनाक हवा है, बिल्कुल भी प्राकृतिक हवा जैसी नहीं है," संजांग ने जवाब दिया।
"तुम्हें कैसे पता चला?" बंदर ने पूछा।
"बस इसे देखो," संजांग ने कहा:
"यह शक्तिशाली और राजसी ढंग से दहाड़ता और गरजता है,"
दूर आकाश से आ रहा है।
जैसे ही यह पहाड़ी की चोटी को पार करता है, पेड़ कराहने लगते हैं।
जब यह लकड़ी में प्रवेश करता है तो तने मुड़ जाते हैं।
अध्याय 20
293
पश्चिम की यात्रा
नदी के किनारे स्थित विलो का पेड़ जड़ से हिल गया है।
और फूल और पत्तियां बगीचे में चारों ओर चक्कर लगाती हैं।
मछली पकड़ने वाली नावें जाल समेटे हुए हैं, वे रस्सियों को जोर से खींच रही हैं;
जहाज अपने पाल नीचे कर रहे हैं, और सभी लंगर डाल रहे हैं।
यात्री यात्रा के मध्य में ही रास्ता भटक जाता है।
पहाड़ियों में रहने वाला लकड़हारा अपना बोझ नहीं उठा सकता।
बंदर जादुई फलों के बागों में इधर-उधर बिखर जाते हैं।
हिरण दुर्लभ फूलों के गुच्छों से भाग जाते हैं।
"बबूल के पेड़ और देवदार के पेड़ चट्टान के सामने ढह जाते हैं।"
घाटी में चीड़ और बांस के पेड़ पत्तों से रहित हो गए हैं।

धूल और रेत के तेज झोंके आते हैं।
और नदियों और समुद्रों पर लहरें उबल रही हैं।"
सुअर बंदर के पास गया और उसे पकड़ लिया। उसने कहा, "भाई, यह बहुत भयंकर तूफान है। चलो कहीं आश्रय लेते हैं।"
"तुम तो बिलकुल निकम्मे हो, भाई," बंदर ने व्यंग्य भरी हंसी के साथ जवाब दिया। "अगर तेज़ हवा से ही तुम्हें छिपने की इच्छा होती है, तो दुष्ट आत्मा से मिलने पर तुम क्या करोगे?"
"बड़े भाई, क्या तुमने कभी ये कहावत नहीं सुनी, 'सुंदर लड़की से वैसे ही बचो जैसे दुश्मन से, हवा से वैसे ही बचो जैसे तीर से?'" सुअर ने जवाब दिया। "हमें आश्रय लेने में कोई हर्ज नहीं है।"
"बोलना बंद करो, मैं इस हवा को महसूस कर लूँ और इसे सूंघ लूँ," बंदर ने कहा।
"तुम फिर से बेतुकी बातें कर रहे हो," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा। "जैसे कि तुम हवा को पकड़ सकते हो। और अगर पकड़ भी लो, तो तुम्हारा हाथ उसमें से निकल जाएगा।"
“भाई, तुम्हें पता नहीं है कि मेरे पास हवा पकड़ने का एक जादुई तरीका है,” बंदर ने जवाब दिया। हवा के अगले हिस्से को जाने देते हुए, शानदार बंदर ने उसकी पूंछ पकड़ी और उसे सूंघा। उसमें से काफी बदबू आ रही थी। “यह अच्छी हवा तो बिल्कुल नहीं है,” उसने कहा। “यह या तो बाघ की हवा है या किसी राक्षस की हवा। इसमें कुछ तो गड़बड़ है।”
अध्याय 20
294
पश्चिम की यात्रा
उसके मुंह से शब्द निकलने से पहले ही, ढलान की तलहटी से एक भयंकर धारीदार बाघ उछल पड़ा, अपनी पूंछ से वार करते हुए उनकी ओर दौड़ा। संजांग इतना भयभीत हो गया कि वह अपने नक्काशीदार घोड़े की काठी पर बैठ नहीं सका और अपने सफेद घोड़े से सिर के बल गिर पड़ा और रास्ते के किनारे बेसुध पड़ा रहा।
सुअर ने सामान नीचे फेंक दिया, अपना फावड़ा उठाया और बंदर को आगे बढ़ने से रोकते हुए दहाड़ा, "जानवर, तू कहाँ जा रहा है?" बंदर सीधे उसके पीछे गया और उसके सिर पर वार किया। बाघ अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अपने बाएँ

अगले पंजे से एक झटके में अपनी ही छाती को नोंच डाला। उसकी खाल उतरते ही एक भयानक आवाज़ हुई और फिर वह प्राणी रास्ते के किनारे खड़ा हो गया। ज़रा देखो वह कितना भयानक था: एक खून से लथपथ, खाल उतरी हुई लाश।
गोल, लाल रंग के पैर और पंजे।
चमकीले, उलझे हुए बाल,
और सीधी, घनी भौहें।
चार भयावह, लोहे जैसे सफेद नुकीले दांत,
सुनहरी चमकती आँखों का एक जोड़ा।
उसने उमंग भरे स्वर में जोरदार दहाड़ लगाई।
एक शक्तिशाली और राजसी चीख।
“इतनी जल्दी नहीं,” वह चिल्लाया, “इतनी जल्दी नहीं। मैं महान पीले पवन राजा के अग्रिम दस्ते का सेनापति हूँ। मुझे महाराज का सख्त आदेश मिला है कि मैं पर्वत पर गश्त लगाऊँ और कुछ आम इंसानों को पकड़ूँ ताकि वे उन्हें शराब के साथ कुतर सकें। तुम कहाँ से आए हो, भिक्षु, और तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे अपने उस हथियार से घायल करने की?”
"मैं तुम्हें देख लूँगा, जानवर," सूअर ने गुस्से से जवाब दिया। "तुम्हें शायद यह एहसास नहीं है कि मैं कोई आम राहगीर नहीं हूँ: मैं पूर्वी तांग सम्राट के छोटे भाई संज़ंग का शिष्य हूँ, जिसे सम्राट ने पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध से मिलने और शास्त्र मांगने के लिए भेजा है। अगर तुम यहाँ से चले जाओ, हमारा रास्ता मत रोको, और मेरे गुरु को डराना बंद करो, तो मैं तुम्हारी जान बख्श दूँगा। लेकिन अगर तुम इसी तरह उत्पात मचाते रहे, तो तुम पर कोई रहम नहीं होगा।"
बहस करने की जहमत न उठाते हुए, दुष्ट आत्मा सुअर पर झपटी, छुरा घोंपा और उसके चेहरे पर पंजे मारे। सुअर फुर्ती से बच निकला और राक्षस पर अपना रेक चलाया, जो निहत्था होने के कारण मुड़कर भाग गया। सुअर उसके पीछे-पीछे था, वह ढलान के नीचे की ओर भागा और वहाँ घनी झाड़ियों से दो कांसे की तलवारें निकालीं; फिर उन्हें लहराते हुए, वह सुअर की ओर मुड़ा। दोनों पहाड़ी की तलहटी में एक-दूसरे पर वार करते हुए लड़ते रहे। बंदर, जो तांग पुजारी को उठने में मदद कर रहा था, बोला, "महोदय, डरिए मत। आप यहीं बैठिए, मैं सुअर को उस राक्षस को हराने में मदद करता हूँ, फिर हम चल देंगे।" संजांग, जो किसी तरह उठ बैठा था, कांप रहा था

और हृदय सूत्र का जाप कर रहा था।
अध्याय 20
295
पश्चिम की यात्रा
बंदर ने अपना डंडा उठाया और चिल्लाया, "पकड़ो इसे!" सुअर ने ज़बरदस्त कोशिश की, लेकिन राक्षस युद्ध के मैदान से भाग गया। बंदर चिल्लाया, "उसे भागने मत दो, तुम्हें उसे पकड़ना ही होगा।" दोनों ने डंडा और रेक लहराते हुए राक्षस का पहाड़ से नीचे तक पीछा किया। राक्षस इतना परेशान हो गया कि उसने...
"सुनहरे टिड्डे के केंचुली उतारने" जैसा करतब। एक कलाबाजी के साथ वह अपने असली रूप—एक भयंकर बाघ—में लौट आया, लेकिन बंदर और सूअर ने उसे फिर भी भागने नहीं दिया और उसका पीछा करते हुए उसे नष्ट करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। जब राक्षस ने देखा कि वे कितने करीब हैं, तो उसने अपनी छाती फाड़कर अपनी केंचुली फिर से उतार दी और उसे एक ऐसे पत्थर पर रख दिया जो बैठे हुए बाघ के आकार का था। फिर उसने अपना असली शरीर त्याग दिया, एक बवंडर में बदल गया और सीधे रास्ते पर वापस चला गया, जहाँ उसने संज़ंग को हृदय सूत्र का पाठ करते हुए देखा। संज़ंग को राक्षस ने पकड़ लिया और हवा में उड़ा ले गया। बेचारा संज़ंग:
नदी के भिक्षु को बहुत कष्ट भोगने का भाग्य प्राप्त था;
निर्वाण के धर्म में पुण्य कमाना कठिन है।
तांग पुजारी को गुफा के प्रवेश द्वार तक ले जाकर, राक्षस ने तूफान को शांत किया और द्वारपालों से कहा, "महाराज को तुरंत सूचना दें कि अग्रिम पंक्ति के बाघ ने एक भिक्षु को पकड़ लिया है और वह द्वार के बाहर आगे के निर्देशों की प्रतीक्षा कर रहा है।" इसके बाद सरदार के आदेश पर उसे अंदर जाने दिया गया। अपनी कमर में लगी दो कांस्य तलवारों के साथ और दोनों हाथों में तांग पुजारी को पकड़े हुए, वह आगे बढ़ा और सरदार के सामने घुटने टेक दिए। उसने कहा, "महाराज, आपका विनम्र सेवक आदेशानुसार पर्वत पर गश्त कर रहा था, तभी अचानक मेरी मुलाकात एक भिक्षु से हुई। वह तांग सम्राट महाराज के छोटे भाई, कुलपति संज़ंग हैं, और वह पश्चिम में बुद्ध से मिलने और शास्त्रों की माँग करने जा रहे थे। मैंने उन्हें पकड़ लिया है और अब उन्हें आपके भोजन के रूप में अर्पित करता हूँ।"
यह खबर सुनकर सरदार चकित रह गया। "मैंने पैट्रिआर्क संज़ंग के बारे में सुना है, जो

महान तांग सम्राट द्वारा धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजे गए पवित्र पुजारी थे। उनका एक शिष्य है जिसका नाम 'भाई बंदर' है, जिसकी जादुई शक्तियां अद्भुत हैं और वह बहुत चालाक है। आपने उसे कैसे पकड़ा?"

"उसके दो शिष्य हैं। सबसे पहले मुझ पर हमला करने वाला एक ऐसा व्यक्ति था जिसकी लंबी नाक और बड़े कान थे और जो नौ नोकों वाला रेक चलाता था, और दूसरा सोने की पट्टी वाली लोहे की लाठी और सुनहरी पुतलियों वाली ज्वलंत आंखें रखता था।"

जब वे दोनों मेरे पीछे पड़े थे और मुझ पर हमला करने ही वाले थे, तो मैंने भागने के लिए 'सुनहरे झींगुर के छिलके उतारने' वाली तरकीब का इस्तेमाल किया, फिर मैंने इस भिक्षु को पकड़ लिया ताकि महाराज को नाश्ते के रूप में भेंट कर सकूं।"

सरदार ने कहा, "अभी उसे खाया नहीं जाना चाहिए।"

"महामहिम, यदि आप अपने सामने परोसा गया भोजन नहीं खाएंगे, तो आप अवश्य ही भूख से मर चुके होंगे," अग्रिम पंक्ति के बाघ ने कहा।

“तुम मेरी बात नहीं समझ रहे,” सरदार ने उत्तर दिया। “मुझे उसे खाने की चिंता नहीं है, बल्कि इस बात की चिंता है कि उसके वे दो शिष्य यहाँ आकर गड़बड़ कर सकते हैं, जो खतरनाक होगा। उसे पीछे वाले बगीचे में हवा से स्थिर रहने वाले खंभे से बाँध दो और कुछ दिनों के लिए वहीं छोड़ दो, जब तक हमें यकीन न हो जाए कि उसके शिष्य हमें परेशान करने नहीं आएँगे। इस तरह वह साफ-सुथरा रहेगा और हम बिना किसी बहस के उसके साथ जो चाहें कर सकते हैं। चाहे हम उसे उबालें, भाप में पकाएँ, तलें या भूनकर खाएँ, हम उसे आराम से खा सकते हैं।”

"महामहिम की योजनाएँ अत्यंत दूरदर्शी हैं, और आप बिल्कुल सही हैं," अग्रिम पंक्ति के बाघ ने कहा, और फिर अपने अधीनस्थों को संजांग को ले जाने का आदेश दिया।

अध्याय 20

उनमें से सात-आठ लोग संज़ंग को बांधने और ले जाने के लिए आगे बढ़े; वे बाज़ों की तरह झाड़ियों को पकड़ते हुए उसे कसकर बांध रहे थे। तब नदी के उस दुर्भाग्यशाली भिक्षु को भाई बंदर की याद सताने लगी; अपनी विपत्तियों में पवित्र पुजारी ने कामना की कि सुअर आ जाए।

“शिष्यों,” उसने पुकारा, “मुझे नहीं पता कि तुम किस पर्वत पर राक्षसों को पकड़ रहे हो या कहाँ दुष्ट आत्माओं को वश में कर रहे हो, लेकिन मुझ पर विपत्ति आ पड़ी है और मैं एक राक्षस के चंगुल में फँस गया हूँ। हाय, मैं तुमसे फिर कब मिल पाऊँगा? अगर तुम जल्दी आओगे तो मेरी जान बचा सकते हो, लेकिन अगर देर हुई तो मेरा अंत हो जाएगा।” उसकी आँखों से आँसू बारिश की तरह बहने लगे और वह कराहते-कराहते हुए बोला।

बंदर और सुअर पहाड़ की ढलान पर बाघ का पीछा करते हुए नीचे उतरे तो उन्होंने देखा कि बाघ नीचे पहुँच गया है और चट्टान के किनारे दुबका हुआ है। बंदर ने अपनी लाठी उठाई और पूरी ताकत से उस पर वार किया, जिससे उसके अपने हाथों में चोट लग गई। सुअर ने अपने खुरपी से बाघ पर एक और प्रहार किया, जिससे खुरपी के कांटे अलग-अलग हो गए।

वह बाघ असल में एक चट्टान पर बिछाई गई बाघ की खाल थी, जिसका आकार बैठे हुए बाघ जैसा था।

"यह तो बहुत बुरा हुआ," बंदर ने कहा, "उसने हमें धोखा दिया है।"

"कैसे?" सुअर ने पूछा।

"इस तरकीब को 'सुनहरे टिड्डे का अपनी त्वचा उतारना' कहा जाता है। उसने अपनी बाघ की खाल इस चट्टान पर रखी और भाग गया।"

हमें वापस जाकर देखना चाहिए कि हमारे स्वामी को कोई नुकसान न पहुंचे।” वे दोनों दौड़कर वापस आए तो देखा कि संज़ांग गायब हो चुका था। “अब हम क्या करें?” बंदर ने गरजती हुई आवाज में कहा। “उसने हमारे स्वामी को पकड़ लिया है।”

सुअर घोड़े को घसीटते हुए ले गया और रोते हुए बोला, "भगवान हमारी मदद करें। हम उसे कहाँ ढूँढ़ें?"

बंदर ने सिर उठाते हुए कहा, "रो मत, रो मत। अगर तुम रोओगे तो हमारा मनोबल गिर जाएगा। मुझे पूरा यकीन है कि वह इसी पहाड़ पर कहीं होगा। हमें उसकी तलाश शुरू करनी चाहिए।"

वे दोनों पहाड़ों में गहराई तक तेज़ी से आगे बढ़े, दर्रों और पहाड़ियों को पार करते हुए, और काफी देर चलने के बाद उन्हें एक चट्टान के तल पर एक गुफा महल दिखाई दिया। वे उसे निहारने के लिए रुक गए, और उन्होंने एक विस्मयकारी दृश्य देखा:

कई ऊबड़-खाबड़ चोटियों से घिरा हुआ,

चारों ओर प्राचीन पगडंडियाँ घुमावदार रास्तों से घिरी हुई हैं;
हरे चीड़ के पेड़ नीले बांस के साथ मिल गए;
विलो और वुटोंग वृक्षों की कोमलता।
चट्टान के सामने अजीबोगरीब चट्टानें जोड़े में खड़ी थीं।
जबकि पक्षी जंगल में छिपकर जोड़े बना रहे थे।
खाई का पानी चट्टान की दीवार से टकराकर छलक रहा था।
जैसे ही झरने का पानी रेत के टीले पर रिसने लगा।
उमड़ते बादलों के नीचे,

दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ खूब फल-फूल रही थीं।
लोमड़ी की आत्माएं और चालाक खरगोश इधर-उधर दौड़ रहे थे;
सींग वाले हिरण और नदी के किनारे रहने वाले हिरण वर्चस्व के लिए आपस में लड़े।
प्राचीन लताएँ चट्टानों पर फैली हुई थीं।
और एक हजार साल पुराना सरू का पेड़ एक गहरी खाई में लटका हुआ था।
अपनी चरम भव्यता में यह माउंट हुआ से प्रतिस्पर्धा करता था;
यहां के फूल और पक्षियों का मधुर गीत तियानताई शिखर के समान ही थे।
“हे मेरे भाई, हमारा सामान हवा रोकने वाली गुफा में रख दो, घोड़े को चरने के लिए छोड़ दो, और तुम छिप जाओ जबकि मैं उस जगह के द्वार पर जाकर उनसे लड़ता हूँ। मुझे अपने स्वामी को बचाने से पहले उस दुष्ट आत्मा को पकड़ना होगा।”
"मुझे निर्देश देने की कोई ज़रूरत नहीं है," सुअर ने जवाब दिया। "तुरंत जाओ।"
बंदर ने अपनी कमीज़ सीधी की, बाघ की खाल से बनी स्कर्ट कसी और अपने हाथों में गदा लिए सीधे द्वार की ओर चल पड़ा। द्वार के ऊपर उसने बड़े अक्षरों में लिखा देखा: पीली हवा की पहाड़ी की पीली हवा की गुफा। दृढ़ मुद्रा में खड़े होकर और गदा लहराते हुए वह चिल्लाया, "दुष्ट राक्षसों, मेरे स्वामी को बाहर निकालो, नहीं तो तुम्हारी यह गुफा तहस-नहस हो जाएगी और तुम्हारा घर रौंदा जाएगा।"
जब उन छोटे शैतानों ने यह सुना तो वे भयभीत हो गए और कांपते हुए अंदर भागकर बोले, "महाराज, एक आपदा आ गई है।"

"यह क्या है?" अंदर बैठे पीले पवन राक्षस ने पूछा।
उन्होंने कहा, "बाहर एक कर्कश आवाज वाला, दाढ़ीदार चेहरे वाला भिक्षु है जिसके हाथों में लोहे का एक बड़ा मोटा डंडा है, और वह अपने गुरु को वापस चाहता है।"
घबराए हुए सरदार ने अग्रिम पंक्ति के बाघ को बुलवाया और उससे कहा, "जब मैंने तुम्हें पहाड़ पर गश्त के लिए भेजा था, तो तुम्हें केवल पहाड़ी बैल, जंगली सूअर, हिरण और बकरियों को पकड़ना था। तुम उस तांग पुजारी को यहाँ क्यों लाए? इससे उसका शिष्य भड़क गया है और हंगामा करने आ गया है। अब हम क्या करें?"
"महाराज, आपको चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है," बाघ ने उत्तर दिया। "आपका अक्षम अधीनस्थ मेरे साथ पचास कनिष्ठ अधिकारियों को लेकर जाएगा और उस बंदर भाई को भोजन के दूसरे व्यंजन के रूप में वापस लाएगा।"
सरदार ने कहा, “ऊपरी और निचले दर्जे के कमांडरों के अलावा, हमारे पास यहाँ लगभग छह सौ कनिष्ठ अधिकारी हैं। आप जितने चाहें उतने अपने साथ ले जा सकते हैं। अगर आप उस बंदर को पकड़ लेते हैं, तो हम पुजारी के साथ आराम से दावत करेंगे, और मैं आपको अपना पक्का भाई बनाने का वादा करता हूँ। लेकिन मुझे डर है कि आप उसे पकड़ नहीं पाएँगे, और वह आपको मार डालेगा। अगर ऐसा हुआ, तो मुझे दोष मत देना।”
“चिंता मत करो,” बाघ राक्षस ने कहा, “चिंता मत करो। मैं जल्द ही उसके साथ लौट आऊंगा।” पचास बलवान और जोशीले नौजवानों को इकट्ठा करके, वह ढोल बजाते और झंडे लहराते हुए द्वार से बाहर निकल पड़ा; उसकी दो कांसे की तलवारें उसके शरीर से बंधी हुई थीं। “तुम कहाँ से आए हो, वानर भिक्षु?” वह अपनी पूरी आवाज़ में चिल्लाया। “इस सब चीखने-चिल्लाने का क्या मतलब है?”

"अरे, खाल उतारे हुए जानवर," बंदर ने जवाब दिया, "तुमने मेरे मालिक को पकड़ने के लिए खुद की खाल उतारने का नाटक किया, और अब तुम मुझसे पूछने की हिम्मत करते हो कि मैं क्या कर रहा हूँ! मेरे मालिक को तुरंत बाहर लाओ, मैं तुम्हारी जान बख्श दूँगा।"
“हाँ, मैंने तुम्हारे स्वामी को पकड़ लिया है,” राक्षस ने उत्तर दिया, “और उसे महाराज

के भोज में परोसा जाएगा। यदि तुममें थोड़ी भी समझ है, तो यहाँ से चले जाओ। अन्यथा मैं तुम्हें भी पकड़ लूँगा और तुम्हें भी उसके साथ परोसा जाएगा। चूंकि मैंने तुममें से एक को पकड़ लिया है, इसलिए दूसरे को छोड़ दूँगा।" बंदर अब क्रोधित हो गया था, और उसने अपने कठोर दाँत पीसे और उसकी जलती हुई आँखें भयानक गुस्से से चौड़ी हो गईं।

"तुम्हारे पास कौन सी शक्तियां हैं," उसने लोहे का डंडा लहराते हुए दहाड़ा, "जो तुम्हें इतनी बड़ी-बड़ी बातें करने की हिम्मत देती हैं? एक पल रुको, और ये लो।" बाघ ने अपनी तलवारें पकड़ लीं, और दोनों ने अपनी-अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करते हुए भयंकर लड़ाई शुरू कर दी।

वह राक्षस हंस के अंडे जैसा था।

बंदर एक अंडे के आकार का पत्थर था।

पीतल की तलवारों से बंदर को भगाने की कोशिश कर रहा है

यह पत्थर पर अंडे फेंकने जैसा था।

एक कौआ या जैकडॉ फीनिक्स से कैसे लड़ सकता है?

एक बाज के सामने कबूतर की क्या संभावना है?

राक्षस ने इतनी तेज हवाएं उगलीं कि पूरा पहाड़ धूल से ढक गया, लेकिन बंदर ने ऐसा कोहरा छोड़ा जिसने सूरज को ढक दिया।

कई राउंड तक चले संघर्ष के बाद,

अग्रिम पंक्ति का सैनिक पूरी तरह थक चुका था, उसकी सारी ताकत खत्म हो चुकी थी।

वह पराजित होकर अपनी जान बचाने के लिए भागने लगा।

और फिर बंदर ने उसे पीट-पीटकर मार डाला।

जब वह अपना बचाव नहीं कर सका, तो राक्षस भागने लगा। अपने सरदार के सामने उसने इतना घमंड किया था कि गुफा में लौटने की हिम्मत नहीं हुई, इसलिए उसने पहाड़ की ओर भागने की कोशिश की। बंदर, जिसका उसे जाने देने का कोई इरादा नहीं था, लाठी लहराते हुए, दहाड़ते और चिल्लाते हुए, पूरी तेज़ी से उसका पीछा करने लगा। वह उसका पीछा उस खोखले स्थान तक ले गया जहाँ हवा जमा होती थी, जहाँ सुअर घोड़े को चरा रहा था। जैसे ही सुअर ने चिल्लाहट सुनी, वह देखने के लिए मुड़ा, और जब उसने बंदर को हारे हुए बाघ राक्षस का पीछा करते देखा, तो उसने घोड़े को

छोड़ दिया, अपना रेक उठाया और बाघ के सिर पर तिरछा वार किया। बेचारा राक्षस, जो सोच रहा था कि वह रेशमी जाल से निकल गया है, उसे कभी पता नहीं चला कि वह एक मछुआरे के हाथों पकड़ा गया है। सुअर के रेक से नौ छेद हो गए जिनसे खून बह निकला, और दिमाग बाहर निकल आया। इसे साबित करने के लिए एक कविता है:

अध्याय 20

299

पश्चिम की यात्रा

कई साल पहले सच्चे धर्म में परिवर्तित हो गए थे,
उन्होंने मांस खाना छोड़ दिया और उन्हें खालीपन का अहसास हुआ।
वह पूरे दिल से संज़ंग की रक्षा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है।
उन्होंने अपने धार्मिक जीवन के प्रारंभिक दौर में ही यह पुण्य अर्जित कर लिया था।

राक्षस की पीठ के बीचोंबीच पैर जमाकर, सुअर ने दोनों हाथों से रेक घुमाकर उसे फिर से मारा। यह देखकर बंदर बहुत खुश हुआ और बोला, "यही तो तरीका है, भाई। वह कुछ दर्जन छोटे-मोटे दुष्टों को लेकर मुझसे लड़ने आया था, लेकिन मैंने उसे हरा दिया। गुफा में वापस भागने के बजाय वह इस तरफ आया, मानो मरना चाहता हो। अगर तुम यहाँ उससे मिलने न आते, तो वह फिर से भाग जाता।"

"क्या वही था जिसने आंधी लाकर हमारे मालिक को उड़ा दिया था?" सुअर ने पूछा।

“बिल्कुल उसी से,” बंदर ने जवाब दिया। “क्या तुमने उससे पूछा कि हमारा मालिक कहाँ है?” सुअर ने पूछा।

"वह हमारे स्वामी को गुफा में ले गया और उन्हें अपने सरदार को चावल के साथ खिलाना चाहता था। इससे मुझे इतना गुस्सा आया कि मैं उससे लड़ते हुए यहाँ तक आ गया, जहाँ तुमने उसे मार गिराया। इसका श्रेय तुम्हें जाता है, भाई। तुम घोड़े और हमारे सामान की देखभाल करते रहो, जबकि मैं उस राक्षस के शरीर को गुफा तक घसीटकर लाता हूँ और उन्हें एक और लड़ाई के लिए चुनौती देता हूँ। अगर हमें अपने स्वामी को बचाना है तो हमें उस मुख्य राक्षस को पकड़ना ही होगा।"

“तुम सही कह रहे हो,” सुअर ने कहा, “तो जाओ। अगर तुम उस बड़े राक्षस को हरा देते हो, तो ध्यान रखना कि उसका पीछा करते हुए इस तरफ आना ताकि मैं उसे घेरकर मार सकूँ।” शानदार बंदर एक हाथ में लाठी और दूसरे हाथ में मरे हुए बाघ को

लेकर सीधे गुफा के मुँह पर चला गया। सचमुच:
जब कुलपिता दुष्ट राक्षसों से खतरे में थे,
भावना और प्रकृति के संयुक्त सहयोग से राक्षसों को वश में किया गया।
अगर आपको नहीं पता कि उसने दुष्ट राक्षसों को हराया और संजांग को बचाया या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 21
धर्म के रक्षकों ने महान ऋषि के लिए एक फार्म बनाया
सुमेरु के लिंगजी ने पवन राक्षस को शांत किया
पचास छोटे शैतान तितर-बितर होकर गुफा में भाग गए, उनके झंडे और ढोल चकनाचूर हो गए, और उन्होंने सूचना दी, "महाराज, अग्रिम पंक्ति का शेर उस बालदार चेहरे वाले भिक्षु का मुकाबला नहीं कर सकता, जिसने उसका पहाड़ से नीचे तक पीछा किया।" यह खबर सुनकर बूढ़ा राक्षस बहुत क्रोधित हुआ, और वह सिर झुकाकर चुपचाप बैठा सोचने लगा कि क्या करे।
फिर द्वार से छोटे-छोटे राक्षस आकर घोषणा करने लगे, "महाराज, बालदार चेहरे वाले भिक्षु ने अध्याय 21 की हत्या कर दी है।"
300
पश्चिम की यात्रा
अग्रिम पंक्ति के बाघ को घसीटकर द्वार तक ले गए, जहां वह हमें लड़ने के लिए उकसाने के उद्देश्य से हमारा अपमान कर रहा है।
यह सुनकर वह बूढ़ा राक्षस पहले से भी अधिक क्रोधित हो गया और बोला, "यह नीच जानता नहीं कि क्या कर रहा है, मेरे अग्रिम पंक्ति के सेनापति को मार रहा है जबकि मैंने उसके स्वामी को नहीं खाया है। घृणित जानवर। मेरा कवच लाओ। मैंने इस बंदर भाई के बारे में सुना है, और अब मैं इस नौ सिर और आठ पूंछ वाले भिक्षु को देखने जाऊंगा। मैं उसे पकड़कर अपने अग्रिम पंक्ति के बाघ का बदला लूंगा।" छोटे शैतान जितनी जल्दी हो सके कवच ले आए, और जब बूढ़े राक्षस ने उसे ठीक से पहन लिया, तो उसने अपना इस्पात त्रिशूल उठाया और अपनी राक्षसी सेना को गुफा से बाहर ले गया। वह बाहर आते समय वीरता से परिपूर्ण था, और आप देख सकते हैं कि वह किस प्रकार सुसज्जित था:
उसका सुनहरा हेलमेट सूरज की रोशनी में चमक रहा था।

और उनके सुनहरे कवच से प्रकाश परावर्तित हो रहा था।
उसके हेलमेट के ऊपर एक तीतर की पूंछ तैर रही थी।
और उसके कवच के ऊपर लिपटा पतला रेशमी वस्त्र हल्के हंस के पीले रंग का था।
उसके कवच को बांधने वाली बेल्ट अजगर की आकृति जैसी चमकदार थी;
उसकी चमकीली कवच आँखों को चकाचौंध कर देती थी।
उसके हिरण की खाल के जूते
उनका रंग टिड्डी के पेड़ के फूलों जैसा था;
उनकी जटाधारी स्कर्ट
इस पर विलो के पत्तों की आकृति बनी हुई थी।
हाथ में एक तेज धार वाला इस्पात का त्रिशूल लिए हुए,
वह नन्हे ऋषि एरलांग से कम अद्भुत नहीं थे।
जैसे ही वह अपनी गुफा से बाहर आया, बूढ़े राक्षस ने अपनी पूरी आवाज में चिल्लाते हुए कहा, "क्या तुम भाई बंदर हो?"
बाघ जैसे राक्षस के शव पर उछल-कूद कर रहा और अपनी लाठी लहरा रहा बंदर बोला,
"बंदर, तुम्हारे दादाजी यहाँ हैं। मेरे स्वामी को बाहर भेजो।" दुष्ट आत्मा ने बंदर को ध्यान से देखा और पाया कि उसका शरीर छोटा और दयनीय था, चेहरा पिचका हुआ था और उसकी लंबाई चार फीट से भी कम थी।
"बेचारी," उसने हंसते हुए कहा। "मैंने सोचा था कि तुम किसी अजेय नायक जैसी हो, लेकिन अब मुझे समझ आ गया कि तुम असल में कितनी बीमार शैतान हो, बस हड्डियों का ढांचा हो।"
बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "तुम्हारे सिर में आंखें नहीं हैं, मेरे बच्चे। मैं भले ही छोटा हूँ, लेकिन अगर तुम मुझे अपने त्रिशूल के हैंडल से सिर पर मारोगे, तो मैं छह फीट और बढ़ जाऊँगा।"
"तो अपना सिर मजबूत कर लो," राक्षस ने उत्तर दिया, "यह आ रहा है।"
अध्याय 21
301
पश्चिम की यात्रा
जब राक्षस ने महान ऋषि पर प्रहार किया तो वे जरा भी विचलित नहीं हुए, फिर कमर

झुकाकर उन्होंने अपनी लंबाई छह फीट बढ़ा ली, जिससे उनकी कुल लंबाई दस फीट हो गई। राक्षस यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया और उसने अपना त्रिशूल नीचे रखकर चिल्लाते हुए कहा, "भाई बंदर, मेरे द्वार पर आकर ये रक्षात्मक रूप-परिवर्तन क्यों कर रहे हो? ये सब करना बंद करो और इधर आओ ताकि हम अपने करतबों की तुलना कर सकें।"

“मेरे बच्चे,” बंदर ने उत्तर दिया, “जैसा कि कहावत है, ‘यदि तुम्हारे मन में कोई स्नेह है, तो क्रोध में हाथ मत उठाओ; और यदि क्रोध में हाथ उठाओ, तो सभी भावनाओं को एक तरफ रख दो।’ मेरा हाथ बहुत भारी है, और मुझे डर है कि तुम मेरी लाठी सहन नहीं कर पाओगे।” आगे बात न करते हुए, राक्षस ने अपना त्रिशूल घुमाया और बंदर की छाती पर झपटा। बंदर ने बड़ी कुशलता से “काले अजगर की तरह ज़मीन पर पैर पटकना” किया।

राक्षस के सिर पर प्रहार करने से पहले उसने अपने डंडे से त्रिशूल को रोकने के लिए हरकत की। इसके बाद पीली हवा के मुहाने पर उन दोनों के बीच एक शानदार द्वंद्वयुद्ध हुआ: दानव राजा क्रोधित था,

महान ऋषि ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।

क्रोधित दानव राजा

वह अपने अग्रिम पंक्ति के कमांडर का बदला लेने के लिए मंकी को पकड़ना चाहता था;

महान ऋषि

इसका उद्देश्य दुष्ट आत्मा को पकड़ना और उसके स्वामी को बचाना था।

जब त्रिशूल आया तो गदा ने उसे रोक दिया।

जब लाठी त्रिशूल पर लगी तो उसने उसे रोक दिया।

उनमें से एक पर्वत का सर्वोच्च सेनापति था।

दूसरा था सुंदर बंदर राजा, जो कानून का रक्षक था।

पहले तो वे धूल में लड़े,

लेकिन फिर वे हवा में ऊपर उठ गए।

इस्पात की नोक वाला त्रिशूल

वह चमकीला, नुकीला और बेहद तेज था;

जैसा आप चाहें वाला डंडा

वह काले रंग का था और उस पर सोने की धारियां थीं।
जिसके शरीर में छेद किया जाता, वह पाताल लोक में जाता;
यदि उनमें से किसी को भी चोट लगती तो वह निश्चित रूप से यमराज से मिलता।
सब कुछ तेज हाथ और पैनी नजर पर निर्भर था;
अध्याय 21
302
पश्चिम की यात्रा
शक्ति और स्फूर्ति आवश्यक थे।
उनमें से हर कोई जीवन या मृत्यु के प्रति उदासीन था।
कौन बचेगा और कौन मारा जाएगा?
बूढ़े राक्षस और महान ऋषि के बीच लगभग तीस दौर के युद्ध के बाद भी मामला सुलझा नहीं था। बंदर को यश पाने की लालसा थी, इसलिए उसने एक "अतिरिक्त शरीर" का प्रयोग किया: उसने एक बाल नोचा, उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में चबाया, उन सभी को बाहर निकाला और चिल्लाया, "बदलो!" वे सौ से अधिक बंदरों में बदल गए, सभी उसी की तरह कपड़े पहने हुए थे और लोहे के डंडे लिए हुए थे। उन्होंने राक्षस को हवा में घेर लिया, और डर के मारे उसने भी अपनी एक चाल चली। उसने अपना सिर तेज़ी से दक्षिण-पूर्व की ओर घुमाया, अपना मुंह तीन बार खोला और फूँका। अचानक एक पीला तूफान उठ खड़ा हुआ। यह सचमुच भयानक था।
जैसे ही वह चीखने-चिल्लाने लगा, सब कुछ बदल गया;
बिना किसी निशान या छाया के पीली धूल उड़ रही थी।
जंगलों से सीटी बजाते हुए, पहाड़ों को गिराते हुए और पेड़ों को उखाड़ते हुए, धूल उड़ाते हुए लुढ़कती हुई पर्वत श्रृंखला को ढकते हुए।
पीली नदी का जलप्रवाह उफान पर था।
जबकि यांग्त्से नदी की लहरें पीछे की ओर बह गईं।
आकाश में स्थित ध्रुवीय महल हिल उठा।
पाताल लोक में स्थित सेनलुओ महल लगभग पूरी तरह से ध्वस्त हो गया था।
आकाश अर्हतों के जयकारे से गूंज उठा।
आठों महान वज्रपाणि जोर-जोर से चिल्ला रहे थे।
मंजुश्री का काले रंग का शेर भाग गया।

समंतभद्र का सफेद हाथी कहीं नजर नहीं आया।
सच्चे मार्शल सम्राट के कछुए और सांप गायब थे।
ज़ी टोंग के खच्चर को उसकी काठी के कपड़े से उड़ाकर ले जाया गया।
यात्रा करने वाले व्यापारियों ने स्वर्ग से प्रार्थना की,
नाविकों ने सुरक्षा की तलाश में देवताओं से मन्नतें मांगीं।
बाढ़ में कई जानें बह गईं।
अध्याय 21
303
पश्चिम की यात्रा
भाग्य या मृत्यु का निर्णय जल द्वारा होता था।
जादुई पहाड़ पर स्थित गुफा महल घोर अंधेरे में डूबा हुआ था।
और आनंद का द्वीप पेंगलाई उदासी में डूब गया।
लाओ ज़ी बड़ी मुश्किल से ही अपनी भट्टी की देखभाल कर पाता था।
दीर्घायु के सितारे ने ड्रैगन बियर्ड घास का अपना पंखा एक तरफ रख दिया।
महारानी माँ, आड़ू के भोज में जाते हुए,
उसकी कमर पर लटके हुए झुमके हवा में उलझ गए थे।
एर्लांग को अपना शहर गुआंगझोउ नहीं मिल सका;
नेझा बड़ी मुश्किल से अपनी तलवार म्यान से निकाल पाया।
स्वर्ग के राजा ली की नजरें उनके हाथ में मौजूद शिवालय से हट गईं।
बढ़ई लू बान से सोने की नोक वाला उसका औजार गिर गया।
थंडर मठ में स्थित पैगोडा की तीन मंजिलें गिर गईं।
और झाओझोऊ में पत्थर का पुल ढह गया।
सूर्य के लाल पहिये से कोई प्रकाश नहीं निकला।
और आकाश के सारे तारे मंद पड़ गए।
दक्षिणी पहाड़ियों के पक्षियों को उत्तर की ओर ले जाया गया।
पूर्वी झील का जल पश्चिम की ओर बहता था।
पति और पत्नी अलग हो गए।
बच्चे से उसकी माँ को छीन लिया गया।
ड्रैगन राजा ने अपने यक्षों को खोजने के लिए समुद्रों में खोजबीन की।

गर्जन के देवता ने अपनी बिजली की तलाश में हर जगह खोजबीन की।
नरक के दस राजाओं ने न्यायाधीश की तलाश की।
जबकि बैल के सिर वाले राक्षस घोड़े के चेहरे वाले की तलाश कर रहे थे।
इस तूफान ने पोटारका द्वीप को उलट-पुलट कर दिया।
गुआनयिन के सभी धर्मग्रंथों को लपेटकर रखना।
सफेद कमल समुद्रों के पार उड़ गया।
अध्याय 21
304
पश्चिम की यात्रा
और बोधिसत्व के बारह दरबार पूरी तरह से ध्वस्त हो गए।
पान गु, जिसने सृष्टि के समय से लेकर अब तक सभी हवाओं को देखा था,
मैंने इससे पहले कभी इतना बढ़िया नहीं देखा था।
चीखो, चीखो – –
जब पहाड़ और समुद्र कांप उठे,
आकाश और पृथ्वी लगभग पूरी तरह से नष्ट हो गए थे।
राक्षस द्वारा उत्पन्न भयंकर तूफान ने महान ऋषि द्वारा अपने बालों से उत्पन्न सभी छोटे बंदरों को हवा में घूमते पहियों की तरह चकनाचूर कर दिया। वे अपने डंडों का उपयोग तो दूर, अपने शरीर पर भी नियंत्रण नहीं रख पा रहे थे। इस नाजुक क्षण में, बंदर ने अपने बालों को झटक कर वापस अपने शरीर पर बांध लिया और फिर अपने लोहे के डंडे को ऊपर उठाकर युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। राक्षस ने उस पर एक और पीला तूफान चलाया, जो इतना शक्तिशाली था कि बंदर को अपनी सुनहरी पुतलियों वाली धधकती आँखों को कसकर बंद करना पड़ा। उन्हें खोलना असंभव था। अपने लोहे के डंडे का उपयोग करने में असमर्थ होने के कारण, उसे युद्ध के मैदान से भागना पड़ा, जिस पर राक्षस ने अपना तूफान रोक दिया और अपनी गुफा में लौट गया।
जब सुअर ने भयंकर पीले तूफान को उठते और आकाश-पृथ्वी को अंधकार में डुबोते देखा, तो वह घोड़े को पकड़े रहा और डंडे को थामे पहाड़ की ढलान पर बनी खोखली जगह में दुबक गया। उसकी आँखें खोलने या सिर उठाने की हिम्मत नहीं हो रही थी, वह बुद्ध का आह्वान कर रहा था और उनसे तरह-तरह की मन्नतें माँग रहा था। उसे नहीं

पता था कि बंदर जीता है या हारा है, या उनका स्वामी अभी जीवित है या नहीं। जब वह इन सब बातों को लेकर चिंतित था, तभी हवा शांत हो गई और आकाश फिर से साफ हो गया। उसने गुफा के प्रवेश द्वार की ओर देखने के लिए अपना सिर उठाया, लेकिन उसे न तो कोई हथियार दिखाई दिए और न ही कोई घंटा या ढोल की आवाज सुनाई दी। वह मूर्ख उन द्वारों के पास नहीं जाना चाहता था, और घोड़े और सामान की देखभाल करने वाला कोई और नहीं था, इसलिए वह वहीं फँस गया, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, और दुखी महसूस कर रहा था। उसके उदास विचारों को पश्चिम की ओर से बंदर की चिल्लाहट की आवाज ने तोड़ दिया। सुअर आधा उठकर उसका स्वागत करने के लिए खड़ा हुआ और बोला, "बड़े भाई, हवा बहुत तेज थी।"
तुम कहाँ थे?"
“यह बहुत भयानक था,” बंदर ने कहा। “मैंने अपने जीवन में कभी ऐसा तूफान नहीं देखा। वह बूढ़ा शैतान लोहे का त्रिशूल लेकर मुझसे लड़ने आया था, और तीस राउंड तक लड़ने के बाद मैंने अपने अतिरिक्त शरीर की तरकीब का इस्तेमाल करके उसे चारों तरफ से घेर लिया। इससे वह इतना घबरा गया कि उसने जानबूझकर तेज हवा बुला ली। हवा सचमुच बहुत भयंकर थी—इतनी तेज कि मैं खड़ा नहीं रह सका, इसलिए मुझे अपनी तरकीबें छोड़कर वहां से भागना पड़ा। कैसी हवा थी! कैसी हवा थी! मैं हवा या बारिश तो बुला सकता हूँ, लेकिन मैंने कभी भी उसके जैसी भयंकर हवा नहीं बुलाई।”
"क्या वह दुष्ट राक्षस अच्छी तरह से लड़ सकता है?" सुअर ने पूछा।
"वह बिल्कुल भी बुरा नहीं है," बंदर ने जवाब दिया, "और वह इस त्रिशूल को बड़ी कुशलता से चलाता है। उस तेज़ हवा को छोड़कर, जिसकी वजह से उसे हराना नामुमकिन है, हम दोनों बराबर के थे।"
"तो फिर हम अपने मालिक को कैसे बचाएंगे?" सुअर ने पूछा।
"उसकी मदद के लिए इंतजार करना पड़ेगा," बंदर ने जवाब दिया। "पता नहीं यहाँ आस-पास कोई नेत्र विशेषज्ञ है जो मेरी आँखों का इलाज कर सके।"
"उनका क्या हुआ?" सुअर ने पूछा।

"जब उस राक्षस ने मुझ पर अपनी हवा छोड़ी," बंदर ने कहा, "तो मेरी आंखें बहुत दुखने लगीं और उनमें से लगातार पानी बह रहा है।"
"हम पहाड़ पर आधे रास्ते तक पहुँच चुके हैं और रात होने वाली है," पिग ने कहा। "आँखों के डॉक्टर की चिंता छोड़ो, हमारे पास रात बिताने के लिए कोई जगह नहीं है।"
“आश्रय की कोई समस्या नहीं है,” बंदर ने उत्तर दिया। “मुझे नहीं लगता कि वह दुष्ट आत्मा हमारे स्वामी को कोई नुकसान पहुँचाने की हिम्मत करेगी, इसलिए चलो मुख्य मार्ग पर चलते हैं और आज रात रहने के लिए कोई घर खोजते हैं। हम सुबह होते ही यहाँ वापस आकर उस दुष्ट आत्मा को वश में कर लेंगे।”
"बहुत खूब, बहुत खूब," सुअर ने जवाब दिया।
घोड़े को आगे बढ़ाते और सामान ढोते हुए वे घाटी से बाहर निकले और रास्ते पर चल पड़े। शाम ढलने लगी थी तभी उन्हें रास्ते के दक्षिण में एक पहाड़ी के नीचे कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। वे रुककर देखने लगे तो उन्हें एक फार्महाउस दिखाई दिया जिसकी खिड़की में एक दीपक तेज़ी से जल रहा था। उन्होंने रास्ता ढूंढने की बजाय सीधे घास के बीच से होते हुए गेट की ओर रुख किया। वहाँ उन्हें काले जादू का कवक दिखाई दिया।
हरे-सफेद रंग की चट्टानें।
कई जड़ी-बूटियों के बीच जादुई कवक गहरे रंग का था।
सफेद चट्टानें काई से हरी हो गई थीं।
कुछ नन्ही जुगनुओं ने रोशनी के बिंदु बना दिए।
घने वन वृक्षों की कतारों के बीच।
ऑर्किड की सुगंध बहुत तीव्र थी।
और वह कोमल बांस अभी-अभी काटा गया था।
एक शुद्ध जलप्रपात घुमावदार जलधारा के साथ बह रहा था।
एक प्राचीन सरू का पेड़ चट्टान के ऊपर लटका हुआ था।
इस एकांत स्थान पर कोई यात्री नहीं आता था।
और द्वार के सामने केवल जंगली फूल ही खिले हुए थे।
चूंकि वे सीधे अंदर नहीं जाना चाहते थे, इसलिए उन दोनों ने चिल्लाकर कहा, "दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो।"

एक बूढ़ा आदमी कई खेतिहर मजदूरों के समूह के आगे-आगे चल रहा था, जिनके हाथों में कांटे, रेक और झाड़ू थे। उसने पूछा, "तुम कौन हो? तुम कौन हो?"

अध्याय 21

306

पश्चिम की यात्रा

“हम पूर्व में स्थित महान तांग वंश के पवित्र पुजारी के शिष्य हैं,” बंदर ने झुककर उत्तर दिया। “हम पश्चिम की ओर बुद्ध से मिलने और शास्त्रों का अनुरोध करने के लिए इन पहाड़ों को पार कर रहे थे, तभी पीले पवन के महान राजा ने हमारे गुरु को अगवा कर लिया। हम अभी तक उन्हें छुड़ा नहीं पाए हैं, लेकिन अंधेरा होने के कारण हम आपके महल में एक रात ठहरने की विनती करने आए हैं, और हमें पूरी उम्मीद है कि आप हमारी सहायता करेंगे।”

बूढ़े व्यक्ति ने झुककर अभिवादन किया और कहा, "मुझे खेद है कि मैंने आपका ठीक से स्वागत नहीं किया। यह ऐसी जगह है जहाँ बहुत बादल तो दिखते हैं लेकिन लोग बहुत कम आते हैं, और जब मैंने द्वार पर आपकी आवाज़ सुनी तो मुझे लगा कि कहीं लोमड़ी की आत्माएँ, बाघ, पहाड़ों से आए डाकू या कुछ और तो नहीं हैं। मुझे खेद है कि मैंने आपको अनजाने में नाराज़ कर दिया: मुझे नहीं पता था कि यहाँ दो आदरणीय सज्जन होंगे। कृपया अंदर आइए।" वे घोड़े और सामान लेकर अंदर गए, घोड़े को बाँधा, सामान ढोने वाली छड़ी नीचे रखी, बूढ़े व्यक्ति को प्रणाम किया और बैठ गए। एक नौकर चाय लेकर आया, और जब उन्होंने चाय पी ली तो तिल के आटे के कुछ कटोरे परोसे गए। खाना खाने के बाद, बूढ़े व्यक्ति ने उनके लिए बिस्तर तैयार करवाए और उन्हें सोने के लिए कहा।

"हमें अभी सोने की ज़रूरत नहीं है," बंदर ने जवाब दिया और आगे कहा, "क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ, सज्जन, कि क्या यहाँ आस-पास कहीं आँखों का मरहम मिलता है?"

"क्या आपको आंखों की कोई पुरानी बीमारी है, महोदय?" बूढ़े व्यक्ति ने पूछा।

"मैं आपको सच-सच बता सकता हूँ, महोदय," बंदर ने उत्तर दिया, "कि हम धार्मिक लोग पहले कभी बीमार नहीं पड़े हैं, और मुझे पहले कभी आँखों की कोई समस्या नहीं हुई है।"

"तो फिर आप मरहम क्यों मांग रहे हैं?" बूढ़े आदमी ने पूछा।

"आज हम येलो विंड रिज पर अपने मालिक को बचाने की कोशिश कर रहे थे," मंकी ने बताया, "तभी उस राक्षस ने मुझ पर अपनी हवा फेंकनी शुरू कर दी, जिससे मेरी आँखों में दर्द होने लगा। अब मेरी आँखों से लगातार आँसू बह रहे हैं, इसीलिए मैं आँखों के लिए कोई मरहम ढूंढना चाहता हूँ।"

“बड़ी कहानी है,” बूढ़े आदमी ने टिप्पणी की। “आप जैसे आदरणीय सज्जन, और वह भी इतने युवा, ऐसे झूठ कैसे बोल सकते हैं? पीली हवाओं के महान राजा का तूफान सचमुच भयानक है। इसकी तुलना वसंत की हवाओं, शरद ऋतु की हवाओं, चीड़ और बांस की हवाओं, या उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की हवाओं से नहीं की जा सकती।”

"यह ज़रूर दिमाग को झकझोर देने वाली हवा होगी," पिग ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "या फिर बकरी के कान जैसी हवा, या भांग जैसी हवा, या फिर सिर घुमा देने वाली हवा।"

"नहीं, नहीं," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "इसे दिव्य समाधि वायु कहते हैं।"

"यह कैसा है?" बंदर ने पूछा।

यह आकाश और पृथ्वी को अंधकारमय कर सकता है।

देवताओं और शैतानों को उदास कर दो,

चट्टानों को चीरकर चीर दो और पर्वतों को गिरा दो,

और यह सिलसिला तब तक नहीं रुकता जब तक आपकी मृत्यु नहीं हो जाती।

बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, "अगर तुम उस हवा का सामना करते, तो तुम्हारा जीवित रहना असंभव था। ऐसी हवा में केवल कोई देवता या अमर ही जीवित रह सकता है।"

"बिल्कुल सही," बंदर ने उत्तर दिया, "बिल्कुल सही। हालांकि हम स्वयं देवता या अमर नहीं हैं, मैं उन्हें अपने से कमतर मानता हूँ, और मेरा यह जीवन समाप्त करना अत्यंत कठिन है - हवा से बस मेरी आँखों में दर्द हुआ।"

“अगर आपकी बात सच है,” बूढ़े आदमी ने कहा, “तो आप वाकई कोई खास शख्सियत होंगे। हालांकि यहाँ कहीं भी आँखों की मरहम नहीं मिलती, लेकिन हवा चलने पर मेरी आँखों से भी पानी आने लगता है। एक बार मेरी मुलाकात एक ऐसे

अनोखे व्यक्ति से हुई जिसने मुझे 'तीन फूल नौ बीज वाली मरहम' का नुस्खा दिया था। इससे आँखों की सारी सूजन ठीक हो जाती है।"

बंदर ने सिर झुकाया, आदरपूर्वक "ना-आ-आ" का उच्चारण किया और कहा, "कृपया मेरी आँखों में थोड़ा सा लगा दीजिए, मैं देख लूँ।" बूढ़े ने सहमति दी, अंदर गया और एक छोटी सी अगेट की बोतल ले आया। ढक्कन खोलकर उसने एक जेड की हेयरपिन को बोतल में डुबोया और बंदर की आँखों में थोड़ी सी मात्रा डाली, फिर उसे आँखें न खोलने के लिए कहा। उसने कहा कि वह बिना किसी चिंता के सो सकता है और सुबह तक ठीक हो जाएगा। जब उसने लगाना समाप्त कर लिया, तो उसने बोतल का ढक्कन वापस लगा दिया और उसे एक नौकर को अंदर रखने के लिए दे दिया। सुअर ने अपने गठ्ठे खोले, बिस्तर बिछाया और बंदर को सोने के लिए कहा।

बंदर आंखें बंद करके इतनी बेतहाशा इधर-उधर हाथ-पैर मार रहा था कि सुअर उस पर हंस पड़ा और बोला, "क्या आपको अंधे आदमी की छड़ी चाहिए, साहब?"

"भूसा खाने वाले मूर्ख," बंदर ने पलटकर कहा, "क्या तुम मुझे अंधा बनाना चाहते हो?" वह मूर्ख धीरे से हंसते-हंसते सो गया, लेकिन बंदर आधी रात तक बिस्तर पर बैठा सोचता रहा, फिर कहीं जाकर उसे नींद आई।

अगली सुबह लगभग पाँच बजे, सूर्योदय से ठीक पहले, बंदर भाई ने अपना चेहरा मलते हुए आँखें खोलीं और बोला, "यह मरहम वाकई कारगर है—मैं दूर तक देख सकता हूँ, और पहले से कहीं ज़्यादा साफ़।" उसने पीछे मुड़कर देखा, और आश्चर्य से वहाँ कोई घर, खिड़कियाँ या दरवाज़े नहीं थे; बस कुछ पुराने बबूल के पेड़ और ऊँचे विलो के पेड़ दिखाई दे रहे थे। वे दोनों हरी सरकंडे की गद्दी पर सो रहे थे।

"तुम किसलिए चिल्ला रहे हो?" सूअर ने जागते हुए पूछा।

"अपनी आँखें खोलो और देखो," बंदर ने जवाब दिया। उस मूर्ख ने अपना सिर उठाया, और जब उसने देखा कि वहाँ कोई नहीं है, तो वह घबराकर उछल पड़ा और बोला, "हमारा घोड़ा कहाँ है?"

"वहाँ, एक पेड़ से बंधा हुआ," बंदर ने कहा।

"सामान का क्या होगा?"

"वहाँ, तुम्हारे सिर के पास।"

"वे बदमाश," पिग ने कहा, "आधी रात को इधर-उधर घूम रहे थे। धिक्कार है, हम लगभग गहरी नींद में सो रहे थे। उन्होंने बिना हमारी आवाज सुने घर को कैसे तोड़

दिया?"
"बेवकूफ," बंदर ने हंसते हुए कहा, "इधर-उधर चिल्लाना बंद करो। क्या तुम देख सकते हो कि उस पेड़ पर कागज का टुकड़ा क्या है?" सुअर पास गया, उसे फाड़ दिया और देखा कि उस पर कविता की चार पंक्तियाँ लिखी थीं:
"यह खेत मनुष्यों द्वारा बसा हुआ नहीं था;"

सत्य के रहस्योद्घाटकों ने जादू से घर का निर्माण किया।
मैंने तुम्हारी आंखों को ठीक करने के लिए तुम्हें अच्छी दवा दी थी:
अपने पूरे दिल से राक्षसों को वश में करो, और कभी संकोच मत करो।"
"तो वे क्रूर देवता अपनी चालें चलने आए, हालाँकि जब से उन्होंने अजगर को घोड़े में बदल दिया है, तब से मैंने उपस्थिति दर्ज नहीं कराई है," बंदर ने कहा।
"दिखावा मत करो, भाई," सुअर ने कहा। "वे भला तुम्हारी हाजिरी का जवाब कैसे दे पाएंगे?"
बंदर ने उत्तर दिया, "तुम्हें इस बात का एहसास नहीं है कि धर्म के रक्षकों, छह डिंग, छह जिया, पंच लोकों के सत्य प्रकटकर्ताओं और चार कर्तव्य देवताओं को बोधिसत्व द्वारा हमारे गुरु को गुप्त सुरक्षा प्रदान करने का आदेश दिया गया है। उन्होंने तब मुझे अपने नाम बताए थे, लेकिन चूंकि हाल ही में तुम मेरे साथ थे, इसलिए मुझे उनकी दोबारा आवश्यकता नहीं पड़ी, यही कारण है कि मैंने नाम नहीं पुकारे।"
"भाई," सुअर ने उत्तर दिया, "यदि उन्हें हमारे स्वामी की गुप्त रूप से रक्षा करने का आदेश दिया गया है, तो निश्चित रूप से वे अपने असली रूप में प्रकट नहीं हो सकते। इसीलिए उन्होंने जादुई फार्म बनाया है। आपको उन पर गुस्सा नहीं करना चाहिए।"
कल उन्होंने तुम्हें आंखों की मरहम दी और हमें खाना खिलाया—उन्होंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की। उन पर गुस्सा मत करो। चलो हम चलते हैं और मालिक को बचाते हैं।
“तुम बिलकुल सही कह रहे हो,” बंदर ने कहा। “यहाँ से पीली हवा वाली गुफा ज़्यादा दूर नहीं है, इसलिए तुम्हें कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। तुम जंगल में ही रहो और घोड़े व सामान की देखभाल करो, मैं गुफा में जाकर पता लगाता हूँ कि हमारे मालिक कहाँ

हैं, उसके बाद ही मैं उस राक्षस से दोबारा लड़ूँगा।”
"हाँ," सुअर ने कहा, "पता लगा लो कि वह ज़िंदा है या मर गया है। अगर मालिक मर गया है, तो बेहतर होगा कि हम सब अपने-अपने रास्ते चले जाएँ, और अगर वह ज़िंदा है तो हम उसे बचाने के लिए हर संभव कोशिश करेंगे।"
"ऐसी बकवास करना बंद करो," बंदर ने जवाब दिया। "मैं जा रहा हूँ।"
एक ही छलांग में वह गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँच गया, जहाँ सभी के सो जाने के कारण द्वार अभी भी बंद थे। बंदर ने उन्हें द्वार खोलने के लिए नहीं कहा क्योंकि वह राक्षसों को सचेत नहीं करना चाहता था। इसके बजाय उसने एक मंत्र पढ़ा, अपने हाथ से एक जादुई इशारा किया, खुद को झटका दिया और एक छोटे से मच्छर में बदल गया।
इसके बारे में कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:
इसका छोटा सा शरीर परेशानी पैदा करता है और इसका दांत बहुत तेज होता है।
इसकी हल्की सी गूंज बिजली की गड़गड़ाहट की तरह सुनाई देती है।
बिस्तर के चारों ओर लगे पर्दों को पार करने में माहिर।
इसे गर्मियों का गर्म मौसम विशेष रूप से पसंद होता है।
इसे केवल धुएं और मक्खी मारने वाले यंत्रों से ही डर लगता है।
और वह दीपक की चमक से मोहित है।
अध्याय 21
309
पश्चिम की यात्रा
हल्का और छोटा होने के कारण, यह सीधे अंदर उड़ जाता है।
दुष्ट आत्मा की गुफा में प्रवेश करना।
द्वार पर बैठे उस तुच्छ राक्षस को गहरी नींद में खर्राटे लेते देख, बंदर ने उसके चेहरे पर काट लिया, जिससे वह जाग गया और बोला, "हे भगवान! कितना बड़ा मच्छर है! एक ही बार काटने से इसने चेहरे पर एक बड़ा सा उभार बना दिया है।"
फिर उसने अपनी आँखें खोलीं और घोषणा की, "उज्ज्वल हो गया है।" दोनों द्वार चरमराते हुए खुल गए, और बंदर भिनभिनाते हुए अंदर उड़ गया। वहाँ उसने देखा कि बूढ़ा राक्षस आदेश दे रहा था कि सभी द्वारों पर कड़ी निगरानी रखी जाए और सभी हथियार फलाँ स्थान पर एकत्रित किए जाएँ।

"मुझे डर है कि कल की हवा ने भाई बंदर को नहीं मारा होगा," वह कह रहा था, "और मुझे लगता है कि वह आज जरूर वापस आएगा। जब वह आएगा, तो मैं उसे खत्म कर दूंगा।"

यह सुनकर बंदर उड़कर हॉल के पिछले हिस्से में चला गया, जहाँ उसने एक दरवाजा देखा जो कसकर बंद था।

वह दरवाजे के दो पल्लों के बीच की दरार से फिसलकर एक बड़े खाली बगीचे में पहुँच गया, जिसके एक तरफ हवा से स्थिर होने वाला खंभा था, जिससे तांग पुजारी बंधा हुआ था। सान्ज़ांग की आँखों से आँसू बह रहे थे, वह सोच रहा था कि बंदर और सुअर कहाँ हैं। बंदर ने उड़ना बंद कर दिया और अपने मुंडे हुए सिर को नोचते हुए पुकारा, "स्वामी।"

"बंदर," संजांग ने उसकी आवाज पहचानते हुए कहा, "क्या तुम मुझे मरवाना चाहते हो? तुम मुझे कहाँ से फोन कर रहे हो?"

"हम आपके सिर पर हैं, स्वामी। चिंता मत कीजिए। हम उस दुष्ट आत्मा को जरूर पकड़ लेंगे और आपकी जान बचा लेंगे।"

"उस दुष्ट आत्मा को पकड़ने में तुम्हें कितना समय लगेगा, मेरे शिष्य?"

बंदर ने जवाब दिया, "सूअर ने उस बाघ जैसे राक्षस को मार डाला है जिसने तुम्हें बंदी बनाया था, लेकिन वह बूढ़ा दुष्ट तूफान लाने में माहिर है। फिर भी, मुझे पूरा यकीन है कि मैं उसे आज पकड़ लूंगा, इसलिए चिंता मत करो और रोना बंद करो। मैं अब जा रहा हूँ।"

ये शब्द कहकर वह तेज़ी से सामने वाले हॉल की ओर चला गया, जहाँ उसने बूढ़े राक्षस को अपने सिंहासन पर बैठे अपने सेनापतियों का निरीक्षण करते देखा। तभी एक युवा दुष्ट आत्मा अचानक अपने हाथों में कमान का झंडा लिए हुए अंदर आया और बोला, "महाराज, मैं अभी पहाड़ पर गश्त करने निकला था, तभी मैंने जंगल में एक लंबे थूथन और बड़े कानों वाले भिक्षु को बैठे देखा। अगर मैं अपनी पूरी ताकत से न भागा होता, तो वह मुझे पकड़ लेता। लेकिन मैंने उस बालदार चेहरे वाले भिक्षु को नहीं देखा।"

"अगर भाई बंदर वहां नहीं था," बूढ़े शैतान ने कहा, "तो वह हवा से मारा गया होगा, और वह अपने मालिक को बचाने के लिए सैनिकों को लाने नहीं जा रहा होगा।"

"महाराज, अगर हवा ने उसे मार डाला, तो हम भाग्यशाली हैं। लेकिन अगर वह नहीं

मरा और इसके बजाय दिव्य सैनिकों को लाने चला गया, तो क्या किया जाए?"
"दिव्य सैनिकों से इतना डरने की क्या बात है?" बूढ़े राक्षस ने कहा। "बोधिसत्व लिंगजी के अलावा उनमें से कोई भी मेरी वायु शक्ति को नहीं बुझा सकता, इसलिए बाकी से डरने की कोई जरूरत नहीं है।"
जब बंदर ने छत की कड़ियाँ पर बैठे हुए यह सुना, तो वह खुशी से झूम उठा। सीधे उड़ते हुए, वह अपने असली रूप में लौट आया और "भाई" कहते हुए वापस जंगल में चला गया।
अध्याय 21
310
पश्चिम की यात्रा
"तुम कहाँ थे?" सुअर ने पूछा। "मैंने अभी-अभी एक झंडे की मदद से एक दुष्ट आत्मा को भगाया है।"
बंदर मुस्कुराते हुए बोला, "शाबाश! बहुत बढ़िया! मैंने मच्छर का रूप धारण किया और अपने स्वामी से मिलने गुफा में गया। वह वहाँ एक खंभे से बंधे रो रहे थे। मैंने उनसे कहा कि रोना मत, फिर मैं छत के एक बीम पर उड़ गया और उनकी बातें ध्यान से सुनीं। मैंने देखा कि कमान का झंडा लिए हुए वह आदमी हाँफता हुआ आया और बताया कि तुमने उसे भगा दिया है और उसने मुझे नहीं देखा। वह बूढ़ा आदमी कुछ बेतुके अंदाजे लगा रहा था।"
पहले तो उसने कहा कि मैं उसकी हवा से मारा गया था, फिर उसने कहा कि मैं दिव्य सैनिकों की मदद मांगने गया था। यह आश्चर्यजनक है - उसने उस व्यक्ति का नाम बता दिया।
"किसका नाम?" सुअर ने पूछा।
"उन्होंने कहा कि बोधिसत्व लिंगजी के अलावा कोई भी दिव्य सैनिक उनकी वायु को दबा नहीं सकता," बंदर ने आगे कहा, "लेकिन मुझे नहीं पता कि बोधिसत्व लिंगजी कहाँ रहते हैं।"
जब वे सोच रहे थे कि क्या करें, तभी एक बूढ़ा आदमी सड़क पर से गुजरा। उसे देखो: वह इतना मजबूत था कि उसे छड़ी की जरूरत नहीं थी।
लेकिन उसकी दाढ़ी बर्फ जैसी थी और उसके लहराते बाल बर्फीले थे।
हालांकि उसकी सुनहरी चमकती आंखें कुछ धुंधली सी लग रही थीं,

उनकी उम्रदराज हड्डियों और मांसपेशियों ने अपनी ताकत नहीं खोई थी।
वह धीरे-धीरे चलता था, कमर झुकी हुई और सिर नीचे झुका हुआ था।
लेकिन उनकी चौड़ी भौंहें और गुलाबी गाल एक लड़के के थे।
अगर आप उसके रूप-रंग के आधार पर उसे कोई नाम देते,
दीर्घायु का सितारा अपनी गुफा से बाहर आ गया था।
जब सुअर ने उसे देखा तो प्रसन्न होकर बोला, "भाई, तुम यह कहावत तो जानते ही हो, 'पहाड़ से नीचे उतरने का रास्ता किसी अनुभवी यात्री से पूछो।' क्यों न तुम उससे पूछ लो?" महान ऋषि ने अपना लोहे का डंडा एक तरफ रख दिया, अपने कपड़े उतारे और बूढ़े व्यक्ति के पास गए। उन्होंने कहा, "प्रणाम, दादाजी।"
आधे-अधूरे मन से जवाब देते हुए और आधे-अधूरे ही जवाब देते हुए, बूढ़े व्यक्ति ने अपना धनुष लौटा दिया और पूछा, "आप कहाँ से आए हैं, भिक्षु, और आप इस सुनसान जगह पर क्या कर रहे हैं?"
"हम पवित्र भिक्षु हैं जो शास्त्रों को लेने जा रहे हैं," बंदर ने उत्तर दिया। "कल हमने अपने गुरु को यहाँ खो दिया था, और हम आपसे पूछना चाहते हैं, महोदय, कि बोधिसत्व लिंगजी कहाँ रहते हैं।"
“लिंगजी यहाँ से हज़ार मील दक्षिण में रहते हैं,” बूढ़े व्यक्ति ने कहा, “छोटे सुमेरु पर्वत नामक एक पहाड़ पर। वहाँ एक पवित्र स्थान है, जो उनका मठ है, जहाँ वे धर्मग्रंथों का उपदेश देते हैं। क्या आप उनसे धर्मग्रंथ लाने जा रहे हैं?”

"नहीं," बंदर ने उत्तर दिया, "हम उससे धर्मग्रंथ लाने नहीं जा रहे हैं, बल्कि किसी और बात पर उसे परेशान करने जा रहे हैं।"
वहां कैसे पहुंचा जा सकता है?
बूढ़े व्यक्ति ने दक्षिण की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह घुमावदार रास्ता तुम्हें ले जाएगा।" इस प्रकार महान ऋषि को मुड़कर देखने के लिए प्रेरित करते हुए, बूढ़ा व्यक्ति हवा के झोंके में बदल गया और आँखों से ओझल हो गया। उसका केवल एक कागज़ का टुकड़ा ही दिखाई दिया जो उसने सड़क के किनारे छोड़ दिया था। उस पर कविता की चार पंक्तियाँ लिखी थीं:

मैं स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि को रिपोर्ट करता हूँ।
मैं लॉन्ग लाइफ ली हूँ।
सुमेरु पर्वत पर एक उड़ने वाला ड्रैगन स्टाफ है।
यह वही हथियार है जो बुद्ध ने एक बार लिंगजी को दिया था।
बंदर भाई ने चिट्ठी उठाई और चल पड़ा। "भाई, पिछले कुछ दिनों से हमारी किस्मत कितनी खराब चल रही है," सुअर ने कहा। "पिछले कुछ दिनों से हमें दिन के उजाले में भी भूत दिख रहे हैं। वो बूढ़ा आदमी कौन था जो हवा बन गया?" बंदर ने कागज का टुकड़ा उसे दे दिया, और जब उसने उसे पढ़ा तो कहा,
"यह लॉन्ग लाइफ ली कौन है?"
"वह पश्चिम का महान श्वेत ग्रह है," बंदर ने उत्तर दिया।
सुअर ने तुरंत सिर झुकाकर कहा, "मेरे उपकारक, मेरे उपकारक। अगर उन्होंने जेड सम्राट की स्मृति में स्मारक न बनवाया होता, तो मुझे नहीं पता कि मेरा क्या होता।"
"तो तुम कृतज्ञता महसूस करने में सक्षम हो," बंदर ने कहा। "इस बीच, तुम बिना किसी को दिखाए इन जंगलों में गहराई में छिप जाओ, और सामान और घोड़े पर कड़ी नज़र रखो, जबकि मैं बोधिसत्व से मिलने के लिए सुमेरु पर्वत पर जाता हूँ।"
"समझ गया," सुअर ने कहा, "समझ गया। तुम जितनी तेज़ी से जा सकते हो जाओ। मैंने कछुए की तरकीब सीख ली है, और ज़रूरत पड़ने पर अपना सिर अंदर खींच सकता हूँ।"
महान ऋषि बंदर हवा में उछले और अपनी कलाबाज़ी करते बादल पर सवार होकर अत्यंत गति से दक्षिण की ओर चल पड़े। वे सिर हिलाकर हज़ार मील की दूरी तय कर सकते थे और कमर घुमाकर आठ सौ चरण पार कर सकते थे। पल भर में ही उन्होंने शुभ बादलों और एक सकारात्मक आभा से घिरे एक ऊंचे पर्वत को देखा। पर्वत की एक घाटी में एक मठ था, जहाँ से दूर से घंटियों और पत्थर की घंटियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी और ऊपर अगरबत्ती के धुएँ की एक धुंध छाई हुई थी। बंदर सीधे द्वार पर गए, जहाँ उन्होंने गले में माला पहने एक गृहस्थ को बुद्ध का आह्वान करते देखा।
"प्रणाम हो, मेरे प्रिय भाई," बंदर ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया।
उस भिक्षु ने उत्तर में उन्हें प्रणाम किया और पूछा, "आप कहाँ से हैं, महोदय?"
"क्या यहीं पर बोधिसत्व लिंगजी शास्त्रों का उपदेश देते हैं?" बंदर ने पूछा।
“जी हां, यही जगह है,” उस भिक्षु ने उत्तर दिया। “क्या आपके पास उनके लिए कोई

संदेश है?”
अध्याय 21
312
पश्चिम की यात्रा
"मैं चाहता हूं कि आप उन्हें बता दें कि मैं भाई सन वुकॉन्ग हूं, जो स्वर्ग के समान महान ऋषि हैं, और पूर्व में महान तांग के सम्राट महामहिम के छोटे भाई, कुलपति संज़ंग के शिष्य हूं, और एक ऐसा मामला है जिसके बारे में मैं बोधिसत्व से मिलना चाहता हूं।"
"सर, इतने सारे शब्द याद रखना मेरे लिए बहुत मुश्किल है," आम भाई ने मुस्कुराते हुए कहा।
“तो उसे बता दो कि तांग पुरोहित का शिष्य सन वुकॉन्ग यहाँ है,” बंदर ने उत्तर दिया।
गृहस्थ ने वैसा ही किया जैसा उसने कहा और संदेश देने के लिए प्रवचन कक्ष में चला गया। बोधिसत्व ने अपना वस्त्र पहना, कुछ अगरबत्ती जलाई और उसका स्वागत करने की तैयारी की। जैसे ही महान ऋषि द्वार से अंदर गए और अंदर देखा, उन्हें यह दृश्य दिखाई दिया:
जटाओं से भरा एक हॉल,
एक विस्मयकारी भव्यता से परिपूर्ण कमरा।
सभी भिक्षु कमल सूत्र का पाठ कर रहे थे।
वृद्ध मुख्य पुजारी ने हल्के से सोने की घंटी बजाई।
बुद्ध को अर्पित की जाने वाली भेंटें
क्या वे जादुई फल और जादुई फूल थे?
मेजों पर सजाकर रखें
वे मांस रहित व्यंजन थे।
चमकीली मोमबत्तियाँ
इंद्रधनुष की ओर सुनहरी लपटें भेजीं,
सुगंधित अगरबत्ती से
पारदर्शी धुंध में हरे रंग का धुआं उठता हुआ दिखाई दिया।
प्रवचन समाप्त होने और मन शांत होने के बाद, समाधि की अवस्था में प्रवेश किया गया।

सफेद बादल चीड़ के पेड़ों की चोटियों के चारों ओर लिपटे हुए थे।
जब ज्ञान की तलवार म्यान में रख दी जाती है, तो राक्षस का सिर काट दिया जाता है; प्रज्ञा-पारमिता की शक्तियाँ महान हैं।
बोधिसत्व ने अपने वस्त्र समेटे और बंदर से मिलने बाहर आए। बंदर सीढ़ियाँ चढ़कर हॉल में आया और अतिथि की सीट पर बैठ गया। जब चाय लाने का आदेश दिया गया, तो बंदर ने कहा, "मैं आपको चाय देने के लिए परेशान नहीं करूँगा। मेरे स्वामी पीले पवन पर्वत पर संकट में हैं, और मैं आपसे, बोधिसत्व, यह विनती करने आया हूँ कि आप अपनी महान शक्तियों का उपयोग करके राक्षस को वश में करें और मेरे स्वामी को बचाएँ।"
अध्याय 21
313
पश्चिम की यात्रा
“तथागत बुद्ध ने मुझे पीले पवन राक्षस की रक्षा करने का आदेश दिया है,” बोधिसत्व ने उत्तर दिया। “तथागत ने मुझे एक वायु-शांत करने वाली गोली और एक उड़ने वाला ड्रैगन दंड दिया था। जब मैंने उस राक्षस को पहले पकड़ा था, तब तथागत ने उसकी जान बख्श दी थी और उसे इस पर्वत पर एकांतवास में रहने के लिए निर्वासित कर दिया था, जहाँ उसे हत्या करने या कोई अन्य बुराई करने की अनुमति नहीं है। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह आज आपके गुरु की हत्या करना चाहेगा। मैं इसके लिए स्वयं को उत्तरदायी मानता हूँ क्योंकि मैं अपने आदेशों का पालन करने में विफल रहा हूँ।” बोधिसत्व बंदर को भोजन और वार्ता के लिए रोकना चाहते थे, लेकिन बंदर की विनती पर उन्होंने अपना उड़ने वाला ड्रैगन दंड उठाया और महान ऋषि के साथ बादल पर सवार होकर चले गए।
कुछ ही क्षणों में वे पीली हवा के पर्वत पर पहुँच गए, और बोधिसत्व ने कहा, "हे महान ऋषि, क्योंकि यह दुष्ट राक्षस मुझसे थोड़ा डरा हुआ है, इसलिए बेहतर होगा कि मैं यहीं बादल के भीतर रहूँ जबकि आप नीचे जाकर उसे बाहर आकर लड़ने के लिए चुनौती दें। एक बार जब आप उसे बाहर निकाल लेंगे, तो मैं अपनी दिव्य शक्ति का प्रयोग कर सकता हूँ।" बोधिसत्व के सुझाव के अनुसार, बंदर ने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा; और बिना देर किए उसने अपने लोहे के डंडे से गुफा के द्वार तोड़ दिए।

"हे राक्षस, मेरे स्वामी को वापस दे दो," वह चिल्लाया।

द्वार पर तैनात सभी छोटे शैतान यह खबर देने के लिए दौड़ पड़े, और बूढ़े राक्षस ने कहा, "उस लानत बंदर की तो हद ही हो गई—ठीक से बर्ताव करने की बजाय, मेरे द्वार तोड़ने आया है। इस बार मैं ऐसी जादुई हवा चलाऊंगा जो उसे निश्चित रूप से मौत के घाट उतार देगी।" पहले की तरह कवच पहनकर और त्रिशूल लेकर वह द्वार से बाहर निकला, और जैसे ही उसने बंदर को देखा, उसने बिना एक शब्द बोले सीधे अपने त्रिशूल से उसकी छाती पर वार किया। बंदर एक तरफ हटकर वार से बच गया और अपने डंडे से राक्षस के चेहरे पर पलटवार किया।

कुछ ही दौर की लड़ाई के बाद, राक्षस दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ा और जैसे ही उसने अपना मुँह खोलकर हवा छोड़नी चाही, तभी बोधिसत्व लिंगजी हवा में प्रकट हुए और उस पर उड़ने वाला ड्रैगन स्टाफ गिरा दिया। राक्षस जब तरह-तरह के मंत्रों का जाप कर रहा था, तभी आठ पंजों वाले सुनहरे ड्रैगन ने अपने दो पंजों से उसे पकड़ लिया और कई बार एक चट्टान से टकरा दिया। इस पर राक्षस अपने असली रूप में लौट आया—एक भूरा मार्टन।

बंदर उस पर झपटा और उसे मारने के लिए अपना गदा उठा ही रहा था कि बोधिसत्व ने उसे रोककर कहा, "हे महामहिम, इसे मत मारो। मुझे इसे तथागत के पास ले जाना है। यह पहले एक नेवला था जिसने गिद्ध शिखर के नीचे मार्ग प्राप्त किया था, और एक बार इसने एक क्रिस्टल दीपक से कुछ शुद्ध तेल चुरा लिया था। जब दीपक बुझ गया तो वह वज्रपाणि द्वारा पकड़े जाने से इतना डर गया कि वह भाग गया और यहाँ एक प्रेत राक्षस बन गया। तथागत ने निर्णय लिया कि यह कोई गंभीर अपराध नहीं है, इसलिए मुझे इसकी रक्षा के लिए भेजा जाना चाहिए; लेकिन यदि इसने किसी की जान ली या कोई अन्य बुरा कर्म किया तो इसे गिद्ध शिखर ले जाया जाएगा। हे महामहिम, चूंकि इसने अब आपको नाराज किया है और तांग पुजारी को हत्या के इरादे से बंदी बना लिया है, इसलिए मुझे इसे तथागत के पास ले जाना होगा ताकि इस मामले को निपटाने से पहले इसके अपराध के लिए इसे सजा दी जा सके।"

इसी बीच, सुअर, जो जंगल में इंतजार करते हुए बंदर के बारे में सोच रहा था, ने पहाड़ की ओर से एक आवाज सुनी, "सुअर, सामान और घोड़े को बाहर ले आओ।"

आवाज को बंदर की आवाज पहचानते ही, वह मूर्ख उन चीजों को लेकर जंगल से बाहर भागा और बंदर से पूछा,

"यह कैसे हुआ?"
"मैंने बोधिसत्व लिंगजी को बुलाया, और उन्होंने अपने उड़ने वाले ड्रैगन स्टाफ का उपयोग करके दुष्ट आत्मा को पकड़ लिया, जो कि भूरे रंग के कोट वाले नेर्टन की आत्मा निकली और बोधिसत्व उसे बुद्ध से मिलने के लिए गिद्ध शिखर पर ले गए। हम दोनों को अपने गुरु को बचाने के लिए गुफा में जाना चाहिए।" यह खबर सुनकर वह मूर्ख बहुत प्रसन्न हुआ।
वे दोनों गुफा में घुस गए और लोहे के डंडे और रेक से अंदर मौजूद सभी दुष्ट खरगोशों, लोमड़ियों, हिरणों और बारहसिंगों को मार डाला। फिर वे अपने स्वामी को बचाने के लिए पीछे के बगीचे में गए। जब वह बाहर आया तो उसने पूछा, "तुम दोनों ने उस दुष्ट आत्मा को कैसे पकड़ा? मुझे कैसे बचाया?" बंदर ने उसे बताया कि कैसे लिंगजी ने दुष्ट आत्मा को वश में किया था, और संजांग ने अध्याय 21 में विस्तार से अपना आभार व्यक्त किया।

उन दोनों ने गुफा में मौजूद मांस रहित भोजन से खाना तैयार किया। फिर वे गुफा से बाहर निकले और पश्चिम की ओर जाने वाले मुख्य रास्ते की तलाश करने लगे।
अगर आपको नहीं पता कि आगे क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 22
बहती रेत नदी में एक सुअर एक भयंकर लड़ाई लड़ता है
मोक्ष ने धर्म का पालन किया और साधु सैंड का विश्वास जीत लिया।
यह कहानी बताती है कि कैसे तांग पुरोहित और उनके दो शिष्य अपनी मुसीबतों से बच निकले और आगे बढ़े।
कुछ ही क्षणों में वे पीली हवा की पर्वतमाला को पार कर चुके थे और एक मैदानी इलाके में पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे। समय तेजी से बीत रहा था और ग्रीष्म ऋतु पतझड़ में परिवर्तित हो गई। ठंडे मौसम में विलो के पेड़ों पर झींगुरों की चहचाहट सुनाई दे रही थी और महान अग्नि तारा पश्चिमी क्षितिज के नीचे डूब रहा था। एक दिन यात्रा करते हुए उन्होंने एक विशाल नदी की शक्तिशाली लहरें देखीं, जो उफनती और उग्र थीं। "शिष्य," संजांग ने अपने घोड़े से पुकारा, "क्या तुम हमारे सामने उस विशाल

नदी को देख रहे हो?"
इस पर कोई नाव क्यों नहीं है, और हम इसे पार कैसे करेंगे?
नदी को देखकर पिग ने कहा, "ये लहरें तो वाकई बहुत भयानक हैं, और हमें पार कराने के लिए कोई नाव भी नहीं है।"
बंदर आसमान में उछला, अपने हाथों से अपनी आँखों को ढँका और देखा। "मालिक," उसने घबराकर कहा, "हम बहुत बड़ी मुसीबत में हैं। मैं तो कमर हिलाकर इस नदी को पार कर सकता हूँ, लेकिन मुझे डर है कि आप दस हज़ार साल में भी इसे पार नहीं कर पाएँगे।"
"तो यह कितना चौड़ा है?" संजांग ने पूछा। "मुझे यहां से दूसरा किनारा दिखाई नहीं दे रहा है।"
"लगभग तीन सौ मील," बंदर ने जवाब दिया। "भाई, तुम्हें दूरी का इतना पक्का पता कैसे है?" सुअर ने पूछा।
“मेरी ये आँखें दिन के उजाले में साढ़े तीन सौ मील दूर तक की घटनाएँ देख सकती हैं,” बंदर ने उत्तर दिया। “अभी जब मैंने ऊपर से देखा तो नदी की लंबाई तो नहीं देख पाया, लेकिन यह ज़रूर देखा कि यह साढ़े तीन सौ मील चौड़ी है।” उदास और चिंतित होकर, संज़ंग ने अपने घोड़े की लगाम खींची और नदी के किनारे एक पत्थर की शिला देखी। तीनों उसे देखने गए और उन्होंने उस पर प्राचीन घुमावदार शैली में ‘बहती रेत की नदी’ शब्द खुदे हुए देखे। शिला के आधार पर मानक लिपि में चार पंक्तियाँ थीं:
"तीन सौ मील तक फैली बहती रेत,
तीन हजार फैदम कमज़ोर पानी,
जिस पर हंस का पंख भी न तैरे,
और सरकंडे का फूल डूब जाएगा।
जब वे तीनों इस पट्टिका को देख रहे थे, तभी उन्हें लहरों की गर्जना सुनाई दी, मानो कोई पहाड़ ढह रहा हो, और पानी से एक अत्यंत भयानक दुष्ट आत्मा प्रकट हुई।
अध्याय 22
315
पश्चिम की यात्रा
उलझे हुए बालों का एक गुच्छा, आग की तरह लाल,
दो टकटकी लगाए आंखें, दीयों की तरह चमक रही थीं।

एक नीला चेहरा, न काला न हरा,
ड्रैगन की आवाज ढोल या गरज की तरह थी।
उसके शरीर पर पीले हंस के पंखों का एक लबादा था।
कमर पर सफेद लता से बंधी हुई।
उसके गले में नौ खोपड़ियाँ लटकी हुई थीं।
और उनके हाथों में एक विशाल लाठी थी।
राक्षस बवंडर की तरह नदी के किनारे आया और सीधे तांग पुजारी पर झपटा। बंदर ने तुरंत संज़ंग को उठाया, मुड़ा और ऊँचे किनारे की ओर भाग गया। सुअर ने अपना डंडा गिरा दिया, अपना रेक उठाया और दुष्ट आत्मा पर प्रहार किया, जिसने अपने डंडे से वार को रोक दिया। उन दोनों ने बहती रेत नदी के किनारे अपनी-अपनी वीरता का प्रदर्शन किया और यह एक शानदार लड़ाई थी।
नौ शाखाओं वाला रेक,
और राक्षस को शांत करने वाली छड़ी:
नदी के किनारे दो आदमी लड़ रहे हैं।
उनमें से एक महान सेनापति तियान पेंग थे।
दूसरा निर्वासित पर्दा उठाने वाला जनरल था।
वे लोग चमत्कारी धुंध के हॉल में मिलते थे।
लेकिन अब वे भयंकर युद्ध में उलझे हुए थे।
रेक ने पंजे वाले ड्रैगनों में गहरी खुदाई कर दी थी।
कर्मचारियों ने दांत वाले हाथियों को हरा दिया था।
जब दोनों में से किसी को भी रक्षात्मक स्थिति में रखा जाता था, तो वह चट्टान की तरह मजबूत होता था;
आक्रमण के दौरान वे हवा की दिशा में आगे बढ़ते हैं।
एक ने सिर और चेहरे पर पंजे मारे,

दूसरे ने कभी घबराहट नहीं दिखाई और न ही कोई मौका छोड़ा।
उनमें से एक फ्लोइंग सैंड्स नदी का नरभक्षी राक्षस था,

दूसरा व्यक्ति एक विश्वासी था, एक सेनापति जो अपने आचरण को सुधार रहा था। दोनों के बीच बीस दौर तक लड़ाई चलती रही, लेकिन कोई भी विजयी नहीं हुआ। महान ऋषि, जो तांग पुजारी को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के बाद घोड़े को पकड़े हुए और सामान की देखभाल कर रहे थे, सुअर और राक्षस को लड़ते देख इतने क्रोधित हो गए कि उन्होंने अपने दांत पीस लिए और मुट्ठियां भींच लीं।

जब वह खुद को और रोक नहीं सका, तो उसने अपनी लाठी निकाली और कहा, "मालिक, आप यहीं बैठिए और डरिए मत। मैं उसके साथ खेलने जा रहा हूँ।" संज़ांग की विनती को अनसुना करते हुए, उसने सीटी बजाई, नदी के किनारे कूद गया और पाया कि सुअर और राक्षस के बीच लड़ाई अपने चरम पर थी। बंदर भाई ने अपनी लाठी घुमाई और राक्षस के सिर पर निशाना साधा, लेकिन राक्षस ने बिजली की गति से पलटी मारी और सीधे नदी में कूद गया। सुअर गुस्से से आग बबूला हो गया।

"किसी ने आपको आने के लिए नहीं कहा था, बड़े भाई," उसने कहा। "वह राक्षस थक रहा था और मेरे वार का सामना मुश्किल से कर पा रहा था। कुछ और वार करता तो मैं उसे पकड़ लेता, लेकिन आपने उसे इतना डरा दिया कि वह भाग गया, धिक्कार है!"

"भाई," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "सच कहूँ तो, तुम्हें इतनी खूबसूरती से लड़ते देख मुझे ज़बरदस्त खुजली होने लगी। पीले पवन राक्षस से निपटने के बाद पहाड़ से नीचे आने के बाद से मैंने पूरे एक महीने तक अपनी लाठी नहीं चलाई थी—मुझे भी मजे में शामिल होना ही था। मुझे क्या पता था कि राक्षस खेलना नहीं चाहेगा और भाग जाएगा?"

फिर उन दोनों ने हाथ मिलाए और बातें करते-करते हंसते हुए वापस संजांग के पास गए, जिसने पूछा, "क्या तुमने उस राक्षस को पकड़ लिया?"

"नहीं," बंदर ने कहा, "वह और बर्दाश्त नहीं कर सका और वापस पानी में कूद गया।"

"शिष्य, वह यहाँ लंबे समय से रह रहा है," संज़ंग ने कहा, "और उसे यहाँ के उथले और गहरे पानी की अच्छी जानकारी होगी। हमें एक जल विशेषज्ञ की आवश्यकता है जो हमें इस विशाल, कमज़ोर जल क्षेत्र को पार करा सके जहाँ कोई नाव नहीं है।"

"हाँ," बंदर ने कहा, "जैसा कि कहावत है, 'सिंदूर के पास की चीज़ लाल हो जाती है, और स्याही के पास की चीज़ काली हो जाती है।'"

चूंकि वह राक्षस यहीं रहता है, इसलिए वह जल विशेषज्ञ अवश्य होगा, इसलिए यदि

हम उसे पकड़ लें तो हमें उसे मारना नहीं चाहिए - हमें उसे पहले आपको पार ले जाने के लिए मजबूर करना चाहिए, स्वामी, और फिर उसे खत्म कर देना चाहिए।"
"समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है, भाई," सुअर ने कहा। "तुम जाओ और उसे पकड़ लो, मैं मालिक का ख्याल रखता हूँ।"
"मैं इसके बारे में ज्यादा बात नहीं कर सकता," मंकी ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं पानी के अंदर की चीजों में उतना अच्छा नहीं हूं।"
पानी के अंदर चलने के लिए भी मुझे एक जादुई हाथ का इशारा करना पड़ता है और पानी को दूर भगाने वाला मंत्र पढ़ना पड़ता है। वहाँ जाने का एकमात्र दूसरा तरीका है खुद को मछली, झींगा, केकड़ा या कछुआ में बदलना। पहाड़ या बादलों में आप जो भी अजीबोगरीब जादू कर सकते हैं, मैं कर सकता हूँ, लेकिन पानी के अंदर के कामों में मैं बिल्कुल बेकार हूँ।
"पुराने समय में जब मैं आकाशगंगा, यानी दिव्य नदी का सेनापति था," पिग ने कहा, "मेरे पास अस्सी हज़ार नाविकों की सेना थी, इसलिए मुझे पानी के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी है। लेकिन मुझे डर है कि वहाँ उसके कई पीढ़ियों के रिश्तेदार हो सकते हैं, और यह मेरे लिए बहुत बड़ी चुनौती होगी। और अगर वे मुझे पकड़ लेते हैं, तो हम सचमुच मुसीबत में पड़ जाएँगे।"

बंदर ने कहा, "तुम पानी में जाओ और उससे वहीं लड़ाई शुरू करो। ज़ोरदार लड़ाई मत करो, और जीतने की कोशिश मत करो। तुम्हें हारना होगा और उसे बाहर आने के लिए लुभाना होगा, फिर मैं उसे तुम्हारे लिए खत्म कर दूंगा।"
"ठीक है, तो मैं चलता हूँ," पिग ने कहा। अपनी जटाधारी कमीज़ उतारकर और जूते उतारकर उसने दोनों हाथों में अपना रेक घुमाया और पानी में उतर गया, जहाँ वर्षों पहले सीखे गए गुर उसने लहरों को पार करते हुए नदी की तलहटी तक पहुँचने में कामयाबी हासिल की और आगे बढ़ गया।
अपनी पिछली हार के बाद राक्षस ने अब तक अपनी साँसें संभाली थीं, और जब उसने किसी को पानी हटाते हुए सुना तो वह उछलकर देखने लगा। यह देखकर कि वह सुअर था जो अपना रेक लहरा रहा था, राक्षस ने अपनी लाठी उठाई और उस पर

चिल्लाया, "तुम कहाँ जा रहे हो, साधु? सावधान रहो, और इसे ले लो।"
सुअर ने अपने रेक से वार को रोका और जवाब दिया, "तुम कौन हो, दुष्ट आत्मा, और तुम रास्ता क्यों रोक रहे हो?"
"शायद आपको पता न हो कि मैं कौन हूं," राक्षस ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं कोई शैतान, दानव, भूत या राक्षस नहीं हूं, और मेरा कोई नाम भी नहीं है।"
"यदि तुम कोई दुष्ट आत्मा, दानव या राक्षस नहीं हो, तो फिर यहाँ रहकर लोगों की जान क्यों लेते हो? मुझे अपना नाम सच-सच बताओ, मैं तुम्हारी जान बख्श दूंगा।"
"मैं," राक्षस ने उत्तर दिया।
"बचपन से ही मुझमें एक दिव्य सार मौजूद है।"
और वे स्वर्ग और पृथ्वी पर हर जगह भटकते रहे हैं।
मैंने विश्व के नायकों के बीच गौरव प्राप्त किया है।
और वीर योद्धाओं ने मुझे अपना आदर्श माना है।
मैंने अपनी इच्छा से देशों और महाद्वीपों की यात्रा की।
झीलों और समुद्रों में जहाँ मन करता था वहाँ जाता था।
मार्ग का अध्ययन करने के लिए मैं आकाश के छोर तक गया।
और मैं शिक्षकों की तलाश में वीरान इलाकों में भटकता रहा।
उन दिनों मेरे पास एक चोगा और एक भिक्षापात्र हुआ करता था।
और मैंने अपने मन और आत्मा को पूरी तरह से नियंत्रित रखा।
मैंने बादलों के जरिए करीब एक दर्जन बार पृथ्वी की यात्रा की।
सौ यात्राओं में हर जगह का भ्रमण करना।
अध्याय 22
318
पश्चिम की यात्रा
आखिरकार मुझे अमर मिल ही गया
मुझे महान और उज्ज्वल मार्ग पर ले चलो।
सबसे पहले मैंने पारा और सीसा इकट्ठा किया,
फिर मैंने लकड़ी और धातु की माँ के पिता को छोड़ दिया।
मेरी भौंहों के पीछे से गुर्दे का पानी मेरे मुंह में चला गया।
और मेरे श्वासनलियों में उठने वाली जिगर की जलन मेरे हृदय तक पहुँच गई।

तीन हजार उपलब्धियां हासिल करने के साथ,
मैंने दिव्य मुखमंडल को प्रणाम किया;
मैंने श्रद्धापूर्वक उनकी महिमा में उनकी पूजा की।
तब महान जेड सम्राट ने मुझे पदोन्नत किया।
पर्दा उठाने वाला सेनापति बनना।
मुझे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के भीतर सम्मानित किया गया।
चमत्कारी धुंध के हॉल से पहले सर्वोच्च।
मेरी कमर पर बाघों की गिनती का रिकॉर्ड लटका हुआ था।
मेरे हाथ में मेरी राक्षस-नाशक छड़ी थी।
मेरा सुनहरा हेलमेट सूर्य के प्रकाश की तरह चमक रहा था।
मेरे शरीर पर कवच चमक रहा था।
मैंने सम्राट के रथ के लिए बने अंगरक्षक दल का नेतृत्व किया।
अदालत में प्रवेश करते या निकलते समय वह हमेशा प्राथमिकता लेता था।
लेकिन फिर महारानी माँ ने आड़ू इकट्ठा कर लिए।
अध्याय 22
319
पश्चिम की यात्रा
और उन्होंने सभी जनरलों को जेड पूल में भोज के लिए आमंत्रित किया।
मैंने लापरवाही से कुछ जेड और क्रिस्टल तोड़ दिए।
सभी स्वर्गिक देवताओं के लिए यह एक भयानक दृश्य था।
अपने भयंकर क्रोध में जेड सम्राट
उसने अपने हाथ जोड़कर उप-प्रधानमंत्री के सामने गुस्से से अपनी भड़ास निकाली।
मेरी टोपी और कवच उतार दिए गए, और मुझे पद से हटा दिया गया।
फिर उन्हें फांसी के स्थान की ओर ले जाया गया।
फिर, मेरे सौभाग्य से, महान नंगे पैर वाले अमर व्यक्ति का दर्शन हुआ।
मैंने अपनी सजा माफ करवाने के लिए आगे कदम बढ़ाया।
मृत्युदंड को क्षमादान में बदल दिया गया; मुझे जीने की अनुमति दी गई
फ्लोइंग सैंड्स नदी के पूर्वी तट पर निर्वासन में।
जब मेरा पेट भरा होता है तो मैं नदी के पानी में सोता हूँ;

जब मुझे भूख लगती है तो मैं भोजन की तलाश में लहरों को चीरते हुए निकल जाता हूँ।
अगर कोई लकड़हारा मुझसे मिल जाए तो उसकी जिंदगी खत्म हो जाएगी– –
मुझे देखने वाला कोई भी मछुआरा बच नहीं पाता।
मैंने किसी न किसी रूप में कई आदमियों को खाया है।
मैं मृत्यु के आवरण में लिपटा हुआ हूँ।
क्योंकि तुमने मेरे द्वार पर आकर उपद्रव मचाने की हिम्मत की है।
आज मेरे पेट को कुछ अच्छा खाने को मिलेगा।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप भद्दे हैं और आपका स्वाद अच्छा नहीं है,
जब मैं तुम्हें पकड़ लूंगा तो तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े करके नमकीन कीमा बना दूंगा।"
अध्याय 22

यह सुनकर सुअर बेहद क्रोधित हुआ और बोला, "तू बिल्कुल अंधा है, नीच। मैं अपनी उंगलियों में बुलबुले पकड़ सकता हूँ, तो तेरी हिम्मत कैसे हुई यह कहने की कि मैं इतना घटिया हूँ कि तू मुझे काटकर नमकीन कीमा बना देगा? तू मुझे बढ़िया पका हुआ हैम समझता है! ढीठ मत बन - इस रेक का एक वार झेल ले।" जब राक्षस ने रेक को अपनी ओर आते देखा तो उसने उससे बचने के लिए "फीनिक्स की तरह सिर हिलाया"। दोनों लड़ते-लड़ते पानी की सतह पर आ गए, जहाँ वे लहरों पर पैर रखते हुए एक ऐसे युद्ध में उलझ गए जो उनके पिछले युद्ध से भी कहीं अधिक भयंकर था।
पर्दा उठाने वाला जनरल,
और मार्शल तियान पेंग;
प्रत्येक ने जादुई शक्तियों का शानदार प्रदर्शन किया।
राक्षस को शांत करने वाली छड़ी सिर के चारों ओर घूमती है,
नौ शाखाओं वाला रेक हाथ में तेजी से चलता है।
जब वे लहरों पर उछलते हैं, तो वे पहाड़ियों और नदियों को हिला देते हैं।
जैसे-जैसे वे पानी को एक तरफ धकेलते हैं, दुनिया अंधेरी होती जाती है।
आपदा के तारे द्वारा झंडों और लटकनों पर प्रहार करने जितना भयानक, मृत्यु तारे से चंदवा हटाने जितना डरावना।

उनमें से एक तांग पुजारी का वफादार रक्षक था।
दूसरा व्यक्ति, एक अपराधी, जल का राक्षस था।
जहां रेक से प्रहार हुआ, वहां नौ निशान रह गए;
जब लाठी चलाई गई, तो सभी आत्माएं तितर-बितर हो गईं।
वे अपनी पूरी ताकत से खुशी-खुशी लड़ रहे थे।
उन्होंने युद्ध में अपना पूरा दिल लगा दिया।
हालांकि वह केवल धर्मग्रंथों को लाने वाला एक तीर्थयात्री है।
उसका अनियंत्रित क्रोध आकाश में फूट पड़ता है।
अराजकता इतनी भीषण थी कि मछलियों के शल्क झड़ गए।
कछुओं के मुलायम खोल कुचल दिए गए;
लाल झींगे और बैंगनी केकड़े सभी मारे गए।
और जल महल के सभी देवताओं ने स्वर्ग से प्रार्थना की।
अध्याय 22
321
पश्चिम की यात्रा
वहाँ केवल लहरों के टकराने की गड़गड़ाहट की आवाज थी;
सूर्य और चंद्रमा अंधेरे में डूबे हुए थे, जिससे धरती और आकाश भयभीत हो गए थे।
वे चार घंटे तक बहस करते रहे, लेकिन मामला अभी भी अनसुलझा था। ऐसा लग रहा था मानो पीतल का तवा लोहे के ब्रश से लड़ रहा हो, या जेड की झंकार सोने की घंटी से प्रतिस्पर्धा कर रही हो।
महान ऋषि, जो तांग पुजारी की रक्षा के लिए उनके बगल में खड़े थे, पानी पर हो रही लड़ाई को बड़ी लालसा से देख रहे थे, कुछ भी करने में असमर्थ थे। तभी सुअर ने अपने रेक से वार करने का नाटक किया, हारने का दिखावा किया और पूर्वी किनारे की ओर दौड़ पड़ा, राक्षस उसके पीछे-पीछे भागा। जब वह लगभग किनारे पर पहुँच ही गया था, तो बंदर खुद को रोक नहीं पाया। अपने स्वामी को छोड़कर, वह अपने हाथ में गदा लेकर नदी के किनारे कूद गया और राक्षस के सिर पर वार किया। उसका सामना करने की हिम्मत न करते हुए, राक्षस सीधे नदी में वापस चला गया।
"घोड़ों के रक्षक," सुअर चिल्लाया, "अतौरवशाली बंदर! तुम्हें थोड़ा धीरे चलना चाहिए था और तब तक इंतज़ार करना चाहिए था जब तक मैं उसे ऊँची जगह पर न ले जाऊँ

और फिर नदी के किनारे से उसका रास्ता न काट दूँ। तब वह वापस नहीं जा पाता और हम उसे पकड़ लेते। लेकिन अब वह वापस चला गया है, वह कभी बाहर नहीं आएगा।"

"चिल्लाओ मत, बेवकूफ," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "चिल्लाओ मत। चलो वापस चलते हैं और अपने मालिक से मिलते हैं।"

जब सुअर बंदर के साथ नदी के किनारे की चोटी पर पहुंचा, तो संजांग ने उसे प्रणाम किया और कहा, "शिष्य, तुमने काफी कठिन समय बिताया है।"

"मैं ऐसा नहीं कहूंगा," पिग ने जवाब दिया। "लेकिन अगर हमने उस दुष्ट आत्मा को पकड़ लिया होता और उसे तुम्हें नदी के उस पार ले जाने के लिए मजबूर किया होता, तो यह सबसे अच्छा उपाय होता।"

"बुरी आत्मा के साथ तुम्हारी लड़ाई कैसी रही?" संजांग ने पूछा।

"वह मेरे जितना ही अच्छा है," सुअर ने जवाब दिया। "जब मैंने लड़ाई में हारने का नाटक किया तो वह मेरा पीछा करते हुए नदी के किनारे तक आ गया; लेकिन फिर उसने बड़े भाई को लाठी लहराते हुए देखा, इसलिए वह भाग गया।"

"तो अब हम क्या करेंगे?" संजांग ने पूछा।

“आराम करो, स्वामी, चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। काफी देर हो चुकी है, इसलिए बेहतर होगा कि आप किनारे पर बैठ जाएं, मैं जाकर कुछ खाना मांगता हूँ। खाना खाने के बाद आप सो सकते हैं, और हम कल सुबह क्या करना है, इस बारे में फैसला करेंगे।”

"अच्छा विचार है," सुअर ने कहा। "जितनी जल्दी हो सके, करो।"

बंदर अपने बादल पर उछलकर उत्तर दिशा में एक घर की ओर गया, जहाँ उसने कुछ भोजन माँगा और वापस आकर अपने स्वामी को दे दिया। उसे इतनी जल्दी लौटते देख संजांग ने उससे कहा, "बंदर, चलो उस घर चलते हैं जहाँ तुमने भोजन माँगा था और उनसे पूछते हैं कि इस नदी को कैसे पार करें। यह उस राक्षस से लड़ने से बेहतर होगा।"

"लेकिन वो घर तो बहुत दूर है," बंदर हँसते हुए बोला। "यहाँ से करीब दो हज़ार मील दूर है। उनसे इस नदी के बारे में पूछने का क्या फायदा? उन्हें इसके बारे में कुछ पता ही नहीं होगा।"

"तुम फिर से झूठी कहानियां सुना रहे हो," पिग ने कहा। "अगर यह दो हजार मील दूर

है, तो तुम इतनी जल्दी वहां जाकर वापस कैसे आ गए?"
अध्याय 22
322
पश्चिम की यात्रा
"तुम्हें तो पता ही नहीं होगा," बंदर भाई ने जवाब दिया, "कि मेरा कलाबाज़ी वाला बादल एक ही छलांग में छत्तीस हज़ार मील की दूरी तय कर सकता है। सिर्फ़ दो हज़ार मील की वापसी यात्रा करने में बस दो-चार इशारे और एक प्रणाम ही काफ़ी है—इसमें कुछ भी मुश्किल नहीं है।"
"अगर यह इतना आसान है, भाई," सुअर ने कहा, "तो तुम मालिक को अपनी पीठ पर उठा लो, बस कुछ इशारे और प्रणाम करके उसे पार ले जाओ, और हमें राक्षस से लड़ने की सारी परेशानी से बचा लो।"
बंदर ने कहा, "तुम बादलों पर सवारी कर सकते हो, है ना? क्यों न तुम अपने मालिक को पार ले जाओ?"
"मालिक का नश्वर शरीर और हड्डियाँ माउंट ताई से भी भारी हैं," सुअर ने कहा, "इसलिए भले ही मैं बादलों पर सवारी कर सकता हूँ, मैं उन्हें कभी नहीं उठा सकता। केवल तुम्हारी कलाबाजी ही काम आएगी।"
“मेरी कलाबाजी बादलों पर उड़ने जैसी ही है,” बंदर ने कहा, “बस फर्क इतना है कि इससे आप और दूर जा सकते हैं। मैं उन्हें उतना ही असमर्थ हूँ जितना आप। जैसा कि पुरानी कहावत है, ‘ताई पर्वत सरसों के दाने जितना आसानी से हिल जाता है, लेकिन मनुष्य को धरती की धूल से नहीं खींचा जा सकता।’ जब उस दूसरे विषैले राक्षस ने जादुई हवा चलाई, तो मैं गुरु को केवल ज़मीन पर घसीटकर ही हिला सका। बेशक। मैं ऐसे करतब कर सकता हूँ, और वे सभी करतब भी जैसे खुद को अदृश्य करना या ज़मीन को सिकोड़ना। लेकिन यद्यपि हमारे गुरु दुखों के सागर से बच नहीं सकते, फिर भी वे परदेस जाना चाहते हैं, इसलिए उन्हें रास्ते का हर इंच भारी लगता है। हम बस इतना कर सकते हैं कि उनकी यात्रा कराएँ और देखें कि उन्हें कोई हानि न हो। हम उनके लिए वह सारा कष्ट नहीं सह सकते, न ही उनके लिए शास्त्र ला सकते हैं। अगर हम बुद्ध से मिलने भी चले गए, तो वे शास्त्र न तो आपको देंगे और न ही मुझे। आखिर, अगर हमें वे इतनी आसानी से मिल जाते, तो हमारे पास करने के लिए कुछ नहीं होता।”

उस मूर्ख ने बंदर की हर बात मान ली, फिर उन्होंने बिना सब्जियों के सादा चावल खाया, जिसके बाद वे तीनों फ्लोइंग सैंड्स नदी के पूर्वी किनारे पर सो गए।
अगली सुबह संजांग ने कहा, "बंदर, आज हम इसके बारे में क्या करने वाले हैं?"
“अब सूअर को वापस पानी के नीचे भेजने के अलावा कोई चारा नहीं है,” बंदर ने जवाब दिया। “भाई, तुम मुझे पानी के नीचे इसलिए भेज रहे हो क्योंकि तुम खुद सूखे रहना चाहते हो,” सूअर ने विरोध किया। “इस बार मैं जल्दबाजी नहीं करूंगा,” बंदर ने कहा। “मैं तुम्हें उसे किनारे पर लाने दूंगा और फिर मैं उसे नदी से अलग कर दूंगा। इस तरह हम उसे ज़रूर पकड़ लेंगे।”
प्यारे सुअर ने अपना चेहरा रगड़ा, अपनी सारी ऊर्जा जुटाई, दोनों हाथों में अपना रेक उठाया, नदी की ओर गया और राक्षस के ठिकाने की ओर लौटते हुए पानी को दो भागों में बाँट दिया। राक्षस, जो अभी-अभी जागा था, पानी के अलग होने की आवाज़ सुनते ही देखने के लिए मुड़ा कि क्या हो रहा है। रेक लिए सुअर को अपनी ओर आते देख वह उसे रोकने के लिए उछल पड़ा और चिल्लाया, "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं। इसे लो।" सुअर ने रेक से वार को रोक दिया और बोला, "अपने पूर्वज को अपनी उस शोक मनाने वाली छड़ी से 'इसे लो' कहने का क्या मतलब है?"
"तुम कुछ नहीं जानते, नीच कहीं के," राक्षस ने उत्तर दिया और आगे कहा:
"मेरे इस कर्मचारी की प्रसिद्धि बहुत अधिक है।"
इसे चंद्रमा पर पाए जाने वाले साला वृक्ष की लकड़ी से बनाया गया है।
वू गैंग ने उसकी एक शाखा काट दी।
लू बान के लिए अपनी अद्वितीय कुशलता के साथ काम करना।
अध्याय 22
323
पश्चिम की यात्रा
इसके हृदय के बीचोंबीच सोने की एक पट्टी गुजरती है।
और यह अनगिनत मोतियों से जड़ा हुआ है।
यह एक अनमोल छड़ी है, जो दुष्ट आत्माओं को वश में करने के लिए उत्तम है;
जब यह स्वर्गिक महल की रक्षा करता था, तब यह सभी राक्षसों को शांत कर सकता था।
जब मुझे उच्च जनरल के पद पर नियुक्त किया गया था

जेड सम्राट ने इसे मुझे उपयोग करने के लिए दिया था।
इसकी लंबाई जितनी चाहूँ उतनी हो सकती है।
मोटा हो या पतला, मेरी इच्छा के अनुरूप।
इसने पीच भोजों में सम्राट की रक्षा की।
उच्च वर्ग के दरबार में उपस्थित रहे।
जब मैं महल में था, तब मेरी मुलाकात सभी ऋषियों से हुई।
जब मैंने पर्दा उठाया, तो उसने अमर लोगों का स्वागत किया।
मैंने इसका पालन-पोषण किया और इसे एक दिव्य हथियार बना दिया।
यह कोई साधारण सांसारिक भुजा नहीं है।
जब मुझे स्वर्ग से निर्वासित करके भेजा गया था
मैंने अपनी मर्जी से पूरी दुनिया की सैर की।
मुझे इस स्टाफ के बारे में शेखी बघारने की जरूरत नहीं है।
विश्व में किसी भी भाले या तलवार से बेजोड़।
अपने उस जंग लगे रेक को देखो!
यह केवल खेती या सब्जियां उगाने के लिए ही अच्छा है।
अध्याय 22
324
पश्चिम की यात्रा
"मैं तुझे तेरी करनी का फल दूंगा, तू तो लानत है!" सुअर ने कहा। "सब्जी उगाने की चिंता मत कर—एक बार भी उसे छूते ही तुझे मरहम लगाने की जगह नहीं मिलेगी, क्योंकि तेरा खून नौ छेदों से बहेगा। अगर इससे तेरी जान नहीं भी गई, तो तुझे जीवन भर के लिए टिटनेस हो जाएगा।" राक्षस ने अपनी रक्षात्मक मुद्रा छोड़ दी और नदी की तलहटी से लेकर पानी की सतह तक सुअर से लड़ने लगा। यह लड़ाई पिछली लड़ाइयों से कहीं अधिक भयंकर थी।
कीमती कर्मचारी घूम गए,
घातक रेक ने वार किया,
और दोनों दुश्मनों के बीच कोई बातचीत नहीं हुई।
क्योंकि लकड़ी की माता ने औषधि माप पर विजय प्राप्त कर ली थी
उन दोनों को एक दूसरे से दो बार लड़ना पड़ा।

बिना किसी जीत के,
और कोई हार नहीं,
लहरें उलट-पुलट हो गईं और उन्हें शांति का कोई आसार नहीं था।
वह व्यक्ति अपने गुस्से को कैसे रोक सकता था?
दूसरा व्यक्ति इस अपमान को कैसे सहन कर सकता था?
जैसे ही कर्मचारियों ने रेक के वारों को रोका, उन्होंने अपनी कुशलता का प्रदर्शन किया; बहती रेत नदी के उफान के साथ ही प्रत्येक अत्यंत क्रूर हो गया।
अत्यधिक क्रोध,
कठिन प्रयास,
यह सब इसलिए हुआ क्योंकि संजांग पश्चिम की ओर जाना चाहता था।
वह बदमाश बेहद क्रूर था।
कर्मचारियों के पास अनुभव था।
सुअर ने अपने दुश्मन को पकड़ लिया और उसे किनारे पर खींचने की कोशिश करने लगा।
वहीं दूसरा व्यक्ति फटे हुए कपड़ों में पिग को पानी के नीचे खींचने की कोशिश कर रहा था।
उस तेज शोर ने मछलियों और ड्रैगनों को विचलित कर दिया;
जैसे ही आकाश में अंधेरा छा गया, देवता और भूत-प्रेत छिप गए।
अध्याय 22
325
पश्चिम की यात्रा
लड़ाई तीस दौर तक चली, लेकिन कोई भी विजयी नहीं हुआ। सुअर ने एक बार फिर हार का नाटक किया और अपना रेक घसीटते हुए भाग गया। राक्षस लहरों के बीच से उसका पीछा करते हुए किनारे तक पहुँच गया, तभी सुअर ने उस पर चिल्लाते हुए कहा, "मैं तुझे पकड़ लूँगा, तू दुष्ट राक्षस। ऊपर इस ऊँची जगह पर आ जहाँ हम सूखी ज़मीन पर लड़ सकें।"
“तुम मुझे ऊपर बुलाना चाहते हो, धिक्कार है तुम पर,” राक्षस ने उत्तर दिया, “ताकि तुम्हारा साथी आकर मुझे ले जाए। वापस आओ और पानी में लड़ो।” वह शैतान, जो दोबारा किनारे पर जाने की बजाय समझदारी से खड़ा रहा, नदी के किनारे खड़ा होकर

पिग के साथ चिल्लाने लगा।
जब बंदर ने देखा कि राक्षस किनारे पर नहीं आ रहा है, तो उसे पकड़ने में असमर्थ होने पर वह हताशा से उबल पड़ा। उसने कहा, "मालिक, आप यहीं बैठिए, मैं उस पर 'भूखा चील अपने शिकार पर टूट पड़ती है' वाला हमला करता हूँ।" वह हवा में कलाबाजी करते हुए नीचे गिरा और राक्षस को पकड़ लिया। राक्षस सूअर पर चिल्ला रहा था, तभी उसे हवा की आवाज सुनाई दी, वह तुरंत मुड़ा और उसने बंदर को बादलों से नीचे आते देखा। उसने अपनी लाठी एक तरफ रख दी, पानी में छप-छप करते हुए कूद गया और फिर दिखाई नहीं दिया। किनारे पर उतरते ही बंदर ने सूअर से कहा, "भाई, राक्षस बड़ी आसानी से भाग गया। अगर वह फिर से किनारे पर नहीं आया तो हम क्या करेंगे?"
"यह नामुमकिन है," पिग ने कहा। "हम उसे कभी हरा नहीं पाएंगे। चाहे मैं अपनी पूरी ताकत ही क्यों न लगा दूं, मैं उसके सामने बस टिक ही सकता हूं।"
"चलो गुरुजी से मिलने चलते हैं," बंदर ने कहा।
वे दोनों नदी के किनारे चढ़े और तांग पुजारी को राक्षस को पकड़ने में आ रही कठिनाइयों के बारे में बताया। "यह बहुत मुश्किल है," संजांग ने रोते हुए कहा। "हम नदी पार कैसे करेंगे?"
“चिंता मत करो, स्वामी,” बंदर ने कहा। “राक्षस नदी के तल में बहुत गहराई में छिपा हुआ है, जहाँ घूमना-फिरना बहुत मुश्किल है। तुम यहीं रहो और स्वामी की देखभाल करो, सुअर, और उस राक्षस से दोबारा मत लड़ना।”
मैं दक्षिणी सागर जा रहा हूँ।
"किसलिए?" सुअर ने पूछा। "शास्त्रों को लाने का यह सारा काम बोधिसत्व गुआनयिन ने शुरू किया था, और उन्होंने ही हमें धर्म परिवर्तन कराया था। अब हम यहाँ बहती रेत की नदी पर फँसे हुए हैं, उनके सिवा कोई और इस समस्या का समाधान नहीं कर सकता। उनकी मदद से हम उस राक्षस से लड़ने में ज़्यादा सक्षम होंगे।"
"हां, हां," सुअर ने कहा, "और जब आप वहां पहुंचें, तो कृपया मुझे धर्म परिवर्तन कराने के लिए उसे धन्यवाद दें।"
"अगर आप बोधिसत्व को आने के लिए आमंत्रित करने जा रहे हैं," संजांग ने कहा, "तो एक पल भी बर्बाद न करें और जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाएं।"

फिर बंदर अपने बादल पर कलाबाजी करते हुए दक्षिणी सागर की ओर उड़ गया, और एक घंटे के भीतर ही उसने पोटारका द्वीप को देख लिया। पल भर में वह बैंगनी बांस के जंगल के बाहर उतरा, जहाँ चौबीस देवता आगे आकर उसका स्वागत करते हुए बोले, "हे महान ऋषि, आप क्यों आए हैं?"

“मेरे स्वामी संकट में हैं,” बंदर ने उत्तर दिया, “मैं बोधिसत्व से मिलने आया हूँ।” उस दिन ड्यूटी पर मौजूद देवता ने बंदर को बैठने के लिए कहा और खुद सूचना देने अंदर चला गया। इसके बाद वह ज्वार गुफा में जाकर यह सूचना देने गया कि सन वुकॉन्ग उनसे किसी काम से मिलना चाहते हैं। बोधिसत्व राजकुमारी पेंग झू के साथ एक बालकनी पर बैठकर कीमती कमल कुंड में खिले फूलों को निहार रही थीं, तभी उन्हें यह खबर मिली। वे अपने शांत और भव्य रूप में वापस आईं, दरवाजा खोला और बंदर को अपने पास बुलाया। महान ऋषि ने श्रद्धापूर्वक उनका अभिवादन किया।

"तुम तांग पुजारी की देखभाल क्यों नहीं कर रहे हो?" उसने पूछा, "और तुम मुझसे मिलने क्यों आए हो?"

अध्याय 22

326

पश्चिम की यात्रा

"मेरे गुरु ने गाओ गाँव में एक नया शिष्य प्राप्त किया है, बोधिसत्व," भाई बंदर ने बताया। "उनका नाम झू बाजी है और आपकी कृपा से उन्हें बौद्ध नाम वुनेन्ग भी मिला है। पीली हवा की पहाड़ी पार करने के बाद हम अब बहती रेत नदी पर पहुँच गए हैं, लेकिन रुओ नदी हज़ार मील लंबी है और मेरे गुरु इसे पार नहीं कर सकते।"

इसके अलावा, नदी में एक दुष्ट राक्षस है जो एक महान योद्धा है, और यद्यपि हमारे सुअर ने पानी की सतह पर उससे तीन भयंकर युद्ध लड़े, फिर भी वह उस राक्षस को हरा नहीं सका, जो अभी भी हमारा रास्ता रोक रहा है और मेरे स्वामी को नदी पार करने से रोक रहा है। इसीलिए मैं आपसे मिलने आया हूँ और आपसे दया करके उसे नदी पार कराने में मदद करने की विनती करता हूँ।

बोधिसत्व ने कहा, "तुमने एक बार फिर अपना अहंकार प्रकट कर दिया है, बंदर! तुमने उस राक्षस को यह क्यों नहीं बताया कि तुम तांग पुजारी की रक्षा कर रहे थे?"

"हम उसे पकड़ना चाहते थे," बंदर ने जवाब दिया, "और उससे अपने मालिक को नदी पार करवाना चाहते थे। चूंकि मुझे पानी में ज्यादा कुछ करने का अनुभव नहीं है,

इसलिए सुअर ही अकेला था जो राक्षस की गुफा ढूंढ सका और सारी बातचीत उसी ने की। मुझे लगता है उसने धर्मग्रंथ लाने का ज़िक्र कभी नहीं किया होगा।"

"बहती रेत नदी का राक्षस महान पर्दा उठाने वाले सेनापति का नश्वर अवतार है," गुआनयिन ने कहा, "और वह एक ऐसा अनुयायी है जिसे मैंने स्वयं परिवर्तित किया है और उसे शास्त्रों को लेने आने वालों की रक्षा करने का निर्देश दिया है। यदि तुमने उसे बताया होता कि तुम पूर्व से शास्त्र लेने आए हो, तो वह तुमसे लड़ने के बजाय निश्चित रूप से तुम्हारे साथ शामिल हो जाता।"

"लेकिन वह डरपोक राक्षस अब नदी में दुबका हुआ है, बाहर आने से इतना डरा हुआ है," बंदर ने कहा, "तो हम उसे अपने साथ कैसे लाएँगे, और मेरा स्वामी इस कमजोर पानी को कैसे पार करेगा?"

बोधिसत्व ने अपने शिष्य हुआन को बुलवाया और अपनी आस्तीन से एक लाल लौकी निकाली। उन्होंने कहा, "यह लौकी लो और सन वुकॉन्ग के साथ बहती रेत नदी पर जाओ। 'वूजिंग'—'शुद्धता का जागरण'—चिल्लाओ, और वह बाहर आ जाएगा। पहले उसे तांग पुजारी के समक्ष आत्मसमर्पण कराओ, और फिर उसे अपने नौ खोपड़ियों को पवित्र महलों की तरह एक धागे में पिरोने को कहो। यदि वह इस लौकी को उनके बीच में रखेगा, तो यह एक धर्म नौका बन जाएगी जो तांग पुजारी को नदी पार कराएगी।" बोधिसत्व के आदेश का पालन करते हुए, हुआन और महान ऋषि ज्वार गुफा और बैंगनी बांस के जंगल से लौकी अपने साथ ले गए। इसका वर्णन करने वाली कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:

पंच तत्वों को दिव्य अमर के साथ संयोजित किया गया था।
अपने पुराने गुरु को पहचानते हुए।
उन्हें महान कार्य करने के लिए पर्याप्त रूप से परिष्कृत किया गया है;
जब सत्य और असत्य में अंतर स्पष्ट हो जाता है, तब उत्पत्ति का पता चलता है।
जब धातु प्रकृति से मिलती है, तो समान चीजें आपस में मिल जाती हैं;
जब वुड भावनाओं की तलाश करता है, तो दोनों ही खो जाती हैं।
जब दोनों पृथ्वी निर्वाण प्राप्त कर लेंगी,
अग्नि और जल का मिलन होगा, और सांसारिक धूल का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

कुछ देर बाद वे दोनों अपने बादलों को फ्लोइंग सैंड्स नदी के किनारे उतारने में कामयाब हो गए।

हुइआन को नौसिखिए मोक्सा के रूप में पहचानते हुए, पिग अपने गुरु को उनसे मिलने के लिए आगे ले गया। जब मोक्सा ने संजांग से शिष्टाचार का आदान-प्रदान किया, तो उसने पिग का अभिवादन किया।

तब पिग ने कहा, "आपकी कृपा से ही मुझे बोधिसत्व से मिलने का अवसर मिला और तब से मैं बौद्ध धर्म के नियमों का पालन करते हुए भिक्षु बन गया हूँ। तब से मैं यात्रा में व्यस्त रहा हूँ, इसलिए आपसे धन्यवाद करने का समय नहीं मिल पाया। कृपया मुझे क्षमा करें।"

"इतनी लंबी-चौड़ी बातें मत करो," बंदर ने कहा। "चलो उस दुष्ट को बुलाते हैं।"

“किसे बुला रहे हो?” संज़ंग ने पूछा। “मैंने बोधिसत्व के दर्शन किए,” बंदर ने कहा, “और उन्हें सारी घटना बताई। उन्होंने कहा कि बहती रेत नदी का राक्षस महान पर्दा उठाने वाले सेनापति का नश्वर अवतार है, जिसे स्वर्ग में किए गए एक अपराध के कारण एक राक्षस के रूप में इस नदी में फेंक दिया गया था। बोधिसत्व ने उसका धर्म परिवर्तन कराया है और उसने आपके साथ पश्चिमी स्वर्ग जाने का वचन दिया है। अगर हमने उसे बताया होता कि हम शास्त्र लाने जा रहे हैं, तो यह भयंकर लड़ाई नहीं होती। बोधिसत्व ने अब मोक्ष को यह लौकी उस व्यक्ति को देने के लिए भेजा है ताकि वह एक धर्म नौका बनाए जो आपको नदी पार ले जाएगी।” यह सुनकर संज़ंग ने कई बार बोधिसत्व को प्रणाम किया और मोक्ष को भी प्रणाम करते हुए कहा, “हे परम पूज्य, कृपया इसे जितनी जल्दी हो सके करें।” तब मोक्ष बादल से गए और अपने हाथों में लौकी लिए नदी के ऊपर खड़े हो गए।

"वुजिंग, वुजिंग," वह जोर-जोर से चिल्लाया, "शास्त्र लेने जा रहे तीर्थयात्री बहुत देर से यहाँ हैं। तुमने अभी तक उनके सामने आत्मसमर्पण क्यों नहीं किया?"

वह राक्षस, जो वानर राजा के भय से नदी के किनारे लौट गया था, अपनी मांद में विश्राम कर रहा था जब उसने अपना बौद्ध नाम पुकारा जाना सुना और समझ गया कि यह बोधिसत्व गुआनयिन का संदेश है। तीर्थयात्रियों के वहाँ होने की बात सुनकर उसका आक्रमण का भय दूर हो गया और उसने लहरों के बीच से अपना सिर ऊपर उठाया तो देखा कि वह भिक्षु मोक्ष था। देखिए, वह मोक्ष को प्रणाम कर रहा है, उसके

चेहरे पर मुस्कान है। "हे परम पूज्य, मुझे खेद है कि मैंने आपका ठीक से स्वागत नहीं किया," उसने कहा। "बोधिसत्व कहाँ हैं?"

"वह नहीं आई," मोक्सा ने उत्तर दिया। "उसने मुझे तुम्हें यह बताने के लिए भेजा है कि तुम तांग पुजारी के शिष्य बनो। तुम्हें अपने गले में पहनी हुई नौ खोपड़ियों को इस लौकी के साथ नौ पवित्र महलों के पैटर्न में सजाना है, और एक धर्म नौका बनाकर उसे इस दुर्बल जल के पार ले जाना है।"

"तीर्थयात्री कहाँ है?" वुजिंग ने पूछा।

"वह रहा, नदी के किनारे बैठा हुआ," मोक्सा ने संजांग की ओर इशारा करते हुए कहा।

फिर वूजिंग ने सुअर को देखा और कहा, "पता नहीं वो खूनी जीव कहाँ से आया है, लेकिन उसने मुझसे पूरे दो दिन तक लड़ाई की और शास्त्र लाने के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। और इस बंदर को देखकर उसने आगे कहा, "ये उसका साथी है और बहुत ही खूंखार है। मैं इनके साथ नहीं जा रहा।"

“वह झू बाजी है, और यह बंदर भाई है। ये दोनों तांग पुजारी के शिष्य हैं जिन्हें बोधिसत्व ने परिवर्तित किया है, इसलिए आपको उनसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं आपको तांग पुजारी से मिलवाता हूँ।” वुजिंग ने अपनी लाठी एक तरफ रख दी, अपने पीले ब्रोकेड के कुर्ते को सीधा किया, किनारे पर कूद गया, तांग पुजारी के सामने घुटने टेक दिए और कहा, “गुरुजी, आपके शिष्य की आँखों में पुतलियाँ नहीं हैं —मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ कि मैंने आपके अनुयायियों को पहचानने के बजाय उन पर हमला किया।”

"अरे फोड़े," सुअर ने कहा, "तुमने आत्मसमर्पण करने के बजाय मुझसे लड़ाई क्यों की? तुम्हारा मतलब क्या था?"

"भाई, तुम उसे दोष नहीं दे सकते," बंदर ने कहा। "हमने उसे अपना नाम नहीं बताया था और न ही धर्मग्रंथ लाने का ज़िक्र किया था।"

"क्या आप हमारे उपदेशों में पूरे दिल से विश्वास करते हैं?" संजांग ने पूछा।

"बोधिसत्व ने मुझे परिवर्तित किया," वुजिंग ने उत्तर दिया, "उन्होंने मुझे इस नदी का

नाम उपनाम के रूप में दिया और मुझे बौद्ध नाम शा वुजिंग, यानी पवित्रता के लिए जागृत रेत, से पुकारा, इसलिए निश्चित रूप से मुझे आपका अनुसरण करना चाहिए, गुरुजी।"

“तो फिर,” संज़ंग ने कहा, “बंदर, उस्तरा लाओ और उसके बाल काट दो।” महान ऋषि ने आज्ञाकारी होकर राक्षस का सिर मुंडवा दिया, जिसने फिर संज़ंग, बंदर और सूअर को उचित श्रद्धा के साथ प्रणाम किया। जब संज़ंग ने उसे एक सच्चे भिक्षु की तरह ऐसा करते देखा, तो उन्होंने उसे एक नया नाम दिया—फ्रायर सैंड।

"अब जब तुम धर्म में प्रवेश कर चुके हो, तो बात करने में समय बर्बाद करने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुरंत धर्म नौका बनाओ।"

फ्रायर सैंड ने बिना देर किए अपने गले से खोपड़ियाँ उतारीं और उन्हें नौ महलों के पैटर्न में बाँध दिया, जिसके मध्य में बोधिसत्व का लौकी था। फिर उन्होंने संज़ंग को उस पर चढ़ने के लिए कहा, और जब संज़ंग उस पर बैठा तो उसने पाया कि वह एक छोटी नाव की तरह स्थिर थी। सुअर और फ्रायर सैन ने उसे बाएँ और दाएँ सहारा दिया, जबकि बंदर उसके पीछे बादलों में से ड्रैगन घोड़े का नेतृत्व कर रहा था, और मोक्ष ऊपर पहरा दे रहा था।

इस प्रकार संज़ंग ने बहती रेत नदी के शांत और निर्वातकारी जल को पार किया। वे तीर की गति से आगे बढ़े और कुछ ही क्षणों में दूसरी ओर तट पर पहुँच गए। वे न तो भीगे थे और न ही कीचड़ से सने थे, और उनके हाथ-पैर पूरी तरह सूखे थे। इस प्रकार गुरु और शिष्य बिना किसी परेशानी के फिर से सूखी भूमि पर आ गए। तब मोक्ष ने अपना बादल उतारा और लौकी वापस ले ली। नौ खोपड़ियाँ नौ हवा के झोंकों में परिवर्तित होकर गायब हो गईं। संज़ंग ने मोक्ष को धन्यवाद देते हुए प्रणाम किया और बोधिसत्व की पूजा की, जिसके बाद

मोक्सा पूर्वी महासागर में लौट आया।

संजांग ने दोबारा घोड़े पर सवार होकर पश्चिम की ओर प्रस्थान किया।

यदि आपको नहीं पता कि उन्हें अपना पुरस्कार कब मिला और वे धर्मग्रंथ कब लाए, तो अगले अध्याय में दी गई व्याख्या को सुनें।

अध्याय 23

संज़ंग बुनियादी बातों को नहीं भूलता।

चारों पवित्रजनों की धार्मिकता की परीक्षा ली जाती है

पश्चिम की ओर यात्रा करते समय रास्ता लंबा है;
शरद ऋतु की सरसराती हवा में पाले से मुरझाए फूल गिर पड़ते हैं।
वह धूर्त बंदर मजबूती से जंजीरों में जकड़ा हुआ है—उसे मत खोलो;
दुष्ट घोड़े की लगाम कसकर बंधी हुई है—उसे चाबुक मत मारो।
अध्याय 23
329
पश्चिम की यात्रा
लकड़ी की माता और धातु के पिता मूल रूप से संयुक्त थे; पीली माता और लाल शिशु के बीच कोई अंतर नहीं था।
जब लोहे की गोली को दांतों से काटकर खोला जाता है, तो सच्चाई सामने आती है; प्रज्ञा-पारमिता उस व्यक्ति तक पहुँच चुकी है।
हालांकि यह पुस्तक शास्त्रों को लाने की यात्रा के बारे में है, लेकिन यह इस विषय को कभी नहीं छोड़ती कि व्यक्ति मूलभूत चीज़ों के लिए किस प्रकार प्रयास करता है। सत्य को समझकर, उन चारों ने नश्वर संसार के बंधनों को तोड़ दिया और प्रकृति के सागर की बहती रेत से छलांग लगाकर पश्चिम की ओर मुख्य मार्ग पर निर्मल होकर चल पड़े। उन्होंने नीले पहाड़ों और हरी नदियों को पार किया और अनगिनत जंगली फूल देखे। समय तेजी से बीत गया और जल्द ही शरद ऋतु आ गई। उन्होंने देखा:
लाल मेपल के पत्तों से ढकी पहाड़ियाँ,
पीली गुलदाउदी शाम की ठंडी हवाओं का सामना कर रही हैं।
बूढ़े टिड्डों का गायन अब पहले जैसा जोशीला नहीं रहा।
शरद ऋतु के झिंगुर समृद्धि के दिनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।
कमल के हरे रेशमी पत्ते झड़ रहे थे।
सुगंधित संतरे का पेड़ सुनहरे गोलों से लदा हुआ था।
जंगली हंसों की कतारें, अफसोस!
दूर आकाश में बिंदुओं की तरह फैले हुए।
एक दिन जब वे यात्रा कर रहे थे, शाम ढलने लगी और संजांग ने कहा, "अब जब देर हो रही है, तो हम कहाँ सोएंगे, शिष्यों?"
“गुरुजी, यह कहना उचित नहीं है,” बंदर ने कहा। “हम भिक्षुओं को हवा खाना, बारिश का पानी पीना, चाँदनी में सोना और पाले में सोना चाहिए। हमारा घर वही है

जहाँ हम हैं। तो फिर यह क्यों पूछना कि हम कहाँ सोएंगे?”
"तुम्हें लग रहा होगा कि तुम्हारी यात्रा आसान रही है," पिग ने कहा, "लेकिन तुम्हें दूसरों की थकान की कोई परवाह नहीं है। जब से हमने फ्लोइंग सैंड्स नदी पार की है, हम पहाड़ों पर चढ़ते आ रहे हैं, और इस भारी बोझ ने मुझे बुरी तरह थका दिया है। हमें कोई घर ढूंढना ही होगा जहाँ हम चाय-खाना मांग सकें और आराम कर सकें—यह तो उचित ही है।"
अध्याय 23
330
पश्चिम की यात्रा
"मुझे तो ऐसा लग रहा है, बेवकूफ, जैसे तुम्हें पछतावा हो रहा है," बंदर ने कहा। "मुझे डर है कि अब तुम्हारा जीवन उतना आसान नहीं होगा जितना गाओ गाँव में था। अगर तुम भिक्षु बनना चाहते हो, तो तुम्हें कष्ट सहना ही पड़ेगा—यही सच्चे शिष्य बनने का एकमात्र तरीका है।"
"तुम्हें क्या लगता है कि यह बोझ कितना भारी है?" सुअर ने पूछा।
"जब से तुम और साधु सैंड हमारे साथ आए हो, मैंने इसे अपने साथ नहीं रखा है, तो मुझे कैसे पता चलेगा?" बंदर ने जवाब दिया।
"बस जोड़ लो," सुअर ने कहा। "वहाँ हैं
पीले बांस की चटाइयों में लिपटे चार बंडल,
अलग-अलग लंबाई की आठ रस्सियाँ।
फिर, बारिश और नमी को दूर रखने के लिए,
इसके चारों ओर फेल्ट की तीन या चार परतें
वह डंडा बहुत फिसलन भरा है।
दोनों सिरों पर कीलें लगी हुई हैं।
फिर एक कांस्य और लोहे से बनी नौ छल्लों वाली छड़ी है।
और बांस और लता से बना एक लबादा।
रोज-रोज इतना सारा बोझ ढोने से मुझे वाकई बहुत मुश्किल होती है। गुरु के शिष्य होने का तो अधिकार है, लेकिन मेरे साथ एक साधारण कर्मचारी जैसा व्यवहार किया जाता है।
"तुम्हें क्या लगता है कि तुम किससे बात कर रहे हो, बेवकूफ?" बंदर ने पूछा।

"मैं आपसे बात कर रहा हूँ, बड़े भाई," सुअर ने कहा।
"तुम्हें मुझसे इसकी शिकायत नहीं करनी चाहिए," बंदर ने जवाब दिया। "मेरा काम मालिक की सुरक्षा का ध्यान रखना है, जबकि तुम और साधु सैंड घोड़े और सामान की देखभाल करो। और अगर तुममें से किसी ने भी लापरवाही की, तो तुम्हें अपने टखनों पर भारी छड़ी का सामना करना पड़ेगा।"
"मुझे पीटने की धमकी मत दो, भाई," सुअर ने कहा, "यह दादागिरी होगी। मुझे पता है कि तुम सामान उठाने के लिए बहुत ऊंचे और शक्तिशाली हो, लेकिन मालिक का घोड़ा एक बड़ा और मजबूत जानवर है, जो केवल एक बूढ़े भिक्षु का भार नहीं उठा सकता।"
अगर इसमें कुछ सामान ले जाने की सुविधा हो तो मुझे बहुत खुशी होगी।
"क्या तुम्हें लगता है कि वह घोड़ा है?" बंदर ने पूछा। "वह कोई साधारण घोड़ा नहीं है। वह पश्चिमी सागर के ड्रैगन राजा आओ रन का पुत्र था, और उसका नाम राजकुमार ड्रैगन-घोड़ा है। महल के मोतियों को जलाने के कारण उसके पिता ने उसे स्वर्ग संहिता का उल्लंघन करने वाला बताकर उसकी शिकायत कर दी थी। सौभाग्य से, बोधिसत्व गुआनयिन ने उसकी जान बचाई, और वह दुख की घाटी में गुरु की प्रतीक्षा करता रहा। बोधिसत्व ने उसे एक बार फिर दर्शन दिए, उसके शल्क और सींग उतारे, उसकी गर्दन से मोती निकाले, और उसे इस घोड़े में बदल दिया, जिसने गुरु को पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध से मिलने ले जाने की शपथ ली है।"
अध्याय 23
331
पश्चिम की यात्रा
यह उसके लिए अपनी योग्यता साबित करने का मामला है, इसलिए बेहतर होगा कि आप उसे अकेला छोड़ दें।"
यह सुनकर फ्रायर सैंड ने पूछा, "क्या वह सचमुच एक अजगर है?"
"हां," बंदर ने उत्तर दिया।
"मैंने एक पुरानी कहावत सुनी है," पिग ने कहा, "कि ड्रैगन बादल उगल सकते हैं, धूल और रेत उड़ा सकते हैं, पर्वत श्रृंखलाओं को जड़ से उखाड़ सकते हैं और महासागरों को उलट-पुलट कर सकते हैं। फिर भी वह अब इतनी धीमी गति से क्यों चल रहा है?"
“अगर तुम उसे तेज़ दौड़ते देखना चाहते हो,” बंदर ने उत्तर दिया, “मैं उसे तुम्हारे लिए

तेज़ दौड़ा दूँगा।" तेजस्वी महान ऋषि ने अपनी लोहे की गदा पकड़ी और उससे अनगिनत चमकदार बादल निकल आए। जब घोड़े ने उन्हें गदा पकड़ते देखा तो उसे लगा कि उसे उससे चोट लगने वाली है, और डर के मारे वह बिजली की गति से भाग निकला। संज़ंग उसे लगाम नहीं लगा सका क्योंकि घोड़ा अपनी सारी दुष्टता के बल पर पहाड़ की ओर दौड़ पड़ा, इससे पहले कि उसने अपनी गति धीमी की। जब संज़ंग की साँस वापस आने लगी, तो उसने ऊपर देखा और बाँस के झुरमुट की छाया में कुछ सुंदर घर देखे:

सरू के पेड़ फाटकों पर झुके हुए थे
नीले पहाड़ के पास स्थित घरों में से।
वहाँ कई फैले हुए चीड़ के पेड़ थे
और कुछ ढाला हुआ बांस।
बाड़ के बाहर जंगली गुलदाउदी, पाले में बेहद खूबसूरत लग रही है;
पुल के पास स्थित ऑर्किड का फूल पानी में लाल रंग को प्रतिबिंबित कर रहा था।
सफेदी से पुती, प्लास्टर की हुई दीवार
इसे घेर लिया।
वह भव्य हॉल बेहद खूबसूरत था।
मुख्य भवन शांत है।
वहां बैल, भेड़, मुर्गी या कुत्ते का कोई निशान नहीं था;
ऐसा लग रहा था कि फसल कटाई के बाद का यह सुस्त मौसम था।

संज़ंग ने घोड़े को रोककर चारों ओर गौर से देखा, और फिर उसने बंदर और अन्य लोगों को आते हुए देखा। बंदर ने पूछा, "मालिक, आप घोड़े से गिरे तो नहीं?"

"तुमने इस घोड़े को बुरी तरह डरा दिया, गंदे बंदर," संजांग ने कहा, "लेकिन मैं अपनी जगह पर बैठा रहा।"

"मुझे डांट मत दीजिए, मालिक," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैंने घोड़े की रफ्तार इसलिए बढ़ा दी क्योंकि सुअर ने कहा था कि घोड़ा बहुत धीरे चल रहा है।"

घोड़े के पीछे तेजी से दौड़ रहा वह मूर्ख सुअर हांफते हुए बुदबुदा रहा था।

बस करो। जब कमर झुकी हो तो आराम नहीं कर सकते। हालांकि मैं इतना भारी बोझ उठाए हुए हूँ कि उसे उठा नहीं सकता, फिर भी तुम मुझे घोड़े के पीछे दौड़ा रहे हो।
“शिष्य,” संज़ंग ने कहा, “क्या तुम्हें वह खेत दिखाई दे रहा है? चलो वहाँ रात बिताने की अनुमति मांगते हैं।” बंदर ने तुरंत ऊपर देखा, पाया कि आकाश आशीर्वाद के बादलों से भरा हुआ था, और वह समझ गया कि वह खेत बुद्ध या किसी अमर शक्ति द्वारा चमत्कारिक रूप से निर्मित किया गया था।
स्वर्ग के रहस्यों को उजागर करने का साहस न करते हुए, उसने केवल इतना कहा, "शानदार, शानदार, चलिए पूछते हैं कि क्या हम वहाँ ठहर सकते हैं।" अपने घोड़े से उतरकर, संज़ंग ने एक द्वार-भवन देखा जिसके खंभे हाथियों की सूंड जैसे थे और बीमों पर चित्रकारी और नक्काशी की गई थी।
फ्रायर सैंड ने डंडा नीचे रख दिया और पिग ने घोड़े को पकड़े हुए कहा, "यह बहुत ही धनी घर है।"
बंदर अंदर जाने ही वाला था कि संज़ंग ने कहा, "नहीं, हम धर्मनिष्ठ लोगों को संदेह से बचना चाहिए। तुम्हें सीधे अंदर नहीं जाना चाहिए। हमें किसी के बाहर आने का इंतज़ार करना चाहिए और फिर विनम्रता से रहने की जगह माँगनी चाहिए।" सुअर ने घोड़े को दीवार के ढलान वाले आधार पर बाँध दिया जबकि संज़ंग एक पत्थर के स्टूल पर बैठ गया, और साधु सैंड और बंदर सीढ़ियों के पास बैठ गए। जब काफी देर तक कोई दिखाई नहीं दिया तो बंदर अधीर होकर उछल पड़ा और अंदर देखने के लिए द्वार से अंदर चला गया। उसने दक्षिण की ओर मुख वाला एक विशाल हॉल देखा जिसकी ऊँची खिड़कियाँ बाँस के पर्दों से ढकी हुई थीं। घर के भीतरी और बाहरी हिस्सों को अलग करने वाले द्वार के ऊपर एक क्षैतिज भूदृश्य चित्र बना हुआ था जो दीर्घायु और आशीर्वाद का प्रतीक था, और द्वार के दोनों ओर सोने के रंग से रंगे स्तंभों पर दो स्क्रॉल चिपके हुए थे जिन पर लिखा था:
"शाम को पुल के किनारे विलो के कोमल पत्ते लहराते हैं; जब बेर के फूल बर्फ के टुकड़ों की तरह दिखते हैं तो आंगन में वसंत का मौसम आ जाता है।"
कमरे के बीचोंबीच एक धूपदानी थी, जिस पर काले रंग का लेप पॉलिश किया हुआ था, उस पर एक प्राचीन पशु-आकार का कांसे का धूपदान रखा था और छह कुर्सियाँ थीं। हॉल के दोनों सिरों पर दीवारों पर चारों ऋतुओं के चित्र टंगे हुए थे।
जब बंदर अंदर झाँक रहा था, तभी उसे पीछे के दरवाजे से कदमों की आहट सुनाई

दी। एक स्त्री, न बूढ़ी न जवान, बाहर आई और मधुर स्वर में बोली, "कौन मेरे इस विधवा के घर में जबरदस्ती घुस आया है?"
महान ऋषि ने आदरपूर्वक उनका अभिवादन करते हुए कहा, "मैं पूर्व में स्थित महान तांग वंश का एक विनम्र भिक्षु हूँ, जो बुद्ध की उपासना करने और शास्त्रों की प्राप्ति के लिए शाही आदेशानुसार पश्चिम आया हूँ। हम कुल चार हैं, और चूंकि हमारी यात्रा हमें शाम ढलने के समय इस मार्ग पर ले आई है, इसलिए हम आपके निवास स्थान, हे दिव्य संरक्षिका, में एक रात्रि ठहरने की विनती करने आए हैं।"
उसने मुस्कुराते हुए अभिवादन का जवाब दिया और कहा, "हे आदरणीय महोदय, बाकी तीन सज्जन कहाँ हैं?" इस पर बंदर चिल्लाया, "स्वामी जी, अंदर आइए।" तभी संज़ांग, सुअर और साधु सैंड घोड़े और सामान के साथ अंदर आए। जैसे ही महिला उनका स्वागत करने के लिए हॉल से बाहर आई, सुअर ने लालची निगाहों से उसे देखा।
अध्याय 23
333
पश्चिम की यात्रा
उसने हरे रंग का रेशमी गाउन पहना हुआ था।
और उसके ऊपर हल्के लाल रंग की जैकेट;
पीले ब्रोकेड की स्कर्ट,
जिसके नीचे मोटे तले वाले जूते दिखाए गए थे।
उसके फैशनेबल केशविन्यास को काले कपड़े से ढका गया था।
जो उसके सफेद होते बालों पर जंचता था, जो अजगर की तरह कुंडलित थे;
महलनुमा शैली की हाथीदांत की कंघियां लाल और हरे रंग से चमक रही थीं।
और उसके बालों में दो सुनहरी पिन सजी हुई थीं।
उसके आधे भूरे बाल उड़ते हुए फीनिक्स पक्षी की तरह लहरा रहे थे।
उसके कानों की बालियों से मोतियों की दो पंक्तियाँ लटक रही थीं।
पाउडर और मेकअप से मुक्त, उसकी सुंदरता स्वाभाविक थी;
वह एक युवा लड़की की तरह ही आकर्षक थी।
जब उसने बाकी तीनों को देखा तो वह पहले से कहीं ज्यादा खुश हुई और उसने उन्हें मुख्य कमरे में आमंत्रित किया।

सभी का परिचय हो जाने के बाद, उसने सबको बैठने और चाय पीने के लिए कहा। चोटी बनाई हुई एक नौकरानी घर के पिछले हिस्से की ओर जाने वाले दरवाजे से अंदर आई; उसके हाथ में एक सुनहरी थाली थी जिस पर सफेद जेड के प्यालों में गरमागरम चाय और स्वादिष्ट सुगंध वाले विदेशी फल रखे थे। उसकी आस्तीनें चौड़ी थीं, और वसंत ऋतु में बांस की कोंपलों जैसी पतली उंगलियों से उसने सभी को जेड का कटोरा दिया और झुककर अभिवादन किया। चाय पी जाने के बाद, मालकिन ने मांस रहित भोजन तैयार करने का आदेश दिया।

"हे पूज्य बोधिसत्व, आपका नाम क्या है?" संजांग ने अपने हाथ फैलाते हुए पूछा। "और इस स्थान का नाम क्या है?"

“यह पशु-दान का पश्चिमी महाद्वीप है, या गोदानिया,” उसने उत्तर दिया। “मेरा मायके का नाम जिया है और मेरे पति का नाम मो था। बचपन में ही मैंने अपने माता-पिता दोनों को खो दिया था, और मैंने पैतृक व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए विवाह किया। हमारे परिवार की संपत्ति दस हजार स्ट्रिंग नकद है, और हमारे पास पंद्रह हजार एकड़ उपजाऊ भूमि है। हमें पुत्रों की प्राप्ति नहीं हुई, और हमारी केवल तीन पुत्रियाँ हैं। पिछले वर्ष से एक वर्ष पहले मैंने अपने पति को खोने का बड़ा दुर्भाग्य सहा। मैं विधवा रही, और इस वर्ष मैंने शोक से बाहर आ गई हूँ। मेरे और मेरी पुत्रियों के अलावा परिवार की संपत्ति का उत्तराधिकारी बनने के लिए कोई अन्य रिश्तेदार नहीं है। मैं पुनर्विवाह करना चाहती हूँ, लेकिन संपत्ति छोड़ने की कीमत पर नहीं। अब जब आप, आदरणीय महोदय, अपने तीन शिष्यों के साथ यहाँ आए हैं, तो मुझे लगता है कि यह आप ही होने चाहिए। मैं और मेरी तीन पुत्रियाँ घर पर रहते हुए विवाह करना चाहती हैं, और आप चारों सज्जन हमारे लिए उपयुक्त रहेंगे। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप सहमत होंगे।” संजांग वहां बहरे और गूंगे होने का नाटक करते हुए, आंखें बंद करके और मन को शांत रखते हुए बैठा रहा। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

उन्होंने आगे कहा, "हमारे पास चार हजार एकड़ से अधिक सिंचित भूमि, शुष्क भूमि और पहाड़ी ढलानों पर स्थित बाग-बगीचे हैं।"

“साथ ही एक हजार से अधिक बैल और भैंसें, खच्चरों और घोड़ों के झुंड, और

अनगिनत सूअर और भेड़ें हैं। साठ-सत्तर खेत की इमारतें और खलिहान हैं। हमारे घर में इतना अनाज है कि हम आठ-नौ साल में भी नहीं खा सकते, और दस साल तक पहनने के लिए पर्याप्त रेशम है—और सोने-चांदी की तो बात ही क्या, इतना सोना-चांदी है कि आप जीवन भर में भी खर्च नहीं कर सकते। आप उन प्राचीन लोगों से भी बेहतर स्थिति में होंगे जो 'सोने के पर्दों के पीछे वसंत का भंडार रखते थे' और ऐसी लड़कियों को रखते थे जिनके 'बाल सोने की पिनों से लदे रहते थे'। यदि आप और आपके शिष्य अपना मन बदल लें और हमारे पति बनकर इस घर में रहने को तैयार हों, तो आप धन और आराम का आनंद ले सकते हैं। क्या यह पश्चिम की कठिन यात्रा से बेहतर नहीं होगा?" संजांग वहाँ चुपचाप बैठा रहा, मानो वह मूर्ख हो।

"मेरा जन्म दिंघाई वर्ष के तीसरे महीने के तीसरे दिन के समय हुआ था," उसने आगे कहा। "मेरे दिवंगत पति मुझसे तीन साल बड़े थे, और अब मेरी उम्र चौवालीस वर्ष है। मेरी सबसे बड़ी बेटी, झेनझेन, उन्नीस वर्ष की है; मेरी दूसरी बेटी, ऐआई, सत्रह वर्ष की है; और सबसे छोटी, लियानलियान, पंद्रह वर्ष की है। उनमें से किसी की भी सगाई नहीं हुई है।"

हालाँकि मैं खुद कुछ बदसूरत हूँ, लेकिन ये लड़कियाँ बहुत सुंदर हैं और उनमें नारीत्व के सारे गुण हैं। मेरे दिवंगत पति के कोई पुत्र नहीं थे, इसलिए उन्होंने उन्हें लड़कों की शिक्षा दी, उन्हें छोटी उम्र से ही कन्फ्यूशियस के ग्रंथ पढ़ना सिखाया और उन्हें कविताएँ और दोहे सुनाना सिखाया। हालाँकि वे इस पहाड़ी फार्महाउस में रहती हैं, फिर भी आप उन्हें असभ्य नहीं कह सकते, और मुझे लगता है कि वे आप सभी आदरणीय सज्जनों के लिए अच्छी जीवनसाथी साबित होंगी। यदि आप अपना दृष्टिकोण व्यापक करने और अपने बाल बढ़ाने के लिए तैयार हैं, तो आप परिवार के मुखिया बन सकते हैं और रेशम और जकूज़ी पहन सकते हैं। क्या यह आपके मिट्टी के भिक्षापात्र, खुरदुरे कपड़े, भूसे की चप्पलों और बारिश से बचाने वाली टोपियों से कहीं बेहतर नहीं होगा?

संज़ंग सम्मान के स्थान पर ऐसे स्थिर बैठा था जैसे कोई बच्चा बिजली कड़कने से डर गया हो या कोई मेंढक बारिश में भीग गया हो। मानो वह किसी समाधि में हो, पीठ झुकाकर आकाश की ओर देखता हुआ। वहीं, पिग के मन में इस सारी दौलत और खूबसूरती के बारे में सुनकर एक अजीब सी बेचैनी होने लगी। वह कुर्सी पर ऐसे छटपटा रहा था मानो उसकी पीठ में सुई चुभाई जा रही हो, और अंत में वह इसे और

सहन नहीं कर सका।
वह अपने स्वामी के पास गया, उनके कपड़े खींचे और बोला, "स्वामी जी, आप महिला की बातों पर ध्यान क्यों नहीं दे रहे हैं? आपको तो ध्यान देना ही चाहिए।" संजांग ने गुस्से से उसे घूरा, एक कर्कश आवाज निकाली और उसे वहां से चले जाने को कहा।
"दुष्ट प्राणी," उसने कहा। "हम धर्मनिष्ठ लोग हैं। धन, सम्मान या कामुकता के विचार से प्रभावित होना शर्मनाक है।"
"बेचारे, बेचारे!" महिला ने मुस्कुराते हुए कहा। "धर्मी पुरुष होने में भला क्या भला हो सकता है?"
"बोधिसत्व, संसार में रहने से क्या लाभ हो सकता है?" संजांग ने उत्तर दिया।
“कृपया बैठ जाइए, आदरणीय महोदय, मैं आपको संसार में रहने के लाभों के बारे में बताती हूँ,” उसने कहा। “इन लाभों का वर्णन करने वाली एक कविता है, जो इस प्रकार है:
वसंत ऋतु में हम जुड़े हुए हीरे के पैटर्न काटते हैं और नया रेशम पहनते हैं; गर्मियों में हम हल्के जालीदार कपड़े पहनते हैं और कमल की सुंदरता का आनंद लेते हैं;
शरद ऋतु में मांस और स्वादिष्ट चावल की शराब आती है।
सर्दी के मौसम में घर गर्म रहता है, और हमारे चेहरे शराब से लाल हो जाते हैं।

हमारे पास चारों मौसमों के लिए आवश्यक सभी चीजें हैं।
साल भर के अनमोल खजाने और स्वादिष्ट व्यंजन।
ब्रोकेड के कपड़े, रेशमी चादरें और शादी की रात
"मैत्रेय की पूजा करते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ने से तो ये बेहतर हैं।"
"बोधिसत्व," संजांग ने कहा, "धन-दौलत, मान-सम्मान, भरपूर भोजन, वस्त्र और परिवार का आनंद लेना बेशक बहुत अच्छा है। लेकिन आप यह नहीं समझते कि धार्मिक जीवन के भी अपने लाभ हैं, जिनका वर्णन इस कविता में किया गया है।"
धर्म में प्रवेश करने का निर्णय लेना कोई मामूली बात नहीं है:
आपको पहले महसूस किए गए प्रेम और कृतज्ञता को नष्ट करना होगा।

अब बाहरी चीजें नहीं बनतीं, और आपका मुंह कसकर बंद है।
आपके शरीर में नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तत्व मौजूद होते हैं।
जब सब कुछ हासिल हो जाता है, तो आप स्वर्णिम द्वारों के सामने होते हैं;
अपने स्वभाव को पहचानें, अपने मन को शांत करें और घर लौट आएं।
यह दुनिया में रहकर खून और भोजन के लिए लालची होने से बेहतर है, जबकि तुम्हारा बदबूदार शरीर बूढ़ा और जर्जर होता जा रहा है।"
“अहंकारी भिक्षु,” स्त्री ने बड़े क्रोध से कहा। “अगर तुम पूरब से इतनी दूर से न आए होते, तो मैं तुम्हें अपने घर से निकाल देती। मैं तुम चारों को पूरे दिल से हमारे यहाँ शादी करने और हमारी संपत्ति का आनंद लेने के लिए आमंत्रित करती हूँ, और तुम मेरी कृपा का जवाब अपमान से देते हो। अगर तुमने नियमों का पालन किया है और प्रतिज्ञाएँ ली हैं, तो कम से कम अपने किसी सेवक को दामाद के रूप में मुझे दे दो। नियमों का इतना सख्ती से पालन क्यों कर रहे हो?”
क्योंकि वह अपना आपा खो बैठी थी, इसलिए संजांग को उसे शांत करना पड़ा, इसलिए उसने कहा, "बंदरिया, तुम यहीं रहो।"
"मैं कभी भी इस तरह का काम नहीं कर पाया हूँ," मंकी ने जवाब दिया।
"पिग को यहीं क्यों न रहने दिया जाए?"
"मज़ाक करना बंद करो, बड़े भाई," सुअर ने कहा। "हम सबको मिलकर तय करना चाहिए कि सबसे अच्छा क्या होगा।"
अध्याय 23
336
पश्चिम की यात्रा
“अगर आप दोनों में से कोई नहीं रुकेगा, तो मुझे साधु सैंड से रुकने के लिए कहना पड़ेगा,” संज़ंग ने कहा; लेकिन साधु सैंड ने उत्तर दिया, “गुरुजी, यह कैसी बात है! बोधिसत्व ने मुझे परिवर्तित किया, मैंने निषेधों का पालन करने का वचन दिया और आपके आने तक प्रतीक्षा की। जब से आपने मुझे अपना शिष्य बनाया है, आपने मुझे और भी बहुत कुछ सिखाया है। मुझे आपके साथ आए हुए अभी दो महीने भी नहीं हुए हैं और मुझे पुण्य कमाने का बिल्कुल भी समय नहीं मिला है। भला मैं धन और पद की इच्छा कैसे कर सकता हूँ? मैं पश्चिमी स्वर्ग जाना चाहता हूँ, चाहे इसके लिए मुझे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े, और मैं ऐसा करके अपनी आशाओं को टूटने

नहीं दूँगा।”
उनके इनकार के बावजूद, महिला मुड़ी, घर के पीछे वाले दरवाजे से बाहर चली गई और दरवाजा जोर से बंद कर दिया, जिससे गुरु और शिष्य बाहर ही रह गए, उन्हें न तो भोजन मिला और न ही चाय। उनके अलावा कोई और उनसे मिलने नहीं आया।
“मालिक, ये तरीका ठीक नहीं है,” गुस्से में भरे सुअर ने बड़बड़ाते हुए कहा। “आपको थोड़ा नरम रुख अपनाना चाहिए था और उसे कोई गोलमोल जवाब देना चाहिए था, तब आपको उससे कुछ खाना मिल जाता। इस तरह हम आज रात अच्छे से खा लेते, और सुबह उनसे शादी करने से मना भी कर पाते। अगर अंदर का दरवाजा बंद रहा और कोई बाहर नहीं आया, तो हमारी रात बहुत खराब गुजरेगी और हमें खाने को कुछ नहीं मिलेगा।”
"भाई सुअर, तुम्हें यहीं रुकना चाहिए और किसी एक लड़की से शादी कर लेनी चाहिए," साधु सैंड ने कहा।
"मुझे छोड़ दो," सुअर ने जवाब दिया। "हमें यह तय करना होगा कि सबसे अच्छा तरीका क्या है।"
“परेशान क्यों होना?” बंदर ने कहा। “अगर तुम उनमें से किसी एक से शादी करना चाहते हो, तो तुम हमारे मालिक और उसकी पत्नी के ससुराल वाले बन जाओगे, और तुम ससुराल वालों के साथ रहने वाले पति बन जाओगे। इतना समृद्ध परिवार अच्छा दहेज तो देगा ही, साथ ही रिश्तेदारों के लिए दावत भी देगा जिससे हम सभी को कुछ न कुछ लाभ होगा। इसलिए हम सभी के हित में यही है कि तुम यहाँ सांसारिक जीवन में लौट आओ।”
"यह ठीक लगता है," पिग ने कहा, "लेकिन इसका मतलब होगा इस दुनिया को छोड़ने के बाद वापस इस दुनिया में लौटना, और एक शादी खत्म करने के बाद दोबारा शादी करना।"
"तो क्या इससे पहले आपकी कोई पत्नी थी?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
“तो तुम्हें अब भी नहीं पता,” बंदर ने कहा, “कि वह स्टुबेट देश के गाओ गाँव में स्क्वाइर गाओ का दामाद हुआ करता था। जब मैंने उसे हराया और बोधिसत्व ने उसका धर्म परिवर्तन कराया और उससे निषेधों का पालन करने का वादा करवाया, तो हम उसे भिक्षु बनने के लिए मजबूर करने में कामयाब हो गए। इसलिए उसने अपनी पत्नी को छोड़ दिया और पश्चिम में बुद्ध के पास यात्रा पर हमारे गुरु के साथ चला

गया। मुझे लगता है कि अब इतने लंबे समय से उससे दूर रहने के कारण उसे वह सब याद आ रहा है। जब उसने इस स्त्री का प्रस्ताव सुना, तो उसके पुराने विचार फिर से जाग उठे। मूर्ख," उसने सुअर को संबोधित करते हुए कहा, "इस परिवार में दामाद बनकर शादी कर लो। अगर तुम मुझे कुछ बार प्रणाम करोगे तो मैं तुम्हारी शिकायत नहीं करूँगा।"

"बकवास, बकवास," सुअर ने कहा। "तुम सब एक ही बात सोच रहे हो, लेकिन मुझे ही निशाना बनाकर तमाशा बना रहे हो। हमेशा से यही कहा जाता है कि 'सुंदर महिलाओं के बीच साधु भूखा भूत होता है,' और यह बात हम सब पर लागू होती है।" लेकिन इतना घमंड दिखाकर तुमने यहाँ हमारी तरक्की की सारी उम्मीदें बर्बाद कर दी हैं। हमें चाय तक नहीं मिली, और हमारे लिए दीपक जलाने वाला भी कोई नहीं है। हम शायद एक रात तो किसी तरह गुज़ार लें, लेकिन कल उस घोड़े को फिर से हमारे मालिक को ढोना पड़ेगा, और अगर उसे रात भर कुछ खाने को नहीं मिला तो वो गिर पड़ेगा। तुम सब यहीं बैठो, मैं उसे चारा खिलाने ले जाता हूँ।" उसने घोड़े को खोला और जल्दी से बाहर खींच लाया, जिस पर बंदर ने कहा, "साधु सैंड, आप यहाँ मालिक के साथ बैठिए, मैं उनके पीछे जाता हूँ और देखता हूँ कि वो उस घोड़े को कहाँ चराते हैं।"

"अगर आप उस पर नजर रखना चाहते हैं, तो आप ऐसा कर सकते हैं," संजांग ने कहा, "लेकिन उसके साथ कोई शरारत मत करना।"

"मैं समझ गया," बंदर ने कहा, और कमरे से बाहर निकलते हुए उसने खुद को झटक दिया, एक लाल ड्रैगनफ्लाई में बदल गया, मुख्य द्वार से बाहर उड़ गया और सुअर के पास पहुँच गया।

अध्याय 23

घोड़े को घास चरने देने के बजाय, उस मूर्ख ने उसे धक्का देकर घसीटते हुए घर के पिछले दरवाजे तक ले गया, जहाँ उसने महिला और उसकी तीन बेटियों को कुछ गुलदाउदी के फूलों की प्रशंसा करते देखा। जब उन्होंने सूअर को आते देखा, तो तीनों लड़कियाँ अंदर भाग गईं, जबकि उनकी माँ उसके सामने खड़ी रही।

"आप कहाँ जा रहे हैं, पादरी जी?" उसने पूछा। उस मूर्ख ने घोड़े की लगाम छोड़ दी,

आदरपूर्वक अभिवादन किया और कहा, "मैं घोड़े को चराने जा रहा हूँ, माँ।"
"तुम्हारा वो गुरु बहुत ही संस्कारी और रूढ़िवादी है," उसने कहा। "क्या तुम यहाँ शादी करना पसंद नहीं करोगे बजाय इसके कि एक घुमंतू भिक्षु बनकर पश्चिम की ओर भटकते रहो?"
"ये लोग तांग सम्राट के आदेश पर काम कर रहे हैं," सुअर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "और उनका अनादर करने से इतना डरते हैं कि ऐसा कुछ नहीं करते। अभी जब उन्होंने हॉल में मुझ पर दबाव डाला तो मैं बहुत ही अजीब स्थिति में था। मुझे उम्मीद है कि आपको मेरी लंबी थूथन और बड़े कानों से कोई आपत्ति नहीं होगी।"
"मुझे कोई आपत्ति नहीं है," उसने कहा, "जब तक घर में कोई पुरुष मौजूद रहे, हालांकि मेरी बेटियों को आप शायद उतने आकर्षक न लगें।"
"अपनी बेटियों से कहो कि वे पति चुनने में इतनी नखरे न करें," सुअर ने कहा। "वह तांग पुजारी देखने में बहुत सुंदर हो सकता है, लेकिन वह बिलकुल बेकार है। हालांकि मैं दिखने में बदसूरत हूं, फिर भी मुझमें कुछ तो बात है।"
"वह क्या होगा?" उसने पूछा। उसका जवाब था:
"हो सकता है मैं देखने में उतना आकर्षक न होऊं,"
लेकिन मैं काम जरूर पूरा करता हूँ।
पंद्रह हजार एकड़
मैं बैल के बिना हल चला सकता हूँ।
सिर्फ अपने रेक का उपयोग करके
मैं ऐसी फसलें बोता हूँ जो अच्छी तरह उगती हैं।
मैं सूखे में भी बारिश ला सकता हूँ।
जब हवा न हो तब भी हवा का आह्वान करो।
अगर आपको अपना घर बहुत छोटा लगता है,
मैं इसमें दो या तीन और कहानियां जोड़ सकता हूं।
अगर जमीन को साफ करने की जरूरत है, तो मैं उसे साफ कर दूंगा;
अगर नालियां अवरुद्ध हैं, तो मैं उन्हें भगा दूंगा।
मैं घर के सभी तरह के काम कर सकता हूँ।
और घर के विविध कार्यों का निर्वाह करें।"
अध्याय 23

"ठीक है," उसने कहा, "अगर तुम यहाँ का काम संभाल सकते हो तो बेहतर होगा कि तुम जाकर अपने मालिक से इस बारे में बात कर लो। अगर कोई समस्या नहीं हुई तो तुम किसी लड़की से शादी कर सकते हो।"
पिग ने कहा, "उससे इस बारे में बात करने की कोई जरूरत नहीं है। वह मेरे पिता या माता नहीं हैं, और यह पूरी तरह से मुझ पर निर्भर करता है कि मैं यह करूं या नहीं।"
"ठीक है," उसने कहा, "मैं लड़कियों को बता देती हूँ, तब तक रुको।" इतना कहकर वह अंदर चली गई और अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया।
सुअर ने फिर भी घोड़े को चरने नहीं दिया बल्कि उसे घसीटते हुए घर के सामने की ओर ले गया।
उसे पता नहीं था कि बंदर, जिसे सब कुछ पता था, वापस उड़कर आया, अपने असली रूप में बदल गया और तांग पुजारी से कहा, "गुरुजी, सुअर घोड़े को वापस ला रहा है।"
"अगर वह इसे आगे न ले जाता, तो यह उत्तेजित होकर भाग सकता था," संज़ंग ने कहा, जिस पर बंदर ज़ोर से हँस पड़ा और उसने उसे सुअर और उस औरत के बीच हुई सारी घटना बता दी। संज़ंग को समझ नहीं आ रहा था कि उसकी बात पर विश्वास करे या नहीं। थोड़ी देर बाद उस मूर्ख ने घोड़े को अंदर लाकर बाँध दिया।
"क्या तुमने घोड़े को चराया है?" संजांग ने पूछा।
"मुझे कोई अच्छी घास नहीं मिली, इसलिए मैं उसे चरा नहीं सका," पिग ने कहा।
बंदर ने कहा, "हो सकता है कि तुम घोड़े को चराने में कामयाब न हुए हो, लेकिन तुमने कुछ घोड़ों का सौदा तो कर ही लिया।"
इस ताने से उस मूर्ख को एहसास हो गया कि राज खुल चुका है, इसलिए उसने अपना सिर झुका लिया और एक शब्द भी नहीं बोला।
एक तरफ का दरवाजा खुलने की चरमराहट हुई और वह महिला अपनी तीन बेटियों - झेनझेन, ऐआई और लियानलियान - के साथ अंदर आईं। उनके हाथ में लाल रंग के दो दीपक और दो पोर्टेबल धूपदान थे, जिनसे मीठी सुगंध वाला धुआं उठ रहा था और उनकी कमर पर सजे जेड के आभूषण झनझना रहे थे। तीनों लड़कियां कमरे के बीच में एक कतार में खड़ी होकर तीर्थयात्रियों का अभिवादन करने के लिए झुकीं। वे

निःसंदेह सुंदर थीं: सभी की भौहें नीली चमकती हुई थीं।
पीले और वसंत ऋतु जैसे चेहरे।
मोहक सुंदरियां जो राज्यों को उलट-पुलट कर सकती हैं,
अपनी शांत मोहकता से पुरुषों के दिलों को झकझोर देने वाली।
उनके सुनहरे फूलों के आभूषण बेहद सुंदर थे;
उनकी कढ़ाईदार कमरबंदें सांसारिक धूल के ऊपर लहरा रही थीं।
उनकी आधी मुस्कान फूटते हुए चेरी की तरह थी;
जब वे धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए चल रहे थे, तो उनकी सांसों से सुगंध आ रही थी।
उनके बाल मोतियों और जेड से ढके हुए थे।
असंख्य रत्नजड़ित आभूषणों के बोझ तले कांपते हुए;

उनके पूरे शरीर से सुगंध आ रही थी।
सुनहरे रंग के नाजुक फूलों से ढका हुआ।
चू की महिला की सुंदरता का जिक्र क्यों करें?
या शी ज़ी के आकर्षण?
वे सचमुच नौवें स्वर्ग की परियों जैसी थीं।
या फिर चंद्रमा की देवी अपने महल से बाहर आ रही हों।
जब संज़ंग ने हाथ जोड़कर सिर झुकाया तो महान ऋषि ने अनदेखा करने का नाटक किया और साधु सैंड मुँह फेर लिया। लेकिन पिग उन्हें टकटकी लगाकर देखता रहा, उसके मन में कामुक विचार उमड़ रहे थे और उसकी वासना उस पर हावी हो रही थी।
“हे दिव्य देवदूतों, हमसे मिलने आने के लिए धन्यवाद,” उसने बेचैनी से कहा, “लेकिन क्या आप कृपया लड़कियों को जाने के लिए कह सकती हैं, माँ?” तीनों लड़कियाँ दरवाज़े से बाहर चली गईं, और अपने पीछे जाली से ढकी दो लालटेन छोड़ गईं।
"क्या आप चारों आदरणीय सज्जन यह तय करेंगे कि आप में से कौन इन लड़कियों में से किसी एक से शादी करेगा?" महिला ने कहा।
"हमने पहले ही तय कर लिया है कि मिस्टर पिग आपके दामाद होंगे," फ्रायर सैंड ने जवाब दिया।

"मुझ पर उंगली मत उठाओ, भाई," पिग ने कहा, "हमें इस बारे में मिलकर चर्चा करनी चाहिए।"

“कोई ज़रूरत नहीं,” बंदर ने कहा। “तुमने पहले ही पिछले दरवाज़े पर सब कुछ ठीक कर दिया है और उसे ‘माँ’ कहकर पुकारा है, इसलिए अब कोई बात करने की ज़रूरत नहीं है। हमारे मालिक दूल्हे के परिवार का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, यह महिला दुल्हन के परिवार का प्रतिनिधित्व करती है, मैं दूल्हे का दोस्त बन सकता हूँ, और साधु सैंड रिश्ता तय करने वाले बन सकते हैं। पत्रों के आदान-प्रदान की कोई ज़रूरत नहीं है, और आज का दिन बहुत ही शुभ है, दिव्य कृपा से भरा हुआ है, इसलिए मालिक को प्रणाम करो और अंदर जाकर उसके दामाद बन जाओ।”

"असंभव," पिग ने कहा, "असंभव। मैं ऐसा कुछ नहीं कर सकता।"

"छिपाने की कोशिश करना बंद करो, बेवकूफ," बंदर ने कहा। "तुम उसे अनगिनत बार 'माँ' कह चुके हो: इसमें कुछ भी असंभव नहीं है। जल्दी करो और अपना वादा पूरा करो ताकि हम शादी की शराब पी सकें, जो इस शादी की एक अच्छी बात होगी।" एक हाथ से सुअर को और दूसरे हाथ से औरत को पकड़कर उसने कहा, "दुल्हन की माँ होने के नाते, तुम्हें अपने दामाद को अंदर ले जाना चाहिए।"

वह मूर्ख सुअर अंदर जाने के लिए झिझक रहा था, और उस औरत ने नौकरों से कहा, "टेबल और कुर्सियाँ लाओ और हमारे इन तीन रिश्तेदारों को बिना मांस का भोजन कराओ। मैं अपने दामाद को अंदर ले जा रही हूँ।" फिर उसने रसोइयों को अगली सुबह उनके दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए दावत तैयार करने को कहा। नौकरों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें कहा गया था, और बाकी तीनों तीर्थयात्रियों ने अपना भोजन किया, अपने बिस्तर बिछाए और अपनी-अपनी जगह पर सो गए।

सुअर अपनी सास के पीछे-पीछे अंदर चला गया, और जैसे-जैसे वह कमरों की गिनती भूलता गया, वह बार-बार दहलीज पर ठोकर खाता रहा। "माँ, इतनी जल्दी मत चलो," उसने कहा, "और कृपया मुझे रास्ता दिखाओ क्योंकि मुझे रास्ता नहीं पता।"

उन्होंने कहा, "ये सभी अनाज भंडार, गोदाम और पिसाई कक्ष हैं। हम अभी तक रसोईघरों तक नहीं पहुंचे हैं।"

"कितना विशाल घर है!" सुअर ने कहा, और वह कई कोनों से घूमता हुआ, ठोकर खाता और चीजों से टकराता हुआ, घर के भीतरी कमरों तक पहुँच गया।
"आपके भाई ने कहा था कि आज का दिन बहुत शुभ है," महिला ने कहा। "इसीलिए मैं आपको अंदर लाई हूँ। लेकिन हम सब बहुत जल्दी में हैं, इसलिए मुझे किसी ज्योतिषी को बुलाने या फल बिखेरने जैसी विधिपूर्वक रस्म अदा करने का समय नहीं मिला। आपको बस आठ बार प्रणाम करना होगा, और यही काफी होगा।"
"अच्छा विचार है, माँ," सुअर ने कहा। "आप सम्मान की सीट पर बैठ जाइए और मैं आपको कुछ बार प्रणाम करूँगा—इससे शादी की रस्म और दुल्हन के परिवार को धन्यवाद देना एक साथ हो जाएगा, जिससे परेशानी नहीं होगी।"
"बहुत खूब," महिला ने हंसते हुए कहा। "आप तो बड़े ही काबिल और व्यावहारिक दामाद हैं। मैं यहीं बैठी रहूंगी, आप मुझे प्रणाम कीजिए।"
चांदी की मोमबत्तियों से जगमगाते कमरे में उस मूर्ख ने सास को प्रणाम किया और फिर पूछा कि दोनों लड़कियों में से किससे उसकी शादी होगी। "यही तो समस्या है," उसकी सास ने कहा। "अगर मैं तुम्हें सबसे बड़ी बेटी दूंगी, तो दूसरी नाराज़ हो जाएगी; और अगर मैं तुम्हें दूसरी बेटी दूंगी, तो मुझे डर है कि तीसरी नाराज़ हो जाएगी; और अगर मैं तुम्हें तीसरी बेटी दूंगी, तो सबसे बड़ी नाराज़ हो जाएगी—इसलिए मैंने अभी तक फैसला नहीं किया है।"
"अगर उनके बीच झगड़े होने का कोई खतरा है," सुअर ने कहा, "तो मुझे उन सभी को दे दो, ताकि परिवार को बहस और झगड़ों से होने वाली परेशानी से बचाया जा सके।"
"क्या सुझाव है!" उसकी सास ने हैरानी से कहा। "तुम मेरी सभी बेटियों को अकेले नहीं रख पाओगे।"
"माँ, ऐसी बातें मत करो। तीन या चार पत्नियाँ होने में क्या अजीब है? अगर और भी कई होतीं, तो मैं उन्हें मुस्कुराते हुए स्वीकार कर लेता। मैंने बचपन में 'लंबे समय तक चलने वाले युद्ध' की कला सीखी थी, और मैं उनमें से हर एक को खुश रखने की गारंटी दे सकता हूँ।"
“नहीं, नहीं,” महिला ने कहा। “मेरे पास एक रुमाल है। इसे अपने सिर पर बाँध लो ताकि तुम्हारा चेहरा ढक जाए, और हम स्वर्ग को तय करने देंगे कि तुम किससे शादी करोगे। मैं लड़कियों को तुम्हारे आगे चलने के लिए कहूँगी जब तुम अपनी बाहें फैलाओगे। जिसे तुम पकड़ोगे, वही तुम्हारी होगी।” उस मूर्ख ने आज्ञाकारी होकर

रुमाल अपने सिर पर बाँध लिया, और इसका प्रमाण एक श्लोक में मिलता है:
वह मूर्ख, जो अपने भाग्य को नहीं जानता,
गुप्त रूप से खुद को नुकसान पहुँचाते हुए वह कामुकता की तलवार से घायल हो गया था। विवाह की विधि-विधानिक रस्में हमेशा से ही रही हैं।
लेकिन आज दूल्हे ने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली।
जब उसने रूमाल को अच्छी तरह से बांध लिया, तो उस मूर्ख ने कहा, "माँ, कृपया लड़कियों को बाहर आने के लिए कहें।"
"झेनझेन, ऐआई, लियानलियान," उसने पुकारा, "बाहर आओ और देखो कि तुममें से कौन मेरे नए दामाद से शादी करेगी।" उसने जेड के गहनों की झंकार सुनी और परियों की तरह दुर्लभ सुगंध महसूस की, इसलिए उसने उनमें से एक को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। उसने अपने बाएँ और दाएँ टटोला, लेकिन सफलता नहीं मिली। वहाँ इतनी लड़कियाँ इधर-उधर भाग रही थीं कि उसे किसी को पकड़ने का कोई मौका नहीं था। जब उसने पूरब की ओर हाथ बढ़ाया तो उसने केवल अध्याय 23 को ही अपनी बाहों में भर लिया।
341
पश्चिम की यात्रा
एक खंभा था, और जब उसने पश्चिम की ओर हाथ बढ़ाया तो उसे केवल दीवार ही महसूस हुई। कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक भागते हुए उसे इतना चक्कर आया कि उसका संतुलन बिगड़ गया और वह बार-बार लड़खड़ाता रहा। आगे बढ़ते हुए वह दरवाजे से टकरा गया, और पीछे हटते हुए ईंट की दीवार से जा टकराया, जिससे वह इतना गिर गया कि उसकी थूथन सूज गई और सिर पर चोट के निशान पड़ गए। अंत में वह फर्श पर बैठ गया और हांफते हुए बोला,
"माँ, तुम्हारी बेटियाँ इतनी फिसलन भरी हैं कि मैं उनमें से एक को भी पकड़ नहीं पा रहा हूँ। अब मैं क्या करूँ?"
"वे चालाक नहीं हैं," उसने रूमाल उतारते हुए कहा, "वे सब तुमसे शादी करने में बहुत शर्माती हैं।"
"अगर वे मुझसे शादी नहीं करेंगे," पिग ने कहा, "तो तुम मुझसे शादी कर लो।"
"क्या दामाद है!" उसने कहा। "उसे इस बात की परवाह नहीं कि वे जवान हैं या बूढ़ी —वह तो अपनी सास को भी चाहता है। अब मेरी इन सभी चतुर बेटियों ने मोतियों से

जड़ी ब्रोकेड की कमीजें सिलवाई हैं। मैं उस लड़की से कहूँगी जिसकी कमीज तुम पहनोगे कि वह तुमसे शादी कर ले।"

“वाह वाह वाह वाह,” सुअर ने कहा। “तीनों कमीज़ें बाहर लाओ ताकि मैं उन्हें पहनकर देख सकूँ, और अगर मैं तीनों पहन लूँ तो मैं तीनों से शादी कर लूँगा।” औरत अंदर गई और सिर्फ़ एक कमीज़ बाहर लाई, जो उसने सुअर को दे दी। उस मूर्ख ने अपना काला कपड़ा उतारकर कमीज़ पहन ली, लेकिन कमर पर बेल्ट बाँधने से पहले ही वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा और खुद को कई रस्सियों से कसकर बंधा हुआ पाया। उसे बहुत दर्द हो रहा था, और सारी औरतें गायब हो चुकी थीं।

जब संज़ंग, बंदर और साधु सैंड जागे, तो पूरब में बिजली चमक रही थी, और जब उन्होंने आँखें खोलकर चारों ओर देखा तो उन्हें वहाँ की कोई भी भव्य इमारत नज़र नहीं आई। न तो नक्काशीदार और रंगीन बीम थे और न ही छत की कड़ियाँ: वे सब चीड़ और सरू के पेड़ों के झुरमुट में सो रहे थे। संज़ंग ने घबराकर बंदर को पुकारा, और साधु सैंड ने कहा, "बड़े भाई, हमारा काम तमाम हो गया—वे राक्षस थे।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?" बंदर ने मुस्कुराते हुए पूछा, जो समझ गया था कि क्या हुआ है। "देखो हम कहाँ सो रहे थे," संजांग ने कहा। "हम यहाँ चीड़ के पेड़ों के नीचे बहुत आराम से हैं," बंदर ने कहा।

"लेकिन मुझे आश्चर्य है कि उस मूर्ख को कहाँ दंडित किया जा रहा है।"

"किसे सजा मिल रही है?" संजांग ने पूछा।

“कल रात जो स्त्री और लड़कियाँ दिखीं, वे शायद कोई बोधिसत्व थीं जो भेस बदलकर हमारे दर्शन करने आई थीं,” बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “और मुझे लगता है कि वे आधी रात को चली गईं। मुझे डर है कि सुअर को दंड मिल रहा है।” यह सुनकर संजांग ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, और फिर उन्होंने एक सरू के पेड़ से लटका हुआ कागज का एक टुकड़ा हवा में लहराता हुआ देखा। साधु सैंड उसे लेने और अपने गुरु को दिखाने के लिए जल्दी से वहाँ गए, जिन्होंने देखा कि उस पर कविता की आठ पंक्तियाँ लिखी हुई थीं।

"ली पर्वत की वृद्ध महिला को संसार की कोई लालसा नहीं थी, लेकिन बोधिसत्व गुआनयिन ने उन्हें आने के लिए राजी कर लिया।"

समंतभद्र और मंजुश्री दोनों उपस्थित थे।

पेड़ों के बीच खूबसूरत लड़कियों के वेश में।

वे पवित्र भिक्षु इतने गुणी थे कि वे गृहस्थ जीवन में वापस नहीं लौट सकते थे।
लेकिन नास्तिक सुअर सांसारिकता से भी बदतर था।
अध्याय 23
342
पश्चिम की यात्रा
अब से उसे अपना मन शांत करना होगा और सुधार करना होगा।
अगर उसने दोबारा बदतमीजी की तो सफर मुश्किल हो जाएगा।"
जैसे ही संजांग, मंकी और फ्रायर सैंड ने ये पंक्तियाँ पढ़ीं, उन्हें जंगल की गहराई से ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दीं:
"गुरुजी, उन्होंने मुझे बांधकर मरने के लिए छोड़ दिया है। अगर आप मुझे बचा लेंगे तो मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा।"
"क्या वो सुअर चिल्ला रहा है, साधु सैंड?" संजांग ने पूछा, और साधु सैंड ने कहा, "हाँ।"
"यद्यपि वह मूर्ख स्वभाव से हठपूर्वक मूर्ख है," संजांग ने कहा, "वह एक ईमानदार व्यक्ति है।"
इसके अलावा, वह बहुत बलवान है और सामान उठा सकता है—और हमें यह भी याद रखना चाहिए कि बोधिसत्व ने उसे बचाया था और उसे हमारे साथ आने के लिए कहा था। मुझे नहीं लगता कि वह दोबारा ऐसा करने की हिम्मत करेगा।" फिर साधु सैंड ने बिस्तर लपेटकर सामान व्यवस्थित किया, जबकि बंदर ने घोड़े को खोलकर उसे अपने साथ जंगल में ले गया ताकि वह जांच कर सके। सचमुच:
धर्म के मार्ग पर चलते समय आपको सावधान रहना चाहिए।
और सत्य की ओर लौटते हुए अपनी इच्छाओं को त्याग दो।
अगर आपको नहीं पता कि वह मूर्ख बच पाया या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 24
अनंत दीर्घायु के पर्वत पर एक महान अमर व्यक्ति अपने एक पुराने मित्र का मनोरंजन करता है। वूझुआंग मंदिर में एक बंदर मानव फल चुरा लेता है।
वे तीनों जंगल में गए और उन्होंने उस मूर्ख को एक पेड़ के नीचे बंधा हुआ देखा, जो असहनीय दर्द से चीख-चिल्ला रहा था। बंदर उसके पास गया और हंसते हुए बोला,

"कैसा दामाद है! इतनी देर हो गई है, और अभी तक अपनी सास को धन्यवाद देने या मालिक को खुशखबरी सुनाने भी नहीं आए। अभी तक यहाँ क्यों खेल रहे हो? तुम्हारी सास कहाँ है? तुम्हारी पत्नी कहाँ है? तुम तो एकदम बंधे-बंधा, खूब पिटे हुए दामाद लग रहे हो!"

इस तरह उपहास से जल रहे उस मूर्ख ने दर्द से कराहने से खुद को रोकने के लिए दांत भींच लिए। उसे देखकर साधु सैंड को दया आ गई और अपना सामान नीचे रखकर वे उसके पास गए और उसकी रस्सी खोल दी। उस मूर्ख ने कृतज्ञता से उनके सामने सिर झुकाया। वह घोर पश्चाताप से पीड़ित था। इसका प्रमाण 'द मून इन द वेस्ट रिवर' की धुन पर एक कविता है:

सेक्स एक ऐसी तलवार है जो शरीर को घायल करती है;

जो भी इसकी लालसा करेगा, उसे कष्ट भोगना पड़ेगा।

अध्याय 24

343

पश्चिम की यात्रा

सोलह साल की एक खूबसूरत लड़की

यह यक्ष राक्षस से कहीं अधिक खतरनाक है।

इसका केवल एक ही मूल है।

और इस काम में कर्मचारियों को कोई अतिरिक्त लाभ नहीं मिलता।

अपनी सारी पूंजी सुरक्षित रखना बेहतर है।

इसकी अच्छी तरह रक्षा करो, और इसे बर्बाद मत करो।

पिग ने जलती हुई अगरबत्ती का प्रतीक दिखाने के लिए थोड़ी सी मिट्टी का इस्तेमाल किया और स्वर्ग की आराधना में सिर झुकाया।

"क्या तुमने बोधिसत्व को पहचाना?" बंदर ने पूछा।

"मैं बेहोश पड़ा था और मेरी आंखों के सामने तारे चमक रहे थे, इसलिए मैं यह नहीं बता सका कि यह कौन था।" बंदर ने उसे कागज का टुकड़ा थमा दिया, और जब उसने उस दिव्य संदेश को पढ़ा, तो सुअर पहले से कहीं अधिक शर्मिंदा हुआ।

"आप बहुत भाग्यशाली हैं," फ्रायर सैंड ने हंसते हुए कहा, "अब आपके चार बोधिसत्व रिश्तेदार हैं।"

"कृपया इसके बारे में बात मत करो," सुअर ने कहा। "मैं सचमुच इंसान कहलाने के

लायक नहीं हूँ। मैं भविष्य में कभी कोई गलत काम नहीं करूँगा, और चाहे इसके लिए मुझे अपनी हड्डियाँ ही क्यों न तोड़नी पड़ें, मैं अपने कंधे पर हाथ रखकर अपने मालिक का सामान पश्चिम तक ले जाऊँगा।"
"अब ठीक लग रहा है," संजांग ने कहा।
फिर बंदर अपने स्वामी को मुख्य सड़क पर ले गया। काफी देर चलने और आराम करने के बाद, उन्होंने देखा कि एक ऊँचा पहाड़ उनके रास्ते में रुकावट डाल रहा है।
"शिष्यों," संजांग ने घोड़े की लगाम खींचते हुए और उसे चाबुक मारना बंद करते हुए कहा, "हमें उस पहाड़ पर बहुत सावधान रहना होगा। मुझे डर है कि उस पर दुष्ट आत्माएँ और राक्षस हो सकते हैं जो हम पर हमला कर देंगे।"
बंदर ने कहा, "हम तीन अनुयायियों के साथ, तुम्हें राक्षसों से डरने की ज़रूरत नहीं है।"
संज़ंग की चिंताएँ दूर हो गईं और वह आगे बढ़ गया। पहाड़ वाकई बहुत सुंदर था।
पहाड़ बहुत ऊँचा था
और इसकी भव्यता चट्टानी थी।
इसकी जड़ें कुनलुन पर्वत श्रृंखला से जुड़ गईं।
इसका शिखर आकाशगंगा को छूता था।
सफेद सारस बबूल और सरू के पेड़ों पर आकर बैठ गया।
काले रंग के बंदर उसकी लताओं से उल्टे लटके हुए थे।
अध्याय 24
344
पश्चिम की यात्रा
जब सूर्य की किरणें इसके जंगलों पर तेज चमकती थीं,
यह लाल धुंध से घिरा हुआ था;
जब अंधेरी घाटियों से हवाएं चलीं,
रंग-बिरंगे बादल आसमान में तेजी से दौड़ रहे थे।
हरे बांस में छिपे पक्षियों ने पुकार लगाई,
जंगली फूलों के बीच तीतर आपस में लड़ रहे थे।
हजार साल के शिखर,
पांच आशीर्वाद शिखर,
कमल की चोटियाँ,

भव्यता से एक कोमल प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हुए;
दस हजार साल पुरानी चट्टानें,
बाघ के दांत जैसी चट्टानें,
थ्री हेवन्स चट्टानें,
सूक्ष्म और शुभ वाष्पों से घिरा हुआ।
चट्टान के सामने हरी-भरी घास,
पहाड़ी की चोटी पर बेर के फूलों की खुशबू।
कंटीले पेड़ों का घना जंगल उग आया था।
ऑर्किड के फूल शुद्ध और हल्के रंग के थे।
घने जंगलों में पक्षी फीनिक्स पक्षी के चारों ओर इकट्ठा हो गए;
एक प्राचीन गुफा में, यूनिकॉर्न जानवरों का मुखिया था।
एक घाटी में बहती एक मनमोहक धारा
यह इधर-उधर भटकते हुए मुड़ता-घुमड़ता रहा;
अंतहीन चोटियाँ
परत दर परत कुंडलित।
फिर वहां हरे रंग के बबूल के पेड़ थे,
चित्तीदार बांस,

पश्चिम की यात्रा
और नीले रंग के चीड़ के पेड़,
वह एक हजार वर्षों से वैभव के मामले में प्रतिस्पर्धा कर रहा था।
सफेद बेर के फूल,
लाल आड़ू,
और पन्ना रंग के विलो पेड़
वसंत ऋतु में सुंदरता की होड़ में वे बेहद शानदार थे।
ड्रैगन पुकार रहे थे और बाघ दहाड़ रहे थे।
सारस नाचने लगे और बंदर जोर-जोर से चिल्लाने लगे।
हिरण फूलों से बाहर निकले।

तीतर सूर्य के लिए गीत गा रहे थे।
यह आशीर्वाद की भूमि थी, अमरों का पर्वत था।
बिल्कुल पेंगलाई या लैंगयुआन की तरह।
पहाड़ की चोटी पर फूल खिले और मुरझा गए।
पर्वतमाला के ऊपर चोटियों पर बादल आते-जाते रहे।
अपने घोड़े पर बैठे हुए संज़ंग ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "शिष्यों, मैंने पश्चिम की अपनी यात्रा में कई पर्वत पार किए हैं, और वे सभी ऊबड़-खाबड़ और पथरीले थे, लेकिन उनमें से कोई भी यहाँ के असाधारण रूप से सुंदर दृश्य की तुलना में नहीं था। यदि यह थंडर मठ से अधिक दूर नहीं है, तो हमें बुद्ध से मिलने के लिए गंभीर और श्रद्धापूर्ण भाव धारण करना चाहिए।"
"अभी तो शुरुआत ही है," मंकी ने हंसते हुए कहा। "वहां तक पहुंचना आसान नहीं है।"
"बड़े भाई, हम थंडर मठ से कितनी दूर हैं?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"छत्तीस हजार मील," बंदर ने उत्तर दिया, "और हमने इसका दसवां हिस्सा भी तय नहीं किया है।"
"वहाँ पहुँचने में हमें कितने साल लगेंगे?" सुअर ने पूछा।
"मेरे दोनों छोटे भाई इसे दस दिनों में पूरा कर सकते हैं, और मैं एक ही दिन में पचास बार वहां जा सकता हूं और फिर भी सूर्यास्त से पहले वापस आ सकता हूं। लेकिन हमारे मालिक के लिए यह सोचना भी मुश्किल है।"
"बताओ, बंदर! इसमें कितना समय लगेगा?" संजांग ने पूछा।
बंदर ने कहा, "अगर तुम बचपन से बुढ़ापे तक जाओ, फिर बुढ़ापे से वापस बचपन में आओ, और ऐसा हज़ार बार करो, तो भी वहाँ पहुँचना मुश्किल होगा। लेकिन अगर तुम अपने सच्चे स्वरूप को पहचान लो, ईमानदार बने रहने का निश्चय करो, और हमेशा ज्ञान की ओर मुड़े रहो, तो तुम 24वें अध्याय तक पहुँच जाओगे।"

गिद्ध शिखर।"
"भले ही यह थंडर मॉनेस्ट्री न हो, फिर भी अच्छे लोगों को ऐसे ही खूबसूरत नजारों के बीच रहना चाहिए," फ्रायर सैंड ने कहा।

"बिल्कुल सही," बंदर ने कहा, "यहाँ कोई दुष्ट प्राणी नहीं हो सकते। यह पवित्र भिक्षुओं या अमर लोगों का निवास स्थान होना चाहिए। चलो यहाँ चारों ओर देखते हैं और आराम से इसका अवलोकन करते हैं।"

इस पर्वत को अनंत दीर्घायु का पर्वत कहा जाता था, और इस पर वूझुआंग मंदिर नामक एक ताओवादी मंदिर था। इस मंदिर में झेन युआन ज़ी नामक एक अमर व्यक्ति निवास करते थे, जिनका ताओवादी नाम था। उन्हें युग के संयुक्त स्वामी के रूप में भी जाना जाता था। मंदिर में एक दुर्लभ खजाना था, एक चमत्कारी वृक्ष जो आदिम अराजकता के पहली बार विभाजन के समय, स्वर्ग और पृथ्वी के विभाजन से पहले, अस्तित्व में आया था। विश्व के चार महान महाद्वीपों में से, केवल पश्चिमी महाद्वीप (पशु-उपहार) के वूझुआंग मंदिर में ही यह खजाना था, जिसे "घास-वापसी करने वाला सिंदूर" या "मनुष्य फल" के नाम से जाना जाता था। इसे खिलने में तीन हजार वर्ष, फल बनने में तीन हजार वर्ष और पकने में तीन हजार वर्ष लगते थे, इस प्रकार फल खाने योग्य होने से पहले लगभग दस हजार वर्ष बीत जाते थे। प्रत्येक दस हजार वर्षों में केवल तीस फल ही बनते थे, और उनका आकार नवजात शिशु जैसा होता था, जिसमें अंग और इंद्रियां पूर्ण रूप से मौजूद होती थीं। जिसकी भी किस्मत में इसे सूंघने का मौका होता, वह तीन सौ साठ साल तक जीवित रहता, और अगर कोई इसे खा लेता तो वह सैंतालीस हजार साल तक जीवित रहता।

उस दिन महान अमर झेन युआन को मूल दिव्य जेड शुद्ध पुरुष से परम पवित्रता के स्वर्ग में स्थित मिलुओ महल में अविभेदित एकता के फल पर प्रवचन सुनने का निमंत्रण मिला। इस महान अमर के शिष्यों की संख्या अनगिनत थी, और अब उनके अड़तालीस शिष्य थे जिन्होंने मार्ग के पूर्ण सत्य को प्राप्त कर लिया था। उस दिन, महान अमर अपने साथ छियालीस शिष्यों को ऊपरी लोक में प्रवचन सुनने के लिए ले गए, और दो सबसे छोटे शिष्यों, शुद्ध पवन और उज्ज्वल चंद्रमा को मंदिर की देखभाल के लिए छोड़ दिया। शुद्ध पवन 1320 वर्ष के थे, और उज्ज्वल चंद्रमा अभी-अभी 1200 वर्ष के हुए थे।

महान अमर ने दोनों लड़कों को निर्देश दिए: "चूंकि मुझे मूल दिव्य जेड शुद्ध पुरुष के आह्वान का पालन करते हुए मिलुओ महल में व्याख्यान सुनने जाना है, इसलिए तुम दोनों को मंदिर की अच्छी तरह से देखभाल करनी होगी। मेरा एक पुराना मित्र जल्द ही यहाँ आने वाला है, और तुम्हें उसका बहुत अच्छे से स्वागत करना होगा। हमारी पुरानी

मित्रता के प्रतीक के रूप में तुम उसके लिए दो मानव फल तोड़ सकते हो।"
“गुरुजी, आपका यह पुराना दोस्त कौन है?” लड़कों ने पूछा। “कृपया हमें बताइए कि वह कौन है ताकि हम उसका ठीक से सत्कार कर सकें।”
“वह तांग सम्राट द्वारा पूर्व में भेजा गया एक पुजारी है,” महान अमर ने उत्तर दिया, “और वह संजांग के नाम से जाना जाता है। वह पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्रों की माँग करने जा रहा भिक्षु है।”
"कन्फ्यूशियस ने कहा था, 'अलग रीति-रिवाजों वाले लोगों से कोई वास्ता मत रखो,'" लड़कों ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
"हमारा संप्रदाय तो महान एकेश्वरवाद का गूढ़ संप्रदाय है, तो फिर तुम उस बौद्ध भिक्षु के मित्र क्यों हो?"
“आपको शायद पता नहीं है,” महान अमर ने उत्तर दिया, “कि वह सुनहरे झींगुर का पुनर्जन्म है, जो पश्चिम के प्राचीन ऋषि तथागत बुद्ध का दूसरा शिष्य था। मेरी उनसे मुलाकात उल्लाम्बना सभा में हुई थी, जहाँ उन्होंने अपने हाथों से मुझे चाय पिलाई थी। बुद्ध के इस शिष्य ने मुझे इतना सम्मान दिया, इसलिए मैं उन्हें अपना पुराना मित्र मानता हूँ।”
जब दोनों अमर बालकों ने यह सुना, तो उन्होंने अपने गुरु के आदेश का पालन किया। जैसे ही वे प्रस्थान करने वाले थे, महान अमर ने उन्हें कुछ और निर्देश दिए: "उन मानव फलों की संख्या सीमित है। आपको केवल दो ही देने हैं, एक भी अधिक नहीं।"
अध्याय 24
347
पश्चिम की यात्रा
"जब बगीचा खोला गया तो हम सबने दो-दो फल आपस में बाँट लिए," लड़कों ने कहा, "और अब पेड़ पर अट्ठाईस फल बचे हैं। हम दो से ज़्यादा इस्तेमाल नहीं करेंगे।"
“यद्यपि तांग पुरोहित मेरे पुराने मित्र हैं,” महान अमर ने कहा, “तुम्हें उनके दुष्ट अनुयायियों से सावधान रहना चाहिए, और उन्हें उस मानवफल के बारे में पता नहीं चलने देना चाहिए।” इसके बाद महान अमर अपने बाकी शिष्यों के साथ स्वर्ग की ओर उड़ गए।
इस बीच, तांग पुजारी और उनके तीन अनुयायी पहाड़ पर सैर का आनंद ले रहे थे, तभी उन्होंने बांस के झुरमुट के ऊपर कुछ ऊँची इमारतें देखीं। "तुम्हें क्या लगता है यह

क्या है?" सान्ज़ांग ने बंदर से पूछा, जिसने जवाब दिया, "यह या तो ताओवादी मंदिर है या बौद्ध मंदिर। चलो जाकर पता लगाते हैं।" उन्हें द्वार तक पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा, और उन्होंने देखा
एक ठंडी, चीड़ के पेड़ों से ढकी ढलान,
बांस के बीच से गुजरता एक शांत रास्ता।
सफेद सारस तैरते हुए बादल लेकर आए।
बंदरों और लंगूरों ने फल भेंट किए।
द्वार के सामने एक चौड़ा तालाब था, और पेड़ों की छायाएँ लंबी थीं; चट्टानों की दरारों में काई उग रही थी।
कई बैंगनी रंग के हॉल एक साथ जमा हो गए थे;
लाल रंग की आभा ने ऊंचे-ऊंचे टावरों को घेर लिया।
वह वास्तव में एक पवित्र स्थान था।
पेंगलाई द्वीप पर स्थित एक बादल गुफा।
इसके पूर्ण शून्य में बहुत कम घटनाएँ घटित हुईं;
इसकी शांति ने मार्ग के विचारों को जन्म दिया।
हरे रंग के पक्षी अक्सर महारानी माँ के पत्र लेकर आते थे;
बैंगनी तीतरों ने लॉर्ड लाओ ज़ी की क्लासिक रचनाओं को ढोया।
उस मार्ग और उसकी शक्ति में एक भव्यता और गरिमा थी।
यह वास्तव में एक दिव्य अमर का घर था।
संजांग घोड़े से उतरा और उसने देखा कि द्वार के बाहर एक पत्थर की पट्टिका थी जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा था:
अध्याय 24
348
पश्चिम की यात्रा
अनंत दीर्घायु के पर्वत की पवित्र भूमि
वुझुआंग मंदिर का गुफा स्वर्ग
"तुम सही थे," संजांग ने कहा, "यह एक ताओवादी मंदिर है।"
"इस मंदिर में अच्छे लोग ही निवास करते होंगे," फ्रायर सैंड ने कहा, "क्योंकि यह इतने रमणीय और सुंदर वातावरण में स्थित है। चलिए अंदर जाकर एक नज़र डालते

हैं। जब हम अपनी यात्रा के अंत में पूर्व की ओर लौटेंगे, तो यह हमारे द्वारा देखे गए सबसे सुंदर दृश्यों में से एक होगा।"
"बहुत खूब," बंदर ने कहा, और वे सब अंदर चले गए। अगले द्वार पर यह दोहा चिपका हुआ था:
"दिव्य अमर प्राणियों का निवास स्थान जो कभी बूढ़े नहीं होते;
"ताओवादियों का घर उतना ही प्राचीन जितना स्वर्ग।"
"यह ताओवादी बड़ी-बड़ी बातें करके लोगों को डराने की कोशिश करता है," बंदर ने हंसते हुए कहा। "जब मैंने पांच सौ साल पहले स्वर्ग महल को नष्ट किया था, तब मैंने सर्वोच्च भगवान लाओ ज़ी के द्वार पर ऐसा कुछ भी नहीं देखा था।"
"उसे छोड़ो," पिग ने कहा। "चलो अंदर चलते हैं। यह ताओवादी शायद काफी अच्छा आदमी हो।"
जैसे ही वे दूसरे द्वार से गुजरे, उन्होंने दो लड़कों को भागते हुए बाहर आते देखा। वे कुछ इस तरह दिखते थे: दुबले-पतले, जीवंत मन और सुंदर चेहरे।
और बालों को बच्चों जैसी चोटी में बांधा गया था।
उनकी ताओवादी पोशाकें स्वाभाविक रूप से धुंध से घिरी हुई थीं।
उनके पंखों वाले कपड़ों की आस्तीनें हवा में लहरा रही थीं।
उनकी जेड की बेल्ट ड्रैगन के सिर के आकार की गांठों से बंधी हुई थीं।
उनके घास के सैंडल रेशम से हल्के ढंग से बंधे हुए थे।
अपनी शालीनता में वे आम मनुष्यों से भिन्न थे।
ताओवादी लड़के: शुद्ध पवन और उज्ज्वल चंद्रमा।
अध्याय 24
349
पश्चिम की यात्रा
दोनों लड़कों ने झुककर उनका अभिवादन किया। उन्होंने कहा, “हे पूज्य गुरुजी, हमें खेद है कि हमने आपका ठीक से स्वागत नहीं किया। कृपया बैठ जाइए।” संज़ंग प्रसन्न हुए और दोनों लड़कों को मंदिर के मुख्य हॉल तक ले गए, जिसका मुख दक्षिण की ओर था। वहाँ एक नक्काशीदार जालीदार खिड़की थी जिससे रोशनी अंदर आ रही थी, और लड़कों ने उस दरवाजे को धक्का देकर खोल दिया। उन्होंने तांग पुजारी को अंदर आने के लिए कहा, और उन्होंने दीवार पर कई रंगों में खुदे हुए दो विशाल शब्द

देखे - स्वर्ग और पृथ्वी। वहाँ लाल रंग की नक्काशीदार लाह से बनी एक धूपदानी थी जिस पर सोने के दो धूपदान और धूप रखी थी।

संज़ंग मेज के पास गए और तीन बार प्रणाम करते हुए अपने बाएं हाथ से धूपदान में एक चुटकी धूप डाली। फिर वे लड़कों की ओर मुड़े और बोले, "यह मंदिर पश्चिमी महाद्वीप में अमर लोगों का निवास स्थान है, तो तुम तीनों पवित्रों, चारों सम्राटों और स्वर्ग के सभी सेवकों की पूजा क्यों नहीं करते? तुम 'स्वर्ग' और 'पृथ्वी' शब्दों को धूप क्यों जलाते हो?"

"सच कहूँ तो, आदरणीय गुरुदेव," लड़कों ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "ऊपर वाले शब्द 'स्वर्ग' की पूजा करना बिल्कुल सही है, लेकिन नीचे वाले शब्द 'पृथ्वी' को हम कोई उपहास नहीं देते। हमारे गुरु ने तो केवल अपनी प्रशंसा पाने के लिए ही उन्हें पूजा के लिए रखा था।"

"वह लोगों को कैसे प्रभावित करता है?" संजांग ने पूछा।

लड़कों ने उत्तर दिया, "तीनों पवित्र आत्माएं और चार सम्राट हमारे गुरु के मित्र हैं, नौ तेजस्वी उनके कनिष्ठ हैं और नक्षत्र उनके अधीनस्थ हैं।"

यह सुनकर बंदर हंसते-हंसते लोटपोट हो गया, और सुअर ने उससे पूछा, "तुम किस बात पर हंस रहे हो?"

"वे कहते हैं कि मैं कुछ गलत काम करता हूँ, लेकिन ये ताओवादी लड़के सचमुच बहुत बड़ी-बड़ी बातें करते हैं।"

"तुम्हारा शिक्षक कहाँ है?" संजांग ने उनसे पूछा।

"उन्हें मूल दिव्य जेड शुद्ध व्यक्ति से निमंत्रण मिला था और वे अविभेदित एकता के उत्पाद पर व्याख्यान सुनने के लिए सर्वोच्च पवित्रता के स्वर्ग में स्थित महल में गए हैं, इसलिए वे घर पर नहीं हैं।"

इस पर बंदर दहाड़ते हुए बोला, "बदबूदार ताओवादी लड़कों, तुम्हें पता नहीं कि तुम किससे बात कर रहे हो। तुम हमारे सामने अपनी गंदी चालें चलते हो और मासूम होने का नाटक करते हो। मिलुओ महल में कौन सा महान मोनड का दिव्य अमर रहता है? तुम्हारे गाय के खुर जैसे गुरु को किसने प्रवचन देने के लिए बुलाया है?"

संज़ंग को चिंता थी कि अब जब उसने अपना आपा खो दिया है, तो लड़के पलटवार करेंगे और एक भयंकर लड़ाई शुरू हो जाएगी, इसलिए उसने कहा, "वुकोंग, उनसे झगड़ा मत करो। हम एक मिनट में निकलेंगे, इसलिए जाहिर है कि हमें उनसे कोई

लेना-देना नहीं है। वैसे भी, कहावत है कि 'बगुले बगुले का मांस नहीं खाते'। उनका मालिक यहाँ है ही नहीं, इसलिए जगह को बर्बाद करने का कोई मतलब नहीं है। जाओ और फाटक के बाहर घोड़े को चराओ। साधु सैंड, तुम सामान का ध्यान रखो, और पिग से कहो कि हमारे गठ्ठों में से कुछ चावल निकालकर उनकी रसोई में हमारे लिए खाना बना दे। जब हम निकलेंगे तो उन्हें लकड़ी के लिए कुछ सिक्के दे देंगे। सब लोग मेरी बात मानो और मुझे यहाँ आराम करने दो। खाना खाने के बाद हम फिर से निकल पड़ेंगे।" तीनों अपने-अपने काम पर चले गए।

इस बीच ब्राइट मून और प्योर विंड चुपचाप एक-दूसरे से संजांग की प्रशंसा कर रहे थे: "कितने शानदार भिक्षु हैं।"

वे सचमुच पश्चिम के प्रिय ऋषि का मानव रूप हैं, और उनका वास्तविक स्वरूप ज़रा भी भ्रमित नहीं है। गुरु ने हमें उनका सत्कार करने और पुरानी मित्रता के प्रतीक के रूप में उन्हें कुछ मनफल भेंट करने को कहा, और साथ ही उन्होंने हमें अपने उन गुंडों से सावधान रहने की चेतावनी भी दी। उनके चेहरे खौफनाक हैं और स्वभाव क्रूर है। शुक्र है कि उन्होंने उन्हें भगा दिया, क्योंकि अगर वे अभी भी उनके साथ होते, तो हम उन्हें मनफल नहीं दे पाते।

“हमें अभी तक पता नहीं है कि यह भिक्षु हमारे गुरु का पुराना मित्र है या नहीं,” प्योर विंड ने कहा। “बेहतर होगा कि हम उनसे पूछ लें।” फिर वे दोनों संज़ंग के पास गए और बोले, “हे पूज्य गुरु, क्या हम आपसे अध्याय 24 का अनुरोध कर सकते हैं?”

क्या आप ही वह महान तांग वंश के संजांग हैं जो शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहे हैं?

"जी हां, मैं ही हूं," संजांग ने उनके अभिवादन का जवाब देते हुए कहा। "आपको कैसे पता चला कि मैं कौन हूं?"

उन्होंने उत्तर दिया, “हमारे गुरु ने जाने से पहले हमसे कहा था कि आपके आने से बहुत पहले ही हम आपसे मिलने आ जाएँ, लेकिन आप हमारी अपेक्षा से अधिक तेज़ी से आ गए, इसलिए हम ऐसा नहीं कर पाए। कृपया बैठ जाइए, गुरुजी, हम आपके लिए चाय लाते हैं।”

"मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूँ," संज़ंग ने कहा। ब्राइट मून जल्दी से बाहर गई और

उसके लिए एक कप सुगंधित चाय लेकर वापस आई।
जब संजांग ने चाय पी ली, तो प्योर विंड ने ब्राइट मून से कहा, "हमें अपने गुरु के कहे अनुसार फल लाना चाहिए।"
दोनों लड़के संज़ांग छोड़कर अपने कमरे में गए, जहाँ उनमें से एक ने सोने की छड़ी उठाई और दूसरे ने लाल थाली, जिस पर उसने कई रेशमी रूमाल गद्दी की तरह रखे। वे मैनफ्रूट के बगीचे में गए, जहाँ प्योर विंड पेड़ पर चढ़ गया और सोने की छड़ी से फलों को थपथपाने लगा, जबकि ब्राइट मून नीचे उन्हें थाली में पकड़ने के लिए इंतज़ार कर रही थी।
उन्होंने कुछ ही क्षणों में दो फल तोड़कर उठा लिए और उन्हें मुख्य हॉल में लाकर संज़ंग को भेंट करते हुए कहा, "हे स्वामी संज़ंग, हमारा यह मंदिर एक दूरस्थ और सुनसान पर्वत पर स्थित है, और इन दो फलों के अलावा हमारे पास आपको भेंट करने के लिए कोई स्थानीय व्यंजन नहीं है। हमें आशा है कि ये आपकी प्यास बुझा देंगे।"
उस मानव-अंग को देखते ही भिक्षु भय से कांपते हुए लगभग तीन फीट पीछे हट गया। "हे भगवान!" वह चिल्लाया। "इस समृद्धि के वर्ष में आप इतनी भूखमरी की स्थिति में कैसे पहुँच सकते हैं कि मानव मांस खा रहे हैं? और मैं भला एक नवजात शिशु से अपनी प्यास कैसे बुझा सकता हूँ?"
"इस भिक्षु ने मुखों और ज़ुबानों के युद्धक्षेत्र और वाद-विवाद के सागर में मांस की आंखें और एक नश्वर शरीर विकसित कर लिया है," शुद्ध पवन ने सोचा, "और वह अमरों के इस घर के खजानों को पहचान नहीं सकता।"
"आदरणीय गुरुदेव," ब्राइट मून ने कहा, "इसे 'मनुष्य फल' कहा जाता है, और इसे न खाने का कोई कारण नहीं है।"
"बकवास, बकवास," संज़ंग ने कहा। "ये अपने माता-पिता के गर्भ में पल रहे हैं और जन्म से पहले इन्हें अनगिनत कष्ट सहने पड़े हैं। तीन दिन भी जीवित न रहने पर आप इन्हें फल की तरह कैसे मान सकते हैं?"
"वे सचमुच एक पेड़ पर उगे थे," प्योर विंड ने कहा।
"बेकार की चीज़ें," संज़ंग ने जवाब दिया। "बच्चे पेड़ों पर नहीं उगते। इन्हें ले जाओ, तुम अमानवीय दरिंदों।"
जब उसने उन्हें खाने से साफ इनकार कर दिया, तो दोनों लड़कों को प्लेट हटाकर अपने कमरे में वापस जाना पड़ा। यह फल थोड़ा नाजुक था और जल्दी ही सख्त

होकर खाने लायक नहीं रह जाता था, इसलिए दोनों लड़के अपने-अपने बिस्तर पर बैठ गए और एक-एक फल खा लिया।

अरे बाप रे! ये कैसी घटना है! उनके कमरे और रसोई के बीच बस एक दीवार थी, जहाँ से उनकी फुसफुसाहट साफ़ सुनाई दे रही थी। सुअर रसोई में चावल पका रहा था जब उसने उन्हें सुनहरी छड़ी और लाल थाली लाते हुए बात करते सुना। बाद में उसने उन्हें यह कहते सुना कि तांग पुजारी ने उस फल को पहचाना नहीं था, इसीलिए वे उसे अपने कमरे में खाने के लिए ले गए थे।

"काश मैं भी इसे चख पाता, पर मुझे पता नहीं कैसे," सुअर ने सोचा, उसके मुँह में पानी आ रहा था। खुद कुछ करने में असमर्थ, उसे भाई बंदर से बात करने तक इंतजार करना पड़ा। अध्याय 24

351

पश्चिम की यात्रा

अब चूल्हे में आग जलाने में उसकी सारी दिलचस्पी खत्म हो गई थी, वह चूल्हे के सामने खड़ा होकर बार-बार रसोई से बाहर झाँककर बंदर को ढूंढ रहा था। थोड़ी देर बाद बंदर घोड़े को लेकर आया, जिसे उसने एक बबूल के पेड़ से बाँध रखा था। जैसे ही वह पीछे की तरफ आया, उस मूर्ख ने उसे बेतहाशा हाथ हिलाकर कहा, "इधर आओ, इधर आओ।"

बंदर मुड़ा, रसोई के दरवाजे पर आया और बोला, "क्यों चिल्ला रहे हो, बेवकूफ? तुम्हारे लिए खाना कम है? बूढ़े साधु को पेट भर खाने दो, फिर हम दोनों आगे वाले बड़े घर में जाकर और खाना मांग सकते हैं।"

"अंदर आओ," सुअर ने कहा, "बात वो नहीं है। क्या तुम्हें पता है कि इस मंदिर में खजाना छिपा है?"

"कौन सा खजाना?" बंदर ने पूछा।

"मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता क्योंकि तुमने इसे कभी नहीं देखा है," पिग ने कहा, "और अगर मैं इसे तुम्हें दे भी दूं, तो भी तुम नहीं जान पाओगे कि यह क्या है।"

"मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो, मूर्ख," बंदर ने कहा। "जब मैंने पांच सौ साल पहले अमरता का मार्ग सीखा था, तब मैं अपने बादल पर सवार होकर समुद्र के कोनों और आकाश की सीमाओं तक गया था। मैंने सब कुछ देखा है।"

"क्या तुमने कभी नर फल देखा है?" सुअर ने पूछा।

"नहीं, मैंने नहीं सुना," बंदर ने आश्चर्य से कहा। "लेकिन मैंने सुना है कि मैनफ्रूट घास को वापस लौटाने वाला सिंदूर है, और जो भी इसे खाता है वह बहुत लंबी उम्र जीता है। हमें यह कहाँ मिल सकता है?"

"लो," सुअर ने कहा। "उन लड़कों ने हमारे गुरु को दो दिए थे, लेकिन उस बूढ़े भिक्षु को पता नहीं था कि वे क्या हैं और उसने सोचा कि वे नवजात शिशु हैं। उसने उन्हें नहीं खाया। वे लड़के शर्मनाक हैं—हमें देने के बजाय, जैसा कि उन्हें करना चाहिए था, वे चुपके से अपने कमरे में चले गए और एक-एक खा गए—गटक-गटक कर—मेरे मुंह में पानी आ रहा था। काश मुझे पता होता कि मैं एक कैसे चख सकता हूँ। ज़रूर आपके पास बाग में घुसने और हमारे लिए कुछ चुराने का कोई तरीका होगा। होगा ना?"

"आसान है," बंदर ने कहा। "मैं अंदर जाकर कुछ तोड़ लाऊंगा।"

जैसे ही वह बाहर भागा, सुअर ने उसे पकड़ लिया और कहा, "मैंने उन्हें अपने कमरे में कहते सुना कि उन्हें उन्हें गिराने के लिए एक सोने की छड़ी चाहिए। तुम्हें यह बहुत सावधानी से करना होगा - किसी को भी इसके बारे में पता नहीं चलना चाहिए।"

"मुझे पता है, मुझे पता है," बंदर ने जवाब दिया।

महान ऋषि ने स्वयं को अदृश्य कर लिया और लड़कों के कमरे में घुस गए, लेकिन वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि फल खाने के बाद वे सामने वाले हॉल में चले गए थे, जहाँ वे संज़ंग से बातें कर रहे थे। बंदर ने पूरे कमरे में सोने की छड़ी को ढूँढा, तभी उसकी नज़र खिड़की की जाली से लटकती दो फुट लंबी सोने की छड़ी पर पड़ी। वह लगभग एक उंगली जितनी मोटी थी। उसके निचले हिस्से में लहसुन की कली जैसा एक उभार था, और ऊपरी हिस्से में एक छेद था जिससे हरे रेशम का एक लटकन लगा हुआ था। "तो इसे ही सोने की छड़ी कहते होंगे," उसने सोचते हुए छड़ी को नीचे उतारा। वह कमरे से बाहर निकला और पीछे के दरवाज़ों को धक्का देकर खोल दिया। अरे वाह! उसने एक बगीचा देखा जिसमें लाल, रत्नों से सजी बालकनियाँ थीं।

और एक घुमावदार कृत्रिम पहाड़ी।

दुर्लभ फूल सूरज को भी मात देने की कोशिश करते हैं।

बांस आसमान से भी ज्यादा नीला दिखने की कोशिश करता है।
फ्लोटिंग कप पवेलियन के बाहर
विलो पेड़ों की एक घुमावदार कतार धुंध की तरह लटकी हुई है;
चाँद को निहारने के लिए बने चबूतरे के सामने
ऊंचे-ऊंचे देवदार के पेड़ों के समूह नीले रंग की छटा बिखेरते हैं।
चमकीला, चमकीला लाल,
अनार का झाड़;
गहरा, गहरा हरा
घास के गद्दों जैसे गद्दे।
गहरा नीला
क्या वे हरे रंग के ऑर्किड थे?
तेज और शक्तिशाली
नदी का पानी।
सुनहरे कुओं और वुटोंग वृक्षों के किनारे गहरे लाल रंग की कैसिया की लताएँ चमक रही थीं।
लाल बालकनियों और सीढ़ियों के दोनों ओर रेशमी फूलों से लदे बबूल के पेड़ लगे हुए थे।
वहाँ गुलाबी और सफेद रंग के आड़ू के फूल खिले हुए थे।
पीले और सुगंधित गुलदाउदी के फूल, जिन्होंने नौ शरद ऋतुएँ देखी हैं।
रसभरी की बेलें
पेओनी मंडप के पास फलना-फूलना;
हिबिस्कस के किनारे
वृक्ष-पेओनी के फूलों की क्यारियों की ओर ले जाएं।
ऐसे कई उत्कृष्ट बांस हैं जो पाले का सामना करने में सफल रहे हैं।
या फिर बर्फ को मात देने वाले भव्य देवदार के पेड़।
फिर वहां सारस के घोंसले और हिरणों के घर हैं।
चौकोर तालाब और गोल पोखर,
झरने का पानी जेड के टुकड़ों जैसा,

सुनहरे फूलों के ढेर।
उत्तर की हवा सफेद बेर के फूलों को खिलने पर मजबूर कर देती है।
जब वसंत आता है, तो यह लाल रंग से जंगली सेब को छू लेता है।
इसे सही मायने में पृथ्वी का सबसे शानदार दृश्य कहा जा सकता है।
पश्चिमी क्षेत्र का सबसे सुंदर उद्यान।
इससे पहले कि बंदर यह सब समझ पाता, उसने एक और द्वार देखा। जब उसने उसे धक्का देकर खोला तो उसे चारों ऋतुओं के लिए सब्जियां दिखाई दीं।
पालक, अजवाइन, चुकंदर, अदरक और समुद्री शैवाल
बांस के अंकुर, शकरकंद, खरबूजे, आयताकार लौकी और जंगली चावल के तने, प्याज, लहसुन, धनिया, हरा प्याज और छोटी प्याज।
लेट्यूस, आर्टेमिसिया और बिटर एलिसमा
लौकी और बैंगन जिन्हें बोना आवश्यक है,
रुटाबागा, शलजम, डॉक्स
लाल चौलाई, हरी पत्तागोभी और बैंगनी सरसों का पौधा।
"तो ये ताओवादी हैं जो अपना खाना खुद उगाते हैं," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा। सब्जी के बगीचे को पार करते ही उसे एक और द्वार दिखाई दिया, और जब उसने उसे खोला तो उसके सामने एक विशाल वृक्ष था जिसकी सुगंधित शाखाएँ और छायादार हरे पत्ते थे जो केले के पत्तों जैसे दिखते थे। वृक्ष लगभग एक हजार फीट ऊँचा था, और उसका तना लगभग सत्तर या अस्सी फीट गोल था। बंदर उस पर झुक गया और ऊपर देखा, और दक्षिण की ओर झुकी हुई एक शाखा पर उसने एक नरफल देखा, जो सचमुच एक नवजात शिशु जैसा दिखता था। उसका तना नीचे से निकला था, और शाखा से लटकते हुए उसके हाथ-पैर बेतहाशा हिल रहे थे और वह अपना सिर हिला रहा था। बंदर बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने प्रशंसा से सोचा, "क्या शानदार चीज है - एक दुर्लभ वस्तु, एक दुर्लभ वस्तु।" और इसी विचार के साथ वह पेड़ पर चढ़ गया।
बंदरों को पेड़ों पर चढ़कर फल चुराने में माहिर होने का कोई और हुनर नहीं होता, और सुनहरी छड़ी के एक ही वार से वह फल नीचे गिर पड़ा। वह उसे उठाने के लिए नीचे

कूदा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला। उसने चारों ओर घास में खोजा, लेकिन उसका कोई निशान नहीं मिला। "यह अजीब है," उसने सोचा, "सच में बहुत अजीब। यह अपने पैरों का इस्तेमाल तो कर सकता होगा—लेकिन फिर भी दीवार पार नहीं कर पाएगा। नहीं, मुझे मिल गया। इस बगीचे के स्थानीय देवता ने इसे कहीं छिपा दिया है ताकि मैं इसे चुरा न सकूँ।"

उन्होंने उंगलियों से कुछ जादू किया और पवित्र ध्वनि "ओम" का उच्चारण किया, जिससे उद्यान के देवता को आगे आकर प्रणाम करना पड़ा और उन्होंने कहा, "आपने मुझे बुलाया है, महान ऋषि। आपका क्या आदेश है?"

"तुम्हें तो पता ही होगा," बंदर ने कहा, "कि मैं धरती का सबसे कुख्यात अपराधी हूँ। कुछ साल पहले जब मैंने पवित्र आड़ू, शाही शराब और अमरता का अमृत चुराया था, तब किसी ने भी मुझसे हिस्सा लेने की हिम्मत नहीं की थी।"

आज जब मैंने कोई फल लिया तो तुमने मेरा पहला फल ही क्यों छीन लिया? यह फल पेड़ पर उगता है, और हवा में उड़ने वाले पक्षियों को भी इसका हिस्सा मिलना चाहिए, तो मेरे एक फल खाने से क्या नुकसान होगा? फल गिरते ही तुमने उसे क्यों छीन लिया?

“हे महान ऋषि,” देवता ने उत्तर दिया, “मुझसे क्रोधित मत होइए। ये खजाने पृथ्वी के अमर प्राणियों के हैं, और मैं एक प्रेत अमर प्राणी हूँ, इसलिए मैं कभी भी इनमें से एक को लेने का साहस नहीं करूँगा। मुझे तो कभी इनकी गंध लेने का सौभाग्य भी नहीं मिला।”

"अगर तुमने इसे नहीं लिया, तो पेड़ से गिराते ही यह गायब क्यों हो गया?" बंदर ने पूछा।

"हे महान ऋषि, आप शायद जानते होंगे कि ये खजाने अमर जीवन प्रदान करते हैं," देवता ने उत्तर दिया, "लेकिन आप इनके उद्गम के बारे में नहीं जानते।"

"तो फिर ये आते कहां से हैं?" बंदर ने पूछा।

“इन अनमोल फलों को खिलने में तीन हज़ार साल लगते हैं, बनने में तीन हज़ार साल और पकने में तीन हज़ार साल। लगभग दस हज़ार सालों में सिर्फ़ तीस ही उग पाते हैं।

जो कोई भी सौभाग्य से इनमें से एक की भी सुगंध सूंघ ले, वह तीन सौ साठ साल जिएगा, और अगर कोई एक खा ले तो वह सैंतालीस हज़ार साल जिएगा। ये फल सिर्फ़ पंच तत्वों से डरते हैं।"

"पांच तत्वों से ही डरने का क्या मतलब है?" बंदर ने पूछा।

“अगर ये धातु से टकराते हैं,” देवता ने कहा, “तो गिर जाते हैं; अगर लकड़ी से टकराते हैं तो सड़ जाते हैं; अगर पानी से टकराते हैं तो घुल जाते हैं; अगर आग से टकराते हैं तो जल जाते हैं; और अगर मिट्टी से टकराते हैं तो उसमें समा जाते हैं। अगर इन्हें छूना हो तो सोने की छड़ी का इस्तेमाल करना होगा, वरना ये गिरेंगे नहीं; और जब इन्हें गिराना हो तो रेशमी रूमालों से गद्दीदार कटोरे में पकड़ना होगा। अगर लकड़ी के बर्तनों के संपर्क में आते हैं तो सड़ जाते हैं, और अगर आप एक भी खा लें तो आपकी उम्र नहीं बढ़ेगी। इन्हें चीनी मिट्टी के बर्तनों में खाना होगा, और इन्हें साफ पानी में पकाना होगा। अगर आग के संपर्क में आते हैं तो जलकर बेकार हो जाते हैं, और जिस भी मिट्टी को छूते हैं उसमें समा जाते हैं। अभी जब आपने एक को जमीन पर गिराया तो वह सीधे मिट्टी में समा गया, और क्योंकि यहाँ की मिट्टी अब सैंतालीस हजार साल तक जीवित रहेगी, तो आप उस पर स्टील की ड्रिल से भी कोई निशान नहीं बना पाएंगे: यह गढ़े हुए लोहे से कहीं ज्यादा कठोर है। लेकिन अगर कोई आदमी एक खा ले तो उसे लंबी उम्र मिलेगी। अगर यकीन नहीं होता तो जमीन पर मारकर देख लो।”

बंदर ने सोने की अंगूठी वाली अपनी लाठी उठाई और उसे ज़मीन पर पटका। लाठी के उछलकर वापस आने से ज़ोरदार आवाज़ हुई। ज़मीन पर कोई निशान नहीं था।

"तो तुम सही हो," बंदर ने कहा, "तुम सही हो। मेरी यह लाठी चट्टानों को चूर-चूर कर सकती है और लोहे पर भी निशान छोड़ सकती है, लेकिन इस बार इसने कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। इसका मतलब है कि तुम्हें दोष देना मेरी गलती थी।"

अब आप वापस जा सकते हैं।" यह सुनकर स्थानीय देवता अपने मंदिर में वापस चले गए।

अब महान ऋषि के पास एक योजना थी। वे पेड़ पर चढ़े और एक हाथ में छड़ी पकड़ी, जबकि दूसरे हाथ से उन्होंने अपने कपड़े के कुर्ते का कॉलर खोलकर उसे एक थैली जैसा बना लिया। उन्होंने पत्तों और शाखाओं को हटाकर तीन फल गिराए, जिन्हें उन्होंने अपने कुर्ते में पकड़ लिया। वे पेड़ से कूदकर सीधे रसोई में गए, जहाँ मुस्कुराते हुए सूअर ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें कुछ मिला है। "यही तो असली चीज़ है, है ना?"

बंदर ने कहा। "मुझे कुछ मिला है। हमें साधु सैंड को अंधेरे में नहीं रखना चाहिए, इसलिए उन्हें भी बता देना।"
"इधर आओ, साधु सैंड," पिग ने हाथ हिलाते हुए पुकारा। साधु सैंड ने सामान नीचे रखा, जल्दी से रसोई में गए और पूछा, "तुमने मुझे क्यों बुलाया?"
"क्या तुम जानते हो ये क्या हैं?" बंदर ने अपनी कमीज़ खोलते हुए पूछा। "ये इंसानी फल हैं," साधु सैंड ने उन्हें देखते ही कहा। "अच्छा," बंदर ने कहा, "तुम जानते हो ये क्या हैं। तुमने इन्हें कहाँ खाया है?"
अध्याय 24
355
पश्चिम की यात्रा
"मैंने इन्हें कभी नहीं खाया," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया, "लेकिन पुराने समय में जब मैं पर्दा उठाने वाला जनरल हुआ करता था, तब मैं शाही रथ को आड़ू भोज में ले जाया करता था, और मैंने कुछ ऐसे आड़ू देखे थे जो विदेशों से आए अमर लोग महारानी माँ के जन्मदिन के उपहार के रूप में लाते थे। मैंने उन्हें देखा तो ज़रूर है, लेकिन कभी चखा नहीं। कृपया मुझे थोड़ा सा चखने के लिए दीजिए।"
"पूछने की ज़रूरत नहीं," बंदर ने कहा। "हम दोनों एक-एक खा रहे हैं।"
तो उन दोनों को खाने के लिए एक-एक मैनफ्रूट दिया गया। पिग को बहुत भूख लगती थी और उसका मुँह भी बहुत बड़ा था, और ताओवादी लड़कों को खाते हुए सुनकर उसे तब से भूख लग रही थी। इसलिए फल देखते ही उसने एक फल उठाया, मुँह खोला और पूरा निगल गया; फिर उसने मासूमियत का चेहरा बनाकर बाकी दोनों से बेशर्मी से पूछा कि वे क्या खा रहे हैं। "मैनफ्रूट," फ्रायर सैंड ने जवाब दिया।
"इसका स्वाद कैसा होता है?" सुअर ने पूछा।
"उसे नज़रअंदाज़ करो, साधु सैंड," बंदर ने कहा। "वह अपना खाना खा चुका है, और उसे तुमसे पूछने का कोई हक नहीं है।"
"भाई," सुअर ने कहा, "मैंने अपना टुकड़ा बहुत जल्दी खा लिया। मैंने इसे तुम दोनों की तरह धीरे-धीरे चबाकर स्वाद नहीं चखा। मुझे तो यह भी नहीं पता कि इसमें गुठली थी या नहीं, क्योंकि मैंने इसे सीधे निगल लिया। तुम्हें अपना काम पूरा करना चाहिए: तुमने मेरी भूख बढ़ा दी है, इसलिए मुझे एक और टुकड़ा दो ताकि मैं उसे आराम से खा सकूँ।"

“तुम्हें कभी संतुष्टि नहीं मिलती,” बंदर ने जवाब दिया। “ये चावल या आटे जैसी चीज़ें नहीं हैं—तुम इन्हें खाकर अपना पेट नहीं भर सकते। दस हज़ार साल में सिर्फ़ तीस ही उगती हैं, इसलिए अगर हममें से हर एक को एक पूरी मिल जाए तो हम खुद को बहुत भाग्यशाली समझ सकते हैं। बस करो, सुअर, तुमने बहुत खा लिया है।” वह उठा, सोने की छड़ी लेकर ताओवादी लड़कों के कमरे में घुस गया और खिड़की से किसी को दिखाई दिए बिना उसे वापस रख दिया। उसने सुअर की बड़बड़ाहट पर कोई ध्यान नहीं दिया।

कुछ ही देर में ताओवादी लड़के अपने कमरे में लौट आए और उन्होंने सुअर को कराहते हुए सुना, "मुझे अपना पुरुष फल पसंद नहीं आया; काश मुझे एक और मिल जाता।" शुद्ध पवन को शक हुआ और उसने उज्ज्वल चंद्रमा से कहा, "क्या तुमने उस लंबे थूथन वाले भिक्षु को यह कहते सुना कि काश उसे एक और पुरुष फल मिल जाता? हमारे गुरु ने जाते समय हमसे कहा था कि हमें उन बदमाशों से सावधान रहना है और उन्हें हमारा खजाना चुराने नहीं देना है।"

"यह तो बहुत बुरा हुआ," ब्राइट मून ने कहा। "सुनहरी छड़ी ज़मीन पर क्या कर रही है? हमें बगीचे में जाकर देखना चाहिए।" वे दोनों जल्दी से बाहर निकले और देखा कि बगीचे के द्वार खुले हुए हैं।

"हमने यह द्वार बंद किया था," प्योर विंड ने कहा, "तो यह खुला क्यों है?" वे फूलों के बगीचे के चारों ओर दौड़े, देखा कि सब्जी के बगीचे का द्वार भी खुला है, और वे फल के बगीचे में घुस गए। वे पेड़ पर झुककर ऊपर देखने लगे और फल गिनने लगे, लेकिन कितनी भी बार गिनने पर भी संख्या हमेशा बाईस ही आती थी।

"क्या तुम गणित कर सकते हो?" ब्राइट मून ने पूछा, और प्योर विंड ने जवाब दिया, "हाँ। मुझे आंकड़े बताओ।"

“शुरू में तीस फल थे,” ब्राइट मून ने कहा। “जब हमारे स्वामी ने बाग खोला तो उनमें से दो बाँट लिए गए और खा लिए गए, जिससे अट्ठाईस बचे। अभी हमने दो फल तोड़कर तांग पुजारी को दे दिए, जिससे छब्बीस बचे। लेकिन अब केवल बाईस ही बचे हैं, यानी चार कम। यह तो तय है कि उन बदमाशों ने ही चुराए होंगे। चलो जाकर उस तांग पुजारी को अपनी राय बताते हैं।”

वे दोनों बगीचे से सामने वाले हॉल में गए, जहाँ उन्होंने संज़ंग की ओर इशारा करते हुए उस पर गंदी और घिनौनी गालियाँ बरसाईं, उसे "गंजा" और "गंजा" कहकर

पुकारा। संज़ंग यह सब सहन नहीं कर सका, इसलिए उसने कहा, "तुम लोग इतना हंगामा क्यों कर रहे हो, हे अमर लड़कों? कृपया रुक जाओ। मुझे तुम्हारे थोड़े असभ्य व्यवहार से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन तुम लोग इस तरह से बात नहीं कर सकते।"

"क्या तुम बहरे हो?" प्योर विंड ने पूछा। "हम कोई विदेशी भाषा नहीं बोल रहे हैं, और तुम हमें अच्छी तरह समझ सकते हो। तुमने हमारा पुरुष फल चुराया है, और तुम्हें हमें इसका ज़िक्र करने से रोकने का कोई अधिकार नहीं है।"

"पुरुष फल कैसा दिखता है?" संजांग ने पूछा।

"यह वही है जो हमने अभी आपको पेश किया था और आपने कहा था कि ये बच्चों जैसे दिखते हैं।"

"अमिताभ बुद्ध!" संज़ंग ने हैरानी से कहा। "इन्हें देखते ही मैं डर से कांप उठा था—मैं एक भी चुरा नहीं सकता था। चाहे मैं कितनी भी लालच में क्यों न डूबा होता, मैं कभी भी इन्हें खाने का अपराध नहीं कर सकता था। आप इतना अनुचित आरोप क्यों लगा रहे हैं?"

"हालांकि तुमने कुछ नहीं खाया," प्योर विंड ने कहा, "तुम्हारे उन मातहतों ने चुराकर कुछ खा लिया।"

"अगर उन्होंने ऐसा किया भी हो, तो तुम्हें इस तरह चिल्लाना नहीं चाहिए। मेरे द्वारा उनसे पूछताछ करने तक प्रतीक्षा करो। अगर उन्होंने कुछ चुराया है, तो मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि वे तुम्हें उसकी भरपाई करें।"

"क्या ये सब मनगढ़ंत बातें हैं?" ब्राइट मून ने कहा। "ये ऐसी चीजें हैं जिन्हें पैसे से नहीं खरीदा जा सकता।"

"तो फिर," संज़ंग ने कहा, "अगर पैसे से वे नहीं सुधरेंगे, तो कहावत है ना, 'अच्छा व्यवहार हज़ार सोने के सिक्कों के बराबर होता है।' मैं उनसे आपसे माफ़ी मंगवाऊँगा, और बात खत्म। वैसे भी, हमें अभी तक यह नहीं पता कि उन्होंने यह किया है या नहीं।"

"बेशक उन्होंने ऐसा किया होगा," ब्राइट मून ने पलटवार किया। "वे अभी भी अंदर झगड़ रहे हैं क्योंकि उनका बंटवारा अन्यायपूर्ण तरीके से हुआ था।"

"शिष्यों, इधर आओ," संजांग ने पुकारा।
जब साधु सैंड ने संज़ंग की आवाज़ सुनी तो उन्होंने कहा, "अब तो खेल खत्म हो गया। हमारे गुरु हमें बुला रहे हैं और युवा ताओवादी गालियां दे रहे हैं। अब तो राज खुल ही गया है।"
बंदर ने कहा, "कितनी शर्मनाक बात है, खाने के लिए इतना हंगामा। लेकिन अगर हम कबूल कर लेंगे, तो वे कहेंगे कि हमने खाना चुराया था; सबसे अच्छा यही है कि हम इसे बिल्कुल भी स्वीकार न करें।"
"बिल्कुल सही, बिल्कुल सही, हम इसे छुपा देंगे," पिग ने कहा, और उनमें से तीन रसोई से हॉल की ओर चले गए।
अगर आपको नहीं पता कि उन्होंने इसे कैसे नकारा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 25
अमर झेन युआन ने तीर्थयात्री पुजारी को बंदी बना लिया
वुझुआंग मंदिर में बंदर ने जमकर उत्पात मचाया
तीनों शिष्य हॉल में प्रवेश करते हुए बोले, "खाना पक गया है, आपने हमें किसलिए बुलाया था?"
"मैं भोजन के बारे में नहीं पूछ रहा हूँ, शिष्यों," संज़ंग ने कहा। "इस मंदिर में कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें 'मनफल' या कुछ ऐसी चीज़ें कहते हैं जो बच्चों जैसी दिखती हैं। तुममें से किसने उनमें से कुछ चुराकर खाई हैं?"
"मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, सच में मुझे कुछ नहीं पता—मैंने कभी कुछ नहीं देखा," पिग ने कहा।

"उस मुस्कुराने वाले ने ही यह किया," प्योर विंड ने कहा, "उस मुस्कुराने वाले ने।"
बंदर चिल्लाया, "मैंने तो पूरी जिंदगी मुस्कुराते हुए बिताई है। क्या तुम मुझे मुस्कुराने से रोकोगे सिर्फ इसलिए कि तुम्हें कोई फल नहीं मिल रहा?"
"शिष्य, अपना आपा मत खोओ," संज़ंग ने कहा। "धर्मी होने के नाते हमें अपनी ज़ुबान पर नियंत्रण रखना चाहिए और ऐसा भोजन नहीं खाना चाहिए जो हमारे दिमाग को

भ्रमित करे। अगर तुमने उनका फल खा लिया है तो तुम्हें उनसे माफी मांगनी चाहिए, न कि इस तरह बेशर्मी से बात को दबाने की कोशिश करनी चाहिए।"

अपने गुरु की बात को सही समझते हुए बंदर भाई ने सच बोलना शुरू किया। उसने कहा, "मैंने शुरुआत नहीं की, गुरुजी। सुअर ने अपने पड़ोस में ताओवादी लड़कों को 'मनफ्रूट' नाम की कोई चीज़ खाते हुए सुना और खुद भी उसे चखना चाहा। उसने मुझे तीन लाने को कहा ताकि हम तीनों शिष्यों को एक-एक मिल सके। लेकिन अब वे खा लिए गए हैं, यहाँ इंतज़ार करने का कोई फायदा नहीं है।"

"ये पुजारी कैसे इनकार कर सकते हैं कि वे अपराधी हैं, जबकि इन्होंने हमारे चार पुरुष जननांग चुरा लिए हैं?" ब्राइट मून ने कहा।

"अमिताभ बुद्ध," सुअर चिल्लाया, "अगर उन्होंने उनमें से चार चुराए तो सिर्फ तीन ही क्यों बांटे? उन्होंने ज़रूर हमारे साथ धोखा किया है।" वह इसी तरह बेतहाशा चिल्लाता रहा।

अब जब उन्हें पता चल गया था कि फल सचमुच चोरी हो गए थे, तो दोनों लड़कों ने उन्हें और भी बुरी तरह से गाली देना शुरू कर दिया।

महान ऋषि ने क्रोध में अपने लोहे के दांत पीसते हुए, अपनी प्रचंड आँखों से घूरते हुए और अपने लोहे के डंडे पर अपनी पकड़ मजबूत करते हुए सोचा, "उन ताओवादी लड़कों को धिक्कार है। अगर वे हमें मारते तो हम सह सकते थे, लेकिन अब वे हमारे सामने इस तरह हमारा अपमान कर रहे हैं, मैं उनका पेड़ काट डालूंगा, फिर उनमें से किसी को भी फल नहीं मिलेगा।"

शानदार बंदर। उसने अपने सिर के पीछे से एक बाल खींचा, उस पर जादुई साँस छोड़ी और कहा

"बदलाव" ने उसे एक नकली बंदर में बदल दिया, जो तांग पुजारी, सुअर और साधु सैंड के साथ रहकर ताओवादी लड़कों के श्राप और गालियों को सहता रहा, जबकि असली बंदर ने अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करते हुए बादल पर सवार होकर हॉल से छलांग लगा दी। वह सीधे बगीचे में गया और अपने सोने की पट्टी वाले डंडे से मैनफ्रूट के पेड़ पर प्रहार किया।

फिर उसने अपनी अलौकिक शक्ति का इस्तेमाल किया, जिससे वह पहाड़ों को हिला सकता था, और एक ही धक्के से पेड़ को गिरा दिया।

पत्ते झड़ गए, डालियाँ फैल गईं और जड़ें ज़मीन से बाहर आ गईं। ताओवादियों को

अब उनका "घास में लौटने वाला सिंदूर" नहीं चाहिए था। पेड़ को गिराने के बाद बंदर ने डालियों में मानव फल ढूँढ़ा, लेकिन उसे एक भी नहीं मिला। ये खजाने धातु के स्पर्श से गिर जाते थे, और बंदर की लाठी सोने से जड़ी होने के साथ-साथ लोहे की भी बनी थी, जो पाँच धातुओं में से एक है, इसलिए एक ही प्रहार से सारे फल नीचे गिर गए, और ज़मीन पर गिरते ही सीधे पेड़ में समा गए, पेड़ पर एक भी नहीं बचा।
“बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया,” उसने कहा, “इससे वे सब शांत हो जाएँगे।” उसने लोहे का डंडा एक तरफ रख दिया, मंदिर के सामने वापस गया, जादुई बालों को झटका दिया और उन्हें वापस अपने सिर पर लगा लिया। बाकी लोग यह सब नहीं देख पाए क्योंकि उनकी आँखें नश्वर थीं।
बहुत समय बाद, जब दोनों ताओवादी लड़कों को लगा कि उन्होंने उन पर काफी देर तक गुस्सा निकाल दिया है, तो शुद्ध पवन ने उज्ज्वल चंद्रमा से कहा, "ये भिक्षु हमारी हर बात मान लेते हैं। हमने उन्हें ऐसे गालियां दीं जैसे मुर्गियों को गालियां दे रहे हों, लेकिन उन्होंने कुछ भी स्वीकार नहीं किया। मुझे नहीं लगता कि उन्होंने कुछ चुराया होगा। पेड़ इतना लंबा है और पत्तियां इतनी घनी हैं कि हो सकता है हमने गिनती में गलती की हो, और अगर की भी है, तो हमें उन्हें इतनी बुरी तरह से गालियां नहीं देनी चाहिए। चलो जाकर गिनती दोबारा जांच लेते हैं।" उज्ज्वल चंद्रमा मान गया, और दोनों वापस बगीचे में चले गए। जब उन्होंने देखा कि पेड़ गिरा हुआ है, उसकी शाखाएं झुकी हुई हैं, पत्ते झड़ गए हैं और फल गायब हैं, तो वे भयभीत हो गए। शुद्ध पवन के घुटने कांपने लगे और वह गिर पड़ा, जबकि उज्ज्वल चंद्रमा कांपने लगा। दोनों बेहोश हो गए, और उनके बारे में एक श्लोक है: अध्याय 25

जब संजांग अनंत दीर्घायु पर्वत पर आया,
बंदर ने घास को वापस लाने वाले सिंदूर को खत्म कर दिया।
शाखाएँ फैली हुई थीं, पत्ते झड़ गए थे और पेड़ नीचे गिर गया था।
ब्राइट मून और प्योर विंड दोनों के दिल बर्फ की तरह ठंडे पड़ गए।
वे दोनों मिट्टी में पड़े हुए बेहोशी की हालत में बड़बड़ा रहे थे और कह रहे थे, "हम क्या करें, हम क्या करें? हमारे वूझुआंग मंदिर का अमृत नष्ट हो गया है और हमारे अमर समुदाय का अंत हो गया है। जब गुरु वापस आएंगे तो हम उनसे क्या कहेंगे?"

"भाई, रोना बंद करो," ब्राइट मून ने कहा। "हमें खुद को संभालना होगा और उन भिक्षुओं को कुछ भी गड़बड़ नहीं होने देना होगा। उस बालदार चेहरे वाले बदमाश ने ही यह सब किया होगा, जो गर्जन देवता जैसा दिखता है। उसने जादू से हमारा खजाना नष्ट कर दिया होगा। लेकिन उससे बहस करने का कोई फायदा नहीं, क्योंकि वह सब कुछ नकार देगा, और अगर हमने उससे झगड़ा शुरू किया और लड़ाई छिड़ गई, तो हम दोनों उन चारों के सामने टिक नहीं पाएंगे। हमें उन्हें बेवकूफ बनाना होगा और कहना होगा कि कोई फल गायब नहीं है। हम दिखावा करेंगे कि हमने पहले गिनती में गलती की थी, और उनसे माफी मांग लेंगे। उनका चावल पक गया है, और हम उन्हें खाने के लिए कुछ परोसी हुई चीजें दे सकते हैं। जैसे ही उन्हें खाने का कटोरा मिल जाए, तुम और मैं दरवाजे के दोनों ओर खड़े होकर उसे जोर से बंद कर देंगे और ताला लगा देंगे। उसके बाद हम सभी फाटकों को बंद कर देंगे, फिर वे भाग नहीं पाएंगे। जब हमारे गुरुजी वापस आएंगे, तो वे तय कर सकते हैं कि उनके साथ क्या करना है।"

वह बूढ़ा भिक्षु उसका मित्र है, इसलिए हमारे गुरु शायद उसे क्षमा कर दें। और अगर वह क्षमा नहीं करते, तो हमने अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया है और शायद हमें खुद भी कोई परेशानी न हो।

"बिल्कुल सही," प्योर विंड ने कहा।

उन दोनों ने खुद को संभाला, खुश दिखने का नाटक किया और वापस सामने वाले हॉल में चले गए।

“गुरुजी,” उन्होंने संजांग के सामने झुकते हुए कहा, “हमने अभी आपके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया। कृपया हमें क्षमा कर दीजिए।”

"तुम्हारा क्या मतलब है?" संजांग ने पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "सारे फल यहीं हैं। पेड़ इतना लंबा और पत्तों से इतना घना होने के कारण हम पहले उन्हें पूरी तरह से नहीं देख पाए थे, लेकिन अभी जाँच करने पर संख्या बिल्कुल सही निकली।"

"तुम लोग इतने छोटे हो कि तुम्हें पता नहीं कि क्या कर रहे हो," पिग ने मौका पाकर कहा। "तुमने हमें गालियां क्यों दीं और हमें फंसाने की कोशिश क्यों की? कमीने हो तुम।"

बंदर, जो लड़कों की चाल समझ गया था, कुछ नहीं बोला और मन ही मन सोचने लगा, "झूठ, झूठ। सारे फल खत्म हो गए हैं। ये लोग ऐसा क्यों कह रहे हैं? क्या उन्हें

पेड़ को फिर से जीवित करने का तरीका पता है?"
"ठीक है," इस बीच संजांग कह रहा था, "हमारे चावल अंदर ले आओ और हम इसे खाने के बाद चले जाएंगे।"
पिग उनके कटोरे भरने चला गया और फ्रायर सैंड ने मेज और कुर्सियाँ लगा दीं। दोनों लड़के जल्दी से बाहर गए और कुछ व्यंजन ले आए—नमकीन कद्दू, नमकीन बैंगन, वाइन लीज़ में डूबी शलजम, अचार वाली फली, नमकीन सलाद पत्ता और सरसों का पौधा, कुल मिलाकर लगभग सात या आठ प्लेटें। उन्होंने ये व्यंजन तीर्थयात्रियों को चावल के साथ खाने के लिए दिए और फिर एक केतली में बढ़िया चाय और दो कप लेकर उनकी सेवा में जुट गए। जैसे ही चारों तीर्थयात्रियों के हाथों में चावल के कटोरे आए, दरवाजे के दोनों ओर खड़े लड़कों ने दरवाजे जोर से बंद कर दिए और उन्हें दो स्प्रिंग वाले कांसे के ताले से बंद कर दिया।
अध्याय 25
359
पश्चिम की यात्रा
"ऐसा मत करो, लड़कों," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा। "भले ही यहाँ के लोग थोड़े बदमाश हों, लेकिन खाना खाते समय दरवाजे बंद करने की कोई ज़रूरत नहीं है।"
"जी हां," ब्राइट मून ने कहा, "हम दोपहर के भोजन के बाद इन्हें खोलेंगे।" हालांकि, प्योर विंड का रवैया अपमानजनक था।
“मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, हे लालची, गंजे सिर वाले, भोजन चोर,” उसने कहा। “तुमने हमारा अमर फल खा लिया है और खेतों और बगीचों से भोजन चुराने के जुर्म में तुम्हें सज़ा मिलनी ही चाहिए। इसके अलावा तुमने हमारे पेड़ को गिरा दिया है और हमारे मंदिर के अमरता के स्रोत को नष्ट कर दिया है। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमसे बहस करने की? पश्चिमी स्वर्ग पहुँचने और बुद्ध के दर्शन करने का तुम्हारा एकमात्र मौका पुनर्जन्म लेना और फिर से पालने में झुलाया जाना है।” यह सुनकर संज़ंग ने अपना चावल का कटोरा गिरा दिया, मानो उसके दिल पर कोई भारी पत्थर आ गया हो। दोनों लड़के गए और मंदिर के मुख्य और भीतरी द्वार को बंद कर दिया, फिर वापस मुख्य हॉल में आकर उन्हें गंदी भाषा में गालियाँ देते रहे और शाम तक उन्हें अपराधी और डाकू कहते रहे, फिर वे भोजन करने चले गए। रात के खाने के बाद वे दोनों अपने कमरों में लौट गए।

"तुम हमेशा मुसीबत खड़ी करते हो, बंदर!" संज़ंग ने बंदर पर झल्लाते हुए कहा। "तुमने उनके फल चुरा लिए, तो तुम्हें उन्हें गुस्सा दिलाकर तुम्हें गालियां देने देना चाहिए था, बात वहीं खत्म हो जाती। तुमने उनका पेड़ क्यों गिराया? अगर वे इसे अदालत में ले गए तो तुम बच नहीं पाओगे, चाहे तुम्हारे पिता ही जज क्यों न हों।"

"मालिक, इतना हंगामा मत कीजिए," बंदर ने कहा। "वे लड़के सो गए हैं, और जब वे सो जाएंगे तो हम आधी रात को निकल जाएंगे।"

"लेकिन सभी द्वार बंद कर दिए गए हैं," फ्रायर सैंड ने कहा, "और उन्हें बहुत मजबूती से बंद कर दिया गया है, तो हम भला कैसे भाग सकते हैं?"

"इस बात से परेशान मत होइए, मेरे पास इसका उपाय है।" बंदर ने कहा, "मेरे पास इसका उपाय है।"

"हमें इस बात की चिंता नहीं थी कि तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं होगा," सुअर ने कहा। "तुम खुद को एक कीड़ा बना सकते हो और खिड़की की जाली के छेदों से उड़कर बाहर निकल सकते हो। लेकिन तुम बेचारे हम जैसे बूढ़े लोगों को, जो खुद को किसी और रूप में नहीं बदल सकते, यहीं छोड़कर जाओगे और तुम्हारी वजह से सारी मुसीबतें हमें ही उठानी पड़ेंगी।"

"अगर वह ऐसा कोई छल करता है और हमें अपने साथ नहीं ले जाता है तो मैं वह पुराना सूत्र पढ़ूंगा - तब वह बिना किसी सजा के बच नहीं पाएगा।"

यह सुनकर सुअर प्रसन्न भी हुआ और चिंतित भी। उसने कहा, "गुरुजी, आपका क्या तात्पर्य है?" सुअर ने कहा, "मैं जानता हूँ कि बुद्ध की शिक्षाओं में लंकावतार सूत्र, कमल सूत्र, मयूर सूत्र, अवलोकित ईश्वर सूत्र और हीरा सूत्र शामिल हैं, लेकिन मैंने कभी किसी प्राचीन सूत्र के बारे में नहीं सुना।"

"भाई, जो बात तुम नहीं जानते," बंदर ने कहा, "वह यह है कि बोधिसत्व गुआनयिन ने यह पट्टी, जो मेरे सिर पर है, हमारे गुरु को दी थी। उन्होंने मुझे धोखे से इसे पहनने के लिए मजबूर किया, और अब यह लगभग वहीं जम गई है और मैं इसे उतार नहीं सकता।"

इस बंधन को कसने का मंत्र या सूत्र ही वह 'पुराना सुर्रा' कहता है। अगर वह इसे बोलता है, तो मेरा सिर दर्द करने लगता है। यह मुझे कष्ट देने का उसका एक तरीका है। कृपया इसे मत पढ़िए, गुरुजी। मैं आपको नहीं छोड़ूंगा। मैं गारंटी देता हूं कि हम सब बच निकलेंगे।

अब अंधेरा हो चुका था और पूरब में चाँद निकल आया था। "अब शांति है," बंदर ने कहा, "और चाँद चमकीला है।"
अब जाने का समय आ गया है।"
"मज़ाक करना बंद करो, भाई," सुअर ने कहा। "सभी द्वार बंद हैं, तो हम कहाँ जा सकते हैं?"
"यह तरकीब देखो," बंदर ने कहा, और अपने हाथ में लाठी कसकर उसने दरवाजों की ओर इशारा किया और उन पर ताला खोलने का जादू कर दिया। एक खड़खड़ाहट की आवाज़ हुई, और सभी दरवाजों और फाटकों से ताले गिर गए, जो अध्याय 25

उसने उन्हें धक्का देकर खोल दिया।
"बिल्कुल भी चालाक नहीं," पिग ने कहा। "एक ताला बनाने वाला भी अपनी खास चाबियों से इतनी जल्दी यह काम नहीं कर पाता।"
“इन दरवाजों को खोलना कोई मुश्किल काम नहीं है,” बंदर ने कहा। “मैं तो बस इशारा करके स्वर्ग के दक्षिणी द्वार खोल सकता हूँ।” फिर उसने अपने मालिक से बाहर जाकर घोड़े पर सवार होने को कहा। सुअर ने सामान कंधे पर उठाया, साधु सैंड ने घोड़े को आगे-आगे चलाया और वे पश्चिम की ओर चल पड़े। “तुम आगे बढ़ो,” बंदर ने कहा, “मैं वापस जाकर देखता हूँ कि वे दोनों लड़के एक महीने तक सोते रहें।”
"ध्यान रखना, शिष्य, उन्हें मारना मत, वरना चोरी के प्रयास में हत्या का आरोप भी तुम पर लग जाएगा," संजांग ने कहा।
“मुझे पता है,” बंदर ने जवाब दिया और मंदिर में वापस चला गया। लड़कों के सोए हुए कमरे के दरवाजे के बाहर खड़े होकर उसने अपनी कमरबंद से कुछ नींद लाने वाले कीड़े निकाले। इन्हीं कीड़ों का इस्तेमाल उसने स्वर्ग के पूर्वी द्वार पर राजा विरुधका को मूर्ख बनाने के लिए किया था, और अब उसने उन्हें खिड़की की जाली में बने एक छेद से अंदर फेंक दिया। वे सीधे लड़कों के चेहरों पर गिरे और उन्हें गहरी नींद में सुला दिया, जिससे वे काफी देर तक नहीं जागे। फिर वह बादलों के सहारे तेजी से वापस आया और संज़ंग से मिल गया। वे मुख्य सड़क से पश्चिम की ओर चल पड़े।
उस रात घोड़ा रुका ही नहीं और वे भोर तक चलते रहे। "तुम मेरी जान ले लोगे, बंदर," संजांग ने कहा। "तुम्हारे लालच की वजह से मुझे पूरी रात जागना पड़ा।"

“बड़बड़ाना बंद करो,” बंदर ने कहा। “अब उजाला हो गया है, तुम सड़क के किनारे जंगल में आराम कर सकते हो और आगे बढ़ने से पहले अपनी ताकत बढ़ा सकते हो।” संज़ंग आज्ञाकारी होकर घोड़े से उतरा और एक चीड़ के पेड़ की जड़ों पर बैठ गया, उसे ध्यान लगाने के लिए अस्थायी आसन बना लिया। साधु सैंड ने सामान नीचे रखा और झपकी ले ली, जबकि सुअर ने अपना सिर एक चट्टान पर रखकर सो गया। महान ऋषि बंदर के अपने ही विचार थे और वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद-कूद कर अपना मनोरंजन कर रहा था।

मूल दिव्य जेड शुद्ध एक के महल में प्रवचन के बाद, महान अमर झेन युआन अपने कनिष्ठ अमरों को तुशिता स्वर्ग से शुभ बादलों पर जेड आकाश के माध्यम से नीचे ले गए, और पल भर में वे वूझुआंग मंदिर के द्वार पर वापस आ गए। उन्होंने देखा कि द्वार पूरी तरह से खुले थे, और ज़मीन साफ़ थी।

“तो शुद्ध वायु और उज्ज्वल चंद्रमा आखिरकार इतने भी बेकार नहीं हैं,” उन्होंने कहा। “आमतौर पर जब सूरज आसमान में ऊँचा होता है, तब भी वे बिस्तर पर ही होते हैं। लेकिन अब, हमारे चले जाने पर, वे जल्दी उठ गए, द्वार खोल दिए और मैदान की सफाई कर दी।” सभी कनिष्ठ अमर देवता प्रसन्न हुए। फिर भी जब वे पूजा कक्ष में गए तो वहाँ न तो कोई अगरबत्ती जल रही थी और न ही कोई दिखाई दे रहा था।

वे सोचने लगे कि ब्राइट मून और प्योर विंड कहाँ गए। "शायद उन्होंने सोचा होगा कि हमारे न होने पर वे कुछ सामान चुराकर भाग जाएंगे।"

“यह तो बहुत ही घिनौना विचार है,” महान अमर ने कहा। “जैसे अमरता की साधना करने वाले मनुष्य इतना बुरा काम कर सकते हैं! मुझे लगता है कि वे कल रात सोने से पहले दरवाज़े बंद करना भूल गए होंगे और अभी तक जागे नहीं होंगे।” जब अमर उनके कमरे में देखने गए तो उन्होंने दरवाज़े बंद पाए और लड़कों के खर्राटे सुने। उन्होंने दरवाज़ों पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक दी और पूरी ताकत से चिल्लाए, लेकिन लड़के नहीं जागे।

उन्होंने दरवाज़े तोड़कर लड़कों को उनके बिस्तरों से खींचकर बाहर निकाला; फिर भी लड़के नहीं जागे। "वाह, तुम तो बड़े ही अच्छे अमर लड़के हो," महान अमर ने मुस्कुराते हुए कहा। "जब कोई अमर हो जाता है, तो उसकी दिव्य आत्मा इतनी परिपूर्ण हो जानी चाहिए कि उसे नींद ही न आए। ये इतने थके हुए क्यों हैं? ज़रूर इन पर जादू किया गया होगा।"

"तुरंत पानी लाओ।" एक लड़के ने जल्दी से उसे आधा कटोरा पानी दिया। उसने एक मंत्र पढ़ा, एक घूंट पानी पिया और उनके चेहरों पर छिड़क दिया। इससे जादू टूट गया। वे दोनों जाग गए, अपनी आँखें खोलीं, अपने चेहरे मले, अपने चारों ओर देखा और महान अमर के साथ-साथ अपने सभी साथियों को भी देखा। अध्याय 25

पश्चिम की यात्रा

अमर भाई। शुद्ध पवन ने सिर झुकाया और उज्ज्वल चंद्रमा ने असमंजस में घुटने टेकते हुए कहा, "गुरुजी, आपका वह पुराना मित्र, पूर्व का पुजारी... डाकुओं का एक गिरोह... खूनी, खूनी...."

"डरो मत," महान अमर ने मुस्कुराते हुए कहा। "शांत हो जाओ और हमें सब कुछ बताओ।"

“गुरुजी,” प्योर विंड ने कहा, “पूरब से तांग पुजारी आए थे। आपके जाने के कुछ ही समय बाद। चार भिक्षु और एक घोड़ा—कुल मिलाकर पाँच लोग थे। हमने आपके आदेशानुसार दो नरफल तोड़कर उन्हें भेंट किए, लेकिन वह आदरणीय सज्जन इतने अशिष्ट और मूर्ख थे कि उन्हें हमारे खजाने का महत्व ही नहीं पता था। उन्होंने कहा कि ये नवजात शिशु हैं और खाने से इनकार कर दिया, इसलिए हमने एक-एक खा लिया। हमें जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनके तीन शिष्यों में से एक, जिसका नाम भाई सन वुकॉन्ग या बंदर था, उनके लिए चार नरफल चुरा लेगा। हमने उनसे बहुत ही समझदारी से बात की, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया और चुपके से अपनी जादूई शक्ति का प्रयोग किया। यह बहुत भयानक है....” इस समय दोनों लड़के अपने गालों पर बहते आँसुओं को रोक नहीं पाए। “क्या भिक्षु ने तुम्हें मारा?” अमर देवताओं ने पूछा। “नहीं,” ब्राइट मून ने कहा, “उन्होंने केवल हमारे नरफल के पेड़ को गिराया।”

उनकी कहानी सुनकर महान अमर ने अपना आपा नहीं खोया, उन्होंने कहा, "रो मत, रो मत। तुम्हें यह एहसास नहीं है कि बंदर सर्वोच्च एकेश्वरवाद का अमर है, और उसने स्वर्ग में भारी उत्पात मचाया है। उसके पास अपार जादुई शक्तियां हैं। लेकिन उसने हमारा पेड़ गिरा दिया है। क्या तुम उन भिक्षुओं को पहचान सकते हो?"

"मैं उन सभी को पहचान सकता था," प्योर विंड ने उत्तर दिया।

"तो फिर मेरे साथ आओ," महान अमर ने कहा। "बाकी सब लोग यातना के उपकरण तैयार करो और हमारे लौटने पर उन्हें कोड़े मारने के लिए तैयार रहो।"

अन्य अमर देवताओं ने आदेशानुसार कार्य किया, जबकि महान अमर देवता, तेजस्वी चंद्रमा और शुद्ध वायु शुभ प्रकाश की किरण के सहारे संज़ंग का पीछा करने लगे। उन्होंने पल भर में तीन सौ मील की दूरी तय कर ली। महान अमर देवता बादलों के किनारे खड़े होकर पश्चिम की ओर देखने लगे, पर उन्हें संज़ंग दिखाई नहीं दिया; फिर वे पूर्व की ओर मुड़े और देखा कि वे संज़ंग को ढाई सौ मील से भी अधिक पीछे छोड़ आए हैं। पूरी रात सवारी करने के बावजूद भी उस आदरणीय सज्जन ने केवल चालीस मील की दूरी तय की थी, यही कारण था कि महान अमर देवता का बादल उनसे बहुत आगे निकल गया था।

अमर बालकों में से एक ने कहा, "गुरुजी, सड़क के किनारे एक पेड़ के नीचे तांग पुजारी बैठे हैं।"

“जी हाँ, मैंने उसे खुद देखा था,” महान अमर ने उत्तर दिया। “तुम दोनों वापस जाओ और कुछ रस्सियाँ तैयार कर लो, मैं उसे खुद पकड़ लूँगा।” शुद्ध पवन और उज्ज्वल चंद्रमा वापस चले गए।

महान अमर ने अपने बादल पर उतरकर खुद को झटक दिया और एक घुमंतू ताओवादी में परिवर्तित हो गए। क्या आप जानते हैं कि वे कैसे दिखते थे?

उन्होंने पैचवर्क गाउन पहना हुआ था।

लू डोंगबिन की कमरबंद से बंधी हुई,

अपने हाथ में मक्खी भगाने वाला पंखा लहराते हुए

उसने एक संगीतमय ढोल बजाया।

उसके पैरों में घास की बनी चप्पलों में तीन कान थे।

अध्याय 25

362

पश्चिम की यात्रा

उसके सिर पर धूप से बचाव के लिए एक पगड़ी बंधी हुई थी।

जैसे ही हवा ने उसकी आस्तीनों को भर दिया

उन्होंने 'द मून इज हाई' गाना गाया।

"आदरणीय महोदय," उसने हाथ उठाते हुए कहा। "ओह, मुझे खेद है कि मैंने आपको पहले नहीं देखा," संजांग ने जल्दी से जवाब दिया।

“तुम कहाँ से आए हो?” महान अमर ने पूछा। “और अपनी यात्रा के दौरान तुम ध्यान

क्यों कर रहे हो?”
"मुझे पूर्व में स्थित महान तांग ने पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है," संजांग ने कहा, "और मैं रास्ते में विश्राम कर रहा हूँ।"
"यदि आप पूर्व दिशा से आए हैं, तो आपको मेरे सुनसान पर्वत को पार करना होगा।"
"क्या मैं पूछ सकता हूँ, हे अमर महोदय, आपका पर्वत कौन सा है?"
"मेरा विनम्र निवास अनंत दीर्घायु पर्वत पर स्थित वूझुआंग मंदिर है।"
"हम उस रास्ते से नहीं आए थे," मंकी ने कहा, जिसे समझ आ गया था कि क्या हो रहा है। "हमने अभी-अभी शुरुआत की है।"
महान अमर ने उसकी ओर इशारा करते हुए हँसते हुए कहा, "मैं तुझे सबक सिखाऊँगा, कमीने बंदर। तू किसे बेवकूफ बना रहा है? मुझे पता है तूने हमारा मेरुदंड का पेड़ गिराया और रात में यहाँ आया। बेहतर होगा कि तू अपना गुनाह कबूल कर ले: तू कुछ भी छुपाकर बच नहीं पाएगा। जहाँ है वहीं रुक जा, और वह पेड़ मुझे तुरंत वापस कर दे।" यह सुनकर बंदर भड़क उठा, और बिना कुछ कहे उसने अपनी गदा से महान अमर के सिर पर वार किया। महान अमर वार से बचकर एक प्रकाश की किरण पर सवार होकर सीधे आकाश में चले गए, और बंदर बादल पर सवार होकर उनका पीछा करने लगा। हवा में ही महान अमर अपने असली रूप में लौट आए, और वे ऐसे दिख रहे थे:
उसके सिर पर सोने का मुकुट था।
उसके शरीर पर सारस के पंखों का एक चिंतामुक्त आवरण था।
उसके पैरों में मुड़ी हुई सैंडल की एक जोड़ी थी।
और उसकी कमर पर रेशम की बेल्ट थी।
उसका शरीर एक बच्चे जैसा था।
उसका चेहरा एक खूबसूरत महिला जैसा था।
उसकी ठुड्डी से हल्की दाढ़ी लटक रही थी।
और उसकी कनपटी के बाल कौवे जैसे काले थे।
वह निहत्थे बंदर से मिला।

उसके हाथों में केवल जेड के हैंडल वाला एक व्हिस्क था।
बंदर ने अपने गदा से उस पर बेतहाशा प्रहार किया, लेकिन महान अमर ने अपनी झाड़ू से उसे दाएं-बाएं धकेल कर दूर कर दिया।
दो या तीन चक्कर लगाने के बाद, महान अमर ने "स्वर्ग और पृथ्वी को अपनी आस्तीन में लपेटने" जैसा करतब दिखाया, बादलों के बीच खड़े होकर हवा में अपनी आस्तीन को धीरे से लहराया, फिर उसे जमीन पर फैलाया और उसमें चारों तीर्थयात्रियों और उनके घोड़े को समेट लिया।
"अरे बाप रे," सुअर ने कहा, "हम सब एक थैले में फंस गए हैं।"
"यह कोई थैला नहीं है, बेवकूफ," बंदर ने कहा, "उसने हम सबको अपनी आस्तीन में फंसा लिया है।"
“वैसे भी कोई फर्क नहीं पड़ता,” पिग ने कहा। “मैं अपने रेक के एक ही वार से इसमें छेद कर सकता हूँ जिससे हम सब निकल जाएँगे। फिर जब वह हम पर अपनी पकड़ ढीली करेगा तो हम नीचे गिर जाएँगे।” लेकिन उसने कपड़े पर चाहे जितनी भी ज़ोर से वार किया, उस पर कोई असर नहीं हुआ: हालाँकि हाथ में पकड़ने पर वह नरम था, लेकिन चोट लगने पर लोहे से भी ज़्यादा सख्त हो गया।
महान अमर ने अपने बादल को घुमाया, सीधे वूझुआंग मंदिर की ओर वापस गए, उतरे, बैठ गए और अपने शिष्यों को रस्सी लाने का आदेश दिया। फिर, सभी कनिष्ठ अमरों की उपस्थिति में, उन्होंने तांग पुजारी को एक कठपुतली की तरह अपनी आस्तीन से बाहर निकाला और उसे मुख्य हॉल के एक खंभे से बांध दिया। उसके बाद उन्होंने बाकी तीनों को बाहर निकाला और उन्हें भी एक-एक खंभे से बांध दिया। घोड़े को बाहर निकाला गया, बांधा गया और आंगन में चारा खिलाया गया, और उनका सामान उन्होंने ढके हुए रास्ते के नीचे फेंक दिया।
उन्होंने कहा, "शिष्यों, ये पुजारी धर्मनिष्ठ लोग हैं, इसलिए हम उन पर तलवार, भाले या कुल्हाड़ी का प्रयोग नहीं कर सकते।"
"तुम बेहतर होगा कि एक चमड़े का कोड़ा लाओ और मेरी तरफ से उन्हें कोड़े मारो—इससे मुझे अपने पुरुषत्व के बारे में अच्छा लगेगा।" शिष्यों ने तुरंत एक कोड़ा निकाला—बैल की खाल, भेड़ की खाल, हिरण की खाल या बछड़े की खाल का कोड़ा नहीं, बल्कि सात तारों वाली ड्रैगन की खाल का कोड़ा—और उसे पानी में भिगोने के लिए कहा गया। एक बलवान युवा अमर को उसे मजबूती से पकड़ने के लिए कहा गया।

"गुरुजी," उसने कहा, "मैं इनमें से किसके अस्तबल को पहले कोड़े मारूँ?"
"सांझांग ने घोर अनादर किया है," महान अमर ने उत्तर दिया, "पहले उसे कोड़े मारो।"
यह सुनकर बंदर ने सोचा, “हमारे उस बूढ़े पुजारी को कोड़े खाना बर्दाश्त नहीं होता था, और अगर कोड़ों से उसकी मौत हो गई तो गलती मेरी होगी।” यह सोचकर उसे असहनीय लगा, और वह बोला, “आप गलत हैं, श्रीमान। मैंने फल चुराए, फल खाए और पेड़ गिराया। पहले उसे क्यों मार रहे हैं, जबकि मुझे मारनी चाहिए?”
"उस बदमाश बंदर की बात में दम है," महान अमर ने मुस्कुराते हुए कहा, "इसलिए बेहतर होगा कि तुम पहले उसे कोड़े मारो।"
"कितने स्ट्रोक?" जूनियर अमर ने पूछा।
महान अमर ने उत्तर दिया, "उसे तीस कोड़े दो, फलों की संख्या के बराबर।" कनिष्ठ अमर ने चाबुक घुमाया और उसे नीचे की ओर चलाने लगा। बंदर, अमर की अपार जादुई शक्तियों से भयभीत होकर, अपनी आँखें चौड़ी करके ध्यान से देखने लगा कि उसे कहाँ चोट लगने वाली है, और पता चला कि चोट उसके पैरों पर लगने वाली है। उसने कमर मरोड़कर "बदलो!" चिल्लाया और अपने पैरों को लोहे के पैरों में बदल लिया, और कोड़ों को पड़ते हुए देखने लगा। कनिष्ठ अमर ने उसे एक के बाद एक तीस कोड़े मारे, जब तक कि लगभग दोपहर नहीं हो गई।
महान अमर ने आदेश दिया, "सानज़ंग को भी कोड़े मारे जाने चाहिए, क्योंकि उसने अपने दुष्ट शिष्य को इतनी लापरवाही से प्रशिक्षित किया और उसे मनमानी करने दी।"
अध्याय 25

छोटे अमर ने चाबुक को फिर घुमाया और संज़ंग पर प्रहार करने ही वाले थे कि बंदर ने कहा, "महाराज, आप फिर से गलती कर रहे हैं। जब मैंने फल चुराया था, तब मेरे गुरु को कुछ पता नहीं था—वे मंदिर के मुख्य हॉल में आपके उन दो लड़कों से बात कर रहे थे। यह साजिश हम तीनों शिष्यों ने रची थी। खैर, अगर उन्होंने मुझे प्रशिक्षण देने में लापरवाही भी की हो, तो भी मैं उनका शिष्य हूँ और मुझे उनकी जगह कोड़े खाने चाहिए। मुझे फिर से कोड़े मारिए।"
“वह दुष्ट बंदर धूर्त और दुष्ट तो है, पर अपने स्वामी के प्रति अपने दायित्वों का कुछ तो बोध रखता है। ठीक है, तो उसे फिर से कोड़े मारो।” कनिष्ठ अमर ने उसे तीस और

कोड़े मारे। बंदर नीचे देखता रहा और अपने पैरों को तब तक कोड़े खाते देखता रहा जब तक कि वे दर्पण की तरह चमकने लगे, लेकिन फिर भी उसे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ।

अब शाम होने लगी थी, और महान अमर ने कहा, "कोड़े को पानी में भिगो दो। हम कल कोड़े मारने का सिलसिला जारी रख सकते हैं।" कनिष्ठ अमर कोड़ा भिगोने के लिए ले गया, जबकि सभी अपने-अपने कमरों में चले गए, और रात के भोजन के बाद वे सब सो गए।

"तुम तीनों की वजह से ही मुझे इस मुसीबत में फंसाया गया है, इसीलिए मुझे यहाँ सजा पाने के लिए लाया गया है," आदरणीय संजांग ने अपने तीनों शिष्यों से कराहते हुए कहा, उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे। "क्या तुम्हें मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए?"

"शिकायत मत करो," बंदर ने जवाब दिया। "पहले तो मुझे कोड़े पड़े थे, और तुमने तो कोड़े का असर महसूस ही नहीं किया, तो शिकायत करने की क्या ज़रूरत है?"

"हो सकता है कि मुझे कोड़े न मारे गए हों," संजांग ने जवाब दिया, "लेकिन इस तरह बंधे रहना बहुत कष्टदायक है।"

"हम भी आपका साथ देने के लिए यहाँ बंधे हुए हैं," साधु सैंड ने कहा। "क्या आप सब चिल्लाना बंद करेंगे?" बंदर ने कहा, "फिर हम आराम करने के बाद अपने रास्ते पर वापस जा सकते हैं।"

"बड़े भाई, तुम फिर से दिखावा कर रहे हो," पिग ने कहा। "उन्होंने हमें भांग की रस्सियों से बांध दिया है और उन पर पानी छिड़का है, इसलिए हम बुरी तरह से बंधे हुए हैं। यह उस समय जैसा नहीं है जब हमें मंदिर के हॉल में बंद कर दिया गया था और तुमने हमें बाहर निकालने के लिए दरवाजे खोल दिए थे।"

"मैं शेखी नहीं मार रहा," बंदर ने कहा। "मुझे उनकी पानी से भीगी हुई तीन भांग की रस्सियों की कोई परवाह नहीं है।"

"भले ही वे चावल के कटोरे जितने मोटे नारियल के तार हों, वे पतझड़ की हल्की हवा मात्र ही होंगे।" उसके बोलने के अलावा, अब चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। शानदार बंदर ने अपना आकार छोटा किया, अपने बंधनों से मुक्त हुआ और बोला, "चलिए, स्वामी।"

“बड़े भाई, हमें भी बचा लीजिए,” चिंतित साधु सैंड ने विनती की। “चुप रहो, चुप

रहो," बंदर ने जवाब दिया, फिर संज़ंग, सुअर और साधु सैंड को मुक्त किया, अपनी कमीज़ सीधी की, कमर कसी, घोड़े पर काठी कसी, छज्जे के नीचे से उनका सामान उठाया और दूसरों के साथ मंदिर के द्वार से बाहर निकल गया। "जाओ और उस चट्टान के पास लगे चार विलो के पेड़ काट डालो," उसने सुअर से कहा, जिस पर सुअर ने पूछा, "तुम्हें उनकी क्या ज़रूरत है?"

"मुझे इनकी ज़रूरत है," बंदर ने जवाब दिया। "इन्हें तुरंत यहाँ ले आओ।"

वह मूर्ख सुअर, जो बेशक बहुत ताकतवर था, गया और एक ही बार में उन सबको काट गिराया और उन्हें अपनी बाहों में उठाकर वापस आ गया। बंदर ने उनके ऊपरी भाग और शाखाएँ तोड़ दीं और अपने दो साथी शिष्यों से कहा कि वे तनों को वापस ले जाकर उन्हें रस्सियों से बाँध दें, जैसे उन्हें बाँधा गया था।

फिर बंदर ने एक मंत्र पढ़ा, अपनी जीभ का अगला हिस्सा काटकर पेड़ों पर खून थूक दिया। उसकी चीख सुनकर

"बदलो!" एक पेड़ संज़ांग में बदल गया, दूसरा बंदर में, और बाकी दो साधु रेत और सुअर बन गए। वे सभी हूबहू अपने रूप में थे; पूछे जाने पर वे जवाब देते थे, और नाम पुकारे जाने पर वे प्रतिक्रिया देते थे। फिर तीनों शिष्य जल्दी से अपने गुरु के पास लौट आए, और एक बार फिर वे वूझुआंग मंदिर से भागते हुए पूरी रात बिना रुके यात्रा करते रहे।

अध्याय 25

365

पश्चिम की यात्रा

भोर होते-होते आदरणीय संज़ंग घोड़े की पीठ पर ऊंघते हुए इधर-उधर झूल रहे थे। "गुरुजी,"

बंदर ने ध्यान देते हुए पुकारा, "तुम तो बिलकुल बेकार हो। तुम तो धर्मनिष्ठ व्यक्ति हो —तुम्हें इतनी थकान क्यों हो रही है? मैं हज़ार रातों तक बिना सोए रह सकता हूँ, मुझे ज़रा भी थकान नहीं होती। बेहतर होगा कि तुम घोड़े से उतर जाओ और राहगीरों द्वारा हँसे जाने की शर्मिंदगी से बच जाओ। आगे बढ़ने से पहले इस पहाड़ी के नीचे किसी ऐसी जगह पर आराम कर लो जहाँ हवा जमा होती है और भाप इकट्ठा होती है।"

हम उन्हें रास्ते के किनारे विश्राम करने के लिए छोड़ देंगे ताकि यह बताया जा सके कि महान अमर भोर में उठे, अपना मांस रहित नाश्ता किया और हॉल में गए। "आज तांग

सान्ज़ांग को कोड़े मारे जाएंगे," उन्होंने कोड़ा मंगवाते हुए घोषणा की।
उस युवक ने उसे घुमाते हुए तांग पुजारी से कहा, "मैं तुम्हें कोड़े मारूंगा।"
"कोड़े मारते रहो," विलो के पेड़ ने जवाब दिया।
जब उसने उसे तीस जोरदार कोड़े मारे, तो उसने कोड़े को एक बार फिर घुमाया और सुअर से कहा, "अब मैं तुम्हें कोड़े मारूंगा।"
"कोड़े मारते रहो," विलो के पेड़ ने जवाब दिया।
जब वह साधु सैंड को कोड़े मारने आया, तो उसने भी उसे आगे बढ़ने के लिए कहा। लेकिन जब वह बंदर को कोड़े मारने आया, तो सड़क पर मौजूद असली बंदर कांप उठा और बोला, "ओह, नहीं!"
"तुम्हारा क्या मतलब है?" संजांग ने पूछा।
"जब मैंने चार विलो वृक्षों को हम चारों में परिवर्तित किया, तो मैंने सोचा कि कल उसने मुझे दो बार कोड़े मारे थे, इसलिए आज वह मुझे फिर से कोड़े नहीं मारेगा, लेकिन अब वह जादुई शरीर पर कोड़े मार रहा है, मेरे असली शरीर को दर्द हो रहा है। मैं इस जादू का अंत कर रहा हूँ।" इतना कहकर उसने जादू तोड़ने के लिए जल्दी से एक मंत्र पढ़ा।
ताओवादी लड़कों के चेहरे पर दहशत देखिए, जब वे अपने चमड़े के कोड़े फेंकते हुए कहते हैं, "गुरुजी, पहले हम महान तांग के पुजारी को कोड़े मार रहे थे, लेकिन अब हम केवल विलो के तनों को कोड़े मार रहे हैं।" यह सुनकर महान अमर ने कड़वी हंसी हंसी और प्रशंसा से भर गए।
"भाई बंदर सचमुच एक शानदार बंदर राजा है। मैंने सुना था कि जब उसने स्वर्ग महल को उलट-पुलट कर दिया था, तो उसे स्वर्ग और पृथ्वी के जाल से भी नहीं पकड़ा जा सका था, और अब मुझे लगता है कि यह सच है। मुझे आपके भाग जाने से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन आपने यहाँ चार विलो के पेड़ क्यों बाँध रखे हैं ताकि वे आपका रूप धारण कर लें? उस पर कोई दया नहीं दिखाई जाएगी। उसके पीछे जाओ!" जैसे ही उनके मुँह से "उसके पीछे जाओ" शब्द निकले, महान अमर एक बादल पर सवार होकर पश्चिम की ओर देखने लगे, जहाँ भिक्षु अपने गठ्ठे लिए और घोड़ों को एड़ी मारते हुए अपने रास्ते पर जा रहे थे। अपने बादल को नीचे लाते हुए वे चिल्लाए, "बंदर, तुम कहाँ जा रहे हो? मेरा मानवफल का पेड़ मुझे वापस दे दो।"
"हमारा काम तमाम हो गया," पिग चिल्लाया, "हमारा दुश्मन वापस आ गया है।"

“हे गुरु, अभी अपनी सारी भक्ति को एक तरफ रख दीजिए,” बंदर ने कहा, “हम उसे थोड़ी सी बुराई से हमेशा के लिए खत्म कर देते हैं; फिर हम भाग निकलेंगे।” यह सुनकर तांग पुजारी कांप उठा और इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, तीनों शिष्य आगे बढ़ गए, साधु सैंड अपने डंडे को लहराते हुए, सुअर अपने रेक को ऊपर उठाए हुए और महान ऋषि बंदर अपने लोहे के डंडे को फहराते हुए। उन्होंने महान अमर को हवा में घेर लिया और उन पर बेतहाशा वार किए। इस भयानक लड़ाई के बारे में कुछ श्लोक हैं: बंदर को नहीं पता था कि अमर झेन युआन,
युग के संयुक्त स्वामी के पास और भी अधिक गहरी शक्तियां थीं।
अध्याय 25
366
पश्चिम की यात्रा
जब तीनों जादुई हथियार तेजी से घूम रहे थे,
उसकी हिरण की पूंछ से बनी मक्खी भगाने वाली छड़ी धीरे से हिल रही थी।
दाएं-बाएं वार रोकते हुए वह इधर-उधर घूमता रहा।
आगे और पीछे से आ रहे वारों को रोकते हुए उसने उन्हें इधर-उधर भागने दिया।
जब रात छटी और सुबह हुई, तब भी वे आपस में लड़ रहे थे।
यदि वे यहाँ रुके रहे तो वे कभी भी पश्चिमी स्वर्ग तक नहीं पहुँच पाएंगे।
वे तीनों अपने जादुई हथियारों से उस पर हमला करने के लिए दौड़े, लेकिन महान अमर ने अपने चंवर से उन्हें रोके रखा। लगभग एक घंटे बाद उन्होंने अपनी आस्तीन खोली और गुरु, शिष्यों, घोड़े और सामान को एक बार फिर उसमें समा लिया। फिर उन्होंने अपने बादल को घुमाया और अपने मंदिर लौट गए, जहाँ सभी अमरों ने उनका अभिवादन किया। हॉल में बैठने के बाद उन्होंने उन्हें एक-एक करके अपनी आस्तीन से बाहर निकाला। उन्होंने तांग पुजारी को सीढ़ियों के नीचे एक बौने बबूल के पेड़ से बांध दिया, और सुअर और साधु सैंड को उसके बगल के पेड़ों से बांध दिया। बंदर को उल्टा बांध दिया गया, जिससे उसे लगा कि उसे यातना दी जाएगी और पूछताछ की जाएगी। जब बंदर को कसकर बांध दिया गया, तो महान अमर ने दस लंबे पगड़ीनुमा कपड़े मंगवाए।
"कितने दयालु सज्जन हैं, सुअर," बंदर ने कहा, "उन्होंने हमारे लिए आस्तीन बनाने के लिए कपड़ा मंगवाया है—थोड़े कम पैसे में तो वे हमारे लिए चोगा भी बना सकते थे।"

छोटे अमर लोग घर का बुना हुआ कपड़ा लाए, और महान अमर द्वारा सुअर और साधु सैंड को उससे लपेटने के लिए कहे जाने पर, वे आगे आए।

"बहुत बढ़िया," बंदर ने कहा, "बहुत बढ़िया—तुम्हें ज़िंदा ही ताबूत में बंद किया जा रहा है।" कुछ ही पलों में उन तीनों को लपेट दिया गया और फिर वार्निश मंगवाई गई। अमर लोगों ने जल्दी से वार्निश लाकर खुद से तैयार की और सुखाई, जिससे उन्होंने तीनों पट्टियों से लिपटे शरीरों को, सिर को छोड़कर, पूरी तरह से रंग दिया।

"हमारे सिर की चिंता मत कीजिए, महोदय, लेकिन कृपया नीचे एक छेद छोड़ दीजिए ताकि हम उसमें से शौच कर सकें," सुअर ने कहा।

तब उस महान अमर ने एक विशाल कड़ाही मंगवाई, जिस पर बंदर ने हंसते हुए कहा, "तुम्हारी किस्मत अच्छी है, सुअर। मुझे लगता है कि वे हमारे लिए चावल पकाने के लिए कड़ाही लाए होंगे।"

"ठीक है," सुअर ने कहा, "मुझे उम्मीद है कि वे हमें पहले कुछ चावल देंगे - अगर हम पेट भरकर मरेंगे तो हम ज्यादा अच्छे दिखने वाले भूत बनेंगे।"

अमर देवताओं ने बड़ा कड़ाहा उठाकर सीढ़ियों के नीचे रख दिया, और महान अमर देवता ने उसके चारों ओर सूखी लकड़ियाँ लादकर आग लगाने का आदेश दिया। उन्होंने आज्ञा दी, "इसमें शुद्ध तेल भर दो, और जब यह इतना गर्म हो जाए कि इसमें बुलबुले उठने लगें, तो इसमें बंदर को तलकर मेरे किए का प्रायश्चित करो।"

यह सुनकर बंदर मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, "मुझे तो यही चाहिए था। मैंने बहुत दिनों से स्नान नहीं किया है और मेरी त्वचा में खुजली हो रही है। गर्म पानी से स्नान करना मुझे बहुत अच्छा लगेगा।" थोड़ी ही देर में तेल उबलने लगा और बंदर को कुछ शंका होने लगी: उसे डर था कि अमर का जादू उसके लिए समझना मुश्किल होगा और शायद शुरुआत में वह कड़ाही में अपने अंगों का इस्तेमाल न कर पाए। उसने जल्दी से चारों ओर देखा तो पाया कि चबूतरे के पूर्व में एक धूपघड़ी और पश्चिम में एक पत्थर का शेर था। बंदर उछलकर उसकी ओर लुढ़का, अपनी जीभ का सिरा काट लिया, पत्थर के शेर पर खून की बौछार कर दी और "बदल जाओ" चिल्लाया, जिस पर वह शेर उसी की तरह एक बंडल में बंधा हुआ उसके अपने रूप में बदल गया। फिर उसने अपनी आत्मा निकाली और बादलों में चला गया, जहाँ से उसने ताओवादियों को नीचे देखा।

अध्याय 25

ठीक इसी समय जूनियर इमॉर्टल्स ने सूचना दी, "तेल बहुत तेज़ी से उबल रहा है।"
“बंदर को नीचे ले जाओ,” महान अमर ने आदेश दिया, लेकिन जब उनमें से चार ने उसे उठाने की कोशिश की तो वे नहीं उठा पाए। फिर आठ ने कोशिश की और असफल रहे, और चार और ने भी कोई फर्क नहीं किया। “यह धरती से मोहित बंदर अचल है,” उन्होंने कहा। “यह छोटा हो सकता है, लेकिन बहुत ठोस है।” फिर बारह कनिष्ठ अमरों को उसे डंडों की सहायता से उठाने के लिए कहा गया, और जब उन्होंने उसे अंदर फेंका तो एक ज़ोरदार धमाका हुआ और तेल की बूँदें चारों ओर छिटक गईं, जिससे कनिष्ठ अमरों के चेहरों पर छाले पड़ गए। “कड़ाही में छेद हो गया है—यह रिसने लगा है,” झुलसे हुए अमर चिल्लाए, लेकिन उनके मुँह से शब्द निकलने से पहले ही सारा तेल कड़ाही के टूटे हुए तल से बह गया। उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने उसमें एक पत्थर का शेर फेंक दिया था।
“उस बंदर की गुस्ताखी पर लानत हो,” महान अमर ने भयंकर क्रोध में कहा। “मेरी उपस्थिति में ऐसी हरकतें करने की उसकी हिम्मत कैसे हुई! मुझे तुम्हारे बच निकलने की इतनी परवाह नहीं है, लेकिन मेरे बर्तन को तोड़ने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? उसे पकड़ने की कोशिश करना बेकार है, और अगर पकड़ भी लो तो रेत से पारा निकालने या परछाई या हवा को पकड़ने जैसा होगा। उसे भूल जाओ, उसे जाने दो। इसके बजाय तांग सान्ज़ांग को खोलो और दूसरा बर्तन ले आओ।”
हम पेड़ के विनाश का बदला लेने के लिए उसे जला सकते हैं।" कनिष्ठ अमर योद्धाओं ने संजांग की लेपित पट्टियों को फाड़ना शुरू कर दिया।
बंदर को ये सब कुछ हवा में ही साफ़ सुनाई दे रहा था। उसने सोचा, "गुरुजी का तो काम तमाम हो गया। अगर वो उस कड़ाहे में गए तो मर जाएँगे। फिर वो पकेंगे और चार-पाँच बार तलने के बाद उन्हें एक बेहद कोमल भिक्षु के टुकड़े की तरह खाया जाएगा। मुझे वापस नीचे जाकर उन्हें बचाना होगा।" महान ऋषि ने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा, अपने हाथ सामने जोड़े और कहा, "इन पॉलिश की पट्टियों को खराब मत करो और मेरे गुरुजी को मत तलो। इसके बजाय मुझे तेल के कड़ाहे में डाल दो।"
"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, बंदर!" महान अमर क्रोधित होकर बोला। "तुमने मेरी खाना

पकाने की मटकी तोड़ने के लिए अपनी एक चाल क्यों चली?"
"अगर तुम मुझसे मिलोगे तो तुम्हारी बुरी तरह पिटाई होगी—और वैसे भी इससे मेरा क्या लेना-देना? मैं तुम्हारे गर्म तेल के प्रस्ताव को स्वीकार करने ही वाला था, लेकिन मुझे इतनी ज़ोर की शौच लगी थी कि अगर मैं तुम्हारे कड़ाहे में करता तो तुम्हारा तेल खराब हो जाता और तुम्हारे खाने का स्वाद भी ठीक नहीं रहता। अब जब मैंने अपना काम कर लिया है तो मैं कड़ाहे के लिए तैयार हूँ। कृपया मेरे स्वामी की जगह मुझे ही तल दो।" महान अमर ने ठंडी हंसी हंसते हुए हॉल से बाहर आकर उसे पकड़ लिया।
अगर आपको नहीं पता कि कहानी क्या है या वह कैसे भागा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 26
सन वुकॉन्ग तीन द्वीपों में सफलता का सूत्र खोज रहे हैं
गुआनयिन मीठे पानी के झरने से वृक्ष को पुनर्जीवित करती है
जैसा कि कविता में कहा गया है,
इस संसार में रहते हुए आपको सहनशील होना चाहिए;
स्वयं को प्रशिक्षित करने के लिए धैर्य अत्यंत आवश्यक है।
हालांकि अक्सर कहा जाता है कि हिंसा अच्छा व्यापार है,

कोई भी काम करने से पहले सोचो, और कभी भी किसी को धमकाओ या गुस्सा मत करो।
सच्चे सज्जन जो कभी प्रयास नहीं करते, वे सदा के लिए प्रसिद्ध होते हैं;
सद्गुणों से प्रेम करने वाले ऋषि आज भी प्रसिद्ध हैं।
बलवान पुरुषों का सामना हमेशा अपने से अधिक बलवान लोगों से ही होता है।
और अंततः वे असफल हो जाते हैं, जबकि गलती उन्हीं की होती है।
महान अमर झेन युआन ने बंदर को हाथ में थामकर कहा, "मैंने तुम्हारी शक्तियों और प्रसिद्धि के बारे में सुना है, लेकिन इस बार तुमने हद पार कर दी है। अगर तुम किसी तरह बच भी जाओ, तो भी मेरी पकड़ से नहीं बच पाओगे। हम दोनों पश्चिमी स्वर्ग तक बहस करेंगे, और अगर तुम्हें तुम्हारा वह बुद्ध भी दिख जाए, तो भी तुम्हें पहले मेरा

मनफल का पेड़ मुझे वापस देना होगा। अब अपनी कोई भी जादूगरी मत आजमाना।"
"आप तो बड़े ही संकीर्ण सोच वाले व्यक्ति हैं, महोदय," बंदर ने हंसते हुए उत्तर दिया। "अगर आप अपने पेड़ को फिर से जीवित करवाना चाहते हैं, तो कोई समस्या नहीं है। अगर आपने मुझे पहले बताया होता तो हम इस सारी कहा-सुनी से बच सकते थे।"
"अगर तुमने मुसीबत न खड़ी की होती तो मैं तुम्हें माफ कर देता," महान अमर ने कहा।
"अगर मैं तुम्हें पेड़ जिंदा वापस दे दूं तो क्या तुम मेरे मालिक को रिहा कर दोगे?" बंदर ने पूछा।
"यदि तुम्हारा जादू वृक्ष को पुनर्जीवित करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है," महान अमर ने उत्तर दिया, "तो मैं तुम्हें आठ बार प्रणाम करूंगा और तुम्हें अपना भाई मानूंगा।"
"तो फिर यह आसान है," बंदर ने कहा। "उन्हें छोड़ दो और मैं गारंटी देता हूँ कि मैं तुम्हारा पेड़ तुम्हें ज़िंदा वापस दे दूँगा।"
उसके भागने की संभावना न होने पर भरोसा करते हुए, महान अमर ने आदेश दिया कि संज़ंग, पिग और फ्रायर सैंड को मुक्त कर दिया जाए। "स्वामी,"
फ्रायर सैंड ने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि बंदर किस तरह की शरारत करने की योजना बना रहा है।"
"मैं तुम्हें बताता हूँ किस तरह की चाल है," सुअर ने पलटकर जवाब दिया। "यह भीख मांगने की चाल है। पेड़ मर चुका है और उसे फिर से जीवित नहीं किया जा सकता। पेड़ का इलाज ढूंढना उसके लिए एक बहाना है, ताकि वह तुम्हारी या मेरी परवाह किए बिना अकेले चला जाए।"
"वह हमें छोड़ने की हिम्मत नहीं करेगा," संजांग ने कहा। "चलो उससे पूछते हैं कि वह इसके लिए डॉक्टर कहां से लाएगा।"
"बंदर," उसने आगे कहा, "तुमने अमर बुजुर्ग को हमें खोलने के लिए मूर्ख क्यों बनाया?"
"मैंने जो कुछ भी कहा, वह सब सच था," बंदर ने जवाब दिया। "मैं उसे बहका नहीं रहा था।"
"इलाज ढूंढने के लिए आप कहां जाएंगे?"
"एक पुरानी कहावत है कि 'इलाज समुद्र पार से आते हैं'। मैं पूर्वी समुद्र में जाऊंगा

और तीनों द्वीपों और दस महाद्वीपों की यात्रा करूंगा, पूजनीय अमर संतों और ऋषियों से मिलूंगा ताकि मृतकों को पुनर्जीवित करने का नुस्खा खोज सकूं। मैं वादा करता हूं कि मैं उस पेड़ का इलाज कर दूंगा।"

"आप कब लौटेंगे?"

मुझे सिर्फ तीन दिन लगेंगे।

"तो फिर मैं तुम्हें तीन दिन का समय देता हूँ। अगर तुम उस समय के भीतर वापस आ जाते हो, तो सब ठीक रहेगा, लेकिन अगर तुम देर करते हो तो मैं वह मंत्र पढ़ूँगा।"

"मैं वैसा ही करूंगा जैसा आप कहेंगे," बंदर ने कहा।

उसने तुरंत अपनी बाघ की खाल की स्कर्ट सीधी की, दरवाजे से बाहर निकला और महान अमर से कहा,

"चिंता मत कीजिए, साहब, मैं जल्दी लौट आऊंगा। ध्यान रखिएगा कि मेरे मालिक का अच्छे से ख्याल रखिएगा। उन्हें दिन में तीन बार चाय और छह बार खाना खिलाइएगा, और कुछ भी खाना मत छोड़ना। अगर आपने ऐसा किया, तो लौटकर मैं इसका हिसाब चुकता कर दूंगा, और सबसे पहले आपके सभी बर्तनों के तले तोड़ दूंगा। अगर उनके कपड़े गंदे हो जाएं, तो उन्हें धो दीजिएगा। अगर उनका चेहरा पीला पड़ गया, तो मैं बर्दाश्त नहीं करूंगा, और अगर उनका वजन कम हो गया, तो आप मुझे कभी नहीं देख पाएंगे।"

“चले जाओ, चले जाओ,” महान अमर ने उत्तर दिया। “मैं उसे भूखा तो बिल्कुल नहीं रहने दूंगा।”

शानदार बंदर राजा ने अपने कलाबाज़ी करते बादल को उछालते हुए वूझुआंग मंदिर से उड़ान भरी और पूर्वी सागर की ओर चल पड़े। वे बिजली की चमक या टूटते तारे की तरह तेज़ी से हवा में उड़ते हुए जल्द ही पेंगलाई की पवित्र भूमि पर पहुँच गए। जैसे ही उनका बादल उतरा, उन्होंने चारों ओर देखा और पाया कि यह वास्तव में एक अद्भुत जगह है। इसके बारे में एक कविता इस प्रकार है:

एक महान और पवित्र भूमि जहाँ अमर ऋषि निवास करते हैं।

फिर भी लहरें आती-जाती रहती हैं।

जैस्पर सिंहासन की छाया आकाश के हृदय को शीतलता प्रदान करती है;
विशाल द्वार के स्तंभों की चमक समुद्र के ऊपर दूर तक जगमगा रही है।
रंगीन धुंध में छिपी हुई हैं जेड पत्थर की बांसुरियां;
सुनहरे विशालकाय जीव पर चंद्रमा और तारे चमक रहे हैं।
पश्चिमी तालाब की महारानी माँ अक्सर यहाँ आती हैं
अपने आड़ू तीनों अमर देवताओं को अर्पित करने के लिए।

अपने सामने फैले उस मनमोहक भूभाग को निहारते हुए, बंदर भाई पेंगलाई में प्रवेश कर गया। चलते-चलते उसने देखा कि बादलों से घिरी एक गुफा के बाहर, चीड़ के पेड़ की छाँव में तीन बूढ़े लोग शतरंज की मेज के चारों ओर बैठे हैं। खेल को देखने वाला व्यक्ति दीर्घायु का तारा था, और खिलाड़ी आशीर्वाद का तारा और पद का तारा थे।

"प्रशंसा करो, आदरणीय छोटे भाइयों," बंदर ने उन्हें पुकारा, और जब उन्होंने उसे देखा तो उन्होंने टुकड़ों को हटा दिया, उसकी अभिवादन का उत्तर दिया और कहा, "आप यहाँ क्यों आए हैं, महान ऋषि?"

"तुम्हें देखने के लिए," उसने जवाब दिया।

अध्याय 26

370

पश्चिम की यात्रा

दीर्घायु के सितारे ने कहा, "मैंने सुना है कि आपने बुद्ध के लिए मार्ग त्याग दिया है, और पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने की यात्रा पर निकले तांग पुजारी की रक्षा के लिए अपना प्राण त्याग दिए हैं। जल और पर्वतों को पार करने की अपनी अंतहीन यात्राओं में से आप हमसे मिलने के लिए समय कैसे निकाल सकते हैं?"

बंदर ने कहा, "सच कहूँ तो, मैं पश्चिम की ओर जा रहा था, लेकिन एक छोटी सी परेशानी के कारण हमें रुकना पड़ा। क्या आप मेरी एक छोटी सी मदद कर सकते हैं?"

"यह सब कहाँ हुआ?" आशीर्वाद के तारे ने पूछा, "तुम्हें क्या रोके हुए है? कृपया हमें बताओ, हम इसका समाधान करेंगे।"

"हम इसलिए रुके हुए हैं क्योंकि हम अनंत दीर्घायु पर्वत पर स्थित वूझुआंग मंदिर से होकर गए थे," बंदर ने कहा।

"लेकिन वूझुआंग मंदिर तो महान अमर झेन युआन का महल है," तीनों अमर घबराकर बोले, "कहीं ऐसा तो नहीं कि तुमने उनके कुछ पुरुष फल चुरा लिए हों!"

"अगर मैंने कुछ चुराकर खा लिया होता तो क्या होता?" बंदर ने मुस्कुराते हुए पूछा।
"अज्ञानी बंदर," तीनों अमर देवताओं ने उत्तर दिया। "उस फल की महज़ गंध से ही मनुष्य 360 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेता है, और जो कोई भी उसे खाता है वह 47,000 वर्ष तक जीवित रहता है। उन्हें कहा जाता है
'दस हजार वर्षों वाला घास-वापिस लौटाने वाला सिंदूरी वृक्ष', और हमारा मार्ग इसके सामने कुछ भी नहीं है। मनफल आपको बड़ी आसानी से स्वर्ग के समान अमर बना देता है, जबकि हमें अपने सार को पोषित करने, आत्मा को शुद्ध करने, मन को संरक्षित करने, जल और अग्नि में सामंजस्य स्थापित करने, और मन को पूर्ण करने के लिए ऊर्जा को ग्रहण करने में न जाने कितना समय लगता है। भला आप यह कैसे पूछ सकते हैं कि इससे कोई फर्क पड़ेगा? धरती पर इसके जैसा चमत्कारी वृक्ष और कोई नहीं है।
"चमत्कारी वृक्ष," बंदर ने उपहास उड़ाते हुए कहा, "चमत्कारी वृक्ष! मैंने उस चमत्कारी वृक्ष का अंत कर दिया है।"
"क्या? इसे खत्म कर दोगे?" तीनों अमर प्राणियों ने भयभीत होकर पूछा।
"पिछले दिनों जब मैं उनके मंदिर में था," बंदर ने कहा, "महान अमर वहाँ नहीं थे। वहाँ केवल दो लड़के थे जिन्होंने मेरे गुरु का स्वागत किया और उन्हें दो नर फल दिए। मेरे गुरु को पता नहीं था कि वे क्या हैं और उन्होंने कहा कि वे नवजात शिशु हैं; उन्होंने उन्हें खाने से इनकार कर दिया। लड़कों ने उन्हें ले जाकर खुद खा लिया, बजाय इसके कि वे उन्हें हम बाकी लोगों को दें, इसलिए मैं गया और तीन चुरा लिए, हम शिष्यों में से प्रत्येक के लिए एक-एक।"
उन बदतमीज़ लड़कों ने हमें लगातार गालियाँ दीं और अपशब्द कहे, जिससे मुझे इतना गुस्सा आया कि मैंने एक ही झटके में उनका पेड़ गिरा दिया। सारे फल गायब हो गए, पत्ते झड़ गए, जड़ें उखड़ गईं और डालियाँ चकनाचूर हो गईं। पेड़ सूख गया। हमें आश्चर्य हुआ कि दोनों लड़कों ने हमें अंदर बंद कर दिया, लेकिन मैंने ताला खोल दिया और हम भाग निकले। अगले दिन जब महान अमर घर आए, तो वे हमारे पीछे आए और हमें पा लिया। हमारी बातचीत ठीक से नहीं हुई और हमने उनसे लड़ना शुरू कर दिया, लेकिन उन्होंने हमें चकमा दिया, अपनी आस्तीन फैलाई और हम सबको उसमें जकड़ लिया। एक दिन तक हमें बाँधकर कोड़े मारे गए और पूछताछ की गई, फिर हम दोबारा भाग निकले, लेकिन उन्होंने हमारा पीछा किया और हमें फिर से

पकड़ लिया। हालाँकि उनमें ज़रा भी ताकत नहीं थी, फिर भी उन्होंने अपने कोड़े से हमारा मुकाबला किया और हमारे तीन हथियारों के बावजूद भी हम उन्हें छू नहीं सके। उन्होंने हमें उसी तरह पकड़ा जैसे पहले पकड़ा था। उसने मेरे गुरु और दोनों भाइयों को पट्टियों में लपेटकर और लेप लगाकर रखा था, और मुझे तेल के कड़ाहे में फेंकने वाला था, लेकिन मैंने एक तरकीब अपनाकर अपना शरीर छुड़ाया और उसका वह कड़ाहा तोड़ दिया। अब जब उसे एहसास हो गया है कि वह मुझे पकड़ नहीं सकता और अपने पास नहीं रख सकता, तो वह मुझसे थोड़ा डरने लगा है, और मैंने उससे अच्छी बातचीत की। मैंने उससे कहा कि अगर वह मेरे गुरु और मेरे भाइयों को छोड़ दे, तो मैं गारंटी देता हूँ कि मैं पेड़ को ठीक कर दूंगा और उसे फिर से जीवित कर दूंगा, जिससे दोनों पक्ष संतुष्ट हो जाएंगे। मुझे याद आया कि 'इलाज समुद्र पार से आते हैं,' इसलिए मैं खास तौर पर आप तीनों भाइयों से मिलने आया हूँ। अगर आपके पास पेड़ को फिर से जीवित करने का कोई इलाज है, तो कृपया मुझे बताएँ ताकि मैं तांग पुजारी को जल्द से जल्द मुसीबत से निकाल सकूँ।

यह सुनकर तीनों सितारों ने उदास स्वर में कहा, "तुम बंदर हो। तुम्हें पता नहीं कि तुम्हारा सामना किससे है। वह मास्टर झेन युआन पृथ्वी के अमरों के कुलपति हैं, और हम दिव्य अध्याय 26 के प्रमुख हैं।"

371

पश्चिम की यात्रा

अमर। यद्यपि तुम एक दिव्य अमर बन चुके हो, फिर भी तुम महान मोनड के साधारण सदस्यों में से एक हो, कुलीन वर्ग में नहीं। तुम कभी भी उसके चंगुल से नहीं बच पाओगे। हे महान ऋषि, यदि तुमने किसी जानवर, पक्षी, कीट या सरीसृप को मारा होता, तो हम तुम्हें चिपचिपे बाजरे से बनी कुछ गोलियाँ दे सकते थे जिससे वह जीवित हो उठता, लेकिन वह मैनफ्रूट का पेड़ जादुई है और उसे पुनर्जीवित करना असंभव है। इसका कोई इलाज नहीं है, बिलकुल भी नहीं। यह सुनकर कि कोई इलाज नहीं है, बंदर की भौंहें तन गईं और उसके माथे पर हजारों झुर्रियाँ पड़ गईं।

"हे महान ऋषि," आशीर्वाद के तारे ने कहा, "भले ही हमारे पास यहाँ कोई इलाज न हो, लेकिन कहीं और ज़रूर हो सकता है।"

इतनी चिंता क्यों?

“अगर मेरे लिए कहीं और जाने की जगह होती,” बंदर ने जवाब दिया, “तो यह

आसान होता। चाहे मुझे सागर के सबसे दूर कोने तक जाना पड़े, या आकाश के छोर पर स्थित चट्टान तक, या छत्तीसवें स्वर्ग में प्रवेश करना पड़े, कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन दिक्कत यह है कि तांग कुलपति बहुत सख्त हैं और उन्होंने मुझे तीन दिन की समय सीमा दी है। अगर मैं तीन दिन में वापस नहीं आया तो वे बंधन कसने का मंत्र पढ़ेंगे।"

"शानदार, शानदार," तीनों सितारों ने हंसते हुए कहा। "अगर तुम उस जादू से बंधे न होते तो फिर से स्वर्ग चले जाते।"

"शांत हो जाइए, महान ऋषि," दीर्घायु के तारे ने कहा, "चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यद्यपि वह महान अमर हमसे वरिष्ठ हैं, वे हमारे मित्र हैं, और चूंकि हमने उनसे लंबे समय से मुलाकात नहीं की है और आपकी मदद करने के लिए हम उनसे मिलने जा रहे हैं। हम आपको सब कुछ समझा देंगे और उस तांग भिक्षु को बता देंगे कि वह बंधन कसने का मंत्र न पढ़े। जब तक आप वापस नहीं आ जाते, हम नहीं जाएंगे, चाहे आपको कितना भी समय लगे, चाहे तीन से पांच दिनों से कहीं अधिक समय क्यों न लगे।"

“बहुत-बहुत धन्यवाद,” बंदर ने कहा। “क्या मैं आपसे अब चलने का अनुरोध कर सकता हूँ, क्योंकि मैं जा रहा हूँ?” इतना कहकर वह विदा हो गया।

तीनों तारे शुभ प्रकाश की किरणों के साथ वूझुआंग मंदिर की ओर रवाना हुए, जहां उनके पहुंचने पर उपस्थित सभी लोगों ने आकाश में सारस की आवाज सुनी।

शून्य दिव्य प्रकाश से नहाया हुआ था।

आकाशगंगा सुगंध से भरपूर है।

रंग-बिरंगी धुंध की हजारों हल्की फुहारों ने पंख धारण किए हुए लोगों को घेर लिया; एक अकेला बादल अमर पैरों को सहारा दे रहा था।

हरे और लाल रंग के फीनिक्स पक्षी चक्कर लगाते और उड़ते हुए दिखाई दिए।

उनकी आस्तीनों की सुगंध धरती पर फैल गई।

ये ड्रैगन अपनी लाठियों पर झुक गए और मुस्कुराए।

और उनके सीने के सामने जेड-सफेद दाढ़ियाँ लहरा रही थीं।

अध्याय 26

उनके युवा चेहरों पर दुख का कोई निशान नहीं था।
उनके भव्य शरीर आशीर्वादों से परिपूर्ण थे।
वे अपनी उम्र गिनने के लिए स्टार-चिप्स ले जाते थे।
और उनकी कमर पर लौकी और ताबीज लटके हुए थे।
उनका जीवन अनंत काल तक लंबा होता है।
और वे दस महाद्वीपों और तीन द्वीपों पर रहते हैं।
वे अक्सर मनुष्यों को आशीर्वाद देने आते हैं।
मनुष्यों के बीच सौ गुना अच्छी चीजों का प्रसार करना।
ब्रह्मांड की महिमा और आशीर्वाद
अब असीम खुशियों के साथ आइए।
जब ये तीनों बुजुर्ग शुभ प्रकाश में महान अमर के दर्शन करने जाते हैं, तो सौभाग्य और शांति की कोई कमी नहीं रहती।
"गुरुजी," अमर युवकों ने उन्हें देखते ही तुरंत सूचना दी, "समुद्र से आए तीन सितारे यहाँ हैं।"
महान अमर झेन युआन, जो तांग पुजारी से बात कर रहे थे, यह सुनकर उनका स्वागत करने के लिए सीढ़ियों से नीचे उतरे।
जब सुअर ने दीर्घायु के तारे को देखा तो वह उसके पास गया और उसके कपड़े खींचने लगा। "तुम्हें तो सालों से देखा ही नहीं, बूढ़े बेवकूफ! तुम तो बड़े बेफिक्र हो गए हो, बिना टोपी के आ गए हो।"
इन शब्दों के साथ ही उसने अपनी पादरी वाली टोपी उस सितारे के सिर पर रख दी, ताली बजाई और जोर से हंस पड़ा।
"वाह, वाह! तुम्हें पदोन्नति मिल गई है।" टोपी फेंकते हुए, दीर्घायु सितारे ने उसे एक असभ्य मूर्ख कहकर कोस दिया।
"मैं मूर्ख नहीं हूँ," सुअर ने कहा, "लेकिन तुम सब गुलाम हो।"
"तुम तो पक्के तौर पर मूर्ख हो," आशीर्वाद के तारे ने जवाब दिया, "तो तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमें गुलाम कहने की?"
"अगर तुम गुलाम नहीं हो तो," सुअर ने पलटवार करते हुए कहा, "लोग तुमसे हमेशा 'लंबी उम्र लाओ', 'आशीर्वाद लाओ' और 'अच्छी नौकरी लाओ' क्यों कहते हैं?"
संज़ंग ने सूअर को चले जाने के लिए चिल्लाया, फिर जल्दी से खुद को ठीक किया

और तीन सितारों को प्रणाम किया। तीन सितारों ने युवा पीढ़ी के सदस्यों के रूप में महान अमर का सम्मान किया, जिसके बाद वे सभी बैठ गए।

“हमने आपका तेजस्वी चेहरा लंबे समय से नहीं देखा है,” स्टार ऑफ ऑफिस ने कहा, “जो हमारे घोर अनादर को दर्शाता है। हम अब आपसे मिलने इसलिए आए हैं क्योंकि महान ऋषि बंदर ने परेशानी खड़ी कर दी है।” (अध्याय 26)

आपके अमर मंदिर में।"

"क्या बंदर पेंगलाई गया है?" महान अमर ने पूछा।

"जी हां," दीर्घायु के सितारे ने उत्तर दिया। "वह हमारे यहां उस अमृत वृक्ष को पुनर्जीवित करने का नुस्खा मांगने आया था जिसे उसने नष्ट कर दिया था। चूंकि हमारे पास इसका कोई इलाज नहीं है, इसलिए उसे इसकी तलाश में कहीं और जाना पड़ा है। हमें डर है कि यदि वह पवित्र पुजारी द्वारा निर्धारित तीन दिन की समय सीमा का उल्लंघन करता है, तो बंधन कसने का मंत्र बोला जा सकता है। हम पहले तो सम्मान व्यक्त करने आए हैं और दूसरे, समय सीमा बढ़ाने का अनुरोध करने।"

"मैं इसे नहीं सुनाऊंगा, मैं वादा करता हूं," यह सुनते ही संजांग ने जवाब दिया।

जब वे बातें कर रहे थे, तभी सुअर दौड़कर आया और आशीर्वाद के तारे को पकड़कर उससे कुछ फल मांगने लगा। वह तारे की आस्तीनों में हाथ डालने लगा और उसकी कमर के चारों ओर टटोलने लगा, हर जगह तलाशी लेते हुए उसने उसके कपड़े फाड़ दिए।

"यह किस तरह का व्यवहार है?" संजांग ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"मैं कोई बदतमीज़ी नहीं कर रहा हूँ," सुअर ने कहा। "इसीलिए तो कहावत है, 'जहाँ भी देखो, आशीर्वाद ही आशीर्वाद'।" संज़ंग ने उसे फिर से चले जाने के लिए चिल्लाया। वह मूर्ख धीरे-धीरे पीछे हट गया, और अपनी आँखों में अटूट घृणा लिए आशीर्वाद के तारे को घूरने लगा।

"मैं तुमसे नाराज़ नहीं था, बेवकूफ," स्टार ने कहा, "तो तुम मुझसे इतनी नफरत क्यों करते हो?"

"मैं तुमसे नफरत नहीं करता," सुअर ने कहा। "इसे ही तो कहते हैं 'सिर घुमाकर आशीर्वाद पाना'।" जब वह मूर्ख बाहर जा रहा था, तो उसने देखा कि एक छोटा लड़का

चार चाय के चम्मच लेकर अंदर आया, मठाधीश के कमरे में फल रखने और चाय परोसने के लिए कटोरे ढूंढ रहा था। सुअर ने एक चम्मच उठाया, मंदिर के मुख्य हॉल में भागा, एक हाथ की घंटी उठाई और उसे बेतहाशा बजाने लगा। वह खूब मजे ले रहा था, तभी महान अमर ने कहा,

"यह भिक्षु दिन-ब-दिन और अधिक अनादरपूर्ण होता जा रहा है।"

"मैं अनादर नहीं कर रहा हूँ," पिग ने जवाब दिया। "मैं 'चारों ऋतुओं के लिए खुशियों का स्वागत' कर रहा हूँ।"

जब सुअर अपनी शरारतें कर रहा था और उपद्रव मचा रहा था, तब बंदर शुभ बादल के सहारे पेंगलाई से दूर उड़कर जादुई पर्वत फांगझांग पर आ गया। यह वास्तव में एक अद्भुत स्थान था। जैसा कि कविता में कहा गया है, विशाल फांगझांग एक और स्वर्ग है।

जहां महान एकता के महल में देवता और अमर आत्माएं मिलती हैं।

बैंगनी सिंहासन तीन पवित्र पुरुषों के मार्ग को रोशन करता है, फूलों और पेड़ों की सुगंध बादलों के बीच तैरती है।

कई सुनहरे फीनिक्स पक्षी इसके फूलों से सजे द्वारों के आसपास आनंद मनाने आते हैं; जादुई मशरूम के खेत जेड की तरह क्यों चमकते हैं?

हल्के पीले रंग के आड़ू और बैंगनी रंग के बेर अभी-अभी पके हैं।

अध्याय 26

374

पश्चिम की यात्रा

अमर प्राणियों को और भी लंबा जीवन देने के लिए तैयार।

लेकिन जब बंदर ने अपना बादल नीचे उतारा तो उसका मन नज़ारे का आनंद लेने का नहीं था। चलते-चलते उसे हवा में एक सुगंध महसूस हुई, काले सारस की आवाज़ सुनाई दी और एक अमर प्राणी दिखाई दिया: आकाश दीप्तिमान प्रकाश से भर गया था।

रंग-बिरंगे बादल चमक रहे थे और दमक रहे थे।

लाल फीनिक्स पक्षी अपनी चोंच में लगे फूलों से भी अधिक चमकीले दिख रहे थे; हरे फीनिक्स पक्षी उड़ान भरते हुए मधुर गीत गा रहे थे।

उनके आशीर्वाद पूर्वी सागर के समान विशाल थे, उनकी आयु पर्वत के समान थी;

फिर भी उनका चेहरा एक बच्चे जैसा था और उनका शरीर बलवान था।
वह अपनी अमर युवावस्था की गोलियां एक बोतल में रखता था।
और उसकी कमर से अमर जीवन का एक ताबीज लटका हुआ था।
उन्होंने अक्सर मानवजाति को आशीर्वाद भेजा था।
कई बार मनुष्यों को कठिनाइयों से बचाया है।
उन्होंने एक बार सम्राट वू को लंबी आयु प्रदान की थी।
और वह हमेशा जेड पूल में पीच बैंक्वेट्स में जाया करता था।
उन्होंने सभी भिक्षुओं को सांसारिक नियति का त्याग करना सिखाया;
महान मार्ग के बारे में उनकी व्याख्याएं बिजली की तरह स्पष्ट थीं।
वह श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए समुद्र पार करके आए थे।
और उन्होंने गिद्ध शिखर पर बुद्ध के दर्शन किए थे।
उनकी उपाधि पूर्वी गौरव के सम्राट की थी।
कोहरे और बादलों के सर्वोच्च श्रेणी के अमर प्राणी।
जब बंदर भाई ने उन्हें देखा तो उसने "महाराज, आपको प्रणाम" कहकर अभिवादन किया। सम्राट ने तुरंत अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा, "मुझे आपका उचित स्वागत करना चाहिए था, महान ऋषि। क्या मैं आपको चाय पर अपने घर बुला सकता हूँ?" वह बंदर का हाथ पकड़कर अपने कौड़ी-सीपों से बने महल में ले गए, जहाँ अनगिनत जैस्पर के तालाब और जेड के मीनारें थीं। वे चाय का इंतज़ार कर रहे थे कि तभी एक लड़का पीछे से प्रकट हुआ। (अध्याय 26)

एक पन्ना रंग का पर्दा। वह कुछ इस तरह दिखता था:
उनके शरीर पर रंगों से जगमगाता हुआ एक ताओवादी वस्त्र लटका हुआ था।
और उसकी कमर के चारों ओर रेशमी कमरबंद से प्रकाश चमक रहा था।
उसके सिर पर सप्तर्षि मंडल के तारों के चिन्ह वाली पगड़ी थी, और उसके पैरों में घास की चप्पलें थीं जो सभी जादुई पहाड़ों पर चढ़ चुकी थीं।
वह अपने वास्तविक स्वरूप को निखार रहा था, अपने खोल से बाहर निकल रहा था।
और जब वह इसे पूरा कर लेगा तो उसे असीम आनंद की अनुभूति होगी।
उनकी समझ ने मूल कारणों तक पहुंचने में सफलता प्राप्त कर ली थी।

और उसके स्वामी को पता था कि वह गलतियों से मुक्त है।
प्रसिद्धि से दूर रहकर और वर्तमान का आनंद लेते हुए उन्होंने लंबा जीवन व्यतीत किया।
और उन्हें समय बीतने की परवाह नहीं थी।
वह टेढ़े-मेढ़े बरामदे से होते हुए कीमती हॉल तक पहुंचा, और तीन बार स्वर्ग के सुखों को ग्रहण किया।
हरे रंग के पर्दे के पीछे से अगरबत्ती के धुएं के बादल उठते हुए प्रतीत हुए; यह युवा अमर स्वयं डोंगफैंग शुओ थे।
"तो तुम यहाँ हो, नन्हे चोर!" बंदर ने उसे देखकर मुस्कुराते हुए कहा। "सम्राट के महल में तुम्हारे लिए चुराने के लिए कोई आड़ू नहीं हैं।"
डोंगफैंग शुओ ने आदरपूर्वक उनका अभिवादन किया और उत्तर दिया, "किसलिए आए हो, बूढ़े चोर? मेरे स्वामी ने तुम्हारे लिए अमरता की कोई गोली यहाँ नहीं रखी है जिसे तुम चुरा सको।"
“बकवास बंद करो, मानकियान,” सम्राट ने चिल्लाकर कहा, “और चाय लाओ।” मानकियान डोंगफांग शुओ का ताओवादी नाम था। वह जल्दी से अंदर गया और चाय के दो कप ले आया।
जब उन दोनों ने उसे पी लिया, तो बंदर ने कहा, "मैं यहाँ आपसे कुछ काम करवाने आया हूँ। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप इसके लिए तैयार होंगे।"
“क्या बात है?” सम्राट ने पूछा। “बताइए।”
"मैं तांग पुजारी को उनकी पश्चिम यात्रा पर ले जा रहा था," बंदर ने उत्तर दिया, "और हमारा मार्ग अनंत दीर्घायु पर्वत पर स्थित वूझुआंग मंदिर से होकर गुजरा। वहाँ के युवक इतने बदतमीज़ थे कि मुझे गुस्सा आ गया और मैंने उनका मैनफ्रूट का पेड़ गिरा दिया। इसके परिणामस्वरूप हम कुछ देर के लिए रुक गए, और तांग अध्याय 26

पुजारी बच नहीं सकता, इसीलिए मैं आपसे, महोदय, इसे ठीक करने का उपाय बताने आया हूँ। मुझे आशा है कि आप कृपा करके सहमत होंगे।
“अरे मूर्ख बंदर,” सम्राट ने उत्तर दिया, “तुम जहाँ भी जाते हो, मुसीबत खड़ी करते हो। वूझुनंग मंदिर के स्वामी झेन युआन को युग के संयुक्त स्वामी की पवित्र उपाधि

प्राप्त है, और वे पृथ्वी के अमरों के कुलपति हैं। तुमने उनसे क्यों पंगा लिया? उनका वह फल-वृहद सिंदूरी वृक्ष है। तुम्हारा कुछ फल चुराना ही काफी बड़ा अपराध था, और वृक्ष को गिराने से उनके लिए तुमसे हर हाल में मुआवज़ा पाना नामुमकिन हो गया है।"

"सच है," बंदर ने कहा। "जब हम भागे तो उसने हमारा पीछा किया और हमें पसीने से भीगे हुए कपड़ों की तरह अपनी आस्तीन में उठा लिया, जिससे मुझे बहुत गुस्सा आया। लेकिन उसे मुझे छोड़ना पड़ा ताकि वह इस बीमारी का इलाज ढूंढ सके, इसलिए मैं आपकी मदद मांगने आया हूँ।"

"मेरे पास महान एकेश्वरवाद की नौ चरणों वाली जीवनदायिनी औषधि है, लेकिन यह केवल सजीव वस्तुओं को ही पुनर्जीवित कर सकती है, वृक्षों को नहीं। वृक्ष लकड़ी और पृथ्वी तत्वों से निर्मित जीवन हैं और स्वर्ग और पृथ्वी द्वारा पोषित होते हैं। यदि यह कोई साधारण नश्वर वृक्ष होता तो मैं इसे पुनर्जीवित कर सकता था, लेकिन अनंत दीर्घायु का पर्वत एक पूर्व स्वर्ग की पवित्र भूमि है, वूझुआंग मंदिर पशु-उपहार के पश्चिमी महाद्वीप का गुफा स्वर्ग है, और मानवफल वृक्ष उस समय का जीवन-मूल है जब स्वर्ग और पृथ्वी अलग हुए थे। इसे पुनर्जीवित करना भला कैसे संभव है? मेरे पास कोई सूत्र नहीं है, बिलकुल भी नहीं।"

"तो फिर मुझे अब जाना होगा," बंदर ने उत्तर दिया, और जब सम्राट ने उसे एक प्याला जेड अमृत देकर रोकने की कोशिश की, तो उसने कहा, "यह इतना ज़रूरी है कि मैं यहाँ नहीं रुक सकता।" वह अपने बादल पर सवार होकर यिंगझोऊ द्वीप वापस चला गया, जो एक और अद्भुत स्थान था, जैसा कि यह कविता दर्शाती है:

मोतियों के वृक्ष बैंगनी धुंध से जगमगा रहे थे;
यिंगझोऊ के महल सीधे स्वर्ग की ओर ले जाते थे।
नीली पहाड़ियाँ, हरी नदियाँ और मनमोहक फूलों की सुंदरता; लोहे के समान कठोर जेड पर्वत।
समुद्र के ऊपर सूर्योदय के समय तीतरों ने आवाज लगाई।
दीर्घायु फीनिक्स पक्षी लाल बादलों में सांस लेते हैं।
लोगो, अपने जार में मौजूद दृश्य को इतनी गहराई से मत देखो:
घटनाओं की दुनिया से परे एक शाश्वत वसंत ऋतु विद्यमान है।

यिंगझोऊ पहुँचने पर उन्होंने देखा कि सिंदूर की चट्टान की तलहटी में एक मोती के पेड़

के नीचे बच्चों जैसे चेहरों वाले कई सफेद बालों वाले अमर शतरंज खेल रहे थे और शराब पी रहे थे। वे हंस रहे थे और गा रहे थे। जैसा कि कविता में कहा गया है, वहाँ थे प्रकाश से भरे शुभ बादल,

एक सुखद धुंध में तैरती हुई सुगंध।
गुफा के प्रवेश द्वार पर शानदार फीनिक्स पक्षी गा रहे हैं,
पर्वत की चोटी पर नाचते हुए काले सारस।
हल्के हरे रंग की कमल की जड़ और आड़ू ने उनकी शराब को आसानी से गले से उतारने में मदद की।
नाशपाती और चटख लाल खजूर ने उन्हें हजार साल का जीवन दिया।
उन दोनों में से किसी ने भी कभी शाही फरमान नहीं सुना था।
लेकिन उन सभी का नाम अमर लोगों की सूची में दर्ज किया गया था।
वे लहरों के साथ बहते और तैरते रहे।
निर्मल और सुरुचिपूर्ण अंदाज में स्वतंत्र और सहज।
दिनों के बीतने का उन पर कोई असर नहीं पड़ा;
उनकी स्वतंत्रता स्वर्ग और पृथ्वी द्वारा सुनिश्चित की गई थी।
काले बंदर जोड़े में पाए जाते हैं।
फल परोसते समय वे बेहद आकर्षक लग रहे हैं;
सफेद हिरण, दो-दो करके झुकते हुए,
सोच-समझकर फूल भेंट करें।

ये बूढ़े लोग सचमुच एक स्वतंत्र और सुखी जीवन जी रहे थे। "क्या आप मुझे अपने साथ खेलने देंगे?" बंदर ने ज़ोर से चिल्लाया, और जब अमर लोगों ने उसे देखा तो वे उसका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े। इस बात को साबित करने के लिए एक कविता भी है:

जब मानव फल के वृक्ष की जादुई जड़ टूट गई;
महान ऋषि इलाज की तलाश में अमर देवताओं के पास गए।
लालिमा लिए कोहरे में से रास्ता बनाते हुए, नौ प्राचीन लोग उस अनमोल जंगल से

बाहर आकर उनका अभिवादन करने आए।
बंदर, जो नौ पूर्वजों को जानता था, मुस्कुराते हुए बोला, "तुम नौ भाई बहुत अच्छा कर रहे हो।"
अध्याय 26
378
पश्चिम की यात्रा
“हे महान ऋषि, यदि आप पुराने समय में सीधे और सरल मार्ग पर चलते और स्वर्ग महल को नष्ट न करते, तो आप हमसे भी कहीं बेहतर स्थिति में होते। अब हमने सुना है कि आपने अपना मार्ग बदल लिया है और बुद्ध से मिलने पश्चिम जा रहे हैं। यहाँ आने के लिए आपको समय कैसे मिला?” बंदर ने उन्हें बताया कि वह पेड़ को ठीक करने का नुस्खा खोज रहा था।
"यह कितना भयानक काम है," वे भयभीत होकर बोले, "कितना भयानक काम है। सच कहें तो हमारे पास इसका कोई इलाज नहीं है।"
"तो फिर मुझे आपसे विदा लेनी होगी।"
नौ प्राचीनों ने उसे जैस्पर मदिरा और जेड कमल की जड़ से रोकने की कोशिश की, लेकिन बंदर बैठने से इनकार कर दिया और खड़ा रहा, उसने केवल एक प्याला मदिरा पी और कमल की जड़ का केवल एक टुकड़ा खाया। फिर वह जल्दी से यिंगझोऊ से निकलकर वापस महान पूर्वी सागर की ओर चला गया। जब उसने देखा कि पोटारका ज्यादा दूर नहीं है, तो उसने अपने बादल को पोटार चट्टान पर उतारा, जहाँ उसने बैंगनी बांस के जंगल में बोधिसत्व गुआनयिन को शास्त्रों की व्याख्या करते और स्वर्ग के सभी महान देवताओं, मोक्ष और ड्रैगन कन्या को बुद्ध के धर्म का उपदेश देते हुए देखा। इस विषय पर एक कविता इस प्रकार है: सागर की स्वामिनी के ऊंचे शहर के चारों ओर घना कोहरा छाया हुआ है,
और देखने लायक अद्भुत चीजों की कोई सीमा नहीं है।
शाओलिन मंदिर में सचमुच असली स्वाद मिलता है।
फूलों और फलों की खुशबू से सराबोर और चारों ओर लाल रंग के पेड़।
बोधिसत्व ने बंदर को आते देखा और पर्वत के महान संरक्षक देवता को उसका स्वागत करने का आदेश दिया। देवता बाँस के झुरमुट से निकले और चिल्लाए, "बंदर, तुम कहाँ जा रहे हो?"

“अरे राक्षस! बंदर चिल्लाते हुए बोला, ‘तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे बंदर कहकर पुकारने की? अगर मैंने उस समय तुम्हारी जान न बचाई होती, तो तुम काले पवन पर्वत पर एक राक्षस की लाश बनकर पड़े होते। अब तुम बोधिसत्व बन गए हो, ज्ञान प्राप्त कर लिया है और इस पवित्र द्वीप पर रहने आ गए हो जहाँ तुम्हें हर समय धर्म का उपदेश सुनने को मिलता है। क्या तुम्हें मुझे ‘महोदय’ कहकर नहीं पुकारना चाहिए?”

यह सचमुच बंदर की ही कृपा थी कि काले भालू को ज्ञान प्राप्त हुआ था और अब वह स्वर्ग के महान देवताओं में से एक के रूप में बोधिसत्व के पोटारक की रक्षा कर रहा था, इसलिए वह केवल मुस्कुराने के अलावा और कुछ नहीं कर सका और बोला,

“प्राचीन ऋषि कहते थे, हे महान ऋषि, कि एक सज्जन व्यक्ति द्वेष नहीं रखता। आपको इस बात की परवाह क्यों करनी चाहिए कि लोग आपको क्या कहते हैं? खैर, बोधिसत्व ने मुझे आपका स्वागत करने के लिए भेजा है।” यह कहकर बंदर गंभीर हो गया और महान ऋषि के साथ बैंगनी बांस के वन में चला गया और बोधिसत्व को प्रणाम किया।

"बंदर, तांग पुजारी कितनी दूर तक पहुँच गया है?" उसने पूछा।

"वह पशु-उपहार के पश्चिमी महाद्वीप में अनंत दीर्घायु के पर्वत पर पहुँच गया है," बंदर ने उत्तर दिया।

"क्या आप उस पर्वत पर स्थित वूझुआंग मंदिर में रहने वाले महान अमर झेन युआन से मिले हैं?" उसने पूछा।

"जब मैं वूझुआंग मंदिर में था, तब आपके शिष्य की मुलाकात महान अमर झेन युआन से नहीं हुई, इसलिए मैंने उनके मानवफल के पेड़ को नष्ट कर दिया और उन्हें नाराज कर दिया। परिणामस्वरूप, मेरे गुरु बहुत मुश्किल स्थिति में हैं और कोई प्रगति नहीं कर पा रहे हैं।"

"अरे दुष्ट बंदर," बोधिसत्व ने अब यह जानकर क्रोधित होकर कहा, "तुम्हारे पास बिल्कुल भी विवेक नहीं है।"

उनका वह मानवफल वृक्ष उस समय से जीवन-जड़ है जब स्वर्ग और पृथ्वी अलग हुए

थे, और मास्टर झेन युआन पृथ्वी के अमर लोगों के कुलपति हैं, जिसका अर्थ है कि मुझे भी उनके प्रति एक निश्चित सम्मान दिखाना होगा।

आपने उसके पेड़ को नुकसान क्यों पहुंचाया?

बंदर ने एक बार फिर झुककर कहा, "मुझे सचमुच नहीं पता था। वह उस दिन बाहर गए हुए थे और हमारी देखभाल के लिए केवल दो अमर युवक ही थे। जब सुअर ने सुना कि उनके पास यह फल है, तो वह भी इसे चखना चाहता था, इसलिए मैंने उसके लिए तीन फल चुरा लिए और हम सबने एक-एक खा लिया। जब उन्हें पता चला तो उन्होंने हमें खूब खरी-खोटी सुनाई, इसलिए मुझे गुस्सा आ गया और मैंने पेड़ को गिरा दिया। जब वह अगले दिन वापस आए तो उन्होंने हमारा पीछा किया और हम सबको अपनी आस्तीन में पकड़ लिया। हमें बांधकर पूरे दिन कोड़े मारे गए। हम उस रात भाग निकले, लेकिन उन्होंने हमें फिर से पकड़ लिया और अपनी आस्तीन में डाल लिया। हमारे भागने के सभी प्रयास विफल रहे, इसलिए मैंने उनसे वादा किया कि मैं पेड़ को ठीक कर दूंगा। मैं पूरे समुद्र में एक सूत्र की खोज कर रहा हूं और अमरों के तीनों द्वीपों पर जा चुका हूं, लेकिन देवता और अमर सब बेकार हैं, इसलिए मैंने यहां आकर आपकी पूजा करने का फैसला किया, बोधिसत्व, और आपको इसके बारे में सब कुछ बताने का। मैं आपसे दयापूर्वक प्रार्थना करता हूं कि मुझे एक सूत्र प्रदान करें ताकि मैं तांग पुजारी को बचा सकूं और उन्हें पश्चिम की ओर भेज सकूं। जितनी जल्दी हो सके दोबारा।

"द्वीपों में इसकी खोज करने के बजाय तुम पहले मुझसे मिलने क्यों नहीं आए?" बोधिसत्व ने पूछा।

यह सुनकर बंदर प्रसन्न हो उठा, "मैं तो भाग्यशाली हूँ! बोधिसत्व के पास अवश्य ही कोई उपाय होगा।" वह उनके पास गया और उनसे फिर से वह उपाय माँगने लगा।

उन्होंने कहा, "मेरे इस पवित्र फूलदान में मौजूद 'मीठी ओस' जादुई पेड़ों और पौधों के लिए एक उत्कृष्ट औषधि है।"

"क्या इसे कभी आजमाया गया है?" बंदर ने पूछा।

"हां," उसने कहा। "कैसे?" उसने पूछा।

"कुछ साल पहले लॉर्ड लाओ ज़ी ने मुझे जुए में हरा दिया था," उसने जवाब दिया, "और मेरी विलो की टहनी अपने साथ ले गए थे।"

उसने इसे अपनी औषधि-शोधन भट्टी में डाला और राख होने तक जलाया, फिर मुझे

वापस भेज दिया। मैंने इसे वापस फूलदान में रख दिया, और एक दिन और एक रात बाद यह पहले की तरह हरा-भरा और पत्तों से भरा हुआ था।

“मैं सचमुच भाग्यशाली हूँ,” बंदर ने कहा, “सचमुच भाग्यशाली। अगर यह एक राख को फिर से जीवित कर सकता है, तो जिसे केवल धक्का दिया गया है, उसके लिए तो यह आसान होना चाहिए।” बोधिसत्व ने अपने अनुयायियों को उपवन की देखभाल करने का निर्देश दिया क्योंकि वह कुछ समय के लिए जा रही थीं। फिर उन्होंने अपना कलश उठाया, और उनका सफेद तोता आगे-आगे गाते हुए चला गया जबकि बंदर उसके पीछे-पीछे चल रहा था। जैसा कि कविता में कहा गया है,

सुनहरे रंग के बालों वाली उस महिला का वर्णन मनुष्यों के लिए करना कठिन है;
वह सचमुच एक दयालु उद्धारक हैं।
यद्यपि युगों पहले वह निष्कलंक बुद्ध को जानती थी,
अब उसने मानव रूप धारण कर लिया था।
दुःख के सागर में कई जन्म लेने के बाद उसने लहरों को शुद्ध कर दिया था, और उसके हृदय में धूल का एक कण भी नहीं बचा था।

अध्याय 26

380

पश्चिम की यात्रा

वह मीठी ओस जो लंबे समय से चमत्कारिक नियम के अधीन थी
जादुई वृक्ष को अमर जीवन देना ही था।

महान अमर और तीनों सितारे अभी भी उच्च कोटि की चर्चा में मग्न थे, तभी उन्होंने बंदर को अपना बादल नीचे लाते देखा और उसे यह कहते हुए सुना, "बोधिसत्व यहाँ हैं। तुरंत आओ और उनका स्वागत करो।" तीनों सितारे और गुरु झेंग युआन, संजांग और उनके शिष्यों के साथ उनका स्वागत करने के लिए तुरंत बाहर आए। अपना बादल रोककर, उन्होंने पहले गुरु झेन युआन से बात की और फिर तीनों सितारों का अभिवादन किया, जिसके बाद वे अपने आसन पर चढ़ गईं। फिर बंदर तांग पुजारी, सुअर और साधु सैंड को सीढ़ियों के सामने प्रणाम करने के लिए बाहर ले गया, और मंदिर में उपस्थित सभी अमर भी उन्हें प्रणाम करने आए।

“हे महान अमर, संकोच करने की कोई आवश्यकता नहीं है,” बंदर ने कहा। “तुरंत एक धूपदानी तैयार करो और बोधिसत्व से अपने उस वृक्ष को ठीक करने की प्रार्थना

करो।" महान अमर झेन युआन ने बोधिसत्व को प्रणाम किया और उन्हें धन्यवाद दिया।

मैं इतनी हिम्मत कैसे कर सकता हूँ कि अपने मामलों से बोधिसत्व को परेशान करूँ?

"तांग पुरोहित मेरे शिष्य हैं, और बंदर ने आपको नाराज किया है, इसलिए यह उचित ही है कि मैं आपके अमूल्य वृक्ष की हानि की भरपाई करूं।"

“तो फिर आपको मना करने की कोई आवश्यकता नहीं है,” तीन सितारों ने कहा। “क्या हम आपको, बोधिसत्व, अपने बगीचे में आकर देखने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं?”

महान ऋषि ने धूपदानी लगाई और बगीचे की सफाई करवाई, फिर उन्होंने बोधिसत्व को आगे चलने को कहा। तीनों सितारे उनके पीछे-पीछे चले। संजांग, उनके शिष्य और मंदिर के सभी अमर देवता बगीचे में देखने गए, और उन्होंने देखा कि पेड़ जमीन पर पड़ा है, मिट्टी फटी हुई है, जड़ें नंगी हैं, पत्ते झड़ गए हैं और शाखाएँ सूख गई हैं। बोधिसत्व ने कहा, "बंदर, अपना हाथ आगे बढ़ाओ," और बंदर भाई ने अपना बायाँ हाथ आगे बढ़ाया। बोधिसत्व ने अपनी विलो की टहनी को अपने फूलदान में रखी मीठी ओस में डुबोया, फिर उससे बंदर की हथेली पर मरे हुओं को जीवित करने का मंत्र लिखा। उन्होंने बंदर से कहा कि वह उसे पेड़ की जड़ों पर तब तक रखे जब तक कि पानी निकलता हुआ न दिखाई दे। बंदर ने मुट्ठी भींची और उसे जड़ों के नीचे रख दिया; थोड़ी ही देर में साफ पानी का एक झरना तालाब का रूप लेने लगा।

"उस जल को पंच तत्वों से बने किसी भी पात्र से दूषित नहीं किया जाना चाहिए, इसलिए आपको उसे जेड के चम्मच से निकालना होगा। यदि आप पेड़ को सहारा देकर उसके ऊपर से पानी डालें, तो उसकी छाल और तना आपस में जुड़ जाएंगे, उसके पत्ते फिर से उग आएंगे, शाखाएँ फिर से हरी हो जाएंगी और फल फिर से दिखाई देने लगेंगे।"

“युवा ताओवादियों, अभी एक जेड का चम्मच लाओ,” बंदर ने कहा। “हम जैसे गरीब भिक्षुओं के पास अपने निर्धन मंदिर में जेड का चम्मच नहीं है। हमारे पास केवल जेड के चाय के प्याले और शराब के प्याले हैं। क्या इनसे काम चल जाएगा?”

“जब तक वे जेड पत्थर के हैं और पानी निकाल सकते हैं, तब तक ठीक है,” बोधिसत्व ने उत्तर दिया। “उन्हें बाहर लाओ और कोशिश करो।” फिर महान अमर ने कुछ लड़कों को बीस-तीस चाय के प्याले और चालीस-पचास शराब के प्याले लाने

और जड़ों के नीचे से साफ पानी निकालने के लिए कहा। बंदर, सुअर और साधु रेत ने पेड़ के नीचे अपने कंधे रखे, उसे सीधा खड़ा किया और मिट्टी से उसे ढक दिया। फिर उन्होंने मीठा झरने का पानी प्याले-प्याले बोधिसत्व को अर्पित किया, जिन्होंने विलो की टहनी से उसे पेड़ पर हल्का सा छिड़का और एक मंत्र पढ़ा। थोड़ी देर बाद जब सारा पानी पेड़ पर छिड़क दिया गया, तो पत्तियाँ सचमुच पहले की तरह घनी और हरी हो गईं, और वहाँ तेईस मानव फल उग आए।

शुद्ध पवन और उज्ज्वल चंद्रमा, दो अमर लड़कों ने कहा, "जब वह फल उस दिन गायब हुआ था, तब केवल बाईस ही थे; तो अब जब वह फिर से जीवित हो गया है, तो एक अतिरिक्त क्यों है?"

“समय ही इंसान की सच्चाई सामने लाता है,” बंदर ने जवाब दिया। “मैंने उस दिन सिर्फ तीन ही चुराए थे। तीसरा ज़मीन पर गिर गया, और स्थानीय देवता ने मुझे बताया कि यह खजाना धरती को छूते ही उसमें समा जाता है। सुअर ने मुझ पर उसे अपने लिए अतिरिक्त समझकर ले जाने का आरोप लगाया और मेरी प्रतिष्ठा धूमिल कर दी, लेकिन आखिरकार सच्चाई सामने आ ही गई।”

“मैंने पंच तत्वों से बने पात्रों का उपयोग इसलिए नहीं किया क्योंकि मुझे पता था कि इस प्रकार के फल पंच तत्वों से बने पात्रों से एलर्जी पैदा करते हैं,” बोधिसत्व ने कहा। महान अमर, अब अत्यंत प्रसन्न होकर, तुरंत स्वर्ण छड़ी मंगवाई और दस फल गिरा दिए। उन्होंने बोधिसत्व और तीन सितारों को उनके परिश्रम के लिए धन्यवाद देने हेतु मंदिर के मुख्य हॉल में एक भोज में आमंत्रित किया। सभी कनिष्ठ अमरों ने मेज, कुर्सियाँ और सिंदूर के कटोरे सजाए। बोधिसत्व को सम्मान के आसन पर बैठने के लिए कहा गया, उनके बाईं ओर तीन सितारे, दाईं ओर तांग पुजारी और उनके सामने मेज़बान के रूप में मास्टर झेन युआन बैठे थे।

उन्होंने एक-एक फल खाया, और इसके बारे में कुछ पंक्तियाँ हैं:

अनंत दीर्घायु के पर्वत पर स्थित प्राचीन सांसारिक स्वर्ग में, नर फल नौ हजार वर्षों में एक बार पकता है।

जब जादुई जड़ें नंगी हो गईं और शाखाएँ सूख गईं,

ओस की मीठी बूंदों ने पत्तियों और फलों में नई जान डाल दी।
तीनों सितारों का यह सुखद मिलन पूर्वनियोजित था;
यह नियति में लिखा था कि चारों भिक्षुओं का एक दूसरे से मिलना तय था।
अब जबकि उन्होंने इस भोज में मानव फल खा लिया है,
वे सभी शाश्वत यौवन का आनंद लेंगे।
बोधिसत्व और तीनों सितारों ने एक-एक खाया, तांग पुरोहित ने भी, जिसे अंततः एहसास हुआ कि यह एक अमर का खजाना है, और बंदर, सुअर और साधु सैंड ने भी। मास्टर झेन युआन ने भी एक खाया और मंदिर के अमरों ने आखिरी वाला आपस में बाँट लिया। बंदर ने बोधिसत्व को धन्यवाद दिया, जो पोतारका लौट गए, और तीनों सितारों को पेंगलाई द्वीप पर उनके घर की यात्रा के लिए विदा किया।
मास्टर झेन युआन ने कुछ गैर-मादक शराब निकाली और बंदर को अपना शपथित भाई बना लिया। यह एक ऐसा मामला था...
"लड़ाई नहीं करोगे तो दोस्त भी नहीं बना पाओगे," और इस तरह उनके दोनों परिवार एकजुट हो गए। उस रात संजांग और उनके शिष्य बहुत प्रसन्न होकर सो गए। उस आदरणीय पुजारी को अब घास से उगने वाला सिंदूर खाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया था।
लंबी आयु प्राप्त करना और दुष्ट आत्माओं और राक्षसों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता हासिल करना।
अगले एपिसोड में जानिए कि अगले दिन उन्होंने कैसे विदा ली।
अध्याय 26
382
पश्चिम की यात्रा
अध्याय 27
लाश राक्षस ने तीन बार तांग सान्ज़ांग को चकमा दिया
पवित्र भिक्षु ने क्रोधित होकर सुंदर बंदर राजा को विदा कर दिया।
अगले दिन भोर होते ही संज़ंग और उनके तीन शिष्यों ने अपना सामान समेटा और प्रस्थान किया। अब जब गुरु झेन युआन ने बंदर को अपना शपथित भाई बना लिया था और उससे इतना स्नेह प्राप्त कर लिया था, तो वे उसे जाने नहीं देना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उसे पाँच-छह दिन और अपने पास रखा। संज़ंग सचमुच एक नए

व्यक्ति में बदल गए थे, और घास लौटाने वाले सिंदूर का सेवन करने के बाद वे पहले से कहीं अधिक चुस्त और स्वस्थ हो गए थे। शास्त्रों को लाने का उनका दृढ़ संकल्प इतना प्रबल था कि वे और समय बर्बाद नहीं करना चाहते थे, इसलिए उनके पास रवाना होने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

दोबारा चलने के कुछ ही क्षण बाद, गुरु और शिष्यों ने अपने सामने एक ऊँचा पर्वत देखा। "मुझे डर है कि आगे का पर्वत घोड़े के लिए बहुत ऊँचा हो सकता है, इसलिए हमें इस बारे में सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए," संजांग ने कहा।

"चिंता मत करो, स्वामी," बंदर ने कहा, "हम इससे निपटने का तरीका जानते हैं।" वह अपने कंधे पर लाठी लिए घोड़े के आगे-आगे चल पड़ा और चट्टान की चोटी तक रास्ता साफ कर दिया। उसने देखा कि अंतहीन रूप से ऊबड़-खाबड़ चोटियों की कतारें ही कतारें थीं।

तेज धाराओं के घुमावदार तल।

बाघ और भेड़िये झुंड में दौड़ रहे थे।

हिरण और मुंटजैक झुंड में घूम रहे हैं।

असंख्य नदी-हिरण इधर-उधर दौड़ रहे थे।

और पहाड़ लोमड़ियों और खरगोशों से ढका हुआ था।

हजार गुना वजन वाले अजगर,

दस हजार फ़ैदम गहरे साँप;

विशालकाय अजगरों ने काले बादलों को फूँककर बाहर निकाला।

विशालकाय सांप भयानक हवाएं उगल रहे थे।

रास्तों के किनारे झाड़ियाँ और कांटे फैले हुए हैं।

पहाड़ी की चोटी पर चीड़ और देवदार के पेड़ भव्यता से खड़े थे।

जहां तक नजर जाती थी, जंगली अंजीर के पेड़ ही पेड़ दिखाई देते थे।

और क्षितिज तक फैले हुए सुगंधित फूल।

पर्वत की छाया समुद्र के उत्तर में पड़ती थी।

सप्तर्षि मंडल के तलवे के दक्षिण में बादल छंट गए।

ये विशाल चट्टानें आदिम सार जितनी ही प्राचीन थीं।
सूर्य की रोशनी में विशाल चट्टानें ठंडी पड़ जाती हैं।
संज़ंग तुरंत भयभीत हो गया, इसलिए बंदर ने अपनी कुछ तरकीबें आजमाईं। उसने अपनी लोहे की लाठी घुमाई और दहाड़ा, जिससे सभी भेड़िये, सांप, बाघ और तेंदुए भाग गए। फिर वे पहाड़ पर चढ़ने लगे, और जब वे एक ऊँची चोटी पार कर रहे थे, तब संज़ंग ने बंदर से कहा, "बंदर, मुझे दिन भर भूख लगी है, तो क्या तुम हमारे लिए कहीं से कुछ खाना ला सकते हो?"
“आप बड़े होशियार नहीं हैं, गुरुजी,” बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “हम एक पहाड़ पर हैं, जहाँ मीलों तक कोई गाँव या सराय नहीं है। अगर हमारे पास पैसे भी होते, तो भी खाने-पीने की कोई जगह नहीं होती, तो मैं कहाँ जाकर भीख माँगूँ?”
संज़ंग को गुस्सा आया और उसने बंदर को खूब खरी-खोटी सुनाई। “अरे बंदर,” उसने कहा, “क्या तुम्हें याद नहीं कि बुद्ध ने तुम्हें दोहरी सीमा वाले पहाड़ के नीचे एक पत्थर की कोठरी में कुचल दिया था, जहाँ तुम बोल तो सकते थे, लेकिन चल नहीं सकते थे? मैंने ही तुम्हारी जान बचाई थी, तुम्हें संन्यास की शपथ दिलाई थी और तुम्हें अपना शिष्य बनाया था। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतनी आलसी होने की? तुम मेहनत करने को तैयार क्यों नहीं हो?”
"मैं हमेशा प्रयास करता हूँ," बंदर ने कहा। "मैं कभी आलसी नहीं होता।"
"अगर तुम इतने मेहनती हो, तो जाओ और हमारे लिए कुछ खाना मांग लो। मैं भूखे पेट नहीं रह सकता। इसके अलावा, इस पहाड़ पर मौजूद जहरीली गैसों के कारण हम थंडर मॉनेस्ट्री तक कभी नहीं पहुंच पाएंगे।"
"कृपया क्रोधित न हों, स्वामी, और बोलना बंद करें। मैं आपके हठी स्वभाव को जानता हूँ—यदि मैं अधिक अवज्ञाकारी हुआ तो आप वह मंत्र बोलेंगे। बेहतर होगा कि आप घोड़े से उतरकर यहीं बैठ जाएँ, मैं किसी को ढूँढ़कर भोजन की भीख माँग लेता हूँ।"
बंदर एक ही छलांग में बादलों में ऊपर उछल गया, और अपने हाथ से अपनी आंखों को ढँकते हुए उसने चारों ओर देखा।
दुर्भाग्यवश, उसे चारों ओर सन्नाटे के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अनगिनत पेड़ों के बीच न कोई गाँव था, न घर, न ही मानव बस्ती का कोई और निशान। बहुत देर तक देखने के बाद उसे दक्षिण दिशा में एक ऊँचा पर्वत दिखाई दिया। उसकी

दक्षिणी ढलानों पर एक चमकीला लाल धब्बा था।
बंदर अपना बादल नीचे लेकर आया और बोला, "गुरुजी, खाने के लिए कुछ है।" संजांग ने उससे पूछा कि क्या है।
“यहाँ आस-पास कोई घर नहीं है जहाँ हम खाना माँग सकें,” बंदर ने जवाब दिया, “लेकिन दक्षिण की ओर एक पहाड़ पर लाल रंग का एक छोटा सा हिस्सा है, मुझे पूरा यकीन है कि वहाँ पके हुए जंगली आड़ू होंगे। मैं जाकर कुछ तोड़ लाऊँगा—तुम्हारा पेट भर जाएगा।”
"जिस भिक्षु को खाने के लिए आड़ू मिलें, वह भाग्यशाली है," संज़ंग ने कहा। बंदर ने अपना कटोरा उठाया और प्रकाश की एक किरण पर छलांग लगा दी। बस देखते रहिए कि वह कैसे कलाबाजी करते हुए, ठंडी हवा के एक झोंके की तरह तेज़ी से निकल गया। पल भर में वह दक्षिणी पर्वत पर आड़ू तोड़ रहा था।
एक कहावत है, "अगर पहाड़ ऊंचा है तो उसमें दुष्ट आत्माएं जरूर होंगी; अगर चोटी खड़ी है तो वहां बुरी आत्माएं निवास करेंगी।" इस पहाड़ पर सचमुच एक बुरी आत्मा थी जो बंदर को देखकर चौंक गई। वह नकारात्मक हवा के सहारे बादलों में से गुज़री और नीचे धरती पर आदरणीय संज़ंग को देखकर प्रसन्न होकर बोली, "कितनी अच्छी किस्मत है! घर पर तो सालों से पूरब से आए एक तांग भिक्षु के बारे में चर्चा हो रही है जो 'महान वाहन' लाने वाला है; वह सुनहरे झींगुर का पुनर्जन्म है और उसका मूल शरीर दस जन्मों में शुद्ध हुआ है। जो भी उसका मांस खाएगा वह अमर हो जाएगा। और आज, आखिरकार, वह आ गया है।" बुरी आत्मा संज़ंग को पकड़ने के लिए आगे बढ़ी, लेकिन संज़ंग के बाईं और दाईं ओर खड़े दो महान सेनापतियों को देखकर वह डर गई और उनके पास जाने से हिचकने लगी। वह सोचने लगी, आखिर वे कौन थे? वे वास्तव में पिग और फ्रायर सैंड थे, और यद्यपि उनकी शक्तियाँ कोई असाधारण नहीं थीं, पिग वास्तव में मार्शल तियान पेंग थे जबकि फ्रायर सैंड महान पर्दा उठाने वाले जनरल थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि उनके पूर्व विस्मयकारी गुण अभी तक अध्याय 27 में नहीं दिखाए गए थे।

यह डर इतना गहरा था कि शैतान पास नहीं आया। "मैं उन पर एक चाल चलूंगा और देखूंगा कि क्या होता है," आत्मा ने मन ही मन कहा।

उस भयानक दुष्ट आत्मा ने एक खोखले स्थान पर अपनी नकारात्मक ऊर्जा रोक दी और स्वयं को एक ऐसी लड़की में रूपांतरित कर लिया जिसका चेहरा चंद्रमा के समान गोल और फूल के समान सुंदर था। उसका माथा साफ और आँखें सुंदर थीं; उसके दाँत सफेद और होंठ लाल थे। उसके बाएँ हाथ में नीले रंग का मिट्टी का बर्तन और दाएँ हाथ में हरे रंग का चीनी मिट्टी का घड़ा था। वह तांग पुजारी की ओर पूर्व दिशा में चल पड़ी।

पवित्र भिक्षु ने अपने घोड़े को पहाड़ पर विश्राम कराया।

और अचानक ही एक खूबसूरत लड़की को पास आते हुए देखा।

उसकी हरे रंग की उंगलियों पर लिपटी आस्तीनें हल्की-हल्की लहरा रही थीं;

उसके लंबे स्कर्ट के नीचे से सुनहरे कमल जैसे पैर झाँक रहे थे।

उसके पाउडर लगे चेहरे पर पसीने की बूंदें फूल पर ओस की बूंदों जैसी थीं।

उसकी धूल से सनी भौंहें धुंध में खड़े एक विलो वृक्ष की तरह लग रही थीं।

वह उसे ध्यान से और गौर से देखता रहा।

जैसे ही वह उसके बिल्कुल पास आई।

"सुअर, साधु सैंड," संजांग ने उसे देखकर कहा, "क्या तुम्हें कोई आता हुआ नहीं दिख रहा, जबकि बंदर ने कहा था कि यह एक सुनसान और निर्जन जगह है?"

"तुम और साधु सैंड यहीं बैठे रहो, मैं जाकर देखता हूँ।" उस मूर्ख ने अपना रेक नीचे रख दिया, अपनी कमीज़ सीधी की, सज्जनता का ढोंग किया और लड़की को घूरते हुए उसका अभिवादन किया। हालाँकि दूर से उसे यकीन नहीं था, लेकिन अब वह स्पष्ट रूप से देख सकता था कि लड़की की हड्डियाँ बर्फ जैसी शुद्ध त्वचा के नीचे जेड की बनी हुई थीं।

उसकी गर्दन के पास से मलाई जैसे सुडौल स्तन दिखाई दे रहे थे।

उसकी पतली-सी भौहें काली और चमकदार थीं।

और उसकी बादामी आँखों से चाँदी के तारे चमक रहे थे।

वह चंद्रमा के समान सुंदर थी।

आकाश के समान पवित्र।

उसका शरीर विलो वृक्ष पर बैठी अबाबील चिड़िया के समान था।

उसकी आवाज जंगल में गा रहे ओरिओल पक्षी जैसी थी।
वह सूरज को अपने घेरे में समेटे हुए जंगली सेब के फूल की तरह थी।
वसंत ऋतु से भरा एक खिलता हुआ पेओनी का फूल।
जब मूर्ख सुअर ने उसकी सुंदरता देखी तो उसकी सांसारिक इच्छाएं जागृत हो गईं और वह अपने होठों से निकले अनियंत्रित शब्दों को रोक नहीं पाया। उसने कहा, "बोधिसत्व, आप कहाँ जा रही हैं और आपके हाथ में क्या है?" हालाँकि वह स्पष्ट रूप से एक दुष्ट राक्षसी थी, फिर भी वह इसे समझ नहीं पाया।
“आदरणीय महोदय,” लड़की ने तुरंत उत्तर दिया, “यह नीला बर्तन स्वादिष्ट चावल से भरा है, और हरे जार में तले हुए गेहूं के गोले हैं। मैं भिक्षुओं को भोजन कराने की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए विशेष रूप से यहाँ आई हूँ।” यह सुनकर सुअर अत्यंत प्रसन्न हुआ। वह तेज़ी से वापस आया और संज़ांग से बोला,
"गुरुजी, 'स्वर्ग अच्छे लोगों को पुरस्कृत करता है'। जब आपने भूख लगने पर मेरे बड़े भाई को भीख मांगने भेजा था, तो वह बंदर कहीं जाकर आड़ू तोड़ रहा था। वैसे भी, बहुत सारे आड़ू खाने से पेट खराब हो जाता है और दस्त लग जाते हैं। क्या आपको नहीं दिख रहा कि यह लड़की हम भिक्षुओं को भोजन कराने आ रही है?"
"तुम मूर्ख हो," संजांग ने जवाब दिया, जो आश्वस्त नहीं था, "हमें इस दिशा में एक भी सभ्य व्यक्ति नहीं मिला है, तो भिक्षुओं को भोजन कराने के लिए कोई कहाँ से आएगा?"
"तो फिर वो कौन है, मालिक?" सुअर ने कहा।
जब संजांग ने उसे देखा तो वह उछलकर खड़ा हो गया, अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़कर बोला,
"बोधिसत्व, आपका घर कहाँ है? आप कौन हैं? आप भिक्षुओं को भोजन कराने के लिए यहाँ किस प्रतिज्ञा से आए हैं?" हालाँकि वह स्पष्ट रूप से एक दुष्ट आत्मा थी, आदरणीय संज़ंग भी इसे नहीं देख पाए। संज़ंग द्वारा उसके बारे में पूछे जाने पर, दुष्ट आत्मा ने तुरंत उन्हें मूर्ख बनाने के लिए एक मीठी-मीठी कहानी गढ़ दी।
“यह पहाड़, जिसके पास सांप और जंगली जानवर नहीं जाते, 'व्हाइट टाइगर रिज' कहलाता है,” उसने कहा। “हमारा घर यहीं से पश्चिम की ओर, इसके तलहटी में स्थित है। मेरे माता-पिता वहीं रहते हैं और वे धर्मपरायण लोग हैं जो धर्मग्रंथ पढ़ते हैं

और दूर-दूर से आए भिक्षुओं को भोजन कराते हैं। क्योंकि उनका कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उन्होंने ईश्वर से आशीर्वाद मांगा। जब मेरा जन्म हुआ तो वे मेरी शादी किसी अच्छे परिवार में करना चाहते थे, लेकिन फिर उन्होंने मेरे लिए एक ऐसा पति ढूंढने का फैसला किया जो उनके घर में रहकर बुढ़ापे में उनकी देखभाल करे और उन्हें विधिपूर्वक अंतिम संस्कार करवाए।"

"बोधिसत्व, आपकी बात सही नहीं हो सकती," संज़ंग ने उत्तर दिया। "अनुलक्तों में लिखा है, 'माता-पिता के जीवित रहते लंबी यात्राएँ न करें; यदि यात्रा करनी ही पड़े तो एक निश्चित उद्देश्य रखें।' आपके माता-पिता घर पर हैं और उन्होंने आपके लिए पति भी ढूंढ लिया है, इसलिए आपको उन्हें अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने देना चाहिए। आप बिना किसी नौकर के अकेले पहाड़ों में क्यों भटक रही हैं? एक महिला को इस तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए।"

लड़की मुस्कुराई और तुरंत ही बड़ी सहजता से जवाब दिया: "हे पूज्यवर, मेरे पति कुछ सेवकों के साथ पहाड़ के उत्तर में एक घाटी में खुदाई कर रहे हैं, और मैं उनके लिए यह पका हुआ भोजन ले जा रही हूँ। जुलाई का महीना है और सारी फसलें पक रही हैं, इसलिए किसी के पास भी काम करने का समय नहीं है, और मेरे माता-पिता बूढ़े हैं, इसलिए मैं इसे स्वयं ले जा रही हूँ। अब जब मैं इतनी दूर से आप तीनों भिक्षुओं से मिली हूँ, तो मैं आपको यह भोजन देना चाहती हूँ क्योंकि मेरे माता-पिता बहुत धर्मनिष्ठ हैं। मुझे आशा है कि आप हमारी इस छोटी सी भेंट को अस्वीकार नहीं करेंगे।"

"आपकी मेहरबानी तो है," संज़ंग ने कहा, "लेकिन मेरा एक शिष्य फल तोड़ने गया है और जल्दी ही लौट आएगा, इसलिए हम आपका खाना नहीं खा सकते। इसके अलावा, अगर हम आपका खाना खा लेते तो आपके पति को पता चलने पर वे आप पर गुस्सा हो सकते थे, और हम भी मुसीबत में पड़ जाते।"

जब तांग पुजारी ने भोजन खाने से इनकार कर दिया, तो लड़की ने अपना सबसे प्यारा चेहरा बनाकर कहा, "मेरे माता-पिता का भिक्षुओं के प्रति दान मेरे पति के दान के आगे कुछ भी नहीं है, हे गुरुजी। वे एक धार्मिक व्यक्ति हैं जिनका जीवन भर का सुख पुलों की मरम्मत, सड़कों की सुधार, वृद्धों की देखभाल और गरीबों की सहायता करना

रहा है। जब उन्हें पता चलेगा कि मैंने आपको यह भोजन दिया है, तो वे मुझसे पहले से भी अधिक प्रेम करेंगे।" फिर भी संजांग ने भोजन करने से इनकार कर दिया।

पिग गुस्से से आग बबूला हो गया। होंठ सिकोड़ते हुए उसने नाराज़गी से बुदबुदाया, "धरती पर जितने भी भिक्षु हैं, उनमें से हमारे गुरु जैसा मूर्ख तो कोई हो ही नहीं सकता। जब हम तीन ही लोग हैं, तब भी ये पका हुआ खाना नहीं खाते। ये उस बंदर के लौटने का इंतज़ार कर रहे हैं, और फिर हमें इसे चार हिस्सों में बाँटना पड़ेगा।" बिना और बात बढ़ाए उसने बर्तन मुँह की तरफ झुकाया और खाने ही वाला था।

ठीक उसी क्षण, बंदर भाई दक्षिणी पर्वत से तोड़े गए आड़ुओं से भरा कटोरा लेकर कलाबाजी करते हुए वापस आ रहा था। जब उसने अपनी धधकती आँखों में सुनहरी पुतलियों से देखा कि वह लड़की एक दुष्ट आत्मा है, तो उसने कटोरा नीचे रख दिया, अपना डंडा उठाया और उसके सिर पर वार करने ही वाला था कि भयभीत संज़ंग ने उसे रोक लिया और कहा, "तुम्हें क्या लगता है कि तुम किसे मारने जा रहे हो?"

"तुम्हारे सामने खड़ी वह लड़की अच्छी नहीं है," उसने जवाब दिया। "वह एक दुष्ट आत्मा है जो तुम्हें मूर्ख बनाने की कोशिश कर रही है।"

"पुराने समय में तुम्हारी नज़र बहुत तेज़ होती थी, तुम नकलची हो," संज़ंग ने कहा, "लेकिन यह बकवास है। यह साक्षात बोधिसत्व हमें उत्तम इरादों से भोजन करा रही हैं, तो तुम उन्हें दुष्ट आत्मा कैसे कह सकते हो?"

"मालिक, आपको पता भी नहीं चलेगा," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "जब मैं जल परदे वाली गुफा में एक दुष्ट राक्षस था, तो मैं ऐसा ही करता था अगर मुझे इंसानी मांस खाने की इच्छा होती थी। मैं खुद को सोने-चांदी, या एक आलीशान घर, या शराब, या एक सुंदर लड़की में बदल लेता था। जो भी मूर्खता से इनमें से किसी एक पर मोहित हो जाता, वह मुझसे प्यार करने लगता, और मैं उसे गुफा में ले जाता, जहाँ मैं उसके साथ जो चाहता था वो करता। कभी-कभी मैं उसे भाप में पकाकर खाता था और कभी-कभी उबालकर, और जो मैं खत्म नहीं कर पाता था उसे बारिश के दिनों के लिए धूप में सुखाकर रख देता था।"

"अगर मुझे यहां आने में देर हो जाती, गुरुजी, तो आप उसके जाल में फंस जाते और वह आपको खत्म कर देती।" तांग पुजारी ने उसकी बात पर विश्वास करने से इनकार कर दिया और कहा कि वह एक अच्छी इंसान थी।

“मैं आपको जानता हूँ, स्वामी,” बंदर ने कहा। “उसका सुंदर चेहरा देखकर आप

कामुक हो गए होंगे। अगर ऐसा है, तो सुअर से कहिए कि कुछ पेड़ काट दे और साधु सैंड लुक को घास लाने भेज दे। मैं बढ़ई बनूँगा और हम यहाँ आपके लिए एक झोपड़ी बना देंगे जिसे आप और वह लड़की अपने वैवाहिक कक्ष के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। हम सब अपने-अपने रास्ते चले जाएँगे।”

क्या विवाह जीवन जीने का एक सार्थक तरीका नहीं है? फिर कुछ धर्मग्रंथ लाने के लिए इतनी मेहनत क्यों करनी चाहिए?" संजांग, जो हमेशा से ही इतने कोमल और गुणी व्यक्ति रहे थे, यह बात सहन नहीं कर सके। वे इतने शर्मिंदा हुए कि उनके मुंडे हुए सिर से लेकर कान तक का चेहरा लाल हो गया।

जब संज़ंग बेहद शर्मिंदा महसूस कर रहा था, तभी बंदर फिर भड़क उठा और उसने दुष्ट आत्मा के चेहरे पर प्रहार किया। वह दुष्ट आत्मा, जो कुछ तरकीबें जानती थी, ने अपने शरीर को त्यागने का एक जादुई तरीका अपनाया: बंदर की लाठी को आते देख उसने खुद को संभाला और भाग गया, और ज़मीन पर एक नकली लाश छोड़ गया।

संजांग भय से कांप उठा और मन ही मन बोला, "वह बंदर तो सरासर दुष्ट है। मेरी तमाम अच्छी सलाहों के बावजूद वह बेवजह लोगों को मार डालता है।"

“मालिक, क्रोधित मत होइए,” बंदर ने कहा। “आइए देखिए उसके बर्तन में क्या है।”

साधु सैंड ने संज़ंग को देखने में मदद की, और उसने देखा कि स्वादिष्ट चावल के बजाय, वह बर्तन लंबी पूंछ वाले कनखियों से भरा हुआ था। बर्तन में गेहूँ के गोले नहीं, बल्कि मेंढक और टोड थे, जो अब ज़मीन पर उछल-कूद कर रहे थे। संज़ंग को अब बंदर की बात पर यकीन होने लगा था।

लेकिन यह एक क्रोधित सुअर को जानबूझकर परेशानी पैदा करने से रोकने के लिए पर्याप्त नहीं था, जिसने कहा, "मालिक, वह लड़की एक स्थानीय ग्रामीण महिला थी जो खेतों में कुछ खाना ले जाते समय संयोग से हमसे मिली थी।"

यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि वह एक बुरी आत्मा थी। मेरा बड़ा भाई उस पर अपना डंडा चला रहा था, और उसने गलती से उसे मार डाला। वह जानबूझकर जादू से खाने को उन चीजों में बदलकर हमें धोखा देने की कोशिश कर रहा है क्योंकि वह

मुझे डर है कि तुम पट्टी कसने वाला मंत्र पढ़ दोगे। उसने तुम्हें बहला-फुसलाकर मंत्र

नहीं पढ़ने दिया है।
इससे संज़ंग पर फिर से अंधापन छा गया, जिसने इन शरारती टिप्पणियों पर विश्वास कर लिया और मंत्र पढ़ते हुए अपने हाथ से जादू कर दिया। "मेरा सिर दुख रहा है, मेरा सिर दुख रहा है," बंदर ने कहा। "रुको, कृपया रुक जाओ।"
अगर आप चाहें तो मुझे डांट सकते हैं।
"मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना," संज़ंग ने उत्तर दिया। "धर्मी व्यक्ति को हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए और उसके विचार सदाचारी होने चाहिए। फर्श साफ करते समय चींटियों को न मारें और पतंगों से बचने के लिए अपने दीपक के चारों ओर जाली लगाएँ। तुम लोगों की हत्या क्यों करते रहते हो? अगर तुम निर्दोष लोगों को ऐसे ही मारोगे तो शास्त्र लाने का कोई मतलब नहीं। वापस जाओ!"
"मैं वापस कहाँ जाऊँगा?" बंदर ने पूछा।
"मैं अब तुम्हें अपना शिष्य नहीं रखूंगा," संजांग ने कहा।
बंदर ने कहा, "यदि आप मुझे अपना शिष्य नहीं बनाएंगे, तो मुझे डर है कि आप शायद कभी पश्चिमी स्वर्ग तक नहीं पहुंच पाएंगे।"
"मेरा भाग्य स्वर्ग के हाथों में है," संज़ंग ने उत्तर दिया। "यदि किसी दुष्ट आत्मा ने मुझे खाने का निश्चय किया है, तो वह ऐसा करके ही रहेगी; और इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है। लेकिन यदि मुझे खाया नहीं जाना है, तो क्या आप मेरी आयु बढ़ा सकते हैं? आप लोग तुरंत चले जाइए।"
"अगर मुझे जाना ही पड़ा तो मैं चला जाऊंगा," बंदर ने कहा, "लेकिन मैं आपके प्रति अपनी दयालुता का कभी भी बदला नहीं चुका पाऊंगा।"
"मैंने तुम्हारा भला कौन सा उपकार किया है?" संजांग ने पूछा।
बंदर घुटनों के बल बैठ गया और प्रणाम करते हुए बोला, “जब मैंने स्वर्ग महल को नष्ट किया, तो मैंने खुद को बहुत खतरनाक स्थिति में डाल दिया था, और बुद्ध ने मुझे द्विसीमा पर्वत के नीचे पटक दिया था। सौभाग्य से बोधिसत्व गुआनयिन ने मुझे प्रतिज्ञा दिलाई, और आपने, गुरुजी, मुझे मुक्त कर दिया, इसलिए यदि मैं आपके साथ पश्चिमी स्वर्ग नहीं जाता, तो मैं एक ऐसे दुष्ट के रूप में देखा जाऊँगा जो एहसान नहीं लौटाता, और जिसका नाम हमेशा के लिए शापित हो जाएगा।”
क्योंकि संजांग एक दयालु और पवित्र भिक्षु थे, इसलिए बंदर की इस बेताब विनती ने उन्हें नरम पड़ने के लिए राजी कर लिया।

"तुम्हारी बातों को ध्यान में रखते हुए मैं तुम्हें इस बार माफ कर देता हूँ, लेकिन दोबारा ऐसा घिनौना व्यवहार मत करना। अगर तुमने दोबारा कभी ऐसी दुष्टता की तो मैं वह मंत्र बीस बार दोहराऊँगा।"

“अगर चाहो तो तीस कर दो,” बंदर ने जवाब दिया। “मैं किसी और को नहीं मारूंगा।” इतना कहकर उसने संज़ंग को घोड़े पर चढ़ने में मदद की और उसे अपने द्वारा तोड़े गए कुछ आड़ू दिए। कुछ आड़ू खाने के बाद तांग पुजारी की भूख कुछ देर के लिए कम हो गई।

बंदर के डंडे से मारे जाने से बचकर दुष्ट आत्मा हवा में उड़ गई। बादलों में दांत पीसते हुए, उसने चुपचाप नफरत से बंदर के बारे में सोचा: "अब मुझे पता चल गया है कि उसकी वो जादुई शक्तियां जिनके बारे में मैं सालों से सुनता आ रहा था, सच हैं। तांग पुजारी को पता ही नहीं चला कि मैं कौन हूं और वो खाना खा लेता। अगर वो ज़रा सा भी आगे झुककर उसे सूंघ लेता, तो मैं उसे पकड़ लेता और वो मेरा हो जाता।"

लेकिन वो बंदर आ गया, मेरी योजना बिगाड़ दी और अपनी लाठी से मुझे लगभग मार ही डाला। अगर मैंने अब उस साधु को छोड़ दिया तो मेरी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी, इसलिए मैं उसे धोखा देने की एक और कोशिश करूंगा।

उस भयानक दुष्ट आत्मा ने अपना नकारात्मक बादल उतारा, खुद को झटका दिया और अस्सी वर्ष की एक बूढ़ी औरत में बदल गई जो टेढ़े हैंडल वाली बांस की छड़ी के सहारे लड़खड़ाते हुए रो रही थी।

"यह तो बहुत भयानक है, स्वामी," सुअर ने उसे देखकर भयभीत होकर कहा। "उसकी माँ उसे ढूंढने आई है।"

अध्याय 27

"किसके लिए?" तांग पुजारी ने पूछा।

"मेरे बड़े भाई ने उसी की बेटी को मारा होगा," पिग ने कहा। "यह लड़की की माँ ही होगी जो उसे ढूंढ रही होगी।"

“बकवास मत करो,” बंदर ने कहा। “वह लड़की अठारह साल की थी और यह बुढ़िया अस्सी साल की है। साठ साल से ज़्यादा उम्र में भला उसका बच्चा कैसे हो सकता है? वह ज़रूर नकली है। मुझे जाकर देखने दो।” शानदार बंदर जल्दी से उसकी जाँच करने

गया और उसने देखा कि वह राक्षसी एक बुढ़िया में बदल गई थी।
जिन मंदिरों का रंग जमी हुई बर्फ की तरह सफेद था।
वह धीरे-धीरे लड़खड़ाते हुए सड़क पर चलने लगी।
वह भयभीत और कांपती हुई आगे बढ़ रही थी।
उसका शरीर कमजोर और दुबला-पतला था।
उसका चेहरा मुरझाई हुई पत्तागोभी के पत्ते जैसा था।
उसकी गाल की हड्डी ऊपर की ओर मुड़ी हुई थी।
उसके होंठों के किनारे नीचे की ओर झुक गए।
वृद्धावस्था की तुलना युवावस्था से कैसे की जा सकती है?
उसका चेहरा किसी तहबंद थैले की तरह झुर्रियों से भरा हुआ था।
यह जानते हुए कि वह एक दुष्ट आत्मा है, बंदर ने बहस करने का समय नहीं लिया, बल्कि अपना डंडा उठाया और उसके सिर पर वार किया। वार की गड़गड़ाहट सुनकर, आत्मा ने फिर से खुद को संभाला और अपना असली रूप फिर से प्रकट किया। वह नकली लाश रास्ते के किनारे गिर पड़ी। संजांग इतना भयभीत हुआ कि वह घोड़े से गिर गया और रास्ते के किनारे लेटकर बीस बार बंधन कसने का मंत्र जपने लगा। बेचारे बंदर का सिर इतनी जोर से दबा था कि वह पतली कमर वाली लौकी जैसा लग रहा था। दर्द असहनीय था, और वह अपने स्वामी की ओर लुढ़क कर गिड़गिड़ाने लगा, "बस करो, स्वामी। जो चाहो कहो।"
“मुझे कुछ नहीं कहना,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “यदि कोई भिक्षु अच्छे कर्म करता है तो वह नरक में नहीं जाएगा। मेरे तमाम उपदेशों के बावजूद तुम हत्या करते हो। ऐसा कैसे कर सकते हो? एक को मारते ही दूसरे को मार देते हो। यह घोर अन्याय है।”
"वह एक दुष्ट आत्मा थी," बंदर ने जवाब दिया।
"बकवास, बंदर," तांग पुजारी ने कहा, "जैसे कि इतने सारे राक्षस हो सकते हैं! तुम्हारा सुधरने का ज़रा भी इरादा नहीं है, और तुम जानबूझकर हत्या करने वाले हो। यहाँ से चले जाओ।"
"क्या आप मुझे फिर से भेज रहे हैं, स्वामी?" बंदर ने पूछा। "अगर ज़रूरी हुआ तो मैं चला जाऊंगा, लेकिन एक बात है जिस पर मैं सहमत नहीं होऊंगा।"

"वह क्या होगा?" संजांग ने पूछा।
"गुरुजी," सुअर ने बीच में कहा, "वह सामान को आप और उसके बीच बाँटना चाहता है। वह कई वर्षों से आपके साथ भिक्षु रहा है, लेकिन उसे कोई अच्छा इनाम नहीं मिला है। आप उसे खाली हाथ नहीं जाने दे सकते।"
बेहतर होगा कि उसे बंडल में से एक घिसा-पिटा कुर्ता और एक फटी हुई टोपी दे दी जाए।"
यह सुनकर बंदर गुस्से से उछल पड़ा। उसने कहा, "मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, लंबे थूथन वाले मूर्ख! मैं सच्चा बौद्ध रहा हूँ और मुझमें लालच या लोभ का कोई अंश नहीं है। मैं निश्चित रूप से इस बोझ का हिस्सा नहीं चाहता।"
"अगर तुम न तो लोभी हो और न ही लालची," संजांग ने कहा, "तो फिर तुम चले क्यों नहीं जाते?"
"सच कहूँ तो, गुरुजी," उसने उत्तर दिया, "जब मैं पुष्प और फल पर्वत पर स्थित जल परदे की गुफा में रहता था और सभी महान नायकों को जानता था, तब मैंने बहत्तर अन्य राक्षस राजाओं को अपने अधीन कर लिया था और मेरे अधीन सैंतालीस हजार छोटे राक्षस थे। मैं बैंगनी सोने का मुकुट और उत्तम जेड की कमरबंद वाला पीला वस्त्र पहनता था। मेरे पैरों में बादल पर चलने वाले जूते थे और मेरे हाथों में 'जैसा आप चाहें' सोने की पट्टी वाला डंडा था। मैं उस समय सचमुच बहुत प्रभावशाली था। लेकिन जब मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ और मैंने पश्चाताप किया, तो मैंने अपना सिर मुंडवा लिया और आपके शिष्य के रूप में बौद्ध धर्म अपना लिया। अगर मैं इस सोने की पट्टी को सिर पर बांधकर वापस जाता, तो मैं अपने पुराने मित्रों का सामना नहीं कर पाता। इसलिए, गुरुजी, यदि आप मुझे अब और नहीं चाहते, तो कृपया पट्टी ढीली करने का मंत्र बोलिए और मैं इसे उतारकर आपको वापस दे दूंगा। मैं खुशी-खुशी इसे किसी और के सिर पर बांधने के लिए सहमत हूँ। जैसा कि मैं रहा हूँ इतने लंबे समय तक आपका शिष्य रहा हूँ, तो निश्चित रूप से आप मुझ पर भी यह दया दिखा सकते हैं।" संजांग को गहरा सदमा लगा।
"बंदर," उसने कहा, "बोधिसत्व ने मुझे गुप्त रूप से बंधन कसने का मंत्र सिखाया था, लेकिन बंधन ढीला करने का नहीं।"
"तो फिर आपको मुझे अपने साथ आने देना होगा," बंदर ने जवाब दिया।

"तो उठो," संजांग ने कहा, क्योंकि उसे लगा कि उसके पास कोई विकल्प नहीं है। "मैं तुम्हें सिर्फ एक बार फिर माफ कर रहा हूँ। लेकिन तुम्हें फिर कभी हत्या नहीं करनी चाहिए।"

"मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा," बंदर ने कहा, "फिर कभी नहीं।" उसने अपने स्वामी को घोड़े पर चढ़ने में मदद की और आगे-आगे चलने लगा।

वह दुष्ट आत्मा, जो बंदर के दूसरे प्रहार पर भी नहीं मरी थी, हवा में तैरते हुए प्रशंसा से भर उठी। "वाह, क्या शानदार बंदर राजा है! और क्या पैनी नज़र है! मेरे दोनों रूपों में भी उसने मुझे पहचान लिया। वे भिक्षु तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं, और जैसे ही वे पहाड़ पार करके पश्चिम की ओर पंद्रह मील दूर जाएंगे, वे मेरे क्षेत्र से बाहर हो जाएंगे। और जो दूसरे राक्षस और दानव उन्हें पकड़ेंगे, वे हंसते-हंसते लोटपोट हो जाएंगे, और मैं दुःख से टूट जाऊंगा। मुझे उन्हें फिर से चकमा देने की कोशिश करनी होगी।" उस उत्कृष्ट दुष्ट आत्मा ने अपनी नकारात्मक ऊर्जा को पहाड़ की ढलान पर उतारा और एक झटके में खुद को एक बूढ़े व्यक्ति में बदल लिया।

उसके बाल प्राचीन पेंग के बालों की तरह सफेद थे।

उनकी कनपटी दीर्घायु के तारे की तरह प्राचीन थी।

जेड की आवाज उसके कानों में गूंज रही थी।

और उसकी आँखों में सुनहरे तारे चमक रहे थे।

वह अजगर के सिर वाली छड़ी पर झुक गया,

और उसने सारस के पंखों का लबादा पहन रखा था।

उसने अपने हाथों में प्रार्थना की माला को छुआ।

बौद्ध सूत्रों का पाठ करते समय।

जब संज़ंग ने घोड़े की पीठ से उसे देखा तो उसने बड़े हर्ष से कहा, "अमिताभ बुद्ध! पश्चिम सचमुच एक धन्य भूमि है। वह बूढ़ा व्यक्ति कठिन परिश्रम से शास्त्रों का पाठ कर रहा है, जबकि वह मुश्किल से चल पा रहा है।"

"मालिक," सुअर ने कहा, "उसके प्रति इतना नरम रवैया मत अपनाइए। वह हमें मुसीबत में डाल देगा।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?" संजांग ने पूछा।
"मेरे बड़े भाई ने बेटी और बूढ़ी औरत की हत्या कर दी है, और यह बूढ़ा आदमी उन्हें ढूंढने आ रहा है।"
अगर हम उसके हाथों में पड़ गए तो तुम्हें अपनी जान देकर इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। तुम्हें मौत की सजा मिलेगी, और मुझे तुम्हारा साथी होने के लिए लंबी सजा मिलेगी। फ्रायर सैंड को आदेश देने के लिए देश निकाला दिया जाएगा। वह बड़ा भाई जादू से गायब हो जाएगा, और हम तीनों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।
“ऐसी बकवास मत करो, मूर्ख,” बंदर ने कहा। “तुम स्वामी को डरा रहे हो। रुको, मैं जाकर एक बार फिर देख लेता हूँ।” अपने शरीर में गदा छिपाकर वह राक्षस के पास गया और बोला, “आप कहाँ जा रहे हैं, आदरणीय महोदय? और चलते-चलते आप शास्त्र क्यों पढ़ रहे हैं?”
राक्षस अपने प्रतिद्वंद्वी को पहचान न पाने के कारण, महान ऋषि बंदर को केवल एक राहगीर समझ बैठा और बोला, "हे प्रभु, मेरा परिवार यहाँ पीढ़ियों से रहता आया है, और मैंने जीवन भर अच्छे कर्म किए हैं, भिक्षुओं को भोजन कराया है, शास्त्र पढ़े हैं और बुद्ध का नाम जपा है। दुर्भाग्य से मेरा कोई पुत्र नहीं है, केवल एक पुत्री है, जो अपने पति के साथ घर पर रहती है। वह आज सुबह भोजन लेकर खेतों में गई थी, और मुझे डर है कि उसे किसी बाघ ने खा लिया होगा। मेरी पत्नी उसे ढूंढने गई थी, लेकिन वह भी वापस नहीं आई। मुझे नहीं पता कि उनके साथ क्या हुआ है, इसलिए मैं उन्हें ढूंढने आया हूँ। यदि वे मर गए हैं, तो मुझे उनकी अस्थियाँ एकत्र करके उन्हें सम्मानजनक अंतिम संस्कार के लिए वापस ले जाना होगा।"
बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मैं भेस बदलने में माहिर हूँ, इसलिए मुझे धोखा देने की कोशिश मत करो। तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते। मैं जानता हूँ कि तुम एक दुष्ट आत्मा हो।" राक्षस डर से अवाक रह गया। बंदर ने अपनी लाठी लहराई और सोचा, "अगर मैं उसे नहीं मारूंगा तो वह भाग जाएगा; लेकिन अगर मैंने मार दिया, तो मेरा स्वामी वह मंत्र पढ़ेगा।"
“लेकिन अगर मैं उसे नहीं मारूंगा,” वह सोचने लगा, “तो इस राक्षस के गुरु को अगवा करने का कोई और मौका मिलते ही, उन्हें बचाने में मुझे बहुत सोच-विचार और मेहनत करनी पड़ेगी। सबसे अच्छा यही है कि मैं उसे मार डालूं। अगर मैं उसे लाठी से मार डालूंगा तो गुरु मंत्र बोलेंगे, लेकिन फिर तो ‘एक खूंखार बाघिन भी अपने बच्चों

को नहीं खाती'। मैं अपनी मीठी बातों और सोच-समझकर चुने गए शब्दों से गुरु को मना लूंगा।" महान ऋषि ने मंत्र बोला और स्थानीय देवताओं और पर्वतों के देवताओं को पुकारा, "इस दुष्ट आत्मा ने मेरे गुरु को तीन बार धोखा देने की कोशिश की है, और अब मैं इसे मार डालूंगा। मैं चाहता हूं कि आप मेरे आस-पास के वातावरण में साक्षी बनें। मुझे छोड़कर मत जाना!"

यह आदेश सुनकर सभी देवताओं को आज्ञा माननी पड़ी और वे बादलों से देखने लगे। महान ऋषि ने अपना गदा उठाया और राक्षस पर प्रहार किया। अंततः वह मर गया।

तांग पुरोहित अपने घोड़े की पीठ पर भय से कांप रहा था, वह कुछ बोल नहीं पा रहा था।

सुअर उसके बगल में खड़ा था और हंसते हुए बोला, "वह बंदर तो कमाल का है, है ना! वह पागल हो गया है। उसने कुछ ही घंटों की यात्रा में तीन लोगों को मार डाला है।"

अध्याय 27

391

पश्चिम की यात्रा

तांग पुजारी मंत्र बोलने ही वाले थे कि बंदर ने खुद को उनके घोड़े के सामने फेंक दिया और पुकार कर कहा, "मालिक, मत बोलिए, मत बोलिए। आकर देख लीजिए।" अब वह धूल से सनी हड्डियों का ढेर मात्र रह गया था।

"वुकोंग, उसे अभी-अभी मारा गया है," संजांग ने आश्चर्य से कहा, "तो वह कंकाल में क्यों बदल गया है?"

"यह एक दानव का शव था जिसमें जादुई शक्तियां थीं और जो लोगों को धोखा देकर उनका विनाश करता था। अब जब मैंने इसे मार डाला है, तो यह अपने मूल रूप में लौट आया है। इसकी रीढ़ की हड्डी पर लिखा है कि इसे 'लेडी व्हाइट बोन' कहा जाता है।"

संजांग को यकीन हो गया था, लेकिन पिग को फिर से मुसीबत खड़ी करनी थी।

"गुरुजी," उसने कहा, "उसे डर है कि आप ये शब्द कह देंगे क्योंकि उसने उसे अपने डंडे से बेरहमी से मारकर जान से मार डाला है, इसलिए उसने आपको बेवकूफ बनाने के लिए उसे इस तरह दिखाया है।" तांग पुजारी, जो वास्तव में भोला था, अब पिग की बात पर विश्वास कर बैठा और उसने मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया।

दर्द को सहन न कर पाने के कारण बंदर रास्ते के किनारे घुटनों के बल बैठ गया और रोते हुए बोला, "रुको, रुको। जो कुछ कहना है कहो।"

"बंदर," संज़ंग ने कहा, "मुझे तुमसे और कुछ नहीं कहना। यदि कोई भिक्षु सही कर्म करता है, तो वह प्रतिदिन अदृश्य रूप से बढ़ता है, जैसे वसंत ऋतु में बगीचे की घास बढ़ती है, जबकि दुष्ट व्यक्ति पत्थर की तरह दिन-प्रतिदिन धीरे-धीरे नष्ट होता जाता है। तुमने इस सुनसान और वीरान जगह में एक के बाद एक तीन लोगों को मार डाला है, और यहाँ कोई भी तुम्हें पकड़ने या तुम्हारे खिलाफ मुकदमा चलाने वाला नहीं है। लेकिन अगर तुम किसी शहर या किसी अन्य भीड़भाड़ वाली जगह पर जाकर उस खूनी लाठी से हमला करने लगोगे, तो हम बड़ी मुसीबत में पड़ जाएँगे और हमारे बचने का कोई रास्ता नहीं होगा। वापस जाओ!"

“मालिक, आप मुझे इसके लिए दोषी नहीं ठहरा रहे हैं,” बंदर ने उत्तर दिया, “क्योंकि वह दुष्ट स्पष्ट रूप से एक दुष्ट राक्षस था जो आपको जान से मारना चाहता था। लेकिन आपने उसे मारकर मेरी जान बचाई है, इसके लिए आभारी होने के बजाय, आप उस मूर्ख की बकवास पर विश्वास करके मुझे बार-बार भगा रहे हैं। जैसा कि कहावत है, आपको कोई भी काम तीन बार से ज़्यादा नहीं करना चाहिए। अगर मैं अभी नहीं गया तो मैं एक नीच और निर्लज्ज प्राणी कहलाऊंगा। मैं जाऊंगा, मैं ज़रूर जाऊंगा, लेकिन फिर आपकी देखभाल करने के लिए आपके पास कौन बचेगा?”

"अरे बंदर," संज़ंग ने जवाब दिया, "तुम दिन-ब-दिन बदतमीज़ होते जा रहे हो। तुम्हें लगता है कि तुम अकेले हो। पिग और फ्रायर सैंड के बारे में क्या? क्या वे इंसान नहीं हैं?"

जब बंदर ने सुना कि सुअर और साधु सैंड भी योग्य व्यक्ति हैं, तो उसे बहुत दुख हुआ। उसने कहा, "यह सुनकर बहुत बुरा लगा, स्वामी जी। जब आप चांगआन से निकले थे, तब लियू बोकिन ने आपकी मदद की थी, और जब आप दोहरी सीमा पर्वत पर पहुँचे, तो आपने मुझे बचाया और मैंने आपको अपना स्वामी मान लिया। मैं प्राचीन गुफाओं और घने जंगलों में जाकर राक्षसों और दानवों को पकड़ता रहा हूँ। मैंने सुअर और साधु सैंड को अपना बनाया है, और इसके लिए मुझे बहुत संघर्ष करना पड़ा है। लेकिन आज आप मूर्ख बन गए हैं और मुझे वापस भेज रहे हैं। 'जब सारे पक्षी मारे जाते हैं, तब धनुष रख दिया जाता है, और जब सारे खरगोश मारे जाते हैं, तब कुत्तों को पकाया जाता है।' खैर! काश आपके पास वह बंधन कसने वाला मंत्र न होता।"

"मैं इसे दोबारा नहीं सुनाऊंगा," संजांग ने कहा।

“ऐसा मत कहो,” बंदर ने जवाब दिया। “अगर कभी तुम ऐसे दुष्ट राक्षसों से घिर जाओ जिनसे तुम बच न सको, और अगर सुअर और साधु सैंड तुम्हें बचा न सकें, तो मुझे याद करना। अगर असहनीय हो जाए, तो मंत्र बोलना। मेरा सिर दर्द करेगा चाहे मैं तुमसे कई दसियों हज़ार मील दूर ही क्यों न रहूँ। लेकिन अगर मैं तुम्हारे पास वापस आ जाऊँ, तो फिर कभी यह मंत्र मत बोलना।”

बंदर की बातें सुनकर तांग पुजारी का गुस्सा बढ़ता ही गया और घोड़े से गिरते हुए उसने साधु सैंड को थैले से कागज और ब्रश निकालने को कहा। फिर उसने एक नदी से पानी लिया, पत्थर पर स्याही रगड़ी, बर्खास्तगी का पत्र लिखा और बंदर को सौंप दिया।

अध्याय 27

"यह लिखित में है," उसने कहा। "मैं तुम्हें एक पल भी अपना शिष्य नहीं रखना चाहता। अगर मैं तुम्हें फिर कभी देखूं तो मैं अविची नरक में गिर जाऊं।"

बंदर ने झट से दस्तावेज़ उठाया और बोला, "गुरुजी, शपथ लेने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं जा रहा हूँ।" उसने कागज़ को मोड़कर अपनी आस्तीन में रख लिया और फिर संज़ंग को मनाने की कोशिश की। "गुरुजी, मैंने आपके साथ कुछ समय बिताया है और बोधिसत्व से शिक्षा भी प्राप्त की है। अब मुझे यात्रा के बीच में ही निकाल दिया जा रहा है, जबकि मैंने अभी तक कुछ भी हासिल नहीं किया है। कृपया बैठ जाइए और मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए, तब मुझे जाने का इतना दुख नहीं होगा।"

तांग पुजारी ने मुंह फेर लिया और उसकी ओर देखे बिना बुदबुदाते हुए कहा, "मैं एक अच्छा भिक्षु हूँ, और मैं तुम्हारे जैसे बुरे लोगों का सम्मान स्वीकार नहीं करूँगा।" यह देखकर कि संज़ंग उनका सामना करने से इनकार कर रहा है, महान ऋषि ने जादू का प्रयोग करके अपने लिए अतिरिक्त शरीर बना लिए। उन्होंने अपने सिर के पीछे से तोड़े गए तीन बालों पर जादुई साँस फूँकी और चिल्लाए, "रूप बदलो!" वे तीन और बंदरों में बदल गए, जिससे असली बंदर सहित कुल चार बंदर हो गए, और उन्होंने गुरु को चारों ओर से घेर लिया और उनके सामने सिर झुकाया। बाएँ या दाएँ हटकर उनसे बचने में असमर्थ, संज़ंग को उनका सम्मान स्वीकार करना पड़ा।

महान ऋषि उछल पड़े, खुद को झटका दिया, अपने बाल समेटे और साधु सैंड को ये निर्देश दिए: "मेरे भाई, तुम एक अच्छे आदमी हो, इसलिए ध्यान रखना कि पिग को बकवास करने से रोको और यात्रा में बहुत सावधान रहना। अगर कभी भी दुष्ट आत्माएं हमारे गुरु को पकड़ लें, तो उन्हें बताना कि मैं उनका वरिष्ठ शिष्य हूँ। पश्चिम के बालों वाले शैतानों ने मेरी शक्तियों के बारे में सुना है और वे उन्हें नुकसान पहुंचाने की हिम्मत नहीं करेंगे।"

तांग पुरोहित ने कहा, "मैं एक अच्छा भिक्षु हूँ, और मैं तुम्हारे जैसे बुरे व्यक्ति का नाम कभी नहीं लूँगा। वापस जाओ।" जब उसके गुरु ने बार-बार अपना मन बदलने से इनकार कर दिया, तो बंदर के पास जाने के अलावा कोई चारा नहीं बचा।

उसे देखो:

अपने आँसू रोकते हुए उसने अपने स्वामी को विदाई दी।

फिर उन्होंने दुखी मन से, लेकिन सावधानीपूर्वक, फ्रायर सैंड को निर्देश दिए।

उसके सिर ने पहाड़ी की घास को अलग कर दिया।

उसके पैरों ने लताओं को हवा में उछाल दिया।

आकाश और पृथ्वी पहिए की तरह घूमने लगे;

पहाड़ों और समुद्रों के ऊपर से उड़ान भरने में कोई भी उसे हरा नहीं सकता था।

पल भर में उसका कोई निशान नहीं दिखाई दिया;

उसने पलक झपकते ही अपनी पूरी यात्रा को दोबारा तय कर लिया।

अपने गुस्से को दबाते हुए, बंदर अपने स्वामी को छोड़कर सीधे फूलों और फलों के पहाड़ पर स्थित जल परदे वाली गुफा में अपने कलाबाज़ी करते बादल पर सवार होकर वापस चला गया। वह अकेला और दुखी महसूस कर रहा था जब उसे पानी की आवाज़ सुनाई दी। जब उसने हवा में रहते हुए चारों ओर देखा, तो उसे एहसास हुआ कि ये पूर्वी सागर की लहरें थीं। इस दृश्य ने उसे तांग पुजारी की याद दिला दी और वह अपने आँसू नहीं रोक पाया। (अध्याय 27)

उसके गालों पर आँसू बह रहे थे। उसने अपना बादल रोक दिया और जाने से पहले काफी देर तक वहीं रुका रहा। अगर आपको नहीं पता कि उसके जाने के बाद क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 28
फूलों और फलों के पहाड़ पर शैतान उठते हैं
काले चीड़ के जंगल में संजांग की मुलाकात एक राक्षस से होती है
महान ऋषि पूर्वी सागर को निहार रहे थे और तांग पुजारी द्वारा भगाए जाने पर उदास होकर आह भर रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं पाँच सौ वर्षों से इस तरफ नहीं आया हूँ।"
जैसे ही उन्होंने समुद्र को देखा, धुंध से भरा विशाल जल फैला हुआ था।
असीम हैं वो विशाल लहरें।
विशाल और धुंध से ढका जल आकाशगंगा तक फैला हुआ था;
असीम और शक्तिशाली लहरें पृथ्वी की धमनियों से जुड़ी हुई थीं।
ज्वार उग्र होकर आने लगा,
पानी चारों ओर घूमने लगा।
बढ़ती लहरें
वसंत ऋतु में गरजने वाली बिजली की तरह दहाड़ा;
घूमता हुआ पानी
गर्मी के तूफान की तरह गरज रहा था।
ड्रैगन पर सवार धन्य प्राचीन
उनके आने-जाने पर जरूर उन्होंने भौंहें चढ़ाई होंगी;
अमर युवक सारसों पर उड़ रहे हैं
जब वे ऊपर से गुजरे तो निश्चित रूप से घबराहट महसूस हुई।
समुद्र तट के पास कोई गांव नहीं थे।
और समुद्र के किनारे शायद ही कोई मछली पकड़ने वाली नाव दिखाई देती थी।
लहरों की चोटियाँ अनादि काल से जमी बर्फ की तरह थीं;
हवा ने जुलाई में ही पतझड़ ला दिया।

जंगली जानवर बेखौफ घूमते थे।
समुद्री पक्षी लहरों में तैर रहे थे।
आस-पास कोई मछुआरा नहीं दिख रहा था।

और वहाँ केवल समुद्री पक्षियों की चीखने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
हालांकि मछलियाँ समुद्र की तलहटी में खुश थीं,
ऊपर उड़ रहे जंगली हंसों में चिंता की लहर दौड़ गई।
बंदर ने छलांग लगाकर पूर्वी महासागर को पार किया और जल्द ही फूलों और फलों के पहाड़ पर वापस आ गया।
जब उसने अपने बादल को नीचे उतारा और चारों ओर देखा, तो उसने पाया कि पहाड़ पर सारी वनस्पति नष्ट हो गई थी और कोहरा पूरी तरह से गायब हो गया था। चोटियाँ धंस गई थीं और जंगल सूखकर मर चुके थे।
क्या आप जानते हैं क्यों? दरअसल, जब बंदर ने स्वर्ग महल को नष्ट करने के बाद उसे ऊपरी लोक में ले जाया गया, तो देवता एरलांग और मेइशान के सात भाइयों ने उसे जलाकर राख कर दिया था। इससे महान ऋषि पहले से भी अधिक दुखी हो गए।
पर्वत के खंडहर परिदृश्य के बारे में प्राचीन शैली में एक कविता है:
मैं रोते हुए अमर पर्वत पर वापस लौटा;
इसे देखकर मेरा दुख दुगुना हो गया।
मुझे लगता था कि यह नुकसान से सुरक्षित है।
लेकिन अब मुझे पता है कि यह नष्ट हो चुका है।
काश, एरलांग ने मुझे हराया न होता;
मुझे इस तरह परेशान करने के लिए तुम्हें धिक्कार है।
मैं तुम्हारे पूर्वजों की कब्रें खोद डालूंगा।
और वे केवल उनकी कब्रों को नष्ट करने तक ही सीमित नहीं रहे।
आसमान को ढकने वाला कोहरा छंट गया;
उसने पृथ्वी को ढकने वाली हवाओं और बादलों को तितर-बितर कर दिया।
पूर्वी पर्वतमाला पर बाघ की दहाड़ शांत है।
पश्चिमी पर्वत पर अब बंदर की दहाड़ सुनाई नहीं देती।
अध्याय 28
395
पश्चिम की यात्रा
उत्तरी घाटी में खरगोश या लोमड़ी का कोई निशान नहीं मिला;
दक्षिणी घाटी में हिरण का नामोनिशान भी नहीं है।

नीली चट्टान जलकर हजारों राख में तब्दील हो गई।
हरे रंग की वह रेत अब सिर्फ कीचड़ बनकर रह गई है।
गुफा के बाहर स्थित ऊंचे-ऊंचे देवदार के पेड़ सभी तिरछे झुके हुए हैं;
चट्टान के सामने सरू के पेड़ बहुत कम हैं।
देवदार, फर, बबूल, शाहबलूत, जुनिपर और चंदन—ये सभी जल जाते हैं।
आड़ू, खुबानी, बेर, नाशपाती और जुजुबे—सब खत्म हो गए।
ओक और शहतूत के बिना रेशम के कीड़ों को कैसे खिलाया जाएगा?
विलो या बांस के बिना पक्षी घोंसला नहीं बना सकते।
चट्टानें और बड़े-बड़े पत्थर धूल में बदल गए हैं।
झरने सूख गए हैं और नदी-नालों में खरपतवार उग आए हैं।
चट्टान के सामने की धरती काली है, और वहां कोई ऑर्किड नहीं उगते हैं।
रास्ते के किनारे भूरी मिट्टी में लताएँ रेंग रही हैं।
कल के पक्षी कहाँ उड़ गए?
जानवर किस दूसरे पहाड़ पर गए?
तेंदुए और अजगर इस खंडहर हो चुके स्थान को नापसंद करते हैं;
सारस और सांप सुनसान इलाकों से दूर रहते हैं।
उन बीते दिनों के मेरे आपराधिक विचार
आज की इस विपत्ति का कारण वही है।
अध्याय 28
396
पश्चिम की यात्रा
गहरे अंधकार में डूबे महान ऋषि को घास के मैदान के सामने कंटीली झाड़ियों के खोखले भाग से एक आवाज सुनाई दी, जैसे सात-आठ छोटे बंदर उछलकर बाहर आए, उनकी ओर दौड़े और उन्हें घेरकर प्रणाम करने लगे। "महान ऋषि," उन्होंने पुकारा।
"क्या तुम आज घर आए हो?"
"तुम लोग खेल क्यों नहीं रहे हो?" सुंदर बंदर राजा ने उनसे पूछा। "तुम सब क्यों छिपे हुए थे? मैं यहाँ सदियों से था और तुम्हारा कोई अता-पता नहीं चला। क्यों?"
अन्य बंदरों की आँखों से आँसू बह निकले और उन्होंने उनसे कहा, "हे महान ऋषि,

जब से आपको बंदी बनाकर स्वर्ग ले जाया गया है, तब से शिकारी हमें बहुत परेशान कर रहे हैं। उनके शक्तिशाली धनुष और धनुष, उनके भूरे बाज़ और दुष्ट कुत्ते, उनके जाल, फंदे, हुक और भाले - इन सब से हमें अपनी जान का इतना डर लगता है कि हम बाहर निकलकर खेलने की हिम्मत नहीं कर पाते। हमें अपनी गुफाओं में गहराई में छिपना पड़ता है और अपने सामान्य ठिकानों से दूर रहना पड़ता है। जब हमें भूख लगती है तो हम पहाड़ी से घास चुरा लेते हैं और झरने का ताज़ा पानी पीते हैं।"

"हमने अभी-अभी आपका प्रवचन सुना है, हे महान ऋषि, महाराज, और हम आपको प्रणाम करने आए हैं। कृपया, कृपया हमारी सहायता करें।"

यह सुनकर महान ऋषि पहले से कहीं अधिक निराश हो गए और उन्होंने आगे पूछा, "इस पर्वत पर तुममें से कितने लोग बचे हो?"

"सभी उम्र के लगभग एक हजार लोग ही होंगे।"

महान ऋषि ने कहा, "पुराने समय में मेरे पास सैंतालीस हजार राक्षस थे। वे सब अब कहाँ चले गए?"

"आपके जाने के बाद देवता एरलांग ने पहाड़ में आग लगा दी और हममें से अधिकांश लोग उस आग में जलकर मर गए। हममें से कुछ लोग कुओं के तल में छिप गए, या नालों में छुप गए, या लोहे के पुल के नीचे शरण ली और अपनी जान बचा ली। जब आग बुझ गई और धुआँ छँट गया, तो हम बाहर आए तो पाया कि हमारे खाने के लिए न तो कोई पेड़-पौधे बचे थे, जिससे जीवन लगभग असंभव हो गया था, इसलिए बचे हुए लोगों में से आधे लोग वहाँ से चले गए। हममें से बाकी लोगों का इस पहाड़ पर बहुत कठिन समय बीता है, और बचे हुए लोगों में से आधे पिछले दो वर्षों में शिकारियों के हाथों मारे गए हैं।"

"वे ऐसा क्यों करते हैं?" बंदर ने पूछा।

“हमें तो ‘शिकारी’ नाम से ही नफरत है,” दूसरे बंदरों ने जवाब दिया। “वे हमें तीरों से मारते हैं, भाले से मारते हैं, ज़हर देते हैं और पीट-पीटकर मार डालते हैं। फिर वे हमें पकड़कर हमारी खाल उतारते हैं और हड्डियों से मांस नोचते हैं, उसके बाद हमें सोया सॉस में उबालते हैं, सिरके में भाप में पकाते हैं, तेल में तलते हैं या नमक के साथ भूनते हैं। फिर वे चावल पचाने में मदद के लिए हमें खा जाते हैं। जो बंदर जालों या फंदों में फंस जाते हैं, उन्हें जिंदा ही पकड़कर एक घेरे में नचाया जाता है, उनसे अभिनय करवाया जाता है, कलाबाजियां करवाई जाती हैं, उछल-कूद करवाई जाती है,

सड़कों पर ढोल-नगाड़े बजवाए जाते हैं और हर तरह से उनका मज़ाक उड़ाया जाता है।"

"गुफा में कौन मुखिया है?" बंदर ने गुस्से से भर कर पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "मार्शल मा और लियू और जनरल बेन और बा अभी भी कमान संभाल रहे हैं।"

"तो उन्हें बता दो कि मैं यहाँ हूँ," बंदर ने कहा।

छोटे-छोटे भक्त दौड़कर अंदर आए और खबर दी, "महामहिम ऋषि घर लौट आए हैं।"

यह सुनकर मा, लियू, बेन और बा तुरंत बाहर आए और गुफा में उनका स्वागत करने के लिए प्रणाम किया।

महान ऋषि उसके बीच में बैठे थे, उनके राक्षसी सैनिक उनके सामने झुककर विनती कर रहे थे,

"महाराज, पश्चिम जाने के बजाय आप अपने पर्वत पर क्यों लौट आए हैं? हमने हाल ही में सुना था कि आप पुनर्जीवित हो गए हैं और तांग पुजारी को पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए ले जा रहे थे।"

"मेरे प्यारे बच्चों, जो बात तुम नहीं जानते," बंदर ने कहा, "वह यह है कि संजांग एक अच्छे आदमी को देखते ही पहचान नहीं पाता।"

मैंने रास्ते भर उसके लिए राक्षसों और दानवों को पकड़ा, और अपनी सभी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करके उसके लिए बुरी आत्माओं को मारा। लेकिन उसने मुझे हत्यारा कहा और मुझे अपना शिष्य नहीं बनाया। उसने मुझे वापस यहाँ भेज दिया और मुझे बर्खास्तगी पत्र देकर प्रमाणित कर दिया कि वह मुझे फिर कभी काम पर नहीं रखेगा।

सभी बंदर खुशी से ताली बजाने लगे। उन्होंने कहा, "कितनी अच्छी किस्मत है! अब तुम किसी साधु-संतों के बाद घर लौट आए हो, तो अगले कुछ वर्षों के लिए हमारे नेता बन सकते हो।"

"महामहिम के वापस आने पर उनका स्वागत करने के लिए तुरंत नारियल की ताड़ी का इंतजाम करो," किसी ने आदेश दिया।

“नहीं,” महान ऋषि ने कहा, “चलो शराब न पिएं। शिकारी हमारे पहाड़ पर कितनी बार आते हैं?”
"महान ऋषि," मार्शल मा और लियू ने उत्तर दिया, "वे हर मौसम में यहाँ आते हैं और कई दिनों तक हमें परेशान करते हैं।"
"तो फिर वे आज क्यों नहीं आए?" बंदर ने पूछा।
"वे जल्द ही यहाँ पहुँच जाएँगे," मार्शलों ने उत्तर दिया।
“बच्चों,” बंदर ने आदेश दिया, “तुम सब बाहर जाओ, आग में जलकर चूर-चूर हो चुके उन टूटे हुए अंगारों को इकट्ठा करो और ढेर लगाओ। मुझे एक ढेर में बीस से तीस या पचास से साठ अंगारे चाहिए। मुझे इनका उपयोग करना है।” मधुमक्खियों के झुंड की तरह छोटे बंदर दौड़ पड़े और चारों ओर ढेर लगाने लगे। जब बंदर ने उन्हें देखा तो उसने कहा, “बच्चों, जाओ और गुफा में छिप जाओ, मैं कुछ जादू करता हूँ।”
जब महान ऋषि चारों ओर देखने के लिए पर्वत की चोटी पर गए, तो उन्होंने दक्षिण से घोड़ों पर सवार एक हजार से अधिक पुरुषों को आते देखा। वे ढोल और घंटे बजा रहे थे, और उन सभी के पास बाज़, शिकारी कुत्ते, तलवारें या भाले थे। उनका बारीकी से निरीक्षण करने पर वानर राजा ने पाया कि वे अत्यंत खतरनाक थे - शानदार और बहादुर युवक थे।
अपने कंधों पर लोमड़ी की खाल ओढ़े हुए,
और उनके सीने पर जकूज़ी का आवरण था।
उनके तरकश भेड़िये के दांतों वाले तीरों से भरे हुए थे।
और नक्काशीदार धनुष उनके पैरों से लटके हुए थे।
वे आदमी पहाड़ियों की छानबीन करने वाले बाघों की तरह थे।
ये घोड़े खाई पार करने वाले अजगरों की तरह हैं।
वे झुंड में आए, अपने कुत्तों को साथ लेकर।
और उनकी भुजाएँ बाज़ों से भरी हुई थीं।
कांटेदार लकड़ी की टोकरियों में वे बंदूकें ले जा रहे थे।

और उनकी कमरबंदों पर शक्तिशाली चीलें बंधी हुई थीं।

उनके पास सैकड़ों चिपचिपे डंडे थे।
और हजारों की संख्या में खरगोश के कांटे।
बैल के सिर वाले राक्षसों ने जालों से रास्ते अवरुद्ध कर दिए थे।
राक्षस राजा गांठदार रस्सियों को संभाल रहे थे।
जैसे ही वे सब अपनी भयंकर चीखें निकालने लगे
वे पहाड़ी पर ऐसे छा गए जैसे आकाश में तारे।
महान ऋषि उन्हें अपने पर्वत पर फैलते देख क्रोधित हो गए। उन्होंने मुट्ठी से मंत्र पढ़ा, उससे संबंधित शब्द बुदबुदाए, जिस दिशा से हवा आ रही थी उस दिशा से एक घूँट हवा अंदर ली और फिर उसे बाहर निकाल दिया। अब वह एक भयंकर तूफान बन गया था, एक शानदार तूफान, जो धूल और मिट्टी को उड़ा ले जा रहा था।
तेज हवाओं से पेड़ और पूरे जंगल उखड़ जाते हैं।
पहाड़ जितनी ऊंची लहरें उठ रही थीं।
वे हजारों की संख्या में तट पर उमड़ पड़े।
आकाश और पृथ्वी अंधकार में डूब गए।
सूर्य और चंद्रमा अंधकार में डूब गए।
एक तेज हवा के झोंके ने बाघ की दहाड़ के साथ चीड़ के पेड़ों को हिला दिया।
बांसों के बीच से दौड़ते हुए वह अजगर की तरह दहाड़ रहा था।
आकाश ने अपने सभी छिद्रों से क्रोधपूर्वक डकार ली।
उड़ती धूल और पत्थरों से चोटें आईं और मौतें हुईं।
महान ऋषि द्वारा बुलाए गए तूफान ने टूटे हुए पत्थरों के ढेर को बेतहाशा घुमा दिया, और हजार आदमी अपने घोड़ों के साथ दयनीय स्थिति में आ गए।
अध्याय 28
399
पश्चिम की यात्रा
पत्थरों के प्रहार से एकोनाइट पत्थर चकनाचूर हो गया।
उड़ती धूल से सभी समुद्री घोड़े घायल हो गए।
पहाड़ी की चोटी पर जिनसेंग और कैसिया घबराए हुए थे।
और सिंदूर की जमीन खून से सन गई।
एकोनाइट अपने घर से दूर फंसा हुआ था।

सुपारी अपने मूल नगर में वापस नहीं लौट सकी।
पहाड़ की ढलान पर लाशें चूर्ण की तरह बिखरी पड़ी थीं।
लाल रंग की महिला को घर पर बेसब्री से इंतजार करते हुए छोड़कर।
जैसा कि एक अन्य कविता कहती है,
सभी पुरुष और घोड़े मर चुके थे, इसलिए वे वापस नहीं जा सकते थे।
भयानक भ्रम में डूबे भूत और अकेली आत्माएं।
अफसोस की बात है कि वीर और साहसी सेनापतियों
मूर्खों पर भरोसा करने के लिए रेत में खून बहाना चाहिए।
अपना बादल नीचे लाते हुए, महान ऋषि ने ताली बजाई और ज़ोर से हँसे। "क्या किस्मत है," उन्होंने कहा, "क्या किस्मत है। जब से मैंने तांग पुजारी के अधीन होकर भिक्षु बना, वे हमेशा मुझसे कहते थे, 'अगर तुम हज़ार दिन तक अच्छा काम करोगे, तब भी काफी नहीं होगा, लेकिन अगर तुम एक दिन भी बुरा काम करोगे, तो वह बहुत ज़्यादा होगा।' यह कितना सच था। जब मैं उनके साथ था, तब मैंने कुछ दुष्ट आत्माओं को मारा था और वे मुझे हत्यारा समझते थे; और अब जब मैं घर लौट आया हूँ, तो मैंने इन सभी शिकारियों का सफाया कर दिया है।"
“निकल आओ, नन्हे बच्चों,” उसने चिल्लाकर कहा, और अब जब तूफान थम चुका था और महान ऋषि ने उन्हें बुलाया था, तो बंदर एक के बाद एक उछलते हुए बाहर आ गए। “जाओ और दक्षिणी पर्वत की तलहटी में मरे हुए शिकारियों के कपड़े उतारो, उन्हें यहाँ वापस लाओ और खून के धब्बे धो डालो। फिर तुम उन्हें पहनकर ठंड से बच सकते हो। सभी शवों को दस हजार फ़ैदम गहरे तालाब में धकेल दो, और जब तुम सभी मरे हुए घोड़ों को यहाँ खींच लाओगे, तो उनकी खाल उतारकर जूते बना लो और उनके मांस का अचार बना लो—यह हमें लंबे समय तक भोजन देगा। मैं तुम्हें वे सभी धनुष, बाण, भाले और तलवारें दूंगा ताकि तुम अपने सैन्य कौशल का अभ्यास कर सको। और मेरे लिए वे सभी रंग-बिरंगे झंडे और पताकाएँ वापस लाओ ताकि हम उनका उपयोग कर सकें।” सभी बंदरों ने उसके आदेश का पालन किया।
महान ऋषि ने झंडों को खुलवाकर धुलवाया, फिर उन्हें एक साथ जोड़कर एक बहुरंगी झंडा बनाया जिस पर लिखा था, "स्वर्ग के समान महान ऋषि, पुष्प और फल पर्वत के पुनर्स्थापक, जल-पर्दे वाली गुफा के निर्माता।" उन्होंने उस झंडे को गुफा के बाहर एक खंभे पर लटका दिया और कई दिनों तक राक्षसों को आमंत्रित करते रहे तथा जंगली

जानवरों की सभाएँ आयोजित करते रहे। उन्होंने रसद सामग्री एकत्र की और "भिक्षु" शब्द का प्रयोग किया।

अध्याय 28

400

पश्चिम की यात्रा

इसका कभी ज़िक्र नहीं हुआ। अपनी उदारता और अपार शक्तियों के कारण वह चारों समुद्रों के ड्रैगन राजाओं से कुछ मीठा जादुई जल उधार लेकर पहाड़ को स्नान कराकर उसे फिर से हरा-भरा करने में सक्षम हुआ। उसने पहाड़ के आगे एल्म और विलो के पेड़ लगाए, और पीछे चीड़ और देवदार के पेड़; उसने आड़ू, बेर, जुजुबे और प्लम भी लगाए। इस प्रकार उसने सुखी और चिंतामुक्त जीवन व्यतीत किया।

आइए, तांग पुरोहित की ओर लौटें, जिन्होंने धूर्त प्रकृति के वचन पर भरोसा किया और बुद्धिमान वानर की अवहेलना की। वे अपने घोड़े पर सवार हुए, और सुअर आगे-आगे चल रहा था तथा साधु सैंड सामान उठाए हुए पश्चिम की ओर चल पड़े। श्वेत बाघ पर्वतमाला को पार करने के बाद उन्होंने वनों से ढकी पहाड़ियों की एक श्रृंखला देखी, जिसके बारे में सचमुच कहा जा सकता था कि नीले सरू और हरे चीड़ के पेड़ों के बीच लताएँ चढ़ती और लिपटती हुई जा रही थीं।

“शिष्यों,” संज़ंग ने कहा, “यह ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ता बहुत कठिन है, और आगे घने चीड़ के जंगलों में हमें सावधान रहना होगा क्योंकि मुझे डर है कि वहाँ दुष्ट आत्माएँ और राक्षस हो सकते हैं।” यह सुनकर मूर्ख सुअर ने अपनी शक्ति का आह्वान किया और भिक्षु सैंड को घोड़े का मार्गदर्शन करने के लिए कहकर, अपने रेक से एक रास्ता बनाया जिस पर वह तांग पुजारी को जंगल में ले गया। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ रहे थे, आदरणीय संज़ंग ने अपने घोड़े की लगाम खींची और सुअर से कहा,

मुझे आज बहुत भूख लगी है। क्या आप मेरे लिए कहीं से कुछ खाना ढूंढ सकते हैं?

“मालिक, कृपया घोड़े से उतर जाइए,” सुअर ने उत्तर दिया, “और यहीं रुकिए, मैं जाकर कुछ लाता हूँ।” संज़ंग घोड़े से उतर गया, जबकि साधु सैंड ने अपना बोझ नीचे रखा, अपना भिक्षापात्र निकाला और सुअर को दे दिया। “मैं जा रहा हूँ,” सुअर ने कहा, और जब संज़ंग ने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है, तो उसने उत्तर दिया, “चिंता मत कीजिए। मैं आपके लिए भोजन की भीख माँगूँगा, चाहे इसके लिए मुझे आग पाने के लिए बर्फ़ काटनी पड़े या बर्फ़ से तेल निकालना पड़े।”

चीड़ के जंगल से पश्चिम की ओर लगभग चार मील चलने के बाद भी उसे कोई नहीं मिला। वह सचमुच एक सुनसान जगह थी, जहाँ केवल भेड़िये और बाघ ही रहते थे। उस मूर्ख को चलना मुश्किल लग रहा था और वह मन ही मन बुदबुदाया, "जब बंदर हमारे साथ था, तो बूढ़े पुजारी को जो चाहे मिल जाता था, लेकिन अब मुझे सब कुछ खुद करना पड़ता है। यह कितना सच है कि 'घर-गृहस्थी संभालने से ही चावल और लकड़ी की कीमत का एहसास होता है, और बेटों को पालने से ही माता-पिता के प्यार का महत्व समझ आता है'। इस रास्ते पर भीख मांगने की कोई जगह नहीं है।" अब तक इतना चलने के बाद उसे नींद आने लगी थी और उसने सोचा, "अगर मैं अभी वापस जाकर बूढ़े भिक्षु को बताऊँ कि मुझे कहीं भी भोजन नहीं मिल रहा है, तो शायद वह विश्वास ही न करे कि मैं इतनी दूर आ गया हूँ। वापस बताने से पहले मुझे यहाँ एक-दो घंटे और रुकना चाहिए। चलो, मैं इस घास पर ही झपकी ले लेता हूँ।" इतना कहकर उस मूर्ख ने अपना सिर घास पर रखा और सो गया। उसका इरादा तो बस थोड़ी देर झपकी लेने और फिर उठने का था, उसे इस बात का एहसास नहीं था कि वह यात्रा से इतना थक चुका था कि सिर नीचे रखते ही वह गहरी नींद में सो जाएगा।

हम सुअर को वहीं सोता हुआ छोड़कर जंगल में संज़ांग के पास लौट चलते हैं। वह चिंतित और बेचैन महसूस कर रहा था, इसलिए उसने साधु सैंड से कहा, "अब बहुत देर हो गई है। सुअर अभी तक खाना माँगकर वापस क्यों नहीं आया?"

"गुरुजी," फ्रायर सैंड ने कहा, "आप अब भी उसे समझ नहीं पाए हैं। उसे पता चल गया है कि कई पश्चिमी लोग भिक्षुओं को भोजन देते हैं, और अपने बड़े पेट के कारण वह आपकी परवाह नहीं करेगा। जब तक उसका पेट भर नहीं जाएगा, वह वापस नहीं आएगा।"

"सही कहा," संज़ंग ने कहा। "अगर वह कहीं दूर जाकर लालच से भरपेट खा रहा है तो हमें उसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। रात हो चुकी है और यहाँ रात बिताना ठीक नहीं है। हमें कहीं और रहने की जगह ढूंढनी होगी।"

"कोई जल्दी नहीं है, स्वामी जी," फ्रायर सैंड ने कहा। "आप यहीं बैठिए और प्रतीक्षा कीजिए, मैं जाकर उसे ढूंढ लाता हूँ।"

"बहुत बढ़िया," संजांग ने कहा, "बहुत बढ़िया। खाने की चिंता मत करो। ज़रूरी बात तो यह है कि रात बिताने के लिए कोई जगह मिल गई है।"

अपने कीमती डंडे को थामे हुए, फ्रायर सैंड पिग की तलाश में चीड़ के जंगल से होकर गुजरे।

अध्याय 28

401

पश्चिम की यात्रा

जंगल में अकेले बैठे संज़ंग बेहद थका हुआ और दुखी महसूस कर रहा था। उसने हिम्मत जुटाई, उठ खड़ा हुआ, सारा सामान एक जगह छिपा दिया, घोड़े को एक पेड़ से बांध दिया, अपनी सरकंडे की टोपी उतार दी और अपनी लाठी ज़मीन में गाड़ दी। फिर उसने अपने काले वस्त्रों को सीधा किया और मन बहलाने के लिए पेड़ों के बीच इत्मीनान से टहलने निकल गया। जंगली फूलों को देखते हुए उसे घोंसलों में लौट रहे पक्षियों की आवाज़ें सुनाई नहीं दीं।

घास घनी थी और जंगल के रास्ते संकरे थे, और ध्यान भटकने के कारण वह रास्ता भटक गया। वह अपना मन बहलाने और पिग और फ्रायर सैंड को खोजने के लिए निकला था; उसे यह एहसास नहीं था कि वे पश्चिम की ओर जा चुके थे जबकि वह, हर दिशा में भटकने के बाद, दक्षिण की ओर जा रहा था। वह जंगल से बाहर निकला और ऊपर देखा तो उसे एक चकाचौंध भरी सुनहरी रोशनी दिखाई दी। ध्यान से देखने पर उसने पाया कि यह एक पैगोडा की सुनहरी छत थी जो डूबते सूरज की रोशनी में चमक रही थी। "मेरे शिष्यों का कितना दुखद भाग्य है," उसने सोचा। "जब मैंने पूरब की धरती छोड़ी, तो मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं रास्ते में आने वाले हर मंदिर में अगरबत्ती जलाऊँगा, हर बुद्ध प्रतिमा की पूजा करूँगा और हर शिवालय की सफाई करूँगा। क्या वह सुनहरा शिवालय चमकता हुआ नहीं दिख रहा? हम उस तरफ क्यों नहीं गए? शिवालय के नीचे ज़रूर कोई मठ होगा, और उसमें भिक्षु भी होंगे। मुझे एक नज़र डालनी चाहिए। उस निर्जन स्थान पर सामान और सफेद घोड़े को कोई नुकसान नहीं होगा। अगर कोई उपयुक्त जगह मिल जाए तो मेरे शिष्यों के लौटने पर हम सब यहाँ रात बिता सकते हैं।"

अफसोस! आदरणीय संज़ंग एक बार फिर भ्रम का शिकार हो गए। वे पैगोडा की ओर बढ़े, और उन्होंने जो देखा वह था...

दस हजार फैदम ऊंची एक चट्टान,

आकाश तक पहुँचने वाला एक विशाल पर्वत।

इसकी जड़ें धरती में गहराई तक धंस गई थीं।
इसका शिखर आकाश की ओर उठा हुआ था।
दोनों ओर हजारों पेड़ थे।
जबकि लताएँ चारों ओर कई मील तक फैली हुई थीं।
हवा के कारण फूलों की कलियों की नोकें झुकने से परछाइयाँ बन रही थीं;
जहां बादलों के नीचे पानी बहता था, वहां चंद्रमा की कोई जड़ नहीं थी।
एक गिरा हुआ पेड़ एक गहरी खाई के ऊपर फैला हुआ था।
मुरझाई हुई लताएँ चमकती हुई चोटी के चारों ओर लिपटी हुई थीं।
पत्थर के पुल के नीचे,
उसने झरने से पानी बहाया;
पवित्र वेदी पर
वह सदा जलने वाला दीपक चाक की तरह चमकीला था।
दूर से देखने पर यह स्वर्ग के तीन द्वीपों जैसा प्रतीत होता था;
यह दिखने में पेंगलाई की पवित्र भूमि जैसा था।
अध्याय 28
402
पश्चिम की यात्रा
पहाड़ी झरनों के चारों ओर सुगंधित चीड़ और बैंगनी बांस उगते थे, मैनाएं, बंदर, कौवे और लंगूर ऊंचे पहाड़ों पर घूमते थे।
एक गुफा के दरवाजे के बाहर
जानवर व्यवस्थित समूहों में आते-जाते थे।
पेड़ों के बीच
पक्षियों के झुंड कुछ देर के लिए दिखाई दिए।
हरे-भरे और सुगंधित जड़ी-बूटियां खूब उग रही थीं।
जब जंगली फूल अपनी पूरी शान से खिल उठे।
यह स्पष्ट रूप से एक बुरी जगह थी
वह भ्रमित पुजारी पास आया,
संज़ंग बाहर निकला और जल्द ही पैगोडा के द्वार पर पहुँच गया। अंदर लटकते चित्तीदार बांस के पर्दे को देखकर उसने उसे उठाया और अंदर चला गया। उसने अपना

सिर ऊपर उठाया और एक भयानक राक्षस को पत्थर के पलंग पर सोते हुए देखा।
क्या आप जानते हैं कि वह कैसा दिखता था?
एक गहरे नीले रंग का चेहरा,
सफेद नुकीले दांत,
एक विशाल खुला हुआ मुंह।
इसके दोनों ओर उलझे हुए बाल थे।
सब कुछ चर्बी और तेल से सना हुआ है।
उसकी दाढ़ी और मूंछों के बैंगनी गुच्छे
इससे फैली हुई लीची की कोंपलों की याद आ गई।
उसकी नाक तोते की चोंच की तरह नुकीली थी।
उसकी आंखें भोर के तारों की तरह धुंधली थीं।
उसकी दोनों मुट्ठियाँ
वे भिक्षु के भिक्षापात्र के आकार के थे;
उसके गहरे नीले पैर

वे लकड़ी के लट्ठों के जोड़े की तरह थे।
उसके ऊपर लिपटा हुआ हल्का पीला वस्त्र
यह जकूज़ी के वस्त्र से भी कहीं अधिक भव्य था।
उसके हाथ में तलवार
चमकी और दमक उठी;
वह चट्टान जिस पर वह सोता था
यह बेहद खूबसूरत, चिकना और दोषरहित था।
एक छोटे शैतान के रूप में उसने चींटियों की संरचनाओं को संगठित किया था।
जब एक वरिष्ठ दानव ततैया के मुख्यालय में बैठा था।
उनकी विस्मयकारी शक्ति को देखकर
सभी चिल्ला उठेंगे,
उन्हें स्वामी कहकर पुकारना।

उसने चांदनी रात में शराब पीते हुए तीन पुरुषों की आकृति बनाई थी।
और उसने हवा से जादू की तरह ताजगी भरी चाय के प्याले प्रकट कर दिए।
उनकी असाधारण अलौकिक शक्तियों पर विचार करें— —
पलक झपकते ही
वह दुनिया के किसी भी कोने में हो सकता है।
घने जंगलों में वह पक्षी की तरह गा सकता था;
वह घने जंगल में सांपों और बाघों के साथ रहता था।
जब कोई अमर प्राणी भूमि पर खेती करता है तो उस पर सफेद जेड पत्थर उगते हैं;
जब कोई ताओवादी गुरु अग्नि की देखभाल करता है तो वह अमृत उत्पन्न करता है।
हालाँकि यह छोटी गुफा का मुँह
इससे अविची नरक की ओर मार्ग नहीं प्रशस्त हुआ।
फिर भी यह भयंकर राक्षस
वह बैल के सिर वाला राक्षस था।
अध्याय 28
404
पश्चिम की यात्रा
उसे देखकर संज़ंग इतना भयभीत हो गया कि वह पीछे हट गया, उसका पूरा शरीर भय से सुन्न हो गया। जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ा, उस राक्षस ने, जिसकी शक्तियाँ वास्तव में बहुत तीव्र थीं, सुनहरी पुतली वाली एक भयानक आँख खोली और चिल्लाया, "दरवाजे के बाहर कौन है, बच्चों?"
एक नन्हा शैतान झाँककर देखने लगा, उसने एक मुंडा हुआ पुजारी देखा और दौड़कर अंदर गया और सूचना दी, "महाराज, एक भिक्षु। उसका चेहरा बड़ा और सिर गोल है, और उसके कान कंधों तक लटके हुए हैं। उसका शरीर अत्यंत कोमल और त्वचा बेहद नाजुक दिखती है। वह एक बहुत ही होनहार भिक्षु है।"
राक्षस खिलखिलाकर हँसा और बोला, "इसे ही कहते हैं 'मक्खी का साँप के सिर पर बैठना, या भोजन और वस्त्र का स्वयं तुम्हारे सामने प्रकट होना'। जाओ, उसे मेरे लिए पकड़ो और यहाँ वापस लाओ। मैं तुम्हें अच्छा इनाम दूँगा।"
छोटे राक्षस मधुमक्खियों के झुंड की तरह संज़ंग के पीछे दौड़ पड़े; और संज़ंग घबराकर इतनी तेज़ी से भागने लगा मानो उड़ रहा हो। लेकिन वह इतना भयभीत था

कि उसके पैर जल्द ही सुन्न जेली जैसे हो गए, और ऊपर से रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ था और घने जंगल में गोधूलि बेला का समय था। वह तेज़ी से नहीं चल पा रहा था, और छोटे राक्षसों ने उसे उठाकर वापस ले आए।

उथले पानी में रहने वाला एक अजगर झींगों का शिकार बन जाता है;

मैदान में मौजूद बाघ को कुत्ते डरा सकते हैं।

हालांकि अच्छे कर्मों में हमेशा मुसीबतें आती हैं,

पश्चिम की ओर अपनी यात्रा में तांग पुरोहित अत्यंत दुर्भाग्यशाली रहा है।

छोटे शैतान तांग पुजारी को बांस के पर्दे तक ले गए और उसे बाहर उतारते हुए बड़े हर्षोल्लास से बोले, "महाराज, हम भिक्षु को वापस ले आए हैं।" बूढ़े राक्षस ने एक नजर डाली और पाया कि संजांग, जो गरिमा के साथ सिर ऊंचा करके खड़ा था, निश्चित रूप से एक उत्तम भिक्षु होगा।

“इतना उत्तम भिक्षु,” उसने सोचा, “ज़रूर कोई श्रेष्ठ व्यक्ति होगा, इसलिए मुझे उसे तुच्छ नहीं समझना चाहिए। अगर मैं उसे डराऊंगा नहीं तो वह मेरे सामने नहीं झुकेगा।” जैसे कोई लोमड़ी बाघ की तरह शक्तिशाली होने का दिखावा करती है, वैसे ही उसने अपनी लाल मूंछें खड़ी कर लीं, अपने खून से सने बाल खड़े कर लिए और अपनी आंखों को गुस्से से बाहर निकाल लिया। “उस भिक्षु को अंदर लाओ,” वह दहाड़ा।

"जी साहब," बाकी दुष्टों ने एक साथ चिल्लाते हुए संज़ंग को अंदर धकेल दिया। कहावत है, "छत के नीचे सिर झुकाना पड़ता है," और संज़ंग को भी हाथ जोड़कर उनका अभिवादन करना पड़ा।

“तुम कहाँ रहते हो, भिक्षु?” राक्षस ने पूछा। “तुम कहाँ से आए हो और कहाँ जा रहे हो? मुझे तुरंत बताओ।”

मैं तांग वंश का एक पुजारी हूँ, और मैं तांग सम्राट के आदेश पर पवित्र ग्रंथों की प्राप्ति के लिए पश्चिम की ओर जा रहा हूँ। जब मैं आपके इस विशिष्ट पर्वत से गुजर रहा था, तो मैं इस मंदिर के संतों से मिलने आया। मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि मैं आपको दुखी करूँगा, और मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ।

जब मैं पश्चिम से धर्मग्रंथ लेकर पूर्व की ओर लौटूंगा, तो मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि आपकी प्रसिद्धि हमेशा के लिए अमर रहे।"

"मुझे लगा था कि तुम किसी श्रेष्ठ देश से आए होगे," राक्षस ने हंसते हुए कहा, "और

चूंकि तुम वही हो, मैं तुम्हें खा जाऊंगा। तुम्हारा आना बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा —नहीं तो हम तुम्हें जाने देते। तुम्हारा मेरे मुंह का भोजन बनना तय था, इसलिए तुम यहां दौड़कर आए। हम कभी नहीं..." (अध्याय 28)

मैं तुम्हें जाने दूंगा; और तुम कभी बच नहीं पाओगे।" फिर उसने छोटे राक्षसों को उसे बांधने का आदेश दिया। वे उस पर टूट पड़े और उसे आत्मा को बांधने वाले खंभे से कसकर बांध दिया।

हाथों में तलवार लिए उस बूढ़े राक्षस ने पूछा, "तुम सब कितने हो? अकेले पश्चिमी स्वर्ग जाने की हिम्मत तो नहीं करोगे?" अपने हाथ में पकड़ी तलवार को देखते हुए, संजांग को सच्चाई से जवाब देना पड़ा।

"महाराज, मेरे दो शिष्य हैं, जिनका नाम पिग और फ्रायर सैंड है। वे दोनों चीड़ के जंगल के बाहर भोजन मांगने गए हैं। उनके अलावा, सामान का एक बड़ा ढेर और एक सफेद घोड़ा है जिसे मैंने जंगल में छोड़ दिया है," उसने कहा।

"और भी अच्छी किस्मत!" राक्षस ने कहा। "दो शिष्य भी हैं, तो तुम तीन हो जाओगे, घोड़े को मिलाकर चार, जो एक भोजन के लिए काफी है।"

"हम जाकर उन्हें पकड़ लेंगे," उन छोटे शैतानों ने कहा।

"नहीं," बूढ़े राक्षस ने कहा, "मत जाओ। सामने का द्वार बंद कर दो। क्योंकि वे भोजन के लिए भीख मांगते हुए गए हैं, इसलिए उन्हें अपने मालिक को ढूंढना होगा ताकि वह उन्हें खा सके, और जब वे उसे नहीं ढूंढ पाएंगे तो वे निश्चित रूप से उसे खोजने के लिए यहां आएंगे।"

कहावत है, 'घर पर कारोबार करना सबसे आसान होता है।' बस थोड़ा इंतज़ार करो, हम सही समय पर उन सबको पकड़ लेंगे।" छोटे शैतानों ने सामने का गेट बंद कर दिया।

हम बदकिस्मत संज़ंग को यहीं छोड़कर साधु सैंड के पास लौटेंगे, जो सुअर की तलाश में जंगल से तीन-चार मील दूर निकल चुके थे, लेकिन उन्हें अभी तक कोई गाँव नहीं मिला था। एक छोटी पहाड़ी पर खड़े होकर चारों ओर देखते हुए उन्हें झाड़ियों में से एक आवाज़ सुनाई दी; और अपनी लाठी से लंबी घास को हटाते हुए उन्होंने पाया कि वह मूर्ख नींद में बड़बड़ा रहा था। साधु सैंड ने जब सुअर का कान मरोड़ा तो वह जाग

गया। साधु सैंड ने कहा, "अरे मूर्ख, किसने कहा कि तुम यहाँ सो सकते हो, जबकि तुम्हें हमारे मालिक ने खाना माँगने को कहा था?"
अचानक नींद से जागते हुए सुअर ने पूछा, "भाई, समय क्या हुआ है?"
"तुरंत उठो," साधु सैंड ने उत्तर दिया। "गुरु ने हम दोनों को रहने के लिए कोई जगह ढूंढने को कहा है, चाहे हमें भीख मांगकर खाना मिले या न मिले।"
अपने भिक्षापात्र और रेक को पकड़े हुए, ऊंघता हुआ सुअर साधु सैंड के साथ सीधे वापस जंगल की ओर चल पड़ा, और जब उन्होंने जंगल में अपने स्वामी को ढूंढा तो वह उन्हें कहीं नहीं मिला। साधु सैंड ने गुस्से से कहा, "यह सब इसलिए हुआ क्योंकि तुम भोजन मांगने के बाद वापस नहीं आए, मूर्ख! स्वामी को कोई दुष्ट आत्मा ले गई होगी।"
“भाई, बकवास मत करो,” मुस्कुराते हुए सुअर ने जवाब दिया। “यह जंगल बहुत ही शांत और सभ्य जगह है और इसमें बुरी आत्माएं हो ही नहीं सकतीं। मुझे लगता है कि बूढ़ा भिक्षु यहाँ बैठे-बैठे ऊब गया होगा और कहीं घूमने निकल गया होगा। चलो, उसे ढूंढते हैं।” उन्होंने घोड़े की लगाम पकड़ी, सामान से लदी डंडी उठाई, संजांग की टोपी और लाठी ली और अपने गुरु की तलाश में चीड़ के जंगल से निकल पड़े।
लेकिन इस बार संज़ंग की किस्मत में मरना नहीं लिखा था। जब दोनों उसे काफी देर तक ढूंढते रहे और सफलता नहीं मिली, तो उन्होंने अपने ठीक दक्षिण में एक सुनहरी रोशनी देखी। "भाई, धन्य हैं वो जो धन्य हैं," पिग ने कहा। "देखो गुरुजी कहाँ ठहरे होंगे। वह रोशनी किसी मंदिर से आ रही है, और वे उनकी अच्छी देखभाल कर रहे होंगे। मुझे लगता है उन्होंने उनके लिए भोजन तैयार किया है और उन्हें वहीं रुकने को कहा है। चलो हम भी चलते हैं और थोड़ा सा खा लेते हैं।"
"यह निश्चित रूप से कुछ भी खतरनाक नहीं हो सकता," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया। "हमें जाकर देखना चाहिए।"
अध्याय 28
406
पश्चिम की यात्रा
जब वे दोनों द्वार पर पहुँचे तो उन्होंने पाया कि द्वार बंद थे। द्वार के ऊपर उन्होंने सफेद जेड पत्थर की एक क्षैतिज पट्टिका देखी जिस पर "मून वाटर्स केव, बाउल माउंटेन" शब्द खुदे हुए थे।

"भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "यह कोई मंदिर नहीं है। यह दुष्ट आत्माओं की गुफा है। अगर हमारे स्वामी वहां हैं तो हम उन्हें कभी नहीं देख पाएंगे।"

“चिंता मत करो,” सुअर ने जवाब दिया। “घोड़े को बांध दो और सामान का ध्यान रखो, मैं उससे खबर लेता हूँ।” इतना कहकर उस मूर्ख ने अपना फावड़ा उठाया और ज़ोर से चिल्लाया, “दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो।” द्वारपाल पर तैनात छोटे शैतान ने द्वार खोल दिए और उन दोनों को देखते ही अंदर दौड़कर बोला, “महाराज, हमारा काम हो गया।”

"किस तरह का कारोबार?" बूढ़े राक्षस ने पूछा।

"द्वार के बाहर दो भिक्षु खड़े हैं," छोटे राक्षस ने उत्तर दिया। "एक की थूथन लंबी और कान बड़े हैं, और दूसरा बदकिस्मत दिखता है, और वे हमें द्वार खोलने के लिए चिल्ला रहे हैं।"

"इसका मतलब है कि पिग और फ्रायर सैंड उसे ढूंढने आए हैं," बूढ़े राक्षस ने कहा। "हा! उन्हें आना ही था।"

इन्हें यहाँ कौन लाया? ये मूर्ख दिखते हैं, लेकिन बेहतर होगा कि मैं इनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करूँ। उसने अपने कवच को पहनने का आदेश दिया, और जब छोटे दानव उसे लाकर पहना चुके, तो उसने अपनी तलवार हाथ में ली और सीधे गुफा से बाहर निकल गया।

जब पिग और फ्रायर सैंड, जो बाहर इंतजार कर रहे थे, ने उस भयंकर राक्षस को बाहर आते देखा तो वह कुछ इस तरह दिख रहा था:

नीला चेहरा, लाल दाढ़ी और लहराते लाल बाल;
सुनहरा कवच बेहद चमकदार।
उसकी कमर पर कौड़ियों की बेल्ट बंधी हुई थी।
और उसका कवच बादलों पर चलने वाली रस्सियों से उसकी छाती से बंधा हुआ था।
जब वह पर्वत के सामने खड़ा था तभी हवा जोर से गरजने लगी;
जब वह समुद्रों में विचरण करता था, तब लहरें बहुत शक्तिशाली होती थीं।
नीले रंग के, मांसल हाथों की एक जोड़ी
उसके हाथ में आत्मा को भेदने वाली, जीवन छीनने वाली तलवार थी।
यदि आप इस प्राणी का नाम जानना चाहते हैं,
उन्हें पीले वस्त्रधारी कहकर संबोधित करें।

जैसे ही पीला वस्त्रधारी बूढ़ा राक्षस द्वार से बाहर आया, उसने पूछा, "तुम भिक्षु कहाँ से आए हो, और मेरे द्वार पर क्यों चिल्ला रहे हो?"

अध्याय 28

407

पश्चिम की यात्रा

"क्या तुम मुझे पहचान नहीं रहे, बेटे?" सुअर ने कहा। "मैं तुम्हारा पिता हूँ। मुझे महान तांग ने पश्चिमी स्वर्ग में एक मिशन पर भेजा है। मेरे गुरु सम्राट के छोटे भाई संज़ंग हैं। अगर वह यहाँ हैं, तो उन्हें तुरंत बाहर भेज दो और मुझे इस रेक से रास्ता तोड़कर अंदर जाने की परेशानी से बचाओ।"

"जी हां," राक्षस हंसते हुए बोला, "मेरे यहां एक तांग पुजारी हैं। मैंने उनके प्रति कोई अभद्रता नहीं दिखाई है, और उनके लिए मानव मांस के पकौड़ों का भोज तैयार करवाया है। आप दोनों भी अंदर आकर थोड़ा खा लीजिए।"

अगर साधु सैंड ने उसे रोककर यह न कहा होता, "भाई, वह तुम्हें बहला रहा है। वैसे भी, तुमने कभी इंसान का मांस कब खाया है?", तो वह मूर्ख बड़े भरोसे से अंदर चला जाता। मूर्ख को आख़िरकार रोशनी दिखाई दी और उसने अपने रेक से उस दुष्ट राक्षस के चेहरे पर वार किया। राक्षस एक तरफ हट गया और अपनी लोहे की तलवार से वार को रोका। दोनों ने अपनी जादुई शक्तियाँ दिखाईं और बादलों पर उछलकर हवा में ही लड़ाई जारी रखी। साधु सैंड ने अपना सामान और सफ़ेद घोड़ा छोड़ दिया और पिग की मदद के लिए दौड़ पड़ा। बादलों में उन दो भेड़ियों जैसे भिक्षुओं और उस दुष्ट राक्षस के बीच ज़बरदस्त लड़ाई हुई।

जब लाठी उठाई गई तो उसका सामना तलवार से हुआ;
उसी तलवार ने रेकर के वार को रोक दिया।
एक शैतान सेनापति अपनी वीरता का प्रदर्शन कर रहा है,
दो साधु जैसे देवता अपने रूप परिवर्तन को प्रकट कर रहे हैं।
नौ शाखाओं वाला रेक काफी शानदार था;
राक्षसों के प्रति समर्पण करने वाला स्टाफ सचमुच भयावह था।
वे आगे से, पीछे से, बाएं से और दाएं से आए।
लेकिन येलो रोब शांत और निडर था।
देखो, उसकी तपती हुई लोहे की तलवार चांदी की तरह चमक रही है;

उनकी जादुई शक्तियां वास्तव में बहुत महान थीं।
उनकी लड़ाई से आसमान भर गया
कोहरे और बादलों के साथ;
पहाड़ों के बीच
चट्टानें टूटकर गिर गईं।
एक प्रसिद्धि के लिए संघर्ष कर रहा था
तो वह कैसे रुक सकता था?
बाकी लोग अपने स्वामी के लिए लड़ रहे थे,
वे बिल्कुल भी भयभीत नहीं थे।
अध्याय 28
408
पश्चिम की यात्रा
उन तीनों ने हवा में दर्जनों राउंड तक बिना किसी रुकावट के लड़ाई लड़ी। वे सभी अपनी जान बचाने के लिए लड़ रहे थे, और कोई भी चीज उन्हें अलग नहीं कर सकती थी।
अगर आपको नहीं पता कि उन्होंने तांग पुजारी को कैसे बचाया, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 29
संज़ैंग को सौंपे जाने के बाद, उसने एक सीमा पार की।
एक कृतज्ञ सुअर पहाड़ों और जंगलों का भ्रमण करता है
एक कविता कहती है
यदि अनियंत्रित विचारों को दृढ़ता से दबाया नहीं गया
सत्य की खोज करने का कोई लाभ नहीं है;
यदि आप बुद्ध के समक्ष अपने स्वभाव को निखारना चाहते हैं,
जागृति और भ्रम के बीच अधर में क्यों लटके रहें?
एक बार जागृत होने पर आप पल भर में सही मार्ग प्राप्त कर सकते हैं;
भ्रमित लोग दस हजार युगों तक भटकते रहेंगे।
यदि आप बुद्ध का आह्वान कर सकते हैं और सत्य का अभ्यास कर सकते हैं,
गंगा की रेत के समान अनगिनत पापों को मिटाया जा सकता है।

पिग और फ्रायर सैंड ने उस राक्षस के साथ तीस दौर तक लड़ाई लड़ी, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। क्या आप जानते हैं कि वे मुकाबले क्यों असफल रहे? कौशल के मामले में, बीस भिक्षु भी उस दुष्ट आत्मा का मुकाबला नहीं कर सकते थे, दो की तो बात ही छोड़िए। फिर भी, क्योंकि तांग पुजारी की मृत्यु निश्चित नहीं थी, इसलिए धर्म के रक्षक देवता गुप्त रूप से उनकी रक्षा कर रहे थे। इसके अलावा, छह नौ इंच के डिंग, छह जिया, पंच लोकों के सत्य के प्रकटकर्ता, चार कर्तव्य देवता और अठारह धर्म रक्षक भी पिग और फ्रायर सैंड की हवा में मदद कर रहे थे।

हमें उन तीनों को संघर्ष में उलझा छोड़कर वापस गुफा में सान्ज़ांग के पास लौटना होगा, जो फूट-फूटकर रो रहा था और अपने शिष्यों के बारे में सोच रहा था। "पता नहीं, सूअर, कहीं किसी गाँव में तुम्हें कोई मददगार मिला है क्या," उसने सोचा, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, "और तुम भेंटों के लालच में बह गए हो। साधु सैंड, तुम उसे कहाँ ढूँढ रहे हो? क्या तुम उसे पाओगे? तुम्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि इस दुष्ट के हाथों मुझे कितना कष्ट सहना पड़ा है। मैं तुमसे कब दोबारा मिलूँगा और अपनी मुसीबतों से कब छुटकारा पाऊँगा ताकि हम जल्दी से गिद्ध शिखर की ओर चल सकें?" जब वह व्याकुल और विलाप कर रहा था, तभी उसने गुफा के भीतरी हिस्से से एक स्त्री को बाहर आते देखा।

“आदरणीय पिता,” उसने आत्मा को स्थिर करने वाले खंभे पर झुकते हुए कहा, “आप कहाँ से आए हैं? उसने अध्याय 29 को क्यों बांधा है?”

"तुम यहाँ हो?" यह सुनकर संज़ंग ने आँसुओं के बीच से उसे एक नज़र देखा और पाया कि वह लगभग तीस वर्ष की थी। "मुझसे यह मत पूछो, बोधिसत्व," उसने कहा, "मेरी मृत्यु नियति थी: मैं तुम्हारे घर आ गया। अगर तुम्हें मुझे खाना ही है, तो खा लो, लेकिन मुझसे यह मत पूछो कि क्यों।"

"मैं इंसान नहीं खाती," उसने जवाब दिया। "मेरा घर यहाँ से सौ मील से भी अधिक पश्चिम में एलिफेंटिया नामक शहर में है।"

मैं राजा की तीसरी पुत्री हूँ, और मेरा बचपन का नाम 'फूल से भी सुंदर' था। तेरह वर्ष पूर्व, आठवें महीने की पंद्रहवीं रात को, वह दुष्ट राक्षस आया और पूर्णिमा की रात का आनंद लेते हुए मुझे बवंडर में उठाकर ले गया। इन तेरह वर्षों में मैं उसकी पत्नी रही हूँ

और मैंने उसे पुत्र और पुत्रियाँ दीं, लेकिन मैं कभी भी घर कोई संदेश नहीं भेज पाई। मुझे अपने माता-पिता की बहुत याद आती है, और मैं उन्हें कभी देख नहीं सकती।
तुम कहाँ से आए थे कि उसने तुम्हें पकड़ लिया?
"मुझे शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग भेजा गया था," संज़ंग ने उत्तर दिया। "जब मैं टहलने निकला था, तब मुझे यह एहसास नहीं था कि मैं इस मुसीबत में फंस जाऊंगा। अब वह मेरे दोनों शिष्यों को पकड़ लेगा और हम सबको एक साथ भाप में पकाकर खा जाएगा।"
"चिंता मत कीजिए, आदरणीय महोदय," राजकुमारी ने मुस्कुराते हुए कहा। "चूंकि आप धर्मग्रंथ लाने जा रहे हैं, इसलिए मैं आपकी रक्षा कर सकती हूं। एलिफेंटिया पश्चिम की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित है, और यदि आप मेरे माता-पिता को यह पत्र पहुंचा देंगे, तो मैं उनसे आपकी जान बख्शने के लिए कह दूंगी।"
"बोधिसत्व, यदि आप मेरी इस दयनीय जान बचा लें, तो मैं आपका दूत बनने का वादा करता हूँ," संजांग ने झुककर कहा।
राजकुमारी जल्दी से अंदर लौटी, अपने परिवार को एक पत्र लिखा, उसे सील किया, संज़ंग को सूली से उतारा और उसे पत्र सौंप दिया। "बोधिसत्व," उसने पत्र लेते हुए कहा, अब जब वह मुक्त हो चुका था, "मेरी जान बचाने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। आपके देश पहुँचकर मैं यह पत्र राजा को दे दूँगा। मेरी एकमात्र चिंता यह है कि इतने वर्षों बाद आपके माता-पिता शायद यह विश्वास न करें कि यह पत्र आपने लिखा है, और तब मैं क्या करूँगा? मैं उन्हें यह सोचने नहीं दे सकता कि मैं उन्हें धोखा देने की कोशिश कर रहा हूँ।"
"कोई बात नहीं। मेरे पिता की हम तीन बेटियाँ ही हैं, कोई बेटा नहीं। अगर उन्हें यह पत्र दिखेगा तो उन्हें लगेगा कि वे मुझे देख रहे हैं।" पत्र को अपनी आस्तीन में सुरक्षित रखते हुए, उन्होंने राजकुमारी से विदा ली और बाहर जाने ही वाले थे कि राजकुमारी ने उन्हें रोक लिया और कहा, "आप सामने वाले द्वार से बाहर नहीं निकल पाएँगे। वे सभी बड़े और छोटे राक्षस द्वार के बाहर झंडे लहरा रहे हैं, युद्ध के नारे लगा रहे हैं और ढोल-घंटी बजा रहे हैं ताकि राक्षस राजा को आपके दो शिष्यों के साथ युद्ध में मदद कर सकें। बेहतर होगा कि आप पीछे वाले रास्ते से निकलें। अगर राक्षस राजा ने आपको पकड़ लिया तो वह आपको यातना देकर पूछताछ करेगा, और अगर छोटे राक्षस आपको पकड़ लेंगे तो वे बिना किसी झिझक के आपको मार डालेंगे। मैं उससे मिलने

जाऊँगी और उससे बात करूँगी। अगर वह आपको जाने देने के लिए तैयार हो जाता है, तो आपके शिष्य आप तीनों को एक साथ जाने की अनुमति माँग सकते हैं।" संजांग ने प्रणाम किया और जैसा कि उसने उसे बताया था, उसे छोड़कर पिछले दरवाजे से चुपके से बाहर निकल गई और अकेले यात्रा करने के बजाय कांटों के बीच छिप गई।

राजकुमारी ने एक चतुर योजना बनाई थी और वह तेजी से मुख्य द्वार से बाहर निकली और छोटे-बड़े राक्षसों की भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए हथियारों की भयंकर टक्कर सुनने के लिए आगे बढ़ी। सुअर और साधु सैंड अभी भी हवा में राक्षस से लड़ रहे थे। "पीले वस्त्रधारी स्वामी!" उसने अपनी पूरी आवाज में पुकारा, और जैसे ही राक्षस राजा ने उसकी आवाज सुनी, वह सुअर और साधु सैंड को छोड़कर अपने बादल पर उतरा और अपनी लोहे की तलवार पकड़े हुए अपनी पत्नी का हाथ थाम लिया।

"क्या बात है, पत्नी?" उसने पूछा।

"मैं अभी बिस्तर पर सो रही थी, पतिदेव," उसने जवाब दिया, "और मैंने सपना देखा कि मैंने सोने के कवच में एक देवता को देखा।"

"यह सोने के कवच वाला कैसा देवता है?" उसने पूछा। "यह यहाँ क्यों आया है?"

“जब मैं महल में बच्ची थी,” उसने कहा, “मैंने गुप्त रूप से यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि मेरा विवाह एक अच्छे पति से होगा तो मैं पवित्र पर्वतों पर चढ़ूंगी, देवताओं के दर्शन करूंगी और भिक्षुओं को दान दूंगी। अब मेरा विवाह आपसे 29वें अध्याय में सुखपूर्वक संपन्न हुआ है।”

तेरह साल तक मैंने उस प्रतिज्ञा का कभी जिक्र नहीं किया था, और सुनहरे कवच वाले देवता मुझे उसे पूरा करवाने के लिए आए।

उसकी चीख सुनकर मेरी नींद खुल गई, और फिर मुझे एहसास हुआ कि यह एक सपना था। मैंने खुद को संभाला और सीधे आपको इसके बारे में बताने आया। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैंने एक भिक्षु को खंभे से बंधा हुआ पाया। हे प्रभु, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरी प्रतिज्ञा का सम्मान करें और अपनी दया से उस भिक्षु को छोड़ दें। इससे भिक्षुओं को भोजन कराने का कार्य संपन्न होगा और मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो

जाएगी। क्या आप ऐसा करेंगे?
"तुम कितनी नखरे वाली हो, पत्नी," उसने जवाब दिया। "इसमें कुछ भी नहीं है। अगर मुझे इंसान खाने हों तो मैं आसानी से कुछ और पकड़ सकता हूँ।"
अगर यही स्थिति है तो भिक्षु को जाने दो।"
"क्या कृपया उसे पिछले दरवाजे से छोड़ा जा सकता है, पतिदेव?"
"मुझे परेशान करने की क्या ज़रूरत है। उसे जाने दो, चाहे वह सामने से जाए या पीछे से।"
फिर उस राक्षस ने अपनी तलवार दोबारा पकड़ी और चिल्लाया, "इधर आओ, सूअर। मैं तुमसे डरता नहीं, लेकिन अब तुमसे नहीं लड़ूंगा। अपनी पत्नी की खातिर मैंने तुम्हारे मालिक को छोड़ दिया है, इसलिए जल्दी से घूमकर उसे पिछले दरवाजे पर ढूंढो और पश्चिम की ओर चले जाओ। अगर तुमने दोबारा मेरे इलाके में कदम रखा तो मैं तुम्हें दोबारा नहीं छोडूंगा।"
इस खबर से पिग और फ्रायर सैंड को ऐसा लगा मानो उन्हें नरक के द्वार से बाहर निकाल दिया गया हो। वे घोड़े और सामान के साथ तेजी से भागे और मून वाटर्स गुफा के दूसरे छोर पर जाकर उन्होंने पुकारा
"मास्टर" की आवाज़ पीछे के प्रवेश द्वार के बाहर सुनाई दी। संज़ंग ने उनकी आवाज़ पहचान ली और कंटीली झाड़ियों के बीच से जवाब दिया। फ्रायर सैंड झाड़ियों के बीच से रास्ता बनाते हुए आया, अपने गुरु को बाहर निकाला और जल्दी से उन्हें घोड़े पर बिठा दिया।
जब उसे भयानक नीले चेहरे वाले राक्षस से खतरा हुआ
उन्हें सौभाग्य से उस धर्मनिष्ठ राजकुमारी से मिलने का अवसर मिला।
सुनहरे हुक से बचकर, कछुआ
उसने अपनी पूंछ को झटकते हुए लहरों के बीच से तैरकर दूर चला गया।
पिग आगे-आगे चल रहा था और फ्रायर सैंड पीछे-पीछे आ रहा था, वे चीड़ के जंगल से निकलकर मुख्य मार्ग पर चल पड़े। दोनों शिष्य बड़बड़ाते और शिकायत करते रहे, जबकि संजांग उन्हें शांत करने की कोशिश करता रहा। हर शाम वे ठहरने की जगह ढूंढते और सुबह मुर्गे की बांग के साथ उठ जाते। उन्होंने अपनी यात्रा के एक के बाद एक पड़ाव पार किए, कभी लंबे तो कभी छोटे, और देखते ही देखते वे निन्यानवे मील की दूरी तय कर चुके थे। अचानक उन्होंने ऊपर देखा और उनके सामने एक सुंदर शहर

था। यह एलिफेंटिया था, और यह एक शानदार जगह थी।
दूर के बादल,
एक लंबा रास्ता;
हालांकि यह एक दूरस्थ भूमि थी,
वहां का नजारा घर जैसा ही सुंदर था।
अध्याय 29
411
पश्चिम की यात्रा
शुभ धुंध ने शहर को घेर लिया;
स्वच्छ चंद्रमा की रोशनी में ताजी हवाएं चल रही थीं।
दूर से दिखाई देने वाले ऊंचे-ऊंचे पहाड़,
वे एक तस्वीर की तरह फैले हुए थे।
नदियाँ कलकल करती बह रही थीं।
जैसे पिसे हुए जैस्पर की धाराएँ।
वहाँ दूर-दूर तक कृषि भूमि के खेत फैले हुए थे।
जहां नई फसलें एक-दूसरे के बहुत करीब उगी थीं।
मुट्ठी भर मछुआरे पानी के तीन हिस्सों में मछली पकड़ने का काम कर रहे थे।
एक लकड़ी इकट्ठा करने वाला व्यक्ति कुछ पहाड़ियों से टहनियाँ लेकर आया।
बाहरी दीवार
और शहर की भीतरी दीवार,
वे एकदम अटल थे।
घरों
और घर
शालीनता में प्रतिस्पर्धा की।
नौ मंजिला मंडप महलों की तरह थे।
शाही स्तंभों की तरह ऊंचे टावर।
वहाँ ग्रेट अल्टीमेट का एक हॉल था,
फूलों से सजा हुआ एक मंडपनुमा हॉल,
धूपदानी,

साहित्यिक अध्ययन का एक हॉल,
सरकार के एक हॉल की घोषणा की गई,
वैभव के हॉल का विस्तारित संस्करण,
सभी सीढ़ियों पर जेड और सोने का काम किया गया है।
जहां नागरिक और सैन्य अधिकारी अपनी-अपनी पंक्तियों में खड़े थे।

वहाँ एक महान प्रकाशमान महल भी था।
एक चमकता हुआ महल,
शाश्वत आनंद का महल,
एक विशिष्ट पवित्रता का महल,
स्थापित ज्ञानोदय का एक महल,
असीम वैभव का महल।
प्रत्येक महल में घंटे, ढोल, बांसुरी और शहनाई थे।
वसंत ऋतु के दुखों और हरम की विपत्तियों पर विलाप करते हुए।
फिर शाही उद्यान थे।
जहां ओस की बूंदें फूलों की कोमल पंखुड़ियों को भिगो रही थीं;
और शाही नहरें
जहां हवा में विलो के पेड़ अपनी पतली कमर झुकाते थे।
राजमार्गों पर
वे बेल्ट बांधे हुए और आधिकारिक टोपी पहने हुए सज्जन थे।
अपनी पूरी शान-शौकत में सजे हुए
वे पांच घोड़ों वाले रथों में सवार थे;
सुदूर कोनों में
वे धनुष और बाण लिए हुए तीरंदाज थे।
जिसके तीरों ने बादलों को चीर दिया
और भाले से छेदे हुए बाजों के जोड़े।
विलो के पेड़ों से घिरी सड़कों के साथ,

और संगीत से भरे घर,
यह वसंत ऋतु का दृश्य लुओयांग पुल के दृश्य को टक्कर दे रहा था।
सूत्रों की खोज में निकला तीर्थयात्री
महान तांग काल की यादों से मैं व्याकुल था;
शिष्य अपने गुरु के साथ चल रहे हैं
अध्याय 29
413
पश्चिम की यात्रा
एक विश्रामगृह में उन्हें अपने सपने में खुशी मिली।
एलिफेंटिया के दृश्य को निहारते हुए गुरु और उनके दो शिष्यों ने सामान और घोड़े का इंतजाम किया और एक विश्रामगृह में ठहर गए।
तांग पुरोहित पैदल चलकर महल के द्वार तक गए, जहाँ उन्होंने द्वारपाल से कहा, "मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप सूचित करें कि तांग दरबार से एक भिक्षु महामहिम से व्यक्तिगत मुलाकात के लिए आए हैं और उनके पास पहचान पत्र है।"
एक हिजड़ा दूत सफेद जेड की सीढ़ियों पर तेजी से पहुंचा और घोषणा की, "महाराज, तांग दरबार से एक प्रतिष्ठित पुजारी आपसे मिलने आए हैं क्योंकि उन्हें अपना परिचय पत्र प्रस्तुत करना है।" राजा यह सुनकर प्रसन्न हुए कि वे शक्तिशाली तांग राज्य से हैं और स्वयं एक पूजनीय और पवित्र भिक्षु हैं, इसलिए उन्होंने तुरंत "उन्हें अंदर बुलाओ" कहकर अपनी स्वीकृति दे दी।
संजांग को सुनहरी सीढ़ियों पर बुलाया गया, जहां उन्होंने सम्मानपूर्वक नृत्य किया और उचित अभिवादन किया।
दोनों ओर मौजूद अनेक नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने प्रशंसा से आह भरी और कहा, "उस प्रतिष्ठित देश के इस सज्जन के पास कितना प्रभावशाली संगीत और अनुष्ठान है।"
"हे पूज्यवर, आप मेरे देश में क्यों आए हैं?" राजा ने पूछा।
"मैं तांग वंश का बौद्ध हूँ," संज़ंग ने उत्तर दिया, "मैं सम्राट के आदेश पर धर्मग्रंथ लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहा हूँ। मेरे पास एक प्रमाण पत्र है, और अब जब मैं महाराज के देश में पहुँच गया हूँ, तो इसे आपको सौंपना उचित समझ रहा हूँ। आगे बढ़ने या पीछे हटने के बीच दुविधा में, ड्रैगन मुखमंडल को विचलित करने के लिए मुझे

क्षमा मांगनी होगी।"

“यदि आपके पास तांग वंश के प्रमाण पत्र हैं,” राजा ने उत्तर दिया, “तो उन्हें मुझे दिखाने के लिए यहाँ लाएँ।” संज़ंग ने आदरपूर्वक दोनों हाथों से पत्र राजा को सौंप दिया और उसे उनकी मेज पर खोल दिया। उसमें लिखा था: महान तांग साम्राज्य के तांग सम्राट की ओर से, जो स्वर्ग के आदेश से दक्षिणी महाद्वीप जंबूद्वीप में शासन करते हैं।

अपनी कमजोरियों के बावजूद हम सिंहासन पर आसीन हुए हैं, और देवताओं की उपासना और प्रजा पर शासन करते समय हम सुबह-शाम इतने सजग रहते हैं मानो किसी खाई के किनारे खड़े हों या पतली बर्फ पर चल रहे हों। जिंग नदी के ड्रैगन राजा को बचाने में असफल रहने के कारण, हम पर दंड आया; हमारी आत्माएं पाताल लोक में चली गईं और हम मृत्युलोक में अतिथि बन गए। चूंकि हमारा जीवनकाल अभी समाप्त नहीं हुआ था, इसलिए अंधकार के देवता ने हमें जीवितों के लोक में वापस भेज दिया। हमने भिक्षुओं की एक महान सभा आयोजित की और एक पवित्र वेदी का निर्माण किया जहाँ मृतकों की आत्माओं को परलोक में ले जाया जा सके। हमारी अपार कृतज्ञता के साथ, दुखों से मुक्ति दिलाने वाली बोधिसत्व गुआनयिन स्वयं प्रकट हुईं और उन्होंने हमें बताया कि पश्चिम में एक बुद्ध हैं जिनके पास ऐसे शास्त्र हैं जो भटके हुओं को बचाएंगे और अकेले आत्माओं को, जिनका कोई सहारा नहीं है, परलोक में ले जाएंगे। इसलिए हमने विशेष रूप से कुलपति ज़ुआनज़ैंग को अनगिनत पहाड़ों को पार करके शास्त्रों और भजनों की खोज के लिए लंबी यात्रा करने का आदेश दिया है। यदि वे पश्चिम के किसी भी देश में आते हैं, तो हम आशा करते हैं कि इस पत्र को देखकर वे उन्हें आगे बढ़ने देंगे और इस पूर्वनियोजित नेक कार्य में बाधा नहीं डालेंगे। यह पत्र सभी संबंधित व्यक्तियों को संबोधित है। महामहिम सम्राट द्वारा महान तांग वंश के तेरहवें वर्ष के शरद ऋतु के एक शुभ दिन पर दिया गया।

जब राजा ने नौ शाही मुहरों से सुसज्जित इस पत्र को पढ़ा, तो उन्होंने इस पर अपनी मुहर लगा दी और इसे संज़ंग को लौटा दिया। संज़ंग ने पत्र लेते हुए धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया, "मैं न केवल प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने लाया हूँ, बल्कि महाराज को देने

के लिए एक पारिवारिक पत्र भी लाया हूँ।" राजा प्रसन्न हुए और पूछा कि यह क्या है। संज़ंग ने कहा, "मैं संयोगवश महाराज की तीसरी राजकुमारी से मिला, जिन्हें कटोरा पर्वत में स्थित चंद्र जल गुफा के पीले वस्त्रधारी राक्षस ने अगवा कर लिया था, और उन्होंने मुझे यह पत्र आपको देने के लिए दिया है।" यह खबर सुनकर राजा की आँखों से आँसू बहने लगे और उन्होंने कहा, “उसे देखे हुए तेरह साल हो गए हैं, और न जाने कितने सैन्य और नागरिक अधिकारियों को मैंने बर्खास्त या पदच्युत किया होगा, और कितनी दासियों, नौकरानियों और हिजड़ों को मैंने पीट-पीटकर मार डाला होगा। मुझे लगा था कि वह महल से बाहर निकल गई होगी और रास्ता भटक गई होगी, और मैंने उसे हर जगह खोजा। यहाँ तक कि सभी आम नागरिकों से पूछताछ करने पर भी मुझे उसके ठिकाने का कोई पता नहीं चला। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई दुष्ट राक्षस उसे अगवा कर सकता है। यह सुनकर अचानक मुझे बहुत दुख हो रहा है।” संजांग ने अपनी आस्तीन से पत्र निकाला और राजा को सौंप दिया। पत्र पर “सब ठीक है” लिखा देखकर राजा के हाथ इतने कमजोर पड़ गए कि वे उसे खोल नहीं सके। उन्होंने साहित्य अकादमी के एक विद्वान को सिंहासन की सीढ़ियाँ चढ़कर पत्र जोर से पढ़ने का आदेश दिया। जैसे ही विद्वान ने सिंहासन की सीढ़ियाँ चढ़ीं, सिंहासन कक्ष के सामने उपस्थित नागरिक और सैन्य अधिकारी तथा उसके पीछे उपस्थित महारानियाँ, राजपत्नियाँ और महल की महिलाएँ सभी ध्यानपूर्वक सुनने लगीं। विद्वान ने पत्र खोला और जोर से पढ़ा: आपकी अयोग्य पुत्री, जो फूल से भी अधिक सुंदर है, ड्रैगन और फीनिक्स महल में स्थित अपने पिता महामहिम राजा को, चमकते प्रकाश के महल के बाहर स्थित अपनी माता महारानी को और दरबार के सभी कुलीन मंत्रियों और सेनापतियों को सौ बार प्रणाम करती है; मुझे आपको समाचार भेजने और मेरे लिए किए गए आपके असीम परिश्रम के लिए धन्यवाद देने में प्रसन्नता हो रही है। लेकिन मैं महामहिम को प्रसन्न करने और अपने पुत्रवत कर्तव्यों का पूर्ण निर्वहन करने में स्वयं को समर्पित करने में असमर्थ हूँ।

तेरह वर्ष पूर्व, आठवें महीने की पंद्रहवीं शुभ रात्रि को, जब महाराज के दयालु आदेशानुसार सभी महलों में भोज आयोजित किए जा रहे थे, हम चांदनी और तारों की चमक का आनंद ले रहे थे। हमारे आनंद के बीच अचानक एक सुगंधित हवा का झोंका आया, और उसमें से सुनहरी पुतलियों, नीले चेहरे और हरे बालों वाला एक राक्षस राजा प्रकट हुआ, जिसने आपकी पुत्री को पकड़ लिया और उसे एक जादुई बादल पर

बिठाकर मानव बस्ती से दूर एक सुनसान पहाड़ पर ले गया। मैं उसे अपनी पत्नी बनने से नहीं रोक सकी, और तेरह वर्षों तक यह सब सहती रही। मैंने उसे दो राक्षसी पुत्र दिए हैं, और वे दोनों पूर्णतः दानव हैं। मैं आपको पत्र लिखकर अपने असभ्य और अपमानजनक अनुभवों की खबर से आपको कलंकित नहीं करना चाहती थी, लेकिन मुझे डर था कि मेरी मृत्यु के बाद किसी को पता नहीं चलेगा कि मेरे साथ क्या हुआ था। जब मैं अपने माता-पिता को याद कर रहा था और अपने भाग्य पर क्रोधित था, उसी समय एक तांग भिक्षु को भी उस राक्षस ने पकड़ लिया। इसलिए, आँखों में आँसू लिए मैं साहसपूर्वक यह पत्र लिख रहा हूँ और अपनी भावनाओं के प्रतीक के रूप में आपको भेज रहा हूँ। हे महाराज, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझ पर दया करें और कटोरा पर्वत में स्थित चंद्र जल गुफा में एक सेनापति भेजकर पीले वस्त्रधारी राक्षस को पकड़वाएँ, मुझे छुड़ाएँ और महल वापस ले आएँ। इससे मैं अत्यंत आभारी रहूँगा। कृपया इस पत्र के जल्दबाजी भरे और असभ्य लहजे के लिए क्षमा करें।

और अधिक प्रणाम करने पर,

तुम्हारी अवज्ञाकारी पुत्री,

फूल से भी अधिक सुंदर।

जब विद्वान ने इसे पूरा पढ़ लिया, तो राजा जोर-जोर से रोने लगा, महल की सभी महिलाएं रो रही थीं और सभी अधिकारी दुखी थे। हर कोई बहुत दुखी था।

अध्याय 29

415

पश्चिम की यात्रा

बहुत देर तक रोने के बाद राजा ने नागरिक और सैन्य अधिकारियों से पूछा कि उनमें से कौन सेना का नेतृत्व करके राक्षस को पकड़ेगा और उसके लिए फूल से भी सुंदर राजकुमारी को बचाएगा। उसने कई बार पूछा, लेकिन कोई भी तैयार नहीं हुआ; सेनापति तो मानो लकड़ी के बने हुए थे, और अधिकारी मानो मिट्टी के।

राजा अत्यंत व्याकुल थे और उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। तभी सभी नागरिक और सैन्य अधिकारी उनके समक्ष झुककर बोले, "महाराज, कृपया इतना विचलित न हों। राजकुमारी तेरह वर्षों से लापता हैं और उनके बारे में कोई खबर नहीं है, इसलिए हम अभी तक यह नहीं जान सकते कि क्या वह वास्तव में उस तांग पुजारी से मिली थीं और उनके माध्यम से पत्र भेजा था। इसके अलावा, हम सब नश्वर हैं, और हमने

जो सैन्य नियमावली और रणनीति की पुस्तकें पढ़ी हैं, उनमें केवल युद्ध में सैनिकों की तैनाती, शिविर लगाना और देश को आक्रमण की आपदा से बचाने के लिए आवश्यक अन्य बातों का ही वर्णन है। वह दुष्ट आत्मा बादलों और कोहरे में आती-जाती है, और हम उसे देख भी नहीं पाएंगे, उसे पकड़ना और राजकुमारी को बचाना तो दूर की बात है। अब वह पूर्वी व्यक्ति जो शास्त्र लाने जा रहा है, एक महान देश का पवित्र पुजारी है। इस भिक्षु के पास निश्चित रूप से राक्षसों को वश में करने की शक्ति होगी, क्योंकि उसके 'उच्च गुण अजगरों और बाघों को भयभीत करते हैं, और उसके महान सद्गुण उसे राक्षसों और देवताओं पर शक्ति प्रदान करते हैं।'

"जैसा कि पुरानी कहावत है, 'सही-गलत पर बहस करने वाला व्यक्ति अक्सर खुद ही अपराधी होता है।' सबसे अच्छा उपाय यही होगा कि इस आदरणीय सज्जन से उस दुष्ट को वश में करने और राजकुमारी को बचाने का अनुरोध किया जाए।"

“हे पूज्यवर, यदि आपमें कोई अलौकिक शक्ति है,” राजा ने संज़ंग की ओर मुड़ते हुए कहा, “तो अपनी धार्मिक शक्तियों का प्रयोग करके इस दुष्ट राक्षस को पकड़ें और मेरी पुत्री को महल में वापस लाएँ। यदि आप ऐसा कर देते हैं, तो पश्चिम की यात्रा करके बुद्ध के दर्शन करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। आप अपने बाल बढ़ा सकते हैं और मैं आपको अपना भाई बना लूँगा। हम दोनों अजगर सिंहासन पर साथ बैठेंगे और मेरी संपत्ति और सम्मान साझा करेंगे। क्या यह अच्छा रहेगा?”

"मेरी एकमात्र मामूली कुशलता," संजांग ने तुरंत उत्तर दिया, "बुद्ध के नाम का जाप करने में है, और मैं वास्तव में राक्षसों को वश में नहीं कर सकता।"

राजा ने पलटवार करते हुए कहा, "यदि तुम राक्षसों को वश में नहीं कर सकते, तो पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध के दर्शन करने का साहस कैसे कर सकते हो?"

अब संजांग ने उन दोनों शिष्यों के बारे में उसे बता दिया क्योंकि वह उन्हें और अधिक समय तक गुप्त नहीं रख सकता था। "महाराज,"

उन्होंने कहा, "मैं अकेले इतनी दूर नहीं आ सकता था। मेरे साथ दो शिष्य हैं, दोनों ही पहाड़ों को पार करने और नदियों पर पुल बनाने में कुशल हैं, और वे मुझे यहाँ तक लाए हैं।"

“तुमने बहुत ही शर्मनाक व्यवहार किया है, भिक्षु,” राजा ने क्रोधित होकर कहा। “चूंकि तुम्हारे शिष्य हैं, तुम्हें उन्हें अपने साथ मुझसे मिलने लाना चाहिए था। भले ही हम उन्हें उनकी पसंद का कोई उपहार न दे पाते, कम से कम उन्हें भोजन तो मिल

जाता।”
"मेरे शिष्य इतने बदसूरत हैं," संजांग ने उत्तर दिया, "कि मैंने महाराज की गरिमा को ठेस पहुंचाने के डर से उन्हें दरबार में लाने का साहस नहीं किया।"
"ये तो साधुओं वाली बात है," राजा ने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम्हें सच में लगता है कि मैं उनसे डरूंगा, है ना?"
"अरे नहीं," संज़ंग ने कहा। "बड़े वाले का उपनाम 'पिग' है; उनके व्यक्तिगत नाम 'वुनेन्ग' (शक्ति का जागृत) और 'बाजी' (आठ निषेध) हैं। उनका थूथन लंबा है, नुकीले दांत हैं, लोहे के बाल हैं और कान पंखे जितने बड़े हैं। उनका शरीर इतना भारी-भरकम है कि चलते समय हवा का झोंका आता है। दूसरे शिष्य का उपनाम 'सैंड' है और उनका बौद्ध नाम 'पवित्रता का जागृत भिक्षु' है। उनकी लंबाई बारह फीट है और उनकी भुजाएँ चार फीट मोटी हैं। उनका चेहरा नीले रंग का है और उनका मुँह खून से भरे कटोरे जैसा है। उनकी आँखें धधकती और चमकती हैं और उनके दांत कीलों की कतारों जैसे हैं। वे दोनों इतने भयानक दिखते हैं कि मैंने उन्हें अपने साथ लाने की हिम्मत नहीं की।"
अध्याय 29

“तुमने मुझे उनके बारे में बता दिया है, फिर भी मुझे डरने की कोई बात नहीं है। उन्हें यहाँ बुलाओ।” इतना कहकर एक संदेशवाहक को सोने की तख्ती लेकर विश्रामगृह भेजा गया ताकि उन्हें महल में आमंत्रित किया जा सके।
निमंत्रण मिलने पर उस मूर्ख ने साधु सैंड से कहा, "भाई, क्या आपको अब भी लगता है कि उसे पत्र नहीं पहुँचाना चाहिए था? अब आप इसे पहुँचाने के फायदे देख सकते हैं। मेरा मानना है कि जब स्वामी ने पत्र पहुँचाया, तो राजा ने सोचा होगा कि ऐसे संदेशवाहक के साथ असभ्य व्यवहार नहीं किया जा सकता, इसलिए उन्होंने उसके लिए भोज का आयोजन किया। हमारे स्वामी को भूख बहुत कम लगती है, इसलिए उन्हें हमारी याद आई होगी और उन्होंने हमारा नाम लिया होगा। इसीलिए दूत को यहाँ भेजा गया था। भोजन के बाद हम कल अच्छी शुरुआत कर सकेंगे।"
“यह तो हमारी नियति में ही लिखा था,” फ्रायर सैंड ने कहा। “चलो चलें।” अपना सामान और घोड़ा छात्रावास के प्रबंधक को सौंपकर वे दूत के साथ दरबार गए; उन्होंने

अपने हथियार अपने पास ही रखे। जब वे सफेद जेड की सीढ़ियों पर पहुँचे तो उनके नीचे खड़े होकर सम्मान में “ना-आ-आ” का उच्चारण किया और फिर बिना हिले-डुले वहीं खड़े रहे। सभी नागरिक और सैन्य अधिकारी भयभीत हो गए।

“भयानक होने के अलावा,” उन्होंने आपस में कहा, “ये बेहद भद्दे और अभद्र भी हैं। महाराज के सामने झुकने के बजाय, मात्र 'ना-आ-आ' कहने पर सीधे खड़े क्यों हैं? बेहद चौंकाने वाला, सच में चौंकाने वाला।”

यह सुनकर सुअर ने कहा, "कृपया हम पर अभद्र टिप्पणी न करें, सज्जनों। हम ऐसे ही दिखते हैं, और हालांकि पहली नजर में हम बदसूरत लगते हैं, लेकिन कुछ समय बाद हम काफी सहनीय हो जाते हैं।"

उनकी क्रूरता देखकर राजा बुरी तरह भयभीत हो गया था, लेकिन उस मूर्ख सुअर की बातें सुनकर वह इतना बुरी तरह कांप उठा कि अपना संतुलन खो बैठा और अपने अजगर सिंहासन से गिर पड़ा। सौभाग्यवश, दरबारी सेवक वहाँ मौजूद थे जिन्होंने उसे उठने में मदद की।

इससे संजांग इतना घबरा गया कि वह घुटनों के बल गिर पड़ा और लगातार प्रणाम करते हुए बोला, "महाराज, मैं दस हजार मृत्यु का पात्र हूँ, दस हजार मृत्यु। मैंने कहा था कि मेरे शिष्य इतने घिनौने हैं कि मैं उन्हें आपके ड्रैगन की गरिमा को ठेस पहुँचाने के डर से दरबार में लाने की हिम्मत नहीं कर सकता, और अब मैंने महाराज को यह भय दे दिया है।"

राजा लड़खड़ाते हुए उसके पास गया, उसे उठाकर खड़ा किया और बोला, "हे पूज्यवर, आपका शुक्र है कि आपने मुझे इनके बारे में पहले ही चेतावनी दे दी। अन्यथा, इन्हें देखकर मैं निश्चित रूप से सदमे से मर जाता।"

जब राजा ने कुछ समय लेकर खुद को शांत किया, तो उसने पिग और फ्रायर सैंड से पूछा कि उन दोनों में से कौन राक्षसों को वश में करने में बेहतर है।

"मैं हूँ," उस निर्लज्ज मूर्ख ने कहा।

"आप ये कैसे करते हैं, कृपया बताइए?" राजा ने पूछा।

"मैं मार्शल तियान पेंग हूँ," पिग ने उत्तर दिया, "और मुझे स्वर्ग संहिता के एक भाग का उल्लंघन करने के कारण इस नश्वर संसार में निर्वासित किया गया था। सौभाग्य से अब मैं सत्य के मार्ग पर लौट आया हूँ और एक भिक्षु बन गया हूँ। हम सभी जो पूर्व से यहाँ आए हैं, उनमें मैं सबसे श्रेष्ठ राक्षस-वशोषक हूँ।"

राजा ने कहा, "यदि तुम स्वर्ग के सेनापति होकर नश्वर प्राणी बने हो, तो तुम्हें रूप बदलने में निपुण होना चाहिए।"
"मैं इतना तो नहीं कहूंगा," पिग ने जवाब दिया, "लेकिन मैं एक-दो कर सकता हूं।"
"मुझे एक दिखाओ," राजा ने कहा।
"बताओ तुम मुझे क्या बनाना चाहते हो," सुअर ने कहा। "तो फिर एक दैत्य बन जाओ," राजा ने कहा।
अध्याय 29
417
पश्चिम की यात्रा
छत्तीस रूपों में रूप बदलने की क्षमता रखने वाला सुअर अब सिंहासन की सीढ़ियों के सामने अपनी शक्तियों का प्रदर्शन कर रहा था।
मुट्ठी भींचकर और मंत्रों का जाप करते हुए उसने "बढ़ो!" चिल्लाया, आगे की ओर झुका और अस्सी-नब्बे फीट लंबा हो गया। वह अंत्येष्टि जुलूसों के आगे ले जाए जाने वाले कागज़ के देवताओं में से एक जैसा लग रहा था। नागरिक और सैन्य अधिकारी भय से कांप उठे; राजा और प्रजा दोनों ही उसे अचंभित होकर देखते रहे।
तब महल की रखवाली कर रहे सेनापति ने कहा, "आप सचमुच बहुत लंबे हो गए हैं, आदरणीय महोदय। आप और कितने लंबे हो सकते हैं, इससे पहले कि आपको रुकना पड़े?"
"यह हवा पर निर्भर करता है," उस मूर्ख ने अपने मूर्खतापूर्ण अंदाज़ में जवाब दिया। "मैं पूरब या पश्चिम की हवा में ठीक-ठाक काम कर सकता हूँ, और अगर दक्षिण की हवा चले तो मैं आसमान में एक बड़ा छेद कर सकता हूँ।"
“तो अपनी जादुई शक्तियों को आराम दो,” राजा ने पहले से कहीं अधिक भयभीत होकर कहा। “हमें पूरा विश्वास है कि तुम ऐसा कर सकते हो।” सुअर अपने वास्तविक आकार में वापस आ गया और एक बार फिर सीढ़ियों के नीचे उपस्थित होकर उसकी सेवा करने लगा।
"इस मिशन पर राक्षस से लड़ने के लिए तुम किस हथियार का इस्तेमाल करोगे?" राजा ने पूछा। सुअर ने अपनी कमर से अपना रेक निकाला और कहा, "यह रेक।"
“लेकिन इससे तो हमारी बदनामी होगी,” राजा ने मुस्कुराते हुए कहा। “हमारे पास यहाँ लोहे के कोड़े, गदाएँ, जंजीरों से बंधे पंजे, युद्ध हथौड़े, कटारें, भाले, कुल्हाड़ी,

युद्ध कुल्हाड़ी, तलवारें, बिल, भाले और युद्ध दरांती हैं। जो तुम्हें ठीक लगे, चुन लो—वह रेक असली हथियार नहीं है।"

"महाराज, आपको इस बात का एहसास नहीं है," सुअर ने उत्तर दिया, "कि भले ही यह कच्चा है, लेकिन मैं इसे बचपन से अपने साथ रखता आया हूँ। जब मैं आकाशगंगा, यानी स्वर्ग की नदी का सेनापति था, तब मैंने अस्सी हज़ार नाविकों और सैनिकों की कमान संभाली थी और इस पर पूरी तरह निर्भर था। इस दुनिया में अपने स्वामी के अंगरक्षक के रूप में मैंने इसका इस्तेमाल पहाड़ों में बाघों और भेड़ियों के मांदों को नष्ट करने और नदियों में अजगरों और विशालकाय राक्षसों के घोंसलों को उलट-पुलट करने के लिए किया है।"

यह सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न और आश्वस्त हो गए, इसलिए उन्होंने अपनी नौ राजसी रानियों को अपने शाही शराब की एक बोतल लाने का आदेश दिया ताकि आदरणीय सुअर को विदाई दी जा सके; फिर उन्होंने एक प्याला भरा और सुअर को देते हुए कहा, "हे आदरणीय पिता, यह शराब का प्याला आपकी सेवा के लिए मेरी कृतज्ञता व्यक्त करे। जब आप उस दुष्ट राक्षस को पकड़कर मेरी पुत्री को वापस लाएंगे, तो आपको राजकीय भोज और एक हजार सोने के सिक्के पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे।" अपनी अशिष्टता के बावजूद, उस मूर्ख ने इसे शान से स्वीकार किया।

आदरपूर्वक "ना-आ-आ" का उच्चारण करने के बाद उसने संजांग से कहा, "गुरुजी, आपको यह शराब पहले पीनी चाहिए, लेकिन महाराज ने इसे मुझे दिया है और मैं उनकी अवज्ञा करने का साहस नहीं कर सकता। कृपया मुझे पहले पीने की अनुमति दें, क्योंकि इससे राक्षस को पकड़ने के लिए मेरा मनोबल बढ़ेगा।"

उसने प्याला एक ही घूंट में खाली कर दिया, उसे फिर से भरा और संज़ंग को दे दिया, जिसने कहा, "चूंकि मैं शराब को छू भी नहीं सकता, इसलिए तुम दोनों इसे मेरे लिए पी लो।" साधु सैंड आया और उसने प्याला ले लिया। तभी पिग के पैरों के नीचे बादल उग आए और वह हवा में ऊपर उठ गया।

"आदरणीय सुअर," राजा ने विस्मय से कहा, "आप भी बादलों पर चल सकते हैं!"

जब सुअर चला गया, तो साधु सैंड ने भी अपना शराब का प्याला एक ही घूंट में खाली कर दिया और कहा, "जब पीले वस्त्रधारी राक्षस ने आपको बंदी बनाया था, स्वामी जी, तब हम दोनों ही युद्ध में उसका मुकाबला कर पाए थे। मुझे डर है कि मेरा बड़ा भाई अकेले उसे हरा नहीं पाएगा।"

"हां," संजांग ने जवाब दिया। "तुम्हें जाकर उसकी मदद करनी चाहिए।"
अध्याय 29
418
पश्चिम की यात्रा
जब साधु सैंड भी बादल पर सवार होकर हवा में उछल पड़े और चले गए, तो चिंतित राजा ने संजांग को पकड़ लिया और कहा, "हे आदरणीय महोदय, मेरे साथ यहीं रुकिए। आप भी बादल पर उड़कर कहीं चले मत जाइए।"
"अफसोस, मैं बादलों पर एक कदम भी नहीं चल सकता।" हम उन दोनों को महल में आपस में बात करते हुए छोड़कर चले जाते हैं।
"मैं यहीं हूँ, भाई," फ्रायर सैंड ने पिग को पकड़ते हुए कहा।
"क्यों?" सुअर ने पूछा। "मालिक ने मुझे तुम्हारी मदद करने के लिए बुलाया है," साधु सैंड ने जवाब दिया।
"अच्छा हुआ कि तुम आ गए। हम दोनों अपनी पूरी जान लगाकर इस शैतान को पकड़ेंगे। भले ही यह कोई बहुत बड़ी बात न हो, लेकिन इससे कम से कम हम इस देश में मशहूर तो हो जाएंगे।"
वे चमचमाते बादलों पर सवार होकर देश छोड़कर चले गए।
जादुई रोशनी की चकाचौंध में राजधानी से प्रस्थान करते हुए।
राजा के आदेश पर वे पर्वत की गुफा में आए।
बुरी आत्मा को पकड़ने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर जमकर लड़ना।
कुछ ही देर में वे गुफा के मुहाने पर पहुँच गए और अपना बादल उतारा। सुअर ने पूरी ताकत से अपना रेक गुफा के द्वार पर मारा और उसमें बाल्टी के आकार का छेद कर दिया। गुफा की रखवाली कर रहे छोटे राक्षस इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने द्वार खोल दिए; उन दोनों को देखते ही वे अंदर दौड़कर बोले, "महाराज, बुरी खबर है। बड़े कानों वाला लंबा थूथन वाला भिक्षु और भयानक चेहरे वाला दूसरा भिक्षु वापस आ गए हैं और हमारे द्वार तोड़ दिए हैं।"
"फिर से पिग और फ्रायर सैंड?" राक्षस ने हैरानी से कहा। "मेरे मालिक की जान बख्शने के बाद भी उनकी हिम्मत कैसे हुई मेरा दरवाजा तोड़ने की?"
"शायद वे कुछ ऐसा लेने आए हैं जो वे पीछे छोड़ गए थे," एक युवा दानव ने सुझाव दिया।

“बकवास,” राक्षस ने गुस्से से कहा। “अगर उन्होंने कुछ छोड़ा होता तो क्या वे फाटक तोड़ देते?” उसने जल्दी से अपना कवच पहना, अपनी लोहे की तलवार ली, बाहर गया और पूछा, “भिक्षुओं, मेरे दरवाजे को तोड़ने का क्या मतलब है? मैंने तुम्हारे गुरु को बख्श दिया था, है ना?”

"क्या तुम कोई अच्छा काम करोगे, दुष्ट राक्षस?" सुअर ने कहा।

"क्या?" बूढ़े राक्षस ने पूछा।

“तुमने एलिफेंटिया देश की तीसरी राजकुमारी को अपनी गुफा में आने के लिए मजबूर किया,” पिग ने कहा, “और तुमने उसे तेरह साल तक यहाँ रखा है। अब तुम्हें उसे वापस भेज देना चाहिए। हम राजा के आदेश पर तुम्हें पकड़ने आए हैं, इसलिए अगर तुम नहीं चाहते कि मैं तुम्हें मारूँ, तो जल्दी से अंदर जाओ और खुद को बाँध लो।”

बूढ़ा राक्षस अब भयंकर क्रोध में था। बस उसे देखो, वह अपने लोहे के दाँत पीसता है, इतनी तीखी नज़र से घूरता है कि उसकी आँखें क्रोध से गोल हो जाती हैं, अपनी तलवार उठाता है और पिग के सिर पर वार करता है। पिग ने वार से खुद को बचाया और अपने रेक से राक्षस के चेहरे पर पलटवार किया, जिसके बाद फ्रायर सैंड अपनी लाठी लेकर लड़ाई में शामिल होने के लिए आगे बढ़ा। पहाड़ पर यह लड़ाई पिछली लड़ाई से अलग थी:

गलत बातें कहने से पुरुष नाराज हो सकते हैं;
दुष्ट इरादे और आहत भावनाएं क्रोध को जन्म देती हैं।
दानव राजा की महान इस्पात तलवार
सिर के पास से चीरा हुआ;
सुअर का नौ दांतों वाला रेक
चेहरे पर वार किया।
जैसे ही फ्रायर सैंड ने अपनी लाठी चलाई
राक्षस राजा ने अपने जादुई हथियार से वार को रोका।
एक खूंखार राक्षस,
दो पवित्र भिक्षु,

अत्यंत शांति के साथ इधर-उधर घूमना।
एक कहता है,
"देश के खिलाफ किए गए अपने अपराध के लिए तुम मौत के हकदार हो।"
अन्य उत्तर,
"हस्तक्षेप करने वाला व्यक्ति, दुनिया को सुधारने की कोशिश कर रहा है।"
"राजकुमारी को बंधक बनाकर तुमने राज्य का अपमान किया है," दूसरे ने कहा।
"बस अपने काम से मतलब रखो," दूसरे ने कहा।
यह सब उस पत्र की वजह से हुआ था।
अब भिक्षुओं और राक्षस के बीच युद्ध छिड़ गया था।
पहाड़ पर आठ-नौ बार लड़ाई लड़ने के बाद पिग थकने लगा था; उसकी ताकत कम हो रही थी और वह बड़ी मुश्किल से अपना फावड़ा उठा पा रहा था। क्या आप जानते हैं कि इस बार वे उस राक्षस का सामना क्यों नहीं कर पाए? पहली लड़ाई में सभी रक्षक देवता पिग और फ्रायर सैंड की मदद कर रहे थे क्योंकि संज़ैंग गुफा में था, इसलिए वे उस राक्षस का मुकाबला करने में सक्षम थे। इस बार सभी रक्षक देवता एलिफेंटिया में संज़ैंग की देखभाल कर रहे थे, इसीलिए पिग और फ्रायर सैंड उस शैतान का सामना नहीं कर पाए।
“तुम आगे आओ और उससे लड़ो, फ्रायर सैंड,” उस मूर्ख ने कहा, “मैं शौच करने चला जाता हूँ।” फिर फ्रायर सैंड के बारे में ज़रा भी सोचे बिना वह घास, जंगली अंजीर, काँटों और लताओं की झाड़ियों में घुस गया, सीधे अंदर चला गया और अपने चेहरे पर लगे खरोंचों की परवाह नहीं की। फिर वह गहरी नींद में सो गया, इतना डरा हुआ था कि उठ नहीं पा रहा था। अध्याय 29

वह फिर बाहर निकल गया। वह हथियारों के टकराने की आवाज सुनने के लिए कान लगाए बैठा रहा।
पिग को भागते देख, राक्षस ने फ्रायर सैंड पर हमला कर दिया, लेकिन सैंड उसे रोकने में असमर्थ रहा और राक्षस ने उसे पकड़कर गुफा में ले गया। छोटे शैतानों ने उसे हाथ-पैर बांध दिए। अगर आपको नहीं पता कि उसका क्या हुआ, तो अगले अध्याय में इसका विवरण सुनें।

अध्याय 30

एक दुष्ट राक्षस सच्चे कानून को नुकसान पहुंचाता है

मन-घोड़ा हृदय-बंदर को याद रखता है

अब जब उसने साधु सैंड को बांध दिया था, तो राक्षस ने न तो उसे मारा, न पीटा और न ही उसे गाली दी। इसके बजाय उसने अपनी तलवार उठाई और सोचा, "इतने महान देश से आने वाले तांग पुजारी में शिष्टाचार तो होना ही चाहिए—मैंने उसकी जान बख्श दी, तो उसने अपने शिष्यों को मुझे पकड़ने के लिए नहीं भेजा होगा। हम्म। मेरी पत्नी ने अपने देश में कोई पत्र भेजा होगा और राज़ खोल दिया होगा। बस इंतज़ार करो जब मैं उससे पूछताछ करूंगा।" राक्षस इतना क्रोधित हो गया कि वह उसे जान से मारने को तैयार था।

अनजान राजकुमारी, जिसने अभी-अभी अपना रूप-रंग पूरा किया था, बाहर आई तो उसने देखा कि राक्षस गुस्से में अपनी भौंहें सिकोड़ रहा था और दांत पीस रहा था।

"आपको क्या परेशानी है, महाराज?" उसने मुस्कुराते हुए पूछा। राक्षस ने घुरघुराहट की और उसका अपमान करना शुरू कर दिया।

"अरे नीच कुतिया," उसने कहा, "तुममें इंसानियत नाम की भी नहीं है। जब मैं तुम्हें पहली बार यहाँ लाया था, तब तुमने कभी कोई शिकायत नहीं की। तुम रेशमी कपड़े और सोने का मुकुट पहनती हो, और मैं तुम्हारी हर ज़रूरत पूरी करता हूँ। तुम साल के चारों मौसम ऐशो-आराम में जीती हो, और हम हमेशा से एक-दूसरे के बहुत करीब रहे हैं। तो फिर तुम सिर्फ अपने माता-पिता के बारे में ही क्यों सोचती हो? तुम्हारे अंदर पत्नी होने का कोई एहसास क्यों नहीं है?"

इससे राजकुमारी इतनी भयभीत हो गई कि वह घुटनों के बल गिर पड़ी और बोली, "तुम मुझसे इस तरह बात क्यों करने लगे हो जैसे तुम मुझे मार डालने वाले हो?"

"मुझे नहीं पता कि मैं तुमसे छुटकारा पा रहा हूँ या तुम मुझसे," राक्षस ने जवाब दिया। "मैंने उस तांग पुजारी को पकड़कर यहाँ खाने के लिए लाया था, लेकिन तुमने मुझसे बिना पूछे उसे छोड़ दिया। तुमने ज़रूर चुपके से उसे पत्र लिखकर उसे पहुँचाने को कहा होगा। इसके अलावा और कोई कारण नहीं है कि ये दोनों भिक्षु इस जगह पर हमला करें और तुम्हारी वापसी की मांग करें। यह सब तुम्हारी ही गलती है, है ना?"

"इसके लिए मुझे दोष मत दीजिए, महाराज," उसने उत्तर दिया। "मैंने कभी ऐसा पत्र नहीं लिखा।"

"झूठा," उसने कहा। "मैंने इसे साबित करने के लिए अपने एक दुश्मन को पकड़ लिया है।"

"कौन?" उसने पूछा।

"फ्रायर सैंड, तांग पुजारी की दूसरी शिष्या।" कोई भी अपनी मृत्यु को स्वीकार करना पसंद नहीं करता, यहाँ तक कि अपनी अंतिम साँस के समय भी नहीं, इसलिए वह केवल दिखावा बनाए रखने की कोशिश कर सकती थी।

“कृपया अपना आपा न खोएं, महाराज,” उसने कहा। “चलिए, उससे इसके बारे में पूछते हैं। अगर सचमुच कोई पत्र था, तो मैं खुशी-खुशी आपको मुझे मारने दूंगी; लेकिन अगर नहीं था, तो आप अपने दास को अन्यायपूर्वक मार रहे होंगे।” बिना और कुछ कहे, उस राक्षस ने टोकरी के आकार की मुट्ठी से उसके रत्नजड़ित बालों को पकड़ा और उसे अपने सामने ज़मीन पर पटक दिया। फिर उसने साधु सैंड से पूछताछ करने के लिए अपनी तलवार उठाई।

अध्याय 30

421

पश्चिम की यात्रा

"फ्रायर सैंड," वह गरजते हुए बोला, "जब तुम दोनों ने हमला करने की गुस्ताखी की, तो क्या यह इसलिए था क्योंकि उसके देश के राजा ने उससे पत्र मिलने के बाद तुम्हें यहाँ भेजा था?"

जब बंधे हुए साधु सैंड ने देखा कि दुष्ट आत्मा गुस्से में राजकुमारी को ज़मीन पर पटक रही है और फिर उसे मारने के लिए अपनी तलवार उठा रही है, तो उसने सोचा, "ज़ाहिर है उसने कोई पत्र भेजा होगा। लेकिन उसने हमारे स्वामी को बख्शकर हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। अगर मैं उसे इसके बारे में बताऊँगा, तो वह उसे मार डालेगा। नहीं, उसने हमारे लिए जो किया है उसके बाद ऐसा करना बहुत भयानक होगा। इसके अलावा, मैंने अपने स्वामी के साथ रहते हुए कोई अच्छा काम नहीं किया है, इसलिए यहाँ कैदी के रूप में मैं अपने स्वामी की भलाई का बदला अपने जीवन से चुका सकता हूँ।"

उसने मन बना लिया और चिल्लाकर कहा, "अच्छी तरह पेश आओ, दुष्ट राक्षस। उसने कोई पत्र नहीं भेजा, इसलिए उसके साथ दुर्व्यवहार मत करो और न ही उसकी हत्या करो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि हम राजकुमारी को क्यों वापस लेने आए हैं। जब मेरा

स्वामी इस गुफा में तुम्हारा कैदी था, तब उसने राजकुमारी का चेहरा देखा था। बाद में जब उसने एलिफेंटिया के राजा को अपने प्रमाण पत्र दिखाए, तो राजा ने उसे राजकुमारी का चित्र दिखाया और पूछा कि क्या उसने उसे अपनी यात्रा के दौरान देखा था। राजा ने बहुत पहले ही राजकुमारी का यह चित्र बनवाया था और उसके बारे में हर जगह पूछताछ की थी। मेरे स्वामी ने राजा को राजकुमारी के बारे में बताया, और जब राजा ने अपनी बेटी के बारे में यह खबर सुनी, तो उसने हमें अपनी शाही शराब दी और उसे महल वापस लाने के लिए भेज दिया। यही सच है। कोई पत्र नहीं था। अगर तुम किसी को मारना चाहते हो, तो मुझे मार डालो, और इतनी दुष्टता मत करो कि एक निर्दोष स्त्री की हत्या करो।"

फ्रायर सैंड के नेक शब्दों से प्रभावित होकर, राक्षस ने अपनी तलवार एक तरफ रख दी और राजकुमारी को बाहों में भरते हुए कहा, "कृपया मुझे इतनी अभद्रता के लिए क्षमा करें।" फिर उसने राजकुमारी के बाल संवारे और कोमल भाव से उसे अपने साथ अंदर चलने का आग्रह किया। उसने राजकुमारी को सम्मान के आसन पर बैठने के लिए कहा और उससे क्षमा मांगी।

अपनी स्त्रीत्वपूर्ण चंचलता के कारण राजकुमारी को उसकी अत्यधिक विनम्रता से प्रेरित होकर एक विचार आया।

"मेरे स्वामी," उसने कहा, "क्या आप हमारे प्रेम की खातिर फ्रायर सैंड के बंधन थोड़े ढीले कर सकते हैं?" उस बूढ़े दुष्ट ने अपने अधीनस्थों को आदेश दिया कि वे फ्रायर सैंड के बंधन खोल दें और उसे वहीं बंद कर दें।

बंधन मुक्त होने और कैद से छूट जाने पर, फ्रायर सैंड उठे और सोचने लगे, "पुराने समय में लोग कहते थे कि किसी दूसरे की मदद करना खुद की मदद करने जैसा है। अगर मैंने उसकी मदद न की होती, तो वह मुझे बंधन मुक्त न करवा पाती।"

उस बूढ़े दुष्ट ने अपनी पत्नी को शांत करने और उसे मनाने के लिए एक भोज का आयोजन किया। जब वह खूब शराब पीकर मदहोश हो गया, तो उसने एक नया चोगा पहना और अपनी कमर में तलवार बाँध ली। फिर उसने राजकुमारी को प्यार से सहलाते हुए कहा, "पत्नी, तुम घर पर रहो और शराब पियो। हमारे दोनों बेटों का ख्याल रखना और साधु संग को भागने मत देना। जब तक तांग पुजारी एलिफेंटिया में हैं, मैं अपने रिश्तेदारों से मिलूंगा।"

"कैसे रिश्ते?" उसने पूछा।

"आपके पिता," उसने उत्तर दिया। "मैं उनका दामाद हूँ और वे मेरे ससुर हैं, तो हम एक-दूसरे से परिचित क्यों न हों?"
"तुम्हें नहीं जाना चाहिए," उसने जवाब दिया।
"क्यों नहीं?" उसने पूछा।
"मेरे पिता," उसने उत्तर दिया, "उन्होंने अपने देश को बलपूर्वक नहीं जीता; यह उन्हें उनके पूर्वजों से विरासत में मिला है। वे बचपन में ही सिंहासन पर आसीन हुए थे और महल के द्वार से कभी दूर नहीं गए, इसलिए उन्होंने आप जैसे बलवान व्यक्ति को कभी नहीं देखा। आपका चेहरा थोड़ा डरावना है, और अगर आपकी यात्रा से वे डर गए तो यह बहुत बुरा होगा। बेहतर होगा कि आप उनसे मिलने न जाएं।"
"तो मैं खुद को सुंदर बना लूंगा," उसने कहा।
"इसे आजमाकर मुझे दिखाओ," राजकुमारी ने कहा।
अध्याय 30
422
पश्चिम की यात्रा
उस भव्य राक्षस ने खुद को झटका दिया और भोज के बीच में ही उसने अपना रूप एक सुंदर पुरुष में बदल लिया।
वह सुरुचिपूर्ण और लंबा था।
वह किसी उच्च अधिकारी की तरह बोलता था।
उसकी हरकतें एक युवक जैसी थीं।
वह कवि काओ झी के समान ही प्रतिभाशाली थे।
वह पैन आन की तरह सुंदर था, जिस पर महिलाएं फल फेंकती थीं।
उसके सिर पर मैना पक्षी के पंखों वाली टोपी थी।
जिसके आगे काले बादल झुक गए;
उन्होंने हरे रंग के रेशम का चोला पहना हुआ था।
चौड़ी और लहराती हुई आस्तीनों के साथ।
उसके पैरों में पैटर्न वाले ऊपरी हिस्से के काले जूते थे।
और उसकी कमर पर एक चमकती हुई तलवार लटकी हुई थी।
वह एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति थे।
लंबा, आकर्षक और सुंदर।

राजकुमारी उसे देखकर बेहद प्रसन्न हुई। उसने मुस्कुराते हुए उससे पूछा, "क्या यह शानदार बदलाव नहीं है?"

"बहुत बढ़िया," उसने उत्तर दिया, "बहुत बढ़िया। जब आप इस तरह दरबार में जाएँगे तो राजा आपको अपना दामाद स्वीकार करने के लिए बाध्य होगा और अपने नागरिक और सैन्य अधिकारियों से आपके लिए भोज आयोजित करवाएगा, इसलिए यदि आप कुछ भी पीते हैं तो आपको बहुत सावधान रहना होगा कि आप अपना असली चेहरा न दिखाएँ - रहस्य उजागर करना ठीक नहीं होगा।"

उन्होंने कहा, "आपको मुझे यह बताने की जरूरत नहीं है, मैं खुद इसे अच्छी तरह समझता हूं।"

वह अपने बादल पर सवार होकर तेजी से रवाना हुआ और जल्द ही एलिफेंटिया पहुंच गया, जहां वह उतरा और महल के द्वार की ओर चल पड़ा।

उन्होंने द्वारपाल से कहा, "कृपया सूचित करें कि महामहिम के तीसरे दामाद मुलाकात के लिए आए हैं।"

एक हिजड़ा दूत सिंहासन की सीढ़ियों पर गया और सूचना दी, "महाराज के तीसरे दामाद आपसे मिलने आए हैं और महल के द्वार के बाहर आपके बुलावे का इंतजार कर रहे हैं।" जब राजा, जो संजांग से बात कर रहे थे, ने "तीसरे दामाद" शब्द सुना, तो उन्होंने उपस्थित अधिकारियों से कहा, "मेरे तो केवल दो ही दामाद हैं—तीसरा हो ही नहीं सकता।"

"ऐसा लगता है कि कोई राक्षस आ गया है," अधिकारियों ने जवाब दिया।

"तो क्या मुझे उसे बुलवाना चाहिए?" राजा ने पूछा।

"महाराज," संजांग ने घबराकर कहा, "वह एक दुष्ट आत्मा है, इसलिए हम मनुष्य उसके बारे में कुछ नहीं कर सकते। वह अतीत और भविष्य दोनों को जानता है और बादलों पर सवार होता है। आप उसे बुलाएँ या न बुलाएँ, वह आएगा ही, इसलिए बेहतर होगा कि आप उसे बुला लें और बहस से बचें।"

राजा ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उसे बुलवाया। वह राक्षस सीढ़ियों के नीचे आया और नाचने-गाने की सामान्य रस्म अदा करने लगा। उसके आकर्षक रूप ने

किसी भी अधिकारी को यह एहसास नहीं होने दिया कि वह एक दानव है; बल्कि उन्होंने अपनी अज्ञानता में उसे एक अच्छा आदमी समझ लिया। उसकी भव्य आकृति को देखकर राजा ने सोचा कि वह राज्य का स्तंभ और रक्षक बनेगा। "दामाद," उसने उससे पूछा,

आप कहाँ रहते हैं? आप कहाँ से हैं? आपने राजकुमारी से कब शादी की? आप मुझसे पहले मिलने क्यों नहीं आए?

राक्षस ने अपना सिर जमीन पर पटकते हुए उत्तर दिया, "मैं बाउल माउंटेन में स्थित मून वाटर्स गुफा से आया हूँ।"

राजा ने पूछा, "यहाँ से वह कितनी दूर है?"

"ज्यादा दूर नहीं," उसने जवाब दिया, "सिर्फ सौ मील।"

राजा ने कहा, "अगर यह सौ मील दूर है, तो राजकुमारी आपसे शादी करने के लिए वहां कैसे पहुंची?"

उस राक्षस ने धूर्तता और धोखे से भरा जवाब दिया। उसने कहा, "महाराज, मैं बचपन से ही घुड़सवारी और शिकार करता आया हूँ और शिकार से ही अपना जीवन यापन करता हूँ। तेरह साल पहले, एक दिन मैं बाज़ों, कुत्तों और कुछ साथियों के साथ शिकार पर गया था, तभी मैंने एक भयंकर धारीदार बाघ को पहाड़ की ढलान से नीचे एक लड़की को अपनी पीठ पर लादे हुए देखा। मैंने अपने धनुष पर तीर चढ़ाया और बाघ को मार गिराया, फिर लड़की को घर ले आया और उसे गर्म पानी पिलाकर होश में लाया, जिससे उसकी जान बच गई। जब मैंने उससे पूछा कि वह कहाँ से है, तो उसने कभी भी अपने जन्मस्थान का ज़िक्र नहीं किया।

'राजकुमारी'—अगर उसने कहा होता कि वह महाराज की पुत्री है, तो मैं आपकी अनुमति के बिना उससे विवाह करने का दुस्साहस कभी नहीं करता। मैं आपके स्वर्ण महल में आता और किसी ऐसे पद की माँग करता जिसमें मैं अपनी प्रतिष्ठा का परिचय करा सकूँ। चूंकि उसने कहा कि वह साधारण परिवार की पुत्री है, इसलिए मैंने उसे अपने घर में रखा। उसकी सुंदरता और मेरी योग्यता से हमें प्रेम हो गया, और इतने वर्षों से हमारा वैवाहिक जीवन चल रहा है। विवाह के समय मैं बाघ को मारकर अपने सभी रिश्तेदारों के लिए भोज में परोसना चाहता था, लेकिन उसने मुझे ऐसा करने से मना कर दिया। एक श्लोक था जो बताता था कि मुझे ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए:

'"स्वर्ग और पृथ्वी की कृपा से हम पति-पत्नी बन रहे हैं; हम बिना मध्यस्थ या गवाहों

के शादी करेंगे।'"
पिछले जन्म में किसी लाल धागे ने हमें अवश्य ही एक दूसरे से जोड़ा होगा।
तो चलिए बाघ को ही अपना मध्यस्थ बना लेते हैं।'
जब उसने ऐसा कहा तो मैंने बाघ को खोल दिया और उसकी जान बख्श दी। घायल जानवर ने अपनी पूंछ झटक दी और भाग गया। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि जान बचाकर भागने के बाद वह पिछले कई सालों से एक ऐसी आत्मा में परिवर्तित हो चुका होगा जिसका एकमात्र उद्देश्य लोगों को धोखा देना और मारना है। मेरा मानना है कि एक बार तीर्थयात्रियों का एक समूह धर्मग्रंथ लेने जा रहा था, जिन्होंने कहा कि वे महान तांग के पुजारी हैं। बाघ ने उनके नेता को मार डाला होगा, उसके पहचान पत्र ले लिए होंगे और खुद को तीर्थयात्री के रूप में प्रस्तुत किया होगा। अब वह इस महल में आपके अध्याय 30 को धोखा देने की कोशिश कर रहा है।

महाराज। कढ़ाईदार तकिये पर बैठा वह व्यक्ति वास्तव में वही बाघ है जो तेरह साल पहले राजकुमारी को उठाकर ले गया था। वह कोई तीर्थयात्री नहीं है।
क्षीण बुद्धि वाले राजा, जो अपनी अंधता के कारण दुष्ट आत्मा को पहचान नहीं सके, ने झूठ के ताने-बाने को सत्य मान लिया और कहा, "महान दामाद, आप यह कैसे कह सकते हैं कि यह भिक्षु वही बाघ है जो राजकुमारी को ले गया था?"
"पहाड़ों में रहते हुए, मैं बाघ का मांस खाता हूँ, बाघ के कपड़े पहनता हूँ, बाघों के बीच सोता हूँ और बाघों के बीच घूमता हूँ। बेशक मैं बता सकता हूँ।"
राजा ने कहा, "भले ही तुम बता सको, फिर भी उसे उसके असली रूप में वापस लाकर मुझे दिखाओ।"
“अगर मुझे आधा प्याला पानी उधार मिल जाए,” राक्षस ने उत्तर दिया, “तो मैं उसे उसके असली रूप में बदल दूंगा।” राजा ने अपने दामाद के लिए पानी लाने के लिए एक अधिकारी को भेजा। राक्षस ने पानी हाथ में लिया, आगे उछला और आँखों को धोखा देने वाला शरीर-स्थिर करने वाला मंत्र पढ़ा। उसने मंत्र के शब्द पढ़े, तांग पुजारी पर एक घूँट पानी छिड़का और चिल्लाया, “बदलो!” संजांग का असली शरीर हॉल के ऊपर छिपा दिया गया और वह एक धारीदार बाघ में बदल गया। राजा की नश्वर आँखों को बाघ का रूप इस प्रकार दिखाई दिया: सफेद माथा और गोल सिर।

शरीर पर पैटर्न बने हुए थे और आंखें बिजली की तरह चमक रही थीं।
चार पैर,
सीधा और लंबा;
बीस पंजे,
नुकीला और धारदार।
उसके मुंह के चारों ओर नुकीले दांत थे।
उसकी भौंहों से नुकीले कान निकले हुए थे।
भयंकर और शक्तिशाली, एक विशाल बिल्ली के आकार का,
भूरे रंग के बछड़े की तरह उग्र और बलवान।
उसकी घनी मूंछें चांदी की तरह चमक रही थीं।
उसकी नुकीली जीभ से तीखी गंध वाली सांस निकल रही थी।
वह सचमुच एक खूंखार बाघ था।
जिसकी भव्यता महल के हॉल में व्याप्त थी।
अध्याय 30
425
पश्चिम की यात्रा
उसे देखते ही राजा की आत्मा शरीर से निकल गई और मुट्ठी भर वीर सेनापतियों को छोड़कर सभी अधिकारी भय से भाग गए। उन्होंने अधिकारियों के एक समूह का नेतृत्व करते हुए बाघ पर धावा बोल दिया और हर तरह के हथियार से अंधाधुंध वार करने लगे। अगर तांग पुरोहित का भाग्य अच्छा न होता, तो उनके जैसे बीस लोग भी टुकड़े-टुकड़े हो जाते। सौभाग्य से, छह डिंग, छह जिया, सत्य के प्रकटकर्ता, कर्तव्य देवता और धर्म के रक्षक सभी हवा में उनकी रक्षा कर रहे थे और उन्हें किसी भी हथियार से घायल होने से बचा रहे थे। शाम तक चले भीषण संघर्ष के बाद, अंततः उन्होंने बाघ को पकड़ लिया, उसे जंजीरों से बांध दिया और उस कमरे में लोहे के पिंजरे में डाल दिया जहाँ अधिकारी मुलाकात के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे।
तब राजा ने अपने राजगृह विभाग को एक भव्य भोज आयोजित करने का आदेश दिया ताकि वह अपने दामाद को अपनी बेटी को भिक्षु द्वारा मारे जाने से बचाने के लिए धन्यवाद दे सके। उस शाम, जब दरबार समाप्त हो गया, तो राक्षस चांदी के शांति कक्ष में गया। अठारह महल की सुंदरियों और उपपत्नियों को चुना गया था, और

उन्होंने संगीत बजाया, गाया और नृत्य किया, जिससे राक्षस को पीने और आनंद लेने के लिए उकसाया। राक्षस सम्मान की सीट पर अकेला बैठा था, और उसके बाएँ और दाएँ ये सभी कामुक स्त्रियाँ बैठी थीं। जब वह रात के दूसरे पहर तक पीता रहा, तो वह इतना मदहोश हो गया कि अपनी क्रूरता को रोक नहीं पाया। वह उछल पड़ा, जोर से हँसा, और अपने असली रूप में लौट आया। उस पर हत्या का आवेग आया, और टोकरी जितना बड़ा हाथ फैलाकर उसने वीणा बजा रही एक लड़की को पकड़ लिया, उसे अपनी ओर घसीटा, और उसके सिर को काट लिया। सत्रह अन्य महल की स्त्रियाँ घबराकर भाग गईं और छिप गईं।

महल की सुंदरियां भयभीत हो गईं।

छोटी रखैलें दहशत में थीं।

भयभीत महल की सुंदरियाँ

वे रात में बारिश से भीगे हुए कमलों के समान थे;

भयभीत रखैलें

वे वसंत की हवाओं में झूमते हुए पेओनी के फूलों की तरह थे।

अपने वीणा तोड़कर वे अपनी जान बचाने के लिए भाग गए।

भागते समय वे वीणा को पैरों से रौंदते चले गए।

जैसे ही वे दरवाजों से बाहर निकले, उन्हें पता नहीं था कि वे कहाँ जा रहे हैं; हॉल से भागते हुए वे हर जगह दौड़ पड़े।

उनके जेड से बने चेहरों को नुकसान पहुंचाना

और उनके सुंदर सिर आपस में टकरा रहे थे।

उनमें से हर एक अपनी जान बचाने के लिए भाग गई;

वे सभी भागकर सुरक्षित स्थान पर चले गए।

अध्याय 30

जो महिलाएं भाग निकली थीं, उन्होंने चिल्लाने की हिम्मत नहीं की क्योंकि वे आधी रात को राजा को परेशान नहीं करना चाहती थीं, इसलिए वे सभी कांपते हुए दीवारों के छज्जे के नीचे छिप गईं, जहां हम उन्हें छोड़ देंगे।

वह राक्षस, अभी भी अपने सम्मान के सिंहासन पर बैठा हुआ था, एक पल के लिए

सोचा, फिर शराब का एक और कटोरा पिया, उस स्त्री को अपनी ओर खींचा और उसके दो और खूनी निवाले खा लिए। जब वह महल के अंदर आनंद ले रहा था, तब बाहर यह खबर फैल रही थी कि तांग पुजारी वास्तव में एक बाघ की आत्मा है। यह अफवाह जंगल की आग की तरह फैल गई और जल्द ही सरकारी छात्रावास तक पहुँच गई। वहाँ सफेद घोड़े के अलावा कोई और नहीं था, जो एक नांद से चारा खा रहा था। यह घोड़ा कभी पश्चिमी सागर का एक युवा ड्रैगन राजकुमार था, जिसने स्वर्ग संहिता का उल्लंघन करने के दंड के रूप में अपने सींग और शल्क खो दिए थे और उसे एक सफेद घोड़े में बदल दिया गया था ताकि वह संजांग को पश्चिम में धर्मग्रंथ लाने के लिए ले जा सके।

जब उसने सुना कि तांग पुजारी एक बाघ की आत्मा है, तो उसने सोचा, "मेरे गुरु तो वाकई अच्छे इंसान हैं। उस दुष्ट आत्मा ने उन्हें नुकसान पहुंचाने के लिए बाघ में बदल दिया होगा, अब मैं क्या करूँ? बंदर तो कब से गायब है, और बाकी दोनों का कोई पता नहीं।" आधी रात होते-होते वह और इंतज़ार नहीं कर सका।

वह उछल पड़ा और बोला, "अगर मैंने तांग पुजारी को नहीं बचाया तो मुझे कोई पुण्य नहीं मिलेगा।" वह खुद को और रोक नहीं सका, इसलिए उसने अपनी लगाम झटक दी, लगाम और पेटी ढीली कर दी, और खुद को वापस अजगर में बदल लिया।

फिर वह सीधे एक काले बादल पर सवार होकर नौवें स्वर्ग की ओर चले गए। इस बात को साबित करने वाली एक कविता है: बुद्ध की पूजा करने के लिए पश्चिम की ओर अपनी यात्रा पर।

स्वामी को दुष्ट राक्षसों में बदल दो।

अब वह बाघ में बदल चुका था

सफेद घोड़ा लगाम घसीटते हुए उसकी मदद के लिए आया।

आकाश में ऊपर से अजगर ने चांदी जैसी शांति के हॉल में जगमगाती रोशनी देखी, जहाँ आठ बड़े दीवटों पर आठ मोमबत्तियाँ जल रही थीं। करीब से देखने के लिए उसने अपना बादल नीचे लाया और देखा कि राक्षस सम्मान की सीट पर अकेला बैठा है और मानव मांस खाते हुए पी रहा है। अजगर ने मुस्कुराते हुए सोचा, "बेहद बेकार जानवर, इस तरह अपनी चाल का खुलासा कर दिया। इसने अपने कवच का संतुलन बिगाड़ दिया है—इसने खुद को बेनकाब कर दिया है!"

आदमखोर अच्छा आदमी नहीं हो सकता। अब मुझे पता चल गया है कि हमारे मालिक

के साथ क्या हुआ है: वह इस दुष्ट राक्षस से मिला है। मैं उसे बेवकूफ बनाने की कोशिश करूंगा। अगर यह कामयाब हो गया तो हमारे मालिक को बचाने के लिए अभी भी समय होगा।

एक झटके में, भव्य ड्रैगन राजा एक पतली और मोहक महल की सुंदरी में परिवर्तित हो गया। जल्दी से अंदर आकर उसने राक्षस का अभिवादन किया और कहा, "महाराज, यदि आप मेरी जान बख्श दें, तो मैं आपके लिए प्याला थाम लूँगा।"

"मुझे और शराब दो," उसने कहा। युवा ड्रैगन ने बर्तन लिया और जल-नियंत्रण मंत्र का प्रयोग करके अपने प्याले को इतना भर दिया कि शराब किनारे से कई इंच ऊपर तक आ गई, लेकिन गिरी नहीं।

वह राक्षस, जिसे इस जादू के बारे में पता नहीं था, इस तरकीब से बहुत खुश हुआ; और जब अजगर ने पूछा,

“क्या मैं इसे और भर दूँ?” उसने उत्तर दिया, “हाँ, हाँ।” अजगर ने घड़ा उठाया और भरता चला गया। शराब इतनी ऊँची उठ गई कि वह तेरह मंजिला शिवालय जितनी ऊँची हो गई, और फिर भी मुश्किल से ही छलक कर बाहर निकली। राक्षस ने अपना मुँह चौड़ा खोला और सारी शराब पी गया, फिर मरी हुई लड़की को अपनी ओर खींचा और एक और निवाला लिया।

"क्या तुम गा सकते हो?" उसने पूछा, और अजगर ने जवाब दिया, "हाँ, थोड़ा-बहुत।" उसने एक छोटा सा गीत गाया और राक्षस को शराब का एक और प्याला थमा दिया।

अध्याय 30

पश्चिम की यात्रा

"क्या तुम नाच सकते हो?" राक्षस ने पूछा। "हाँ, थोड़ा-बहुत," उसने उत्तर दिया, "लेकिन मैं खाली हाथ ठीक से नहीं नाच सकता।" राक्षस ने अपना चोला एक तरफ हटाया, अपनी कमर पर बंधी तलवार निकाली, उसे म्यान से बाहर निकाला और अजगर को दे दिया। अजगर ने तलवार लेकर भोज की मेज के सामने तलवार नृत्य किया।

जैसे ही राक्षस ने आँखें फाड़कर देखा, अजगर ने नाचना बंद कर दिया और उसके चेहरे पर वार किया। दैत्य एक तरफ हट गया और तुरंत लोहे की एक लालटेन उठा ली, जिसका वजन स्टैंड समेत लगभग सौ किलो रहा होगा, और उससे तलवार का

वार रोका। जैसे ही वे दोनों चांदी जैसी शांति के हॉल से बाहर आए, अजगर अपने असली रूप में लौट आया और लड़ाई जारी रखने के लिए बादल पर सवार होकर हवा में उड़ गया। यह सचमुच एक भयंकर लड़ाई थी: एक राक्षस बाउल माउंटेन पर पैदा हुआ और पला-बढ़ा था;
दूसरा पश्चिमी सागर से निर्वासित एक अजगर था।
एक ऐसा चमक रहा था मानो वह बिजली उगल रहा हो;
दूसरे की ऊर्जा मानो बादलों को चीरते हुए फूट पड़ी।
उनमें से एक भीड़ में सफेद दांतों वाले हाथी की तरह था;
दूसरा एक सुनहरे पंजों वाला जंगली बिल्ली का बच्चा था जो धरती पर छलांग लगा रहा था।
उनमें से एक जेड पत्थर का स्तंभ था, जो आकाश की ओर ऊंचा खड़ा था।
दूसरी किरण समुद्र की सुनहरी किरणों में से एक थी।
चांदी का अजगर नाचने लगा।
पीला राक्षस आसमान में उड़ गया,
जैसे-जैसे ब्लेड लगातार दाएं-बाएं काटता चला गया,
और लालटेन बिना रुके लगातार इधर-उधर चमकती रही।
बूढ़ा राक्षस पहले की तरह ही शक्तिशाली था। बादलों में आठ-नौ दौर की लड़ाई के बाद युवा ड्रैगन थक गया और लड़ाई जारी रखने में असमर्थ हो गया, इसलिए उसने अपनी तलवार राक्षस पर फेंक दी। राक्षस ने एक जादुई चाल से तलवार को पकड़ लिया, असहाय ड्रैगन की ओर बढ़ा और उस पर लालटेन फेंक दी, जो उसके पिछले पैर पर लगी। ड्रैगन ने अपने बादल को सीधे धरती पर गिरा दिया, जहाँ महल की नहर ने उसकी जान बचाई: एक बार जब वह उसमें कूद गया, तो राक्षस उसे ढूंढ नहीं पाया। इसके बजाय वह तलवार और मोमबत्ती को पकड़े हुए चांदी के शांति कक्ष में वापस चला गया। वहाँ उसने शराब पीकर नींद में खलल डाला।
अजगर एक घंटे तक नहर की तलहटी में छिपा रहा, तब तक सब शांत हो चुका था। पैर के दर्द से कराहते हुए, वह पानी से बाहर कूदा और एक काले बादल पर सवार होकर वापस छात्रावास चला गया, जहाँ उसने अपना रूप बदलकर फिर से घोड़े का रूप धारण कर लिया और एक बार फिर चारागाह पर झुक गया। बेचारा जानवर पसीने से तरबतर था और उसके पैर पर चोट के निशान थे।

विचार-घोड़ा और मन-बंदर तितर-बितर हो गए थे।
धातु के स्वामी और लकड़ी की माता तितर-बितर हो गए।
पीली पत्नी क्षतिग्रस्त हो गई थी, उसकी शक्तियां विभाजित हो गई थीं।
वह मार्ग समाप्त हो चुका था, और उसे कैसे बचाया जा सकता था?
हम संज़ांग को खतरे में और अजगर को पराजित छोड़कर उस सुअर के पास लौटेंगे जो साधु रेत को छोड़ने के बाद से झाड़ियों में छिपा हुआ था। उसने वहाँ अपना एक सुअरबाड़ा बना लिया था और आधी रात तक सोता रहा। जब वह जागा तो उसे याद नहीं था कि वह कहाँ है। उसने अपनी आँखें मलीं, खुद को संभाला और कान खड़े किए। इन जंगली पहाड़ों में न तो कुत्ते भौंकते थे और न ही मुर्गे बांग देते थे। तारों की स्थिति देखकर उसने अनुमान लगाया कि लगभग आधी रात हो चुकी है और सोचा, "मुझे वापस जाकर साधु रेत को बचाना होगा। यह बिल्कुल सच है कि 'एक धागे से धागा नहीं बनता और न ही एक हाथ से ताली बजती है।' नहीं, नहीं। मुझे शहर वापस जाना चाहिए, गुरु से मिलना चाहिए और राजा को इसकी सूचना देनी चाहिए। वह मुझे साधु रेत को बचाने में मदद करने के लिए कुछ और बहादुर सैनिक दे सकते हैं।"
वह मूर्ख जितनी तेज़ी से हो सकता था, अपने बादल पर सवार होकर शहर की ओर भागा और पल भर में छात्रावास पहुँच गया। रात एकदम शांत और चाँदनी से जगमगा रही थी, और उसे इमारत के किसी भी हिस्से में अपना मालिक नहीं मिला। वहाँ केवल सफेद घोड़ा सो रहा था, उसका शरीर पसीने से तर था, और उसके पिछले पैर पर एक थाली के आकार का हरा घाव था।
"ये तो दोहरी मुसीबत है," सुअर ने भयभीत होकर सोचा। "ये बेचारा पसीने से लथपथ क्यों है और इसके पैर में चोट क्यों लगी है?"
वह कहीं नहीं गया है। कुछ बदमाश मालिक को अगवा कर गए होंगे और घोड़े को घायल कर दिया होगा।
सुअर को देखकर घोड़ा अचानक चिल्लाया, "बड़े भाई!" सुअर सदमे से गिर पड़ा, फिर उठा और भागने ही वाला था कि घोड़े ने उसके कपड़े अपने दांतों के बीच दबा लिए और कहा, "भाई, मुझसे मत डरो।"

"आज तुमने बोलना क्यों शुरू कर दिया?" कांपते हुए सुअर ने पूछा। "ज़रूर कोई भयानक घटना घटी होगी जिसकी वजह से तुम बोल रहे हो।"
"क्या तुम्हें पता है कि हमारे स्वामी खतरे में हैं?" घोड़े ने पूछा।
"नहीं," सुअर ने उत्तर दिया।
"तुम ऐसा नहीं करोगे," घोड़े ने कहा। "जब तुम और साधु सैंड राजा के सामने अपनी शान दिखा रहे थे, तो तुम्हें लगा था कि तुम उस राक्षस को पकड़ लोगे और इनाम पाओगे। तुमने ये कल्पना भी नहीं की थी कि उसकी शक्तियाँ तुम्हारे लिए बहुत ज़्यादा होंगी। तुम्हें शर्म आनी चाहिए कि तुम अकेले ही बिना कोई खबर दिए वापस आ गए। उस राक्षस ने खुद को एक सुंदर विद्वान में बदल लिया, महल में आया और राजा को अपना दामाद बना लिया। उसने हमारे स्वामी को बाघ में बदल दिया, जिसे अधिकारियों ने पकड़ लिया और दरबार के प्रतीक्षालय में एक पिंजरे में बंद कर दिया। ये खबर सुनकर मेरा दिल मानो टुकड़ों में कट गया हो। तुम दोनों को गए दो दिन हो चुके थे, और जहाँ तक मुझे पता था, तुम मारे गए होगे, इसलिए मुझे वापस अजगर बनकर अपने स्वामी को बचाने की कोशिश करनी पड़ी। जब मैं दरबार पहुँचा तो मुझे वो नहीं मिले, हालाँकि मैंने उस राक्षस को सिल्वरी पीस हॉल के बाहर देखा। मैंने उसे धोखा देने के लिए महल की सुंदरी का रूप धारण कर लिया। उसने मुझसे तलवारबाजी करवाई, और जब वो मुझ पर मोहित हो गया तो मैंने उस पर वार किया। वो बच गया।" उसने वार किया, दोनों हाथों में एक विशाल लालटेन उठाई और देखते ही देखते मुझे भागने पर मजबूर कर दिया। मैंने अपनी तलवार उस पर फेंकी, लेकिन उसने उसे पकड़ लिया और लालटेन फेंककर मेरी पिछली टांग पर चोट पहुँचाई। मैं महल की नहर में छिपकर अपनी जान बचा पाया। यह निशान वहीं का है जहाँ उसने मुझे मोमबत्ती से मारा था।
अध्याय 30

पश्चिम की यात्रा
"क्या यह सब सच है?" सुअर ने पूछा।
"यह मत सोचो कि मैं तुम्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा हूँ," अजगर ने कहा।
"हम क्या करें?" सुअर ने कहा। "क्या तुम हिल सकते हो?"
"अगर मैं ऐसा कर सकूँ तो?" अजगर ने कहा।

"अगर तुम चल सकते हो," सुअर ने कहा, "तो वापस समुद्र की ओर चलो: मैं सामान गाओ गाँव वापस ले जाऊँगा और फिर से शादीशुदा आदमी बन जाऊँगा।" इस पर अजगर ने सुअर के कुर्ते को ज़ोर से काट लिया और उसे जाने नहीं दिया।
उसकी आंखों से आंसू बहने लगे और उसने कहा, "कृपया हार मत मानो, बड़े भाई।"
"हार मानने के अलावा मैं और क्या कर सकता हूँ?" पिग ने कहा। "फ्रायर सैंड को उसने पकड़ लिया है, और मैं उसे हरा नहीं सकता, तो अब अलग होने के अलावा हमारे पास क्या विकल्प है?"
ड्रैगन ने कुछ पल सोचने के बाद, अभी भी रोते हुए जवाब दिया, "भाई, अलग होने की बात भी मत करो।"
स्वामी को बचाने के लिए आपको बस इतना करना है कि किसी को यहां आने के लिए कहें।"
"कौन?" सुअर ने पूछा।
"जितनी जल्दी हो सके, एक बादल लेकर फूलों और फलों के पहाड़ पर वापस जाओ और हमारे सबसे बड़े भाई बंदर को यहाँ आने के लिए कहो। राक्षसों को हराने की अपनी अद्भुत क्षमता के साथ, वह स्वामी को बचाने और तुम्हारी पराजय का बदला लेने में सक्षम होना चाहिए।"
"क्या हम किसी और से नहीं पूछ सकते?" पिग ने कहा। "जब से उसने व्हाइट टाइगर रिज पर व्हाइट बोन स्पिरिट को मारा है, तब से उसके मेरे साथ संबंध अच्छे नहीं हैं। वह मुझसे नाराज़ है क्योंकि मैंने गुरु को बैंड-टाइटनिग स्पेल बोलने के लिए उकसाया था। मैंने तो बस मज़ाक में कहा था—मुझे कैसे पता चलता कि बूढ़ा भिक्षु सचमुच वह मंत्र बोल देगा और उसे भगा देगा?"
भगवान ही जाने वो मुझसे कितना नाराज़ है। वो तो बिल्कुल नहीं आएगा। मेरी ज़ुबान उसका मुकाबला नहीं कर सकती, और अगर उसने इतनी बदतमीज़ी की कि अपनी उस जानलेवा लाठी से मुझे एक-दो बार मार भी दिया, तो मेरी जान ही निकल जाएगी।
“बिल्कुल, वो तुम्हें नहीं मारेगा,” ड्रैगन ने कहा। “वो दयालु और नेक बंदर राजा है। जब तुम उससे मिलो, तो उसे ये मत बताना कि स्वामी मुसीबत में है। बस इतना कहना, ‘स्वामी तुम्हें याद कर रहे हैं।’ एक बार जब तुम उसे यहाँ बुला लोगे और उसे स्थिति का पता चल जाएगा, तो वो बिल्कुल भी गुस्सा नहीं होगा। वो राक्षस से लड़ना

चाहेगा। मैं गारंटी देता हूँ कि वो राक्षस को पकड़ लेगा और हमारे स्वामी को बचा लेगा।”

"खैर," सुअर ने कहा, "खैर। चूंकि तुम इतने दृढ़ निश्चयी हो, मुझे जाना ही पड़ेगा, वरना मैं आधे मन से लगूंगा। अगर बंदर आने को तैयार है, तो मैं उसके साथ वापस आऊंगा; लेकिन अगर वह तैयार नहीं है, तो मेरी उम्मीद मत करना—मैं वापस नहीं आऊंगा।"

"जाओ," अजगर ने कहा। "मैं वादा करता हूँ कि वह आएगा।"

उस मूर्ख ने अपना फावड़ा उठाया, अपनी कमीज़ ठीक की, एक बादल पर उछला और पूरब की ओर चल पड़ा। संज़ंग का जीवित रहना तय था। सुअर को अनुकूल हवा मिल रही थी, इसलिए उसने अपने कानों को पाल की तरह ऊपर उठाया और देखते ही देखते पूर्वी महासागर पहुँच गया। उसने अपना बादल उतारा। उसे पता भी नहीं चला और जैसे ही वह पहाड़ों की ओर बढ़ा, सूरज उग आया।

चलते-चलते अचानक उसे कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। उसने ध्यान से देखा तो उसे एक पहाड़ी की खोखली घाटी में राक्षसों के झुंड के साथ एक बंदर दिखाई दिया। वह एक चट्टान पर बैठा था और उसके सामने बारह सौ से अधिक बंदर कतार बनाकर "महान ऋषि की जय हो" का जाप कर रहे थे।

“वह बहुत अच्छा कर रहा है,” सुअर ने सोचा, “सचमुच बहुत अच्छा। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह साधु बने रहने के बजाय घर लौटना चाहता था। यहाँ उसका जीवन सचमुच बहुत सुखद है, इस तरह की बड़ी जगह और उसके इशारों पर नाचने वाले उन सभी छोटे बंदरों के साथ।” (अध्याय 30)

और पुकारो। अगर मेरे पास ऐसा पहाड़ होता तो मैं कभी साधु नहीं बनता। लेकिन अब मैं यहाँ हूँ तो क्या करूँ? मुझे जाकर उनसे मिलना ही होगा।" क्योंकि वह काफी भयभीत था, इसलिए सुअर ने हिम्मत करके सीधे उनसे मिलने जाने की कोशिश नहीं की। इसके बजाय वह घास से ढकी एक चट्टान के चारों ओर घूमकर बारह सौ बंदरों के बीच घुस गया और उनके साथ प्रणाम करने लगा।

उसे ज़रा भी उम्मीद नहीं थी कि तेज़ नज़र वाला बंदर उसे अपने ऊँचे सिंहासन से देख लेगा और कहेगा, "इन पंक्तियों में एक विदेशी गलत तरीके से झुक रहा है। यह कहाँ

से आया है? इसे यहाँ लाओ।" उसके मुँह से ये शब्द निकले ही थे कि कुछ छोटे बंदर उसके चारों ओर जमा हो गए, उसे आगे धकेल दिया और ज़मीन पर पटक दिया। "तुम कहाँ से आए हो, विदेशी?" बंदर ने पूछा।

"अगर मुझे कुछ कहने की अनुमति हो तो," पिग ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "मैं कोई अजनबी नहीं हूँ, मैं आपका पुराना दोस्त हूँ।"

“मेरे सारे बंदरों का झुंड बिल्कुल एक जैसा दिखता है,” महान ऋषि ने उत्तर दिया, “लेकिन तुम्हारे मूर्ख चेहरे को देखकर लगता है कि तुम कहीं और से आए हुए दुष्ट राक्षस हो। खैर, कोई बात नहीं। अगर तुम एक बाहरी व्यक्ति होकर मेरे दल में शामिल होना चाहते हो, तो तुम्हें पहले अपना बायोडाटा और नाम बताना होगा, तभी हम तुम्हारा नाम दर्ज कर पाएंगे। अगर मैं तुम्हें भर्ती नहीं करता, तो पागलों की तरह मेरे सामने झुकने का तुम्हारा कोई हक नहीं है।”

पिग ने अपने सिर को बाहों में भर लिया, जिसे उसने अभी भी नीचे रखा हुआ था, और जवाब दिया, "मुझे माफ़ करना। यह एक बदसूरत चेहरा है। लेकिन तुम और मैं कई सालों तक भाई थे; तुम मुझे पहचानने से इनकार नहीं कर सकते और यह नहीं कह सकते कि मैं एक विदेशी हूँ।"

"अपना सिर ऊपर उठाओ," बंदर ने कहा।

उस मूर्ख ने ऐसा ही किया और कहा, "देखो, भले ही तुम मुझे बाकी के रूप में न पहचान पाओ, लेकिन मेरा चेहरा तो तुम्हें याद रहेगा।"

"सूअर!" बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। यह सुनकर सूअर उछल पड़ा और बोला, "हाँ, हाँ। मैं सूअर हूँ।"

यह सोचकर कि अब जब मंकी ने उसे पहचान लिया है, तो उससे निपटना आसान होगा।

"तांग पुजारी के साथ शास्त्र लाने जाने के बजाय तुम यहाँ क्यों आए हो?" बंदर ने पूछा।

"क्या तुमने भी मालिक को नाराज किया है और तुम्हें वापस भेज दिया गया है? मुझे अपना बर्खास्तगी पत्र दिखाओ।"

"मैंने उसे नाराज नहीं किया है," पिग ने जवाब दिया। "उसने मुझे बर्खास्तगी का पत्र नहीं दिया है, न ही मुझे भगाया है।"

“तो फिर तुम यहाँ क्यों आए हो?” बंदर ने पूछा। “मालिक ने मुझे यहाँ भेजा है ताकि

मैं तुम्हें वापस बुला लूँ, क्योंकि उन्हें तुम्हारी याद आ रही है," सुअर ने उत्तर दिया।
"उन्होंने मुझे वापस नहीं बुलाया है," बंदर ने कहा, "और उन्हें मेरी याद भी नहीं आ रही है। उन्होंने स्वर्ग की कसम खाकर मुझे जाने का पत्र लिखा है, इसलिए उन्हें मेरी याद आना या तुम्हें इतनी दूर मुझे वापस बुलाने के लिए भेजना नामुमकिन है। मेरा जाना तो बिलकुल भी ठीक नहीं होगा।"
"वह तुम्हें बहुत याद कर रहा है," सुअर ने बेताब होकर झूठ बोलते हुए कहा, "सच में।"
"क्यों?" बंदर ने पूछा।
"चलते-चलते उन्होंने 'शिष्य' कहकर पुकारा। मैंने सुना नहीं, और साधु सैंड बहरे हैं, इसलिए उन्हें तुम्हारी याद आने लगी और वे कहने लगे कि हम दोनों का कोई भविष्य नहीं है। उन्होंने कहा कि तुम बुद्धिमान और चतुर हो, और जब भी वे पुकारते हो, तुम हमेशा जवाब देते हो। इस वजह से उन्हें तुम्हारी इतनी याद आई कि उन्होंने मुझे खास तौर पर यहाँ भेजा है ताकि मैं तुमसे वापस आने का अनुरोध करूँ। कृपया, कृपया मेरे साथ वापस आ जाओ। तुम उन्हें निराशा से और मुझे एक लंबी, व्यर्थ यात्रा से बचा लोगे।"
बंदर अपनी चट्टान से नीचे कूदा, सुअर को उठाकर खड़ा किया और बोला, "प्यारे भाई, इतनी दूर आने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। क्या आप मेरे साथ आकर एक चक्कर नहीं लगाएंगे?"
"यह एक लंबी यात्रा रही है," सुअर ने उत्तर दिया, "और मुझे डर है कि मालिक मुझे याद करेंगे, इसलिए बेहतर होगा कि मैं न जाऊं।"
अध्याय 30
431
पश्चिम की यात्रा
"अब जब तुम यहाँ आ ही गए हो," बंदर ने कहा, "तुम्हें मेरा पहाड़ ज़रूर देखना चाहिए।" ज़्यादा ज़िद न करते हुए, वह मूर्ख उसके साथ चला गया।
वे दोनों हाथ में हाथ डालकर चल रहे थे और बंदरों का झुंड उनके पीछे-पीछे फूलों और फलों के पहाड़ की चोटी की ओर बढ़ रहा था। यह एक खूबसूरत पहाड़ था। वापस आने के कुछ ही दिनों में बंदर ने इसे पहले की तरह ही साफ-सुथरा बना दिया था।
यह मैलाकाइट के कणों की तरह हरा था।

इतनी ऊंचाई पर कि वह बादलों को छू गया।
इसके चारों ओर बाघ घात लगाए बैठे थे और अजगर कुंडली मारकर बैठे थे।
बंदरों और सारसों की आवाजों के बीच।
सुबह के समय चोटी बादलों से ढकी हुई थी।
शाम का सूरज पेड़ों के बीच अस्त हो जाता था।
धाराएँ ऐसे छपछपा रही थीं मानो जेड के रत्न झिलमिला रहे हों।
वीणा की ध्वनि के साथ झरने गिर रहे थे।
पर्वत के सामने खड़ी चट्टानें और पथरीली ढलानें थीं।
पीछे की ओर हरे-भरे पौधे और पेड़ थे।
इसके ऊपर जेड गर्ल के कपड़े धोने के कटोरे तक पहुँच थी।
इसके ठीक नीचे स्वर्ग नदी का जलविभाजक मिल जाता था।
धरती और स्वर्ग के संयोजन में यह पेंगलाई के स्वर्ग के बराबर था; शुद्धता और ठोसता का इसका मिश्रण इसे एक सच्चा गुफा महल बनाता था।
यह चित्रकार के ब्रश और रंगों की सीमाओं को भी पार कर जाता था;
इसे तो कोई माहिर चित्रकार भी नहीं बना सकता था।
विचित्र आकृतियों वाले ये पत्थर जटिल थे।
पर्वत शिखर को सुशोभित करते हुए।
सूर्य की छाया में बैंगनी रंग की रोशनी झिलमिला रही थी;
बादलों के सागर में एक जादुई लाल चमक फैल गई।
पृथ्वी पर गुफाओं के स्वर्ग और जन्नत जैसे स्थान सचमुच मौजूद हैं।
अध्याय 30

जहां पूरा पर्वत नए पेड़ों और खिले फूलों से ढका हुआ है।
पिग ने उसे निहारते हुए प्रसन्नता से कहा, "कितनी अद्भुत जगह है, भाई। यह दुनिया का सबसे बेहतरीन पहाड़ है।"
"क्या तुम यहाँ गुज़ारा कर पाओगे?" बंदर ने पूछा।
"क्या सवाल है!" सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम्हारा यह पहाड़ तो धरती पर स्वर्ग है, तो तुम 'गुज़ारा करने' की बात कैसे कर सकते हो?"

दोनों ने कुछ देर बातें कीं और हंसी-मजाक किया, फिर नीचे उतर गए। उन्होंने रास्ते के किनारे कुछ छोटे बंदरों को घुटनों के बल बैठे देखा, जिनके हाथों में बड़े-बड़े बैंगनी अंगूर, सुगंधित खजूर और नाशपाती, सुनहरे रंग के लोकाट और रसीले लाल स्ट्रॉबेरी थे।

उन्होंने कहा, "महाराज, कृपया नाश्ता कर लीजिए।"

बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "भाई सुअर, तुम्हारी बड़ी भूख फलों से नहीं मिटेगी। खैर, कोई बात नहीं—अगर तुम्हें बुरा न लगे तो तुम थोड़ा सा फल नाश्ते के तौर पर खा सकते हो।"

"हालांकि मुझे बहुत भूख लगती है," सुअर ने कहा, "मैं हमेशा स्थानीय खाना ही खाता हूँ। मुझे चखने के लिए कुछ ला दो।"

जब वे दोनों फल खा रहे थे, तभी सूरज उगने लगा, जिससे उस मूर्ख को चिंता होने लगी कि कहीं वह तांग पुजारी को बचाने में बहुत देर न कर दे। "भाई," उसने बंदर को जल्दी करने के लिए कहते हुए कहा, "गुरुजी हमारा इंतज़ार कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि हम जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाएँ।"

"आओ और जल परदे वाली गुफा का चक्कर लगाओ," बंदर ने जवाब दिया।

"आपका प्रस्ताव बहुत अच्छा है," सुअर ने कहा, "लेकिन मुझे मालिक को इंतजार नहीं कराना चाहिए, इसलिए मुझे खेद है कि मैं गुफा में नहीं जा सकता।"

"तो मैं तुम्हारा समय बर्बाद नहीं करूंगा," बंदर ने कहा। "अलविदा।"

"तुम नहीं आ रहे हो?" सुअर ने पूछा।

“कहाँ जाऊँ?” बंदर ने जवाब दिया। “यहाँ मुझे दखल देने वाला कोई नहीं है और मैं जो चाहूँ वो करने के लिए आज़ाद हूँ। मैं मौज-मस्ती करना क्यों छोड़ूँ और साधु क्यों बनूँ? मैं नहीं जा रहा। तुम जाकर तांग पुजारी को बता दो कि चूंकि उसने मुझे भगा दिया है, तो वो मुझे भूल ही जाए।” उस मूर्ख ने बंदर पर और दबाव डालने की हिम्मत नहीं की, कहीं वो अपना आपा खोकर उसे लाठी से दो-चार वार न कर दे। वह बस इतना ही कह सका, अलविदा और अपने रास्ते चला गया।

जैसे ही बंदर उसे जाते हुए देखता रहा, उसने दो चालाक छोटे बंदरों को अपने पीछे आने और उसकी हर बात सुनने का आदेश दिया। वह मूर्ख पहाड़ की ढलान पर मुश्किल से एक मील ही आगे बढ़ा था कि वह मुड़ा, बंदर की ओर इशारा किया और उसे गालियाँ देने लगा।

“वो बंदर,” उसने कहा, “वह साधु बनने की बजाय राक्षस बनना पसंद करेगा। वो बबून। मैंने उससे पूरी ईमानदारी से विनती की, लेकिन उसने मुझे मना कर दिया। खैर, अगर तुम नहीं आओगे, तो बात खत्म।” कुछ-कुछ कदम चलने पर वो उसे और गालियाँ देता रहा। दोनों छोटे बंदर दौड़कर वापस आए और बोले, “महाराज, वो सूअर तो शर्मनाक है। वो चलते-चलते आपको गालियाँ दे रहा है।”

"इसे गिरफ्तार करो!" बंदर गुस्से में चिल्लाया। बंदरों का झुंड सूअर के पीछे गया, उसे पकड़ा, उल्टा लटकाया, उसके बाल खींचे, उसकी पूंछ पकड़ी, उसके बाल मरोड़े और इस तरह उसे वापस ले आया।

अध्याय 30

433

पश्चिम की यात्रा

अगर आपको नहीं पता कि उसके साथ क्या किया गया या वह बच पाया या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 31

सुअर बंदर राजा को आगे बढ़ाता है

उनकी अच्छाई

नौसिखिए सूर्य ने अपनी चतुराई से राक्षस को वश में कर लिया

उन्होंने भाई बनने की शपथ ली।

और धर्म ने उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में वापस ला दिया।

जब धातु और लकड़ी को वश में कर लिया गया, तब सच्चा परिणाम प्राप्त किया जा सका; मन-बंदर और लकड़ी की माता ने मिलकर अमृत का निर्माण किया।

वे साथ मिलकर आनंद के लोक की ओर अग्रसर होंगे।

और वे एक ही धार्मिक शाखा को मानते हैं।

शास्त्र आत्म-साधना का मार्ग हैं।

जिसमें बुद्ध ने स्वयं अपनी दिव्यता समाहित कर ली है।

भाइयों ने मिलकर एक त्रिपक्षीय गठबंधन बनाया।

पंच तत्वों से निपटने की शैतानी शक्तियों के साथ।

अस्तित्व के छह रूपों को दरकिनार करते हुए,

वे थंडर मठ की ओर चल पड़ते हैं।

बंदरों की भीड़ उसे घसीटते हुए वापस ले जा रही थी, तभी पिग का कुर्ता फटकर चूर-चूर हो गया। "मैं तो गया काम से," उसने मन ही मन बुदबुदाया, "जाना ही गया। अब वो मुझे मार डालेगा।"

कुछ ही देर में वह गुफा के शिखर पर वापस आ गया, जहाँ एक चट्टान पर बैठा बंदर गुस्से से उससे बोला, "अरे बेवकूफ, भूसा खाने वाले। मैंने तुम्हें जाने दिया, तो मुझे गाली क्यों दे रहे हो?"

"मैंने ऐसा कभी नहीं किया, बड़े भाई," सूअर घुटनों के बल बैठते हुए बोला। "अगर मैंने कभी ऐसा किया भी हो, तो मेरी जीभ काट डालो। मैंने तो बस इतना कहा था कि चूंकि आप नहीं आ रहे हैं, इसलिए मुझे जाकर मालिक को बताना पड़ेगा। मैंने कभी भी आपको गाली देने की हिम्मत नहीं की।"

“तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते,” बंदर ने जवाब दिया। “अगर मैं अपना बायां कान ऊपर उठाऊं तो मुझे तैंतीसवें स्वर्ग में होने वाली बातें सुनाई देंगी, और अगर मैं अपना दायां कान नीचे कर लूं तो मुझे पता चल जाएगा कि नरक के दस राजा और उनके न्यायाधीश क्या चर्चा कर रहे हैं। बेशक, चलते-चलते मैं तुम्हें गालियां देते हुए सुन सकता था।”

अध्याय 31

434

पश्चिम की यात्रा

"अब समझ में आया," सुअर ने कहा। "तुम्हारे उस शैतानी दिमाग के साथ, मेरी बात सुनने के लिए तुम्हें खुद को किसी और रूप में बदलना पड़ा होगा।"

बंदर चिल्लाया, "बच्चों, कुछ भारी छड़ें लाओ। उसके चेहरे पर बारह बार मारो, फिर उसकी पीठ पर बारह बार। उसके बाद मैं उसे अपने लोहे के डंडे से खत्म कर दूंगा।"

"बड़े भाई," सुअर ने गिड़गिड़ाते हुए और बेबस होकर कहा, "मैं आपसे विनती करता हूँ कि हमारे स्वामी की खातिर मुझे बख्श दें।"

"वह अच्छा और दयालु स्वामी? कभी नहीं!" बंदर ने कहा।

"अगर वह नहीं मानेगा," सुअर ने विनती करते हुए कहा, "तो बोधिसत्व के नाम पर मुझे छोड़ दो।" बोधिसत्व का जिक्र सुनकर बंदर थोड़ा नरम पड़ गया।

"अब जब तुमने यह कह दिया है तो मैं तुम्हें कोड़े नहीं लगवाऊंगा," उसने जवाब दिया। "लेकिन तुम्हें मुझे साफ-साफ और बिना झूठ बोले बताना होगा कि तांग पुजारी किस

मुसीबत में है—शायद इसीलिए उसने तुम्हें मुझे धोखा देने के लिए भेजा है।"
"वह मुसीबत में नहीं है," पिग ने विरोध करते हुए कहा, "वह सचमुच तुम्हें याद कर रहा है।"
बंदर ने कहा, "तुम सच में मार खाने के लायक हो, क्योंकि तुम अब भी मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहे हो, मूर्ख। हालांकि मैं जल परदे वाली गुफा में वापस गया था, लेकिन मेरे मन में उस तीर्थयात्री की यादें बसी हुई हैं। गुरु को हर कदम पर परेशानी हुई होगी। अगर तुम मार नहीं खाना चाहते तो मुझे अभी इसके बारे में बताओ।"
सुअर ने फिर से घुटने टेके और कहा, "हाँ, मैंने आपको वापस बुलाने के लिए चाल चलने की कोशिश की थी। मुझे नहीं पता था कि आप इतनी आसानी से मेरी चाल समझ जाएँगे। कृपया मुझे कोड़े मारने की बजाय छोड़ दें, फिर मैं आपको सच बता दूँगा।"
“अच्छा, तो फिर,” बंदर ने जवाब दिया, “उठो और मुझे बताओ।” छोटे बंदरों ने उसके हाथ खोल दिए। वह उछलकर खड़ा हो गया और इधर-उधर बेतहाशा देखने लगा।
“क्या देख रहे हो?” बंदर ने पूछा।
पिग ने कहा, "मैं उस चौड़े खाली रास्ते को देख रहा हूँ जिस पर मैं भाग सकता हूँ।"
"इससे तुम्हें कुछ हासिल नहीं होगा," बंदर ने कहा। "अगर मैं तुम्हें तीन दिन की बढ़त भी दे दूं, तब भी मैं तुम्हें पकड़ लूंगा। बोलना शुरू करो। अगर तुमने मुझे गुस्सा दिलाया, तो तुम्हारा काम तमाम हो जाएगा।"
"मैं तुम्हें सच बताता हूँ," सुअर ने कहा। "तुम्हारे वापस आने के बाद, मैं और साधु सैंड गुरुजी के साथ गए। जब हमने एक घना चीड़ का जंगल देखा, तो गुरुजी घोड़े से उतरे और मुझे कुछ भोजन माँगने को कहा। जब मैं बहुत दूर तक बिना किसी को पाए चला गया, तो मैं इतना थक गया कि घास में ही सो गया; मुझे एहसास नहीं था कि गुरुजी साधु सैंड को मेरे पीछे भेजेंगे। तुम जानते हो कि गुरुजी कितने अधीर हैं; वे अकेले ही टहलने चले गए, और जब वे जंगल से बाहर आए तो उन्होंने एक चमकता हुआ सुनहरा पैगोडा देखा। उन्होंने उसे मठ समझ लिया, लेकिन वहाँ रहने वाले पीले वस्त्रधारी राक्षस नामक एक दुष्ट आत्मा ने उन्हें पकड़ लिया। जब मैं और साधु सैंड उन्हें ढूंढने वापस आए, तो हमें केवल सफेद घोड़ा और सामान ही दिखाई दिया। गुरुजी जा चुके थे। हमने गुफा के प्रवेश द्वार तक उनकी तलाश की और राक्षस से लड़ाई की। सौभाग्य से गुरुजी को गुफा में कोई मिल गया जिसने उन्हें बचा लिया।"

वह एलिफेंटिया के राजा की तीसरी पुत्री थी और उसे राक्षस अगवा कर ले गया था। उसने अपने स्वामी को अपने परिवार को देने के लिए एक पत्र दिया और राक्षस को उसे छोड़ने के लिए मना लिया। जब हम राजधानी पहुँचे और पत्र पहुँचाया, तो राजा ने हमारे स्वामी को राक्षस को वश में करने और राजकुमारी को घर वापस लाने का आदेश दिया। भाई, मैं तुमसे पूछता हूँ, क्या स्वामी राक्षस को पकड़ सकता है? हम दोनों उससे लड़ने गए, लेकिन उसकी शक्तियाँ हम पर भारी थीं: उसने साधु सैंड को पकड़ लिया और मुझे भागने पर मजबूर कर दिया। मैं झाड़ियों में छिप गया। राक्षस ने अपना रूप बदलकर एक सुंदर विद्वान का रूप धारण किया और दरबार में गया, जहाँ उसने राजा से अपना परिचय दिया और स्वामी को बाघ में बदल दिया। सफेद घोड़ा आधी रात को फिर से अजगर में बदल गया और स्वामी को खोजने निकल पड़ा। उसे स्वामी नहीं मिला, लेकिन उसने राक्षस को सिल्वरी पीस हॉल में शराब पीते हुए देखा, इसलिए उसने अपना रूप बदलकर महल की सुंदरी का रूप धारण कर लिया। उसने राक्षस पर शराब डाली और उसे मारने का मौका पाने की उम्मीद में तलवार नृत्य किया, लेकिन राक्षस ने लालटेन से उसके पिछले पैर को घायल कर दिया, यह सफेद घोड़ा था जिसने मुझे भेजा था (अध्याय 31)

मैं तुम्हें लेने आया हूँ। उसने कहा, 'हमारा बड़ा भाई एक नेक और सम्मानित सज्जन है, और सज्जन लोग मन में बैर नहीं रखते। वह ज़रूर आएगा और गुरुजी को बचा लेगा।' कृपया याद रखें कि 'यदि कोई व्यक्ति एक दिन के लिए आपका शिक्षक रहा है, तो आपको जीवन भर उसका सम्मान अपने पिता के समान करना चाहिए।' मैं आपसे विनती करता हूँ कि उसे बचा लें।

“बेवकूफ,” बंदर ने कहा, “मैंने तुम्हें जाने से पहले बार-बार कहा था कि अगर कोई दुष्ट राक्षस गुरु को पकड़ ले तो तुम्हें उन्हें बताना है कि मैं उनका वरिष्ठ शिष्य हूँ। तुमने मेरा ज़िक्र क्यों नहीं किया?” सुअर ने सोचा कि एक योद्धा के लिए चुनौती आमंत्रण से ज़्यादा असरदार होती है और कहा, “अगर हमने तुम्हारा नाम नहीं लिया होता तो ठीक रहता। जब मैंने तुम्हारा ज़िक्र किया तभी तो वो भड़क उठा।”

"तुमने क्या कहा?" बंदर ने पूछा।

मैंने कहा, 'कृपा करके रहो, दयालु राक्षस, और हमारे स्वामी को नुकसान मत

पहुँचाओ। मेरा एक बड़ा भाई है जिसका नाम 'बंदर भाई' है, जो दानवों को वश में करने में माहिर है और उसके पास अपार जादुई शक्तियाँ हैं। अगर वह आया तो वह तुम्हें मार डालेगा, और तुम्हारा अंतिम संस्कार भी नहीं होगा।' यह सुनकर राक्षस और भी क्रोधित हो गया, और उसने कहा, 'मैं बंदर से नहीं डरता। अगर वह यहाँ आया तो मैं उसकी खाल उतार दूँगा, उसकी नसें नोच डालूँगा, उसकी हड्डियाँ कुतर दूँगा और उसका दिल खा जाऊँगा। हालाँकि बंदर दुबले-पतले होते हैं, मैं उसके मांस को बारीक काटकर तल सकता हूँ।' यह सुनकर बंदर इतना क्रोधित हो गया कि वह गुस्से में उछल-कूद करने लगा, अपने कान खींचने लगा और गाल खुजलाने लगा।

"क्या उसमें इतनी हिम्मत थी कि वह मेरे बारे में ऐसा कहे?" उसने पूछा।

"शांत हो जाओ भाई," सुअर ने कहा। "मैंने उसकी सारी गालियाँ खास तौर पर याद रखीं ताकि तुम्हें बता सकूँ।"

“उठो,” बंदर बोला। “मुझे पहले जाने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन अब जब उसने मेरा अपमान किया है, तो मुझे उसे पकड़ना ही होगा। चलो चलें। जब मैंने पाँच सौ साल पहले स्वर्ग महल को नष्ट किया था, तब स्वर्ग के सभी सेनापति मुझे देखकर सिर झुकाते थे और मुझे 'महान ऋषि' कहते थे। उस दुष्ट की हिम्मत कैसे हुई मेरी पीठ पीछे मेरा अपमान करने की! मैं उसे पकड़कर उसके शव के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा ताकि उसे इसका सबक मिले। जब मैं यह कर लूंगा, तब वापस आऊंगा।”

"बिल्कुल सही," सुअर ने कहा। "जब तुम राक्षस को पकड़ लोगे और उससे बदला ले लोगे, तब यह तुम पर निर्भर करेगा कि तुम हमारे साथ आना चाहते हो या नहीं।"

महान ऋषि चट्टान से कूदकर गुफा में घुस गए और अपने सारे राक्षसी वस्त्र उतार दिए। उन्होंने कढ़ाईदार कुर्ता पहना, बाघ की खाल की स्कर्ट बांधी, लोहे का डंडा उठाया और बाहर आ गए। उनके भयभीत वानर प्रजाजनों ने उन्हें रोकने की कोशिश करते हुए कहा, "महाराज, आप कहाँ जा रहे हैं? क्या कुछ और वर्षों तक हम पर शासन करना मजेदार नहीं होगा?"

“क्या कह रहे हो, बच्चों?” बंदर ने उत्तर दिया। “मुझे तांग पुजारी की रक्षा करनी है। स्वर्ग और पृथ्वी में सभी जानते हैं कि मैं तांग पुजारी का शिष्य हूँ। उन्होंने मुझे सचमुच नहीं निकाला। वे बस चाहते थे कि मैं घर जाकर थोड़ा आराम करूँ। अब मुझे यह काम करना है। तुम सब हमारे घर का अच्छे से ख्याल रखना। सही मौसम में विलो और चीड़ के पौधे लगाना, और चीजों को खराब नहीं होने देना। मुझे तांग पुजारी के साथ

जाना है जब वे शास्त्र लाकर पूर्व की ओर लौटेंगे। मेरा मिशन पूरा होने पर मैं तुम्हारे साथ इस सुखमय जीवन में वापस आ जाऊँगा।" सभी बंदरों ने उसके आदेश का पालन किया।

सुअर का हाथ पकड़कर बंदर एक बादल पर सवार हो गया और गुफा से निकल गया। पूर्वी सागर पार करने के बाद वह पश्चिमी तट पर रुका और बोला, "तुम अपनी गति से आगे बढ़ो, मैं समुद्र में स्नान करता हूँ।"

"हमें बहुत जल्दी है," सुअर ने कहा। "क्या तुम अभी नहा नहीं सकते?"

"तुम नहीं समझोगे," बंदर ने जवाब दिया। "घर पर रहते हुए मुझमें से एक शैतानी बदबू आने लगी, और मुझे डर है कि सफाई के प्रति उनके जुनून को देखते हुए मालिक को आपत्ति हो सकती है।" तभी सुअर को एहसास हुआ कि बंदर सचमुच ईमानदार और गंभीर था।

अध्याय 31

436

पश्चिम की यात्रा

बंदर के डुबकी लगाने के बाद वे वापस अपने बादलों पर सवार हो गए और पश्चिम की ओर बढ़ने लगे। जब उन्होंने सुनहरे शिवालय की चमक देखी तो सुअर ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "पीले वस्त्रधारी राक्षस वहीं रहता है। साधु सैंड अभी भी वहीं है।"

"तुम यहीं ऊपर मेरा इंतजार करो, मैं दुष्ट आत्मा से लड़ने से पहले प्रवेश द्वार के आसपास एक नजर डाल लेता हूँ," बंदर ने कहा।

"कोई ज़रूरत नहीं," सुअर ने कहा, "क्योंकि वह घर पर नहीं है।"

"मुझे पता है," बंदर ने कहा। शानदार बंदर राजा ने अपना चमकीला बादल उतारा और प्रवेश द्वार के बाहर चारों ओर देखा। उसे केवल दो बच्चे दिखाई दिए, एक लगभग दस वर्ष का और दूसरा आठ या नौ वर्ष का, जो पंखों से भरी गेंद को घुमावदार डंडियों से मार रहे थे। यह जानने की जहमत उठाए बिना कि वे किसके बच्चे हैं, बंदर उनके पास दौड़ा, उनके सिर के ऊपर उगे बालों के गुच्छों को पकड़ा और उन्हें लेकर उड़ गया। डरे हुए लड़कों के रोने और गालियों ने मून वाटर्स गुफा के छोटे शैतानों को चौंका दिया, जो दौड़कर राजकुमारी को यह बताने गए कि कोई, जिसे वे नहीं जानते थे, उनके बेटों को ले गया है। ये लड़के, आप जानते हैं, राजकुमारी और राक्षस के

बच्चे थे।
राजकुमारी गुफा से बाहर भागी तो उसने देखा कि बंदर उसके बेटों को एक चट्टान की चोटी पर पकड़े हुए है और उन्हें नीचे फेंकने ही वाला है।
"अरे, मैंने तुम्हें कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचाया," वह हताशा से चिल्लाई, "तो तुम मेरे बेटों का अपहरण क्यों कर रहे हो?"
अगर उन्हें कुछ हुआ तो उनके पिता तुम्हें बख्शेंगे नहीं, और वो एक कातिल हैं।"
“क्या तुम मुझे नहीं जानती?” बंदर ने कहा। “मैं बंदर हूँ, तांग पुजारी का वरिष्ठ शिष्य। अगर तुम मेरे भाई फ्रायर सैंड को अपनी गुफा से रिहा कर दोगी, तो मैं तुम्हें तुम्हारे बेटे वापस दे दूँगा। तुम्हें अच्छा सौदा मिलेगा—एक के बदले दो।” राजकुमारी जल्दी से गुफा में वापस गई, दरवाजे पर खड़े छोटे राक्षसों को रास्ते से हटने को कहा और अपने हाथों से फ्रायर सैंड को खोल दिया।
"मुझे जाने मत दो, महिला," फ्रायर सैंड ने कहा, "वरना जब वह राक्षस वापस आएगा और मेरे बारे में पूछेगा, तो मैं तुम्हें उसके साथ मुसीबत में डाल दूंगा।"
"आदरणीय महोदय," राजकुमारी ने उत्तर दिया, "आपने पत्र के बारे में जो कहा उससे मेरी जान बच गई, इसलिए मैं आपको किसी भी हालत में जाने देने वाली थी, और अब आपका बड़ा भाई बंदर यहां आया है और उसने मुझे आपको रिहा करने के लिए कहा है।"
"बंदर" शब्द सुनते ही साधु सैंड को ऐसा लगा मानो उनके सिर पर ज्ञान का तेल उंडेल दिया गया हो और मीठी ओस ने उनके हृदय को समृद्ध कर दिया हो। उनका चेहरा प्रसन्न था और उनका हृदय उमंग से भर गया था। वे किसी ऐसे व्यक्ति की तरह लग रहे थे जैसे उन्हें सोने या जेड का टुकड़ा मिल गया हो, न कि किसी ऐसे व्यक्ति की तरह जिसे अभी-अभी किसी मित्र के आने की सूचना मिली हो। उन्होंने अपने कपड़ों को हाथों से झाड़ा, बाहर गए, बंदर को प्रणाम किया और कहा, "भाई, तुम अचानक प्रकट हो गए। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरी जान बचा लो!"
"भाई सैंड, जब गुरु ने बंधन कसने का मंत्र बोला, तो क्या तुमने मेरी मदद के लिए एक भी शब्द कहा?" बंदर ने मुस्कुराते हुए पूछा। "बोलते रहो, बोलते रहो, बोलते रहो। अगर तुम अपने गुरु को बचाना चाहते हो तो यहाँ बैठे रहने के बजाय पश्चिम की ओर जाना चाहिए।"
"कृपया उस बात को मत उठाइए," फ्रायर सैंड ने कहा। "एक सज्जन व्यक्ति द्वेष नहीं

रखता। हम हार चुके हैं, और हमने साहस की बात करने का अधिकार खो दिया है। कृपया मुझे बचा लीजिए।"

"ऊपर आओ," बंदर ने जवाब दिया, और फ्रायर सैंड एक छलांग लगाकर चट्टान पर चढ़ गया।

जब सुअर ने ऊपर हवा में से देखा कि साधु सैंड गुफा से बाहर आ गया है, तो उसने अपने बादल को नीचे उतारा और कहा, "मुझे क्षमा करें, मुझे क्षमा करें, भाई सैंड।"

अध्याय 31

437

पश्चिम की यात्रा

"तुम कहाँ से आए हो?" फ्रायर सैंड ने उसे देखकर पूछा।

"कल मेरी पिटाई होने के बाद," सुअर ने कहा, "मैं कल रात राजधानी वापस गया और सफेद घोड़े से मिला, जिसने मुझे बताया कि मालिक मुसीबत में है। राक्षस ने जादू से उसे बाघ में बदल दिया है। घोड़े और मैंने इस बारे में बात की और हमने अपने बड़े भाई को वापस बुलाने का फैसला किया।"

"बकवास बंद करो, बेवकूफ," बंदर ने कहा। "तुममें से हर कोई इन बच्चों में से एक को शहर ले जाओ। इनका इस्तेमाल करके राक्षस को उकसाओ ताकि वह वापस यहाँ आकर मुझसे लड़े।"

"हम ऐसा कैसे करेंगे?" फ्रायर सैंड ने पूछा।

“तुम दोनों अपने बादलों पर सवार होकर महल के ऊपर रुको, अपने दिल को कठोर करो और बच्चों को महल की सीढ़ियों पर उतार दो। जब तुमसे पूछा जाए, तो कहना कि वे पीले वस्त्रधारी राक्षस के बेटे हैं और तुम दोनों उन्हें यहाँ लाए हो। यह सुनकर राक्षस ज़रूर वापस आएगा, जिससे मुझे शहर जाकर उससे लड़ने की परेशानी से मुक्ति मिल जाएगी। अगर हम शहर में लड़े, तो हमारे द्वारा फैलाई गई धुंध और धूल भरी आंधी से दरबार, अधिकारी और आम लोग भयभीत हो जाएँगे।”

"भाई, तुम जो भी करो, हमें धोखा देने की कोशिश करो।" सुअर ने हंसते हुए कहा।

"मैं तुम्हें कैसे धोखा दे रहा हूँ?" बंदर ने पूछा।

"ये दोनों बच्चे तो बुरी तरह डर गए हैं," सुअर ने जवाब दिया। "ये रो-रोकर बेहाल हो गए हैं और किसी भी पल मारे जा सकते हैं। क्या तुम्हें लगता है कि इन्हें टुकड़े-टुकड़े करने के बाद वो राक्षस हमें जाने देगा? वो तो हमारी गर्दनें ही चाहेगा। तुम अब भी

धोखेबाज़ हो, है ना? वो तुम्हें देख भी नहीं पाएगा, तो साफ है कि तुम हमें बेवकूफ बना रहे हो।"
"अगर वह तुम पर हमला करे," बंदर ने कहा, "लड़ते हुए वापस यहाँ आ जाना, जहाँ मेरे पास उससे हिसाब बराबर करने के लिए काफी जगह है।"
“जी हां,” फ्रायर सैंड ने कहा, “हमारे बड़े भाई की बात बिलकुल सही है। चलिए चलते हैं।” दोनों भाइयों को लेकर जाते हुए उनका दृश्य अत्यंत प्रभावशाली था।
फिर बंदर चट्टान से कूदकर पैगोडा के द्वार के सामने ज़मीन पर आ गिरा, जहाँ राजकुमारी ने उससे कहा, "हे विश्वासघाती भिक्षु! तुमने कहा था कि अगर मैं तुम्हारे भाई को रिहा कर दूँ तो तुम मेरे बच्चों को मुझे वापस दे दोगे। अब मैंने उसे तो रिहा कर दिया है, लेकिन बच्चे अभी भी तुम्हारे पास हैं। तुम किसलिए वापस आए हो?"
"राजकुमारी, गुस्सा मत होइए," बंदर ने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए कहा। "चूंकि आप यहां काफी समय से हैं, इसलिए हम आपके बेटों को उनके दादा से मिलवाने ले गए हैं।"
"कोई बकवास मत करो, भिक्षु," राजकुमारी ने कहा। "मेरे पति पीले वस्त्रधारी कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। अगर तुमने उन बच्चों को डरा दिया है, तो बेहतर होगा कि तुम उन्हें शांत कर दो।"
बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "राजकुमारी, क्या तुम जानती हो कि दुनिया का सबसे जघन्य अपराध क्या है जो तुम कर सकती हो?"
"हां," उसने उत्तर दिया।
"तुम महज़ एक औरत हो, इसलिए तुम्हें कुछ समझ नहीं आएगा," बंदर ने कहा।
उन्होंने कहा, "बचपन से ही मेरे माता-पिता ने मुझे महल में शिक्षा दी है, और मुझे वह प्राचीन ग्रंथ याद है जिसमें लिखा था: 'तीन हजार अपराध हैं, और उनमें सबसे बड़ा अपराध माता-पिता का अनादर करना है।'"

“पर तुम तो माता-पिता के प्रति असहिष्णु हो,” बंदर ने उत्तर दिया। “मेरे पिता ने मुझे जन्म दिया, मेरी माता ने मेरा पालन-पोषण किया। मेरे माता-पिता पर धिक्कार है! मुझे पालने-पोसने में उन्हें कितना प्रयास करना पड़ा होगा! माता-पिता के प्रति श्रद्धा

ही सभी आचरणों का आधार और सभी अच्छाइयों की जड़ है, तो तुमने एक दुष्ट आत्मा से विवाह क्यों किया और अपने माता-पिता को क्यों भुला दिया? निश्चय ही यह माता-पिता के प्रति असहिष्णु व्यवहार का अपराध है।" यह सुनकर राजकुमारी का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

"आपकी बात बिल्कुल सही है," उसने कहा। "मैं अपने माता-पिता को भूली नहीं हूँ। लेकिन उस दरिंदे ने मुझे यहाँ आने पर मजबूर कर दिया, और वह इतना सख्त है कि मैं एक कदम भी मुश्किल से चल पाती हूँ। ऊपर से, यह बहुत लंबा सफर है और कोई मेरा संदेश भी नहीं पहुँचा सकता। मैं आत्महत्या करने वाली थी, लेकिन फिर मुझे लगा कि मेरे माता-पिता को कभी पता नहीं चलेगा कि मैं जानबूझकर नहीं भागी थी। इसलिए मेरे पास अपनी इस दयनीय जिंदगी को जैसे-तैसे गुजारने के अलावा कोई चारा नहीं बचा। मैं धरती पर सबसे दुष्ट इंसान हूँ।" बोलते-बोलते उसकी आँखों से झरने के पानी की तरह आँसू बहने लगे।

"राजकुमारी, इतना बोझ मत उठाओ," बंदर ने कहा। "सूअर ने मुझे बताया है कि तुमने मेरे स्वामी की जान कैसे बचाई और एक पत्र लिखा, जिससे पता चलता है कि तुम अपने माता-पिता को नहीं भूली हो। मैं वादा करता हूँ कि मैं उस राक्षस को पकड़ूँगा, तुम्हें तुम्हारे पिता से मिलवाऊँगा और तुम्हारे लिए एक अच्छा पति ढूँढूँगा। फिर तुम अपने माता-पिता की जीवनभर देखभाल कर सकती हो।"

उस बारे में आप क्या कहेंगे?"

"कृपा करके अपनी जान मत गँवाओ, भिक्षु," उसने कहा। "तुम्हारे दोनों श्रेष्ठ भाई पीले वस्त्रधारी को नहीं हरा सके, तो तुम ऐसी बातें कैसे कर सकते हो, हे दुबले-पतले, सिर्फ़ हड्डियों के टुकड़े? तुम केकड़े जैसे हो, तुम्हारी हड्डियाँ बाहर निकली हुई हैं। तुम्हारे पास कोई जादुई शक्तियाँ नहीं हैं, इसलिए राक्षसों को पकड़ने की बात मत करो।"

"तुम लोगों को पहचानने में कितने नासमझ हो," बंदर हँसते हुए बोला। "कहावत है, 'पेशाब का बुलबुला बड़ा तो होता है, पर हल्का होता है, जबकि एक गज का वज़न एक टन को संतुलित कर सकता है।' ये दोनों बड़े तो हैं, पर किसी काम के नहीं। हवा में चलते समय इनका भारी-भरकम शरीर इनकी गति धीमी कर देता है, इन्हें कपड़े पहनाने में बहुत पैसा लगता है, ये अंदर से खोखले हैं, चूल्हे में जलती आग की तरह, ये कमज़ोर हैं और जितना खाते हैं, बदले में कुछ नहीं देते। मैं भले ही छोटा हूँ, पर

बहुत काम का हूँ।”
"क्या सचमुच तुम्हारे पास जादुई शक्तियां हैं?" राजकुमारी ने पूछा।
"तुमने मेरे जैसी जादूगरी कभी नहीं देखी होगी," उसने जवाब दिया। "राक्षसों और शैतानों को वश में करने में मेरा कोई मुकाबला नहीं है।"
"क्या आपको यकीन है कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे?" राजकुमारी ने कहा।
"हां," बंदर ने कहा।
"तुम तो राक्षसों को वश में करने में इतने माहिर हो, तो इसे कैसे पकड़ोगे?"
"छिप जाओ और मेरी नज़रों से दूर रहो," बंदर ने कहा। "नहीं तो जब वह वापस आएगा तो मैं उससे ठीक से निपट नहीं पाऊँगा। मुझे डर है कि तुम उसके प्रति ज़्यादा दोस्ताना व्यवहार करने लगोगे और उसे अपने पास रखना चाहोगे।"
"बेशक मैं उसे अपने पास नहीं रखना चाहूंगी," उसने विरोध करते हुए कहा। "मैं तो मजबूरी में ही यहाँ रुकी हूँ।"
“तेरह साल से तुम उसकी पत्नी हो, इसलिए तुम्हें उससे कुछ स्नेह तो होगा ही। जब मैं उससे मिलूंगा तो यह कोई बच्चों का खेल नहीं होगा। तुम्हें अदालत में वापस ले जाने से पहले मुझे उसे अपने डंडे और मुक्कों से मारना पड़ेगा।”
राजकुमारी ने आदेश का पालन किया और एक शांत स्थान पर छिप गई। उसका विवाह समाप्त होना ही था, इसलिए उसकी मुलाकात महान ऋषि से हुई। अब जब राजकुमारी रास्ते से हट गई थी, तो वानर राजा ने अपने शरीर को झटककर राजकुमारी का रूप धारण कर लिया और राक्षस का इंतजार करने के लिए गुफा में वापस चला गया।
पिग और फ्रायर सैंड बच्चों को एलिफेंटिया शहर ले गए और उन्हें महल की सीढ़ियों पर फेंक दिया, जहाँ बेचारे लड़के चूर-चूर हो गए; उनका खून छलक गया और उनकी हड्डियाँ बिखर गईं। अध्याय 31

चूर-चूर हो गए। घबराए हुए दरबारियों ने घोषणा की कि एक भयानक घटना घटी है—दो लोगों को आकाश से नीचे फेंक दिया गया है। "ये बच्चे पीले वस्त्रधारी राक्षस के पुत्र हैं," सुअर ने अपनी पूरी आवाज़ में चिल्लाते हुए कहा, "और इन्हें सुअर और साधु सैंड यहाँ लाए हैं।"

सिल्वरी पीस हॉल में सो रहा राक्षस सपने में ही किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुनकर करवट बदला और ऊपर देखा तो उसे बादलों से पिग और फ्रायर सैंड की आवाज़ें सुनाई दीं। उसने सोचा, "मुझे पिग की चिंता नहीं है, लेकिन फ्रायर सैंड घर पर बंधा हुआ था। वह कैसे भागा? क्या मेरी पत्नी ने उसे जाने दिया होगा? उसने मेरे बेटों को कैसे पकड़ा? शायद पिग मुझे फंसाने के लिए यह चाल चल रहा है क्योंकि मैं बाहर आकर उससे लड़ना नहीं चाहता। अगर मैं उसके झांसे में आ गया तो मुझे उससे लड़ना ही पड़ेगा, और इतनी शराब पीने के बाद मेरी हालत अभी भी खराब है। उसके एक ही वार से मेरी सारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। मैं उसकी चाल समझ गया हूँ। मैं घर जाकर देखूंगा कि वे मेरे बेटे हैं या नहीं, फिर उनसे बहस करूंगा।"

राजा से अनुमति लिए बिना, वह राक्षस घने जंगलों वाले पहाड़ों को पार करके अपनी गुफा में वापस चला गया, यह पता लगाने के लिए कि आखिर हुआ क्या था। अब तक महल में सबको पता चल चुका था कि वह एक दुष्ट आत्मा है। सत्रह अन्य महिलाएं, जो महल की सुंदरी को खा जाने पर अपनी जान बचाकर भाग गई थीं, उन्होंने अगली सुबह राजा को सब कुछ बता दिया था, और उसके अचानक चले जाने से यह और भी स्पष्ट हो गया कि वह एक दानव था। राजा ने अधिकारियों को उस नकली बाघ का ध्यान रखने का आदेश दिया।

जब बंदर ने राक्षस को गुफा में वापस आते देखा, तो उसने उसे चकमा देने का एक तरीका सोचा। उसने तब तक पलकें झपकाईं जब तक उसकी आँखों से आँसू बारिश की तरह बहने लगे, फिर वह बच्चों के लिए रोने लगा और शोक में उछल-कूद करने लगा, जिससे गुफा उसके रोने की आवाज़ से गूंज उठी। राक्षस बंदर को पहचान नहीं पाया और उसने उसे गले लगा लिया। "क्या बात है, पत्नी?" उसने पूछा।

“पतिदेव,” बंदर रोते हुए, अपनी शैतानी झूठी कहानियाँ गढ़ते हुए बोला, “यह कितना सच है कि ‘जिस पुरुष की पत्नी नहीं होती, उसकी संपत्ति की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता; और जिस स्त्री का पति मर जाता है, उसका पतन निश्चित है’। कल अपने ससुर से मिलने शहर जाने के बाद आप वापस क्यों नहीं आए? आज सुबह सूअर आया और उसने साधु सैंड को पकड़ लिया, फिर उन्होंने हमारे बेटों को भी पकड़ लिया और मेरी तमाम मिन्नतों के बावजूद उन्हें नहीं छोड़ा। उन्होंने कहा कि वे उन्हें महल में उनके दादा से मिलवाने ले जा रहे हैं, लेकिन मैंने उन्हें पूरे दिन नहीं देखा। मुझे नहीं पता कि उनका क्या हुआ है, और आप तो दूर ही थे। उन्हें खोने का मुझे

इतना दुख है कि मैं रोना बंद नहीं कर पा रही हूँ।" राक्षस क्रोधित था।
"मेरे बेटे?" उसने पूछा।
"हां," बंदर ने जवाब दिया, "सूअर उन्हें ले गया।"
क्रोध से उछलते हुए उस राक्षस ने कहा, "बस, अब बहुत हो गया। इसने मेरे बेटों को मार डाला है। इसे इसकी सज़ा मिलेगी। मैं उस साधु से इसका बदला उसकी जान से लूंगा। रोओ मत, पत्नी। अब कैसा लग रहा है? मैं तुम्हें ठीक कर देता हूँ।"
"मुझमें कोई खराबी नहीं है," बंदर ने कहा, "सिवाय इसके कि मैं इतना रोया हूँ कि मेरा दिल दुख रहा है।"
"छोड़ो कोई बात नहीं," राक्षस ने जवाब दिया। "इधर आओ। मेरे पास एक खजाना है जिसे तुम्हें अपने दर्द पर रगड़ना है, दर्द कम हो जाएगा। लेकिन बहुत सावधानी बरतना और इसे अपने अंगूठे से मत छूना, क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हें मेरा असली शरीर दिख जाएगा।"
बंदर मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, "कितना सलीकेदार राक्षस है! बिना यातना सहे ही सब कुछ दे दिया। जब वो मुझे खजाना देगा, तो मैं उसे फेंककर देखूंगा कि वो असल में किस तरह का राक्षस है।" फिर राक्षस उसे गुफा के एक सुनसान और एकांत हिस्से में ले गया और मुर्गी के अंडे के आकार का एक खजाना थूक दिया। यह एक जादुई गोली थी जिसे आंतरिक स्राव के एक टुकड़े से बड़ी कुशलता से बनाया गया था। बंदर ने सोचा, "कितनी अद्भुत चीज है! पता नहीं कितनी बार इसे तराशा, परिष्कृत किया और संकरण कराया गया होगा, तब जाकर यह इतनी जादुई वस्तु बनी। आज तो इसका मुझसे मिलना तय था।"
अध्याय 31

पश्चिम की यात्रा
बंदर ने उसे उठाया, अपने नकली दर्द पर रगड़ा और अंगूठे से झटका देने ही वाला था कि राक्षस डर गया और उसे उससे छीनने की कोशिश करने लगा। चालाक बंदर ने उसे अपने मुंह में डाला और निगल लिया। राक्षस ने मुट्ठी भींचकर उस पर वार किया, लेकिन बंदर ने वार को रोक दिया, अपना चेहरा रगड़ा और चिल्लाते हुए अपने असली रूप में लौट आया, "तमीज़ से पेश आओ, राक्षस। देख लो कि मैं कौन हूँ।"
"पत्नी," उस अचंभित राक्षस ने कहा, "तुम्हारा यह भयानक चेहरा कैसे बन गया?"

"मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, दुष्ट राक्षस," बंदर ने कहा। "मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ। क्या तुम अपने दादा को भी नहीं पहचान सकते?" राक्षस को अब कुछ समझ आने लगा था, और उसने कहा, "तुम मुझे कुछ-कुछ जानी-पहचानी लग रही हो।"

"एक बार फिर देख लो," बंदर ने कहा, "मैं तुम्हें नहीं मारूंगा।"

"मैं तुम्हें पहचानता हूँ," राक्षस ने कहा, "पर तुम्हारा नाम याद नहीं आ रहा। तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? मेरी पत्नी को तुमने कहाँ छिपा रखा है? तुमने मेरा खजाना क्यों चुरा लिया? यह बहुत ही घिनौना व्यवहार है।"

"चूंकि आप मुझे नहीं जानते," बंदर ने कहा, "तो मैं आपको बता दूं कि मैं सन वुकॉन्ग हूं, भाई बंदर, तांग पुजारी का वरिष्ठ शिष्य। मैं आपसे पूरे पांच सौ साल पहले का पूर्वज हूं।"

"बकवास," राक्षस ने उत्तर दिया, "बकवास। मुझे पता है कि जब मैंने तांग पुजारी को पकड़ा था, तब उसके केवल दो शिष्य थे। उनके नाम सुअर और साधु रेत थे। किसी ने भी बंदर नाम के किसी व्यक्ति का ज़िक्र नहीं किया। तुम ज़रूर कहीं से आए हुए शैतान हो जो मुझे धोखा देने आए हो।"

"मैं बाकी दो के साथ यहाँ नहीं आया," बंदर ने कहा, "क्योंकि मेरा स्वामी एक दयालु और करुणामय व्यक्ति है जिसने मुझे बहुत सारी बुरी आत्माओं को मारने के कारण वापस घर भेज दिया। तुम्हें अपने पूर्वज का नाम पता होना चाहिए।"

"तुम किस तरह के आदमी हो?" राक्षस ने पूछा, "तुम्हारे स्वामी द्वारा भेजे जाने के बाद वापस आने की हिम्मत तुममें कैसे हो?"

“तुम नहीं समझोगे, धिक्कार है राक्षस,” बंदर ने कहा, “कि जब कोई व्यक्ति एक दिन के लिए तुम्हारा गुरु रहा हो, तो तुम्हें उसे जीवन भर अपने पिता के समान मानना चाहिए, और पिता-पुत्र के बीच का झगड़ा कभी खत्म नहीं होना चाहिए। तुमने मेरे गुरु को चोट पहुँचाई है, इसलिए मैं उन्हें बचाने आया हूँ। अगर मैं इसे नज़रअंदाज़ भी कर सकता, तो भी यह बेहद शर्मनाक है कि तुमने मेरी पीठ पीछे मेरा अपमान किया।”

"मैंने कभी तुम्हारा अपमान नहीं किया," राक्षस ने कहा।

"सूअर ने मुझे बताया कि तुमने ऐसा किया," बंदर ने जवाब दिया।

"तुम्हें उस चुभती ज़बान वाली बुढ़िया की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए," राक्षस ने कहा।

"चलिए, इधर-उधर की बातें बंद करते हैं," बंदर ने कहा। "दूर से आए मेहमान के तौर

पर आपने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है।"
भले ही आपके पास मुझे खिलाने के लिए शराब या बढ़िया व्यंजन न हों, लेकिन आपके पास दिमाग तो है, तो इसे फैलाइए और मुझे अपनी लाठी से इस पर वार करने दीजिए—चाय के बजाय यही ठीक रहेगा।"
मार-पीट का जिक्र सुनते ही राक्षस जोर से हंस पड़ा। "इस बार तो तुम पूरी तरह गलत समझ रहे हो, बंदर।"
उसने कहा, "अगर तुम मुझसे लड़ना चाहते थे तो तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था। मेरे पास यहां हर आकार के हज़ार शैतान मौजूद हैं।"
"भले ही तुम हथियारों से घिरे हो, फिर भी तुम कभी भी लड़कर बाहर नहीं निकल पाओगे।"
"बकवास," बंदर ने जवाब दिया। "एक हज़ार की बात छोड़ो—अगर तुम्हारे पास हज़ारों या दसियों हज़ार भी हों, तो मुझे बस उन्हें साफ़-साफ़ देखने की ज़रूरत होगी और मेरा हर वार उन पर सीधा लगेगा। मैं तुम सबको मिटा दूंगा।"
अध्याय 31
441
पश्चिम की यात्रा
राक्षस ने तुरंत गुफा के अंदर और आसपास मौजूद सभी दुष्ट आत्माओं और दानवों को अपने हथियारों के साथ इकट्ठा होने और सभी दरवाजों पर कड़ा घेरा बनाने का आदेश दिया। बंदर उन्हें देखकर प्रसन्न हुआ और दोनों हाथों से अपना गदा लहराते हुए चिल्लाया "बदलो!" और अचानक उसके छह हाथ और तीन सिर हो गए। फिर उसने अपने सोने की पट्टी वाले गदा को हिलाया और उसे तीन सोने की पट्टी वाले गदाओं में बदल दिया। वह अपने छह हाथों और तीन गदाओं के साथ युद्ध में उतर गया।
वह भेड़शाला में शेर और मुर्गीखाने में बाज की तरह था। बेचारे नन्हे शैतानों के सिर चूर-चूर हो गए थे, और उनका खून पानी की तरह बह रहा था। वह इधर-उधर ऐसे भागता रहा मानो वहाँ कोई और न हो, जब तक कि केवल वह बूढ़ा राक्षस ही नहीं रह गया।
वह बंदर के पीछे बाहर गया और बोला, "बेशर्म बंदर। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ आकर हमें धमकाने की?"
बंदर मुड़ा, उसे इशारा किया और बोला, "इधर आओ, इधर आओ। मुझे तुम्हें मारने

का श्रेय लेने दो।"
राक्षस ने अपनी तलवार से सिर पर वार किया, और बंदर ने अपने डंडे से उसके चेहरे पर पलटवार किया। दोनों पहाड़ की चोटी पर घने कोहरे के बीच लड़ते रहे।
महान ऋषि की जादूई शक्ति अत्यंत शक्तिशाली थी।
उस राक्षस की शक्ति भयानक थी।
उनमें से एक के हाथ में लोहे का डंडा था;
दूसरी तलवार, कठोर लोहे की बनी हुई थी।
जब तलवार उठाई गई तो वह एक चमकदार आभा से जगमगा उठी;
बचाव करने वाली लाठी बादलों से घिरी हुई थी।
वे अपने सिर बचाते हुए इधर-उधर कूद रहे थे।
बार-बार घूमना और कलाबाजियां करना।
उनमें से एक का चेहरा हवा के हर झोंके के साथ बदल जाता था।
दूसरा व्यक्ति स्थिर खड़ा रहा और अपने शरीर को हिलाता रहा।
एक ने अपनी वानर जैसी भुजा फैलाते हुए उग्र आँखों से घूरा, दूसरे की सुनहरी पुतलियाँ चमक उठीं जब उसने अपनी बाघ जैसी कमर को मरोड़ा।
वे एक घातक लड़ाई में उलझे हुए थे।
तलवार और लाठी ने बेरहमी से प्रहार किया।
बंदर राजा ने युद्ध कला के क्लासिक ग्रंथ के अनुसार अपनी लोहे की गदा चलाई, और राक्षस की तलवारबाजी प्राचीन ग्रंथों के अनुरूप थी।
उनमें से एक दानवों का राजा था जिसे काले जादू का अनुभव था।
अध्याय 31

दूसरे ने तांग पुजारी की रक्षा के लिए जादुई शक्तियों का इस्तेमाल किया।
भयंकर बंदर राजा पहले से भी अधिक क्रूर हो गया।
वह वीर राक्षस एक और भी महान नायक बन गया।
उन्होंने अंतरिक्ष में लड़ाई लड़ी, मौत की परवाह किए बिना।
यह सब इसलिए हुआ क्योंकि तांग पुरोहित बुद्ध से मिलने गए थे।
पचास-साठ दौर तक दोनों बिना किसी नतीजे के लड़ते रहे, तभी बंदर ने सोचा, "उस

खूनी राक्षस की तलवार मेरी गदा के बराबर है। मैं उसे मौका देने का नाटक करूंगा और देखूंगा कि क्या वह समझ पाता है कि यह एक चाल है।" बंदर राजा ने अपनी गदा उठाई और "ऊंचे घोड़े तक पहुंचने" का इशारा किया। राक्षस को यह एहसास नहीं हुआ कि यह एक चाल है, और उसने सोचा कि उसे सच में मौका मिल गया है, इसलिए उसने अपनी तलवार से बंदर पर ज़ोरदार वार किया।

बंदर ने तुरंत वार से बचने के लिए ऊंची छलांग लगाई, फिर "पत्तों के नीचे से आड़ू चुराने" जैसी फुर्ती से राक्षस के सिर पर वार किया और उसे इतनी ज़ोर से मारा कि वह बिना किसी निशान के गायब हो गया। बंदर ने अपना डंडा एक तरफ रख दिया और उसे ढूंढने लगा, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली।

“वाह!” बंदर ने हैरानी से कहा, “मैंने उसे सिर्फ़ मारा ही नहीं—बल्कि उसे मिटा ही दिया। लेकिन अगर मैंने सच में उसे मार डाला होता तो कम से कम खून और मवाद तो होना चाहिए था, और यहाँ तो कुछ भी नहीं दिख रहा। शायद वो भाग गया हो।” वो चारों ओर देखने के लिए एक बादल पर उछल पड़ा, लेकिन कुछ भी हिल नहीं रहा था। “मेरी आँखें एक नज़र में सब कुछ देख सकती हैं,” उसने सोचा, “तो वो इतनी रहस्यमयी तरीके से कैसे भाग गया? अब समझ में आया। उसने कहा कि उसे लगा जैसे वो मुझे पहचानता है, तो वो कोई साधारण राक्षस नहीं हो सकता। वो ज़रूर स्वर्ग से आई कोई आत्मा होगी।”

यह सब बंदर के लिए असहनीय हो गया, और वह क्रोधित होकर अपने हाथों में गदा लिए हुए स्वर्ग के दक्षिणी द्वार तक उछल पड़ा। घबराए हुए स्वर्ग के सेनापति पांग, लियू, गौ, बी, झांग, ताओ, डेंग और शिन द्वार के दोनों ओर झुक गए, और उसका रास्ता रोकने की हिम्मत नहीं की। उन्होंने उसे द्वार से होते हुए सीधे सर्वव्यापी प्रकाश के हॉल तक जाने दिया, जहाँ चार महान स्वर्ग के गुरु झांग, गे, जू और किउ ने पूछा, "हे महान ऋषि, आप यहाँ किसलिए आए हैं?"

"जब मैं तांग पुजारी को एलिफेंटिया ले जा रहा था, तभी एक दुष्ट राक्षस ने एक राजकुमारी का अपहरण कर लिया और गुरु को नुकसान पहुंचाया।"

मुझे उससे लड़ना पड़ा, और हमारी लड़ाई के बीच में ही वह गायब हो गया। मैंने सोचा कि वह कोई साधारण राक्षस नहीं हो सकता, बल्कि स्वर्ग से आया कोई प्रेत होगा, इसलिए मैं यह पता लगाने आया हूँ कि कहीं कोई दुष्ट देवता अपना स्थान छोड़कर तो नहीं चले गए हैं। यह सुनकर स्वर्ग के गुरुओं ने चमत्कारिक धुंध के हॉल में जाकर जेड

सम्राट को इसकी सूचना दी। उन्होंने जाँच का आदेश दिया। उन्होंने पाया कि नौ तेजस्वी देवताओं, बारह शाखाओं के देवताओं, उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और मध्य के पाँच सप्तर्षों, आकाशगंगा के देवताओं, पाँच शिखरों, चार नदियों और स्वर्ग के अन्य सभी देवताओं में से कोई भी गायब नहीं था। फिर उन्होंने सप्तर्षि और बैल के महल के बाहर जाँच की और पाया कि अट्ठाईस नक्षत्रों में से एक, परजीव, गायब था। उन्होंने सिंहासन को सूचना दी, "लकड़ी का भेड़िया स्ट्राइडर धरती पर उतर गया है।"

"वह कितने समय से स्वर्ग से दूर है?" जेड सम्राट ने पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "वह चार बार हाजिरी में अनुपस्थित रहा है, और हर तीन दिन में एक बार हाजिरी होने के हिसाब से कुल तेरह दिन हो जाते हैं।"

"स्वर्ग में तेरह दिन पृथ्वी पर तेरह साल के बराबर होंगे," सम्राट ने कहा, और उन्होंने स्ट्राइडर के साथी तारों को नीचे जाकर उसे वापस स्वर्ग लाने का आदेश दिया।

अध्याय 31

443

पश्चिम की यात्रा

यह आदेश मिलते ही सत्ताईस अन्य नक्षत्र स्वर्ग के द्वार से बाहर निकल आए और प्रत्येक नक्षत्र ने अपना-अपना मंत्र जपते हुए स्ट्राइडर को चौंका दिया। क्या आप जानते हैं कि वह कहाँ छिपा हुआ था? वह उन स्वर्गीय सेनापतियों में से एक था जिसे बंदर द्वारा स्वर्ग महल पर आक्रमण करने पर हराया गया था, और वह एक पहाड़ी धारा में छिपा हुआ था जिसने उसके राक्षसी रूप को छुपाकर उसे सबकी नज़रों से दूर रखा था। जब उसने अन्य नक्षत्रों को अपने मंत्र जपते हुए सुना तभी उसने पानी से बाहर निकलने और उनके साथ स्वर्ग वापस जाने का साहस किया।

महान ऋषि स्वर्ग के द्वार पर खड़े थे और अन्य नक्षत्रों की विनती के कारण ही बच पाए, जिन्होंने उसे बचाया और उसे जेड सम्राट के पास ले गए। राक्षस ने अपनी कमर से अपना स्वर्ण पदचिह्न निकाला और महल के फर्श पर सिर झुकाकर अपना अपराध स्वीकार किया।

"लकड़ी के भेड़िये स्ट्राइडर," जेड सम्राट ने कहा, "तुम स्वर्ग की अनंत सुंदरता से संतुष्ट होने के बजाय अकेले क्यों चले गए?"

"महाराज, मैं मरने का हकदार हूँ," स्ट्राइडर ने उत्तर दिया। "एलिफेंटिया के राजा की वह पुत्री कोई साधारण नश्वर नहीं थी। वह धूप के महल में रहने वाली एक जेड कन्या

थी जो मुझसे प्रेम संबंध रखना चाहती थी। क्योंकि हम स्वर्गिक महल को अपवित्र नहीं करना चाहते थे, इसलिए उसने पहले नश्वर बनने का निर्णय लिया और एक राजा के महल में पुनर्जन्म लिया।"

फिर मैं एक दुष्ट राक्षस बन गया और उसे निराश न करने के लिए एक पहाड़ पर कब्जा कर लिया। मैं उसे अपनी गुफा में ले गया, और हम तेरह वर्षों तक पति-पत्नी रहे। कहावत है, 'हर निवाला और हर घूंट पूर्वनिर्धारित है,' और अब महान ऋषि मुझे यहाँ लाने में सफल हो गए हैं।" जेड सम्राट ने अपना पद वापस ले लिया और उसे तुशिता महल में भगवान लाओ ज़ी की आग जलाने में मदद करने वाले एक साधारण नौकर के रूप में पदावनत कर दिया। यदि वह अच्छा काम करता, तो उसे उसके पूर्व पद पर बहाल कर दिया जाता; यदि नहीं, तो उसकी सजा और कड़ी कर दी जाती। बंदर जेड सम्राट के इस व्यवहार को देखकर प्रसन्न हुआ, और सम्मानपूर्वक "ना-आ-आ" का उच्चारण करते हुए उसने उपस्थित देवताओं से कहा, "सज्जनों, मैं जा रहा हूँ।"

"वह बंदर पहले की तरह ही बदतमीज़ है," स्वर्ग के शिक्षकों ने हंसते हुए कहा, "बस 'ना-आ-आ' का जाप कर रहा है और उस राक्षस को पकड़ने के लिए आपकी दिव्य कृपा के लिए आपको धन्यवाद दिए बिना चला गया।"

जेड सम्राट ने कहा, "यदि वह स्वर्ग की शांति भंग किए बिना चला जाता है, तो हम स्वयं को भाग्यशाली मान सकते हैं।"

महान ऋषि अपने चमकते बादल को सीधे बाउल पर्वत पर स्थित मून वाटर्स गुफा में ले आए, राजकुमारी को वहाँ पाया और उसे नश्वर बनने और एक राक्षस से विवाह करने के लिए फटकार लगाई। ऐसा करते समय उन्होंने पिग और फ्रायर सैंड को हवा में चिल्लाते हुए सुना, "भाई, हमें कुछ राक्षसों को खत्म करने के लिए छोड़ दो।"

"मैंने उन्हें पहले ही खत्म कर दिया है," बंदर ने जवाब दिया।

"कोई बात नहीं," साधु सैंड ने कहा। "चलो राजकुमारी को महल वापस ले चलते हैं। उसे घूरना मत, सुअर। हमें दूरी कम करने वाला जादू करना चाहिए।"

राजकुमारी को अपने कानों में हवा का एक झोंका सुनाई दिया और पल भर में वह वापस शहर में आ गई। तीनों शिष्य उसे सिंहासन कक्ष में ले गए, जहाँ उसने अपने राजमाता को प्रणाम किया और अपनी बहनों से पुनः मिली। सभी अधिकारी उसका अभिवादन करने के लिए झुके। फिर उसने कहा, "पीले वस्त्रधारी राक्षस की पराजय

और मेरी मुक्ति के लिए हम आदरणीय बंदर की असीम शक्तियों के ऋणी हैं।"
"वह किस प्रकार का राक्षस था?" राजा ने पूछा।
"महाराज के दामाद," बंदर ने उत्तर दिया, "स्वर्ग से आए स्ट्राइडर नक्षत्र हैं, और आपकी बेटी एक जेड कन्या थी जो धूप धारण करती थी जब तक कि उसने नश्वर बनने का फैसला नहीं किया और इस दुनिया में नहीं आ गई।"
यह विवाह पूर्वनियोजित था। जब मैं स्वर्ग महल में गया और उन्हें एक ज्ञापन सौंपा, तो जेड सम्राट ने पाया कि राक्षस चार हाजिरी में अनुपस्थित रहा था और तेरह दिनों से स्वर्ग से बाहर था, जो पृथ्वी पर तेरह वर्ष के बराबर है। सम्राट ने अपने साथी तारों को उसे लाने के लिए भेजा, फिर उसे तुशिता स्वर्ग में निर्वासित कर दिया, जहाँ उसे अपने पापों का प्रायश्चित करना है। इस प्रकार मैंने आपकी बेटी को बचाया और अध्याय 31
444
पश्चिम की यात्रा
उसे यहाँ लाया था।" राजा ने बंदर को धन्यवाद दिया और उसे अपने स्वामी से मिलने जाने को कहा।
तीनों शिष्य सिंहासन कक्ष छोड़कर सभी दरबारियों के साथ प्रतीक्षालय में गए, जहाँ लोहे का पिंजरा लाया गया और नकली बाघ को जंजीरों से मुक्त किया गया। बंदर ही एकमात्र ऐसा था जो देख सका कि वह मनुष्य है; बाकी सभी को लगा कि वह सचमुच एक बाघ है। संजांग राक्षस के वश में था इसलिए वह हिल नहीं सकता था, और यद्यपि वह होश में था, वह अपना मुँह या आँखें खोलने में असमर्थ था।
"हे गुरु, आप तो बड़े ही अच्छे भिक्षु हैं," बंदर ने कहा, "अपने आप को इस घिनौने रूप में ढाल रहे हैं। आपने मुझ पर हत्या का आरोप लगाया और मुझे घर भेज दिया, लेकिन अगर आपका दिल अच्छाई से भरा होता तो आप इतने भयानक नहीं लगते।"
"उसे बचाओ, भाई, उसे डांट मत," पिग ने कहा।
“तुमने ही उसे ये सब करने के लिए उकसाया था,” बंदर ने कहा। “तुम उसके प्रिय शिष्य थे। मुझे बुलवाने के बजाय तुमने उसे क्यों नहीं बचाया? वैसे भी, मैंने तुमसे कहा था कि राक्षस को हराने और उस अपमान का बदला लेने के बाद मैं वापस आऊंगा।” साधु सैंड उसके पास गया और उसके सामने घुटने टेक दिए।
“जैसा कि पुरानी कहावत है,” उसने विनती करते हुए कहा, “यदि आप भिक्षु के लिए ऐसा नहीं करेंगे, तो बुद्ध के लिए ही करें। मैं आपसे विनती करता हूँ कि अब जब आप

यहाँ हैं, तो कृपया उसे बचा लें। यदि हम उसे स्वयं बचा सकते, तो मैं आपको बुलाने के लिए इतनी दूर नहीं आता।"

"मैं उसे बचाए बिना नहीं रह सका," बंदर ने फ्रायर सैंड को उठाते हुए उत्तर दिया। "मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ।" सुअर वापस छात्रावास गया, घोड़ा और सामान लाया, उसमें से सोने का भिक्षापात्र निकाला, उसे आधा पानी से भरा और बंदर को दे दिया। बंदर ने पानी हाथ में लिया, मंत्र पढ़ा और उसे बाघ के सिर पर छिड़क दिया। दुष्ट जादू नष्ट हो गया और बाघ की आभा बिखर गई।

संज़ंग एक बार फिर अपने असली रूप में प्रकट हुए। जब उन्होंने खुद को संभाला और आँखें खोलीं, तो उन्होंने बंदर को देखा, उसे पकड़ लिया और कहा, "बंदर, तुम कहाँ से आए हो?" वहाँ उपस्थित साधु सैंड ने उन्हें बताया कि कैसे बंदर को वापस बुलाया गया, उसने राक्षस को हराया, राजकुमारी को बचाया, बाघ की शक्ति को नष्ट किया और महल में वापस आ गया। संज़ंग ने कृतज्ञता से भरकर कहा, "हे योग्य शिष्य, धन्यवाद, धन्यवाद। जब हम पश्चिम की यात्रा से पूर्व लौटेंगे, तो मैं तांग सम्राट को सूचित करूँगा कि तुमने सर्वोच्च सम्मान प्राप्त किया है।"

मुस्कुराते हुए बंदर ने कहा, "कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। अपनी कृतज्ञता दिखाने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि तुम वह मंत्र न बोलो।" जब राजा ने यह सब सुना तो उसने उन चारों को धन्यवाद दिया और पूर्वी भाग में उनके लिए एक भव्य शाकाहारी भोज का आयोजन किया। राजा की इस दयालुता को देखकर गुरु और शिष्य उनसे विदा लेकर पश्चिम की ओर चल पड़े। राजा और उनके दरबारी उन्हें विदा करने के लिए बहुत दूर से आए, जिसके बाद

सम्राट अपने देश पर शासन करने के लिए महल लौट आया।

भिक्षु बुद्ध के दर्शन करने के लिए थंडर मठ की ओर रवाना हुए।

अगर आपको नहीं पता कि आगे क्या हुआ या वे पश्चिमी स्वर्ग कब पहुँचे, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 31

445

पश्चिम की यात्रा

अध्याय 32

फ्लैट-टॉप माउंटेन पर कर्तव्यनिष्ठ ईश्वर एक संदेश देते हैं

कमल के फूल की गुफा में सुअर मुसीबत में पड़ जाता है
कहानी बताती है कि बंदर के तांग पुजारी से दोबारा मिलने के बाद, वे चारों अपने साझा दृढ़ संकल्प के साथ पश्चिम की ओर चल पड़े। एलिफेंटिया के राजा ने अपनी बेटी को वापस लाने के लिए उनका धन्यवाद करने हेतु उन्हें अपनी राजधानी से आगे तक अपने साथ ले गए। वहाँ से वे आगे बढ़े, भूख लगने पर भोजन करते और प्यास लगने पर पानी पीते, दिन में चलते और रात में विश्राम करते। अब वसंत ऋतु आ चुकी थी।
हल्की हवा से विलो के रेशमी हरे फूलों की कलियाँ हिल उठीं।
और नजारा बेहद खूबसूरत था।
इस मौसम ने पक्षियों को गाने के लिए प्रोत्साहित किया;
गर्म धूप में फूल खिल उठे।
पूरी दुनिया को सुगंधित बनाना।
आंगन में लगे पेड़ पर अबाबीलों का एक जोड़ा आकर बैठ गया;
अब वसंत ऋतु का आनंद लेने का समय था।
दुनिया की लाल धूल और शहर की सड़कों के बीच,
वीणा और बांसुरी की धुन पर हल्के रेशमी वस्त्र पहने जाते थे।
जैसे-जैसे फूल आपस में प्रतिस्पर्धा करते गए और प्याला चारों ओर घुमाया गया।
गुरु और शिष्य अपनी यात्रा का आनंद ले रहे थे कि तभी उन्हें अपने रास्ते में एक पहाड़ दिखाई दिया। तांग पुजारी ने कहा, "शिष्यों, सावधान रहो। मुझे डर है कि कहीं बाघ और भेड़िये हमें उस ऊंचे पहाड़ को पार करने से न रोक दें।"
"धर्मी होने के नाते," बंदर ने कहा, "तुम्हें इस तरह की बातें नहीं कहनी चाहिए। क्या तुम्हें वह हृदय सूत्र याद नहीं है जो रूक नेस्ट के साधु ने तुम्हें सिखाया था—'यदि कोई प्रज्ञा-पारमिता पर भरोसा करता है, तो उसका मन मुक्त हो जाता है, उसे कोई भय नहीं रहता, वह अवास्तविकता के स्वप्निल विचारों से मुक्त हो जाता है और परम निर्वाण का आनंद लेता है।' तुम्हें बस इतना करना है..."
अपने दिमाग से धूल झाड़ लो,
अपने कान से गंदगी धोकर निकाल लें।

सबसे भयानक पीड़ा के बिना
तुम महान व्यक्ति नहीं बन सकते।'
इतना उदास होने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरे यहाँ होने से आसमान गिर जाए तब भी तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा, तो भेड़ियों और बाघों से क्यों डर रहे हो?" तांग पुजारी ने अपने घोड़े की लगाम खींची और जवाब दिया:
"जब मैंने शाही आदेशों पर चांगआन छोड़ा,
मैंने पश्चिम में बुद्ध की पूजा करने का दृढ़ निश्चय किया था।
जहां पवित्र भूमि में उनकी स्वर्णिम छवि चमकती है,
और पैगोडा में हरे रंग के बाल चमक रहे हैं।
मैं दुनिया की अनाम नदियों की खोज करूंगा,
और सभी अज्ञात पर्वत श्रृंखलाओं पर चढ़ाई करें।
मैं विशाल, धुंध भरी लहरों को पार करने के लिए तरसता हूँ;
लेकिन आखिर कब, मुझे शांति मिलेगी?
यह सुनकर बंदर हँस पड़ा और बोला, "इसमें तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी। जब तुम्हारा मिशन पूरा हो जाएगा, तब तुम्हारे सारे भाग्य समाप्त हो जाएँगे और तुम्हारे सारे धर्म निरर्थक हो जाएँगे, तब तुम निःसंदेह विश्राम कर पाओगे।" यह सुनकर संज़ंग का उत्साह बढ़ गया और उसने अपने ड्रैगन-घोड़े की लगाम थामकर उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। जैसे-जैसे वे पर्वत पर चढ़ते गए, उन्होंने पाया कि वह वास्तव में ऊबड़-खाबड़ और खड़ी ढलान वाला था।
ऊँची चोटियाँ,
नुकीले शिखर।
गहरी और घुमावदार धारा में नीचे,
एकाकी चट्टान के किनारे।
गहरी और घुमावदार धारा में नीचे,
आप सांपों को पानी में खेलते और छपछपाते हुए सुन सकते हैं;
एकाकी चट्टान के किनारे,

चट्टानी कगार पर पेड़ों के बीच बाघ अपनी पूंछ हिलाते हैं।
ऊपर देखो,
और ऊँचा नीला आकाश पर्वतमाला के ऊपर फैला हुआ है;
गोल घूमिए,
और घाटी में आकाश गहराइयों से मिल जाता है।
इस पर चढ़ना
यह सीढ़ी चढ़ने जैसा है;
अवरोही
यह किसी गड्ढे में जाने जैसा है।
यह वास्तव में एक विचित्र और ऊबड़-खाबड़ पर्वत श्रृंखला है।
ढलानदार चट्टानों की एक दीवार।
ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी पर,
औषधि संग्राहक भय से कांपता है;
एकदम खड़ी चट्टान पर
लकड़ी इकट्ठा करने वाला एक कदम भी नहीं चल सकता।
जंगली बकरियां और घोड़े सभी खुले में घूमते हैं
और खरगोश और पहाड़ी बैल बहुत सारे हैं।
यह पर्वत इतना ऊंचा है कि यह सूर्य और तारों को ढक लेता है;
अक्सर रास्ते में दुष्ट राक्षस और भूरे भेड़िये दिखाई देते हैं।
यह रास्ता कठिन है और घोड़े के लिए भी मुश्किल है:
वे थंडर मठ में बुद्ध के दर्शन कैसे कर पाएंगे?
जब संजांग ने पहाड़ को देखने के लिए अपने घोड़े की लगाम खींची तो उसने देखा कि वे एक बेहद कठिन स्थान पर पहुँच गए हैं।
हरी-भरी ढलान पर एक लकड़ी इकट्ठा करने वाला खड़ा था, और वह कुछ इस तरह दिखता था: उसके सिर पर एक पुरानी नीली फेल्ट की टोपी थी।

उसके शरीर पर एक काली ऊनी कमीज थी।
जर्जर फेल्ट टोपी
सूरज और बादलों को दूर रखने वाला वह नजारा अजीब था;
अपने काले ऊनी कुर्ते में
वह बेहद खुश और बेफिक्र था।
उसके हाथ में मौजूद इस्पात की कुल्हाड़ी को इतना तेज किया गया था कि वह चमकने लगी थी;
उसने सूखी लकड़ियाँ काटीं और उनकी गठरियाँ बनाईं।
उसकी डंडी से एक स्प्रिंग लटकी हुई थी।
और वह चारों सीजनों में खुश रहा।
उनका चेहरा तनावमुक्त था।
और उसका मन चिंता से मुक्त हो गया।
उन्होंने जीवन भर अपनी नियति को स्वीकार किया था;
इस पर्वत पर प्रसिद्धि और बदनामी ने उन्हें कभी परेशान नहीं किया।
लकड़ी इकट्ठा करने वाला
ढलान पर सूखी लकड़ियाँ काट रहा था
जब उसने पूर्व दिशा से भिक्षु को आते देखा।
अपनी कुल्हाड़ी को थोड़ी देर आराम देकर, वह पेड़ों के बीच से बाहर आ गया।
और, तेजी से चढ़ते हुए, उन्होंने जल्द ही चट्टान की दीवार पर विजय प्राप्त कर ली।
"पश्चिम की ओर अपनी यात्रा में यहाँ थोड़ी देर रुकिए," उसने चिल्लाकर कहा। "मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि इस पर्वत पर क्रूर राक्षसों और खूंखार भेड़ियों का एक झुंड है। वे पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाले यात्रियों को खा जाते हैं।"
इस खबर से संजांग बुरी तरह भयभीत हो गया। घोड़े पर कांपते हुए वह अचानक मुड़ा और अपने शिष्यों को पुकारा।
"क्या तुमने लकड़हारे की बात सुनी?" उसने पूछा। "इस पहाड़ पर राक्षस और भेड़िये हैं। क्या तुममें से कोई उससे और जानकारी पूछने की हिम्मत करेगा?"

"चिंता मत करो, स्वामी जी," बंदर ने कहा, "मैं उससे पता लगा लूंगा।"
बंदर भाई जल्दी से पहाड़ पर चढ़ गया और लकड़हारे को "बड़े भाई" कहकर संबोधित करते हुए उससे सब कुछ पूछ लिया। "आदरणीय महोदय, आप यहाँ क्यों आए हैं?" लकड़हारे ने अभिवादन का जवाब देते हुए पूछा।
"सच कहूँ तो, बड़े भाई," बंदर ने कहा, "हम पूरब से आए हैं और शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिम की ओर जा रहे हैं। घोड़े पर मेरे स्वामी हैं। वे थोड़े डरपोक हैं, इसलिए जब आपने उन्हें राक्षसों और भेड़ियों के बारे में बताया, तो उन्होंने मुझे आपसे उनके बारे में पूछने के लिए भेजा। वे यहाँ कब से हैं? क्या वे विशेषज्ञ हैं या अभी शुरुआत कर रहे हैं?"
कृपया मुझे उनके बारे में बताएं। फिर मैं पहाड़ के देवताओं और स्थानीय देवताओं को उन्हें विदा करने के लिए कह सकता हूँ।
यह सुनकर लकड़हारा अपना सिर पीछे करके जोर से हंस पड़ा। उसने कहा, "तुम सचमुच एक पागल साधु हो।"
"मैं पागल नहीं हूँ," बंदर ने जवाब दिया, "मैं समझदारी की बात कर रहा हूँ।"
"अगर तुम सच में कुछ कहना चाहते हो," लकड़हारे ने कहा, "तो फिर तुम यह कैसे कह सकते हो कि तुम उन्हें पैदल ही ले जाओगे?"
बंदर ने कहा, "तुम उनसे ज़रूर रिश्तेदार होगे, ये सब दिखावा कर रहे हो और हमारा रास्ता रोककर हमसे ये सब बकवास कर रहे हो। अगर तुम उनसे रिश्तेदार नहीं हो, तो या तो उनके पड़ोसी होगे या उनके दोस्त।"
"ये तो हद हो गई, पागल साधु," लकड़हारा फिर हँसते हुए बोला। "जो चेतावनी मैं तुम्हें देने आया हूँ, वो अच्छी नीयत से दी है। मैं तुम्हें सफ़र में हर पल सावधान रहने के लिए कहता हूँ, लेकिन तुम मुझे उन सारे राक्षसों के लिए ज़िम्मेदार ठहरा रहे हो। मुझे ये पता हो या न हो कि ये राक्षस क्या करते हैं, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। अगर मुझे पता भी होता, तो तुम उन्हें कहाँ भेजते?
“अगर वे आकाश के राक्षस होते,” बंदर ने उत्तर दिया, “तो मैं उन्हें जेड सम्राट के पास भेज देता, और अगर वे पृथ्वी के राक्षस होते तो मैं उन्हें पृथ्वी महल भेज देता। पश्चिमी राक्षस बुद्ध के पास जाते और पूर्वी राक्षस ऋषि के पास। उत्तर के राक्षसों को मैं उत्तर के सच्चे युद्ध देवता के पास और दक्षिण के राक्षसों को अग्नि देवता के पास भेज देता। ड्रैगन आत्माओं को समुद्र के स्वामी के पास और राक्षसों को यमराज के पास भेज

देता। उन सभी के लिए कोई न कोई ठिकाना है। मैं उन सभी स्थानों के लोगों को जानता हूँ, इसलिए मुझे केवल एक आदेश लिखना होगा कि राक्षसों को उसी रात दोगुनी गति से वहाँ भेज दिया जाए।”

"अरे पागल साधु," लकड़हारा ने उपहास भरी हंसी के साथ कहा, "तुम भले ही बादलों में यात्रा कर चुके हो और थोड़ा-बहुत जादू सीख चुके हो, लेकिन भले ही तुम बुरी आत्माओं को भगा सकते हो और राक्षसों को बांध सकते हो, तुमने कभी ऐसे क्रूर शैतानों का सामना नहीं किया है।"

"उनमें ऐसी क्या बुरी बात है?" बंदर ने पूछा।

"यह पहाड़ लगभग दो सौ मील चौड़ा है," लकड़हारा ने कहा, "और इसे फ्लैट-टॉप माउंटेन कहा जाता है।"

वहाँ एक गुफा है जिसे कमल के फूल की गुफा कहते हैं, जहाँ दो शैतान सरदार रहते हैं। वे भिक्षुओं को पकड़ने के लिए इतने दृढ़ हैं कि उन्होंने उनकी तस्वीरें बना ली हैं और उस व्यक्ति का नाम भी पता कर लिया है जिसे वे खाना चाहते हैं - तांग पुजारी। यदि आप तांग के अलावा कहीं और से आए हैं तो आप सुरक्षित रहेंगे। लेकिन यदि आप तांग से हैं, तो आगे न बढ़ें।

बंदर ने उत्तर दिया, "तांग की भूमि, ठीक वही जगह है जहाँ से हम आए हैं।"

"फिर वे तुम्हें खा जाएंगे," लकड़हारे ने कहा।

बंदर ने कहा, "हमारी किस्मत अच्छी है, हमारी किस्मत अच्छी है। बस एक ही बात है कि मुझे नहीं पता कि वे हमें कैसे खाएंगे।"

"तुम उन्हें कैसे खाना चाहते हो?" लकड़हारे ने पूछा।

बंदर ने कहा, "अगर वे पहले मेरा सिर खा लें, तो ठीक है। लेकिन अगर वे मेरे पैरों से शुरुआत करें, तो मुझे बहुत तकलीफ होगी।"

"इससे क्या फर्क पड़ता है कि वे तुम्हारे सिर से शुरू करें या पैरों से?" लकड़हारे ने पूछा।

“तुम्हें इसका कोई अनुभव नहीं है,” बंदर ने कहा। “अगर वे मेरे सिर से शुरू करें, तो एक ही बार में मेरा सिर काट देंगे और मैं मर जाऊंगा। चाहे वे मुझे तलें, भूनें या

पकाएँ, मुझे ज़रा भी दर्द नहीं होगा। लेकिन अगर वे मेरे पैरों से शुरू करें, तो वे मेरी टखनों को चबा सकते हैं, मेरी टांगों को कुचल सकते हैं और मेरी कमर तक खा सकते हैं, और मैं तब भी ज़िंदा और दर्द से तड़पता रहूंगा। यह थोड़ी-थोड़ी यातना सहने जैसा होगा। इसीलिए मैं यह सब सहूंगा।”

"वे वहां बहुत समय से हैं, भिक्षु," लकड़हारा ने कहा, "और जैसे ही वे तुम्हें पकड़ेंगे, वे तुम्हें बांध देंगे, स्टीमर में डाल देंगे और तुम्हें पूरा का पूरा खा जाएंगे।"

"और भी बढ़िया," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "और भी बढ़िया। इसमें ज़रा भी दर्द नहीं होगा; बस थोड़ी गर्मी और नज़दीकी महसूस होगी।"

"यह कोई मज़ाक की बात नहीं है, भिक्षु," लकड़हारा बोला। "उन राक्षसों के पास पाँच खजाने हैं जिन्हें वे अपने साथ रखते हैं, और उनकी जादुई शक्तियाँ बहुत विशाल हैं। चाहे तुम स्वर्ग के जेड स्तंभों में से एक हो या समुद्र को सहारा देने वाली सुनहरी किरणों में से एक, तुम्हें भी तांग पुजारी को रास्ता दिखाने के लिए बेहोश होना पड़ सकता है।"

"कितनी बार?" बंदर ने पूछा।

"तीन या चार बार," लकड़हारे ने उत्तर दिया।

"ये तो कुछ भी नहीं है," बंदर ने कहा, "बिल्कुल कुछ भी नहीं। हम सब साल में सात-आठ सौ बार बेहोश हो जाते हैं, तो तीन-चार बार और बेहोश होना आसान होगा और फिर हम काम चला लेंगे।"

निडर ऋषि, जिनका एकमात्र उद्देश्य तांग पुजारी की रक्षा करना था, लकड़हारे को छोड़कर जल्दी से वापस लौट आए। जब वे पहाड़ की ढलान पर खड़े घोड़े के पास पहुँचे तो उन्होंने कहा, "कोई बात नहीं, गुरुजी। यह सच है कि यहाँ कुछ दुष्ट आत्माएँ हैं, लेकिन स्थानीय लोग उनसे केवल डरपोक होने के कारण ही चिंतित हैं। मेरे यहाँ होने से आपको उनसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, इसलिए चलिए हम फिर से अपने रास्ते पर चलें।" यह सुनकर संजांग को राहत मिली और वह बंदर के पीछे चल दिए।

जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, उन्हें एहसास हुआ कि लकड़हारा कुछ समय पहले गायब हो गया था। "जिस लकड़हारे ने हमें संदेश दिया था, वह हमें क्यों नहीं दिख रहा?" संजांग ने पूछा।

"कितनी बुरी किस्मत है," सुअर ने कहा। "हमें दिन दहाड़े एक भूत से मिलना पड़ेगा।"

“वह और लकड़ियाँ ढूँढ़ने जंगल में गया होगा,” बंदर ने कहा। “मैं देखता हूँ।” अपनी सुनहरी पुतलियों वाली तेजस्वी आँखों को चौड़ा करके, महान ऋषि ने पर्वत पर खोजबीन की, लेकिन लकड़हारा कहीं नहीं दिखा। फिर उन्होंने बादलों की ओर देखा और वहाँ दिन के कर्तव्य देवता को देखा। वे स्वयं वहाँ उछल पड़े और उन्हें कई बार कोसते हुए बोले, “तुमने अपना रूप बदलकर मेरे सामने यह नाटक करने के बजाय मुझे सीधे-सीधे क्यों नहीं बताया?”

कर्तव्य देवता ने चिंता से झुककर उसे प्रणाम किया और कहा, "चेतावनी देने में देरी के लिए मुझे क्षमा करें। उन राक्षसों के पास वास्तव में अपार जादुई शक्तियां हैं और वे हर तरह का रूप बदल सकते हैं। अपने स्वामी की रक्षा के लिए आपको अपनी सारी कुशलता और चतुराई का इस्तेमाल करना होगा। यदि आप जरा भी ढिलाई बरतेंगे तो आप पश्चिमी स्वर्ग तक नहीं पहुंच पाएंगे।"

बंदर ने कर्तव्य देवता को विदा कर दिया। वह चिंतित महसूस कर रहा था क्योंकि उसने अपने बादल को उतारा और पहाड़ की ओर चढ़ गया, जहाँ उसे संज़ांग, सुअर और साधु सैंड आगे बढ़ते हुए मिले। "अगर मैं गुरु को सीधे बता दूं कि अध्याय 32 में क्या है..."

“कर्तव्य के देवता ने कहा,” उसने सोचा, “मालिक इसका सामना नहीं कर पाएगा और रोने लगेगा। लेकिन अगर मैं उसे न बताऊं और उसे अंधेरे में रखूं तो उसे पता नहीं चलेगा कि मामला क्या है, और अगर वह राक्षसों के हाथों पकड़ा गया तो मेरे लिए बहुत बड़ी मुसीबत होगी। बेहतर होगा कि मैं जाकर पिग से मिलूं। मैं उसे राक्षस से लड़ने के लिए आगे भेज सकता हूं। अगर वह जीत जाता है, तो यह उसकी उपलब्धि होगी। अगर वह नहीं जीत पाता और राक्षस उसे पकड़ लेता है, तो मैं जाकर उसे बचा सकता हूं, जिससे मुझे अपनी काबिलियत दिखाने और मशहूर होने का मौका मिलेगा।” ये सब सोचते हुए उसे लगा कि कहीं पिग इससे बचकर सान्ज़ांग से सुरक्षा न मांग ले। उसने फैसला किया कि उसे ऐसा करने के लिए मजबूर करना ही पड़ेगा।

महान ऋषि ने एक तरकीब अपनाई। उन्होंने अपनी आँखों को तब तक रगड़ा जब तक उनमें से पानी न आ गया, फिर वे गुरु के पास गए। जब सुअर ने उन्हें देखा तो उसने साधु रेत से कहा, "अपना डंडा नीचे रख दो और सामान खोल दो। हम दोनों इसे बाँट

लेंगे।"
"तुम्हारा मतलब क्या है, इसे विभाजित करना?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"बांट लो," सुअर ने कहा। "तुम बहती रेत की नदी पर वापस जाकर राक्षस बन सकते हो, और मैं गाओ गाँव जाकर अपनी पत्नी से मिलूँगा। हम सफेद घोड़े को बेचकर मालिक के बुढ़ापे में काम आने वाले ताबूत के लिए लकड़ी खरीद सकते हैं। फिर हम पश्चिमी स्वर्ग जाने के बजाय अलग हो जाएँगे।"
जब संजांग ने यह सुना तो उसने कहा, "यात्रा के बीच में तुम ऐसी बकवास कैसे कर सकते हो?"
"कौन बकवास कर रहा है? मैं फिर से कहता हूँ," सुअर ने कहा। "क्या तुम नहीं देख सकते कि बंदर रोते हुए लौट रहा है? वह एक असली बहादुर है जो धरती में उतरने या आकाश में जाने से नहीं डरता, न ही कटने, जलने या तेल में उबलने से डरता है, इसलिए अगर वह गहरे उदास मन से और चेहरे पर आँसू बहाते हुए आ रहा है तो इस ऊबड़-खाबड़ पहाड़ पर ज़रूर राक्षस और भेड़िये होंगे जिनसे हम जैसे कमज़ोर लोग कभी पार नहीं कर सकते।"
"यह बकवास बंद करो," संजांग ने कहा। "मैं उससे पूछूंगा कि उसे क्या कहना है। मुझे साफ-साफ बताओ," उसने बंदर से कहा।
"तुम्हें क्या परेशान कर रहा है? तुम क्यों रो रही हो? क्या तुम हमें डराने की कोशिश कर रही हो?"
“अभी-अभी हमें यह संदेश देने वाला व्यक्ति,” बंदर ने उत्तर दिया, “आज का कर्तव्य देवता था। उसने कहा कि यहाँ की दुष्ट आत्माएँ इतनी क्रूर हैं कि यहाँ से गुजरना बहुत मुश्किल होगा; इसके अलावा, हम इन ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों को पार नहीं कर पाएँगे। चलो किसी और दिन चलते हैं।”
इस खबर से भयभीत होकर, संजांग ने मंकी की बाघ की खाल से बनी स्कर्ट को खींचते हुए कहा, "जब हम आधी यात्रा कर चुके हैं तो वापस लौटने के ये विचार क्यों?"
"ऐसा नहीं है कि मैं डगमगा रहा हूँ," बंदर ने कहा, "लेकिन इतने सारे राक्षसों का हम मुकाबला नहीं कर पाएंगे। 'भट्टी में लोहे का एक टुकड़ा बस कुछ ही कीलें बना सकता है।'"
"आप सही कह रहे हैं," संज़ंग ने कहा, "अकेले यह करना बहुत मुश्किल होगा। जैसा

कि सैन्य शास्त्र में कहा गया है, 'कम लोग बहुतों का मुकाबला नहीं कर सकते'। लेकिन मेरे पास पिग और फ्रायर सैंड भी हैं जिन्हें आप अपने अधीनस्थों के रूप में तैनात कर सकते हैं। मिलकर रास्ता साफ कीजिए और मुझे पहाड़ पार कराइए। तब आपको आपका उचित पुरस्कार मिलेगा।"

बंदर भाई के छोटे से नाटक से उसके मालिक के मुंह से बस यही शब्द निकले थे, इसलिए उसने अपने आंसू पोंछे और कहा, "मालिक, अगर आप पहाड़ को अपनी इच्छानुसार पार करना चाहते हैं, तो सुअर को वो दो काम करने होंगे जो मैं उसे करने को कहूंगा। अगर वो मेरे लिए ये दो काम नहीं करेगा, तो आपकी कोई उम्मीद नहीं रहेगी।"

"भाई," पिग ने कहा, "अगर हम पहाड़ पार नहीं कर सकते, तो चलो अलग हो जाते हैं। मुझे इसमें शामिल मत करो।"

"शिष्य," संजांग ने कहा, "अपने भाई से पूछो कि वह तुमसे क्या करवाना चाहता है।"

"भाई, तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो?" उस मूर्ख ने पूछा।

"मालिक का ख्याल रखना और पहाड़ों में गश्त लगाना," बंदर ने जवाब दिया।

"लेकिन मालिक की देखभाल करने का मतलब है एक जगह टिके रहना," सुअर ने कहा, "और गश्त लगाने का मतलब है घूमना-फिरना। आप मुझसे यह नहीं कह सकते कि मैं थोड़ी देर एक जगह रुकूं और फिर थोड़ी देर घूमूं। मैं दोनों काम एक साथ नहीं कर सकता।"

"मैं तुमसे ये दोनों काम करने के लिए नहीं कह रहा हूँ," बंदर ने कहा, "मैं बस इतना चाहता हूँ कि तुम इनमें से एक काम करो।"

"यह तो बहुत आसान है," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा, "हालांकि मुझे समझ नहीं आ रहा कि मालिक की देखभाल करने या पहाड़ों पर गश्त लगाने से आपका क्या मतलब है। मुझे बताओ कि तुम क्या चाहते हो, फिर मैं वह काम कर सकता हूँ जो मुझे ठीक लगे।"

बंदर ने कहा, "मालिक की देखभाल करने का मतलब है कि अगर वह सैर पर जाना चाहता है तो तुम्हें उसका खर्च उठाना होगा, और अगर वह खाना चाहता है तो तुम्हें

उसके लिए खाना मांगना होगा। अगर वह भूखा है तो तुम्हारी पिटाई होगी। अगर उसका चेहरा पीला पड़ गया है तो तुम्हारी पिटाई होगी। अगर वह और पतला हो गया है तो तुम्हारी पिटाई होगी।"

“यह तो बहुत मुश्किल है,” सुअर ने घबराते हुए कहा। “उसकी देखभाल करना या उसे संभाल कर रखना तो कुछ भी नहीं है—उसे उठाना भी आसान होगा। लेकिन अगर वह मुझे किसी गाँव में भोजन माँगने के लिए भेज दे, तो पश्चिम की ओर जाने वाले इस रास्ते पर लोग यह नहीं समझ पाएँगे कि मैं धर्मग्रंथ लाने जा रहा एक भिक्षु हूँ। वे सोचेंगे कि मैं पहाड़ों से उतरा हुआ एक बढ़ता हुआ जंगली सूअर हूँ। काँटे, रेक और झाड़ू लिए आदमियों की भीड़ मुझे घेर लेगी, पकड़ लेगी, मेरा वध कर देगी और नए साल के जश्न के लिए मुझे नमक में लपेट देगी। यही तो मेरा अंत होगा, है ना?”

"फिर तुम पहाड़ों में गश्त कर सकते हो," भाई बंदर ने कहा।

"इसमें क्या शामिल होगा?" सुअर ने पूछा।

बंदर ने कहा, "आपको इन पहाड़ों में जाना होगा, यह पता लगाने के लिए कि वहां कितने राक्षस हैं, पहाड़ों के बारे में सब कुछ जानने के लिए, और राक्षसों की गुफाएं कैसी हैं, ताकि हम इसे पार कर सकें।"

“कोई बात नहीं,” सुअर ने जवाब दिया। “मैं पहाड़ों में गश्त लगाऊंगा।” उस मूर्ख ने अपनी कमीज़ ऊपर खींची, अपना फावड़ा पकड़ा और गर्व से पहाड़ों में घुस गया। रास्ते पर तेज़ी से चलते हुए उसका मनोबल ऊंचा था।

बंदर अपनी हंसी नहीं रोक पाया। "अभागे बंदर," संजांग ने कहा, "तुम्हें अपने भाइयों के लिए जरा भी स्नेह नहीं है, सिर्फ ईर्ष्या है। तू अपनी चालाकी भरी बातों से उसे पहाड़ पर गश्त लगाने के लिए बहकाता है, और फिर उस पर हंसता है।"

"मैं उस पर नहीं हंस रहा," बंदर ने कहा। "मेरी हंसी का कुछ मतलब है। बस देखो—वह पहाड़ों पर गश्त नहीं करेगा और न ही किसी राक्षस से मिलने की हिम्मत करेगा। वह कुछ समय के लिए कहीं छिप जाएगा और फिर हमें बेवकूफ बनाने के लिए कोई कहानी गढ़ देगा।"

"तुम्हें उसके बारे में इतनी जानकारी कैसे है?" संजांग ने पूछा।

"मुझे लगता है कि वह यही करेगा," बंदर ने उत्तर दिया, "और अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है तो मैं जाकर उसे देख लूंगा। मैं उसे राक्षसों को वश में करने में मदद कर सकता हूं और साथ ही यह भी पता लगा सकता हूं कि बुद्ध के दर्शन करने की

उसकी इच्छा कितनी सच्ची है।"
“बहुत बढ़िया,” संज़ंग ने कहा, “बहुत बढ़िया। लेकिन उसे बेवकूफ मत बनाना।” बंदर मान गया, और पहाड़ की ढलान पर चढ़ते हुए उसने अपने शरीर को झटक कर एक छोटे से कीड़े का रूप धारण कर लिया। अब वह बहुत ही साफ-सुथरा और छोटा दिख रहा था।
अपने कोमल पंखों पर वह हल्की हवा में नाच सकता था;

उसकी पतली कमर सुई की तरह बारीक थी।
जैसे ही वह सरकंडों के बीच से सरपट भागा या फूलों के नीचे से गुजरा
वह टूटते तारे से भी तेज था।
उसकी आंखें चमकीली थीं।
उनकी आवाज कोमल थी।
वह सभी कीड़ों में सबसे छोटा था।
पतला और सुरुचिपूर्ण, लेकिन बेहद बुद्धिमान।
अगर वह छुट्टी के दिन जंगल में आराम कर रहा होता,
आप उसे कभी नहीं देख पाएंगे।
और हज़ार आँखें भी उसे कभी नहीं ढूंढ पाएंगी।
वह उड़ गया, जल्दी ही सुअर के पास पहुँच गया और उसके कान के पीछे एक बाल पर बैठ गया; लेकिन सुअर चलता रहा, उसे पता ही नहीं था कि वह अपने साथ एक यात्री को ले जा रहा है। दो-तीन मील चलने के बाद सुअर ने अपना फावड़ा गिरा दिया, पीछे मुड़कर तांग पुजारी को देखा और उसे गालियाँ देने लगा, साथ ही ज़ोर-ज़ोर से हाथ-पैर हिलाने लगा।
"बेवकूफ बूढ़े साधु," उसने कहा, "दुष्ट बंदर और कमजोर दिमाग वाले साधु सैंड। ये सब पीछे मजे कर रहे हैं जबकि मुझे बेवकूफ बनाकर यहाँ आने को मजबूर कर रहे हैं। हम सब धर्मग्रंथ लाने जा रहे हैं और हम सबको अपना इनाम चाहिए, तो इन पहाड़ों की जासूसी करने की जिम्मेदारी मुझे क्यों सौंपी जाए? हम्म! अगर उन्हें पता है कि आसपास राक्षस हैं तो हमें कुछ देर के लिए छिप जाना चाहिए। लेकिन यह उनके लिए

काफी नहीं है। उन्हें मुझे अकेले ही उन्हें ढूंढने के लिए भेजना पड़ा। कितनी बुरी किस्मत है। मैं जाकर कहीं सो जाता हूँ। वापस आकर मैं उन्हें कोई गोलमोल जवाब दे दूंगा और कह दूंगा कि मैंने पहाड़ों की जासूसी कर ली है। इससे उनका बदला पूरा हो जाएगा।"

उस पल खुद पर प्रसन्न होकर सुअर ने अपना फावड़ा उठाया और चल पड़ा। जब उसने पहाड़ की घाटी में एक लाल घास से ढकी ढलान देखी, तो वह सीधे वहीं गया, फावड़े की मदद से अपना बिस्तर बनाया और लेटकर सोने लगा। लेटते हुए उसने कहा, "यही तो असली ज़िंदगी है। बंदर भी मेरे जितना आराम से नहीं रह सकता।" बंदर ने बेशक उसके कान के पीछे से कही हर बात सुन ली थी, और वह उड़कर उसे चिढ़ाने के लालच को रोक नहीं पाया। उसने खुद को झटका दिया और कठफोड़वा में बदल गया।

उसकी नुकीली लोहे की चोंच लाल रंग की थी।

उसके हरे-नीले पंख चमक रहे थे।

उसके लोहे के पंजे कीलों की तरह नुकीले थे।

और जब उसे भूख लगती थी तो वह जंगल की खामोशी को तोड़ देता था।

उसे सूखी और सड़ी हुई लकड़ी बहुत पसंद थी;

उसे अकेले और मजबूत पुराने पेड़ बिल्कुल पसंद नहीं थे।

उसकी गोल आंखें और लहराती पूंछ उसे एक जीवंत प्राणी बनाती थीं।

और उसके थपथपाने की आवाज़ सुहावनी थी।

यह पक्षी न तो बहुत बड़ा था और न ही बहुत छोटा, और इसका वजन केवल दो या तीन औंस ही रहा होगा। इसकी चोंच तांबे के रंग की लाल थी, इसके पैर लोहे के रंग के काले थे, और यह अपने पंखों को फड़फड़ाते हुए नीचे की ओर उड़ता हुआ आया। जब उसने सूअर के होंठ पर चोंच मारी, जो सिर नीचे करके सो रहा था, तो वह मूर्ख झट से खड़ा हो गया और चिल्लाया, "एक राक्षस, एक राक्षस! इसने मुझे अपने भाले से मारा। मेरे मुंह में बहुत दर्द हो रहा है।" उसने हाथ से छूकर देखा तो खून बहने लगा। "धत् तेरे की," उसने कहा, "मेरे साथ कुछ भी खास अच्छा नहीं हुआ है, तो ये लाल

रंग मेरे होठों पर क्या कर रहा है?"
अपने खून से सने हाथ को देखकर वह घबराकर इधर-उधर देखने लगा, कुछ बुदबुदाते हुए, और जब उसे कुछ नहीं दिखा तो उसने कहा, "यहाँ कोई राक्षस नहीं है, तो मुझे चोट कैसे लगी?" फिर उसने ऊपर देखा और अपने ऊपर एक कठफोड़वा को उड़ते हुए देखा।
“अरे बदमाश,” उसने दांत पीसते हुए कहा, “बंदर से परेशान होना ही काफी बुरा है, अब तू मुझ पर भी हमला कर रहा है। लगता है तुझे पता नहीं था कि मैं इंसान हूँ और तूने मेरी थूथन को कीड़ों से भरा हुआ काला, सड़ा हुआ पुराना पेड़ समझ लिया। तूने अपने लिए कुछ कीड़े ढूंढने के लिए मुझे चोंच मारी। अब मुझे अपनी थूथन कपड़ों में छुपानी पड़ेगी।” इतना कहकर वह मूर्ख वापस सो गया।
बंदर फिर नीचे आया और उसके कान के पीछे चोंच मारी, जिस पर वह मूर्ख उछलकर खड़ा हो गया और बोला, "यह कमीना पक्षी सचमुच मुझ पर हमला करने आया है। लगता है यहाँ उसका घोंसला अंडों या चूजों से भरा है और वह मुझे उन्हें लेने से रोकने के लिए मुझ पर हमला कर रहा है। ठीक है, तो मैं यहाँ नहीं सोऊँगा।" उसने अपना फावड़ा उठाया और लाल घास वाली ढलान से निकलकर अपने रास्ते पर चल पड़ा।
बंदर खुशी से फूला नहीं समा रहा था और सोचने लगा, "आंखें खुली होने पर भी वह मूर्ख अपने ही लोगों में से एक को नहीं पहचान सकता।"
एक झटके के साथ, महान ऋषि ने स्वयं को एक छोटे से कीड़े में बदल लिया और सुअर के कान के पीछे बैठ गए। पहाड़ों में लगभग एक मील और आगे एक खोखले स्थान में मेज के आकार के तीन चौकोर ग्रेनाइट के पत्थर थे। सुअर ने अपना रेक नीचे रखा और उनके लिए "री-ई-एर" का जाप किया।
"बेवकूफ," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा, "ये पत्थर इंसान नहीं हैं। ये न तो बोल सकते हैं और न ही उसकी नमस्ते का जवाब दे सकते हैं।"
वह उनके प्रति विनम्रता दिखाकर अपना समय बर्बाद कर रहा है। दरअसल, वह मूर्ख यह दिखावा कर रहा था कि वे संजांग, साधु सैंड और बंदर हैं, और उनके सामने अपने भाषण का अभ्यास कर रहा था।
"जब मैं वापस जाऊँगा," उसने कहा, "अगर मालिक मुझसे राक्षसों के बारे में पूछेगा, तो मैं कहूँगा कि यहाँ कुछ राक्षस हैं। जब वह पूछेगा कि यह किस तरह का पहाड़ है, तो अगर मैं कहूँ कि यह मिट्टी, रेत, टिन, तांबा, आटा, कागज या सिर्फ रंगा हुआ है,

तो वह सोचेगा कि मैं बकवास कर रहा हूँ। मैं कहूँगा कि यह चट्टान का पहाड़ है, और अगर वह गुफाओं के बारे में पूछेगा, तो मैं कहूँगा कि एक पत्थर की गुफा है। दरवाजों के बारे में क्या? मैं कहूँगा कि वे लोहे की प्लेट से ढके और कीलों से जड़े हुए हैं। जब वह पूछेगा कि गुफा कितनी गहरी है, तो मैं कहूँगा कि इसके तीन हिस्से हैं, एक के पीछे एक। अगर वह मुझसे और भी पूछताछ करे और जानना चाहे कि दरवाजों में कितनी कीलें हैं, तो मैं कहूँगा कि मैं इतना उत्साहित था कि ध्यान ही नहीं दिया। अब जब मुझे अपनी कहानी अच्छी तरह याद है, तो मैं बंदर को बेवकूफ बना दूँगा।"
अपनी मनगढ़ंत कहानी सुनाकर, वह अपने फावड़े को घसीटते हुए वापस रास्ते पर चल पड़ा, उसे जरा भी पता नहीं था कि बंदर ने उसके कान के पीछे सब कुछ सुन लिया था और उसके वापस लौटने पर उससे आगे उड़ गया था। बंदर ने अपना अध्याय 32 फिर से शुरू किया।

अपने असली रूप में अपने मालिक को देखने के लिए, जिसने कहा, "अरे, तुम यहाँ हो। सुअर वापस क्यों नहीं आया?"
मंकी ने कहा, "वह अभी भी अपनी कहानी गढ़ रहा है, वह जल्द ही यहाँ आ जाएगा।"
"वह मूर्ख, जिसके कान उसकी आँखों को ढक लेते हैं, भला कहानी कैसे गढ़ सकता है?" संज़ंग ने कहा। "झूठ तो तुम ही बोल रहे हो।"
“मालिक, आप उसका बचाव कर रहे हैं,” बंदर ने जवाब दिया। “मैंने यह सब उसी के मुँह से सुना है।” उसने संज़ांग को बताया कि कैसे सुअर घास में सो रहा था जब उसे कठफोड़वा की चोंच से जगाया गया, कैसे उसने पत्थरों के प्रति श्रद्धा व्यक्त की, और कैसे उसने पहाड़ों के बारे में एक मनगढ़ंत कहानी बनाई कि वे पत्थर के बने हैं, जिनमें लोहे के दरवाज़े वाली एक पत्थर की गुफा है और उसमें राक्षस रहते हैं। कुछ ही देर में वह मूर्ख पास आ गया। वह अपना सिर झुकाकर अपनी कहानी दोहरा रहा था ताकि वह उसे भूल न जाए, तभी बंदर चिल्लाया, “अरे, मूर्ख, क्या सुना रहे हो?”
सुअर ने अपने कान खड़े किए, चारों ओर देखा और कहा, "मैं वापस आ गया हूँ।"
वह घुटनों के बल गिर पड़ा और संजांग ने उसे उठाया और कहा, "शिष्य, तुम थके हुए लग रहे हो।"
"हाँ," सुअर ने जवाब दिया। "इतनी सारी पैदल चलने और चढ़ाई करने से मैं पूरी तरह

से थक गया हूँ।"
"क्या राक्षस होते हैं?" संजांग ने पूछा।
"हां," सुअर ने कहा, "बिल्कुल हैं। उनकी तो पूरी भीड़ है।"
"आपको किस तरह की विदाई दी गई?"
"उन्होंने मुझे पूर्वज सुअर और दादा सुअर कहकर पुकारा, मुझे नूडल का सूप और शाकाहारी व्यंजन दिए, मुझसे बातें कीं और ढोल और झंडे के साथ मुझे पहाड़ के उस पार वापस भेज दिया," सुअर ने जवाब दिया।
"यह ज़रूर कोई सपना होगा जो तुमने घास में सोते समय देखा होगा," बंदर ने कहा, जिससे वह मूर्ख इतना डर गया कि वह दो इंच सिकुड़ गया।
"बंदर स्वामी," उसने कहा, "आपको कैसे पता चला कि मैं सो रहा था?"
बंदर उसके पास गया, उसे पकड़ लिया और बोला, "इधर आओ, मुझे तुमसे कुछ पूछना है।"
"अगर पूछना ही है तो पूछ लो," उस मूर्ख ने डर से कांपते हुए कहा, "लेकिन तुम्हें मुझे इस तरह पकड़ने की क्या ज़रूरत थी?"
"वह किस प्रकार का पहाड़ था?" बंदर ने पूछा।
"चट्टानों का पहाड़," सुअर ने उत्तर दिया।
"किस तरह की गुफा?"
"पत्थर।"
"किस तरह के द्वार?"
लोहे से मढ़ा हुआ।
"कितनी गहराई?"

"इसमें तीन खंड थे।"
"और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है," बंदर ने कहा। "बाकी मुझे याद है। मैं सब कुछ आपके लिए कह देता हूँ ताकि मालिक को यकीन हो जाए।"
"बेशर्म!" सुअर ने कहा। "तुम वहाँ गए ही नहीं हो, इसलिए तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि मेरे लिए क्या कहना चाहिए।"

“अगर वो जानना चाहे कि फाटकों में कितने कील लगे हैं, तो मैं कहूँगा कि मैं इतना उत्साहित था कि ध्यान ही नहीं दिया। है ना?” बंदर ने कहा। घबराया हुआ मूर्ख फिर से घुटनों पर गिर पड़ा, और बंदर ने आगे कहा, “तुमने उन पत्थरों को प्रणाम किया और उनसे ऐसे बात की जैसे हम तीनों हों, है ना? फिर तुमने कहा, ‘अब मुझे ये कहानी पूरी तरह याद हो गई है, तो मैं बंदर को बेवकूफ बना दूँगा,’ है ना?”

"भाई," उस मूर्ख ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, अब वह बेताब होकर घुटने टेक रहा था, "जब मैं पहाड़ों में गश्त कर रहा था, तब तुम यह सब नहीं सुन सकते थे।"

"मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, बेवकूफ," बंदर ने कहा, "पहाड़ों पर गश्त लगाने का आदेश मिलने के बावजूद तुम सो रहे थे। अगर कठफोड़वा ने तुम्हें चोंच मारकर न जगाया होता, तो तुम अब भी सो रहे होते। जब तुम जागे, तो तुमने झूठ का यह पुलिंदा गढ़ा जिससे हमारी पूरी यात्रा बर्बाद हो सकती थी। अपना टखना फैलाओ, नहीं तो मैं तुम्हें सबक सिखाने के लिए अपनी लाठी से पाँच कोड़े मारूँगा।"

"उस जानलेवा लाठी के एक स्पर्श मात्र से ही मेरी चमड़ी फट जाएगी, और उसके स्पर्श से ही मेरी नसें टूट जाएंगी। पांच वार मुझे मार डालेंगे।"

"अगर तुम पिटना नहीं चाहते थे," बंदर ने कहा, "तो तुमने झूठ क्यों बोला?"

"मैंने ऐसा सिर्फ एक बार किया था," पिग ने कहा, "और मैं ऐसा फिर कभी नहीं करूंगा।"

"चूंकि यह सिर्फ एक बार हुआ था, इसलिए मैं आपको तीन दूंगा।"

"मेरे स्वामी," सुअर ने कहा, "एक वार भी मेरी जान ले लेगा।" उस मूर्ख के पास एकमात्र उपाय था संजांग से लिपटकर उससे अपने लिए सिफारिश करने की भीख मांगना।

"जब बंदर ने मुझसे कहा कि तुम झूठ गढ़ रहे हो," संज़ंग ने कहा, "मैंने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया, लेकिन अब तुम निश्चित रूप से मार खाने के लायक हो। लेकिन चूंकि इन पहाड़ों को पार करते समय मेरी सेवा करने के लिए तुममें से बहुत कम लोग हैं, इसलिए बंदर, बेहतर होगा कि तुम उसे तब तक छोड़ दो जब तक हम दूसरी तरफ न पहुँच जाएँ।"

“जैसा कि पुरानी कहावत है, माता-पिता के निर्देशों का पालन करना सबसे बड़ा कर्तव्य है। मालिक ने मुझे तुम्हें पीटने से मना किया है, इसलिए मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ। जाओ और फिर से छानबीन करो। अगर तुमने इस बार झूठ बोला या गड़बड़ की, तो

मैं तुम पर कोई रहम नहीं दिखाऊँगा।”
वह मूर्ख उठा और फिर चल पड़ा। जैसे-जैसे वह रास्ते पर तेज़ी से आगे बढ़ रहा था, उसे हर कदम पर शक होता था कि बंदर किसी न किसी रूप में उसका पीछा कर रहा है, इसलिए उसे लगता था कि जो कुछ भी वह देख रहा है, वह बंदर ही है। दो-तीन मील चलने के बाद जब एक बाघ पहाड़ की ढलान से उछलता हुआ आया, तो उसने अपना फावड़ा उठाया और कहा, "देखने आए हो भाई कि मैं झूठ बोल रहा हूँ या नहीं? इस बार मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।"
आगे चलकर एक तेज़ पहाड़ी हवा ने एक सूखे पेड़ को गिरा दिया और वह लुढ़कते हुए उसकी ओर आ गिरा। यह देखकर वह पैर पटका, अपनी छाती पीटी और बोला, "भाई, तुमने मेरे साथ कैसा बर्ताव किया? मैंने कहा था कि मैं झूठ नहीं बोलूंगा, लेकिन तुम खुद पेड़ बनकर मुझ पर हमला करने आए हो।"
थोड़ी देर बाद उसने अपने सामने एक सफेद गर्दन वाले कौवे को कांव-कांव करते देखा। उसने कहा, "भाई, तुम तो बिल्कुल बेशर्म हो।"
"बेशर्म। मैंने जो कहा था कि मैं झूठ नहीं बोलूंगा, वो सच था, तो फिर तुम कौवे की तरह क्यों बन गए? मेरी बात सुनने क्यों आए हो?" अध्याय 32 में

दरअसल, इस बार बंदर उसका पीछा नहीं कर रहा था, और सुअर का यह पागलपन भरा संदेह कि बंदर हर जगह उसके साथ है, उसकी अपनी कल्पना की उपज थी। फिलहाल हम उस मूर्ख को उसके डर के साथ ही छोड़ देते हैं।
इस चपटी चोटी वाले पर्वत पर एक कमल के फूल की गुफा थी, जहाँ दो राक्षस रहते थे, वरिष्ठ राजा स्वर्ण सींग और कनिष्ठ राजा रजत सींग। स्वर्ण सींग अपनी राजसी कुर्सी पर बैठा था और रजत सींग से बोला, "बहुत समय हो गया जब हमने इस पर्वत पर गश्त की थी।"
"दो सप्ताह," सिल्वर हॉर्न ने उत्तर दिया।
"आपको आज गश्त करनी चाहिए," गोल्ड हॉर्न ने कहा।
"आज ही क्यों?" सिल्वर हॉर्न ने पूछा।
"तुमने शायद यह खबर नहीं सुनी होगी," गोल्ड हॉर्न ने कहा, "कि तांग सम्राट के छोटे भाई, पूरब के तांग पुजारी को पश्चिम में बुद्ध की पूजा करने के लिए भेजा गया है।

उनके साथ तीन अनुयायी हैं, जिनका नाम सन द नोविस, पिग और फ्रायर सैंड है, यानी उनके घोड़े समेत कुल पाँच लोग हैं। उन्हें ढूंढो और मेरे पास ले आओ।"
"अगर हमें कुछ इंसानों को खाना है," सिल्वर हॉर्न ने कहा, "तो हम कहीं भी कुछ को पकड़ सकते हैं। इस भिक्षु को जहाँ भी जाना है, क्यों न जाने दें?"
"तुम्हें एहसास नहीं है," गोल्ड हॉर्न ने उत्तर दिया, "कि जब मैं कुछ साल पहले स्वर्ग से लौटा था, तो मैंने सुना था कि तांग पुजारी आदरणीय स्वर्ण झींगुर का नश्वर अवतार थे, और एक ऐसे पवित्र व्यक्ति थे जिन्होंने दस जन्मों तक अच्छाई का मार्ग अपनाया और अपने मूल सार का एक अंश भी नहीं खोया। जो कोई भी उनका मांस खाएगा, वह अमर हो जाएगा।"
"अगर उसका मांस खाकर अमरता प्राप्त की जा सकती है," सिल्वर हॉर्न ने कहा, "तो हमें ध्यान लगाने, पुण्य कमाने, औषधियों को फिर से तैयार करने या नर-मादा का मिलान करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। हमें बस उसे खाना है। मैं उसे लाने जा रहा हूँ।"
“भाई, तुम बहुत अधीर हो रहे हो,” गोल्ड हॉर्न ने कहा। “इतनी जल्दी मत करो। तांग पुजारी के अलावा किसी और भिक्षु को पकड़ने के लिए जल्दबाजी करना गलत होगा। मुझे उनका चेहरा याद है और मैंने एक बार उनके और उनके शिष्यों के चित्र बनाए थे। उन्हें अपने साथ ले जाओ और रास्ते में मिलने वाले हर भिक्षु की उनसे तुलना करो।” उसने आगे उन सभी के नाम बताए, और जब सिल्वर हॉर्न के पास उनके चित्र और नाम आ गए, तो वह गुफा से बाहर निकला, तीस साथियों को इकट्ठा किया और पहाड़ पर गश्त करने के लिए निकल गया।
सुअर की किस्मत खराब थी। वह सीधे राक्षसों के उस गिरोह के बीच जा घुसा, जिन्होंने उसका रास्ता रोक रखा था और कहा, "तुम कौन हो? कहाँ से आए हो?" उस मूर्ख ने ऊपर देखा, अपने कान आँखों से हटाए और भयभीत होकर देखा कि वे दुष्ट राक्षस थे।
"अगर मैं कहूँ कि मैं तीर्थयात्री हूँ," उसने सोचा, "तो वे मुझे पकड़ लेंगे। मैं कहूँगा कि मैं बस एक यात्री हूँ।" उस छोटे दानव ने राजा को बताया कि वह एक यात्री है। तीस छोटे दानवों में से कुछ ने उसे पहचान लिया था और कुछ ने नहीं, और उनमें से एक जिसने उसे पहचाना था, उसे सिल्वर हॉर्न को दिए गए निर्देश याद थे।
उन्होंने कहा, "महाराज, यह भिक्षु तस्वीर में दिख रहे सूअर जैसा लग रहा है।"

सिल्वर हॉर्न ने तस्वीर टांग दी, जिसे देखकर पिग ने भयभीत होकर सोचा, "इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मैं इन दिनों इतना उदास क्यों हूँ - उन्होंने मेरी आत्मा को यहाँ कैद कर लिया है।"

अध्याय 32

458

पश्चिम की यात्रा

जब कनिष्ठ शैतानों ने इसे अपने भालों से ऊपर उठाया, तो सिल्वर हॉर्न ने इसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "सफेद घोड़े पर सवार व्यक्ति तांग पुजारी है, और बालों वाले चेहरे वाला व्यक्ति सन नौसिखिया है।"

"हे नगर देवता," सुअर ने सोचा, "आप मुझे छोड़ दीजिए। मैं आपको तिहरा बलिदान और 24 प्याले शुद्ध मदिरा अर्पित करूंगा..."

शैतान की बात सुनकर वह मन ही मन प्रार्थना करने लगा, "लंबा, सांवला आदमी फ्रायर सैंड है, और वह लंबी थूथन और बड़े कानों वाला सुअर है।" अपना नाम सुनते ही सुअर ने अपनी थूथन कपड़ों में छिपा ली।

"अपनी थूथन बाहर निकालो, भिक्षु," राक्षस ने कहा।

"मैं तो ऐसे ही पैदा हुआ हूँ," सुअर ने कहा, "इसलिए मैं इसे बाहर नहीं निकाल सकता।" राक्षस ने छोटे शैतानों को हुक से इसे बाहर निकालने का आदेश दिया, जिस पर सुअर ने जल्दी से इसे बाहर निकालते हुए कहा, "मुझे बस शर्म आ रही है। ये रहा। अगर देखना ही है तो देख लो, लेकिन हुक से मत पकड़ो।"

पिग को पहचानते ही राक्षस ने अपनी तलवार उठाई और उस पर वार किया। पिग ने अपने रेक से वार को रोका और कहा,

"मेरे बच्चे, तमीज़ से पेश आओ और इसे ले लो।"

"तुमने अपनी प्रतिज्ञाएँ काफी देर से लीं," राक्षस ने मुस्कुराते हुए कहा।

"बड़े होशियार लड़के," सुअर ने जवाब दिया, "लेकिन तुम्हें कैसे पता चला?"

"जिस तरह से तुम उस रेक को चला रहे हो," राक्षस ने कहा, "तुमने उसका इस्तेमाल सब्जी के बगीचे में ज़मीन को समतल करने के लिए किया होगा। तुमने उसे चुराया होगा।"

"तुम इस रेक को नहीं जानते, मेरे लड़के," पिग ने कहा। "यह ज़मीन समतल करने वाला रेक नहीं है: इसके दांत अजगर के पंजों जैसे हैं।"

बाघ जैसी आकृतियों में सोने के छींटे पड़े हुए हैं।
यह शत्रु के विरुद्ध बर्फीली हवा चलाता है।
और युद्ध के दौरान यह आग उगलता है।
यह तांग पुजारी के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर कर देता है।
पश्चिमी स्वर्ग की ओर जाने वाले मार्ग में शैतानों को पकड़ना।
जब इसे घुमाया जाता है, तो इसकी वाष्प सूर्य और चंद्रमा को ढक लेती है।
और इसके काले बादल तारों को धुंधला कर देते हैं।
जब यह ताई पर्वत को समतल कर देता है तो बाघ कांप उठते हैं;
जब यह समुद्र को उलट देता है तो ड्रैगन डर जाते हैं।
भले ही तुम्हारे पास कुछ तरकीबें हों, तुम राक्षस हो।
इस रेक के एक ही वार से नौ खूनी छेद हो जाएंगे।"
अध्याय 32
459
पश्चिम की यात्रा
इससे राक्षस का दृढ़ संकल्प और भी प्रबल हो गया, और अपनी सात सितारा तलवार से उसने पहाड़ पर सूअर के साथ बीस दौर तक अनिर्णायक युद्ध लड़ा। सूअर ने भी घातक क्रोध से पलटवार किया, और जब उसने देखा कि राक्षस अपने कान खड़े कर रहा है, लार थूक रहा है, और गुर्राते हुए अपना रेक लहरा रहा है, तो भयभीत राक्षस अपने सभी साथियों को युद्ध में अपने साथ लाने के लिए मुड़ गया।
अगर वह सिर्फ एक ही दुश्मन से लड़ रहा होता, तो सुअर का काम चल जाता, लेकिन जब सारे छोटे शैतान उस पर टूट पड़े तो उसने अपना आपा खो दिया, अब और प्रतिरोध नहीं कर सका और हार मानकर भाग गया। क्योंकि वह ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर ध्यान नहीं दे रहा था, इसलिए वह एक लता से टकराकर गिर गया। वह जैसे ही उठा और फिर से चलने लगा, तभी वहाँ लेटे एक छोटे राक्षस ने उसकी एड़ी खींची और उसे कीचड़ खाने वाले कुत्ते की तरह नीचे गिरा दिया। राक्षसों की भीड़ ने उसे पकड़ लिया और उसके बाल, कान, पैर और पूंछ पकड़कर उसे गुफा में वापस ले गए।
सचमुच:
एक अकेले राक्षस को नष्ट करना ही काफी कठिन है;
असंख्य आपदाओं को टालना लगभग असंभव है।

अगर आपको नहीं पता कि पिग जीवित था या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 33

असामंजस्य सच्चे स्वरूप को भ्रमित करता है

आदिम देवता मूल हृदय की सहायता करता है

राक्षस सुअर को गुफा में ले जाते हुए बोला, "लो एक, भाई।"

"मुझे उसे देखने दो," बूढ़े राक्षस ने प्रसन्नता से कहा।

"क्या यही वह नहीं है?" छोटे दानव ने पूछा।

"नहीं," दूसरे ने जवाब दिया, "तुमने गलत आदमी को पकड़ लिया है। वह किसी काम का नहीं है।"

"महाराज," सुअर ने मौका देखकर कहा, "मैं तो बस एक निकम्मा भिक्षु हूँ, इसलिए मुझे जाने दीजिए। मैं मुश्किल से ही इंसान हूँ।"

“नहीं, उसे जाने मत दो, भाई,” छोटे राक्षस ने कहा। “वह खुद तो किसी काम का नहीं है, लेकिन वह तांग पुजारी के साथ है। उसका नाम सूअर है। हम उसे पीछे वाले पीने के पानी के कुंड में तब तक भिगोएंगे जब तक उसके बाल न निकल आएं, फिर उसे नमक लगाकर सुखाएंगे और किसी बरसात के दिन अपनी शराब के साथ खाएंगे।”

"धत् तेरे की!" सुअर ने कहा, "मुझे तो एक ऐसे शैतान से टकराना पड़ेगा जो नमकीन सुअर का मांस बेचता है।" छोटे शैतान सुअर को अंदर ले गए और उसे तालाब में फेंक दिया।

इस बीच, संजांग ढलान पर बैठा हुआ बेचैन महसूस कर रहा था। उसके कान गर्म हो रहे थे और उसकी आंखें फड़क रही थीं।

"वुकोंग," उसने कहा, "पिग काफी समय से पहाड़ पर गश्त कर रहा है। वह वापस क्यों नहीं आया?"

"क्या आपको अभी तक उसकी मानसिकता समझ नहीं आई, स्वामी?" बंदर ने कहा।

"किस मानसिकता की बात हो रही है?" संजांग ने पूछा।

"अगर पहाड़ों में राक्षस होते तो वो बिल्कुल बेबस हो जाता," बंदर ने कहा। "वो खूब हंगामा करता और दौड़कर मुझे बताता। मुझे नहीं लगता कि वहाँ कोई राक्षस हो सकते हैं। मुझे लगता है कि उसे रास्ता आसान लगा होगा और वो सीधे आगे बढ़ गया होगा।"

"अगर वह आगे निकल गया है," संजांग ने कहा, "तो हम उससे कहाँ मिलेंगे? यह तो एक विशाल निर्जन क्षेत्र है। यहाँ उससे मिलना किसी शहर या बाज़ार में मिलने जैसा नहीं होगा।"

“अपने घोड़े पर सवार हो जाओ और चिंता करना छोड़ दो,” बंदर ने कहा। “वह आलसी मूर्ख तेज़ नहीं चल रहा होगा, इसलिए तुम्हें बस अपने घोड़े को तेज़ी से दौड़ाना है। हम उसे ज़रूर पकड़ लेंगे और अपनी यात्रा साथ-साथ जारी रखेंगे।” तांग पुजारी ने कहे अनुसार अपने घोड़े पर सवार हो गए, और बंदर पहाड़ों में आगे-आगे चलने लगा जबकि साधु सैंड सामान ढो रहा था।

वरिष्ठ दानव राजा गोल्ड हॉर्न ने कनिष्ठ दानव राजा सिल्वर हॉर्न से कहा, "भाई, चूंकि तुमने पिग को पकड़ लिया है, इसलिए हम निश्चित हो सकते हैं कि तांग पुजारी यहीं है। एक बार फिर खोज करो और इस बार किसी गलत व्यक्ति को मत पकड़ लेना।"

"अभी तुरंत," सिल्वर हॉर्न ने कहा, जिसने तुरंत पचास कनिष्ठ राक्षसों को इकट्ठा किया और गश्त पर निकल पड़ा।

आगे बढ़ते हुए उन्होंने एक शुभ बादल को मंडराते और चक्कर लगाते देखा। "तांग पुजारी यहाँ हैं," कनिष्ठ दानव राजा ने कहा।

"कहाँ?" दूसरे राक्षसों ने पूछा।

"अच्छे व्यक्ति के सिर के ऊपर हमेशा शुभ बादल चमकते हैं और बुरे व्यक्ति के ऊपर अशुभ बादल छा जाते हैं," सिल्वर हॉर्न ने कहा। "तांग पुजारी आदरणीय स्वर्ण झींगुर का अवतार हैं। वे एक पवित्र व्यक्ति हैं जिन्होंने दस जन्मों तक अपने आचरण को सुधारा है। इसीलिए उनके सिर के ऊपर वह शुभ बादल छाया रहता है।"

जब बाकी लोग उसे नहीं देख पाए तो कनिष्ठ दानव राजा ने फिर से इशारा करते हुए कहा, "यह रहा।" दानव के इशारा करते ही संजांग घोड़े की पीठ पर तीन बार कांप उठा।

"मैं क्यों कांप उठा, शिष्यों?" उसने बेचैनी से पूछा।

"शायद यह अपच है," फ्रायर सैंड ने कहा।

“बकवास,” बंदर ने कहा, “ज़रूर इन ऊंचे पहाड़ों की वजह से मालिक घबरा जाता होगा। डरो मत। जब मैं अपने डंडे से रास्ता साफ़ कर दूंगा, तब तुम्हें अच्छा लगेगा।” फिर बंदर ने अपने मालिक के घोड़े के सामने डंडे को ऊपर-नीचे और चारों ओर घुमाते हुए सैन्य नियमावली में लिखी सारी रस्में दोहराईं। तांग पुजारी ने उसकी ऐसी दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन देखा, जिनका धरती पर कोई मुकाबला नहीं था।

बंदर को आगे बढ़ते देख राक्षस भय से लगभग मर ही पड़ा; पहाड़ की चोटी से देखते हुए उसकी आत्माएं हवा में उड़ने लगीं। "अब मुझे पता चला कि मैंने सालों से नौसिखिया सूर्य के बारे में जो कुछ भी सुना था, वह बिलकुल सच था।"

"महाराज," छोटे राक्षसों ने उसके पास आकर कहा, "आप अपने शत्रु को बढ़ा रहे हैं और खुद को छोटा कर रहे हैं। क्यों? आखिर इतना महान कौन है?"

"बंदर की जादुई शक्तियों के साथ हम कभी भी तांग पुजारी को नहीं खा पाएंगे," सिल्वर हॉर्न ने कहा।

अध्याय 33

461

पश्चिम की यात्रा

"अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते," छोटे राक्षसों ने कहा, "हम अपने में से कुछ को भेजकर वरिष्ठ राजा से कहेंगे कि वह हमारी गुफा में मौजूद सभी सैनिकों को युद्ध में भेज दें। अगर हम सब मिलकर काम करेंगे तो वे बच नहीं पाएंगे।"

"तुमने वो लोहे का डंडा कभी नहीं देखा," छोटे राजा ने कहा। "वो पूरी सेना का भी मुकाबला कर सकता है, तो हम मात्र चार-पाँच सौ सैनिकों के साथ उसके उस डंडे के सामने टिक नहीं पाएंगे।"

"तो फिर," दूसरे राक्षसों ने कहा, "हम तांग पुजारी को कभी नहीं खा पाएंगे। सुअर को पकड़ने का कोई फायदा नहीं था। चलो उसे आज़ाद कर देते हैं।"

"हमने उसे पकड़कर सही किया, हमें उसे जाने नहीं देना चाहिए," कनिष्ठ राजा ने कहा। "हम अभी तांग पुजारी को खा नहीं सकते, लेकिन देर-सवेर हम उसे खा ही लेंगे।"

"इसमें कितने साल लगेंगे?" बाकी लोगों ने पूछा।

"इसमें सालों नहीं लगेंगे," छोटे राजा ने उत्तर दिया। "मेरी राय में हमें उसे चालाकी से पकड़ना चाहिए, क्रूरता से नहीं। बलपूर्वक पकड़ने की कोशिश करोगे तो उसका कुछ

भी हाथ नहीं लगेगा। लेकिन अगर हम उससे दयालुता से दोस्ती कर लें तो छल से उसे पकड़ लेंगे।"

"महाराज, कृपया अपनी योजना में हमारे लिए भी कोई स्थान ढूंढिए," छोटे राक्षसों ने कहा।

"शिविर में वापस जाओ," छोटे दानव राजा ने उनसे कहा, "लेकिन महाराज को पता मत चलने देना। अगर उन्हें भनक लग गई और उन्होंने भेद खोल दिया तो हमारी योजना बर्बाद हो जाएगी। मैं जादुई रूपान्तरण से तांग पुजारी को पकड़ सकता हूँ।"

जैसे ही दूसरे दानव चले गए, वह पहाड़ की ढलान से नीचे रास्ते पर कूद गया, खुद को झटककर एक बूढ़े ताओवादी में बदल गया। वह कुछ इस तरह दिखता था:

एक चमकीली तारा-टोपी,
बिखरे हुए सफेद बाल।
पंखों से बने लबादे के चारों ओर कढ़ाई की हुई बेल्ट,
पीले नारियल के रेशे से बंधी बादलनुमा सैंडल।
निर्मल मन और अमर के समान उज्ज्वल आँखों वाला,
मजबूत और हल्का, मानो वह व्यक्ति जो शाश्वत रूप से जीवित रहेगा।
उनकी तुलना भैंस पर सवार ताओवादी से की जा सकती है।
लेकिन यह श्वेत स्क्रॉल के स्वामी जैसा अधिक है।
यह झूठी छवि वास्तविक भी हो सकती है;
उसका छल ही सत्य प्रतीत होता है।

वह रास्ते के किनारे खड़ा था, मानो किसी ताओवादी का पैर टूटने का नाटक कर रहा हो। उसके पैर खून से लथपथ थे। "मदद करो, मदद करो," वह चिल्लाया।

अध्याय 33

462

पश्चिम की यात्रा

जैसे ही संजांग महान ऋषि बंदर और भिक्षु रेत के सहारे खुशी-खुशी आगे बढ़ रहा था, तभी उसने "हे पिता, मेरी मदद करो" की आवाज सुनी।

“अरे बाप रे!” संज़ंग ने कहा। “इन जंगली और निर्जन पहाड़ों में कौन चिल्ला रहा होगा? ज़रूर कोई बाघों, तेंदुओं या भेड़ियों से डरा हुआ होगा।” अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए उसने पुकारा, “कौन मुसीबत में है? बाहर आओ।” राक्षस झाड़ियों से

रेंगता हुआ निकला और तांग पुजारी के सामने ज़ोर-ज़ोर से प्रणाम किया। पुजारी उसे ताओवादी और इतनी अधिक उम्र का देखकर बहुत परेशान हुआ। वह तेज़ी से घोड़े से उतरा और बूढ़े को उठने में मदद करते हुए उससे विनती की।
"यह असहनीय पीड़ा है," राक्षस ने कहा, "असहनीय पीड़ा।"
जब तांग पुजारी ने अपना हाथ छोड़ा और नीचे देखा तो पाया कि बूढ़े आदमी के पैर से खून बह रहा था। "आप कहाँ से आए हैं, महाराज?" सन्ज़ांग ने चौंककर पूछा। "और आपके पैर में चोट कैसे लगी?"
"हे पिता, इस पर्वत के पश्चिम में," राक्षस ने झूठ बोलते हुए कहा, "एक पवित्र और शांत ताओवादी मंदिर है। मैं वहाँ का पुजारी हूँ।"
"तुम यहाँ क्या कर रहे थे, अपने मंदिर में धूप जलाने और शास्त्रों और कानून का पाठ करने के बजाय इधर-उधर क्यों घूम रहे थे?" संजांग ने पूछा।
"कुछ दिन पहले, पहाड़ के दक्षिण में रहने वाले हमारे एक शुभचिंतक ने हम सभी पुरोहितों को अपने जन्म नक्षत्र के लिए एक प्रार्थना सभा में आमंत्रित किया और उनके लिए आशीर्वाद बाँटने को कहा। मैं अपने शिष्य के साथ लगभग आधे रास्ते में था—हमें देर हो रही थी—तभी एक भयंकर और मजबूत धारीदार बाघ मेरे शिष्य को उठाकर ले गया। मैं डर से काँपते हुए लड़खड़ाता हुआ जा रहा था और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाऊँ। तभी एक पथरीले टीले पर मेरा संतुलन बिगड़ गया और मेरे पैर में चोट लग गई। मुझे वापस जाने का रास्ता नहीं मिल रहा है। हे पिता, आज आपसे मिलकर ईश्वर का धन्यवाद। हे ईश्वर, मैं आपसे अपनी अपार दया से मुझे बचाने की विनती करता हूँ। यदि हम किसी तरह मंदिर वापस पहुँच गए, तो मैं आपकी कृपा का ऋण चुकाने के लिए खुद को गुलामी में भी बेच दूँगा।"
"महाराज," संज़ंग ने पूरी तरह मंत्रमुग्ध होकर उत्तर दिया, "आप और मैं एक ही नियति साझा करते हैं। मैं एक बौद्ध भिक्षु हूँ और आप एक ताओवादी हैं। यद्यपि हम अलग-अलग वस्त्र धारण करते हैं, हम अपने आचरण को एक ही सिद्धांतों के अनुसार ढालते हैं।"
यदि मैं तुम्हें बचाने में असफल रहा तो मैं सच्चा साधु नहीं कहलाऊंगा। लेकिन मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ, पर तुम चल नहीं सकते।
"मैं खड़ा भी नहीं हो सकता, चलना तो दूर की बात है," राक्षस ने उत्तर दिया।
"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं," संजांग ने कहा। "मैं चल सकता हूँ, इसलिए आप

थोड़ी देर के लिए मेरे घोड़े पर सवारी कर सकते हैं और जब हम आपके मंदिर पहुँचें तो इसे वापस कर देना।"

"आप बहुत उदार हैं और मैं आपका बहुत आभारी हूं," राक्षस ने कहा, "लेकिन मेरी जांघ में चोट लग गई है और मैं सवारी नहीं कर सकता।"

"जी हां," संज़ंग ने कहा और फिर साधु सैंड को घोड़े पर सामान रखने और ताओवादी को अपने कंधों पर उठाकर ले जाने का निर्देश दिया। साधु सैंड मान गए।

वह राक्षस तुरंत मुड़ा और साधु सैंड को ध्यान से देखने लगा। उसने कहा, "पिताजी, उस बाघ से तो मैं बहुत डर गया था, लेकिन यह भयानक दिखने वाला साधु मुझे उससे भी ज्यादा डरा रहा है। मैं इतना डर गया हूँ कि उसे मुझे ले जाने देने की हिम्मत भी नहीं कर पाऊँगा।"

"वुकोंग, तुम उसे उठाओ," संजांग ने कहा।

"ज़रूर, ज़रूर," बंदर ने उत्तर दिया। राक्षस ने उसे पहचान लिया और विनम्रतापूर्वक उसके द्वारा उठाए जाने दिया, और कुछ नहीं बोला।

"उस बूढ़े ताओवादी को कुछ पता नहीं है," साधु सैंड हँसते हुए बोला। "अरे वाह, मुझे तुम्हें उठाने से मना कर रहा है और बंदर को उठाने को कह रहा है। अगर हमारे गुरु यहाँ न होते तो वो तुम्हें किसी नुकीले पत्थर से टकराकर तुम्हारी सारी नसें तोड़ देते।"

अध्याय 33

463

पश्चिम की यात्रा

बंदर राक्षस को अपने कंधों पर उठाए हुए कुछ मजे से मन ही मन बुदबुदाया, "अरे राक्षस, तेरी हिम्मत कैसे हुई मुझे उकसाने की? क्या तुझे लगता है मैं कोई बच्चा हूँ? तेरी शैतानी हरकतें तांग पुजारी को तो धोखा दे सकती हैं, पर मुझे नहीं। मैं देख सकता हूँ कि तू यहीं का पहाड़ी राक्षस है। मुझे लगता है तू मेरे स्वामी को खाना चाहता है। वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है—तू उसे खा नहीं सकता। और अगर तू उसे खाना चाहता है, तो उसका आधा हिस्सा मुझे देना होगा।"

बंदर की बड़बड़ाहट सुनकर राक्षस ने उत्तर दिया, "पिताजी, मैं एक सभ्य परिवार का ताओवादी भिक्षु हूँ, जो आज दुर्भाग्यवश उस बाघ से मिल गया। मैं कोई बुरी आत्मा नहीं हूँ।"

"अगर तुम्हें बाघ से डर लगता था तो तुमने ग्रेट बेयर स्क्रिप्चर का पाठ क्यों नहीं

किया?" बंदर ने पूछा।
जैसे ही संज़ंग घोड़े पर सवार हो रहा था, उसने बंदर की बड़बड़ाहट सुनी और उसे फटकारा: "बेशर्म बंदर! 'सात मंजिला शिवालय बनाने से बेहतर है किसी इंसान की जान बचाना।' अगर तुम उसे ले जा रहे हो, तो बस अपना काम करो। 'ग्रेट बेयर स्क्रिप्चर्स' या 'लिटिल बेयर स्क्रिप्चर्स' की बातें करना बंद करो।"
“तुम्हारी किस्मत अच्छी है, धिक्कार है तुम पर,” बंदर ने कहा। “मेरा मालिक दयालु और नेक तो है, लेकिन अपने सौम्य स्वभाव के पीछे वह थोड़ा कठोर भी है। अगर मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले गया तो वह नाराज़ हो जाएगा। अगर ज़रूरी हुआ तो मैं ले जाऊंगा, लेकिन पहले मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूं: अगर तुम्हें पेशाब या शौच करना हो तो मुझे बता देना। अगर तुमने मेरी पीठ पर किया तो बदबू असहनीय होगी। और वैसे भी, अगर मेरे कपड़े गंदे हो गए तो उन्हें धोने वाला कोई नहीं है।”
इस पर राक्षस ने उत्तर दिया, "बिल्कुल। मैं इतना बड़ा हो गया हूँ कि यह समझ सकूँ।"
अंत में बंदर ने राक्षस को अपनी पीठ पर लाद लिया और तांग पुजारी और साधु सैंड के साथ पश्चिम की ओर तेज़ी से चल पड़ा। जब पहाड़ों में रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ हो गया, तो बंदर धीरे-धीरे और सावधानी से चलने लगा, और तांग पुजारी को आगे जाने दिया।
कुछ मील चलने से पहले ही गुरु और साधु सैंड पहाड़ की ढलान पर एक खोखले स्थान में मंकी की नज़रों से ओझल हो गए। "इतनी उम्र होने के बावजूद गुरु को काम करने का कोई तरीका नहीं सूझता," वह मन ही मन बड़बड़ाया। "इस लंबी यात्रा में तो मुझे खाली हाथ भी बोझ महसूस होगा। काश मैंने इस दुष्ट राक्षस को कुचल दिया होता। मुझे उसे ढोना पड़ेगा। वह राक्षस नहीं बल्कि एक नेक इंसान है, उसे तो इस उम्र में मर जाना चाहिए। मैं उसे क्यों ढोऊँ? मैं उसे नीचे फेंक दूँगा और मार डालूँगा।"
राक्षस को यह आभास हो गया कि महान ऋषि उसे मारने का निश्चय कर रहे हैं, इसलिए उसने पर्वतों को स्थानांतरित करने की अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए बंदर की पीठ पर पर्वत-गतिमान-समुद्र-उलटने वाला जादू कर दिया। उसने मंत्र का उच्चारण किया, जिससे सुमेरु पर्वत हवा में उड़ता हुआ बंदर के सिर पर आ गिरा। महान ऋषि ने पलक झपकते ही अपना सिर एक तरफ घुमा लिया, और पर्वत उनके बाएं कंधे पर आ गिरा।
"बेटा, मुझे बताओ, तुमने कौन सा जादू किया है जिससे तुम इतने भारी हो गए हो?

तुम मुझे कुचल रहे हो। मुझे वजन से कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन 'असंतुलित डंडे को संभालना संतुलित डंडे से कहीं ज्यादा मुश्किल होता है।'"

"एक पहाड़ उसे कुचलने के लिए काफी नहीं है," राक्षस ने सोचा, और उसने एक और मंत्र पढ़ा जिससे माउंट एमेई हवा में से नीचे बंदर के सिर पर आ गिरा। बंदर फिर से एक तरफ मुड़ा, जिससे पहाड़ उसके दाहिने कंधे पर आ गिरा। बस उसे देखो, दो पहाड़ों को अपने कंधों पर लिए वह अपने स्वामी के पीछे टूटते तारे की तरह दौड़ रहा है। बंदर को पहाड़ों को उठाते देख राक्षस के पूरे शरीर पर पसीना आ गया। फिर उसने खुद को संभाला, एक और मंत्र पढ़ा, और माउंट ताई को आकाश से बंदर के सिर पर गिरा दिया। अब तक महान ऋषि थकान से इतने कमजोर हो चुके थे कि उनके सिर पर गिरे इस पहाड़ ने उन्हें जकड़ लिया: उनकी तीनों मृत आत्माएं फट गईं, और उनके सात छिद्रों से खून बहने लगा।

जब उसने अपनी जादुई शक्तियों से बंदर को कुचल दिया, तो वह भयानक दुष्ट आत्मा तेज़ हवा पर सवार होकर संज़ंग के पास पहुँच गई। राक्षस अपने बादल से नीचे उतरा और घोड़े पर सवार तांग पुजारी को पकड़ने की कोशिश की। भिक्षु सैंड ने भयभीत होकर अपना सामान नीचे फेंक दिया और उसे रोकने के लिए अपनी दानव-वशीकरण छड़ी लेकर आगे बढ़े। दुष्ट राक्षस ने अपनी सात-सितारा तलवार भिक्षु सैंड के सामने उठाई। यह अध्याय 33 था।

पश्चिम की यात्रा

भीषण युद्ध:

सात तारों वाली तलवार,
एक राक्षस-निवारक छड़ी,
सुनहरी रोशनी से जगमगाता हुआ।
उसकी आंखें भयानक हैं, वह मृत्यु का एक काला दानव है;
लोहे के चेहरे वाला दूसरा व्यक्ति वास्तव में पर्दे का सेनापति है।
पर्वत के सामने राक्षस अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करता है।
तांग सान्ज़ांग को पकड़ने के लिए दृढ़ संकल्पित।
उसका शत्रु उस योग्य पुजारी को बचाने के लिए जमकर संघर्ष करता है।
उसे जाने देने से पहले मरने को तैयार।

दोनों ही ऐसे कोहरे उगलते हैं जो स्वर्गिक महल को घेरे रहते हैं।
और धूल के बादल उड़ाकर तारों को ढक दें।
उनकी लड़ाई के आगे लाल सूरज फीका पड़ जाता है।
आकाश और पृथ्वी में अफरा-तफरी मच गई है।
लेकिन नौ झड़पों के बाद भी कोई नतीजा नहीं निकला।
दुर्भाग्यवश, फ्रायर सैंड अचानक पराजित हो जाता है।
भयंकर राक्षस ने अपनी तलवार को टूटते तारे की तरह लहराया और तब तक लड़ता रहा जब तक कि फ्रायर सैंड थक नहीं गया। फ्रायर सैंड भागने के लिए मुड़ा, लेकिन राक्षस ने उसके डंडे को रोक दिया और उसे पकड़ने के लिए अपना विशाल हाथ घुमाकर आगे बढ़ाया।
भिक्षु को अपनी बाईं भुजा के नीचे दबाकर, राक्षस ने अपने दाहिने हाथ से संजांग को उसके घोड़े से नीचे खींच लिया, अपने पैर की उंगलियों से उनके सामान को फंसाया, घोड़े के अयाल में अपने दांत गड़ाने के लिए अपना मुंह खोला, और अपने जादू का उपयोग करके उन्हें हवा में उठा लिया और हवा के एक झोंके के साथ उन्हें वापस कमल के फूल की गुफा में ले गया।
"बड़े भाई," वह चिल्लाया, "मेरे पास सभी भिक्षु हैं।"
बूढ़ा राक्षस प्रसन्न हुआ। उसने कहा, "इन्हें यहाँ लाओ; मैं इन्हें देखना चाहता हूँ।"
"ये वही हैं, है ना?" छोटे वाले ने कहा।
"भाई," बूढ़े राक्षस ने आह भरते हुए कहा, "तुमने फिर से गलत लोगों को चुन लिया है।"
अध्याय 33

पश्चिम की यात्रा
"लेकिन आपने ही तो मुझे तांग पुजारी को लाने को कहा था," छोटे वाले ने कहा। "यह तांग पुजारी ही है," बड़े राक्षस ने कहा, "लेकिन तुमने अभी तक उस शक्तिशाली नौसिखिया सन को नहीं पकड़ा है। हम तांग पुजारी को तब तक नहीं खा सकते जब तक हम उसे पकड़ नहीं लेते। जब तक हम उसे पकड़ नहीं लेते, हमें किसी भी हालत में उसके किसी भी आदमी को नहीं छूना चाहिए। उस बंदर राजा के पास अपार जादुई शक्तियां हैं और वह खुद को कई रूपों में बदल सकता है। वह हमें अपने गुरु को खाने

नहीं देगा। अगर वह हमसे लड़ने के लिए हमारे दरवाजे पर आया, तो तुम शांति से रहने की उम्मीद छोड़ देना।"
छोटे राक्षस ने हंसते हुए कहा, "बड़े भाई, आप उसकी बहुत ज़्यादा तारीफ़ कर रहे हैं। जिस तरह से आप उसकी अद्भुतता का बखान कर रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि धरती पर उसके जैसा कोई नहीं है और स्वर्ग में भी बहुत कम हैं। मेरी नज़र में तो वह कोई खास नहीं है: उसके पास कोई शक्तियां नहीं हैं।"
"क्या तुमने उसे पकड़ लिया?" बूढ़े दानव ने पूछा।
दूसरे ने जवाब दिया, "वह एक इंच भी हिल नहीं सकता। मैंने उस पर तीन पहाड़ गिरा दिए थे, जिनके नीचे वह दब गया है। उसके साथ ऐसा करने के बाद ही मैंने तांग पुजारी, साधु सैंड, घोड़े और सामान को इकट्ठा किया और उन सबको यहाँ ले आया।"
यह खबर सुनकर बूढ़े राक्षस का दिल खुशी से भर गया। "कितनी अच्छी किस्मत! कितनी अच्छी किस्मत! अब तुमने उस दुष्ट सन का काम तमाम कर दिया है, तांग पुजारी तो मानो हमारे मुंह में भोजन के समान है।" यह कहते हुए बूढ़े राक्षस ने युवा राक्षसों को आदेश दिया, "तुरंत शराब लाओ और इस युवा राजा को उसकी सफलता का जश्न मनाने के लिए एक घूंट पिलाओ।"
“नहीं, मैं कुछ नहीं पीऊँगा,” छोटे दानव ने कहा। “छोटे शैतानों से कहो कि वे सुअर को पानी से बाहर निकालें और उसे लटका दें।” फिर सुअर को गुफा के पूर्वी भाग में, साधु सैंड को पश्चिमी भाग में और तांग पुजारी को मध्य भाग में लटका दिया गया। सफेद घोड़े को अस्तबल में भेज दिया गया और सामान को सुरक्षित रख दिया गया।
“भाई, तुम्हारे पास अद्भुत शक्तियां हैं,” बूढ़े राक्षस ने हंसते हुए कहा। “तुमने तीनों भिक्षुओं को दो बार पकड़ लिया है। लेकिन भले ही तुमने उसे पहाड़ के नीचे कुचल दिया हो, फिर भी उस सूर्य को हमारे खाना पकाने के बर्तन में डालने के लिए तुम्हें कुछ जादू की ज़रूरत पड़ेगी। वो दिन कभी आएगा।”
"कृपया बैठ जाइए, बड़े भाई," छोटे राक्षस ने कहा। "मैं बंदर को बिना हाथ लगाए ही ले आऊंगा। मुझे बस दो छोटे शैतानों को कुछ खजाने देकर उसे वापस लाने के लिए भेजना होगा।"
"कौन से खजाने?"
"मेरा सोना और लाल लौकी और तुम्हारा भेड़ की चर्बी से बना जेड का कलश।" बड़े राक्षस ने दोनों खजाने लाकर उसे सौंप दिए और पूछा कि किन दो छोटे शैतानों को

भेजा जाए। "कुशल भूत और निपुण पशु को भेजो," छोटे राक्षस ने उत्तर दिया। फिर उसने उन्हें निर्देश दिया, "दोनों खजाने सीधे एक ऊंचे पहाड़ की चोटी पर ले जाओ, उन्हें वहां उल्टा रख दो और सूर्य को पुकारो। अगर वह जवाब देता है तो वह सीधे अंदर चला जाएगा। तुम्हें तुरंत इस पर यह लेबल चिपकाना होगा: 'सर्वोच्च भगवान लाओ: नियमों और अध्यादेशों के अनुसार तुरंत कार्रवाई की जाए।' साढ़े तीन घंटे के भीतर वह मवाद बन जाएगा।" दोनों छोटे शैतानों ने प्रणाम किया और खजाने लेकर बंदर को पकड़ने चले गए।

जब वह तीन पहाड़ों के नीचे कुचला हुआ पड़ा था, तब महान ऋषि ने अपनी पीड़ा में पवित्र पुजारी संजांग के बारे में सोचा।

“गुरुजी,” वह विलाप करते हुए बोला, “मुझे याद है कि कैसे आपने मुझे दोहरी सीमा वाले पर्वत के नीचे जकड़े हुए कागज को हटाया, मुझे भयानक पीड़ा से मुक्ति दिलाई और मुझे बौद्ध धर्म में प्रवेश कराया। बोधिसत्व ने मुझे आपके साथ रहने और स्वयं को सुधारने का आदेश दिया था, ताकि मैं आपके भाग्य, आपके रूप और आपके ज्ञान को साझा कर सकूँ। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे यहाँ इस राक्षसी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा और फिर से पहाड़ों के नीचे दबना पड़ेगा। हे भगवान, हे भगवान। अगर आपकी मृत्यु हो जाती है तो यही आपके लिए उचित है। लेकिन मुझे साधु रेत, सुअर और उस छोटे अजगर के लिए बहुत दुख हो रहा है जो घोड़े में बदल गया था।”

वास्तव में:

पश्चिम की यात्रा

एक लंबा पेड़ हवा को आमंत्रित करता है;
फिर हवा पेड़ को हिला देती है।
जो कोई भी प्रसिद्धि के लिए प्रयास करता है
प्रसिद्धि ने उसे बर्बाद कर दिया है।
फिर उसने आह भरी और आंसू बारिश की तरह बहने लगे।

इन सब बातों से पर्वतीय आत्माएं, स्थानीय देवता और चारों दिशाओं तथा केंद्र के रक्षक चिंतित हो गए थे।

"ये पहाड़ किसके हैं?" स्वर्ण सिर वाले रक्षक ने पूछा।

स्थानीय देवताओं ने कहा, "यह हमारा है।"
और तुम्हारे पहाड़ों के नीचे कौन दबा हुआ है?
स्थानीय देवताओं ने कहा, "हमें नहीं पता।"
"तुम लोग ऐसा नहीं करोगे," रक्षक ने कहा।
"ये सन वुकॉन्ग हैं, वो महान ऋषि जो स्वर्ग के समतुल्य हैं और जिन्होंने पाँच सौ साल पहले स्वर्ग के महलों में तबाही मचाई थी। अब उन्होंने धर्म अपना लिया है और तांग पुजारी के शिष्य बन गए हैं। तुमने उस राक्षस को अपने पहाड़ों का इस्तेमाल करके उन्हें कुचलने की इजाज़त क्यों दी? अब तुम्हारा काम तमाम हो गया है। अगर वो आज़ाद हो गए तो तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। अगर वे तुम्हें हल्के में भी छोड़ दें तो भी स्थानीय देवताओं को निर्वासन और पर्वत आत्माओं को कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। और मुझे भी कड़ी फटकार मिलेगी।"
"हमें पता नहीं था, सचमुच हमें पता नहीं था," भयभीत देवताओं और आत्माओं ने कहा। "जब मुख्य राक्षस ने पर्वत-स्थानांतरण मंत्र पढ़ा, तो हमने उन्हें बस यहाँ स्थानांतरित कर दिया। हमें कभी पता नहीं चला कि यह महान ऋषि सूर्य थे।"
"डरो मत," रक्षक ने कहा। "कानून कहता है कि जिस बात की तुम्हें जानकारी नहीं है, उसके लिए तुम्हें दंडित नहीं किया जा सकता। हमें उसे इस तरह से रिहा करने की योजना बनानी होगी कि वह हम सबको न मार डाले।"
स्थानीय देवताओं ने कहा, "अगर हम उसे आज़ाद कर दें तो उसका हमें मार डालना बहुत अन्यायपूर्ण होगा।"
"एक और बात है जो तुम नहीं जानते," रक्षक ने कहा। "उसके पास एक बेहद घातक, सोने की पट्टी वाली लाठी है। अगर वह तुम्हें उससे मारे तो तुम्हारी मौत निश्चित है, और उसके हल्के से स्पर्श से भी घाव हो जाएगा। एक हल्की सी चोट से तुम्हारी नसें चकनाचूर हो जाएंगी, और खरोंच से तुम्हारी त्वचा चीर-फाड़ हो जाएगी।"
भयभीत स्थानीय देवताओं और पर्वतीय आत्माओं ने तब रक्षकों से परामर्श किया, तीनों पर्वतों के द्वारों के पास पहुँचे और पुकारा, "महान ऋषि, पर्वतीय आत्माएँ, स्थानीय देवता और चारों दिशाओं और केंद्र से आए रक्षक आपसे मिलने आए हैं।"
शानदार बंदर। वह बाघ की तरह दुबला-पतला था, पर हमेशा की तरह जोश से भरा हुआ था। "तो क्या हुआ?" उसने ऊँची और स्पष्ट आवाज़ में पुकारा।
अध्याय 33

स्थानीय देवताओं ने उत्तर दिया, "हमारे पास महान ऋषि के लिए एक संदेश है। यदि हम पर्वतों को हटाकर आपको मुक्त कर दें, तो क्या आप हम जैसे तुच्छ आत्माओं को हमारी असभ्यता के लिए क्षमा कर देंगे?"
“इन पहाड़ों को हटाओ,” बंदर बोला, “और मैं तुम्हें नहीं मारूंगा।” फिर वह चिल्लाया, “उठो।” यह ठीक वैसा ही था जैसे अधिकारियों ने आदेश दिया हो: सभी देवताओं ने जादुई शब्द कहे और पहाड़ वापस अपनी जगह पर चले गए। बंदर आज़ाद हो गया। वह उछलकर खड़ा हुआ, अपने शरीर से धूल झाड़ी, अपनी स्कर्ट कसी, अपने कान के पीछे से अपना डंडा निकाला और स्थानीय देवताओं और पर्वत आत्माओं से कहा, “सब अपने पैर फैलाओ। मैं अपना गुस्सा शांत करने के लिए तुम सबको दो-दो वार करने वाला हूँ।”
"लेकिन हे महान ऋषि, आपने अभी कुछ क्षण पहले ही हमसे क्षमा करने का वादा किया था," देवताओं ने भयभीत होकर कहा। "आप अपने वचन से मुकरकर हमें कैसे मार सकते हैं?"
"मेरे प्रिय स्थानीय देवताओं और पर्वतीय आत्माओं," बंदर ने कहा, "आप मुझसे ज्यादा उस राक्षस से डरते हैं।"
"लेकिन उस दानव के पास महान और शक्तिशाली जादुई कलाएं हैं! जब वह अपने असली मंत्र बोलता है तो वह हमें हर दिन बारी-बारी से उसकी गुफा में ड्यूटी करने के लिए मजबूर करता है।"
उनकी ड्यूटी के बारे में सुनकर बंदर चौंक गया। उसने आकाश की ओर देखा और चिल्लाया, "स्वर्ग, स्वर्ग, जब आदिम अराजकता पहली बार विभेदित हुई और स्वर्ग पृथ्वी से अलग हुआ, तब मेरा जन्म पुष्प और फल पर्वत पर हुआ। मैंने अनेक ज्ञानी गुरुओं से दर्शन किए और अमर जीवन के रहस्य सीखे। मैं हवा की तरह तेज़ी से रूप बदल सकता था, बाघों और अजगरों को वश में कर सकता था और स्वर्ग के महलों में भारी उत्पात मचा सकता था।"
लेकिन मैंने कभी भी पर्वतीय आत्माओं और स्थानीय देवताओं को धमकाया नहीं और न ही उनसे अपने काम करवाए। कितनी शर्म की बात है, जब ये दुष्ट राक्षस पर्वतीय आत्माओं और स्थानीय देवताओं को अपना गुलाम बनाकर उनसे बारी-बारी से सेवा

करवाते हैं। हे भगवान! अगर आपने मुझे बनाया है, तो आपने उन्हें क्यों बनाया?
जब महान ऋषि अपनी शिकायत के बीच में ही थे, तभी पर्वत की घाटी में एक गुलाबी रोशनी चमकने लगी।
"गुफा में आप जिन पर्वतीय आत्माओं, स्थानीय देवताओं की सेवा करते हैं, तो आखिर यह क्या चमक रहा है?" बंदर ने पूछा।
स्थानीय देवताओं ने उत्तर दिया, "राक्षसों का खजाना, कुछ दानव तुम्हें फंसाने के लिए ही लाए होंगे।"
बंदर ने कहा, "बस मुझे यही चाहिए था कि मैं उन पर एक छोटी सी शरारत करूँ: मुझे बताओ, गुफा में उनसे मिलने कौन आता है?"
स्थानीय देवताओं ने उत्तर दिया, "उनकी रुचि अमरता के अमृत को परिष्कृत करने में है, और उनके सबसे अच्छे मित्र क्वानझेन स्कूल के ताओवादी गुरु हैं।"
“इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि उसने मेरे गुरु को धोखा देने के लिए खुद को एक बूढ़े ताओवादी पुजारी के रूप में बदल लिया,” बंदर ने कहा। “ठीक है, मैं तुम्हें अभी छोड़ देता हूँ। वापस जाओ। मैं उन्हें खुद ले आता हूँ।” सभी आत्माएँ हवा में उड़ गईं और चली गईं।
महान ऋषि ने स्वयं को झटककर एक वृद्ध ताओवादी गुरु का रूप धारण कर लिया।
क्या आप जानते हैं कि उन्होंने स्वयं को कैसा रूप दिया?
उसके बाल दो गुच्छों में बंधे हुए थे,
सौ टुकड़ों से बना एक रंगबिरंगा वस्त्र।
उसने मछुआरे के ढोल को बजाया,
उनकी कमर पर लॉर्ड लू का एक कमरबंद बंधा हुआ था।
अध्याय 33
468
पश्चिम की यात्रा
वह रास्ते के किनारे झुक गया।
नन्हे शैतानों का इंतजार है।
जल्द ही शैतान आ गए
बंदर राजा की चालों का शिकार बनना।
कुछ ही देर में वे दो छोटे शैतान आ गए। बंदर ने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी

निकाली और उन दोनों राक्षसों को ठोकर मार दी, जो एकदम बेखबर थे। जब वे उठे, तब उन्होंने बंदर को देखा। "अरे बदमाश! अगर हमारे महान राजा तुम जैसे लोगों के इतने बड़े प्रशंसक न होते, तो हम तुम्हें तुरंत सबक सिखा देते।"

"मेरा क्या मतलब है, मुझे सुलझाने का?" बंदर ने बनावटी मुस्कान के साथ पूछा। "हम सब ताओवादी हैं - एक बड़ा खुशहाल परिवार।"

"तुम यहाँ क्यों लेटे हो, और तुमने हमें क्यों गिरा दिया?" शैतानों ने पूछा।

"थोड़ा सा गिरना तुम लड़कों के लिए मेरे जैसे ताओवादी बुजुर्ग से मिलने पर सम्मान दिखाने का एक तरीका है," बंदर ने कहा।

"हमारे महान राजा तो लोगों से पहली मुलाकात में बस कुछ औंस चांदी ही मांगते हैं," उन छोटे शैतानों ने कहा, "तो आप हमसे अपने सामने झुकने की उम्मीद क्यों करते हैं? यहाँ ऐसा रिवाज नहीं है। आप कहीं और से आए होंगे।"

"जी हां, मैं ही हूं," बंदर ने कहा। "मैं पेंगलाई पर्वत से हूं।"

"लेकिन वह समुद्र में एक द्वीप है जहाँ अमर लोग रहते हैं," शैतानों ने कहा।

"अगर मैं अमर नहीं हूँ," बंदर ने कहा, "तो मुझे नहीं पता कौन है।" अब तक राक्षसों का क्रोध आनंद में तब्दील हो चुका था।

“हे पूजनीय देवता,” उन्होंने कहा, “हे पूजनीय देवता, कृपया हमारी असभ्यता पर नाराज़ न हों। यह केवल इसलिए हुआ क्योंकि हमारी नश्वर आँखें आपको पहचान नहीं पाईं।”

"मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है," बंदर ने कहा। "जैसा कि कहावत है, 'अमर शरीर आम भूमि पर नहीं चलता।' तुमसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि तुम यह जानते हो। मैं आज तुम्हारे पर्वत पर एक ऐसे गुणी व्यक्ति को लेकर आया हूँ जो अमर हो चुका है और मोक्ष का मार्ग पूरा कर चुका है। क्या कोई मेरे साथ आना चाहता है?"

"मैं आपके साथ चलूंगा, स्वामी," निपुण भूत ने कहा।

"मैं भी," स्किल्फुल बीस्ट ने कहा।

"आप दोनों सज्जन कहाँ से आए हैं?" बंदर ने पूछा, मानो उसे पहले से पता न हो।

उन्होंने कहा, "कमल के फूल की गुफा से। आप कहाँ जा रहे हैं?"

"हमें हमारे महान राजा से नौसिखिए सन को पकड़ने का आदेश मिला है," शैतानों ने जवाब दिया।

"कौन?" बंदर ने पूछा।

"सन द नोविस," उन्होंने दोहराया।
अध्याय 33
469
पश्चिम की यात्रा
"वह नौसिखिया सूर्य जो तांग पुजारी के साथ शास्त्र लाने जा रहा है?" बंदर ने पूछा।
"हाँ, वही," शैतानों ने जवाब दिया। "क्या तुम उसे जानते हो?"
“वह बंदर तो हद ही कर देता है,” बंदर ने कहा। “मैं उसे जानता हूँ, और मुझे भी उस पर बहुत गुस्सा आता है। चलो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ और उसे पकड़ने में तुम्हारी मदद करता हूँ।”
“धन्यवाद, स्वामी,” उन्होंने उत्तर दिया, “लेकिन हमें आपकी सहायता की आवश्यकता नहीं होगी। हमारे नन्हे राजा ने अपनी जादुई शक्तियों का प्रयोग करके तीन पर्वतों को यहाँ बुलाकर उन्हें कुचलने का आदेश दिया है। अब वे एक इंच भी हिल नहीं सकते। हमें यहाँ खजाने के साथ भेजा गया है ताकि हम उन्हें उसमें भर सकें।”
"कौन से खजाने?" बंदर ने पूछा।
"मेरे पास लाल लौकी है," डेक्सटरस घोस्ट ने कहा, "और उसके पास जेड का फूलदान है।"
"तुम उसे इनमें कैसे फिट करोगे?" बंदर ने पूछा।
“हम उन्हें उल्टा लटका देंगे,” उन छोटे शैतानों ने कहा, “और उसे पुकारेंगे। अगर वह जवाब देगा, तो हम उसे अंदर डाल देंगे और उस पर एक लेबल चिपका देंगे जिस पर लिखा होगा: ‘सर्वोच्च भगवान लाओ: नियमों और अध्यादेशों के अनुसार तुरंत कार्रवाई की जाए।’ साढ़े तीन घंटे बाद वह मवाद का ढेर बन जाएगा।” यह खबर सुनकर बंदर चौंक गया और मन ही मन सोचने लगा कि यह कितनी खतरनाक साजिश है।
"आज के कर्तव्य देवता ने मुझे बताया कि कुल पाँच खजाने हैं," उसने सोचा। "ये उनमें से दो हैं। मुझे आश्चर्य है कि बाकी तीन क्या हैं।"
“सज्जनों,” उसने ज़ोर से कहा, “क्या आप मुझे अपने खजाने देखने देंगे?” यह न समझते हुए कि यह एक चाल थी, दोनों छोटे शैतानों ने अपनी आस्तीनों से खजाने निकाले और दोनों हाथों से आदरपूर्वक उन्हें धन को सौंप दिया। धन प्रसन्न हुआ, हालाँकि उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। “शानदार चीज़ें,” उसने सोचा, “शानदार। मुझे बस अपनी पूंछ हवा में लहरानी है और छलांग लगाकर उड़ जाना है। इन्होंने मुझे दे

दिया।" फिर उसके मन में दूसरा विचार आया: "नहीं, यह ठीक नहीं है। इन्हें चुराना तो आसान होगा, लेकिन इससे मेरी प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी। यह दिनदहाड़े डकैती होगी।" इसलिए उसने खजाने लौटाते हुए कहा, "लेकिन आपने अभी तक मेरा खजाना नहीं देखा है।"

"यह क्या है?" शैतानों ने पूछा। "क्या आप हम जैसे आम इंसानों को इसे देखने देंगे? इससे हमें सौभाग्य प्राप्त होगा।"

उस शानदार बंदर ने अपना हाथ नीचे किया, अपनी पूंछ से एक बाल खींचा, एक मंत्र पढ़ा और कहा, "बदलो!" वह बाल एक बड़े सुनहरे और लाल रंग के लौकी में बदल गया, जो एक फुट सात इंच लंबा था। उसने अपनी कमर से लौकी निकाली और पूछा, "क्या तुम मेरी लौकी देखना चाहोगे?"

कुशल जानवर ने उसे उठाया, उस पर नजर डाली और कहा, "यह बहुत बड़ा लौकी है, स्वामी, सुडौल और देखने में बहुत सुंदर है, लेकिन यह बेकार है।"

"बेकार का क्या मतलब है?" बंदर ने पूछा।

"हमारे प्रत्येक खजाने में एक हजार लोग समा सकते हैं," शैतानों ने उत्तर दिया।

बंदर ने कहा, "लोगों को अपने भीतर समाहित करने की क्षमता में ऐसी क्या खास बात है? मेरा शरीर तो खुद आकाश को भी समाहित कर सकता है।"

"आकाश?" शैतानों ने पूछा।

"हां, बिल्कुल हो सकता है," बंदर ने जवाब दिया।

"तुम झूठ बोल रहे होगे," उन छोटे शैतानों ने कहा। "हम तभी विश्वास कर सकते हैं जब हम तुम्हें ऐसा करते हुए देखें। वरना हम तुम्हारी बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करेंगे।"

बंदर ने कहा, "अगर आसमान मुझे परेशान करता है, तो मैं महीने में सात-आठ बार यहाँ आकर बैठ जाता हूँ; लेकिन अगर यह मुझे परेशान नहीं करता है, तो मैं इसे आधे साल के लिए अकेला छोड़ सकता हूँ।"

"देखते हैं कि क्या वह अपना आकाश-धारण करने वाला खजाना हमारे साथ बदलेगा," कुशल जानवर ने दूसरे दानव से कहा।

"लेकिन वह अपना आकाश-धारक हमारे उस आकाश-धारक से कभी नहीं बदलेगा जिसमें केवल मनुष्य ही समा सकते हैं," निपुण भूत ने उत्तर दिया। "अगर वह नहीं बदलेगा तो हम अपना फूलदान भी फेंक सकते हैं," कुशल जानवर ने कहा।

अपनी खुशी छुपाते हुए बंदर ने सोचा, "एक लौकी के बदले एक लौकी और कलश भी, यानी एक के दाम में दो: मैं तो ज़रूर मान जाऊँगा।" इसलिए वह कुशल जानवर के पास गया, उसे पकड़ लिया और पूछा, "अगर यह आकाश को भी थाम सकता है, तो क्या तुम इन्हें बदलोगे?"

"हाँ, हम उन्हें आपस में बदल लेंगे, बशर्ते वह आकाश को थाम सके," शैतान ने कहा, "और अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो मैं तुम्हारा बेटा बन जाऊंगा।"

"ठीक है," बंदर ने कहा, "मैं आपको दिखाने के लिए इसमें आकाश डाल दूंगा।"

महान संत ने मंत्र पढ़ने और उसके शब्द बोलने के लिए अपना सिर झुकाया। उन्होंने दिन के रक्षक, रात के रक्षक, चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षक को पुकारा: "मेरी ओर से जेड सम्राट को सूचित करें कि मैंने अब सच्चा धर्म पा लिया है और मैं तांग पुजारी को शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग ले जा रहा हूँ। हम इस समय एक ऊँचे पर्वत पर फंसे हुए हैं और मेरे स्वामी बहुत संकट में हैं। मैं राक्षसों को छल से उनके खजाने मुझसे बदलना चाहता हूँ, इसलिए मैं अत्यंत विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि मुझे एक घंटे के लिए आकाश में शरण लेने की अनुमति दी जाए। इससे मुझे सफलता मिलेगी। यदि जरा सा भी इनकार हुआ तो मैं चमत्कारिक कोहरे के हॉल में आकर युद्ध करूँगा।"

उस दिन का गश्ती दल सीधे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से चमत्कारी धुंध के हॉल में गया, जहाँ उसने जेड सम्राट को सारी जानकारी दी।

"बेशर्म बंदर," जेड सम्राट ने कहा। "यह सरासर गुस्ताखी है। पहले बोधिसत्व गुआनयिन ने हमें उसे तांग पुजारी के साथ भेजने के लिए राजी किया था। हमने चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षकों और चारों कर्तव्य देवताओं को बारी-बारी से उसकी रक्षा के लिए भेजा था। अब वह आकाश को हटाना चाहता है। यह संभव नहीं है।"

जैसे ही उन्होंने कहा कि आकाश को हटाया नहीं जा सकता, राजकुमार नेझा दरबार के अधिकारियों के बीच से आगे बढ़े और एक ज्ञापन प्रस्तुत किया: "महाराज, आकाश को समाहित करना संभव है।"

"कैसे?" जेड सम्राट ने पूछा।

“जब आदिम अराजकता का सर्वप्रथम विभाजन हुआ,” राजकुमार नेझा ने उत्तर दिया, “प्रकाश और शुद्ध आकाश बन गए, और भारी और मैला पृथ्वी बन गए। आकाश शुद्ध वाष्प का एक गोला है जो स्वर्ग के महलों को धारण करता है, और स्वाभाविक रूप से इसे समाहित करना असंभव होना चाहिए। लेकिन अब जब नवसिखिए सन, तांग पुजारी को पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए ले जा रहे हैं, तो यह ताई पर्वत के समान महान आशीर्वाद का स्रोत होगा, एक ऐसा नेक कार्य जो सागर के समान गहरा होगा। आज हमें उनकी सफलता में सहायता करनी चाहिए।”

"तुम उसकी मदद कैसे करोगे?" जेड सम्राट ने पूछा।

"मैं स्वर्ग के उत्तरी द्वार पर एक शाही फरमान जारी करने की विनती करता हूं, जिसमें सच्चे योद्धा देवता से हमें अपना काला गिद्ध ध्वज उधार देने का अनुरोध किया जाए, जिसे हम दक्षिणी द्वार के बाहर फैलाकर सूर्य, चंद्रमा और तारों को ढक सकें।"

वहाँ नीचे वे एक दूसरे को देख नहीं पाएंगे और काले-सफेद में भी फर्क नहीं कर पाएंगे। इससे अध्याय 33 को धोखा दिया जा सकेगा।

शैतानों को यह सोचने पर मजबूर करना कि आकाश लौकी में समा गया है, और नौसिखिए सूर्य को सफल बनाना।" जेड सम्राट ने इस सुझाव को लागू करने का आदेश दिया। शाही आदेश का पालन करते हुए राजकुमार नेझा उत्तरी स्वर्ग द्वार पर स्थित सच्चे मार्शल गॉड से मिलने गए और उन्हें सारी घटना बताई। सच्चे मार्शल गॉड ने राजकुमार को ध्वज सौंप दिया।

तब तक एक गश्ती दल का सदस्य तेजी से नीचे आकर महान ऋषि के कान में फुसफुसाया, "राजकुमार नेझा आपकी मदद करने आ रहे हैं।"

बंदर ने ऊपर देखा तो उसे शुभ संकेत देने वाले घूमते हुए बादल दिखाई दिए, जो किसी देवता की उपस्थिति का पक्का संकेत था, फिर वह छोटे शैतानों की ओर मुड़ा और बोला, "तो हम आकाश को हटा देंगे।"

"अगर आप चाहें तो इसे हटा सकते हैं," उन नन्हे शैतानों ने कहा, "लेकिन समय बिताने के लिए यह सब खेलने का क्या मतलब है?"

"मैं बस मंत्र बोल रहा था और जादुई शक्तियों का आह्वान कर रहा था," बंदर ने कहा। छोटे शैतान आँखें फाड़कर देख रहे थे, सोच रहे थे कि वह आकाश को कैसे छिपाएगा।

बंदर ने अपना नकली लौकी हवा में उछाला। वह सचमुच एक बाल जितना पतला था, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि वह कितना हल्का था। जैसे ही पहाड़ की चोटी के चारों ओर की हवाओं ने उसे पकड़ा, वह एक घंटे तक हवा में तैरता रहा और फिर नीचे गिरा। इसी बीच राजकुमार नेझा स्वर्ग के दक्षिणी द्वार पर काले गिद्ध का झंडा जोर-शोर से फहरा रहा था, जिससे सूर्य, चंद्रमा और तारे छिप गए थे। सचमुच: स्वर्ग और पृथ्वी स्याही की तरह काले रंग में रंगे हुए थे;
तब ब्रह्मांड अंधकार में डूब गया।
वे दोनों नन्हे शैतान डर गए। उन्होंने कहा, "अभी थोड़ी देर पहले जब हम बात कर रहे थे, तब दोपहर का समय था। अब शाम कैसे हो सकती है?"
बंदर ने कहा, "जब आकाश हट जाता है, तो समय का भेद मिट जाता है। बेशक, सब कुछ धुंधला हो जाता है।"
"लेकिन अब इतना अंधेरा क्यों है?"
"सूर्य, चंद्रमा और तारे सब अंदर रख दिए गए हैं, इसलिए बाहर कोई रोशनी नहीं है। अंधेरा होना तय है।"
"गुरुजी," उन नन्हे शैतानों ने कहा, "आपकी आवाज़ कहाँ से आ रही है?"
"मैं तुम्हारे ठीक सामने ही तो हूँ, है ना?" बंदर ने कहा। उन छोटे शैतानों ने अपने हाथ फैलाए और उसे महसूस किया।
"हम आपकी आवाज़ सुन सकते हैं, लेकिन आपको देख नहीं सकते। हम कहाँ हैं, स्वामी?"
बंदर ने उन्हें आँखें झपकाते हुए कहा, "घबराओ मत, तुम बोहाई सागर के तट पर हो। एक भी गलती हुई तो तुम सात-आठ दिन तक नीचे गिरते रहोगे।"
वे छोटे शैतान घबरा गए। "बस करो, बस करो। आसमान को फिर से खोल दो। अब हमें पता चल गया है कि इसे कैसे छिपाया जाता है।"
अगर हम एक पल भी ज्यादा देर तक समुद्र में गिर गए तो हम कभी घर नहीं लौट पाएंगे।"
शानदार बंदर! जब वे दोनों आश्वस्त हो गए, तो उसने एक और मंत्र पढ़ा जिसका राजकुमार नेझा पर प्रभाव पड़ा और उसने ध्वज को फिर से लपेट दिया, जिससे दोपहर का सूरज एक बार फिर दिखाई दिया। "अद्भुत!" नन्हे शैतानों ने खुशी से कहा, "अद्भुत! अगर हम इस खजाने के लिए अदला-बदली नहीं करते हैं, तो हम अपने

परिवार के हितों की रक्षा नहीं कर रहे होंगे।"
अध्याय 33
472
पश्चिम की यात्रा
कुशल भूत ने लौकी सौंप दी और निपुण जानवर ने फूलदान निकाला। जब उन्होंने ये दोनों चीजें बंदर को दीं, तो उसने अपनी नकली लौकी दे दी। लेन-देन तो हो गया था, लेकिन बंदर इसे अंतिम रूप देना चाहता था, इसलिए उसने अपनी नाभि के नीचे से एक बाल निकाला, उस पर जादुई साँस फूँकी और उसे तांबे के सिक्के में बदल दिया। उन्होंने कहा, "लड़कों, यह सिक्का लो और एक कागज खरीद लो।"
उन्होंने पूछा, "क्यों?"
"हम तुम्हारे दो आदमखोर खजानों के बदले मेरे आकाश-धारक के बदले एक कानूनी अनुबंध लिखेंगे," बंदर ने कहा। "समय बीतने के साथ होने वाले पछतावे से बचने के लिए हम दोनों को एक लिखित समझौते की आवश्यकता है।"
"लेकिन यहाँ अनुबंध लिखने के लिए न तो ब्रश है और न ही स्याही," उन दोनों नन्हे शैतानों ने कहा। "चलो, इसके बजाय शपथ लेते हैं।"
"किस तरह की शपथ?" बंदर ने पूछा।
"हम अपने दो मनुष्य-धारण करने वाले खजाने तुम्हारे आकाश-धारण करने वाले खजाने से बदल लेते हैं," शैतानों ने कहा, "और अगर हमें कभी कोई पछतावा हो तो हम चारों मौसमों में महामारी से पीड़ित हों।"
“मुझे तो कोई पछतावा नहीं होगा,” बंदर हँसते हुए बोला। “अगर हुआ भी तो चारों ऋतुओं में मुझे भी महामारी लग जाए।” शपथ लेने के बाद वह उछला, उसकी पूंछ हवा में लहराई और वह स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के सामने उतरा, जहाँ उसने राजकुमार नेझा को ध्वज उठाने में मदद करने के लिए धन्यवाद दिया। राजकुमार महल लौटकर ध्वज को सच्चे योद्धा देवता को लौटा दिया, और बंदर तारों और बादलों के बीच खड़ा उन छोटे शैतानों को निहारता रह गया।
अगर आपको नहीं पता कि आखिर क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 34
दानव राजा की धूर्तता ने बुद्धि-बंदर के लिए मुसीबत खड़ी कर दी।

महान ऋषि ने तात्कालिक रचना के माध्यम से खजाने प्राप्त किए
नकली लौकी हाथ में लिए दोनों छोटे शैतान इस बात पर झगड़ रहे थे कि कौन इसकी जाँच करेगा, तभी उन्होंने ऊपर देखा और पाया कि बंदर गायब हो गया था। "भाई," कुशल जानवर ने कहा, "अमर लोग भी कभी-कभी झूठ बोल देते हैं। उसने कहा था कि खजाने की अदला-बदली के बाद वह हमें अमर बना देगा। वह बिना कुछ कहे कैसे गायब हो गया?"
"हमें बहुत अच्छा सौदा मिला है," कुशल भूत ने कहा, "और वह गायब होने की हिम्मत नहीं करेगा। लौकी आगे बढ़ाओ—मैं इसमें आकाश डालना चाहता हूँ और इसे आज़माना चाहता हूँ।" उसने लौकी को हवा में उछाला, लेकिन वह फिर से धड़ाम से नीचे गिर गई, जिससे कुशल जानवर परेशान हो गया और उसने पूछा, "यह आकाश को अंदर क्यों नहीं ले रही है? क्या ऐसा हो सकता है कि नौसिखिया सूर्य अमर बनकर आया हो और उसने हमारी असली लौकी की जगह नकली लौकी रख दी हो?"
"बकवास," डेक्सटरस घोस्ट ने कहा। "नौसिखिया सूर्य उन तीन पहाड़ों के नीचे दब गया है। वह बाहर कैसे निकल सकता था? लौकी मुझे दो। मैं उसके द्वारा बनाए गए मंत्र के शब्द बोलूंगा और हम आकाश को उसके अंदर डाल देंगे।" फिर उसने भी लौकी को हवा में उछालते हुए कहा, "अगर ज़रा भी इनकार हुआ तो मैं चमत्कारी धुंध के हॉल में आकर युद्ध करूंगा।" उसके मंत्र पूरा करने से पहले ही लौकी ज़मीन पर गिर गई।
"आसमान तो अंदर नहीं गिरा है," दोनों ने कहा, "यह ज़रूर नकली होगा।"
अध्याय 34
473
पश्चिम की यात्रा
आकाश में विराजमान महान ऋषि सन वुकॉन्ग उनकी कही हर बात सुन सकते थे और उनके इस हंगामे के दौरान हो रही हर घटना को देख सकते थे। इस डर से कि कहीं वे बहुत देर तक शोर मचाते रहें और खबर को किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति तक पहुंचा दें, उन्होंने खुद को झटक दिया और अपने शरीर पर लौकी जैसे बालों को वापस लगा लिया, जिससे वे दोनों छोटे शैतान पूरी तरह से खाली हाथ रह गए।
"मुझे लौकी दो, भाई," डेक्सटरस घोस्ट ने कहा।
"मुझे दे दो," कुशल जानवर ने कहा। "हे भगवान! यह तो गायब हो गया!"

वे दोनों जमीन पर और घास में बेतहाशा खोजने लगे, अपने हाथों को अपनी आस्तीनों और अपने कुर्ते में भी डाला, लेकिन वह कहीं नहीं मिला।
"अब हम क्या करें," दोनों भयभीत नन्हे शैतानों ने कहा, "अब हम क्या करें? परम पूज्य ने हमें ये खजाने नौसिखिए सूर्य को पकड़ने के लिए दिए थे। अब हम उसे पकड़ नहीं पाए हैं और खजाने गायब हो गए हैं।"
हम उसे इसकी सूचना नहीं दे सकते, वरना वह हमें पीट-पीटकर मार डालेगा। अब हम क्या करें?
"चलो भाग चलते हैं," स्किल्फुल बीस्ट ने कहा।
"कहाँ जाना है?" डेक्सटरस घोस्ट ने पूछा।
"कहीं भी," स्किल्फुल बीस्ट ने कहा, "क्योंकि अगर हम वापस जाकर यह कहते हैं कि हमने खजाने खो दिए हैं, तो जाहिर तौर पर यही हमारा अंत होगा।"
"नहीं," फुर्तीले भूत ने कहा, "भागने की ज़रूरत नहीं। चलो वापस चलते हैं। दोनों महाराज तुम्हें बहुत पसंद करते हैं, और मैं तुम्हारे लिए सिफारिश करूँगा। अगर वे मान जाएँ तो तुम्हारी जान बख्श देंगे। भले ही हम उन्हें हमें पीट-पीटकर मार डालने से न रोक पाएँ, कम से कम वे वहीं मारेंगे, और हम दोराहे पर नहीं फँसेंगे। चलो वापस चलते हैं।" मन बना लेने के बाद दोनों छोटे शैतान अपने पहाड़ की ओर चल पड़े।
बंदर आसमान में ऊपर से उन्हें वापस आते देख रहा था, उसने खुद को झटका दिया और एक मक्खी में बदल गया जो नीचे उड़कर उनके पीछे-पीछे गई। आप सोच रहे होंगे कि अब जब वह मक्खी बन गया है, तो उसने अपना खजाना कहाँ रखा होगा?
अगर वह उन्हें रास्ते में छोड़ देता या घास में छिपा देता तो कोई उन्हें ढूंढकर ले जा सकता था, और उसकी सारी मेहनत बेकार हो जाती। इसलिए उसने उन्हें अपने पास ही रखा। लेकिन एक मक्खी तो बस एक दाने जितनी होती है: उसके लिए जगह कैसे मिलती? क्योंकि उसके वे दो अनमोल खजाने, उसकी सोने की पट्टी वाली गदा की तरह, बुद्ध के ऐसे अनमोल खजाने थे जो आपके साथ बढ़ते या घटते हैं। इसीलिए वह उन्हें अपने पास रख सका। वह राक्षसों के पीछे भिनभिनाता हुआ चल पड़ा। थोड़ी ही देर में वह गुफा के अंदर पहुँच गया, जहाँ दोनों राक्षस राजा बैठे शराब पी रहे थे।
दोनों नन्हे शैतान उनके पास गए और घुटने टेक दिए। बंदर दरवाजे की चौखट पर बैठा सुन रहा था। नन्हे शैतानों ने कहा, "महाराज।"
"तो तुम वापस आ गए," जूनियर दानव राजा ने अपना प्याला नीचे रखते हुए कहा।

"हां," उन नन्हे शैतानों ने कहा।
"क्या तुम्हारे पास नौसिखिया सन है?" अगला सवाल था। दोनों नन्हे शैतानों ने जवाब देने की हिम्मत न करते हुए अपना सिर ज़मीन पर पटक दिया। बूढ़े शैतानों ने फिर पूछा, और फिर भी उन्होंने जवाब देने की हिम्मत नहीं की, बल्कि अपना सिर ज़मीन पर पटकते रहे।
जब उनसे कई बार यही पूछा गया, तब जाकर उन्होंने अपने आप को जमीन पर गिराया और कहा, "हमें क्षमा कर दीजिए।"
हम हज़ार बार मरने के लायक हैं। हमें क्षमा कर दीजिए। हम खजाने को पहाड़ों में ले जा रहे थे जब अध्याय 34
474
पश्चिम की यात्रा
पेंगलाई पर्वत से आए एक अमर व्यक्ति से हमारी मुलाकात हुई। उन्होंने हमसे पूछा कि हम कहाँ जा रहे हैं, और हमने उन्हें बताया कि हम नौसिखिया सूर्य को पकड़ने जा रहे हैं। जब उस अमर व्यक्ति ने नौसिखिया सूर्य के बारे में सुना, तो उन्होंने कहा कि वे भी उससे नाराज़ हैं और हमारे साथ आकर मदद करना चाहते हैं। हमने उनसे ऐसा करने के लिए कभी नहीं कहा, लेकिन हमने उन्हें विस्तार से बताया कि हम सूर्य को खजाने में कैसे डालेंगे। उस अमर व्यक्ति के पास एक लौकी भी थी जिसमें पूरा आकाश समा सकता था। क्योंकि हम अपने परिवार का भला करने के लालच में थे, इसलिए हमने अपने मनुष्य-धारक को उनके आकाश-धारक से बदल लिया। पहले तो हमने एक लौकी के बदले एक लौकी देने की पेशकश की, लेकिन फिर कुशल जानवर ने अतिरिक्त सावधानी के तौर पर कलश भी फेंक दिया। लेकिन उस अमर व्यक्ति का खजाना हम जैसे नश्वर लोगों के लिए नहीं था। हम उसे आज़मा ही रहे थे कि लौकी और वह अमर व्यक्ति दोनों गायब हो गए। हम आपसे विनती करते हैं कि हमें उस मौत से बचाएँ जिसके हम हकदार हैं।
इस पर वरिष्ठ दानव राजा गरज उठा, "धिक्कार है, धिक्कार है। यह नौसिखिए सन था जो अमर का वेश धारण करके तुम्हें धोखा देने आया था। उस बंदर के पास अपार जादुई शक्तियां हैं और वह हर जगह लोगों को जानता है। किस छोटे से बालदार देवता ने उसे हमारे खजाने हमसे छीनने के लिए भेजा?"
"भाई, कृपया शांत हो जाओ," जूनियर दानव राजा ने कहा।

"वो बंदर हद से ज़्यादा क्रूर है। इतनी शक्तियों के बावजूद उसे भाग जाना चाहिए था। उसने हमारे खजाने को हमसे छीनने के लिए ये चाल क्यों चली? अगर मुझे उसे पकड़ने की शक्ति नहीं मिली तो मैं फिर कभी पश्चिम की राह पर एक राक्षस नहीं बन पाऊंगा।"

"तुम उसे कैसे पकड़ोगे?" वरिष्ठ राजा ने पूछा।

"हमारे पास पांच खजाने थे," जूनियर राजा ने कहा, "इसलिए दो खोने के बाद भी हमारे पास तीन बचे हैं जिनसे हम उसे पकड़ सकते हैं और पकड़ना ही चाहिए।"

"वे तीन खजाने कौन से हैं?" वरिष्ठ राजा ने पूछा।

"सात सितारा तलवार और केले का पंखा जो मैं अपने साथ रखता हूँ," कनिष्ठ राजा ने उत्तर दिया, "और वह चमकदार सुनहरी डोरी जो कुचले हुए ड्रैगन पर्वत में कुचले हुए ड्रैगन गुफा में हमारी बूढ़ी माँ के घर पर रखी है।"

अब हमें कुछ छोटे शैतानों को भेजकर अपनी माँ को तांग पुजारी के मांस के भोज में आमंत्रित करना चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि वे नवोदित सन को पकड़ने के लिए चमकदार सुनहरी डोरी लेकर आएं।

"हमें किन्हें भेजना चाहिए?" वरिष्ठ राजा ने पूछा।

"उन दोनों की तरह बेकार नहीं," जूनियर किंग ने जवाब दिया, और फिर उसने डेक्सटरस घोस्ट और स्किल्ड बीस्ट को उठने के लिए चिल्लाया।

उन्होंने कहा, "कितनी अच्छी किस्मत है! न तो हमारी पिटाई हुई और न ही हमें गालियां दी गईं—हमें छोड़ दिया गया है।"

"मेरे नियमित सेवकों, माउंटेन टाइगर और ओशन ड्रैगन को बुलाओ," जूनियर किंग ने आदेश दिया। वे दोनों उसके सामने घुटने टेककर बैठ गए और उसने उन्हें निर्देश दिए। "तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा।"

उन्होंने जवाब दिया, "हम सतर्क रहेंगे।"

"और सावधान रहें।"

उन्होंने जवाब दिया, "हम सावधान रहेंगे।"

"क्या आपको हमारी मां के घर का रास्ता पता है?" उसने पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "हाँ, हम करते हैं।"

"तो फिर जितनी जल्दी हो सके जाओ। जब तुम उस बूढ़ी औरत के घर पहुँचो तो उसे बहुत आदरपूर्वक प्रणाम करो, फिर उसे तांग पुजारी के मांस का भोज आमंत्रित करो और उससे कहो कि वह अपने साथ चमकीला सुनहरा धागा लाए ताकि वह नौसिखिए सन को पकड़ सके।"

दोनों राक्षस आज्ञाकारी होकर जल्दी से चले गए, उन्हें इस बात का पता नहीं था कि बंदर ने उनकी हर बात सुन ली थी। उसने अपने पंख फैलाए और उड़ता हुआ पहाड़ी बाघ के पास पहुँच गया और उस पर बैठ गया। लगभग एक मील चलने के बाद वह उन दोनों को मारने ही वाला था कि तभी उसने सोचा, "इन्हें मारना तो कोई मुश्किल काम नहीं है, लेकिन मुझे नहीं पता कि वह बुढ़िया अपना चमकीला सुनहरा धागा कहाँ रखती है। मारने से पहले मुझे उनसे पूछताछ कर लेनी चाहिए।"

वाह, बंदर! वह उन दोनों छोटे शैतानों से दूर उड़ गया और उन्हें सौ कदम आगे जाने दिया। फिर उसने झटके से अपना रूप बदलकर एक दूसरे छोटे शैतान का रूप धारण कर लिया, जिसने लोमड़ी की खाल की टोपी और बाघ की खाल की उल्टी स्कर्ट पहनी हुई थी। वह उनके पीछे भागा और बोला, "एक पल रुकिए, यात्रियों!"

ओशन ड्रैगन ने पीछे मुड़कर पूछा, "तुम कहाँ से हो?"

"मेरे प्यारे भाई," बंदर ने जवाब दिया, "क्या तुम अपने ही घर के सदस्यों को भी नहीं पहचानते?"

"तुम हमारे जैसे नहीं हो," उन छोटे शैतानों ने कहा।

"तुम्हारा क्या मतलब है?" बंदर ने कहा। "एक बार फिर देखो और पता लगाने की कोशिश करो कि क्या तुम मुझे पहचान सकते हो।"

उन्होंने जवाब दिया, "आप अजनबी हैं, और हम पहले कभी नहीं मिले हैं।"

"हाँ, बिल्कुल सही," मंकी ने कहा, "तुम मुझसे कभी नहीं मिले हो। मैं बाहरी कर्मचारियों में से एक हूँ।"

"तो फिर," उन नन्हे शैतानों ने जवाब दिया, "हम आपसे कभी नहीं मिल पाते, महोदय। आप कहाँ जा रहे हैं?"

"महामहिम ने मुझे बताया," बंदर ने कहा, "कि उन्होंने आप दोनों सज्जनों को उस बूढ़ी महिला को तांग पुजारी के मांस के भोज में आमंत्रित करने के लिए भेजा है। आपको उनसे यह कहना था कि वे नवोदित सन को पकड़ने के लिए चमकदार सुनहरी डोरी

साथ लेकर आएं।"
उसे चिंता थी कि तुम दोनों सुस्ती दिखाओगे, बदतमीजी करोगे और सब गड़बड़ कर दोगे, इसलिए उसने मुझे भी तुम्हारे साथ भेज दिया ताकि तुम जल्दी करो।" चूंकि उसे सारी बातें पता थीं, इसलिए उन दोनों शैतानों को ज़रा भी शक नहीं हुआ: उन्हें यकीन हो गया कि बंदर सचमुच उन्हीं में से एक है। वे लगभग तीन मील तक बड़ी तेज़ी से भागे।
"यह तो बहुत तेज़ है," बंदर ने कहा। "हम कितनी दूर आ गए हैं?"
"लगभग पांच मील," उन नन्हे शैतानों ने कहा।
और अभी कितनी दूर जाना बाकी है?
"बस उस काले जंगल की ओर," महासागर ड्रैगन ने इशारा करते हुए कहा। बंदर ने ऊपर देखा तो उसे थोड़ी ही दूर पर घना जंगल दिखाई दिया। उसने सोचा, बूढ़ा राक्षस कहीं आस-पास ही रहता होगा; इसलिए वह रुक गया ताकि छोटे शैतान उससे आगे निकल सकें, फिर उसने अपना डंडा निकाला, उनके पीछे दौड़ा और उनके पैरों पर वार किया।
दुर्भाग्यवश उसने उन्हें इतनी जोर से मारा कि वे दोनों छोटे शैतान चूर-चूर हो गए।
वह रास्ते के किनारे घनी झाड़ियों में छिप गया, अपने बालों में से एक बाल निकाला, उस पर फूँक मारी और बोला, "बदलाव!"
और उसे पर्वतीय बाघ में बदल दिया। उसने स्वयं को महासागरीय अजगर में बदल लिया। फिर दोनों नकली शैतान बूढ़ी औरत को निमंत्रण देने के लिए कुचले हुए अजगर की गुफा की ओर चल पड़े। सचमुच: बहत्तर रूपांतरणों की शक्तियाँ महान हैं;

इन सबमें सबसे महान कला है तात्कालिक रचना की कला।
चार-पाँच छलांगों में ही वह जंगल में पहुँच गया। उसने तब तक खोजबीन की जब तक उसे पत्थर के दो दरवाजे खुले हुए दिखाई नहीं दिए। अंदर घुसने की हिम्मत न करते हुए उसने चिल्लाकर कहा, "दरवाजे खोलो।"
दरवाजे पर बैठी वह छोटी शैतान लड़की इतनी चौंक गई कि उसने एक दरवाजा चौड़ा खोल दिया। "तुम कहाँ से हो?" उसने पूछा।

"हमें फ्लैट-टॉप माउंटेन पर स्थित लोटस फ्लावर गुफा से उस बूढ़ी औरत के लिए निमंत्रण लेकर भेजा गया है," बंदर ने कहा, और उस छोटी शैतान औरत ने उन दोनों को अंदर बुला लिया। जब वह अंदर के दरवाजों पर पहुँचा तो उसने झाँककर देखा और गुफा के बीच में एक बूढ़ी औरत को बैठे हुए पाया। क्या आप जानते हैं कि वह कैसी दिखती थी?

बर्फ जैसे सफेद बालों का नक्शा,
तारा चमक रहा है।
लालिमा लिए, झुर्रियों से भरा चेहरा,
कम दांत, और एक राजसी अंदाज़।
वह पाले के बीच खिले गुलदाउदी के फूल जैसी लग रही थी।
बारिश के बाद पुराने देवदार के पेड़ों के रंग जैसा चेहरा।
उसके सिर पर सफेद रेशमी स्कार्फ लिपटा हुआ था।
और उसके सोने के झुमकों में रत्न जड़े हुए थे।

जब महान ऋषि सन ने उसे देखा तो वह अंदर नहीं गए, बल्कि अपने हाथों से अपना चेहरा ढककर भीतरी द्वार के बाहर रोने लगे। क्या आप जानते हैं कि वह क्यों रो रहे थे? क्या यह इसलिए था क्योंकि वह उससे डरते थे? लेकिन अगर वह डरते भी तो रोने का कोई फायदा नहीं था। इसके अलावा, उन्होंने उनसे उनके खजाने छीन लिए थे और छोटे राक्षसों को मार डाला था, तो उन्हें रोने की क्या जरूरत थी? जब उन्हें नौ कड़ाही में बंद करके आठ-नौ दिनों तक लगातार तेल में तला गया था, तब भी उन्होंने एक आंसू नहीं बहाया था।

तांग पुरोहित के शास्त्रों की खोज में हुए कष्टों के विचार मात्र से ही वे इतने व्याकुल हो गए कि रोते हुए उन्होंने कहा: "मैंने अपनी शक्तियों का प्रयोग करके एक छोटे राक्षस का रूप धारण किया है और इस राक्षसी के लिए निमंत्रण लेकर आया हूँ। उससे बात करते समय सीधा खड़ा रहना ठीक नहीं होगा: मुझे उसके सामने सिर झुकाना होगा। अपने जीवन में मैंने केवल तीन लोगों के सामने सिर झुकाया है: पश्चिमी स्वर्ग में भगवान बुद्ध, दक्षिणी सागर में बोधिसत्व गुआनयिन और गुरु—जब उन्होंने मुझे द्विसीमा पर्वत से मुक्त कराया था, तब मैंने उनके सामने चार बार सिर झुकाया था, और उनके लिए मैं अपने फेफड़ों और जिगर के छह ब्लेड और अपने हृदय के तीन बाल और सात छिद्र घिस दूँगा। लेकिन क्या शास्त्रों की एक प्रति के लिए इस राक्षसी

के सामने अपना सिर पटकना वाकई उचित है? अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो मेरा भेद खुल जाएगा। यह भयानक है। मुझे लगता है कि यह सब केवल इसलिए है क्योंकि गुरु संकट में हैं।" कि मैं इस तरह खुद को अपमानित करूंगा।" चूंकि उसके पास कोई विकल्प नहीं था, इसलिए वह अंदर भागा, घुटनों के बल बैठ गया और घोषणा की कि वह बूढ़ी औरत के सामने सिर झुका रहा है।

अध्याय 34

477

पश्चिम की यात्रा

“उठो, मेरे बच्चे,” उस शैतान औरत ने कहा। बंदर को बहुत खुशी हुई कि उसकी बात कारगर साबित हुई। “तुम कहाँ से आए हो?” उस बूढ़ी शैतान ने पूछा।

"मुझे समतल पर्वत पर स्थित कमल के फूल की गुफा के दो राजाओं के आदेश पर भेजा गया है, महोदया, आपको तांग पुजारी के मांस के भोज में आमंत्रित करने के लिए। वे आपसे यह भी अनुरोध करते हैं कि आप अपना चमकीला सुनहरा धागा साथ लाएँ ताकि आप नौसिखिए सूर्य को वश में कर सकें।" बूढ़ा शैतान सचमुच बहुत प्रसन्न हुआ।

"कितने अच्छे और आज्ञाकारी लड़के हैं," उसने अपनी कुर्सी मंगवाते हुए कहा।

“हे भगवान!” बंदर ने मन ही मन कहा, “सोचो, एक राक्षस को कुर्सी पर बिठाकर ले जाया जा रहा है।” दो राक्षसनियाँ सुगंधित बेंत की बनी कुर्सी लेकर पीछे से आईं। उन्होंने कुर्सी को दरवाज़े के बाहर रख दिया और हरे रंग का पर्दा उठाया। बूढ़ी राक्षसी गुफा से बाहर निकली और कुर्सी पर बैठ गई। कुछ जवान राक्षसनियाँ कंघी, दर्पण, स्टैंड, तौलिए और सुगंध की डिब्बी लेकर उसके पीछे-पीछे आईं।

"तुम सब यहाँ किसलिए आए हो? मैं अपने बेटों से मिलने जा रहा हूँ, और वहाँ मेरी देखभाल करने वालों की कोई कमी नहीं होगी। मुझे तुम लोगों की ज़रूरत नहीं है कि तुम मेरे लिए हड़बड़ी करो और बकबक करो। अंदर जाओ, दरवाज़े बंद करो और इस जगह का ध्यान रखो।"

दो कुर्सी ढोने वालों को छोड़कर बाकी सभी छोटे शैतान सचमुच अंदर चले गए। "तुम दोनों दूतों को क्या कहते हो?" बूढ़ी शैतान औरत ने पूछा।

"उसे माउंटेन टाइगर कहते हैं," बंदर ने तुरंत जवाब दिया, "और मैं ओशन ड्रैगन हूं।"

"तुम दोनों आगे बढ़ो और मेरे लिए रास्ता साफ करो," उस बूढ़ी शैतान औरत ने कहा।

"किस्मत ही खराब है," बंदर ने सोचा। "अभी तक कोई धर्मग्रंथ नहीं मिला, ऊपर से मुझे उसका गुलाम भी बनना पड़ेगा।" मना करने का तो सवाल ही नहीं उठता था, इसलिए उसे आगे-आगे चलना पड़ा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना पड़ा, "कुर्सी उठाओ!" लगभग दो मील चलने के बाद वह एक गहरी खाई के किनारे बैठ गया। जब कुर्सी ढोने वाले उसके पास पहुँचे तो उसने कहा, "थोड़ा आराम क्यों न कर लें? इस भार से तुम्हारे कंधे दुख रहे होंगे।" यह न समझते हुए कि यह एक चाल थी, उन छोटे शैतानों ने कुर्सी नीचे रख दी। उसके पीछे खड़े होकर बंदर ने अपनी छाती से एक बाल निकाला और उसे तिल के बन में बदल दिया और उसे पकड़े हुए ही खाने लगा।
"आप क्या खा रहे हैं, महोदय?" कुर्सी ढोने वाले कुलियों ने पूछा।
“समझाना थोड़ा मुश्किल है,” बंदर ने जवाब दिया। “हम महारानी को आमंत्रित करने के लिए बहुत दूर से आए हैं, लेकिन मुझे खाना नहीं दिया गया है इसलिए मुझे भूख लग रही है। जब मैं अपने साथ लाया हुआ सूखा राशन खा लूँगा, तब हम आगे बढ़ सकते हैं।”
"हमें थोड़ा सा दे दो," कुलियों ने विनती की।
"तो इधर आओ," बंदर ने कहा। "परिवार के भीतर ज्यादा सावधान रहने की जरूरत नहीं है।"
कुछ अनभिज्ञ, छोटे शैतान बंदर के चारों ओर उसके सूखे राशन में से हिस्सा पाने के लिए जमा हो गए, जिस पर उसने अपना डंडा निकाल लिया। एक शैतान के सिर पर वार हुआ और वार रोकने की कोशिश में वह चूर-चूर हो गया; दूसरा, जिसे केवल खरोंच आई थी, दर्द से कराहते हुए बच गया। ये कराहें सुनकर बूढ़ी राक्षसी कुर्सी से अपना सिर बाहर निकालकर देखने लगी। बंदर कुर्सी के सामने कूद गया और अपना डंडा उसके सिर पर दे मारा, जिससे उसकी खोपड़ी में गड्ढा हो गया और खून और दिमाग बाहर निकल आया। उसे कुर्सी से खींचकर अच्छी तरह देखने पर उसने पाया कि वह वास्तव में नौ पूंछ वाली लोमड़ी थी।
“क्रूर दरिंदे,” उसने कहा, “तुम्हें खुद को ‘महामहिम’ कहलाने की क्या ज़रूरत है। अगर तुम ‘महामहिम’ हो तो मुझे सर्वोच्च पूर्वज स्वामी कहकर संबोधित करो।” तब उस शानदार वानर राजा ने उसका चमकीला सुनहरा धागा ढूंढ लिया और उसे अपनी आस्तीन में छुपाते हुए गर्व से बोला, “उन नीच राक्षसों के पास भले ही जादुई शक्तियां हों, अध्याय 34”

लेकिन उनके खजाने में से तीन अब मेरे हैं।" फिर उसने दो और बाल निकाले जिन्हें उसने माउंटेन टाइगर और ओशन ड्रैगन के डुप्लिकेट में बदल दिया, साथ ही दो और बालों को उसने कुर्सी ढोने वालों में बदल दिया। फिर उसने खुद को उस बूढ़ी औरत जैसा रूप दिया, कुर्सी पर बैठा और उसे उसी रास्ते से वापस ले जाने का आदेश दिया। कुछ ही देर में वे कमल के फूल की गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँच गए और दो बालनुमा कुम्हार दरवाज़े खोलने के लिए चिल्लाने लगे। दरवाज़ों पर बैठे छोटे शैतान ने पूछा कि क्या पर्वत बाघ और सागर अजगर वापस आ गए हैं।

"हां," बालों ने उत्तर दिया।

"क्या आपने महारानी को आने के लिए राजी किया?"

"क्या तुम उसे कुर्सी पर नहीं देख सकते?" बालों ने इशारा करते हुए पूछा।

"एक पल रुकिए, मैं अंदर जाकर सूचना देती हूँ," उस नन्हे शैतान ने कहा और अंदर जाकर घोषणा की, "महाराज, महारानी आ गई हैं।" यह सुनकर दोनों दानव राजाओं ने उनके स्वागत के लिए अगरबत्तियों की मेज सजा दी। यह सब सुनकर बंदर मन ही मन प्रसन्न हुआ।

"कितनी अच्छी किस्मत है," उसने सोचा। "अब मेरी बारी है इसे शान से करने की। जब मैंने खुद को एक छोटी शैतान औरत में बदला था, तब मुझे उस बुढ़िया को निमंत्रण देते हुए सिर झुकाना पड़ा था। अब जब मैंने खुद को उसी औरत में बदल लिया है, तो मैं उनकी माँ हूँ, और उन्हें मेरे सामने चार बार सिर झुकाना होगा। इसका कोई खास मतलब नहीं है, लेकिन कम से कम मैं दो बार सिर झुकाकर प्रणाम तो कर लूँगी।"

महान संत अपनी कुर्सी से उठे, अपने कपड़े समेटे और अपने शरीर पर चारों बाल फिर से उगा लिए। दरवाज़े पर बैठा छोटा शैतान खाली कुर्सी अंदर ले गया, और बंदर उसके पीछे धीरे-धीरे चलने लगा, बूढ़ी शैतान औरत की बनावटी अदाओं की नकल करते हुए। जैसे ही वह अंदर गया, छोटे-बड़े सभी शैतानों ने घुटने टेककर उसका अभिवादन किया। ढोल और बाँसुरी की संगति बजने लगी और बोशान के धूपदानों से अगरबत्ती का धुआँ उठने लगा। मुख्य हॉल में पहुँचकर वह दक्षिण की ओर मुख करके राजसी ढंग से बैठ गया, जबकि दोनों राक्षस राजाओं ने उसे प्रणाम करते हुए कहा, "माँ,

आपके बच्चे आपको प्रणाम करते हैं।"
"उठो, मेरे बच्चों," बंदर ने कहा।
पिग, जो अभी भी छत की बीम से लटका हुआ था, जोर-जोर से हंसने लगा। "तुम तो बड़े ही शानदार हो, भाई," फ्रायर सैंड ने कहा।
फोन कटने के बाद हंसना।
"मुझे पता है मैं क्या कर रहा हूँ," पिग ने कहा।
"और तुम क्या कर रहे हो?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
मुझे डर था कि जब बुढ़िया आएगी तो हम पककर खा लिए जाएँगे। लेकिन यह वो नहीं है: यह तो वही पुरानी कहानी है।
"कौन सी पुरानी कहानी?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"घोड़ों का रक्षक यहाँ है," सुअर ने कहा।
"तुम्हें कैसे पता चला?" साधु सैंड ने पूछा। "जब वह आगे झुकी और बोली, 'उठो, मेरे बच्चों,' तो उसके पीछे एक बंदर की पूंछ निकली हुई थी। मैं तुमसे बेहतर देख सकता हूँ क्योंकि मैं ज़्यादा ऊँचाई पर लटका हुआ हूँ।"
"बोलना बंद करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "चलो सुनते हैं कि वे क्या कहते हैं।"
"हां, हां," सुअर ने कहा।
अध्याय 34
479
पश्चिम की यात्रा
"अच्छा, लड़कों, तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है?" बंदर ने दोनों राक्षस राजाओं के बीच बैठते हुए पूछा।
उन्होंने उत्तर दिया, "माँ, हम कई दिनों से आपके प्रति बहुत असभ्य रहे हैं और आपके प्रति अपना कर्तव्य पूरा नहीं किया है।"
लेकिन आज सुबह हमने पूरब से तांग पुजारी को पकड़ लिया है, और हम उसे अकेले खाने के बारे में सोच भी नहीं सकते। इसलिए हमने आपको आमंत्रित किया है ताकि हम उसे आपके सामने जीवित प्रस्तुत कर सकें। हम उसे पकाकर आपको खाने के लिए देंगे: वह आपकी आयु बढ़ाएगा।
"मैं तांग पुजारी का मांस नहीं खाऊंगा, प्यारे बच्चों," बंदर ने उत्तर दिया, "लेकिन लोग कहते हैं कि सूअर के कान स्वादिष्ट होते हैं।"

क्या आप इन्हें काटकर तैयार करवा सकते हैं? ये किसी पेय के साथ बहुत अच्छे लगेंगे।

यह सुनकर सुअर घबराकर बोला, "तुम पर लानत हो! तो तुम मेरे कान काटने आए हो? मैं जो कहने वाला हूँ, वह सुनना अच्छा नहीं लगेगा।"

अरे बाप रे! उस मूर्ख की बातों से भेद खुल गया और बंदर राजा का राज खुल गया। तभी छोटे-छोटे शैतानों, पर्वत रक्षकों और द्वारपालों की भीड़ उमड़ पड़ी और खबर देने लगी, "महाराज, आपदा! नौसिखिया सूर्य ने बूढ़ी औरत को मार डाला है और उसका वेश धारण कर लिया है।"

जैसे ही दानव राजाओं ने यह सुना, बहस का समय ही नहीं था: सात सितारा तलवार निकाली गई और उसने सीधे बंदर के चेहरे पर वार किया। तेजस्वी महान ऋषि पलक झपकते ही गायब हो गए: गुफा लाल रोशनी से भर गई और वे ओझल हो गए। ऐसा करतब वाकई मजेदार था: वे खुद को ठोस रूप में बदल सकते थे या भाप बनकर विलीन हो सकते थे। वरिष्ठ दानव राजा भय से कांप रहा था, जबकि बाकी सभी राक्षस अपनी उंगलियां पीटते और सिर हिलाते रहे।

वरिष्ठ राजा ने कहा, "भाई, चलो तांग पुजारी, साधु सैंड, पिग, सफेद घोड़े और उनके सभी सामान को नौसिखिए सन को वापस दे दें और हमारे बीच का झगड़ा समाप्त कर दें।"

"ये कैसी बात है," छोटे राजा ने उत्तर दिया। "भगवान ही जानते हैं कि उन सभी भिक्षुओं को पकड़ने की हमारी योजना में हमने कितनी मेहनत की। लेकिन अब तुम नौसिखिए सन के अद्भुत रूपांतरणों से इतने डर गए हो कि तुम उसे सब कुछ वापस देना चाहते हो। तुम सचमुच कायर हो। कोई भी आदमी ऐसा नहीं करेगा। बैठ जाओ और इतना डरना बंद करो। मैंने उसकी अपार जादुई शक्तियों के बारे में सुना है, लेकिन मैंने कभी उसके खिलाफ अपनी शक्ति का परीक्षण नहीं किया, हालांकि हम मिले थे। मेरा कवच लाओ। मैं उसे ढूंढूंगा और उससे तीन दौर की लड़ाई लड़ूंगा। अगर वह मुझे उन तीन दौरों में नहीं हरा सका तो तांग पुजारी हमारा होगा; और अगर मैं उसे नहीं हरा सका तो हम उसे तांग पुजारी वापस दे देंगे।"

“तुम सही कह रहे हो, भाई,” बूढ़े दानव ने कहा और फिर कवच लाने का आदेश दिया। ऐसा ही किया गया।

जब लघु दानव राजा पूरी तरह से सुसज्जित हो गया, तो उसने अपने हाथ में तलवार

ली और पुकारते हुए बाहर चला गया,
"नवदीश सूर्य, तुम कहाँ चले गए?" महान ऋषि, जो अब बादलों में थे, अपना नाम पुकारे जाने पर तुरंत पीछे मुड़े और देखा कि यह कनिष्ठ दानव राजा था। उसका पहनावा कुछ इस प्रकार था:
उसके सिर पर लगा फीनिक्स-हेलमेट सर्दियों की बर्फ को भी मात दे रहा था;
उसके युद्ध कवच से इस्पात की चमक निकल रही थी।
उसकी कमर पर बंधी बेल्ट अजगर की नसों से बुनी गई थी;
मुलायम चमड़े के बूटों में बेर के फूल जैसी सिलवटें थीं।

एक ऐसा चेहरा जो मानो गुआंकौ के सच्चे स्वामी का साक्षात रूप हो।
एक ऐसा चेहरा जो सर्वशक्तिमान चमत्कारिक ईश्वर से बिल्कुल भिन्न नहीं था।
उसने अपनी मुट्ठी में सात सितारा तलवार लहराई;
उसका क्रोध इतना प्रखर था कि वह बादलों तक पहुँच गया।
"हे नौसिखिए सूर्य," कनिष्ठ राजा दहाड़ा, "हमारे खजाने और हमारी माता को वापस कर दो, और हम तुम्हारे तांग पुजारी को शास्त्र लाने के लिए मुक्त कर देंगे।" महान ऋषि स्वयं को उसे अपशब्द कहने से नहीं रोक सके:
"अरे घिनौने शैतान, तुम्हें पता नहीं कि मैं किससे मुकाबला करने जा रही हूँ। मेरे स्वामी, मेरे भाइयों, सफेद घोड़े और हमारे सामान को मुझे वापस दे दो, और पश्चिम की यात्रा के लिए कुछ यात्रा खर्च भी दे दो। अगर तुम्हारे मुँह से ज़रा सा भी 'ना' निकला तो बेहतर होगा कि तुम अपनी रस्सी खुद बना लो ताकि मुझे यह झंझट न उठाना पड़े।"
यह सुनकर, लघु दानव राजा ने एक बादल को ऊपर की ओर भेजा और हवा में उछलकर अपनी तलवार घुमाते हुए बंदर को काट डाला, जिसने अपने लोहे के डंडे से उसके चेहरे पर वार किया। आकाश में उनके बीच का युद्ध शानदार था:
बराबरी के शतरंज खिलाड़ी,
एक सेनापति का मुकाबला एक योग्य शत्रु से।
एक कुशल शतरंज खिलाड़ी को अपनी क्षमता का प्रदर्शन करना होगा;

एक सेनापति केवल एक योग्य शत्रु के विरुद्ध ही गौरव प्राप्त कर सकता है।
जब ये दिव्य योद्धा आपस में भिड़े
यह दक्षिणी पहाड़ियों में बाघों की लड़ाई जैसा था।
या फिर उत्तरी समुद्रों में संघर्ष करते हुए ड्रैगन।
जहां ड्रैगन संघर्ष करते हैं
उनकी खाल चमकती है।
जब बाघ लड़ते हैं
पंजे और दांत तबाही मचाते हैं।
उनके पंजे और दांत तबाही मचाते हैं, चांदी के हुक की तरह गिरते हैं;
चमकती हुई ये परतें लोहे की पत्तियों जैसी लगती हैं।
जो मुड़ता और घूमता है,

हजारों तरह के युद्धाभ्यास करते हुए;
दूसरा इधर-उधर हिलता रहता है,
एक पल के लिए भी आराम नहीं।
सोने की पट्टी वाली लाठी
खोपड़ी से कुछ इंच की दूरी तक आता है;
सात-सितारा तलवार
इसका उद्देश्य हृदय को झकझोर देना है।
वह तो तारों में भी भय पैदा कर देता है;
दूसरे का क्रोध बिजली से भी अधिक भयानक है।
दोनों ने तीस दौर तक लड़ाई लड़ी, लेकिन कोई भी जीत नहीं पाया। बंदर खुश था, हालांकि उसने यह दिखाया नहीं। "तो यह दुष्ट शैतान मेरे लोहे के डंडे का मुकाबला कर सकता है। चूंकि मैंने पहले ही उसके तीन खजाने ले लिए हैं, इसलिए इस तरह उससे लड़कर मैं अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ। उसे लौकी या फूलदान में डाल देना कहीं बेहतर होता। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं," उसने आगे सोचा। "जैसा कि कहावत है, 'माल उसके मालिक के अधिकार में होता है।' अगर वे मेरी बात नहीं मानेंगे, तो सब

कुछ बर्बाद हो जाएगा। मुझे उसे चमकदार सुनहरी डोरी से बांधना होगा।"
एक हाथ से अपनी गदा से जादुई तलवार को रोकते हुए, महान ऋषि ने दूसरे हाथ में रस्सी उठाई और उसे हवा में लहराते हुए राक्षस राजा को फंदे में फंसा लिया। अब राजा के पास रस्सी कसने और ढीली करने का मंत्र था। जब वह दूसरों को फंदे में फंसाता, तो वह कसने का मंत्र बोलता, जिससे कोई भी मुक्त नहीं हो पाता, और जब वह अपने ही लोगों को फंदे में फंसाता, तो वह ढीला करने का मंत्र बोलता, जिससे किसी को चोट नहीं लगती।
रस्सी को अपने परिवार के खजाने के रूप में पहचानते हुए, उन्होंने उसे ढीला करने का मंत्र पढ़ा, जिससे फंदा खुल गया। वे मुक्त हो गए और रस्सी को बंदर की ओर फेंक दिया, जिससे वह फंस गया। इससे पहले कि महान ऋषि किसी जादू का प्रयोग करके बच पाते, राक्षस ने उसे कसने का मंत्र पढ़ दिया। बंदर जकड़ा हुआ था, खुद को छुड़ाने में असमर्थ; उसकी गर्दन पर सोने की अंगूठी से वह बुरी तरह जकड़ा हुआ था। राक्षस ने रस्सी को झटका दिया और उसे अपनी ओर खींच लिया, फिर जादुई तलवार से उसके सिर पर सात-आठ वार किए। इससे बंदर के सिर की त्वचा पर जरा भी लालिमा नहीं आई।
“अगर तेरा दिमाग इतना अकड़ा हुआ है, तो मैं तुझे और नहीं काटूंगा,” राक्षस ने कहा। “मैं तुझे बाद में मारने के लिए वापस ले जाऊंगा। मुझे मेरे दोनों खजाने तुरंत वापस दे दे।”
"मेरे पास तुम्हारा कोई खजाना नहीं है," बंदर ने जवाब दिया, "तो मुझसे क्यों पूछ रहे हो?" राक्षस राजा ने उसकी बहुत सावधानी से तलाशी ली, लौकी और कलश बरामद किया, और उसे रस्सी से खींचकर वापस गुफा में ले गया।
"भाई, मैंने उसे पकड़ लिया है," उसने घोषणा की।
"कौन?" वरिष्ठ राजा ने पूछा।
"सन, नौसिखिए," कनिष्ठ राजा ने उत्तर दिया। "आओ और देखो।"
जब वरिष्ठ राजा ने देखा कि वह बंदर है, तो उनके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। "यह वही है," उन्होंने कहा, "यह वही है।"
उसे एक खंभे से बहुत लंबी रस्सी से बांध दो और हम उसके साथ खूब मज़ा करेंगे।" और सचमुच बंदर को बांध दिया गया (अध्याय 34)।

इसी बीच दोनों दानव राजा पानी पीने के लिए पीछे वाले हॉल में चले गए।
खंभे के नीचे बंदर की बेचैनी देखकर सुअर परेशान हो गया। अपनी बीम से लटकते हुए उस मूर्ख ने बंदर का मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "तो तुम वो कान नहीं खा पाए।"
बंदर ने कहा, "मूर्ख, क्या तुम्हें वहां लटकना अच्छा लगता है? अगर मैं बाहर निकल पाया तो मैं गारंटी देता हूं कि मैं तुम सबको बचा लूंगा।"
"तुम बेशर्म हो," सुअर ने कहा, "बिल्कुल बेशर्म। तुम खुद से नहीं बच सकते और दूसरों को बचाना चाहते हो। बस बहुत हो गया। चलो हम सब मालिक के साथ मर जाते हैं, तब कम से कम हम पाताल लोक में उससे रास्ता तो मांग सकेंगे।"
"ऐसी बकवास करना बंद करो," बंदर ने कहा, "और देखो मैं कैसे बाहर निकलता हूँ।"
"कैसे?" सुअर ने पूछा। महान ऋषि ने सुअर को बताया कि वह उन दो राक्षस राजाओं पर कड़ी नज़र रख रहे थे, जो अंदर दावत कर रहे थे और छोटे राक्षस उनके लिए खाने के बर्तन और शराब के घड़े ला रहे थे। वे दोनों इधर-उधर लड़खड़ा रहे थे और सुरक्षा व्यवस्था बिल्कुल ढीली थी।
सामने किसी को न देखकर बंदर ने अपनी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए अपना डंडा बाहर निकाला। उसने उस पर फूँक मारी और "बदलो!" कहा, जिससे वह शुद्ध लोहे की चक्की में बदल गया। उसने अपनी गर्दन पर बंधी अंगूठी को चार-पाँच बार घिसकर तोड़ दिया, फिर चक्की हटा दी, खुद को आज़ाद किया, एक बाल निकाला, उसकी हूबहू प्रतिकृति बनाई और उसे वहीं बाँधकर छोड़ दिया। फिर पलक झपकते ही वह एक छोटे शैतान में बदल गया और उसके बगल में खड़ा हो गया।
छत के किनारे खड़े सुअर ने चिल्लाना शुरू किया, "यह बहुत बुरा है, बहुत बुरा। जो बंधा हुआ है वह नकली है। असली वाला तो यहाँ लटका हुआ है।"
वरिष्ठ दानव राजा ने अपना शराब का प्याला नीचे रखकर पूछा, "सूअर क्यों चिल्ला रहा है?" बंदर, जो अब एक छोटे शैतान के वेश में था, आगे आकर बोला, "सूअर नौसिखिए सन को अपना रूप बदलकर भाग जाने के लिए उकसा रहा था। सन ने ऐसा करने से इनकार कर दिया, इसलिए सूअर चिल्ला रहा है।"
"किसने कहा था कि सुअर अच्छा व्यवहार करता है?" छोटे राजा ने पूछा। "अब हमें पता चल गया है कि वह कितना चालाक है। उसकी थूथन पर बीस बार मारना पड़ेगा।"
जब बंदर उसे मारने के लिए छड़ी लेकर आया, तो सुअर ने कहा, "मुझे ज़ोर से मत

मारो, क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया तो मैं फिर से चिल्लाना शुरू कर दूंगा। मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो।"
"मैं ये सारे रूप परिवर्तन सिर्फ तुम्हारे लिए कर रहा हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "तुमने ये राज़ क्यों खोल दिया? गुफा में मौजूद किसी भी राक्षस को पता नहीं था कि मैं कौन हूँ। ये तो सिर्फ तुम्हें ही पता लगाना था।"
"तुमने अपना चेहरा तो बदल लिया होगा," सुअर ने जवाब दिया, "लेकिन तुम अपनी पीठ नहीं बदल सकते। तुम्हारी पीठ पर दोनों नितंबों पर लाल रंग का धब्बा है, है ना? इसी से मुझे पता चला कि तुम ही हो।" बंदर अंदर के कमरों में गया, रसोई में घुस गया, एक बर्तन के नीचे रगड़ा, कालिख को अपने दोनों नितंबों पर मल लिया और गुफा के आगे वाले हिस्से में वापस आ गया।
"वह बंदर कहाँ-कहाँ मस्ती कर रहा था?" सूअर ने उसे देखकर उसका मज़ाक उड़ाया। "उसका पिछवाड़ा तो पूरा काला हो गया है।"
बंदर अभी भी उनके सामने खड़ा था, उनके खजाने चुराने की कोशिश कर रहा था। अत्यंत बुद्धिमान होने के कारण वह मुख्य हॉल में गया, बूढ़े राक्षस का पैर खींचा और बोला, "महाराज, नौसिखिया सूर्य खंभे से बंधा हुआ है और सुनहरी रस्सी को घिसने की कोशिश कर रहा है। बेहतर होगा कि इसे मोटी रस्सी से बदल दिया जाए।"
अध्याय 34
483
पश्चिम की यात्रा
"तुम सही हो," वरिष्ठ दानव राजा ने कहा और अपनी कमर पर बंधी शेर की खाल की बेल्ट उतारकर बंदर को दे दी। बंदर ने उसी बेल्ट से नकली बंदर को बांध दिया। फिर उसने सुनहरी रस्सी को धीरे-धीरे अपनी आस्तीन में समेटा, उस पर एक बाल फूँका और उसे चमकदार सुनहरी डोरी की प्रतिकृति में बदल दिया। उसने आदरपूर्वक दोनों हाथों से वह डोरी दानव को लौटा दी। दानव शराब में इतना मग्न था कि उसने ध्यान से देखा ही नहीं और डोरी स्वीकार कर ली। इस प्रकार महान ऋषि ने अपनी सूझबूझ से एक बाल को चमकदार सुनहरी डोरी में बदल दिया।
अब जब उसे यह खजाना मिल गया था, तो वह जितनी तेजी से हो सकता था गुफा से बाहर भागा, अपने असली रूप में वापस आया और चिल्लाया, "तुम शैतान हो।"
"तुम कौन हो, इस तरह चिल्ला रहे हो?" दरवाजों पर खड़े शैतानों ने पूछा।

"तुरंत अंदर जाओ और अपने निकम्मे दानव राजाओं को बता दो कि नवोदित सूर्य यहाँ आ गया है।" जब नन्हे शैतानों ने यह संदेश दिया तो वरिष्ठ राजा बहुत चौंक गया।
"हमने नौसिखिया सन को पकड़ लिया है, तो फिर दूसरा नौसिखिया सन कैसे हो सकता है?"
"उससे डरने की कोई बात नहीं है," छोटे राजा ने कहा। "हमें अपना सारा खजाना वापस मिल गया है। मैं लौकी लाकर उसे उसमें डाल देता हूँ।"
"भाई, सावधान रहना," वरिष्ठ राजा ने कहा।
छोटा राजा लौकी लेकर बाहर गया और उसने देखा कि कोई नौसिखिए सन जैसा ही है, बस थोड़ा छोटा है। उसने पूछा, "तुम कहाँ से हो?"
"मैं सन द नोविस का भाई हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "मैंने सुना है कि आपने उसे पकड़ लिया है, इसलिए मैं आपसे हिसाब-किताब करने आया हूँ।"
"हाँ, मैंने उसे पकड़ लिया है," छोटे दानव राजा ने कहा। "वह गुफा में बंधा हुआ है। चूंकि तुम यहाँ हो, तो तुम लड़ाई चाहते होगे, और मैं तुमसे तलवारबाजी करने को तैयार हूँ। लेकिन क्या तुममें हिम्मत है कि अगर मैं तुम्हारा नाम पुकारूँ तो तुम जवाब दे सको?"
बंदर ने कहा, "अगर तुम मेरा नाम हजार बार भी पुकारोगे, तो मैं दस हजार बार जवाब दूंगा।"
राक्षस अपने खजाने के साथ हवा में उछल पड़ा, जिसे उसने उल्टा पकड़ रखा था और चिल्लाया, "नौसिखिया सूर्य।"
बंदर ने जवाब देने की हिम्मत नहीं की।
"अगर मैंने जवाब दिया," उसने सोचा, "तो वह मुझे अंदर ले जाएगा।"
"तुम मुझे जवाब क्यों नहीं देते?" राक्षस ने पूछा।
"मुझे आपकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही," बंदर ने जवाब दिया। "मैं थोड़ा बहरा हूँ। ज़ोर से चिल्लाओ।"
"नौसिखिया सूर्य," राक्षस फिर चिल्लाया। नीचे बंदर सोच-विचार करते हुए अपनी उंगलियां चटका रहा था: "मेरा असली नाम नौसिखिया सूर्य है। नौसिखिया सूर्य तो बस एक मनगढ़ंत नाम है। अपने असली नाम से तो मुझे लौकी में डाला जा सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि मनगढ़ंत नाम से ऐसा नहीं हो सकता।" अब और संयम न रख पाने के कारण उसने इस बार जवाब दिया। हवा के एक ज़ोरदार झोंके के साथ

वह लौकी के अंदर खिंच गया और उस पर लेबल लगा दिया गया। संयोगवश, उस खजाने के लिए नाम असली हो या नकली, कोई फर्क नहीं पड़ता था: कोई भी जवाब आपको अंदर डालने के लिए काफी था।

महान ऋषि ने लौकी के अंदर घोर अंधेरा पाया। जब उन्होंने अपना सिर उठाने की कोशिश की तो वे उसे बिल्कुल भी हिला नहीं सके, क्योंकि वे उसमें इतने कसकर फंसे हुए थे। अब उन्हें बहुत चिंता होने लगी। "अध्याय 34 में मुझे मिले दो छोटे शैतान..."

"पहाड़ ने मुझे बताया था कि लौकी या कलश में रखे जाने पर साढ़े तीन घंटे में मवाद बन जाता है। शायद मेरे साथ भी ऐसा ही होगा।" फिर उसके मन में एक और विचार आया: "कोई बात नहीं। मैं मवाद नहीं बनूंगा। जब मैंने पाँच सौ साल पहले स्वर्ग के महल में उत्पात मचाया था, तब भगवान लाओ ज़ी ने मुझे अपनी अष्टत्रिकोणीय भट्टी में उनतालीस दिनों तक जलाया था, और इससे मुझे सोने का हृदय और जिगर, चाँदी के फेफड़े, पीतल का सिर, लोहे की पीठ, अग्नि जैसी आँखें और सुनहरी पुतलियाँ मिलीं। साढ़े तीन घंटे में मेरा मवाद बनना नामुमकिन है। मैं उन्हें मुझे अंदर ले जाने देता हूँ और देखता हूँ कि वे क्या करते हैं।"

बंदर को अंदर ले जाते हुए, छोटे दानव राजा ने कहा, "मैंने उसे पकड़ लिया है, भाई।"

"कौन?" वरिष्ठ राजा ने पूछा।

"मैंने नौसिखिए सूर्य को अपने लौकी में पैक कर रखा है," कनिष्ठ राजा ने उत्तर दिया।

“बैठ जाओ, प्यारे भाई,” वरिष्ठ राजा ने कहा, “और हिलना मत। हमें लौकी को तब तक हिलाना होगा जब तक कि हमें उसके अंदर छप-छप की आवाज़ न सुनाई दे, उसके बाद ही हम लेबल हटाएँगे।” यह सुनकर बंदर सोचने लगा, “वे मेरे शरीर को तब तक कैसे हिलाएँगे जब तक कि उन्हें छप-छप की आवाज़ न सुनाई दे? जब तक मैं पेशाब न कर दूँ, तब तक उन्हें कुछ सुनाई नहीं देगा। मैं पेशाब कर लेता हूँ, फिर अगर वे मुझे हिलाएँगे और मुझे छप-छप की आवाज़ सुनाई देगी, तो वे लेबल और ढक्कन ज़रूर हटा देंगे, और मैं यहाँ से निकल जाऊँगा। नहीं, यह ठीक नहीं है। पेशाब करना ठीक लग सकता है, लेकिन इससे मेरा कुर्ता गंदा हो जाएगा।”

जब वह लौकी हिलाएगा, तो मेरे मुंह में इतनी लार भरी होगी कि मैं उसे शोर मचाते

हुए मुंह खोलवा सकूंगा। फिर मैं वहां से निकल जाऊंगा।" महान ऋषि तैयार हो गए, लेकिन राक्षस अपनी शराब के लिए इतने प्यासे थे कि वे लौकी हिलाने की हिम्मत नहीं कर रहे थे। इसलिए उन्होंने उन्हें लौकी हिलाने के लिए उकसाने का एक तरीका सोचा।

"हे भगवान!" वह चिल्लाया, "मेरी उंगलियों के जोड़ मवाद से भर गए हैं।" लेकिन राक्षसों ने फिर भी उसे नहीं हिलाया। फिर वह चिल्लाया, "माँ, मेरी कमर तो अब गायब ही हो गई है।"

इस पर वरिष्ठ दानव राजा ने कहा, "अगर उसका शरीर कमर तक मवाद से भर गया है, तो वह खत्म हो चुका है। लेबल हटाकर हमें देखने दीजिए।"

जब महान ऋषि ने यह सुना, तो उन्होंने एक और बाल नोचकर उसे रूप बदलने का आदेश दिया और उसे अपने शरीर के आधे हिस्से में बदल दिया, जिसे उन्होंने लौकी के तल में छोड़ दिया। उन्होंने स्वयं को एक छोटे से कीड़े में बदल लिया जो लौकी के मुख के पास बैठा था। जैसे ही छोटे दानव राजा ने कागज़ का ढक्कन हटाया, वह उड़ गया, लुढ़का और सागर ड्रैगन में बदल गया, वही छोटा शैतान जो बूढ़ी औरत को निमंत्रण लेकर गया था। इस रूप में वह रास्ते के किनारे खड़ा रहा, जबकि वरिष्ठ राजा ने लौकी का ढक्कन हटाया, अपनी गर्दन ऊपर उठाई और देखा कि आधा शरीर अभी भी हिल रहा है। यह न समझते हुए कि यह नकली है, वह घबराकर चिल्लाया, "इसे फिर से बंद करो, भाई, इसे बंद करो।"

वह अभी तक सड़ा नहीं है।" छोटे राजा ने ढक्कन वापस लगा दिया। महान ऋषि इस बात से मन ही मन प्रसन्न हुए कि उन्हें यह पता नहीं था कि वह वास्तव में कहाँ हैं।

वरिष्ठ दानव राजा ने लौकी ली, एक प्याले को शराब से लबालब भर दिया और दोनों हाथों से कनिष्ठ राजा को देते हुए कहा, "कृपया मुझसे यह पेय स्वीकार करें।"

"बड़े भाई," छोटे राजा ने उत्तर दिया, "मैंने बहुत पी लिया है। मैं और नहीं पी सकता।"

इस पर वरिष्ठ राजा ने कहा, "तांग पुजारी, सुअर और साधु सैंड को पकड़ना कोई बड़ी बात नहीं थी; लेकिन मैं तुम्हें तुम्हारी उपलब्धि पर बधाई देने के लिए कुछ पेय पदार्थ अर्पित करना चाहता हूँ, क्योंकि तुमने नौसिखिया सूर्य को बाँधकर उसे अपने लौकी में डाल दिया।" अपने बड़े भाई के इतने सम्मान और आदर को देखते हुए, कनिष्ठ राजा को प्याला स्वीकार करना पड़ा। लेकिन वह अभी भी जादुई लौकी पकड़े हुए था, और एक हाथ से प्याला लेना असभ्यता होती। इसलिए उसने लौकी महासागर ड्रैगन को दे

दी ताकि वह दोनों हाथों से प्याला ग्रहण कर सके, इस बात से अनभिज्ञ कि महासागर ड्रैगन भेस में बंदर था। बस देखिए, बंदर कितने आदरपूर्वक लौकी पकड़े हुए उपस्थित है। जब कनिष्ठ राजा ने पेय पी लिया, तो वह भी शिष्टाचार का बदला चुकाना चाहता था।

अध्याय 34

485

पश्चिम की यात्रा

“कोई ज़रूरत नहीं,” वरिष्ठ राजा ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ एक पी लूँगा।” दोनों ही बहुत विनम्रता दिखा रहे थे। बंदर ने लौकी पकड़ी और उन दोनों को देखता रहा, क्योंकि वे एक-दूसरे को कितनी बार पेय पिला रहे थे, इसका हिसाब ही भूल गए थे। उसने लौकी को अपनी आस्तीन में छिपा लिया, उसमें से एक बाल निकाला और उसे हूबहू वैसी ही लौकी में बदल दिया जैसी उसने राजाओं को भेंट की थी। एक-दूसरे को इतने सारे पेय पिलाने के बाद दोनों राजाओं ने उसकी प्रामाणिकता की जाँच नहीं की, बल्कि अपना खजाना लिया, अपनी-अपनी जगह पर गए, बैठ गए और पीना जारी रखा। महान ऋषि बच निकले। वे खजाने पर कब्जा करने से बहुत प्रसन्न थे।

"इन राक्षस राजाओं की जादुई शक्तियों के बावजूद, यह लौकी अब मेरी है," उसने सोचा।

अगर आपको नहीं पता कि अपने स्वामी को बचाने और राक्षसों को नष्ट करने के लिए उसे क्या करना पड़ा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 35

असामंजस्य की शक्ति सच्चे स्वरूप को दबा देती है।

द माइंड-एप ने खजाने जीते और राक्षसों को हराया

वास्तविक स्वरूप स्पष्ट है; मार्ग स्वयं को स्पष्ट करता है;

एक ही बार में कोई जाल से बाहर कूद जाता है।

रूपांतरणों को सीखना वास्तव में बहुत कठिन है;

अमर होना कोई साधारण बात नहीं है।

भाग्य के पहिये के घूमने के साथ ही पवित्रता अपवित्रता में और अपवित्रता पवित्रता में परिवर्तित हो जाती है:

कल्पों को पार करके स्वतंत्र रूप से यात्रा करें।

अरबों वर्षों तक अपनी इच्छा से विचरण करो,
शून्य में निरंतर चमकता हुआ एक पवित्र प्रकाश का बिंदु।
यह कविता महान ऋषि की अद्भुत शक्तियों का सटीक लेकिन अप्रत्यक्ष वर्णन है। अब जब उन्होंने राक्षसों का खजाना जीत लिया था और उसे अपनी आस्तीन में छुपा लिया था, तो उन्होंने प्रसन्नता से सोचा, "उस शापित राक्षस ने मुझे पकड़ने के लिए बहुत कष्ट उठाए, लेकिन यह तो मानो पानी से चाँद निकालने जैसा था। पर तुम्हें पकड़ने की कोशिश करना तो आग पर बर्फ पिघलाने जैसा होगा।"
अपने चारों ओर लौकी को छुपाते हुए वह चुपके से बाहर निकला, अपने असली रूप में लौट आया और पूरी ताकत से चिल्लाया, "दरवाजा खोलो, तुम शैतानो।"
"तुम खुद को क्या समझते हो, इस तरह चिल्ला रहे हो?" वहां मौजूद शैतानों ने पूछा।
अध्याय 35
486
पश्चिम की यात्रा
"अपने उन दुष्ट दानव राजाओं को तुरंत बता दो कि नौसिखिया सूर्य यहाँ आ गया है," उसने उत्तर दिया।
राक्षस अंदर आकर सूचना देने लगे, "महाराजों, दरवाजे पर सूर्य नाम का कोई नौसिखिया है।" वरिष्ठ राजा चौंक गए।
"यह तो बहुत बुरा हुआ, भाई," उसने कहा। "हमने तो उनके सारे घोंसले को ही छेड़ दिया है। नौसिखिया सूर्य चकाचौंध भरी सुनहरी डोरी से बंधा हुआ है, और नौसिखिया सूर्य लौकी के अंदर है, तो फिर नौसिखिया सूर्य कैसे हो सकता है?"
वे सब भाई ही होंगे और सब आ गए हैं।"
"चिंता मत करो, भाई," छोटे राजा ने उत्तर दिया। "मैं अपने लौकी में हज़ार लोगों को समा सकता हूँ, और अभी तो मेरे अंदर केवल नौसिखिया सूर्य ही है। नौसिखिया सूर्य या किसी और से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं बाहर जाकर देखूंगा और उसे भी अंदर डाल दूंगा।"
"सावधान रहना," वरिष्ठ दानव राजा ने कहा।
देखें कि जूनियर किंग पिछली बार की तरह ही वीर और प्रभावशाली ढंग से अपने लौकी के साथ दरवाजे से बाहर निकलता है।
"तुम कहाँ से हो?" उसने अपनी पूरी आवाज़ में चिल्लाते हुए कहा, "और तुम्हारी

हिम्मत कैसे हुई यहाँ चिल्लाने और दहाड़ने की?"
"क्या तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ?" बंदर ने कहा।
"मेरा घर फूलों और फलों के पर्वत पर है;
हम लंबे समय से वाटर कर्टेन गुफा में रह रहे हैं।
स्वर्ग में उत्पात मचाने के लिए
मैंने युगों तक युद्ध और संघर्ष से विश्राम किया।
जब से मुझे दुखों से मुक्ति मिली है,
मैंने धार्मिक मार्ग छोड़ दिया है और अब मैं एक भिक्षु की सेवा करता हूँ।
एक श्रद्धालु होने के नाते मैं थंडर श्राइन जाता हूँ।
शास्त्रों का अध्ययन करना और सत्य की ओर लौटना।
अब जब मैं तुम दुष्टों से मिल चुका हूँ,
मुझे अपनी सारी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करना पड़ा है।
तांग राजवंश से आए पुजारी को हमें वापस लौटा दो।
पश्चिम की यात्रा करके भगवान बुद्ध के दर्शन करना।
अध्याय 35
487
पश्चिम की यात्रा
दोनों प्रतिद्वंद्वी पक्ष काफी लंबे समय से लड़ रहे हैं:
आइए अब हम सब शांतिपूर्वक एक साथ रहें।
बूढ़े बंदर को गुस्सा मत दिलाओ।
अगर उसने ऐसा किया तो वह तुम्हें निश्चित रूप से खत्म कर देगा।
"इधर आओ," राक्षस ने कहा। "मैं तुम्हें मारूंगा नहीं। मैं बस तुम्हारा नाम पुकारूंगा। क्या तुम जवाब दोगे?"
बंदर ने कहा, "अगर तुम मेरा नाम पुकारोगे, तो मैं जवाब दूंगा। लेकिन अगर मैं तुम्हारा नाम पुकारूं तो क्या तुम जवाब दोगे?"
राक्षस ने कहा, "अगर मैं तुम्हें बुलाऊं, तो मेरे पास एक चमत्कारी लौकी है जिसमें लोगों को भरा जा सकता है। लेकिन अगर तुम मुझे बुलाओगे, तो तुम्हारे पास क्या होगा?"
"मेरे पास भी एक लौकी है," बंदर ने जवाब दिया।

"अगर तुम्हारे पास है, तो मुझे दिखाओ," राक्षस ने कहा।
फिर बंदर ने अपनी आस्तीन से लौकी निकाली और कहा, "देखो, दुष्ट राक्षस।" उसने लौकी लहराई और फिर उसे वापस अपनी आस्तीन में रख लिया ताकि राक्षस उसे छीन न ले।
यह नजारा देखकर राक्षस को गहरा सदमा लगा। उसने सोचा, "इसे यह लौकी कहाँ से मिली? यह बिल्कुल मेरी लौकी जैसी क्यों है? एक ही बेल से निकली लौकियाँ भी आकार और आकृति में अलग-अलग होती हैं। लेकिन यह तो बिल्कुल एक जैसी है।" फिर उसने बंदर पर गुस्से से चिल्लाते हुए कहा, "नवजात सूर्य, तुम्हें यह लौकी कहाँ से मिली?"
क्योंकि मंकी को सच में नहीं पता था कि यह कहाँ से आया है, इसलिए उसने एक और सवाल पूछा: "तुम्हारा वाला कहाँ से आया?"
यह न समझते हुए कि यह बंदर की अनुभव से सीखी हुई एक चाल थी, राक्षस ने शुरू से ही सच्ची कहानी सुनाई: "जब अराजकता पहली बार विभाजित हुई और स्वर्ग पृथ्वी से अलग हुआ, तब एक भगवान लाओ ज़ी थे जिन्होंने स्वर्ग को ठीक करने और जांबू महाद्वीप को बचाने के लिए एक पत्थर को पिघलाने के लिए देवी नुवा का नाम लिया।"
जब उन्होंने स्वर्गिक महल का गुम हुआ हिस्सा लगाया, तो उन्होंने कुनलुन पर्वत की तलहटी में एक जादुई लता देखी, जिस पर यह सोने और लाल रंग का लौकी उग रहा था। यह लौकी भगवान लाओ ज़ी के समय से आज तक चली आ रही है।
यह सुनकर बंदर ने उसी लहजे में बोलना जारी रखा: "मेरी लौकी भी वहीं से आई थी।"
"तुम्हें कैसे पता चला?" राक्षस राजा ने पूछा।
“जब शुद्ध और अशुद्ध का पहली बार विभाजन हुआ,” महान ऋषि ने उत्तर दिया, “उत्तर-पश्चिम कोने में स्वर्ग अधूरा था, और दक्षिण-पूर्व में पृथ्वी का एक भाग गायब था। इसलिए महान ताओवादी कुलपति ने आकाश को ठीक करने के लिए नुवा का रूप धारण किया। जब वे कुनलुन पर्वत से गुजरे, तो वहाँ एक जादुई लता थी जिस पर दो लौकी उग रही थीं। मेरे पास जो है वह नर है, और आपके पास जो है वह मादा है।”
"यौन संबंध की चिंता मत करो," राक्षस ने कहा। "असली खजाना तो तभी है जब उसमें लोगों को समाहित किया जा सके।"

"बिल्कुल सही," बंदर ने कहा। "पहले मुझे अंदर डालने की कोशिश करो।"
अत्यंत प्रसन्न राक्षस उछलकर हवा में कूद गया, अपना लौकी का पात्र आगे बढ़ाया और पुकारा, "नौसिखिया सूर्य।"
बिना किसी संकोच के महान ऋषि ने आठ-नौ बार उत्तर दिया, लेकिन वे अंदर नहीं खींचे गए। राक्षस नीचे आया, पैर पटकता हुआ, सीना पीटता हुआ और चिल्लाता हुआ बोला, "हे भगवान! किसने कहा कि दुनिया कभी नहीं बदलती? यह खजाना अपने बूढ़े से डरता है! इस स्त्री में इतनी हिम्मत नहीं है कि वह इस पुरुष को अपने अंदर समा सके।"
“अब अपना लौकी दूर रख दो,” बंदर ने कहा। “अब तुम्हारी बारी है तुम्हारा नाम पुकारने की।” एक तेज़ कलाबाज़ी लगाते हुए वह उछला, अपने लौकी को उल्टा करके राक्षस की ओर मुँह किया और पुकारा, “महान राजा सिल्वर हॉर्न।”
राक्षस चुप नहीं रह सका; उसे जवाब देना ही था, और वह लौकी में सीटी बजाते हुए घुस गया। फिर बंदर ने उस पर एक लेबल लगा दिया जिस पर लिखा था:
महान भगवान लाओ को: विधानों और अध्यादेशों के अनुसार इस मामले पर तत्काल कार्रवाई की जाए।
"वाह, मेरे बेटे," उसने मन ही मन प्रसन्नता से सोचा, "आज तुमने कुछ नया करने की कोशिश की है।"
लौकी को अपने साथ लिए हुए वह बादल पर उतरा। कमल के फूल की गुफा की ओर बढ़ते हुए उसका एकमात्र उद्देश्य अपने गुरु को बचाना था। पहाड़ी रास्ता बेहद ऊबड़-खाबड़ था और उसके पैर भी टेढ़े थे, इसलिए जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, लौकी हिलती गई और लगातार छप-छप की आवाज़ आती रही। क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा था? महान ऋषि का शरीर इतना मजबूत था कि वह जल्दी सड़ नहीं सकता था। दूसरी ओर, राक्षस, हालांकि बादलों पर सवार हो सकता था, लेकिन उसके पास केवल कुछ ही जादुई शक्तियां थीं। उसका शरीर मूल रूप से एक साधारण मनुष्य का ही था, जो लौकी में जाते ही सड़ जाता था।
यह विश्वास न करते हुए कि राक्षस पहले ही मवाद में बदल चुका है, बंदर ने मज़ाक में

कहा, "मुझे नहीं पता कि यह पेशाब है या लार, महाराज, लेकिन मैंने भी यह खेल खेला है। मैं सात-आठ दिनों तक ढक्कन नहीं हटाऊँगा, तब तक आप तरल बन चुके होंगे। इतनी जल्दी क्या है? इतनी अत्यावश्यकता क्या है? जब मैं सोचता हूँ कि मैं कितनी आसानी से बच निकला, तो आप हज़ार साल तक नज़रों से ओझल रहने के लायक हैं।" लौकी को ले जाते हुए और इस तरह बोलते हुए, उसे पता भी नहीं चला कि वह गुफा के दरवाज़े पर वापस पहुँच गया है। उसने लौकी को हिलाया, और उससे वही आवाज़ आती रही।

"ये तो एक भाग्य बताने वाली नली की तरह है, जिसमें से छड़ी हिलाकर कुछ निकाला जाता है," उसने सोचा। "मैं एक बार हिलाकर देखूंगा कि गुरुजी कब बाहर आएंगे।" उसे देखो, जैसे-जैसे वह उसे हिलाता जा रहा है और बार-बार मंत्र दोहरा रहा है, "राजा वेन की परिवर्तन पुस्तक, ऋषि कन्फ्यूशियस, आड़ू के फूल की देवी, गुरु भूत घाटी।"

जब उन्होंने उसे देखा तो गुफा में बैठे छोटे शैतानों ने कहा, "महाराज, विपत्ति आ गई है। नौसिखिए सूर्य ने अपने कनिष्ठ महाराज को लौकी में डाल दिया है और उसे हिला रहा है।" यह खबर सुनकर वरिष्ठ राजा की सारी आत्माएं कांप उठीं और उनकी हड्डियां और नसें नरम पड़ गईं।

वह जोर-जोर से चिल्लाते हुए गिर पड़ा, "भाई, हम दोनों चुपके से ऊपर की दुनिया से निकलकर मनुष्यों के बीच पुनर्जन्म लेने आए थे।"

हमारी आशा थी कि हम इस गुफा के शासक बनकर सदा गौरव साझा करेंगे। हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि यह भिक्षु तुम्हें मार डालेगा और हमें अलग कर देगा।" गुफा में मौजूद सभी शैतान रोने-बिलखने लगे।

बीम से लटके हुए सुअर के लिए यह सब चीख-पुकार असहनीय थी। "चीखना बंद करो, राक्षस," वह खुद को चिल्लाने से रोक नहीं पाया, "और मेरी बात सुनो। पहले आने वाला नौसिखिया सूर्य, उसके बाद आने वाला नौसिखिया सूर्य और अंत में आने वाला नौसिखिया सूर्य, इन सभी के नाम एक ही हैं, और ये सभी मेरे साथी शिष्य हैं। वह बहत्तर रूपान्तरण कर सकता है। वह रूप बदलकर यहाँ आया, तुम्हारा खजाना चुराया और तुम्हारे भाई को उसमें डाल दिया। अब जब वह मर चुका है, तो इस सब दुख का कोई मतलब नहीं है। अपने खाना पकाने के बर्तनों को अच्छी तरह से साफ कर लो और कुछ गिल मशरूम और बटन मशरूम, चाय के अंकुर, बांस के अंकुर, टोफू, ग्लूटेन पकाओ। अध्याय 35

वृक्षों पर उगने वाले कवक और सब्जियां। फिर आप मेरे गुरु, मेरे सह-शिष्य और मुझे अपने भाई के लिए जीवन सूत्र पढ़ने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं।"
"मैंने सोचा था कि सुअर अच्छा व्यवहार करता है," राक्षस राजा क्रोधित होकर गरजा, "लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है, मेरा इस तरह मजाक उड़ा रहा है।" फिर उसने छोटे शैतानों को पुकारा, "रोना बंद करो और सुअर को नीचे उतारो। उसे तब तक पकाओ जब तक वह नरम न हो जाए, और जब मैं उसका अच्छा भोजन कर लूँगा तो मैं बाहर जाकर नौसिखिया सूर्य से अपना बदला लूँगा।"
"बहुत खूब," फ्रायर सैंड ने पिग से शिकायत करते हुए कहा। "मैंने तुमसे कहा था कि अपना मुंह बंद रखो। बकवास करने का तुम्हारा इनाम यह होगा कि तुम्हें सबसे पहले पकाया जाएगा।"
अब तक वह मूर्ख काफी डर चुका था। उसके बगल में खड़ा एक छोटा शैतान बोला, "महाराज, सूअर का मांस पकाना मुश्किल होगा।"
"भगवान का शुक्र है," सुअर ने कहा। "क्या यह भाई कुछ पुण्य कमा रहा है? यह सच है कि मैं अच्छा खाना नहीं बना सकता।"
फिर एक और छोटे शैतान ने कहा, "अगर पहले उसकी खाल उतार दी जाए तो वह पक जाएगा।"
"हाँ," सुअर ने हताशा में कहा, "मैं पक जाऊँगा। मेरी खाल और हड्डियाँ भले ही खुरदरी हों, लेकिन उबलने पर नरम हो जाएँगी। मैं तो गया काम से! मैं तो गया काम से।"
इससे पहले कि पिग चिल्लाना खत्म कर पाता, एक छोटा शैतान बाहर से अंदर आकर यह बताने लगा कि नोविस द सन फिर से वहाँ आ गया है और बहुत गाली-गलौज कर रहा है।
"धिक्कार है उसे! वह सोचता है कि हम बिल्कुल बेकार हैं," वरिष्ठ दानव राजा ने भयभीत होकर कहा। "सूअर को फिर से लटका दो," उसने छोटे दानवों से कहा, "और देखो कि हमारे पास क्या खजाने बचे हैं।"
"गुफा में अभी भी तीन लोग हैं," प्रबंधक शैतान ने बताया।
"कौन सी तीन?" दानव राजा ने पूछा। "सात सितारा तलवार, केले का पंखा और

पवित्र कलश," प्रबंधक ने उत्तर दिया।
“यह फूलदान बेकार है,” दानव राजा ने कहा। “पहले तो बस किसी का नाम पुकारना होता था और जवाब मिलते ही उसे इसमें डाल दिया जाता था। लेकिन अब नौसिखिए सन ने मंत्र सीख लिया है और मेरे भाई को इसमें डाल दिया है। हमें इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी—इसे यहीं छोड़ दो। तलवार और पंखा तुरंत लाओ।”
सेवक तुरंत बूढ़े राक्षस के लिए उन्हें ले आया। बूढ़े राक्षस ने पंखा अपने कॉलर के पीछे दबा लिया और तलवार हाथ में ले ली। फिर उसने अपने तीन सौ से अधिक राक्षसों को इकट्ठा किया और उन्हें भाला, लाठी, रस्सी और तलवार चलाने का प्रशिक्षण दिया। वरिष्ठ राक्षस राजा ने अपना हेलमेट और कवच पहना, जिसके ऊपर उसने धधकते लाल रेशम का लबादा ओढ़ लिया। राक्षस युद्ध की मुद्रा में आ गए, महान ऋषि सूर्य को पकड़ने के लिए तैयार। इस बीच, महान ऋषि को पता चल गया था कि कनिष्ठ राक्षस राजा लौकी के अंदर सड़ चुका है, इसलिए उसने उसे कसकर बांध लिया और अपनी कमरबंद से लगा लिया। फिर सोने की पट्टी वाली गदा हाथ में लिए वह लड़ने के लिए तैयार हो गया। बूढ़ा राक्षस, अपने पीछे लाल युद्ध ध्वज फहराते हुए, गुफा के दरवाजों से बाहर कूद गया। उसका पहनावा कुछ इस प्रकार था:
उसके हेलमेट पर लगे लटकन बेहद चमकदार थे।
उसने अपनी कमर पर चमकीले रंगों वाली बेल्ट पहनी थी।
उसने जो कवच पहना था वह ड्रैगन की खाल से बना था।

जलती हुई आग की चादर से ढका हुआ।
उसकी चमकती आंखों से बिजली सी कौंधी।
उसके लोहे के मजबूत दांतों से धुआं उठ रहा था।
उसने हल्के से सात सितारा तलवार उठाई।
उसके कंधे केले के पंखे से ढके हुए थे।
वह किसी द्वीप से बहते बादलों की तरह आगे बढ़ रहा था।
ऐसा लगा जैसे बिजली कड़कने से पहाड़ कांप रहे हों।
उसकी अपार शक्ति स्वर्ग के योद्धाओं को भी कुचल देगी।

जब वह क्रोधित होकर अपने शैतानों को गुफा से बाहर ले गया।
उसने उन नन्हे शैतानों को तुरंत युद्ध की स्थिति में आने का आदेश दिया, फिर गालियाँ बरसाने लगा: "बेहद बदतमीज़ बंदर। तूने मेरे भाई की हत्या कर दी और हमारे भाईचारे को बर्बाद कर दिया। तू बेहद घृणित है।"
“घिनौने राक्षस,” बंदर ने भी उसी लहजे में जवाब दिया। “तुम अपनी शैतानी जान बचाने के लिए जी जान से बैठे हो, लेकिन मैं कैसे बर्दाश्त कर सकता हूँ कि मेरे गुरु, मेरे साथी शिष्य और मेरा घोड़ा सब तुम्हारी गुफा में बिना किसी वजह के लटके रहें? यह असहनीय है। इन्हें अभी मुझे सौंप दो और साथ में कुछ यात्रा खर्च भी दे दो। फिर मैं खुशी-खुशी चला जाऊँगा और तुम्हारी सड़ी हुई जान बख्श दूँगा।” बिना देर किए राक्षस ने अपनी तलवार उठाई और बंदर के सिर पर वार किया, वहीं बंदर ने भी अपना लोहे का डंडा उठाकर उसका मुकाबला किया। द्वार के बाहर दोनों के बीच ज़बरदस्त लड़ाई हुई। वाकई!
स्वर्णधारी गदा और सात सितारा तलवार,
मिलते ही वे बिजली की तरह चमक उठते हैं।
उनसे आने वाली ठंडी हवा से ठंड लग जाती है।
जबकि बादलों के विशाल समूह पर्वत श्रृंखलाओं को ढक लेते हैं।
एक, भाईचारे के प्रेम से प्रेरित होकर,
कोई दया का कार्य नहीं करेगा;
दूसरा, तीर्थयात्री को बचाने के लिए निकला हुआ था,
उसने जरा भी दया नहीं दिखाई।
अध्याय 35
491
पश्चिम की यात्रा
दोनों पक्षों में समान रूप से घृणा व्याप्त थी।
उन सभी के मन में एक जैसी घृणा थी।
उन्होंने इतनी कड़ी लड़ाई लड़ी कि
आकाश और पृथ्वी अंधकार में डूब गए।
देवता और राक्षस भयभीत हो गए।
घने धुएं में सूरज का रंग फीका पड़ गया।

अजगर और बाघ कांप उठे।
एक ने अपने दांत पीसे, मानो वह जेड के नाखूनों को घिस रहा हो;
दूसरे की धधकती आँखों में सुनहरी आग जल रही थी।
वे इधर-उधर घूमते हुए अपनी वीरता का प्रदर्शन कर रहे थे।
तलवार और लाठी के अंतहीन खेल में।
जब बूढ़े राक्षस ने बंदर से बीस दौर तक लड़ाई लड़ी और कोई भी विजयी नहीं हुआ, तो उसने अपनी तलवार की म्यान लहराई और अपने सभी छोटे शैतानों को आगे बुलाया। उनमें से तीन सौ से अधिक शैतान दौड़ पड़े और बंदर को घेर लिया। महान ऋषि, बिल्कुल भी विचलित हुए बिना, अपने गदा से आगे-पीछे, दोनों ओर प्रहार करते रहे। सभी छोटे शैतान बहुत कुशल थे, और वे लड़ते हुए उसके और करीब आते गए, उसकी कमर और टांगों को खींचते हुए उसे रेशम के धागे की तरह जकड़ लिया। वे पीछे नहीं हटे। इससे महान ऋषि इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने अलौकिक जादू का प्रयोग किया। अपनी बाईं पसलियों के नीचे से बालों का एक गुच्छा तोड़कर, उन्होंने उसे चबाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और "बदलो!" चिल्लाते हुए उसे बाहर निकाल दिया। हर टुकड़ा एक और बंदर में बदल गया। बस देखते रहिए कि कैसे सबसे बड़े वाले लाठियों का इस्तेमाल करते हैं, छोटे वाले अपनी मुट्ठियों का, और सबसे छोटे वाले, जिनके पास हमला करने का कोई और तरीका नहीं होता, उंगलियों के जोड़ों को पकड़कर मांसपेशियों में अपने दांत गड़ा देते हैं।
उन छोटे शैतानों को खदेड़ दिया गया। "महाराज," वे चिल्लाए, "सब कुछ गलत हो रहा है। हम बहुत बड़ी मुसीबत में हैं।"
"पूरा पहाड़ और हर जगह नौसिखिए सूर्य से भरा पड़ा है।" अब जबकि उसके छोटे शैतान अलौकिक जादू से पीछे धकेल दिए गए थे, दानव राजा मुश्किल में था; चाहे वह कितनी भी भागदौड़ करे, उसके लिए बचने का कोई रास्ता नहीं था।
घबराकर उस राक्षस ने अपनी कीमती तलवार बाएं हाथ में उठाई और दाहिने हाथ से गर्दन के पीछे जाकर केले का पंखा निकाला। फिर वह दक्षिण-पूर्व के अग्निदेवों और लिगोंग नक्षत्र की ओर मुड़ा और पंखा लहराया। तुरंत ही जमीन से लपटें निकल आईं, क्योंकि उस खजाने में इतनी शक्ति थी। वह राक्षस सचमुच निर्दयी था। उसने पंखा सात-आठ बार लहराया, जिससे आकाश और पृथ्वी में भीषण आग लग गई। वह एक शानदार ज्वाला थी।

यह कोई दिव्य अग्नि नहीं है।
न ही भट्टी में आग,

न ही पहाड़ पर आग लगी थी।
न ही बर्तन के नीचे आग जलाई गई थी।
लेकिन पंच तत्वों से उत्पन्न होने वाली चमत्कारी अग्नि।
पंखा कोई साधारण वस्तु नहीं है।
और न ही इसे मानवीय कौशल से बनाया गया था:
यह एक ऐसा खजाना है जो तब बना था जब अराजकता पहली बार अलग हुई थी।
इस पंखे के कारण लगी आग
चमकता और चकाचौंध करता है
लाल रेशम की बिजली की तरह;
जलना और धधकना
जैसे गहरे लाल रंग के धुंधले पर्दे में डूबते सूरज की रोशनी।
धुएं का जरा सा भी निशान नहीं था।
केवल एक पर्वत जो आग की लपटों से ढका हुआ है,
अपनी पहाड़ियों पर उगने वाले चीड़ के पेड़ों को आग के पेड़ों में बदलते हुए,
और उसकी चट्टानों के किनारे उगने वाले सरू के पेड़ लालटेन की तरह चमकते हैं।
अपने मांदों में छिपे जानवर, अपनी जान के डर से सहमे हुए थे।
इधर-उधर भागना;
जंगल में रहने वाले पक्षी अपने पंखों को बचाने के लिए ऐसा करते हैं।
दूर-दूर तक और ऊँचाई तक उड़ो।
वह जादुई अग्नि जो आकाश की ओर दहाड़ती है,
यह चट्टानों को नष्ट कर देता है, नदियों को सुखा देता है और सब कुछ लाल कर देता है।
इस भयानक आग को देखकर महान ऋषि भय से कांप उठे। उन्होंने कहा, "यह तो बहुत भयानक है। इससे मुझे शायद कोई नुकसान न हो, लेकिन मैं अपने उन बालों

को नहीं बचा सकता। अगर वे आग की चपेट में आ गए तो बाल जलकर राख हो जाएंगे।"
इसलिए उसने खुद को झटक दिया और अपने शरीर पर मौजूद बालों को वापस समेट लिया, केवल एक बाल को अपने ही प्रतिबिंब के रूप में पीछे छोड़ दिया।
फिर, आग से होने वाली तबाही से बचने के लिए, उसके असली रूप ने ऊपर की ओर कलाबाजी मारी, आग को दूर भगाने के लिए एक मंत्र का जाप किया और उस भीषण आग से बच निकला। वह अपने गुरु को बचाने की उम्मीद में सीधे कमल के फूल की गुफा में वापस चला गया।
वह गुफा के दरवाजों की ओर दौड़ा, अपने बादल को ज़मीन पर उतारा, और वहाँ सौ से अधिक छोटे शैतानों को पाया। अध्याय 35

सिर चकनाचूर, टांगें टूटी हुई और खुले घाव। ये सब उसके जादुई दूसरे रूपों द्वारा घायल किए गए थे और अब दर्द से कराहते हुए वहाँ खड़े थे। उन्हें देखकर महान ऋषि अपनी दुष्ट और हत्यारी प्रवृत्ति को रोक नहीं पाए; उन्होंने लोहे का डंडा घुमाते हुए उन पर हमला कर दिया। बेचारे, जिन्होंने मानव रूप प्राप्त करने के लिए इतनी मेहनत की थी, एक बार फिर घिसी-पिटी और बालों वाली खाल के टुकड़े बन गए।
सभी छोटे शैतानों का सफाया करने के बाद, महान ऋषि अपने गुरु को मुक्त कराने के लिए गुफा में घुस गए। अंदर और भी तेज़ लपटें देखकर वे घबरा गए: "बस हो गया। आग पिछले दरवाजे से अंदर आ गई है। अब मैं गुरु को बचा नहीं पाऊंगा।" हालांकि वे बहुत डरे हुए थे, उन्होंने ध्यान से देखा और पाया कि यह लपटें नहीं बल्कि एक सुनहरी चमक थी। खुद को संभालते हुए उन्होंने अंदर देखा और पाया कि यह प्रकाश "मटन-फैट" जेड से बने एक फूलदान से आ रहा था।
“वाह, क्या खूबसूरत है!” उसने मन ही मन प्रसन्नता से सोचा। “यही वह कलश है जो पहाड़ पर तब चमका था जब वे दोनों छोटे शैतान इसे ले जा रहे थे। मैंने इसे उनसे छीन लिया था, फिर दानव राजा ने मेरी तलाशी के दौरान इसे पा लिया। अब मैं देख रहा हूँ कि जब वे इसे यहाँ रखते हैं तब भी यह चमकता है।” उसे देखिए, वह कलश चुराने में इतना आनंद ले रहा है कि अपने गुरु को बचाने के बजाय वह गुफा से जितनी जल्दी हो सके बाहर निकल जाता है। वह गुफा के ठीक बाहर था जब दानव राजा

दक्षिण से प्रकट हुआ, अपनी जादुई तलवार और पंखा लहराते हुए। इससे पहले कि महान ऋषि बचाव कर पाते, दानव ने तलवार उठाई और उनके चेहरे पर वार किया। लेकिन महान ऋषि तुरंत एक कलाबाजी करते हुए बादल पर सवार होकर हवा में उड़ गए और बिना किसी निशान के गायब हो गए।

गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँचकर दानव राजा अपने सभी अनुयायियों के शवों को चारों ओर बिखरा देखकर इतना व्याकुल हो गया कि उसने अपना सिर पीछे की ओर झुका लिया और दर्द से कराहने लगा। यह बात एक कविता से सिद्ध होती है:

दुष्ट बंदर और हठी घोड़ा,
उनकी आत्माओं का नश्वर रूप में पुनर्जन्म हुआ।
क्योंकि अपनी मूर्खता में उन्होंने स्वर्ग के द्वार छोड़ दिए।
वे होश खो बैठे और इन पहाड़ियों में आ गिरे।
वह हंस बड़ा दुःख का पात्र होता है जो अपने झुंड से बिछड़ जाता है;
उन राक्षस सैनिकों की आंखों में आंसू हैं जिनकी जाति नष्ट हो गई है।
उनका पाप कब माफ होगा और उनके बंधन कब टूटेंगे?
ताकि वे अपने स्वर्गीय घर लौट सकें?

पश्चाताप से व्याकुल होकर, वरिष्ठ दानव राजा गुफा में प्रवेश करते समय हर कदम पर सिसकते रहे। यद्यपि गुफा में सभी वस्तुएँ और फर्नीचर अभी भी मौजूद थे, फिर भी वह शांत और सुनसान थी। इससे उनका अकेलापन और अवसाद और भी बढ़ गया। वे गुफा में अकेले पत्थर की मेज पर धँसकर बैठ गए, तलवार मेज से टिकी हुई थी और पंखा फिर से उनकी गर्दन के पीछे था। इस प्रकार वे नींद में डूब गए। वास्तव में:

खुशी मन को शक्ति प्रदान करती है;
दुःख तो बस आपको नींद में भेज देता है।

कहानी आगे बताती है कि कैसे महान ऋषि सूर्य ने अपने कलाबाज़ी करते बादल को घुमाकर पहाड़ के सामने रोक दिया। अपने गुरु को बचाने के लिए उन्होंने कलश को अपनी कमर में कसकर बाँधा और गुफा में वापस जाकर स्थिति का जायज़ा लिया। दरवाज़े खुले थे और सन्नाटा छाया हुआ था, इसलिए वे चुपके से अंदर गए और देखा

कि बूढ़ा राक्षस पत्थर की मेज़ से टिका हुआ गहरी नींद में सो रहा है। केले का पंखा उसके कंधे पर कपड़ों से बाहर निकला हुआ था, जिससे उसका आधा सिर ढका हुआ था, और सात सितारा तलवार अभी भी मेज़ से टिकी हुई थी। बंदर बहुत धीरे से आगे बढ़ा, पंखा निकाला, फिर मुड़ा और तेज़ी से बाहर निकल गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पंखा राक्षस के बालों से रगड़ खा गया था, जिससे वह जाग गया था। जैसे ही उसने ऊपर देखा और पाया कि बंदर ने पंखा चुरा लिया है, उसने अपनी तलवार उठाई और उसके पीछे भागा। तब तक बंदर दरवाज़े के बाहर पहुँच चुका था, पंखा उसकी कमर में सुरक्षित था और लोहे का डंडा उसके हाथों में था, और वह राक्षस के हमले का सामना करने के लिए तैयार था। यह एक शानदार मुकाबला था।

क्रोधित राक्षस राजा,
क्रोध से बौखलाया हुआ,
इतना क्रोधित कि बंदर को पूरा निगल जाए।
अपना क्रोध निकालने में असमर्थ,
उसने निर्दयतापूर्वक बंदर को शाप दिया;
तुम हमेशा मुझसे मजाक करने की कोशिश करते रहते हो।
तुमने मेरे कितने लोगों को मार डाला है,
और तुमने मेरे खजाने छीन लिए।
इस लड़ाई में कोई दया नहीं दिखाई जाएगी:
देखते हैं कौन बचता है।
महान ऋषि ने राक्षस पर चिल्लाते हुए जवाब दिया:
तुममें जरा भी अक्ल नहीं है।
तुम्हारे जैसे नौसिखिए के लिए मुझसे लड़ना
यह पत्थर को अंडों से तोड़ने की कोशिश करने जैसा होगा।"
तलवार का सामना लोहे के डंडे से हुआ।
दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर दया दिखाए बिना लड़ाई लड़ी।

एक के बाद एक संघर्ष में उन्होंने वर्चस्व हासिल करने के लिए संघर्ष किया।

हथियारों में अपनी कुशलता दिखाने के लिए वे घूमते और मुड़ते हैं।
तीर्थयात्री पुजारी को बचाने के लिए,
और गिद्ध शिखर पर स्थित बुद्ध प्रतिमा के दर्शन करें।
धातु और अग्नि एक दूसरे के आगे नहीं झुकेंगे।
और प्रकृति के प्रकोप ने उनकी दोस्ती को तोड़ दिया।
जैसे ही उन्होंने अपनी युद्ध कला और जादुई शक्तियों का प्रदर्शन किया,
उन्होंने अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए पत्थरों और रेत को हवा में उड़ा दिया।
जब वे लड़ रहे थे तब सूरज धीरे-धीरे डूब रहा था;
डरा हुआ राक्षस सबसे पहले भाग गया।
बंदर के साथ तीस-चालीस दौर की लड़ाई के बाद, जब लगभग दिन ढल चुका था, दानव राजा और अधिक देर तक टिक नहीं सका और पराजित होकर भाग निकला। वह दक्षिण-पश्चिम की ओर, कुचले हुए ड्रैगन की गुफा की ओर चल पड़ा।
फिर बंदर ने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा और सीधे कमल के फूल की गुफा में वापस चला गया, जहाँ उसने तांग पुजारी, सुअर और साधु सैंड को मुक्त किया। तीनों ने बंदर को उन्हें घोर खतरे से बचाने के लिए धन्यवाद दिया और फिर पूछा कि राक्षस कहाँ गए थे।
इस पर बंदर ने जवाब दिया, "छोटा दानव राजा लौकी के अंदर है, और मुझे लगता है कि वह अब तक घुल चुका होगा। मैंने अभी-अभी बड़े राजा को हराया है, और वह कुचले हुए ड्रैगन की गुफा में वापस चला गया है। गुफा के उन छोटे शैतानों की बात करें तो, मैंने अपने जादुई अतिरिक्त शरीरों से उनमें से आधे को मार डाला, फिर भागकर वापस आए घायल बचे हुए लोगों को भी खत्म कर दिया। इसी तरह मैं यहाँ आकर तुम्हें बचा सका।"
तांग पुरोहित ने उनका दिल से धन्यवाद किया: "शिष्य, आपके महान प्रयासों के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं।"
"तुम कह रहे हो कि यह बहुत बड़ा प्रयास था," बंदर हँसते हुए बोला। "तुम लोगों को तो बस लटके रहने का दर्द सहना पड़ा, लेकिन मुझे एक पल भी स्थिर रहने की इजाज़त नहीं थी। मैं किसी ज़रूरी संदेशवाहक से भी ज़्यादा जल्दबाज़ी में था, बिना रुके हर जगह भागता फिर रहा था। मैं राक्षसों को केवल इसलिए मार गिरा पाया क्योंकि मैंने उनके खजाने चुरा लिए थे।"

"भाई, हमें लौकी दिखाओ," सुअर ने कहा।
"मुझे लगता है कि वह अब तक घुल चुका होगा।" बंदर ने अपनी कमर से फूलदान निकाला और फिर चमकदार सुनहरी डोरी और पंखा निकालकर अपने हाथों में लौकी ले आया।
“अंदर मत देखो,” उसने कहा, “बिल्कुल मत देखो। जब उसने मुझे अंदर डाला था, तो मैंने अपने मुँह में लार घुमाकर उसे ढक्कन हटवाने और भागने में कामयाब होने का झांसा दिया था। हमें बिल्कुल भी ढक्कन नहीं हटाना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह हम पर भी कोई चाल चल दे और भाग जाए।” खुशी-खुशी गुरु और शिष्यों को गुफा में चावल, नूडल्स और सब्जियां मिल गईं, उन्होंने चूल्हा और खाना पकाने के बर्तन साफ किए और अपने लिए शाकाहारी भोजन बनाया। जब उनका पेट भर गया...
अध्याय 35

वे गुफा में सो गए। उस रात कुछ भी उल्लेखनीय नहीं हुआ, और जल्द ही नया दिन निकल आया।
इस बीच, वरिष्ठ दानव राजा सीधे कुचले हुए ड्रैगन पर्वत पर चले गए, जहाँ उन्होंने सभी राक्षसी महिलाओं को बुलाया और उन्हें बताया कि कैसे उनकी माँ की हत्या कर दी गई थी, उनके भाई को लौकी में डाल दिया गया था, सभी राक्षस सैनिकों को मार डाला गया था और खजाने चुरा लिए गए थे।
यह सुनकर सभी राक्षसी औरतें रोने लगीं। काफी देर तक रोने के बाद उसने कहा, "दुखी मत हो। मेरे पास अभी भी मेरी सात सितारा तलवार है, और मैं तुम सभी महिला सैनिकों को कुचले हुए ड्रैगन पर्वत के पीछे ले जाकर जुलूस निकालूंगा, जहाँ से मैं अपने रिश्तेदारों से कुछ सैनिक ले आऊंगा। मैंने ठान लिया है: मैं नौसिखिए सन को पकड़ूंगा और उससे बदला लूंगा।"
उसके मुंह से शब्द निकले ही थे कि दरवाजे के बाहर से एक छोटे शैतान ने सूचना दी, "महाराज, पहाड़ों के उस पार से आपके चाचा सैनिकों के साथ आए हैं।" यह खबर सुनकर वरिष्ठ दानव राजा ने तुरंत सफेद शोक वस्त्र पहने और उनसे मिलने के लिए बाहर गए। ये चाचा राजा सेप्टिमस फॉक्स थे, जो दानव राजा की माता के छोटे भाई थे। उन्होंने पहाड़ों पर गश्त कर रहे अपने साथियों से सुना था कि बंदर ने उनकी बहन

की हत्या कर दी थी और फिर उनकी बहन का रूप धारण करके उनके भतीजे का खजाना चुरा लिया था और उसी दिन फ्लैट-टॉप माउंटेन की लड़ाई में उनसे लड़ रहा था। सेप्टिमस फॉक्स अपने दो सौ से अधिक दानव सैनिकों को लड़ाई में मदद के लिए ला रहे थे, तभी रास्ते में उन्होंने अपनी बहन के घर पर खबर ली। जैसे ही वे अंदर गए और दानव राजा को अपनी माता के शोक में डूबा देखा, दोनों जोर-जोर से रोने लगे। कुछ देर रोने के बाद दानव राजा ने उन्हें प्रणाम किया और सारी घटना बताई। क्रोध में आकर सेप्टिमस ने दानव राजा से शोक वस्त्र उतारने, तलवार उठाने, महिला सैनिकों की सूची बनाने और उसके साथ शामिल होने का आदेश दिया। फिर वे हवाओं और बादलों के सहारे उत्तर-पूर्व दिशा की ओर चल पड़े।

महान ऋषि ने अभी-अभी साधु सैंड को नाश्ता तैयार करने के लिए कहा ही था कि वे नाश्ता करने के तुरंत बाद निकल पड़ेंगे, तभी उन्हें हवा की आवाज सुनाई दी। बाहर जाकर देखने पर उन्होंने दक्षिण-पश्चिम से दानव सैनिकों की एक बड़ी सेना को आते देखा। इससे वे घबरा गए और जल्दी से वापस भागे और पिग को चिल्लाकर कहा, "भाई, वह दुष्ट आत्मा अतिरिक्त सैनिकों के साथ फिर से लौट आई है।"

यह खबर सुनकर संजांग भय से पीला पड़ गया। उसने पूछा, "शिष्य, इसका क्या मतलब हो सकता है?"

“चिंता मत करो,” बंदर हँसते हुए बोला, “चिंता मत करो। उनके सारे खजाने मेरे लिए ले आओ।” फिर महान ऋषि ने लौकी और कलश को अपनी कमर में लगाया, चमकदार सोने की डोरी को अपनी आस्तीन में रखा, केले का पंखा अपने कंधे के पीछे लगाया और लोहे की लाठी को दोनों हाथों से घुमाया। उन्होंने साधु सैंड को गुफा के अंदर रहकर गुरु की रक्षा करने का आदेश दिया, जबकि उन्होंने सूअर को अपना रेक लेकर दुश्मन का सामना करने के लिए बाहर आने को कहा।

जब राक्षसों की युद्ध पंक्ति तैयार हो गई, तो राजा सेप्टिमस फॉक्स ने कमान संभाली। उनका चेहरा जेड पत्थर जैसा था, लंबी मूंछें थीं, लोहे जैसी मजबूत भौंहें और तलवार जैसे कान थे। उनका हेलमेट शुद्ध सोने का था, उन्होंने जंजीरदार कवच पहना हुआ था और उनके हाथ में स्वर्ग के आकार का चौकोर भाला था।

“मैं तुम्हें देख लूँगा, तुम दुस्साहसी और धृष्ट बंदर! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई लोगों के साथ इतना बुरा बर्ताव करने की? तुमने खजाने चुराए, मेरे रिश्तेदारों को घायल किया, राक्षस सैनिकों को मार डाला, और तो और उनके गुफा महल पर कब्जा कर लिया।

तुम सब अपनी गर्दनें बाहर निकालो और फांसी पर चढ़ने के लिए तैयार हो जाओ, जबकि मैं अपनी बहन के परिवार का बदला लूँगा।"

"तुम बालदार भीड़, तुम दुख फैलाने वाले," बंदर ने उत्तर दिया, "तुम मेरी शक्तियों को समझ नहीं सकते। मत जाओ—मेरी लाठी से इसे ले लो।" राक्षस वार से बचने के लिए घूम गया, फिर उसने आकाश-वर्गाकार भाले से उसके सिर पर पलटवार किया। दोनों ने पहाड़ की चोटी पर तीन-चार दौर तक लड़ाई की, जब तक कि राक्षस इतना कमजोर नहीं हो गया कि वह लड़ न सके। वह मैदान से भाग गया, बंदर उसका पीछा करता रहा, जब तक कि अध्याय 35 ने उसे रोक नहीं दिया।

वरिष्ठ दानव राजा। जब इन दोनों ने तीन और दौर की लड़ाई लड़ी, तो सेप्टिमस फॉक्स ने फिर से हमला शुरू कर दिया।

युद्ध के किनारे पर खड़े होकर यह सब देखकर पिग ने उसे रोकने के लिए अपने नौ दाँतों वाले रेक को लहराया। युद्ध लंबे समय तक अनिर्णायक रूप से चलता रहा, जिसमें दोनों योद्धा एक-दूसरे को रोकते रहे, अंततः दानव राजा ने पिग को घेरने के लिए सभी दानव सैनिकों को बुला लिया।

इस बीच, संज़ंग गुफा में बैठा चीख-पुकार और ज़मीन के कांपने की आवाज़ें सुन रहा था। उसने साधु सैंड को बाहर जाकर यह देखने को कहा कि उसका भाई जीत रहा है या नहीं। साधु सैंड ने अपनी दानव-नाशक छड़ी उठाई और दहाड़ते हुए बाहर निकल पड़ा, जिससे शैतानी झुंड भाग गया। हालात बिगड़ते देख सेप्टिमस भागने लगा, तभी सूअर ने पीछे से आकर उसे अपनी कुदाल से ज़ोरदार प्रहार किया। इससे उसके शरीर से खून की नौ धाराएँ बह निकलीं और उस बेचारे की आत्मा उसके आगे-आगे चलने लगी। जब सूअर ने उसे पकड़ा और उसके कपड़े फाड़े, तो उसने देखा कि सेप्टिमस वास्तव में एक लोमड़ी की आत्मा थी।

अपने चाचा को घायल देखकर दानव राजा बंदर से अलग हो गया और सूअर पर वार करने के लिए अपनी तलवार उठाई, जिसे सूअर ने अपने रेक से रोक दिया। जब दोनों लड़ रहे थे, तभी साधु सैंड आया और उसने अपनी लाठी से दानव राजा पर प्रहार किया। यह दानव राजा के लिए असहनीय था, इसलिए वह अपनी हवा और बादल पर सवार होकर दक्षिण की ओर भाग गया, सूअर और साधु सैंड उसके पीछे-पीछे गए।

यह देखकर महान ऋषि तुरंत अपने बादल पर सवार होकर आकाश में उड़ गए। उन्होंने बूढ़े दानव को पकड़ने के लिए कलश निकाला।

"राजा स्वर्ण सींग!" उसने पुकारा, और बूढ़ा राक्षस, यह सोचकर कि उसका कोई पराजित छोटा शैतान पुकार रहा है, जवाब देने के लिए मुड़ा। उसने फूलदान में सीटी बजाई, और बंदर ने उस पर एक लेबल लगा दिया जिस पर लिखा था: महान भगवान लाओ के लिए: नियमों और अध्यादेशों के अनुसार तत्काल कार्रवाई की जाए।

सात सितारा तलवार ज़मीन पर गिर गई, और अब वह भी बंदर की हो गई। "तलवार तो तुम्हारे पास है, भाई," सूअर उसकी ओर आते हुए बोला, "लेकिन बुरी आत्मा कहाँ है?"

"उसका काम तमाम हो गया," बंदर हँसते हुए बोला। "मैंने उसे इस फूलदान में रख दिया है।" सुअर की तरह, फ्रायर सैंड भी यह सुनकर बहुत खुश हुआ।

अब जब सभी दुष्ट आत्माओं का नाश हो चुका था, शिष्य गुफा में वापस गए और संज़ंग को खुशखबरी सुनाई: "पर्वत शुद्ध हो गया है और अब कोई राक्षस नहीं हैं। कृपया सवार हो जाइए, गुरुजी, और हम चलते हैं।" संज़ंग खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। गुरुजी और शिष्यों ने नाश्ता किया, अपना सामान और घोड़ा तैयार किया और पश्चिम की ओर चल पड़े।

जब वे चल रहे थे तभी अचानक रास्ते के किनारे एक अंधा आदमी प्रकट हुआ, उनके पास आया और संजांग के घोड़े को छीन लिया।

"तुम कहाँ जा रहे हो, भिक्षु?" उसने पूछा। "मुझे मेरा खजाना लौटा दो।"

"बस हो गया," सुअर ने भयभीत होकर कहा। "वही पुराना राक्षस अपने खजाने वापस मांगने आया है।"

जब बंदर ने ध्यान से देखा और पाया कि वह सर्वोच्च भगवान लाओ ज़ी हैं, तो वह उनके पास दौड़ा, उन्हें प्रणाम किया और पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं, बूढ़े दोस्त?"

आदरणीय वृद्ध तुरंत जेड के राज्य में अपने सिंहासन पर विराजमान हुए, नौ कोहरे के बीच सीधे खड़े हुए और पुकारा, "सूर्य, नौसिखिए, मुझे मेरे खजाने वापस दे दो।" महान ऋषि वायु में उठे और निवेदन किया।

"कौन से खजाने?"

“मैं लौकी में सिंदूर रखता हूँ और कलश में पानी,” भगवान लाओ ने उत्तर दिया। “कीमती तलवार का उपयोग मैं राक्षसों को नष्ट करने के लिए करता हूँ, पंखे का उपयोग आग को हवा देने के लिए और रस्सी का उपयोग अपने वस्त्र को बांधने के लिए करता हूँ। उन दो राक्षसों में से एक मेरा सोने का भट्ठी की देखभाल करने वाला नौकर था और दूसरा मेरी चांदी की भट्ठी की देखभाल करने वाला नौकर था। उन्होंने मेरे खजाने चुरा लिए और मनुष्यलोक में आ गए। मुझे वे कहीं नहीं मिले।”
आपने उन्हें पकड़कर बहुत अच्छा काम किया है।
“तुम सचमुच बहुत असभ्य हो, बूढ़े,” महान ऋषि ने कहा। “तुम पर लापरवाही का आरोप लगना चाहिए क्योंकि तुमने अपने घर के सदस्यों को दुष्ट आत्मा बनने दिया।”
"गलत व्यक्ति को दोष मत दो," भगवान लाओ ने कहा। "इसमें मेरा कोई हाथ नहीं था। समुद्र से आए बोधिसत्व ने मुझसे तीन बार इन्हें उधार मांगा था और इन्हें यहाँ भेज दिया ताकि इन्हें राक्षस बना दिया जाए और यह परखा जा सके कि क्या तुम्हारे गुरु और उनके शिष्य सचमुच पश्चिम जाना चाहते थे।"
यह सुनकर महान ऋषि ने सोचा, "वह बोधिसत्व तो बड़ी झूठी है। जब उसने मुझे बचाया और पश्चिम की यात्रा पर शास्त्र लाने के लिए तांग पुजारी की रक्षा करने को कहा, तो मैंने कहा कि यात्रा कठिन और मुश्किल होगी। उसने वादा किया था कि जब भी हालात बहुत खराब होंगे, वह आकर मेरी मदद करेगी। लेकिन मदद करने के बजाय उसने दुष्ट आत्माओं को भेजकर मुझे परेशान किया है। वह झूठी है! उसे तो जीवन भर कुंवारी ही रहना चाहिए। अगर वह बूढ़ा खुद यहाँ न आया होता, तो मैं उसे शास्त्र बिल्कुल वापस न देता। लेकिन अब जब तुमने मुझे यह सब बता दिया है, तो बेहतर है कि तुम उन्हें ले लो।"
जब भगवान लाओ को अपने पाँचों खजाने वापस मिल गए, तो उन्होंने लौकी और फूलदान के ढक्कन खोले और अमर वाष्प की दो फुहारें निकालीं। जैसे ही उन्होंने उनकी ओर इशारा किया, वे उनके दो सेवकों में बदल गईं, जो सोने और चांदी की भट्टी में उनके दोनों ओर सेवा करते थे। फिर रंग-बिरंगी रोशनी की असंख्य किरणें प्रकट हुईं और वे वापस तुशिता महल में लौट आईं और सीधे दलुओ स्वर्ग की ओर चली गईं।
यदि आपको नहीं पता कि इसके बाद क्या हुआ, या महान ऋषि सूर्य ने तांग पुजारी

की रक्षा कैसे की, या वे पश्चिमी स्वर्ग कब पहुँचे, तो अगली कड़ी में दिए गए स्पष्टीकरणों को सुनें।

अध्याय 36

जब मन-बंदर सही राह पर आ जाता है, तो सभी बुराई के कारण हार मान लेते हैं।

जब बगल का द्वार टूट गया तो चंद्रमा अपनी पूरी चमक के साथ प्रकट हुआ। कथा बताती है कि कैसे नौसिखिए सूर्य ने अपने बादल को धरती पर उतारा और गुरु एवं उनके साथी शिष्यों को बोधिसत्व द्वारा दो सेवकों को उधार लेने और भगवान लाओ द्वारा अपने खजाने को पुनः प्राप्त करने के बारे में सब कुछ बताया। संजांग ने बड़े ही आशय से धन्यवाद व्यक्त किया, फिर दृढ़ निश्चय और श्रद्धापूर्वक पश्चिम की ओर अपनी पूरी शक्ति से प्रस्थान करने की तैयारी की। जैसे ही वह घोड़े पर सवार हुए, सुअर ने सामान अपने कंधे पर उठाया, साधु रेत ने घोड़े की लगाम पकड़ी और बंदर ने अपने लोहे के डंडे से पहाड़ की ढलान पर सीधा रास्ता साफ किया। हम इस बात का पूरा वर्णन नहीं कर सकते कि वे बारिश में कैसे सोए, हवा से भोजन कैसे किया, पाले में कैसे लिपटे रहे और ओस में कैसे रहे। जब वे काफी देर तक यात्रा करते रहे तो उन्होंने पाया कि आगे का रास्ता एक और पहाड़ से अवरुद्ध है।

"शिष्यों," संजांग ने अपने घोड़े की पीठ से चिल्लाकर कहा, "जरा देखो वह पहाड़ कितना ऊंचा और पथरीला है।"

आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना होगा; मुझे डर है कि राक्षस हम पर हमला कर सकते हैं।"

"अपने इन बेतुके ख्यालों को छोड़ो, स्वामी," बंदर ने उत्तर दिया, "और शांत हो जाओ। बेशक कुछ नहीं होगा।"

“लेकिन शिष्य, पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा इतनी कठिन क्यों है?” संज़ंग ने पूछा। “जहाँ तक मुझे याद है, चांगआन शहर छोड़ने के बाद से मैंने चार-पाँच साल वसंत, ग्रीष्म, शरद और शीत ऋतुओं का सामना किया है। अध्याय 36

क्या मैं अभी तक वहां नहीं पहुंचा हूँ?

इस सवाल पर मंकी को हंसी आ गई: "अभी तो बहुत जल्दी है। हम अभी घर के मुख्य दरवाजे से बाहर भी नहीं निकले हैं।"

"झूठ बोलना बंद करो, भाई," सुअर ने कहा। "धरती पर ऐसा कोई सामने का दरवाजा नहीं है।"
"लेकिन हम अभी भी हॉल में इधर-उधर भटक रहे हैं," मंकी ने कहा।
"बड़ी-बड़ी बातें करके हमें डराने की कोशिश मत करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "इतना बड़ा हॉल हो ही नहीं सकता: इतनी बड़ी छत की बीम कहीं मिलेंगी ही नहीं।"
"भाई, अगर तुम मेरी बात मानो तो नीला आकाश छत की टाइलें हैं, सूरज और चाँद खिड़कियाँ हैं, और चार पर्वत और पाँच चोटियाँ खंभे और बीम हैं। स्वर्ग और पृथ्वी एक बड़े हॉल की तरह हैं।"
"बस बहुत हो गया," पिग ने कहा। "क्यों न हम थोड़ी देर इधर-उधर घूम लें और फिर वापस चलें?"
"बकवास मत करो," बंदर ने कहा। "मेरे साथ चलते रहो।"
महान संत ने अपना लोहे का डंडा कंधे पर रखा, तांग पुजारी को शांत किया और पहाड़ों से आगे बढ़ने का रास्ता साफ किया। जब गुरु ने अपने घोड़े से उस दृश्य को देखा तो उन्हें वह एक शानदार पर्वतीय दृश्य लगा। वास्तव में:
विशाल शिखर सप्तर्षि के हैंडल को स्पर्श करता है;
पेड़ों की चोटियाँ बादलों तक पहुँचती हुई प्रतीत होती हैं।
नीले रंग की घनी धुंध से
घाटी के मुहाने पर बंदर की चीख सुनाई देती है;
फ़िरोज़ी रंग की गहरी छायाओं में
चीड़ के पेड़ों के बीच सारस आवाजें निकाल रहे हैं।
जैसे ही हवाएँ ज़ोर से चलती हैं, घाटियों में पर्वतीय अप्सराएँ प्रकट होती हैं।
लकड़हारों के साथ शरारत करना;
चालाक लोमड़ियाँ चट्टानों के किनारों पर बैठी रहती हैं।
शिकारियों के लिए दहशत का कारण।
एक शानदार पर्वत,
इसका हर हिस्सा विशाल और एकदम सपाट है।
विचित्र आकृतियों वाले चीड़ के पेड़ अपनी चमकीली हरी छतरी फैलाते हैं;

सूखे पुराने पेड़ों से विस्टेरिया की लताएँ लटकती हैं।
जैसे वसंत ऋतु का पानी हवा में उड़ता है
ठंडी हवा का झोंका आता है और ठंडक पहुंचाता है।
जहां चट्टानें ऊंची उठती हैं
एक शुद्ध हवा आँखों को छूती है और स्वप्निल आत्मा को चौंका देती है।
कभी-कभी बाघ की दहाड़ सुनाई देती है।
और अक्सर पहाड़ी पक्षियों के गीत भी सुनाई देते हैं।
हिरणों और मुंटजैक के झुंड कंटीली झाड़ियों से होते हुए उछलते-कूदते हुए आगे बढ़ते हैं;
नदी के किनारे रहने वाले हिरण और नर हिरण अपने भोजन की तलाश करते हैं।
भागदौड़ और जल्दबाजी।
घास के ढलान पर खड़े होकर,
कोई भी यात्री इसे नहीं देख सकता;
गहरी घाटियों में चलते हुए,
चारों ओर सियार और भेड़िये मौजूद हैं।
यह बुद्ध के आत्म-साधना के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है।
लेकिन यह पक्षियों और जानवरों का निवास स्थान है।
जैसे-जैसे स्वामी इन पहाड़ों में गहराई तक आगे बढ़ता गया, उसका दिल भय से कांपने लगा। अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए उसने पुकारा,
"बुद्धि में वृद्धि होने और प्रतिज्ञा लेने के बाद,
महाराज ने मुझे राजधानी से बाहर तक पहुंचाया।
अपनी यात्रा में मुझे तीन पथभ्रष्ट लोग मिले।
घोड़े की पीठ पर सवार होकर मुझे आगे बढ़ने में मदद करने के लिए।
पहाड़ियों और घाटियों के ऊपर मैं धर्मग्रंथों की खोज करता हूँ,

बुद्ध की पूजा करने के लिए कई पहाड़ों पर चढ़ना।

मैं अपने आप को मानो किसी बाड़ के पीछे सुरक्षित कर रहा हूँ।
मैं राजमहल देखने कब वापस आऊंगा?
यह सुनकर बंदर ने व्यंग्यात्मक हंसी के साथ कहा, "चिंता मत करो, गुरुजी, और इतना परेशान मत होइए। बस आराम से रहो और आगे बढ़ते रहो। वैसे भी, आप तो अवश्य सफल होंगे क्योंकि आप बहुत मेहनती हैं।" गुरुजी और शिष्य पर्वतीय दृश्यों का आनंद लेते हुए आगे बढ़े। देखते ही देखते सूरज पश्चिम में डूब गया। सचमुच:
दस मील लंबे मंडप से कोई भी यात्री बाहर नहीं निकलता।
नौ आकाशों में तारे दिखाई देते हैं।
आठों धाराओं पर सभी नावें बंदरगाह में खड़ी हैं।
सात हजार शहरों के द्वार बंद कर दिए गए हैं।
छह महलों और पांच विभागों से अधिकारी चले गए हैं; चार समुद्रों और तीन नदियों पर मछली पकड़ने की जालियाँ टिकी हुई हैं।
दोनों मीनारों में ढोल और घंटी की आवाज सुनाई देती है;
एक चमकीला चंद्रमा धरती और आकाश को रोशन करता है।
दूर तक देखने पर उस आदरणीय बुजुर्ग ने एक के बाद एक कई मीनारों और विशाल हॉलों की कतारें देखीं।
"शिष्यों, अब काफी देर हो चुकी है। सौभाग्य से पास में ही वे मीनारें और हॉल हैं। मुझे लगता है कि वे किसी बौद्ध या ताओवादी मठ या कॉन्वेंट के होंगे। चलो आज रात वहीं बिताते हैं और सुबह फिर निकल पड़ते हैं।"
“आप सही कह रहे हैं, गुरुजी,” बंदर ने कहा, “लेकिन धैर्य रखिए। मुझे देखने दीजिए कि यह अच्छी जगह है या बुरी।” महान ऋषि हवा में उछले और उसका बारीकी से निरीक्षण किया। यह वास्तव में एक बौद्ध मठ था। वे देख सकते थे
लाल रंग से प्लास्टर की हुई टाइलों की दीवार,
दोनों फाटकों पर सुनहरे स्टड लगे हुए हैं।
पहाड़ियों के बीच, मीनारों की कतार के पीछे कतारें,
पहाड़ों के भीतर छिपे हुए एक के बाद एक कई गलियारे।

दस हजार बुद्धों का भवन तथागत हॉल के सामने स्थित है, जबकि सनशाइन टैरेस हीरो गेट के ठीक सामने है।
सात मंजिला पैगोडा रात के कोहरे को समेट लेता है।
तीनों बुद्ध प्रतिमाएं अपनी भव्यता प्रदर्शित करती हैं।
भिक्षुओं के छात्रावास के बगल में स्थित मंजुश्री टावर,
दया कक्ष के बगल में स्थित मैत्रेय मंडप।
माउंटेन टॉवर के बाहर हरी बत्तियाँ नाच रही हैं,
शून्य-गतिमान हॉल से बैंगनी बादल उठते हैं।
चीड़ के पेड़ों की हरियाली बांस की हरियाली से मिल जाती है।
मठाधीश के ध्यान कक्ष में सब कुछ पवित्र है।
संगीत को शांत और सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।
और सभी नदियाँ लौटते समय आनंदित होती हैं।
ध्यान के स्थान पर भिक्षु शिक्षा देते हैं;
संगीत कक्ष में कई वाद्य यंत्र बजते हैं।
आश्चर्य की छत पर एपिफिलम का फूल गिरता है,
उपदेश कक्ष के सामने धर्मग्रंथों का ताड़ का पेड़ उगता है।
तीन रत्नों का स्थान जंगलों से घिरा हुआ है;
ये पहाड़ भारतीय राजकुमार के महल की रक्षा करते हैं।
दीवारों के किनारे जलते हुए दीपक तेज रोशनी बिखेर रहे हैं;
अगरबत्तियों के धुएं से हवा घनी हो गई है।
अपने बादल को ज़मीन पर उतारकर, महान ऋषि सूर्य ने संज़ंग को बताया, "गुरुजी, यह एक बौद्ध मठ है, और रात बिताने के लिए यह एक अच्छी जगह होगी। चलिए वहीं चलते हैं।" आदरणीय ऋषि ने अपने घोड़े को फिर से आगे बढ़ने दिया, और वे सीधे मठ के द्वार के बाहर तक चले गए। "गुरुजी," बंदर ने पूछा, "यह कौन सा मठ है?"
"यह पूछना बिल्कुल अनुचित है," संजांग ने जवाब दिया, "जब मेरा घोड़ा अभी-अभी रुका है और मुझे अपना पैर रकाब से निकालने का भी समय नहीं मिला है।"

“लेकिन आप तो बचपन से ही भिक्षु रहे हैं, आदरणीय महोदय,” बंदर ने कहा। “आपको सूत्र और धर्म का अध्ययन करने से पहले कन्फ्यूशियस की पुस्तकें पढ़ाई गई थीं। आप बहुत शिक्षित हैं और इसके अलावा तांग सम्राट ने आप पर बहुत कृपा दिखाई है। तो फिर आप द्वार पर लिखे उन बड़े-बड़े अक्षरों को क्यों नहीं पढ़ सकते?”
“अरे मूर्ख बंदर,” आदरणीय बुजुर्ग ने शाप देते हुए कहा, “तुम्हें कुछ पता नहीं है। मैं अपने घोड़े को पश्चिम की ओर दौड़ा रहा था और सूरज की रोशनी मेरी आँखों में पड़ रही थी। इसके अलावा, अक्षर धूल से ढके हुए हैं। इसीलिए मैंने उन्हें नहीं देखा।” यह सुनकर बंदर ने झुककर अपना कद बीस फीट से भी अधिक बढ़ा लिया, अपने हाथ से धूल साफ की और अपने स्वामी को उन्हें पढ़ने के लिए आमंत्रित किया। वहाँ पाँच शब्द बड़े अक्षरों में लिखे थे: शाही रूप से स्थापित
कीमती लकड़ी का मठ। बंदर अपने सामान्य आकार में वापस आ गया और गुरु से पूछा कि उनमें से कौन मठ में जाकर रहने की जगह मांगेगा।
"मैं करूँगा," संज़ंग ने कहा। "तुम सब इतने बदसूरत, अभद्र भाषा बोलने वाले, कठोर और अभिमानी हो कि तुम यहाँ के भिक्षुओं को इतना डरा सकते हो कि वे हमें शरण देने से इनकार कर दें। यह ठीक नहीं होगा।"
"तो फिर, स्वामी जी," बंदर ने उत्तर दिया, "बस बहुत हो गया। कृपया अंदर जाइए।"
संज़ंग ने अपनी मठवासी छड़ी नीचे रखी, अपना लबादा उतारा, अपने कपड़े ठीक किए, हाथ जोड़े और मठ के द्वार से अंदर चले गए। दोनों ओर लाल रंग की रेलिंग के पीछे दो वज्रपाणि संरक्षक देवता विराजमान थे। ये मूर्तियाँ भव्य और भयावह दोनों थीं: किसी का लोहे जैसा चेहरा और लोहे जैसी मूंछें मानो जीवित प्रतीत होती थीं।
दूसरे व्यक्ति के झुलसे हुए माथे और उभरी हुई आँखों को अत्यंत खूबसूरती से उकेरा गया था।
बाईं ओर लोहे की तरह गांठदार मुट्ठियाँ थीं,
दाईं ओर तांबे की अयस्क की तरह खुरदुरे हाथ थे।
उनकी सुनहरी कवच प्रकाश में चमक रही थी।
हेलमेट और कढ़ाईदार कमरबंद हवा में लहरा रहे थे।
पश्चिम में कई लोग बुद्ध की पूजा करते हैं;
पत्थर के तिपाई पर रखी अगरबत्ती लाल रंग से जगमगा रही है।
जब संजांग ने इन मूर्तियों को देखा तो उसने सिर हिलाया, आह भरी और कहा, "अगर

पूर्व में ऐसे लोग होते जो धूप जलाने और पूजा करने के लिए इस तरह की बड़ी मूर्तियां बना सकते तो मुझे कभी पश्चिमी स्वर्ग जाने की जरूरत नहीं पड़ती।"
गहरी आहें भरते हुए वह मठ के भीतरी द्वार से अंदर गया, जहाँ धृतराष्ट्र, वैश्रवण, विरुद्धक और यिरुपाक्ष की प्रतिमाएँ पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम दिशाओं में उचित वायु और वर्षा के प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए स्थापित थीं। भीतरी द्वार से अंदर पहुँचते ही उसने चार ऊँचे देवदार के पेड़ देखे, जिनमें से प्रत्येक की छतरी छत्र के आकार की फैली हुई थी। अचानक उसने ऊपर देखा तो उसे मुख्य बुद्ध कक्ष दिखाई दिया। उसने हाथ जोड़कर प्रतिमाओं के समक्ष प्रणाम किया, फिर उठा, बुद्ध प्रतिमाओं वाले चबूतरे के चारों ओर घूमा और पिछले द्वार से बाहर निकल गया। उसने देखा कि बुद्ध प्रतिमाओं के पीछे बोधिसत्व गुआनयिन की प्रतिमा थी, जो दक्षिणी सागर में सभी प्राणियों का उद्धार कर रही थीं। शिल्प कौशल उत्कृष्ट था: झींगे, मछलियाँ, केकड़े और कछुओं की आकृतियाँ सिर और पूंछ के साथ रचना से उभरती हुई दिखाई दे रही थीं, मानो वे समुद्र की लहरों में उछल-कूद और खेल रहे हों।
अध्याय 36
504
पश्चिम की यात्रा
आदरणीय बुजुर्ग ने कई बार सिर हिलाया और बार-बार आह भरते हुए कहा, "हे भगवान! यदि शल्क और खोल वाले सभी प्राणी बुद्ध की पूजा करते हैं, तो केवल मनुष्य ही क्यों सदाचारी जीवन नहीं जीता?"
जैसे ही उसने आह भरी, एक भिक्षु सबसे भीतरी द्वार से बाहर आया। संजांग की असाधारण और विशिष्ट उपस्थिति को देखकर वह जल्दी से उसके पास गया, विनम्रतापूर्वक उसका अभिवादन किया और कहा, "आप कहाँ से आए हैं, पूज्यवर?"
"मुझे महामहिम तांग सम्राट ने पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए भेजा है। चूंकि हम शाम को आपके इस प्रतिष्ठित मठ में पहुंचे हैं, इसलिए मैं निवेदन करता हूं कि हमें यहां रात बिताने की अनुमति दी जाए।"
“आदरणीय महोदय,” भिक्षु ने कहा, “कृपा करके मुझसे नाराज़ न हों, लेकिन यह निर्णय लेना मेरा काम नहीं है। मैं तो बस एक साधारण भिक्षु हूँ जो झाड़ू लगाता है, घंटी बजाता है और छोटे-मोटे काम करता है। यहाँ एक आदरणीय मठाधीश हैं जो यहाँ के प्रभारी हैं और मुझे उन्हें ही रिपोर्ट करना होगा। यदि वे आपको यहाँ रहने की

अनुमति देते हैं तो मैं फिर से निमंत्रण लेकर आऊँगा, लेकिन यदि वे अनुमति नहीं देते हैं तो मुझे खेद है कि मैं आपका और समय बर्बाद नहीं कर पाऊँगा।”

"आपकी परेशानी के लिए धन्यवाद," संजांग ने कहा।

आम भिक्षु मठाधीश को सूचना देने के लिए जल्दी से अंदर गया, जो कि चर्च के मामलों का अधीक्षक भी था।

"महाराज, बाहर कोई है।" मठाधीश उठे, अपना मुकुट और वस्त्र पहने और जल्दी से दरवाजे खोलकर उन्हें अंदर आने दिया।

"वह कहाँ है?" उसने उस भिक्षु से पूछा।

"क्या आप उसे मुख्य हॉल के पीछे, वहाँ नहीं देख सकते?" उस भिक्षु ने उत्तर दिया।

द्वार के सहारे खड़े संज़ंग सिर ढके हुए थे और उन्होंने पच्चीस पट्टियों से बना भिक्षु वस्त्र और पानी से भीगे गंदे बोधिधर्म सैंडल पहने हुए थे। उन्हें देखते ही मठाधीश ने भिक्षु से कहा, "भाई, तुम्हें अभी और कोड़े खाने की ज़रूरत है। क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है कि मैं इस मठ में उच्च पद पर हूँ और केवल शहर से आने वाले उन प्रतिष्ठित लोगों को ही यहाँ शरण देता हूँ जो धूप जलाने आते हैं? तुम इतने मूर्ख कैसे हो सकते हो कि मुझसे ऐसे भिक्षु को शरण देने के लिए कह रहे हो? ज़रा उसका चेहरा देखो। तुम देख सकते हो कि वह ईमानदार नहीं है। वह शायद कोई भटकता हुआ भिक्षु है जो देर रात होने के कारण यहाँ ठहरने की गुहार लगा रहा है। हमारे यहाँ ऐसे लोगों से कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। वह रात छज्जे के नीचे बैठकर गुज़ार सकता है। मुझे उसके बारे में क्यों बता रहे हो?" इतना कहकर वह मुड़ा और चला गया।

यह सब सुनकर संज़ंग की आँखों से आँसू बहने लगे। "हाय," उसने कहा। "हाय! यह कितना सच है कि 'घर से दूर रहने वाला व्यक्ति मिट्टी के समान होता है।' मैं बचपन से ही भिक्षु रहा हूँ। मैंने कभी

'मांस खाते समय मृतकों को क्षमा कर दिया'

या नुकसान पहुंचाने का विचार आया हो,

या फिर क्रोधपूर्वक सूत्रों का पाठ करें।

या फिर शांति के बिना चिंतन किया।

और न ही मैंने

पश्चिम की यात्रा
छत की टाइलें फेंकीं, या ईंट उछाली
किसी मंदिर भवन को नुकसान पहुंचाना,
या कभी अर्हत के चेहरे से खुरच कर निकाला गया हो
अत्यंत कीमती सोने की परत।
हे भगवान! पता नहीं किस जन्म में मैंने स्वर्ग और पृथ्वी को इतना नुकसान पहुंचाया था कि मुझे इस जन्म में हमेशा बुरे लोगों से ही मिलना पड़ रहा है। हे भिक्षु, अगर आप हमें रात भर ठहरने की जगह नहीं देंगे, तो आपने इतनी शर्मनाक बातें क्यों कहीं और हमें छज्जे के नीचे बैठने को क्यों कहा? अच्छा हुआ कि आपने वुकॉन्ग से ऐसा कुछ नहीं कहा। अगर कहा होता तो वह यहाँ आकर लोहे के डंडे से आपके पैर तोड़ देता।
"खैर, कोई बात नहीं," संज़ंग ने सोचा। "कहावत के अनुसार, शिष्टाचार ही इंसान को इंसान बनाता है। मैं अंदर जाकर उससे पूछूंगा और देखूंगा कि वह क्या फैसला करता है।"
गुरु द्वार से होकर मठाधीश के आवास में प्रवेश किया, जहाँ उन्होंने मठाधीश को अपने बाहरी वस्त्र उतारे हुए और क्रोध से उग्र बैठे देखा। मेज पर रखे कागजों के ढेर को देखकर संजांग यह नहीं समझ पाए कि वे धर्मग्रंथ पढ़ रहे थे या किसी के लिए बौद्ध क्षमा पत्र लिख रहे थे।
आगे बढ़ने का साहस न करते हुए, संजांग आंगन में खड़ा रहा, झुककर प्रणाम किया और जोर से कहा, "मेरे स्वामी मठाधीश, आपका शिष्य आपको प्रणाम करता है।"
भिक्षु, जो जाहिर तौर पर उसके आने से बहुत चिढ़ गया था, ने उसकी अभिवादन का मुश्किल से ही जवाब दिया और पूछा, "आप कहाँ से हैं?"
इस पर संज़ंग ने उत्तर दिया, "मुझे महामहिम तांग सम्राट ने पश्चिमी स्वर्ग में जीवित बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए भेजा है। मैं आपके प्रतिष्ठित मठ में सूर्यास्त के समय पहुँचा हूँ, इसलिए आपसे ठहरने का अनुरोध कर रहा हूँ। मैं कल सुबह सूर्योदय से पहले चला जाऊँगा। हे आदरणीय मठाधीश, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप मुझ पर कृपा करें।"
तभी मठाधीश ने थोड़ा झुककर पूछा, "क्या आप तांग सान्ज़ांग हैं?"
"हाँ मैं हूँ।"

"यदि आप शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहे हैं, तो आपको रास्ता क्यों नहीं पता?"
"मैं पहले कभी यहां नहीं आया," संजांग ने कहा।
"पश्चिम की ओर लगभग डेढ़ मील दूर टेन माइल इन है," मठाधीश ने कहा, "जहाँ भोजन मिलता है और आप रात भर ठहर सकते हैं। दूर से आए आप भिक्षुओं के लिए यहाँ ठहरना सुविधाजनक नहीं होगा।"
"मठाधीश जी," संज़ंग ने उत्तर दिया, "एक कहावत है कि 'बौद्ध और ताओवादी मठ और कॉन्वेंट हम भिक्षुओं के लिए विश्राम स्थल हैं; मंदिर के द्वार का दर्शन चावल की एक बड़ी थाली के बराबर है।' आप हमें मना नहीं कर सकते।"
आपका इससे क्या मतलब है?
"तुम घुमंतू भिक्षुओं," मठाधीश ने क्रोध में गरजते हुए कहा, "तुम सब वाक्पटुता की कला में माहिर हो, है ना?"

"आप ऐसा क्यों कहते हैं?" संजांग ने पूछा, जिस पर मठाधीश ने उत्तर दिया, "एक पुरानी कहावत है, जब बाघ शहर में आता है,
हर घर ने अपने दरवाजे बंद कर लिए।
हालांकि उसने अभी तक किसी को काटा नहीं था,
टाइगर का नाम पहले से ही बदनाम था।
"तुम्हारा मतलब क्या है, 'टाइगर का नाम पहले बुरा था?'" संजांग ने पूछा।
"कुछ साल पहले," दूसरे ने उत्तर दिया, "भिखारी भिक्षुओं का एक समूह आया और हमारे द्वार पर बैठ गया। उनकी दयनीय हालत देखकर—उनके कपड़े फटे हुए थे, वे नंगे पैर और सिर ढके हुए थे—मुझे उनकी इस फटीचर हालत पर दया आई।"
इसलिए मैंने उन्हें अपने कमरे में बुलाया, बैठने के लिए सबसे अच्छी जगहें दीं, खाना खिलाया, उनमें से हर एक को एक पुराना कपड़ा उधार दिया और उन्हें कुछ दिनों के लिए रहने दिया। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुफ्त खाना और मुफ्त कपड़े उनके मन से जाने का ख्याल पूरी तरह मिटा देंगे। वे सात-आठ साल तक रहे। रहना उतना बुरा नहीं था, बल्कि उनके द्वारा किए गए सारे भयानक काम बहुत बुरे थे।

"कौन सी भयानक बातें?" संजांग ने पूछा। "सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ," मठाधीश ने उत्तर दिया।
जब वे खाली बैठे होते थे या ऊब जाते थे, तो वे ईंटें इधर-उधर फेंकते थे।
या फिर मठ की दीवारों से कीलें उखाड़ दीं।
सर्दी के दिनों में वे सभी खिड़कियों के फ्रेम जला देते थे।
गर्मी के मौसम में टूटे-फूटे दरवाजों पर बाहर सोया।
उन्होंने झंडे फाड़कर अपने पैरों के लिए कपड़े बना लिए, हमारे धूप और हाथीदांत को शलजम के बदले बेच दिया।
मैंने उस दीपक से तेल चुराया जो कभी बुझता नहीं है।
और हमने अपने सारे कड़ाहे और बर्तन जुए में हार दिए।"
यह सुनकर संज़ंग ने मन ही मन सोचा, "अरे बाप रे! मैं तो इन लोगों की तरह रीढ़विहीन भिक्षु नहीं हूँ।" उसकी आँखों में आँसू आ गए थे, लेकिन फिर उसने सोचा कि कहीं मठाधीश उसका मज़ाक न उड़ाएँ, इसलिए उसने चुपके से अपने कपड़े से अपने आँसू पोंछे, सिसकियाँ रोकीं और अपने तीनों शिष्यों से मिलने के लिए जल्दी से बाहर चला गया।
अपने गुरु के क्रोधित चेहरे को देखकर बंदर ने उनसे पूछा, "गुरुजी, क्या अंदर मौजूद भिक्षुओं ने आपकी पिटाई की?"

"नहीं," संजांग ने उत्तर दिया।
"उन्होंने ऐसा किया ही होगा," बंदर ने कहा, "वरना मुझे रोने की आवाज़ क्यों सुनाई दी? क्या उन्होंने तुम्हें डांटा?"
"नहीं," संजांग ने कहा। "उन्होंने मुझे डांट नहीं लगाई।"
"अगर उन्होंने तुम्हें पीटा या डांटा नहीं, तो तुम इतने परेशान क्यों दिख रहे हो?" बंदर ने पूछा। "कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हें घर की याद आ रही है?"
तांग पुजारी ने कहा, "यह अच्छी जगह नहीं है।"
"ये लोग ज़रूर ताओवादी होंगे," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा।
"ताओवादी तो केवल ताओवादी मंदिर में ही मिलते हैं," संजांग ने क्रोधित होकर जवाब

दिया। "बौद्ध मठ में तो बौद्ध भिक्षु ही होते हैं।"
"तुम बिलकुल बेकार हो," बंदर ने कहा। "अगर वे बौद्ध भिक्षु हैं तो वे हमारे जैसे ही हैं। जैसा कि कहावत है, 'बौद्ध समुदाय में सभी मित्र होते हैं।' तुम यहीं बैठो, मैं आस-पास देख लेता हूँ।"
शानदार बंदर ने अपने सिर पर बंधी सोने की पट्टी को छुआ, अपनी स्कर्ट को कसकर बांधा, सीधे मुख्य मंदिर के हॉल में गया, तीन बुद्ध प्रतिमाओं की ओर इशारा करते हुए बोला, "तुम भले ही सोने की परत चढ़ी मिट्टी की बनी नकली प्रतिमाएं हो, लेकिन तुम्हारे भीतर कुछ भावना तो जरूर होगी। मैं आज शाम यहाँ रात भर ठहरने की अनुमति मांगने आया हूँ क्योंकि मैं पवित्र तांग पुजारी को बुद्ध की पूजा करने और पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए ले जा रहा हूँ। कृपया अभी हमें सूचित करें। यदि आप हमें रात भर नहीं ठहराएंगे, तो मैं इस लाठी के एक ही वार से तुम्हारे सोने के शरीरों को चकनाचूर कर दूंगा और तुम्हें तुम्हारी असलियत दिखा दूंगा।"
जब बंदर अपने इस बुरे स्वभाव और बड़बोलेपन में डूबा हुआ था, तभी शाम की धूप जलाने का काम कर रहे एक भिक्षु ने कई अगरबत्तियाँ जलाईं और उन्हें बुद्ध प्रतिमाओं के सामने रखे धूपदान में रख रहा था। बंदर की गुस्से भरी चीख से वह इतना डर गया कि गिर पड़ा। उठकर उसने बंदर का चेहरा देखा, जिसे देखकर वह फिर से गिर पड़ा, फिर लुढ़कता हुआ लड़खड़ाते हुए मठाधीश की कोठरी तक पहुँचा और वहाँ उसने बताया, "आदरणीय महोदय, बाहर एक भिक्षु है।"
“तुम जैसे आम भाइयों को और कोड़े पड़ने चाहिए,” मठाधीश ने कहा। “मैंने पहले ही कह दिया है कि वे छज्जे के नीचे बैठ सकते हैं, तो फिर शिकायत क्यों कर रहे हो? अगली बार बीस कोड़े पड़ेंगे।”
"लेकिन, आदरणीय महोदय," उस भिक्षु ने कहा, "यह एक अलग भिक्षु है। यह बेहद क्रूर दिखता है, और इसमें बिल्कुल भी हिम्मत नहीं है।"
"वह कैसा है?" मठाधीश ने पूछा।
"गोल आंखें, नुकीले कान, गालों पर हर जगह बाल और एक ऐसा चेहरा जो किसी गर्जन देवता की तरह बदसूरत था," उस भिक्षु ने कहा।
उसके हाथ में लाठी है और वह गुस्से से दांत पीस रहा है। वह किसी को मारने की तलाश में जरूर होगा।
“मैं बाहर जाकर उसे देखता हूँ,” मठाधीश ने कहा। जैसे ही उन्होंने अपना दरवाजा

खोला, बंदर अंदर घुस आया। वह सचमुच बदसूरत था: टेढ़ा-मेढ़ा, गांठदार चेहरा, पीली आँखें, उभरा हुआ माथा और बाहर निकले हुए दाँत। वह केकड़े जैसा था, अंदर से मांसल और बाहर से हड्डीदार। बूढ़ा भिक्षु इतना डर गया कि उसने अपने कमरे के दरवाजे बंद कर लिए।

उसके ठीक पीछे चल रहे बंदर ने दरवाजे तोड़ दिए और बोला, "जल्दी करो और मेरे लिए एक हजार साफ-सुथरे कमरे तैयार कर दो। मैं सोना चाहता हूँ।"

अध्याय 36

508

पश्चिम की यात्रा

अपने कमरे में छिपे मठाधीश ने गृहस्थ भिक्षु से कहा, "उसका बदसूरत होना उसकी गलती नहीं है। वह बस अपने चेहरे की कमी को छिपाने के लिए बड़ी-बड़ी बातें कर रहा है। पूरे मठ में मेरे कमरे, बुद्ध हॉल, ढोल-घंटी टावर और गलियारों को मिलाकर भी केवल तीन सौ कमरे हैं, लेकिन वह सोने के लिए एक हजार कमरे मांग रहा है। हम उन्हें तो बिल्कुल भी नहीं दे सकते।"

“आदरणीय महोदय,” उस भिक्षु ने कहा, “मैं बहुत डरा हुआ हूँ। बेहतर होगा कि आप उसे जवाब दें, चाहे जैसे भी हो।”

"आदरणीय महोदय," मठाधीश ने भय से कांपते हुए पुकारा, "आप आवास मांग रहे हैं, लेकिन हमारा छोटा मठ आपके लिए अत्यंत असुविधाजनक होगा, इसलिए हम आपका स्वागत नहीं कर पाएंगे। कृपया कहीं और रात बिताएं।"

बंदर ने अपनी लाठी को चावल के कटोरे जितना मोटा बनाया और उसे मठाधीश की कुटिया के बाहर आंगन में सीधा खड़ा कर दिया। उसने कहा, "अगर असुविधा हो, तो भिक्षु, आपको यहाँ से चले जाना चाहिए।"

"लेकिन मैं बचपन से यहीं रहता आया हूँ," मठाधीश ने कहा, "मेरे गुरु के गुरु ने यह मठ मेरे गुरु को सौंपा, जिन्होंने इसे मेरी पीढ़ी को सौंपा, और हम इसे बारी-बारी से अपने उत्तराधिकारियों और उनके बाद आने वाली पीढ़ियों को सौंपते रहेंगे।"

उत्तराधिकारी। भगवान ही जाने वह क्या कर रहा है, यहाँ घुसकर हमें यहाँ से हटाने की कोशिश कर रहा है।"

“कोई दिक्कत नहीं है, आदरणीय महोदय,” आम सदस्य ने कहा। “हम जा सकते हैं। वह अपना खंभा पहले ही आंगन में ले आए हैं।”

"बकवास बंद करो," मठाधीश ने कहा। "हम भिक्षुओं की संख्या चार-पाँच सौ है, बूढ़े और जवान, तो हम कहाँ जाएँगे? अगर हम चले भी गए तो हमारे रहने के लिए कोई जगह नहीं बचेगी।"

"अगर तुम्हारे पास कहीं और जाने की जगह नहीं है," बंदर ने कहा, जिसने बातचीत सुन ली थी, "तो तुम्हें किसी को भेजना होगा ताकि वह मुझसे लाठी से लड़ाई कर सके।"

"जाओ और मेरे लिए उससे लड़ो," मठाधीश ने आम भाई को आदेश दिया।

"आदरणीय महोदय," उस आम भाई ने विरोध करते हुए कहा, "आप मुझसे इतनी बड़ी तलवार से लाठी से लड़ने के लिए नहीं कह सकते।"

"आपको अवश्य ही करना चाहिए," मठाधीश ने उत्तर दिया और आगे कहा, "एक सेना को कई वर्षों तक खड़ा किया जाता है ताकि उसे एक ही सुबह में इस्तेमाल किया जा सके।"

“उसने तुम्हें उस लोहे की छड़ से मारा, इसकी चिंता मत करो,” उस भिक्षु ने कहा, “अगर वह तुम पर गिर भी जाए तो तुम बिल्कुल कुचल जाओगे।”

"और अगर यह तुम पर गिरकर तुम्हें कुचल भी न दे," मठाधीश ने कहा, "तो भी, अगर यह आंगन में ऐसे ही खड़ा है, तो हो सकता है कि तुम रात में इधर-उधर घूम रहे हो, इसे भूल जाओ और गलती से इससे टकराकर अपने सिर पर चोट लगा लो।"

“अब आपको समझ आ गया होगा कि यह कितना भारी है, पूज्यवर, आप मुझसे यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि मैं बाहर जाकर अपनी लाठी से उससे लड़ूँ?” भिक्षु ने कहा। भिक्षुओं के बीच इसी तरह से झगड़ा होता था।

“हाँ,” बंदर ने ये सब सुनकर कहा, “तुम मेरा मुकाबला नहीं कर सकते। लेकिन अगर मैं इस लाठी से तुममें से एक को भी मार डालूँ तो मेरे स्वामी मुझसे फिर से हत्या करने पर नाराज़ हो जाएँगे। बेहतर होगा कि मैं तुम्हें सबक सिखाने के लिए किसी और चीज़ पर वार करूँ।” मठाधीश के कमरे के दरवाज़े के बाहर एक पत्थर का शेर देखकर उसने अपनी लाठी उठाई और एक ही ज़ोरदार वार से उसे चकनाचूर कर दिया। जब मठाधीश ने खिड़की से यह देखा तो डर से उसकी हड्डियाँ और मांसपेशियाँ काँप उठीं। वह बिस्तर के नीचे छिप गया।

वह भिक्षु चूल्हे पर चढ़ गया और बार-बार कहने लगा, "महोदय, महोदय, वह लाठी बहुत भारी है, मैं आपका मुकाबला नहीं कर सकता। मैं आपसे विनती करता हूँ, मैं

आपसे विनती करता हूँ।"
अध्याय 36
509
पश्चिम की यात्रा
"मैं तुम्हें नहीं मारूंगा, भिक्षु," बंदर ने कहा। "मेरा बस एक सवाल है: मठ में कितने भिक्षु हैं?"
"हमारे पास कुल मिलाकर 285 कोठरियाँ हैं," मठाधीश ने भय से कांपते हुए उत्तर दिया, "और 500 भिक्षुओं के पास आधिकारिक दीक्षा लाइसेंस हैं।"
बंदर ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम उन पाँच सौ भिक्षुओं को जुलूस में लाओ, उन्हें लंबे वस्त्र पहनाओ और मेरे गुरु का स्वागत करो। तब मैं तुम्हें नहीं मारूंगा।"
"अगर आप मुझे नहीं मारेंगे, महोदय," मठाधीश ने कहा, "तो मैं खुशी-खुशी उसे अंदर ले आऊंगा।"
"तो जल्दी करो," बंदर ने कहा।
"मुझे परवाह नहीं कि डर से तुम्हारा पित्ताशय फट जाए, या तुम्हारा दिल टूट जाए," मठाधीश ने आम भिक्षु से कहा। "जाओ और सबको बताओ कि वे यहाँ आकर महामहिम तांग पुजारी का स्वागत करें।"
उस भिक्षु के पास अपनी जान जोखिम में डालने के अलावा कोई चारा नहीं था। सामने के दरवाजे से निकलने की हिम्मत न करते हुए, वह पीछे की दीवार में बने एक छेद से रेंगकर बाहर निकला और सीधे मुख्य हॉल में गया, जहाँ उसने पूर्व दिशा में रखे ढोल और पश्चिम दिशा में रखी घंटी को बजाया। दोनों की एक साथ ध्वनि से दोनों ओर के छात्रावासों में सो रहे सभी भिक्षु, चाहे वे युवा हों या वृद्ध, चौंक गए।
वे मुख्य हॉल में आए और पूछा, "ढोल और घंटी अभी क्यों बज रहे हैं? अभी बहुत जल्दी है।"
“तुरंत जाकर कपड़े बदल लो,” गृहस्थ भिक्षु ने कहा, “फिर वरिष्ठ भिक्षु के नेतृत्व में अपने-अपने समूहों में बँट जाओ और तांग देश से आए परम पूज्य भिक्षु का स्वागत करने के लिए मुख्य द्वार के बाहर जाओ।” तब सभी भिक्षु अत्यंत व्यवस्थित ढंग से जुलूस निकालते हुए उनका स्वागत करने के लिए द्वार से बाहर निकले। कुछ ने पूर्ण वस्त्र पहने थे, और कुछ ने कुर्ता; जिनके पास वस्त्र नहीं थे, उन्होंने बिना आस्तीन का एक प्रकार का अश्रु वस्त्र पहना था, और सबसे गरीब भिक्षुओं ने, जिनके पास उचित

वस्त्र नहीं थे, अपनी धोती के दोनों सिरों को अपने कंधों पर लपेट रखा था।
"भिक्षुओं, तुमने ये क्या पहन रखा है?" बंदर ने पूछा।
"महोदय, हमें मत मारिए," उन्होंने उसका बदसूरत और क्रूर चेहरा देखकर कहा, "हमें समझाने दीजिए। यह कपड़ा हम शहर में भीख मांगकर मांगते हैं। हमारे यहाँ कोई दर्जी नहीं है, इसलिए ये गरीबों के कपड़े हम खुद बनाते हैं।"
यह सुनकर बंदर मन ही मन हँसा, फिर उन सबको फाटक से बाहर ले जाकर घुटने टेकने को कहा। मठाधीश ने प्रणाम किया और पुकार कर कहा, "तांग के महाराज, कृपया मेरे कमरे में बैठिए।"
यह सब देखकर सुअर ने कहा, "मालिक, आप तो बिलकुल निकम्मे हैं। जब आप अंदर गए थे तो आप रोते-रोते और मुंह फुलाए हुए थे, इतना कि मानो आपके होठों पर बोतल लटकी हो। आखिर बंदर को ही कैसे पता है कि हमें प्रणाम करके स्वागत कैसे करवाया जाए?"
"बदतमीज़ बेवकूफ़," संज़ंग ने कहा। "कहावत है ना, शैतान भी बदसूरत चेहरे से डरता है।" उन सबको सिर झुकाकर प्रणाम करते देख संज़ंग बहुत असहज हो गया, इसलिए वह आगे बढ़ा और सबको उठने को कहा। सबने फिर से सिर झुकाया और कहा, "महाराज, अगर आप अपने शिष्य से दया करके हमें उस चाबुक से न मारने को कहें, तो हम खुशी-खुशी एक महीने तक यहीं घुटने टेकेंगे।"
तांग पुजारी ने कहा, "वुकोंग, तुम्हें उन पर प्रहार नहीं करना चाहिए।"
“मैंने उन्हें नहीं मारा,” बंदर ने कहा। “अगर मैंने मारा होता, तो मैं उन सबको खत्म कर देता।” तभी सारे भिक्षु खड़े हो गए। घोड़े को आगे बढ़ाते हुए, सामान से लदे कंधे पर लादे हुए, तांग पुजारी को उठाए हुए, सूअर को पीठ पर बिठाकर और साधु सैंड को सहारा देते हुए, वे सब मुख्य द्वार से होते हुए अध्याय 36 में प्रवेश कर गए।

पीछे की ओर मठाधीश का आवास था, जहाँ वे विधिवत क्रम से बैठ गए।
सभी भिक्षुओं ने फिर से प्रणाम करना शुरू कर दिया। "कृपया उठिए, मठाधीश," संज़ंग ने कहा। "अब और प्रणाम करने की कोई आवश्यकता नहीं है, यह मेरे जैसे गरीब भिक्षु के लिए दमनकारी है। हम दोनों बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं।"
"महामहिम, आप एक शाही आयुक्त हैं," मठाधीश ने उत्तर दिया, "और मैं आपका

ठीक से अभिवादन नहीं कर पाया। आप हमारे इस दयनीय मठ में आए, लेकिन जब मैं आपसे मिला तो मेरी नश्वर आँखों ने आपकी उच्च पदवी को नहीं पहचाना। क्या मैं यह पूछने का साहस कर सकता हूँ, महाराज, कि आप अपनी यात्रा में शाकाहारी भोजन कर रहे हैं या मांसाहारी? हम आपके लिए भोजन तैयार करना चाहेंगे।"

"शाकाहारी भोजन," संजांग ने उत्तर दिया।

"और मुझे लगता है कि ये आदरणीय सज्जन," मठाधीश ने कहा, "मांस खाना पसंद करते हैं।"

"नहीं," बंदर ने कहा। "हम शाकाहारी हैं, और जीवन भर शाकाहारी ही रहे हैं।"

"हे भगवान!" मठाधीश ने हैरानी से कहा, "क्या ये जैसे जीव भी शाकाहारी हो सकते हैं?"

तब एक बहुत साहसी भिक्षु आगे आकर पूछने लगा, "महोदय, चूंकि आप शाकाहारी भोजन करते हैं, तो हमें आपके लिए कितना चावल पकाना चाहिए?"

"बड़े कंजूस भिक्षुओं," सुअर ने कहा, "पूछने की क्या ज़रूरत? हमारे लिए एक टोकरी भर खाना पकाओ।" फिर भिक्षु तेज़ी से चूल्हे और कड़ाहे साफ़ करने और सभी कोठरियों में भोजन और चाय परोसने के लिए जुट गए। दीपक ऊँचे लटकाए गए और तान पुजारी के मनोरंजन के लिए मेज़ें और कुर्सियाँ लाई गईं।

जब गुरु और शिष्यों ने रात का भोजन कर लिया, तो भिक्षुओं ने सामान समेट लिया। संजांग ने मठाधीश को धन्यवाद देते हुए कहा, "मठाधीश, हमने आपके प्रतिष्ठित मठ को बहुत कष्ट दिया है।"

"नहीं, नहीं," मठाधीश ने विरोध करते हुए कहा, "हमने आपका बहुत ही खराब तरीके से स्वागत किया है।"

"क्या मैं और मेरे शिष्य आज रात यहीं ठहर सकते हैं?" संजांग ने पूछा।

“चिंता मत कीजिए, महाराज,” मठाधीश ने उत्तर दिया, “हम व्यवस्था कर लेंगे।” फिर उन्होंने पुकार कर पूछा, “क्या वहाँ कोई भिक्षु सेवारत हैं?”

"जी हां, आदरणीय महोदय," एक आम भाई ने उत्तर दिया।

“फिर उनमें से कुछ को उनके घोड़े के लिए चारा लाने के लिए भेजो,” मठाधीश ने निर्देश दिया, “और कुछ को सामने वाले ध्यान कक्ष की सफाई करने के लिए कहो। इन आदरणीय सज्जनों के सोने के लिए वहाँ बिस्तर लगा दो।”

गृहस्थ भाइयों ने निर्देशानुसार कार्य किया और सारी व्यवस्था कर ली, फिर तांग

पुजारी को सोने के लिए आमंत्रित किया।
गुरु और शिष्य घोड़े को हांकते हुए और अपना सामान लेकर मठाधीश के कमरे से ध्यान कक्ष तक गए।
दरवाजे से अंदर झाँकने पर उन्होंने देखा कि दीपक तेज़ी से जल रहा था और कमरे के दोनों सिरों पर बेंत के चार पलंग लगे हुए थे। बंदर ने चारे की देखभाल कर रहे भिक्षु को उसे अंदर ले जाकर ध्यान कक्ष में रखने और सफेद घोड़े को बाँधने का आदेश दिया; इसके बाद सभी भिक्षुओं को विदा कर दिया गया। संज़ंग बीच में, दीपक के ठीक नीचे बैठे थे, जबकि पाँच सौ भिक्षु अपने-अपने समूहों में उनकी सेवा में खड़े थे, किसी का भी जाने का साहस नहीं था।
"अब आप जा सकते हैं, सज्जनों," संजांग ने अपनी कुर्सी से झुककर उन्हें प्रणाम करते हुए कहा, "क्योंकि हम सोना चाहते हैं।" लेकिन भिक्षुओं ने जाने की हिम्मत नहीं की।
मठाधीश आगे बढ़ा और उनसे कहा, "महामहिमों को बिस्तर पर ले जाने में मदद करें, फिर चले जाएं।"
अध्याय 36
511
पश्चिम की यात्रा
"तुम लोग यह काम पहले ही कर चुके हो," संजांग ने कहा, "इसलिए अब तुम सब जा सकते हो।" तभी वे सब तितर-बितर हुए।
जब तांग पुजारी शौच के लिए बाहर गए तो उन्होंने आकाश में चंद्रमा को चमकते देखा। उन्होंने अपने शिष्यों, बंदर, सुअर और रेत भिक्षु को बुलाया, जो उनकी सेवा में खड़े होने के लिए बाहर आए। वे चंद्रमा की चमक और पवित्रता से मंत्रमुग्ध हो गए, जो आकाश में ऊँचाई से चमक रहा था और स्वर्ग और पृथ्वी पर सब कुछ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। उन्होंने प्राचीन शैली में चांदनी में एक लंबी कविता का पाठ किया, जिसमें उन्हें पुरानी यादों का भाव था। कविता इस प्रकार थी: एक श्वेत आत्मा आकाश में एक दर्पण की तरह लटकी हुई है।
पर्वतीय धारा में उसका पूर्ण प्रतिबिंब दिखाई दे रहा था।
शुद्ध प्रकाश जेड के टावरों को भर देता है।
चांदी के कटोरे के चारों ओर ठंडी हवा घूम रही है।

वही शुद्ध प्रकाश हजारों मील तक फैलता है;
यह साल की सबसे साफ रात है।
यह समुद्र से एक बर्फीली डिस्क की तरह ऊपर उठता है,
आकाश में बर्फ के पहिये की तरह लटका हुआ।
सराय की ठंडी खिड़की के पास बैठा अकेला यात्री उदास था;
बूढ़ा आदमी गांव के पब में सोने चला जाता है।
हान उद्यान में सफेद होते बालों को देखकर कोई भी चौंक जाता है;
किन टावर में महिला सोने की तैयारी कर रही है।
यु लियांग द्वारा चंद्रमा पर खींची गई रेखाएं इतिहास में दर्ज हैं;
युआन होंग नदी की नाव में चांदनी रात में बिना सोए लेटा रहा।
प्याले में तैरती हुई रोशनी ठंडी और कमजोर है;
दरबार में चमकने वाली पवित्रता प्रबल और जादू से भरपूर है।
अध्याय 36
512
पश्चिम की यात्रा
हर खिड़की पर बर्फ के लिए कविताएँ गाई जाती हैं,
हर आंगन में बर्फीले अर्धचंद्र का वर्णन किया गया है।
आज रात हम मठ में शांतिपूर्ण आनंद साझा करेंगे;
हम सब एक साथ घर कब लौटेंगे?

कविता सुनकर बंदर उनके पास गया और बोला, "गुरुजी, आप तो केवल चंद्रमा की सुंदरता के बारे में जानते हैं, और आपको भी घर की याद सता रही है। आप नहीं जानते कि चंद्रमा वास्तव में क्या है। यह बढ़ई की रेखा और कम्पास की तरह है—यह आकाशीय पिंडों को व्यवस्थित रखता है। हर महीने की तीस तारीख को इसकी पुरुष आत्मा का धातु तत्व पूरी तरह समाप्त हो जाता है, और इसकी स्त्री आत्मा का जल तत्व पूरे गोले को भर देता है। इसीलिए यह काला हो जाता है और इसमें कोई प्रकाश नहीं होता। इसे ही पुराने चंद्रमा का अंत कहते हैं। पुराने चंद्रमा के अंतिम दिन और नए चंद्रमा के पहले दिन के बीच का यही समय होता है, जब यह सूर्य के साथ मिलन करता है। प्रकाश इसे गर्भ धारण करने में मदद करता है। तीसरे दिन पहला पुरुष प्रकाश दिखाई देता है, और आठवें दिन दूसरा पुरुष प्रकाश। जब चंद्रमा की पुरुष और

स्त्री आत्माओं में से प्रत्येक का आधा हिस्सा होता है, तो चंद्रमा एक धागे से विभाजित होने की तरह दिखाई देता है। इसीलिए इसे पहला चतुर्थांश कहते हैं। पंद्रहवीं रात, यानी आज रात, तीनों पुरुष प्रकाश पूर्ण हो जाते हैं, और चंद्रमा गोल है। इसे पूर्णिमा कहते हैं।

सोलहवें दिन प्रथम स्त्री सिद्धांत का जन्म होता है, उसके बाद बाईसवें दिन द्वितीय का। इस अवस्था में दोनों आत्माएँ पुनः एक हो जाती हैं और चंद्रमा फिर से एक धागे से विभाजित हो जाता है। इसे ही तीसरा चरण कहा जाता है। तीसवें दिन तक तीनों स्त्री सिद्धांत पूर्ण हो जाते हैं, और यह पुराने चंद्रमा का अंतिम दिन होता है। इसी को 'जन्मपूर्व अवशोषण और परिष्करण' कहा जाता है। यदि हम सभी धीरे-धीरे 'दोहरे आठ' को उठा सकें और नौ दिनों में इसे प्राप्त कर लें, तो बुद्ध के दर्शन करना और घर लौटना भी आसान हो जाएगा। जैसा कि कविता में कहा गया है:

पहले क्वार्टर के बाद और तीसरे क्वार्टर से पहले,

दवाइयों का स्वाद फीका है, और सभी वायु संबंधी लक्षण पूरी तरह से मौजूद हैं।

जब इसे भट्टी में एकत्रित और परिष्कृत किया जाता है,

इच्छा की प्राप्ति ही पश्चिमी स्वर्ग है।

यह जानकर आदरणीय बुजुर्ग को तुरंत ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होंने सत्य को पूरी तरह समझ लिया। बंदर को धन्यवाद देते हुए उनका हृदय प्रसन्नता से भर गया। उनके बगल में खड़े साधु सैंड हँसे। उन्होंने टिप्पणी की, "मेरे भाई की बात जहाँ तक सही है, वह सच है। पहले चरण में नर प्रधान होता है और तीसरे चरण के बाद मादा। जब नर और मादा आधे-आधे होते हैं, तो धातु तत्व जल प्राप्त करता है।" लेकिन उन्होंने यह नहीं कहा:

आग और पानी एक दूसरे का सहारा हैं, दोनों का अपना-अपना भाग्य है;

इन सभी का प्राकृतिक संयोजन धरती माता पर निर्भर करता है।

तीनों बिना प्रतिस्पर्धा किए एक साथ मिलते हैं;

यांग्त्ज़ी नदी में पानी है और आकाश में चंद्रमा है।"

यह सुनकर आदरणीय बुजुर्ग के मन से एक और बाधा दूर हो गई। सचमुच: जब तर्क

एक रहस्य को सुलझा लेता है, तो हजारों रहस्य स्पष्ट हो जाते हैं;
निर्जीवता को भेदने वाला सिद्धांत अमरता की ओर ले जाता है।
इस पर सुअर अपने मालिक के पास गया, उसके कपड़े खींचे और बोला, "मालिक, इन सब बकवास बातों पर ध्यान मत दीजिए। हमारी नींद खराब हो रही है। जहाँ तक उस चाँद की बात है, तो:
कुछ ही समय बाद जब इसमें खराबी आती है तो चंद्रमा फिर से भर जाता है।
जिस प्रकार जन्म के समय मैं भी अपूर्ण था।
जब मैं खाना खाती हूँ तो वे शिकायत करते हैं कि मेरा पेट बहुत बड़ा हो गया है।
और कहो कि कटोरा पकड़ते समय मेरे मुंह से लार टपकती है।
वे सभी साफ-सुथरे और सुसंस्कृत हैं;
मैं जन्म से ही मूर्ख हूँ और मेरा भाग्य और भी बुरा है।
शास्त्रों को प्राप्त करके तुम जीवन के तीनों मार्ग प्राप्त कर लोगे, और अपनी पूंछ और सिर हिलाते हुए सीधे पश्चिमी स्वर्ग की ओर चले जाओगे।
“बस इतना ही काफी है,” संजांग ने कहा। “शिष्यों, आपकी यात्रा कठिन रही है, इसलिए अब आप सो जाइए। मुझे पहले यह सूत्र पढ़ना है।”
“गुरुजी, आप अवश्य ही गलत हैं,” बंदर ने कहा। “आप बहुत कम उम्र में ही भिक्षु बन गए थे और बचपन के सभी सूत्र आपको कंठस्थ हैं। अब आप तांग सम्राट के आदेश पर पश्चिमी स्वर्ग जा रहे हैं ताकि महायान के सच्चे ग्रंथ ला सकें, लेकिन अभी तक आपको सफलता नहीं मिली है। आपने न तो बुद्ध के दर्शन किए हैं और न ही ग्रंथ प्राप्त किए हैं। तो आप कौन सा सूत्र पढ़ेंगे?”
"चांगआन छोड़ने के बाद से, मैं हर दिन इतनी जल्दबाजी में यात्रा कर रहा हूँ कि मैं अपने बचपन के शास्त्रों को भूल गया हूँ। आज रात मेरे पास कुछ खाली समय है, इसलिए मैं उन्हें फिर से सीख लूँगा।"
"तो फिर हम पहले सो जाते हैं," बंदर ने कहा। तीनों अपने-अपने बेंत के पलंग पर सो गए, जबकि उनके स्वामी ने ध्यान कक्ष का दरवाजा बंद कर दिया, चांदी का दीपक जलाया और धर्मग्रंथ की पुस्तक खोली, जिसे उन्होंने चुपचाप पढ़ा। सचमुच:
जब मीनार में पहला ढोल बजता है तो सभी लोग चुप हो जाते हैं।

पश्चिम की यात्रा
किनारे पर खड़ी मछली पकड़ने वाली नाव में लगी आग बुझा दी गई है।
यदि आपको नहीं पता कि आदरणीय बुजुर्ग ने मंदिर कैसे छोड़ा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 37
शाही भूत रात में तांग पुजारी से मिलने आता है
वुकॉन्ग के जादुई रूपांतरण ने लड़के को आकर्षित किया
संज़ंग कीमती लकड़ी के मठ के ध्यान कक्ष में बैठे-बैठे सम्राट वू ऑफ लियांग की स्तुति और मयूर सूत्र का पाठ करते रहे, जब तक कि तीसरे पहर में उन्होंने आखिरकार धर्मग्रंथों को वापस थैलों में नहीं रख दिया। जैसे ही वे सोने वाले थे, उन्हें एक तेज़ हवा और एक भयानक सीटी की आवाज़ सुनाई दी। उन्हें डर था कि कहीं उनका दीपक बुझ न जाए, इसलिए आदरणीय बुजुर्ग ने जितनी जल्दी हो सके अपनी आस्तीन से दीपक को ढक लिया। उनकी हैरानी की बात यह थी कि दीपक बार-बार जल-बुझ रहा था। अब तक वे इतने थक चुके थे कि उन्होंने अपना सिर पढ़ने की मेज पर रख लिया और झपकी ले ली। हालाँकि उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली थीं और ऊंघ रहे थे, फिर भी उनका मन पूरी तरह से जागृत था क्योंकि वे खिड़की के बाहर उस भयानक हवा की गर्जना सुन रहे थे। यह एक शानदार हवा थी। वास्तव में, उसमें सरसराहट और सीटियाँ थीं।
बहुत तेजी से भागने की कोशिश।
यह सरसराहट और सीटी की आवाज़ करता हुआ गिरे हुए पत्तों को अपने साथ ले जाता है।
बादल तेजी से दूर चले जाते हैं।
आकाश के सारे तारे बुझ जाते हैं।
और पृथ्वी उड़ती हुई धूल से ढकी हुई है।
कभी-कभी उग्र,
कभी-कभी सौम्य।
जब हवा धीमी चलती है, तो चीड़ और बांस की आवाज़ साफ सुनाई देती है;
जब तेज हवा चलती है, तो झीलों में मैली लहरें उठती हैं।
पर्वतीय पक्षी शोक मनाते हैं, क्योंकि वे अपने बसेरों तक नहीं पहुंच पाते हैं;

समुद्र में मछलियाँ बेचैनी से उछल-कूद कर रही हैं।
हॉल के दरवाजे और खिड़कियां उड़ जाती हैं।
बगल के कमरों में आत्माएं और राक्षस घूर रहे हैं।
अध्याय 37
515
पश्चिम की यात्रा
बुद्ध भवन में रखे सभी फूलदान जमीन पर गिरकर टूट जाते हैं;
कांच का दीपक हिलकर ढीला हो जाता है और लौ बुझ जाती है।
अगरबत्ती जलाने वाले पात्र के झुकने पर उसकी राख बिखर जाती है।
जब मोमबत्तियों का स्टैंड झुक जाता है तो वे भड़क उठती हैं।
सभी बैनर और पर्दे फटे हुए हैं।
जैसे ही घंटी और ढोल के टावर अपनी जड़ों तक हिल जाते हैं।
कुछ देर हवा थमने पर, ऊंघते हुए बुजुर्ग ने ध्यान कक्ष के बाहर से "गुरुजी" की धीमी आवाज़ सुनी। उन्होंने ऊपर देखा, और सपने में उन्होंने एक आदमी को वहाँ भीगा हुआ खड़ा देखा जो रो रहा था और बार-बार "गुरुजी" कह रहा था।
संज़ंग ने अपनी सीट से ही उन्हें प्रणाम किया और कहा, "तुम ज़रूर कोई दुष्ट आत्मा, या भूत, या राक्षस हो जो आधी रात को मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहे हो। लेकिन मैं इच्छा या क्रोध में लीन नहीं हूँ। मैं पूर्वी तांग सम्राट के आदेश पर पश्चिम की तीर्थयात्रा पर आया एक धर्मनिष्ठ भिक्षु हूँ, जो बुद्ध की आराधना करने और शास्त्र लाने आया हूँ। मेरे तीन शिष्य हैं जो सभी राक्षस-नाशक वीर हैं। अगर वे तुम्हें देख लेंगे तो तुम्हारे शरीर और हड्डियों को चूर-चूर कर देंगे। लेकिन मैं अपार करुणा से भरा हूँ और तुम्हारे हित में जो उचित होगा वही करूँगा। अभी इसी वक्त यहाँ से चले जाओ और फिर कभी मेरे ध्यान कक्ष में मत आना।"
वह व्यक्ति वहीं रुका रहा और बोला, "गुरुजी, मैं कोई दानव, भूत, राक्षस या बुरी आत्मा नहीं हूँ।"
"अगर तुम इनमें से कोई नहीं हो," संजांग ने पलटवार करते हुए कहा, "तो आधी रात को तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"
"मुझे ध्यान से देखिए, गुरुजी," उसने कहा। जब संजांग ने ध्यान से देखा तो उसे आश्चर्य हुआ कि उसके सिर पर स्वर्ग को छूने वाली टोपी थी।

और उसकी कमर पर नीले-हरे जेड पत्थर की बेल्ट थी।
उसके गेरूए रंग के वस्त्र पर ड्रैगन और फीनिक्स नृत्य कर रहे थे;
उनके चिंतामुक्त जूतों पर बादलों की कढ़ाई की गई थी।
उनके हाथ में जो सफेद जेड पत्थर का राजदंड था, उस पर नक्षत्रों की आकृतियाँ अंकित थीं।
उनका चेहरा माउंट ताई के शाश्वत सम्राट के समान था।
उनका रूप राजशाही के देवता वेनचांग जैसा था।
अध्याय 37

उसे देखते ही संजांग सदमे से पीला पड़ गया। उसने तुरंत झुककर प्रणाम किया और जोर से पुकारा,
"महाराज, आप कौन से सम्राट हैं? कृपया बैठ जाइए।" वह सम्राट को सहारा देने के लिए जल्दी से आगे बढ़ा, लेकिन पाया कि वह हवा को थामे हुए है। उसने दोबारा देखा तो पाया कि वह व्यक्ति अभी भी वहीं खड़ा है।
"महाराज," संज़ंग ने कहा, "आप कौन से राजा हैं? आप किस देश पर शासन करते हैं? मेरा अनुमान है कि आप आधी रात को यहाँ भागकर आए होंगे क्योंकि आपके देश में अराजकता फैली हुई है या फिर कुछ दुष्ट मंत्रियों द्वारा आपको सताया जा रहा है। मुझे अपनी कहानी बताइए।"
तभी उस व्यक्ति ने अपनी कहानी बताई, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे और माथे पर शिकन साफ दिख रही थी। उसने कहा, "पिताजी, मैं यहाँ से लगभग पंद्रह मील पश्चिम में, उस किलेबंद शहर में रहता हूँ जहाँ मेरे वंश की स्थापना हुई थी।"
"इसका नाम क्या है?" संजांग ने पूछा।
"मैं आपको सच बता रहा हूँ, पिताजी," उसने उत्तर दिया। "जब मैंने अपना शासन स्थापित किया, तो मैंने राज्य का नाम बदलकर वूजी कर दिया।"
"लेकिन महाराज, आप इस भयानक संकट में क्यों हैं?" संजांग ने आगे पूछा।
दूसरे ने कहा, "पिताजी, पांच साल पहले यहाँ इतना भयंकर सूखा पड़ा था कि कोई वनस्पति नहीं उगी और लोग भूख से मर रहे थे। यह भयावह था।"
यह सुनकर संजांग ने सिर हिलाया और मुस्कुराते हुए कहा, "महाराज, एक पुरानी

कहावत है कि स्वर्ग सुशासित देश का पक्ष लेता है। मुझे लगता है कि आपने अपनी प्रजा पर दया नहीं दिखाई। अकाल पड़ने पर भी आपको अपने शहर से भागने का कोई अधिकार नहीं है। वापस जाइए, अपने अन्न भंडार खोलिए और लोगों को राहत दीजिए।"

अपने बीते पापों का पश्चाताप करो और अब से अच्छे बनो। उन सभी को क्षमा करो जिन्हें गलत तरीके से दोषी ठहराया गया है।

स्वर्ग का हृदय स्वतः ही सामंजस्य से भर जाएगा, और हवा और बारिश अपने आप ही आएंगी।

“लेकिन हमारे अन्न भंडार खाली थे,” दूसरे ने कहा। “हमारे पास न पैसा बचा था, न अनाज। अधिकारियों और सैनिकों के वेतन बकाया थे, और हम अपने शाही भोजन में मांस नहीं खा रहे थे। हमने महान यु के उदाहरण का अनुसरण किया जब उन्होंने जल को नियंत्रण में लाया था, अपनी प्रजा के सुख-दुख में उनके साथ बाँटा, स्वयं को शुद्ध करने के लिए स्नान किया, उपवास किया, धूप जलाई और दिन-रात प्रार्थना की। यह तीन साल तक चला, लेकिन सूखा इतना भयानक था कि नदियाँ और कुएँ सूख गए। जब संकट चरम पर था, तभी झोंगनान पर्वत से एक क्वानझेन ताओवादी जादूगर आया। वह हवा और बारिश ला सकता था, और स्पर्श से पत्थरों को सोने में बदल सकता था। पहले वह हमारे नागरिक और सैन्य अधिकारियों से मिलने गया, और फिर हमसे मिलने आया।”

हमने उन्हें प्रार्थना करने के लिए वेदी पर आमंत्रित किया, और उन्हें इसका फल मिला। जहाँ भी वे अपनी जादुई छड़ी घुमाते, वहाँ मूसलाधार बारिश होने लगती। हमने सोचा था कि तीन फुट बारिश काफी होगी, लेकिन उन्होंने कहा कि इतने लंबे समय के बाद इतनी बारिश से उर्वरता बहाल नहीं होगी और उन्होंने दो इंच अतिरिक्त बारिश कर दी। उनकी उदारता देखकर हमने उनके सामने सिर झुकाया और उन्हें अपना शपथ लिया हुआ भाई मान लिया।

"तो महाराज, आप अत्यंत भाग्यशाली हैं," संजांग ने कहा।

"किस तरह से?" दूसरे ने पूछा।

"अगर उस क्वानझेन जादूगर के पास जब चाहे बारिश कराने की शक्ति है और आप उससे अपनी इच्छा से चीजों को सोने में बदलवा सकते हैं, तो ऐसी क्या भयानक बात है कि आपको अपने शहर से भागकर यहाँ आना पड़ रहा है?"

"हम दो साल तक एक ही मेज पर खाना खाते थे और एक ही कमरे में सोते थे। फिर एक वसंत ऋतु में जब लाल खुबानी और आड़ू के पेड़ खिले हुए थे, तो सभी सज्जन, महिलाएं और राजकुमार मौसम की सुंदरता का आनंद लेने के लिए बाहर निकल गए। जब नागरिक और सैन्य अधिकारी अपने कार्यालयों में लौट गए और शाही पत्नियां और रखैलें अपने कमरों में वापस चली गईं, तब हम महल के बगीचे में जादूगर के साथ हाथ में हाथ डालकर टहल रहे थे।"

अध्याय 37

517

पश्चिम की यात्रा

जब हम चमकीली टाइलों से ढके आठ कोनों वाले कुएँ के पास पहुँचे, तो उसने कुएँ में कुछ फेंका—हमें नहीं पता क्या था—जिससे कुआँ सुनहरी रोशनी से जगमगा उठा। हमें इस खजाने को दिखाने के लिए कुएँ के किनारे बुलाकर, उसने हमें ज़ोर से कुएँ में धकेलने और उसके ऊपर एक पत्थर रखने का घिनौना इरादा किया। उसने उसके ऊपर मिट्टी डाली और फिर उसके ऊपर एक केला रख दिया। तो, अफसोस, हम तीन साल से मरे हुए हैं। हम उस व्यक्ति की आत्मा हैं जिसकी बेरहमी से कुएँ में धकेल कर हत्या कर दी गई थी।

यह जानकर कि वह एक भूत है, तांग पुजारी पूरी तरह कमजोर पड़ गया और उसके रोंगटे खड़े हो गए। लेकिन उसने हिम्मत जुटाकर अपना प्रश्नोत्तर जारी रखा। "महाराज, आपकी बातें पूरी तरह गलत हैं। यदि आप तीन वर्ष से मृत हैं, तो जब आपके दरबार में महाराज से मुलाकात के लिए आए थे, तब आपके सैन्य और नागरिक अधिकारी या आपकी रानियाँ आपको खोजने क्यों नहीं गईं?"

“पिताजी,” भूत ने उत्तर दिया, “उसकी शक्तियाँ संसार में दुर्लभ हैं। जैसे ही उसने हमें मारा, उसने स्वयं को झटककर हमारा हूबहू रूप धारण कर लिया। अब वह हमारे देश का स्वामी है, हमारे क्षेत्र का गुप्त चोर है। हमारे नागरिक और सैन्य अधिकारी, चार सौ दरबारी, तीनों रानियाँ और छह परिसरों की रानियाँ और रखैलें, सब अब उसी के अधीन हैं।”

"महाराज, आप कायर हैं," संजांग ने कहा।

"हम कायर कैसे हैं?" भूत ने पूछा।

"महाराज," संजांग ने कहा, "भले ही उस राक्षस के पास आपकी शक्ल बदलकर

आपका राज्य चुराने की जादुई शक्तियां हों, और वह भी आपके नागरिक और सैन्य अधिकारियों या आपकी रानियों और पत्नियों की नज़र से बचकर, ताकि केवल आप ही सच जान सकें और आपकी मृत्यु हो जाए, तो आपने उसके खिलाफ यमराज के पाताल लोक में मुकदमा क्यों नहीं दायर किया? वहां आप शिकायत दर्ज करा सकते थे और अपने साथ हुए अन्याय का जिक्र कर सकते थे।"

"लेकिन उसकी जादुई शक्तियां इतनी व्यापक हैं और वह सभी संबंधित अधिकारियों के साथ इतने अच्छे संबंध रखता है," भूत ने उत्तर दिया।

"वह हमेशा नगर देवता के साथ शराब पीता रहता है, और सभी ड्रैगन राजाओं से उसका संबंध है। ताई पर्वत का स्वर्ग के समान देवता उसका मित्र है, और पाताल लोक के सभी दस राजा उसके शपथ लिए हुए भाई हैं। अगर हम उसके खिलाफ मुकदमा चलाना चाहते हैं तो हमारे पास कोई और रास्ता नहीं है।"

"महाराज," संजांग ने कहा, "यदि आप पाताल लोक में उसके खिलाफ मुकदमा चलाने में असमर्थ हैं तो जीवितों की दुनिया में क्यों आए हैं?"

दूसरे ने उत्तर दिया, "पिताजी, अन्यायपूर्ण तरीके से मारे गए व्यक्ति की आत्मा के रूप में मैं कभी भी आपको पुकारने का साहस नहीं करता।"

मठ के द्वार के बाहर धर्म के रक्षक स्वर्गीय राजा, छह डिंग और छह जिया, चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षक, चारों कर्तव्य देवता और धर्म के अठारह संरक्षक, सभी अपने घोड़ों पर काठी कस चुके हैं। रात्रि के पहरेदार द्वारा उत्पन्न एक जादुई हवा ही मुझे यहाँ लाई है। उसने कहा कि मेरे तीन वर्षों के कष्टों का अंत होने वाला है और उसने मुझे आपको, पिता, प्रणाम करने के लिए भेजा है।

उन्होंने मुझे बताया कि आपके वरिष्ठ शिष्य स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि हैं और वे राक्षसों का संहार करने और उन्हें वश में करने में अत्यंत शक्तिशाली हैं। मैं आज रात आपसे विनती करने और आपसे आग्रह करने आया हूँ कि आप मेरे देश आएं, उस दुष्ट राक्षस को पकड़ें और उसके कुकर्मों का पर्दाफाश करें। हे गुरु, हम आपकी इस महान कृपा के लिए अत्यंत आभारी होंगे और आपका आभार व्यक्त करेंगे।

"महाराज," संजांग ने कहा, "क्या आप मुझसे यह अनुरोध करने आए हैं कि मेरा शिष्य इस दुष्ट से आपको छुटकारा दिलाने के लिए आपके पास जाए?"

"हां, बिल्कुल सही," दूसरे ने जवाब दिया।

"मेरा वह शिष्य वैसे तो किसी काम का नहीं है," संजांग ने कहा, "लेकिन राक्षसों को

वश में करना और दानवों को पकड़ना उसके बस की बात है। बस दिक्कत ये है, महाराज, कि अगर उसे ये काम सौंप भी दिया जाए तो शायद वो इसे पूरा न कर पाए।"

अध्याय 37

518

पश्चिम की यात्रा

"क्यों नहीं?" भूत ने पूछा।

“खैर,” संज़ंग ने कहा, “उस दुष्ट के पास तो असाधारण जादुई शक्तियाँ होंगी, तभी तो वो तुम्हारे जैसा इतना रूप धारण कर सकता है कि दरबार के सभी अधिकारी और सैनिक उससे प्रसन्न हैं और तुम्हारे हरम की सभी रानियाँ और रखैलें उस पर मोहित हैं। हालाँकि मेरे शिष्य के पास कुछ जादुई शक्तियाँ हैं, फिर भी उसे आसानी से हथियार नहीं उठाने चाहिए। अगर वो पकड़ा गया और उस पर राजद्रोह का आरोप लगा, तो हम जेल में डाल दिए जाएँगे।”

तब सब कुछ बर्बाद हो जाएगा।"

"लेकिन अदालत में अभी भी कोई ऐसा है जिस पर मैं भरोसा कर सकता हूं," भूत ने कहा।

"यह तो शानदार है," संजांग ने कहा, "बेहद शानदार। इसमें कोई शक नहीं कि यह कोई राजकुमार या उच्च अधिकारी होगा जिसे कहीं किसी सैन्य चौकी की कमान संभालने के लिए भेजा गया होगा।"

"नहीं," भूत ने उत्तर दिया, "यह मेरा बेटा युवराज है जो मेरे अपने महल में रहता है।"

"लेकिन निश्चित रूप से युवराज को उस दुष्ट ने ही निर्वासित किया होगा।"

“नहीं, वह नहीं गया है,” भूत ने उत्तर दिया। “वह अपना समय सिंहासन कक्ष और पंच फीनिक्स के टावर में विद्वानों के साथ अध्ययन करने या सिंहासन पर बैठे उस जादूगर के बगल में बैठने में व्यतीत करता है। पिछले तीन वर्षों से युवराज को रानी के महल में जाने से प्रतिबंधित कर दिया गया है और उन्हें महारानी से मिलने से रोक दिया गया है।”

"क्यों?" संजांग ने पूछा।

भूत ने कहा, "यह सब उस दुष्ट ने रचा है। अगर राजकुमार और उसकी माँ मिल जाएँ और आपस में बातें करने लगें तो सच्चाई सबके सामने आ जाएगी। वह सिंहासन पर

तभी टिक सकता है जब वे दोनों न मिलें।"
"तुम्हारी मुसीबतें, मेरी ही तरह, स्वर्ग से भेजी गई होंगी," संज़ंग ने कहा। "मेरे पिता की हत्या समुद्री लुटेरों ने कर दी थी, जिनमें से एक ने मेरी माँ को अगवा कर लिया था। तीन महीने बाद मेरा जन्म हुआ। मैं नदी के रास्ते जान बचाकर भागा और मेरे संरक्षक, जिनशान मठ के मठाधीश ने मुझे बचाया, जिन्होंने मेरा पालन-पोषण किया। मुझे याद है कि अनाथ होना कैसा होता है, इसलिए मुझे उस युवराज के लिए बहुत दुख होता है जिसने अपने माता-पिता दोनों को खो दिया है। लेकिन भले ही तुम्हारा युवराज अभी भी महल में है, मैं उससे कैसे मिल पाऊँगा?"
"तुम्हें क्या रोकेगा?" भूत ने पूछा।
"अगर वह राक्षसों के इतने कड़े नियंत्रण में है कि वह अपनी माँ को भी नहीं देख सकता, तो मुझ जैसा एक साधारण भिक्षु उसे कैसे देख पाएगा?" संजांग ने उत्तर दिया।
भूत ने कहा, "वह कल बाहर जाएगा।"
"क्यों?" संजांग ने पूछा।
भूत ने कहा, "कल सुबह की प्रार्थना सभा के बाद, वह बाज़ों और शिकारी कुत्तों के साथ तीन हज़ार लोगों को लेकर शहर से बाहर शिकार पर निकलेगा। तुम उसे ज़रूर देख पाओगे। जब तुम उसे देखो, तो उसे वह सब कुछ बताना जो मैंने तुम्हें बताया है, और वह तुम पर विश्वास करेगा।"
"लेकिन वह तो सिर्फ एक नश्वर प्राणी है," संज़ंग ने उत्तर दिया। "राक्षस ने उसे महल में मूर्ख बना रखा है, और वह दिन में कई बार राक्षस पिता को पुकारता है। वह मेरी किसी बात पर विश्वास क्यों करेगा?"
"अगर वह ऐसा नहीं करता है, तो मैं तुम्हें कुछ ऐसा दूंगा जो प्रत्यक्ष प्रमाण होगा," भूत ने कहा।
"क्या?" संजांग ने पूछा।
अध्याय 37
519
पश्चिम की यात्रा
भूत ने अपने हाथ में पकड़े हुए सोने की किनारी वाले सफेद जेड पत्थर के राजदंड को नीचे रख दिया और कहा, "यह सबूत होगा।"

"क्यों?" संजांग ने पूछा।
“जब जादूगर ने खुद को हूबहू मेरे जैसा बना लिया,” भूत ने उत्तर दिया, “तो एक खजाना ऐसा था जिसकी नकल वह नहीं कर पाया। महल लौटने के बाद उसने बताया कि जादूगर ने उसे चुरा लिया है और पिछले तीन सालों से वह गायब है। अगर युवराज उसे देख लेंगे तो उन्हें मेरी याद आ जाएगी और मैं अपना बदला ले पाऊंगा।”
"ठीक है," संज़ंग ने कहा, "मैं इसे रख लूंगा और अपने शिष्य को आपके लिए व्यवस्था करने भेज दूंगा। क्या आप वहां युवराज का इंतजार करेंगे?"
"मैं स्वयं वहाँ रहने की हिम्मत नहीं कर सकता," भूत ने कहा। "मुझे रात्रि के रक्षक से एक और जादुई हवा भेजने के लिए कहना होगा जो मुझे महल के हरम में ले जाए, ताकि मैं अपने पहले रानी के सपने में प्रकट होकर उसे बता सकूँ कि वह हमारे पुत्र, आपके साथ, पिता, और आपके शिष्यों के साथ सहयोग करे।"
संजांग ने सिर हिलाकर सहमति जताई। "तो अब आप जाइए।"
मृत सम्राट का भूत प्रणाम करते हुए विदा हुआ। संज़ंग भूत को विदा करने के लिए आगे ही बढ़ा था कि ठोकर खाकर गिर पड़ा और इतना डर गया कि जाग गया। तो यह सब एक सपना था। धुंधली रोशनी में उसने घबराकर पुकारा, "शिष्यों!"
"ये लोग छोटी-छोटी बातों का इतना ज़िक्र क्यों कर रहे हैं?" सूअर जागते हुए बुदबुदाया। "पुराने दिनों में मैं कितना खुश रहता था। मैं बहुत ताकतवर था। मैं सिर्फ इंसानी मांस खाता था और हमेशा पेट भरकर खाता था। तुम्हें साधु बनना होगा और अपनी यात्रा में हमारी सुरक्षा करवानी होगी। तुमने मुझसे कहा था कि मैं साधु बनूंगा, लेकिन अब तुम मेरे साथ गुलाम जैसा बर्ताव करते हो। मुझे दिन भर तुम्हारा सामान ढोना पड़ता है, तुम्हारे घोड़े को हांकना पड़ता है, तुम्हारा शौचालय खाली करना पड़ता है और रात को तुम्हारे पैरों को गर्म करने के लिए तुम्हारे बिस्तर के पास लेटना पड़ता है। तुम मुझे कभी सोने नहीं देते। अब मुझे क्यों बुला रहे हो?"
"शिष्य," संजांग ने कहा, "अभी-अभी जब मैं मेज पर सिर रखकर सो गया था, तब मुझे एक अजीब सपना आया।"
“गुरुजी,” बंदर उछलते हुए बोला, “सपने कल्पना से आते हैं। पहाड़ पर चढ़ना शुरू करने से पहले ही आप राक्षसों से डर जाते हैं। आप चिंता करते हैं कि क्या आप कभी थंडर मठ तक पहुँच पाएंगे क्योंकि वह बहुत दूर है; और आप चांगआन को याद करते हैं और सोचते हैं कि आप वहाँ कब वापस जा पाएंगे। इसीलिए आप इतनी चिंताओं

और सपनों से घिरे रहते हैं। अब मैं पूरी तरह से दृढ़ संकल्पित हूँ और पश्चिम जाकर बुद्ध के दर्शन करने के लिए प्रतिबद्ध हूँ: मुझे अब सपने नहीं आते।"

"शिष्य," संज़ंग ने कहा, "मेरा यह सपना घर का सपना नहीं था। आँखें बंद करते ही तेज़ हवा चली और ध्यान कक्ष के दरवाज़े के बाहर एक राजा प्रकट हुआ। उसने कहा कि वह वूजी देश का सम्राट है। वह पूरी तरह भीगा हुआ था और उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।" संज़ंग अभी भाई बंदर को सपने के बारे में और उसमें बताई गई हर बात बताने ही वाला था।

"मुझे और कुछ बताने की ज़रूरत नहीं," बंदर ने कहा। "वह सपने में तुमसे मिलने आया था और ज़ाहिर तौर पर मेरे लिए कोई काम लेकर आया था। इसमें कोई शक नहीं कि किसी दुष्ट ने उसका सिंहासन छीन लिया है। मैं उस दुष्ट से बदला लूँगा। मुझे पूरा यकीन है कि जैसे ही मेरा डंडा उसे लगेगा, मैं जीत जाऊँगा।"

"लेकिन उसने मुझे बताया कि उस राक्षस के पास अपार जादुई शक्तियां हैं," संजांग ने चेतावनी दी।

"वाह, कमाल है!" बंदर ने कहा। "जैसे ही उसे पता चलेगा कि मैं आ गया हूँ, उसे भागने की जगह न होने का पछतावा होगा।"

"मुझे याद है कि राजा ने सबूत के तौर पर मेरे लिए एक खजाना भी छोड़ा था," संजांग ने कहा।

अध्याय 37

"ऐसी बकवास मत करो," सुअर ने जवाब दिया। "अगर तुमने सपना देखा था, तो बस वही बात थी। ये सब फालतू की बातें क्यों?"

"जो चीज़ें सीधी-सीधी दिखती हैं, उन पर भरोसा मत करो, और सावधान रहो कि दयालुता असल में निर्दयता नहीं होती," फ्रायर सैंड ने कहा। "चलो एक रोशनी जलाते हैं, दरवाजे खोलते हैं, और देखते हैं कि हमें क्या दिखाई देता है।"

तो भाई बंदर ने दरवाजे खोल दिए, और जब उन सभी ने बाहर देखा तो उन्होंने चंद्रमा और तारों के प्रकाश में देखा कि वास्तव में सीढ़ियों के किनारे एक सोने की किनारी वाला सफेद जेड का राजदंड पड़ा हुआ था।

"यह क्या है, भाई?" पिग ने पास जाकर उसे उठाते हुए पूछा।

"यह एक अनमोल रत्न है जिसे जेड का राजदंड कहते हैं, जिसे एक राजा अपने हाथों में धारण करता है," बंदर ने कहा, "और इससे मुझे विश्वास हो गया है, स्वामी, कि यह कहानी सच है। मैं कल उस राक्षस को पकड़ने की पूरी जिम्मेदारी लूंगा। लेकिन मैं आपसे तीन काम करवाना चाहता हूं।"

"ये तो कमाल है," सुअर ने कहा, "सचमुच कमाल है। पहले तो तुम्हें सपना आता है, फिर तुम्हें उसे बताना पड़ता है। वो हर मोड़ पर लोगों को धोखा देता है। अब वो तुमसे तीन काम करने को कह रहा है।"

अंदर वापस जाते हुए, संजांग ने पूछा, "वे कौन-कौन से तीन काम हैं?"

"कल मैं चाहता हूं कि तुम मेरी तरफ से कष्ट सहो, प्रताड़ित हो और बुखार से पीड़ित हो जाओ," बंदर ने कहा।

"इनमें से कोई भी एक काम काफी बुरा होगा," पिग ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं तीनों काम एक साथ नहीं कर सकता।" एक बुद्धिमान बुजुर्ग होने के नाते, तांग पुजारी ने अपने शिष्य से पूछा कि वह ये तीनों काम क्यों करवाना चाहता है।

"स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता नहीं होगी," बंदर ने कहा। "पहले मैं आपको कुछ बातें बता देता हूँ।"

महान संत ने एक बाल निकाला, उस पर जादुई साँस फूँकी, "बदलो!" कहा और उसे लाल और सुनहरे रंग के एक डिब्बे में बदल दिया, जिसमें उन्होंने सफेद जेड का राजदंड रख दिया। उन्होंने कहा, "गुरुजी, कल सुबह आपको अपना सुनहरा वस्त्र पहनकर मठ के मुख्य हॉल में बैठना है और अपने हाथों में डिब्बा लेकर शास्त्रों का पाठ करना है, जबकि मैं जाकर उस शहर का जायजा लेता हूँ। अगर वह सचमुच दुष्ट आत्मा है तो मैं उसे मार डालूँगा, और यह मेरे कर्मों में एक और पुण्य जुड़ जाएगा। अगर वह दुष्ट आत्मा नहीं है, तो हम मुसीबत में नहीं पड़ेंगे।"

"उत्कृष्ट, उत्कृष्ट," संजांग ने कहा।

"अगर राजकुमार शहर से बाहर नहीं जाता है, तो बात यहीं खत्म हो जाएगी," बंदर ने कहा, "और अगर वह तुम्हारे सपने के अनुसार शहर छोड़ देता है, तो मैं उसे तुमसे मिलने के लिए यहाँ जरूर लाऊंगा।"

"अगर वह मुझसे मिलने आए तो मैं उनसे क्या कहूँगी?" संज़ंग ने पूछा। "मैं तुम्हें उनके आने से ठीक पहले एक सूचना दूँगा," बंदर ने कहा। "मैं चाहता हूँ कि जब मैं दो इंच ऊँचा एक छोटा भिक्षु बन जाऊँ, तब तुम उस बक्से का ढक्कन थोड़ा सा खोल देना,

फिर राजदंड के साथ मुझे अपने हाथों में ले लेना। जब राजकुमार मठ में आएँगे तो वे बुद्धों की पूजा अवश्य करेंगे। चाहे वे कितना भी प्रणाम करें, तुम उन पर बिल्कुल ध्यान मत देना। तुम्हें वहाँ बिना हिले-डुले बैठे देखकर वे तुम्हें ज़रूर गिरफ़्तार करवा लेंगे। उन्हें गिरफ़्तार करने दो। उन्हें तुम्हें पिटवाने दो, बाँधने दो या अगर वे चाहें तो जान से मारने दो।"

"हे भगवान!" संजांग ने हैरानी से कहा। "अपनी सारी सैन्य शक्ति का इस्तेमाल करके वह सचमुच मुझे मरवा सकता है, और यह बहुत भयानक होगा।"

“कोई बात नहीं,” बंदर ने कहा। “मैं वहाँ रहूँगा। अगर कोई गड़बड़ हुई तो मैं तुम्हारा ख्याल रखूँगा। अगर वह तुमसे सवाल करे, तो उसे बताना कि तुम पूर्व से पश्चिम स्वर्ग में बुद्ध की उपासना करने, शास्त्र लाने और कुछ अनमोल वस्तुएँ अर्पित करने के लिए भेजे गए शाही आदेश से नियुक्त भिक्षु हो। जब वह तुमसे पूछे कि कौन सी अनमोल वस्तुएँ, तो उसे सोने के वस्त्र के बारे में बताना और कहना, 'यह मेरी तीसरी श्रेणी की अनमोल वस्तु है। मेरे पास प्रथम और द्वितीय अध्याय 37 की बहुत ही उत्तम अनमोल वस्तुएँ भी हैं।'"

जब वह आपसे उनके बारे में पूछे, तो उसे बताना कि इस बक्से में एक ऐसा खजाना है जो बीते पांच सौ वर्षों, वर्तमान युग के पांच सौ वर्षों और उसके बाद के पांच सौ वर्षों—कुल पंद्रह सौ वर्षों—के बारे में सब कुछ जानता है। फिर मुझे बक्से से बाहर निकाल देना और मैं राजकुमार को वह सब कुछ बता दूँगा जो तुम्हें सपने में बताया गया था। अगर वह मुझ पर विश्वास करता है, तो मैं उस दुष्ट को पकड़ने जाऊँगा। इससे उसके पिता का बदला पूरा होगा और हमारी प्रतिष्ठा को बहुत लाभ होगा। लेकिन अगर वह फिर भी आप पर विश्वास नहीं करता है, तो उसे सफेद जेड का राजदंड दिखा देना। मेरी एकमात्र चिंता यह है कि वह शायद इसे याद रखने के लिए बहुत छोटा हो।

संज़ंग, भाई बंदर के सुझाव से प्रसन्न हुआ। उसने कहा, "शिष्य, यह एक शानदार योजना है। जब मैं अपने तीन खजानों के बारे में बात करता हूँ, तो मैं उनमें से एक को स्वर्ण वस्त्र और दूसरे को श्वेत जेड राजदंड कह सकता हूँ। लेकिन जिसे तुम अपने आप में रूपांतरित करोगे, उसे मैं क्या कहूँ?"

"इसे राजा बनाने वाला कहो," बंदर ने कहा। संज़ंग ने उसके निर्देशों को याद कर लिया। भोर की प्रतीक्षा में गुरु और उनके शिष्यों को उस रात सोने का कोई आसार नहीं था। उनकी बस यही इच्छा थी कि वे सिर हिलाकर सूर्य को उगा सकें और अपनी एक साँस से आकाश के सारे तारों को उड़ा ले जाएँ।

कुछ ही देर में पूर्वी आकाश उजाला हो गया। बंदर ने सुअर और साधु सैंड को विदाई के निर्देश दिए:

“तुम्हें भिक्षुओं को परेशान नहीं करना चाहिए और इधर-उधर बेतहाशा भाग-दौड़ नहीं करनी चाहिए। जैसे ही हमारा मिशन पूरा हो जाएगा, हम तुम्हारे साथ आगे की यात्रा पर निकल पड़ेंगे।” उनसे विदा लेते ही वह सीटी बजाते हुए हवा में उछल पड़ा और कलाबाजी करते हुए पश्चिम की ओर देखा। अपनी तेज निगाहों से पश्चिम की ओर देखते हुए उसे सचमुच शहर दिखाई दिया।

आप शायद यह पूछना चाहेंगे कि यह कैसे संभव हुआ। हमें पहले बताया गया था कि शहर केवल पंद्रह मील दूर था, इसलिए वह इतनी ऊंचाई से उसे देख सकता था।

भाई बंदर ने करीब से देखा तो पाया कि उसके ऊपर राक्षसी कोहरे के घने बादल छाए हुए हैं, साथ ही अन्याय की बुरी हवाएँ और वाष्प भी व्याप्त हैं। हवा में ऊपर उठते हुए बंदर ने आह भरी और कहा,

चारों ओर शुभ प्रकाश फैलेगा
यदि आज सिंहासन पर कोई सच्चा सम्राट बैठा होता।
लेकिन महल के द्वारों पर काले धुएं का साया मंडरा रहा है।
अब एक दुष्ट ने इसे अपना बना लिया है।"

जब मंकी आह भर रहा था, तभी उसे तोप की स्पष्ट आवाज सुनाई दी। शहर का पूर्वी द्वार खुला और लोगों और घोड़ों का एक काफिला बाहर निकला। यह वास्तव में एक प्रभावशाली शिकार दल था: भोर में निषिद्ध शहर से निकलते हुए,
वे झाड़ियों में फैल जाते हैं,
उनके रंग-बिरंगे झंडे सूरज की रोशनी में चमक रहे थे,
सफेद घोड़े हवा के विपरीत दिशा में सरपट दौड़ रहे हैं।
एलीगेटर की चमड़ी से बने ड्रम बजते हैं

तलवारबाजी के भाले आपस में टकराते हैं।
बाज़ पालने वालों का दल बेहद क्रूर था।
सीमाओं के स्वामी मार्शल।
तोपों से आकाश कांप उठता है,
जबकि चिपचिपे खंभे सूरज की रोशनी में लाल चमकते हैं।
प्रत्येक व्यक्ति के पास एक धनुष है;
हर किसी की कमर पर धनुष बंधा होता है।
पहाड़ियों की तलहटी में जाल बिछाए जाते हैं।
और रास्तों में जाल बिछाए गए हैं।
बिजली की गड़गड़ाहट से भी अधिक भयावह आवाज के साथ
एक हजार घुड़सवारों ने एक भालू को घेर लिया।
चालाक खरगोश भी खुद को नहीं बचा सकता।
और चालाक नदी-हिरण अब पूरी तरह से हताश हो चुका है।
लोमड़ियों का अंत निश्चित है।
और अब हिरण का सामना मौत से होने वाला है।
पर्वतीय तीतर उड़कर दूर नहीं जा सकता।
और न ही मैदान में रहने वाला इसका चचेरा भाई बच सकता है।
उन्होंने जंगली जानवरों को पकड़ने के लिए पहाड़ों पर कब्जा कर लिया है।
और वे उड़ते हुए पक्षियों को मारने के लिए जंगलों को नष्ट कर रहे हैं।
शहर छोड़ने के बाद वे पूर्वी बाहरी इलाके से होते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़े और कुछ ही देर में लगभग छह मील दूर एक ऊँची जगह पर पहुँच गए जहाँ एक सैन्य शिविर था। वहाँ एक बहुत छोटा जनरल था जिसने हेलमेट, सीने पर कवच, कमर पर कमरबंद और अठारह धातु की प्लेटें पहन रखी थीं। उसके हाथ में नीले किनारे वाली तलवार थी और वह एक पीले घोड़े पर सवार था। उसकी कमर पर एक तैयार धनुष लटका हुआ था। सचमुच: वह एक सम्राट की छवि था।
एक सम्राट के भव्य चेहरे के साथ।

उनका व्यवहार किसी तुच्छ व्यक्ति जैसा नहीं था;
वह एक असली ड्रैगन की तरह चलता था।
जब बंदर भाई ने हवा में से नीचे देखा तो वह प्रसन्न हो उठा। "यह तो स्पष्ट है कि वह युवराज ही होगा। मुझे लगता है मैं उस पर एक चाल चलूंगा।" महान ऋषि ने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा और सैनिकों के बीच से सीधे युवराज के घोड़े के सामने पहुँच गए। फिर उन्होंने अपना रूप बदलकर एक सफेद खरगोश का रूप धारण कर लिया, जो राजकुमार के घोड़े के सामने बेतहाशा दौड़ने लगा। राजकुमार ने जब उसे देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने धनुष पर एक तीर लगाया, उसे खींचा और पहले ही तीर से खरगोश को मार गिराया।
अब महान ऋषि ने जानबूझकर राजकुमार को अपने ऊपर प्रहार करने के लिए उकसाया, और अपनी फुर्ती और आँखों से तीर का अगला हिस्सा पकड़ लिया, उसके पंख अपने पास ज़मीन पर गिरा दिए और भागने लगे। अपने तीर को जेड खरगोश पर लगते देख युवराज ने अपने घोड़े को पूरी रफ्तार से दौड़ाया और उसका पीछा करते हुए बाकी घोड़ों से आगे निकल गए। उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि जब उनका घोड़ा तेज़ दौड़ता था तो बंदर हवा की तरह भागता था, और जब घोड़ा धीमा होता था तो बंदर भी धीमा हो जाता था, बस थोड़ी सी दूरी पर आगे रहता था। देखिए कैसे वह राजकुमार को मीलों तक पीछे ले जाता है जब तक कि वह उसे कीमती लकड़ी के मठ के प्रवेश द्वार तक नहीं ले जाता। यहाँ बंदर अपने असली रूप में लौट आया। खरगोश अब कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। केवल चौखट में एक तीर फंसा हुआ था। बंदर अंदर भागा और तांग पुजारी से कहा, "वह यहाँ है, गुरुजी, वह यहाँ है।" फिर एक और रूप परिवर्तन के साथ वह केवल दो इंच लंबे एक छोटे भिक्षु में बदल गया और लाल बक्से में घुस गया।
राजकुमार उस जेड पत्थर का पीछा करते हुए मठ के प्रवेश द्वार तक पहुँच गया था, लेकिन जब वह गायब हो गया और केवल एक तीर दिखाई दिया जिस पर गिद्धों के पंख लगे थे और वह चौखट में फंसा हुआ था, तो वह बहुत आश्चर्यचकित हुआ।
“यह तो अजीब है,” उसने हैरानी से कहा, “सचमुच बहुत अजीब। मुझे पूरा यकीन है कि मैंने यहीं जेड पत्थर पर निशाना लगाया था। यह गायब नहीं हो सकता, सिर्फ मेरा तीर यहीं रह गया। मुझे लगता है कि इतने सालों में यह जगह एक आत्मा बन गई

होगी।" अपना तीर निकालते हुए उसने देखा कि प्रवेश द्वार पर बड़े अक्षरों में लिखा था, "शाही रूप से स्थापित कीमती लकड़ी का मठ"।

"मुझे याद है," उसने मन ही मन कहा। "कुछ साल पहले जब मेरे पिता महल के सिंहासन कक्ष में थे, तो उन्होंने यहाँ के भिक्षुओं के लिए धन और रेशम के उपहारों के साथ अधिकारियों को भेजा था ताकि वे बुद्ध प्रतिमाओं वाला एक बुद्ध हॉल बनवा सकें। मुझे आज यहाँ आने की उम्मीद नहीं थी; लेकिन, जैसा कि कहते हैं,

किसी मंदिर के पास से गुजरते समय भिक्षु के शब्दों को सुनना।

यह जीवन की व्यर्थता से आधे दिन का विश्राम है।

युवराज घोड़े से उतरे और अंदर जाने ही वाले थे कि उनके निजी अंगरक्षक और तीन हजार घुड़सवार एक विशाल भीड़ के रूप में तेजी से आ गए, सभी धक्का-मुक्की करते हुए मठ में घुसने की कोशिश कर रहे थे। बेहद घबराए हुए भिक्षुओं ने प्रणाम करते हुए बाहर आकर राजकुमार को मठ के मुख्य हॉल में ले गए, जहाँ उन्होंने बुद्ध की मूर्तियों की पूजा की। जब उन्होंने गलियारों में घूमने से पहले चारों ओर देखने के लिए अपना सिर उठाया, तो उन्होंने देखा कि एक भिक्षु हॉल के ठीक बीच में बैठा है। "यह कैसी गुस्ताखी है!" उन्होंने कहा। "मैं, युवराज, आज स्वयं इस मठ में दर्शन करने आया हूँ, और यद्यपि भिक्षुओं को मुझसे मिलने के लिए यात्रा करने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उन्हें शाही फरमान द्वारा सूचित नहीं किया गया था, फिर भी इस भिक्षु को कम से कम मेरे पूरे बल के साथ आने पर उठ जाना चाहिए था। उसकी हिम्मत कैसे हुई वहाँ बैठे रहने की?" फिर उन्होंने अध्याय 37

भिक्षु को गिरफ्तार करने का आदेश दिया गया।

"गिरफ्तारी" शब्द सुनते ही राजकुमार के दोनों ओर खड़े अधिकारियों ने तुरंत संज़ंग को पकड़ लिया और उसे बांधने के लिए रस्सियाँ तैयार कर लीं। बंदर चुपचाप अपने डिब्बे में प्रार्थना कर रहा था: "धर्म के रक्षक स्वर्ग के राजाओं, छह डिंग और छह जिया, मेरे पास एक राक्षस को वश में करने की योजना है, लेकिन यह राजकुमार नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है, और वह मेरे स्वामी को बंधवाने वाला है। आपको तुरंत उसकी रक्षा करनी होगी। यदि आप उसे बंधने देंगे तो आप सब मुसीबत में पड़ जाएँगे।" उनमें से किसी ने भी महान ऋषि के गुप्त निर्देशों का उल्लंघन करने का

साहस नहीं किया, और उन्होंने वास्तव में संज़ंग की रक्षा की। अधिकारी संज़ंग के मुंडे हुए सिर को छू भी नहीं सके; ऐसा लग रहा था मानो वह एक दीवार से घिरा हो, और वे उसके पास तक नहीं पहुँच सकते थे।

"तुम कहाँ से हो, और आत्मरक्षा के इस जादू से मेरा अपमान करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?" युवराज ने पूछा।

संज़ंग उनके पास गए, आदरपूर्वक उनका अभिवादन किया और कहा, "मेरे पास आत्मरक्षा का कोई जादू नहीं है। मैं पूर्व से आया हुआ तांग पुरोहित हूँ जो बुद्ध की पूजा करने, शास्त्र लाने और गर्जन मठ में खजाने अर्पित करने जा रहा हूँ।"

राजकुमार ने उत्तर दिया, "आपकी पूर्वी भूमि मध्य मैदानों में तो स्थित है, लेकिन वह अत्यंत गरीब है। आपके पास भला कौन-कौन से खजाने हो सकते हैं? मुझे बताइए।"

"मैंने जो चोगा पहना है, वह तीसरी श्रेणी का खजाना है। मेरे पास पहली और दूसरी श्रेणी के भी खजाने हैं जो इससे कहीं बेहतर हैं," संजांग ने कहा।

"लेकिन वह चोगा तो तुम्हें आधा ही ढकता है," राजकुमार ने आपत्ति जताई। "यह इतना कीमती तो हो ही नहीं सकता कि इसे खजाना कहा जाए।"

"हो सकता है कि भिक्षु का वस्त्र दोनों कंधों को न ढके," संजांग ने उत्तर दिया, "लेकिन इस बारे में एक कविता है जो कहती है: बेशक एक भिक्षु का वस्त्र एक कंधे को खुला छोड़ देता है।"

लेकिन इसमें सांसारिक धूल से मुक्त एक सच्चे बुद्ध का वर्णन है।

यह हजारों सुइयों की सच्ची उपलब्धि थी;

नौ मोती और आठ खजाने इसकी आत्मा का आधार थे।

परियों और पवित्र महिलाओं ने इसे श्रद्धापूर्वक सिला था।

ध्यानमग्न भिक्षु को उनके शरीर को शुद्ध करने के लिए उपहार के रूप में।

महाराज को अभिवादन न करने की गलती को नजरअंदाज किया जा सकता है।

लेकिन उस आदमी का क्या फायदा जो अपने पिता का बदला नहीं लेता?

यह सुनकर युवराज क्रोधित हो गए। उन्होंने चिल्लाते हुए कहा, "तुम बकवास कर रहे हो, उद्दंड भिक्षु!"

"अगर आप चाहें तो अपनी वाक्पटुता का इस्तेमाल करके अपने इस खस्ताहाल कपड़े की तारीफ कर सकते हैं। लेकिन आपको मुझे यह बताना होगा कि मैंने अपने पिता के साथ किए गए किन अन्याय का बदला लेने में असफल रहा हूँ।"

संजांग ने एक कदम आगे बढ़ाया, अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ा और कहा, "महामहिम, मनुष्य को पृथ्वी पर कितनी महान कृपाएँ प्राप्त होती हैं?"
“चार,” राजकुमार ने उत्तर दिया। “वे क्या हैं?” संजांग ने पूछा। “एक तो आकाश और पृथ्वी की कृपा है जो उसे आश्रय और सहारा देते हैं,” राजकुमार ने कहा। “एक सूर्य और चंद्रमा की कृपा है जो उसे प्रकाश देते हैं। एक उसके राजा की कृपा है जो उसे भूमि और जल प्रदान करते हैं। और एक उसके माता-पिता की कृपा है जो उसका पालन-पोषण करते हैं।”
"महामहिम गलत हैं," संज़ंग ने मुस्कुराते हुए कहा। "मनुष्यों को केवल आकाश और पृथ्वी का आवरण और सहारा मिलता है, सूर्य और चंद्रमा का प्रकाश मिलता है, और उनके राजा उन्हें भूमि और जल प्रदान करते हैं। उनका पालन-पोषण उनके माता-पिता द्वारा नहीं किया जाता है।"
"भिक्षु," राजकुमार क्रोधित होकर गरजा, "तुम गंजे सिर वाले, भोजन की भीख मांगने वाले आवारा, तुम विद्रोही, अगर लोगों को पालने-पोसने के लिए माता-पिता न हों तो वे कहाँ से आएंगे?"
"महाराज, यह एक ऐसी बात है जो मुझे नहीं पता। लेकिन मेरे पास इस संदूक में एक खजाना है जिसे राजा बनाने वाला कहा जाता है, जो पाँच सौ वर्षों पहले, वर्तमान युग के पाँच सौ वर्षों में और उसके बाद के पाँच सौ वर्षों में, कुल मिलाकर पंद्रह सौ वर्षों में जो कुछ हुआ है या होगा, वह सब जानता है। वह हमें माता-पिता द्वारा पाले-पोसे जाने के स्नेह से वंचित रहने के बारे में सब कुछ बता सकता है।"
उन्होंने मुझे यहां बहुत देर तक इंतजार करवाया है।
“उसे बाहर लाओ और मुझे देखने दो,” युवराज ने कहा। जैसे ही संज़ंग ने संदूक का ढक्कन खोला, बंदर भाई बाहर कूद गया और उसके दोनों ओर दौड़ने लगा। “इतने छोटे से आदमी को भला कुछ पता नहीं हो सकता,” राजकुमार ने कहा।
जैसे ही बंदर ने अपने आकार पर आपत्ति सुनी, उसने अपनी जादुई शक्तियों का उपयोग करके खुद को इतना लंबा कर लिया कि वह तीन फीट चार या पांच इंच लंबा हो गया, जिससे सैनिक आश्चर्यचकित रह गए और उन्होंने कहा, "अगर वह इसी गति

से बढ़ता रहा तो एक-दो दिन में ही वह आसमान को चीरते हुए निकल जाएगा।"
जब बंदर भाई अपने मूल आकार में वापस आ गया तो उसका बढ़ना बंद हो गया। तभी राजकुमार ने उससे बात की:
"हे राजा-निर्माता, यह बूढ़ा भिक्षु कहता है कि आप अतीत और भविष्य की सभी अच्छी और बुरी बातों को जानते हैं। क्या आप अपनी भविष्यवाणियों के लिए कछुए के खोल या मिलफ़ॉइल का उपयोग करते हैं? या आप पुस्तकों के वाक्यों की व्याख्या करके ऐसा करते हैं?"
"मैं किसी चीज़ का इस्तेमाल नहीं करता," बंदर ने कहा। "मुझे हर चीज़ के बारे में सब कुछ जानने के लिए बस अपनी तीन इंच लंबी जीभ की ज़रूरत है।"
"तुम फिर से बकवास कर रहे हो," राजकुमार ने कहा। "पुराने समय से ही 'परिवर्तन की पुस्तक' दुनिया में होने वाली अच्छी और बुरी घटनाओं की भविष्यवाणी करने वाली सबसे अच्छी पुस्तक रही है। यह आपको बताती है कि किन चीजों से बचना चाहिए।"
इसीलिए तो कछुए के खोल या यारो से भी भविष्यवाणियां की जा सकती हैं। मैं तुम्हारी किसी बात पर विश्वास क्यों करूं?
आप निराधार भविष्यवाणियां करके परेशानी खड़ी करने की कोशिश करेंगे।
“महाराज, धैर्य रखिए, जब तक आप मेरी बात न सुन लें। आप वूजी के सम्राट के सबसे बड़े पुत्र हैं। पाँच वर्ष पूर्व आपके देश में भयंकर सूखा पड़ा था, जिससे आपकी प्रजा को भारी कष्ट सहना पड़ा। आपके पिता राजा और उनके मंत्रियों ने वर्षा के लिए अत्यंत प्रार्थना की, लेकिन एक बूँद भी नहीं गिरी, जब तक कि झोंगनान पर्वत से एक ताओवादी जादूगर नहीं आया, जो हवा और बारिश ला सकता था और पत्थर को सोने में बदल सकता था। राजा को उस जादूगर से इतना लगाव हो गया कि उन्होंने उसे अपना शपथित भाई बना लिया। क्या अब तक की सारी बातें सच हैं?”
"जी हां," युवराज ने कहा, "आगे बढ़ो।"
"तीन साल बाद जब जादूगर गायब हो गया, तब सिंहासन पर कौन बैठा था?"
अध्याय 37
526
पश्चिम की यात्रा
“आप बिलकुल सही कह रहे हैं कि एक जादूगर था,” राजकुमार ने कहा, “और मेरे पिता महाराज ने उसे अपना शपथित भाई मान लिया था। वे एक ही कमरे में सोते थे

और एक ही मेज पर खाना खाते थे। तीन साल पहले वे महल के बगीचों की सुंदरता का आनंद ले रहे थे, तभी उसने जादुई हवा के झोंके से मेरे पिता का सोने की किनारी वाला सफेद जेड पत्थर का राजदंड छीन लिया और उसे अपने साथ झोंगनान पर्वत पर ले गया। मेरे पिता आज भी उसे याद करते हैं। उसके बिना मेरे पिता को आराम करने में कोई दिलचस्पी नहीं है, और महल के बगीचे पिछले तीन सालों से पूरी तरह बंद हैं। अगर राजा मेरे पिता नहीं हैं, तो मैं जानना चाहूंगा कि वे और कौन हो सकते हैं।"

बंदर मुस्कुराया, और राजकुमार द्वारा और प्रश्न पूछे जाने पर भी बिना उत्तर दिए मुस्कुराता रहा। "तुम्हें धिक्कार है!"

क्रोधित राजकुमार ने कहा, "तुम मुझ पर मुस्कुराकर क्या कहना चाहते हो?"

"मुझे अभी बहुत कुछ कहना है," बंदर भाई ने अंत में उत्तर दिया, "लेकिन इतने सारे लोगों के बीच यहाँ बात करना उचित नहीं है।" राजकुमार को लगा कि इस बात के पीछे कोई ध्येय है, इसलिए उसने अपनी आस्तीन हिलाकर सैनिकों को विदा कर दिया। उपस्थित अधिकारियों ने तुरंत आदेश का पालन करते हुए तीन हज़ार सैनिकों और उनके घोड़ों को मठ के द्वार के बाहर डेरा डालने का आदेश दिया। अब जब मठ के हॉल में कोई और नहीं था, तो राजकुमार ने सबसे अच्छी जगह पर बैठ गया। आदरणीय भिक्षु राजकुमार के बगल में खड़े थे और बंदर उनके पास खड़ा था। मठ के सभी भिक्षु वहाँ से चले गए।

फिर बंदर की मुस्कान गायब हो गई और वह आगे बढ़कर बोला, "महाराज, वास्तव में आपके अपने ही माता-पिता हवा में उड़ गए थे, और अब सिंहासन पर वर्षा कराने वाला जादूगर बैठा है।"

"बकवास," राजकुमार ने कहा, "बकवास। जब से जादूगर चला गया है, मेरे पिता ने मौसम को अच्छी तरह से नियंत्रित रखा है, देश को मजबूत बनाया है और जनता को संतुष्ट रखा है। लेकिन तुम कहते हो कि वह मेरे पिता नहीं हैं। चूंकि मैं अभी बहुत छोटा हूँ, इसलिए मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ; लेकिन अगर महाराज, मेरे पिता, तुम्हें ऐसी राजद्रोह की बातें करते हुए सुन लेते, तो वे तुम्हें गिरफ्तार करवाकर दस हजार टुकड़े-टुकड़े करवा देते।" फिर उसने बंदर को चिल्लाकर कहा कि वह चला जाए।

"मैंने क्या कहा?" बंदर ने तांग पुजारी से पूछा। "मैंने कहा कि वह मुझ पर विश्वास नहीं करेगा। खैर, अब मेरे पास यही उपाय है कि मैं उसे वह खजाना दे दूं, इस उम्मीद में कि मुझे पासपोर्ट मिल जाए ताकि हम पश्चिमी स्वर्ग की ओर आगे बढ़ सकें।" संजांग

ने लाल डिब्बा बंदर को दिया, जिसने उसे लिया, खुद को झटका दिया, उसे गायब कर दिया - आखिरकार, वह उसके अपने ही बालों का रूपांतरित रूप था - और उसे वापस अपने शरीर पर रख लिया। फिर उसने सफेद जेड का राजदंड दोनों हाथों से राजकुमार को भेंट किया।

"आप वाकई एक शानदार भिक्षु हैं," युवराज ने इसे देखकर कहा। "पांच साल पहले आप क्वानझेन जादूगर बनकर मेरे परिवार के खजाने को हड़पने आए थे, और अब आप बौद्ध भिक्षु बनकर इसे मुझे भेंट करने आए हैं।"

“इसे गिरफ्तार करो,” राजकुमार चिल्लाया, और जैसे ही आदेश दिया गया, संजांग ने भयभीत होकर बंदर की ओर इशारा करते हुए कहा, “घोड़ों के अभागे रक्षक! तुम केवल बेवजह मुसीबत खड़ी कर सकते हो जिसमें तुम मुझे भी फंसा देते हो।” बंदर उसे रोकने के लिए आगे बढ़ा।

"चुप रहो, वरना भेद खुल जाएगा। मुझे किंगमेकर नहीं कहा जाता। मेरा एक असली नाम है।"

क्रोधित युवराज चिल्लाया, "इधर आओ। मुझे तुम्हारा असली नाम चाहिए ताकि मैं तुम्हें सजा के लिए कानूनी अधिकारियों के हवाले कर सकूं।"

“मैं इस बड़े का वरिष्ठ शिष्य हूँ,” बंदर ने कहा। “मेरा नाम सन वुकॉन्ग है। मैं अपने गुरु के साथ पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने जा रहा था, इसलिए हमने कल रात यहाँ शरण ली। मेरे गुरु कल रात देर तक सूत्र पढ़ रहे थे, और उन्हें तीसरे पहर में एक सपना आया। उस सपने में महाराज, आपके पिता ने मेरे गुरु को बताया कि जादूगर ने उन्हें महल के बगीचों में स्थित आठ-पहलू वाले चमकदार टाइलों वाले कुएँ में धकेल कर मार डाला था। फिर जादूगर ने अपना रूप आपके पिता के इतने सटीक ढंग से धारण कर लिया कि दरबार के कोई भी अधिकारी अंतर नहीं बता सके। आप इतने छोटे थे कि आपको कुछ समझ नहीं आया और आपको हरम से बहिष्कृत कर दिया गया था।”

बगीचा बंद था। इसका कारण यह था कि उसे डर था कि सच्चाई सबके सामने आ जाएगी। महाराज, आपके पिता, अध्याय 37

कल रात वह खास तौर पर मुझसे उस दुष्ट आत्मा को मारने के लिए कहने आया था।

मुझे चिंता थी कि कहीं वर्तमान राजा सचमुच कोई बुरी आत्मा न हो, लेकिन जब मैंने ऊपर से देखा तो मुझे पता चला कि वह निश्चित रूप से एक बुरी आत्मा है। मैं उसे पकड़ने ही वाला था कि तुम शिकार के लिए शहर से बाहर निकल गए। जिस हरे रंग के खरगोश को तुमने तीर से मारा, वह मैं ही था। मैं तुम्हें अपने गुरु से मिलवाने के लिए इस मठ में लाया था। मैंने तुम्हें जो कुछ भी बताया है, वह सब सच है। तुम उस सफेद हरे रंग के राजदंड को पहचान सकते हो; तो क्यों न तुम अपने पालन-पोषण करने वाले पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्हें प्रणाम करो और उनका बदला लो?

ये शब्द सुनकर युवराज अत्यंत व्याकुल हो गए और शोक में डूबे हुए उन्होंने मन ही मन कहा, "शायद मुझे उसकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, पर ये बातें कुछ हद तक विश्वसनीय लग रही हैं। लेकिन अगर मैं उस पर विश्वास कर भी लूं, तो महल में अपने पिता का सामना कैसे कर पाऊंगा?" वास्तव में वे बहुत चिंतित थे।

दुविधा में फंसा हुआ,

वह सोच रहा था कि आखिर उसे क्या करना चाहिए।

यह देखकर कि वह कोई निर्णय नहीं ले पा रहा है, बंदर उसके पास गया और बोला, "महाराज, इन सब शंकाओं की कोई आवश्यकता नहीं है। आप राजधानी वापस जाइए और महारानी से पूछिए कि तीन साल पहले की तुलना में उनके और आपके पिता के बीच प्रेम कैसा है। यही एक सवाल है जो साबित करेगा कि मैं सच कह रहा हूँ।"

इससे राजकुमार का मन बदल गया। उसने कहा, "बस, मैं अपनी माँ से पूछूँगा।" वह उछलकर खड़ा हुआ, राजदंड अपनी आस्तीन में रखा और जाने ही वाला था कि बंदर ने उसके कपड़े खींचे और कहा, "अगर तुम्हारे सारे आदमी और घोड़े वापस चले गए तो भेद खुल जाएगा और मेरे लिए कामयाब होना बहुत मुश्किल हो जाएगा। तुम्हें अकेले वापस जाना है और किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं करना है, न ही कोई शोर मचाना है। मुख्य द्वार से मत जाना; इसके बजाय पीछे के द्वारों में से किसी एक का इस्तेमाल करना। और जब तुम अपनी माँ से मिलने महल में महिलाओं के कमरे में जाओ, तो चिल्लाना या शोर मत मचाना। तुम्हें अपनी आवाज़ धीमी रखनी है और बहुत धीरे से बात करनी है। उस दुष्ट के पास शायद बहुत बड़ी जादुई शक्तियाँ हैं, और एक बार भेद खुल गया तो तुम्हारी माँ की जान की कोई कीमत नहीं रहेगी।"

युवराज ने इन निर्देशों को बड़े आदर के साथ स्वीकार किया और फिर मठ के द्वार से

बाहर जाकर अपने अधिकारियों को ये आदेश दिए: "यहीं डेरा डाले रहो और हिलना मत। मुझे कुछ काम निपटाना है। मेरे लौटने तक इंतज़ार करो और फिर हम सब एक साथ राजधानी लौटेंगे।" उन्हें देखिए: सेना को डेरा डालने का आदेश देते हुए।
वह मानो पंखों पर सवार होकर शहर की ओर लौटता है।
अगर आपको नहीं पता कि रानी से मुलाकात के दौरान क्या बातचीत हुई थी, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 38
अपनी माँ से सवाल करते हुए, लड़का सही और गलत में फर्क करना सीखता है।
जब धातु और लकड़ी रहस्य में जुड़ते हैं, तो सत्य और असत्य स्पष्ट हो जाते हैं (अध्याय 38)
528
पश्चिम की यात्रा
यदि आप केवल जन्म से उत्पन्न होने वाले कारण की बात करते हैं,
आप बुद्ध की सभा में उपस्थित हो सकते हैं।
धूल से भरे संसार के बुद्ध केवल शांतिपूर्ण विचारों में ही लीन रहते हैं;
सभी क्षेत्रों के लोग उस आत्मा को वश में करते हुए देखते रहते हैं।
यदि आप यह जानना चाहते हैं कि सच्चा सम्राट कौन है,
आपको अपनी मां से पूछना होगा जिसने आपको जन्म दिया है।
आपने अभी तक कोई दूसरी दुनिया नहीं देखी है;
हर कदम पर एक नया फूल खिल उठता है।
महान ऋषि से विदा लेने के तुरंत बाद, वूजी के युवराज शहर लौट आए। निर्देशानुसार, वे मुख्य महल के द्वार की ओर नहीं गए और न ही अपने आगमन की घोषणा की, बल्कि सीधे एक पिछले द्वार पर गए जिसकी रखवाली कुछ हिजड़े कर रहे थे। उन्हें रोकने का साहस न करते हुए, उन्होंने उन्हें अंदर जाने दिया। तेजस्वी राजकुमार अपने घोड़े पर सवार होकर सीधे रेशमी सुगंध मंडप के चरणों में पहुँचे, जहाँ रानी दर्जनों रानियों और रखैलियों के साथ पंखे लिए बैठी थीं। रानी एक नक्काशीदार रेलिंग से टेक लगाकर रो रही थीं। क्या आप जानते हैं क्यों? दरअसल, उन्हें सुबह तड़के आए एक सपने की आधी-अधूरी याद थी और आधी-अधूरी भूल भी गई थीं। अब वे गहरी सोच में डूबी हुई थीं।

राजकुमार घोड़े से उतरे, मंडप के चरणों में घुटने टेककर बैठ गए और "माँ" कहकर पुकारा।
रानी ने खुद को खुशमिजाज दिखाने की कोशिश की और उसे पुकारते हुए कहा, "तुम्हें देखकर कितनी खुशी हुई, मेरे बच्चे, कितनी खुशी हुई। मैं दो-तीन साल से तुम्हारे बारे में चिंतित थी। तुम्हारे पिता महाराज से दरबार में मेरी तमाम गुजारिशों के बावजूद मैं तुमसे मिल नहीं पाई। आज मुझसे मिलने की इजाजत तुम्हें कैसे मिली? मैं बहुत खुश हूँ। लेकिन तुम इतने उदास क्यों लग रहे हो, बच्चे? तुम्हारे पिता अब बूढ़े हो रहे हैं। एक दिन अजगर को हरे-भरे सागर में और फीनिक्स को लाल बादलों में लौटना होगा। तब सिंहासन तुम्हारा होगा। तो फिर इतने दुखी क्यों हो रहे हो?"
इस पर राजकुमार ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया, "माँ, अब सिंहासन पर कौन विराजमान है? शाही 'हम' का प्रयोग कौन करता है?"
रानी ने हैरानी से कहा, "लड़का पागल हो गया है। तुम्हारे पिता राजा हैं। तुम क्यों पूछ रहे हो?"
"माँ, मैं आपसे विनती करता हूँ," राजकुमार ने फिर से प्रणाम करते हुए कहा, "अपने बेटे के अपराध को क्षमा कर दीजिए ताकि मैं एक बार फिर से क्षमा माँग सकूँ। यदि आप मुझे क्षमा नहीं कर सकतीं, तो मैं क्षमा नहीं माँग सकता।"
रानी ने कहा, "मां और बेटे के बीच कोई आपराधिक कार्यवाही नहीं हो सकती। तुम्हें माफ कर दिया गया है। अब जल्दी करो और पूछ लो।"
राजकुमार ने कहा, "माँ, मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि क्या तीन साल पहले की तुलना में अब आपके और मेरे पिता के बीच स्नेह में कोई अंतर है?"

जैसे ही रानी ने यह सुना, उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा और वह दौड़कर मंडप के नीचे गई और राजकुमार को गले लगा लिया। आँखों से आँसू बहते हुए उसने कहा, "बच्चे, इतने लंबे समय तक अलग रहने के बाद तुम मुझसे यह पूछने के लिए हरम में क्यों आए हो?"
"माँ," राजकुमार ने बड़े क्रोध से कहा, "तुरंत बता दो कि तुम्हें क्या कहना है, वरना तुम सब कुछ बर्बाद कर दोगी।"

रानी ने अपने सेवकों को पीछे हटने का आदेश दिया, फिर धीमी और आँसू भरी आवाज़ में बोली, "अगर तुमने मुझसे इसके बारे में नहीं पूछा होता तो मैं यह राज़ अपने साथ कब्र में ले जाती। अब जब तुमने पूछ ही लिया है, तो मेरी बात सुनो: वह पहले बहुत भावुक और कोमल हुआ करता था।"
लेकिन तीन साल बाद वह ठंडेपन की ओर मुड़ गया है।
अगर मैं तकिए पर उसके कान में प्यार से फुसफुसाऊं
वह बुढ़ापे का हवाला देते हुए कहता है कि अब वह इच्छाशक्ति खत्म हो गई है।
यह सुनकर युवराज अपनी मां के आलिंगन से अलग हो गए और अपने घोड़े पर सवार हो गए। "क्या बात है, बेटा?"
रानी ने उसे पकड़ते हुए पूछा, "हमारी बातचीत पूरी होने से पहले ही तुम क्यों जा रहे हो?"
राजकुमार तब उनके सामने घुटने टेककर बोला, "माँ, मैं आपको यह बताने की हिम्मत ही नहीं कर पा रहा हूँ। आज सुबह जब मैं महाराज द्वारा कृपापूर्वक दिए गए बाज़ों और कुत्तों के साथ शिकार पर गया, तो संयोगवश मेरी मुलाकात एक पवित्र भिक्षु से हुई जो धर्मग्रंथ लेने जा रहे थे। उनके वरिष्ठ शिष्य का नाम 'सन द नोविस' या 'ब्रदर सन' है। वे भूत-प्रेतों को भगाने में बहुत कुशल हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे पिता महाराज महल के बगीचों में स्थित आठ-पहलू वाले चमकदार टाइलों वाले कुएँ में मृत पाए गए हैं, और उस जादूगर ने सिंहासन हथियाने के लिए मेरे पिता का रूप धारण कर लिया है। पिछली रात के मध्य में मेरे पिता ने उन्हें स्वप्न में दर्शन दिए। उन्होंने पुजारी से उस दुष्ट आत्मा को पकड़ने के लिए यहाँ आने को कहा। मैं आपसे यह प्रश्न पूछने आया हूँ क्योंकि मैं उनकी बातों पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर पा रहा था। माँ, आपने जो अभी मुझे बताया है, उससे अब मुझे पूरा यकीन है कि वह एक दुष्ट आत्मा है।"
"मेरे बेटे, तुम्हें अजनबियों की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए," रानी ने कहा।
“मैं तो उसकी बात पर बिलकुल भी यकीन नहीं करता,” युवराज ने उत्तर दिया, “सिवाय इसके कि महाराज मेरे पिता ने उसे सबूत के तौर पर कुछ दिया था।” जब रानी ने पूछा कि वह क्या है, तो युवराज ने अपनी आस्तीन से सोने की किनारी वाला सफेद जेड पत्थर का राजदंड निकाला और रानी को सौंप दिया। रानी ने उसे देखा और राजा के खजाने के रूप में पहचान लिया। वह अपने आँसू नहीं रोक पाई।

"मेरे स्वामी," वह रोते हुए बोली, "आपकी मृत्यु के बाद पिछले तीन वर्षों में आप मुझसे मिलने क्यों नहीं आए? आप पहले पवित्र भिक्षु और फिर राजकुमार के दर्शन क्यों किए?"

"माँ, आपका क्या मतलब है?" राजकुमार ने पूछा।

“मेरे बच्चे,” रानी ने कहा, “मुझे भी सुबह तड़के एक सपना आया था। मैंने तुम्हारे पिता को अपने सामने भीगे हुए खड़े देखा। उन्होंने मुझे खुद बताया कि उनकी हत्या कर दी गई है और उनकी आत्मा ने तांग पुजारी को पुकार कर उनसे सिंहासन पर बैठे धोखेबाज को पकड़ने और उन्हें छुड़ाने की विनती की है। मुझे उनकी ये सारी बातें याद हैं, लेकिन बहुत धुंधली सी। मैं बस इसी बारे में सोच रही थी कि तुम आए, तुमने वह सवाल पूछा और मुझे राजदंड दिखाया। मैं इसे अपने पास रखूँगी, और तुम जाओ और उस पवित्र भिक्षु से जल्द से जल्द आने का अनुरोध करो। तब बुराई का साया छंट जाएगा, सत्य और असत्य अलग हो जाएँगे, और तुम अपने पिता महाराज को उनके किए का बदला चुका पाओगे।”

तुम्हें पालने-पोसने में दयालुता दिखाई।"

राजकुमार जल्दी से घोड़े पर सवार हुआ और शहर से दूर जाने के लिए महल के पिछले द्वार से बाहर निकल गया।

वास्तव में:

आँखों में आँसू लिए उसने अपनी माँ से विदा ली;

दुःख से व्याकुल होकर वह संजांग लौट आया।

वह जल्द ही शहर से बाहर निकलकर कीमती लकड़ी के मठ के द्वार पर पहुँच गया, जहाँ पूरी सेना ने उसका अभिवादन किया और वह घोड़े से उतर गया। अब लगभग सूर्यास्त हो चुका था। युवराज ने सैनिकों को अनावश्यक हलचल न करने का आदेश दिया। फिर वह मठ में वापस गया, अपने कपड़े ठीक किए और जैसे ही भाई बंदर मुख्य हॉल से बाहर निकल रहा था, उसने उसे प्रणाम किया।

राजकुमार घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "गुरुजी, मैं वापस आ गया हूँ।"

बंदर उसके पास गया और उसे उठाकर खड़ा किया और बोला, "कृपया उठो। जब तुम शहर गए थे तो तुमने किससे पूछताछ की थी?"

"मैंने अपनी मां से पूछताछ की," युवराज ने जवाब दिया और फिर उसे सारी घटना विस्तार से बताई।
बंदर ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "अगर वह इतना ठंडा है तो वह किसी बर्फीली चीज का ही रूपांतर होगा। कोई बात नहीं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं उसे तुम्हारे लिए खत्म कर दूंगा। बस दिक्कत ये है कि आज कुछ भी करने के लिए बहुत देर हो चुकी है।"
अब वापस जाओ और कल मेरे आने तक इंतजार करो।"
राजकुमार फिर से घुटनों के बल बैठ गया, प्रणाम किया और बोला, "मुझे यहीं रहने दीजिए, मैं आपके हर आदेश का पालन करूंगा, जब तक कि मैं कल आपके साथ अंदर न चला जाऊं।"
"नहीं," बंदर ने कहा, "ऐसा करना ठीक नहीं होगा। अगर हम दोनों साथ शहर गए तो उस शैतान को शक हो जाएगा। वह यह नहीं सोचेगा कि मैं तुमसे बस संयोग से मिला हूँ। वह कहेगा कि तुमने मुझे बुलाया था, और फिर तुमसे नाराज़ हो जाएगा।"
"लेकिन अगर मैं अभी शहर वापस गया तो वह वैसे भी मुझसे नाराज हो जाएगा," राजकुमार ने उत्तर दिया।
"क्यों?" बंदर ने पूछा।
राजकुमार ने कहा, "क्योंकि आज सुबह उसके आदेश पर इतने सारे आदमियों, घोड़ों, बाज़ों और शिकारी कुत्तों को मारने के बाद, जब मैं बिना कुछ पकड़े वापस लौटूंगा, तो मेरे पास उसका सामना करने का कोई तरीका नहीं होगा। अगर वह मुझे मेरी अक्षमता के लिए दंडित करता है, तो मुझे जेल में डाल दिया जाएगा और कल जब तुम शहर जाओगे तो तुम्हारी मदद करने वाला कोई नहीं होगा।"
और इस पूरी सेना में मेरा एक भी दोस्त नहीं है।"
"कोई बात नहीं," बंदर ने कहा। "अगर तुमने मुझे पहले बताया होता तो मैं तुम्हारे लिए एक अच्छा थैला तैयार रखता।"
हे महान ऋषि! देखिए, वे राजकुमार के सामने अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करते हुए एक ही छलांग में बादलों में पहुँच जाते हैं, अपनी उंगलियों से जादू करते हैं और गूढ़ शब्द "ॐ राम शुद्ध धर्म जगत" का उच्चारण करते हैं।

उन्होंने पर्वतीय देवताओं और उस स्थान के स्थानीय देवताओं को हवा में ही उनके सामने झुकने और यह कहने के लिए मजबूर किया, "हे महान ऋषि, हम जैसे तुच्छ देवताओं के लिए आपके क्या आदेश हैं?"

इस पर भाई बंदर ने जवाब दिया, "मैं तांग पुजारी को यहाँ तक ले आया हूँ और अब मैं एक राक्षस को पकड़ना चाहता हूँ।"

समस्या यह है कि युवराज को शिकार में कुछ नहीं मिला, इसलिए वह महल लौटने की हिम्मत नहीं कर रहे हैं। मैं आप सभी से एक निवेदन करता हूँ। क्या आप उनके लिए कुछ नदी-हिरण, मृग, खरगोश, अन्य पक्षी और जानवर ला सकते हैं? पर्वतीय देवताओं या स्थानीय देवताओं में से किसी ने भी इस आदेश को अस्वीकार करने की हिम्मत नहीं की।

जब उन्होंने पूछा कि प्रत्येक वस्तु की कितनी मात्रा चाहिए, तो महान ऋषि ने उत्तर दिया, "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। बस कुछ ले आओ।"

तब देवताओं ने अपने अदृश्य सैनिकों को इकट्ठा किया और एक जादुई हवा चलाई जिससे जानवर इकट्ठा हो गए। उन्होंने सैकड़ों-हजारों तीतर, हिरण, मृग, नदी-हिरण, लोमड़ी, बिज्जू, रैकून कुत्ते, खरगोश, बाघ, तेंदुए और भेड़िये पकड़े, जिन्हें उन्होंने बंदर को भेंट किया।

"मुझे वे नहीं चाहिए," उसने कहा। "मैं चाहता हूँ कि आप उनके पैर की पट्टियाँ काट दें और उन्हें वापस जाने वाली सड़क के पंद्रह मील के दोनों ओर छोड़ दें ताकि शिकारी उन्हें अपने बाज़ों या कुत्तों का इस्तेमाल किए बिना राजधानी ले जा सकें।"

इससे तुम्हारा ही गुणगान होगा। देवताओं ने वैसा ही किया जैसा उन्हें कहा गया था, अपनी जादुई हवा को रोक दिया और शिकार को सड़क के किनारे रख दिया।

तभी बंदर भाई ने अपना बादल ज़मीन पर उतारा और राजकुमार से कहा, "महाराज, अब आप जा सकते हैं। आपका थैला सड़क के किनारे रखा है, आप उसे ले सकते हैं।" बंदर की अद्भुत शक्तियों के इस हवाई प्रदर्शन को देखकर राजकुमार पूरी तरह आश्वस्त हो गया कि यह सच है, इसलिए उसने केवल प्रणाम किया और विदा ली। फिर वह मठ से बाहर निकला और सैनिकों को शहर लौटने का आदेश दिया। सड़क के किनारे सचमुच अनगिनत जंगली जानवर थे जिन्हें सैनिक बाज़ या कुत्तों की ज़रूरत के बिना, अपने हाथों से ही पकड़ सकते थे। सभी सैनिकों ने राजकुमार का

उत्साहवर्धन किया और कहा कि यह उनके सौभाग्य के कारण है, उन्हें यह एहसास नहीं था कि यह बंदर की जादुई उपलब्धि थी। राजधानी लौटते समय उनके विजयगीतों को सुनिए।

इस बीच, बंदर संज़ंग की रखवाली कर रहा था। राजकुमार के साथ उन दोनों के अच्छे संबंध देखकर मठ के भिक्षुओं ने उनका बहुत सम्मान किया। उन्होंने उन्हें शाकाहारी भोजन दिया और ध्यान कक्ष में विश्राम कर रहे तांग पुजारी की देखभाल की। लगभग पूरे दो घंटे तक बंदर इतना परेशान रहा कि उसे नींद नहीं आई।

वह उछलकर उठा, तांग पुजारी के पलंग के पास गया और "गुरुजी" कहकर पुकारा। संज़ंग अभी भी जाग रहा था, लेकिन उसने सोने का नाटक किया क्योंकि वह जानता था कि बंदर शोर मचाने और मुसीबत खड़ी करने वाला था। इसलिए बंदर ने संज़ंग के मुंडे हुए सिर को सहलाया और बेतहाशा चिल्लाया, "मालिक, आप क्यों सो रहे हैं?"

तांग पुजारी ने क्रोधित होकर कहा, "दुष्ट प्राणी, रात के इस समय तुम क्यों चिल्ला रहे हो, जबकि तुम्हें सोना चाहिए?"

"लेकिन स्वामी जी," बंदर ने कहा, "मुझे आपसे किसी बात पर चर्चा करनी है।"

"क्या?" संजांग ने पूछा।

“मुझे नींद नहीं आ रही,” बंदर भाई ने जवाब दिया, “क्योंकि कल जब मैं युवराज के सामने अपनी जादुई शक्तियों का बखान कर रहा था कि वे पहाड़ों से भी ऊँची और समुद्र से भी गहरी हैं, तो मैंने कहा था कि मैं उस राक्षस को थैली से कुछ निकालने जितना आसान तरीके से पकड़ सकता हूँ। मुझे बस अपना हाथ फैलाना होगा और उसे पकड़ लेना होगा। अब सोचकर मुझे एहसास हो रहा है कि यह मुश्किल होगा।”

तांग पुजारी ने कहा, "यदि यह मुश्किल है, तो राक्षस को पकड़ने का विचार छोड़ दो।"

"उसे पकड़ना तो जरूरी है," बंदर ने कहा, "लेकिन यह सही नहीं है।"

"तुम बकवास कर रहे हो, बंदर," तांग पुजारी ने कहा। "उस शैतान ने सिंहासन हथिया लिया है। तुम्हारा मतलब क्या है?"

'यह सही नहीं है?'

बंदर ने कहा, “तुम्हें सिर्फ सूत्र पढ़ना, बुद्ध की पूजा करना, ध्यान में बैठना और

धार्मिक शिक्षा प्राप्त करना आता है। तुमने कभी विधि संहिता नहीं देखी। कहावत है, 'चोरी के सबूत के बिना किसी को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता।' वह दुष्ट तीन साल से राजा बना हुआ है और उसने कुछ भी नहीं बताया। वह हरम में पत्नियों और रखेलों के साथ सोता है और दरबार में सरकारी और सैन्य अधिकारियों के साथ मौज-मस्ती करता है। मेरे पास उसे पकड़ने की शक्ति तो है, लेकिन उस पर आरोप साबित करना मुश्किल होगा।"

"इसका क्या मतलब है?" तांग पुजारी ने पूछा।

"भले ही वह आम तौर पर चुप रहता हो," बंदर ने कहा, "फिर भी वह तुम्हारे सामने बेशर्मी से कहेगा, 'मैं वूजी का सम्राट हूँ। मैंने स्वर्ग के विरुद्ध ऐसा कौन सा अपराध किया है कि तुम मुझे गिरफ्तार करने आए हो?' तुम्हारे पास उसके खिलाफ अपने मामले को साबित करने के लिए कौन सा लिखित दस्तावेज है?"

"तुम इससे कैसे निपटोगे?" संजांग ने पूछा।

"मेरी योजना तो तैयार है," भाई बंदर ने हंसते हुए कहा। "बस एक ही बात है कि इससे महाराज और आपके पक्षपात पर असर पड़ेगा।"

"मैं पक्षपात कैसे दिखाऊं?" तांग पुजारी ने पूछा।

"क्योंकि सुअर इतना बेवकूफ है कि वह तुम्हारा पालतू जानवर है।"

"इसका क्या मतलब है?" तांग पुजारी ने पूछा।

"अच्छा, अगर वह तुम्हारा पसंदीदा नहीं है, तो आज थोड़ा और साहसी बनो और फ्रायर सैंड के साथ यहीं रुकने के लिए राज़ी हो जाओ, जबकि मैं और पिग वूजी की राजधानी चलते हैं, महल के बगीचे ढूंढते हैं, चमकदार टाइलों वाले कुएं को खोलते हैं, मरे हुए राजा के अवशेष निकालते हैं और उन्हें कपड़े में लपेट देते हैं। फिर जब हम कल शहर में जाएं तो यात्रा दस्तावेजों की चिंता मत करना—जैसे ही मैं उस शैतान को देखूंगा, उसे मारने के लिए अपना डंडा निकाल लूंगा। अगर वह बहस करने की कोशिश करे, तो उसे अवशेष और कपड़े दिखाओ और कहो, 'यही वह आदमी है जिसकी तुमने हत्या की है।' फिर युवराज को अपने पिता के लिए शोक मनाने और रानी को अपने पति के अवशेषों की पहचान करने के लिए लाओ। सभी नागरिक और सैन्य अधिकारियों को उनके असली स्वामी को देखने दो, और फिर मैं और पिग काम पर लग जाएंगे। बाद में किसी भी मुकदमे में जीतने का यही एकमात्र तरीका है।"

यह सुनकर तांग पुजारी ने अपनी खुशी छुपाते हुए कहा, "लेकिन शायद सुअर जाना न

चाहे।"
"लो," बंदर ने कहा, "मैंने कहा था कि तुम पक्षपात करते हो। तुम्हें कैसे पता कि वह जाना नहीं चाहेगा? यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे तुमने पूरे एक घंटे तक मेरी बार-बार जगाने की कोशिशों का जवाब नहीं दिया था। मेरी तीन इंच लंबी जीभ सुअर को भी अपने साथ ले जा सकती है, चाहे वह डेढ़ सुअर ही क्यों न हो।"
"बहुत अच्छा," संजांग ने कहा, "अगर आप चाहें तो उसे बुला सकते हैं।"
फिर बंदर ने मालिक से विदा ली, सीधे सुअर के बिस्तर पर गया और उसका नाम पुकारा। वह मूर्ख थका देने वाली यात्रा के बाद सिर झुकाए ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा था। महज़ पुकारने से वह जागने वाला नहीं था। बंदर ने उसके कान और रोएँ पकड़कर उसे ऊपर खींचा और फिर से "सुअर!" चिल्लाया। वह मूर्ख... अध्याय 38

अभी भी गहरी नींद में सो रहा है।
जब बंदर ने उसे दोबारा बुलाया तो सुअर ने कहा, "सो जाओ और मस्ती करना बंद करो। हमें कल फिर से निकलना है।"
"मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ," बंदर ने कहा। "हम दोनों को एक काम निपटाना है।"
"किस तरह का कारोबार?" पिग ने पूछा।
"क्या तुमने राजकुमार को हमें बताते हुए नहीं सुना?" बंदर ने कहा।
पिग ने कहा, "मैंने उसे देखा तक नहीं, उसे बोलते हुए सुनना तो दूर की बात है।"
“राजकुमार ने मुझे बताया कि उस दुष्ट के पास एक ऐसा खजाना है जो उसे दस हजार आदमियों के बराबर शक्तिशाली बना देता है,” बंदर ने कहा। “जब हम शहर जाएंगे तो हमें उससे लड़ना होगा, और अगर उसके पास वह खजाना है तो वह हमें हरा देगा। यह बहुत भयानक होगा। मेरा मानना है कि अगर सामने वाला आपसे ज़्यादा ताकतवर है तो सबसे अच्छा तरीका है पहले हमला करना। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम दोनों जाकर उसका खजाना चुरा लें?”
"भाई, तुम मुझे चोरी करने के लिए बहकाने की कोशिश कर रहे हो," सुअर ने कहा। "मैं इस काम में तुम्हारा साथ दूंगा और तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी साबित होऊंगा, लेकिन पहले मैं तुमसे एक बात स्पष्ट कर लेना चाहता हूं। जब हम खजाना चुरा लेंगे और राक्षस को पकड़ लेंगे, तो मैं खजाने में से किसी भी तरह का घटिया और संकीर्ण

सोच वाला बंटवारा बर्दाश्त नहीं करूंगा। मुझे पूरा खजाना चाहिए।"
"क्यों?" बंदर ने पूछा। "तुम्हारे जैसी वाक्पटुता मुझमें नहीं है। मैं लोगों से खाना नहीं छीन सकता। मैं अनाड़ी और रूखा हूँ, और मुझे सूत्र याद नहीं आते। जब मैं बहुत परेशान होता हूँ, तो मैं हमेशा खाने के बदले अपनी परेशानी का सौदा कर लेता हूँ।"
"मुझे तो बस शोहरत चाहिए," बंदर ने कहा। "मुझे खजानों की कोई परवाह नहीं। अगर तुम चाहो तो इसे ले लो।" खजाने का वादा सुनकर वह मूर्ख इतना खुश हुआ कि बिस्तर से उठा, कपड़े पहने और बंदर के साथ चल पड़ा। यह एक ऐसा मामला था...
शुद्ध शराब पीने से गाल लाल हो जाते हैं;
सोना सबका ध्यान अपनी ओर खींच लेता है।
उन दोनों ने बहुत ही चुपचाप दरवाजा खोला, संजांग से निकले और एक शुभ बादल में सवार होकर सीधे शहर की ओर चल दिए।
वे जल्द ही वहाँ पहुँच गए, और जैसे ही उन्होंने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा, उन्होंने मीनार पर ढोल की दो बार बजने की आवाज़ सुनी। "भाई, यह दूसरी पहरेदारी है," बंदर ने कहा।
“बिल्कुल सही,” सुअर ने कहा, “बिल्कुल सही। सब लोग गहरी नींद में सो रहे हैं।” वे दोनों मुख्य द्वार से बचकर महल के पिछले द्वार की ओर गए, जहाँ घंटियाँ और तालियाँ बज रही थीं। “भाई,” बंदर ने कहा,
"ऐसा लग रहा है जैसे आगे और पीछे दोनों दरवाजों पर अलार्म बज रहा है। हम अंदर कैसे जाएंगे?"
“चोरों को फाटक से अंदर जाते हुए किसने सुना है?” सुअर ने कहा। “चलो दीवार फांदकर चलते हैं ताकि कोई हमें देख न सके।” बंदर ने उसका सुझाव मान लिया और एक छलांग में भीतरी दीवार के ऊपर पहुँच गया। सुअर भी ऊपर कूद गया, फिर दोनों रेंगते हुए अंदर घुस गए और महल के बगीचों की ओर जाने का रास्ता खोजने लगे।
अध्याय 38

चलते-चलते उन्हें सामने तीन छज्जों और सफेद अलंकरणों वाला एक द्वार-मीनार दिखाई दिया। उस पर दो बड़े-बड़े शब्द चमक रहे थे: शाही उद्यान। पास जाकर देखने पर बंदर भाई ने पाया कि द्वारों पर सीलिंग पेपर की कई परतें चिपकाई गई थीं और

उनके ताले बुरी तरह जंग खा चुके थे। फिर उसने सुअर को जल्दी चलने को कहा। उस मूर्ख ने अपना लोहे का रेक उठाया और पूरी ताकत से द्वारों पर वार किया, जिससे वे चकनाचूर हो गए। बंदर अंदर कदम रखने ही वाला था कि उसे उछल-कूद करने और चिल्लाने की तीव्र इच्छा हुई, जिसे देखकर सुअर डर गया और उसके पास जाकर उसे पकड़ लिया और बोला,

"भाई, तुम मेरी जान ले लोगे। भला चोरों को इस तरह चिल्लाते हुए किसने सुना है? तुम उन्हें जगा दोगे और हमें गिरफ्तार करवाकर मुकदमे के लिए सौंप दोगे। फिर या तो मौत की सजा होगी या फिर हमें दोषी मानकर घर भेज दिया जाएगा।"

"भाई," बंदर ने कहा, "क्या तुम जानते हो कि मैं इतना परेशान क्यों हूँ? बस देखो!"

नक्काशीदार और रंगी हुई रेलिंगें पूरी तरह से अस्त-व्यस्त पड़ी थीं।

बहुमूल्य मंडप एक तरफ झुके हुए हैं।

नदी के किनारे उगने वाली सेज और नटवीड घास बर्फ में दब गई हैं।

पियोनी और रसभरी के पौधे बर्बाद हो गए हैं।

गुलाब और चमेली की खुशबू गायब हो गई है;

वृक्षीय पेओनी और जंगली लिली के फूल व्यर्थ ही खिलते हैं।

हिबिस्कस और रोज ऑफ शेरोन के पौधे बहुत ज्यादा बढ़ गए हैं।

और सारे अनमोल फूल मुरझा गए।

विचित्र आकृतियों वाली चट्टानों से बनी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ ढह गई हैं;

सूखे हुए तालाबों में मछलियाँ मर चुकी हैं।

चीड़ और बांस बिल्कुल सूखे हुए थे;

मुगवर्ट और वर्मवुड से रास्ते ढके हुए हैं।

आड़ू और ओसमंथस की शाखाएँ तोड़ दीं।

अनार और केरिया के तनों को मरोड़ दिया।

पुल तक जाने वाले टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर काई उग आती है:

एक उजाड़ बगीचे का दृश्य।"

“तुम इतने परेशान क्यों हो रहे हो?” सुअर ने पूछा। “चलो अपना काम शुरू करते हैं।” अपनी परेशानी के बावजूद बंदर को याद आया कि सपने में तांग पुजारी को बताया गया था कि कुआँ केले के पेड़ के नीचे है। आगे बढ़ने पर उसने सचमुच एक बेहद हरा-भरा केला का पेड़ देखा, जो बाकी सभी फूलों और पेड़ों से बिल्कुल अलग था।

वास्तव में:
अध्याय 38
535
पश्चिम की यात्रा
यह एक दिव्य शूट था
जन्म से ही खालीपन का भाव लिए हुए।
हर शाखा से कागज़ की पतली पट्टियाँ निकलीं।
और सभी पत्तों में सुगंध समाई हुई थी।
पन्ना हरे रंग के हजारों सुंदर वृक्ष,
दिल के भीतरी हिस्से में लाल रंग का हल्का सा स्पर्श।
शरद ऋतु की बारिश की ठंड में वह शोक में डूबा हुआ था;
यह शरद ऋतु की हवाओं के भय से मुरझा गया।
इसे माली के प्रयासों से उगाया गया था।
सृष्टिकर्ता के कार्यों के माध्यम से पाला-पोसा गया।
लेखन कागज के रूप में इसका मूल्य अद्भुत है।
पानी टपकाने के लिए इसका उपयोग अद्भुत है।
काश, फीनिक्स के पंख भी इनकी तुलना कर पाते;
फीनिक्स की पूंछ उसके पत्तों का मुकाबला नहीं कर सकती थी।
जब भरपूर ओस धीरे-धीरे टपक रही थी
पेड़ हल्की धुंध से ढका हुआ था।
इसकी हरी छाया ने खिड़की को ढक लिया।
उसकी हरे रंग की छाया फ्रेम पर पड़ी।
जंगली हंस उसकी पत्तियों पर नहीं बैठ सकता था।
और न ही चार्जर को गाड़ी के ट्रंक से बांधकर रखना चाहिए।
एक ठंडे दिन में यह मुरझाया हुआ सा दिखता था;
चांदनी में धुंधलापन था।
गर्मी की तपिश में यह केवल ताजगी ही दे सकता था।
और चिलचिलाती धूप से कुछ आश्रय प्रदान करें।
इसमें आड़ू या बेर जैसी सुंदरता का अभाव था।

सफेदी की हुई दीवार के पूर्व दिशा में अकेला खड़ा।
“तैयार हो जाओ, सुअर,” बंदर ने कहा। “खजाना केले के पेड़ के नीचे दबा है।” उस मूर्ख ने अपने दोनों हाथों में फावड़ा उठाया और पेड़ को धड़ाम से गिरा दिया। फिर उसने अपनी थूथन से तीन-चार फीट गहराई तक खोदा और एक पत्थर का आवरण उजागर किया।
“भाई, हमारी किस्मत अच्छी है,” उस मूर्ख ने खुशी से कहा। “सचमुच इस पत्थर के आवरण के नीचे खजाना है। मुझे आश्चर्य है कि यह किसी घड़े में है या किसी डिब्बे में।”
"ढक्कन उठाओ, हम देखेंगे," बंदर ने कहा। अपनी थूथन की एक और जड़ से उस मूर्ख ने उसे खोल दिया। अंदर बहुरंगी रोशनी की चमक थी, और एक चमकदार, सफेद धुआँ था।
"हमारी किस्मत अच्छी है, हमारी किस्मत अच्छी है," सुअर खिलखिलाते हुए बोला। "खजाना चमक रहा है।"
और करीब जाकर ध्यान से देखने पर उन्हें पता चला कि वास्तव में यह एक कुएं के पानी से परावर्तित तारों और चंद्रमा की रोशनी थी।
"भाई," सुअर ने कहा, "तुम्हें आगे की योजना बनानी चाहिए।"
"आगे की सोच रखने का क्या मतलब है?" बंदर ने पूछा।
"यह तो कुआँ है," सुअर ने कहा। "अगर तुमने मुझे मठ में बताया होता कि खजाना कुएँ में छिपा है, तो मैं अपने साथ सामान टांगने वाली कुछ रस्सियाँ ले आता और हम कुएँ में उतरने का कोई तरीका निकाल लेते। लेकिन मैं खाली हाथ वहाँ जाकर खजाना कैसे लाऊँगा?"
"क्या तुम नीचे जाने को तैयार हो?" बंदर ने पूछा।
"अगर मैं कर सकता तो ज़रूर करता," सुअर ने कहा, "लेकिन यहाँ रस्सी नहीं है।"
"उस वस्त्र को उतार दो—मुझे पता है क्या करना है," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा।
"मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे वस्त्र कहा जा सके," सुअर ने कहा। "मैं सिर्फ यह कुर्ता ही उतार सकता हूँ।"

महान ऋषि ने अपनी सोने की नोक वाली लाठी निकाली, उसे दोनों सिरों से खींचा और कहा, "बढ़ो!" वह लाठी सत्तर-अस्सी फीट लंबी हो गई। बंदर ने कहा, "तुम एक सिरा पकड़ो, सूअर, मैं तुम्हें इसमें नीचे उतार दूँगा।"

"मुझे पानी तक पहुँचने तक नीचे उतार दो, भाई, और फिर रुक जाना," पिग ने कहा।

“समझ गया,” बंदर ने कहा। जैसे ही वह मूर्ख लाठी के सिरे से चिपका रहा, बंदर ने उसे हल्के से उठाया और कुएँ में डाल दिया। थोड़ी ही देर में सुअर पानी तक पहुँच गया। जैसे ही बंदर ने उसे पुकारते हुए सुना कि वह वहाँ है, बंदर ने लाठी नीचे की ओर मारी, जिससे वह मूर्ख लाठी छोड़ कर छप-छप करते हुए पानी में गिर गया।

"हे भगवान, मेरी तो जान से हत्या की जा रही है," पिग पानी में बड़बड़ाया। "मैंने तुमसे कहा था कि जब मैं पानी में पहुँचूँ तो मुझे जाने मत देना, लेकिन तुमने मुझे धक्का देकर पानी में गिरा दिया।"

बंदर ने अपनी लाठी निकाली और हंसते हुए पूछा, "क्या तुम खजाना ढूंढ सकते हो, भाई?"

"कौन सा खजाना?" सुअर ने कहा। "यहाँ तो सिर्फ पानी से भरा एक कुआँ है।"

"खजाना तल में है," बंदर ने कहा, "तो नीचे जाओ और टटोल कर देखो।" वह मूर्ख, जो वास्तव में एक अच्छा तैराक था, सतह पर गोता लगाकर नीचे कूद गया। वाह! कुआँ बहुत गहरा था, इसलिए उसने खुद को और नीचे धकेल दिया, और अचानक आश्चर्य से एक अलंकृत मेहराब को निहारने लगा जिस पर 'जल क्रिस्टल महल' लिखा हुआ था।

“बस बहुत हो गया,” सुअर ने घबराते हुए कहा। “मैंने गलत रास्ता ले लिया है। मैं गलती से समुद्र में आ गया हूँ। समुद्र में तो जल-क्रिस्टल महल होते हैं, लेकिन कुएँ में भला कोई नहीं हो सकता।” सुअर को यह एहसास नहीं था कि यह कुएँ के ड्रैगन राजा का जल-क्रिस्टल महल था।

जब सुअर अपने आप से बातें कर रहा था, तभी गश्त लगा रहा एक यक्ष ने कुएँ का द्वार खोला और उसे देखते ही तुरंत अंदर वापस जाकर सूचना दी, "महाराज, एक भयानक घटना हुई है। बड़े-बड़े कानों और लंबी थूथन वाला एक भिक्षु कुएँ में गिर

गया है। वह पूरी तरह भीगा हुआ और नग्न है। वह अभी भी जीवित है और पूरी ताकत से बातें कर रहा है।"

यह खबर कुएं के ड्रैगन राजा के लिए बहुत बड़ा झटका थी, जिसने सोचा, "यह जरूर मार्शल तियान पेंग होंगे।"

कल शाम रात्रि के पहरेदार ने एक फरमान जारी किया जिसमें मुझे वूजी के राजा की आत्मा को तांग पुजारी के पास भेजने और उनसे स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि को राक्षस को पकड़ने के लिए भेजने का आदेश दिया गया था। मेरा मानना है कि महान ऋषि और सेनापति अब यहीं होंगे। मुझे उनके प्रति बहुत विनम्र व्यवहार करना चाहिए और सीधे बाहर जाकर उनका स्वागत करना चाहिए।

ड्रैगन राजा ने अपने कपड़े ठीक किए और अपने जलमयी कबीले के मुखिया के रूप में द्वार से बाहर निकल गया।

"मार्शल तियान पेंग, कृपया अंदर आइए और बैठ जाइए," उसने अपनी पूरी आवाज में पुकारा।

इससे सुअर को बहुत खुशी हुई। "तो यह एक पुराना दोस्त है," उसने सोचा। बिना और सोचे-समझे वह मूर्ख सीधे जल क्रिस्टल महल में चला गया। उसे शिष्टाचार का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था, और वह नग्न अवस्था में ही सम्मान के स्थान पर बैठ गया।

“महाराज,” ड्रैगन राजा ने कहा, “मैंने सुना है कि आपको नया जीवन मिला है, आपने बौद्ध धर्म अपना लिया है, और आप तांग पुजारी को उनके पश्चिम की यात्रा पर धर्मग्रंथ लाने के लिए ले जा रहे हैं। आप यहाँ क्यों आए हैं?”

"बिल्कुल जैसा आपने कहा। मेरे वरिष्ठ साथी शिष्य मंकी ने अपना सम्मान भेजा है और मुझे यहाँ आकर आपसे किसी प्रकार का खजाना मांगने के लिए कहा है।"

"अरे बाप रे," ड्रैगन राजा ने कहा, "यहाँ तो कोई खजाना नहीं है। मैं यांग्त्से, पीली, हुआई या जी नदियों के ड्रैगन राजाओं का मुकाबला नहीं कर सकता, जो उड़ सकते हैं, रूप बदल सकते हैं और इस तरह खजाना हासिल कर सकते हैं। मैं यहाँ सदियों से फंसा हुआ हूँ और कई महीनों से अपने दायरे को बढ़ा नहीं पाया हूँ, तो भला मैं खजाना कैसे हासिल कर सकता हूँ?"

"मुझे टालने की कोशिश करना बंद करो," पिग ने कहा। "जो कुछ भी तुम्हारे पास है, उसे बाहर निकालो।"

"यह सच है कि मेरे पास एक खजाना है," ड्रैगन राजा ने स्वीकार किया, "लेकिन मैं

उसे हिला नहीं सकता। शायद आप आकर उसे खुद देखना चाहेंगे, मार्शल।"
"शानदार, शानदार, शानदार," सुअर ने कहा। "मुझे इसे ज़रूर देखना चाहिए।"
वह मूर्ख ड्रैगन राजा के पीछे-पीछे चल पड़ा। जल क्रिस्टल महल के कक्षों से निकलते ही उन्होंने एक खुले गलियारे में छह फुट लंबा एक शव पड़ा देखा। ड्रैगन राजा ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "यही खजाना है।" जब सुअर ने करीब से देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गया कि वह एक राजा का शव था जो एकदम सीधा लेटा हुआ था और उसने आकाश को छूने वाला मुकुट, पीले गेरू रंग का वस्त्र, निश्चिंतता के जूते और लैंटेन जेड की कमरबंद पहन रखी थी।
अध्याय 38
538
पश्चिम की यात्रा
"यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं है," सुअर हँसते हुए बोला, "बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। इसे खजाना नहीं कह सकते। मुझे याद है जब मैं पहाड़ों में एक राक्षस था, तब मैं अक्सर ऐसी ही चीज़ों को खा जाता था। मैंने कितनी ही चीज़ें देखी हों, बहुत खाई हैं। इसे किसी भी तरह से खजाना नहीं कहा जा सकता।"
"मार्शल, कुछ बातें ऐसी हैं जो आप नहीं जानते," ड्रैगन राजा ने कहा। "यह वूजी के राजा का शरीर है।"
जब वह कुएँ में गिरा, तो मैंने उसके चेहरे को सुरक्षित रखने वाला एक मोती उस पर रख दिया और उसका शरीर सड़ा नहीं। अगर तुम उसके शरीर को स्वर्ग के समरूप महान ऋषि के दर्शन के लिए ले जाओ, और अगर उसे फिर से जीवित किया जा सके, तो तुम्हें तुम्हारी हर इच्छा पूरी हो जाएगी, खजाने तो दूर की बात है।
"अगर आपकी बात सही है और मैं उसे आपके लिए ऊपर ले जाऊं, तो मुझे बताइए कि उसके अंतिम संस्कार की व्यवस्था करने के लिए आप मुझे कितना भुगतान करेंगे," पिग ने कहा।
"सच कहूं तो, मेरे पास पैसे नहीं हैं," ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया।
"तो तुम्हें लोगों से मुफ्त में काम करवाना अच्छा लगता है, है ना?" सुअर ने कहा। "पैसा नहीं तो गाड़ी नहीं।"
“अगर तुम नहीं जाओगे, तो कृपया चले जाओ,” ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया। सुअर दो बलवान यक्षों के साथ चला गया, जो शव को महल के द्वार के बाहर ले गए, जहाँ

उन्होंने उसे नीचे रखा और जल-प्रतिरोधी मोती को निकाल लिया।
अचानक पानी की एक आवाज़ आई। सुअर ने पीछे मुड़कर देखा, लेकिन पानी का क्रिस्टल महल गायब हो चुका था। राजा के शव को छूकर वह तब तक छटपटाता रहा जब तक वह थककर चूर नहीं हो गया, फिर पानी से बाहर आया और कुएँ की दीवार पकड़ ली। "भाई," वह चिल्लाया, "गदा नीचे रखो और मुझे बचाओ।"
"क्या तुम्हें खजाना मिला?" बंदर ने पूछा।
"बिल्कुल नहीं," सुअर ने कहा। "पानी के नीचे मुझे सिर्फ़ कुएँ का ड्रैगन राजा मिला, जो मुझसे एक लाश ऊपर लाने को कह रहा था। जब मैंने मना किया, तो उसने मुझे बाहर निकाल दिया और पानी का क्रिस्टल महल गायब हो गया। मैं बस उस लाश को पकड़ पाया। मैं इतना घबरा गया था कि मेरा पूरा शरीर काँप गया और मैं उसे हिला भी नहीं पा रहा। भाई, भगवान के लिए मुझे बचाओ।"
"लेकिन असली खजाना तो वही है," बंदर ने कहा। "तुमने इसके बारे में पहले क्यों नहीं बताया?"
"मुझे पता था कि वह बहुत पहले मर चुका था," पिग ने कहा, "तो फिर मरने का क्या फायदा होता?"
"अगर तुम इस बारे में बात नहीं करोगे तो मैं वापस जा रहा हूँ," बंदर ने कहा।
"कहाँ जाना है?" सुअर ने पूछा।
"मठ वापस चलते हैं और अपने गुरु के पास सोने चलते हैं," बंदर ने उत्तर दिया।
"क्या मैं नहीं आ सकता?" सुअर ने कहा।
"अगर तुम बाहर निकल सकते हो तो तुम्हारा स्वागत है, लेकिन अगर नहीं निकल सकते तो तुम्हारी किस्मत खराब है," बंदर ने कहा। यह सुनकर सुअर घबरा गया क्योंकि वह बाहर नहीं निकल सकता था।
"ज़रा सोचो," उसने पुकारा, "शहर की दीवार पर चढ़ना ही काफी मुश्किल होता है। यह कुआँ ऊपर की ओर संकरा होता जाता है। इसकी गोल, लटकती हुई दीवारें हैं, जो वर्षों से किसी के द्वारा पानी न निकाले जाने के कारण बेहद फिसलन भरी काई से ढकी हुई हैं।"
तुम मुझसे इस पर चढ़ने की उम्मीद कैसे करते हो? भाई, यह मत भूलो कि हम अच्छे दोस्त हैं। मैं इसे लेने नीचे जा रहा हूँ।
“अच्छा,” बंदर ने कहा। “जल्दी से ऊपर लाओ और हम वापस बिस्तर पर चले जाते

हैं।” फिर उस मूर्ख ने एक और गोता लगाया और सीधे नीचे चला गया। उसने तब तक टटोला जब तक उसे शव नहीं मिल गया, उसे घसीटकर लाया और ऊपर ले गया जब तक कि... अध्याय 38

539

पश्चिम की यात्रा

फिर से सामने आया।

"मैंने इसे ऊपर लाया है, भाई," सुअर ने कुएँ के किनारे सहारा लेते हुए पुकारा। जब बंदर ने ध्यान से देखा और पाया कि सुअर सचमुच शव को ऊपर लाया है, तो उसने सोने की पट्टी वाली लाठी वापस कुएँ में डाल दी। सुअर इतना क्रोधित हुआ कि उसने अपना मुँह खोलकर लाठी को काट लिया, तभी बंदर ने उसे धीरे से बाहर निकाला।

सुअर ने शव को नीचे रखा, अपने कपड़े उठाए और उन्हें वापस पहन लिया। बंदर ने राजा का चेहरा देखा और पाया कि वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा जीवित रहते समय था। "भाई," उसने कहा, "इसे मरे हुए तीन साल हो गए हैं। फिर भी इसका चेहरा इतना सुरक्षित कैसे है?"

"तुम्हें इसके बारे में पता नहीं होगा," सुअर ने कहा। "कुएं के ड्रैगन राजा ने मुझे बताया था कि उसने शरीर को सड़ने से रोकने के लिए चेहरे को सुरक्षित रखने वाले मोती का इस्तेमाल किया था।"

"कितनी अच्छी किस्मत है," बंदर ने कहा, "कितनी अच्छी किस्मत है। उसने अभी तक अपना बदला नहीं लिया है, और हम ज़रूर कामयाब होंगे। उसे अपने कंधे पर उठा लो, भाई।"

"मैं उसे कहाँ ले जाऊँ?" सुअर ने पूछा।

"उसे गुरुजी के पास ले जाओ," बंदर ने जवाब दिया।

"मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया गया है," सुअर बड़बड़ाया, "कैसा बर्ताव है। मैं गहरी नींद में सो रहा था जब उस बंदर ने अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से मुझे उस सौदे की झूठी तवज्जो दी। अब मैंने उसका काम कर दिया है और मुझे यह लाश ढोनी पड़ रही है।"

यह सारा गंदा पानी मुझ पर टपक रहा है और मेरी कमीज़ को मैला कर रहा है। इसे धोने वाला कोई नहीं है। बादल छाए रहने पर कंधों पर लगे पैच गीले हो जाएंगे। मैं इसे पहन ही नहीं पाऊँगी।

बंदर ने कहा, "तुम उसे मठ तक ले जाओ, और मैं तुम्हें उसके बदले पहनने के लिए

कुछ और दे दूंगा।"
"तुम बेशर्म हो," सुअर ने कहा। "तुम्हारे पास खुद पहनने के लिए कुछ भी नहीं है और तुम मुझे कुछ और देने की बात कर रहे हो।"
"अगर तुम इस तरह शिकायत करते रहोगे तो इसे मत ढोओ," बंदर ने कहा।
"तो मैं नहीं करूँगा," पिग ने कहा।
"फिर अपने टखनों को बाहर निकालो और लाठी के बीस कोड़े खाओ," बंदर ने कहा।
"लेकिन भाई, तुम्हारा डंडा बहुत ज़ोर से लगता है," सूअर ने घबराकर विरोध किया। "बीस वार और मैं इस राजा जैसा हो जाऊँगा।"
"अगर मार नहीं खानी है तो इसे उठाकर ले चलो," बंदर ने कहा। चूंकि सुअर सचमुच मार से डरता था, इसलिए उसने शव को घसीटते हुए अपने कंधे पर रखा और बड़े ही अप्रिय ढंग से महल के बगीचे से बाहर निकल गया।
महान संत ने अपने हाथों से जादू किया, एक मंत्र पढ़ा और वायु त्रिकोण की दिशा में फूँका। तुरंत ही हवा का एक ज़बरदस्त झोंका सुअर को महल के मैदान से उठाकर शहर की दीवार और खाई के पार ले गया। फिर हवा शांत हो गई और दोनों ज़मीन पर गिर पड़े, जिससे वे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। मूर्ख, जो अभी भी खुद को बहुत अपमानित महसूस कर रहा था और बंदर से बदला लेना चाहता था, मन ही मन बोला, "उस बंदर ने मुझे बेवकूफ बना दिया, और जब हम मठ वापस जाएंगे तो मैं उससे इसका बदला जरूर लूंगा।"
मैं स्वामी को बताऊँगा कि बंदर शरीर को पुनर्जीवित कर सकता है। जब वह असफल होगा, तो स्वामी बंधन कसने का मंत्र बोलेगा और उस बंदर के सिर से सारा दिमाग निचोड़ लिया जाएगा। यही एकमात्र तरीका है जिससे मैं संतुष्ट होऊंगा। नहीं, यह ठीक नहीं है," वह चलते-चलते सोचने लगा। "अगर मैं उससे शरीर को पुनर्जीवित करने के लिए कहूँ, तो यह उसके लिए बहुत आसान होगा। उसे केवल नरक के राजा को बुलाना होगा और राजा की आत्मा वापस माँगनी होगी। सबसे अच्छा तरीका होगा उसे पाताल लोक में जाने से रोकना। उसे अध्याय 38 की दुनिया में राजा को पुनर्जीवित करना होगा।

जीविका।"

इन्हीं विचारों में खोए-खोए वे मठ के द्वार पर पहुँच गए। सीधे अंदर गए, ध्यान कक्ष के दरवाज़े के ठीक सामने शव को ज़मीन पर फेंक दिया और चिल्लाए, "गुरुजी, आइए और एक अजीबोगरीब चीज़ देखिए।" नींद से वंचित तांग पुजारी, भिक्षु सैंड से इस बारे में बात कर रहे थे कि कैसे बंदर ने सुअर को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया और वे कितनी देर से गायब थे, तभी उन्होंने सुअर की चीख सुनी। तांग पुजारी बिस्तर से तुरंत उठे और बोले, "क्या देखना है?"

"भाई बंदर के दादाजी, और मुझे उन्हें वापस लाना पड़ा," सुअर ने कहा।

"अरे बेवकूफ, तुम तो बिल्कुल ही घटिया चीज़ हो," बंदर ने कहा। "मेरा कोई दादा नहीं है।"

"अच्छा भाई," सुअर ने जवाब दिया, "अगर वह तुम्हारा दादा नहीं है, तो तुमने मुझे उसे उठाने के लिए क्यों मजबूर किया? यह बहुत ही कठिन काम था।"

जब संज़ंग और साधु सैंड ने दरवाज़े खोलकर देखा तो पाया कि राजा का चेहरा बिल्कुल वैसा ही था जैसा जीवन में था। तांग पुजारी ने दुखी स्वर में कहा, "महाराज, कौन जाने किस पिछले जन्म में आपने जादूगर की घृणा अर्जित की थी? शायद इसीलिए जब आप इस जन्म में उससे मिले तो उसने आपकी हत्या कर दी और आपको आपकी पत्नियों और बच्चों से छीन लिया, और यह सब किसी भी नागरिक या सैन्य अधिकारी को पता नहीं चला। कितना अफ़सोस की बात है कि अपनी अज्ञानता में आपकी पत्नियों और बच्चों ने कभी आपकी आत्मा को धूप नहीं जलाई और चाय नहीं अर्पित की।" वह फूट-फूटकर रोने लगा और उसके आँसू बारिश की तरह बहने लगे।

"उसकी मौत से तुम्हें क्या लेना-देना?" पिग ने सान्ज़ांग पर हंसते हुए पूछा। "वह तुम्हारा पिता या दादा नहीं है, तो उसके लिए क्यों रो रहे हो?"

"शिष्य," संज़ंग ने आह भरते हुए कहा, "करुणा एक भिक्षु का मूलभूत गुण है, और दूसरों की मदद करना भिक्षु का मार्ग है। तुम इतने कठोर हृदय कैसे हो सकते हो?"

"मैं कठोर हृदय नहीं हूँ," सुअर ने कहा। "बंदर ने मुझे बताया था कि वह इस शरीर को फिर से जीवित कर सकता है। नहीं तो मैं इसे यहाँ नहीं लाता।" हमेशा की तरह आसानी से बहकावे में आने वाला वह बुजुर्ग मूर्ख की बातों में आ गया।

"वुकोंग," उसने पुकारा, "अगर तुम्हारे पास इस राजा को पुनर्जीवित करने की शक्ति है, तो एक मानव जीवन बचाना सात मंजिला शिवालय बनाने से भी बेहतर होगा।

हमारे लिए तो यह थंडर पीक पर बुद्ध की पूजा करने से भी श्रेष्ठ होगा।"
“उस मूर्ख की बकवास पर विश्वास मत करो, स्वामी,” बंदर ने कहा। “जब लोग तीन सप्ताह, फिर पाँच सप्ताह और अंत में सात सौ दिन तक मर जाते हैं, तो वे इस जीवन में अपने सभी पापों का प्रायश्चित कर लेते हैं और पुनर्जन्म लेने चले जाते हैं। वह तो अब तीन साल से मरा हुआ है। उसे बचाना असंभव है।”
इस पर तांग पुजारी ने कहा, "खैर, छोड़ो।" पिग अब भी अन्याय की आग में जल रहा था। उसने कहा, "गुरुजी, उसकी बातों में मत आइए। वह बकवास कर रहा है। आप बस अपना मंत्र पढ़िए और मैं गारंटी देता हूँ कि वह आपके लिए राजा को फिर से जीवित कर देगा।" तांग पुजारी ने सचमुच बंधन कसने वाला मंत्र पढ़ा, जिससे बंदर इतना बुरी तरह जकड़ गया कि उसकी आँखें बाहर निकल आईं और सिर में तेज दर्द होने लगा।
अगर आपको नहीं पता कि राजा को कैसे पुनर्जीवित किया गया, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 39
स्वर्ग से लाल सिंदूर की एक गोली लाई जाती है
अध्याय 39
541
पश्चिम की यात्रा
तीन साल बाद सम्राट का पुनरुद्धार हुआ
कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि सूर्य, असहनीय सिरदर्द से पीड़ित होकर, अपने गुरु से विनती करते हुए बोले: "बस करो, बस करो, मैं उसे फिर से जीवित कर दूंगा।" जब संजांग ने पूछा कैसे, तो बंदर ने उत्तर दिया, "एकमात्र उपाय है पाताल लोक जाना, वहाँ के राजाओं में से यह पता लगाना कि किस राजा के पास उसकी आत्मा है, और उससे वह आत्मा वापस माँगकर उसे पुनर्जीवित करना।"
"मालिक, बंदर पर भरोसा मत करो," सुअर ने कहा। "उसने मुझे पहले बताया था कि पाताल लोक जाने की कोई ज़रूरत नहीं होगी क्योंकि वह उसे जीवितों की दुनिया में वापस ला सकता है। उसने सोचा कि यह अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करने का एक अच्छा तरीका होगा।"
इस दुष्टता की हवा से एक बार फिर प्रभावित होकर, आदरणीय बुजुर्ग ने बंधन कसने

वाले मंत्र का जाप करना शुरू कर दिया, जिससे बंदर इतनी दयनीय स्थिति में पहुँच गया कि उसने खुशी-खुशी शर्त स्वीकार कर ली: "मैं उसे जीवितों की दुनिया में ही ठीक कर दूंगा, मैं सचमुच ठीक कर दूंगा।"

"रुको मत," सुअर ने कहा, "मंत्र का जाप करते रहो।"

"अरे मूर्ख, दुष्ट जानवर," बंदर चिल्लाया, "मालिक को वह मंत्र बोलने के लिए उकसा रहे हो।" सुअर हंसते-हंसते लोटपोट हो रहा था।

"भाई, भाई, तुमने सोचा था कि तुम मुझे बेवकूफ बना दोगे, लेकिन तुमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं तुम्हें बेवकूफ बना दूंगा।"

"बस करो, स्वामी, बस करो," बंदर ने विनती की। "मैं उसे जीवितों की दुनिया छोड़े बिना वापस जीवन में ले आऊंगा।"

"और तुम यह कैसे करोगे?" संजांग ने पूछा।

"मैं अपने बादल की एक ही कलाबाजी से स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से अंदर जा सकता हूँ," बंदर ने कहा। "मैं सप्तर्षि और बैल के महल या चमत्कारी धुंध के हॉल में नहीं जाऊँगा, बल्कि सीधे तैंतीसवें स्वर्ग के ऊपर स्थित लिहेन स्वर्ग में तुशिता महल में जाकर परम स्वामी लाओ ज़ी से मिलूँगा। मैं उनसे उनकी नौ-चक्र वाली आत्मा-वापसी की गोली माँगूँगा और मैं गारंटी देता हूँ कि इससे वे फिर से जीवित हो जाएँगे।"

यह सुनकर संजांग प्रसन्न होकर बोला, "तो अब तुम जाओ और जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी जाओ।"

“अब तीसरा पहर हो गया है; जब तक मैं वापस आऊंगा तब तक भोर हो चुकी होगी,” बंदर भाई ने कहा। “लेकिन उस राजा को वहाँ मृत और ठंडा पड़ा देखना बहुत दुखद है। वहाँ किसी को शोक मनाने के लिए होना चाहिए और उसके लिए रोना चाहिए।”

"मुझे मत बताओ," सुअर ने कहा, "कि वह बंदर चाहता है कि मैं शोक मनाने वाला बनूँ।"

"तुम ज़रूर रोओगे," बंदर ने कहा। "अगर तुम उसके लिए नहीं रोओगे तो मैं उसे वापस ज़िंदा नहीं कर पाऊंगा।"

"तुम जाओ भाई," सुअर ने कहा, "रोना-धोना मेरे ऊपर छोड़ दो।"

"रोने के एक से अधिक तरीके होते हैं," बंदर ने कहा। "मुंह से चिल्लाना ही विलाप करना कहलाता है।"

आँखों से कुछ आंसू बहाना भी रोना ही है। हमें तो सिसकते हुए रोना और आंसू बहाना चाहिए, और इस तरह सिसकना चाहिए जैसे दिल टूट गया हो, तभी तो सही मायने में रोना और विलाप करना कहते हैं।

"क्या मैं तुम्हें एक प्रदर्शन दिखाऊं?" सुअर ने पूछा। उसने कहीं से कागज की एक पट्टी फाड़ी, उसे मरोड़कर फैला दिया और दो बार अपनी नाक में घुसा लिया, जिससे उसे कई बार छींक आई। बस देखते रहो कि कैसे उसकी आंखों से आंसू बहने लगे और नाक बहने लगी, और वह रोने लगा। वह बेकाबू होकर सिसकता रहा और तरह-तरह की बातें करता रहा। (अध्याय 39)

यह बिल्कुल बकवास है, मानो सचमुच किसी की मृत्यु हो गई हो।

यह इतना दुखद प्रदर्शन था कि तांग पुजारी रोने लगे, वे इतने परेशान थे। "मुझे तो बस इसी तरह का दुख चाहिए," बंदर हँसते हुए बोला, "और तुम रोना बंद मत करना। तुमने ही गुरु को बहकाकर मुझे भेजा है, बेवकूफ, और अगर तुमने रोना बंद किया तो मुझे सुनाई देगा। ऐसे ही रोते रहो तो सब ठीक रहेगा; लेकिन अगर एक पल के लिए भी रुके तो मैं अपनी लाठी से तुम्हारी एड़ियों पर बीस वार करूँगा।"

"जाओ," सुअर हँसते हुए बोला। "एक बार इस तरह रोना शुरू कर दूं तो दो-तीन दिन तक रोता रह सकता हूँ।" यह सब शोर-शराबा सुनकर साधु सैंड कुछ अगरबत्तियाँ ले आया और उन्हें भेंट के रूप में जलाया।

"बहुत बढ़िया," बंदर ने कहा। "आप सभी इतने सम्मानजनक व्यवहार कर रहे हैं, इसलिए मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाऊंगा।"

इस प्रकार महान ऋषि ने अपने गुरु और दो साथी शिष्यों को आधी रात में ही छोड़कर एक चमकते बादल पर सवार होकर उड़ान भरी। वे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से प्रवेश कर गए और अपने वचन के पूर्ण थे: वे चमत्कारी कोहरे के हॉल या सप्तर्षि और बैल के महल में नहीं गए, बल्कि अपने चमकते बादल को लेकर सीधे लिहेन स्वर्ग में स्थित तुशिता महल में चले गए। अंदर पहुँचते ही उन्होंने देखा कि परम भगवान लाओ ज़ी अपनी औषधि प्रयोगशाला में बैठे हैं, जहाँ अमर बालक केले के पत्ते के पंखे से उस भट्टी को हवा दे रहे हैं जिसमें औषधि को परिष्कृत किया जा रहा था।

जब भगवान ने देखा कि बंदर वहां मौजूद है, तो उन्होंने अमृत की रखवाली कर रहे

लड़कों से कहा, "बहुत सावधान रहो: अमृत चोर वापस आ गया है।"
बंदर ने मुस्कुराते हुए सम्मान व्यक्त किया: "कितने नीरस हो तुम, बूढ़े आदमी। मुझसे सावधान रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं अब ऐसे काम नहीं करता।"
“बंदर,” भगवान लाओ ज़ी ने कहा, “पाँच सौ साल पहले जब तुमने स्वर्ग में उत्पात मचाया था, तब तुमने मेरी बहुत सी जादुई गोलियाँ चुरा ली थीं। नन्हे ऋषि एरलांग ने तुम्हें पकड़ लिया और यहाँ लाकर मेरी औषधि भट्टी में उनतालीस दिनों तक शुद्ध किया। ईश्वर ही जानता है कि हमने कितना कोयला इस्तेमाल किया। सौभाग्य से तुम बच निकले और बौद्ध धर्म अपना लिया, तब से तुम तांग पुरोहित के साथ पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा पर शास्त्रों को लाने के लिए गए हो। उस दिन जब तुमने समतल पर्वत पर उन राक्षसों को वश में किया, तब तुम बहुत दुष्ट थे; तुमने मुझे मेरा खजाना वापस देने से इनकार कर दिया। अब तुम यहाँ किसलिए हो?”
"मैं उन्हें लौटाने में बिल्कुल भी देर नहीं कर रहा था," बंदर ने विरोध करते हुए कहा। "जब समय आया तो मैंने तुम्हें तुम्हारे पाँचों खजाने वापस दे दिए। तुम मुझ पर इतना शक क्यों कर रहे हो?"
"जब आपको अपनी यात्रा पर होना चाहिए था, तब आप मेरे महल में चुपके से क्यों घुस आए हैं?" लॉर्ड लाओ ज़ी ने पूछा।
"जबसे मैंने तुम्हें आखिरी बार देखा था," बंदर ने कहा, "हम पश्चिम में वूजी नामक एक देश में आ गए हैं, जहाँ एक दुष्ट आत्मा ने ताओवादी का वेश धारण करके हवा और बारिश बुलाई, राजा की हत्या कर दी और खुद को राजा के हमशक्ल में बदल लिया।" अब वह महल में बैठा है। कल रात मेरे गुरु बहुमूल्य लकड़ी के मठ में सूत्र पढ़ रहे थे, तभी राजा का भूत उनके पास आया और मुझसे विनती की कि मैं उसके लिए उस दुष्ट आत्मा को वश में करूँ और सही-गलत का फैसला करूँ। मुझे समझ नहीं आया कि इस पर विश्वास करूँ या नहीं, इसलिए मैं उस रात अपने साथी शिष्य सुअर के साथ महल के बगीचों में चला गया।
हमने कुआँ तोड़कर अंदर प्रवेश किया और पाया कि उसे एक आठ-पहलू वाले, चमकदार टाइलों से बनी दीवारों वाले कुएँ में दफनाया गया था। हमने उसका शरीर बाहर निकाला, और वह बिल्कुल सही हालत में था। जब हम अपने गुरु से मिलने मठ वापस गए, तो उन्होंने करुणावश मुझे राजा को पुनर्जीवित करने का आदेश दिया। वे मुझे उनकी आत्मा वापस मांगने के लिए पाताल लोक नहीं जाने देंगे: मुझे जीवितों की

दुनिया में ही उन्हें बचाने का कोई रास्ता खोजना होगा। मैं आपको प्रणाम करने इसलिए आया हूँ क्योंकि उन्हें पुनर्जीवित करने का कोई और तरीका नहीं है। हे महान गुरु, मैं आपसे विनती करता हूँ कि अपनी दया से मुझे उनकी आत्मा को वापस लाने वाली नौ-चक्रीय गोलियों में से एक हजार गोलियां उधार दें ताकि मैं उन्हें बचा सकूँ।
"ये कैसी घिनौनी बकवास है, बंदर!" लॉर्ड लाओ ज़ी ने कहा। "हज़ार? दो हज़ार? क्या तुम इन्हें खाना चाहते हो? ये सिर्फ़ मिट्टी के गोले नहीं हैं। यहाँ से चले जाओ! मेरे पास अब कुछ नहीं बचा।"
अध्याय 39
543
पश्चिम की यात्रा
"लगभग सौ के आसपास?" बंदर ने पूछा।
“वो भी नहीं,” लॉर्ड लाओ ज़ी ने कहा। “दस के करीब?” बंदर ने पूछा। “मुझे परेशान करना बंद करो, दुष्ट बंदर,” लॉर्ड लाओ ज़ी ने कहा। “बिल्कुल नहीं। यहाँ से चले जाओ!”
"अगर सचमुच आपके पास कोई नहीं है," बंदर ने हंसते हुए कहा, "तो मुझे कहीं और से मदद मांगनी पड़ेगी।"
"निकल जाओ! निकल जाओ! निकल जाओ!" लॉर्ड लाओ ज़ी दहाड़े, जिस पर बंदर मुड़कर चला गया।
फिर अचानक भगवान लाओ ज़ी को यह ख्याल आया कि बंदर इतना दुष्ट है कि अपने जाने की घोषणा करने के बाद भी वह चुपके से वापस आकर कुछ चुरा सकता है। इसलिए उन्होंने कुछ अमर लड़कों को बंदर को वापस बुलाने के लिए भेजा।
"तुम इतने बड़े चोर हो, बंदर," उसने कहा, "कि बेहतर होगा कि मैं तुम्हें आत्मा लौटाने वाली गोली दे दूं।"
“हे बूढ़े, चूंकि आप मेरी शक्तियों को जानते हैं,” बंदर भाई ने कहा, “अपना सारा सुनहरा अमृत निकालिए और उसे चालीस-साठ हिस्सों में बाँट लीजिए। आप खुद को भाग्यशाली समझिए। नहीं तो मैं सारे ले लेता, जैसे चमड़े की छलनी से पानी निकालना।” कुलपिता ने लौकी निकाली और उसे उल्टा कर दिया। उसमें से एक सुनहरी गोली गिरी। “मेरे पास बस यही एक है,” भगवान लाओ ज़ी ने बंदर को देते हुए कहा। “इसे ले लो। मैं इसे तुम्हें राजा को पुनर्जीवित करने के लिए दे रहा हूँ और

इसका श्रेय तुम ले सकते हो।”

“बस एक पल रुकिए,” बंदर ने उसे लेते हुए सोचा। “मुझे इसे चखने दीजिए। कहीं वो मुझे नकली चीज़ से धोखा देने की कोशिश तो नहीं कर रहा।” उसने उसे मुंह में डाल लिया, जिससे मुखिया घबरा गया। उसने एक हाथ से उसकी खोपड़ी पकड़ ली और दूसरे हाथ से उसकी मुट्ठी जकड़ ली। “लानत है बंदर,” लॉर्ड लाओ ज़ी दहाड़ा, “अगर तूने इसे निगल लिया तो मैं तुझे मरवा दूंगा।”

"क्या चेहरा है!" बंदर हँसा। "कितने तुच्छ दिखते हो तुम! मैं तुम्हारी गोली नहीं खाना चाहूँगा। इसकी कोई कीमत नहीं है, और यह उतनी असरदार भी नहीं है जितना लोग कहते हैं। ये लो।" बंदर की ठुड्डी के नीचे एक थैली थी जिसमें उसने गोली रखी हुई थी।

भगवान लाओ ज़ी ने इसे महसूस किया और फिर कहा, "यहाँ से चले जाओ, और फिर कभी मुझे परेशान करने के लिए यहाँ वापस मत आना।" इसके बाद महान ऋषि ने कुलपति को धन्यवाद दिया और तुशिता महल से चले गए।

देखो, वह हजारों प्रकाश की किरणों के बीच जेड द्वार से निकलकर दस हजार शुभ बादलों के बीच धरती पर आ उतरता है। पल भर में वह स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से होते हुए पूर्व की धरती पर पहुँच गया, जहाँ अब सूर्योदय हो रहा था। उसने अपने बादल को सीधे कीमती लकड़ी के मठ के द्वार के बाहर धरती पर उतारा, जहाँ अभी भी सुअर के रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह पास आया और पुकारा, "गुरुजी।"

"तुम वापस आ गए, वुकॉन्ग," संज़ंग ने प्रसन्नता से कहा। "क्या तुम्हारे पास गोली है?"

"हां," बंदर ने कहा।

"बेशक वह ऐसा करेगा," सुअर ने कहा, "भले ही उसे इसे चुराना पड़े।"

“भाई,” बंदर ने कहा, “अब आप जा सकते हैं। हमें अब आपकी ज़रूरत नहीं है। अपने आँसू पोंछ लो या कहीं और जाकर रो लो।” फिर बंदर ने साधु रेत से पानी लाने को कहा। साधु रेत जल्दी से पीछे वाले कुएँ पर गया जहाँ एक बाल्टी रखी थी और बंदर के लिए आधा कटोरा पानी ले आया। बंदर ने पानी पिया, गोली थूक दी और उसे राजा के होठों के बीच रख दिया। फिर उसने दोनों हाथों से शरीर के दाँत अलग किए और एक घूँट साफ पानी के साथ गोली राजा के पेट में डाल दी। अगले एक घंटे तक पेट से अजीबोगरीब आवाज़ें आती रहीं, लेकिन शरीर हिल नहीं सका। “स्वामी,” बंदर ने

कहा,
"मेरी सुनहरी औषधि लाने से भी वह नहीं बचेगा। क्या तुम सचमुच मुझे तड़पा-तड़पा कर मार डालोगे?"
अध्याय 39
544
पश्चिम की यात्रा
"बेशक वह फिर से जीवित हो जाएगा," संजांग ने कहा। "इतने लंबे समय से मृत शरीर पानी कैसे पी सकता है?"
यह स्वर्णमय अमृत की चमत्कारी शक्ति को दर्शाता है। स्वर्णमय अमृत पेट में पहुँचते ही पेट झूमने लगता है; और जब पेट झूमता है तो रक्त वाहिकाएँ भी उसके साथ तालमेल बिठाकर चलने लगती हैं। बस फर्क इतना है कि प्राणवायु रुक गई है और वह स्वयं को फैला नहीं सकती। लोहा तीन साल तक कुएँ में पड़ा रहे तो जंग खा जाएगा —तो आप मानव शरीर से क्या उम्मीद कर सकते हैं? अब जब उसकी प्राणवायु चली गई है तो किसी को उसे मुँह भर हवा देनी होगी।" पिग ऐसा करने के लिए आगे बढ़ा, तभी संज़ंग ने उसे पकड़ लिया और कहा, "तुम नहीं कर पाओगे। वुकॉन्ग को बुलाओ।"
गुरु ने इस बात पर इतना ज़ोर क्यों दिया? इसका कारण यह था कि सुअर बचपन से ही एक क्रूर नरभक्षी था, जिसका अर्थ था कि उसकी श्वास अशुद्ध थी; जबकि बंदर ने बचपन से ही अपने आचरण में सुधार किया था और चीड़, सरू और आड़ू के पेड़ों के फल खाकर अपना जीवन व्यतीत करता था, जिससे उसकी श्वास शुद्ध रहती थी। इसलिए महान ऋषि आगे बढ़े, एक भयानक गर्जन देवता का मुख बनाया, राजा के होठों पर अपना मुख रखा और उसमें फूँक मारी। वह श्वास राजा के मुख से होकर, ऊँचे टॉवर से गुज़रते हुए, उज्ज्वल हॉल के चारों ओर से होते हुए सीधे सिंदूर के मैदान तक गई, फिर उबलते झरनों से वापस मिट्टी के महल में आ गई। हवा के एक ज़ोरदार झोंके के साथ राजा की प्राण शक्ति समाहित हो गई और उसकी आत्मा को नई ऊर्जा प्राप्त हुई।
वह उठ बैठा, अपने हाथ-पैर हिलाए और "गुरुजी" कहकर पुकारा। फिर वह धूल में घुटने टेककर बोला, "मुझे याद है कि कल रात मैं भूत बनकर आपसे मिलने आया था, लेकिन मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि आज मैं जीवितों की दुनिया में लौटूँगा।"

संजांग ने जल्दी से उसे उठाया और कहा, "महाराज, यह मेरी गलती नहीं थी। आपको मेरे शिष्य का धन्यवाद करना चाहिए।"

“क्या बात है, स्वामी जी,” बंदर हँसते हुए बोला। “जैसा कि कहावत है, 'एक घर में दो स्वामी नहीं हो सकते।' यह बिल्कुल सही है कि आपको उनका धन्यवाद स्वीकार करना चाहिए।”

संज़ंग, इस शिष्टाचार को स्वीकार करने में अभी भी असहज महसूस कर रहा था, उसने राजा को उठने में मदद की और उन्हें ध्यान कक्ष में ले गया। वहाँ राजा ने सुअर, बंदर और साधु रेत को प्रणाम किया और फिर अपनी जगह पर बैठ गए। तब तक मठ के भिक्षुओं ने नाश्ता तैयार कर लिया था और वे उसे लाने ही वाले थे कि उन्होंने भीगे हुए राजा को देखा, जिससे वे सब घबरा गए और उन्हें संदेह हुआ।

बंदर उछलकर बोला, "चिंता मत करो, भिक्षुओं। ये वूजी के राजा हैं, आपके सच्चे शासक। तीन साल पहले एक राक्षस ने उनकी हत्या कर दी थी, और मैंने कल रात उन्हें पुनर्जीवित किया। आज हम राजधानी जा रहे हैं, सही-गलत का फैसला करने के लिए। अगर आपके पास कुछ खाने का सामान हो, तो ले आओ। हम खाएंगे और फिर चल पड़ेंगे।" तब भिक्षु राजा के नहाने के लिए गर्म पानी और कपड़े लाए। उन्होंने राजा का पीला गेरूआ चोगा उतार दिया और उन्हें मठाधीश के दो वस्त्र दिए, जिनमें कमर पर बांधने के लिए लैंटियन जेड की बेल्ट के बजाय पीले रेशमी धागे थे। उन्होंने उनके चिंतामुक्ति के जूते उतार दिए और उनके पैरों में पुराने मठवासी सैंडल पहना दिए। फिर सबने नाश्ता किया और घोड़े पर काठी कसी गई।

"सामान कितना भारी है, सुअर?" बंदर ने पूछा।

"मैं इसे इतने लंबे समय से ढो रहा हूं कि मुझे अब कुछ पता ही नहीं है," पिग ने जवाब दिया।

बंदर ने कहा, "सामान को दो हिस्सों में बाँट लो और एक हिस्सा राजा को उठाने के लिए दे दो। हमें काम शुरू करने के लिए शहर जल्दी पहुँचना होगा।"

"मैं भाग्यशाली हूं," पिग ने कहा। "उसे यहां तक लाने में मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी, लेकिन अब जब वह फिर से जीवित हो गया है तो वह मेरा काम कर रहा है।"

उस मूर्ख ने मठ से सामान ढोने के लिए डंडा माँगा और सामान को अनुचित तरीके से बाँट दिया। उसने सारी हल्की चीज़ें अपने बोझ तले और भारी चीज़ें राजा के बोझ तले दबा दीं। "महाराज," बंदर हँसते हुए बोला, "क्या आपको बुरा नहीं लग रहा कि इस

तरह कपड़े पहनकर और हमारे साथ बोझ ढोते हुए आपको इतना बुरा लग रहा है?" राजा सीधे घुटनों के बल गिर पड़ा और अध्याय 39

उसने उत्तर दिया, "स्वामी जी, आप ही मेरे माता-पिता हैं जिन्होंने मुझे दूसरा जीवन दिया है। बोझ उठाने की चिंता मत कीजिए—मैं पश्चिमी स्वर्ग की आपकी यात्रा में आपका दूल्हा बनकर आपकी सेवा करने को तैयार हूँ।"

"तुम्हें वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है," संज़ंग ने कहा। "किस्मत ने हमें वहाँ जाने के लिए बाध्य किया है। तुम्हें बस सामान को पंद्रह मील दूर शहर तक ले जाना होगा। जैसे ही हम उस राक्षस को पकड़ लेंगे, तुम वापस शासन करने लौट जाना और हम अपने धर्मग्रंथ लाने के लिए आगे बढ़ेंगे।"

इस पर पिग की टिप्पणी थी, "इसका मतलब है कि वह इसे केवल उन पंद्रह मील तक ही ले जाएगा, और मुझे स्थायी कुली के रूप में काम करना जारी रखना होगा।"

“बस करो ये सब बकवास, भाई,” बंदर ने कहा। “जल्दी जाओ और आगे चलो।” फिर सुअर राजा के साथ आगे बढ़ा, जबकि साधु सैंड ने स्वामी को घोड़े पर चढ़ने में मदद की और बंदर सबसे पीछे-पीछे आया। मठ के पाँच सौ भिक्षु संगीत की धुन पर उन्हें विदा करने के लिए एक व्यवस्थित जुलूस में खड़े हो गए। “हमें विदा करने के लिए आपको आगे आने की कोई ज़रूरत नहीं है,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। “अगर किसी अधिकारी को इसके बारे में पता चल गया और हमारी योजना की खबर फैल गई तो बहुत बुरा होगा। कृपया सीधे वापस चले जाइए। मैं बस इतना चाहता हूँ कि आप महाराज के कपड़े साफ-सुथरे कर दें और उन्हें आज शाम या कल सुबह राजधानी भेज दें। मैं देख लूँगा कि आपको उचित इनाम मिले।” भिक्षु आज्ञाकारी होकर लौट गए, और बंदर ने अपने स्वामी के साथ चलने के लिए अपनी गति तेज़ कर दी क्योंकि वे आगे बढ़ रहे थे। सचमुच: पश्चिम में सत्य प्रकट करने का एक जादुई मंत्र था;

धातु और लकड़ी के संयोजन से आत्मा का परिष्करण हुआ।
सिनबार की माँ ने एक रहस्यमय सपना देखा था।
लड़का उस निष्फल शरीर पर शोक मना रहा था।
असली शासक को कुएं की तलहटी में ही खोजना पड़ा।

और स्वर्ग में भगवान लाओ ज़ी से मिलने जाना आवश्यक था।
पदार्थ के शून्य होने का अहसास होने पर, उसने अपना स्वाभाविक स्वरूप पुनः प्राप्त कर लिया;
बुद्ध वास्तव में उन्हीं लोगों का उद्धार करते हैं जिनका भाग्य ऐसा ही होता है।
गुरु और शिष्यों को अपनी यात्रा पूरी करने में एक सुबह से भी कम समय लगा और वे जल्द ही शहर के पास पहुँच गए।
"वुकोंग," संजांग ने कहा, "मुझे लगता है कि हमारे सामने वूजी की राजधानी होनी चाहिए।"
“तुम सही कह रहे हो,” बंदर ने कहा। “चलो जल्दी वहाँ पहुँचकर अपना काम करते हैं।” जैसे ही वे शहर में दाखिल हुए, उन्होंने देखा कि सड़कों पर लोग अच्छे कपड़े पहने हुए थे और वहाँ चहल-पहल और समृद्धि का माहौल था। महल के फीनिक्स मंडप और ड्रैगन मीनारें बेहद भव्य लग रही थीं, और इस बात को साबित करने के लिए एक कविता भी है: ये महल किसी महान राज्य के महलों जैसे दिखते हैं;
यहां का गायन और नृत्य तांग राजवंश के समान है।

फूलों का मुख कीमती पंखों की ओर है, और लाल बादल ऊपर तैर रहे हैं;
सूर्य की रोशनी में वस्त्र पन्ना की तरह चमकते हैं।
अगरबत्ती के धुएं के बादलों के बीच मोर के द्वार खुलते हैं।
मोती के पर्दों के ऊपर रंगीन झंडे लहरा रहे हैं।
समृद्धि का एक सचमुच प्रशंसनीय उदाहरण:
अधिकारी चुपचाप खड़े हैं और उनके पास बताने के लिए कुछ नहीं है।
संजांग घोड़े से उतरा और बोला, "शिष्य, मुझे लगता है कि हमें महल जाकर अपने यात्रा दस्तावेज जमा कर देने चाहिए ताकि छोटे-मोटे अधिकारियों से कोई परेशानी न हो।"
"तुम सही कह रहे हो," बंदर ने कहा। "मैं और मेरे भाई सब एक साथ अंदर जाएंगे। अगर हम कई लोग होंगे तो इसे संभालना बहुत आसान होगा।"
"अगर आप सब अंदर जाते हैं," संजांग ने कहा, "तो अभद्र भाषा का प्रयोग न करें।

कुछ भी बोलने से पहले, एक प्रजा की तरह अपने राजा को सम्मान दें।"
"क्या इसका मतलब प्रणाम करना है?" बंदर ने पूछा।
"जी हां," संजांग ने कहा, "पांच बार झुककर और तीन बार प्रणाम करके पूर्ण प्रणाम किया जाता है।"
“आप किसी काम के नहीं हैं, स्वामी जी,” बंदर भाई हँसते हुए बोला। “उसके सामने झुकना तो सरासर बेवकूफी होगी। बेहतर होगा कि आप मुझे पहले अंदर जाने दें और मामला सुलझा लें। मैं देख लूँगा कि वह क्या कहता है, फिर तय करूँगा कि क्या जवाब देना है। अगर मैं झुकता हूँ, तो आप सब भी झुकें; और अगर मैं बैठता हूँ, तो आप सब भी बैठें।”
देखिए कैसे शरारती बंदर राजा उन्हें महल के द्वार तक ले जाता है और वहाँ तैनात अधिकारी से कहता है, "हम पूर्व के महान तांग सम्राट द्वारा बुद्ध की पूजा करने और पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजे गए तीर्थयात्री हैं। आज हम अपने प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने आए हैं और महोदय, कृपया इन्हें हमारे लिए आगे भेज दें। इस प्रकार आप हमारी उत्कृष्ट उपलब्धि में बाधा नहीं डालेंगे।"
इसके बाद द्वारपाल महल के दक्षिणी द्वार से अंदर गया, सीढ़ियों पर घुटने टेककर बैठ गया और सूचना दी, "द्वार के बाहर पाँच भिक्षु हैं जो कहते हैं कि वे महान तांग द्वारा बुद्ध की पूजा करने और पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजे गए तीर्थयात्री हैं। वे अब यहाँ अपने प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने आए हैं, और बिना बुलाए अंदर आने के बजाय वे द्वार के बाहर शाही आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"
उस दुष्ट सम्राट ने उन्हें तुरंत बुलवाया। तांग पुजारी के साथ महल के द्वार से अंदर जाते ही, पुनर्जीवित राजा अपने आँसू नहीं रोक सका और वे उसके गालों पर बहने लगे। उसने सोचा, "यह कितना भयानक है कि मेरा राज्य, जो पीतल और लोहे के समान मजबूत है, मुझसे चुपके से छीन लिया गया है।"
“महाराज, चिंता मत कीजिए, वरना भेद खुल जाएगा। मेरा डंडा मेरे कान में बज रहा है और मुझे पूरा यकीन है कि मैं कामयाब होऊंगा। मैं वादा करता हूं कि मैं उस दुष्ट को मार डालूंगा और उसकी सारी गंदगी मिटा दूंगा। राज्य जल्द ही फिर से आपका हो जाएगा।” राजा अवज्ञा करने की हिम्मत नहीं कर सके, इसलिए उन्होंने अपने आंसू कपड़ों से पोंछे और अपनी जान जोखिम में डालकर उनके पीछे-पीछे महल के मुख्य दरबार में चले गए।

इसके बाद नागरिक और सैन्य अधिकारी तथा चार सौ दरबारी दिखाई दिए, जो सभी राजसी मौन में उनके ऊपर खड़े थे। बंदर ने तांग पुजारी को सफेद जेड की सीढ़ियों के नीचे अविचलित खड़ा कर दिया। सीढ़ियों के नीचे खड़े सभी अधिकारी भय से कांप रहे थे।

उन्होंने कहा, "कितना मूर्ख भिक्षु है! हमारे राजा से मिलने भी नहीं गया, न ही उनके सामने न झुके और न ही कोई शिष्टाचारपूर्ण बात कही। उसने सम्मानपूर्वक कोई मंत्र भी नहीं पढ़ा। कितनी बेशर्मी है!"

उनके मुंह से शब्द निकलने से पहले ही राक्षस-राजा ने पूछा, "वह भिक्षु कहाँ से आया है?"

इस पर बंदर ने साहसपूर्वक उत्तर दिया, "वह दक्षिणी जंबू महाद्वीप के पूर्व में स्थित महान तांग देश से शाही आदेश द्वारा भेजा गया एक तीर्थयात्री है, जो पश्चिम में भारत के थंडर मठ में जीवित बुद्ध की पूजा करने और सच्चे शास्त्रों को प्राप्त करने के लिए आया है। अब जब वह यहाँ है, तो वह अपनी उपस्थिति की सूचना दिए बिना आपके देश से नहीं जाना चाहता, इसीलिए वह आज अपने प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने आया है।"

यह सुनकर राक्षस राजा क्रोधित होकर सोचने लगा, "तुम्हारे पूर्वी राज्य में ऐसी क्या खास बात है? मैं तुम्हारे दरबार को कोई भेंट नहीं देता और न ही तुम्हारे राजा से मेरा कोई संबंध है। तो फिर तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम इतने असभ्य हो और मुझे प्रणाम नहीं करते?"

बंदर मुस्कुराते हुए बोला, “पूर्व में हमारा एक महान राजवंश रहा है और हमें एक श्रेष्ठ देश माना जाता रहा है, जबकि तुम्हारा देश तो बस एक छोटा-मोटा सीमावर्ती राज्य है। पुरानी कहावत है, महान देश का सम्राट ही श्रेष्ठ होता है।”

क्या पिता और श्रेष्ठ,
एक छोटे राज्य का शासक
वह पुत्र है और उससे हीन है।

आप तो हमसे मिलने भी नहीं आए। हमारी ओर से न झुकने पर शिकायत करने की आपकी हिम्मत कैसे हुई!

भयंकर क्रोध में आकर राक्षस राजा ने अपने नागरिक और सैन्य अधिकारियों को आदेश दिया, "उस असभ्य भिक्षु को गिरफ्तार करो।" "गिरफ्तार" शब्द सुनते ही सभी अधिकारी बंदर की ओर दौड़े, जिसने चिल्लाकर उनकी ओर इशारा किया और उन्हें पीछे हटने को कहा। उन पर इशारा करते हुए उसने जादू किया जिससे वे सब हिल-डुल नहीं सके। अब कोई भी अधिकारी हिल नहीं सकता था।
वास्तव में:
सीढ़ियों के सामने खड़े कर्नल लकड़ी की मूर्तियों में तब्दील हो गए;
हॉल में मौजूद सेनापति मिट्टी की मूर्तियों के समान थे।
अपने सभी नागरिक और सैन्य अधिकारियों को मूर्ति में परिवर्तित देखकर, राक्षस राजा अपने अजगर सिंहासन से कूद पड़ा और बंदर को पकड़ने ही वाला था कि बंदर ने प्रसन्नता से सोचा, "बस यही तो मैं चाहता था। भले ही उसका सिर लोहे का हो, मेरे एक ही प्रहार से उसमें छेद हो जाएगा।" लेकिन जैसे ही राक्षस ने हिलना शुरू किया, उसके बगल से एक रक्षक आगे आया।
अध्याय 39
548
पश्चिम की यात्रा
क्या आप जानते हैं कि वह कौन था? वह वूजी का युवराज था, जो आगे बढ़कर उस राक्षस के दरबारी वस्त्रों को छीनने के लिए दौड़ा, उसके सामने घुटने टेककर बोला, "महाराज, कृपया क्रोधित न हों।"
"क्यों, मेरे बच्चे?" उस राक्षस ने पूछा।
"हे पिता, मैं आपको बताता हूँ। तीन साल पहले मैंने सुना था कि तांग सम्राट ने एक पवित्र भिक्षु को बुद्ध की पूजा करने और पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजा था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह आज हमारे देश में होंगे। महाराज, आपका स्वभाव बहुत उग्र है, और मुझे डर है कि आप उस भिक्षु का सिर कलम करवा देंगे, और जब महान तांग सम्राट को यह खबर पता चलेगी तो वे क्रोधित हो उठेंगे। तांग सम्राट ली शिमिन ने शासक बनने के बाद से देश को एकजुट किया है, लेकिन वे अभी भी संतुष्ट नहीं हैं। उन्होंने पहले ही विदेशों में सैन्य अभियान भेजे हैं। यदि उन्हें पता चला, महाराज, कि आपने इस पवित्र पुजारी की हत्या कर दी है जो उनके शपथ लिए हुए भाई थे, तो वे निश्चित रूप से आप पर युद्ध छेड़ने के लिए सेना खड़ी करेंगे। हमारी

सेना उनका मुकाबला करने के लिए बहुत कमजोर है, लेकिन तब तक पछताने का समय नहीं रहेगा। यदि महाराज, आप अपने पुत्र का सुझाव स्वीकार करें, तो आप चारों भिक्षुओं को गिरफ्तार करवाकर उनसे गहन पूछताछ करवाएं। उन पर शाही उपस्थिति में प्रणाम न करने का आरोप लगाएं; सजा बाद में सुनाई जा सकती है।"

राक्षस को रोकने के लिए ये सभी सुझाव इसलिए दिए गए थे क्योंकि युवराज को चिंता थी कि राक्षस तांग पुजारी को नुकसान पहुंचा सकता है। उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि बंदर ने जानबूझकर ऐसा इसलिए किया था ताकि उसे राक्षस पर हमला करने का मौका मिल सके।

उस राक्षस ने राजकुमार की सलाह मान ली, उसके सिंहासन के सामने खड़ा हुआ और दहाड़ते हुए बोला, "भिक्षु, तुमने पूर्व कब छोड़ा? तांग सम्राट ने तुम्हें शास्त्र लाने के लिए क्यों भेजा था?"

बंदर गर्व से खड़ा होकर बोला, "मेरे स्वामी तांग सम्राट के शपथ लिए हुए भाई हैं, और उनकी उपाधि संजांग है।"

तांग सम्राट का एक मंत्री था जिसका नाम वेई झेंग था। उसने सपने में जिंग नदी के बूढ़े अजगर का सिर काट दिया था क्योंकि उसे स्वर्ग से ऐसा करने का आदेश मिला था। जब तांग सम्राट ने पाताल लोक की यात्रा का सपना देखने के बाद जीवन में वापसी की, तो उसने अन्यायपूर्वक मारे गए सभी लोगों की आत्माओं को बचाने के लिए एक विशाल जल और भूभाग का निर्माण किया। मेरे गुरु ने शास्त्रों का उपदेश इतनी व्यापक करुणा के साथ दिया कि बोधिसत्व गुआनयिन ने उन्हें पश्चिम की यात्रा करने का निर्देश दिया। मेरे गुरु ने अपने देश के प्रति पूर्ण निष्ठा व्यक्त करने के लिए स्वेच्छा से यह यात्रा करने का गंभीर वचन दिया और तांग सम्राट ने उन्हें एक प्रमाण पत्र दिया। यह तियान गुआन शासनकाल के तेरहवें वर्ष के नौवें महीने की पूर्णिमा से तीन दिन पहले की बात है। पूर्व की भूमि छोड़ने के बाद वे द्वि-सीमा पर्वत पर आए, जहाँ उन्होंने मुझे अपना वरिष्ठ शिष्य बनाया; मेरा नाम सन वुकॉन्ग है, जिसे सन द नोविस या ब्रदर मंकी भी कहा जाता है। फिर वे स्टुबेट की भूमि में गाओ गाँव आए, जहाँ उन्होंने अपने दूसरे शिष्य, झू बाजी, झू वुनेन्ग, या सुअर को अपने साथ लिया। बहती रेत की नदी पर उन्होंने अपने तीसरे शिष्य, शा वुजिंग, या साधु रेत को अपने साथ लिया। फिर परसों उन्होंने कीमती लकड़ी के मठ में एक गृहस्थ को अपना कुली नियुक्त किया।

यह सब सुनकर, वह दुष्ट, जिसके पास तांग पुजारी की तलाशी लेने या बंदर से चालाकी से पूछताछ करने का कोई तरीका नहीं था, गुस्से से घूरते हुए बोला, "जब तुम पूरब से निकले थे, तब अकेले यात्रा कर रहे थे। तुमने जिन चार अनुयायियों को अपने साथ लिया, उनमें से तीन नियमित भिक्षु तो कोई समस्या नहीं हैं। लेकिन मैं उस गृहस्थ भाई को अपने साथ ले जाने को बर्दाश्त नहीं करूँगा। मुझे यकीन है कि उसका अपहरण किया गया है। उसका नाम क्या है? क्या उसके पास आधिकारिक दीक्षा प्रमाण पत्र है?"

उन्हें बयान देने के लिए आगे लाएं।

यह सुनकर असली राजा कांपने लगा और उसने पूछा, "गुरुजी, मैं क्या कहूँ?"

"डरो मत," बंदर ने उसे चुटकी काटते हुए कहा। "मैं तुम्हारे लिए बोलूंगा।"

महान संत ने तेजी से आगे बढ़कर उस राक्षस को ऊँचे स्वर में पुकारा, "महाराज, यह वृद्ध साधु गूंगा है और थोड़ा बहरा भी है। लेकिन जब वह जवान था, तब वह एक बार पश्चिमी स्वर्ग गया था, इसलिए उसे रास्ता पता है। मैं उसके अतीत से भलीभांति परिचित हूँ, इसलिए महाराज, अपनी दया से मुझे उसकी ओर से बोलने की अनुमति दें।"

अध्याय 39

549

पश्चिम की यात्रा

"अगर तुम सजा नहीं पाना चाहते तो बेहतर होगा कि तुम तुरंत पूरा और स्पष्ट बयान दे दो," उस शैतान ने कहा।

इस पर बंदर ने कहा,

"अब अपराध स्वीकार करने वाला भाई काफी उम्रदराज है।"

बहरे और गूंगे दोनों हो गए, और दिवालिया भी हो गए।

उनका परिवार लंबे समय से इस क्षेत्र में रहता आया है।

पांच साल पहले तक भीषण आपदा आ पड़ी थी।

बारिश नहीं हुई और लोग सूखे से पीड़ित हुए;

राजा और आम लोग सभी ने व्रत रखा और उपवास किया।

उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए धूप जलाई।

लेकिन सैकड़ों मील तक कोई बादल दिखाई नहीं दे रहे थे।

जब सभी लोग भूख से व्याकुल थे,
झोंगशान से अचानक एक जादूगर आ गया।
उसने हवा और बारिश लाने की अपनी महान शक्ति का प्रदर्शन किया।
फिर उसने चुपके से देश के शासक की हत्या कर दी।
उसे महल के बगीचे में स्थित कुएं में धकेल दिया।
उसने स्वयं राजा की शक्ल में सिंहासन ग्रहण किया।
सौभाग्यवश मैं आया और मैंने एक बहुत अच्छा काम किया।
मुर्दों को जीवित करना और उन्हें फिर से जीवन देना।
फिर उन्होंने स्वेच्छा से हमारे कुली का काम करने की पेशकश की।
और हमारे साथ भिक्षुओं के साथ पश्चिम की ओर चलें।
वह झूठा राजा वास्तव में एक बहुत ही दुष्ट जादूगर है;
आम भाई वास्तव में भेस बदले हुए सच्चे राजा हैं।"
अपने महल के सिंहासन कक्ष में बैठे हुए यह सुनकर वह राक्षस इतना भयभीत हो गया कि उसका दिल एक छोटे हिरण की तरह उछल पड़ा और उसका चेहरा लाल हो गया। वह तुरंत पीछे हट गया और भागने ही वाला था कि वह निहत्था था। उसने मुड़कर देखा तो महल के रक्षकों में से एक अधिकारी, जिसकी कमर पर तलवार थी, एकदम स्थिर खड़ा था। (अध्याय 39)

बंदर के जादू ने उसे गतिहीन कर दिया था, इसलिए वह एक मूर्ख की तरह व्यवहार कर रहा था।
उस राक्षस ने तलवार पकड़ी और बादल पर सवार होकर हवा में उड़ गया, जिससे साधु सैंड का क्रोध भड़क उठा और सुअर ने बंदर के अधीर होने की शिकायत करते हुए कहा: "अगर तुमने थोड़ा नरमी बरती होती तो तुम उसे शांत कर सकते थे और पकड़ सकते थे। अगर वह अब अपने बादल पर उड़ गया, तो तुम उसे कहाँ ढूँढोगे?"
“भाइयों, यह भयानक शोर बंद करो,” बंदर हँसते हुए बोला। “चलो राजकुमार से कहते हैं कि वह नीचे आकर अपने पिता को प्रणाम करें, और रानी और उनकी रानियों को भी अपने पति को प्रणाम करने के लिए आमंत्रित करते हैं।” फिर उसने सम्मोहन को दूर करने वाले मंत्र पढ़े और कहा, “जब अधिकारी होश में आएँ, तो उनसे कहो कि

वे आकर अपने राजा को प्रणाम करें। तब पता चलेगा कि असली राजा कौन है। सबको बताओ कि क्या हुआ है ताकि सच्चाई सामने आ सके। मैं राक्षस को खोजने जा रहा हूँ।" फिर महान ऋषि ने सुअर और साधु रेत को विदाई के निर्देश दिए: "उन सबका ख्याल रखना—राजा और मंत्रियों का, पिता और पुत्र का, रानी और उनकी रानियों का, और हमारे स्वामी का।"

जब तक उसने बोलना समाप्त किया, तब तक वह गायब हो चुका था।

वह पहले ही बादलों की नौवीं परत में पहुँच चुका था और उस राक्षस को चारों ओर खोज रहा था। उसने देखा कि वह दुष्ट अपनी जान बचाकर भाग निकला है और पूरब की ओर वापस जा रहा है। बंदर जल्द ही उसके पीछे पहुँच गया और चिल्लाने लगा, "राक्षस, तुम कहाँ जा रहे हो? बंदर तुम्हारा पीछा कर रहा है।"

उस राक्षस ने मुड़कर देखा, अपनी तलवार उठाई और चिल्लाया, "अरे बदमाश, बंदर। किसी और के सिंहासन पर बैठने से तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं था। यहाँ आकर मेरी गलतियों को सुधारने और मेरा रहस्य उजागर करने की तुम्हें क्या ज़रूरत थी?"

"मैं तुम्हें देख लूँगा, बदमाश राक्षस," बंदर हँसते हुए बोला। "यह मत सोचो कि तुम फिर कभी राजा बन पाओगे। जैसा कि तुम जानते थे कि मैं कौन हूँ, तुम्हें मेरे स्वामी को परेशान करने के बजाय यहाँ से चले जाना चाहिए था। तुम उससे किस तरह का कबूलनामा निकलवाना चाहते थे? जो तुमने अभी लिया? अगर तुम नहीं जाओगे, बहादुर, तो मेरे डंडे का स्वाद चखो।" उस राक्षस ने वार से बचते हुए फिर अपनी तलवार से बंदर के चेहरे पर वार किया। एक बार जब दोनों आमने-सामने आ गए, तो यह एक शानदार लड़ाई थी। वाकई:

वानर राजा भयंकर था, और दानव सम्राट शक्तिशाली था।

जैसे ही वे एक दूसरे से लड़ रहे थे, लाठी ने तलवार को रोक दिया।

पूरे एक दिन तक तीनों लोक बादलों में घिरे रहते हैं।

सिर्फ इसलिए कि एक सम्राट ने अपना सिंहासन वापस पा लिया है।"

कुछ ही देर बाद उस राक्षस को एहसास हुआ कि वह बंदर का मुकाबला नहीं कर सकता और वह उसी रास्ते से वापस शहर की ओर भाग गया। सफेद जेड की सीढ़ियों के सामने खड़े नागरिक और सैन्य अधिकारियों की दो पंक्तियों को पार करते हुए, उसने अपने शरीर को झटककर तांग पुजारी का रूप धारण किया और सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

जब महान ऋषि ने राक्षस को पकड़ लिया और उसे मारने के लिए अपना गदा उठाया, तो राक्षस ने कहा,
"शिष्य, मैं हूँ, मुझे मत मारो।" फिर बंदर ने असली तांग पुजारी पर प्रहार करने के लिए अपना डंडा उठाया, जिसने भी कहा,
"शिष्य, मैं हूँ, मुझे मत मारो।" दोनों तांग पुरोहित इतने एक जैसे दिखते थे कि उनमें अंतर करना असंभव था।
"अगर मैं तांग पुजारी को मार डालूँ, जो असल में भेस बदला हुआ दानव है, तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी," बंदर ने सोचा। "लेकिन अगर मैंने अपने असली गुरु को मार डाला तो यह बहुत बुरा होगा।" इसलिए उसे रुकना पड़ा और उसने सुअर से पूछा
(अध्याय 39)
551
पश्चिम की यात्रा
और साधु सैंड ने कहा, "इनमें से कौन शैतान है और कौन हमारा स्वामी? मुझे शैतान की ओर इशारा करो और मैं उसे मार डालूंगा।"
"ऊपर लड़ते समय तुमने इतना शोर मचाया," पिग ने कहा, "कि मेरी पलकें झपकीं, और जब मैंने दोबारा आंखें खोलीं तो दो मालिक थे। मुझे नहीं पता कि असली मालिक कौन है।"
जैसे ही उसने यह सुना, बंदर ने अपने हाथों से जादू किया, मंत्र के शब्द बोले, और धर्म के रक्षक सभी देवताओं, छह डिंग, छह जिया, चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षकों, चार कर्तव्य देवताओं और धर्म के अठारह संरक्षकों, साथ ही स्थानीय देवताओं और पर्वतीय देवताओं का आह्वान किया।
मैं यहाँ एक दानव को वश में करने आया हूँ, लेकिन दानव ने स्वयं को मेरा स्वामी बना लिया है। वे इतने मिलते-जुलते हैं कि मैं उनमें अंतर नहीं कर सकता। चूंकि आपके पास गुप्त ज्ञान है, कृपया मेरे स्वामी को सिंहासन कक्ष में आने के लिए आमंत्रित करें ताकि मैं उस दुष्ट को पकड़ सकूँ।
वह राक्षस बादलों पर कूदने में माहिर था, और जैसे ही उसने बंदर की बात सुनी, वह सिंहासन कक्ष की छत पर कूदकर निकल गया, जिससे बंदर के लाठी उठाते ही तांग पुजारी पर वार हो गया। हे भगवान! अगर उसने उन देवताओं को न बुलाया होता, तो वह वहीं बीस तांग पुजारियों को मार-पीट कर अधमरा कर देता।

सौभाग्यवश देवताओं ने उसके प्रहार को रोक दिया और कहा, "महान ऋषि, वह राक्षस बादलों पर कूदने वाला है। वह छत पर चढ़ गया है।" लेकिन जैसे ही बंदर उसके पीछे छत पर चढ़ा, वह राक्षस फिर नीचे कूद गया, असली तांग पुजारी को पकड़ लिया और उन दोनों को भीड़ में फिर से मिला दिया। वे एक बार फिर पहचान से परे हो गए।

बंदर बहुत परेशान था, और अपने बगल से सुअर की उपहास भरी हंसी सुनकर वह गुस्से से भड़क उठा: "तुम्हें क्या हुआ है, मूर्ख? अब तुम्हें दो स्वामियों के इशारों पर चलना होगा, तो तुम इतने खुश क्यों दिख रहे हो?"

"अगर चाहो तो मुझे बेवकूफ कह लो, भाई," पिग हँसते हुए बोला, "लेकिन तुम मुझसे भी ज़्यादा बेवकूफ हो। अगर तुम यह नहीं बता सकते कि गुरु कौन है, तो कोशिश करके अपना समय बर्बाद मत करो। अगर सिरदर्द सह सकते हो, तो हमारे गुरु से मंत्र बोलने को कहो। मैं और साधु सैंड उनमें से एक-एक के पास खड़े होकर सुनेंगे। जो मंत्र नहीं जानता होगा, वही शैतान होगा।"

समस्या क्या है?"

"शाबाश भाई," बंदर ने कहा। "उस मंत्र के शब्द केवल तीन लोगों को पता हैं। वे भगवान बुद्ध के हृदय से निकले थे और बोधिसत्व गुआनयिन को सिखाए गए थे, जिन्होंने उन्हें हमारे गुरु को सौंप दिया।"

इन्हें कोई और नहीं जानता। ठीक है। हे गुरुजी, मंत्र बोलिए।" तांग पुजारी ने सचमुच मंत्र बोलना शुरू कर दिया। वह राक्षस, जिसे ये शब्द पता ही नहीं थे, केवल कुछ अटपटा सा बुदबुदा सका।

"यहाँ जो बड़बड़ा रहा है, वही शैतान है," सुअर ने कहा। राक्षस को छोड़कर और उसे मारने के लिए अपना रेक उठाते हुए, शैतान हवा में उछला और बादल पर उड़ गया।

एक ज़ोरदार चीख के साथ, शानदार सुअर दूसरे बादल पर सवार होकर उसके पीछे चल पड़ा। साधु सैंड भी इतने उत्साहित थे कि उन्होंने तांग पुजारी को छोड़कर युद्ध के लिए अपनी छड़ी लहरा दी। तभी तांग पुजारी ने मंत्र पढ़ना बंद किया। महान ऋषि बंदर ने सिरदर्द के बावजूद अपनी गदा उठाई और हवाई दौड़ में शामिल हो गए। इस लड़ाई में तीन भयंकर भिक्षुओं ने एक दुष्ट राक्षस को घेर लिया था। जब सुअर के रेक और साधु सैंड की छड़ी ने राक्षस को रोक रखा था, तो बंदर हँसते हुए बोला, "मैं सीधे उसके पास जाकर उसे सिर से नहीं मार सकता क्योंकि वह मुझसे इतना डरा हुआ है

कि भाग जाएगा। मैं और ऊपर जाऊँगा, खुद को उल्टा कर लूँगा और उस तरह से उसे मारूँगा।"

तब महान ऋषि शुभ प्रकाश में नौवीं बादल परत पर उछल पड़े, और जैसे ही वे प्रहार करने वाले थे, उत्तर-पश्चिम दिशा में एक बहुरंगी बादल प्रकट हुआ और एक आवाज जोर से सुनाई दी, "उसे मत मारो, सन वुकॉन्ग।" बंदर ने मुड़कर देखा तो पाया कि यह बोधिसत्व मंजुश्री थे। उसने तुरंत अपना प्रहार रोक दिया और प्रणाम किया।

अध्याय 39

552

पश्चिम की यात्रा

"बोधिसत्व, आप कहाँ जा रहे हैं?" उसने पूछा।

“मैं तुम्हारे लिए उस राक्षस को पकड़ने आया हूँ,” मंजुश्री ने उत्तर दिया। बंदर ने उनकी सहायता के लिए धन्यवाद दिया। मंजुश्री ने अपनी आस्तीन से राक्षस-प्रकट करने वाला दर्पण निकाला और राक्षस का असली रूप दिखाया, फिर बंदर ने सुअर और साधु रेत को बोधिसत्व का स्वागत करने के लिए बुलाया। जब उन सभी ने दर्पण में देखा तो उन्हें पता चला कि वह राक्षस अत्यंत भयानक रूप से बदसूरत था।

चमकदार प्लेटों जैसी आंखें,
सिर किसी लोहे के कड़ाहे जैसा।
उसका पूरा शरीर गर्मियों में नील की तरह नीला पड़ गया था।
उसके पंजे शरद ऋतु की बर्फ की तरह सफेद थे।
दो लटकते कान,
झाड़ू जितनी लंबी पूंछ।
साहस से भरे नीले बाल,
सोने की तरह चमकती लाल आंखें।
जेड पत्थर की तरह चपटे दांत,
भाले की तरह बाहर निकली हुई गोल मूंछें।
जब दर्पण में उसका वास्तविक स्वरूप दिखाई देता है
वह मंजुश्री के शेर राजा हैं।

"बोधिसत्व," बंदर ने कहा, "यह वही नीले बालों वाला शेर है जो आपके सिंहासन के नीचे रहता था। वह यहाँ आकर दुष्ट आत्मा क्यों बन गया, और आपने उसे पहले वश

में क्यों नहीं किया?"
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "वुकोंग भागा नहीं था। उसे भगवान बुद्ध ने यहाँ भेजा था।"
"भगवान बुद्ध ने इस राक्षस को यहाँ आत्मा बनकर सिंहासन हथियाने के लिए कैसे भेजा होगा? काश मुझे उनके कुछ आदेशों की मदद मिल जाती ताकि मैं तांग पुजारी के साथ यात्रा करने के इस कष्ट को सहन कर सकूँ।"
“कुछ बातें ऐसी हैं जो आप नहीं जानते,” मंजुश्री ने कहा। “वुजी का वह राजा एक दयालु व्यक्ति था और भिक्षुओं को भोज कराया करता था। भगवान बुद्ध ने मुझे उसे पश्चिम लाने के लिए यहाँ भेजा है, जहाँ वह स्वर्णिम अर्हत बन सके।”
क्योंकि मैं अपने असली रूप में उनके सामने प्रकट नहीं हो सका, इसलिए मैंने एक साधारण भिक्षु का वेश धारण किया और उनसे कुछ शाकाहारी भोजन मांगा। जब वे मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सके, तो उन्होंने मुझे पापी समझकर बांध दिया और तीन दिनों तक महल की खाई में डुबोए रखा। सौभाग्य से, छह जियाओं ने अपने स्वर्णिम शरीरों से मुझे बचाया और पश्चिम वापस ले गए, जहाँ मैंने तथागत बुद्ध को सूचना दी। उन्होंने ही आदेश दिया कि मेरे तीन दिन तक कुएँ में रहने के दंड के रूप में राजा को कुएँ में धकेल कर तीन वर्षों तक डुबोए रखा जाए। 'हम जो कुछ भी खाते या पीते हैं, वह पूर्वनियोजित होता है।' यहाँ आकर आपने महान पुण्य अर्जित किया है।

"हो सकता है कि तुमने अपने निजी द्वेष का बदला ले लिया हो, जैसे हर निवाला चुकाकर, लेकिन भगवान ही जानता है कि उस राक्षस ने कितने लोगों की हत्या की," बंदर ने उत्तर दिया।
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, “उन्होंने कभी किसी की हत्या नहीं की। उनके आगमन के बाद से तीन वर्षों में हवा और बारिश सही समय पर आई हैं, राज्य मजबूत रहा है और लोगों को शांति मिली है। उन्होंने किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाई।”
"भले ही यह सब मान लिया जाए," बंदर ने कहा, "वह रानी और हरम की रानियों के साथ सोता रहा है।"
निश्चित रूप से इससे उनकी छवि धूमिल हुई है और यह नैतिकता का अपमान है।"
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "उसने उन्हें बिल्कुल भी अपवित्र नहीं किया है। वह एक

बधिया किया हुआ शेर है।"
यह सुनकर सुअर उस प्राणी के पास गया और उसे छूकर देखा। "इस दुष्ट आत्मा की बेवजह बदनामी है," वह हँसते हुए बोला, "जैसे कोई शराब न पीने वाला लाल नाक वाला व्यक्ति हो।"
“तो फिर,” बंदर ने कहा, “उसे अपने साथ ले जाओ। अगर आप नहीं आते, बोधिसत्व, तो मैं उसकी जान कभी नहीं बख्शता।”
तब बोधिसत्व ने एक मंत्र पढ़ा और गरजते हुए कहा, "सत्य की ओर लौट आओ, राक्षस। किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हो?" तभी राक्षस राजा अपने मूल रूप में लौटा। मंजुश्री ने उसे वश में करने के लिए उसके ऊपर एक कमल का फूल रखा, उसकी पीठ पर बैठ गए और बंदर को सुनहरे प्रकाश में छोड़कर चले गए। आह!
मंजुश्री वुताई पर्वत पर लौट आए
कमल के सिंहासन के नीचे शास्त्रों का उपदेश सुनना।
यदि आपको नहीं पता कि तांग पुजारी और उनके शिष्यों ने शहर कैसे छोड़ा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 40
बालक रूपान्तरण से मूर्खता करता है, ध्यानमग्न हृदय को विचलित करता है। वानर और अश्व चाकू लेकर लौटते हैं; लकड़ी की माता खाली है। कहानी आगे बताती है कि कैसे महान ऋषि वानर और उनके दो साथी शिष्य अपने बादलों से उतरे और सीधे महल में चले गए। वहाँ राजा, मंत्री, रानी और राजकुमार ने बारी-बारी से उनका आभार व्यक्त किया और वानर ने सबको बताया कि कैसे मंजुश्री ने राक्षस को हराया था। वे सब घुटने टेककर बार-बार जमीन पर प्रणाम करते रहे।
सभी बधाइयों के बीच द्वारपाल ने आकर सूचना दी, "महाराज, द्वार पर चार और भिक्षु हैं।"
इस खबर से पिग घबरा गया।
"भाई," उसने कहा, "क्या उस दुष्ट ने हमें धोखा देने के लिए अपनी जादूगरी से एक नकली मंजुश्री बनाया है? शायद वह अब हमारे साथ बुद्धि की एक और लड़ाई के लिए भिक्षु बन गया है।"

"बकवास," बंदर ने कहा और उन्हें अंदर बुलाने का आदेश दिया।
नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने आदेश पारित किया और भिक्षुओं को भेजा गया। बंदर ने देखा कि वे कीमती लकड़ी के मठ के भिक्षु थे जो राजा का मुकुट, जेड बेल्ट, पीले गेरू रंग का वस्त्र और निश्चिंतता के जूते लेकर आए थे।
"शानदार," बंदर ने प्रसन्नता से कहा, "शानदार।" फिर उसने गृहस्थ भाइयों को आगे आने के लिए कहा और राजा को अपना मठवासी सिर का कपड़ा उतारकर मुकुट पहनने, सूती वस्त्र उतारकर पीले गेरू रंग का वस्त्र पहनने, रेशमी बेल्ट की जगह जेड बेल्ट लगाने और मठवासी चप्पलों को उतारकर चिंतामुक्त जूते पहनने के लिए कहा।
तब बंदर ने युवराज से कहा कि वह अपने पिता के लिए सफेद जेड का राजदंड लाए और राजा को एक बार फिर शासन करने के लिए सिंहासन कक्ष में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित किया।
जैसा कि पुरानी कहावत है, "राज दरबार एक दिन भी राजा के बिना नहीं रह सकता।" राजा ने सिंहासन पर बैठने से इनकार कर दिया, और सीढ़ियों के बीच में घुटने टेककर रोने लगा और बोला, "हे स्वामी, आपने मुझे तीन साल की मृत्यु के बाद फिर से जीवित कर दिया है, अब मैं राजा बनकर नहीं रह सकता। कृपया अपने स्वामी से राजा बनने का अनुरोध करें। मेरे लिए इतना ही काफी होगा कि मैं अपनी पत्नियों और बच्चों को लेकर शहर के बाहर एक आम नागरिक की तरह जीवन व्यतीत करूँ।" संजांग ने सिंहासन ग्रहण करने से बिल्कुल इनकार कर दिया, उसका मन पूरी तरह से बुद्ध की उपासना करने और शास्त्रों को लाने में लगा हुआ था।
तब राजा ने बंदर को सिंहासन की पेशकश की, जिस पर बंदर ने हंसते हुए कहा, "सच कहूँ तो, सज्जनों, अगर मैं राजा बनना चाहता तो धरती के हर देश का राजा बन सकता था। लेकिन अब हम सब भिक्षु जीवन के आदी हो चुके हैं—यह आसान जीवन है। अगर मैं राजा होता तो मुझे अपने बाल बढ़ाने पड़ते और मैं शाम को या पाँचवें पहर के ढोल बजने पर सो नहीं पाता। जब भी सीमा से कोई खबर आती, मैं चिंतित हो जाता, और अकाल और आपदा की खबरों से व्याकुल और असहाय हो जाता। मैं कभी भी इसकी आदत नहीं डाल पाता। नहीं, आप वापस राजा बन जाइए, और मैं भिक्षु बनकर पुण्य कमाता रहूँगा।"
राजा ने चाहे जितना भी इनकार किया हो, अंततः उसे सिंहासन कक्ष में प्रवेश करना

पड़ा, दक्षिण की ओर मुख करके सिंहासन पर बैठना पड़ा और स्वयं को राजा घोषित करना पड़ा। उसने आम क्षमादान जारी किया, कीमती लकड़ी के मठ के भिक्षुओं को बहुमूल्य उपहारों के साथ वापस भेजा और तांग पुरोहित के लिए भोज आयोजित करने के लिए महल के पूर्वी कक्ष को खोल दिया। उसने तांग कुलपति और उनके तीन शिष्यों के चित्र बनाने के लिए चित्रकारों को भी बुलवाया, जिन्हें सिंहासन कक्ष में टांगा जाना था।

देश में शांति बहाल हो जाने के बाद गुरु और उनके शिष्य अधिक देर तक रुकना नहीं चाहते थे; वे राजा से विदा लेकर पश्चिम की ओर प्रस्थान करने के लिए उत्सुक थे। राजा, उनकी रानी और रानियों, युवराज और मंत्रियों ने देश के सबसे बड़े खजाने के साथ-साथ सोना, चांदी, रेशम और साटन भी गुरु को धन्यवाद के प्रतीक के रूप में भेंट किए।

संज़ंग ने इनमें से कोई भी उपहार स्वीकार नहीं किया, केवल अपना पासपोर्ट वापस मांगा और बंदर और बाकी दोनों से घोड़े पर काठी कसने और जल्द से जल्द रवाना होने का आग्रह किया। राजा बहुत नाराज़ हुए। उन्होंने राजसी रथ लाने का आदेश दिया और तांग पुरोहित को उसमें बैठने के लिए आमंत्रित किया। नागरिक और सैन्य अधिकारियों के दोनों समूह आगे-आगे चल रहे थे, जबकि राजा, उनकी रानी और रानियाँ तथा युवराज रथ के पहिए धकेल रहे थे। जब वे शहर की बाहरी दीवारों से गुजर गए, तभी संज़ंग ने उन सभी से विदा लेने के लिए रथ से नीचे उतरे।

"महाराज, पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथों को एकत्र करने के बाद वापस आते समय कृपया हमारे देश की यात्रा करें," राजा ने कहा।

"मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ," संज़ंग ने उत्तर दिया। राजा अपने मंत्रियों के साथ रोते हुए लौट गए। तांग पुजारी और उनके तीन शिष्य घुमावदार सड़क पर चल पड़े, उनका दृढ़ निश्चय था कि वे गिद्ध शिखर पर जाकर पूजा करें। अब पतझड़ धीरे-धीरे शीत ऋतु में परिवर्तित हो रहा था।

अध्याय 40

555

पश्चिम की यात्रा

पाला पड़ने से लाल पत्तियां कटने लगती हैं और जंगल नंगे खड़े रह जाते हैं;
बारिश के बाद पीले बाजरे की अच्छी फसल पक गई।

सूर्य की गर्मी से तपते बेर के पेड़ भोर में खिल उठते हैं;
ठंडी हवा से हिलते बांस से आवाज आती है।
गुरु और शिष्य अब वूजी राज्य छोड़ चुके थे। रात में विश्राम करते और दिन में यात्रा करते हुए, वे लगभग एक महीने से चल रहे थे जब उन्होंने अपने सामने एक ऐसा पर्वत देखा जो आकाश को छू रहा था और सूर्य को ढक रहा था। संजांग घबरा गया। उसने घोड़े की लगाम खींचकर बंदर को पुकारा, जिसने पूछा, "गुरुजी, आपका क्या आदेश है?"
"क्या तुम्हें हमारे सामने वह विशाल पर्वत दिखाई दे रहा है?" संजांग ने कहा। "वह इतना सीधा है कि मुझे यकीन है कि उस पर दुष्ट प्राणी घात लगाकर हमें पकड़ने की कोशिश कर रहे होंगे, इसलिए सावधान रहना।"
बंदर हंसते हुए बोला, "बस चलते रहो और चिंता मत करो। मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।" इतना सुनकर बुजुर्ग ने राहत की सांस ली और अपने घोड़े को दौड़ाया। जब वे ऊबड़-खाबड़ पहाड़ पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि वह वाकई बेहद खड़ी ढलान वाला था।
क्या यह अधिक है?
यह नीले आकाश को छूता है।
क्या यह गहरा है?
इसकी गहरी खाई सीधे नरक की ओर खुलती है।
पर्वत के सामने हमेशा सफेद बादल उमड़ते रहते हैं।
घूमती हुई काली धुंध,
लाल फूल वाले बेर, पन्ना रंग का बांस,
हरे सरू के पेड़ और नीले रंग के चीड़ के पेड़।
पहाड़ के पीछे एक भव्य और आत्मा को मोहित कर देने वाला स्तंभ है,
राक्षसों की भयानक गुफाओं को छुपाते हुए।
गुफाओं से झरने मधुर स्वर में बहते हैं,
और घुमावदार घाटियों से नीचे उतरते हुए।
बंदर आसमान से झूलते हुए फल भेंट करते हैं;
नर हिरणों के सींग कई शाखाओं वाले होते हैं।

पश्चिम की यात्रा
नदी के किनारे रहने वाले हिरण शरमाते हुए अजनबियों को देखते हैं।
बत्तखों के झुंड को देखकर बाघ अपने मांद की तलाश में निकल पड़ते हैं;
भोर होते ही ड्रैगन पानी से बाहर निकलते हैं।
गुफा के मुहाने पर अचानक एक जोरदार गर्जना सुनाई दी।
इससे पक्षी भयभीत होकर शोर मचाते हुए ऊपर उड़ जाते हैं।
देखो कैसे जंगल के जानवर चुपके से भाग जाते हैं।
इन सभी पक्षियों और जानवरों को देखकर
भय से मनुष्य का हृदय तेजी से धड़कता है।
गुफाएँ गलियारों जितनी विशाल हैं।
सभी चोटियों के साथ कतारबद्ध हैं;
ग्रेनाइट की चट्टानें जेड के टुकड़ों की तरह रंगीन हैं;
कोहरा हर तरफ ऐसे छाया हुआ है मानो हरे रंग की जाली से ढका हो।
गुरु और शिष्य पहले से ही काफी भयभीत थे, तभी पहाड़ की एक दर्रे से एक लाल बादल निकला और सीधा आकाश में ऊपर उठ गया, जहाँ उसने आग का गोला बना लिया। बंदर भयभीत हो गया। जब वह करीब से देखने गया तो उसने गुरु का पैर धक्का देकर उन्हें घोड़े से नीचे उतार दिया और कहा, "भाइयों, यहीं रुको। एक दुष्ट आत्मा आ रही है।" घबराहट में सुअर ने अपना लोहे का रेक और साधु सैंड ने अपनी लाठी पकड़ ली और वे तांग पुजारी के दोनों ओर पहरा देने लगे।
यहां कहानी दो भागों में बंट जाती है। लाल रोशनी वास्तव में एक दुष्ट आत्मा की थी जिसने कुछ वर्ष पहले सुना था कि पूर्व से एक तांग पुजारी, जो आदरणीय स्वर्ण झींगुर का पुनर्जन्म थे और दस जन्मों तक अपने आचरण को शुद्ध करते रहे थे, शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहे हैं। जो कोई भी उनके मांस का एक टुकड़ा खाएगा, वह स्वर्ग और पृथ्वी के समान दीर्घायु होगा। दुष्ट आत्मा दिन-रात उनके आने की प्रतीक्षा कर रही थी, और अब वे आ गए थे। जब दुष्ट आत्मा ने आकाश में से उन तीनों शिष्यों को देखा, जो घोड़े पर सवार तांग पुजारी की रक्षा करते हुए कार्रवाई के लिए तैयार थे, तो आत्मा प्रशंसा से भर उठी।
"अब ये रहा एक साधु," उसने मन ही मन कहा। "मैं एक मोटे, गोरे चेहरे वाले साधु को घोड़े पर सवार देख सकता हूँ।"

वह पवित्र तांग पुजारी ही होंगे। लेकिन वे तीन भयंकर भिक्षुओं से घिरे क्यों हैं? उन सभी ने अपनी मुट्ठियाँ भींच रखी हैं, उनकी आस्तीनें ऊपर चढ़ी हुई हैं, और वे हथियारबंद हैं। वे ऐसे दिखते हैं जैसे लड़ाई के लिए तैयार हों। मुझे आश्चर्य है कि क्या उनमें से कोई इतना तेज नजर वाला है कि मुझे पहचान सके? मेरी शक्ल देखकर तो तांग पुजारी का मांस खाने की कोई उम्मीद नहीं है।

कुछ देर तक इस बारे में सोचने के बाद उसने मन ही मन कहा, "अगर मैं झपट्टा मारकर उसे पकड़ने की कोशिश करूँ तो मैं उसके पास भी नहीं पहुँच पाऊँगा। मैं उसे तभी पकड़ पाऊँगा जब मैं चालाकी से उसे धोखा दूँ। एक बार जब मैं उसे चकमा दे दूँगा तो मैं कोई ऐसी धूर्त योजना बना लूँगा जिससे वह ज़रूर पकड़ा जाएगा। इसलिए मैं नीचे जाकर उसके साथ कुछ चालें चलूँगा।"

अध्याय 40

557

पश्चिम की यात्रा

फिर उस भयानक दुष्ट राक्षस ने अपनी लाल रोशनी बिखेर दी और अपने बादल को पहाड़ की ढलान पर उतारा, जहाँ उसने अपने शरीर को झटककर खुद को एक छह साल के शरारती लड़के में बदल लिया, जो पूरी तरह नग्न था, उसके हाथ-पैर एक चीड़ के पेड़ की चोटी से बंधे हुए थे, और वह चिल्ला रहा था, "मदद करो, मदद करो!"

जब महान ऋषि बंदर ने दोबारा ऊपर देखा और पाया कि लाल बादल और आग पूरी तरह से गायब हो गए हैं, तो उसने स्वामी से कहा कि वह फिर से घोड़े पर सवार हो जाए और अपने रास्ते पर आगे बढ़े।

"लेकिन आपने कहा था कि यहाँ एक बुरी आत्मा है; मैं हिलने की हिम्मत नहीं कर सकता," संजांग ने जवाब दिया।

“अभी-अभी मैंने ज़मीन से एक लाल बादल उठते देखा,” बंदर ने कहा, “और वह हवा में ही आग के गोले में बदल गया। वह ज़रूर कोई बुरी आत्मा थी। अब जब आग और बादल गायब हो गए हैं, तो मुझे लगता है कि वह बस यहाँ से गुज़र रही थी और हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाने वाली थी। चलो चलते हैं।”

"तुम इसे बहुत ही विश्वसनीय तरीके से बता रहे हो," पिग ने कहा, "लेकिन भला किसने कभी किसी बुरी आत्मा के बारे में सुना है जो बस यूं ही गुजर गई हो?"

"तुम्हें पता नहीं होगा," बंदर ने उत्तर दिया। "अगर किसी पहाड़ी गुफा के दानव राजा ने

पहाड़ों की सभी गुफाओं की आत्माओं को भोज में आमंत्रित किया है, तो चारों ओर से आत्माएं वहीं जा रही होंगी।"

वे किसी को नुकसान पहुंचाने की बजाय दावत में ज्यादा दिलचस्पी रखते होंगे। वह शायद एक क्षणिक आत्मा रही होगी।

संज़ंग को पूरी तरह यकीन नहीं हुआ, फिर भी वह घोड़े पर सवार होकर पहाड़ की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे "मदद!" की आवाज़ सुनाई दी और उसने अपने शिष्य से हैरानी से कहा, "शिष्य, इन पहाड़ों के बीच ये कैसी आवाज़ है?"

“आप बस चलते रहिए, स्वामी जी,” बंदर उनके पास आते हुए बोला। “कुर्सियों की चिंता करना छोड़ दीजिए, चाहे उन्हें लोग ढो रहे हों या खच्चर, चाहे वे खुली छत वाली हों या पालकी। अगर यहाँ कोई कुर्सी होती भी तो उसे आपके लिए उठाने वाला कोई नहीं होता।”

"मैं सामान ढोने वाली कुर्सियों की बात नहीं कर रहा, बल्कि जयकारे लगाने की बात कर रहा हूँ," संज़ंग ने कहा। "मुझे पता है," बंदर ने कहा, "लेकिन इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है। तुम बस आगे बढ़ते रहो।"

संज़ैंग ने आदेश का पालन किया और अपने घोड़े को आगे की ओर चाबुक मारा। लगभग एक चौथाई मील चलने के बाद उसने "मदद!" की एक और चीख सुनी।

“शिष्य,” उसने कहा, “ये किसी जिन्न या राक्षस की चीख नहीं है। अगर होती तो कोई गूंज नहीं होती। इन चीखों को सुनो, एक के बाद एक। मुझे यकीन है कि कोई मुसीबत में है। हमें उसकी मदद के लिए जाना चाहिए।”

“गुरुजी,” बंदर ने कहा, “पहाड़ पार करने तक थोड़ी दया दिखाएँ। उसके बाद आप जितनी चाहें उतनी दया दिखा सकते हैं। यह एक बुरी जगह है। आपने सुना होगा कि कैसे लताएँ पेड़ों से चिपक जाती हैं और जीव आत्मा बन जाते हैं। उनमें से ज़्यादातर से कोई परेशानी नहीं होती, लेकिन एक तरह का अजगर है जिसने लंबे समय तक अपनी शक्तियों को इतना विकसित कर लिया है कि वह आत्मा बन गया है। उसे लोगों के बचपन के नाम बहुत अच्छे से याद हैं। अगर वह झाड़ियों या पहाड़ की गुफा से आपका नाम पुकारे और आप जवाब न दें, तो आप सुरक्षित रहेंगे; लेकिन अगर आपने एक भी शब्द कहा, तो वह आपकी आत्मा को पकड़ लेगा और अगली रात आकर आपको मार डालेगा। जल्दी करो! अगर आप बच निकले, तो आप अपने भाग्य को धन्यवाद देंगे, जैसा कि कहावत है। कुछ भी हो, उसे नज़रअंदाज़ करो।”

आदरणीय बुजुर्ग के पास आज्ञा मानने और अपने घोड़े को चाबुक मारने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। "पता नहीं वो दुष्ट राक्षस कहाँ है," बंदर ने सोचा। "वो बस चिल्लाता ही जा रहा है। मुझे उसे और गुरु को अलग रखने के लिए पृथक्करण जादू का प्रयोग करना होगा।" तब महान ऋषि ने भिक्षु सैंड को अपने पास बुलाया और कहा, "जब तक मैं पेशाब कर लेता हूँ, घोड़े को धीरे-धीरे आगे ले चलो।" बंदर को देखिए, कैसे वो तांग पुजारी को कुछ कदम आगे जाने देता है, पहाड़ों को हिलाने और ज़मीन को सिकोड़ने का मंत्र बोलता है, और अपनी लाठी से पीछे की ओर इशारा करता है। एक बार जब गुरु और शिष्य अध्याय 40 समाप्त कर लेते हैं

जिस चोटी पर वे इस राक्षस को पीछे छोड़ देते, वहीं वे पहुँच गए। फिर वह तांग पुजारी से मिलने और पहाड़ पर आगे बढ़ने के लिए जल्दी से आगे बढ़ा। लेकिन तभी संज़ंग ने पहाड़ के दूसरी ओर से "मदद!" की एक और पुकार सुनी।

“शिष्य,” उसने कहा, “वह बेचारा बहुत बदनसीब है कि हमसे नहीं मिल पाया। हम उससे आगे निकल चुके हैं। क्या तुम्हें पहाड़ के उस पार उसकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही?”

"अगर वह यहीं कहीं है तो वह इसी तरफ होगा," पिग ने कहा। "बस हवा का रुख बदल गया है।"

बंदर ने कहा, "हवा की दिशा बदली हो या न बदली हो, चिंता मत करो। चलते रहो।" इसके बाद वे सब चुप हो गए और सोचने लगे कि काश वे एक ही कदम में पहाड़ पार कर पाते।

कहानी फिर से उस दुष्ट आत्मा की ओर मुड़ती है, जिसकी तीन-चार चीखों का कोई जवाब नहीं मिला था। "मैं यहाँ तांग पुजारी का इंतज़ार कर रहा था," उसने सोचा, "और मैंने देखा कि वह लगभग एक मील दूर था। पता नहीं इतने समय बाद भी वह यहाँ क्यों नहीं आया। उसने ज़रूर कोई शॉर्टकट लिया होगा।" फिर उसने हिम्मत जुटाई, अपने बंधनों से मुक्त हुआ और एक बार फिर लाल प्रकाश में हवा में उड़ गया। उसे पता ही नहीं चला कि महान ऋषि ने उसकी ओर देखा, उसे दुष्ट आत्मा के रूप में पहचाना और तांग पुजारी को एक बार फिर घोड़े से पैर से धक्का देकर गिरा दिया। "भाइयों," बंदर ने कहा, "बहुत सावधान रहो। दुष्ट आत्मा वापस आ रही है।" फिर से

सुअर और साधु रेत ने तांग पुजारी के दोनों ओर खड़े होकर अपने रेक और लाठी से उसकी रक्षा की।

जब आत्मा ने हवा में यह सब देखा तो वह प्रशंसा से भर उठा: "कितने उत्तम भिक्षु हैं! मैंने घोड़े पर बैठे उस मोटे, गोरे चेहरे वाले को देखा था: बाकी तीनों ने उसे क्यों छिपा रखा है? मुझे और करीब से देखना होगा। तांग पुजारी को पकड़ने से पहले मुझे उस तेज नजर वाले से छुटकारा पाना होगा। अन्यथा मेरी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाएगी।"

मैंने इतनी मेहनत की, फिर भी सब व्यर्थ गया।"

एक बार फिर उसने बादल को नीचे उतारा, वही रूपान्तरण किया जो उसने पिछली बार किया था, और एक चीड़ के पेड़ की चोटी पर प्रतीक्षा करने लगा। इस बार वह उनसे कुछ सौ गज की दूरी पर था।

जब महान ऋषि सूर्य ने एक बार फिर ऊपर देखा और पाया कि लाल बादल छंट गया है, तो उन्होंने एक बार फिर गुरु से घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ने को कहा। "लेकिन आपने तो मुझे बताया था कि दुष्ट आत्मा वापस आ गई है," संजांग ने कहा, "तो आप मुझे आगे क्यों बढ़ाना चाहते हैं?"

“यह तो बस एक राहगीर था, और यह हमें नुकसान पहुंचाने की हिम्मत नहीं करेगा,” बंदर ने जवाब दिया। इस पर आदरणीय बुजुर्ग को गुस्सा आ गया।

"अरे बंदर! तुम मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश करते रहते हो। जब सचमुच में दुष्ट राक्षस होते हैं तो तुम कहते हो कि कोई समस्या नहीं है, लेकिन इस शांत और सुकून भरी जगह पर तुम बुरी आत्माओं के बारे में चिल्लाकर मुझे बुरी तरह डराते रहते हो। अगर मैं गिर जाऊं और मुझे चोट लग जाए तो मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूंगा। ये सरासर गलत है।"

“मुझसे नाराज़ मत होइए, स्वामी,” बंदर ने कहा। “अगर गिरने से आपके हाथ या पैर में चोट भी लग जाए तो उसका इलाज आसानी से हो सकता है। लेकिन अगर कोई बुरी आत्मा आपको पकड़ ले तो मुझे नहीं पता होगा कि आपको कहाँ ढूँढना है।” सान्ज़ांग, जो उस समय भयंकर क्रोध में था, साधु सैंड की विनतियों से ही बंधन कसने का मंत्र बोलने से रुका।

एक बार फिर वह अपने घोड़े पर सवार होकर अपनी यात्रा जारी रखने के लिए निकल पड़ा।

अध्याय 40

वह अभी घोड़े पर ठीक से बैठा भी नहीं था कि उसे "हे स्वामी, सहायता करो!" की एक और आवाज़ सुनाई दी। उसने ऊपर देखा तो एक छोटा लड़का पेड़ पर नग्न लटका हुआ था। घोड़े की लगाम खींचते हुए उसने बंदर को फिर से कोसना शुरू कर दिया: "तू नीच, बंदर। तुझमें ज़रा भी दया नहीं है। तू केवल दुष्टता और हत्या के बारे में सोचता है। मैंने तुझे बताया था कि यह एक इंसान की आवाज़ है, लेकिन तू बार-बार चिल्लाता रहा कि यह एक राक्षस है। क्या तुझे पेड़ पर लटका हुआ लड़का नहीं दिख रहा?" स्वामी के इतने गुस्से में होने के कारण बंदर ने चुपके से उसकी ओर देखा और उसके चेहरे के भाव समझ लिए। फिर उसने अपना सिर झुका लिया और कोई जवाब नहीं दिया, पहला तो इसलिए कि वह कुछ कर नहीं सकता था, और दूसरा इसलिए कि उसे डर था कि स्वामी जादू कर देगा।

जब तांग पुजारी पेड़ की तलहटी तक पहुँचे, तो उन्होंने अपने चाबुक से लड़के की ओर इशारा करते हुए पूछा, "तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? तुम वहाँ क्यों लटके हो? मुझे बताओ, मैं तुम्हें बचा लूँगा।" हे भगवान! वह सचमुच एक दुष्ट आत्मा था जो इस तरह दिख रहा था, लेकिन गुरु की आँखें तो नश्वर थीं, इसलिए वे उसकी असलियत नहीं देख पाए।

ये सवाल सुनकर दुष्ट आत्मा ने और भी ज्यादा नाटक करना शुरू कर दिया। "गुरुजी," उसने रोते हुए पुकारा।

मैं पहाड़ के पश्चिम में स्थित विथर्ड पाइन रैविन के पास एक गाँव में रहता हूँ। मेरे दादाजी को करोड़पति हांग के नाम से जाना जाता था क्योंकि उनके पास बहुत धन था। उनका बहुत समय पहले निधन हो गया और उन्होंने अपनी सारी संपत्ति मेरे पिता के नाम कर दी। आजकल हम पैसे फिजूलखर्ची में उड़ाते हैं और अब हम उतने अमीर नहीं रहे। इसीलिए मेरे पिता को लाख हांग कहा जाता है। उन्हें बस बड़े-बड़े लोगों से दोस्ती करना और अपना सोना-चांदी ब्याज पर उधार देना पसंद है। लेकिन वे बदमाश थे जिन्होंने उनका सारा धन हड़प लिया और उन्हें मूलधन और ब्याज दोनों का नुकसान हुआ। मेरे पिता ने कसम खाई कि वे कभी एक पैसा भी उधार नहीं देंगे। फिर उनसे उधार लेने वाले लोग गरीबी से इतने बेबस हो गए कि उन्होंने एक गिरोह बना लिया। उन्होंने दिन दहाड़े हम पर आग और हथियारों से हमला किया, हमारा सारा सामान लूट

लिया और मेरे पिता की हत्या कर दी। मेरी माँ बहुत सुंदर थीं, इसलिए वे उन्हें डाकुओं के सरदार की रखैल बनाने के लिए ले गए। वह मुझे पीछे नहीं छोड़ सकीं, इसलिए उन्होंने मुझे अपने कपड़ों में छिपा लिया और रोते-कांपते हुए डाकुओं के साथ चली गईं। जब वे इस पहाड़ पर पहुँचे तो डाकू... मुझे मार डालो। मेरी माँ की बेताब विनतियों के कारण ही उन्होंने मुझे तलवार से बख्शा। इसके बजाय उन्होंने मुझे इस पेड़ से बाँध दिया ताकि मैं ठंड और भूख से मर जाऊँ। मुझे नहीं पता कि डाकू मेरी माँ को कहाँ ले गए हैं। मैं तीन दिन और तीन रात से यहाँ लटका हुआ हूँ, और आप पहले लोग हैं जो यहाँ से गुज़रे हैं। हे स्वामी, इस जन्म में आपसे मिलने का अवसर मिला है, अवश्य ही मैंने पिछले जन्म में पुण्य कर्म किए होंगे। यदि आप अपनी अपार दया से मुझे बचाकर घर ले जाएँ, तो मैं आपको ऋण देने के लिए खुशी-खुशी गुलामी में खुद को बेच दूँगा। दफ़न होने के बाद भी मैं आपके द्वारा मेरे लिए किए गए कार्य को नहीं भूलूँगा।

इन सब बातों को सच मानकर, संजांग ने सुअर को रस्सियाँ खोलने और लड़के को नीचे उतारने का आदेश दिया। वह मूर्ख, यह जाने बिना कि वह कौन है, बस ऐसा करने ही वाला था। यह मंकी के बर्दाश्त से बाहर था।

“अरे, शैतान! यहाँ कोई है जो देख सकता है कि तुम क्या हो। ये सब बकवास बंद करो और हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश करना छोड़ दो। अगर तुम्हारे परिवार का सारा सामान चोरी हो गया है, तुम्हारे पिता की हत्या कर दी गई है और तुम्हारी माँ का अपहरण कर लिया गया है, तो तुम्हें छुड़ाने के बाद हम तुम्हें किसके हवाले करेंगे? तुम हमें क्या इनाम दोगे? ये सब बेतुका है। ये सब झूठ का पुलिंदा है।”

इससे दुष्ट आत्मा भयभीत हो गई, क्योंकि उसे अब एहसास हो गया था कि बंदर एक सक्षम प्रतिद्वंद्वी है और उस पर नज़र रख रहा है। इसलिए वह कांपते हुए और रोते हुए बोला, "यद्यपि मैंने अपने माता-पिता और अपने परिवार की सारी संपत्ति खो दी है, फिर भी मेरे पास हमारी सारी ज़मीन और मेरे अन्य रिश्तेदार हैं।"

"कैसे रिश्ते?" बंदर ने पूछा।

दुष्ट आत्मा ने उत्तर दिया, “मेरे दूसरे दादाजी पहाड़ के दक्षिण में रहते हैं, और मेरी चाची का घर पहाड़ी की चोटी के उत्तर में है। घाटी के शीर्ष पर रहने वाले ली चतुर्थ का विवाह मेरी चाची से हुआ है, और जंगल में रहने वाले हांग तृतीय मेरे दूर के चाचा हैं। मेरे कुछ चचेरे भाई-बहन भी गाँव के आसपास रहते हैं। यदि पूज्य गुरुजी मुझे बचाकर

गाँव और मेरे रिश्तेदारों के पास वापस ले जाएँगे, तो मैं उन्हें पूज्य गुरुजी की कृपा के बारे में सब कुछ बताऊँगा। मैं कुछ ज़मीन गिरवी रखूँगा या बेच दूँगा, और आपको भरपूर इनाम दूँगा।"

इस पर सूअर ने बंदर का रास्ता रोकते हुए कहा, "भाई, तुम एक छोटे लड़के से इस तरह पूछताछ नहीं कर सकते। उसने तुम्हें बताया कि डाकुओं ने केवल उसका चल सामान लूटा है—वे उसके घर और ज़मीन कैसे ले जा सकते हैं? अगर उसने अपने रिश्तेदारों को सब कुछ बता दिया, तो हम चाहे कितनी भी भूख क्यों न हो, ज़्यादा से ज़्यादा डेढ़ एकड़ ज़मीन ही खा पाएंगे। चलो उसे बचाते हैं।" उस मूर्ख के दिमाग में बस अपने पेट की ही चिंता थी। उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी कि वह सही कर रहा है या नहीं, और उसने अपनी साधु की छुरी से रस्सियाँ काट दीं और राक्षस को पेड़ से नीचे उतार दिया।

तब वह राक्षस तांग पुजारी के घोड़े के सामने गिड़गिड़ाने और खूब रोने लगा। दयालु पुजारी ने कहा, "घोड़े पर चढ़ जाओ, मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा।"

“गुरुजी,” लड़के ने कहा, “इतनी देर तक लटके रहने से मेरे हाथ-पैर सुन्न हो गए हैं और मेरी पीठ में भी दर्द हो रहा है। वैसे भी, हम गाँव वालों को घुड़सवारी नहीं आती।” तब तांग पुजारी ने सुअर को दुष्ट आत्मा को उठाने के लिए कहा। दुष्ट आत्मा ने सुअर पर एक नज़र डाली और बोली, “गुरुजी, ठंड से जमने के कारण मेरी त्वचा इतनी कोमल हो गई है कि मैं इस सज्जन को मुझे ले जाते हुए बर्दाश्त नहीं कर सकती। उनकी लंबी थूथन, बड़े कान और सिर के पीछे के बाल मुझे बुरी तरह चुभेंगे।”

तांग पुरोहित ने कहा, "सांड भिक्षु, आप उसे ले जाइए।"

फिर लड़के ने साधु सैंड की ओर एक नज़र डाली और कहा, "गुरुजी, जब डाकुओं ने हमारे घर पर हमला किया तो मैं बुरी तरह डर गया था। वे सब अभिनेताओं की तरह सजे-धजे थे, नकली दाढ़ी लगाए हुए थे और लाठी-तलवार लिए हुए थे। उस भयानक दिखने वाले साधु को देखकर मेरी जान निकल जाती है। मैं उन्हें मुझे उठाने की हिम्मत नहीं करने दूंगा।" तब तांग पुजारी ने बंदर को लड़के को उठाने के लिए कहा, जिस पर

बंदर हँसते हुए मान गया। राक्षस ने अपनी खुशी छुपाई और चुपचाप बंदर को उसे उठाने दिया। बंदर उसे रास्ते के किनारे खींच लाया और उसका वजन नापा।
लड़का लगभग तीन पौंड दस औंस का था। "तुम्हें धिक्कार है, शैतान," बंदर ने कहा, "आज ही मरना। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझ पर चाल चलने की! मैं जानता हूँ कि तुम उन्हीं में से एक हो।"
“मैं एक अच्छे परिवार का बेटा हूँ, जिसे दुर्भाग्यवश विपत्ति का सामना करना पड़ा है,” राक्षस ने विरोध करते हुए कहा। “मुझे ‘उनमें से एक’ कहकर तुम्हारा क्या मतलब है?”
"अगर तुम अच्छे परिवार के बेटे हो," बंदर ने कहा, "तो तुम्हारी हड्डियाँ इतनी हल्की क्यों हैं?"
"मेरी हड्डियाँ बहुत छोटी हैं," राक्षस ने कहा।
"तुम्हारी उम्र कितनी है?" बंदर ने पूछा।
"इस साल छह," राक्षस ने उत्तर दिया।
बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हें अभी भी हर साल कम से कम एक पाउंड वजन बढ़ाना चाहिए। तुम्हारा वजन कम से कम छह पाउंड होना चाहिए: तुम चार पाउंड से भी कम क्यों हो?"
"बचपन में मुझे स्तनपान नहीं कराया गया था," राक्षस ने कहा।
“ठीक है,” बंदर ने कहा, “मैं तुम्हें ले चलूँगा। लेकिन ध्यान रखना, अगर तुम्हें पेशाब या शौच करने की ज़रूरत हो तो मुझे बता देना।” इसके बाद संज़ांग, सुअर और साधु सैंड के साथ आगे बढ़ गया, जबकि बंदर राक्षस को अपनी पीठ पर लादकर पीछे-पीछे चलने लगा।
वे पश्चिम की ओर बढ़ते रहे, जैसा कि यह कविता सिद्ध करती है:
घोर भयावह खतरे उच्च सद्गुणों का सामना करते हैं;
ध्यान की शांति से बुरी आत्माओं का जन्म होता है।
अध्याय 40
561
पश्चिम की यात्रा
जब हृदय का स्वामी सच्चा होता है और मध्य मार्ग अपनाता है,
वुड की मां मूर्खतापूर्ण तरीके से गलत रास्ते पर चल पड़ती है।

विचार-घोड़ा चुपचाप इच्छाओं को पालता है,
पीली पत्नी बिना कुछ कहे चिंता और शोक व्यक्त करती है।
जब अजनबी समृद्ध होता है तो वह व्यर्थ ही आनंद मनाता है;
ठीक इसी स्थान से व्यक्ति को गायब होना पड़ता है।

महान ऋषि बंदर दुष्ट आत्मा को ढोते हुए तांग पुजारी के प्रति बहुत क्रोधित था क्योंकि वह उसकी कठिनाई को नहीं समझ पा रहा था। "इन ऊँचे पहाड़ों को खाली हाथ पार करना ही काफी बुरा होता, ऊपर से वह मुझे किसी और को भी ढोने के लिए मजबूर कर रहा है। भले ही यह दुष्ट आत्मा अच्छी हो और दुष्ट आत्मा न हो, इसने अपने माता-पिता को खो दिया है और मुझे नहीं पता कि मैं इसे किसके पास ले जाऊँ। सबसे अच्छा यही होगा कि इसे ज़मीन पर पटक कर खत्म कर दूँ।"

राक्षस को पता था कि बंदर क्या सोच रहा है, इसलिए उसने चारों ओर से चार गहरी सांसें लीं और फिर उन्हें बंदर की पीठ पर छोड़ दिया, जिससे बंदर को लगा कि उसका वजन एक हजार पाउंड हो गया है।

“मेरे बच्चे, तुम मुझे भारी बनाने के लिए अतिरिक्त भार का जादू इस्तेमाल कर रहे हो,” बंदर हँसते हुए बोला। इससे राक्षस डर गया कि बंदर उसे मार डालेगा, इसलिए उसने अपनी आत्मा शरीर से निकाल ली और बादलों की नौवीं परत में उछल गया। अब जब बंदर को अपनी पीठ पर बोझ और भी भारी लगने लगा, तो उसने लड़के को पकड़ा और रास्ते के किनारे एक चट्टान पर इतनी ज़ोर से पटका कि लड़के का शरीर कीमा बनाया हुआ सूअर के मांस जैसा हो गया। फिर, यह सुनिश्चित करने के लिए कि लड़का आगे कोई परेशानी न खड़ी करे, बंदर ने उसके चारों हाथ-पैर फाड़ दिए और उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर रास्ते के दोनों ओर बिखेर दिया।

यह देखकर, हवा में मंडरा रहा राक्षस अपना क्रोध रोक नहीं पाया। उसने कहा, "यह भिक्षु तो बिल्कुल दुष्ट है। मैं भले ही दुष्ट आत्मा हूँ जो तुम्हारे गुरु को मारना चाहती है, पर अभी तक मैंने उसे पकड़ा नहीं है। तुमने मुझे इतनी बेरहमी से कैसे मार डाला? अगर मैंने पहले से ही अपनी आत्मा को बाहर न निकाला होता, तो तुम मुझे बेरहमी से मार डालते। मैं अभी यहीं तांग पुजारी को पकड़ने जा रहा हूँ। अगर मैंने और देर की, तो वह बहुत चालाक हो जाएगा।"

उस भयानक दुष्ट आत्मा ने फिर आकाश में एक भयंकर बवंडर उत्पन्न कर दिया। वह इतना भयानक था कि पत्थर और धूल उड़ने लगे। क्या ही शानदार हवा थी!

तेज गति से आती गेंदों के बवंडर ने बादलों और पानी के ऊपर दुर्गंध फैला दी;
सूर्य और चंद्रमा उस काले आवरण से ढक गए थे।
पहाड़ी की चोटी पर लगे पेड़ जल्द ही जड़ से उखड़ गए;
फूल वाले बेर के पेड़ तनों समेत चपटे हो गए थे।
अध्याय 40
562
पश्चिम की यात्रा
रेत से आंखों में अंधापन आ जाने के कारण यात्री मुश्किल से ही चल पा रहे थे;
रास्ते में जगह-जगह चट्टानें गिरकर रास्ता रोक रही थीं।
इसके घूमते हुए पिंड के कारण पूरी पृथ्वी अंधेरी प्रतीत हो रही थी;
पर्वतीय जीव सदमे से चीखने-चिल्लाने लगे।
हवा इतनी तेज़ थी कि संज़ंग मुश्किल से अपने घोड़े पर टिक पा रहा था, पिग सीधे आगे नहीं देख पा रहा था, और साधु सैंड को झुककर अपना चेहरा ढकना पड़ा। यह समझकर कि यह शैतानी हवा है, महान ऋषि उन्हें पकड़ने के लिए तेज़ी से आगे बढ़े, लेकिन राक्षस पहले ही तांग पुजारी को अपनी हवा में उठा ले गया था। संज़ंग का कोई निशान नहीं मिला। कोई नहीं बता सकता था कि उसे कहाँ ले जाया गया है या उसकी तलाश कहाँ से शुरू की जाए।
कुछ ही देर में हवा थम गई और सूरज फिर से चमकने लगा। बंदर ऊपर गया और देखा कि सफेद अजगर घोड़ा कांप रहा था और हिनहिना रहा था। सामान रास्ते में बिखरा पड़ा था, सुअर एक चट्टान के नीचे छिपकर सिसक रहा था, और साधु सैंड पहाड़ की ढलान पर बैठकर जोर-जोर से चिल्ला रहा था।
"सूअर!" बंदर चिल्लाया, और उसकी आवाज पहचानकर उस मूर्ख ने ऊपर देखा तो पाया कि तूफान थम चुका था।
वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ, बंदर को पकड़ लिया और बोला, "कितनी तेज़ हवा है!"
फ्रायर सैंड भी आगे आए और बोले, "भाई, वो तो एक भयंकर बवंडर था। लेकिन उसका मालिक कहाँ है?"
"हवा इतनी तेज़ चल रही थी," पिग ने कहा, "कि हम सबको अपने सिर छुपाने पड़े, आँखें बंद करनी पड़ीं और पनाह लेनी पड़ी। मालिक घोड़े की पीठ पर लेट गया।"
"लेकिन अब वह कहाँ चला गया?" बंदर ने पूछा।

"वह हवा के झोंके से ऐसे उड़ गया होगा जैसे वह सरकंडों का बना हो," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया।
"खैर, भाइयों, हमें यहीं और अभी अलग हो जाना चाहिए," बंदर ने कहा।
"हाँ," सुअर ने कहा, "जितनी जल्दी हो उतना अच्छा। अगर हम सब अपने-अपने रास्ते चले जाएँ तो बहुत अच्छा होगा। पश्चिमी स्वर्ग की यह यात्रा अंतहीन है। हम कभी वहाँ नहीं पहुँच पाएँगे।" उनकी यह बात सुनकर साधु सैंड काँप उठा और सुन्न पड़ गया।
“भाइयों, ये कितनी बुरी बातें हैं,” उन्होंने कहा। “हम सबने अपने पिछले जन्मों में अपराध किए थे और बोधिसत्व गुआनयिन ने हमें प्रतिज्ञाएँ दिलाकर और बौद्ध नाम देकर हमारा धर्म परिवर्तन कराया था। हम सबने बौद्ध धर्म अपनाया और बुद्ध की उपासना करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिम की यात्रा पर निकले तांग पुरोहित की रक्षा करने का स्वेच्छा से दायित्व ग्रहण किया। इसी तरह हम अपने अपराधों का प्रायश्चित करेंगे। अगर हम यहीं हार मानकर अलग-अलग रास्ते जाने की बात करेंगे तो हम बोधिसत्व द्वारा सुझाए गए अच्छे कर्म करने में असफल हो जाएँगे और अपना अपमान करेंगे। लोग हमारा उपहास उड़ाएँगे और कहेंगे कि हम दृढ़ नहीं रह सकते।”
“तुम सही कह रहे हो, भाई,” बंदर ने कहा। “लेकिन स्वामी ने आदेश का पालन क्यों नहीं किया? मेरी प्रचंड आँखें और सुनहरी पुतलियाँ अच्छे और बुरे में अंतर कर सकती हैं। अभी जो बवंडर आया, वह पेड़ पर लटके उस लड़के के कारण था। मैं देख सकता था कि वह एक दुष्ट आत्मा थी, लेकिन न तो तुम और न ही स्वामी देख सके। उन्होंने सोचा कि लड़का एक अच्छे परिवार का बेटा है और मुझे उसे उठाने के लिए कहा। ठीक जब मैंने उससे छुटकारा पाने का फैसला किया, तभी उसने अपने जादू से अध्याय 40 बना दिया।”

वह खुद मुझसे भारी था और मुझे भी नीचे खींच रहा था, इसलिए मैंने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। मुझे लगता है कि उसने अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करके अपने शरीर से बाहर निकलकर बवंडर खड़ा किया होगा और मालिक को उड़ा ले गया होगा। काश मालिक ने मेरी सलाह को हमेशा नज़रअंदाज़ न किया होता। इसीलिए मैं इतना निराश था और मैंने कहा था कि हमें अलग हो जाना चाहिए। भाई, मैं तुम्हारी सच्ची सलाह मानता हूँ, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। तुम्हारा क्या सुझाव है,

सुअर?
"मैंने अभी जो कहा वो सब बकवास था," पिग ने कहा। "मैं बिना सोचे-समझे बोल रहा था। ज़ाहिर है हमें अलग नहीं होना चाहिए। भाई, हमें वही करना होगा जो फ्रायर सैंड ने कहा है, राक्षस को ढूंढना होगा और अपने मालिक को बचाना होगा।"
"जी भाई," बंदर ने प्रसन्नता से कहा, उसका क्रोध अब शांत हो चुका था, "चलो हम सब मिलकर काम करें। सामान और घोड़े को तैयार करो, और हम पहाड़ पर चढ़कर राक्षस को ढूंढेंगे और अपने स्वामी को बचाएंगे।"
तीनों लताओं की सहायता से पहाड़ की ढलान पर चढ़े और घाटियों को पार किया, लगभग बीस मील का सफर तय किया लेकिन उन्हें राक्षस का कोई सुराग नहीं मिला। पहाड़ पर न तो कोई पक्षी था और न ही कोई जानवर, लेकिन वहाँ कई ऊँचे-ऊँचे चीड़ के पेड़ थे। अब बंदर सचमुच बहुत चिंतित हो गया था, इसलिए वह एक चट्टानी चोटी पर उछल पड़ा, चिल्लाया, "बदलो!" और अपने तीन सिर और छह हाथ उगा लिए, जिससे वह बिल्कुल वैसा ही दिखने लगा जैसा वह स्वर्ग में तबाही मचाते समय दिखता था। फिर उसने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी को हिलाया जिससे उसकी भी तीन भुजाएँ हो गईं।
वह जोर-जोर से मारते-पीटते हुए पूरब और पश्चिम की ओर बेतहाशा दौड़ा और दोनों दिशाओं में रास्ते साफ करता चला गया।
"यह तो बहुत बुरा हुआ, भाई," पिग ने फ्रायर सैंड से कहा। "बंदर इस तरह कभी अपने मालिक को नहीं ढूंढ पाएगा—वह तो बस बहुत गुस्से में है।"
बंदर के उछल-कूद करने से फटे-पुराने कपड़ों में लिपटे, अधमरे स्थानीय देवताओं की भीड़ उमड़ पड़ी, जिनके पतलून में न तो सीट थी और न ही टांगें। वे सब पहाड़ की ढलान पर घुटने टेककर बैठ गए और बोले, "हे महान ऋषि, हम पर्वतीय देवता और स्थानीय देवता आपको प्रणाम करते हैं।"
"तुम इतने सारे क्यों हो?" बंदर ने पूछा।
“महामहिम,” उन्होंने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया, “इस पर्वत को हाओ पर्वत के नाम से जाना जाता है। यह दो सौ मील लंबा है। चूंकि प्रत्येक तीन मील पर एक पर्वतीय देवता और एक स्थानीय देवता विराजमान हैं, इस प्रकार तीस पर्वतीय देवता और तीस स्थानीय देवता हैं। हमने कल सुना था कि आप आ रहे हैं, महामहिम, लेकिन हम सभी समय पर एकत्रित नहीं हो सके, इसलिए आपको प्रणाम करने में देर हो गई। इसी

कारण महामहिम क्रोधित हैं। हम उनसे क्षमा मांगते हैं।"
बंदर ने कहा, "मैं तुम्हें इस बार छोड़ देता हूँ, लेकिन मुझे तुमसे एक सवाल पूछना है: इस पहाड़ पर कितनी बुरी आत्माएँ हैं?"
“हे स्वामी, केवल एक ही है,” उन्होंने उत्तर दिया, “पर उसने तो हमें बिल्कुल कंगाल कर दिया है। अब तो हमें मुश्किल से ही धूप या कागज की भेंट चढ़ाई जाती है, और न ही भोजन, न ही रक्त। हमें भूखा और नंगा रहना पड़ता है। हम भला कितने दुष्ट आत्माओं का भरण-पोषण कर सकते हैं?”
"वह पहाड़ के किस तरफ रहता है?" बंदर ने पूछा।
“दोनों में से कोई नहीं,” उन्होंने कहा। “पहाड़ के बीचोंबीच एक खाई है जिसे मुरझाए चीड़ की खाई कहते हैं, और उसके बगल में एक गुफा है जिसे अग्नि-बादल गुफा कहते हैं। उस गुफा में एक दानव राजा रहता है जिसके पास अपार जादुई शक्तियां हैं। वह हमेशा हम पर्वतीय देवताओं और स्थानीय देवताओं को पकड़ लेता है ताकि हम उसकी रसोई की आग जलाएं और उसके दरवाजे की रखवाली करें, या फिर हमें घंटियां ढोने और रात में उसके लिए रास्ता साफ करने के लिए चिल्लाने का काम सौंप दें। और ये छोटे शैतान हमसे नियमित भुगतान की भी उम्मीद करते हैं।”
"आप सब आत्माओं की दुनिया के देवता हैं, तो आपको पैसा कहां से मिलेगा?" बंदर ने पूछा।

देवताओं ने उत्तर दिया, "हमारे पास कुछ नहीं है। हमें सुबह-शाम सभी आत्माओं को इकट्ठा करके कुछ हिरणों को पकड़ना पड़ता है, और अगर हमारे पास चढ़ाने के लिए कुछ नहीं होगा, तो वे आकर हमारे मंदिरों को तोड़ देंगे और हमारे कपड़े उतार लेंगे।"
उसने हमारी जिंदगी नामुमकिन कर दी है। हम आपसे विनती करते हैं कि हमें इस राक्षस से छुटकारा दिलाएं और इन पहाड़ों की सभी आत्माओं को बचाएं।
"चूंकि वह तुम्हें नियंत्रित करता है और तुम हमेशा उसकी गुफा में जाते हो, इसलिए तुम्हें यह जानना होगा कि वह कहां से है और उसका नाम क्या है," भाई बंदर ने कहा।
“जब हम आपको यह बताएंगे तो हमें पूरा विश्वास है कि आपने उनके बारे में सुना होगा, हे महान ऋषि,” उन्होंने उत्तर दिया। “वे बैल दानव राजा और राक्षसी के पुत्र हैं।

उन्होंने अग्नि पर्वतों में तीन सौ वर्षों तक साधना की और सच्ची समाधि अग्नि प्राप्त की। उनकी शक्तियाँ अपार हैं। बैल दानव राजा ने उन्हें इस पर्वत की रक्षा के लिए यहाँ भेजा है। उनका नाम लाल बालक है और उनकी उपाधि बालक ऋषि राजा है।"
यह बंदर के लिए अच्छी खबर थी, जिसने स्थानीय देवताओं और पर्वतीय देवताओं को त्याग दिया, अपना असली रूप धारण किया और चोटी से नीचे कूद गया। उसने सुअर और साधु रेत से कहा, "चिंता मत करो, भाइयों, अब और परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। स्वामी को मारा नहीं जाएगा। वह दुष्ट आत्मा मेरा रिश्तेदार है।"
"झूठ बोलना बंद करो, भाई," सुअर ने कहा। "यह मवेशियों का पश्चिमी महाद्वीप है, और तुम श्रेष्ठ शरीर के पूर्वी महाद्वीप से आए हो। ये दोनों महाद्वीप बहुत दूर हैं, इनके बीच हजारों पहाड़ और नदियाँ हैं, और दो-चार महासागर भी हैं। तो भला वह तुम्हारा रिश्तेदार कैसे हो सकता है?"
"अभी जो भीड़ जमा हुई थी, वो यहाँ के स्थानीय देवता और पर्वतीय देवता थे। जब मैंने उनसे उस दानव के बारे में कुछ जानकारी माँगी, तो उन्होंने बताया कि वह लाल बालक है, जो बैल दानव राजा और राक्षसी का पुत्र है, और उसे बालक ऋषि राजा के नाम से भी जाना जाता है। जब मैंने पाँच सौ वर्ष पूर्व स्वर्ग में उत्पात मचाया था, तब मैंने दुनिया के सभी प्रसिद्ध पर्वतों और प्रतिष्ठित लोगों का दौरा किया था। बैल दानव राजा ने मुझे अपना सातवाँ शपथ लिया हुआ छोटा भाई मान लिया था। कुल मिलाकर छह दानव राजा थे, और बैल दानव राजा को अपना बड़ा भाई कहने का एकमात्र कारण यह था कि मैं उनसे थोड़ा छोटा था। इसलिए, क्योंकि यह दानव बैल दानव राजा का पुत्र है और मैं उसके पिता को जानता हूँ, मैं उसका चाचा हूँ। इसका मतलब है कि वह मेरे स्वामी को किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचा सकता। मुझे अब तुरंत जाना होगा।"
"लेकिन भाई," सुअर हंसते हुए बोला, "तीन साल तक मुलाकात न करने पर रिश्तेदार, रिश्तेदार नहीं रह जाते, जैसा कि कहावत है। तुमने उसे पांच-छह सौ साल से नहीं देखा है। तुमने उसके साथ एक बार भी शराब नहीं पी है और न ही उसे छुट्टियों में अपने घर बुलाया है। अब तो वो तुम्हें रिश्तेदार समझेगा ही नहीं।"
“लोगों को आंकने का यह कैसा तरीका है,” भाई बंदर ने कहा। “एक और कहावत है, हर घास का टुकड़ा बहकर समुद्र में चला जाता है;
लोग हमेशा कहीं न कहीं एक दूसरे से मिलेंगे।

भले ही वह अब मुझे रिश्तेदार न समझे, फिर भी वह गुरु को कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा। मैं उससे शानदार दावत की उम्मीद तो नहीं करता, लेकिन वह मुझे तांग पुजारी को सही सलामत वापस जरूर लौटा देगा।" तीनों शिष्य भाई एक बार फिर धार्मिक विचारों में लीन होकर सामान से लदे सफेद घोड़े को लेकर रास्ते पर चल पड़े। दिन हो या रात, इसकी परवाह किए बिना वे लगभग चालीस मील का सफर तय कर चुके थे, तभी उन्हें चीड़ का जंगल दिखाई दिया, जिसमें से एक धारा घुमावदार घाटी से होकर बह रही थी। पानी हरा और शुद्ध था, और अध्याय 40 के शीर्ष पर

खाई में एक पत्थर का पुल था जो एक गुफा की ओर जाता था। बंदर ने कहा, "भाई, मुझे यकीन है कि वह दुष्ट आत्मा उस चट्टान में ही रहती होगी। चलो एक युद्ध सभा करते हैं और तय करते हैं कि सामान और घोड़े की देखभाल कौन करेगा और कौन मेरे साथ उस राक्षस को वश में करने चलेगा।"

"भाई," सुअर ने कहा, "मुझे इधर-उधर घूमना पसंद नहीं है। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।"

“ठीक है,” बंदर ने कहा और आगे बोला, “फ्रायर सैंड, घोड़े और सामान को जंगल में गहराई में छिपा दो और उनकी सावधानीपूर्वक रखवाली करो, जबकि हम दोनों मालिक को ढूंढने के लिए वहाँ जाते हैं।” फ्रायर सैंड ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था, जबकि बंदर और सुअर पूरी तरह से हथियारों से लैस होकर गुफा की ओर चल दिए। वास्तव में:

एक नपुंसक बच्चे की प्रचंड आग विजयी हुई;

माइंड-एप और मदर ऑफ वुड दोनों ने मदद की।

अगर आपको नहीं पता कि परिणाम अच्छा हुआ या बुरा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 41

मन-बंदर आग से पराजित हुआ

लकड़ी की देवी को एक दानव ने बंदी बना लिया है।

अच्छाई और बुराई को जल्दी भुला दिया जाता है।

फूल खिलने और मुरझाने की कोई चिंता नहीं है।

जब बोध आंशिक रूप से प्रकट होता है तो वह या तो सफल हो सकता है या

असफल;
भाग्य का अनुसरण करो और जब भोजन और पेय पदार्थ मिलें तो उन्हें ग्रहण कर लो।
दिव्य शांति स्थिर और एकांत में ही मिलती है;
मूर्खता शैतानी हमलों के लिए खुली रहती है।
पंच तत्व चिंतन के जंगलों को ध्वस्त कर देते हैं;
जब हवा चलती है तो ठंड लगना तय है।
कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि बंदर ने साधु सैंड से विदा ली और सुअर को अपने साथ लेकर मुरझाए हुए चीड़ के नाले को पार किया और सीधे राक्षस की चट्टान की ओर चल पड़ा। वहाँ सचमुच एक गुफा थी, और वह कोई साधारण दृश्य नहीं था।
अध्याय 41
566
पश्चिम की यात्रा
रहस्यमय सन्नाटे में अपने पुराने रास्ते से लौटते समय,
हवा और चांदनी में सारस की आवाज सुनाई देती है।
सफेद बादल नदी को प्रकाश से नहला रहे हैं;
पुल के नीचे का पानी अमर लोगों की याद दिलाता है।
विदेशी पौधों के बीच बंदर और पक्षी चिल्लाते हैं;
लताएं सीढ़ियों को ढक लेती हैं; जादुई मशरूम खूब फलते-फूलते हैं।
धुंध छंटने पर चट्टानों के बीच गहरा हरा रंग तैरता हुआ दिखाई देता है;
जब एक फीनिक्स पक्षी पेड़ पर बैठता है तो फ़िरोज़ी रंग चीड़ के पेड़ों को छूता है।
दूर स्थित पर्वत श्रृंखला बिल्कुल एक स्क्रीन की तरह दिखती है;
पर्वत की घाटियों में एक अमर की गुफा का निर्माण हुआ है।
कुनलुन पर्वत श्रृंखला की इस शाखा में ड्रैगन जन्म लेते हैं;
केवल उन्हीं लोगों को इस सुंदरता का आनंद उठाने का अवसर मिलता है, जिनके भाग्य में ऐसा लिखा होता है।
जैसे ही वे द्वार के पास पहुँचे, उन्होंने एक पत्थर की पट्टिका देखी जिस पर बड़े अक्षरों में खुदा हुआ था, अग्नि-वायु गुफा, सूखे चीड़ की घाटी, हाओ पर्वत। दूसरी ओर, छोटे राक्षसों का एक समूह तलवार और भाले से लड़ रहा था, हवा में उछल-कूद कर रहा था और खूब मौज-मस्ती कर रहा था। बंदर ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "छोटे बच्चों,

अपने शासक से तुरंत कह दो कि अगर वह मेरे गुरु तांग पुजारी को बाहर लाता है, तो मैं तुम सबकी जान बख्श दूँगा, लेकिन अगर उसने ज़रा सा भी 'ना' कहा, तो मैं तुम्हारे पर्वत को उलट दूँगा और तुम्हारी गुफा को कुचल दूँगा।" यह सुनकर, सभी छोटे राक्षस गुफा में वापस भाग गए, दरवाज़े बंद कर लिए और अंदर जाकर बोले, "महाराज, मुसीबत आ गई है।"

राक्षस संज़ंग को गुफा में ले गया, उसके कपड़े उतार दिए, उसके हाथ-पैर बांध दिए और छोटे शैतानों को साफ पानी लाने के लिए भेजा ताकि उसे धोया जा सके। वह संज़ंग को पकाने के लिए एक गर्म तवे पर रखने वाला था, लेकिन जब शोर मच गया तो वह संज़ंग को धोना भूल गया, मुख्य हॉल में भागा और पूछा, "क्या मुसीबत है?"

"एक भिक्षु है जिसका चेहरा इतना बदसूरत है जैसे कोई गर्जन देवता हो। उसके साथ एक और भिक्षु है जिसकी लंबी थूथन और बड़े कान हैं। वह अपने गुरु को, जिसे तांग पुजारी या कुछ और कहा जाता है, को अपने पास बुला रहा है और कहता है कि अगर उसने जरा सा भी 'ना' कहा तो वह पहाड़ को उल्टा कर देगा और गुफा को कुचल देगा।"

“ये तो नौसिखिए सूर्य और सुअर ही होंगे,” दानव राजा ने क्रूरता से हंसते हुए कहा। “ये अपने स्वामी को ढूंढते हुए ही आए होंगे। लेकिन मैं इनके स्वामी को पहाड़ों के बीच से पचास मील दूर यहाँ तक लाया हूँ। ये यहाँ कैसे पहुँच गए?” फिर उस राक्षस ने अपने गाड़ीवानों को गाड़ियाँ बाहर धकेलने का आदेश दिया, और उन छोटे शैतानों ने ऐसा ही किया, जिससे सामने के द्वार खुल गए।

अध्याय 41

जब सुअर ने उन्हें देखा तो उसने कहा, "भाई, मुझे लगता है कि वे हमसे इतने डरे हुए हैं कि वे अपनी गाड़ियां बाहर निकाल लाए हैं और अब यहां से जाने वाले हैं।"

"नहीं," बंदर ने कहा। "देखो—वे उन्हें वहीं छोड़ रहे हैं।" नन्हे शैतानों ने गाड़ियों को पंच तत्वों—धातु, लकड़ी, जल, अग्नि और पृथ्वी—के क्रम में लगाया, उनकी जाँच की और रिपोर्ट देने के लिए वापस अंदर चले गए।

"तैयार हो?" दानव राजा ने पूछा।

"तैयार," उन्होंने जवाब दिया।

“मेरा भाला लाओ,” राक्षस राजा ने कहा, और शस्त्रागार से दो छोटे शैतान अठारह फुट लंबा, आग की नोक वाला भाला लेकर आए और उसे अपने राजा को सौंप दिया। राजा ने भाले से कुछ वार करके देखे। उसने न तो हेलमेट पहना था और न ही कवच, बस कमर पर कढ़ाईदार ब्रोकेड की एक युद्ध-कोट थी, और वह नंगे पैर द्वार से बाहर निकल गया। जब बंदर और सूअर ने ऊपर उसकी ओर देखा, तो उन्होंने पाया कि राक्षस के पास:

चेहरा इतना पीला पड़ गया था मानो उस पर पाउडर लगाया गया हो।

होंठ लिपस्टिक की तरह लाल।

बालों के दो गुच्छे नीले रंग से भी गहरे रंग के दिख रहे हैं।

एक साफ-सुथरी भौंहें, अर्धचंद्र की तरह।

उनकी स्कर्ट पर फीनिक्स और ड्रैगन की कढ़ाई की गई थी।

वह नेझा जैसा दिखता था, लेकिन थोड़ा मोटा था।

उसके हाथों में एक विस्मयकारी भाला था,

जैसे ही वह अपने सुरक्षात्मक आभा मंडल से सुरक्षित होकर द्वार से बाहर आया।

जब वह दहाड़ता था तो उसकी गूंज बिजली की तरह सुनाई देती थी।

और उसकी आंखों की चमक बिजली की तरह तेज थी।

यदि आप इस राक्षस का असली नाम जानना चाहते हैं,

वह अमर ख्याति प्राप्त रेड बॉय थे।

रेड बॉय चिल्लाते हुए बाहर आया, "यह शोर कौन मचा रहा है?"

बंदर पास आया, मुस्कुराया और बोला, "ऐसा नाटक मत करो, प्यारे भतीजे। आज सुबह उस चीड़ के पेड़ की चोटी पर तुम दुबले-पतले, पीलियाग्रस्त नन्हे बच्चे थे, और तुमने मेरे मालिक को बेवकूफ बना दिया। मैंने तुम्हें बड़ी नरमी से अपनी गोद में उठाया था, लेकिन तुमने बवंडर खड़ा कर दिया और मेरे मालिक को अपने साथ ले गए। अब तुम ये बड़ा नाटक कर रहे हो, लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो।"

अगर तुम नहीं चाहते कि मैं अपना रिश्ता भूल जाऊं और हिंसक हो जाऊं, तो मेरे स्वामी को तुरंत बाहर लाओ। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे आदरणीय पिता मुझे एक अपमानजनक गुंडा समझें।" इन शब्दों ने राक्षस को क्रोधित कर दिया।

"दुष्ट बंदर," वह दहाड़ा, "तुम मेरे रिश्तेदार नहीं हो। तुम सरासर बकवास कर रहे हो। तुम्हें यह दावा करने का कोई कारण नहीं है कि मैं तुम्हारा भतीजा हूँ।"
"तुम्हें इसके बारे में पता भी नहीं होगा, बेटा," बंदर ने कहा। "जब तुम्हारे आदरणीय पिता और मैं कसम खाकर भाई बने थे, तब तुम्हारे बारे में सोचा भी नहीं गया था।"
"बकवास, बंदर!" राक्षस ने कहा। "सोचो तुम कहाँ से आए हो और मैं कहाँ से आया हूँ। तुम मेरे पिता के सगे भाई कैसे हो सकते हो?"
"तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता नहीं होगा," बंदर ने कहा। मैं सन वुकॉन्ग हूँ, स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि, जिसने पाँच सौ वर्ष पूर्व स्वर्ग में प्रलय मचाई थी। उससे पहले मैं समुद्रों और आकाश में विचरण करता था और चारों महाद्वीपों का भ्रमण करता था। उन दिनों मैं सच्चे नायकों का बहुत बड़ा प्रशंसक था। आपके आदरणीय पिता, बैल दानव राजा, स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि थे। उन्होंने मुझे अपना सातवाँ भाई माना और मैंने उन्हें सबसे बड़ा भाई बना दिया। हमारे दूसरे भाई सैलामैंडर दानव राजा, समुद्र को उलट देने वाले महान ऋषि थे। तीसरे भाई रोक दानव राजा, स्वर्ग को अस्त-व्यस्त करने वाले महान ऋषि थे। चौथे भाई ऊँट राजा, पर्वतों को गतिमान करने वाले महान ऋषि थे। हमारे पाँचवें भाई मकाक राजा, पवन के साथ यात्रा करने वाले महान ऋषि थे; और छठे भाई सिंह राजा थे—उनका नाम था देवताओं को भगाने वाले महान ऋषि। मैं सबसे छोटा था, इसलिए मैं सातवाँ भाई, स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि था। हम भाई खूब मौज-मस्ती कर रहे थे। उन दिनों में तो तुम्हारा जन्म भी नहीं हुआ था।"
राक्षस ने इस बात पर जरा भी विश्वास न करते हुए, अपनी अग्नि-युक्त भाला उठाकर बंदर पर प्रहार किया। एक सच्चे कुशल योद्धा की सहजता से बंदर ने भाले के प्रहार से खुद को बचाया, अपनी लोहे की गदा घुमाई और उसका अपमान किया:
"तुम्हें पता ही नहीं चलता कि तुम कब हार मान लेते हो, छोटे शैतान। ये लो!"
दुष्ट आत्मा भी रास्ते से हट गई और बोली, "समय बदल गया है और तुम पीछे छूट गए हो, दुष्ट बंदर। ये लो!" उनके रिश्ते की कोई बात नहीं हुई क्योंकि दोनों ने भयंकर क्रोध में अपनी जादुई शक्तियां दिखाईं। वे हवा में उछले और एक शानदार द्वंद्व युद्ध शुरू हो गया।
बंदर बहुत प्रसिद्ध था।
राक्षस राजा बहुत शक्तिशाली था।

एक व्यक्ति ने अपने सामने सोने की पट्टी वाली लाठी पकड़ रखी थी।
दूसरे ने आग की नोक वाले भाले से वार किया।
उनके द्वारा छोड़ी गई धुंध ने तीनों लोकों को अंधकारमय कर दिया;
उन्होंने धुएं के ऐसे बादल उगले जो चारों दिशाओं को ढक लेते थे।
वह आतंक और हत्या की चीखों का दिन था।
जब सूर्य, चंद्रमा और तारे दिखाई नहीं देते थे।
बोलने में दोनों में से किसी ने भी एक इंच भी पीछे नहीं हटे;
दोनों स्वभाव से ही तर्कहीन थे।
अध्याय 41
569
पश्चिम की यात्रा
उनमें से एक असभ्य और दबंग व्यक्ति था।
दूसरे ने रिश्तेदारी के दायित्वों को भुला दिया।
बचाव करने वाली लाठी से व्यक्ति और भी अधिक शक्तिशाली हो जाता था;
भाले का प्रहार दूसरे की बर्बरता को दर्शाता था।
उनमें से एक आदिम अराजकता से आया एक सच्चा महान ऋषि था।
दूसरी सुधना नाम की महिला थी।
वे दोनों वर्चस्व के लिए संघर्ष कर रहे थे।
यह सब इसलिए हुआ क्योंकि तांग पुरोहित बुद्ध की पूजा करते थे।
जब दुष्ट आत्मा बंदर से बीस दौर तक लड़ती रही, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला, तो सुअर किनारे से साफ देख रहा था कि हालांकि राक्षस पराजित नहीं हुआ था, वह केवल बंदर को रोके हुए था और उस पर हमला करने की उसकी कोई उम्मीद नहीं थी। और हालांकि बंदर अभी तक राक्षस को हरा नहीं पाया था, वह अपनी लाठी को इतनी कुशलता से चला रहा था कि वह राक्षस के सिर पर लगातार वार करता रहा और उसका निशाना कभी नहीं चूका।
"यह ठीक नहीं है," सुअर ने सोचा। "बंदर बड़ा चालाक है, और अगर उसने राक्षस को मौका दे दिया और उसे हमला करने के लिए उकसा दिया, तो बंदर अपने डंडे के एक ही वार से उसे खत्म कर देगा और मुझे कोई गौरव नहीं मिलेगा।" देखो कैसे सुअर ने अपनी हिम्मत जुटाई, नौ दांतों वाला रेक उठाया और हवा में से राक्षस के सिर पर वार

किया। इससे राक्षस इतना डर गया कि वह हार मानकर भाग गया।
"उसके पीछे जाओ," बंदर चिल्लाया, "उसके पीछे जाओ।"
वे दोनों उसका पीछा करते हुए गुफा के मुहाने तक पहुँचे, जहाँ राक्षस पाँच छोटी गाड़ियों में से बीच वाली गाड़ी पर खड़ा था, एक हाथ में आग की नोक वाला भाला लहरा रहा था और दूसरे हाथ की मुट्ठी से अपनी नाक पर दो बार घूँट मार रहा था।
"बेशर्म," सुअर हँसते हुए बोला, "अपनी नाक पर घूँट मारकर खून निकाल रहे हो, फिर खून को अपने पूरे चेहरे पर मल रहे हो। क्या तुम हम पर मुकदमा करोगे?"
लेकिन जब राक्षस ने अपनी नाक पर दो बार प्रहार किया, तो उसने एक मंत्र भी बोला और आग उगली, साथ ही नाक से धुएं के घने बादल भी निकाले। पलक झपकते ही हर जगह आग की लपटें फैल गईं। पाँचों गाड़ियों से आग निकल रही थी। राक्षस के कुछ और बार फूंक मारने के बाद, एक भयंकर आग आकाश की ओर उठ रही थी, जिसने अग्नि-बादल गुफा को भी ढक लिया। आकाश और पृथ्वी दोनों ही आग की लपटों में घिर गए। "भाई," सुअर ने भयभीत होकर कहा, "यह भयानक है। एक बार उस आग में गिर गया तो तुम्हारा अंत हो जाएगा। मैं जलकर राख हो जाऊंगा, और उसे बस कुछ मसाले मिलाने होंगे और वह मुझे खा जाएगा। चलो यहाँ से निकलें।"
इतना कहकर वह बंदर की अनदेखी करते हुए खाई के उस पार भाग गया।
बंदर की जादुई शक्तियाँ सचमुच बहुत अद्भुत थीं। अपनी उंगलियों से अग्नि से बचाव का मंत्र बनाकर वह राक्षस का पीछा करते हुए आग की लपटों में कूद गया। बंदर को अपने पीछे आते देख राक्षस ने और भी भयंकर आग उगली। वह आग
आकाश में भीषण ज्वालाएं छा गईं।
धरती को भयानक लाल रंग से ढक दिया,
अध्याय 41
570
पश्चिम की यात्रा
आग के पहिये की तरह ऊपर-नीचे उड़ने लगा,
पूरब और पश्चिम की ओर चिंगारियों की तरह नृत्य किया।
यह आग जलाने वाले द्वारा लकड़ी रगड़ने से उत्पन्न आग नहीं थी।
या फिर लाओ ज़ी द्वारा अपने अमृत भट्टी को गर्म करने की घटना।
यह कोई दिव्य अग्नि नहीं है।

या फिर मैदान में लगी आग,
लेकिन उस राक्षस ने सच्ची समाधि अग्नि को परिष्कृत किया था।
ये पांचों रथ पांच तत्वों का संयोजन थे।
और उनके रूपांतरणों से अग्नि का निर्माण हुआ।
जिगर की लकड़ी दिल की आग को और भड़का सकती है;
हृदय की अग्नि क्रोध की जड़ को शांत कर सकती है।
तिल्ली की मिट्टी से धातु उत्पन्न होती है, जो जल में परिवर्तित हो जाती है।
और जल से लकड़ी का जन्म होता है, जिससे यह जादुई चक्र पूरा होता है।
अग्नि के कारण ही सभी जन्म और परिवर्तन होते हैं;
यह अंतरिक्ष में सभी चीजों को फलने-फूलने में मदद करता है।
दुष्ट आत्मा ने बहुत पहले समाधि की अग्नि में सांस लेना सीख लिया था;
वह सदा के लिए पश्चिम का प्रथम स्वामी था।
भयंकर आग के बीच बंदर को राक्षस नहीं मिला, न ही उसे गुफा के प्रवेश द्वार का रास्ता दिखाई दिया, इसलिए वह आग से बाहर कूद गया। राक्षस, जो गुफा के प्रवेश द्वार से यह सब स्पष्ट रूप से देख रहा था, बंदर के चले जाने का पता चलने पर उसने आग जलाने का सामान एक तरफ रख दिया, अपने शैतानी दल को गुफा के अंदर ले गया और पत्थर के दरवाजे बंद कर दिए। उसे लगा कि उसने जीत हासिल कर ली है, इसलिए उसने अपने साथियों को दावत का आयोजन करने का आदेश दिया। वहाँ संगीत और खूब जश्न मनाया गया, जिसके बारे में हम बात नहीं करेंगे।
इसके बजाय हम मंकी के पास लौटते हैं, जो मुरझाए हुए चीड़ के दर्रे के पार छलांग लगाकर वापस आया था और अपने बादल को उस जगह पर ले आया था जहाँ वह चीड़ के पेड़ों के बीच पिग और फ्रायर सैंड को जोर-जोर से और स्पष्ट रूप से बात करते हुए सुन सकता था।
वह उनके पास गया और सुअर पर चिल्लाते हुए बोला, "तुम मर्द नहीं हो, मूर्ख। तुम राक्षस की आग से इतना डर गए कि मुझे छोड़कर अपनी जान बचाकर भाग गए। लेकिन मेरे पास लंबे समय से कुछ तरकीबें हैं।"
"भाई," सुअर हँसते हुए बोला, "उस राक्षस ने बिल्कुल सही कहा था कि अब तुम इसके लायक नहीं रहे। जैसा कि पुरानी कहावत है,

वह राक्षस तुम्हारा रिश्तेदार नहीं था, लेकिन तुमने उसे अपना रिश्तेदार समझने के लिए मजबूर करने की कोशिश की; और जब लड़ाई हुई तो उसने वह भयानक आग लगा दी। क्या तुम भागने के बजाय उससे फिर से लड़ने जा रहे हो?
"राक्षस की युद्ध क्षमता की तुलना मेरी क्षमताओं से कैसे की जा सकती है?" बंदर ने पूछा।
"वह तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता," पिग ने कहा।
वह भाला चलाने में कैसा है?
"यह भी ठीक नहीं है," सुअर ने जवाब दिया। "जब मैंने देखा कि वह मुश्किल से ही टिक पा रहा है, तो मैंने तुम्हारी मदद करने के लिए उस पर हमला कर दिया।"
वह खेलने को तैयार नहीं था और भाग गया। फिर उसने धोखा दिया और आग लगा दी।
“तुम्हें नहीं आना चाहिए था,” बंदर ने कहा। “अच्छा होता अगर मैं उससे कुछ और बार भिड़ जाता और अपनी लाठी से उसे एक जोरदार मुक्का मार देता!” फिर वे दोनों उस दानव के कौशल और उसकी भयानक आग के बारे में चर्चा करने लगे, जबकि साधु सैंड एक चीड़ के पेड़ के तने से टिककर मुस्कुरा रहा था।
"भाई, तुम किस बात पर मुस्कुरा रहे हो?" बंदर ने यह देखकर पूछा। "कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हारे पास कोई ऐसी शक्ति है जिससे तुम राक्षस को पकड़ सको और उसकी जादुई आग को हरा सको? अगर होती, तो तुम हम सबकी मदद कर रहे होते। जैसा कि कहावत है, 'अनेक हाथ मिलकर काम आसान कर देते हैं।' अगर तुम राक्षस को पकड़ कर गुरु को बचा लेते हो, तो यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।"
"मेरे पास कोई जादुई शक्तियां नहीं हैं," फ्रायर सैंड ने कहा, "और मैं राक्षसों को वश में नहीं कर सकता। मैं तो बस आप दोनों को इतना बेताब देखकर मुस्कुरा रहा था।"
"तुम्हारा क्या मतलब है?" बंदर ने पूछा।
"जादू या लड़ाई में यह दानव तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता," साधु सैंड ने कहा। "तुम उसे सिर्फ इसलिए नहीं हरा पा रहे हो क्योंकि उसके पास आग है। अगर तुम मेरी

सलाह मानो तो तत्वों के परस्पर प्रभाव के सिद्धांत का उपयोग करके उसे आसानी से पकड़ सकते हो।"

इस पर बंदर जोर से हँसा और बोला, "तुम सही कह रहे हो। हम इतने हताश थे कि यह बात भूल ही गए। तत्वों के परस्पर विरोधी होने के सिद्धांत के अनुसार, हमें आग को पानी से बुझाना होगा। सवाल यह है कि उस आग को बुझाने और स्वामी को बचाने के लिए हमें पानी कहाँ से मिलेगा?"

"जी हां," फ्रायर सैंड ने कहा, "और हमें बिल्कुल भी समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।"

"तुम दोनों यहीं रहो," बंदर ने कहा, "लेकिन उससे झगड़ा मत करना। मैं पूर्वी महासागर से कुछ ड्रैगन सैनिकों को लाकर लाऊंगा ताकि वे शैतान की आग को बुझाने के लिए पानी ला सकें।"

"जाओ भाई," सुअर ने कहा, "और चिंता मत करो। हमें पता है क्या करना है।"

अध्याय 41

572

पश्चिम की यात्रा

महान संत अपने बादल पर सवार होकर दूर चले गए। पल भर में वे पूर्वी सागर पर पहुँच गए, लेकिन जल-विकर्षण जादू से लहरों को चीरते हुए वे समुद्री दृश्य की प्रशंसा करने में रुचि नहीं रखते थे। जल में चलते हुए उनकी मुलाकात गश्त कर रहे एक यक्ष से हुई, जो वरिष्ठ ड्रैगन राजा आओ गुआंग को सूचना देने के लिए जल-क्रिस्टल महल में वापस चला गया। आओ गुआंग अपने ड्रैगन पुत्रों और पोतों तथा झींगा और केकड़ा सैनिकों के साथ बंदर का स्वागत करने के लिए बाहर आए। ड्रैगन राजा ने बंदर को अंदर आकर बैठने का निमंत्रण दिया। शिष्टाचार समाप्त होने पर राजा ने बंदर को चाय पिलाई।

“कृपया परेशान न हों,” बंदर ने कहा। “लेकिन मैं आपको किसी और बात के लिए परेशान करने आया हूँ। मेरे गुरु, तांग पुजारी, बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जाते समय बंदी बना लिए गए हैं। उन्हें हाओ पर्वत पर सूखे चीड़ के घाटी के पास स्थित अग्नि-बादल गुफा के एक दुष्ट आत्मा, लाल बालक, बालक ऋषि राजा ने पकड़ लिया है। मैं अपने गुरु को खोजने और उस राक्षस से लड़ने के लिए गुफा में गया था, लेकिन राक्षस ने भीषण आग लगा दी। यह मेरे बस से बाहर थी। मैंने सोचा कि जैसे पानी आग को बुझा देता है, वैसे ही मैं यहाँ आपसे पानी माँगने आया

हूँ। क्या आप मेरे लिए मूसलाधार बारिश कर सकते हैं जिससे आग बुझ जाए और तांग पुजारी बच जाएँ?"

"तुम गलत जगह आ गए हो," ड्रैगन राजा ने कहा। "बारिश के लिए मुझसे प्रार्थना करना उचित नहीं है।"

"लेकिन आप तो चारों महासागरों के ड्रैगन राजा हैं," बंदर ने कहा, "वर्षा के स्वामी हैं। अगर मैं आपसे नहीं पूछूंगा तो और किससे पूछूंगा?"

“बारिश का स्वामी मैं हूँ,” ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया, “लेकिन मैं बिना अनुमति के कुछ नहीं कर सकता। मुझे जेड सम्राट से अनुमति लेनी होगी कि कहाँ, कब और कितनी बारिश करनी है, और दादा गरज, माता बिजली, चाचा पवन और बादल के लड़कों की मदद मांगने से पहले मुझे बहुत सारे आधिकारिक हस्ताक्षर प्राप्त करने होंगे। जैसा कि कहावत है, ड्रैगन बादलों के बिना यात्रा नहीं कर सकते।”

"लेकिन मुझे हवा, बादल, गरज या बिजली की ज़रूरत नहीं है," बंदर ने कहा। "मुझे बस इतनी बारिश चाहिए जिससे आग बुझ जाए।"

“हे महान ऋषि, आपको शायद हवा, बादल, गरज या बिजली की ज़रूरत न हो,” ड्रैगन राजा ने कहा, “लेकिन मैं अकेले आपकी मदद नहीं कर सकता। अगर मैं अपने छोटे भाइयों से भी मदद मांगूं तो आप क्या कहेंगे?”

"वे कहाँ हैं?" बंदर ने पूछा। "आओ किन दक्षिणी सागर का ड्रैगन राजा है, आओ रुन उत्तरी सागर का ड्रैगन राजा है, और आओ शुन पश्चिमी सागर का ड्रैगन राजा है।"

"तीनों समुद्रों की परिक्रमा करने की बजाय स्वर्ग जाकर जेड सम्राट से आदेश मांगना कहीं अधिक आसान होगा।"

बंदर ने हंसते हुए जवाब दिया, "हे महान ऋषि, आपको जाने की कोई आवश्यकता नहीं है," ड्रैगन राजा ने कहा। "अगर मैं अपना लोहे का ढोल और कांसे की घंटी बजाऊं तो वे तुरंत यहां आ जाएंगे।"

"हे वरिष्ठ ड्रैगन राजा, कृपया उन्हें तुरंत बजाएं," बंदर ने कहा।

कुछ ही देर बाद बाकी तीन ड्रैगन राजा भी भीड़ बनाकर आ गए। उन्होंने पूछा, "बड़े भाई, आपके पास हमारे लिए क्या आदेश हैं?"

"महान ऋषि बंदर एक राक्षस को वश में करने के लिए बारिश उधार लेने आए हैं," वरिष्ठ ड्रैगन राजा ने कहा। अभिवादन के बाद बंदर ने बताया कि उसे पानी की आवश्यकता क्यों है। सभी ड्रैगन खुशी-खुशी मान गए। उन्होंने निम्नलिखित चीजें

जुटाईं:
बहादुर शार्क अग्रिम पंक्ति में है,

पश्चिम की यात्रा
सबसे आगे बड़े मुंह वाला हेमिबैग्रस था;
मार्शल कार्प जो लहरों में गोता लगाता है,
कमांडर ब्रीम जो धुंध उगलती है।
कर्नल मैकरेल को पूर्व की ओर गश्त करने का आदेश दिया गया।
मेजर कुल्लर पश्चिम की ओर आगे बढ़ेंगे।
घुड़सवार सैनिक रेड आई दक्षिण की ओर सरपट दौड़ता है।
जबकि जनरल ब्लैकशेल उत्तर में घुसपैठ करने में सफल रहे।
ब्रिगेडियर क्रोकर केंद्रीय बल की कमान संभालते हैं;
हर यूनिट नायकों की एक बेहतरीन टुकड़ी है।
रणनीति का माहिर व्यक्ति चीफ ऑफ स्टाफ टर्टल है;
कछुआ देवता सूक्ष्म भविष्यवाणियों में माहिर हैं।
प्रधानमंत्री एलिगेटर ज्ञान से परिपूर्ण हैं।
गैरीसन कमांडर टेरापिन में असाधारण क्षमता है।
बगल की ओर बढ़ते हुए, केकड़े के आकार के सैनिक अपनी तलवारें लहराते हैं।
उछलती हुई झींगा मछली जैसी महिलाएँ अपने धनुष खींचती हैं।
सचिव कैटफिश कागजी कार्रवाई का ध्यान रखते हैं।
और ड्रैगन सेना की हाजिरी लेता है।
इस विषय पर एक कविता है, जो इस प्रकार है:
चारों समुद्री ड्रैगन मदद करने के लिए प्रसन्न थे।
जब बंदर ऋषि सहायता मांगने आया।
पुजारी संजांग अपनी यात्रा में संकट में थे।
वे सभी आग बुझाने के लिए पानी लेकर आए।

बंदर जल्द ही अपनी ड्रैगन सेना के साथ माउंट हाओ पर स्थित सूखे चीड़ के घाटी में लौट आया। उसने कहा, "आओ वंश के योग्य भाइयों, मैं आपको बहुत दूर से लाया हूँ। यहीं पर वह राक्षस रहता है। कृपया आप यहीं हवा में रहें और जब तक मैं उससे लड़ता हूँ, तब तक अपना चेहरा न दिखाएँ। अगर मैं उसे हरा देता हूँ, तो मुझे उसे पकड़ने के लिए आप लोगों को परेशान करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अगर वह मुझे हरा देता है, तो आप लोगों को लड़ाई में शामिल होने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं बस इतना चाहता हूँ कि जब वह आग जलाए, तो मेरे बुलावे पर आप सब मिलकर बारिश बरसाएँ।" ड्रैगन राजाओं ने वैसा ही किया जैसा उन्हें कहा गया था।

फिर बंदर ने अपने बादल को चीड़ के जंगल में उतारा, वहां उसने सुअर और साधु सैंड को देखा और उन्हें पुकारा।

"तुम बहुत जल्दी में थे," सुअर ने कहा। "क्या तुमने ड्रैगन राजा को आने के लिए मना लिया?"

“वे सब यहीं हैं,” बंदर भाई ने जवाब दिया। “बारिश होने पर सामान को गीला होने से बचाने के लिए तुम दोनों को बहुत सावधान रहना होगा। मैं राक्षस से लड़ने जा रहा हूँ।”

"आप जाइए, और चिंता मत कीजिए," फ्रायर सैंड ने कहा। "हम सब संभाल लेंगे।"

बंदर खाई पार करके गुफा के प्रवेश द्वार तक कूद गया और चिल्लाया, "दरवाजा खोलो!" छोटे शैतान दौड़कर वापस अंदर गए और बताया, "नौसिखिया सूर्य फिर से यहाँ आ गया है।"

लाल लड़के ने मुस्कुराते हुए ऊपर देखा और कहा, "बंदर को लगता है कि कोई आग उसे जला नहीं सकती, क्योंकि आज तक किसी आग ने उसे जलाया नहीं है। इसीलिए वह फिर से यहाँ आया है। लेकिन इस बार हम उसे नहीं छोड़ेंगे: हम उसे राख कर देंगे।" वह उछल पड़ा, अपना भाला पकड़ा और छोटे राक्षसों को आग की गाड़ियाँ बाहर ले जाने का आदेश दिया। फिर वह द्वार के सामने गया और बंदर से पूछा, "तुम फिर से यहाँ क्यों आए हो?"

"मेरे मालिक को वापस दे दो," बंदर ने जवाब दिया।

“समय के साथ कदम मिलाकर चलो, बंदर,” राक्षस ने कहा। “वह तुम्हारे लिए भले ही गुरु हो, पर मेरे लिए तो वह मेरे पेय के साथ खाने की एक वस्तु मात्र है। बेहतर

होगा कि तुम उसे भूल जाओ।" इन शब्दों ने बंदर को क्रोधित कर दिया। उसने अपनी सोने की पट्टी वाली गदा उठाई और राक्षस के सिर पर प्रहार किया। राक्षस ने तुरंत अपने अग्नि-युक्त भाले से वार को रोक दिया। यह लड़ाई पिछली लड़ाई से अलग थी:
एक क्रूर दुष्ट दानव,
क्रोधित बंदर राजा।
एक व्यक्ति तीर्थयात्री पुजारी को बचाने के लिए दृढ़ संकल्पित था,
जिसे दूसरा निगलने का इरादा रखता था।
जब हृदय बदल जाता है तो रिश्तेदारी खत्म हो जाती है;
भावनाओं के अभाव में कोई रियायत नहीं दी जाती।
कोई व्यक्ति अपने शत्रु की जिंदा खाल उतार देने में भी प्रसन्न होता;
दूसरा अपने दुश्मन को चटनी में डुबोकर अचार बनाना चाहता था।
ऐसी वीरता,
कितनी क्रूरता!
अध्याय 41
575
पश्चिम की यात्रा
वर्चस्व की लड़ाई में भाले ने लाठी का वार रोका;
लाठी ने युद्ध में भाले को रोककर जीत हासिल की।
बीस दौर की लड़ाई के बाद
दोनों पक्ष बराबरी पर थे।
जब राक्षस राजा ने बंदर के साथ बीस दौर तक लड़ाई लड़ी और उसे लगा कि कोई भी जीतने वाला नहीं है, तो उसने छलावा किया, पीछे हटा, मुट्ठी भींची, अपनी नाक पर दो बार मुक्का मारा और फिर से आग उगलने लगा। प्रवेश द्वार के सामने खड़ी गाड़ियों से लपटें उठ रही थीं और उसका मुंह और आंखें आग की लपटों से भर गई थीं।
बंदर ने पीछे मुड़कर चिल्लाते हुए कहा, "ड्रैगन राजाओं, तुम कहाँ हो?" फिर ड्रैगन राजा भाइयों ने अपनी जल सेना को लेकर राक्षस की आग पर मूसलाधार बारिश की बौछार कर दी। यह एक शानदार, शक्तिशाली वर्षा थी।
भारी।

आकाश से गिरते तारों के समान शक्तिशाली,
किनारे पर टकराती लहरों की तरह भारी।
शुरू में बूंदें मुट्ठी के आकार की होती हैं।
फिर प्रत्येक एक उल्टा रखा हुआ पानी का कटोरा है।
भूमि पर बहते हुए, बत्तखों की गर्दन को हरा कर देता है;
पहाड़ की ढलान को धोकर उसे गहरा नीला रंग देना।
घाटी का पानी हजार फैदम गहरा जेड रत्न जैसा है।
वसंत ऋतु की धारा चांदी की असंख्य धाराओं में तब्दील होकर फैल जाती है।
जल्द ही चौराहा पानी से भर जाता है।
और घुमावदार नदी सीधी बहने लगती है।
ड्रैगन संकट में तांग पुजारी की मदद करते हैं।
स्वर्गिक नदी को उफान पर लाना।
लेकिन मूसलाधार बारिश भी राक्षस की आग को बुझा नहीं सकी। ड्रैगन राजा की निजी बारिश केवल साधारण आग बुझा सकती थी, इस राक्षस की समाधि अग्नि नहीं। बारिश आग पर तेल डालने जैसी थी: जितनी ज़्यादा बारिश होती, उतनी ही भयंकर लपटें उठतीं। "मैं हाथ से मंत्र पढ़कर आग में कूद जाऊंगा," बंदर ने कहा, जो अध्याय 41 के बाद गया।

राक्षस अपना गदा घुमा रहा था। बंदर को आते देख, राक्षस ने धुएं का एक बादल सीधे उसके चेहरे पर फेंक दिया। हालांकि बंदर ने मुंह फेर लिया, उसकी आंखों में भयानक जलन हुई और वह आंसू बहने से नहीं रोक सका। आग से अप्रभावित होने के बावजूद, महान ऋषि धुएं के प्रति संवेदनशील थे। उस समय जब उन्होंने स्वर्ग में तबाही मचाई थी और भगवान लाओ ज़ी द्वारा अष्टम त्रिग्राम भट्टी में उनका शुद्धिकरण किया गया था, तब उन्होंने वायु त्रिग्राम शुन द्वारा नियंत्रित भट्टी के हिस्से में रहकर खुद को जलने से बचाया था। लेकिन हवा ने उन पर धुआं फेंका था, और वे इतने बुरी तरह जल गए थे कि उनकी आंखें आग जैसी हो गईं और पुतलियां सुनहरी हो गईं। यही कारण था कि वे अभी भी धुएं के प्रति संवेदनशील थे। जब राक्षस ने उन पर धुएं का एक और बादल फेंका, तो यह उनकी सहनशीलता से परे था, और इसलिए वे अपने

बादल पर सवार होकर भाग गए। फिर राक्षस राजा ने आग लगाने के उपकरण को एक तरफ रख दिया और गुफा में वापस चले गए।

आग की लपटों और धुएं ने महान ऋषि को असहनीय रूप से गर्म कर दिया था, इसलिए वे आग बुझाने के लिए सीधे नदी में कूद गए, उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि ठंडे पानी के झटके से आग उनके हृदय पर हमला कर देगी और उनकी तीनों आत्माएं उनसे बाहर निकल जाएंगी। हाय!

जब सांस रुक गई, तो उसका मुंह और जीभ ठंडी पड़ गई;

उसकी सभी आत्माएं बिखर गईं और उसका जीवन समाप्त हो गया।

आकाश में दूर से देख रहे चारों समुद्रों के ड्रैगन राजाओं ने भयभीत होकर वर्षा रोक दी और चिल्लाए, "मार्शल तियान पेंग, पर्दा उठाने वाले सेनापति, जंगल में छिपना बंद करो। जाओ और अपने भाई को ढूंढो।"

उनकी दिव्य आवाज़ सुनकर पिग और फ्रायर सैंड ने तुरंत घोड़े की रस्सी खोली, सामान ढोने वाला डंडा अपने कंधों पर रखा और जंगल से बाहर निकल भागे। वे नदी के किनारे बंदर को ढूंढने लगे, गीले और कीचड़ से सने होने की परवाह किए बिना। नदी के ऊपर की ओर उन्होंने देखा कि कोई तेज़ धारा में बह रहा है और लहरों में इधर-उधर उछल रहा है। जैसे ही फ्रायर सैंड ने यह देखा, वह पूरे कपड़े पहने पानी में कूद गए और उसे किनारे पर खींच लाए। यह महान ऋषि का शरीर था। हाय! वह सिकुड़े हुए थे, अपने किसी भी अंग को फैला नहीं पा रहे थे और पूरी तरह बर्फ की तरह ठंडे थे। "बेचारे भाई," फ्रायर सैंड ने कहा। "तुम जो कभी अमर होने वाले थे, अब एक यात्री के रूप में तुम्हारा जीवन समाप्त हो गया।"

"रोना बंद करो भाई," सुअर हँसते हुए बोला। "बंदर तो बस हमें डराने के लिए मरने का नाटक कर रहा है। उसकी छाती छूकर देखो कि वह अभी भी गर्म है या नहीं।"

"उसका पूरा शरीर ठंडा पड़ गया है, बस थोड़ी सी गर्मी बची है। हम उसे होश में कैसे लाएँगे?" फ्रायर सैंड ने कहा।

“वह बहत्तर रूपांतरण करना जानता है,” सुअर ने कहा, “और इसका मतलब है बहत्तर जीवन। तुम उसके पैर पकड़ो और मैं उसे संभाल लूँगा।” इसलिए साधु सैंड ने बंदर के पैर खींचे जबकि सुअर ने उसका सिर थामे रखा। उन्होंने उसे सीधा किया, खड़ा किया और फिर उसे पालथी मारकर बिठा दिया। सुअर ने अपनी हथेलियों से ज़ोर से रगड़कर बंदर को गर्म किया, उसके सातों छिद्रों को ढक दिया और उसे ध्यान

मालिश दी। ठंडे पानी के झटके से बंदर के पेट में साँस रुक गई थी, जिससे वह बोल नहीं पा रहा था। सुअर की मालिश और रगड़ने से बंदर के शरीर में साँस जल्द ही तीनों मार्गों से फिर से बहने लगी, उसके उज्ज्वल कक्ष में संचारित हुई और “गुरुजी” की पुकार के साथ उसके छिद्रों से बाहर निकली।
"भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "तुम गुरु के लिए जीते हो, और मरते समय भी उनका नाम तुम्हारे होठों पर होता है।"
जाग जाओ। हम यहाँ हैं।
बंदर ने अपनी आंखें खोलीं और पूछा, "भाइयों, क्या आप यहां हैं? मैं खो गया हूँ।"

"तुम अभी बेहोश हो गए थे," सुअर ने हंसते हुए कहा, "और अगर मैंने तुम्हें बचाया न होता तो तुम मर चुके होते। तुम्हें मेरा शुक्रिया अदा करना चाहिए।"
तभी बंदर अपने पैरों पर खड़ा हुआ, ऊपर देखा और बोला, "आओ भाइयों, तुम कहाँ हो?"
"हम जैसे विनम्र ड्रैगन यहाँ उपस्थित हैं," चारों महासागरों के ड्रैगन राजाओं ने आकाश में रहते हुए उत्तर दिया।
बंदर ने कहा, "मैंने तुम्हें इस लंबी यात्रा की परेशानी व्यर्थ ही दी है। क्या अब तुम वापस जाना चाहोगे?"
मैं किसी और दिन आकर आपका धन्यवाद करूंगा।" हम ड्रैगन राजाओं के बारे में और कुछ नहीं कहेंगे क्योंकि वे अपनी जलीय जनजातियों को शान से घर ले गए थे।
फ्रायर सैंड ने बंदर को वापस जंगल में ले जाने में मदद की, जहाँ वे दोनों बैठ गए। थोड़ी देर में बंदर ठीक हो गया और उसकी सांसें सामान्य हो गईं, हालाँकि उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। "मालिक," वह रोया,
मुझे याद है जब आपने ग्रेट टैंग छोड़ा था,
और उन्होंने मुझे चट्टान पर होने वाली यातना से बचा लिया।
हर पर्वत और नदी पर राक्षसों ने आपको परेशान किया है;
आपका हृदय अनगिनत पीड़ाओं और कष्टों से छलनी हो गया था।
कभी-कभी आपने अच्छा भोजन किया है और कभी-कभी नहीं;

आपने अपनी रातें जंगलों या खेतों में बिताई हैं।
आपका दिल हमेशा से ही उपलब्धि हासिल करने पर लगा हुआ था;
कौन जानता है कि आप इस समय किन-किन पीड़ाओं से गुजर रहे हैं?
"भाई, इतना परेशान मत होइए," फ्रायर सैंड ने कहा। "हम अतिरिक्त सैनिक जुटाने और गुरु को बचाने की योजना बना लेंगे।"
"कहां से?" बंदर ने पूछा।
"बहुत समय पहले, जब बोधिसत्व ने हमें तांग पुजारी की रक्षा करने का आदेश दिया था, तब उन्होंने हमसे वादा किया था कि यदि हम स्वर्ग या पृथ्वी से सहायता के लिए प्रार्थना करेंगे, तो हमें हमेशा उत्तर मिलेगा," भिक्षु सैंड ने उत्तर दिया। "अब हम कहाँ जाएँ?"
"मुझे याद है जब मैंने स्वर्ग में उत्पात मचाया था," बंदर ने कहा, "स्वर्गीय सैनिक मेरा मुकाबला नहीं कर पाए थे।"
उस दुष्ट आत्मा के पास अपार जादू है। मुझसे भी अधिक शक्तियों वाला ही उसे वश में कर सकता है। स्वर्ग और पृथ्वी के देवता तो बेकार हैं, इसलिए उस राक्षस को पकड़ने का एकमात्र उपाय बोधिसत्व गुआनयिन से सहायता मांगना ही है। लेकिन मैं अपने कलाबाज़ी करने वाले बादल पर सवार नहीं हो सकती: मेरी त्वचा बहुत बुरी तरह छिल गई है और मेरा शरीर दर्द कर रहा है। हम उनकी मदद कैसे प्राप्त करेंगे?
"मुझे बताओ कि मुझे क्या कहना है," सुअर ने कहा, "और मैं उससे पूछने जाऊंगा।"
अध्याय 41
578
पश्चिम की यात्रा
“ठीक है,” बंदर हँसते हुए बोला, “तुम जाओ। अगर बोधिसत्व तुम्हें स्वीकार करें, तो उनकी ओर मत देखना। अपना सिर नीचे रखो और उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम करो। जब वे तुमसे पूछें, तो उन्हें इस स्थान और राक्षस का नाम बताना, फिर उनसे गुरु को बचाने का अनुरोध करना। अगर वे आने के लिए सहमत हो जाएँ, तो वे निश्चित रूप से राक्षस को पकड़ लेंगी।”
पिग अपने बादल पर सवार होकर दक्षिण की ओर चल पड़ा।
गुफा में वापस आकर राक्षस प्रसन्नता से बोला, "मेरे बच्चों, नौसिखिया सन हार गया। इस बार मैंने उसे मारा तो नहीं, लेकिन कम से कम वह काफी देर तक बेहोश रहा।"

उसने आह भरी और फिर बोला, "बस एक ही चिंता है कि वह मदद के लिए और लोगों को बुला सकता है। गुफा खोलो, मैं बाहर जाकर देखता हूँ कि वह किसे बुला रहा है।"

राक्षसों ने दुष्ट आत्मा के लिए द्वार खोल दिए ताकि वह उछलकर हवा में ही चारों ओर देख सके। सुअर को दक्षिण की ओर जाते देख, आत्मा ने अनुमान लगाया कि वह निश्चित रूप से बोधिसत्व गुआनयिन से मिलने जा रहा होगा, क्योंकि दक्षिण में और कोई जगह नहीं थी जहाँ वह जा सकता था। राक्षस ने अपना बादल तेज़ी से नीचे उतारा और अपने अनुयायियों से कहा, "छोटे बच्चों, मेरा चमड़े का थैला ले आओ। इसके मुँह पर लगी डोरी अब शायद ठीक नहीं है क्योंकि मैंने इसे बहुत समय से इस्तेमाल नहीं किया है, इसलिए कृपया इसमें एक नई डोरी लगा दें और इसे भीतरी द्वार के बाहर रख दें। मैं सुअर को यहाँ वापस बुलाकर थैले में डाल दूँगा। फिर हम उसे अच्छे से पकाकर नरम कर लेंगे, जो तुम सबके लिए इनाम होगा।" छोटे राक्षस अपने राजा का चमड़े का थैला ले आए, उसमें डोरी बदली और उसे मुख्य द्वार के अंदर रख दिया।

दानव राजा वहां लंबे समय से रह रहा था, इसलिए वह उस क्षेत्र से भलीभांति परिचित था और जानता था कि दक्षिणी सागर तक जाने के कौन से रास्ते तेज़ हैं और कौन से लंबे। उसने अपने बादल पर सवार होकर तेज़ रास्ते से सुअर को पीछे छोड़ दिया और खुद को गुआनयिन के रूप में बदलकर एक चट्टान पर बैठ गया और उसका इंतज़ार करने लगा।

जब उस मूर्ख ने अचानक अपने बादल पर सवार होकर आगे बढ़ते हुए गुआनयिन को देखा, तो उसे यह पता नहीं चल पाया कि यह एक नकली मूर्ति है: यह तो बस एक छवि को देखकर उसे बुद्ध समझ लेने जैसा मामला था। उस मूर्ख ने अपना बादल रोका, प्रणाम किया और कहा, "बोधिसत्व, आपका शिष्य झू वुनेन्ग आपको प्रणाम करता है।"

बोधिसत्व ने पूछा, "शास्त्र लाने के लिए तांग पुजारी के साथ जाने के बजाय तुम मुझसे मिलने क्यों आए हो?"

"मैं गुरुजी के साथ यात्रा कर रहा था," सुअर ने उत्तर दिया, "जब लाल बालक नामक एक दुष्ट आत्मा मेरे गुरुजी को हाओ पर्वत पर स्थित सूखे चीड़ के दर्रे के पास अग्नि-बादल गुफा में ले गई। बंदर और हम दोनों उस राक्षस को ढूंढने और उससे लड़ने गए।

क्योंकि वह आग पैदा कर सकता था, इसलिए हम पहली बार में उसे हरा नहीं पाए। दूसरी बार हमने ड्रैगन राजाओं से बारिश के लिए मदद मांगी, लेकिन उससे भी आग नहीं बुझी। आग की लपटों ने बंदर को इतना घायल कर दिया है कि वह हिल भी नहीं सकता, इसलिए उसने मुझे आपकी सहायता मांगने के लिए भेजा है, बोधिसत्व। मैं आपसे दयापूर्वक गुरुजी की रक्षा करने की विनती करता हूँ।"

दुष्ट आत्मा ने कहा, "अग्नि-बादल गुफा का स्वामी हत्यारा नहीं है। तुमने उसे नाराज कर दिया होगा।"

"मैंने उसे कभी नाराज़ नहीं किया," सुअर ने कहा। "यह मेरे भाई बंदर ने किया था। राक्षस ने मेरे मालिक को लुभाने के लिए पेड़ की चोटी पर लटके एक छोटे लड़के का रूप धारण कर लिया था। मेरे मालिक इतने दयालु हैं कि उन्होंने मुझे लड़के को खोलने के लिए कहा और बंदर को उसे उठाने के लिए कहा। बंदर ने ही उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया और मालिक को हवा में उड़ा ले गया।"

दुष्ट आत्मा ने कहा, "उठो और मेरे साथ गुफा में चलो, उसके स्वामी से मिलने। मैं उनसे तुम्हारे प्रति दयालु होने की विनती करूंगा।"

आपको माफी मांगने के लिए बस सिर झुकाना होगा और अपने मालिक को वापस मांगना होगा।"

पिग ने कहा, "बोधिसत्व, अगर मैं उस तरह से गुरु को वापस ला सकता हूँ तो मैं उनके सामने सिर झुकाऊँगा।"

"मेरे साथ आओ," दानव राजा ने कहा। अज्ञानतावश, वह मूर्ख दक्षिणी सागर की ओर जाने के बजाय उसी रास्ते से दानव के पीछे-पीछे अग्नि-बादल गुफा की ओर चल पड़ा। पल भर में वे गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँच गए।

अंदर जाते हुए दुष्ट आत्मा ने कहा, "चिंता मत करो, यह मेरा पुराना परिचित है। अंदर आ जाओ।" जैसे ही उस मूर्ख ने अंदर जाने के लिए पैर उठाया, सभी राक्षसों ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए उसे पकड़ लिया, धक्का देकर गिरा दिया और थैले में धकेल दिया। फिर थैले के मुँह पर बंधी रस्सी को कसकर खींचा गया और सुअर को छत की कड़ियाँ से लटका दिया गया।

दुष्ट आत्मा ने अपना असली रूप धारण कर लिया, राक्षसों के बीच बैठ गया और बोला, "सूअर, तुम्हें क्या लगता है तुम्हारे पास क्या शक्तियां हैं? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम तांग पुजारी को शास्त्र लाने जाते समय उसकी रक्षा करने का वादा करो, या यहाँ मौजूद बोधिसत्व से मुझे वश में करने के लिए कहो? ज़रा ध्यान से देखो। क्या तुम्हें नहीं दिखता कि मैं ऋषि बालक राजा हूँ? अब जब मैंने तुम्हें पकड़ लिया है, तो मैं तुम्हें चार-पाँच दिन तक लटकाकर रखूँगा, भाप में पकाऊँगा और फिर इन छोटे शैतानों को उनके पेय के साथ कुतरने के लिए दावत के तौर पर दूँगा।"

यह सुनकर सुअर थैले के अंदर ही गालियां बकने लगा: "तुम्हें धिक्कार है, राक्षस। यह शर्मनाक हरकत है। तुमने मुझे खाने के लिए भले ही सारे हथकंडे और तरकीबें आजमाई हों, लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि मैं तुम सबको सिर फोड़ने वाली महामारी फैला दूंगा।" वह मूर्ख लगातार गालियां बकता और चिल्लाता रहा, लेकिन हम उसके बारे में और कुछ नहीं कहेंगे।

इसी बीच, बंदर जब साधु सैंड के साथ बैठा था, तो उसे अचानक एक बदबूदार हवा का झोंका महसूस हुआ। "यह तो बुरा है," उसने छींकते हुए कहा। "यह तो बहुत ही खराब हवा है। मुझे लगता है कि सुअर कहीं खो गया है।"

"लेकिन अगर वह रास्ता भटक जाए तो क्या वह रास्ता नहीं पूछेगा?" फ्रायर सैंड ने पूछा।

"वह जरूर किसी राक्षस से टकरा गया होगा," बंदर ने कहा।

"लेकिन अगर उसकी मुलाकात किसी दानव से हुई होती तो क्या वह वापस यहीं नहीं भागकर आ जाता?" फ्रायर सैंड ने कहा।

"पक्का नहीं कह सकता," बंदर ने कहा। "तुम यहीं बैठो और चीजों का ध्यान रखो, मैं खाई के उस पार जाकर देखता हूँ कि क्या हो रहा है।"

"मुझे जाने दो," फ्रायर सैंड ने कहा। "तुम्हारी पीठ में अभी भी दर्द है और वह तुमसे फिर से लड़ सकता है।"

"तुम तो किसी काम के नहीं होगे," बंदर ने कहा। "यह काम मुझे ही करना पड़ेगा।"

शानदार बंदर ने दर्द से दांत पीसते हुए, हाथ में गदा उठाई, खाई पार की और गुफा के मुहाने पर चिल्लाया, "क्रूर राक्षस!" द्वार पर खड़ा छोटा शैतान अंदर भागा और खबर दी कि नौसिखिया सूर्य फिर से द्वार पर चिल्ला रहा है। दानव राजा ने बंदर को पकड़ने का आदेश दिया। एक जोरदार युद्धघोष के साथ, तलवारों और भालों से लैस राक्षसों

की भीड़ ने द्वार खोल दिए और चिल्लाए, "उसे पकड़ो!"
बंदर सचमुच इतना थक चुका था कि उनसे लड़ नहीं सकता था। उसने खुद को रास्ते के किनारे सटा लिया और चिल्लाया,
"बदलो," और उसने खुद को सोने की कढ़ाई वाले कपड़े में लिपटे एक बंडल में बदल लिया। जैसे ही उन छोटे शैतानों ने उसे देखा, उन्होंने उसे उठाया और अंदर ले गए। "महाराज," उन्होंने बताया, "बंदर डरपोक है। जैसे ही हमने 'उसे पकड़ो' चिल्लाया, वह इतना डर गया कि उसने अपना बंडल गिरा दिया और भाग गया।"
“उसमें कुछ भी कीमती नहीं होगा,” राक्षस राजा ने मुस्कुराते हुए कहा। “शायद कुछ पुराने भिक्षुओं के वस्त्र और पुरानी टोपियाँ ही होंगी। उन्हें अंदर ले जाओ, धोओ और फाड़कर पोछे के रूप में इस्तेमाल करो।” छोटे राक्षसों में से एक ने उस गठ्ठे को गुफा के अंदर ले लिया, उसे पता ही नहीं था कि वह वास्तव में बंदर है। “वाह, ये लोग गठ्ठा अंदर ले जा रहे हैं।” दुष्ट आत्मा ने बिना ध्यान दिए उसे दरवाजे के अंदर गिरा दिया।
शानदार बंदर रूपान्तरण के भीतर रूपान्तरण और छल के भीतर छल कर सकता था। उसने अपने बालों में से एक बाल खींचकर उस पर जादुई साँस फूँकी और उसे पहले गुच्छे जैसा बना दिया। फिर उसने खुद को एक मक्खी में बदल लिया और दरवाजे के धुरी पर बैठ गया। उसे सूअर की अस्पष्ट सी बड़बड़ाहट सुनाई दी, जैसे कोई सूअर बुखार से पीड़ित हो। जब बंदर उसे ढूंढने के लिए ऊपर गया तो उसने सूअर को चमड़े के बोरे में लटका हुआ पाया। बंदर बोरे पर उतरा, जहाँ से उसे सूअर को राक्षस को कोसते और गालियाँ देते हुए सुनाई दिया।
अध्याय 41
580
पश्चिम की यात्रा
"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई बोधिसत्व गुआनयिन होने का नाटक करने की और मुझे यहाँ आने के लिए बहकाने की! फिर तुमने मुझे लटका दिया और कहा कि तुम मुझे खा जाओगे। एक दिन जल्द ही मेरा बड़ा भाई..."
वह अपनी असाधारण महान ऋषि शक्तियों का उपयोग करेगा।
और तुम सब शैतान एक झटके में फंस जाओगे।
वह इस बैग को खोलेगा और मुझे बाहर निकलने देगा।
मैं तुम्हें अपने रेक से हजारों बार मारूंगा।"

यह सुनकर बंदर बहुत खुश हुआ। "वह बेवकूफ भले ही अंदर थोड़ा अकड़ू हो, लेकिन वह अपनी असलियत नहीं छुपा रहा। मैं उस शैतान को पकड़ूंगा और उससे अपना बदला लूंगा।"

बंदर अभी सुअर को बचाने की योजना बना ही रहा था कि तभी उसने दानव राजा को चिल्लाते हुए सुना, "छह योद्धा कहाँ हैं?" उसके छह छोटे शैतान मित्रों को योद्धा की उपाधि दी गई थी। हर एक का अपना नाम था। वे थे बादलों में धुंध, धुंध में बादल, अग्नि-प्रबल, पवन-प्रबल, तापक और रसोइया। छह योद्धा आगे बढ़े और घुटने टेक दिए। दानव ने पूछा, "क्या तुम जानते हो कि बूढ़ा राजा कहाँ रहता है?"

"हां," योद्धाओं ने उत्तर दिया।

"आज रात जाकर महाराज को यहाँ आमंत्रित करो। उन्हें बताओ कि मैंने एक तांग पुजारी को पकड़ा है जिसे मैं उनके लिए पकाऊँगा, और इससे वह हज़ार युगों तक जीवित रहेगा।" छह राक्षस आदेश लेकर बाहर चले गए। बंदर भिनभिनाते हुए थैले से नीचे उतरा और गुफा से निकलते ही उन छह राक्षसों के पीछे-पीछे चल दिया।

अगर आपको नहीं पता कि पुराने राजा को वहां कैसे आमंत्रित किया गया था, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 42

महान ऋषि श्रद्धापूर्वक दक्षिणी सागर की यात्रा करते हैं

अपनी दया से गुआनयिन ने लाल लड़के को बांध दिया

कहानी बताती है कि कैसे छह योद्धा गुफा से निकलकर दक्षिण-पश्चिम की ओर चल पड़े। बंदर ने सोचा, "वे बूढ़े राजा को हमारे स्वामी को खाने के लिए बुलाने वाले हैं। मुझे यकीन है कि वह बैल दानव राजा ही होगा। पुराने दिनों में हमारी बहुत अच्छी बनती थी और हम पक्के दोस्त थे, लेकिन अब मैं सीधा-सादा हो गया हूँ और वह अब भी एक दुष्ट राक्षस है। हालाँकि उसे देखे हुए बहुत समय हो गया है, फिर भी मुझे उसकी शक्ल याद है। मुझे लगता है कि मैं खुद को बैल दानव राजा में बदल लूँगा, उन्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश करूँगा और देखूँगा कि क्या होता है।" शानदार बंदर ने उन छह छोटे राक्षसों को चकमा दिया, अपने पंख फैलाए, उनसे लगभग बारह मील आगे उड़ गया, खुद को झटका दिया और बैल दानव राजा में बदल गया। उसने कुछ बाल खींचे, "रूप बदलो" चिल्लाया और उन्हें कुत्तों, बाज़ों, धनुषों और क्रॉसबो से लैस छोटे शैतानों में बदल दिया, मानो वे पहाड़ी घाटी में शिकार करने गए हों। फिर वह उन

छह योद्धाओं का इंतज़ार करने लगा।
जैसे ही छह योद्धा लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ रहे थे, अचानक उन्होंने देखा कि बैल दानव राजा उनके बीच में बैठा है। हीटर और कुकर घबराकर घुटनों के बल गिर पड़े और बोले, "महाराज, आप यहाँ आ गए हैं!"
अध्याय 42
581
पश्चिम की यात्रा
बादलों में धुंध, धुंध में बादल, अग्नि-प्रबल और पवन-तेज, ये सभी सामान्य मनुष्य थे जिनकी आंखें नश्वर थीं, जो सत्य और असत्य में भेद करने में असमर्थ थे, और वे भी घुटने टेककर प्रणाम करते हुए बोले, "महाराज, हमें अग्नि-बादल गुफा के ऋषि बालक राजा ने भेजा है ताकि हम आपको तांग पुजारी के मांस के भोज में आमंत्रित कर सकें, जो आपके आयु को हजार युगों तक बढ़ा देगा।"
"उठो बच्चों," बंदर ने कहा, "और मेरे साथ मेरी गुफा में वापस चलो, मैं कपड़े बदल लेता हूँ।"
"महाराज, इतनी परेशानी उठाने की कोई ज़रूरत नहीं है," नन्हे शैतानों ने झुककर प्रणाम करते हुए कहा। "आपको वापस जाने की ज़रूरत नहीं है। यह बहुत लंबा रास्ता है, और मुझे यकीन है कि अगर आप गए तो हमारे राजा हमसे नाराज़ हो जाएँगे। कृपया हमारे साथ आइए।"
“कितने अच्छे बच्चे हैं!” बंदर ने कहा। “बहुत अच्छा, तो फिर आगे चलो। मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ।” छहों नन्हे शैतानों ने खुद को संभाला और महान ऋषि के लिए रास्ता साफ करने के लिए चिल्लाए, जो उनके पीछे आ रहे थे।
वे जल्द ही गुफा में वापस आ गए। विंड-फास्ट और फायर-स्पीडी अंदर दौड़कर खबर देने गए, "महाराज, महामहिम यहाँ हैं।"
“तुम लोग इतनी जल्दी लौट आए, यह तो सराहनीय है,” राक्षस राजा ने प्रसन्नता से कहा। फिर उसने अपने सभी सेनापतियों को आदेश दिया कि वे अपने झंडे और ढोल के साथ सेना को जुलूस में शामिल करें और बूढ़े राजा का स्वागत करें। गुफा में मौजूद सभी राक्षस आज्ञाकारी होकर जुलूस में शामिल हो गए। बंदर ने अपनी छाती फुलाकर और बड़े घमंड से खुद को संभाला, अपने सारे बाल वापस खींच लिए जिन्हें उसने बाज़ पालने वालों और शिकारियों में बदल दिया था, फिर सीधे द्वार से अंदर चला गया

और दक्षिण की ओर मुख करके केंद्रीय सिंहासन पर एक सम्राट की तरह बैठ गया।
लाल लड़के ने घुटने टेककर उन्हें प्रणाम किया और कहा, "महाराज, आपका पुत्र आपको प्रणाम करता है।"
"इसकी कोई ज़रूरत नहीं है," बंदर ने कहा। चार बार प्रणाम करने के बाद दानव राजा अपने पिता के नीचे खड़ा हो गया।
"तुमने मुझे यहाँ किसलिए बुलाया है, लड़के?" बंदर ने पूछा।
"तुम्हारे मूर्ख पुत्र," दानव ने झुककर कहा, "कल तुमने किसी को पकड़ा—पूर्व के महान तांग राजवंश के एक पुजारी को। मैंने अक्सर सुना है कि उसने दस जन्मों तक अपने आचरण का अभ्यास किया है, और यदि तुम उसका एक टुकड़ा खाओगे तो तुम पेंगलाई या यिंगझोऊ के अमर के समान दीर्घायु हो जाओगे। मैंने स्वयं उसे खाने का साहस नहीं किया, इसीलिए मैंने महाराज से तांग पुजारी का मांस साझा करने और तुम्हारा जीवन हजार युगों तक बढ़ाने का अनुरोध किया है।"
यह सुनकर बंदर चौंक गया और पूछा, "कौन सा तांग पुजारी, मेरे बच्चे?"
"वह जो पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने जा रहा है," दानव राजा ने उत्तर दिया।
"लेकिन क्या वह नौसिखिया सूर्य का गुरु नहीं है?" बंदर ने पूछा।
"हाँ," राक्षस राजा ने कहा।
बंदर ने हाथ हिलाया, सिर झुकाया और बोला, "उससे पंगा मत लो। जिससे चाहो उससे लड़ लो, पर उससे नहीं। मेरे प्यारे बच्चे, क्या तुम्हें पता नहीं कि वह कैसा आदमी है? उस बंदर के पास अपार जादुई शक्तियां हैं और वह हर तरह का रूप बदल सकता है। जब उसने स्वर्ग में तबाही मचाई थी, तो जेड सम्राट ने एक लाख स्वर्गीय सैनिकों को स्वर्ग और पृथ्वी पर जाल बिछाने के लिए भेजा था, लेकिन वे उसे पकड़ नहीं पाए। तुमने उसके स्वामी को खाने की हिम्मत कैसे की? पुजारी को उसके काम से विदा कर दो, और उस बंदर से पंगा मत लो। अगर उसे पता चल भी गया कि तुमने उसके स्वामी को खा लिया है, तो उसे तुमसे लड़ने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। उसे बस अपने उस सोने की पट्टी वाले डंडे से पहाड़ की ढलान में एक छेद करना होगा और पूरा पहाड़ ही गिर जाएगा।"
फिर तुम कहाँ रह पाओगे, मेरे बेटे, और बुढ़ापे में मेरा सहारा कौन होगा?

"महाराज, मैं क्या कहूँ? आप तो उसे बढ़ावा दे रहे हैं और मुझे छोटा दिखा रहे हैं।"
वह बंदर और उसके कुछ साथी शिष्य मेरे पहाड़ों को पार कर रहे थे, तभी मैंने रूप परिवर्तन किया और उसके गुरु को उठा ले गया। वह और सुअर मेरा पीछा करते हुए यहाँ द्वार तक आ गए और रिश्तेदारी के बारे में कुछ बेतुकी बातें करने लगे। मुझे इतना गुस्सा आया कि हम दोनों के बीच कुछ दौर तक लड़ाई हुई। बस इतना ही हुआ। वह कोई खास नहीं था। फिर सुअर मुझ पर हमला करने आया, तो मैंने अपनी सच्ची समाधि अग्नि का प्रयोग किया और उसे हरा दिया। बंदर इतना हताश हो गया कि वह चारों समुद्रों के ड्रैगन राजाओं से बारिश की भीख मांगने चला गया, लेकिन वे मेरी सच्ची समाधि अग्नि को बुझा नहीं सके। मैंने उसे इतना जला दिया कि वह बेहोश हो गया, फिर मैंने सुअर को जल्दी से दक्षिणी समुद्रों की बोधिसत्व गुआनयिन को बुलाने के लिए भेज दिया। मैंने खुद को गुआनयिन में बदल लिया और सुअर को यहाँ आने के लिए बहकाया: वह अब 'जैसा चाहो' थैली में लटका हुआ है, और मैं उसे अपने सभी साथियों के लिए दावत के तौर पर भाप में पकाऊँगा। वह बंदर आज सुबह फिर से हमारे द्वार पर चिल्ला रहा था। मैंने उसकी गिरफ्तारी का आदेश दिया, और इससे वह इतना घबरा गया कि उसने अपना गठ्ठा गिरा दिया और भाग गया। तभी मैंने महाराज को आमंत्रित किया ताकि आप देख सकें कि तांग पुजारी जीवित रूप में कैसा दिखता था, इससे पहले कि हम उसे पकाकर आपको खिलाएं और आप अमर हो जाएं।
"मेरे प्यारे बच्चे," बंदर हँसते हुए बोला, "तुम्हें सिर्फ इतना पता है कि तुमने उसे अपनी सच्ची समाधि अग्नि से कैसे हराया। तुम यह भूल रहे हो कि वह बहत्तर रूपों में रूपांतरित हो सकता है।"
"वह चाहे जो भी रूप धारण कर ले, मैं उसे हमेशा पहचान सकता हूँ," दानव राजा ने कहा, "और मुझे यकीन है कि वह यहाँ दोबारा हमला करने की हिम्मत नहीं करेगा।"
बंदर ने कहा, "मेरे बेटे, तुम शायद कभी-कभी उसे पहचान पाओगे, लेकिन वह भेड़िये, ओरंगुटान या हाथी जैसे किसी बड़े जानवर में नहीं बदलेगा। अगर वह बदल भी गया तो गुफा के अंदर नहीं आ पाएगा। अगर वह किसी छोटे जानवर में बदल जाए तो तुम्हें उसे पहचानना मुश्किल होगा।"
"चाहे वो खुद को कितना भी छोटा क्यों न बना ले, हमने हर दरवाजे पर चार-पांच छोटे

शैतान तैनात कर रखे हैं। वो कभी अंदर नहीं घुस पाएगा।"
"तुम्हें इस बात का एहसास नहीं है कि वह खुद को मक्खी, मच्छर, पिस्सू, मधुमक्खी, तितली या सबसे छोटे कीड़े में बदल सकता है। वह तो बिल्कुल मेरे जैसा दिख भी सकता है। तुम शायद ही पहचान पाओगे।"
"चिंता मत करो," दानव राजा ने कहा। "चाहे उसके पास लोहे के हौसले और कांसे का दिल ही क्यों न हो, वह कभी भी यहाँ आने की हिम्मत नहीं करेगा।"
"तो फिर, मेरे प्यारे बेटे," बंदर ने कहा, "तुम्हारे पास ऐसी कौन सी शक्तियाँ हैं जो तुम्हें उससे कहीं अधिक शक्तिशाली बनाती हैं, जिससे तुम मुझे आज यहाँ तांग पुजारी का मांस खाने के लिए आमंत्रित कर सके? वैसे भी, मुझे नहीं लगता कि आज मेरे पास ऐसी कोई शक्ति होगी।"
"क्यों नहीं?" राक्षस राजा ने कहा।
बंदर ने कहा, "मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, और तुम्हारी माँ मुझे अच्छे काम करने के लिए लगातार टोकती रहती है। मुझे बस शाकाहारी भोजन करने में ही रुचि है।"
दानव राजा ने कहा, "महाराज, क्या यह स्थायी है या केवल एक महीने के लिए?"
"दोनों में से कोई नहीं," बंदर ने कहा। "इसे 'गरज के साथ शाकाहार' कहते हैं। इसे महीने में चार दिन करना होता है।"
"कौन से चार?" राक्षस ने पूछा।
"महीने के वो तीन दिन जिनके नाम में 'शिन' आता है, और छठा दिन भी। आज 'शिन यू' का दिन है, तो इसका मतलब है कि मुझे शाकाहारी भोजन करना चाहिए। वैसे भी, 'यू' के दिनों में मेहमानों का आना ठीक नहीं होता। लेकिन कल मैं वापस आकर उसे खुद रगड़-रगड़ कर नहला सकती हूँ और भाप से नहला सकती हूँ, और तुम्हारे साथ उसका आनंद ले सकती हूँ, मेरे प्यारे।"
अध्याय 42
583
पश्चिम की यात्रा
यह सब देखकर दानव राजा सोचने लगा, "मेरे पिता आमतौर पर मानव मांस खाते हैं और उनकी उम्र एक हजार वर्ष से अधिक हो चुकी है। अब वे शाकाहारी भोजन के बारे में क्यों सोच रहे हैं? उनके सभी बुरे कर्मों को देखते हुए, महीने में तीन-चार दिन शाकाहारी भोजन उनकी भरपाई नहीं कर सकता। कुछ तो गड़बड़ है। यह बहुत ही

संदिग्ध है।" वह पीछे हट गया और भीतरी द्वार से बाहर निकल गया, छह योद्धाओं को बुलवाया और उनसे पूछा, "जब आपने उन्हें निमंत्रण दिया था तब महाराज कहाँ थे?"
"आधे रास्ते में हैं," उन नन्हे शैतानों ने जवाब दिया।
"मुझे लगा था कि तुम बहुत तेज़ हो," दानव राजा ने कहा। "क्या तुम उसके घर नहीं गए थे?"
"नहीं," उन नन्हे शैतानों ने कहा, "हमने ऐसा नहीं किया।"
"यह तो बुरा हुआ," दानव राजा ने कहा। "मुझे धोखा दिया गया है। यह महाराज नहीं हैं।"
वे सभी छोटे शैतान उसके सामने घुटने टेककर बैठ गए और बोले, "महाराज, क्या आप अपने पिता को पहचान नहीं सकते?"
“वह दिखने और चलने में बिलकुल मेरे पिता जैसा है,” दानव राजा ने कहा, “पर उसकी बातें मेल नहीं खातीं। मुझे डर है कि मैं उसके किसी रूपान्तरण का शिकार हो गया हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम सब बहुत सावधान रहो। तुममें से तलवारबाज़ अपनी तलवारें निकाल लो, भाला चलाने वाले अपने भाले तेज़ कर लो, और जो लाठी और रस्सियों का इस्तेमाल कर सकते हो, तैयार हो जाओ। मैं उससे फिर पूछताछ करूँगा और देखूँगा कि वह क्या कहता है। अगर वह सचमुच महाराज है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम आज, कल या एक महीने बाद दावत मनाते हैं। लेकिन अगर उसकी बातें गलत हैं, तो जैसे ही मैं इशारा करूँ, तुम सब एक साथ हमला कर देना।”
जब सभी छोटे शैतानों को उनके आदेश दे दिए गए, तो दानव राजा मुड़ा, अंदर गया और बंदर को प्रणाम किया, जिसने कहा, "परिवार में इतनी औपचारिकता की कोई ज़रूरत नहीं है, मेरे बच्चे। प्रणाम मत करो। जो कहना है कह दो।"
राक्षस राजा ने बंदर के सामने प्रणाम किया और उत्तर दिया, "आपके मूर्ख पुत्र ने वास्तव में आपको दो कारणों से आमंत्रित किया था। एक तो आपको तांग पुजारी का मांस भेंट करना था, और दूसरा आपसे कुछ पूछना था। मैं उस दिन अपने शुभ प्रकाश पर सैर कर रहा था, तभी मैं बादलों के नौवें स्तर तक पहुँच गया और वहाँ मेरी मुलाकात ताओवादी गुरु झांग दाओलिंग से हो गई।"
"क्या आपका मतलब ताओवादी पोप झांग दाओलिंग से है?" बंदर ने पूछा।
"हाँ," दानव राजा ने उत्तर दिया। "उसने तुमसे क्या कहा?" बंदर ने पूछा।
“यह देखकर कि आपके पुत्र के सभी अंग पूर्ण हैं और मेरे माथे, नाक और ठोड़ी के

बीच की दूरी शुभ रूप से समतुल्य है," राक्षस राजा ने उत्तर दिया, "उन्होंने मुझसे मेरे जन्म का घंटा, दिन, महीना और वर्ष पूछा। आपका बच्चा इतना छोटा है कि उसे यह सब ठीक से याद नहीं होगा। मास्टर झांग एक प्रतिभाशाली ज्योतिषी हैं, और उन्होंने मेरी कुंडली बनाने की पेशकश की है। महाराज, मैं इसी बारे में जानकारी लेना चाहता था, ताकि अगली बार जब मैं उनसे मिलूँ तो उनसे अपनी कुंडली बनवा सकूँ।"

यह देखकर बंदर मन ही मन मुस्कुराया: "क्या शानदार राक्षस है। जब से मैं बौद्ध बना और इस यात्रा पर तांग पुजारी का साथ देने लगा, तब से मैंने कई राक्षसों को पकड़ा है, लेकिन उनमें से कोई भी इतना तेज नहीं था जितना यह।"

वह मुझसे परिवार के बारे में छोटी-छोटी बातें पूछ रहा है, और मुझे बस झूठे जवाब देने होंगे। भला मुझे कैसे पता चलेगा कि उसका जन्म कब हुआ था? शानदार बंदर राजा बहुत ही चालाक था।

वह मध्य स्थान पर शान से बैठे रहे, चेहरे पर जरा भी भय का भाव नहीं था। मुस्कुराते हुए उन्होंने उत्तर दिया, "कृपया उठो, प्यारे बच्चे। मैं अब इतना बूढ़ा हो गया हूँ कि कुछ भी मेरी मर्जी के मुताबिक नहीं होता। मुझे अभी ठीक से याद नहीं आ रहा कि तुम्हारा जन्म कब हुआ था। मैं कल घर जाकर तुम्हारी माँ से पूछ लूँगा।"

"महाराज, आप तो हमेशा मेरे जन्म-समय का ब्यौरा देते रहते हैं," राक्षस राजा ने कहा, "और कहते हैं कि मैं स्वर्ग जितना लंबा जिऊंगा। आप अब भूल तो नहीं गए। ये तो सरासर झूठ है। आप झूठे हैं।" फिर उसने संकेत दिया और सारे राक्षस बंदर पर टूट पड़े और तलवारों व भालों से उस पर वार करने लगे।

महान ऋषि ने अपने गदा से उनके वारों को रोका, फिर से अपने सामान्य रूप में आ गए और दुष्ट आत्मा से कहा, "तुम ही तो घिनौने हो, प्यारे बच्चे। किसी बेटे के लिए अपने ही पिता पर हमला करना बिल्कुल भी उचित नहीं हो सकता।"

राक्षस राजा शर्म से इतना व्याकुल हो गया कि उसने बंदर की ओर देखने की हिम्मत ही नहीं की। तभी बंदर भाई सुनहरी रोशनी में बदल गया और गुफा से निकल गया।

"महाराज, नौसिखिया सन चला गया है," उन नन्हे शैतानों ने सूचना दी।

"खैर, जो हुआ सो हुआ," दानव राजा ने कहा। "अच्छा हुआ। इस बार तो उसने मुझे

हरा दिया। द्वार बंद कर दो और उससे कुछ मत कहना। चलो, तांग पुजारी को साफ करके पकाते हैं और खा जाते हैं।”

अपनी लाठी लहराते हुए बंदर जोर-जोर से हंसते हुए खाई के उस पार वापस चला गया। यह सुनकर साधु सैंड जंगल से दौड़कर उसके पास आया और बोला, "भाई, तुम्हें बहुत देर हो गई। तुम क्यों हंस रहे हो? मुझे उम्मीद है कि तुम मालिक को बचाने की खुशी में हंस रहे हो।"

"नहीं, भाई," बंदर ने जवाब दिया। "लेकिन भले ही मैंने उसे अभी तक बचाया नहीं है, इस बार मैं जीत गया।"

"कैसे?" फ्रायर सैंड ने पूछा।

"उस दुष्ट ने गुआनयिन का वेश धारण करके सुअर को यहाँ वापस बुलाया और उसे चमड़े के थैले में लटका दिया। मैं सुअर को बचाने का तरीका सोच ही रहा था कि तभी उस दानव ने अपने छह तथाकथित योद्धाओं को भेजकर बूढ़े राजा को स्वामी के मांस का भोज आमंत्रित किया। मुझे लगा कि बूढ़ा राजा निश्चित रूप से बैल दानव राजा होगा, इसलिए मैंने उसका वेश धारण किया, अंदर गया और सम्मान के स्थान पर बैठ गया। उसने मुझे 'महाराज' और 'पिताजी' कहकर पुकारा।"

और मैंने जवाब दिया; और जब उसने सिर झुकाकर प्रणाम किया तो मैं सीधा बैठ गया। यह बहुत अच्छा था। मैं सचमुच जीत गया।

"लेकिन जब आप आसानी से अंक बना रहे थे, तब गुरु का जीवन भीषण खतरे में था," फ्रायर सैंड ने कहा।

"चिंता मत करो," बंदर ने कहा। "मैं यहाँ मौजूद बोधिसत्व से पूछने जा रहा हूँ।"

"लेकिन तुम्हारी पीठ में अभी भी दर्द हो रहा है," फ्रायर सैंड ने कहा।

“अब ऐसा नहीं है,” बंदर ने कहा। “जैसा कि पुरानी कहावत है, जब चीजें अच्छी होती हैं तो मन प्रसन्न हो जाता है। घोड़े और सामान का ध्यान रखना। मैं जा रहा हूँ।”

"तुमने उसे इतना शत्रु बना लिया है," फ्रायर सैंड ने कहा, "कि मुझे डर है कि वह गुरु की हत्या कर देगा। जितनी जल्दी हो सके, काम पर लग जाओ।"

"मैं जल्दी आता हूँ," बंदर ने कहा। "मैं खाना खाने में लगने वाले समय में वापस आ जाऊँगा।"

जब वे अभी बोल ही रहे थे, तभी महान ऋषि ने फ्रायर सैंड को छोड़कर एक कलाबाज बादल पर सवार होकर दक्षिणी महासागर की ओर उड़ान भरी। एक घंटे से

भी कम समय में ही उन्हें पोटारका द्वीप दिखाई देने लगा। उन्होंने पलक झपकते ही अपना बादल उतारा और सीधे राका क्रैग की ओर चल दिए, जहाँ चौबीस देवताओं ने उनसे पूछा, "महान ऋषि, आप कहाँ जा रहे हैं?"
बंदर ने उनसे शिष्टाचार का आदान-प्रदान करने के बाद उत्तर दिया, "मैं बोधिसत्व के दर्शन करना चाहूंगा।"
“कृपया थोड़ी देर प्रतीक्षा करें, हम उन्हें सूचना दे देते हैं,” देवताओं ने कहा। हरिति और अन्य देवता ज्वार गुफा के प्रवेश द्वार पर यह सूचना देने गए, “बोधिसत्व, सन वुकॉन्ग दर्शन के लिए आए हैं।” बोधिसत्व अध्याय 42
585
पश्चिम की यात्रा
उसे अंदर लाने का अनुरोध किया गया।
महान ऋषि ने अपने वस्त्र समेटे और आज्ञाकारी भाव से आदरपूर्वक अंदर चले गए। बोधिसत्व को देखकर उन्होंने उनके समक्ष प्रणाम किया। बोधिसत्व ने कहा, "वुकोंग, आप स्वर्ण झींगुर गुरु को पश्चिम में शास्त्र लाने के लिए ले जाने के बजाय यहाँ क्यों आए हैं?"
“बोधिसत्व,” बंदर ने उत्तर दिया, “आपके शिष्य ने विनम्रतापूर्वक सूचित किया है कि तांग पुरोहित को उनकी यात्रा में साथ ले जाते समय, वह हाओ पर्वत पर स्थित सूखे चीड़ के घाटी में अग्नि-बादल गुफा में पहुँच गए हैं। लाल बालक नामक एक दुष्ट आत्मा, जिसे ऋषि बालक राजा की उपाधि प्राप्त है, ने मेरे गुरु का अपहरण कर लिया है। मैं और सुअर उसके द्वार तक पहुँचे और उससे युद्ध किया, लेकिन उसने सच्ची समाधि अग्नि प्रज्वलित कर दी। इससे हमारे लिए उसे हराना और गुरु को बचाना असंभव हो गया। मैं पूर्वी सागर की ओर भागा और चारों सागरों के ड्रैगन राजाओं से वर्षा करने का अनुरोध किया, लेकिन इससे आग पर काबू नहीं पाया जा सका, और मैं धुएँ से बुरी तरह घायल हो गया, जिससे मेरी जान जाते-जाते बची।”
बोधिसत्व ने पूछा, "अगर मेरे पास सच्ची समाधि अग्नि और इतनी महान शक्तियां हैं, तो तुमने ड्रैगन राजाओं को क्यों बुलाया, मुझे क्यों नहीं?"
"मैं आना चाहता था," बंदर ने जवाब दिया, "लेकिन धुएं से मैं इतना बुरी तरह प्रभावित हो गया था कि मैं बादल पर सवारी नहीं कर सकता था।"
मैंने पिग को भेजा है कि वह आकर आपसे मदद मांगे।

"लेकिन वह यहाँ नहीं आया है," बोधिसत्व ने उत्तर दिया।
"बस यही बात है," बंदर ने कहा। "सूअर के इस द्वीप पर पहुँचने से पहले ही दुष्ट आत्मा ने तुम्हारा रूप धारण कर लिया, बोधिसत्व बनकर उसे गुफा में ले गई, और अब उसे चमड़े के थैले में लटकाकर भाप में पकाकर खाने के लिए तैयार कर रही है।"
यह सुनकर बोधिसत्व क्रोधित हो उठीं, "उस दुष्ट राक्षस की हिम्मत कैसे हुई कि वह मेरा रूप धारण कर ले!" क्रोध से दहाड़ते हुए उन्होंने अपना कीमती पवित्र कलश समुद्र में फेंक दिया। बंदर इतना भयभीत हो गया कि उसके रोंगटे खड़े हो गए। वह खड़ा हुआ, बोधिसत्व के सिंहासन के नीचे खड़ा हुआ और बोला, "यदि बोधिसत्व अपना क्रोध नहीं काबू में रखतीं तो मुझे अनुचित बोलने और उनके आचरण को बिगाड़ने का दोषी ठहराया जाएगा। यह बहुत बुरा है।"
तुमने अपना गुलदस्ता फेंक दिया। अगर मुझे पता होता तो तुम मुझ पर बहुत बड़ा एहसान कर सकते थे और उसे मुझे दे सकते थे।
उसके मुंह से शब्द पूरे होने से पहले ही समुद्र की लहरें नाचने लगीं और उनमें से फूलदान बाहर निकला। वह एक राक्षस की पीठ पर रखा हुआ था। जब बंदर भाई ने राक्षस को ध्यान से देखा तो उसे पता चला कि वह कैसा दिखता है:
जहां से वह आता है, वहां उसे मिट्टी ढोने वाले के रूप में जाना जाता है।
समुद्र के नीचे अकेले ही वैभव से चमकता हुआ,
अपने प्राचीन गुमनामी काल से ही स्वर्ग और पृथ्वी का ज्ञान रखते हुए,
और अपने शांतिपूर्ण छिपने के स्थान से भूतों और देवताओं के तौर-तरीकों को जानता है।
छिपने पर वह अपना सिर और पूंछ अंदर खींच लेता है।
लेकिन उसके पैर उसे उड़ने जितनी तेज गति से तैरने में सक्षम बनाते हैं।
उस पर राजा वेन ने त्रिकोण बनाया और ज़ेंग युआन ने शकुन बताए;

उन्हें हमेशा फू शी के दरबार में पेश किया जाता था।
इस आदिम ड्रैगन द्वारा समस्त सुंदरता प्रकट होती है।
लहरों को बुलाकर उन्हें उत्पन्न करना।

सोने के धागों से उसका कवच एक साथ सिला हुआ है।
और चितकबरी सतह कछुए के खोल को रंग देती है।
इसकी पीठ पर अष्टभुजाकार नौ गुना महल बना हुआ है;
उसके हरे रंग के कोट पर बिखरी हुई चमक के धब्बे दिखाई देते हैं।
ड्रैगन राजा जीवित रहते हुए उसके साहस की प्रशंसा करता था;
वह भगवान बुद्ध की मृत्यु के बाद उनकी पट्टिका को अपने साथ ले जाता है।
यदि आप जानना चाहते हैं कि इस प्राणी को क्या कहा जाता है,
वह दुष्ट कछुआ है जो हवा और लहरें पैदा करता है।

कछुआ अपनी पीठ पर कलश लिए किनारे पर रेंगता हुआ आया और बोधिसत्व को चौबीस बार सिर हिलाकर प्रणाम किया। यह देखकर बंदर मन ही मन हँसा और बोला, "यह कलश का रखवाला ही होगा। मुझे लगता है कि जब भी कलश खो जाता है, वे इसी से मांगते होंगे।"

"वुकोंग, तुम क्या कह रहे हो?"

"कुछ नहीं," बंदर ने जवाब दिया।

“कलश लाओ,” बोधिसत्व ने आदेश दिया। बंदर उसे उठाने गया, लेकिन उसके लिए उसे हिलाना उतना ही असंभव था जितना कि एक मक्खी के लिए पत्थर के खंभे को एक इंच के अंश तक भी हिलाना। बंदर बोधिसत्व के पास वापस आया, उनके सामने घुटने टेककर बोला, “बोधिसत्व, आपका शिष्य इसे हिला नहीं सकता।”

बोधिसत्व ने कहा, "अरे बंदर, तुम तो बस बातें ही कर सकते हो। अगर तुम एक फूलदान भी नहीं हिला सकते, तो राक्षसों को वश में करने की उम्मीद कैसे कर सकते हो?"

"सच कहूँ तो, बोधिसत्व, मैं सामान्यतः इसे हिला सकता हूँ, पर आज मैं ऐसा नहीं कर पा रहा हूँ। मुझे लगता है कि दुष्ट आत्मा द्वारा पीटे जाने से मैं कमजोर हो गया हूँ।"

बोधिसत्व ने कहा, “यह आमतौर पर एक खाली कलश होता है, लेकिन जब मैंने इसे समुद्र में फेंका, तो यह तीनों नदियों, पाँच झीलों, आठ समुद्रों, चारों धाराओं और सभी नालों, झरनों, तालाबों और गुफाओं के चारों ओर घूमकर पूरे समुद्र जितना पानी सोख लिया। तुम समुद्र को उठाने के लिए बिल्कुल भी शक्तिशाली नहीं हो। इसीलिए तुम इसे हिला नहीं सकते।”

"जी हां," बंदर भाई ने अपने हाथ जोड़ते हुए कहा, "तुम्हारे शिष्य को यह बात पता

नहीं थी।"
फिर बोधिसत्व आगे बढ़ीं, अपने दाहिने हाथ से कलश को धीरे से उठाया और उसे अपने बाएं हाथ की हथेली पर रख दिया। कछुए ने बोधिसत्व को फिर से सिर हिलाकर अभिवादन किया और वापस समुद्र में चला गया। "तो तुम अध्याय 42 रखते हो।"
587
पश्चिम की यात्रा
"अपने फूलदान की देखभाल के लिए एक घरेलू मंदबुद्धि को रखो," बंदर ने कहा।
बोधिसत्व ने बैठते हुए कहा, "वुकोंग, मेरी इस बोतल में जो मीठी ओस है, वह ड्रैगन राजाओं से बिल्कुल अलग है।"
निजी बारिश समाधि की अग्नि बुझा सकती है। मैं तुम्हें इसे ले जाने देने वाली थी, लेकिन तुम इसे हिला नहीं सकते। फिर मैंने नाग कन्या को तुम्हारे साथ ले जाने का सोचा, लेकिन तुम्हारा हृदय दयालु नहीं है और तुम पक्के धोखेबाज हो। मेरी नाग कन्या बहुत सुंदर है, और कलश अनमोल है; अगर तुम इनमें से कोई भी चुराओगे तो मैं तुम्हें ढूंढने के लिए बहुत व्यस्त रहूंगी। इसलिए तुम्हें कुछ ज़मानत के तौर पर छोड़ना होगा।
“कितने दुख की बात है,” बंदर ने कहा, “कि आप इतने शंकालु हैं, बोधिसत्व। जब से मैंने धर्म परिवर्तन किया है, मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है। आप मुझसे सुरक्षा के तौर पर क्या छोड़ने को कहेंगे? आपने स्वयं मुझे यह जटा भेंट की है जो मैंने पहनी है। मेरी बाघ की खाल की स्कर्ट तो दो पैसे की भी नहीं है, और मुझे आत्मरक्षा के लिए इस लोहे के डंडे की ज़रूरत है। बस मेरे सिर पर बंधी पट्टी ही बची है। यह सोने की है, लेकिन आपने जादू से इसे मेरी खोपड़ी में इस तरह जमा दिया है कि इसे उतारा नहीं जा सकता। अगर आपको सुरक्षा चाहिए तो आप इसे ले लीजिए। कोई मंत्र बोलकर इसे उतार दीजिए। अगर इससे भी काम नहीं चलेगा, तो और क्या बचा है?”
बोधिसत्व ने कहा, "तुम बड़े समझदार हो। मुझे तुम्हारे कपड़े, तुम्हारा डंडा या तुम्हारी पट्टियाँ नहीं चाहिए। बस अपने सिर के पीछे से जीवन रक्षक बालों में से एक बाल निकाल कर मुझे दे दो।"
"लेकिन आपने ही तो मुझे ये दिया था, महाराज," बंदर ने विरोध करते हुए कहा। "इसके अलावा, अगर मैंने एक भी निकाल लिया तो पूरा सेट टूट जाएगा, और फिर वे

मेरी जान नहीं बचा पाएंगे।"
बोधिसत्व ने क्रोधित होकर कहा, "बंदर, तुम एक छोटा सा बाल भी नहीं निकाल रहे हो। मुझे अपनी कन्या से अलग होने का बिल्कुल भी मन नहीं है।"
“बोधिसत्व,” बंदर ने विनती की, “आप बहुत संदेह कर रही हैं। जैसा कि कहते हैं, ‘यदि आप भिक्षु के लिए नहीं कर सकतीं, तो बुद्ध के लिए कर लें। आप जो भी करें, कृपया मेरे स्वामी की रक्षा करें।’” बोधिसत्व प्रसन्नतापूर्वक अपने कमल आसन से नीचे उतरीं।
धूप की सुगंध के बीच बादलों के बीच चट्टान की ओर गया।
क्योंकि पवित्र भिक्षु को जानलेवा खतरे का सामना करना पड़ा।
वह उसे सौंप देगी और उस दुष्ट को पकड़ लेगी।
बंदर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने बोधिसत्व को ज्वार गुफा से बाहर आने का निमंत्रण दिया, जहाँ पोटा चट्टान पर देवता पंक्तिबद्ध होकर बैठे थे। बोधिसत्व ने कहा, "चलो, वुकॉन्ग, समुद्र पार चलते हैं।"
"बोधिसत्व, आपके बाद," बंदर ने झुककर कहा। "नहीं, आपके बाद," बोधिसत्व ने उत्तर दिया।
“बोधिसत्व के सामने दिखावा करने की हिम्मत नहीं कर सकता,” बंदर ने प्रणाम करते हुए कहा। “यदि मैं अपने कलाबाज़ी वाले बादल पर सवार हो जाऊँ, हे बोधिसत्व, तो मुझे डर है कि मैं थोड़ा बेनकाब हो जाऊँगा, और आप मुझ पर अनादर का आरोप लगाएँगे।” इस पर बोधिसत्व ने नाग कन्या को कमल के तालाब से एक कमल की पंखुड़ी काटकर चट्टान के नीचे पानी में लाने का आदेश दिया। “उस पंखुड़ी पर खड़े हो जाओ,” बोधिसत्व ने भाई बंदर से कहा, “और मैं तुम्हें समुद्र पार ले जाऊँगा।”
अध्याय 42

"लेकिन वह पंखुड़ी मेरा वजन सहने के लिए बहुत हल्की और पतली है," बंदर ने कहा। "अगर मैं समुद्र में गिर गया तो मेरी बाघ की खाल की स्कर्ट भीग जाएगी, और उसमें मौजूद नमक जो उसे मुलायम रखता है, धुल जाएगा। फिर मैं उसे ठंड के मौसम में नहीं पहन पाऊंगा।"
"चढ़ो और देखो," बोधिसत्व ने चिल्लाकर कहा। अब और बहाने बनाने की हिम्मत न

करते हुए, बंदर आज्ञाकारी होकर उस पर कूद पड़ा। हालाँकि वह देखने में बहुत कमज़ोर लग रही थी, लेकिन सवार होने के बाद वह किसी समुद्री नाव से कहीं अधिक बड़ी थी।

"बोधिसत्व, यह मुझे ले जा सकता है," उसने प्रसन्नता से कहा।

"तो फिर मैं तुम्हें समुद्र के पार ले चलता हूँ," बोधिसत्व ने उत्तर दिया।

"लेकिन यहाँ न तो डंडा है, न चप्पू, न मस्तूल, न पाल," बंदर ने कहा, "तो मैं पार कैसे जाऊँगा?"

"तुम्हें इनकी आवश्यकता नहीं होगी," बोधिसत्व ने कहा, और एक ही सांस में उसने नाव को दक्षिणी दुख सागर के विपरीत किनारे पर पहुंचा दिया।

जैसे ही उसके पैर सूखी जमीन पर पड़े, बंदर मुस्कुराया और बोला, "उस बोधिसत्व ने सचमुच अपनी जादुई शक्तियों का प्रदर्शन किया, मुझे बिना किसी परेशानी के सीधे समुद्र के पार पहुँचा दिया।"

सभी देवताओं को अपने अमर लोक की रक्षा करने का निर्देश देते हुए, बोधिसत्व ने नाग कन्या को गुफा के द्वार बंद करने को कहा, शुभ बादल के सहारे पोटा चट्टान से निकलकर यह पुकारने के लिए आगे बढ़े, "हुइआन कहाँ हो?" हुइआन, स्वर्ग के राजा ली के दूसरे पुत्र मोक्ष थे, जो शिवालय धारण करने वाले थे; वे बोधिसत्व के शिष्य थे, जिन्होंने स्वयं उन्हें शिक्षा दी थी, और वे कभी भी उनका साथ नहीं छोड़ते थे। उनका पूरा नाम हुइआन, नौसिखिए, धर्म के रक्षक था।

हुइआन ने हाथ जोड़कर बोधिसत्व के आदेश की प्रतीक्षा में खड़े हो गए। उन्होंने कहा, "सीधे स्वर्ग जाओ, अपने पिता महाराज से प्रार्थना करो और उनसे मुझे ध्रुव तारा की तलवारें उधार देने का अनुरोध करो।"

"मालकिन, आपको कितने चाहिए होंगे?" हुआन ने पूछा।

"पूरा सेट," उसने जवाब दिया।

इसके बाद हुइआन आज्ञाकारी भाव से सीधे अपने बादल पर सवार होकर स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से होते हुए बादल-मीनार महल में गया, जहाँ उसने अपने पिता को प्रणाम किया।

"तुम कहाँ से आए हो?" स्वर्ग के राजा ली ने उनका अभिवादन करने के बाद पूछा।

"मेरी स्वामिनी को सन वुकॉन्ग ने एक राक्षस को वश में करने के लिए कहा है," हुइआन—या मोक्सा—ने उत्तर दिया। "उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है और आपसे

ध्रुव तारा तलवारों का सेट उधार मांगा है।"
तब स्वर्ग के राजा ने नेझा को छत्तीस तलवारें लाने के लिए भेजा, जो उन्होंने मोक्ष को दे दीं। मोक्ष ने नेझा से कहा, “भाई, क्या आप कृपया हमारी माता को मेरा प्रणाम कहेंगे? मैं एक बहुत ज़रूरी काम पर जा रहा हूँ, और तलवारें लाकर मैं उन्हें प्रणाम करूँगा।” बड़ी जल्दी में विदा लेते हुए वे अपना शुभ प्रकाश लेकर सीधे दक्षिणी सागर की ओर गए, जहाँ उन्होंने बोधिसत्व को तलवारें भेंट कीं।
बोधिसत्व ने तलवारें उठाईं, उन्हें हवा में उछाला, एक मंत्र पढ़ा और उन्हें हजार पंखुड़ियों वाले कमल के सिंहासन में बदल दिया, जिस पर वह विराजमान हो गईं। बंदर मन ही मन मुस्कुराया और बोला, "वह बोधिसत्व तो बड़ी कंजूस है। उसके कमल के सरोवर में पहले से ही कई रंगों का कमल का सिंहासन है, लेकिन वह उस पर बैठने की ज़हमत नहीं उठाती।"
उसे उसे किसी और से उधार लेने के लिए भेजना पड़ेगा।
बोधिसत्व ने कहा, "वुकोंग, चुप रहो और मेरे साथ आओ।" फिर वे दोनों बादलों के सहारे तट से विदा हो गए। सफेद तोता आगे उड़ गया, जबकि महान ऋषि और हुइआन उसके पीछे खड़े रहे।
अध्याय 42
589
पश्चिम की यात्रा
कुछ ही क्षणों में उन्हें एक पर्वत शिखर दिखाई दिया। बंदर ने कहा, "यह हाओ पर्वत है। यहाँ से राक्षस का स्थान लगभग डेढ़ सौ मील दूर है।" तब बोधिसत्व ने उसे शुभ बादल नीचे उतारने का आदेश दिया। उन्होंने शिखर के ऊपर जादुई शब्द "ओम" का उच्चारण किया, जिसके बाद कई देवता और भूत—पर्वत की सभी स्थानीय आत्माएँ —पर्वत के चारों ओर से प्रकट हुईं और बोधिसत्व के कमल सिंहासन के सामने प्रणाम करने के लिए एकत्रित हो गईं।
“डरो मत,” उसने कहा। “मैं इस राक्षस राजा को पकड़ने आई हूँ। मैं चाहती हूँ कि यह पूरा इलाका पूरी तरह से साफ हो जाए, यहाँ से सौ मील के दायरे में कोई भी जीवित प्राणी न बचे। सभी छोटे जानवरों को उनके मांदों में और पेड़ों के छेदों में छिपे पक्षियों को सुरक्षा के लिए इस ऊँची चट्टान की चोटी पर रख दिया जाए।” आज्ञाकारी होकर राक्षस पीछे हट गए, और जल्द ही वे सभी वापस आ गए। “अब जब यह जगह साफ

हो गई है, तो तुम सब अपने-अपने मंदिरों में लौट सकते हो," बोधिसत्व ने कहा। फिर उसने अपने पवित्रता के कलश को उल्टा कर दिया, जिससे पानी गरजती हुई आवाज के साथ बाहर निकला। सचमुच,
शिखर से नीचे की ओर बहता हुआ,
चट्टानों को तोड़ते हुए आगे बढ़ा।
समुद्र की शक्ति के साथ शिखर से नीचे की ओर बह निकला,
एक विशाल महासागर की तरह चट्टानों को चीरता हुआ आगे बढ़ा।
काले रंग की फुहारें जलमय आकाश की ओर उठीं,
विशाल लहरें सूर्य की ठंडी रोशनी को प्रतिबिंबित कर रही थीं।
लाल रंग की लहरें चट्टानों को चीरती हुई आगे बढ़ीं।
समुद्र सुनहरे कमलों से ढका हुआ था।
गुआनयिन ने अपनी राक्षस-नाशक जादूई शक्ति का प्रदर्शन किया।
अपनी आस्तीन से ध्यान मुद्रा निकालते हुए।
उसने उस पर्वत को पोटाका द्वीप बना दिया।
ठीक वैसे ही जैसे दक्षिणी सागर में है।
सरकंडे लंबे-लंबे उगते थे, और उपपत्र कोमल होता था।
चारों ओर फूल ही फूल थे, और पत्रा ताजा लग रहा था।
बैंगनी बांसों पर तोते बैठे थे।
और हरे-भरे चीड़ के पेड़ों के बीच बटेरें चहक रही थीं।
दूर-दूर तक फैली लहरों की अंतहीन कतारें, जहाँ तक नज़र जाती थी।
और जो कुछ सुनाई दे रहा था, वह पानी पर हवा की आवाज के अलावा कुछ नहीं था।
अध्याय 42
590
पश्चिम की यात्रा
महान ऋषि बंदर मन ही मन प्रशंसा से भर उठा: "कितनी बड़ी दया और करुणा है। अगर मेरे पास वह जादुई शक्ति होती तो मैं फूलदान को उलट देता और पक्षियों, जानवरों, सरीसृपों और कीड़ों की परवाह नहीं करता।"
"वुकोंग, अपना हाथ आगे बढ़ाओ," बोधिसत्व ने कहा। बंदर ने तुरंत अपने कपड़े समेटे और अपना बायाँ हाथ आगे बढ़ाया। बोधिसत्व ने विलो की टहनी निकाली, उसे

मीठी ओस में भिगोया और लिखा।
उसकी हथेली पर "अस्पष्टता" का भाव था। "मुट्ठी बनाओ," उसने उससे कहा, "और राक्षस को युद्ध के लिए चुनौती देने जाओ। उसे तुम्हें हराने दो, फिर उसे वापस यहाँ बुला लो। मेरे पास धर्म की शक्ति है जिससे मैं उसे वश में कर सकती हूँ।"
बंदर आज्ञाकारी होकर अपने बादल को लेकर सीधे गुफा के प्रवेश द्वार पर लौट आया। एक हाथ में लाठी लहराते हुए और दूसरे हाथ की मुट्ठी भींचते हुए उसने चिल्लाकर कहा, "मुँह खोलो, दुष्ट आत्माओं!" नन्हे शैतान अंदर भागकर वापस आए और बोले, "नौसिखिया सूर्य फिर से आ गया है।"
"दरवाजे कसकर बंद कर दो और उसे नजरअंदाज करो," राक्षस राजा ने कहा।
"तुम कितने अच्छे बेटे हो," बंदर चिल्लाया, "अपने ही पिता को घर से बाहर निकाल दिया और उनके लिए दरवाजे खोलने से इनकार कर दिया।"
"नौसिखिया सन बहुत बदतमीजी कर रहा है," नन्हे शैतानों ने वापस आकर बताया।
“उसे अनदेखा करो,” राक्षस राजा ने कहा। जब उसके दो बार पुकारने के बाद भी दरवाजे बंद रहे, तो बंदर बहुत क्रोधित हो गया। उसने अपनी लोहे की लाठी उठाई और उनमें छेद कर दिया।
इससे उन नन्हे शैतानों में इतनी दहशत फैल गई कि वे लड़खड़ाते हुए अंदर भागे और बोले, "नौसिखिए सूर्य ने दरवाजे तोड़ दिए हैं।"
पहले मिली सभी खबरों के बाद जब उसे पता चला कि बाहरी दरवाजे तोड़ दिए गए हैं, तो दानव राजा उछल पड़ा और भाला लहराते हुए बाहर निकल आया और बंदर को गालियां देने लगा: "अरे बंदर, तुम्हें बिल्कुल अक्ल नहीं है। मैंने तुम्हें आसानी से छोड़ दिया था, लेकिन तुम्हें यह नहीं पता कि हद कब होती है। तुम फिर से मुझे धमकाने की कोशिश कर रहे हो। मैं तुम्हें मेरे दरवाजे तोड़ने के जुर्म की सजा जरूर दूंगा।"
"अपने पिता को घर से भगा देने का तुम्हारा अपराध क्या है?" बंदर ने पलटवार किया। अपमान और क्रोध में आकर दानव राजा ने अपना भाला बंदर भाई की छाती पर वार किया। बंदर ने अपने गदा से वार को रोका और पलटवार किया। एक बार शुरू होने पर वे चार-पाँच दौर तक लड़ते रहे, जिसमें बंदर, एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में मुट्ठी बांधे, पीछे हटता चला गया। दानव ने कहा, "मैं वापस जाकर तांग पुजारी को साफ-सुथरा करवाता हूँ।"
“तुम सावधान रहो, मेरे बच्चे,” बंदर ने कहा। “स्वर्ग देख रहा है कि तुम क्या कर रहे

हो। तुम यहाँ आओ।" इससे राक्षस राजा का क्रोध और भड़क उठा। बंदर के पीछे दौड़ते हुए उसने उसे पकड़ लिया और अपने भाले से उस पर एक और प्रहार किया। बंदर ने अपने डंडे से पलटवार किया और कुछ और वार के बाद हार मानकर फिर भाग गया।

राक्षस राजा ने उसे एक बार फिर ताना मारना शुरू किया: "पिछली बार तो तुमने बीस-तीस राउंड तक डटकर मुकाबला किया था। लेकिन अब तो हर बार लड़ाई के दौरान तुम भाग जाते हो। तुम्हें क्या हो गया है?"

"मेरे प्यारे बेटे," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हारे पिता को डर है कि तुम फिर से आग लगा दोगे।"

"मैं नहीं करूंगा," राक्षस ने कहा, "अब, इधर आओ।"

"अगर तुम आग नहीं लगाने वाले हो," बंदर ने कहा, "चलो यहाँ से चलते हैं। एक बहादुर आदमी अपने ही दरवाजे के सामने किसी पर हमला नहीं करता।" यह न समझते हुए कि यह एक चाल थी, दुष्ट आत्मा ने अपना भाला उठाया और उसके पीछे दौड़ पड़ा। बंदर ने अपना डंडा घसीटा और दूसरा हाथ खोल दिया। तब राक्षस राजा घबरा गया और अपनी पूरी ताकत से बंदर का पीछा करने लगा। शिकार टूटते तारे की तरह भागा, और पीछा करने वाला बिजली की तरह। (अध्याय 42)

उसे अभी-अभी धनुष से गोली मारी गई थी।

कुछ ही क्षण में बंदर ने बोधिसत्व को देख लिया। उसने राक्षस से कहा, "दुष्ट आत्मा, मैं तुमसे डरता हूँ। कृपया मुझे छोड़ दो। मैं उस स्थान पर जा रहा हूँ जहाँ दक्षिणी सागर की बोधिसत्व गुआनयिन निवास करती हैं। तुम अब घर जाओ।" राक्षस राजा को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ, इसलिए उसने दाँत पीसकर उसका पीछा करना जारी रखा। बंदर ने अपने शरीर को झटककर बोधिसत्व के दिव्य प्रकाश में खुद को छिपा लिया।

बंदर को गायब देखकर दुष्ट आत्मा बोधिसत्व के पास गई, उसे घूरकर देखा और पूछा, "क्या तुम बंदर द्वारा भेजी गई सहायक हो?" बोधिसत्व ने कोई उत्तर नहीं दिया।

तब राक्षस राजा ने अपना भाला घुमाया और दहाड़ते हुए कहा, "अरे! क्या तुम बंदर द्वारा भेजे गए अतिरिक्त सैनिक हो?" बोधिसत्व ने फिर कोई उत्तर नहीं दिया।

तब राक्षस राजा ने अपना भाला सीधे बोधिसत्व के हृदय पर मारा, जिसके बाद वह सुनहरी रोशनी की किरण में परिवर्तित हो गईं और सीधे सर्वोच्च स्वर्ग की ओर उठ गईं। बंदर भी उनके साथ ऊपर गया और शिकायत करने लगा।

"बोधिसत्व, आपने मुझे फिर धोखा दिया। जब वह राक्षस आपसे बार-बार पूछ रहा था, तब आपने बहरे और गूंगे होने का नाटक क्यों किया और कुछ नहीं कहा? उसके भाले के एक ही वार से आप भाग गए। आपने अपना कमल सिंहासन भी त्याग दिया।"

बोधिसत्व ने कहा, "चुप रहो और देखो कि वह आगे क्या करता है।"

बंदर और मोक्ष ऊपर एक दूसरे के बगल में खड़े होकर देख रहे थे जबकि राक्षस ने उपहासपूर्ण ढंग से कहा,

"बेशर्म बंदर, तुझे पता नहीं था कि तू किससे मुकाबला कर रहा है। तुझे यह एहसास नहीं था कि मैं किस तरह का इंसान हूँ। तूने मुझसे कई बार लड़ाई की और हारा, फिर तूने उस घिनौनी बोधिसत्व को बुलवाया। मेरे भाले के एक ही वार से वो गायब हो गई। वो अपना कमल सिंहासन भी वहीं छोड़ गई। खैर, अब मैं उस पर बैठूंगा।" फिर वह दुष्ट आत्मा बोधिसत्व की नकल करते हुए सिंहासन के बीचोंबीच पालथी मारकर बैठ गया।

"यह तो बहुत ही शानदार है," बंदर ने कहा। "अब तुमने अपना कमल सिंहासन त्याग दिया है।"

"अब तुम क्या कह रहे हो, वुकॉन्ग?" बोधिसत्व ने पूछा।

"मैं क्या कह रहा हूँ?" बंदर ने जवाब दिया। "मैं कह रहा हूँ कि तुमने अपना कमल सिंहासन किसी और को दे दिया है। वह दुष्ट उस पर बैठ गया है। क्या तुम उसे वापस लेना चाहोगे?"

"लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह इस पर बैठे," बोधिसत्व ने कहा। "वह इतना छोटा है कि वह इस पर तुमसे कहीं अधिक सुरक्षित रूप से बैठेगा," बंदर ने उत्तर दिया।

बोधिसत्व ने कहा, "बोलना बंद करो और धर्म की शक्ति देखो।"

उसने विलो की टहनी से नीचे की ओर इशारा करते हुए कहा, "वापस मुड़ो।" कमल सागर के सारे रंग और शुभ आभा गायब हो गए, और राक्षस राजा तलवारों की नोकों पर बैठा रह गया। उसने मोक्ष को आदेश दिया, "राक्षस-नाशक मूसल से तलवारों के हैंडल पर प्रहार करके उन्हें अंदर धंसा दो।"

फिर मोक्ष ने अपने बादल को सीधा नीचे उतारा और राक्षस-नाशक मूसल से एक हजार से अधिक बार प्रहार किया, मानो वह दीवार बनाने के लिए मिट्टी को ठोक रहा हो। राक्षस के खुले घावों से खून बह रहा था और दो तलवारों की नोकें उसकी जांघों से बाहर निकल आई थीं। देखिए राक्षस दर्द से कराहते हुए अपने दांत पीस रहा है। उसने अपना भाला नीचे फेंक दिया और तलवारों को गुस्से से खींचने लगा।

बंदर ने हैरानी से कहा, "बोधिसत्व, वह राक्षस दर्द से नहीं डरता। वह तलवारें निकालने की कोशिश कर रहा है।"

यह देखकर उसने मोक्ष को पुकारा, "उसे मत मारो।" फिर उसने अपनी विलो की टहनी को एक बार फिर नीचे की ओर झुकाया, जादुई शब्द "ओम" कहा, और ध्रुव तारा की सभी तलवारों को भेड़िये के दांतों की तरह उल्टे कांटों वाले भाले में बदल दिया (अध्याय 42)।

उसे बाहर नहीं निकाला जा सका। अंततः इसी बात ने राक्षस को हताश कर दिया।

तलवार की नोकों को मोड़ने का प्रयास करते हुए, वह पीड़ा में गिड़गिड़ाया, "बोधिसत्व, आपका शिष्य अंधा था। मैं आपकी महान धर्म शक्तियों को पहचानने में असफल रहा। मैं आपसे दयापूर्वक अपने जीवन को बख्शने की विनती करता हूँ। मैं फिर कभी बुराई नहीं करूँगा, और मैं बौद्ध बनने और आचरण के नियमों का पालन करने का संकल्प लेता हूँ।"

यह सुनकर बोधिसत्व मोक्ष, बंदर और सफेद तोते के साथ अपने सुनहरे प्रकाश पर सवार होकर दुष्ट आत्मा के सामने तक गईं। "क्या तुम सचमुच मेरे आचरण के नियमों को स्वीकार करोगे?"

राक्षस राजा ने सिर हिलाया और आँसुओं के बीच बोला, "यदि आप मेरी जान बख्श दें तो मैं नियमों को स्वीकार कर लूंगा।"

"क्या तुम मेरे धर्म में शामिल होगे?" बोधिसत्व ने पूछा।

"अगर तुम मेरी जान बख्श दोगे तो मैं कसम खाता हूँ कि मैं ऐसा करूँगा," राक्षस राजा ने कहा।

“तो फिर,” बोधिसत्व ने कहा, “मैं तुम्हारे सिर पर हाथ रखकर प्रतिज्ञा दिलाऊँगी।” उसने अपनी आस्तीन से एक सुनहरा उस्तरा निकाला और कुछ ही वार में राक्षस का

सिर ताई पर्वत की तरह मुंडवा दिया, जिससे उसके सिर पर एक चोटी और तीन छोटे-छोटे बालों के गुच्छे रह गए।

"बेचारा दुष्ट आत्मा," बंदर हँसते हुए बोला। "अब तो पता ही नहीं चलता कि वो लड़का है या लड़की। भगवान ही जाने वो क्या बनने वाला है।"

“चूंकि तुमने मेरे आचरण के नियम स्वीकार कर लिए हैं,” बोधिसत्व ने राक्षस से कहा, “मैं तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार नहीं करूंगा। मैं तुम्हें पन्ने सुधना कहकर पुकारूंगा। क्या तुम स्वीकार करते हो?” राक्षस ने सहमति में सिर झुकाया, वह केवल अपनी जान बख्शना चाहता था। तब बोधिसत्व ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, “पीछे हटो!” एक जोरदार आवाज के साथ ध्रुव तारा की तलवारें धूल में गिर गईं। अब लड़का पूरी तरह सुरक्षित था।

बोधिसत्व ने कहा, “हुइआन, क्या तुम तलवारें वापस स्वर्गलोक ले जाकर अपने पिता महाराज को लौटा दोगे? तुम्हें मुझसे मिलने वापस आने की आवश्यकता नहीं है: सभी देवताओं के साथ पोटा पर्वत पर प्रतीक्षा करो।” निर्देशानुसार, मोक्ष तलवारें लेकर स्वर्ग वापस गया और फिर दक्षिणी सागर की ओर लौट गया।

लड़के का उग्र स्वभाव अभी भी शांत नहीं हुआ था। जब उसने देखा कि उसके पैरों का दर्द चला गया है, उसकी पीठ पर कोई घाव नहीं है, और उसके सिर पर बालों के तीन छोटे-छोटे गुच्छे उग आए हैं, तो वह दौड़कर अपना भाला लेने गया और बोधिसत्व से बोला, "आपके पास ऐसी कोई वास्तविक धार्मिक शक्ति नहीं है जो मुझे वश में कर सके। यह सब महज़ एक भ्रम था। मैं आपके नियमों को स्वीकार नहीं करता। यह लीजिए!"

उसने अपने भाले से उसके चेहरे पर वार किया, जिससे बंदर इतना क्रोधित हो गया कि उसने लड़के पर अपनी लाठी से हमला कर दिया।

"उसे मत मारो," बोधिसत्व ने पुकार कर कहा।

"मेरे पास उसे दंडित करने का एक तरीका है।" उसने अपनी आस्तीन से एक सोने की पट्टी निकाली और आगे कहा, "यह अनमोल वस्तु उन तीन पट्टियों में से एक है - एक सोने की, एक कसने वाली और एक निषेध वाली - जो तथागत बुद्ध ने मुझे तब दी थीं जब मैं शास्त्रों को लाने वाले तीर्थयात्री को खोजने के लिए पूर्व की ओर गया था। तुमने कसने वाली पट्टी पहनी है। निषेध वाली पट्टी का उपयोग पर्वत की रक्षा करने वाले महान देवता को वश में करने के लिए किया जाता था। मैं सोने की पट्टी पहले

नहीं दे पाई थी, लेकिन चूंकि यह राक्षस इतना अत्याचार कर रहा है, इसलिए इसे उसे ही लेना होगा।"

फिर उस तेजस्वी बोधिसत्व ने हवा में उस पट्टी को लहराया, "बदलो!" चिल्लाई और उसे पाँच पट्टियों में बदल दिया, जिन्हें उन्होंने "ठीक करो!" के आदेश के साथ लड़के पर फेंक दिया। एक पट्टी उसके सिर पर, दो उसके हाथों पर और दो उसके पैरों पर पड़ी। बोधिसत्व ने आदेश दिया, "वुकोंग, दूर खड़े रहो, जब तक मैं स्वर्ण-पट्टी मंत्र का उच्चारण करती हूँ।"

"बोधिसत्व," बंदर ने घबराकर विनती की, "मैंने आपको राक्षस को वश में करने के लिए यहाँ बुलाया था, तो आप मुझ पर श्राप क्यों दे रहे हैं?"

अध्याय 42

593

पश्चिम की यात्रा

“परन्तु तुम पर बंधन कसने वाला मंत्र नहीं असर करेगा,” बोधिसत्व ने समझाया। “लड़के पर सोने का बंधन वाला मंत्र असर करेगा।” बोधिसत्व के बगल में खड़े होकर मंत्र सुनते हुए बंदर को मन में थोड़ी राहत मिली। बोधिसत्व ने अपने हाथों से जादू किया और चुपचाप कई बार मंत्र दोहराए। दुष्ट आत्मा ने अपने कान और गाल मरोड़े, पैर पटके और लोटपोट होने लगी।

वास्तव में,

एक वाक्यांश असंख्य शब्दों को एकजुट करता है;

धर्म की शक्ति असीम और गहरी है।

अगर आपको नहीं पता कि आखिर उस लड़के का धर्म परिवर्तन कैसे हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 43

ब्लैक रिवर पर एक राक्षस पुजारी को उठा ले गया

पश्चिम के ड्रैगन राजकुमार ने एक मगरमच्छ को पकड़ लिया

कथा के अनुसार, बोधिसत्व ने मंत्र का कई बार जाप किया और फिर रुक गए। तभी दुष्ट आत्मा का कष्ट समाप्त हुआ। जब वे होश में आए, खड़े हुए और खुद को देखा तो पाया कि उनके गले, हाथों और पैरों में सोने की पट्टियाँ बंधी हुई थीं। वे इतनी कसकर बंधी थीं कि लाख कोशिश करने पर भी वे उन्हें हिला नहीं पा रहे थे।

वे खजाने पहले ही उसके शरीर में जड़ जमा चुके थे, और जितना अधिक वह उन्हें रगड़ता था, उतना ही अधिक दर्द होता था।

"अरे, अरे, नन्ही सी प्यारी," बंदर ने चिढ़ाते हुए कहा। "बोधिसत्व ने तुम्हारे गले में एक शुभ ताबीज पहना दिया है ताकि तुम सुरक्षित रूप से बड़ी हो सको।"

इस ताने से लड़का क्रोधित हो गया, उसने एक बार फिर अपना भाला उठाया और बंदर पर बेतहाशा हमला करने लगा। बंदर ने फुर्ती से वार से बचते हुए बोधिसत्व के पीछे जाकर चिल्लाया, "मंत्र बोलो, मंत्र बोलो।"

बोधिसत्व ने अपनी विलो की टहनी को मीठी ओस से भिगोया और "एक साथ!" कहते हुए उस अमृतमयी द्रव को उस लड़के पर छिड़का। लड़के ने अपना भाला गिरा दिया और अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ लिया, उन्हें अलग करने में असमर्थ था। कुछ लोगों में आज भी पाई जाने वाली "गुआनयिन ट्विस्ट" उसके हाथों में भी थी। जब उसके हाथ अटूट रूप से जुड़े होने के कारण वह अपना भाला नहीं उठा सका, तभी लड़के ने धर्म की शक्ति के गहरे रहस्य को समझा। वह सिर झुकाकर प्रणाम करने के अलावा कुछ नहीं कर सका।

फिर बोधिसत्व ने एक और मंत्र पढ़ा और अपना कलश उलट कर सारा पानी वापस ले लिया। एक बूंद भी नहीं बची। "वुकोंग," उन्होंने बंदर से कहा, "इस राक्षस ने अब आत्मसमर्पण कर दिया है। बस एक ही बात है कि इसके मन में अभी भी कुछ अजीब विचार हैं। यह धर्म तभी स्वीकार करेगा जब यह यहाँ से पोटारका द्वीप तक हर कदम पर प्रणाम करते हुए जाएगा। तुम्हें सीधे गुफा में वापस जाकर अपने स्वामी को बचाना होगा।"

बंदर ने प्रणाम करते हुए कहा, "चूंकि आपके शिष्य ने आपको इस लंबी यात्रा की परेशानी उठाने के लिए प्रेरित किया है, इसलिए मैं आपको वापस आपके रास्ते में कुछ दूर तक छोड़ दूंगा।"

"कोई ज़रूरत नहीं," बोधिसत्व ने कहा। "मुझे तुम्हारे गुरु के जीवन की चिंता है।" तब भाई बंदर ने प्रसन्नतापूर्वक प्रणाम करते हुए उनसे विदा ली। अब दुष्ट आत्मा को गुआनयिन द्वारा सच्चे सिद्ध पुरुष में परिवर्तित कर दिया गया, जिन्होंने अध्याय 43 में बताया है।

वे उनके 53वें धार्मिक शिक्षक बने।

अब कहानी बोधिसत्व द्वारा अपनी बुद्धिमत्ता से एक सेवक को जीतने की घटना से हटकर साधु सैंड की ओर मुड़ती है, जो लंबे समय से जंगल में बंदर की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब बंदर वापस नहीं आया, तो उन्होंने सामान घोड़े की पीठ पर बांध दिया और एक हाथ से लगाम पकड़कर और दूसरे हाथ में अपनी राक्षस-नाशक छड़ी लिए चीड़ के जंगल से बाहर दक्षिण की ओर देखने चले गए। बंदर को बहुत प्रसन्न अवस्था में लौटते देख साधु सैंड उसके पास गए और बोले, "भाई, बोधिसत्व को बुलाने के बाद वापस आने में आपको इतनी देर क्यों लग गई? मैं तो चिंता से अधमरा हो गया था।"

“तुम सो रहे थे और सपना देख रहे थे,” बंदर ने कहा। “मैं उसे यहाँ ले आया हूँ और उसने राक्षस को वश में कर लिया है।” फिर बंदर ने उसे बोधिसत्व की धर्म शक्ति के बारे में सब कुछ बताया। “चलो गुरु को बचाते हैं,” साधु सैंड ने प्रसन्नता से कहा।

फिर वे दोनों खाई पार करके दरवाज़े की ओर दौड़े, जहाँ उन्होंने घोड़े को बाँध दिया। फिर वे दोनों एक साथ अंदर घुस गए, अपने हथियार तैयार रखे और शैतानों का सफाया कर दिया। उन्होंने चमड़े का थैला नीचे गिराकर सुअर को रिहा कर दिया, जिसने बंदर को धन्यवाद दिया और पूछा, "भाई, वह दुष्ट आत्मा कहाँ है? मुझे उसे अपने रेक से मारने दो; मैं उससे बदला लेना चाहता हूँ।"

"चलो गुरु को ढूंढते हैं," बंदर ने कहा।

वे तीनों गुफा के बिल्कुल पीछे गए, जहाँ उन्होंने अपने स्वामी को नग्न अवस्था में बंधा हुआ और पीछे के आँगन में रोते हुए पाया। साधु सैंड ने उन्हें खोला जबकि बंदर उनके कपड़े लाने गया। फिर वे तीनों उनके सामने घुटने टेककर बोले, "स्वामी जी, आपने बहुत कष्ट सहा है।"

संज़ंग ने उनका धन्यवाद किया और कहा, "प्रिय शिष्यों, मैंने तुम्हें बड़ी मुसीबत में डाल दिया। राक्षस को कैसे वश में किया गया?" तब बंदर ने उन्हें बताया कि बोधिसत्व को बुलाया गया था और उन्होंने उस लड़के को अपना सेवक बना लिया था। (आजकल लोग इसी बात का जिक्र करते हैं जब सेवक बोधिसत्व के प्रति समर्पण दिखाता है और तीन बार बुद्ध के दर्शन करने के बाद उन्हें अपना 53वां गुरु मानता है।)

बंदर ने साधु सैंड से कहा कि वह गुफा में रखी सभी कीमती चीजें इकट्ठा कर लें और फिर गुरु के लिए शाकाहारी भोजन बनाने के लिए चावल ढूंढें। आदरणीय गुरु का जीवन पूरी तरह से महान ऋषि सूर्य की कृपा से ही संभव हो पाया था; और शास्त्रों

को लाने के लिए वे सुंदर बंदर आत्मा पर ही निर्भर थे। तब गुरु और शिष्य गुफा से निकल पड़े। घोड़े पर काठी कसी गई और मुख्य मार्ग मिलते ही वे पूरे दृढ़ संकल्प के साथ पश्चिम की ओर चल पड़े।

एक दिन, जब वे एक महीने से अधिक समय से यात्रा कर रहे थे, संज़ंग को नदी की आवाज़ सुनाई दी। संज़ंग ने घबराकर कहा, "शिष्य, यह कौन सी नदी है?"

“आप तो हद से ज़्यादा चिंता करते हैं, बूढ़े गुरुजी,” बंदर हँसते हुए बोला, “पुजारी बनने के लायक तो हैं ही नहीं। हम चारों में से सिर्फ़ आपको ही पानी की आवाज़ क्यों सुनाई देती है? क्या आप अपना हृदय सूत्र भूल गए हैं?”

"मुझे पैगोडा पर्वत पर रूक नेस्ट साधु ने स्वयं उस सूत्र के चौवन वाक्य और 270 शब्द सिखाए थे," संज़ंग ने उत्तर दिया। "मैंने उन्हें सुनकर याद किया और मैं उन्हें लगातार दोहराता रहता हूँ। मैं उसका कौन सा वाक्य भूल गया हूँ?"

“गुरुजी,” बंदर भाई ने कहा, “आप यह वाक्य भूल गए हैं, ‘न दृष्टि है, न ध्वनि, न गंध, न स्वाद, न स्पर्श और न ही मानसिक प्रक्रिया।’ हम धर्मात्माओं को सौंदर्य की ओर नहीं देखना चाहिए, न संगीत सुनना चाहिए, न मीठी सुगंध सूंघनी चाहिए और न ही स्वादिष्ट भोजन का स्वाद लेना चाहिए। हमें यह भी ध्यान नहीं देना चाहिए कि हमें गर्मी लग रही है या ठंड, और हमारा मन भ्रम से मुक्त होना चाहिए। यही वह तरीका है जिससे आंख, कान, नाक, जीभ, शरीर और मन पर आक्रमण करने वाले छह लुटेरों को दूर किया जा सकता है। शास्त्रों को लाने के अपने मिशन के कारण आप लगातार चिंतित रहते हैं। आप अपने शरीर से चिपके रहने के कारण दुष्ट राक्षसों से डरते हैं। जब आप शाकाहारी भोजन मांगते हैं तो आपकी जीभ हिलती है। जब आप किसी सुखद सुगंध का आनंद लेते हैं तो यह आपकी नाक को उत्तेजित करती है। ध्वनियाँ आपके कानों को चौंका देती हैं। चीजों को देखकर आप अपने अध्याय 43 को बंद कर लेते हैं।

उन पर नजर रखो। अगर तुम बार-बार उन छह डाकुओं को बुलाते रहोगे तो पश्चिमी स्वर्ग तक पहुँचने और बुद्ध के दर्शन करने की उम्मीद कैसे कर सकते हो?

इस पर संजांग कुछ देर तक गहरे और मौन चिंतन में डूबे रहे, फिर बोले, "शिष्य, जब कई साल पहले मैं अपने सम्राट से विदा हुआ था,

मैंने अंतहीन दिनों और रातों की यात्रा शुरू की।
पहाड़ों पर छाई धुंध में मेरी घास की चप्पलें घिस गईं; मैंने बांस की बनी बारिश से बचाव वाली टोपी पहनकर कई चोटियों पर चढ़ाई की है।
रात में गिब्बन की आवाज सुनकर मैंने कितनी बार आह भरी है?
मुझे चांदनी रात में पक्षियों की चहचहाहट सुनना बर्दाश्त नहीं होता।
मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तीनों समाधियाँ कब प्राप्त होंगी?
और तथागत के सबसे अद्भुत नियम को प्राप्त करें?
यह सुनकर बंदर खुद को ताली बजाने और जोर से हंसने से नहीं रोक सका। "मालिक," उसने कहा,
"आप घर की याद से बुरी तरह पीड़ित हैं। यदि आप वास्तव में तीनों समाधियों को प्राप्त करना चाहते हैं तो यह इतना कठिन नहीं है। जैसा कि कहावत है, 'सही समय पर प्राप्ति स्वतः ही हो जाती है।'"
"भाई," सुअर ने उसकी ओर देखते हुए कहा, "अगर हम इसी तरह के भयानक राक्षसों का सामना करते रहे तो हम हजार साल में भी कभी सफल नहीं हो पाएंगे।"
"भाई सुअर," साधु सैंड ने कहा, "तुम भी मेरी ही तरह बदज़ुबान हो। बंदर को परेशान करना बंद करो: कहीं वो अपना आपा न खो दे। बस अपना बोझ ढोते रहो और एक दिन हम ज़रूर कामयाब होंगे।"
वे बातें करते हुए चलते रहे, और घोड़े के खुर तब तक नहीं रुके जब तक वे एक विशाल काली नदी के पास नहीं पहुँच गए जो दूर-दूर तक फैली हुई थी। जब वे चारों किनारे पर खड़े होकर करीब से देखने लगे तो उन्होंने देखा कि नदी में लहरों पर लहरें थीं।
भंवर और कीचड़ भरे चक्र।
एक के बाद एक मैली लहरें अंधेरे पानी को मथती हैं,
कीचड़ भरे भंवर और जलप्रपात जो चिकनाई की तरह दिखते हैं।
निकट से देखने पर इसमें मानव की छवि प्रतिबिंबित नहीं होती है;
दूर-दूर तक एक भी पेड़ दिखाई नहीं देता।

स्याही को रोल करना,
उबलती राख।
जो बुलबुले ऊपर उठते हैं वे कोयला होते हैं;
उड़ता हुआ झाग फावड़े से उछाली गई कोयले की धूल जैसा है।
मवेशी और भेड़ें पानी नहीं पिएंगी।
मैगपाई और कौआ इससे दूर रहते हैं।
मवेशी और भेड़ें इसका काला रस नहीं पिएंगी;
मैगपाई और कौआ इसके विशाल विस्तार से दूर रहते हैं।
केवल नदी के किनारे उगने वाले सरकंडे ही सही ढंग से बढ़ते हैं।
रेतीले टीले के किनारे फूल और घास हरे-भरे खिल रहे हैं।
दुनिया नदियों और झीलों से भरी पड़ी है।
और इसमें असंख्य नदियाँ, दलदल और झरने हैं।
लेकिन जीवन में लोगों ने जितनी भी जगहें देखी हैं, उनमें से
पश्चिम की काली नदी उनमें से नहीं है।
घोड़े से उतरते हुए संजांग ने पूछा, "शिष्यों, यह नदी इतनी काली और मैली क्यों है?"
"किसी ने इसमें नील रंगाई का बर्तन धोया है," पिग ने कहा। "नहीं," फ्रायर सैंड ने कहा, "किसी ने इसमें अपनी स्याही साफ की है।"
"तुम दोनों बेवकूफी भरे अनुमान लगाना बंद करो," बंदर ने कहा, "और चलो पता लगाते हैं कि हम मालिक को कैसे पार कराएंगे।"
"मुझे उस नदी को पार करने में कोई दिक्कत नहीं होगी," पिग ने कहा। "मैं बादल पर सवार होकर या तैरकर भी नदी पार कर सकता हूँ और तुम्हारे खाना खाने से पहले ही मैं उसके ऊपर पहुँच जाऊँगा।"
"और मैं पल भर में बादल पर सवार होकर या पानी पर चलकर पार जा सकता हूँ," फ्रायर सैंड ने कहा। "हमारे लिए तो यह आसान है," बंदर ने कहा, "लेकिन असली समस्या मालिक है।"
"शिष्यों," संजांग ने कहा, "यह नदी कितनी चौड़ी है?"
"तीन या चार मील," पिग ने कहा।
"तुम तीनों तय करो कि तुममें से कौन मुझे पार ले जाएगा," संजांग ने कहा।
"सूअर तुम्हें ले जा सकता है," बंदर ने कहा।

"यह मुश्किल होगा," सुअर ने कहा। "अगर मैं उसे बादल पर लादकर ले जाने की कोशिश करूं तो हम ज़मीन से तीन फीट ऊपर भी नहीं उठ पाएंगे। जैसा कि कहावत है, इंसान पहाड़ों से भारी होते हैं। और अगर मैं उसे अपनी पीठ पर लादकर तैरने की कोशिश करूं तो हम दोनों डूब जाएंगे।"
जब वे नदी के किनारे बातें कर रहे थे, तभी एक आदमी छोटी नाव चलाते हुए नदी के ऊपरी हिस्से में दिखाई दिया। संज़ंग ने प्रसन्नता से कहा, "शिष्यों, यहाँ एक नाव है। चलो नाविक से हमें नदी पार कराने के लिए कहें।"
"नाविक," फ्रायर सैंड चिल्लाया, "हमें पार कराओ।"
नाव पर बैठे व्यक्ति ने उत्तर दिया, "यह कोई नौका नहीं है, और मैं आपको यहाँ से पार नहीं करा सकता।" "स्वर्ग और पृथ्वी में सबसे पहले सहायता का भाव होना चाहिए," साधु सैंड ने कहा। "आप भले ही नाविक न हों, लेकिन हम आपको परेशान करने नहीं आए हैं। हम पूर्व से आए बौद्ध हैं, जिन्हें सम्राट ने धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है। यदि आप थोड़ी सी दया करके हमें पार करा दें, तो हम आपके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करेंगे।"
इस पर नाविक अपनी नाव किनारे पर ले आया और चप्पू चलाते हुए बोला, "मालिकों, यह नाव आप सभी को ले जाने के लिए बहुत छोटी है।" जब संजांग ने ध्यान से देखा तो पाया कि नाव एक ही लकड़ी के लट्ठे से तराशी गई थी और बीच में केवल दो लोगों के बैठने की जगह थी।
“हम क्या करें?” संज़ंग ने पूछा। “यह नाव हमें दो चक्कर में पार करा देगी,” साधु सैंड ने कहा। इस पर सुअर ने खुद को परेशानी से बचाने और मालिक से अच्छी दोस्ती करने का एक चतुर तरीका सोचा। उसने कहा, “साधु सैंड, आप और बंदर भाई सामान और घोड़े का ध्यान रखें, जबकि मैं पहले मालिक को पार ले जाता हूँ। फिर मालिक घोड़े को लेने वापस आ सकता है। बंदर भाई नदी पार कर सकता है।”
"अच्छा विचार है," बंदर ने सिर हिलाया।
जब वह मूर्ख तांग पुजारी का समर्थन कर रहा था, तब नाविक ने नाव को धकेल कर सीधे मुख्य धारा में प्रवेश कर दिया।

जैसे ही वे बीच में पहुँचे, एक ज़ोरदार गर्जना हुई, विशाल लहरों ने आसमान को ढक लिया और एक भयानक तूफान उठ खड़ा हुआ। क्या ज़बरदस्त हवा थी!
आकाश क्रोधित बादलों से भरा हुआ था;
नदी में विशाल काली लहरें उठ रही थीं।
नदी के किनारों से उड़ती रेत सूरज को ढक रही थी; चारों ओर पेड़ चीखते हुए नीचे गिर पड़े, चीखें आसमान तक गूंज रही थीं।
उफनती नदियों और समुद्रों ने अजगरों में दहशत पैदा कर दी।
जबकि पेड़ और फूल धूल में दबकर नष्ट हो गए।
प्रहार बिजली की कड़क की तरह थे;
तेज हवा के झोंके भूखे बाघों की तरह दहाड़ रहे थे।
केकड़े, मछलियाँ और झींगे स्वर्ग से प्रार्थना करने के लिए लेट गए।
जबकि पक्षियों और जानवरों को उनके घोंसलों से भगा दिया गया था।
अध्याय 43
598
पश्चिम की यात्रा
झीलों पर मौजूद सभी नाव चालकों पर विपत्ति आ पड़ी;
समुद्रों में किसी भी मानव जीवन की सुरक्षा नहीं थी।
नदी किनारे खड़ा मछुआरा मुश्किल से अपना भाला पकड़ पा रहा था;
नदी में नाव चलाने वाला अपनी नाव को आगे नहीं बढ़ा सका।
ईंटें और टाइलें उड़ने से घर ढह गए;
सर्वव्यापी भय से माउंट ताई कांप उठा।
यह हवा नाविक की करतूत थी, जो असल में काली नदी का एक राक्षस था। देखिए कैसे तांग पुजारी और सुअर नाव समेत पानी में कूद पड़ते हैं। वे बिना किसी निशान के गायब हो गए, और किसी को नहीं पता चला कि उन्हें कहाँ ले जाया गया।
नदी किनारे साधु सैंड और मंकी हताश थे। उन्होंने कहा, "हम क्या करें? गुरुजी लगातार मुसीबतों में फँसते जा रहे हैं। पिछले राक्षस से बच निकलने और अपनी यात्रा के शांतिपूर्ण दौर के बाद अब वे यहाँ काली नदी पर मुसीबत में फँस गए हैं।"
"शायद नाव पलट गई हो," फ्रायर सैंड ने कहा, "चलो उसे नदी में आगे जाकर ढूंढते हैं।"

“नहीं,” बंदर ने कहा, “ऐसा नहीं हो सकता। अगर नाव पलट गई होती तो सुअर तैर सकता है और वह ज़रूर मालिक को बचाकर पानी से ऊपर निकाल लेता। मैंने अभी-अभी नाविक के साथ कुछ गड़बड़ देखी है, और मुझे यकीन है कि उसी ने हवा पैदा की है और मालिक को पानी में डुबो दिया है।”

"आपने पहले क्यों नहीं बताया?" फ्रायर सैंड ने पूछा। "जब तक मैं पानी में उसे ढूंढने जाता हूँ, तब तक आप घोड़े और सामान का ध्यान रखें।"

"लेकिन पानी भी ठीक नहीं लग रहा है," बंदर ने कहा। "मुझे नहीं लगता कि तुम ऐसा कर पाओगे।"

"यह मेरी 'शिफ्टिंग सैंड्स' नदी के पानी के मुकाबले कुछ भी नहीं है," फ्रायर सैंड ने कहा, "मैं इसे कर सकता हूँ।"

उस तेजस्वी भिक्षु ने अपना वस्त्र उतारा, अपनी कलाई और पैरों पर कपड़े की पट्टियाँ बाँधीं और अपने राक्षस-नाशक दंड को घुमाते हुए ज़ोरदार छपछपाहट के साथ लहरों में कूद गया। जैसे ही वह पानी में आगे बढ़ा, उसे कुछ आवाज़ें सुनाई दीं, इसलिए वह एक तरफ हटकर देखने लगा। उसने एक मंडप देखा, जिसके दरवाजों के ऊपर बड़े अक्षरों में लिखा था, "महल का"।

हेंगयांग घाटी में काली नदी के देवता।

वहाँ बैठे-बैठे उसे मानो एक राक्षस अपने मन में कह रहा हो, "उसे पकड़ना बहुत मुश्किल काम रहा है, लेकिन यह पुजारी एक पवित्र व्यक्ति है जिसने दस जन्मों तक अपने आचरण को सुधारा है। उसके शरीर का एक टुकड़ा ही तुम्हें अमर बनाने के लिए काफी है।"

मैंने उसका काफी लंबे समय तक इंतजार किया, और अब मेरी महत्वाकांक्षा पूरी हो गई है।"

फिर उन्होंने आदेश दिया: "बच्चों, तुरंत धातु का स्टीमर लाओ, उन दोनों भिक्षुओं को पूरा पकाओ, फिर एक निमंत्रण पत्र लिखो और उसे मेरे दूसरे चाचा को दो, उन्हें जन्मदिन की दावत के रूप में उन्हें खाने के लिए आमंत्रित करो।"

यह फ्रायर सैंड के गुस्से को काबू से बाहर कर देने वाला था। उसने अपनी लाठी से दरवाजों पर प्रहार किया और अपशब्दों से चिल्लाते हुए कहा, "अरे, मेरे स्वामी तांग पुजारी और मेरे भाई पिग को अभी के अभी वापस दे दो!" इससे दरवाजों के अंदर मौजूद राक्षस इतने भयभीत हो गए कि वे अंदर भागकर बोले, "विनाश हो गया!"

"कौन सी आपदा?" बूढ़े राक्षस ने पूछा।
"बाहर एक बेहद भयावह दिखने वाला भिक्षु है जो बाहरी दरवाजों पर जोर-जोर से दस्तक दे रहा है और उन्हें पुकार रहा है।"
इस पर राक्षस ने अपना कवच मंगवाया, जिसे छोटे शैतान ले आए। कवच ठीक से बंध जाने के बाद वह बाहर गया, अपने हाथ में स्टील के टुकड़ों से बना कोड़ा लिए हुए, जो बांस की कड़ियों से जुड़ा था। उसका रूप-रंग भयावह था।
चौकोर आकार के चेहरे पर गोल आंखें धधकती लाल रंग की थीं;
उसके खून जैसे लाल होंठ एक विशाल मुंह के चारों ओर मुड़े हुए थे।
उसकी दाढ़ी के बाल तार की तरह पतले थे;
उसकी कनपटी पर उलझे हुए बाल सिंदूरी लाल रंग के थे।
वह अपनी शक्ति में किसी भयावह वर्ष स्वामी की तरह दिख रहा था।
क्रोधित गर्जन देवता के क्रोधित चेहरे के साथ।
उसके द्वारा पहने गए लोहे के कवच पर फूलों की नक्काशी की गई थी।
और उनके सोने के हेलमेट में कई रत्न जड़े हुए थे।
अपने हाथ में बांस के आकार के स्टील के डंडे को पकड़े हुए,
चलते समय उसने अपने चारों ओर तेज हवा का झोंका पैदा कर दिया।
जन्म के समय वह जल का प्राणी था।
लेकिन उसने अपनी जन्मभूमि को छोड़कर बुराई का मार्ग अपना लिया।
यदि आप इस आत्मा का वास्तविक नाम जानना चाहते हैं,
उसे पहले छोटा मगरमच्छ कहा जाता था।
"मेरे दरवाजे पर कौन दस्तक दे रहा है?" राक्षस दहाड़ा।
"मैं तुझे पकड़ लूँगा, हे अज्ञानी शैतान," फ्रायर सैंड ने कहा। "धोखेबाज राक्षस, नाविक का वेश बनाकर मेरे स्वामी को अगवा करने आया है। उसे तुरंत वापस कर दे, मैं तेरी जान बख्श दूँगा।" यह सुनकर राक्षस जोर से हँस पड़ा।
“भिक्षु, तुम अपनी जान जोखिम में डाल रहे हो,” राक्षस ने कहा। “तुम्हारा स्वामी अब मेरा है, और मैं उसे पकाकर दावत बनाऊंगा। इधर आओ और देखो कि क्या तुम मुझे

हरा सकते हो। अगर तुम तीन दौर तक टिके रहे तो मैं तुम्हारा स्वामी तुम्हें वापस दे दूंगा; लेकिन अगर नहीं टिक पाए तो मैं तुम्हें भी उसके साथ पका दूंगा और तुम पश्चिमी स्वर्ग जाने का सपना भूल जाओ।"

अध्याय 43

600

पश्चिम की यात्रा

फ्रायर सैंड अब भयंकर क्रोध में था, और उसने अपनी छड़ी से राक्षस के सिर पर प्रहार किया, जिसे राक्षस ने अपने कोड़े से रोक दिया। उन दोनों के बीच पानी के भीतर एक शानदार लड़ाई हुई: राक्षस को वश में करने वाली छड़ी और बांस से बना कोड़ा;
वर्चस्व के लिए लड़ रहे दो गुस्सैल प्रतिद्वंद्वी।
ब्लैक रिवर का सहस्राब्दी दानव,
और चमत्कारिक धुंध के हॉल से एक पूर्व अमर प्राणी।
उनमें से एक को संजांग के मांस का लालच था।
दूसरे व्यक्ति की इच्छा थी कि वह तांग पुजारी का जीवन बचाए।
जब वे पानी के नीचे लड़ रहे थे
उन दोनों के सफल होने की कोई संभावना नहीं थी।
भयभीत झींगे और मछलियाँ अपने सिर हिलाकर छिप गईं;
केकड़े और कछुए अपने खोलों में सिमट गए।
फिर ढोल की थाप के साथ जल महल के राक्षस
वह लड़ाई में शामिल हो गया और फाटकों के सामने चिल्लाने लगा।
महान भिक्षु, सच्चे फ्रायर सैंड,
वह बिल्कुल अकेला खड़ा रहा और उसने उन्हें अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने दिया।
जब वे लहरों को चीरते हुए आगे बढ़े तो कोई विजेता नहीं निकला;
कोड़ा और लाठी बराबर की टक्कर के थे।
यह सब इसलिए हुआ क्योंकि तांग पुजारी चाहता था
बुद्ध के दर्शन करने और शास्त्रों को लाने के लिए।

जब तीस दौर तक लड़ाई चली और कोई नतीजा नहीं निकला, तो फ्रायर सैंड ने सोचा, "यह राक्षस मेरे जितना ही कुशल योद्धा है। मैं इसे हरा नहीं पाऊंगा। मुझे इसे बाहर बुलाना होगा ताकि मंकी इसे मार सके।" फिर फ्रायर सैंड ने दिखावा किया कि

उसने अपना बचाव कम कर दिया है और अपनी लाठी घसीटते हुए भाग निकला।
लेकिन उसका पीछा करने के बजाय उस दुष्ट राक्षस ने कहा, "तो जाओ। मैं अब तुमसे नहीं लड़ूंगा। मैं अपने मेहमानों के लिए निमंत्रण पत्र लिखने जा रहा हूं।"
अध्याय 43
601
पश्चिम की यात्रा
फ्रायर सैंड उग्रता से गुर्राते हुए लहरों से बाहर निकला। मंकी को देखकर उसने कहा, "भाई, वह राक्षस तो हद ही कर रहा है।"
बंदर ने कहा, "तुम काफी देर तक नीचे पड़े रहे। क्या कोई बुरी आत्मा है? क्या तुम्हें गुरु मिल गया?"
“वहाँ नीचे एक मंडप है,” साधु सैंड ने कहा, “जिस पर ‘हेंगयांग घाटी में काली नदी के देवता का महल’ लिखा हुआ है। मैं वहाँ छिपकर उसकी बातें सुनता रहा। उसने अपने मातहतों को मास्टर और भाई पिग को पकाने के लिए धातु के स्टीमर को धोने का आदेश दिया और उन्हें अपने चाचा को जन्मदिन की दावत के लिए आमंत्रित करने भेजा। मुझे इतना गुस्सा आया कि मैं उसके दरवाजे पीटने लगा। वह राक्षस बाँस के टुकड़ों से बने स्टील के डंडे लेकर बाहर आया और मुझसे घंटों तक लड़ता रहा। हम तीस-तीस राउंड तक लड़े, लेकिन हममें से कोई भी जीत नहीं पाया। मैंने हारने का नाटक किया ताकि वह यहाँ आ जाए और आप मेरी मदद कर सकें, लेकिन वह इतना चालाक था कि मेरे पीछे नहीं आया। वह निमंत्रण पत्र लिखने के लिए अंदर चला गया, इसलिए मैं बाहर आ गया।”
"वह किस प्रकार का दुष्ट प्राणी है?" बंदर ने पूछा।
"वह देखने में एक बड़े नरम खोल वाले कछुए जैसा लगता है," फ्रायर सैंड ने कहा। "अगर वह कछुआ नहीं है तो वह मगरमच्छ जरूर है।"
"मुझे आश्चर्य है कि उसका चाचा कौन है," बंदर ने कहा।
उसके मुंह से ये शब्द निकलने से पहले ही नदी के मोड़ से एक बूढ़ा आदमी निकला, उनसे काफी दूरी पर घुटनों के बल बैठ गया और बोला, "काली नदी का देवता महान ऋषि को प्रणाम करता है।"
"क्या तुम वही दुष्ट आत्मा नहीं थे जिसने नाव चलाई थी?" बंदर ने कहा। "क्या तुम फिर से हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हो?"

वृद्धजन रोते हुए और प्रणाम करते हुए बोला, "मैं कोई राक्षस नहीं हूँ, हे महाशय। मैं इस नदी का असली देवता हूँ। पिछले वर्ष पाँचवें महीने में बाढ़ के दौरान एक दुष्ट आत्मा पश्चिमी सागर से यहाँ आई थी। उसने मुझसे युद्ध किया, और मेरी वृद्धावस्था के कारण मैं उसका मुकाबला नहीं कर सका, इसलिए उसने हेंगयांग घाटी में स्थित मेरे काले नदी देवता के महल पर कब्जा कर लिया और मेरे कई जलवंशी लोगों को मार डाला। मुझे उसके विरुद्ध मामला दर्ज कराने के लिए समुद्र में जाना पड़ा। लेकिन पश्चिमी सागर का ड्रैगन राजा उसका चाचा है, इसलिए उसने मेरा मामला खारिज कर दिया और मुझे अपना महल उस राक्षस को सौंपने के लिए कहा। मैंने स्वर्ग में विरोध दर्ज कराने का प्रयास किया, लेकिन मैं इतना विनम्र नदी देवता था कि जेड सम्राट से मुलाकात नहीं कर सका। अब जब आप यहाँ हैं, हे महाशय, मैं आपको प्रणाम करने और आपके समक्ष आत्मसमर्पण करने आया हूँ। मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरा बदला लें।"

“तुम्हारी बातों से तो लगता है कि पश्चिमी सागर का ड्रैगन राजा भी गलत है,” बंदर भाई ने कहा। “अब जब उस राक्षस ने मेरे गुरु और मेरे साथी शिष्य को पकड़ लिया है, उन्हें भाप में डुबोने की घोषणा कर दी है और अपने चाचा को भी बुला लिया है, तो मुझे उसे पकड़ना ही होगा। अच्छा हुआ कि तुमने मुझे बता दिया। ठीक है, नदी के देवता, तुम यहाँ साधु रेत के साथ सब पर नज़र रखो, जबकि मैं समुद्र में जाकर उस ड्रैगन को गिरफ्तार करता हूँ और उससे उस राक्षस को पकड़वाता हूँ।”

"हे महान ऋषि, मैं आपका बहुत आभारी हूँ," नदी के देवता ने कहा।

बंदर कलाबाजी करते हुए बादल पर सवार होकर सीधे पश्चिमी महासागर में गया, जहाँ उतरकर उसने अपने हाथों से जल-विकर्षक जादू किया और लहरों को चीर दिया। उसने एक काले रंग की मछली की आत्मा को देखा जो सोने का निमंत्रण पत्र लिए तीर की तरह धारा के विपरीत दिशा में तेजी से जा रही थी। बंदर ने उसका सामना किया और अपने लोहे के डंडे के एक ही प्रहार से उसकी खोपड़ी तोड़ दी, जिससे बेचारे आत्मा का दिमाग उड़ गया और उसके गाल फट गए, और वह एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ पानी से बाहर निकला। बंदर ने डिब्बा खोला और उसमें एक निमंत्रण पत्र मिला जिस पर लिखा था: महामहिम द्वितीय चाचा आओ,

आपके भतीजे तुओ जी ने प्रणाम करते हुए आपके स्नेह के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया है। आज मैंने पूर्व से दो दुर्लभ पुजारियों को बंदी बनाया है। उन्हें स्वयं खाने का साहस न करते हुए और आपके जन्मदिन के निकट होने के कारण, मैंने आपके लिए एक साधारण भोज का आयोजन किया है ताकि आपको शाश्वत जीवन की शुभकामनाएं दी जा सकें। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप अपनी गरिमामय उपस्थिति से मुझे सम्मानित करें।

“उस आदमी ने मुझे मेरे मामले के लिए ज़रूरी सारे सबूत दे दिए हैं,” बंदर हँसते हुए बोला और निमंत्रण पत्र को अपनी आस्तीन में रखते हुए आगे बढ़ गया। तभी समुद्र में गश्त कर रहे एक यक्ष ने बंदर को देख लिया और तुरंत क्रिस्टल महल लौटकर ड्रैगन राजा को सूचना दी, “स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि, भगवान बंदर, यहाँ हैं।”

ड्रैगन राजा आओ शुन अपने जल-जनजाति के साथ महल से बंदर का स्वागत करने के लिए निकले: "महान ऋषि, क्या आप थोड़ी देर के लिए मेरे साधारण महल में आकर एक कप चाय नहीं पिएंगे?"

"मैंने तुम्हारी चाय का एक कप भी कभी नहीं पिया है," बंदर ने कहा, "लेकिन तुमने मेरी शराब पहले पी है।"

इस पर ड्रैगन राजा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "महान ऋषि, आप हमेशा से बुद्ध के सच्चे अनुयायी रहे हैं और आपने कभी मांस या शराब का सेवन नहीं किया है। आपने मुझे कभी भी पेय पदार्थों के लिए आमंत्रित नहीं किया है।"

"तुम भले ही कभी शराब पीने के लिए यहाँ नहीं आए हो, लेकिन शराबी होने के कारण तुम पहले से ही मुसीबत में हो," मंकी ने कहा।

"मैं मुसीबत में कैसे पड़ गया?" आओ शुन ने घबराकर पूछा। बंदर ने निमंत्रण पत्र निकाला और उसे ड्रैगन राजा को सौंप दिया।

यह देखकर ड्रैगन राजा बुरी तरह भयभीत हो गया। वह घबराकर घुटनों के बल गिर पड़ा, प्रणाम किया और बोला, "हे महान ऋषि, मुझे क्षमा करें। वह भयानक बालक मेरी छोटी बहन का नौवाँ पुत्र है। मेरे बहनोई, उसके पति ने, गलत मात्रा में हवा भेजकर बारिश कम कर दी। मानव प्रधानमंत्री वेई झेंग को एक दिव्य आदेश भेजा गया, जिसने स्वप्न में ही उसका सिर काट दिया। मैं अपनी बहन को यहाँ इसलिए लाया क्योंकि उसके पास रहने और लड़के का पालन-पोषण करने के लिए कोई और

जगह नहीं थी। दो साल पहले एक बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई, और लड़का बेघर हो जाने के बाद मैंने उसे काली नदी में उसके स्वभाव को निखारने और सत्य का अभ्यास करने के लिए भेज दिया। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह इतने भयानक पाप करेगा, और अब मैं उसे गिरफ्तार करने के लिए लोगों को भेजूँगा।"
"तुम्हारी बहन के कितने अच्छे बेटे थे?" बंदर ने पूछा। "क्या वे सब राक्षस थे?"
“नौ,” ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया। “बाकी आठ अच्छे निकले हैं। सबसे बड़ा छोटा पीला ड्रैगन है, जो हुआई नदी में रहता है। दूसरा छोटा काला ड्रैगन है, जो जी नदी में रहता है। तीसरा नीली पीठ वाला ड्रैगन है, जो यांग्त्से नदी में रहता है। लाल मूंछों वाला ड्रैगन चौथा पुत्र है, जो पीली नदी का स्वामी है। पाँचवाँ व्यर्थ प्रयास वाला ड्रैगन है, जो भगवान बुद्ध की घंटी की देखभाल करता है। छठा रक्षक ड्रैगन है, जो स्वर्ग महल की छत की रक्षा करता है। सातवाँ आदरणीय ड्रैगन है; वह जेड सम्राट के दरबार में पंखों वाले स्तंभ को थामे रहता है। आठवाँ क्लैम ड्रैगन है, जो मेरे सबसे बड़े भाई के साथ ताई पर्वत पर रहता है। सबसे छोटा, मगरमच्छ ड्रैगन, अभी छोटा होने के कारण कोई विशेष कर्तव्य नहीं सौंपा गया है। उसे पिछले साल केवल अपनी प्रकृति को पोषित करने के लिए काली नदी में भेजा गया था। उसने अभी तक कोई प्रसिद्धि हासिल नहीं की है और न ही उसे कहीं और स्थानांतरित करके नौकरी दी गई है। मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि वह आपको, महान ऋषि, नाराज करके मेरी अवज्ञा करेगा।”
यह सुनकर बंदर हँस पड़ा और बोला, "तुम्हारी बहन के कितने पति रहे हैं?"
"केवल एक," आओ शुन ने उत्तर दिया, "जिंग नदी का ड्रैगन राजा। उसकी मृत्यु के बाद वह यहाँ विधवा के रूप में रहती थी और पिछले वर्ष एक बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई।"
अध्याय 43

"एक पति-पत्नी के इतने सारे नाजायज बच्चे कैसे हो सकते हैं?" बंदर ने पूछा।
"जैसा कि कहावत है, नौ प्रकार के ड्रैगन पैदा होते हैं, और हर एक अलग होता है," आओ शुन ने उत्तर दिया।
“अभी मेरा सब्र टूट गया,” बंदर ने कहा। “इस निमंत्रण को सबूत मानकर मैं स्वर्ग की अदालत में शिकायत दर्ज कराने वाला था और तुम पर किसी राक्षस के साथ मिलकर

अपहरण करने का आरोप लगाने वाला था। लेकिन तुमने जो बताया उससे लगता है कि उस दुष्ट ने तुम्हारी सलाह नहीं मानी, इसलिए मैं तुम्हें इस बार छोड़ रहा हूँ, कुछ तो तुम्हारे बड़े भाई के सम्मान में और कुछ इसलिए कि वह दुष्ट अभी इतना छोटा है कि उसे इतनी समझ नहीं है। इसके अलावा, तुम्हें पता भी नहीं था कि क्या हो रहा है। लेकिन तुम्हें तुरंत किसी को भेजकर उसे गिरफ्तार करवाना होगा और मेरे स्वामी को छुड़ाना होगा। फिर हम तय करेंगे कि आगे क्या करना है।"

तब आओ शुन ने अपने बेटे मोआंग से कहा, "हमारे पांच सौ सबसे ताकतवर झींगा और मछली सैनिकों को लेकर मगरमच्छ को तुरंत गिरफ्तार करो और उस पर मुकदमा चलाओ। साथ ही, महान ऋषि से माफी मांगने के लिए एक भोज का आयोजन करो।"

"महाराज, चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है," बंदर ने कहा। "मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि मैं आपको छोड़ दूंगा, तो भोज में शामिल होने की क्या ज़रूरत है? लेकिन मैं आपके पुत्र के साथ जाना चाहता हूँ क्योंकि मेरे गुरु के साथ अन्याय हुआ है और मेरे साथी शिष्य मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।"

ड्रैगन राजा ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे। तभी एक ड्रैगन कन्या चाय लेकर आई, जिसे बंदर ने खड़े-खड़े ही पी लिया और बूढ़े ड्रैगन से विदा लेकर मोआंग और उसके सैनिकों के साथ पश्चिमी सागर से निकल गया। जल्द ही वे काली नदी पर वापस आ गए, जहाँ बंदर ने कहा, "महाराज, आप राक्षस को पकड़ लीजिए, मैं किनारे पर इंतज़ार करता हूँ।"

"चिंता मत करो, महान ऋषि," मोआंग ने कहा। "मैं उसे गिरफ्तार कर लूंगी, आपको सौंप दूंगी, ताकि आप उसे सजा सुनाएं और दंडित करें, और फिर आपके स्वामी को आपको लौटा दूंगी। तभी मैं उसे वापस सागर में ले जाऊंगी और अपने पिता से मिलूंगी।"

बंदर ने प्रसन्नतापूर्वक उससे विदा ली, जल-भगाने का मंत्र पढ़ा और उसे अपने हाथों से दोहराया, लहरों से बाहर निकला और सीधे पूर्वी तट की ओर चल पड़ा, जहाँ साधु रेत और नदी देवता ने कहा, "जब तुम गए थे तो हवा में थे, तो पानी के नीचे से वापस क्यों आ गए?" बंदर ने उन्हें सब कुछ बताया कि कैसे उसने मछली की आत्मा को मारा, निमंत्रण स्वीकार किया, ड्रैगन राजा पर हमला किया और ड्रैगन राजकुमार के साथ सैनिकों को वापस लाया।

फ्रायर सैंड बहुत प्रसन्न हुए, और वे सभी नदी के किनारे खड़े होकर प्रतीक्षा करने लगे।

राजकुमार मोआंग ने जलमग्न महल के द्वार पर एक दूत भेजा और दुष्ट आत्मा को यह सूचना दी, "पश्चिमी सागर के प्राचीन ड्रैगन राजा के पुत्र राजकुमार मोआंग यहाँ आए हैं।" यह खबर सुनकर अंदर बैठी दुष्ट आत्मा को संदेह होने लगा।

"मैंने कुछ समय पहले अपने चाचा को निमंत्रण के साथ एक काली मछली की आत्मा भेजी थी," उसने सोचा, "और मुझे अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है। मेरी जगह मेरा चचेरा भाई यहाँ क्यों है?"

जब वह सोच ही रहा था, तभी नदी गश्ती दल से एक छोटा दानव आकर सूचना देने लगा, "महाराज, महल के पश्चिम में नदी में सैनिकों की एक टुकड़ी डेरा डाले हुए है। उनके झंडे पर लिखा है 'युवा मार्शल मोआंग, युवराज और पश्चिमी सागर के ड्रैगन राजा के पुत्र'।"

"मेरा वो चचेरा भाई तो हद ही पार कर देता है," राक्षस ने कहा। "शायद मेरे चाचा आ नहीं सके और उन्होंने उसे दावत में भेज दिया, लेकिन उसे अपने साथ सेना लाने की ज़रूरत नहीं थी। हम्म। ज़रूर कुछ गड़बड़ है।"

“बच्चों,” उसने कहा, “मेरा कवच और मेरा लोहे का कोड़ा तैयार रखो, कहीं ऐसा न हो कि जब मैं बाहर जाकर उसका स्वागत करूँ और देखूँ कि क्या हो रहा है, तब तक हालात बिगड़ जाएँ।” आदेश सुनते ही सभी शैतानों ने अपने हाथ मल लिए और तैयार हो गए।

अध्याय 43

604

पश्चिम की यात्रा

जब मगरमच्छ बाहर आया तो उसने देखा कि दाहिनी ओर समुद्री सैनिकों की एक पूरी टुकड़ी डेरा डाले हुए थी: कढ़ाईदार कमरबंद और लहराते झंडे।

भोर की रोशनी से भी अधिक चमकीले रंग के भाले,
उत्तम तलवारें ठंडी चमक बिखेर रही थीं,
कई खूबसूरत लटकनों वाले भाले,
धनुष चंद्रमा की तरह पीछे खींचे हुए हैं,
भेड़ियों के दांतों जैसे तीर,

चमकीली चौड़ी तलवारें,
कठोर गदाएँ।
वहाँ व्हेल, कछुए और क्लैम थे।
केकड़े, कछुए, मछली और झींगे,
सभी को आकार के अनुसार तैयार किया गया है।
उनके हथियार भांग के खेत की तरह घनी तरह से पैक किए गए थे।
जब तक कि किसी वरिष्ठ अधिकारी द्वारा आदेश न दिया जाए
कोई भी उन पर हमला करने की हिम्मत नहीं करता था।
जब मगरमच्छ रूपी राक्षस ने उन्हें देखा तो वह सीधे उनके शिविर के द्वार पर गया और अपनी पूरी आवाज में चिल्लाया, "चचेरे भाई, मैं यहाँ तुम्हारे लिए एक निमंत्रण लेकर इंतजार कर रहा हूँ।"
शिविर में गश्त कर रहा एक शंख सीधे कमांडर के तंबू में गया और सूचना दी, "महामहिम, मगरमच्छ ड्रैगन एक निमंत्रण लेकर बाहर है।"
राजकुमार ने अपने सिर पर हेलमेट को महसूस किया, अपनी कमर के चारों ओर रत्नजड़ित बेल्ट को कसा, तीन धार वाली गदा उठाई और शिविर से बाहर निकल पड़ा। "मेरे लिए क्या निमंत्रण है?" उसने पूछा।
एलीगेटर ड्रैगन ने झुककर उत्तर दिया, "आज सुबह मैंने तुम्हारे पिता को निमंत्रण भेजा था। निस्संदेह उन्होंने आना उचित नहीं समझा होगा और तुम्हें भेज दिया होगा। लेकिन तुम्हें अपने साथ सेना लाने की क्या ज़रूरत थी? तुम यहाँ पूरी तरह से हथियारों से लैस होकर डेरा क्यों डाले हुए हो?"
"आपने मेरे पिता को किस कार्यक्रम में आमंत्रित किया है?" युवराज ने पूछा।
“उनकी कृपा से मैं यहाँ रह रहा हूँ, इसलिए मैंने लंबे समय से उनका तेजस्वी चेहरा नहीं देखा है और न ही उनके प्रति अपना कर्तव्य निभाया है,” मगरमच्छ ने उत्तर दिया।
“कल मैंने पूर्व से आए एक पुजारी को पकड़ा, जो... अध्याय 43

कहते हैं, उसने लगातार दस जन्मों तक अपने आचरण को सुधारा। अगर तुम उसका शरीर खा लो तो तुम बहुत लंबे समय तक जीवित रह सकते हो। मैं चाचाजी को जन्मदिन के उपहार के रूप में स्टीमर में पकाने से पहले उन्हें पुजारी को देखने के लिए

आमंत्रित करना चाहता था।

"बिल्कुल मूर्ख!" युवराज चिल्लाया। "क्या तुम जानते हो कि वह पुजारी कौन है?"

"वह तांग वंश का एक पुजारी है जो पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने जा रहा है," राक्षस ने उत्तर दिया।

युवराज ने कहा, "आप बस इतना जानते हैं कि वह तांग वंश का पुजारी है। लेकिन आपको यह एहसास नहीं है कि उसके शिष्य कितने शक्तिशाली हैं।"

“उसके पास एक लंबे थूथन वाला राक्षस है जिसका नाम पिग है, जिसे मैंने पहले ही पकड़ लिया है और मैं उसे तांग पुजारी के साथ मिलकर मार गिराने वाला हूँ,” मगरमच्छ राक्षस ने उत्तर दिया। “उसका एक और शिष्य है जिसका नाम फ्रायर सैंड है, एक सांवला सा, भयावह चेहरे वाला व्यक्ति जो लाठी से लड़ता है। वह कल मेरे द्वार पर अपने गुरु को माँगने आया था। मैं अपनी नदी सेना के साथ निकला और मैंने उसे अपनी लोहे की मूठ से तुरंत भगा दिया। मुझे समझ नहीं आता कि उसमें ऐसी क्या ताकत है।”

"तुम्हें अभी तक बात समझ नहीं आई है," ड्रैगन राजकुमार ने उत्तर दिया। "उनका वरिष्ठ शिष्य सर्वोच्च परम का स्वर्ण अमर है, वह महान ऋषि जो स्वर्ग के समतुल्य है और जिसने पांच सौ साल पहले स्वर्ग में तबाही मचाई थी।"

वह अब तांग पुरोहित को बुद्ध की पूजा करने और पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए ले जा रहा है। पोतारका की दयालु और कृपालु बोधिसत्व गुआनयिन ने उसका धर्म परिवर्तन कराया और उसका नाम बदलकर सन वुकॉन्ग (नौसिखिया) रख दिया। आखिर तुमने अपने ऊपर यह विपत्ति क्यों बुलाई? हमारे सागर में उसकी मुलाकात तुम्हारे एक दूत से हुई, उसने निमंत्रण स्वीकार किया और सीधे हमारे क्रिस्टल महल में घुसकर मेरे पिता और मुझे बहुत परेशान कर दिया। उसने हम पर दुष्ट आत्माओं के साथ मिलकर अपहरण करने का आरोप लगाया है।

अगर तुम ज़िंदा रहना चाहते हो, तो बेहतर होगा कि तुम तांग पुजारी और सुअर को सीधे बैंक ले आओ, उन्हें महान ऋषि बंदर को सौंप दो और मेरे साथ मिलकर उनसे माफ़ी मांगो। अगर तुमने ज़रा भी 'ना' कहा, तो तुम यहाँ सही-सलामत रहने की उम्मीद छोड़ देना।

इससे मगरमच्छ राक्षस भयंकर क्रोध में आ गया। "मेरा अपना चचेरा भाई उनका साथ दे रहा है!" वह चिल्लाया। "तुम मुझसे तांग पुजारी को सौंपने को कह रहे हो, लेकिन

इस दुनिया में कुछ भी इतना आसान नहीं है। सिर्फ इसलिए कि तुम उससे डरते हो, इसका मतलब यह नहीं कि मैं भी डरता हूँ। अगर उसके पास सच में इतनी शक्तियाँ हैं और वह मेरे महल के द्वार के सामने मुझसे तीन बार लड़ने की हिम्मत रखता है, तो मैं उसे उसका स्वामी वापस दे दूँगा। अगर वह मेरा मुकाबला नहीं कर सकता, तो मैं उसे भी पकड़ लूँगा और बाकी लोगों के साथ पका दूँगा। और इस बार कोई मेहमान या रिश्तेदार नहीं होंगे; मैं दरवाजे बंद कर दूँगा, मेरे बच्चे मेरे लिए गाएँगे और नाचेंगे, और मैं सम्मान के स्थान पर बैठकर उन्हें खुद खाकर खूब मजे करूँगा।"

"धिक्कार है शैतान," युवराज ने उसे अपशब्द कहते हुए कहा, "तू एक कलंक है। अगर तू महान ऋषि बंदर को भी योग्य शत्रु नहीं मानता, तो क्या तू मुझसे लड़ने की हिम्मत करेगा?"

“एक ताकतवर आदमी किसी से नहीं डरता,” राक्षस ने जवाब दिया। फिर उसने अपना कवच मंगवाया, जिस पर कई छोटे शैतान उसका कवच और लोहे का कोड़ा लेकर आगे आ गए। अब वे दोनों एक-दूसरे को घूर रहे थे और हर कोई हीरो बनना चाहता था। आदेश दिए गए, ढोल बजने लगे और एक ऐसी लड़ाई शुरू हो गई जो फ्रायर सैंड के साथ हुई लड़ाई से कहीं ज्यादा भयंकर थी। जो कुछ दिखाई दिया वह यह था:

चमकीले बैनर,
चमकते हुए भाले।
शिविर को तुरंत हटा दिया गया।

अध्याय 43

606

पश्चिम की यात्रा

महल के द्वार पूरी तरह से खुले हुए थे।
प्रिंस मोआंग ने अपनी सुनहरी गदा चलायी;
उस मगरमच्छ ने अपने डंडे से वार को रोका।
तोपों की गर्जना के बीच नदी के किनारे तैनात सैनिक बेहद उग्र हो गए;
घंटा बजते ही समुद्र के योद्धा उग्र हो गए।
झींगों ने झींगों से लड़ाई की।
और केकड़े के साथ केकड़ा।

व्हेल और विशाल कछुओं ने लाल कार्प मछलियों को निगल लिया;
ब्रीम और कार्प मछलियाँ घोंघे को भगा देती हैं।
शार्क और मुलेट मछली ने मैकेरल मछली को भगा दिया;
जब सीपियों ने क्लैम को पकड़ लिया तो सभी मसल्स घबरा गए।
स्वोर्डफिश के कांटे लोहे की छड़ों की तरह सख्त थे;
बैराकुडा मछली की सुइयां भाले से भी अधिक नुकीली थीं।
स्टर्जन मछलियों ने सफेद ईल का पीछा किया;
पर्च और हेरिंग ने पोम्फ्रेट की पीठ पर कब्जा कर लिया।
नदी राक्षसों के बीच युद्ध की ललचाती हुई थी।
दोनों पक्षों के ड्रैगन योद्धा आपस में लड़ रहे थे।
लंबे समय तक चले इस संघर्ष ने लहरों को उत्तेजित कर दिया।
और क्राउन प्रिंस मोआंग वज्रपाणि से बेहतर थे,
जैसे ही वह दहाड़ा और अपने गदा से सिर पर प्रहार किया,
परेशानी पैदा करने वाले मगरमच्छ को पकड़ना।

राजकुमार ने तीन धार वाले गदा से सतर्कता कम करने का नाटक किया। यह न समझते हुए कि यह एक चाल है, दुष्ट आत्मा उस पर टूट पड़ी, जिस पर युवराज ने कुशलता से पहले उसके दाहिने हाथ पर गदा से प्रहार किया जिससे वह लड़खड़ा गया, फिर उसका पीछा किया और उसके पैरों पर प्रहार करके उसे ज़मीन पर गिरा दिया।

समुद्र के सैनिक दौड़े, मगरमच्छ को पकड़ लिया, उसके दोनों हाथ पीछे बांध दिए, उसकी गर्दन की हड्डी में लोहे की जंजीर डाल दी, उसे किनारे पर खींच लाए और बंदर के पास ले गए, जहां राजकुमार ने बताया, "महान ऋषि, मैंने मगरमच्छ राक्षस को गिरफ्तार कर लिया है और उसे न्याय के लिए आपके हवाले कर रहा हूं।"

“अरे आज्ञा न मानने वाले दुष्ट,” बंदर ने कहा जब उसने और साधु रेत ने उस राक्षस को देखा, “तुम्हारे चाचा ने तुम्हें यहाँ रहने, अपना स्वभाव निखारने और अपना ख्याल रखने के लिए भेजा था। जब तुम्हारा नाम रोशन हो जाता तो वो तुम्हें कहीं और काम

पर भेजने वाले थे। तुमने नदी देवता के घर पर कब्ज़ा क्यों किया और गुंडागर्दी क्यों की? तुमने मेरे स्वामी और मेरे भाई को छल से क्यों पकड़ा? मैं तुम्हें मारने ही वाला था, लेकिन मेरी ये लाठी इतनी ज़ोर से चलती है कि बस छूने भर से ही तुम मर जाओगे। तुमने मेरे स्वामी को कहाँ रखा है?"

“हे महान ऋषि,” राक्षस ने लगातार प्रणाम करते हुए उत्तर दिया, “इस तुच्छ मगरमच्छ ने आपका नाम कभी नहीं सुना था। लेकिन अब मुझे मेरे चचेरे भाई ने उसकी अवज्ञा करने और न्याय के विरुद्ध घोर अपराध करने के कारण गिरफ्तार कर लिया है। हे महान ऋषि, मेरा जीवन बचाने के लिए मैं आपका अत्यंत आभारी हूँ। आपका स्वामी अभी भी जलमहल में बंधा हुआ है। यदि आप जंजीर खोलकर मेरे हाथ खोल दें, तो मैं नदी में लौटकर उसे आपके पास वापस ले आऊँगा।”

उनके बगल में खड़े राजकुमार मोआंग ने कहा, "महान ऋषि, वह एक दुष्ट और कपटी जानवर है। यदि आप उसे रिहा कर देंगे तो वह बुरे इरादे रख सकता है।"

"मुझे पता है उसका ठिकाना कहाँ है," फ्रायर सैंड ने कहा। "मैं उस गुरु को ढूंढ लूंगा।"

फिर वह और नदी देवता नदी में कूद गए और सीधे जल महल के द्वार पर पहुँच गए, जो पूरी तरह से खुले थे और वहाँ एक भी सैनिक पहरा नहीं दे रहा था। मंडप के अंदर उन्होंने तांग पुजारी और सुअर को नग्न अवस्था में बंधे हुए देखा। साधु सैंड ने तुरंत पुजारी के बंधन खोल दिए, जबकि नदी देवता ने सुअर को मुक्त कर दिया। इसके बाद वे दोनों एक-एक को पानी की सतह तक और फिर किनारे तक ले गए।

दुष्ट आत्मा को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखकर पिग ने उसे मारने के लिए अपना रेक उठाया और अपशब्दों से कहा, "दुष्ट जानवर, इसे मुझसे ले ले।"

बंदर ने उसे रोकते हुए कहा, "भाई, आओ शुन और उसके बेटे के प्रति दया भाव रखते हुए उसकी जान बख्श दो।"

तब मोआंग ने झुककर कहा, "हे महान ऋषि, मुझे अब यहाँ और नहीं रुकना चाहिए। मैंने आपके स्वामी को बचा लिया है, इसलिए अब मैं इस दुष्ट को अपने पिता के पास ले जा रहा हूँ। आपने उसे मृत्युदंड से तो बचा लिया है, लेकिन मेरे पिता उसे अन्य प्रकार के दंडों से नहीं बख्शेंगे। जब उसे सजा सुनाई जाएगी, तो उसे आपके पास वापस भेजा जाएगा ताकि वह आपसे फिर से क्षमा मांग सके।"

“ठीक है,” बंदर ने कहा, “इसे ले जाओ। अपने पिता को मेरा प्रणाम कहना और यह भी कहना कि मैं उनसे व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद देने के लिए किसी और दिन वापस

आऊंगा।” इसके बाद राजकुमार अपने कैदी के साथ पानी में कूद गया और अपनी समुद्री सेना को लेकर सीधे पश्चिमी सागर की ओर लौट गया।
तब काली नदी के देवता ने अपने जल महल की पुनः प्राप्ति के लिए भाई बंदर को धन्यवाद दिया। "शिष्य,"
तांग पुरोहित ने कहा, "हम अभी भी पूर्वी तट पर हैं। हम इस नदी को कैसे पार करेंगे?"
“हे स्वामी, चिंता मत कीजिए,” नदी देवता ने कहा। “कृपया अपने घोड़े पर सवार हो जाइए, मैं आपको नदी पार करा दूंगा।” तब गुरु अपने घोड़े पर सवार हो गए, सुअर घोड़े की अगुवाई कर रहा था, साधु रेत सामान ढो रहा था और बंदर संजांग को सहारा दे रहा था। नदी देवता ने जल को रोकने के लिए जादू किया। पल भर में जहाँ पानी रुका था, वहाँ एक चौड़ा रास्ता खुल गया; गुरु और शिष्य पश्चिमी तट पर पहुँचे, उस पर चढ़े, नदी देवता को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। सचमुच:
पश्चिम की यात्रा के लिए उन्होंने पुजारी को बचा लिया;
जब नदी पार की गई तो वहां कोई लहर नहीं थी।
अध्याय 43
608
पश्चिम की यात्रा
यदि आपको नहीं पता कि उन्होंने बुद्ध से कैसे मुलाकात की और शास्त्रों को कैसे प्राप्त किया, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 44
हृदय के केंद्र में बुराई क्रॉस करती है
बैकबोन पास
एक कविता है जो इस प्रकार है:
वे खतरों से बचने के लिए पश्चिम की ओर यात्रा करते हैं ताकि धर्मग्रंथों की खोज कर सकें;
और वे सभी प्रसिद्ध पर्वतों पर रुक भी नहीं सकते।
वे दिन-रात लगातार आगे बढ़ते रहते हैं, कौवों और खरगोशों को डराते हुए।
फूलों के गिरने और पक्षियों के मधुर गीत के बीच ऋतुओं का परिवर्तन होता है।
आंखों के नीचे की धूल में तीन हजार संसार समाहित हैं;

एक छड़ी के सिरे पर चार सौ प्रांत टिके हुए हैं।
ओस में सोते और हवा में भोजन करते हुए वे बैंगनी ढलान पर चढ़ते हैं; उन्हें कभी नहीं पता होता कि वे कब वापस लौट पाएंगे।
कथा बताती है कि कैसे ड्रैगन राजकुमार द्वारा राक्षस को पराजित करने और काली नदी के देवता द्वारा जल को दो भागों में बाँटने के बाद, गुरु और शिष्यों ने काली नदी पार की और पश्चिम की ओर मुख्य मार्ग पर चल पड़े। उन्हें तेज हवाओं और बर्फ का सामना करना पड़ा और वे चाँद और तारों की रोशनी में यात्रा करते रहे। काफी देर तक यात्रा करने के बाद, फिर से वसंत ऋतु का आरंभ हो गया।
सूर्य फिर से उगता है;
सब कुछ फिर से जीवंत हो उठता है।
सूर्य फिर से उगता है;
सौंदर्य आकाश को एक खुले हुए ग्रंथ की तरह भर देता है।
सब कुछ फिर से जीवंत हो उठता है।
अध्याय 44
609
पश्चिम की यात्रा
जैसे फूल कढ़ाईदार गद्दियों से धरती को ढक लेते हैं।
बेर के फूलों के कुछ बर्फ के टुकड़े अभी भी बचे हैं।
जबकि गेहूं बादलों के सागर की तरह फैल जाता है।
बर्फ पिघलने के साथ ही अब पहाड़ का झरना बहने लगा है।
नई कोंपलें उगती हैं और जली हुई सूखी घास को ढक लेती हैं।
ताई हाओ पूर्व दिशा पर शासन करता है।
वन देवता भोर पर शासन करते हैं।
सुगंध और गर्म हवा के ऊपर
बादल छंट जाते हैं और सूरज फिर से चमकने लगता है।
रास्ते के किनारे विलो के पेड़ अपनी हरी-भरी छटा बिखेरते हैं।
उपजाऊ बारिश सभी जीवित प्राणियों के लिए वसंत का आगमन करती है।
गुरु और शिष्य नज़ारे का आनंद लेते हुए टहल रहे थे कि अचानक उन्हें हज़ारों स्वरों से एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी, मानो कोई युद्धघोष हो रहा हो। संज़ंग भयभीत हो

गया। उसने अपने घोड़े की लगाम खींच ली, आगे कदम बढ़ाने में असमर्थ। "वुकोंग," उसने पीछे मुड़कर उससे कहा, "यह आवाज़ कहाँ से आ रही है?"
"ऐसा लग रहा था जैसे भूकंप या भूस्खलन हुआ हो," पिग ने कहा।
"या फिर गरज," फ्रायर सैंड ने कहा।
"या फिर लोग चिल्ला रहे हों और घोड़े हिनहिना रहे हों," संजांग ने कहा।
"तुम सब गलत हो," बंदर हँसते हुए बोला। "बस एक पल रुको, मैं जाकर देख लेता हूँ।"
शानदार बंदर। एक ही छलांग में वह बादल पर सवार होकर हवा में चारों ओर देखने लगा। दूर उसे एक चारदीवारी वाला शहर दिखाई दिया, और जब वह पास गया तो उसने देखा कि उस पर शुभ प्रकाश की एक धुंध छाई हुई थी और किसी भी बुरी ऊर्जा का कोई निशान नहीं था। "यह अच्छी जगह है," उसने मन ही मन सोचा, "लेकिन वह भयानक शोर क्यों था? मुझे वहां युद्ध के झंडे या भाले दिखाई नहीं दे रहे हैं, और तोपों की कोई आवाज भी नहीं है। तो फिर चिल्लाने और हिनहिनाने जैसी आवाज क्यों आ रही थी?"
जब वह इन सब बातों पर मन ही मन विचार कर रहा था, तभी उसने शहर के द्वार के बाहर एक रेतीले टीले पर बौद्ध भिक्षुओं की एक बड़ी भीड़ को एक गाड़ी खींचते हुए देखा। जिस शोर ने संज़ंग को चौंका दिया था, वह उन सभी के एक साथ चिल्लाने की आवाज़ थी, "शक्तिशाली बोधिसत्व राजा!"
जब उसने बेहतर ढंग से देखने के लिए धीरे-धीरे अपना बादल नीचे किया, तो उसने देखा कि गाड़ी भट्टी की ईंटों, टाइलों, लकड़ी और मिट्टी की ईंटों से लदी हुई थी। रेत के टीले के ऊपर एक ऊँची पहाड़ी थी, जिसके शिखर पर दो बड़े फाटकों के बीच एक संकरा रास्ता जाता था। फाटकों के नीचे सभी रास्ते पहाड़ी की खड़ी ढलानों से सीधे नीचे उतरते थे: गाड़ी को वहाँ तक खींचना असंभव था। यद्यपि मौसम इतना सुहावना था, फिर भी भिक्षु सभी फटे-पुराने कपड़ों में थे और घोर निर्धन दिख रहे थे।

"मुझे लगता है वे कोई मठ बना रहे होंगे," बंदर ने सोचा, "और फसल कटाई का मौसम होने के कारण उन्हें खुद ही काम करना पड़ रहा है क्योंकि वे कोई मजदूर नहीं

रख सकते।" वह अभी भी पूरी तरह आश्वस्त नहीं था कि तभी उसने दो युवा ताओवादी पुजारियों को शहर के द्वार से इतराते हुए बाहर आते देखा। ज़रा उनके पहनावे को तो देखो: उनके सिर पर तारों के मुकुट थे।

ब्रोकेड और कढ़ाई वाले कपड़े।

उनके सिर पर सजे तारों के मुकुट खूब चमक रहे हैं।

ब्रोकेड और कढ़ाई वाले कपड़े सूर्यास्त के बादलों की तरह तैरते हैं।

उनके पैरों में बादलों पर चलने वाले जूते हैं।

उनकी कमर पर रेशमी बेल्ट बंधी हुई हैं।

सुंदर और बुद्धिमान चेहरे, चंद्रमा के समान गोल;

ऐसे शरीर जो स्वर्ग में विराजमान अमर लोगों के समान सुंदर हों।

ताओवादियों के आने से बौद्ध भिक्षु भय से कांप उठे और उन्होंने अपने प्रयास दोगुने कर दिए और गाड़ी को पहले से कहीं अधिक जोर से खींचने लगे।

"आह!" बंदर ने सोचा, जब उसे समझ आया कि क्या हो रहा है। "भिक्षु ताओवादियों से डरे हुए होंगे। नहीं तो इतनी ज़ोर से क्यों खींच रहे होते? मैंने सुना है कि पश्चिम की ओर जाने वाले रास्ते में एक जगह है जहाँ ताओवाद को माना जाता है और बौद्ध भिक्षुओं को सताया जाता है। यही वह जगह होनी चाहिए। मैं गुरु को बताने जा रहा था, लेकिन अगर मैंने पता नहीं लगाया तो वे मुझसे नाराज़ हो जाएँगे। वे कहेंगे कि मुझ जैसे चतुर व्यक्ति को सच्चाई का पता लगाना चाहिए। मैं नीचे जाकर पता लगाऊँगा कि क्या हो रहा है ताकि मैं गुरु को बता सकूँ।"

लेकिन वह किससे पूछता? महान संत ने स्वयं को झटककर एक घुमंतू क्वानझेन ताओवादी का रूप धारण कर लिया, जिसके बाएं हाथ पर भोजन की टोकरी थी और वह बांस के ढोल पर थाप करते हुए ताओवादी गीत गा रहा था।

बंदर शहर के द्वार की ओर चला और दोनों ताओवादियों को प्रणाम करते हुए बोला, "मार्ग के वरिष्ठजनों, सादर प्रणाम।"

"आप कहाँ से हैं, महोदय?" ताओवादियों ने अभिवादन का जवाब देते हुए पूछा।

“मैं समुद्र के कोनों से लेकर आकाश के छोर तक भटकता रहता हूँ,” बंदर ने उत्तर दिया। “मैं आज यहाँ किसी पुण्य परिवार से भीख मांगने आया हूँ। क्या आप दोनों बड़े-बुजुर्ग मुझे बता सकते हैं कि इस शहर की कौन सी गलियाँ और रास्ते धर्म और उसके अनुयायियों से प्रेम करते हैं? मैं कुछ भोजन की भीख मांगना चाहता हूँ।”

"कितना निराशाजनक तरीका है बात करने का, महोदय," ताओवादी पुजारियों में से एक ने हंसते हुए कहा।
"इसमें इतना निराशाजनक क्या है?" बंदर ने पूछा।
"क्या यह दुखद नहीं है कि तुम भोजन के लिए भीख मांगना चाहते हो?" पुजारी ने पूछा।
"लेकिन हम धर्मनिष्ठ लोगों को भीख मांगकर ही जीवन यापन करना पड़ता है," भाई बंदर ने कहा। "अगर हम ऐसा नहीं करेंगे, तो हम अपना भोजन नहीं खरीद पाएंगे।"
अध्याय 44
611
पश्चिम की यात्रा
ताओवादी पुजारी फिर हँसे और बोले, "आप यहाँ अजनबी हैं और हमारे शहर के बारे में नहीं जानते। यहाँ केवल नागरिक और सैन्य अधिकारी, धनी और बुजुर्ग ही नहीं, बल्कि युवा और वृद्ध, पुरुष और स्त्री, सभी हमें देखकर भोजन अर्पित करते हैं। लेकिन इन सब बातों का उल्लेख करना व्यर्थ है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि महाराज ताओवादी मार्ग और उसके अनुयायियों के सच्चे भक्त हैं।"
बंदर ने कहा, "मैं जवान हूँ और दूर से आया अजनबी हूँ। मुझे यह पता नहीं था। क्या मैं आप दोनों बुजुर्गों से एक साथी विश्वासी की मदद करने का अनुरोध कर सकता हूँ? कृपया मुझे इस जगह के नाम और राजा द्वारा इस मार्ग और इसके अनुयायियों के प्रति प्रेम के बारे में और अधिक बताएं।"
ताओवादी पुजारी ने उत्तर दिया, "इस देश का नाम टैरीकार्ट है, और महाराज हमारे निकट ही हैं।"
यह सुनकर बंदर हँसते हुए बोला, "क्या ऐसा हो सकता है कि एक ताओवादी पुजारी सम्राट हो?"
"नहीं," उसने उत्तर दिया। "यहाँ बीस वर्षों तक सूखा पड़ा रहा और बारिश की एक बूँद भी नहीं गिरी। कुछ भी नहीं उग सका।"
सभी—राजा, मंत्री, आम लोग, उच्च वर्ग और साधारण वर्ग—सभी ने स्नान किया, धूप जलाई और वर्षा के लिए स्वर्ग से प्रार्थना की। जब वे वास्तव में विकट संकट में थे, तब सभी जीवित प्राणियों को बचाने के लिए स्वर्ग से तीन अमर प्राणियों को भेजा गया।

"कौन से तीन?" बंदर ने पूछा।
"हमारे गुरु," ताओवादी पुजारी ने उत्तर दिया।
"क्या मैं उनके पदनाम पूछ सकता हूँ?" बंदर ने पूछा। "हमारे वरिष्ठ गुरु महान अमर बाघ शक्ति हैं," ताओवादी ने उत्तर दिया, "हमारे दूसरे गुरु महान अमर हिरण शक्ति हैं, और तीसरे गुरु महान अमर मृग शक्ति हैं।"
"तुम्हारे तीनों गुरु किस तरह का जादू कर सकते हैं?" बंदर ने पूछा।
ताओवादी ने कहा, "वे हाथ के एक इशारे से हवा और बारिश ला सकते हैं, और पानी को तेल में या पत्थर को सोने में उतनी ही आसानी से बदल सकते हैं जितनी आसानी से वे मुड़ जाते हैं। उनकी जादुई कलाओं से वे आकाश और पृथ्वी की रचना को नियंत्रित कर सकते हैं, या तारों की स्थिति को बदल सकते हैं। हमारे राजा और उनके मंत्री उनका बहुत सम्मान करते हैं और अब वे हमारे रिश्तेदार हैं।"
“तुम्हारा राजा बहुत भाग्यशाली है,” बंदर ने कहा। “कहावत है कि जादू शासक और मंत्री दोनों को प्रभावित करता है। अगर तुम्हारे गुरुओं के पास ऐसी शक्तियां हैं और राजा उन्हें अपने रिश्तेदार मानता है, तो वे राजा के प्रति बहुत दयालु रहे होंगे। अरे बाप रे! मुझे नहीं लगता कि मुझ जैसे एक साधारण ताओवादी को तुम्हारे आदरणीय गुरुओं से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा।”
“उनसे मिलने में कोई समस्या नहीं है,” ताओवादी ने कहा। “हम दोनों उनके प्रिय शिष्य हैं। इसके अलावा, हमारे गुरु इस मार्ग और इसके अनुयायियों से इतना प्रेम करते हैं कि वे किसी भी आगंतुक का स्वागत करने के लिए बस 'मार्ग' शब्द सुनते ही बाहर आ जाते हैं। आपको अंदर ले जाना हमारे लिए राख झाड़ने जितना आसान होगा।”
बंदर ने गहरी और सम्मानपूर्ण "री-ई-एर" की ध्वनि निकाली और फिर कहा, "परिचय कराने के लिए मैं बहुत आभारी रहूंगा।"
चलो अन्दर चले।"
"एक पल रुकिए," ताओवादी ने कहा। "जब तक हम अपने काम पूरे नहीं कर लेते, आप यहीं बैठिए, फिर हम साथ में अंदर जाएंगे।"
बंदर ने कहा, "पुजारियों को पूरी तरह से स्वतंत्र और बंधनमुक्त होना चाहिए। आपको कौन से काम करने होते हैं?"
अध्याय 44

ताओवादी ने रेत के टीले पर बैठे बौद्ध भिक्षुओं की ओर इशारा करते हुए कहा, "वे हमारे लिए काम कर रहे हैं, और हमें हाजिरी लगानी होगी ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे काम में ढिलाई न करें।"

बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "आप बड़ों को गलतफहमी है। हम बौद्ध और ताओवादी भिक्षु सभी धार्मिक व्यक्ति हैं। उन्हें हमारे लिए काम नहीं करना चाहिए और हाजिरी नहीं लगानी चाहिए।"

आपको शायद पता न हो कि जिस वर्ष हम सब मेष राशि के लिए प्रार्थना कर रहे थे, उस वर्ष बौद्ध एक तरफ बुद्ध की पूजा कर रहे थे, जबकि हम दूसरी तरफ विशाल भालू की पूजा कर रहे थे। हम दोनों ने ही दरबार से अनाज की प्रार्थना की, लेकिन बौद्ध निष्फल निकले। उनके सूत्रों के पाठ से कोई लाभ नहीं हुआ और उन्होंने जरा भी मदद नहीं की।

हमारे गुरु ही आए, उन्होंने हवा और बारिश बुलाई और लोगों को उनकी मुसीबतों से बचाया। राजा उन निकम्मे बौद्धों से इतना क्रोधित हुआ कि उसने उनके मठ तुड़वा दिए और उनकी बुद्ध प्रतिमाएँ तुड़वा दीं। उसने उनके दीक्षा पत्र रद्द कर दिए और उन्हें घर लौटने से मना कर दिया। इसके बजाय उसने उन्हें हमें गुलाम बनाकर काम करने के लिए दे दिया। वे हमारे लिए खाना बनाते हैं, सफाई करते हैं और हमारे द्वारों की रखवाली करते हैं।

क्योंकि यहाँ हमारा निवास अभी तक बनकर तैयार नहीं हुआ है, इसलिए हमने बौद्धों से ईंटें, टाइलें और लकड़ी यहाँ मंगवाकर भवन निर्माण का काम करवाया है। हम दोनों को यहाँ उनकी निगरानी करने और यह सुनिश्चित करने के लिए भेजा गया है कि वे काम में ढिलाई न करें।

जब बंदर ने यह सुना तो उसने उन्हें पकड़ लिया और आँसुओं के बीच बोला, "मैंने कहा था कि तुम्हारे स्वामियों से मिलना मेरी किस्मत में नहीं था और मैं सही था।"

"तुम उनसे क्यों नहीं मिलोगे?" ताओवादी ने पूछा।

बंदर ने कहा, "मैं अपनी भटकन के दौरान यहाँ दो कारणों से आया हूँ। एक तो जीविका कमाना और दूसरा कोई रिश्तेदार ढूँढना।"

"क्या रिश्ता है?" ताओवादी ने पूछा।

“मेरा एक चाचा है,” बंदर ने उत्तर दिया, “जो बहुत कम उम्र में ही घर छोड़कर अपने बाल मुंडवाकर बौद्ध भिक्षु बन गया था। कई साल पहले अकाल के दौरान वह भीख मांगने चला गया था। तब से वह वापस नहीं लौटा है, और मैं अपने पूर्वजों के प्रति कर्तव्य की भावना से उसे ढूंढ रहा हूँ। मुझे लगता है कि उसे यहीं रोक लिया गया है और वह भाग नहीं सकता, लेकिन इसका कोई निश्चित तरीका नहीं है। अगर मैं उसे ढूंढ लूँ और देख लूँ तो उसके बाद मैं तुम्हारे साथ शहर जा सकूँगा।”

“कोई बात नहीं,” ताओवादी ने कहा। “हम यहीं बैठेंगे, तुम नीचे रेत पर जाकर उन्हें देख लो। बस यह सुनिश्चित कर लेना कि वे पाँच सौ ही हों। देखना कि कहीं तुम्हारे चाचा उनमें से तो नहीं हैं। अगर हैं, तो हम उन्हें छोड़ देंगे क्योंकि तुम भी एक ताओवादी हो। फिर हम साथ में शहर जा सकते हैं।”

बंदर सचमुच बहुत आभारी था। उसने हाथ उठाकर उन्हें प्रणाम किया और बांस का ढोल बजाते हुए सीधे रेत के टीले की ओर चल पड़ा। जैसे ही वह दोनों द्वारों से होकर पहाड़ी की चोटी पर पहुंचा, सभी भिक्षुओं ने घुटने टेककर उसे प्रणाम किया।

भिक्षुओं में से एक ने कहा, "गुरुजी, हम ढिलाई नहीं कर रहे हैं। हम पांच सौ में से हर एक यहाँ मौजूद है और सभी मिलकर उस गाड़ी को खींच रहे हैं।"

यह सुनकर बंदर मन ही मन मुस्कुराया और दबी हुई मुस्कान के साथ सोचने लगा, "उन ताओवादियों ने उन्हें इतना डरा दिया है कि वे मुझ जैसे नकली ताओवादी से भी डर रहे हैं। अगर मैं असली ताओवादी होता तो वे डर से मर जाते।"

फिर बंदर ने अपने हाथों को हिलाते हुए जोर से कहा, "घुटने मत टेको, और डरो मत। मैं पर्यवेक्षक नहीं हूँ।"

मैं यहां किसी रिश्तेदार की तलाश में आया हूं।" जैसे ही उन्होंने रिश्तेदार की तलाश के बारे में सुना, सभी भिक्षु उनके चारों ओर जमा हो गए, गर्दन आगे करके, खांसते हुए और अन्य आवाजें निकालते हुए, यह उम्मीद करते हुए कि उन्हें भी किसी रिश्तेदार से मिल लिया जाएगा।

"उसका क्या रिश्तेदार है?" सबने हैरानी से पूछा। बंदर ने कुछ देर तक सबको देखा और फिर जोर से हंसने लगा।

भिक्षु ने कहा, "मेरे स्वामी, यदि आप हमारे बीच अपना कोई रिश्तेदार नहीं ढूंढ सकते, तो हंसने की क्या बात है?"

"जानते हो मैं क्यों हंस रहा हूँ?" बंदर ने पूछा। "क्योंकि तुम सब भिक्षु नाकाम हो। तुम्हारा जन्म अशुभ नक्षत्रों के नीचे हुआ है। तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें भिक्षु बनने की अनुमति केवल इसलिए दी क्योंकि तुम उनके लिए दुर्भाग्य लाए थे या क्योंकि तुम्हारी किस्मत में बहनें न होना लिखा था। तुम ताओवादियों के लिए गुलामों की तरह काम क्यों कर रहे हो, जबकि तुम्हें तीन रत्नों का आदर करना चाहिए, बुद्ध के धर्म का सम्मान करना चाहिए, सूत्रों का अध्ययन करना चाहिए और पश्चाताप के अनुष्ठान करने चाहिए?"

"आपने हमें शर्मिंदा कर दिया, महाराज," भिक्षु ने उत्तर दिया। "आप यहाँ अजनबी हैं, महोदय, जो स्थिति को नहीं समझते।"

"हाँ, मैं हूँ," बंदर ने उत्तर दिया, "और हाँ, मैं नहीं भी हूँ।"

"हमारे राजा," बौद्ध भिक्षु ने रोते हुए कहा, "पक्षपाती और तर्कहीन हैं। उन्हें केवल लाओ ज़ी के अनुयायी पसंद हैं और वे हम बौद्धों से नफरत करते हैं।"

"क्यों?" बंदर ने पूछा।

“क्योंकि तीन देवता यहाँ हवा और बारिश लाने आए थे,” भिक्षु ने उत्तर दिया। “उन्होंने हमारे लिए सब कुछ बर्बाद कर दिया और राजा का विश्वास जीत लिया। उसने हमारे मठों को नष्ट कर दिया, हमारे दीक्षा लाइसेंस रद्द कर दिए और हमें अपने घरों में लौटने से मना कर दिया। और उसने हम पर जो जबरन श्रम थोपा, वह यह था कि हमें देवताओं को सौंप दिया जाए ताकि हम उनके लिए काम करें। यह असहनीय रूप से कठिन है। जब तुम यहाँ आओगे, हे घुमंतू ताओवादी, तो तुम्हें केवल राजा से प्रार्थना करनी होगी और तुम्हें भरपूर इनाम मिलेगा। लेकिन कोई भी बौद्ध भिक्षु जो यहाँ आता है, चाहे वह आस-पास का हो या दूर से, उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है और देवताओं के लिए काम पर लगा दिया जाता है।”

"मुझे लगता है कि ताओवादियों को राजा का विश्वास जीतने के लिए कुछ जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करना पड़ता होगा," बंदर ने कहा। "हवा और बारिश बुलाना तो गैर-परंपरागत संप्रदायों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला मामूली जादू है, और राजा का दिल जीतने के लिए यह काफी नहीं है।"

"वे सिंदूर से पारा शुद्ध कर सकते हैं, ध्यान में बैठ सकते हैं, पानी को तेल में बदल

सकते हैं और पत्थरों को सोने में परिवर्तित कर सकते हैं।"
भिक्षु ने उत्तर दिया, “उन्होंने अब तीन पवित्रजनों का एक मंदिर बनाया है जहाँ वे दिन-रात धर्मग्रंथ पढ़ते हैं और महाराज के लिए शाश्वत जीवन की प्राप्ति हेतु स्वर्ग और पृथ्वी की स्तुति करते हैं। इसीलिए राजा का हृदय द्रवित हो गया है।”
"तो बात ऐसी है?" बंदर ने कहा। "अब आप सब जा सकते हैं।"
“परन्तु, महाराज, हम बच नहीं सकते,” भिक्षु ने उत्तर दिया। “अमर देवताओं ने राजा को भिक्षुओं के चित्र बनवाने के लिए राजी कर लिया है, और इन्हें हर वार्ड और हर नदी के किनारे प्रदर्शित करने के लिए भेज दिया गया है। टैरीकार्ट एक विशाल देश है, लेकिन हर शहर, प्रांत, काउंटी कस्बे, गाँव, बस्ती, सराय और बाज़ार में बौद्ध भिक्षुओं का चित्र लगा हुआ है, जिस पर राजा के अपने हाथ से यह सूचना लिखी है: जो भी अधिकारी किसी भिक्षु को पकड़ेगा, उसे तीन पद ऊपर पदोन्नत किया जाएगा। कोई भी सामान्य नागरिक जो किसी भिक्षु को पकड़ेगा, उसे पचास औंस चांदी का इनाम मिलेगा।”

इसीलिए हम बच नहीं सकते। यह सिर्फ हम बौद्ध भिक्षुओं की बात नहीं है। जिसके भी बाल छोटे हैं, जो गंजा है या जिसके बाल झड़ रहे हैं, उसे गिरफ्तार होने से बचना मुश्किल है। एजेंट और पुलिस हर जगह हैं। हमारे बचने का कोई रास्ता नहीं है। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है: हम यहाँ केवल कष्ट सह सकते हैं।
"अगर ऐसा है तो तुम सबको मर जाना ही बेहतर होगा," बंदर ने कहा।
“मेरे प्रभु,” बौद्ध भिक्षु ने कहा, “हममें से कई लोग मर चुके हैं। हम कुल मिलाकर दो हज़ार से ज़्यादा थे, जिनमें स्थानीय भिक्षु और अन्य जगहों से गिरफ्तार किए गए भिक्षु दोनों शामिल थे। हममें से छह-सात सौ मर चुके हैं और लगभग उतने ही लोगों ने असहनीय पीड़ा, झुलसा देने वाली गर्मी, कड़ाके की ठंड या स्थानीय परिस्थितियों के कारण आत्महत्या कर ली है। हम पाँच सौ ही बचे हैं।”
"तुम अब तक ज़िंदा कैसे रहे?" बंदर ने पूछा।
"जब हमने खुद को फांसी लगाने की कोशिश की तो रस्सी टूट गई, या जब हमने अपना गला काटने की कोशिश की तो हमें दर्द तक नहीं हुआ, या जब हम नदी में कूदे

तो हम तैरते रहे और डूबे नहीं, या हमने जो जहर खाया उससे हमें कोई नुकसान नहीं हुआ।"

"तो तुम सब बहुत भाग्यशाली हो," बंदर ने कहा। "स्वर्ग ने तुममें से प्रत्येक को अमर जीवन दिया है।"

“महाराज,” भिक्षु ने कहा, “आपने एक शब्द छोड़ दिया है। यह आजीवन कारावास है। दिन में तीन बार भोजन के लिए हमें केवल भूरे चावल का पतला दलिया मिलता है। रात को हमें खुले में रेत के टीले पर सोना पड़ता है। सौभाग्य से, जब हम अपनी आँखें बंद करते हैं तो आत्माएँ हमारी रक्षा के लिए आती हैं।”

"मुझे लगता है कि तुम इतने थके हुए हो कि तुम्हें भूत दिखाई देते हैं," बंदर ने कहा।

"नहीं," बौद्ध भिक्षु ने कहा। "वे छह डिंग, छह जिया और धर्म के संरक्षक हैं। लेकिन वे केवल रात में ही हमारी रक्षा कर सकते हैं, सिवाय तब जब वे हममें से किसी ऐसे व्यक्ति की जान बचाने आते हैं जो मृत्यु के कगार पर हो।"

"यह आत्माओं का बहुत गलत काम है," भाई बंदर ने कहा। "उन्हें इस तरह तुम्हारी रक्षा नहीं करनी चाहिए। उन्हें तुम्हें मरने देना चाहिए और जितनी जल्दी हो सके पश्चिमी स्वर्ग में पुनर्जन्म लेने देना चाहिए।"

भिक्षु ने कहा, “वे हमारे सपनों में आते हैं और हमें सलाह देते हैं, जैसे, ‘मरने की कोशिश मत करो। तब तक छिपे रहो जब तक पूर्व से कोई पवित्र पुजारी न आ जाए, और एक अर्हत जो पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लेकर आएगा। उसका एक शिष्य है, जो अपार जादुई शक्तियों वाला है, स्वर्ग के समान महान ऋषि। उसका हृदय अच्छा और निष्ठावान है, वह अन्याय का निवारण करता है, संकट में पड़े लोगों को बचाता है और विधवाओं और अनाथों की सहायता करता है। तब तक प्रतीक्षा करो जब तक वह अपनी दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन न करे, ताओवादी पुजारियों का नाश न करे और हमारे ध्यान धर्म को उसका उचित सम्मान वापस न दिलाए।’”

इससे बंदर खुश हुआ, हालांकि उसने अपनी खुशी जाहिर नहीं की।

"किसने कहा था कि बंदर के पास कोई शक्तियां नहीं हैं?"

मेरे यहां पहुंचने से पहले ही देवी-देवताओं और आत्माओं ने मेरी प्रसिद्धि फैला दी थी।"

फिर वह भिक्षुओं से विदा लेकर जल्दी से चला गया और बाँस का ढोल बजाते हुए शहर के द्वार की ओर चल पड़ा ताकि ताओवादी पुजारियों से फिर मिल सके। "इनमें से आपके आदरणीय चाचा कौन हैं?" उन्होंने पूछा।

"ये सभी पाँच सौ मेरे रिश्तेदार हैं," बंदर ने उत्तर दिया।
उन्होंने फिर पूछा, "तुम्हारे पास इतने सारे कैसे हो सकते हैं?"
अध्याय 44
615
पश्चिम की यात्रा
“सौ लोग मेरे पड़ोसी थे जो हमारे बाईं ओर रहते थे,” बंदर ने उत्तर दिया, “और सौ लोग दाईं ओर रहते थे। सौ लोग मेरे पिता के रिश्तेदार हैं, सौ लोग मेरी माँ से संबंधित हैं। बाकी सौ लोग मेरे अपने दोस्त और परिचित हैं। अगर आप उन सबको रिहा करने को तैयार हैं, तो मैं आपके साथ शहर चलूँगा; लेकिन अगर आप तैयार नहीं हैं, तो मैं नहीं चलूँगा।”
“तुम पागल हो गए हो, ऐसी बकवास कर रहे हो,” ताओवादी पुजारियों ने उत्तर दिया। “ये सभी बौद्ध भिक्षु महाराज द्वारा हमें सौंपे गए थे। अगर हम उनमें से एक या दो को भी रिहा कर दें, तो हमें अपने आकाओं को उनकी बीमारी की सूचना देनी होगी और फिर मृत्यु प्रमाण पत्र भरवाने होंगे। हम उन सभी को रिहा नहीं कर सकते। यह घोर अन्याय होगा, बहुत घोर अन्याय। हमारे पास कोई सेवक नहीं बचेगा और राजा हमसे बहुत नाराज़ होंगे। वार्ड प्रमुख हमेशा निरीक्षण के लिए अधिकारियों को भेजते रहते हैं, और कभी-कभी तो राजा स्वयं उनकी गिनती करने आते हैं। हम उन्हें जाने नहीं दे सकते।”
"तुम नहीं कर सकते?" बंदर ने कहा।
"नहीं," पुजारियों ने उत्तर दिया। तीन बार यही सवाल पूछकर एक ही जवाब मिलने पर वह भयंकर क्रोध से भर उठा। उसने अपने कान से लोहे का डंडा निकाला, हाथों से मंत्र पढ़ा, उसे चावल के कटोरे जितना मोटा बनाया, घुमाया और ताओवादियों के चेहरों पर दे मारा। बेचारे ताओवादी खून से लथपथ, सिर फटे हुए ज़मीन पर गिर पड़े। घाव इतने गहरे थे कि दिमाग चारों ओर बिखर गया था, दोनों गर्दनें टूट गई थीं।
समुद्र तट पर दूर बैठे बौद्ध भिक्षुओं ने जब बंदर को दो ताओवादियों की हत्या करते देखा, तो वे अपनी गाड़ी छोड़कर दौड़ते हुए आए और बोले, "यह बहुत बुरा हुआ, यह बहुत बुरा हुआ। तुमने राजा के रिश्तेदारों को मार डाला है।"
"राजा के रिश्तेदार कौन हैं?" बंदर ने पूछा।
भिक्षुओं ने उसे मिट्टी ढोने वाली टोकरियों से घेर लिया और कहा, "उनके गुरुओं को

सिंहासन कक्ष में प्रवेश करते समय राजा का अभिवादन करने या विदा लेते समय उनसे विदा लेने की आवश्यकता नहीं होती। राजा उन्हें 'बड़े भाई गुरु' कहकर संबोधित करते हैं। हमें इस भयानक मुसीबत में डालने के लिए आपको यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी? उनके शिष्यों का काम की देखरेख के लिए आना आपसे संबंधित नहीं था। अब जब वे मारे जा चुके हैं, तो हमारा क्या होगा?"
हमें आपको शहर ले जाकर उनकी मृत्यु की सूचना देनी होगी।"
"कृपया चिल्लाना बंद करें, सज्जनों," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं वास्तव में कोई घुमंतू क्वानझेन ताओवादी नहीं हूँ।"
मैं तुम्हें बचाने आया हूँ।
उन्होंने कहा, "लेकिन उन्हें मारकर तुमने हमारे लिए हालात और भी बदतर कर दिए हैं। तुम कैसे कह सकते हो कि तुम हमें बचाने आए हो?"
"मैं सन वुकॉन्ग नौसिखिया हूं," बंदर ने उत्तर दिया, "मैं महान तांग के पवित्र पुजारी का शिष्य हूं, और मैं विशेष रूप से आपको बचाने के लिए यहां आया हूं।"
"नहीं, तुम नहीं हो," भिक्षु ने कहा। "हम जानते हैं कि वह महान स्वामी कैसे दिखते हैं।"
"लेकिन तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?" बंदर ने पूछा। "तुम उससे कभी मिले ही नहीं हो।"
अध्याय 44
616
पश्चिम की यात्रा
"हमने सपने में एक बूढ़े व्यक्ति को देखा जिसने हमें बताया कि वह महान श्वेत ग्रह है। उसने हमें बताया कि सूर्य, जो नौसिखिया या बंदर है, कैसा दिखता है ताकि हम उसे किसी और के साथ भ्रमित न करें।"
"ग्रह ने उसके बारे में तुम्हें क्या बताया?" बंदर ने उससे पूछा।
इस पर बौद्ध भिक्षु ने उत्तर दिया, "उन्होंने हमें बताया कि महान ऋषि का माथा फटा हुआ प्रतीत होता है, और उनकी दो आंखें सोने की तरह चमकती हैं।"
हमें बताया गया है कि उसका सिर गोल है, चेहरा बालों से भरा है और गाल धंसे हुए हैं।
नुकीले थूथन से छोटे-छोटे नुकीले दांत बाहर निकले हुए थे;

वह देखने में किसी गर्जन देवता जैसा लगता है, और उसका आचरण बहुत ही असभ्य है।
वह सोने की पट्टियों से जड़े सिरों वाले लोहे के डंडे को धारण करता है।
जिसके द्वारा उसने प्राचीन काल में एक विद्रोही के रूप में स्वर्ग के द्वार तोड़ दिए थे।
अब उसने आस्था का प्रकाश देख लिया है और वह अपने स्वामी का मार्गदर्शन कर रहा है, और वह जिसे भी संभव हो, मृत्यु और विपत्ति से बचाता है।"
यह सुनकर बंदर को गुस्सा भी आया और खुशी भी हुई। उसे इस बात की खुशी थी कि उसकी प्रसिद्धि फैल गई थी, लेकिन मन ही मन गुस्से से सोचा, "वह बूढ़ा बदमाश, इन साधारण इंसानों को बता रहा है कि मैं असल में कैसा दिखता हूँ।"
फिर उसने खुद को जोर से बोलते हुए पाया और कहा, "सज्जनों, आप बिल्कुल सही हैं कि मैं नौसिखिया सन नहीं हूं।"
मैं तो बस उसका एक सेवक हूँ जो यहाँ मौज-मस्ती करने और शरारत करने का अभ्यास करने आया हूँ। लेकिन नौसिखिए सन आ रहे हैं—वहाँ देखो!" उसने पूरब की ओर इशारा किया और सभी भिक्षुओं को चकमा देकर उनका ध्यान दूसरी ओर मोड़ दिया, जबकि वह अपने असली रूप में वापस आ गया।
तभी उन्हें पता चला कि वह वास्तव में कौन है, और वे जमीन पर गिरकर प्रणाम करने लगे और बोले, "हे मेरे स्वामी, क्योंकि हमारी आंखें नश्वर हैं, इसलिए हम आपको आपके भेष में पहचान नहीं पाए। हम आपसे विनती करते हैं कि आप शहर में जाएं, बुराई को पराजित करें और हमारी रक्षा करें और हमारा बदला लें।"
"तो मेरे साथ आओ," बंदर ने कहा, और भिक्षु उसके पीछे-पीछे चलने लगे।
महान ऋषि सीधे रेत के टीले पर गए और जादू से रथ को दो द्वारों से होते हुए पहाड़ी की चोटी तक ले गए, फिर उसे ऊपर उठाकर चकनाचूर कर दिया। ईंटें, टाइलें और लकड़ी सब ढलान से नीचे लुढ़क गए। उन्होंने भिक्षुओं से कहा, "बिखर जाओ और मुझसे दूर रहो, जब तक मैं कल राजा से मिल न लूँ और उन ताओवादियों का सफाया न कर दूँ।"
"परन्तु, मेरे स्वामी," बौद्ध भिक्षु ने कहा, "हम दूर जाने की हिम्मत नहीं कर सकते। हमें डर है कि अधिकारी हमें गिरफ्तार कर लेंगे और वापस यहाँ लाकर कोड़े मारेंगे और अन्य प्रकार से दंडित करेंगे। इससे हमारी स्थिति और भी बदतर हो जाएगी।"
“तो फिर मैं तुम्हें कुछ जादुई सुरक्षा प्रदान करूँगा,” बंदर ने कहा। तब महान ऋषि ने

मुट्ठी भर बाल निकाले और उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में चबाया, जिनमें से एक-एक टुकड़ा उन्होंने प्रत्येक भिक्षु को दिया। “इसे संभाल कर रखो।” (अध्याय 44)

617

पश्चिम की यात्रा

अपनी तीसरी उंगली के नाखून के अंदर उंगली रखो, अपनी उंगलियों को आपस में मिला लो और चलते रहो,” उसने उनसे कहा। “जब तक कोई तुम्हें गिरफ्तार करने की कोशिश न करे, तब तक कुछ नहीं होगा। अगर कोई करे, तो मुट्ठी बांधकर जोर से चिल्लाओ, 'महान ऋषि जो स्वर्ग के समान हैं।' तब मैं आकर तुम्हारी रक्षा करूंगा।”

"पर, मेरे स्वामी," भिक्षु ने कहा, "यदि आप बहुत दूर हों और हमारी नज़रों से ओझल हों तो क्या होगा? यदि हम आपको बुलाने पर भी न आएं तो क्या होगा? तब हम क्या करेंगे?"

"चिंता मत करो," बंदर ने कहा। "मैं तुम्हें पूरी तरह सुरक्षित रखूंगा, चाहे मैं तुमसे हजारों मील दूर ही क्यों न रहूं।"

भिक्षुओं में से एक साहसी भिक्षु ने मुट्ठी भींचकर धीमी आवाज़ में कहा, "स्वर्ग के समान महान ऋषि"। उसके सामने लोहे का डंडा लिए हुए गर्जन देवता जैसी एक आकृति प्रकट हुई, जो इतनी भयानक थी कि एक विशाल सेना भी उसके पास जाने का साहस नहीं करती। तभी सौ से अधिक भिक्षुओं ने पुकार लगाई और सौ से अधिक महान ऋषि उनकी रक्षा के लिए प्रकट हुए।

"यह सचमुच एक चमत्कार है, मेरे प्रभु," सभी भिक्षुओं ने प्रणाम करते हुए कहा।

फिर बंदर ने उनसे कहा कि वे "चुप रहो" कहें ताकि उनके रक्षक फिर से गायब हो जाएं। तब उन सभी ने "चुप रहो" कहा, और बालों के टुकड़े एक बार फिर उनके नाखूनों के पीछे दब गए। तभी भिक्षु खुशी-खुशी तितर-बितर हो गए और भाग निकले।

“ज्यादा दूर मत जाना,” बंदर भाई ने कहा, “और मेरे बारे में खबर सुनते रहना। अगर बौद्ध भिक्षुओं को वापस बुलाने का कोई नोटिस जारी हो, तो शहर आकर मेरे बाल लौटा देना।” तब पाँच सौ भिक्षु सभी दिशाओं में बिखर गए; कुछ चले गए और कुछ वहीं रुक गए।

कहानी फिर से संज़ंग पर लौट आती है, जिसने बंदर के वापस आने का इंतज़ार करते हुए रास्ते के किनारे रुकना छोड़ दिया और सूअर को घोड़े को पश्चिम की ओर ले जाने को कहा। रास्ते में उन्हें जल्दी-जल्दी जाते हुए भिक्षु मिले, और जब वे शहर की दीवार

के पास पहुँचे तो उन्हें बंदर लगभग एक दर्जन भिक्षुओं के साथ मिला जो अभी तक नहीं गए थे। संज़ंग ने अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए कहा, "वुकोंग, उस आवाज़ की जाँच करके वापस आने में तुम्हें इतनी देर क्यों लगी?" बंदर ने लगभग एक दर्जन भिक्षुओं को संज़ंग के घोड़े के सामने प्रणाम करने के लिए प्रेरित किया और फिर उसे सारी घटना बताई। संज़ंग भयभीत हो गया: "अगर यही बात है तो हम क्या करें?"

"हे स्वामी, चिंता न करें," लगभग एक दर्जन भिक्षुओं ने कहा। "महान ऋषि बंदर स्वर्ग से उतरे देवता हैं जिनकी दिव्य शक्तियाँ असीम हैं। वे निश्चित रूप से आपकी रक्षा करेंगे। हम शहर में स्थित शाही मठ, दीप ज्ञान मठ के भिक्षु हैं। क्योंकि हमारे मठ की स्थापना वर्तमान राजा के परदादा ने की थी और वहाँ उनकी एक प्रतिमा भी है, इसलिए इसे ध्वस्त नहीं किया गया है, जबकि शहर के अन्य सभी छोटे-बड़े मठ ध्वस्त कर दिए गए हैं। हम आपको सीधे शहर में आकर हमारे साधारण मठ में ठहरने के लिए आमंत्रित करते हैं। महान ऋषि बंदर कल सुबह दरबार में किसी न किसी तरह से स्थिति को संभाल लेंगे।"

"तुम सही कह रहे हो," बंदर ने कहा। "तो फिर, बिना देर किए शहर चलते हैं।"

तब आदरणीय भिक्षु घोड़े से उतरे और पैदल ही नगर द्वार की ओर चल पड़े। पश्चिम में सूर्य अस्त हो रहा था जब उन्होंने पुल पार किया और तीन द्वारों से अंदर प्रवेश किया। जब लोगों ने देखा कि दीप ज्ञान मठ के भिक्षु घोड़े को खींच रहे हैं और सामान ढो रहे हैं, तो वे सड़कों से मुँह फेरने लगे। जब वे मठ के द्वार पर पहुँचे तो यात्रियों ने अपने ऊपर एक बड़ा सा बोर्ड देखा जिस पर लिखा था: दीप ज्ञान मठ: शाही आदेश द्वारा स्थापित।

भिक्षुओं ने द्वार खोल दिए और उन्हें वज्रपाणियों के हॉल से होते हुए मठ के मुख्य हॉल के द्वार तक ले गए। संज़ंग ने अपने वस्त्र से खुद को ढक लिया और अध्याय 44 से पहले बुद्ध की पूजा की।

प्रवेश कर रहे हैं।

"प्रबंधक!" भिक्षुओं ने पुकारा, और एक बूढ़ा भिक्षु बाहर आया जिसने बंदर को देखते ही उसके सामने सिर झुकाया।

"मेरे स्वामी, क्या आप सचमुच यहाँ हैं?" उसने कहा।

"क्या तुम जानते हो कि मैं कौन सा स्वामी हूँ, जो इस तरह झुक रहा है?" बंदर ने पूछा।

“मैं देख सकता हूँ कि आप भगवान सूर्य हैं, स्वर्ग के समान महान ऋषि,” बूढ़े भिक्षु ने उत्तर दिया। “हम आपको हर रात अपने सपनों में देखते हैं; विशाल श्वेत ग्रह हमेशा हमारे सपनों में आकर हमें बताता है कि आपके आने पर ही हमारा उद्धार होगा। अब जब मैंने आपका विशिष्ट चेहरा देख लिया है, तो मैं जानता हूँ कि यह वही है जो हमें सपनों में दिखाई देता है। मुझे खुशी है कि आप इतनी जल्दी यहाँ आ गए, मेरे प्रभु। यदि आप एक-दो दिन देर से आते, तो हम सब तब तक भूत बन चुके होते।”

“कृपया उठिए,” बंदर ने कहा। “कल सब ठीक हो जाएगा।” फिर भिक्षुओं ने गुरु और उनके शिष्यों के लिए शाकाहारी भोजन तैयार किया और उनके ठहरने के लिए मठाधीश के कमरे को साफ-सुथरा कर दिया। वे रात के लिए आराम करने चले गए।

आधी रात से कुछ पहले, बंदर, जिसके मन में बहुत कुछ चल रहा था और जिसे नींद नहीं आ रही थी, ने बाहर संगीत सुना, चुपचाप उठा, कपड़े पहने और चारों ओर देखने के लिए हवा में उछल पड़ा। दक्षिण की ओर उसने दीपक और मोमबत्तियाँ तेज़ी से जलती देखीं, और जब उसने करीब से देखने के लिए अपना बादल नीचे किया, तो उसने देखा कि तीन पवित्रों के मंदिर में ताओवादी एक तारा अनुष्ठान कर रहे थे। उसने जो देखा वह था...

गर्भगृह का ऊँचा हॉल,
यह वास्तव में एक पवित्र तीर्थस्थल है।
गर्भगृह का ऊँचा हॉल
यह पेनघु के जादुई द्वीप जितना ही भव्य था;
सच्चा पवित्र तीर्थस्थल
यह हुआले मंदिर की तरह रहस्यमय रूप से पवित्र था।
दोनों ओर ताओवादी पुजारी बांसुरी बजा रहे थे।
जबकि केंद्र में उपस्थित समारोहकर्ता ने जेड की एक शिला पकड़ी हुई थी।
उन्होंने आपदा निवारण के बारे में बताया।
और उन्होंने मार्ग और उसकी शक्ति पर उपदेश दिया।
धूल उड़ाने वाला नृत्य समाप्त होने पर ताबीज़ जारी किए गए; ईश्वर से प्रार्थना करने के बाद सभी आदरपूर्वक लेट गए।

जब जल को पवित्र कर दिया गया और आत्माओं को आमंत्रित कर लिया गया,

मोमबत्तियों की टिमटिमाती लौ आसमान की ओर उठ रही थी।
जब ध्रुव तारा का पता चल गया और सप्तर्षि मंडल की दिशा निर्धारित हो गई,
सुगंधित अगरबत्ती के बादलों ने उस खालीपन को भर दिया।
पूजा की मेजों पर ताजा भोजन अर्पित किया गया।
और मांस रहित भोजन का एक भरपूर भोज परोसा गया।
हॉल के सामने पीले ब्रोकेड के दो ऊर्ध्वाधर स्क्रॉल लटके हुए थे जिन पर ये शब्द कढ़ाई किए गए थे: हवाएँ और बारिशें वैसे ही आएँ जैसे उन्हें आना चाहिए;
हम स्वर्ग के परम पूज्यों की असीम शक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।
नदियाँ और समुद्र पवित्र और शांत रहें;
हम महामहिम के लिए अनेक वर्ष के जीवन की प्रार्थना करते हैं।
बंदर ने धार्मिक वस्त्र पहने तीन वृद्ध ताओवादियों को देखा; उसने उन्हें बाघ शक्ति, हिरण शक्ति और मृग शक्ति के महान अमर देवता समझा। उनके नीचे दोनों ओर सात-आठ सौ ताओवादियों की भीड़ ढोल, घंटियाँ, अगरबत्ती और प्रार्थनाएँ लिए खड़ी थी। बंदर बहुत प्रसन्न हुआ।
"मेरा इरादा था कि मैं नीचे जाकर अकेले ही उनके साथ मस्ती करूँ," उसने सोचा, "लेकिन रेशम के एक धागे से धागा नहीं बनता, और एक हाथ से ताली नहीं बजती। मुझे लगता है कि मुझे वापस जाकर फ्रायर सैंड और पिग पर एहसान करना चाहिए और उन्हें भी मेरे साथ खेल में शामिल कर लेना चाहिए।"
फिर बंदर अपने शुभ बादल पर उतरा और सीधे मठाधीश के कमरे में चला गया, जहाँ उसने सुअर और साधु सैंड को सिर से पैर मिलाकर सोते हुए पाया। बंदर ने सबसे पहले साधु सैंड को पुकारा, जो जाग गया और बोला, "भाई, क्या तुम अभी तक सोए नहीं हो?"
"उठो," बंदर ने कहा। "हम अच्छा खाना खाने वाले हैं।"
"आधी रात को जब मेरा गला सूख गया हो और मेरी आंखें धुंधली हो गई हों, तो मुझे किस तरह का अच्छा भोजन मिल सकता है?" फ्रायर सैंड ने पूछा।

"इस शहर में तीन पवित्र आत्माओं का मंदिर है जहाँ ताओवादी पुजारी एक धार्मिक अनुष्ठान कर रहे हैं।"
बंदर भाई ने उत्तर दिया, "तीनों पवित्र पुरुषों का महल प्रसाद से भरा हुआ है: बाल्टी जितने बड़े उबले हुए बन, पचास-साठ पौंड वजन के केक, भरपूर चावल और ताजे फल भी। चलो, कुछ खाते हैं।"
इस स्वादिष्ट भोजन की चर्चा सुनकर सुअर जाग गया। उसने पूछा, "भाई, क्या तुम मुझे भी साथ ले जाओगे?"
बंदर ने कहा, "अगर तुम्हें खाना चाहिए, तो अपनी आवाज धीमी रखो और मालिक को मत जगाओ। मेरे साथ आओ।"
अध्याय 44
620
पश्चिम की यात्रा
दोनों ने कपड़े पहने, चुपके से बाहर निकले और बंदर के साथ बादल के ऊपर छलांग लगा दी। जैसे ही उस मूर्ख ने रोशनी देखी, वह हमला करना चाहता था, लेकिन बंदर ने उसे रोक लिया और कहा, "शांत रहो। जब वे सब चले जाएंगे, तब हम नीचे उतरेंगे।"
"लेकिन उनकी पाठ-प्रस्तुति अभी तो बस शुरुआत है," पिग ने कहा। "वे जाना नहीं चाहेंगे।"
"मैं कुछ ऐसा जादू करूंगा जिससे वे भाग जाएंगे," बंदर ने कहा।
महान संत ने मंत्रोच्चार करते हुए शब्द कहे और हाथ से इशारे किए, हवा की दिशा से एक सांस ली और इतनी भयंकर आंधी चलाई कि तीन पवित्र पुरुषों के हॉल में घुसते ही उसने दीवारों पर रखे सभी फूलदान, दीये और चढ़ावे गिरा दिए और सभी दीपक बुझा दिए। सभी ताओवादी भय से कांप उठे।
“शिष्यों, बेहतर होगा कि आप चले जाएं,” महान अमर बाघ शक्ति ने कहा। “इस दिव्य हवा ने सभी दीपक और अगरबत्ती बुझा दी हैं, इसलिए आप सभी को वापस बिस्तर पर चले जाना चाहिए। कल सुबह जल्दी उठकर कुछ और शास्त्रों का पाठ करके संख्या पूरी कर लें।” तब सभी ताओवादी चले गए।
फिर बंदर, सुअर और साधु सैंड को उनके बादलों को उतारने के लिए ले गया, और वे सीधे तीन पवित्रों के हॉल में घुस गए। उस मूर्ख ने बिना यह परवाह किए कि खाना पका है या कच्चा, कुछ खाना उठा लिया और जैसे ही वह उसे खाने वाला था, बंदर ने

उसे मारने के लिए अपना लोहे का डंडा उठा लिया। सुअर ने अपना हाथ पीछे खींच लिया और कहा, "तुम मुझे कुछ चखने से पहले ही मार रहे हो।"

"इतना नीच व्यवहार मत करो," बंदर ने कहा। "तुम्हें सम्मानपूर्वक बैठना चाहिए और फिर खाना चाहिए।"

"तुम बेशर्म हो," सुअर ने कहा। "तुम खाना चुराते हो और मुझसे भी सम्मान की उम्मीद करते हो। अगर हमें ठीक से आमंत्रित किया गया होता तो मुझे क्या करना पड़ता?"

“क्या तुम जानते हो कि ऊपर बैठे ये तीन बोधिसत्व कौन हैं?” बंदर ने पूछा। “क्या तुम स्वयं उन तीन पवित्र पुरुषों को नहीं पहचान सकते?” सुअर ने पूछा। “तुम भला कैसे सोच सकते हो कि वे बोधिसत्व हैं?”

“उन तीन पवित्रों के बारे में क्या?” बंदर ने पूछा। “अच्छा,” सुअर ने कहा, “बीच वाला मूल दिव्य पवित्र है, बाईं ओर वाला अनमोल पवित्र है, और दाईं ओर वाला सर्वोच्च भगवान लाओ ज़ी है।”

"सुरक्षित रूप से खाने से पहले हमें खुद को उनके जैसा दिखाना होगा," बंदर ने कहा। प्रसाद की स्वादिष्ट सुगंध से वह मूर्ख भूख से बेहाल हो रहा था, इसलिए वह मूर्ति के चबूतरे पर चढ़ गया और अपनी थूथन से एक ही धक्के में भगवान लाओ ज़ी को नीचे गिरा दिया।

"तुम यहाँ बहुत देर तक बैठे रहे, बूढ़े आदमी," उसने कहा। "अब मेरी बारी है।"

सुअर ने स्वयं को सर्वोच्च भगवान लाओ ज़ी में, बंदर ने स्वयं को मूल दिव्य शुद्ध पुरुष में और भिक्षु सैंड ने स्वयं को अनमोल शुद्ध पुरुष में रूपांतरित कर लिया। जब सभी मूर्तियाँ गिरा दी गईं और वे तीनों ऊपर बैठे थे, तब सुअर ने एक बड़ा सा भाप से पका हुआ बन उठा लिया।

"इतनी जल्दी नहीं," बंदर ने कहा।

"लेकिन भाई," सुअर ने विरोध करते हुए कहा, "हम तो पहले ही उनके जैसे दिखने लगे हैं। अब हम किस बात का इंतजार कर रहे हैं?"

“भाई,” बंदर ने कहा, “खाना खाने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी है खुद को छिपाना। अगर कोई ताओवादी सुबह जल्दी उठकर घंटी बजाने या फर्श साफ करने जाए और हमारी गिराई हुई मूर्तियों के किसी टुकड़े से ठोकर खा जाए तो खबर फैल जाएगी। बेहतर होगा कि तुम उन्हें छुपा लो।”

"लेकिन कहाँ?" सुअर ने पूछा। "मैं यहाँ अजनबी हूँ और मुझे यहाँ के रास्ते नहीं पता।"
बंदर ने कहा, "जब हम अंदर आए, तो दाहिनी ओर दो छोटे दरवाज़े थे जिनमें से भयानक बदबू आ रही थी। ज़रूर वही जगह होगी जहाँ पाँचों प्रकार के अनाज पुनर्जन्म की तैयारी करते हैं। उन्हें वहीं रख दो।"
उस मूर्ख में वाकई बहुत ताकत थी। कूदते ही उसने तीनों मूर्तियों को अपने कंधों पर उठाया और बाहर ले गया। जब उसने लात मारकर दरवाज़े खोले तो पाया कि वह वास्तव में एक बड़ा शौचालय था।
"घोड़ों का वह रक्षक वाकई बोलना जानता है," उसने हंसते हुए कहा। "उसने तो शौचालय का एक शानदार ताओवादी नाम भी रख दिया है - 'वह स्थान जहाँ पाँच प्रकार के अनाज पुनर्जन्म की तैयारी करते हैं'।" अपने साथ ले जा रही तीनों मूर्तियों को अंदर रखने से पहले उसने एक प्रार्थना बुदबुदाई:
"हे तीन पवित्र आत्माओं, हे तीन पवित्र आत्माओं, मेरी प्रार्थना सुनो। हम दूर से दुष्ट आत्माओं को नष्ट करने आए हैं।"
हम आपके प्रसाद का आनंद लेना चाहते थे, लेकिन बैठने की जगह नहीं थी। इसलिए हमें कुछ समय के लिए आपके आसन उधार लेने पड़े। आप वहाँ बहुत देर तक बैठे रहे, अब आपको गटर में जाना होगा। आम तौर पर आपके पास खाने-पीने की चीजों की कोई कमी नहीं होती, और आप सच्चे ताओवादी हैं। लेकिन आज आपको गंदगी का स्वाद चखना होगा और बदबूदार "स्वर्गीय पूज्य" बनना होगा।
उसने प्रार्थना करते हुए उन्हें एक जोरदार छपछपाहट के साथ पानी में फेंक दिया, जिससे उसका आधा कुर्ता दुर्गंधयुक्त तरल से सन गया।
जब वह वापस हॉल में गया तो बंदर ने उससे पूछा, "क्या तुमने उन्हें ठीक से छिपाया था?"
"मैंने उन्हें अच्छी तरह से छिपा दिया था," उस मूर्ख ने जवाब दिया, "लेकिन उस गंदे पानी की कुछ बूँदें मेरे कपड़ों पर गिर गईं। मुझे उम्मीद है कि बदबू से आपको उल्टी नहीं आएगी।"
“कोई बात नहीं,” बंदर हँसते हुए बोला, “चलो अब खाना खा लो। लेकिन बाहर जाने

से पहले तुम्हें सफाई करनी होगी।" उस मूर्ख ने अपना रूप बदलकर फिर से भगवान लाओ ज़ी का रूप धारण कर लिया और तीनों पेट भरकर खाने बैठ गए। पहले उन्होंने उबली हुई रोटी खाई, फिर तरह-तरह के ठंडे पकवान, चावल, पेस्ट्री, बन, बिस्कुट, पैनकेक, डोनट और पकी हुई पाई खाईं। उन्हें जो मन हुआ, उन्होंने खाया, चाहे वो गर्म हो या ठंडा। बंदर को पका हुआ खाना ज़्यादा पसंद नहीं था, इसलिए उसने बाकी दोनों का साथ देने के लिए कुछ फल खा लिए। उन्होंने सब कुछ ऐसे साफ कर दिया जैसे टूटता तारा चाँद का पीछा करता है या हवा बादलों को उड़ा ले जाती है। जब खाने के लिए कुछ नहीं बचा, तो वे गए नहीं, बल्कि वहीं बैठकर बातें करते रहे और खाना पचाते हुए अपना मनोरंजन करते रहे।

ये कैसी गलती हो गई! एक युवा ताओवादी पुजारी पूर्वी गलियारे के पास स्थित अपने शयनकक्ष में सोने ही वाला था कि अचानक उठ बैठा। उसने सोचा, "मैंने अपनी घंटी हॉल में ही छोड़ दी है, और अगर कल वो खो गई तो मेरे गुरु मुझसे बहुत नाराज़ होंगे।"

“तुम सो जाओ,” उसने अपने साथ बिस्तर साझा कर रहे दूसरे पुजारी से कहा, “मैं इसे ढूंढने जाता हूँ।” वह इतनी जल्दी में था कि उसने अपने अंतर्वस्त्र भी नहीं पहने, बस अपनी कमीज़ पहनी और सीधे मुख्य हॉल में अपनी घंटी ढूंढने चला गया। उसने चारों ओर टटोला, जब तक कि उसे घंटी नहीं मिल गई। वह मुड़ने और जाने ही वाला था कि तभी उसे सांस लेने की आवाज़ सुनाई दी। घबराकर भागते हुए वह एक लीची के पत्थर से ठोकर खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा और ज़ोरदार आवाज़ के साथ उसकी घंटी चकनाचूर हो गई। यह देखकर सुअर ज़ोर से हंसने लगा, जिससे वह युवा ताओवादी बुरी तरह डर गया।

वह लड़खड़ाते हुए मठाधीश के आवास तक पहुंचा, दरवाजों पर दस्तक दी और कहा, "गुरुजी, विपत्ति आ गई है।"

तीनों वरिष्ठ ताओवादी अभी तक बिस्तर पर नहीं गए थे, इसलिए उन्होंने दरवाजे खोले और पूछा, "क्या आपदा आई है?"

"मेरी घंटी खो गई थी," युवा ताओवादी ने कांपते हुए कहा, "और मैं उसे हॉल में ढूंढ रहा था जब मैंने एक ज़ोरदार हंसी सुनी जिससे मैं लगभग डर के मारे मर ही गया था।"

अध्याय 44

यह सुनकर वरिष्ठ ताओवादियों ने कहा, "लालटेन लाओ और देखो कि वह कौन सा दुष्ट प्राणी है।" यह आदेश दोनों मठों के युवा और वृद्ध पुजारियों को दिया गया, जो सभी उठे, दीपक जलाए और देखने के लिए मुख्य हॉल में गए।

अगर आपको नहीं पता कि उन्हें क्या मिला, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 45

तीन पवित्रजनों के हॉल में महान ऋषि अपना नाम अंकित करते हैं; टैरीकार्ट के राज्य में वानर राजा अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करते हैं।

कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि बंदर ने अपने बाएं हाथ से साधु रेत और दाएं हाथ से सुअर को चुटकी काटी। दोनों को समझ आ गया कि क्या हो रहा है और वे ऊपर चुपचाप सिर झुकाकर बैठ गए, जबकि ताओवादियों ने अपने दीपक जलाए और चारों ओर रोशनी डालकर खोजबीन की। तीनों ऐसे लग रहे थे मानो सचमुच मिट्टी से बने हों और उन पर सोने की परत चढ़ी हो।

महान अमर बाघ शक्ति ने कहा, "यदि यहाँ कोई दुष्ट आत्मा नहीं आई थी, तो फिर ये सारी भेंटें कैसे खा ली गईं?"

"ऐसा लगता है जैसे लोगों ने इन्हें खा लिया हो," महान अमर हिरण शक्ति ने कहा। "छिलके वाले सारे फल छिल गए हैं और गुठलियाँ थूक दी गई हैं। लेकिन हमें कोई दिखाई क्यों नहीं दे रहा?"

“भाई, इतना शंका करने की कोई आवश्यकता नहीं है,” महान अमर मृग शक्ति ने कहा। “मुझे लगता है कि दिन-रात शास्त्रों का पाठ करने और जप करने में हमारी श्रद्धा और आदर तथा महाराज के नाम से स्वर्ग के पूजनीय लोग प्रभावित हुए होंगे। स्पष्टतः तीनों पवित्र प्रभु इन भेंटों का आनंद लेने के लिए नश्वर संसार में अवतरित हुए। मेरा सुझाव है कि उनके सारसों पर सवार होकर उड़ जाने से पहले हमें स्वर्ग के पूजनीय लोगों की आराधना करनी चाहिए। हमें उनसे कुछ पवित्र जल और स्वर्ण औषधि की गोलियाँ माँगनी चाहिए, जिन्हें हम महाराज को अर्पित कर उन्हें अमरता प्रदान करने का श्रेय प्राप्त कर सकें।”

"अच्छा विचार है," टाइगर पावर ने कहा। "मेरे शिष्यों, संगीत और पाठ हो," उन्होंने

आदेश दिया, "और मेरे औपचारिक वस्त्र लाओ ताकि मैं सप्तर्षि नृत्य कर सकूँ और महाराज की अमरता के लिए प्रार्थना कर सकूँ।"

युवा ताओवादियों ने निर्देशानुसार कार्य किया और शीघ्र ही वे दो समूहों में सुव्यवस्थित रूप से विभाजित हो गए। पत्थर की घंटी की ध्वनि पर वे सभी एक साथ मिलकर 'पीले दरबार के मार्ग और उसकी शक्ति का सच्चा ग्रंथ' का पाठ करने लगे।

अपने कंधों पर धार्मिक वस्त्र डालते हुए, टाइगर पावर ने अपने हाथों में जेड की पट्टिका ली, मूर्तियों के सामने धूल उड़ाते हुए अनुष्ठानिक नृत्य किया, सम्मानपूर्वक प्रणाम किया और पवित्र आत्माओं को निम्नलिखित ज्ञापन अर्पित किया:

भय और कांपते हुए मैं विनम्रतापूर्वक अपना सिर झुकाता हूँ। हम आपकी प्रजा हैं, जो धर्म का प्रचार करते हैं और आपकी पवित्र शून्यता की कामना करते हैं। हम बौद्ध भिक्षुओं की नीच अश्लीलता को दबा रहे हैं और मार्ग की चमक के लिए सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। महाराज के आदेश से एक पवित्र मंदिर का निर्माण किया गया है। अनेक भेंटें रखी गई हैं, और ड्रैगन ध्वज ऊँचे लहरा रहे हैं; मोमबत्तियाँ रात भर जलती हैं और अगरबत्ती दिन भर धुआँ छोड़ती है। हम पूर्ण निष्ठा, आदर और भक्ति के साथ आपकी आराधना करते हैं। अब जब आपने हमें अपने आगमन से सम्मानित किया है, तो हम आपसे विनती करते हैं कि अपने अमर रथों में विराजमान होने से पहले हमें स्वर्ण अमृत की गोलियाँ और पवित्र जल प्रदान करें, ताकि हम उन्हें दक्षिणी पहाड़ियों के समान दीर्घायु प्रदान करने के लिए अर्पित कर सकें।

यह सब देखकर सुअर को बहुत असहज महसूस हुआ और उसने बंदर से दबी आवाज़ में कहा, "हमें यह सब खाने के बाद प्रार्थना करवाने के लिए नहीं रुकना चाहिए था। हम उनकी प्रार्थनाओं का जवाब कैसे देंगे?"

बंदर ने उसे एक और चुटकी काटी, अपना मुंह खोला और पुकार कर कहा, "अपनी पूजा बंद करो, युवा अमर।"

हम अभी-अभी एक आड़ू भोज से लौटे हैं, इसलिए आज हम कोई स्वर्णिम अमृत या पवित्र जल नहीं लाए हैं। हम आपको किसी और दिन भेंट करेंगे।

जब युवा और वृद्ध पुरोहितों ने मूर्ति को बोलते सुना, तो वे सब अपने वस्त्रों को

झटकने लगे और कांपते हुए बोले, "हे प्रभु, एक जीवित, परम पूजनीय व्यक्ति पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं। उन्हें जाने मत दीजिए। चाहे जो भी हो जाए, उनसे हमें अनन्त जीवन का नुस्खा दिलवाइए।"

टाइगर पावर ने आगे बढ़कर फिर से प्रणाम किया और कहा, "अपने हृदय की निष्ठा से धूल उड़ाते हुए, आपका विनम्र सेवक तीनों पवित्रों की श्रद्धापूर्वक आराधना करता है। इस देश में आने के बाद से हमने मार्ग का प्रचार किया है और बौद्ध पुरोहितों का दमन किया है। महाराज मार्ग से प्रेम करते हैं और आदरपूर्वक अपने जीवनकाल को बढ़ाना चाहते हैं, इसीलिए हमने स्वर्ग की इस महान सेवा में भाग लिया और पूरी रात शास्त्रों का पाठ किया।"

हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि हे परम पूज्य प्रभु, आपने अपने पवित्र रथों में अवतरित होने से विमुख नहीं हुए और स्वयं प्रकट हुए। हम आपसे कृपापूर्वक निवेदन करते हैं कि हमें थोड़ा सा पवित्र जल प्रदान करें ताकि आपके शिष्यों का जीवन लंबा हो सके।

"वे इसे पाने के लिए बेताब होंगे, इसके लिए फिर से प्रार्थना कर रहे होंगे," फ्रायर सैंड ने मंकी से धीमी आवाज़ में कहा और उसे एक चुटकी काट ली।

"तो चलो इन्हें भी कुछ देते हैं," बंदर ने कहा।

"लेकिन यह हमें मिलेगा कहाँ से?" सुअर ने बुदबुदाते हुए कहा।

"देखो मुझे," बंदर ने कहा। "जब मुझे कुछ मिलेगा, तो तुम्हें भी मिलेगा।" ताओवादियों ने तब तक अपना संगीत बजाना समाप्त कर दिया था।

“युवा अमर प्राणियों,” बंदर भाई ने कहा, “आपको प्रणाम करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने मूल रूप से आपके पास पवित्र जल छोड़ने की इच्छा नहीं की थी, कहीं ऐसा न हो कि इससे आपकी अमरता की संतान नष्ट हो जाए, लेकिन आपको थोड़ा सा पवित्र जल देने में कोई कठिनाई नहीं होगी।”

जब ताओवादियों ने यह सुना तो वे सब प्रणाम करके, सिर झुकाकर बोले, "हम परम पूज्य ईश्वर से विनती करते हैं कि वे हमारी श्रद्धापूर्वक भक्ति के सम्मान में अपने शिष्यों को कुछ अनुग्रह प्रदान करें। हमने व्यापक रूप से इस मार्ग और इसकी शक्ति का प्रचार किया है और अपने रहस्यवादी संप्रदाय के लिए राजा का सम्मान प्राप्त किया है।"

“अच्छा, तो फिर,” बंदर ने कहा, “एक बर्तन लाओ।” सभी ताओवादियों ने एक बार

फिर धन्यवाद में सिर झुकाया: बाघ शक्ति, जिसे दिखावा करना पसंद था, एक बड़ा मिट्टी का घड़ा लेकर आया और उसे हॉल में रख दिया। हिरण शक्ति ने प्रसाद चढ़ाने के लिए मेज पर एक मिट्टी का बर्तन रखा, और मृग शक्ति ने फूलदान से फूल निकालकर बाकी दो बर्तनों के बीच रख दिए।

“तुम सब हॉल से बाहर निकल जाओ,” बंदर ने आदेश दिया, “और हमें घेर लो। स्वर्ग के रहस्य प्रकट नहीं होने चाहिए। फिर हम तुम्हें पवित्र जल दे सकते हैं।” इसके बाद सभी पुजारी हॉल के बाहर सीढ़ियों के नीचे लेट गए और दरवाजे बंद कर दिए।

फिर बंदर खड़ा हुआ, अपनी बाघ की खाल की स्कर्ट उठाई और बदबूदार पेशाब से फूलदान भर दिया। सुअर को यह देखकर बहुत खुशी हुई और उसने कहा, "इतने सालों से हम भाई हैं, हमने ऐसा कभी नहीं किया। मैंने अभी-अभी खाना खाया है और तुम मुझसे यह काम करने को कह रहे हो।" फिर उस मूर्ख ने अपने कपड़े उठाए और शोर मचाते हुए मिट्टी के बर्तन को भर दिया। आवाज़ ऐसी थी मानो पहाड़ से कोई झरना बह रहा हो। साधु सैंड ने मिट्टी का बर्तन आधा भर दिया।

अध्याय 45

624

पश्चिम की यात्रा

फिर उन सभी ने अपने वस्त्र समेटे, दोबारा बैठ गए और कहा, "आओ और पवित्र जल ग्रहण करो, हे नवोदित बालकों।"

तब ताओवादी बुजुर्गों ने पर्दों को एक तरफ हटा दिया और श्रद्धा और कृतज्ञता में सिर झुकाया। जब घड़ा बाहर लाया गया और उसे फूलदान और थाली के साथ रखा गया, तो उन्होंने पुकारा, "शिष्यों, मुझे थोड़ा चखने के लिए एक प्याला लाओ।"

युवा ताओवादियों ने एक चाय का प्याला लाकर बड़ों को दे दिया। बड़े ने प्याला भरा, उसे खाली किया और फिर मुंह पोंछने और होंठों को चटकाने का दिखावा किया।

"क्या यह अच्छा है, भाई?" डियर पावर ने पूछा।

अपने होठों को सिकोड़ते हुए, सबसे वरिष्ठ बुजुर्ग ने कहा, "ज्यादा अच्छा नहीं है। स्वाद थोड़ा अजीब है।"

"मुझे भी थोड़ा चखने दो," एंटेलोप पॉवर ने कहा। एक घूंट पीने के बाद उसने कहा, "इसका स्वाद तो सूअर के मूत्र जैसा है।"

जब बंदर ने ऊपर बैठे-बैठे यह सुना तो उसे एहसास हुआ कि उसकी योजना विफल

हो गई है। "मैं बस मजे के लिए एक शरारत करने जा रहा हूँ ताकि वे मुझे याद रखें।" फिर वह चिल्लाया:

"अरे वाह, अरे वाह, तुम क्या बकवास सोच रहे हो। भला कौन से तीन पवित्र आत्मा पृथ्वी पर अवतरित होंगे? मैं तुम्हें अपने असली नाम बताता हूँ। हम महान तांग वंश के बौद्ध भिक्षु हैं, जो शाही आदेशों पर पश्चिम की यात्रा कर रहे हैं।"

इस सुहावनी शाम को करने के लिए कुछ और न होने के कारण हमने आपके मंदिर में आने का फैसला किया। हमने प्रसाद ग्रहण कर लिया था और यहाँ बैठकर बातें कर रहे थे कि तभी आप हमारे सामने सिर झुकाकर हमारी पूजा करने लगे। आप हमसे क्या प्रतिक्रिया की उम्मीद कर रहे थे? आप जो पी रहे हैं वह पवित्र जल नहीं है—वह हमारा पेशाब है।

यह सुनकर ताओवादी पुजारियों ने दरवाजे बंद कर दिए और हॉल में बेतहाशा रेक, झाड़ू, टाइलें और पत्थर फेंकने लगे। शानदार भाई बंदर ने साधु सैंड को अपनी बाईं भुजा के नीचे और सुअर को अपनी दाईं भुजा के नीचे दबाया, दरवाजे से बाहर भागा और अपने बादल पर सवार होकर सीधे गहरे ज्ञान मठ में मठाधीश के आवास पर वापस चला गया। तीनों अपने गुरु को परेशान किए बिना वापस बिस्तर पर चले गए।

कुछ ही देर में पांचवें पहर का तीसरा चौथाई समय हो गया, जब राजा ने सुबह-सुबह दरबार लगाया, जिसमें नागरिक और सैन्य अधिकारी और चार सौ दरबारी रेशमी लालटेन की लाल रोशनी के नीचे और धूपदानों से निकलने वाले धुएं के बादलों के बीच एकत्रित हुए थे।

ठीक इसी समय तांग पुजारी जाग उठे और बोले, "शिष्यों, मेरे साथ चलो जब मैं अपना पासपोर्ट दिखाकर निकास परमिट लेने जाऊँगा।" बंदर, सुअर और साधु सैंड जल्दी से बिस्तर से उठे और कपड़े पहनकर गुरु की सेवा में खड़े हो गए।

“गुरुजी,” बंदर ने बताया, “यहाँ के राजा को उन ताओवादी पुजारियों पर भरोसा है। वे ताओवाद का प्रचार करते हैं और बौद्ध भिक्षुओं को सताते हैं। मुझे डर है कि अगर आपने कुछ गलत कहा तो वे आपको देश छोड़ने की अनुमति देने से इनकार कर देंगे। बेहतर होगा कि हम आपको महल तक पहुँचा दें।”

तांग पुरोहित इस सुझाव से अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने अपना रेशमी चोगा पहना, बंदर ने पासपोर्ट लिया, सुअर ने भिक्षापात्र उठाया और भिक्षु सैंड ने मठ का डंडा। सामान और घोड़े को दीप ज्ञान मठ के भिक्षुओं के हवाले कर दिया गया। वे सीधे महल के द्वार

पर स्थित पंच फीनिक्स मीनार गए, जहाँ उन्होंने ड्यूटी पर तैनात हिजड़े को प्रणाम किया और अपना नाम बताया। उन्होंने कहा कि वे पूर्व में स्थित महान तांग के भिक्षु हैं जो धर्मग्रंथ लेने आए हैं और अपने दस्तावेज़ दिखाकर निकास परमिट प्राप्त करने आए हैं, और उन्होंने उनसे यह संदेश आगे पहुँचाने का अनुरोध किया।

द्वारपाल सीधे सिंहासन कक्ष में गया, जहाँ उसने सीढ़ियों के पास लेटकर प्रणाम किया और सूचना दी,

"पांच फीनिक्सों के टावर के बाहर चार भिक्षु महाराज के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे कहते हैं कि वे पूर्व में स्थित महान तांग वंश से आए हैं और धर्मग्रंथ लाने जा रहे हैं।" इस पर राजा ने उत्तर दिया, "क्या उनके पास अध्याय 45 है?"

क्या वे यहाँ अपनी मौत को दावत देने आए थे? क्या वे कहीं और ऐसा नहीं कर सकते थे? पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करके यहाँ क्यों नहीं लाया?

राजा के शिक्षक ने आगे बढ़कर यह निवेदन किया: "पूर्व में स्थित महान तांग साम्राज्य, जांबू के दक्षिणी महाद्वीप में है। इसे चीन की महान भूमि के रूप में जाना जाता है। यह यहाँ से तीन हजार मील से अधिक दूर है, और मार्ग में अनेक राक्षस हैं। इन भिक्षुओं के पास अवश्य ही कोई जादुई शक्ति होगी, तभी उन्होंने पश्चिम की यात्रा करने का साहस किया है। महाराज, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि चीन के दूर देश से आए इन भिक्षुओं को स्वीकार करें, उनके यात्रा दस्तावेजों की जाँच करें और उन्हें आगे बढ़ने दें। इससे चीन के साथ आपके अच्छे संबंध बने रहेंगे।" राजा ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया।

तांग पुरोहित और उनके शिष्यों को सिंहासन कक्ष में बुलाया गया, जहाँ वे सीढ़ियों के सामने एक पंक्ति में खड़े हुए और राजा को अपने यात्रा दस्तावेज प्रस्तुत किए।

राजा ने अभी दस्तावेज़ खोला ही था कि किन्नर द्वारपाल ने आकर फिर से सूचना दी, "राष्ट्र के तीनों गुरु यहाँ आ चुके हैं।" यह सुनकर राजा इतना घबरा गया कि उसने कागज़ एक तरफ रख दिया, सिंहासन से नीचे उतरा, अपने सेवकों को कढ़ाईदार स्टूल लाने का आदेश दिया और ताओवादी गुरुओं से मिलने चला गया।

संज़ंग और उनके शिष्यों ने मुड़कर देखा तो तीनों महान अमर देव भव्यता से अंदर आए, उनके पीछे बालों में जूड़े बांधे दो सेवक चल रहे थे। वे सीधे अंदर चले गए

जबकि सभी नागरिक और सैन्य अधिकारी सिर झुकाकर प्रणाम कर रहे थे, ऊपर देखने की हिम्मत भी नहीं कर रहे थे।

जब वे सिंहासन कक्ष में प्रवेश कर रहे थे, तो उन्होंने राजा के सामने झुकने की जहमत भी नहीं उठाई, जिस पर राजा ने उनसे पूछा, "राष्ट्र के शिक्षकों, आपने हमें अपनी उपस्थिति से सम्मानित क्यों किया है जबकि हमने अभी तक आपको आमंत्रित नहीं किया है?"

ताओवादियों में सबसे वरिष्ठ ने उत्तर दिया, "मुझे कुछ बताना है। वे चारों बौद्ध भिक्षु कहाँ से आए हैं?"

“इन्हें पूर्व में स्थित महान तांग से पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजा गया है,” राजा ने उत्तर दिया, “और ये यहाँ से निकलने का परमिट लेने आए हैं।” यह खबर सुनकर तीनों ताओवादियों ने खुशी से तालियाँ बजाईं।

"हमें लगा था कि वे जा चुके हैं, लेकिन वे अभी भी यहीं हैं।"

“गुरुजी, आपका क्या मतलब है?” राजा ने आश्चर्य से पूछा। “वे अभी-अभी अपने नाम बताने आए हैं। मैं उन्हें आपके हवाले करने ही वाला था कि आप उनका जैसे चाहें इस्तेमाल कर सकते हैं, तभी मेरे शिक्षक ने एक बहुत ही समझदारी भरा सुझाव दिया। उनकी लंबी दूरी को ध्यान में रखते हुए और चीन के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए मैंने उन्हें अभी कुछ देर पहले बुलवाया था और मैं उनके कागजात देख ही रहा था कि आप तीनों गुरुजी ने यह सवाल उठा दिया। क्या उन्होंने आपको कोई ठेस पहुंचाई है या नुकसान पहुंचाया है?”

इस पर ताओवादी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "महाराज, आपको अभी तक यह नहीं पता है कि वे कल आए, पूर्वी द्वार के बाहर हमारे दो शिष्यों की हत्या कर दी, पांच सौ बंदी बौद्ध भिक्षुओं को रिहा कर दिया, हमारी गाड़ी तोड़ दी, रात में हमारे मंदिर में घुस गए, तीन पवित्रों की मूर्तियों को नष्ट कर दिया और उनकी भेंटें चुरा लीं।"

हम उनके धोखे में इस कदर आ गए थे कि हमने सोचा कि वे स्वर्ग से आए हुए पूजनीय व्यक्ति हैं और हमने उनसे पवित्र जल और औषधि की गोलियाँ माँगीं ताकि महाराज को भेंट कर आपको अमर जीवन की प्राप्ति हो सके। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि वे हमें मूत्र पिलाकर हमारा मज़ाक उड़ाएँगे। हममें से हर एक ने स्वाद के लिए एक-एक घूँट पिया, लेकिन जब हमने उन्हें पकड़ने की कोशिश की तो वे भाग निकले। अगर वे अभी भी यहाँ हैं तो समझो कि संकरी राह पर अपने शत्रु से सामना

करना पड़ रहा है। यह सब सुनकर राजा इतना क्रोधित हुआ कि उसने चारों भिक्षुओं को मृत्युदंड देने का आदेश दे दिया।

महान ऋषि बंदर ने अपने हाथ जोड़कर जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया, "हे महाराज, कृपया क्षण भर के लिए अपना प्रचंड क्रोध रोकें और हमें, बौद्ध भिक्षुओं को, अपना समर्पण करने की अनुमति दें।"

राजा ने उत्तर दिया, "तुमने राष्ट्र के शिक्षकों को नाराज किया है, और वे जो कहते हैं वह हमेशा सही होता है।"

अध्याय 45

626

पश्चिम की यात्रा

“वो मुझ पर कल यहाँ आकर अपने दो शिष्यों की हत्या करने का आरोप लगा रहा है,” बंदर ने कहा। “उसके पास गवाह क्या है? अगर हम हत्या की बात मान भी लें, तो भी तुम हम दो भिक्षुओं को फाँसी देकर उनकी जान की भरपाई कर सकते हो और बाकी दो को शास्त्र लाने के लिए छोड़ सकते हो। उसके पास इस बात का भी कोई गवाह नहीं है कि मैंने उनकी गाड़ी तोड़कर बंदी भिक्षुओं को मुक्त किया। अगर मैंने ऐसा किया भी होता, तो भी यह कोई गंभीर अपराध नहीं होता। हममें से एक और को सज़ा देना ही काफी होता। जब वो कहता है कि मैंने तीन पवित्र पुरुषों की मूर्तियाँ तोड़ीं और ताओवादी मंदिर में उत्पात मचाया, तो वो जानबूझकर मुझे फंसाकर मेरी हत्या करने की कोशिश कर रहा है।”

"क्यों?" राजा ने पूछा।

“हम सब पूरब से आए हैं,” बंदर ने उत्तर दिया, “और अभी-अभी यहाँ पहुँचे हैं। हमें तो गलियों का भी ठीक से ज्ञान नहीं है, तो भला हमें कैसे पता चलेगा कि आधी रात को उसके मंदिर में क्या हुआ? अगर हमने उन्हें पेशाब भी दिया होता तो वे हमें वहीं गिरफ्तार कर लेते। उन्हें अब ये भयानक आरोप नहीं लगाने चाहिए। दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जो झूठे नाम बताते हैं। वह यह कैसे बता सकता था कि यह मैं था। मुझे आशा है महाराज, आप अपना क्रोध त्यागकर इन आरोपों की ठीक से जाँच करवाएँगे।” राजा पहले तो क्रोध से आग बबूला था, लेकिन अब बंदर की बात सुनकर वह फैसला नहीं कर पा रहा था।

जब राजा सोच ही रहे थे कि क्या करें, तभी एक हिजड़ा द्वारपाल ने आकर सूचना दी,

"महाराज, द्वार के बाहर गांव के बुजुर्गों की भीड़ आपके बुलावे का इंतजार कर रही है।"

"वे क्या चाहते हैं?" राजा ने पूछा और उन्हें अंदर भेजने का आदेश दिया।

उनमें से तीस या चालीस लोगों को राजमहल के सामने लाया गया, जहाँ उन्होंने राजा के सामने सिर झुकाकर कहा, "महाराज, इस वसंत ऋतु में बारिश नहीं हुई है और हमें इस ग्रीष्म ऋतु में सूखे की आशंका है। हम आपसे निवेदन करने आए हैं कि आप राष्ट्र के शिक्षकों को समय पर बारिश के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध करें, जिससे आम जनता को राहत मिलेगी।"

“आप जा सकते हैं,” राजा ने कहा। “बारिश होने वाली है।” बुजुर्गों ने उनकी दया के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और चले गए।

राजा ने कहा, “तांग भिक्षुओं, क्या आप जानते हैं कि हम बौद्ध धर्म का सम्मान क्यों करते हैं और बौद्ध भिक्षुओं को क्यों सताते हैं? कुछ वर्ष पूर्व जब इस देश के बौद्ध भिक्षुओं ने वर्षा के लिए प्रार्थना की, तो उन्हें एक बूँद भी वर्षा नहीं हुई। सौभाग्यवश, स्वर्ग ने राष्ट्र के गुरुओं को हमारे पास भेजा, जो सहायता और मुक्ति लेकर आए। आप दूर से आए हैं और राष्ट्र के गुरुओं का अपमान किया है, और आप इसके लिए दंड के पात्र हैं। यदि मैं आपको कुछ समय के लिए छोड़ दूँ, तो क्या आप राष्ट्र के गुरुओं के साथ वर्षा कराने की प्रतियोगिता में भाग लेंगे? यदि आप अच्छी वर्षा कराकर आम जनता को बचा लेते हैं, तो हम आपके अपराधों को क्षमा कर देंगे, आपका पत्र लौटा देंगे और आपको जाने देंगे। यदि आप असफल होते हैं, तो आप सभी को मृत्युदंड स्थल पर ले जाकर सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी जाएगी।”

"हम जैसे विनम्र भिक्षु चीजों के लिए प्रार्थना करना जानते हैं," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा।

यह सुनकर राजा ने वेदियों को साफ करने का आदेश दिया और अपना रथ मंगवाया क्योंकि वे पंचमस्तिष्क मीनार से अनुष्ठान देखने जा रहे थे। अधिकारियों ने उन्हें रथ में बिठाकर मीनार तक पहुँचाया, जहाँ वे तुरंत बैठ गए। तांग पुरोहित बंदर, साधु रेत और सुअर के साथ मीनार के नीचे खड़े थे, जबकि तीन ताओवादी गुरु राजा के साथ मीनार में बैठे थे। कुछ ही देर में एक अधिकारी घोड़े पर सवार होकर आया और सूचना दी, "वेदी पर सब कुछ तैयार है। क्या राष्ट्र के गुरु कृपया वेदी पर आएँगे?"

महान अमर बाघ शक्ति ने राजा को प्रणाम करके विदा ली और मीनार से नीचे उतर

गए। बंदर भाई ने उनका रास्ता रोकते हुए कहा, "महाराज, आप कहाँ जा रहे हैं?"
"बारिश के लिए प्रार्थना करने के लिए वेदी पर जाओ," उस अमर ने उत्तर दिया।
अध्याय 45
627
पश्चिम की यात्रा
“तुम बहुत घमंडी हो रहे हो,” बंदर ने कहा। “दूर से आए हम भिक्षुओं के प्रति थोड़ी शिष्टाचार क्यों नहीं दिखाते?”
खैर, 'एक ताकतवर अजगर भी अपने मांद में सांप को कुचल नहीं सकता।' आप पहले जाइए, लेकिन आपको महाराज को समझाना होगा।
"क्या समझाओगे?" महान अमर ने पूछा।
बंदर ने जवाब दिया, "अगर हम दोनों वेदी पर बारिश के लिए प्रार्थना करेंगे, तो हमें कैसे पता चलेगा कि यह तुम्हारी बारिश है या मेरी? यह तय करना मुश्किल होगा कि इसका श्रेय किसे मिलना चाहिए।" जब राजा ने अपने टावर पर यह सुना तो वह मन ही मन प्रसन्न हुआ और बोला, "वह छोटा भिक्षु तो समझदारी की बात कर रहा है।"
फ्रायर सैंड ने भी मुस्कुराते हुए सोचा, "राजा को यह एहसास नहीं है कि बंदर ने अभी तक अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करना शुरू भी नहीं किया है।"
"किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होगी," अमर ने कहा। "महामहिम को तो पता ही होगा कि यह बारिश किसकी है।"
"मुझे पूरा यकीन है कि वह मान जाएगा," बंदर ने कहा, "लेकिन हम दूर-दूर से आए भिक्षुओं ने आपसे पहले कभी मुलाकात नहीं की है। अगर बाद में दोनों पक्षों ने झूठे दावे किए तो यह बहुत बुरा होगा। शुरू करने से पहले हमें सब कुछ सुलझा लेना चाहिए।"
“जब मैं वेदी पर जाऊँगा,” महान अमर ने कहा, “मेरी यह जादुई छड़ी संकेत देगी। पहली बार बजने पर हवा चलेगी। दूसरी बार बजने पर बादल उठेंगे। तीसरी बार बजने पर गरज और बिजली चमकेगी। चौथी बार बजने पर बारिश होगी। पाँचवीं बार बजने पर बादल छंट जाएँगे और बारिश समाप्त हो जाएगी।”
"शानदार," बंदर ने हंसते हुए कहा। "मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा। आप आगे बढ़िए।"
इसके बाद महान अमर सीधे वेदी परिसर के द्वार की ओर बढ़े, उनके पीछे संज़ंग और

उनके शिष्य भी थे। उन्होंने ऊपर देखा तो उन्हें तीस फीट से भी ऊँचा एक चबूतरा दिखाई दिया। उसके बाएँ और दाएँ अट्ठाईस राशि चक्रों के चिन्ह वाले झंडे लगे हुए थे, और वेदी के सबसे ऊँचे स्थान पर रखी मेज पर रखे धूपदान से सुगंधित धुएँ के बादल उठ रहे थे। मेज के दोनों सिरों पर मोमबत्ती स्टैंड थे जिनमें मोमबत्तियाँ तेज़ी से जल रही थीं। धूपदान के बगल में एक सोने की पट्टिका थी जिस पर गर्जन के देवताओं के नाम खुदे हुए थे, और धूपदान के नीचे पाँच बड़े पात्र थे जो सभी स्वच्छ जल से भरे हुए थे। उन पर विलो की टहनियाँ तैर रही थीं, और विलो पर एक लोहे की पट्टिका थी जिस पर गर्जन के सेनापति का ताबीज बना हुआ था। इनके बाएँ और दाएँ पाँच मजबूत खंभे थे जिन पर पाँच बर्बर गर्जन दूतों के नाम लिखे हुए थे।

प्रत्येक खंभे के पास दो ताओवादी पुजारी लोहे के हथौड़ों से प्रहार करने के लिए तैयार खड़े थे। चबूतरे के पीछे कई ताओवादी पुजारी कुछ लिख रहे थे, और उनके बीच में कागज जलाने के लिए एक चूल्हा और कुछ मॉडल मूर्तियाँ थीं जो ताबीज ले जाने वाले दूतों और ताओवादी शिक्षाओं का समर्थन करने वाले स्थानीय देवताओं का प्रतिनिधित्व करती थीं।

महान ताओवादी सीधे वेदी के घेरे में दाखिल हुए और बिना किसी संकोच के वेदी के टीले पर चढ़कर अपना स्थान ग्रहण किया। उनके बगल में खड़े एक युवा ताओवादी ने उन्हें मंत्रों से लिखे पीले कागज़ के कई टुकड़े और एक कीमती तलवार सौंपी। तलवार को पकड़े हुए महान ताओवादी ने एक मंत्र पढ़ा और एक मोमबत्ती पर मंत्र जलाया। वेदी के नीचे खड़े दो-तीन युवा ताओवादियों ने उन्हें मंत्र पकड़े हुए एक मूर्ति और एक लिखित दस्तावेज़ दिया, जिसे उन्होंने भी जलाकर नष्ट कर दिया। तभी छड़ी से एक ज़ोरदार आवाज़ हुई और आकाश में ऊपर की ओर हवा चलने के संकेत दिखाई दिए।

"यह तो बुरा हुआ," सुअर ने बुदबुदाते हुए कहा। "उस ताओवादी के पास वाकई कुछ शक्तियां हैं। हवा चलाने के लिए उसे बस एक बार अपनी छड़ी घुमानी पड़ी।"

"चुप रहो भाइयों," बंदर ने कहा, "और मुझसे कुछ मत कहना। जब तक मैं काम में लग जाता हूँ, तब तक मालिक का ख्याल रखना।"

अध्याय 45

पश्चिम की यात्रा

तब महान ऋषि ने अपने बालों में से एक बाल निकाला, उस पर जादुई साँस फूंकी,

"बदलो!" कहा और उसे एक नकली बंदर में बदल दिया, जो तांग पुजारी के पास खड़ा रहा, जबकि उनका असली रूप भाग निकला, हवा में ऊपर उठा और चिल्लाया, "हवा का स्वामी कौन है?" इससे दादी पवन इतनी घबरा गईं कि उन्होंने अपना कपड़े का थैला कसकर पकड़ लिया, जबकि युवा स्वामी शुन ने उसके मुँह पर डोरी बाँध दी। दोनों आगे आए और उन्हें प्रणाम किया।

"मैं पवित्र पुजारी को तांग से बचा रहा हूँ, जो पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा पर शास्त्रों को लाने जा रहा है।"

बंदर ने कहा, "अब हम टैरीकार्ट देश में एक दुष्ट ताओवादी के साथ बारिश करवाने की प्रतियोगिता कर रहे हैं।"

तुम मेरी मदद करने के बजाय उसकी मदद क्यों कर रहे हो? अगर तुम अपनी हवा रोक लोगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा, लेकिन अगर उस ताओवादी की दाढ़ी में एक बाल भी हिलने जितनी हवा हुई तो मैं तुम्हें अपने लोहे के डंडे से बीस-बीस कोड़े मारूंगा।

"हम उसकी मदद करने की हिम्मत नहीं करेंगे," दादी हवा ने कहा, और फिर हवा रुक गई।

अधीर होकर सुअर बेतहाशा चिल्लाने लगा, "हार मान लो, हार मान लो। तुमने अपनी छड़ी घुमा दी है और हवा का एक झोंका भी नहीं चल रहा है। अब नीचे आ जाओ और हमें ऊपर जाने दो।"

एक बार फिर ताओवादी ने अपनी जादुई छड़ी उठाई, मंत्र पढ़े और छड़ी से एक ध्वनि उत्पन्न की। आकाश बादलों से भर गया।

"बादलों को कौन फैला रहा है?" महान ऋषि ने ऊपर से पूछा। बालक बादल फैलाने वाले और युवा स्वामी धुंध फैलाने वाले ने उन्हें प्रणाम किया। बंदर ने एक बार फिर घटना का विवरण दिया; बादल फैलाने वाले और धुंध फैलाने वाले ने बादलों को हटा दिया, और साफ आसमान में सूरज एक बार फिर चमकने लगा।

"यह शिक्षक राजा को बेवकूफ बना रहा है और आम लोगों को धोखा दे रहा है," सुअर हँसते हुए बोला। "असल में उसके पास कोई शक्ति नहीं है। उसकी छड़ी दूसरी बार बज चुकी है, और आसमान में एक भी बादल नहीं दिख रहा है।"

अब तक ताओवादी चिंतित होने लगा था। अपनी तलवार पर झुककर उसने अपने बाल नीचे किए, एक मंत्र पढ़ा और तीसरी बार अपनी जादुई छड़ी चटकाई। स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से स्वर्ग के स्वामी डेंग ने दादा गर्जन और माता बिजली को हवा में बंदर

के सामने प्रणाम करने के लिए प्रेरित किया। बंदर ने उन्हें सारी घटना बताई और पूछा, "आप इतने आज्ञाकारी क्यों हो रहे हैं? आप किस प्रकार के आदेशों का पालन कर रहे हैं?"

“वह ताओवादी सचमुच गर्जना के पंच नियम जानता है,” स्वर्गिक स्वामी डेंग ने उत्तर दिया। “उसने सही दस्तावेज़ जारी किया, आदेश पत्र जला दिया और जेड सम्राट को सचेत कर दिया, जिन्होंने नौवें स्वर्ग के सर्वमान्य पूजनीय, जो आदिम शक्ति को गर्जना की ध्वनि से संबोधित करते हैं, के कार्यालयों को एक फरमान जारी किया। हम शाही आदेश पर दादा गर्जना और माता बिजली की मदद से वर्षा कराने जा रहे हैं।”

"तो फिर बेहतर होगा कि तुम यहीं रहो और मुझे सब कुछ ठीक करने दो," बंदर ने कहा; और सचमुच न तो गरज सुनाई दी और न ही बिजली चमकी।

ताओवादी पहले से कहीं अधिक चिंतित हो रहा था। उसने और अधिक अगरबत्तियाँ जलाईं, ताबीज जलाए, मंत्र पढ़े और अपनी छड़ी को एक बार फिर घुमाया। चारों समुद्रों के ड्रैगन राजा आकाश में एकत्रित हो गए। "आप कहाँ जा रहे हैं, आओ गुआंग?" बंदर ने पूछा। चारों ड्रैगन राजा आओ गुआंग, आओ शुन, आओ किन और आओ रन उसके पास आए और उसे प्रणाम किया।

उसने उन्हें सारी घटना बताई और फिर कहा, "जब मैंने तुम्हें उस दिन परेशान किया था, तो तुम सफल नहीं हुए थे। मुझे उम्मीद है कि तुम आज फिर मेरी मदद करोगे।"

"हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं," ड्रैगन राजाओं ने उत्तर दिया।

इसके बाद बंदर ने आओ शुन को धन्यवाद देते हुए कहा: "मैं आपके बेटे का बहुत आभारी हूं जिसने उस दिन राक्षस को पकड़कर मेरे स्वामी की जान बचाई।"

अध्याय 45

629

पश्चिम की यात्रा

“उस दुष्ट को समुद्र में जंजीरों में बांधकर रखा गया है,” ड्रैगन राजा आओ शुन ने उत्तर दिया। “मैंने स्वयं उससे निपटने का साहस नहीं किया है, और मैं आपसे, महान ऋषि, उसके दंड पर निर्णय लेने का अनुरोध करता हूँ।”

“उससे जैसा चाहो वैसा निपटाओ,” बंदर ने उत्तर दिया। “अब मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी एक मदद करो। उस ताओवादी ने अपनी जादुई छड़ी चार बार घुमाई है, इसलिए अब मेरी बारी है। क्योंकि मुझे मंत्रों का प्रयोग करना, ताबीज जलाना या जादुई छड़ी

घुमाना नहीं आता, इसलिए मुझे आप सज्जनों से मदद माँगनी पड़ेगी।”
“हम महान ऋषि के आदेश का उल्लंघन करने का साहस नहीं करेंगे,” स्वर्गिक स्वामी डेंग ने उत्तर दिया। “लेकिन हम तभी कार्य कर सकते हैं जब उचित आदेश दिए जाएं। अन्यथा, बिजली और बारिश गलत समय पर होगी, और महान ऋषि की विश्वसनीयता धूमिल हो जाएगी।”
"मैं अपनी लाठी से संकेत दूंगा," बंदर ने कहा, जिससे दादा गरज घबरा गए और उन्होंने विरोध करते हुए कहा, "लेकिन मेरे स्वामी, हममें से कोई भी आपकी लाठी नहीं ले सकता।"
"नहीं," बंदर ने कहा, "मैं इससे तुम्हें नहीं मारूंगा। जब मैं पहली बार इसे ऊपर की ओर इशारा करूंगा तो मुझे हवा चाहिए।"
"हम हवा को बाहर निकलने देंगे," दादी पवन और युवा स्वामी शुन ने वादा किया।
"दूसरी बार जब मैं ऊपर की ओर इशारा करता हूं तो मुझे बादल चाहिए।"
"हम बादलों को फैला देंगे," क्लाउडपुशर और मिस्टस्प्रेडर ने कहा।
"तीसरी बार जब मैं लाठी से ऊपर की ओर इशारा करूंगा तो मुझे गरज और बिजली चाहिए।"
"हम आज्ञा मानेंगे, हम आज्ञा मानेंगे," दादा गरज और माता बिजली ने कहा।
"चौथी बार जब मैं लाठी से ऊपर की ओर इशारा करता हूँ तो मुझे बारिश चाहिए।"
"आपके आदेशों का पालन किया जाएगा," ड्रैगन राजाओं ने उत्तर दिया।
और जब मैं पांचवीं बार लाठी से ऊपर की ओर इशारा करता हूँ, तो मुझे साफ आसमान में सूरज की रोशनी चाहिए। मैं किसी भी तरह की अवज्ञा या गलती बर्दाश्त नहीं करूँगा।
आदेश देने के बाद बंदर ने अपना बादल नीचे उतारा, अपने बाल झटककर वापस अपने शरीर पर लपेट लिए। नश्वर आँखों वाले किसी भी व्यक्ति को यह सब दिखाई नहीं दिया। फिर बंदर ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, "हे गुरुजी, कृपया अब समाप्त कीजिए। आपने अपनी जादुई छड़ी चार बार घुमाई, लेकिन न तो हवा चली, न बादल बने, न गरज हुई और न ही बारिश हुई। अब मेरी बारी है।" ताओवादी अब और वेदी पर नहीं रुक सका; उसे नीचे उतरना पड़ा और बंदर को अपनी जगह लेने देना पड़ा, जबकि वह उदास चेहरे के साथ राजा से मिलने के लिए मीनार पर चढ़ गया। बंदर ने कहा, "जब तक मैं उनके साथ ऊपर जाकर उनकी बात सुनता हूँ, तब तक रुकिए।"

उसने राजा को यह पूछते हुए सुना, "जब तुमने अपनी जादुई छड़ी को चार बार घुमाया तो हवा या बारिश क्यों नहीं हुई?"
हम बहुत ध्यान से सुन रहे हैं।"
"आज सारे ड्रैगन बाहर निकल आए हैं," ताओवादी ने उत्तर दिया।
"महाराज," बंदर चिल्लाया, "आज तो सारे अजगर आ गए हैं। बस राष्ट्र के गुरु का जादू काम नहीं आया और वे उन्हें बुला नहीं पाए। देखिए हम बौद्ध भिक्षु उन्हें कैसे बुलाते हैं।"
राजा ने कहा, "तो फिर वेदी पर चढ़ो। हम यहीं रुकेंगे और बारिश का इंतजार करेंगे।"
अध्याय 45
630
पश्चिम की यात्रा
जैसे ही उसे यह आदेश मिला, भाई बंदर वेदी परिसर की ओर दौड़ा, तांग पुजारी के कपड़े खींचे और कहा, "गुरुजी, कृपया वेदी के टीले पर चढ़ें।"
"लेकिन मुझे नहीं पता कि बारिश के लिए प्रार्थना कैसे करते हैं, शिष्य," संजांग ने कहा।
"वह तुम्हें जान से मारने की कोशिश कर रहा है," पिग ने कहा। "अगर तब भी बारिश नहीं हुई तो वे लकड़ियाँ लाएँगे और तुम्हें आग में जला देंगे।"
बंदर ने कहा, "हो सकता है कि तुम्हें बारिश के लिए प्रार्थना करना न आता हो, लेकिन तुम धर्मग्रंथों का पाठ करने में माहिर हो। मैं तुम्हारी मदद करूंगा।"
तभी आदरणीय भिक्षु वेदी की ओर चढ़ने लगे। शिखर पर पहुँचकर वे बड़े ही गरिमामय ढंग से बैठ गए, अपने स्वभाव को शांत किया, अपने मन को वश में किया और चुपचाप प्रज्ञा-पारमिता हृदय सूत्र का पाठ करने लगे। जब वे वहाँ बैठे थे, तभी एक आधिकारिक दूत घोड़े पर सवार होकर उनके पास आया और पूछा, "हे भिक्षु, आप जादू की छड़ी क्यों नहीं चला रहे हैं या मंत्र और आह्वान क्यों नहीं कर रहे हैं?"
“उसे इसकी ज़रूरत नहीं है,” बंदर ने चिल्लाकर जवाब दिया। “हम शांति और मौन में प्रार्थना करते हैं।” अधिकारी यह उत्तर राजा को बताने के लिए लौट गया।
जब बंदर ने सुना कि उसके स्वामी ने सूत्र का पाठ पूरा कर लिया है, तो उसने अपने कान से अपनी लाठी निकाली, उसे हवा में लहराया जिससे वह लगभग बारह फीट लंबी और चावल के कटोरे जितनी मोटी हो गई, और उसे आकाश की ओर कर दिया।

जैसे ही दादी पवन ने उसे देखा, उसने अपना चमड़े का थैला खोल दिया, जबकि युवा स्वामी शुन ने उसके मुंह पर बंधी रस्सी खोल दी। तभी एक ऐसी गर्जना हुई जिसने टाइलें उखाड़ दीं और ईंटें पूरे शहर में उड़ा दीं। यह स्पष्ट रूप से एक शानदार हवा थी, साधारण हवाओं से बिल्कुल अलग: विलो के पेड़ टूट गए और फूल मुरझा गए।
तबाह हुए जंगलों में पेड़ गिर पड़े हैं।
नौ मंजिला गलियारों की दीवारें ढह गईं;
फाइव फीनिक्स टावर में बीम और स्तंभ हिल गए।
आकाश में लाल सूरज अंधेरा हो गया।
और धरती की पीली धूल उड़ने लगी।
समीक्षा मंच के सामने खड़े अधिकारी डरे हुए थे;
अपने हॉल में मौजूद सरकारी अधिकारियों में दहशत फैल गई।
हरम की सुंदरियों के बाल हवा से बिखरे हुए थे;
शाही परिवार की रानियों के केशविन्यास पूरी तरह से बर्बाद हो गए थे।
कुलीनों के मुकुटों से लटकनें गिर पड़ीं;
प्रधानमंत्री की काली रेशमी टोपी हवा में उड़ने लगी।
राजा इतना भयभीत था कि वह बोल नहीं पा रहा था।
अध्याय 45
631
पश्चिम की यात्रा
हिजड़े अपनी रिपोर्ट जमा नहीं कर सके।
वरिष्ठ अधिकारी अव्यवस्था में खड़े थे।
उच्च पदस्थ अधिकारियों ने नियमों का उल्लंघन किया।
रंगीन मंडप और फ़िरोज़ी रंग की स्क्रीनें नष्ट हो गईं;
हरी खिड़कियां और गहरे लाल रंग के दरवाजे क्षतिग्रस्त हो गए थे।
राजमहल से ईंटें और टाइलें उड़ने लगीं;
ब्रोकेड क्लाउड चैंबर में दरवाजे झुके हुए थे और विभाजन टूट गए थे।
यह भयानक आंधी सचमुच बहुत प्रचंड थी।
जिससे राजा के लिए अपने बेटों से मिलना मुश्किल हो जाता है,
और लोगों को सड़कों और बाजारों से खदेड़ना:

हर घर ने अपने दरवाजे मजबूती से बंद कर लिए।
जब यह आंधी अपने चरम पर थी, तभी भाई बंदर ने अपनी दिव्य शक्तियों का एक और प्रदर्शन किया और दूसरी बार अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी को आकाश की ओर उठाया। तब जो दिखाई दिया वह था: लड़का बादल धकेलने वाला।
युवा लॉर्ड मिस्टस्प्रेडर।
बादल धकेलने वाले लड़के ने अपना दिव्य जादू दिखाया।
आकाश से लटकते हुए चट्टानों के विशाल ढेर बनाते हुए;
युवा लॉर्ड मिस्टस्प्रेडर ने अपनी शक्तियों का प्रयोग किया।
पृथ्वी को घने, मोटे कोहरे से ढक देना।
तीनों बाजारों में अंधेरा छाया हुआ था;
शहर की छह मुख्य सड़कें काले रंग की थीं।
हवा के साथ समुद्र को छोड़ते हुए,
वे कुनलुन पर्वत श्रृंखला में बारिश के साथ प्रकट हुए।
पल भर में आकाश और पृथ्वी भर गए,

इसने तुरंत ही नश्वर जगत को अपने दायरे में ले लिया।
सब कुछ अंधकार में डूब गया
और फाइव फीनिक्स टावर के दरवाजे गायब हो गए।
पल भर में चारों ओर घना कोहरा और घने बादल छा गए। फिर बंदर ने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी को तीसरी बार हवा में लहराया, जिसके भयावह परिणाम हुए:
दादा थंडर क्रोधित थे।
मदर लाइटनिंग क्रोधित थी।
दादा थंडर गुस्से में थे
जब वह अपने अग्नि-पशु पर सवार होकर स्वर्ग से नीचे की ओर आ रहा था;
मदर लाइटनिंग क्रोधित थी।
जैसे ही वह अपने डिपर पैलेस से निकली, उसने अपने सुनहरे सांप को लहराते हुए हमला किया।

बिजली कड़की और जोर से गरजी।
आयरन फोर्क पर्वत को हिलाते हुए;
लाल रेशम की शानदार झलकियाँ
पूर्वी महासागर से उड़ान भरी।
शोर गाड़ियों की तरह गड़गड़ा रहा था;
वो चमक हवा में लहराते हुए चावल के पौधों की तरह थी।
सभी जीवित अंकुरों की आत्मा पुनर्जीवित हो उठी।
कई सोए हुए कीड़े-मकोड़े अचानक जाग उठे।
इससे राजा और प्रजा दोनों ही समान रूप से भयभीत हो गए;
उस आवाज ने व्यापारियों को घबराकर हरकत में ला दिया।
बिजली गरजते हुए भूकंप या भूस्खलन जैसी आवाज़ आई, जिससे शहर के लोग इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने अगरबत्ती और नकली सिक्के जलाए। बंदर ने परिचित लहजे में चिल्लाते हुए कहा, "देंग, यह सुनिश्चित करो कि तुम मेरे लिए कुछ और भ्रष्ट अधिकारियों को मार डालो जो कानूनों को तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं और उन अवज्ञाकारी बेटों को भी जो अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्य का पालन नहीं करते, ताकि जनता के लिए एक उदाहरण बन सके।" बिजली पहले से कहीं अधिक तेज़ हो गई, और बंदर ने अध्याय 45 के लिए अपनी लाठी ऊपर की ओर उठाई।
633
पश्चिम की यात्रा
चौथी बार।
ड्रैगनों ने अपने आदेश दिए
और मेढ़े ने आकाश और पृथ्वी को भर दिया।
मानो आकाश में बहने वाली नदी स्वर्गिक खाई को भर रही हो,
और उतनी ही तेज़ी से जितनी तेज़ी से बादल समुद्र के द्वारों के ऊपर से गुज़रते हैं।
यह टावर की छत पर टपक रहा था,
खिड़कियों पर छींटे पड़े।
अब जबकि आकाश में बहने वाली नदी उफान पर थी,
सफेद लहरें सड़कों पर लहराती हुई आगे बढ़ रही थीं।
वे ऐसे हिल रहे थे जैसे कोई बर्तन उठाया जा रहा हो।

ऐसा लगा जैसे किसी कटोरे से पानी उलट दिया गया हो।
उस सुनसान खेत के घर लगभग पूरी तरह से बाढ़ में डूब गए थे।
जो नदी पर बने पुल की ऊंचाई के लगभग बराबर था।
शहतूत के खेत सचमुच समुद्र में परिवर्तित हो रहे थे।
और पल भर में सूखी जमीन पानी में डूब गई।
ड्रैगनों ने यही मदद की थी।
जैसे ही उन्होंने यांग्त्से नदी को उठाया और पानी नीचे डाला।
सुबह करीब आठ बजे बारिश शुरू हुई और दोपहर तक जारी रही, तब तक टैरीकार्ट की राजधानी के अंदर और बाहर की सभी सड़कें पानी से भर चुकी थीं। तब राजा ने आदेश जारी किया: "अब बहुत बारिश हो चुकी है। अगर और बारिश हुई तो उगती हुई फसलें डूब जाएंगी और यह एक बड़ी आपदा होगी।"
पांच फीनिक्सों के टावर के नीचे तैनात अधिकारी ने अपने घोड़े को चाबुक मारा और बारिश में आगे बढ़ते हुए कहा, "हे पवित्र भिक्षु, अब बहुत बारिश हो गई।" यह सुनकर बंदर ने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी फिर से आकाश की ओर उठाई, और तुरंत ही गरज बंद हो गई, हवा थम गई, बारिश रुक गई और बादल छंट गए।
राजा प्रसन्न हुए और सभी नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने प्रशंसा करते हुए कहा, "कितने अद्भुत भिक्षु हैं!"
यह कितना सच है कि आप किसी काम में कितने भी अच्छे क्यों न हों, आपसे बेहतर कोई न कोई हमेशा होता है। हमारे देश के शिक्षक बारिश करवाने में माहिर हैं, लेकिन जब वे अच्छे मौसम की कामना करते हैं तो कई घंटों तक हल्की बारिश होती रहती है। लेकिन क्या यह साधु अपने इशारे से आसमान को तुरंत साफ कर सकता है, जिससे सूरज तुरंत चमकने लगे और दूर-दूर तक आसमान में एक भी बादल न दिखाई दे?
अध्याय 45

राजा ने आदेश दिया कि उनकी गाड़ी को वापस दरबार में लाया जाए, जहाँ वे तांग पुजारी का पासपोर्ट और निकास परमिट लौटाकर उन्हें जाने देंगे। जैसे ही वे दस्तावेज़ पर शाही मुहर लगा रहे थे, तीन ताओवादी उन्हें रोकने के लिए आए और बोले, "महाराज, वह बारिश भिक्षु के कारण नहीं बल्कि हमारे प्रयासों के कारण हुई है।"

“लेकिन तुमने पहले मुझसे कहा था कि बारिश इसलिए नहीं हुई क्योंकि ड्रैगन राजा घर पर नहीं थे,” राजा ने कहा। “जब बौद्ध भिक्षु वेदी पर गए और शांति और मौन में प्रार्थना की, तब बारिश हुई। भला तुम उनसे इसका श्रेय कैसे छीन सकते हो?”

“जब मैं वेदी पर गया, मंत्रों और आह्वानों को जलाया और अपनी जादुई छड़ी चलाई,” महान अमर बाघ शक्ति ने कहा, “ड्रैगन राजाओं ने दूर रहने की हिम्मत नहीं की होगी। निस्संदेह उन्हें कहीं और बुलाया गया था, इसीलिए हवा, बादल, गरज और बारिश के प्रभारी सभी अधिकारी बाहर थे। जब उन्होंने मेरा आदेश सुना तो वे जल्दी से यहाँ आ गए, और संयोग से मैं वेदी से नीचे आ रहा था और वह ऊपर जा रहा था। यह एक संयोग था कि उसी समय बारिश हुई। असल में मैंने ही ड्रैगनों को बुलाया और बारिश करवाई। इसका श्रेय उसे बिल्कुल नहीं दिया जा सकता।” अपनी उलझन में राजा ने इस सुझाव को गंभीरता से लिया और एक बार फिर निर्णय लेने में असमर्थ रहा।

बंदर ने एक कदम आगे बढ़ाया, अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ा और कहा, "महाराज, इन अपरंपरागत जादू-टोने से कुछ भी हासिल नहीं हुआ; इसका श्रेय न तो उन्हें जाता है और न ही मुझे। लेकिन चारों समुद्रों के ड्रैगन राजा अभी भी यहीं आकाश में हैं। मैंने उन्हें नहीं भेजा है, और वे अपनी मर्जी से जाने की हिम्मत भी नहीं करेंगे। यदि राष्ट्र के गुरु ड्रैगन राजाओं को प्रकट कर सकते हैं, तो इसका श्रेय उन्हें ही जाता है।"

इससे राजा प्रसन्न हुए और बोले, "23 वर्षों के शासनकाल में हमने कभी जीवित अजगर नहीं देखा। तुम दोनों को अपनी जादुई शक्तियाँ दिखानी होंगी। जो भी उन्हें प्रकट कर सकेगा, चाहे वह ताओवादी हो या बौद्ध, उसे श्रेय मिलेगा; और जो असफल होगा उसे दंडित किया जाएगा।"

बेशक, ताओवादियों के पास इतनी शक्ति नहीं थी। महान ऋषि की उपस्थिति में, ड्रैगन राजा ताओवादियों के आह्वान पर अपना चेहरा दिखाने का साहस नहीं करते। ताओवादियों ने कहा, "हम ऐसा नहीं कर सकते। आप ही उन्हें बुलाइए।"

महान ऋषि ने आकाश की ओर देखा और ऊँचे स्वर में चिल्लाए, "आओ गुआंग, तुम कहाँ हो? तुम और तुम्हारे भाई अपने असली रूप में मेरे सामने प्रकट हो जाओ।" यह आह्वान सुनते ही ड्रैगन राजा अपने असली रूप में प्रकट हो गए; आकाश में कोहरे और बादलों के बीच से निकलते हुए वे हवा में नाचते हुए सिंहासन कक्ष तक पहुँचे। जो दृश्य दिखाई दिया वह यह था:

उड़ने वाले रूपांतरण,
बादलों के बीच से होकर गुजरते हुए।
उनके हरे रंग के पंजे सफेद हुक की तरह लटके हुए थे।
उनकी चांदी जैसी चमकती हुई परतें दर्पणों की तरह झिलमिला रही थीं।
उनकी लहराती हुई सफेद दाढ़ियों के हर एक बाल में जोश भरा हुआ था;
और उनके सींग गर्व से और पवित्रता से भरे हुए उठे।
उनके माथे ऊंचे थे।
उनकी गोल-गोल आंखें चमक रही थीं।
अध्याय 45
635
पश्चिम की यात्रा
कोई भी उनके प्रकट होने की भविष्यवाणी नहीं कर सकता;
उनकी उड़ान का मूल्यांकन करना असंभव है।
लेकिन जब बारिश के लिए प्रार्थना की गई, तो बारिश हुई।
और अनुरोध करते ही आसमान साफ हो गया।
ये पवित्र और जादुई ड्रैगन थे।
महल को अलौकिक प्रकाश से घेरते हुए।
राजा ने अपने महल के प्रांगण में धूप जलाई और मंत्रियों ने सीढ़ियों के सामने सिर झुकाकर श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। राजा ने कहा, "अब जब आप दोनों ने हमें अपनी उपस्थिति का अनुग्रह दिया है, तो हमें आपको और अधिक देर तक रोके रखने की आवश्यकता नहीं है। हम किसी और दिन धन्यवाद प्रार्थना सभा आयोजित करेंगे।"
"अब आप सभी देवता भी जा सकते हैं," बंदर ने कहा। "राजा किसी और दिन धन्यवाद प्रार्थना सभा आयोजित करेंगे।"
ड्रैगन राजा सीधे अपने महासागरों में लौट गए, और सभी देवता स्वर्ग लौट गए।
सचमुच: अद्भुत धर्म महान और असीम है;
जब झूठे विश्वासों की सच्चाई सामने आती है तो वे चकनाचूर हो जाते हैं।
अगर आपको नहीं पता कि बुराई का खात्मा कैसे हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 46

झूठी आस्था सच्चे धर्म का दमन करती है।
ऋषि-मन-बंदर बुराई का उन्मूलन करता है
कहानी बताती है कि जब राजा ने देखा कि बंदर में अजगरों को बुलाने और देवताओं को आदेश देने की शक्ति है, तो उसने पासपोर्टों पर अपनी मुहर लगा दी और उन्हें तांग पुजारी को सौंप दिया, जिसे उसने पश्चिम की ओर अपनी यात्रा जारी रखने की अनुमति दी। तीनों ताओवादी गुरु इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने स्वर्ण घंटियों के हॉल में प्रणाम किया और राजा को एक निवेदन प्रस्तुत किया। राजा अपने अजगर सिंहासन से नीचे उतरे, उन्हें अपने हाथों से सहारा देकर उठाया और कहा, "आज तुम मुझे यह प्रणाम क्यों कर रहे हो?"
"महाराज," ताओवादियों ने उत्तर दिया, "हम यहाँ देश की सहायता करने, राज्य की रक्षा करने और जनता की देखभाल करने आए थे। हमने यहाँ बीस वर्षों तक परिश्रम किया है, लेकिन अब इन बौद्ध भिक्षुओं ने हमसे आगे बढ़कर एक जादूई चाल से हमारी प्रतिष्ठा धूमिल कर दी है। क्या आप मात्र बारिश के कारण उन्हें मृत्युदंड से मुक्त करके हमारा अपमान नहीं कर रहे हैं? हम आपसे निवेदन करते हैं कि उनके दस्तावेज़ सुरक्षित रखें और हमें, तीन भाइयों को, उन्हें एक और प्रतियोगिता में चुनौती देने की अनुमति दें। आपका क्या विचार है?"
टैरीकार्ट का राजा सचमुच दुविधा में था: जब उसने पूर्व से सलाह सुनी तो वह पूर्व की ओर झुक गया (अध्याय 46)।

पश्चिम की यात्रा
और जब उन्हें पश्चिम से सलाह मिली तो उन्होंने पश्चिम की ओर रुख किया। उन्होंने पूछा, "राष्ट्र के शिक्षकों, आप उनसे किस प्रकार की प्रतिस्पर्धा का प्रस्ताव रखते हैं?"
"हम ध्यान में बैठने में उनसे प्रतिस्पर्धा करना चाहेंगे," महान अमर बाघ शक्ति ने कहा।
“राष्ट्र के गुरु से अवश्य कोई गलती हुई होगी,” राजा ने उत्तर दिया। “वह भिक्षु ध्यान साधना करने वाले संप्रदाय से आता है। उसने अपने सम्राट द्वारा शास्त्र लाने के लिए भेजे जाने से पहले ही ध्यान की कला में महारत हासिल कर ली होगी। तुम उससे इस मामले में प्रतिस्पर्धा क्यों करना चाहते हो?”
“जिस तरह से हम ध्यान में बैठते हैं,” महान अमर ने उत्तर दिया, “वह सामान्य तरीका नहीं है। उसका एक विशेष नाम है:

'बादलों की सीढ़ी पर अपनी पवित्रता प्रकट करना'
"इसका क्या मतलब है?" राजा ने पूछा।
“सौ मेजों की आवश्यकता है,” महान अमर ने कहा। “उनमें से पचास को एक के ऊपर एक रखकर ध्यान का चबूतरा बनाया जाता है। इस पर हाथों या सीढ़ी का उपयोग करके नहीं, बल्कि बादल पर सवार होकर ही बैठा जा सकता है और निर्धारित घंटों तक बिना हिले-डुले बैठना पड़ता है।”
यह जानकर कि यह काफी कठिन है, उसने यह प्रश्न पूछा: "भिक्षुओं, राष्ट्र के गुरु आपसे 'बादलों की सीढ़ी पर बैठकर अपनी पवित्रता प्रकट करना' नामक ध्यान विधि में प्रतिस्पर्धा करना चाहते हैं। क्या आप में से कोई ऐसा कर सकता है?" यह सुनकर बंदर चुप रहा और उसने कोई उत्तर नहीं दिया।
"भाई," सुअर ने पूछा, "तुम कुछ क्यों नहीं बोल रहे हो?"
"मैं तुमसे सच कहूँ तो," बंदर ने जवाब दिया। "मैं आसमान को कुएँ में धकेलने, समुद्र को मथने, नदियों को उलट-पुलट करने, पहाड़ों को उठाने, चाँद को भगाने और तारों व नक्षत्रों को इधर-उधर करने जैसे कई करतब कर सकता हूँ। मुझे अपना सिर कटने, दिमाग के टुकड़े-टुकड़े होने, आँतें चीरने, दिल निकालने और इस तरह के अन्य कामों से डर नहीं लगता। लेकिन जब ध्यान में बैठने की बात आती है, तो मैं हार जाता हूँ। मैं स्वभाव से स्थिर नहीं रह सकता। अगर तुम मुझे लोहे के खंभे से भी बाँध दो, तो भी मैं ऊपर-नीचे हिलना चाहूँगा। मैं कभी भी शांत नहीं बैठना चाहूँगा।"
फिर संजांग ने बीच में टोकते हुए कहा, "मैं ध्यान में बैठ सकता हूँ।"
बंदर ने प्रसन्नता से कहा, "यह तो बहुत बढ़िया है, बहुत बढ़िया। लेकिन आप इसे कब तक कर सकते हैं?"
"जब मैं छोटा था," संज़ंग ने उत्तर दिया, "चान संप्रदाय के एक भिक्षु मेरे मठ में आए थे और उन्होंने मुझे जीवन और मृत्यु की सीमा पर रहते हुए अपने अस्तित्व को जड़ से जोड़ने, स्वभाव को स्थिर करने और आत्मा को स्थिर करने का तरीका सिखाया था। मैं दो या तीन साल तक ध्यान लगा सकता हूँ।"
“अगर आप दो-तीन साल तक वहीं बैठे रहेंगे, गुरुजी,” बंदर ने कहा, “तो हम शास्त्रों को लाने जाने का विचार छोड़ सकते हैं। आपको नीचे आने से पहले कुछ घंटों से ज्यादा वहां बैठने की जरूरत नहीं पड़ेगी।”
"लेकिन मैं वहां नहीं चढ़ सकता, शिष्य," संजांग ने विरोध किया।

"आगे बढ़ो और चुनौती स्वीकार करो," बंदर ने कहा। "मैं तुम्हें ऊपर पहुंचा दूंगा।"
आदरणीय भिक्षु ने अपने हाथ छाती के सामने जोड़कर कहा, "यह विनम्र भिक्षु ध्यान में बैठ सकता है।" तब राजा ने ध्यान के लिए चबूतरे बनवाने का आदेश दिया। राज्य के पास पहाड़ों को तुड़वाने के लिए पर्याप्त संसाधन थे, और एक घंटे से भी कम समय में सिंहासन कक्ष के दोनों ओर दो ध्यान चबूतरे बनकर तैयार हो गए।
अध्याय 46
637
पश्चिम की यात्रा
महान अमर बाघ शक्ति तब हॉल से नीचे उतरी, सीढ़ियों के बीच में खड़ी हुई, हवा में उछली और सीधे एक बादल पर सवार होकर पश्चिमी चबूतरे पर जा पहुँची और नीचे बैठ गई। बंदर ने अपने बालों में से एक बाल निकाला और उसे अपने ही प्रतिरूप में बदल दिया जो सुअर और साधु रेत के साथ नीचे खड़ा था, जबकि उसने अपने असली रूप को एक रंगीन शुभ बादल में बदल दिया जिसने तांग पुजारी को हवा में ऊपर उठाकर पूर्वी चबूतरे पर उनके स्थान पर पहुँचा दिया।
फिर उसने बादल को हटा दिया, एक छोटे से कीड़े में बदल गया, सूअर के कान में घुस गया और कहा, "भाई, मालिक पर कड़ी नज़र रखना और मेरे हमशक्ल से बात मत करना।"
"मैं समझ गया, मैं समझ गया," उस मूर्ख ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
महान अमर हिरण शक्ति काफी देर से अपने कढ़ाईदार तकिये पर बैठे उन दोनों को ऊंचे चबूतरे पर बैठे देख रहे थे, लेकिन कोई भी विजेता नहीं बन पा रहा था। उन्होंने अपने बड़े भाई की मदद करने का फैसला किया, इसलिए उन्होंने अपने सिर के पीछे से एक बाल तोड़ा, उसे गेंद की तरह गोल किया और सीधे तांग पुजारी के सिर पर फेंक दिया, जो एक बड़े खटमल में बदल गया और आदरणीय बुजुर्ग को काटने लगा। संज़ंग को पहले खुजली हुई और फिर दर्द होने लगा। ध्यान में बैठे हुए हाथों को हिलाना मना था; अगर उन्होंने हाथ हिलाया तो वे हार जाएंगे। दर्द जल्द ही असहनीय हो गया, और उन्होंने अपना सिर नीचे झुकाकर कॉलर से खुजली करने लगे।
"यह तो बुरा है," बंदर ने कहा। "मालिक मिर्गी के दौरे से पागल हो रहा है।"
"नहीं," फ्रायर सैंड ने कहा, "यह माइग्रेन है।"
यह सुनकर बंदर बोला, "हमारे गुरुजी सच्चे और सज्जन हैं। अगर वे कहते हैं कि वे

ध्यान में बैठ सकते हैं, तो वे निश्चित रूप से बैठ सकते हैं। सज्जन झूठ नहीं बोलते। तुम दोनों चुप रहो, मैं ऊपर जाकर देखता हूँ।" फिर वह शानदार बंदर भिनभिनाते हुए सीधे तांग पुजारी के सिर के पास उड़ गया, जहाँ उसने देखा कि एक सेम के आकार का कीड़ा गुरुजी को काट रहा है। उसने तुरंत उसे उनके सिर से हटाया और फिर उनके सिर को खुजलाया और रगड़ा, जिससे आदरणीय बुजुर्ग को खुजली और दर्द नहीं हुआ और वे फिर से सीधे बैठ गए।

“भिक्षुओं के सिर गंजे होते हैं,” बंदर भाई ने सोचा, “और उन पर तो एक जूँ भी नहीं बैठ सकती, खटमल की तो बात ही छोड़ो। मुझे लगता है कि उन ताओवादियों ने गुरु को मरवाने के लिए यह चाल चली होगी। हम्म! खैर, धोखे के बावजूद वे अभी तक जीते नहीं हैं। मैं भी उन पर एक चाल चलूँगा।” तभी बंदर उड़कर महल के हॉल की छत पर बने मिट्टी के जानवरों में से एक के सिर पर जा बैठा। उसने खुद को झटका दिया और सात इंच लंबे एक जहरीले कनखजूरे में बदल गया, जो सीधे ताओवादी की ओर बढ़ा और उसकी नाक पर डंक मार दिया। ताओवादी अब और स्थिर नहीं बैठ सका और सिर के बल गिरते हुए चबूतरे से नीचे गिर गया। अगर वरिष्ठ और कनिष्ठ अधिकारियों ने उसे बचाया न होता तो शायद उसकी मृत्यु हो जाती। भयभीत राजा ने शाही शिक्षक को ताओवादी को साहित्यिक वैभव के हॉल में ले जाने और उसके बाल संवारने और उसे साफ करने के लिए भेजा; इस बीच बंदर अपने शुभ बादल पर सवार होकर अपने विजयी गुरु को सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों के सामने ले आया।

राजा ने सान्ज़ांग को देश छोड़ने की अनुमति देने का आदेश दिया, लेकिन महान अमर हिरण शक्ति ने यह निवेदन किया: "महाराज, मेरे बड़े भाई को लंबे समय से गठिया है। उस ऊंचे स्थान पर चलने वाली दिव्य हवा ने उनकी बीमारी को फिर से बढ़ा दिया, जिसके कारण बौद्ध भिक्षु जीत गए। कृपया उन्हें यहीं रखें ताकि मैं लकड़ी के तख्तों के माध्यम से वस्तुओं का अनुमान लगाने में उनके साथ प्रतिस्पर्धा कर सकूं?"

"लकड़ी के तख्तों के माध्यम से वस्तुओं का अनुमान लगाना क्या होता है?" राजा ने पूछा।

“इस विनम्र ताओवादी के पास बोर्ड के दूसरी तरफ क्या है, यह जानने की शक्ति है,” डीर पावर ने उत्तर दिया, “और मैं देखना चाहता हूँ कि क्या वह बौद्ध भिक्षु भी ऐसा कर सकता है। यदि वह मुझसे बेहतर अनुमान लगा सकता है, तो उसे जाने दो। लेकिन यदि वह नहीं है, तो मुझे आशा है कि महाराज यह तय करेंगे कि वह किस

अपराध का दोषी है, हम भाइयों का बदला लेंगे, और देश की रक्षा में हमारे बीस वर्षों के बलिदान को कलंकित नहीं होने देंगे।"

राजा इतना मूर्ख था कि उसने इस द्वेषपूर्ण सुझाव को मान लिया और राजपरिवार के हिजड़ों को लाल रंग से रंगा हुआ एक संदूक हरम में ले जाने का आदेश दिया, जहाँ रानी को अपना एक खजाना उसमें रखने को कहा गया। कुछ ही क्षणों में संदूक को बाहर लाया गया और सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों के सामने रख दिया गया। उसने बौद्ध और ताओवादी से कहा, "तुम दोनों धर्मों को अपनी जादुई शक्तियों के साथ यह अनुमान लगाने की होड़ लगानी होगी कि संदूक में कौन सा खजाना है।"

"शिष्य," संजांग ने पूछा, "मैं कैसे जान सकता हूँ कि अंदर क्या है?"

बंदर ने अपना बादल हटाया, खुद को एक छोटे से कीड़े में बदल लिया, संज़ंग के चेहरे पर उतरा और बोला, "चिंता मत करो, गुरुजी। मैं जाकर देखता हूँ।" तेजस्वी महान ऋषि उड़कर संदूक के पास गए, उसके पैरों के नीचे रेंगते हुए गए और तख्तों के बीच एक दरार देखी, जिससे वे अंदर घुस गए। वहाँ उन्होंने एक लाल लाख की थाली देखी, जिसमें दरबारी वस्त्रों का एक सेट रखा था: एक पर्वत, नदी और राज्य का वस्त्र और एक स्वर्ग, पृथ्वी और भूमि का वस्त्र। उन्होंने उन्हें उठाया, हिलाकर मसल दिया, अपनी जीभ की नोक को काटा, उन पर मुँह भर खून छिड़का, "बदलो!" कहा और उन्हें एक पुराने लबादे में बदल दिया, जिसमें उन्होंने पेशाब किया और फिर तख्तों के बीच की दरार से बाहर रेंगकर निकल गए। फिर वे तांग पुजारी के कान में वापस उड़कर गए और बोले,

"गुरुजी, कहिए कि यह एक पुराना लबादा है।"

"लेकिन उसने मुझसे अनुमान लगाने को कहा कि इसके अंदर कौन सा खजाना है," तांग पुजारी ने कहा। "एक पुराना लबादा किस तरह का खजाना है?"

“उसकी चिंता मत करो,” बंदर ने कहा। “बस अनुमान लगाओ।” तांग पुजारी आगे बढ़ा और अपना अनुमान बताने ही वाला था कि हिरण शक्ति ने कहा, “मैं पहला अनुमान लगाता हूँ। संदूक में एक पर्वत, नदी और राज्य का वस्त्र और एक स्वर्ग, पृथ्वी और भूमि का वस्त्र है।”

"नहीं," तांग पुजारी ने कहा, "ऐसा नहीं है। संदूक में एक सड़ा हुआ लबादा है।"
“वह भिक्षु हद से ज़्यादा बदतमीज़ी कर रहा है,” राजा ने कहा। “उसकी धृष्टता है कि वह एक फटे-पुराने लबादे को देखकर यह कह रहा है कि हमारे देश में कोई खजाना नहीं है। उसे फाँसी दे दो!”
सुरक्षाकर्मियों के दोनों दल तांग पुजारी पर झपटने ही वाले थे कि तभी उसने हताशा में पुकार लगाई,
"महाराज, मुझे थोड़ी देर के लिए क्षमा करें, ताकि आप संदूक खोलकर अंदर देख सकें। यदि वास्तव में उसमें कोई खजाना है तो मैं अपना दंड स्वीकार कर लूंगा; लेकिन यदि नहीं है तो आप मेरे साथ अन्याय करेंगे।" तब राजा ने संदूक खोलने का आदेश दिया, और जब उनके साथ आए अधिकारियों ने उसे खोला और लाल ट्रे को बाहर निकाला तो उन्होंने देखा कि वास्तव में उस पर एक सड़ा हुआ पुराना लबादा था।
"इसे वहां किसने रखा?" राजा ने बड़े क्रोध से पूछा।
फिर रानी अजगर के सिंहासन के पीछे से आगे बढ़कर बोली, "मेरे स्वामी, मैंने पर्वत, नदी और राजकीय वस्त्र तथा स्वर्ग, पृथ्वी और भूमि के वस्त्र अपने भीतर समाहित कर लिए थे। मुझे नहीं पता कि वे उसमें कैसे परिवर्तित हो गए।"
“आप आराम कर सकती हैं, मेरी प्यारी पत्नी,” राजा ने कहा। “मुझे आप पर पूरा भरोसा है। हरम में इस्तेमाल होने वाली सभी चीजें उत्तम रेशम और जालीदार कपड़ों की हैं। हम कभी भी ऐसी कोई चीज नहीं रखेंगे।” फिर उन्होंने आदेश दिया कि संदूक उनके पास लाया जाए ताकि वे स्वयं उसमें खजाना रखकर एक और परीक्षण कर सकें।
इसके बाद राजा हरम में गए, महल के बगीचों में स्थित जादुई आड़ू के पेड़ से कटोरे के आकार का एक आड़ू तोड़ा, उसे संदूक में रखा और उसे नीचे मंगवाया ताकि वे दोनों अनुमान लगा सकें कि वह क्या है।
तांग पुजारी ने कहा, "शिष्य, मुझे फिर से अनुमान लगाना होगा।"
"चिंता मत करो," बंदर ने कहा, "मैं एक बार फिर देख लेता हूँ।" वह एक बार फिर भिनभिनाया, उसी दरार से अंदर गया और उसे एक आड़ू दिखा जो उसे बिल्कुल पसंद आया। वह वापस अपने असली रूप में आ गया और आड़ू को पूरा खा गया। (अध्याय 46)

वह छाती पर बैठा रहा, उसके हर एक टुकड़े को कुतरता रहा, यहाँ तक कि त्वचा के क्षतिग्रस्त हिस्सों को भी, और जब वह वापस एक नन्हे कीड़े में परिवर्तित हुआ और उड़कर संज़ंग के कान पर जा गिरा, तो उसने उस गुठली को वहीं छोड़ दिया।
"गुरुजी," उसने कहा, "लगता है यह आड़ू की गुठली है।"
"मुझे मूर्ख मत बनाओ, शिष्य," संज़ंग ने कहा। "अगर मैंने अभी जल्दी से कुछ नहीं कहा होता तो मुझे मृत्युदंड दे दिया जाता। इस बार मुझे यह अनुमान लगाना ही होगा कि यह कोई कीमती चीज है, और आड़ू की गुठली में कुछ भी कीमती नहीं होता।"
"डरो मत," बंदर ने कहा। "जीतना ही सबसे महत्वपूर्ण है।"
संजांग के कुछ बोलने से पहले ही महान अमर मृग शक्ति ने कहा, "मैं पहला अनुमान लगाता हूँ। यह एक जादुई आड़ू है।"
"यह आड़ू नहीं है, केवल आड़ू की गुठली है," संजांग ने कहा।
“लेकिन आड़ू तो हमने खुद उसमें डाला था,” राजा ने कहा। “यह सिर्फ एक गुठली तो नहीं हो सकती। राष्ट्र के तीसरे शिक्षक की बात सही है।”
"महामहिम," संजांग ने कहा, "सीना खोलकर देखिए।"
उपस्थित अधिकारियों ने एक बार फिर संदूक को खोलने के लिए ऊपर उठाया, थाली को बाहर निकाला और उसमें केवल एक पत्थर पाया जिस पर कोई त्वचा या मांस नहीं था, इस दृश्य को देखकर राजा स्तब्ध रह गया।
उन्होंने कहा, "राष्ट्र के शिक्षकों, उससे प्रतिस्पर्धा करना बंद करो और उसे जाने दो। हमने अपने हाथों से वह जादुई आड़ू उसमें डाला था। अगर अब वहाँ सिर्फ़ गुठली बची है, तो उसे किसने खाया होगा? ज़रूर कोई देवता या राक्षस गुप्त रूप से उसकी मदद कर रहे होंगे।"
जब सुअर ने यह सुना तो उसने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ साधु सैंड से कहा, "राजा को यह एहसास नहीं है कि बंदर आड़ू खाने में माहिर है।"
जब वह यह कह रहा था, तभी महान अमर बाघ शक्ति अपने बाल संवारने और साहित्यिक वैभव के हॉल में स्नान करने के बाद सिंहासन कक्ष में वापस आ गया। उसने कहा, "महाराज, इस भिक्षु को चीजों को बदलने और रूपांतरित करने की कला आती है। संदूक को यहाँ मँगवाएँ। मैं उसका जादू तोड़ दूँगा और उसके साथ एक और

भविष्यवाणी प्रतियोगिता करूँगा।"
"अब तुम क्या अनुमान लगाना चाहते हो?" राजा ने पूछा।
"जादू केवल वस्तुओं को बदल सकता है, व्यक्तियों को नहीं," टाइगर पावर ने कहा। "इस ताओवादी लड़के को संदूक में छिपा दो, मैं गारंटी देता हूँ कि भिक्षु इसे नहीं बदल पाएगा।" लड़का अंदर चला गया, ढक्कन लगा दिया गया और संदूक को नीचे ले जाया गया।
"अंकक, तीसरी बार अनुमान लगाओ कि इसके अंदर कौन सा खजाना है," राजा ने कहा।
"फिर से!" संज़ंग ने हैरानी से कहा, जिस पर बंदर ने जवाब दिया, "रुको, मैं एक बार फिर देख लेता हूँ।" वह एक बार फिर फुदकते हुए अंदर घुस गया, इस बार उसे अंदर एक छोटा लड़का मिला।
शानदार बंदर जानता था कि क्या करना है। यह कितना सच है कि दुनिया में कुछ ही लोग तात्कालिक रूपान्तरण कर सकते हैं, और उसके जितना कुशल तो शायद ही कोई हो। उसने खुद को झटका दिया, पुराने ताओवादी की हूबहू छवि में बदल गया, छाती में प्रवेश किया और कहा, "शिष्य।"
"आप कहाँ से आए हैं, गुरुजी?" लड़के ने उनसे पूछा।

"मैं गायब होने के जादू से आया हूँ," बंदर ने जवाब दिया।
"मुझे क्या निर्देश देने हैं?" लड़के ने पूछा।
बंदर ने कहा, "बौद्ध भिक्षु ने तुम्हें संदूक में घुसते हुए देख लिया था, और अगर उसने कह दिया कि यहाँ एक युवा ताओवादी है, तो हम हार जाएँगे। मैं तुम्हारे साथ एक योजना बनाने आया हूँ। हम तुम्हारा सिर मुंडवा देंगे और यह जताएँगे कि तुम एक बौद्ध भिक्षु हो।"
"गुरुजी, आप जो भी फैसला करें, वही करें," लड़के ने कहा, "बस हमें जीतना होगा। अगर हम उससे दोबारा हार गए तो हमारी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाएगी और राजा का हमारे प्रति कोई सम्मान नहीं रहेगा।"
“तुम सही कह रहे हो,” बंदर ने कहा। “इधर आओ, मेरे बच्चे, और अगर हम जीत गए

तो मैं तुम्हें खूब इनाम दूंगा।" फिर उसने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी को तेज धार वाले औजार में बदल दिया, बच्चे को अपनी बाहों में कसकर पकड़ लिया और कहा, "दर्द सह लो, अच्छे बच्चे, और जब मैं तुम्हारा सिर मुंडवा रहा हूँ तो एक भी आवाज़ मत करना।" पल भर में उसने बच्चे के बाल मुंडवा दिए, जिन्हें उसने एक गेंद की तरह इकट्ठा किया और संदूक के एक कोने में छिपा दिया। फिर उसने तेज धार वाला औजार एक तरफ रख दिया और बच्चे के मुंडे हुए सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "अब तुम्हारा सिर किसी बौद्ध भिक्षु जैसा लग रहा है, मेरे बच्चे, लेकिन तुम्हारे कपड़े ठीक नहीं हैं। इन्हें उतार दो और मैं इन्हें तुम्हारे लिए बदल दूंगा।"

लड़के ने कढ़ाईदार ब्रोकेड किनारों वाला, बादल के पैटर्न वाला, सारस की आकृति वाला अपना हरा-सफेद चोगा उतार दिया। बंदर ने उस पर "बदलो!" कहकर जादुई साँस फूंकी और उसे भूरे रंग के बौद्ध भिक्षु के वस्त्र में बदल दिया, जिसे लड़के ने पहन लिया। बंदर ने दो और बाल खींचे और उन्हें लकड़ी की मछली में बदल दिया, जो उसने लड़के को देते हुए कहा, "ध्यान से सुनो, शिष्य। चाहे कुछ भी हो जाए, 'ताओवादी बालक' की पुकार सुनकर बाहर मत आना। बल्कि जब कोई 'बौद्ध भिक्षु' कहे, तो संदूक का ढक्कन अपने सिर से उठाओ, लकड़ी की मछली पर प्रहार करो और बौद्ध मंत्र का पाठ करते हुए बाहर आओ। ऐसा करो और हम जीत जाएँगे।"

"लेकिन मैं केवल तीन अधिकारियों का ग्रंथ, सप्तर्षि ग्रंथ और आपदा निवारण ग्रंथ ही सुना सकता हूँ," लड़के ने कहा, "मुझे बौद्ध धर्मग्रंथों का कोई ज्ञान नहीं है।"

"क्या तुम किसी बुद्ध का नाम बता सकते हो?" बंदर ने पूछा। "कोई भी 'अमिताभ बुद्ध' का नाम बता सकता है," लड़के ने उत्तर दिया।

"बस इतना ही काफी है," बंदर ने कहा। "बुद्ध का नाम जप लो और मुझे तुम्हें सूत्र सिखाने की परेशानी से बचाओ। मेरी कही बातें याद रखना, मैं अब जा रहा हूँ।" फिर बंदर एक छोटे से कीड़े में बदल गया, बाहर निकला, तांग पुजारी के कान के पास वापस उड़कर आया और बोला, "गुरुजी, कहिए कि अंदर एक बौद्ध भिक्षु है।"

"इस बार हमारी जीत निश्चित है," संजांग ने जवाब दिया।

"तुम्हें इतना यकीन कैसे हो सकता है?" बंदर ने पूछा।

"सूत्र हमें सिखाते हैं कि तीन खजाने हैं," संजांग ने कहा, "बुद्ध, धर्म और पुरोहित वर्ग; इसलिए एक भिक्षु को भी एक खजाने के समान माना जाना चाहिए।"

जब संज़ंग यह कह रहे थे, तभी महान अमर बाघ शक्ति ने कहा, "महाराज, तीसरी

बार भी अंदर एक ताओवादी बालक है।" बाघ शक्ति ने बार-बार पुकारा, लेकिन बालक बाहर नहीं आया। तब संज़ंग ने हाथ जोड़कर कहा, "अंदर एक भिक्षु है।"
"संदूक के अंदर एक भिक्षु है!" पिग ने ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा, जिस पर लड़के ने संदूक का ढक्कन अपने सिर से उठाया और बाहर निकल आया, अपनी लकड़ी की मछली को पीटते हुए और बुद्ध का नाम जपते हुए। नागरिक और सैन्य अधिकारी इतने प्रसन्न हुए कि सबने जयकारे लगाए; जबकि भयभीत ताओवादी अवाक रह गए।
अध्याय 46
641
पश्चिम की यात्रा
“इस भिक्षु को देवता और राक्षस दोनों की सहायता मिल रही है,” राजा ने कहा। “वरना वह ताओवादी बालक बनकर संदूक में कैसे प्रवेश कर सकता था और बौद्ध भिक्षु बनकर कैसे बाहर निकल सकता था? अगर कोई नाई भी उसके साथ अंदर गया होता तो वह केवल उसका सिर ही मुंडवा सकता था; लेकिन उसने तो बढ़िया वस्त्र पहने हैं और बुद्ध का नाम भी जप रहा है। हे राष्ट्र के गुरुओं, आप इन भिक्षुओं को जाने दें।”
इस पर महान अमर बाघ शक्ति ने उत्तर दिया, "महाराज, यह एक शतरंज खिलाड़ी के अपने प्रतिद्वंद्वी से भिड़ने या एक सेनापति के एक कुशल रणनीतिकार के सामने आने जैसा मामला है। हम झोंगनान पर्वत में बचपन में सीखी हुई मार्शल आर्ट का प्रयोग उनके विरुद्ध करना चाहेंगे।"
"कौन सी मार्शल आर्ट?" राजा ने पूछा।
"हम तीनों भाइयों के पास कुछ दैवीय शक्तियां हैं," टाइगर पावर ने उत्तर दिया। "हम अपने सिर को वापस जोड़ सकते हैं जब वे कट गए हों; अपनी छाती खोलकर, अपने दिल को निकालकर खुद को फिर से पूरा बना सकते हैं; और उबलते तेल में स्नान कर सकते हैं।"
“लेकिन ये सब तो निश्चित मौत हैं,” राजा ने भयभीत होकर कहा। “हमारे पास ये शक्तियां हैं,” टाइगर पावर ने कहा।
"इसीलिए मैं आपको स्पष्ट आश्वासन दे सकता हूं कि जब तक हमें उनके साथ टूर्नामेंट खेलने की अनुमति नहीं मिल जाती, तब तक हम हार नहीं मानेंगे।"
बंदर ने अभी-अभी खुद को एक नन्हे से कीड़े में बदला था और जाँच करने के लिए

उधर गया ही था कि उसने यह सब सुना। अपने असली रूप में लौटकर वह ज़ोर से हँसा और बोला, "क्या किस्मत है, क्या गजब की किस्मत है। काम खुद मेरे दरवाजे तक आ गया है।"
"लेकिन ये सब तो खुद को मौत के घाट उतारने के तरीके हैं," पिग ने कहा। "तुम अपने घर के दरवाजे पर कारोबार आने की बात कैसे कर सकते हो?"
"तुम्हें अभी भी मेरी शक्तियों का पता नहीं है," बंदर ने कहा।
"लेकिन तुम जितने भी रूप बदल सकते हो, वो काफी हैं," पिग ने कहा। "तुम्हारे पास ऐसी शक्तियां भी नहीं हो सकतीं।"
इस पर बंदर ने कहा,
"मेरा सिर काट दो, मैं फिर भी बोलता रहूंगा।"
मेरी भुजाएँ काट दो, नहीं तो मैं तुम्हें एक और घूंसा मारूंगा।
मेरे पैर काट दो, मैं चलता रहूंगा।
मेरी आंतें निकाल लो, मैं उन्हें फिर से जोड़ दूंगा।
"जब कोई मांस का पकौड़ा बनाता है
मैं इसे लेता हूं और एक ही बार में पी जाता हूं।
गर्म तेल से स्नान करना वास्तव में बहुत सुखद होता है।
एक गर्म पानी का टब जो सारी गंदगी को साफ कर देता है।"
अध्याय 46
642
पश्चिम की यात्रा
जब सुअर और साधु रेत ने यह सुना तो वे जोर से हंस पड़े। फिर बंदर आगे बढ़ा और बोला, "महाराज, इस विनम्र भिक्षु का सिर कलम किया जा सकता है।"
"तुम्हारा क्या मतलब है, तुम्हारा सिर कलम किया जा सकता है?" राजा ने पूछा।
"कई साल पहले जब मैं मठ में अपने आचरण का अभ्यास कर रहा था, तब वहाँ आए एक ध्यान भिक्षु ने मुझे सिर कलम करने की एक विधि सिखाई थी। मुझे नहीं पता कि यह विधि कारगर है या नहीं, और मैं आज इसे आजमाना चाहता हूँ।"
राजा ने मुस्कुराते हुए कहा, "वह भिक्षु अभी इतना छोटा है कि उसमें अक्ल नहीं है। अपना सिर कटवाना कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे मजे के लिए आजमाया जा सके। सिर छह सकारात्मक गुणों का मुखिया है, और जब यह कट जाता है तो इंसान मर

जाता है।"

"महाराज," महान अमर बाघ शक्ति ने कहा, "मैं यही चाहता हूँ कि वह ऐसा करे ताकि हम उससे बदला ले सकें।" उसकी बात मानकर मूर्ख राजा ने सार्वजनिक रूप से फांसी देने के लिए जगह तैयार करने का आदेश दिया।

आदेश मिलते ही राजरक्षकों के तीन हजार जवान महल के द्वार के बाहर जमा हो गए। राजा ने कहा, "सबसे पहले भिक्षु का सिर कलम किया जाएगा।" बंदर ने खुशी-खुशी सहमति जताते हुए कहा, "मैं पहले जाऊंगा, मैं पहले जाऊंगा।"

फिर उसने हाथ जोड़कर चिल्लाते हुए कहा, "राष्ट्र के गुरु, आशा है कि आप पहले बोलने की मेरी गुस्ताखी को क्षमा कर देंगे।" इसके बाद बंदर मुड़कर बाहर चला गया।

"शिष्य सावधान रहो," संजांग ने उसके गुजरते समय उसे पकड़ते हुए कहा, "यह मजाक करने की जगह नहीं है।"

बंदर ने कहा, "डरने की क्या बात है? मुझे पकड़ना छोड़ो; मुझे जाने दो।"

महान ऋषि सीधे फांसी के मैदान में गए, जहां जल्लादों ने उन्हें पकड़कर गेंद की तरह बांध दिया। जब उन्हें मिट्टी के ऊंचे टीले पर रखा गया, तो "इसका सिर काट दो!" की आवाज सुनाई दी, और तलवार सीटी बजाते हुए नीचे आई और उनका सिर धड़ से अलग हो गया। जल्लादों ने फिर उसके सिर को लात मारी और वह पके तरबूज की तरह तीस-चालीस कदम दूर लुढ़क गया। बंदर के गले से खून नहीं निकला, लेकिन उसके पेट से "इधर आओ, सिर!" की आवाज आई।

महान अमर बाघ शक्ति इस जादुई कौशल के प्रदर्शन से इतनी भयभीत हो गई कि उसने एक मंत्र पढ़ा और स्थानीय देवता को आदेश दिया, "इस सिर को थामे रहो। जब मैं इस भिक्षु को हरा दूंगा, तो मैं महाराज से तुम्हारे छोटे मंदिर को एक बड़े मंदिर के रूप में पुनर्निर्मित करने और तुम्हारी मिट्टी की मूर्ति को सोने की मूर्ति से बदलने का अनुरोध करूंगा।" अब स्थानीय देवता बाघ शक्ति के वश में था क्योंकि बाघ शक्ति के पास पांच प्रकार की वज्र शक्ति थी, इसलिए उसने बंदर का सिर थामे रखा।

"इधर आओ, सिर!" बंदर ने फिर पुकारा, लेकिन उसका सिर हिल नहीं पा रहा था, मानो वहीं जड़ जमा चुका हो। बंदर अब घबरा गया था, इसलिए उसने हाथों से एक मंत्र पढ़ा, उसे बांधने वाली रस्सियों से खुद को छुड़ाया और चिल्लाया, "बढ़ो!" पलक झपकते ही उसकी गर्दन पर एक और सिर उग आया, जिससे जल्लाद और पहरेदार इतने भयभीत हो गए कि वे सब कांपने लगे।

फांसी की निगरानी कर रहा अधिकारी महल में दौड़कर यह सूचना देने पहुंचा, "महाराज, जब छोटे भिक्षु का सिर काट दिया गया तो उसका दूसरा सिर उग आया।"
"तो यह एक और चाल है जो हमारा भाई कर सकता है," पिग ने फ्रायर सैंड से मजाक उड़ाते हुए हंसते हुए कहा।
अध्याय 46
643
पश्चिम की यात्रा
"चूंकि वह बहत्तर रूपान्तरण कर सकता है, इसलिए उसके बहत्तर सिर हैं," फ्रायर सैंड ने कहा। "
उसके ऐसा कहने से पहले ही बंदर वापस आया और पुकारा, "मालिक!"
"क्या तुम्हें दर्द हुआ, शिष्य?" बेहद राहत महसूस करते हुए संजांग ने पूछा।
"नहीं, यह दर्दनाक नहीं था," बंदर ने कहा, "यह मजेदार था।"
"भाई," सुअर ने पूछा, "क्या आपको तलवार के घाव के लिए मरहम चाहिए?"
"देखो, कोई निशान है या नहीं," बंदर ने कहा।
उस मूर्ख ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और चौड़ी आँखों से आश्चर्य भरी मुस्कान के साथ कहा, "शानदार! यह बिल्कुल सही सलामत है—इस पर एक भी निशान नहीं है।"
जब शिष्य भाई एक-दूसरे को बधाई दे रहे थे, तभी उन्होंने राजा को उन्हें अपना पासपोर्ट लेने के लिए बुलाते हुए सुना और यह कहते हुए सुना, "हम तुम्हें पूर्ण क्षमा प्रदान करते हैं। तुरंत जाओ।"
"हम पासपोर्ट स्वीकार करते हैं, लेकिन हम इस बात पर जोर देते हैं कि राष्ट्र के शिक्षक का भी सिर कलम किया जाना चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि आगे क्या होता है," बंदर ने कहा।
“राष्ट्र के वरिष्ठ शिक्षक,” राजा ने कहा, “वह भिक्षु तुम्हें नहीं छोड़ेगा। तुमने उसे हराने का वादा किया था, और इस बार मुझे फिर से डराओ मत।” फिर टाइगर पावर की बारी आई और जल्लादों ने उसे गेंद की तरह बांध दिया और तलवार की एक ही वार से उसका सिर काट दिया, जिसे लात मारकर तीस कदम दूर फेंक दिया गया।
उसके गले से भी खून नहीं निकला, और उसने भी पुकार कर कहा, "इधर आओ, मुखिया।"
बंदर ने तुरंत एक बाल खींचा, उस पर जादुई सांस फूंकी, "बदल जाओ!" कहा और

उसे एक भूरे कुत्ते में बदल दिया जो फांसी के मैदान में दौड़ता हुआ गया, उसने ताओवादी का सिर अपने दांतों से उठाया और महल की खाई में फेंक दिया।
ताओवादी ने तीन बार जोर से चिल्लाया, लेकिन उसका सिर वापस नहीं आया। बंदर की तरह नया सिर उगाने की कला न होने के कारण, उसकी गर्दन से लाल खून तेजी से बहने लगा।
हवा और बारिश को बुलाने की उसकी शक्तियां व्यर्थ थीं;
वह फिर कभी सच्चे अमर व्यक्ति से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सका।
कुछ ही क्षणों में उसका शरीर धूल में गिर पड़ा, और सभी को पता चल गया कि वह वास्तव में एक बिना सिर वाला पीले बालों वाला बाघ था।
फिर फाँसी की निगरानी कर रहे अधिकारी ने आकर सूचना दी, "महाराज, राष्ट्र के वरिष्ठ गुरु का सिर काट दिया गया है और अब उनका सिर नहीं उग सकता। वे धूल में मृत पड़े हैं और अब एक बिना सिर वाले पीले बालों वाले बाघ बन गए हैं।" यह घोषणा सुनकर राजा सदमे से पीले पड़ गए। उन्होंने अन्य दो ताओवादी गुरुओं को टकटकी लगाकर देखा, उनकी आँखें हिल नहीं रही थीं।
अध्याय 46
644
पश्चिम की यात्रा
तब हिरण शक्ति उठ खड़ी हुई और बोली, "मेरे बड़े भाई का जीवन समाप्त हो गया है, लेकिन वह शेर तो नहीं था। उस दुष्ट भिक्षु ने अपने दुष्टतापूर्ण कर्मों से मेरे बड़े भाई को जानवर बना दिया होगा। मैं उसे कभी क्षमा नहीं करूँगा और मैंने ठान लिया है कि मैं उसका पेट चीरकर उसका दिल निकाल लूँगा।"
जब राजा ने यह सुना तो उसने खुद को संभाला और कहा, "छोटे भिक्षु, राष्ट्र के दूसरे शिक्षक तुमसे एक और प्रतियोगिता करना चाहते हैं।"
बंदर ने कहा, "मैंने बहुत दिनों से पका हुआ खाना नहीं खाया था, जब तक कि कुछ दिन पहले पश्चिम की यात्रा के दौरान मुझे एक शाकाहारी के घर खाना नहीं मिला। मैंने काफी सारी उबली हुई रोटी खाई, और तब से मेरे पेट में दर्द हो रहा है। मुझे लगता है कि मेरे पेट में कीड़े पड़ गए हैं, इसलिए महाराज की तलवार उधार लेकर अपना पेट चीरकर, अपनी आँतें निकालकर, तिल्ली और पेट की अच्छी तरह सफाई करवा लूँ, और फिर पश्चिमी स्वर्ग जाऊँ।"

जब राजा ने यह सुना तो उसने कहा, "इसे फाँसी के स्थान पर ले चलो।" लोगों की एक पूरी भीड़ बंदर पर टूट पड़ी, उसे पकड़ लिया और उसे घसीटते हुए वहाँ ले जाने लगी। बंदर ने अपने हाथ छुड़ा लिए और कहा, "मुझे पकड़ने की ज़रूरत नहीं है। मैं खुद चलकर वहाँ जा सकता हूँ। बस एक शर्त है: मेरे हाथ बंधे नहीं होने चाहिए क्योंकि मुझे अपने भीतर के अंगों को साफ करने के लिए उनकी ज़रूरत पड़ेगी।" तब राजा ने आदेश दिया कि उसके हाथ खुले छोड़ दिए जाएँ।

बंदर इतराते हुए सीधे फांसी के मैदान तक गया, जहां वह खंभे से टिक गया, अपने कपड़े उतारे और अपना पेट दिखा दिया। जल्लादों ने उसकी गर्दन और पैरों में रस्सियां बांधीं, फिर गाय के कान के आकार के चाकू से उसके पेट में एक तेज चीरा लगाया। इससे एक छेद बन गया जिसमें बंदर ने अपने दोनों हाथ डालकर उसे और खोला और अपनी आंतें बाहर निकाल लीं। उसने काफी देर तक उन्हें ध्यान से देखा और फिर वापस अंदर डाल दिया। इसके बाद वह फिर झुका, अपने पेट की त्वचा को एक साथ दबाया, उस पर जादुई सांस फूंकी, "बढ़ो!" कहा और उसे फिर से जोड़ दिया।

राजा इतना आश्चर्यचकित हुआ कि उसने बंदर को अपने हाथों से पासपोर्ट देते हुए कहा, "यह रहा आपका पासपोर्ट। कृपया पश्चिम की ओर अपनी यात्रा में आप पवित्र भिक्षुओं को और अधिक विलंब न करने दें।"

"पासपोर्ट की चिंता छोड़ो," बंदर ने कहा, "लेकिन राष्ट्र के दूसरे शिक्षक का पेट चीरने के बारे में क्या ख्याल है?"

"इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है," राजा ने डियर पावर से कहा।

"आप उससे मुकाबला करना चाहते थे, और अब आपको आगे बढ़ना ही होगा।"

"चिंता मत करो," डीयर पॉवर ने कहा। "मैं उससे हार ही नहीं सकता।"

उसे देखो, वह महान ऋषि बंदर की तरह अकड़ते हुए फांसी के मैदान की ओर जा रहा है, जहां जल्लाद उसे बांधकर गाय के कान के चाकू की सीटी से उसका पेट चीर देंगे। उसने भी अपनी आंतें निकालकर अपने हाथों से छांटीं। इसी बीच बंदर ने अपने बालों में से एक बाल खींचा, उस पर जादुई सांस फूंकी, "बदलो!" चिल्लाया और उसे एक भूखे बाज में बदल दिया, जिसने अपने पंख फैलाए, अपने पंजे फैलाए, नीचे झपटा, ताओवादी के आंतरिक अंग, हृदय, जिगर सब कुछ पकड़ लिया और उड़ गया, पता नहीं कहां जाकर उन्हें खा गया। ताओवादी

एक खाली, खोखली आत्मा की तरह रह गया,

वह बिना आंत और पेट के इधर-उधर भटकता रहता है।
अध्याय 46
645
पश्चिम की यात्रा
जल्लादों ने लकड़ी के खंभे को लात मारकर गिरा दिया और शव को घसीटकर देखने लगे। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह एक सफेद बालों वाले हिरण का शव था। फांसी की निगरानी कर रहे अधिकारी ने एक और चौंकाने वाली रिपोर्ट दी: "राष्ट्र के दूसरे शिक्षक का दुखद अंत हो गया है। उनकी मृत्यु तब हुई जब उनका पेट चीर दिया गया और एक भूखे बाज ने उनके सारे आंतरिक अंग और आंतें अपने पंजों में उठाकर खा लीं। पता चला कि वे एक सफेद बालों वाला हिरण थे।"
"वह हिरण कैसे हो सकता है?" राजा ने भयभीत होकर पूछा। इस पर महान अमर मृग शक्ति ने उत्तर दिया: "मेरे बड़े भाई की मृत्यु के बाद वह जानवर जैसा कैसे दिख सकता है? यह सब उस भिक्षु के जादू का परिणाम है जिसने हमें बर्बाद करने की कोशिश की। मुझे अपने बड़े भाई का बदला लेने दो।"
“तुम्हारे पास कौन सी जादुई कला है जिससे तुम उसे हरा सकते हो?” राजा ने पूछा।
“मैं उससे उबलते तेल में नहाने की प्रतियोगिता करूँगा,” एंटेलोप पावर ने उत्तर दिया। तब राजा ने एक बड़ा कड़ाहा मंगवाने और उसमें तिल का तेल भरने का आदेश दिया ताकि वे दोनों प्रतियोगिता कर सकें।
"आपकी इस बात के लिए मैं बहुत आभारी हूं," बंदर ने कहा। "मैंने बहुत दिनों से स्नान नहीं किया है, और पिछले कुछ दिनों से मेरी त्वचा में खुजली होने लगी है। मुझे गर्म पानी से अच्छी तरह भीगने की ज़रूरत है।"
राजा के सेवकों ने तेल का कड़ाहा तैयार किया, सूखी लकड़ियों का ढेर लगाया, उसे तेज़ आंच पर जलाया और तेल को तब तक गर्म किया जब तक वह उबलने और बुलबुले छोड़ने लगा। बंदर को पहले अंदर जाने के लिए कहा गया। उसने अपने हाथ छाती के सामने जोड़कर पूछा, "क्या यह सौम्य स्नान होगा या ज़ोरदार?" जब राजा ने उससे पूछा कि क्या होगा, तो बंदर ने उत्तर दिया, "सुखद स्नान के लिए, कपड़े पहने रहो, हाथों को फैलाओ, लोट-पोट हो जाओ और बिना कपड़ों को गंदा किए ऊपर आ जाओ। अगर कपड़ों पर तेल का एक धब्बा भी लग गया तो तुम हार गए। ज़ोरदार स्नान के लिए, कपड़े टांगने का स्टैंड और एक तौलिया चाहिए। कपड़े उतारो, पानी में

कूद जाओ और कलाबाज़ी या ड्रैगनफ्लाई की तरह खड़े हो जाओ, खेलते हुए खुद को धो लो।"

“क्या तुम उससे सौम्य स्नान में मुकाबला करना चाहते हो या कठोर स्नान में?” राजा ने एंटेलोप पावर से पूछा। “यदि सौम्य स्नान की बात है,” एंटेलोप पावर ने कहा, “तो हो सकता है उसने अपने कपड़ों पर कोई ऐसी औषधि लगाई हो जिससे तेल न लगे। तो चलो कठोर स्नान ही करते हैं।” तब बंदर आगे बढ़ा और बोला, “हमेशा पहले जाने की मेरी गुस्ताखी के लिए क्षमा करें।” उसे देखो जब वह अपना कुर्ता और बाघ की खाल का स्कर्ट उतारता है, कड़ाही में कूदता है और लहरों में गोता लगाता है, मानो पानी में तैर रहा हो, उतना ही आनंद ले रहा है।

यह देखकर सुअर ने अपनी उंगली काट ली और साधु सैंड से कहा, "हमने उस बंदर को कम आंका। मैं आमतौर पर उसके बारे में बुरी-बुरी बातें कहता हूँ जैसे कि वह सिर्फ मौज-मस्ती करता हो। मुझे कभी एहसास नहीं हुआ कि उसके पास ऐसी शक्तियाँ हैं।"

जब बंदर ने उन दोनों को आपस में उसकी तारीफ करते हुए देखा, तो उसने संदेह से सोचा, "यह मूर्ख फिर से मेरा मज़ाक उड़ा रहा है। यह कितना सच है कि चतुरों को सारा काम करना पड़ता है और अनाड़ी लोग खाली बैठे रहते हैं। मैं यहाँ ऐसे उछल-कूद कर रहा हूँ और वह वहाँ आराम से खड़ा है। ठीक है, फिर। मैं उसे गांठों में बांध दूँगा और उसे खूब डराऊँगा।" खुद को धोते-धोते उसने ज़ोरदार छपछपाहट की और कड़ाही की तलहटी में जा गिरा जहाँ वह बेर के पत्थर में बदल गया। वह फिर कभी ऊपर नहीं आया।

फांसी की निगरानी कर रहे अधिकारी राजा के पास गए और सूचना दी, "महाराज, नन्हा भिक्षु उबलते तेल में तलकर मर गया है।" राजा प्रसन्न हुए और उन्होंने आदेश दिया कि हड्डियाँ निकालकर उन्हें दिखाई जाएँ। जल्लाद एक लंबे डंडे वाली लोहे की छलनी लाए और उससे कड़ाही में चारों ओर तलाशी ली, लेकिन उसकी जाली इतनी मोटी थी कि बंदर, जो अब एक कील जितना छोटा हो गया था, बार-बार उसके छेदों से फिसल जाता था और वे उसे बाहर नहीं निकाल सके। फिर उन्होंने बताया कि भिक्षु इतना छोटा था और उसकी हड्डियाँ इतनी नरम थीं कि वे तुरंत तल गईं।

“तीनों भिक्षुओं को गिरफ्तार करो,” राजा ने आदेश दिया। उपस्थित पहरेदारों ने सबसे पहले पिग को पकड़ा क्योंकि वह खतरनाक लग रहा था, उसे नीचे धकेल दिया और

उसके हाथ पीछे बांध दिए। संज़ंग इतना भयभीत हो गया कि वह चिल्लाया, “महाराज, इस बेचारे भिक्षु को कुछ घंटों की मोहलत दीजिए। मेरे शिष्य ने अनगिनत अध्याय 46 प्राप्त किए हैं।”

646

पश्चिम की यात्रा

धर्म परिवर्तन के बाद उसने अच्छे कर्म किए। आज वह उबलते तेल के कड़ाहे में मर गया क्योंकि उसने महाराज का अपमान किया था। जो पहले मरते हैं वे देवता बन जाते हैं, और मुझे जीवित रहने का लालच नहीं है। वास्तव में, संसार में सत्ता में बैठे लोग संसार के लोगों की देखभाल करते हैं। यदि महाराज मुझे मरने का आदेश दें, तो आपका प्रजा अवज्ञा करने का साहस नहीं करेगा। मैं आपसे केवल दयापूर्वक एक कटोरी ठंडा दलिया और तीन कागज़ के घोड़े देने की विनती करता हूँ जिन्हें मैं कड़ाहे के सामने रख सकूँ। मैं अपने शिष्य के प्रति अपनी भावना के प्रतीक के रूप में कागज़ को जलाना चाहूँगा, और फिर मैं अपनी मृत्यु के लिए तैयार हो जाऊँगा।

“बहुत खूब,” राजा ने कहा। “इन चीनियों में सम्मान की कितनी अच्छी भावना है।” फिर उन्होंने तांग पुजारी को दलिया और पीला कागज देने का आदेश दिया, जो किया गया।

संज़ंग ने साधु सैंड को अपने साथ आने को कहा और वे दोनों सीढ़ियों के नीचे चले गए, जबकि कई पहरेदार सुअर को उसके कानों से घसीटते हुए कड़ाही तक ले गए। संज़ंग ने कड़ाही के सामने यह प्रार्थना की: "शिष्य सन वुकॉन्ग,

दीक्षा प्राप्त करने और फिर हमारे संप्रदाय में शामिल होने के बाद से

पश्चिम की यात्रा के दौरान आपने मेरी देखभाल की और मेरी रक्षा की।

हमें आशा थी कि हम अपनी इस महान यात्रा को एक साथ पूरा करेंगे।

किसने सोचा होगा कि तुम यहाँ आराम करने आओगे?

आपके जीवन का एकमात्र उद्देश्य धर्मग्रंथों का संग्रह करना था।

और यहां तक कि जब आप बुद्ध की मृत्यु के बाद भी चिंतन करते हैं।

अब बहुत दूर, बहुत दूर, आपकी सच्ची आत्मा प्रतीक्षा कर रही है;

तुम भूत बनकर गरज के मंदिर तक चढ़ोगे।

यह सुनकर सुअर बोला, "मालिक, इस तरह की प्रार्थना की कोई आवश्यकता नहीं है। साधु सैंड, मेरे लिए कुछ दलिया लाओ, मैं प्रार्थना करूँगा।" फिर जमीन पर बंधे हुए

उस मूर्ख ने गुस्से से गुर्राते हुए कहा,
"शरारती बंदर,
घोड़ों का अज्ञानी रक्षक।
उस बंदर को मरना ही चाहिए था।
रक्षक को जलना ही था।
बंदर को बहुत गर्मी लग रही थी।
रक्षक को उसका हिस्सा मिल चुका है।"
अध्याय 46
647
पश्चिम की यात्रा
जब कड़ाही के तल में बैठा बंदर उस मूर्ख को इस तरह गाली देते हुए सुना, तो वह खुद को रोक नहीं पाया और वापस अपने असली रूप में आ गया, कड़ाही में खड़ा हो गया और बोला, "गंदगी पीने वाले मूर्ख! तुम्हें क्या लगता है कि तुम किसे गाली दे रहे हो?"
उसे देखकर संजांग ने कहा, "शिष्य, तुमने मुझे बुरी तरह डरा दिया।"
"बिग ब्रदर तो मृतकों का नाटक करने का आदी है," फ्रायर सैंड ने कहा। नागरिक और सैन्य अधिकारी इतने घबरा गए कि वे राजा को रिपोर्ट करने के लिए आगे बढ़ गए।
"महाराज, भिक्षु की मृत्यु नहीं हुई है। वह तो बस कड़ाही में खड़ा हो गया है।" फाँसी की निगरानी कर रहे अधिकारी को डर था कि राजा को पहले झूठी सूचना देने के कारण वह मुसीबत में पड़ जाएगा, इसलिए उसने एक नई सूचना दी: "भिक्षु की मृत्यु तो हुई थी, लेकिन क्योंकि आज अशुभ दिन है, वह भूत बनकर हमें परेशान करने के लिए वापस आ गया है।"
इससे बंदर इतना क्रोधित हुआ कि वह कड़ाही से बाहर कूद गया, अपने ऊपर से तेल पोंछा, कपड़े पहने, अपनी लाठी निकाली और फांसी के पर्यवेक्षक को इतनी जोर से मारा कि उसका सिर मांस के गोले जैसा हो गया। "सचमुच एक भूत," उसने कहा, जिससे अधिकारी इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने सुअर को खोल दिया, घुटनों के बल गिर पड़े और गिड़गिड़ाने लगे।
"हमें क्षमा करें, हमें क्षमा करें।" जैसे ही राजा अपने अजगर सिंहासन से नीचे उतरे, बंदर महल में गया, उन्हें पकड़ लिया और बोला, "महाराज, मत जाइए। राष्ट्र के तीसरे

गुरु को अभी तेल के कड़ाहे में डाल दीजिए।"
"राष्ट्र के तीसरे शिक्षक," राजा ने बहुत कांपते हुए कहा, "मेरी जान बचाने के लिए आपको तुरंत कड़ाही में उतरना होगा।"
"भिक्षु को मुझे मारने मत देना।" फिर एंटेलोप पावर सिंहासन कक्ष से नीचे उतरा और बंदर की तरह अपने कपड़े उतारकर तेल में कूद गया और खुद को धोने की रस्म अदा करने लगा।
बंदर ने राजा को जाने दिया, कड़ाही के पास गया और आग जलाने वालों से और ईंधन डालने को कहा। फिर उसने हाथ डालकर महसूस किया और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि उबलता हुआ तेल बर्फीला ठंडा था।
"जब मैंने स्नान किया था तब तो बहुत गर्मी थी," उसने सोचा, "लेकिन उसके स्नान में तो ठंड लग रही है। मुझे यकीन है कि कोई ड्रैगन राजा उसकी रक्षा कर रहा होगा।" वह सीधे हवा में उछला, जादुई शब्द "ओम" बोला और उत्तरी सागर के ड्रैगन राजा को बुला लिया।
"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, सींग वाले कीड़े, शल्कों वाली मछली," बंदर ने कहा। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ताओवादी की मदद करने की, ठंडे अजगर की तरह कड़ाही के तल की रक्षा करने की और उसे इस दिव्य शक्ति प्रदर्शन में मुझे हराने देने की!"
ड्रैगन राजा इतना भयभीत था कि वह सम्मानपूर्वक स्वर निकालते हुए बोला, "मैं उसकी मदद करने की हिम्मत कभी नहीं करता। हे महान ऋषि, इस मामले में आप जितना समझते हैं, उससे कहीं अधिक गंभीर बातें हैं। उस दुष्ट प्राणी ने अपने आचरण को बहुत सुधारा है, अपना मूल आवरण उतार फेंका है, और अब उसके पास केवल पंच-विद्य जादू ही बचा है। अन्य सभी मामलों में उसने विधर्म का मार्ग अपना लिया है और वह कभी भी सच्चे मार्ग पर नहीं लौट सकता। यही वह 'महान ज्ञानोदय' है जो उसने लघु माओ पर्वत पर सीखा था। हे महान ऋषि, अन्य दो ड्रैगनों की शक्तियाँ आप पहले ही पराजित कर चुके हैं और वे अपने वास्तविक स्वरूप में लौट आए हैं। यह शीत ड्रैगन उसने स्वयं बनाया है, लेकिन यह केवल आम मनुष्यों को मूर्ख बनाने की एक चाल है: हे महान ऋषि, यह आपको धोखा नहीं दे सकता। अब मैं उस शीत ड्रैगन को अपने वश में करूँगा, और यह सुनिश्चित करूँगा कि उसकी खाल और हड्डियाँ जलकर राख हो जाएँ।"
"अगर मार नहीं खानी है तो जल्दी करो," बंदर ने कहा, जिस पर ड्रैगन राजा एक

भयंकर हवा के झोंके में बदल गया जिसने ठंडे ड्रैगन को पकड़ लिया और उसे समुद्र में उड़ा ले गया।

अध्याय 46

648

पश्चिम की यात्रा

बंदर धरती पर उतर आया और सिंहासन कक्ष के सामने संज़ंग, सुअर और साधु सैंड के बगल में खड़ा होकर उस ताओवादी को उबलते तेल से बाहर निकलने के लिए असफल प्रयास करते हुए देखने लगा। तभी वह ताओवादी वापस कड़ाही में गिर गया, और पल भर में उसकी हड्डियाँ अलग हो गईं, उसकी त्वचा कुरकुरी तल गई और मांस नरम होकर पक गया।

फांसी की निगरानी कर रहे अधिकारी ने फिर आकर सूचना दी, "महाराज, राष्ट्र के तीसरे शिक्षक को तलकर मार डाला गया है।" राजा की आँखों से आँसू बहने लगे, उन्होंने सिंहासन के पास वाली मेज पर मुक्का मारा और जोर से रोने लगे।

जीवन पाना भी कठिन है और उसका अंत भी कठिन है;

बिना सही निर्देश के अमृत का शोधन कभी नहीं होता।

व्यर्थ ही आत्माओं को दौड़ाया जाता है और जल-मंत्र बनाए जाते हैं;

अमरता प्रदान करने वाली गोलियां केवल एक कल्पना मात्र हैं।

अव्यवस्थित मन से कभी निर्वाण प्राप्त नहीं किया जा सकता;

जब धूर्तता से केवल विनाश ही हो तो वह व्यर्थ है।

अगर मुझे पहले से चेतावनी दी गई होती कि सब कुछ इतनी आसानी से विफल हो सकता है,

मैं डाइट का पालन करता और निष्क्रियता का जीवन चुनता।

वास्तव में:

स्वर्णिम स्पर्श और अमृत बनाने का कोई फायदा नहीं था;

हवा को बुलाना और बारिश को आमंत्रित करना, सब कुछ असफल रहा।

यदि आपको नहीं पता कि गुरु और उनके शिष्यों ने आगे कैसे यात्रा की, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 47

रात में स्वर्ग की नदी ने पवित्र भिक्षु को रोक दिया

धातु और लकड़ी ने अपनी दया से एक बच्चे की जान बचाई
राजा रोते हुए अपने सिंहासन पर गिर पड़ा और सूर्यास्त तक रोता रहा। तभी बंदर आगे बढ़ा और पुकारा,
"इतनी मूर्खता मत करो। उन ताओवादियों के शरीर देखो। एक बाघ था और दूसरा हिरण। एंटेलोप पावर अध्याय 47"
649
पश्चिम की यात्रा
वह एक हिरण था। अगर आपको यकीन नहीं है, तो उसकी हड्डियाँ निकलवाकर देख लीजिए। क्या वह किसी इंसान का कंकाल है? वे सब पहाड़ी जानवर थे जो आत्मा बन गए और आपको नष्ट करने यहाँ आए थे। उन्होंने अभी तक हमला इसलिए नहीं किया क्योंकि आपकी जीवन शक्ति अभी भी प्रबल है; लेकिन कुछ सालों में जब आपकी जीवन शक्ति कमजोर हो जाएगी, तो वे आपको मार डालेंगे और आपका पूरा राज्य उनका हो जाएगा। आप बहुत भाग्यशाली हैं कि हम समय रहते यहाँ आकर उनकी बुराई को नष्ट कर आपकी जान बचा ली। आप किस बात के लिए रो रहे हैं? हमें हमारा पासपोर्ट तुरंत दीजिए और हमें जाने दीजिए।
अंततः इससे राजा को होश आया, और फिर नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने मिलकर रिपोर्ट दी, "मरने वाले पहले दो वास्तव में एक सफेद हिरण और एक पीला बाघ थे; और कड़ाही में एक मृग की हड्डियाँ हैं।"
पवित्र भिक्षु पर विश्वास करना चाहिए।
“यदि ऐसा है तो मुझे पवित्र भिक्षु का धन्यवाद करना चाहिए,” राजा ने कहा, और फिर अपने शिक्षक से कहा, “अब देर हो चुकी है, इसलिए कृपया पवित्र भिक्षुओं को गहन ज्ञान मठ ले चलें। कल सुबह महल का पूर्वी भाग खोला जाएगा और शाही रसोई में हमारी कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में शाकाहारी भोज का आयोजन किया जाएगा।” इसके बाद उन्हें मठ ले जाया गया, जहाँ उन्होंने उस रात विश्राम किया।
अगली सुबह भोर से कुछ ही समय पहले राजा ने एक सभा बुलाई, जिसमें उन्होंने अधिकारियों को आदेश दिया कि वे शहर के चारों द्वारों और हर सड़क पर बौद्ध भिक्षुओं को वापस बुलाने का नोटिस लगाएं। जब भोज की तैयारी चल रही थी, राजा अपने रथ में बैठकर दीप ज्ञान मठ के द्वार पर गए और तांग पुरोहित और उनके शिष्यों को महल के पूर्वी भाग में आयोजित भोज में आमंत्रित किया।

जब भाग निकले बौद्ध भिक्षुओं को सूचना मिली तो वे सभी प्रसन्न होकर महान ऋषि वानर को खोजने, उनके विष्ठापद लौटाने और उनका धन्यवाद करने के लिए शहर लौट आए। भोज समाप्त होने पर राजा ने संजांग को पासपोर्ट लौटा दिया और अपनी रानी, पत्नियों, रखेलों और नागरिक एवं सैन्य अधिकारियों के साथ उन्हें महल के द्वार से बाहर ले गए। बौद्ध भिक्षु सड़क के किनारे घुटने टेककर पुकार रहे थे, "हे स्वर्ग के समान महान ऋषि, हम वही भिक्षु हैं जिन्हें महाराज ने रेत के टीले पर बचाया था। अब जब हमने सुना है कि महाराज ने उन दुष्ट प्राणियों का नाश करके हमें बचाया है, और महाराज ने हमें भिक्षुओं को वापस बुलाने का आदेश जारी किया है, तो हम आपके विष्ठापद लौटाने और कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम करने आए हैं।"

"आपमें से कितने लोग यहाँ हैं?" बंदर ने पूछा।

"सभी पांच सौ: हममें से एक भी कम नहीं है।"

बंदर ने अपने बाल समेटे और राजा, प्रजा, भिक्षुओं और आम लोगों से एक समान कहा, "मैंने ही इन भिक्षुओं को मुक्त किया, मैंने ही रथ को दोनों द्वारों से होते हुए पहाड़ी की चोटी तक ले जाकर उसे नष्ट किया, और मैंने ही उन दुष्ट ताओवादियों को मारा। अब जब बुराई नष्ट हो गई है, तो आप समझ जाएंगे कि बुद्ध के धर्म में एक मार्ग है। अब से आपको कोई मूर्खतापूर्ण विश्वास नहीं रखना चाहिए। मुझे आशा है कि आप बौद्ध धर्मगुरुओं और ताओवाद के मार्ग का सम्मान करते हुए, तथा प्रतिभावान पुरुषों को कन्फ्यूशियस परंपरा में शिक्षित करके तीनों शिक्षाओं को अपनाएंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इससे आपका राज्य सदा के लिए सुरक्षित हो जाएगा।" राजा ने यह सलाह स्वीकार कर ली और तांग पुजारी के साथ शहर से बाहर जाते हुए उन्होंने बड़ी श्रद्धा से अपना आभार व्यक्त किया।

क्योंकि वे गंभीरतापूर्वक धर्मग्रंथों की खोज कर रहे थे,

उन्होंने अपनी आत्मा की चमक को बनाए रखने का भरसक प्रयास किया।

अध्याय 47

650

पश्चिम की यात्रा

भोर होते ही निकल पड़े और सूर्यास्त तक रुके नहीं, प्यास लगने पर पानी पीते और भूख लगने पर भोजन करते रहे। देखते ही देखते वसंत और ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो गई और फिर से पतझड़ आ गया। एक दिन शाम को तांग पुजारी ने अपने घोड़े की लगाम

खींची और पूछा, "शिष्यों, हम आज रात कहाँ बिताएँगे?"
"गुरुजी," बंदर ने कहा, "एक धार्मिक व्यक्ति को आम आदमी की तरह बात नहीं करनी चाहिए।"
"उनके बात करने के तरीके में क्या अंतर है?" संजांग ने पूछा।
“ऐसे समय में,” बंदर ने कहा, “एक आम आदमी गर्म बिस्तर पर रजाई ओढ़कर, गोद में बच्चे को लिए और पैरों को गर्म रखने के लिए पत्नी के साथ गहरी नींद में सो रहा होता। हम भिक्षु ऐसी किसी चीज़ की उम्मीद नहीं कर सकते। हमारे पास तो बस चाँद और तारे ही सहारा हैं। हम हवा से भोजन करते हैं और ओस में सोते हैं। हम तभी यात्रा करते हैं जब हमें रास्ता मिलता है और तभी रुकते हैं जब आगे बढ़ने का कोई रास्ता नहीं बचता।”
"भाई," सुअर ने कहा, "तुम्हें तो आधी ही कहानी पता है। रास्ता अब बहुत ही ढलान वाला है और मैं अपना भारी बोझ बड़ी मुश्किल से संभाल पा रहा हूँ। हमें कोई ऐसी जगह ढूंढनी होगी जहाँ मैं चैन से सो सकूँ और कल अपना बोझ उठाने के लिए खुद को तैयार कर सकूँ। नहीं तो मैं थकान से चूर होकर गिर पड़ूँगा।"
“चलो चांदनी रात में थोड़ा और आगे चलते हैं,” बंदर ने कहा। “जब हमें कोई घर मिल जाएगा तो हम वहाँ ठहर सकते हैं।” गुरु और शिष्यों के पास बंदर के साथ आगे बढ़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।
वे अभी ज्यादा दूर नहीं चले थे कि उन्हें लहरों की आवाज सुनाई दी। "बस हो गया," सुअर ने कहा। "हम रास्ते के अंत तक पहुँच गए हैं।"
"हमारे रास्ते में एक नदी है," फ्रायर सैंड ने कहा।
"हम पार कैसे जाएंगे?" तांग पुजारी ने पूछा।
"मुझे इसकी गहराई जांचने दो," पिग ने कहा।
"बकवास मत करो, वुनेन्ग," संज़ंग ने कहा। "तुम पानी की गहराई कैसे माप सकते हो?"
"हंस के अंडे के आकार का एक छोटा पत्थर ढूंढो और उसे पानी में फेंक दो," सुअर ने जवाब दिया। "अगर उससे ज़ोरदार छपछपाहट होती है तो पानी उथला है; और अगर वह बुलबुले बनाते हुए नीचे चला जाता है तो पानी गहरा है।"
"तो फिर इसे आजमा कर देखो," बंदर ने कहा। फिर उस मूर्ख ने एक पत्थर उठाया और उसे पानी में फेंक दिया; पत्थर के डूबने पर उन्हें बुलबुले उठते सुनाई दिए।

"यह बहुत गहरा है, इतना गहरा कि हम इसे कभी पार नहीं कर पाएंगे," उसने कहा।
तांग पुजारी ने कहा, "आपने गहराई का परीक्षण तो कर लिया है, लेकिन हमें इसकी चौड़ाई का पता नहीं है।"
"मैं यह नहीं बता सकता," पिग ने कहा।
“मुझे देखने दो,” बंदर ने कहा। महान ऋषि अपने बादल पर सवार होकर हवा में उछल पड़े और उन्होंने गौर से देखा। उन्होंने जो देखा वह यह था:
विशालता में समाई हुई चंद्रमा की रोशनी,
असीम आकाश का तैरता हुआ प्रतिबिंब।
अध्याय 47
651
पश्चिम की यात्रा
जादुई धारा ने माउंट हुआ को निगल लिया है;
सैकड़ों नदियाँ इसमें आकर मिलती हैं।
हजारों की संख्या में लहरें उठती हैं और फिर गिर जाती हैं,
असंख्य ऊंची लहरें टकराती हैं।
कोई भी मछुआरा किनारे पर आग नहीं जलाता;
अब सारे बगुले रेत पर सो रहे हैं।
यह समुद्र की तरह ही मैला और विशाल है।
और दूर-दूर तक इसके पानी का कोई अंत नजर नहीं आता।
बंदर ने जल्दी से अपना बादल नीचे उतारा, उसे एक तरफ रख दिया और कहा, "यह बहुत चौड़ा है, स्वामी जी, बहुत चौड़ा। हम इसे कभी पार नहीं कर पाएंगे। मेरी सुनहरी पुतलियों वाली तेज आंखें दिन में सौ मील तक देख सकती हैं और अच्छे-बुरे में फर्क भी कर सकती हैं। रात में वे सौ से डेढ़ सौ मील तक देख सकती हैं। अगर मैं भी दूसरा किनारा नहीं देख सकता, तो भगवान ही जाने यह कितना चौड़ा होगा।"
सन्जांग सदमे से अवाक रह गया, फिर वह सिसकते हुए बोला, "शिष्यों, हम क्या करें?"
"रोओ मत, गुरुजी," साधु सैंड ने कहा। "वहाँ नदी के किनारे कोई खड़ा है।"
“मुझे लगता है कि कोई मछुआरा जाल बिछा रहा है,” बंदर ने कहा। “मैं जाकर उससे पूछता हूँ।” बंदर ने अपने लोहे के डंडे को हाथ में लिया और दो-तीन छलांगों में उस

आदमी के सामने पहुँच गया, लेकिन वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि वह वास्तव में एक पत्थर की शिला थी जिस पर प्राचीन लिपि में बड़े अक्षरों में तीन शब्द और उनके नीचे छोटी-छोटी दो पंक्तियों में नौ शब्द खुदे हुए थे। बड़े अक्षरों में लिखे तीन शब्द थे 'स्वर्ग की नदी', और छोटे अक्षरों में लिखे शब्द थे...

"यह 250 मील में फैला हुआ है; यहां बहुत कम यात्री आए हैं।"

"मालिक," बंदर ने पुकारा, "आओ और एक नज़र डालो।"

जब संज़ंग ने यह पढ़ा तो आँसुओं से भीगते हुए बोला, "शिष्य, जब मैंने इतने साल पहले चांगआन छोड़ा था, तब मैंने सोचा था कि पश्चिमी स्वर्ग तक पहुँचना आसान होगा। मुझे कभी पता नहीं था कि इतने सारे दुष्ट राक्षस मेरा रास्ता रोकेंगे, या इतने विशाल पहाड़ और नदियाँ पार करनी पड़ेंगी।"

"सुनिए, स्वामी," सुअर ने कहा। "ढोल और झांझ की यह आवाज़ कहाँ से आ रही है? ज़रूर कोई धार्मिक उत्सव मना रहा होगा। चलिए, कुछ खाना लेकर आते हैं और पता लगाते हैं कि कल हमें पार ले जाने वाली नाव कहाँ मिलेगी।" जब संज़ंग घोड़े पर बैठे-बैठे सुन रहा था, तो उसे सचमुच ढोल और झांझ की आवाज़ सुनाई दी।

"ये ताओवादी वाद्ययंत्र नहीं हैं," उसने कहा। "ज़रूर कोई बौद्ध भिक्षु कोई अनुष्ठान कर रहे होंगे। चलो वहीं चलते हैं।" बंदर घोड़े को आगे-आगे ले जा रहा था और वे संगीत की ओर चल पड़े। जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते गए, कोई पगडंडी नहीं दिख रही थी, फिर वे नीचे उतरने लगे और रेत के टीलों को पार करते हुए तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि लगभग चार-पाँच सौ घरों वाला एक गाँव नज़र नहीं आ गया। यह एक सुंदर बस्ती थी:

पहाड़ियों से घिरा हुआ, मुख्य सड़क के किनारे,
नदी के किनारे पर स्थित, और एक धारा से सिंचित।
सभी विकेट गेट बंद थे;
हर घर की बांस की बाड़ बंद कर दी गई थी।
समुद्र तट पर बैठे बगुले के सपने स्पष्ट थे।
विलो वृक्षों के किनारे पक्षियों का गीत शांत हो गया।

बांसुरी से कोई आवाज नहीं आई।
लकड़ी काटने वाले तख्ते की आवाज का कोई आभास नहीं हुआ।
चंद्रमा जंगली घास के डंठलों में झूल रहा था;
सरकंडों के पत्ते हवा में कांप रहे थे।
खेतों के किनारे बाड़ के पार से कुत्ते भौंक रहे थे;
मछुआरा नदी के किनारे बंधी अपनी नाव में सो रहा था।
सन्नाटे के बीच रोशनी बहुत कम थी।
और चंद्रमा आकाश में दर्पण की तरह लटका हुआ था।
हवा में बत्तख के पत्तों की महक फैल गई
पश्चिमी तट से हवा द्वारा ले जाया गया।
जब संजांग घोड़े से उतरा तो उसने सड़क के अंत में एक घर देखा जिसके बाहर रेशम का एक बैनर लटका हुआ था।
अंदर मोमबत्तियों और लालटेनों की रोशनी से जगमगा रहा था और अगरबत्ती के धुएं के बादल छाए हुए थे।
“वुकोंग,” संज़ंग ने कहा, “पहाड़ी घाटी या नदी के किनारे से तो यह कहीं बेहतर है। छज्जे के नीचे हम आराम से सो सकेंगे और ओस से बचकर चैन की नींद सो सकेंगे। तुम सब एक तरफ हट जाओ, मैं उस श्रद्धालु के घर के द्वार पर जाता हूँ जहाँ धार्मिक उत्सव चल रहा है, ताकि मैं आश्रय माँग सकूँ। अगर वे मुझे अंदर बुलाते हैं, तो मैं तुम्हें भी बुला लूँगा। लेकिन अगर वे मुझे अंदर नहीं बुलाते, तो हंगामा मत करना। अगर तुम अपना बदसूरत चेहरा दिखाओगे, तो वे बुरी तरह डर जाएँगे और मुसीबत खड़ी हो जाएगी, और फिर हमारे पास रहने की कोई जगह नहीं बचेगी।”
"आप सही कह रहे हैं," बंदर ने कहा। "आप जाइए, स्वामी जी, हम यहीं इंतजार करते हैं।"
तब आदरणीय बुजुर्ग ने अपनी बारिश से बचने वाली टोपी उतारी, अपने वस्त्रों को ठीक किया, हाथ में अपनी मठवासी छड़ी ली और नंगे सिर खुले द्वार की ओर चल दिए। बिना बुलाए अंदर जाने का साहस न करते हुए, संज़ंग कुछ देर वहीं खड़े रहे, तभी गले में प्रार्थना की माला पहने एक बहुत बूढ़ा व्यक्ति, जो अमिताभ बुद्ध का नाम जप रहा था, द्वार बंद करने के लिए बाहर आया।
अध्याय 47

संजांग ने तुरंत अपने हाथ छाती के सामने जोड़कर कहा, "हे उपकारक, मैं आपको प्रणाम करता हूँ।" बूढ़े व्यक्ति ने भी अभिवादन किया और फिर कहा, "आप बहुत देर से आए हैं, भिक्षु।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?" संजांग ने पूछा।

“अब तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा, बहुत देर हो चुकी है,” बूढ़े ने कहा। “अगर तुम पहले आए होते तो हम हर भिक्षु को अच्छा भोजन, तीन पाइंट पॉलिश किए हुए चावल, एक सफेद कपड़ा और दस तांबे के सिक्के दे रहे होते। तुम अब क्यों आए हो?”

"परोपकारी," संजांग ने उत्तर दिया, "मैं यहां भेंट लेने नहीं आया हूँ।"

"यदि आप यहां भेंट चढ़ाने नहीं आए हैं, तो फिर किसलिए आए हैं?" बूढ़े व्यक्ति ने पूछा।

"मुझे पूर्व में स्थित महान तांग सम्राट ने पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है," संज़ंग ने उत्तर दिया। "जब मैं इस गाँव पहुँचा तो काफी रात हो चुकी थी, और ढोल-नगाड़ों की आवाज़ सुनकर मैं यहाँ रात बिताने के लिए आश्रय माँगने आया हूँ। मैं भोर होते ही वापस चला जाऊँगा।"

बूढ़े व्यक्ति ने उससे हाथ हिलाते हुए उत्तर दिया, "भिक्षु, धर्मनिष्ठ लोगों को झूठ नहीं बोलना चाहिए। पूर्व में स्थित महान तांग यहाँ से 18,000 मील दूर है। आप वहाँ से अकेले कैसे आ सकते हैं?"

"आप बिलकुल सही कह रहे हैं, उपकारक," संज़ंग ने कहा। "मैं यहाँ तक केवल इसलिए पहुँच पाया हूँ क्योंकि मेरे तीन शिष्य मेरी रक्षा करते हैं। वे पहाड़ों पर रास्ते बनाते हैं और नदियों पर पुल बनाते हैं।"

“अगर आपके पास ये शिष्य हैं,” बूढ़े व्यक्ति ने कहा, “तो वे आपके साथ क्यों नहीं हैं? लेकिन अंदर आ जाइए। हमारे पास आपके ठहरने के लिए जगह है।”

फिर संजांग ने पीछे मुड़कर पुकारा, "शिष्यों, इधर आओ।"

बंदर स्वभाव से अधीर था, सुअर रूखा और साधु सैंड उतावला, इसलिए जैसे ही उन्होंने अपने स्वामी की पुकार सुनी, उन्होंने घोड़े की लगाम और सामान पकड़ा और पूरी रफ्तार से अंदर भागे। उन्हें देखकर बूढ़े को इतना सदमा लगा कि वह गिर पड़ा और बड़बड़ाने लगा, "राक्षस, राक्षस!"

"कृपा करके भयभीत न हों," संजांग ने कहा। "वे राक्षस नहीं हैं, वे मेरे शिष्य हैं।"
"लेकिन इतने सुंदर गुरु के इतने बदसूरत शिष्य कैसे हो सकते हैं?" बूढ़े व्यक्ति ने कांपते हुए पूछा।
"हो सकता है कि वे देखने में उतने आकर्षक न हों," संज़ंग ने कहा, "लेकिन वे ड्रैगन और बाघों को वश में करना और राक्षसों और दानवों को पकड़ना बखूबी जानते हैं।"
बूढ़ा व्यक्ति पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था, और उसने तांग पुजारी को अंदर जाने में मदद की।
तीनों उग्र शिष्य मुख्य हॉल की ओर दौड़े, घोड़े को बाहर बांध दिया और सामान नीचे रख दिया।
अंदर कई भिक्षु सूत्र पढ़ रहे थे। अपने लंबे थूथन को हाथों से ढकते हुए, सुअर चिल्लाया, "भिक्षुओं, आप कौन सा सूत्र पढ़ रहे हैं?" उसका प्रश्न सुनकर भिक्षुओं ने ऊपर देखा।
उन्होंने अजनबी की ओर देखा और उन्हें एक लंबी थूथन दिखाई दी।
साथ ही उनके बड़े-बड़े कान भी थे जो बाहर निकले हुए थे।
अध्याय 47
654
पश्चिम की यात्रा
उसका शरीर गठीला और कंधे चौड़े थे;
जब उसने अपना मुंह खोला, तो वह बिजली की तरह दहाड़ा।
लेकिन हमारे बंदर और अच्छे साधु सैंड के बारे में,
उनके चेहरे इतने भयावह थे कि कोई भी व्यक्ति उन्हें सहन नहीं कर सकता था।
मुख्य हॉल में भिक्षु अपने सूत्र पढ़ रहे हैं।
सभी लोग बुरी तरह से भयभीत और डरे हुए थे।
शिक्षक ने पाठ का पाठ जारी रखा।
जब तक कि मुख्य भिक्षु ने उन्हें रात के लिए रुकने के लिए नहीं कहा।
उन्होंने घंटियों और घंटी की आवाज़ पर कोई ध्यान नहीं दिया।
और बुद्ध की प्रतिमाएं उनके हाथों से गिर पड़ीं।
उन सभी ने एक साथ फूँक मारी और सारी बत्तियाँ बुझा दीं।
और भय के मारे वे भागने लगे।

वे लड़खड़ाते और गिरते हुए जमीन पर रेंगते हैं।
और वे सभी उस हॉल से बाहर निकलते समय लड़खड़ा जाते हैं।
एक बूढ़े भिक्षु का सिर दूसरे से टकराता है
ठीक वैसे ही जैसे ढेर सारे लौकी के ढेर गिरने से होता है।
जो कभी एक पवित्र और परम पावन अनुष्ठान हुआ करता था
अब सब कुछ एक हास्यास्पद दृश्य में तब्दील हो गया था।
भिक्षुओं को लड़खड़ाते और रेंगते देख तीनों शिष्यों ने ताली बजाई और ज़ोर से हँसने लगे, जिससे भिक्षु पहले से कहीं ज़्यादा भयभीत हो गए। एक-दूसरे से सिर टकराते हुए वे सब अपनी जान बचाने के लिए भागे और गायब हो गए। जब तक संज़ंग ने बूढ़े को हॉल में पहुँचाया, तब तक सारी बत्तियाँ बुझ चुकी थीं और वे तीनों अभी भी हँस रहे थे।
"धिक्कार है तुम सब पर," संजांग ने कहा, "तुम सब पूरी तरह से दुष्ट हो, मेरी दैनिक शिक्षा और सलाह के बावजूद। जैसा कि पूर्वजों ने कहा था,"
केवल संत ही बिना उपदेश के अच्छे बन सकते हैं;
केवल योग्य व्यक्ति ही शिक्षा प्राप्त करने के बाद अच्छे बन सकते हैं;

केवल मूर्ख ही निर्देश मिलने पर भी अच्छे नहीं बन पाते।
आपने अभी जो शर्मनाक हरकत की है, वह मेरी कल्पना से परे सबसे घटिया और मूर्खतापूर्ण चीजों में से एक है।
तुम बिना किसी सम्मान के द्वार से अंदर घुस आए, हमारे बुजुर्ग दानदाता को भय से बेहोश कर दिया, सभी भिक्षुओं को जान बचाकर भागने पर मजबूर कर दिया और उनकी सारी सेवा को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया। इस सब का दोष मुझे ही लेना पड़ेगा।" उनमें से कोई भी अपने बचाव में एक शब्द भी नहीं कह सका।
तभी उस बूढ़े व्यक्ति को यकीन हुआ कि वे सचमुच संजांग के शिष्य हैं, वह पीछे मुड़ा और बोला, "कुछ नहीं, महाराज, कुछ नहीं। अभी-अभी दीपक बुझाए गए हैं और फूल बिखेरे गए हैं क्योंकि वैसे भी पूजा समाप्त हो रही है।"
“अगर यह सब खत्म हो गया है,” सुअर ने कहा, “समापन भोज के लिए खाना और

शराब ले आओ। सोने से पहले हमें खाना चाहिए।" बूढ़े ने तेल के दीपक जलाने का आदेश दिया। नौकरों को समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों किया गया।

"मुख्य हॉल में जहां लोग सुर्रास पढ़ रहे हैं, वहां बहुत सारी अगरबत्तियां और मोमबत्तियां हैं, तो वह तेल के दीपक क्यों जलाना चाहता है?"

जब कुछ नौकर बाहर देखने आए तो उन्हें चारों ओर अंधेरा मिला, इसलिए उन्होंने मशालें और लालटेन जलाईं और एक साथ अंदर दौड़ पड़े। जब उन्होंने अंदर देखा और अचानक पिग और फ्रायर सैंड को देखा तो वे डर के मारे अपनी मशालें गिराकर भाग गए, और पीछे से दरवाजे बंद कर दिए और चिल्लाते हुए घर के अंदरूनी हिस्से में भाग गए।

"राक्षस, राक्षस!"

बंदर ने एक मशाल उठाई, कुछ दीपक और मोमबत्तियाँ जलाईं, और तांग पुजारी के बैठने के लिए एक कुर्सी खींच ली, जबकि शिष्य उनके दोनों ओर बैठ गए। जब वे वहाँ बैठकर बातें कर रहे थे, तभी उन्होंने घर के अंदरूनी हिस्से से आने वाले एक दरवाजे के खुलने की आवाज़ सुनी। एक और बूढ़ा आदमी छड़ी के सहारे अंदर आया और पूछा, "तुम कौन सी बुरी आत्माएँ हो जो आधी रात को इस पवित्र घर में आई हो?"

उनके सामने बैठे पहले बूढ़े व्यक्ति उठे और पर्दे के पीछे जाकर उनसे बोले, "बड़े भाई, चिल्लाना बंद कीजिए। ये राक्षस नहीं हैं। ये पूर्व के महान तांग से धर्मग्रंथ लाने आए अर्हत हैं। उनके शिष्य भले ही दुष्ट दिखते हों, लेकिन वास्तव में वे बहुत अच्छे हैं।" तभी बूढ़े व्यक्ति ने अपनी छड़ी नीचे रखी और उन चारों को प्रणाम किया, जिसके बाद वे भी उनके सामने बैठ गए और चाय और शाकाहारी भोजन मंगवाया। उन्होंने कई बार चिल्लाया, लेकिन नौकर अभी भी डर से कांप रहे थे और अंदर आने से बहुत डर रहे थे।

यह बात पिग के बर्दाश्त से बाहर थी। उसने कहा, "बूढ़े आदमी, आपके पास तो बहुत सारे नौकर हैं। वे सब क्या करने चले गए हैं?"

"मैंने उन्हें आप सज्जनों को भेंट करने के लिए भोजन लाने भेजा है," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया।

"इनमें से कितने लोग खाना परोसेंगे?" सुअर ने पूछा।

"आठ," बूढ़े आदमी ने कहा।

"वे किसका इंतज़ार कर रहे होंगे?" सुअर ने पूछा।

"आप चारों सज्जन," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया।
"हमारे स्वामी, जिनका चेहरा सफेद है, उन्हें सेवा के लिए केवल एक ही व्यक्ति की आवश्यकता है," सुअर ने कहा। "जिनके गालों पर बाल हैं और जिनका मुख गर्जन देवता जैसा दिखता है, उन्हें केवल दो की आवश्यकता है। उस क्रूर दिखने वाले प्राणी को आठ की आवश्यकता है, और मुझे बीस की।"

"तुम्हारी बातों से तो लगता है कि वह काफी ज्यादा खाने वाला होगा," बूढ़े आदमी ने टिप्पणी की।
"तुम लगभग सही हो," पिग ने कहा।
"हमारे पास पर्याप्त नौकर हैं," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, और सभी उम्र के नौकरों को इकट्ठा करके उसने तीस या चालीस नौकरों को पेश किया।
जब भिक्षु बूढ़े व्यक्ति से बात कर रहे थे, तो नौकरों का डर गायब हो गया और उन्होंने तांग पुजारी के सामने एक मेज लगा दी, और उन्हें सम्मान के स्थान पर बैठने के लिए आमंत्रित किया। फिर उन्होंने उनके दोनों ओर तीन और मेजें लगा दीं, जिन पर उन्होंने तीनों शिष्यों को बैठने के लिए कहा, और इन दोनों के सामने दो बूढ़े व्यक्तियों के लिए एक और मेज लगा दी। मेजों पर करीने से फल, सब्जियां, पास्ता, चावल, जलपान और मटर के नूडल्स का सूप रखा हुआ था। संजांग ने अपनी चॉपस्टिक उठाई और भोजन के लिए प्रार्थना करने लगे, लेकिन वह मूर्ख, जो अधीर और भूखा भी था, उनके प्रार्थना पूरी करने का इंतजार किए बिना ही लाल रंग के लकड़ी के कटोरे में रखे सफेद चावल को झट से उठाकर एक ही बार में निगल गया।
उसके बगल में खड़े नौकर ने कहा, "महाराज, आपने ठीक से सोचा नहीं। अगर आप खाना अपनी आस्तीनों में रखने वाले हैं, तो चावल की जगह उबली हुई रोटी क्यों नहीं ले लेते, क्योंकि चावल से आपके कपड़ों पर ड्यूटी लग जाएगी?"
"मैंने इसे अपनी आस्तीन में नहीं रखा था," सुअर ने हंसते हुए कहा, "मैंने इसे खा लिया था।"
उन्होंने कहा, "लेकिन तुमने तो अपना मुंह भी नहीं खोला, तो फिर तुम इसे कैसे खा सकते हो?"

"तो फिर झूठ कौन बोल रहा है?" सुअर ने कहा। "मैंने ही खाया है। अगर आपको यकीन नहीं है तो मैं एक और खाकर दिखाऊंगा।" नौकर चावल लेकर आए, एक कटोरा भरा और सुअर को दे दिया, जिसने पलक झपकते ही उसे निगल लिया।
"महाराज," आश्चर्यचकित नौकरों ने कहा, "आपका गला तो पत्थरों से बना हुआ लगता है, इतना चिकना और फिसलनदार है।"
मालिक के प्रार्थना पूरी करने से पहले ही सुअर पाँच-छह कटोरी खा चुका था; तभी उसने अपनी चॉपस्टिक उठाई और उनसे खाना शुरू किया। वह मूर्ख जो कुछ भी हाथ लगा, झटपट खाने लगा, चाहे चावल हो या पास्ता, फल हो या नाश्ता।
“और खाना, और खाना,” वह चिल्लाता रहा, जब तक कि खाना धीरे-धीरे खत्म होने लगा। “भाई,” बंदर ने कहा, “इतना मत खाओ। आधा पेट भरकर ही काम चलाओ। वैसे भी, पहाड़ की घाटी में भूखे मरने से तो बेहतर है।”
"तुम्हारा चेहरा कितना भयानक है," सुअर ने कहा। "कहावत है, भोज में बैठा साधु जो पेट भरकर नहीं खा सकता, उसका चेहरा भी भयानक होता है।"
"पहाड़ी पर जिंदा दफन होना ज्यादा बेहतर होगा।"
"चीज़ें हटा दो और उस पर ध्यान मत दो," बंदर ने कहा।
“हम आपसे खुलकर बात करेंगे, आदरणीय महोदय,” झुककर प्रणाम करते हुए दोनों वृद्ध पुरुषों ने कहा। “हम दिन के समय सौ या उससे अधिक आदरणीय सज्जनों को, जिनके पेट बड़े हों, भोजन कराने में कोई कठिनाई नहीं होती, लेकिन अब देर हो चुकी है और छोटी दावत का बचा हुआ खाना भी हटा दिया गया है। हमने केवल एक टोकरी नूडल्स, पाँच टोकरी चावल और कुछ मेजों पर शाकाहारी भोजन पकाया था, ताकि पूजा के अंत में अपने पड़ोसियों और पुरोहितों को खिला सकें। हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि आप आदरणीय सज्जन आएंगे और भिक्षुओं को भगा देंगे। हम अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों को भी भोजन नहीं दे पाए हैं क्योंकि हमने सारा भोजन आपको ही दे दिया है। यदि आप अभी भी भूखे हैं तो हम... अध्याय 47

थोड़ा और पका लो।
"हाँ," सुअर ने कहा, "थोड़ा और पकाओ।"
इस बातचीत के बाद भोज में इस्तेमाल की गई मेजें और अन्य सामान समेट दिए गए।

संजांग ने भोजन के लिए मेज़बानों को धन्यवाद देने के लिए झुककर अभिवादन किया और फिर उनसे उनका उपनाम पूछा। उन्होंने उत्तर दिया, "हमारा नाम चेन है।"
"तो तुम मेरे रिश्तेदार हो," संजांग ने अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ते हुए कहा।
"क्या आपका उपनाम भी चेन है?" बूढ़े व्यक्ति ने पूछा।
"जी हां," संजांग ने उत्तर दिया, "भिक्षु बनने से पहले मेरा उपनाम चेन था। क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपने अभी-अभी वह धार्मिक भोज क्यों आयोजित किया था?"
"भाई, आप यह क्यों पूछ रहे हैं, स्वामी जी?" सुअर ने हंसते हुए कहा। "कोई भी आपको बता सकता है कि यह नई फसलों के लिए, या सुरक्षा के लिए, या अंत्येष्टि समारोहों के समापन के लिए दावत रही होगी।"
"नहीं, ऐसा नहीं था," बूढ़े आदमी ने कहा।
"तो फिर यह किसलिए था?" संजांग ने पूछा।
"यह मृत्यु की तैयारी के लिए आयोजित भोज था," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया।
"तुम्हें पता नहीं कि तुम किससे बात कर रहे हो," सुअर हँसते-हँसते लोटपोट हो गया। "हम झूठ से पुल बना सकते हैं। हम छल के बादशाह हैं। हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो। भिक्षु होने के नाते हम छोटी-छोटी दावतों के बारे में सब जानते हैं। छोटी-छोटी दावतें तो केवल परलोक में धन भेजने और मन्नतें पूरी करने के लिए ही होती हैं। यहाँ किसी की मृत्यु नहीं हुई है, तो फिर अंतिम संस्कार की दावत क्यों?"
"यह बेवकूफ अब थोड़ी अक्ल सीख रहा है," बंदर ने मन ही मन हंसते हुए कहा।
"बूढ़े आदमी," उसने ऊँची आवाज़ में कहा, "तुमने जो कहा वह ज़रूर गलत होगा। मृत्यु की तैयारी के लिए दावत कैसे दी जा सकती है?"
इस पर दोनों वृद्धों ने झुककर उत्तर दिया, "और यदि आप धर्मग्रंथ लाने ही जा रहे थे तो मुख्य मार्ग से जाने के बजाय यहाँ क्यों आए?"
बंदर ने उत्तर दिया, “हम मुख्य मार्ग पर थे, लेकिन रास्ते में एक नदी आ गई और हम उसे पार नहीं कर पाए। ढोल और झांझ की आवाज़ सुनकर हम आपके प्रतिष्ठित निवास पर एक रात के लिए आश्रय मांगने आए हैं।”
"नदी के किनारे तुमने क्या देखा?" बूढ़े लोगों में से एक ने पूछा।
"वहाँ बस एक पत्थर की शिला थी जिस पर ऊपर 'स्वर्ग की नदी' और नीचे '250 मील चौड़ी; यहाँ बहुत कम यात्री आए हैं' लिखा था," बंदर ने उत्तर दिया।

“पत्थर की शिला से नदी के किनारे आधे मील से भी कम दूरी पर चमत्कारिक प्रतिक्रिया देने वाले महान राजा का मंदिर है,” बूढ़े व्यक्ति ने कहा। “क्या तुमने उसे नहीं देखा?”

"नहीं," बंदर ने जवाब दिया। "क्या आप बूढ़े सज्जन मुझे बताएँगे कि उसे 'चमत्कारी प्रतिक्रिया' क्यों कहा जाता है?"

दोनों बूढ़े व्यक्ति रोते हुए बोले, "मेरे प्रभु, जहाँ तक महान राजा का सवाल है, अध्याय 47"

क्योंकि उन्होंने हमारे द्वारा निर्मित मंदिर पर प्रतिक्रिया दी;
उनके चमत्कारों से आम लोगों को बहुत मदद मिली।
वह आसपास के खेतों में समय पर बारिश भेजता है;
उनके बादल हमें सूखा पड़ने से बचाने के लिए अपनी नमी प्रदान करते हैं।

“लेकिन अगर वह समय पर बारिश और बादल भेजता है तो वह तुम पर मेहरबान है,” बंदर भाई ने कहा, “तो तुम इतने परेशान और दुखी क्यों हो?” इस पर बूढ़े ने ज़मीन पर पैर पटका, अपनी छाती पीटी और विलाप करते हुए कहा, “गुरुजी, हमारी कृतज्ञता महान है, हमारा क्रोध उससे भी कहीं अधिक है।”

हालांकि वह दयालु है, लेकिन वह खतरनाक भी है।
वह सच्चे और न्यायप्रिय देवताओं में से एक नहीं है।
लड़के-लड़कियों को खाना उसका घिनौना आनंद है।

"क्या उसे लड़के-लड़कियों को खाना पसंद है?" बंदर भाई ने हैरानी से कहा।

"हां," बूढ़े आदमी ने जवाब दिया।

"मुझे लगता है अब तुम्हारे परिवार की बारी है," बंदर ने कहा।

“जी हाँ, इस साल हमारी बारी है,” बूढ़े ने कहा। “यहाँ सौ परिवार रहते हैं। इस जगह को चेन गाँव कहते हैं, और यह टैरीकार्ट राज्य के युआनहुई ज़िले में है। यहाँ हर साल राजा को बलि चढ़ाई जाती है, जिसमें एक लड़का, एक लड़की, सूअर, भेड़, बैल और शराब चढ़ाई जाती है। अगर राजा को बलि मिल जाती है, तो वह सही समय पर हवा और बारिश भेजते हैं; लेकिन अगर बलि नहीं चढ़ाई जाती, तो वे विपत्ति भेजते हैं।”

"तुम्हारे घर में कितने बेटे हैं?" बंदर ने पूछा।

बूढ़े ने अपनी छाती पीटते हुए कहा, "हाय, हाय, बेटों की बात सुनकर हम शर्म से मर जाते हैं। ये मेरा भाई चेन किंग है, जो सत्तावन साल का है। मैं चेन चेंग हूँ और बासठ साल का हूँ। हम दोनों को संतान प्राप्ति में बहुत कठिनाई हुई है। क्योंकि मेरा कोई बेटा नहीं था, इसलिए जब मैं लगभग पचास साल का हुआ, तो मेरे दोस्तों और रिश्तेदारों ने मुझे रखैल रखने के लिए राजी किया। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, इसलिए मैंने रखैल रख ली और हमारी एक बेटी हुई। वह इस साल सात साल की है, और हम उसे 'सोने की पान' कहते हैं।"

"यह तो बहुत ही शानदार नाम है," पिग ने कहा। "लेकिन 'सोने की कड़ाही' क्यों?"

"क्योंकि हमारी कोई संतान नहीं थी, इसलिए हमने पुल बनवाए, सड़कें ठीक करवाईं, मठ और पैगोडा बनवाने में योगदान दिया, दान दिया और भिक्षुओं को भोजन कराया। हमने इन सबका हिसाब रखा, और यहाँ तीन औंस और वहाँ पाँच औंस खर्च करते-करते, बच्ची के जन्म तक कुल मिलाकर तीस पाउंड सोना जमा हो गया। तीस पाउंड सोने की एक कड़ाही के बराबर होता है, इसीलिए इसका नाम यह रखा गया है।"

"बेटों के बारे में क्या?" बंदर ने पूछा।

"मेरे भाई का एक बेटा है जो एक रखैल से हुआ था। वह इस साल छह साल का हो गया है, और हम उसे चेन गुआन कहते हैं - दिया हुआ।"

“तुमने उसे यह नाम क्यों दिया?” बंदर ने पूछा। “हमारे परिवार में हम भगवान गुआन यू की पूजा करते हैं, और हमने उसे गुआन नाम दिया है—क्योंकि भगवान गुआन की मूर्ति से ही हमने प्रार्थना करके यह पुत्र प्राप्त किया था। मेरे भाई और मेरी उम्र मिलाकर 120 वर्ष है, और ये हमारे दो ही बच्चे हैं। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि इस वर्ष बलि चढ़ाने का दायित्व हम पर आएगा, और यह हमारा कर्तव्य है जिससे हम बच नहीं सकते। पिता होने के नाते हम अपने बच्चों से बिछड़ नहीं सकते, इसलिए हमने पुनर्जन्म के लिए यह सेवा, मृत्यु की तैयारी के लिए यह छोटा भोज आयोजित किया।”

यह सुनकर संजांग की आंखों से आंसू बहने लगे और उसने जवाब दिया, "प्राचीन लोगों का यही तात्पर्य था जब उन्होंने कहा था,

पके हुए बेरों से बहुत पहले ही हरे बेर हमेशा गिर जाते हैं;
स्वर्ग की कठोरता संतानहीनों को सबसे अधिक प्रभावित करती है।
यह सुनकर बंदर मुस्कुराया और बोला, "मुझे कुछ और सवाल पूछने दीजिए। बताइए, महोदय, आपके परिवार के पास कितनी संपत्ति है?"
“काफी ज्यादा,” युवा बुजुर्ग ने उत्तर दिया। “लगभग सात सौ एकड़ धान के खेत, एक हजार एकड़ सूखे खेत, अस्सी-नब्बे खेतों में घास, दो-तीन सौ भैंसें और बैल, बीस-तीस गधे और घोड़े, और न जाने कितने सूअर, भेड़ें, मुर्गियां और हंस। हमारे घर में इतना पुराना अनाज जमा है कि हम खा भी नहीं सकते, और इतने कपड़े हैं कि पहन भी नहीं सकते। यही हमारे परिवार की संपत्ति है।”
"यह बहुत दुख की बात है कि तुम अपनी सारी दौलत को लेकर इतने कंजूस हो," बंदर ने कहा।
"आप हम पर कंजूसी का आरोप कैसे लगा सकते हैं?" बूढ़े आदमी ने पूछा।
बंदर ने कहा, "अगर तुम इतने अमीर हो, तो अपने बच्चों की बलि क्यों देते हो? पचास औंस में एक लड़का और सौ औंस में एक लड़की खरीदी जा सकती है। बाकी सारे खर्चों को मिलाकर भी अपने बच्चों को पालने में दो सौ औंस से ज्यादा चांदी नहीं लगनी चाहिए। क्या यह बेहतर नहीं होगा?"
इस पर युवा बूढ़े व्यक्ति ने आंसू बहाते हुए उत्तर दिया, "मेरे स्वामी, आपको यह एहसास नहीं है कि महान राजा चमत्कारिक रूप से उत्तरदायी हैं, और वे अक्सर इस घर में आते हैं।"
"अगर वह यहाँ आता है तो क्या तुमने देखा है कि वह कैसा दिखता है और उसकी लंबाई कितनी है?" भाई बंदर ने पूछा।
“हम उन्हें देखते नहीं हैं,” छोटे बूढ़े ने उत्तर दिया, “हमें बस इतना पता चलता है कि महान राजा आ रहे हैं जब हमें सुगंधित हवा की गंध आती है। तब हम बहुत सारी अगरबत्ती जलाते हैं और हम सब, जवान और बूढ़े, हवा की दिशा में प्रणाम करते हैं। उन्हें हमारे घर की हर छोटी से छोटी बात पता है—यहाँ तक कि हमारे चम्मच और कटोरे भी—और उन्हें हमारी जन्मतिथियाँ भी याद रहती हैं। वे केवल हमारे अपने बेटे और बेटी को ही स्वीकार करते हैं।”
दो-तीन सौ औंस चांदी की तो बात ही छोड़िए: हम दसियों हजार औंस चांदी में भी बिल्कुल एक ही उम्र के, दिखने में हूबहू एक जैसे बच्चे नहीं खरीद सकते।

“तो बात ऐसी है,” बंदर ने कहा। “ठीक है, अपने बेटे को बाहर लाओ ताकि मैं उसे देख सकूँ।” चेन किंग जल्दी से घर के अंदरूनी हिस्से में गया, गुआन-गिवेन को अपने साथ वापस हॉल में लाया और लड़के को दीपक के सामने बिठा दिया। अपने ऊपर मंडरा रहे खतरे को न समझते हुए, छोटा लड़का उछल-कूद करने लगा, अपनी आस्तीनों में फल भरने लगा, खाने लगा और खेलने लगा। बंदर ने उसे देखा, मन ही मन एक मंत्र पढ़ा, खुद को झटका दिया और खुद को गुआन-गिवेन जैसा बना लिया। फिर दोनों लड़के दीपक के सामने उछलने-कूदने और नाचने लगे, जिससे दोनों बूढ़े इतने चौंक गए कि घुटनों के बल गिर पड़े।
"आदरणीय महोदय, उसने जो किया वह बहुत ही भयानक बात थी," संजांग ने कहा।
“लेकिन अभी कुछ देर पहले तो ये सज्जन हमसे बात कर रहे थे,” बूढ़े ने कहा। “ये मेरे बेटे की हूबहू शक्ल कैसे बन गए? जब आप इन्हें बुलाते हैं तो ये जवाब देते हैं और साथ-साथ चलने लगते हैं। इस सदमे ने हमारी उम्र कम कर दी है। कृपया अपने सामान्य रूप में लौट आइए!” बंदर ने अपना चेहरा रगड़ा और फिर से पहले जैसा हो गया। “हे स्वामी, आपके पास कितनी अद्भुत शक्तियाँ हैं,” बूढ़े ने घुटनों के बल बैठे हुए कहा।
"क्या मैं तुम्हारा बेटा था?" बंदर ने पूछा।
"हाँ, बिलकुल उसी की तरह," बूढ़े आदमी ने जवाब दिया। "एक जैसा चेहरा, एक जैसी आवाज़, एक जैसे कपड़े, एक जैसी कद-काठी।"
"तुमने ठीक से नहीं देखा," बंदर ने कहा। "तराजू लाओ और मेरा वजन करके देखो कि क्या मेरा वजन उसके बराबर है।"
"हां, हां, वजन उतना ही है," बूढ़े आदमी ने कहा।
"क्या मैं इस तरह के बलिदान के लिए तैयार हूँ?" बंदर ने पूछा।
"बिल्कुल सही," बूढ़े आदमी ने कहा, "बिल्कुल सही। तुम्हें स्वीकार कर लिया जाएगा।"
"मैं उस बच्चे का स्थान ले लूंगा और उसे आपके परिवार के लिए जीवित रखूंगा ताकि उनके वंशज आपको धूप जला सकें।"

बंदर ने कहा, "मैं महान राजा को अर्पित किया जाऊँगा।" यह सुनकर चेन किंग ने घुटने टेकते हुए प्रणाम किया और कहा, "हे प्रभु, यदि आप अपनी दया से उनका स्थान ग्रहण कर लें, तो मैं आदरणीय तांग पुजारी को पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा के खर्च के लिए एक हजार औंस चांदी भेंट करूँगा।"

"क्या तुम मुझे इनाम नहीं दोगे?" बंदर ने पूछा।

"लेकिन अगर लड़के की जगह तुम्हारी बलि दी गई तो तुम्हारा अंत हो जाएगा," बूढ़े आदमी ने कहा।

"तुम्हारा क्या मतलब है?" बंदर ने पूछा।

"महान राजा तुम्हें खा जाएगा," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया।

"क्या वो मुझे खाने की हिम्मत करेगा?" बंदर ने कहा।

बूढ़े आदमी ने कहा, "वह तुम्हें तभी नहीं खाएगा जब उसे लगेगा कि तुम्हारा स्वाद बहुत ही तीखा है।"

बंदर ने कहा, "स्वर्ग को जो करना है करने दो। अगर मुझे खा लिया गया तो यह मेरी नश्वर नियति के कारण होगा; और अगर मुझे नहीं खाया गया तो यह मेरी किस्मत के कारण होगा। मुझे बलि के लिए ले चलो।"

चेन किंग ने प्रणाम किया, धन्यवाद व्यक्त किया और उन्हें पाँच सौ औंस चाँदी भेंट की, जबकि चेन चेंग ने न तो प्रणाम किया और न ही बंदर को धन्यवाद दिया, बल्कि दरवाजे से टेक लगाकर रोने लगा। जैसे ही बंदर भाई ने यह देखा, वह उसके पास गया, उसके कपड़े पकड़े और बोला, "बूढ़े, क्या तुम अपनी बेटी को खोने का दर्द सहन नहीं कर पा रहे हो, इसलिए मुझे कुछ नहीं दे रहे और न ही धन्यवाद दे रहे हो?"

तभी चेन चेंग घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "हाँ, मैं उसे खोने का दर्द सहन नहीं कर सकता। इतना ही काफी है कि आप अपनी इस महान कृपा से मेरे भतीजे की जान बचा रहे हैं। लेकिन मेरा कोई बेटा नहीं है। वह मेरी इकलौती संतान है और मेरी मृत्यु के बाद वह मेरे लिए बहुत रोएगी। मैं उसे खोने का दर्द सहन नहीं कर सकता।"

"तो बेहतर होगा कि आप तुरंत जाएं और उस लंबे थूथन वाले आदरणीय सज्जन के लिए पांच बुशेल चावल और कुछ अच्छे शाकाहारी व्यंजन पका लें। फिर मैं उन्हें

आपकी बेटी के समान रूप दे दूंगा और हम दोनों बलिदान में भाग ले सकेंगे। हम देखेंगे कि क्या हम कोई पुण्य कर्म कर सकते हैं और आपके बच्चों की जान बचा सकते हैं।"

ये शब्द पिग के लिए बहुत बड़ा झटका थे, जिसने कहा, "भाई, अगर तुम खुद को आत्मा में बदल लेते हो और मुझे मरने के लिए छोड़ देते हो, तो तुम मुझे विपत्ति में घसीट रहे होगे।"

“भाई,” बंदर ने कहा, “जैसा कि कहावत है, मुर्गी बिना मेहनत के कुछ नहीं खाती। हम यहाँ आए और हमें भरपेट खाना मिला, लेकिन तुम्हें भूख की शिकायत करनी थी। संकट की इस घड़ी में तुम उनकी मदद करने को तैयार क्यों नहीं हो?”

"लेकिन भाई," पिग ने विरोध करते हुए कहा, "मैं रूपांतरण नहीं कर सकता।"

बंदर ने कहा, "तुम छत्तीस रूपांतरण कर सकते हो। भला तुम इसे कैसे नकार सकते हो?"

"वुनेन्ग," संज़ंग ने पिग से कहा, "तुम्हारे भाई की बात बिलकुल सही है, और उसने सही फैसला लिया है। कहावत है कि सात मंजिला पैगोडा बनाने से बेहतर है किसी इंसान की जान बचाना। अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम हमारे मेज़बानों के उदार आतिथ्य के लिए उनका आभार व्यक्त करोगे और अपने लिए अच्छे कर्म अर्जित करोगे।"

इसके अलावा, इस ठंडी रात में जब आपके पास करने के लिए और कुछ नहीं है, तो यह आपके और आपके भाई के लिए मजेदार भी होगा।"

"आप क्या कह रहे हैं, मालिक?" सुअर ने कहा। "मैं तो बस पहाड़ी, पेड़, पत्थर, खुरदरे हाथी, भैंस या मोटे-ताज़े आदमी में ही बदल सकता हूँ। मेरे लिए छोटी बच्ची में बदलना बहुत मुश्किल होगा।"

"उस पर ध्यान मत दो," बंदर ने चेन चेंग से कहा, "लेकिन अपनी बेटी को बाहर लाओ ताकि मैं उसे देख सकूं।"

चेन चेंग जल्दी से अंदर गया और सोने की थाली को गोद में लिए हुए हॉल में वापस आया; और घर के सभी लोग, जवान और बूढ़े, पत्नियाँ और रखैलें, परिवार के सदस्य और अन्य रिश्तेदार, सभी बंदर से बच्चे की जान बचाने की विनती करने के लिए अंदर आए। छोटी बच्ची के बालों में नीले रंग का डिज़ाइनदार हेडबैंड था, जिस पर आठ कीमती चीजों के प्रतीक आभूषण लटके हुए थे। उसकी जैकेट लाल और पीले रंग के

रेमी ऊन की थी, और उसके ऊपर हरे रंग के शाही साटन का चेकदार कॉलर वाला चोला था। उसकी स्कर्ट लाल रंग के फूलों वाले रेशम की थी, उसके जूते गुलाबी रेमी ऊन के थे और मेंढक के सिर के आकार के थे, और उसकी पतलून कच्चे रेशम की थी जिस पर सोने के धागे लगे थे। वह हाथ में एक फल पकड़े हुए उसे खा रही थी।

"वो रही वो लड़की," बंदर ने कहा। "तुरंत उसके जैसी बन जाओ। हम बलि के लिए चल रहे हैं।"

"लेकिन वह मेरे लिए बहुत छोटी और नाजुक है, इसलिए मैं उसमें नहीं बदल सकता, भाई," पिग ने कहा।

"जल्दी करो, नहीं तो मैं तुम्हें मारूंगा," बंदर ने कहा।

"मुझे मत मारो," सुअर ने हताशा में विनती की। "मैं देखता हूँ कि क्या मैं बदलाव ला सकता हूँ।"

फिर उस मूर्ख ने मंत्र पढ़ा, अपना सिर कई बार हिलाया, "बदलो!" कहा और सचमुच अपना सिर उस छोटी बच्ची के सिर जैसा बना लिया। बस एक ही दिक्कत थी कि उसका पेट अब भी बहुत मोटा और बेमेल था।

"थोड़ा और बदलो," बंदर ने हंसते हुए कहा।

अध्याय 47

662

पश्चिम की यात्रा

"तो फिर मुझे मारो," सुअर ने कहा। "मैं अब और नहीं बदल सकता, बस यही बात है।"

"लेकिन एक साधु के शरीर पर एक छोटी बच्ची का सिर नहीं हो सकता," बंदर ने कहा। "तुम ऐसा बिल्कुल नहीं करोगे—तुम न तो पुरुष हो और न ही लड़की। सप्तम के तारों वाले कदम उठाओ।" फिर बंदर ने उस पर जादुई साँस फूंकी और सचमुच उसका शरीर बदलकर उस छोटी बच्ची के शरीर जैसा हो गया।

“आप दोनों बूढ़े सज्जन कृपया छोटे मालिक और युवती को अंदर ले जाइए और इस बात का कोई भ्रम मत होने दीजिए कि वे कौन हैं,” बंदर ने कहा। “मैं और मेरा भाई राक्षस से बचने और मस्ती करने की कोशिश करेंगे, और हम शायद यहाँ अंदर आ जाएँगे, ताकि असली बच्चों से हमें पहचानना मुश्किल हो जाए। उनके लिए कुछ फल तैयार रखिएगा और उन्हें रोने मत देना, कहीं ऐसा न हो कि महान राजा को पता चल

जाए और हमारा राज़ खुल जाए। अब हम चलते हैं यह देखने के लिए कि क्या हम उन्हें बेवकूफ बना सकते हैं।”

तब महान संत ने भिक्षु सैंड को तांग पुजारी की देखभाल करने के लिए कहा, जबकि पिग और उन्होंने चेन गुआन (दान) और सोने के पात्र का रूप धारण कर लिया। जब वे दोनों तैयार हो गए, तो बंदर ने पूछा, "पीड़ितों को कैसे प्रस्तुत किया जाता है? क्या उन्हें एक गठरी में बांधा जाता है, या उनके हाथों को रस्सी से बांधा जाता है? क्या उन्हें भाप में पकाया जाता है या छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता है?"

"भाई," सुअर ने विनती करते हुए कहा, "मुझे नीचा मत दिखाओ। मेरे पास वो जादुई शक्तियां नहीं हैं।"

“हम ऐसा करने की हिम्मत कभी नहीं करेंगे,” बूढ़े लोगों ने कहा। “हम बस इतना चाहेंगे कि आप दोनों सज्जन एक-एक लाल रंग की थाली में बैठें, जिसे मेज पर रखा जाएगा। फिर दो युवक आपको मेजों पर लादकर मंदिर में ले जाएंगे।”

“ठीक है, ठीक है,” बंदर ने कहा। “हमें चखने के लिए ये व्यंजन यहाँ लाओ।” बूढ़े लोगों ने दो लाल थालियाँ मंगवाईं, जिनमें बंदर और सुअर बैठ गए, जबकि चार युवक उन्हें आँगन में कुछ कदम ले गए और फिर उन्हें हॉल में रख दिया। “सुअर,” बंदर ने खुशी से कहा, “इस तरह थालियों में घूमना हमें मठाधीशों की तरह सम्मान की गद्दी पर बैठने जैसा महसूस कराता है।”

"मुझे भोर तक यहां से अंदर-बाहर ले जाए जाने से बिल्कुल भी डर नहीं लगेगा," सुअर ने कहा, "लेकिन मंदिर में ले जाकर खाया जाना कोई मजाक नहीं है।"

"बस मुझे देखते रहो," बंदर भाई ने कहा, "और जब वह मुझे खा जाए तो भाग जाना।"

"तुम्हें कैसे पता चलेगा कि वह पहले किसे खाएगा?" सुअर ने कहा। "अगर वह लड़के को पहले खाएगा तो मैं भाग जाऊंगा; लेकिन अगर वह लड़की को पहले खा ले तो मैं क्या करूंगा?"

इस पर एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "पिछले वर्षों में बलिदानों के दौरान हममें से कुछ साहसी लोग मंदिर के पिछले हिस्से में घुस जाते थे या उन मेजों के नीचे छिप जाते थे जिन पर चढ़ावे चढ़ाए जाते थे। उन्होंने देखा है कि वह पहले लड़के को खाता है और फिर लड़की को।"

"भगवान का शुक्र है," सुअर ने कहा, "भगवान का शुक्र है।"

जब दोनों भाई-शिष्य बातें कर रहे थे, तभी उन्होंने बाहर से घंटों और ढोलों की जोरदार आवाज और जगमगाती रोशनी सुनी, क्योंकि ग्रामीणों ने सामने के द्वार खोल दिए और अंदर घुस आए, चिल्लाते हुए, "लड़के और लड़की को बाहर लाओ।"

इसके बाद चारों युवक बंदर और सुअर को बूढ़े लोगों के रोने-धोने के बीच बाहर ले गए।

यदि आपको नहीं पता कि उनकी जान गई या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 47

663

पश्चिम की यात्रा

अध्याय 48

एक भयानक बर्फीले तूफान ने बर्फ को भंवर में बदल दिया

बुद्ध की पूजा करने की इच्छा रखने वाला भिक्षु बर्फ पर चलता है

कहानी बताती है कि कैसे चेन गाँव के श्रद्धालु शोर मचाते हुए बंदर और सूअर को सूअर का मांस, भेड़ का मांस, गोमांस और शराब के साथ सीधे चमत्कारिक प्रतिफल के मंदिर में ले गए, जहाँ उन्होंने उन सभी को उस छोटे लड़के और लड़की के साथ सबसे प्रमुख स्थान पर स्थापित किया। बंदर ने चारों ओर देखा और पाया कि चढ़ावे की मेजें सुगंधित फूलों और मोमबत्तियों से ढकी हुई थीं। उसके सामने एक पट्टिका थी जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा था, "चमत्कारी प्रतिफल के महान राजा"। वहाँ किसी अन्य देवता की कोई मूर्ति नहीं थी। जब श्रद्धालुओं ने सब कुछ ठीक से स्थापित कर दिया, तो सभी ने प्रणाम किया और यह प्रार्थना की:

"हे महान राजा, इस वर्ष के इस महीने के इस दिन, इस समय, यज्ञ के स्वामी चेन चेंग और विभिन्न आयु वर्ग के सभी अन्य श्रद्धालु वार्षिक परंपरा के अनुसार, राजा के आनंद के लिए बालक चेन गुआन (दान किया गया), स्वर्ण कन्या पैन (सोने की देवी), सूअर का मांस, भेड़ का मांस, गोमांस और शराब अर्पित करने की विनती करते हैं। हम आपसे उचित मात्रा में हवा और बारिश प्रदान करने और हमारी सभी फसलों की अच्छी पैदावार देने की प्रार्थना करते हैं।"

प्रार्थना करने के बाद उन्होंने कागज के घोड़े जलाए और सभी अपने-अपने घर चले गए।

जब वे सब चले गए तो सुअर ने बंदर से कहा, "चलो घर चलते हैं।"
"तुम्हारा घर कहाँ है?" बंदर ने पूछा।
"चलो बूढ़े चेन के घर जाकर थोड़ी देर सो लेते हैं," पिग ने जवाब दिया।
"तुम फिर से बकवास कर रहे हो, बेवकूफ," बंदर ने कहा। "तुमने उनसे वादा किया है और अब तुम्हें उनकी इच्छा पूरी करनी होगी।"
"बेवकूफ तुम हो, मैं नहीं, चाहे तुम हमेशा कुछ भी कहते रहो," सुअर ने जवाब दिया। "क्यों न हम उसे घुमाने ले चलें? क्या तुम सच में ऐसा सोच रहे हो कि हम उनके लिए कुर्बान हो जाएंगे?"
बंदर ने कहा, "जो भी काम शुरू करो, उसे पूरा करो। हम इस मामले को तभी सुलझा पाएंगे जब हम तब तक यहीं रुके रहेंगे जब तक महान राजा आकर हमें खा न जाए। वरना हम उसे आपदाएँ लाने पर मजबूर कर देंगे, जो बहुत भयानक होगा।"
जब वे बातें कर रहे थे, तभी उन्हें बाहर हवा के चलने की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। "यह तो बहुत भयानक है," सुअर ने कहा। "यह हवा कहाँ से आई?"
"चुप रहो, मैं स्थिति संभाल लेता हूँ।" बंदर ने कहा। कुछ ही देर बाद एक दुष्ट प्राणी मंदिर के दरवाजों से अंदर आ गया।
उसे देखो:
सोने का कवच, सोने का हेलमेट, चमकता हुआ;
लाल बादल उसकी कमर पर बंधी जेड रंग की बेल्ट को घेरे हुए हैं।
उसकी आंखें रात के तारों की तरह चमक रही थीं।
उसके दांत आरी के दांतों जैसे दिखते थे।
अध्याय 48
664
पश्चिम की यात्रा
उसके पैरों के नीचे सूर्यास्त के बादल लहरा रहे थे;
चारों ओर फैली धुंध गर्म और सुगंधित थी।
चलते समय ठंडी हवाएं नकारात्मक हवाओं के साथ बह रही थीं;
जिस स्थान पर वह खड़ा था, वहां मृत्यु का गहरा साया छाया हुआ था।
वह एक सम्राट की रक्षा करने वाले अधिकारी की तरह था।
या फिर किसी मठ के द्वार पर विराजमान कोई देवता उसकी रक्षा कर रहा हो।

राक्षस मंदिर के प्रवेश द्वार पर खड़ा होकर पूछने लगा, "इस वर्ष बलि कौन दे रहा है?"
"पूछने के लिए धन्यवाद," बंदर ने उत्तर दिया। "इस वर्ष ग्राम प्रधान चेन चेंग और चेन किंग का परिवार है।" यह उत्तर राक्षस को बहुत अजीब लगा।
"उस लड़के में बहुत हिम्मत है," उसने सोचा, "और वो अच्छी तरह से बात भी करता है। आमतौर पर जब मैं बच्चों से कोई सवाल पूछता हूँ तो वे पहले तो कुछ नहीं बोलते और दूसरी बार तो बुरी तरह डर जाते हैं। मेरे हाथ पकड़ने से पहले ही वे मर चुके होते हैं। तो आज ये लड़का जवाब देने में इतना अच्छा क्यों है?"
उसे पकड़ने के बजाय, राक्षस ने एक और सवाल पूछा: "तुम्हारा नाम क्या है, लड़के?"
"मेरा नाम चेन गुआन है, और उस लड़की का नाम पैन ऑफ गोल्ड है।"
"इस बलिदान की पुरानी प्रथा के अनुसार, मुझे सबसे पहले तुम्हें खाना चाहिए," राक्षस ने कहा।
"मुझे कोई आपत्ति नहीं है," बंदर भाई ने कहा। "आप अपने भोजन का आनंद लें।"
यह सुनकर राक्षस एक बार फिर बंदर को पकड़ने से डर गया, इसलिए उसने दरवाजे को रोक दिया और चिल्लाया, "मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुनूंगा। आमतौर पर मैं पहले लड़के को खाता हूं, लेकिन इस साल मैं लड़की से शुरुआत करूंगा।"
"पुरानी परंपरा का पालन करना ही बेहतर है," सुअर ने घबराते हुए कहा। "परंपरा को मत तोड़ो।"
बिना और कोई चर्चा किए, राक्षस ने सुअर को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन सुअर कूदकर नीचे गिरा, वापस अपने असली रूप में आ गया और अपने रेक से राक्षस के हाथ पर वार किया। राक्षस ने अपना हाथ पीछे खींच लिया और भाग गया। बस एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। सुअर चिल्लाया, "मैंने उसका कवच तोड़ दिया है!"
बंदर, जिसने अपना असली रूप फिर से धारण कर लिया था, ने देखा, उसे बर्फ की थाली के आकार के दो मछली के शल्क दिखाई दिए, और उसने चिल्लाकर कहा, "उसके पीछे जाओ!"
वे दोनों हवा में उछल पड़े, जहाँ निहत्थे होकर दावत में आए राक्षस ने एक बादल से उनसे पूछा, "भिक्षुओं, तुम कहाँ से आए हो, और मुझे धमकाने, मेरी भेंटों को खराब करने और मेरी प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिए यहाँ क्यों आए हो?"
"तुम्हें इस बात का एहसास नहीं है, हे दुष्ट राक्षस," बंदर ने उत्तर दिया, "कि हम पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश के पवित्र पुजारी संज़ंग के शिष्य हैं, जिन्हें उनके सम्राट ने

पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है। हम पिछली रात चेन परिवार के घर पर थे, तभी हमें बताया गया कि एक दुष्ट आत्मा... अध्याय 48

चमत्कारिक प्रतिक्रिया होने का ढोंग करने वाले हर साल एक लड़के और एक लड़की की बलि मांगते हैं। अपनी दया से हमने जीवन बचाने और तुम्हें पकड़ने का फैसला किया है, हे शापित राक्षस। बेहतर होगा कि तुम तुरंत अपना पूरा और सच्चा कबूलनामा कर लो।

तुम यहाँ कब से खुद को 'महान राजा' कह रहे हो, और साल में दो की दर से कितने छोटे लड़कों और लड़कियों को खा चुके हो? मुझे पूरा हिसाब दो और अगर तुम अपनी जान बचाना चाहते हो तो उन्हें मेरे पास वापस ले आओ।" यह सुनकर राक्षस भाग गया, और सूअर ने अपने रेक से उस पर जो वार किया, उससे बच निकला। वह एक तेज हवा में बदल गया और सीधे स्वर्ग की नदी में जा गिरा।

“उसका पीछा करने की कोई ज़रूरत नहीं,” बंदर ने कहा। “मुझे यकीन है कि वह राक्षस नदी का जीव है। हमें कल उसे पकड़ने और स्वामी को नदी पार कराने का कोई तरीका निकालना होगा।” सुअर ने यह सुझाव मान लिया और सीधे मंदिर वापस चला गया, जहाँ से वह सूअर का मांस, भेड़ का मांस और शराब, मेजें समेत, चेन के घर ले आया। तांग पुजारी, साधु सैंड और चेन भाई हॉल में खबर का इंतज़ार कर रहे थे, तभी उन्होंने बंदर और सुअर को अंदर आते और सूअर का मांस, भेड़ का मांस और अन्य सभी चढ़ावे आँगन में रखते देखा।

“वुकॉन्ग, यज्ञ में क्या हुआ?” संजांग ने बंदर से पूछा, जिसने बताया कि कैसे उसने राक्षस को अपनी पहचान बता दी और उसे नदी में खदेड़ दिया। यह देखकर दोनों बूढ़े सज्जन बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने आदेश दिया कि बगल के कमरों की सफाई करके उनमें पलंग बिछाए जाएं। गुरु और उनके शिष्यों को रात बिताने के लिए वहीं आमंत्रित किया गया।

अपनी जान बचाकर नदी में वापस आने के बाद, राक्षस अपने महल में चुपचाप सोच-विचार में डूबा बैठा रहा, जबकि उसके नदी किनारे रहने वाले कबीले के लोगों ने उससे पूछा, "महाराज, आप इस साल इतने उदास क्यों हैं? आमतौर पर जब आप अपनी बलि खाकर वापस आते हैं तो बहुत खुश होते हैं।"

"आम तौर पर मैं बलिदान के बाद तुम्हारे लिए कुछ बचा हुआ भोजन लाता हूँ," राक्षस ने कहा, "लेकिन आज तो मुझे खुद भी खाने को कुछ नहीं मिला। मेरा भाग्य साथ नहीं दे रहा था। मेरा सामना ऐसे शत्रुओं से हुआ जिन्होंने मुझे लगभग मार ही डाला।"
"कौन, महाराज?"
"पूर्व में स्थित महान तांग के एक पवित्र पुजारी के शिष्य, जो बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहे थे, मेरे मंदिर में बैठे थे। उन्होंने अपना रूप बदलकर एक लड़के और एक लड़की का रूप धारण कर लिया था। जब वे वापस अपने असली रूप में आए, तो उन्होंने लगभग मुझे मार ही डाला। मैंने बहुत समय से तांग सान्ज़ांग के बारे में सुना है, जो एक ऐसे पवित्र व्यक्ति हैं जिन्होंने दस जन्मों तक अपने आचरण को शुद्ध किया है: उनके शरीर का एक टुकड़ा भी आपको अमर बना देगा। लेकिन मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि उनके ऐसे शिष्य होंगे। उन्होंने मेरी प्रतिष्ठा धूमिल कर दी है और उनके शिष्यों ने मेरी पूजा करना बंद कर दिया है। काश मैं उस तांग पुजारी को पकड़ पाता, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसा कर पाऊंगा।"
जलीय जीवों के समूह में से, पैटर्न वाले कपड़े पहने एक मादा मंदारिन मछली आगे बढ़ी। वह छोटे-छोटे, आदरपूर्ण कदमों से राक्षस की ओर बढ़ी और बार-बार झुकते हुए बोली, "महाराज, तांग पुजारी को पकड़ने में कोई समस्या नहीं होगी। लेकिन यदि आप उसे पकड़ लेते हैं, तो क्या आप मुझे दावत देंगे?"
"अगर तुम्हारे पास कोई योजना है तो हम मिलकर तांग पुजारी को पकड़ेंगे," राक्षस ने कहा। "मैं तुम्हें अपनी शपथित बहन बना लूंगा और हम मिलकर उसका मांस खाएंगे।"
मंदारिन मछली ने धन्यवाद में सिर झुकाया और फिर कहा, "मैं बहुत समय से जानती हूँ कि महाराज, आपके पास हवा और बारिश लाने या नदियों और समुद्र में उथल-पुथल मचाने की शक्तियाँ हैं। लेकिन क्या आप बर्फबारी करवा सकते हैं?"
"हाँ," राक्षस ने उत्तर दिया। "जैसे तुम बर्फ़बारी करवा सकते हो," मैंडरिन मछली ने आगे कहा, "क्या तुम ठंड पैदा करके बर्फ़ भी बना सकते हो?"
"मैं तो इसमें और भी बेहतर हूँ," राक्षस ने कहा। तब मछली ने खुशी से ताली बजाई और बोली, "तो फिर यह बहुत-बहुत आसान होगा।"
अध्याय 48
666
पश्चिम की यात्रा

"क्या तुम मुझे सफलता का यह बहुत आसान तरीका बताओगे?" राक्षस ने पूछा।
“महाराज, ज़रा भी देर न करें,” मछली ने उत्तर दिया। “अब तीसरा पहर है, लगभग आधी रात हो चुकी है। आपको जादू से एक साथ ठंडी हवा और भारी बर्फ़बारी करानी होगी। स्वर्ग की नदी पूरी तरह जम जानी चाहिए। हममें से जो लोग रूप बदलने में माहिर हैं, वे मनुष्य का रूप धारण करके पीठ पर थैले लिए, छाते और सामान ढोने वाले डंडे लिए और गाड़ियाँ धकेलते हुए रास्ते के अंत में प्रकट होंगे। हम बर्फ़ पर एक अंतहीन धारा की तरह चलते रहेंगे। वह तांग पुजारी शास्त्र लाने के लिए इतना बेचैन है कि जब वह इतने सारे लोगों को चलते हुए देखेगा, तो उसका भी मन करेगा कि वह खुद बर्फ़ पार करे। महाराज, आपको बस इतना करना है कि नदी के बीच में चुपचाप बैठे रहें जब तक कि आपको उसके कदमों की आहट सुनाई न दे, फिर बर्फ़ को तोड़ दें ताकि वह और उसके शिष्य सभी पानी में गिर जाएँ। वे सभी एक साथ पानी में समा जाएँगे।”
"वाह, वाह!" सुझाव से बेहद प्रसन्न होकर राक्षस ने कहा। वह अपने जलमग्न महल को छोड़कर आकाश में चला गया, जहाँ उसने हवाएँ और बर्फ़बारी की और इतनी ठंड पैदा कर दी कि नदी जम गई।
तांग पुरोहित और उनके तीन शिष्य चेन के घर में सो रहे थे। भोर होने से कुछ ही देर पहले उन्हें अपने बिस्तर में बहुत ठंड लगने लगी। सुअर कांप रहा था, उसे नींद नहीं आ रही थी, इसलिए उसने पुकारा, "भाई, बहुत ठंड है।"
बंदर ने कहा, "बेवकूफ, तुम्हें तमीज़ नहीं आती। भिक्षुओं पर गर्मी या सर्दी का कोई असर नहीं पड़ता।"
आपको ठंड से परेशान नहीं होना चाहिए।
"शिष्य," संज़ंग ने कहा, "सचमुच बहुत ठंड है। देखो: दोहरी रजाई भी अब गर्मी नहीं दे रही है।"
आस्तीनों में हाथ डालने पर केवल बर्फ ही मिलती है।
सूखे पत्तों से पाले की पतली-पतली लकीरें उगती हैं।
जमी हुई चीड़ के पेड़ों से जमी हुई घंटियाँ लटक रही हैं।
ठंड इतनी भीषण है कि धरती फट जाती है;
तालाब का पानी एक ठोस पिंड के समान है।
मछुआरे की नाव में कोई बूढ़ा व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा है;

पर्वतीय मंदिर में किसी भी भिक्षु से मुलाकात नहीं होनी चाहिए।
लकड़हारा चाहता है कि वह और अधिक ईंधन इकट्ठा कर सके;
राजकुमार आग में और अधिक कोयला डालने से खुश है।
यात्रियों की दाढ़ी लोहे में बदल जाती है;
कवि का ब्रश सिंघाड़े की तरह सख्त होता है।
अब तो फर की जैकेट भी बहुत पतली लगती है;
अध्याय 48
667
पश्चिम की यात्रा
मार्टन का कोट बहुत हल्का लगता है।
अपने आसन पर बैठा भिक्षु एकदम अकड़ा हुआ है;
कागज के पर्दे के पीछे यात्री डरा हुआ है।
बिस्तर की कई परतों में भी
शरीर सिर से पैर तक कांप उठता है।
गुरु और शिष्य दोनों को नींद नहीं आ रही थी, इसलिए वे उठे और कपड़े पहने। जब उन्होंने बाहर देखने के लिए दरवाजा खोला तो वे आश्चर्यचकित रह गए, चारों ओर सफेद बर्फ ही बर्फ थी। "इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमें इतनी ठंड लग रही थी," बंदर ने कहा, "अगर इतनी भारी बर्फबारी हो रही है।" जब चारों ने देखा तो उन्हें एक शानदार पतझड़ दिखाई दिया: काले बादलों के घने समूह,
ठंडी, उदास धुंध।
घने बादलों के बीच
उत्तर से आने वाली ठंडी हवा जोर-जोर से गरजती है;
ठंडी, उदास धुंध के बीच
भारी हिमपात से जमीन पूरी तरह ढक गई है।
वास्तव में:
छह भुजाओं वाले हिमखंड
ये उड़ते हुए रत्न हैं;
विशाल जंगल में
हर पेड़ पर जेड पत्थर लटके हुए हैं।

पहले आटे की तरह, फिर नमक की तरह।
सफेद तोता अपना सफेद रंग खो देता है।
सारस के पंख अब उतने स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते।
यह हजारों नदियों के जल में वृद्धि करता है।
यह दक्षिणपूर्व के बेर के पेड़ों को भी मात देता है।
मानो जेड के तीन मिलियन ड्रैगन पराजित हो गए हों,
अध्याय 48
668
पश्चिम की यात्रा
आकाश कवच और शल्कों के टुकड़ों से भरा हुआ है।
यहां आपको डोंगगुओ की बिना तलवे वाली सैंडल नहीं मिलेंगी।
वह बिस्तर जहां युआन आन की ठंड से मौत हो गई थी,
वह स्थान जहाँ सुन कांग बर्फ की परावर्तित रोशनी में अध्ययन करता था, वह नाव
जिस पर वांग ज़ियू एक बर्फीली रात में सवार हुआ था,
वांग गोंग का लबादा,
या फिर वह कालीन जिसे सु वू को खाना पड़ा था।
आपको बस गांव के घर ऐसे दिखाई देंगे जैसे चांदी की नक्काशी की गई हो।
तीन हजार मील तक फैली हुई, जेड जैसी चमकती नदी और पहाड़ियाँ।
वाह, कितनी शानदार बर्फ है!
पुल पर विलो की कलियाँ बिखेरते हुए,
कुटिया को नाशपाती के फूलों से ढक दिया गया।
जब पुल पर विलो के फूल बिखरे होते हैं,
उसके बगल में खड़ा मछुआरा भूसे से बना अपना लबादा पहन लेता है;
जब कुटिया नाशपाती के फूलों से ढकी हो
अंदर बैठा बूढ़ा आदमी दूसरों से लकड़ियां मांगकर जलावन का सामान खरीदता है।
यात्री को पेय खरीदने में काफी कठिनाई हो रही है;
गुलाम को वह बेर का फूल नहीं मिल पा रहा है जिसके लिए उसे भेजा गया था।
भारी बर्फबारी से तितली के पंख उड़ जाते हैं।
भयंकर बर्फीले तूफान ने हंस के पंख नोच डाले।

हवाओं के कारण बर्फ के बड़े-बड़े टीले उड़ते रहते हैं;
परत दर परत सड़क को छुपा देती है।
ठंडी हवा के झोंके पर्दों से होकर अंदर आते हैं।
ठंडी हवा बिस्तर में प्रवेश करती है।
यह स्वर्ग का अच्छी फसल का वादा है।
यह एक खुशखबरी है, जो जश्न मनाने का कारण है।
अध्याय 48
669
पश्चिम की यात्रा
बर्फ ऐसे बरस रही थी मानो जेड के टुकड़े या रुई के फाहे हों। जब गुरु और शिष्यों ने बर्फ को निहारते हुए काफी देर तक आहें भरीं, तो बूढ़े चेन भाइयों ने दो नौकरों को बर्फ में रास्ता बनाने का आदेश दिया और दो अन्य को भिक्षुओं के लिए गर्म पानी लाने को कहा ताकि वे अपना चेहरा धो सकें। थोड़ी देर बाद उबलती हुई गर्म चाय, चीज़केक और कोयले का चूल्हा बगल वाले कमरे में लाए गए, जहाँ गुरु और शिष्य उनके चारों ओर बैठ गए।
तांग पुरोहित ने पूछा, "आदरणीय उपकारक, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि क्या आप यहाँ वर्ष की ऋतुओं के बीच अंतर कर सकते हैं?"
"यह एक दूरस्थ स्थान हो सकता है," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "और हमारे रीति-रिवाज और लोग आपके प्रतिष्ठित देश से भिन्न हो सकते हैं, लेकिन हमारी फसलें और जानवर एक ही आकाश के नीचे उगते हैं, इसलिए स्वाभाविक रूप से हम चारों मौसमों में अंतर करते हैं।"
"तो फिर आज इतनी भारी बर्फबारी क्यों हो रही है और इतनी ठंड क्यों है?" संजांग ने पूछा।
"हालांकि अगस्त का महीना चल रहा है," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, "कल रात पड़ी ठंड ने सितंबर की शुरुआत का संकेत दे दिया।"
यहां सितंबर में आमतौर पर पाला और बर्फ पड़ती है।
"यह पूर्वी हिस्से से अलग है," संजांग ने कहा। "हमारे यहां सर्दियों में पाला और बर्फ पड़ती है।"
जब वे बातें कर रहे थे तभी नौकर मेज लेकर आए और उन्हें दलिया खाने के लिए

आमंत्रित किया। जब तक उन्होंने खाना खत्म किया, बर्फ पहले से कहीं ज्यादा भारी हो गई थी और देखते ही देखते दो फुट गहरी जम गई। संजांग चिंता से रोने लगी।
"चिंता मत कीजिए," बूढ़े श्री चेन ने कहा, "और बर्फ की वजह से परेशान मत होइए। हमारे पास यहाँ पर्याप्त अनाज है, इतना कि आप जैसे आदरणीय सज्जनों का आधा जीवन आराम से कट जाएगा।"
“हे उपकारी, आप नहीं जानते कि मैं क्यों कष्ट भोग रहा हूँ,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “वर्षों पूर्व जब तांग सम्राट ने कृपापूर्वक मुझे यह यात्रा करने का आदेश दिया और स्वयं रथ में बिठाकर सीमा दर्रे तक ले गए, तो उन्होंने अपने हाथों से मुझे विदाई भोज दिया और पूछा कि मैं कब लौटूँगा। मुझे यह आभास नहीं था कि मेरे मार्ग में कितने कठिन पर्वत और नदियाँ होंगी, इसलिए मैंने यूँ ही उत्तर दे दिया कि मैं तीन वर्षों में शास्त्रों के साथ लौट आऊँगा। अब सात-आठ वर्ष बीत चुके हैं और मुझे अभी तक बुद्ध के दर्शन का अवसर नहीं मिला है। मुझे चिंता है कि मैंने सम्राट द्वारा निर्धारित समय सीमा पार कर ली है और आगे आने वाले दुष्ट राक्षसों और अन्य क्रूर प्राणियों से भयभीत हूँ। आज मुझे आपके भव्य महल में ठहरने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और कल रात मेरे शिष्यों ने आपका एक छोटा सा उपकार करके आपको धन्यवाद दिया। मैं नदी पार करने के लिए नाव माँगने की सोच रहा था, मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि आकाश से इतनी भारी बर्फबारी होगी। अब सड़कें अवरुद्ध हैं और मुझे नहीं पता कि मैं कब अपना मिशन पूरा करके घर लौट पाऊँगा।”
“चिंता मत कीजिए, महाराज,” बूढ़े श्री चेन ने कहा। “आपकी यात्रा का अधिकांश समय बीत चुका है। आपको यहाँ केवल कुछ दिनों तक आसमान साफ होने और बर्फ पिघलने का इंतजार करना होगा, फिर हम आपको नदी पार कराने के लिए अपनी सारी जमा पूंजी लगा देंगे।”
फिर एक नौकर उन्हें नाश्ते के लिए आमंत्रित करने आया, जिसे उन्होंने मुख्य हॉल में खाया, और कुछ ही देर बाद दोपहर का भोजन किया। संजांग इस भव्य आतिथ्य सत्कार से थोड़ा असहज महसूस कर रहा था, इसलिए उसने बार-बार कहा, "चूंकि आप हम पर इतनी कृपा कर रहे हैं कि हमें ठहरने दे रहे हैं, इसलिए हमें साधारण भोजन करने पर जोर देना चाहिए।"
श्री चेन ने उत्तर दिया, "आदरणीय महोदय, बच्चों को बलिदान से बचाने के लिए हम आपके इतने आभारी हैं कि अगर हम आपको हर दिन भोज भी दें तो भी हम आपका

पर्याप्त धन्यवाद नहीं कर पाएंगे।"
अध्याय 48
670
पश्चिम की यात्रा
इसके बाद बर्फबारी रुक गई और लोग इधर-उधर घूमने लगे। सान्ज़ांग को इतना दुखी देखकर बूढ़े श्रीमान...
चेन ने बगीचे की सफाई करवाई और अंगीठी में आग जलाई, फिर उन्हें बर्फ की गुफा में आमंत्रित किया ताकि वे बर्फ के नजारे का आनंद लेकर अपना मन बहला सकें।
"कितना बेवकूफी भरा विचार है," सुअर हँसते हुए बोला। "वसंत का मौसम बगीचों का आनंद लेने का समय होता है। इस बर्फ में बहुत ठंड है, और वैसे भी अब देखने लायक कुछ नहीं है।"
"तुम्हें कुछ नहीं पता, बेवकूफ," बंदर ने कहा। "बर्फ से ढके परिदृश्य बहुत शांत और सुंदर होते हैं। उन्हें देखना सुखद होगा और इससे मालिक को भी अच्छा लगेगा।"
“जी हां, जी हां,” बूढ़े श्री चेन ने कहा। फिर आगंतुकों को बगीचे में ले जाया गया और उन्होंने यह नजारा देखा:
हालांकि यह शरद ऋतु थी
वहां का नजारा सर्दियों का था।
सफेद चीड़ के पेड़ पर हरे रंग के पुंकेसर बने।
मुरझाते विलो पेड़ से चांदी जैसे फूल लटक रहे थे।
सीढ़ियों के किनारे लाइकेन पर पाउडर का ढेर लगा दिया गया था।
खिड़की के पास लगे बांस से रत्नजड़ित अंकुर फूट निकले।
ऊबड़-खाबड़ पर्वतीय चोटियाँ,
मछली का तालाब।
ऊबड़-खाबड़ पर्वतीय चोटियों पर
नुकीली और धारदार चोटियाँ जेड बांस की तरह थीं।
मछली के तालाब में
स्वच्छ और जीवंत जल अब बर्फ बन चुका था।
नदी के किनारे खिले कमल की सुंदरता लुप्त हो गई थी;
शेरोन के नाजुक पत्तों वाला गुलाब नीचे की ओर झुका हुआ था।

शरद ऋतु बेगोनिया
वह पूरी तरह से बोझिल था;
सर्दियों का बेर
अभी-अभी नई वृद्धि हो रही थी।
अध्याय 48
671
पश्चिम की यात्रा
पियोनी पवेलियन,
अनार मंडप,
ओसमैन्थस पैवेलियन,
सभी हंस के पंखों से गहराई तक ढके हुए;
चिंताओं को भूलने की जगह,
आगंतुकों के मनोरंजन का स्थान,
मनोरंजन स्थल
सब कुछ ऐसा ढका हुआ था मानो तितलियों के पंख हों।
बाड़ के किनारे खिले पीले गुलदाउदी के फूल जेड और सोने से बुने हुए प्रतीत होते थे;
कुछ मेपल के पेड़ सफेद और लाल धब्बों से सजे हुए थे।
कई आंगन इतने ठंडे थे कि उनमें प्रवेश करना असंभव था:
बर्फ की गुफा को देखकर ऐसा लगता था मानो कोई बर्फ का टुकड़ा हो।
यहां पीतल का एक अंगीठी रखा हुआ था।
जानवरों के सिर और हाथियों के पैरों के साथ,
जहां कोयले की तेज आग जल रही थी,
और कुछ वार्निश की हुई आर्मचेयर
बाघ की खाल के गद्दों के साथ
और चारों ओर गर्माहट के लिए कागज की स्क्रीन लगाई गई थीं।
दीवारों पर प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा बनाई गई प्राचीन पेंटिंग टंगी हुई थीं, जिनमें दिखाया गया था: सात वीर पुरुष दर्रे से बाहर जा रहे हैं।
एक ठंडी नदी पर अकेला मछुआरा,
बर्फ से ढकी चोटियों और पहाड़ों के बीचोंबीच।

सु वू अपना कालीन खा रहा है,
दूतों से मिलने के लिए बेर की शाखाएँ तोड़ते हुए,
अध्याय 48
672
पश्चिम की यात्रा
और जमे हुए जंगल की ठंड में लिखना।
इसका कोई अंत नहीं था।
नदी के किनारे बने मंडप के पास स्थित घर जहाँ मछली खरीदी जा सकती है।
बर्फ से ढके पहाड़ी रास्ते जहां शराब नहीं बिकती।
अगर यह रहने लायक काफी बड़ा होता
जादुई पेंघु जाने की किसे जरूरत होगी?
काफी देर तक नजारे का आनंद लेने के बाद वे बर्फ की गुफा में बैठ गए और अपने बुजुर्ग पड़ोसियों को धर्मग्रंथ लाने के अपने मिशन के बारे में बताया। सुगंधित चाय पीने के बाद बूढ़े श्री चेन ने कहा,
"आदरणीय महोदय, क्या मैं आपको थोड़ी शराब भेंट कर सकता हूँ?"
"एक भिक्षु होने के नाते मैं शराब नहीं पीता," संजांग ने उत्तर दिया, "लेकिन मेरे शिष्य कुछ प्याले पी सकते हैं।" बूढ़ा व्यक्ति प्रसन्न हुआ।
“शाकाहारी भोजन लाओ,” उन्होंने आदेश दिया, “और इन सज्जनों को ठंड से बचाने के लिए थोड़ी शराब गर्म करो।” फिर नौकरों ने अंगीठी के चारों ओर मेजें लगा दीं। उन सभी ने अपने दोनों बुजुर्ग पड़ोसियों के साथ कई कप शराब पी, फिर सब कुछ समेट दिया गया।
अब काफी रात हो चुकी थी, और आगंतुकों को शाम के भोजन के लिए वापस हॉल में आमंत्रित किया गया। वे सड़क पर राहगीरों को यह कहते हुए सुन सकते थे, "ओह! आज तो बहुत ठंड है। स्वर्ग की नदी जम सी गई है।"
"यह तो बहुत बुरा हुआ," संजांग ने भाई बंदर से कहा। "नदी जम गई है।"
“ऐसी अचानक ठंड में मुझे लगता है कि केवल किनारे के पास का उथला पानी ही जम सकता है,” बूढ़े श्री चेन ने कहा। तभी एक और राहगीर ने कहा, “पूरा 250 मील का किनारा शीशे की तरह चिकना जम गया है, और कुछ लोग सड़क के अंत से आगे बढ़ रहे हैं।” लोगों को चलते हुए सुनकर संजांग बाहर जाकर देखना चाहता था।

“इतनी जल्दी मत कीजिए, आदरणीय महोदय,” बूढ़े श्री चेन ने कहा। “अभी बहुत देर हो चुकी है। सुबह तक रुकिए।” फिर उन्होंने दोनों बुजुर्ग पड़ोसियों को अलविदा कहा, और रात के खाने के बाद मेहमान एक बार फिर बगल वाले कमरे में सो गए।

भोर होते ही सुअर उठा और बोला, "भाई, कल रात तो और भी ज़्यादा ठंड थी। मुझे लगता है नदी सचमुच जम गई होगी।" संज़ंग द्वार पर गया, स्वर्ग को प्रणाम किया और प्रार्थना की, "हे सभी देवताओं, जो शिक्षाओं की रक्षा करते हैं, पश्चिम की अपनी यात्रा में मैंने बुद्ध की श्रद्धापूर्वक उपासना की है और अनेक नदियों और पर्वतों को बड़ी कठिनाइयों के साथ पार किया है, और कभी कोई शिकायत नहीं की। मैं स्वर्ग का बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे यहाँ तक पहुँचाया, और मैं नदी के जम जाने के लिए भी अत्यंत कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। जब मैं शास्त्रों को वापस लाऊँगा, तो मैं यह सब तांग सम्राट को बताऊँगा और आपको हार्दिक पुरस्कार दूँगा।" प्रार्थना समाप्त करने के बाद उसने भिक्षु सैंड से घोड़े पर काठी कसने को कहा ताकि वे जमी हुई नदी को पार कर सकें। "जल्दी मत कीजिए," बूढ़े श्री चेन ने कहा। "कुछ और दिन यहीं रुकिए, जब तक बर्फ पिघल न जाए, मैं आपके लिए नाव का इंतज़ाम करूँगा।"

"मुझे नहीं पता कि हमें जाना चाहिए या रुकना चाहिए," फ्रायर सैंड ने कहा। "आप लोगों की बातों पर भरोसा नहीं कर सकते, आप केवल वही मान सकते हैं जो आप अपनी आँखों से देखते हैं। मैं घोड़े पर काठी कस देता हूँ और आप खुद जाकर देख सकते हैं।"

“अच्छा सुझाव है,” बूढ़े श्री चेन ने कहा। “नौकरों,” उन्होंने आदेश दिया, “हमारे छह घोड़ों पर काठी कस दो, लेकिन तांग पुजारी के घोड़े पर नहीं।”

फिर छह युवा सेवकों के साथ वे कतार में खड़े होकर नदी के किनारे देखने गए। सचमुच: बर्फ पहाड़ों की तरह जमा हो गई थी।

जब बादल छंट जाते हैं तो सुबह की रोशनी तेज हो जाती है।

बर्फ से ढके दर्रे के ऊपर हजारों शिखर आसमान छूते हैं;

जमी हुई नदियाँ और झीलें बिल्कुल चिकनी होती हैं।

उत्तर से आने वाली ठंडी हवा हड्डियों तक जमा देती है।

फिसलन भरी बर्फ बेहद ठंडी है।
तालाब में मछलियाँ पौधों के पास ही रहती हैं।
जंगली पक्षी खेत की सूखी घास में मंडराते रहते हैं।
सीमावर्ती इलाकों में ठंड से उंगलियां सुन्न हो जाती हैं;
नदी पर नाव चलाने वाला कांपते हुए अपने दांत तोड़ बैठा।
सांपों का पेट फट जाता है।
पक्षियों के पैर टूट जाते हैं:
बर्फ से हजारों फीट ऊंचे पहाड़ बन जाते हैं।
बहती हुई चांदी दस हजार घाटियों में ठहर जाती है;
ठंड नदी का तरल जेड है।
पूर्वी देशों में जमे हुए रेशम के कीड़े उत्पादित होते हैं।
और चूहे उत्तरी बर्फ में अपने बिल बनाते हैं।
वांग जियांग बर्फ पिघलाने के लिए उस पर लेट गया।
और उसने अपनी माँ के खाने के लिए एक कार्प मछली पकड़ी।
जब सम्राट गुआंगवु ने नदी पार की
उसके लिए रातोंरात बर्फ का एक पुल बन गया।
तालाब पर बर्फ की कई परतें हैं।
अध्याय 48

और गहरा तालाब पूरी तरह से जम गया है।
स्वर्ग की विशाल नदी पर अब कोई लहरें नहीं हैं;
चमकती हुई बर्फ सड़क की तरह सख्त होकर फैली हुई है।
जब संज़ंग और उसके साथी नदी के किनारे पहुँचे तो उन्होंने अपने घोड़ों की लगाम रोककर देखा कि सड़क जहाँ नदी के किनारे तक जाती थी, वहाँ से सचमुच लोग निकल रहे थे। संज़ंग ने पूछा, "मददगार?"
"बर्फ के उस पार वे लोग कहाँ जा रहे हैं?"
"नदी के उस पार," बूढ़े श्री चेन ने कहा, "पश्चिमी लियांग का स्त्री-क्षेत्र है। वहाँ के सभी लोग व्यापारी हैं। जो चीज़ इस तरफ सौ रुपये में मिलती है, वह वहाँ दस हज़ार

रुपये की हो सकती है और इसका उल्टा भी सच है। और क्योंकि वहाँ कम खर्च में इतना अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है, इसलिए लोग अपनी जान जोखिम में डालकर वहाँ जाते हैं।"

आम तौर पर वे पांच से लेकर लगभग एक दर्जन लोगों के समूह बनाते हैं और नावों से नदी पार करते हैं, लेकिन अब जब नदी जम गई है तो वे जान जोखिम में डालकर पैदल पार करने को तैयार हैं।

“शोहरत और दौलत ही दुनिया को चलाती हैं,” संज़ंग ने कहा। “वे दौलत के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं, और मेरे शिष्य शोहरत के लिए वफादारी से आदेशों का पालन करते हैं: दोनों में कोई खास फर्क नहीं है।” फिर उन्होंने बंदर से कहा कि वह अपने संरक्षक के घर वापस जाए, सामान पैक करे, और घोड़े पर लगाम और काठी कस दे ताकि बर्फ के स्थिर रहते हुए वे पश्चिम की ओर जा सकें। बंदर हँसते हुए मान गया।

"गुरुजी," फ्रायर सैंड ने कहा, "एक कहावत है, 'हजार दिनों के लिए आपको हजार पाइंट चावल की जरूरत होती है।'"

अब जबकि हम चेन के घर में ठहरे हुए हैं, क्यों न हम कुछ दिन और यहीं रुकें जब तक आसमान साफ न हो जाए और बर्फ पिघल न जाए, फिर नाव से पार जाने का इंतजाम करें? इस तरह जल्दबाजी करने से केवल मुसीबत ही आएगी।

"वुजिंग," सान्ज़ांग ने जवाब दिया, "तुम इतने मूर्ख कैसे हो सकते हो? अगर मार्च का महीना होता और मौसम हर दिन गर्म हो रहा होता तो हम बर्फ पिघलने का इंतज़ार कर सकते थे। लेकिन अब सितंबर है और हर दिन ठंड बढ़ती जा रही है, इसलिए बर्फ पिघलने का इंतज़ार करना बेवकूफी होगी। इससे हमारी यात्रा बहुत देर से शुरू होगी।"

"ये सब बेकार की बातें बंद करो," सुअर अपने घोड़े से कूदते हुए बोला। "मैं पता लगाने जा रहा हूँ कि बर्फ कितनी मोटी है।"

"अरे बेवकूफ," बंदर ने कहा, "तुम पिछली शाम पानी में पत्थर फेंककर उसकी गहराई का अंदाजा लगा सकते थे, लेकिन अब जब बर्फ इतनी मोटी है तो तुम ऐसा कभी नहीं कर सकते।"

"भाई, तुम जो नहीं समझते, वो ये है कि मैं इसे अपने रेक से मार सकता हूँ। अगर मैं इसे तोड़ दूँ, तो ये इतना पतला हो जाएगा कि हम इस पर चल नहीं पाएँगे; लेकिन अगर मैं इसे बिल्कुल भी न हिलाऊँ, तो इससे पता चलेगा कि ये इतना मोटा है कि

हम इसे पार कर सकते हैं।"
"तुम्हारी बात सही है," संज़ंग ने कहा। उस मूर्ख ने अपने कपड़े समेटे, नदी के किनारे तक गया, दोनों हाथों से अपना फावड़ा उठाया और पूरी ताकत से नीचे पटका। एक खोखली सी आवाज़ आई और बर्फ पर नौ सफेद निशान बन गए। उसके हाथ में ज़ोरदार चोट लगी थी।
"हम जा सकते हैं," उस मूर्ख ने मुस्कुराते हुए कहा, "हम जा सकते हैं। यह नीचे तक पूरी तरह से जम गया है।"
यह खबर सुनकर संजांग बहुत खुश हुई और उन सभी को वापस चेन के घर ले गई और उनसे यात्रा की तैयारी करने को कहा।
बार-बार की विनतियों से भी आगंतुकों के रुकने की उम्मीद न देखकर, दोनों वृद्ध पुरुषों ने उन्हें कुछ सूखा पका हुआ अनाज, बन और भाप में पकी रोटी दी। पूरे परिवार ने आदरपूर्वक भिक्षुओं के सामने सिर झुकाया, फिर चांदी और सोने के सिक्कों से भरी एक थाली लेकर उनके सामने घुटने टेक दिए। "हमारे बच्चों की जान बचाने के लिए हम आपके बहुत आभारी हैं और यात्रा के दौरान भोजन के खर्च के लिए यह भेंट करना चाहते हैं।"

संज़ंग ने सिर हिलाया और हाथ हिलाकर इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा, "मैं एक भिक्षु हूँ, और मुझे पैसे की क्या ज़रूरत है? मैं यात्रा में कभी पैसे नहीं जुटा पाऊँगा। हमें खाने के लिए भीख माँगनी पड़ती है। आपने जो भोजन दिया है, वह पर्याप्त होगा।" जब बूढ़े लोगों ने बार-बार उनसे इसे स्वीकार करने की विनती की, तो मंकी ने अपनी उंगलियों के बीच आधा औंस से थोड़ा कम भोजन लिया और संज़ंग को देते हुए कहा,
"गुरुजी, इस भेंट को स्वीकार कीजिए ताकि आप इन दोनों वृद्ध सज्जनों के प्रति कृतघ्न न हों।"
तभी उन्होंने विदा ली। एक बार नदी के किनारे जमी बर्फ पर घोड़े के खुर फिसल गए, जिससे संजांग लगभग गिर ही गया था।
"यह बहुत कठिन है, गुरुजी," फ्रायर सैंड ने कहा।

"रुको," सुअर ने कहा। "बूढ़े श्री चेन से कुछ चावल का भूसा मांगो।"
"किसलिए?" बंदर भाई ने पूछा।
“तुम्हें पता नहीं होगा,” सुअर ने कहा। “अगर घोड़े के खुरों पर भूसा लपेट दो तो वो फिसलेगा नहीं और मालिक गिरेगा नहीं।” जब बूढ़े श्री चेन ने यह बात किनारे से सुनी तो उन्होंने तुरंत किसी को घर से भूसे का गट्ठा लाने के लिए भेजा, फिर उन्होंने संजांग को घोड़े से उतरने के लिए कहा जबकि सुअर ने घोड़े के खुरों पर भूसा लपेटा, जिसके बाद वे बर्फ पर चल पड़े।
जब उन्होंने बूढ़े चेन भाइयों से विदा ली और नदी के किनारे से लगभग एक मील दूर चले गए, तो पिग ने नौ छल्ले वाली मठवासी छड़ी संजांग को सौंप दी।
"गुरुजी," उसने कहा, "सवारी करते समय इस छड़ी को बगल की ओर निकला हुआ रखें।"
"अरे बेवकूफ," बंदर ने कहा, "तुम फिर से कोई गंदी चाल चलने की कोशिश कर रहे हो। तुम्हें तो लाठी उठानी चाहिए, तो फिर तुम उसे मालिक को क्यों दे रहे हो?"
"तुमने कभी बर्फ पर चलकर नहीं देखा," पिग ने कहा, "इसलिए तुम्हें पता नहीं होगा कि वहाँ हमेशा दरारें होती हैं। एक पर पैर रखोगे तो गिर जाओगे। अगर तुम्हारे पास कोई सहारा देने वाला डंडा नहीं है, तो तुम पानी में गिर जाओगे और बाहर निकलने की उतनी ही उम्मीद होगी जितनी कि ढक्कन वाले किसी बड़े बर्तन में होने पर होती है। सुरक्षित रहने के लिए तुम्हारे पास ऐसा कोई सहारा होना ज़रूरी है।"
"इस मूर्ख को बर्फ पर चलने का सालों का अनुभव होगा," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा, और उन्होंने सुअर की सलाह मान ली: आदरणीय गुरु ने अपनी छड़ी एक तरफ पकड़ी, बंदर ने अपनी लोहे की लाठी, साधु सैंड ने अपनी भूत-प्रेत भगाने वाली लाठी और सुअर, जिसने कंधे पर डंडे से सामान लादा हुआ था, ने अपना रेक कमर की ऊंचाई पर एक तरफ पकड़ा। इस प्रकार गुरु और शिष्य बिना किसी चिंता के रात होने तक आगे बढ़ते रहे, जब उन्होंने अपना सूखा राशन खाया। देर न करने की हिम्मत करते हुए, वे बर्फ पर तेजी से आगे बढ़े जो चमक रही थी और अपने सफेद विस्तार पर चंद्रमा और तारों की रोशनी को प्रतिबिंबित कर रही थी। घोड़ा एक पल भी नहीं रुका और न ही गुरु और शिष्यों ने रात भर चलते हुए अपनी आँखें बंद कीं। उन्होंने भोर में कुछ और सूखा राशन खाया और पश्चिम की ओर चल पड़े।
चलते-चलते उन्हें बर्फ के नीचे से एक तेज़ चरमराहट की आवाज़ सुनाई दी, जिससे

सफ़ेद घोड़ा इतना डर गया कि लगभग गिर ही पड़ा। "शिष्यों," संज़ंग ने घबराकर पूछा, "वह कैसी आवाज़ थी?"
"नदी इतनी जम गई है कि धरती कांप रही है," पिग ने कहा। "या शायद नदी बीचोंबीच बिल्कुल नीचे तक जम गई है।" कुछ हद तक आश्वस्त और फिर भी कुछ हद तक भयभीत होकर, संज़ंग ने घोड़े को चाबुक मारकर आगे बढ़ाया और वे चल पड़े।
अध्याय 48
676
पश्चिम की यात्रा
अपने जलमग्न महल में लौटने के बाद से ही वह दुष्ट राक्षस अपनी सारी आत्माओं के साथ बर्फ के नीचे लंबे समय से इंतजार कर रहा था। जैसे ही उसने घोड़े के खुरों की आहट सुनी, उसने अपने जादू से बर्फ को ज़ोरदार आवाज़ के साथ चटका दिया, जिससे बंदर इतना डर गया कि वह हवा में उछल पड़ा। बाकी तीनों और सफेद घोड़ा पानी में डूब गए, जहाँ उस दुष्ट राक्षस ने संज़ांग को पकड़ लिया और उसकी सारी आत्माओं के साथ उसे अपने जलमग्न महल में ले गया।
"मेरी बहन, मैंडरिन मछली, कहाँ है?" उसने तीखे स्वर में चिल्लाया, जिस पर वह आगे आई, प्रणाम किया और बोली, "महाराज, मैं आपकी बहन बनने के योग्य नहीं हूँ।"
“तुम ऐसी बात कैसे कह सकती हो, प्यारी बहन?” राक्षस ने उत्तर दिया। “एक बार बोला गया शब्द वापस नहीं आता। मैंने कहा था कि अगर मैं तुम्हारी योजना के अनुसार तांग पुजारी को पकड़ लूँ, तो मैं तुम्हें अपनी शपथित बहन बना लूँगा। आज तुम्हारी योजना उत्तम सिद्ध हुई है और तांग पुजारी पकड़ा गया है। मैं अपने वचन से पीछे नहीं हट सकता। “बच्चों,” उसने अपने अधीनस्थों को आदेश दिया, “एक मेज लाओ, एक तेज चाकू तेज करो, इस भिक्षु को चीर दो, उसका दिल निकालो, उसकी खाल उतारो और उसके मांस के टुकड़े कर दो। मैं यह भी चाहता हूँ कि जब मैं इसे अपनी बहन के साथ बाँटूँ, तो संगीत बजाया जाए और हम दोनों को अनन्त जीवन प्राप्त हो।”
“महाराज,” उस मंडारिन मछली ने कहा, “अभी उसे मत खाइए। अगर उसके शिष्य उसे ढूंढते हुए यहाँ आए तो वे हंगामा कर सकते हैं। बेहतर होगा कि हम कुछ दिन इंतज़ार करें, जब तक हमें यह पता न चल जाए कि वे दुष्ट लोग उसे ढूंढने नहीं आएंगे,

उसके बाद ही हम उसे काटेंगे। फिर महाराज सम्मान के स्थान पर बैठेंगे और हम, आपके रिश्तेदार, आपके चारों ओर संगीत बजाएंगे, गाएंगे और नाचेंगे और आपकी सेवा करेंगे; और आप आराम से अपनी इच्छा पूरी कर सकेंगे। क्या यह सबसे अच्छा नहीं होगा?" राक्षस ने सुझाव मान लिया और संज़ंग को महल के पीछे एक छह फुट लंबे पत्थर के संदूक में रखवा दिया।

इस बीच, सुअर और साधु सैंड ने नदी में पड़ा सामान बरामद किया, उसे सफेद घोड़े की पीठ पर लादा और लहरों को चीरते हुए तैरते हुए ऊपर आ गए। जब बंदर ने उन्हें ऊपर हवा से देखा तो उसने पूछा,

"गुरु कहाँ है?"

“अब वह तांग पुजारी नहीं है,” पिग ने कहा। “वह डूबा हुआ पुजारी है। वह कहीं नहीं मिल रहा, इसलिए चलो किनारे पर वापस चलते हैं और फिर तय करते हैं कि क्या करना है।” पिग, मार्शल तियान पेंग का मानव अवतार था, जिसने कभी आकाश में स्थित स्वर्गीय नदी पर अस्सी हज़ार नाविकों की कमान संभाली थी, फ्रायर सैंड बहती रेत नदी से आया था, और सफेद घोड़ा पश्चिमी महासागर के ड्रैगन राजा का पोता था, इसलिए वे सभी अच्छे तैराक थे। महान ऋषि ने उन्हें हवा में रास्ता दिखाया और वे जल्द ही पूर्वी तट पर वापस आ गए, जहाँ उन्होंने घोड़े को सुखाया और साफ किया और अपने कपड़े निचोड़े।

फिर बंदर ने अपना बादल उतारा और वे दोनों साथ में चेन परिवार के घर लौट गए, जहाँ एक संदेशवाहक ने पहले ही सूचना दे दी थी कि शास्त्रों को लाने जा रहे चार पूजनीय सज्जनों में से केवल तीन ही लौट रहे हैं। दोनों वृद्ध भाई उनसे मिलने के लिए जल्दी से बाहर गए।

“सज्जनों,” उन्होंने उनके गीले कपड़े देखकर कहा, “हमने आपको और अधिक समय तक रुकने के लिए बहुत समझाने की कोशिश की, और देखिए आपके इनकार का क्या नतीजा निकला। आदरणीय तांग पुजारी कहाँ हैं?”

"वह अब तांग पुजारी नहीं रहे," पिग ने कहा। "वह डूबे हुए पुजारी बन गए हैं।"

"हाय, हाय," बूढ़े भाइयों ने फूट-फूटकर रोते हुए कहा। "हमने कहा था कि बर्फ पिघलने तक इंतजार करो ताकि हम तुम्हें नाव से पार भेज सकें, लेकिन उसने मना कर दिया और अब वह मर गया है।"

“बुजुर्गों,” बंदर ने कहा, “अपने मित्र के लिए परेशान मत होइए। मैं आपको विश्वास

दिलाता हूँ कि स्वामी जी मरेंगे नहीं। मुझे पूरा यकीन है कि चमत्कारिक शक्ति के महान राजा ने उन्हें जादू से पकड़ लिया है। इसलिए चिंता करना छोड़िए, हमारे कपड़े धुलवाकर इस्त्री करवा लीजिए, पासपोर्ट सुखा लीजिए और सफेद घोड़े को चारा खिला दीजिए। मैं और मेरे भाई उस दुष्ट प्राणी को ढूंढ निकालेंगे, स्वामी जी को बचाएंगे और इस दुष्ट राक्षस का खात्मा कर देंगे। फिर वह आपके गाँव को कोई परेशानी नहीं देगा और मुझे उम्मीद है कि आपका भविष्य सुरक्षित और शांतिपूर्ण होगा।" यह सुनकर बूढ़े श्री चेन को बहुत हौसला मिला और उन्होंने शाकाहारी भोजन मंगवाने का आदेश दिया।

अध्याय 48

677

पश्चिम की यात्रा

तीनों भाइयों ने भरपेट भोजन किया, घोड़े और सामान को चेन परिवार के हवाले कर दिया, अपने हथियार तैयार किए और अपने स्वामी को ढूंढने और राक्षस को पकड़ने के लिए जल्दी से निकल पड़े। सचमुच: बर्फ पर चलने से वास्तविक स्वभाव को ठेस पहुंची थी;

सिनबार के बिना वे कैसे पूर्ण हो सकते हैं?

यदि आपको नहीं पता कि उन्होंने तांग पुजारी को कैसे बचाया, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को सुनें।

अध्याय 49

संजांग का सबसे बड़ा दुर्भाग्य नदी में गिर जाना था।

गुआनयिन की मछली की टोकरी ने तांग पुजारी की जान बचाई

कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि बंदर ने बूढ़े चेन भाइयों से विदा ली, सुअर और साधु रेत के साथ नदी के किनारे गए, और उन दोनों से कहा कि वे तय करें कि उनमें से कौन पहले पानी में जाएगा।

"भाई," सुअर ने कहा, "तुम्हें पहले जाना चाहिए; हम दोनों में से किसी के पास भी कोई विशेष शक्तियां नहीं हैं।"

"सच कहूँ तो भाई," बंदर ने जवाब दिया। "पहाड़ी आत्माओं से निपटने में मुझे तुम दोनों की मदद की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं पानी में नहीं रह सकता। अगर मैं नदियों या समुद्रों में जाता हूँ तो मुझे पानी को दूर रखने के लिए हाथ से मंत्र जपना पड़ता है,

या फिर मछली या केकड़े जैसा कुछ बनना पड़ता है। लेकिन हाथ से मंत्र जपते हुए मैं अपने डंडे से ठीक से वार नहीं कर सकता, अपनी शक्तियों का इस्तेमाल नहीं कर सकता, और बुरी आत्माओं को मार नहीं सकता। मैंने तुम दोनों को अंदर जाने के लिए इसलिए कहा क्योंकि मैं लंबे समय से जानता हूँ कि तुम दोनों अच्छे तैराक हो।"

“भाई,” फ्रायर सैंड ने कहा, “मैं चलता हूँ, लेकिन मुझे नहीं पता कि नदी की तलहटी में हमें क्या मिलेगा। मुझे लगता है कि हम सबको चलना चाहिए। तुम खुद को किसी रूप में बदल लो, नहीं तो मैं तुम्हें पानी में से ले जाकर राक्षस का अड्डा ढूँढ़ दूँगा। तुम पहले जाओ और पता लगाओ कि क्या हो रहा है। अगर स्वामी को चोट नहीं लगी है और वह अभी भी वहीं है, तो हम राक्षस पर हमला करने की पूरी कोशिश कर सकते हैं। लेकिन अगर राक्षस ने स्वामी पर जादू किया है और वह डूब गया है या उसे खा लिया गया है, तो ज़्यादा खोजबीन करने का कोई फ़ायदा नहीं होगा; बेहतर होगा कि हम कुछ और काम ढूँढ़ लें।”

“तुम सही कह रहे हो भाई,” बंदर ने कहा। “तुममें से कौन मुझे उठाएगा?”

"सूअर इस सवाल से मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, 'पता ही उस बंदर ने मुझे कितनी बार बेवकूफ बनाया होगा। चूंकि वह तैर नहीं सकता, इसलिए इस बार मैं उसे उठाकर बेवकूफ बनाऊंगा।"

"भाई," उसने हंसते हुए कहा, "मैं तुम्हें उठा लूंगा।" यह समझते हुए कि सुअर कुछ शरारत कर रहा है, बंदर ने उसे उसी के खेल में हराने का फैसला किया और जवाब दिया, "बहुत खूब, तुम फ्रायर सैंड से भी ज्यादा ताकतवर हो।" फिर सुअर ने बंदर को अपनी पीठ पर उठा लिया।

फ्रायर सैंड ने स्वर्ग नदी के जल में से अपने शिष्य भाइयों के लिए रास्ता बनाया। जब वे नदी के तल पर तीस-चालीस मील चल चुके थे, तब उस मूर्ख ने बंदर को पकड़ने की कोशिश की। बंदर ने अपने बालों में से एक बाल खींचकर उसका एक प्रतिरूप बना लिया और उसे सूअर की पीठ पर रख दिया। वहीं उसने अपना असली रूप बदलकर सूअर की जूँ बना लिया जो उस मूर्ख के कान से चिपक गई। चलते-चलते सूअर अचानक लड़खड़ा गया, जिससे बंदर आगे की ओर गिर गया। अब चूंकि वह प्रतिरूप केवल एक बाल ही था, इसलिए वह ऊपर तैरता हुआ गायब हो गया।

"भाई," साधु सैंड ने सुअर से कहा, "तुम क्या कर रहे हो? ठीक से चलने के बजाय तुम कीचड़ में क्यों गिर पड़े हो? और अगर तुम्हें चलना ही है, तो तुमने बंदर को कहाँ छोड़ा है?"
"वह खुद को गिरने से नहीं रोक सका," सुअर ने जवाब दिया, "और वह गायब हो गया है। कोई बात नहीं, वह ज़िंदा है या मर गया। हम दोनों जाकर मालिक को ढूंढेंगे।"
“नहीं,” साधु सैंड ने कहा, “हमें उसकी ज़रूरत है। वह तैरना नहीं जानता, पर हमसे ज़्यादा होशियार है। अगर वह नहीं आएगा तो मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा।” बंदर खुद को और रोक नहीं पाया।
"सूअर!" उसने कान के अंदर से पूरी ताकत से चिल्लाकर कहा। "मैं यहाँ हूँ।"
जब फ्रायर सैंड ने यह सुना तो हंसते हुए बोला, "बस हो गया। अब तो तुम्हारी ही खैर नहीं, बेवकूफ। तुमने उसे बेवकूफ बनाने की कोशिश की, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? अब हम क्या करें? हम उसकी आवाज सुन सकते हैं लेकिन वह गायब हो गया है।"
सुअर कीचड़ में घुटने टेककर बेताब होकर गिड़गिड़ाने लगा और बोला, "मैंने गलती की, भाई, मैंने गलती की। जब हम मालिक को बचा लेंगे, तो मैं किनारे पर तुमसे ठीक से माफी मांगूंगा। तुमने हमसे कहां से बात की? तुमने मुझे बहुत डरा दिया। कृपया, कृपया अपने असली रूप में लौट आओ। मैं तुम्हें उठा लूंगा, और मैं वादा करता हूं कि अब तुम्हें कभी परेशान नहीं करूंगा।"
“तुम मुझे हर समय ढोते रहे हो,” बंदर ने कहा। “मैं तुम्हारे साथ कोई चाल नहीं चलूँगा। अब जल्दी चलो।” वह मूर्ख लड़खड़ाते हुए माफी माँगता हुआ उठा और फ्रायर सैंड के साथ आगे बढ़ गया।
लगभग तीस-चालीस मील चलने के बाद उन्होंने ऊपर देखा तो उन्हें एक ऊँची इमारत दिखाई दी जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा था, "नदी के कछुए का निवास"। "यहीं पर वह राक्षस रहता होगा," फ्रायर सैंड ने कहा। "हम दोनों बिना हालात जाने उसके दरवाजे तक जाकर उसे युद्ध के लिए चुनौती नहीं दे सकते।"
"वुजिंग," भाई बंदर ने साधु रेत से कहा, "क्या दरवाजे के अंदर और बाहर पानी है?"
"नहीं," फ्रायर सैंड ने कहा। "तो फिर तुम दोनों यहीं कहीं छिप जाओ, मैं चारों ओर देख लेता हूँ," मंकी ने कहा।
महान संत सुअर के कान से बाहर निकले, खुद को झटककर लंबी टांगों वाली एक

मादा झींगा में परिवर्तित हो गए और दो-तीन छलांगों में दरवाजे तक पहुँच गए। जब उन्होंने चारों ओर गौर से देखा तो उन्हें दरवाजे के ऊपर एक राक्षस बैठा हुआ दिखाई दिया, जिसके चारों ओर उसका पूरा जलीय समूह इकट्ठा था और उसके बगल में एक मादा मैंडरिन मछली बैठी थी। वे सब मिलकर तांग पुजारी को खाने की योजना बना रहे थे। बंदर ने चारों ओर ध्यान से देखा लेकिन उसे गुरु कहीं दिखाई नहीं दिए। तभी उसने देखा कि एक और मादा झींगा पश्चिम की ओर बरामदे में आकर खड़ी हो गई।
बंदर उछलकर आगे बढ़ा और बोला, "भाभी, वह तांग पुजारी कहाँ है जिसके खाने की बात महाराज और बाकी सब लोग कर रहे हैं?"
"महाराज ने उसे कल तब पकड़ लिया जब उसने इतनी बर्फ और हिम बनाई थी," मादा झींगा ने जवाब दिया। "वह अब महल के पीछे एक पत्थर के संदूक में बंद है। अगर उसके चेले यहाँ आकर हंगामा नहीं मचाते हैं तो हम कल संगीत बजाएंगे और उसका भोज करेंगे।"
यह सुनकर बंदर ने थोड़ी देर और नाटक किया, फिर सीधे महल के पीछे चला गया जहाँ उसे एक पत्थर का संदूक मिला जो किसी सूअर के बाड़े या ताबूत जैसा था। उसने उसे नापा, पाया कि वह छह फुट लंबा था, उस पर लेट गया और सुनने लगा। उसे अंदर से संज़ंग के रोने की आवाज़ सुनाई दी। बंदर ने कुछ नहीं कहा, बस अपना कान ढक्कन से सटाकर ध्यान से सुना, और संज़ंग को दांत पीसते हुए और कराहते हुए कहते हुए सुना,

"काश मेरी किस्मत हमेशा से इतनी बुरी न होती:
मैंने अपने पूरे जीवन में नदियों में होने वाली आपदाओं का सामना किया है।
मेरे जन्म के तुरंत बाद मुझे पानी पर तैरा दिया गया था।
और अब जब मैं डूब चुका हूँ, तो मैं भगवान बुद्ध के दर्शन कभी नहीं करूँगा।
कुछ समय पहले ही ब्लैक रिवर ने मुझे रुला दिया था।
और अब बर्फ के टूटने से मैं गहरे पानी में आ गया हूँ।
मुझे आश्चर्य है कि क्या कभी मेरे अनुयायी आएंगे
ताकि मैं धर्मग्रंथ ला सकूं और अपनी घर वापसी की यात्रा पूरी कर सकूं।"

बंदर खुद को रोक नहीं पाया और उसने गुरु से कहा, "गुरुजी, जल से उत्पन्न विपत्तियों को लेकर इतना परेशान मत होइए। जल विपत्ति के ग्रंथ में लिखा है, 'पृथ्वी पंच तत्वों की जननी है और जल उनका मूल है।'"
बिना मिट्टी के जीवन संभव नहीं है, और बिना पानी के विकास संभव नहीं है। मैं यहाँ हूँ।
"मुझे बचाओ, शिष्य," बंदर की आवाज सुनकर संजांग ने कहा।
"चिंता मत करो," बंदर ने कहा, "मैं वादा करता हूँ कि जब हम राक्षस को पकड़ लेंगे तो हम तुम्हें बचा लेंगे।"
"जल्दी करो," संजांग ने कहा। "अगर मैं यहाँ एक और दिन रहा तो दम घुटकर मर जाऊँगा।"
"कोई बात नहीं," बंदर ने कहा, "कोई बात नहीं। मैं जा रहा हूँ।" वह मुड़ा, मुख्य दरवाज़े से बाहर कूद गया, फिर वापस अपने असली रूप में आ गया और सूअर को पुकारा।
"क्या हो रहा है?" मूर्ख और साधु सैंड ने उसके पास आकर पूछा।
“राक्षस ने उस चाल से गुरु को पकड़ लिया,” बंदर ने उत्तर दिया। “उन्हें कोई चोट नहीं आई है, लेकिन राक्षस ने उन्हें एक पत्थर के संदूक में बंद कर दिया है। तुम दोनों तुरंत राक्षस को युद्ध के लिए चुनौती दो, मैं पानी से बाहर आता हूँ। अगर पकड़ सको तो पकड़ लो, और अगर नहीं पकड़ सको तो हारने का नाटक करो और उसे पानी से बाहर निकालो ताकि मैं उसे मार सकूँ।”
"तुम जाओ भाई, और चिंता मत करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "हम पता लगा लेंगे कि वह राक्षस असल में कैसा है।"
फिर बंदर ने अपने हाथों से पानी को दूर भगाने का मंत्र बनाया, लहरों के बीच से ऊपर उछला और किनारे पर खड़ा होकर इंतजार करने लगा।
देखें कि कैसे सुअर हिंसक मनोदशा में दरवाजों की ओर दौड़ता है और चिल्लाता है, "धिक्कार है राक्षस, हमारे मालिक को वापस दे दो।"
दरवाजे के अंदर मौजूद नन्हे शैतान घबराकर वापस भागे और बोले, "महाराज, बाहर लोग अपने स्वामी के बारे में पूछ रहे हैं।"
“ज़रूर ये वही खूनी साधु होंगे,” राक्षस ने कहा। “जल्दी से मेरे कवच और हथियार लाओ।” छोटे शैतान उन्हें लाने दौड़े, और जब राक्षस ने कवच पहन लिया और अपने

हथियार हाथ में ले लिए, तो उसने दरवाज़े खोलने का आदेश दिया। जैसे ही वह बाहर आया, पिग और फ्रायर सैंड, जो उसके दोनों ओर खड़े थे, उसकी वेशभूषा और साजो-सामान देख सके। वह एक शानदार राक्षस था। ज़रा देखिए: अध्याय 49

उसके सिर पर सोने का एक चमकता हुआ हेलमेट था।
उसके शरीर पर सुनहरे रंग का कवच था जो इंद्रधनुष की आकृति बना रहा था।
उसकी कमरबंद मोतियों और जेड पत्थरों से मोटी परत में जड़ी हुई थी;
उसके पैरों में जो अजीब से जूते थे, वे धुएँ के रंग के पीले चमड़े के बने थे।
उसकी नाक पहाड़ की चोटी जितनी ऊंची थी।
उसका माथा अजगर के माथे की तरह ही भव्य और चौड़ा था।
उसकी आंखें भयंकर और गोल थीं, जिनमें से रोशनी चमक रही थी।
उसके नुकीले, साफ-सुथरे दांत स्टील की कीलों जैसे थे।
उसके छोटे, उलझे हुए बाल मानो आग की लपटों में घिरे हुए थे।
और उसकी लंबी मूंछें सुनहरी कीलों की तरह उभरी हुई थीं।
वह अपने मुंह में एक कोमल सरकंडा चबा रहा था।
वह तांबे की नौ गांठों वाली गदा चला रहा था।
दरवाजे पूरी तरह खुलने पर जो शोर हुआ
यह वसंत ऋतु में गरजने वाली बिजली की गड़गड़ाहट के बराबर था।
नश्वर जगत में ऐसे कुछ ही उदाहरण देखने को मिलते हैं:
महान राजा वास्तव में अपनी उपाधि के पात्र हैं।
दुष्ट आत्मा अपने सौ या उससे अधिक छोटे शैतानों के साथ बाहर आई, जिन्होंने दो टुकड़ियों में खड़े होकर अपनी तलवारें और भाले लहराए। उसने सुअर से पूछा, "तुम कहाँ से आए हो, भिक्षुओं, और यहाँ यह भयानक शोर क्यों मचा रहे हो?"
"तुम पहले तो बच निकले, पर अब मैं तुम्हें पकड़ लूँगी, कमीने राक्षस," सुअर ने चिल्लाते हुए जवाब दिया। "यह दिखावा करना बंद करो कि तुम मुझे नहीं जानते—हमारी पहले ही बहस हो चुकी है। मैं महान तांग वंश के उस पवित्र पुजारी की शिष्या हूँ जो पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध की उपासना करने और शास्त्रों को इकट्ठा करने जा रही है। तुम और तुम्हारी ये छोटी-मोटी चालें, खुद को चमत्कारिक प्रतिक्रिया का महान राजा

कहते हो और चेन गाँव में लड़के-लड़कियों को खाते हो। क्या तुम मुझे पहचान नहीं सकते? मैं चेन परिवार की छोटी बच्ची थी, सोने की पैन।"
"भिक्षु," राक्षस ने कहा, "तुम कलंक हो। अगर तुमने उस लड़की का रूप धारण किया था, तो तुम्हें धोखाधड़ी के लिए दंडित किया जाना चाहिए। तुमने मेरे हाथ के पिछले हिस्से को घायल कर दिया था, हालाँकि मैंने तुम्हें खाया नहीं। मैंने तुम्हें उस समय छोड़ दिया था, तो फिर तुम मुझे ढूँढ़ते हुए मेरे घर के सामने क्यों आए हो?"
अध्याय 49
681
पश्चिम की यात्रा
"मुझे छोड़ने का क्या मतलब है?" सुअर ने कहा। "तुमने ही ये ठंडी हवा और बर्फ़ पैदा की है, नदी को जमा दिया है, और मालिक को मारने जा रहे हो। जैसे ही तुम उसे वापस कर दोगे, सारी परेशानी दूर हो जाएगी, लेकिन अगर तुमने ज़रा भी मना किया तो मेरे इस अय्याश से मार खाओगे, और वो तुम पर ज़रा भी रहम नहीं करेगा।"
इस पर दुष्ट आत्मा ने उपहास भरी हंसी हंसते हुए जवाब दिया। "यह तो बड़ी-बड़ी बातें हैं, साधु," उसने कहा, "परन्तु यह सब बकवास है। सच तो यह है कि ठंड, बर्फ और पाला मैंने ही पैदा किया है और मैंने तुम्हारे स्वामी को पकड़ लिया है। तुम्हें लगता होगा कि यहाँ आकर चिल्लाने से तुम उसे वापस पा लोगे, पर इस बार हालात अलग हैं। पिछली बार मैं निहत्था था क्योंकि मैं एक भोज में जा रहा था, इसीलिए तुमने अचानक मुझ पर हमला किया और मुझे घायल कर दिया। इस बार अगर तुम यहाँ से नहीं भागे तो मैं तुमसे तीन दौर तक लड़ूंगा। अगर तुम मेरा मुकाबला कर सकते हो तो मैं तुम्हें तुम्हारा स्वामी वापस दे दूंगा, पर अगर नहीं तो तुम्हें भी खा जाऊंगा।"
"कितना अच्छा बच्चा है!" सुअर ने कहा। "बिल्कुल यही सुनने की उम्मीद थी। मेरे रेक से सावधान रहना!"
"तो तुम अधेड़ उम्र में ही भिक्षु बने," राक्षस ने कहा।
"तुम्हारे अंदर वाकई अद्भुत प्रतिक्रियाशीलता है, मेरे बच्चे," सुअर ने जवाब दिया। "तुम्हें यह कैसे पता चला?"
"अगर तुम रेक से लड़ते हो तो इसका मतलब है कि तुम पहले किसी सब्जी के बगीचे में मजदूर थे और तुमने इसे चुराया था," राक्षस ने कहा।
"मेरे बच्चे," सुअर ने कहा, "यह खेती का फावड़ा नहीं है। इसे देखो: इसके

शक्तिशाली कांटे अजगर के पंजों जैसे हैं।"
सोने से जड़े हुए सर्पों के आकार के आभूषण।
शत्रु से युद्ध करते समय यह ठंडी हवाएँ उत्पन्न करता है।
जब तक कि लंबी लड़ाई में आग की लपटें न निकलने लगें।
यह पवित्र पुजारी के लिए राक्षसों का नाश करता है।
पश्चिम की यात्रा के दौरान बुरी आत्माओं को वश में करना।
जब यह बादलों को हिलाता है तो सूर्य और चंद्रमा को बाहर निकाल देता है।
सूर्यास्त के रंगों को और भी अधिक चमकीला बनाना।
इससे माउंट ताई को गिराया जा सकता है, जिससे बाघों में दहशत फैल जाएगी।
समुद्रों को उलट-पुलट कर दो, जिससे सभी ड्रैगन सतर्क हो जाएं।
मैं तुम्हारी अपार शक्तियों के कारण तुम्हें बख्श सकता हूँ।
लेकिन अगर मैं तुम्हें रेक से मारूं तो नौ छेद हो जाएंगे।"
अध्याय 49
682
पश्चिम की यात्रा
इस बात पर विश्वास न करते हुए राक्षस ने अपना तांबे का गदा उठाया और सुअर के सिर पर प्रहार किया। सुअर ने अपने रेक से वार को रोका और कहा, "तुम्हें धिक्कार है, तुम तो अधेड़ उम्र में दुष्ट आत्मा बन चुके हो।"
"तुम्हें यह कैसे पता चला?" राक्षस ने पूछा।
"चूंकि तुम गदा से लड़ते हो, मुझे लगता है कि तुमने किसी सुनार के यहाँ भट्टी में काम किया होगा, वह हथौड़ा हासिल किया होगा और उसे चुरा लिया होगा," सुअर ने जवाब दिया।
"यह किसी सुनार का हथौड़ा नहीं है," राक्षस ने कहा। "इसे देखो: इसके नौ घुंडी फूलों की कलियों की तरह हैं।"
सदाबहार पौधे की एक टहनी पर उग रहा है।
यह कभी भी सांसारिक दुनिया की उपज नहीं थी।
क्योंकि यह अमर प्राणियों के उद्यानों से आया था।
इसके हरे और बैंगनी फल जेड पूल के किनारे पकते हैं;
इसकी शुद्ध सुगंध नेफ्राइट तालाब के किनारे उत्पन्न हुई थी।

क्योंकि मैंने लगन और कौशल से काम किया और उसे निखारा।
अब यह स्टील की तरह सख्त और चमत्कारिक रूप से तेज हो गया है।
भाले, तलवारें और भाले इसके योग्य प्रतिद्वंद्वी नहीं हैं;
युद्धप्रिय और पक्षपाती लोग पास आने की हिम्मत न करें।
आपके रेक के कांटे कितने भी तेज क्यों न हों,
अगर वे मेरे हथौड़े को छू लेंगे तो वे मुड़ जाएंगे और टूट जाएंगे।"
उन दोनों के बीच की यह बातचीत फ्रायर सैंड के लिए असहनीय हो गई, और उन्होंने आगे आकर कहा,
"राक्षस, ये सब खोखली बातें बंद करो। जैसा कि कहावत है, करनी कथनी से ज़्यादा मायने रखती है। यहीं रुको और देखो कि तुम्हें मेरे कर्मचारी कैसे लगते हैं।"
उस राक्षस ने अपने गदा से वार को रोका और जवाब दिया, "तुम भी उन लोगों में से एक हो जो अधेड़ उम्र में भिक्षु बन गए।"
"आपको कैसे पता चला?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"तुम्हें देखकर लगता है कि तुम पहले चक्की चलाने वाले रहे होगे," राक्षस ने जवाब दिया।
"आपको ऐसा क्यों लगता है?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"अगर तुम चक्की चलाने वाले नहीं होते तो नूडल बनाने वाले डंडे से क्यों लड़ते?" राक्षस ने पूछा।
अध्याय 49
683
पश्चिम की यात्रा
"अरे दुष्ट प्राणी," फ्रायर सैंड ने कहा, "तुम यह नहीं देख सकते कि दुनिया में इस हथियार के समान हथियार बहुत कम हैं।"
इसीलिए आपको नहीं पता कि मेरी इस छड़ी का नाम क्या है।
यह चंद्रमा के छायाहीन हिस्से में उगा था।
इसे साला वृक्ष के तने से आकार दिया गया था।
इसके चारों ओर जड़े हुए रत्न अनेक रंगों से जगमगाते हैं।
और इसके भीतर जो आशीर्वाद छिपा है, वह ठोस है।
एक समय यह जेड सम्राट के भोजों में उपस्थित हुआ करता था।

अब यह पुजारी को तांग राजवंश से बचाता है।
पश्चिम की ओर जाने वाले इस रास्ते पर यह बिल्कुल अज्ञात है।
लेकिन स्वर्ग के महलों में इसकी प्रसिद्धि बहुत अधिक है।
इसे दानवों को शांत करने वाली अनमोल छड़ी के रूप में जाना जाता है।
और एक ही वार में यह तुम्हारी भौंहों को चूर-चूर कर सकता है।"
दुष्ट आत्मा ने और अधिक बहस की अनुमति नहीं दी और वे तीनों अब कट्टर दुश्मन बन गए। उन्होंने पानी के नीचे एक भयंकर युद्ध लड़ा:
गदा, लाठी और रेक,
वुनेंग और वुजिंग राक्षस के खिलाफ।
उनमें से एक मार्शल तियान पेंग थे जो पृथ्वी पर आए थे।
एक महान सेनापति स्वर्ग से उतरा।
दोनों ने जल राक्षस पर हमला करने में अपनी दक्षता का प्रदर्शन किया।
जिन्होंने स्वर्गिक भिक्षुओं के विरुद्ध जमकर लड़ाई लड़ी।
उन्हें महान मार्ग को पूरा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
एक अंतहीन क्रम में एक दूसरे पर विजय प्राप्त करना।
अध्याय 49
684
पश्चिम की यात्रा
पृथ्वी ने जल को पराजित किया;
जब पानी सूख गया तो नदी का तल दिखाई देने लगा।
जल से लकड़ी का जन्म हुआ।
जब यह पौधा अच्छी तरह से बढ़ रहा था, तब इसमें फूल खिलने लगे।
ध्यान और मेडिटेशन एक ही थे;
सिंदूर का शोधन और रसायन शास्त्र तीनों स्कूलों को सौंपे गए।
पृथ्वी ही माता थी।
धातु के अंकुर उत्पन्न करते हुए,
और धातु से वह तरल पदार्थ निकला जिससे शिशु का जन्म हुआ।
पानी ही जड़ था
इससे लकड़ी के फलने-फूलने में मदद मिली।

जिसकी भव्यता सूर्यास्त की चमक के बराबर थी।
क्योंकि तत्व एक साथ घनी भीड़ में थे
वे सब शत्रुतापूर्ण हो गए और लड़ने लगे।
गदा पर लगे नौ घुंडों की चमक देखिए।
जबकि कर्मचारियों को कई रंगों के रेशमी वस्त्रों से सजाया गया है।
रेक ने सकारात्मक और नकारात्मक दोनों को कुचल दिया।
नौ चमकीले सितारों को विभाजित किया,
और वह बेतरतीब ढंग से उलझकर झूलने लगा।
वे तांग पुजारी को बचाने के लिए मरने को भी तैयार थे।
शाक्यमुनि बुद्ध के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने को तैयार।
वे तांबे के गदा को लगातार बिना रुके चलाते रहे।
लाठी और रेक के वारों को रोकते हुए।
जब तीनों चार घंटे तक पानी के नीचे लड़ते रहे और किसी को भी जीत नहीं मिली, तो पिग को एहसास हुआ कि वे राक्षस को हरा नहीं पाएंगे और उसने फ्रायर सैंड को इशारा किया। हार का नाटक करते हुए, वे दोनों मुड़े और अपने हथियार पीछे छोड़ते हुए भाग गए।
अध्याय 49
685
पश्चिम की यात्रा
"यहाँ डटे रहो, मेरे बच्चों," राक्षस ने अपने साथियों से कहा, "जब तक मैं उन दुष्टों का पीछा करता हूँ।"
जब मैं उन दुष्ट भिक्षुओं को पकड़ लूंगा, तो उन्हें वापस लाकर तुम सबको खिलाऊंगा।" उसे देखो, जैसे ही वह पानी के ऊपर से निकलता है, उन दोनों का पीछा करते हुए, मानो हवा गिरे हुए पत्तों को उड़ा रही हो या बारिश मुरझाए फूलों को गिरा रही हो।
इस बीच बंदर किनारे पर खड़ा होकर स्थिर निगाहों से पानी को देख रहा था। अचानक उसने देखा कि लहरें उथल-पुथल मचा रही हैं और एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ सुअर किनारे पर कूद पड़ा।
उन्होंने कहा, "वह आ रहा है, वह आ रहा है।"

इसके बाद फ्रायर सैंड नदी के किनारे पहुँचकर बोले, "वह आ रहा है, वह आ रहा है।" फिर वह राक्षस उनके पीछे चिल्लाते हुए आया, "तुम कहाँ चले गए?"
जैसे ही उसका सिर नज़र आया, बंदर ने अपने डंडे से वार किया और चिल्लाया, "ले लो!" दुष्ट आत्मा ने बचने के लिए इधर-उधर हाथ घुमाया और फिर अपनी लकड़ी की गदा से वार को रोका। एक तरफ नदी में लहरें उठ रही थीं, वहीं दूसरी तरफ किनारे पर दूसरे ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। लड़ाई के तीन दौर पूरे होने से पहले ही राक्षस, प्रतिरोध जारी रखने में असमर्थ होकर, एक चाल चलाकर पानी में कूद गया, जिसके बाद हवा थम गई और लहरें शांत हो गईं।
"धन्यवाद भाइयों," बंदर ने ऊंचे किनारे पर वापस जाते हुए कहा।
"भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "हो सकता है आपको न लगे कि वह राक्षस किनारे पर कुछ खास कर सकता है, लेकिन पानी के अंदर वह सचमुच आतंक मचाता है। पिग और मैंने मिलकर भी उस पर हमला किया, लेकिन वह अकेले ही उसका मुकाबला कर सकता था। हम उससे कैसे निपटेंगे और मालिक को कैसे बचाएंगे?"
बंदर ने कहा, "हमारे पास समय नहीं है। वह मालिक को मार सकता है।"
"मैं उसे बाहर आने के लिए चाल चलूँगा," सुअर ने कहा। "तुम हवा में इंतज़ार करो और कुछ मत बोलना। जब तुम्हें लगे कि उसका सिर पानी से ऊपर आ गया है, तो उल्टा होकर उसके माथे पर ज़ोर से मारो। भले ही इससे उसकी जान न जाए, लेकिन उसके सिर में दर्द होगा और वह बेहोश हो जाएगा। जब मैं उसे अपने रेक से मारूँगा, तब उसका हिसाब चुकता हो जाएगा।"
"अच्छा विचार है," बंदर ने कहा, "अच्छा विचार है। इसे ही समन्वित हमला कहते हैं, और यह कारगर साबित होगा।"
वे दोनों वापस पानी में चले गए।
दुष्ट राक्षस पराजित होकर अपने महल में भाग गया, जहाँ अन्य राक्षसों ने उसका स्वागत किया और मंदारिन मछली ने पूछा, "महाराज, आप उन दोनों भिक्षुओं का पीछा करते हुए कहाँ गए?"
“उनका एक साथी है,” राक्षस ने उत्तर दिया। “जब वे किनारे पर उतरे तो उसने लोहे का डंडा मुझ पर चलाया। मैं बच गया और पलटवार किया। भगवान ही जाने वह डंडा कितना भारी था: मैं अपने गदा से उसे रोक नहीं पाया। उसने मुझे तीन राउंड से भी कम समय में बुरी तरह से पीटकर वापस यहाँ भेज दिया।”

"महाराज, क्या आपको याद है कि उनका साथी कैसा दिखता है?" मंदारिन मछली ने पूछा।
"वह एक भिक्षु है जिसका चेहरा बालों से भरा है और किसी गर्जन देवता जैसा दिखता है," राक्षस ने उत्तर दिया, "नुकीले कान, टूटी हुई नाक और सुनहरी पुतलियों वाली धधकती आंखें।" यह सुनकर मंदारिन मछली कांप उठी।
"शुक्र है महाराज, आपने उसकी बहादुरी को भांप लिया और भाग गए," उसने कहा। "आप अगले तीन राउंड तक टिक नहीं पाते। मैं जानती हूँ कि वह साधु कौन है।"
अध्याय 49
686
पश्चिम की यात्रा
"तो फिर वह कौन है?" राक्षस ने पूछा।
"कई साल पहले जब मैं पूर्वी महासागर में था, तब मैंने एक बार बूढ़े ड्रैगन राजा को अपनी प्रसिद्धि के बारे में बात करते सुना था। वह सुंदर बंदर राजा हैं, स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि, जिन्होंने स्वयं को सर्वोच्च एकत्व के स्वर्णिम अमर रूप में रूपांतरित कर पाँच सौ वर्ष पहले स्वर्ग में प्रलय मचा दी थी। अब उन्होंने बुद्ध की शिक्षाओं को स्वीकार कर लिया है, अपना नाम बदलकर सन वुकॉन्ग (नौसिखिया) रख लिया है, और शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा पर तांग पुजारी की रक्षा कर रहे हैं। उनके पास अपार दिव्य शक्तियाँ हैं और वे हर प्रकार का रूपांतरण कर सकते हैं। महाराज, आपको उन्हें उकसाना नहीं चाहिए और न ही उनसे कोई और लड़ाई करनी चाहिए।"
उसके मुंह से ये बातें निकलने से पहले ही दरवाजे के पास से छोटे शैतान वापस आकर खबर देने लगे, "महाराज, वे दोनों भिक्षु फिर से आपको युद्ध के लिए चुनौती देने आए हैं।"
“अच्छी बहन,” राक्षस ने कहा, “तुम बहुत बुद्धिमान हो। मैं बाहर नहीं जाऊँगा, लेकिन देखूँगा कि क्या होता है।” उसने यह तत्काल आदेश भेजा: “बच्चों, दरवाज़े कसकर बंद कर लो। जैसा कि कहते हैं, तुम बाहर खड़े होकर दहाड़ सकते हो।”
लेकिन हम दरवाजा नहीं खोलेंगे।
वे कुछ दिनों तक यहाँ रह सकते हैं, और जब वे और बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे और चले जाएंगे, तो हम आराम से तांग पुजारी का भोज करेंगे।"

छोटे शैतानों ने पत्थरों का ढेर लगाकर और मिट्टी का सीमेंट बनाकर दरवाजों को मजबूती से बंद कर दिया। जब पिग और फ्रायर सैंड की बार-बार की चीखों से भी राक्षस बाहर नहीं आया, तो उस मूर्ख का धैर्य टूट गया और उसने अपने रेक से दरवाजे तोड़ने शुरू कर दिए, लेकिन दरवाजे इतने मज़बूती से बंद थे कि सात-आठ बार वार करने पर भी दरवाजे टूट गए, फिर भी उनके पीछे मिट्टी और पत्थरों की इतनी परतें थीं कि उसके लिए अंदर जाना नामुमकिन था।

यह देखकर साधु सैंड ने कहा, "भाई, वह राक्षस इतना डरा हुआ है कि उसने अपने दरवाजे बंद कर लिए हैं और बाहर नहीं निकल रहा है। बेहतर होगा कि हम किनारे पर वापस जाकर बंदर से इस बारे में बात करें।" सुअर मान गया और वे पूर्वी तट पर लौट आए।

जब बंदर, जो कोहरे और बादलों में अपने हाथ में गदा लिए इंतजार कर रहा था, ने उन दोनों को बिना किसी राक्षस के बाहर आते देखा, तो वह उनसे मिलने के लिए अपने बादल को किनारे पर ले आया। उसने पूछा, "भाइयों, तुम उसे अपने साथ ऊपर क्यों नहीं लाए?"

"राक्षस ने अपने दरवाजे बंद कर लिए हैं और वह दिखाई नहीं दे रहा है," फ्रायर सैंड ने कहा। "जब ब्रदर पिग ने उसके दरवाजे तोड़ दिए तो उसने देखा कि दरवाजा मिट्टी और पत्थरों से मजबूती से बंद किया गया था, और चूंकि हम उससे लड़ नहीं सकते, इसलिए हम मालिक को बचाने के किसी अन्य तरीके पर चर्चा करने के लिए वापस आए हैं।"

"यह तो नामुमकिन सा लगता है," बंदर ने कहा। "तुम दोनों बैंक की रखवाली करो और मेरी गैरमौजूदगी में राक्षस को भागने मत देना।"

"भाई, तुम कहाँ जा रहे हो?" सुअर ने पूछा।

“मैं बोधिसत्व से मिलने पोटारका जा रहा हूँ,” बंदर ने उत्तर दिया, “और उस राक्षस का नाम और पृष्ठभूमि पता करूँगा। जब मुझे उसका पैतृक घर मिल जाएगा और मैं उसके रिश्तेदारों और पड़ोसियों को पकड़ लूँगा, तब मैं वापस आऊँगा।” अध्याय 49

उसे पकड़ने और स्वामी को बचाने के लिए।"

“लेकिन ये सब करना बहुत झंझट भरा और समय लेने वाला काम होगा,” सुअर

हँसते हुए बोला। “मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि इसमें न तो समय लगेगा और न ही कोई परेशानी,” बंदर भाई ने जवाब दिया। “मैं जल्दी वापस आ जाऊँगा।”

महान ऋषि ने अपने शुभ बादल पर सवार होकर नदी के किनारे से तीव्र गति से प्रस्थान किया और दक्षिणी सागर की ओर चल पड़े। एक घंटे के भीतर पोटारका द्वीप दिखाई देने लगा और उन्होंने पोटा चट्टान पर बादल उतारा, जहाँ चौबीस देवता, द्वीप के संरक्षक देवता, मोक्ष (नवदीक्षित), बालक सुधना और नाग कन्या पेंगझू सभी आगे आकर प्रणाम करने लगे और अभिवादन करते हुए पूछा, "हे महान ऋषि, आप क्यों आए हैं?"

"एक ऐसी बात है जिसके बारे में मैं बोधिसत्व से जानना चाहता हूँ," बंदर ने उत्तर दिया।

“बोधिसत्व आज सुबह अपनी गुफा से निकलकर अपने बाँस के जंगल में गई हैं,” देवताओं ने उत्तर दिया। “उन्होंने किसी को भी अपने साथ जाने की अनुमति नहीं दी, लेकिन क्योंकि उन्हें पता था कि आप आज आ रहे हैं, इसलिए उन्होंने हमें यहाँ आपका स्वागत करने के लिए प्रतीक्षा करने को कहा। चूंकि आप उनसे तुरंत मिल नहीं पाएंगे, इसलिए कृपया फ़िरोज़ी चट्टान के नीचे तब तक बैठें जब तक बोधिसत्व बाहर आकर निर्णय न ले लें कि उन्हें क्या करना है।”

भाई बंदर ने उनकी सलाह मानी, लेकिन बैठने से पहले ही सेवक सुधना उसके पास आकर झुककर बोली, "महान ऋषि सूर्य, आपकी कृपा से ही बोधिसत्व ने मुझे अपने पास रखा है। मैं कभी उनका साथ नहीं छोड़ती और हमेशा उनके कमल सिंहासन के चरणों में रहती हूँ। उन्होंने मुझ पर बहुत कृपा की है।" बंदर, जो जानता था कि वह पहले लाल लड़का था, हँसते हुए बोला, "तुम उस समय बुराई में इतने उलझे हुए थे कि अब जब तुम्हारा धर्म परिवर्तन हो गया है, तभी तुम्हें एहसास हुआ है कि मैं एक अच्छा इंसान हूँ।"

जब वह लंबे समय से प्रतीक्षा कर रहा था लेकिन बोधिसत्व अभी तक प्रकट नहीं हुए थे, तो बंदर ने चिंता से कहा।

"क्या आप कृपया मेरे यहाँ होने की सूचना देंगे? समय बर्बाद हो रहा है, और मुझे डर है कि मेरे स्वामी की हत्या हो सकती है।"

“हम ऐसा करने की हिम्मत नहीं करेंगे,” देवताओं ने उत्तर दिया। “बोधिसत्व ने हमें उनके स्वयं आने तक प्रतीक्षा करने को कहा है।” बंदर, जो एक पल भी और प्रतीक्षा

करने के लिए बहुत अधीर था, अंदर दौड़ पड़ा।
सुंदर बंदर राजा
वह अधीर और बहुत ही व्यंग्यात्मक था।
देवता उसे रोक नहीं सके।
जब वह अंदर जाना चाहता था।
वह पेड़ों के झुरमुट में काफी अंदर तक चला गया।
आँखें चौड़ी करके वह चारों ओर देखने लगा।
उसने उद्धारकर्ता को बैठे हुए देखा
जमीन पर बांस के पत्ते पड़े हुए हैं।
अध्याय 49
688
पश्चिम की यात्रा
उसे न तो नहलाया गया था और न ही कंघी की गई थी।
और उसके चेहरे पर चिंता का कोई निशान नहीं था।
इसमें जगह पर टिकाने के लिए कोई लटकन नहीं थी।
उसके बालों की रेशमी लटें।
उसने अपना सादा नीला वस्त्र नहीं पहना था।
लेकिन सिर्फ एक चिपकी हुई बनियान,
उसकी कमर के चारों ओर ब्रोकेड की स्कर्ट थी।
और दोनों भुजाएँ नंगी छोड़ दी गईं।
उसके कंधों के लिए कोई शॉल नहीं थी;
उसने अपने पैर में जूता नहीं पहना था।
उसके कोमल हाथों में लोहे का चाकू था।
जिससे वह बांस छीलती थी।
जब बंदर ने उसे देखा तो वह खुद को चिल्लाने से रोक नहीं पाया, "बोधिसत्व, आपका शिष्य सन वुकॉन्ग आपको श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता है।"
बोधिसत्व ने कहा, "बाहर इंतजार करो।"
बंदर ने उत्तर दिया, "बोधिसत्व, मेरे स्वामी संकट में हैं और मैं स्वर्ग की नदी में रहने वाले उस दुष्ट राक्षस के बारे में आदरपूर्वक जानकारी लेने आया हूँ।"

बोधिसत्व ने कहा, "बाहर जाओ और मेरे बाहर आने तक प्रतीक्षा करो।"
अपनी मांगों को और आगे बढ़ाने की हिम्मत न कर पाने के कारण, बंदर को बांस के जंगल से निकलकर सभी देवताओं से कहना पड़ा,
"बोधिसत्व वसंत ऋतु की सफाई करती हुई प्रतीत हो रही हैं। वे कमल के सिंहासन पर बैठने के बजाय, उपवन में बांस की पट्टियाँ क्यों काट रही हैं और उन्होंने ठीक से वस्त्र भी नहीं पहने हैं?"
“हमें नहीं पता,” देवताओं ने कहा। “वह आज सुबह कपड़े पहनने से पहले गुफा से निकलकर जंगल में चली गई और हमें यहाँ आपका स्वागत करने के लिए कहा। हे महान ऋषि, इसका आपसे ही कुछ संबंध होना चाहिए।” बंदर के पास प्रतीक्षा करने के अलावा कोई चारा नहीं था।
कुछ ही देर में बोधिसत्व बैंगनी बांस से बनी टोकरी लिए हुए जंगल से बाहर निकले।
"वुकोंग,"
उसने कहा, "हम दोनों मिलकर तांग पुजारी को बचाने जा रहे हैं।"
अध्याय 49
689
पश्चिम की यात्रा
बंदर घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "आपके शिष्य में इतनी धृष्टता है कि वह सुझाव दे रहा है कि आपको वस्त्र धारण करके अपने कमल सिंहासन पर बैठ जाना चाहिए।"
“परिधान पहनने की कोई आवश्यकता नहीं है; मैं जैसी हूँ वैसी ही जाऊँगी,” बोधिसत्व ने उत्तर दिया, जिसके बाद उन्होंने देवताओं को विदा किया और एक शुभ बादल पर सवार होकर प्रस्थान किया। बंदर केवल उनके पीछे-पीछे चल सका।
पल भर में वे स्वर्ग नदी के किनारे पहुँच गए। जब पिग और फ्रायर सैंड ने उन्हें देखा तो वे आपस में बोले, "हमारा वह भाई बहुत अधीर है। भगवान ही जाने उसने दक्षिणी सागर में क्या हंगामा किया होगा कि बोधिसत्व को ठीक से कपड़े पहने बिना ही यहाँ आना पड़ा।" उनके ये शब्द पूरे होने से पहले ही गुआनयिन किनारे पहुँच गईं और दोनों ने उन्हें प्रणाम करते हुए कहा, "बोधिसत्व, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था, हमसे गलती हुई, हमें क्षमा कर दीजिए।" बोधिसत्व ने अपनी जैकेट के चारों ओर रेशमी कमरबंद खोला, उसका एक सिरा टोकरी से बाँधा और रंगीन बादल पर सवार होकर

ऊपर उठ गईं।
कमरबंद का दूसरा सिरा पकड़े हुए उसने टोकरी को नदी में फेंक दिया और फिर धारा के बीच से उसे ऊपर खींचते हुए बुदबुदाया, "जाओगे तो मरोगे, ठहरोगे तो जिओगे, जाओगे तो मरोगे, ठहरोगे तो जिओगे।" सात बार ऐसा कहने के बाद उसने टोकरी को फिर से ऊपर उठाया, और इस बार उसमें एक चमकती हुई सुनहरी मछली थी, जो अपनी आँखें झपका रही थी और अपने शल्क हिला रही थी। बोधिसत्व ने कहा, "वुकोंग, पानी में उतरो और अपने स्वामी को बचाओ।"
"मैं कैसे कर सकता हूँ?" बंदर ने कहा। "राक्षस अभी तक पकड़ा नहीं गया है।"
"क्या टोकरी में वही नहीं है?" बोधिसत्व ने पूछा।
तब पिग और फ्रायर सैंड ने झुककर पूछा, "उस मछली में इतनी महान शक्तियां कैसे हो सकती थीं?"
“यह मूल रूप से एक सुनहरी मछली थी जिसे मैंने अपने कमल के कुंड में पाला था,” बोधिसत्व ने उत्तर दिया। “यह प्रतिदिन सूत्रों को सुनने के लिए तैरकर आती थी और इसने जादुई शक्तियाँ प्राप्त कर ली थीं। नौ गांठों वाली तांबे की गदा एक अधखिली कमल की कली थी जिसे इसने परिपक्व करके हथियार बना लिया था। एक दिन, मुझे नहीं पता कब, ज्वार कुंड तक पहुँचा और इसे यहाँ ले आया। आज सुबह जब मैं रेलिंग पर झुककर कमलों को देख रहा था, तो मैंने देखा कि वह दुष्ट मुझे प्रणाम करने नहीं आया था, इसलिए मैंने अपनी उंगलियों और हथेलियों की जाँच की और समझा कि वह आत्मा बन गया होगा और आपके गुरु को मारने की योजना बना रहा होगा। इसीलिए मैंने कपड़े पहनने का इंतजार किए बिना ही अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करके एक बाँस की टोकरी बुनी जिसमें उसे पकड़ लिया।”
“तो फिर,” बंदर ने कहा, “क्या आप थोड़ी देर और रुक सकते हैं? हम चेन गाँव के श्रद्धालुओं को आपका सुनहरा चेहरा दिखाना चाहते हैं, बोधिसत्व। यह एक महान कृपा होगी, और इससे आम लोगों को यह भी सीखने को मिलेगा कि उस राक्षस को कैसे वश में किया गया, ताकि वे विश्वास करें और भेंट चढ़ाएँ।”
"बहुत अच्छा," बोधिसत्व ने कहा। "उन्हें यहाँ बुलाओ।"
फिर पिग और फ्रायर सैंड चिल्लाते हुए गाँव की ओर दौड़े, "आओ और सजीव बोधिसत्व गुआनयिन के दर्शन करो, आओ और सजीव बोधिसत्व गुआनयिन के दर्शन करो।" गाँव के सभी लोग, जवान और बूढ़े, पुरुष और महिलाएं, कीचड़ और पानी के

बावजूद नदी के किनारे दौड़ पड़े और घुटनों के बल बैठकर प्रणाम किया। उनमें एक कुशल चित्रकार भी था जिसने बोधिसत्व गुआनयिन का मछली की टोकरी लिए हुए चित्र बनाया। इसके बाद बोधिसत्व दक्षिणी सागर में लौट गए।

पिग और फ्रायर सैंड ने पानी में रास्ता बनाते हुए सीधे रिवर टर्टल के निवास तक पहुँच गए, जहाँ उन्होंने अपने स्वामी की खोज की। वहाँ मौजूद सभी जल राक्षस और मछली आत्माएँ मर कर सड़ चुकी थीं। वे महल के पीछे गए, पत्थर का संदूक खोला, तांग पुजारी को पानी से बाहर निकाला और भीड़ को दिखाया।

चेन भाइयों ने सिर झुकाकर धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा, "महाराज, यदि आपने हमारी सलाह मान ली होती और कुछ और समय तक रुके होते तो आपको इस सारी परेशानी से मुक्ति मिल जाती।"

“इसके बारे में और कुछ मत कहो,” बंदर ने उत्तर दिया। “अगले वर्ष से आप लोगों को कोई बलिदान नहीं देना पड़ेगा। महान राजा को हटा दिया गया है, और वह फिर कभी आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। बूढ़े श्रीमान चेन, मैं अब आपसे निवेदन करता हूँ कि आप जितनी जल्दी हो सके एक नाव का इंतजाम करें ताकि हम नदी पार कर सकें।”

"हां, मैं कर सकता हूं, मैं कर सकता हूं," चेन किंग ने कहा और लोगों को नाव बनाने के लिए लकड़ी को तख्तों में काटने का आदेश दिया।

जब उनके सेवकों ने यह सुना तो वे सभी भेंट देने के लिए प्रसन्न हुए, और कई लोगों ने कहा, "मैं मस्तूल और पाल का भुगतान करूंगा," "मैं चप्पू ठीक करूंगा," "मैं रस्सियों की व्यवस्था करूंगा," और "मैं नाविकों को किराए पर लूंगा।"

नदी के किनारे शोरगुल के बीच नदी से एक ज़ोरदार आवाज़ आई, "हे महान ऋषि सूर्य, नाव बनाने में दूसरों का पैसा बर्बाद मत करो। मैं तुम सबको, गुरु और शिष्यों को, नदी पार करा दूँगा।" यह सुनकर भीड़ भयभीत हो गई। उनमें से जो अधिक डरपोक थे, वे चुपके से घर चले गए, जबकि साहसी लोग काँपते हुए वहीं रुक कर देखते रहे। कुछ ही क्षण बाद पानी से एक राक्षस प्रकट हुआ। वह कुछ इस तरह था: एक दिव्य, चौकोर सिर वाला और असाधारण जानवर।

वह चमत्कारी प्राणी, जल का अमर जीव।
अपनी पूंछ हिलाते हुए वह कई युगों तक जीवित रह सकता है।
नदियों की गहराई में चुपचाप और स्थिर रूप से छिपा हुआ।
लहरों को चीरते हुए वह तेजी से किनारे की ओर दौड़ता है।
या फिर समुद्र के किनारे धूप और हवा के सामने स्थित हो।
उन्होंने अपने सार को पोषित करने का सच्चा मार्ग खोज लिया है।
सफेद कवच वाला प्राचीन नरम खोल वाला कछुआ।
प्राचीन कोमल खोल वाले कछुए ने पुकारा, "महान ऋषि, नाव मत बनवाइए। मैं तुम चारों को पार ले जाऊंगा।"
"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, दुष्ट जानवर," बंदर ने लोहे का डंडा घुमाते हुए कहा। "बैंक आओ और मैं तुम्हें इसी से मार डालूंगा।"
"हे महान ऋषि, मैं आपका आभारी हूँ और मैंने सद्भावनापूर्वक आपके गुरु और शिष्यों को नदी पार कराने की पेशकश की है, तो आप मुझे क्यों मारना चाहते हैं?" राक्षस ने पूछा।
"मैंने तुम्हारा कौन सा भला किया है?" बंदर भाई ने पूछा।
"महान ऋषि," कोमल खोल वाले कछुए ने कहा, "शायद आपको यह एहसास न हो कि नदी के तल में स्थित नदी कछुए का निवास मेरा घर है, जो कई पीढ़ियों से मुझे विरासत में मिला है। क्योंकि मैंने मूलभूत ज्ञान प्राप्त किया और अपने आचरण को सुधारकर दिव्य आत्मा विकसित की, इसलिए मैंने अपने पैतृक घर का पुनर्निर्माण नदी कछुए के निवास के रूप में करवाया। नौ साल पहले, जिस दिन समुद्र गरज रहा था और लहरें टकरा रही थीं, वह दुष्ट राक्षस ज्वार के साथ यहाँ आया और अपनी शक्ति का उपयोग करके मुझ पर क्रूर हमला किया। उसने मेरे कई बच्चों को मार डाला और मेरे कई कुलियों को बंदी बना लिया। चूंकि मैं उसका मुकाबला नहीं कर सकता था, इसलिए मुझे उसे अपना घर मुफ्त में ले जाने देना पड़ा। अब जब आप तांग पुजारी को बचाने आए हैं, महान ऋषि, और अध्याय 49

मैंने यहाँ बोधिसत्व गुआनयिन से बुराई को दूर करने और राक्षस को पकड़ने की प्रार्थना की थी। मेरा घर मुझे वापस मिल गया है और मेरा परिवार फिर से एक हो गया

है। अब हम मिट्टी के झोपड़े बनाने के बजाय अपने पुराने घर में रह सकते हैं। इसीलिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ, पहाड़ जितना विशाल और समुद्र जितना गहरा। और केवल मेरा परिवार ही नहीं, पूरा गाँव अब वार्षिक यज्ञ से मुक्त हो जाएगा, और कई परिवारों के बेटे-बेटियाँ भी बच जाएँगे। आपने सचमुच एक ही कर्म से दो लाभ दिए हैं, और इस कृपा का मुझे प्रतिफल देना ही होगा।

यह सुनकर बंदर का दिल खुश हो गया, इसलिए उसने अपना डंडा एक तरफ रख दिया और पूछा, "क्या यह सब सचमुच सच है?"

"मैं उस महान ऋषि से कैसे झूठ बोल सकता हूँ जिन्होंने मुझ पर इतनी बड़ी कृपा की है?" प्राचीन नरम खोल वाले कछुए ने पूछा।

"यदि यह सच है तो तुम्हें स्वर्ग की शपथ लेनी होगी," बंदर ने कहा, जिस पर प्राचीन कोमल खोल वाले कछुए ने अपना लाल मुंह खोला और स्वर्ग की शपथ ली, "यदि मैं तांग पुजारी को स्वर्ग की नदी के पार निष्ठापूर्वक नहीं ले गया तो मेरा पूरा शरीर खून में बदल जाए।"

"किनारे आओ, किनारे आओ," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। तभी प्राचीन नरम खोल वाला कछुआ किनारे के पास आया, एक छलांग लगाई और टीले पर चढ़ गया। जब सब उसके पास गए तो उन्होंने देखा कि उसका लगभग चालीस फीट चौड़ा एक विशाल सफेद खोल था।

"गुरुजी," बंदर ने कहा, "चलिए इसकी पीठ पर चढ़कर पार चलते हैं।"

"लेकिन, शिष्य," संज़ंग ने कहा, "हम उस बर्फ को पार नहीं कर पाए, चाहे वह कितनी भी मोटी जमी हुई क्यों न हो। मुझे डर है कि कछुए की पीठ पर तो हम और भी असुरक्षित होंगे।"

"हे स्वामी, भयभीत न हों," प्राचीन कोमल खोल वाले कछुए ने कहा। "मैं बर्फ की उन मोटी परतों से कहीं अधिक सुरक्षित हूँ। मैं अपने आध्यात्मिक प्रयासों में तभी असफल होऊंगा जब मैं एक तरफ लुढ़क जाऊँगा।"

“गुरुजी,” बंदर ने कहा, “कोई भी प्राणी जो मनुष्यी भाषा बोल सकता है, झूठ नहीं बोलेगा।” फिर उसने सुअर और साधु सैंड को घोड़े को आगे ले जाने का आदेश दिया। जब वे नदी के किनारे पहुँचे तो गाँव के सभी लोग झुककर उन्हें विदा करने आए। बंदर घोड़े को कछुए के सफेद खोल पर ले गया और तांग पुजारी से घोड़े के दाहिनी ओर, सुअर से बाईं ओर और भिक्षु सैंड से उसके पीछे खड़े होने को कहा, जबकि वह खुद

आगे खड़ा रहा। नरम खोल वाले कछुए के शरारत करने की आशंका में, बंदर ने अपनी बाघ की नस की बेल्ट खोली, उसे कछुए की नाक में पिरोया और उसे लगाम की तरह पकड़ लिया। फिर एक पैर कछुए के खोल पर और दूसरा उसके सिर पर रखकर, एक हाथ में लोहे का डंडा और दूसरे हाथ में लगाम लेकर, उसने चिल्लाकर कहा, "शांत रहो, प्राचीन नरम खोल वाले कछुए। एक बार भी लुढ़के तो मैं तेरे सिर पर मारूंगा।"

“मैं कभी हिम्मत नहीं करूँगा, मैं कभी हिम्मत नहीं करूँगा,” कछुए ने कहा और अपने चारों पैरों पर पानी पर ऐसे चलने लगा जैसे सूखी ज़मीन पर चल रहा हो। किनारे पर खड़े सभी लोगों ने अगरबत्ती जलाई, प्रणाम किया और “नमो अमिताभ बुद्ध” का जाप किया। यह सचमुच एक सच्चे अर्हत का नश्वर संसार में अवतरित होना और एक साक्षात बोधिसत्व का प्रकट होना था। सभी ने प्रणाम किया, उन्हें तब तक देखते रहे जब तक वे ओझल नहीं हो गए और फिर अपने-अपने घर चले गए।

एक दिन से भी कम समय में गुरु ने सफेद कोमल खोल वाले कछुए पर सवार होकर स्वर्ग नदी के 250 मील का सफर तय किया और सूखे हाथों-पैरों के साथ दूसरी तरफ उतर गए। किनारे पर पहुँचकर संजांग ने कृतज्ञता से हाथ जोड़कर कहा, "प्राचीन कोमल खोल वाले कछुए, मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिया, पर मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है। शास्त्रों के साथ लौटने पर ही मैं अपना आभार व्यक्त करूँगा।"

“हे पूज्यवर, किसी उपहार की आवश्यकता नहीं है,” कछुए ने कहा। “मैंने सुना है कि पश्चिमी स्वर्ग में भगवान बुद्ध मृत्यु और जीवन से परे चले गए हैं और अतीत और भविष्य के बारे में सब कुछ जानते हैं। मैं यहाँ 1300 वर्षों से अधिक समय से अपने आचरण का अभ्यास कर रहा हूँ, और यद्यपि मैंने अपना जीवन लंबा किया है और मानव जीवन के अध्याय 49 को सीखा है…”

मैं अपने खोल से बाहर नहीं निकल सकता। हे पूज्यवर, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मेरी ओर से भगवान बुद्ध से प्रार्थना करें कि मैं कब इस खोल से मुक्त होकर मनुष्य रूप धारण कर सकूँ।

"मैं पूछूंगा, मैं पूछूंगा," संज़ंग ने वादा किया, जिस पर प्राचीन कोमल खोल वाला कछुआ वापस पानी में कूद गया और बंदर ने संज़ंग को घोड़े पर चढ़ने में मदद की। सुअर ने सामान अपने कंधों पर उठाया और साधु सैंड उनके साथ-साथ चलने लगा,

गुरु और शिष्य पश्चिम की ओर मुख्य मार्ग पर चल पड़े। सचमुच: सम्राट ने पुजारी को बुद्ध से मिलने के लिए भेजा था; कठिनाइयाँ बहुत थीं और नदी और पहाड़ियों से होकर जाने वाला मार्ग लंबा था।

उसका इरादा दृढ़ था और उसका हृदय सच्चा था: उसके लिए मृत्यु का कोई भय नहीं था।

उन्होंने पुराने कछुए के ऊंचे खोल पर खड़े होकर स्वर्ग की नदी पार की। यदि आप नहीं जानते कि उन्हें अभी कितनी दूर जाना था, या उन्हें किन अन्य भयानक परीक्षाओं का सामना करना पड़ा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 50

भावनाओं का प्रकोप होता है और इच्छाओं के कारण प्रकृति बेलगाम हो जाती है।

मन की उलझन में हृदय व्याकुल हो जाता है और दानव का सामना होता है। कविता इस प्रकार है:

हृदय को नियमित रूप से साफ करना चाहिए।
भावनाओं की धूल हट गई,
कहीं बुद्ध गड्ढे में न फंस जाएं।
केवल तभी जब सार शुद्ध हो
तो क्या इसके मूल कारण पर चर्चा की जा सकती है?
प्रकृति की मोमबत्ती को सजाएं,
मास्टर काओक्सी द्वारा सिखाए गए तरीके से सांस लें।
मन के बंदर और घोड़े को नियंत्रित करें।
केवल तभी जब दिन और रात सांस शांत हो।

क्या कोई सच्चे कुशल व्यक्ति की कला को प्राप्त कर सकता है?

यह कविता नान के ज़ी की धुन पर आधारित है और इसमें बताया गया है कि कैसे तांग पुरोहित स्वर्ग नदी की बर्फ के नीचे से आपदा से बच निकले और सफेद कछुए के खोल पर बैठकर दूसरे किनारे पर पहुँच गए। जब चारों तीर्थयात्री पश्चिम की ओर बढ़े, तब तक कड़ाके की ठंड पड़ चुकी थी, लेकिन जंगलों में अभी भी हल्की धुंध छाई हुई

थी और पहाड़ों की हड्डियाँ पानी के ऊपर अपनी पवित्रता के साथ उभरती हुई दिखाई दे रही थीं। गुरु और शिष्य जब अपने रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे, तो एक विशाल पर्वत ने उनका रास्ता रोक दिया। रास्ता पथरीला था और उन्हें और घोड़े को आगे बढ़ने में कठिनाई हो रही थी। संज़ंग ने घोड़े की लगाम खींची और अपने शिष्यों को बुलाया। बंदर, सुअर और साधु सैंड को आगे लाकर उपस्थित होने के लिए कहा और पूछा, "गुरुजी, आपके क्या निर्देश हैं?"

"देखो, हमारे सामने पहाड़ कितना ऊंचा है," संजांग ने कहा। "मुझे डर है कि कहीं वहां बाघ, भेड़िये, राक्षस या दानव जैसे जानवर न हों जो हमें मार डालें। तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा।"

“चिंता मत करो, स्वामी,” बंदर ने कहा। “सत्य की खोज में परिवर्तित होने के बाद से हम तीनों भाई बहुत अच्छे से साथ रहे हैं। राक्षसों और दानवों को वश में करने की हमारी जादुई शक्तियों के साथ, हमें बाघों, भेड़ियों या राक्षसों से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।” इससे संजांग को बहुत तसल्ली मिली और वह आगे बढ़ गया। जब वह एक घाटी के मुहाने पर पहुँचा और घोड़े को ढलान पर चढ़ाया, तो उसने अपना सिर ऊपर उठाया और देखा कि वह एक भव्य पर्वत था।

ऊँची-ऊँची चट्टानें,
एक खड़ी और ऊँची पर्वत श्रृंखला।
विशाल चट्टानें आकाश को भेदती हुई प्रतीत होती थीं।
ऊंचे और ऊंचे पर्वतीय पर्वत श्रृंखला ने नीले आसमान के धुंधलेपन को रोक दिया।
विचित्र चट्टानें बैठे हुए बाघों की तरह ढेर थीं।
टेढ़े-मेढ़े, तिरछे चीड़ के पेड़ ड्रैगन की तरह उड़ते हुए प्रतीत होते थे।
पहाड़ी की चोटी पर पक्षी सुंदर गीत गा रहे थे।
उस निशान के पास बेर के फूलों की गहरी सुगंध फैली हुई थी।
नदी का धीमा प्रवाह ठंडा था।
और शिखर के ऊपर काले बादल मंडरा रहे थे, जो भयावह लग रहे थे।
उन्होंने बर्फ को घूमते हुए देखा,
और एक बर्फीली हवा
भूखे पहाड़ी बाघों की दहाड़ के साथ गर्जना।

ठंड से ठिठुरते कौवों को पेड़ों पर बैठने की कोई जगह नहीं मिली।
और जंगली हिरणों को घर लौटने का रास्ता नहीं पता था।
यात्री के लिए आगे बढ़ना वाकई बहुत कठिन था।
चिंता से भौंहें चढ़ाते हुए उसने अपना सिर ढँक लिया।
ठंड और बर्फ में कांपते हुए वे चारों उस ऊँची पहाड़ी को पार कर रहे थे और दूर एक घाटी में ऊँचे-ऊँचे टावर और सुंदर घर दिखाई दिए। घोड़े की पीठ पर बैठे हुए राहत की सांस लेते हुए संज़ंग ने कहा, "शिष्यों, आज हम ठंड और भूख से परेशान हैं, लेकिन उस घाटी में कई इमारतें हैं, मुझे पूरा यकीन है कि वे कोई खेत या बौद्ध या ताओवादी मठ होंगी। चलिए, आगे बढ़ने से पहले वहाँ जाकर कुछ भोजन मांग लेते हैं।"
बंदर की पहली प्रतिक्रिया चारों ओर गौर से देखने की थी। उसने देखा कि उस स्थान पर अशुभ दिखने वाले बादल और धुआँ छाया हुआ है, इसलिए वह तांग पुजारी की ओर मुड़ा और बोला, "गुरुजी, वह एक बुरी जगह है।"
"इतने सारे टावरों, मंडपों और शानदार इमारतों के साथ यह जगह भला बुरी कैसे हो सकती है?" संजांग ने पूछा।
“आपको पता नहीं होगा, गुरुजी,” बंदर ने उत्तर दिया। “पश्चिम की ओर जाने वाले इस रास्ते पर अनगिनत दुष्ट आत्माएँ और राक्षस हैं जो जादू से इमारतें बनाने में माहिर हैं। वे मीनारों और घरों से लेकर हॉल और मंडप तक, सब कुछ बना सकते हैं, और सब कुछ सिर्फ चारा के रूप में। जैसा कि आप जानते हैं, नौ प्रकार के ड्रैगन में से एक को क्लैम-ड्रैगन कहा जाता है। उसकी साँस से निकलने वाली आकृतियाँ सुंदर इमारतों और तालाबों जैसी दिखती हैं। क्लैम-ड्रैगन की इमारतें तब दिखाई देती हैं जब किसी बड़ी नदी पर घना कोहरा छाया होता है। उड़ते हुए पक्षी उन पर विश्राम करने के लिए बैठते हैं। क्लैम-ड्रैगन सबको खा जाता है, चाहे कितने भी लोग हों। यह सचमुच एक घातक चाल है। वहाँ का वातावरण बेहद खतरनाक दिखता है: चाहे कुछ भी हो जाए, वहाँ मत जाना।”
"भले ही मुझे भूख न लगी हो, फिर भी मुझे बहुत भूख लगी है," संजांग ने कहा।
"जी, स्वामी जी, आपको ऐसा करना ही होगा," बंदर ने उत्तर दिया। "क्या आप उतरकर यहाँ समतल ज़मीन पर बैठेंगे, जबकि मैं कहीं और जाकर आपके लिए भोजन

माँग लूँ?" संज़ंग ने यह सुझाव मान लिया।
जब सुअर ने लगाम पकड़ी हुई थी, तब साधु सैंड ने सामान नीचे रखा, एक बंडल खोला और उसमें से एक भिक्षापात्र निकाला जो उसने बंदर को दे दिया। कटोरा लेते हुए बंदर ने उसे ये विदाई निर्देश दिए: "आगे मत जाना। मालिक की रक्षा करना और यह सुनिश्चित करना कि वह यहीं बैठा रहे जब तक मैं कुछ खाना लेकर वापस न आ जाऊं। फिर हम पश्चिम की ओर चल सकते हैं।"
फ्रायर सैंड ने ऐसा करने का वादा किया। फिर बंदर ने संजांग से दोबारा कहा: "गुरुजी, यह बहुत खतरनाक जगह है।"
आप चाहे जो भी करें, यहां से बिल्कुल मत हिलिए। मैं अब भीख मांगने जा रहा हूं।
"और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं," संज़ैंग ने जवाब दिया। "जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाना। मैं यहीं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा।"
बंदर मुड़ा और जाने ही वाला था कि तभी वापस मुड़कर बोला, "गुरुजी, मैं जानता हूँ कि आप शांत बैठने के लिए धैर्य नहीं रख सकते, लेकिन मैं एक मंत्र पढ़ता हूँ जिससे आप यहाँ सुरक्षित रहेंगे।" इतना कहकर उसने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी निकाली और पलक झपकते ही उससे ज़मीन पर एक वृत्त बना दिया। उसने तांग पुजारी को उस वृत्त में बैठने को कहा, जिसके दोनों ओर सुअर और साधु सैंड खड़े थे, और घोड़ा और सामान पास ही में थे।
फिर उसने अपने हाथ जोड़कर तांग पुजारी से कहा, "मैंने जो घेरा बनाया है, वह पीतल या लोहे की दीवार से भी अधिक मजबूत है। कोई बाघ, तेंदुआ, भेड़िया, दानव, दैत्य या राक्षस इसके पास आने की हिम्मत नहीं करेगा। लेकिन आपको इसके बाहर कदम नहीं रखना है। मैं गारंटी देता हूँ कि जब तक आप घेरे के अंदर बैठे रहेंगे, आपको कोई नुकसान नहीं होगा; लेकिन एक बार अध्याय 50"

अगर आप इसे छोड़ेंगे तो आपके साथ बहुत बुरी चीजें हो सकती हैं। कृपया, कृपया, कृपया चाहे कुछ भी हो जाए, इसके अंदर ही रहें।
संज़ंग ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था और वे सब बैठ गए। तभी बंदर अपने बादल पर सवार होकर दक्षिण दिशा की ओर भोजन मांगने के लिए निकल पड़ा। जब उसने एक और फार्महाउस के प्राचीन वृक्षों को आकाश की ओर बढ़ते देखा, तो उसने

करीब से देखने के लिए अपना बादल नीचे उतारा। उसने जो देखा वह यह था:
निर्मम बर्फबारी से विलो के पेड़ झुक गए,
एक चौकोर तालाब जो पूरी तरह जम गया था।
कुछ बिखरे हुए बांस हरे रंग में लहरा रहे थे,
एक ऊंचे और सुंदर देवदार के पेड़ का फ़िरोज़ी रंग।
चांदी से ढकी हुई प्रतीत होने वाली फूस की झोपड़ियाँ,
एक तिरछा पुल जो देखने में आटे से बना हुआ प्रतीत होता था।
बाड़ के किनारे लगे डैफोडिल के फूल खिलने लगे थे।
छत के नीचे बर्फ की पतली-पतली डंडियाँ लटक रही थीं।
बर्फीली हवा अपने साथ कई विचित्र सुगंधें लेकर आई;
तेज बर्फबारी के कारण बेर के फूल दिखाई देना बंद हो गए।
बंदर जब खेत का जायजा लेने के लिए उसकी ओर बढ़ा, तो उसने एक बूढ़े आदमी के बाहर आने की आवाज सुनी। वह लकड़ी की छड़ी के सहारे खड़ा था और उसने भेड़ की खाल की टोपी, फटी हुई कमीज और सरकंडे की चप्पलें पहन रखी थीं। उसने आसमान की ओर देखकर कहा, "उत्तर-पश्चिम से हवा चल रही है, इसलिए कल आसमान साफ रहेगा।" उसके मुंह से ये शब्द निकलने से पहले ही उसके पीछे से एक पेकिनीज कुत्ता उछलता हुआ आया और बंदर पर जोर-जोर से भौंकने लगा। तभी उस आदमी ने मुड़कर देखा तो बंदर उसके लिए भीख का कटोरा लिए खड़ा था।
“आदरणीय उपकारक,” बंदर ने कहा, “मैं उस भिक्षु के साथ हूँ जिसे पूर्व में स्थित महान तांग सम्राट ने बुद्ध की उपासना करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग भेजा है। हम इस रास्ते से गुजर रहे थे और मेरे गुरु बहुत भूखे हैं, इसलिए मैं आपके आदरणीय निवास पर शाकाहारी भोजन की याचना करने आया हूँ।”
बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया, अपनी छड़ी से ज़मीन पर मारा और बोला, "महोदय जी, यहाँ भीख मत मांगिए। आप रास्ता भटक गए हैं।"
"नहीं, मैंने नहीं देखा है," बंदर ने कहा।
"पश्चिम की ओर जाने वाला मुख्य मार्ग यहाँ से तीन सौ मील से भी अधिक उत्तर में है," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "तो आप उस मार्ग पर क्यों नहीं हैं?"
"मैं यहीं से आया हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "मेरा मालिक अभी मुख्य रास्ते के किनारे बैठा मेरा इंतज़ार कर रहा है कि मैं उसके लिए कुछ खाना लाऊँ।"

“तुम बकवास कर रहे हो, भिक्षु,” बूढ़े ने उत्तर दिया। “तुम्हारा स्वामी मुख्य मार्ग पर तुम्हारा इंतज़ार कैसे कर सकता है कि तुम उसके लिए कुछ भोजन लाओ? अगर तुम इतनी दूर तक चल भी लो तो तीन सौ मील की दूरी तय करने में तुम्हें छह या सात दिन लग जाएँगे और वापस आने में भी उतना ही समय लगेगा। तब तक तो वह भूख से मर चुका होगा।”
“सचमुच, उपकारी,” बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “मैं अभी-अभी अपने स्वामी से लौटा हूँ, और यहाँ पहुँचने में मुझे एक कप चाय पीने से भी कम समय लगा। खाना मिलने के बाद मैं उसे उनके दोपहर के भोजन के लिए वापस ले जाऊँगा।”
इससे बूढ़ा व्यक्ति भयभीत हो गया और तुरंत पीछे हटते हुए बोला, "वह भिक्षु एक राक्षस है, एक राक्षस।"
वह अंदर जाने ही वाला था कि बंदर ने उसे पकड़ लिया और पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं, उपकारी? मुझे तुरंत कुछ खाना दीजिए।"
“यह बहुत मुश्किल है,” बूढ़े आदमी ने कहा, “बहुत मुश्किल। कहीं और कोशिश करो।”
“आप सचमुच नहीं समझते, उपकारी,” बंदर ने उत्तर दिया। “ज़रा सोचिए, मुझे यहाँ तक पहुँचने के लिए तीन सौ मील से अधिक का सफर तय करना पड़ा है, तो दूसरे घर तक जाने में शायद तीन सौ मील और लगेंगे। आप मेरे मालिक को भूखा मारकर मारना चाहते हैं।”
बूढ़े आदमी ने साफ-साफ कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ कि परिवार के छह-सात सदस्यों के लिए बर्तन में सिर्फ तीन पाइंट चावल ही आ पाते हैं, और वो भी अभी तक पक ही रहे हैं। पहले कहीं और कोशिश करके देखो।"
“एक पुरानी कहावत है,” बंदर ने जवाब दिया, “कि तीन घरों में जाने से बेहतर है एक ही घर में रहना। मैं यहीं रहूँगा।” बूढ़े आदमी को बंदर पर गुस्सा आ गया क्योंकि वह बहुत ज़िद कर रहा था और उसने उसे मारने के लिए अपनी छड़ी उठाई। लेकिन बंदर को ज़रा भी फ़िक्र नहीं हुई और उसने बूढ़े आदमी को अपने मुंडे हुए सिर पर सात-

आठ बार मारने दिया: उसे ऐसा लगा जैसे सिर की खुजली खुजाई जा रही हो।
"तुम एक ऐसे भिक्षु हो जिसे सिर पर मार खाना पसंद है," बूढ़े व्यक्ति ने कहा।
"जितना चाहो मारो, बूढ़े," बंदर ने कहा। "मैं हिसाब रख रहा हूँ और हर एक वार के बदले तुम्हें मुझे एक पाइंट चावल देना होगा।"
यह सुनकर बूढ़े व्यक्ति ने अपनी छड़ी गिरा दी, अंदर भागा, फाटक बंद किया और चिल्लाया: "एक राक्षस, एक राक्षस!" यह सुनकर पूरा घर डर से कांप उठा और सबने जल्दी से आगे और पीछे के फाटक बंद कर दिए।
द्वार बंद होते देख बंदर ने सोचा, "पता नहीं वह बूढ़ा खलनायक चावल की मात्रा के बारे में सच कह रहा था या नहीं। कहावत है ना, अच्छे लोग ताओवाद से परिवर्तित हो जाते हैं और मूर्ख बौद्ध धर्म से।"
मैं अंदर जाकर एक नज़र डाल लेता हूँ।" इतना कहकर उस महान ऋषि ने अपने हाथों से जादू करके खुद को अदृश्य कर लिया और सीधे रसोई में देखने चले गए। उन्होंने देखा कि बर्तन से भाप निकल रही थी और वह आधा अनाज से भरा हुआ था, इसलिए उन्होंने अपना भिक्षापात्र उसमें डाला, उसे पूरा भर दिया और अपने बादल पर वापस चले गए।
इसी बीच, तांग पुजारी, जो बंदर के वापस आने की प्रतीक्षा में काफी देर से घेरे में बैठे थे, अंगड़ाई लेकर चारों ओर देखने लगे और बोले, "वह बंदर भोजन मांगने कहां चला गया?"
"पता नहीं वो कहाँ होगा—शायद इधर-उधर मौज-मस्ती कर रहा होगा," उसके बगल में बैठे सुअर ने हंसते हुए कहा। "खाने के लिए भीख मांग रहा होगा! उसने हमें यहाँ बाड़े में छोड़ दिया है।"
"पेन में, तुम्हारा क्या मतलब है?" संजांग ने पूछा।
अध्याय 50
697
पश्चिम की यात्रा
“मालिक, यह भी एक ऐसी बात है जो आपको नहीं पता होगी,” सुअर ने जवाब दिया। “पुराने ज़माने में लोग बाड़े बनाने के लिए ज़मीन पर गोले बनाते थे। वह अपनी लाठी से एक गोला बनाता है और कहता है कि यह पीतल या लोहे की दीवार से भी ज़्यादा मज़बूत है। लेकिन भला यह यहाँ आने वाले किसी भी बाघ, भेड़िये या दुष्ट

राक्षस को कैसे रोक पाएगा? हम तो उनके लिए थाली में परोसा हुआ भोजन बन जाएँगे।"

"हमें इसके बारे में क्या करना चाहिए, वुनेन्ग?" संजांग ने उससे पूछा।

"यहाँ हवा और ठंड से बचाव नहीं है," सुअर ने कहा। "अगर मुझसे पूछो तो हमें पश्चिम की ओर पगडंडी पर चलते रहना चाहिए। बंदर अपने बादल पर भीख मांगने गया है, इसलिए वह जल्द ही वापस आ जाएगा। वह हमसे मिल जाएगा। अगर उसके पास कुछ खाने को होगा तो हम आगे बढ़ने से पहले खा लेंगे। यहाँ इतनी देर बैठे रहने से हमारे पैर ठंडे हो गए हैं।"

ये शब्द संज़ंग के लिए विनाशकारी साबित हुए: उसने उस मूर्ख की सलाह मान ली और वे सब घेरा छोड़कर चले गए। तांग पुरोहित घोड़े को आगे-आगे ले जा रहे सुअर और सामान ढो रहे साधु सैंड के साथ पगडंडी पर चलने लगे। वे जल्द ही ऊँची मीनारों वाले घर के पास पहुँच गए, जो दक्षिणमुखी परिसर था। द्वार के बाहर एक सफेदी की हुई दीवार थी, जिसके ऊपर कमल के फूलों की तरह झुकी हुई एक बहुरंगी मीनार खड़ी थी। द्वार आधा खुला हुआ था। सुअर ने घोड़े को दहलीज के पास रखे पत्थर के ढोल से बाँध दिया, साधु सैंड ने सामान नीचे रख दिया और संज़ंग हवा से बचने के लिए दहलीज पर बैठ गया।

"मालिक," सूअर ने कहा, "यह किसी रईस या मंत्री का घर लगता है। द्वार पर कोई नहीं है, इसलिए मुझे लगता है कि वे सब अंदर आग के पास बैठकर धूप सेंक रहे हैं। बैठ जाइए और मुझे एक नज़र डालने दीजिए।"

तांग पुजारी ने कहा, "सावधान रहना। उनके घर में जबरदस्ती घुसने की कोशिश मत करना।"

"मुझे पता है," उस मूर्ख ने कहा। "बौद्ध बनने के बाद मेरा व्यवहार बहुत बेहतर हो गया है। मैं अब देहाती नहीं रहा।"

उस मूर्ख ने अपना रेक कमरबंद में दबाया, अपनी काली ब्रोकेड की कमीज़ सीधी की और बड़े ही बनावटी अंदाज़ में फाटक से अंदर चला गया। उसने ऊँची, पर्दों से ढकी खिड़कियों वाला एक विशाल हॉल देखा जो बिल्कुल शांत और सुनसान था।

वहाँ कोई मेज, कुर्सी या अन्य फर्नीचर नहीं था। जब वह पर्दे के पीछे से घूमकर घर के अंदर गया, तो उसने खुद को एक गलियारे में पाया, जिसके अंत में एक बहुमंजिला इमारत थी, जिसकी ऊपरी मंजिल की खिड़कियाँ आधी खुली थीं, जिनसे पीले रंग के

दमिश्क के पर्दे दिखाई दे रहे थे। "मुझे लगता है कि वे अभी भी बिस्तर पर हैं क्योंकि बहुत ठंड है," पिग ने सोचा, और फिर घर के निजी कमरों में घुसने की मर्यादा की परवाह किए बिना सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया। जब उस मूर्ख ने पर्दा उठाया और अंदर देखा, तो वह सदमे से लगभग गिर पड़ा: पर्दों के अंदर हाथीदांत के बिस्तर पर चमकदार सफेद हड्डियों का ढेर था, जिसमें एक बुशेल के आकार की खोपड़ी और लगभग चार या पाँच फीट लंबी जांघ की हड्डियाँ थीं।

जब उस मूर्ख ने खुद को शांत किया तो उसकी आँखों से आंसू बहने लगे, उसने कंकालों की ओर सिर हिलाया और आह भरते हुए कहा, "मुझे आश्चर्य होता है:

आप किस महान राजवंश के सेनापति थे?

आपने किस देश की सेना में उच्च कमान संभाली?

तब तुम वर्चस्व के लिए लड़ने वाले नायक थे,

लेकिन अब तुम सिर्फ हड्डियों का ढेर हो।

विधवा और बच्चे कहां भेंट चढ़ा रहे हैं?

क्या कोई सैनिक आपकी स्मृति में अगरबत्ती नहीं जलाता?

यह नजारा देखकर गहरी आह भरने का मन करता है:

उस व्यक्ति पर अफसोस जो कभी विजेता हुआ करता था।

जब सुअर शोक से आहें भर रहा था, तभी पर्दे के पीछे आग की एक हल्की सी लौ दिखाई दी। मूर्ख ने सोचा, "शायद पीछे सेवक उसे धूप चढ़ाने के लिए होंगे।" जब वह बिस्तर के पर्दे के पीछे देखने के लिए दौड़ा, तो उसने देखा कि खिड़कियों से दिन का उजाला आ रहा था, जिसके बगल में रंगीन लाख की एक मेज रखी थी। उस पर ब्रोकेड और कढ़ाई वाले कुछ गद्देदार कपड़े पड़े थे। जब मूर्ख ने उन्हें उठाकर देखा, तो उसने पाया कि वे तीन रजाईदार ब्रोकेड जैकेट थीं। यह सोचे बिना कि ऐसा करना सही है या नहीं, मूर्ख उन्हें नीचे ले गया और मुख्य हॉल से होते हुए गेट से बाहर निकल गया।

“मालिक,” वह चिल्लाया, “यहाँ जीवन का कोई नामोनिशान नहीं है—यह मुर्दों का घर है। मैं अंदर गया और ऊपर गया, जहाँ मुझे पीले रंग के पर्दे के पीछे हड्डियों का ढेर

मिला। ऊपर की मंजिल पर एक तरफ तीन रजाईदार ब्रोकेड जैकेटें थीं, देखो—मैं इन्हें अपने साथ ले आया हूँ। हम सचमुच भाग्यशाली हैं क्योंकि ठंड का मौसम आ गया है और हमें इनकी बहुत ज़रूरत है। मालिक, अपनी पोशाक उतारिए और इनमें से एक पहन लीजिए। आपको बहुत आराम मिलेगा: यह ठंड से बचाएगी।"

"नहीं," संज़ंग ने कहा, "यह मना है। कानून कहता है, 'चाहे खुलेआम हो या छुपकर, कुछ भी लेना हमेशा चोरी है।' अगर किसी को पता चल गया, वह हमारा पीछा करके हमें अधिकारियों के हवाले कर दे, तो हम निश्चित रूप से चोरी के दोषी पाए जाएँगे। बेहतर होगा कि आप इन्हें वापस अंदर ले जाकर वहीं रख दें जहाँ से आपने इन्हें लिया था। हम यहाँ थोड़ी देर हवा से बचने के लिए बैठेंगे और वुकॉन्ग के लौटते ही अपने रास्ते पर आगे बढ़ जाएँगे। भिक्षुओं को इस तरह आसानी से कुछ पाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।"

"लेकिन यहाँ आस-पास कोई नहीं है जो जान सके," सुअर ने कहा, "मुर्गी या कुत्ता भी नहीं। सिर्फ़ हम ही जानते हैं। हम पर मुकदमा कौन करेगा? कोई सबूत नहीं है। यह तो ऐसा ही है जैसे हमने इसे उठा लिया हो।"

इसमें लेने या चोरी करने का कोई लेना-देना नहीं है।"

"बकवास," तांग पुजारी ने कहा। "भले ही इसके बारे में किसी और को पता न हो, स्वर्ग को धोखा नहीं दिया जा सकता। जैसा कि उत्पत्ति के स्वामी ने हमें सिखाया है, 'अंधेरे घर में बुराई मत करो: देवताओं की निगाहें बिजली की तरह तेज़ होती हैं।' इसे तुरंत वापस ले लो और उस चीज़ के पीछे भागना छोड़ दो जिस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है।"

वह मूर्ख इस बात को मानने को तैयार नहीं था। उसने मुस्कुराते हुए तांग पुजारी से कहा, "गुरुजी, मैंने जीवन भर कई जैकेट पहनी हैं, लेकिन ऐसी रजाईदार ब्रोकेड जैकेट पहले कभी नहीं देखी। अगर आप इसे पहनना नहीं चाहते, तो कृपया मुझे इसे पहनकर अपनी पीठ को गर्म करने दीजिए। जब बंदर वापस आएगा, तो मैं इसे उतार दूंगा और हम फिर से चल देंगे।"

"उस प्लास्टर में," फ्रायर सैंड ने कहा, "मैं भी एक पहनकर देखना चाहूँगा।" दोनों ने अपने बाहरी कुर्ते उतार दिए और उनकी जगह जैकेट पहन लीं। बेल्ट कसते ही वे गिर पड़े, खड़े रहने में असमर्थ। जैकेट बंधनों से भी बदतर थीं। पल भर में दोनों के हाथ पीछे बंध गए। संज़ंग ने निराशा और क्रोध में अपना पैर पटका और उन्हें खोलने के

लिए आगे बढ़ा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।
उन तीनों ने मिलकर लगातार चीख-पुकार मचाई जिससे जल्द ही एक राक्षस राजा परेशान हो गया।
ये इमारतें वास्तव में एक दुष्ट आत्मा के जादू से बनी थीं, जिसने अपना सारा जीवन लोगों को पकड़ने के लिए वहीं घात लगाकर बिताया था। अपनी गुफा में बैठे-बैठे क्रोध की चीखें सुनकर वह बाहर भागा और पाया कि उसने कई लोगों को बांध रखा है। उस राक्षस ने अपने छोटे शैतानों को अपने साथ आने का आदेश दिया और सभी जादुई इमारतों को गायब कर दिया। वे तांग पुजारी को पकड़े हुए, घोड़े को आगे बढ़ाते हुए और सुअर और साधु सैंड को घसीटते हुए गुफा में वापस आए। बूढ़ा राक्षस अपने सिंहासन पर बैठ गया, जबकि छोटे शैतानों ने संजांग को सीढ़ियों के नीचे धकेल दिया और उसे ज़मीन पर घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया।
अध्याय 50
699
पश्चिम की यात्रा
"तुम कहाँ से आए हो, भिक्षु?" राक्षस ने पूछा, "और दिन दहाड़े मेरे कपड़े चुराने की तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई?"
"मुझे पूर्व में स्थित महान तांग सम्राट द्वारा पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा गया है।"
संज़ंग ने उत्तर दिया, “मुझे भूख लगी थी इसलिए मैंने अपने वरिष्ठ शिष्य को भोजन मांगने भेजा। वह अभी तक वापस नहीं आया है, और उसकी अच्छी सलाह को अनसुना करने के कारण ही मैं हवा से बचने के लिए आपके अमर महल में आ गया, यह कल्पना भी नहीं की थी कि मेरे शिष्य इतने लालची होंगे कि आपके वस्त्र चुरा लेंगे। चूंकि मेरे मन में ऐसे कोई बुरे विचार नहीं थे, इसलिए मैंने उनसे वस्त्र तुरंत वापस करने को कहा, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी और उन्हें पहनकर अपनी पीठ गर्म करने पर अड़े रहे। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि हम महाराज के जाल में फंस जाएंगे और बंदी बना लिए जाएंगे। मैं आपसे दयापूर्वक प्रार्थना करता हूं कि हमारे जीवन को बख्श दें ताकि हम शास्त्रों को ला सकें। हम महाराज के सदा ऋणी रहेंगे और पूर्व लौटने के बाद भी आपकी स्तुति सदा गाई जाएगी।”
“लेकिन मैंने हमेशा लोगों को यह कहते सुना है कि अगर तांग पुजारी का मांस खा लो

तो सफेद बाल काले हो जाते हैं और गिरे हुए दांत फिर से उग आते हैं," राक्षस ने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम आज बिना बुलाए ही आ गए हो, और अब मुझसे उम्मीद करते हो कि मैं तुम्हें बख्श दूं! तुम्हारे वरिष्ठ शिष्य का क्या नाम है, और वह कहां भीख मांगने गया है?"

इस सवाल पर पिग ने शेखी बघारना शुरू कर दिया: "मेरा बड़ा भाई सन वुकॉन्ग है, जो स्वर्ग के समान महान ऋषि है जिसने पांच सौ साल पहले स्वर्ग में तबाही मचाई थी।"

इस खबर से राक्षस स्तब्ध रह गया। उसने सोचा, "मैंने उस दुष्ट बंदर की अपार शक्तियों के बारे में बहुत पहले सुना था, और अब मैं उससे ऐसे समय मिल रहा हूँ जब मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। छोटे बच्चों," उसने आदेश दिया, "तांग पुजारी को बाँध दो, बाकी दोनों के कीमती वस्त्र उतार दो, और उन्हें बाँधने के लिए दो रस्सियाँ ले आओ। उन्हें पीछे ले जाओ, और जब मैं वरिष्ठ शिष्य को पकड़ लूँगा, तो हम उन्हें अच्छी तरह से धोकर भाप में डालकर पका लेंगे।" छोटे राक्षसों ने उसका आदेश मान लिया, फिर उन तीनों को एक साथ बाँध दिया और उन्हें पीछे ले गए।

उन्होंने सफेद घोड़े को चारागाह के पास बांध दिया, सामान अंदर ले गए और बंदर को पकड़ने के लिए अपने हथियारों को तेज कर लिया।

इस बीच, बंदर, जिसने दक्षिण में स्थित फार्महाउस में अपने भिक्षापात्र में चावल भर लिए थे, अपने बादल पर सवार होकर वापस लौटा और पहाड़ की ढलान पर समतल भूमि पर उतरा। वहाँ उसने देखा कि तांग पुजारी गायब हो चुके हैं। उसे नहीं पता कि वे कहाँ चले गए हैं। उन्होंने अपनी लाठी से जो घेरा बनाया था, वह अभी भी वहीं था, लेकिन यात्री और घोड़ा गायब हो चुके थे। जब उसने इमारतों की ओर देखा, तो वे भी गायब हो चुकी थीं: वहाँ केवल पहाड़ और विचित्र आकार की चट्टानें ही दिखाई दे रही थीं।

"कहीं ऐसा तो नहीं!" उसने भयभीत होकर सोचा। "वे पकड़े गए हैं।" वह घोड़े के पदचिह्नों का पीछा करते हुए पश्चिम दिशा में उनके पीछे दौड़ा।

लगभग दो मील आगे जाकर, जब वह बेहद उदास महसूस कर रहा था, तभी उसे उत्तर दिशा में ढलान के दूसरी ओर से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। जब उसने देखा तो उसे एक बूढ़ा आदमी दिखाई दिया, जिसने मखमली कपड़े, एक गर्म टोपी और घिसे हुए चिकने कपड़े के जूते पहने हुए थे। उसके हाथ में एक अजगर के सिर वाली छड़ी थी और

उसके पीछे एक गुलाम लड़का चल रहा था। बूढ़े आदमी ने बेर के फूल की एक टहनी तोड़ ली थी और ढलान से नीचे आते हुए वह गाना गा रहा था। बंदर ने अपना भिक्षापात्र नीचे रख दिया और बूढ़े आदमी के चेहरे की ओर देखते हुए अपने हाथ जोड़कर कहा, "नमस्कार, दादाजी।"

"आप कहाँ से हैं, आदरणीय महोदय?" बूढ़े व्यक्ति ने झुककर अभिवादन करते हुए उत्तर दिया।

"हम पूर्व से आए भिक्षु हैं जो बुद्ध की पूजा करने और शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जा रहे हैं।"

बंदर ने कहा, “हम कुल चार लोग हैं, एक गुरु और तीन शिष्य। मेरे गुरु भूखे थे, इसलिए मैं भीख मांगने गया था। मैंने बाकी तीनों को पहाड़ की ढलान पर समतल जगह पर मेरा इंतज़ार करने को कहा था। जब मैं लौटा तो वे जा चुके थे, और मुझे नहीं पता कि वे किस तरफ गए। क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि क्या आप अध्याय 50 पढ़ सकते हैं?”

क्या आपने उन्हें देखा है, दादाजी?

इस सवाल पर बूढ़ा आदमी खिलखिलाकर हंस पड़ा। उसने पूछा, "क्या उन तीनों में से किसी एक का थूथन लंबा और कान बड़े थे?"

"हां, हां, हां," बंदर ने जवाब दिया।

"और क्या वहाँ एक और व्यक्ति था जिसका चेहरा भयावह लग रहा था और वह एक सफेद घोड़े को आगे ले जा रहा था, और एक मोटा भिक्षु था जिसका चेहरा सफेद था?"

"हाँ, बिल्कुल," बंदर ने कहा।

“तो तुम सब रास्ता भटक गए हो,” बूढ़े आदमी ने कहा। “उन्हें ढूंढने की कोशिश मत करो: यहाँ हर कोई अपनी जान बचाने के चक्कर में है।”

"सफेद चेहरे वाला मेरा गुरु है और अजीब दिखने वाले मेरे शिष्य भाई हैं," बंदर ने उत्तर दिया।

"हम सब पश्चिमी स्वर्ग जाकर धर्मग्रंथ लाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। बेशक मुझे उन्हें ढूंढना ही होगा।"

"जब मैं अभी इस रास्ते से आया तो मैंने देखा कि वे रास्ता भटक गए थे और सीधे राक्षस के मुंह में जा रहे थे," बूढ़े आदमी ने कहा।

"दादाजी, अगर आप मुझे बता सकें कि वह कौन सा राक्षस है और कहाँ रहता है, तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा। मैं उससे प्रार्थना करके उन्हें वापस मांगना चाहता हूं ताकि हम पश्चिमी स्वर्ग की अपनी यात्रा जारी रख सकें।"

“इस पर्वत का नाम जिंदौ पर्वत है और इसके सामने जिंदौ गुफा है,” बूढ़े ने उत्तर दिया। “गुफा में महान गैंडा राजा रहता है। उसकी जादुई शक्तियां अपार हैं और वह बहुत शक्तिशाली है। तुम्हारे तीनों साथी अब तक मर चुके होंगे। अगर तुम उन्हें ढूंढने जाओगे तो शायद खुद को भी बचा न पाओगे। बेहतर यही होगा कि तुम वहां न जाओ। मैं तुम्हें रोकने या यहां बांधने की कोशिश नहीं करूंगा—मैं बस तुम्हें सोचने के लिए अकेला छोड़ रहा हूं।”

बंदर ने बूढ़े व्यक्ति को धन्यवाद देने के लिए फिर से झुककर प्रणाम किया और कहा, "आदरणीय महोदय, आपकी सलाह के लिए धन्यवाद। लेकिन मुझे उन्हें ढूंढना होगा।" चावल निकालकर बूढ़े व्यक्ति को देते हुए उसने अपना भिक्षापात्र एक तरफ रख दिया। यह देखकर बूढ़े व्यक्ति ने अपनी छड़ी नीचे रख दी और कटोरा स्वीकार कर लिया, जिसे उसने अपने दास को सौंप दिया।

फिर वे दोनों अपने सामान्य रूप में आ गए, घुटनों के बल गिर पड़े और प्रणाम करते हुए बोले, "हे महानुभाव, हम आपको धोखा देने का साहस नहीं करते। हम दोनों इस स्थान के पर्वत देवता और स्थानीय देवता हैं, और हम यहाँ आपका स्वागत करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे, हे महानुभाव। हम चावल और आपके भिक्षापात्र का ध्यान रखेंगे ताकि आप अपनी जादुई शक्तियों का उपयोग आसानी से कर सकें। जब आप तांग पुजारी को बचा लेंगे, तब आप उन्हें भोजन देकर अपना कर्तव्य पूरा कर सकते हैं।"

बंदर चिल्लाया, "बालों वाले शैतानो! तुम्हें कोड़े पड़ने चाहिए। अगर तुम्हें पता था कि मैं यहाँ हूँ, तो भेस बदलकर इधर-उधर छुपने के बजाय पहले मुझसे क्यों नहीं मिले? ये तो शर्मनाक है!"

"हे महान ऋषि, क्योंकि आपका क्रोध बहुत तीव्र है, इसलिए हम जल्दबाजी में आकर आपको नाराज नहीं करना चाहते थे," स्थानीय देवता ने उत्तर दिया। "इसीलिए हमने भेष बदलकर आपको ये सब बताया।"

"ठीक है," बंदर ने कहा, "हम उस पिटाई को स्थगित कर देते हैं। जब तक मैं उस दुष्ट आत्मा को पकड़ता हूँ, तब तक मेरे कटोरे का ध्यान रखना।"
तब महान ऋषि ने बाघ की नस से बनी अपनी कमरबंद कसी, बाघ की खाल से बनी अपनी स्कर्ट को ऊपर उठाया, अपने सोने की पट्टी वाली गदा हाथों में ली और गुफा की तलाश में सीधे पहाड़ की ओर चल पड़े। जैसे ही वे एक खड़ी दीवार के पास पहुँचे, उन्होंने नीले-हरे रंग की चट्टान के किनारे चट्टानों के बीच बने पत्थर के दो दरवाजे देखे। दरवाजों के बाहर छोटे शैतानों की भीड़ तलवार और भाले से अभ्यास कर रही थी।
वास्तव में, अध्याय 50
701
पश्चिम की यात्रा
शुभ बादल,
हरी लाइकेन,
विचित्र और ऊबड़-खाबड़ चट्टानों की कतारें,
खड़ी ढलान वाली घुमावदार पगडंडियाँ।
प्रकृति की सुंदरता में बंदर दहाड़ रहे थे और पक्षी गा रहे थे;
अमर लोगों की इस भूमि में फीनिक्स पक्षी उड़ते और नाचते थे।
दक्षिण दिशा की ओर मुख वाले बेर के पेड़ों पर पहले फूल खिल चुके थे;
सूरज की गर्मी में हजारों बांस हरे-भरे हो गए थे।
चट्टान के नीचे,
गहरी घाटी में:
चट्टान के नीचे बर्फ का सफेद ढेर लगा हुआ था;
गहरी घाटी में धारा बर्फ में बदल गई थी।
सरू और चीड़ के पेड़ों के समूह ने प्राचीन सुंदरता को संरक्षित रखा;
कैमेलिया की सभी झाड़ियों में एक ही तरह के लाल फूल खिले थे।
पूरी तरह से जांच किए बिना ही महान ऋषि सीधे दरवाजे की ओर बढ़े और अपनी पूरी आवाज में चिल्लाए, "छोटे शैतानों, सीधे अंदर जाओ और अपने गुरु को बताओ कि मैं सन वुकॉन्ग हूं, स्वर्ग के समान महान ऋषि और पवित्र तांग पुजारी का शिष्य हूं। उनसे कहो कि अगर तुम सब मारे नहीं जाना चाहते तो मेरे गुरु को तुरंत बाहर भेज दें।"

सभी छोटे शैतान जल्दी से अंदर आकर सूचना देने लगे, "महाराज, द्वार पर एक भिक्षु है जिसका चेहरा बालों से भरा है और मुंह टेढ़ा है। उसका नाम महान ऋषि सन वुकॉन्ग है और वह अपने गुरु को वापस बुला रहा है।"

यह सुनकर राक्षस प्रसन्न हुआ। "मैं तो यही चाहता था कि आए," उसने कहा। "अपने महल को छोड़कर नश्वर संसार में आने के बाद से मुझे अपने युद्ध कौशल को आज़माने का कोई मौका नहीं मिला। अब जब वह यहाँ है, तो मुझे एक योग्य शत्रु मिलेगा। मेरे हथियार लाओ, बच्चों," उसने आदेश दिया। गुफा में मौजूद सभी छोटे-बड़े शैतानों ने कमर कस ली और जितनी जल्दी हो सके बारह फुट लंबा स्टील का भाला उठाकर बूढ़े राक्षस को सौंप दिया, जिसने उन्हें निर्देश दिए: "बच्चों, तुम्हें व्यवस्थित रूप से खड़े रहना होगा।"

जो आगे बढ़ेंगे उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा, और जो पीछे हटेंगे उन्हें मृत्युदंड दिया जाएगा।"

आदेश मिलते ही छोटे शैतान बूढ़े राक्षस के पीछे दरवाजे से बाहर निकल भागे, जिसने चिल्लाकर पूछा, "सन वुकॉन्ग कौन है?" बंदर प्रवेश द्वार के पास से आगे बढ़ा और देखा कि राक्षस राजा कितना बदसूरत और खूंखार दिख रहा था।

अध्याय 50

702

पश्चिम की यात्रा

एक अकेला नुकीला सींग,

चमकीली आँखों की एक जोड़ी।

उसके सिर के ऊपर मोटी त्वचा उभरी हुई थी।

उसके कानों के पास काली त्वचा चमक रही थी।

जब वह अपनी जीभ बाहर निकालता था तो वह अपनी थूथन को चाट सकता था;

जब उसने अपना मुंह चौड़ा खोला तो उसके पीले दांत दिखाई दिए।

उसके बाल गहरे नीले रंग के थे।

उसकी मांसपेशियां लोहे की तरह सख्त थीं।

वह गैंडे की तरह था, लेकिन पानी के आर-पार नहीं देख सकता था।

दिखने में भैंस जैसा था लेकिन हल नहीं चला सकता था।

यह उस बैल की तरह उपयोगी नहीं है जो चंद्रमा को देखकर रंभाता है।

वह आसानी से आकाश को भयभीत कर सकता था और पृथ्वी को हिला सकता था।
उसके बैंगनी रंग के हाथ मांसपेशियों से जकड़े हुए थे।
वह अपने लोहे के भाले के साथ सीधा खड़ा था।
उसके भयानक रूप को देखकर ही कोई भी अंदाजा लगा सकता था।
यह जानने के लिए कि उन्हें गैंडों का राजा कहलाने का हकदार क्यों माना जाता था।
महान ऋषि बंदर ने आगे बढ़ते हुए कहा, "तुम्हारा दादा बंदर यहाँ है। मेरे स्वामी को मुझे वापस दे दो, हम दोनों में से किसी को भी चोट नहीं पहुँचेगी। लेकिन अगर तुमने ज़रा सा भी 'ना' कहा, तो मैं तुम्हें मार डालूँगा और तुम्हारे अवशेषों को दफ़नाने की कोई जगह नहीं बचेगी।"
"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, तुम बदतमीज़ बंदर!" राक्षस दहाड़ते हुए बोला। "तुम्हारे पास कौन सी शक्तियां हैं जो तुम्हें इस तरह बोलने की हिम्मत देती हैं?"
"जाहिर है तुमने उन्हें अभी तक नहीं देखा है," बंदर ने जवाब दिया।
"तुम्हारे स्वामी ने मेरे कपड़े चुरा लिए," राक्षस ने कहा, "और अब मैंने उसे पकड़ लिया है और मैं उसे पकाकर खाऊंगा।"
तुम खुद को किस तरह का बहादुर समझते हो, जो यहां आकर उसे वापस मांगने की हिम्मत कर रहे हो?
"मेरे गुरु एक वफादार, ईमानदार और अच्छे भिक्षु हैं: वे किसी भी तरह से आपकी कोई भी शैतानी वस्तु नहीं चुरा सकते थे।"
बंदर ने जवाब दिया।
अध्याय 50
703
पश्चिम की यात्रा
"मैंने पहाड़ी रास्ते पर एक जादुई विला बनाया," राक्षस ने कहा, "और तुम्हारा स्वामी चुपके से अंदर घुस गया। वह अपने लालच में इतना बह गया कि उसने तीन रजाईदार ब्रोकेड जैकेट चुरा लिए। मैंने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। अगर तुम्हारे पास वाकई कोई शक्तियां हैं तो मैं तुमसे मुकाबला करूंगा। तीन दौर तक मेरा सामना कर पाए तो मैं तुम्हारे स्वामी की जान बख्श दूंगा; अगर नाकाम रहे तो तुम उसके साथ पाताल लोक जाओगे।"
“चुप रहो, दुष्ट राक्षस,” बंदर ने जवाब दिया। “लड़ाई मुझे बहुत पसंद आएगी। इधर

आओ और मेरे डंडे का स्वाद चखो।" राक्षस लड़ने से बिल्कुल नहीं डरा और उसने अपना भाला बंदर के सिर पर दे मारा। यह एक शानदार लड़ाई थी। बस देखिए:
सोने की पट्टी वाली लाठी उठाई गई,
लंबे हैंडल वाले भाले ने हमले को रोक दिया।
सोने की पट्टी वाली लाठी उठाई गई,
बिजली की सुनहरी लपटों की तरह चमकता हुआ।
लंबे हैंडल वाले भाले ने वार को रोका,
समुद्र से निकलते हुए अजगर की तरह चमकता हुआ।
दरवाजे के बाहर छोटे शैतान अपने ढोल बजा रहे हैं,
उसकी शक्ति बढ़ाने के लिए उसे युद्ध क्रम में व्यवस्थित किया गया था।
जब महान ऋषि ने अपनी कुशलता का प्रदर्शन किया,
वह खुलकर अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर रहा था।
एक तरफ भाला और दृढ़ मनोबल,
इसके विरुद्ध लाठी और युद्ध कौशल का प्रयोग किया जा सकता है।
दरअसल, यह नायक बनाम नायक की लड़ाई थी।
दो एक-दूसरे के बिल्कुल बराबर के दुश्मन।
दानव राजा ने बैंगनी रंग की कुंडलित धुंध बाहर निकाली।
महान ऋषि की आँखों की चमक से रंगीन बादल बन रहे थे, केवल इसलिए क्योंकि तांग पुजारी मुसीबत में था।
क्या उन दोनों ने इतनी बेरहमी से लड़ाई लड़ी कि कोई रहम नहीं किया गया?
तीस असफल दौरों के बाद दानव राजा ने देखा कि सन वुकॉन्ग गदा चलाने में पूर्ण रूप से माहिर था, जो बिना कोई खामी छोड़े आगे या पीछे हट सकता था। "क्या शानदार बंदर है!" वह बार-बार यही कहता रहा। (अध्याय 50)

प्रशंसा भरे स्वर में, "क्या शानदार बंदर है। यही वो कौशल था जिसने स्वर्ग में तबाही मचा दी थी।"
बंदर भी राक्षस राजा के भाले चलाने के सटीक तरीके से प्रभावित हुआ, क्योंकि वह बड़ी कुशलता से दाएं-बाएं वार को रोक रहा था।

“क्या गजब का हौसला है,” उसने कहा, “क्या गजब का हौसला है। वह सचमुच एक शैतान है जो अमृत की गोलियां चुराना जानता है।” इसके बाद उन दोनों ने दस-बीस और दौर तक लड़ाई लड़ी।

राक्षस राजा ने अपने भाले की नोक से ज़मीन को छुआ और अपने छोटे शैतानों को आगे आने का आदेश दिया। वे सभी दुष्ट राक्षस अपनी कटारों, लाठियों, तलवारों और भालों से महान ऋषि को घेर लिया। बंदर बिल्कुल भी नहीं डरा।

“मुझे खुशी है कि तुम आ गए,” वह चिल्लाया, “मुझे खुशी है कि तुम आ गए। मुझे यही चाहिए था।” अपने सोने की पट्टी वाले डंडे से उसने आगे-पीछे और दोनों तरफ से उनके हमलों को रोका, लेकिन शैतान पीछे हटने को तैयार नहीं थे। धैर्य खोकर बंदर ने अपना डंडा हवा में उछाला, चिल्लाया, “बदलो!” और उसे एक हजार से अधिक डंडों में बदल दिया जो आकाश से उड़ते हुए साँपों की तरह बरसने लगे, जिससे शैतान बुरी तरह डर गए और जान बचाकर अपने सिर पर हाथ रखकर अपनी गुफाओं में भाग गए।

“बंदर, तमीज़ से पेश आओ,” राक्षस ने उपहास भरी हंसी के साथ कहा, “और ये करतब देखो।” उसने तुरंत अपनी आस्तीन से एक चमकदार सफेद अंगूठी निकाली और “पकड़ो इन्हें!” चिल्लाते हुए उसे हवा में उछाल दिया। वह घूमती हुई नीचे आई और अपने अंदर मौजूद सभी सोने की पट्टियों वाले डंडों को पकड़ लिया, जिससे बंदर को अपनी जान बचाने के लिए कलाबाजी मारनी पड़ी क्योंकि अब वह निहत्था हो चुका था। राक्षस राजा विजयी होकर अपनी गुफा में लौट गया, जबकि भाई बंदर पूरी तरह से हैरान रह गया।

रास्ता एक कदम बढ़ गया, लेकिन दानव दस कदम बढ़ गया।

अंधे और भ्रमित होने के कारण, वे यह देखने में असफल रहे कि घर नकली था।

अफसोस की बात है कि धर्म शरीर के लिए कोई स्थान नहीं मिला:

उन्होंने अपने कार्यों और विचारों में बहुत बड़ी गलती की थी।

अगर आपको नहीं पता कि यह सब कैसे समाप्त हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 51

हजारों चालें चलने वाला मन-बंदर व्यर्थ ही ऐसा करता है

आग और पानी राक्षस को नुकसान पहुंचाने में विफल रहे।

यह कहानी बताती है कि कैसे स्वर्ग के समान महान ऋषि खाली हाथ और पराजित होकर माउंट जिंदौ के पीछे बैठ गए, उनकी दोनों आंखों से आंसू बह रहे थे।
"गुरुजी," उसने पुकारा, "मुझे उम्मीद थी..."
अध्याय 51
705
पश्चिम की यात्रा
भगवान बुद्ध ने कृपापूर्वक हमें एक साथ लाया
हे स्वामी, आपके साथ सदा रहने के लिए।
आपके साथ प्रशिक्षण लेने और स्वतंत्र होना सीखने के लिए।
मुझे जो भी उपकार प्राप्त हुए, मैं उनका सदा ध्यान रखूंगा।
हमारे दिल एक-दूसरे से जुड़ गए थे और हमारी किस्मतें आपस में गुंथी हुई थीं;
जब हम इस मार्ग का अध्ययन कर रहे थे, तब हम दोनों के विचार एक जैसे थे।
मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि मैं इस हद तक हताश हो जाऊँगा।
मेरे हाथ में छड़ी न होने पर मैं जीत नहीं सकता।"
जब मंकी घोर दुख में डूबा हुआ था, तभी उसने सोचा, "वह दुष्ट जानता था कि मैं कौन हूँ। मुझे याद है कि लड़ाई के दौरान मेरी प्रशंसा करते हुए उसने कुछ ऐसा कहा था कि मेरे कौशल ने स्वर्ग में भी तबाही मचा दी थी।"
इसका मतलब है कि वह कोई आम इंसान या राक्षस नहीं हो सकता: वह ज़रूर स्वर्ग से आया कोई दुष्ट तारा होगा जो सांसारिक चीज़ों के लालच में धरती पर उतरा है। मुझे नहीं पता कि वह कहाँ से आया है, इसलिए बेहतर होगा कि मैं स्वर्ग जाकर कुछ पूछताछ करूँ।
तभी बंदर ने अपना दिमाग लगाना शुरू किया और फिर से पहल की। वह तुरंत एक शुभ बादल पर कलाबाजी करते हुए सीधे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार की ओर बढ़ा, जहाँ उसने ऊपर देखा तो विशाल दृष्टि वाले स्वर्ग के राजा विरुपाक्ष उसे प्रणाम करते हुए और यह कहते हुए दिखाई दिए, "हे महान ऋषि, आप कहाँ जा रहे हैं?"
बंदर ने कहा, "मुझे जेड सम्राट से किसी काम से मिलना है। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"
"आज स्वर्ग के दक्षिणी द्वार की निगरानी करने की मेरी बारी है," विरुपाक्ष ने उत्तर दिया, और उनके बोलने से पहले ही चारों सेनापति मा, झाओ, वेन और गुआन ने

झुककर कहा, "महान ऋषि, हम आपको प्रणाम करना भूल गए। क्या आप चाय पिएंगे?"
"मैं व्यस्त हूँ," बंदर ने उत्तर दिया, और विरुपाक्ष और चारों सेनापतियों से विदा लेकर वह द्वार से अंदर चला गया और सीधे चमत्कारिक धुंध के हॉल की ओर बढ़ गया, जहाँ चारों स्वर्गीय गुरु झांग दाओलिंग, गे शियानवेंग, जू जिंगयांग और किउ होंगजी, दक्षिणी सप्तर्षि के छह अधिकारी और उत्तरी सप्तर्षि के सात मूल तत्व सभी ने महल के हॉल के सामने उसका अभिवादन करते हुए हाथ उठाए।
“हे महान ऋषि, आप यहाँ किसलिए आए हैं?” उन्होंने पूछा और आगे कहा, “क्या आपने तांग पुजारी को विदा करने का कार्य पूरा कर लिया है?”
“अभी इस तरह की बातें करना जल्दबाजी होगी,” बंदर ने जवाब दिया। “यह बहुत लंबी यात्रा है, जिसमें रास्ते में कई राक्षस मिलेंगे और हमने अभी आधी ही यात्रा पूरी की है। फिलहाल हम जिंदौ पर्वत पर स्थित जिंदौ गुफा में फंसे हुए हैं, जहां एक गैंडे की आत्मा ने मेरे स्वामी को पकड़ लिया है और उन्हें गुफा में ले गई है। जब मैं वहां गया और उससे लड़ा, तो उसके पास इतनी जबरदस्त जादुई शक्तियां थीं कि उसने मेरी सोने की पट्टी वाली गदा छीन ली। मेरे लिए उसे पकड़ना नामुमकिन है। इसीलिए मैं जेड सम्राट पर लापरवाही से निगरानी रखने का आरोप लगाने आया हूं।”
"तुम पहले की तरह ही जंगली और दुष्ट हो, बंदर," जू जिंगयांग ने मुस्कुराते हुए कहा।
अध्याय 51

पश्चिम की यात्रा
"नहीं, मैं ऐसा नहीं हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी बेबाकी से बात की है क्योंकि आगे बढ़ने का यही एकमात्र तरीका है।"
"बस करो ये बातें," स्वर्गीय गुरु झांग दाओलिंग ने कहा। "हम आपके आगमन की सूचना दे देंगे।"
"बहुत-बहुत धन्यवाद," बंदर ने जवाब दिया।
चारों स्वर्गीय गुरुओं ने यह सब चमत्कारी धुंध के हॉल में बताया और फिर बंदर को सिंहासन तक जाने वाली जेड की सीढ़ियों पर ले गए। बंदर ने आदरपूर्वक ज़ोर से "री-ई-ई" की आवाज़ निकाली और फिर कहा, "अच्छा, बूढ़े, मैं आपको परेशान करने आया हूँ। मैं आपको पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए तांग पुजारी को ले जाने के

सभी खतरों के बारे में बताकर उबाऊ नहीं बनाऊँगा, लेकिन हम अब जिंदौ पर्वत पर स्थित जिंदौ गुफा में पहुँच गए हैं जहाँ एक गैंडे जैसे राक्षस ने तांग पुजारी को पकड़ लिया है और उसे अपनी गुफा में ले गया है। मुझे नहीं पता कि राक्षस उसे भाप में पकाने, उबालने या सुखाने की योजना बना रहा है या नहीं।"

जब मैं गुफा में गया और उससे लड़ा, तो वह मुझे पहचान गया, और सचमुच उसके पास चमत्कारी शक्तियां हैं। उसने मेरा सोने की पट्टी वाला डंडा ले लिया है, इसलिए मैं उसे पकड़ नहीं सकता। मुझे लगता है कि वह स्वर्ग से आया कोई दुष्ट तारा है जो सांसारिक चीजों के लालच में धरती पर उतरा है, इसीलिए मैं यहां विनती करने आया हूं। हे प्रभु, मैं आपसे आपकी दया और विवेक से विनती करता हूं कि आप दुष्ट तारों का निरीक्षण करने और उस राक्षस को पकड़ने के लिए सेना भेजने का आदेश दें। मैं आपके भय से कांप रहा हूं। फिर उसने गहरा प्रणाम किया और कहा, "मैं यह रिपोर्ट प्रस्तुत करता हूं।"

हॉल के एक तरफ खड़े गे जियानवेंग ने मुस्कुराते हुए कहा, "ऐसा क्यों है कि आप पहले जिद्दी थे लेकिन अब सम्मानजनक हैं?"

"ऐसा नहीं है," बंदर ने कहा, "बिल्कुल भी नहीं। मैं सम्मानजनक नहीं बन गया हूँ। बस आज मेरे पास मेरा डंडा नहीं है।"

बंदर की शिकायत सुनकर जेड सम्राट ने तारा अधिकारी केहान को सीधा आदेश भेजा: "कृपया सभी आकाशों के सभी तारों का निरीक्षण करें और पता लगाएं कि क्या किसी नक्षत्र के कोई दिव्य राजा सांसारिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति के कारण पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं। बाद में रिपोर्ट दें।" यह आदेश प्राप्त करके सच्चे भगवान केहान महान ऋषि के साथ निरीक्षण करने के लिए निकल पड़े। सबसे पहले वे स्वर्ग के चारों द्वारों पर स्थित दिव्य राजाओं और अधिकारियों से मिलने गए। फिर उन्होंने तीन छोटे घेरों के भीतर सभी सच्चे देवताओं का निरीक्षण किया; गर्जन अधिकारी ताओ, झांग, शिन, डेंग, गौ, बी, पांग और लियू; और तैंतीस आकाश, जो सभी अपनी-अपनी जगह पर थे। इसके बाद उन्होंने अट्ठाईस राशि चक्र नक्षत्रों की जाँच की: पूर्व में सींग, गलफड़ा, आधार, कक्ष, ओरियन, पूंछ और भस्मक; पश्चिम में सप्तर्षि, बैल, स्त्री, बंजर, छत, घर और दीवार; और उत्तर और दक्षिण के नक्षत्रों की भी जाँच की। लेकिन सभी नक्षत्र शांतिपूर्वक अपने स्थान पर स्थित थे। उन्होंने सूर्य, चंद्रमा, जल, अग्नि, लकड़ी, धातु और पृथ्वी की सात शक्तियों का निरीक्षण किया; और राहु,

केतु, गैस और धूमकेतु सहित चार अन्य शक्तियों का भी। आकाश में कोई भी तारा सांसारिक वस्तुओं के प्रेम में पृथ्वी पर नहीं उतरा था।

“तो फिर,” बंदर ने कहा, “चमत्कारी धुंध के हॉल तक की मेरी यात्रा व्यर्थ गई। मैंने महाराज जेड को परेशान किया है—यह मेरे लिए बहुत असुविधाजनक था। बेहतर होगा कि आप जाएं और वापस आकर मुझे बताएं। मैं यहां आपके जवाब का इंतजार करूंगा।” सच्चे भगवान केहान ने वैसा ही किया जैसा उन्हें कहा गया था, और बंदर लंबे इंतजार में जुट गया। उसने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक कविता बनाई, जो इस प्रकार थी:

शुद्ध हवाएं, बादलों से रहित आकाश और परम शांति;
शांत देवता, उज्ज्वल चमकते तारे और स्पष्ट आशीर्वाद।
आकाशगंगा अभी भी स्थिर है; आकाश के संकट थम गए हैं;
पूरी दुनिया में हमें युद्ध की कोई आवाज सुनाई नहीं देती।

अध्याय 51

707

पश्चिम की यात्रा

सच्चे भगवान केहान ने अपने विस्तृत निरीक्षण के बाद जेड सम्राट को रिपोर्ट दी: "आकाश में कोई तारा या नक्षत्र अनुपस्थित नहीं है। सभी क्षेत्रीय देवता और अधिकारी उपस्थित हैं, और कोई भी सांसारिक वस्तुओं के लालच में पृथ्वी पर नहीं उतरा है।" यह रिपोर्ट सुनकर जेड सम्राट ने सन वुकॉन्ग को आदेश दिया कि वह कुछ स्वर्गीय सेनापतियों को चुनकर राक्षस को पकड़ने के लिए पृथ्वी पर भेजे।

जब चारों स्वर्गीय गुरुओं को यह आदेश दिया गया, तो वे चमत्कारी धुंध के हॉल से निकलकर बंदर से बोले, "महान ऋषि, जेड सम्राट अपनी उदारता से आपको आदेश देते हैं कि आप कुछ स्वर्गीय सेनापतियों को चुनकर पृथ्वी पर भेजें ताकि वे राक्षस को पकड़ सकें, क्योंकि सांसारिक वस्तुओं के लालच में कोई भी तारा वहां नहीं गया है।"

बंदर ने सिर झुकाकर सोचा, "स्वर्ग के अधिकांश सेनापति मेरे जितने अच्छे नहीं हैं: मुझसे बेहतर तो कुछ ही हैं।"

जब मैंने स्वर्ग में तबाही मचाई, तो जेड सम्राट ने अपने एक लाख दिव्य सैनिकों को भेजा जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी पर जाल बिछा दिया, लेकिन उनमें से किसी भी सेनापति ने मुझसे लड़ने की हिम्मत नहीं की। केवल एक ही व्यक्ति जो मेरा मुकाबला

कर सकता था, वह था नन्हा ऋषि एरलांग जिसे उन्होंने बाद में भेजा था। उस दानव की शक्तियाँ मेरी शक्तियों के बराबर हैं, तो मैं उसे भला कैसे हरा पाऊँगा?

“समय बदल गया है,” स्वर्ग के गुरु जू जिंगयांग ने कहा। “जैसा कि कहावत है, हर चीज को किसी न किसी चीज से हराया जा सकता है। क्या आप शाही फरमान की अवहेलना करने का साहस करेंगे? अपने उत्कृष्ट विवेक के अनुसार कुछ दिव्य सेनापतियों का चयन करें और समय बर्बाद न करें: यह विनाशकारी हो सकता है।”

“तो फिर,” बंदर ने कहा, “महाराज की कृपा के लिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ, और मैं उनके आदेशों का उल्लंघन करने का साहस नहीं करूँगा। इसके अलावा, मैं नहीं चाहता कि मेरी यह यात्रा व्यर्थ जाए। इसलिए कृपया जेड सम्राट से कहें कि वे स्वर्ग के राजा ली (शिविर वाहक) और राजकुमार नेझा को भेजें। उनके पास राक्षस-वश में करने वाले हथियार हैं, तो देखते हैं कि अगर वे पृथ्वी पर जाकर उस राक्षस से लड़ें तो क्या होता है। अगर वे उसे पकड़ लेते हैं तो मेरी किस्मत अच्छी होगी, और अगर वे नहीं पकड़ पाते तो हमें फिर से सोचना पड़ेगा।”

स्वर्ग के गुरु ने यह सूचना जेड सम्राट को दी, जिन्होंने स्वर्ग के राजा ली और उनके पुत्र राजकुमार नेझा को अपनी दिव्य सेना के साथ बंदर की सहायता के लिए भेजने का आदेश दिया। स्वर्ग के राजा आज्ञाकारी होकर बंदर से मिलने गए, जहाँ बंदर ने स्वर्ग के गुरु से कहा, "स्वर्ग के राजा को भेजने के लिए मैं जेड सम्राट का अत्यंत आभारी हूँ। मेरी एक और विनती है कि आप उसे बता दें। मैं चाहता हूँ कि जब स्वर्ग के राजा राक्षस से लड़ रहे हों, तब दो गर्जन देवता बादलों में खड़े होकर उसके सिर पर गर्जन के टुकड़े फेंककर उसे मार डालें।"

यह एक बहुत अच्छा तरीका होगा।"

"बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया," स्वर्ग के गुरु ने कहा और उन्होंने यह अनुरोध जेड सम्राट को बताया, जिन्होंने तब नौ स्वर्गों के कार्यालय को आदेश दिया कि वे गर्जन देवता डेंग हुआ और झांग फैन को स्वर्ग के राजा ली की सहायता के लिए भेजें ताकि वे राक्षस को पकड़ सकें। फिर वे स्वर्ग के राजा और महान ऋषि के साथ स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से बाहर निकल गए।

वे जल्द ही वहाँ पहुँच गए। बंदर ने कहा, "यह जिंदौ पर्वत है, और जिंदौ गुफा इसी में स्थित है। मैं चाहता हूँ कि आप सभी सज्जन यह तय करें कि आप में से कौन सबसे पहले राक्षस को युद्ध के लिए चुनौती देगा।" स्वर्ग के राजा ने अपने बादल को रोक

दिया और पर्वत की दक्षिणी ढलानों के नीचे अपनी सेना को डेरा डाला।
"जैसा कि आप जानते हैं, महान ऋषि," उन्होंने कहा, "मेरे पुत्र नेझा ने छियानवे अलग-अलग गुफाओं में राक्षसों को पराजित किया है, वह रूप परिवर्तन में बहुत निपुण है, और वह हमेशा अपने राक्षस-वशीकरण हथियार अपने साथ रखता है। उसे सबसे पहले युद्ध में जाना चाहिए।"
"हाँ, बिल्कुल," बंदर ने कहा। "मैं उसे अपने साथ ले चलूँगा।"
राजकुमार ने अपनी शौर्य शक्ति का आह्वान किया, महान ऋषि के साथ पर्वत की चोटी पर छलांग लगाई और सीधे गुफा के प्रवेश द्वार पर गए, जहाँ उन्होंने पाया कि दरवाजे कसकर बंद थे और अध्याय 51 में कोई भी बुरी आत्मा दिखाई नहीं दे रही थी।

चट्टानी चेहरा। "दुष्ट राक्षस," बंदर चिल्लाते हुए दरवाजों तक गया, "तुरंत दरवाजा खोलो और मेरे स्वामी को वापस दे दो।"
जब दरवाजों की रखवाली कर रहे छोटे शैतानों ने यह देखा तो वे जल्दी से वापस आकर सूचना देने लगे, "महाराज, नौसिखिया सन के साथ एक छोटा लड़का है और वह आपको दरवाजों के बाहर युद्ध के लिए चुनौती दे रहा है।"
“मेरे पास उसका सोने की पट्टी वाला डंडा है,” राक्षस राजा ने कहा, “और वह निहत्थे मुझसे लड़ नहीं पाएगा, इसलिए मुझे लगता है कि उसने कुछ अतिरिक्त सैनिक बुला लिए होंगे। मेरे हथियार लाओ!” फिर वह अपना भाला लहराते हुए बाहर देखने चला गया। वह छोटा लड़का देखने में बेहद मासूम और अद्भुत था, और शक्ति और जोश से भरपूर था। सचमुच: उसका चेहरा पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह चमक रहा था।
लाल होंठ, चौकोर आकार का मुंह और चांदी के दांत।
उसकी आंखों की भयानक पुतलियों से बिजली सी चमक रही थी;
उनकी चौड़ी और सुंदर रंगत वाली भौंहों पर बालों के गुच्छे थे।
उसकी कमरबंद हवा में ज्वाला की लपटों की तरह लहरा रही थी;
सूर्य की रोशनी में रेशमी गाउन सुनहरे रंग में चमक रहा था।
चमकीले छल्लों ने उसकी छाती पर एक कांस्य दर्पण को पकड़ रखा था।
और कीमती कवच ने उसके योद्धा के जूतों को खूब शोभा दी।

शरीर से छोटा, लेकिन आवाज में शक्तिशाली।
भयानक नेझा, धर्म के रक्षक।
"तुम स्वर्ग के राजा ली के तीसरे पुत्र, राजकुमार नेझा हो," राक्षस ने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम मेरे दरवाजे पर चिल्लाते हुए क्यों आए हो?"
"क्योंकि तुमने पूर्व के पवित्र भिक्षु को हानि पहुँचाकर मुसीबत खड़ी की है, हे दुष्ट राक्षस। मैं जेड सम्राट के आदेश पर तुम्हें गिरफ्तार करने आया हूँ।"
"मुझे यकीन है कि सन वुकॉन्ग ने ही तुम्हें यहाँ बुलाया होगा," दानव राजा ने भयंकर क्रोध में कहा। "हाँ, मैं ही वह दानव हूँ जिसने पवित्र भिक्षु को पकड़ रखा है। अगर तुम ऐसी बकवास करने की हिम्मत करते हो, तो मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारे पास युद्ध कौशल कैसा है, नन्हे लड़के।"
"जहाँ हो वहीं रहो और देखो कि तुम्हें मेरा भाला कैसा लगता है।"
राजकुमार ने तुरंत अपनी राक्षस-काटने वाली तलवार से वार का जवाब दिया। दोनों के बीच हाथापाई शुरू होते ही युद्ध छिड़ गया। बंदर पहाड़ के चारों ओर दौड़ते हुए चिल्लाया, "गरज के देवता कहाँ हैं? जल्दी करो और राजकुमार की मदद करने के लिए उस राक्षस पर अपनी गरज की लपटें चलाओ।"
गर्जन के देवता डेंग और झांग तुरंत अपने बादलों पर सवार होकर आक्रमण करने ही वाले थे कि राजकुमार नेझा ने जादू का प्रयोग करके स्वयं को तीन सिर और छह भुजाएँ दे लीं, जिनसे उन्होंने छह हथियार धारण किए और राक्षस पर प्रहार किया। इसके बाद दानव राजा ने भी स्वयं को तीन सिर और छह भुजाएँ दे लीं, जिनसे उन्होंने तीन लंबे भाले धारण किए। (अध्याय 51)

जिन पर उसने प्रहारों को रोक दिया। इसके बाद राजकुमार ने अपनी राक्षस-वशीकरण धर्म शक्ति का प्रयोग करते हुए अपने छह शस्त्रों को हवा में उछाल दिया। वे छह शस्त्र कौन से थे? राक्षस-मुखदाने वाली तलवार, राक्षस-काटने वाली कटार, राक्षस-बांधने वाली रस्सी, राक्षस-शांत करने वाला मूसल, कढ़ाईदार गेंद और अग्नि-चक्र।
नेझा ने "बदलो!" चिल्लाया और उनमें से प्रत्येक दस, प्रत्येक दस सौ, प्रत्येक सौ हज़ार और प्रत्येक हज़ार दस हज़ार एक जैसे हथियारों में बदल गए, जो ओलावृष्टि की तरह राक्षस पर टूट पड़े। राक्षस राजा ज़रा भी नहीं डरा। उसने अपनी चमकती हुई

सफेद अंगूठी निकाली और "इन्हें पकड़ो!" चिल्लाते हुए उसे हवा में उछाल दिया। जैसे ही वह सीटी बजाती हुई नीचे आई, उसने छहों अलग-अलग प्रकार के हथियारों को पकड़ लिया, जिससे नेझा इतना भयभीत हो गया कि वह खाली हाथ अपनी जान बचाकर भाग गया। राक्षस राजा विजयी होकर अपनी गुफा में लौट गया।

जब दोनों गर्जन देवताओं ने आकाश से यह देखा तो वे मन ही मन मुस्कुराए और बोले, "अच्छा हुआ कि हमें स्थिति का अंदाज़ा हो गया और हमने अपने गर्जन के टुकड़े नहीं फेंके। अगर वह उन्हें भी पकड़ लेता तो हम स्वर्ग के पूजनीय लोगों को बताने की हिम्मत ही नहीं कर पाते।" दोनों ने अपने बादल नीचे उतारे और राजकुमार के साथ पर्वत के दक्षिणी ढलान पर चले गए।

उन्होंने स्वर्ग के राजा ली से कहा, "राक्षस राजा के पास सचमुच अपार शक्तियां हैं।"

बंदर हंसते हुए बोला, "उस दुष्ट राक्षस की जादुई शक्तियां कुछ खास नहीं हैं, सिवाय उस भयानक अंगूठी के। मुझे आश्चर्य है कि वह किस प्रकार का खजाना है और हवा में फेंके जाने पर वह सब कुछ कैसे पकड़ लेती है।"

"हे महान ऋषि, आपमें जरा भी इंसानियत नहीं है," नेझा ने क्रोधित होकर कहा। "हम बुरी तरह हार गए हैं और बहुत परेशान हैं, और वो भी आपकी वजह से। आपको हंसने की क्या जरूरत है?"

"तुम शायद परेशान हो, लेकिन तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि मैं परेशान नहीं हूँ?" बंदर ने जवाब दिया। "मैं बहुत परेशान हूँ, और क्योंकि मैं रो नहीं सकता, इसलिए हंसना ही एकमात्र उपाय है।"

"हम इस सब का अंत कैसे करेंगे?" स्वर्ग के राजा ने पूछा।

"तुम लोग जो चाहो योजना बना लो," बंदर ने कहा, "लेकिन हम उसे केवल उसी चीज से पकड़ सकते हैं जिसे उसकी अंगूठी पकड़ न सके।"

"उनकी अंगूठी से सबसे अच्छी चीज जो नहीं रुकती, वो हैं पानी और आग," स्वर्ग के राजा ली ने कहा। "जैसा कि कहावत है, पानी और आग किसी पर दया नहीं दिखाते।"

"तुम सही कह रहे हो," बंदर ने जवाब दिया। "जब तक मैं वापस स्वर्ग नहीं जाता, तब तक तुम यहीं चुपचाप बैठे रहो।"

"किसलिए?" दोनों गर्जन देवताओं ने पूछा।

“इस बार मैं जेड सम्राट की याद में कोई स्मारक नहीं बनाऊंगा,” बंदर भाई ने कहा। “मैं सीधे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से लाल वैभव के महल में जाऊंगा और अग्नि के तारा

स्वामी यिंगहुओ से यहां आकर आग लगाने का अनुरोध करूंगा, जिससे राक्षस जल उठेगा और शायद उसकी अंगूठी भी राख हो जाएगी, ताकि हम उसे पकड़ सकें। फिर आप अपने हथियार वापस ले सकते हैं और स्वर्ग लौट सकते हैं, और मेरे स्वामी को बचाया जा सकता है।"

यह सुनकर राजकुमार बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "हे महान ऋषि, कृपया समय बर्बाद न करें और जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाएं। हम यहीं आपका इंतजार करेंगे।"

बंदर ने अपना शुभ प्रकाश फिर से जलाया और सीधे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार पर वापस चला गया, जहाँ विरुपाक्ष और चारों सेनापति उससे मिले और पूछा, "हे महान ऋषि, आप फिर से क्यों लौट आए हैं?"

अध्याय 51

पश्चिम की यात्रा

"स्वर्गीय राजा ली ने राजकुमार नेझा को युद्ध में भेजा था," बंदर ने उत्तर दिया, "लेकिन पहले ही युद्ध में दानव राजा ने उसके सभी छह हथियार छीन लिए। अब मैं लाल वैभव के महल में जाकर अग्नि के तारा स्वामी से युद्ध में सहायता माँगना चाहता हूँ।" चारों सेनापतियों ने उसे और देर न करते हुए अंदर जाने दिया।

जब वह क्रिमसन स्प्लेंडर के महल में पहुंचा तो अग्नि के सभी देवता यह सूचना देने के लिए अंदर गए, "सन वुकॉन्ग आपसे मिलने आया है, मेरे स्वामी।"

दक्षिण के अग्नि के तारा स्वामी ने अपने वस्त्र समेटे और उनका अभिवादन करते हुए बाहर आए।

"केहान कल हमारा निरीक्षण करने आया था, और यहाँ कोई भी सांसारिक चीजों की लालसा नहीं कर रहा है।"

"मुझे पता है," बंदर ने उत्तर दिया। "स्वर्ग के राजा ली और राजकुमार नेझा युद्ध में हार गए हैं और अपने हथियार खो चुके हैं, इसीलिए मैं आपकी मदद मांगने यहाँ आया हूँ।"

"नेझा तीसरे वेदी, समुद्रों के देवता हैं, जिन्होंने सबसे पहले निन्यानवे गुफाओं के राक्षसों को वश में करके प्रसिद्धि प्राप्त की," अग्नि के तारा स्वामी ने उत्तर दिया। "उनकी जादुई शक्तियाँ अपार हैं, इसलिए यदि वे उस राक्षस को वश में नहीं कर सकते, तो मुझे ऐसा करने की क्या उम्मीद हो सकती है?"

“मैंने इस बारे में स्वर्ग के राजा ली से बात की है,” बंदर ने जवाब दिया। “जल और अग्नि स्वर्ग और पृथ्वी में सबसे शक्तिशाली चीजें हैं। उस राक्षस के पास एक ऐसी अंगूठी है जो चीजों को पकड़ सकती है। मुझे नहीं पता कि वह कौन सा खजाना है। जैसा कि कहते हैं कि आग सब कुछ नष्ट कर सकती है, इसलिए मैं आपसे, तारा स्वामी, यह विनती करने आया हूँ कि आप अपनी अग्नि सेना को नश्वर दुनिया में भेजें ताकि उस दुष्ट राक्षस को जलाकर राख कर दिया जाए और मेरे स्वामी को बचाया जा सके।”

जब अग्नि के तारा स्वामी ने यह सुना, तो उन्होंने अपनी दिव्य सेना को एकत्रित किया और बंदर के साथ जिंदौ पर्वत की दक्षिणी ढलानों पर गए, जहाँ उन्होंने स्वर्ग के राजा और गर्जन देवताओं से अभिवादन किया। स्वर्ग के राजा ली ने कहा, "महान ऋषि सूर्य, उस राक्षस को फिर से बुलाओ और मैं उससे लड़ना शुरू कर दूंगा। जब वह अपना छल्ला फेंकेगा, तो मैं रास्ते से हट जाऊंगा और तारा स्वामी अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए उसे जलाकर राख कर देंगे।"

"हाँ," बंदर ने कहा। "मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।" अग्नि तारा स्वामी, राजकुमार नेझा और दो गर्जन देवताओं के साथ एक ऊँची चोटी पर खड़े होकर राक्षस को युद्ध के लिए चुनौती देने लगे।

जब महान ऋषि जिंदौ गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुंचे तो वे चिल्लाए, "मुड़ जाओ! मेरे गुरु को तुरंत वापस दे दो।"

"सन वुकॉन्ग वापस आ गया है," छोटे शैतानों ने जल्दबाजी में सूचना दी, और राक्षस अपने दल को गुफा से बाहर लेकर बंदर से बोला, "बेशर्म बंदर, तू यहाँ कौन से सैनिक लाया है?"

स्वर्ग के राजा ली, जो पैगोडा को धारण करने वाले थे, आगे आकर चिल्लाए, "दुष्ट राक्षस, क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?"

"स्वर्गीय राजा ली," राक्षस ने हंसते हुए उत्तर दिया, "निस्संदेह आप अपने प्रतिष्ठित पुत्र का बदला लेना चाहते हैं और उसके हथियार वापस पाना चाहते हैं।"

“मुझे अपना बदला और उसके हथियार चाहिए,” स्वर्ग के राजा ने उत्तर दिया, “और मैं तुम्हें पकड़कर तांग पुजारी को भी छुड़ाऊंगा। तुम यहीं रहो, मैं तुम्हें अपनी तलवार से काट डालूंगा।” राक्षस ने वार से बचते हुए अपने भाले से पलटवार किया। गुफा के सामने दोनों के बीच एक शानदार लड़ाई हुई। बस देखिए: स्वर्ग के राजा ने अपनी

तलवार से वार किया,
राक्षस के भाले ने प्रहार को रोक दिया।
अध्याय 51
711
पश्चिम की यात्रा
तलवार ठंडी चमक रही थी और उससे आग निकल रही थी।
तेज भाले से अशुभ बादल निकल रहे थे।
उनमें से एक वह राक्षस था जो जिंदौ गुफा में पला-बढ़ा था;
दूसरे को चमत्कारी धुंध के हॉल से भेजा गया था।
एक व्यक्ति धर्म के स्वरूप को दबाने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहता था;
एक व्यक्ति अपनी महानता का उपयोग पुजारी को बचाने के लिए कर रहा था।
स्वर्ग के राजा की शक्तियों से रेत और कंकड़ उड़ने लगे।
जवाबी हमला करने वाले राक्षस ने धूल उड़ा दी।
धूल ने आकाश और पृथ्वी को अंधकार में ढक लिया।
रेत और कंकड़ के कारण समुद्र और जिगर दोनों ही मैले हो गए थे।
उन दोनों ने जीत के लिए कड़ी मशक्कत की।
क्योंकि तांग पुरोहित बुद्ध के दर्शन करना चाहता था।
जब बंदर ने उन दोनों को लड़ते देखा तो वह सबसे ऊँची चोटी पर कूद गया और अग्नि के तारा देवता से कहा, "ध्यान दो।" देखो, जब लड़ाई अपने चरम पर होती है तो दानव फिर से अपनी अंगूठी निकाल लेता है।
जब स्वर्ग के राजा ली ने यह देखा, तो उन्होंने अपना शुभ प्रकाश गतिमान किया और पराजित होकर भाग गए। तुरंत ही अग्नि के तारा स्वामी ने अपने शिखर से अपनी सेना को आदेश दिया कि वे अपनी सारी अग्नि एक साथ छोड़ दें। यह एक भयानक दृश्य था: शास्त्रों में कहा गया है कि दक्षिण में अग्नि का सार है।
एक चिंगारी भी
इससे एक लाख एकड़ जमीन जल सकती है।
स्टार लॉर्ड की शक्ति
इससे सौ तरह की आग पैदा हो सकती है।

उसके पास अग्नि भाले और अग्नि तलवारें थीं।
आग उगलने वाले धनुष और क्रॉसबो,
और उसके सभी देवता अलग-अलग हथियारों का इस्तेमाल करते थे।
आकाश आग के कौवों की कांव-कांव से भर गया था।
अध्याय 51
712
पश्चिम की यात्रा
पर्वतों की चोटियों पर अग्नि-परागित घोड़े सरपट दौड़ रहे थे।
आग बुझाने वाले चूहे दो-दो की संख्या में आते थे।
अग्नि ड्रैगन जोड़े में।
दो-दो की टोलियों में आग उगलते हुए चूहे निकले।
हजारों मील के क्षेत्र को लाल रंग से जगमगा देना;
अग्नि ड्रेगन के जोड़े घना धुआं उगल रहे थे।
चारों ओर अंधकार का साया छा गया।
दमकल गाड़ियां बाहर लाई गईं।
आग जलाने वाले बर्तन खुल गए।
जब आग के झंडे लहराए तो आकाश सूर्यास्त के लाल रंग से जगमगा उठा;
लाठियों से आग उगलने लगी और पूरी धरती दहक उठी।
इसके मुकाबले बैल जलाने का आरोप कुछ भी नहीं था;
इसने रेड क्रैग पर हमला करने वाले झोउ यू के अग्नियानों को पराजित कर दिया।
यह एक भयानक दिव्य प्रलय थी।
आग का एक भयंकर तूफान।
लेकिन आग के इस हमले से राक्षस ज़रा भी नहीं डरा। उसने अपनी अंगूठी हवा में उछाली, और जैसे ही वह सीटी बजाती हुई नीचे आई, उसने अग्नि-ड्रैगन, अग्नि-घोड़े, अग्नि-कौवे, अग्नि-चूहे, अग्नि-तलवारें, अग्नि-भाले, अग्नि-धनुष और अग्नि-बाण को पकड़ लिया। फिर राक्षस अपनी सेना के साथ विजय का जश्न मनाते हुए अपनी गुफा में लौट गया।
बेकार झंडा लिए अग्नि तारा स्वामी ने अपने अधिकारियों को वापस बुलाया और पर्वत के दक्षिणी ढलान पर स्वर्ग के राजा ली और अन्य लोगों के साथ जाकर बैठ गए।

उन्होंने बंदर से कहा, "महान ऋषि, मैंने पहले कभी इतना भयंकर राक्षस नहीं देखा। अब मेरे सारे अग्नि-प्राण उपकरण नष्ट हो गए हैं, मैं क्या करूँ?"
बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "शिकायत करना बंद करो। क्या आप लोग थोड़ी देर यहाँ बैठेंगे, जब तक मैं दोबारा जाऊँ?"
"इस बार तुम कहाँ जा रहे हो?" स्वर्ग के राजा ली ने पूछा।
"अगर उस राक्षस को आग से कोई फर्क नहीं पड़ता, तो मुझे यकीन है कि वह पानी से ज़रूर कमज़ोर पड़ जाएगा। जैसा कि कहावत है, पानी आग को हरा देता है। मैं स्वर्ग के उत्तरी द्वार पर जल के देवता, बुध ग्रह से प्रार्थना करने जा रहा हूँ कि वे जल की शक्ति का उपयोग करके गुफा में बाढ़ ला दें और राक्षस राजा को डुबो दें। तब मैं आपको आपकी सभी चीज़ें लौटा सकूँगा।"
"यह बहुत अच्छा विचार है," स्वर्ग के राजा ने कहा, "लेकिन मुझे डर है कि कहीं आपका स्वामी भी डूब न जाए।"

"कोई बात नहीं," बंदर ने कहा। "अगर वह डूब भी जाए तो मेरे पास उसे वापस ज़िंदा करने का तरीका है। लेकिन मैं आपका समय बर्बाद कर रहा हूँ, सज्जनों, और यह बिल्कुल गलत है।"
"तो फिर," अग्नि के तारा स्वामी ने कहा, "आप अपने रास्ते पर आगे बढ़ सकते हैं।"
महान ऋषि सूर्य, अपनी कलाबाजी करते हुए बादल पर सवार होकर सीधे स्वर्ग के उत्तरी द्वार की ओर चल पड़े। उन्होंने ऊपर देखा तो स्वर्ग के राजा वैश्रवण उन्हें प्रणाम कर पूछ रहे थे, "हे महान ऋषि सूर्य, आप कहाँ जा रहे हैं?"
बंदर ने कहा, "मुझे जल के तारा देवता से उनके अंधकारमय विशाल महल में मिलना होगा। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"
“आज गश्त लगाने की मेरी बारी है,” वैश्रवण ने उत्तर दिया। उनके बोलते ही चारों देव-सेनापति पांग, लियू, गौ और बी ने उनका विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया और उन्हें चाय भेंट की।
"क्योंकि मुझे बहुत जल्दी है, मैं आपको परेशान नहीं करूंगा," बंदर ने कहा और उनसे विदा लेकर सीधे अंधकारमय विशालता के महल में चला गया, जहाँ उसने जल के

सभी देवताओं को अपने आने की सूचना देने के लिए भेजा।
“स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि, सन वुकॉन्ग यहाँ आए हैं,” उन्होंने सूचना दी। यह जानकर जल के तारा देवता ने चारों सागरों, पाँच झीलों, आठ नदियों, चार धाराओं, तीन प्रमुख जलमार्गों और नौ सहायक नदियों के देवताओं के साथ-साथ सभी ड्रैगन राजाओं को भी विदा कर दिया, फिर अपनी टोपी सीधी की, कमर कसी और महल के द्वार से बाहर निकलकर उनका स्वागत करने और उन्हें अंदर ले जाने के लिए चले गए।
"कल केहान निरीक्षण के लिए यहाँ आया था," तारा स्वामी ने कहा। "उसे आश्चर्य हुआ कि क्या मेरे जल देवताओं में से कोई सांसारिक चीजों की लालसा के कारण राक्षस बन गया है। हम नदियों, समुद्रों और धाराओं के सभी देवताओं की जाँच कर रहे हैं, लेकिन अभी तक काम पूरा नहीं हुआ है।"
“वह दानव राजा कोई नदी देवता नहीं है,” बंदर ने कहा, “वह कहीं अधिक शक्तिशाली आत्मा है। जेड सम्राट ने स्वर्ग के राजा ली, राजकुमार नेझा और दो गर्जन देवताओं को उसे पकड़ने के लिए पाताल लोक में भेजा था, लेकिन उसने नेझा के छह जादुई हथियारों को एक अंगूठी से पकड़ लिया। इसलिए मुझे लाल वैभव के महल में जाकर अग्नि के तारा स्वामी से अपने सभी अग्नि देवताओं को आग लगाने के लिए कहने को कहा, लेकिन उस राक्षस ने अग्नि ड्रैगन, अग्नि अश्व और बाकी सब कुछ अपनी अंगूठी से पकड़ लिया। मेरा मानना है कि चूंकि उसे आग से कोई फर्क नहीं पड़ता, इसलिए वह पानी से कमजोर होगा, इसीलिए मैं यहां आपसे पानी का उपयोग करने, उस राक्षस को पकड़ने और स्वर्ग के सेनापतियों को वापस लाने का अनुरोध करने आया हूं।”
हथियार ले जाओ, और अपने मालिक को भी बचाओ।"
जब जल के तारा देवता ने यह सुना, तो उन्होंने पीली नदी के सरदार को महान ऋषि के साथ उनकी सहायता के लिए जाने का आदेश दिया। नदी सरदार ने अपनी आस्तीन से एक सफेद जेड का कटोरा निकालते हुए कहा, "मैं इसमें पानी ले जा सकता हूँ।"
"लेकिन इसमें ज्यादा देर तक पानी नहीं टिक सकता," बंदर ने कहा। "यह उस राक्षस को कैसे डुबो सकता है?"
"मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ जब मैं कहता हूँ कि इस कटोरे में पीली नदी का सारा पानी समा सकता है," अर्ल ने उत्तर दिया। "आधा कटोरा नदी का आधा हिस्सा है, और पूरा

कटोरा पूरी नदी के बराबर है।"
"आधा कटोरा ही काफी होगा," एक प्रसन्न बंदर ने उत्तर दिया, और फिर उसने जल के तारा देवता से विदा ली और पीली नदी के सरदार के साथ स्वर्ग के द्वार से बाहर निकल गया।
अर्ल ने पीली नदी में अपना कटोरा आधा भर लिया और फिर महान ऋषि के साथ माउंट जिंदौ गया, जहाँ उसने स्वर्ग के राजा, राजकुमार, दो गर्जन देवताओं और अग्नि के तारा स्वामी का अभिवादन किया। उन्होंने उसे घटनाक्रम बताना शुरू किया, तभी बंदर ने कहा, "विस्तार छोड़ो। नदी के अर्ल, मेरे साथ आओ। जब मैं दरवाजों पर चिल्लाकर उन्हें खुलने के लिए कहूँ, तो दरवाजों के खुलने का इंतज़ार मत करना। सीधे पानी अंदर डाल दो और सबको डुबो दो।" (अध्याय 51)

राक्षसों का अड्डा। फिर मैं स्वामी का शव निकालूंगा और उसे पुनर्जीवित करूंगा।"
अर्ल ने आदेश का पालन किया और बंदर का पीछा करते हुए पहाड़ के चारों ओर घूमकर गुफा के मुहाने तक गया।
“दरवाजे खोलो, शैतानों!” बंदर चिल्लाया, और जब छोटे शैतानों ने उसकी आवाज़ पहचानी तो वे अंदर जाकर खबर देने लगे कि वह वापस आ गया है। इस पर दानव राजा अपना भाला लहराते हुए और अपना खजाना लेकर फिर से बाहर निकला, तभी दरवाजे ज़ोर से खुल गए। नदी देवता ने अपने सफेद जेड के कटोरे का सारा पानी गुफा में उड़ेल दिया। इसे आते देख, दानव ने अपना भाला नीचे फेंक दिया और जल्दी से अपनी अंगूठी निकालकर अंदर के दरवाजों को कसकर बंद कर दिया। फिर सारा पानी शोर मचाते हुए बाहर निकल आया, जिससे सन वुकॉन्ग इतना डर गया कि उसे तुरंत कलाबाजी करके नदी देवता के साथ पहाड़ की चोटी पर वापस कूदना पड़ा। स्वर्ग के राजा और बाकी सभी लोग चोटी के सामने अपने बादलों पर खड़े होकर शक्तिशाली बाढ़ की विशाल लहरों को देख रहे थे। यह शानदार पानी था। सचमुच:
बस एक चम्मच भर
असीम गहराई उत्पन्न करता है;
एक दिव्य उपलब्धि
आम भलाई के लिए सौ नदियों को भरता है।

घाटी को हिला देने वाली उस भीषण गर्जना को सुनो,
देखो, विशाल जलधाराएं आकाश को भर रही हैं।
गरज जैसी आवाज से दुनिया विस्मय से भर जाती है;
बर्फ की तरह घुमावदार चोटियों वाली लहरें भयंकर हैं।
अब ऊंची-ऊंची लहरें सड़कों को जलमग्न कर देती हैं।
जबकि असंख्य लहरें पहाड़ों से टकराती हैं।
वे नेफ्राइट की तरह ठंडे होते हैं।
तारों की धुन पर झूमते हुए।
चट्टानों से टकराने पर वे जेड के टुकड़े बिखेर देते हैं;
ज्वार उतरने पर जल भंवरों के रूप में घूमता है।
धारा सभी गड्ढों और खोखले स्थानों से होकर बहती है।
खाइयों को भरना और सभी धाराओं को आपस में जोड़ना।
यह दृश्य देखकर बंदर भाई घबरा गया। उसने कहा, "यह तो भयानक है। पानी किसानों के घरों में घुस रहा है।"
खेतों में, और राक्षस की गुफा को छोड़कर हर जगह जा रहे हैं। हम क्या करें?" उसने नदी देवता से अध्याय 51 लिखने का अनुरोध किया।

उसने तुरंत अपना पानी बहा दिया।
“मैं इसे केवल बहा सकता हूँ,” अर्ल ने उत्तर दिया। “मैं इसे वापस नहीं डाल सकता। जैसा कि कहावत है, गिरा हुआ पानी वापस नहीं उठाया जा सकता।” अरे बाप रे! लेकिन पहाड़ इतना ऊँचा और ढलानदार था कि पानी तेज़ी से नीचे बह गया और कुछ ही पलों में नालों और खाइयों से बहकर गायब हो गया।
कुछ नन्हे शैतान गुफा से बाहर निकल आए और पहले की तरह बड़े हर्षोल्लास से खेलने लगे, चिल्लाते, चीखते, मुट्ठियाँ हिलाते, आस्तीनें लहराते और अपने डंडे व भाले लहराते हुए। "तो पानी गुफा के अंदर गया ही नहीं," स्वर्ग के राजा ने कहा। "सारी मेहनत व्यर्थ गई।" अपने भीतर उमड़ते भयंकर क्रोध को नियंत्रित न कर पाने के कारण, बंदर दोनों मुट्ठियों से वार करते हुए, चिल्लाते हुए दानव राजा के दरवाजे की ओर दौड़ा।

"तुम कहाँ जा रहे हो? मैं तुम्हें पकड़ लूंगा।"
भयभीत नन्हे शैतानों ने अपने भाले और लाठियाँ गिरा दीं और डर और कांपते हुए गुफा में वापस भाग गए और बताया, "महाराज, वह फिर से हमला कर रहा है।"
राक्षस राजा भाला तैयार रखते हुए द्वार से बाहर निकला और बोला, "बेशर्म बंदर, तू कितना बड़ा बदमाश है। तूने मुझे हराने की कई बार कोशिश की, पर नाकाम रहा। आग और पानी भी मेरे पास नहीं पहुँच पाए। तो फिर यहाँ क्यों आया है? अपनी जान गँवाने?"
“तुमने बात को उल्टा समझ लिया है, मेरे लड़के,” ब्रदर मंकी ने कहा। “मैं अपनी जान नहीं गँवा रहा, बल्कि तुम अपनी जान गँवा रहे हो। इधर आओ, मैं तुम्हें एक घूंसा मारूंगा।”
"तुम बस अटपटा व्यवहार कर रहे हो, बंदर," दानव राजा ने हंसते हुए उत्तर दिया। "तुम मुक्के चला सकते हो, लेकिन मैं अपना भाला चलाऊंगा। तुम्हारी पतली सी मुट्ठी अखरोट से बड़ी नहीं है। उसका वजन तो एक छोटे हथौड़े के बराबर भी नहीं है।"
ठीक है। मैं अपना भाला नीचे रख देता हूँ और हम कुछ मुक्केबाजी करने की कोशिश करते हैं।
"बहुत खूब," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "चलो फिर।"
फिर उस राक्षस ने अपने कपड़े ऊपर खींचे और दोनों मुट्ठियाँ उठाकर लड़ने की मुद्रा में खड़ा हो गया। उसकी मुट्ठियाँ तेल निकालने वाली मशीनों में इस्तेमाल होने वाले हथौड़ों के आकार की थीं। महान ऋषि ने अपने पैर फैलाए, अपनी ऊर्जा का संचार किया और गुफा के द्वार के सामने राक्षस राजा के साथ प्रहार करते हुए अपना कौशल दिखाना शुरू कर दिया; यह एक शानदार लड़ाई थी।
वाह!
उन्होंने चौकोर रुख अपनाते हुए शुरुआत की,
उड़ते हुए पैरों की जोड़ियों से लात मारी गई।
दोनों ने एक-दूसरे की छाती पर धमकी भरे स्वर में प्रहार किया।
इतने कठोर प्रहार जो हृदय को बाहर निकाल सकते हैं।
अमर व्यक्ति मार्ग दिखा रहा है
"लाओ ज़ी अपनी सारस पर सवार हैं।"
शिकार पर झपटने वाला बाघ उतना ही भयानक होता है,

पानी में खेलते हुए अजगरों की तरह क्रूर।
अध्याय 51
716
पश्चिम की यात्रा
दानव राजा ने ड्रैगन रोल किया;
महान ऋषि ने अपने सींगों के साथ एक हिरण की तरह लड़ाई लड़ी।
वे थूकते हुए अजगरों की तरह उछल पड़े।
आकाश को सहारा देने वाले ऊंटों की तरह अपनी कलाई मोड़ते हुए।
नीले शेर ने अपने जबड़े खोले।
कार्प मछली इतनी ऊंची उछली कि उसकी पीठ टूटने का खतरा था।
उनके माथे के चारों ओर फूल बिखरे हुए थे।
और उनकी कमर के चारों ओर रस्सियाँ कसकर बंधी हुई थीं।
हवा पंखे के करीब ही रही।
तेज बारिश के कारण फूल झड़ गए।
जब दानव ने "गुआनयिन हाथ" का इस्तेमाल किया
बंदर ने "अर्हत के पैर" से जवाब दिया।
लंबे मुक्के खुले और सहज थे।
शरीर पर लगने वाले छोटे-छोटे मुक्कों जितने तीव्र नहीं।
जब वे कई दर्जन दौर तक लड़ चुके थे
दोनों की प्रतिभा बराबर थी; कोई विजेता नहीं बन पाया।
जब वे दोनों गुफा के सामने लड़ रहे थे, तब स्वर्ग के राजा ली और अग्नि के तारा स्वामी उत्साहवर्धन और प्रशंसा में चिल्ला रहे थे और ताली बजा रहे थे। दोनों गर्जन देवता और राजकुमार नेझा, देवताओं की सेनाओं का नेतृत्व करते हुए, बंदर की मदद के लिए लड़ाई स्थल पर कूद पड़े, जबकि दूसरी ओर, राक्षसी सेना अपने स्वामी की रक्षा के लिए झंडे, ढोल, तलवारें और कटार लेकर आगे बढ़ी। स्थिति बिगड़ती देख बंदर ने मुट्ठी भर बाल निकाले, उन्हें हवा में बिखेर दिया और "बदलो!" चिल्लाते हुए उन्हें तीन-चार दर्जन छोटे बंदरों में बदल दिया, जो आगे बढ़े और राक्षस को रोक दिया। उन्होंने उसकी टांगों को जकड़ लिया, उसकी कमर पकड़ ली, उसकी आँखों पर वार किया और उसके बाल खींचे। घबराकर राक्षस ने अपनी अंगूठी निकाल ली। जब बंदर

और स्वर्ग के राजा ने उसे ऐसा करते देखा, तो उन्होंने अपने बादलों को दूसरी तरफ मोड़ दिया और लड़ाई से बचने के लिए पहाड़ की चोटी पर वापस भाग गए। जैसे ही राक्षस ने अंगूठी हवा में उछाली, वह सीटी बजाती हुई नीचे आई, और तीन-चार दर्जन छोटे बंदरों को, जो बालों से रूपांतरित हो गए थे, पकड़ लिया और उन्हें उनके मूल रूप में वापस बदल दिया। राक्षस उन्हें अपने साथ गुफा में ले गया और विजय के साथ अपनी सेना के साथ वापस लौटते हुए दरवाजे बंद कर दिए और जश्न मनाया।

"महान ऋषि," राजकुमार नेझा ने कहा, "आप सचमुच एक बहादुर योद्धा हैं। आपने मुक्केबाजी का शानदार प्रदर्शन किया, मानो रेशमी कपड़े पर कढ़ाई करना कितना कुशल काम हो। और जादू से खुद को दो हिस्सों में बांटकर आपने उन्हें अपनी प्रतिभा का परिचय दे दिया।"

अध्याय 51

बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "आप सभी सज्जन यहीं से देख रहे थे। राक्षस की तकनीक मेरी तकनीक से कितनी अलग थी?"

"उसकी मुक्केबाजी ढीली थी और उसके पैरों की चाल धीमी थी," स्वर्ग के राजा ली ने कहा, "जबकि तुम साफ-सुथरे और फुर्तीले थे।"

जब उसने हमें जाते देखा तो वह चिंतित हो गया, और जब तुमने अपने आत्मविभाजन के जादू का इस्तेमाल किया तो वह घबरा गया, इसीलिए उसे अपने अंगूठी के जादू का इस्तेमाल करना पड़ा।"

बंदर ने कहा, "राक्षस राजा से निपटना काफी आसान होता, अगर उसकी अंगूठी न होती। उसे हराना बहुत मुश्किल है।"

अग्नि के तारा स्वामी ने पीली नदी के अर्ल से कहा, "अगर हमें उसे हराना है, तो हमें वह खजाना हासिल करना होगा।"

तब हम उसे पकड़ लेंगे।

"लेकिन चोरी करने के अलावा इसे पाने का और क्या तरीका है?" बंदर ने पूछा।

दोनों गर्जन देवता इस पर हँसे और बोले, "अगर हमें इसे चुराने का सम्मान देना है, तो महान ऋषि की बराबरी कोई नहीं कर सकता। जब उन्होंने स्वर्ग में उत्पात मचाया था, तब उन्होंने शाही शराब, जादुई आड़ू, अजगर का जिगर, फीनिक्स की अस्थि मज्जा

और यहाँ तक कि भगवान लाओ ज़ी का अमृत भी चुरा लिया था। वह तो वाकई कमाल की कला थी! अब उन्हें उस अंगूठी को पाने के लिए अपनी इस कला का इस्तेमाल करना चाहिए।"

"तुम मेरी तारीफ कर रहे हो," बंदर ने कहा, "तुम मेरी तारीफ कर रहे हो। बेहतर होगा कि तुम यहीं बैठो, मैं जाकर कुछ चीजों की जासूसी करता हूँ।"

महान संत शिखर से नीचे उतरे और चुपके से गुफा के प्रवेश द्वार तक पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपना रूप बदलकर एक अत्यंत सुंदर मक्खी का रूप धारण कर लिया। उन्हें देखिए: उनके पंख बांस की झिल्लियों जितने महीन थे।

एक शरीर जो बेर के फूल के हृदय जितना छोटा हो,

उसके हाथ और पैर बाल से भी कम मोटे थे।

और ऐसी आंखें जो जगमगाती और चमकती रोशनी से भरी हैं:

जब उसे किसी चीज की अच्छी खुशबू आती है तो वह अपनी नाक के इशारे पर चलता है।

और वह तेज गति से उड़ते हुए हवा पर सवार होता है।

अगर उसका वजन किया जाए तो तराजू टस से मस नहीं होगा।

और फिर भी वह एक प्यारा और सच्चा दोस्त है जो जरूरत के समय काम आता है।

वह चुपचाप दरवाज़ों तक उड़कर गया और उनके बीच की संकरी जगह से रेंगकर अंदर घुस गया। उसने देखा कि सभी राक्षस, जवान और बूढ़े, दोनों ओर कतारों में नाच-गा रहे थे, जबकि राक्षस राजा एक ऊँचे चबूतरे पर बैठा था। उसके सामने साँप का मांस, हिरण का सूखा मांस, भालू के पंजे, ऊँटों के कूबड़, पहाड़ों की जंगली सब्जियाँ और फल रखे थे। उसके पास एक सेलेडॉन रंग का शराब का घड़ा था, साथ ही कुछ स्वादिष्ट महक वाली कौमिस और नारियल की ताड़ी भी थी, जिसे वह बड़े-बड़े कटोरे भर-भरकर पी रहा था। बंदर छोटे राक्षसों के बीच उतरा और खुद को एक बिज्जू में बदल लिया। (अध्याय 51)

आत्मा। वह धीरे-धीरे सिंहासन के करीब पहुंचा, लेकिन काफी देर तक देखने के बाद भी वह खजाने के छिपे होने का पता नहीं लगा सका। वह तुरंत पीछे हट गया और सिंहासन के पीछे चला गया, जहां उसने पीछे के हॉल में छत से लटकते हुए अग्नि

ड्रैगनों को कराहते और अग्नि घोड़ों को हिनहिनाते देखा। उसने ऊपर देखा तो पूर्वी दीवार के सहारे उसकी सोने की पट्टी वाली गदा टिकी हुई थी। यह देखकर वह इतना खुश हुआ कि उसके दिल में एक ऐसी खुजली सी दौड़ गई जिसे वह खुजा नहीं सका, और अपना भेष भूलकर वह वहां गया, गदा उठाई, अपना असली रूप धारण किया, उससे कुछ हरकतें करके देखीं और गुफा से बाहर निकलने के लिए लड़ने लगा। सभी राक्षस भय से कांप उठे, और राक्षस राजा कुछ नहीं कर सका क्योंकि बंदर ने खून की लकीर छोड़ते हुए तीन को इधर धकेला और दो को नीचे गिरा दिया, और सीधे सामने के दरवाजे से बाहर निकल गया।

वह दानव अपने अभिमान में डूबा हुआ था और तैयार नहीं था;

लाठी वापस उसके मालिक के पास चली गई।

अगर आपको नहीं पता कि सब कुछ अच्छा हुआ या बुरा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 52

जिंदौ गुफा में बंदर ने जमकर उत्पात मचाया

बुद्ध मालिक के बारे में संकेत देते हैं

कहानी बताती है कि कैसे सोने की पट्टी वाली गदा वापस पाने के बाद बंदर गुफा से बाहर निकला और सभी देवताओं को देखने के लिए चोटी पर चढ़ गया। वह खुद से बहुत खुश था। स्वर्ग के राजा ली ने पूछा, "इस बार कैसा रहा?" बंदर ने कहा, "मैंने रूप बदला और गुफा में गया, जहाँ मैंने राक्षसों को अपनी जीत का जश्न मनाते हुए नाचते, गाते और पीते देखा। लेकिन मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं चला कि राक्षस अपना खजाना कहाँ रखता है। जब मैं पीछे की तरफ गया तो मैंने घोड़ों और अजगरों के कराहने की आवाज़ सुनी और समझ गया कि वे ज़रूर अग्नि-राक्षस होंगे। मेरी सोने की पट्टी वाली गदा पूर्वी दीवार से टिकी हुई थी, इसलिए मैंने उसे उठाया और गुफा से बाहर निकल आया।"

देवताओं ने कहा, "अब तो तुम्हारा खजाना तुम्हारे पास है, लेकिन हम अपना खजाना वापस कैसे लेंगे?"

“आसान,” बंदर बोला, “आसान। इस लोहे के डंडे से मैं उसे हरा सकता हूँ, चाहे वह कुछ भी करे। मैं तुम्हारा खजाना वापस लाऊँगा।” जब वे बात कर रहे थे, तभी पहाड़ की ढलान से घंटियों और ढोलों की एक साथ तेज़ आवाज़ के साथ-साथ धरती को

हिला देने वाली चीखें सुनाई दीं: महान गैंडा राजा अपने आत्माओं के दल के साथ बंदर का पीछा कर रहा था, जिसे देखकर बंदर चिल्लाया, “वाह वाह, मुझे यही चाहिए था। कृपया बैठ जाइए, सज्जनों, मैं उसे पकड़ने जाता हूँ।”

महान संत ने अपनी लोहे की गदा उठाई और चिल्लाते हुए राक्षस के चेहरे पर प्रहार किया, "तू कहाँ जा रहा है, दुष्ट राक्षस? यह ले!" अपने भाले से वार को रोकते हुए राक्षस ने पलटकर उनका अपमान किया: "चोर बंदर! तू कलंक है। दिन दहाड़े मेरी संपत्ति चुराने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?"

"मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, दुष्ट राक्षस। मरने की तमीज़ रखो! तुम बस अपनी अंगूठी का इस्तेमाल करके दिन दहाड़े हमारी संपत्ति चुरा सकते हो। इनमें से कोई भी चीज़ तुम्हारी नहीं है। यहीं रहो, और यह लो!" एक बार फिर राक्षस ने अपने भाले से वार रोका। यह एक शानदार लड़ाई थी।

अध्याय 52

719

पश्चिम की यात्रा

महान ऋषि अत्यंत उग्र थे।
वह राक्षस दयालु नहीं था।
दोनों पक्षों ने साहस के साथ लड़ाई लड़ी;
दोनों में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं था।
लोहे का डंडा अजगर की पूंछ था।
वह लंबा भाला एक सर्प के सिर के आकार का था।
लाठी के प्रहार हवा की तरह सीटी बजाते थे।
भाले की चालें नदी की धारा की तरह सहजता से बहती थीं।
रंग-बिरंगी धुंध से घिरे पहाड़ का रंग गहरा हो गया;
शुभ बादल जंगलों पर घने छाए हुए थे।
आकाश में उड़ रहे सभी पक्षियों ने उड़ना बंद कर दिया;
मैदान के सभी जंगली जानवर छिप गए।
एक तरफ के राक्षसों ने युद्धघोष किया
वहीं दूसरी ओर मंकी में भरपूर ऊर्जा थी।
एक लोहे का डंडा जिसका सामना कोई नहीं कर सकता था

पश्चिम की ओर लंबे रास्ते पर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ा था;
एक लंबा भाला जो एक योग्य प्रतिद्वंदी था।
और इसने माउंट जिंदौ पर हमेशा अपनी सर्वोच्च शक्ति बनाए रखी।
एक बार युद्ध में शामिल हो जाने के बाद कोई राहत नहीं मिल सकती थी:
उन्होंने शपथ ली कि जब तक एक जीत हासिल नहीं कर लेता, तब तक वे संघर्ष जारी रखेंगे।

राक्षस राजा और महान ऋषि छह घंटे से लड़ रहे थे, लेकिन कोई भी विजयी नहीं हो पा रहा था। रात होते-होते दुष्ट आत्मा ने अपना भाला आगे बढ़ाया और कहा, "रुक जाओ, वुकॉन्ग। अब लड़ने के लिए बहुत अंधेरा हो गया है। चलो थोड़ी देर सो लेते हैं, कल फिर तुमसे मुकाबला करेंगे।"

"चुप रहो, दुष्ट राक्षस," बंदर ने गुस्से से जवाब दिया। "मैंने अभी-अभी शुरुआत की है। मुझे परवाह नहीं कि कितना समय बीत गया है: मैं तब तक लड़ता रहूंगा जब तक हममें से कोई एक जीत न जाए।" राक्षस चिल्लाया, अपने भाले से वार करने का नाटक किया और अपनी जान बचाकर भाग गया। वह अपने साथ आए शैतानों को भी गुफा में वापस ले गया, जहाँ उन्होंने दरवाजे कसकर बंद कर लिए।

अध्याय 52

720

पश्चिम की यात्रा

जब बंदर अपनी लाठी लेकर पहाड़ की चोटी पर लौटा तो स्वर्ग के सभी देवताओं ने उसे बधाई दी।

उन्होंने कहा, "आप सचमुच बलवान और सक्षम हैं, हे स्वर्ग के समान महान ऋषि, और आपकी शक्तियां असीम हैं।"

"तुम तारीफ कुछ ज्यादा ही कर रहे हो," बंदर ने जवाब दिया।

"नहीं," स्वर्ग के राजा ली ने उसके पास आते हुए कहा, "यह खोखली प्रशंसा नहीं है। तुम सचमुच एक बहादुर इंसान हो। आज जिस शक्ति का तुमने सामना किया, वह उतनी ही शक्तिशाली थी जितनी कि वर्षों पहले स्वर्ग और पृथ्वी के जाल थे।"

“इतनी पुरानी बातों में न पड़ें,” बंदर ने कहा। “मुझसे लड़ाई के बाद वो राक्षस ज़रूर थक गया होगा। मुझे तो कोई खास परेशानी नहीं हुई है, इसलिए अगर आप सब यहाँ आराम से बैठेंगे तो मैं गुफा में वापस जाकर पता लगाऊंगा कि उसने अंगूठी कहाँ रखी

है और अगर मुमकिन हुआ तो उसे चुरा लूंगा। फिर मैं उस राक्षस को पकड़ लूंगा, आपके हथियार ढूंढ लूंगा और उन्हें आपको वापस दे दूंगा ताकि आप उन्हें स्वर्ग ले जा सकें।"

"अब काफी देर हो चुकी है," राजकुमार नेझा ने कहा। "तुम्हें अच्छी नींद लेनी चाहिए और कल सुबह जाना चाहिए।"

“तुम्हें ज़िंदगी की समझ नहीं है, मेरे बच्चे,” बंदर ने जवाब दिया। “भला किसने सुना है कि कोई चोर दिन दहाड़े चोरी करना पसंद करता है? इस तरह की चोरी छुपकर, अंधेरे में ही की जाती है। यही तरीका है।”

"महामहिम, बहस बंद कीजिए," अग्नि के तारा देवता और दो गर्जन देवताओं ने कहा। "हमें इस तरह की बातों का कुछ भी ज्ञान नहीं है, और महान ऋषि अनुभवी हैं। उन्हें रात के समय का पूरा फायदा उठाने दीजिए, जब राक्षस थका हुआ होगा और किसी को भी किसी घटना की उम्मीद नहीं होगी। कृपया तुरंत जाइए।"

एक खिलखिलाती हंसी के साथ महान ऋषि ने अपना लोहे का गदा एक तरफ रख दिया, चोटी से नीचे कूद गए और गुफा के मुहाने पर जाकर खुद को झटक कर एक झींगुर में बदल लिया। सचमुच: कठोर मुंह, काली त्वचा और लंबे एंटीना।

चमकीली आंखें और शाखाओं की तरह मुड़ने वाले पैर।

स्वच्छ हवा और चांदनी में वह दीवार के पास गाता है;

जब रात शांत होती है तो वह इंसानों की तरह बात करता है।

जब वह ओस में रोता है तो आसपास का नजारा ठंडा प्रतीत होता है;

उनकी मधुर आवाज अब रुक-रुक कर आती है।

ठीक उसी समय जब घर की याद सताने वाला यात्री उसे सुनना बिल्कुल नहीं चाहता था।

वह उसे बिस्तर के नीचे छिपा हुआ पाता है।

अपने शक्तिशाली पैरों की कुछ ही छलांगों में बंदर दरवाजे पर पहुँच गया। उनके बीच की संकरी जगह से निकलकर वह दीवार के पास बैठ गया और ध्यान से देखने लगा कि रोशनी कहाँ से आ रही है। उसने अध्याय 52 के सभी दृश्य देखे।

बड़े-छोटे शैतान भेड़ियों या बाघों की तरह अपना भोजन चट कर रहे थे। बंदर थोड़ी देर

चहचहाता रहा, और थोड़ी देर बाद दावत खत्म हो गई और सभी शैतान सोने चले गए। लगभग दो घंटे बाद, जब बंदर पीछे वाले कमरे में पहुँचा, तो उसने दानव राजा को यह कहते हुए सुना, "दरवाजों पर पहरा देने वाले बच्चों, जागते रहो! सन वुकॉन्ग अपना रूप बदलकर यहाँ चोरी करने के लिए घुस सकता है।"

उस रात पहरा दे रहे लोग सलीके से तैयार थे और अपने क्लैपर और घंटियाँ बजा रहे थे। इससे महान ऋषि के लिए अपना काम करना और भी आसान हो गया। राक्षस के शयनकक्ष में चुपके से घुसते हुए उन्होंने देखा कि एक पत्थर का पलंग था जिसके दोनों ओर चूर्णित और चित्रित पर्वत और वृक्षों की आत्माएँ खड़ी थीं। वे बिस्तर बिछा रही थीं और बूढ़े राक्षस की प्रतीक्षा कर रही थीं, उसके जूते और कपड़े उतार रही थीं। जब बूढ़े राक्षस के कपड़े उतर गए तो बंदर ने उसकी बाईं भुजा पर सफेद चमकती अंगूठी देखी। यह मोतियों की माला से बने कंगन जैसी लग रही थी। राक्षस ने उसे उतारने के बजाय, सोने से पहले उसे अपनी भुजा पर दो-तीन बार ऊपर सरकाया ताकि वह और मजबूती से अपनी जगह पर बैठ जाए। यह देखकर बंदर ने अपना रूप फिर से बदल लिया, इस बार वह भूरे रंग के पिस्सू में बदल गया जो बिस्तर पर उछल पड़ा, तकिये में घुस गया, राक्षस की बांह पर चढ़ गया और उसे इतनी जोर से काटा कि वह चीखते हुए उठ बैठा, "अरे गुलामों, तुम्हें और कोड़े मारने पड़ेंगे। तुमने रजाई नहीं झाड़ी, बिस्तर से धूल नहीं हटाई, और मुझे अभी-अभी काटा है।" उसने अंगूठी को दो बार और रगड़ा और वापस सो गया।

बंदर ने छल्ले पर चढ़कर उसे फिर से काट लिया, जिससे राक्षस नींद न आने के कारण फिर से उठ बैठा। "मुझे बहुत खुजली हो रही है," उसने शिकायत की।

सुरक्षा इतनी कड़ी देखकर और यह देखकर कि दानव ने खजाना अपने पास ही रखा हुआ है और उसे उतारने वाला नहीं है, बंदर समझ गया कि वह उसे चुरा नहीं पाएगा। इसलिए वह बिस्तर से कूद गया, खुद को वापस झींगुर में बदल लिया, शयनकक्ष से बाहर निकला और सीधे पीछे चला गया, जहाँ उसने फिर से अजगरों और घोड़ों की कराहें और सिसकियाँ सुनीं, लेकिन अब कसकर बंद दरवाजों के पीछे से। बंदर अपने असली रूप में वापस आया और जादू से ताला खोलने के लिए दरवाजों तक गया। उसने एक मंत्र पढ़ा और ताले को रगड़ा, जिससे उसकी दोनों जीभें चटक कर खुल गईं। फिर उसने दरवाजे धक्का देकर खोले और अंदर घुस गया, जहाँ आग के उपकरणों और जीवों की रोशनी में दिन का उजाला था। उसने देखा कि दोनों ओर

दीवारों के सहारे कुछ हथियार रखे हुए हैं: राजकुमार नेझा की दानव-काटने वाली कटार और अन्य हथियार, साथ ही आग के धनुष, तीर और अग्नि के तारा स्वामी का बाकी सामान। आग की रोशनी में चारों ओर देखते हुए उसने खुशी से देखा कि दरवाजों के पीछे एक पत्थर की मेज पर बांस की टोकरी में मुट्ठी भर बाल पड़े हुए हैं। बंदर ने उन्हें उठाया, उन पर दो बार गर्म साँस फूंकी, "बदलो!" चिल्लाया और उन्हें तीन-चार दर्जन छोटे बंदरों में बदल दिया। उसने उनसे कहा कि वे कटार, तलवार, मूसल, रस्सी, गेंद, पहिया, धनुष, तीर, भाला, गाड़ियाँ, लौकी, अग्नि कौवे, अग्नि चूहे, अग्नि घोड़े और घेरे में फँसी हर चीज़ उठा लें; फिर वह अग्नि अजगर पर सवार हो गया और अंदर से बाहर की ओर आग लगा दी। ज़ोरदार गर्जना और धमाके हुए जो बिजली और तोपों की आवाज़ जैसे थे। सभी बड़े और छोटे राक्षस इतने घबरा गए और घबरा गए कि उन्होंने अपने रजाईयों में खुद को लपेट लिया, अपने सिर ढँक लिए, चिल्लाए और रोए। भागने की कोई जगह न होने के कारण उनमें से अधिकांश जलकर मर गए। जब सुंदर बंदर राजा विजयी होकर लौटा तो लगभग आधी रात हो चुकी थी।

जब स्वर्ग के राजा ली और अन्य देवताओं ने पर्वत की चोटी से निकलती हुई चकाचौंध भरी आग को देखा, तो वे आगे बढ़े और उन्होंने देखा कि भाई बंदर अजगर पर सवार होकर छोटे बंदरों को सीधे शिखर की ओर ले जा रहा है।

“आओ और अपने हथियार ले लो,” उसने चिल्लाकर कहा, “आओ और अपने हथियार ले लो।” अग्नि के तारा स्वामी और नेझा ने अभिवादन किया, जिस पर बंदर ने खुद को झटका दिया और अपने शरीर के सारे बाल वापस उगा लिए। नेझा ने अपने छह हथियार उठा लिए, और तारा स्वामी ने अपने अधीनस्थों को अग्नि ड्रैगन और बाकी अग्नि प्राणियों और औजारों को इकट्ठा करने का आदेश दिया। वे सभी बंदर को बधाई देते हुए खुशी से हंस रहे थे।

जिंदौ गुफा में लगी भीषण आग ने महान गैंडे के राजा को इतना भयभीत कर दिया कि उनकी आत्मा शरीर से निकल गई। वे तुरंत उठ बैठे, अपने शयनकक्ष के दरवाजे खोल दिए और आग बुझाने के लिए दोनों हाथों में अंगूठी लेकर पूरब और पश्चिम की ओर फैला दी। फिर वे अपना खजाना लहराते हुए चारों ओर दौड़े, जिससे हवा में फैली सारी लपटें और धुआं बुझ गया, और अपने राक्षसों को बचाने की कोशिश की, जिनमें से अधिकतर मर चुके थे। वे केवल सौ के करीब नर और मादा राक्षसों को ही इकट्ठा

कर पाए; और जब उन्होंने हथियारों के स्थान पर देखा तो पाया कि वे सभी गायब थे। पीछे की ओर जाकर उसने देखा कि पिग, फ्रायर सैंड और तांग पुजारी अभी भी वहीं बंधे हुए थे, सफेद घोड़ा अभी भी वहीं था। अध्याय 52

नाली से बंधा हुआ और सामान अभी भी कमरे में ही है।

"पता नहीं किस लापरवाह शैतान ने आग लगाई," उसने गुस्से से कहा। "देखो इसका क्या हाल हो गया!"

"महाराज," उनके सेवकों ने कहा, "आग का हमारे घर के किसी भी सदस्य से कोई लेना-देना नहीं था। संभवत: किसी चोर ने सभी अग्नि प्राणियों को छोड़ दिया और जादुई हथियार चुरा लिए।"

तभी उस राक्षस को समझ आया कि क्या हुआ था। उसने कहा, "मुझे यकीन है कि यह सन वुकॉन्ग ही था। कोई और हो ही नहीं सकता। इसीलिए तो मुझे नींद नहीं आ रही थी। उस चोर बंदर ने यहाँ घुसने और मेरी बांह पर दो बार काटने के लिए अपना रूप बदला होगा। वह मेरा खजाना चुराने की कोशिश कर रहा होगा, लेकिन नाकाम रहा क्योंकि मैंने उसे बहुत कसकर पहना हुआ था। इसलिए उसने हथियार चुरा लिए और अग्नि-राक्षस को छोड़ दिया। कितना घिनौना विचार था: वह मुझे जलाकर मार डालना चाहता था। दुष्ट बंदर! तुम्हारी चालाकी काम नहीं आएगी: तुम्हें अभी मेरी शक्तियों का पता नहीं है। जब तक मेरे पास यह खजाना है, मैं बिना डूबे समुद्र में जा सकता हूँ और बिना जले आग में जा सकता हूँ। अगर मैंने उस डाकू को पकड़ लिया, तो मैं उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और उसे मशाल की तरह जला दूंगा। यही एकमात्र तरीका है जिससे मुझे तसल्ली मिलेगी।"

बहुत देर तक अपने दुख में डूबे रहने के कारण वह मन ही मन बड़बड़ाता रहा और उसे भोर के समय मुर्गों की बांग भी सुनाई नहीं दी। पर्वत की चोटी पर, राजकुमार नेझा, जिसे अब अपने छह हथियार वापस मिल गए थे, ने बंदर से कहा, "महान ऋषि, अब उजाला हो गया है और हमें समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। हमें राक्षस से तब लड़ना चाहिए जब उसका मनोबल अभी भी कम हो। जब आप उससे लड़ेंगे तो हम अपनी पूरी अग्नि सेना से आपका समर्थन करेंगे, और मुझे लगता है कि इस बार आप उसे पकड़ लेंगे।"

“तुम सही कह रहे हो,” बंदर ने कहा। “हम सब मिलकर काम करेंगे। चलो कुछ मज़ा करें।” उनमें से हर एक ने खुद को तैयार किया और गुफा के मुँह की ओर बढ़ते हुए अपनी युद्ध कला का प्रदर्शन किया। “बाहर आओ, शापित राक्षस!”

बंदर चिल्लाया, "और मुझसे लड़ो।" आग की लपटों से दोनों पत्थर के दरवाजे राख हो गए थे, और अंदर मौजूद छोटे शैतान राख को साफ कर रहे थे। सभी देवताओं के आने की आहट सुनकर वे घबराकर अपने झाड़ू और राख के कांटे छोड़कर अंदर भागे और खबर दी, "सन वुकॉन्ग स्वर्ग से देवताओं की सेना लेकर फिर से युद्ध की मांग करने आया है।" इस खबर से गैंडे जैसे राक्षस को बहुत डर लगा। उसने गुस्से से अपने लोहे के दांत पीसे, उसकी आंखें क्रोध से फूल गईं, और वह अपना भाला और खजाना लेकर बाहर निकला और गालियां बकने लगा: "मैं तुम्हें देख लूंगा, हे चोर, आग लगाने वाले बंदर। तुम्हारे पास ऐसी कौन सी शक्तियां हैं जो तुम्हें मुझसे इस तरह का व्यवहार करने का अधिकार देती हैं?"

"धिक्कार है शैतान," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "अगर तुम मेरी शक्तियों के बारे में जानना चाहते हो तो मैं तुम्हें बताता हूँ: जब से मैं छोटा था तब से मेरी शक्तियाँ बहुत महान रही हैं;

मेरी प्रसिद्धि स्वर्ग और पृथ्वी दोनों जगह फैल चुकी है।
एक प्रतिभाशाली युवा के रूप में मैंने अमर होना सीख लिया।
शाश्वत यौवन की परंपराओं को ग्रहण करना।
मैंने हृदय की भूमि की यात्रा करने का निश्चय किया।
और आदरपूर्वक ऋषियों के देश की ओर प्रस्थान किया।
मैंने अनंत परिवर्तनों का जादू सीखा
और वे ब्रह्मांडीय अंतरिक्ष में अपनी इच्छा से विचरण करते थे।

पश्चिम की यात्रा

पहाड़ियों पर बाघों को काबू में करना मेरा शौक था;
जब मैं ऊब जाता था तो मैं समुद्री ड्रैगनों को अपने अधीन कर लेता था।
मैं फूलों और फलों के पर्वत का सम्राट था।
और मैंने वाटर कर्टेन केव में अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।

अक्सर मैंने स्वर्ग जाने का फैसला किया।
और अपनी मूर्खता में मैंने ऊपर का स्थान ग्रहण कर लिया।
मुझे स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि कहा जाता था।
और उन्हें सुंदर बंदर राजा की उपाधि दी गई।
जब उन्होंने अपने जादुई आड़ुओं का भोज आयोजित किया
मुझे सबसे ज्यादा गुस्सा इस बात पर आया कि मुझे आमंत्रित नहीं किया गया था।
मैं चुपके से जेड लिकर चुराने गया था।
उनके भव्य मंडपों में इस दुर्लभ शराब का आनंद लेना।
ड्रैगन का जिगर, फीनिक्स का मज्जा,
और उस दिन मैंने कई अन्य स्वादिष्ट चीजें भी चुराईं।
मैंने उन अमर आड़ुओं को जी भर के खाया।
और मैंने अपना पेट अमर जीवन की गोलियों से भर लिया।
फिर मैंने स्वर्ग की सभी अद्भुत वस्तुओं को चुरा लिया।
और उस महल के खजाने को छिपाकर रख दिया।
क्योंकि जेड सम्राट को मेरी शक्तियों के बारे में पता चल गया था।
स्वर्गीय सैनिकों को युद्ध में भेजा गया
मैंने नौ प्रतिभाशाली लोगों को उनके मार्ग पर विदा किया;
मैंने पांचों दुष्ट नक्षत्रों को घायल कर दिया।
स्वर्ग के सेनापति मेरे सामने कुछ भी नहीं थे:
एक लाख सैनिकों का मनोबल पूरी तरह से टूट गया।
तब जेड सम्राट को मजबूरन आह्वान करना पड़ा।
नन्हा ऋषि एरलांग भी लड़ाई में शामिल होने के लिए तैयार है।
अध्याय 52
724
पश्चिम की यात्रा
हम दोनों ने अपने बहत्तर बदलावों से गुज़रे।
हममें से प्रत्येक अपनी भावना और शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है।
बोधिसत्व गुआनयिन उनकी सहायता के लिए आईं।
अपने शुद्ध जल के कलश और विलो की टहनी के साथ,

और लाओ ज़ी ने अपने डायमंड जेड का इस्तेमाल किया
मुझे कैदी बनाकर वापस स्वर्ग ले जाने के लिए।
वे मुझे जंजीरों में जकड़कर जेड सम्राट के महल में ले गए।
जहां कानूनी अधिकारियों ने मेरे भाग्य का फैसला किया।
बलवान सैनिकों को मेरा सिर काटने का आदेश दिया गया था।
लेकिन मेरी खोपड़ी पर किए गए वारों से केवल चिंगारियां ही निकलीं।
उन्होंने अपनी सारी चालें चलीं लेकिन कुछ भी मुझे मार नहीं पाया।
इसके बाद मुझे लाओ ज़ी के महल में ले जाया गया।
सिक्स डिंग्स ने मुझे अपनी भट्टी की आग से शुद्ध किया।
और इसने मेरे पूरे शरीर को लोहे की तरह कठोर बना दिया।
सात बार सात दिन बीतने के बाद भट्टी खोली गई।
और मैं पहले से भी ज्यादा भयानक हालत में बाहर कूद गया।
सभी देवता अपने द्वार बंद कर लिए, वे प्रतिरोध करने में असमर्थ थे।
और ऋषियों ने बुद्ध से सहायता मांगने का निर्णय लिया।
बुद्ध के धर्म की शक्ति महान थी।
वास्तव में उनकी बुद्धिमत्ता असीम रूप से शक्तिशाली है।
मैंने कलाबाजी करते हुए उसके हाथ से निकलने की शर्त लगाई।
लेकिन उसने मुझे एक ऐसे पहाड़ से कुचल दिया जिसने मुझे शक्तिहीन कर दिया।
फिर जेड सम्राट ने शांति का जश्न मनाया
और पश्चिम को आनंद की भूमि घोषित किया गया।
मैं पांच सौ वर्षों तक पहाड़ के नीचे दबा रहा।
कभी चाय या खाने का एक घूंट भी न चखा हो।
अध्याय 52
725
पश्चिम की यात्रा
जब सुनहरा सिकाडा धरती पर आया
उन्हें पूर्व से बुद्ध से मिलने के लिए भेजा गया था।
वह धर्मग्रंथों को वापस चीन लाना चाहता है।
इस प्रकार तांग शासक अपने पूर्वजों की आत्माओं को बचा सके।

गुआनयिन ने मुझे अच्छाई के पक्ष में परिवर्तित कर दिया।
शिक्षाओं का पालन करना और खुद को नियंत्रण में रखना।
जब से मुझे उस कष्टदायक पर्वत से मुक्ति मिली है
मैं सच्चे धर्मग्रंथों को लाने के लिए पश्चिम की ओर जा रहा हूँ।
हे शैतान, अपनी दुष्ट चालों का प्रयोग करने का प्रयास मत करो:
मेरे स्वामी, मुझे बुद्ध की पूजा करने के लिए वापस लौटा दीजिए।
यह सब सुनकर राक्षस ने बंदर की ओर इशारा करते हुए कहा, "तो तुम ही हो वो चोर जिसने स्वर्ग को लूटा है। यहीं रहो और इसे ले लो!" महान ऋषि ने अपने गदा से भाले को रोका, और जैसे ही वे दोनों फिर से लड़ने लगे, नेझा और अग्नि के तारा देवता का क्रोध भड़क उठा और उन्होंने अपने सभी जादुई हथियार और अग्नि उत्पन्न करने वाले उपकरण राक्षस राजा पर फेंक दिए। बंदर पहले से कहीं अधिक उग्र था, जबकि गर्जन के देवता अपने वज्र के टुकड़ों के साथ और स्वर्ग के राजा अपनी तलवार के साथ एक साथ युद्ध में कूद पड़े, पद और वरिष्ठता की परवाह किए बिना।
राक्षस राजा ने व्यंग्यपूर्ण और राजसी हंसी हंसते हुए चुपके से अपनी आस्तीन से अंगूठी निकाली और "पकड़ो इन्हें!" चिल्लाते हुए उसे हवा में उछाल दिया। अंगूठी सीटी बजाती हुई नीचे आई और छह जादुई हथियार, आग जलाने के सभी उपकरण और जीव, गर्जन देवताओं का वज्र, स्वर्ग राजा की तलवार और बंदर का गदा, सब कुछ अपने साथ ले गई। एक बार फिर सभी देवता खाली हाथ रह गए और महान ऋषि सूर्य निहत्थे हो गए। विजयी राक्षस ने मुड़कर कहा, "छोटे बच्चों, नए दरवाजे बनाने के लिए पत्थर लाओ और अंदर के सभी कमरों की मरम्मत के लिए खुदाई और निर्माण शुरू करो। जब यह हो जाएगा, तो मैं स्थानीय देवता को धन्यवाद देने के लिए तांग पुजारी और उसके शिष्यों का वध करूंगा, और तुम सबको उसमें से हिस्सा मिलेगा।" सभी छोटे राक्षस निर्देशानुसार काम पर लग गए।
जब स्वर्ग के राजा ली अपनी सेना लेकर पर्वत पर वापस लौटे, तो अग्नि के तारा स्वामी नेझा के अधीर होने पर बड़बड़ा रहे थे और गर्जन के देवता स्वर्ग के राजा के बुरे व्यवहार से नाराज़ थे। केवल पीली नदी के सरदार ही चुप थे। यह देखकर कि वे सब एक-दूसरे से नज़रें मिलाने को तैयार नहीं थे और चिंतित, हताश, नाराज़ थे तथा खुद को खुश दिखाने की कोशिश कर रहे थे, बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए उनसे कहा, "परेशान मत होइए। जीत और हार तो सैनिक के जीवन का हिस्सा हैं। राक्षस की युद्ध

कला औसत दर्जे की है। उसे इतना खतरनाक बनाने वाली एकमात्र चीज़ वह अंगूठी है जिसने हमारे सभी हथियारों को फिर से जकड़ लिया है। चिंता मत कीजिए। मैं जाकर पता लगाता हूँ कि वह कौन है और क्या है।"

"लेकिन पिछली बार जब आपने जेड सम्राट से पूरे स्वर्ग का निरीक्षण करने को कहा था, तो आपको उसका कोई सुराग नहीं मिला," राजकुमार नेझा ने कहा। "अब आप उसे कहाँ ढूँढ़ेंगे?"

अध्याय 52

726

पश्चिम की यात्रा

“जहाँ तक मुझे याद है,” बंदर ने कहा, “बुद्ध का धर्म असीम है। मैं पश्चिमी स्वर्ग जाकर तथागत बुद्ध से प्रार्थना करूँगा कि वे अपनी सर्वदृष्टि से चारों महाद्वीपों को देखें और पता लगाएँ कि उस राक्षस का जन्म कहाँ हुआ था, उसका आधिकारिक निवास कहाँ दर्ज है और उसकी अंगूठी वास्तव में क्या है। चाहे कुछ भी हो जाए, हमें उसे पकड़ना ही होगा ताकि हम आपका बदला ले सकें और आपको स्वर्ग में प्रसन्नतापूर्वक वापस जाने दें।”

"तो फिर," देवताओं ने कहा, "यहाँ एक पल भी मत रुको। तुरंत चले जाओ।"

स्प्लेंडिड मंकी ने कहा, "जाओ!" और अपनी कलाबाजी करते हुए बादल की एक छलांग के साथ वह जल्द ही वल्चर पीक पर पहुँच गया।

अपने शुभ दाहिने हाथ को नीचे लाते हुए उन्होंने चारों ओर देखा। यह एक अद्भुत स्थान था: पवित्र चोटियाँ भव्यता से विराजमान थीं।

इन चट्टानों की सुंदरता बिल्कुल अनूठी है।

जादुई चोटियाँ उठकर हरे-नीले आकाश को छूती हैं,

यही वह चीज है जो पश्चिमी स्वर्ग को अपनी जगह पर बनाए रखती है।

अपनी अपार शक्ति से चीन पर प्रभुत्व स्थापित करना।

इसकी आदिम ऊर्जा पृथ्वी और आकाश में व्याप्त है।

अपनी भव्यता के प्रसार से यह सब कुछ अपनी सुंदरता से ढक लेता है।

घंटियों और झंकारों की आवाज़ें देर तक गूंजती रहती हैं।

इस दौरान पवित्र सूत्रों का पाठ करते हुए आवाजें सुनाई दे रही हैं।

नीले देवदार के पेड़ों के नीचे श्रद्धालु उपदेश देते हैं

जबकि अर्हत सरू के पेड़ों के बीच टहलते हैं।
सफेद सारस एक विशेष उद्देश्य से गिद्ध शिखर पर आते हैं;
फीनिक्स पक्षी इसके खाली मंडपों पर बैठना पसंद करते हैं।
बंदरों का जोड़ा मिलकर अमर फल चुनता है;
हिरणों के जोड़े मिल्क वेटच के पौधे प्रस्तुत करते हैं।
छिपे हुए पक्षियों के गीत मानो उनके दुखों को बयां कर रहे हों;
इन विचित्र और शानदार फूलों को नाम देना संभव नहीं है।
यहां पर्वत श्रृंखलाएं एक के ऊपर एक कई बार लिपटी हुई हैं;
चारों ओर घूमते हुए प्राचीन रास्ते चिकने हैं।
यह पवित्रता और जादू का स्थान है।
अध्याय 52
727
पश्चिम की यात्रा
ज्ञान प्राप्त बुद्ध का पवित्र निवास स्थान।
जब बंदर पहाड़ों के नज़ारे की प्रशंसा कर रहा था, तभी किसी ने उसे पुकारा, "सुन वुकॉन्ग, तुम कहाँ से आए हो और कहाँ जा रहे हो?" वह तुरंत मुड़ा तो देखा कि वह एक सम्मानित भिक्षुणी थी।
"एक ऐसा मामला है जिस पर मैं तथागत से मिलना चाहता हूँ," बंदर ने झुककर कहा।
भिक्षुणी ने कहा, "तुम बहुत शरारती हो। अगर तुम तथागत के दर्शन करने आए हो तो यहाँ के नज़ारों की तारीफ़ करने के बजाय सीधे उनके मठ में क्यों नहीं चले जाते?"
"मैंने देखने की हिम्मत इसलिए की क्योंकि यह मेरी पहली यात्रा थी," बंदर ने जवाब दिया।
“तुरंत मेरे साथ आओ,” भिक्षुणी ने कहा, और बंदर उनके साथ गर्जन मठ के द्वार तक गया, जहाँ आठ भयंकर रक्षक देवताओं, वज्रपाणियों ने उनका रास्ता रोक दिया।
“यहाँ थोड़ी देर रुको, वुकॉन्ग, मैं तुम्हारी ओर से एक सूचना दे देती हूँ,” भिक्षुणी ने कहा। बंदर द्वार के बाहर खड़ा रहा जबकि भिक्षुणी बुद्ध के समक्ष गईं, हाथ जोड़कर बोलीं, “सन वुकॉन्ग एक मामले के सिलसिले में यहाँ आए हैं, जिस पर वे आपसे मिलना चाहते हैं, तथागत।” बुद्ध ने बंदर को बुलवाया, और फिर वज्रपाणियों ने उसे अंदर आने दिया।

जब बंदर ने प्रणाम किया तो बुद्ध ने पूछा, "तुम यहाँ अकेले क्यों हो? मुझे बताया गया था कि आदरणीय गुआनयिन द्वारा तुम्हें मुक्त किए जाने के बाद तुमने धर्म परिवर्तन कर लिया था, और तुम तांग पुजारी को शास्त्र लाने के लिए यहाँ लाए थे। क्या हुआ है?"

"मैं अपने बुद्ध को सूचित करता हूँ," बंदर ने अपना सिर ज़मीन पर टिकाते हुए कहा, "कि मेरे धर्म परिवर्तन के बाद से आपका शिष्य तांग पुजारी को पश्चिम की ओर ले जा रहा है। जिंदौ पर्वत पर स्थित जिंदौ गुफा में हमारा सामना महान गैंडा राजा नामक एक दुष्ट राक्षस से हो रहा है, जिसके पास अपार जादुई शक्तियाँ हैं। उसने मेरे गुरु और साथी शिष्यों को अपनी गुफा में बंदी बना रखा है। मैंने राक्षस से उन्हें वापस करने का अनुरोध किया है, लेकिन उसकी मंशा बुरी है।"

जब हमारी लड़ाई हुई तो उसने मेरी लोहे की गदा छीन ली, जिस पर एक चमकदार सफेद अंगूठी थी। मुझे लगा कि वह स्वर्ग का कोई अधिकारी होगा जिसे सांसारिक चीजों की लालसा है, इसलिए मैं सीधे ऊपर गया, लेकिन जाँच करने पर मुझे कुछ भी गायब नहीं मिला। जेड सम्राट ने कृपा करके स्वर्ग के राजा ली और उनके पुत्र नेझा को मेरी मदद के लिए भेजा, लेकिन उस राक्षस ने राजकुमार के छह हथियार चुरा लिए। फिर मैंने अग्नि के तारा देवता से उसे जलाकर भस्म करने की प्रार्थना की, लेकिन वह आग लगाने वाले सभी उपकरण और जीव ले गया। इसके बाद मैंने जल के तारा देवता से उसे डुबो देने की प्रार्थना की, लेकिन एक बूँद भी उस पर नहीं पड़ी। मैंने गदा और बाकी सब कुछ वापस पाने के लिए बहुत प्रयास किया, उसे फिर से लड़ाई के लिए चुनौती दी, और फिर से सब कुछ उससे हार गया। मेरे पास उसे वश में करने का कोई उपाय नहीं है। इसलिए मैं अपने बुद्ध से प्रार्थना करने आया हूँ कि वे अपने शिष्य पर दया करें और पता लगाएँ कि वह राक्षस कहाँ से आया है। तब मैं उसके रिश्तेदारों और पड़ोसियों को गिरफ्तार कर सकूँगा, उसे पकड़ सकूँगा और गुरु को बचा सकूँगा। तब हम सब मिलकर श्रद्धापूर्वक सच्ची सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

जब बुद्ध ने यह सुना, तो उनकी सर्वदृष्टि ने दूर तक देखा और उन्हें सब कुछ एक पल में स्पष्ट हो गया। उन्होंने कहा, "मैं जानता हूँ कि वह राक्षस कौन है, लेकिन मैं तुम्हें नहीं बता सकता। तुम चुप नहीं रह सकते, नन्हे बंदर, और अगर तुमने यह बात फैला दी कि मैंने तुम्हें बताया है, तो वह तुमसे लड़ना बंद कर देगा और गिद्ध शिखर पर आकर हंगामा करेगा। मैं अपने लिए ही मुसीबत मोल लूँगा। इसके बजाय, मैं तुम्हें कुछ

धर्म शक्ति प्रदान करूँगा जिससे तुम उसे पकड़ सको।"
"तथागत मुझे कौन सी धर्म शक्ति प्रदान करेंगे?" बंदर ने कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम करते हुए पूछा। तब तथागत बुद्ध ने अपने अठारह अर्हतों को अपने खजाने खोलने और अठारह दाने सुनहरी सिंदूर की रेत लाने का आदेश दिया।
"सुनहरी सिंदूरी रेत क्या करती है?" बंदर ने पूछा।

बुद्ध ने उत्तर दिया, “गुफा के बाहर जाकर उस राक्षस से एक और मुकाबला करो। उसे बाहर आने के लिए उकसाओ ताकि अर्हत उस पर रेत गिराकर उसे वहीं रोक सकें। वह न तो अपना शरीर हिला पाएगा और न ही पैर उठा पाएगा, और तुम उसे अपनी इच्छानुसार पीट सकोगे।”
“बहुत बढ़िया,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, “बहुत बढ़िया। चलो अभी चलते हैं।” देर न करते हुए, अर्हतों ने सुनहरी सिंदूरी रेत लाकर अपना काम शुरू किया, जबकि बंदर भाई ने एक बार फिर बुद्ध का धन्यवाद किया। रास्ते में बंदर ने गिनकर देखा कि वहाँ केवल सोलह अर्हत थे।
"अगर आप लोगों को रिश्वत देकर अपने कर्तव्यों से बचने की छूट देते हैं तो यह कैसी जगह है?" बंदर ने पूछा।
"आपका क्या मतलब है, रिश्वत देकर अपने कर्तव्यों से बचने का?"
"तुममें से अठारह को भेजा गया था," बंदर ने उत्तर दिया, "तो अब तुममें से केवल सोलह ही क्यों हैं?"
उसके मुंह से ये शब्द निकलने से पहले ही अर्हत, ड्रैगन-वशक करने वाले और बाघ-निकालने वाले, उसके पास आए और पूछा, "वुकोंग, तुम इतने दुष्ट कैसे हो सकते हो? हम तो बुद्ध के उपदेश ग्रहण करने के लिए यहीं रुके थे।"
“तुम बहुत चालाक हो,” बंदर ने कहा, “बहुत चालाक। अगर मैंने थोड़ी देर से आवाज़ लगाई होती तो शायद तुम आते ही नहीं।” सभी अर्हत हंसते हुए अपने शुभ बादलों पर सवार हो गए।
वे जल्द ही जिंदौ पर्वत पर पहुँच गए। जब स्वर्ग के राजा ली ने उन्हें देखा, तो उन्होंने अपने सैनिकों को अभिवादन के लिए बाहर बुलाया और उन्हें सारी घटना बताने लगे।

अर्हतों ने कहा, "विस्तार से मत बताइए, जितनी जल्दी हो सके उसे बुला लीजिए।"
महान ऋषि ने अपने हाथों से मंत्रोच्चार किया, गुफा के प्रवेश द्वार पर गए और अपशब्द चिल्लाने लगे:
"बाहर आओ, तुम मोटे शैतान, बाहर आओ और देखो कि क्या तुम अपने दादा बंदर को हरा सकते हो।"
छोटे शैतान खबर देने के लिए उड़कर आए, और दानव राजा ने क्रोध में कहा, "उस चोर बंदर ने अपनी दुष्टता में मदद करने के लिए किसे साथ लिया है?"
"उसके साथ कोई सैनिक नहीं है," उन छोटे शैतानों ने जवाब दिया। "वह वहाँ अकेला है।"
“वह अकेले यहाँ वापस आने की हिम्मत कैसे कर सकता है?” दानव राजा ने आश्चर्य से कहा। “उसकी लाठी मेरे पास है। क्या वह एक और मुक्केबाजी करना चाहता है?”
अपनी अंगूठी लेकर और भाला लहराते हुए दानव ने छोटे शैतानों को प्रवेश द्वार पर पड़े पत्थरों को हटाने का आदेश दिया और बाहर कूद गया। “अरे बंदर,” उसने अपमानजनक स्वर में चिल्लाते हुए कहा, “यहाँ से दफ़ा हो जा। तुझे बहुत मार पड़ चुकी है। अब यहाँ आकर क्या चिल्ला रहा है?”
"अरे राक्षस," बंदर ने कहा, "तुम्हें अपने भले की समझ नहीं है। मुझे वापस आने से रोकने का एकमात्र उपाय है आत्मसमर्पण करना, क्षमा मांगना और मेरे गुरु और मेरे साथी शिष्यों को वापस सौंप देना। ऐसा करो, तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा।"
"मैंने तुम्हारे उन तीनों भिक्षुओं का काम तमाम कर दिया है," राक्षस ने जवाब दिया, "और जल्द ही मैं उनका वध करने वाला हूँ। क्या तुम्हें अभी तक यह एहसास नहीं हुआ? दफ़ा हो जाओ!"
"वध" शब्द सुनते ही बंदर ने अपने पैर पटके और उसके गाल गुस्से से लाल हो गए क्योंकि वह एक पल भी अपना गुस्सा रोक नहीं सका। उसने अपना बचाव छोड़ दिया और एक कदम पीछे हटकर राक्षस के चेहरे पर मुक्का मारा।
राक्षस ने अपने भाले से पलटवार किया, और यह न समझते हुए कि बंदर जानबूझकर इधर-उधर उछल रहा था, वह गुफा से दक्षिण की ओर और दूर बहता चला गया। तब बंदर ने अर्हतों से आह्वान किया कि वे सब मिलकर राक्षस पर अपनी सुनहरी सिंदूरी रेत फेंकें। यह दिव्य शक्ति का एक अद्भुत प्रदर्शन था।
वास्तव में:

पहले तो यह धुंध या धुएं की तरह फैल गया।
आकाश से धीरे-धीरे नीचे उतरते हुए।
सफेदी का एक विशाल विस्तार
जिसमें कुछ भी दिखाई नहीं देता;
अस्पष्टता का आवरण
जो पल भर में किसी का रास्ता छुपा देता है।
लकड़ी इकट्ठा करते समय लकड़हारा अपनी साथी से बिछड़ जाता है;
जड़ी-बूटियां इकट्ठा कर रहे युवा ताओवादी को अपना घर दिखाई नहीं दे रहा है।
बारीक दाने हवा में आटे की तरह उड़ते हैं।
मोटे दाने तिल के दानों की तरह लुढ़कते हैं।
दुनिया नजरों से ओझल हो गई है, पहाड़ों की चोटियाँ अंधेरी हैं।
और आकाश से आने वाली धूप गायब हो जाती है।
यह घोड़ों द्वारा उड़ाई गई धूल नहीं है।
और न ही किसी सुगंधित रथ की कोमलता जैसी।
यह सिंदूरी रेत एक निर्दयी चीज है
आकाश और पृथ्वी को ढककर सभी राक्षसों को बंदी बनाना।
क्योंकि राक्षस ने सच्चे मार्ग पर हमला किया था
क्या अर्हतों को इसकी भव्यता का प्रदर्शन करने का आदेश दिया गया था?
उनके हाथों में चमकते मोती थे
सही समय पर चकाचौंध भरी चमक के साथ दमकना।
उड़ती रेत से राक्षस की आँखें चौंधियाने लगीं, तो उसने झुककर देखा कि रेत तीन फुट गहरी हो चुकी थी। घबराकर वह तुरंत ऊपर की ओर उछल पड़ा, लेकिन संभलने से पहले ही रेत दो फुट से भी ज़्यादा गहरी हो गई थी। हताश होकर उसने अपने पैर रेत से छुड़ाए, अपनी अंगूठी निकाली और "पकड़ो इन्हें!" चिल्लाते हुए हवा में उछाल दी। जैसे ही अंगूठी सीटी बजाती हुई नीचे आई, उसने सुनहरी सिंदूरी रेत के अठारह दाने पकड़ लिए। राक्षस वापस अपनी गुफा में चला गया।

खाली हाथ खड़े अर्हतों ने अपने बादल गिराना बंद कर दिया। "अर्हतों, तुमने रेत गिराना क्यों बंद कर दिया?" बंदर ने उनकी ओर आते हुए पूछा।

"अभी-अभी एक शोर हुआ और हमारी सारी सुनहरी सिंदूरी रेत गायब हो गई," उन्होंने जवाब दिया।
"उस चीज ने भी उसे पकड़ लिया होगा," बंदर ने हंसते हुए कहा।
"अगर वह इतना अजेय है तो क्या हम उसे पकड़ पाएंगे?" स्वर्ग के राजा और बाकी सबने कहा। "हम स्वर्ग कब लौटेंगे, और हम जेड सम्राट का सामना कैसे कर पाएंगे?"
तब ड्रैगन-वशक करने वाले और बाघ-शांत करने वाले दो अर्हतों ने बंदर से कहा, "वुकोंग, क्या तुम जानते हो कि हम दोनों को निकलने में देर क्यों हुई?"
"मैं इसलिए नाराज़ था क्योंकि मुझे लगा कि तुम कहीं छिपकर बैठे हो और आ नहीं रहे हो," बंदर ने कहा। "मुझे नहीं पता था कि तुम बातचीत कर रहे हो।"
“तथागत बुद्ध ने हमें ये निर्देश दिए थे,” अर्हतों ने उत्तर दिया। “उन्होंने कहा, ‘उस राक्षस के पास बहुत बड़ी जादुई शक्तियाँ हैं। यदि तुम अपनी सुनहरी सिंदूरी रेत खो दो, तो सुन वुकॉन्ग से कहना कि वह लिहेन स्वर्ग में स्थित भगवान लाओ ज़ी के तुशिता महल में जाकर उस राक्षस के बारे में जानकारी प्राप्त करे। यदि वह ऐसा कर ले, तो वह उस राक्षस को आसानी से पकड़ सकता है।’”
“यह तो बहुत ही भयानक काम है,” बंदर ने कहा। “बुद्ध ने मुझे फिर धोखा दिया है। उन्हें मुझे पहले ही बता देना चाहिए था और आपको इस लंबी यात्रा से बचा लेना चाहिए था।”
"क्योंकि ये बुद्ध के स्पष्ट निर्देश हैं, इसलिए आपको जल्द से जल्द अपनी यात्रा शुरू कर देनी चाहिए," स्वर्ग के राजा ली ने कहा।
शानदार बंदर ने "मैं जा रहा हूँ!" कहते हुए अपना कलाबाज़ी करता बादल सीधे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से अंदर भेज दिया, जहाँ चारों सेनापतियों ने हाथ उठाकर उसका अभिवादन किया और पूछा कि राक्षस को पकड़ने का काम कैसा चल रहा है। बंदर ने बिना रुके कहा, "अभी तक मैंने उसे पकड़ा नहीं है, लेकिन अब मुझे पता चल गया है कि उसके बारे में कहाँ से पता चलेगा।" उसे रोकने की हिम्मत न करते हुए, चारों

सेनापतियों ने उसे जाने दिया। वह चमत्कारी धुंध के हॉल या सप्तर्षि और बैल के महल में नहीं गया, बल्कि सीधे तैंतीस स्वर्गों से परे स्थित लिहेन स्वर्ग में तुशिता महल के द्वार पर गया, जहाँ उसने दो अमर लड़कों को सेवा करते देखा। बंदर ने अपना नाम नहीं बताया और सीधे अंदर चला गया, जिससे वे लड़के घबरा गए और उसे पकड़ लिया।

उन्होंने पूछा, "तुम कौन हो? और कहाँ जा रहे हो?"

"मैं स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि हूं," बंदर ने उत्तर दिया, "और मैं भगवान लाओ ज़ी से मिलने आया हूं।"

“तुम इतने बदतमीज़ कैसे हो सकते हो?” लड़कों ने कहा। “जब तक हम रिपोर्ट बनाते हैं, वहीं इंतज़ार करो।” आगे कोई बात न करते हुए मंकी उन पर चिल्लाया और सीधे अंदर चला गया, जहाँ उसकी टक्कर लॉर्ड लाओ ज़ी से हो गई जो उससे मिलने बाहर आ रहे थे।

"तुम्हें तो सालों से नहीं देखा, बूढ़े दोस्त," बंदर ने झुककर और आदरपूर्वक "री-ई-ईर" कहते हुए कहा।

"तुम यहाँ क्यों हो, नन्हे बंदर, शास्त्र लाने जाने के बजाय?" भगवान लाओ ज़ी ने मुस्कुराते हुए पूछा।

इस पर बंदर ने उत्तर दिया,

पवित्र ग्रंथों को लाने के लिए
मैं दिन-रात परिश्रम करता हूँ।

पश्चिम की यात्रा
और अब मैं मुसीबत में हूँ
आपको देखना सही रहेगा।

"पश्चिमी स्वर्ग के मार्ग पर आने वाली तुम्हारी परेशानियों का मुझसे क्या लेना-देना है?" भगवान लाओ ज़ी ने पूछा। बंदर का उत्तर था:

बुद्ध के पश्चिमी स्वर्ग के बारे में
कृपया आज बात न करें।
इसका मतलब है किसी निशान का अनुसरण करना।

कि मैं इस तरह से आगे बढ़ा हूँ।"
"लेकिन यह तो सर्वोच्च अमरों का महल है," लॉर्ड लाओ ज़ी ने उत्तर दिया, "तो आप यहाँ किसी के पदचिह्नों का पीछा कैसे कर सकते हैं?"
बंदर महल में गया और बड़ी एकाग्रता से चारों ओर देखने लगा। कई ढके हुए रास्तों से गुज़रने के बाद उसने भैंसों के बाड़े के पास एक लड़के को सोते हुए देखा, जहाँ से भैंस गायब थी। बंदर चिल्लाया, "बूढ़े आदमी, तुम्हारी भैंस भाग गई है, तुम्हारी भैंस भाग गई है!"
“वह दुष्ट जानवर कब भाग गया?” लॉर्ड लाओ ज़ी ने भयभीत होकर पूछा। शोर से लड़का जाग गया, जो लॉर्ड लाओ ज़ी के सामने घुटने टेककर बोला, “हे प्रभु, मैं सो रहा था। मुझे नहीं पता वह कब गया।”
"तुम कब सो गए थे, छोटे बदमाश?" लॉर्ड लाओ ज़ी ने क्रोधित होकर पूछा।
"मैंने औषधि प्रयोगशाला में औषधि की एक गोली उठाई और उसे खा लिया," लड़के ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया, "फिर मैं यहीं सो गया।"
“मुझे लगता है तुमने वो सात अग्नि-युक्त औषधि की गोलियाँ खा लीं जो शायद मेरे द्वारा उन्हें बनाते समय गिर गई थीं, धिक्कार है तुम पर,” लॉर्ड लाओ ज़ी ने कहा। “उनमें से एक गोली खाने से तुम सात दिन तक सो जाते। जब तुम सो गए और पहरा नहीं दे रहे थे, तब उस दुष्ट जानवर ने मौका पाकर भागकर नश्वर दुनिया में प्रवेश कर लिया। यह सात दिन पहले की बात होगी।” फिर उन्होंने यह पता लगाने के लिए निरीक्षण का आदेश दिया कि क्या उसने कोई खजाना चुराया है।
"इसमें कोई खजाना नहीं है, बस एक भयानक आवाज़ है," बंदर ने कहा।
जब लॉर्ड लाओ ज़ी ने तुरंत जाँच की तो उन्हें पता चला कि हीरे और जेड की चूड़ी के अलावा कुछ भी गायब नहीं था।
"उस दुष्ट जानवर ने मेरा हीरा-जड़ी चूड़ी चुरा लिया होगा," लॉर्ड लाओ ज़ी ने कहा।
"तो यही उसका खजाना है," बंदर ने कहा, "इसी से उसने मुझसे लड़ाई की थी। भगवान ही जाने उसने हमारे कितने हथियार चुरा लिए हैं, जिन्हें लेकर वह अब इस दुनिया में उत्पात मचा रहा है।"
"वह दुष्ट जानवर अब कहाँ है?" लॉर्ड लाओ ज़ी ने पूछा।

जिंदौ पर्वत पर स्थित जिंदौ गुफा में, जहाँ उसने तांग पुजारी को बंदी बना रखा है और मेरी सोने की पट्टी वाली गदा छीन ली है। मैंने दिव्य सैनिकों से मदद मांगी, लेकिन उसने राजकुमार नेझा के जादुई हथियार ले लिए। जब मैंने अग्नि के तारा देवता को बुलाया, तो उनके अग्नि-प्राण उपकरण और जीव भी ले लिए गए। हालाँकि पीली नदी का सरदार उसे डुबो नहीं सका, लेकिन कम से कम उसका सामान तो नहीं लिया गया। फिर जब मैंने बुद्ध से अपने अर्हतों को भेजकर सुनहरी सिंदूरी रेत बिखेरने का अनुरोध किया, तो राक्षस ने वह सब भी ले लिया। ऐसा लगता है कि एक चोर और हत्यारे राक्षस को भागने देने के लिए आप एक बहुत गंभीर अपराध के दोषी हैं।

"वह हीरे और जेड की चूड़ी एक अनमोल वस्तु है जिसे मैंने हान दर्रे से होकर विदेशियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के बाद बनाया और निखारा था। इसके पास कुछ भी नहीं पहुँच सकता, न हथियार, न आग, न पानी। लेकिन अगर मेरा केले का पंखा चोरी हो जाता तो मैं भी कुछ नहीं कर पाता।"

बंदर बेहद प्रसन्न था क्योंकि वह भगवान लाओ ज़ी के साथ, जो अपना केले का पंखा लिए हुए थे, शुभ बादल पर सवार होकर महल से बाहर निकला। जैसे ही वे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से गुज़रे, वे बादल को सीधे जिंदौ पर्वत पर ले आए, जहाँ भगवान लाओ ज़ी ने अठारह अर्हतों, गर्जन देवताओं, पीली नदी के सरदार, अग्नि तारा देवता, स्वर्ग के राजा ली और राजकुमार नेझा का अभिवादन किया, जिन्होंने उन्हें सारी घटना बताई। भगवान लाओ ज़ी ने कहा, "मुझे उसे पकड़ने के लिए सन वुकॉन्ग को एक बार फिर नीचे जाकर उसे बाहर निकालना होगा।"

बंदर चोटी से नीचे कूद गया और एक बार फिर गालियां बकने लगा। "मोटे, दुष्ट जानवर, बाहर आ और मर जा।"

जब नन्हे शैतानों ने दोबारा सूचना दी तो दानव राजा ने कहा, "पता नहीं इस बार दुष्ट बंदर किसे लेकर आया है।" वह अपना भाला और खजाना लेकर चला गया ताकि बंदर उसे एक बार फिर श्राप दे।

“दुष्ट राक्षस, इस बार तो तुम्हारी मौत पक्की है। यहीं रुको और ये लो!” बंदर उस पर झपटा, मुक्के से उसके कान पर ज़ोरदार प्रहार किया, मुड़ा और भाग गया। राक्षस भाला लिए उसके पीछे भाग रहा था, तभी पहाड़ की चोटी से एक आवाज़ आई: “घर जाओ, भैंस। किस बात का इंतज़ार कर रहे हो?”

जब राक्षस ने ऊपर देखा और भगवान लाओ ज़ी को देखा तो वह भय से कांप उठा। "वह चोर बंदर सचमुच एक शैतान है।"

उन्होंने मेरे मालिक को आने के लिए कैसे राजी किया?

जब भगवान लाओ ज़ी ने मंत्र पढ़ा और एक बार पंखा चलाया, तो राक्षस ने अंगूठी त्याग दी जिसे भगवान ने अपने हाथ में पकड़ लिया। जब उन्होंने दोबारा पंखा चलाया तो राक्षस की सारी शक्ति समाप्त हो गई और वह अपने असली रूप, भैंस में बदल गया। तब भगवान लाओ ज़ी ने जादुई श्वास से हीरे के कंगन पर फूँक मारी, उसे भैंस की नाक में डाला, अपनी कमर की पट्टी खोली, उसे अंगूठी में पिरोया और उसे पकड़ लिया।

आज भी भैंसों की नाक में खूंटी नामक उपकरण लगे होते हैं, जिनके माध्यम से रस्सी डाली जा सकती है: यह वही काम करता है।

इसके बाद भगवान लाओ ज़ी ने देवताओं से विदा ली, भैंस पर सवार हुए और अपने बहुरंगी बादल पर सवार होकर तुशिता स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया, और राक्षस को अपने साथ बादल के आगे-पीछे ले गए।

तभी महान ऋषि सूर्य, स्वर्ग के राजा ली और उनकी समस्त सेना गुफा में प्रवेश कर सकी और सौ से अधिक छोटे-बड़े राक्षसों को मारकर उनके हथियार और साजो-सामान वापस ले लिए। बंदर ने स्वर्ग के राजा ली और नेझा को धन्यवाद दिया, जो स्वर्ग लौट गए; गर्जन के देवताओं को, जो अपने निवास स्थान पर लौट गए; अग्नि के तारा स्वामी को, जो अपने महल में चले गए; पीली नदी के सरदार को, जो अपनी नदी पर चले गए; और अर्हतों को, जो पश्चिमी स्वर्ग लौट गए। अंत में उसने तांग पुजारी, सुअर और साधु रेत को मुक्त कर दिया और अपना लोहे का डंडा वापस ले लिया। जब उन तीनों ने बंदर को धन्यवाद दिया, तो घोड़े और सामान को तैयार किया गया और गुरु और शिष्य पश्चिम की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग की खोज में गुफा से निकल पड़े।

अध्याय 52

पश्चिम की यात्रा

चलते-चलते उन्हें "पवित्र तांग पुजारी, शाकाहारी भोजन करें" की आवाज़ सुनाई दी, जिससे गुरु चौंक गए। यदि आप नहीं जानते कि कौन पुकार रहा था, तो अगले भाग

में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 53
ध्यान गुरु को भोजन करने के बाद गर्भाधान हुआ।
पीली पत्नी शैतानी भ्रूण को हटाने के लिए एक बेकार आदमी को लाती है
आठ सौ प्रकार के सद्गुणों का विकास करना चाहिए।
तीन हजार अच्छे कर्म गुप्त रूप से करने होंगे।
वस्तुओं को स्वयं से, या मित्र को शत्रु से भेद न करो:
यह पश्चिमी स्वर्ग की शिक्षाओं के अनुरूप है।
गैंडे के आकार के उस राक्षस को किसी हथियार का डर नहीं था;
पानी और आग की विफलता के लिए किसी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता।
भगवान लाओजी ने उसे वश में कर लिया और उसे स्वर्ग ले गए।
मुस्कुराते हुए भैंस को घुमाते हुए।
कहानी आगे बताती है कि रास्ते में कौन पुकार रहा था। जिंदौ पर्वत के पर्वत देवता और स्थानीय देवता बैंगनी सोने का कटोरा लिए हुए बाहर आए। उन्होंने कहा, "हे पवित्र भिक्षु, चावल का यह कटोरा महान ऋषि बंदर ने एक धर्मनिष्ठ परिवार से मांगा था। आपने अच्छी सलाह नहीं मानी, इसलिए आप एक दुष्ट राक्षस के चंगुल में फंस गए, जिससे महान ऋषि को अंतहीन कष्ट सहना पड़ा, अंततः आज वे आपको मुक्त करने में सफल हुए।"
कृपया आगे बढ़ने से पहले यह भोजन कर लें, और महान ऋषि के आदर और कर्तव्यबोध के प्रति कृतघ्न न हों।
"मैं आपका बहुत आभारी हूँ, शिष्य," संज़ंग ने कहा, "और मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं ढूंढ पा रहा हूँ। अगर मुझे पहले ही यह एहसास हो जाता कि मुझे घेरे से बाहर नहीं निकलना चाहिए, तो मैं कभी भी जान से मारे जाने के ऐसे खतरे में नहीं पड़ता।"
"मैं आपसे साफ-साफ कहता हूँ, स्वामी जी," बंदर भाई ने कहा, "कि आपने मेरे द्वारा बनाई गई अंगूठी पर भरोसा नहीं किया, इसलिए आप किसी और की अंगूठी के शिकार हो गए। इससे आपको बहुत कष्ट और पीड़ा सहनी पड़ी। हे भगवान! हे भगवान! हे भगवान!"
"तुम्हारा दूसरे रिंग से क्या मतलब है?" पिग ने पूछा।

"मालिक को उस भयानक खतरे में डालने के लिए तुम ही जिम्मेदार थे, हे दुष्ट जुबान वाले मूर्ख," बंदर ने कहा।
"मुझे दिव्य सैनिकों, जल, अग्नि और यहाँ तक कि बुद्ध की सिंदूरी रेत को लाने के लिए आकाश-पृथ्वी को उलट-पुलट करना पड़ा, ये सब उनकी चमकदार सफेद अंगूठी में समाहित हो गया था। बुद्ध ने अर्हतों को संकेत दिया जिन्होंने मुझे बताया कि राक्षस कहाँ से आया था, तभी मैं भगवान लाओ ज़ी को बुलाकर उसे वश में कर सका।"
वह एक भैंसा था जो दानव बन गया था।
यह सुनकर संज़ंग ने असीम कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा, "अच्छा शिष्य। इस अनुभव के बाद मैं भविष्य में निश्चित रूप से आपकी सलाह मानूंगा।" फिर उन चारों ने गरमागरम भोजन किया। "यह चावल अभी भी गर्म क्यों है?" (अध्याय 53)

इतने लंबे समय बाद?" बंदर ने पूछा। "जब मुझे पता चला कि महान ऋषि सफल हो गए हैं, तो मैंने इसे स्वयं गर्म किया," घुटनों के बल बैठे स्थानीय देवता ने उत्तर दिया। भोजन शीघ्र ही खा लिया गया, जिसके बाद उन्होंने कटोरा एक तरफ रख दिया और स्थानीय देवता और पर्वत देवता से विदा ली। गुरु अपने घोड़े पर सवार हुए और वे ऊंचे पर्वत को पार कर गए। चिंताओं से मुक्त होकर, वे वास्तविक चेतना में लौट आए; हवा का आनंद लेते हुए और ओस में सोते हुए वे पश्चिम की ओर बढ़ते रहे। जब वे काफी देर तक यात्रा कर चुके थे, तब एक बार फिर वसंत ऋतु का आरंभ हो गया था।
उन्होंने सुना
अबाबीलों की मधुर पुकार,
ओरिओल पक्षियों की सुंदरता।
अबाबीलों की मधुर पुकार, उनकी सुगंधित आवाजों को थका देती है;
ओरिओल पक्षियों की सुंदरता और उनका लगातार मधुर गीत।
यह भूमि रेशमी वस्त्र की तरह फूलों से ढकी हुई है।
पन्ना-हरे रंग की पहाड़ियाँ मानो गद्दीदार गद्दियों से ढकी हुई प्रतीत होती हैं।
पहाड़ी की चोटी पर लगे हरे बेर के पेड़ों पर फल लगते हैं।
जबकि एक प्राचीन सरू का पेड़ घाव के सामने बादल को थामे हुए है।
उपजाऊ मैदान पर धुंधली रोशनी फीकी है;

गर्म रेत सूर्यास्त की सुनहरी रोशनी में नहा रही है।
अब बागों और पेड़ों में फूल खिलने लगे हैं;
वसंत ऋतु के आगमन के साथ ही विलो के पेड़ों में नई कोंपलें निकल आती हैं।
चलते-चलते वे एक छोटी नदी के पास पहुँचे जिसका पानी ठंडा, शुद्ध और गहरा था।
जब तांग पुजारी ने बेहतर ढंग से देखने के लिए अपने घोड़े की लगाम खींची, तो उन्हें विलो के हरे-भरे पेड़ों की छाया में एक फूस की झोपड़ी की छत का कुछ हिस्सा दिखाई दिया। "यह किसी नाविक का घर होगा," बंदर ने झोपड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा। "ऐसा ही लगता है," संजांग ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं पूरी तरह से निश्चित नहीं होना चाहता क्योंकि मुझे कोई नाव दिखाई नहीं दे रही है।"
"नाविक!" पिग ने सामान नीचे रखते हुए ज़ोर से चिल्लाया। "नाव को इधर लाओ।"
कई बार चिल्लाने के बाद, विलो के पेड़ों के नीचे से एक छोटी नाव चरमराती हुई निकली और जल्द ही उनके किनारे के पास आ गई। जब उन्होंने ध्यान से देखा तो उन्हें यह दिखाई दिया:
छोटी-छोटी चप्पूएँ लहरों को चीरती हुई,
पानी पर हल्के से तैरते हुए।
जहाज के बाहरी हिस्से को कई रंगों में रंगा गया है।
अध्याय 53
735
पश्चिम की यात्रा
पूरी तरह से बंद जगह को घेरते हुए।
धनुषों में लोहे की जंजीरें बड़े करीने से कुंडलित हैं।
और जहाज के पिछले हिस्से में लगा पतवार चमकीला है।
हालांकि यह छोटी नाव सरकंडे जितनी ही हल्की है।
यह एक महासागरीय पोत के बराबर है।
इसमें हाथीदांत का मस्तूल या रेशमी रस्सियाँ नहीं हो सकती हैं।
लेकिन इसमें कैसिया की लकड़ी के चप्पू और चीड़ की लकड़ी का पिछला खंभा जरूर है।
वास्तव में यह जहाज लंबी यात्राओं के लिए उपयुक्त नहीं है।
एक ऐसी नौका जो सिर्फ एक छोटी सी नदी को पार करने के लिए उपयुक्त हो।

नदी के किनारों के बीच आना-जाना,
उस प्राचीन पारगमन स्थल को कभी न छोड़ें।
नाव जल्द ही किनारे पर आ गई, नाविक ने पुकारा, "नदी पार करने का रास्ता इधर है।" पास से देखने के लिए घोड़े को आगे बढ़ाते हुए, संज़ंग ने देखा कि नाविक कुछ इस तरह दिखता था:
सिर तौलिए के कपड़े से लिपटा हुआ था।
पैरों में रेशम के काले जूते।
सूती गद्देदार ट्यूनिक और पतलून पर कई पैच,
और कमर के चारों ओर अच्छी तरह से सिला हुआ सूती एप्रन था।
हाथों की त्वचा सख्त और मांसपेशियां कठोर हैं।
धुंधली आंखें, झुर्रियों से भरी भौंहें और उम्रदराज चेहरा।
लेकिन वह आवाज ओरिओल पक्षी के गीत की तरह मधुर थी;
ध्यान से देखने पर स्पष्ट था कि वह एक बूढ़ी महिला थी।
"क्या आप नाव चलाते हैं?" बंदर ने नाव के पास आते हुए पूछा।
"हां," महिला ने जवाब दिया।

"नाविक यहाँ क्यों नहीं है?" बंदर ने पूछा। "उसने नाव को चलाने का काम अपनी पत्नी पर क्यों छोड़ दिया है?"
महिला मुस्कुराई और कुछ नहीं बोली, उसने तख्ता सही जगह पर रख दिया। फ्रायर सैंड ने सामान उठाया और मंकी ने मास्टर की मदद की, फिर वह खुद भी चढ़ गया। पिग घोड़े को आगे ले गया, जिसके बाद तख्ता रख दिया गया। महिला ने नाव चलाई और तेज़ी से उन्हें नदी पार करा दिया।
जब वे पश्चिमी तट पर पहुँचे, तो संज़ंग ने साधु संग से कहा कि वे एक गठरी खोलें और उसमें से कुछ सिक्के निकालकर उसे दे दें। नाव चलाने वाली महिला ने राशि पर कोई आपत्ति नहीं जताई, बल्कि नाव को उसके खंभे से पानी के किनारे बाँध दिया और हँसते हुए अपनी कुटिया में वापस चली गई।
क्योंकि उसे प्यास लगी थी और पानी इतना साफ था, इसलिए संजांग ने सुअर से

कहा, "कटोरा लाओ और मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ।" सुअर ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था और पानी अपने मालिक को दे दिया, जिसने उसका लगभग एक तिहाई ही पिया, और बाकी दो तिहाई उस मूर्ख ने झट से पी लिया और फिर मालिक को उसके घोड़े पर वापस बिठाने में मदद की।

गुरु और शिष्य पश्चिम की ओर सड़क पर एक घंटे से भी कम समय तक चले थे कि संजांग कराहने लगा, "मेरे पेट में दर्द हो रहा है।"

उसके पीछे खड़े पिग ने कहा, "मुझे भी पेट में दर्द हो रहा है।"

"ज़रूर तुमने ठंडा पानी पी लिया होगा," फ्रायर सैंड ने कहा, लेकिन तभी "बहुत तकलीफ हो रही है!" की कराहों से उनकी बात अधूरी रह गई।

अपने स्वामी और सुअर से। दोनों असहनीय दर्द में थे और उनके पेट धीरे-धीरे फूलते जा रहे थे। जब उन्होंने हाथों से छुआ तो उन्हें मांस और खून का एक गोला सा महसूस हुआ जो लगातार हिलता-डुलता रहा। संजांग बहुत अस्थिर महसूस कर रहा था तभी उसने सड़क किनारे एक गाँव में एक पेड़ की चोटी से भूसे के दो गट्ठे लटके हुए देखे।

“यह अच्छा है, स्वामी,” बंदर ने कहा। “वहाँ एक शराब की दुकान है। मैं जाकर आपके लिए थोड़ा गर्म पानी माँगूँगा और पता लगाऊँगा कि क्या वहाँ कोई दवा बेचता है और आपको दर्द कम करने के लिए कुछ दवा दे सकता है।”

संज़ंग को यह सुझाव बहुत पसंद आया, इसलिए उसने सफेद घोड़े को तेज़ी से दौड़ाया और जल्द ही गाँव के द्वार पर पहुँचकर वहाँ उतर गया। द्वार के बाहर भूसे के गट्ठे पर एक बूढ़ी औरत बैठी भांग का धागा कात रही थी। बंदर उसके पास गया, हाथ जोड़कर अभिवादन किया और बोला, "हम भिक्षु पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश से आए हैं। मेरे गुरु तांग सम्राट के छोटे भाई हैं, और नदी का पानी पीने से उनके पेट में दर्द हो रहा है।"

"तुमने किस नदी का पानी पिया था?" बूढ़ी औरत ने जोर से हंसते हुए पूछा।

"यहाँ से पूर्व की ओर बहने वाली निर्मल नदी से," बंदर ने उत्तर दिया।

"कितनी मज़ेदार बात है," बूढ़ी औरत खिलखिलाकर हंस पड़ी, "कितनी मज़ेदार बात है! अंदर आओ, मैं समझाती हूँ।"

बंदर ने संज़ंग को सहारा दिया जबकि साधु सैंड ने सुअर को फूस की झोपड़ी में बिठाया। दोनों अपने फूले हुए पेटों के कारण दर्द से कराह रहे थे, उनके चेहरे पीले पड़ गए थे और माथे पर शिकन साफ दिख रही थी। बंदर ने कहा, "मेरे मालिक के लिए

थोड़ा पानी उबाल दीजिए, मालकिन। उन्हें पानी की बहुत ज़रूरत है, और मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा।"

ऐसा करने के बजाय, वह हँसते हुए घर के पिछले हिस्से में चली गई और बोली, "आओ और देखो, आओ और देखो!" अंदर चप्पलों की आवाज़ आई और दो-तीन अधेड़ उम्र की औरतें बाहर आकर सान्ज़ांग को हँसी से घूरने लगीं। इससे बंदर इतना क्रोधित हो गया कि वह उन पर चिल्लाया और अपने दाँत दिखाए, जिससे वे सब डर के मारे भागकर अंदर चली गईं।

अध्याय 53

बंदर उनके पीछे गया, बूढ़ी औरत को पकड़ लिया और बोला, "अभी इसी वक्त थोड़ा पानी उबाल लो और मैं तुम्हारी जान बख्श दूंगा।"

"मालिक," बूढ़ी औरत ने कहा, "गर्म पानी से कोई फायदा नहीं होगा। मैं उन दोनों के पेट दर्द में कुछ भी मदद नहीं कर सकती। अगर आप मुझे जाने देंगे तो मैं आपको सब कुछ बता दूंगी।" जब बंदर ने उसे छोड़ा तो उसने आगे कहा, "यह पश्चिमी लियांग का स्त्री-लोक है। इस देश में हम सब स्त्री हैं, हमारे बीच कोई पुरुष नहीं है, इसीलिए आपको देखकर हमें इतनी खुशी हुई। यह बहुत बुरा हुआ कि पूज्य पिता ने उस नदी का पानी पिया, जिसे मातृत्व नदी कहा जाता है। हमारी राजधानी के बाहर एक पुरुष-स्वागत केंद्र है जहाँ एक गर्भ निवेदन का झरना है। इस देश में हम बीस वर्ष की आयु प्राप्त करने पर ही नदी का पानी पीने का साहस करते हैं। इसे पीने के बाद हमें गर्भावस्था के कारण पेट में दर्द होने लगता है। तीन दिन बाद हम पुरुष-स्वागत केंद्र पर स्थित गर्भ निवेदन के झरने पर जाते हैं। यदि हमें पानी में दोहरी परछाई दिखाई देती है तो हम बच्चे को जन्म देते हैं। आपके स्वामी ने मातृत्व नदी का पानी पिया है इसलिए वे गर्भवती हैं। वे जल्द ही बच्चे को जन्म देने वाले हैं। क्या गर्म पेय पीने से उन्हें कोई लाभ होगा?"

यह खबर सुनकर संजांग सदमे से पीली पड़ गई।

"मैं क्या करूँ, शिष्य?" उसने पूछा।

"मैं बच्चा पैदा करने जा रहा हूँ, लेकिन मैं तो पुरुष हूँ," पिग दर्द से कराहते हुए बोला। "बच्चा कहाँ से निकलेगा? मैं उसे जन्म कैसे दूँगा?"

"जैसा कि पुरानी कहावत है, तरबूज पकने पर ही गिरता है," बंदर ने हंसते हुए जवाब दिया। "जब समय आएगा, तो तुम्हारी पसलियों के नीचे एक छेद खुल जाएगा जिससे वह बाहर निकलेगा।"

इस बातचीत से सुअर डर से कांप उठा और दर्द असहनीय हो गया। "मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता," उसने कहा। "मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं मर रहा हूँ, मैं मर रहा हूँ।"

"भाई, बेचैन होना बंद करो," फ्रायर सैंड ने मुस्कुराते हुए कहा, "बेचैन होना बंद करो, नहीं तो गर्भनाल उलझ जाएगी और जन्म से पहले ही तुम बीमार पड़ जाओगे।"

उस मूर्ख की घबराहट अब पहले से भी बदतर हो गई थी। आँखों में आँसू लिए वह बंदर को पकड़े हुए बोला, "भाई, उस बुढ़िया से पूछो कि कोमल स्पर्श वाली दाइयाँ कहाँ मिलती हैं और उन्हें बुलाओ। दर्द अब बहुत तेज़ी से बढ़ रहे हैं। ये प्रसव पीड़ा ही होनी चाहिए। अब बहुत जल्द ही प्रसव हो जाएगा।"

"अगर ये प्रसव पीड़ा है, भाई, तो बेहतर होगा कि तुम छटपटाना बंद कर दो, नहीं तो तुम्हारा पानी टूट जाएगा," फ्रायर सैंड ने मुस्कुराते हुए कहा।

"मेरी प्यारी महिला," संजांग कराहते हुए बोली, "क्या यहाँ आस-पास कोई डॉक्टर है? मेरे किसी शिष्य को भेजकर कोई ऐसी दवा मंगवाइए जिससे मेरा गर्भपात हो जाए।"

"दवा से कोई फायदा नहीं होगा," बूढ़ी औरत ने कहा। "यहाँ से दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क पर माउंट ऑफस्प्रिंग डिसॉल्व्ड में चाइल्डफ्री गुफा में एक गर्भपात का झरना है। गर्भावस्था समाप्त करने के लिए आपको उस झरने का पानी पीना होगा। लेकिन अब वह झरना उपलब्ध नहीं है क्योंकि पिछले साल 'ऐसे-आप-इच्छा अमर' नाम का एक ताओवादी यहाँ आया था और उसने चाइल्डफ्री गुफा को अमर आश्रम में बदल दिया। वह गर्भपात के झरने का पानी जमा कर रहा है, जिसे वह देना नहीं चाहता। जो भी पानी चाहता है उसे उसे कीमती उपहार देने होंगे। आपको भेड़ का मांस, शराब और फल चढ़ाने होंगे, और उससे एक कटोरा पानी प्राप्त करने से पहले बहुत श्रद्धा दिखानी होगी।"

"तुम घुमंतू भिक्षुओं के लिए यह सब करना संभव नहीं है, इसलिए तुम्हें भाग्य को अपना काम करने देना होगा और जब तुम्हारा समय आएगा तब बच्चे पैदा करने होंगे।" यह सब जानकर बंदर बहुत प्रसन्न हुआ और फिर उसने पूछा कि संतान विलीन पर्वत कितनी दूर है। "दस मील," बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया।

"ठीक है," बंदर ने कहा। "आप चिंता करना छोड़ दीजिए, स्वामी जी। मैं जाकर आपके लिए थोड़ा पानी ले आता हूँ।"

अध्याय 53

738

पश्चिम की यात्रा

महान संत ने साधु सैंड को विदाई देते हुए कहा, "गुरु का ठीक से ख्याल रखना, और अगर यहाँ के लोग उन्हें धमकाने की कोशिश करें, तो उन्हें डराने के लिए अपना पुराना तरीका इस्तेमाल करना, यानी मुँह बनाना, जब तक मैं पानी लेकर वापस न आ जाऊँ।"

फ्रायर सैंड आदेशानुसार काम करने ही वाला था कि तभी एक बूढ़ी औरत एक बड़ा मिट्टी का कटोरा लेकर आई और उसने मंकी को देते हुए कहा, "इसे लो और जितना हो सके उतना खाना ले आओ, ताकि हम आपात स्थिति के लिए कुछ बचा सकें।"

बंदर अपने हाथों में कटोरा लिए फूस की झोपड़ी से निकला और अपने बादल पर सवार होकर उड़ गया। यह देखकर बूढ़ी औरत ने आकाश की ओर प्रणाम किया और कहा, "हे प्रभु, वह भिक्षु बादलों पर सवार हो सकता है।" फिर वह अंदर गई और दूसरी स्त्रियों को तांग पुजारी को प्रणाम करने के लिए बुलाया। वे उन्हें "अर्हत" और "बोधिसत्व" कहकर पुकारने लगीं, पानी उबाला और उनके लिए भोजन तैयार किया।

बंदर की कलाबाजी से उड़ता बादल जल्द ही उसे एक पहाड़ के पास ले आया जो उसके बादल का रास्ता रोक रहा था, इसलिए उसने उस शानदार पहाड़ को निहारने के लिए अपने बादल को नीचे उतारा। उसने देखा

नाजुक फूलों की एक रेशमी माला,
जंगली फूल हरी चादर की तरह फैले हुए हैं,
धाराएँ एक दूसरे में समाहित हो रही हैं,
ब्रूक्स और बादल दोनों ही सहजता से हैं।
कई घाटियों में लताएँ घनी रूप से उगती हैं।
और दूर स्थित एक पहाड़ी पर पेड़ एक दूसरे के बहुत करीब हैं।
जब पक्षी चहचहाते हैं तो जंगली हंस ऊपर से उड़ते हैं,
हिरण पानी पीते हैं और गिब्बन चढ़ाई करते हैं।
चोटियों की हरी-भरी श्रृंखला एक स्क्रीन की तरह खड़ी है;

नीली चट्टान का मुखड़ा चोटी के आकार का है।
उड़ती हुई रेत के पार वहां तक पहुंचना मुश्किल है;
झरने को देखते-देखते कोई नहीं थक सकता था।
ताओवादी लड़के जड़ी-बूटियों की तलाश में घूमते हैं;
वनकर्मी लकड़ियों के गट्ठे लेकर लौट रहे हैं।
यह माउंट तियानताई का एक योग्य प्रतिद्वंद्वी है।
और यह तीन गुना हुआशान शिखर सम्मेलन से भी बेहतर है।
अध्याय 53
739
पश्चिम की यात्रा
जब महान ऋषि पर्वत को देख रहे थे, तो उन्होंने उसकी उत्तरी ढलान पर एक फार्महाउस देखा, जहाँ से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। महान ऋषि सीधे पर्वत से नीचे फार्महाउस की ओर गए, जो वास्तव में एक शानदार जगह थी।
एक जीवंत धारा पर बना पुल,
पहाड़ी की छाया में स्थित एक कुटिया,
टूटी हुई बाड़ के पास कुत्ते भौंक रहे हैं,
एक एकांतवासी जो अपनी मर्जी से आता-जाता है।
बंदर जल्द ही द्वार पर पहुँच गया, जहाँ उसने एक बूढ़े ताओवादी को हरे रंग के तकिये पर बैठे देखा। मिट्टी का कटोरा नीचे रखकर बंदर उन्हें प्रणाम करने के लिए आगे बढ़ा। ताओवादी ने बैठे-बैठे ही झुककर उसका अभिवादन किया और पूछा, "आप कहाँ से आए हैं? आप किस काम से इस आश्रम में आए हैं?"
“मुझे पूर्व के महान तांग सम्राट ने पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजा है,” बंदर भाई ने उत्तर दिया। “मेरे स्वामी का पेट असहनीय रूप से दर्द कर रहा है और सूजा हुआ है क्योंकि उन्होंने मातृत्व नदी का कुछ पानी पी लिया है। जब हमने स्थानीय लोगों से पूछा तो उन्होंने बताया कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वे गर्भवती हैं, और संतानहीन पर्वत पर स्थित संतानमुक्त गुफा में गर्भपात के झरने के अलावा इसका कोई इलाज नहीं है। इसलिए मैं विशेष रूप से अपनी इच्छा के अनुसार अमर देवता को प्रणाम करने और उनसे अपने स्वामी को बचाने के लिए झरने का कुछ पानी मांगने आया हूँ। क्या आप कृपा करके मुझे रास्ता दिखा सकते हैं?”

"यह पहले संतानमुक्त गुफा थी," ताओवादी ने मुस्कुराते हुए कहा, "लेकिन अब इसे अमर आश्रम कहा जाता है। मैं अपने गुरु, 'जैसा चाहो वैसा अमर' का वरिष्ठ शिष्य हूँ। अपना नाम बताइए, मैं आपका परिचय करा दूँगा।"

"मैं कुलपति तांग सान्ज़ांग का वरिष्ठ शिष्य हूँ," बंदर ने विनम्रता से कहा, "और मेरा नाम सन वुकॉन्ग है।"

"तुम्हारे उपहार, तुम्हारी शराब और तुम्हारी भेंटें कहाँ हैं?" ताओवादी ने पूछा।

"मैं तो बस एक अस्थायी घुमंतू भिक्षु हूँ," बंदर ने कहा, "इसलिए मैं इन्हें आयोजित नहीं कर पाया हूँ।"

"मूर्ख!" ताओवादी ने हंसते हुए कहा। "मेरे गुरु ही इस झरने को नियंत्रित करते हैं और कभी कुछ मुफ्त में नहीं देते। अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारा नाम घोषित करूं, तो बेहतर होगा कि तुम जाकर अपनी भेंट ले आओ, वरना चले जाओ और इस बात को भूल जाओ।"

बंदर ने जवाब दिया, "लोग सम्राट के आदेश से ज़्यादा एहसानमंद होते हैं। जाओ और उन्हें मेरा नाम बताओ, वे मुझ पर यह एहसान ज़रूर करेंगे। हो सकता है वे मुझे पूरी बसंत ऋतु ही दे दें।"

ताओवादी यह सब बताने के लिए उस अमर व्यक्ति के पास गया, जो अपना किन वीणा बजा रहा था, और उसके समाप्त होने तक प्रतीक्षा करने के बाद बोला, "गुरुजी, बाहर एक बौद्ध भिक्षु है जो कहता है कि वह तांग सान्ज़ांग का वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग है। वह अपने गुरु को बचाने के लिए गर्भपात के झरने का कुछ जल मांग रहा है।" यदि उस अमर व्यक्ति को यह बात न बताई गई होती तो मामला वहीं समाप्त हो जाता, लेकिन सन वुकॉन्ग का नाम सुनते ही उसके हृदय में क्रोध भड़क उठा और उसके भीतर द्वेष भर आया। वह उछलकर खड़ा हुआ, जिस मेज पर वह किन बजा रहा था, उससे नीचे उतरा, अपने साधारण वस्त्रों को बदलकर ताओवादी वस्त्र धारण किए और बाहर भाग गया। (अध्याय 53)

अपने आश्रम के द्वार से अंदर आते हुए, हाथ में अपनी इच्छा-आधारित हुक लिए हुए, उसने चिल्लाकर पूछा, "सन वुकॉन्ग कहाँ है?" और बंदर ने मुड़कर देखा तो वह इस प्रकार दिख रहा था:

उसके सिर पर कई रंगों का तारा-मुकुट था।
और उसका जादुई वस्त्र सोने के धागों से जड़ा हुआ लाल रंग का था।
उसके पैरों में पहनी हुई बादलनुमा जूतियाँ घनी कढ़ाई से सजी हुई थीं;
उनकी कमर पर बंधी जेड की बेल्ट पर बहुत ही बारीकी से काम किया गया था।
उनकी लहरदार मोजे ब्रोकेड के थे।
और रेशमी मखमल की पेटीकोट की झलक दिखाई दी।
उसके पास एक सुनहरा ऐज़-यू-विल हुक था,
लंबे हैंडल वाला और ड्रैगन के आकार के आधार वाला।
उसकी आंखें फीनिक्स की तरह चमकीली थीं, और उसकी भौहें कमल के समान थीं;
उसके दांत लोहे की तरह तेज थे और उसके होंठ चमकीले लाल रंग के थे।
वह मार्शल वेन से भी कहीं अधिक दुष्ट दिख रहा था।
हालांकि उन्होंने अलग तरह के कपड़े पहने थे।
जब बंदर ने उसे देखा तो उसने अपने हाथ जोड़कर कहा, "मेरा नाम, महोदय, सन वुकॉन्ग है।"
ताओवादी गुरु ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या तुम सचमुच सन वुकॉन्ग हो, या सिर्फ दिखावा कर रहे हो?"
"यह कैसी अजीब बात है, महोदय! जैसा कि कहावत है, एक सज्जन व्यक्ति यात्रा करते समय या घर पर रहते समय अपना नाम कभी नहीं बदलता। मैं वास्तव में सन वुकॉन्ग हूँ। मुझे दिखावा करने की क्या ज़रूरत है?"
"क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?" ताओवादी गुरु ने पूछा।
“मैंने बौद्ध धर्म अपना लिया है और बौद्ध शिक्षाओं का पालन करता हूँ,” बंदर ने कहा। “इस लंबी यात्रा में मैं अपने बचपन के दोस्तों से दूर हो गया हूँ और उनमें से किसी से भी मिलने नहीं गया हूँ। मुझे डर है कि मैं आपको ठीक से पहचान नहीं पा रहा हूँ। मैं आपका नाम सिर्फ इसलिए जानता हूँ क्योंकि मदरहुड नदी के पश्चिम में स्थित गाँव के लोगों ने मुझे बताया था कि आप वही अमर हैं जो अपनी इच्छा के अनुसार चलते हैं।”
ताओवादी ने उत्तर दिया, "आप अपनी यात्रा में व्यस्त हैं, और मैं अपनी सच्ची कलाओं को निखारने में व्यस्त हूँ, तो आप मुझसे मिलने क्यों आए हैं?"
“क्योंकि मेरे स्वामी गर्भवती हैं और गलती से मातृत्व नदी का पानी पीने के बाद उनके पेट में दर्द हो रहा है,” बंदर ने कहा। “मैं आपके अमर निवास में आपसे गर्भपात के

झरने का एक कटोरा पानी मांगने आया हूँ ताकि मैं उन्हें इस पीड़ा से मुक्ति दिला सकूँ।"

अध्याय 53

741

पश्चिम की यात्रा

"क्या आपके गुरु तांग सान्ज़ांग हैं?" ताओवादी ने गुस्से भरी निगाहों से पूछा।

"हां, हां," भाई बंदर ने कहा।

"क्या तुम कभी बालक ऋषि राजा से मिले हो?" ताओवादी ने घृणा से दांत पीसते हुए पूछा।

"यह हाओ पर्वत पर मुरझाए हुए चीड़ के दर्रे के पास स्थित अग्नि-बादल गुफा में रहने वाले दानव लाल लड़के का नाम था।"

बंदर ने जवाब दिया, "तुम उसके बारे में क्यों पूछ रहे हो, अमर?"

“वह मेरा भतीजा है,” अमर ने उत्तर दिया। “मैं बैल दानव राजा का भाई हूँ। उसने मुझे पत्र लिखकर बताया कि तांग सान्ज़ांग के दुष्ट वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग ने उस लड़के को कैसे मार डाला। मुझे इस बात का बहुत अफसोस है कि मैं यहाँ तुमसे बदला नहीं ले सका, लेकिन अब तुम मेरे दरवाजे पर पानी माँगने आए हो।”

“आप गलत समझ रहे हैं, महोदय,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। “आपके आदरणीय बड़े भाई मेरे मित्र हुआ करते थे, और हम दोनों मेरे बचपन के सात शपथबद्ध भाइयों में से दो थे। मैंने पहले आपसे मिलने न आने का एकमात्र कारण यह था कि मुझे आपका पता नहीं पता था। आपके भतीजे ने बहुत तरक्की की है। वह अब बोधिसत्व गुआनयिन की सेवा में सुधना के रूप में कार्यरत है। वह हम सब से कहीं बेहतर स्थिति में है, तो आप मुझसे इतना नाराज़ क्यों हैं?”

"अरे बंदर!" ताओवादी गुरु चिल्लाए। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस तरह बहस करने की? क्या मेरा भतीजा गुलाम बनकर राजा बनने के सुखों से बेहतर स्थिति में है? तमीज़ से पेश आना सीखो, और मेरे हुक का स्वाद चखो।"

बंदर ने अपने लोहे के डंडे से वार रोकते हुए कहा, "लड़ाई की बात मत करो। इसके बजाय मुझे झरने का पानी दे दो।"

"दुष्ट बंदर," ताओवादी गुरु ने फिर कहा, "तुम्हें नहीं पता कि तुम जीना चाहते हो या मरना। अगर तुम तीन दौर तक मेरा सामना कर सको तो मैं तुम्हें पानी दूंगा, लेकिन

अगर नहीं कर सके तो मैं अपने भतीजे का बदला लेने के लिए तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और तुम्हें सोया सॉस में पका दूंगा।"
“मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, हे धृष्ट और दुष्ट प्राणी,” महान ऋषि ने उत्तर दिया। “अगर लड़ना चाहते हो तो मेरी गदा आजमाओ।” ताओवादी गुरु ने अपने हुक से उसे रोक दिया, और दोनों ने अमर आश्रम के पास एक शानदार युद्ध लड़ा।
नदी का पानी पीने के बाद उस पवित्र भिक्षुणी को गर्भ धारण हुआ।
इसलिए बंदर अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाले अमर देवता से मिलने गया,
यह न जानते हुए कि वह ताओवादी वास्तव में एक राक्षस था,
जिसने अपनी शक्तियों का इस्तेमाल गर्भपात के झरने पर कब्जा करने के लिए किया था।
जब उसकी मुलाकात मंकी से हुई तो पुरानी दुश्मनी फिर से ताजा हो गई:
वे आपस में संघर्ष कर रहे थे और कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था।
जैसे-जैसे उनकी बातचीत आगे बढ़ती गई, उसका गुस्सा बढ़ता ही गया।
वह अपने बदले को लेकर बेहद दृढ़ संकल्पित था।
अध्याय 53
742
पश्चिम की यात्रा
एक व्यक्ति अपने स्वामी का जीवन बचाने के लिए पानी लेने आया था।
जिसे दूसरा व्यक्ति अपने भतीजे की खातिर भी नहीं देगा।
बिच्छू से भी ज्यादा घातक था वह बेजान सा कांटा।
सोने की पट्टी वाली लाठी अजगर की तरह प्रहार करती थी,
लाठी लगातार बेरहमी से सीने पर वार करती रही।
जबकि हुक ने पैरों पर हल्के-हल्के कट लगा दिए।
जहां लाठी लगी थी, वहां गहरे घाव थे।
और कंधे से उठा हुआ हुक सिर पर वार करने के लिए आगे बढ़ा।
लाठी कमर के चारों ओर घूम गई
जैसे बाज चिड़िया का पीछा करता है;
हुक ने सिर पर तीन बार प्रहार किया।
जैसे कोई मैंटिस किसी टिड्डे को पकड़ता है।

वे सत्ता हासिल करने के लिए संघर्ष करते हुए आते-जाते रहे।
युद्ध का उतार-चढ़ाव उन्हें आगे-पीछे ले जा रहा था।
लाठी और हुक के बीच चुनने जैसा कुछ था ही नहीं;
दोनों में से कोई भी प्रतियोगी विजेता बनकर नहीं उभरा।
ताओवादी गुरु ने महान ऋषि के साथ दस से अधिक दौर तक लड़ाई लड़ी, लेकिन जब वह उनका मुकाबला नहीं कर पाए, तो बंदर ने पहले से कहीं अधिक उग्रता से उनके सिर पर प्रहार किया, उसके डंडे के वार टूटते तारों की धारा की तरह गिर रहे थे। पूरी तरह से थके-हारे, ताओवादी गुरु पहाड़ की ढलान से नीचे भाग गए, और अपने पीछे अपने 'जैसा तुम चाहो' वाले हुक को घसीटते चले गए।
उसका पीछा करने के बजाय, बंदर पानी की तलाश में आश्रम गया, लेकिन वहाँ उसने देखा कि दूसरे ताओवादी ने द्वार पहले ही बंद कर दिए थे। हाथों में मिट्टी का कटोरा लिए वह सीधे द्वार तक गया, पूरी ताकत से लात मारकर उसे तोड़ दिया और अंदर घुस गया। ताओवादी शिष्य कुएँ की रेलिंग के पीछे दुबका हुआ था। महान ऋषि ने उस पर चिल्लाया, अपना डंडा उठाया और उसे मारने ही वाले थे कि ताओवादी पीछे की ओर भाग गया। बंदर अभी बाल्टी लाया ही था और कुएँ से झरने का पानी भरने ही वाला था कि गुरु उसके पीछे से आए, हुक से उसके पैर पकड़े और उसे ज़मीन पर पटक दिया।
महान ऋषि ने खुद को संभाला और अपने गदा से पलटवार करने लगे। ताओवादी गुरु एक तरफ हट गए और गदा लहराते हुए बोले, "देखते हैं कि तुम मेरे कुएँ से पानी चुरा पाते हो या नहीं।"
“इधर आओ,” बंदर चिल्लाया, “इधर आओ। मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, दुष्ट प्राणी, और तुम्हें पीट-पीटकर मार डालूँगा।” ताओवादी गुरु बंदर की ओर नहीं बढ़े, बल्कि कुएँ पर पहरा देते रहे और उसे पानी निकालने से रोकते रहे। यह देखकर कि वह हिल नहीं रहा है, बंदर ने अपने बाएं हाथ से अपनी लाठी को गोल-गोल घुमाया और अध्याय 53 में

उसके दाहिने हाथ ने बाल्टी पकड़ी और उसे रस्सी से बांधकर शोर मचाते हुए कुएँ में फेंक दिया। ताओवादी गुरु ने अपने हुक से पलटवार किया। बंदर एक हाथ से उसे रोक नहीं पाया और फिर से उसके पैरों में उलझकर गिर पड़ा, जिससे बाल्टी और

रस्सी कुएँ में गिर गईं।
“यह कैसा व्यवहार है,” महान ऋषि ने खड़े होते हुए और दोनों हाथों में लाठी लेकर बेतहाशा वार करते हुए कहा। ताओवादी गुरु एक बार फिर उनका सामना करने में असमर्थ होकर भाग गए। महान ऋषि अभी भी कुछ पानी भरना चाहते थे, लेकिन अब उनके पास बाल्टी नहीं थी और उन्हें यह भी डर था कि कहीं वे फिर से कांटे से न गिर जाएं। “मुझे किसी से मदद लेनी चाहिए,” उन्होंने सोचा।
महान संत ने अपने बादल को घुमाया, सीधे कुटिया के द्वार पर वापस गए और चिल्लाकर कहा, "साधु सैंड।" जब सान्ज़ांग और पिग, जो पीड़ा से कराह रहे थे, ने उनकी यह आवाज़ सुनी तो राहत से बोले, "साधु सैंड, वुकॉन्ग वापस आ गया है।"
फ्रायर सैंड ने जितनी जल्दी हो सके दरवाजा खोला और पूछा, "क्या आपके पास पानी है, भाई?"
जब बंदर अंदर आया और उसने उन्हें सारी घटना बताई, तो संजांग ने आँखों में आँसू लिए कहा, "हम क्या करें, शिष्य?"
"मैं भाई सैंड को अपने साथ आश्रम ले जाने आया हूँ," बंदर ने उत्तर दिया। "जब तक मैं उस दुष्ट ताओवादी से लड़ता हूँ, वह तुम्हारे लिए पानी लाएगा।"
"अगर तुम दोनों स्वस्थ लोग हमें बीमारों की तरह अकेला छोड़कर चले जाओगे तो हमारी देखभाल कौन करेगा?" संजांग ने पूछा।
उनके बगल में खड़ी वृद्धा ने कहा, "चिंता न करें, आदरणीय अर्हत। आपको अपने शिष्यों की आवश्यकता नहीं होगी। हम आपकी देखभाल कर लेंगे। जब आप पहली बार आए थे, तब हमने आपके प्रति बहुत दयालुता दिखाई थी, और अब जब हमने देख लिया है कि वह बोधिसत्व बादलों पर यात्रा कर सकते हैं, तो हम जानते हैं कि आप अर्हत और बोधिसत्व हैं। हम आपको कभी भी हानि नहीं पहुँचा सकते।"
"तुम औरतें," मंकी ने चिढ़कर कहा, "तुम किसी को चोट पहुंचाने की हिम्मत नहीं करोगी।"
"महाराज, आपको अपनी किस्मत का अंदाजा नहीं है," बूढ़ी औरत ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "अगर आप किसी और घर में गए होते तो आप कभी सही सलामत बाहर नहीं आ पाते।"
"तुम्हारा क्या मतलब है?" सुअर कराह उठा।
"इस परिवार में हम सब बूढ़े हो रहे हैं," बूढ़ी औरत ने जवाब दिया, "और वासना हमें

अब परेशान नहीं करती, इसीलिए हमने तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाया। अगर तुम अलग-अलग उम्र की औरतों वाले किसी दूसरे घर में जाते, तो जवान औरतें तुम्हें कभी जाने नहीं देतीं। वे तुम्हें अपने साथ सोने के लिए मजबूर करतीं, और अगर तुम मना करते, तो वे तुम्हारी हत्या कर देतीं और तुम्हारे शरीर से सारा मांस निकालकर इत्र की थैलियों में भर देतीं।"

"उस स्थिति में तो मैं सुरक्षित होता," सुअर ने कहा। "बाकी सब तो बहुत अच्छी खुशबू देते हैं, इत्र की थैली के लिए एकदम सही, लेकिन मैं तो बदबूदार सुअर हूँ और मेरे शरीर से काटा गया कोई भी मांस बदबूदार होगा। मुझे कोई नुकसान नहीं होता।"

"बड़ाई करना बंद करो," बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए कहा, "और अपनी ताकत प्रसव के लिए बचाओ।"

"जितनी जल्दी हो सके पानी ले आओ। समय बर्बाद मत करो," बूढ़ी औरत ने कहा।

“क्या आपके पास रस्सी से बंधी बाल्टी है जो मैं उधार ले सकूँ?” बंदर ने पूछा। बुढ़िया पीछे गई और रस्सी से बंधी बाल्टी और रस्सी का एक अतिरिक्त कुंडल लाकर साधु सैंड को दे दिया। “दोनों रस्सियाँ ले लो, कहीं कुआँ इतना गहरा हो कि ज़रूरत पड़ जाए,” उसने कहा।

अध्याय 53

744

पश्चिम की यात्रा

फ्रायर सैंड ने बाल्टी और रस्सियाँ लीं, मंकी के साथ कुटिया से निकले और उसी बादल पर उड़ गए। उन्हें माउंट ऑफस्प्रिंग डिसॉल्व्ड पहुँचने में एक घंटे से भी कम समय लगा, जहाँ वे सीधे आश्रम के द्वार के बाहर उतरे। मंकी ने फ्रायर सैंड से कहा, "बाल्टी और रस्सियाँ ले लो और वहाँ छिप जाओ। मुझे उसे युद्ध के लिए चुनौती देने दो। जब लड़ाई ज़ोरों पर हो, तो चुपके से अंदर जाओ, पानी ले आओ और वापस ले आओ।"

फ्रायर सैंड ने उनके आदेश स्वीकार कर लिए।

अपने लोहे के डंडे को लहराते हुए महान ऋषि सूर्य द्वार तक गए और चिल्लाए, "द्वार खोलो! द्वार खोलो!"

जब द्वारपाल ने उसे देखा तो वह जल्दी से अंदर जाकर बोला, "गुरुजी, सन वुकॉन्ग फिर से यहाँ आ गए हैं। ताओवादी गुरु बहुत क्रोधित हैं।"

"वह दुष्ट बंदर बिलकुल असंभव है। मैंने लंबे समय से उसकी शक्तियों के बारे में सुना था और अब मुझे पता चल गया है कि वे वास्तव में क्या हैं। उसका वह डंडा अजेय है।"

दूसरे ताओवादी ने कहा, "गुरुजी, उसकी शक्तियां भले ही महान हों, लेकिन आप भी उसके बराबर ही कुशल हैं। आप उसका मुकाबला कर सकते हैं।"

"उसने मुझे पिछली दो बार हराया था," गुरु ने कहा।

“हाँ,” दूसरे ने कहा, “लेकिन ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह तुम पर बड़े गुस्से से टूट पड़ा था। जब वह पानी निकालने की कोशिश कर रहा था, तब तुमने उसे अपने हुक से दो बार गिरा दिया, तो हिसाब बराबर हो गया, है ना? उसे भागना पड़ा। अगर वह अब वापस आया है तो इसका मतलब यही है कि उसे मजबूरी में आना पड़ा होगा। मुझे लगता है कि संज़ांग अपनी गर्भावस्था के आगे बढ़ने के कारण बहुत शिकायत कर रहा है। मुझे यकीन है कि वह अपने मालिक से नाराज़ है। इस बार तो तुम्हारी जीत पक्की है, मालिक।”

इससे ताओवादी अमर देवता प्रसन्न हुए और बेहद खुश होकर दरवाज़े से बाहर निकल गए। उनका चेहरा मुस्कानों से भरा था, उनका अंदाज़ प्रभावशाली था और उनके हाथों में हुक था। "दुष्ट बंदर, तू यहाँ वापस क्यों आया है?" उन्होंने चिल्लाकर कहा।

"बस थोड़ा पानी लाने गया था," बंदर ने जवाब दिया।

“यह मेरा कुआँ है,” अमर ने कहा, “और चाहे तुम राजा हो या मंत्री, तुम्हें मुझे उपहार देने होंगे, भेड़ का मांस और शराब चढ़ानी होगी, तभी मैं तुम्हें पानी दूँगा। इसके अलावा, तुम मेरे शत्रु हो। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहाँ खाली हाथ पानी की उम्मीद लेकर आने की?”

"क्या तुम मुझे कुछ भी देने से इनकार करते हो?" बंदर ने पूछा।

"हां," अमर ने कहा, "मैं ऐसा नहीं करूंगा।"

“क्रूर और दुष्ट जानवर,” बंदर चिल्लाया, “अगर तू मुझे पानी नहीं देगा, तो ये ले!” उसने अपना बचाव छोड़ते हुए अपने डंडे से अमर प्राणी के सिर पर ज़ोरदार प्रहार किया। अमर प्राणी ने वार से बचते हुए अपने हुक से पलटवार किया। यह पिछली लड़ाई से भी कहीं अधिक शानदार मुकाबला था।

सोने की पट्टी वाली लाठी,

द ऐज़-यू-विल हुक,

और दो लड़ाके नफरत और गुस्से से भरे हुए थे।
अध्याय 53
745
पश्चिम की यात्रा
उड़ती हुई रेत और पत्थरों ने धरती और आकाश को अंधकारमय कर दिया;
धूल और मिट्टी के बादलों ने सूर्य और चंद्रमा को उदास प्रतीत करा दिया।
महान ऋषि अपने स्वामी को बचाने के लिए पानी ला रहे थे;
उस दुष्ट अमर प्राणी ने अपने भतीजे की खातिर इनकार कर दिया।
दोनों पक्षों ने बराबर जोश के साथ लड़ाई लड़ी।
उनकी लड़ाई में आराम का कोई अवसर नहीं था।
उन्होंने जबड़े भींचकर जीत के लिए संघर्ष किया।
वे जीतने के लिए जी-जान से संघर्ष कर रहे थे और अपने दांत पीस रहे थे।
बढ़ते कौशल के साथ
और भी अधिक जोश
उन्होंने देवताओं और भूतों को डराने के लिए बादल उगले।
उनके हथियारों के टकराने की आवाज़ ज़ोर से गूंज उठी।
उनकी युद्ध गर्जना से पहाड़ और पहाड़ियां कांप उठीं।
वे एक बवंडर की तरह जंगल को तहस-नहस कर रहे थे।
दो खूंखार लड़ाकू बैल।
जैसे-जैसे युद्ध आगे बढ़ा, महान ऋषि को अधिक खुशी महसूस होने लगी।
और ताओवादी अमर व्यक्ति के पास पहले से कहीं अधिक ऊर्जा थी।
हर कोई लड़ाई जारी रखने के लिए दृढ़ संकल्पित था;
समस्या का समाधान होने तक दोनों में से कोई भी हार नहीं मानेगा।
वे दोनों आश्रम के द्वार से लेकर पहाड़ की ढलान तक लड़ते हुए इधर-उधर उछल-कूद करते रहे। यह एक लंबा और भयंकर संघर्ष था।
जब साधु सैंड बाल्टी हाथ में लिए द्वार से अंदर घुसे, तो ताओवादी शिष्य ने उनका रास्ता रोककर पूछा, "तुम कौन होते हो, हमारा पानी चुराने आए हो?" साधु सैंड ने अपनी बाल्टी और रस्सियाँ नीचे रख दीं, अपना दानव-नाशक डंडा निकाला और जवाब में ताओवादी के सिर पर प्रहार किया। ताओवादी समय रहते हट नहीं पाए, जिससे

उनकी बांह टूट गई और वे ज़मीन पर गिर पड़े, भागने की कोशिश करते हुए।
अध्याय 53
746
पश्चिम की यात्रा
“मैं तुझे मार डालता, हे दुष्ट जानवर,” साधु सैंड दहाड़ा, “पर तुम मनुष्य हो, इसलिए मुझे तुझ पर दया आ रही है और मैं तुझे जाने दे रहा हूँ। अब मुझे अपना पानी लाने दे।” ताओवादी अपनी जान बचाने के लिए ईश्वर और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए आश्रम के पीछे रेंगता हुआ गया। फिर साधु सैंड ने कुएँ से अपनी बाल्टी में पानी भरा, द्वार से बाहर निकला, अपने बादल पर सवार हुआ और बंदर को पुकारा, “भाई, मुझे पानी मिल गया है। अब इसे छोड़ दे, इसे छोड़ दे।”
यह सुनकर बंदर ने अपने डंडे से हुक को रोके रखा और कहा, "मेरी बात सुनो। मैं तुम सबको खत्म कर देने वाला था, लेकिन तुमने कोई कानून नहीं तोड़ा है और तुम्हारा भाई बैल दानव राजा मेरा मित्र है।"
जब मैं पहली बार आया था, तुमने मुझे अपने हुक से दो-तीन बार गिरा दिया था और मैं पानी नहीं ले पाया था। मैंने तुम्हें लड़ाई के लिए उकसाया ताकि मेरा साथी शिष्य पानी ले सके। अगर मैंने अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल किया होता, तो मैं तुममें से कई को मार डालता, एक अकेले अमर की तो बात ही छोड़ो। लेकिन जान लेने से बेहतर है जान बचाना, इसलिए मैं तुम्हें कुछ और साल जीने देता हूँ। अब से कभी भी यहाँ पानी लेने आने वाले किसी से भी जबरदस्ती करने की कोशिश मत करना।
दुष्ट और मूर्ख अमर प्राणी ने हिलकर बंदर को एक बार फिर फंसाने की कोशिश की, लेकिन बंदर ने फंदे से बचते हुए उस पर झपट्टा मारा और चिल्लाया, "हिलो मत!" असहाय अमर प्राणी सिर के बल जमीन पर गिर पड़ा और उठ नहीं सका। महान ऋषि ने अपना 'जैसा चाहो' फंदा उठाया, उसे दो टुकड़ों में तोड़ दिया, फिर उन दोनों टुकड़ों को चार भागों में तोड़कर जमीन पर फेंक दिया। "धिक्कार है राक्षस," उन्होंने कहा, "क्या तू अब और कोई बकवास करने की कोशिश करेगा?" कांपते हुए अमर प्राणी को चुपचाप अपनी बेइज्जती सहनी पड़ी, और हंसते हुए महान ऋषि अपने बादल पर सवार हो गए।
एक कविता है जो इस बात की गवाही देती है। वह इस प्रकार है:
शुद्ध सीसे को पिघलाने पर शुद्ध तरल पदार्थ प्राप्त होता है;

यदि वास्तविक तरल को सही ढंग से मिलाया जाए, तो वास्तविक पारा जम जाता है।
शुद्ध पारा और शुद्ध सीसा में कोई स्त्रीत्व गुण नहीं होते;
जादुई सिंदूर और जड़ी-बूटियाँ अमरता का अमृत हैं।
जब बच्चा लापरवाही से बनता है और परिणामस्वरूप गर्भावस्था होती है
धरती की माता बिना किसी प्रयास के सफल होती है।
विधर्म को दरकिनार कर रूढ़िवादिता का सम्मान किया जाता है;
दिल का स्वामी सफल होता है और मुस्कुराते हुए लौटता है।
महान ऋषि ने अपना बादल उड़ाया और साधु सैंड से मिले। जादुई जल लेकर लौटते हुए वे बहुत प्रसन्न थे। जब उन्होंने अपना बादल झोपड़ी के पास उतारा, तो उन्होंने देखा कि सुअर दरवाजे से टिका हुआ कराह रहा है और उसका बड़ा सा पेट बाहर निकला हुआ है। "बेवकूफ," बंदर ने चुपके से उसके पास जाकर कहा, "तुम कब गर्भवती हो गईं?"
"मुझे चिढ़ाना बंद करो," उस मूर्ख ने हताशा में कहा।
"क्या तुम पानी ले आए?" बंदर अपना मज़ाक जारी रखने ही वाला था कि तभी साधु सैंड मुस्कुराते हुए वहाँ पहुँचे और बोले, "ये रहा पानी।"
अपनी पीड़ा के बावजूद, संजांग ने झुककर प्रणाम करते हुए कहा, "शिष्यों, मैं आपका बहुत आभारी हूँ।" बुढ़िया भी प्रसन्न हुई और पूरा परिवार प्रणाम करने और यह कहने के लिए आगे आया, "बोधिसत्व, अध्याय 53"
747
पश्चिम की यात्रा
"यह अद्भुत है, अद्भुत!" वह सजावटी चीनी मिट्टी का एक पीने का कटोरा लाई, उसे आधा पानी से भरा और संज़ंग को देते हुए बोली, "आदरणीय महोदय, कृपया इसे धीरे-धीरे पिएं। एक घूंट ही गर्भ समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।"
"मुझे कटोरे की ज़रूरत नहीं पड़ेगी," सुअर ने कहा। "मैं बाल्टी भर पानी, रस्सी समेत सब पी जाऊंगा।"
“आदरणीय महोदय,” महिला ने कहा, “मुझे इतना डराइए मत। अगर आप पूरी बाल्टी पी लेंगे तो आपके सारे अंग गल जाएंगे।” यह सुनकर वह मूर्ख इतना डर गया कि उसने संयम बरता और केवल आधा कटोरा ही पिया।
खाना खाने में जितना समय लगता है, उससे भी कम समय में दोनों असहनीय पीड़ा

से तड़पने लगे: उनकी आंतें मानो निचोड़ी जा रही थीं और उनसे कई बार ज़ोरदार गड़गड़ाहट की आवाज़ आई। उसके बाद वह मूर्ख खुद को रोक नहीं पाया; उसने शौच और पेशाब कर दिया। तांग पुजारी भी खुद को रोक नहीं पाया और उसे शौचालय जाने की तीव्र इच्छा हुई।

“मालिक,” बंदर भाई ने कहा, “आपको ऐसी किसी जगह नहीं जाना चाहिए जहाँ हवा का झोंका लग सकता हो। अगर आपको सर्दी लग गई तो आपको दूध का बुखार हो सकता है।” तब महिला उन दोनों के लिए दो शौचालय की बाल्टियाँ ले आई। जब उन दोनों ने उनका कई बार इस्तेमाल कर लिया तो दर्द बंद हो गया और उनके पेट धीरे-धीरे अपने सामान्य आकार में लौटने लगे क्योंकि उनमें जमा अतिरिक्त मांस और खून घुलने लगा था।

फिर उस महिला ने उनके पेट को आराम देने के लिए सादा चावल का दलिया पकाया। सुअर ने कहा, "मैडम, मेरा पेट बहुत मजबूत है, इसे आराम की जरूरत नहीं है। दलिया खाने से पहले मेरे लिए नहाने के लिए थोड़ा पानी उबाल दीजिए।"

"भाई, आपको स्नान नहीं करना चाहिए," फ्रायर सैंड ने कहा। "प्रसव के बाद पहले महीने में स्नान करने से आप बीमार पड़ सकते हैं।"

"यह प्रसव नहीं था," पिग ने कहा, "बस गर्भपात था: चिंता की कोई बात नहीं। मैं नहाना चाहती हूँ, ताकि साफ़ हो जाऊँ।" फिर उस महिला ने उनके लिए पानी उबाला ताकि वे हाथ-पैर धो सकें। तांग पुजारी केवल दो कटोरी दलिया ही खा पाए, जबकि पिग ने लगभग एक दर्जन कटोरी खा ली और उसे अभी और चाहिए था।

बंदर हंसते हुए बोला, "बेवकूफ, इतना मत खाओ। अगर तुम्हारा पेट रेत की बोरी की तरह बड़ा हो गया तो बिलकुल भी अच्छा नहीं लगेगा।"

“कोई बात नहीं,” सुअर ने कहा, “कोई बात नहीं। मैं मादा सुअर नहीं हूँ, इसलिए मुझे इस बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।” फिर महिलाएं उसके लिए और चावल पकाने के लिए बाहर चली गईं।

"क्या आप मुझे बचा हुआ पानी देंगे?" बूढ़ी औरत ने तांग पुजारी से पूछा।

"क्या तुमने पर्याप्त पानी पी लिया है?" बंदर ने पूछा।

पिग ने कहा, "मेरे पेट का दर्द बंद हो गया है, और मुझे यकीन है कि गर्भावस्था पूरी तरह से समाप्त हो गई है। अब मैं ठीक हूँ, इसलिए मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

“अब दोनों ठीक हो गए हैं, इसलिए हम आपको पानी दे देते हैं,” बंदर ने कहा। महिला

ने उसे धन्यवाद दिया और पानी को घर के पीछे एक कांच के बर्तन में भरकर दफना दिया।

"पानी का वह घड़ा मेरे ताबूत का खर्च उठाने के लिए काफी होगा," उसने अपने परिवार के बाकी सदस्यों से कहा, जो सभी बहुत खुश हुए।

शाकाहारी भोजन तैयार किया गया, मेज-कुर्सियाँ लगाई गईं और भिक्षुओं ने भोजन किया। उन्होंने भोजन का आनंद आराम से लिया और फिर रात के लिए सोने चले गए।

अध्याय 53

748

पश्चिम की यात्रा

अगली सुबह उन्होंने बूढ़ी औरत और उसके परिवार को धन्यवाद दिया और कुटिया से निकल पड़े। संजांग घोड़े पर सवार हुआ, साधु सैंड ने सामान अपने कंधों पर उठाया, महान ऋषि बंदर आगे-आगे चल रहा था और सुअर लगाम पकड़े हुए था। यह एक ऐसा मामला था...

शरीर से बुराइयों को धोकर उसे शुद्ध करना,

प्राकृतिक स्वरूप को पुनर्स्थापित करने के लिए नश्वर भ्रूण का विघटन करना।

अगर आपको नहीं पता कि उस देश में और क्या हुआ था, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या सुनें।

अध्याय 54

बुद्ध-प्रकृति पश्चिम की ओर यात्रा करते हुए नारी जाति में प्रवेश करती है

बुद्धिमान बंदर सुंदरियों से बचने की योजना बनाता है

जब संज़ंग और उनके शिष्य कुटिया से निकले तो वे पश्चिम की ओर चल पड़े, और लगभग बारह मील चलने के बाद वे पश्चिमी लियांग के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। घोड़े पर सवार तांग पुजारी ने कहा, “वुकोंग, आगे थोड़ी ही दूर एक नगर है, और मुझे बाज़ार से बहुत शोर सुनाई दे रहा है। तुम सबको बहुत सावधान रहना होगा और अच्छा व्यवहार करना होगा। मनमानी करके या मोह में पड़कर हमारे बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का उपहास मत करो।” तीनों शिष्यों ने उनके निर्देशों का पालन करने का निश्चय कर लिया।

तांग पुजारी के बोलने से पहले ही वे पूर्वी द्वार से अंदर आने वाली सड़क पर पहुँच

गए।
वहाँ नज़र आने वाले सभी लोग स्कर्ट और महिलाओं का जैकेट पहने हुए थे, चेहरे पर पाउडर लगा था और बालों में तेल लगा था। जवान-बूढ़े सभी औरतें थीं। जब गली में खरीद-फरोख्त करने वालों ने उन चारों को आते देखा तो वे तालियाँ बजाने लगे, हँसने लगे और चेहरे पर मुस्कान लिए कहने लगे, "मर्द, मर्द!" संज़ांग इतना घबरा गया कि उसने अपने घोड़े की लगाम खींच दी, आगे बढ़ने में असमर्थ। पल भर में सड़कें लोगों से भर गईं और हवा में खुशी की आवाज़ें गूँज उठीं।
"मैं एक बधिया किया हुआ सुअर हूँ, एक बधिया किया हुआ सुअर!" सुअर ने घबराकर चिल्लाया।
“ये बकवास बंद करो, बेवकूफ,” बंदर ने कहा। “बस उन्हें अपना चेहरा वैसा ही दिखा दो जैसा पहले था।” फिर सुअर ने अपना सिर दो-तीन बार हिलाया, अपने पंखों जैसे कान खड़े किए, अपनी खुरदरी, लटकती हुई थूथन को मरोड़ा और ऐसी दहाड़ मारी जिससे सारी औरतें डर के मारे गिर पड़ीं। इस बात को साबित करने के लिए एक कविता है, “भिक्षु बुद्ध के पास जाते हुए पश्चिमी लियांग आया;
गलियां महिलाओं की दुनिया थीं जहां पुरुषों का कोई नामोनिशान नहीं था।
किसान, विद्वान और कारीगर, व्यापारी और मछुआरे,
लकड़ी काटने वाली, खेती करने वाली और पशुपालक—ये सभी महिलाएं थीं।
सुंदरियां पुरुषों का स्वागत करने के लिए सड़कों पर उमड़ पड़ीं;

युवतियां बड़ी संख्या में आकर सुंदर दूल्हे का अभिवादन करती हैं।
यदि वुनेन्ग ने अपने भयानक चेहरे का पूरा उपयोग न किया होता,
तीर्थयात्री महिलाओं की घेराबंदी का सामना नहीं कर सकते थे।
तब वे सभी महिलाएं इतनी भयभीत हो गईं कि उनकी हिम्मत ही नहीं हुई कि वे पास जा सकें।
अपने हाथों को थामे, झुके हुए, सिर हिलाते हुए, उंगलियां चबाते हुए, कांपते-थरथराते हुए वे तांग पुजारी को देखने के लिए सड़कों पर रुक गए। महान ऋषि बंदर ने भी उनके लिए रास्ता बनाने के लिए भयानक चेहरा बनाया, जिसमें फ्रायर सैंड के विकृत

चेहरों ने भी मदद की। घोड़े को आगे बढ़ाते हुए, सूअर ने अपनी थूथन बाहर निकाली और अपने कान फड़फड़ाए। जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, उन्होंने देखा कि शहर की सड़कों के किनारे की इमारतें अच्छी तरह से बनी हुई थीं और दुकानों के अग्रभाग भव्य थे। वहां किराने की दुकानें और अनाज बेचने वाले, बार और चायघर, बहुमंजिला दुकानें जहां सब कुछ बिकता था, मीनारें और सुंदर ढंग से सजी खिड़कियों वाले आलीशान भवन थे।

गुरु और शिष्य एक मोड़ मुड़े तो सड़क पर खड़ी एक महिला अधिकारी के सामने आ पहुँचे जो चिल्ला रही थी, “दूर से आए दूतों, आप बिना अनुमति के शहर के द्वार में प्रवेश नहीं कर सकते। कृपया सरकारी डाकघर जाकर अपना नाम दर्ज कराएँ ताकि मैं महारानी को इसकी सूचना दे सकूँ। जाँच के बाद आपको आगे बढ़ने की अनुमति दी जाएगी।” यह सुनकर संजांग घोड़े से उतरे और देखा कि सरकारी भवन के दरवाजे पर लगे बोर्ड पर “पुरुषों का स्वागत करने वाला डाकघर” लिखा हुआ था।

आदरणीय बुजुर्ग ने कहा, "वुकोंग, गांव वालों ने हमें जो बताया वह सच था। वास्तव में माले का स्वागत करने वाला एक डाकघर है।"

"भाई सुअर," साधु सैंड ने हंसते हुए कहा, "तुम्हें गर्भावस्था प्रकट करने वाले झरने में देखना चाहिए कि कहीं तुम्हारी दोहरी परछाई तो नहीं है।"

"मुझे मूर्ख बनाने की कोशिश करना बंद करो," पिग ने कहा। "गर्भपात के झरने का पानी पीने के बाद मेरा गर्भपात हो गया।"

मुझे किन चीजों की तलाश करनी होगी?

"अपने शब्दों पर ध्यान रखो, वुनेन्ग, अपने शब्दों पर ध्यान रखो," संजांग ने पीछे मुड़कर पिग को निर्देश दिए और फिर आगे बढ़कर अधिकारी का अभिवादन किया।

वह उन्हें डाकघर के मुख्य हॉल में ले गई, जहाँ वे बैठ गए और चाय मंगाई गई। यहाँ भी सभी कर्मचारियों ने अपने बालों को जूड़े में बाँधा हुआ था और स्कर्ट पहनी हुई थी। चाय आते ही सबके चेहरे पर मुस्कान आ गई। थोड़ी देर बाद, जब चाय पी ली गई, तो अधिकारी ने बैठते हुए थोड़ा झुककर पूछा, "आप दूत किसलिए आए हैं?"

“हम पूर्वी तांग सम्राट द्वारा बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग में भेजे गए दूत हैं,” बंदर ने उत्तर दिया। “मेरे गुरु तांग सान्ज़ांग, तांग सम्राट के छोटे भाई हैं। मैं सन वुकॉन्ग, उनका वरिष्ठ शिष्य हूँ, और ये दोनों मेरे साथी हैं, झू वुनेन्ग (सूअर) और शा वुजिंग (साँप)। घोड़े को भी गिन लें तो हम कुल पाँच हैं। हमारे पास

पासपोर्ट है, कृपया जाँच करके हमें आगे बढ़ने की अनुमति दें।”
जब महिला अधिकारी ने यह सब लिख लिया, तो वह उनके सामने घुटने टेककर प्रणाम करने लगी और बोली, "मुझे क्षमा करें, महोदय। मैं केवल पुरुष स्वागत डाकघर की अधीक्षक हूँ और मुझे यह एहसास नहीं था कि आप एक श्रेष्ठ देश के सज्जन हैं जो यहाँ से इतनी दूर आकर मिलने के योग्य हैं।" वह उठी और कर्मचारियों को उनके लिए भोजन और पेय पदार्थ उपलब्ध कराने का आदेश दिया। "कृपया आप आराम से रहें, महोदय, जब तक मैं शहर जाकर हमारी रानी को सूचना देती हूँ। उसके बाद आपके दस्तावेज़ पर विचार किया जाएगा।" अध्याय 54

और पश्चिम की ओर जाते समय आपको कीमती उपहारों के साथ देखा जाएगा।" संजांग वहां बैठकर खुश था।
अधीक्षक ने अपने कपड़े ठीक किए और सीधे शहर में महल के प्रवेश द्वार पर स्थित पंचमस्तिष्क मीनार में गईं, जहाँ उन्होंने द्वारपाल से कहा, "मैं पुरुष स्वागत डाकघर की अधीक्षक हूँ और मैं एक विशेष मामले पर महारानी से मिलना चाहती हूँ।" द्वारपाल ने तुरंत यह सूचना महारानी को दी, जिसके बाद अधीक्षक को सीधे सिंहासन कक्ष में बुलाया गया और उनसे पूछा गया कि वे क्या बात कहने आई थीं।
“आपकी विनम्र प्रजा,” उसने उत्तर दिया, “पूर्व में स्थित तांग सम्राट के छोटे भाई तांग सान्ज़ांग उनके डाकघर में आए हैं। उनके साथ तीन शिष्य हैं, जिनके नाम सुन वुकॉन्ग, झू वुनेन्ग और शा वुजिंग हैं, और एक घोड़ा भी है, कुल मिलाकर पाँच लोग हैं। वे बुद्ध की पूजा करने और शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जाना चाहते हैं। मैं विशेष रूप से महाराज को यह निवेदन करने आई हूँ कि क्या उन्हें अपना पासपोर्ट स्वीकृति के लिए प्रस्तुत करने और आगे बढ़ने की अनुमति दी जा सकती है।”
रानी उसकी रिपोर्ट से प्रसन्न हुई और उसने अपने अधिकारियों से कहा, "हमने कल रात रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाती सोने की स्क्रीन और प्रकाश से भरे जेड दर्पण का सपना देखा। ये आज जो हुआ है उसके शुभ संकेत रहे होंगे।"
महिला अधिकारी सिंहासन की सीढ़ियों के चारों ओर जमा हो गईं और प्रणाम करते हुए बोलीं, "महाराज, आप कैसे कह सकते हैं कि ये आज के लिए शुभ संकेत थे?"
“पूर्व से आया यह व्यक्ति,” रानी ने उत्तर दिया, “तांग सम्राट का छोटा भाई है।

आदिम अराजकता के समाप्त होने के बाद से हमने यहाँ शासन करने वाली सभी रानियों के अधीन कभी किसी पुरुष को नहीं देखा। तांग सम्राट के छोटे भाई का यह सौभाग्यपूर्ण आगमन स्वर्ग का वरदान होना चाहिए। मैंने अपने देश की संपत्ति का उपयोग सम्राट के भाई को मुझे अपनी रानी बनाकर राजा बनने के लिए मनाने का निर्णय लिया है। तब हम पुरुष और स्त्री का मिलन कर पुत्र और पोते उत्पन्न कर सकेंगे जिन्हें सिंहासन सौंपा जा सके। तो क्या ये शुभ संकेत नहीं हैं?" प्रसन्न महिला अधिकारियों ने प्रणाम करते हुए नृत्य किया।

"महामहिम का सिंहासन भावी पीढ़ियों को सौंपने का विचार उत्कृष्ट है," डाक स्टेशन के अधीक्षक ने आगे कहा, "लेकिन सम्राट के छोटे भाई के तीन घिनौने शिष्य बिल्कुल भी आकर्षक नहीं हैं।"

रानी ने पूछा, "सम्राट का भाई कैसा दिखता है, और उसके शिष्य इतने बदसूरत क्यों हैं?"

“सम्राट के भाई का चेहरा सुंदर है और उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली है,” अधीक्षक ने उत्तर दिया। “वे सचमुच किसी महान देश के शासक, स्वर्ग से भेजे गए राजवंश के वंशज, दक्षिणी जांबू महाद्वीप के चीन के वंशज जैसे दिखते हैं। लेकिन तीनों शिष्य तो घोर दुष्ट और राक्षसी चेहरे वाले प्रतीत होते हैं।”

"तो फिर," रानी ने कहा, "उनके शिष्यों को उपहार दे दो, उनके पासपोर्ट लौटा दो और उन्हें पश्चिमी स्वर्ग की ओर भेज दो। सम्राट के भाई को ही यहाँ रखो। क्या कोई कारण है कि हम ऐसा न करें?"

इस पर अधिकारियों ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "महाराज के विचार बिल्कुल सही हैं और आपकी प्रजा उनका आदरपूर्वक पालन करेगी। एकमात्र समस्या यह है कि हमारे पास विवाह कराने के लिए कोई मध्यस्थ नहीं है। जैसा कि पुरानी कहावत है..."

विवाह और प्रजनन लाल पत्तियों पर निर्भर करते हैं;

एक मध्यस्थ पति-पत्नी के बीच संबंध स्थापित करता है।

अध्याय 54

751

पश्चिम की यात्रा

“आपके सुझाव के अनुसार,” रानी ने उत्तर दिया, “राजकीय शिक्षक को विवाह कराने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए, और मेल-वेलकमिंग पोस्ट स्टेशन की अधीक्षक

समारोह की संचालिका होंगी। पोस्ट स्टेशन जाइए और सम्राट के छोटे भाई की सहमति प्राप्त कीजिए। जब वे सहमत हो जाएँगे, तो हम अपनी गाड़ी में बैठकर शहर से बाहर उनका स्वागत करने जाएँगे।" शिक्षक और अधीक्षक निर्देशों का पालन करने के लिए महल से रवाना हो गए।

संजांग और उनके शिष्य डाकघर के हॉल में शाकाहारी भोजन का आनंद ले ही रहे थे कि तभी बाहर से किसी के रानी के शिक्षक और अधीक्षक के आगमन की घोषणा करने की आवाज सुनाई दी।

"रानी का शिक्षक यहाँ क्यों है?" संजांग ने पूछा।

"शायद यह रानी का निमंत्रण है," सुअर ने कहा। "या तो यह है या फिर शादी का प्रस्ताव," भाई बंदर ने कहा।

"लेकिन अगर वह मुझे जबरदस्ती शादी करने के लिए मजबूर करे और हमें जाने से मना कर दे तो मैं क्या करूँ, वुकॉन्ग?" संजांग ने पूछा।

"बस मान जाइए, स्वामी जी," बंदर ने कहा। "मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगा।"

उनकी बातचीत समाप्त होने से पहले ही, दो महिला अधिकारी अंदर आईं और आदरणीय बुजुर्ग को प्रणाम किया। बुजुर्ग ने भी उनका अभिवादन करते हुए कहा, "मैं एक विनम्र भिक्षु हूँ। मुझमें ऐसी कौन सी अद्भुत शक्तियाँ हैं कि आप मुझे इस प्रकार प्रणाम कर रही हैं?"

रानी के शिक्षक उनके नेक आचरण से मन ही मन प्रसन्न हुए और सोचने लगे, "यदि यह व्यक्ति हमारी रानी का पति बने तो हमारा देश सचमुच बहुत भाग्यशाली होगा।"

दोनों अधिकारियों ने प्रणाम करने के बाद संजांग के दोनों ओर खड़े होकर कहा, "महाराज भाई, आपको बहुत-बहुत बधाई।"

"मैं एक भिक्षु हूँ," संजांग ने उत्तर दिया, "तो मुझे बधाई देने लायक कौन सा सौभाग्य है?"

एक बार फिर झुकते हुए, रानी के शिक्षक ने कहा, "यह पश्चिमी लियांग का स्त्री-क्षेत्र है, और यहाँ पहले कभी कोई पुरुष नहीं आया है। सम्राट के भाई, महामहिम, ने अपनी उपस्थिति से हमें सम्मानित किया है, इसलिए मैं महारानी के आदेश पर विवाह का प्रस्ताव रखने आया हूँ।"

"हे भगवान!" संज़ंग ने कहा। "मैं आपके इस प्रतिष्ठित देश में अपने तीन असभ्य शिष्यों के अलावा निःसंतान आया हूँ। महारानी इनमें से किससे विवाह करना चाहती

हैं?"

“मैं अभी महल से खबर लेकर आया हूँ,” डाक स्टेशन के अधीक्षक ने कहा, “हमारी रानी बहुत प्रसन्न थीं। उन्होंने बताया कि पिछली रात उन्होंने एक शुभ स्वप्न देखा जिसमें एक सुनहरा पर्दा अनेक रंगों से जगमगा रहा था और एक जेड दर्पण प्रकाश से भरा हुआ था। जब उन्हें पता चला कि महामहिम सम्राट के भाई तांग वंश के हैं, तो उन्होंने आपको अपने देश की सारी संपत्ति भेंट करने का निश्चय किया ताकि आप उनके पति बनकर यहीं रुकें और सिंहासन पर बैठें। महारानी बनेंगी। शाही शिक्षक को विवाह कराने का कार्य सौंपा गया है और मुझे समारोह की संचालिका बनाया गया है। हम आपका हाथ मांगने आए हैं।” यह सुनकर संजांग ने मौन में सिर झुका लिया।

“सच्चा आदमी अपना मौका नहीं गंवाता,” रानी के शिक्षक ने कहा। “किसी पुरुष को किसी महिला से शादी करने और उसके घर में रहने का प्रस्ताव मिलना कोई असामान्य बात नहीं है, लेकिन ऐसा बहुत कम होता है कि किसी को इसके लिए राज्य की सारी संपत्ति की पेशकश की जाए। मैं सम्राट के भाई से विनती करता हूँ कि वे जल्द से जल्द सहमति दें ताकि मैं महारानी को इसकी सूचना दे सकूँ।” आदरणीय बुजुर्ग मानो अवाक रह गए।

अध्याय 54

752

पश्चिम की यात्रा

उनके बगल में खड़ा सुअर, अपने थूथन पर हाथ रखकर बोला, "गुरुजी, कृपया महारानी को बता दीजिए कि मेरे स्वामी एक अर्हत हैं जिन्होंने लंबे समय से मार्ग का अनुसरण किया है। उन्हें आपके देश की संपत्ति या महारानी की अपार सुंदरता में कोई रुचि नहीं है। जल्दी कीजिए और हमारा पासपोर्ट लौटा दीजिए और उन्हें पश्चिम की ओर भेज दीजिए। आप मुझे यहाँ उनके पति के रूप में रख सकती हैं। क्या विचार है?" यह सुझाव सुनकर गुरुजी कांप उठीं। वह सदमे से अवाक रह गईं।

अधीक्षक ने कहा, "तुम भले ही पुरुष हो, लेकिन तुम महारानी के लिए बहुत बदसूरत हो।"

"तुम समझते नहीं हो," सूअर ने कहा। "मोटी विलो की टहनियों से झाड़ू बनती है और पतली टहनियों से फ़नल। हर चीज़ का कोई न कोई उपयोग होता है। दुनिया में कोई भी इंसान सचमुच बदसूरत नहीं होता।"

बंदर ने कहा, "बेवकूफ, ये सब बकवास बंद करो। हमारे मालिक को फैसला करने दो। अगर वो मान गए तो शादी होगी, और अगर नहीं मानी तो रद्द। मध्यस्थ का समय बर्बाद मत करो।"

"वुकोंग," सानज़ांग ने कहा, "आप तय करें।"

“अगर मुझसे पूछो तो,” बंदर ने जवाब दिया, “तुम यहाँ बहुत आराम से रहोगे। जैसा कि पुरानी कहावत है, हज़ार मील भी अलग नहीं कर सकते।”

एक ऐसा जोड़ा जिसका विवाह होना तय है:

उनका जीवन और भाग्य आपस में जुड़ा हुआ है।

एक लंबे और अदृश्य धागे से।

आपको ऐसी जगह और कहाँ मिलेगी जो आपको इतना कुछ प्रदान करती हो?

"शिष्य," संज़ंग ने कहा, "यदि हम धन और प्रतिष्ठा के लालच में यहीं रुके रहे तो पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने कौन जाएगा? क्या यह हमारे महान तांग सम्राट के प्रति घोर अन्याय नहीं होगा?"

"महामहिम," शाही शिक्षक ने उत्तर दिया, "मुझे आपको सच बताना होगा। हमारी रानी केवल आपसे, सम्राट के भाई से, विवाह करना चाहती हैं। आपके तीनों शिष्यों को विवाह भोज में आमंत्रित किया जाएगा, उपहार दिए जाएंगे, उनके पासपोर्ट लौटा दिए जाएंगे और उन्हें धर्मग्रंथ लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा पर जाने की अनुमति दी जाएगी।"

“राजक शिक्षक की बात सही है,” बंदर ने उत्तर दिया। “हम तीनों को कोई परेशानी नहीं खड़ी करनी चाहिए। हम अपने गुरु को रानी के पति के रूप में यहीं रहने देंगे। जल्दी करो और हमें हमारा यात्रा दस्तावेज़ लौटा दो ताकि हम पश्चिम की ओर जा सकें। हम वापस आते समय धर्मग्रंथों के साथ महारानी को प्रणाम करेंगे और महान तांग वापस जाने के लिए कुछ धन मांगेंगे।”

शाही शिक्षक और अधीक्षक दोनों ने बंदर को प्रणाम किया और कहा, "हम आपकी सहायता के लिए आपके बहुत आभारी हैं, महोदय।"

"गुरुजी," सुअर ने कहा, "केवल हमें खाना खिलाने की बातें मत कीजिए। अब जब हम सहमत हो गए हैं, तो अपनी मालकिन से एक भोज आयोजित करने को कहिए ताकि हम सब सगाई की शराब का एक प्याला पी सकें। क्या कहते हैं?"

“जी हाँ,” शिक्षक ने कहा, “भोज का आयोजन किया जाएगा।” अधीक्षक और शिक्षक अत्यंत प्रसन्न होकर रानी को सूचना देने के लिए लौट आए।
इसी बीच संज़ंग ने बंदर को पकड़ लिया और उसे गालियाँ देने लगा। "तुम मुझे मारना चाहते हो, बंदर! तुम ऐसी बातें कैसे कह सकते हो? मुझे यहाँ उसका पति बनकर रहने के लिए मजबूर कर रहे हो, जबकि तुम पश्चिम स्वर्ग में बुद्ध की पूजा करने जा रहे हो! मैं ऐसा करने से पहले मर जाऊँगा।"
"चिंता मत करो, स्वामी," बंदर ने कहा। "मैं आपकी प्रकृति को भलीभांति जानता हूँ। लेकिन इस जगह पर ऐसे लोगों का सामना करते हुए मुझे उन्हें उन्हीं की चाल में मात देनी पड़ी।"
"उन्हें उन्हीं के खेल में हराने का क्या मतलब है?" संजांग ने पूछा।
“अगर तुम जिद्दी होते और उसे मना कर देते तो वह हमारा यात्रा पत्र वापस नहीं करती और हमें आगे नहीं जाने देती,” बंदर ने जवाब दिया। “अगर वह क्रूर हो जाती और अपने सभी साथियों को बुलाकर तुम्हारा मांस काटकर इत्र की थैलियाँ या कुछ और बनवा देती तो हमें कभी अच्छा इनाम नहीं मिलता। हमें राक्षसों को वश में करने और मारने के लिए अपनी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करना पड़ता। तुम जानते हो कि हम कितनी ज़ोर से वार करते हैं और हमारे हथियार कितने घातक हैं।”
एक बार जब हम आगे बढ़ जाते, तो हम पूरे देश के सभी लोगों को खत्म कर देते। लेकिन वे इंसान हैं, राक्षस नहीं, भले ही वे हमारा रास्ता रोक रहे हों। और इस पूरी यात्रा में आप दयालु और नेक रहे हैं—आपने एक भी जान नहीं ली। इतने सारे निर्दोष लोगों को मारना आप कैसे सहन कर सकते हैं? यह सचमुच बुराई होगी।
"वुकोंग," संज़ंग ने उत्तर दिया, "यह तो बहुत अच्छा तर्क है। लेकिन मुझे डर है कि जब रानी मुझे अपने महल में ले जाएंगी, तो वे मुझसे वैवाहिक कर्तव्य निभाने की अपेक्षा करेंगी। मैं अपनी मूल मर्दानगी को खोकर बौद्ध भिक्षु के रूप में अपने आचरण को बर्बाद नहीं कर सकता, न ही अपने वीर्य को बाहर निकलने देकर धर्म में अपनी प्रतिष्ठा को नष्ट कर सकता हूँ।"
"चूंकि आपने शादी के लिए सहमति दे दी है, इसलिए वह आपको राजा की तरह मानेगी और आपको लेने के लिए अपनी गाड़ी में आएगी," बंदर ने जवाब दिया।

"किसी भी हालत में मना मत करना। फीनिक्स और ड्रैगन वाली गाड़ी में बैठो, सिंहासन कक्ष में प्रवेश करो और सम्राट के रूप में दक्षिण की ओर मुख करके सिंहासन पर बैठो। रानी से कहो कि वह अपनी शाही मुहरें लाए और हमें दरबार में बुलाने के लिए निमंत्रण पत्र लिखे। हमारे यात्रा परमिट पर आधिकारिक मुहर लगाओ और उनसे उस पर हस्ताक्षर करवाकर हमें वापस कर दो। अपने और रानी के लिए एक भोज का आयोजन करवाओ, साथ ही हमें विदाई भी दो। भोज समाप्त होने पर गाड़ी तैयार करवाओ और रानी से कहो कि जब तुम हम तीनों को शहर से बाहर छोड़ दोगी, तो तुम उनके साथ सोने के लिए वापस आओगे। इससे रानी और उनकी प्रजा इतनी प्रसन्न हो जाएगी कि वे हमें और रोकने की कोशिश नहीं करेंगे, और न ही हमारे प्रति कोई बुरी मंशा रखेंगे। जब तुम हमें शहर से बाहर छोड़ दो, तो गाड़ी से उतर जाओ। फ्रायर सैंड से कहो कि वह तुम्हारे साथ रहे और तुम्हें सफेद घोड़े पर चढ़ने में मदद करे, जबकि मैं रानी और उनकी प्रजा को हिलने से रोकने के लिए कुछ जादुई उपाय करता हूँ।"

फिर हम मुख्य सड़क पर पश्चिम की ओर आगे बढ़ेंगे, और जब एक दिन और एक रात का सफर हो जाएगा, तो मैं जादू को खत्म करने और उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए एक मंत्र बोलूंगा ताकि वे वापस शहर में जा सकें। इस तरह उनमें से कोई भी मारा नहीं जाएगा और आपको अपनी आत्मा को नुकसान नहीं पहुंचाना पड़ेगा। इसे ही 'झूठे विवाह के जाल से बच निकलने' की योजना कहते हैं। यह दोनों तरफ से काम करता है, है ना?

इन शब्दों ने संज़ंग को सचेत कर दिया और उसके सपने से जगा दिया। वह अपनी चिंताओं को भूल गया और बंदर का तहे दिल से शुक्रिया अदा किया: "हे मेरे शिष्य, आपके इस शानदार सुझाव के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ।" अब जब चारों एक योजना पर सहमत हो गए थे, तो हम उन्हें इस पर चर्चा करते हुए यहीं छोड़ देते हैं।

रानी के शिक्षक और डाकघर के अधीक्षक बिना बुलाए ही महल के द्वार से सीधे सिंहासन की सीढ़ियों तक चले गए। "महामहिम का शुभ सपना पूरी तरह से सच साबित हुआ।"

उन्होंने घोषणा की, "तुम दोनों एक साथ मछली और पानी की तरह खुश रहोगे।"

पश्चिम की यात्रा

जब रानी ने उनकी रिपोर्ट सुनी तो उसने मोतियों का पर्दा उठाया, अपने ड्रैगन सिंहासन से नीचे उतरी और मुस्कुराते हुए अपने चेरी जैसे होंठों को फैलाया और अपने चांदी जैसे दांत दिखाते हुए अपनी मनमोहक आवाज में पूछा, "जब आपने सम्राट के भाई से बात की तो उन्होंने क्या कहा?"

“जब हम डाकघर पहुँचे और सम्राट के भाई को प्रणाम किया,” रानी के शिक्षक ने उत्तर दिया, “हमने उन्हें विवाह के प्रस्ताव के बारे में बताया। उन्होंने इसे अस्वीकार करने का प्रयास किया, लेकिन सौभाग्य से उनके वरिष्ठ शिष्य ने उनकी ओर से सहमति दे दी। वह चाहते हैं कि उनके गुरु महाराज से विवाह करें और राजा के रूप में सिंहासन पर बैठें। उन्होंने आपसे निवेदन किया है कि आप पहले उनके पासपोर्ट लौटा दें और तीनों शिष्यों को पश्चिम की ओर रवाना कर दें। जब वे धर्मग्रंथ लेकर लौटेंगे तो वे अपने गुरु और महाराज को प्रणाम करेंगे और महान तांग वापस जाने के लिए कुछ धन माँगेंगे।”

"इस पर सम्राट के भाई ने क्या कहा?" रानी ने मुस्कुराते हुए पूछा।

शिक्षक ने उत्तर दिया, "उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन वह महाराज से विवाह करने को तैयार है। बस एक ही बात है कि उसका दूसरा शिष्य पहले सगाई का भोज चाहता है।"

जब रानी ने यह सुना तो उन्होंने विदेश मामलों के कार्यालय को भोज आयोजित करने का आदेश दिया। उन्होंने अपने स्वामी और पति का स्वागत करने के लिए शहर से बाहर ले जाने हेतु राजसी रथ भी तैयार करवाया। महिला अधिकारियों ने आज्ञाकारी रूप से महल की सफाई की और हॉल में भोज का आयोजन किया। भोज की तैयारी करने वाली महिलाएं आग की गति से काम कर रही थीं, और रथ तैयार करने वाली महिलाएं टूटते तारे की गति से काम कर रही थीं। पश्चिमी लियांग महिलाओं का देश था, लेकिन उसका राजसी रथ किसी चीनी रथ से कम भव्य नहीं था: रंगीन बादलों को उगलते हुए छह अजगर।

शुभ संकेतों से भरपूर फीनिक्स पक्षियों का एक जोड़ा।

जब रथ बाहर निकला तो छह ड्रैगन ने उसे सहारा दिया।

दो फीनिक्स पक्षी उस पर सवार थे।

इत्र सुगंधित थे।

शुभ वाष्प के घने बादल।
अब जेड पत्थर से बने सुनहरी मछली के आकार के लटकन पहने अधिकारी चारों ओर जमा हो गए; महिलाएं अपने बालों को गहनों से सजाए हुए खड़ी थीं।
मंदारिन-बत्तख के पंखों ने गाड़ी को छाया प्रदान की।
जबकि जेड और मोती के पर्दे रानी को आश्रय दे रहे थे।
बांसुरी की धुन पर गाए गए गीत बेहद खूबसूरत लग रहे थे।
तार वाले और लकड़ी के वाद्ययंत्र सभी सामंजस्यपूर्ण ढंग से बज रहे थे।
आनंद की एक लहर आसमान तक पहुंच गई;
हृदय से असीम आनंद का प्रवाह उमड़ पड़ा।
अध्याय 54
755
पश्चिम की यात्रा
रेशम की तिहरी छतरी ने आकाश को हिला दिया;
चमकीले झंडों की रोशनी सिंहासन की सीढ़ियों पर पड़ रही थी।
इससे पहले यहां कभी भी विवाह का प्याला नहीं पिया गया था;
आज रानी का विवाह होने वाला है।
गाड़ी जल्द ही शहर से निकलकर माले स्थित स्वागत डाकघर पहुँच गई। रानी के आगमन की सूचना तुरंत संज़ंग और उनके शिष्यों को दी गई, जिन्होंने अपने कपड़े समेटे और रानी की गाड़ी का स्वागत करने के लिए बाहर आए। रानी ने पर्दा उठाया और बाहर आईं। उन्होंने पूछा, "इन सज्जनों में से कौन तांग सम्राट का भाई है?"
“डाकघर के सामने लंबा गाउन पहने वह सज्जन,” शिक्षक ने उत्तर दिया। रानी ने अपनी निखरती आँखों से, अपनी भौहों को ऊपर उठाते हुए, उन्हें ध्यान से देखा। वह सचमुच एक असाधारण दृश्य थे। उन्हें देखिए:
एक नेक व्यवहार,
विशिष्ट विशेषताएं।
सफेद दांत मानो चांदी के बने हों।
लाल होंठों वाला चौकोर कटा हुआ मुंह।
सिर का ऊपरी भाग चपटा, माथा चौड़ा और सुडौल;
सुंदर आंखें, सुस्पष्ट भौंहें और लंबा जबड़ा।

उनके कान किसी महान व्यक्ति की तरह गोल थे;
उनका शरीर किसी असाधारण प्रतिभा वाले व्यक्ति का था।
एक सुंदर, बुद्धिमान और वीर पुरुष;
सुंदर रानी के लिए आदर्श साथी।
जब रानी प्रसन्नता और प्रशंसा से उसे निहार रही थी, तो उसके मन में तीव्र इच्छा और जुनून का ज्वार उमड़ आया।
अपने गुलाबी होंठों को खोलते हुए उसने कहा, "तांग सम्राट के छोटे भाई, क्या आप मेरी शाही गाड़ी में नहीं बैठेंगे?" यह सुनकर संजांग शर्म से लाल हो गया। वह इतना शर्मिंदा था कि उसकी ओर देख भी नहीं पा रहा था।
उसके बगल में खड़ा सुअर अपने थूथन पर हाथ रखकर रानी को अपनी आँखों से निहारने लगा। वह एक पतली और खूबसूरत महिला थी।
अध्याय 54

हरी विलो जैसी भौंहें,
भेड़ की चर्बी जैसा मांस,
गालों पर बेर के फूलों की छटा बिखरी हुई है।
सुनहरे फीनिक्स पक्षी के पंखों जैसे बाल।
उसकी आंखों की शरदकालीन लहरें आकर्षण से भरी हुई थीं;
वसंत ऋतु में खिलने वाले बांस के अंकुर की तरह उसका आकर्षक शारीरिक हावभाव था।
लाल रंग के गुच्छे उसकी कनपटी पर खूबसूरती से लहरा रहे थे।
मोतियों और किंगफिशर के पंखों से सजे उसके ऊंचे गुच्छे वाले बाल सुशोभित थे।
राजकुमारी झाओजुन की सुंदरता के बारे में अभी बात क्यों करें?
यह रानी पौराणिक शी शी से भी अधिक सुंदर है।
जैसे ही उसकी पतली कमर धीरे से झुकती है, सोने के लटकन झंकारते हैं;
उसके कमल जैसे चरण, उसके जेड जैसे अंगों के साथ कोमल भाव से चलते हैं।
चंद्रमा की देवी भी उसकी बराबरी नहीं कर सकती थी;
कोई भी दिव्य परी उसकी बराबरी नहीं कर सकती थी।

उसके भव्य महलनुमा वस्त्र किसी साधारण मनुष्य के वस्त्र नहीं थे;
वह पश्चिम की महारानी माँ थीं जो जेड पूल में आई थीं।
उसकी सुंदरता देखकर वह मूर्ख खुद को लार टपकाने से नहीं रोक सका। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा और उसके हाथ-पैर कांपने लगे; वह आग के पास बैठे बर्फीले शेर की तरह पिघल गया।
जब रानी संजांग के करीब आई तो उसने उसे पकड़ लिया और बेहद मोहक स्वर में कहा, "प्रिय सम्राट के भाई, क्या आप मेरे ड्रैगन रथ में नहीं बैठेंगे, मेरे साथ सिंहासन कक्ष तक वापस नहीं चलेंगे और मुझसे शादी नहीं करेंगे?"
आदरणीय बुजुर्ग कांप रहे थे, उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने में अस्थिरता महसूस हो रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वे नशे में हों या बेहोश हों।
"मालिक, इतने संकोची और संकोची मत बनिए," उसके बगल में खड़े बंदर ने विनती की। "कृपया अपनी होने वाली पत्नी के साथ गाड़ी में बैठ जाइए। हमारा पासपोर्ट जितनी जल्दी हो सके हमें लौटा दीजिए ताकि हम शास्त्रों को लाने के लिए अपनी यात्रा जारी रख सकें।" संजांग कुछ कह नहीं सका और बंदर पर हाथ रखते हुए अपने आँसू रोक नहीं पाया।
“मालिक, इतना परेशान मत होइए,” बंदर ने कहा। “यह आपके लिए धन और सम्मान का आनंद लेने का अवसर है, इसलिए इसका भरपूर लाभ उठाइए।” संजांग के पास बंदर की बात मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। अपने आँसू पोंछते हुए उसने मुस्कुराने की कोशिश की और आगे बढ़ा।
अध्याय 54
757
पश्चिम की यात्रा
रानी का सफेद हाथ थामे रहो
ड्रैगन रथ में बैठे हुए।
रानी पति मिलने की संभावना से अत्यंत प्रसन्न थी;
भयभीत बुजुर्ग व्यक्ति केवल बुद्ध की पूजा करना चाहता था।
एक महिला मोमबत्ती की रोशनी से जगमगाते बेडरूम में अपने प्रेमी को गले लगाने के लिए तरस रही थी;
दूसरा देखना चाहता था

वल्चर पीक पर विश्व स्तर पर सम्मानित।
रानी ईमानदार थी।
वह पवित्र भिक्षु दिखावा कर रहा था।
रानी अपनी ईमानदारी में
आशा थी कि वे एक साथ सद्भाव से बूढ़े होंगे।
पवित्र भिक्षु ढोंग कर रहा है
उसने अपनी कोमल भावनाओं को नियंत्रित करके अपनी आदिम आत्मा का पोषण किया।
एक महिला अपने पति को देखकर बहुत खुश थी।
वह चाहती थी कि वे दिन दहाड़े पति-पत्नी बन जाएं।
दूसरा व्यक्ति स्त्री की सुंदरता से डरता था।
उसकी गिरफ्त से बचकर थंडर मॉनेस्ट्री तक पहुंचने की तीव्र इच्छा।
दोनों एक साथ गाड़ी में चढ़ गए।
लेकिन तांग पुजारी के इरादे इससे बिल्कुल अलग थे।
जब नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने अपनी प्रेमिका को आदरणीय संज़ंग के साथ शाही रथ में प्रवेश करते देखा, तो उनके चेहरे मुस्कान से खिल उठे। जुलूस मुड़कर वापस शहर की ओर चल पड़ा। मंकी ने साधु सैंड को सामान उठाने के लिए कहा, जबकि वह घोड़े को आगे-आगे ले जा रहा था और वे रथ के पीछे-पीछे चल रहे थे।
पिग बेतहाशा आगे बढ़ा और जब वह पांच फीनिक्स के टावर पर पहुँचा तो चिल्लाने लगा, "यह बहुत अच्छा और शानदार है, लेकिन यह काफी नहीं है, बिल्कुल भी नहीं। हमें दूल्हे के स्वागत में कुछ शादी के पेय पीने होंगे।"
उसने जुलूस का नेतृत्व कर रही और औपचारिक प्रतीक चिन्ह लिए महिला अधिकारियों को इतना भयभीत कर दिया कि वे सभी रानी की गाड़ी में वापस जाकर रिपोर्ट करने लगीं, "महामहिम, बड़े कान और लंबी थूथन वाला व्यक्ति फाइव फीनिक्स टॉवर के सामने हंगामा कर रहा है और शादी के पेय की मांग कर रहा है।"

यह सुनकर रानी ने अपना सुगंधित कंधा संजांग से टिका दिया, अपने आड़ू जैसे

गुलाबी गालों को उससे सटा लिया और चंदन की सुगंध से महकते हुए अपने मोहक स्वर में फुसफुसाया, "प्रिय सम्राट के भाई, क्या बड़े कानों और लंबी थूथन वाला वह व्यक्ति आपके विशिष्ट शिष्यों में से एक है?"

“वह मेरा दूसरा शिष्य है,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “उसे बहुत भूख लगती है और उसने अपना पूरा जीवन अच्छा भोजन पाने की कोशिश में बिताया है। हमें उसके लिए कुछ खाने-पीने का इंतजाम करना होगा, उसके बाद ही हम आगे बढ़ सकते हैं।” फिर रानी ने उत्सुकता से पूछा कि क्या विदेश मामलों के कार्यालय ने भोज की तैयारी कर ली है।

महिला अधिकारियों ने बताया, "यह तैयार है। इसे पूर्वी हॉल में परोसा गया है और इसमें मांसाहारी और शाकाहारी दोनों तरह के व्यंजन शामिल हैं।"

"दोनों तरह की क्यों?" रानी ने पूछा।

"आपकी प्रजा को लगता था कि तांग सम्राट के भाई और उनके प्रतिष्ठित शिष्य शाकाहारी हो सकते हैं।"

अधिकारियों ने जवाब दिया, "इसीलिए हमने दोनों तरह का भोजन उपलब्ध कराया था।"

"प्रिय सम्राट के भाई," रानी ने खुशी से हल्की सी हंसी हंसते हुए कहा और संजांग के सुगंधित गालों से खुद को रगड़ा, "क्या आप मांस खाते हैं या शाकाहारी भोजन?"

"मैं शाकाहारी भोजन करता हूँ," संजांग ने उत्तर दिया, "लेकिन मैंने शराब का सेवन कभी नहीं छोड़ा। मेरे दूसरे शिष्य के लिए हमें कुछ प्याले हल्की शराब रखनी चाहिए।"

उनके बोलने से पहले ही रानी के शिक्षक ने रानी से कहा, "महाराज, यदि आप भोज के लिए पूर्वी कक्ष में आएँगी? आज का दिन शुभ है, और आज रात शुभ मुहूर्त में आपका विवाह सम्राट के भाई से हो सकता है। कल से एक नया चक्र शुरू हो रहा है, और मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि सम्राट के छोटे भाई कल सिंहासन कक्ष में प्रवेश करें और दक्षिण की ओर मुख करके सिंहासन ग्रहण करें तथा एक नए शासनकाल का शुभारंभ करें।"

रानी इस सुझाव से बहुत प्रसन्न हुईं। संजांग का हाथ थामे हुए वे रथ से उतरीं और महल के मुख्य द्वार से अंदर गईं। वहाँ उन्होंने जो देखा और सुना वह यह था: एक गैलरी से जादुई संगीत की मधुर ध्वनि आ रही थी।

जैसे ही फ़िरोज़ी रंग की गाड़ी महल के अंदर आई।

कोमल प्रकाश के बीच फीनिक्स के द्वार चौड़े खुले हुए थे;
अपने पूरे वैभव के साथ मौजूद हरम को बंद नहीं किया गया था।
यूनिकॉर्न हॉल में अगरबत्ती का धुआं ऊपर की ओर उठ रहा था;
मोर के पर्दे के पीछे परछाइयाँ हिल रही थीं।
ये इमारतें किसी शक्तिशाली राज्य की इमारतों की तरह भव्य थीं;
जेड से बने हॉल और सोने के घोड़े तो और भी अधिक भव्य थे।
अध्याय 54
759
पश्चिम की यात्रा
जब वे पूर्वी हॉल में पहुँचे तो बांसुरी और गायन की मधुर ध्वनि सुनाई दी और पाउडर से सजी सुंदरियों की दो पंक्तियाँ दिखाई दीं। हॉल के मध्य में दो भव्य भोज सजे हुए थे; बाईं ओर शाकाहारी और दाईं ओर मांसाहारी। नीचे दो पंक्तियों में व्यक्तिगत स्थान थे। रानी ने अपनी आस्तीनें मोड़ीं, अपनी दस कोमल उंगलियों से एक जेड प्याला उठाया और संज़ंग को भोज में ले गईं। बंदर उनके पास गया और बोला, "हम सब शाकाहारी हैं, तो क्या आप मेरे गुरु से कहेंगी कि वे बाईं ओर शाकाहारी भोज में बैठें जबकि उनके नीचे हम तीन शिष्यों के लिए तीन स्थान हैं?"
“जी हाँ, यह सही है,” रानी के शिक्षक ने कहा। “गुरु और शिष्य पिता-पुत्र के समान होते हैं। उन्हें साथ-साथ बैठाना अनुचित होगा।” महिला अधिकारियों ने तुरंत बैठने की व्यवस्था बदल दी, और रानी ने उन्हें उनके स्थानों पर ले जाते हुए प्रत्येक को प्याले दिए। बंदर ने तांग पुजारी को शिष्टाचार का जवाब देने के लिए एक इशारा किया, जिस पर वह अपने हाथ में जेड का प्याला लेकर अपनी सीट से नीचे उतरा और रानी को उनके स्थान पर ले गया।
सभी नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने कृतज्ञतापूर्वक रानी के सामने सिर झुकाया और वरीयता क्रम में दोनों ओर बैठ गए। तभी संगीत बंद हुआ और शुभकामनाओं का सिलसिला शुरू हुआ।
सूअर को किसी बात की चिंता नहीं थी, उसने अपना पेट आराम से फैलाया और जी भरकर खाया। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह जेडफ्लेक चावल, उबले हुए बन, मीठे केक, मशरूम, गिल फंगस, बांस के अंकुर, ट्री-ईयर फंगस, डे लिली, अगर, लैवर, शलजम, तारो, डेविलपेपर, शकरकंद या सीलवर्ट है: उसने सब कुछ एक साथ

चट कर लिया।
फिर उसने छह-सात गिलास शराब पी ली और चिल्लाया, "इसे भर दो, मुझे एक और लाओ। मुझे एक बड़ा गिलास चाहिए। मुझे कुछ और घूंट पिलाओ, फिर हम सब जाकर अपना-अपना काम कर सकते हैं।"
"ऐसा क्या महत्वपूर्ण है जिसके कारण हमें इस शानदार भोज को छोड़कर जाना पड़ रहा है?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
“एक पुरानी कहावत है,” उस मूर्ख ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, “कि हर आदमी को अपने काम से मतलब रखना चाहिए। हममें से कुछ की अब शादी हो रही है, और कुछ को धर्मग्रंथ लाने जाना है। हमें कुछ और शराब के चक्कर में सब कुछ बर्बाद नहीं करना चाहिए। हम चाहते हैं कि हमारा पासपोर्ट जल्द से जल्द वापस मिल जाए। जैसा कि कहते हैं।”
“योद्धा अपने घोड़ों पर सवार हैं, सभी आगे बढ़ते जा रहे हैं।” जब रानी ने यह सुना तो उन्होंने बड़े प्याले मंगवाए, और उपस्थित अधिकारियों ने तुरंत तोते के आकार के प्याले, जलकौवे के आकार के चम्मच, सोने की टोकरियाँ, चाँदी के प्याले, कांच के थालियाँ, क्रिस्टल की थालियाँ, अमर लोगों के कटोरे और अंबर के प्याले लाकर रख दिए। अब अमृतमय पेय परोसा गया और सभी ने उसे पिया।
इसके बाद संजांग ने झुककर प्रणाम किया, खड़े हुए, अपने हाथ छाती के सामने जोड़कर रानी से कहा, "महाराज, इस भव्य भोज के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। अब हमारा भोजन पर्याप्त हो गया है। क्या आप अब सिंहासन कक्ष में जाकर पासपोर्ट लौटा देंगी ताकि मैं कल सुबह इन तीनों को शहर से विदा कर सकूँ?"
जैसा उसने कहा था, रानी ने सान्ज़ांग का हाथ पकड़कर भोज समाप्त किया और वे सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों पर चढ़ गए, जहाँ उसने तांग पुजारी को सिंहासन पर बैठने के लिए आमंत्रित किया।
“नहीं,” उन्होंने कहा, “यह गलत होगा। जैसा कि महाराज के शिक्षक ने कहा था, कल से एक नया चक्र शुरू होगा: तभी मैं सिंहासन ग्रहण करने का साहस करूँगा। आज पासपोर्ट पर मुहर लगानी होगी ताकि उन्हें रवाना किया जा सके।”
रानी ने उनके सुझाव मान लिए, फिर से ड्रैगन सिंहासन पर बैठ गईं, उसके बाईं ओर संज़ंग के बैठने के लिए एक सोने की कुर्सी रखवाई और शिष्यों को पासपोर्ट लाने को कहा। महान ऋषि ने भिक्षु सैंड से पासपोर्ट का आवरण खोलने और उसे बाहर

निकालने को कहा, फिर दोनों हाथों से उसे रानी को सौंप दिया, जिन्होंने ध्यान से उसकी जाँच की। सबसे ऊपर महान तांग सम्राट की नौ मुहरें थीं, और नीचे एलिफेंटिया, वूजी और टैरीकार्ट देशों की मुहरें थीं। जब रानी ने उन्हें देखा तो उन्होंने मधुर, झिलमिलाती मुस्कान के साथ कहा, "क्या आपका उपनाम चेन है, सम्राट के भाई?"

उन्होंने उत्तर दिया, "मेरा सांसारिक उपनाम चेन था, और मेरा धार्मिक नाम शुआनज़ैंग है। तांग सम्राट ने अपनी बुद्धिमत्ता और दया से मुझे अपना छोटा भाई मानकर मुझे तांग उपनाम प्रदान किया।"

रानी ने पूछा, "आपके विख्यात शिष्यों के नाम पासपोर्ट पर क्यों नहीं अंकित हैं?"

"मेरे तीनों मूर्ख शिष्य तांग वंश के पुरुष नहीं हैं," संजांग ने उत्तर दिया।

"लेकिन अगर वे तांग वंश के नहीं हैं तो वे आपके साथ यहां क्यों आए हैं?" रानी ने फिर पूछा।

"मेरा वरिष्ठ शिष्य," संज़ंग ने उत्तर दिया, "मूल रूप से पूर्वी महाद्वीप के आओलाई देश का रहने वाला था। मेरा दूसरा शिष्य पश्चिमी महाद्वीप के स्टुबेट के गाओ गाँव का रहने वाला है।"

मेरा तीसरा शिष्य बहती रेत नदी से है। उन सभी को स्वर्ग के नियमों के उल्लंघन के लिए दंडित किया गया था, जब तक कि बोधिसत्व गुआनयिन ने उन्हें उनके कष्टों से मुक्ति नहीं दिलाई। तब से वे धर्म में परिवर्तित हो गए हैं और अपने पिछले अपराधों के प्रायश्चित के लिए पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने की मेरी यात्रा में मेरे साथ चलने के लिए स्वेच्छा से तैयार हैं। मैंने यात्रा के दौरान उनमें से प्रत्येक को अपने साथ जोड़ा, यही कारण है कि उनके धार्मिक नाम पासपोर्ट पर दर्ज नहीं किए गए हैं।

"क्या आप चाहेंगे कि मैं उनके नाम भी इसमें जोड़ दूं?" रानी ने कहा।

"अगर महाराज को यही पसंद है," संज़ंग ने उत्तर दिया। रानी ने फिर ब्रश और स्याही की छड़ी मंगवाई, और जब उन्होंने स्याही की छड़ी को पत्थर पर रगड़कर गाढ़ी और सुगंधित स्याही बनाई, जिससे उन्होंने अपने ब्रश के रेशों को भर लिया, तो उन्होंने तीनों शिष्यों - सन वुकॉन्ग, झू वुनेन्ग और शा वुजिंग - के नाम पासपोर्ट के नीचे

लिखे। फिर उन्होंने उस पर अपनी शाही मुहर लगाई, अपने हस्ताक्षर किए और उसे बंदर को सौंप दिया, जिसने साधु रेत को उसे फिर से सावधानीपूर्वक लपेटने के लिए कहा।

फिर रानी ने उन्हें सोने और चांदी के छोटे-छोटे टुकड़ों से भरी एक थाली भेंट की, अपने सिंहासन से नीचे उतरी और बंदर से कहा, "तुम तीनों इसे अपनी यात्रा के खर्चों के लिए ले जाओ और जितनी जल्दी हो सके पश्चिमी स्वर्ग की ओर जाओ। जब तुम शास्त्रों के साथ वापस आओगे तो हम तुम्हें फिर से भरपूर पुरस्कार देंगे।"

“हम धार्मिक लोग हैं,” बंदर भाई ने कहा, “और हम सोना-चांदी स्वीकार नहीं करते। रास्ते में हमें भीख मांगकर भोजन प्राप्त करने के लिए जगहें मिलेंगी।” यह देखकर कि वे इसे स्वीकार नहीं करेंगे, रानी ने दस थान दमिश्क और जकूज़ी के कपड़े मंगवाए और बंदर को देते हुए कहा, “तुम्हें इतनी जल्दी है कि हमारे पास इसे सिलने का समय नहीं है। कृपया इसे ले जाओ और यात्रा के दौरान पहनने के लिए कुछ कपड़े सिलवा लो ताकि तुम्हें ठंड न लगे।”

“हम भिक्षु रेशम या जकूज़ी नहीं पहन सकते,” बंदर ने कहा। “हमें केवल सूती कपड़े से ही खुद को ढकने की अनुमति है।” यह देखकर कि वह रेशम भी स्वीकार नहीं करेगा, रानी ने आदेश दिया कि तीन पाइंट चावल मंगवाए जाएं ताकि वे यात्रा के दौरान भोजन कर सकें। जैसे ही सुअर ने “चावल” शब्द सुना, उसने उसे उठाया और सामान के गट्ठों के साथ रख दिया। “भाई,” बंदर ने उससे कहा, “सामान अब बहुत भारी हो गया है। क्या तुम चावल भी उठा पाओगे?”

"तुम्हें पता नहीं होगा कि चावल पकाने के दिन ही खाना सबसे अच्छा होता है," सुअर ने जवाब दिया। "एक बार में ही खत्म हो जाएगा।" फिर उसने धन्यवाद देते हुए अपने हाथ जोड़ लिए।

"क्या मैं महाराज से विनती कर सकता हूँ कि वे मेरे साथ चलें जब मैं अपने शिष्यों को शहर से बाहर ले जाऊँ?" संजांग ने पूछा।

"जब मैं उन्हें पश्चिम की यात्रा के बारे में कुछ विदाई निर्देश दे दूंगी, तब मैं महाराज के साथ शाश्वत यश का आनंद लेने के लिए वापस आऊंगी। जब मैं इन चिंताओं और परेशानियों से मुक्त हो जाऊंगी, तभी हम फीनिक्स पक्षियों की तरह एक साथ मिल पाएंगे।" यह न समझते हुए कि यह एक चाल थी, रानी ने अपना रथ मंगवाया और उसमें सवार हो गईं, शहर से पश्चिम की ओर जाते हुए उन्होंने अपना सुगंधित कंधा

संज़ंग से टिका दिया। कटोरे साफ पानी से भर दिए गए थे और सभी अगरबत्तियों में उत्तम अगरबत्ती जला दी गई थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि लोग अपनी रानी को उनके रथ में देख रहे थे और इसलिए भी क्योंकि वे एक पुरुष, सम्राट के छोटे भाई को देख रहे थे। सभी, युवा और वृद्ध, सुंदर चेहरे वाली महिलाएं थीं, जिनके हरे-काले बाल बादलों की तरह ऊंचे गुंथे हुए थे। रथ जल्द ही शहर से बाहर निकलकर पश्चिमी द्वार के बाहर पहुँच गया।

बंदर, सुअर और साधु सैंड, एक समान उद्देश्य से एकजुट होकर, अपने कपड़े समेटे और गाड़ी से मिलने चले गए। "महाराज, हमें दूर तक साथ ले जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम यहीं आपसे विदा लेते हैं।"

अध्याय 54

761

पश्चिम की यात्रा

संज़ंग शाही रथ से उतरे, रानी के सामने हाथ जोड़कर बोले, "महाराज, कृपया अब वापस जाइए और मुझे शास्त्र लाने दीजिए।" यह सुनकर रानी का चेहरा सदमे से पीला पड़ गया। उन्होंने तांग पुजारी को पकड़ लिया और कहा, "प्रिय सम्राट के भाई, मैंने आपको अपना पति बनने के लिए अपने राज्य की सारी संपत्ति अर्पित कर दी है। कल आप सम्राट के रूप में सिंहासन ग्रहण करेंगे और मैं आपकी संगिनी बनूंगी। हम विवाह भोज भी कर चुके हैं। अब आप अपने वचन से कैसे मुकर सकते हैं?"

यह सब देखकर पिग का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया और वह बेकाबू हो गया। अपनी थूथन हिलाते और कान फड़फड़ाते हुए वह शाही रथ की ओर दौड़ा और चिल्लाने लगा, "हम जैसे भिक्षु तुम्हारे जैसे कंकाल से शादी क्यों करेंगे? मेरे स्वामी को छोड़ दो!" इस कठोर और हिंसक व्यवहार से रानी इतनी भयभीत हो गईं कि उनकी आत्माएं हवा में उड़ गईं और वह रथ में ही गिर पड़ीं। साधु सैंड ने सान्ज़ांग को भीड़ से बाहर निकाला और घोड़े पर चढ़ने में मदद की। तभी सड़क किनारे से एक महिला चिल्लाते हुए आगे बढ़ी, "मत जाओ, तांग सम्राट के भाई। हम दोनों प्रेम करने जा रहे हैं।"

“अज्ञानी, दुष्ट प्राणी!” फ्रायर सैंड ने चिल्लाते हुए अपने डंडे से उसके सिर पर प्रहार किया। तब उस स्त्री ने एक बवंडर खड़ा किया जिसने तांग पुजारी को एक ज़ोरदार गर्जना के साथ उड़ा दिया। वह बिना किसी आभा या निशान के गायब हो गया।

वह सुंदरियों के जाल से बच निकला
एक कामुक राक्षसी से सामना करना।
अगर आपको नहीं पता कि वह महिला इंसान थी या राक्षस, या फिर मालिक जीवित था या मर गया, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 55
तांग पुरोहित कामुकता और दुराचार के प्रलोभन में पड़ जाता है
क्योंकि उनका स्वभाव नेक है, इसलिए वे बिना किसी हानि के प्रतिरोध करते हैं।
कहानी बताती है कि महान ऋषि और सुअर सभी महिलाओं को स्थिर करने के लिए अपने जादू का प्रयोग करने ही वाले थे कि अचानक उन्हें हवा की आवाज़ सुनाई दी। चिल्ला रहे साधु सैंड ने तुरंत पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि तांग पुजारी वहाँ से गायब हो गए थे।
"मास्टर को कौन ले गया है?" बंदर ने पूछा।
"एक औरत ने बवंडर बनाया और उसे उसमें उड़ा ले गई," फ्रायर सैंड ने बताया। यह खबर सुनकर मंकी उछलकर अपने बादल पर खड़ा हो गया और अपनी आँखों को धूप से बचाते हुए चारों ओर देखने लगा। उसने उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ते हुए बवंडर के भूरे धूल के बादल को देखा।
"भाइयों," वह पीछे मुड़कर चिल्लाया, "सीधे अपने बादलों पर चढ़ जाओ। हम मालिक के पीछे जा रहे हैं।" पिग और फ्रायर सैंड ने घोड़े पर सामान बांधा और दोनों शोर मचाते हुए हवा में उछल पड़े।
इन सब बातों से पश्चिमी लियांग की रानी और उनकी प्रजा इतनी भयभीत हो गईं कि वे धूल में घुटने टेककर गिर पड़ीं और बोलीं, "यह एक अर्हत है जो दिन दहाड़े भाग गया है। महाराज, घबराइए मत।" अध्याय 55

तांग सम्राट के भाई एक ध्यान भिक्षु हैं जिन्होंने मार्ग में महारत हासिल कर ली है। हम इतने अंधे थे कि चीन के इस व्यक्ति की असलियत नहीं देख पाए, और हमने व्यर्थ ही अपनी सारी लालसाओं को हवा दी। महाराज, कृपया अपने रथ में बैठकर महल लौट जाइए।" रानी अपने अधिकारियों के साथ राजधानी लौटते समय शर्मिंदा महसूस कर रही थीं, और हम उनके बारे में और कुछ नहीं कहेंगे।

इस बीच बंदर और अन्य दो शिष्य बवंडर के बाद बादलों पर सवार होकर हवा में उड़ रहे थे।

उन्होंने उसका पीछा करते हुए एक ऊंचे पहाड़ तक गए, जहां धूसर धूल जम गई और हवा शांत हो गई, जिससे उन्हें पता नहीं चल पाया कि राक्षस किस दिशा में गया है। भाइयों ने रास्ता खोजने के लिए अपने बादलों को धरती पर उतारा।

अचानक उन्हें एक चमकती हुई चट्टान दिखाई दी जो एक स्क्रीन के आकार की थी। घोड़े को उसके पीछे घुमाकर उन्होंने देखा तो उन्हें पत्थर के दो दरवाजे दिखाई दिए जिनके ऊपर लिखा था:

घातक शत्रु पर्वत पीपा गुफा

अपनी नासमझी में सुअर दरवाजों तक गया और उन्हें अपने रेक से पीटने ही वाला था कि बंदर दौड़कर उसे रोकने के लिए आगे आया। "इतनी जल्दी मत करो, भाई," उसने कहा। "बवंडर का पीछा करने के बाद हमें इन दरवाजों को ढूंढने से पहले काफी देर तक इधर-उधर देखना पड़ा। हमें नहीं पता कि इनके पीछे क्या है। अगर ये गलत दरवाजे हैं तो हम गलत लोगों को नाराज़ करके मुसीबत खड़ी कर देंगे, और हम ऐसा नहीं करना चाहते। तुम दोनों घोड़े को चट्टानी आड़ के सामने ले जाओ और थोड़ी देर रुको। मैं इधर-उधर देखकर पता लगाता हूँ कि यहाँ क्या हो रहा है। फिर यह जानना बहुत आसान हो जाएगा कि क्या करना है।"

फ्रायर सैंड को यह विचार पसंद आया। "शानदार, शानदार," उन्होंने कहा, "जब हालात बिगड़ रहे थे, तब आपने समझदारी भरा समाधान ढूंढ लिया, संकट से निकलने का शांत रास्ता खोज लिया।" फिर वे दोनों घोड़े को चट्टानी दीवार के दूसरी ओर ले गए।

फिर बंदर ने अपनी जादुई शक्तियां दिखाईं। हाथों से मंत्र बनाकर और शब्द बोलकर उसने खुद को हिलाया और एक खूबसूरत मधुमक्खी में बदल गया। बस उसे देखो:

हवा में लहराते सुंदर पंख,
सूरज की रोशनी में चमकती पतली कमर।
अपने मीठे मुख से उसने पुंकेसर की खोज की,
जबकि उसकी पूंछ का डंक मेंढकों को मार डालता था।
शहद बनाने के क्षेत्र में उनकी उपलब्धि बहुत बड़ी थी।
और वह हमेशा शिष्टाचार के साथ छत्ते में प्रवेश करता था।
अब वह एक शानदार योजना का उपयोग करेगा

जैसे ही वह दरवाजे की छत के नीचे से उड़कर अंदर आया।
बंदर बाहरी दरवाजों के बीच की दरार से अंदर घुसा और फिर भीतरी दरवाजों से होते हुए अंदर गया। वहाँ उसने देखा कि एक स्त्री राक्षस फूलों के मंडप में बैठी है, जिसके साथ रंग-बिरंगे कढ़ाईदार कपड़े पहने और दो गुच्छों में ऊपर की ओर उठे बालों वाली नौकरानियाँ हैं। वे सभी बहुत प्रसन्न थीं, लेकिन बंदर उनकी बातें नहीं सुन पा रहा था। बंदर बहुत चुपचाप उनके पास उड़कर गया, मंडप की जाली पर बैठ गया और अपना कान लगाकर सुनने लगा (अध्याय 55)।
763
पश्चिम की यात्रा
सुनो। उसने दो महिलाओं को देखा जिनके उलझे हुए बाल जूड़े में बंधे थे, वे गरमागरम खाने की दो थालियाँ मंडप की ओर ला रही थीं और कह रही थीं, "महोदया, इस थाली में मानव मांस से भरे हुए स्टीम्ड रोल हैं, और उस थाली में मीठे बीनपेस्ट से भरे हुए शाकाहारी रोल हैं।"
“बच्चों,” उस शैतान औरत ने मुस्कुराते हुए कहा, “तांग सम्राट के भाई को बाहर लाओ।” कढ़ाईदार कपड़े पहने कुछ नौकरानियाँ तांग पुजारी की मदद करने के लिए पीछे वाले कमरे में गईं। उनका चेहरा पीला पड़ गया था, होंठ सफेद और आँखें लाल थीं, आँसू उनके चेहरे से बह रहे थे। “मालिक को नशा दिया गया है,” बंदर ने चुपचाप आह भरते हुए सोचा।
वह राक्षसी मंडप से नीचे उतरी और अपनी दस उंगलियाँ दिखाईं जो हरे प्याज की तरह कोमल थीं। उसने संज़ंग को पकड़ते हुए कहा, "चिंता मत करो, सम्राट के भाई। यह पश्चिमी लियांग के स्त्रीलोक में स्थित महल जितना भव्य और आलीशान तो नहीं है, लेकिन शांत और आरामदायक है, और बुद्ध का नाम जपने और शास्त्रों को पढ़ने के लिए आदर्श स्थान है। मेरे साथ रहकर हम सौ वर्ष की आयु तक सद्भाव से रह सकेंगे।" संज़ंग ने कुछ नहीं कहा।
"दुखी मत हो," उस शैतान औरत ने कहा। "मुझे पता है कि स्त्रीलोक में तुम्हारे भोज में तुम्हें खाने-पीने को कुछ नहीं मिला। ये लो दो व्यंजन, एक मांसाहारी और एक शाकाहारी। क्या तुम थोड़ा खाकर अपना मन शांत नहीं करोगे?"
संज़ंग ने गहरी सोच में डूबकर कहा, "अगर मैं कुछ न बोलूं और कुछ न खाऊं, तो यह शैतान औरत मेरी जान ले लेगी। यह रानी से भी बदतर है, जो कम से कम इंसान तो

थी और तमीज़ जानती थी। मैं क्या करूं? मेरे शिष्य नहीं जानते कि मैं यहां कैदी हूं। अगर मैं उसे मुझे मारने दूं, तो मैं अपना जीवन व्यर्थ ही बर्बाद कर दूंगा।" उसने बहुत सोचा, पर उसे कोई दूसरा उपाय सूझा नहीं, इसलिए उसने खुद को संभाला और पूछा, "मांसाहारी व्यंजन क्या है और शाकाहारी व्यंजन क्या है?"

"मांसाहारी वाला तो मानव मांस से भरे हुए उबले हुए रोल हैं, और शाकाहारी वाला मीठी भराई से भरे हुए उबले हुए रोल हैं," उस राक्षसी ने उत्तर दिया।

"मुझे कुछ शाकाहारी व्यंजन चाहिए," संजांग ने कहा।

“नौकरानियों,” राक्षसी ने कहा, “गरमागरम चाय लाओ और अपने स्वामी को कुछ शाकाहारी रोटी दो।” तभी एक नौकरानी चाय की थाली लेकर आई और उसे तांग पुजारी के सामने रख दिया। राक्षसी ने एक शाकाहारी रोटी तोड़कर संज़ंग को दे दी, जिसने उसे एक पूरी मांसाहारी रोटी दे दी। “महाराज, आप इसे मेरे लिए क्यों नहीं खोल रहे?” राक्षसी ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूं, इसलिए मैं मांसाहारी भोजन को त्यागने की हिम्मत नहीं करूंगा," संजांग ने कहा।

"तो फिर," उस शैतान औरत ने कहा, "तुमने मदरहुड रिवर पर शादी का केक क्यों खाया, और अब तुम बीनपेस्ट खाने पर क्यों अड़े हो?"

इस पर संजांग ने उत्तर दिया,

"जब नदी में पानी अधिक होता है तो मैं बह जाता हूँ।"

जब मैं किसी चीज में फंस जाता हूँ तो मुझे अपनी गति धीमी करनी पड़ती है।"

अध्याय 55

बंदर, जो जाली पर बैठकर उनकी बातचीत की बढ़ती दोस्ताना प्रकृति को सुन सकता था, चिंतित होने लगा कि कहीं स्वामी का असली स्वभाव न प्रकट हो जाए। यह उसके लिए असहनीय था, इसलिए वह अपने असली रूप में लौट आया और "अच्छी तरह पेश आओ, दुष्ट जानवर!" चिल्लाते हुए अपनी लाठी लहराई। जब उस राक्षसी ने उसे देखा, तो उसने धुआं और प्रकाश उगला जिससे पूरा मंडप ढक गया और अपने साथियों को तांग पुजारी को अंदर बंद करने का आदेश दिया।

फिर उसने अपना इस्पात त्रिशूल उठाया और मंडप के दरवाजे से बाहर कूदते हुए

अपशब्दों से चिल्लाई, "बदमाश बंदर! मेरी घर में घुसकर मुझे गंदी निगाहों से देखने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! यहीं रुक जाओ और यह लो!" महान ऋषि ने उसके त्रिशूल के वार को रोका और पीछे हटते हुए पूरी ताकत से लड़ते रहे।

जब वे गुफा के बाहर पहुँचे जहाँ सुअर और साधु रेत इंतज़ार कर रहे थे, तो भयंकर युद्ध का दृश्य देखकर सुअर इतना भयभीत हो गया कि वह सफेद घोड़े को साधु रेत के पास ले गया और बोला, "घोड़े और सामान का ध्यान रखना। मैं भी इसमें शामिल हो रहा हूँ।" फिर उस मूर्ख ने अपने दोनों हाथों से अपना रेक उठाया और चिल्लाते हुए आगे बढ़ा, "भाई, पीछे हट जाओ, मैं इस दुष्ट जानवर को मार डालता हूँ।" सुअर को आते देख उस शैतान औरत ने एक अलग तरह का जादू किया और अपनी नाक से आग और मुँह से धुआँ उगला। वह झटके से हिली और अपने त्रिशूल को लहराते और नाचते हुए सुअर पर टूट पड़ी। भगवान ही जाने उसके कितने हाथ थे, क्योंकि वह कलाबाज़ी करते हुए उनकी ओर बढ़ी और भयंकर प्रहार करने लगी। बंदर और सुअर दोनों एक-दूसरे से भिड़ गए।

"सन वुकॉन्ग," उस राक्षसी ने कहा, "तुम्हें पता नहीं कि सिर नीचे कब रखना चाहिए। मैं तुम्हें जानती हूँ, लेकिन तुम मुझे पहचान नहीं पाते। यहाँ तक कि तुम्हारे वज्र मठ के तथागत बुद्ध भी मुझसे डरते हैं। तुम दोनों छोटे दुष्ट कहाँ जाओगे? इधर आओ, सब लोग, और देखो मैं तुम सबको कैसे हराती हूँ।" यह एक ज़बरदस्त लड़ाई थी।

उस शैतान औरत की शक्ति अद्भुत थी।

जैसे-जैसे बंदर राजा का क्रोध बढ़ता गया।

फिर मार्शल तियान पेंग भी लड़ाई में शामिल हो गए।

वह बेतहाशा अपने रेक को लहराते हुए दिखावा कर रहा था।

उनमें से एक त्रिशूल की बहुमुखी प्रतिभा की धनी स्वामिनी थी।

खुद को धुएं और रोशनी से घेरते हुए;

अन्य दो अधीर थे और उनके हथियार शक्तिशाली थे।

उन्होंने धुंध के कई बादल उठा दिए।

वह शैतान कुतिया साथी पाने के लिए संघर्ष कर रही थी।

लेकिन भिक्षु कभी भी अपना प्राणदायी वीर्य नहीं खोएगा।

दो असंतुलित नर और मादा आपस में भिड़ गए।

इस भीषण संघर्ष में प्रत्येक ने वीरता का परिचय दिया।

नर पक्षी पूर्ण शांति के प्रति अपने प्रेम के कारण सतर्क था।
इससे उनके बीच शांति असंभव हो गई।
जैसे त्रिशूल ने लाठी और रेक से वर्चस्व के लिए लड़ाई लड़ी।
लाठी बहुत शक्तिशाली थी।
रेक और भी मजबूत है,
लेकिन उस शैतान औरत का त्रिशूल उन दोनों के लिए काफी था।
डेडली फो माउंटेन पर कोई भी हार मानने को तैयार नहीं था;
पीपा गुफा के बाहर किसी पर दया नहीं दिखाई गई।
एक व्यक्ति तांग पुजारी को पति के रूप में पाकर प्रसन्न था;
बाकी दो लोग उसके साथ धर्मग्रंथों को इकट्ठा करने जा रहे थे।
इस युद्ध से आकाश और पृथ्वी में दहशत फैल गई।
जिससे सूर्य और चंद्रमा अंधकारमय हो गए और सभी तारे विस्थापित हो गए।
जब तीनों के बीच काफी देर तक लड़ाई चलती रही और कोई भी विजयी नहीं हुआ, तब राक्षसी ने खुद को झटककर अपनी पूंछ के डंक से महान ऋषि के सिर पर वार किया। बंदर असहनीय दर्द से चीख उठा और हारकर भाग गया। स्थिति बिगड़ती देख सुअर भी अपना फावड़ा घसीटते हुए पीछे हट गया। विजयी राक्षसी ने अपना इस्पात त्रिशूल रख दिया।
बंदर ने अपने हाथों से अपना सिर पकड़ रखा था और दर्द से उसका चेहरा सिकुड़ा हुआ था, वह चिल्ला रहा था, "यह भयानक है, यह भयानक है।"
"भाई," सुअर ने उसके पास जाकर कहा, "जब तुम इतनी अच्छी तरह से लड़ रहे थे, तब दर्द से कराहते हुए क्यों भाग गए?"
"बहुत तकलीफ हो रही है, बहुत तकलीफ हो रही है," भाई बंदर ने अपना सिर पकड़े हुए कराहते हुए कहा।
"क्या तुम्हें माइग्रेन का दौरा पड़ रहा है?" पिग ने पूछा।
"नहीं, नहीं," बंदर दर्द से कराहते हुए उछलने लगा।
"लेकिन मैंने तुम्हें घायल होते नहीं देखा," पिग ने कहा, "तो तुम्हारे सिर में दर्द कैसे हो

सकता है?"
"यह असहनीय है," बंदर कराह उठा। "जैसे ही उसने देखा कि मैं उसके त्रिशूल को हराने लगा हूँ, उसने खुद को संभाला और मेरे सिर पर वार कर दिया। मुझे नहीं पता उसने किस हथियार का इस्तेमाल किया, लेकिन इससे मेरे सिर में इतना असहनीय दर्द हुआ कि मुझे हारकर भागना पड़ा।"
"शांत जगहों पर तुम हमेशा शेखी बघारते हो कि तुम्हारा दिमाग भट्टी में तपाकर सख्त किया गया है," सुअर ने हंसते हुए कहा, "तो फिर यह बात तुम्हारे लिए इतनी बड़ी क्यों थी?"
अध्याय 55
766
पश्चिम की यात्रा
“हाँ,” बंदर ने उत्तर दिया, “अपना दिमाग शुद्ध करने के बाद मैंने जादुई आड़ू, अमर शराब और भगवान लाओ ज़ी की सुनहरी औषधि चुरा ली। जब मैंने स्वर्ग में उत्पात मचाया, तो जेड सम्राट ने बलवान दानव राजा और अट्ठाईस नक्षत्रों को मुझे सप्तर्षि और वृषभ महल में ले जाकर मेरा सिर कलम करने का आदेश दिया। देवताओं ने मुझ पर अपनी कटारें, कुल्हाड़ियाँ, हथौड़े और तलवारें चलाईं, मुझ पर वज्रपात किया और मुझे आग से जला दिया।”
फिर लाओ ज़ी ने मुझे अपनी अष्टकोणीय भट्टी में डाला और उनतालीस दिनों तक मेरा शोधन किया। इससे मुझे ज़रा भी नुकसान नहीं हुआ। भगवान ही जाने उस औरत ने कौन सा हथियार इस्तेमाल किया जिससे मेरे सिर में इतना दर्द हो रहा है।
"अपने हाथ नीचे करो और मुझे देखने दो," फ्रायर सैंड ने कहा। "क्या इसे काटकर खोला गया है?"
"नहीं, नहीं," बंदर ने कहा।
"मुझे बेहतर होगा कि मैं पश्चिमी लियांग वापस जाऊं और तुम्हारे लिए कुछ मरहम ले आऊं," पिग ने कहा।
"इसमें कोई कट या सूजन नहीं है; मुझे मरहम की जरूरत नहीं है," बंदर ने कहा।
"भाई," सुअर हंसते हुए बोला, "मैं गर्भावस्था के दौरान या बच्चे को खोने के बाद बिल्कुल भी बीमार नहीं थी, लेकिन तुम्हारे माथे पर फोड़ा हो गया है।"
"भाई, उसे चिढ़ाना बंद करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "देर हो रही है, हमारे बड़े भाई के

सिर में चोट लगी है, और हमें नहीं पता कि गुरुजी जीवित हैं या मर गए। हम आखिर क्या करेंगे?"

“मालिक ठीक हैं,” बंदर भाई कराहते हुए बोला। “मैं मधुमक्खी बनकर अंदर आया और देखा कि वह औरत फूलों के मंडप में बैठी है। थोड़ी देर में दो नौकरानियाँ भाप में पके हुए रोल की दो थालियाँ लेकर आईं, एक में इंसान के मांस की भराई थी और दूसरे में मीठी बीन्स के पेस्ट की भराई। उसने दो और नौकरानियों को मालिक को बाहर लाने के लिए भेजा ताकि वह कुछ खाकर अपना तनाव कम कर सकें। वह मालिक की सहेली बनने की बात कर रही थी। पहले तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और न ही कोई रोल खाया, लेकिन वह उन्हें इतनी मीठी बातें सुना रही थी कि उन्होंने शाकाहारी रोल खाने को कहा।”

पता नहीं क्यों। उस औरत ने एक केक तोड़कर उसे दिया, और उसने उसे एक साबुत मांस का केक थमा दिया। उसने पूछा, 'तुम इसे मेरे लिए क्यों नहीं खोल रहे?' तो उसने कहा, 'मैं धार्मिक व्यक्ति हूँ, इसलिए मांस तोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकता।' तब उसने कहा, 'तो फिर तुमने मातृत्व नदी पर शादी का केक क्यों खाया था, और अब मीठी चीज़ें क्यों खा रहे हो?' गुरु को उसकी बात समझ नहीं आई, और उसने जवाब दिया, 'जब नदी उफान पर होती है तो मैं बह जाता हूँ; जब दलदल में फंस जाती है तो मुझे धीमा होना पड़ता है।' जाली से यह सब सुनकर मुझे चिंता हुई कि गुरु अपना आपा खो बैठेगा, इसलिए मैं वापस अपने असली रूप में आ गया और अपनी लाठी से उस पर वार किया। उसने भी जादू का इस्तेमाल किया, बादल छोड़े, उन्हें गुरु को दूर करने का आदेश दिया, और अपने त्रिशूल से मुझे गुफा से बाहर निकाल दिया।

फ्रायर सैंड ने अपनी उंगली काटते हुए कहा, "वह नीच कुतिया किसी न किसी स्तर पर हमारा पीछा जरूर करती होगी, उसे तो सब कुछ पता है।"

"तुम्हारी बातों से तो यही लगता है," सुअर ने कहा, "हमें आराम नहीं करना चाहिए। शाम से लेकर आधी रात तक हमें लगातार वापस जाकर उसे लड़ाई के लिए चुनौती देनी होगी। हमें इतना शोर मचाना होगा कि वह सो न सके या हमारे मालिक से अलग न हो सके।"

"मैं वापस नहीं जा सकता," बंदर ने कहा। "मेरे सिर में बहुत तेज दर्द हो रहा है।"

“हम उसे युद्ध के लिए चुनौती नहीं दे सकते,” साधु सैंड ने कहा। “हमारे बड़े भाई का सिर दुख रहा है और हमारे गुरु सच्चे साधु हैं। वे कामुकता के भ्रम को अपने स्वभाव

को विचलित नहीं करने देंगे। चलो सुबह पहाड़ की ढलान पर किसी सुरक्षित जगह पर बैठकर समय बिताते हैं। फिर हम अपनी ऊर्जा जुटा सकते हैं और सुबह किसी और विषय पर विचार कर सकते हैं।" तीनों शिष्य भाइयों ने सफेद घोड़े को बांधा और सामान की रखवाली करते हुए पहाड़ की ढलान पर रात बिताई।

अध्याय 55

767

पश्चिम की यात्रा

फिर उस शैतान औरत ने हत्या का विचार त्याग दिया और फिर से एक मील का जूता पहनते हुए बोली, "बच्चों, आगे और पीछे के दरवाज़े कसकर बंद कर दो।" फिर उसने बंदर पर नज़र रखने के लिए दो जासूसों को भेजा और उन्हें आदेश दिया कि जैसे ही दरवाज़े पर कोई आवाज़ सुनाई दे, तुरंत सूचना दें। "नौकरानियों," उसने आदेश दिया, "शयनकक्ष को साफ करो और तैयार करो। मोमबत्तियाँ लाओ, अगरबत्ती जलाओ और तांग सम्राट के भाई को अंदर बुलाओ। मैं उसके साथ प्रेम करने जा रही हूँ।"

इसके बाद तांग पुजारी को पीछे से बाहर निकाला गया, जबकि बेहद मोहक दिखने वाली उस राक्षसी ने उसका हाथ पकड़कर कहा, "जैसा कि कहावत है, आनंद सोने से भी ज्यादा कीमती है। हम दोनों पति-पत्नी के रूप में खूब मजे करेंगे।"

आदरणीय बुजुर्ग ने अपने दांत भींच लिए और एक शब्द भी नहीं बोला। वह उसके साथ जाना पसंद नहीं करते, लेकिन उन्हें डर था कि वह उन्हें मार डालेगी, इसलिए भयभीत और कांपते हुए वे उसके साथ दुल्हन के कमरे में चले गए, मानो वे सुन्न और मूक हो गए हों। उन्होंने अपना सिर ऊपर नहीं उठाया, न ही ऊपर देखा, कमरे में बिस्तर और पर्दे तो दूर की बात थी, और न ही उन्होंने जटिल नक्काशीदार फर्नीचर या उसके केशविन्यास और वस्त्रों को देखा। जब उसने अपनी इच्छा व्यक्त की तो वे बहरे और उदासीन थे। वे वास्तव में एक उत्तम भिक्षु थे: उनकी आँखों को कोई बुरी सुंदरता नहीं दिखाई दी।

उसके कानों ने कामुक शब्दों को नहीं सुना।

उसके लिए रेशमी वस्त्र और सुंदर चेहरा गोबर के समान था।

सोना, गहने और सुंदरता, लेकिन इतनी गंदगी।

उनके जीवन का प्रेम चिंतन था;

उन्होंने बुद्ध की भूमि से कभी एक कदम भी नहीं रखा।

उन्हें महिलाओं के आकर्षण की परवाह नहीं थी।
वह केवल अपने वास्तविक स्वभाव को पोषित करना जानता है।
वह शैतान औरत
जीवन से भरपूर था
और असीम इच्छा।
आदरणीय भिक्षु
लगभग मृत प्रतीत हो रहा था।
उनका मन एकाग्रचित्त था।
एक नरम जेड रंग का था और उसमें गर्म सुगंध थी;
दूसरा भाग सूखी राख और मुरझाई हुई लकड़ी का था।
एक ने दुल्हन की चादरें बिछा दीं,
अध्याय 55
768
पश्चिम की यात्रा
कामुकता से परिपूर्ण;
दूसरे ने अपनी कमीज को और कसकर बांध लिया।
उनका हृदय सदा सच्चा था।
एक की दिली तमन्ना थी कि वह अपने स्तनों को उससे सटा ले और उनके अंगों को आनंदमय मिलन में एक दूसरे से लिपटा ले;
दूसरा व्यक्ति केवल दीवार की ओर मुंह करके बैठना चाहता था।
भिक्षु बोधिधर्म की तरह।
उस शैतान औरत ने अपने कपड़े उतार दिए।
अपनी कोमल त्वचा और सुगंधित शरीर का प्रदर्शन करते हुए;
तांग पुजारी ने अपने वस्त्रों को समेटा।
उसकी त्वचा और मांस की खुरदरी सतह को ढकते हुए।
उस शैतान औरत ने कहा,
"मेरे तकिए पर और मेरी चादर के नीचे जगह है:
बिस्तर पर क्यों नहीं आते?
तांग पुजारी ने उत्तर दिया,

"मेरा सिर मुंडा हुआ है और मैंने भिक्षुओं के वस्त्र पहने हैं।"
मैं शायद आपके साथ शामिल न होऊं।
उसने कहा, "मैं कहानी में लियू कुइकुई की भूमिका निभाना चाहूंगी।"
उन्होंने उत्तर दिया, "लेकिन मैं चांदनी रात के भिक्षु जैसा नहीं हूँ।"
उस शैतान औरत ने कहा, "मैं शी शी से भी ज्यादा सुंदर हूँ।"
भिक्षु ने उत्तर दिया, "उए के राजा को उसी के कारण दफनाया गया था, जिसके लिए उन्हें बहुत समय लगा था।"
"क्या तुम्हें वो पंक्तियाँ याद हैं?" उस शैतान औरत ने पूछा।
मैं मरने और फूलों के नीचे दफन होने को तैयार हूँ;
क्या मैं भूत बनकर भी जी सकूंगा और प्रेम कर सकूंगा?'"
इस पर तांग पुजारी ने उत्तर दिया,
"मेरी सच्ची मर्दानगी ही मेरा सबसे बड़ा खजाना है।"
अध्याय 55
769
पश्चिम की यात्रा
मैं इसे तुम्हारे जैसे हड्डियों के ढांचे को आसानी से नहीं दे सकता था।"
दोनों के बीच देर रात तक तीखी बहस चलती रही, और तांग पुजारी का संकल्प अडिग रहा। वह स्त्री उसके कपड़े खींचती रही, उसे छोड़ने को तैयार नहीं थी, जबकि पुजारी भी डटकर उसका विरोध करता रहा। संघर्ष आधी रात तक चलता रहा, जब अंत में उस स्त्री का सब्र टूट गया और उसने पुकारा, "रस्सी लाओ, बच्चों।" उसने अपने प्रिय को कुत्ते की तरह बांधकर बरामदे में घसीटकर ले आई। फिर चांदी के दीपक बुझा दिए गए और सब लोग सोने चले गए।
देखते ही देखते मुर्गों ने तीन बार बांग दे दी। पहाड़ की ढलान पर, महान ज्ञानी बंदर आगे झुककर बोला, "मेरे इस सिर में कुछ देर से दर्द हो रहा था, लेकिन अब न तो दर्द है और न ही सुन्नपन। बस थोड़ी खुजली हो रही है।"
"अगर खुजली हो रही है तो क्यों न उसे तुम्हारे लिए फिर से चुभोने दो?" सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा।
"हमें उसे उसे छोड़ने के लिए मजबूर करना होगा," बंदर ने थूकते हुए कहा।
"उसे जाने दो, उसे जाने दो," सुअर ने उपहास करते हुए कहा। "मुझे यकीन है कि

हमारे मालिक ने पिछली रात मजे किए होंगे।"
"तुम दोनों बहस करना बंद करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "अब उजाला हो गया है। हमें उस राक्षस को जितनी जल्दी हो सके पकड़ना होगा।"
बंदर ने कहा, "भाई, तुम यहीं रहो और घोड़े की देखभाल करो। हिलना मत। सूअर, मेरे साथ आओ।"
उस मूर्ख ने खुद को संभाला, अपनी काली सूती कमीज़ की बेल्ट कसी और मंकी के साथ गाड़ी की छत पर कूद गया और दोनों हाथ में हथियार लिए पत्थर की दीवार के नीचे पहुँच गए। "तुम यहीं खड़े रहो,"
बंदर ने कहा, "मुझे डर है कि उस दुष्ट स्त्री ने रात में स्वामी को नुकसान पहुँचाया होगा, इसलिए रुको, मैं अंदर जाकर पता लगाता हूँ। अगर उसने स्वामी को बहकाकर उनकी मूल मर्दानगी छीन ली और उनके सतीत्व को नष्ट कर दिया, तो हम सब अलग हो जाएँगे। लेकिन अगर उन्होंने अपना हौसला बनाए रखा और उनका ध्यान अविचलित रहा, तो हमें उस दुष्ट स्त्री को मारकर स्वामी को बचाने तक यहीं रुकना होगा। उसके बाद हम पश्चिम की ओर चलेंगे।"
"बेवकूफ!" सुअर ने कहा। "कहावत है, क्या सूखी मछली बिल्ली का तकिया हो सकती है? अगर वह सफल नहीं भी हुई, तो भी उसने उसे पकड़ने की अच्छी कोशिश तो की होगी।"
"ऐसी बकवास करना बंद करो," बंदर ने कहा। "मैं जाकर देखता हूँ।"
महान संत ने सुअर से विदा ली और चट्टानी घेरे के चारों ओर चक्कर लगाया। फिर उन्होंने खुद को झटककर मधुमक्खी का रूप धारण किया और अंदर उड़ गए, जहाँ उन्होंने दो सेविकाओं को अपने पहरेदारों के खड़खड़ाहट और घंटों पर सिर रखकर गहरी नींद में सोते देखा। जब वे पुष्प मंडप पहुँचे तो उन्होंने पाया कि राक्षस अभी भी सो रहे थे, आधी रात तक जागने के बाद थक चुके थे और उन्हें भोर का पता ही नहीं था। फिर बंदर गुफा के पिछले हिस्से में उड़ गया, जहाँ उसे संज़ंग की आवाज़ आधी सुनाई दी। उसने ऊपर देखा तो गुरु को बरामदे के नीचे हाथ-पैर रस्सियों से बंधे देखा। संज़ंग के सिर पर हल्के से उतरते हुए उसने कहा, "गुरुजी।"
उसकी आवाज पहचानकर संजांग ने कहा, "क्या तुम हो, वुकॉन्ग? मुझे बचाओ!"
"क्या तुमने कल रात खूब मज़ा किया?" बंदर ने पूछा।
"मैं पहले मर जाता," संजांग ने दांत भींचते हुए जवाब दिया।

"कल तो मुझे ऐसा लगा कि वह तुमसे प्यार करती है," मंकी ने आगे कहा, "तो फिर वह तुम्हें इस तरह क्यों परेशान कर रही है?"
"उसने आधी रात तक मुझे परेशान किया, लेकिन मैंने अपने कपड़े नहीं उतारे और न ही बिस्तर को छुआ।" संजांग ने जवाब दिया।
जब उसने देखा कि मैं उसकी बात नहीं मानूंगी, तो उसने मुझे बांधकर यहीं छोड़ दिया। चाहे कुछ भी हो जाए, तुम्हें मुझे बचाना होगा ताकि मैं जाकर शास्त्र ला सकूं।" अब तक उनकी बातचीत से वह दुष्ट स्त्री जाग उठी थी। हालांकि वह बेहद क्रूर थी, फिर भी वह संजांग को खोना बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।
जैसे ही वह उठी और बैठी, उसने उसे "शास्त्र लाओ" कहते हुए सुना, वह सीधे बिस्तर से लुढ़क गई और चीखते हुए बोली, "मेरे पति होने के बजाय तुम शास्त्र क्यों लाना चाहते हो?"
इससे बंदर घबरा गया, उसने अपने मालिक को छोड़ दिया, अपने पंख फैलाए, उड़ गया, फिर वापस अपने असली रूप में आ गया और सूअर को पुकारने लगा। मूर्ख पत्थर की दीवार के पीछे से आया और पूछा, "तो क्या हुआ?"
“नहीं,” बंदर हँसते हुए बोला, “ऐसा नहीं हुआ। वह उसे बार-बार सहला रही थी, लेकिन वह उसकी बात नहीं मान रहा था, इसलिए उसे गुस्सा आ गया और उसने उसे बाँध दिया। जब वह मुझे सब कुछ बता ही रहा था कि क्या हुआ, तभी वह शैतान जाग गया और मुझे घबराकर भागना पड़ा।”
"मालिक ने क्या कहा?" सुअर ने पूछा।
"उसने मुझे बताया कि उसने कभी अपने कपड़े नहीं उतारे," बंदर ने जवाब दिया, "और उसने कभी बिस्तर को छुआ भी नहीं।"
"यह तो बहुत बढ़िया है," सुअर ने कहा। "वह सचमुच एक साधु है। चलो चलते हैं और उसे बचाते हैं।"
वह मूर्ख इतना असभ्य था कि बहस करने की जहमत ही नहीं उठाई: उसने अपना फावड़ा उठाया और पूरी ताकत से दरवाजों पर मारा, जिससे वे चकनाचूर हो गए। इससे चौकीदारों के ताली और घंटियों पर सिर रखकर सो रही नौकरानियाँ इतनी

भयभीत हो गईं कि वे चिल्लाते हुए अंदर के दरवाजों की ओर भागीं।
"दरवाजा खोलो! कल रात यहाँ आए दो बदसूरत आदमियों ने सामने के दरवाजे तोड़ दिए हैं।"
वह शैतान औरत अभी अपने कमरे से बाहर ही आ रही थी कि तभी चार-पांच नौकरानियां दौड़कर अंदर आईं और खबर देने लगीं।
"मैडम, कल यहाँ आए हुए वे दो बदसूरत आदमी वापस आ गए हैं और उन्होंने सामने के दरवाजे तोड़ दिए हैं।"
यह सुनकर उस राक्षसी ने आदेश दिया, "बच्चों, मेरे लिए तुरंत पानी उबालो ताकि मैं अपने बाल धो और संवार सकूँ।"
फिर उसने उनसे कहा, "सम्राट के भाई को रस्सी से बांधकर ही ले जाओ और उसे पीछे वाले कमरे में बंद कर दो। मैं उनसे लड़ने जा रही हूँ।"
वह भयानक राक्षसी त्रिशूल लहराते हुए और अपशब्दों से चिल्लाते हुए बाहर निकली, "दुष्ट बंदरिया! गंदा सुअर!"
अज्ञानी दरिंदे! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे दरवाजे पर दस्तक देने की!
"गंदी वेश्या," सुअर ने पलटवार करते हुए कहा, "तुम हमारे मालिक को बांधती हो और फिर इस तरह अकड़ दिखाने की हिम्मत करती हो। तुमने हमारे मालिक को बहला-फुसलाकर अपना पति बनाने की कोशिश की। उसे अभी वापस कर दो और हम तुम्हारी जान बख्श देंगे। अगर तुमने ज़रा सा भी 'ना' कहा तो मेरा यह लंपट तुम्हारा पूरा पहाड़ चूर-चूर कर देगा।"
राक्षसी ने और बहस की गुंजाइश नहीं छोड़ी, बल्कि अपनी आत्माओं को बुलाकर पहले जैसी ही जादूई शक्ति से धुआं और आग उगलते हुए अपने इस्पात के त्रिशूल से सुअर पर वार किया। वार से बचने के लिए सुअर एक तरफ हट गया और उसने अपने रेक से पलटवार किया। जब बंदर अपने गदा से उसकी मदद करने के लिए आया, तो राक्षसी ने और जादू का इस्तेमाल करके अपने लिए अनगिनत हाथ बना लिए, जिनसे वह उनके हथियारों को दाएं-बाएं रोकती रही। चार-पांच दौर की लड़ाई के बाद, उस रहस्यमयी हथियार ने सुअर के होंठ पर वार किया, जिससे वह जान बचाकर भागने लगा। वह अपना रेक घसीटता हुआ मुंह पर हाथ रख बैठा। बंदर, जो उससे काफी डरा हुआ था, उसने भी अपने गदा से वार करने का नाटक किया और हार मानकर भाग गया। राक्षसी विजयी होकर अपनी गुफा में लौट गई और अपने साथियों को पत्थरों से

एक अस्थायी बाहरी दीवार बनाने का आदेश दिया।
अध्याय 55
771
पश्चिम की यात्रा
जब साधु सैंड घोड़े को चरा रहे थे, तब उन्होंने सूअर की कराहने की आवाज़ सुनी और ऊपर देखा तो सूअर अपना हाथ चेहरे पर रखे कराहता हुआ उनकी ओर आ रहा था।
"क्या हुआ?" साधु सैंड ने पूछा।
"यह बहुत भयानक है, बहुत भयानक," उस मूर्ख ने कराहते हुए कहा, "दर्द, दर्द।"
वह अभी शिकायत ही कर रहा था कि तभी मंकी भी वहाँ आ गया और मुस्कुराते हुए बोला, "बेवकूफ! कल तुमने मेरे माथे पर फोड़ा होने की कामना की थी, और आज तुम्हारे होंठ पर फोड़ा हो गया है।"
"मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता," पिग कराहते हुए बोला, "यह असहनीय पीड़ा है, यह असहनीय कष्ट है।"
जब तीनों को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, तभी एक बूढ़ी औरत हरे बांस की टोकरी में दक्षिण की पहाड़ियों से जंगली सब्जियां लेकर आई। "भाई," साधु सैंड ने बंदर से कहा, "वह औरत इधर आ रही है। मैं उससे पूछूंगा कि यह दुष्ट आत्मा कौन है और उसके पास ऐसा कौन सा हथियार है जिससे इतने भयानक घाव होते हैं।"
"तुम यहीं रुको, मैं जाकर उससे पूछता हूँ," बंदर ने कहा, और एक नज़र डालते ही उसने देखा कि बूढ़ी औरत के सिर के ठीक ऊपर शुभ बादलों का एक घेरा था, और उसके चारों ओर सुगंधित धुंध छाई हुई थी।
बंदर ने पहचानते ही पुकारा, "भाइयों, आओ और प्रणाम करो। यह महिला बोधिसत्व हैं।" यह सुनकर वे इतने आश्चर्यचकित हुए कि सुअर ने दर्द के बावजूद प्रणाम किया, साधु सैंड ने घोड़े को पकड़े हुए सिर झुकाया, और बंदर घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "मैं दुखों से मुक्ति दिलाने वाली दयालु और करुणामयी बोधिसत्व गुआनयिन को प्रणाम करता हूँ।"
जब बोधिसत्व ने देखा कि उन्होंने उसे पहचान लिया है, तो वह अपने शुभ बादल पर सवार होकर आकाश में विलीन हो गईं और मछली की टोकरी लिए हुए अपने वास्तविक रूप में प्रकट हुईं। उनके साथ आकाश में जाते हुए, बंदर ने प्रणाम किया और कहा, "बोधिसत्व, कृपया अपने शिष्य को क्षमा करें कि हम आपसे मिलने नहीं

आ सके। गुरु को बचाने में हम इतने व्यस्त थे कि हमें पता ही नहीं चला कि आप हमसे मिलने आई हैं। अब हम एक ऐसे राक्षस का सामना कर रहे हैं जिसे हम हरा नहीं सकते, और हम आपसे, बोधिसत्व, हमारी सहायता करने की विनती करते हैं।"

“वह सचमुच एक भयानक राक्षस है,” बोधिसत्व ने उत्तर दिया। “उसका त्रिशूल वास्तव में उसके जन्मजात दो पंजे हैं, और उसके पूंछ में मौजूद ‘घोड़ा-नाशक विष’ नामक डंक से इतने दर्दनाक घाव होते हैं। वह मूल रूप से एक बिच्छू की आत्मा थी जो गर्जन मठ में बुद्ध के प्रवचन सुनती थी। जब तथागत बुद्ध ने उसे देखा और गलती से उसे हाथ से दूर धकेलने की कोशिश की, तो उसने अपनी पूंछ से उनके बाएं अंगूठे पर डंक मार दिया। दर्द से कराहते हुए बुद्ध ने एक वज्रपाणि को उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया और वह अब यहां है। आपको किसी और से मदद मांगनी होगी क्योंकि मुझे भी उससे दूरी बनाए रखनी है।”

बंदर ने फिर से प्रणाम किया और कहा, "मैं बोधिसत्व से आगे के निर्देशों की विनती करता हूँ। कृपया अपने शिष्य को बताएँ कि मुझे सहायता के लिए किससे मिलना चाहिए।"

"स्वर्ग के पूर्वी द्वार के भीतर स्थित प्रकाश के महल में जाओ और प्लीएड्स के तारा अधिकारी को खोजो। वही उसे वश में कर पाएगा।" इतना कहकर वह सुनहरी रोशनी की किरण में बदल गई और सीधे दक्षिणी महासागर की ओर लौट गई।

तब महान ऋषि बंदर ने अपना बादल नीचे उतारा और सुअर और साधु रेत से कहा, "चिंता मत करो, भाइयों।"

हमारे स्वामी को बचाने के लिए एक सितारा है।"

"कहाँ?" फ्रायर सैंड ने पूछा।

"बोधिसत्व ने अभी-अभी मुझे प्लीएड्स के तारा अधिकारी से मदद मांगने के लिए कहा है," बंदर ने कहा। "मैं चलता हूँ।"

"भाई," पिग कराहते हुए बोला, उसका हाथ अभी भी उसके मुंह पर था, "कृपया तारा देवता से इस दर्द को रोकने के लिए कुछ मरहम मांगो।"

अध्याय 55

बंदर हंसते हुए बोला, "तुम्हें किसी मरहम की ज़रूरत नहीं है। एक रात के दर्द के बाद

सब ठीक हो जाएगा, जैसे कल रात मेरा ठीक हो गया था।"
"ये सारी बातें बंद करो," फ्रायर सैंड ने कहा, "और जितनी जल्दी हो सके वहाँ पहुँचो।"
शानदार बंदर तुरंत अपने कलाबाज़ी करते बादल पर सवार होकर रवाना हुआ और पलक झपकते ही स्वर्ग के पूर्वी द्वार के बाहर पहुँच गया। स्वर्ग के राजा विरुधक अचानक प्रकट हुए और विनम्रतापूर्वक उनका अभिवादन करते हुए पूछा, "हे महान ऋषि, आप कहाँ जा रहे हैं?"
"मैं प्रकाश के महल में जाकर प्लीएड्स के तारा स्वामी से मिलना चाहता हूँ क्योंकि जिस तांग पुजारी को मैं शास्त्र लाने के लिए पश्चिम ले जा रहा हूँ, उसे एक शैतान परेशान कर रहा है," बंदर ने कहा। तभी चार सेनापति ताओ, झांग, शिन और डेंग प्रकट हुए और बंदर से पूछा कि वह कहाँ जा रहा है।
उन्होंने कहा, "मैं प्लीएड्स के स्टार ऑफिसर की तलाश कर रहा हूं ताकि वह एक राक्षस को वश में कर मेरे स्वामी को बचा सके।"
इस पर उन्होंने उत्तर दिया, "आज जेड सम्राट के आदेश पर तारा अधिकारी तारा-दर्शन टॉवर के निरीक्षण पर गए हैं।"
"क्या यह सच है?" बंदर ने पूछा।
"हम उसके साथ सप्तर्षि और बैल महल से निकले थे," स्वर्ग के भगवान शिन ने कहा, "और हम इसके बारे में झूठ बोलने की हिम्मत नहीं करेंगे।"
"वह बहुत समय से अनुपस्थित हैं," स्वर्गिक भगवान ताओ ने कहा, "इसलिए हो सकता है कि वह अब तक लौट आए हों। महान ऋषि, आपके लिए सबसे अच्छा होगा कि आप पहले प्रकाश महल जाएँ, और यदि वह वापस नहीं आए हैं, तो तारा-दर्शन टॉवर की ओर बढ़ें।"
इससे महान ऋषि प्रसन्न हुए और उनसे विदा लेकर प्रकाश महल के द्वार की ओर चल दिए। जब उन्होंने देखा कि तारा अधिकारी वास्तव में वहाँ नहीं है, तो वे जाने ही वाले थे कि उन्होंने बाहर सैनिकों का एक दल देखा। उनके पीछे तारा स्वामी अपने सुनहरे धागे से सिले दरबारी वस्त्रों में लौट रहे थे। उनका रूप-रंग कुछ इस प्रकार था:
उनकी टोपी में लगे फाइव पीक पिन सोने की तरह चमक रहे थे;
उसके हाथ में जो पर्वत और नदी की पट्टिका थी, वह उत्तम गुणवत्ता वाले जेड पत्थर की बनी थी।
बादलों और कोहरे के बीच सात तारे उसकी कमर से लटके हुए थे;

उनकी आठ ध्रुवों वाली कमरबंद पर जड़े जेड के छल्ले बेहद चमकदार थे।
उनके लटकते हुए वस्त्रों से एक लयबद्ध ध्वनि निकली;
तेज हवा के चलने से घंटियों जैसी आवाज आ रही थी।
प्लीएड्स का तारा अधिकारी अपने किंगफिशर पंखे को पकड़े हुए आया; जबकि दिव्य सुगंध के बादल हॉल में भर गए।
अध्याय 55
773
पश्चिम की यात्रा
जब अग्रिम पंक्ति के सैनिकों ने प्रकाश महल के बाहर बंदर को खड़ा देखा, तो वे जल्दी से वापस आकर सूचना देने लगे, "मेरे स्वामी, महान ऋषि सूर्य यहाँ आए हैं।" तारा अधिकारी ने अपने बादल हटाए और अपने दरबारी वस्त्रों को ठीक किया, फिर जब उनके पदचिह्न लिए हुए सेवक बाएँ और दाएँ हट गए, तो वे बंदर का विनम्रतापूर्वक अभिवादन करने के लिए आगे बढ़े और पूछा, "आप यहाँ क्यों आए हैं, महान ऋषि?"
"मैं विशेष रूप से आपको प्रणाम करने और अपने स्वामी को विपत्ति से बचाने की विनती करने आया हूँ," भाई बंदर ने उत्तर दिया।
"कौन सी आपदा, और कहाँ?" वरिष्ठ अधिकारी ने पूछा।
"वह पश्चिमी लियांग में स्थित डेडली फो माउंटेन पर पीपा गुफा में है," बंदर ने उत्तर दिया।
"गुफा में ऐसा कौन सा दुष्ट राक्षस है कि आपको मुझे बुलाने के लिए किसी को भेजना पड़ा?" स्टार ऑफिसर ने पूछा।
"बोधिसत्व गुआनयिन अभी-अभी हमारे सामने प्रकट हुईं," बंदर ने कहा, "और उन्होंने हमें बताया कि वह एक बिच्छू की आत्मा हैं।"
उन्होंने खास तौर पर आपका नाम लिया, महोदय, कि आप ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो उन्हें काबू में कर सकते हैं। इसीलिए मैं आपसे मदद मांगने यहां आई हूं।
“मैं जेड सम्राट को ज्ञापन देना पसंद करता,” तारा अधिकारी ने उत्तर दिया, “परन्तु आप यहाँ आ गए हैं, हे महान ऋषि, और बोधिसत्व द्वारा मेरी सिफ़ारिश करने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ, इसलिए मैं और समय बर्बाद नहीं करना चाहता। क्षमा करें, अगर मैं आपको चाय न पिलाऊँ: चलिए नीचे जाकर राक्षस को वश में करते हैं।

लौटने पर मैं महाराज को सूचना दे दूँगा।”
तब महान ऋषि तारा अधिकारी के साथ स्वर्ग के पूर्वी द्वार से होकर सीधे पश्चिमी लियांग लौट गए। पास ही घातक शत्रु पर्वत को देखकर, बंदर ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "यही वह पर्वत है।" तारा स्वामी ने अपना बादल नीचे उतारा और बंदर के साथ पत्थर की दीवार के सामने ढलान पर चले गए।
उन्हें देखकर साधु सैंड ने सुअर से कहा, "उठो भाई। भाई बंदर अपने विशेष अधिकारी के साथ वापस आ गया है।"
"मुझे क्षमा करें," उस मूर्ख ने अपने मुंह पर हाथ रखे हुए कहा, "मुझे क्षमा करें, लेकिन मैं इतना बीमार हूं कि आप सभी शिष्टाचारों का पालन नहीं कर सकता।"
"लेकिन तुम तो अपने आचरण को सुधारने वाले हो," तारामंडल के स्वामी ने कहा। "तुम बीमार कैसे हो सकते हो?"
"उस शैतान औरत ने मुझसे लड़ते समय मेरे होंठ पर घूंसा मारा था," पिग ने जवाब दिया, "और अभी भी दर्द होता है।"
"इधर आओ," तारामंडल के स्वामी ने कहा, "मैं तुम्हारा इलाज कर दूंगा।"
तभी उस मूर्ख ने दर्द से कराहते हुए अपने हाथ नीचे कर लिए, "कृपा करके, कृपया इसे ठीक कर दीजिए। ठीक होने पर मैं आपको अच्छा इनाम दूंगा।" तब तारा देवता ने उसके होंठ को छुआ और उस पर फूँक मारी, जिससे दर्द रुक गया। प्रसन्न होकर सुअर घुटनों के बल बैठ गया और तारा देवता को प्रणाम किया। "अद्भुत, अद्भुत," उसने कहा।
"क्या तुम मेरे सिर को भी छुओगे?" बंदर ने मुस्कुराते हुए पूछा।
"क्यों?" तारा स्वामी ने पूछा। "तुम्हें जहर का इंजेक्शन नहीं लगाया गया था।"
"कल था," बंदर ने कहा, "और कल रात के बाद ही दर्द कम हुआ। अभी भी सुन्नपन और खुजली है और मौसम खराब होने पर फिर से बढ़ सकती है, इसलिए मैं चाहता हूं कि आप इसका इलाज करें।" तब उस उच्च अधिकारी ने उसके सिर को भी छुआ और उस पर फूँक मारी, जिससे बचा हुआ ज़हर निकल गया और सुन्नपन और खुजली बंद हो गई।

क्रोधित सूअर ने कहा, "भाई, चलो उस दुष्ट प्राणी से लड़ते हैं।"
"जी हां," तारा स्वामी ने कहा, "तुम दोनों उसे बुलाओ ताकि मैं उसे उसकी औकात दिखा सकूं।"
बंदर और सुअर ढलान पर उछल पड़े और एक बार फिर पत्थर की दीवार के चारों ओर घूम गए। गालियाँ बकते हुए उस मूर्ख ने अपने हाथों को कुल्हाड़ी की तरह इस्तेमाल किया और अपने रेक से गुफा के मुँह के बाहर बनी पत्थर की दीवार को तोड़कर रास्ता बनाया। बाहरी दीवार तोड़कर उसने फिर से अपने रेक से वार किया और अंदर के दरवाजों को चूर-चूर कर दिया, जिससे उनके पीछे छिपे छोटे शैतानों को इतना झटका लगा कि वे अंदर भागकर बोले, "महोदया, उन दो भयंकर आदमियों ने अंदर के दरवाजे तोड़ दिए हैं।" शैतान औरत ने अभी-अभी तांग पुजारी को खोलकर उसके लिए शाकाहारी नाश्ता मंगवाया ही था कि उसे अंदर के दरवाजे टूटने की आवाज सुनाई दी। अपने फूलों के मंडप से कूदकर उसने अपने त्रिशूल से सुअर पर वार किया। सुअर ने अपने रेक से वार को रोका जबकि बंदर भी बगल से लड़ाई में शामिल हो गया। शैतान औरत उनके बिल्कुल पास गई और अपनी बुरी चाल चलने ही वाली थी कि वे दोनों, जो अब उसकी चाल समझ चुके थे, मुड़े और भाग गए।
जैसे ही वे दोनों चट्टान के चारों ओर पहुँचे, बंदर ने पुकारा, "आप कहाँ हैं, तारा स्वामी?" तारा स्वामी तुरंत पहाड़ की ढलान पर अपने मूल रूप में, दो कलगी वाले एक विशाल मुर्गे के रूप में खड़े हो गए। जब उन्होंने अपना सिर उठाया तो उनकी ऊँचाई छह या सात फीट थी, और जैसे ही उन्होंने बांग दी, राक्षस अपने असली रूप में लौट आया, एक पिपा मैंडोलिन के आकार की बिच्छू आत्मा के रूप में। जब तारा स्वामी ने फिर से बांग दी, तो राक्षस का पूरा शरीर मृत्यु में चूर-चूर हो गया। इस बात का प्रमाण एक कविता में मिलता है,
सुंदर कंघियों और लटकन वाले गले के हार के साथ,
कठोर पंजे, लंबे नुकीले पैर और क्रोधित आंखें,
वह पूर्ण शक्ति से परिपूर्ण होकर, गरिमापूर्ण ढंग से छलांग लगाता है।
वह तीन बार रोता है, और वह बेहद भव्य और प्रभावशाली है।
वह कोई साधारण पक्षी नहीं है जो झोपड़ी में बैठकर बांग देता है।
लेकिन आकाश से एक तारा अपनी पूरी महिमा के साथ नीचे उतरा।
व्यर्थ ही उस दुष्ट बिच्छू ने मानव रूप धारण कर लिया:

अब अपने असली रूप में प्रकट होकर वह अपनी कहानी समाप्त करती है।
सुअर आगे बढ़ा और राक्षस की पीठ पर एक पैर रखकर बोला, "दुष्ट जानवर, इस बार तुम अपने घोड़े मारने वाले जहर का इस्तेमाल नहीं कर पाओगे।" राक्षस टस से मस नहीं हुआ, जिसके बाद उस मूर्ख ने उसे अपने रेक से पीट-पीट कर चूर-चूर कर दिया। तारा स्वामी ने एक बार फिर अपने चारों ओर सुनहरी रोशनी समेटी और अपने बादल पर सवार होकर चला गया।
बंदर, सुअर और साधु सैंड तीनों ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपने हाथ जोड़कर स्वर्ग की ओर उठाए।
उन्होंने कहा, "हमने आपको बहुत परेशानी दी है। हम किसी और दिन आपके महल में आकर आपका धन्यवाद करेंगे।"
जब उन तीनों ने अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर ली, तो उन्होंने सामान और घोड़े को तैयार किया और गुफा में चले गए, जहाँ युवा और वृद्ध सेविकाएँ दोनों ओर घुटने टेककर कह रही थीं, "मेरे स्वामी, हम अध्याय 55"

ये बुरी आत्माएं नहीं हैं, बल्कि पश्चिमी लियांग की वे महिलाएं हैं जिन्हें बुरी आत्माएं अगवा कर ले गई थीं। आपके स्वामी पीछे सुगंधित कमरे में बैठे रो रहे हैं।
यह सुनकर बंदर ने चारों ओर बड़ी सावधानी से देखा, और यह देखकर कि अब कोई भी बुरी शक्तियाँ नहीं थीं, वह पीछे की ओर गया और "गुरुजी!" कहकर पुकारा। तांग पुजारी उन सभी को वहाँ देखकर बहुत प्रसन्न हुए।
“हे अच्छे शिष्यों,” उन्होंने कहा, “मैंने तुम्हें बहुत परेशानी में डाल दिया है। उस स्त्री का क्या हुआ?”
"वह दुष्ट स्त्री वास्तव में एक बिच्छू थी," पिग ने कहा। "सौभाग्य से बोधिसत्व गुआनयिन ने हमें बताया कि क्या करना है।"
भाई बंदर स्वर्ग के महलों में गया था ताकि वह प्लीएड्स के तारा स्वामी से नीचे आकर राक्षसी को हराने की विनती करे। मैंने उसे बुरी तरह हराया है। इसीलिए हम आपसे मिलने के लिए सीधे अंदर आने की हिम्मत कर पाए, स्वामी जी।
तांग पुजारी ने उनका तहे दिल से शुक्रिया अदा किया। फिर उन्होंने मांस रहित चावल और नूडल्स ढूंढे और अपने लिए भोजन तैयार किया। अगवा की गई सभी महिलाओं

को पहाड़ से नीचे उतारा गया और उन्हें घर का रास्ता दिखाया गया। इसके बाद उन्होंने एक मशाल जलाकर वहां की सभी इमारतों को जला दिया और फिर तांग पुजारी को उनके घोड़े पर बिठाकर पश्चिम की ओर मुख्य सड़क पर आगे बढ़ गईं। सचमुच: उन्होंने सांसारिक संबंधों से खुद को अलग कर लिया था।

इच्छाओं के प्रलोभनों से मुंह मोड़ना।

सोने के सागर को पीछे धकेलकर,

उनके मन और हृदय में उनकी जागरूकता का स्तर उच्च था।

अगर आपको नहीं पता कि उन्हें अपनी असली उपलब्धि हासिल करने में कितने साल लगे, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 56

आत्मा बेकाबू हो जाती है और डाकुओं का सफाया कर देती है

भ्रम का मार्ग बंदर जैसे मन को दूर भेज देता है

जैसा कि कविता में कहा गया है,

जिस हृदय में किसी भी प्रकार की चीज नहीं होती, उसे पवित्र कहा जाता है।

पूर्ण शांति में, बिना किसी विचार को जन्म दिए।

बंदर और घोड़े को बांधकर रखना चाहिए, उन्हें जंगली रूप से घूमने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए;

आत्मा को हमेशा सतर्क रहना चाहिए, यश की खोज नहीं करनी चाहिए।

तीन वाहनों के साथ जागें, छह डाकुओं का सफाया करें,

और तब सभी मनुष्यों के भाग्य स्पष्ट हो जाते हैं।

कामुकता की बुराई को मिटाओ और आनंद की ओर बढ़ो

पश्चिम में मिलने वाले स्वर्ग के सुख।

कहानी बताती है कि कैसे तांग सान्ज़ांग ने गोली को दांतों से काट लिया, अपने शरीर की पवित्रता बनाए रखने के लिए अपनी पूरी ताकत से संघर्ष किया और जब बंदर और अन्य लोगों ने बिच्छू आत्मा को मार डाला तो उन्हें पीपा गुफा से बचा लिया गया। उनकी यात्रा के अगले चरण के बारे में कुछ नहीं बताया गया है, और जल्द ही फिर से

गर्मी का मौसम आ गया। उन्होंने जो देखा वह जंगली ऑर्किड की सुगंध लिए हुए सुगंधित हवाएँ थीं।
बारिश के बाद आसमान साफ होने पर नए बांस ठंडे हो जाते हैं;
पहाड़ी पर आर्टेमिसिया तोड़ने के लिए कोई यात्री नहीं हैं।
और जलधाराओं में खिले हुए कैटेल के सुगंधित फूल।
मधुमक्खियाँ अनार की सुंदरता से मोहित हो जाती हैं।
जबकि सिसकिन पक्षी विलो के पेड़ों की छाया का आनंद लेते हैं।
राहगीर क्व युआन को पकौड़ी कैसे भेंट कर सकते हैं?
नदी में तैरती ड्रैगन नौकाओं को उनकी मृत्यु पर शोक मनाना चाहिए।
गुरु और शिष्य ड्रैगनबोट महोत्सव का दिन मनाए बिना ही ग्रीष्म ऋतु के आरंभिक दृश्यों का आनंद ले रहे थे, तभी उनके सामने एक ऊँचा पर्वत प्रकट हुआ और उनका मार्ग अवरुद्ध हो गया। संजांग ने अपने घोड़े की लगाम खींची और पीछे मुड़कर कहा, "सावधान रहो, वुकॉन्ग: मुझे चिंता है कि आगे उस पर्वत पर राक्षस हो सकते हैं।"
“चिंता मत करो, गुरुजी,” बंदर भाई ने कहा। “हम सब सच्चे विश्वासी हैं। मुझे राक्षसों से डर नहीं लगता।” इस उत्तर से आदरणीय बुजुर्ग बहुत प्रसन्न हुए, जिन्होंने
अपने शानदार घोड़े पर सवार होकर कोड़े खा रहा था,
उसने अजगर के घोड़े को उसका सिर दे दिया।
अध्याय 56
777
पश्चिम की यात्रा
कुछ ही देर में वे पहाड़ की एक चट्टान के ऊपर पहुँच गए, और जब उन्होंने चारों ओर देखने के लिए अपना सिर उठाया तो उन्हें यह दृश्य दिखाई दिया:
नीले आकाश को छूते सरू और चीड़ के पेड़,
चट्टानों पर उगने वाले हेज़ल के पेड़ों पर लताएँ चढ़ रही हैं।
एक लाख फीट की ऊंचाई पर,
एक हजार सीधी कटी हुई परतें।
एक लाख फीट ऊंचे ये शिखर बेहद ऊंचे हैं;
खाई के किनारों पर स्थित एक हजार खड़ी चट्टानों की परतें।
नम चट्टानों पर काई और लिवरवर्ट उग आते हैं।

टिड्डी और जुनिपर मिलकर एक विशाल वन बनाते हैं।
जंगल के भीतरी भाग में
पक्षियों की आवाजें सुनाई देती हैं, वे दिखाई नहीं देते।
वे अपनी सुरीली आवाज़ में गीत गाते हैं।
उस नाले का पानी हरे रंग की धारा की तरह बह रहा है;
रास्ते में गिरे हुए फूल सोने के ढेर की तरह लग रहे हैं।
पहाड़ की ढलान बहुत ऊंची है।
हालात मुश्किल हैं।
और शायद ही कोई कदम समतल जमीन पर हो।
लोमड़ियाँ और डेविड के हिरण जोड़े में आते हैं;
सफेद और काले रंग के गिब्बन जोड़े में अभिवादन करते हैं।
बाघ का कटोरा देखकर ही मन भयभीत हो जाता है;
सारस की पुकार आकाश में गूंजती है।
बेर और लाल खुबानी से भोजन प्राप्त होता है;
इन असंख्य जंगली फूलों को कोई नाम नहीं दिया जा सकता।
अध्याय 56
778
पश्चिम की यात्रा
काफी देर तक धीरे-धीरे पहाड़ चढ़ने के बाद चारों शिखर पर पहुँचे और पश्चिमी ढलानों पर उन्हें धूप से जगमगाता समतल मैदान दिखाई दिया। पिग ने खूब जोश दिखाया और फ्रायर सैंड को सामान उठाने को कहा, जबकि उसने अपने दोनों हाथों में फावड़ा उठाया और घोड़े को आगे बढ़ाने की कोशिश की। लेकिन घोड़ा उससे डरा नहीं और उसकी हर कोशिश के बावजूद उसी धीमी गति से चलता रहा।
"भाई, तुम घोड़े को तेज़ क्यों दौड़ाने की कोशिश कर रहे हो?" बंदर ने पूछा। "उसे अपनी गति से धीरे-धीरे चलने दो।"
"देर हो रही है," सुअर ने जवाब दिया, "और पहाड़ पर पूरा दिन बिताने के बाद मुझे भूख लग रही है। हमें जल्दी करनी चाहिए और किसी घर से खाना माँगने के लिए जगह ढूँढनी चाहिए।"
"तो फिर मैं इसे तेज़ दौड़ाता हूँ," बंदर ने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी लहराते हुए

और चिल्लाते हुए कहा, जिस पर घोड़े ने लगाम छोड़ दी और तीर की गति से ट्रैक पर सरपट दौड़ने लगा। क्या आपको आश्चर्य होता है कि घोड़ा बंदर से डरता था लेकिन सुअर से नहीं? इसका कारण यह था कि पाँच सौ साल पहले बंदर को दलुओ स्वर्ग में शाही अस्तबल में घोड़ों के रक्षक का पद दिया गया था; यह नाम आज तक चला आ रहा है, इसीलिए सभी घोड़े आज भी बंदरों से डरते हैं। आदरणीय बुज़ुर्ग लगाम नहीं संभाल पा रहे थे: उन्होंने बस काठी को कसकर पकड़ रखा था और घोड़े को अपनी मर्ज़ी से दौड़ने दिया, जो कुछ खेतों की ओर छह-सात मील दौड़ा और फिर धीरे-धीरे चलने लगा।

जब संज़ंग घोड़े पर सवार होकर जा रहा था, तभी उसने एक घंटा बजने की आवाज़ सुनी और भाले, तलवारों और लाठियों से लैस तीस से अधिक लोग रास्ते के दोनों ओर से निकलकर उसका रास्ता रोकने लगे और कहने लगे, "भिक्षु, तुम कहाँ जा रहे हो?" यह सुनकर तांग पुजारी इतना भयभीत हो गया कि वह अपनी सीट से गिर पड़ा। "महाराज, मेरी जान बख्श दीजिए," उसने रास्ते के किनारे झाड़ियों में बैठकर विनती की, "मेरी जान बख्श दीजिए।"

तब गिरोह के दोनों सरदारों ने कहा, "हम तुम्हें नहीं मारेंगे। बस हमें अपना पैसा दे दो।" तभी उस आदरणीय बुजुर्ग को एहसास हुआ कि वे डाकू थे। जब उन्होंने सिर उठाकर उन्हें देखा तो उन्हें ये दिखाई दिया: एक का नीला चेहरा और बाहर निकले हुए नुकीले दांत किसी दुष्ट देवता से भी बदतर थे; दूसरे की उभरी हुई आंखें मृत्यु के तारे जैसी थीं।

उनकी कनपटी के लाल बाल मानो आग की लपटों में घिरे हुए थे;
उनके भूरे रंग के बाल सुई की तरह नुकीले थे।
दोनों ने बाघ की खाल से बनी टोपी पहन रखी थी।
और मार्टन की खाल से बनी स्कर्ट।
एक व्यक्ति भेड़िये के दांतों से जड़े नुकीले डंडे लिए हुए था।
दूसरी वस्तु गांठदार बेंत की रस्सी थी।
वे पर्वतीय बाघों से कम भयानक नहीं थे।
और ये पानी से निकलने वाले ड्रैगन की तरह ही डरावने होते हैं।

उनकी क्रूर छवि देखकर संजांग केवल अपने पैरों पर खड़ा हो सका, अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़कर बोला, "महाराज, मुझे पूर्व के तांग सम्राट ने पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजा है। चांगआन छोड़े हुए कई वर्ष हो गए हैं और मेरा सारा यात्रा खर्च खत्म हो चुका है। हम भिक्षु केवल भीख मांगकर ही अपना गुजारा कर सकते हैं—हमारे पास कोई पैसा नहीं है। महाराज, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझ पर दया करें और मुझे जाने दें।" दोनों डाकू सरदारों ने अपने आदमियों को आगे बढ़ाते हुए कहा, "हम यहाँ शेर हैं। हम मुख्य सड़कों पर यात्रियों को केवल धनवान बनने के लिए रोकते हैं। दान का इससे कोई लेना-देना नहीं है।"

अगर तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं, तो अपने कपड़े उतार दो और हमें वह सफेद घोड़ा दे दो, फिर हम तुम्हें जाने देंगे।"

"अमिताभ बुद्ध!" संज़ंग ने कहा। "मैंने ये वस्त्र टुकड़ों-टुकड़ों में माँगे हैं, एक परिवार से कपड़ा और दूसरे परिवार से सुई। अगर आप इसे लेंगे तो आप मेरी जान ले लेंगे। अगर आप इस जीवन में अकड़ दिखाएंगे तो अगले जन्म में पशु बनकर लौटेंगे।"

डाकुओं के सरदारों में से एक इस टिप्पणी से इतना क्रोधित हो गया कि उसने अपना डंडा लहराना शुरू कर दिया और संज़ंग पर प्रहार करने के लिए उसके पास चला गया। बोल न पाने के कारण संज़ंग केवल मन ही मन सोच सका, "बेचारे, तुम्हें लगता है कि तुम्हारे पास डंडा है: मेरे शिष्य के डंडे का क्या होगा, तब देखना।" डाकू बहस करने के मूड में नहीं था, उसने अपना डंडा उठाया और संज़ंग पर वार करने लगा। संज़ंग, जिसने अपने पूरे जीवन में कभी झूठ नहीं बोला था, इस विकट परिस्थिति में झूठ बोलने पर मजबूर हो गया: "महाराज, मुझे मत मारिए। मेरा एक युवा शिष्य मेरे पीछे आ रहा है, जो जल्द ही यहाँ पहुँच जाएगा। उसके पास कई औंस चाँदी है जो वह आपको दे देगा।"

डाकुओं के सरदारों में से एक ने कहा, "भिक्षु को चोट मत पहुँचाओ। उसे बाँध दो।" फिर डाकुओं की भीड़ उस पर टूट पड़ी, उसे रस्सी से बाँधा और एक ऊँचे पेड़ से लटका दिया।

विपत्ति लाने वाली तीनों आत्माएँ अभी भी पीछे-पीछे आ रही थीं। सुअर ज़ोर से हँसते हुए बोला, "मालिक बहुत तेज़ी से जा रहे हैं। पता नहीं वे हमारा इंतज़ार कहाँ कर रहे हैं।" तभी उसने पेड़ पर संज़ांग को देखा और कहा, "मालिक को देखो, अगर वे चाहते

तो इंतज़ार कर सकते थे, लेकिन वे इतने उत्साहित थे कि उन्हें पेड़ पर चढ़कर लताओं से झूला बनाना पड़ा।"

"बकवास बंद करो," बंदर ने जब यह सब देखा तो कहा। "मालिक को ऊपर लटका दिया गया है, है ना? तुम दोनों थोड़ी देर रुको, मैं ऊपर जाकर देखता हूँ।"

तब महान संत तेजी से ढलान पर चढ़े और चारों ओर देखा, और उन्हें डाकू दिखाई दिए। "मैं भाग्यशाली हूँ," उन्होंने प्रसन्नता से सोचा, "मैं भाग्यशाली हूँ। काम खुद मेरे दरवाजे पर आ गया है।" इतना कहकर वे मुड़े, खुद को झटककर सोलह साल के एक छोटे से नन्हे शिष्य में बदल गए, जिसने काला वस्त्र पहना हुआ था और अपने कंधे पर नीले सूती कपड़े में लिपटा हुआ एक बंडल लिए हुए था। फिर वे आगे बढ़े और गुरु के पास पहुँचकर उन्हें पुकारा,

"गुरुजी, ये सब क्या हो रहा है? ये दुष्ट लोग कौन हैं?"

"मुझे बचाओ, शिष्य," संजांग ने कहा, "और इतने सारे सवाल पूछना बंद करो।"

"यह सब क्या है?" बंदर ने पूछा।

"इन लुटेरों ने मेरा रास्ता रोककर मुझसे पैसे मांगे," संजांग ने जवाब दिया। "मेरे पास पैसे नहीं थे, इसलिए उन्होंने मुझे यहाँ लटका दिया। मैं आपके किसी उपाय का इंतज़ार कर रहा हूँ। अगर आप कोई उपाय नहीं ढूंढ पाए, तो आपको उन्हें घोड़ा देना पड़ेगा।"

"आप तो बिलकुल ही बेकार हैं, गुरुजी," बंदर हँसते हुए बोला। "दुनिया के सारे भिक्षुओं में से आपके जैसा कोमल स्वभाव वाला शायद ही कोई हो।"

जब तांग सम्राट ताइज़ोंग ने आपको पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध की पूजा करने के लिए भेजा था, तब उन्होंने आपको कभी भी उस ड्रैगन घोड़े को त्यागने के लिए नहीं कहा था।"

"जब उन्होंने मुझे यहाँ लटका दिया और मुझसे चीजें माँगते हुए मुझे पीट रहे थे, तो मैं क्या करता?" संजांग ने कहा।

"तुमने उनसे क्या कहा?" बंदर ने पूछा।

"जब उन्होंने मुझे पीटा तो मैं इतनी हताश हो गई थी कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था: मुझे तुम्हारे बारे में उन्हें बताना ही पड़ा," संजांग ने जवाब दिया।

बंदर ने कहा, "मालिक, आप किसी काम के नहीं हैं। आपने मेरी शिकायत क्यों की?"
"मैंने उनसे कहा कि तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं," संजांग ने कहा। "मैंने ऐसा सिर्फ हताशा में किया ताकि वे मुझे पीटना बंद कर दें।"
“बहुत बढ़िया,” बंदर भाई ने कहा, “बहुत बढ़िया। सुझाव के लिए धन्यवाद। यही तो है मेरी चुगली करने का तरीका। अगर आप चाहें तो महीने में सत्तर-अस्सी बार ऐसा कर सकते हैं, और मेरा धंधा पहले से भी ज़्यादा चलेगा।”
जब डाकुओं ने बंदर को अपने स्वामी से बात करते देखा तो वे उन्हें घेरने के लिए फैल गए और बोले, "छोटे भिक्षु, अपनी कमर में छिपाकर रखे हुए पैसे निकाल दो, जो तुम्हारे स्वामी ने हमें बताया है, और हम तुम्हारी जान बख्श देंगे। लेकिन अगर तुमने मना करने की कोशिश भी की, तो तुम मर जाओगे।"
“चिल्लाइए मत, सज्जनों,” बंदर ने अपना गठ्ठा नीचे रखते हुए कहा। “इसमें कुछ पैसे हैं, लेकिन ज़्यादा नहीं—सिर्फ़ बीस घोड़े की नाल के आकार के सोने के टुकड़े और बीस-तीस चांदी के टुकड़े, छोटे टुकड़ों को तो गिना ही नहीं। अगर आपको चाहिए तो मैं पूरा गठ्ठा निकाल दूंगा, बस आप मेरे मालिक को मत मारिए। जैसा कि प्राचीन ग्रंथ में लिखा है, 'पुण्य जड़ है और धन तो शाखा का ऊपरी सिरा है।' यह तो बस शाखा का ऊपरी सिरा है। हम धर्मपरायण लोग भीख मांगने के लिए हमेशा जगह ढूंढ लेते हैं। जब हमें कोई ऐसा दानदाता मिल जाता है जो भिक्षुओं को भोजन कराता है, तो हमारे लिए बहुत सारा पैसा और कपड़े मिल जाते हैं। हमें ज़्यादा कुछ नहीं चाहिए। जैसे ही आप मेरे मालिक को निराश कर देंगे, मैं आपको सब कुछ दे दूंगा।”
जब डाकुओं ने यह सुना तो वे प्रसन्न हुए और सबने कहा, "बूढ़ा भिक्षु तो कंजूस है, लेकिन यह छोटा भिक्षु बहुत उदार है। इसे नीचे उतार दो।" अब जब उसकी जान बच गई थी, तो आदरणीय बुजुर्ग घोड़े पर सवार होकर उसी रास्ते से वापस सरपट दौड़ पड़े, चाबुक का भरपूर इस्तेमाल करते हुए और बंदर के बारे में ज़रा भी नहीं सोचा।
"तुम गलत रास्ते पर चले गए हो," बंदर ने घबराकर कहा, फिर अपना बंडल उठाया और उसके पीछे दौड़ने लगा, लेकिन डाकुओं ने उसका रास्ता रोक दिया।
उन्होंने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो? हमें अपना पैसा दो वरना हमें तुम्हें यातना देनी पड़ेगी।"
"अब जब हम इस विषय पर आ ही गए हैं," बंदर ने कहा, "हमें पैसे को तीन हिस्सों में बांटना होगा।"

“छोटे साधु, तुम बड़े ही शरारती हो, है ना?” डाकुओं के सरदारों में से एक ने कहा। “तुम अपने मालिक को बिना बताए कुछ छिपाना चाहते हो। ठीक है, तो सब कुछ बाहर ले आओ, हम देख लेंगे। अगर बहुत सारा माल होगा तो हम तुम्हें थोड़ा सा फल खरीदने के लिए दे देंगे।”

"मेरा मतलब बिलकुल भी वो नहीं है, भाई," बंदर ने कहा। "मेरे पास पैसे नहीं हैं। मेरा मतलब ये है कि तुम दोनों ने जो सोना और चांदी दूसरों से चुराया है, उसमें से मुझे भी कुछ हिस्सा देना होगा।"

इससे डाकुओं का सरदार क्रोधित हो गया और गाली-गलौज करते हुए चिल्लाया, "तू खुद ही मुसीबत मोल ले रहा है, छोटे भिक्षु। हमें अपना देने के बजाय हमारा चाहता है! यहीं रुक जा और यह ले ले।" उसने अपनी गांठदार बेंत उठाई और बंदर के सिर पर छह-सात बार वार किया।

बंदर ने अनदेखा करने का नाटक किया और मुस्कुराते हुए कहा, "भाई, अगर तुम मुझे इस तरह मार सकते हो तो तुम अगले वसंत के अंत तक भी मुझे मारते रहोगे और असल में तुमने मुझे मारा ही नहीं होगा।"

"तुम्हारा सिर तो बहुत ही कठोर है," हैरान डाकू ने कहा।

"नहीं, नहीं, तुम मेरी ज़रूरत से ज़्यादा तारीफ़ कर रहे हो: मैं बस जैसे-तैसे गुज़ारा कर लेता हूँ," बंदर ने जवाब दिया। इतना कहते ही बातचीत रुक गई क्योंकि दो-तीन डाकू बंदर पर झपटे और उस पर हमला करने लगे।

"कृपया अपना आपा न खोएं, सज्जनों," बंदर ने कहा, "जब तक मैं इसे बाहर निकालता हूं।"

तब उस महान संत ने अपने कान में हाथ डालकर एक कढ़ाई की सुई निकाली। उन्होंने कहा, "महोदय, हम भिक्षु अपने साथ पैसे नहीं रखते। मैं आपको बस यह सुई दे सकता हूँ।"

“कितनी बुरी किस्मत है,” डाकुओं में से एक ने कहा। “हमने अमीर साधु को जाने दिया और इस गंजे गधे को पकड़ लिया जिसके पास एक पैसा भी नहीं है। लगता है तुम लोग सिलाई का काम करते हो। सुई हमारे किसी काम की नहीं है।” यह सुनकर

कि उन्हें सुई नहीं चाहिए, बंदर ने सुई को हाथ में लिया, उसे लहराया और चावल के कटोरे जितनी मोटी लाठी में बदल दिया।

भयभीत डाकुओं ने कहा, "तुम भले ही युवा हो, नन्हे भिक्षु, लेकिन तुम्हारे पास निश्चित रूप से कुछ जादुई शक्तियां हैं।"

फिर बंदर ने लाठी को ज़मीन में गाड़ते हुए कहा, "अगर तुममें से कोई इसे हिला सकता है, तो यह तुम्हारी है।" दोनों डाकू सरदार उसे पकड़ने के लिए दौड़े, लेकिन वे उसे वैसे ही नहीं हिला सके जैसे एक ड्रैगनफ्लाई पत्थर के खंभे को नहीं हिला सकती: वह एक इंच भी नहीं हिली। उन डाकुओं को कैसे पता चला होगा कि सोने की पट्टी वाली 'ऐज़-यू-विल' लाठी का वज़न स्वर्ग के तराजू पर 13,500 पाउंड था? फिर बंदर आगे बढ़ा, उसे आसानी से उठाया, अजगर की तरह मरोड़ाते हुए घुमाया, डाकुओं की ओर इशारा करते हुए कहा,

"आप सब बदकिस्मत हैं: आपकी मुलाकात बंदर से हो गई है।"

डाकुओं का सरदार फिर उस पर झपटा और उसे पचास-साठ बार और मारा। बंदर ने कहा, "लगता है तुम्हारे हाथ थक गए हैं। अब मैं तुम्हें एक बार मारता हूँ, पर इसे असली चोट मत समझना।" देखो, वह कैसे अपनी लाठी घुमाता है, उसे हिलाता है और उसे कुएँ के ऊपरी हिस्से जितना मोटा और सत्तर-अस्सी फीट लंबा बना देता है। एक ही वार से एक डाकू सरदार ज़मीन पर गिर पड़ा। वह ज़मीन पर लेट गया और फिर कुछ नहीं बोला।

"तुम्हारी गुस्ताखी तो देखो, गंजे!" दूसरे डाकू सरदार ने गुस्से से कहा। "तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं, और अब तुमने हम में से एक को मार डाला है।"

“बस एक पल रुकिए,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। “मैं तुम सबको मार डालूँगा और तुम्हारा सफाया कर दूँगा।” अपने डंडे के एक और वार से उसने दूसरे डाकू सरदार को मार डाला, जिसे देखकर उनके सभी आदमियों ने अपने भाले और लाठियाँ फेंक दीं और दहशत में अपनी जान बचाकर भागने लगे।

तांग पुरोहित पूर्व दिशा की ओर घोड़े दौड़ाते हुए तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि पिग और फ्रायर सैंड ने उन्हें रोककर पूछा, "गुरुजी, आप कहाँ जा रहे हैं? यह गलत रास्ता है।"

"शिष्यों," संजांग ने अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए कहा, "वापस जाओ और अपने भाई से कहो कि वह अपनी उस लाठी से दया दिखाए और सभी डाकुओं को न मारे।"

"मालिक, यहीं रुकिए," सुअर ने कहा। "मैं जाता हूँ।" वह मूर्ख सीधे रास्ते पर वापस भागा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, "भाई, मालिक ने कहा है कि तुम्हें उन्हें नहीं मारना है।"

"क्या मैंने किसी को मारा है?" बंदर ने पूछा।

"सारे डाकू कहाँ चले गए?" सुअर ने कहा। "दोनों सरदारों को छोड़कर बाकी सब भाग गए हैं। वे यहाँ सो रहे हैं।"

"चेचक से ग्रसित दोनों," सुअर ने उनसे कहा, "निस्संदेह तुम्हारी रात बहुत खराब गुज़री होगी और तुम इतने थके हुए थे कि सोने के लिए यही जगह चुननी पड़ी।" उनके करीब आते हुए वह बोला, "तुम बिल्कुल मेरे जैसे हो: मुंह खोलकर सोते हो और लार टपकाते हो।"

"ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैंने उन्हें अपनी लाठी से बुरी तरह पीटकर उनका बुरा हाल कर दिया था," बंदर ने कहा।

"लेकिन लोगों के दिमाग में टोफू नहीं भरा होता," पिग ने कहा।

"मैंने उनकी जमकर पिटाई की," बंदर ने कहा।

जैसे ही उसने बंदर को यह कहते सुना, वह मूर्ख मुड़ा और सीधे तांग पुजारी के पास जाकर बोला,

"उसने उन्हें तितर-बितर कर दिया है।"

"शानदार, शानदार," संज़ंग ने कहा। "वे किस तरफ गए?"

"उसने उन्हें इतनी जोर से मारा कि वे ढेर हो गए," सुअर ने जवाब दिया। "वे कहीं नहीं जा सकते।"

"तो फिर उन्हें बिखेरने से आपका क्या मतलब है?" संजांग ने पूछा।

"उसने उन्हें मार डाला," पिग ने जवाब दिया। "अगर इससे उनका गिरोह तितर-बितर नहीं हुआ, तो और क्या हुआ?"

"उसने उन्हें कैसे मारा?" संजांग ने पूछा।

"उसने उनके सिर में दो बड़े छेद कर दिए," पिग ने कहा।

"बंडल खोलो," संजांग ने कहा, "कुछ सिक्के निकालो और कहीं से कुछ मरहम

खरीदकर उनके घावों पर लगाओ।"
"मालिक, आप बिलकुल भी समझदारी की बात नहीं कर रहे हैं," सुअर ने कहा। "मरम्मत करने का कोई मतलब तो सिर्फ़ ज़िंदा लोगों के ज़ख्मों पर ही होता है। मरे हुए लोगों के शरीर में गहरे गड्ढों पर मरहम क्यों लगाना?"
"क्या उसने सचमुच उन्हें मार डाला है?" संजांग ने अपना आपा खोते हुए और बंदरों और मकाक बंदरों के बारे में अपशब्द बड़बड़ाते हुए कहा, और घोड़े को घुमाकर साधु सैंड और पिग के साथ उस जगह वापस चला गया जहाँ खून से लथपथ मृत व्यक्ति पड़े थे, जिनके सिर पहाड़ की ढलान की ओर झुके हुए थे।
यह दृश्य आदरणीय बुजुर्ग के लिए असहनीय था। उन्होंने पिग से कहा, "अपने रेक से इनके लिए एक कब्र खोदो और इन्हें दफना दो, जबकि मैं इनके लिए अंतिम संस्कार सूत्र पढ़ता हूँ।"
“मालिक, आप गलत आदमी को यह काम दे रहे हैं,” सुअर ने शिकायत की। “बंदर ने उन्हें मारा है, इसलिए बंदर को ही उन्हें दफनाना चाहिए। मुझे खुदाई क्यों करवानी पड़ रही है?”
मालिक की डांट से पहले से ही बहुत खराब मूड में चल रहे बंदर भाई ने सुअर पर चिल्लाया।
"बदमाश! मूर्ख! इन्हें तुरंत दफनाओ। अगर तुमने और देर की तो मैं तुम्हें मारूंगा।" यह सुनकर वह मूर्ख इतना घबरा गया कि उसने अपने फावड़े से खोदना शुरू कर दिया। जब वह तीन फुट नीचे खोद चुका था, तो उसे पत्थरों की एक ऐसी परत मिली जिसे उसके फावड़े के कांटे हिला नहीं पा रहे थे, इसलिए उसने फावड़ा एक तरफ फेंक दिया और अपनी थूथन से खोदने लगा। नरम मिट्टी में वह एक धक्के में ढाई फुट और दो धक्कों में पांच फुट तक खोद सका। फिर उसने दोनों शवों को दफना दिया और उनके ऊपर एक टीला बना दिया।

"वुकोंग," संजांग ने कहा, "कुछ अगरबत्ती और मोमबत्तियाँ लाओ ताकि मैं उनके लिए प्रार्थना कर सकूँ और सूत्र पढ़ सकूँ।"
"तुम्हें कुछ समझ नहीं आता," बंदर ने मुंह फुलाते हुए जवाब दिया। "हम पहाड़ों के

बीचोंबीच हैं, मीलों दूर तक कोई गांव या सराय नहीं है। तुम मुझसे मोमबत्ती और अगरबत्ती कहां से लाने की उम्मीद करते हो? मेरे पास पैसे होते भी तो भी मैं इन्हें कहीं से नहीं खरीद सकता।"

"मेरे रास्ते से हट जाओ, बंदर," संजांग ने क्रोध से कहा, "मैं समाधि पर मिट्टी छिड़कने, अगरबत्ती जलाने और प्रार्थना करने जा रहा हूँ।"

सनज़ैंग उदास मन से जंगल में स्थित मकबरे के पास घोड़े से उतर गया;

पवित्र भिक्षु ने सुनसान कब्र के पास प्रार्थना की।

ये उनके प्रार्थना के शब्द थे:

मैं आप सभी वीरजनों को प्रणाम करता हूँ और आपसे मेरी प्रार्थना सुनने का अनुरोध करता हूँ। मैं पूर्व में स्थित तांग राजवंश से हूँ। सम्राट ताइज़ोंग के आदेश पर मैं पश्चिम में धर्मग्रंथ लाने जा रहा था, तभी मेरी मुलाकात आप सभी सज्जनों से हुई।

मुझे नहीं पता कि तुम किस प्रांत, क्षेत्र और जिले से आकर यहाँ पहाड़ों में अपना समूह बनाया। मैंने तुमसे विनम्रता से बात की और विनती की, लेकिन तुमने मेरी बात अनसुनी कर दी और भलाई का बदला क्रोध से लिया। फिर तुम्हारा सामना नवसिखिए भिक्षु सन से हुआ, जिसने तुम्हें अपने डंडे से मार डाला। तुम्हारे शव खुले में पड़े देखकर मैंने उन्हें दफना दिया और उनके ऊपर मिट्टी का ढेर लगा दिया। मैंने धूप और मोमबत्तियों के बदले कुछ बांस तोड़कर रखे; हालाँकि उनसे कोई प्रकाश नहीं मिलता, फिर भी वे सच्चे हृदय से अर्पित किए जाते हैं। भोजन के बदले मैं केवल पत्थर ही अर्पित कर सकता हूँ: उनका कोई स्वाद नहीं होता, फिर भी वे सच्चे विश्वास से दिए जाते हैं। जब तुम अपनी शिकायत दर्ज कराने और अपने दुर्भाग्य की जड़ खोजने के लिए पाताल लोक पहुँचो, तो याद रखना कि उसका उपनाम सन है और मेरा चेन: दोनों अलग-अलग हैं। यह जानो कि तुम्हें किसने नुकसान पहुँचाया है, ठीक वैसे ही जैसे तुम किसी कर्जदार को जानते हो, और शास्त्र लाने वाले भिक्षु के विरुद्ध कोई मुकदमा मत करना।

"तुमने सारा दोष खुद पर मढ़ लिया," सुअर ने हंसते हुए कहा। "जब बंदर ने उन्हें मारा था, तब हम दोनों भी वहां नहीं थे।"

फिर संज़ंग ने एक चुटकी मिट्टी उठाई और दोबारा प्रार्थना की। "बड़े लोगों, जब तुम अपना मामला पेश करो तो सिर्फ़ नौसिखिए सन पर ही आरोप लगाना। इसका पिग या साधु सैंड से कोई लेना-देना नहीं है।"

यह सुनकर बंदर अपनी हंसी नहीं रोक सका और उसने जवाब दिया, "मालिक, आपके पास तो बिल्कुल भी अच्छी भावनाएं नहीं हैं।"

भगवान ही जानते हैं मैंने तुम्हारे लिए शास्त्र लाने के लिए कितनी कोशिशें कीं, लेकिन अब जब मैंने उन दो डाकुओं को मार डाला है, तो तुम उनसे कह रहे हो कि जाकर मेरे खिलाफ मुकदमा करें। यह सच है कि मैंने उन्हें मारा, लेकिन सिर्फ तुम्हारे लिए। अगर तुम शास्त्र लाने न निकले होते और मैं तुम्हारा शिष्य न बना होता, तो मैं कभी यहाँ आकर उन्हें न मारता। मैं भी उनका आह्वान किए बिना नहीं रह सकता।

उसने अपनी लोहे की लाठी उठाई, कब्र पर तीन बार प्रहार किया और बोला, "मेरी बात सुनो, चेचक से ग्रसित डाकुओं। तुमने मुझे सात-आठ बार मारा, फिर सात-आठ बार; तुमने मुझे ज़रा भी चोट नहीं पहुँचाई, यहाँ तक कि गुदगुदी भी नहीं की, लेकिन तुमने मुझे क्रोधित ज़रूर कर दिया। एक गलतफहमी दूसरी गलतफहमी में तब्दील हो गई और मैंने तुम्हें मार डाला। तुम जहाँ चाहो मेरे विरुद्ध मुकदमा कर सकते हो—मैं डरता नहीं। जेड सम्राट मुझे जानता है। स्वर्ग के राजा मेरी आज्ञा का पालन करते हैं।"

अध्याय 56

784

पश्चिम की यात्रा

अट्ठाईस नक्षत्र मुझसे डरते हैं। नौ तेजस्वी नक्षत्र, तारामंडल के स्वामी, मुझसे भयभीत हैं।

नगरों और प्रांतों के देवता मेरे सामने घुटने टेकते हैं; पूर्वी शिखर के देवता, जो स्वर्ग के समान हैं, मुझसे भयभीत हैं। पाताल लोक के दस राजा कभी मेरे सेवक हुआ करते थे। पाँच भयंकर देवता कभी मेरे कनिष्ठ थे। तीनों लोकों के पाँच सेनापति और दस दिशाओं के अधिकारी सभी मेरे घनिष्ठ मित्र हैं। इसलिए जाओ और जहाँ चाहो अपना मामला लेकर आओ।

मंकी को इस बेहद अप्रिय लहजे में बोलते हुए सुनकर संज़ंग को एक और झटका लगा। उसने कहा, "शिष्य, मेरी प्रार्थना का उद्देश्य केवल तुम्हें जीवन की रक्षा करना और अच्छा और दयालु बनना सिखाना था। तुम्हें इसे इतना गंभीरता से लेने की क्या ज़रूरत है?"

“मालिक, यह कोई मज़ाक की बात नहीं है,” बंदर ने जवाब दिया। “हमें जल्द से जल्द रात बिताने के लिए कोई जगह ढूंढनी होगी।” मालिक के पास अपना गुस्सा काबू में

रखने और घोड़े पर सवार होने के अलावा कोई चारा नहीं था।
महान ऋषि सूर्य के असंतुष्ट होने और सुअर एवं भिक्षु रेत के ईर्ष्यालु होने के कारण, गुरु और शिष्यों के बीच ऊपरी तौर पर ही सौहार्द था: भीतर ही भीतर शत्रुता थी। पश्चिम की ओर बढ़ते हुए, उन्हें रास्ते के उत्तर में एक फार्महाउस दिखाई दिया। चाबुक से उसकी ओर इशारा करते हुए संजांग ने उन्हें बताया कि यही वह स्थान है जहाँ वे रात बिता सकते हैं।
"बहुत अच्छा," सुअर ने कहा, और वे खेत को देखने के लिए ऊपर चले गए। यह एक सुंदर दृश्य था: रास्तों पर जंगली फूल खिले हुए थे,
पेड़ों की छाया दरवाजों पर पड़ रही है।
एक पहाड़ी धारा दूर स्थित एक चट्टान से नीचे गिर रही थी;
खेतों में गेहूं और मालवा उग रहे थे।
ओस से भीगी हुई नरकटें समुद्री पक्षियों के लिए बिस्तर का काम करती थीं;
हवा में लहराते चिनार के पेड़ थके हुए पक्षियों के लिए बैठने की जगह थे।
नीले सरू के पेड़ों के बीच चीड़ का हरा रंग उसका प्रतिद्वंदी था;
सुगंध के मामले में रेड रश और नॉटवीड प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।
गांव के कुत्ते भौंकने लगे।
शाम ढलते ही मुर्गों ने बांग दी।
अच्छी तरह से पोषित मवेशियों और भेड़ों को लड़के वापस ले जा रहे थे।
चूल्हों से उठते धुएं के गुबार के बीच बाजरा पकाया जा रहा था;
अब पहाड़ी फार्म में शाम हो चुकी थी।
अध्याय 56
785
पश्चिम की यात्रा
जैसे ही आदरणीय बुजुर्ग पास आए, खेत के द्वार से एक बूढ़ा व्यक्ति बाहर आया, उसने संज़ंग को देखा और उनका अभिवादन किया। "आप कहाँ से आए हैं, भिक्षु?" उसने पूछा, जिस पर संज़ंग ने उत्तर दिया, "मैं पूर्व में स्थित महान तांग वंश से पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजा गया हूँ। मैं इस रास्ते से गुजर रहा हूँ और रात हो रही है, इसलिए मैं आपसे एक रात ठहरने की विनती करने आया हूँ, हे उपकारक।"
"आपके प्रतिष्ठित देश से यहाँ तक का सफर वाकई बहुत लंबा है," बूढ़े व्यक्ति ने

मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "तो आप इतनी सारी नदियाँ पार करके और इतने सारे पहाड़ चढ़कर अकेले यहाँ कैसे पहुँचे?"
"मेरे साथ तीन शिष्य आए हैं," संज़ंग ने कहा। "वे कहाँ हैं?" बूढ़े व्यक्ति ने पूछा। "वे सड़क के किनारे खड़े हैं," संज़ंग ने कहा।
बूढ़े व्यक्ति ने ऊपर देखा और उनके भयानक चेहरों को देखकर इतना भयभीत हो गया कि वह तुरंत अंदर भागने के लिए मुड़ा, लेकिन संजांग ने उसे रोक लिया और कहा, "हे प्रभु, मैं आपसे दयापूर्वक विनती करता हूँ कि हमें आज रात यहीं बिताने दें।"
बूढ़ा आदमी कांप रहा था, मुश्किल से अपना मुंह खोल पा रहा था, सिर हिलाते हुए और हाथ लहराते हुए बोला, "व...व...व...वे इंसान नहीं हैं। वे...व...दुष्ट आत्माएं हैं।"
"डरिए मत, उपकारी," संजांग ने मुस्कुराते हुए कहा। "वे बस बदसूरत हो गए हैं। वे बुरी आत्माएं नहीं हैं।"
"लेकिन मेरे स्वामी," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "एक राक्षस दानव है, एक घोड़े के मुख वाला शैतान है, और एक गर्जन का देवता है।"
जब बंदर ने यह आखिरी टिप्पणी सुनी तो वह अपनी पूरी आवाज में चिल्लाया, "गरज के देवता मेरे पोते हैं, राक्षस मेरे परपोते हैं और घोड़े के चेहरे वाले शैतान मेरे परदादा के परपोते हैं।"
यह सुनकर बूढ़े आदमी का चेहरा पीला पड़ गया और वह अंदर जाना चाहता था। संजांग ने उसे सहारा दिया और वे घर के छप्पर वाले मुख्य कमरे में गए, और बनावटी मुस्कान के साथ कहा, "उससे डरो मत। वे सब ऐसे ही असभ्य होते हैं। उन्हें ठीक से बोलना नहीं आता।"
जब वह अपनी बात समझा रहे थे, तभी पीछे से एक महिला चार-पाँच साल के बच्चे का हाथ पकड़े हुए बाहर आई। उसने पूछा, "महोदय, आपको इतना डर किस बात से लगा?"
“चाय लाओ, पत्नी,” उसने कहा, और महिला ने बच्चे का हाथ छोड़ दिया और अंदर से चाय के दो कप ले आई। चाय पीने के बाद, संज़ांग अपनी सीट से नीचे उतरकर उसका अभिवादन करने और समझाने लगा, “मुझे पूर्व के महान तांग ने पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजा है। मैं अभी-अभी यहाँ पहुँचा था और आपके भव्य महल में एक रात ठहरने का अनुरोध कर रहा था, तभी मेरे तीन शिष्यों के बदसूरत चेहरों को देखकर उस बूढ़े सज्जन को बहुत डर लगा।”

"अगर बदसूरत चेहरों को देखकर ही आपको इतना डर लगता है, तो बाघ या भेड़िया देखकर आप कैसे सामना करेंगे?" महिला ने कहा।

“उनकी कुरूपता तो मैं बर्दाश्त कर सकता था, पत्नी,” बूढ़े आदमी ने जवाब दिया। “लेकिन मुझे उनके बोलने का तरीका बहुत डरावना लगा। जब मैंने कहा कि वे एक राक्षस, घोड़े के मुख वाले शैतान और गर्जन के देवता जैसे हैं, तो उनमें से एक चिल्लाया कि गर्जन के देवता उसके पोते हैं, राक्षस उसके परपोते हैं और घोड़े के मुख वाले शैतान उसके परदादा के परपोते हैं। यही बात मुझे सबसे ज्यादा डरा गई।”

"डरने की कोई ज़रूरत नहीं," संज़ंग ने कहा। "बिल्कुल नहीं। जो गर्जन देवता के समान है, वह मेरा वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग है। जो घोड़े के मुख वाले राक्षस के समान है, वह मेरा दूसरा शिष्य झू वुनेन्ग है, जिसे सुअर भी कहते हैं। और जो राक्षस के समान है, वह मेरा तीसरा शिष्य शा वुजिंग है, जिसे रेत भिक्षु भी कहते हैं। भले ही वे बदसूरत हों, लेकिन वे सभी सच्चे बौद्ध हैं जो सच्ची सिद्धि में विश्वास रखते हैं। वे दुष्ट राक्षस या दुष्ट दानव नहीं हैं। उनसे डरने की कोई बात नहीं है।"

अध्याय 56

786

पश्चिम की यात्रा

जब बूढ़े व्यक्ति और उनकी पत्नी ने सान्ज़ांग के बारे में सुना और उन्हें बताया गया कि उनके सभी शिष्य सच्चे बौद्ध हैं, तो उनका तनाव कुछ हद तक कम हुआ और उन्होंने सान्ज़ांग से उन्हें अंदर बुलाने को कहा। आदरणीय बुजुर्ग उन्हें बुलाने के लिए दरवाजे पर गए और फिर उनसे कहा, "बूढ़े साहब आप लोगों को देखकर बहुत भयभीत हो गए हैं। अब जब आप उनसे मिलने जाएं तो आप सभी को बहुत ही सलीके से पेश आना है और उनके प्रति बहुत विनम्र रहना है।"

"मैं सुंदर और सुसंस्कृत हूँ," सुअर ने कहा, "अपने भाइयों की तरह असभ्य और शोर मचाने वाला नहीं।"

"अगर तुम्हारी लंबी थूथन, बड़े कान और बदसूरत चेहरा न होता तो तुम बहुत ही सुंदर आदमी होते," बंदर हँसते हुए बोला।

"झगड़ा बंद करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "यह सौंदर्य प्रतियोगिता के लिए उपयुक्त जगह नहीं है। अंदर जाओ!"

इसके बाद वे सामान उठाकर घोड़े को अंदर ले आए, मुख्य कमरे में दाखिल हुए,

आदरपूर्वक अभिवादन किया और बैठ गए। कुशल और सक्षम पत्नी बच्चे को बाहर ले गई और चावल पकाने और शाकाहारी भोजन तैयार करने का आदेश दिया। जब गुरु और शिष्यों ने भोजन कर लिया, तब रात होने लगी थी, इसलिए एक दीपक लाया गया और वे मुख्य कमरे में बैठकर बातें करने लगे। तभी संजांग ने अपने मेज़बान का उपनाम पूछा।

"यांग," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, और जब उनसे उनकी उम्र पूछी गई तो उन्होंने बताया कि वे तिहत्तर वर्ष के हैं।

"तुम्हारे कितने बेटे हैं?" संजांग ने पूछा।

“सिर्फ एक,” बूढ़े आदमी ने जवाब दिया। “मेरी पत्नी अभी-अभी मेरे पोते को लेकर आई है।”

"क्या आप अपने बेटे को अंदर नहीं बुलाएंगे? मैं उससे मिलना चाहता हूँ," संजांग ने कहा।

“वह तुम्हारे शिष्टाचार के लायक भी नहीं है, वह नीच,” बूढ़े ने उत्तर दिया। “मेरी किस्मत में एक निकम्मा बेटा पालना लिखा था, और वह अभी घर पर नहीं है।”

"वह अपना जीवन यापन कहाँ से करता है?" संजांग ने पूछा।

बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया और आह भरते हुए जवाब दिया, "यह एक दुखद कहानी है। अगर वह ईमानदारी से अपना जीवन यापन करने को तैयार होता तो मुझे बहुत खुशी होती, लेकिन उसका मन बुराई में लगा हुआ है और वह खेती-बाड़ी नहीं करेगा। वह बस घरों में लूटपाट करना, यात्रियों को लूटना, आगजनी करना और हत्या करना चाहता है। उसके साथी लोमड़ी और कुत्ते से भी बदतर हैं। वह पाँच दिन पहले गया था और अभी तक वापस नहीं आया है।"

यह सुनकर संज़ंग एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं कर पाया, लेकिन उसने सोचा, "शायद वह उन लोगों में से एक था जिन्हें वुकॉन्ग ने मार डाला था।" बहुत बेचैन होकर वह वहीं बैठ गया और सिर झुका लिया। "हे भगवान! हे भगवान! इतने अच्छे माता-पिता का इतना दुष्ट बेटा कैसे हो सकता है?"

बंदर बूढ़े आदमी के पास गया और बोला, "तुम्हें ऐसे निकम्मे बेटे की क्या ज़रूरत है? वह हत्यारा और बलात्कारी है, और वह तुम दोनों को भी मुसीबत में डाल देगा। मुझे उसे ढूंढने दो और तुम्हारे लिए उसे मार डालने दो।"

“काश मैं उससे छुटकारा पा सकता,” बूढ़े आदमी ने कहा, “लेकिन अगर मैं ऐसा कर

भी लेता तो मेरा कोई दूसरा बेटा नहीं है। चाहे वह कितना भी दुष्ट क्यों न हो, मुझे उसे ही अपने अंतिम संस्कार के लिए इस्तेमाल करना पड़ेगा।"

"भाई, उन मामलों में दखल देना बंद करो जिनका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है," फ्रायर सैंड और पिग ने कहा। "हम सरकार नहीं हैं। अगर उसका बेटा बुरा है तो हमें क्या फर्क पड़ता है? हे उपकारी, क्या आप हमें वहाँ बिछाने और सोने के लिए भूसे का एक गट्ठा दे सकते हैं? हम कल सुबह निकलेंगे।" बूढ़ा आदमी उठा और फ्रायर सैंड को चावल के भूसे के दो गट्ठे पीछे वाले आँगन में ले जाने के लिए भेजा, जहाँ उन्हें रात एक छप्पर वाली झोपड़ी में बितानी थी। बंदर घोड़े के आगे-आगे चल रहा था और पिग सामान ढो रहा था, जब वे अपने मालिक को झोपड़ी तक ले गए और अध्याय 56

वे रात भर वहीं सोए, जहाँ हम उन्हें छोड़ देंगे।

बूढ़े श्री यांग का बेटा सचमुच उन डाकुओं में से एक था जो पिछली सुबह पहाड़ी पर मंकी द्वारा उनके दो सरदारों की हत्या किए जाने के बाद अपनी जान बचाकर भाग गए थे। उस रात तड़के, उनमें से कुछ फिर से इकट्ठा हुए और मुख्य द्वार पर दस्तक दी। शोर सुनकर बूढ़े ने अपने कंधों पर कुछ कपड़े डाले और कहा, "पत्नी, वे बदमाश डाकू यहाँ आ गए हैं।"

"तो फिर द्वार खोलो और उन्हें अंदर आने दो," उसने उत्तर दिया। तभी उसने द्वार खोला और देखा कि डाकुओं की भीड़ चिल्ला रही थी, "हम भूखे मर रहे हैं, हम भूखे मर रहे हैं।" बूढ़े श्री यांग का बेटा अंदर भागा और अपनी पत्नी को चावल पकाने के लिए कहा। रसोई में लकड़ी न होने के कारण वह आंगन से लकड़ी लाने चला गया।

रसोई में वापस आकर उसने अपनी पत्नी से पूछा, "आंगन में वह सफेद घोड़ा कहाँ से आया?"

"पूर्व से कुछ भिक्षु धर्मग्रंथ लेने आ रहे हैं," उसने उत्तर दिया। "उन्होंने कल रात यहाँ रुकने की अनुमति मांगी थी। आपके माता-पिता ने उन्हें रात का भोजन कराया और उन्हें घास-फूस की झोपड़ी में ठहराया।"

यह खबर सुनकर डाकू खुशी से ताली बजाते हुए हॉल से बाहर आया और बोला, "क्या किस्मत है, भाइयों, क्या किस्मत है। हमारे दुश्मन यहीं मेरे घर में हैं।"

"कौन से दुश्मन?" बाकी सबने पूछा।

"हमारे सरदारों की हत्या करने वाले भिक्षु रात बिताने के लिए यहीं आए थे," उसने उत्तर दिया, "और वे झोपड़ी में सो रहे हैं।"

"वाह!" दूसरे डाकुओं ने कहा। "चलो उन गंजे गधों को पकड़ते हैं। हम उन्हें काटकर सोया सॉस में पकाकर अचार बना लेंगे। हमें उनका सामान और घोड़ा भी मिल जाएगा और साथ ही सरदारों का बदला भी हो जाएगा।"

“आराम से,” डाकू यांग ने कहा। “तुम लोग जाओ और अपनी तलवारें तेज कर लो, हम चावल पकाते हैं। चलो हम सब मिलकर अच्छे से खाना खा लें, फिर उन्हें मारेंगे।” इस पर डाकुओं ने अपनी तलवारें और भाले तेज कर लिए।

बूढ़े व्यक्ति ने यह सब सुन लिया था, इसलिए वह चुपके से पीछे की ओर गया और तांग पुजारी और उनके शिष्यों को बताने लगा।

"मेरे उस दुष्ट बेटे ने गिरोह को यहाँ बुलाया है। उन्हें पता है कि तुम यहाँ हो और वे तुम्हारी हत्या करना चाहते हैं।"

आप इतनी दूर से आए हैं, यह जानते हुए मैं आपको मरते हुए नहीं देख सकता, इसलिए कृपया जितनी जल्दी हो सके अपना सामान पैक कर लें। मैं आपको पीछे वाले गेट से बाहर निकाल दूंगा।

संज़ंग, जो अब भय से कांप रहा था, ने बूढ़े व्यक्ति को धन्यवाद देते हुए प्रणाम किया और फिर सुअर को घोड़े को आगे ले जाने के लिए कहा, जबकि साधु सैंड ने डंडा अपने कंधे पर उठाया और बंदर ने नौ छल्ले वाली मठवासी छड़ी ले ली। बूढ़े व्यक्ति ने उन्हें बाहर निकालने के लिए पिछला द्वार खोला और फिर चुपचाप वापस सामने वाले द्वार पर सोने चला गया।

जब तक डाकुओं ने अपने हथियार तेज किए और भरपेट भोजन किया, तब तक पांचवां पहर हो चुका था और लगभग भोर हो गई थी। वे पिछवाड़े में जमा हुए तो देखा कि उनके शिकार वहां नहीं थे। जल्दी से दीपक और आग जलाकर उन्होंने काफी देर तक तलाशी ली, लेकिन उन्हें कहीं भी उनका कोई सुराग नहीं मिला, सिवाय इसके कि पिछला द्वार खुला हुआ था।

"वे पीछे से भाग गए हैं!" सबने एक साथ कहा। "उनके पीछे जाओ! उन्हें पकड़ो!"

वे सभी तीर की तरह तेजी से आगे बढ़े, और जब पूर्व में सूरज निकला तो उन्होंने आखिरकार संजांग को देखा, जिसने चिल्लाहट सुनकर पीछे मुड़कर देखा और भाले और तलवारों से लैस बीस या तीस लोगों की भीड़ को अपने पीछे आते हुए देखा।

“शिष्यों,” उसने पुकारा, “डाकुओं ने हमें पकड़ लिया है। अब हम क्या करें?”
अध्याय 56
788
पश्चिम की यात्रा
"चिंता मत करो," बंदर ने कहा। "मैं उन्हें खत्म कर दूंगा।"
"वुकोंग," संजांग ने अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए कहा, "तुम्हें उन्हें चोट नहीं पहुंचानी है। बस उन्हें डराकर भगा देना है।"
बंदर ने इस बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया और अपनी लाठी घुमाते हुए उनकी ओर मुड़ा। उसने पूछा, "आप लोग कहाँ जा रहे हैं?"
“खूनी गंजे!” उन्होंने बंदर को घेरते हुए अपशब्दों से चिल्लाकर कहा, “हमारे सरदारों को वापस दे दो।” जब वे भाले और तलवारों से उस पर वार करने लगे, तो महान ऋषि ने अपनी गदा को एक बार घुमाया, उसे चावल के कटोरे जितना मोटा बना दिया और उन सबको तितर-बितर कर दिया। जिन पर इसका पूरा प्रभाव पड़ा, वे तुरंत मर गए; मामूली वार से हड्डियाँ टूट गईं, और छूने मात्र से ही खुला घाव हो गया। कुछ फुर्तीले लोग भागने में कामयाब रहे, लेकिन धीमे चलने वालों को पाताल लोक में यमराज को प्रणाम करना पड़ा।
इतने सारे लोगों को गिरते देख घबराए हुए संज़ंग ने अपने घोड़े को पश्चिम की ओर जितनी तेज़ी से हो सके दौड़ाया, और पिग और फ्रायर सैंड भी उसके पीछे-पीछे दौड़ते हुए आए। "तुममें से बूढ़े यांग का लड़का कौन है?" मंकी ने घायल डाकुओं से पूछा जो अभी भी जीवित थे।
"पीले रंग वाले, महाराज," वे कराह उठे।
बंदर पास गया, उससे तलवार छीन ली और उसका सिर काट डाला। खून से लथपथ सिर को हाथ में पकड़े हुए उसने अपना गदा एक तरफ रख दिया और बादल के सहारे तांग पुजारी के पास पहुँच गया। घोड़े के सामने सिर लहराते हुए उसने कहा, "गुरुजी, ये रहा बूढ़े यांग के दुष्ट पुत्र का सिर।"
भय से पीला पड़ा संज़ंग घोड़े की काठी से गिर पड़ा। "दुष्ट बंदर, तू मुझे इस तरह डराकर मेरी जान ले लेगा। इसे तुरंत हटाओ।" पिग ने बंदर का सिर रास्ते के किनारे लात मारकर फेंक दिया और अपने फावड़े से उसे मिट्टी में दबा दिया।
"उठिए, गुरुजी," फ्रायर सैंड ने डंडा नीचे रखते हुए और तांग पुजारी को सहारा देते

हुए कहा। ज़मीन पर बैठे-बैठे ही उन्होंने खुद को संभाला और बंधन कसने का मंत्र पढ़ना शुरू किया।

बंदर की खोपड़ी इतनी कसकर दबाई गई थी कि उसका चेहरा और कान एकदम लाल हो गए थे, उसकी आंखें बाहर निकल आई थीं और उसके सिर में तेज दर्द हो रहा था। "रुको! रुको!" वह दर्द से कराहते हुए इधर-उधर लोटने लगा, लेकिन जब संजांग ने एक दर्जन बार से भी अधिक बार कहा, तब भी वह रुका नहीं।

असहनीय पीड़ा में बंदर ने कलाबाजियां कीं और सिर के बल खड़ा होकर चिल्लाया, "मुझे क्षमा कर दो, स्वामी।"

जो कहना है कहो। रुको, रुको!" तभी संजांग ने मंत्र पढ़ना बंद किया।

“मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना,” उसने उत्तर दिया। “मैं तुम्हें अब और अपने साथ नहीं रखना चाहता। वापस जाओ।” दर्द के बावजूद सिर झुकाते हुए बंदर ने पूछा, “मालिक, आप मुझे क्यों भेज रहे हैं?”

"दुष्ट बंदर," संज़ंग ने कहा, "तुम इतने बड़े हत्यारे हो कि शास्त्र लाने का भी कोई हक नहीं। मैंने तुम्हें ये शास्त्र कल पहाड़ पर दो डाकू सरदारों की हत्या करने की तुम्हारी क्रूरता के लिए दिया था। कल शाम जब हम उस बूढ़े सज्जन के घर पहुँचे तो उन्होंने हमें खाना खिलाया और रात को ठहरने की जगह दी, और हम सिर्फ इसलिए बच पाए क्योंकि उन्होंने हमें पिछले द्वार से भागने में मदद की। हालाँकि उनका बेटा बुरा था, लेकिन उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं था, और तुमने उसका सिर काटना गलत किया, उन सभी जिंदगियों का तो जिक्र ही नहीं जो तुमने नष्ट कीं। भगवान ही जानता है कि तुमने स्वर्ग और पृथ्वी के सामंजस्य को कितना बिगाड़ा है। मेरी बार-बार की चेतावनी के बावजूद तुममें जरा भी अच्छाई नहीं है। मुझे तुम्हारी बिल्कुल भी जरूरत नहीं है। अगर तुम नहीं चाहते कि मैं फिर से मंत्र पढ़ूँ तो तुरंत यहाँ से चले जाओ।"

“ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो,” बंदर ने डरते हुए विनती की, “मैं जा रहा हूँ।” उसके मुँह से ये शब्द निकलते ही वो हवा में कलाबाज़ी करते हुए बादल पर सवार होकर बिना किसी निशान के गायब हो गया। हाय!

अध्याय 56

789

पश्चिम की यात्रा

जब मन हत्या के विचारों से भरा हो,

सिनाबार का उपचार नहीं किया जा सकता।
यदि मन में अव्यवस्था हो,
यह मार्ग अधूरा ही रह गया है।
यदि आपको नहीं पता कि महान ऋषि कहाँ गए थे, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को सुनें।
अध्याय 57
सच्चे सूर्य वुकॉन्ग ने पोताराका में अपनी शिकायत दर्ज कराई
जल परदे की गुफा में नकली बंदर राजा एक दस्तावेज़ की नकल करता है। क्रोधित और उदास, महान ऋषि सूर्य आकाश में उठ खड़े हुए। ऐसी कई जगहें थीं जहाँ वे जाना चाहते थे, लेकिन जा नहीं सके। पुष्प और फल पर्वत पर स्थित जल परदे की गुफा में, उन्हें डर था कि इतनी जल्दी वापस आने पर उनका मज़ाक उड़ाया जाएगा, क्योंकि वे किसी सच्चे पुरुष की तरह व्यवहार नहीं कर रहे थे। उन्हें नहीं लगता था कि उन्हें स्वर्ग के महलों में लंबे समय तक रहने दिया जाएगा; वे समुद्र में स्थित तीन जादुई द्वीपों में अमर लोगों का सामना नहीं कर सकते थे; और वे अपने आप को ड्रैगन महल में ड्रैगन राजा से मदद मांगने के लिए तैयार नहीं कर सकते थे। उनके पास मदद के लिए कोई नहीं था।
"कोई चारा नहीं है," उसने मन ही मन कड़वाहट से सोचा। "मुझे गुरु के पास वापस जाना होगा और सच्ची उपलब्धि हासिल करनी होगी।"
फिर उसने अपना बादल सीधा नीचे लाकर तांग पुजारी के घोड़े के सामने खड़ा कर दिया और कहा, "हे गुरुजी, इस बार मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं फिर कभी हत्या नहीं करूँगा, और आप जो भी कहेंगे, मैं सब करूँगा। आपको मुझे पश्चिमी स्वर्ग तक ले जाने की अनुमति अवश्य देनी होगी।" तांग पुजारी ने उसे देखते ही घोड़े की लगाम खींच दी। उसकी एकमात्र प्रतिक्रिया थी बंधन कसने वाले मंत्र का जाप शुरू करना, जिसे उसने बीस से अधिक बार दोहराया, तब तक नहीं रुका जब तक कि बंदर जमीन पर रोता हुआ नहीं गिर पड़ा, और बंधन उसके सिर में एक इंच तक धंस गया।
"तुम वापस क्यों नहीं गए? तुम मुझे अभी भी क्यों परेशान कर रहे हो?" संजांग ने पूछा।
"फिर से ऐसा मत कहो," बंदर ने कहा, "नहीं! मेरे पास रहने के लिए जगहें हैं, लेकिन मुझे डर है कि मेरे बिना तुम कभी पश्चिमी स्वर्ग तक नहीं पहुँच पाओगे।"

"तू एक क्रूर हत्यारा है, बंदर!" संज़ंग क्रोध से भड़क उठा। "तूने मुझे बहुत मुसीबत में डाल दिया है। अब मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं। मैं वहाँ पहुँचूँ या न पहुँचूँ, इससे तुझे कोई लेना-देना नहीं। तुरंत जा। एक पल की भी देरी हुई तो मैं फिर से मंत्र बोलूँगा, और तब तक नहीं रुकूँगा जब तक तेरा सारा दिमाग निचोड़ न लिया जाए।" असहनीय दर्द में, और यह देखकर कि गुरु अपना इरादा नहीं बदलेंगे, बंदर के पास कोई विकल्प नहीं बचा था। एक बार फिर वह अपने कलाबाज़ी वाले बादल पर सवार होकर हवा में उछला, और इस बार उसे अचानक एक विचार आया।

"उस भिक्षु ने मुझे निराश किया है," उसने सोचा। "मैं बोधिसत्व गुआनयिन से शिकायत दर्ज कराने के लिए पोटारका जा रहा हूँ।"

अध्याय 57

790

पश्चिम की यात्रा

शानदार बंदर एक बार फिर अपने कलाबाजियों से भरे बादल पर सवार होकर रवाना हुआ और दो घंटे से भी कम समय में वह दक्षिणी महासागर तक पहुँच गया। उसने अपने शुभ बादल को रोका और सीधे पोटारका की ओर चल पड़ा।

सन वुकॉन्ग बैंगनी बांस के जंगल में घुस गया, जहाँ नौसिखिए मोक्सा ने विनम्रतापूर्वक उसका अभिवादन किया और पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं, महान ऋषि?"

“मैं बोधिसत्व के दर्शन करना चाहता हूँ,” उसने उत्तर दिया। तब मोक्ष उसे ज्वार गुफा के प्रवेश द्वार तक ले गया, जहाँ सेवक सुधना ने प्रणाम किया और पूछा, “हे महान ऋषि, आप यहाँ क्यों आए हैं?”

"मैं बोधिसत्व के समक्ष शिकायत दर्ज कराना चाहता हूँ," बंदर ने उत्तर दिया।

"शिकायत" शब्द सुनते ही सुधना मुस्कुराते हुए बोली, "तुम्हारी ज़बान कितनी बुरी है, बंदर! बिलकुल वैसे ही जैसे तुमने तांग पुजारी को पकड़ने के बाद मुझे धोखा दिया था। हमारी बोधिसत्व असीम पवित्र और दयालु बोधिसत्व हैं, जिन्होंने अपनी अपार दया और करुणा से सभी दुखी प्राणियों के उद्धार के लिए महायान का उपयोग करने का संकल्प लिया है। उन्होंने ऐसा क्या गलत किया है कि तुम शिकायत कर रहे हो?"

यह देखकर बंदर, जो पहले से ही बेहद उदास था, क्रोध से भड़क उठा। उसने इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि सुधना पीछे हट गई: "अकृतज्ञ छोटे जानवर! मूर्ख! जब तक मैंने

बोधिसत्व से तुम्हें अपने वश में करने और परिवर्तित करने की प्रार्थना नहीं की थी, तब तक तुम एक राक्षस आत्मा थे। अब तुम शाश्वत आनंद और मुक्ति में जी रहे हो, और जब तक स्वर्ग रहेगा, तब तक ऐसा ही करते रहोगे। तुम्हें इतना अपमान करने के बजाय मुझे धन्यवाद देने के लिए झुकना चाहिए था। मैं बोधिसत्व के समक्ष शिकायत लेकर यहाँ आई हूँ, और तुम मुझ पर बुरी ज़बान होने और उनकी शिकायत करने का आरोप लगा रहे हो।"

"मुझे लगता है तुम पहले की तरह ही गुस्सैल बंदर हो," सुधना ने कहा। "मैं तो बस मजाक कर रही थी: इतना गुस्सा करने की कोई जरूरत नहीं है।"

जब वे बातें कर रहे थे, तभी एक सफेद तोता आया और उनके चारों ओर उड़ने लगा। उन्होंने इसे बोधिसत्व का बुलावा समझा। तब मोक्ष और सुधना बंदर को उनके कमल सिंहासन पर ले गए, जहाँ उसने उनके सामने सिर झुकाया और रोते हुए उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। बोधिसत्व ने मोक्ष और सुधना को बंदर को उठने में मदद करने के लिए कहा और बोला, "वुकोंग, मुझे साफ-साफ बताओ कि तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है। रोना मत: मैं तुम्हें तुम्हारी परेशानियों से मुक्त कर दूँगा।"

"पूरी जिंदगी में मेरे साथ इतना बुरा बर्ताव कभी नहीं हुआ," एक नम्र बंदर ने रोते हुए कहा और उसके सामने सिर झुकाता रहा। "जब से आपने मुझे स्वर्ग से आई विपत्ति से बचाया है, मैं एक निष्ठावान बौद्ध बन गया हूँ और तांग पुरोहित को बुद्ध की उपासना करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग जाते समय उनकी रक्षा करता रहा हूँ। मैंने राक्षसों से उन्हें बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली है, चाहे यह किसी बाघ के मुँह से कुरकुरी हड्डियाँ निकालने या किसी अजगर की पीठ से शल्क हटाने जैसा ही कठिन क्यों न हो। मैं सच्चे पुण्य की प्राप्ति और अपने पिछले पापों को मिटाने के लिए बहुत प्रयास कर रहा हूँ। मैंने कभी नहीं सोचा था कि गुरु इतने कृतघ्न होंगे कि वे सही-गलत में अंतर न कर पाने के कारण मेरे अच्छे भाग्य की संभावनाओं को बर्बाद कर देंगे।"

बोधिसत्व ने कहा, "सही-गलत में अंतर न कर पाने का क्या अर्थ है?" बंदर ने उन्हें डाकुओं के मारे जाने की सारी कहानी विस्तार से बताई, और यह भी बताया कि इतने बड़े नरसंहार पर क्रोधित होकर तांग पुजारी ने मामले के सही-गलत पर विचार किए बिना ही बार-बार बंधन कसने का मंत्र पढ़ा और फिर उसे बार-बार भगा दिया। उसने कहा कि वह उनके पास इसलिए आया है क्योंकि उसके पास स्वर्ग या पृथ्वी पर जाने

का कोई रास्ता नहीं था।

बोधिसत्व ने कहा, “तांग पुरोहित अपने सम्राट के आदेश पर पश्चिम की ओर यात्रा कर रहे हैं और वे किसी को भी बेवजह मारे जाने नहीं देंगे। वे एक ऐसे भिक्षु हैं जिनका हृदय दयालुता से भरा है। आप जैसी अपार शक्तियों वाले व्यक्ति को इतने सारे छोटे-मोटे डाकुओं को मारने की क्या आवश्यकता थी? ऐसे डाकू बुरे तो होते हैं, लेकिन वे भी इंसान हैं और उन्हें मारना गलत है। यह दुष्ट जानवरों, राक्षसों और आत्माओं जैसा नहीं है। उन्हें मारना एक पुण्य कर्म है। उन आदमियों को मारना क्रूरता थी। आप उन्हें भगाकर अपने गुरु की जान बचा सकते थे। मेरे निष्पक्ष निर्णय के अनुसार, उन्हें मारना आपका दुष्टतापूर्ण कार्य था।”

“भले ही मैं दुष्ट था,” बंदर ने कहा, “मुझे अच्छे कर्म करके अपने पाप का प्रायश्चित करने का अवसर मिलना चाहिए। मुझे इस तरह भेजकर उन्होंने बहुत बड़ी गलती की। हे बोधिसत्व, कृपा करके, कृपया बंधन मुक्त करने वाला मंत्र बोलिए और मेरा बंधन हटा दीजिए। मैं आपको बंधन वापस दे दूंगा और जल-परदे की गुफा में जाकर रहने लगूंगा।”

बोधिसत्व ने उत्तर दिया, “तथागत बुद्ध ने मुझे बंधन कसने का मंत्र सिखाया था। जब मुझे शास्त्रों को लाने के लिए एक तीर्थयात्री की खोज में पूर्व की ओर भेजा गया था, तब उन्होंने मुझे तीन अनमोल वस्तुएँ दीं: रेशमी चोगा, नौ छल्लों वाली भिक्षु छड़ी और तीन बंधन। उन्होंने मुझे तीन गुप्त मंत्र सिखाए, लेकिन बंधन ढीला करने का मंत्र उनमें से एक नहीं था।”

“तो फिर, बोधिसत्व, मुझे आपसे विदा लेनी होगी,” बंदर ने उत्तर दिया। “आप कहाँ जाएँगे?” बोधिसत्व ने पूछा। “मैं पश्चिमी स्वर्ग जा रहा हूँ तथागत को प्रणाम करने और उनसे बंधन तोड़ने का मंत्र सीखने का अनुरोध करने के लिए।” बंदर ने उत्तर दिया। “आप एक क्षण रुकिए, मैं आपके लिए पता लगा लेता हूँ कि क्या संभावनाएँ अच्छी हैं।”

"कोई ज़रूरत नहीं," बंदर ने कहा। "हालात पहले से ही काफी खराब हैं।"

"मैं तुम्हारे बारे में नहीं, बल्कि तांग पुजारी के बारे में पता लगा रहा हूँ," बोधिसत्व ने

उत्तर दिया।
फिर तेजस्वी बोधिसत्व अपने कमल सिंहासन पर विराजमान हुईं और उनका हृदय तीनों लोकों में विचरण करने लगा, जबकि उनकी बोधगम्य दृष्टियाँ समस्त ब्रह्मांड का भ्रमण करने लगीं। पल भर में उन्होंने कहा, "वुकोंग, तुम्हारे गुरु घायल होने वाले हैं और वे शीघ्र ही तुम्हें ढूंढने आएंगे। तुम यहीं प्रतीक्षा करो, मैं तांग पुरोहित से मिलने जाती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे तुम्हें अपने साथ शास्त्रों को लाने और सच्चे फल को प्राप्त करने के लिए ले जाएं।" महान ऋषि कमल सिंहासन के चरणों में खड़े होकर केवल सहमत हो सके और अपनी अधीरता को नियंत्रित कर सके।
कहानी फिर से तांग पुरोहित के पास लौटती है, जिन्होंने बंदर को विदा करने के बाद लगभग पंद्रह मील पश्चिम की ओर यात्रा की थी। सुअर घोड़े को आगे खींच रहा था और साधु सैंड सामान ढो रहा था। घोड़े की लगाम खींचते हुए उन्होंने कहा, "शिष्यों, मुझे बहुत भूख और प्यास लगी है। भोर से पहले उस कुटिया से निकलने के बाद से मैं कई घंटों से चल रहा हूँ और घोड़ों के उस रक्षक से मैं बहुत परेशान हो गया हूँ। तुममें से कौन मुझसे भोजन माँगेगा?"
“आप नीचे उतर जाइए, स्वामी,” सुअर ने कहा, “मैं यहाँ आस-पास कोई गाँव ढूँढ लेता हूँ जहाँ भीख माँग सकूँ।” यह सुनकर संज़ंग घोड़े से उतर गया, और वह मूर्ख बादल पर सवार होकर ऊपर चला गया और चारों ओर अच्छी तरह से देखा। उसे केवल पहाड़ ही दिखाई दिए: वहाँ किसी इंसान का घर नज़र आने की कोई उम्मीद नहीं थी। बादल को वापस नीचे लाते हुए सुअर ने संज़ंग से कहा, “यहाँ से भीख माँगने की कोई जगह नहीं है। मैंने चारों ओर देखा तो मुझे एक भी खेत नज़र नहीं आया।”
"तो फिर," संजांग ने कहा, "हमारी प्यास बुझाने के लिए थोड़ा पानी ले आओ।"
"मैं दक्षिण की ओर उस पहाड़ पर स्थित झरने से कुछ पानी ले आऊंगा," पिग ने कहा, और फ्रायर सैंड ने उसे भिक्षापात्र थमा दिया। पिग उसे अपने बादल पर ले गया, जबकि स्वामी बहुत देर तक रास्ते के किनारे बैठकर इंतज़ार करता रहा, उसकी प्यास असहनीय होती जा रही थी, और पिग का कोई अता-पता नहीं था। इस बात को साबित करने के लिए एक कविता है, जो इस प्रकार है:
सच्ची भावना को संरक्षित रखें और सांस को पोषित करें, क्योंकि यही सार कहलाता है।

भावना और प्रकृति मूल रूप से एक ही रूप साझा करते थे।
अध्याय 57
792
पश्चिम की यात्रा
जब मन और हृदय में असंतुलन होता है, तभी सभी प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं;
यदि सार और रूप दोनों में गिरावट आती है तो मूल प्रवृत्ति ध्वस्त हो जाएगी।
इन तीनों चिंतन के बिना समस्त प्रयास व्यर्थ है;
यदि चारों तत्व बहुत ही दयनीय स्थिति में हों तो संघर्ष करने का कोई अर्थ नहीं है।
मिट्टी और लकड़ी के बिना धातु या पानी का निर्माण नहीं हो सकता;
आलस्य के माध्यम से धर्म शरीर कैसे प्राप्त किया जा सकता है?
सुअर के पानी न लाने पर स्वामी को प्यास से व्याकुल देखकर, साधु सैंड ने सामान नीचे रखा, सफेद घोड़े को बांधा और कहा, "स्वामी जी, आराम से बैठिए। मैं जल्दी से पानी लेकर आता हूँ।" सान्ज़ांग, जो इतना भावुक था कि कुछ बोल नहीं पा रहा था, ने सहमति में सिर हिलाया, जिसके बाद साधु सैंड बादलों के सहारे दक्षिण की ओर पर्वत की ओर चल पड़ा।
संज़ंग को अपने असहनीय दर्द को अकेले सहने के लिए छोड़ दिया गया था। अपनी गहरी पीड़ा में, उसे एक आवाज़ सुनाई दी जिससे वह चौंक गया और देखने लगा। बंदर रास्ते के किनारे घुटनों के बल बैठा था, उसके हाथ में एक चीनी मिट्टी का प्याला था और वह कह रहा था,
"मेरे बिना आपको पीने के लिए पानी भी नहीं मिलेगा, स्वामी जी। मैं आपके लिए भोजन मांगने जाती हूँ, तब तक आप यह ठंडा पानी पी लीजिए।"
"तुम जो पानी दोगे, मैं नहीं पीऊँगी," संज़ंग ने कहा। "मैं यहीं प्यास से मरना पसंद करूँगी। मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है। चले जाओ।"
“परन्तु मेरे बिना तुम पश्चिमी स्वर्ग तक कभी नहीं पहुँच पाओगे,” बंदर ने कहा। “मैं वहाँ पहुँचूँ या न पहुँचूँ, इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं,” तांग पुजारी ने उत्तर दिया। “दुष्ट बंदर! मुझे क्यों परेशान करते रहते हो?” यह सुनकर बंदर क्रोधित हो गया और अपशब्दों से चिल्लाने लगा, “तुमने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है, निर्दयी, दुष्ट बूढ़े गंजे।” इतना कहकर उसने कटोरा एक तरफ फेंक दिया और अपनी लाठी घुमाकर

संज़ंग की पीठ पर मारा। संज़ंग लगभग बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा और कुछ बोल नहीं पा रहा था। बंदर ने नीले मखमल में लिपटे दो बंडल अपनी बाहों में उठाए और एक कलाबाज़ी करते बादल पर सवार होकर बिना किसी निशान के गायब हो गया।

जब सुअर अपने हाथ में कटोरा लिए दक्षिण की ओर पहाड़ की तरफ तेजी से जा रहा था, तो उसने एक खोखले स्थान में एक फूस की झोपड़ी देखी। पहली बार देखने पर वह उसे नहीं देख पाया था क्योंकि वह पहाड़ की एक तह में छिपी हुई थी।

यह महसूस करते हुए कि अब वह एक घर के करीब है, उस मूर्ख ने सोचा, "अगर मैं उन्हें अपना बदसूरत चेहरा दिखाऊंगा तो वे इतने डर जाएंगे कि मुझे खाना भी नहीं देंगे। सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। बेहतर होगा कि मैं कुछ बेहतर दिखने वाला रूप धारण कर लूं।"

उस मूर्ख भिक्षु ने फिर अपने हाथों से एक मंत्र पढ़ा, जादुई शब्द बोले, खुद को सात-आठ बार हिलाया और एक तपेदिक रोगी भिक्षु में बदल गया, जिसका चेहरा मोटा और पीला था। वह कुछ बुदबुदाते हुए दरवाजे तक गया और पुकारा, "हे प्रभु, क्या आपके रसोईघर में भूखे यात्रियों के लिए कुछ चावल बचे हैं? मैं पूरब से आया हूँ और पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने जा रहा हूँ। मेरे गुरु रास्ते में भूखे-प्यासे हैं। अगर आपके बर्तन में कुछ चावल चिपके हों, तो कृपया मुझे कुछ दे दीजिए ताकि हम अपनी जान बचा सकें।"

संयोगवश, घर के सभी पुरुष धान की रोपाई और बाजरे की बुवाई में व्यस्त थे, और घर में केवल दो महिलाएं थीं जिन्होंने दोपहर के भोजन के लिए चावल पकाए थे और दो थालियों में भरकर खेतों में ले जाने की तैयारी कर रही थीं। बर्तन के तले में कुछ चावल बचे थे। उनकी कमज़ोरी देखकर उन्होंने पूर्व से पश्चिम स्वर्ग से शास्त्र लाने के बारे में उनकी बात को अध्याय 57 मान लिया।

वह बेसुध होकर बड़बड़ा रहा था। उन्हें डर था कि कहीं वह दरवाजे पर ही गिरकर मर न जाए, इसलिए उन्होंने बड़ी धूमधाम से उसके कटोरे में बर्तन के तले से चावल भर दिए। उस मूर्ख ने उनसे कटोरा लिया, अपने असली रूप में लौट आया और जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से वापस चला गया।

जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहा था, उसने "सूअर!" की एक चीख सुनी और ऊपर देखा तो फ्रायर सैंड एक चट्टान के ऊपर खड़े होकर चिल्ला रहे थे, "इधर आओ, इधर आओ।"
फ्रायर सैंड नीचे आए और सीधे उनकी ओर बढ़ते हुए पूछा,
"तुमने इस नदी से थोड़ा ताजा पानी क्यों नहीं लिया? तुम वहाँ क्यों गए थे?"
"यहाँ पहुँचने के बाद मैंने एक घाटी में एक झोपड़ी देखी, इसलिए मैं वहाँ गया और चावल का यह कटोरा माँगा।"
"हमें इसकी बहुत ज़रूरत है," फ्रायर सैंड ने कहा, "लेकिन गुरुजी को बहुत प्यास लगी है, तो हम उनके लिए पानी कैसे लाएँगे?"
"यह तो आसान है," सुअर ने कहा। "जब तक मैं जाकर इस कटोरे में थोड़ा पानी ले आता हूँ, तब तक तुम इस चावल को अपने लबादे की तह में रख लो।"
वे दोनों बेहद प्रसन्न होकर वापस रास्ते पर लौटे, तभी उन्होंने देखा कि संज़ंग मिट्टी में औंधे मुंह पड़ा है। सफेद घोड़े की लगाम छूट गई थी और वह रास्ते के किनारे इधर-उधर दौड़ रहा था, हिनहिना रहा था। सामान का कोई आहट नहीं थी। सुअर डर से लड़खड़ा गया और अपनी छाती पीटते हुए बोला, "कहीं ऐसा तो नहीं है?"
वह चिल्लाया, "मुझे मत बताओ। मंकी द्वारा भगाए गए गिरोह के बचे हुए लोग वापस आ गए हैं, उन्होंने सरदार को मार डाला है और सामान चुरा लिया है।"
"घोड़े को बांधो," साधु सैंड ने कहा। "अब हम क्या करेंगे? हम अपनी यात्रा के आधे रास्ते में ही असफल हो गए हैं। स्वामी!"
वह फूट-फूटकर रो रहा था और उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।
"रोओ मत, भाई," सुअर ने कहा। "क्योंकि यही हुआ है, इसलिए हमें धर्मग्रंथ लाने का विचार छोड़ना पड़ेगा। तुम स्वामी के शव का ध्यान रखना। मैं घोड़े को तब तक संभाल कर रखूँगा जब तक मैं किसी कस्बे, गाँव, बाज़ार या सराय में न पहुँच जाऊँ जहाँ मैं उसे कुछ चाँदी के सिक्कों में बेचकर उनके लिए एक ताबूत खरीद सकूँ। फिर हम अलग-अलग रास्तों पर चले जाएँगे।"
अपने स्वामी की मृत्यु का शोक सहन न कर पाने के कारण, साधु सैंड ने शव को पलटकर अपना चेहरा उनके चेहरे से गर्म किया। "बेचारे स्वामी!" वह रोते हुए बोला, तभी उसने स्वामी की नाक से गर्म साँसें आते हुए देखीं और उनकी छाती में गर्माहट महसूस की।
"इधर आओ, सुअर," उसने चिल्लाकर कहा, "मालिक अभी भी जीवित हैं।" सुअर

पास आया और संज़ंग को बैठने में मदद की।
जब संजांग को होश आया तो वह कराहते हुए बोला, "उस दुष्ट बंदर ने मेरी हत्या करने की कोशिश की।"
"कौन सा मकाक?" बाकी दोनों ने पूछा। आदरणीय बुजुर्ग ने आह भरी और कुछ नहीं कहा।
जब उसने पानी मांगा और कुछ घूंट पी लिया, तब उसने जवाब दिया, "तुम्हारे जाते ही वुकॉन्ग फिर से मुझे परेशान करने आ गया। जब मैंने उसे वापस लेने से इनकार कर दिया, तो उसने मुझे अपनी लाठी से मारा और नीले मखमल में लिपटे बंडल चुरा लिए।" यह सुनकर सूअर के दांत किटकिटाने लगे और उसका क्रोध बढ़ता ही गया।
"उस बंदर को धिक्कार है," उसने कहा। "वह इतना भयानक काम कैसे कर सकता है? मालिक का ख्याल रखना," उसने फ्रायर सैंड को संबोधित करते हुए कहा, "मैं उसके घर से बंडल वापस लाने जा रहा हूँ।"
"गुस्सा मत करो," साधु सैंड ने कहा। "चलो मालिक को उस घाटी में बनी झोपड़ी तक ले चलते हैं ताकि वे गर्म चाय मांग सकें। फिर हम तुम्हारे द्वारा मांगे गए चावल गर्म कर सकते हैं और बंदर का पीछा करने से पहले मालिक को ठीक कर सकते हैं।"
इस सुझाव को मानते हुए पिग ने स्वामी को घोड़े पर वापस चढ़ने में मदद की। पानी का कटोरा और फ्रायर सैंड के वस्त्र में चावल लेकर वे सीधे कुटिया के दरवाजे की ओर चल पड़े। घर में केवल एक बूढ़ी औरत थी, और उन्हें देखते ही वह जितनी जल्दी हो सके छिप गई। फ्रायर सैंड ने अपने हाथ जोड़ लिए। (अध्याय 57)

उसने अपनी छाती पर हाथ रखकर कहा, "हे देवी, हमें पूर्व में स्थित तांग दरबार द्वारा पश्चिमी स्वर्ग भेजा गया है। हमारे स्वामी की तबीयत ठीक नहीं है, इसलिए मैं आपसे उनके चावल गर्म करने के लिए कुछ गर्म चाय मांगने आया हूँ।"
“अभी-अभी एक बीमार भिक्षु यहाँ भीख माँगने आया था, जिसने कहा कि वह पूरब से आया है,” बूढ़ी औरत ने जवाब दिया। “अब तुम भी कह रहे हो कि तुम पूरब से आए हो। घर पर कोई नहीं है। कृपया कहीं और कोशिश करो।”
यह सुनकर, आदरणीय बुजुर्ग सुअर की सहायता से घोड़े से उतरे, उन्हें प्रणाम किया और बोले, "महोदया, भारत में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए थंडर मठ

जाते समय मेरे तीन शिष्य थे जो मेरी रक्षा करते थे। लेकिन मेरे वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग जन्मजात हत्यारा है और दयालु नहीं है, इसलिए मैंने उसे भेज दिया। मुझे घोर आश्चर्य हुआ कि वह चुपके से मेरे पास आया, मेरी पीठ पर वार किया और मेरे कपड़े, सामान और कटोरा चुरा लिया। मैं अपने एक अन्य शिष्य को उसके पीछे भेजना चाहता हूँ, और क्योंकि मैं सड़क किनारे नहीं रुक सकता, इसलिए मैं यहाँ आपसे कुछ समय के लिए विश्राम करने की अनुमति माँगने आया हूँ। यह केवल सामान मिलने तक ही होगा। मैं ज़्यादा देर नहीं रुकूँगा।"

"अभी-अभी एक तपेदिक से पीड़ित, मोटे और पीले चेहरे वाले भिक्षु ने हमसे कुछ भोजन मांगा," महिला ने कहा। "उसने कहा कि वह पूरब से आया है और पश्चिमी स्वर्ग जा रहा है। आप जैसे लोगों का दूसरा समूह तो हो ही नहीं सकता।"

"वो मैं ही था," सुअर ने अपनी हंसी रोक न पाने के कारण कहा। "मैंने खुद को ऐसा दिखाया था। मुझे लगा था कि मेरी लंबी थूथन और बड़े कान तुम्हें इतना डरा देंगे कि तुम मुझे खाना नहीं दोगे। अगर तुम्हें यकीन नहीं है, तो मेरे भाई ने तुम्हारे बर्तन के तले से चावल निकालकर अपनी कमीज में छिपा रखे हैं।"

चावल को पहचानते ही बूढ़ी औरत ने उन्हें भगाने की कोशिश करना बंद कर दिया। उसने उन्हें अंदर बैठने को कहा और गर्म चाय का एक बर्तन तैयार किया, जो उसने साधु सैंड को चावल गर्म करने के लिए दिया। उसने ऐसा किया और चाय अपने स्वामी को दे दी, जिसने कुछ घूंट खाए, थोड़ी देर शांत होकर बैठा रहा, फिर पूछा, "तुममें से कौन सामान लाने जाएगा?"

"जब तुमने उसे पिछले साल भेजा था," सुअर ने उत्तर दिया, "मैं उसे लेने गया था। मुझे फूलों और फलों के पहाड़ पर स्थित उसकी जल-पर्दा गुफा का रास्ता पता है। तुम यहीं रुको, मैं जाता हूँ।"

“नहीं,” संज़ंग ने कहा, “तुम नहीं। तुम्हारी उस बंदर से कभी नहीं बनी, और वैसे भी तुम बहुत बदतमीज़ हो। अगर तुमने कुछ भी गलत कहा तो वो तुम्हें मारेगा। वूज़िंग को जाने दो।” साधु सैंड तुरंत मान गया, और संज़ंग ने उसे ये निर्देश दिए: “जब तुम वहाँ पहुँचो तो स्थिति पर कड़ी नज़र रखना। अगर वो तुम्हें बंडल वापस देने को तैयार हो तो उन्हें स्वीकार करते समय बहुत आभार जताना। अगर वो मना करे तो किसी भी हालत में उससे झगड़ा मत करना। सीधे दक्षिणी सागर में बोधिसत्व के पास जाओ, उन्हें सब कुछ बताओ और उनसे वूज़िंग से बंडल वापस माँगने के लिए कहो।”

फ्रायर सैंड ने उसकी बात मान ली और सुअर से कहा, "मैं अब बंदर को ढूंढने जा रहा हूँ। कुछ भी हो जाए, शिकायत मत करना। मालिक का ठीक से ख्याल रखना। इन लोगों से झगड़ा मत करना, वरना वे तुम्हें खाना नहीं देंगे। मैं जल्दी वापस आ जाऊँगा।"

"मैं समझ गया," पिग ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। "जाओ, और सामान मिले या न मिले, जल्दी वापस आना। नहीं तो हम दोनों तरफ से हार जाएँगे," फिर फ्रायर सैंड ने हाथ से मंत्र पढ़ा और बादल के सहारे पूर्वी महाद्वीप की ओर चल पड़ा। सचमुच:

जब शरीर तो मौजूद होता है लेकिन आत्मा चली जाती है, तो उसे जीवित रखने के लिए कुछ भी नहीं बचता; बिना आग के भट्टी सिंदूर को शुद्ध नहीं कर सकती।

पीली पत्नी धातु के बुजुर्ग की तलाश में स्वामी को छोड़कर चली जाती है।

अध्याय 57

795

पश्चिम की यात्रा

वुड की मां मालिक की देखभाल करने के लिए बीमार होने का नाटक करती है।

कौन जाने यह सफर कब खत्म होगा?

या फिर वह दूर से कब लौटेगा?

पंच तत्व एक दूसरे को जन्म देते हैं और एक दूसरे को त्याग देते हैं।

जब तक वह मनो-बंदर वापस नहीं आ जाता, तब तक सब कुछ अव्यवस्थित रहेगा।

फ्रायर सैंड तीन दिन और तीन रात तक उड़ता रहा, तब जाकर वह पूर्वी महासागर तक पहुँचा। उसकी लहरों की आवाज़ सुनकर उसने नीचे देखा और पाया कि...

आसमान तक फैली काली धुंध और अंधकारमय वाष्प;

भोर की ठंडी रोशनी में सागर सूर्य को आलिंगन दे रहा है।

लेकिन यिंगझोऊ और अन्य अमर द्वीपों को पार करते हुए, वह नज़ारे का आनंद लेने के मूड में नहीं था और पूर्व की ओर सीधे फूलों और फलों के पर्वत की ओर बढ़ गया। समुद्री हवा पर सवार होकर और पानी पर चलते हुए, उसे बहुत समय लगा जब तक कि उसे एक पंक्ति में सटी हुई भाले जैसी चोटियाँ और स्क्रीन जैसी खड़ी चट्टानें दिखाई नहीं दीं। जब वह सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचा, तो उसने अपने बादल को उतारा और पर्वत से नीचे उतरकर जल परदे की गुफा की ओर चल पड़ा। जैसे ही वह पास पहुँचा, उसने एक बड़ा शोर सुना: पर्वत चिल्लाते हुए बंदरों की आत्माओं से भरा हुआ

था। और करीब आने पर उसने बंदर को एक ऊँचे पत्थर के चबूतरे पर बैठे देखा, जिसके दोनों हाथों में कागज का एक टुकड़ा था जिसे वह पढ़ रहा था।

हम, पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश के सम्राट ली, अपने लघु भाई, धर्म के विद्वान चेन शुआनज़ैंग को अपने समक्ष बुलाकर उन्हें पश्चिम में भारत के सहा गिद्ध शिखर पर स्थित गर्जन मठ में भगवान बुद्ध से शास्त्र प्राप्त करने का आदेश देते हैं। जब एक अचानक बीमारी के कारण हमारी आत्मा पाताल लोक में भटकने लगी, तो सौभाग्यवश अंधकार के स्वामी ने हमें जीवन के कुछ वर्ष बढ़ा दिए और हमें सृजित जगत में लौटा दिया। तब से हमने मृतकों की आत्माओं को परलोक पहुंचाने के लिए अनेक प्रार्थना सभाएं आयोजित की हैं और वेदी बनाई हैं। हमें दुखों से मुक्ति दिलाने वाली स्वर्णमयी बोधिसत्व गुआनयिन के दर्शन का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, जिन्होंने हमें बताया कि पश्चिम में स्थित बुद्ध के पास ऐसे शास्त्र हैं जो सभी भटकी हुई आत्माओं को मुक्ति दिलाएंगे। इसलिए हमने धर्म गुरु शुआनज़ैंग को सूत्रों और गाथाओं की खोज में हजार पर्वतों को पार करते हुए लंबी यात्रा पर भेजा है। हम निवेदन करते हैं कि पश्चिम के जिन राज्यों से होकर वे गुजरे, उनमें उन्हें इस पासपोर्ट के अनुसार आगे बढ़ने की अनुमति दी जाए और उनके पवित्र कार्य को व्यर्थ न जाने दिया जाए। महान तांग राजवंश के झेंगगुआन के तेरहवें वर्ष की शरद ऋतु के एक शुभ दिन पर दिया गया।

उस विशाल साम्राज्य को छोड़ने के बाद वह कई अन्य राज्यों से होकर गुजरा है। इस यात्रा में उसने तीन शिष्यों को अपने साथ लिया है। वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग हैं; दूसरे झू वुनेन्ग या झू बाजी हैं; और तीसरे शा वुजिंग या साधु सैंड हैं।

अध्याय 57

796

पश्चिम की यात्रा

संज़ैंग के पासपोर्ट का पाठ एक बार पढ़ने के बाद, उसने उसे दोबारा पढ़ा, जिस पर फ्रायर सैंड खुद को रोक नहीं पाया और ज़ोर से चिल्लाया, "भाई, आप गुरुजी का पासपोर्ट क्यों पढ़ रहे हैं?"

यह सुनकर बंदर ने अपना सिर झटक दिया और फ्रायर सैंड को पहचानने से इनकार करते हुए चिल्लाया, "उसे गिरफ्तार करो!"

"इसे गिरफ्तार करो!" सभी बंदर उस पर टूट पड़े और उसे घेर लिया, उसे घसीटते हुए

उस बंदर की ओर ले गए, जो चिल्लाया, "तुम खुद को क्या समझते हो? कितनी हिम्मत है तुम्हारी, हमारे अमर लोगों की गुफा के इतने करीब आने की।"
बंदर को ठंडा पड़ते और उसे पहचानने से इनकार करते देख, साधु सैंड के पास उसके पास झुककर प्रणाम करने और यह कहने के अलावा कोई चारा नहीं था, "बड़े भाई, हमारे स्वामी का आप पर इतना क्रोधित होना, आपको शाप देना और आपको भगा देना गलत था। मुझे और सुअर को उन्हें ऐसा न करने के लिए मना लेना चाहिए था, और जब आप इतनी कृपा करके वापस आए थे, तब हमें अपने भूखे-प्यासे स्वामी के लिए पानी की तलाश में और भोजन की भीख मांगने के लिए दूर नहीं जाना चाहिए था। स्वामी का इतना जिद्दी होना और आपको फिर से रहने देने से इनकार करना गलत था। इसीलिए आपने उन्हें बेहोश कर दिया और सामान ले लिया। जब हम वापस आए तो हमने स्वामी को होश में लाया और अब मैं आपसे मिलने आया हूँ। अगर आप स्वामी से नफरत नहीं करते और अतीत में आपको यातनाओं से मुक्त करने के लिए उनके ऋण को नहीं भूले हैं, तो क्या आप सामान लेकर मेरे साथ उनसे मिलने नहीं आएंगे? तब हम सब पश्चिमी स्वर्ग जा सकते हैं और अपना सच्चा पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं। अगर आप वास्तव में उनसे इतनी गहरी नफरत करते हैं कि मेरे साथ नहीं आएंगे, तो कृपया, कृपया मुझे बंडल दे दें। तब आप अपने जीवन के सूर्यास्त का आनंद ले सकते हैं।" अपने पैतृक पर्वत में यहाँ का जीवन।
इस तरह हम सब ठीक रहेंगे।
इस पर बंदर ने उपहास भरी हंसी के साथ जवाब दिया, "भाई, मेरे मन में ऐसा बिल्कुल नहीं था। मैंने मालिक को इसलिए नहीं मारा और सामान इसलिए नहीं लिया क्योंकि मैं पश्चिम नहीं जा रहा हूँ या यहाँ रहना चाहता हूँ।"
मैं पासपोर्ट को कंठस्थ कर रहा हूँ ताकि मैं पश्चिम के स्वर्ग में जाकर बुद्ध की उपासना कर सकूँ और स्वयं शास्त्रों को ला सकूँ। उन्हें पूर्व में वापस लाने का सारा यश मुझे ही मिलेगा। मैं दक्षिणी जंबू महाद्वीप के लोगों को यह विश्वास दिलाऊँगा कि मैं एक महान गुरु हूँ और मैं सदा के लिए प्रसिद्ध हो जाऊँगा।
"आप जो कह रहे हैं, वह पूरी तरह सही नहीं है," साधु सैंड ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "किसी ने भी कभी नहीं सुना कि नौसिखिए सन शास्त्रों को लाने गए हों। हमारे तथागत बुद्ध ने सच्चे शास्त्रों के तीन भंडार बनाए और बोधिसत्व गुआनयिन को पूर्व में भेजा ताकि वे उस तीर्थयात्री को खोजें जो उन्हें लाने जाएगा। हमारा काम उस

तीर्थयात्री को हज़ारों पहाड़ों और रास्ते में पड़ने वाले सभी देशों से होकर ले जाना है। जैसा कि बोधिसत्व ने हमें बताया है, वह तीर्थयात्री कभी पूजनीय बुजुर्ग स्वर्ण झींगुर थे, जो तथागत बुद्ध के शिष्य थे। क्योंकि उन्हें गिद्ध शिखर से निर्वासित कर दिया गया था और पूर्व में पुनर्जन्म हुआ था, क्योंकि उन्होंने भगवान बुद्ध के शास्त्र संबंधी उपदेशों को नहीं सुना था, इसलिए उन्हें पश्चिम में अपनी सच्ची सिद्धि प्राप्त करनी है और महान मार्ग पर लौटना है। हम तीनों को इसलिए बचाया गया ताकि हम उन्हें यात्रा में मिलने वाले राक्षसों से बचा सकें। अगर आप तांग पुजारी के बिना आते हैं तो कोई भी भगवान बुद्ध आपको शास्त्र नहीं देंगे। यह व्यर्थ का प्रयास होगा।"

“भाई,” बंदर ने कहा, “तुम हमेशा से ही बड़े मूर्ख रहे हो। तुम्हें आधी बात भी नहीं पता। तुम कहते हो कि तुम्हारे पास एक तांग पुजारी है, लेकिन तुम्हें क्या लगता है कि मेरे पास साथ ले जाने के लिए कोई नहीं है? मैंने यहाँ एक और पवित्र भिक्षु को साथ ले जाने के लिए चुना है। कोई बात नहीं! हम कल अपनी बड़ी यात्रा शुरू कर रहे हैं। अगर तुम्हें विश्वास नहीं है तो मैं तुम्हें उसे दिखा दूँगा। “बच्चों,” उसने पुकारा, “मेरे गुरु को तुरंत बाहर लाओ।” वे दौड़कर अंदर गए और फिर एक सफेद घोड़े, एक तांग सान्ज़ांग, सामान ढोने वाले एक सूअर और अपने मठवासी कर्मचारियों के साथ एक भिक्षु सैंड को लेकर बाहर आए।

“मैंने अपना नाम कभी नहीं बदला,” यह देखकर साधु सैंड क्रोधित होकर दहाड़ा। “ऐसा हो ही नहीं सकता कि कोई दूसरा साधु सैंड हो। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! ये लो!” शानदार साधु सैंड ने अपनी दानव-नाशक छड़ी दोनों हाथों से उठाई और अपने हमशक्ल के सिर पर वार किया, जिससे उसकी तुरंत मृत्यु हो गई और यह प्रकट हो गया कि वह वास्तव में एक बंदर की आत्मा था। इससे बंदर इतना क्रोधित हुआ कि उसने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी घुमाई और सभी बंदरों को अपने चारों ओर घेर लिया। साधु सैंड ने उससे लड़ते हुए अपना रास्ता बनाया और बादल के सहारे भाग निकला।

“वह दुष्ट बंदर इतना क्रूर हो रहा है कि मुझे उसकी शिकायत बोधिसत्व से करनी पड़ेगी,” उसने सोचा; और क्योंकि साधु सैंड ने एक बंदर आत्मा को मार डाला था और उसे भगा दिया गया था, इसलिए बंदर उसके पीछे नहीं गया। अपनी गुफा में वापस जाकर उसने अपने साथियों को लाश को एक तरफ घसीटने, उसकी खाल उतारने और उसका मांस पकाने का आदेश दिया, जिसे उसने और अन्य बंदरों ने

नारियल की ताड़ी और अंगूर की शराब के साथ खाया। फिर उसने एक और दुष्ट बंदर चुना। (अध्याय 57)

797

पश्चिम की यात्रा

जो रूप बदलने में माहिर था, उसने फ्रायर सैंड का रूप धारण किया और पश्चिम की यात्रा की तैयारी करते हुए उसे फिर से प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। यहीं पर हम उसे छोड़ते हैं।

इसी बीच, फ्रायर सैंड ने अपने बादल को पूर्वी महासागर से दूर उड़ाया और एक दिन और एक रात की यात्रा करके दक्षिणी महासागर तक पहुँचे। कुछ ही देर में, पास ही में पोटारका पर्वत दिखाई देने लगा, इसलिए वे आगे बढ़े और फिर अपने बादल को नीचे उतारा ताकि रुककर उसे देख सकें। यह एक अद्भुत दृश्य था। सचमुच: इसमें स्वर्ग और पृथ्वी के सभी रहस्य समाहित थे।

यहां नदियों का संगम है।
जहां सूर्य और तारे नहाते और स्नान करते हैं।
यहां सभी प्राणी आते हैं,
हवाएं जन्म लेती हैं और लहरों में चंद्रमा डगमगाता है।
जब ज्वार की लहर ऊंची उठती है तो विशालकाय जीव का रूप बदल जाता है।
विशाल लहरों के बीच एक बड़ा कछुआ तैर रहा है।
यह जलक्षेत्र पश्चिमी और उत्तरी समुद्रों से जुड़ा हुआ है;
ये तरंगें मध्य और पूर्वी महासागरों से जुड़ती हैं।
चारों समुद्र पृथ्वी की धमनियों की तरह आपस में जुड़े हुए हैं;
जादुई द्वीपों में अमर लोगों के महल हैं।
सांसारिक स्वर्गों के बारे में भूल जाओ;
पोटारका की बादलों से ढकी गुफा को देखो।
एक अद्भुत दृश्य:
सूर्यास्त के समय शिखर की उदात्त आत्मा महान होती है;
चट्टानों के नीचे हवाएं लहरदार क्रिस्टल जैसी आकृतियां बनाती हैं।
बैंगनी बांस के झुरमुट में मोर उड़ते हैं;
हरे चिनार के पेड़ों की शाखाओं में तोते बातें करते हैं।

जेड और जैस्पर के फूल सदा खिलते रहते हैं;
बहुमूल्य वृक्ष और सुनहरे कमल हर साल उगते हैं।
अध्याय 57
798
पश्चिम की यात्रा
सफेद सारस इस चोटी पर श्रद्धांजलि अर्पित करने आते हैं;
फीनिक्स पक्षी अक्सर पर्वतीय मंडपों में उतरते हैं।
यहां तक कि मछलियां भी अपने असली स्वभाव को निखारने लगती हैं।
वे धर्मग्रंथों को सुनते हुए लहरों में उछल-कूद कर रहे थे।
जब साधु सैंड इस मनमोहक दृश्य का आनंद लेते हुए पहाड़ पर टहल रहे थे, तभी नौसिखिए मोक्सा उनके पास आए और बोले, "शा वुजिंग, आप तांग पुजारी को शास्त्रों को लाने के लिए उनके साथ जाने के बजाय यहां क्यों हैं?"
फ्रायर सैंड ने उन्हें प्रणाम किया और उत्तर दिया, "एक ऐसा विषय है जिस पर मैं बोधिसत्व से मिलना चाहता हूँ। क्या आप मुझे उनसे मिलवा सकते हैं?"
मोक्सा, जब यह समझ गया कि वह बंदर को ढूंढ रहा है, तो उसने आगे कोई प्रश्न नहीं पूछा बल्कि सीधे बोधिसत्व के पास गया और कहा, "तांग पुजारी का कनिष्ठ शिष्य शा वुजिंग यहां श्रद्धांजलि अर्पित करने आया है।"
जब बंदर, जो अभी भी कमल के सिंहासन के नीचे था, ने यह सुना तो मुस्कुराते हुए बोला, "बोधिसत्व, अगर साधु सैंड आपकी मदद मांगने आए हैं, तो तांग पुरोहित ज़रूर मुसीबत में होंगे।" तब बोधिसत्व ने मोक्ष को उन्हें अंदर लाने के लिए कहा। साधु सैंड ने ज़मीन पर लेटकर उन्हें प्रणाम किया, फिर ऊपर देखा और अपनी शिकायत शुरू करने ही वाले थे कि उन्होंने बंदर को उनके बगल में खड़ा देखा। बिना कुछ कहे उन्होंने अपने राक्षस-वशीकरण दंड से बंदर के चेहरे पर प्रहार किया। बंदर ने पलटवार करने के बजाय वार से बचकर रास्ते से हट गया।
"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, तुम घोर दुष्ट, धोखेबाज बंदर हो," फ्रायर सैंड दहाड़ा। "तुम बोधिसत्व को भी धोखा देने की कोशिश कर रहे हो।"
बोधिसत्व ने चिल्लाकर कहा, "उसे मत मारो। मुझे बताओ क्या हो रहा है।"
तभी साधु सैंड ने अपनी कीमती छड़ी नीचे रख दी और कमल के सिंहासन के सामने फिर से प्रणाम करते हुए भयंकर क्रोध से कहा, "इस बंदर ने यात्रा में कितने कत्ल

किए हैं, इसकी गिनती हम भूल चुके हैं। पिछले दिन इसने दो लुटेरों को मार डाला और सरदार ने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई, इसलिए जब हम अगली रात डाकुओं के सरदार के घर पर रुके थे, तो यह देखकर हमें बहुत बड़ा झटका लगा कि उसने गिरोह के जितने लोगों को मार सकता था, मार डाला और खून से लथपथ एक कटा हुआ सिर सरदार को दिखाने के लिए ले गया। सरदार इतना डर गया कि वह अपने घोड़े से गिर गया, बंदर को कुछ गालियां दीं और उसे भगा दिया। उसके जाने के बाद सरदार इतना भूखा-प्यासा था कि उसने सूअर को पानी लाने के लिए भेजा, और क्योंकि सूअर को वापस आने में बहुत देर हो गई, इसलिए उसने मुझे उसके पीछे भेज दिया। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि बंदर वापस आएगा, अपने लोहे के डंडे से सरदार को मारेगा और हमारे जाने के दौरान नीले मखमल में लिपटे दो बंडल चुरा लेगा। हम वापस आए और सरदार को समझाया। फिर मैं जल परदे तक गया।" मैं बंदर को लाने के लिए गुफा में गया। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह एकदम ठंडा पड़ गया और मुझे पहचानने से इनकार कर दिया। वह गुरु का पासपोर्ट बार-बार जोर से पढ़ रहा था। जब मैंने उससे पूछा कि क्यों, तो उसने कहा कि चूंकि वह तांग पुजारी को आगे नहीं ले जा सकता, इसलिए वह पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाकर स्वयं पूर्व की ओर ले जाएगा। तब लोग उसे एक महान गुरु मानेंगे और वह हमेशा के लिए प्रसिद्ध हो जाएगा। जब मैंने पूछा कि अगर तांग पुजारी उसके साथ नहीं है तो उसे शास्त्र कौन देगा, तो उसने कहा कि उसने एक पवित्र भिक्षु को चुना है और उसे बाहर आने के लिए कहा है। वहाँ एक सफेद घोड़ा, एक तांग पुजारी, एक सुअर और एक साधु रेत थे। 'मैं साधु रेत,' मैंने कहा, 'और वह इकलौता साधु रेत भी।' मैंने उसे अपनी छड़ी से एक प्रहार किया, और वह एक बंदर आत्मा निकला। जब बंदर अपने दल के साथ मेरे पीछे आया, तो मैंने आपको, बोधिसत्व, बताने और आपकी सहायता मांगने के लिए यहाँ आने का फैसला किया। मुझे कभी एहसास नहीं हुआ कि वह कलाबाजी करते हुए बादल से मुझसे पहले यहाँ पहुँच जाएगा, या वह वह अपनी मीठी बातों से आपको मूर्ख बना देता है।

“वुजिंग, तुम्हें इस तरह की निंदा नहीं करनी चाहिए,” बोधिसत्व ने कहा। “वुकोंग चार दिनों से यहाँ है। मैंने उसे वापस नहीं जाने दिया, और उसने किसी अन्य तांग पुजारी

को शास्त्र लाने के लिए नहीं भेजा।”
"लेकिन जल परदे वाली गुफा में उस बंदर का क्या हुआ? मैं तुम्हें सच बता रहा हूँ," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया।
“शांत हो जाओ,” बोधिसत्व ने कहा। “मैं वुकॉन्ग को तुम्हारे साथ पुष्प-फल पर्वत पर वापस भेज रहा हूँ ताकि वह अच्छी तरह से छानबीन कर ले। अगर वह असली है तो उसे मिटाना मुश्किल होगा, लेकिन अगर वह नकली है तो तुम उसे आसानी से खत्म कर पाओगे। वहाँ पहुँचकर तुम्हें पता चल जाएगा कि वह नकली है या नकली।” इतना कहकर बंदर भाई और रेत भिक्षु बोधिसत्व से विदा लेकर अपनी यात्रा पर निकल पड़े।
फूलों और फलों के पहाड़ की ओर
सही और गलत का खुलासा करना;
पानी के पर्दे वाली गुफा की ओर
झूठ और सच में फर्क करना।
अगर आपको नहीं पता कि उन्होंने उन्हें कैसे अलग किया, तो बेहतर होगा कि आप अगले भाग, अध्याय 58 में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।
दो दिमागों ने आसमान और धरती में हलचल मचा दी
एक शरीर से सच्चे निर्वाण की प्राप्ति संभव नहीं है।
जब बंदर और साधु सैंड ने बोधिसत्व से विदा ली, तो वे शुभ प्रकाश की दो किरणों से दक्षिणी सागर से निकल पड़े। बंदर का कलाबाज़ी करता बादल साधु सैंड के अमर बादल से कहीं अधिक तेज़ था, इसलिए बंदर आगे निकल रहा था जब साधु सैंड ने उसे पीछे खींचकर कहा, "भाई, घर के काम निपटाने के लिए इतनी जल्दी में मुझे अपनी एड़ी दिखाने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरा इंतज़ार करो, मैं तुम्हारे साथ आऊंगा।"
हालाँकि बंदर भाई की मंशा अच्छी थी, फिर भी साधु सैंड को शक होने लगा। दोनों ने मिलकर अपने बादलों में उड़ान भरी और जल्द ही उन्हें फूलों और फलों का पहाड़ दिखाई देने लगा। उन्होंने अपने बादलों को नीचे उतारा और गुफा के बाहर का अच्छी तरह से निरीक्षण किया, जहाँ वास्तव में एक बंदर एक ऊँचे पत्थर के चबूतरे पर बैठा अपने साथी बंदरों के साथ मौज-मस्ती कर रहा था। वह बिल्कुल महान ऋषि जैसा दिखता था: सुनहरे पट्टे में बंधे पीले बाल, सुनहरी पुतलियों वाली तेज आँखें, जटाधारी वस्त्र, बाघ की खाल की स्कर्ट, हाथों में सोने की पट्टी वाली लोहे की गदा और हिरण

की खाल के जूते। उसका चेहरा भी गर्जन देवता की तरह बालों से भरा हुआ था।
शनि ग्रह जैसे गाल;
नुकीले कान और चौड़ा माथा,
अध्याय 58
800
पश्चिम की यात्रा
और लंबे, उभरे हुए नुकीले दांत।
क्रोध के आवेश में आकर महान ऋषि ने साधु सैंड को पीछे छोड़ दिया और दूसरे बंदर की ओर बढ़े, अपना डंडा लहराते हुए और गालियाँ देते हुए चिल्लाए, "तुम किस तरह के राक्षस हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! तुम मेरे जैसे दिखते हो, मेरे बच्चों और पोते-पोतियों को चुराते हो, मेरी अमर गुफा पर कब्जा कर लेते हो, और ऊपर से इस तरह मौज-मस्ती करते हो।" जब दूसरे बंदर ने यह सब सुना तो उसने जवाब देना उचित नहीं समझा और अपने लोहे के डंडे से उस पर झपट पड़ा। जब दोनों बंदर आमने-सामने थे तो सच और झूठ में फर्क करना असंभव था। यह एक शानदार लड़ाई थी।
दो लाठियाँ और बंदरों की आत्माओं का एक जोड़ा,
दो बेहद दुर्जेय शत्रु।
दोनों तांग सम्राट के भाई को ले जाना चाहते हैं;
हर कोई वह हासिल करना चाहता है जिससे उसे प्रसिद्धि मिले।
अब सच्चा बंदर शाक्यमुनि की शिक्षाओं को स्वीकार करता है;
वह पाखंडी राक्षस केवल बौद्ध होने का दिखावा करता है।
जादुई शक्तियों और रूपांतरणों में
असत्य और सत्य में संतुलन है।
एक है आदिम ऊर्जा के ऋषि समतुल्य स्वर्ग,
दूसरा एक पृथ्वी आत्मा है जिसने लंबे समय से अपनी शक्तियों को निखारा है।
एक व्यक्ति अपनी मर्जी से सोने की पट्टी वाली लाठी चलाता है।
दूसरा एक लोहे की छड़ है जो दिल की इच्छा का अनुसरण करती है।
वे एक-दूसरे को रोकते और बचाव करते हैं, लेकिन कोई भी विजयी नहीं होता।
पहले वे गुफा के बाहर एक दूसरे से लड़ते हैं।
लेकिन जल्द ही वे हवा में ही संघर्ष जारी रखते हैं।

उनमें से प्रत्येक अपने-अपने बादलों पर सवार होकर ऊपर उठा और प्रकाश की ओर बढ़ते हुए नौवें आकाश के बादलों में लड़ने लगा। जब साधु सैंड उनके बगल में खड़ा था, तो उसने उनके झगड़े में हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं की क्योंकि वह वास्तव में असली बंदर और नकली बंदर में अंतर नहीं कर पा रहा था। वह अपनी तलवार निकालकर लड़ाई में शामिल होना चाहता था, लेकिन उसे असली बंदर को घायल करने का डर था।

जब वह लंबे समय तक इस दुविधा को सहन कर चुका था, तो वह वापस पहाड़ की ढलान पर उतर गया, जहाँ उसने अपने दानव-नाशक दंड का प्रयोग करते हुए जल परदे की गुफा के बाहर तक पहुँचने के लिए संघर्ष किया। यहाँ उसने सभी दानवों को आतंकित करते हुए भगा दिया, पत्थर की बेंचों को उलट दिया और उन बर्तनों को तोड़ डाला जिन पर वे भोजन कर रहे थे। (अध्याय 58)

और जी भर कर पी रहे थे। लेकिन नीले रंग के मखमल के बंडलों को हर जगह ढूंढने के बावजूद, उन्हें नहीं मिले। जल परदे वाली गुफा का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि उसके प्रवेश द्वार को ढकने वाला झरना दूर से देखने पर सफेद कपड़े के पर्दे जैसा दिखता था और पास से ही असली झरने के रूप में दिखाई देता था। चूंकि साधु सैंड को नहीं पता था कि गुफा का प्रवेश द्वार उसके पीछे है, इसलिए वह अंदर जाने का रास्ता नहीं ढूंढ पाया। उसने अपने बादल को वापस नौवें स्वर्ग में ले जाकर अपनी छड़ी फिर से घुमानी शुरू की, लेकिन फिर भी वार करने में असमर्थ रहा।

“महान ऋषि ने कहा, “महान सैंड, आप यहाँ ज़्यादा मदद नहीं कर सकते। वापस जाइए और गुरु को बताइए कि हमारे साथ क्या हो रहा है, जबकि मैं इस राक्षस को दक्षिणी महासागर में स्थित पोटारका द्वीप पर ले जाता हूँ ताकि बोधिसत्व मुझे असली बंदर के रूप में पहचान सकें।” दूसरे बंदर ने भी वही बात दोहराई जो उन्होंने कही थी। क्योंकि वे दिखने और बोलने में बिलकुल एक जैसे थे, इसलिए महान ऋषि सैंड उनमें अंतर नहीं कर पाए। उन्हें बस इतना करना था कि वे अपने बादल पर सवार होकर वापस तांग पुजारी के पास चले गए।

इसी बीच, दोनों बंदर लड़ते-झगड़ते और चिल्लाते हुए दक्षिणी महासागर की ओर बढ़े, जहाँ से वे सीधे पोटारका द्वीप पर पहुँच गए और एक-दूसरे को मारते-पीटते रहे।

उनकी लगातार चीख-पुकार से धर्म के रक्षक सभी देवता विचलित हो गए, इसलिए वे ज्वार गुफा में गए और सूचना दी, "बोधिसत्व, दो सन वुकॉन्ग सचमुच लड़ते-लड़ते यहाँ आ गए हैं।"

बोधिसत्व अपने कमल सिंहासन से नीचे उतरीं और मोक्ष, सेवक सुधना और नाग कन्या के साथ प्रवेश द्वार पर गईं, जहाँ उन्होंने चिल्लाकर कहा, "वहीं रुक जाओ, दुष्ट प्राणी।"

दोनों बंदरों ने एक-दूसरे को पकड़ लिया, जबकि असली बंदर बोला, "बोधिसत्व, यह दुष्ट राक्षस बिल्कुल मेरे जैसा दिखता है। हमारी लड़ाई जल परदे वाली गुफा में शुरू हुई थी और बहुत लंबे समय से चल रही है, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला है। साधु सैंड की कमजोर आंखें हम दोनों में फर्क नहीं कर सकतीं, इसलिए वह कुछ भी मदद नहीं कर सकते। मैंने उन्हें पश्चिम में गुरु को सूचना देने के लिए भेज दिया, जबकि मैं इस धोखेबाज से यहाँ लड़ रहा था ताकि आप असली और नकली में फर्क कर सकें। बोधिसत्व, आपकी आंखें बहुत तेज हैं।"

फिर दूसरे बंदर ने भी ठीक यही बात कही। देवताओं और बोधिसत्व ने बड़ी गौर से देखा, लेकिन वे यह नहीं बता पाए कि कौन सा बंदर कौन है। बोधिसत्व ने कहा, "तुम दोनों एक-दूसरे को छोड़ दो और एक-एक तरफ खड़े हो जाओ, मैं फिर से देख लेता हूँ।"

जैसा उसने उन्हें बताया, वैसा ही करते हुए, उसके बाईं ओर वाले ने कहा, "मैं असली बंदर हूँ," और उसके दाईं ओर वाले ने कहा, "वह एक धोखेबाज है।"

तब बोधिसत्व ने मोक्ष और सुधना को अपने पास बुलाया और धीरे से ये निर्देश दिए: "मैं चाहती हूँ कि तुममें से एक-एक उनके बहुत करीब खड़ी हो जाओ, जबकि मैं धीरे से बंधन कसने का मंत्र पढ़ूँ। जो पीड़ा में होगी, वही असली होगी, और जो पीड़ा में नहीं होगी, वही पाखंडी होगी।"

उनमें से एक-एक बंदर के पास गया, लेकिन जैसे ही बोधिसत्व ने गुप्त रूप से मंत्र पढ़ा, वे दोनों दर्द से चीख उठे, अपना सिर पकड़ लिया और ज़मीन पर लोटते हुए चिल्लाने लगे, "रुको! रुको!" जैसे ही उसने रुकने को कहा, वे फिर से एक-दूसरे को पकड़ लिया और लड़ने और चिल्लाने लगे। हताश होकर बोधिसत्व ने देवताओं और मोक्ष को मदद के लिए बुलाया, लेकिन उनमें से किसी ने भी असली बंदर को चोट पहुँचाने के डर से वार करने की हिम्मत नहीं की।

बोधिसत्व ने "सन वुकॉन्ग" कहकर पुकारा, और दोनों बंदरों ने उत्तर दिया। बोधिसत्व ने कहा, "चूंकि तुम्हें एक बार घोड़ों का रक्षक नियुक्त किया गया था, इसलिए जब तुमने स्वर्गलोक में उत्पात मचाया, तो सभी स्वर्गीय सेनापति तुम्हें पहचान गए। ऊपरी लोक में जाओ: वहाँ तुम दोनों के बीच अंतर करो। वापस आकर मुझे परिणाम बताओ।" महान ऋषि ने बोधिसत्व की दयालुता के लिए उनका धन्यवाद किया और दूसरे बंदर ने भी उनका धन्यवाद किया।

अध्याय 58

802

पश्चिम की यात्रा

एक-दूसरे को खींचते और झटकते हुए तथा अपना निरंतर शोर मचाते हुए वे सीधे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार पर पहुँचे, जहाँ स्वर्ग के राजा विरुपाक्ष ने चार स्वर्गीय सेनापतियों मा, झाओ, वेन और गुआन तथा अन्य सभी छोटे-बड़े द्वार देवताओं का नेतृत्व करते हुए प्रवेश द्वार को अपने हथियारों से अवरुद्ध कर दिया।

"तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने चिल्लाकर कहा। "यह झगड़ा करने की जगह नहीं है।"

“सांझांग ने मुझे कुछ डाकुओं को मारने के आरोप में निर्वासित कर दिया था, जब मैं शास्त्रों को लाने के लिए उनके साथ पश्चिमी स्वर्ग जा रहा था,” महान ऋषि ने उत्तर दिया। “मैं शिकायत करने के लिए पोताराका गया। मुझे यह देखकर बहुत भय हुआ कि उस दुष्ट आत्मा ने मेरा रूप धारण कर लिया, तांग पुजारी को धक्का देकर गिरा दिया और मेरा सामान चुरा लिया। साधु सैंड मेरी तलाश में पुष्प और फल पर्वत पर गए और पाया कि उस दुष्ट आत्मा ने मेरी गुफा पर कब्जा कर लिया है। फिर वे बोधिसत्व को बताने और उनकी सहायता मांगने के लिए पोताराका गए। जब उन्होंने मुझे वहाँ देखा, तो उन्होंने मुझ पर यह घिनौना आरोप लगाया कि मैं कलाबाजी करते हुए बादल से पहले वहाँ पहुँच गया था और बोधिसत्व से झूठ का पुलिंदा बोलकर अपनी बात छिपा ली।”

सौभाग्य से वह मेरी गवाही दे सकती थी और उसने साधु सैंड पर विश्वास नहीं किया, इसलिए उसने हम दोनों को यह पता लगाने के लिए फूलों और फलों के पर्वत पर वापस भेज दिया कि क्या हुआ था। जैसा कि आप देख सकते हैं, यह दुष्ट आत्मा बिल्कुल मेरे जैसी दिखती है। हम जल परदे की गुफा से पोटारका द्वीप तक बोधिसत्व से मिलने के लिए लड़ते हुए आए, लेकिन वह हमें पहचान नहीं पाई, इसलिए अब मैं

उससे लड़ते हुए यहाँ तक आया हूँ इस उम्मीद में कि सभी स्वर्गों की सभी आँखें देख सकेंगी कि मैं ही असली बंदर हूँ। फिर दूसरे बंदर ने भी यही कहानी सुनाई। चाहे कितनी भी देर तक देखा जाए, स्वर्ग के सभी देवता उन्हें अलग नहीं पहचान पाए।

"अगर तुम ये नहीं बता सकते कि कौन क्या है," दोनों बंदर चिल्लाए, "रास्ते से हट जाओ और हमें जेड सम्राट से मिलने जाने दो।"

क्योंकि देवता उन्हें रोक नहीं सके, इसलिए उन्होंने द्वार खोल दिए ताकि वे सीधे चमत्कारिक धुंध के हॉल में जा सकें। मार्शल मा और चारों स्वर्गीय गुरु झांग, गे, जू और किउ ने जेड सम्राट को सूचना दी।

"मनुष्यलोक से दो एक जैसे सन वुकॉन्ग स्वर्ग के द्वार से अंदर घुस आए हैं और कहते हैं कि वे महाराज से मिलना चाहते हैं।" उनके बोलने से पहले ही दोनों बंदर दहाड़ते हुए सीधे अंदर आ गए, जिससे जेड सम्राट इतने घबरा गए कि वे अपने सिंहासन से नीचे उतरकर महल के हॉल में खड़े हो गए। जेड सम्राट ने पूछा, "तुम दोनों स्वर्ग के महल में इतना शोर क्यों मचा रहे हो और हमारे सामने क्यों चिल्ला रहे हो? क्या तुम मरना चाहते हो?"

“महाराज की जय हो,” महान ऋषि ने कहा। “अब जब मैं एक धर्मनिष्ठ बौद्ध हूँ, तो मैं कभी भी अपने से बड़ों को धमकाने की हिम्मत नहीं करूँगा। बात बस इतनी है कि इस दुष्ट आत्मा ने मेरा रूप धारण कर लिया है।” फिर उन्होंने पूरी कहानी सुनाई और अंत में कहा, “और मैं आपसे विनती करता हूँ कि महाराज इस धोखेबाज का पर्दाफाश करें।” तब दूसरे बंदर ने भी वही बात दोहराई।

जेड सम्राट ने स्वर्ग के राजा ली (शिकारी) को आदेश दिया कि वे अपने दानव-प्रकट करने वाले दर्पण में उन दोनों को देखें, झूठे को मार डालें और सच्चे को बचा लें। स्वर्ग के राजा ने उन दोनों को अपने दर्पण में कैद कर लिया और जेड सम्राट और अन्य सभी देवताओं को देखने के लिए आमंत्रित किया। दर्पण में दोनों बंदर एक ही सोने की पट्टी और एक ही वस्त्र पहने हुए दिखाई दिए। उनमें जरा भी अंतर नहीं था। उन्हें पहचान न पाने के कारण, जेड सम्राट ने उन दोनों को महल से बाहर निकाल दिया।

महान ऋषि ने उपहास भरी हंसी हंसी, और दूसरे बंदर ने भी ऐसा ही किया। फिर उन्होंने एक-दूसरे के बाल और गला पकड़कर स्वर्ग के द्वार से बाहर निकलने के लिए संघर्ष किया और पश्चिम की ओर जाने वाली सड़क पर जा गिरे। उनमें से एक ने कहा, "चलो गुरु से मिलने चलते हैं" और दूसरे ने उत्तर दिया, "चलो गुरु से मिलने चलते हैं।"

फ्रायर सैंड ने दोनों बंदरों से विदा लेने के बाद खेत में लौटने में तीन दिन और तीन रात का सफर तय किया, जहाँ उसने तांग पुजारी को सारी घटना बताई। तांग पुजारी को बहुत खेद हुआ:

"मैंने कहा था कि सन वुकॉन्ग ने मुझे मारा था और बंडल चुरा लिए थे, मुझे कभी यह एहसास नहीं हुआ कि एक दुष्ट आत्मा ने खुद को एक नकली बंदर में बदल लिया था।"

अध्याय 58

803

पश्चिम की यात्रा

"दुष्ट आत्मा ने तुम्हारी, सफेद घोड़े की, हमारा सामान ढोने वाले सुअर की और मेरी दोहरी प्रतियां बना दीं," फ्रायर सैंड ने कहा।

"मैं इतना क्रोधित था कि मैंने नकली साधु सैंड को मार डाला: वह वास्तव में एक बंदर की आत्मा थी। इससे वे सब भाग गए, फिर मैं बोधिसत्व को अपनी परेशानी बताने गया। उन्होंने मुझे और बंदर को उस राक्षस की पहचान करने के लिए वापस भेजा, लेकिन वह असली बंदर से इतना मिलता-जुलता था कि मैं लड़ाई में मदद नहीं कर सका, इसलिए मैं आपको बताने वापस आया हूँ, गुरुजी।"

यह खबर सुनकर संज़ंग का चेहरा डर से पीला पड़ गया, जबकि पिग ठहाके लगाकर हंसने लगा। "वाह वाह!" वह खिलखिलाकर हंसा। "जैसा कि उस दयालु बुढ़िया ने कहा था, कई तीर्थयात्री शास्त्रों को लेने जा रहे हैं। वे सब एक ही समूह हैं, है ना?"

घर में मौजूद सभी लोग, चाहे जवान हों या बूढ़े, फ्रायर सैंड से पूछने आए, "पिछले कुछ दिनों से आप अपने यात्रा खर्चों के लिए पैसे कहाँ से जुटा रहे थे?"

"मैं अपने बड़े भाई को ढूंढने और सामान लाने के लिए पूर्वी महाद्वीप में स्थित पुष्प-फल पर्वत पर गया था," भिक्षु सैंड ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "फिर मैं बोधिसत्व गुआनयिन के दर्शन करने के लिए दक्षिणी महासागर में स्थित पोटारका द्वीप गया और यहाँ वापस आने से पहले फिर से पुष्प-फल पर्वत पर गया।"

परिवार के बुजुर्ग ने पूछा, "आपकी वापसी की यात्रा में कितना समय लगा?"

"लगभग 70,000 मील," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया।

"कुछ ही दिनों में इतनी लंबी दूरी पैदल चलना बहुत मुश्किल होगा," बूढ़े आदमी ने कहा। "वहाँ पहुँचने के लिए आपको बादलों से होकर जाना होगा।"

"तुम्हें क्या लगता है कि वह समुद्र पार कैसे पहुंचा होगा?" सुअर ने कहा।
"जो काम हम और तुम करते हैं, वह मंकी की तुलना में पैदल चलने जैसा है: वह तो एक-दो दिन में वहां जाकर वापस आ जाता।"
फ्रायर सैंड ने कहा। जब परिवार ने यह सुना तो उन्हें एहसास हुआ कि वे सभी या तो देवता हैं या अमर प्राणी।
"नहीं, हम नहीं हैं," पिग ने कहा। "हम उनसे वरिष्ठ हैं।"
उनकी बातचीत में अचानक तेज़ आवाज़ में झगड़ा होने लगा और जब वे देखने के लिए बाहर भागे तो उन्होंने दो बंदरों को लड़ते देखा। यह नज़ारा देखकर सूअर को खुजली होने लगी। उसने कहा, "मैं ऊपर जाकर उन्हें अलग करता हूँ," और इतना कहते ही वह मूर्ख हवा में उछल पड़ा और चिल्लाया, "चिल्लाना बंद करो भाई, सूअर यहाँ है।"
"दुष्ट आत्मा को मारो," दोनों बंदर चिल्लाए, "दुष्ट आत्मा को मारो।"
यह सब देखकर परिवार भयभीत और प्रसन्न दोनों हुआ। उन्होंने कहा, "हमारे यहाँ बादलों पर सवार होने वाले कई अर्हत ठहरे हुए हैं। अगर हमने भिक्षुओं को भोजन कराने का संकल्प भी लिया होता, तो भी हम इन जैसे पवित्र पुरुषों को भोजन नहीं करा पाते।" अब वे पहले से कहीं अधिक उदारता से भोजन और चाय देने लगे। फिर उन्हें चिंता सताने लगी कि अगर दो नवसिखियों के बीच का झगड़ा हिंसक हो गया, तो स्वर्ग और पृथ्वी उलट-पुलट हो सकते हैं: यह विनाशकारी हो सकता है।
बूढ़े व्यक्ति की प्रसन्नता के पीछे छिपी गहरी आशंकाओं को देखकर संजांग ने उससे कहा, "हे उपकारी, चिंता करने या घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। जब मैंने उसे अपने अधीन कर लिया और अपना शिष्य बना लिया, तो उसने बुराई का मार्ग अपना लिया और अच्छाई की ओर मुड़ गया। हम निश्चित रूप से आपके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करेंगे।"
"यह बहुत बड़ा सम्मान होगा," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, "बहुत बड़ा सम्मान।"
अध्याय 58
804
पश्चिम की यात्रा
"अब बोलना बंद करो, उपकारी," फ्रायर सैंड ने कहा, "और तुम यहाँ बैठो, स्वामी। पिग और मैं उनमें से एक-एक को यहाँ लाकर आपके सामने खड़ा करेंगे। जब आप

मंत्र बोलेंगे, तो जिसे कष्ट होगा वही असली बंदर होगा और जिसे कष्ट नहीं होगा वही धोखेबाज होगा।"

"यह तो बहुत ही अच्छा विचार है," संजांग ने कहा।

फिर साधु रेत हवा में ऊपर उठा और बोला, "तुम दोनों रुक जाओ। मैं तुम दोनों में से किसी एक को चुनने के लिए तुम्हें अपने स्वामी के पास ले जा रहा हूँ।" तब महान ऋषि ने अपने प्रतिद्वंद्वी को छोड़ दिया, और दूसरे बंदर ने भी ऐसा ही किया। साधु रेत ने एक को पकड़ा और सुअर को दूसरे को पकड़ने के लिए कहा, और वे दोनों को अपने बादलों के सहारे नीचे ले आए जब तक कि वे फूस की झोपड़ी के सामने नहीं आ गए।

जैसे ही संज़ंग ने उन्हें देखा, उसने बंधन कसने का मंत्र बोलना शुरू कर दिया, जिस पर दोनों बंदर एक साथ चिल्ला उठे, "जब हम इतनी ज़ोरदार लड़ाई लड़ रहे हैं, तब आपको यह मंत्र क्यों बोलना है? रुको! रुको!" दयालु और करुणामय होने के कारण, आदरणीय बुजुर्ग ने उन्हें पहचानने से पहले ही मंत्र बोलना बंद कर दिया। फिर दोनों बंदर सुअर और साधु सैंड से छूट गए और दोबारा लड़ने लगे।

महान ऋषि ने कहा, "भाइयों, जब तक मैं इस धोखेबाज से लड़कर पाताल लोक के राजाओं से यह पता नहीं लगा लेता कि हम में से कौन असली है, तब तक गुरुजी का ध्यान रखना।" दूसरे बंदर ने भी यही कहा, और वे दोनों एक-दूसरे को पकड़ते और खींचते हुए जल्द ही गायब हो गए।

"फ्रायर सैंड," पिग ने कहा, "जब आपने उसे वाटर कर्टेन गुफा में नकली पिग को सामान ले जाते हुए देखा था, तो आपने उससे सामान क्यों नहीं छीन लिया?"

"जब मैंने दानव-निवारक छड़ी से अपने हमशक्ल को मारा, तो दुष्ट आत्माओं ने मुझे घेर लिया," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया।

"वे मुझे पकड़ने वाले थे, इसलिए मुझे अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। बोधिसत्व के दर्शन करने के बाद, मैं बंदर के साथ गुफा के प्रवेश द्वार पर वापस आया और मैंने उनकी सारी पत्थर की बेंचें उलट दीं और छोटे राक्षसों को तितर-बितर कर दिया, लेकिन मुझे गुफा का कोई प्रवेश द्वार दिखाई नहीं दिया, केवल एक झरना दिखाई दिया। मैं खाली हाथ वापस आया क्योंकि मुझे अपना सामान नहीं मिला।"

"मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ," सुअर ने कहा। "कुछ साल पहले जब मैं उसे वापस आने के लिए मनाने गया था, तो हमारी मुलाकात गुफा के बाहर हुई थी। उसे मनाने के

बाद, वह नीचे कूदा और कपड़े बदलने के लिए गुफा में चला गया। मैंने उसे सीधे पानी के बीच से जाते देखा: झरना ही गुफा का प्रवेश द्वार है। मुझे पूरा यकीन है कि उस शैतान ने हमारा सामान वहीं रखा होगा।"

"चूंकि तुम्हें गुफा का रास्ता पता है, तो मुझे लगता है कि जब तक राक्षस दूर है, तब तक तुम जाकर हमारा सामान ले आओ," संजांग ने कहा। "अगर वुकॉन्ग वापस भी आ जाए, तो भी मैं उसे नहीं लूंगा।"

"तो मैं चलता हूँ," पिग ने कहा।

"गुफा के सामने हजारों-हजारों छोटे बंदर हैं," फ्रायर सैंड ने कहा। "अगर आप अकेले हों और उनसे निपटना आपके लिए मुश्किल हो जाए तो यह बहुत बुरा होगा।"

"मुझे चिंता नहीं है," पिग ने कहा और दौड़कर बाहर निकल गया और सामान लाने के लिए फूलों और फलों के पहाड़ की ओर चल पड़ा।

दोनों बंदर लड़ते-लड़ते पाताल लोक के अंधकारमय पर्वत के पिछले हिस्से तक पहुँच गए, जहाँ सभी राक्षस भय से काँपते हुए छिप गए। जो सबसे पहले भागने में सफल हुए, वे सीधे पाताल लोक के सरकारी कार्यालयों में पहुँचे और सेनलुओ महल को सूचना दी, "महाराज, स्वर्ग के समान दो महान ऋषि अंधकारमय पर्वत पर आ गए हैं और यहाँ तक पहुँचने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।"

अध्याय 58

805

पश्चिम की यात्रा

प्रथम महल में स्थित किंगुआंग के वलय ने द्वितीय महल में स्थित चुजियांग के राजा को इस खबर की सूचना चिंतापूर्वक दी। यह समाचार क्रमशः तृतीय महल में स्थित सोंगदी के राजा, चतुर्थ महल में स्थित बियानचेंग के राजा, पंचम महल में स्थित यमराज, सप्तम महल में स्थित निष्पक्ष राजा, सप्तम महल में स्थित ताइशान के राजा, सप्तम महल में स्थित महानगरीय राजा, नब्बेम महल में स्थित वुगुआन के राजा और दसवें महल में स्थित सदाभंगुर चक्र के राजा तक पहुँचा। क्षण भर में सभी दस राजा एकत्रित हुए और क्षितिगर्भ के राजा को एक तत्काल संदेश भेजा। इसी बीच, सेनलुओ महल में पाताल लोक की सेनाएँ एकत्रित हो गईं और सच्चे और झूठे बंदरों को पकड़ने के लिए तैयार थीं। तभी एक प्रचंड हवा का शोरगुल हुआ और घने कोहरे ने आकाश को घेर लिया, और दोनों बंदर लुढ़कते-लुढ़कते सेनलुओ महल की ओर आ

गिरे।
पाताल लोक के स्वामी आगे बढ़कर उनका रास्ता रोकने लगे और बोले, "महान ऋषियों, आप हमारे पाताल लोक में ऐसी अव्यवस्था क्यों फैला रहे हैं?"
इस पर सच्चे ऋषि ने उत्तर दिया, "मैं तांग पुरोहित के साथ पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने की यात्रा पर था, जब पश्चिमी लियांग देश के एक पर्वत पर डाकुओं ने उन्हें लूटने का प्रयास किया। जब मैंने उनमें से कुछ को मार डाला तो वे मुझसे क्रोधित हो गए और मुझे वहाँ से भगा दिया। मैं अपनी परेशानी दक्षिणी सागर में बोधिसत्व को बताने गया। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यह राक्षस इतना दुस्साहस करेगा कि वह मेरा हमशक्ल बनकर मेरे गुरु पर रास्ते में हमला करेगा और हमारा सामान चुरा लेगा। जब मेरा साथी शिष्य, भिक्षु सैंड, सामान लेने के लिए मेरे पर्वत पर वापस गया, तो उसने पाया कि राक्षस ने गुरु का एक प्रतिरूप बनाकर पश्चिमी स्वर्ग में शास्त्र लाने के लिए भेजा था, इसलिए वह बोधिसत्व गुआनयिन से मिलने के लिए दक्षिणी सागर की ओर दौड़ा और मुझे वहाँ उनके साथ पाया। अपनी कहानी सुनाने के बाद, बोधिसत्व ने मुझे अपने साथ पुष्प और फल पर्वत पर वापस भेज दिया ताकि पता चल सके कि क्या हो रहा है। मैंने पाया कि इस दुष्ट ने मेरी गुफा चुरा ली थी। हम रास्ते भर बहस करते रहे..." बोधिसत्व गुआनयिन के स्थान पर, लेकिन वह यह नहीं बता सकीं कि हम दोनों में से असली मैं कौन हूँ। फिर मैंने उससे लड़ते हुए स्वर्ग तक का सफर तय किया, जहाँ किसी भी देवता को यह नहीं पता था कि हम दोनों में से असली कौन कौन है, और उसके बाद मैं गुरु से मिलने गया। जब गुरु ने बंधन कसने का मंत्र पढ़ा, तो मेरे हमशक्ल को भी उतना ही दर्द हो रहा था जितना मुझे।
इसीलिए मैंने यह अराजकता पाताल लोक में फैलाई है, इस उम्मीद में कि महाराज मेरे लिए जीवन और मृत्यु के रजिस्टर देखेंगे ताकि मैं नौसिखिए झूठे सूर्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकूँ और उसकी आत्मा को पकड़कर दो मनों के इस भ्रम को समाप्त कर सकूँ। फिर दानव ने भी यही बात दोहराई।
पाताल लोक के स्वामियों ने अभिलेखों के प्रभारी न्यायाधीशों को बुलाया और उनसे कहा कि वे अभिलेखों की शुरुआत से अंत तक सावधानीपूर्वक जाँच करें। नौसिखिए झूठे सूर्य के नाम से कोई व्यक्ति नहीं मिला। उन्होंने फिर से रोएँदार प्राणियों के अभिलेखों की जाँच की और पाया कि बंदरों वाले अनुभाग में मद संख्या 130 के अंतर्गत यह दर्ज था कि महान ऋषि सूर्य ने अपनी युवावस्था में ही मोक्ष प्राप्त कर

लिया था, पाताल लोक में उत्पात मचाया था और मृत्यु अभिलेखों से अपना नाम हटवा लिया था, जिसके बाद से किसी भी बंदर का नाम दर्ज नहीं किया गया था। न्यायाधीशों ने अपनी जाँच पूरी करने के बाद महल को सूचना दी।

अपने पदचिह्नों को धारण किए हुए पाताल लोक के स्वामियों ने बंदर से कहा, "महान ऋषि, अभिलेखों में ऐसे कोई नाम नहीं हैं जिनकी जाँच की जा सके। आपको अपनी पहचान के लिए जीवितों की दुनिया में वापस जाना होगा।"

जब वे यह कह रहे थे, तभी उन्होंने बोधिसत्व राजा क्षितिगर्भ को यह कहते हुए सुना, "रुको, रुको! मैं परीक्षक को भेजता हूँ जो तुममें अंतर बताएगा।" परीक्षक एक ऐसे जानवर का नाम था जो बोधिसत्व क्षितिगर्भ की सूत्र-वेदी के नीचे लेटा रहता था। केवल वहाँ लेटे रहने मात्र से ही वह चारों महाद्वीपों के सभी पर्वतों, नदियों और देशों में, सभी गुफाओं और सभी पवित्र स्थानों में रहने वाले घोंघे, मछलियाँ, बालदार जीव, पंखदार जीव, कीड़े-मकोड़े, स्वर्ग के अमर प्राणी, पृथ्वी के अमर प्राणी, दिव्य अमर प्राणी, मनुष्य अमर प्राणी और राक्षस अमर प्राणियों में अच्छे और बुरे तथा बुद्धिमान और मूर्ख में अंतर कर सकता था। क्षितिगर्भ के निर्देशानुसार वह जानवर सेनलुओ महल के प्रांगण में जमीन पर लेटा रहा।

थोड़ी देर बाद उसने अपना सिर उठाया और क्षितिगर्भ से कहा, "मुझे राक्षस का नाम मिल गया है, लेकिन मैं उसके सामने उसका नाम नहीं बता सकता, न ही मैं उसे पकड़ने में मदद कर सकता हूँ।"

"अगर आप उसे उसके सामने पहचान लें तो क्या होगा?" क्षितिगर्भ ने पूछा।

परीक्षक ने उत्तर दिया, "यदि मैंने ऐसा किया, तो मुझे डर है कि दुष्ट आत्मा विकृत हो जाएगी, महल में अव्यवस्था फैलाएगी और पाताल लोक की शांति भंग कर देगी।"

"तुम उसे पकड़ने में मदद क्यों नहीं करोगे?" क्षितिगर्भ ने आगे पूछा, और परीक्षक ने उत्तर दिया, "उस दुष्ट आत्मा की जादुई शक्तियाँ सन वुकॉन्ग से कम नहीं हैं। पाताल लोक के देवताओं के पास चाहे कितनी भी धर्म शक्ति हो, वे उसे कभी नहीं पकड़ पाएंगे।"

"ऐसे में उस बुरी आत्मा से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है?"

परीक्षक ने उत्तर दिया, "बुद्ध का धर्म असीम है।" क्षितिगर्भ अब प्रबुद्ध हो गए थे। उन्होंने दोनों बंदरों से कहा, "चूंकि तुम दोनों एक जैसे दिखते हो और तुम्हारे पास एक जैसी जादुई शक्तियां हैं, इसलिए यदि तुम दोनों को अलग-अलग पहचानना चाहते हो तो तुम्हें गर्जन मठ में शाक्यमुनि बुद्ध के पास जाना होगा।"

“आप सही कह रहे हैं,” दोनों ने एक साथ उत्तर दिया, “आप सही हैं। हम दोनों पश्चिमी स्वर्ग जाएंगे, जहाँ भगवान बुद्ध हमें अलग करेंगे।” इसके बाद उन्होंने क्षितिगर्भ से विदा ली और दस पाताल लोक के राजाओं ने उन्हें विदाई दी, जिसके बाद पाताल लोक के प्रवेश द्वार को बंद करने के लिए राक्षसों को भेजा गया।

उन दो बंदरों को देखो, जो बादलों और कोहरे के बीच से उड़ते हुए पश्चिमी आकाश की ओर जा रहे हैं। इस पर एक कविता भी है, जो इस प्रकार है:

दुविधा तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति के मन में दो विचार हों;
समुद्र से लेकर आकाश तक, हर चीज पर संदेह का साया छाया हुआ है।
हर कोई उत्तम घोड़ों और सर्वोच्च पद की कामना करता है।
राज दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त करने की तीव्र इच्छा।
उत्तर और दक्षिण में लगातार लड़ाई जारी है,
वे बिना रुके पूरब और पश्चिम की ओर प्रहार करते रहते हैं।
ध्यान में मनहीनता का रहस्य सीखना चाहिए;
शिशु का मौन पोषण करो और पवित्र भ्रूण का निर्माण करो।

वे दोनों हवा में उड़ते हुए एक-दूसरे को पकड़ते, खींचते, झपटते और छीनते हुए पश्चिमी स्वर्ग में गिद्ध शिखर पर स्थित गर्जन मठ के बाहर तक लड़ते रहे। उनके पहुँचने से पहले ही चारों बोधिसत्व, आठ वज्रपाणि, पाँच सौ अर्हत, तीन हज़ार रक्षक, भिक्षुणियाँ, भिक्षुणियाँ, गृहस्थ और सभी पवित्र आत्माएँ सात अनमोल कमल सिंहासन के नीचे खड़े होकर तथागत का धर्मोपदेश सुन रहे थे। वे यही उपदेश दे रहे थे: अध्याय 58

अस्तित्वहीनता में अस्तित्व है, अस्तित्वहीनता के गैर-अस्तित्व में अस्तित्व है। निर्जीव में पदार्थ है, निर्शून्यता में शून्यता है। जो विद्यमान है वह अस्तित्वहीन है, और जो विद्यमान नहीं है वह अस्तित्वहीन नहीं है।

निर्जीव वस्तु भी पदार्थ है; निर्शून्यता भी शून्यता है। शून्यता शून्यता है और पदार्थ पदार्थ है। पदार्थ स्थायी पदार्थ नहीं है, पदार्थ शून्य है। शून्यता स्थायी शून्यता नहीं है, शून्यता पदार्थ है। यह जान लो कि शून्यता शून्य नहीं है और पदार्थ पदार्थ नहीं है। यही अंतर्दृष्टि और अद्भुत वाणी को समझने का अर्थ है।

सभी मेजबानों ने प्रणाम किया। मंत्रोच्चार की ध्वनि के बीच तथागत ने दिव्य पंखुड़ियों की वर्षा की, अपने सिंहासन से उठकर उनसे कहा, "तुम सब एकमत हो। देखो यहाँ दो अलग-अलग मतों का संघर्ष कैसा होता है।"

उन सबने आँखें उठाकर देखा तो दो बंदर चिल्लाते-चिल्लाते पवित्र वज्र शिखर की ओर आ रहे थे। आठों वज्रपाणि इतने भयभीत हो गए कि वे आगे बढ़कर उनका रास्ता रोकने लगे और बोले, "तुम दोनों कहाँ जा रहे हो?"

"इस दुष्ट आत्मा ने स्वयं को मेरा हमशक्ल बना लिया है," बंदर ने उत्तर दिया, "इसलिए मैं कमल सिंहासन पर जाकर तथागत से यह कहना चाहता हूँ कि मैं ही असली सन वुकॉन्ग हूँ और वह एक धोखेबाज है।"

क्योंकि वज्रपाणि उन्हें रोक नहीं सके, वे एक-दूसरे पर चिल्लाते हुए कमल सिंहासन के चरणों तक पहुँच गए, जहाँ उन्होंने प्रणाम किया और उनमें से प्रत्येक ने कहा, "आपका शिष्य तांग पुजारी को यहाँ सच्चे शास्त्र लाने के लिए लेकर आया था। ईश्वर ही जानता है कि रास्ते में राक्षसों से निपटने और दानवों को पकड़ने में मैंने कितना प्रयास किया है। हाल ही में हमें डाकुओं ने लूट लिया था, और मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने उनमें से कुछ को दो बार मार डाला। गुरुजी मुझसे इतने क्रोधित थे कि उन्होंने मुझे वापस भेज दिया और मुझे आपके स्वर्णिम स्वरूप की पूजा करने के लिए अपने साथ नहीं आने दिया।"

मेरे पास एक ही रास्ता बचा था कि मैं वापस दक्षिणी महासागर जाकर गुआनयिन को अपनी मुसीबतें बताऊं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह दुष्ट आत्मा मेरे जैसी शक्ल-सूरत बना लेगी, गुरु को गिरा देगी और हमारा सामान चुरा लेगी। मेरा भाई, फ्रायर सैंड, मुझे ढूंढते हुए मेरे पहाड़ पर गया और इस राक्षस ने बड़ी-बड़ी झूठी बातें कीं कि उसने अपने खास साधु को धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है। जब फ्रायर सैंड बचकर भाग निकला और दक्षिणी महासागर जाकर गुआनयिन को सारी कहानी सुनाई, तो उसने हम दोनों को वापस मेरे पहाड़ पर भेज दिया।

उसके बाद हम दोनों, असली मैं और वह धोखेबाज, कंधे से कंधा मिलाकर दक्षिणी

सागर, स्वर्ग, तांग पुजारी और पाताल लोक तक पहुँचे, लेकिन कोई भी यह नहीं बता सका कि हम में से कौन असली है। इसीलिए मैंने यहाँ आकर आपसे असीम दया और करुणा की भीख माँगने का साहस किया है कि आप मुझे असली सन वुकॉन्ग के रूप में पहचान लें। तब मैं तांग पुजारी को यहाँ लाकर आपके समक्ष आपकी आराधना कर सकूँगा और शास्त्रों को पूर्व में वापस ले जा सकूँगा, ताकि महान शिक्षाएँ सदा के लिए ज्ञात हो जाएँ। उन दोनों को एक ही स्वर में एक ही बात कहते हुए सुनकर, मेजबानों में से कोई भी उन्हें अलग नहीं पहचान सका: केवल तथागत स्वयं ही जानते थे। वे धोखेबाज का पर्दाफाश करने ही वाले थे कि तभी एक रंगीन बादल दक्षिण से गुआनयिन को हमारे बुद्ध के दर्शन के लिए ले आया।

"हे महानुभाव गुआनयिन," हमारे बुद्ध ने अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ते हुए कहा, "क्या आप सच्चे सूर्य, नौसिखिए को झूठे सूर्य से अलग बता सकती हैं?"

“जब वे मेरे द्वीप पर आए थे, तब मैं उन्हें पहचान नहीं पाया था,” बोधिसत्व ने उत्तर दिया। “तब से वे स्वर्ग और पाताल लोक जा चुके हैं, फिर भी कोई नहीं बता पाया कि कौन कौन है। इसीलिए मैं आपसे, तथागत, सच्चे सूर्य वुकॉन्ग की पहचान करने की विनती करने आया हूँ।”

इस पर बुद्ध ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "आप सभी के पास बहुत महान धर्म शक्तियां हैं, लेकिन आप केवल आकाश के नीचे घटित होने वाली हर चीज का अवलोकन कर सकते हैं। आप आकाश के नीचे के सभी प्राणियों और श्रेणियों को नहीं जान सकते।"

जब बोधिसत्व ने पूछा कि ये श्रेणियाँ क्या हैं, तो बुद्ध ने उत्तर दिया, "पाँच प्रकार के अमर प्राणी हैं: स्वर्गीय, सांसारिक, दिव्य, मनुष्य और राक्षस। पाँच प्रकार के जीव हैं: घोंघा, शल्कों वाला, रोएँदार, पंखदार और कीट। यह दुष्ट प्राणी न तो स्वर्गीय है, न सांसारिक, न दिव्य, न मनुष्य और न ही राक्षस। यह घोंघा भी नहीं है, या अध्याय 58

पपड़ीदार, या रोएँदार, या पंखदार या एक कीट। अब चार प्रकार के वानर भी हैं जो भ्रम पैदा करते हैं और दस श्रेणियों में से किसी में भी नहीं आते हैं।"

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि ये चार प्रकार के वानर कौन से हैं?" बोधिसत्व ने पूछा।

बुद्ध ने उत्तर दिया, "पहली तरह का बंदर बुद्धिमान पत्थर का बंदर है।" वह हर तरह का रूपांतरण कर सकता है, स्वर्ग के सभी मौसमों और सांसारिक लाभों के बारे में जानता

है, और तारों और उनके नक्षत्रों को गति दे सकता है। दूसरी तरह का बंदर लाल पूंछ वाला मंड्रिल है जो यिन और यांग और मानवीय मामलों के बारे में सब कुछ जानता है, कहीं भी आ-जा सकता है, और अपने जीवन को लंबा करने और मृत्यु से बचने का तरीका जानता है। तीसरी तरह का बंदर जादुई भुजाओं वाला गिब्बन है जो सूर्य या चंद्रमा को पकड़ सकता है, पहाड़ों को सिकोड़ सकता है, शुभ और अशुभ का अंतर देख सकता है, और स्वर्ग और पृथ्वी के साथ खिलवाड़ कर सकता है। चौथी तरह का बंदर छह कानों वाला मकाक है जिसकी सुनने और समझने की क्षमता अद्भुत है। वह अतीत और भविष्य के बारे में जानता है और सभी प्राणियों को समझता है। ये चारों प्रकार के बंदर दस श्रेणियों में से किसी में भी नहीं आते हैं और स्वर्ग और पृथ्वी के बीच रहने वाले प्राणियों में सूचीबद्ध नहीं हैं। मैं देख सकता हूँ कि नकली सन वुकॉन्ग ठीक ऐसा ही एक छह कानों वाला मकाक है। वह जहाँ भी खड़ा होता है, सैकड़ों मील दूर क्या हो रहा है, यह जान सकता है और कही गई हर बात सुन सकता है। इसीलिए उसकी सुनने की क्षमता इतनी अद्भुत है, उसकी समझ इतनी तेज है, और उसे इतना ज्ञान है। अतीत, भविष्य और सभी प्राणी; इसीलिए वह दिखने और बोलने में बिल्कुल वुकॉन्ग जैसा है। वह छह कानों वाला मकाक है।

जैसे ही बंदर ने तथागत बुद्ध को अपना असली रूप बताते सुना, वह भय से कांपने लगा और भागने के लिए एक बड़ी छलांग लगाई। तथागत ने तुरंत अपने सैनिकों को हमला करने का आदेश दिया, और बंदर तुरंत चारों बोधिसत्वों, आठ वज्रपाणियों, पांच सौ अर्हतों, तीन हजार रक्षकों और सभी भिक्षुओं, भिक्षुणियों और गृहस्थों, साथ ही गुआनयिन और मोक्ष से घिर गया। महान ऋषि बंदर भी आगे बढ़ गया।

"उसे मत मारो, वुकॉन्ग," तथागत ने कहा। "मैं उसे तुम्हारे लिए पकड़ लूँगा।" जैसे ही बंदर को एहसास हुआ कि अब बचने का कोई रास्ता नहीं है, उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसने खुद को झटका दिया और तुरंत एक मधुमक्खी में बदल गया जो ऊपर की ओर उड़ने लगी, लेकिन तथागत के सोने के भिक्षापात्र के उसके ऊपर रखे जाने पर वह फिर से नीचे गिर गया। सभी मेजबानों को लगा कि वह बच निकला है। "बकवास बंद करो," बुद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा। "दुष्ट आत्मा नहीं भागी है। वह मेरे भिक्षापात्र के नीचे है।" जैसे ही भिक्षापात्र उठाया गया, सभी आगे बढ़े और उन्हें उनके असली रूप, छह कानों वाले बंदर के रूप में देखा।

महान ऋषि स्वयं को रोक नहीं पाए। उन्होंने लोहे का डंडा घुमाते हुए एक ही प्रहार में

राक्षस के सिर पर वार करके उसे मार डाला, और इसी कारण यह प्रजाति अब विलुप्त हो चुकी है। तथागत के लिए यह असहनीय था।
उन्होंने कहा, "यह बहुत भयानक है, यह बहुत भयानक है।"
“तुम्हें उसके लिए दुखी नहीं होना चाहिए,” महान ऋषि ने कहा। “उसने मेरे स्वामी को घायल कर दिया और हमारे गठ्ठे चुरा लिए।”
कानून के अनुसार, चोरी और दिनदहाड़े डकैती के दौरान चोट पहुंचाने के लिए उसका सिर काट दिया जाना चाहिए।
तथागत ने कहा, "तुरंत वापस जाओ और तांग पुजारी को शास्त्र लाने के लिए यहाँ तक पहुँचाओ।"
महान ऋषि ने कृतज्ञतापूर्वक उन्हें प्रणाम किया और कहा, "मैं तथागत को सूचित करना चाहता हूँ कि मेरे स्वामी ने मुझे स्वीकार करने से स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया है। यह यात्रा व्यर्थ ही कष्टदायी होगी। हे तथागत, मैं आपसे कृपापूर्वक विनती करता हूँ कि आप बंधन मुक्त करने वाला मंत्र बोलें। तब मैं यह सोने का बंधन उतारकर आपको वापस दे दूँगा और आप मुझे गृहस्थ जीवन में लौटने की अनुमति दे देंगे।"
तथागत ने कहा, “उन मूर्खतापूर्ण विचारों को त्याग दो और तमीज़ से पेश आओ। मैं गुआनयिन को तुम्हें उनके पास वापस लाने के लिए भेजूँगा। वे तुम्हें अवश्य स्वीकार करेंगे। उनकी अच्छी तरह रक्षा करना, और जब तुम सफल होकर परम आनंद प्राप्त कर लोगे, तो तुम्हारे लिए भी कमल के सिंहासन पर स्थान होगा।”
अध्याय 58
809
पश्चिम की यात्रा
जब बोधिसत्व गुआनयिन ने यह सुना, तो उन्होंने उनकी दया के लिए धन्यवाद देते हुए हाथ जोड़े और फिर वुकॉन्ग को बादल पर बिठाकर मोक्ष और सफेद तोते के साथ विदा कर गईं। वे शीघ्र ही सड़क के किनारे बनी फूस की कुटिया में लौट आए। जैसे ही साधु सैंड ने उन्हें देखा, वे तुरंत बाहर आए और गुरु से बोधिसत्व का द्वार पर स्वागत करने का अनुरोध किया।
"तांग पुजारी," उसने कहा, "वो छह कान वाला बंदर था जो वुकॉन्ग होने का नाटक कर रहा था और उसी ने उस दिन आपको मारा था।"
सौभाग्यवश तथागत उसे पहचान गए और वुकॉन्ग ने उसे मार डाला है। अब तुम्हें

वुकॉन्ग को वापस लाना होगा। आगे रास्ते में कई राक्षसी बाधाएँ हैं और गिद्ध शिखर तक पहुँचने, बुद्ध के दर्शन करने और शास्त्रों को लाने के लिए तुम्हें उसकी सुरक्षा की आवश्यकता होगी, इसलिए उससे क्रोधित होना बंद करो।

"मैं आदरपूर्वक आज्ञा का पालन करूंगा," संजांग ने उत्तर दिया।

जैसे ही वह कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम कर रहा था, पूरब से एक बवंडर की गर्जना सुनाई दी, जो सूअर को अपनी पीठ पर दो गठ्ठियाँ लादे हुए उड़ा ले जा रहा था। बोधिसत्व को देखकर उस मूर्ख ने प्रणाम किया और कहा, "आपका शिष्य कुछ दिन पहले गुरु को छोड़कर पुष्प और फल पर्वत पर स्थित जल परदे की गुफा में यह सामान ढूंढने गया था। मुझे वहाँ नकली तांग पुजारी और नकली सूअर मिले और मैंने उन दोनों को मार डाला। वे दोनों बंदर थे। फिर मैं अंदर गया और मुझे गठ्ठियाँ मिल गईं। कुछ भी गायब नहीं है—मैंने उनकी अच्छी तरह से जाँच कर ली है। इसलिए मैं सीधे हवा के सहारे वापस आ गया। उन दो बंदरों का क्या हुआ?"

तब बोधिसत्व ने उसे बताया कि तथागत ने उन दोनों को कैसे पहचाना था। वह मूर्ख प्रसन्न हुआ और बहुत देर तक धन्यवाद देता रहा। गुरु और शिष्यों ने बोधिसत्व को विदाई दी, जो समुद्र में लौट गए। अब वे चारों एक बार फिर एक ही इच्छा और एक ही मन के हो गए थे; सभी शिकायतें दूर हो गई थीं और क्रोध मिट गया था। उन्होंने फूस की झोपड़ी में अपने मेज़बानों को धन्यवाद दिया, सामान को फिर से बांधा, घोड़े पर काठी कसी और पश्चिम की ओर चल पड़े।

यात्रा के दौरान हुए अलगाव ने पंच तत्वों को अस्त-व्यस्त कर दिया;

राक्षस-वशीकरण सभा में ज्ञान की प्राप्ति हुई।

आत्मा मन के घर लौट आई और ध्यान शांत हो गया; जब छह इंद्रियों पर नियंत्रण पा लिया गया तो औषधि का सेवन पूरा हो गया।

यदि आपको नहीं पता कि दोबारा यात्रा शुरू करने के बाद संजांग को बुद्ध से मिलने और शास्त्र मांगने में कितना समय लगा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 59

अग्नि पर्वतों पर संजांग का मार्ग अवरुद्ध हो गया है

बंदर ने पहले केले का पंखा उधार लेने की कोशिश की

ये अनेक प्रजातियां मूलतः एक ही हैं;

अध्याय 59

सब कुछ असीम सागर में समा जाता है।
हर विचार और चिंता व्यर्थ है;
सभी प्रकार और रूप आपस में मिल जाते हैं।
जब उपलब्धि पूरी हो जाए
पूर्ण और प्रकाशमान धर्म महान होगा।
अपने मतभेदों को विभाजन का कारण न बनने दें:
सब कुछ संभाल कर रखें।
सभी को अमृत भट्टी में इकट्ठा करो,
इसे तब तक परिष्कृत करें जब तक यह गहरे सुनहरे रंग जैसा लाल न हो जाए।
फिर अपनी चमक और सुंदरता में
यह अपनी इच्छा से ड्रैगन की सवारी कर सकता है।
कहानी बताती है कि कैसे संज़ंग ने बोधिसत्व के निर्देशानुसार भाई बंदर को वापस ले लिया और सुअर और साधु रेत के साथ हृदय से एकात्म होकर पश्चिमी स्वर्ग की ओर चल पड़ा। अब वे दुविधा में नहीं थे, और बंदर और घोड़ा पूरी तरह से नियंत्रण में थे। समय तीर की तरह तेज़ी से बीत गया; दिन और रात शटल की गति से बारी-बारी से बीतते गए। ग्रीष्म ऋतु की चिलचिलाती गर्मी के बाद अब वे शरद ऋतु के अंतिम पाले में थे। उन्होंने जो देखा वह था:
पश्चिम की तेज हवा से बिखरे हुए बादल उड़ गए,
बर्फीले जंगलों के बीच दूर पहाड़ियों में सारस की आवाजें सुनाई दे रही हैं।
यह ठंड का समय है
जब पर्वतीय नदियाँ पहले से कहीं अधिक लंबी प्रतीत होती हैं।
हंस उत्तरी सीमावर्ती दर्रों से होकर लौटता है;
प्रवासी पक्षी अपने दक्षिणी क्षेत्रों में वापस चले जाते हैं।
यात्री को रास्ते में अकेलापन महसूस होता है;
मठवासी वस्त्र ठंड से बचाव नहीं करते।

पश्चिम की यात्रा

गुरु और शिष्य जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए, गर्म हवा में उन्हें और भी गर्मी लगने लगी। "अब तो पतझड़ का मौसम है, फिर से गर्मी क्यों बढ़ रही है?" संजांग ने अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए पूछा।

“पता नहीं,” सुअर ने कहा। “पश्चिम में एक देश है, सिहाली, जहाँ सूरज डूबता है। लोग उसे ‘आकाश का अंत’ कहते हैं। हर शाम लगभग छह बजे राजा शहर की दीवारों पर लोगों को भेजता है ताकि वे ढोल बजाएँ और बिगुल बजाएँ और समुद्र के उफनने की आवाज़ को दबा दें। ऐसा इसलिए क्योंकि जब सूरज की आग पश्चिमी महासागर में गिरती है, तो एक भयंकर शोर होता है, जैसे जलती हुई कोई चीज़ पानी में डाली जा रही हो। अगर वे ढोल और बिगुल से उस शोर को न दबाएँ, तो सदमे से शहर के सभी छोटे बच्चे मर जाएँगे। मुझे लगता है कि हम वहीं हैं—वह जगह जहाँ सूरज डूबता है।” यह सुनकर महान ऋषि हँसे बिना नहीं रह सके।

"ऐसी बकवास मत करो, मूर्ख। हम अभी सिहाली से बहुत दूर हैं। जिस तरह हमारे गुरु लगातार दुविधा में हैं और अपना मन बदलते रहते हैं, हम तीन जन्मों में भी वहाँ नहीं पहुँच पाएँगे, चाहे हम बचपन से बुढ़ापे तक, फिर से बचपन तक, फिर से बुढ़ापे तक और फिर तीसरे बचपन तक ही क्यों न चले जाएँ।"

"तो मुझे बताओ, भाई," सुअर ने कहा, "अगर यहाँ सूरज नहीं डूबता है तो इतनी भीषण गर्मी क्यों है?"

“मौसम का संतुलन बिगड़ गया है,” साधु सैंड ने कहा। “मुझे लगता है कि यहाँ लोग पतझड़ के मौसम में भी गर्मियों के रीति-रिवाज निभा रहे हैं।” तीनों शिष्य बहस कर ही रहे थे कि तभी उन्हें सड़क के किनारे एक खेत दिखाई दिया। उसकी छत लाल टाइलों की थी, दीवारें लाल ईंटों की बनी थीं और दरवाजे, खिड़कियाँ और फर्नीचर सब लाल रंग से रंगे हुए थे। चारों तरफ लाल रंग ही लाल था।

"वुकोंग," संजांग ने घोड़े से उतरते हुए कहा, "उस घर में जाओ और पता लगाओ कि वह इतना गर्म क्यों है।"

महान ऋषि ने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी एक तरफ रख दी, अपने कपड़े ठीक किए और एक सभ्य सज्जन की तरह शान से सड़क पर चलने लगे। जब वे द्वार पर देखने के लिए पहुँचे तो अचानक अंदर से एक बूढ़ा आदमी प्रकट हुआ। वह कुछ इस तरह दिखता था:

उन्होंने भांग के कपड़े का चोला पहना हुआ था।
न तो पूरी तरह भूरा और न ही लाल,
बुने हुए बांस से बनी धूप से बचने वाली टोपी,
काले और हरे रंग के बीच में।
उसके हाथ में गांठदार छड़ी
न तो टेढ़ा था और न ही सीधा।
उसके चमड़े के लंबे जूते
वे नए नहीं थे, लेकिन अभी पुराने भी नहीं हुए थे।
उसका चेहरा तांबे के रंग का था।
उसकी दाढ़ी धागे की तरह सफेद हो गई थी।
उनकी लंबी भौहें उनकी पन्ना-नीली आँखों को छाया दे रही थीं।
और उनकी मुस्कान में सुनहरे दांत दिखाई दे रहे थे।
अध्याय 59
812
पश्चिम की यात्रा
बंदर को देखकर बूढ़ा चौंक गया। "अरे, तुम कहाँ से आए हो?" उसने अपनी छड़ी का सहारा लेते हुए पूछा। "मेरे द्वार पर क्या कर रहे हो?"
“आदरणीय संरक्षक,” बंदर ने झुककर उत्तर दिया, “घबराइए मत। मैं कोई विचित्र प्राणी नहीं हूँ। मेरे गुरु और हम तीनों शिष्यों को पूर्व के महान तांग सम्राट ने पश्चिम से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है। अब जब हम आपके निवास पर पहुँच गए हैं, तो मैं आपसे यह पूछने आया हूँ कि यहाँ इतनी भीषण गर्मी क्यों है और इस स्थान का नाम क्या है।”
तभी बूढ़े व्यक्ति की चिंता कम हुई और उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "कृपया बुरा न मानें, आदरणीय महोदय।"
मेरी बूढ़ी आंखें काफी कमजोर हो गई हैं और मैं आपको पहचान नहीं पाया।
"इतनी विनम्रता दिखाने की कोई ज़रूरत नहीं है," बंदर ने कहा। "तुम्हारा मालिक किस रास्ते पर है?" बूढ़े आदमी ने पूछा।
"वो रहा, दक्षिण की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर खड़ा है," बंदर ने जवाब दिया।
“उसे बुलाओ, उसे बुलाओ,” बूढ़े आदमी ने बंदर को प्रसन्न करते हुए जवाब दिया।

बंदर ने उन्हें इशारा किया, और संज़ंग, सुअर और साधु सैंड के साथ सफेद घोड़े को आगे बढ़ाते हुए और सामान ढोते हुए आ गया। उन सभी ने बूढ़े आदमी को प्रणाम किया।

बूढ़ा व्यक्ति संज़ंग के सुंदर रूप को देखकर प्रसन्न हुआ, लेकिन पिग और फ्रायर सैंड की असाधारण कुरूपता देखकर चिंतित भी हुआ। उन्हें अंदर बुलाकर उसने परिवार के छोटे सदस्यों से चाय लाने और खाना पकाने को कहा। यह सब सुनकर संज़ंग उठ खड़ा हुआ और बूढ़े व्यक्ति को धन्यवाद देते हुए पूछा, "क्या आप मुझे बता सकते हैं, महोदय, कि शरद ऋतु होने के बावजूद फिर से इतनी गर्मी क्यों हो गई है?"

“ये तो अग्नि पर्वत हैं,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया। “यहाँ न तो वसंत आता है और न ही पतझड़। यहाँ साल भर गर्मी ही रहती है।”

"पहाड़ कहाँ हैं?" संजांग ने पूछा। "क्या वे पश्चिम की ओर जाने का रास्ता रोकते हैं?"

“पश्चिम की ओर जाना असंभव है,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया। “पहाड़ यहाँ से लगभग बीस मील दूर हैं।”

पश्चिम की ओर जाने के लिए आपको इन्हें पार करना होगा, लेकिन ये 250 मील से भी अधिक लंबी आग की लपटें हैं। आसपास कहीं भी घास का एक तिनका भी नहीं उग सकता। अगर आपकी खोपड़ी काँसे की और शरीर लोहे का भी हो, तो भी आप इन्हें पार करने की कोशिश में पिघल जाएँगे।

इस जवाब को सुनकर संजांग भय से पीला पड़ गया; उसने और कोई सवाल पूछने की हिम्मत नहीं की।

तभी एक युवक लाल रंग की ठेलागाड़ी धकेलते हुए द्वार पर रुका और चिल्लाया, "केक! केक!" महान ऋषि ने अपने बालों में से एक बाल निकाला और उसे तांबे के सिक्के में बदल दिया, जिससे उन्होंने उस युवक से एक केक खरीदा।

उस आदमी ने पैसे लिए और बिना किसी चिंता के अपनी ठेली का ढक्कन उठाया, जिससे गर्म भाप का एक बादल निकला, उसने एक रोटी निकाली और बंदर को दे दी। जब बंदर ने उसे हाथ में लिया तो वह जलते हुए कोयले या भट्टी में रखी हुई लाल गर्म कील की तरह गर्म थी।

उसे देखिए, वह केक को एक हाथ से दूसरे हाथ में उछालते हुए चिल्ला रहा है, "यह गर्म है, यह गर्म है, मैं इसे नहीं खा सकता।"

"अगर आप गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकते तो यहां मत आइए," युवक ने जवाब दिया।

"यहां हमेशा इतनी ही गर्मी रहती है।"
“तुम बिलकुल नहीं समझते, मेरे बच्चे,” बंदर ने कहा। “जैसा कि कहावत है, न तो बहुत ठंड होती है और न ही बहुत गर्मी।”
अध्याय 59
813
पश्चिम की यात्रा
पांचों प्रकार के अनाज की कटाई नहीं होगी।
"यहाँ इतनी गर्मी है तो केक बनाने के लिए आटा कहाँ से मिलता है?" इस पर युवक ने कहा,
"आप मुझसे पूछते हैं कि हमें कड़ाही के लिए आटा कहाँ से मिल सकता है:
हम आपसे विनम्रतापूर्वक 'इम्मोर्टल आयरन फैन' से अनुरोध करते हैं।
"आप मुझे इस अमर प्राणी के बारे में क्या बता सकते हैं?" बंदर ने पूछा।
“अमर देवता के पास केले का पंखा है,” युवक ने उत्तर दिया। “अगर आप उससे कहें, तो पंखा पहली लहर में आग बुझा देता है, दूसरी लहर में हवा चलाता है और तीसरी लहर में बारिश लाता है। इसी तरह हम फसल बोते और काटते हैं और अपना जीवन यापन करते हैं। इसके बिना कुछ भी उग नहीं सकता।”
यह सुनकर बंदर दौड़कर अंदर गया, संजांग को केक दिए और बोला, "चिंता मत करो, स्वामी जी: अगले साल जो भी होगा, उसके बारे में परेशान मत होइए। ये केक खा लीजिए, मैं आपको सब कुछ बता दूंगा।"
संजांग ने केक लिए और बूढ़े आदमी से कहा, "कृपया एक केक लीजिए, महोदय।"
“जब तक हम आपको चाय-पानी न दें, मैं आपका केक नहीं खा सकता,” बूढ़े ने उत्तर दिया। “महोदय,” बंदर ने जवाब दिया, “हमें खाना-पानी देने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन क्या आप मुझे बता सकते हैं कि लौह पंखा अमर कहाँ रहता है?”
“तुम अमर के बारे में क्या जानना चाहते हो?” बूढ़े ने पूछा। “केक बेचने वाले ने अभी मुझे बताया कि अमर के पास केले का पंखा है,” बंदर ने कहा। “अगर तुम उसे उधार लो तो पहली लहर आग बुझा देती है, दूसरी हवा चलाती है और तीसरी बारिश लाती है। इसीलिए तुम फसल बो पाते हो और काट पाते हो जिससे तुम्हारा पेट भरता है। मैं अमर से विनती करने जा रहा हूँ ताकि हम आग के पहाड़ों पर लगी लपटों को बुझा सकें और उन्हें पार कर सकें। तब तुम शांति से बो पाओगे, काट पाओगे और जीवन

जी पाओगे।”
"यह एक अच्छा विचार है," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "लेकिन चूंकि आपके पास कोई उपहार नहीं है, इसलिए अमर व्यक्ति नहीं आएगा।"
"किस तरह के उपहार चाहिए होंगे?" संजांग ने पूछा।
“हर दस साल में,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, “हम अमर देवता से मिलने जाते हैं। हम चार सूअर और चार भेड़ें ले जाते हैं, सभी फूलों और लाल रिबन से सजे होते हैं, साथ ही मौसम के स्वादिष्ट फल, मुर्गियाँ, हंस और बेहतरीन शराब भी ले जाते हैं। हम स्नान करते हैं और अत्यंत श्रद्धापूर्वक पर्वत पर जाकर अमर देवता से गुफा छोड़कर यहाँ आकर जादू करने का अनुरोध करते हैं।”
“यह पहाड़ कहाँ है?” बंदर ने पूछा। “इसका नाम क्या है? यह यहाँ से कितनी दूर है? मैं वहाँ पंखा माँगने जा रहा हूँ।”
"यह यहाँ से दक्षिण-पश्चिम में स्थित है," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "और इसे माउंट टरकॉइज़ क्लाउड कहते हैं। जब हम श्रद्धालु उस जादुई पर्वत पर पूजा करने जाते हैं तो यात्रा में हमें एक महीना लग जाता है क्योंकि यह कुल मिलाकर लगभग 485 मील की दूरी है।"
"कोई बात नहीं," बंदर ने कहा। "मैं पलक झपकते ही वहां जाकर वापस आ सकता हूँ।"
अध्याय 59
814
पश्चिम की यात्रा
“एक मिनट रुकिए,” बूढ़े ने कहा। “पहले कुछ खा-पी लीजिए, और हम यात्रा के लिए कुछ सामान तैयार कर लेते हैं। आपको अपने साथ दो लोगों की ज़रूरत होगी। रास्ते में कोई नहीं रहता और बहुत सारे भेड़िये और बाघ हैं। वहाँ पहुँचने में कई दिन लग जाएँगे। आपको इस बारे में गंभीरता से सोचना होगा।”
"कोई ज़रूरत नहीं," बंदर ने हंसते हुए कहा, "कोई ज़रूरत नहीं। मैं जा रहा हूँ।" इतना कहते ही वह गायब हो गया।
"हे भगवान!" बूढ़े व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा। "वह एक देवता हैं जो बादलों पर सवार हो सकते हैं।"
हम इस बारे में और कुछ नहीं कहेंगे कि कैसे परिवार ने तांग पुजारी को अपनी भेंट

दोगुनी कर दी, बल्कि बंदर की कहानी सुनाएंगे, जो पलक झपकते ही फ़िरोज़ी बादल पर्वत पर पहुँच गया, अपनी शुभ ज्योति को रोककर गुफा के प्रवेश द्वार की तलाश करने लगा। उसने कुल्हाड़ी की आवाज़ सुनी और पहाड़ की ढलान पर जंगल में एक लकड़हारे को पेड़ काटते देखा। जल्दी से आगे बढ़ते हुए, बंदर ने उसे कहते सुना।

"मैं बादलों के बीच प्राचीन जंगलों को पहचानता हूँ;
रास्ता झाड़ियों से भरा हुआ है; पहाड़ी की ढलान खड़ी है।
पश्चिमी पहाड़ियों से मुझे सुबह की बारिश दिखाई देती है;
दक्षिण की ओर लौटते समय नदी पार करने का रास्ता बहुत गहरा है।

लकड़हारे के पास जाकर बंदर ने कहा, "नमस्कार, लकड़हारे।" लकड़हारे ने अपनी कुल्हाड़ी नीचे रखकर शिष्टाचारवश उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है। बंदर ने कहा, "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह माउंट टरकॉइज़ क्लाउड है?"

"हां," लकड़हारे ने उत्तर दिया।

"लोहे के पंखे वाले अमर की केले की गुफा कहाँ है?" बंदर ने पूछा।

"यहाँ एक केले की गुफा है," लकड़हारे ने उत्तर दिया, "लेकिन कोई लौह पंखा अमर नहीं, केवल एक राजकुमारी लौह पंखा है।"

उसे रक्सासी भी कहा जाता है।

"कहते हैं कि अमर आत्मा के पास केले का पंखा है जो अग्नि पर्वतों की लपटों को बुझा सकता है। क्या वह वही है?"

"जी हां," लकड़हारे ने कहा। "वह एक साध्वी हैं और उनके पास आग बुझाने वाला एक अनमोल खजाना है। क्योंकि वह दूर रहने वाले लोगों की रक्षा करती हैं, इसलिए उन्हें लौह पंखा अमर कहा जाता है। हमें यहां उनकी कोई आवश्यकता नहीं है, इसलिए हम उन्हें केवल राक्षसी कहते हैं। वह बैल दानव राजा की पत्नी हैं।"

खबर सुनकर बंदर सदमे से पीला पड़ गया। उसने सोचा, "एक और आदमी जो मुझसे दुश्मनी रखता है। पिछले साल जब मैंने रेड बॉय को काबू किया था, तो उसने कहा था कि यह कुतिया उसकी माँ है। जब मैं माउंट ऑफस्प्रिंग डिसॉल्व्ड पर चाइल्डफ्री गुफा में रेड बॉय के चाचा से मिला, तो उसने मुझे पानी देने से इनकार कर दिया और बदला लेना चाहता था। अब मुझे उसके माता-पिता का सामना करना पड़ रहा है। मैं पंखा कैसे उधार ले पाऊंगा?"

बंदर को गहरी सोच में डूबे और लगातार आहें भरते देख लकड़हारा मुस्कुराते हुए

बोला, "आदरणीय महोदय, आप धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं। आपको चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बस इस पूर्व दिशा वाले मार्ग का अनुसरण कीजिए और आप अध्याय 59 पर पहुँच जाएँगे।"

प्लांटैन गुफा यहाँ से कुछ ही मील की दूरी पर है।"

"मैं तुमसे साफ-साफ कहूँ, लकड़हारे," बंदर ने कहा। "मैं तांग पुजारी का वरिष्ठ शिष्य हूँ, जिसे तांग सम्राट ने पूर्व से पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजा है। पिछले साल अग्नि-बादल गुफा में मेरी रक्षसी के पुत्र लाल लड़के से कहा-सुनी हो गई थी, और मुझे डर है कि रक्षसी मुझसे नाराज़गी जताते हुए मुझे पंखा देने से मना कर सकती है। इसीलिए मैं चिंतित हूँ।"

"एक सच्चा आदमी हालात के हिसाब से चलना जानता है," लकड़हारे ने जवाब दिया। "बस पंखा मांग लो। अपनी पुरानी लड़ाई भूल जाओ। मुझे यकीन है कि तुम उसे उधार ले पाओगे।"

बंदर ने आदरपूर्वक कुछ बुदबुदाया और कहा, "आपकी सलाह के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं चलता हूँ।"

इसके बाद बंदर भाई ने लकड़हारे से विदा ली और सीधे केले की गुफा के मुहाने की ओर चल दिया।

दोनों दरवाजे कसकर बंद थे, और बाहर का नजारा बेहद खूबसूरत था। यह एक शानदार जगह थी। सचमुच: चट्टानें पहाड़ की शोभा बढ़ा रही थीं।

और साथ ही पृथ्वी की आत्मा भी।

सूर्यास्त के समय बादलों ने रात की बारिश को रोक रखा था।

और काई ने अपने हरे रंग से ताजगी प्रदान की।

ये विशाल शिखर पेंगलाई के शिखरों से कहीं अधिक भव्य थे;

वह सुगंधित शांति किसी जादुई द्वीप जैसी थी।

जंगली सारस ऊंचे-ऊंचे देवदार के पेड़ों पर बैठे थे।

जबकि विलो वृक्षों में चिड़ियाएं गा रही थीं।

यह वास्तव में एक प्राचीन स्थल था।

दस हजार वर्षों से अमर लोगों का निवास स्थान।

शानदार फीनिक्स पक्षी छत्र वृक्षों में गीत गा रहा था।
जबकि नीले रंग के ड्रैगन बहते पानी में छिपे हुए थे।
घुमावदार रास्तों पर लताएँ लटकी हुई थीं।
और लताओं ने पत्थर की सीढ़ियों को ढक लिया था।
चट्टानों पर बैठे बंदरों ने उगते हुए चंद्रमा का स्वागत करने के लिए चीख-पुकार मचाई;
ऊंचे पेड़ों पर पक्षी नीले आसमान को देखकर खुशी से गीत गा रहे थे।
बांस के झुरमुट इतने ठंडे थे मानो बारिश हुई हो;
अध्याय 59
816
पश्चिम की यात्रा
रास्ते के किनारे लगे फूल कढ़ाईदार मखमल के थे।
कभी-कभी दूर स्थित एक चोटी से सफेद धुएं का बादल बहता हुआ दिखाई देता था;
हवा में बहते हुए इसका कोई निश्चित आकार नहीं था।
"दरवाजा खोलो, भाई बैल!" बंदर चिल्लाते हुए दरवाजे तक गया। दरवाजे चरमराते हुए खुले, और एक युवती हाथ में फूलों की टोकरी और कंधे पर कुदाल लिए बाहर आई। सचमुच: हालांकि वह फटे-पुराने कपड़ों में लिपटी थी और उसने कोई बढ़िया पोशाक नहीं पहनी थी,
उसका चेहरा जोश से भरा हुआ था, उसका हृदय उस मार्ग पर दृढ़ था।
बंदर अपने हाथों को छाती के सामने जोड़कर उसके पास गया और बोला, "कृपा करके राजकुमारी को बता दीजिए कि मैं एक भिक्षु हूँ जो पश्चिम में धर्मग्रंथ लाने जा रहा हूँ। मैं यहाँ उनसे केले का पंखा उधार लेने आया हूँ क्योंकि हम अग्नि पर्वतों को पार नहीं कर सकते।"
"आप किस मठ से हैं?" लड़की ने पूछा, "और आपका नाम क्या है? कृपया मुझे बताएं ताकि मैं आपका नाम बता सकूं।"
"मैं पूरब से आया हूँ," बंदर ने उत्तर दिया, "और मेरा नाम सन वुकॉन्ग है।"
लड़की गुफा में वापस गई, राजकुमारी के सामने घुटने टेककर बोली, "महाराज, बाहर पूरब से एक भिक्षु हैं जिनका नाम सन वुकॉन्ग है। वे आपसे मिलना चाहते हैं और आपसे केले के पत्तों का पंखा उधार मांगना चाहते हैं ताकि वे अग्नि पर्वत पार कर सकें।" सन वुकॉन्ग का नाम सुनते ही राजकुमारी का चेहरा लाल हो गया और उनके

हृदय में भयंकर क्रोध भड़क उठा।
"आखिरकार वो कमीना बंदर आ ही गया," उसने घृणा से कहा। "लड़की," वह चिल्लाई, "मेरा कवच और हथियार लाओ।" फिर उसने अपना कवच पहना, अपनी नीली नोक वाली तलवारों को कमर पर बांधा, सब कुछ कसकर बांधा और बाहर चली गई। बंदर चुपके से प्रवेश द्वार पर गया यह देखने के लिए कि वह कैसी दिखती है और उसने यह देखा: उसके सिर पर फूलों वाला रुमाल बंधा हुआ था।
बादलों के पैटर्न वाला रजाईदार ब्रोकेड का एक वस्त्र।
उसकी कमर के चारों ओर बाघ की दो नसों की एक बेल्ट थी।
कढ़ाईदार रेशम की स्कर्ट दिखाते हुए।
उसके जूते फीनिक्स पक्षी की चोंच की तरह थे और केवल तीन इंच लंबे थे;
ड्रैगन की दाढ़ी के आकार की उसकी पतलून सोने से सजी हुई थी।
अपनी तलवारें लहराते हुए उसने गुस्से में चीख-पुकार मचाई;

वह चंद्रमा की देवी की तरह ही घातक दिखती थी।
"सन वुकॉन्ग कहाँ है?" रक्सासी अपनी गुफा से बाहर आते हुए चिल्लाई।
बंदर आगे बढ़ा, झुककर प्रणाम किया और उत्तर दिया, "भाभी जी, मैं आपको आदरपूर्वक प्रणाम करता हूँ।"
"मैं तुम्हारी भाभी नहीं हूँ," उसने गुस्से से चिल्लाते हुए कहा, "और मैं तुमसे कोई अभिवादन नहीं स्वीकारूंगी।"
"आपके आदरणीय पति, बैल दानव राजा, कभी मेरे सगे भाई थे," बंदर ने उत्तर दिया। "हम कुल सात भाई थे। चूंकि मुझे पता चला है कि आप मेरे भाई बैल की पत्नी हैं, इसलिए मुझे आपको भाभी कहना ही पड़ेगा।"
"धिक्कार है बंदर," रक्सासी ने कहा, "अगर तुम मेरे पति के मुंहबोले भाई हो तो तुमने हमारे बेटे के साथ वह भयानक काम क्यों किया?"
"तुम्हारा बेटा कौन है?" बंदर ने पूछा, मानो वह जानता ही न हो।
"वह लाल लड़का है, माउंट हाओ पर मुरझाए हुए चीड़ के दर्रे के पास स्थित अग्नि-बादल गुफा का बालक ऋषि राजा।"

रक्सासी ने उत्तर दिया, “तुमने उसे बर्बाद कर दिया, और अब तुम अपनी जान देकर इसकी कीमत चुकाने हमारे दरवाजे पर आए हो। हम तुमसे बदला लेने के लिए तरस रहे थे, लेकिन पता नहीं था कि तुम कहाँ मिलोगे। तुम्हें मुझसे कोई दया नहीं मिलेगी।”
चेहरे पर चौड़ी मुस्कान लिए बंदर ने उत्तर दिया, "आपने इस बात को पूरी तरह से नहीं समझा है, भाभी। आपको मुझसे इतना नाराज़ होने का कोई कारण नहीं है। आपके भले बेटे ने मेरे गुरु को पकड़ लिया था और अगर बोधिसत्व ने उस लड़के को अपना शिष्य बनाकर मेरे गुरु को बचाया न होता, तो वह उन्हें भाप में पका देता या उबाल देता। अब वह बोधिसत्व के द्वीप पर सुधना नाम का सेवक है और उसने उनसे सच्चे फल की प्राप्ति का मार्ग स्वीकार कर लिया है।"
अब वह जीवन और मृत्यु से परे, और मलिनता और पवित्रता से ऊपर है। वह आकाश, पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा के समान दीर्घ रहेगा। लेकिन उसकी जान बचाने के लिए मुझे धन्यवाद देने के बजाय, तुम मुझसे नाराज़ हो रहे हो। यह तुम्हारी गलती है।
"तुम चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले बंदर हो," रक्सासी ने तीखे स्वर में जवाब दिया। "मेरा बेटा शायद ज़िंदा हो, लेकिन वह यहाँ कब आएगा? मैं उसे दोबारा कब देख पाऊँगी?"
बंदर मुस्कुराते हुए बोला, "अपने बेटे से दोबारा मिलना तुम्हारे लिए आसान होगा। बस मुझे आग बुझाने के लिए पंखा दे दो। जब मैं अपने गुरु को पहाड़ों के पार ले जाऊँगा, तो मैं दक्षिणी सागर में बोधिसत्व के स्थान पर जाकर उनसे कहूँगा कि वे यहाँ आकर तुमसे मिलें और तुम्हारा पंखा वापस कर दें। कोई दिक्कत नहीं। तब तुम देख पाओगे कि वह पूरी तरह से सुरक्षित है। अगर उसे ज़रा भी चोट लगी होती, तो तुम्हें मुझ पर गुस्सा होने का पूरा हक होता।"
लेकिन वो पहले की तरह ही आकर्षक हैं। आपको मेरा शुक्रिया अदा करना चाहिए।
इस पर राक्षसी ने उत्तर दिया: "चुप रहो, वानर राक्षस! अपना सिर बाहर निकालो ताकि मैं अपनी तलवार से उसे काट सकूँ। अगर तू दर्द सह सकता है तो मैं तुझे केले का पंखा उधार दे दूँगा। अगर नहीं सह सकता तो सीधे नरक में जाकर यमराज से मिलेगा।"
फिर बंदर ने अपने हाथों को सामने की ओर जोड़कर मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "बस इतना ही काफी है, भाभी।"
मैं अपना गंजा सिर फैला दूंगी और तुम जब तक थक न जाओ, जितनी बार चाहो वार

कर सकते हो। लेकिन तुम्हें मुझे पंखा देना होगा।" बिना और कुछ कहे, रक्षसी ने अपनी दोनों तलवारें घुमाईं और बंदर के सिर पर ज़ोरदार प्रहार किए। बंदर को ज़रा भी फर्क नहीं पड़ा। रक्षसी इतनी डर गई कि वह भागने लगी।
"भाभी, आप कहाँ जा रही हैं?" बंदर ने कहा। "जल्दी करो और मुझे वह पंखा दे दो।"
अध्याय 59

"मेरा खजाना ऐसी चीज नहीं है जिसे यूं ही किसी को उधार दे दिया जाए," रक्सासी ने जवाब दिया।
"अच्छा," बंदर ने कहा, "अगर तुम अभी मना करोगे तो तुम्हें अपने साले के डंडे का स्वाद चखना ही पड़ेगा।"
शानदार बंदर राजा ने एक हाथ से उसे पकड़ रखा था और दूसरे हाथ से अपने कान से अपना गदा निकाल लिया। एक ही झटके में वह चावल के कटोरे जितना मोटा हो गया। राक्षसी ने उसकी पकड़ से खुद को छुड़ाया और पलटवार करने के लिए अपनी तलवारें उठा लीं। बंदर ने भी अपना गदा घुमाकर उसे मारना शुरू कर दिया और फ़िरोज़ी बादल पर्वत के सामने लड़ाई शुरू हो गई। रिश्तेदारी की सारी बातें भुला दी गईं और उनके मन में केवल नफरत ही बची थी। यह एक ज़बरदस्त लड़ाई थी: उस स्त्री ने खुद को एक राक्षस बनाने के लिए कड़ी मेहनत की थी;
वह उस बंदर से घृणा करती थी और अपने बेटे का बदला लेना चाहती थी।
हालांकि बंदर गुस्से से उबल रहा था,
वह अपने स्वामी के हित में रियायतें देने को तैयार था।
पहले तो उसने केले का पंखा उधार मांगा था।
धैर्यवान और सौम्य रहना, उग्र नहीं।
अज्ञानवश रक्षसी ने अपनी तलवार से वार किया।
तभी बंदर ने रिश्तेदारी के बारे में बात करने का फैसला किया।
महिलाओं को कभी भी पुरुषों से झगड़ा नहीं करना चाहिए।
क्योंकि पुरुष अधिक कठोर होते हैं और उन्हें कुचल सकते हैं।
सोने की पट्टी वाली लाठी भयानक थी।
नीली बर्फ से ढकी तलवार की चालें बहुत ही सूक्ष्म थीं।

चेहरे और सिर पर प्रहार करते हुए,
क्योंकि दोनों ने ही हार मानने से दृढ़तापूर्वक इनकार कर दिया था।
उन्होंने दाएं और बाएं दोनों ओर अवरोध बनाते हुए अपनी युद्ध कला का प्रयोग किया;
जिस चतुराई से वे डटे रहे या पीछे हटे, वह अद्भुत थी।
ठीक उसी समय जब वे दोनों आनंद लेने लगे थे
इससे पहले कि उन्हें पता चलता, सूरज पश्चिमी आकाश में डूब चुका था।
राक्षसी ने भूतों और देवताओं को छोटा महसूस कराया।
अपने सच्चे जादूगर प्रशंसक की कई लहरों के साथ।
अध्याय 59
819
पश्चिम की यात्रा
राक्षसी और बंदर शाम तक लड़ते रहे। बंदर की लाठी इतनी ज़ोर से चल रही थी और उसकी तकनीक इतनी अचूक थी कि राक्षसी को एहसास हो गया कि वह उसे कभी हरा नहीं पाएगी। उसने अपना केले का पंखा निकाला और एक ही झटके में बंदर को आँखों से ओझल कर दिया। अब उसके लिए टिके रहना नामुमकिन था। इसके साथ ही राक्षसी विजयी होकर अपनी गुफा में लौट गई।
महान ऋषि हवा में इधर-उधर धक्के खा रहे थे, न तो धरती पर उतर पा रहे थे और न ही कहीं शरण पा पा रहे थे। वे बवंडर में सूखे पत्ते या तेज धारा में बहते गिरे फूल की तरह थे।
पूरी रात तेज हवाओं के झटकों के बाद अगली सुबह वह किसी तरह एक पहाड़ पर उतरने में कामयाब हुआ और दोनों हाथों से एक चट्टान को कसकर पकड़ लिया। उसे शांत होने और चारों ओर अच्छी तरह देखने में काफी समय लगा, तब जाकर उसे एहसास हुआ कि वह छोटे सुमेरु पर्वत पर है।
"कितनी भयानक औरत है," उसने गहरी आह भरते हुए मन ही मन कहा। "वह मुझे यहाँ कैसे ले आई? मुझे याद है कि मैं एक बार यहाँ बोधिसत्व लिंगजी से पीली हवा के राक्षस को वश में करने और अपने गुरु को बचाने की प्रार्थना करने आया था।"
येलो विंड रिज यहाँ से एक हजार मील से भी अधिक दक्षिण में है, इसलिए पश्चिम से वापस आने के कारण मैंने हजारों-हजारों मील की दूरी तय की होगी। वापस जाने से पहले मैं नीचे जाकर बोधिसत्व लिंगजी से कुछ और जानकारी प्राप्त करूँगा।

जैसे ही वह अपना निर्णय ले रहा था, उसे एक ज़ोरदार घंटा सुनाई दिया, इसलिए वह जल्दी से पहाड़ से नीचे उतरा और सीधे ध्यान मठ की ओर चल पड़ा। द्वार पर मौजूद भिक्षु ने बंदर को पहचान लिया और अंदर जाकर घोषणा की, "बालों वाले मुख वाले महान ऋषि, जिन्होंने कुछ वर्ष पहले बोधिसत्व से पीले पवन राक्षस को वश में करने का अनुरोध किया था, फिर से यहाँ आए हैं।"

यह समझते हुए कि यह सन वुकॉन्ग ही होंगे, बोधिसत्व अपने सिंहासन से जल्दी से नीचे उतरे और उनका अभिवादन करते हुए उन्हें अंदर ले गए और कहा, "मुझे आपको बधाई देने दीजिए। मुझे लगता है कि अब आप शास्त्र ले आए होंगे।"

"अभी बहुत लंबा समय लगेगा," बंदर ने कहा, "बहुत लंबा समय।"

"लेकिन अगर आप अभी तक थंडर मठ नहीं पहुंचे हैं तो मेरे पर्वत पर क्यों आए हैं?" बोधिसत्व ने पूछा।

“कुछ साल पहले आपने मुझ पर इतनी कृपा की थी कि मैंने पीले पवन राक्षस को वश में कर लिया था,” बंदर ने उत्तर दिया, “ईश्वर ही जानता है कि हमने अपनी यात्रा में कितना कष्ट सहा है। अब हम अग्नि पर्वतों पर हैं, लेकिन हम उन्हें पार नहीं कर सकते। जब मैंने स्थानीय लोगों से पूछा तो उन्होंने मुझे एक लौह पंखा चलाने वाली अमर देवी के बारे में बताया जिनके पास एक ऐसा लौह पंखा था जो आग बुझा सकता था। मैं उस अमर देवी से मिलने गया, तो पता चला कि वह बैल दानव राजा की पत्नी और लाल लड़के की माँ हैं। मैंने उन्हें बताया कि उनका बेटा अब गुआनयिन बोधिसत्व का सेवक है, लेकिन वह मुझसे नाराज़ हैं क्योंकि वह उसे देख नहीं सकतीं। उन्होंने मुझे अपना पंखा देने से इनकार कर दिया और मुझसे लड़ने लगीं। जब उन्हें एहसास हुआ कि मेरा डंडा उनके लिए बहुत भारी है, तो उन्होंने अपना पंखा लहराया और मुझे हवा में उछालते हुए यहाँ तक पहुँचा दिया।”

इसीलिए मैं आपके मठ में भटकते हुए वापस जाने का रास्ता पूछने आया हूँ। यहाँ से अग्नि पर्वत कितनी दूर हैं?

"उस स्त्री का नाम रक्षसी है, या लौह पंखे की राजकुमारी," लिंगजी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "उसका केले का पंखा एक चमत्कारी खजाना है जो कुनलुन पर्वत के पीछे आकाश और पृथ्वी द्वारा तब बनाया गया था जब आदिम अराजकता पहली बार अलग हुई थी। यह पत्ता नकारात्मक यिन सिद्धांत का सार है, इसीलिए यह आग बुझा सकता है। अगर वह किसी को इससे हवा दे, तो वह नकारात्मक हवा के शांत होने से पहले

27,000 मील दूर उड़ जाएगा। लेकिन मेरा यह पर्वत अग्नि पर्वतों से केवल 17,000 मील दूर है। हे महान ऋषि, आप बादलों को रोकने की शक्ति रखते हैं, इसलिए आप यहाँ रुके होंगे। कोई साधारण मनुष्य आपको रोक नहीं पाता।"
"वह बहुत बुरी है," बंदर ने कहा। "मेरा मालिक उन पहाड़ों को कैसे पार करेगा?"

"चिंता मत करो, महान ऋषि," लिंगजी ने उत्तर दिया। "तांग पुजारी का आपके साथ इस यात्रा में सफल होना तय है।"
"आपको कैसे पता?" बंदर ने पूछा। "कई साल पहले जब तथागत ने मुझे निर्देश दिए थे," लिंगजी ने उत्तर दिया, "उन्होंने मुझे एक वायु-निरोधक गोली और एक उड़ने वाला ड्रैगन दंड दिया था। उड़ने वाले ड्रैगन दंड का उपयोग पीले पवन राक्षस को वश में करने के लिए किया गया था, लेकिन मैंने अभी तक वायु-निरोधक गोली का प्रयोग नहीं किया है और मैं इसे आज आपको दे रहा हूँ। यह पंखे को आपको हिलाने से रोक देगा। आपको बस इसे माँगना होगा और इससे आग बुझानी होगी। आपको तुरंत सफलता मिल जाएगी।"
बंदर ने झुककर हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया। बोधिसत्व ने अपनी आस्तीन से एक रेशमी थैली निकाली और उसमें से वात-निरोधक गोली निकाली। उन्होंने यह गोली बंदर को दी और उसे अपनी कमीज़ के कॉलर के अंदर सुरक्षित रूप से सिलने को कहा। बंदर को द्वार से बाहर जाते देख लिंगजी ने कहा, "मैं तुम्हें अब और नहीं रोकूंगा। उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ो, इससे तुम राक्षसी पर्वत पर पहुँच जाओगे।"
लिंगजी से विदा लेते हुए बंदर अपने कलाबाज बादल पर सवार होकर सीधे फ़िरोज़ी बादल पर्वत पर वापस चला गया और पल भर में वहाँ पहुँच गया। "दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो!" वह लोहे के डंडे से दरवाजों पर प्रहार करते हुए चिल्लाया।
"बंदर पंखा उधार लेने आया है।"
यह सुनकर दरवाजे के अंदर बैठी नौकरानी इतनी घबरा गई कि वह दौड़कर वापस आई और बोली, "महाराज, वह फिर से पंखा उधार लेने आया है।" यह खबर सुनकर रक्षसी डर गया और सोचने लगा, "उस लानत बंदर के पास तो वाकई कुछ खास शक्तियां हैं। अगर मैं अपने खजाने से किसी और को हवा दूं तो वह 27,000 मील

दूर जाकर रुकता है। उड़ जाने के बाद वह इतनी जल्दी वापस कैसे आ गया? इस बार मैं उसे दो-तीन बार हवा दूंगा और वह कभी वापस यहाँ नहीं आ पाएगा।"

वह उछलकर खड़ी हुई, अपने सारे कवच कसकर बांधे और हाथों में तलवारें लिए गुफा से बाहर निकल गई, चिल्लाते हुए बोली, "सन द नोविस, क्या तुम मुझसे डरते नहीं? यहाँ वापस आकर खुद को मरवाने क्यों आए हो?"

"भाभी, इतनी कंजूसी मत करो," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम्हें मुझे यह उधार देना ही होगा। मैं तांग पुजारी को अग्नि पर्वतों के पार पहुँचाते ही इसे लौटा दूँगा। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं एक सज्जन व्यक्ति हूँ। मैं उधार लेकर लौटाने वाला नीच प्राणी नहीं हूँ।"

"अरे बंदर!" रक्षसी चिल्लाई। "तुम बहुत बदतमीज़ हो और तुम्हें कुछ समझ नहीं है। मुझे अपने बेटे की मौत का बदला लेना है, तो भला मैं तुम्हें अपना पंखा कैसे दे सकती हूँ? अगर मेरी तलवार का स्वाद नहीं चखना चाहते तो यहाँ से चले जाओ।" महान ऋषि, ज़रा भी भयभीत नहीं हुए, उन्होंने अपने लोहे के डंडे से उसके हाथों पर वार किया और दोनों के बीच छह-सात दौर तक लड़ाई चली। तब तक रक्षसी की भुजाएँ तलवार चलाने के लिए बहुत थक चुकी थीं, जबकि बंदर भाई पूरी तरह से तैयार था और अच्छी तरह लड़ रहा था। लड़ाई का पलड़ा अपने पक्ष में झुकता देख, रक्षसी ने पंखा निकाला और एक बार बंदर की ओर घुमाया।

वह अविचल खड़ा रहा, अपनी लोहे की लाठी एक तरफ रख दी और हंसते हुए बोला, "इस बार बात अलग है। जितना चाहो पंखा चलाओ। अगर मैं एक इंच भी हिला तो मर्द नहीं रहूंगा।" उसने दो बार और पंखा चलाया, फिर भी वह नहीं हिला। अब वह इतनी घबरा गई थी कि उसने तुरंत अपना सामान एक तरफ रख दिया, सीधे गुफा में वापस गई और दरवाजे मजबूती से बंद कर दिए।

जब बंदर ने यह देखा तो उसने जादू का प्रयोग किया। उसने अपनी कमीज़ का कॉलर फाड़ दिया, वात-निरोधक गोली अपने मुँह में डाली, खुद को झटका दिया, एक छोटे से कीड़े में बदल गया और दरवाजों के बीच की दरार से अंदर घुस गया, जहाँ उसने रक्षसी को चिल्लाते हुए देखा, "मुझे प्यास लगी है, मुझे प्यास लगी है। जल्दी, मेरे लिए चाय लाओ।" उसकी सेवा में लगी नौकरानी सबसे अच्छी चाय का एक बर्तन लाई और इतनी शोर मचाते हुए एक बड़े कप में चाय डाली कि सतह पर झाग बन गया।

बंदर बहुत खुश हुआ। अपने पंखों की हल्की फड़फड़ाहट के साथ वह झाग के नीचे उड़ गया। रक्षसी इतनी प्यासी थी कि उसने चाय दो घूंट में ही पी ली।
उसके पेट में प्रवेश करते ही बंदर अपने असली रूप में लौट आया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा।
"भाभी, मुझे पंखा उधार दे दो।"
अध्याय 59
821
पश्चिम की यात्रा
रक्सासी सदमे से पीली पड़ गई। "बच्चों," उसने अपने अधीनस्थों को पुकारा, "क्या सामने के दरवाजे बंद हैं?"
"हां," उन सभी ने कहा।
"अगर दरवाजे बंद हैं तो नौसिखिया सन गुफा के अंदर कैसे हो सकता है और चिल्ला सकता है?" उसने पूछा।
"वह तुम्हारे अंदर से चिल्ला रहा है," नौकरानी ने जवाब दिया।
"तुम अपने जादूगरी के करतब कहाँ दिखा रहे हो, नौसिखिए सूर्य?" रक्सासी ने पूछा।
“मैंने अपनी पूरी जिंदगी में कभी जादू के करतब नहीं दिखाए,” बंदर ने जवाब दिया। “मेरा जादू और मेरी शक्तियां सब असली हैं। मैं आपके अंदरूनी अंगों से खेल रहा हूँ, भाभी जी। मैंने अभी-अभी आपके फेफड़े और जिगर देखे हैं। मुझे पता है कि आपको बहुत भूख और प्यास लगी है, इसलिए मैं आपको प्यास बुझाने के लिए एक कटोरी भर खाना देता हूँ।” इतना कहकर उसने अपना पैर पटका, जिससे रक्षसी के पेट में असहनीय ऐंठन हुई और वह कराहते हुए ज़मीन पर बैठ गई। “ना कहने की कोशिश मत करो, भाभी जी,” बंदर ने फिर कहा। “मैं आपको एक पेस्ट्री दे रहा हूँ, अगर आपको भूख लगी हो तो।” उसने ऊपर की ओर टक्कर मारी, जिससे उसे इतना ज़ोर का दिल का दर्द हुआ कि वह दर्द से पीली पड़ गई और होंठ सफेद पड़ गए, वह बस ज़मीन पर लोटती रही।
"मुझे बख्श दीजिए, जीजाजी, मुझे बख्श दीजिए," वह बस इतना ही कह सकी।
तभी बंदर ने मारना-पीटना बंद किया। "तो अब तुम मुझे जीजाजी कहते हो?" उसने कहा। "मैं अपने भाई बुल की खातिर तुम्हारी जान बख्श दूंगा। मुझे पंखा लाओ, जल्दी।"

"आपको यह मिलेगा, जीजाजी, आपको यह मिलेगा," उसने कहा। "बाहर आइए और इसे ले जाइए।"

“इसे लाओ और मुझे दिखाओ,” बंदर ने कहा। उसने नौकरानी को केले का पंखा लाने और उसे अपने पास पकड़ने के लिए कहा। बंदर ने अपना सिर उसके गले में डालकर उसे देखा और बोला, “भाभी, मैं आपकी जान बख्श रहा हूँ, इसलिए मैं आपकी पसलियों के नीचे से नहीं निकलूँगा। मैं आपके मुँह से निकलूँगा। तीन बार मुँह खोलो।” इतना कहते ही रक्षसी ने अपना मुँह खोल दिया और बंदर वापस छोटे कीड़े में बदल गया और उड़कर पंखे पर बैठ गया। रक्षसी को पता ही नहीं चला कि क्या हुआ और उसने दो बार और अपना मुँह खोला।

"बाहर आओ, जीजाजी," उसने कहा।

बंदर अपने असली रूप में लौट आया, पंखा उठाया और बोला, "ये लो। उधार देने के लिए धन्यवाद।" इतना कहकर वह आगे बढ़ गया, जबकि उसके साथियों ने गुफा के दरवाजे खोल दिए ताकि वह बाहर निकल सके।

फिर महान ऋषि ने अपने बादल को घुमाया और पूर्व दिशा की ओर चल दिए। कुछ ही क्षणों में वे बादल के पास उतरे और लाल ईंट की दीवार के पास खड़े हो गए। सुअर उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, "गुरुजी, बंदर यहाँ है! वह वापस आ गया है!" संजांग, खेत के बूढ़े व्यक्ति और साधु सैंड के साथ उनका स्वागत करने बाहर गए, और फिर वे सब अंदर लौट आए।

दीवार के सहारे पंखे को टिकाते हुए बंदर ने पूछा, "सर, बताइए, क्या यही पंखा है?"

"जी हां," बूढ़े आदमी ने कहा।

"यह एक बड़ी उपलब्धि है, शिष्य," संजांग ने कहा। "इस खजाने को लाने में तुम्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा होगा।"

"कोई परेशानी नहीं," बंदर ने कहा। "क्या आप जानते हैं कि वह लौह पंखा अमर कौन है? वह राकसासी है, बैल दानव राजा की पत्नी और लाल लड़के की माँ। उसका दूसरा नाम राजकुमारी लौह पंखा है। मैंने उसे उसकी गुफा के बाहर पाया और पंखा उधार लेने के लिए कहा, लेकिन वह केवल अपनी पुरानी दुश्मनी के बारे में बात करती रही। उसने मुझ पर कुछ वार किए।" (अध्याय 59)

वह अपनी तलवारों से मुझे डरा रही थी, लेकिन जब मैंने उसे लाठी से थोड़ा डराया, तो उसने मुझे पंखे से हवा दी और उड़ाकर मुझे नन्हे सुमेरु पर्वत तक पहुँचा दिया। सौभाग्य से मुझे बोधिसत्व लिंगजी के दर्शन हुए, जिन्होंने मुझे हवा रोकने वाली एक शिला दी और मुझे फ़िरोज़ी बादल पर्वत पर वापस जाने का रास्ता दिखाया। फिर मैंने राक्षसी को दोबारा देखा, लेकिन इस बार उसके पंखे से मैं एक इंच भी नहीं हिला, इसलिए वह अपनी गुफा में वापस चली गई और मैं एक छोटा सा कीड़ा बनकर उसके पीछे उड़ गया। जब उस दुष्ट स्त्री ने चाय माँगी, तो मैं ऊपर झाग के नीचे से फिसलकर उसके अंदर घुस गया और उसे कुछ घूंसे और लातें मारने लगा। वह दर्द सहन नहीं कर पा रही थी। वह बार-बार कह रही थी, 'मुझे छोड़ दो, जीजाजी, मुझे छोड़ दो।' जब उसने मुझे पंखा देने की पेशकश की, तो मैंने उसकी जान बख्श दी और पंखा ले लिया। "आग के पहाड़ों को पार करने के बाद मैं उसे पंखा वापस दे दूँगा।" जब संज़ंग ने यह सुना, तो वह अत्यंत आभारी हुआ।

गुरु और शिष्यों ने फिर उस बूढ़े व्यक्ति से विदा ली और लगभग पंद्रह मील पश्चिम की ओर यात्रा की। गर्मी असहनीय होती जा रही थी। "मेरे पैरों के तलवे झुलस रहे हैं," साधु सैंड ने शिकायत की।

"मेरे खुर जल रहे हैं और दर्द हो रहा है," पिग ने कहा। घोड़ा भी सामान्य से कहीं ज़्यादा तेज़ दौड़ रहा था। ज़मीन इतनी गर्म थी कि वे रुक नहीं पा रहे थे, लेकिन हर कदम दर्दनाक था।

“गुरुजी, कृपया नीचे उतर जाइए,” बंदर ने कहा, “और भाइयों, यहीं रुकिए, मैं पंखे से आग बुझा देता हूँ। जब हवा और बारिश आएगी, तो ज़मीन काफी ठंडी हो जाएगी और हम पहाड़ों को पार कर सकेंगे।” फिर उसने पंखा उठाया और आग की दिशा में एक बार ज़ोर से चलाया: लपटें पहाड़ों के ऊपर उठने लगीं। उसने फिर से पंखा चलाया, और वे सौ गुना ऊँची हो गईं। उसने तीसरी बार पंखा चलाया, और अब वे कुछ मील ऊँची हो गईं और उसे जलाने लगीं। बंदर भागा, लेकिन भागने से पहले उसके शरीर के दो हिस्से जल चुके थे। वह सीधे तांग पुजारी के पास वापस भागा और बोला, “जल्दी वापस आइए, जल्दी वापस आइए, लपटें आ रही हैं।”

मालिक घोड़े पर सवार होकर पिग और फ्रायर सैंड के साथ पूर्व की ओर लगभग सात मील की दूरी तय करने के बाद रुका और पूछा, "क्या हुआ, वुकॉन्ग?"

"यह गलत है," बंदर ने पंखा नीचे फेंकते हुए कहा, "यह गलत है। उस कमीनी औरत

ने मुझे बेवकूफ बना दिया।"
यह सुनकर संजांग का चेहरा उतर गया और वह बेहद निराश हो गया। "अब हम क्या करें?" वह सिसकते हुए बोला, उसकी आँखों से आंसू लगातार बह रहे थे।
"भाई," सुअर ने कहा, "तुम इतनी जल्दबाजी में वापस क्यों आए और हमें यहाँ वापस क्यों भेज दिया?"
"पहली बार जब मैंने आग को हवा दी तो लपटें उठीं," बंदर ने जवाब दिया, "दूसरी बार आग और भी भयंकर हो गई, और तीसरी बार लपटें कई मील ऊंची थीं। अगर मैं तेजी से नहीं भागा होता तो मेरे सारे बाल जलकर राख हो गए होते।"
"लेकिन तुम तो हमेशा कहते हो कि बिजली और गरज से तुम्हें कोई नुकसान नहीं होता और आग से तुम जल नहीं सकते," सुअर ने हंसते हुए कहा। "अब तुम्हें आग से डर क्यों लग रहा है?"
"बेवकूफ," बंदर ने कहा, "तुम्हें कुछ समझ नहीं आता। बाकी समय मैं तैयार था, इसीलिए मुझे चोट नहीं लगी।"
आज मैंने आग से बचने के लिए कोई मंत्र नहीं पढ़ा और न ही आत्मरक्षा के लिए जादू का इस्तेमाल किया। इसीलिए मेरे शरीर के दो हिस्से झुलस गए।
"अगर आग इतनी भीषण है और पश्चिम की ओर जाने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है तो हम क्या करेंगे?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"हमें बस ऐसी जगह ढूंढनी होगी जहां आग न लगी हो," पिग ने जवाब दिया।
"वह रास्ता कौन सा होगा?" संजांग ने पूछा।
"पूरब हो, उत्तर हो या दक्षिण: उन दिशाओं में आग नहीं लगती," सुअर ने कहा। "लेकिन धर्मग्रंथ किस दिशा में हैं?"
अध्याय 59

"केवल पश्चिम में," पिग ने उत्तर दिया।
"मैं केवल वहीं जाना चाहता हूं जहां धर्मग्रंथ हैं," संजांग ने कहा।
"हम पूरी तरह से अचंभित हैं," फ्रायर सैंड ने कहा। "जहां धर्मग्रंथ हैं वहां जोश है, और जहां जोश नहीं है वहां धर्मग्रंथ नहीं हैं।"
जब गुरु और शिष्य यह निरर्थक बातें कर रहे थे, तभी उन्होंने किसी को पुकारते हुए

सुना, "हे महान ऋषि, क्रोधित मत होइए।"
आगे की चर्चा करने से पहले आइए और कुछ शाकाहारी भोजन कर लीजिए।" चारों ने मुड़कर देखा तो एक बूढ़ा आदमी हवा में लहराता हुआ लबादा और अर्धचंद्राकार टोपी पहने खड़ा था। उसके हाथ में अजगर के सिर वाली छड़ी थी और पैरों में लोहे के जूते थे। उसके साथ एक राक्षस था जिसकी चोंच चील जैसी और गाल मछली जैसे थे। वह अपने सिर पर भाप में पके हुए बन, बाजरे के केक, पके हुए बाजरे और चावल से भरा तांबे का कटोरा लिए खड़ा था।
पश्चिम की ओर जाने वाली सड़क पर उस बूढ़े व्यक्ति ने उन्हें प्रणाम किया और कहा, "मैं अग्नि पर्वतों का स्थानीय देवता हूँ। जैसा कि मैं जानता हूँ कि आप इस पवित्र भिक्षु, महान ऋषि, का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं और आगे नहीं जा सकते, इसलिए मैं यह भोजन भेंट के रूप में लाया हूँ।"
बंदर ने जवाब दिया, "खाने की कोई ज़रूरत नहीं है। ये आग कब बुझेगी ताकि मेरा मालिक पहाड़ों को पार कर सके?"
स्थानीय देवता ने कहा, "यदि तुम आग बुझाना चाहते हो तो तुम्हें पहले रक्सासी से केले का पंखा उधार मांगना होगा।"
बंदर रास्ते के किनारे गया, पंखा उठाया और बोला, "यही तो है ना? मैं जितनी ज्यादा हवा देता हूँ, आग उतनी ही तेज जलती है। क्यों?"
"क्योंकि यह असली नहीं है," स्थानीय देवता ने उसे देखकर हंसते हुए कहा। "उसने तुम्हें बेवकूफ बनाया।"
"तो फिर मुझे असली वाला कैसे मिलेगा?" बंदर ने कहा।
स्थानीय देवता ने फिर से सिर झुकाया और उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी, उन्होंने उत्तर दिया, "यदि आप असली केले का पंखा उधार लेना चाहते हैं तो आपको बलवान भुजाओं वाले राजा से पूछना होगा।"
अगर आप स्ट्रॉन्गआर्म किंग के बारे में पूरी जानकारी नहीं रखते हैं, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।
अध्याय 60
बैल दानव राजा ने लड़ाई छोड़कर दावत में जाने का फैसला किया।
बंदर ने केले का पंखा उधार लेने की दूसरी कोशिश की
"बलवान भुजाओं का राजा बैल दानव राजा है," स्थानीय देवता ने समझाया।

"क्या उसने इन पहाड़ों में आग लगा दी और ऐसा दिखावा किया कि ये अग्नि पर्वत हैं?" बंदर ने पूछा।
"नहीं, नहीं," स्थानीय देवता ने उत्तर दिया। "यदि आप मुझे ऐसा करने के लिए क्षमा करने का वादा करेंगे, हे महान ऋषि, तो मैं खुलकर बोलूंगा।"
"माफ़ करने जैसा क्या है?" बंदर ने कहा। "साफ़-साफ़ बोलो।"
"हे महान ऋषि, तुमने ही यह आग लगाई है," स्थानीय देवता ने उत्तर दिया।
अध्याय 60
824
पश्चिम की यात्रा
"यह बकवास है," बंदर ने गुस्से से कहा। "मैं यहाँ नहीं था। क्या तुम मुझे आग लगाने वाला समझते हो?"
"तुम्हें पता नहीं मैं कौन हूँ," स्थानीय देवता ने कहा। "ये पहाड़ हमेशा से यहाँ नहीं थे। जब तुमने पाँच सौ साल पहले स्वर्ग में उत्पात मचाया था और तुम्हें प्रख्यात ऋषि एरलांग ने पकड़ लिया था, तब तुम्हें भगवान लाओ ज़ी के पास ले जाया गया, अष्टकोण भट्टी में डाला गया और शुद्ध किया गया। जब भट्टी खोली गई, तो तुमने उसे लात मारकर गिरा दिया, और उसकी कुछ ईंटें जिनमें अभी भी आग थी, यहाँ गिर गईं और अग्नि पर्वत बन गईं। मैं तुशिता महल में भट्टी की देखभाल करने वाले ताओवादी लड़कों में से एक था, लेकिन भगवान लाओ ज़ी मुझसे अपने कर्तव्य में विफल रहने के कारण इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने मुझे यहाँ का स्थानीय देवता बनाकर भेज दिया।"
"मैं सोच रहा था कि तुमने ऐसे कपड़े क्यों पहने हैं," पिग ने ज़ोर देकर कहा, "तुम एक ताओवादी हो जो स्थानीय देवता बन गए हो।"
"मुझे बताओ कि मुझे बलवान राजा को ढूंढने की जरूरत क्यों है," बंदर ने कहा, वह पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था।
“वह रक्षसी का पति है,” स्थानीय देवता ने कहा। “उसने उसे त्याग दिया है और थंडरपाइल्ड पर्वत पर स्थित बादल-स्पर्श गुफा में रहने चला गया है। वहाँ दस हज़ार वर्षों तक जीवित रहने वाले एक लोमड़ी राजा की मृत्यु हो गई, जिसकी इकलौती पुत्री राजकुमारी जेड थी, जिसके पास दस लाख की संपत्ति थी, लेकिन उसका प्रबंधन करने वाला कोई नहीं था। दो वर्ष पूर्व वह बैल दानव राजा से मिलने गई और उसकी

अपार जादुई शक्तियों के बारे में पता चला। उसने तय किया कि अगर वह उसके पति के रूप में उसकी गुफा में रहने आ जाए तो वह अपनी संपत्ति उसे दे देगी। इसलिए बैल दानव राजा ने रक्षसी को त्याग दिया और युगों से उससे मिलने नहीं आया है। हे महान ऋषि, यदि आप उसे ढूंढकर यहाँ आने के लिए मना लें, तो आप असली पंखा उधार ले सकेंगे। सबसे पहले, आप लपटों को बुझाकर अपने स्वामी को पहाड़ों के पार ले जा सकेंगे।"

दूसरे, आप इस विनाशकारी आग को बुझा देंगे ताकि यहाँ की भूमि फिर से जीवित हो सके। और तीसरे, मुझे क्षमा कर दिया जाएगा और मुझे स्वर्ग वापस जाने और भगवान लाओ ज़ी के अधीन रहने की अनुमति दी जाएगी।"

"माउंट थंडर पाइल्ड कहाँ है, और यह यहाँ से कितनी दूर है?"

स्थानीय देवता ने कहा, "ठीक दक्षिण की ओर, और एक हजार मील से भी अधिक दूर।" यह जानकर बंदर ने साधु रेत और सुअर को स्वामी की देखभाल करने का आदेश दिया और स्थानीय देवता को उनके साथ रहने के लिए कहा। फिर हवा जैसी गर्जना हुई और वह गायब हो गया।

एक घंटे से भी कम समय में उसने आकाश को छूता हुआ एक ऊँचा पर्वत देखा। उसने अपने बादल को नीचे लाकर शिखर पर खड़े होकर चारों ओर देखा, और उसे यह दृश्य दिखाई दिया:

क्या यह लंबा था?

इसकी चोटी नीले आकाश को छू रही थी।

क्या यह बड़ा था?

इसकी जड़ें येलो स्प्रिंग्स तक जाती थीं।

जब सूरज पहाड़ के अगले हिस्से को गर्म कर रहा था

पर्वत श्रृंखला के पीछे से ठंडी हवाएं चल रही थीं।

पहाड़ के सूर्य की गर्मी से तपते अग्रभाग पर

फूलों और पेड़ों को कभी पता ही नहीं था कि सर्दी क्या होती है;

पर्वत श्रृंखला के पीछे ठंडी हवाओं में

गर्मी के मौसम में भी बर्फ और पाला नहीं पिघला।
एक अजगर के तालाब से एक नदी घाटियों में बहती थी;
चट्टान में स्थित बाघ की गुफा के पास फूल समय से पहले खिल गए थे।
नदी हजारों हरे रंग की धाराओं में विभाजित हो गई;
फूल रेशमी वस्त्र की तरह एक साथ खिले हुए थे।
घुमावदार पहाड़ी की चोटी पर टेढ़े-मेढ़े पेड़ उग रहे थे;
गांठदार चट्टानों के बगल में गांठदार चीड़ के पेड़ थे।
वास्तव में थे
एक ऊँचा पर्वत,
खड़ी चोटियाँ,
खड़ी चट्टानें,
सुगंधित फूल,
बढ़िया फल,
लाल लताएँ,
बैंगनी बांस,
हरे चीड़ के पेड़,
फिरोजी रंग के विलो वृक्ष।
यह सभी मौसमों में एक जैसा ही दिखता था;
ड्रैगन की तरह, हमेशा अपरिवर्तनीय।
बहुत देर तक खोज करने के बाद, महान ऋषि ऊँची चोटी से नीचे उतरकर पर्वत में अपना रास्ता खोजने लगे। जब वे असमंजस में थे, तभी सुगंधित ऑर्किड की एक टहनी लिए एक दुबली-पतली युवती उनकी ओर आई। महान ऋषि एक विचित्र चट्टान के पीछे छिप गए और उसे गौर से देखा। वह कुछ इस प्रकार थी:
एक ऐसी मनमोहक सुंदरता जो पूरे देश को मंत्रमुग्ध कर दे।
वह अपने नन्हे कमल जैसे पैरों पर बहुत धीरे-धीरे चल रही थी।

उसका चेहरा वांग कियांग या चू की महिला जैसा था।

वह एक बोलती हुई फूल थी।
सुगंधित जेड पत्थर।
उसके बालों का गुच्छा जेड-नीले कौवों की तरह नीचे की ओर फैला हुआ था; उसकी हरी आँखें शरद ऋतु की बाढ़ की याद दिलाती थीं।
उसकी रेशमी स्कर्ट से उसके नन्हे-मुन्ने पैरों की झलक दिखाई दे रही थी;
उनकी फ़िरोज़ी रंग की आस्तीनों से लंबी और आकर्षक कलाईयां उभर रही थीं।
वह किसी को भी प्रेम भाव में ला सकती थी;
उसके होंठ लाल थे और उसके दांत मोती जैसे सफेद थे।
उसकी त्वचा जिनजियांग की सुंदरी की तरह चिकनी और भौहें उतनी ही सुंदर थीं; वह वेनजुन या श्यू ताओ से कहीं अधिक काबिल थी।
जैसे ही युवती धीरे-धीरे चट्टान के पास पहुँची, महान ऋषि ने उसे प्रणाम किया और कहा, "बोधिसत्व, आप कहाँ जा रही हैं?" उनके बोलने से पहले युवती ने उन्हें देखा तक नहीं था; लेकिन जब उसने ऊपर देखा और महान ऋषि का भयानक रूप देखा, तो वह भयभीत हो गई और न आगे बढ़ पाई और न पीछे हट पाई।
वह कांपते हुए बस इतना ही कर सकी और खुद को मजबूर करके जवाब देने को कहा, "आप कहां से हैं? आपकी हिम्मत कैसे हुई मुझसे सवाल करने की?"
"अगर मैं उसे शास्त्र लाने और पंखा उधार लेने की बात बताऊँ, तो यह औरत कहीं बैल दानव राजा की रिश्तेदार न हो। बेहतर होगा कि मैं बैल दानव राजा के किसी रिश्तेदार होने का नाटक करूँ और उसे भोज में आमंत्रित करने आया हूँ।"
जब उसने उसके सवालों का जवाब नहीं दिया तो महिला क्रोधित हो गई और चिल्लाई, "तुम कौन हो और तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे सवाल करने की?"
"मैं फ़िरोज़ी बादल पर्वत से आया हूँ," बंदर ने झुककर और बनावटी मुस्कान के साथ जवाब दिया। "मुझे रास्ता नहीं पता, क्योंकि मैं यहाँ पहली बार आया हूँ। क्या मैं आपसे, बोधिसत्व, पूछ सकता हूँ कि क्या यह गर्जन स्तंभ पर्वत है?"
"हाँ," उसने जवाब दिया।
"मुझे बादल छूने वाली गुफा कहाँ मिल सकती है?" महान ऋषि ने पूछा।
"आप इसे किसलिए ढूंढना चाहते हैं?" महिला ने पूछा।
"मुझे माउंट टरकॉइज़ क्लाउड पर स्थित प्लांटैन गुफा की राजकुमारी आयरन फैन ने बैल दानव राजा के लिए निमंत्रण के साथ भेजा है," बंदर ने उत्तर दिया।

जैसे ही उस महिला ने राजकुमारी आयरन फैन द्वारा बैल दानव राजा को निमंत्रण भेजने के बारे में सुना, वह क्रोध से भड़क उठी और उसका चेहरा लाल हो गया।

अध्याय 60

827

पश्चिम की यात्रा

"उसे अक्ल आनी चाहिए थी, लानत है उस कुतिया को। बैल दानव राजा को यहाँ आए हुए दो साल भी नहीं हुए हैं, और न जाने मैंने तब से उसे कितने गहने, सोना, चांदी, बढ़िया रेशम और जटा दी है। मैं उसे हर साल लकड़ी और हर महीने चावल भेजता हूँ। शुक्रिया, वो ठीक-ठाक है। तो फिर वो बेशर्म कुतिया क्या कर रही है, उसे निमंत्रण भेज रही है?"

जब महान ऋषि ने यह सुना और उन्हें पता चला कि वह राजकुमारी जेड है, तो उन्होंने जानबूझकर अपना लोहे का डंडा निकाला और उस पर चिल्लाते हुए कहा, "तू एक कुतिया है, अपने धन का इस्तेमाल बैल दानव राजा को खरीदने के लिए कर रही है। तूने उसे केवल अपने पैसे से ही विवाह के लिए राजी किया। तुझे इतना अपमानजनक व्यवहार करने के बजाय अपने आप पर शर्म आनी चाहिए।"

यह सुनकर उसकी सारी आत्माएं हवा में उड़ गईं और वह भय से कांपते हुए, लड़खड़ाते हुए, अपने जूतों में उलझकर भागने लगी, जबकि महान ऋषि चिल्लाते और दहाड़ते हुए उसके पीछे दौड़े। चीड़ के पेड़ों की छाया से बाहर निकलते ही वे बादल-स्पर्श गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँच गए। वह अंदर भागी और उसके पीछे दरवाजे ज़ोर से बंद हो गए।

तभी बंदर ने अपना डंडा एक तरफ रख दिया और ध्यान से देखा: एक घना जंगल,
खड़ी चट्टानें,
लताओं की बहुतायत,
ऑर्किड की खुशबू।
झरने का पानी हरे रंग के पत्थरों और बांसों के बीच से होकर बहता था;
विचित्र और धूर्त चट्टानों में कीमती पत्थर छिपे हुए थे।
दूर स्थित चोटियाँ कोहरे से घिरी हुई थीं;
सूर्य और चंद्रमा की रोशनी से बादल से ढकी चट्टानें जगमगा उठीं।
अजगर दहाड़े, बाघ गरजे,

सारस बोल रहे थे और चिड़ियों के गीत गा रहे थे।
इसकी शांत और मनमोहक शांति ताजगी भरी थी।
और पूरा दृश्य अनमोल फूलों से जगमगा रहा था।
यह तियानताई की जादुई गुफाओं के बराबर था।
और समुद्र में स्थित पेंग और यिंग द्वीपों से भी अधिक सुंदर।
हम इस बारे में कुछ नहीं कहेंगे कि बंदर भाई ने नज़ारे की कितनी प्रशंसा की, बल्कि यह बताएंगे कि दौड़ने के बाद पसीने से तरबतर और डर से बेतहाशा धड़कती हुई वह युवती सीधे उस अध्ययन कक्ष में गई जहाँ बैल दानव राजा चुपचाप सिंदूर रसायन शास्त्र पर एक किताब पढ़ रहे थे। वह बेहद परेशान होकर उनकी बाहों में गिर पड़ी, उनके चेहरे और कानों को खरोंचा और खींचा, और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाई।
अध्याय 60

"इतना परेशान मत हो, मेरी प्यारी," बैल दानव राजा ने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम मुझे क्या बताना चाहती हो?"
इसके बाद वह गुस्से में उछलने-कूदने लगी और अपशब्दों में बोली, "तुम मुझे मार रहे हो, शापित राक्षस।"
"तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?" उसने मुस्कुराते हुए पूछा।
"मैंने तुम्हें यहाँ अपनी देखभाल और सुरक्षा के लिए लाया था क्योंकि मैंने अपने माता-पिता को खो दिया था और मेरे आस-पास के सभी लोग कहते थे कि तुम एक सख्त आदमी हो," उसने कहा। "लेकिन तुम तो बस एक और जोरू का गुलाम और निकम्मे हो।"
बैल दानव राजा ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और कहा, "मैंने तुम्हारे साथ क्या गलत किया है, मेरी प्यारी? आराम से बताओ। मैं इसकी भरपाई कर दूंगा।"
“अभी मैं गुफा के बाहर फूलों के बीच टहल रही थी और ऑर्किड तोड़ रही थी,” उसने कहा। “तभी एक गरजते हुए देवता जैसे चेहरे वाला भिक्षु मेरे पास आया और प्रणाम करने लगा। मैं इतनी डर गई कि हिल भी नहीं सकी। जब मैं शांत हुई और उससे पूछा कि वह कौन है, तो उसने कहा कि उसे लौह पंखा की राजकुमारी ने आपके लिए निमंत्रण लेकर भेजा है। मुझे इतना गुस्सा आया कि मैंने कुछ कहा, और उसने मुझे

गाली देना शुरू कर दिया और अपने डंडे से मेरा पीछा किया। अगर मैं इतनी तेज़ी से न भागती तो वह मुझे डंडे से मार ही डालता। तो देखा आपने, आपको यहाँ लाना एक आपदा थी। यह मुझे अंदर से मार रहा है।" इस पर बैल दानव राजा ने उससे बहुत ही गंभीरता से माफी मांगी। काफी समय और कई बार प्यार से सहलाने के बाद आखिरकार वह शांत हुई।

"मैं तुमसे सच कहता हूँ, मेरी प्रियतमा," दानव राजा ने ज़ोरदार स्वर में कहा। "केले की गुफा भले ही थोड़ी दूर हो, पर वह पवित्रता और भव्यता का स्थान है। मेरी पत्नी बचपन से ही उच्च नैतिक मूल्यों वाली रही है, और वह अमर है जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है। वह अपने घर का कामकाज बहुत सख्ती से संभालती है। वहाँ एक भी सेवक नहीं है। वह किसी ऐसे भिक्षु को तो भेज ही नहीं सकती जिसका चेहरा गर्जन देवता जैसा हो। मुझे आश्चर्य है कि वह कौन सा दुष्ट राक्षस है। उसने मेरी पत्नी के नाम का इस्तेमाल करके मुझसे मिलने आया होगा। मैं जाकर देखता हूँ।"

शानदार दानव राजा अध्ययन कक्ष से बाहर निकलकर हॉल में गया और अपना कवच पहना और अपनी लोहे की गदा उठाई।

"तुम कौन हो, और इतना अभद्र व्यवहार क्यों कर रहे हो?" उसने दरवाजे से बाहर निकलते हुए चिल्लाकर कहा।

एक तरफ से देख रहे बंदर ने पाया कि अब वह पांच सौ साल पहले की तुलना में बिल्कुल अलग दिख रहा था।

उसका लोहे का हेलमेट पानी या चांदी की तरह चमक रहा था;

उनके सुनहरे कवच पर रेशम और ब्रोकेड की कढ़ाई की गई थी।

उसके हिरण की खाल से बने बूटों के आगे का हिस्सा ऊपर की ओर मुड़ा हुआ था;

उनके तलवे सफेद थे।

उसकी कमर पर रेशम की बेल्ट में तीन शेर की पूंछें बनी हुई थीं।

उसकी आंखें दर्पण की तरह चमकदार थीं।

उनकी भौहें लाल इंद्रधनुष की तरह सुंदर थीं।

उसका मुंह खून से भरे कटोरे जैसा था।

उसके दांत तांबे की प्लेटों की एक पंक्ति जैसे थे।

उसकी गर्जना सुनकर पर्वतों के देवता भयभीत हो गए;

दुष्ट आत्माएं उसकी अपार शक्ति से भयभीत हो गईं।
समुद्रों में अराजकता फैलाने के लिए उनकी प्रसिद्धि पूरे समुद्र में फैली हुई थी;
वह पश्चिम में शक्तिशाली दानव राजा था।
तब महान ऋषि ने अपने कपड़े ठीक किए, आगे बढ़े, सम्मानपूर्वक गहरी "री-ए-एर" ध्वनि निकाली और पूछा, "क्या आप मुझे अभी भी पहचान सकते हैं, बड़े भाई?"
"क्या आप सन वुकॉन्ग हैं, स्वर्ग के समान महान ऋषि?" बैल दानव राजा ने अपना धनुष लौटाते हुए उत्तर दिया।
"जी हां," बंदर ने कहा। "कितने लंबे समय बाद हमारी मुलाकात हुई है। मैं आपसे मिलने यहाँ इसलिए आया हूँ क्योंकि मैंने अभी-अभी एक महिला से कुछ सवाल पूछे थे। मैं आपको बधाई देना चाहता हूँ कि सब कुछ कितनी अच्छी तरह से बढ़ रहा है।"
“बस करो,” बैल दानव राजा चिल्लाया। “मैंने सुना है कि तुमने स्वर्ग में उत्पात मचाया और भगवान बुद्ध द्वारा पंच तत्व पर्वत के नीचे कुचल दिए गए। फिर तुम्हें स्वर्गिक दंड से मुक्त कर दिया गया ताकि तुम तांग पुजारी को बुद्ध की पूजा करने और पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के रास्ते में उसकी रक्षा कर सको। तुमने मेरे पुत्र, ऋषि बालक बछड़े को क्यों नष्ट किया? मैं तुमसे बहुत क्रोधित हूँ। तुम यहाँ मुझे क्यों ढूंढ रहे हो?”
“भाई, मुझे गलत मत समझिए,” महान ऋषि ने एक और प्रणाम करते हुए कहा। “आपके भले बेटे ने मेरे गुरु को पकड़ लिया था और उन्हें खाने जा रहा था। मैं उसका मुकाबला नहीं कर सकता था। सौभाग्य से बोधिसत्व गुआनयिन ने मेरे गुरु को बचाया और आपके बेटे का धर्म परिवर्तन करवाया। अब वह सुधना नाम का सेवक है। वह आपसे भी लंबा है। वह परम आनंद के मंदिर में रहता है और शाश्वत सुख का आनंद लेता है। इसमें कोई बुराई नहीं है, तो आप मुझसे क्यों नाराज़ हैं?”
"चपनी में चालाक बंदर," बैल दानव राजा ने जवाब दिया। "अगर तुम मेरे बेटे को बर्बाद करने के जुर्म से बच भी जाओ, तो मेरी प्रिय रखैल को नाराज़ करने और उसे मेरे दरवाजे तक भगाने का तुम्हारा क्या इरादा है?"
"मैंने उस महिला से विनम्रतापूर्वक पूछताछ की क्योंकि मैं आपको ढूंढ नहीं पा रहा था," बंदर ने जवाब दिया। "मुझे पता नहीं था कि वह आपकी दूसरी पत्नी हैं, इसलिए जब उन्होंने मेरे साथ बदतमीजी की तो मैंने भी वैसा ही कठोर व्यवहार किया। कृपया

मुझे क्षमा करें।"
"ठीक है," बैल दानव राजा ने कहा। "हमारी पुरानी दोस्ती की खातिर मैं तुम्हें इस बार माफ कर देता हूँ।"
“आपकी अपार कृपा के लिए मैं वास्तव में बहुत आभारी हूँ,” महान ऋषि ने उत्तर दिया। “लेकिन एक बात है जिसके लिए मैं आपको परेशान करना चाहता हूँ। मुझे आशा है कि आप मेरी मदद कर सकेंगे।”
"अरे बंदर!" बैल दानव राजा उस पर चिल्लाया, "तुम्हें लगता है कि तुम कुछ भी करके बच जाओगे! मैं तुम्हारी जान बख्श देता हूँ, लेकिन यहाँ से चले जाने की बजाय तुम मुझे परेशान करते रहते हो। मदद करने का तुम्हारा क्या मतलब है?"
“मैं आपसे सच कहूँ तो,” महान ऋषि ने उत्तर दिया। “मैं तांग पुरोहित के साथ यात्रा करते हुए अग्नि पर्वतों पर फँस गया हूँ और हम कहीं नहीं पहुँच पा रहे हैं। स्थानीय लोगों ने मुझे बताया कि आपकी पत्नी रक्षसी के पास केले का पंखा है। मैंने उसे उधार लेने की कोशिश की। मैं अपनी भाभी से मिलने गया, लेकिन उन्होंने मुझे पंखा देने से इनकार कर दिया, इसलिए मैं आपसे मिलने आया हूँ। हे भाई, मैं आपसे आपके दयालु हृदय से विनती करता हूँ कि आप मेरे साथ भाभी के घर चलें और मेरे लिए पंखा उधार ले आएँ ताकि मैं आग बुझा सकूँ और अपने गुरु को पर्वतों के पार ले जा सकूँ। फिर मैं उसे तुरंत लौटा दूँगा।”
इस पर बैल दानव राजा का हृदय क्रोध से धधक उठा। "तुमने मुझसे कहा था कि तुम्हें व्यवहार करना आता है," उसने अपने लोहे के दाँत पीसते हुए कहा। "मुझे लगता है कि यह सब सिर्फ पंखा उधार लेने के लिए नहीं था। मुझे यकीन है कि मेरी पत्नी ने अध्याय 60 पढ़ लिया है।"

मैंने तुम्हें इसे उधार देने से मना कर दिया क्योंकि तुमने उसके साथ दुर्व्यवहार किया है। इसीलिए तुम मुझसे मिलने आए हो। इसके अलावा तुमने मेरी प्रिय रखैल को डर के मारे भागने पर मजबूर कर दिया। जैसा कि कहावत है,
धक्का-मुक्की मत करो
आपके सबसे अच्छे दोस्त की पत्नी,
नष्ट करने की कोशिश मत करो

'वही उसके जीवन की सबसे बड़ी खुशी थी।'
तुम मेरी पत्नी को परेशान कर रहे हो और मेरी प्रेमिका को बर्बाद करने की कोशिश कर रहे हो, जो मेरी जिंदगी की खुशी है। यह घोर अन्याय है। ये लो!
"भाई, अगर तुम मुझे मारना चाहते हो, तो मुझे डर नहीं है," बंदर ने कहा। "मुझे बस खजाना चाहिए। मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे वह उधार दे दो।"
बैल दानव राजा ने कहा, "अगर तुम मेरे साथ तीन दौर तक टिक सकते हो, तो मैं अपनी पत्नी से इसे तुम्हें उधार दिलवा दूंगा। और अगर तुम नहीं टिक सकते, तो मैं तुम्हें मार डालूंगा और अपना बदला लूंगा।"
“अच्छा विचार है, भाई,” बंदर ने जवाब दिया। “मैं बहुत आलसी हो गया हूँ। तुमसे मिले हुए बहुत समय हो गया है, और मुझे नहीं पता कि तुम्हारी युद्ध शक्ति अब पहले जैसी है या नहीं। चलो, हम अपने गदाओं से एक मुकाबला करते हैं।” बैल दानव राजा और बहस करने के मूड में नहीं था, और उसने अपने गदा से बंदर के सिर पर प्रहार किया। बंदर ने अपने सोने की पट्टी वाले गदा से पलटवार किया। यह एक शानदार लड़ाई थी।
सोने की पट्टी वाली लाठी,
खुरदरी लोहे की गदा,
अब वे दोस्त नहीं रहे।
एक ने कहा, "तुमने मेरे बेटे को मार डाला, तुम बंदर।"
दूसरा, "गुस्सा मत करो: उसे रास्ता मिल गया है।"
"तुम इतने मूर्ख कैसे हो सकते हो कि मेरे दरवाजे पर आ गए?"
मैं एक विशेष उद्देश्य से आपसे मिलने आया हूँ।
एक व्यक्ति तांग पुजारी की रक्षा के लिए पंखे का इस्तेमाल करना चाहता था;
दूसरा व्यक्ति इतना कंजूस था कि उसने केले का पत्ता भी उधार नहीं दिया।
शब्दों के आदान-प्रदान में ही मित्रता खो गई;

गुस्से में दोनों में से किसी में भी भाईचारे की भावना नहीं थी।
बैल दानव राजा की गदा अजगर की तरह चलती थी;

महान ऋषि के दंड से देवता और राक्षस भाग निकले।
पहले उन्होंने पहाड़ के सामने लड़ाई लड़ी,
फिर वे दोनों शुभ बादलों पर सवार होकर ऊपर उठे।
उन्होंने हवा में अपनी अद्भुत शक्तियों का प्रदर्शन किया।
बहुरंगी रोशनी में अद्भुत करतब दिखा रहा है।
उनकी लाठियों की खड़खड़ाहट से स्वर्ग के द्वार हिल गए;
दोनों टीमें इतनी बराबरी की थीं कि किसी के भी जीतने की संभावना नहीं थी।
महान ऋषि और बैल दानव राजा के बीच सौ से अधिक दौर तक लड़ाई चली, लेकिन कोई भी विजयी नहीं हो सका।
जैसे ही वे अपने संघर्ष में उलझने लगे, शिखर से एक आवाज आई, "राजा बैल, मेरे राजा ने अपना सम्मान भेजा है और आपको भोज में अपनी उपस्थिति से उन्हें सम्मानित करने के लिए आमंत्रित किया है।"
इस पर बैल दानव राजा ने सोने की पट्टी वाली लाठी को अपने लोहे के गदा से रोक दिया और पुकार कर कहा, "तुम यहीं रहो, बंदर। मैं अपने एक मित्र के घर भोजन करने जा रहा हूँ। मैं जल्दी लौट आऊँगा।" इतना कहकर वह अपने बादल पर उतरा और सीधे गुफा में वापस चला गया।
"मेरी प्यारी," उसने राजकुमारी जेड से कहा, "जिस आदमी को तुमने गर्जन देवता जैसे चेहरे के साथ देखा, वह सन वुकॉन्ग नाम का बंदर है। मेरे गदा के वार से वह भाग गया है: वह वापस नहीं आएगा। चिंता करना छोड़ो और मजे करो। मैं मेंड के यहाँ कुछ पीने जा रहा हूँ।" फिर उसने अपना हेलमेट और कवच उतारा, मखमली कपड़े से बनी हल्के हरे रंग की जैकेट पहनी, बाहर गया और अपने जलरोधी सुनहरी आँखों वाले जानवर पर सवार हो गया। अपने सेवकों को महल की देखभाल करने का आदेश देकर वह बादलों और कोहरे में उत्तर-पश्चिम की ओर चल पड़ा।
जब महान ऋषि शिखर से यह सब देख रहे थे, तो उन्होंने सोचा, "पता नहीं यह मित्र कौन है और वह अपने भोज के लिए कहाँ गया है। मैं उसका पीछा करूँगा।" तभी तेजस्वी बंदर ने स्वयं को झटका दिया और एक निर्मल हवा में परिवर्तित होकर उनके पीछे चल पड़ा। वह जल्द ही एक पर्वत पर पहुँच गया, लेकिन बैल दानव राजा कहीं भी दिखाई नहीं दिया। महान ऋषि अपने वास्तविक रूप में वापस आ गए और पर्वत पर उसकी खोज शुरू कर दी। उन्हें शुद्ध जल का एक गहरा कुंड मिला, जिसके किनारे

एक पत्थर की शिला पर बड़े अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था।
ऊबड़-खाबड़ चट्टानी पहाड़
ग्रीन वेव पूल
बंदर ने सोचा, "बूढ़ा बैल ज़रूर पानी में चला गया होगा, और पानी के अंदर रहने वाली आत्माएं छोटी ड्रैगन, ड्रैगन या मछली की आत्माएं होती हैं, या फिर कछुए या टेरापिन की आत्माएं होती हैं। मुझे नीचे जाकर देखना चाहिए।"
अध्याय 60
832
पश्चिम की यात्रा
हाथ से मंत्र जपते हुए और जादुई शब्द बोलते हुए, महान ऋषि ने स्वयं को झटक दिया, छत्तीस पाउंड वजन वाले एक मध्यम आकार के केकड़े में परिवर्तित हो गए, छपाछप करते हुए पानी में कूद गए और सीधे तालाब की तलहटी में चले गए। उन्होंने एक अलंकृत मेहराब देखा, जिस पर नाजुक नक्काशी थी और जिससे पानी से बचने वाला एक सुनहरी आंखों वाला जानवर बंधा हुआ था। मेहराब के दूसरी ओर पानी नहीं था। बंदर रेंगता हुआ अंदर गया और ध्यान से देखा। एक तरफ से उसे संगीत सुनाई दिया, और उसने यह देखा: लाल महल के लिए कौड़ी के द्वार।
दुनिया में किसी और चीज़ जैसा नहीं।
छत की टाइलें पीले सोने की थीं।
दरवाजे के धुरीदार पुंज सबसे सफेद जेड पत्थर के बने हैं।
स्क्रीन कछुए की खोल से बनी थीं।
मूंगे और मोती से बनी रेलिंग।
सिंहासन के चारों ओर शुभ बादल चमक रहे थे।
ऊपर आकाश से लेकर नीचे जमीन तक।
यह न तो स्वर्ग का महल था और न ही समुद्र का।
हालांकि यह किसी द्वीप स्वर्ग से कहीं अधिक उत्तम था।
भव्य हॉल में मेजबान और मेहमानों के लिए भोज का आयोजन किया गया था।
जहां सभी अधिकारी मोतियों से सजी टोपी पहनते थे।
जेड लड़कियों को हाथीदांत के कटोरे लाने के लिए कहा गया था।
उत्कृष्ट संगीत प्रस्तुत करने वाली बेहद खूबसूरत अभिनेत्रियाँ।

विशालकाय व्हेल ने गीत गाया,
विशालकाय केकड़े नाच रहे थे।
कछुओं ने बांसुरी और ढोल बजाए।
जबकि प्यालों और जंगली सूअरों के ऊपर मोती चमक रहे थे।
फिरोजी रंग की स्क्रीन पर पक्षी जैसी आकृतियां बनी हुई थीं।
जबकि गलियारों में झींगा की मूंछों के आकार के पर्दे लटके हुए थे।
आठों स्वरों के मिश्रण से अद्भुत संगीत की रचना हुई।
जिसकी आवाज ऊपर बादलों तक गूंज उठी।
अध्याय 60
833
पश्चिम की यात्रा
हरे बालों वाली मधुर गीत गाती लड़कियाँ जैस्पर के वीणा बजा रही थीं
जबकि लाल आंखों वाली ड्रैगनफ्लाई जेड की बांसुरी बजा रही थीं।
मंदारिन मछली सूखे हिरण के मांस को अपने सिर पर रखकर अंदर लाईं।
जबकि ड्रैगन लड़कियों के बालों में सुनहरे तीतर के पंख थे।
उन्होंने जो खाया वह था
स्वर्गिक रसोई के सबसे दुर्लभ व्यंजन;
उन्होंने जो पिया वह था
पर्पल पैलेस की सर्वश्रेष्ठ वाइन।
बैल दानव राजा सम्मान की सीट पर बैठा था, जिसके दोनों ओर तीन या चार छोटे ड्रैगन आत्माएं थीं।
उसके सामने एक प्राचीन अजगर खड़ा था, जो अजगर पुत्रों, अजगर पोतों, अजगर पत्नियों और अजगर पुत्रियों से घिरा हुआ था। जब वे दावत और पेय का आनंद ले रहे थे, तभी महान ऋषि सूर्य सीधे अंदर आ गए, जिन्हें देखकर प्राचीन अजगर ने आदेश दिया, "उस आवारा केकड़े को गिरफ्तार करो।" अजगर पुत्रों और पोतों ने उस पर हमला कर दिया और उसे पकड़ लिया।
"मुझे बख्श दो, मुझे बख्श दो," बंदर ने अचानक इंसानी लहजे में बोलते हुए कहा।
“तू कहाँ से आया है, आवारा केकड़ा?” प्राचीन अजगर ने पूछा। “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे महल में आकर मेरे सम्मानित अतिथियों के सामने इस तरह का अपमानजनक

व्यवहार करने की? अगर तू मृत्युदंड से बचना चाहता है तो अभी बता दे।" तब महान ऋषि ने उसे झूठ का पुलिंदा सुनाने के लिए तैयार किया:
"जबसे मैं झील के किनारे रहने आया हूँ
मुझे चट्टानों और गुफाओं में अपना घर बनाना पड़ा है।
पिछले कुछ वर्षों में मैंने खुद को विस्तारित करना सीख लिया है।
तो अब मुझे टेढ़ा-मेढ़ा हथियारबंद आदमी के नाम से जाना जाता है।
मैं झाड़ियों और कीचड़ से होते हुए अपना रास्ता बना रहा था,
मुझे कभी भी सही सामाजिक व्यवहार नहीं सिखाया गया।
यदि मेरी अज्ञानता में मैंने किसी को ठेस पहुंचाई हो तो मैं क्षमा चाहता हूँ।
महाराज, मुझ पर दया कीजिए।
अध्याय 60
834
पश्चिम की यात्रा
जब भोज में उपस्थित आत्माओं ने यह सुना तो वे सभी प्राचीन ड्रैगन के सामने झुक गए और बोले, "यह पहली बार है कि तिरछा योद्धा आपके जैस्पर के महल में आया है, और वह शाही शिष्टाचार को नहीं समझता है।"
हम आपसे निवेदन करते हैं कि उन्हें बख्श दें।"
प्राचीन अजगर ने आत्माओं का धन्यवाद किया और आदेश दिया, "इस दुष्ट को छोड़ दो। इसके नाम पर पिटाई का रिकॉर्ड दर्ज करो और इसे बाहर इंतजार करने को कहो।" महान ऋषि ने उनकी दया को स्वीकार किया और अपनी जान बचाने के लिए तब तक भागे जब तक वे बाहर के द्वार तक नहीं पहुँच गए।
"वो बैल दानव राजा अंदर जी भरकर शराब पी रहा है," उसने सोचा। "मैं दावत खत्म होने तक इंतज़ार नहीं करने वाला। और अगर कर भी लूँ तो भी वो मुझे पंखा नहीं देगा। इससे बेहतर होगा कि मैं उसके सुनहरे आँखों वाले जानवर को चुरा लूँ और खुद को बैल दानव राजा में बदल लूँ। फिर मैं रक्षसी को छल से पंखा उधार ले लूँगा और अपने स्वामी को पहाड़ों के पार ले जा सकूँगा। यही सबसे अच्छा रहेगा।"
फिर उस तेजस्वी महान ऋषि ने अपना मूल रूप धारण किया, सुनहरी आँखों वाले पशु को खोला, नक्काशीदार काठी पर सवार हुए और सीधे पानी की तलहटी से ऊपर की ओर चल पड़े। तालाब से बाहर निकलते ही उन्होंने बैल दानव राजा का रूप धारण कर

लिया। पशु को चाबुक मारते हुए उन्होंने अपने बादल को गतिमान किया और शीघ्र ही फ़िरोज़ी बादल पर्वत पर स्थित केले की गुफा के मुहाने पर पहुँच गए।
"दरवाजा खोलो!" उसने चिल्लाकर कहा, और उसकी आवाज सुनते ही द्वार के अंदर मौजूद दोनों नौकरानियों ने उसके लिए दरवाजे खोल दिए।
उन्हें बैल दानव राजा समझकर वे अंदर जाकर सूचना देने गए, "महाराज, महाराज घर लौट आए हैं।" यह खबर सुनकर राक्षसी ने जल्दी से अपने बाल संवारे और कमल जैसे कोमल कदमों से उनका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़ी। घोड़े की पीठ से उतरकर महान ऋषि सुनहरी आँखों वाले उस जानवर को अंदर ले गए। उन्होंने उस सुंदरी को धोखा देने का साहस दिखाया, जिसकी नश्वर आँखें उन्हें अंदर ले जाते समय, हाथ में हाथ डाले, उनकी असलियत नहीं देख पाईं। दासियों को जगह तैयार करने और चाय लाने के लिए कहा गया, और स्वामी के वापस आने पर पूरे घर ने उनकी देखभाल करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।
कुछ ही देर में महान ऋषि और राक्षसी बातें करने लगे। "मेरी शुभचिंतक," उस झूठे बैल दानव राजा ने कहा, "बहुत समय हो गया है।"
"मुझे उम्मीद है कि महाराज, आपके लिए सब कुछ अच्छा रहा होगा," रक्सासी ने उत्तर दिया और आगे पूछा, "अब जब आपने अपनी नई प्रेमिका से शादी कर ली है, तो कौन सी हवा आपको आपकी त्यागी हुई पत्नी के पास वापस ले आई है?"
“तुम्हें छोड़ने का तो सवाल ही नहीं उठता,” महान ऋषि ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “बात बस इतनी है कि राजकुमारी जेड के मुझे अपने घर बुलाने के बाद से मैं काफी समय से दूर रहा हूँ। घरेलू कामों और दोस्तों से मिलने-जुलने में मैं बहुत व्यस्त रहता हूँ। मैंने सुना है कि फलां सन वुकॉन्ग तांग पुजारी के साथ अग्नि पर्वतों के बहुत पास है, और मुझे डर है कि कहीं वह आकर तुमसे पंखा न माँग ले। मैं उसे हमारे बेटे को मारने के लिए माफ़ नहीं कर सकता, मैं उससे बदला लेना चाहता हूँ। अगर वह आता है, तो बस किसी को भेजकर मुझे बता देना। जब मैं उसे पकड़ लूँगा, तो हम उसके शरीर के दस हज़ार टुकड़े कर देंगे, जो हमने सहा है उसका बदला।”
"महाराज," रक्सासी ने अपनी कही बात पर रोते हुए उत्तर दिया, "जैसा कि कहावत है, 'जिस पुरुष के पास स्त्री नहीं होती वह अपनी संपत्ति को खतरे में डालता है; जिस स्त्री के पास पति नहीं होता वह अपने स्वास्थ्य को खतरे में डालती है।' उस बंदर ने तो मानो मेरी जान ही ले ली थी।"

इस पर महान ऋषि ने भयंकर क्रोध का नाटक किया। "वह कमीना बंदर कब गया?" उन्होंने अपशब्द कहे।

“वह अभी गया नहीं है,” रक्सासी ने उत्तर दिया। “वह कल पंखा उधार लेने आया था, और चूंकि उसने हमारे लड़के को बुरी तरह घायल कर दिया था, इसलिए मैंने अपना कवच पहना और उसे अपनी तलवारों से टुकड़े-टुकड़े करने के लिए बाहर गई। लेकिन उसने दर्द सहन किया, मुझे अपनी भाभी कहा और बताया कि तुम और वह कभी सगे भाई थे।”

"वह पांच सौ साल पहले मेरा सातवां शपथ लिया हुआ भाई था," महान ऋषि ने उत्तर दिया।

अध्याय 60

835

पश्चिम की यात्रा

"जब मैंने उसे गालियां दीं, तो उसने एक शब्द भी नहीं कहा," रक्सासी ने आगे बताया, "और जब मैंने उसे काटा, तो उसने पलटवार भी नहीं किया। आखिर में मैंने उसे पंखे से उड़ा दिया। पता नहीं उसे हवा रोकने का जादू कहां से मिला, लेकिन आज सुबह वह फिर दरवाजे के बाहर चिल्ला रहा था, और पंखा कितना भी जोर से हिलाऊं, वह टस से मस नहीं हुआ। जब मैंने अपनी तलवारें घुमाईं और उस पर हमला किया, तो वह बिल्कुल भी नरम नहीं था। मैं उसके डंडे की ताकत से इतना डर गया कि मैं अंदर आ गया और दरवाजे कसकर बंद कर लिए। किसी तरह वह मेरे पेट में जा घुसा और मुझे लगभग मार ही डाला। मुझे उसे जीजाजी कहकर बुलाना पड़ा और पंखा उधार देना पड़ा, तब जाकर वह गया।"

महान ऋषि ने सीना पीटते हुए बड़े ही नाटकीय अंदाज में कहा, "कितना भयानक, कितना भयानक। तुमने गलत किया, पत्नी। तुम्हें वह खजाना बंदर को कभी नहीं देना चाहिए था।"

"महाराज, क्रोधित न हों," रक्सासी ने उत्तर दिया। "मैंने उसे एक नकली पंखा उधार दिया और उसे धोखे से वहां से भगा दिया।"

"असली वाला कहाँ है?" महान ऋषि ने पूछा।

“चिंता मत करो,” उसने उत्तर दिया, “चिंता मत करो। यह सुरक्षित रूप से रखा हुआ है।” फिर उसने नौकरानियों को उनके स्वागत के लिए शराब और दावत तैयार करने

का आदेश दिया। “महाराज,” उसने उन्हें शराब का प्याला देते हुए कहा, “कृपया अपने नए विवाह की खुशी में अपनी युवावस्था की पत्नी को न भूलें। क्या आप घर से लाई हुई यह शराब नहीं पिएंगे?”
महान ऋषि के पास प्याला स्वीकार करने और उसे उठाते हुए मुस्कुराने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।
"पहले आप पियो, पत्नी," उसने कहा। "मैंने तुम्हें घर की देखभाल अकेले बहुत लंबे समय तक करने के लिए छोड़ दिया है, क्योंकि मैं अपनी दूसरी संपत्तियों के काम में व्यस्त था। इसे मेरी कृतज्ञता का प्रतीक समझो।"
रक्षसी ने प्याला वापस लिया, उसे फिर से उठाया और राजा को देते हुए कहा, "जैसा कि पुरानी कहावत है: पत्नी बराबर होती है, लेकिन पति पिता होता है जो उसका पालन-पोषण करता है। आपको मुझे धन्यवाद देने की आवश्यकता नहीं है।" कुछ और शिष्टाचार के बाद ही वे दोनों बैठ गए और पीने लगे। मांस न खाने के अपने वचन को न तोड़ने के लिए, महान ऋषि ने उससे बात करते हुए केवल कुछ फल खाए।
कुछ प्याले पीने के बाद, रक्षसी को हल्का नशा सा महसूस हो रहा था और वह काफी कामुक भी। वह महान ऋषि से लिपट गई, उन्हें सहलाने और चुटकी काटने लगी। उनका हाथ पकड़कर, उसने उनके कानों में कोमल शब्द फुसफुसाए; अपना कंधा उनसे टिकाकर, वह धीरे और विनम्रता से बोली। उन्होंने एक ही प्याले से शराब साझा की, एक-एक घूंट करके पीते रहे, और उसने उन्हें फल खिलाए। महान ऋषि ने मुस्कुराने का नाटक किया। उनके पास उसके सहारे झुकने के अलावा कोई चारा नहीं था। सचमुच: कविता को आकर्षित करने का यही तरीका है।
दुःख को दूर भगाने वाली झाड़ू,
शराब सभी कठिनाइयों का निवारण करती है।
हालांकि वह व्यक्ति गुणी था, फिर भी उसने अपने कोट के कॉलर के बटन खोल दिए; वह महिला होश खो बैठी और हंसने लगी।
उसका चेहरा आड़ू की तरह गोरा था।
उसका शरीर एक छोटे पेड़ के अंकुर की तरह हिल रहा था।
उसके मुंह से अनेक शब्द लड़खड़ाते हुए निकले।

जैसे-जैसे वह अपनी इच्छा में चुभती और काटती गई।
कभी-कभी वह अपने बालों को खींचती थी।
या फिर उसने अपनी कोमल उंगलियां हिलाईं।
वह अक्सर अपना पैर उठाती थी
और उसने अपने कपड़ों की आस्तीनें झटक दीं।
उसकी पाउडर लगी गर्दन और नीचे झुक गई।
और उसकी सुडौल कमर मटकने लगी।
वह एक पल के लिए भी बोलना बंद नहीं करती थी।
जैसे ही उसने अपने स्तनों को आधा दिखाने के लिए सोने के बटन खोले।
नशे की हालत में वह मानो जेड के भूस्खलन जैसी लगती थी।
और जब उसने अपनी धुंधली आँखों को मला तो वह अपने सबसे अच्छे रूप में नहीं दिख रही थी।
उसे नशे में धुत होते देख महान ऋषि ने अपना होश नहीं खोया और उसे बहकाने की कोशिश करते हुए कहा,
"पत्नी, तुमने असली पंखा कहाँ रखा है? तुम्हें इस पर हमेशा बहुत ध्यान रखना चाहिए। मुझे डर है कि नौसिखिया सूर्य अपने अनेक रूपों का इस्तेमाल करके इसे तुमसे छीन लेगा।" यह सुनकर राक्षसी खिलखिला उठी, उसने पंखा मुँह से थूक दिया और महान ऋषि को दे दिया। वह पंखा खुबानी के पत्ते के आकार का ही था।
"यह रहा खजाना," उसने कहा।
महान ऋषि ने उसे ले लिया, लेकिन उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि यह सचमुच नकली है। उन्होंने सोचा, "इतनी छोटी सी चीज आग कैसे बुझा सकती है? यह जरूर कोई नकली चीज होगी।"
उसे खजाने को इतनी गहरी सोच में डूबे हुए देखकर, रक्षसी खुद को रोक नहीं पाई और उसने अपना पाउडर लगा चेहरा बंदर के चेहरे से रगड़ते हुए कहा, "खजाने को एक तरफ रख दो और एक और घूंट पी लो, प्यारे। तुम इतने परेशान क्यों दिख रहे हो?"
महान ऋषि ने मौका पाकर यह सवाल पूछा, "इतनी छोटी सी चीज 250 मील तक आग कैसे फैला सकती है?" वह अब इतनी नशे में थी कि सच बोलने में उसे कोई

झिझक नहीं थी, इसलिए उसने उन्हें बताया कि यह कैसे किया जाता है: "महाराज, मुझे लगता है कि आपने मुझे छोड़ने के बाद पिछले दो वर्षों में दिन-रात अपनी सुख-सुविधाओं का अत्यधिक आनंद लिया है। राजकुमारी जेड ने आपके दिमाग को खराब कर दिया होगा अगर आपको अपने खजाने के बारे में भी याद नहीं है। आपको बस अपने बाएं हाथ के अंगूठे से सातवें लाल रेशमी धागे को पकड़ना है और कहना है, 'हुइशुहेक्सिसिचुइहु।' फिर यह बारह फीट लंबा हो जाएगा। यह जितनी बार चाहे उतनी बार रूप बदल सकता है। यह एक ही लहर से 250,000 मील तक आग की लपटें फैला सकता है।

महान ऋषि ने यह सब बड़ी सावधानी से याद कर लिया, पंखा अपने मुँह में डाला, अपना चेहरा मला और वापस अपने असली रूप में आ गए। "राक्षसी!" वे ज़ोर से चिल्लाए। "ध्यान से देखो: मैं तुम्हारा बहनोई हूँ। तुमने मेरे साथ कितना घिनौना व्यवहार किया है, और कितने लंबे समय से कर रहे हो।"

तुम बेशर्म हो, बिलकुल बेशर्म।

अध्याय 60

837

पश्चिम की यात्रा

सुन वुकॉन्ग को देखकर वह भयभीत हो गई और खाने की मेज को धक्का देकर गिरा दिया। शर्म से चूर होकर वह चीखने लगी, "मैं इतनी परेशान हूँ कि मर सकती हूँ, मैं मर सकती हूँ।"

वह स्त्री जीवित है या मृत, इसकी परवाह किए बिना, महान ऋषि ने खुद को मुक्त किया और सीधे केले की गुफा से बाहर निकल भागे। वास्तव में, उन्हें उस सुंदर स्त्री पर कोई वासना नहीं थी, और वे मुस्कुराते हुए उससे विदा लेने में प्रसन्न थे। वे अपने शुभ बादल पर सवार हुए जो उन्हें पर्वत की चोटी पर ले गया, उन्होंने अपने मुँह से पंखा थूक दिया और जादू का प्रयोग करने लगे। अपने बाएं हाथ के अंगूठे से सातवें लाल गुच्छे को पकड़ते हुए उन्होंने कहा,

"हुइशुहेक्सिसिचुइहु," और सचमुच यह बारह फीट लंबा हो गया। ध्यान से देखने पर उसने पाया कि यह उस नकली से बिल्कुल अलग था जिसे उसने पहले उधार लिया था। यह शुभ प्रकाश से जगमगा रहा था और शुभ वाष्प से घिरा हुआ था। लाल रेशम के छत्तीस धागों ने अंदर और बाहर जालीदार पैटर्न बनाया था। लेकिन बंदर भाई ने

केवल इसे बढ़ाने का तरीका पूछा था, इसे छोटा करने का मंत्र नहीं। इसलिए उसे इसे कंधे पर लादकर उसी रास्ते से वापस जाना पड़ा जिससे वह आया था।

जब बैल दानव राजा का हरे लहर वाले कुंड की तलहटी में सभी आत्माओं के साथ भोज समाप्त हुआ, तो वह बाहर गया और पाया कि जल से बचाव करने वाला सुनहरी आँखों वाला जानवर गायब था। प्राचीन ड्रैगन राजा ने सभी आत्माओं को बुलाकर पूछा, "तुममें से किसने बैल दानव राजा के सुनहरी आँखों वाले जानवर को खोलकर चुराया?" सभी आत्माएँ घुटने टेककर बैठ गईं और बोलीं, "हम उसे चुराने की हिम्मत नहीं करते। हम सब भोज में इंतज़ार कर रहे थे, गा रहे थे या खेल रहे थे। हममें से कोई भी यहाँ बाहर नहीं था।"

"मुझे यकीन है कि तुम महल के संगीतकारों में से किसी ने भी इसे लेने की हिम्मत नहीं की होगी," प्राचीन ड्रैगन ने कहा। "क्या यहाँ कोई अजनबी आया था?"

"कुछ समय पहले भोज के दौरान एक केकड़े की आत्मा यहाँ आई थी, और वह एक अजनबी थी।"

यह सुनकर बैल राजा को अचानक समझ आ गया कि क्या हुआ है। "बस करो," उसने कहा। "आज सुबह जब तुमने निमंत्रण लेकर अपना दूत भेजा था, तो वहाँ एक सन वुकॉन्ग था जो मेरा केले का पंखा उधार माँगने आया था क्योंकि उसका साथ दे रहा तांग पुजारी अग्नि पर्वतों के पार से शास्त्र नहीं ला सका था। मैंने मना कर दिया। उससे मेरी लड़ाई चल रही थी जिसमें हम दोनों में से कोई भी नहीं जीत रहा था, तभी मैंने उसे झटक कर भगा दिया और सीधे यहाँ भोज में आ गया। वह बंदर बहुत फुर्तीला और परिस्थितियों के अनुकूल ढलने वाला है। मुझे यकीन है कि केकड़े की आत्मा ही यहाँ जासूसी करने के लिए भेस बदलकर आई थी। उसने मेरा जानवर चुरा लिया है ताकि वह मेरी पत्नी से केले का पंखा धोखे से छीन सके।" यह खबर सुनकर सभी आत्माएँ भय से काँप उठीं।

उन्होंने पूछा, "क्या आपका मतलब उस सन वुकॉन्ग से है जिसने स्वर्ग में तबाही मचाई थी?"

"जी हां," बैल दानव राजा ने उत्तर दिया। "यदि आप में से किसी को पश्चिम की ओर जाते समय कोई परेशानी हो, तो हर हाल में उससे दूरी बनाए रखें।"

"लेकिन अगर यह सब सच है, तो महाराज के घोड़े का क्या होगा?" प्राचीन ड्रैगन ने पूछा।

"कोई बात नहीं," बैल दानव राजा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "आप सभी सज्जन अब घर जा सकते हैं, मैं उसके पीछे जाता हूँ।"
इसके साथ ही वह पानी में से रास्ता बनाते हुए तालाब की तलहटी से उछला और एक पीले बादल पर सवार होकर सीधे फ़िरोज़ी बादल पर्वत पर स्थित केले की गुफा तक पहुँच गया, जहाँ उसने रक्सासी को पैर पटकते, छाती पीटते, चीखते और कराहते हुए सुना। उसने दरवाज़े खोल दिए और देखा कि पानी से बचने वाला सुनहरी आँखों वाला जानवर उनसे बंधा हुआ है।
"सन वुकॉन्ग कहाँ गया, पत्नी?" बैल दानव राजा ने कहा।
अध्याय 60
838
पश्चिम की यात्रा
बैल दानव राजा को वापस देखकर, सभी सेविकाएँ घुटने टेककर बोलीं, "क्या आप घर आ गए हैं, महाराज?"
रक्सासी ने उसे पकड़ लिया, अपना सिर उसके सिर से टकराया और अपशब्दों से कहा, "तुम्हें धिक्कार है, तुम लापरवाह मूर्ख। तुमने उस बंदर को सुनहरी आंखों वाले जानवर को चुराने और खुद को तुम्हारा हमशक्ल बनाकर यहां आकर मुझे धोखा देने की इजाजत क्यों दी?"
"बंदर किधर गया?" बैल दानव राजा ने क्रोध से दांत पीसते हुए पूछा। अपनी छाती पीटते हुए रक्षसी ने अपशब्दों की बौछार जारी रखी: "उस लानत बंदर ने मुझे धोखा देकर मेरा खजाना छीन लिया, फिर अपने असली रूप में लौट आया और चला गया। मुझे इतना गुस्सा आ रहा है कि मैं मर सकती हूँ।"
“अपनी पत्नी, अपना ख्याल रखना,” बैल दानव राजा ने कहा, “और इतना परेशान मत होना। जब मैं बंदर को पकड़कर उससे खजाना ले लूंगा, तो मैं उसकी खाल उतारकर, उसकी हड्डियों को पीसकर चूर-चूर कर दूंगा और उसका दिल और जिगर तुम्हारे लिए लाऊंगा। इससे तुम्हें अच्छा लगेगा।” फिर उसने हथियार मंगवाए।
"महाराज के हथियार यहां नहीं हैं," नौकरानियों ने जवाब दिया।
"तो अपनी स्वामिनी के हथियार ले आओ," बैल दानव राजा ने उत्तर दिया। सेवक उसके लिए नीले रंग की नोक वाली दो तलवारें ले आए, और बैल दानव राजा ने भोज में पहनी हुई बत्तख-हरे रंग की मखमली जैकेट उतार दी और अपनी त्वचा से चिपकी

हुई छोटी सी बनियान को और कसकर बांध लिया। फिर वह दोनों हाथों में तलवार लिए केले की गुफा से बाहर निकला और बंदर का पीछा करते हुए सीधे अग्नि पर्वतों की ओर चल पड़ा। यह एक ऐसा मामला था...

वह आदमी जो एक भलाई को भूल गया
एक स्नेहशील पत्नी को धोखा देना;
उग्र स्वभाव वाला बूढ़ा राक्षस
एक भिक्षु से मुलाकात।

अगर आपको नहीं पता कि यह यात्रा दुर्भाग्यपूर्ण थी या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 61

झू बाजी एक दानव राजा को हराने में मदद करती है
बंदर का पंखा उधार लेने का तीसरा प्रयास

कहानी बताती है कि कैसे बैल दानव राजा ने महान ऋषि सूर्य का पीछा किया और उन्हें अपने कंधे पर केले का पंखा लिए बड़े प्रसन्न भाव से जाते देखा। दानव राजा ने सोचा, "तो इस बंदर ने भी पंखा चलाने की कला सीख ली है। अगर मैं उससे पंखा वापस मांगूं तो वह मना कर देगा, और अगर वह मुझे उसी पंखे से हवा दे और साठ हज़ार मील दूर भेज दे तो यही उसकी इच्छा होगी। अब मुझे पता है कि तांग पुजारी मुख्य सड़क पर बैठा इंतज़ार कर रहा है। पुराने समय में जब मैं दुष्ट आत्मा था, तब मैं उसके दूसरे शिष्य, सुअर आत्मा को जानता था। मुझे लगता है कि मैं सुअर आत्मा का रूप धारण कर लूंगा और उसी पर पलटवार करूंगा। वह बंदर निश्चित रूप से इतना खुश होगा कि वह सावधान नहीं रहेगा।"

वह शानदार दानव राजा बहत्तर रूपों में रूपांतरित हो सकता था और उसके युद्ध कौशल महान ऋषि के बराबर थे: बस फर्क इतना था कि वह थोड़ा अधिक भद्दा था, कम फुर्तीला और भेदक था, और उतना अनुकूलनीय नहीं था।

पहले उसने तलवारें छुपाईं, फिर मंत्र पढ़ा, खुद को हूबहू सूअर के रूप में बदल लिया, नीचे गया और बंदर से आमने-सामने मिला। "मैं यहाँ हूँ, भाई," उसने पुकारा।

महान ऋषि सचमुच प्रसन्न हुए। प्राचीन कहावत है कि लड़ाई जीतने वाली बिल्ली बाघ से भी अधिक प्रसन्न होती है। बंदर को अपनी शक्तियों पर इतना भरोसा था कि उसने यह जानने की जहमत ही नहीं उठाई कि नया मेहमान यहाँ क्यों आया है, लेकिन जब उसने देखा कि वह सूअर जैसा दिखता है, तो उसने पुकार कर पूछा, "भाई, तुम कहाँ जा रहे हो?"

बैल दानव राजा ने तुरंत जवाब दिया: "तुम इतने लंबे समय से अनुपस्थित थे कि स्वामी को लगा कि बैल दानव राजा की जादुई शक्तियां तुम्हारे लिए बहुत अधिक हैं और तुम खजाना नहीं ला पाओगे। इसलिए उन्होंने मुझे तुमसे मिलने भेजा है।"

"चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी," बंदर ने कहा। "मुझे तो पहले से ही मिल गया है।"

"तुमने यह कैसे किया?" बैल दानव राजा ने पूछा।

"बूढ़े बैल और मैंने सौ से अधिक दौर तक लड़ाई लड़ी, लेकिन हममें से कोई भी एक-दूसरे पर हावी नहीं हो पाया। फिर उसने लड़ाई बीच में ही रोक दी और रैग्ड रॉक पर्वत पर स्थित ग्रीन वेव पूल की तलहटी में कई छोटे-मोटे ड्रैगनों के साथ भोज करने चला गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे वहाँ गया, केकड़े का रूप धारण किया, पानी को दूर भगाने वाले सुनहरी आँखों वाले जानवर को चुरा लिया, खुद को उसी की तरह दिखने लगा और रक्सासी को धोखा देने के लिए प्लांटैन गुफा में चला गया। उसने लगभग उसी क्षण मुझसे शादी कर ली और मैंने उसे धोखे से राजी कर लिया।"

“भाई, आपको बहुत मेहनत करनी पड़ी,” बैल दानव राजा ने उत्तर दिया। “क्या मैं पंखा पकड़ सकता हूँ?” यह जाने बिना कि यह सुअर एक धोखेबाज है, या इस संभावना पर विचार किए बिना भी, महान ऋषि सूर्य ने उसे पंखा थमा दिया।

अब बैल दानव राजा पंखे को छोटा या बड़ा करने का रहस्य जान चुका था, और पंखा हाथ में आते ही उसने एक ऐसा जादू किया जिसे कोई देख नहीं सकता था, और उसे खुबानी के पत्ते के आकार का बना दिया, और अपने असली रूप में लौट आया। "अरे बंदर," उसने कसम खाते हुए कहा, "अब तुम्हें पता चला कि मैं कौन हूँ?" यह देखकर बंदर को अपनी भयानक गलती पर पछतावा हुआ।

पीड़ा से चीखते हुए उसने अपने पैर पटके और चिल्लाया, "आह! इतने वर्षों तक जंगली हंसों का शिकार करने के बाद, एक हंस के बच्चे ने मेरी आँख फोड़ दी!" वह अब भयंकर क्रोध में उछल-कूद कर रहा था और उसने अपने लोहे के डंडे से बैल

दानव राजा के सिर पर प्रहार किया। दानव राजा ने उसे पंखे से हवा दी, यह जाने बिना कि महान ऋषि ने अनजाने में वह वातनाशक गोली निगल ली थी जो उसके मुँह में थी जब वह राक्षसी के पेट में जाने के लिए एक छोटे से कीड़े में परिवर्तित हुआ था। इससे उसकी सारी आँतें, उसकी त्वचा और उसकी हड्डियाँ इतनी ठोस और मजबूत हो गई थीं कि बैल दानव राजा चाहे जितनी भी जोर से हवा दे, वह उसे हिला नहीं सका। इससे बैल दानव राजा घबरा गया, उसने अपने मुँह में रखा खजाना निकाला और दोनों हाथों में तलवारें लहराते हुए पलटवार किया। दोनों ने हवा में एक शानदार युद्ध लड़ा।
महान ऋषि जो स्वर्ग के समतुल्य हैं,
दुष्टता का बैल दानव राजा,
यह सब केले के पत्ते के पंखे के लिए किया गया।
जब वे मिले तो प्रत्येक ने अपनी-अपनी शक्तियां दिखाईं;
अध्याय 61
840
पश्चिम की यात्रा
उस लापरवाह महान ऋषि ने एक तरकीब से पंखा प्राप्त कर लिया।
लेकिन बुल किंग को इसे वापस ले जाने की अनुमति दी गई।
एक ने निर्दयतापूर्वक सोने का डंडा उठाया,
दूसरे ने अपनी नीली नोक वाली तलवारों को कुशलता से चलाया।
महान ऋषि ने रंगीन धुंध उगली।
जबकि दुष्ट बैल राजा तेज रोशनी बिखेर रहा था।
साहस में दोनों बराबर हैं।
दोनों ही दुष्ट हैं।
वे भयंकर क्रोध में अपने दांत पीसने लगे।
उनके द्वारा उड़ाई गई धूल से आकाश और पृथ्वी अंधकारमय हो गए;
देवता और भूत, दोनों ही उड़ते हुए पत्थरों से छिप गए।
"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे खिलाफ चाल चलने की!"
मैं तुमसे वो वादा पूरा करवाऊंगा जो मेरी पत्नी ने तुमसे किया है!
उनकी भाषा अभद्र थी और उनका स्वभाव उग्र था।
"मेरी पत्नी को धोखा देने के लिए तुम मौत के लायक हो।"

"जब मैं तुम्हारे खिलाफ मुकदमा करूंगा तो सजा निश्चित रूप से मौत होगी।"
वह धूर्त महान ऋषि जो स्वर्ग के समान है,
हत्यारा, शक्तिशाली दानव राजा:
दोनों सिर्फ लड़ना चाहते थे।
उनमें से कोई भी रुककर चर्चा करने को तैयार नहीं था।
तलवारों और लाठियों के बराबर प्रयास;
अगर उनमें से कोई भी ढिलाई बरतता तो सीधे नरक में जाता।
अब कहानी उन दोनों के बीच चल रहे संघर्ष की नहीं, बल्कि सड़क किनारे बैठे उस तांग पुजारी की है जिसे भीषण गर्मी असहनीय लग रही थी। वह बहुत चिंतित और प्यासा भी था।
उसने स्थानीय देवता से कहा, "क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि उस बैल दानव राजा की शक्तियाँ कैसी हैं?"

स्थानीय देवता ने उत्तर दिया, "उसके पास बहुत बड़ी जादुई शक्ति है, और उसकी धार्मिक शक्तियां असीमित हैं। वह और महान ऋषि सूर्य एक दूसरे के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं।"
“वुकोंग बहुत कुशल यात्री है,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “वह आम तौर पर छह-सात सौ मील की दूरी पलक झपकते ही तय करके वापस आ जाता है। वह पूरे दिन कहाँ गया हुआ है? मुझे यकीन है कि वह बैल दानव राजा से लड़ रहा होगा।” इतना कहकर उसने सुअर और साधु रेत को बुलाया और पूछा, “तुममें से कौन अपने बड़े भाई से मिलने जाएगा? अगर वह किसी शत्रु से लड़ रहा है तो तुम्हें लड़ाई में उसकी मदद करनी होगी, पंखा लाना होगा और वापस आना होगा। मुझे इन पहाड़ों को पार करके अपने रास्ते पर आगे बढ़ने की बहुत जल्दी है।”
"देर हो रही है," पिग ने जवाब दिया, "और मैं उससे मिलने जाना चाहता हूँ। बस दिक्कत ये है कि मुझे माउंट थंडर पाइल्ड का रास्ता नहीं पता।"
"लेकिन मैं करता हूँ," स्थानीय देवता ने कहा। "पर्दा उठाने वाले सेनापति से कहो कि जब तक तुम और मैं वहाँ जाते हैं, तब तक वह तुम्हारे स्वामी का साथ दे।"

संजांग बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, "आपने इतनी मेहनत की, इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं, और जब आप सफल हो जाएंगे तो मैं आपको फिर से धन्यवाद दूंगा।"

फिर सुअर ने हिम्मत जुटाई, अपने काले जटाधारी वस्त्र की कमर कसी और हाथ में अपना फावड़ा लेकर स्थानीय देवता के साथ अपने बादल पर सवार होकर पूर्व दिशा की ओर चल पड़ा। रास्ते में उन्हें ज़ोरदार चीखें सुनाई दीं और तेज़ हवाओं का सामना करना पड़ा। बादल को रोककर उसने गौर से देखा तो पाया कि यह सब बंदर और बैल दानव राजा के बीच लड़ाई के कारण हो रहा था।

"मार्शल तियान पेंग, आप क्यों नहीं शामिल हो जाते?" स्थानीय देवता ने पूछा। "आप किस बात का इंतजार कर रहे हैं?"

इस पर उस मूर्ख ने अपना रेक लहराया और जोर से चिल्लाते हुए कहा, "भाई, मैं आ रहा हूँ।"

बंदर ने कड़वाहट से कहा, "बेवकूफ, तुमने मेरे लिए सब कुछ खराब कर दिया।"

"लेकिन मालिक ने मुझे आपसे मिलने के लिए कहा था," सुअर ने विरोध किया। "उन्होंने स्थानीय देवता से मुझे रास्ता दिखाने की प्रार्थना की थी क्योंकि मुझे रास्ता नहीं पता। इसीलिए मुझे थोड़ी देर हो गई। आप कैसे कह सकते हैं कि मैंने आपके लिए सब कुछ बिगाड़ दिया?"

"मुझे तुम्हारे देर से आने पर गुस्सा नहीं है," बंदर ने जवाब दिया। "यह बदमाश बैल ही तो पूरी तरह से शर्मनाक है। मैंने रक्षसी से पंखा छीन लिया था, लेकिन वह तुम्हारे हमशक्ल में बदल गया और मुझसे मिलने आ गया। तुम्हें देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मैंने उसे पंखा थमा दिया। वह फिर से अपने असली रूप में आ गया और तब से हम लड़ रहे हैं। इसीलिए मैंने कहा कि तुमने मेरे लिए सब कुछ बिगाड़ दिया है।"

इस खबर से सुअर का गुस्सा भड़क उठा। उसने अपना रेक उठाकर बैल दानव राजा के चेहरे पर अपशब्द कहे।

"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, चेचक से ग्रसित खून के थैले! मैं तुम्हें इसलिए पकड़ लूंगा क्योंकि तुमने मेरे भाई को धोखा देने और हमारे बीच झगड़ा करवाने के लिए खुद को मेरा, अपने ही पूर्वज का, होने का नाटक किया।"

देखिए कैसे वह बेंत से बेतहाशा वार करने लगता है। बैल दानव राजा, जो दिन भर बंदर से लड़ता रहा था, थक गया था, और उसे यह भी एहसास हो गया था कि वह

सुअर के बेंत के प्रहार को सहन नहीं कर पाएगा, इसलिए वह हार मानकर भाग गया। लेकिन उसका रास्ता अग्नि पर्वतों के स्थानीय देवता के नेतृत्व में आत्मा सैनिकों की एक सेना ने रोक दिया।

"हे बलवान राजा, रुकिए," स्थानीय देवता ने कहा। "सभी देवता और स्वर्ग तांग सान्ज़ांग की पश्चिम की यात्रा में उनकी रक्षा कर रहे हैं, ताकि वे शास्त्रों को ला सकें। तीनों लोक उनके बारे में जानते हैं, और दसों दिशाएँ उनका समर्थन कर रही हैं। कृपया उन्हें अपना केले का पंखा दें ताकि वे आग बुझा सकें और बिना किसी खतरे या विपत्ति के पहाड़ों को पार कर सकें। अन्यथा स्वर्ग आपको दोषी ठहराएगा और आपको मृत्युदंड दिया जाएगा।"

अध्याय 61

842

पश्चिम की यात्रा

“तुमने इस मामले में सही-गलत का ज़रा भी गौर नहीं किया,” दानव बैल राजा ने उत्तर दिया। “उस दुष्ट बंदर ने एक के बाद एक कई बुरे काम किए हैं: उसने मेरे बेटे को चुरा लिया, मेरी रखैल को सताया और मेरी पत्नी को धोखा दिया। काश मैं उसे पूरा निगल कर उसका मल बना देता जिसे कुत्तों को खिलाया जा सके। मैं उसे अपना खजाना कभी उधार नहीं दूंगा।”

उसके मुंह से शब्द पूरे होने से पहले ही सुअर उसके पास पहुँच गया और गाली-गलौज करते हुए बोला, "मैं तुझे मार डालूँगा, तू नीच बैल। या तो पंखा मारो या अपनी जान दे!" बैल दानव राजा को मुड़कर अपनी तलवारों से सुअर से लड़ना पड़ा, जबकि महान ऋषि बंदर ने अपनी गदा से उसकी मदद की। उनके बीच एक ज़बरदस्त लड़ाई हुई:

एक सुअर जो आत्मा बन गया था,
एक बैल राक्षस बन गया।
एक बंदर जिसने स्वर्ग को लूट लिया और सही राह पा ली।
धर्म—प्रकृति हमेशा सृजित चीजों पर विजय प्राप्त कर सकती है;
पृथ्वी का उपयोग मूल कारण के साथ संयोजन के लिए किया जाना चाहिए।
रेक के नौ दांत नुकीले और धारदार थे;
दोनों तलवारों की धार लचीली और तेज थी।
लोहे के डंडे की चालों ने लड़ाई पर अपना दबदबा कायम किया;

स्थानीय देवता ने सिंदूर से बने सिर का निर्माण किया।
उन तीनों ने इस बाधा को पार करने के लिए संघर्ष किया।
उनमें से प्रत्येक अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करने की साजिश रच रहा था।
धातु की मुद्रा बैल को हल खींचने के लिए सबसे अच्छी होती है;
अगर सूअर को भट्टी में डाल दिया जाए, तो लकड़ी खत्म हो जाती है।
जब तक मन उसमें न लगे तब तक मार्ग पूर्ण नहीं हो सकता;
बंदर की आत्मा को वश में रखने के लिए उसे बांधकर रखना आवश्यक है।
चीख-पुकार और बेताब गुहारों के बीच
तीनों प्रकार के हथियार हवा में सीटी बजाते हुए निकले।
रेक और तलवार के वार में कोई दया नहीं थी;
सोने की पट्टी वाली लाठी सही कारण से उठी।
उनकी लड़ाई ने तारों को बुझा दिया और चंद्रमा की रोशनी को कम कर दिया;
आकाश ठंडी, अंधेरी और उदास धुंध से भरा हुआ था।
अध्याय 61
843
पश्चिम की यात्रा
दानव राजा ने वर्चस्व के लिए बहादुरी और साहस से लड़ाई लड़ी, और हर बार पीछे हटता रहा। पूरी रात चले युद्ध के बाद जब भोर हुई, तब भी कोई विजेता नहीं था, और अब उनके सामने थंडरपाइल्ड पर्वत पर स्थित क्लाउड-टचिंग गुफा का प्रवेश द्वार था। उन तीनों, स्थानीय देवता और आत्मा सैनिकों द्वारा मचाए जा रहे कान फाड़ देने वाले शोर से राजकुमारी जेड घबरा गई, और उसने अपनी दासियों को यह देखने के लिए भेजा कि शोर कौन मचा रहा है।
द्वार पर बैठे नन्हे दानवों ने सूचना दी, "यह हमारे स्वामी हैं। वे गर्जन देवता जैसे चेहरे वाले व्यक्ति, लंबी थूथन और बड़े कानों वाले एक अन्य भिक्षु, और अग्नि पर्वतों के स्थानीय देवता और उनके आदमियों से लड़ रहे हैं।" जैसे ही राजकुमारी जेड ने यह सुना, उन्होंने रक्षक दल के वरिष्ठ और कनिष्ठ अधिकारियों को अपनी तलवारें और भाले लेकर अपने स्वामी की सहायता करने का आदेश दिया।
“तुम्हें देखकर अच्छा लगा,” बैल दानव राजा ने प्रसन्नता से कहा, “तुम्हें देखकर अच्छा लगा।” सभी दानव बेतहाशा आक्रमण करने के लिए दौड़ पड़े। सुअर के बस

की बात नहीं थी और वह हार मानकर भाग गया, उसका रेक उसके पीछे घिसटता चला गया। महान ऋषि एक कलाबाजी करते हुए बादल पर सवार होकर चारों ओर से घिरे हुए दानवों के बीच से निकल आए; आत्मा सैनिक तितर-बितर हो गए और भाग गए। बूढ़ा बैल अपनी दानव सेना को विजय के साथ गुफा में वापस ले गया और उनके पीछे गुफा के दरवाजे कसकर बंद कर दिए गए।

“वो बहुत ही ताकतवर है,” बंदर ने कहा। “कल दोपहर करीब चार बजे से उसने मुझसे लड़ना शुरू कर दिया था और जब तुम दोनों कल रात मदद के लिए आए, तब तक हम नतीजे के आस-पास भी नहीं थे। उसने आधे दिन और पूरी रात बिना थके लड़ाई की। और अभी-अभी जो शैतान निकले, वे भी बहुत ही आक्रामक थे। अब उसने अपनी गुफा के दरवाजे बंद कर लिए हैं और बाहर नहीं आ रहा। अब हम क्या करें?”

"भाई, कल सुबह करीब दस बजे तुम मालिक को छोड़कर गए थे," सुअर ने कहा, "तो फिर दोपहर चार बजे तुमने उससे लड़ना क्यों शुरू किया? बीच के छह घंटों में तुम क्या कर रहे थे?"

"तुम्हें छोड़ने के तुरंत बाद मैं इस पहाड़ पर पहुँचा," बंदर ने जवाब दिया, "और मुझे एक स्त्री दिखी। जब मैंने उससे पूछताछ की तो पता चला कि वह उसकी पसंदीदा रखैल राजकुमारी जेड थी। मैंने उसे अपने डंडे से थोड़ा डरा दिया, इसलिए वह गुफा में भाग गई और अपने बैल दानव राजा को बाहर भेज दिया। हम दोनों ने एक-दूसरे को कुछ अपशब्द कहे और फिर लड़ाई शुरू हो गई।"

हम दो घंटे से यही कर रहे थे कि तभी कोई उसे भोज में आमंत्रित करने आ गया। मैं उसका पीछा करते हुए रैग्ड रॉक पर्वत पर स्थित ग्रीन वेव पूल के तल तक गया और जासूसी करने के लिए केकड़े में परिवर्तित हो गया। फिर मैंने उसका जल-निरोधक सुनहरी आँखों वाला जानवर चुरा लिया और बैल दानव राजा के हमशक्ल में परिवर्तित होकर माउंट टरकॉइज़ क्लाउड पर स्थित प्लांटैन गुफा में वापस चला गया, जहाँ मैंने राकसासी को पंखा देने के लिए मना लिया। मैं बाहर गया और पंखे पर जादू का प्रयोग करके उसे बड़ा कर दिया, लेकिन मुझे उसे फिर से छोटा करने का तरीका नहीं पता था।

जब मैं उसे अपने कंधे पर लेकर चल रहा था, तभी वह हूबहू तुम्हारे जैसा दिखने लगा और उसने उसे मुझसे वापस छीन लिया। इस तरह मेरे छह घंटे बर्बाद हो गए।

"जैसा कि कहावत है," सुअर ने जवाब दिया, "यह बिल्कुल टोफू से भरी नाव के डूबने जैसा है: यह गीले से निकला और गीले में ही गायब हो गया। आसानी से आया, आसानी से चला गया। लेकिन अगर हमें पंखा लाने में इतनी मुश्किल हो रही है, तो हम अपने मालिक को पहाड़ों के पार कैसे ले जाएंगे? हमें वापस जाना होगा और एक लंबा चक्कर लगाना होगा।"

“हे महान ऋषि, अधीर मत होइए,” स्थानीय देवता ने कहा, “और हे मार्शल तियान पेंग, आलसी मत बनिए। यदि आप कोई घुमावदार रास्ता अपनाएंगे तो इसका अर्थ होगा सीधे मार्ग से भटकना: इस तरह आप कभी भी अपने आचरण में सुधार नहीं ला पाएंगे। जैसा कि पुरानी कहावत है, 'चलते समय कभी भी शॉर्टकट मत लो।' आपको घुमावदार रास्तों की बात नहीं करनी चाहिए। आपके गुरु मुख्य मार्ग पर आपकी सफलता के लिए बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

"हाँ, हाँ," बंदर ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा, "बकवास मत करो, मूर्ख। स्थानीय देवता सही हैं। जहाँ तक उस बैल दानव राजा की बात है, हमें उससे निपटना होगा।"

अध्याय 61

844

पश्चिम की यात्रा

महारत हासिल करने के लिए संघर्ष करना,

अपनी शक्तियों का उपयोग करो,

जब तक हम पूरी पृथ्वी को बदल नहीं सकते।

पश्चिम में आने के बाद से उनका कोई प्रतिद्वंदी नहीं रहा है:

बुल किंग मूल रूप से एक परिवर्तित मानसिक-बंदर था।

आज ही से इन स्रोतों का प्रवाह शुरू हुआ है:

हमें पंखा उधार मिलने तक इंतजार करना होगा।

भोर की ठंडक में आग बुझा दो।

हठधर्मी शून्यता को चीरते हुए बुद्ध के दर्शन करें।

जब सब कुछ पूर्ण हो जाएगा, तब हम स्वर्गिक आनंद की प्राप्ति करेंगे।

और सभी लोग ड्रैगन-फ्लावर वृक्ष के नीचे सभा में जाते हैं।

इन शब्दों ने पिग के मनोबल को भी बढ़ा दिया और उसने उत्सुकता से कहा,

"हां हां हां!

जाओ जाओं जाओ!
बुल किंग की शक्तियां चाहे जो भी हों,
उत्तर-उत्तर-पश्चिम में लकड़ी उगती है और उसका मिलान सूअर से किया जाता है;
बछड़े को वापस मिट्टी में मिला दिया जाएगा।
मेटल का जन्म पश्चिम दक्षिण पश्चिम में हुआ था और वह एक बंदर था।
बिना किसी संघर्ष या विजय के, शांति से परिपूर्ण।
हमें केले के पत्ते का उपयोग पानी की तरह करना चाहिए।
आग बुझाने और सद्भाव स्थापित करने के लिए।
दिन-रात कड़ी मेहनत, कभी आराम नहीं।
इससे हमें सफलता और उल्लाम्बाना उत्सव की ओर ले जाया जाएगा।"
अध्याय 61
845
पश्चिम की यात्रा
उन दोनों ने स्थानीय देवता और उसके आत्मिक सैनिकों का नेतृत्व किया और फिर कुदाल और लाठी से बादल-स्पर्श गुफा के दरवाजों को तोड़ डाला। इससे पहरेदार इतने भयभीत हो गए कि वे अंदर जाकर सूचना देने लगे, "महाराज, सन वुकॉन्ग अपनी सेना लेकर आया है और उसने हमारे मुख्य द्वार तोड़ दिए हैं।"
बैल दानव राजा उसी समय राजकुमारी जेड को सारी घटना बता रहा था और बंदर से बुरी तरह तंग आ चुका था। सामने के दरवाज़े के टूटने की खबर सुनकर वह गुस्से से आग बबूला हो गया, इसलिए उसने तुरंत अपना कवच पहना और लोहे का गदा हाथ में लेकर बाहर चला गया और गालियाँ देते हुए चिल्लाया, "लानत है बंदर! तुझे लगता होगा तू बहुत बड़ा आदमी है, यहाँ आकर गुंडागर्दी कर रहा है और मेरा दरवाज़ा तोड़ रहा है।"
"कंजूस कहीं के!" सुअर ने आगे बढ़ते हुए जवाब दिया, "तुम खुद को क्या समझते हो, दूसरों को उनकी औकात दिखाने की कोशिश कर रहे हो? हिलना मत! ये लो!"
"बेवकूफ!" बैल दानव राजा ने उत्तर दिया। "भूसा खाने वाले! तुम पर ध्यान देने की कोई जरूरत नहीं है। उस बंदर को यहाँ बुलाओ।"
“तुम्हें अपने भले की समझ नहीं है, जुगाली करने वाले,” बंदर ने पुकारा। “कल तक तो तुम मेरे सगे भाई थे, पर आज हम दुश्मन हैं। ध्यान से देखो!” बैल दानव राजा ने

पूरे साहस के साथ उनका सामना किया और उसके बाद की लड़ाई पहले से भी कहीं ज़्यादा ज़बरदस्त थी। तीनों वीर आपस में भिड़ गए। क्या ज़बरदस्त लड़ाई थी!
रेक और लोहे का डंडा अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहे हैं।
आत्मा सैनिकों का नेतृत्व करते हुए प्राचीन राक्षस पर हमला करना।
अकेले लड़ते समय उस राक्षस ने अपनी भयानक शक्ति का प्रदर्शन किया, और अपनी उन शक्तियों को पुनर्जीवित किया जो स्वर्ग की शक्तियों के बराबर थीं।
रेक ने जोर से प्रहार किया।
गदा ने प्रहार किया,
लोहे के डंडे ने अपनी वीरतापूर्ण शक्ति का प्रदर्शन किया।
तीनों हथियार आपस में टकराकर गूंज उठे।
अवरोधन और बचाव करते हुए, कभी हार न मानते हुए।
एक ने कहा कि वह चैंपियन है।
एक अन्य ने दावा किया, "मैं सबसे अच्छा हूं।"
वहां मौजूद जमीनी सैनिक उन्हें मुश्किल से ही पहचान पा रहे थे।
लकड़ी और मिट्टी के बीच युद्ध छिड़ा हुआ था।
अध्याय 61
846
पश्चिम की यात्रा
"आप हमें केले का पंखा क्यों नहीं उधार देंगे?"
"तुमने मेरी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करने की धृष्टता की।"
मेरे बेटे को बर्बाद करने और मेरी रखैल को डराने के लिए।
मैंने अभी तक तुम्हें इन सब बातों के लिए दंडित नहीं किया है।
और अब आप हमें परेशान करते हैं और मेरे दरवाजे तोड़ देते हैं।"
"अपनी मर्जी के अनुसार चलने वाले हथकंडे से सावधान रहें:
इसके स्पर्श मात्र से ही आपकी त्वचा फट जाएगी।
"ध्यान रहे, मेरे रेक के दांतों से बचो:
एक ही वार में नौ घाव हो गए और सभी से खून बहने लगा।"
बैल राक्षस ने निडर होकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।
वह अपनी गदा को कुशलता और चतुराई से चलाता था।

उनकी हरकतों ने बारिश के बादलों को उलट-पुलट कर दिया।
जैसे ही उनमें से प्रत्येक ने अपनी धुंध और हवाओं को बाहर निकाला।
यह सचमुच मौत की लड़ाई थी।
वे अपने दिलों में नफरत लिए एक साथ लड़ रहे थे।
नए रुख अपनाते हुए,
उच्च और निम्न दोनों स्तरों पर रिक्तियों की पेशकश करते हुए,
उन्होंने बिना कोई गलती किए हमला किया और बचाव किया।
दोनों भाई शिष्य अपने प्रयासों में एकजुट थे;
अकेले गदा ने ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।
वे सुबह से लेकर रात आठ बजे तक लड़ते रहे।
जब तक बैल दानव को लड़ाई छोड़नी नहीं पड़ी।
मृत्यु का भय मन में लिए और जीवित रहने की कोई उम्मीद न रखते हुए, तीनों ने लगभग सौ दौर तक लड़ाई लड़ी, जब तक कि सुअर ने बंदर की चमत्कारी शक्तियों का लाभ उठाते हुए अपनी पूरी ताकत से अपने रेक से ऐसे प्रहार किए जो बैल दानव राजा के लिए असहनीय थे। वह पराजित होकर अपनी गुफा की ओर भागा, लेकिन वहाँ पहुँचकर उसने पाया कि गुफा का प्रवेश द्वार स्थानीय देवता और उसकी आत्माओं की सेना द्वारा अवरुद्ध है।
अध्याय 61
847
पश्चिम की यात्रा
"तुम कहाँ जा रहे हो, बलवान राजा?" स्थानीय देवता चिल्लाया। "हम यहीं हैं।" अपनी गुफा में न घुस पाने के कारण बैल दानव राजा भाग गया, लेकिन सूअर और बंदर उसका पीछा करने लगे। घबराहट में बैल दानव राजा ने अपना हेलमेट और कवच उतार दिया, अपना गदा फेंक दिया, खुद को झटका दिया, हंस में रूपांतरित हुआ और उड़ गया।
बंदर ने चारों ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "सूअर, बूढ़ा बैल चला गया है।"
उस मूर्ख को ज़रा भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है, और न ही स्थानीय देवता को, क्योंकि वे चारों ओर देख रहे थे और व्यर्थ ही थंडर पाइल्ड पर्वत पर खोजबीन कर रहे थे। "क्या वह ऊपर उड़ता हुआ वही नहीं है?" बंदर ने इशारा करते

हुए कहा।
"यह एक हंस है," सुअर ने उत्तर दिया।
"हां," बंदर ने कहा, "बूढ़े बैल ने खुद को इसी रूप में बदल लिया था।"
"तो अब हम इसके बारे में क्या करने वाले हैं?" स्थानीय देवता ने पूछा।
"तुम दोनों अंदर घुस जाओ, बिना किसी दया के सभी राक्षसों का सफाया कर दो और उसकी मांद को ध्वस्त कर दो," बंदर ने जवाब दिया।
"इससे उसका पीछे हटने का रास्ता बंद हो जाएगा और मैं जाकर उसके साथ रूपांतर कर दूंगा।" पिग और स्थानीय देवता द्वारा निर्देशानुसार गुफा में प्रवेश करने के बारे में हम और कुछ नहीं कहेंगे।
अपने सोने की पट्टी वाले डंडे को एक तरफ रखकर और मंत्रों का जाप करते हुए, बंदर ने आवश्यक हाथ के इशारे करते हुए खुद को झटककर एक गिद्ध में बदल लिया। वह अपने पंखों को ज़ोर से फड़फड़ाते हुए बादलों में उड़ गया, फिर हंस पर झपटा, उसकी गर्दन पकड़ ली और उसकी आँखें नोच लीं। यह जानकर कि यह सन वुकॉन्ग का बदला हुआ रूप है, बैल दानव राजा ने खुद को संभाला और एक सुनहरे बाज में बदल गया, जिसने गिद्ध पर पलटवार किया। फिर बंदर एक काले फीनिक्स में बदल गया और बाज का पीछा करने लगा, लेकिन बैल राजा ने उसे पहचान लिया और एक सफेद सारस में बदलकर ज़ोर से पुकारते हुए दक्षिण की ओर उड़ गया। बंदर रुका, अपने पंखों को समेटा और एक लाल फीनिक्स में बदल गया, जिसने भी ज़ोर से पुकारा। सभी पक्षियों के राजा, फीनिक्स को देखते ही, जिसका अनादर करने का साहस कोई पक्षी नहीं करता था, सफेद सारस अपने पंख फड़फड़ाते हुए चट्टान के किनारे झपटा, खुद को झटका दिया और एक डरपोक, मूर्ख हिरण में बदल गया जो चट्टान के नीचे चर रहा था। बंदर ने उसे देखा, वह भी झपटा और एक भूखे बाघ में बदल गया जो हिरण के पीछे दौड़ता हुआ अपनी पूंछ को भूख से हिला रहा था। राक्षस राजा को तेजी से आगे बढ़ना पड़ा और उसने खुद को सोने के सिक्कों जैसे धब्बों वाले एक विशाल तेंदुए में बदल लिया और उस भूखे बाघ पर हमला करने के लिए मुड़ गया।
यह देखकर बंदर ने हवा की ओर मुख किया, खुद को झटका दिया और गरजती आवाज, निर्भीक सिर और लोहे जैसे माथे वाले सुनहरी आंखों वाले शेर में बदल गया। वह तेंदुए को निगलने के लिए घूम उठा, जिसे देखकर बैल दानव राजा तुरंत एक

विशाल भालू में बदल गया और शेर के पीछे भागा। फिर बंदर ने खुद को समेट लिया और बांस की टहनियों जैसे दांतों और अजगर जैसी सूंड वाले हाथी में बदल गया, जिसे उसने भालू को लपेटने के लिए फैला दिया।

बैल दानव राजा हँसा और अपने मूल रूप में लौट आया - एक विशाल सफेद बैल, जिसका सिर खुरदुरा और आँखें चमक रही थीं। उसके प्रत्येक सींग लोहे के शिवालय की तरह थे और उसके दाँत तेज़ तलवारों की कतारों जैसे थे। वह सिर से पूंछ तक लगभग दस हज़ार फीट लंबा था और कंधे तक आठ हज़ार फीट ऊँचा था।

“अब तू मेरा क्या बिगाड़ेगा, धिक्कार है मकाक?” उसने अपने भाई बंदर पर पूरी ताकत से चिल्लाया; इस पर बंदर भी अपने असली रूप में लौट आया, अपनी सोने की पट्टी वाली गदा निकाली, आगे झुककर बोला “बढ़ जा!” फिर वह एक लाख फीट लंबा हो गया, उसका सिर ताइशान पर्वत जैसा, आँखें सूर्य और चंद्रमा जैसी, मुँह खून के तालाब जैसा और दाँत दरवाजों जैसे हो गए। उसने अपनी लोहे की गदा उठाई और बैल दानव राजा के सिर पर प्रहार किया; बैल दानव राजा ने अपना सिर कठोर किया और अपने सींगों से बंदर पर हमला कर दिया। यह एक ऐसा युद्ध था जिसने पर्वतों को हिला दिया, आसमान को भयभीत कर दिया और धरती को दहला दिया, और इसे साबित करने के लिए एक कविता भी है:

मार्ग एक कदम बढ़ता है, दानव दस हजार कदम बढ़ता है;
वह धूर्त और चालाक बंदर उसे बलपूर्वक मार गिराता है।
यदि अग्नि पर्वतों की ज्वालाओं को बुझाना है,
उस प्यारे पंखे को उन्हें ठंडी हवा देनी चाहिए।
पीली पत्नी आदिम प्राचीन की रक्षा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है;
लकड़ी की माता राक्षसों का सफाया करने पर तुली हुई है।

जब पंच तत्व सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं, तो वे अपनी वास्तविक उपलब्धि की ओर लौट जाते हैं; बुराई और गंदगी पश्चिम की ओर यात्रा करते हुए शुद्ध हो जाती हैं। पर्वत पर लड़ते हुए उन दोनों ने अपनी जादुई शक्तियों का ऐसा शानदार प्रदर्शन किया कि सभी देवता सतर्क हो गए। स्वर्ण-शीर्ष रक्षक, छह जिया, छह डिंग और अठारह

धर्म रक्षक, जो वायु में विचरण कर रहे थे, दानव राजा को घेरने के लिए आ गए। दानव राजा ज़रा भी भयभीत नहीं हुआ और उसने अपने सीधे, चमकदार, लोहे के सींगों से पूर्व और पश्चिम की ओर प्रहार किया तथा अपनी मजबूत और बालों वाली पूंछ से उत्तर और दक्षिण की ओर वार किया। सन वुकॉन्ग ने उसका डटकर सामना किया जबकि अन्य सभी देवताओं ने उसे घेर लिया। हताशा में बैल दानव राजा ज़मीन पर लोट पड़ा, अपने सामान्य रूप में वापस आ गया और केले की गुफा की ओर चल पड़ा। बंदर ने भी अपना जादुई रूप त्याग दिया और सभी देवताओं के साथ उसका पीछा करने लगा, लेकिन गुफा में पहुँचते ही दानव राजा ने दरवाज़े कसकर बंद कर लिए। तब देवताओं ने फ़िरोज़ी बादल पर्वत के चारों ओर एक जलरोधी घेरा बना दिया। जैसे ही वे सभी दरवाज़ों पर धावा बोलने वाले थे, उन्होंने सूअर के स्थानीय देवता और उसके आत्मिक सैनिकों के साथ आने की आवाज़ सुनी।

"बादलों को छूने वाली गुफा में सब कैसा चल रहा है?" बंदर ने उसका अभिवादन करते हुए पूछा।

"मैंने बूढ़े बैल की औरत को अपने रेक के एक ही वार से खत्म कर दिया," पिग मुस्कुराते हुए बोला, "और जब मैंने उसके कपड़े उतारे तो पता चला कि वह जेड-चेहरे वाली लोमड़ी की आत्मा थी। उसके सारे राक्षस गधे, खच्चर, बैल, बिज्जू, लोमड़ी, रैकून कुत्ते, नदी के हिरण, बकरी, बाघ, बारहसिंगा, हिरण और इसी तरह के जानवर थे। हमने उन सबको मार डाला और गुफा की सारी इमारतें जला दीं। स्थानीय देवता ने मुझे बताया कि उसकी एक और औरत यहाँ रहती है, इसलिए हम उसे भी खत्म करने यहाँ आए हैं।"

“तुमने अच्छा किया, भाई,” बंदर ने कहा। “बधाई हो। मैंने बूढ़े बैल से रूप बदलने की प्रतियोगिता करने की कोशिश की, लेकिन मैं उसे हरा नहीं सका। वह एक विशालकाय सफेद बैल में बदल गया, और मैं आकाश और पृथ्वी जितना बड़ा हो गया। हम दोनों के बीच लड़ाई चल ही रही थी कि सारे देवता नीचे आए और उसे घेर लिया। काफी देर बाद वह वापस अपने असली रूप में आ गया और गुफा में चला गया।”

"क्या यह केले की गुफा है?" सुअर ने पूछा।

"हां हां," बंदर ने जवाब दिया, "रक्षसी यहीं है।"

"तो फिर क्यों न हम उस जगह पर धावा बोलकर उन सबको खत्म कर दें और पंखा

हासिल कर लें?" पिग ने गुस्से से लथपथ होकर कहा।
क्या हम उन दोनों को और अधिक उम्र तक, समझदार होने तक और एक-दूसरे से कोमल प्रेम करने तक जीने देंगे?
फिर उस मूर्ख ने अपनी पूरी ताकत जुटाकर दरवाजों पर इतना ज़ोर से रेक मारा कि पत्थर समेत दरवाजे ज़ोरदार गड़गड़ाहट के साथ ढह गए। नौकरानियाँ अंदर दौड़कर बोलीं, "महाराज, अध्याय 61

किसी ने दरवाजे तोड़ दिए हैं और हमें नहीं पता कि वह कौन है।" बैल दानव राजा स्वयं हांफते हुए अंदर भागा आया था और अभी भी रक्षसी को पंखे के लिए बंदर के साथ हुई अपनी लड़ाई के बारे में बता रहा था, तभी उसने यह खबर सुनी, जिससे वह बहुत क्रोधित हो गया।
उसने तुरंत पंखा थूक दिया और उसे रक्सासी को दे दिया, जिसने उसे अपने हाथों में लेकर रोते हुए कहा, "महाराज, अगर वह अपनी सेना को वापस बुला ले तो उसे पंखा दे दीजिए।"
“पत्नी,” बैल दानव राजा ने उत्तर दिया, “यह भले ही छोटी सी बात हो, लेकिन मैं उससे घृणा करता हूँ और उसे बहुत बुरा मानता हूँ। यहीं रुको, मैं उससे फिर से निपट लेता हूँ।” दानव ने एक बार फिर अपना कवच पहना, तलवारों का एक और जोड़ा चुना और बाहर गया तो देखा कि सुअर अपने फावड़े से दरवाजे तोड़ रहा है। बिना कुछ कहे बूढ़े बैल ने अपनी तलवारें उठाईं और सुअर के सिर पर वार किया। सुअर ने अपने फावड़े से वार को रोका और कुछ कदम पीछे हट गया, जब तक कि वह दरवाजे के बाहर नहीं पहुँच गया, जहाँ बंदर ने बैल दानव राजा के सिर पर अपना डंडा चलाया। फिर बैल दानव एक तूफानी हवा पर सवार होकर गुफा से निकलकर फ़िरोज़ी बादल पर्वत पर बंदर से एक बार फिर लड़ने के लिए चला गया। सभी देवता उसके चारों ओर जमा हो गए, जबकि स्थानीय देवता के सैनिक दोनों ओर से लड़ाई में शामिल हो गए। यह एक शानदार लड़ाई थी: धुंध ने दुनिया को ढक लिया था।
घने कोहरे ने आकाश और पृथ्वी को ढक लिया था।
एक तेज सीटी बजाती हुई तूफानी हवा ने रेत और कंकड़ों को उड़ा दिया;
प्रचंड प्रचंडता से समुद्र की लहरें टूट उठीं।

दो नई तेज की गई तलवारों के साथ,
और एक बार फिर कवच में लिपटा हुआ शरीर,
उसकी नफरत समुद्र से भी गहरी थी।
और घृणा ने उसके क्रोध को पहले से कहीं अधिक बढ़ा दिया।
यश की खोज में महान ऋषि ने स्वर्ग के समान उपलब्धि प्राप्त की।
अब वह दूसरे को पुराने दोस्त के रूप में नहीं देखता था।
सुअर पंखा हासिल करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा रहा था।
जबकि देवता और रक्षक बैल को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे।
बुल किंग के दोनों हाथों को आराम नहीं मिल पा रहा था।
उन्होंने अद्भुत कौशल से बाएं और दाएं दोनों ओर से ब्लॉक किया।
पक्षियों ने अपने पंख मोड़ लिए, वे आगे उड़ने में असमर्थ थे;
मछलियों ने उछलना बंद कर दिया और वे तल में डूब गईं।
भूत रोए, देवता विलाप करने लगे; धरती और आकाश अंधकारमय हो गए;
अध्याय 61
850
पश्चिम की यात्रा
अजगर और बाघ भयभीत हो गए और सूर्य की रोशनी मंद पड़ गई।
बैल दानव राजा ने अपनी पूरी ताकत से पचास से अधिक दौर तक लड़ाई लड़ी, लेकिन अंत में वह मैदान छोड़कर उत्तर की ओर भाग गया, क्योंकि वह और अधिक देर तक टिक नहीं सका। उसे जल्द ही वज्रपानी बोफा ने घेर लिया, जो वुटाई पर्वत पर स्थित गुप्त दानव गुफा में रहता था और जिसकी जादुई शक्तियां बहुत व्यापक थीं।
"बैल दानव," उसने चिल्लाकर कहा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"
मुझे भगवान शाक्यमुनि बुद्ध द्वारा आदेश दिया गया है कि मैं स्वर्ग और पृथ्वी पर जाल फैलाकर तुम्हें यहीं गिरफ्तार कर लूं।"
जैसे ही उसने बोलना शुरू किया, महान ऋषि, सुअर और सभी देवता उसके पास आ पहुँचे। हताशा में राक्षस राजा मुड़ा और दक्षिण की ओर भागा, लेकिन वहाँ उसे माउंट एमेई पर शीतलता की गुफा के वज्रपाणि शेनझी ने रोक दिया, जिसने चिल्लाकर कहा, "मैं बुद्ध के आदेश पर तुम्हें ले जाने आया हूँ।"
बैल दानव राजा इतना भयभीत और थका हुआ था कि वह मुड़कर पूर्व की ओर भागा,

लेकिन सुमेरु पर्वत पर स्थित मोएर गुफा के वज्रपाणि डाली, वैरोचना भिक्षु ने उसे रोक लिया और चिल्लाकर कहा, "हे बूढ़े बैल, तुम कहाँ जा रहे हो? मैं तथागत के गुप्त आदेश पर तुम्हें पकड़ने आया हूँ।"

बैल दानव राजा एक बार फिर भयभीत होकर पीछे हट गया, इस बार पश्चिम की ओर, जहाँ उसका सामना कुनलुन पर्वत पर स्थित स्वर्णिम प्रकाश पर्वतमाला से विराजमान अविनाशी राजा वज्रपानी योंगझू से हुआ, जो चिल्ला रहा था,

"तुम कहाँ जा रहे हो, धिक्कार है तुम पर? पश्चिमी स्वर्ग में स्थित गर्जन मठ के पूज्य बुद्ध ने मुझे स्वयं निर्देश दिया है कि मैं तुम्हारा भागने का रास्ता यहीं रोक दूँ। कोई भी तुम्हें आगे नहीं जाने देगा।"

बूढ़ा बैल अब भय से कांप रहा था, लेकिन पछताने का समय नहीं था। वह चारों ओर से बुद्ध की सेनाओं और दिव्य सेनापतियों से घिरा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी ऐसे जाल में फंस गया हो जिससे निकलना नामुमकिन था। हताशा में उसने बंदर को अपनी सेना के साथ पीछे आते सुना, इसलिए वह अपने बादल पर सवार होकर ऊपर चला गया।

ठीक उसी क्षण स्वर्ग के राजा ली, जो पैगोडा धारण करने वाले थे, राजकुमार नेझा, मछली-पेट वाले यक्ष और शक्तिशाली चमत्कारिक देवता के साथ आकाश में डेरा डाले हुए थे।

“इतनी जल्दी नहीं,” वह चिल्लाया, “इतनी जल्दी नहीं। मैं जेड सम्राट के आदेश पर तुम्हें खत्म करने आया हूँ।” अपनी हताशा में बैल दानव राजा ने खुद को झटका दिया, वापस विशाल सफेद बैल में बदल गया और अपने लोहे के सींगों से स्वर्ग के राजा को घायल करने की कोशिश की, जबकि स्वर्ग के राजा ने अपनी तलवार से उस पर वार किया। कुछ ही देर में भाई बंदर वहाँ पहुँच गया।

"महान ऋषि," राजकुमार नेझा ने अपनी पूरी आवाज़ में चिल्लाते हुए कहा, "मैं कवच पहने होने के कारण आपका ठीक से अभिवादन नहीं कर सकता।"

कल मैं और मेरे पिता तथागत बुद्ध के दर्शन करने गए थे, जिन्होंने जेड सम्राट को एक संदेश भेजा था। उसमें लिखा था कि तांग पुरोहित अग्नि पर्वतों में फंसे हुए हैं और आप बैल दानव राजा को वश में नहीं कर सकते, हे महान ऋषि। जेड सम्राट ने तब मेरे पिता को अपनी सेना यहाँ लाकर सहायता करने का आदेश दिया।

"लेकिन इस दुष्ट प्राणी की जादुई शक्तियां तो बहुत ही जबरदस्त हैं," बंदर ने जवाब

दिया, "और इसने खुद को इस रूप में बदल लिया है। अब हम इसके बारे में क्या करेंगे?"
"शक मत करो," नेझा ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "देखो मैं उसे कैसे पकड़ता हूँ।"
राजकुमार ने तब चिल्लाकर कहा, "बदलो!" उसने अपने तीन सिर और छह भुजाएँ बना लीं और बैल दानव राजा की पीठ पर छलांग लगा दी। अपनी दानव-सिर काटने वाली तलवार के एक ही वार से उसने बैल का सिर धड़ से अलग कर दिया, इससे पहले कि उसे इसका एहसास भी होता। स्वर्ग के राजा ने अपनी तलवार फेंक दी और बंदर से मिलने चला गया। लेकिन बैल दानव राजा के गले से एक और सिर उग आया, उसके मुँह से काली धुआँ निकल रही थी और उसकी आँखों से सुनहरी रोशनी चमक रही थी। नेझा ने फिर से वार किया, लेकिन जैसे ही सिर गिरा, एक नया सिर प्रकट हो गया। नेझा की तलवार ने एक दर्जन सिर काट दिए। अध्याय 61

नेझा ने बैल के सिर काट दिए और तुरंत ही एक दर्जन नए सिर उग आए। फिर नेझा ने अपना अग्नि-चक्र बैल के सींगों पर लटका दिया, जादुई आग पर फूँक मारी और उसे इतनी भयंकर रूप से प्रज्वलित किया कि बैल दानव राजा दर्द से कराह उठा, अपना सिर और पूंछ हिलाते हुए भागने की पूरी कोशिश करने लगा।
जैसे ही वह एक और रूप बदलकर भागने वाला था, स्वर्ग के राजा ली के दानव-प्रकट करने वाले दर्पण में उसकी असली छवि कैद हो गई। अब वह और कोई रूप नहीं बदल सकता था और उसके पास भागने का कोई रास्ता नहीं था।
वह केवल इतना ही कह सका, "मेरी जान बख्श दो! मैं बौद्ध धर्म में परिवर्तित होना चाहता हूँ।"
"अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है, तो पंखा तुरंत मुझे दे दो," नेझा ने कहा। "मेरी पत्नी इसकी देखभाल कर रही है," बैल दानव राजा ने जवाब दिया।
यह उत्तर सुनकर नेझा ने अपनी राक्षस-बंधन रस्सी खोली और उसे उसके गले में डाल दिया, फिर उसकी नाक पकड़कर रस्सी को उसमें से गुजारते हुए उसे हाथ से पकड़कर अपने साथ ले गया। इस बीच, बंदर ने चारों वज्रपाणियों, छह डिंग, छह जिया, धर्म के रक्षकों, स्वर्ग के राजा ली, शक्तिशाली चमत्कारिक देवता, सुअर, स्थानीय देवता और आत्मा सैनिकों को इकट्ठा किया और सफेद बैल के चारों ओर

जमा कर उसे केले की गुफा के प्रवेश द्वार तक वापस ले गया।
"पत्नी," बूढ़े बैल ने पुकारा, "पंखे को बाहर लाओ और मेरी जान बचाओ।" यह सुनते ही रक्षसी ने अपने गहने और चमकीले कपड़े उतार दिए, अपने बालों को ताओवादी नन की तरह संवारा और बौद्ध नन की तरह सफेद रेशमी वस्त्र पहन लिया।
वह बारह फुट का पंखा दोनों हाथों में लिए द्वार से बाहर आई और वज्रपाणियों, देवताओं, स्वर्ग के राजा और नेझा को देखते ही भय से घुटने टेककर प्रणाम करते हुए बोली, "हे बोधिसत्वों, मेरे पति और मुझे बख्श दीजिए। मैं यह पंखा अपने देवर बंदर को अर्पित करती हूँ ताकि वह इससे यश प्राप्त कर सके।" बंदर आगे बढ़ा, पंखा उठाया और शुभ बादल पर सवार होकर दूसरों के साथ पूर्व दिशा की ओर लौट गया।
संज़ंग और साधु सैंड बंदर के लौटने का बहुत लंबे समय से इंतज़ार कर रहे थे, कभी बैठे तो कभी खड़े। वे बेहद बेचैन थे, तभी अचानक आकाश शुभ बादलों से भर गया और धरती आशीर्वाद भरी रोशनी से जगमगा उठी, मानो सभी देवता सीटी बजाते हुए हवा में उनकी ओर आ रहे हों।
आदरणीय बुजुर्ग ने भयभीत होकर कहा, "वुजिंग, वहाँ से किसके दिव्य सैनिक आ रहे हैं?"
"गुरुजी," उन्हें पहचान लेने वाले साधु सैंड ने कहा, "ये चारों वज्रपाणि, स्वर्ण सिर वाले रक्षक, छह जिया, छह डिंग, धर्म के संरक्षक और अन्य सभी आने-जाने वाले देवता हैं। बैल को आगे ले जाने वाला राजकुमार नेझा है, और वहाँ दर्पण लिए हुए शिवालय-वाहक स्वर्ग के राजा ली हैं। मेरे बड़े भाई केले का पंखा लिए हुए हैं, और उनके पीछे दूसरे भाई और स्थानीय देवता हैं। बाकी सभी अंगरक्षक सैनिक हैं।"
यह सुनकर, संजांग ने अपना वैरोचना मुकुट और चोगा पहना और फिर भिक्षु सैंड के साथ देवताओं का स्वागत करने और उन्हें इन शब्दों में धन्यवाद देने के लिए गया: "आपका शिष्य होने के नाते मुझमें ऐसा क्या गुण है कि मैंने आप सभी पवित्रों को पृथ्वी पर आने की परेशानी उठाई?"
इस पर चारों वज्रपाणियों ने उत्तर दिया, "शुभकामनाएं, हे पवित्र भिक्षु। महान कार्य अब सिद्ध हो गया है। हमें बुद्ध के आदेश पर आपकी सहायता के लिए भेजा गया था। अब आपको आत्म साधना जारी रखनी चाहिए और एक क्षण भी शिथिल नहीं होना चाहिए।" संजांग ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया कि वे उनके आदेश स्वीकार करते हैं।
महान ऋषि सूर्य पंखा लेकर अग्नि पर्वतों के पास गए, उसे पूरी ताकत से घुमाया और

लपटों को बुझा दिया। उनकी चमक गायब हो गई। उन्होंने पंखा फिर घुमाया और ठंडी हवा की सरसराहट सुनाई दी; और तीसरी बार घुमाते ही आकाश बादलों से घिर गया और हल्की बारिश होने लगी। एक कविता इसकी गवाही देती है:

सैकड़ों मील तक आग के पहाड़ फैले हुए हैं
उसने अपनी कुख्यात ज्वालाओं से आकाश और पृथ्वी को प्रज्वलित कर दिया।
जब अग्नि पांचों भावनाओं को भून देती है तो अमृत नहीं बन सकता।
जब ज्वाला तीनों दर्रों को जला देती है तो मार्ग शुद्ध नहीं रहता।
केले का पंखा उधार लेकर बारिश लाना,
स्वर्ग के देवताओं को अपनी आध्यात्मिक शक्ति से सहायता करनी पड़ी।
जब बैल को बुद्ध के पास ले जाया जाता है तो उसे बुराई करना छोड़ देना चाहिए;
जब जल और अग्नि का मिलन होता है तो प्रकृति शांत रहती है।

अपनी चिंताओं से मुक्त होकर संजांग ने चिंता करना छोड़ दिया। सभी मेजबानों ने आदरपूर्वक वज्रपाणियों का धन्यवाद किया, जो सभी अपने-अपने पर्वतों पर लौट गए, और छह डिंग और छह जिया अपनी रक्षा के लिए आकाश में वापस चले गए। जो देवता वहाँ से गुजर रहे थे, वे सभी अपने-अपने मार्ग पर चल दिए; और स्वर्ग के राजा और नेझा बैल को वापस बुद्ध को सौंपने के लिए ले गए। अब वहाँ केवल स्थानीय पर्वत देवता ही राक्षसी की निगरानी में प्रतीक्षा कर रहे थे।

"राक्षसी, तुम अभी तक क्यों नहीं जा रहे?" बंदर ने पूछा। "तुम वहाँ खड़े होकर किस बात का इंतज़ार कर रहे हो?"

"हे महान ऋषि, मैं आपसे दयापूर्वक विनती करती हूँ," उसने उत्तर दिया, "कृपया मुझे पंखा वापस दे दीजिए।"

"तुम्हारी तो हद ही हो गई, कुतिया!" सुअर दहाड़ा। "हमने तुम्हारी जान बख्श दी है और यही तुम्हारे लिए काफी होना चाहिए।"

तुम्हें पंखे की क्या ज़रूरत है? पहाड़ पार करने के बाद हम इसे बेचकर खाना खरीद लेंगे। इतनी मेहनत और मशक्कत के बाद क्या तुम्हें लगता है कि हम इसे तुम्हें मुफ्त में दे देंगे? बारिश हो रही है, तो तुम जाओ घर।

उसने दोबारा सिर झुकाकर कहा, "लेकिन महान ऋषि ने वादा किया था कि आग बुझाने के बाद वे इसे वापस कर देंगे। जो कुछ भी हुआ उसके लिए मुझे बहुत खेद है। मैं बहुत परेशान थी, इसीलिए मैंने आपको इतनी तकलीफ दी।"

हम भी मनुष्य की तरह जीना सीख चुके हैं। बस फर्क इतना है कि हम सच्चे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित नहीं हुए थे। अब हमारा सच्चा स्वरूप पश्चिम की ओर मुड़ गया है, और हम फिर कभी कोई बुरा काम करने की हिम्मत नहीं करेंगे। आपसे निवेदन है कि पंखा लौटा दें ताकि मैं सुधर सकूँ और अपना आत्म-विकास कर सकूँ।

स्थानीय देवता ने कहा, “हे महान ऋषि, आइए हम इस स्त्री के अग्नि-निरोधक ज्ञान का पूरा उपयोग करके इन आगों को हमेशा के लिए बुझा दें और उसे उसका पंखा लौटा दें। तब मैं यहाँ शांति से रह सकूँगा, यहाँ रहने वाले लोगों की सहायता कर सकूँगा और मुझे रक्त और भोजन का चढ़ावा प्राप्त होगा। यह मेरे लिए सचमुच एक बड़ी कृपा होगी।”

मंकी ने कहा, "मैंने स्थानीय लोगों को कहते सुना है कि जब पंखा इन पहाड़ों में आग बुझाता है, तो वे दोबारा आग लगने से पहले केवल एक ही फसल काट पाते हैं। हम उन्हें हमेशा के लिए कैसे बुझा पाएंगे?"

रक्सासी ने कहा, "आग को हमेशा के लिए बुझाने के लिए बस पंखे को उनतालीस बार घुमाना है। फिर वे दोबारा कभी नहीं जलेंगी।"

अध्याय 61

पश्चिम की यात्रा

अब जब बंदर भाई को यह पता चल गया, तो उसने पंखा उठाया और उससे पहाड़ों को अपनी पूरी ताकत से उनतालीस बार हवा दी, जिसके बाद ज़ोरदार बारिश होने लगी। पंखा सचमुच एक अनमोल चीज़ थी: जहाँ आग लगी होती थी, वहाँ बारिश होती थी, और जहाँ आग नहीं होती थी, वहाँ आसमान साफ़ रहता था। जहाँ आग नहीं थी, वहाँ खड़े होकर गुरु और शिष्य भीगने से बच गए। रात भर वहाँ बैठे रहने के बाद, अगली सुबह उन्होंने घोड़ा और सामान तैयार किया और पंखा रक्षसी को लौटा दिया।

“अगर मैं इसे तुम्हें वापस नहीं दूंगा,” बंदर ने कहा, “तो लोग कहेंगे कि मैं अपना वचन नहीं रखता। पंखा अपने साथ ले जाओ, अपने पर्वत पर वापस जाओ और कोई और परेशानी मत खड़ी करो। चूंकि तुमने मनुष्य रूप प्राप्त कर लिया है, मैं तुम्हारी जान

बख्श दूंगा।" उससे पंखा लेकर, रक्षसी ने मंत्र पढ़ा, धागे को इतना दबाया कि वह खुबानी के पत्ते के आकार का हो गया और उसे अपने मुंह में रख लिया। फिर उसने उन सभी को धन्यवाद दिया और एक संन्यासी के रूप में अपना आचरण करने की तैयारी की। बाद में उसे भी सच्चा फल प्राप्त हुआ और शास्त्रों में उसका नाम अमर हो गया। रक्षसी और स्थानीय देवता ने चारों ऋषियों के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त की और उन्हें उनके मार्ग पर विदा किया। जब बंदर, सुअर और साधु रेत संजांग को उनके मार्ग पर विदा कर रहे थे, तो उनके शरीर ठंडे और उनके पैरों के नीचे की जमीन सुखद रूप से नम थी। यह वास्तव में त्रिग्राम कान और ली की सहायता से मूल तत्व का संयोजन होता है; जब अग्नि और जल संतुलित होते हैं, तो महान मार्ग पूर्ण होता है।

अगर आपको नहीं पता कि उन्हें पूर्व में लौटने में कितने साल लगे, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 62

शुद्ध और पवित्र हृदय से वह पैगोडा की सफाई करता है।

शैतानों को पकड़कर परिवर्तित किया जाता है; शरीर को संवारा जाता है।

इन सभी पलों में इसे कभी नहीं भूलना चाहिए:

सफलता मिलने पर सारा समय टल जाएगा।

पाँच वर्षों और साठ हज़ार मील के लिए

पवित्र जल को सूखने न दें।

आग को बुझने न दें।

जब जल और अग्नि संतुलन में होते हैं तो कोई हानि नहीं होती;

पंच तत्व इस प्रकार जुड़े हुए हैं मानो हुक से बंधे हों।

यिंग और यांग सामंजस्य में बादल की मीनार पर चढ़ते हैं।

फीनिक्स पर सवार होकर बैंगनी महल की ओर,

और फिर सारस पर बैठकर जादुई यिंगझोऊ की यात्रा।

यह गीत लिन जियांग शियान की धुन पर आधारित है। इसमें बताया गया है कि कैसे

तांग सान्ज़ांग और उनके शिष्यों ने जल और अग्नि की सहायता से अपने स्वभाव को शांत किया और शुद्ध यिन से युक्त पंखे का उपयोग करके दूर के पहाड़ों पर लगी ज्वालाओं को बुझाया। पश्चिम की ओर बढ़ते हुए उन्हें 250 मील की दूरी तय करने में कई दिन लगे, वे निश्चिंत और चिंतामुक्त महसूस कर रहे थे। अब शरद ऋतु का अंत होकर शीत ऋतु का आरंभ हो रहा था, और उन्होंने यह देखा: जंगली गुलदाउदी की पंखुड़ियाँ मुरझा रही थीं।

बेर का कोमल नया फूल।

सभी गांवों में फसलें काट ली गई हैं;

स्वादिष्ट शोरबा का आनंद हर जगह लिया जाता है।

जैसे-जैसे पेड़ों से पत्ते झड़ते जाते हैं, दूर-दूर तक फैले जंगल दिखाई देने लगते हैं;

खाइयाँ घनी बर्फ से ढकी होती हैं और शांत घाटियाँ निर्मल होती हैं।

ठंड के मौसम के जवाब में

रेशम के कीड़ों को शीतनिद्रा में जाने के लिए अलग रख दिया जाता है।

शुद्ध यिन और यांग में

चंद्रमा आदिम महासागर पर शासन करता है;

जहां पानी पूरी तरह से भरा हुआ है

शुन का सूर्य दयालु प्रकाश से जगमगाता है।

पृथ्वी की वाष्प नीचे उतरती है,

आकाश से वाष्प उठती है।

अब इंद्रधनुष दिखाई नहीं देता।

धीरे-धीरे तालाब पर बर्फ जमने लगती है।

चट्टान पर उगी लताओं से फूल गिरते हैं।

जबकि ठंड में भी बांस और चीड़ के पेड़ हरे-भरे दिखाई देते हैं।

जब वे चारों काफी आगे बढ़ गए तो वे एक दीवार और खाई से घिरे शहर के पास पहुँचे। घोड़े की लगाम खींचते हुए तांग पुजारी ने अपने शिष्यों से कहा: "वुकोंग, यह कैसी जगह है जिसमें इतने ऊँचे-ऊँचे लोग हैं?" अध्याय 62

शानदार इमारतें?" बंदर ने देखा कि शहर कुछ इस तरह था: कांसे की एक दीवार, जो

अजगर के आकार की थी,
और एक घात लगाए बैठे बाघ के रूप में,
सभी दिशाओं से सुंदर गाड़ियाँ आ रही हैं
और कई पहियों ने इसके रास्ते को सुगम बनाया है।
संगमरमर की रेलिंग पर अद्भुत जानवरों की आकृतियाँ उकेरी गई हैं;
महान पुरुषों की प्रतिमाएं सोने के चबूतरे पर खड़ी हैं।
यह वास्तव में एक धन्य राजधानी है।
एक सच्चा महानगर।
इसके विशाल भूभाग पर दृढ़ता से कब्जा है;
यह राजवंश एक हजार वर्षों से फलता-फूलता रहा है।
राजा की दयालुता के आगे बर्बर लोग झुक जाते हैं;
यहां द्वीपों और समुद्र से आए पवित्र लोग एकत्रित हुए हैं।
महल की सीढ़ियों के सामने पवित्रता है;
राजमार्गों पर शांति का माहौल है।
बार शोर और संगीत से भरे हुए हैं;
आनंद की प्राप्ति सुख-सुविधाओं के घरों में होती है।
महल के बाहर शाश्वत वसंत के वृक्ष उगते हैं।
जहां फीनिक्स पक्षी भोर का स्वागत करते हुए गीत गाते हैं।
"स्वामी," बंदर ने कहा, "वह शहर एक शाही राजधानी है।"
"दुनिया में तो कई प्रांतीय शहर और काउंटी मुख्यालय हैं," पिग हँसते हुए बोला। "तुम्हें इतना यकीन कैसे है कि यह एक शाही राजधानी है?"
"तुम्हें शायद यह एहसास नहीं है कि शाही राजधानियाँ, प्रांतीय शहरों और काउंटी कस्बों से अलग होती हैं," बंदर ने जवाब दिया। "ज़रा देखो। इसमें दस से ज़्यादा द्वार हैं और दीवार बीस-तीस मील लंबी होगी। वे मीनारें इतनी ऊँची हैं कि बादलों में समा जाती हैं। भला शाही राजधानी के अलावा और कोई इतनी भव्य कैसे हो सकती है?"

"आप सही कह रहे हैं, भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "यह एक शाही शहर है। लेकिन

इसका नाम क्या है?"
"मुझे कैसे पता चलेगा?" बंदर ने जवाब दिया। "वहाँ कोई संकेत या बैनर नहीं हैं। हमें अंदर जाकर पूछना पड़ेगा।"
आदरणीय बुजुर्ग ने अपने घोड़े को चाबुक मारा और जल्द ही एक द्वार पर पहुँच गए, जहाँ वे पुल पार करने और अंदर देखने के लिए उतरे। उन्होंने छह मुख्य सड़कें और तीन बाज़ार देखे, जहाँ व्यापार फल-फूल रहा था, साथ ही कुलीन और प्रतिष्ठित लोगों के भव्य वस्त्र भी दिखाई दिए। फिर चलते-चलते उन्होंने लगभग एक दर्जन बौद्ध भिक्षुओं को जंजीरों और गले में भारी तख्तियाँ ठूँसे हुए, घर-घर भीख माँगते देखा।
वे फटे-पुराने कपड़ों में थे।
"लोमड़ी खरगोश की मौत पर शोक मना रही है," संज़ंग ने आह भरते हुए कहा। "सभी जीव अपने जैसे जीवों के लिए दुखी होते हैं। जाओ और उनसे पूछो, वुकॉन्ग, कि उन्हें इस तरह क्यों दंडित किया जा रहा है।"
जैसा उसे बताया गया था, वैसा ही करते हुए बंदर ने पूछा, "आप किस मठ से हैं, भिक्षुओं? आप हथकड़ी और बेड़ियों में क्यों हैं?"
सभी भिक्षुओं ने घुटने टेकते हुए कहा, "मेरे प्रभु, हम स्वर्ण प्रकाश मठ से हैं और हमारे साथ अन्याय हुआ है।"
"गोल्डन लाइट मठ कहाँ है?" बंदर ने पूछा।
उन्होंने जवाब दिया, "बस थोड़ी ही दूर पर है।"
बंदर उन्हें तांग पुजारी के पास ले गया और उनसे पूछा, "तुम्हारे साथ क्या अन्याय हुआ है? मुझे बताओ।"
“हम नहीं जानते कि आप कहाँ से आए हैं, लेकिन आप हमें कुछ जाने-पहचाने से लगते हैं, महाराज,” भिक्षुओं ने उत्तर दिया। “हम यहाँ बात करने की हिम्मत नहीं करते। कृपया हमारे छोटे से मठ में आइए, जहाँ हम आपको अपनी पीड़ाएँ सुना सकते हैं।”
“बहुत अच्छा,” आदरणीय बुजुर्ग ने कहा, “हम उनके मठ में जाकर उनसे सारी जानकारी लेंगे।” वे उनके साथ मठ के द्वार तक गए, जिसके ऊपर एक तख्ती लगी थी जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा था: राष्ट्र-संरक्षित स्वर्ण प्रकाश मठ
शाही आदेश द्वारा स्थापित
जब गुरु और शिष्य अंदर जाकर चारों ओर देखने लगे तो उन्होंने यह देखा: प्राचीन

कक्ष में दीपक ठंडे थे;
सुनसान गलियारों में हवा से पत्ते उड़ रहे थे।
हजार फुट ऊँचा एक शिवालय बादलों को छू रहा था;
प्रकृति को पोषण देने के लिए चीड़ के पेड़ उगते थे।
अध्याय 62
857
पश्चिम की यात्रा
गिरे हुए फूल उस सुनसान मैदान को कालीन की तरह ढक रहे थे;
मकड़ियाँ छत के किनारों पर हर जगह जाले बुन रही हैं।
ड्रम स्टैंड खाली था।
घंटी व्यर्थ ही बजती रही।
और धूल के कारण भित्तिचित्र मुश्किल से ही दिखाई दे रहे थे।
वह उपदेश मंच अब भी वैसा ही था जहाँ कोई पुजारी दिखाई नहीं दे रहा था।
ध्यान कक्ष में पक्षियों की आवाज के अलावा सन्नाटा पसरा हुआ था।
उस वीरानगी को देखकर आह भरने का मन करता था;
इसकी नीरसता ने बहुत पीड़ा दी।
यद्यपि बुद्ध के सामने एक धूपदान रखा हुआ था
चारों ओर ठंडी राख, मुरझाए फूल और वीरानगी छाई हुई थी।
इन सब बातों से संज़ंग बहुत दुखी हो गया और उसके आँसू बहने लगे। जंजीरों में जकड़े भिक्षुओं ने मुख्य बुद्ध-कक्ष का दरवाज़ा खोल दिया और उसे अंदर आकर बुद्ध की पूजा करने के लिए आमंत्रित किया। संज़ंग अंदर गया, अपने हृदय की धूप अर्पित की और तीन बार मंत्रोच्चार किया। फिर उसने मुड़कर देखा तो मठाधीश के आवास के बाहर खंभों से छह-सात युवा भिक्षु बंधे हुए थे। यह सब देखकर वह व्याकुल हो गया।
जब वह मठाधीश के आवास में दाखिल हुए और सभी भिक्षु उनके सामने झुककर प्रणाम करने लगे तो उन्होंने पूछा, "आप आदरणीय महोदय कुछ अलग दिखते हैं। क्या आप पूर्व के महान तांग से आए हैं?"
"तुम्हारे पास तो भविष्य देखने की शक्ति है," बंदर ने हंसते हुए कहा। "हाँ, बिल्कुल, लेकिन तुम्हें कैसे पता चला?"
“हे प्रभु, हमारे पास भविष्य देखने की शक्ति नहीं है,” भिक्षुओं ने उत्तर दिया। “बात

बस इतनी है कि हम पर हुए अन्याय से बहुत दुखी हैं और हमारे पास कहीं और जाने का कोई रास्ता नहीं है, इसलिए हम कई दिनों से लगातार प्रार्थना कर रहे हैं। किसी दिव्य देवता को हम पर दया आ गई होगी क्योंकि कल रात हम सभी ने एक ही सपना देखा। हमें बताया गया कि पूर्व में स्थित महान तांग से एक पवित्र भिक्षु आ रहे हैं जो हमारी जान बचाएंगे और हमारे साथ हुए अन्याय का निवारण करेंगे। आज हम आपको पहचान गए क्योंकि आप कुछ असामान्य दिख रहे थे।"

इससे संजांग बेहद प्रसन्न हुआ। उसने पूछा, "यह कौन सा देश है, और आपको किस प्रकार के अन्याय का सामना करना पड़ा है?"

"मेरे प्रभु," भिक्षुओं ने घुटनों के बल बैठकर कहा, "इस देश का नाम जिसाई है, और यह पश्चिम के सबसे बड़े देशों में से एक है।"

पुराने समय में आसपास के सभी विदेशी राज्य हमें भेंट भेजते थे: दक्षिण में युएतुओ, उत्तर में गाओचांग, पूर्व में पश्चिमी लियांग और पश्चिम में बेनबो। हर साल वे उत्तम जेड, चमकीले मोती, सुंदर स्त्रियाँ और शानदार घोड़े भेंट करते थे। हमें कभी भी उनके विरुद्ध हथियार उठाने या अभियान भेजने की आवश्यकता नहीं पड़ी: वे स्वाभाविक रूप से हमें अपना अधिपति मानते थे।

"यदि उन्होंने ऐसा किया तो आपके राजा को मार्ग को समझना होगा और आपके नागरिक और सैन्य अधिकारियों को बुद्धिमान और अच्छा होना होगा।"

सानज़ैंग ने कहा।

अध्याय 62

858

पश्चिम की यात्रा

"हे प्रभु," भिक्षुओं ने संज़ंग के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, "हमारे देश के अधिकारी बुद्धिमान नहीं हैं, हमारे सेनापति कुशल नहीं हैं, और हमारे राजा को मार्ग का ज्ञान नहीं है। हमारे मठ के शिवालय के चारों ओर शुभ बादल मंडराते थे और उसके ऊपर शुभ संकेत देने वाली धुंध छाई रहती थी। रात में उसकी चमक हजारों मील दूर से देखी जा सकती थी; रंगीन वाष्प की प्रशंसा चारों ओर के देश करते थे। इसीलिए यह ईश्वर द्वारा नियुक्त राजधानी थी, जहाँ सभी विदेशी भेंट भेजते थे। लेकिन तीन साल पहले शरद ऋतु के पहले महीने के पहले दिन आधी रात को रक्त की वर्षा हुई। अगली सुबह सभी भयभीत और दुखी थे। सभी मंत्रियों ने सिंहासन पर ज्ञापन प्रस्तुत किया: वे

समझ नहीं पा रहे थे कि स्वर्ग हमसे इतना क्रोधित क्यों है। ताओवादियों से शुद्धिकरण करने और बौद्ध भिक्षुओं से स्वर्ग और पृथ्वी को भेंट के रूप में सूत्र पाठ करने का अनुरोध किया गया। ईश्वर ही जानता है क्यों, लेकिन हमारा स्वर्ण शिवालय अपवित्र हो गया है, और पिछले दो वर्षों से किसी भी विदेशी देश ने भेंट नहीं भेजी है। हमारे राजा भेंट भेजना चाहते थे। उन्हें दंडित करने के लिए सेनाएँ भेजी गईं, लेकिन अधिकारियों ने कहा कि विदेशी देशों द्वारा भेंट न भेजने का कारण शुभ बादल और कोहरा गायब हो गया था, और ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि हम भिक्षुओं ने अपने मठ के पैगोडा से खजाना चुरा लिया था। मूर्ख राजा ने कोई जाँच नहीं की, और उन भ्रष्ट अधिकारियों ने हम सभी भिक्षुओं को गिरफ्तार करवा दिया।

हमें हर संभव तरीके से पीटा और प्रताड़ित किया गया है। इस मठ में हम भिक्षुओं की तीन पीढ़ियाँ हुआ करती थीं, लेकिन पिछली दो पीढ़ियाँ मार-पीट और यातना सहन न कर पाने के कारण मर गईं।

अब हमें गिरफ्तार कर लिया गया है और ये हथकड़ियां और बेड़ियां पहना दी गई हैं। माननीय न्यायाधीश महोदय, हम कभी इतने दुष्ट नहीं हो सकते कि मंदिर से खजाना चुरा लें। हम आपसे विनती करते हैं कि आप हम पर दया करें और अपनी अपार करुणा और दया से हमारे जीवन की रक्षा करें।

इस पर संज़ंग ने सिर हिलाया और आह भरते हुए कहा, "यह एक पेचीदा मामला है जिसे सुलझाना मुश्किल होगा। दरबार का शासन खराब चल रहा है और आप विपत्ति झेल रहे हैं। अगर खून की बारिश से ही आपका मंदिर दूषित हुआ था, तो आपने उस समय अपने राजा को इसकी सूचना क्यों नहीं दी? इसके बजाय आपने खुद को इस विपत्ति में फंसा लिया।"

"हम तो केवल साधारण मनुष्य हैं, महाराज, और हमें यह जानने का कोई तरीका नहीं था कि स्वर्ग के मन में क्या है। इसके अलावा, हमारे बड़े-बुजुर्ग भी नहीं समझते थे। हम इसके बारे में क्या कर सकते थे?"

"वुकोंग, कितना समय हुआ है?" संजांग ने पूछा।

"लगभग शाम चार बजे," बंदर ने जवाब दिया।

"मैं राजा से मिलकर अपना पासपोर्ट दिखाना चाहता हूँ, लेकिन मैं इन भिक्षुओं की समस्या का समाधान नहीं कर सकता और न ही महाराज को इसकी सूचना दे सकता हूँ। चांगआन से निकलते समय मैंने फामेन मठ में प्रतिज्ञा ली थी कि पश्चिम की यात्रा

के दौरान मैं हर मंदिर में अगरबत्ती जलाऊँगा, हर मठ में बुद्ध की पूजा करूँगा और हर शिवालय की सफाई करूँगा। आज मेरी मुलाकात इन भिक्षुओं से हुई है जिनके साथ उनके शिवालय के कारण अन्याय हुआ है। क्या आप मेरे स्नान करते समय मेरे लिए एक नई झाड़ू लाएँगे? फिर मैं ऊपर जाकर उसकी सफाई करूँगा और पता लगाऊँगा कि उसमें क्या मिलावट है और वह अब चमक क्यों नहीं रहा। एक बार सच्चाई पता चल जाने पर राजा को व्यक्तिगत रूप से इसकी सूचना देना और उन्हें उनके कष्टों से मुक्ति दिलाना बहुत आसान हो जाएगा।"

जैसे ही गले में जंजीरें और गले में जकड़े भिक्षुओं ने यह सुना, वे रसोई की ओर दौड़े और एक बड़ा सब्जी काटने वाला यंत्र लाकर सुअर को दे दिया।

उन्होंने कहा, "महाराज, यह कुल्हाड़ी लीजिए और उन लोहे के तालों को काट दीजिए जिनसे युवा भिक्षुओं को खंभों से बांधा गया है ताकि वे आपके लिए कुछ भोजन और चाय तैयार कर सकें और आपके गुरु के भोजन और स्नान करते समय उनकी सेवा कर सकें।"

इस बीच हम फिर से सड़कों पर निकलकर आपके मालिक के लिए एक नई झाड़ू मांगेंगे ताकि वह पैगोडा की सफाई कर सके।"

“ताले खोलने में कोई दिक्कत नहीं है,” सुअर हँसते हुए बोला। “हमें चाकू या कुल्हाड़ी की ज़रूरत नहीं है। बस उस बालदार चेहरे वाले सज्जन से पूछ लो: वो तो सालों से ताले खोल रहे हैं।” फिर बंदर आगे बढ़ा और ताला खोलने का जादू किया: एक स्पर्श से सारे ताले खुल गए। सभी युवा भिक्षु रसोई में खाना पकाने के बर्तन और चूल्हा साफ़ करने और भोजन तैयार करने के लिए दौड़ पड़े। जब संज़ंग और उनके शिष्यों ने भोजन कर लिया, तब अध्याय 62 का समय हो गया।

जैसे-जैसे अंधेरा होने लगा, गले में जंजीरें और गले में बेड़ियां पहने भिक्षु दो झाड़ू लेकर अंदर आए, जिससे संजांग को बहुत प्रसन्नता हुई।

जब वे बातें कर रहे थे, तभी एक युवा भिक्षु दीपक जलाने और संज़ंग को स्नान करने के लिए आमंत्रित करने आया। तब तक आकाश चाँद और तारों से जगमगा रहा था, और निगरानी मीनारों से रात के पहरों की आहट ढोल पर सुनाई दे रही थी। वास्तव में यही वह समय था जब

दीवारों के आसपास ठंडी हवाएं चलती हैं।
और हर घर में दीपक जलाए गए हैं।
सड़कों पर सभी दरवाजे बंद हैं;
तीनों बाजारों के द्वार बंद हैं।
मछली पकड़ने वाली नाव पेड़ों की ओट में सुरक्षित है;
हल चला रहे बैल की रस्सी खोल दी जाती है।
लकड़हारा अपनी कुल्हाड़ी को थोड़ी देर के लिए आराम देता है।
इस दौरान छात्र को अपने पाठ पढ़ते हुए सुना जा सकता है।
जब संजांग ने स्नान कर लिया, तो उसने पतली आस्तीनों वाला एक वस्त्र पहना, कमरबंद कस लिया, जूते पहने और नई झाड़ू उठा ली। उसने भिक्षुओं से कहा, "जब तक मैं पैगोडा की सफाई करता हूँ, तुम यहीं सो जाओ।"
"खून की बारिश से वह पैगोडा दूषित हो गया था," बंदर ने कहा, "और कई दिनों से उसमें रोशनी नहीं चमकी है।"
वहाँ ऊपर बुरी शक्तियाँ रहती होंगी। अगर तुम इस ठंडी और तूफानी रात में अकेले ऊपर जाओगी तो मुझे डर है कि कुछ गड़बड़ हो सकती है। क्यों न मैं तुम्हारे साथ चलूँ?
“बहुत अच्छा विचार है,” संज़ंग ने उत्तर दिया, और दोनों झाड़ू लेकर सबसे पहले मुख्य बुद्ध कक्ष में गए, जहाँ संज़ंग ने चमकीला दीपक जलाया, अगरबत्ती जलाई और बुद्ध को प्रणाम करते हुए कहा, “पूर्व में महान तांग राजवंश ने आपके शिष्य चेन ज़ुआनज़ैंग को गिद्ध शिखर पर स्थित तथागत बुद्ध की आराधना करने और शास्त्र लाने के लिए भेजा है। मैं अब जिसाई राज्य के स्वर्ण प्रकाश मठ में पहुँच गया हूँ, जहाँ भिक्षुओं ने मुझे बताया है कि उनका शिवालय अपवित्र हो गया है और राजा के खजाने की चोरी के संदेह में उन्हें अन्यायपूर्ण ढंग से दंडित किया गया है। आपका शिष्य अब श्रद्धापूर्वक मीनार की सफाई करने जा रहा है, इस आशा में कि बुद्ध अपनी महान कृपा से अपवित्रता का कारण प्रकट करेंगे और इन लोगों को अन्याय से बचाएंगे।”
प्रार्थना करने के बाद उसने और भाई बंदर ने पैगोडा का दरवाजा खोला और उसे जमीन से ऊपर की ओर साफ करने लगे। वह पैगोडा
आसमान छूता हुआ,

अंतरिक्ष में ऊपर की ओर धकेला गया।
इसे चमकीली टाइलों से बना पैगोडा कहा जाता था।
स्वर्णिम सरिरा शिखर।
सीढ़ियाँ गुफा के अंदर की तरह घुमावदार थीं;
वह दरवाजा किसी मुर्गीखाने का दरवाजा लग रहा था।
फूलदान की चमक क्षितिज पर स्थित चंद्रमा तक पहुँच गई;
समुद्री हवा के साथ उसकी घंटियों की ध्वनि गूंज रही थी।
छज्जे और कोरबेल ब्रैकेट को देखें,
बादलों में स्थित शिखर।
छज्जा और कोरबेल ब्रैकेट
वे पत्थर की चिनाई से बने थे, जिनमें से सुगंधित हवाएं बहती थीं।
बादलों में स्थित शिखर
पैगोडा के चारों ओर धुंध से घिरे अजगर कुंडली मार रहे थे।
दूर-दूर तक सैकड़ों मील तक का नजारा फैला हुआ था;
उस पर चढ़ना मानो स्वर्ग पर चढ़ने जैसा था।
हर मंजिल के दरवाजे पर कांच के दीपक लगे हुए थे।
लेकिन धूल से भरा हुआ, रोशनी से नहीं।
चारों ओर छज्जे के नीचे संगमरमर की रेलिंग लगी हुई थी।
गंदगी और कीड़ों से ढका हुआ।
टावर के अंदर,
बुद्ध प्रतिमाओं के पास,
अब अगरबत्ती नहीं जलाई जाती।
खिड़कियों के बाहर,
ईश्वर के मुख के सामने,
हर तरफ मकड़ी के जाले लगे हुए थे।
धूपदान चूहों की बीट से भरे हुए थे।

ये दीपक तेल से अछूते हैं।
क्योंकि खजाना गायब हो चुका था
कई भिक्षु व्यर्थ ही मर गए थे।
संज़ंग पैगोडा को पूरी तरह से नष्ट करने के लिए दृढ़ संकल्पित था।
और इसे पहले जैसी सुंदरता लौटा दें।
एक मंजिल की सफाई पूरी करने के बाद तांग पुजारी अगली मंजिल की सफाई करने लगा, और इसी तरह वह सातवीं मंजिल तक सफाई करता रहा। अब रात का दूसरा पहर हो चुका था और वह थका हुआ महसूस करने लगा था।
"तुम थक गए हो," बंदर ने कहा। "यहाँ बैठो और मैं तुम्हारे लिए झाड़ू लगा देता हूँ।"
"इसमें कितनी कहानियां हैं?" संजांग ने पूछा।
“लगभग तेरह,” बंदर ने उत्तर दिया। अपनी थकान पर काबू पाते हुए तांग पुजारी ने कहा, “मुझे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए इसे स्वयं साफ करना होगा।” जब तक उन्होंने तीन और मंजिलें साफ कीं, उनकी पीठ और टांगों में दर्द होने लगा। दसवीं मंजिल पर पहुँचकर वे गिर पड़े और बोले, “मेरे लिए आखिरी तीन मंजिलें साफ कर दो, वुकॉन्ग।”
बंदर ने अपनी सारी ऊर्जा जुटाई, ग्यारहवीं मंजिल पर गया और थोड़ी देर बाद बारहवीं मंजिल पर। वहाँ झाड़ू लगाते हुए उसे छत से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। "यह तो अजीब है," उसने सोचा, "बहुत अजीब है। यह तीसरा पहर है। इतनी देर रात तक ऊपर से कोई बातें नहीं कर रहा होगा। मुझे यकीन है कि ये बुरी आत्माएँ हैं। चलो देखते हैं।"
शानदार बंदर राजा ने चुपचाप अपनी झाड़ू बगल में दबाई, अपने कपड़े समेटे, दरवाजे से बाहर निकले और बेहतर ढंग से देखने के लिए एक बादल पर कदम रखा। तेरहवीं मंजिल के बीच में दो दुष्ट आत्माएं भोजन की थाली, एक कटोरा और शराब का एक घड़ा लिए बैठी थीं। वे उंगली से अनुमान लगाने का खेल खेल रही थीं और शराब पी रही थीं।
बंदर ने अपनी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करके झाड़ू को हटाया और सोने की पट्टी वाली लाठी निकाली, जिससे उसने पैगोडा के प्रवेश द्वार को बंद कर दिया और चिल्लाया, "तो तुम ही हो जिन्होंने पैगोडा का खजाना चुराया है, राक्षसो!" वे दोनों

घबराकर उछल पड़े, घड़ा और कटोरा उठाया और बंदर पर फेंक दिया।
बंदर ने अपने लोहे के डंडे से उन्हें दूर धकेल दिया और कहा, "मैं तुम्हें नहीं मारूंगा क्योंकि मुझे तुमसे सबूत लेने की जरूरत है।"
उसने उन्हें बोलने पर मजबूर करने के लिए अपनी लाठी का इस्तेमाल किया। शैतान दीवार से चिपके हुए थे, हिलने-डुलने या संघर्ष करने में असमर्थ थे। वे बस यही दोहरा सकते थे, "हमें बख्श दो, हमें बख्श दो। इसमें हमारा कोई लेना-देना नहीं है। चोर यहाँ नहीं है।"
बंदर ने जादुई शक्ति का इस्तेमाल करते हुए उन्हें अकेले ही दसवीं मंजिल तक नीचे ले गया, जहाँ उसने कहा, "मालिक, मैंने चोरों को पकड़ लिया है।"
यह खबर सुनकर सो रहा संजांग खुशी से चौंक कर जाग उठा। उसने पूछा, "इन्हें तुमने कहाँ पकड़ा?"
राक्षसों को घसीटकर अपने स्वामी के सामने घुटने टेकने पर मजबूर करते हुए बंदर ने उत्तर दिया, "वे छत पर शराब पी रहे थे और उंगलियों से अनुमान लगाने का खेल खेल रहे थे। जब मैंने उनका शोर सुना तो मैं बादल के सहारे छत पर पहुँच गया और उनके भागने का रास्ता रोक दिया। मैंने उनके साथ सख्ती नहीं बरती क्योंकि मुझे डर था कि एक ही वार से वे मर जाएँगे और हमारे पास गवाही देने वाला कोई नहीं बचेगा। इसीलिए मैं उन्हें यहाँ आराम से और नरमी से लाया हूँ। आप अध्याय 62 पढ़ सकते हैं।"

"हे गुरु, उनसे बयान लो और पता लगाओ कि वे कहाँ से आए हैं और चोरी का खजाना कहाँ छिपाया गया है।"
राक्षस अब भी कांप रहे थे और थरथरा रहे थे और कह रहे थे, "हमें बख्श दो!" फिर उन्होंने यह सच बात कही। "हमें रैग्ड रॉक पर्वत पर स्थित ग्रीन वेव पूल के असीम ऋषि ड्रैगन राजा ने भेजा है। उनका नाम बेनबोरबा है और मेरा नाम बाबोरबेन है। वे कैटफ़िश की आत्मा हैं और मैं स्नेकहेड मछली की आत्मा हूँ। हमारे असीम ऋषि प्राचीन ड्रैगन की एक पुत्री है जिसका नाम असीम ऋषि राजकुमारी है। वह फूलों या चंद्रमा की तरह सुंदर और उतनी ही प्रतिभाशाली भी है। प्राचीन ड्रैगन ने उसके लिए एक पति चुना है जो महल में रहेगा। उसके पास अपार जादुई शक्तियाँ हैं और उसे

प्रिंस नाइनहेड कहा जाता है। वह पिछले साल ड्रैगन राजा के साथ यहाँ आया था और अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करते हुए उसने रक्त की वर्षा की जिससे पैगोडा दूषित हो गया और बुद्ध का बहुमूल्य शरीर अवशेष चुरा लिया। फिर राजकुमारी दलुओ स्वर्ग गई और चमत्कारिक धुंध के हॉल के सामने से महारानी माँ का नौ-लोब वाला जादुई कवक पौधा चुरा लिया। हमने इसे पूल के तल में रखा है, और यह दिन-रात सुनहरी रोशनी और रंगीन चमक से जगमगाता है। हाल ही में हमने सुना है कि सन वुकॉन्ग धर्मग्रंथों को लाने के लिए आ रहा है।" पश्चिमी स्वर्ग। कहते हैं कि उसकी शक्तियाँ असीम हैं, और वह हमेशा से अन्याय को सुधारने की कोशिश करता रहा है। इसीलिए हमें यहाँ गश्त करने और उसके आने पर उसे रोकने के लिए भेजा जाता है। अगर वह सन वुकॉन्ग आ गया तो हम उसका सामना करने के लिए तैयार हैं।

इस पर बंदर ने व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए कहा, "कितना दुष्ट प्राणी है! वह तो अकल्पनीय है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उसने कुछ दिन पहले बैल दानव राजा को अपने घर भोज के लिए आमंत्रित किया था। वह इन सभी शापित राक्षसों के बीच अपने संपर्क बढ़ा रहा है क्योंकि वह कुछ बुरा करने की फिराक में है।"

उसके बोलने से पहले ही पिग और दो-तीन युवा भिक्षु लालटेन लेकर पैगोडा के निचले हिस्से से सीढ़ियों से ऊपर आ गए।

"मालिक," सुअर ने कहा, "आप यहाँ बैठकर बातें करने के बजाय अब सो क्यों नहीं जाते, जब आपने पैगोडा की सफाई कर ली है?"

"भाई, तुम बिलकुल सही समय पर आए हो," बंदर ने कहा। "शिखर का खजाना असीम ज्ञान वाले प्राचीन ड्रैगन ने चुरा लिया है। उसने इन दो छोटे शैतानों को, जिन्हें मैंने अभी पकड़ा है, शिवालय की निगरानी करने और हमारी खबर पर नज़र रखने के लिए भेजा है।"

"उनका नाम क्या है, और वे किस प्रकार की आत्माएं हैं?" सुअर ने पूछा।

“उन्होंने सब कुछ कबूल कर लिया है,” बंदर ने जवाब दिया। “इसका नाम बेनबोरबा है और यह एक कैटफ़िश की आत्मा है, और उसका नाम बाबोरबेन है और यह एक स्नेकहेड मछली की आत्मा है।” फिर सुअर ने उन्हें मारने के लिए अपना रेक उठाया।

उन्होंने कहा, "अगर वे बुरी आत्माएं हैं और उन्होंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है, तो हम किस बात का इंतजार कर रहे हैं? चलो उन्हें मार डालते हैं।"

“नहीं,” बंदर ने कहा, “तुम समझते नहीं हो। इन्हें ज़िंदा रखो ताकि ये राजा को सब

कुछ बता सकें और हमें चोरों को पकड़ने और खजाना वापस लाने में मदद कर सकें।" फिर उस मूर्ख ने अपना फावड़ा नीचे रख दिया। वह और बंदर दोनों एक-एक करके उन्हें सीढ़ियों से नीचे ले गए।

"हमें बख्श दो," राक्षस लगातार विनती करते रहे।

"मैं तुम दोनों मछलियों को सूप में बदलकर उन भिक्षुओं को खिलाना चाहता हूँ जिनके साथ इतना अन्याय हुआ है," सुअर ने बुदबुदाते हुए कहा।

अत्यंत प्रसन्न हुए दो-तीन युवा भिक्षु लालटेन लेकर आदरणीय बुजुर्ग भिक्षु को पैगोडा की सीढ़ियों से नीचे ले गए। उनमें से एक भिक्षु अन्य भिक्षुओं को बताने के लिए आगे दौड़ गया।

"अच्छी खबर! खुशखबरी! हमारी मुसीबतें खत्म हो गईं। आदरणीय सज्जनों ने खजाना चुराने वाले दुष्ट आत्माओं को पकड़ लिया है।"

अध्याय 62

863

पश्चिम की यात्रा

"जंजीरें लाओ," बंदर ने कहा, "इन्हें इनके कंधों में ठूंस दो और इन्हें यहीं बंद कर दो। जब तक हम सो जाते हैं, तब तक तुम इन पर नज़र रखना। आगे क्या करना है, यह हम कल तय करेंगे।" इसके बाद भिक्षुओं ने राक्षसों पर कड़ी नज़र रखी, जबकि संज़ंग और उनके शिष्य सो रहे थे।

देखते ही देखते भोर हो गई। "वुकोंग और मैं पासपोर्ट पेश करने के लिए दरबार जाएंगे," संज़ंग ने कहा और उसने अपना जटाधारी चोगा और वैरोचना मुकुट पहन लिया। अपने भव्य वस्त्रों में सज-धज कर वह आगे बढ़ा, उसके साथ बंदर भी था, जिसने अपनी बाघ की खाल की स्कर्ट कस ली थी और अपनी कमीज़ सीधी कर ली थी और पासपोर्ट लिए हुए था।

"तुम उन दो राक्षसों को अपने साथ क्यों नहीं ले जा रहे हो?" सुअर ने पूछा।

"हम पहले सिंहासन पर एक ज्ञापन प्रस्तुत करेंगे," बंदर ने उत्तर दिया, "फिर मुझे उम्मीद है कि राजा उन्हें लाने के लिए सैनिकों को भेजेंगे।" फिर वे महल के द्वार पर गए, जहाँ उन्होंने शुद्ध राजधानी के गहरे लाल द्वारों को सुशोभित करते हुए अनगिनत लाल पक्षियों और सुनहरे ड्रैगनों को देखा।

पूर्वी वैभव के द्वार पर संजांग ने प्रभारी अधिकारी को प्रणाम किया और कहा, "क्या मैं

आपको यह सूचित करने के लिए विवश कर सकता हूँ कि पूर्व में स्थित महान तांग से पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा गया एक भिक्षु महामहिम से मिलने और अपना पासपोर्ट प्रस्तुत करने का अनुरोध करता है?"

द्वारपाल ने वास्तव में यह रिपोर्ट दी, और सिंहासन की सीढ़ियों पर जाकर कहा, "बाहर अजीब चेहरे और अजीब कपड़े पहने दो बौद्ध भिक्षु हैं, जो कहते हैं कि उन्हें जांबू के दक्षिणी महाद्वीप के पूर्व में स्थित तांग दरबार द्वारा पश्चिम में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्रों को लाने के लिए भेजा गया है।"

वे महाराज से मुलाकात का अनुरोध करते हैं ताकि वे अपना पासपोर्ट प्रस्तुत कर सकें। तब राजा ने उन्हें बुलवाया।

जब तांग पुजारी उसे महल में ले गए, तो बंदर को देखकर सभी नागरिक और सैन्य अधिकारी भयभीत हो गए। कुछ ने उसे बंदर भिक्षु कहा, तो कुछ ने गर्जन-देवता भिक्षु; वे सभी इतने भयभीत थे कि उसे देर तक देख भी नहीं पा रहे थे। तांग पुजारी ने नृत्य करते हुए और ज़ोर से प्रणाम करते हुए राजा को प्रणाम किया, जबकि महान ऋषि एक तरफ झुके हुए, हाथ बांधे, बिना हिले-डुले खड़े रहे।

तब आदरणीय पुरोहित ने यह निवेदन प्रस्तुत किया: "मैं एक पुजारी हूँ जिसे महान तांग वंश ने दक्षिण महाद्वीप के पूर्वी भाग जंबू में बुद्ध की उपासना करने और पश्चिम में स्थित भारत की धरती पर स्थित थंडर मठ में सच्चे धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है। मेरा मार्ग आपके प्रतिष्ठित देश से होकर गुजरता है, इसलिए मैं बिना अनुमति के पार जाने का साहस नहीं कर सकता, और मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि मेरे पास मौजूद पासपोर्ट की जाँच करें और मुझे आगे बढ़ने की अनुमति दें।"

यह सब सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने तांग से पवित्र पुजारी को सिंहासन कक्ष में बुलाया, जहाँ उनके बैठने के लिए एक कढ़ाईदार चौकी रखी गई थी। संजांग स्वयं कक्ष में गए और पासपोर्ट सौंपने के बाद कृतज्ञतापूर्वक उस चौकी को स्वीकार किया।

जब राजा ने पासपोर्ट पढ़ा तो वह प्रसन्न हुआ। "ऐसा लगता है कि जब आपके महान तांग सम्राट बीमार थे, तो उन्होंने एक ऐसे प्रतिष्ठित भिक्षु को चुना जो बुद्ध की आराधना करने और शास्त्र लाने के लिए लंबी यात्रा से भी नहीं हिचकता था। लेकिन हमारे देश के सभी भिक्षु केवल चोरी करना चाहते हैं, जिससे देश का विनाश हो रहा है और उनके राजा का पतन हो रहा है।"

जब संजांग ने यह सुना तो उसने हाथ जोड़कर जवाब दिया, "आप इतने निश्चित कैसे हो सकते हैं कि वे देश को नष्ट कर रहे हैं और अपनी संप्रभुता को बर्बाद कर रहे हैं?"
"पश्चिमी क्षेत्रों में हमारा यह देश अग्रणी है। इस राजधानी में स्थित स्वर्ण प्रकाश मठ में स्वर्ण शिवालय के कारण चारों ओर के विदेशी राज्य हमेशा भेंट भेजते थे। एक बहुरंगी चमक... अध्याय 62"

पैगोडा से निकलने वाली रोशनी आसमान तक चमकती थी। लेकिन हाल ही में मठ के दुष्ट भिक्षुओं ने पैगोडा का खजाना चुरा लिया है, और अब तीन साल से न तो कोई रंगीन रोशनी दिखाई देती है और न ही विदेशियों की ओर से कोई भेंट आती है। यह सब हमारे लिए बेहद दुखद है।
"महाराज," संज़ंग ने मुस्कुराते हुए अपने हाथ सीने के सामने जोड़ते हुए कहा, "एक छोटी सी गलती बड़ी विपत्ति का कारण बन सकती है। कल आपके स्वर्गिक राजधानी के द्वार में प्रवेश करते ही मैंने लगभग एक दर्जन भिक्षुओं को चोगा पहने देखा। जब मैंने उनसे पूछा कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं, तो उन्होंने बताया कि वे स्वर्ण प्रकाश मठ से हैं और उनके साथ अन्याय हुआ है। मठ में गहन जाँच करने पर मुझे पता चला कि इसमें वहाँ के भिक्षुओं की कोई गलती नहीं थी। आधी रात को जब मैंने पैगोडा की सफाई की, तो मैंने खजाना चुराने वाले उन दुष्टों को पकड़ लिया।"
"वे कहाँ हैं?" प्रसन्न राजा ने पूछा।
"मेरे शिष्यों ने उन्हें गोल्डन लाइट मठ में बंद कर रखा है," संजांग ने उत्तर दिया।
राजा ने तुरंत गोल्डन लाइट मठ में शाही अंगरक्षकों को भेजने का आदेश दिया ताकि वे चोर शैतानों को ला सकें और वह स्वयं उनसे पूछताछ कर सकें। "महाराज, मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि मेरा शिष्य अंगरक्षकों के साथ जाए।"
"वह कहाँ है?" राजा ने पूछा।
"सिंहासन की सीढ़ियों पर खड़ा हूँ," संजांग ने उत्तर दिया।
राजा ने जो देखा उससे वह दंग रह गया। उसने पूछा, "हे पूज्यवर, आप इतने सुंदर हैं तो आपका शिष्य इतना बदसूरत कैसे हो सकता है?"
यह सुनकर महान ऋषि सूर्य ने ऊँचे स्वर में कहा, "महाराज, आपको लोगों को उनके चेहरों से नहीं आंकना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे आप समुद्र को बाल्टी से नहीं नापते।

सुंदर रूप-रंग से कभी भी चोर शैतानों को पकड़ा नहीं जा सकता।"
इससे राजा का भय शांत हुआ और उन्होंने कहा, "आप सही कह रहे हैं, पवित्र भिक्षु। हमें यहाँ प्रतिभाशाली पुरुषों का चयन करना नहीं आता। चोरों को पकड़ने और खजाना वापस लाने वाले ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं।" फिर उन्होंने अपने सहायकों को रथ तैयार करने का आदेश दिया और शाही अंगरक्षकों को पवित्र भिक्षु की सुरक्षा करने के लिए कहा, जब वे चोरों को लाने जा रहे थे। सहायकों ने पीले रंग की छतरी वाली एक बड़ी पालकी तैयार करवाई, जिसमें आठ अंगरक्षकों ने भिक्षु को बिठाया और आठ अन्य अंगरक्षक उनके साथ थे, जो स्वर्ण प्रकाश मठ तक जाने का रास्ता साफ करने के लिए चिल्ला रहे थे। तब तक पूरे शहर में यह खबर फैल चुकी थी; हर कोई पवित्र भिक्षु और चोरों को देखने के लिए निकल आया।
शोर सुनकर सुअर और साधु सैंड ने सोचा कि राजा ने अपने कुछ अधिकारियों को भेजा होगा, इसलिए वे उनसे मिलने के लिए दौड़ पड़े, लेकिन वहाँ उन्होंने बंदर को पालकी में बैठे देखा। सुअर हँसते हुए बोला, "अब तुम फिर से पहले जैसे हो गए हो, भाई!"
"तुम्हारा क्या मतलब है?" बंदर ने पूछा, कुर्सी से उठते हुए खुद को संभालने के लिए उसने सुअर पर हाथ रख दिया।
"देखो, तुम्हें आठ आदमी एक शाही पीले चंदोवे के नीचे एक कुर्सी पर बिठाकर ले जा रहे हैं," सुअर ने कहा। "क्या सुंदर बंदर राजा को इसी तरह यात्रा नहीं करनी चाहिए? इसीलिए मैंने कहा कि तुम फिर से पहले जैसे हो गए हो।"
"मजाक करना बंद करो," बंदर ने कहा, और फिर उसने उन दोनों शैतानों को राजा के पास ले जाने के लिए बुलवाया।
"क्या आप मुझे भी साथ नहीं ले जाएंगे?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"तुम यहीं रहो और सामान और घोड़े की देखभाल करो," बंदर ने जवाब दिया।
अध्याय 62
865
पश्चिम की यात्रा
"मेरे स्वामियों," जंजीरों और गले में जकड़े भिक्षुओं ने कहा, "आप सब महाराज से मिलने क्यों नहीं जाते? हम यहां आपके सामान की देखभाल कर सकते हैं।"
"तो फिर हम सब राजा के पास जाकर रिपोर्ट करेंगे," बंदर ने कहा, "और फिर तुम्हें

रिहा करवा देंगे।" सूअर ने एक शैतान को और साधु सैंड ने दूसरे को पकड़कर रखा, बंदर पालकी में वापस बैठ गया और शैतानों को दरबार ले गया।

वे जल्द ही सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों पर पहुँच गए, जहाँ राजा को बताया गया कि शैतान आ गए हैं। राजा अपने अजगर सिंहासन से नीचे उतरे और तांग पुजारी तथा अपने नागरिक एवं सैन्य अधिकारियों के साथ उनका निरीक्षण करने लगे। एक शैतान के गाल फूले हुए थे, शरीर पर काले शल्क थे, मुँह नुकीला था और दाँत तेज़ थे। दूसरे की त्वचा चिपचिपी थी, पेट मोटा था, मुँह बड़ा था और मूंछें लंबी थीं। हालाँकि उनके पैर थे और वे चल सकते थे, यह स्पष्ट था कि उन्होंने केवल रूप परिवर्तन के माध्यम से मनुष्य का रूप धारण किया था।

“तुम कहाँ से आए हो, हे चोरों, हे दुष्ट आत्माओं?” राजा ने पूछा। “कब से इस देश को लूट रहे हो? किस साल तुमने हमारा खजाना चुराया? तुम कितने डाकू हो? तुम्हारे नाम क्या हैं? मुझे सब कुछ जानना है, और सच जानना है।” दोनों शैतान उसके सामने घुटने टेक दिए, और यद्यपि उनकी गर्दन से खून बह रहा था, उन्हें दर्द महसूस नहीं हुआ। उन्होंने बस इतना कहा:

तीन साल पहले, सातवें महीने के पहले दिन, असीम ऋषि ड्रैगन राजा अपने कई रिश्तेदारों को लेकर इस देश के दक्षिण-पूर्वी कोने में, यहाँ से लगभग चालीस मील दूर रैग्ड रॉक पर्वत पर स्थित ग्रीन वेव पूल में रहने के लिए आए थे। उनकी एक बेहद खूबसूरत बेटी है, जिसके लिए उन्होंने राजकुमार नाइनहेड को हमारे महल में रहने के लिए पति के रूप में नियुक्त किया था। उनकी जादुई शक्तियाँ अजेय हैं। उन्हें पता था कि आपके टावर में एक दुर्लभ खजाना है, इसलिए उन्होंने ड्रैगन राजा के साथ मिलकर उसे चुराने की योजना बनाई। पहले उन्होंने खून की बारिश करवाई और फिर बुद्ध की पवित्र वस्तु चुरा ली। अब वह वस्तु ड्रैगन महल को रोशन करती है, जो घोर अंधेरी रात में भी दिन के उजाले की तरह चमकता है। फिर राजकुमारी ने अपनी शक्तियों का उपयोग करके चुपके से रानी माँ का जादुई कवक चुरा लिया ताकि पूल में रखे खजाने को गर्म रखा जा सके। हम दोनों डाकुओं के सरदार नहीं हैं। हम तो ड्रैगन राजा द्वारा भेजे गए साधारण सैनिक हैं, जिन्हें कल रात पकड़ लिया गया था। यही सच है।

राजा ने कहा, "चूंकि तुमने यह स्वीकारोक्ति कर दी है, तो तुम मुझे अपने नाम क्यों नहीं बता देते?"

उनमें से एक ने जवाब दिया, "मैं बेनबोर्बा हूँ, और वह बाबोर्बेन है। मैं एक कैटफ़िश राक्षस हूँ और वह एक स्नेकहेड राक्षस है।"
तब राजा ने शाही अंगरक्षकों को उन्हें सलाखों के पीछे सुरक्षित रखने का आदेश दिया और कहा, "गोल्डन लाइट मठ के सभी भिक्षुओं को उनकी जंजीरों और बेड़ियों से मुक्त करो, और विदेश मंत्रालय को यूनिकोम हॉल में एक भोज आयोजित करने का निर्देश दो ताकि पवित्र भिक्षुओं को चोरों को पकड़ने में उनकी महान उपलब्धि के लिए बधाई दी जा सके। अब हम उन्हें सरगनाओं को पकड़ने के लिए आमंत्रित करेंगे।"
इसके बाद विदेश मंत्रालय ने मांसाहारी और शाकाहारी दोनों प्रकार के भोजन का एक दोहरा भोज आयोजित किया, जिसके लिए राजा ने संजांग और उनके शिष्यों को यूनिकॉर्न हॉल में अपने स्थान ग्रहण करने के लिए आमंत्रित किया।
“हे पवित्र भिक्षु, क्या मैं आपकी उपाधि जान सकता हूँ?” उन्होंने संज़ंग से कहा, जिन्होंने हाथ जोड़कर उत्तर दिया, “मेरा गृहस्थ उपनाम चेन है, और मेरा बौद्ध नाम शुआनज़ैंग है। मेरे सम्राट ने मुझे तांग उपनाम और संज़ंग की उपाधि प्रदान की है।”
राजा ने पूछा, "तुम्हारे शिष्यों की उपाधियाँ क्या हैं?"
"इनके पास कोई उपाधि नहीं है," संज़ंग ने उत्तर दिया। "वरिष्ठ का नाम सन वुकॉन्ग, द्वितीय का नाम झू वुनेन्ग और तृतीय का नाम शा वुजिंग है। ये नाम उन्हें दक्षिणी सागर की बोधिसत्व गुआनयिन ने दिए थे। जब वे मेरे शिष्य बने, तो मैंने वुकॉन्ग को सन (नवदीक्षित), वुनेन्ग को बाजी और वुजिंग को साधु (रेत) कहा।"
अध्याय 62
866
पश्चिम की यात्रा
फिर राजा ने संज़ंग को सम्मान के स्थान पर बैठने को कहा, जबकि बंदर उनके बाईं ओर और सुअर तथा साधु सैंड उनके दाईं ओर बैठे। उनका भोज पूर्णतया शाकाहारी था: फल, सब्ज़ियाँ, चाय और चावल। उनके सामने मांसाहारी व्यंजनों की एक मेज़ थी जिस पर राजा बैठे थे, और उनके नीचे सौ से अधिक मेज़ें सभी दरबारी और सैन्य अधिकारियों के लिए मांसाहारी व्यंजनों से सजी थीं। सभी अधिकारियों ने राजा की दयालुता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, और शिष्यों ने अपने गुरु की अनुमति से बैठ गए। जब सभी बैठ गए, तो राजा ने अपना प्याला उठाया, और यद्यपि संज़ंग ने नहीं पिया, उनके तीनों शिष्यों ने भोज की सफलता के लिए पिया। फिर दरबारी

संगीतकारों ने वाद्य यंत्र बजाना शुरू कर दिया।
ज़रा पिग को देखिए, वो जी भरकर खा रहा है, जैसे कोई बाघ या भेड़िया अपना सारा खाना चट कर जाता है और मेज़ खाली कर देता है। थोड़ी देर में और सूप और खाना लाया गया, वो भी उसी तरह गायब हो गया। जब भी नौकर शराब लाते, वो प्याला पूरा खाली कर देता, कभी मना नहीं करता। दावत दोपहर के बाद तक चलती रही, फिर खत्म हुई।
जब संज़ंग ने भव्य भोज के लिए धन्यवाद व्यक्त किया, तो राजा उन्हें और अधिक समय तक रोकना चाहते थे। "यह तो बस राक्षसों को पकड़ने के लिए आप पवित्र भिक्षुओं को धन्यवाद देने का एक छोटा सा तरीका था।" फिर उन्होंने विदेश मंत्रालय को भोज को जियानझांग महल में स्थानांतरित करने का आदेश दिया ताकि वे पवित्र भिक्षुओं के साथ इस बात पर चर्चा कर सकें कि मुख्य साजिशकर्ताओं को कैसे पकड़ा जाए और खजाने को पैगोडा में कैसे वापस लाया जाए।
"अगर हमें चोरों को पकड़ना है और खजाना बरामद करना है," संजांग ने कहा, "तो एक और भोज की जरूरत नहीं होगी।"
अब हम महाराज से विदा लेते हैं और राक्षसों को पकड़ने के लिए निकल पड़ते हैं।
लेकिन राजा ने उन्हें एक और भोज के लिए जियानझांग महल ले जाने पर जोर दिया। उन्होंने अपना प्याला उठाते हुए पूछा, "तुममें से कौन सा पवित्र भिक्षु उस सेना का नेतृत्व करेगा जो राक्षसों को पकड़ने जा रही है?"
"मेरे वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग को भेजिए," संज़ंग ने उत्तर दिया। महान ऋषि ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया।
राजा ने पूछा, "यदि पूजनीय सूर्य जा रहे हैं तो उन्हें कितने घुड़सवार और पैदल सैनिकों की आवश्यकता होगी, और वे कब रवाना होंगे?"
यह सुनकर सुअर खुद को रोक नहीं पाया और चिल्ला उठा, "हमें किसी सैनिक की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, और हमें इस बात की परवाह नहीं कि हम कब जाएंगे। अच्छा खाना खाकर और कुछ पेय पीकर हम दोनों अभी जाकर उन्हें पकड़ सकते हैं, बस उन्हें हाथ लगाकर।"
"बाजी," संजांग ने प्रसन्नता से कहा, "तुम बहुत उत्सुक हो रहे हो।"
"ठीक है," बंदर ने कहा। "साधु सैंड, आप स्वामी की रक्षा करें, हम दोनों चलते हैं।"
राजा ने कहा, "भले ही आप दोनों आदरणीय बुजुर्गों को सैनिकों की आवश्यकता न

हो, फिर भी आपको हथियारों की आवश्यकता अवश्य होगी।"
"हमें तुम्हारे हथियारों की ज़रूरत नहीं है," सुअर हँसते हुए बोला। "हमारे पास अपने हथियार हैं।" यह सुनकर राजा दो बड़े प्याले ले आया और उनकी यात्रा के लिए शुभकामनाएँ देते हुए उन्होंने पिया।
“अब हमारे पास पीने के लिए और कुछ नहीं है,” बंदर ने कहा। “लेकिन हम चाहते हैं कि शाही अंगरक्षक उन छोटे राक्षसों को हमारे पास ले आएं। हमें उनकी मार्गदर्शक के रूप में आवश्यकता है।” राजा ने आदेश दिया और उन्हें तुरंत लाया गया। फिर बंदर और सुअर, दोनों ने एक-एक राक्षस को मजबूती से पकड़ रखा था, हवा पर सवार होकर और जादुई शक्ति का उपयोग करके उन्हें दक्षिण-पूर्व की ओर ले गए। सचमुच: जब राजा और दरबार ने जादुई बादलों को देखा तभी यह बात सामने आई।
अध्याय 62
867
पश्चिम की यात्रा
क्या उन्हें इस बात का एहसास था कि वे चारों वास्तव में पवित्र भिक्षु थे?
अगर आपको नहीं पता कि गिरफ्तारी कैसे हुई और उन्हें क्या मिला, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 63
दो भिक्षुओं ने ड्रैगन महल में राक्षसों का संहार किया
ऋषियों ने बुराई का नाश किया और खजाने को पुनः प्राप्त किया
कथा के अनुसार, जिसाई के राजा और उनके उच्च-स्तरीय अधिकारियों ने देखा कि महान ऋषि बंदर और सुअर हवा और बादलों में गायब हो गए, और अपने साथ दो राक्षसों को भी ले गए। तब उन सभी ने स्वर्ग को प्रणाम करते हुए कहा, "उनकी प्रसिद्धि सत्य है। आज ही हम वास्तव में विश्वास कर सकते हैं कि ऐसे अमर और जीवित बुद्ध मौजूद हैं।" जैसे ही बंदर और सुअर दूर चले गए, राजा ने संजांग और साधु सैंड को धन्यवाद देने के लिए फिर से प्रणाम किया।
"हमारी नश्वर आंखें केवल इतना ही देख पाईं कि आपके विख्यात शिष्यों में चोर शैतानों को पकड़ने की शक्ति थी।"
हमें कभी एहसास नहीं हुआ कि आप हवाओं और बादलों पर सवार होने की शक्ति रखने वाले श्रेष्ठ अमर प्राणी हैं।"

"मेरे पास कोई धार्मिक शक्तियां नहीं हैं," संजांग ने उत्तर दिया। "अपनी यात्रा में मैं अपने तीन शिष्यों पर बहुत अधिक निर्भर रहा हूँ।"

"मैं आपको सच बताता हूँ, महाराज," फ्रायर सैंड ने कहा। मेरे वरिष्ठ सह-शिष्य स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि हैं, जिन्होंने धर्म परिवर्तन कर लिया है। उन्होंने एक बार स्वर्ग में प्रलय मचा दी थी, और एक लाख स्वर्गीय सैनिकों में से कोई भी उनके स्वर्ण-पट्टी वाले डंडे का मुकाबला नहीं कर सका। उन्होंने सर्वोच्च भगवान लाओ ज़ी और जेड सम्राट दोनों को भयभीत कर दिया था। मेरे अगले वरिष्ठ सह-शिष्य मार्शल तियान पेंग हैं, जो अब एक निष्ठावान बौद्ध हैं। उन्होंने एक बार स्वर्ग नदी पर 80,000 नाविकों का नेतृत्व किया था। हममें से केवल मेरे पास कोई जादुई शक्तियां नहीं हैं: प्रतिज्ञा लेने से पहले मैं पर्दा उठाने वाला सेनापति था। हम राक्षसों और दानवों को पकड़ने, चोरों और भगोड़ों को गिरफ्तार करने, बाघों और अजगरों को वश में करने और आकाश को कुएँ में धकेलने के अलावा किसी काम के नहीं हैं। और हम समुद्र को मथने और नदियों को उलटने के बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं। ओह हाँ, और फिर बादलों और कोहरे पर सवार होना, हवा और बारिश बुलाना, आकाश में तारों को इधर-उधर करना, पहाड़ों को उठाना और चंद्रमा का पीछा करना भी है: लेकिन ये तो बस कुछ ही हैं। अतिरिक्त लोगों।" इन सब बातों ने राजा को उनके प्रति अत्यंत आदरपूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया। वास्तव में, उन्होंने संजांग को सम्मान के स्थान पर आमंत्रित करते हुए, उन्हें "बुद्ध" कहकर संबोधित किया और भिक्षु सैंड और अन्य लोगों को बोधिसत्व कहा। सभी नागरिक और सैन्य अधिकारी प्रसन्न हुए और देश के नागरिकों ने उनके समक्ष सिर झुकाया।

कहानी आगे बढ़ती है और महान ऋषि बंदर और सुअर तूफानी हवा पर सवार होकर रैग्ड रॉक माउंटेन पर स्थित ग्रीन वेव पूल तक पहुंचते हैं, जहां वे अपने बादलों को रोकते हैं।

अपने सोने की पट्टी वाले गदा पर जादुई साँस फूँकते हुए वुकॉन्ग ने उसे रूप बदलने का आदेश दिया और उसे एक भिक्षु के चाकू में बदल दिया। उसने उसी चाकू से नाग के सिर का एक कान और कैटफ़िश का निचला होंठ काट दिया, फिर दोनों राक्षसों को पानी में फेंकते हुए चिल्लाया, "अनंत ऋषि ड्रैगन राजा को बता दो कि भगवान सूर्य, स्वर्ग के समान महान ऋषि, यहाँ हैं। यदि वह चाहते हैं कि मैं उनकी और उनके परिवार की जान बख्श दूँ, तो उन्हें जिसाई में स्वर्ण प्रकाश मठ के पैगोडा का खजाना

तुरंत सौंप देना चाहिए। यदि उनकी ओर से 'ना' का जरा सा भी संकेत मिला, तो मैं इस तालाब को इतना हिला दूँगा कि इसमें पानी ही नहीं बचेगा और फिर उनके पूरे परिवार का सफाया कर दूँगा।"

अध्याय 63

868

पश्चिम की यात्रा

यह आदेश मिलते ही दोनों छोटे शैतान बड़ी पीड़ा में अपनी जान बचाने के लिए भागे और जंजीरों, रस्सियों और जंजीरों से जकड़े हुए पानी में कूद गए, जिससे विभिन्न कछुए, मगरमच्छ, झींगा, केकड़े और मछली की आत्माएं घबरा गईं और उनके चारों ओर जमा होकर पूछने लगीं, "तुम्हें रस्सी और जंजीरों से क्यों बांधा गया है?"

उनमें से एक ने अपना सिर हिलाया और कान पर हाथ रखकर अपनी पूंछ लहराई; दूसरे ने मुंह ढककर पैर पटके और छाती पीटी। दोनों ने शोर मचाते हुए और हंगामा मचाते हुए ड्रैगन राजा के महल में जाकर कहा, "महाराज, विपत्ति आ गई है।"

असीम ऋषि ड्रैगन राजा अपने दामाद राजकुमार नाइनहेड के साथ शराब पी रहे थे, तभी वे दोनों वहाँ पहुँचे। "क्या आपदा है?" ड्रैगन राजा ने अपना प्याला नीचे रखते हुए पूछा।

“हम कल रात पहरा दे रहे थे,” उन्होंने बताया, “जब तांग पुजारी और नवोदित सन शिवालय की सफाई कर रहे थे, तब उन्होंने हमें पकड़ लिया। हमें जंजीरों में बांधकर आज सुबह राजा के पास ले जाया गया। फिर नवोदित सन शिवालय और पिग हमें घसीटते हुए यहाँ ले आए। हममें से एक का कान काट दिया गया और दूसरे का होंठ। फिर उन्होंने हमें पानी में फेंक दिया ताकि हम शिवालय के शिखर से खजाना मांग सकें।” फिर उन्होंने पूरी कहानी विस्तार से सुनाई। स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि सन शिवालय की खबर सुनकर प्राचीन अजगर इतना भयभीत हो गया कि उसकी आत्मा शरीर छोड़कर आकाश में बिखर गई।

"दामाद," उसने कांपते हुए राजकुमार से कहा, "किसी और से निपटना तो आसान होता; लेकिन अगर यह वही है तो यह बहुत भयानक होगा।"

“शांत हो जाइए, ससुर जी,” राजकुमार ने उत्तर दिया। “मैं बचपन से ही मार्शल आर्ट का अभ्यास कर रहा हूँ और दुनिया के कई नायकों से मेरी दोस्ती है। उसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरे साथ तीन दौर के बाद मैं गारंटी देता हूँ कि वह नीच अपना

सिर इतना नीचे झुकाकर आत्मसमर्पण कर देगा कि वह आपकी ओर देखने की हिम्मत भी नहीं करेगा।"

वह शानदार राक्षस उछलकर खड़ा हुआ, अपना कवच पहना, अपना हथियार, अर्धचंद्राकार धार वाला भाला उठाया, महल से बाहर निकला, पानी को चीरता हुआ सतह पर पहुँचा और पुकार कर बोला, "यह 'स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि' वाली बात क्या है? आओ और तुरंत आत्मसमर्पण कर दो।" किनारे पर खड़े सुअर और बंदर ने देखा कि वह दुष्ट आत्मा किस तरह से कपड़े पहने हुए थी:

उसके सिर पर चांदी का हेलमेट था।
सबसे सफेद बर्फ को भी मात दे दिया;
वह कवच जो उसने पहना था
शरद ऋतु की ठंड से अधिक था।
इसके ऊपर जटाधारी कपड़े का युद्ध वस्त्र था।
ड्रैगन, बादल के पैटर्न और मोतियों के साथ;
उसकी कमर पर गैंडे के पैटर्न वाली बेल्ट थी।
वह सोने में लिपटे अजगर की तरह था।
उसके हाथ में अर्धचंद्राकार भाला था।
वह बिजली की तरह उड़ा और चमका;

उसके पैरों में सुअर की खाल के जूते
पानी या लहरों की तरह सहजता से बह रहा था।
दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था मानो उसका केवल एक ही चेहरा और सिर हो।
लेकिन पास से देखने पर उसके चारों ओर कई चेहरे दिखाई दे रहे थे:
आगे की आंखें और पीछे की आंखें
जो सभी दिशाओं में देख सकता था;
बाईं ओर मुंह और दाईं ओर मुंह,
उनमें से नौ लोग थे, सभी बातें कर रहे थे।
उसकी एक चीख से आकाश कांप उठता था।

जैसे तारों के बीच सारस की पुकार गूंजती है।
जब किसी ने जवाब नहीं दिया तो उसने फिर चिल्लाकर पूछा, "तुममें से कौन स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि है?"
अपने सिर के चारों ओर बंधी सुनहरी पट्टी को छूते हुए और अपने लोहे के डंडे को हाथ में पकड़े हुए बंदर ने उत्तर दिया, "मैं हूँ।"
"तुम कहाँ रहते हो?" राक्षस ने पूछा। "तुम कहाँ से आए हो? राजा के मंदिर की देखभाल करने के लिए तुम जिसाई क्यों आए हो? तुमने हमारे दो अधिकारियों को पकड़कर उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े करने की इतनी धृष्टता क्यों की? और अब तुम यहाँ युद्ध की मांग क्यों कर रहे हो?"
बंदर ने गुस्से से जवाब दिया, "चोर शैतान, यह तो साफ है कि तुम मुझे नहीं जानते। ज़रा पास आओ, मैं तुम्हें बताता हूँ।"
मेरे लोग फूलों और फलों के पर्वत से आते हैं।
समुद्र के बीचोंबीच स्थित जल परदे वाली गुफा से।
मैंने बचपन से ही अपने शरीर को अविनाशी बना लिया है;
जेड सम्राट ने मुझे स्वर्ग के समतुल्य ऋषि के रूप में सृजित किया।
जब मैंने डिपर और बुल पैलेस में खूब उत्पात मचाया था
स्वर्ग के सारे देवता भी मुझे हराने के लिए काफी नहीं थे।
तब बुद्ध से उनकी महान और सूक्ष्म शक्तियों का उपयोग करने के लिए कहा गया;
उनकी असीम बुद्धि नश्वर संसार से परे थी।
अध्याय 63
870
पश्चिम की यात्रा
जब मैंने अपनी शक्तियों को उसकी शक्तियों से मिलाया और कलाबाजियां कीं
उसका हाथ पहाड़ में बदल गया और उसने मुझे उसके नीचे कुचल दिया।
मुझे वहां पूरे पांच सौ वर्षों तक रखा गया।
और उसे तभी रिहा किया गया जब गुआनयिन ने उसे परिवर्तित किया।
क्योंकि संज़ंग पश्चिमी स्वर्ग जा रहा था
दूर स्थित गिद्ध शिखर पर बुद्ध के वचनों की खोज करना।
फिर उसने मुझे पवित्र भिक्षु के साथ जाने के लिए मुक्त कर दिया।

अपने सभी दोषों को दूर करने और अपने आचरण को शुद्ध करने के लिए।
हमारी यात्रा हमें पश्चिमी क्षेत्र में स्थित जिसाई ले गई।
जहां मठवासी पीढ़ियों के साथ क्रूरतापूर्वक दुर्व्यवहार किया गया है।
जब हमने दया भाव से उनसे पूछा कि क्या हुआ था
हमें पता चला कि पैगोडा अब प्रकाश से जगमगा नहीं रहा था।
मेरे मालिक ने कारण जानने के लिए उसे पूरी तरह से साफ कर दिया।
रात के तीसरे पहर की गहरी खामोशी में,
हमने उन शैतानों को पकड़ लिया और उनसे कबूलनामे हासिल कर लिए:
उन्होंने कहा कि तुम ही वह चोर हो जिसने महान खजाना चुराया था, और प्राचीन ड्रैगन राजा के साथ मिलकर डकैती की साजिश रच रहे थे।
और वह राजकुमारी जिसे असीम ऋषि के नाम से भी जाना जाता है।
तुम्हारे रक्त की वर्षा ने पैगोडा की जादुई रोशनी को बुझा दिया।
और आप लोग उस खजाने को वापस यहाँ लाए ताकि आप खुद उसका इस्तेमाल कर सकें।
उन्होंने जो कबूलनामा किया वह हर तरह से सच था।
और हम यहां महामहिम के स्वयं के आदेश पर आए हैं।
इसीलिए हमने आपको ढूंढा और आपको मुकाबले के लिए चुनौती दी:
अब आपको मेरा नाम दोबारा कभी पूछने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
राजा को उसका खजाना तुरंत लौटा दो।
यदि आप अपने परिवार के सभी सदस्यों की जान बचाना चाहते हैं।
अध्याय 63
871
पश्चिम की यात्रा
यदि तुम अपनी मूर्खता में प्रतिरोध करने का प्रयास करो
तुम्हारा तालाब सूख जाएगा और तुम्हारा महल चकनाचूर हो जाएगा।"
यह सब सुनकर राजकुमार ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "यदि आप भिक्षु हैं और धर्मग्रंथ लाने जा रहे हैं, तो आपको बेवजह आरोप नहीं लगाने चाहिए। अगर मैंने उनका खजाना चुरा लिया तो क्या हुआ? आप अपने बौद्ध धर्मग्रंथ लाने जा रहे हैं, इससे आपका कोई लेना-देना नहीं है। आप यहाँ झगड़ा करने क्यों आए हैं?"

“हे दुष्ट चोर! तुझे सही-गलत का कोई ज्ञान नहीं है। राजा ने हम पर कोई उपकार नहीं किया। हम उसके राज्य का जल नहीं पीते और न ही उसका अनाज खाते हैं। हम पर उसके लिए कुछ भी करने का कोई दायित्व नहीं था। लेकिन तूने उसका खजाना चुरा लिया, उसके मंदिर को अपवित्र कर दिया और स्वर्ण प्रकाश मठ के भिक्षुओं को वर्षों तक कष्ट दिया। वे हमारे साथी विश्वासी हैं, इसलिए हम उनके लिए प्रयास करेंगे और उनके साथ हुए अन्याय का निवारण करेंगे।”

"तो ऐसा लगता है कि तुम लड़ाई चाहते हो," राजकुमार ने कहा। "जैसा कि कहावत है, योद्धा अनावश्यक लड़ाई से बचता है; लेकिन एक बार शुरू हो गया तो कोई दया नहीं होगी, तुम पल भर में मर जाओगे, और शास्त्र लाने जाने का तुम्हारा प्रयास यहीं समाप्त हो जाएगा।"

"अरे, लानत चोर," बंदर ने पलटकर शाप दिया, "तुम्हें लगता होगा कि तुम बहुत बड़े योद्धा हो, इतनी बड़ी-बड़ी बातें करते हो।"

इधर आओ और इसे ले लो!” राजकुमार जरा भी विचलित नहीं हुआ और उसने अपने अर्धचंद्राकार भाले से लाठी को रोक दिया। रैग्ड रॉक पर्वत पर एक भयंकर युद्ध छिड़ गया।

क्योंकि राक्षस ने खजाना चुरा लिया था, इसलिए पैगोडा में अंधेरा था;
बंदर राजा की खातिर राक्षसों को पकड़ने गया था;
वे नन्हे शैतान अपनी जान बचाने के लिए वापस पानी में भाग गए;
प्राचीन अजगर ने अपने भय में ही परामर्श किया।
प्रिंस नाइनहेड ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।
वह कवच पहनकर अपनी शक्तियों का प्रयोग करने के लिए बाहर निकला।
क्रोधित महान ऋषि स्वर्ग के समतुल्य
उसने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी उठाई जो वास्तव में बहुत कठोर थी:
राक्षस की खान में अठारह आँखें थीं
वे चारों दिशाओं में देखते हुए चमक रहे थे।
बंदर की लोहे जैसी भुजाएँ अत्यंत मजबूत थीं।
और चारों ओर शुभ प्रकाश जगमगा रहा था।

पश्चिम की यात्रा
भाला नए चंद्रमा के अर्धचंद्र के समान था।
लाठी उड़ते हुए पाले की तरह थी।
"गलतियों को सुधारने की कोशिश करना क्यों नहीं छोड़ देते?"
"पैगोडा का खजाना चुराना तुम्हारी गलती थी।"
तमीज़ से पेश आओ, दुष्ट शैतान!
और अगर तुम जीना चाहते हो तो मुझे खजाना वापस कर दो।"
लाठी और भाला वर्चस्व के लिए आपस में लड़े:
इस लड़ाई में कोई भी विजेता बनकर नहीं उभरा।
दोनों तीस से अधिक दौर तक जमकर लड़े, लेकिन कोई भी विजेता नहीं बन पाया। पहाड़ पर खड़ा सुअर, जो उनकी लड़ाई की सुंदरता और रोमांच का आनंद ले रहा था, ने अपना रेक उठाया और पीछे से दुष्ट आत्मा पर वार किया। अब राक्षस के नौ सिरों में आंखें थीं, और वह सुअर को अपने पीछे आते हुए स्पष्ट रूप से देख सकता था, इसलिए उसने रेक को रोकने के लिए अपने भाले के पिछले हिस्से का इस्तेमाल किया और लाठी को ब्लेड से रोके रखा। उसने छह या सात दौर तक और प्रतिरोध किया, जब तक कि वह आगे और पीछे से उस पर वार कर रहे हथियारों का सामना नहीं कर सका, तब वह लुढ़क कर दूर चला गया और नौ सिरों वाले पक्षी के रूप में अपने असली रूप में आकाश में छलांग लगा दी। वह बेहद घिनौना लग रहा था: उसे देखकर कोई भी डर से मर सकता था।
उसका पूरा शरीर पंखों और रुई से ढका हुआ था।
उसकी परिधि लगभग बारह फीट थी।
और वह एक बूढ़े मगरमच्छ जितना लंबा था।
उसके दोनों पैर किताब के आकार के ब्लेड की तरह तेज थे।
और उसके नौ सिर एक वृत्त में रखे हुए थे।
जब उसने अपने पंख खोले तो वह शानदार ढंग से उड़ सकता था:
यहां तक कि रॉक भी उसकी असाधारण ताकत का मुकाबला नहीं कर सकता था।
उनकी आवाज आकाश के छोर तक गूंज सकती थी।
जिसकी गूंज सारस की आवाज से भी कहीं अधिक तेज थी।
उसकी अनेक आँखों से सुनहरी रोशनी की तेज चमक निकली;

उसका गर्व आम पक्षियों के गर्व से कहीं अधिक था।
अध्याय 63
873
पश्चिम की यात्रा
यह दृश्य देखकर सुअर घबरा गया और बोला, "भाई, मैंने अपने पूरे जीवन में इतना बदसूरत कुछ नहीं देखा। वह भयानक पक्षी किस तरह के खून से पैदा हुआ होगा?"
“उसके जैसा कोई नहीं,” बंदर ने जवाब दिया, “कोई नहीं। मैं उसे मारने जा रहा हूँ।”
तब महान ऋषि अपने बादल पर सवार होकर हवा में उछल पड़े और अपनी गदा से राक्षस के सिर पर प्रहार किया। राक्षस ने अपने शरीर की शक्ति का प्रदर्शन करते हुए नीचे की ओर झपट्टा मारा, अपने पंख फैलाए, फिर दहाड़ते हुए मुड़ा और पहाड़ के ऊपर से नीचे आते हुए अपनी कमर से एक और सिर निकाला जिसका मुँह खून के कटोरे की तरह चौड़ा खुला हुआ था। उसकी चोंच ने पहले ही प्रयास में सुअर के रोएँ पकड़ लिए, फिर उसने सुअर को तालाब तक घसीटा और उसमें खींच लिया।
ड्रैगन महल के बाहर वापस आते ही उसने अपना रूप बदल लिया, सुअर को जमीन पर फेंक दिया और कहा, "तुम बच्चे कहाँ हो?"
इसके बाद मैकेरल, ट्राउट, कार्प, मैंडरिन मछली, कठोर और नरम खोल वाले कछुए और मगरमच्छ, जो सभी कवचधारी राक्षस थे, "यहाँ आओ!" चिल्लाते हुए आगे बढ़े।
राजकुमार ने कहा, "इस भिक्षु को ले जाओ और मेरे लिए इसे बांध दो। यह हमारे गश्ती पहरेदारों का बदला होगा।"
चिल्लाते और धक्का-मुक्की करते हुए, आत्माएं सुअर को अंदर ले गईं, जिससे प्राचीन ड्रैगन राजा बहुत प्रसन्न हुआ। वह राजकुमार से मिलने बाहर आया और बोला, "बधाई हो, दामाद जी। आपने इसे कैसे पकड़ा?" राजकुमार ने उसे पूरी कहानी सुनाई, जिसके बाद प्राचीन ड्रैगन ने एक भव्य भोज का आयोजन किया, जिसका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है।
इसके बजाय कहानी बताती है कि दुष्ट आत्मा द्वारा सुअर को पकड़ लिए जाने के बाद बंदर ने भयभीत होकर सोचा, "यह राक्षस तो भयानक है। लेकिन अगर मैं स्वामी से मिलने दरबार में वापस गया तो राजा शायद मुझ पर हँसेगा। लेकिन अगर मैंने उसे फिर से युद्ध के लिए चुनौती दी तो मैं अकेले उसका सामना कैसे करूँगा? इसके अलावा, मुझे पानी में रहने की आदत नहीं है। मुझे अंदर जाने के लिए खुद को किसी

रूप में बदलना होगा और देखना होगा कि दुष्ट आत्मा ने सुअर के साथ क्या किया है। अगर संभव हो तो मैं उसे चुपके से वहाँ से निकाल लाऊँगा ताकि वह मेरी मदद कर सके।"

उस महान ऋषि ने फिर अपनी उंगलियों से जादू किया, खुद को झटका दिया, फिर से केकड़े में बदल गए और पानी में तब तक गोता लगाते रहे जब तक कि वे फिर से मेहराब के बाहर नहीं आ गए। उन्हें यह रास्ता तब से पता था जब वे पिछली बार यहाँ आए थे और बैल राजा के जल-निवारक सुनहरी आँखों वाले जानवर को चुराया था। जब वे महल के द्वार पर पहुँचे तो वे तिरछे होकर अंदर चले गए और देखा कि प्राचीन ड्रैगन राजा, नौ सिर वाला राक्षस और उनका पूरा परिवार एक साथ जश्न मनाते हुए शराब पी रहे थे। ज्यादा पास जाने की हिम्मत न करते हुए, बंदर पूर्वी बरामदे की छत के नीचे रेंग गया, जहाँ कई झींगा और केकड़े की आत्माएँ मस्ती कर रही थीं। उसने कुछ देर उनकी बातें सुनीं और फिर उनकी नकल करते हुए कहा, "क्या राजकुमार जिस लंबे थूथन वाले भिक्षु को यहाँ लाया था, वह मरा हुआ है या जीवित?"

सभी आत्माओं ने उत्तर दिया, "वह जीवित है, और बंधा हुआ है। क्या तुम उसे उस पश्चिमी बरामदे के नीचे कराहते हुए नहीं देख सकते?"

फिर बंदर चुपचाप रेंगते हुए पश्चिमी बरामदे की ओर गया, जहाँ उसने सचमुच सुअर को एक खंभे से बंधा हुआ और कराहते हुए पाया। "क्या तुम मुझे पहचान सकते हो, सुअर?" उसने पूछा। सुअर बंदर की आवाज़ से समझ गया कि वह कौन है।

“ये तो बहुत बुरा हुआ, भाई,” उसने कहा। “राक्षस ने मुझे पकड़ लिया।” चारों ओर देखकर यह सुनिश्चित करने के लिए कि वहाँ कोई नहीं है, बंदर ने अपने पंजों से रस्सियाँ काट दीं और सुअर को जाने को कहा। “मैं क्या करूँ, भाई?” सुअर ने कहा।

"उसके पास मेरा रेक है।"

"क्या तुम्हें पता है उसने इसे कहाँ रखा है?" बंदर ने पूछा।

"मुझे लगता है कि वह इसे महल के मुख्य हॉल में ले गया होगा," सुअर ने जवाब दिया।

अध्याय 63

874

पश्चिम की यात्रा

"मेहराब के नीचे मेरा इंतज़ार करो," बंदर ने कहा, और सुअर अपनी जान बचाने के

लिए चुपके से निकल गया। बंदर मुख्य हॉल की छत पर चढ़ गया, जहाँ से उसने बाईं ओर सुअर के रेक की तेज़ रोशनी देखी, खुद को अदृश्य कर लिया और महल से चुपके से बाहर निकल गया। मेहराब के नीचे पहुँचकर उसने पुकारा, "सुअर, अपना हथियार उठाओ।"

“तुम आगे बढ़ो, भाई,” सुअर ने अपने रेक से दोबारा मिलकर कहा। “मैं उस महल पर हमला करने जा रहा हूँ। अगर मैं जीत गया तो मैं उनके पूरे परिवार को पकड़ लूँगा, और अगर मैं हार गया तो तुम किनारे पर मेरा इंतज़ार करोगे मुझे बचाने के लिए।” बंदर, जो इस सुझाव से बहुत खुश हुआ, ने उसे सावधान रहने के लिए कहा। “मैं उससे नहीं डरता,” सुअर ने जवाब दिया। “मुझे पानी के बारे में कुछ तो पता है।” फिर बंदर उसे छोड़कर पानी में से ऊपर आ गया।

इस बीच, पिग ने अपनी काली कमीज़ की बेल्ट कस ली, दोनों हाथों से अपना रेक पकड़ा और एक ज़ोरदार युद्ध-घोष के साथ आगे बढ़ा, जिससे जलपरी जनजाति के सभी सदस्य महल में दौड़ पड़े और चिल्लाने लगे, "विनाश!"

लंबे थूथन वाला भिक्षु अपने बंधनों से मुक्त होकर वापस अंदर आ रहा है। प्राचीन ड्रैगन राजा, नौ सिर वाला राक्षस और परिवार के बाकी सदस्य अचानक हमले से अचंभित रह गए और वे बस उछलकर भाग गए और अपनी जान बचाने के लिए छिप गए। वह मूर्ख, अपनी जान की परवाह किए बिना, हॉल में घुस गया और अपने रेक से सब कुछ तोड़ता चला गया। उसने सब कुछ तहस-नहस कर दिया: दरवाजे, मेजें, कुर्सियाँ, शराब के प्याले और बाकी सब कुछ। इसे साबित करने के लिए एक कविता भी है:

जब जल राक्षस वनमाँ को ले गया
उस बुद्धिमान बंदर ने कठिन बचाव कार्य से जरा भी विचलित नहीं हुआ।
एक व्यक्ति ने अपने गुप्त कौशल का उपयोग करके ताले खोले;
दूसरे ने घृणा और क्रोध में अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।
राजकुमार अपनी राजकुमारी को सुरक्षित स्थान पर ले जाकर भाग गया;
कांपते हुए अजगर से कोई आवाज नहीं सुनाई दी।
महल की लाल रंग की खिड़कियाँ और दरवाजे पूरी तरह से चकनाचूर हो गए थे;
अजगर की संतानें बुरी तरह डर गई थीं।
सुअर ने कछुए के खोल से बनी जाली को चूर-चूर कर चूर-चूर कर दिया और मूंगे के

पेड़ों को टुकड़ों में तोड़ दिया।
जब नौ सिर वाले राक्षस ने अपनी राजकुमारी को सुरक्षित रूप से अंदर छिपा लिया, तो उसने अपना अर्धचंद्राकार भाला उठाया और महल के रहने वाले कमरों के सामने खड़े सुअर की ओर दौड़ते हुए चिल्लाया, "बेवकूफ! सूअर! मेरी परिवार को आतंकित करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"
“चोर शैतान,” सुअर ने जवाब दिया। “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे पकड़ने की? जब तक तुमने मुझे इसमें घसीटा नहीं, तब तक यह मेरा कोई लेना-देना नहीं था। खजाना मुझे तुरंत वापस दे दो ताकि मैं उसे राजा के पास ले जा सकूँ, बस बात खत्म। वरना तुम्हारे परिवार के एक-एक सदस्य को मार डाला जाएगा।” राक्षस दया के मूड में नहीं था: उसने अपने दांत पीसे और सुअर से लड़ने लगा। तभी प्राचीन अजगर थोड़ा शांत हुआ और उसने अपने अजगर पुत्रों और पोतों को सुअर को घेरने और भाले और तलवारों से उस पर हमला करने के लिए भेजा। जब सुअर ने देखा कि हालात उसके पक्ष में नहीं जा रहे हैं, तो वह बेहोश होकर भाग गया, और प्राचीन अजगर और उसकी सेना उसके पीछे-पीछे भागी। एक पल बाद वह पानी से ऊपर उछला और वे सभी तालाब के ऊपर आ गए।
अध्याय 63
875
पश्चिम की यात्रा
किनारे पर इंतज़ार कर रहे बंदर ने अचानक देखा कि सुअर के पीछे-पीछे वे लोग पानी से बाहर आ रहे हैं। उसने एक पैर बादल पर रखा और "वहीं रुक जाओ" चिल्लाते हुए अपना लोहे का डंडा निकाल लिया। उसके पहले ही वार से प्राचीन ड्रैगन राजा चूर-चूर हो गया। यह एक भयानक दृश्य था: उसका शव और उससे उतरी खालें तालाब की सतह पर तैर रही थीं, जो उसके खून से लाल हो गई थी। उसके बेटे और पोते सब डर के मारे अपनी जान बचाकर भाग गए, जबकि राजकुमार नाइनहेड शव को पानी के नीचे स्थित महल में ले गया।
बंदर और सुअर भाई उनका पीछा करने नहीं गए, बल्कि बैंक लौटकर हुई घटना पर चर्चा करने लगे। सुअर ने कहा, "मैंने उसकी खूब पिटाई की है। मैं अपने फावड़े से अंदर घुस गया और सब कुछ तहस-नहस कर दिया। वे सब बुरी तरह डर गए थे। मैं राजकुमार से लड़ ही रहा था कि तभी प्राचीन ड्रैगन राजा ने मुझ पर हमला कर दिया।

उसे मारने के लिए धन्यवाद। अब वे कमीने वापस चले गए हैं, वे मातम और अंतिम संस्कार में इतने व्यस्त होंगे कि दोबारा बाहर नहीं आएंगे। वैसे भी अब देर हो रही है। हम क्या करेंगे?"

"देर होने की चिंता मत करो," बंदर ने जवाब दिया। "यह हमारा मौका है। वापस नीचे जाओ और फिर से हमला करो।"

तुम्हें खजाना लाना ही होगा ताकि हम वापस अदालत जा सकें।" वह मूर्ख आलस के मारे नीचे जाने से बचने के लिए तरह-तरह के बहाने बना रहा था, लेकिन बंदर ने ज़िद की: "चिंता मत करो भाई। बस उसे फिर से बाहर निकालो जैसे तुमने अभी किया था और मैं उसे मार डालूंगा।"

जब वे दोनों बातें कर रहे थे, तभी उन्हें तेज़ हवा की गर्जना सुनाई दी और पूरब से काले और घने बादल दक्षिण की ओर बढ़ते हुए दिखाई दिए। जब बंदर ने नज़दीक से देखा, तो उसने पाया कि वे प्रख्यात ऋषि एरलांग थे, जो बेर पहाड़ी के छह भाइयों के साथ आए थे। उनके पास बाज़ और शिकारी कुत्ते थे और वे अपने साथ लोमड़ी, खरगोश, जल-हिरण और हिरण लाए थे जिन्हें उन्होंने मारा था। उन सभी की कमर में धनुष और धनुष बंधे थे और वे अपने साथ तेज़ तलवारें लिए हुए थे। वे हवा और बादलों पर सवार होकर आए थे।

"सूअर," बंदर ने कहा, "मेरे सात ऋषि-शपथधारी भाई आ रहे हैं। चलो उन्हें रोकते हैं और उनसे इस लड़ाई में हमारी मदद करने के लिए कहते हैं। इससे हमारी जीत की संभावना बहुत बढ़ जाएगी।"

"अगर वे तुम्हारे शपथ लिए हुए भाई हैं तो उनका तुम पर यह फर्ज बनता है," पिग ने कहा।

“मुसीबत बस इतनी है कि उनमें सबसे बड़े, प्रतापी ऋषि ने एक बार मुझे आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया था, इसलिए मुझे उनका सामना करने में शर्म आती है,” बंदर ने कहा। “मैं चाहता हूँ कि आप ऊपर जाएँ, बादलों को रोकें और कहें, ‘हे प्रभु, कृपया एक क्षण रुकिए। स्वर्ग के समान महान ऋषि आपको प्रणाम करना चाहते हैं।’ मुझे यकीन है कि वे रुक जाएँगे। मैं उनका सामना तभी कर पाऊँगा जब वे नीचे उतर आएँगे।”

फिर वह मूर्ख अपने बादल पर सवार होकर पहाड़ की चोटी पर पहुंचा और एरलांग को रोकने के लिए आगे बढ़ा। उसने ऊँचे स्वर में चिल्लाते हुए कहा, "हे प्रभु, क्या आप

थोड़ी देर के लिए धीमे हो सकते हैं? स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि आपसे मिलना चाहते हैं।" यह सुनकर प्रभु एरलांग ने छह भाइयों को रुकने का आदेश दिया और सुअर से विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया।
उन्होंने पूछा, "स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि कहाँ हैं?"
"पहाड़ की तलहटी में आपके बुलावे का इंतजार कर रहा हूँ," सुअर ने उत्तर दिया।
एर्लांग ने कहा, "भाइयों, जाओ और उससे तुरंत ऊपर आने का अनुरोध करो।"
छह भाई कांग, झांग, याओ, ली, गुओ और झी सभी अपने-अपने शिविरों से बाहर आए और बोले, "महान ऋषि, हमारे सबसे बड़े भाई ने आपके लिए निमंत्रण भेजा है।" बंदर आगे बढ़ा, उन्हें प्रणाम किया, फिर उनके साथ पहाड़ की चोटी तक गया, जहां भगवान एरलांग ने उसका स्वागत किया, उसका हाथ पकड़ा और शिष्टाचार का सम्मान किया।
“हे महान ऋषि,” उन्होंने कहा, “मैं आपको आपके भयानक कष्टों से मुक्ति पाने और बौद्ध धर्म में परिवर्तित होने पर हार्दिक बधाई देता हूँ। शीघ्र ही आप सफल होंगे और अपने कमल सिंहासन पर विराजमान होंगे।”
अध्याय 63
876
पश्चिम की यात्रा
“मैं आपकी बधाई का पात्र नहीं हूँ,” बंदर ने उत्तर दिया। “मुझ पर बहुत बड़ा एहसान है जिसे मैंने अभी तक पूरा करना शुरू भी नहीं किया है। मुझे बचा लिया गया है और मैं पश्चिम की ओर जा रहा हूँ, लेकिन अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि हम सफल होंगे या नहीं। जैसा कि हमने जिसाई राज्य में कुछ भिक्षुओं को विपत्ति से बचाने का वादा किया था, हम यहाँ एक राक्षस को पकड़ने और खजाने की वापसी की मांग करने आए हैं। बड़े भाई, आपको इस रास्ते से गुजरते देखकर, मैं सोच रहा हूँ कि क्या मैं आपको रुकने और हमारी मदद करने के लिए मना सकता हूँ। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप कहाँ से आए हैं और क्या आप मदद करने के लिए तैयार होंगे?”
"मैं अपने भाइयों के साथ शिकार पर गया था और घर लौट रहा हूँ क्योंकि मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं था," एरलांग ने जवाब दिया।
"हे महान ऋषि, हमारी पुरानी मित्रता का सम्मान करते हुए मुझे यहाँ रुकने के लिए कहने के लिए मैं आपका आभारी हूँ। यदि आप चाहें तो मैं निश्चित रूप से किसी

राक्षस को वश में करने में आपकी सहायता करूँगा। यहाँ किस प्रकार के राक्षस हैं?"
"क्या तुम भूल गए हो?" छह भाइयों ने पूछा। "यह रैग्ड रॉक माउंटेन है, और इसके नीचे ग्रीन वेव पूल है, जो अनंत ऋषि ड्रैगन का महल है।"
“परमज्ञानी प्राचीन ड्रैगन कोई उपद्रवी नहीं है,” एरलांग ने आश्चर्य से कहा। “वह पैगोडा को कैसे लूट सकता है?”
“हाल ही में उसका दामाद उसके साथ रहने लगा है,” बंदर ने जवाब दिया, “एक नौ सिर वाला राक्षस जो आत्मा बन गया है। उसने अपने ससुर के साथ मिलकर यह सब साजिश रची। उन्होंने जिसाई पर खून की बारिश की और फिर गोल्डन लाइट मठ के पैगोडा के ऊपर से पवित्र बुद्ध अवशेष चुरा लिए। राजा ने अपनी अज्ञानता में भिक्षुओं को गिरफ्तार करवाकर यातनाएं दीं। मैंने पैगोडा में उनके दो साथियों को पकड़ लिया, जिन्हें गश्त पर भेजा गया था, जब मेरे गुरु ने दया करके एक रात पैगोडा को खाली करवा दिया था, और उन्होंने आज सुबह महल में सब कुछ कबूल कर लिया। जब राजा ने हमारे गुरु को इन राक्षसों को पकड़ने का आदेश दिया, तो हम दोनों को यहाँ भेजा गया। पहली लड़ाई में नौ सिर वाले राक्षस का एक और सिर उसकी कमर से निकला और वह सूअर को उठाकर ले गया। मुझे पानी में जाकर उसे बचाने के लिए अपना रूप बदलना पड़ा। फिर एक और बड़ी लड़ाई हुई जिसमें मैंने प्राचीन ड्रैगन राजा को मार डाला। सूअरों ने शव बरामद कर लिया है और अब शोक मना रहे हैं। हम दोनों अभी इस बारे में बात कर ही रहे थे कि उन्हें फिर से युद्ध में कैसे घसीटा जाए, तभी हमने आपको आते हुए देखा था। इसीलिए मैंने आपसे मिलने की गुस्ताखी की।
"चूंकि तुमने प्राचीन ड्रैगन राजा को मार डाला है, इसलिए तुम्हें उन पर इतनी ज़ोर से प्रहार करना होगा कि राक्षस को समझ ही न आए कि क्या करे," एरलांग ने उत्तर दिया। "फिर तुम उनके पूरे अड्डे को साफ़ कर सकते हो।"
"हां," सुअर ने कहा, "लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है।"
"सैनिकों की एक कहावत है कि हमले को कभी टालना नहीं चाहिए," एरलांग ने जवाब दिया। "देर हो जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता।"
"भाई, इतनी बेसब्री मत करो," कांग, याओ, क्वो और झी ने कहा। "राक्षस का परिवार यहाँ है, इसलिए हमें नहीं लगता कि वह भाग जाएगा। बंदर भाई एक खास मेहमान हैं, और लोहे के बालों वाला सुअर भी परिवर्तित हो गया है। हमारे शिविर में शराब और अच्छा खाना है। क्यों न हम छोटे बच्चों से कहें कि वे चूल्हा जलाएँ और

यहाँ दावत का आयोजन करें? यह उन्हें बधाई देने का एक तरीका होगा और साथ ही बातचीत करने का भी मौका मिलेगा। अच्छी दावत के बाद कल की लड़ाई के लिए बहुत समय होगा।"

एर्लैंग को यह सुझाव बहुत पसंद आया: "बहुत बढ़िया विचार है, भाइयों।" इसके बाद अधीनस्थों को भोज सजाने का आदेश दिया गया।

“हम आप सज्जनों के उदार निमंत्रण को मना नहीं कर सकते थे,” बंदर ने उत्तर दिया। “लेकिन अब हम भिक्षु हैं, इसलिए हम केवल शाकाहारी भोजन ही कर सकते हैं। हम मांस नहीं खा सकते।”

“हमारे पास भरपूर शाकाहारी भोजन है,” एरलांग ने उत्तर दिया, “और मठ की शराब भी।” तब सभी भाइयों ने चाँद और तारों की रोशनी में बैठकर शराब पी और पुराने दिनों की बातें कीं; जब आकाश उनका छत्र था और धरती उनकी चटाई।

अध्याय 63

877

पश्चिम की यात्रा

यह बात कितनी सच है कि रात अकेलेपन में लंबी और सुख में छोटी होती है। जल्द ही पूरब में उजाला होने लगा और पिग, कुछ पेय पीने के बाद बहुत खुश और ऊर्जावान महसूस करते हुए बोला, "उजाला हो रहा है। मैं उन्हें युद्ध के लिए चुनौती देने जा रहा हूँ।"

"सावधान रहना, मार्शल," एरलांग ने कहा। "बस उसे बाहर आने के लिए उकसाओ ताकि मैं और मेरे भाई उससे निपट सकें।"

"मैं समझ गया," सुअर मुस्कुराया, "मैं समझ गया।" देखो कैसे वह अपने कपड़े समेटता है, अपना रेक उठाता है, पानी को दो भागों में बांटने का जादू करता है, कूदता है, सीधे मेहराब की ओर जाता है, और एक जोरदार युद्धघोष के साथ महल में घुस जाता है।

ड्रैगन के पुत्र शोक वस्त्र पहने हुए थे और ड्रैगन के शव को देखकर रो रहे थे, जबकि ड्रैगन के पोते और राजकुमार पीछे ताबूत तैयार कर रहे थे। तभी पिग आया और उन पर चिल्लाने लगा। उसने अपने रेक से एक जोरदार प्रहार किया जिससे ड्रैगन के एक पुत्र के सिर में नौ छेद हो गए।

अजगर की विधवा भयभीत होकर बाकी लोगों के साथ अंदर भाग गई।

“उस लंबे थूथन वाले भिक्षु ने मेरे बेटे को मार डाला,” वह चीखी, और यह सुनकर राजकुमार अपने अर्धचंद्राकार भाले को लहराते हुए अपने ड्रैगन पोतों को युद्ध के लिए ले आया। सुअर ने भाले को रोकने के लिए अपना रेक उठाया और पानी से बाहर कूदने तक पीछे हटता हुआ लड़ता रहा। स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि और सात शपथित भाई सभी युद्ध में कूद पड़े और तलवार और भाले से भयंकर प्रहार करने लगे। ड्रैगन पोतों में से एक के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

हालात बिगड़ते देख राजकुमार पहाड़ के सामने लुढ़क गया, फिर अपने असली रूप में लौट आया, पंख फैलाए और चक्कर लगाने लगा। तभी एरलांग ने अपना सुनहरा धनुष उठाया, उस पर चांदी की गोली लगाई, उसे पूरी तरह खींचा और हवा में चला दिया। राक्षस ने अपने पंख समेटे और कमर से निकले सिर से एरलांग को काटने के लिए झपट्टा मारा। एरलांग का दुबला-पतला कुत्ता उछला, भौंका और खून से लथपथ उसका सिर काट दिया। राक्षस दर्द से कराहते हुए जान बचाकर भागा और सीधे उत्तरी सागर की ओर चल पड़ा। सुअर उसके पीछे जाना चाहता था, लेकिन बंदर ने उसे रोक दिया।

"उसका पीछा मत करो," उसने कहा। "हारे हुए दुश्मन को कभी घेरना नहीं चाहिए। अब जब कुत्ते ने उसका सिर काट दिया है, तो मुझे यकीन है कि वह मरने की कगार पर होगा। मैं खुद को उसका हमशक्ल बना लूंगा। मैं चाहता हूं कि तुम पानी को दो भागों में बांटो और मेरा पीछा करते हुए अंदर जाओ ताकि राजकुमारी को ढूंढकर उससे खजाना छीन सको।"

“अगर तुम नहीं चाहते तो उसका पीछा करने की कोई ज़रूरत नहीं है,” एरलांग और उसके छह ऋषियों ने कहा, “लेकिन ऐसे प्राणी को जीवित रहने देकर तुम भविष्य के लिए मुसीबत खड़ी कर रहे हो।” आज भी पाए जाने वाले नौ सिर वाले भयानक राक्षस उसी के वंशज हैं।

सुअर ने आदेश का पालन किया और राक्षस की तरह दिखने वाले बंदर के लिए पानी में रास्ता बना दिया, ताकि वह शोर मचाते हुए उसका पीछा कर सके। वे जल्द ही ड्रैगन महल पहुँच गए, जहाँ राजकुमारी अनंत ऋषि ने पूछा,

"राजकुमार, आप इस हालत में क्यों हैं?"

"सूअर ने मुझे पीट दिया," बंदर ने जवाब दिया, "और मेरा पीछा करते हुए मुझे यहाँ तक ले आया। मैं उसका मुकाबला नहीं कर सकता। खजाने को कहीं सुरक्षित जगह

पर छुपा दो।"
घबराहट में उसे यह एहसास नहीं हुआ कि वह एक धोखेबाज है। उसने महल के पीछे से एक सोने का संदूक लाकर बंदर को दिया और कहा, "यह बुद्ध का अवशेष है।" फिर वह एक सफेद जेड का डिब्बा लाकर बंदर को देते हुए बोली, "यह नौ पंखुड़ियों वाला जादुई कवक है। खजाने को कहीं सुरक्षित जगह पर छुपा दो, मैं तुम्हें बचाने के लिए उससे दो-तीन बार लड़ती हूँ। जब खजाना सुरक्षित हो जाए, तो आकर लड़ाई में शामिल हो जाना।"
फिर बंदर ने खजाने को अपने कपड़ों में छिपाया, अपना चेहरा रगड़ा और वापस अपने असली रूप में आ गया। "राजकुमारी, ध्यान से देखो। क्या मैं सचमुच तुम्हारा पति हूँ?" जैसे ही राजकुमारी ने बक्सों को पकड़ने की हड़बड़ी में हाथ बढ़ाया, सुअर दौड़कर आया और अपने फावड़े से उसके कंधे पर वार करके उसे ज़मीन पर गिरा दिया।
अध्याय 63
878
पश्चिम की यात्रा
प्राचीन अजगर की विधवा भाग रही थी तभी सुअर ने उसे पकड़ लिया और उसे कुचलने के लिए अपना फावड़ा उठाया। "रुको!" बंदर बोला। "उसे मत मारो! उसे ज़िंदा रखो ताकि जब हम दरबार में अपनी जीत का ऐलान करने वापस जाएँ तो वह हमारे काम आए।" फिर सुअर ने उसे पानी से बाहर निकाला जबकि बंदर दो बक्सों के साथ उसके पीछे-पीछे किनारे पर चला गया।
"बड़े भाई, आपकी शक्ति और प्रतिष्ठा के कारण ही हमने खजाने बरामद कर लिए हैं और चोर शैतानों का सफाया कर दिया है," बंदर ने कहा।
"इसमें हमारी कोई उपलब्धि नहीं थी," एरलांग ने कहा। "पहली बात तो यह है कि राजा का सौभाग्य स्वर्ग के समान था, और दूसरी बात यह है कि आप योग्य भाइयों ने अपनी असीम शक्तियों का प्रदर्शन किया।"
तब सभी भाइयों ने कहा, "चूंकि अब आप सफल हो गए हैं, भाई बंदर, हम आपसे विदा लेते हैं।"
बंदर ने हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया और उन्हें राजा से मिलने जाने के लिए मनाने की कोशिश की। उनमें से कोई भी सहमत नहीं हुआ और वे अपनी सेना के साथ वापस गुआंकोऊ लौट गए।

बंदर ने बक्से उठाए और सुअर ने बादलों और कोहरे के बीच से गुज़रते हुए पलक झपकते ही अजगर की पत्नी को शहर वापस खींच लिया। स्वर्ण प्रकाश मठ के मुक्त भिक्षु शहर के बाहर उनका इंतज़ार कर रहे थे, और जब उन्होंने उन दोनों को अचानक बादलों से उतरते देखा, तो वे उनके पास गए और प्रणाम करके उन्हें शहर में प्रवेश कराया। उस समय राजा महल के मुख्य हॉल में तांग पुजारी से बातचीत कर रहे थे।
एक भिक्षु आगे बढ़ा और साहस जुटाकर महल के द्वार से अंदर गया और सूचना दी, "महाराज, स्वामी बंदर और सुअर एक चोर और खजाने के साथ वापस आ गए हैं।" यह खबर सुनते ही राजा सिंहासन कक्ष से नीचे उतरे और तांग पुजारी और भिक्षु सैंड के साथ उनका स्वागत किया। वे उनकी इस अद्भुत उपलब्धि के लिए अत्यंत कृतज्ञ थे और उन्होंने धन्यवाद भोज का आदेश दिया।
“हमें अभी किसी पेय की आवश्यकता नहीं है,” संज़ंग ने कहा। “हम तभी भोज करेंगे जब मेरे शिष्य खजाना मंदिर में वापस ले आएंगे।” फिर उन्होंने बंदर से पूछा कि वे कल ही तो चले गए थे, अब क्यों लौटे हैं? बंदर ने उन्हें राजकुमार के साथ युद्ध, ड्रैगन राजा की मृत्यु, सच्चे भगवान एरलांग से मुलाकात, दुष्ट राक्षसों की पराजय और छल और रूपान्तरण के माध्यम से खजाना प्राप्त करने की सारी कहानी सुनाई। संज़ंग, राजा और सभी नागरिक एवं सैन्य अधिकारी प्रसन्न हुए।
"क्या ड्रैगन पत्नी इंसानी भाषा बोल सकती है?" राजा ने तब पूछा।
"बेशक वह इंसानी भाषा जानती है," सुअर ने जवाब दिया। "उसकी शादी एक ड्रैगन से हुई थी और उसके बहुत सारे ड्रैगन बेटे और पोते थे।"
"तो फिर," राजा ने कहा, "उसे हमें उनके अपराधों की पूरी कहानी बतानी चाहिए।"
"मुझे बुद्ध अवशेष की चोरी के बारे में कुछ नहीं पता," उसने कहा। "यह सब मेरे उस पति, उस अजगर ने किया है जो अब भूत बन चुका है, और हमारे दामाद, उस नौ सिर वाले राक्षस ने। उन्हें पता था कि आपके पैगोडा से निकलने वाला प्रकाश बुद्ध अवशेष से आता है, जिसे उन्होंने रक्तपात की आड़ में चुरा लिया था।"
जब उनसे पूछा गया कि जादुई कवक कैसे चुराया गया, तो उन्होंने उत्तर दिया, "मेरी पुत्री, असीम ऋषि राजकुमारी, चुपके से दलुओ स्वर्ग में घुस गई और चमत्कारी धुंध के हॉल के सामने से महारानी माँ का नौ-लोब वाला जादुई कवक चुरा लिया। कवक की जादुई वाष्पों ने उस अवशेष को पोषित किया है, जो अब अविनाशी है और हजारों वर्षों तक चमकता रहेगा। यदि इसे दफना दिया जाए या किसी खेत में रख दिया जाए,

तो छूने मात्र से ही यह हजारों रंगीन प्रकाश की किरणें और शुभ वाष्प उत्सर्जित करेगा। अब आपने इसे वापस ले लिया है और मेरे पति, मेरे सभी पुत्रों, मेरे दामाद और मेरी पुत्री को मार डाला है। कृपया मेरी जान बख्श दें।"
"तुम्हारे लिए कोई दया नहीं होगी," सुअर ने जवाब दिया।
अध्याय 63
879
पश्चिम की यात्रा
"ऐसा कोई परिवार नहीं होता जिसमें सभी लोग अपराधी हों," बंदर ने कहा। "मैं तुम्हारी जान एक शर्त पर बख्श दूंगा: तुम मेरे लिए इस पैगोडा की हमेशा देखभाल करोगे।"
“अच्छी मौत से बेहतर है गरीबी का जीवन,” ड्रैगन की पत्नी ने उत्तर दिया। “मेरी जान बख्श दो, मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूँगी।” बंदर ने लोहे की जंजीर मंगवाई, जिसे उसके एक सहायक ने लाकर दिया।
उसने उसे ड्रैगन पत्नी की कॉलरबोन में घुसा दिया और फ्रायर सैंड से कहा, "कृपया राजा से कहें कि वे आकर देखें कि खजाने को वापस पैगोडा में कैसे रखा जा रहा है।"
फिर राजा ने अपना रथ तैयार करवाया और संज़ंग के साथ हाथ में हाथ डालकर दरबार से निकल पड़े। उनके साथ नागरिक और सैन्य अधिकारी भी थे। वे स्वर्ण प्रकाश मठ गए और पैगोडा पर चढ़े, जहाँ तेरहवीं मंजिल पर छत के ठीक नीचे एक कीमती कलश में पवित्र अवशेष रखा हुआ था। ड्रैगन पत्नी को पैगोडा के केंद्रीय स्तंभ से जंजीरों से बांध दिया गया था। फिर मंत्र पढ़े गए और राजधानी के स्थानीय देवताओं और नगर देवताओं तथा मठ के रक्षकों को बुलाया गया। उन्हें आदेश दिया गया कि वे ड्रैगन पत्नी को जीवित रखने के लिए हर तीन दिन में एक बार भोजन और पेय लाएँ। यदि वह कोई छल करने का प्रयास करे तो उसे वहीं मार डाला जाए। सभी देवताओं ने गुप्त रूप से उनके आदेश स्वीकार कर लिए। भाई बंदर ने जादुई कवक का उपयोग करके पैगोडा की तेरह मंजिलों को एक-एक करके साफ किया और फिर उसे कलश में रखकर पवित्र अवशेष की देखभाल के लिए रख दिया। तभी पैगोडा रंगीन प्रकाश और एक शुभ आभा से फिर से जगमगा उठा, जिसे चारों दिशाओं से देखा जा सकता था और आसपास के सभी देशों द्वारा सराहा जा सकता था।
जब वे पगोडा से नीचे उतरे तो राजा ने उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा, "हे पूज्य बुद्ध, यदि

आप और आपके तीनों बोधिसत्व यहाँ नहीं आते तो यह मामला कभी हल नहीं होता।" “महाराज,” बंदर ने कहा, “स्वर्ण प्रकाश एक अच्छा नाम नहीं है क्योंकि यह स्थायी नहीं है। सोना पिघल सकता है और प्रकाश तो केवल चमकती हुई भाप है। हम भिक्षुओं ने आपके लिए काफी प्रयास किया है, इसलिए हम इसका नाम बदलकर 'वश में किया हुआ ड्रैगन मठ' रखना चाहते हैं। इससे आपकी अमरता सुनिश्चित होगी।” राजा ने नाम बदलने का आदेश दिया और एक नया बोर्ड लगाया गया जिस पर लिखा था।

राष्ट्र-रक्षक

वश में किया गया ड्रैगन मठ

शाही आदेश द्वारा स्थापित

फिर उन्होंने भोज का आयोजन करने का आदेश दिया और चारों के चित्र बनाने के लिए चित्रकारों को बुलवाया। उनके नाम पंचमस्तिष्क मीनार में दर्ज किए गए। इसके बाद राजा ने तांग पुजारी और उनके शिष्यों से मिलने के लिए अपना रथ मंगवाया। उन्होंने उन्हें सोना और रत्न देने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने कुछ भी लेने से साफ इनकार कर दिया। दरअसल:

बुराई का नाश हो चुका था;

अब एक बार फिर शांति का माहौल छा गया।

धूप वापस आ गई थी।

अध्याय 63

880

पश्चिम की यात्रा

पगोडा में फिर से रोशनी लौट आई।

अगर आपको आगे की यात्रा में क्या हुआ, यह नहीं पता है, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को सुनें।

अध्याय 64

वुनेन्ग थॉर्न रिज पर कड़ी मेहनत कर रहा है

वन अमर आश्रम में संजांग कविता पर चर्चा करते हैं

कहा जाता है कि जिसाई के राजा ने तांग सान्ज़ांग और उनके तीन शिष्यों को राक्षसों को पकड़ने के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें सोना और जेड भेंट करने का आग्रह

किया, लेकिन उन्होंने कुछ भी स्वीकार नहीं किया। इसलिए राजा ने अपने सहायकों को आदेश दिया कि वे उनके लिए उनके जैसे दो-दो वस्त्र, दो जोड़ी मोज़े, दो जोड़ी जूते और दो बेल्ट बनवाएँ। उन्हें सूखा राशन भी दिया गया और उनके पासपोर्ट की विधिवत जाँच करके उन्हें लौटा दिया गया। शहर से विदा होने के लिए रथों का एक जुलूस निकला, जिसमें नागरिक और सैन्य अधिकारी, शहर के आम लोग और वश में किए गए ड्रैगन मठ के भिक्षु शामिल थे। तेज़ संगीत भी बज रहा था। छह-सात मील चलने के बाद उन्होंने राजा से विदा ली और बाकी सभी लोग छह-सात मील तक उनके साथ चले। फिर वश में किए गए ड्रैगन मठ के भिक्षुओं को छोड़कर बाकी सभी वापस लौट गए, जो बीस मील बाद भी उनके साथ थे। कुछ भिक्षु उनके साथ पश्चिमी स्वर्ग जाना चाहते थे और अन्य उनके आचरण को सुधारना और उनकी सेवा करना चाहते थे।

जब बंदर ने देखा कि उनमें से कोई भी वापस लौटने को तैयार नहीं है, तो उसने अपनी शक्तियों का प्रयोग करने का निर्णय लिया। उसने अपने तीस-चालीस बाल खींचे, उन पर जादुई साँस फूँकी, "रूप बदलो!" चिल्लाया और उन्हें भयंकर धारीदार बाघों में बदल दिया जो आगे के रास्ते पर दहाड़ते हुए उछलने लगे। तभी भिक्षु डरकर वापस लौटे। फिर महान ऋषि ने अपने घोड़े को चाबुक मारकर आगे बढ़ाया और वे जल्द ही बहुत दूर निकल गए।

इस पर भिक्षु जोर-जोर से रोने लगे और चिल्लाने लगे, "दयालु और आदरणीय महोदय, लगता है हमारा भाग्य हमारे खिलाफ है क्योंकि आप हमें अपने साथ नहीं ले जा रहे हैं।"

आइए विलाप करते भिक्षुओं की कहानी न सुनाएँ, बल्कि इस बात की कहानी सुनाएँ कि कैसे गुरु और उनके तीन शिष्य कुछ देर तक पश्चिम की ओर मुख्य मार्ग पर चले, फिर बंदर ने अपने बाल वापस खींच लिए। एक बार फिर ऋतुएँ बदल रही थीं, और अब शीत ऋतु का अंत और वसंत ऋतु का आरंभ हो चुका था, न ज़्यादा गर्मी थी न ज़्यादा सर्दी। वे बेफिक्र होकर आगे बढ़ रहे थे, तभी उन्होंने अपने सामने एक लंबी पहाड़ी देखी, जिसके ऊपर से रास्ता जाता था। संज़ंग ने देखने के लिए अपने घोड़े की लगाम खींची। उन्होंने देखा कि पहाड़ी कंटीली झाड़ियों और लताओं से भरी हुई थी। हालाँकि रास्ते की रेखा दिखाई दे रही थी, लेकिन वह पूरी तरह से कंटीली झाड़ियों और कांटों से ढका हुआ था। "शिष्यों, हम इस रास्ते पर कैसे चलेंगे?" उन्होंने पूछा।

"कोई बात नहीं," बंदर ने जवाब दिया।
"पर, शिष्य, यह रास्ता कांटों से भरा है। हम तो बस सांपों या कीड़ों की तरह पेट के बल रेंगकर ही इसे पार कर सकते हैं। चलते-चलते तुम्हारी कमर झुक जाएगी, और मैं कभी घोड़े की सवारी नहीं कर पाऊंगा।"
“चिंता की कोई बात नहीं, मालिक,” सुअर ने जवाब दिया। “मैं अपने रेक से कांटे हटा दूंगा। यह आग जलाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करने जैसा ही होगा। अपने घोड़े पर सवार होने की चिंता मत कीजिए—मैं वादा करता हूँ कि हम वहाँ तक कुर्सी पर बैठकर भी जा सकते हैं।”
तांग पुजारी ने उत्तर दिया, "आप बहुत बलवान हैं, लेकिन यह बहुत लंबा रास्ता है और कठिन होगा। मुझे नहीं पता कि आप इतनी दूरी तय करने की ऊर्जा कहाँ से लाएँगे: भगवान ही जाने यह कितनी दूर है।"
अध्याय 64
881
पश्चिम की यात्रा
“अंदाजा लगाने की कोई जरूरत नहीं है,” बंदर ने कहा। “मैं जाकर देखता हूँ।” जब वह हवा में उछला तो उसने देखा कि वह अनंत तक फैला हुआ है। सचमुच:
इसका आकार बहुत विशाल था;
यह कोहरे और बारिश से ढका हुआ था।
पगडंडी पर बिछी घास की कालीन मुलायम थी;
पहाड़ चमकीले हरे रंग से ढका हुआ था।
नए पत्ते घनी मात्रा में उग रहे थे।
सुगंधित लताएँ चारों ओर फैली हुई थीं।
दूर से देखने पर इसका कोई अंत नजर नहीं आ रहा था;
पास से देखने पर वह हरे-भरे बादलों के समूह जैसा प्रतीत होता था।
हरियाली से भरपूर, रहस्यमय और हरा-भरा।
हवाएँ हर जगह सरसराहट कर रही थीं।
जैसे ही पर्वत श्रृंखला सूर्य की रोशनी में चमक उठी।
वहाँ चीड़, सरू और बांस के पेड़ थे।
कई बेर, विलो के पेड़ और शहतूत के पेड़ भी।

प्राचीन वृक्षों के चारों ओर लिपटी हुई लताएँ,
जबकि लताएँ झुके हुए चिनार के पेड़ों को लपेटे हुए थीं,
सब एक फ्रेम की तरह आपस में गुंथे हुए हैं,
बिस्तर में एक साथ बुना हुआ।
यहां फूलों ने जीवंत ब्रोकेड का रूप धारण कर लिया था;
असीम फूलों की सुगंध दूर-दूर तक फैल गई।
हर किसी के जीवन में कांटे और झाड़ियाँ होती हैं।
लेकिन पश्चिम में स्थित इमारतों जितनी ऊंची इमारतें इनमें से किसी की भी नहीं हैं।
बहुत देर तक ढूंढने के बाद, बंदर ने अपने बादल को नीचे उतारा और कहा, "गुरुजी, यह बहुत दूर है।"
अध्याय 64
882
पश्चिम की यात्रा
"कितनी दूर?" संजांग ने पूछा।
"मुझे तो इसका कोई अंत नज़र नहीं आता," बंदर ने जवाब दिया। "यह कम से कम तीन सौ मील लंबा होगा।"
"यह तो बहुत बुरा है," संजांग ने कहा।
"दुखी मत होइए, गुरुजी," साधु सैंड ने हंसते हुए कहा। "हम झाड़ियों को जलाना जानते हैं। मशाल से आग लगा दीजिए, सारे कांटे जलकर राख हो जाएंगे। फिर हम पार जा सकेंगे।"
"बकवास मत करो," सुअर ने जवाब दिया। "इस तरह से ज़मीन साफ़ करना नवंबर या उसके बाद ही संभव है, जब घास सूख चुकी हो और पेड़ सूख चुके हों। वरना आग नहीं लगेगी। अभी तो आग लगेगी ही नहीं, जब सब कुछ उग रहा है।"
"अगर इसमें आग भी लग जाए तो भी यह भयानक होगा," मंकी ने कहा।
"तो फिर हम पार कैसे जाएंगे?" संजांग ने पूछा।
"तुम्हें मुझ पर ही निर्भर रहना होगा," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा।
उस मूर्ख ने हाथों से मंत्र पढ़ा और उसके शब्द बोले, आगे झुककर बोला, "बढ़ो!" वह दो सौ फीट लंबा हो गया, फिर उसने रेक लहराते हुए चिल्लाया, "बदलो!" वह तीन सौ फीट लंबा हो गया।

फिर वह आगे बढ़ा और दोनों हाथों से रेक चलाकर रास्ते के दोनों ओर की झाड़ियाँ साफ करने लगा। "मेरे साथ आइए, स्वामी जी," उसने कहा। संज़ंग घोड़े को चाबुक मारकर आगे बढ़ाने में प्रसन्न हुआ और उसके पीछे-पीछे चलने लगा, जबकि साधु सैंड सामान ढो रहा था और बंदर अपनी लाठी से रास्ता साफ करने में मदद कर रहा था। उन्होंने पूरे दिन एक पल भी आराम नहीं किया और तीस मील से अधिक का सफर तय कर लिया था, जब सूर्यास्त के समय वे एक सुनसान मैदान पर पहुँचे जहाँ रास्ते के बीचोंबीच एक पत्थर की पट्टिका खड़ी थी।

पट्टिका पर बड़े अक्षरों में 'थॉर्न रिज' लिखा था, और उनके नीचे छोटी लिखावट में दो पंक्तियाँ थीं।

"ढाई सौ मील तक फैले घने कांटों से भरा रास्ता; बहुत कम यात्रियों ने कभी इस रास्ते की यात्रा की है।"

जब सुअर ने यह देखा तो हंसते हुए बोला, "मैं इसमें कुछ और पंक्तियाँ जोड़ देता हूँ: 'सुअर हमेशा से कांटे हटाने में माहिर रहा है; उसने पश्चिम की ओर जाने वाली सड़कें पूरी तरह साफ कर दी हैं।'" इसके बाद संजांग बहुत खुश होकर घोड़े से उतर गया।

उन्होंने कहा, "शिष्यों, मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिया है। आज रात यहीं रुकते हैं और कल सुबह तड़के फिर से निकलेंगे।"

"अब मत रुकिए, स्वामी जी," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा। "आसमान साफ है और हमारा मूड भी अच्छा है। अगर हम पूरी रात ऐसे ही करते रहें तो कोई दिक्कत नहीं है।" आदरणीय बुजुर्ग को उसका सुझाव मानना ही पड़ा।

पिग आगे-आगे कड़ी मेहनत कर रहा था, और वे चारों बिना रुके रात और अगले दिन तक चलते रहे, जब तक कि फिर से शाम नहीं हो गई। उनके सामने पेड़ और झाड़ियाँ घनी तरह से उलझी हुई थीं और बाँसों में हवा की सरसराहट और चीड़ के पेड़ों में सरसराहट सुनाई दे रही थी। सौभाग्य से वे एक और खाली ज़मीन पर पहुँचे जहाँ एक पुराना मंदिर था, जिसके द्वार के बाहर चीड़ और सरू के पेड़ों ने घनी हरी छाया बना रखी थी, जबकि आड़ू और बेर के पेड़ सुंदरता में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। तब संज़ंग घोड़े से उतरे और अपने तीन शिष्यों के साथ उसका निरीक्षण करने गए। उन्होंने जो देखा वह यह था:

चट्टान के सामने एक ठंडी धारा के किनारे एक प्राचीन मंदिर स्थित था;

पहाड़ी के चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था।

झाड़ियों में मौजूद सफेद सारसों के कारण चंद्रमा अधिक चमकीला प्रतीत हो रहा था;
सीढ़ियों पर जमी हरी काई कई वर्षों से वहीं थी।
हरे बांस की सरसराहट मानवीय भाषण जैसी प्रतीत हो रही थी;
पक्षियों की शेष आवाजें शोक की अभिव्यक्ति प्रतीत हो रही थीं।
कुत्ते और मुर्गियां कभी नहीं आए, और न ही कुछ ही इंसान आए;
दीवार पर जंगली फूल और पौधे उग आए थे।
"यह जगह मुझे बहुत ही भयावह लग रही है," बंदर ने कहा। "हमें यहाँ ज्यादा देर नहीं रुकना चाहिए।"
“भाई, तुम ज़रूरत से ज़्यादा सावधान हो रहे हो,” साधु सैंड ने कहा। “यह जगह सुनसान है और मुझे नहीं लगता कि यहाँ कोई राक्षस, जंगली जानवर या शैतान हैं, इसलिए डरने की कोई बात नहीं है।” उनके ये शब्द कहते ही एक भयानक हवा का झोंका आया और मंदिर के द्वार से एक बूढ़ा आदमी निकला। उसने पगड़ी, हल्के रंग का चोगा और घास की चप्पलें पहन रखी थीं और उसके हाथ में एक टेढ़ी छड़ी थी। उसके साथ एक शैतानी सेवक था जिसका चेहरा नीला, भयानक नुकीले दाँत, लाल मूंछें और लाल शरीर था और जो अपने सिर पर केक की थाली लिए हुए था।
"महान ऋषि," बूढ़े व्यक्ति ने घुटने टेकते हुए कहा, "मैं थॉर्न रिज का स्थानीय देवता हूँ। चूंकि मुझे पता था कि आप आ रहे हैं, लेकिन मेरे पास आपको भेंट करने के लिए कुछ बेहतर नहीं था, इसलिए मैंने आपके स्वामी के लिए भाप में पके हुए केक की यह थाली तैयार की है।"
क्या सबके पास कुछ है? चूंकि सैकड़ों मील तक कोई और घर नहीं है, मुझे उम्मीद है कि आप भूख की पीड़ा से राहत पाने के लिए कुछ भोजन स्वीकार करेंगे।
सुअर यही सुनना चाहता था: वह आगे बढ़ा और केक लेने के लिए हाथ ही बढ़ा रहा था कि तभी बंदर, जो यह सब ध्यान से देख रहा था, चिल्लाया, "रुको! वह दुष्ट है! तमीज़ से पेश आओ!" अब वह स्थानीय देवता को संबोधित कर रहा था।
"तुम कोई देवता नहीं हो, मुझे इस तरह बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हो। ये लो!"

उसके हमले की भयंकरता देखकर स्थानीय देवता मुड़े और खुद को एक भयानक नकारात्मक हवा के झोंके में बदल लिया, जो उस पूजनीय बुजुर्ग को हवा में उड़ा ले गया। किसी को नहीं पता था कि उसे कहाँ ले जाया गया। महान ऋषि हताश थे क्योंकि उन्हें अपने गुरु को ढूँढ़ने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था, जबकि पिग और फ्रायर सैंड सदमे से पीले पड़कर एक-दूसरे को घूर रहे थे। यहाँ तक कि सफेद घोड़ा भी डर से हिनहिना रहा था। तीनों शिष्य भाई और घोड़ा पूरी तरह से भ्रमित थे। उन्होंने जहाँ तक उनकी नज़र जा सकती थी, चारों ओर देखा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला।

हम उनकी खोज का वर्णन नहीं करेंगे, बल्कि यह बताएंगे कि कैसे बूढ़े व्यक्ति और उसके शैतानी सेवक ने संज़ंग को कोहरे से घिरे एक पत्थर के घर तक पहुँचाया और उसे धीरे से नीचे रख दिया। उसका हाथ पकड़कर और सहारा देते हुए बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "हे पवित्र भिक्षु, डरो मत। हम बुरे लोग नहीं हैं। मैं थॉर्न रिज का अठारहवाँ स्वामी हूँ। मैंने तुम्हें इस ठंडी, साफ चाँदनी रात में यहाँ कविता पर चर्चा करने और मित्रता का समय बिताने के लिए बुलाया है।"

तभी संज़ंग शांत हुआ। जब उसने चारों ओर ध्यान से देखा तो उसे यह दिखाई दिया: जहाँ से बादलों की कतारें निकलती थीं।

अध्याय 64

884

पश्चिम की यात्रा

अमर लोगों के लिए एक पवित्र घर था, एक ऐसी जगह
स्वयं को शुद्ध करने और अमृत को परिष्कृत करने के लिए,
बांस के बाग लगाना और फूल उगाना।
सारस अक्सर पन्ना रंग की चट्टान पर आते थे।
और तालाब के नीले पानी में मेंढक आवाज कर रहे थे।
यह तियानताई पर्वत पर स्थित सिंदूर भट्टी के बराबर था।
और इससे माउंट हुआशान के सूर्यास्त की याद आ गई।

बादलों को चीरने और चांद को पाने की व्यर्थ कोशिशों को भूल जाइए; यहां अद्भुत एकांत और सुकून है।

यहां काफी देर तक बैठे रहने से आपका मन विशाल सागर के समान हो जाता है;
पतले पर्दों के बीच से उगता हुआ चांद आधा दिखाई दे रहा है।

जब संज़ंग चारों ओर देख रहा था और चाँद व तारों की चमक पर ध्यान दे रहा था, तभी उसे आवाज़ें सुनाई दीं, "अठारहवें स्वामी पवित्र भिक्षु को यहाँ लाए हैं।" संज़ंग ने ऊपर देखा तो उसे तीन बूढ़े आदमी दिखाई दिए। सबसे नज़दीक वाला सफ़ेद बालों वाला और प्रतिष्ठित था; दूसरे के कनपटी पर हरी चमक थी और वह जोश से भरा हुआ था; और तीसरे का हृदय शुद्ध था और उसके बाल नीले-काले थे।

उनके चेहरे और कपड़े सभी अलग-अलग थे, और वे सभी संजांग के सामने झुकने आए, जिन्होंने उनके सम्मान का जवाब देते हुए कहा, "मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है जिसके लिए मैं आप लोगों के इस महान स्नेह का पात्र बनूं।"

इस पर अठारहवें भगवान ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "हे पूज्य भिक्षु, हमने बहुत समय से आपके द्वारा प्राप्त मार्ग के बारे में सुना है और हम आपसे मिलने के उस सौभाग्य की प्रतीक्षा कर रहे थे जो हमें आज प्राप्त हुआ है। आशा है कि आप अपने ज्ञान के मोती साझा करने में संकोच नहीं करेंगे, बल्कि आराम से बैठेंगे और विचार-विमर्श करेंगे। तब हम सच्चे ध्यान के उपदेशों के बारे में जान सकेंगे।"

"क्या मैं अमरों की उपाधियाँ पूछ सकता हूँ?" संजांग ने झुककर पूछा।

अठारहवें भगवान ने उत्तर दिया, “सफेद बालों वाले को एकाकी धर्मात्मा भगवान के रूप में जाना जाता है; हरे रंग की कनपटी वाले को स्वामी शून्यता के रूप में; और शुद्ध हृदय वाले को प्राचीन बादल-स्पर्शक के रूप में। मेरा नाम ऊर्जा है।”

"आप चारों आदरणीय सज्जनों की आयु कितनी है?" संजांग ने पूछा। इस पर एकाकी धर्मात्मा स्वामी ने उत्तर दिया,

मैं पहले से ही हजार वर्ष का हूँ;
मैं आकाश को छूता हूँ और मेरे पत्ते हमेशा वसंत ऋतु जैसे रहते हैं।

मेरी सुगंधित शाखाएँ बेहद खूबसूरत हैं।
ड्रैगन और सांपों के आकार के;
मेरी परछाई कई हिस्सों में टूट गई है;
मेरा शरीर बर्फ से ढका हुआ है।
मैं बचपन से ही दृढ़ रहा हूँ और सहन करता आया हूँ;

अब मुझे सत्य का पालन करने में प्रसन्नता हो रही है।
जो पक्षी और फीनिक्स पक्षी बैठे हैं, वे केवल नश्वर प्राणी नहीं हैं;
मैं स्वतंत्र हूं और सामान्य दुनिया की धूल-मिट्टी से बहुत दूर हूं।"
मास्टर एम्प्टीनेस ने मुस्कुराते हुए आगे कहा:
मैंने हजार वर्षों तक हवा और ठंड सहन की है।
मेरा लंबा शरीर और मेरे अंगों की शक्ति मुझे प्रबल बनाती है।
रात के सन्नाटे में बारिश की बूंदों की आवाज आती है।
और छाया शरद ऋतु की धूप में बादल की तरह फैल जाती है।
मेरी टेढ़ी-मेढ़ी जड़ों में अमर जीवन का रहस्य छिपा है;
मुझे कभी बूढ़ा न होने की कला प्राप्त हुई है।
यहां सारस और ड्रैगन रहते हैं, ये आम जीव नहीं हैं:
मैं हरा-भरा और जीवन से भरपूर हूँ, मानो अमर लोगों की भूमि में रहता हूँ।
तब प्राचीन बादल-स्पर्शक ने मुस्कुराते हुए कहा,
मैंने एक हजार से अधिक पतझड़ खालीपन में बिताए हैं;
वह दृश्य और भी अधिक दिव्य और शुद्ध होता जाता है।
यहां कोई हलचल नहीं है, बल्कि शाश्वत शांति और स्थिरता है;
मैं उत्साह से भरा हुआ हूँ और मैंने बहुत ठंड और बर्फ देखी है।
सात प्रतिष्ठित व्यक्ति मार्ग के बारे में चर्चा करने आते हैं;
मैं अपने दोस्तों, उन छह फुर्सत के पलों में डूबे पुरुषों के साथ गाता और पीता हूँ।
अध्याय 64
886
पश्चिम की यात्रा
जेड और सोने को हल्के से पीटना
मेरा स्वभाव स्वर्ग के साथ एक है; मैं अमर लोगों के साथ विचरण करता हूँ।"
तब अठारहवें स्वामी, ऊर्जा ने मुस्कुराते हुए कहा,
"मेरी उम्र भी एक हजार से अधिक है।"
मैं बूढ़ा, शुद्ध और स्वाभाविक हूँ।
बारिश और ओस से अद्भुत शक्ति मिलती है;
मैं स्वर्ग और पृथ्वी की सृजनात्मक शक्ति का उपयोग करता हूँ।

मैं अकेले ही हवा और कोहरे की घाटियों में फलता-फूलता हूँ,
मैं चारों मौसमों में तनावमुक्त और सहज महसूस करता हूँ।
मेरी हरी छांव में अमर निवास करते हैं
शतरंज, संगीत और जीवन-यात्रा से जुड़ी किताबों के लिए।"
"आप चारों अमर लोग अत्यंत उन्नत आयु तक जीवित रहे हैं," संज़ंग ने कहा, "और वृद्ध सज्जन की ऊर्जा एक हजार वर्ष से अधिक है। आप प्राचीन हैं, आपने मार्ग पा लिया है, आप सुरुचिपूर्ण और पवित्र हैं। क्या आप हान काल के चार तेजस्वी नहीं हैं?"
“आप हमारी बहुत प्रशंसा कर रहे हैं,” चारों वृद्धों ने कहा। “हम वे चार तेजस्वी नहीं हैं: हम पहाड़ों की गहराई से आए हुए चार लोग हैं। हे आदरणीय भिक्षु, क्या हम आपसे आपकी आयु जान सकते हैं?” संजांग ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया।
"चालीस साल पहले मैं अपनी माँ के गर्भ से बाहर आया था,
जन्म से पहले से ही मेरा भाग्य विपत्ति के लिए लिखा था।
अपनी जान बचाकर मैं लहरों में बहता चला गया।
जब तक मैं जिनशान नहीं पहुँच गया, जहाँ मैंने अपने शरीर का पुनर्जीवन किया।
मैंने अपने स्वभाव का पोषण किया और सूत्रों का अध्ययन किया।
बुद्ध की उपासना में निष्ठावान, समय व्यर्थ न करना।
अब जबकि महाराज ने मुझे पश्चिम की ओर भेजा है,

मैं आप प्राचीन अमर आत्माओं के प्रति अत्यंत सम्मानित महसूस करता हूँ।
तब चारों वृहद भिक्षुओं ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा, “हे परम पूज्य भिक्षु, आपने माता के गर्भ से जन्म लेने के समय से ही बुद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण किया है। बचपन से ही अपने आचरण को सुसंस्कृत करके आपने मार्ग को पा लिया है और आप एक उच्च कोटि के भिक्षु बन गए हैं। आपको देखकर हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई है और हम आपसे शिक्षा देने का अनुरोध करते हैं। क्या आप हमें ध्यान धर्म के मूल सिद्धांतों के बारे में बता सकते हैं? इससे हमें बहुत शांति मिलेगी।” जब आदरणीय वृहद भिक्षु ने यह सुना तो वे जरा भी विचलित नहीं हुए और उन्होंने उनसे यह कहा:

"ध्यान मौन है; धर्म वह है जो मुक्ति दिलाता है। मौन मुक्ति केवल ज्ञानोदय के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है।"

ज्ञानोदय मन को शुद्ध करना और उसे चिंताओं से मुक्त करना, तुच्छ चीजों को त्याग देना और सांसारिक धूल को पीछे छोड़ देना है।

मानव जीवन प्राप्त करना कठिन है; मध्यभूमि में जन्म लेना कठिन है; और सच्चे धर्म को खोजना कठिन है।

इन तीनों का होना ही सबसे बड़ा सौभाग्य है। पूर्ण सद्गुण का अद्भुत मार्ग सूक्ष्म और अगोचर है। केवल इसी मार्ग से छह इंद्रियों और चेतना के छह रूपों को दूर किया जा सकता है।

ज्ञान यही है: न मृत्यु है, न जीवन, न अधिकता है, न पदार्थ और न शून्यता, सब कुछ समाहित है, पवित्र और सांसारिक दोनों का कोई स्थान नहीं। इसने ताओवादी धर्म के औजारों में महारत हासिल कर ली है और शाक्यमुनि की विधियों से भलीभांति परिचित है। यह घटनाओं के जाल को भेदकर निर्वाण को भस्म कर देता है। बोध के भीतर बोध आवश्यक है, ज्ञान के भीतर ज्ञान, तब पवित्र प्रकाश का एक बिंदु सब कुछ की रक्षा करेगा। सहालोक को प्रकाशित करने के लिए प्रज्वलित अग्नि प्रज्वलित करो; केवल वही धर्म जगत में प्रकट होता है। अत्यंत सूक्ष्म होकर यह पहले से कहीं अधिक दृढ़ है: कौन शाब्दिक प्रलोभन से रहस्य के दर्रे को पार कर सकता है? आरंभ से ही मैंने महान जागरूकता का ध्यान किया: मैं ज्ञान प्राप्त करने के लिए नियत और दृढ़ था।

चारों वरिष्ठ भिक्षु ध्यानपूर्वक सुन रहे थे और असीम आनंद से भर उठे। उनमें से प्रत्येक ने प्रणाम किया और सत्य को स्वीकार करते हुए कृतज्ञतापूर्वक कहा, "हे परम पूज्य भिक्षु, आप ही ध्यान साधना के माध्यम से प्राप्त होने वाले ज्ञान के मूल स्रोत हैं।"

प्राचीन आकाश-स्पर्शक ने कहा, "ध्यान मौन हो सकता है, और धर्म उद्धार कर सकता है, लेकिन स्वभाव का स्थिर होना और मन का सच्चा होना आवश्यक है। यदि कोई महान चेतना वाला सच्चा अमर है, तो उसे प्राणहीनता के मार्ग पर बैठना होगा। हमारे रहस्य बहुत भिन्न हैं।"

"मार्ग निश्चित नहीं है; इसका रूप और कार्य एक ही हैं। आपका मार्ग इससे अलग कैसे है?" संज़ंग ने पूछा। इस पर प्राचीन बादल-स्पर्शक ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया:

हम जन्म से ही दृढ़ हैं: हमारे रूप और कार्य आपसे भिन्न हैं। हम आकाश और पृथ्वी के प्रति सजग होकर पैदा हुए और वर्षा और ओस में पले-बढ़े। हम गर्व से हवा और पाले पर हंसते हैं; हम दिन-रात को व्यतीत करते हैं। एक भी पत्ता नहीं मुरझाता, और हमारी सभी शाखाएँ दृढ़ संकल्प से भरी हैं। मेरी बातों में कोई व्यर्थता नहीं है, परन्तु आप अपनी संस्कृत से चिपके हुए हैं। यह मार्ग सर्वप्रथम चीन का था और बाद में पश्चिम में इसके प्रमाण खोजे गए। आप व्यर्थ ही अपने तिनके घिस रहे हैं: आपको पता नहीं कि आप क्या खोज रहे हैं। आप उस पत्थर के शेर के समान हैं जो अपना ही हृदय निकाल रहा है, या उस लोमड़ी के समान हैं जो इतनी लार टपका रही है कि अपनी हड्डियों का मज्जा भी पचा रही है। यदि आप अपने ध्यान में अपनी जड़ों को भूल जाते हैं तो बुद्ध के फल की प्राप्ति व्यर्थ होगी। आपके शब्द हमारी काँटेदार पहाड़ी की झाड़ियों की तरह उलझे हुए और लताओं की तरह भ्रमित हैं। हम आप जैसे सज्जन को कैसे स्वीकार कर सकते हैं? आप जैसे व्यक्ति को कैसे स्वीकृति और शिक्षा दी जा सकती है? आपको अपनी वर्तमान स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए और एक स्वतंत्र जीवन खोजना चाहिए। स्थिरता। तभी तुम अथाह टोकरी में पानी भरना सीख सकते हो, और जड़विहीन लोहे के पेड़ को फूल खिला सकते हो।
चमत्कारिक खजाने के शिखर पर, अध्याय 64

मेरे पैर मजबूती से टिके हैं; मैं लोंगहुआ में सभा में लौटता हूँ।

जब संज़ंग ने यह सुना तो उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम किया, और अठारहवें स्वामी और एकमात्र सीधे स्वामी ने उन्हें उठने में सहायता की। गुरु शून्यता ने हल्के से हंसते हुए कहा, "बादल को छूने वाले की बातों ने कुछ ज्यादा ही स्पष्ट कर दिया। कृपया उठिए, पवित्र भिक्षु: आपको हर बात पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है। हमारा इरादा चंद्रमा के प्रकाश का उपयोग गंभीर चर्चाओं के लिए करने का नहीं था। हमें कविताएँ गानी चाहिए, स्वतंत्र महसूस करना चाहिए और स्वयं को आराम करने देना चाहिए।"

"अगर हम कविताएँ पढ़ने ही वाले हैं," क्लाउड-टचर ने मुस्कुराते हुए पत्थर के घर की ओर इशारा करते हुए कहा, "तो क्यों न हम आश्रम में जाकर थोड़ी चाय पी लें?"

संज़ंग ने झुककर उत्तर दिया और आश्रम को देखने चला गया, जिसके ऊपर बड़े

अक्षरों में 'वृक्ष-अमर आश्रम' लिखा हुआ था। फिर वे सभी अंदर गए और बैठने की जगह तय की, तभी लाल रंग का शैतानी सेवक चीनी जड़ की रोटी और सुगंधित चाय के पाँच कटोरे लेकर प्रकट हुआ। चारों बूढ़े लोगों ने संज़ंग से कुछ रोटी खाने का आग्रह किया, लेकिन वह इतना संशयी था कि उसने तब तक कुछ नहीं खाया जब तक कि चारों बूढ़े लोगों ने कुछ-कुछ नहीं खा लिया: तभी उसने दो-चार रोटी खाईं। चाय पीने के बाद, आश्रम को हटा दिया गया। फिर संज़ंग ने चारों ओर ध्यान से देखा और पाया कि चाँदनी में सब कुछ अत्यंत सुंदर और जटिल लग रहा था।

जहां चट्टानों के किनारे पानी बहता था,
और फूलों से आती सुगंधित खुशबू,
वहां का दृश्य सुसंस्कृत शांति का था।
निम्न जगत की धूल से मुक्त।

संज़ंग को यह दृश्य निहारने में अत्यंत आनंद आया: वे प्रसन्न, तनावमुक्त और उत्साहित महसूस कर रहे थे। उन्होंने स्वयं को कविता की एक पंक्ति कहते हुए पाया: "ध्यान हृदय चंद्रमा के समान पवित्रता में विचरण करता है।"

एनर्जी ने मुस्कुराते हुए कहा, "काव्यात्मक प्रेरणा आकाश से भी अधिक ताजगी भरी होती है।"

इस पर लोन अपराइट ने आगे कहा: "प्रत्येक पंक्ति को जोड़ने से कढ़ाई बढ़ती है।"

तब शून्यता ने कहा: "मोती तब मिलते हैं जब लेखन स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होता है।"

क्लाउड-टचर ने आगे कहा: "अब गौरव का दौर समाप्त हो गया है: छह राजवंश लुप्त हो गए हैं। भेद स्पष्ट करने के लिए गीतों को पुनर्गठित किया गया है।"

"मुझे वो बेवकूफी भरी बातें अभी नहीं कहनी चाहिए थीं," संज़ंग ने कहा। "मैं तो बस यूं ही बोल रहा था। सच में, मैं तो एक नौसिखिया हूं जो विशेषज्ञों के सामने अपनी प्रतिभा दिखाने की कोशिश कर रहा हूं। आप जैसे महान लोगों की उस ताजगी भरी और बेबाक शैली को सुनकर अब मुझे पता चल गया है कि आप जैसे बुजुर्ग सज्जन सचमुच कवि हैं।"

"व्यर्थ की बातों में समय बर्बाद मत करो," एनर्जी ने कहा। "एक साधु को हर काम को अंत तक पूरा करना चाहिए। तुमने श्लोक शुरू किया है, तो उसे पूरा क्यों नहीं करते? कृपया इसे तुरंत पूरा करो।"

"मैं नहीं कर सकता," संज़ंग ने उत्तर दिया। "अगर आप इसे मेरे लिए पूरा कर दें, अठारहवें स्वामी, तो यह कहीं बेहतर होगा।"
“यह तो आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है!” एनर्जी ने टिप्पणी की। “आपने ही तो यह श्लोक शुरू किया है, तो आप इसे पूरा करने से इनकार नहीं कर सकते। अपने मोतियों को लेकर इतना कंजूस होना गलत है।” तब संजांग के पास अंतिम दोहा जोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था:
"हवा में झूलते हुए तकिये पर रखी चाय का इंतजार कर रहा हूँ,"
अब आवाज में वसंत की झलक है, क्योंकि दिल को सुकून मिल गया है।
अठारहवें प्रभु ने कहा, "मुझे 'बसंत की आवाज में ताजगी है क्योंकि दिल शांत है' यह पंक्ति पसंद है।"
इस पर लोन अपराइट ने जवाब दिया, "एनर्जी, तुम्हें कविता की गहरी समझ है और तुम अपना सारा समय इसके आनंद में बिताते हो। क्यों न तुम हमारे लिए एक और कविता लिखो?"
अठारहवें स्वामी ने उदारतापूर्वक मना नहीं किया। उन्होंने उत्तर दिया, "ठीक है, तो चलिए दोहे की श्रृंखला बनाते हैं।"
प्रत्येक व्यक्ति को अपने दोहे की शुरुआत पिछले दोहे के अंतिम शब्द से करनी होगी।
मैं शुरुआत करता हूँ: वसंत की महिमा के बिना शीत ऋतु की मृत्यु नहीं होती;
बादल आते हैं और कोहरा ऐसे गायब हो जाता है मानो उनका कोई अस्तित्व ही न हो।
"मुझे इसमें कुछ और पंक्तियाँ जोड़ने दीजिए," मास्टर एम्प्टीनेस ने कहा।
"फैलती हुई छाया को हिलाने के लिए हवा का एक झोंका भी नहीं था।"
आगंतुक "धन और दीर्घायु" की तस्वीर का आनंद लेते हैं।
अब क्लाउड-टचर ने भी अपनी दोहे के साथ इसमें भाग लिया:
"इसकी कल्पना पश्चिमी पहाड़ियों के बलवान बूढ़े व्यक्ति की तरह करो, दक्षिण के साधु की तरह पवित्र, निर्दयी व्यक्ति की तरह।"
लोन अपराइट ने अपनी दो पंक्तियाँ जोड़ीं:

"वह आदमी छत की कड़िया की तरह है क्योंकि उसके किनारे के पत्ते हैं।"
सेंसर कार्यालय का निर्माण करने के लिए।"
यह सब सुनकर संजांग ने केवल आह भरी और कहा, "सचमुच, आपकी उत्कृष्ट कविताओं में एक महान भावना है जो स्वर्ग तक पहुँचती है। प्रतिभा की कमी के बावजूद मैं इसमें एक दोहा जोड़ना चाहूँगा।"
"हे पवित्र भिक्षु," एकाकी साधु ने कहा, "आप मार्ग के ज्ञाता और महान साधना प्राप्त व्यक्ति हैं। आपको एक और दोहा जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय आप हमें एक पूरा श्लोक दे सकते हैं ताकि हम यथासंभव तुकबंदी के पैटर्न से मेल खाने का प्रयास कर सकें।" संजांग के पास मुस्कुराते हुए निम्नलिखित नियमबद्ध श्लोक सुनाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था:
मैं अपने कर्मचारियों के साथ धर्म राजा से मिलने पश्चिम की ओर यात्रा कर रहा हूँ।
मैं उन अद्भुत धर्मग्रंथों की खोज करता हूँ ताकि उन्हें दूर-दूर तक फैला सकूँ।
सुनहरा जादुई कवक कविता मंडल को आशीर्वाद देता है;
पेड़ों के नीचे हजारों फूलों की सुगंध फैली हुई है।
सौ फुट ऊंचे खंभे के शीर्ष से और ऊपर जाना पड़ता है।
दस क्षेत्रों की दुनिया में अपने निशान छोड़ते हुए।
अपनी दिव्य छवि और भव्य शरीर को निखारें:
आनंद के द्वार के सामने मठ है।
जब चारों वृद्धों ने यह सुना तो वे इसकी बहुत प्रशंसा करने लगे। अठारहवें स्वामी ने कहा, "यद्यपि मैं मूर्ख और प्रतिभाहीन हूँ, फिर भी मैं साहस जुटाकर आपकी कविताओं का अनुकरण करने का प्रयास करूँगा: बलवान और गर्वित, मैं वृक्षों के राजा के रूप में मुस्कुराता हूँ।"
स्वर्ग का वृक्ष भी मेरी प्रसिद्धि की बराबरी नहीं कर सकता।
पहाड़ों में हजार फीट तक फैले अजगर और सांप की छाया; यह झरना हजार वर्षों से अपनी सुनहरी सुगंध के साथ बह रहा है।
मेरी आत्मा स्वर्ग और पृथ्वी के साथ एकरूप है:
मैं खुशी-खुशी हवा और बारिश में अपने निशानों को मिटा देता हूँ।

अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मुझे अमर हड्डियों के न होने का अफसोस है।
और अपने जीवनयापन के लिए केवल चीन की जड़ों पर ही निर्भर रहना होगा।"
"वह कविता वीरतापूर्ण ढंग से शुरू हुई, और अगले दोहे में भी कुछ शक्ति थी," एकाकी धर्मात्मा स्वामी ने कहा। "लेकिन अंतिम पंक्ति बहुत ही विनम्र थी। प्रशंसनीय! अत्यंत प्रशंसनीय! मुझे भी एक तुकबंदी करने दीजिए:
मैं पक्षियों के राजा को पाले में बैठने की जगह खुशी-खुशी देता हूँ; मेरी प्रतिभा चार पूर्णताओं के हॉल के सामने प्रदर्शित की जाती है।
ओस की बूंदों के मोती जैसे गुच्छे हरी कालीन को ढक लेते हैं;
हल्की हवा में पत्थर के दांत ठंडी सुगंध को कुचल देते हैं।
रात के सन्नाटे में गलियारे में एक मधुर आवाज गूंजती है;
प्राचीन हॉल में शरद ऋतु की धुंधली छायाएँ दूर हो जाती हैं।
मुझे नव वर्ष पर दीर्घायु की कामना किया जाता था;
बुढ़ापे में मैं गर्व से पहाड़ पर खड़ा हूं।"
“क्या शानदार कविता है, क्या शानदार कविता है,” स्वामी शून्यता ने कहा। “सचमुच, इसे लिखने में चंद्रमा और आकाश दोनों ने मिलकर काम किया है। मुझ जैसे अनाड़ी मूर्ख के लिए इसकी तुकबंदी की बराबरी करना कैसे संभव है? लेकिन मुझे कुछ पंक्तियाँ जोड़कर कोशिश करनी ही होगी: मैं इस अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता।”
"छत की कड़ियों की लकड़ी राजाओं के करीब होती है।"
इसकी प्रसिद्धि परम पवित्रता के महल में फैली हुई है।
सूर्य की रोशनी से जगमगाता हुआ हॉल नीले रंग से भरा हुआ प्रतीत होता है;
हरी-भरी खुशबू हमेशा अंधेरी दीवार में व्याप्त रहती है।
मेरी सुंदरता में मजबूती, शीतलता और प्राचीनता झलकती है।
मेरी जड़ें पाताल लोक के नौ झरनों तक जाती हैं।
मेरी फैली हुई छाया ठंडे बादलों की तरह आवरण प्रदान करती है।
मैं सुंदरता के मामले में फूलों से प्रतिस्पर्धा नहीं करता।

"आप तीनों सज्जनों की कविताएँ," क्लाउड-टचर ने कहा, "सुंदर और शुद्ध हैं, मानो कढ़ाई और ब्रोकेड से भरा एक पूरा बोरा खोला जा रहा हो। हालाँकि मुझमें न तो शक्ति है और न ही प्रतिभा, आप तीनों सज्जनों ने मेरे लिए अवरोध हटा दिया है। यदि आप ज़िद करें तो मैं कुछ तुकबंदी वाली पंक्तियाँ लिख दूँगा। मुझे उम्मीद है कि वे आपको हँसाएँगी नहीं।"
बांस के झुरमुट में मैं बुद्धिमान राजाओं को प्रसन्न करता हूँ;
वेई नदी के किनारे मेरी सौ एकड़ जमीन मुझे प्रसिद्धि दिलाती है।
मेरी हरी त्वचा स्वाभाविक रूप से जियांग देवी के आंसुओं से चिह्नित है; मेरी पपड़ीदार शाखाएँ इतिहास की सुगंध बिखेरती हैं।
मेरे पत्तों का रंग पाले में कभी नहीं बदलेगा;
मेरी धुंध से ढकी टहनियों की सुंदरता कभी छिप नहीं सकती।
वांग हुइझी की मृत्यु के बाद से कुछ ही लोग मुझे समझ पाए हैं;
प्राचीन काल से ही मुझे ब्रश और स्याही के माध्यम से जाना जाता रहा है।
"आप सभी पूजनीय अमरजनों ने फीनिक्स पक्षियों की तरह मोती बिखेरते हुए कविताएँ रची हैं," संजांग ने कहा।
मैं इसमें कुछ और नहीं जोड़ सकता। आपने मुझ पर जो कृपा दिखाई है, उससे मैं अत्यंत भावुक हूँ। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है और मुझे नहीं पता कि मेरे तीनों शिष्य मेरा कहाँ इंतज़ार कर रहे हैं। मैं अब और नहीं रुक सकता, और मुझे वापस जाने का रास्ता खोजना होगा। आपके असीम प्रेम के लिए मैं अत्यंत आभारी हूँ। क्या आप मुझे वापस जाने का रास्ता दिखा सकते हैं?
"हे पवित्र भिक्षु, चिंता मत कीजिए," चारों वृहद भिक्षुओं ने हंसते हुए उत्तर दिया। "ऐसा अवसर हज़ार वर्षों में एक बार ही आता है। आकाश निर्मल और साफ है, और चंद्रमा की रोशनी से रात दिन के समान उज्ज्वल लग रही है। आप आराम कीजिए और थोड़ी देर और यहीं बैठिए। भोर होते ही हम आपको पहाड़ी के उस पार देखेंगे। आप निश्चित रूप से अपने विशिष्ट शिष्यों से मिलेंगे।"
जब वे बातें कर रहे थे, तभी नीले रंग की पोशाक पहने दो नौकरानियाँ आईं, दोनों के

हाथों में लाल रेशम की लालटेन थी। उनके पीछे एक परी थी, जिसके हाथ में खुबानी के फूल की एक टहनी थी और उसने मुस्कुराते हुए उनका अभिवादन किया। वह परी कैसी दिखती थी?
उसके बाल हरे रंग के थे, जैसे जेड रत्न।
उसका चेहरा रूज से भी ज्यादा गुलाबी था।
उसकी तारों जैसी आंखें प्रकाश और रंगों से भरी हुई थीं;
उसकी सुंदर भौहें पतंगे के एंटीना जैसी थीं।
अध्याय 64
893
पश्चिम की यात्रा
उसने बेर के फूलों की डिज़ाइन वाली लाल स्कर्ट पहनी थी;
और एक हल्के भूरे रंग की जैकेट जिस पर लाल रंग की धारियाँ थीं।
उसके घुमावदार जूते फीनिक्स पक्षी की चोंच के आकार के थे।
और उसकी रेशमी मोजों पर कीचड़ के निशान थे।
यह चुड़ैल तियानताई की उस स्त्री जितनी ही सुंदर थी।
वह झोऊ राजा की उपपत्नी से कम सुंदर नहीं थी।
"खुबानी की परी, आपके आगमन से हमें जो सुख मिला है, उसका क्या कारण है?" बूढ़े व्यक्ति ने उनसे झुककर पूछा।
उनके अभिवादन का जवाब देते हुए उसने कहा, "मैंने सुना है कि आपके यहाँ एक विशिष्ट अतिथि आए हैं और आप उनके साथ कविताओं का आदान-प्रदान कर रहे हैं। क्या मैं उनसे मिल सकती हूँ?"
अठारहवें स्वामी ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "ये रहा। पूछने की ज़रूरत नहीं है।" संज़ंग ने उन्हें प्रणाम किया, लेकिन कुछ कहने की हिम्मत नहीं की।
“चाय तुरंत लाओ,” उसने कहा। पीले रंग की पोशाक पहने दो और नौकरानियाँ लाल रंग की लाख की थाली में चाय लेकर आईं, जिस पर छह उत्तम चीनी मिट्टी के चाय के प्याले रखे थे। इनमें दुर्लभ फल और चम्मच रखे थे, साथ ही एक तांबे की जड़ाई वाली लोहे की चायदानी भी थी जिसमें गर्म और सुगंधित चाय थी। चाय परोसने के बाद, उस महिला ने अपनी कोमल उंगलियाँ दिखाईं जो हरे प्याज की पत्तियों जैसी थीं। उसने चाय के प्याले पहले संज़ंग को और फिर चारों बुजुर्गों को दिए। आखिरी प्याला

उसने खुद रख लिया।
जब स्वामी शून्यता ने खुबानी परी को बैठने के लिए आमंत्रित किया, तभी वह बैठी। चाय पीने के बाद वह आगे झुकी और बोली, "चूंकि आप प्राचीन अमर लोगों ने इतनी आनंददायक शाम बिताई है, क्या आप मुझे अपनी कुछ सर्वश्रेष्ठ पंक्तियाँ सुना सकते हैं?"
"हमारी रचनाएँ तो सरासर घटिया और बेतुकी थीं," क्लाउड-टचर ने उत्तर दिया। "लेकिन इस पवित्र भिक्षु की कविताएँ वास्तव में उच्च कोटि की तांग कविता की उत्कृष्ट कृतियाँ थीं।"
"कृपया मुझे इन्हें सुनने दीजिए," परी ने कहा, जिसके बाद चारों प्राचीनों ने संज़ंग की दो कविताएँ और ध्यान धर्म पर उनकी व्याख्या सुनाई। मुस्कुराती हुई स्त्री ने कहा, "मैं बिल्कुल प्रतिभाहीन हूँ और मुझे इस तरह खुद को मूर्ख नहीं बनाना चाहिए, लेकिन इन अद्भुत पंक्तियों को सुनना एक ऐसा अवसर है जिसे गंवाना नहीं चाहिए। क्या मैं दूसरी तुकबंदी शैली में एक छंद बना सकती हूँ?" फिर उसने ये पंक्तियाँ सुनाईं:
हान सम्राट वू ने सबसे पहले मेरा नाम रोशन किया;
झोऊ काल में कन्फ्यूशियस ने मेरी छत्रछाया में शिक्षा दी थी।
डोंग फेंग मुझसे इतना प्यार करता था कि उसने मेरी एक लकड़ी का पेड़ लगा दिया;
सन चू ने एक बार मेरी जेली को बलि के रूप में अर्पित किया था।
अध्याय 64
894
पश्चिम की यात्रा
मेरी गुलाबी और बारिश से सींची हुई सुंदरता कोमल है;
धुंधली हरी घास दिखाई भी देती है और फिर भी छिपी रहती है।
जब ये ज्यादा पक जाते हैं तो इनमें थोड़ी खटास आ जाती है;
हर साल मैं गेहूँ के खेतों के किनारे लेट जाता हूँ।
जब चारों बुजुर्गों ने कविता सुनी तो वे सब उसकी प्रशंसा से भर गए। उन्होंने कहा, "यह कितनी सुंदर है!"
और ये सांसारिक धूल से कितने मुक्त हैं। साथ ही, इन पंक्तियों में वसंत ऋतु के जागरण का आभास भी है।
'मेरी गुलाबी और बारिश से सींची हुई सुंदरता कोमल है।' यह अच्छा है। 'मेरी गुलाबी

और बारिश से सींची हुई सुंदरता कोमल है।'

“आप तो बहुत दयालु हैं—यह तो मुझे थोड़ा चौंका देता है,” उसने उत्तर दिया। “अभी-अभी मैंने जो पवित्र भिक्षु के वचन सुने, वे हृदय से निकले रेशमी वस्त्र या शब्दों की कढ़ाई के समान थे। क्या आप उदारता दिखाते हुए मुझे उनमें से एक श्लोक सिखा सकते हैं?” तांग पुजारी उत्तर देने का साहस नहीं कर सका।

वह महिला स्पष्ट रूप से उस पर मोहित हो रही थी और उसके करीब आती जा रही थी, खुद को उससे सटाकर फुसफुसाते हुए कह रही थी, "महान अतिथि, आइए प्यार की इस अद्भुत रात का भरपूर आनंद लें। हम किस बात का इंतजार कर रहे हैं? जीवन छोटा है।"

"हे पवित्र भिक्षु, खुबानी की परी आपकी बहुत बड़ी प्रशंसक है," अठारहवें स्वामी ने कहा। "आपको भी उसके लिए कुछ न कुछ जरूर महसूस करना चाहिए। अगर आपको वह प्यारी नहीं लगती तो आपका स्वाद बहुत ही खराब है।"

“पवित्र भिक्षु एक प्रसिद्ध सज्जन हैं जिन्होंने मार्ग पा लिया है,” एकाकी धर्मात्मा स्वामी ने कहा, “वे कभी भी अनुचित कार्य नहीं करेंगे। हमारे लिए ऐसा करना सरासर गलत होगा। उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान को धूमिल करना बहुत ही घृणित कार्य होगा। यदि खुबानी परी सहमत हो, तो बादल-स्पर्शक और अठारहवें स्वामी मध्यस्थ की भूमिका निभा सकते हैं, जबकि मैं और स्वामी शून्यता विवाह के गारंटर बन सकते हैं। उनका विवाह होना उत्तम होगा।”

यह सुनकर संज़ंग भय से पीला पड़ गया, उछलकर खड़ा हो गया और ज़ोर से चिल्लाया, "तुम सब राक्षस हो, मुझे इस तरह गुमराह करने की कोशिश कर रहे हो। मार्ग के रहस्यों पर तर्कपूर्ण ढंग से चर्चा करने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन एक स्त्री को मोहरा बनाकर मुझ जैसे भिक्षु को बर्बाद करने की कोशिश करना शर्मनाक है।" संज़ंग को इतना क्रोधित देखकर वे सब डर के मारे अपनी उंगलियां चबाने लगे और कुछ नहीं बोले।

लेकिन लाल शैतान सेवक भयंकर क्रोध से भड़क उठा, "तुम्हें पता नहीं है कि तुम कितने सम्मानित हो रहे हो, भिक्षु।"

मेरी बहन में क्या खराबी है? वो खूबसूरत और आकर्षक है। उसकी कढ़ाई की कला को छोड़ दें तो, कविता लिखने की उसकी प्रतिभा ही उसे तुम्हारे लिए काफी उपयुक्त बनाती है। तुम्हारा मतलब क्या है, उसे ठुकराने की कोशिश कर रहे हो? तुम बहुत बड़ी

गलती कर रहे हो। अकेले नेक स्वामी का विचार बिल्कुल सही था। अगर तुम उससे चुपके से सोने के लिए तैयार नहीं हो, तो मैं तुम दोनों की शादी विधिपूर्वक करवा दूँगा। सन्ज़ंग सदमे से और भी पीला पड़ गया। उनके तर्क, चाहे कितने भी अटपटे क्यों न हों, उस पर ज़रा भी असर नहीं डाल रहे थे। "हम आपसे बहुत अच्छे से बात कर रहे हैं, भिक्षु," शैतानी सेवक ने कहा, "लेकिन आप ज़रा भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। अगर हम अपना आपा खो बैठे और अपने देहाती तरीके से पेश आने लगे, तो हम आपको घसीटकर ले जाएंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि आप फिर कभी भिक्षु न बन सकें और न ही कभी शादी कर सकें। उसके बाद आपका जीवन अर्थहीन हो जाएगा।"

उस आदरणीय बुजुर्ग का हृदय पत्थर की तरह कठोर बना रहा और उन्होंने शिष्यों की बात मानने से हठपूर्वक इनकार कर दिया, वे लगातार सोचते रहे कि उनके शिष्य उन्हें कहाँ ढूँढ रहे हैं। इस विचार से उनकी आँखों से आँसू लगातार बहने लगे। मुस्कुराते हुए और उनके पास बैठते हुए उस स्त्री ने अपनी पन्ना रंग की आस्तीन से रेशमी रूमाल निकालकर उनके आँसू पोंछे।

अध्याय 64

"इतने नाराज़ मत होइए, आदरणीय अतिथि," उसने कहा। "हम दोनों प्रेम के सुखों का स्वाद चखने वाले हैं।" संज़ंग उछल पड़ा और उसे चले जाने के लिए चिल्लाया, और अगर उसे बलपूर्वक वहाँ न रोका गया होता तो वह तुरंत चला जाता।

यह झगड़ा सुबह होने तक चलता रहा।

अचानक संज़ंग ने पुकार सुनी, "स्वामी! स्वामी! हम आपको सुन सकते हैं। आप कहाँ हैं?" बंदर, सुअर और साधु सैंड पूरी रात सफेद घोड़े को आगे बढ़ाते और सामान ढोते हुए हर जगह खोज रहे थे। वे बिना एक पल भी आराम किए काँटों और झाड़ियों से गुज़रते हुए 250 मील चौड़ी बादलों से ढकी काँटेदार पर्वत श्रृंखला के पश्चिमी किनारे पर पहुँच गए थे। संज़ंग की गुस्से भरी चीखें सुनकर उन्होंने यही आवाज़ लगाई। संज़ंग खुद को छुड़ाकर बाहर भागा और पुकारा, "वुकोंग, मैं यहाँ हूँ। मदद करो! मदद करो!" चारों वृहद, शैतानी नौकर, वह स्त्री और उसकी दासियाँ पलक झपकते ही गायब हो गए।

कुछ ही देर बाद पिग और फ्रायर सैंड भी वहाँ आ गए। उन्होंने पूछा, "आप यहाँ कैसे

पहुँचे, स्वामी जी?"
"शिष्यों," संज़ंग ने बंदर से लिपटते हुए कहा, "मैंने तुम्हें बहुत परेशान किया है। मुझे यहाँ उस बूढ़े व्यक्ति ने लाया है जो कल रात प्रकट हुआ था और उसने कहा था कि वह एक स्थानीय देवता है जो हमारे लिए शाकाहारी भोजन लाया है - वही जिसे तुमने चिल्लाया था और मारने वाले थे। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे उस दरवाजे के अंदर ले गया, जहाँ मैंने तीन बूढ़े लोगों को देखा जो मुझसे मिलने आए थे। वे मुझे 'पवित्र भिक्षु' कहकर पुकारते रहे और बहुत ही शुद्ध और शालीन तरीके से बातें करते रहे।"
वे अद्भुत कवि थे, और मैंने उनकी कुछ कविताओं से मेल खाया। फिर लगभग आधी रात को एक खूबसूरत औरत लालटेन लेकर मुझसे मिलने आई और उसने खुद एक कविता बनाई। वह मुझे बार-बार 'महान अतिथि' कहकर पुकार रही थी। उसे मेरा रूप इतना पसंद आया कि वह मेरे साथ सोना चाहती थी। इससे मुझे होश आया। जब मैंने मना किया तो उन्होंने हमारे बीच रिश्ता करवाने और हमारी शादी करवाने की पेशकश की। मैंने कसम खाई कि मैं सहमत नहीं होऊंगा और उन पर चिल्लाते हुए वहां से भागने की कोशिश कर रहा था कि तभी अचानक आप वहां आ गए। हालांकि वे अभी भी मेरे कपड़े खींच रहे थे, लेकिन अचानक गायब हो गए। ऐसा शायद इसलिए हुआ क्योंकि सुबह हो चुकी थी और वे आपसे भी डर गए थे।
"क्या आपने कविता के बारे में बात करते समय उनसे उनके नाम पूछे थे?"
बंदर ने पूछा। "हाँ," संज़ंग ने उत्तर दिया, "मैंने उनसे उनके पदनाम पूछे। सबसे बड़े ऊर्जा थे, अठारहवें स्वामी; उनसे छोटे अकेले सीधे स्वामी थे; तीसरे शून्यता के स्वामी थे; और चौथे प्राचीन बादल-स्पर्शी थे। वे उस स्त्री को खुबानी परी कहते थे।"
"वे कहाँ हैं?" सुअर ने पूछा, "वे कहाँ चले गए?"
"वे कहाँ गए हैं, मुझे नहीं पता," संजांग ने उत्तर दिया, "लेकिन जहाँ हमने कविता के बारे में बात की थी, वह यहीं पास में था।"
जब तीनों शिष्यों ने अपने गुरु के साथ खोजबीन की तो उन्हें एक चट्टान मिली जिस पर ये शब्द खुदे हुए थे।
"वृक्ष अमरों का आश्रम।"
"यही है," संज़ंग ने कहा, और ध्यान से देखने पर भाई बंदर को एक बड़ा जुनिपर का पेड़, एक पुराना सरू का पेड़, एक पुराना चीड़ का पेड़ और एक पुराना बांस दिखाई

दिया। बांस के पीछे एक लाल मेपल का पेड़ था। जब उसने चट्टान के किनारे से दोबारा देखा तो उसे एक पुराना खुबानी का पेड़, दो सर्दियों में खिलने वाले बेर के पेड़ और दो ओस्मांथस के पेड़ दिखाई दिए।

"क्या तुमने बुरी आत्माओं को देखा?" बंदर ने पूछा।

"नहीं," सुअर ने कहा।

"ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम्हें यह एहसास नहीं है कि वे पेड़ आत्मा बन गए हैं," बंदर ने कहा।

"तुम्हें कैसे पता चला कि वे आत्माएं पेड़ थीं?" सुअर ने पूछा।

अध्याय 64

896

पश्चिम की यात्रा

"अठारहवें स्वामी चीड़ का पेड़ हैं," बंदर ने उत्तर दिया, "अकेले सीधे खड़े स्वामी सरू के पेड़ हैं, स्वामी शून्यता जुनिपर के पेड़ हैं और प्राचीन बादल-स्पर्शी बांस के पेड़ हैं। मेपल का पेड़ लाल शैतान था और खुबानी परी खुबानी का पेड़ थी।"

जब सुअर ने यह सुना तो उसने बेरहमी से अपने रेक से प्रहार किया और अपनी थूथन से पेड़ों को उखाड़ दिया, जिससे बेर, ओसमंथस, खुबानी और मेपल के पेड़ गिर पड़े और ऐसा करते ही उनकी जड़ों से खून बहने लगा। "वुनेन्ग," संजांग ने उसे रोकने के लिए उसके पास जाकर कहा, "इनमें से किसी को भी नुकसान मत पहुँचाओ। हालाँकि वे आत्मा बन गए हैं, लेकिन उन्होंने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई।"

चलिए अब हम फिर से अपने रास्ते पर चलें।

“मालिक, उन पर दया मत कीजिए,” बंदर ने कहा। “अगर हमने उन्हें बड़े राक्षस बनने दिया तो वे लोगों को बहुत नुकसान पहुँचाएँगे।” इतना कहकर उस मूर्ख ने अपना फावड़ा चलाया और चीड़, सरू, जुनिपर और बाँस के सभी पेड़ों को ज़मीन पर गिरा दिया। तभी उसने अपने मालिक को घोड़े पर सवार होकर पश्चिम की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर चलने का न्योता दिया।

अगर आपको नहीं पता कि आगे बढ़ने पर क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 65

एक दानव ने झूठी गड़गड़ाहट की चोटी बनाई

चारों तीर्थयात्रियों पर विपत्ति आ पड़ती है
इस बार कारण और परिणाम का खुलासा हुआ
इससे व्यक्ति को अच्छे कार्यों को करने और बुरे कार्यों से दूर रहने की प्रेरणा मिलनी चाहिए।
एक बार विचार उत्पन्न हो जाए
खुफिया विभाग को इसकी जानकारी है।
और इसे कार्रवाई में बदलें।
मूर्खता या कौशल सीखने का प्रयास क्यों करें?
दोनों ही निर्दयता की दवा हैं।
जब तक आप जीवित हैं, सही काम करें;
यूं ही बहते मत रहो।
मूल कारण और स्रोत को पहचानें,
तने और खोल से बच निकलें।
यदि आप दीर्घायु होना चाहते हैं तो आपको यह बात समझनी होगी।
हर पल ध्यान से देखें,
अध्याय 65
897
पश्चिम की यात्रा
अपने विचारों को परिष्कृत करें।
तीनों दर्रों से गुजरो, काला सागर को भर दो;
अच्छाई निश्चित रूप से फीनिक्स और सारस पर सवार होगी।
तब आपका अंधकार करुणा में बदल जाएगा
जैसे-जैसे आप परम आनंद की ओर बढ़ते हैं।
तांग सान्ज़ांग के विचार इतने शुद्ध थे कि न केवल स्वर्ग के देवताओं ने उनकी रक्षा की, बल्कि वनस्पतियों के देवताओं ने भी उन्हें एक रात के लिए अपने साथ यात्रा के एक हिस्से में ले जाकर सुंदर वार्तालाप कराया, जिससे उन्हें कांटों और झाड़ियों से होकर गुजरने से मुक्ति मिल गई। आगे कोई लताएँ भी नहीं थीं जो उन्हें उलझा सकें। जब वे चारों पश्चिम की ओर एक और लंबी यात्रा पर निकले, तो शीत ऋतु समाप्त हो गई और वसंत ऋतु लौट आई।

सभी चीजें खिलने लगती हैं।
सप्तर्षि मंडल का हैंडल पूर्व दिशा की ओर लौटता है।
हर जगह घास हरी है।
नदी के किनारे उगे विलो के पत्ते भी वैसे ही हैं।
आड़ू के फूलों से ढकी पहाड़ी की चोटी लाल ब्रोकेड जैसी दिखती है;
नदी के ऊपर छाई धुंध एक पारदर्शी जाली की तरह है।
तेज हवा और बारिश,
असीम भावना।
फूल सूर्य के लिए अपने दिल खोल देते हैं,
अबाबीलें नाजुक काई को उड़ा ले जाती हैं।
वांग वेई को पहाड़ों की सुंदरता को चित्रित करना चाहिए था;
पक्षियों का मधुर गीत सु किन की सुरीली ज़ुबान की तरह ही प्रभावशाली है।
हालांकि इन सुगंधित फूलों के गुच्छों को कोई नहीं देखता
तितलियाँ और मधुमक्खियाँ इन्हें बहुत पसंद करती हैं।
गुरु और शिष्य फूलों और घास के बीच से घोड़े के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़े, जब तक कि उन्हें दूर एक इतना ऊँचा पर्वत दिखाई नहीं दिया जो आकाश को छू रहा था। उन्होंने अपनी चाबुक से उसकी ओर इशारा किया (संज़ांग, अध्याय 65)

उसने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि वह पर्वत कितना ऊंचा है, वुकॉन्ग। वह आकाश को छूता है और आसमान को भेदता है।"
क्या कोई प्राचीन कविता ऐसी नहीं है जिसमें कहा गया हो, 'स्वर्ग ही सर्वोच्च है: कोई पर्वत उसकी ऊँचाई के बराबर नहीं हो सकता?'
बंदर ने उत्तर दिया, "पहाड़ चाहे कितना भी ऊंचा क्यों न हो, वह आकाश से जुड़ नहीं सकता।"
"तो फिर कुनलुन पर्वत को स्वर्ग का स्तंभ क्यों कहा जाता है?" सुअर ने पूछा।
"ज़ाहिर है, तुम्हें नहीं पता कि उत्तर-पश्चिम दिशा में आकाश का एक हिस्सा हमेशा से गायब रहा है," बंदर भाई ने जवाब दिया। "कुनलुन उत्तर-पश्चिम कोने में स्थित है, इसलिए यह आकाश के उस खालीपन को भरता है। इसीलिए इसे स्वर्ग का स्तंभ

कहा जाता है।"
"भाई," फ्रायर सैंड ने मुस्कुराते हुए कहा, "उसे ये सब बताना बंद करो। वो खुद को श्रेष्ठ साबित करने के लिए इन सब बातों का बखान करेगा।"
पहाड़ की ऊंचाई का अंदाजा हमें तब लगेगा जब हम उस पर चढ़ जाएंगे।
वह मूर्ख साधु सैंड का पीछा करने लगा और उससे मज़ाकिया अंदाज़ में हाथापाई करने लगा, और मालिक का घोड़ा मानो पंखों पर सवार होकर सरपट दौड़ने लगा। वे जल्द ही एक गहरी खाई के किनारे पहुँच गए, जिस पर वे बड़ी धीमी गति से चढ़ने लगे। पहाड़ कुछ इस तरह का था:
जंगलों में हवा सरसरा रही है,
खाइयों के तल में पानी तेजी से बह रहा है।
कौवे और गौरैया इसके ऊपर से उड़ नहीं सकते;
यहां तक कि देवताओं और अमर प्राणियों को भी यह मुश्किल लगता है।
अंतहीन रूप से मुड़ती हुई दरारें और खाइयाँ;
धूल के बादल ऐसी जगह उड़ रहे हैं जहां कोई नहीं जा सकता;
विचित्र और आकर्षक आकृतियों वाली चट्टानें।
बादल पानी के विशाल विस्तार की तरह दिखते हैं,
जबकि अन्य जगहों पर पेड़ो पर पक्षी गीत गा रहे हैं।
हिरण अपने मुंह में जादुई कवक लेकर घूमते हैं।
बंदर आड़ू तोड़ते हैं।
चट्टानों पर लोमड़ियाँ और रैकून कुत्ते उछल-कूद करते नज़र आते हैं।
पहाड़ी की चोटी पर बड़े और छोटे हिरण खेलते हैं।
फिर आती है बाघ की रोंगटे खड़े कर देने वाली दहाड़,
और रास्ता तेंदुओं और भेड़ियों द्वारा अवरुद्ध है।
अध्याय 65
899
पश्चिम की यात्रा
संज़ंग ने जो देखा उससे वह भयभीत हो गया, लेकिन बंदर की शक्तियाँ असीम थीं। अपने सोने की पट्टी वाले डंडे और एक ज़ोरदार दहाड़ से उसने भेड़ियों, बाघों, तेंदुओं और अन्य जंगली जानवरों को भगा दिया और फिर स्वामी के लिए पर्वत की चोटी

तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त किया। जैसे ही वे शिखर पार करके पश्चिम की ओर हल्की ढलान पर उतरने लगे, उन्होंने कुछ भव्य इमारतों के ऊपर दिव्य प्रकाश और रंगीन बादल देखे, जिनसे घंटियों और पत्थर की घंटियों की धीमी आवाज़ें आ रही थीं।
“देखो, शिष्यों, वह जगह कैसी है,” संजांग ने कहा। बंदर ने अपना सिर उठाया, अपने हाथों से अपनी आँखों को ढका और ध्यान से देखने पर पाया कि वह एक सुंदर जगह थी: भव्य वास्तुकला।
एक प्रसिद्ध मठ।
शून्यता की घाटी पृथ्वी के कंपनों से भरी हुई है;
दिव्य सुगंध शांति में व्याप्त है।
नीले रंग के चीड़ के पेड़ों पर बारिश की वजह से इमारतें धुंधली दिखाई देती हैं;
हरे बांस के चारों ओर फैली धुंध प्रवचन कक्ष को सुरक्षा प्रदान करती है।
रंगीन बादलों के बीच से अजगर का महल दिखाई देता है;
अनंत संसार झिलमिलाते प्रकाश में दिखाई देते हैं।
लाल रंग की रेलिंग और संगमरमर के दरवाजे,
रंगे और नक्काशीदार बीम।
जिस सभागार में धर्मग्रंथों का अध्यापन होता है, वहां अगरबत्ती की सुगंध गूंज रही है;
जिस खिड़की से रहस्य पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं, उसके ऊपर चंद्रमा की रोशनी टिकी हुई है।
लाल पेड़ों पर पक्षी गाते हैं,
सारस चट्टानों में स्थित एक झरने से पानी पीते हैं।
ये फूल जेतवन के फूलों के समान ही सुंदर हैं;
श्रावस्ती की चमक के लिए सभी द्वार खुल जाते हैं।
विशाल इमारतों के बगल में स्थित द्वार चट्टानों की ओर खुलते हैं;
घंटी और झंकार की लय धीमी है।
खुली खिड़कियों से हल्की हवा अंदर आती है।
और ऊपर उठे हुए पर्दों के नीचे धुंध छाई हुई है।
अध्याय 65
900
पश्चिम की यात्रा

भिक्षुओं के बीच सभी भाव शांत हैं;
सांसारिकता के अभाव में ही शांति का वास होता है।
अमर लोगों की एक ऐसी भूमि जो पृथ्वी की धूल से अछूती है,
यह पवित्र भूमि का भव्य मठ।
जब बंदर ने अच्छी तरह से निरीक्षण कर लिया, तो वह वापस आकर बोला, "गुरुजी, यह एक मठ है, लेकिन किसी कारणवश यहाँ के शुभ ध्यान के वातावरण में कुछ अशुभ सा महसूस हो रहा है। यह जगह थंडर मठ जैसी दिखती है, लेकिन यहाँ तक की दूरी गलत बताई जा रही है। चाहे कुछ भी हो जाए, हमें अंदर जाने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। अगर हम अंदर गए तो किसी बुरी चीज से हमारा सामना हो सकता है।"
"लेकिन अगर यह थंडर मॉनेस्ट्री जैसा दिखता है, तो यह निश्चित रूप से वल्चर पीक ही होगा," तांग पुजारी ने कहा। "मेरी दिली इच्छा को निराश करने की कोशिश मत करो और जिस काम के लिए मैं आया हूँ, उसमें देरी मत करो।"
"लेकिन यह गिद्धों की चोटी नहीं है," मंकी ने कहा। "मैं वहां कई बार जा चुका हूं और यह वह रास्ता नहीं है।"
"भले ही ऐसा न हो, फिर भी यहां अच्छे लोग जरूर रहते होंगे," पिग ने कहा।
"इतना संदेह मत करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "सड़क गेट के ठीक आगे से सीधी जाती है, इसलिए हम एक नज़र में ही पता लगा सकते हैं।"
"तुम सही कह रहे हो," बंदर ने कहा।
घोड़े को चाबुक मारते हुए, आदरणीय बुजुर्ग मठ के द्वार पर पहुँचे, जिसके ऊपर "थंडर" शब्द अंकित थे।
मठ के बारे में लिखा गया था।
यह बात सुनकर वह इतना हैरान हुआ कि घोड़े से गिर पड़ा और गुस्से में बोला, "अरे दुष्ट बंदर! तू मेरी जान ले लेगा। हम थंडर मॉनेस्ट्री में हैं और तू अभी भी मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है।"
“गुस्सा मत कीजिए, स्वामी जी,” बंदर ने बनावटी मुस्कान के साथ कहा। “एक बार फिर देखिए। द्वार के ऊपर तीन शब्द लिखे हैं। आपने उनमें से केवल दो ही क्यों पढ़े और फिर मुझसे गुस्सा हो गए?” अभी भी कांपते हुए, स्वामी जी दोबारा खड़े हुए और उन्होंने देखा कि वास्तव में वहाँ तीन शब्द लिखे थे: LESSER

थंडर मठ।
"भले ही यह लघु वज्र मठ हो," संज़ंग ने कहा, "यहाँ अवश्य ही कोई बुद्ध विराजमान होंगे। शास्त्रों में वर्णित तीन हज़ार बुद्ध एक ही स्थान पर नहीं रह सकते, जैसे बोधिसत्व गुआनयिन दक्षिणी सागर में, समंतभद्र एमेई पर्वत पर और मंजुश्री वुटाई पर्वत पर निवास करते हैं। मुझे आश्चर्य है कि यह किस बुद्ध का पवित्र आसन है। जैसा कि कहावत है, जहाँ बुद्ध होते हैं, वहाँ शास्त्र होते हैं।"
आप जहां भी जाएंगे, आपको कुछ न कुछ अनमोल चीज़ें मिलेंगी।
चलो अन्दर चले।"
अध्याय 65
901
पश्चिम की यात्रा
"नहीं, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए," बंदर ने कहा। "यह जगह बेहद खतरनाक लग रही है। अगर इससे कोई दुर्घटना हो जाए तो मुझे दोष मत देना।"
"भले ही यहाँ बुद्ध की प्रतिमा न हो, लेकिन कहीं न कहीं बुद्ध की मूर्ति तो अवश्य होगी, और मैंने व्रत रखा है कि मैं रास्ते में मिलने वाली हर बुद्ध प्रतिमा की पूजा करूँगा," संज़ंग ने उत्तर दिया। "मैं तुम्हें दोष नहीं दूँगा।" फिर उसने पिग को अपना चोगा उतारने, मुकुट पहनने, अपने कपड़े ठीक करने और आगे बढ़ने को कहा।
जैसे ही उसने ऐसा किया, द्वार के भीतर से एक आवाज़ आई, "तांग पुजारी, आप हमारे बुद्ध की पूजा करने के लिए पूर्व से आए हैं, तो आप अभी भी इतने लापरवाह क्यों हैं?" संज़ंग ने तुरंत प्रणाम करना शुरू कर दिया, पिग ने भी ऐसा ही किया जबकि साधु सैंड घुटने टेककर बैठ गए। महान ऋषि घोड़े को पकड़े और सामान की देखभाल करते हुए पीछे रह गए। भीतरी द्वार से प्रवेश करते ही वे बुद्ध हॉल पहुँच गए, जिसके बाहर पाँच सौ अर्हत, तीन हज़ार रक्षक, चार वज्रपाणि, आठ बोधिसत्व, भिक्षुणियाँ, गृहस्थ और अनगिनत पवित्र भिक्षु और गृहस्थ भाई विराजमान थे। चारों ओर फूलों की सुगंध और शुभ वाष्प फैली हुई थी। आदरणीय वृद्ध, पिग और साधु सैंड सभी इतने अभिभूत थे कि हॉल तक पहुँचने तक वे हर कदम पर प्रणाम करते रहे। केवल बंदर ने प्रणाम नहीं किया।
सिंहासन से एक तीखी आवाज आई, "सन वुकॉन्ग, जब तुम बुद्ध को देखते हो तो प्रणाम क्यों नहीं करते?"

किसी को भी इस बात का एहसास नहीं हुआ कि बंदर ने चारों ओर सावधानीपूर्वक देखते हुए यह जान लिया था कि यह सब झूठ था।

घोड़े को छोड़कर और सामान नीचे रखकर उसने लाठी लहराते हुए चिल्लाया, "दुष्ट जानवरो!"

कितनी हिम्मत है तुम्हारी! बुद्ध का रूप धारण करके उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! यहीं रहो!" उसने दोनों हाथों में लाठी उठाई और वार करने ही वाला था कि आकाश से पीतल की दो झांझें एक जोरदार धमाके के साथ गिरीं और उसे सिर से पैर तक पूरी तरह घेर लिया। पिग और फ्रायर सैंड ने अपने रेक और लाठी को पकड़ने की बेताब कोशिश की, लेकिन अर्हतों, रक्षकों, पवित्र भिक्षुओं और गृहस्थ भाइयों ने उन्हें इतनी कसकर घेर लिया कि वे हिल भी नहीं सके। उन्हें और संजांग को भी पकड़ लिया गया और रस्सियों से कसकर बांध दिया गया।

अब कमल के सिंहासन पर विराजमान बुद्ध एक राक्षस राजा थे और सभी अर्हत और अन्य उसके छोटे शैतान थे। उन्होंने बुद्ध का वेश उतार दिया, जिससे वे एक बार फिर उन दुष्ट प्राणियों की तरह दिखने लगे जो वे वास्तव में थे, और उन तीनों को पीछे ले जाकर पहरे में रखा गया जबकि बंदर को झांझ के अंदर बंद कर दिया गया, जिसे कभी मुक्त नहीं किया जाना था। फिर झांझ को एक चबूतरे पर रखा गया, और वहाँ उसे तीन दिन और तीन रातों के भीतर मवाद और खून में बदल दिया जाना था, जिसके बाद बाकी तीनों को लोहे के भाप पात्र में पकाकर खा लिया जाना था।

सचमुच:

हरी आंखों वाले बंदर ने देखा कि यह झूठा था;

ध्यानमग्न भिक्षु ने बुद्ध के स्वरूप की पूजा की।

पीली पत्नी ने भी आँख बंद करके प्रणाम किया।

लकड़ी की माँ ने मूर्खतापूर्वक सहमति दे दी।

राक्षसों ने वास्तविक प्रकृति को दबाने के लिए बल का प्रयोग किया;

राक्षस राजा ने दुष्टतापूर्वक उस पवित्र व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार किया।

दानवों का राजा संकरे मार्ग से भी बड़ा था;

गलत रास्ता चुनकर उन्होंने अपनी जिंदगी बर्बाद कर दी।
तांग पुरोहित और उनके दो शिष्यों को एक कमरे में बंद करके और घोड़े को पीछे बांधकर, उन्होंने संजांग का चोगा और मुकुट वापस सामान में रख दिया और उसे भी सुरक्षित स्थान पर रख दिया। फिर उन्होंने सब कुछ कड़ी सुरक्षा में रख दिया।
मंकी को झांझों के अंदर घोर अंधेरा और इतनी गर्मी मिली कि वह पसीने से तरबतर हो गया। लाख कोशिश करने के बावजूद वह बाहर नहीं निकल सका, और हताशा में उसने अपने लोहे के डंडे से चारों ओर बेतहाशा वार किए, फिर भी झांझें एक इंच भी नहीं हिलीं। तभी उसने एक मंत्र पढ़ा जिससे उसकी लंबाई दस हजार फीट हो गई; झांझें भी उसके साथ बढ़ गईं। कहीं भी ऐसी कोई दरार नहीं बची जिससे रोशनी की एक किरण भी अंदर आ सके। उसने एक और मंत्र पढ़ा जिससे वह छोटा हो गया और इतना सिकुड़ गया कि सरसों के दाने जितना छोटा हो गया। झांझें भी उसके साथ सिकुड़ती गईं, फिर भी कोई छेद नहीं बचा।
उसने लोहे के डंडे पर जादुई साँस फूँकी, "बदलो!" कहा और उसे एक झंडे के खंभे में बदल दिया जिससे वह झांझों को सहारा दे सके। फिर उसने अपने सिर के पीछे से दो लंबे बाल खींचे, उन पर फूँका और कहा, "बदलो!"
और उसने उन्हें एक पांच भागों वाली ड्रिल में बदल दिया, जिसमें बेर के फूल के आकार का एक बिट लगा था, जिसे उसने हज़ार बार या उससे अधिक घुमाया। एक घिसने जैसी आवाज़ आई, लेकिन ड्रिल ने कोई प्रभाव नहीं डाला।
अब तक वह हताश महसूस कर रहा था, इसलिए उसने एक और हस्त-मंत्र बनाया और इन शब्दों का जाप किया, "ॐ राम शांतिपूर्ण धर्म जगत; स्वर्गीय एकता की शाश्वत तीव्र पवित्रता।"
इससे पांच रक्षकों, छह डिंग, छह जिया और धर्म के अठारह संरक्षकों को झांझ के चारों ओर इकट्ठा होकर यह कहने के लिए विवश होना पड़ा, "महान ऋषि, हम सभी आपके स्वामी की रक्षा कर रहे हैं और राक्षसों को उन्हें नुकसान पहुंचाने से रोक रहे हैं, तो आप हमें यहां क्यों बुला रहे हैं?"
“अगर वह मर गया तो मेरी सलाह न मानने का उसे यही अंजाम भुगतना पड़ेगा,” बंदर ने जवाब दिया। “तुम लोग कोई जादू ढूंढो और इन झांझों को तुरंत खोल दो और मुझे यहाँ से बाहर निकालो ताकि मैं फैसला कर सकूँ कि मुझे क्या करना है। यहाँ बिलकुल अंधेरा है, मुझे बहुत गर्मी लग रही है और इतनी घुटन है कि मैं मर जाऊँगा।”

सभी देवताओं ने झांझों को उठाने की कोशिश की, लेकिन पहले की तरह उन्हें एक इंच के अंश तक भी हिलाना नामुमकिन था।

स्वर्ण सिर वाले रक्षक ने कहा, "महान ऋषि, ईश्वर ही जानता है कि यह किस प्रकार का खजाना है, लेकिन ये सभी ऊपर से नीचे तक एक ही टुकड़े के बने हैं। हम देवता इन्हें हिलाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली नहीं हैं।"

"और मैंने यहाँ अपनी कितनी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल किया है, यह गिनना भी मुश्किल है, और मैं उन्हें हिला भी नहीं पा रहा हूँ," बंदर ने कहा। जब रक्षक ने यह सुना, तो उसने छह डिंग को बंदर का ध्यान रखने और छह जिया को झांझों की निगरानी करने का आदेश दिया, जबकि संरक्षक चारों ओर हो रही घटनाओं पर नज़र रखते रहे।

फिर वह अपनी शुभ प्रकाश की किरण के साथ आगे बढ़ा और क्षण भर में स्वर्ग के दक्षिणी द्वार से प्रवेश कर गया। वहाँ उसने किसी के बुलावे का इंतज़ार नहीं किया, बल्कि सीधे चमत्कारिक प्रकाश के हॉल की सीढ़ियों पर पहुँचकर जेड सम्राट के समक्ष प्रणाम किया और कहा, "महाराज, मैं चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षकों में से एक हूँ। तांग पुजारी को शास्त्र लाने की यात्रा पर ले जा रहे महान ऋषि, जो स्वर्ग के समतुल्य हैं, अब एक पर्वत पर पहुँच गए हैं जहाँ लघु वज्र मठ नामक एक मठ है। तांग पुजारी गिद्ध शिखर पर पहुँचने के भ्रम में पूजा करने के लिए अंदर चले गए, लेकिन यह सब उन्हें फँसाने के लिए एक चाल थी। महान ऋषि दो झांझों के भीतर फँसे हुए हैं और कहीं नहीं जा सकते। वे धीरे-धीरे मर रहे हैं। यही सूचना देने मैं आया हूँ।" जेड सम्राट ने तुरंत अट्ठाईस नक्षत्रों को उन्हें बचाने और राक्षसों को पराजित करने के लिए भेजने का आदेश दिया।

अध्याय 65

पश्चिम की यात्रा

एक पल भी देर न करते हुए, नक्षत्र रक्षक के साथ स्वर्ग के द्वार से बाहर निकल गए और जल्द ही मठ के अंदर पहुँच गए। रात के पाँच पहरों में से दूसरा पहर चल रहा था, और सभी राक्षस, वरिष्ठ और कनिष्ठ, तांग पुजारी की गिरफ्तारी का जश्न मनाने के लिए उनके राजा द्वारा दी गई दावत के बाद सो गए थे। उन्हें परेशान किए बिना, नक्षत्र झांझ के पास गए और सूचना दी, "महान ऋषि, हम अट्ठाईस नक्षत्र हैं। जेड सम्राट ने

हमें आपको बचाने के लिए यहाँ भेजा है।" यह खबर सुनकर बंदर बहुत खुश हुआ। "अपने हथियारों से इन्हें तोड़ दो और मुझे यहाँ से बाहर निकालो।"

"हम ऐसा करने की हिम्मत नहीं करते," नक्षत्रों ने उत्तर दिया। "यह शुद्ध सोना है और अगर हमने इसे छुआ तो शोर से शैतान जाग उठेंगे और फिर तुम्हें बचाना नामुमकिन हो जाएगा। हमें अपने हथियारों से इसे खोलने की कोशिश करनी होगी। जैसे ही तुम्हें इसमें रोशनी की एक भी किरण दिखे, तुम बाहर आ जाना।"

"हाँ," बंदर ने कहा। उन्होंने अपने भाले, तलवारें, कृपाण और कुल्हाड़ियों का इस्तेमाल करके उसे खोलने की कोशिश की, लेकिन तमाम प्रयासों के बावजूद तीसरा पहर आ गया और वे उस पर ज़रा सा भी असर नहीं डाल पाए। ऐसा लग रहा था मानो झांझ एक ही टुकड़े से ढाले गए हों। बंदर को अंदर से ज़रा सी भी रोशनी नहीं दिख रही थी, चाहे वह कितनी भी कोशिश करे, रेंगता रहे और चारों ओर लोटता रहे।

तब गुलेट नक्षत्र के धातु ड्रैगन ने कहा, "हे महान ऋषि, अधीर मत होइए। यह एक ऐसा खजाना है जिसे आप अपनी इच्छा अनुसार बदल सकते हैं और मुझे यकीन है कि इसे बदला जा सकता है। आप अंदर से झांझों के जुड़ने का स्थान महसूस कर सकते हैं। जैसे ही मैं अपना सींग उनके बीच डालूंगा, आप स्वयं को किसी और रूप में ढालकर उस जगह से बाहर निकल सकते हैं जहाँ मैंने उन्हें ढीला किया है।"

बंदर ने इस सुझाव का पालन किया और अंदर हाथ-पैर टटोलने लगा। इसी बीच तारामंडल ने खुद को इतना छोटा कर लिया कि उसका सींग सुई की नोक से भी छोटा रह गया। उसने दोनों झांझों के जोड़ पर सींग से ज़ोर से धक्का दिया और अत्यधिक दबाव डालकर अंदर घुसने में कामयाब हो गया।

फिर उसने "बढ़ो! बढ़ो! बढ़ो!" कहते हुए खुद को एक जादुई शरीर प्रदान किया। सींग चावल के कटोरे जितना मोटा हो गया, लेकिन झांझ धातु से बनी वस्तुओं की बजाय त्वचा और मांस के जीवों की तरह लग रहे थे: उन्होंने गलेट के धातु ड्रैगन के सींग पर अपनी पकड़ बनाए रखी, और उसके आसपास कहीं भी कोई दरार नहीं आई।

बंदर ने नक्षत्र के सींग को छूते हुए कहा, "कोई फायदा नहीं। यह कहीं से भी ढीला नहीं है। कोई चारा नहीं: तुम्हें दर्द सहकर मुझे बाहर निकालना होगा।" तब महान ऋषि ने अपने सोने की पट्टी वाले डंडे को लोहे के छुरे में बदल दिया, सींग की नोक में छेद किया, खुद को सरसों के दाने जितना छोटा कर लिया, छेद में रेंगकर घुस गए, वहीं बैठ गए और चिल्लाए, "इसे बाहर निकालो।" बड़े ही अथक प्रयासों से नक्षत्र अपना

सींग बाहर निकालने में कामयाब हुआ, जिससे वह इतना कमजोर और थका हुआ हो गया कि गिर पड़ा।

फिर बंदर सींग के छेद से बाहर निकला, अपने असली रूप में आया, अपना गदा उठाया और तांबे के पहाड़ के ढहने जैसी भयानक आवाज के साथ झांझों को चकनाचूर कर दिया। बौद्ध वाद्य यंत्र अब सोने के हजारों टुकड़ों में बिखर गए थे। इससे अट्ठाईस नक्षत्र बुरी तरह भयभीत हो गए और रक्षकों के रोंगटे खड़े हो गए। सभी राक्षस जाग गए, और जैसे ही राक्षस राजा नींद से जागा, वह उछल पड़ा, अपने कपड़े पहने और सभी राक्षसों को उनके हथियारों के साथ इकट्ठा करने के लिए ढोल बजवाए। अब लगभग भोर हो चुकी थी और वे सभी सिंहासन के चारों ओर जमा हो गए। बंदर और नक्षत्रों को सोने की झांझों के टुकड़ों के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े देखकर राक्षस राजा सदमे से पीला पड़ गया और उसने अपने अधीनस्थों को सामने के द्वार बंद करने और उन्हें भागने न देने का आदेश दिया।

जैसे ही बंदर ने यह सुना, उसने अट्ठाईस नक्षत्रों को उनके बादलों पर उछालते हुए नौवें आकाश के ऊपर तक पहुँचा दिया, जबकि दानव राजा ने सोने के टुकड़ों को व्यवस्थित किया और अपनी शैतानी सेनाओं को मठ के द्वार के बाहर इकट्ठा कर लिया।

क्रोध में आकर राजा के पास अपने कवच को पहनने, अपनी छोटी और लचीली, भेड़िये के दांतों से बनी गदा उठाने और शिविर से बाहर आकर चिल्लाने के अलावा कोई चारा नहीं था, "शुरुआती सूर्य! एक सच्चा योद्धा लड़ाई से भागता नहीं है। वापस आओ और मुझसे तीन दौर की लड़ाई लड़ो।" यह बात बंदर के बर्दाश्त से बाहर थी, और उसने दुष्ट आत्मा को देखने के लिए अपने बादल को अपनी तारामय सेना के आगे उतारा।

अध्याय 65

पश्चिम की यात्रा

उसने यही देखा:

उलझे हुए बाल

एक पतली सोने की पट्टी द्वारा अपनी जगह पर टिका हुआ;

आँखें चमक रही हैं

पीले रंग की भौंहों के नीचे;

नाशपाती के आकार की नाक
नथुने फूले हुए;
एक वर्गाकार कटा हुआ मुँह
नुकीले दांतों के साथ।
उसने चेन-मेल का कोट पहन रखा था।
झालरदार कच्चे रेशम के कमरबंद से बंधा हुआ;
उसके पैरों में बैल की खाल के जूते थे।
और वह भेड़िये के दांतों से बना एक गदा लिए हुए था।
वह एक ही समय में जंगली जानवर जैसा भी दिखता था और नहीं भी;
उसका चेहरा मानवीय था, फिर भी मानवीय नहीं था।
"तुम खुद को किस तरह का राक्षस समझते हो?" बंदर ने लाठी लहराते हुए चिल्लाकर कहा। "तुम्हारी इतनी धृष्टता कैसे हो सकती है कि तुम बुद्ध का रूप धारण करके पहाड़ पर कब्जा जमा लो और एक नकली छोटा गर्जन मठ बना लो?"
“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे जादुई पहाड़ पर उत्पात मचाने की, इसका एकमात्र कारण यही होगा कि तुम मेरा नाम नहीं जानते,” राक्षस ने कहा। “यह छोटा पश्चिमी स्वर्ग है, और स्वर्ग ने मुझे ये सुंदर इमारतें इसलिए दी हैं क्योंकि मैंने अपने आचरण को सुधारा है और सच्ची सिद्धि प्राप्त की है। मुझे पीली भौंहों वाला बुद्ध कहा जाता है, हालांकि यहाँ के लोग अज्ञानतावश मुझे पीली भौंहों वाला राजा या पीली भौंहों वाला स्वामी कहते हैं। मुझे तुम्हारी पश्चिम यात्रा के बारे में बहुत पहले से पता है और मेरे पास कुछ जादुई शक्तियाँ हैं, इसीलिए मैं तुम्हारे गुरु को लुभाने के लिए वे मायाजालें रच सका ताकि हम दोनों शक्ति परीक्षण कर सकें। यदि तुम मुझे हरा देते हो, तो मैं तुम्हारे गुरु और उनके शिष्यों को बख्श दूँगा और तुम्हें अपनी सच्ची सिद्धि पूरी करने दूँगा। लेकिन यदि तुम नहीं हरा पाते, तो मैं तुम सबको मार डालूँगा और स्वयं तथागत बुद्ध से मिलने जाऊँगा, शास्त्रों को लाकर चीन ले जाऊँगा।”
“तुम बहुत ज्यादा बोलते हो, दुष्ट आत्मा,” बंदर ने हंसते हुए कहा। “अगर तुम्हें अपनी ताकत आजमानी है तो मेरी इस लाठी से वार करके देखो।” राक्षस राजा ने बड़े हर्ष से लाठी को रोका और एक शानदार लड़ाई शुरू हो गई: अध्याय 65

लाठियों का एक जोड़ा,
सभी एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं।
सबसे पहले तो, वे दिखने में कैसे थे,
एक छोटा और लचीला बुद्ध हथियार था।
दूसरा समुद्र के भंडार से प्राप्त होने के कारण कठोर था।
इन दोनों को इच्छानुसार बदला जा सकता था।
और आज वे वर्चस्व की लड़ाई में आमने-सामने थे।
भेड़िये के दांत से बनी मुलायम गदा पर जटा सजी हुई थी।
सोने की पट्टी से ढकी उस कठोर लाठी पर अजगर के चित्र बने हुए थे।
वे दोनों ही प्रशंसनीय रूप से बड़े या छोटे हो सकते हैं।
आप जितनी लंबाई चाहें, उतनी ही सही लंबाई मिलेगी।
बंदर और राक्षस बराबर की टक्कर के थे:
उनके बीच की यह लड़ाई असली थी।
आस्था से वश में किया गया बंदर अब मन से लंगड़ा हो गया था;
उस दुष्ट राक्षस ने छल से स्वर्ग को नाराज कर दिया था।
अपने क्रोध और घृणा में भी उन्होंने दया नहीं दिखाई;
दोनों के ही अपने-अपने क्रूर और हिंसक तरीके थे।
एक प्रहार सिर पर हुआ, जिससे दबाव कभी कम नहीं हुआ;
दूसरे ने चेहरे पर वार किया और उसका मुकाबला नहीं किया जा सका।
उनके द्वारा बनाए गए बादलों के पीछे सूर्य छिप गया;
उन्होंने ऐसी धुंध छोड़ी जिसने विशाल चट्टानों को छिपा दिया।
जब प्रतिद्वंद्वी आपस में भिड़े तो लाठी का सामना लाठी से हुआ।
दोनों ने तांग पुजारी के लिए जीवन और मृत्यु को भुला दिया।
दोनों ने पचास दौर तक लड़ाई लड़ी, लेकिन कोई भी विजयी नहीं हुआ। मठ के द्वार पर ढोल और घंटे ज़ोर-ज़ोर से बज रहे थे, दुष्ट आत्माएँ युद्धघोष कर अपने झंडे लहरा रही थीं। उनके सामने अट्ठाईस नक्षत्रों के स्वर्गीय सैनिक और पंच रक्षकों की पवित्र सेनाएँ थीं, जो अध्याय 65 में वर्णित हैं।

सभी हथियारबंद होकर चिल्लाते हुए दानव राजा को घेर लिया। मठ के द्वार के बाहर मौजूद दानव इतने भयभीत थे कि वे अपने ढोल नहीं बजा पा रहे थे, और उनके हाथ इतने बुरी तरह कांप रहे थे कि वे अपने घंटे भी नहीं बजा पा रहे थे।

बूढ़ा राक्षस राजा बिल्कुल भी भयभीत नहीं था। उसने एक हाथ में गदा धारण करके शत्रु सैनिकों को रोके रखा, जबकि दूसरे हाथ से उसने अपनी कमर पर बंधी एक पुरानी सफेद सूती थैली खोली और उसे हवा में उछाल दिया।

एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ उसने महान ऋषि बंदर, अट्ठाईस नक्षत्रों और चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षकों को पकड़ लिया; फिर उसने उन्हें अपने कंधे पर लादकर अंदर ले गया। सभी छोटे राक्षस विजयी होकर लौट आए। राक्षस राजा ने अपने अधीनस्थों को चालीस-पचास चमड़ी की रस्सियाँ लाने को कहा, थैला खोला और अपने कैदियों को एक-एक करके बाहर निकालकर बाँध दिया। उनमें से प्रत्येक को लगा कि उनकी हड्डियाँ नरम पड़ गई हैं। उनकी मांसपेशियाँ सुन्न हो गई थीं और उनकी त्वचा ढीली पड़ गई थी। बाँधने के बाद उन सभी को पीछे ले जाकर बेतरतीब ढंग से ज़मीन पर फेंक दिया गया। फिर राक्षस राजा ने एक भोज का आदेश दिया और राक्षस सुबह से शाम तक पीते रहे, फिर भोज समाप्त हुआ और वे सब सो गए।

आधी रात को, जब महान ऋषि बंदर सभी देवताओं के साथ बंधा हुआ लेटा था, तो उसने रोने की आवाज़ सुनी। ध्यान से सुनने पर उसने सान्ज़ांग की आवाज़ पहचानी, जो सिसकते हुए कह रहा था,

"वुकोंग,"

काश मैंने आपकी चेतावनी पर ध्यान दिया होता:

हम इस आपदा से बच सकते थे।

जब तुम्हें सोने के झांझों में यातना दी जा रही हो,

किसी को नहीं पता कि मैं यहां कैदी हूं।"

"हम चारों का भाग्य कितना कड़वा है।"

हमारी सारी उपलब्धियां अब व्यर्थ हो गई हैं।

हम इस भयानक गतिरोध से कैसे बच सकते हैं?

क्या हमें पश्चिम की ओर जाना चाहिए और फिर घर लौटना चाहिए, जैसा कि हमें करना चाहिए?

यह सुनकर बंदर को अपने स्वामी पर दया आ गई। उसने सोचा, "भले ही मेरी सलाह

न मानने से ही यह विपत्ति आई हो, लेकिन कम से कम आप अपनी मुसीबतों में मुझे याद तो कर रहे हैं। बेहतर होगा कि मैं इन सबको बचा लूँ और रात के समय इन्हें भागने दूँ, क्योंकि सारे राक्षस सो रहे होते हैं और कोई भी पहरा नहीं दे रहा होता।"
महान संत ने जादू का प्रयोग करते हुए खुद को इतना छोटा कर लिया कि वे अपने बंधनों से मुक्त हो गए, तांग पुजारी के पास गए और कहा, "गुरुजी।"
"तुम यहाँ क्यों हो?" सान्ज़ांग ने उसकी आवाज़ पहचानते हुए पूछा। बंदर ने उसे बहुत धीमी आवाज़ में सारी घटना बताई, जिससे उसे बहुत प्रसन्नता हुई।
"कृपया मुझे जितनी जल्दी हो सके बचा लीजिए," संजांग ने कहा। "अब से मैं आपकी हर बात मानूंगा और इतना जिद्दी नहीं रहूंगा।"
अध्याय 65
907
पश्चिम की यात्रा
तभी बंदर ने हरकत शुरू की, पहले उसने स्वामी, सुअर और साधु रेत को मुक्त किया, फिर अट्ठाईस नक्षत्रों को; और चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षकों को, जिन्हें उसने एक-एक करके खोल दिया।
इसके बाद उसने घोड़े को पास लाया और अपने मालिक से कहा कि वह जितनी जल्दी हो सके आगे बढ़ जाए। बाहर पहुँचते ही बंदर को एहसास हुआ कि उसका सामान कहाँ है और वह उसे ढूंढने के लिए वापस चला गया।
"ऐसा लगता है कि तुम लोगों से ज़्यादा चीज़ों को अहमियत देते हो," गुलेट के धातु ड्रैगन ने कहा। "यही काफ़ी होना चाहिए कि हमने तुम्हारे मालिक को बचा लिया है। तुम सामान क्यों ढूँढना चाहते हो?"
"बेशक लोग महत्वपूर्ण हैं," बंदर ने कहा, "लेकिन चीजें उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। सामान में हमारा पासपोर्ट, रेशमी चोगा और सोने का भिक्षापात्र है। ये सभी बौद्ध धर्म के अनमोल खजाने हैं, और हमें इन्हें अपने पास रखना ही होगा।"
"तुम वापस जाकर उन्हें ढूंढो, भाई," सुअर ने कहा, "हम चलते हैं। हम तुम्हारा बाद में इंतज़ार करेंगे।" देखो कैसे तारे तांग पुजारी के चारों ओर जमा हो जाते हैं और अपनी जादुई शक्तियों का एक साथ इस्तेमाल करके उन्हें हवा के झोंके से घेरे से बाहर निकाल देते हैं। वे ढलान से नीचे मुख्य सड़क पर तेज़ी से चलते हुए समतल ज़मीन पर पहुँचते हैं और आराम करते हैं।

लगभग तीसरे पहर में महान ऋषि बंदर धीरे-धीरे और चुपके से वापस अंदर आया तो देखा कि सभी द्वार कसकर बंद थे। जब वह इमारत की ऊपरी मंजिल पर देखने के लिए चढ़ा तो उसने पाया कि खिड़कियाँ भी पूरी तरह से बंद थीं। वह वापस नीचे जाने ही वाला था कि खिड़कियों के शोर के डर से हिलने की हिम्मत नहीं कर पाया। इसलिए उसने हाथ से मंत्र पढ़ा, खुद को झटका दिया और एक अमर चूहे में बदल गया, जिसे आमतौर पर चमगादड़ कहा जाता है। क्या आप जानते हैं कि वह कैसा दिखता था?

उसका सिर चूहे की तरह नुकीला था।

उसकी आंखें चूहे की तरह चमक उठीं।

वह गोधूलि बेला में अपने पंखों पर सवार होकर प्रकट हुआ।

दिन में अंधेरे में सोना।

वह टाइलों के बीच छिप गया;

उसने जिन मच्छरों को पकड़ा, वही उसका भोजन थे।

उन्हें चांदनी रातों की चमक सबसे ज्यादा पसंद थी;

वह विमान उड़ाने में वाकई बहुत अच्छा था।

वह छत की खुली टाइल के नीचे से अंदर घुस गया और दरवाजों के ऊपर से उड़ता हुआ इमारत के बीचोंबीच पहुँच गया। वहाँ उसने दूसरी मंजिल की खिड़की के नीचे से आती एक हल्की सी टिमटिमाती रोशनी देखी। यह लालटेन या मोमबत्ती की रोशनी, जलती हुई अगरबत्ती की चमक, शाम की धूप या बिजली की चमक जैसी नहीं थी। वह खिड़की के पास गया, उत्साह से उसका दिल धड़क रहा था, और उसने अंदर देखा तो पाया कि वह चमक सामान से आ रही थी। दुष्ट आत्मा ने तांग पुजारी का चोगा उतार लिया था, लेकिन उसे मोड़ने के बजाय बेतरतीब ढंग से वापस बंडलों में डाल दिया था। चोगे के चमकने का कारण यह था कि वह स्वयं एक बुद्ध का खजाना था, जिस पर इच्छा-आधारित मोती, मणि मोती, लाल कार्नेलियन, बैंगनी मूंगा, सारिरा बुद्ध अवशेष और रात्रि में चमकने वाले मोती जड़े हुए थे। इन चीजों को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ और उन्हें उठाने के लिए वापस अपने असली रूप में आ गया, उसने उठाने वाला डंडा अपने कंधे पर रखा और उन्हें ले गया। (अध्याय 65)

भार को संतुलित करने के लिए रस्सियों को समायोजित करने के लिए रुके बिना ही नीचे उतर गए।

दुर्भाग्यवश, एक छोर पर रखा सामान फिसल गया और ज़ोरदार आवाज़ के साथ फर्श पर गिर गया। हाय!

इस शोर से नीचे सो रहा बूढ़ा दानव राजा जाग गया और "घुसपैठिए!" चिल्लाते हुए बिस्तर से कूद पड़ा।

"घुसपैठिए!" यह सुनकर सभी छोटे-बड़े राक्षस उठ खड़े हुए, दीपक जलाए और चारों ओर खोजबीन करने लगे। सभी जोर-जोर से चिल्ला रहे थे, "तांग पुजारी भाग गया है!" एक ने सूचना दी, जिसके बाद दूसरे ने कहा, "सन द नवोदित और बाकी सब भाग गए हैं।" बूढ़े राक्षस ने सभी द्वारों पर कड़ी सुरक्षा का आदेश दिया। बंदर ने यह सुनते ही अपना सामान वहीं छोड़ दिया, खिड़कियों से कलाबाजी करते हुए बाहर कूद गया और उनके पकड़ने से पहले ही भाग गया।

दुष्ट आत्माएँ चाहे जितना भी खोज लें, तांग पुजारी और बाकी लोगों को नहीं ढूंढ पाईं। अब सुबह होने लगी थी, इसलिए दानव राजा ने अपना गदा उठाया और अपनी सेना के साथ उनका पीछा करने लगा। उन्हें पहाड़ की तलहटी में धुंध और बादलों से घिरा अट्ठाईस नक्षत्रों और पंच रक्षकों का शिविर मिला। "तुम कहाँ जा रहे हो?" दानव राजा चिल्लाया। "मैं यहीं हूँ।"

नक्षत्र सींग के लकड़ी के छोटे ड्रैगन ने खतरे की चेतावनी देते हुए कहा, "भाइयों, राक्षस यहाँ आ गए हैं।" गले का धातु ड्रैगन, स्त्री का पृथ्वी चमगादड़, कक्ष का सूर्य खरगोश, हृदय का चंद्रमा लोमड़ी, पूंछ का अग्नि बाघ, सूप का जल तेंदुआ, सप्तर्षि का लकड़ी का यूनिकॉर्न, बैल का धातु बैल, आधार का पृथ्वी रैकून-कुत्ता, बंजर भूमि का सूर्य चूहा, छत का चंद्रमा निगल, घर का अग्नि सुअर, दीवार का जल पशु, स्ट्राइडर का लकड़ी का भेड़िया, हार्वेस्टर का धातु कुत्ता, पेट का पृथ्वी सूअर, प्लीएड्स का सूर्य मुर्गा, जाल का चंद्रमा कौआ, कछुए का अग्नि बंदर, ओरियन का जल वानर, कुएं का लकड़ी का लकड़बग्घा, भूतों की धातु बकरी, विलो का पृथ्वी नदी हिरण, सात तारों का सूर्य घोड़ा, फैले हुए जाल का चंद्रमा हिरण, पंख का अग्नि सर्प, और धुरी का जल कृमि, शीर्ष पर। स्वर्ण सिर वाला रक्षक, रजत सिर वाला रक्षक, छह डिंग, छह जिया, धर्म के संरक्षक, सुअर और साधु सैंड—उन्होंने तांग पुजारी या सफेद ड्रैगन घोड़े को नहीं लिया—सभी अपने हथियारों के साथ आगे बढ़े। उन्हें

देखकर दानव राजा ने तिरस्कारपूर्ण हंसी हंसी, सीटी बजाई और चार-पांच हजार दुष्ट आत्माओं को बुलाया, जिनमें से प्रत्येक शक्तिशाली और बलवान थी। फिर पर्वत की पश्चिमी ढलानों पर एक भयंकर युद्ध छिड़ा, और यह एक शानदार लड़ाई थी।
दुष्ट दानव राजा ने वास्तविक स्वरूप को धोखा दिया था:
उस सौम्य स्वभाव के आगे उसका कोई बस नहीं था।
इतनी सारी साजिशों के साथ दर्द से बचना मुश्किल था;
जब इतनी चालाकी का इस्तेमाल किया जाता था तो शांति संभव ही नहीं थी।
सभी आकाशों ने अपनी सुरक्षा प्रदान की।
और अनेक विद्वानों ने इस लड़ाई को लड़ने में मदद की।
लकड़ी की माता दया दिखाने के कारण कष्ट भोगती है।
दृढ़ संकल्प पीली पत्नी को प्रेरित करता है।
उस भीषण संघर्ष ने आकाश और पृथ्वी को हिलाकर रख दिया;

संघर्ष में दोनों पक्षों ने अपने-अपने जाल बिछा दिए।
एक ओर झंडे लहरा रहे थे और युद्धघोष सुनाई दे रहे थे,
दूसरी ओर ढोल और घंटों की थाप सुनाई दे रही थी।
तलवारों और भालों के समूह से निकलने वाली ठंडी रोशनी का सागर,
और तलवारों और भालों की खूनी निगाहें।
राक्षसी सेना क्रूर और कठोर थी;
स्वर्ग के सैनिक उनका मुकाबला नहीं कर सके।
घने बादलों ने सूर्य और चंद्रमा को ढक लिया;
चारों ओर कंपकंपा देने वाला कोहरा छाया हुआ था।
यह लड़ाई कठिन और कड़वी थी।
और यह सब इसलिए हुआ क्योंकि संजांग बुद्ध के दर्शन करना चाहता था।
दुष्ट आत्मा अब पहले से कहीं अधिक उग्र लग रही थी, जब उसने अपने साथियों का नेतृत्व करते हुए हमला किया। ठीक उसी समय जब स्थिति अधर में लटकी हुई थी, तभी बंदर की गुस्से भरी दहाड़ सुनाई दी, "मैं यहाँ हूँ।"

"सामान का क्या होगा!" सुअर ने उसका अभिवादन करते हुए पूछा।
"मैं बाल-बाल बच गया," बंदर ने जवाब दिया, "तो तुम सामान के बारे में क्यों पूछ रहे हो?"
"तुम दोनों चुप रहो," अपने डंडे को थामे हुए साधु सैंड ने कहा। "जल्दी करो और दुष्ट आत्माओं से लड़ो।" नक्षत्र, रक्षक, डिंग, जिया और अन्य सभी देवता भयंकर युद्ध में राक्षसों से घिरे हुए थे, जबकि राक्षस राजा ने अपने गदा से उन तीनों पर हमला किया। बंदर, सुअर और साधु सैंड ने अपने डंडे, लाठी और रेक से वार करके दुश्मन को रोके रखा। धरती और आकाश अंधेरे में डूब गए थे, और अभी भी कोई विजेता नहीं था। वे तब तक लड़ते रहे जब तक पश्चिमी पहाड़ियों में सूरज नहीं डूब गया और पूर्वी द्वीपों पर चंद्रमा नहीं उग आया।
काफी देर हो जाने पर राक्षस ने सीटी बजाई और सभी दुष्टों को विशेष रूप से सावधान रहने का आदेश दिया, क्योंकि वह अपना खजाना एक बार फिर प्रकट करने जा रहा था। बंदर ने थैली खोली और उसे अपने हाथों में ले लिया, और उसे सब कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा था।
“यह तो बुरा हुआ,” बंदर ने कहा। “चलो यहाँ से चलते हैं।” और इतना कहकर वह कलाबाजी करते हुए सीधे नौवें आकाश में पहुँच गया, सूअर, साधु रेत और स्वर्गदूतों की उसे कोई परवाह नहीं थी, जो उसकी बात समझ नहीं पाए और पीछे छूट गए, फिर से थैले में फँस गए। बंदर अकेला बच निकला। फिर दानव राजा ने अपनी सेना को वापस बुला लिया और उन्हें मठ के अंदर ले गया, जहाँ उसने एक बार फिर रस्सियाँ मंगवाईं और उन्हें दोबारा बाँध दिया।
तांग पुरोहित, सुअर और साधु सैंड को एक ऊंचे खंभे से लटका दिया गया और सफेद घोड़े को पीछे बांध दिया गया। देवताओं को भी बांधकर एक तहखाने में ले जाया गया, जिसे बाद में ढककर सील कर दिया गया। हम इस बात पर चर्चा नहीं करेंगे कि शैतानों ने फिर से सब कुछ कैसे पैक किया।
अध्याय 65
910
पश्चिम की यात्रा
जब बंदर बादलों में उछलकर अपनी जान बचाई और उसने शैतान सैनिकों को अपने झंडे लहराए बिना लौटते देखा, तो वह समझ गया कि उसके पक्ष को एक बार फिर

बंदी बना लिया गया है। जैसे ही उसने पूर्वी शिखर पर अपना शुभ प्रकाश डाला,
उसने राक्षस के प्रति घृणा से अपने दांत पीस लिए;
अपने स्वामी को याद करते हुए बंदर की आंखों से आंसू बहने लगे।
फिर निराशा में उसने अपना चेहरा आकाश की ओर कर लिया।
और सानज़ांग की नई आपदा पर जोर से कराह उठा।
“गुरुजी,” उसने पुकारा, “आपने अपने पिछले जन्म में अपने लिए इतनी सारी मुश्किलें क्यों खड़ी कर लीं कि हर मोड़ पर आपको बुरी आत्माओं का सामना करना पड़ता है? आपकी मुसीबतों का कोई अंत नहीं है। अब हम क्या करें?” वह ऊपर अकेले काफी देर तक आहें भरता रहा, फिर शांत होकर सोचने लगा कि क्या किया जाए।
"मुझे आश्चर्य है कि शैतान के पास किस तरह की थैली है जिसमें इतनी सारी चीजें समाई हुई हैं!" उसने सोचा। "अब उसमें देवता, स्वर्ग के सेनापति और बहुत से अन्य लोग भी हैं। मुझे स्वर्ग से मदद मांगनी होगी, लेकिन मुझे डर है कि जेड सम्राट इस घटना से क्रोधित होंगे। अब मुझे याद आया कि उत्तर में एक सच्चे मार्शल देवता हैं, स्वर्ग के सम्मानित दानव दमनकर्ता, जो अब जंबू के दक्षिणी महाद्वीप में वुडांग पर्वत पर रहते हैं। मैं जाकर उनसे अपने स्वामी को बचाने के लिए कहूंगा।" वास्तव में: मार्ग
अभी अधूरा ही था कि वानर और घोड़े तितर-बितर हो गए;
जब मन पर कोई स्वामी नहीं होता है तो पंच तत्वों में जीवन का अभाव होता है।
अगर आपको नहीं पता कि इस यात्रा में क्या हुआ, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या सुनें।
अध्याय 66
सभी देवताओं का सामना एक क्रूर शत्रु से होता है
मैत्रेय ने दुष्ट राक्षस को बांध दिया
कथा बताती है कि कैसे महान ऋषि सूर्य, जब हताश हो गए, तो शुभ बादल पर सवार होकर सीधे दक्षिणी महाद्वीप जंबू के वुडांग पर्वत पर पहुँचे और स्वर्ग के पूजनीय दानव संहारक से संज़ंग, सुअर, भिक्षु रेत, स्वर्गीय सैनिकों और बाकी सभी को बचाने की प्रार्थना की। वे बिना रुके उड़ते रहे और जल्द ही कुलपति के अमर लोक के दर्शन करने लगे। जब उन्होंने अपने बादल को धीरे से ज़मीन पर उतारा और चारों ओर देखा, तो उन्हें यह दृश्य दिखाई दिया:

पश्चिम की यात्रा
दक्षिणपूर्व का महान किला,
केंद्रीय स्वर्ग का एक दिव्य स्तंभ।
लोटस पिनैकल अपनी भव्यता में बुलंदियों पर पहुंचा।
बैंगनी रंग से ढकी हुई रिज बहुत ऊंचाई तक फैली हुई थी।
ये नौ नदियाँ जिंग और यांग से बहुत दूर यहीं समाप्त हो जाती थीं;
विंग और एक्सल ट्री में सौ पहाड़ तारों को छूते हैं।
ऊपर शून्यता की अनमोल गुफा थी,
और झू और लू का आध्यात्मिक टावर।
छत्तीस महलों में सोने की घंटियाँ बज उठीं,
हजारों श्रद्धालुओं ने धूप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।
यहां प्राचीन काल के सम्राट गश्त करते थे और पूजा-अर्चना करते थे।
अधिकारियों के पास सोने से उत्कीर्ण जेड पत्थर की पट्टियाँ थीं।
नीले पक्षी ऊंचे टावरों के ऊपर से उड़ते रहे;
शामियानों के नीचे लाल गाउन पहने हुए थे।
वह स्थान एक ऐसे पर्वत पर स्थित था जो ब्रह्मांड से भी ऊँचा उठता था।
शून्यता से परिपूर्ण एक अमर क्षेत्र।
कुछ बेर के पेड़ों पर अभी-अभी फूल खिले थे।
और पहाड़ी फूलों के रंगों से जगमगा उठी थी।
खड्डों की तलहटी में अजगर छिपे रहते थे
जबकि बाघ चट्टानों की खाइयों पर घात लगाए बैठे थे।
ऐसा लग रहा था मानो तीतर आपस में बात कर रहे हों;
पालतू हिरण लोगों के पास आ गए।
बादलों से ढके जुनिपर वृक्षों पर सफेद सारस बैठे हुए;
हरे और लाल रंग के फीनिक्स पक्षियों ने सूर्य के लिए गीत गाए।
शुद्ध जेड से बना यह स्थान अमर लोगों की भूमि जैसा दिखता है;
स्वर्णिम द्वार की करुणा युग पर राज करती है।

पश्चिम की यात्रा
सच्चे मार्शल लॉर्ड का जन्म राजा प्योरजॉय और उनकी पत्नी महारानी विक्टोरिया के एक रात के सपने के बाद हुआ था, जिसमें उन्होंने सूर्य के प्रकाश को निगलकर गर्भ धारण किया था। चौदह महीने की गर्भावस्था के बाद, उन्होंने काइहुआंग शासनकाल के पहले वर्ष, जियाचेन वर्ष के तीसरे महीने के पहले दिन शाही महल में जन्म दिया।
राजकुमार
वह बचपन से ही बहादुर था।
समझ विकसित हुई।
सिंहासन ग्रहण नहीं किया।
लेकिन धर्म का पालन करते थे।
उसके माता-पिता उसे रोक नहीं सके।
उसने महल छोड़ दिया
रहस्यों और समाधि की अवस्था के लिए
यहां पहाड़ों में।
जब सब कुछ पूरा हो गया
वह दिन के उजाले में भी उड़ सकता था।
जेड सम्राट ने उसका नाम रखा
सच्चा योद्धा।
वह अंधकारमय शून्यता पर प्रतिक्रिया करता है,
कछुए और सांप के साथ जुड़ना।
सभी दिशाओं में
क्या उनकी उत्कृष्टता का बखान किया गया है?
वह सभी रहस्यों को भेद सकता है।
हर तरह की उपलब्धि हासिल करता है।
शुरुआत से अंत तक
वह राक्षसों का संहार करता है।

भव्य दृश्य की प्रशंसा करते हुए महान ऋषि सूर्य शीघ्र ही प्रथम, द्वितीय और तृतीय द्वारों से होकर अपने स्वर्ग में प्रवेश कर गए। जब वे महान शांति महल के बाहर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि पाँच सौ आध्यात्मिक अधिकारी शुभ प्रकाश और वातावरण में एक साथ खड़े हैं। वे आगे बढ़कर पूछने लगे, "कौन आया है?"

"मैं सन वुकॉन्ग हूं, स्वर्ग के समान महान ऋषि," बंदर ने उत्तर दिया, "और मैं गुरु से मिलना चाहता हूं।"

आत्मा के अधिकारियों ने तुरंत इसकी सूचना कुलपति को दी, जो बंदर का महल में स्वागत करने के लिए अपने सिंहासन कक्ष से बाहर आए।

श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद बंदर ने कहा, "मेरी आपसे एक विनती है।"

"क्या?"

“मैं तांग पुरोहित को पश्चिमी स्वर्ग में शास्त्रों की खोज यात्रा पर ले जाते समय मुसीबत में हूँ,” बंदर ने उत्तर दिया। “पश्चिमी महाद्वीप में स्थित लघु पश्चिमी स्वर्ग नामक पर्वत पर स्थित लघु वज्र मठ में एक दुष्ट राक्षस रहता है। जब मेरे गुरु मठ के द्वार से अंदर गए और वहाँ सभी अर्हतों, रक्षकों, भिक्षुओं और पुरोहितों को पंक्तिबद्ध देखा, तो उन्होंने सोचा कि बुद्ध सचमुच में हैं, और वे ज़मीन पर गिर पड़े और उन्हें प्रणाम करने लगे। फिर उन्होंने उन्हें पकड़ लिया। मेरी लापरवाही के कारण मैंने उन्हें मुझे सोने के दो मज़बूती से जुड़े हुए झांझों के बीच फँसाने दिया, मानो उन्हें जकड़कर रखा गया हो। सौभाग्य से, स्वर्ण-सिर वाले रक्षक ने जेड सम्राट से उसी रात अट्ठाईस नक्षत्रों को पृथ्वी पर भेजने का अनुरोध किया।”

वे झांझों को अलग नहीं कर सके, लेकिन गले के धातु के ड्रैगन ने किसी तरह अपना सींग झांझों के बीच फंसाकर मुझे बाहर निकाल लिया, शुक्र है। फिर मैंने झांझों को तोड़ दिया, जिससे राक्षस जाग गया।

जब वह हमारे पीछे आया तो उसने हम सबको पकड़ लिया—मुझे, अट्ठाईस नक्षत्रों को और पाँच रक्षकों को—और हम सबको रस्सी से बाँध दिया। मैं उस रात किसी तरह बच निकला और नक्षत्रों, तांग पुजारी और बाकी सबको बचा लिया। बाद में जब मैं अपना सामान ढूंढ रहा था, तो मैंने उस बूढ़े राक्षस को फिर से जगा दिया और वह स्वर्गदूतों के पीछे उनसे फिर से लड़ने चला गया। जब उसने इस बार अपना थैला

इस्तेमाल करने के लिए उतारा, तो मैंने उसे पहचान लिया और भाग निकला, लेकिन बाकी सब पकड़े गए। अब मैं पूरी तरह से हताश हूँ, इसलिए मैं आपको प्रणाम करने आया हूँ, गुरुजी, और आपकी सहायता माँगने आया हूँ।

कुलपति ने कहा, "पुराने समय में, मैंने उत्तर की रक्षा की। मेरा पद सच्चे योद्धा देवता का था, और मैंने जेड सम्राट के आदेश पर पूरी दुनिया से दुष्ट आत्माओं का नाश किया। बाद में मैं नंगे पैर और खुले बालों के साथ छलांग लगाते हुए सर्प और दिव्य कछुए पर सवार होकर, पांच गर्जन सेनापतियों, युवा विशालकाय ड्रैगनों, शेरों, भयंकर जानवरों और क्रूर ड्रैगनों का नेतृत्व करते हुए उत्तर-पूर्व में व्याप्त काले राक्षसी वातावरण का अंत किया।"

उस समय मैं परम पूज्य देवदूत के आदेशों का पालन कर रहा था। अब मैं वुडांग पर्वत पर परम शांति के हॉल में शांति और सुकून से रह रहा हूँ। पर्वत और समुद्र लंबे समय से शांत हैं, और आकाश और पृथ्वी अत्यंत स्थिर हैं। हमारे दक्षिणी महाद्वीप जंबू और उत्तरी महाद्वीप कुरु में सभी दुष्ट राक्षसों का नाश हो चुका है और दुष्ट दानव अब कहीं दिखाई नहीं देते। हे महान ऋषि, मैं आपका आभारी हूँ कि आप मुझसे मिलने आए हैं: बस एक ही समस्या है कि स्वर्ग से निर्देश न मिलने के कारण मैं अकेले अपने बल पर युद्ध नहीं कर सकता। यदि मैं अपने सभी देवताओं को भेज दूँ तो जेड सम्राट को शायद बुरा लग जाए; लेकिन हे महान ऋषि, यदि मैं आपके अनुरोध को ठुकरा दूँ तो यह मेरी संवेदनहीनता होगी। मुझे विश्वास है कि पश्चिम की ओर जाने वाले उस मार्ग पर यदि कोई दुष्ट प्राणी हैं भी तो वे वास्तव में भयानक नहीं हो सकते। इसलिए मैं आपकी सहायता के लिए जनरल कछुआ, जनरल नाग और पाँच जादुई ड्रैगन भेजूँगा। मैं गारंटी देता हूँ कि वे दुष्ट आत्मा को पकड़ लेंगे और आपके स्वामी को बचा लेंगे।

बंदर ने कुलपति को धन्यवाद देते हुए सिर झुकाया और कछुए, साँप और जादुई ड्रैगनों के साथ, सभी अपने साथ बेहतरीन और धारदार हथियार लिए, पश्चिम की ओर वापस चल दिए। कुछ ही समय में वे लेसर थंडर मठ पहुँच गए, जहाँ उन्होंने अपने बादलों को उतारा और सीधे द्वार पर जाकर उन्हें युद्ध के लिए चुनौती दी।

इसी बीच, किंग येलो ब्रो ने मठ के मुख्य हॉल के सामने अपने सभी राक्षसी सैनिकों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "सन द नोविस पिछले कुछ दिनों से यहाँ नहीं है। मुझे आश्चर्य है कि वह अतिरिक्त सैनिकों के लिए कहाँ गया है।"

अध्याय 66

उसके मुंह से ये शब्द निकलने से पहले ही एक छोटा शैतान मुख्य द्वार से आकर खबर देने लगा, "नौसिखिया सूर्य कुछ अजगर, सांप और कछुए जैसे अधिकारियों के साथ यहाँ आया है। वे मुख्य द्वार के बाहर युद्ध की मांग कर रहे हैं।"
"उस बंदर को ये कहाँ से मिले?" राक्षस राजा ने पूछा। "ये कहाँ से आए हैं?"
इतना कहकर उसने अपना कवच पहना और मुख्य द्वार से बाहर निकल गया, चिल्लाते हुए बोला, "तुम कौन से ड्रैगन देवता हो?"
मेरी अमर दुनिया में घुसपैठ करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?
भव्यता का भाव लिए और अपनी आत्मा को समेटते हुए, पांचों ड्रैगन और सेनापति कछुआ और नाग ने चिल्लाकर कहा,
"धिक्कार है राक्षस! हम पाँच ड्रैगन देवता हैं, और सेनापति कछुआ और नाग हैं, जो वुडांग पर्वत पर स्थित महान शांति महल से परम पूज्य दानव दमनकर्ता, अविभेदित एकता के कुलपति के समक्ष उपस्थित हैं। हम स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि के निमंत्रण पर और परम पूज्य के अधिकार से तुम्हें गिरफ्तार करने आए हैं। तांग पुजारी, नक्षत्रों और बाकी सभी को हमारे हवाले कर दो, वरना तुम्हारी जान बख्श दी जाएगी, हे दुष्ट आत्मा। अन्यथा हम इस पर्वत पर मौजूद तुम सभी शैतानों के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे और तुम्हारी सभी इमारतों को जलाकर राख कर देंगे।"
यह सुनकर राक्षस क्रोधित हो गया। "जानवरों!" उसने वाकया। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसी बातें करने की? तुम्हें क्या लगता है तुम्हारे पास किस तरह की शक्तियां हैं? यहीं रुको, और यह लो!" पांचों ड्रैगनों ने बादलों को पलटकर बारिश कर दी, जबकि दोनों सेनापतियों ने धूल और रेत उड़ाते हुए अपने भाले, कृपाण, तलवार और गदा लेकर आक्रमण शुरू कर दिया। बंदर भी लोहे की गदा लिए उनके पीछे-पीछे युद्ध में कूद पड़ा। यह एक शानदार लड़ाई थी।
उस दुष्ट राक्षस ने अपनी शक्ति का प्रयोग किया;
बंदर मदद के लिए गया।
जब दुष्ट राक्षस ने अपनी शक्ति का प्रयोग किया
उन्होंने मठ पर कब्जा कर लिया और बुद्ध की मूर्तियां बनाईं।
जब बंदर मदद के लिए गया

वह ड्रैगनों को उधार लेने के लिए एक अनमोल भूमि की ओर बहुत दूर तक यात्रा करता है।
कछुए और सांप ने जल और अग्नि का सृजन किया;
दुष्ट आत्माओं ने हथियार उठा लिए।
निर्देशानुसार पांचों ड्रैगन पश्चिम की ओर चले गए।
बंदर अपने स्वामी की खातिर पीछे ही रुका रहा।
तलवार और भाला रंगीन बिजली की तरह चमक उठे;
भाले और तलवारें इंद्रधनुष की तरह चमक रही थीं।
भेड़िये के दांतों वाली गदा
यह शक्तिशाली, छोटा और लचीला था;
अध्याय 66
915
पश्चिम की यात्रा
सोने की पट्टी वाली लाठी
मालिक की इच्छा के अनुसार इसमें बदलाव किया जा सकता है।
धमाके पटाखों की तरह हो रहे थे।
और धातु के टकराने की लयबद्ध झंकार।
उस राक्षस पर आग और पानी से हमला किया गया।
और हथियार आत्माओं के चारों ओर कसकर जमा हो गए।
युद्ध की चीखों ने भेड़ियों और बाघों को भयभीत कर दिया;
उस शोर ने देवताओं और राक्षसों दोनों को विचलित कर दिया।
ठीक उसी समय जब लड़ाई का नतीजा अभी तक नहीं निकला था
दुष्ट आत्मा ने अपना खजाना फिर से निकाल लिया।
जब बंदर एक घंटे तक पांच ड्रैगन और दो सेनापतियों का नेतृत्व करते हुए राक्षस राजा से लड़ रहा था, तभी राक्षस ने अपनी थैली उतारकर हाथ में पकड़ ली। "सावधान रहो, सज्जनों!" बंदर ने भयभीत होकर कहा।
उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है, इसलिए उन्होंने अपने हथियारों से हमला करना बंद कर दिया और आगे बढ़ गए। तभी दानव राजा ने अपना थैला हवा में उछाल दिया और एक ज़ोरदार आवाज़ हुई। पाँचों ड्रैगन और दो सेनापतियों को थैले में

लपेटकर छोड़कर, महान ऋषि बंदर नौवें आकाश में कलाबाज़ी करते हुए बच निकला। दुष्ट आत्माएँ एक बार फिर विजयी होकर लौटीं, उन्हें भी बाँध दिया, गड्ढे में ले गईं और ढक्कन लगा दिया।

बंदर ने अपना बादल उतारा और चोटी के नीचे सुस्त और निराश होकर लेट गया। "वह राक्षस तो आतंक मचाता है।"

उसने घोर खेद के साथ सोचा, और यह महसूस किए बिना कि क्या हो रहा है, उसने अपनी आँखें बंद कर लीं मानो वह सोने जा रहा हो।

तभी एक आवाज़ आई: "हे महान ऋषि, सो मत जाइए। उठिए और जितनी जल्दी हो सके उन्हें बचा लीजिए। आपके स्वामी का जीवन खतरे में है।" बंदर ने तुरंत अपनी आँखें खोलीं और उछलकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि यह उस दिन के कर्तव्य देवता थे।

“अरे छोटे से देवता, तूने वहाँ खून और बलिदानों के लिए इतना लालच किया कि कई दिनों से ड्यूटी पर नहीं आया। अब मुझे परेशान करने क्यों आ रहे हो? अपना पैर बाहर निकाल। मैं तुम्हें दो-तीन बार मारूंगा ताकि मेरा मूड ठीक हो जाए। मैं बहुत उदास हूँ।”

कर्तव्य के देवता ने शीघ्रता से प्रणाम किया और कहा, "महान ऋषि, आप मानव जगत के भाग्यशाली अमर प्राणियों में से एक हैं।"

आप उदास कैसे हो सकते हैं? हम बोधिसत्व के आदेश पर लंबे समय से यहाँ तांग पुजारी की गुप्त रूप से रक्षा कर रहे हैं। हम और स्थानीय देवता एक पल के लिए भी उनसे दूर नहीं हुए हैं, इसीलिए हम आपको पर्याप्त सम्मान नहीं दे पाते। आप इसके लिए मुझे दोषी नहीं ठहरा सकते।

"अगर तुम उसकी रक्षा कर रहे हो," बंदर ने उत्तर दिया, "तो मुझे बताओ कि दुष्ट आत्मा ने नक्षत्रों, रक्षकों, संरक्षकों, मेरे स्वामी और बाकी सबको कहाँ कैद कर रखा है। वे किस कष्ट से गुजर रहे हैं?"

अध्याय 66

916

पश्चिम की यात्रा

“आपके गुरु और आपके साथी शिष्यों को मुख्य हॉल के बाहर मठ में लटका दिया गया है,” कर्तव्य देवता ने उत्तर दिया। “सभी नक्षत्र एक गड्ढे में पीड़ा भोग रहे हैं।

पिछले कुछ दिनों से मुझे आपकी कोई खबर नहीं मिली, हे महान ऋषि, लेकिन मैंने अभी देखा कि दुष्ट आत्माओं ने दिव्य ड्रैगन, कछुआ और नाग को भी पकड़कर गड्ढे में डाल दिया है। तभी हमें एहसास हुआ कि हे महान ऋषि, आप कुछ अतिरिक्त सहायता लेकर आए होंगे, इसीलिए हम विशेष रूप से आपको ढूंढने आए हैं। हे महान ऋषि, चाहे आप कितने भी थके हुए हों, आपको उन्हें तुरंत बचाना होगा।"

यह सुनकर बंदर ने आँसू बहाते हुए देवता से कहा, "मुझे स्वर्ग जाने में शर्म आ रही है, और समुद्र में जाने की हिम्मत भी नहीं है। बोधिसत्व से मदद माँगने में भी डर लग रहा है और बुद्ध के चेहरे देखने की हिम्मत भी नहीं हो रही। अभी-अभी जो पकड़े गए हैं, वे सच्चे योद्धा देवता के कछुए, नाग और पाँच ड्रैगन और उनकी सेनाएँ हैं। अब मदद के लिए मेरे पास कोई और रास्ता नहीं बचा। मैं क्या करूँ?"

कर्तव्य देवता ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "चिंता न करें, महान ऋषि, मैंने कुछ विशिष्ट सैनिकों के बारे में सोचा है जो निश्चित रूप से इन राक्षसों को वश में कर लेंगे। आप अभी-अभी दक्षिणी जांबू महाद्वीप में स्थित वुडांग गए थे। मेरे विचार में जो सैनिक हैं, वे भी उसी महाद्वीप से, ज़ुयी पर्वत पर स्थित बिनचेंग से आते हैं। इसे अब सिझोऊ कहा जाता है। वहाँ एक महान ऋषि बोधिसत्व राजा गुरु हैं जिनके पास अपार जादुई शक्तियाँ हैं। उनका एक शिष्य है जिसका नाम छोटा राजकुमार झांग है और चार दिव्य सेनापति हैं: पिछले वर्ष उन्होंने जल माता देवी को वश में किया था। आपको स्वयं वहाँ जाकर उनसे पूछना चाहिए। यदि वे अपनी कृपा से आपकी सहायता करने के लिए तैयार हों, तो आप निश्चित रूप से राक्षस को पकड़कर गुरु को बचा लेंगे।"

यह खबर सुनकर बंदर बहुत खुश हुआ और उसने कहा, "तुम मालिक का ख्याल रखना और उसे किसी भी तरह का नुकसान मत होने देना, जबकि मैं उसकी मदद मांगने जा रहा हूँ।"

फिर बंदर ने कलाबाजी करते हुए उस राक्षस-ग्रस्त जगह को छोड़कर सीधे माउंट ज़ुयी की ओर प्रस्थान किया। वह जल्द ही वहाँ पहुँच गया, और जब उसने चारों ओर देखा तो पाया कि वह एक सुंदर स्थान था।

यांग्त्से नदी दक्षिण दिशा में ज्यादा दूर नहीं थी।

उत्तर की ओर यह हुआई नदी के सामने स्थित था।

पूर्व की ओर जाने पर यह समुद्र में स्थित द्वीपों की ओर जाता था।

पश्चिम की ओर यह फेंगफू से जुड़ा हुआ था।

पहाड़ की चोटी पर एक भव्य मंदिर था।
इसके किनारों से पानी के झरने फूट पड़े।
विचित्र आकृतियों वाली चट्टानें बहुत ऊंची खड़ी थीं;
ऊंचे-ऊंचे देवदार के पेड़ सुरुचिपूर्ण ढंग से कोणीय थे।
वहाँ हमेशा ताजे फल मौसमी रूप में उपलब्ध रहते थे।
और हर तरह के फूल सूरज की रोशनी में खिल उठे।
लोग चींटियों की सेना की तरह इधर-उधर भाग रहे थे।
जबकि नावें दूर-दूर से हंसों के झुंड की तरह आ रही थीं।
अध्याय 66
917
पश्चिम की यात्रा
उस पर खड़ा था
शुभ चट्टानी मंदिर,
पूर्वी शिखर का महल,
पांच प्रतापी व्यक्तियों का तीर्थस्थल,
कछुआ पर्वत मठ।
लयबद्ध घंटियों की ध्वनि और अगरबत्ती का धुआं आकाश की ओर उठा।
वहाँ भी थे
क्रिस्टल स्प्रिंग,
पांच स्तूपों की घाटी,
आठ अमर लोगों का चबूतरा,
खुबानी का बाग।
पहाड़ों और पेड़ों के रंगों ने बिनचेंग को रोशन कर दिया।
बादलों का विस्तार असीम था।
जबकि छिपे हुए पक्षी थक जाने पर भी गाते रहते थे।
ताई, सोंग, हेंग या हुआ पर्वतों की परवाह मत करो;
यह धरती पर मौजूद स्वर्ग की सुंदरता थी।
महान ऋषि ने हुआई नदी पार करते हुए, बिनचेंग शहर में प्रवेश किया और महान ऋषि के ध्यान मठ के द्वार पर पहुँचकर दृश्य का भरपूर आनंद लिया। भव्य हॉल और

रंगीन गलियारों के ऊपर एक शिवालय विराजमान था। वास्तव में:
यह बादलों को चीरते हुए दस हजार फीट ऊपर आकाश में उठ गया;
सोने का फूलदान आकाश में समा गया।
उससे निकलने वाले प्रकाश ने ब्रह्मांड को भर दिया;
उसकी खिड़कियों पर कोई छाया नहीं पड़ती थी।
जब हवा ने घंटियों को बजाया तो दिव्य संगीत सुनाई दिया;
सूर्य की रोशनी बुद्ध-कक्ष की ओर मुख किए हुए छत पर बने अजगरों पर पड़ रही थी।
अध्याय 66

पक्षी लगातार यहां आकर अपनी शिकायतें गाते थे;
हुआई नदी का नजारा बेहद खूबसूरत था।
बंदर ने यह सब देखते हुए भीतरी द्वार से प्रवेश किया, जहां बोधिसत्व राजा शिक्षक, जो उसका इंतजार कर रहे थे, छोटे राजकुमार झांग के साथ उससे मिलने के लिए बाहर आए थे। एक-दूसरे का अभिवादन करने और शिष्टाचारवश कुछ बातें कहने के बाद बंदर ने कहा, "मैं तांग पुरोहित को पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए ले जा रहा हूँ। हम लघु वज्र मठ में आ गए हैं, जहाँ एक पीले भौंहों वाला राक्षस बुद्ध होने का ढोंग कर रहा है। यह न जानते हुए कि वह धोखेबाज है, मेरे गुरु ने उसके सामने सिर झुकाया और बंदी बना लिए गए। फिर मुझे सोने की झांझों के बीच कैद कर लिया गया, लेकिन सौभाग्य से स्वर्ग से भेजे गए नक्षत्रों ने मुझे बचा लिया। मैंने झांझों को तोड़ दिया, लेकिन जब हमने उससे फिर लड़ाई की, तो उसने स्वर्ग के देवताओं, रक्षकों, संरक्षकों, मेरे गुरु और मेरे साथी शिष्यों को एक कपड़े के थैले में लपेट दिया। हे बोधिसत्व, मेरे पास और कोई रास्ता नहीं है, इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करने आया हूँ और आपसे आपकी महान शक्ति का प्रयोग करने का अनुरोध करता हूँ। उन जादुई शक्तियों का प्रयोग करें जिनसे आपने जल माता को वश में किया और आम लोगों को बचाया, ताकि आप मेरे गुरु को बचाने के लिए मेरे साथ चल सकें। फिर वे शास्त्रों को चीन वापस ले जाकर प्रसारित कर सकते हैं।" "हमारे बुद्ध की बुद्धिमत्ता की सदा प्रशंसा करो और प्रज्ञा-पारमिता को और अधिक प्रसिद्ध करो।"
“आज आप जो पूछ रहे हैं, वह वास्तव में हमारे बुद्ध की महिमा बढ़ाने के लिए है,”

राजा गुरु ने कहा, “और मुझे स्वयं जाना चाहिए। लेकिन अभी ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत है, ठीक वही समय जब हुआई नदी में बाढ़ आती है। जिस महान ऋषि जल वानर को मैंने हाल ही में वश में किया था, वह पानी होने पर सक्रिय हो जाता है, और मुझे डर है कि वह मेरी अनुपस्थिति का फायदा उठाकर इतना उत्पात मचा देगा कि कोई भी दिव्य शक्ति उसे वश में नहीं कर पाएगी। मैं अपने शिष्य को चार सेनापतियों के साथ भेज रहा हूँ ताकि वे राक्षस को वश में करने में आपकी मदद करें।”

बंदर ने उसे धन्यवाद दिया और फिर चार सेनापतियों और नन्हे राजकुमार झांग के साथ बादल पर सवार होकर पश्चिमी स्वर्ग की ओर वापस चला गया, जहाँ वे सीधे नन्हे वज्र मठ में पहुँचे। वहाँ नन्हे राजकुमार झांग ने अपने कागज़ जैसे सफेद भाले को लहराया और चारों सेनापतियों ने अपनी उत्कृष्ट तलवारें घुमाते हुए राक्षसों को युद्ध के लिए चुनौती दी।

जब छोटे शैतान यह खबर देने के लिए अंदर भागे, तो दानव राजा ने अपने शैतानों को एक बार फिर बाहर निकाला, अपने ढोल बजवाए और जवाब दिया, "इस बार तुमने किसे आने के लिए राजी किया है?"

उसके मुंह से शब्द पूरे होने से पहले ही, चारों जनरलों के मुखिया छोटे राजकुमार झांग ने चिल्लाकर कहा,

"धिक्कार है दुष्ट आत्मा! क्या तुम्हारी आँखों में कुछ नहीं है? क्या तुम हमें पहचान नहीं पाते?"

"तुम किसके चेले हो?" राक्षस राजा ने कहा। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई उसकी मदद करने की?"

"मैं सिझोऊ के महान ऋषि, बोधिसत्व राजा शिक्षक का शिष्य हूं, और मैं उनके आदेश पर चार दिव्य सेनापतियों के साथ आपको पकड़ने आया हूं," राजकुमार ने उत्तर दिया।

राक्षस राजा ने उपहास करते हुए उत्तर दिया, "तुम्हारे पास किस प्रकार की मार्शल आर्ट है जो तुम्हें इतना अपमानजनक होने की हिम्मत देती है?"

"चूंकि आप मेरी युद्ध कला के बारे में जानना चाहते हैं," राजकुमार ने उत्तर दिया, "तो मैं आपको बताता हूँ: मेरे लोग फ्लोइंग सैंड्स नदी से आते हैं।"

जहां मेरे पिता सैंडलैंड के राजा हुआ करते थे।

अध्याय 66

मैं एक कमजोर और बीमार बच्चा था।
बुरे प्रभाव और अशुभ नक्षत्र के प्रभाव में जन्म।
मैं लंबे समय से अपने गुरु की अमर शक्तियों का प्रशंसक रहा था।
एक आकस्मिक मुलाकात में उन्होंने मुझे यह रहस्य बताया।
औषधि की आधी गोली से मेरी बीमारी ठीक हो गई;
मैंने अपने आचरण को सुधारने के लिए अपना सिंहासन त्याग दिया।
एक समय था जब मुझे स्वर्ग के समान लंबे समय तक जीने का तरीका पता था;
मेरा चेहरा जवां हो गया और हमेशा के लिए ऐसा ही रहेगा।
मैं ड्रैगनफ्लावर के पेड़ के नीचे आयोजित सभाओं में गया हूँ।
और बादल पर सवार होकर बुद्ध के महल तक गए।
कोहरे और हवाओं पर कब्जा करके मैंने जलमयी जनजाति को वश में कर लिया;
मैंने अजगरों और बाघों को वश में करके पहाड़ की रक्षा की।
कर्तव्यनिष्ठ लोगों ने एक भव्य पैगोडा का निर्माण किया।
अपने अवशेषों की चमक से समुद्र को शांत करने के लिए।
मेरा कागज जैसा सफेद भाला सभी राक्षसों को पकड़ सकता है;
मेरी कोट की धूसर आस्तीन में बुरी आत्माएं फंसी हुई हैं।
अब बिनचेंग शहर में शांति और खुशी का माहौल है।
और पूरी दुनिया लिटिल झांग की प्रसिद्धि की प्रशंसा करती है।"

जब राक्षस राजा ने यह सुना तो उसने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "राजकुमार, जब तुमने बोधिसत्व गुरु का अनुसरण करने के लिए अपना सिंहासन त्यागा था, तब तुमने अमरता की कौन-सी कलाएँ सीखी थीं? तुम तो केवल हुआई नदी में जल राक्षसों को पकड़ने में ही कुशल हो। तुम्हें नौसिखिए सन की सारी बकवास पर विश्वास नहीं करना चाहिए था और उन सभी पहाड़ों और नदियों को पार करके अपना प्राण अर्पित करने नहीं आना चाहिए था। हमें जल्द ही पता चल जाएगा कि तुम अमर हो या नहीं।"

यह सुनकर नन्हा झांग बहुत क्रोधित हुआ और उसने भाले से सीधे राक्षस के चेहरे पर प्रहार किया। चारों सेनापति और महान ऋषि बंदर भी लोहे की गदा लिए हुए एक

साथ हमले में कूद पड़े।
वह शानदार दुष्ट आत्मा जरा भी भयभीत नहीं था, क्योंकि वह अपने छोटे और लचीले भेड़िये के दांत वाले गदा से वार को रोकता, रोकता और पलटवार करता रहा। यह एक शानदार लड़ाई थी:
अध्याय 66
920
पश्चिम की यात्रा
कागज़ जैसे सफेद भाले वाला छोटा राजकुमार,
चारों जनरलों की तलवारों से और भी मजबूत होकर,
वुकॉन्ग अपने सोने की पट्टी वाले डंडे का इस्तेमाल करते हुए,
उन्होंने एकमत होकर दानव राजा को घेर लिया।
सचमुच उसकी जादुई शक्तियां बहुत महान थीं।
उसने बिना किसी भय के उनके हमलों का सामना किया।
भेड़िये के दांत से बनी गदा बुद्ध का हथियार थी।
उसे तलवारों या भाले के घावों से बचाना।
वाइल ने हवा को गरजा।
बुराई की धुंध के भयंकर भंवर के बीच से।
एक व्यक्ति ने अपनी प्रतिभा का उपयोग नश्वर वस्तुओं के प्रति प्रेम के लिए किया;
दूसरे व्यक्ति का मन बुद्ध और शास्त्रों में लगा हुआ था।
उन्होंने हमला किया और वे उग्र हो गए।
बादलों में सूर्य, चंद्रमा और तारों को ढकते हुए,
उनमें से प्रत्येक क्रोध में दुष्ट और क्रूर है।
लंबे समय तक तीनों वाहन अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर सके:
प्रतिद्वंद्वी कौशलों की यह लड़ाई बेहद कड़वी और बराबरी की थी।
काफी देर तक लड़ाई चलती रही और कोई नतीजा नहीं निकला, तभी दुष्ट आत्मा ने अपनी थैली खोली और बंदर ने एक बार फिर चिल्लाकर कहा, "सावधान रहो, सज्जनों!" राजकुमार और उसके साथियों को समझ नहीं आया कि वह उन्हें किस बात के लिए चेतावनी दे रहा है, इसलिए एक झटके में राक्षस राजा ने उन्हें अपनी थैली में फंसा लिया। केवल बंदर ही समय रहते बच निकला। हम यह वर्णन नहीं करेंगे कि

कैसे राक्षस राजा एक बार फिर विजयी होकर लौटा, रस्सियाँ मंगवाईं और उन्हें बांधकर ताला लगाकर एक गड्ढे में डाल दिया।
जब बंदर आसमान में उछला और उसने राक्षस को अपनी सेना के साथ वापस लौटते और द्वार बंद करते देखा, तो उसने अपना शुभ प्रकाश धरती पर उतारा और पर्वत के पश्चिमी ढलान पर खड़ा हो गया। "स्वामी!" वह अपनी पीड़ा में जोर से रोया।
"धर्म परिवर्तन करने और भिक्षु बनने के बाद से
अध्याय 66
921
पश्चिम की यात्रा
मैं गुआनयिन का आभारी हूं कि उन्होंने मेरे दुखों का अंत किया।
आपको पश्चिम की ओर महान मार्ग की खोज में मार्गदर्शन करते हुए।
मैंने आपको बुद्ध के अपने मंदिर तक पहुँचने में सहायता की है।
जब सब कुछ आसान लग रहा था, तब भला किसने सोचा होगा?
हमें इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि हम पर इतने शक्तिशाली राक्षस द्वारा हमला किया जाएगा।
मेरी कोई भी तरकीब या युक्ति कारगर नहीं हुई;
मैंने जितनी भी मदद मांगी, सब व्यर्थ ही गई।"
जब बंदर घोर दुख में डूबा हुआ था, तभी अचानक दक्षिण-पश्चिम दिशा से एक चमकीला बादल आया और पूरी पर्वत चोटी मूसलाधार बारिश से भीग गई। "वुकोंग," एक आवाज़ ने पुकारा, "क्या तुम जानते हो मैं कौन हूँ?" बंदर देखने के लिए आगे बढ़ा और उसने यह देखा: बड़े कान, चौड़ा जबड़ा और चौकोर चेहरा;
चौड़े कंधे, गठीली छाती और मोटा शरीर।
एक हंसमुख आवाज जो मस्ती से भरी थी,
चमकीली और दमकती आंखों की एक जोड़ी।
उसके कपड़े खुले हुए थे; किस्मत पूरी तरह से उसके साथ थी।
उनकी भूसे की चप्पलें आरामदायक थीं और उनका मनोबल ऊंचा था।
वह आनंद की भूमि के स्वामी थे।
हंसते हुए भिक्षु मैत्रेय।
बंदर ने जैसे ही उन्हें देखा, उसने तुरंत प्रणाम किया और कहा, "आप कहाँ जा रहे हैं,

पूर्व से आए भगवान बुद्ध? मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ कि मैं आपके रास्ते से नहीं हटा।"
बुद्ध ने उत्तर दिया, "मैं यहां छोटे गर्जन मठ में रहने वाले राक्षस के कारण आया हूं।"
“हे स्वामी, आपकी अपार कृपा के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ,” बंदर ने उत्तर दिया। “क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह राक्षस कहाँ से आया है और यह दुष्ट आत्मा कैसे बना? इसकी थैली में किस प्रकार का खजाना है? कृपया मुझे बताइए, हे स्वामी।”
“वह पीले माथे वाला एक सेवक था जो मेरी पत्थर की घंटी बजाता था,” बुद्ध मैत्रेय ने उत्तर दिया। “इस वर्ष के तीसरे महीने के तीसरे दिन, जब मैं आदिम परमेश्वर की सभा में गया, तो मैंने उसे अपने महल की देखभाल करने के लिए छोड़ दिया था। उसी समय उसने मेरे कुछ खजाने चुरा लिए और एक नकली बुद्ध के रूप में आत्मा बन गया। अध्याय 66

यह थैली मेरा भविष्य का स्वर्ग का थैला है, या जिसे आम तौर पर मानव वीर्य का थैला कहा जाता है। भेड़िये के दांतों वाली लाठी मूल रूप से घंटी बजाने के लिए इस्तेमाल होने वाली छड़ी थी।
यह सुनकर बंदर चिल्लाया, "सच कहूँ तो, तुम बड़े ही हंसमुख साधु हो। उस लड़के को भागने देकर तुमने उसे बुद्ध का रूप धारण करने और मेरे लिए सब कुछ बर्बाद करने का मौका दे दिया। तुम्हें घर के प्रबंधन में लापरवाही बरतने का दोषी ठहराया जाना चाहिए।"
“मैं लापरवाह था,” मैत्रेय ने उत्तर दिया। “इसके अलावा, आपके गुरु और आपके शिष्यों को अभी भी कई राक्षसों से निपटना बाकी है। इसीलिए हर तरह के आध्यात्मिक प्राणी पृथ्वी पर आ रहे हैं। आपका कष्ट सहना स्वाभाविक है। अब मैं उसे आपके लिए पकड़ने आया हूँ।”
बंदर ने जवाब दिया, "उस दुष्ट आत्मा के पास बहुत बड़ी जादुई शक्तियां हैं, और तुम्हारे पास कोई हथियार नहीं है। तुम उसे कैसे वश में कर पाओगे?"
मैत्रेय ने कहा, “मैं पहाड़ के नीचे एक छोटी सी झोपड़ी बनाऊंगा, जहाँ मैं फल और खरबूजे उगाऊंगा। तुम उसे युद्ध के लिए चुनौती दो, लड़ाई में हार जाओ, और उसे मेरे खरबूजों के खेत में ले आओ। मेरे सारे खरबूजे अभी कच्चे हैं, इसलिए तुम एक बड़े

पके हुए खरबूजे में बदल जाओ। जब वह वहाँ पहुँचेगा तो उसे खरबूजा खाने की इच्छा होगी और मैं तुम्हें उसे दे दूंगा। एक बार जब तुम उसके पेट में चले जाओगे तो तुम उसके साथ जो चाहो कर सकते हो। फिर मैं उसकी थैली लाऊंगा और हम उसे उसमें डाल देंगे।"

"यह बहुत अच्छी योजना है," बंदर ने उत्तर दिया, "लेकिन आपको कैसे पता चलेगा कि मैं जिस तरबूज में बदल जाऊंगा, वह पका हुआ तरबूज कौन सा होगा?"

और वो मेरे पीछे वहाँ जाने के लिए क्यों तैयार होगा?

मैत्रेय हँसते हुए बोले, "मैं संसार का स्वामी हूँ, और मेरी दृष्टि चमत्कारिक है। बेशक मैं पहचान लूँगा कि तुम कौन हो। तुम चाहे जो भी रूप धारण कर लो, मैं तुम्हें पहचान लूँगा। बस चिंता की बात ये है कि कहीं वो राक्षस तुम्हारे पीछे न आ जाए। मुझे तुम्हें कुछ नया जादू सिखाना पड़ेगा।"

"लेकिन वो मुझे अपनी थैली में पकड़ लेगा," बंदर ने जवाब दिया, "मेरा पीछा नहीं करेगा। मैं कौन सी जादुई शक्ति का इस्तेमाल कर सकता हूँ?"

“अपना हाथ फैलाओ,” मैत्रेय ने कहा। बंदर ने अपना बायाँ हाथ फैलाया। मैत्रेय ने अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को जादुई लार से गीला किया, उस पर “रुको” लिखा और बंदर को मुट्ठी बनाने को कहा। अगर उसने राक्षस के सामने फिर से मुट्ठी खोली तो राक्षस निश्चित रूप से उसके पीछे पड़ जाएगा।

बंदर ने निर्देशानुसार खुशी-खुशी मुट्ठी बनाई और मठ के द्वार की ओर लौट गया। एक हाथ में लाठी लहराते हुए वह चिल्लाया, "दुष्ट आत्मा, तुम्हारा स्वामी बंदर यहाँ है। तुरंत बाहर आओ और हम देखेंगे कि विजेता कौन है।" जब छोटे शैतान अंदर आकर यह सूचना देने लगे, तो दानव राजा ने पूछा कि बंदर इस बार अपने साथ कितने सैनिक लाया है।

उन्होंने जवाब दिया, "कोई नहीं। वह यहाँ अकेला है।"

“वह बंदर पूरी तरह से थक चुका है और उसकी बुद्धि जवाब दे चुकी है,” दानव राजा हँसते हुए बोला, “और उसे मदद करने के लिए कोई और नहीं मिल रहा है। वह बस अपनी जान जोखिम में डाल रहा है।” कवच धारण करने के बाद उसने अपना खजाना और लचीला भेड़िया-दांत वाला गदा लिया और मठ के द्वार से बाहर निकलकर चिल्लाया, “इस बार तुम टिक नहीं पाओगे, सन वुकॉन्ग।”

"धिक्कार है उस राक्षस पर," बंदर ने गुस्से से जवाब दिया। "तुम्हारा क्या मतलब है, मैं

टिक नहीं पाऊंगा?"
“देखो तुम्हें,” राक्षस ने उत्तर दिया। “तुम पूरी तरह से हताश और थके हुए हो। मदद के लिए तुम्हारे पास कोई और नहीं बचा है। अब तुम फिर से मुझसे प्रतिरोध करने आए हो, तो तुम्हारी मदद के लिए कोई दिव्य सैनिक या ऐसा कोई भी नहीं होगा। इसीलिए मैंने कहा था कि तुम टिक नहीं पाओगे।”
अध्याय 66
923
पश्चिम की यात्रा
बंदर ने कहा, "शैतान, तुझे तो यह भी नहीं पता कि तू जीना चाहता है या मरना। ये सब बातें बंद कर और ये ले!"
बंदर को एक हाथ से ही लाठी चलाते देख राक्षस जोर से हंस पड़ा: "कितना चालाक छोटा बंदर है! क्या तुम्हें लगता है कि तुम एक हाथ से लाठी चलाकर मुझे रोक पाओगे?"
"मेरे प्यारे बच्चे," बंदर ने कहा, "अगर मैं दोनों हाथों का इस्तेमाल करूँ तो भी तुम मुझे हरा नहीं पाओगे। यहाँ तक कि चार-पाँच हाथों से भी, चाहे मेरा एक हाथ पीछे बंधा हो, तुम मुझे हरा नहीं पाओगे। हाँ, बशर्ते तुम अपनी उस थैली का इस्तेमाल न करो।"
“ठीक है,” दानव राजा ने उत्तर दिया, “मैं अपने खजाने का इस्तेमाल नहीं करूँगा। मैं तुमसे सीधी लड़ाई लड़ूँगा और हम देखेंगे कि कौन बेहतर है।” इतना कहकर उसने अपना भेड़िया-दांत वाला गदा उठाया और बंदर पर हमला कर दिया। बंदर ने दोनों हाथों में गदा लेकर दानव के चेहरे पर अपनी मुट्ठी तान दी। जैसे ही दानव उसके प्रभाव में आया, उसने पीछे हटने का ख्याल छोड़ दिया और सचमुच अपने खजाने का इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि सीधे गदा लेकर बंदर पर टूट पड़ा।
बंदर ने पहले तो छटपटाया, फिर मुड़कर हार मानकर भाग गया, और दुष्ट आत्मा पहाड़ की पश्चिमी ढलानों पर उसका पीछा करने लगी।
जैसे ही बंदर ने तरबूज़ का खेत देखा, वह गेंद की तरह गोल होकर उसमें घुस गया और खुद को एक बड़े, पके और मीठे तरबूज़ में बदल लिया। दुष्ट आत्मा रुककर चारों ओर देखने लगी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि बंदर कहाँ चला गया।
वह दौड़कर झोपड़ी के पास गया और पूछा, "ये खरबूजे कौन उगा रहा है?"
मैत्रेय, जिसने स्वयं को एक बूढ़े तरबूज उत्पादक के रूप में बदल लिया था, घास-फूस

की झोपड़ी से बाहर आया और बोला, "मैं हूँ, महाराज।"
"क्या तुम्हारे पास कोई पके हुए फल हैं?" राक्षस राजा ने पूछा।
"हां," मैत्रेय ने उत्तर दिया।
"तो मेरे लिए एक पका हुआ फल तोड़कर लाओ," राक्षस ने कहा। "मुझे प्यास लगी है।"
मैत्रेय ने बंदर के रूप में परिवर्तित तरबूज को उठाया और आदरपूर्वक दोनों हाथों से राक्षस राजा को सौंप दिया। राक्षस राजा ने उसे जांचने के बजाय, उसे उठाया और काट लिया। यह बंदर के लिए राक्षस के गले में सीधे घुसने का मौका था। बिना देर किए, वह लात-घूंसे मारने लगा, राक्षस की आंतों और पेट को पकड़ने और नोचने लगा, कलाबाजियां करने लगा, सिर के बल खड़ा हो गया और जो चाहे करने लगा। दुष्ट आत्मा ने दांत पीसे और दर्द से कराह उठा, उसकी आंखों से आंसू बहने लगे, और वह तरबूज के खेत में तब तक लुढ़कता रहा जब तक कि वह खलिहान जैसा न दिखने लगा।
"रुको, रुको!" वह चिल्लाया। "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।"
इसके बाद मैत्रेय अपने असली रूप में लौट आए और एक हंसमुख मुस्कान के साथ बोले, "दुष्ट प्राणी, क्या तुम मुझे पहचानते हो?"
जब दुष्ट आत्मा ने ऊपर देखा तो वह जमीन पर घुटनों के बल गिर पड़ा, दोनों हाथों से अपना पेट सहलाते हुए और प्रणाम करते हुए बोला, "हे स्वामी, मुझे बख्श दो, मुझे बख्श दो। मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूंगा।"
तब मैत्रेय आगे बढ़े, एक हाथ से उसे पकड़ लिया, भविष्य के स्वर्ग की थैली खोल दी, पत्थर की घंटी बजाने के लिए इस्तेमाल होने वाली छड़ी वापस ले ली और कहा, "सन वुकॉन्ग, मेरी खातिर उसकी जान बख्श दो।"
घृणा और नफरत से व्याकुल बंदर, राक्षस के पेट में तब तक घूंसे मारता रहा, लात मारता रहा और तबाही मचाता रहा जब तक कि राक्षस असहनीय पीड़ा से तड़प कर गिर नहीं गया।
अध्याय 66

मैत्रेय ने कहा, "वुकोंग, अब वह और बर्दाश्त नहीं कर सकता। उसे छोड़ दो।"

"अपना मुंह चौड़ा खोलो," सन वुकॉन्ग ने अंततः कहा, "और मुझे बाहर निकालो।" हालांकि राक्षस के अंदरूनी अंग दर्दनाक गांठों में जकड़े हुए थे, लेकिन उसका दिल अभी तक क्षतिग्रस्त नहीं हुआ था, और जैसा कि कहावत है, जब तक दिल क्षतिग्रस्त नहीं होता, कोई नहीं मरता;

पेड़ के तने का रस सूख जाने पर ही पत्तियां गिरती हैं।

जैसे ही उसे मुंह चौड़ा खोलने को कहा गया, उसने दर्द के बावजूद ऐसा कर दिया। तभी बंदर उछलकर बाहर आया और वापस अपने असली रूप में आ गया। उसने तुरंत अपना डंडा उठाया और फिर से वार करने ही वाला था कि बुद्ध मैत्रेय ने उस दुष्ट आत्मा को थैली में डालकर अपनी कमर पर टांग लिया। हाथ में घंटियाँ पकड़े हुए मैत्रेय ने कहा, "दुष्ट प्राणी, तूने जो सोने की झांझें चुराई थीं, वे कहाँ हैं?"

जीने के लिए बेताब उस राक्षस को भविष्य के स्वर्ग के थैले के अंदर बड़बड़ाते हुए सुना जा सकता था, "सन वुकॉन्ग ने उन्हें चकनाचूर कर दिया।"

"अगर ये टूटे हुए हैं तो मेरा सोना मुझे वापस दे दो," मैत्रेय ने कहा।

"यह मुख्य हॉल में कमल के सिंहासन पर ढेर लगा हुआ है," राक्षस ने उत्तर दिया।

एक हाथ में थैली और दूसरे हाथ में छड़ी पकड़े हुए बुद्ध हँसते हुए बोले, "वुकोंग, हम दोनों मिलकर मेरा सोना वापस लाएँगे।" धर्म की ऐसी शक्ति का प्रदर्शन देखकर सुन वुकोंग जरा भी ढिलाई नहीं कर सका और गुरु को वापस पहाड़ पर मठ में ले गया, जहाँ उन्होंने सोने के सभी टुकड़े एकत्र किए।

हालांकि मठ के द्वार मजबूती से बंद थे, लेकिन छड़ी से एक धक्का देने पर ही वे खुल गए। अंदर झाँकने पर उन्होंने देखा कि सभी छोटे शैतान मठ का सारा धन लेकर इधर-उधर भाग रहे थे। बंदर को जब एक शैतान मिला तो उसने एक को मार डाला; जब दो मिले तो उसने दो को मार डाला; और इसी तरह वह छह-सात सौ छोटे शैतानों को मारता चला गया, जो फिर से अपने असली रूप में आ गए - पर्वतीय आत्माएँ, वृक्ष राक्षस, दुष्ट जानवर और पशु दानव।

बुद्ध ने सोने के सभी टुकड़ों को इकट्ठा किया, उन पर जादुई श्वास फूंकी और मंत्र पढ़ा। पल भर में वे फिर से दो सोने के झांझ बन गए। फिर उन्होंने बंदर से विदा ली और शुभ बादल पर सवार होकर सीधे अपने स्वर्ग की ओर चल दिए। इसके बाद महान ऋषि ने तांग पुजारी, सुअर और साधु सैंड को मुक्त कर दिया।

कई दिनों तक वहाँ लटके रहने के बाद वह मूर्ख बुरी तरह भूखा था। बंदर को धन्यवाद

दिए बिना ही वह झुकी हुई कमर के साथ सीधे रसोई की ओर भागा, कुछ खाने की तलाश में। संयोग से उस राक्षस ने अपना दोपहर का भोजन मंगवाया था, लेकिन उसे खाने का समय ही नहीं मिला था कि बंदर ने उसे युद्ध के लिए चुनौती दे दी। जैसे ही उसने चुनौती देखी, सुअर ने आधा बर्तन चावल खा लिया और फिर स्वामी और साधु सैंड के लिए दो-दो कटोरे लाकर दिए ताकि वे दोनों दो-दो कटोरे खा सकें। उसके बाद ही उसने बंदर को धन्यवाद दिया और उस दुष्ट आत्मा के बारे में पूछा।

बंदर ने उसे बताया कि कैसे उसने राजा गुरु, कछुए और नाग की मदद मांगी, फिर सच्चे भगवान से राजकुमार को उधार लिया, और कैसे मैत्रेय ने राक्षस को वश में किया। यह सुनकर संजांग ने बहुत कृतज्ञता व्यक्त की और सभी देवताओं को प्रणाम किया। उसने पूछा, "शिष्य, सभी देवता कहाँ कैद हैं?"

अध्याय 66

925

पश्चिम की यात्रा

"कल मुझे दिन के देवता ने बताया कि वे सब गड्ढे में हैं," बंदर ने जवाब दिया। "सूअर," उसने आगे कहा, "हम दोनों उन्हें बचाने जा रहे हैं।"

भोजन करने के बाद, वह मूर्ख फिर से शक्ति और ऊर्जा से भर गया। उसने अपना रेक उठाया और बंदर के साथ गड्ढा खोदने, कैदियों को खोलने और उन्हें मीनार के नीचे आने के लिए कहने चला गया। संज़ंग, जिसने अब अपना चोगा फिर से पहन लिया था, ने उनमें से प्रत्येक को धन्यवाद देते हुए प्रणाम किया। इसके बाद, महान ऋषि ने पाँच ड्रैगन और दो जनरलों को वुडांग वापस जाने के लिए, छोटे राजकुमार झांग और चार जनरलों को बिनचेंग जाने के लिए, और अट्ठाईस नक्षत्रों को स्वर्ग के महलों में वापस जाने के लिए विदा किया। उन्होंने रक्षकों और संरक्षकों को भी मुक्त कर दिया ताकि वे सभी अपने-अपने क्षेत्र में लौट सकें।

गुरु और शिष्य कुछ घंटों के विश्राम के लिए मठ में रुके। फिर, घोड़े के भरपेट खाने और सारा सामान पैक करने के बाद, वे अगली सुबह फिर से निकल पड़े। जाने से पहले उन्होंने मीनारों, सिंहासनों, हॉलों और उपदेश कक्षों को जलाकर राख कर दिया। इस प्रकार वे बिना किसी चिंता के अपनी परेशानियों से भाग निकले।

आपदाओं और बाधाओं से अंततः मुक्ति।

अगर आपको नहीं पता कि वे ग्रेट थंडर मॉनेस्ट्री कब पहुंचे, तो अगली कड़ी में इसका

स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 67
ध्यान – प्रकृति स्थिर है और तुओलूओ गाँव बच गया है
मार्ग का मन शुद्ध हो जाता है क्योंकि भ्रष्टाचार दूर हो जाता है।
कहानी बताती है कि कैसे संज़ंग और उनके तीन शिष्य पश्चिमी स्वर्ग को छोड़कर प्रसन्नतापूर्वक अपने मार्ग पर आगे बढ़े। उन्हें चलते हुए एक महीने से अधिक समय हो गया था और अब वसंत ऋतु का अंतिम समय था। फूल खिल चुके थे और दूर-दूर तक फैले जंगल हरे-भरे थे। हवा और बारिश के बाद एक बार फिर शाम ढलने लगी थी।
"शिष्य," संज़ंग ने अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए कहा, "देर हो रही है। रात बिताने के लिए जगह ढूंढने के लिए हम किस तरफ चलें?"
“चिंता मत करो, स्वामी,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। “अगर हमें रहने के लिए कोई जगह नहीं भी मिली, तो भी हम तीनों में कुछ न कुछ हुनर है। सुअर से कहो कि कुछ घास काटे और साधु सैंड से कहो कि कुछ चीड़ के पेड़ काटे। मुझे थोड़ी-बहुत बढ़ईगिरी आती है। हम यहीं सड़क के किनारे एक झोपड़ी बना लेंगे जो एक साल तक रहने के लिए काफी अच्छी होगी। इतनी जल्दी क्या है?”
"लेकिन भाई, यहाँ रुकने की जगह नहीं है," पिग ने कहा। "पहाड़ बाघों, तेंदुओं और भेड़ियों जैसे जंगली जानवरों से भरा पड़ा है। पहाड़ी राक्षस और बौने हर जगह फैले हुए हैं। दिन के उजाले में भी यात्रा करना मुश्किल है। मैं यहाँ रात बिताने की हिम्मत नहीं करूँगा।"
"बेवकूफ!" बंदर बोला। "तुम दिन-ब-दिन और भी निराश होते जा रहे हो। मैं यूं ही बकवास नहीं कर रहा। इस लाठी को हाथ में लेकर मैं आसमान को भी थाम सकता हूं, अगर वह ढह जाए तो।"
अध्याय 67

गुरु और शिष्य आपस में बातचीत कर रहे थे तभी उनकी नजर पास ही में एक पहाड़ी खेत पर पड़ी।
"अच्छा," बंदर ने कहा, "रात बिताने के लिए एक अच्छी जगह मिल गई।"
"कहाँ?" आदरणीय बुजुर्ग ने पूछा।

"क्या वह सामने पेड़ों में बना घर नहीं है?" बंदर ने इशारा करते हुए पूछा। "चलो पूछते हैं कि क्या हम आज रात वहाँ रुक सकते हैं। हम सुबह सबसे पहले निकल जाएंगे।"
संजांग इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपने घोड़े को आगे बढ़ने के लिए उकसाया। बेंत के फाटकों के बाहर उतरकर उसने पाया कि वे मजबूती से बंद थे।
"दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो," उसने द्वारों पर दस्तक देते हुए पुकारा। अंदर से एक बूढ़े व्यक्ति ने द्वार खोले, जिसके हाथ में एक छड़ी थी और जिसने सरकंडे की चप्पलें, एक काली पगड़ी और एक सादा वस्त्र पहन रखा था।
"कौन चिल्ला रहा है?" उसने पूछा।
अपने हाथों को छाती के सामने जोड़कर, संजांग ने विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया और कहा, "आदरणीय संरक्षक, मैं पूर्व से भेजा गया एक भिक्षु हूँ जो पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने आया हूँ। दिन ढलते हुए इस विशिष्ट स्थान पर पहुँचने के कारण मैं आपके निवास पर एक रात्रिकालीन आवास की विनती करने आया हूँ। कृपया हम पर कृपा करें।"
"भिक्षु," बुजुर्ग ने कहा, "तुम पश्चिम की ओर जाना तो चाहोगे, पर वहाँ कभी नहीं पहुँच पाओगे। यह छोटा पश्चिमी स्वर्ग है, और यहाँ से महान पश्चिमी स्वर्ग तक का रास्ता बहुत लंबा है। इस जगह से निकलना ही इतना कठिन है, बाकी की यात्रा की कठिनाइयों का तो जिक्र ही क्या।"
"इससे बाहर निकलना इतना मुश्किल क्यों है?" संजांग ने पूछा।
बूढ़े आदमी ने अपने हाथ जोड़कर जवाब दिया, "हमारे गांव से लगभग बारह मील पश्चिम में एक बहती हुई पर्सिमोन लेन और सेवन परफेक्शंस नामक एक पहाड़ है।"
"सात पूर्णताएँ क्यों?" संजांग ने पूछा।
"यह 250 मील चौड़ा है," बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया, "और पूरी तरह से खजूर के पेड़ों से ढका हुआ है। एक पुरानी कहावत है कि खजूर के पेड़ों में सात गुण होते हैं।"
1. वे जीवन को लंबा करते हैं।
2. वे बहुत ही संदिग्ध हैं।
3. इनमें कोई पक्षी घोंसला नहीं बनाते।
4. वे कीड़ों से मुक्त हैं।
5. पाला पड़ने के बाद इनके पत्ते बहुत खूबसूरत हो जाते हैं।
6. फल बहुत बढ़िया है।

7. शाखाएँ और पत्तियाँ बड़ी और मोटी हैं।

अध्याय 67

927

पश्चिम की यात्रा

इसीलिए इसे सात पूर्णता का पहाड़ कहा जाता है। यह एक बड़ा, कम आबादी वाला इलाका है, और कोई भी कभी पहाड़ के अंदरूनी हिस्से में नहीं गया है। हर साल, ज़्यादा पके, सड़े हुए परसिमन रास्ते पर गिरते हैं, और पथरीली गली को पूरी तरह भर देते हैं। बारिश, ओस, बर्फ और पाला उन पर हमला करते हैं, और वे पूरी गर्मी सड़ते रहते हैं, जब तक कि पूरी गली सड़े हुए कचरे का ढेर न बन जाए। यहाँ के लोग इसे बहता हुआ मल या बहते हुए परसिमन की गली कहते हैं। जब पश्चिम से हवा चलती है तो इसकी बदबू किसी गंदे नाले से भी बदतर होती है। अब वसंत का मौसम है और तेज़ दक्षिण-पूर्वी हवा चल रही है, इसलिए अभी इसकी बदबू नहीं आ रही है।" संज़ंग इतना उदास था कि बोल नहीं पा रहा था।

बंदर खुद को रोक नहीं पाया। उसने ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा, "बेवकूफ बूढ़े! हम यहाँ रात को रहने की जगह ढूंढने आए हैं, और तुम अपनी बातों से हमें डरा रहे हो। अगर तुम्हारा घर सच में इतना छोटा है कि हमारे सोने की जगह नहीं है, तो हम रात इस पेड़ के नीचे ही बिताएंगे। तो हँसना बंद करो।" बंदर का भयानक चेहरा देखकर बूढ़ा आदमी डर के मारे चुप हो गया।

फिर उसने हिम्मत जुटाई, अपनी छड़ी बंदर की ओर तानी और चिल्लाया, "तुम्हें धिक्कार है, हड्डीदार चेहरे वाले, नुकीली भौंहों वाले, चपटी नाक वाले, धंसे हुए गालों वाले, बालों वाली आंखों वाले, बीमार दिखने वाले शैतान। तुम्हें जरा भी इज्जत नहीं है, इस तरह मुंह फैलाकर एक बूढ़े सज्जन का अपमान कर रहे हो।"

“तुम ज़्यादा समझदार नहीं हो, दोस्त,” बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “तुम्हें पता ही नहीं कि यह बीमार-सा दिखने वाला शैतान कौन है। चेहरे-मोहरे की किताब कहती है, ‘एक बदसूरत चेहरा उस पत्थर की तरह होता है जिसमें कीमती जेड छिपा होता है।’ लोगों को उनके रूप-रंग से आंकना सरासर गलत है। मैं बेशक बदसूरत हूँ, लेकिन मुझे कुछ तरकीबें पता हैं।”

“तुम कहाँ से आए हो?” बूढ़े आदमी ने पूछा। “तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारे पास कौन-कौन सी शक्तियाँ हैं?” इस पर बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया:

"मेरा घर श्रेष्ठ शरीर के पूर्वी महाद्वीप में है;
मैंने अपने आचरण को पुष्प और फल पर्वत पर संवारा।
स्पिरिट-टावर हार्ट माउंटेन के कुलपति के साथ अध्ययन करने के बाद मैंने मार्शल आर्ट में पूर्ण और निपुणता प्राप्त की।
मैं महासागरों को हिला सकता हूँ, मादा ड्रैगनों को वश में कर सकता हूँ,
अपने कंधों पर पहाड़ों का बोझ ढोता हूँ, और सूरज को आगे बढ़ाता हूँ।
राक्षसों और दानवों को पकड़ने में मैं माहिर हूँ;
जब मैं तारों की स्थिति बदलता हूँ तो भूत और देवता भयभीत हो जाते हैं।
आकाश चोर और पृथ्वी को पलटने वाले के रूप में मेरी ख्याति महान है;
मैं अनंत रूपों में रूपांतरित होने वाला सुंदर पत्थर का बंदर हूँ।
अध्याय 67
928
पश्चिम की यात्रा
इससे बूढ़े व्यक्ति का क्रोध प्रसन्नता में बदल गया। उन्हें प्रणाम करते हुए उसने कहा, "कृपया मेरे साधारण से घर में आइए और आराम से रहिए।" फिर वे चारों घोड़े को आगे बढ़ाते हुए और बोझ उठाते हुए अंदर चले गए। द्वार के दोनों ओर केवल कांटेदार झाड़ियाँ ही दिखाई दे रही थीं। भीतरी द्वार ईंट और पत्थर की दीवार में बना था, जिसके ऊपर और भी कांटे लगे थे, और जब वे अंदर गए, तभी उन्हें तीन कमरों वाला टाइलों का घर दिखाई दिया। बूढ़े व्यक्ति ने उनके लिए कुर्सियाँ खींचीं ताकि वे चाय आने का इंतज़ार करते हुए बैठ सकें और भोजन का आदेश दिया। थोड़ी देर में एक मेज लाई गई और उस पर गेहूं का दलिया, टोफू, शकरकंद, मूली, सरसों का साग, शलजम, चावल और खट्टी-माला का सूप परोसा गया।
गुरु और शिष्यों ने भरपेट भोजन किया। भोजन के बाद, सुअर ने बंदर को एक तरफ खींचकर फुसफुसाते हुए कहा, "भाई, पहले तो वह बूढ़ा हमें रुकने नहीं दे रहा था। अब उसने हमें इतना बढ़िया भोजन कराया है। क्यों?"
“यह कुछ खास नहीं था, है ना?” बंदर भाई ने जवाब दिया। “कल हम उससे दस तरह के फल और दस तरह के व्यंजन लेंगे।”
"तुम्हारी हिम्मत तो देखो!" सुअर ने जवाब दिया। "अपनी शेखी बघारकर तुमने उसे हमारे लिए खाना देने के लिए मना तो लिया, पर हम कल यहाँ से चले जाएंगे। भला

वो तुम्हें कुछ कैसे दे सकता है?"
"इतने अधीर मत हो," बंदर ने कहा, "मेरे पास इससे निपटने का एक तरीका है।"
जल्द ही शाम ढलने लगी। बूढ़े आदमी ने एक दीपक लाया, और बंदर ने झुककर पूछा, "आपका उपनाम क्या है, महोदय?"
"ली," बूढ़े आदमी ने जवाब दिया।
"मुझे लगता है कि यह ली गांव होगा," बंदर ने आगे कहा।
“नहीं,” बूढ़े आदमी ने कहा, “यह तुओलूओ गाँव है। यहाँ पाँच सौ से अधिक परिवार रहते हैं। उनमें से अधिकांश के उपनाम अलग हैं। मैं अकेला हूँ जिसका नाम ली है।”
"परोपकारी ली," बंदर ने उत्तर दिया, "आपने हमें इतना भरपूर भोजन किसलिए दिया?"
"अभी आपने कहा था कि आप दुष्ट राक्षसों को पकड़ सकते हैं," बूढ़े व्यक्ति ने कहा। "हमारे पास यहाँ एक राक्षस है जिसे हम चाहते हैं कि आप हमारे लिए पकड़ लें, और हम आपको निश्चित रूप से भरपूर इनाम देंगे।"
फिर बंदर ने सम्मानपूर्वक "ना-आ-आ" की ध्वनि निकाली और कहा, "मैं आपका आदेश स्वीकार करता हूँ।"
"बस उसे देखो," सुअर ने कहा, "मुसीबत मोल ले रहा है। जैसे ही उसे पता चलता है कि एक राक्षस को पकड़ना है, वह उसके साथ अपने दादाजी से भी ज़्यादा नरमी से पेश आता है। उसने तो पहले 'ना-आ-आ' का जाप भी किया।"
"भाई, तुम समझते नहीं हो। मेरे 'ना-आ-आ' ने सौदा पक्का कर दिया। अब वो किसी और को काम पर नहीं रखेगा।"
जब संजांग ने यह सुना तो उसने कहा, "अरे बंदर, तू हमेशा सब कुछ अपने लिए हथियाना चाहता है। अगर उस दुष्ट आत्मा की शक्ति इतनी अधिक है कि तू उसे पकड़ नहीं सकता, तो हम भिक्षु झूठे साबित हो जाएंगे।"
"मुझ पर गुस्सा मत कीजिए, स्वामी जी," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "मुझे कुछ और सवाल पूछने दीजिए।"
"और क्या?" बूढ़े आदमी ने पूछा।
"यह खूबसूरत गांव एक खुले मैदान में बसा है और यहां बहुत से लोग रहते हैं," मंकी ने कहा। "यह दूरस्थ और एकांत जगह नहीं है।"
कौन सी बुरी आत्मा तुम्हारे दरवाजे पर आने की हिम्मत करेगी?

“मैं तुमसे साफ-साफ कहूंगा,” बूढ़े ने जवाब दिया। “हम यहां साढ़े तीन साल पहले तक शांति और समृद्धि से रहते रहे, फिर अचानक तेज हवा चली। उस समय सब लोग खलिहान में गेहूं की कटाई या धान के खेतों में धान की रोपाई में व्यस्त थे। हमने सोचा कि बस मौसम बदल गया है। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि हवा चलने पर कोई दुष्ट आत्मा हमारे चरागाह में चर रहे घोड़ों और मवेशियों के साथ-साथ सूअरों और भेड़ों को भी खा जाएगी। उसने मुर्गियों और हंसों को पूरा निगल लिया, और जो भी पुरुष या स्त्री उसे मिली, उसे जिंदा ही खा गई। तब से वह पिछले दो सालों में हर साल हमें मारने आता है।”
आदरणीय महोदय, यदि वास्तव में आपके पास दुष्ट आत्मा को पकड़ने और उस स्थान को उससे शुद्ध करने की जादुई शक्तियां हैं, तो हम निश्चित रूप से आपको उदारतापूर्वक और पूरे सम्मान के साथ पुरस्कृत करेंगे।
"लेकिन उस राक्षस को पकड़ना मुश्किल होगा," बंदर ने जवाब दिया।
"हाँ," सुअर ने कहा, "बहुत मुश्किल है। हम तीर्थयात्री भिक्षु हैं, यहाँ केवल एक रात के लिए रुके हैं। हम कल अपने रास्ते पर निकल जाएंगे। हम किसी राक्षस को नहीं पकड़ सकते।"
"तो तुम भिक्षुओं ने धोखे से मुझसे वह भोजन छीन लिया," बूढ़े आदमी ने कहा। "जब हम पहली बार मिले थे, तब तुमने बड़ी-बड़ी बातें की थीं।"
तुमने कहा था कि तुम तारों को हिला सकते हो और दुष्ट राक्षसों को पकड़ सकते हो। लेकिन अब जब मैंने तुम्हें इसके बारे में बता दिया है, तो तुम ऐसा दिखावा कर रहे हो कि उसे पकड़ा ही नहीं जा सकता।
"बूढ़े आदमी," बंदर ने कहा, "बुरी आत्मा को पकड़ना आसान होता, लेकिन यहाँ आप लोग आपस में सहयोग नहीं करते। इसीलिए यह मुश्किल है।"
"आपको इतना यकीन कैसे है कि हम साथ मिलकर काम नहीं करते?" बूढ़े आदमी ने पूछा।
"अगर वह राक्षस आपको तीन साल से परेशान कर रहा है, तो भगवान ही जाने उसने कितनी जानें ली होंगी।"

बंदर ने जवाब दिया, "मेरा मानना है कि अगर हर परिवार एक औंस चांदी जमा करे तो पांच सौ परिवार मिलकर पांच सौ औंस चांदी इकट्ठा कर सकते हैं, और उससे कहीं न कहीं कोई पुजारी मिल जाएगा जो उस राक्षस को भगा देगा। तुमने तीन साल तक उसकी ऐसी क्रूरता को खुशी-खुशी क्यों सहन किया?"

“तुम पैसे खर्च करने की बात कर रहे हो,” बूढ़े आदमी ने कहा। “तुम हमें शर्मिंदा करके मारना चाहते हो। यहाँ हर परिवार ने चार-पाँच औंस चाँदी खर्च की है। पिछले साल से पहले हम पहाड़ों के दक्षिण में रहने वाले एक बौद्ध भिक्षु को राक्षस को पकड़ने के लिए बुलाने गए थे, लेकिन वह असफल रहा।”

“भिक्षु ने यह कैसे करने की कोशिश की?” बंदर भाई ने पूछा। इस पर बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया:

भिक्षु ने चोगा पहना हुआ था
और उन्होंने शास्त्रों का पाठ किया;
सर्वप्रथम मयूर सूत्र
और फिर कमल।
उसने धूपदान में अगरबत्ती जलाई।
उसने अपने हाथों के बीच एक घंटी पकड़ रखी थी।
उनका धर्मग्रंथों का अध्ययन
दुष्ट आत्मा को भयभीत कर दिया,

जो सीधे खेत में आया
उसकी हवाओं और बादलों के बीच।
भिक्षु ने आत्मा से संघर्ष किया
और यह एक शानदार दृश्य था:
उनमें से एक ने मुक्का मारा।
दूसरे ने अपने दुश्मन को पकड़ लिया।
भिक्षु को यह लाभ प्राप्त था कि
सिर पर बाल न होना।

लेकिन जल्द ही राक्षस जीत गया।
और वह सीधे अपने बादलों में वापस चला गया।
जब घाव धूप में सूख गया
हमने करीब जाकर देखा;
भिक्षु का गंजा सिर चकनाचूर हो गया था।
बिल्कुल पके हुए तरबूज की तरह।
"दूसरे शब्दों में कहें तो," बंदर हँसते हुए बोला, "वह हार गया।"
“उसने अपनी जान देकर कीमत चुकाई,” बूढ़े ने जवाब दिया। “नुकसान तो हमारा हुआ। हमें उसका ताबूत खरीदना पड़ा, उसके अंतिम संस्कार का खर्च उठाना पड़ा और उसके शिष्य को मुआवज़ा देना पड़ा। वह चाँदी शिष्य के लिए काफी नहीं थी। वह अब भी हम पर मुकदमा कर रहा है। वह हार मानने को तैयार नहीं है।”
"क्या तुमने राक्षस को पकड़ने के लिए किसी और को काम पर रखा है?" बंदर ने पूछा।
"पिछले साल हमने एक ताओवादी पुजारी को यह काम करने के लिए आमंत्रित किया था," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया।
"उसने कैसे कोशिश की?" बंदर ने पूछा।
"ताओवादी," बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया।
"उसने अपने सिर पर सोने का मुकुट पहना हुआ था।"
और उसके शरीर पर जादुई वस्त्र थे।
उसने अपनी जादुई छड़ी घुमाई,

उन्होंने ताबीज और पानी का भी इस्तेमाल किया।
उसने देवताओं और सेनापतियों को अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य किया।
बंदी बनाए गए राक्षस और जिन्न।
तेज हवा ज़ोर से गरज रही थी,
जबकि काले कोहरे ने सब कुछ ढक लिया।

दानव और ताओवादी
दोनों मुकाबले बराबरी के थे;
वे सूर्यास्त तक लड़ते रहे।
जब वह राक्षस बादलों में वापस चला गया।
आकाश और पृथ्वी स्पष्ट थे
और हम सभी लोग वहां मौजूद थे।
हम पुजारी की तलाश में निकले।
वह पहाड़ी झरने में डूबा हुआ मिला।
जब हमने उसे बाहर निकाला तो देखने के लिए
वह भीगे हुए मुर्गे की तरह था।
"दूसरे शब्दों में कहें तो," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "वह भी हार गया।"
"उसने तो सिर्फ अपनी जान देकर कीमत चुकाई, लेकिन हमें बहुत सारा पैसा खर्च करना पड़ा जो वास्तव में जरूरी नहीं था," बूढ़े आदमी ने जवाब दिया।
"कोई बात नहीं," बंदर ने कहा। "कोई बात नहीं। रुको, मैं तुम्हारे लिए उस राक्षस को पकड़ लेता हूँ।"
"अगर आपमें उसे पकड़ने की शक्ति है, तो मैं गाँव के कुछ बुजुर्गों से लिखित में वचन देने को कहूँगा कि उसे हराने के बाद वे आपको जितना चाहें उतना चाँदी देंगे। आपको एक पैसा भी कम नहीं पड़ेगा। लेकिन अगर आप हार जाते हैं, तो हमसे पैसे ऐंठने की कोशिश मत करना। हमें ईश्वर की इच्छा को स्वीकार करना होगा।"
“बूढ़े आदमी,” बंदर ने कहा, “उन्होंने तुम्हें जबरन वसूली से डरा रखा है। हम वैसे नहीं हैं। बड़ों को बुलाओ।”
बूढ़ा व्यक्ति बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने दासों को अपने पड़ोसियों, चचेरे भाइयों, पत्नी के परिवार और मित्रों में से सात-आठ वृद्धों को आमंत्रित करने के लिए भेजा। वे सभी अजनबियों से मिलने आए और तांग पुजारी का अभिवादन करने के बाद उन्होंने राक्षस को पकड़ने के बारे में खुशी-खुशी चर्चा की।
उन्होंने पूछा, "आपके प्रतिष्ठित शिष्यों में से कौन यह कार्य करेगा?"

"मैं करूँगा," बंदर ने अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ते हुए कहा।
“तुम कभी नहीं कर पाओगे, बिलकुल नहीं,” बूढ़े ने भयभीत होकर कहा। “दुष्ट आत्मा की जादुई शक्तियाँ बहुत विशाल हैं, और वह बहुत बड़ी भी है। आदरणीय महोदय, आप इतने छोटे और पतले हैं कि उसके दाँतों के बीच की किसी एक दरार से भी फिसल जाएँगे।”
बंदर मुस्कुराते हुए बोला, "बूढ़े, आप लोगों को परखने में माहिर नहीं हैं। मैं भले ही छोटा हूँ, पर मजबूत हूँ। मेरे अंदर जितना दिखता है उससे कहीं ज़्यादा खूबियाँ हैं।"
जब बड़ों ने यह सुना तो उन्हें उसकी बात माननी पड़ी।
उन्होंने कहा, "आदरणीय महोदय, राक्षस को पकड़ने के लिए आप कितना इनाम चाहेंगे?"
"इनाम की बात क्यों करनी है?" बंदर ने पूछा। "जैसा कि कहावत है, 'सोना चकाचौंध करता है, चांदी सफेद और बेवकूफ होती है, और तांबे के सिक्के बदबूदार होते हैं।' हम गुणी भिक्षु हैं और हम पैसे बिल्कुल नहीं लेंगे।"
“तो फिर तुम सबको व्रतों का पालन करने वाले उच्च कोटि के भिक्षु होना चाहिए,” बड़ों ने कहा। “पर अगर तुम पैसे नहीं भी लोगे, तो भी हम तुम्हें मुफ्त में काम नहीं करने दे सकते। हम सब खेती पर निर्भर हैं। अगर तुम राक्षस को वश में करके इस जगह को साफ कर दोगे, तो यहाँ का हर परिवार तुम्हें एक तिहाई एकड़ अच्छी खेती योग्य ज़मीन देगा, जो कुल मिलाकर 150 एकड़ से ज़्यादा हो जाएगी। तुम्हारे गुरु और तुम्हारे शिष्य वहाँ एक मठ बना सकते हैं और ध्यान कर सकते हैं। यह तुम्हारी लंबी यात्रा पर जाने से कहीं बेहतर होगा।”
“यह तो और भी बुरा होगा,” बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “अगर हम ज़मीन मांगेंगे तो हमें घोड़े पालने पड़ेंगे, मज़दूरी करनी पड़ेगी, अनाज पर कर देना पड़ेगा और चारा देना पड़ेगा। हम कभी शाम ढलते ही सो नहीं पाएंगे और न ही पांचवीं पहर के बाद देर तक जाग पाएंगे। यह तो हमारी मौत का कारण बन जाएगा।”
"अगर आप कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे, तो हम अपना आभार कैसे व्यक्त करेंगे?" बुजुर्गों ने पूछा।
"हम धार्मिक लोग हैं," बंदर ने कहा। "हमारे लिए कुछ चाय और भोजन ही काफी होगा।"
बुजुर्गों ने कहा, "यह तो आसान है। लेकिन तुम उस राक्षस को पकड़ोगे कैसे?"

"जब यह आएगा तो मैं इसे ले लूंगा," बंदर ने कहा।
"लेकिन यह बहुत विशाल है," बुजुर्गों ने कहा। "यह धरती से आकाश तक फैला हुआ है। यह हवा के साथ आता है और कोहरे के साथ चला जाता है।"
आप इसके करीब कैसे पहुंच पाएंगे?
"जब बात उन दुष्ट आत्माओं की आती है जो हवाएं बुला सकती हैं और बादलों पर सवार हो सकती हैं," बंदर ने उत्तर दिया, "मैं उन्हें महज बच्चों की तरह मानता हूँ। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कितनी बड़ी है - मेरे पास उसे हराने के तरीके हैं।"
जब वे बातें कर रहे थे, तभी तेज़ हवा के ज़ोरदार शोर से आठ-नौ बुजुर्ग डर से कांपने लगे। उन्होंने कहा, "भिक्षु, तुमने मुसीबत मोल ली है और अब तुम्हें वही मिल गई है। तुमने राक्षस के बारे में बात की थी और वह यहाँ है।"
बूढ़े श्री ली ने दरवाजा खोला और अपने रिश्तेदारों और तांग पुजारी से कहा, "अंदर आओ, अंदर आओ, राक्षस यहाँ है।"
इससे सुअर और साधु सैंड इतने घबरा गए कि वे भी अंदर जाना चाहते थे, लेकिन बंदर ने दोनों को एक-एक हाथ से पकड़ लिया और कहा, "तुम शर्मनाक हो। तुम भिक्षु हो और तुम्हें बेहतर पता होना चाहिए। यहीं रहो और भागने की कोशिश मत करो। मेरे साथ आंगन में आओ। हम देखेंगे कि यह किस तरह की बुरी आत्मा है।"
"लेकिन भाई," सुअर ने कहा, "वे पहले भी इस स्थिति से गुज़र चुके हैं। हवा की आवाज़ का मतलब है कि राक्षस आ रहा है। वे सब छिप गए हैं। हम राक्षस के दोस्त या रिश्तेदार नहीं हैं। हमारा उससे कोई व्यापारिक लेन-देन नहीं है। हम उससे क्यों मिलना चाहते हैं?" बंदर इतना बलवान था कि बिना और बहस किए उसने अध्याय 67 को खींच लिया।

उन्हें आंगन में ले जाकर खड़ा कर दिया, जबकि हवा और भी तेज होती जा रही थी। वह एक शानदार हवा थी।
उखड़े हुए पेड़ और समतल जंगल, भेड़ियों और बाघों को डराते हुए, नदियों और महासागरों को प्रज्वलित करते हुए भूतों और देवताओं को भयभीत करते हुए, महान माउंट हुआ की तीन चोटियों को उलट-पुलट कर देते हुए, दुनिया के चारों महाद्वीपों में धरती और आकाश को हिला देते हुए।

गांव के हर परिवार ने अपने दरवाजे कसकर बंद कर लिए।
सभी लड़के और लड़कियां जान बचाने के लिए भागने लगे।
काले बादलों ने आकाशगंगा को ढक लिया;
दीपकों की रोशनी फीकी पड़ गई और दुनिया में अंधेरा छा गया।
सुअर डर से कांप रहा था। वह ज़मीन पर लेटा हुआ था, अपनी थूथन ज़मीन में गाड़कर सिर छिपाए हुए था। ऐसा लग रहा था मानो उसे वहाँ कीलों से ठोक दिया गया हो। साधु सैंड ने अपना चेहरा ढँक लिया और आँखें खुली नहीं रख पा रहा था। बंदर हवा की आवाज़ से समझ गया कि उसमें कोई राक्षस है। थोड़ी देर बाद, जब हवा थम गई, तो आकाश में धुंधली सी दो बत्तियाँ ही दिखाई दे रही थीं।
“भाइयों,” उसने नीचे देखते हुए कहा, “हवा थम गई है। उठो और देखो।” उस मूर्ख ने अपनी नाक बाहर निकाली, अपने ऊपर से धूल झाड़ी और आकाश की ओर देखा, जहाँ उसे दो दीपक दिखाई दिए।
"कितनी मज़ेदार बात है," सुअर ने ज़ोर से हंसते हुए कहा, "कितनी मज़ेदार बात है। ये तो अच्छे व्यवहार वाली दुष्ट आत्मा है। चलो इससे दोस्ती कर लेते हैं।"
"यह बहुत अंधेरी रात है," फ्रायर सैंड ने कहा, "और तुमने इसे देखा भी नहीं है, तो तुम कैसे बता सकते हो कि यह अच्छी है या बुरी?"
"पुराने जमाने में लोग कहते थे," सुअर ने जवाब दिया, "रात में बाहर निकलते समय एक मोमबत्ती साथ ले जाओ, और अगर मोमबत्ती न हो तो वहीं रुक जाओ। तुम देख सकते हो कि इसके पास रास्ता रोशन करने के लिए दो लालटेन हैं। यह जरूर कोई अच्छी आत्मा होगी।"
"तुम गलत हो," फ्रायर सैंड ने कहा। "ये लालटेन नहीं हैं: ये तो राक्षस की आंखें हैं।"
यह सुनकर वह मूर्ख इतना भयभीत हो गया कि उसका आकार तीन इंच सिकुड़ गया।
"हे भगवान!" उसने कहा। "अगर उसकी आंखें इतनी बड़ी हैं, तो पता नहीं उसका मुंह कितना बड़ा होगा।"
"डरिए मत, भाई," बंदर ने कहा। "तुम दोनों मालिक की रखवाली करो, मैं ऊपर जाकर देखता हूँ कि उनका मूड कैसा है और वे किस तरह की बुरी आत्मा हैं।"
"भाई," सुअर ने कहा, "हमारे बारे में राक्षस को मत बताना।"

शानदार बंदर सीटी बजाते हुए हवा में उछल पड़ा। "इतनी जल्दी नहीं," उसने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते हुए, अपना डंडा लहराते हुए कहा, "इतनी जल्दी नहीं। मैं यहाँ हूँ।" जब राक्षस ने उसे देखा तो वह दृढ़ मुद्रा में खड़ा हो गया और गुस्से में अपना लंबा भाला चलाने लगा।

अपने डंडे से वार रोकते हुए बंदर ने पूछा, "राक्षस, तुम कहाँ से आए हो? क्या तुम कोई बुरी आत्मा हो?" राक्षस ने सवालों को अनसुना कर दिया और भाले से खेलना जारी रखा। बंदर ने फिर पूछा, लेकिन फिर भी कोई जवाब नहीं मिला और भाले से खेलना जारी रहा।

"तो ये बहरा और गूंगा है," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा। "भागना मत! ये लो!" बेपरवाह, राक्षस ने लाठी को और भी ज़ोरदार भाले से रोक दिया। हवा में ये लड़ाई आधी रात तक चलती रही, कभी एक तो कभी दूसरा हावी होता रहा, लेकिन फिर भी कोई विजेता नहीं था। सुअर और साधु सैंड को ली परिवार के आंगन से सब कुछ साफ़ दिखाई दे रहा था, और वे देख सकते थे कि राक्षस केवल अपने बचाव के लिए भाले का इस्तेमाल कर रहा था, हमला नहीं कर रहा था, जबकि बंदर की लाठी राक्षस के सिर से कभी दूर नहीं थी।

"फ्रायर सैंड," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा, "आप यहाँ पहरा दीजिए। मैं लड़ाई में शामिल होने जा रहा हूँ। मैं बंदर को राक्षस को हराने का सारा श्रेय अकेले नहीं लेने दूँगा। उसे सबसे पहले शराब नहीं पिलाई जाएगी।"

वह मूर्ख व्यक्ति अपने बादल पर उछल पड़ा और लड़ाई में शामिल हो गया, उसने अपने रेक से वार किया। राक्षस ने दूसरे भाले से उसका वार रोक दिया। दोनों भाले उड़ते हुए साँपों या बिजली की चमक की तरह थे। सुअर प्रशंसा से भर उठा।

"यह दुष्ट आत्मा भाले चलाने में माहिर है। यह 'पहाड़ के पीछे' होने वाला भाला-युद्ध नहीं है; यह तो 'उलझे हुए धागे' जैसा है।"

भाले से खेलना। यह मा फैमिली स्टाइल नहीं है। इसे सॉफ्ट-शाफ्ट स्टाइल कहा जाता है।"

"ऐसी बकवास मत करो, बेवकूफ," बंदर ने कहा। "सॉफ्ट-शाफ्ट स्टाइल जैसी कोई चीज नहीं होती।"

"बस देखो," पिग ने जवाब दिया। "वह हमें तलवारों से रोक रहा है। उसके भाले

दिखाई नहीं दे रहे। मुझे नहीं पता उसने उन्हें कहाँ छिपा रखा है।"
"ठीक है," बंदर ने कहा, "शायद कोई नरम शैली हो। लेकिन यह राक्षस बोल नहीं सकता। मुझे लगता है कि यह अभी तक इंसान नहीं बना है: इसमें अभी भी बहुत सारी नकारात्मकता बाकी है। कल सुबह, जब सकारात्मकता हावी होगी, तो यह ज़रूर भाग जाएगा। जब यह भागे, तो हमें इसका पीछा करना होगा और इसे जाने नहीं देना होगा।"
"हां, हां," सुअर ने कहा।
जब लड़ाई काफी देर तक चलती रही तो पूरब में उजाला छा गया। राक्षस ने और लड़ने की हिम्मत नहीं की, इसलिए वह मुड़ा और भाग गया, बंदर और सुअर दोनों उसके पीछे भागे। अचानक उन्हें माउंट सेवन परफेक्शंस पर स्थित रनी पर्सिमोन लेन की सड़ी हुई और असहनीय दुर्गंध महसूस हुई।
"कोई परिवार अपना गंदा पानी का गटर खाली कर रहा होगा," सुअर ने कहा। "उफ़! कितनी भयानक बदबू है!"
अपनी नाक पकड़े हुए बंदर भाई बोला, "राक्षस के पीछे जाओ, राक्षस के पीछे जाओ!" राक्षस पहाड़ के ऊपर से गया और वापस अपने असली रूप में आ गया: एक विशाल लाल रंग का अजगर। ज़रा इसे देखो: आँखें टूटते तारों जैसी।
नाक से बादलों की तरह पानी बह रहा है,
दांत, जैसे पास-पास लगे हुए स्टील के ब्लेड।
अध्याय 67
935
पश्चिम की यात्रा
सुनहरे हुक की तरह मुड़े हुए पंजे।
उसके सिर पर मांस का एक सींग था
जैसे अगेट के हजारों टुकड़े;
इसका शरीर लाल रंग के शल्कों से ढका हुआ है।
जैसे अनगिनत लाल रंग के धब्बे हों।
जब इसे जमीन पर लपेटा जाता है तो यह रेशमी रजाई जैसा प्रतीत हो सकता है;
उड़ते समय इसे इंद्रधनुष समझा जा सकता है।
जहां से यह सो रहा है, वहां से दुर्गंध आकाश तक उठती है।

और गति में इसका शरीर लाल बादलों से घिरा रहता है।
क्या यह बड़ा है?
एक व्यक्ति को एक तरफ से दूसरी तरफ नहीं देखा जा सकता था।
क्या यह लंबा है?
यह उत्तर से दक्षिण तक फैले एक पर्वत को पार कर सकता है।
"तो यह एक लंबा सांप है," पिग ने कहा। "अगर यह आदमखोर है तो यह एक बार में पांच सौ आदमियों को निगल सकता है और फिर भी इसका पेट नहीं भरेगा।"
"इसके नरम डंडे वाले भाले इसकी दोमुंही जीभ हैं," बंदर ने कहा। "यह पीछा करते-करते थक गया है। इस पर पीछे से हमला करो।" सुअर उछलकर उस पर झपटा और अपने रेक से उसे मारा। राक्षस एक गुफा में घुस गया, लेकिन उसकी सात-आठ फीट लंबी पूंछ बाहर निकली रह गई।
पिग ने अपना रेक नीचे फेंक दिया, उसे पकड़ा और चिल्लाया, "रुको, रुको!" उसने अपनी पूरी ताकत से खींचा, लेकिन उसे एक इंच भी हिला नहीं सका।
बंदर हँसते हुए बोला, "बेवकूफ, इसे अंदर जाने दो। हम इससे निपटने का कोई न कोई तरीका निकाल लेंगे। सांप को इतनी जोर से मत खींचो।"
जब सुअर ने राक्षस को छोड़ दिया तो राक्षस ने खुद को सिकोड़ लिया और उसके अंदर घुस गया।
"लेकिन छोड़ने से पहले तो हमारे पास उसका आधा हिस्सा था," उसने बड़बड़ाते हुए कहा। "अब वह सिकुड़कर अंदर चला गया है, हम उसे कभी बाहर नहीं निकाल पाएंगे। हमने सांप को खो दिया है, है ना?"
“वह बेचारा प्राणी बहुत विशालकाय है और गुफा बहुत संकरी है,” बंदर ने जवाब दिया। “वह अंदर घूम भी नहीं पाएगा। वह निश्चित रूप से सीधे अंदर गया होगा, इसलिए गुफा के दूसरे छोर पर बाहर निकलने का रास्ता जरूर होगा। जल्दी से पीछे वाले दरवाजे को बंद कर दो, मैं सामने से उस पर हमला करता हूँ।”
वह मूर्ख पहाड़ के दूसरी ओर भागा, जहाँ वास्तव में एक और छेद था जिसे उसने अपने पैर से बंद कर दिया। लेकिन वह संभल नहीं पाया था कि बंदर ने गुफा के सामने से अपना डंडा घुसा दिया, जिससे राक्षस को इतनी चोट लगी कि वह पीछे से रेंगकर बाहर निकल गया। सुअर तैयार नहीं था, और जब अध्याय 67 का एक झटका लगा

सांप की पूंछ ने उसे धक्का देकर गिरा दिया, वह उठ नहीं सका: वह दर्द से कराहते हुए जमीन पर पड़ा रहा। गुफा को खाली देखकर बंदर लाठी लेकर राक्षस को पकड़ने के लिए दूसरी तरफ दौड़ पड़ा। बंदर की चीखों से सुअर इतना शर्मिंदा हुआ कि दर्द के बावजूद वह उठ खड़ा हुआ और बेंत से उस पर बेतहाशा वार करने लगा।
यह देखकर बंदर हंसते हुए बोला, "तुम्हें क्या लगता है तुम किसे मार रहे हो? राक्षस तो भाग गया।"
मैं "सांप को बाहर निकालने के लिए घास को पीट रहा हूँ।"
"बेवकूफ!" बंदर ने कहा, "उसके पीछे जाओ!"
दोनों ने एक गहरी खाई पार की, जहाँ उन्होंने राक्षस को कुंडली मारकर बैठे देखा, उसका सिर ऊँचा था और उसका विशाल मुँह चौड़ा खुला हुआ था। वह सुअर को निगलने ही वाला था, जो डर के मारे भाग गया। लेकिन बंदर सीधे उसकी ओर बढ़ा और एक ही झटके में निगल लिया गया।
"भाई," सुअर विलाप करते हुए बोला, अपने पैर पटकते हुए और अपनी छाती पीटते हुए, "तुम नष्ट हो गए हो।"
"चिंता मत करो, सुअर," बंदर ने राक्षस के पेट के अंदर से पुकारा, जिसे वह अपनी लाठी से कुरेद रहा था।
"मैं इसे पुल बना दूंगा। देखो!" जैसे ही उसने यह कहा, राक्षस ने अपनी पीठ को इंद्रधनुष के आकार के पुल की तरह मोड़ लिया।
"देखने में तो यह पुल जैसा लगता है," सुअर चिल्लाया, "लेकिन इसे पार करने की हिम्मत कोई नहीं करेगा।"
“तो मैं इसे नाव में बदल दूंगा,” बंदर ने कहा। “देखो!” उसने अपनी लाठी से राक्षस के पेट की खाल को बाहर धकेल दिया, और जब खाल ज़मीन पर पड़ी थी और उसका सिर ऊपर उठा हुआ था, तो वह सचमुच एक नदी की नाव जैसा दिख रहा था।
पिग ने कहा, "यह देखने में नाव जैसा लग सकता है, लेकिन बिना मस्तूल या पाल के यह हवा में अच्छी तरह से नहीं चल पाएगा।"
“तो फिर रास्ते से हट जाओ,” बंदर ने कहा, “मैं इसे तुम्हारे लिए पाल की तरह चला देता हूँ।” फिर उसने अपनी लाठी को पूरी ताकत से राक्षस की रीढ़ की हड्डी में अंदर

से घुसा दिया और उसे लगभग साठ-सत्तर फीट ऊँचा, मस्तूल की तरह खड़ा कर दिया। अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करते हुए और असहनीय दर्द से तड़पता हुआ राक्षस हवा से भी तेज़ गति से आगे बढ़ा, पहाड़ से नीचे उतरता हुआ और जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से सात मील से अधिक दूर तक गया, जब तक कि वह धूल में बेजान होकर गिर नहीं गया। वह मर चुका था।

जब सुअर राक्षस के पास पहुँचा तो उसने अपना फावड़ा उठाया और उस पर बेतहाशा वार करने लगा। बंदर ने राक्षस के पेट में एक बड़ा छेद कर दिया, बाहर निकला और बोला, "बेवकूफ! यह मर चुका है, बस बात खत्म। इसे मारते क्यों रहना?"

"भाई," सुअर ने जवाब दिया, "क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि मैंने अपनी पूरी जिंदगी मरे हुए साँपों को मारना पसंद किया है?" तभी उसने अपना रेक एक तरफ रख दिया, साँप की पूंछ पकड़ी और उसे पीछे की ओर खींचना शुरू कर दिया।

इसी बीच तुओलू गांव में बूढ़े श्री ली और अन्य लोग तांग पुजारी से कह रहे थे, "आपके दोनों शिष्य पूरी रात से गायब हैं और अभी तक वापस नहीं आए हैं। वे अवश्य ही मर गए होंगे।"

"मुझे पूरा यकीन है कि कोई समस्या नहीं होगी," संज़ंग ने जवाब दिया। "चलो जाकर देखते हैं।" कुछ ही देर में बंदर और सुअर मंत्रोच्चार करते हुए एक विशाल अजगर को घसीटते हुए प्रकट हुए। तभी सबको खुशी का एहसास हुआ।

गांव के सभी लोग, जवान और बूढ़े, पुरुष और महिला, घुटने टेककर संजांग को प्रणाम करते हुए बोले,

"महोदय, यही वह दुष्ट आत्मा है जिसने इतना नुकसान पहुंचाया है। अब जब आपने अपनी शक्तियों का प्रयोग करके इस राक्षस का सिर काट दिया है और हमें इस बुराई से मुक्ति दिला दी है, तो हम फिर से शांति से रह सकेंगे।" सभी लोग बहुत आभारी थे, और सभी परिवारों ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्हें भोजन पर आमंत्रित किया, गुरु और शिष्यों को छह या सात दिनों तक वहीं रखा, और उन्हें तभी जाने दिया जब उन्होंने जाने की अनुमति मांगी। चूंकि वे धन या कोई अन्य उपहार स्वीकार नहीं करते थे, इसलिए ग्रामीणों ने भुने हुए अनाज और फल घोड़ों और खच्चरों पर लाद दिए जिन पर अध्याय 67 लटका हुआ था।

लाल रंग के फूलों के गुच्छे और कई रंगों के झंडे लहराते हुए लोग उन्हें विदा कर रहे थे। गांव के पांच सौ घरों में से लगभग सात-आठ सौ लोग उनके साथ रवाना हुए।
यात्रा के दौरान वे सभी बहुत खुश थे, लेकिन माउंट सेवन परफेक्शंस पर स्थित रनी पर्सिमोन लेन पहुंचने से पहले ही संजांग को भयानक दुर्गंध आई और उसने देखा कि उनका रास्ता अवरुद्ध हो गया है।
"वुकोंग," उसने बंदर से कहा, "हम यहाँ से कैसे निकलेंगे?"
"यह मुश्किल होने वाला है," बंदर ने अपनी नाक ढकते हुए जवाब दिया। जब बंदर ने भी कहा कि यह मुश्किल होने वाला है, तो संजांग रोने लगी।
"महाराज, चिंता न करें," बूढ़े श्री ली और अन्य बुजुर्गों ने उनके पास आकर कहा। "हम सब आपके साथ यहाँ इसलिए आए हैं क्योंकि हमने पहले ही तय कर लिया है कि क्या करना है। आपके प्रख्यात शिष्यों ने दुष्ट आत्मा को परास्त कर गाँव को इस बुराई से मुक्त कर दिया है, इसलिए हम सबने मिलकर आपके लिए पहाड़ के ऊपर से एक बेहतर मार्ग प्रशस्त करने का निश्चय किया है।"
“ये सब बकवास है, बूढ़े,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। “तुमने पहले भी बताया था कि पहाड़ लगभग 250 मील चौड़ा है। तुम तो महान यु के दिव्य सैनिक नहीं हो, तो भला तुम उस पर रास्ता कैसे बना सकते हो? अगर मेरे स्वामी को पार जाना है तो हमारे प्रयासों से ही संभव होगा। तुम कभी नहीं कर पाओगे।”
"लेकिन हम अपने प्रयासों से यह कैसे कर सकते हैं?" सान्ज़ांग ने घोड़े से उतरने के बाद पूछा।
"अभी तो पहाड़ पार करना वाकई मुश्किल होगा," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "और नया रास्ता बनाना तो उससे भी ज्यादा मुश्किल होगा। हमें पुराने रास्ते से ही जाना पड़ेगा। मुझे बस यही चिंता है कि कहीं खाना देने वाला कोई मिल न जाए।"
“यह कैसी बात है, आदरणीय महोदय,” बूढ़े श्री ली ने कहा। “जब तक आप यहाँ रहना चाहें, हम आपका भरण-पोषण कर सकते हैं। आप यह नहीं कह सकते कि कोई भोजन उपलब्ध नहीं कराएगा।”
"तो फिर जाओ और दो सौ किलोग्राम भुना हुआ अनाज, साथ ही कुछ उबले हुए केक और बन तैयार कर लो।"
बंदर ने कहा, "जब हमारे लंबे थूथन वाले भिक्षु का पेट भर जाएगा, तो वह एक विशाल सूअर में बदल जाएगा और अपने थूथन से पुराने रास्ते को साफ कर देगा। तब

मेरे स्वामी अपने घोड़े पर सवार होकर पहाड़ के ऊपर से जा सकेंगे और हम उनका सहारा देंगे।"
वह निश्चित रूप से पार कर जाएगा।
"भाई," सुअर ने कहा, "तुम बाकी सबको साफ रखना चाहते हो। बदबू सिर्फ मुझे ही क्यों आनी चाहिए?"
"वुनेन्ग," संजांग ने कहा, "अगर तुम अपनी थूथन से रास्ता साफ करके मुझे पहाड़ के उस पार पहुंचा सको, तो यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ा नेक काम होगा।"
"स्वामी, उपकारियों, कृपया मुझे चिढ़ाएँ नहीं," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं छत्तीस रूप बदल सकता हूँ। अगर आप मुझसे कुछ हल्का, कोमल, सुंदर या उड़ने वाला बनने को कहें, तो मैं नहीं बन सकता। लेकिन अगर आप मुझसे पहाड़, पेड़, चट्टान, मिट्टी का टीला, हाथी, सुअर, भैंस या ऊँट बनने को कहें, तो मैं इनमें से कुछ भी बन सकता हूँ। बस एक ही बात है कि मैं जितना बड़ा होता हूँ, मेरा पेट उतना ही बड़ा होता जाता है। जब तक मेरा पेट भरा न हो, मैं ठीक से काम नहीं कर सकता।"
“हमारे पास बहुत कुछ है,” लोगों ने कहा। “हमारे पास बहुत कुछ है। हम भुना हुआ अनाज, फल, तवे पर पके केक और रवियोली लाए हैं। पहाड़ पर रास्ता बनाने के बाद हम ये सब आपको देने वाले थे। अब आप इन्हें खा सकते हैं। जब आप अपना रूप बदल लेंगे और काम शुरू कर देंगे, तो हम कुछ लोगों को वापस भेजकर आपके लिए और खाना तैयार करवाएंगे।” पिग खुशी से फूला नहीं समा रहा था।
अध्याय 67
938
पश्चिम की यात्रा
अपनी कमीज़ उतारकर और नौ नोकों वाला रेक नीचे रखकर उसने उन सभी से कहा, "मुझ पर मत हँसो। बस देखते रहो कि मैं इस गंदे काम को करके पुण्य कैसे कमाता हूँ।" उस शानदार मूर्ख ने अपने हाथों से एक मंत्र पढ़ा, खुद को झटका दिया और एक विशाल सूअर में बदल गया। सचमुच:
उसकी थूथन लंबी थी, उसके बाल छोटे थे, और उसका आधा शरीर मोटा था; पहाड़ों में एक छोटे सुअर के बच्चे के रूप में उसने जड़ी-बूटियों और साधारण चीजों को खाकर अपना जीवन यापन किया था।
उसका चेहरा काला था और उसकी आंखें सूर्य या चंद्रमा की तरह गोल थीं;

उसके सिर पर लगे बड़े-बड़े कान केले के पत्तों जैसे थे।
उसने अपनी हड्डियों को इतना मजबूत बना लिया था कि वह स्वर्ग के समान लंबा जीवन जी सकता था; उसकी मोटी त्वचा को इतना मजबूत बना लिया गया था कि वह लोहे की तरह सख्त हो गई थी।
उसने नाक बंद होने के कारण एक कर्कश आवाज निकाली;
उसकी हांफती हुई सांस गले में कर्कश आवाज कर रही थी।
उसके चारों सफेद खुरों की ऊंचाई एक हजार फीट थी;
तलवार की तरह दिखने वाला प्रत्येक रेशा सैकड़ों गज लंबा था।
जब से मनुष्य ने सूअरों को पालना और मोटा करना शुरू किया है
आज तक इतना बड़ा सूअर पहले कभी नहीं देखा गया था।
तांग पुरोहित और बाकी सभी लोग प्रशंसा से भरे हुए थे।
मार्शल तियान पेंग और उनकी जादुई शक्तियों के लिए।
सुअर का यह हाल देखकर बंदर भाई ने उन्हें विदा करने आए लोगों से कहा कि वे सारा भुना हुआ अनाज एक साथ इकट्ठा कर दें और सुअर को उसे खाने को कहा। चाहे अनाज पका हो या कच्चा, उस मूर्ख ने सारा अनाज एक ही बार में गटक लिया और फिर रास्ता साफ करने के लिए आगे बढ़ गया। बंदर ने सांड साधु से कहा कि वह अपनी चप्पलें उतारकर सामान सावधानी से उठाए और अपने स्वामी को नक्काशीदार काठी पर मजबूती से बैठने की सलाह दी।
फिर उसने अपने ऊंचे जूते उतारे और बाकी सभी को वापस जाने के लिए कहा: "क्या आप कृपा करके मेरे भाई की ताकत बनाए रखने के लिए जल्द से जल्द कुछ और भोजन भेज सकते हैं?"
सात-आठ सौ तीर्थयात्रियों को विदा करने आए लोगों में से अधिकतर खच्चरों या घोड़ों पर सवार होकर आए थे और वे टूटते तारों की तरह तेज़ी से गाँव की ओर लौट गए। पैदल आए तीन सौ लोग पर्वत की तलहटी में खड़े होकर यात्रियों को जाते हुए देखते रहे। गाँव से पर्वत की दूरी दस मील या उससे अधिक थी, और भोजन लाने के लिए दस मील से अधिक की यात्रा फिर से करनी पड़ती थी, कुल मिलाकर तीस मील से अधिक की यात्रा होती थी। इसलिए जब तक वे वापस लौटे, गुरु और शिष्य उनसे बहुत आगे निकल चुके थे। तीर्थयात्रियों को खोने से बचने के लिए, ग्रामीणों ने अपने खच्चरों और घोड़ों को गली में दौड़ाया और रात भर उनका पीछा किया, और अगली

सुबह ही उनसे मिल पाए।
अध्याय 67
939
पश्चिम की यात्रा
“तीर्थयात्रियों,” वे चिल्लाए, “एक पल रुकिए, एक पल रुकिए, महोदय। हम आपके लिए भोजन लाए हैं।” जब संज़ंग ने यह सुना तो उन्होंने उनका बहुत-बहुत धन्यवाद किया, कहा कि वे अच्छे और वफादार लोग हैं, और सुअर को आराम करने और कुछ खाने के लिए कहा ताकि उसकी ताकत बढ़ जाए। वह मूर्ख, जो अपनी थूथन से रास्ता साफ करने के दूसरे दिन पर था, अब तक बुरी तरह भूखा हो चुका था। ग्रामीणों ने सात-आठ सौ किलोग्राम से कहीं अधिक भोजन लाया था, जिसे उसने जल्दी से उठाया और एक ही बार में चट कर गया, इस बात की परवाह किए बिना कि वह चावल है या गेहूं। जब उसका पेट भर गया तो वह वापस रास्ता साफ करने चला गया, जबकि संज़ंग, बंदर और साधु सैंड ने ग्रामीणों को धन्यवाद दिया और उनसे विदा ली।
सभी किसान तुओलूओ गांव लौट गए;
पहाड़ के उस पार सुअर ने रास्ता साफ कर दिया था।
संजांग की आस्था को अपार शक्ति का समर्थन प्राप्त था;
सूर्य की राक्षस-वशोषण कलाओं का प्रदर्शन किया गया।
हजार साल की गंदगी एक ही सुबह में साफ हो गई;
सेवन परफेक्शंस लेन का आज उद्घाटन किया गया।
छहों इच्छाओं की सारी गंदगी अब साफ हो चुकी है।
वे कमल सिंहासन की ओर प्रार्थना करने जाते हैं।
अगर आपको नहीं पता कि उनकी यात्रा कितनी लंबी होने वाली थी या उन्हें किन भयानक राक्षसों का सामना करना पड़ेगा, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।
अध्याय 68
पुरपुरिया की भूमि में तांग पुरोहित इतिहास पर चर्चा करते हैं
दान की भावना से प्रेरित होकर तीर्थयात्री सूर्य ने डॉक्टर बनने की पेशकश की।
जब अच्छाई सही होती है तो सभी कारण दूर हो जाते हैं;
इसकी प्रसिद्धि चारों महाद्वीपों में फैली हुई है।

ज्ञान के प्रकाश में वे दूसरे किनारे पर चढ़ जाते हैं;
आकाश के किनारे से काले बादल गरजते हुए नीचे आ रहे हैं।
सभी बुद्ध उनकी सहायता करते हैं।
वे सदा के लिए अपने जेड के सिंहासनों पर विराजमान रहते हैं।
अध्याय 68
940
पश्चिम की यात्रा
मानव जगत के भ्रमों को चकनाचूर कर दो,
रोकना!
गंदगी साफ करो; किसी को कष्ट न पहुँचाओ।
यह कहानी बताती है कि कैसे संजांग और उनके शिष्यों ने गली को गंदगी से साफ किया और सड़क पर काफी आगे बढ़ गए।
समय तेजी से बीत गया और मौसम फिर से झुलसा देने वाला हो गया। सचमुच:
बेगोनिया के फूल अपने रेशमी गोलों की तरह फैल गए;
कमल के पत्ते अपने हरे रंग के बर्तन खुद ही फाड़ लेते हैं।
नवजात अबाबीलें सड़क किनारे उगने वाले विलो पेड़ों में छिप जाती हैं;
यात्री गर्मी से राहत पाने के लिए अपने रेशमी पंखे लहराते हैं।
जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, उनके सामने एक चारदीवारी और खाई से घिरा शहर दिखाई दिया। अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए, संज़ंग ने कहा, "शिष्यों, क्या आप देख सकते हैं कि यह कहाँ है?"
"गुरुजी, आपको पढ़ना नहीं आता," बंदर ने हैरानी से कहा। "तांग सम्राट ने आपको इस मिशन पर भेजने के लिए कैसे राजी किया?"
"मैं बचपन से ही भिक्षु रहा हूँ और मैंने हजारों क्लासिक और धर्मग्रंथ पढ़े हैं," संजांग ने उत्तर दिया।
"आप यह कैसे कह सकते हैं कि मैं पढ़ नहीं सकता?"
"अच्छा," बंदर ने जवाब दिया, "अगर आप ऐसा कर सकते हैं, तो शहर की दीवार पर लगे खुबानी-पीले झंडे पर बड़े-बड़े अक्षरों में स्पष्ट रूप से लिखे लेख को पढ़ने के बजाय यह क्यों पूछ रहे हैं कि हम कहाँ हैं?"
"अरे बंदर," संज़ंग चिल्लाया, "तुम बकवास कर रहे हो। झंडा हवा में इतनी तेज़ी से

फड़फड़ा रहा है कि कोई भी यह नहीं पढ़ सकता कि उस पर क्या लिखा है, या कुछ लिखा भी है या नहीं।"
"तो फिर मैं इसे कैसे पढ़ सकता हूँ?" बंदर ने पूछा।
"उसके झांसे में मत आओ, स्वामी जी," पिग और फ्रायर सैंड ने कहा। "इतनी दूरी से तो हमें दीवारें और खाई भी ठीक से दिखाई नहीं दे रही हैं, बैनर पर लिखे शब्द तो दूर की बात है।"
"लेकिन क्या इस पर पुरपुरिया नहीं लिखा है?" बंदर ने पूछा।
"पुरपुरिया ज़रूर कोई पश्चिमी साम्राज्य होगा," संज़ंग ने कहा। "हमें अपना पासपोर्ट दिखाना होगा।"
"यह तो स्पष्ट है," बंदर ने कहा।
वे जल्द ही शहर के द्वार के बाहर पहुँच गए, जहाँ स्वामी घोड़े से उतरे, पुल पार किया और तीन द्वारों से अंदर चले गए। यह वास्तव में एक भव्य महानगर था। जो कुछ देखा जा सकता था वह यह था: अध्याय 68
941
पश्चिम की यात्रा
ऊंचे द्वार-मीनार,
नियमित प्राचीरें,
जीवनदायी जल चारों ओर बह रहा है,
उत्तर और दक्षिण दिशा की ओर मुख किए हुए पर्वत।
सड़कों और बाजारों में कई तरह का सामान मिलता है।
और सभी नागरिक फलते-फूलते व्यवसाय करते हैं।
यह शहर किसी सम्राट के रहने योग्य है।
स्वर्ग द्वारा प्रदत्त राजधानी।
इस दूरस्थ क्षेत्र में यात्री भूमि और जलमार्ग से आते हैं;
इस दूरस्थ क्षेत्र में जेड और रेशम प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।
यह दूर स्थित पर्वत श्रृंखलाओं से भी अधिक सुंदर है;
यह महल अंतरिक्ष की पवित्रता की ऊँचाई तक पहुँचता है।
यहां आने वाले रास्ते पूरी तरह से बंद हैं।
जब शांति और समृद्धि हमेशा के लिए कायम रहेंगी।

गुरु और शिष्य जब राजमार्गों और बाजारों से होकर गुजरे तो उन्होंने देखा कि लोग लंबे, साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए और सुभाषी थे। वास्तव में, वे महान तांग काल के लोगों से किसी भी तरह कमतर नहीं थे। सड़क के दोनों ओर खड़े व्यापारियों ने जब देखा कि सुअर कितना बदसूरत है, साधु रेत कितना लंबा और सांवला है, और बंदर कितना बालों वाला और चौड़ी भौंहों वाला है, तो वे सब अपना कारोबार छोड़कर उन्हें देखने आ गए।

"मुसीबत मत खड़ी करो," संज़ंग ने उन्हें पुकारा। "अपना सिर नीचे रखो।" सुअर ने आज्ञाकारी होकर अपनी थूथन अपनी छाती में दबा ली और साधु सैंड ने ऊपर देखने की हिम्मत नहीं की। लेकिन बंदर, तांग पुजारी के पास ही खड़ा रहा और चारों ओर देखता रहा। समझदार लोग एक नज़र डालने के बाद चले गए, लेकिन दर्शकों में मौजूद आलसी, जिज्ञासु और शरारती बच्चों ने उनका मज़ाक उड़ाया, अजनबियों पर ईंटें और टाइलें फेंकीं और सुअर का उपहास किया।

"कुछ भी हो जाए, झगड़ा मत करना," संजांग ने फिर बड़ी घबराहट में कहा। वह मूर्ख अपना सिर नीचे किए बैठा रहा।

कुछ ही देर में वे एक मोड़ पर मुड़े और दीवार में एक फाटक देखा, जिसके ऊपर बड़े अक्षरों में 'होटल ऑफ मीटिंग' लिखा हुआ था। "हम इस सरकारी दफ्तर में जा रहे हैं," संजांग ने कहा।

"क्यों?" बंदर ने पूछा।

"होस्टल ऑफ मीटिंग एक ऐसी जगह है जहाँ दुनिया भर से लोग आते हैं, इसलिए हम वहाँ जाकर उन्हें परेशान कर सकते हैं," संज़ंग ने कहा। "चलो वहाँ आराम करते हैं। जब मैं राजा से मिल लूँगा और अपना पासपोर्ट दिखा दूँगा, तब हम अध्याय 68 से निकल सकते हैं।"

"शहर से निकलकर हम फिर से अपने रास्ते पर चलेंगे।" यह सुनकर सुअर ने अपनी थूथन बाहर निकाली, जिससे पीछे आ रहे लोग इतने भयभीत हो गए कि उनमें से दर्जनों लोग गिर पड़े।

“मालिक सही कह रहा है,” सुअर ने आगे बढ़ते हुए कहा। “चलो अंदर जाकर इन दुष्टों से छुटकारा पा लेते हैं।” वे अंदर चले गए, जिसके बाद लोग इधर-उधर भागने लगे।

छात्रावास में दो आयुक्त थे, एक वरिष्ठ और उनका सहायक, और वे एक अधिकारी का स्वागत करने जाने से पहले हॉल में अपने कर्मचारियों की जाँच कर रहे थे, तभी अचानक तांग पुजारी प्रकट हो गए, जिससे वे बहुत घबरा गए।

"तुम कौन हो?" उन्होंने एक साथ पूछा। "तुम कौन हो? तुम कहाँ जा रहे हो?"

“मुझे महामहिम तांग सम्राट ने पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है,” तांग पुजारी ने अपने हाथ छाती के सामने जोड़ते हुए उत्तर दिया। “आपके गौरवशाली देश में पहुँचकर मैंने छिपकर जाने का साहस नहीं किया। मैं अपना पासपोर्ट जाँच के लिए प्रस्तुत करना चाहता हूँ ताकि हमें आगे बढ़ने की अनुमति मिल सके। इस बीच हम आपके शानदार छात्रावास में विश्राम करना चाहेंगे।”

जब दोनों आयुक्तों ने यह सुना, तो उन्होंने अपने अधीनस्थों को छुट्टी दे दी, अपना पूरा आधिकारिक वस्त्र धारण किया और मुख्य हॉल से नीचे आकर आगंतुकों का स्वागत किया। उन्होंने अतिथि कक्षों को उनके सोने के लिए साफ-सुथरा करने का निर्देश दिया और उनके लिए शाकाहारी भोजन का प्रबंध किया। संजांग ने उन्हें धन्यवाद दिया, और दोनों अधिकारी अपने कर्मचारियों के साथ हॉल से बाहर चले गए। उनके कुछ सेवकों ने आगंतुकों को अतिथि कक्षों में सोने के लिए आमंत्रित किया।

संजांग उनके साथ चली गई, लेकिन बंदर ने कड़वी शिकायत करते हुए कहा, "बेशर्मी की हद है। मुझे मुख्य हॉल में क्यों नहीं रहने दे रहे?"

"यहाँ के लोग हमारे महान तांग साम्राज्य के अधिकार क्षेत्र में नहीं आते और न ही उनका हमारे देश से कोई संबंध है। इसके अलावा, उनके उच्च अधिकारी अक्सर यहाँ रहने आते हैं। उनके लिए हमारा सत्कार करना मुश्किल है।"

"तो फिर," बंदर ने जवाब दिया, "मैं इस बात पर जोर देता हूँ कि वे हमारा ठीक से मनोरंजन करें।"

जब वे बात कर रहे थे, तभी प्रबंधक उनके लिए राशन ले आया: सफेद चावल और गेहूं के आटे की एक-एक थाली, दो पत्तागोभी, टोफू के चार टुकड़े, गेहूं के ग्लूटेन के दो टुकड़े, सूखे बांस के अंकुरों की एक थाली और एक थाली।

"वृक्ष-कान" कवक। संजांग ने अपने शिष्यों को राशन लेने के लिए कहा और प्रबंधक को धन्यवाद दिया।

"पश्चिमी कमरे में एक साफ चूल्हा है," प्रबंधक ने कहा, "और उसमें लकड़ी जलाना आसान है। क्या आप कृपया अपना खाना खुद पका लेंगे?"

"क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि राजा महल में हैं?" संजांग ने पूछा।
“महामहिम लंबे समय से दरबार में नहीं आए हैं,” प्रबंधक ने उत्तर दिया। “लेकिन आज का दिन शुभ है, और वे अपने नागरिक और सैन्य अधिकारियों के साथ नोटिस के मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं। यदि आप समय पर पहुंचकर अपना पासपोर्ट उन्हें सौंपना चाहते हैं, तो आपको जल्दी करनी चाहिए। कल तक बहुत देर हो जाएगी, और पता नहीं आपको कितना इंतजार करना पड़ेगा।”
"वुकोंग," संज़ंग ने कहा, "तुम तीनों खाना तैयार करो, मैं जल्दी से वहाँ जाकर अपने पासपोर्ट की जाँच करवा लेता हूँ। खाना खाने के बाद हम निकल सकते हैं।" पिग ने झटपट संज़ंग के लिए चोगा और पासपोर्ट निकाला, संज़ंग ने खुद को तैयार किया और महल के लिए निकल पड़े, साथ ही अपने शिष्यों को हिदायत दी कि वे छात्रावास न छोड़ें और कोई गड़बड़ न करें।
कुछ ही देर में तांग पुजारी पांच फीनिक्स टावर के बाहरी महल द्वार पर पहुँच गए। महल के गलियारों की भव्यता और ऊँची इमारतों और छतों की शान का वर्णन करना असंभव था। जब वे मुख्य दक्षिणी द्वार पर पहुँचे, तो उन्होंने रिपोर्टिंग अधिकारी से दरबार में अपनी इच्छा की घोषणा करने का अनुरोध किया कि उनके अध्याय 68 को आगे बढ़ाया जाए।
943
पश्चिम की यात्रा
पासपोर्ट की जांच की गई।
द्वार पर तैनात हिजड़ा अधिकारी सिंहासन की सीढ़ियों पर गया और वहाँ उसने निम्नलिखित ज्ञापन प्रस्तुत किया:
"पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश द्वारा भेजा गया एक भिक्षु महल के द्वार पर है, जो पश्चिम में स्थित गर्जन मठ से बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए आया है। वह अपना पासपोर्ट अनुमोदन हेतु प्रस्तुत करना चाहता है। महाराज, मैं आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"
यह सुनकर राजा प्रसन्न हुए और बोले, “काफी समय से हम इतने बीमार थे कि सिंहासन पर बैठ नहीं पा रहे थे। आज हम सिंहासन कक्ष में चिकित्सकों को बुलाने का आदेश देने आए हैं, और अब एक प्रतिष्ठित भिक्षु हमारे देश में आ गए हैं।” उन्होंने भिक्षु को सिंहासन की सीढ़ियों पर बुलाने का आदेश दिया। संजांग ने आदरपूर्वक

उनके सामने सिर झुकाया। राजा ने उन्हें सिंहासन कक्ष में बुलाया, बैठने के लिए आमंत्रित किया और विदेश मामलों के विभाग को शाकाहारी भोजन की व्यवस्था करने का आदेश दिया। संजांग ने राजा को उनकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया और अपना पासपोर्ट प्रस्तुत किया।

जब राजा ने इसे पूरा पढ़ लिया, तो उसने बड़े हर्ष से कहा, "हे धर्मगुरु, आपके महान तांग राज्य में कितने राजवंशों ने शासन किया है? कितने पीढ़ियों के बुद्धिमान मंत्री हुए हैं? तांग सम्राट किस बीमारी के बाद पुनर्जीवित हुए थे कि उन्होंने आपको शास्त्रों को लाने के लिए इस लंबी और कठिन यात्रा पर भेजा?"

इन सभी प्रश्नों के पूछे जाने पर, आदरणीय बुजुर्ग ने सिर झुकाया, हाथ जोड़े और कहा, "मेरे देश में, तीन सम्राटों ने शासन किया था।"

पांचों शासकों ने नैतिकता की स्थापना की।
याओ और शुन ने सिंहासन ग्रहण किया।
यू और तांग ने लोगों को शांति प्रदान की।
इनमें से कई चेंगझोऊ की संतानें थीं।
जिन्होंने अपने-अपने राज्य स्थापित किए,
कमजोरों को उनकी ही ताकत से धमकाना,
राज्य को विभाजित करके स्वयं को शासक घोषित करना।
स्थानीय राज्यों के ऐसे अठारह सरदारों
सीमा तक के क्षेत्र को विभाजित किया गया।
बाद में उनकी संख्या बारह हो गई।
ब्रह्मांडीय व्यवस्था में शांति लाना।
लेकिन जिनके पास युद्ध रथ नहीं थे
दूसरों ने उन्हें निगल लिया।

अध्याय 68

पश्चिम की यात्रा

जब सात महान राज्यों ने आपस में संघर्ष किया
उनमें से छह को किन के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ा।
स्वर्ग ने लियू बैंग और जियांग यू को जन्म दिया।

उनमें से प्रत्येक के मन में बुरे विचार थे।
उस समय यह साम्राज्य हान साम्राज्य के अधीन था।
दोनों पक्षों के बीच तय की गई शर्तों के अनुसार।
सत्ता हान वंश से सीमा वंश को हस्तांतरित हो गई।
टिल जिन भी अराजकता के घेरे में आ गया।
उत्तर और दक्षिण में बारह राज्यों का शासन था।
इनमें सोंग, क्यूई, लियांग और चेन शामिल हैं।
सम्राटों ने एक के बाद एक शासन किया।
जब तक महान सुई ने सच्ची एकता को बहाल नहीं किया।
फिर इसने बुराई और दुष्टता में लिप्त हो गया।
आम लोगों पर कष्ट पहुंचाना।
हमारे वर्तमान शासक, ली वंश,
राज्य को तांग नाम दिया गया है।
जब से उच्च पूर्वज ने सिंहासन त्याग दिया है
वर्तमान शासक ली शिमिन हैं।
नदियाँ निर्मल बह रही हैं और समुद्र शांत है।
उनके महान सद्गुण और परोपकार के कारण।
चांगआन शहर के उत्तर में
एक दुष्ट नदी ड्रैगन रहता था
जिसने थोड़े समय में ही सही समय पर बारिश दी,
जिसके लिए उसे अपनी मृत्यु से ही भुगतान करना उचित था।
एक रात वह सपने में सम्राट के पास आया।
सम्राट से अपने जीवन को बख्शने की विनती करते हुए।
अध्याय 68
945
पश्चिम की यात्रा
सम्राट ने क्षमादान देने का वादा किया।
और उन्होंने अगले दिन सुबह-सुबह अपने बुद्धिमान मंत्री को बुलवाया।
उसने उसे महल के अंदर ही रखा।

वह अपना समय शतरंज के लंबे खेल में बिताता था।
लेकिन दोपहर के समय मंत्री
मैं सो गया और सपने में मैंने अजगर का सिर काट दिया।
यह सुनकर राजा ने आह भरी और पूछा, "हे विधि के स्वामी, वह बुद्धिमान मंत्री किस देश से आया था?"
"वह हमारे सम्राट के प्रधानमंत्री वेई झेंग थे, जो ज्योतिषी, भूगोलवेत्ता, यिन और यांग के ज्ञाता और हमारे राज्य के महान संस्थापकों और स्थिरकर्ताओं में से एक थे," संज़ंग ने बताया। "क्योंकि उन्होंने सपने में जिंग नदी के ड्रैगन राजा का सिर काट दिया था, इसलिए ड्रैगन ने क्षमादान देने के बाद भी उनका सिर काटने के लिए हमारे सम्राट के खिलाफ पाताल लोक में मुकदमा दायर कर दिया। सम्राट बहुत बीमार हो गए और उनकी हालत गंभीर हो गई।"
वेई झांग ने उन्हें एक पत्र लिखा जिसे उन्हें पाताल लोक ले जाकर फेंगदू के न्यायाधीश कुई जुए को देना था। इसके तुरंत बाद सम्राट की मृत्यु हो गई, लेकिन तीसरे दिन वे फिर से जीवित हो उठे। वेई झेंग के प्रयासों के कारण ही न्यायाधीश कुई जुए एक दस्तावेज़ में संशोधन करने और सम्राट को बीस वर्ष का अतिरिक्त जीवन देने के लिए राजी हुए। उन्होंने एक विशाल भू-जल समूह का आयोजन किया और मुझे इस लंबी यात्रा पर भेजा ताकि मैं अनेक देशों का भ्रमण करूँ, बुद्ध की आराधना करूँ और महायान धर्मग्रंथों के तीन भंडार लाऊँ जो सभी व्यथितों को पाप से मुक्ति दिलाकर स्वर्ग तक पहुँचाएँगे।
यह सुनकर राजा ने फिर आह भरी और कराहते हुए कहा, "तुम्हारा वंश वास्तव में स्वर्गिक है और तुम्हारा राष्ट्र महान है।"
“न्यायी शासक और बुद्धिमान मंत्रियों के साथ। हम लंबे समय से बीमार हैं, लेकिन हमारे पास एक भी मंत्री नहीं है जो हमें बचा सके।” यह सुनकर आदरणीय बुजुर्ग ने राजा की ओर एक नज़र डाली और देखा कि उनका चेहरा पीला और कमजोर हो गया था; उनका रूप-रंग बिगड़ता जा रहा था और उनका मनोबल बहुत गिरा हुआ था। आदरणीय बुजुर्ग उनसे कुछ प्रश्न पूछने ही वाले थे कि विदेश मामलों के विभाग का एक अधिकारी तांग पुजारी को भोजन के लिए आमंत्रित करने आया। राजा ने आदेश दिया कि उनका भोजन भी सान्ज़ांग के साथ सुगंध कक्ष में रखा जाए ताकि वे विधि के स्वामी के साथ भोजन कर सकें। राजा की दयालुता के लिए धन्यवाद देते हुए

सान्ज़ांग अपना भोजन अपने साथ ले गए।
इसी बीच, मीटिंग के छात्रावास में, ब्रदर मंकी ने फ्रायर सैंड को चाय, अनाज और शाकाहारी व्यंजन तैयार करने को कहा। फ्रायर सैंड ने कहा, "चाय और चावल में कोई समस्या नहीं है, लेकिन शाकाहारी व्यंजन तैयार करना मुश्किल होगा।"
"क्यों?" बंदर ने पूछा।
"इसमें तेल, नमक, सोया सॉस या सिरका नहीं है," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया।
"मेरे पास कुछ सिक्के हैं," बंदर ने कहा, "तो हम सुअर को उन्हें खरीदने के लिए भेज सकते हैं।"
"मैं हिम्मत नहीं करूँगा," उस मूर्ख ने कहा, जिसे जाने में बहुत आलस आ रहा था। "मेरा बदसूरत चेहरा मुसीबत खड़ी कर सकता है, और फिर मालिक मुझे ही दोषी ठहराएगा।"
अध्याय 68
946
पश्चिम की यात्रा
"अगर आप उचित कीमत पर सामान खरीदते हैं और भीख मांगकर या चोरी करके उसे हासिल करने की कोशिश नहीं करते हैं, तो किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं हो सकती," भाई बंदर ने कहा।
"क्या तुमने अभी-अभी हुई हलचल नहीं देखी?" सुअर ने पूछा। "मैंने बस फाटक के बाहर अपनी थूथन दिखाई और उनमें से लगभग एक दर्जन डर के मारे गिर पड़े। भगवान ही जाने, अगर मैं किसी व्यस्त शॉपिंग स्ट्रीट में होता तो कितने लोगों को डराकर मार डालता।"
"अच्छा," बंदर ने कहा, "चूंकि आप व्यस्त खरीदारी वाली सड़कों के बारे में इतना कुछ जानते हैं, तो क्या आपने ध्यान दिया कि उनमें क्या बेचा जा रहा था?"
"नहीं," सुअर ने कहा। "मालिक ने मुझे चुप रहने और कोई गड़बड़ न करने के लिए कहा था। सच कहूँ तो, मैंने कुछ नहीं देखा।"
“मुझे आपको बार, अनाज व्यापारियों, मिलों, रेशम की दुकानों और किराना स्टोरों के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं है,” बंदर ने कहा। “लेकिन यहाँ शानदार चायघर और नूडल्स की दुकानें हैं जहाँ तिल के बड़े-बड़े बन और स्टीम्ड ब्रेड मिलती हैं। रेस्टोरेंट में आपको बढ़िया सूप, चावल, मसाले और सब्ज़ियाँ मिलेंगी। फिर वहाँ तरह-तरह के

स्वादिष्ट केक, दही, स्नैक्स, रोल, फ्राइज़ और शहद की मिठाइयाँ भी हैं। अनगिनत चीज़ें हैं। क्या मैं आपके लिए कुछ खरीद लाऊँ?”

इस वर्णन को सुनकर उस मूर्ख के मुंह से लार टपकने लगी; लार उसके गले में अटक गई। "भाई," वह उछलकर खड़ा हो गया।

"इस बार मैं तुम्हें भुगतान करने देता हूँ। अगली बार जब मेरे पास पैसे होंगे तो मैं तुम्हें दावत दूंगा।"

"फ्रायर सैंड," बंदर ने अपनी हंसी छुपाते हुए कहा, "जब तक मैं कुछ अन्य सामग्री खरीदने जाता हूं, तब तक चावल पका दीजिए।"

यह समझते हुए कि बंदर उस मूर्ख को केवल बेवकूफ बना रहा था, साधु सैंड मान गया। "जाओ," उसने कहा। "खूब सारा सामान खरीदो और पेट भर खाओ।" एक कटोरा और एक थाली लेकर वह मूर्ख बंदर के साथ बाहर चला गया।

"आप दोनों महोदय कहाँ जा रहे हैं?" दो अधिकारियों ने उनसे पूछा।

"कुछ किराने का सामान खरीदने के लिए," बंदर ने जवाब दिया।

उन्होंने कहा, "इस सड़क पर पश्चिम की ओर जाइए, ढोल की मीनार के पास मुड़िए, और आप झेंग की किराने की दुकान पर पहुँच जाएँगे। वहाँ आपको जितना चाहें उतना तेल, नमक, सोया सॉस, सिरका, अदरक, काली मिर्च और चाय मिल जाएगी: उनके पास सब कुछ है।"

दोनों हाथ में हाथ डाले पश्चिम की ओर चल पड़े। बंदर कई चाय-मकानों और रेस्तरांओं के पास से गुजरा, लेकिन उसने न तो कुछ खरीदा और न ही कुछ खाया। "भाई," सुअर ने पुकारा, "क्यों न हम यहाँ जो मिल रहा है उसी से काम चला लें?" बंदर, जो अब तक सिर्फ सुअर को बेवकूफ बना रहा था, ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहता था।

“मेरे प्यारे भाई,” उसने कहा, “तुम्हें अच्छी सौदेबाजी करना नहीं आता। अगर हम थोड़ा और आगे चलें तो तुम्हें बड़े-बड़े मिल जाएंगे।” जब वे दोनों बातें कर रहे थे, तभी बहुत सारे लोग उनके पीछे धक्का-मुक्की करते हुए चलने लगे। थोड़ी ही देर में वे ढोल टावर तक पहुँच गए, जहाँ एक विशाल और शोरगुल भरी भीड़ धक्का-मुक्की कर रही थी और पूरी सड़क को भर रही थी।

यह देखकर सुअर बोला, "मैं और आगे नहीं जा रहा, भाई। जिस तरह से वे चिल्ला रहे हैं, उससे लगता है कि वे भिक्षुओं को पकड़ने आए हैं। और हम संदिग्ध दिखने वाले अजनबी हैं। अगर वे हमें गिरफ्तार कर लेते हैं तो हम क्या करेंगे?"

“ऐसी बकवास बंद करो,” बंदर ने कहा। “हम भिक्षुओं ने कोई कानून नहीं तोड़ा है, इसलिए भिक्षु पकड़ने वालों के पास हमें गिरफ्तार करने का कोई कारण नहीं होगा। चलो चलते हैं और झेंग की दुकान से ज़रूरी सामान खरीदते हैं।”

अध्याय 68

947

पश्चिम की यात्रा

"नहीं," सुअर ने कहा, "कभी नहीं। मैं मुसीबत मोल नहीं लूंगा। अगर मैंने उस भीड़ में से निकलने की कोशिश की और मेरे कान पूरी तरह से खिंच गए तो डर से वे गिर पड़ेंगे। उनमें से कई कुचलकर मर सकते हैं, और इसकी कीमत मुझे अपनी जान देकर चुकानी पड़ेगी।"

“ठीक है,” बंदर ने कहा। “तुम इस दीवार के नीचे खड़े रहो, मैं जाकर सामान खरीद लाता हूँ। मैं तुम्हारे लिए कुछ गेहूं के केक लेकर आऊँगा।” उस मूर्ख ने कटोरा और थाली बंदर को थमा दी और फिर भीड़ की तरफ पीठ करके दीवार के नीचे थूथन टिकाकर खड़ा हो गया। वह दुनिया में किसी भी कीमत पर हिलने को तैयार नहीं था।

जब बंदर ढोल मीनार पर पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ वास्तव में बहुत भीड़ थी। भीड़ में से रास्ता बनाते हुए उसने लोगों को कहते सुना कि मीनार पर एक राजघोषणा लगाई गई है: यही वह चीज़ थी जिसे देखने के लिए सभी लोग बेताब थे। बंदर धक्का देते हुए उसके पास पहुँचा, फिर अपनी सुनहरी पुतलियों वाली तेज आँखों को खोलकर उसे ध्यान से पढ़ा। उस पर यह लिखा था: हम, पश्चिमी महाद्वीप के पशु-उपहार क्षेत्र में स्थित पुरपुरिया के राजा, अपने शासनकाल के आरंभ से ही चारों दिशाओं में शांति और प्रजा को सुकून प्रदान करते रहे हैं। हाल ही में राज्य की विपत्तियों ने हमें एक दीर्घकालिक बीमारी से बिस्तर पर ला दिया है। हमारा इलाज असंभव साबित हुआ है, और हमारे देश के राजचिकित्सा महाविद्यालय के कई उत्कृष्ट नुस्खे भी अभी तक कारगर नहीं हुए हैं। हम इसके द्वारा दुनिया के सभी बुद्धिमान चिकित्सा और फार्मेसी विशेषज्ञों को, चाहे वे उत्तर से हों या पूर्व से, चीन से हों या विदेशों से, सिंहासन कक्ष में आकर हमारी बीमारी का इलाज करने के लिए आमंत्रित करते हैं। यदि हम ठीक हो जाते हैं तो हम अपना आधा राज्य आपको दे देंगे। यह कोई खोखला वादा नहीं है। जो भी लोग इलाज बता सकते हैं, उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए।

जब बंदर ने यह पढ़ा तो वह प्रसन्नता से बोला, "पुराने जमाने में कहते थे, 'एक कदम उठाओ, तुम्हारा भाग्य एक तिहाई बन जाता है।' छात्रावास में रुके रहना मेरी गलती थी। किराने का सामान खरीदने की कोई जरूरत नहीं है, और शास्त्र लाने का काम एक दिन बाद भी हो सकता है, मैं जाकर डॉक्टर बनकर थोड़ा आनंद ले लूँ।" महान संत ने झुककर कटोरा और थाली हटा दी, एक चुटकी धूल ली, उसे हवा में उछाला, मंत्र पढ़ा और स्वयं को अदृश्य कर लिया। फिर वे सूचना पत्र के पास गए, चुपचाप उसे नीचे उतारा और जादुई साँस से दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर फूँक दी।

अचानक एक भयंकर आंधी आई और वहां मौजूद सभी लोग तितर-बितर हो गए। बंदर सीधे वहीं वापस गया जहां सुअर खड़ा था, उसकी नाक दीवार के सहारे टिकी हुई थी मानो वह गहरी नींद में सो रहा हो। बंदर ने नोटिस को मोड़कर सुअर को बिना परेशान किए उसकी कमीज के कॉलर में डाल दिया, फिर मुड़ा और वापस छात्रावास चला गया।

जैसे ही बवंडर चलने लगा, ढोल मीनार के नीचे जमा भीड़ ने अपने सिर ढँक लिए और आँखें बंद कर लीं। उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि हवा थमने पर राजघोषणा गायब हो जाएगी। वे भयभीत हो गए। उस सुबह बारह राजकक्ष और बारह पहरेदार इसे लगाने निकले थे, और अब छह घंटे से भी कम समय में यह उड़ गई थी। डर और थरथराहट में लोग उसे चारों ओर ढूंढने लगे, तभी पिग के कॉलर से एक कागज़ का टुकड़ा बाहर निकला हुआ दिखाई दिया।

"तो आपने ही वह घोषणापत्र हटा दिया, है ना?" उन्होंने उसके पास जाकर पूछा।

अचानक चौंककर ऊपर देखते हुए उस मूर्ख ने अपनी नाक उनकी ओर उठा दी, जिससे पहरेदार अधिकारी डर के मारे लड़खड़ाकर गिर पड़े। वह भागने के लिए मुड़ा, लेकिन तभी कुछ साहसी लोगों ने उसका रास्ता रोककर उसे पकड़ लिया।

उन्होंने कहा, "आपने डॉक्टरों को आमंत्रित करने वाली शाही घोषणा को हटा दिया है, इसलिए आप महाराज का इलाज करने के लिए महल में आ रहे हैं। आप और कहाँ जा रहे हैं?"

"अगर मैंने पोस्टर फाड़ दिया तो मैं आपका बेटा हूँगा," सुअर ने घबराते हुए कहा। "अगर मैं बीमारियों का इलाज कर सकता हूँ तो मैं आपका पोता बनूँगा।"

"तुम्हारी कमीज में से यह क्या निकला हुआ है?" एक अधिकारी ने पूछा।
तभी उस मूर्ख ने नीचे देखा और पाया कि सचमुच वहाँ एक कागज़ का टुकड़ा था। उसे खोलते ही उसने दाँत पीसते हुए गाली दी, "वह बंदर मुझे मरवाना चाहता है!" उसने गुस्से में दहाड़ मारी और उसे फाड़ने ही वाला था कि सबने उसे रोक दिया।
उन्होंने कहा, "तुम तो गए काम से। यह आज महाराज द्वारा जारी की गई घोषणा है। इसे फाड़ने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? जैसा कि तुमने इसे अपने वस्त्र में रखा है, तुम निसंदेह एक प्रतिभाशाली डॉक्टर हो। तुरंत हमारे साथ चलो!"
"तुम समझते नहीं हो," पिग चिल्लाया। "इसे मैंने नहीं गिराया। इसे मेरे साथी शिष्य सन वुकॉन्ग ने गिराया था।"
उसने चुपके से मेरी कमीज़ में वह चीज़ डाल दी और फिर मुझे वहीं छोड़ दिया। हम सबको मिलकर उसे ढूंढना होगा ताकि इस मामले की तह तक पहुँच सकें।
“बकवास,” उन्होंने कहा। “हमारे पास यहाँ एक घंटी है—हम ऐसी घंटी बजाने नहीं जा रहे जो अभी बन ही रही हो। तुम जो चाहो कह लो। उसे घसीटकर महाराज से मिलवाओ।” मामले की सच्चाई जानने की ज़हमत न उठाते हुए उन्होंने उस मूर्ख को धक्का-मुक्की की, जो अपनी जगह पर ऐसे अड़ा रहा मानो जड़ जमा चुका हो। दस से ज़्यादा लोगों ने उसे हिलाने की कोशिश की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। “तुम्हें ज़रा भी इज़्ज़त नहीं है,” सुअर ने कहा। “अगर तुम मुझे ऐसे ही खींचते रहे और मेरा गुस्सा भड़काते रहे तो मैं पागल हो जाऊँगा, और तब मुझे दोष मत देना।”
इस हलचल ने जल्द ही पूरे मोहल्ले में हलचल मचा दी और पिग अब चारों तरफ से घिर गया था।
भीड़ में मौजूद दो बुजुर्ग महल के हिजड़ों ने कहा, "तुम बहुत अजीब दिखते हो और तुम्हारी आवाज भी बेतुकी है। तुम कहाँ से आए हो, बदमाश?"
"हम पूरब से आए तीर्थयात्री हैं जो पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने आए हैं," पिग ने उत्तर दिया। "मेरे गुरु तांग सम्राट के छोटे भाई और विधि के विद्वान हैं। वे अभी महल गए हैं अपना पासपोर्ट जाँच के लिए। मैं अपने शिष्य भाई के साथ कुछ किराने का सामान खरीदने आया था, लेकिन मीनार के पास इतने लोग थे कि मैं आगे जाने से डर गया। उन्होंने मुझे यहीं रुकने को कहा। जब उन्होंने घोषणापत्र देखा तो उन्होंने एक बवंडर बनाया, उसे नीचे उतारा, चुपके से मेरी कमीज़ में रख दिया और चले गए।"

"हमने महल के द्वार से एक गोल-मटोल, गोरे चेहरे वाले भिक्षु को अंदर जाते देखा," एक हिजड़े ने कहा।
"शायद वही तुम्हारा गुरु था।"
"हां, हां," सुअर ने कहा।
“तुम्हारा साथी शिष्य कहाँ गया?” नपुंसक ने पूछा।
"हम कुल चार लोग हैं," पिग ने कहा। "जब मालिक अपना पासपोर्ट दिखाने गया, तो हम तीनों अपने सामान और घोड़े के साथ मीटिंग के हॉस्टल में ही रुक गए। मेरे भाई ने मेरे साथ एक चाल चली और मुझसे पहले ही वहाँ वापस चला गया।"
“अधिकारियों, उसे छोड़ दो,” हिजड़े ने कहा। “हम सब मिलकर छात्रावास जाएंगे और पता लगाएंगे कि असल में क्या हो रहा है।”
"आप दोनों महिलाएं बहुत समझदार हैं," पिग ने कहा।
"भिक्षु, तुम्हें कुछ नहीं पता," अधिकारियों ने कहा। "तुम सज्जनों को महिलाओं की तरह कैसे संबोधित कर सकते हो?"
"तुम तो बिल्कुल बेशर्म हो," सुअर हँसते हुए बोला। "तुमने तो उनका लिंग ही बदल दिया। इन दो बूढ़ी महिलाओं को 'औरत' या 'लेडी' कहने की बजाय 'जेंटलमैन' कहना तो बड़ी बड़ी बात है!"
"बस करो तुम्हारी बदतमीज़ी," उन सबने कहा। "तुरंत अपने साथी शिष्य को ढूंढो।"
अध्याय 68
949
पश्चिम की यात्रा
सड़क पर उमड़ी शोरगुल भरी भीड़, जिसकी संख्या मात्र सैकड़ों में नहीं थी, उसे हॉस्टल के द्वार तक ले गई। "आगे मत आइए, सज्जनों," पिग ने कहा। "मेरा भाई आपको मेरी तरह उसका मज़ाक नहीं उड़ाने देगा। वह एक क्रूर और गंभीर स्वभाव का व्यक्ति है। जब आप उससे मिलें तो आपको उसके सामने झुककर उसे प्रणाम करना होगा और उसे पुकारना होगा।"
"अगर आप सूर्य देवता से प्रार्थना करेंगे, तो वे आपकी देखभाल करेंगे। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे, तो वे क्रोधित हो जाएंगे और यह व्यवसाय विफल हो जाएगा।"
इस पर हिजड़ों और अधिकारियों ने जवाब दिया, "अगर सचमुच आपके भाई में हमारे राजा को ठीक करने की शक्ति है, तो उसे आधा देश दे दिया जाएगा और हम सब

उसके सामने झुकेंगे।"
जब पिग हिजड़ों और अधिकारियों को सीधे अंदर ले गया, तब भी आवारा लोग छात्रावास के द्वार के बाहर हंगामा कर रहे थे, जहाँ मंकी को खुशी से हंसते हुए सुना जा सकता था क्योंकि वह फ्रायर सैंड को बता रहा था कि उसने घोषणापत्र को कैसे उतारा था।
सुअर उसके पास गया, उसे पकड़ लिया और चिल्लाया, "तुम मर्दों जैसा बर्ताव क्यों नहीं करते? तुमने मुझे बाहर निकालने के लिए नूडल्स, बन्स और स्टीम्ड ब्रेड खरीदने का वादा किया था, लेकिन वो तो बस एक खोखला वादा था। फिर तुमने बवंडर खड़ा किया, राजघोषणा उतारी और चुपके से मेरी कमीज़ में रख दी। तुमने मुझे पूरी तरह बेवकूफ बना दिया। तुम किस तरह के भाई हो?"
"बेवकूफ," बंदर हँसते हुए बोला, "तुम ज़रूर रास्ता भटक गए होगे और गलत रास्ते पर चले गए होगे। ढोल के टावर के दूसरी तरफ से किराने का सामान खरीदकर वापस आते समय मुझे तुम नहीं मिले, इसलिए मैं आगे निकल गया। मैंने कोई राजघोषणा तो फाड़ी ही नहीं?"
"इसकी रखवाली कर रहे अधिकारी यहां मौजूद हैं," पिग ने कहा।
उसके बोलने से पहले ही हिजड़े और अधिकारी आगे आए, झुककर प्रणाम किया और बोले, "हे सूर्यदेव, महाराज आज बहुत भाग्यशाली हैं क्योंकि स्वर्ग ने आपको हमारे पास भेजा है। हमें पूरा विश्वास है कि आप अपनी महान कुशलता का प्रदर्शन करेंगे और उन्हें अपने उत्कृष्ट चिकित्सा ज्ञान का लाभ देंगे। यदि आप हमारे राजा को ठीक कर देते हैं तो आपको आधा देश और आधा राज्य प्राप्त होगा।" यह सुनकर बंदर ने अपना चेहरा संवार लिया, सुअर से घोषणापत्र लिया और बोला, "मुझे लगता है कि आप ही वे अधिकारी हैं जो इस सूचना की रखवाली कर रहे थे।"
"हम गुलाम अनुष्ठान विभाग में हिजड़े हैं," हिजड़ों ने प्रणाम करते हुए कहा, "और ये सज्जन शाही अंगरक्षक दल में अधिकारी हैं।"
बंदर ने कहा, "मैं राजघोषणा लेकर आया था, और मैंने अपने छोटे भाई की मदद से आपको यहाँ बुलाया है। आपके स्वामी बीमार हैं। कहावत है, 'दवा लापरवाही से मत बेचो, और बीमार होने पर किसी भी डॉक्टर को मत बुलाओ।' अपने राजा से कहो कि वे यहाँ आएं और मुझसे मदद मांगें। मैं उनकी बीमारी को एक स्पर्श में ठीक कर सकता हूँ।"

इससे सभी हिजड़े चौंक गए।
"यह तो बहुत बड़ी बात है, इसलिए आपमें अपार साहस होना चाहिए," अधिकारियों ने कहा। "हममें से आधे लोग चुपचाप निमंत्रण पर दबाव बनाने के लिए यहीं रुकेंगे, जबकि बाकी आधे लोग महल में जाकर रिपोर्ट करेंगे।"
चार हिजड़े और छह अंगरक्षक अधिकारी बिना बुलाए ही सीधे महल में चले गए और सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों पर खड़े होकर बोले, "महाराज, आपको बधाई हो।"
जब राजा, जो भोजन के बाद संजांग के साथ एक औपचारिक बातचीत कर रहे थे, ने यह सुना तो उन्होंने पूछा, "किस बात पर?"
“आज सुबह जब हम, आपके दास, महाराज का चिकित्सकों को बुलाने वाला आदेश लेकर ढोल मीनार के नीचे चिपका रहे थे, तो पूर्व के महान तांग प्रांत के एक पवित्र भिक्षु ने उसे उतार लिया,” उन्होंने उत्तर दिया। “वह अब सभागृह में हैं और महाराज से व्यक्तिगत रूप से उनसे सहायता मांगने का अनुरोध कर रहे हैं। वे स्पर्श मात्र से रोग दूर कर सकते हैं। इसीलिए हम यह सूचना देने आए हैं।”

यह खबर सुनकर राजा प्रसन्न हो गया। उसने पूछा, "हे विधि के स्वामी, आपके कितने विशिष्ट शिष्य हैं?"
अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ते हुए संजांग ने उत्तर दिया, "मेरे तीन मूर्ख अनुयायी हैं।"
"इनमें से कौन चिकित्सा विशेषज्ञ है?" राजा ने पूछा।
"महाराज, सच कहूँ तो, ये सब देहाती गंवार हैं, जो सिर्फ सामान ढोने, घोड़े को हांकने, नदियों में रास्ता खोजने या मुझे पहाड़ों और नदियों के पार ले जाने के लायक हैं। खतरनाक जगहों पर ये राक्षसों को हरा सकते हैं, दानवों को पकड़ सकते हैं और बाघों और अजगरों को वश में कर सकते हैं। इनमें से किसी को भी औषधियों का ज्ञान नहीं है।"
"क्या आप उन पर कुछ ज़्यादा ही सख्ती बरत रहे हैं?" राजा ने पूछा। "यह बहुत सौभाग्य की बात है कि आज सुबह जब हम सिंहासन कक्ष में दाखिल हुए, तब आप दरबार में आए: यह तो निश्चित रूप से ईश्वर की योजना थी। अगर आपके शिष्य को

चिकित्सा के बारे में कुछ भी नहीं पता होता, तो वह हमारी घोषणा क्यों लिखता और हमसे व्यक्तिगत रूप से आपसे मिलने की मांग क्यों करता?"
वह निश्चित रूप से एक महान चिकित्सक होंगे।
फिर उन्होंने पुकारा, "नागरिकों और सैन्य अधिकारियों, हम अपनी गाड़ी में बैठने के लिए बहुत कमजोर हैं। आप सभी को महल छोड़कर हमारी ओर से पूज्य सूर्य को हमारी बीमारी के इलाज के लिए आमंत्रित करने जाना होगा। जब आप उनसे मिलें तो किसी भी हालत में उनका अनादर न करें। उन्हें 'पवित्र भिक्षु, पूज्य सूर्य' कहकर संबोधित करें और उनके साथ अपने स्वामी के समान आदरपूर्ण व्यवहार करें।"
ये आदेश मिलते ही अधिकारी घोषणा के लिए ज़िम्मेदार हिजड़ों और पहरेदारों के साथ सीधे सभागृह में गए। वहाँ वे अपने-अपने समूह बनाकर बंदर को प्रणाम करने लगे। सुअर इतना डर गया कि वह एक कोने में छिप गया, जबकि साधु सैंड दीवार के पीछे छिप गया। ज़रा कमरे के बीचोंबीच गंभीर मुद्रा में बैठे उस महान ऋषि को तो देखिए।
"वह बंदर सचमुच अपना सिर कटवाने को तैयार है," सुअर ने मन ही मन नाराज़गी से सोचा। "सारे अधिकारी उसके सामने झुक रहे हैं, और वह न तो पलटकर झुक रहा है और न ही खड़ा हो रहा है।"
कुछ ही समय बाद, जब अनुष्ठान संपन्न हो गए, तो अधिकारियों ने बंदर को इस प्रकार संबोधित किया मानो वह उनका सम्राट हो: "हम पवित्र भिक्षु, आदरणीय सूर्य को सूचित करते हैं कि हम पुरपुरिया राज्य के अधिकारी अपने राजा के आदेश पर पवित्र भिक्षु को सम्मानपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करने और उन्हें महल में आमंत्रित करने आए हैं ताकि वे हमारे बीमार राजा का उपचार कर सकें।"
तभी बंदर भाई खड़ा हुआ और बोला, "तुम्हारा राजा अभी तक क्यों नहीं आया?"
"महामहिम अपनी गाड़ी में बैठने के लिए बहुत कमजोर हैं," सभी अधिकारियों ने उत्तर दिया, "इसीलिए उन्होंने हमें आदेश दिया है कि हम आपको, पवित्र भिक्षु, इस प्रकार प्रणाम करें जैसे आप हमारे संप्रभु हों, आपके सामने सिर झुकाएं और आपको आने का निमंत्रण दें।"
“तो फिर,” बंदर ने कहा, “आप लोग कृपया आगे चलें। मैं आपके पीछे आऊंगा।” इसके बाद अधिकारी अपने-अपने पद के अनुसार कतार बनाकर चल पड़े। बंदर ने अपने कपड़े समेटे और खड़ा हो गया।

"भाई," सुअर ने कहा, "जो भी करो, हमें इसमें मत घसीटो।"
"मैं नहीं करूंगा," बंदर ने उत्तर दिया, "बशर्ते तुम दोनों मेरी तरफ से दवा स्वीकार कर लो।"
"कौन सी दवा?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
“मुझे जो भी दवाइयाँ भेजनी हों, सब स्वीकार करनी होंगी,” बंदर ने उत्तर दिया। “वापस आने पर मैं उन्हें ले लूँगा।” उन दोनों ने यह ज़िम्मेदारी स्वीकार कर ली।
अध्याय 68
951
पश्चिम की यात्रा
बंदर जल्द ही अधिकारियों के साथ महल में पहुँच गया, जो राजा को सूचित करने के लिए सबसे पहले अंदर गए। राजा ने मोतियों के पर्दे ऊँचे उठाए, अपनी अजगर और फीनिक्स जैसी आँखों से चमक बिखेरी, अपना सुनहरा मुँह खोला और राजसी स्वर में बोला,
"वह कौन से सज्जन हैं जो पवित्र भिक्षु, आदरणीय सूर्य हैं?"
एक कदम आगे बढ़ाते हुए, बंदर ने अपनी पूरी आवाज में चिल्लाकर कहा, "मैं हूँ।"
आवाज इतनी कर्कश और चेहरा इतना भयावह था कि राजा अपने अजगर सिंहासन पर गिर पड़ा। घबराकर महिला अधिकारियों और महल के हिजड़ों ने उसे भीतरी कक्ष में ले जाने में सहायता की।
उन्होंने कहा, "उसने महामहिम को इतना डरा दिया कि उनकी मृत्यु हो गई।"
सभी अधिकारियों ने बंदर से गुस्से से कहा, "भिक्षु, तुम इतने कठोर और असभ्य कैसे हो सकते हो? तुमने घोषणापत्र को उतारने की हिम्मत कैसे की?"
जब बंदर भाई ने यह सुना तो उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "तुम्हें मुझसे नाराज़ नहीं होना चाहिए। अगर तुम मेरे साथ इतना बुरा बर्ताव करोगे तो तुम्हारा राजा हज़ार साल में भी नहीं सुधरेगा।"
"लेकिन इंसान की जिंदगी कितनी लंबी होती है?" अधिकारियों ने पूछा। "हजार साल में भी उसकी हालत में सुधार क्यों नहीं होगा?"
“वह अब एक बीमार शासक है,” बंदर ने कहा। “जब वह मरेगा तो एक बीमार भूत होगा, और जब भी उसका पुनर्जन्म होगा, वह फिर से एक बीमार इंसान ही होगा। इसीलिए वह हज़ार साल में भी ठीक नहीं होगा।”

क्रोधित अधिकारियों ने जवाब दिया, "तुम्हें ज़रा भी सम्मान का बोध नहीं है। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसी बकवास करने की!"
"यह बकवास नहीं है," बंदर हँसा। "सुनो, मैं समझाता हूँ:
चिकित्सा के सिद्धांत वास्तव में रहस्यमय हैं;
मन की लचीलापन एक आवश्यक गुण है।
अपनी आंखों और कानों का इस्तेमाल करें, सवाल पूछें, नब्ज़ जांचें:
एक भी प्रश्न छोड़ दिया जाए तो परीक्षा अधूरी मानी जाएगी।
सबसे पहले रोगी की जीवन शक्ति के बाहरी संकेतों की तलाश करें।
सूखा? चिकना? मोटा? पतला? सक्रिय? क्या वह अच्छी नींद सोता है?
दूसरा, ध्यान से सुनें कि आवाज स्पष्ट है या कर्कश:
यह निर्धारित करें कि वह जो शब्द बोलता है वह सत्य है या पागलपन भरा कथन।
तीसरा, आपको यह पूछना होगा कि यह बीमारी कितने समय से चल रही है।
और रोगी किस प्रकार खाता-पीता है और शौच करता है।
अध्याय 68
952
पश्चिम की यात्रा
चौथा, नब्ज़ को महसूस करें और नसों के बारे में स्पष्ट जानकारी प्राप्त करें:
क्या वे गहरे हैं, उथले हैं, बाहरी हैं या आंतरिक हैं?
यदि मैं देखूं-सुनूं, प्रश्न न पूछूं और नब्ज न जांचूं, तो राजा अपने पूरे जीवन में कभी भी ठीक नहीं होगा।"
नागरिक और सैन्य अधिकारियों के बीच रॉयल कॉलेज ऑफ मेडिसिन के कुछ साथी भी थे, जिन्होंने ये शब्द सुनकर मंकी की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा की: "भिक्षु सही कह रहा है। यहां तक कि एक देवता या अमर प्राणी को भी अपने दिव्य वरदानों से किसी मरीज का सफलतापूर्वक इलाज करने से पहले देखना, सुनना, प्रश्न पूछना और नब्ज की जांच करना पड़ता है।"
सभी अधिकारियों ने इन टिप्पणियों से सहमति जताई, फिर राजा के पास गए और कहा: "आदरणीय महोदय उचित उपचार देने से पहले देखना, सुनना, प्रश्न पूछना और नाड़ी की जांच करना चाहते हैं।"
"उसे भगा दो," राजा अपने अजगर के पलंग पर लेटे हुए बार-बार दोहरा रहा था। "हम

किसी अजनबी को देखना बर्दाश्त नहीं कर सकते।"
तब उनके सेवक भीतरी कक्ष से बाहर आए और घोषणा की, "भिक्षु, महाराज का आदेश है कि आप चले जाएं। वे किसी अजनबी को देखना सहन नहीं कर सकते।"
"अगर वह किसी अजनबी से नहीं मिलना चाहता," बंदर ने जवाब दिया, "तो मुझे लटकते धागों से नब्ज़ देखने की कला आती है।"
"हमने इसके बारे में सिर्फ सुना है," सभी अधिकारियों ने अपनी खुशी छुपाते हुए कहा, "लेकिन इसे हमने अपनी आँखों से कभी नहीं देखा। कृपया अंदर जाकर एक और रिपोर्ट प्रस्तुत करें।"
इसके बाद निजी सेवक भीतरी कक्ष में वापस गए और सूचना दी, "महाराज, पूज्य सूर्य लटकते धागों से आपकी नब्ज़ देख सकते हैं: उन्हें महाराज का चेहरा देखने की आवश्यकता नहीं है।"
इस पर राजा ने सोचा, "पिछले तीन वर्षों से जब से हम बीमार हैं, हमने कभी इस तकनीक को आजमाया नहीं है। उसे अंदर भेजो।"
उपस्थित दरबारियों ने तुरंत घोषणा की, "महामहिम ने लटकते धागों से नाड़ी की जाँच कराने की सहमति दे दी है। आदरणीय सूर्य को तुरंत भीतरी कक्ष में भेजें ताकि वे अपनी जाँच कर सकें।"
फिर बंदर सिंहासन कक्ष में प्रवेश कर गया, जहाँ तांग पुजारी ने उसका अपमान करते हुए कहा: "दुष्ट बंदर! तू ही मेरी मृत्यु का कारण बनेगा!"
"मेरे स्वामी," बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "मैं आपको सम्मान दिला रहा हूँ। आप कैसे कह सकते हैं कि मैं आपकी मृत्यु का कारण बनूँगा?"
"जितने साल तुम मेरे साथ रहे हो, मैंने तुम्हें कभी किसी का इलाज करते नहीं देखा," संजांग चिल्लाया। "तुम्हें दवाओं के बारे में कुछ नहीं पता, और तुमने कभी चिकित्सा की किताबें नहीं पढ़ीं। तुम इतने लापरवाह कैसे हो सकते हो और हम पर यह विपत्ति कैसे ला सकते हो?"
“मालिक, आपको एहसास नहीं है,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, “कि मुझे जड़ी-बूटियों के कुछ खास नुस्खे पता हैं और मैं गंभीर बीमारियों का इलाज कर सकता हूँ। मैं गारंटी देता हूँ कि मैं उसे ठीक कर दूँगा। अगर इलाज से उसकी मौत भी हो जाए, तो भी मैं सिर्फ चिकित्सीय अक्षमता के कारण हत्या का दोषी होऊँगा। यह कोई गंभीर अपराध नहीं है। आप किस बात से डर रहे हैं? चिंता की कोई बात नहीं है।”

कुछ नहीं। आप यहीं बैठिए और देखिए कि मेरी नाड़ी की रिपोर्ट कैसी है।"
"तुम ये सब बकवास कैसे कर सकते हो," संजांग ने पूछा, "जब तुमने कभी 'प्लेन क्वेश्चंस', 'क्लासिक ऑफ डिफिकल्टीज', 'फार्माकोपिया' और 'मिस्ट्रीज ऑफ द पल्सेस' नहीं पढ़ीं, न ही उनकी टीकाओं का अध्ययन किया? तुम लटकते धागों से उसकी नाड़ी का निदान कैसे कर सकते हो?"
“मेरे शरीर पर ऐसे सुनहरे धागे हैं जो तुमने कभी नहीं देखे,” बंदर ने जवाब दिया और अपना हाथ बढ़ाकर अपनी पूंछ से तीन बाल निकाले, उन्हें एक गुच्छा बनाकर पकड़ा, “बदलो!” कहा और उन्हें तीन सुनहरे धागों में बदल दिया, जिनमें से प्रत्येक चौबीस फीट लंबा था, जो सौर वर्ष की चौबीस अवधियों के बराबर था। इन्हें हाथ में पकड़े हुए उसने तांग पुजारी से कहा, “ये सुनहरे धागे हैं, है ना?”
“पुजारी जी, बोलना बंद कीजिए,” राजा के परिचारकों ने कहा। “कृपया अंदर आइए और अपना निदान कीजिए।” तांग पुजारी से विदा लेकर बंदर अपने रोगी को देखने के लिए परिचारकों के पीछे भीतरी कक्ष में चला गया। सचमुच:
दिल में एक गुप्त नुस्खा छिपा है जो एक देश को बचा सकता है;
यह गुप्त और अद्भुत मंत्र अमर जीवन प्रदान करता है।
यदि आपको यह नहीं पता कि किस बीमारी का निदान हुआ था या कौन सी दवाइयाँ दी गई थीं और आप सच्चाई जानना चाहते हैं, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।
अध्याय 69
हृदय का स्वामी रात में औषधि तैयार करता है
भोज में सम्राट एक दानव के बारे में चर्चा करते हैं
कथा के अनुसार, महान ऋषि सूर्य राजा के परिचारकों के साथ महल के भीतरी कक्ष में गए और शाही शयनकक्ष के द्वार के बाहर खड़े हो गए। उन्होंने तीन स्वर्ण धागे हिजड़ों को अंदर ले जाने के लिए सौंपे और उन्हें ये निर्देश दिए:
"महल के भीतरी भाग की रानियों और रानियों या निजी सेवकों को कहो कि वे इन धागों को महाराज की बाईं कलाई पर इंच, बार और क्यूबिट पर बांध दें, फिर उन्हें

खिड़की से बाहर मुझे दे दें।" हिजड़ों ने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था, उन्होंने राजा से अपने ड्रैगन पलंग पर बैठने को कहा जबकि उन्होंने सोने के धागों के एक सिरे को इंच, बार और क्यूबिट पर बांध दिया और दूसरे सिरे को बाहर दे दिया।

बंदर ने इन धागों के सिरों को लिया और पहले एक सिरे को अपने दाहिने हाथ के अंगूठे और तर्जनी के बीच रखकर इंच बिंदु पर नाड़ी की जांच की। उसने दूसरे सिरे को अपनी मध्यमा उंगली से लगाकर बार बिंदु पर नाड़ी की जांच की, फिर अपने अंगूठे को अपनी तीसरी उंगली से दबाकर कोहनी बिंदु पर नाड़ी की जांच की। इसके बाद उसने अपनी सांसों को नियंत्रित करके चारों क्रियाविधियों, पांच अवसादों, सात बाहरी और आठ आंतरिक लक्षणों, नौ स्वभावों, तैरती हुई नाड़ियों के भीतर गहरी नाड़ियों और गहरी नाड़ियों के भीतर तैरती हुई नाड़ियों का परीक्षण किया। इस प्रकार उसने अंगों के कार्य में कमियों और अधिकताओं का पता लगाया, फिर हिजड़ों को राजा की बाईं कलाई से धागे उतारकर दाहिनी कलाई के उन्हीं बिंदुओं पर बांधने को कहा। उसने अपने बाएं हाथ की उंगलियों से एक-एक करके धागों की जांच की।

एक झटके के साथ उसने सुनहरे धागे वापस अपने शरीर पर डाले और ज़ोर से चिल्लाया, "महाराज, आपकी बाईं कलाई पर इंच की नाड़ी मजबूत और तनावपूर्ण है, बार की नाड़ी सुस्त और धीमी है, और कोहनी खोखली और गहरी है। आपकी दाहिनी कलाई पर इंच की नाड़ी तैरती हुई और फिसलन भरी है, बार की नाड़ी धीमी और गांठदार है, और कोहनी की नाड़ी बार-बार और स्थिर है। बाईं ओर इंच की नाड़ी का मजबूत और तनावपूर्ण होना यह दर्शाता है कि आपके भीतर आंतरिक खालीपन और हृदय में दर्द है। बाईं ओर बार की नाड़ी का सुस्त और धीमी होना यह दर्शाता है कि आपको पसीना आता है और आपकी मांसपेशियां सुन्न महसूस होती हैं। कोहनी का खोखलापन और गहराई लाल मूत्र और खूनी मल का संकेत देती है। दाहिनी कलाई पर तैरती हुई, फिसलन भरी इंच की नाड़ी आंतरिक जमाव और अवरुद्ध नलिकाओं को दर्शाती है। बार की नाड़ी का धीमा और गांठदार होना अपच और रुके हुए पानी के कारण है। कोहनी की बार-बार और तार जैसी नाड़ी चिड़चिड़ेपन से भरेपन और खाली ठंडक के दीर्घकालिक विरोध को दर्शाती है। महाराज, आपके रोग का मेरा निदान यह

है कि आप भय और चिंता से पीड़ित हैं। इस स्थिति को इस प्रकार जाना जाता है..." पक्षियों का जोड़ा अलग हो गया।

जब राजा ने अपने कक्ष में यह सुना तो वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसका मनोबल बढ़ गया और उसने उत्तर में चिल्लाकर कहा, "आपने अपनी उंगलियों से मेरी बीमारी को पहचान लिया है। वास्तव में यही मेरी समस्या है। कृपया बाहर जाइए और कुछ दवा ले आइए।"

बंदर धीरे-धीरे महल के भीतरी हिस्से से बाहर निकला, तब तक उसे देख रहे हिजड़ों ने सबको खबर दे दी थी। थोड़ी देर बाद जब बंदर बाहर आया तो तांग पुजारी ने उससे पूछा कि क्या हुआ। बंदर ने कहा, "मैंने उसकी नाड़ी देखकर निदान किया है। अब मुझे उसकी बीमारी के लिए दवा तैयार करनी है।"

तब सभी अधिकारी आगे आकर पूछने लगे, "पवित्र भिक्षु, आदरणीय महोदय, 'बिछड़े हुए पक्षियों का जोड़ा' क्या है?"

जिस स्थिति के बारे में आपने अभी बात की?

"यह तब होता है जब एक नर पक्षी और एक मादा पक्षी एक साथ उड़ रहे होते हैं और अचानक एक भयंकर तूफान उन्हें अलग कर देता है," बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "मादा पक्षी को नर पक्षी की याद आती है और नर पक्षी को मादा पक्षी की। क्या यही 'दो पक्षियों का बिछड़ना' नहीं है?"

इस पर सभी अधिकारी प्रशंसा से बार-बार चिल्ला उठे, "वह सचमुच एक पवित्र भिक्षु हैं! वह सचमुच एक दिव्य चिकित्सक हैं!"

रॉयल कॉलेज ऑफ मेडिसिन के एक फेलो ने कहा, "आपने इस स्थिति का निदान तो कर लिया है, लेकिन आप इसके इलाज के लिए किन दवाओं का इस्तेमाल करेंगे?"

"नुस्खे के अनुसार दवा लेने की कोई ज़रूरत नहीं है," मंकी ने कहा। "जब मुझे दवाएँ दिखेंगी, मैं खुद चुन लूंगा।"

"चिकित्सा के प्रसिद्ध ग्रंथ के अनुसार, 'दवाओं की 808 किस्में और बीमारियों की 404 किस्में होती हैं'," रॉयल कॉलेज ऑफ मेडिसिन के फेलो ने कहा। "जब एक व्यक्ति को सभी बीमारियां नहीं होतीं, तो सभी दवाओं का उपयोग करना कैसे सही हो सकता है? आप केवल देखकर ही अपनी दवा का चुनाव नहीं कर सकते।"

इस पर बंदर ने उत्तर दिया, "प्राचीन काल के लोग कहते थे, 'दवाएँ बनाते समय निर्धारित सूत्रों का कड़ाई से पालन न करें; आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग करें।'

इसीलिए मैंने सभी प्रकार की औषधीय सामग्री मंगवाई है ताकि मैं आवश्यकतानुसार समायोजन कर सकूँ।"

रॉयल कॉलेज के फेलो इस पर और कुछ नहीं कह सके, बल्कि महल के द्वार से बाहर गए और कॉलेज के उन कर्मचारियों को भेजा जो ड्यूटी पर थे, ताकि वे शहर की सभी फार्मेसियों को, चाहे वे कच्चा माल बेचती हों या तैयार दवाएं, यह बताएं कि वे मंकी को प्रत्येक की तीन पाउंड मात्रा भेजें।

“यह दवा बनाने की जगह नहीं है,” बंदर ने कहा। “सभी दवाइयाँ और औज़ारों का पूरा सेट सभागृह में भेजा जाना चाहिए और मेरे दो साथी शिष्यों को सौंप दिया जाना चाहिए।” साथियों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें कहा गया था। दवा बनाने की 808 सामग्रियों में से प्रत्येक की तीन-तीन पौंड मात्रा, औज़ारों के रोलर, चक्की, छलनी, ओखली, कटोरे, मूसल और इसी तरह के अन्य औज़ारों के साथ सभागृह में भेजे गए, सौंप दिए गए और प्राप्त कर लिए गए।

बंदर सिंहासन कक्ष में वापस गया और अपने स्वामी से दवा तैयार करते समय उसके साथ छात्रावास में लौटने का अनुरोध किया। संज़ंग अभी जाने के लिए उठ ही रहा था कि राजा ने भीतरी कक्ष से एक आदेश भेजा कि अध्याय 69

955

पश्चिम की यात्रा

विधि के शिक्षक को वहीं रुककर साहित्यिक वैभव के हॉल में रात बितानी थी; अगली सुबह, दवा लेने और बीमारी से ठीक होने के बाद, राजा उन्हें पुरस्कृत करेंगे, पासपोर्ट की जाँच करेंगे और उन्हें विदा कर देंगे। संजांग भयभीत हो गया।

“शिष्य,” उसने कहा, “वह मुझे यहाँ बंधक बनाकर रखना चाहता है। यदि वह ठीक हो जाता है तो हमें जाने देने में उसे खुशी होगी, लेकिन यदि उपचार विफल रहा तो मेरा जीवन समाप्त हो जाएगा। दवा तैयार करते समय तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा और पूरा ध्यान देना होगा।”

"चिंता मत करो, स्वामी जी," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "यहाँ मजे करो। मैं एक बेहतरीन डॉक्टर हूँ।"

संज़ंग और सभी अधिकारियों से विदा लेकर महान ऋषि सीधे छात्रावास लौट गए, जहाँ सुअर ने मुस्कुराते हुए उनका स्वागत किया। "भाई," उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम क्या करने वाले हो।"

"क्या?" बंदर ने पूछा।

“अगर शास्त्र लाने का काम नहीं चला तो तुम्हारे पास कारोबार शुरू करने के लिए कोई पूंजी नहीं बचेगी।” सुअर ने जवाब दिया। “अब जब तुमने देख लिया है कि यह जगह कितनी समृद्ध है, तो तुम यहाँ एक दवा की दुकान खोलने की योजना बना रहे हो।”

बंदर चिल्लाया, "बकवास मत करो। राजा का इलाज करने के बाद मैं अपनी सफलता का इस्तेमाल दरबार छोड़कर आगे बढ़ने के लिए करूंगा। मैं कोई दवाखाना नहीं चलाने वाला।"

"अच्छा," सुअर ने कहा, "अगर आप दुकान नहीं खोल रहे हैं, तो एक आदमी के इलाज के लिए 808 अलग-अलग सामग्रियों में से प्रत्येक की तीन-तीन पौंड मात्रा क्यों ले रहे हैं? आपको इसकी कितनी मात्रा की आवश्यकता होगी? उसे यह सब खत्म करने में कितने साल लगेंगे?"

"वह इतना कभी खत्म नहीं कर पाएगा," बंदर ने जवाब दिया। "उनके रॉयल कॉलेज ऑफ मेडिसिन के लोग बिल्कुल मूर्ख हैं। मैंने इतनी सारी सामग्रियां सिर्फ इसलिए मंगवाई थीं ताकि उन्हें उलझन में डाल सकूं और उन्हें पता न चल सके कि मैं कौन सी सामग्रियां इस्तेमाल करने वाला हूं। फिर वे मेरी चमत्कारी दवा का रहस्य नहीं जान पाएंगे।"

जब वे बात कर रहे थे तभी छात्रावास के दो कर्मचारी अंदर आए और उनके सामने घुटने टेककर बोले, "हम पवित्र भिक्षुओं और आदरणीय सज्जनों से निवेदन करते हैं कि वे उनके रात्रिभोज में शामिल हों।"

"आज सुबह आपने हमारे साथ कुछ अलग ही व्यवहार किया," बंदर ने कहा, "तो अब हमें आमंत्रित करने के लिए घुटनों पर क्यों बैठ रहे हैं?"

“जब आप पहली बार आए थे, महाराज,” छात्रावास के सेवकों ने उत्तर दिया, “हम इतने अंधे थे कि आपके प्रतिष्ठित चेहरों को पहचान नहीं पाए थे। अब हमने सुना है कि आप अपनी उत्कृष्ट चिकित्सा क्षमताओं का उपयोग करके हमारे राजा का इलाज कर रहे हैं। यदि महाराज स्वस्थ हो जाते हैं, तो वे आपके साथ राज्य साझा करेंगे, इसलिए हम सभी आपकी प्रजा होंगे। इसलिए हमारे लिए यह उचित है कि हम आपको प्रणाम करें और विनम्रतापूर्वक भोजन के लिए आमंत्रित करें।” यह सुनकर बंदर प्रसन्नतापूर्वक सम्मान के स्थान पर बैठ गया, जबकि सुअर और साधु सैंड उसके बाईं

और दाईं ओर बैठ गए।
जब शाकाहारी भोजन परोसा गया तो फ्रायर सैंड ने पूछा, "भाई, हमारे गुरु कहाँ हैं?"
“राजा ने उसे बंधक बनाकर रखा है,” बंदर ने उत्तर दिया। “जब राजा ठीक हो जाएगा, तो वह हमारी ओर ध्यान देगा और हमें जाने देगा।”
"क्या उसकी अच्छी तरह देखभाल की जा रही है?" फ्रायर सैंड ने आगे पूछा।
"उसका मेज़बान एक राजा है, इसलिए ज़ाहिर है कि वह विलासिता में है। जब मैं वहाँ गया था, तो तीन वरिष्ठ मंत्री उसकी देखभाल कर रहे थे और उसे साहित्यिक वैभव के हॉल में आमंत्रित किया गया था।"
"तो फिर भी," पिग ने कहा, "मालिक की हालत हमसे कहीं बेहतर है। उसकी देखभाल के लिए मंत्री तैनात हैं, जबकि हमारे पास सेवा करने के लिए केवल कुछ ही छात्रावास के कर्मचारी हैं। इसलिए मैं उसके बारे में भूलकर आराम से खाना खाऊंगा।"

इस प्रकार उन तीनों ने आराम से अपने भोजन का आनंद लिया।
अब काफी रात हो चुकी थी। मंकी ने छात्रावास के सफाईकर्मियों से कहा, "बर्तन समेट दो और मेरे लिए खूब सारा तेल और मोमबत्तियाँ ले आओ। दवा बनाने का सबसे अच्छा समय रात के सन्नाटे में ही होगा।"
निर्देशानुसार नौकर तेल और मोमबत्तियाँ लेकर आए और फिर उन्हें छुट्टी दे दी गई। आधी रात के सन्नाटे में पिग ने पूछा, "भाई, क्या हम दवाइयाँ बनाने जा रहे हैं? चलो शुरू करते हैं। मुझे नींद चाहिए।"
"एक औंस रूबर्ब लो और उसे रोलर से बारीक पाउडर में पीस लो," ब्रदर मंकी ने कहा।
"रूबर्ब का स्वाद कड़वा और तासीर ठंडी होती है, लेकिन यह हानिकारक नहीं है," फ्रायर सैंड ने कहा। "इसका स्वभाव गहरा है, सतही नहीं; यह एक सक्रिय औषधि है, रक्षात्मक नहीं। यह रुकावटों को दूर करती है, अव्यवस्था को ठीक करती है और शांति लाती है, और इसे 'सामान्य औषधि' कहते हैं। यह एक रेचक औषधि है। लेकिन शायद यह किसी ऐसे व्यक्ति के लिए उपयुक्त न हो जो लंबी बीमारी के बाद खाली और कमजोर अवस्था में हो।"

“भाई, तुम्हें कुछ पता नहीं है,” बंदर ने कहा। “यह दवा कफ निकालने में मदद करती है, जीवन शक्ति को सुचारू बनाती है और पेट में जमा गर्मी-ठंड को शांत करती है। मुझे अकेला छोड़ दो और मेरे लिए एक औंस क्रोटन के बीज ले आओ। उन्हें छील लो, उनका ज़हरीला तेल निकाल दो, फिर उन्हें रोलर से बारीक पाउडर बना लो।”

पिग ने कहा, "क्रोटन का बीज तीखा, गर्म और जहरीला होता है। यह कठोर जमाव को हटाता है, फेफड़ों और आंतों में जमे हुए ठंड से राहत देता है और रुकावटों को दूर करता है। यह पानी और अनाज के लिए रास्ता सुगम बनाता है। यह दर्रों और फाटकों पर आक्रमण करने में माहिर है। इसका इस्तेमाल करते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए।"

“भाई,” बंदर ने उत्तर दिया, “तुम जो नहीं समझते हो वह यह है कि यह एक ऐसी दवा है जो गांठों को तोड़ती है, आंतों को खोलती है और हृदय की सूजन और जलोदर का इलाज कर सकती है। जल्दी करो और इसे तैयार करो। और मुझे इसके साथ एक सहायक दवा भी चाहिए होगी।”

दोनों ने मिलकर दोनों नशीले पदार्थों को बारीक पाउडर में पीसना शुरू किया। "भाई, तुम्हें ऐसे और दर्जनों की ज़रूरत पड़ेगी।"

उन्होंने कहा, "तो वे कौन से होंगे?"

"बस इतना ही," बंदर ने जवाब दिया।

"लेकिन आपके पास 808 अलग-अलग औषधीय सामग्रियों में से प्रत्येक की तीन-तीन पौंड मात्रा है," पिग ने कहा। "अगर आप सिर्फ दो औंस का ही इस्तेमाल करने वाले हैं, तो आप इन लोगों को बेवकूफ बना रहे हैं।"

फिर बंदर ने एक डिज़ाइनदार चीनी मिट्टी की थाली निकाली और कहा, "भाइयों, बातें करना बंद करो। इस थाली को लो और इसे खाना पकाने के बर्तन से खुरची हुई कालिख से आधा भर दो।"

"क्यों?" सुअर ने पूछा।

"मुझे दवा के लिए इसकी ज़रूरत है," बंदर ने जवाब दिया। "मैंने कभी नहीं सुना कि खाना पकाने के बर्तन की कालिख का इस्तेमाल दवा में किया जाता है," साधु सैंड ने कहा।

"इसे 'फूलों पर जमी बर्फ' कहते हैं," बंदर ने कहा, "और यह हर तरह की बीमारी के इलाज में काम आती है। क्या तुम्हें यह नहीं पता था?"

फिर उस मूर्ख ने आधी कटोरी भरकर उसे खुरचकर बारीक पाउडर बना लिया।
फिर बंदर ने उसे एक और थाली देते हुए कहा, "अब मुझे हमारे घोड़े के पेशाब से आधी थाली लाकर दो।"
"किसलिए?" सुअर ने पूछा।
अध्याय 69
957
पश्चिम की यात्रा
"इससे दवा की गोलियां बनानी हैं।" बंदर ने जवाब दिया।
"भाई," फ्रायर सैंड ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह कोई मज़ाक की बात नहीं है। घोड़े का पेशाब बदबूदार होता है। इसका इस्तेमाल दवा में नहीं किया जा सकता। मैंने तो सिर्फ सिरका, पुराना चावल का पेस्ट, शुद्ध शहद और साफ पानी से ही गोलियां बनते देखी हैं।"
भला किसने सुना है कि घोड़े के पेशाब से गोलियां बनाई जाती हैं? उसकी बदबू तो भयानक होती है। कमजोर दिल वाला कोई भी व्यक्ति पहली ही सूंघ में उल्टी कर देगा। अगर वो आगे बढ़कर रूबर्ब और क्रोटन के बीज भी खा ले तो उसे एक तरफ से उल्टी होगी और दूसरी तरफ से दस्त। ये कोई मज़ाक नहीं होगा।
“तुम्हें अंदर की कहानी नहीं पता,” बंदर ने कहा। “हमारा वो घोड़ा कोई साधारण घोड़ा नहीं है। वो पश्चिमी महासागर में एक अजगर हुआ करता था। अगर वो हमें अपना थोड़ा सा पेशाब दे दे तो तुम्हारी सारी बीमारियाँ ठीक हो जाएँगी। मेरी बस यही चिंता है कि कहीं वो मना न कर दे।” यह सुनकर सुअर घोड़े के पास जाकर खड़ा हो गया, जो लेटा हुआ सो रहा था। उस मूर्ख ने घोड़े को तब तक लात मारी जब तक वो खड़ा नहीं हो गया, फिर काफी देर तक उसके पेट से चिपका रहा, लेकिन पेशाब का कोई निशान नहीं दिखा। वो दौड़कर बंदर के पास आया और बोला, “भाई, राजा के इलाज की चिंता छोड़ो। जल्दी करो और घोड़े का इलाज करो। वो तो गया काम से: उसका पेशाब बिल्कुल सूख गया है। उससे पेशाब की एक बूँद भी नहीं निकलेगी।”
"मैं तुम्हारे साथ चलूंगा," बंदर मुस्कुराया।
"मैं भी आकर देखूंगा," फ्रायर सैंड ने कहा।
जब वे तीनों घोड़े के पास पहुँचे तो वह उछलने-कूदने लगा और ज़ोर-ज़ोर से इंसानी भाषा में चिल्लाने लगा, "भाई, तुम इतने अज्ञानी कैसे हो सकते हो? मैं पश्चिमी सागर

में उड़ने वाला अजगर हुआ करता था। बोधिसत्व गुआनयिन ने मुझे तब बचाया जब मैंने स्वर्ग संहिता का उल्लंघन किया था। उन्होंने मेरे सींग काट दिए, मेरे शल्क हटा दिए और मुझे घोड़ा बना दिया ताकि मैं गुरु को पश्चिमी स्वर्ग ले जाकर शास्त्र ला सकूँ। इस तरह मैं अपने अपराधों का प्रायश्चित कर पाऊँगा। अगर मैं किसी नदी में पेशाब करूँ, तो पानी में मौजूद मछलियाँ उसे पीकर अजगर बन जाएँगी। जिस भी पहाड़ से हम गुज़र रहे हों, उस पर जो घास उसका स्वाद चखेगी, वह अमर लड़कों के लिए जादुई कवक बन जाएगी, जिसे वे इकट्ठा करके अमर जीवन प्राप्त कर लेंगे। इसलिए ज़ाहिर है कि मैं इसे इस तरह की तुच्छ, सांसारिक जगह पर यूँ ही नहीं गिरा सकता।"

"भाई, संभलकर बोलो," बंदर ने कहा। "यह एक पश्चिमी राजा का शहर है, कोई तुच्छ, सांसारिक जगह नहीं। यहाँ यूँ ही यूँ ही कुछ भी मत बोल देना। जैसा कि कहावत है, अनेक हाथों से काम आसान हो जाता है। हमें राजा का इलाज करना ही होगा। जब हम ऐसा कर लेंगे, तो हम सब गौरव से भर उठेंगे। अगर हम असफल रहे, तो मुझे डर है कि हम इस देश से सम्मान के साथ नहीं जा पाएँगे।"

"एक पल रुको," घोड़े ने आखिरकार कहा। उसे देखो, वह कैसे उछलकर आगे बढ़ता है, फिर अपने पिछले पैरों पर बैठ जाता है, जोर से दांत पीसता है और बड़ी मुश्किल से कुछ बूंदें मल त्याग कर फिर खड़ा हो जाता है।

"कितना निकम्मा है!" पिग ने कहा। "तुम हमें कुछ और दे सकते थे, चाहे वो सोने की बूँदें ही क्यों न हों।"

जब बंदर ने देखा कि थाली लगभग एक तिहाई भर चुकी है, तो उसने कहा, "बस, बस। इसे ले जाओ।" तभी साधु सैंड को खुशी महसूस हुई।

फिर वे तीनों मुख्य हॉल में वापस गए, पेशाब को पहले से तैयार सामग्री के साथ मिलाया और मिश्रण को तीन बड़ी गोल गेंदों में रोल किया। "ये बहुत बड़ी हैं, भाइयों," बंदर ने कहा।

"ये तो अखरोट के आकार की हैं," पिग ने जवाब दिया। "अगर मैं इन्हें खाऊं तो एक निवाले के लिए भी काफी नहीं होंगी।" फिर तीनों शिष्यों ने गोलियों को एक बड़े डिब्बे में रखा और कपड़े पहने हुए ही सोने चले गए।

जल्द ही भोर हो गई, और अपनी बीमारी के बावजूद राजा ने दरबार लगाया, तांग पुरोहित को उनसे मिलने के लिए बुलाया और अपने सभी अधिकारियों को सीधे

सभागृह में भेजा ताकि वे पवित्र भिक्षु, आदरणीय अध्याय 69 को सम्मान दे सकें।

सूरज, और दवा ले आओ।
जब अधिकारी छात्रावास पहुँचे तो उन्होंने भाई बंदर के सामने प्रणाम करते हुए कहा, "महाराज ने हमें प्रणाम करने और चमत्कारी औषधि लाने के लिए भेजा है।" बंदर ने सुअर को डिब्बा लाने को कहा, जिसे उसने खोलकर अधिकारियों को सौंप दिया।
उन्होंने पूछा, "इस दवा का नाम क्या है? हम महामहिम से मिलने पर उन्हें इसके बारे में बताना चाहेंगे।"
"इसे ब्लैक गोल्ड एलिक्जिर कहते हैं," बंदर ने जवाब दिया, जिस पर सुअर और साधु सैंड को अपनी हंसी छिपानी पड़ी क्योंकि उन्होंने सोचा, "बेशक ये काला सोना ही हैं - इन्हें खाना पकाने के बर्तनों से खुरची गई कालिख से बनाया गया था।"
अधिकारियों ने पूछा, "उन्हें सही राह पर मार्गदर्शन देने के लिए गोलियों के साथ क्या लेना चाहिए?"
“दो तरह के मार्गदर्शक हैं जिन्हें वे अपने साथ ले जा सकते हैं,” बंदर ने उत्तर दिया। “एक तो आसानी से मिल जाता है। वह छह सामग्रियों का काढ़ा है जिसे गर्म पेय के रूप में लिया जाता है।”
"वे कौन-कौन सी छह सामग्रियां हैं?" अधिकारियों ने पूछा।
"उड़ते हुए कौवे की एक पाद," बंदर ने उत्तर दिया, "तेज़ बहती धारा में कार्प मछली का पेशाब, पश्चिम की महारानी माँ द्वारा इस्तेमाल किया गया थोड़ा सा फेस पाउडर, भगवान लाओ की भट्टी में परिष्कृत अमृत की कालिख, जेड सम्राट के घिसे-पिटे सिर के कपड़े के तीन टुकड़े, और फँसे हुए अजगर की दाढ़ी के पाँच बाल। इन छह सामग्रियों का काढ़ा गोलियों के साथ लेने से आपके राजा की बीमारी तुरंत ठीक हो जाएगी।"
जब अधिकारियों ने यह सुना तो उन्होंने जवाब दिया, "ये ऐसी चीजें हैं जो इस दुनिया में नहीं मिलतीं, इसलिए कृपया हमें बताएं कि दूसरा मार्गदर्शक क्या है।"
"गोलियों को बिना जड़ वाले पानी के साथ लेना चाहिए," बंदर ने कहा।
"इसे हासिल करना बहुत आसान है," अधिकारियों ने मुस्कुराते हुए कहा।
"तुम्हें इतना यकीन कैसे हो सकता है?" बंदर ने पूछा।

अधिकारियों ने जवाब दिया, "हमारे यहां एक कहावत है कि अगर आपको बिना जड़ के पानी की जरूरत हो तो एक कटोरा या बर्तन लेकर कुएं या नदी के पास जाओ, उसे पानी से भर लो और जल्दी से वापस आ जाओ। एक बूंद भी मत गिराओ, पीछे मुड़कर मत देखो और वह पानी मरीज को दवा के साथ पीने के लिए दे दो।"
"लेकिन कुएं के पानी और नदी के पानी दोनों की जड़ें होती हैं," बंदर ने कहा। "जिस जड़विहीन पानी की मैं बात कर रहा हूँ, उसे आकाश से गिरना पड़ता है और ज़मीन पर पहुँचने से पहले ही पी लिया जाना चाहिए। तभी उसे जड़विहीन कहा जा सकता है।"
अधिकारियों ने कहा, "यह आसानी से हो सकता है। अगली बार जब बादल छाए हों और बारिश हो, तब तक यह दवा नहीं लेनी चाहिए।"
इसके बाद अधिकारियों ने बंदर को धन्यवाद देने के लिए सिर झुकाया और दवा को राजा को भेंट करने के लिए अपने साथ ले गए, जिसने प्रसन्नतापूर्वक अपने सेवकों को उसे लाने का आदेश दिया।
"ये गोलियां क्या हैं?" उसने उन्हें देखकर पूछा।
“पवित्र भिक्षु का कहना है कि ये काला सोना अमृत हैं और इन्हें बिना जड़ वाले पानी के साथ लेना चाहिए,” अधिकारियों ने उत्तर दिया। तब राजा ने अपने महल की कुछ महिलाओं को बिना जड़ वाला पानी लाने के लिए भेजा।
अध्याय 69
959
पश्चिम की यात्रा
“पवित्र भिक्षु कहते हैं कि बिना जड़ वाला जल कुओं या नदियों से नहीं मिल सकता,” अधिकारियों ने कहा। “यह वह जल होना चाहिए जो आकाश से आया हो और अभी तक धरती को न छुआ हो।” तब राजा ने अपने सहायकों को आदेश दिया कि वे जादूगरों को वर्षा कराने के लिए आमंत्रित करने का फरमान जारी करें। अधिकारियों ने राजा के आदेशानुसार एक घोषणा जारी की।
सभागृह के हॉल में वापस आकर बंदर भाई ने सुअर से कहा, "उसे अभी कुछ बारिश चाहिए ताकि वह अपनी दवा ले सके। यह बहुत जरूरी है। हम बारिश कैसे लाएँगे? मुझे लगता है कि वह बहुत गुणी और नेक राजा है, तो क्यों न हम उसे थोड़ी बारिश का पानी लाने में मदद करें ताकि वह अपनी दवा ले सके?"
"लेकिन हम उसे बिना जड़ों वाला पानी कैसे दिलाएंगे?" सुअर ने पूछा।

"मेरे बाईं ओर खड़े हो जाओ और मेरे पालनहार तारे बनो," बंदर ने उससे कहा, फिर साधु रेत से कहा, "मेरे दाईं ओर खड़े हो जाओ और मेरे सीधे करने वाले तारे बनो, जबकि मैं उसे कुछ जड़विहीन पानी लाने में मदद करता हूँ।"

उस महान संत ने जादुई आकृति बनाई और मंत्र का उच्चारण किया। जल्द ही उनके पूर्व दिशा में एक काला बादल प्रकट हुआ जो धीरे-धीरे उनके सिर के ऊपर आ गया। "महान संत," उसमें से एक आवाज आई, "पूर्वी सागर के ड्रैगन राजा, आओ गुआंग, आपसे मिलने आए हैं।"

"अगर यह ज़रूरी न होता तो मैं आपको परेशान नहीं करता," बंदर ने कहा। "क्या मैं आपसे राजा को दवा लेने के लिए थोड़ा सा बिना जड़ वाला पानी देने में मदद मांग सकता हूँ?"

“जब आपने मुझे बुलाया था, हे महान ऋषि,” ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया, “आपने पानी के बारे में कुछ नहीं कहा था। मैं तो अकेला ही आया हूँ। मैं अपने साथ बारिश कराने का कोई उपकरण नहीं लाया हूँ, हवा, बादल, गरज और बिजली की तो बात ही छोड़िए। तो मैं बारिश कैसे करा सकता हूँ?”

"इस बार हवा, बादल, गरज या बिजली जैसी कोई समस्या नहीं होगी," बंदर ने कहा, "और हमें ज्यादा बारिश की भी जरूरत नहीं है। हमें बस इतना पानी चाहिए कि कोई अपनी दवा ले सके।"

"तो फिर मैं दो-तीन बार छींकूंगा और थोड़ा सा थूक दूंगा," ड्रैगन राजा ने कहा। "इतना काफी होगा कि वह अपनी दवा ले ले।"

"शानदार," बंदर ने प्रसन्नता से कहा। "एक पल भी बर्बाद मत करो। इसे जितनी जल्दी हो सके करो।"

प्राचीन अजगर धीरे-धीरे अपने काले बादल को नीचे लाता गया, यहाँ तक कि वह महल के ठीक ऊपर आ गया, हालाँकि उसने खुद को पूरी तरह से छिपाए रखा। उसने मुँह भर लार थूकी जो समय पर हुई बारिश में बदल गई, जिस पर दरबार के सभी अधिकारियों ने कहा, "महाराज, आपको दस करोड़ बधाई। स्वर्ग से समय पर बारिश हो रही है।"

तब राजा ने आदेश दिया, "वर्षा का पानी इकट्ठा करने के लिए बर्तन लाओ। महल के अंदर और बाहर, चाहे कोई भी पद हो, सभी अधिकारियों को यह पवित्र जल इकट्ठा करना होगा ताकि हमारी जान बच सके।" देखते ही देखते, महल के भीतरी भाग के

तीन हरमों और छह परिसरों की सभी नागरिक और सैन्य अधिकारी, साथ ही रानियाँ, रखैलें, तीन हज़ार सुंदरियाँ और आठ सौ आकर्षक दासियाँ, सभी समय पर बरसने वाले पानी को इकट्ठा करने के लिए प्याले, थालियाँ, कटोरे और प्लेटें लेकर वहाँ खड़ी हो गईं। आकाश में प्राचीन अजगर ने अपनी लार को इस प्रकार नियंत्रित किया कि वह सारी लार महल के भीतर ही गिरी। लगभग दो घंटे बाद अजगर राजा ने महान ऋषि से विदा ली और समुद्र में लौट गया। जब अधिकारियों ने सभी प्याले, थालियाँ, कटोरे और प्लेटें इकट्ठा कीं, तो उन्होंने पाया कि कुछ में एक या दो बूँदें, कुछ में तीन से पाँच बूँदें और कुछ में एक भी बूँद नहीं थी। जब सब इकट्ठा किया गया, तो तीन थालियों से थोड़ा अधिक पानी भरा हुआ था, और यह सारा पानी राजा को भेंट किया गया। सचमुच: सिंहासन कक्ष मनमोहक सुगंध से भर गया था;

पश्चिम की यात्रा

स्वर्ग के पुत्र के दरबार में मधुर सुगंध फैली हुई थी।

राजा ने विधि के स्वामी को विदा कर दिया और काले सोने का अमृत तथा समय पर होने वाली वर्षा को भीतरी कक्ष में भिजवाया, जहाँ उन्होंने समय पर होने वाली वर्षा के पहले प्याले के साथ पहली गोली ली, फिर दूसरी गोली दूसरे प्याले के साथ ली। तीन प्रयासों में उन्होंने तीनों गोलियाँ और तीनों प्याले समाप्त कर दिए। कुछ ही देर बाद उनके पेट से चरखे के लगातार घूमने जैसी आवाज़ आने लगी। उन्होंने अपना शौचालय मंगवाया और चार-पाँच बार शौच करने के बाद कुछ चावल का दलिया खाया और अपने अजगर पलंग पर गिर पड़े। जब उनकी दो रानियों ने शौचालय का निरीक्षण किया तो उन्होंने देखा कि उसमें भारी मात्रा में मल और बलगम था, और उसके बीच चिपचिपे चावल का एक गोला था।

"समस्या का मूल कारण स्पष्ट हो गया है," रानियों ने शाही पलंग की ओर जाते हुए बताया। राजा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने चावल खाए। थोड़ी देर बाद उनके सीने को आराम मिला और उनकी शारीरिक शक्ति और रक्त का संतुलन फिर से स्थापित हो गया। वे ऊर्जा से परिपूर्ण थे और उनके पैरों में फिर से शक्ति आ गई थी, इसलिए वे पलंग से उठे, अपने दरबारी वस्त्र पहने और सिंहासन कक्ष में गए, जहाँ उन्होंने तांग पुजारी को प्रणाम किया। आदरणीय पुरोहित ने भी यथाशीघ्र यह

सम्मान व्यक्त किया।
यह सब हो जाने पर राजा ने अपने हाथों से संज़ंग को सहारा देकर खड़ा किया और अपने दरबारियों से कहा, "तुरंत एक पत्र लिखकर हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ भेजो और एक अधिकारी को भेजकर विधि के गुरु के तीन प्रख्यात शिष्यों को यहाँ आने का निमंत्रण दो। इस बीच महल का पूर्वी भाग खोला जाए और विदेश मामलों का विभाग धन्यवाद भोज का आयोजन करे।" ये आदेश मिलते ही अधिकारियों ने उनका पालन किया। लेखकों ने पत्र लिखा और भोजन तैयार किया। सचमुच एक राज्य इतना शक्तिशाली होता है कि वह पहाड़ को भी पलट सकता है, और सब कुछ पल भर में हो गया।
जब सुअर ने अधिकारियों को पत्र देते हुए देखा तो वह खुशी से फूला नहीं समाया। उसने कहा, "भाई, यह तो वाकई चमत्कारिक औषधि है। जिस तरह से वे आपका धन्यवाद करने आए हैं, उससे तो यही लगता है कि आपने कमाल कर दिखाया है।"
“भाई, तुम सब कुछ गलत समझ रहे हो,” फ्रायर सैंड ने कहा। “जैसा कि कहावत है, ‘एक आदमी की अच्छी किस्मत उसके पूरे परिवार को प्रभावित करती है।’ हम दोनों ने गोलियां बनाई थीं, इसलिए हम भी इसके हकदार हैं। तो बस मजे करो और बातें करना बंद करो।” अरे! तीनों भाइयों को देखो, वे सब खुशी-खुशी सीधे महल की ओर चल पड़े, जहाँ सभी अधिकारियों ने उनका स्वागत किया और उन्हें पूर्वी हॉल में ले गए।
यहाँ उन्होंने तांग पुरोहित को राजा और उनके मंत्रियों के साथ देखा, और भोज पूरी तरह से तैयार था। भाई बंदर, सुअर और साधु रेत ने अपने स्वामी के प्रति आदर का भाव प्रकट करते हुए "ना-आ-आ" का उच्चारण किया, जिसके बाद सभी अधिकारी अंदर आ गए। सबसे अच्छी जगह पर शाकाहारी भोजन की चार मेजें लगी थीं। यह उस प्रकार का भोज था जिसमें आपकी अपेक्षा से दस गुना अधिक व्यंजन परोसे जाते थे। इन मेजों के सामने मांसाहारी व्यंजनों की एक मेज थी, और इस पर भी आप एक व्यंजन खाते समय दस दुर्लभ व्यंजनों को देख सकते थे। दोनों ओर चार-पाँच सौ और मेजें अत्यंत सुव्यवस्थित ढंग से सजी हुई थीं।
जैसा कि प्राचीन काल में कहा जाता था:
"सौ दुर्लभ व्यंजन,
एक हजार गिलास उत्तम शराब,

गाढ़ी क्रीम और दही,

रेशमी कपड़े की तरह चिकना, लाल मांस।"
बहुमूल्य और रंग-बिरंगी सजावटें,
फलों की तीव्र सुगंध।
विशालकाय चीनी के अजगर मीठे शेरों और अमर प्राणियों के चारों ओर कुंडली मारकर बैठे हैं:
फीनिक्स पक्षियों द्वारा संरक्षित केक के पिंड भट्टियों में ले जाए जाते हैं।
मांस में सूअर का मांस, भेड़ का मांस, हंस, मुर्गी, बत्तख और मछली शामिल थे; सब्जियों में बांस के अंकुर, सेम स्प्राउट्स, मशरूम और बटन मशरूम थे।
सूप में स्वादिष्ट नूडल्स,
पारदर्शी मलाईदार मिठाई,
रसीला बाजरा,
ताज़ा जंगली चावल की खिचड़ी,
चावल के नूडल्स से बना तीखा और स्वादिष्ट सूप।
ऐसे व्यंजन जिनमें मिठास और सुंदरता के बीच प्रतिस्पर्धा होती थी।
जैसे ही भोजन करने वाले अपनी-अपनी सीटों पर बैठे, सम्राट और प्रजा ने अपने प्याले उठाए; पद के अनुसार बैठे अधिकारियों ने धीरे-धीरे प्याले आगे बढ़ाए।
हाथ में प्याला लिए राजा ने सबसे पहले तांग पुजारी को बैठाया, जिन्होंने कहा, "एक भिक्षु होने के नाते मैं शराब नहीं पी सकता।"
"यह अल्कोहल रहित शराब है," राजा ने कहा। "क्या आप इसका एक प्याला भी नहीं पी सकते, विधि के स्वामी?"
"लेकिन हम भिक्षुओं के लिए सबसे पहला निषेध शराब है," संजांग ने कहा। राजा असहज महसूस करने लगा।
"यदि आप शराब नहीं पी सकते, हे विधि के स्वामी, तो मैं आपको बधाई कैसे दे सकता हूँ?"
"मेरे तीनों बदतमीज़ शिष्य मेरी ओर से पिएंगे," संज़ंग ने उत्तर दिया। तब राजा ने

प्रसन्नतापूर्वक सोने का प्याला बंदर को दे दिया, जिसने उसे लेकर सभा को विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया और एक प्याला पी लिया।
बंदर को इतनी खुशी से प्याला पीते देख राजा ने उसे एक और प्याला दिया। बंदर ने मना नहीं किया बल्कि दोबारा पी लिया।
राजा ने मुस्कुराते हुए कहा, "एक तीसरा प्याला लो," और बंदर ने स्वीकार कर लिया और तीसरी बार पिया। फिर राजा ने प्याला फिर से भरने का आदेश दिया और कहा, "चारों ऋतुओं के लिए चार प्याले हो जाएं, एक और प्याला लो।"
बंदर के बगल में खड़ा सुअर अपने अंदर ही लार के गुड़गुड़ाने को सह रहा था क्योंकि शराब उसके हाथ नहीं लग रही थी; और अब जब राजा बंदर पर पीने के लिए इतना दबाव डाल रहा था, तो वह चिल्लाने लगा, "महाराज, आपने जो दवा ली है, उसमें मेरा भी कुछ अंश है। उन गोलियों में घोड़े का मांस मिला हुआ है..." जब बंदर ने अध्याय 69 सुना

उसे डर था कि कहीं वह बेवकूफ सारी बात न बता दे, इसलिए उसने प्याला सुअर को दे दिया। सुअर ने प्याला लिया, पानी पिया और चुप हो गया।
"हे पवित्र भिक्षु," राजा ने कहा, "अभी आपने कहा था कि गोलियों में घोड़ा है। किस प्रकार का घोड़ा?"
"मेरा यह भाई बहुत ही बेबाक है," मंकी ने बीच में टोकते हुए कहा। "हमारे पास एक बहुत ही बढ़िया, आजमाया हुआ और परखा हुआ फॉर्मूला है, और वह इसे सबको बताना चाहता है। महाराज ने आज सुबह जो गोलियां लीं, उनमें घोड़े का रस नहीं, बल्कि अरिस्टोलोचिया था।"
राजा ने पूछा, "अरिस्टोलोचिया किस प्रकार की औषधि है? यह किन-किन बीमारियों का इलाज कर सकती है?"
राजा के बगल में खड़े रॉयल कॉलेज ऑफ मेडिसिन के एक फेलो ने कहा, "महाराज, अरिस्टोलोचिया कड़वा, ठंडा और विष रहित है।"
सांस फूलने की समस्या दूर करता है और कफ को अच्छी तरह ठीक करता है।
ऊर्जा का संचार करता है, रक्त संक्रमण को दूर करता है।
यह खालीपन को भरता है, खांसी को शांत करता है और दिल को सुकून देता है।

“यही सही चीज़ थी, यही सही चीज़ थी,” राजा ने कहा। “आदरणीय सुअर को एक और प्याला चाहिए।” उस मूर्ख ने और कुछ नहीं कहा, लेकिन तीन प्याले गटक लिए। फिर राजा ने साधु सैंड को तीन प्याले दिए, जिन्हें उसने पी लिया। फिर सब लोग बैठ गए।

जब वे सब काफी देर तक दावत और शराब पीते रहे, तो राजा ने एक बार फिर एक बड़ा प्याला उठाया और बंदर को दे दिया। बंदर ने कहा, "महाराज, कृपया बैठ जाइए। मैं हर दौर में जमकर पी रहा हूँ।"

मैं कभी मना नहीं करूंगा।

“हे पवित्र भिक्षु,” राजा ने कहा, “हम आपके प्रति अत्यंत ऋणी हैं, जिसका ऋण हम कभी नहीं चुका पाएंगे। कृपया इस विशाल प्याले को खाली कर दीजिए: हमें आपसे कुछ कहना है।”

"पहले आप जो चाहें कह लीजिए," बंदर ने जवाब दिया, "मैं बाद में पीऊंगा।"

राजा ने कहा, "हम वर्षों तक उस उदासी से पीड़ित रहे, और आपकी चमत्कारिक गोलियों की एक खुराक ने उसे ठीक कर दिया।"

"जब मैंने कल महाराज को देखा तो मुझे एहसास हुआ कि आप उदासी से पीड़ित हैं," बंदर ने कहा, "लेकिन मुझे नहीं पता कि आपको क्या परेशान कर रहा है।"

“एक पुरानी कहावत है कि परिवार के गुप्त राज़ अजनबियों से नहीं बताए जाते,” राजा ने उत्तर दिया। “हे पवित्र भिक्षु, आप हमारे उपकारक हैं, इसलिए हम आपको बताएंगे, लेकिन कृपया हंसिएगा मत।”

"मैं ऐसा करने की हिम्मत कभी नहीं करूंगा," बंदर ने कहा। "कृपया खुलकर बोलें।"

राजा ने पूछा, "पूर्व से यहाँ आते समय आप पवित्र भिक्षुओं ने कितने देशों से होकर यात्रा की?"

"पांच या छह," बंदर ने जवाब दिया।

"अन्य राजाओं की रानियों के क्या-क्या खिताब हैं?" राजा ने आगे पूछा।

"इन्हें मुख्य महल, पूर्वी महल और पश्चिमी महल की रानियाँ कहा जाता है," बंदर ने उत्तर दिया।

“हम इस तरह की उपाधियाँ नहीं देते,” राजा ने कहा। “हम प्रधान रानी को पवित्र स्वर्ण महल की रानी, पूर्वी रानी को पवित्र जेड महल की रानी और पश्चिमी रानी को पवित्र रजत महल की रानी कहते हैं। लेकिन अभी यहाँ केवल जेड और रजत की रानी ही उपस्थित हैं।”

"सुनहरी रानी महल में क्यों नहीं है?" बंदर ने पूछा।

"वह पूरे तीन साल से गायब है," राजा ने रोते हुए उत्तर दिया।

"वह कहाँ गई?" बंदर ने पूछा।

"तीन साल पहले ड्रैगनबोट महोत्सव में," राजा ने कहा, "हम अपनी रानियों और रानियों के साथ महल के बगीचों में अनार के मंडप में थे, चावल के पकौड़े खोल रहे थे, आर्टेमिसिया के फूल लगा रहे थे, कैलमस और रियलगर वाइन पी रहे थे और ड्रैगनबोट की दौड़ देख रहे थे, तभी अचानक हवा का एक झोंका आया।"

एक दुष्ट आत्मा आकाश में प्रकट हुई। उसने कहा कि वह दुष्ट तारा मिलानकर्ता है जो यूनिकॉर्न पर्वत पर स्थित हॉर्नडॉग गुफा में रहता है और उसे पत्नी की कमी है। हमारी स्वर्णिम रानी की सुंदरता और आकर्षण को देखकर वह उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था और उसने हम पर दबाव डाला कि हम उसे तुरंत उसके हवाले कर दें। अगर हमने उसके तीन बार कहने के बाद भी ऐसा नहीं किया, तो वह पहले हमें, फिर हमारे अधिकारियों और शहर में रहने वाले सभी आम लोगों को खा जाएगा। हम अपने देश और अपनी प्रजा के भाग्य को लेकर इतने चिंतित थे कि हमारे पास कोई विकल्प नहीं था: स्वर्णिम रानी को मंडप से बाहर धकेलना पड़ा ताकि दुष्ट आत्मा उसे शोर मचाते हुए ले जा सके। इस सब से हम इतने भयभीत हो गए कि जो चावल का पकौड़ा हम खा रहे थे वह हमारे पेट में जम गया। इसके अलावा, चिंता के कारण हम सो भी नहीं पाए, यही कारण है कि हम तीन साल तक बीमार रहे। आप पवित्र भिक्षुओं की चमत्कारी गोलियां लेने के बाद से हमने तीन बार शौच किया है और तीन साल पहले का सारा मल त्याग हो गया है। इसीलिए अब हमारा शरीर हल्का और मजबूत महसूस होता है और हमारी आत्मा पहले जैसी हो गई है। आज हमें यह जीवन आप पवित्र भिक्षुओं द्वारा दिया गया है; यह एक ऐसा उपहार है जो माउंट ताई से भी अधिक मूल्यवान है।"

जब बंदर भाई ने यह सुना तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने शराब का बड़ा प्याला दो ही घूंट में पी लिया। उसने राजा से मुस्कुराते हुए कहा, "महाराज, तो यही आपके

सदमे और अवसाद का कारण था। आज आप भाग्यशाली रहे: आप मुझसे मिले और ठीक हो गए। लेकिन मुझे नहीं पता कि आप स्वर्ण रानी को महल में वापस चाहते हैं या नहीं।"

इस पर राजा ने आँसू भरी आँखों से उत्तर दिया, "हम दिन-रात उसके लिए तरसते रहे हैं, लेकिन कोई भी उस दुष्ट आत्मा को पकड़ नहीं पाया है। बेशक हम उसे अपने देश में वापस चाहते हैं।"

"अगर मैं तुम्हारे लिए उस दुष्ट प्राणी से निपटने जाऊं तो कैसा रहेगा?" बंदर ने कहा।

राजा घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "यदि आप हमारी रानी को बचा सकते हैं, तो हम खुशी-खुशी अपनी तीनों रानियों और नौ रानियों को राजधानी से दूर ले जाकर आम लोगों की तरह जीवन व्यतीत करेंगे, और पूरे राज्य को आपके शासन के लिए छोड़ देंगे, हे पवित्र भिक्षु।"

जब उनके बगल में बैठा सुअर यह सब बातें और इतने बड़े सम्मानों को होते हुए सुन रहा था, तो वह जोर से हंसने से खुद को रोक नहीं पाया।

"इस राजा को तो शिष्टाचार का कोई ज्ञान ही नहीं है," वह हँसते हुए बोला। "ज़रा सोचिए, अपनी बूढ़ी पत्नी के लिए अपना राज्य त्याग कर एक भिक्षु के सामने घुटने टेक रहा है।"

अध्याय 69

964

पश्चिम की यात्रा

बंदर राजा को उठने में मदद करने के लिए तेजी से आगे बढ़ा और पूछा, "महाराज, क्या स्वर्ण रानी को पाने के बाद से दुष्ट आत्मा वापस आ गई है?"

“पिछले वर्ष के पाँचवें महीने में,” राजा ने कहा, “वह स्वर्ण रानी का अपहरण कर ले गया। दसवें महीने में वह वापस आया और रानी की सेवा के लिए दो दासियों की माँग की, और हमने उसे दो दासियाँ भेंट कर दीं। पिछले वर्ष के तीसरे महीने में वह एक और जोड़ी की माँग करने आया, और सातवें महीने में दो और दासियों की। फिर इस वर्ष के दूसरे महीने में चौथी जोड़ी आई। हमें नहीं पता कि वह कब वापस आएगा।”

"अगर वह इतनी बार आता है तो तुम उससे बहुत डरते होगे," बंदर ने जवाब दिया।

“क्योंकि वह बार-बार आता है, इसलिए हम उससे और उसकी जानलेवा मंशाओं से डरते हैं,” राजा ने कहा। “पिछले साल चौथे महीने में हमने एक राक्षस आश्रय बनाने

का आदेश दिया था, ताकि जब भी हमें हवा की आहट सुनाई दे और पता चले कि वह आ रहा है, तो हम अपनी दो रानियों और नौ रानियों के साथ वहाँ शरण ले सकें।”
"महाराज, क्या आप मुझे आश्रय स्थल दिखाने ले जाएंगे?" बंदर ने पूछा, और राजा ने बंदर का बायां हाथ पकड़कर उसे मेज से नीचे ले गए। सभी अधिकारी खड़े हो गए।
"भाई," सुअर ने विरोध करते हुए कहा, "तुम बहुत ही अनुचित हो। इस शाही शराब को छोड़कर भोज को क्यों भंग करके कुछ देखने जा रहे हो?"
यह सुनकर और यह समझकर कि सुअर अपने पेट को लेकर चिंतित है, राजा ने अपने सेवकों को शाकाहारी भोजन की दो मेजें लाने का आदेश दिया ताकि सुअर राक्षसों के आश्रय स्थल के बाहर भी शराब पीता रहे। तभी उस मूर्ख ने हंगामा करना बंद किया और अपने स्वामी और साधु सैंड के साथ मिलकर बोला, "चलो दावत खत्म करते हैं।"
नागरिक और सैन्य अधिकारियों के एक दल के नेतृत्व में राजा और बंदर महल के आवासीय कक्षों से होते हुए शाही उद्यानों के पिछले हिस्से तक हाथ में हाथ डालकर चले, लेकिन वहां कोई बड़ी इमारत दिखाई नहीं दी।
"राक्षसों का आश्रय कहाँ है?" बंदर ने पूछा, और उसके मुँह से शब्द निकलने से पहले ही दो हिजड़ों ने लाल रंग से लेपित लोहे की छड़ों से एक चौकोर पत्थर की पटिया को खोल दिया।
"यह रहा," राजा ने कहा। "हमारे नीचे बीस फीट या उससे अधिक गहराई में एक विशाल भूमिगत महल कक्ष की खुदाई की गई है।"
इसमें शुद्ध तेल के चार बड़े कुंड हैं जिनमें दिन-रात बत्तियाँ जलती रहती हैं। जब हवा की आवाज आती है तो हम यहाँ शरण लेते हैं और बाहर से पत्थर की पटिया फिर से बिछा दी जाती है।
“तो दुष्ट आत्मा तुम्हें मारना नहीं चाहती,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। “अगर वह ऐसा करती भी तो इससे तुम्हें कोई सुरक्षा नहीं मिलती।” उसके बोलते ही दक्षिण दिशा से तेज़ हवा चली जिससे धूल उड़ने लगी।
घबराकर सभी अधिकारियों ने शिकायत की, "उस भिक्षु का मुख किसी भविष्यवक्ता जैसा है। जैसे ही वह दुष्ट आत्मा का नाम लेता है, वह प्रकट हो जाती है।" भयभीत राजा ने बंदर को वहीं छोड़ दिया और अपने भूमिगत आश्रय में घुस गया। तांग पुरोहित भी उसके साथ गया और सभी अधिकारी छिपने के लिए भाग गए।
सुअर और साधु सैंड भी छिपना चाहते थे, लेकिन बंदर ने दोनों हाथों से एक-एक को

पकड़ लिया और कहा, "डरो मत, भाइयों। हम दोनों मिलकर उसकी पहचान करेंगे और देखेंगे कि वह किस तरह की बुरी आत्मा है।"
“बकवास,” सुअर ने कहा। “हमें उसकी पहचान क्यों करनी है? सारे अधिकारी छिप गए हैं और राजा ने खुद को एकांत में बंद कर लिया है। हम यहाँ से क्यों न निकल जाएँ? तुम किस तरह के हीरो बनने की कोशिश कर रहे हो?” लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद वह मूर्ख खुद को छुड़ा नहीं सका। जब बंदर कुछ देर तक उसे पकड़े रहा, तो अचानक हवा में एक दुष्ट आत्मा प्रकट हुई। ज़रा देखो वह कैसी दिखती थी:
अध्याय 69
965
पश्चिम की यात्रा
नौ फीट लंबा एक घिनौना विशालकाय शरीर,
गोल-गोल आंखें सोने के दीपकों की तरह चमक रही थीं।
दो विशाल कान ऐसे बाहर निकले हुए थे मानो वे गोल पंखे हों।
बहुत लंबी कीलों जैसे चार लोहे के नुकीले दांत।
उसके कनपटी पर लाल बाल घुंघराले थे; उसकी भौंहें ज्वाला की तरह थीं;
उसकी नाक लटकती हुई नाली जैसी थी; उसके नथुने फैले हुए थे।
उसकी मूंछें सिंदूर के धागे जैसी थीं।
और उभरी हुई गाल की हड्डियाँ उसके हरे चेहरे को एक खास आकार देती थीं।
लाल मांसपेशियों वाली भुजाओं पर गहरे नीले रंग के हाथ थे।
और दस नुकीले पंजों ने एक भाले को पकड़ रखा था।
उसकी कमर के चारों ओर तेंदुए की खाल से बनी एक स्कर्ट बंधी हुई थी।
नंगे पैर और उलझे हुए बाल उसके शैतानी रूप को और भी भयावह बना रहे थे।
जब बंदर ने उस दुष्ट आत्मा को देखा तो उसने पूछा, "फ्रायर सैंड, क्या आप इसे पहचान सकते हैं?"
"मैं नहीं जानता कि वह कौन है," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया। "मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा।"
"सूअर," बंदर ने आगे पूछा, "क्या तुम जानते हो?"
"मैंने उसके साथ कभी चाय या कॉफी नहीं पी है," सुअर ने जवाब दिया। "वह मेरा न तो दोस्त है और न ही पड़ोसी। मैं कैसे जान सकता हूँ?"

"वह मुझे पूर्वी शिखर के स्वर्ग के समतुल्य के नीचे स्थित पीले चेहरे और सुनहरी आंखों वाले द्वारपाल भूत की याद दिलाता है।"
"नहीं, वह नहीं है, नहीं, वह नहीं है," पिग ने कहा।
"तुम्हें कैसे पता कि वह नहीं है?" बंदर ने पूछा।
"क्योंकि भूत अंधेरे और पाताल लोक की आत्माएं हैं," सुअर ने जवाब दिया। "वे केवल रात में, पांच बजे से आधी रात के बीच ही बाहर आते हैं। अभी तो सुबह के दस बजे हैं, और कोई भूत इस समय बाहर आने की हिम्मत नहीं करेगा। और अगर वह शैतान भी होता, तो वह कभी बादल पर सवार नहीं होता। भूत जो हवाएं चलाते हैं, वे बवंडर पैदा करते हैं, आंधी नहीं। शायद वह दुष्ट तारा मिलानकर्ता है।"
"तुम इतने भी मूर्ख नहीं हो," बंदर ने कहा। "यह बात तो समझदारी भरी लगती है, इसलिए तुम दोनों मालिक का ध्यान रखो, मैं जाकर उनका नाम पूछता हूँ। इससे मुझे सुनहरी रानी को बचाने और उसे राजा के लिए महल में वापस लाने में मदद मिलेगी।"
अध्याय 69
966
पश्चिम की यात्रा
"जाओ अगर जाना ही है तो," सुअर ने जवाब दिया, "लेकिन हमारे बारे में उसे कुछ मत बताना।" बंदर ने जवाब देना उचित नहीं समझा और सीधे अपनी जादुई बत्ती पर सवार होकर ऊपर उछल गया। वाह!
राष्ट्र को बसाने के लिए उन्होंने सबसे पहले राजा का इलाज किया;
प्रेम और घृणा के मार्ग को संरक्षित करने के लिए।
यदि आपको नहीं पता कि बंदर के आकाश में उड़ने के बाद हुए युद्ध में कौन जीता या उस दुष्ट राक्षस को कैसे पकड़ा गया और स्वर्ण रानी को कैसे बचाया गया, तो अगले अध्याय में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।
अध्याय 70
दुष्ट राक्षस के खजाने से धुआं निकलता है।
रेत और आग: वुकॉन्ग छल से सोने की घंटियाँ चुरा लेता है
कहानी बताती है कि कैसे बंदर भाई ने अपनी दिव्य शक्ति का आह्वान किया और अपने जादुई प्रकाश पर सवार होकर लोहे की गदा लहराते हुए हवा में उड़ गया। उसने दुष्ट आत्मा के चेहरे पर चिल्लाते हुए पूछा, "तू कहाँ से आया है, दुष्ट राक्षस? और तू

कहाँ तबाही मचाने जा रहा है?"
"मैं माउंट यूनिकॉर्न पर हॉर्नडॉग गुफा से महान राजा एविल स्टार मैचर के अधीन अग्रणी योद्धा हूं।"
राक्षस ने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते हुए कहा, "मैं ही हूँ। महाराज ने मुझे दो दासियों को लाने का आदेश दिया है ताकि वे स्वर्ण रानी की सेवा कर सकें। तुम कौन हो और तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे सवाल करने की?"
“मैं सन वुकॉन्ग हूँ, स्वर्ग के समान महान ऋषि,” बंदर ने उत्तर दिया। “मैं तांग पुरोहित को पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध की पूजा कराने के लिए ले जाते समय इस देश से गुज़र रहा था। अब मुझे पता चला है कि तुम्हारे राक्षसों का गिरोह राजा पर अत्याचार कर रहा है, इसलिए मैं अपनी वीर शक्तियों का उपयोग करके देश में व्यवस्था बहाल करूँगा और इस बुराई का नाश करूँगा। और अब तुम यहाँ आ गए हो, ठीक उसी समय जब मुझे पता ही नहीं था कि तुम कहाँ मिलोगे।” यह सुनकर राक्षस ने मूर्खतापूर्वक अपना भाला बंदर पर चला दिया, जिस पर बंदर ने लोहे के डंडे से उसके चेहरे पर वार किया। दोनों के बीच हवा में एक शानदार युद्ध हुआ।
वह लाठी अजगर के महल से आया हुआ समुद्री जीव था;
वह भाला लोहे का बना था जिसे मानव निर्मित शक्ति से परिपक्व किया गया था।
एक साधारण हथियार अमर प्राणी के हथियार का मुकाबला नहीं कर सकता था;
कुछ ही झड़पों में इसकी सारी जादुई शक्तियां समाप्त हो गईं।
महान ऋषि परम सत्ता के अमर थे;
वह आत्मा एक दुष्ट राक्षस मात्र थी।
एक दानव किसी सच्चे ईश्वर के पास कैसे पहुँच सकता है?
अध्याय 70

सत्य के सामने बुराई का नाश हो जाएगा।
एक ने राजा को डराने के लिए हवा और धूल उड़ाई;
दूसरे ने सूर्य और चंद्रमा को ढकने के लिए कोहरे और बादलों पर कदम रखा।
जब उन्होंने जीत हासिल करने के प्रयास में अपनी सतर्कता कम कर दी
उनमें से किसी ने भी दिखावा करने की हिम्मत नहीं की।

स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि कहीं अधिक कुशल योद्धा थे:
उसकी लाठी की जोरदार चोट से भाला टूट गया।
जब बंदर के लोहे के डंडे से उसका भाला झट से दो टुकड़ों में टूट गया, तो दुष्ट आत्मा को अपने जीवन का डर सताने लगा, इसलिए उसने हवा की दिशा पूरी तरह बदल दी और पश्चिम की ओर भाग गया।
उसका पीछा करने के बजाय, बंदर अपने बादल को भूमिगत राक्षस आश्रय के प्रवेश द्वार पर ले आया।
“गुरुजी,” उसने पुकारा, “आप और महाराज अब बाहर आ सकते हैं। राक्षस भाग गया है।” तभी तांग पुजारी राजा को सहारा देते हुए भूमिगत आश्रय से बाहर आया। आकाश साफ था, और दुष्ट आत्मा का कोई निशान नहीं बचा था।
राजा मेज के पास गया, अपने हाथों से शराब की बोतल से एक सोने का प्याला भरा और बंदर को यह कहते हुए भेंट किया, "पवित्र भिक्षु, हमें अपनी अस्थायी कृतज्ञता व्यक्त करने की अनुमति दें।"
बंदर ने प्याला ले लिया, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, महल के पश्चिमी द्वार के बाहर से एक अधिकारी अंदर आया और सूचना दी, "पश्चिमी द्वार में आग लग गई है।"
यह सुनते ही बंदर ने प्याला समेत शराब हवा में उछाल दी। प्याला ज़ोरदार आवाज़ के साथ गिरा। इससे राजा इतना घबरा गया कि उसने बंदर को प्रणाम करते हुए कहा, "हे पवित्र भिक्षु, हमें क्षमा करें। हमने आपके साथ बुरा बर्ताव किया है। उचित तो यह होता कि हम आपको सिंहासन कक्ष में बुलाकर धन्यवाद देते। हमने आपको शराब यहाँ इसलिए दी क्योंकि वह पास ही थी। क्या आपने नाराज़ होकर प्याला फेंक दिया था, हे पवित्र भिक्षु?"
"ऐसा कुछ नहीं," बंदर हँसते हुए बोला, "ऐसा कुछ नहीं।"
कुछ ही देर बाद एक और अधिकारी ने आकर बताया, "अचानक बहुत तेज बारिश हुई है। पश्चिमी द्वार पर आग लगते ही तेज बारिश ने उसे बुझा दिया। सड़कें पानी से भरी हैं और चारों ओर शराब की महक फैली हुई है।"
"महाराज," बंदर ने एक और मुस्कान के साथ कहा, "आपको लगा कि मैंने प्याला फेंककर नाराज़गी जताई थी, लेकिन आप गलत थे। जब दुष्ट आत्मा पश्चिम की ओर भागी, तो मैं उसके पीछे नहीं गया, इसलिए उसने आग लगाई। मैंने तो बस उस प्याले

का इस्तेमाल राक्षस की आग बुझाने और पश्चिमी द्वार के बाहर खड़े लोगों को बचाने के लिए किया था। इसका कोई और मतलब नहीं था।"

राजा पहले से भी अधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने बंदर का और भी अधिक सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया। उन्होंने संजांग और उनके तीन शिष्यों को अपने साथ सिंहासन कक्ष में आने का निमंत्रण दिया, जिससे स्पष्ट हो गया कि वे उनके पक्ष में सिंहासन त्यागने का इरादा रखते थे।

अध्याय 70

968

पश्चिम की यात्रा

"महाराज," बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए कहा, "अभी जो राक्षस यहाँ आया था, उसने बताया कि वह दुष्ट तारा गणक के अधीन एक अग्रणी योद्धा था और महल की कन्याओं को लेने आया था। अब वह हारकर वापस चला गया है, इसलिए वह उस दुष्ट राक्षस की सूचना ज़रूर देगा, जो मुझसे लड़ने ज़रूर आएगा। मुझे डर है कि अगर वह अपनी सेना के साथ यहाँ आया तो आम जनता में दहशत फैल जाएगी और महाराज भयभीत हो जाएँगे। मैं उससे मिलने जाना चाहता हूँ, उसे हवा में ही पकड़ लेना चाहता हूँ और आपकी रानी को वापस लाना चाहता हूँ। लेकिन मुझे रास्ता नहीं पता। उसकी गुफा यहाँ से कितनी दूर है?"

“हमने एक बार अपने रात्रिकालीन खोज दल के कुछ घुड़सवारों और पैदल सैनिकों को यह पता लगाने के लिए भेजा था कि क्या हो रहा है,” राजा ने उत्तर दिया। “वापसी की यात्रा में उन्हें पचास दिन से अधिक का समय लगा। दक्षिण की ओर यह एक हजार मील से अधिक दूर है।”

यह जानकर बंदर ने कहा, "सूअर, साधु सैंड, यहाँ सावधान रहना। मैं जा रहा हूँ।"

“हे पवित्र भिक्षु, एक दिन और रुकिए,” राजा ने उन्हें पकड़ते हुए कहा। “जब तक हम आपके लिए कुछ सूखा भोजन तैयार न कर लें, तब तक मत जाइए। हम आपको यात्रा के लिए चांदी और एक तेज़ घोड़ा भी देंगे।”

"महाराज, आप ऐसे बात कर रहे हैं जैसे मुझे पहाड़ों पर चढ़ना और पहाड़ियों को पार करना पड़ेगा," बंदर ने उत्तर दिया। "मैं आपको सच बता रहा हूँ कि आपके द्वारा परोसी गई शराब का एक प्याला ठंडा होने से पहले ही मैं एक हजार मील की वापसी यात्रा कर सकता हूँ।"

“हे पवित्र भिक्षु,” राजा ने उत्तर दिया, “मुझे आशा है कि आपको हमारी बात से बुरा नहीं लगेगा, लेकिन आपकी विशिष्ट शारीरिक बनावट बंदर जैसी है। आपके पास यात्रा करने की इतनी जादुई शक्तियाँ कैसे हो सकती हैं?” इस पर बंदर ने उत्तर दिया:

"यद्यपि मेरा शरीर एक बंदर का शरीर है,
मैंने बचपन में ही जीवन और मृत्यु के मार्गों को भलीभांति जान लिया था।
मैंने उन सभी महान शिक्षकों से मुलाकात की जिन्होंने मुझे अपना मार्ग सिखाया।
और मैंने दिन-रात पहाड़ के किनारे रहकर खुद को प्रशिक्षित किया।
मैंने स्वर्ग को अपनी छत और धरती को अपनी भट्टी बना लिया।
और सूर्य और चंद्रमा को पूरा करने के लिए दोनों प्रकार की दवाओं का इस्तेमाल किया।
सकारात्मक और नकारात्मक तत्वों को लेते हुए, अग्नि और जल को मिलाते हुए,
अचानक ही मुझे मिस्टिक पास का एहसास हुआ।
मैंने अपनी सभी यात्राओं में सफलता के लिए पूरी तरह से सप्तर्षि मंडल पर भरोसा किया।
उस तारामंडल के सहारे अपनी चाल बदलते हुए।
जब सही समय आता है तो मैं आंच को कम या ज्यादा कर देता हूं।
सीसा निकालकर उसमें पारा मिलाना और दोनों को देखते रहना।
पंच तत्वों को समूहित करके रूपांतरण किए जाते हैं;

चारों रूपों को मिलाकर ऋतुओं को अलग-अलग पहचाना जा सकता है।
दोनों महत्वपूर्ण शक्तियां राशिचक्र में लौट आईं;
तीनों शिक्षाएं स्वर्णिम अमृत मार्ग पर मिलीं।
जब चारों अंगों को नियमों की समझ आ गई
मूल कलाबाजी को दैवीय सहायता प्राप्त हुई थी।
एक ही छलांग में मैं ताइहांग पर्वतमाला को पार कर सकता था;
एक ही झटके में मैं बादलों को छूते हुए फोर्ड के पार उड़ सकता था।
मुझे हजारो खड़ी चोटियों से कोई परेशानी नहीं है।

और न ही यांग्त्से नदी जितनी विशाल सैकड़ों नदियाँ हैं।
क्योंकि मेरे परिवर्तनों को रोकना असंभव है।
मैं एक ही छलांग में साठ हजार मील की दूरी तय कर सकता हूँ।
यह सुनकर राजा आश्चर्यचकित और प्रसन्न दोनों हुए। उन्होंने हंसते हुए बंदर को शाही शराब का एक प्याला भेंट किया और कहा, "हे पवित्र भिक्षु, आपके सामने एक लंबी और थका देने वाली यात्रा है। क्या आप अपनी यात्रा में सहायता के लिए यह शराब नहीं पिएंगे?"
महान ऋषि के मन में केवल राक्षस को हराने का ही विचार था, उन्हें शराब पीने में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं थी।
“इसे नीचे रख दो,” उसने कहा। “मैं वापस आकर पी लूँगा।” उस शानदार बंदर के ऐसा कहते ही वह एक झटके में गायब हो गया। राजा और उसकी प्रजा के आश्चर्य का वर्णन हम नहीं करेंगे।
इसके बजाय हम बताते हैं कि कैसे एक छलांग में बंदर कोहरे में ढके एक ऊंचे पहाड़ के सामने पहुँच गया। उसने अपने बादल को नीचे उतारा और शिखर पर खड़ा हो गया। जब उसने चारों ओर देखा तो पाया कि वह एक सुंदर पहाड़ था।
आकाश की ओर उड़ान भरते हुए, पृथ्वी पर विराजमान होते हुए,
सूर्य को ढककर बादल बनाना।
जहां से यह आकाश की ऊंचाइयों तक पहुंचा।
वह विशाल शिखर बहुत ऊँचा उठा हुआ था;
जिस धरती पर यह स्थित था
इसका विस्तार दूर-दूर तक है।
अध्याय 70
970
पश्चिम की यात्रा
सूरज की रोशनी को किसने रोका?
क्या वह पहाड़ी चीड़ के पेड़ों से घनी थी?
जहां बादल बने
वह उस निशान के नीचे चमकते हुए पत्थरों के बीच था।
गहरे चीड़ के पेड़

वे सभी मौसमों में हरे-भरे रहते थे;
चमकते हुए पत्थर
हजारों वर्षों में भी कभी नहीं बदलेगा।
रात में अक्सर बंदरों के चिल्लाने की आवाज सुनाई देती थी।
और दुष्ट अजगर अक्सर गहरी खाइयों को पार करते थे।
पहाड़ों पर पक्षी मधुर गीत गा रहे थे।
जबकि जंगली जानवर दहाड़ रहे थे।
पर्वतीय रोबक और हिरण
कई जोड़ी जूते पहनकर घूमा।
पर्वतीय मैगपाई और कौवे
वे घने झुंडों में उड़ते थे।
दूर-दूर तक पर्वतीय फूलों की कोई कमी नहीं दिख रही थी।
जबकि मौसम के दौरान पहाड़ी आड़ू और अन्य फल चमक रहे थे।
ढलान बहुत खड़ी थी, और आगे बढ़ना असंभव था।
लेकिन यह अब भी एक ऐसी जगह थी जहाँ दुष्ट अमर प्राणी सेवानिवृत्ति का जीवन व्यतीत कर सकते थे।
महान ऋषि असीम आनंद से देखते रहे और गुफा के प्रवेश द्वार को खोजने ही वाले थे कि तभी पहाड़ की एक खोखली जगह से लपटें फूट पड़ीं। पल भर में लाल आग आसमान तक फैल गई, और लपटों से भयानक धुआं निकला जो आग से भी ज्यादा डरावना था। कितना शानदार धुआं! यही दृश्य दिखाई दिया:
आग अनगिनत सुनहरे दीपों की रोशनी से जगमगा रही थी;

आग की लपटें हजारों लाल इंद्रधनुषों की तरह उछल उठीं।
यह धुआं चूल्हे की चिमनी का धुआं नहीं था।
न ही घास या लकड़ी का धुआँ,
लेकिन कई रंगों का धुआँ,
नीला, लाल, सफेद, काला और पीला।

इसने स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के बाहर के स्तंभों को काला कर दिया।
चमत्कारी धुंध के हॉल में छत की कड़ियों को झुलसा दिया।
यह इतनी तेज जल रही थी कि
अपने मांदों में बंद जंगली जानवर खाल समेत पूरी तरह से पक गए थे।
और वन के पक्षियों के सारे पंख झड़ गए।
इस भयानक धुएं को देखते ही वह सोचने लगा...
राक्षस राजा को पर्वत में कैसे पकड़ा जा सकता था?
जैसे ही महान ऋषि भय से स्तब्ध रह गए, पर्वत से एक रेतीला तूफान फूट पड़ा। वाह, क्या शानदार रेत थी! इसने सूर्य और आकाश को ढक लिया। देखो:
इसके घूमते हुए विशाल पिंडों ने आकाश को भर दिया,
यह धरती को ढकते हुए गहरा और धुंधला हो गया था।
बारीक अनाज ने हर जगह लोगों की आंखों की रोशनी छीन ली।
जबकि बड़े-बड़े अंगारे घाटियों में लुढ़कते तिल के दानों की तरह फैल गए।
जड़ी-बूटियां इकट्ठा करने वाले अमर लड़कों ने अपने साथियों को खो दिया;
लकड़ी इकट्ठा करने वाले लकड़हारे अपने घर का रास्ता नहीं ढूंढ पाए।
भले ही आपके हाथ में एक चमकीला मोती ही क्यों न हो
फिर भी हवा इतनी तेज होती कि आप उसे देख नहीं पाते।
बंदर नज़ारे का आनंद लेने में इतना मग्न था कि उसे अपनी नाक में उड़ती रेत और राख का पता ही नहीं चला, जब तक कि उसमें गुदगुदी शुरू नहीं हो गई। दो ज़ोरदार छींकें मारते हुए उसने अपना हाथ पीछे की ओर बढ़ाया और दो कंकड़ों को महसूस किया। (अध्याय 70)

एक चट्टान के नीचे आकर उसने अपनी नाकें बंद कर लीं, फिर खुद को झटककर आग पकड़ने वाले बाज में बदल गया और सीधे लपटों और धुएं के बीच उड़ गया, कुछ झपट्टे मारे और तुरंत रेत और राख को रोककर आग बुझा दी। वह जल्दी से वापस अपने असली रूप में आ गया, नीचे उतरा और चारों ओर फिर से देखा।
इस बार उसने तांबे के घंटे जैसी तेज आवाज सुनी।
"मैं गलत रास्ते पर आ गया हूँ," उसने मन ही मन कहा। "यह कोई राक्षसों का अड्डा

नहीं है। घंटा किसी सरकारी संदेशवाहक के घंटे जैसा लग रहा है। यह किसी देश का मुख्य मार्ग होना चाहिए, और मैं कोई सरकारी संदेशवाहक हूँ जो कोई दस्तावेज़ पहुँचाने जा रहा है। मैं जाकर उससे पूछताछ करूँगा।"

जैसे ही बंदर आगे बढ़ा, एक युवा दानव जैसा दिखने वाला प्राणी प्रकट हुआ। उसके हाथ में एक पीला झंडा था, पीठ पर एक दस्तावेज़ था और वह इतनी तेज़ी से भाग रहा था मानो हवा में उड़ रहा हो, साथ ही वह घंटा भी बजा रहा था। बंदर ने कहा, "तो ये वही है जो घंटा बजा रहा था? पता नहीं ये कौन सा दस्तावेज़ पहुँचा रहा है। मैं उससे पूछूंगा।"

महान संत ने स्वयं को झटककर एक टिड्डे का रूप धारण किया और फुर्ती से उड़ते हुए अपने दस्तावेज़ों के थैले पर आकर बैठ गए। यहाँ बंदर दुष्ट आत्मा को घंटा बजाते हुए बड़बड़ाते हुए सुन सकता था।

"हमारा राजा अत्यंत क्रूर है। तीन साल पहले उसने पुरपुरिया राज्य से स्वर्ण रानी को अगवा कर लिया था, लेकिन भाग्य उसके विरुद्ध रहा और वह उसे वापस नहीं पा सका। जिन बेचारी राजमहल की महिलाओं को उसने अगवा किया था, उन्हें उसकी कीमत पर कष्ट सहना पड़ा। उसने आने वाली दो महिलाओं को मार डाला, फिर अगली चार को। उसने पिछले से पिछले साल, पिछले साल और इस साल की शुरुआत में भी उन्हें वापस लाने की मांग की। इस बार जब उसने दो और महिलाओं को बुलवाया तो उसे अपनी चुनौती मिल गई। राजमहल की महिलाओं को वापस लाने गया अग्रिम पंक्ति का योद्धा, जिसे सन द नोविस या कुछ और कहा जाता था, ने हरा दिया। उसे अपनी राजमहल की महिलाएं नहीं मिलीं। इससे हमारा राजा इतना क्रोधित हो गया कि वह पुरपुरिया पर युद्ध छेड़ना चाहता है। उसने मुझे युद्ध की यह घोषणा देकर भेजा है। अगर उनका राजा युद्ध नहीं लड़ता है तो वह ठीक रहेगा, लेकिन अगर वह लड़ता है तो उसके लिए भयानक आपदा आएगी। जब हमारा राजा अपनी आग, धुआं और रेत के तूफान का इस्तेमाल करेगा, तो उनका राजा, मंत्री और आम लोग सब मर जाएंगे। फिर हम उनके शहर पर कब्जा कर लेंगे। हमारा राजा उसका सम्राट होगा और हम उसकी प्रजा होंगे। लेकिन भले ही हमें सरकारी पद मिलें, यह ईश्वर के नियमों के विरुद्ध है।"

यह सुनकर बंदर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा, "तो कुछ अच्छे दुष्ट आत्माएँ भी होती हैं। उसकी आखिरी टिप्पणी—'यह स्वर्ग के विरुद्ध है'—बहुत अच्छी थी। मुझे आश्चर्य

है कि जब उसने कहा कि भाग्य उनके राजा के विरुद्ध है और वह स्वर्ण रानी को प्राप्त नहीं कर सका, तो उसका क्या मतलब था। चलो उससे कुछ सवाल पूछता हूँ।" भिनभिनाते हुए वह दुष्ट आत्मा से दूर सड़क पर कुछ मील आगे उड़ गया, खुद को झटककर एक ताओवादी लड़के में परिवर्तित हो गया।
उसने अपने बालों को दो गुच्छों में बांध रखा था।
और सौ पैचवर्क वाला एक चोगा।
उसने मछुआरे के ढोल पर बजाया
उन्होंने ताओवाद के कुछ अंश गाए।
जैसे ही बंदर ढलान से घूमकर उस छोटे शैतान की ओर आया, उसने अभिवादन में अपने हाथ ऊपर उठाए और कहा, "आप कहाँ जा रहे हैं, महोदय? आप कौन सा आधिकारिक दस्तावेज़ पहुँचा रहे हैं?"
शैतान ने मानो उसे पहचान लिया हो, क्योंकि उसने अपना घंटा बजाना बंद कर दिया, उसकी अभिवादन का जवाब दिया और खिलखिलाते हुए कहा,
"हमारे राजा ने मुझे युद्ध की घोषणा के साथ पुरपुरिया भेजा है।"
"क्या पुरपुरिया की उस स्त्री ने राजा के साथ संबंध बनाए हैं?" बंदर ने अपने सवाल जारी रखते हुए पूछा।
अध्याय 70
973
पश्चिम की यात्रा
“जब वह उसे पिछले साल यहाँ लाया था,” उस छोटे शैतान ने जवाब दिया, “एक अमर देवता ने स्वर्ण रानी को शादी के लिए एक जादुई वस्त्र दिया था। जैसे ही उसने उसे पहना, वह सिर से पैर तक कांटों से ढक गई। हमारे राजा ने उसे छूने तक की हिम्मत नहीं की। ज़रा सा भी स्पर्श उसके हाथ में दर्द पैदा कर देता है। मुझे नहीं पता ऐसा क्यों हुआ। इसलिए उस साल से लेकर आज तक वह उसके पास नहीं आई है। जब आज सुबह उसके अग्रिम दस्ते के योद्धा को दो और राजमहल की दासियों को उसकी सेवा में रखने की माँग करने के लिए भेजा गया, तो उसे हरा दिया गया। हमारे राजा इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने मुझे युद्ध की यह घोषणा देकर भेजा। वह कल उससे लड़ने वाले हैं।”
"तो क्या राजा का मूड खराब है?" बंदर ने पूछा।

“हाँ, वो पीछे बहुत उदास है,” छोटे शैतान ने कहा। “तुम्हें जाकर उसे कुछ ताओवादी गीत सुनाने चाहिए ताकि उसका मूड ठीक हो जाए।” शानदार बंदर ने अपनी बाँहें आस्तीनों में डाल लीं, जाने के लिए तैयार, जबकि दुष्ट आत्मा पहले की तरह अपना घंटा बजाते हुए अपने रास्ते चला गया। तभी बंदर का गुस्सा भड़क उठा। उसने अपना डंडा निकाला, घूमा और छोटे शैतान के सिर के पिछले हिस्से पर ज़ोर से मारा। बेचारे राक्षस का सिर चूर-चूर हो गया। खून बहने लगा, उसकी चमड़ी फट गई और गर्दन टूट गई। वह मर गया। फिर बंदर ने अपना डंडा रख दिया और पछतावे के साथ मन ही मन कहा।

"मैं बहुत जल्दी में था। मैंने उससे उसका नाम नहीं पूछा। बहुत बुरा हुआ।" उसने शव से युद्ध की घोषणा उठाई और अपनी आस्तीन में रख ली। फिर उसने पीले झंडे और घंटे को रास्ते के किनारे झाड़ियों में छिपा दिया और शव को टखनों से घसीटकर खाई में फेंकने ही वाला था कि उसे कुछ खनकने की आवाज सुनाई दी। राक्षस की कमर पर सोने से जड़ी एक हाथीदांत की पट्टिका दिखाई दी। उस पर लिखा था: यह हमारा विश्वसनीय अधीनस्थ गोकोम है। यह कद में छोटा है और इसका चेहरा धब्बेदार और बिना दाढ़ी वाला है। यह पट्टिका हमेशा इसकी कमर पर रखी जानी चाहिए। जिसके पास यह पट्टिका नहीं है वह धोखेबाज है।

“तो उस दुष्ट का नाम गोकोम था। लेकिन मेरे इस डंडे से चोट लगने के बाद वो गया और अब कभी वापस नहीं आएगा।” फिर उसने हाथीदांत की पट्टिका खोली, उसे अपनी कमर पर बाँधा और शरीर को नीचे फेंकने ही वाला था कि उसे भयानक आग और धुएँ की याद आ गई और उसने गुफा महल की तलाश करने का मन नहीं बनाया। उसने डंडा उठाया, उसे राक्षस की छाती में घुसा दिया, उसे हवा में उठा लिया और अपनी पहली सफलता की घोषणा करने के लिए सीधे पुरपुरिया वापस चला गया। देखो, वो सीटी बजाते हुए उस देश की ओर जा रहा है।

सुअर सिंहासन कक्ष के सामने राजा और उसके स्वामी की रक्षा कर रहा था, तभी अचानक उसने पीछे मुड़कर देखा तो बंदर राक्षस को हवा में उड़ाकर ले जा रहा था। "अरे!" उसने शिकायत की, "यह तो बहुत आसान काम था। अगर मुझे पता होता कि तुम उसे पकड़ लोगे तो मैं खुद कर लेता और श्रेय ले लेता।" उसके बोलने से पहले ही बंदर ने बादल को नीचे गिरा दिया और राक्षस को सीढ़ियों के नीचे फेंक दिया।

पिग दौड़कर आया और अपने रेक से लाश पर वार किया, "इसका श्रेय मैं लेता हूँ,"

उसने कहा।
"तुम? श्रेय?" बंदर ने जवाब दिया।
"इसे मुझसे छीनने की कोशिश मत करो," पिग ने कहा, "मेरे पास सबूत है। क्या तुम नहीं देख सकते कि मैंने अपने रेक से उसमें नौ छेद कर दिए हैं?"
"देखो, उसका सिर है या नहीं," बंदर ने कहा।
"तो उसका सिर ही नहीं है," सुअर ने जवाब दिया। "अब मुझे समझ आया कि जब मैंने उसे मारा तो वह हिला तक क्यों नहीं।"
"मालिक कहाँ है?" बंदर ने पूछा।

"राजगद्दी कक्ष में राजा से बात कर रहा हूँ," सुअर ने कहा।
"जाओ और उससे बाहर आने के लिए कहो," बंदर ने कहा, और सुअर जल्दी से हॉल में चला गया।
सुअर के इशारे पर संजांग उठ खड़ा हुआ और तुरंत बंदर से मिलने बाहर आया, जिसने युद्ध की घोषणा को उसकी आस्तीन में यह कहते हुए डाल दिया, "इसका ध्यान रखना, स्वामी, और इसे राजा को देखने मत देना।"
उसके मुंह से शब्द पूरे होने से पहले ही राजा भी महल से बाहर आकर बंदर का अभिवादन करने और यह कहने के लिए आदरणीय महोदय से मिला, "आप वापस आ गए, पवित्र भिक्षु, आदरणीय महोदय। राक्षस को पकड़ने का कार्य कैसा रहा?"
"क्या सीढ़ियों के नीचे वह कोई राक्षस नहीं है?" बंदर ने इशारा करते हुए पूछा। "मैंने उसे मार डाला।"
“हाँ, यह सच है, यह एक दुष्ट आत्मा का शरीर है, लेकिन यह दुष्ट तारा मिलानकर्ता नहीं है। हमने दुष्ट तारा मिलानकर्ता को दो बार अपनी आँखों से देखा है। वह अठारह फीट लंबा और नौ फीट चौड़ा है। उसका चेहरा सोने की तरह चमकता है और उसकी आवाज गरजती है। वह उस जैसे किसी तुच्छ और दुष्ट प्राणी जैसा नहीं है।”
"महाराज, आप सही कह रहे हैं," बंदर ने उत्तर दिया, "यह वह नहीं है। यह तो बस एक छोटा सा शैतान दूत था जिससे मेरी मुलाकात हो गई। मैंने उसे मार डाला और एक ट्रॉफी के रूप में वापस ले आया।"

"शानदार," राजा ने अत्यंत प्रसन्नता से कहा, "शानदार! यह पहली सफलता है। हमने कई बार लोगों को यह पता लगाने के लिए भेजा है कि क्या हो रहा है, लेकिन उन्हें कभी कुछ पता नहीं चलता। फिर, हे पवित्र भिक्षु, आपको सीधे जाकर किसी को वापस लाना पड़ता है। आप सचमुच दिव्य शक्तियों से संपन्न हैं।"
"थोड़ी गर्म शराब लाओ," उसने आदेश दिया, "और इसे आदरणीय सज्जनों को दे दो।"
“शराब की चिंता छोड़ो,” बंदर ने कहा। “मैं महाराज से पूछना चाहता हूँ कि क्या स्वर्ण रानी अपने जाने से पहले कोई यादगार वस्तु छोड़ गई थीं? यदि हाँ, तो मुझे कुछ दे दीजिए।” “यादगार वस्तुएँ” शब्द ने राजा के दिल को झकझोर दिया। वह फूट-फूटकर रोने लगे और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।
"जब हम उस वर्ष त्योहार का आनंद ले रहे थे
ईविल स्टार मैचर ने ज़ोर से चिल्लाया,
उसने हमारी पत्नी को अपनी डाकू रानी बना लिया;
जमीन को बचाने के लिए हमें उसे बाहर भेजना पड़ा।
हमारे पास बातचीत करने या विदाई के शब्द कहने का समय नहीं था।
और न ही मैं उसे विदा कर सका।
वह कोई स्मृति चिन्ह या इत्र की थैली नहीं छोड़ गई;
हम आज तक यहां अकेले ही रहते।
"महाराज यहाँ हैं," बंदर ने कहा, "तो आप क्यों परेशान हो रहे हैं? अगर रानी ने कोई यादगार वस्तु नहीं छोड़ी है, तो महल में कुछ ऐसी चीजें जरूर होंगी जिनसे उन्हें खास लगाव होगा। मुझे उनमें से एक दे दीजिए।"
अध्याय 70
975
पश्चिम की यात्रा
"तुम्हें यह किसलिए चाहिए?" राजा ने पूछा।
“उस दानव राजा की जादुई शक्तियाँ वाकई अद्भुत हैं,” बंदर ने कहा, “और मैंने उसकी आग, धुएँ और रेत को देखकर यही लगता है कि उसे पकड़ना बहुत मुश्किल होगा। अगर मैं उसे पकड़ भी लूँ तो रानी शायद मुझ जैसे अजनबी के साथ यहाँ वापस आने से मना कर दे। मुझे उसकी कोई पसंदीदा चीज़ चाहिए ताकि वह मुझ पर भरोसा

करे और मुझे उसे वापस लाने दे। इसीलिए तो मैं वह चीज़ चाहता हूँ।"
"सनलाइट पैलेस में उनके ड्रेसिंग रूम में सोने के कंगन रखे हैं जिन्हें वह पहना करती थीं," राजा ने उत्तर दिया। "उन्होंने उन्हें केवल उसी दिन उतारा था क्योंकि ड्रैगनबोट उत्सव था और वह उनकी जगह रंग-बिरंगे धागे पहनने वाली थीं। उन्हें वे कंगन बहुत पसंद थे। उन्हें उनकी ड्रेसिंग टेबल में रखा गया है। उनके जाने के बाद से हम उन्हें देख नहीं पा रहे हैं: उन्हें देखना उनके प्यारे चेहरे को देखने जैसा है, और इससे हमें पहले से भी ज़्यादा दुख होता है।"
"बस इतना ही कहिए," बंदर ने उत्तर दिया, "और कंगन यहाँ मंगवाइए। अगर आप इन्हें देने के लिए तैयार हैं, तो मुझे दोनों दे दीजिए। अगर नहीं, तो मैं एक ही ले लूँगा।" राजा ने जेड रानी को कंगन लाने का आदेश दिया, और रानी ने उन्हें लाकर राजा को सौंप दिया।
उन्हें देखते ही उसने कई बार "मेरी प्रिय और कोमल हृदय वाली रानी" कहकर पुकारा, फिर उन्हें बंदर को सौंप दिया, जिसने उन्हें लेकर अपनी बांह पर रख लिया।
महान संत उत्सव की शराब पीने के लिए नहीं रुके, बल्कि कलाबाज़ी करते हुए अपने बादल पर सवार होकर माउंट यूनिकॉर्न की ओर वापस चले गए। अब उन्हें नज़ारे में कोई दिलचस्पी नहीं थी, वे सीधे गुफा महल की ओर बढ़ गए। चलते-चलते उन्हें शोरगुल सुनाई दिया, इसलिए वे रुक गए और चारों ओर ध्यान से देखा। हॉर्नडॉग गुफा के प्रवेश द्वार की रक्षा कर रहे लगभग पाँच सौ सैनिक, सभी रैंकों के, एक साथ पंक्तिबद्ध होकर खड़े थे।
निकट क्रम में।
वे एक पंक्तिबद्ध होकर खड़े हुए और अपने हथियार ताने खड़े थे।
सूर्य की रोशनी में चमकता हुआ।
उन्होंने बारी-बारी से अपने झंडे फहराए।
वह हवा में लहरा रहा था।
बाघ और भालू जैसे सेनापतियों ने रूपांतरण किए;
तेंदुए और बाघ-बिल्ली के मार्शल जोश से भरे हुए थे।
भेड़िये बेहद क्रूर थे;
हाथी बहुत शक्तिशाली और प्रभावशाली थे।
धूर्त खरगोशों और जल-हिरणों ने तलवार और भाले लहराए;

विशालकाय सांप और अजगर तलवार और धनुष लेकर चलते थे।
अध्याय 70
976
पश्चिम की यात्रा
ऐसे ओरंगुटान जो इंसानी भाषा समझते थे
उसने सैन्य संरचनाओं को नियंत्रित किया और खुफिया जानकारी जुटाई।
जब बंदर ने यह देखा तो वह आगे नहीं बढ़ा और सीधे उसी रास्ते से वापस चला गया। जानते हो क्यों? इसलिए नहीं कि वह उनसे डरता था। वह उस जगह वापस गया जहाँ उसने छोटे शैतान को मारा था, पीला झंडा और घंटा उठाया, हाथ से मंत्र पढ़ा, अपने भविष्य के बारे में सोचा, हवा का सामना किया, खुद को झटका दिया और गोकोम का रूप धारण कर लिया। फिर वह हॉर्नडॉग गुफा की ओर सीधे चलते हुए घंटा बजाने लगा।
वह गुफा की रूपरेखा देखने जा रहा था तभी उसने एक ओरंगुटान को यह कहते हुए सुना, "तुम वापस आ गए, गोकोम।"
"हां," बंदर को जवाब देना पड़ा।
"जल्दी करो," ओरंगुटान ने कहा। "हमारे राजा उड़ने वाले मंडप में तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं कि तुम क्या बताना चाहते हो।"
यह सुनते ही बंदर अपना घंटा बजाते हुए और चारों ओर देखते हुए मुख्य द्वार से सीधे अंदर घुस गया। उसने देखा कि चट्टान को काटकर कमरे और हॉल बनाए गए थे। दोनों ओर दुर्लभ और कीमती फूल खिले हुए थे, जबकि चारों ओर प्राचीन सरू और ऊंचे चीड़ के पेड़ खड़े थे। देखते ही देखते वह भीतरी द्वार से अंदर पहुँच गया, और अचानक ऊपर देखते ही उसे आठ खिड़कियों से रोशन एक मंडप दिखाई दिया। मंडप में सोने से जड़ी एक शानदार कुर्सी थी जिस पर एक राक्षस राजा सीधा बैठा था। वह सचमुच एक भयानक दृश्य था। वह कुछ इस तरह दिखता था:
उसके सिर के ऊपरी हिस्से से एक झिलमिलाती लाल रोशनी उठी;
उसके सीने से एक शक्तिशाली और घातक हवा फूट पड़ी।
उसके मुंह से निकले हुए नुकीले दांत थे;
उसकी कनपटी के झुलसे हुए बालों से लाल धुआं उठ रहा था।
उसकी मूंछों के बाल धंसे हुए तीरों की तरह थे;

उसका शरीर ऐसे बालों से ढका हुआ था मानो उसे संवारा गया हो।
उनकी आंखें घंटी की तरह बाहर निकली हुई थीं, मानो वे दुष्ट तारे को भी टक्कर दे रही हों:
उनके हाथों में महादेव की तरह लोहे की गदा थी।
जब बंदर ने दुष्ट आत्मा को देखा तो उसने उसके प्रति अनादरपूर्ण व्यवहार किया, जरा भी सम्मान नहीं दिखाया, बल्कि दूसरी ओर देखकर अपना घंटा बजाता रहा। "तो तुम वापस आ गए हो?" राक्षस राजा ने कहा। बंदर ने कोई उत्तर नहीं दिया।
“गोकम,” दानव राजा ने फिर पूछा, “तुम वापस आ गए हो?” फिर भी बंदर ने कोई जवाब नहीं दिया। तब दानव राजा उसके पास गया, उसे पकड़ा और बोला, “घर वापस आ गए हो तो भी अपना घंटा क्यों बजा रहे हो?”
और जब मैं आपसे कोई सवाल पूछता हूं तो आप जवाब क्यों नहीं देते?
अध्याय 70
977
पश्चिम की यात्रा
"तुम्हारे 'क्यों? क्यों? क्यों?' से क्या मतलब है?" बंदर ने जवाब दिया।
मैंने तुमसे कहा था कि मैं जाना नहीं चाहता, लेकिन तुमने ज़िद की। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मैंने देखा कि बड़ी संख्या में पैदल सैनिक और घुड़सवार युद्ध की तैयारी में खड़े थे। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, वे चिल्लाने लगे, 'राक्षस को पकड़ो! राक्षस को पकड़ो!' उन्होंने मुझे धक्का दिया, घसीटा और शहर में ले गए, जहाँ मैंने उनके राजा को देखा। उसने उन्हें मेरा सिर काटने को कहा, लेकिन सौभाग्य से उसके सलाहकारों के दो समूहों ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों में दूतों को फाँसी नहीं दी जानी चाहिए, इसलिए मुझे बख्श दिया गया। उन्होंने युद्ध की घोषणा ली, मुझे शहर से बाहर ले गए, अपनी सेना के सामने मुझे तीस कोड़े मारे और मुझे यहाँ वापस आकर रिपोर्ट करने को कहा। जल्द ही वे तुमसे लड़ने के लिए यहाँ आएँगे।
"दूसरे शब्दों में कहें तो," राक्षस ने कहा, "तुम्हारा समय खराब बीता। जब मैंने तुमसे वे सवाल पूछे तो तुमने जवाब देने से इनकार कर दिया, इसके लिए मैं तुम्हें दोष नहीं देता।"
"ऐसा नहीं था," बंदर ने कहा। "मैंने दर्द के कारण जवाब नहीं दिया।"
"उनकी सेना कितनी शक्तिशाली है?" राक्षस राजा ने पूछा।

"मैं सदमे से व्याकुल था और पिटाई से इतना डरा हुआ था कि मैं उन्हें गिन भी नहीं पा रहा था," बंदर ने जवाब दिया।
"मुझे बस वहां ढेरों हथियार तैनात दिखाई दे रहे थे।"
धनुष और बाण, भाले और तलवारें, कवच,
कटार-कुल्हाड़ी, भाले, तलवारें और झालरदार झंडे।
भाले, पक्षपाती सैनिक, हेलमेट,
कुल्हाड़ी, गोल ढाल और लोहे के कांटेदार औजार।
लंबी लाठियाँ,
छोटी लाठियाँ,
स्टील के कांटे, तोपें और हेलमेट।
उन्होंने ऊंचे बूट, टोपी और रजाईदार जैकेट पहन रखी थी।
और वे लाठी, छोटे धनुष और कांसे के गदा लिए हुए थे।"
“ये बात न तो यहाँ की है और न वहाँ की,” यह सुनकर दानव राजा हँस पड़ा। “ऐसे हथियार एक ही वार में नष्ट हो सकते हैं। जाओ और स्वर्ण रानी को सब कुछ बता दो और उससे कहो कि वह परेशान न हो। आज सुबह जब से उसने मुझे गुस्से में आकर युद्ध करने का फैसला करते सुना है, तब से वह लगातार रो रही है। उसे बताओ कि उनकी सेना इतनी भयंकर और बहादुर है कि वे हमें हरा ही देंगे। इससे वह कुछ देर के लिए शांत हो जाएगी।”
इससे बंदर बहुत खुश हुआ और सोचने लगा, "बिल्कुल यही तो मैं चाहता था।" उसे देखो, वह अपने जाने-पहचाने रास्ते से, बगल वाले दरवाजे से होते हुए हॉल पार कर गया। अंदर ऊँची-ऊँची इमारतें थीं: यह बाहर जैसा नहीं था। वह सीधे पीछे महिलाओं के कमरे में गया, जहाँ उसने दूर से एक सुंदर और सजा हुआ द्वार देखा। वहीं पर स्वर्ण रानी रहती थी। जब वह उससे मिलने गया, तो वहाँ लोमड़ी और हिरण की आत्माओं के दो समूह थे जो सजे-धजे थे। अध्याय 70

सुंदर स्त्रियों की तरह जो उसकी सेवा करें। रानी बीच में बैठी थी, अपने सुगंधित गालों को हाथों से थामे हुए और दोनों आँखों से आँसू बह रहे थे। सचमुच, उसके पास
एक खूबसूरत चेहरा, इतना कोमल और मनमोहक।

एक मोहक, अत्यंत सुंदर चेहरा।
लेकिन उसके काले घने बाल बिखरे हुए थे।
और बेतरतीब ढंग से उसके सिर पर ढेर लगा दिया गया था;
वह सजना-संवरना नहीं चाहती थी
और उसने बालों में कोई आभूषण या अंगूठी नहीं पहनी थी।
उसके चेहरे पर पाउडर नहीं लगा था।
और उसने आंखों पर रूज भी नहीं लगाया था।
उसके बालों में तेल नहीं लगा था
लेकिन सब कुछ उलझा हुआ है।
उसने अपने गुलाबी होंठों को सिकोड़ लिया।
उसने अपने चांदी के दांत पीसे।
उसने अपनी भौंहें पतंगे के एंटीना की तरह सिकोड़ लीं।
और उसकी आँखों में आँसू की चमक आ जाए।
उसका पूरा दिल
यह पुरपुरिया के राजा की यादों से भरा हुआ था;
सभी समय
वह उस जाल से मुक्त होने के लिए तड़प रही थी जिसने उसे जकड़ रखा था।
सचमुच,
कई खूबसूरत महिलाओं का दुर्भाग्य रहा है।
वे अपने मौन शोक में डूबे हुए पूर्वी हवा का सामना करने के लिए रह गए।
बंदर उसके पास गया और "हैलो" कहकर उसका अभिवादन किया।
अध्याय 70
979
पश्चिम की यात्रा
"अहंकारी, बदतमीज़, सनकी!" रानी ने कहा। "मुझे याद है जब मैं अपने राजा के साथ पुरपुरिया में शान-शौकत से रहती थी, तब राजा के शिक्षक और प्रधानमंत्री को भी मुझसे मिलने पर धूल में लोटना पड़ता था: वे कभी मेरी आँखों में देखने की हिम्मत नहीं करते थे। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे 'नमस्कार' कहने की, गँवार? तुम कहाँ से आए हो, बदतमीज़ जानवर?"

"कृपया क्रोधित न हों, महोदया," नौकरानियों ने कहा। "वह महाराज के सबसे भरोसेमंद लेफ्टिनेंटों में से एक हैं।"
उसका नाम गोकोम है। आज सुबह युद्ध की घोषणा के साथ उसे ही भेजा गया था।
इस पर रानी ने अपने गुस्से पर काबू पाया और पूछा, "क्या घोषणा सुनाते समय आप पुरपुरिया के अंदर गए थे?"
बंदर ने कहा, "मैं उसे सीधे राजधानी ले गया और सिंहासन कक्ष में पहुंचा। मैंने राजा से मुलाकात की और उनसे जवाब प्राप्त किया।"
"जब तुमने राजा को देखा तो उसने क्या कहा?" रानी ने पूछा।
"मैंने महामहिम को यहां पहले ही बता दिया है कि उन्होंने युद्ध और उनकी सेनाओं की तैनाती के बारे में क्या कहा था।"
बंदर ने जवाब दिया, "लेकिन राजा का एक निजी संदेश भी था, जो आपको याद कर रहे हैं, महोदया। मुझे आपको एक निजी बात बतानी है, लेकिन इतने सारे सेवकों के बीच यह बात करने का समय नहीं है।"
जब रानी ने यह सुना तो उसने अपने लोमड़ियों और हिरणों को वापस भेज दिया। बंदर भाई ने महल का दरवाजा बंद किया, अपना चेहरा रगड़ा और वापस अपने असली रूप में आ गया। उसने रानी से कहा, "मुझसे मत डरो। मैं पूर्व में महान तांग राजवंश द्वारा भेजा गया एक भिक्षु हूँ, जो भारत में थंडर मठ से बुद्ध के दर्शन करने और शास्त्र लाने आया हूँ। मेरे गुरु तांग सम्राट के छोटे भाई तांग सान्ज़ांग हैं। मैं उनका वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग हूँ।"
जब हम आपके पासपोर्ट को मंज़ूरी दिलाने के लिए आपकी राजधानी में थे, तब मैंने आपके राजा और उनके मंत्रियों द्वारा डॉक्टरों की भर्ती के लिए लगाया गया एक नोटिस देखा। तब मैंने अपने चिकित्सा कौशल का उपयोग करके उस बीमारी को ठीक किया जो आपको याद करने के कारण उन्हें हो गई थी। जब हम उनके द्वारा मुझे धन्यवाद देने के लिए आयोजित भोज में पेय पी रहे थे, तब उन्होंने मुझे बताया कि आपको दुष्ट आत्मा ले गई थी। चूंकि मैं अजगरों और बाघों को वश में कर सकता हूँ, इसलिए मुझे विशेष रूप से उस राक्षस को पकड़ने, आपको बचाने और आपको आपके देश वापस लाने के लिए आमंत्रित किया गया था। मैंने ही अग्रिम पंक्ति को हराया और उस छोटे शैतान को मार डाला।
जब मैंने द्वार के बाहर से देखा कि दानव राजा कितना भयंकर था, तो मैंने स्वयं को

गोकोम के हमशक्ल में बदल लिया और आपको एक संदेश देने के लिए यहां आया।
यह सुनकर रानी ने कुछ नहीं कहा। फिर बंदर ने कंगन निकाले और दोनों हाथों से उन्हें रानी को भेंट कर दिए।
"अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो बस देख लीजिए; ये कहाँ से आए हैं?" उसने पूछा।
जैसे ही रानी ने उन्हें देखा, वह फूट-फूटकर रोने लगी, जहां वह बैठी थी वहां से नीचे उतरी, धन्यवाद देते हुए उन्हें प्रणाम किया और कहा, "आदरणीय महोदय, यदि आप वास्तव में मुझे बचा सकते हैं और मुझे वापस दरबार में ला सकते हैं, तो मैं बुढ़ापे और दांतहीन होने पर भी आपके प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता को याद रखूंगी।"
बंदर ने कहा, "मुझे आपसे एक सवाल पूछना है। वह किस खजाने का इस्तेमाल करके आग, धुआं और रेत पैदा करता है?"
रानी ने कहा, "यह कोई खजाना नहीं है, बस तीन सोने की घंटियाँ हैं। जैसे ही वह पहली घंटी हिलाता है, तीन हज़ार फीट ऊँची जलती हुई लपटें निकलती हैं। दूसरी घंटी हिलाते ही तीन हज़ार फीट ऊँचा धुएँ का स्तंभ लोगों पर टूट पड़ता है। और तीसरी बार हिलाते ही तीन हज़ार फीट ऊँचा, आँखों को चौंधिया देने वाला रेत का तूफान उठ खड़ा होता है। आग और धुआँ तो कुछ भी नहीं हैं, लेकिन रेत जानलेवा है। अगर यह नाक में चली जाए तो जान ले सकती है।"
"यह बहुत भयानक है," बंदर ने कहा, "बहुत भयानक। मैंने इसका अनुभव किया है और मुझे कई बार छींक आ गई। मुझे आश्चर्य है कि वह घंटियाँ कहाँ रखता है।"
अध्याय 70
980
पश्चिम की यात्रा
"वह उन्हें कभी नीचे नहीं रखता," रानी ने उत्तर दिया। "वह उन्हें हमेशा अपनी कमर पर ही रखता है, चाहे वह कहीं जा रहा हो, घर पर हो, बैठा हो या सो रहा हो। वे हमेशा उसके साथ रहते हैं।"
“अगर तुम अब भी पुरपुरिया की परवाह करती हो और अपने राजा से दोबारा मिलना चाहती हो, तो फिलहाल अपने दुख और गम को भूल जाओ,” बंदर ने कहा। “खुद को आकर्षक और खुशमिजाज दिखाओ। उससे एक प्यार करने वाली पत्नी की तरह बात करो और उससे घंटियाँ अपने पास रखने के लिए कहो। जब मैं उन्हें चुरा लूँगा और

राक्षस को हरा दूँगा, तो मैं तुम्हें तुम्हारे शाही पति से मिलाने के लिए वापस ले जाऊँगा ताकि तुम दोनों शांति से रह सको।"

रानी ने बंदर के कहे अनुसार ही किया, और बंदर ने अपना रूप बदलकर फिर से दानव राजा के भरोसेमंद लेफ्टिनेंट का रूप धारण कर लिया। रानी ने दरवाजे दोबारा खोले और सेविकाओं को अंदर बुलाया। रानी ने कहा, "गोकोम, सामने वाले मंडप में जाओ और महाराज से कहो कि वे यहाँ आएं, क्योंकि मुझे उनसे कुछ कहना है।"

शानदार बंदर ने सहमति दी और खाल उतारने वाले मंडप में गया, जहाँ उसने दुष्ट आत्मा से कहा, "महाराज, महारानी आपसे मिलना चाहती हैं।"

"वह आमतौर पर मुझे कोसती ही रहती है, तो अब मुझे क्यों बुला रही है?" राक्षस राजा ने प्रसन्नता से पूछा। "जब उसने मुझसे पुरपुरिया के राजा के बारे में पूछा तो मैंने उससे कहा, 'वह अब तुम्हें नहीं चाहता: उसकी एक नई रानी है।'"

जब उन्हें पता चला कि महारानी को उनकी कमी महसूस होना बंद हो गया है, तभी उन्होंने मुझे यह निमंत्रण देकर भेजा।

"तुम बहुत सक्षम हो," दानव राजा ने कहा, "और जब हम पुरपुरिया को नष्ट कर देंगे, तो मैं तुम्हें अपना निजी उच्च-कुलपति नियुक्त करूंगा।"

बंदर ने दानव राजा की दयालुता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और पीछे के कमरे के दरवाजे की ओर तेजी से बढ़ा, जहाँ रानी ने मुस्कुराते हुए उसका स्वागत किया और उसके हाथ पर हाथ रख दिए। राजा असहज होकर पीछे हट गया।

"नहीं," उसने कहा, "नहीं। आपके स्नेह के इस संकेत के लिए मैं बहुत आभारी हूं, महोदया, लेकिन मैं आपके बगल में खड़े होने की हिम्मत नहीं कर सकता, कहीं इससे मेरे हाथ में चोट न लग जाए।"

"महाराज, बैठ जाइए," रानी ने कहा। "मुझे आपसे कुछ कहना है।"

"तुम्हारे बोलने पर कोई आपत्ति नहीं है," राक्षस राजा ने उत्तर दिया। "महाराज, मुझ पर कृपा करने के लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ," उसने कहा। "तीन साल से आपने मेरे साथ तकिया साझा नहीं किया है, जबकि पिछले जन्मों से ही हमारा विवाह होना तय था। मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी कि महाराज मुझे अपनी पत्नी की बजाय एक अजनबी की तरह समझेंगे। मुझे याद है जब मैं पुरपुरिया की रानी थी, तो राजा विदेशों से प्राप्त सभी मूल्यवान भेंटों को रानी को सौंप देते थे, जब भी वे उन्हें देखते थे। लेकिन आपके पास यहाँ कोई खजाना नहीं है। नौकर नेवले की खाल पहनते हैं

और खून पीते हैं। मैंने यहाँ कोई बढ़िया रेशम, ब्रोकेड, सोना या मोती नहीं देखे हैं। सभी चादरें और कंबल चमड़े और फेल्ट के हैं। या शायद आपके पास कुछ खजाने हैं जिन्हें आप मुझे देखने या उनकी देखभाल करने नहीं देते क्योंकि आप मुझे एक अजनबी समझते हैं। कहते हैं आपके पास तीन घंटियाँ हैं। मुझे लगता है कि वे खजाने ही होंगे। आप उन्हें हमेशा अपने पास क्यों रखते हैं, यात्रा करते समय या बैठे हुए भी? उन्हें मुझे सौंपने में कोई हर्ज नहीं है। जब आपको उनकी आवश्यकता होगी, मैं उन्हें आपको दे दूंगी। यह आपके प्रति पत्नी होने का एक तरीका होगा और यह दिखाएगा कि हम दिल से एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं। आप ऐसा इसलिए नहीं करते होंगे क्योंकि आप मुझे बाहरी व्यक्ति मानते हैं।

यह सुनकर राक्षस राजा ज़ोर से हँस पड़ा, फिर उसने महिला को प्रणाम किया और कहा, "महाराज, आपकी शिकायत जायज़ है। ये रहे खजाने, और आज मैं इन्हें आपकी देखरेख में सौंप रहा हूँ।" उसने अपने कपड़े उतारकर खजाने बाहर निकाले। बंदर ने अपनी निगाहें स्थिर रखते हुए देखा कि राक्षस ने अपने दो-तीन कपड़े हटाकर अपनी त्वचा से चिपके हुए तीन घंटे बाहर निकाले।

उन्हें रुई से ढककर, उसने उन्हें तेंदुए की खाल में लपेटकर रानी को सौंपते हुए कहा, "ये कुछ भी नहीं हैं, लेकिन कृपया इनका बहुत ध्यान रखें। आप जो भी करें, अध्याय 70"

उन्हें हिलाओ।

“मैं समझ गई,” रानी ने उन्हें स्वीकार करते हुए उत्तर दिया। “मैं इन्हें अपनी ड्रेसिंग टेबल पर रखूंगी और कोई इन्हें हिलाएगा नहीं।” फिर उन्होंने आदेश दिया: “मेरे प्यारे बच्चों, दावत तैयार करो। महाराज और मैं अपने सुखद मिलन का जश्न मनाने के लिए कुछ पेय लेंगे।” तुरंत ही सेविकाएँ फल, सब्जियाँ और जलीय हिरण, रैकून-डॉग, हिरण और खरगोश का मांस लेकर आईं और उन्हें नारियल की ताड़ी पिलाई। रानी ने स्वयं को इतना मोहक रूप दिया कि दुष्ट आत्मा भी उनके वश में आ गई।

इसी बीच बंदर घंटियाँ लाने चला गया। टटोलते-टटोलते हुए वह ड्रेसिंग टेबल तक पहुँचा, धीरे से तीनों घंटियाँ उठाईं, भीतरी कमरों के दरवाज़ों से चुपके से बाहर निकला और गुफा महल से बाहर चला गया। जब वह खाल उतारने वाले मंडप में

पहुँचा तो वहाँ कोई नहीं था, इसलिए उसने तेंदुए की खाल से ढके आवरण को खोलकर देखा।

एक घंटी चाय के कप जितनी बड़ी थी और बाकी दो मुट्ठी के आकार की। उसने मूर्खतावश रुई फाड़ दी। ज़ोरदार आवाज़ हुई और धुआँ, आग और रेत तेज़ी से बाहर निकलने लगे। बंदर ने उन्हें रोकने की पूरी कोशिश की, पर कुछ नहीं कर सका। मंडप में आग लग चुकी थी, जिससे द्वार पर मौजूद दुष्ट आत्माएँ घबराकर भीतरी कमरों में भाग गईं।

"आग बुझाओ," बुरी तरह घबराए हुए दानव राजा ने कहा। जब वह देखने के लिए बाहर भागा तो उसने देखा कि गोकोम सोने की घंटियाँ ले गया है। वह उसके पास गया और चिल्लाया, "गंदे गुलाम! तूने मेरी कीमती सोने की घंटियाँ क्यों चुराईं? तू क्या कर रहा है? इसे गिरफ्तार कर!" द्वार पर तैनात बाघ और भालू सेनापति, तेंदुए और बाघ-बिल्ली के सरदार, हाथी, धूर्त भेड़िये, चालाक जल हिरण, धूर्त खरगोश, लंबे सांप, विशाल अजगर, ओरंगुटान और अन्य सभी सैनिक एक साथ उस पर टूट पड़े।

बंदर घबरा गया। सोने की घंटियाँ गिराकर वह वापस अपने असली रूप में आ गया, अपनी सोने की पट्टी वाली 'जैसा चाहो' गदा निकाली, उन पर टूट पड़ा और अपनी गदा चलाने की कलाबाज़ी करते हुए बेतहाशा वार करने लगा। दानव राजा ने अपना खजाना वापस ले लिया और आदेश दिया, "मुख्य द्वार बंद कर दो।" इस पर कुछ दानवों ने द्वार बंद कर दिए और बाकी युद्ध में उतर गए। भागने में असमर्थ, बंदर ने अपनी गदा एक तरफ रख दी, खुद को झटका दिया और एक मूर्ख मक्खी में बदल गया जो पत्थर की दीवार के एक ऐसे हिस्से पर चिपक गई जहाँ आग नहीं जल रही थी। कोई भी दानव उसे नहीं ढूंढ पाया। "महाराज," उन्होंने सूचना दी, "चोर भाग गया, चोर भाग गया।"

"क्या वह फाटकों से बाहर निकल गया?" दानव राजा ने पूछा।

“सामने के द्वार मजबूती से बंद और कुंडी लगे हुए हैं,” राक्षसों ने उत्तर दिया। “वह उनके माध्यम से बाहर नहीं निकल सकता।”

"अच्छी तरह से खोजो," राक्षस राजा ने कहा, और जब उनमें से कुछ आग बुझाने के लिए पानी लेने गए तो बाकी लोगों ने बारीकी से खोज की लेकिन उनका कोई सुराग नहीं मिला।

“ये कैसा चोर है?” दानव राजा ने क्रोध से पूछा। “उसकी हिम्मत तो देखो, गोकोम का

रूप धारण करके यहाँ आकर मुझे सूचना दी, फिर मेरे साथ तब तक रहा जब तक उसे मेरे खजाने चुराने का मौका नहीं मिल गया। शुक्र है कि उसने उन्हें बाहर नहीं ले गया, अगर वो उन्हें पहाड़ की चोटी पर ले जाता और तेज़ हवा चलती तो बहुत बड़ी आपदा आ जाती।"

"महाराज, आपका सौभाग्य ईश्वरीय है," बाघ सेनापति ने आगे बढ़ते हुए कहा। "यह हमारी किस्मत का ही नतीजा है कि वह पकड़ा गया।"

तब भालू सेनापति आगे आकर बोला, "महाराज, चोर कोई और नहीं बल्कि वही सन वुकॉन्ग था जिसने हमारे अग्रिम पंक्ति के योद्धा को हराया था। मेरा मानना है कि वह रास्ते में गोकोम से टकरा गया होगा, उसे मार डाला होगा, उसका पीला झंडा, घंटा और हाथीदांत की पट्टिका ले ली होगी, और उसका हमशक्ल बनकर यहाँ आया होगा ताकि महाराज को धोखा दे सके।"

“जी हाँ,” दानव राजा ने उत्तर दिया, “तुम बिलकुल सही हो। बच्चों,” उसने आदेश दिया, “एक बार फिर ध्यान से तलाशी लो और सतर्क रहो। चाहे कुछ भी हो जाए, द्वार मत खोलो और उसे बाहर मत जाने दो।” यह कहना बिल्कुल सही है कि अध्याय 70

अत्यधिक चतुर बनने से मनुष्य मूर्ख बन जाता है;
जो बात कभी मजाक हुआ करती थी, वह सच भी हो सकती है।

अगर आपको नहीं पता कि ब्रदर मंकी राक्षसों के द्वार से कैसे बाहर निकला, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 71

झूठे नाम के तहत बंदर ने दानव कुत्ते को हरा दिया
गुआनयिन दानव राजा को वश में करने के लिए प्रकट होती है

पदार्थ हमेशा से ही खाली रहा है;
शून्यता को पदार्थ कहना स्वाभाविक ही है।
जब कोई पदार्थ की शून्यता के ध्यान में प्रवेश करता है
सिंदूर को औषधि में परिष्कृत करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
सद्गुण और आचरण की पूर्णता की खोज में विश्राम न करें;

कठिन परिश्रम से अर्जित कौशल प्राप्त करने के लिए कष्टों को सहन करें।
कभी-कभी व्यक्ति अपने कर्मों के पूर्ण हो जाने पर ही स्वर्ग की ओर रुख करता है, ताकि उसे एक अपरिवर्तनीय और अमर चेहरा प्राप्त हो सके।
कहानी बताती है कि कैसे दुष्ट तारा मिलानकर्ता ने बंदर की तलाश में आगे और पीछे के द्वार कसकर बंद करवा दिए थे। शोर शाम तक जारी रहा, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। दानव राजा उड़ने वाले मंडप में बैठा था, जहाँ उसने अपने राक्षसों को इकट्ठा किया और सभी द्वारों पर तैनात पहरेदारों को घंटियाँ बजाने, मंत्र बोलने, ढोल बजाने और खड़खड़ाहट करने का आदेश दिया। हर किसी को अपनी धनुष की डोरी पर तीर या म्यान से तलवार निकाल कर रखनी थी, क्योंकि हर कोई रात में पहरा देने के लिए अपनी बारी का इंतज़ार कर रहा था। सन वुकॉन्ग, जो एक मक्खी में बदल गया था, द्वार के पास बैठा था। आगे के द्वारों पर सुरक्षा इतनी कड़ी देखकर उसने अपने पंख फैलाए और देखने के लिए रहने वाले कमरों के द्वार की ओर उड़ गया। उसने देखा कि सुनहरी रानी एक छोटी मेज पर झुकी हुई थी, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे और वह चुपचाप अपने दुख में रो रही थी, इसलिए वह अंदर उड़ गया और उसके बालों के ढीले काले बादलों पर धीरे से उतरा ताकि वह सुन सके कि वह किस बात पर रो रही है। कुछ क्षण बाद उसने आँसू भरी आँखों से कहा, "मेरे स्वामी, आपने और मैंने पिछले जन्म में विरह की अग्नि का अनुभव किया था।"
और अब मेरा सामना एक दुष्ट दानव राजा से हुआ है।
अध्याय 71
983
पश्चिम की यात्रा
मैं तीन साल से दूर हूँ: हम दोनों कब फिर से मिलेंगे?
बत्तखों के बिछड़ने का दुख बहुत गहरा होता है।
ठीक उसी समय जब पुजारी ने मुझे आपका संदेश दिया था।
हमारा रिश्ता एक बार फिर टूट गया है और बंदर मर गया है।
क्योंकि वह सोने की घंटियों के बारे में बहुत उत्सुक था।
मुझे तुम्हारी याद पहले से कहीं ज्यादा सता रही है।"
यह सुनकर बंदर उसके कान के पीछे गया और फुसफुसाते हुए बोला, "महाराज, भयभीत न हों। मैं पवित्र भिक्षु, आदरणीय सन वुकॉन्ग हूँ, जिसे आपके देश से भेजा

गया है। मैं अभी भी जीवित हूँ। यह सब मेरी अधीरता के कारण हुआ। मैं आपकी ड्रेसिंग टेबल पर गया और सोने की घंटियाँ चुरा लीं। जब आप दानव राजा के साथ शराब पी रही थीं, मैं चुपके से सामने वाले मंडप में चला गया, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं पाया और उन्हें खोलकर देखने लगा। मेरा इरादा नहीं था, लेकिन मैंने घंटियों को ढकने वाली रुई फाड़ दी, और जैसे ही वे बजीं, आग, धुआँ और रेत बाहर निकलने लगी। मैं घबरा गया, घंटियाँ नीचे फेंक दीं, वापस अपने असली रूप में आ गया, और अपने लोहे के डंडे से बाहर निकलने की पूरी कोशिश की। जब मैं असफल हो गया और मुझे डर लगा कि वे मुझे मार डालेंगे, तो मैं एक मक्खी में बदल गया, और अभी तक दरवाजे के धुरी पर छिपा रहा। दानव राजा ने सुरक्षा व्यवस्था और भी कड़ी कर दी है और वह दरवाजे नहीं खोल रहा है। क्या आप उसके सामने पत्नी की तरह व्यवहार करके उसे लुभाएँगी? मैं यहाँ सो रहा हूँ ताकि मैं भाग सकूँ और तुम्हें बचाने का कोई और रास्ता खोज सकूँ?

यह सुनकर रानी थरथरा उठीं और उनके बाल ऐसे खड़े हो गए मानो कोई आत्मा उन्हें खींच रही हो; वे इतनी भयभीत थीं मानो उनका दिल मूसल से कूटा जा रहा हो। "क्या तुम मनुष्य हो या भूत?" उन्होंने रोते हुए पूछा।

“न तो मनुष्य, न भूत,” उसने उत्तर दिया। “इस समय मैं एक मक्खी में परिवर्तित हो गया हूँ और यहाँ हूँ। डरो मत। जल्दी करो और यहाँ मौजूद दानव राजा से पूछो।” रानी ने फिर भी उसकी बात पर विश्वास नहीं किया।

"इस बुरे सपने में आना बंद करो," उसने आंसू भरी आवाज में कहा।

“मैं किसी बुरे सपने में नहीं हूँ,” बंदर ने कहा। “अगर आपको यकीन नहीं है तो अपना हाथ आगे बढ़ाओ और खोलो। मैं तुम्हारे सामने उसमें कूद जाऊंगा।” रानी ने फिर अपना खुला हाथ आगे बढ़ाया। बंदर नीचे उड़कर आया और रानी की कोमल हथेली पर हल्के से उतर गया। वह बिल्कुल रानी जैसा था।

कमल के फूल पर एक काला सेम,
एक मधुमक्खी चमेली के फूल पर बैठी हुई है।
एक किशमिश हाइड्रेंजिया के फूल में गिर गई,
जंगली लिली के तने पर एक काला धब्बा।

रानी ने अपना हाथ उठाया और कहा, "पवित्र भिक्षु।"

"मैं परिवर्तित पवित्र भिक्षु हूँ," बंदर ने उत्तर दिया। तभी रानी ने उसकी बात पर विश्वास किया।
"जब मैं दानव राजा को यहाँ आमंत्रित करूँगी तो तुम क्या करोगे?" उसने पूछा।
“एक पुरानी कहावत है कि किसी की जान लेने के लिए शराब से बेहतर कुछ नहीं,” बंदर ने जवाब दिया, “और एक और कहावत है कि किसी भी समस्या को सुलझाने के लिए शराब से बेहतर कुछ नहीं। शराब बहुत काम की चीज है। सबसे अच्छा यही होगा कि उसे खूब पिलाया जाए। अपनी किसी निजी दासी को बुलाओ और मुझे उसे देखने दो ताकि मैं उसके जैसी दिख सकूँ और तुम्हारी सेवा कर सकूँ। फिर मैं अपना दांव चल सकूँगी।”
रानी ने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। "वसंत की सुंदरता, तुम कहाँ हो?" उसने पुकारा, और एक सुंदर चेहरे वाली लोमड़ी पर्दे के पीछे से आई, घुटने टेककर बोली, "महाराज ने मुझे क्या आदेश लेने के लिए बुलाया है?"
रानी ने कहा, “उन्हें अंदर आने और रेशमी लालटेन जलाने, कस्तूरी जलाने और मुझे सामने वाले कमरे में ले जाने के लिए कहो। फिर मैं महाराज से सोने का अनुरोध करूंगी।” वसंत सौंदर्यी सामने गई और सात-आठ हिरण और लोमड़ी की आत्माओं को बुलाया, जो उसके दोनों ओर कतार में खड़ी हो गईं। वे दो जोड़ी लालटेन और एक जोड़ी पोर्टेबल धूपदान लिए हुए थीं। जब तक रानी ने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया, तब तक महान ऋषि उड़ चुके थे।
अपने पंख फैलाकर, शानदार बंदर सीधे स्प्रिंग ब्यूटी के सिर पर उड़ गया, जहाँ उसने उसका एक बाल खींचा, उस पर जादुई साँस फूँकी और पुकारा, "बदलो!" वह बाल एक नींद के कीड़े में बदल गया जो स्प्रिंग ब्यूटी के चेहरे पर हल्के से उतरा। अब जब नींद के कीड़े किसी इंसान के चेहरे पर पहुँचते हैं तो वे नाक के नथुनों में घुस जाते हैं, और एक बार अंदर जाने के बाद व्यक्ति सो जाता है। स्प्रिंग ब्यूटी को सचमुच नींद आने लगी। वह अपने पैरों पर खड़ी नहीं रह सकी, बल्कि लड़खड़ाती हुई और ऊंघती हुई जल्दी से उस जगह पहुँची जहाँ वह पहले आराम कर रही थी, सिर के बल गिर पड़ी और गहरी नींद में सो गई। फिर भाई बंदर नीचे कूदा, खुद को झटका दिया, स्प्रिंग ब्यूटी का हूबहू रूप धारण किया और स्क्रीन के चारों ओर घूमकर दूसरों के साथ कतार

में लग गया।
जैसे ही स्वर्णिम रानी महल के अग्रभाग में दाखिल हुई, एक छोटे शैतान ने उसे देखा और दुष्ट तारा मिलानकर्ता को सूचना दी, "महाराज, रानी आ गई हैं।" दानव राजा तुरंत खाल उतारने वाले मंडप से बाहर आकर उनका स्वागत करने के लिए दौड़ा।
"महाराज," रानी ने कहा, "धुआं और आग बुझा दी गई है और चोर का कोई निशान नहीं है। चूंकि अब काफी रात हो चुकी है, इसलिए मैं आपसे सोने का आग्रह करने आई हूं।"
"आप कितनी दयालु हैं, मेरी रानी," राक्षस ने उन्हें देखकर अत्यंत प्रसन्न होकर उत्तर दिया। "चोर सन वुकॉन्ग था जिसने मेरे अग्रिम पंक्ति के योद्धा को हराया, फिर मेरे लेफ्टिनेंट को मार डाला और उसका वेश बदलकर हमें धोखा देने आया। हमने उसकी तलाश की लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। इससे मुझे बेचैनी हो रही है।"
"वह बदमाश भाग गया होगा," रानी ने उत्तर दिया। "शांत हो जाइए, महाराज, चिंता करना छोड़िए और बिस्तर पर आ जाइए।"
रानी को वहाँ खड़े और इतने विनम्रतापूर्वक आमंत्रित करते देख राक्षस राजा हठपूर्वक मना नहीं कर सका, इसलिए उसने अन्य राक्षसों को आग और दीयों का ध्यान रखने और लुटेरों से सावधान रहने का आदेश दिया और फिर रानी के साथ पीछे के निवास कक्ष में चला गया। वसंत ऋतु की सुंदरी का वेश धारण किए बंदर ने अन्य दासियों के साथ उनका नेतृत्व किया।
रानी ने कहा, "महामहिम के लिए शराब लाओ। वे बहुत थक गए हैं।"
“जी हां,” राक्षस राजा ने मुस्कुराते हुए कहा, “जी हां, बिल्कुल। जल्दी से कुछ लाओ। इससे हमारा मन शांत होगा।” फिर वसंत ऋतु की अप्सरा और अन्य सेवकों ने फल और बढ़िया मांस परोसा और मेज-कुर्सियां लगाईं। रानी ने प्याला उठाया और राक्षस राजा ने भी ऐसा ही किया; दोनों ने एक-दूसरे को अपने-अपने प्याले से एक-एक प्याला पिलाया।
अध्याय 71

उनके बगल में खड़ी वसंत ऋतु की अपरूपी सुंदरी ने घड़ा पकड़े हुए कहा, "चूंकि आज रात पहली बार महाराज और महाराज एक-दूसरे को अपने प्यालों से पेय पिला

रहे हैं, इसलिए मुझे आशा है कि आप दोनों अपने प्यालों को पूरी तरह से खाली कर देंगे, जिससे आपको दुगनी खुशी मिलेगी।" सचमुच, दोनों ने अपने प्याले फिर से भर लिए और उन्हें फिर से खाली कर दिया। "चूंकि महाराज और महाराज के लिए यह इतना खुशी का अवसर है, तो क्यों न हम दासी आपके लिए गाएं और नाचें?" वसंत ऋतु की अपरूपी सुंदरी ने सुझाव दिया।

उसके मुंह से शब्द पूरे होने से पहले ही मधुर स्वर सुनाई देने लगे और गायन-नृत्य शुरू हो गया। रानी के गायन-नृत्य समाप्त करने से पहले ही उन दोनों ने खूब शराब पी ली। दासी अपने-अपने समूहों में बंट गईं और पर्दे के बाहर कतार में खड़ी हो गईं, केवल वसंत ऋतु की सुंदरी की नकल ही घड़ा पकड़े हुए उन्हें शराब परोसने के लिए रह गई। रानी और राक्षस राजा पति-पत्नी की तरह एक-दूसरे से बातें कर रहे थे, और रानी इतनी कामुक थी कि राक्षस राजा की हड्डियां नरम पड़ गईं और नसें सुन्न हो गईं। दुर्भाग्य से, बेचारा राक्षस रानी की कृपा का आनंद लेने के लिए इतना भाग्यशाली नहीं था।

दरअसल, यह "बिना किसी बात के खुशी मनाने" जैसा मामला था, जैसे कोई बिल्ली पेशाब के बुलबुले को काट रही हो।

कुछ देर बातचीत और हंसी-मजाक के बाद रानी ने पूछा, "क्या खजाने को कोई नुकसान पहुंचा है, महाराज?"

“ये खजाने बहुत-बहुत पहले बनाए गए थे,” राक्षस राजा ने कहा, “इसलिए इन्हें नुकसान पहुंचना नामुमकिन था। बस इतना हुआ कि चोर ने घंटियों को ढकने वाली रुई फाड़ दी और तेंदुए की खाल का आवरण जल गया।”

"उन्हें कहाँ रखा गया है?" रानी ने पूछा।

“इसकी कोई ज़रूरत नहीं,” दानव राजा ने उत्तर दिया। “मैं इन्हें अपनी कमर पर रखता हूँ।” यह सुनकर, वसंत ऋतु की अप्सरा ने उसके कुछ बाल नोच लिए, उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में चबाया, दानव राजा के पास रेंगकर गई, बालों के टुकड़ों को दानव के शरीर पर रखा, तीन जादुई साँसें छोड़ीं, बहुत धीरे से “बदलो!” कहा, और बालों के टुकड़ों को तीन घिनौने कीड़ों में बदल दिया: जूँ, पिस्सू और खटमल। वे सभी दानव राजा के शरीर पर टूट पड़े और उसकी त्वचा को बेतहाशा काटने लगे। असहनीय खुजली से परेशान होकर, दानव राजा ने जलन को दूर करने के लिए अपने हाथों को अपने कपड़ों के अंदर डाला। उसने कुछ जूँओं को अपनी उंगलियों के बीच पकड़ा और

उन्हें करीब से देखने के लिए एक दीपक के पास ले गया।
जब रानी ने उन्हें देखा तो उसने उपहासपूर्वक कहा, "महाराज, आपकी कमीज जरूर गंदी होगी। ऐसा लगता है जैसे इसे सदियों से धोया ही नहीं गया है। मुझे लगता है इसीलिए ये लोग यहाँ हैं।"
"मैंने पहले कभी ऐसे कीड़े नहीं देखे," उसने शर्मिंदा होकर कहा। "आज रात तो मुझे खुद को मूर्ख साबित करना ही पड़ेगा।"
"महाराज, आपका क्या मतलब है, खुद को मूर्ख बनाना?" रानी ने मुस्कुराते हुए कहा।
"कहावत है, सम्राट के भी तीन शाही जूं होते हैं। कपड़े उतारिए, मैं उन्हें आपके लिए पकड़ लूंगी।" दानव राजा ने सचमुच अपनी बेल्ट खोली और अपने कपड़े उतार दिए।
वसंत ऋतु की अप्सरा दानव राजा के बगल में खड़ी थी और कपड़ों की हर परत के बीच उछलते हुए पिस्सूओं को ध्यान से देख रही थी, जिन पर खटमलों की कतारें थीं। जूँ और उनके अंडे चींटियों की तरह एक-दूसरे से सटे हुए थे, जैसे चींटियाँ अपने घोंसले से निकल रही हों। जब दानव राजा ने कपड़ों की तीसरी परत उतारी और अपना शरीर दिखाया, तो सोने की घंटियाँ भी अनगिनत कीड़ों से भरी हुई थीं।
"महाराज," नकली वसंत सुंदरी ने कहा, "मुझे घंटियाँ दे दीजिए ताकि मैं उन पर लगे जूँ पकड़ सकूँ।" दानव राजा शर्म और भय से इतना व्याकुल हो गया कि उसने वसंत सुंदरी को तीनों घंटियाँ सौंप दीं, यह ध्यान दिए बिना कि वह एक धोखेबाज थी।
नकली वसंत सुंदरी ने घंटियाँ उठाईं और जूँ पकड़ने का लंबा नाटक किया। जब उसने देखा कि दानव राजा अपने कपड़े झाड़ने के लिए नीचे देख रहा है, तो उसने सोने की घंटियाँ छिपा दीं, एक बाल निकाला और उससे असली घंटियों जैसी तीन और घंटियाँ बना दीं, जिन्हें वह जाँचने के लिए दीपक के पास ले गई।
अध्याय 71

फिर वह छटपटाने लगी, खुद को संभाला, जूँ, खटमल और पिस्सू वापस अपने शरीर पर लगा लिए और नकली घंटियाँ राक्षस को लौटा दीं। उसने घंटियाँ ले लीं, लेकिन अभी भी इतना भ्रमित था कि वह यह नहीं देख पाया कि वे नकली थीं। दोनों हाथों से घंटियाँ रानी को देते हुए उसने कहा, "अब इन्हें रख दो, लेकिन इनका बहुत ध्यान रखना, पहले की तरह नहीं।" रानी ने घंटियाँ लीं, चुपचाप संदूक खोला, उन्हें अंदर रखा

और सोने के ताले से बंद कर दिया। फिर उसने राक्षस राजा के साथ कई और प्याले शराब पी।

"हाथीदांत के पलंग से धूल झाड़कर उसे साफ करो," उसने नौकरानियों को आदेश दिया, "और जटाधारी रजाई बिछाओ। महाराज और मैं सोने जा रहे हैं।"

राक्षस राजा ने धन्यवाद व्यक्त किया, लेकिन कहा, "मेरी ऐसी किस्मत नहीं है। मैं तुम्हारे साथ जाने की हिम्मत नहीं कर सकता। मैं महल की किसी स्त्री को अपने साथ ले जाऊंगा और महल के पश्चिमी भाग में जाकर सो जाऊंगा। आपको अकेले में शुभ रात्रि, महोदया।" इतना कहकर वे दोनों सोने चले गए, और इसके बारे में आगे कुछ नहीं कहा जाएगा।

इसी बीच, सफल नकलची स्प्रिंग ब्यूटी ने खजाने को अपनी बेल्ट में रखा और वापस बंदर बन गई। उसने खुद को झटककर नींद के कीड़े को वापस लिया और महल के सामने की ओर चल पड़ा, जहाँ लाठियाँ और घंटियाँ एक साथ बज रही थीं, जो तीसरे पहर का संकेत दे रही थीं। शानदार बंदर ने अपने हाथों से एक मंत्र बनाकर और उसके शब्द बोलकर खुद को अदृश्य कर लिया। सीधे द्वार पर जाकर उसने देखा कि वे बहुत मजबूती से बंद और कुंडी लगे हुए थे, इसलिए उसने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी निकाली, उसे दरवाजे की ओर किया और ताला खोलने का जादू किया। द्वार आसानी से खुल गए।

जल्दी से बाहर निकलकर वह फाटक के पास खड़ा हो गया और अपनी पूरी ताकत से दो-तीन बार चिल्लाया, "दुष्ट तारा मिलानकर्ता, हमारी स्वर्णिम रानी को हमें वापस दे दो।"

इससे सभी शैतान चौंक गए और दौड़कर देखने लगे तो पाया कि द्वार खुले हुए थे। वे जल्दी से दीपक लेकर ताले ढूंढने और द्वारों को फिर से बंद करने के लिए निकल पड़े। उनमें से कई को वापस अंदर जाकर सूचना देने के लिए भेजा गया।

"महामहिम, मुख्य द्वार के बाहर कोई आपका नाम पुकार रहा है और स्वर्णिम रानी की मांग कर रहा है।"

दासी लड़कियाँ जल्दी से बाहर आईं और बहुत धीरे से बोलीं, "चिल्लाना बंद करो। महाराज अभी-अभी सोए हैं।" बंदर ने फिर से द्वार पर ज़ोर से चिल्लाया, लेकिन नन्हे शैतानों ने फिर भी अपने स्वामी को परेशान करने की हिम्मत नहीं की। ऐसा तीन-चार बार हुआ, लेकिन वे कभी अंदर जाकर शिकायत नहीं की। महान ऋषि भोर तक शोर

मचाते रहे, जब तक कि उनका धैर्य टूट नहीं गया और उन्होंने लोहे की लाठी से द्वारों पर प्रहार किया। इससे छोटे-बड़े सभी राक्षस इतने भयभीत हो गए कि उनमें से कुछ ने द्वारों पर मोर्चाबंदी कर ली, जबकि अन्य शिकायत करने के लिए अंदर चले गए।
जैसे ही दानव राजा जागा और उसने कर्कश शोर सुना, वह उठा, कपड़े पहने और अपने पलंग के पर्दों से बाहर निकलकर पूछा, "यह सब शोर किस बात का है?"
घुटनों के बल बैठी दासी लड़कियों ने कहा, "महोदय की रात से गुफा के बाहर कोई चिल्ला रहा है और गालियां दे रहा है। हमें नहीं पता कि वह कौन है। अब वह द्वार पर हमला कर रहा है।"
जैसे ही दानव राजा महल के द्वार से बाहर निकला, कई घबराए हुए छोटे शैतान उसके सामने प्रकट हुए और उसे प्रणाम करते हुए बोले, "बाहर कोई चिल्ला रहा है और गालियां दे रहा है। वह स्वर्ण रानी को मांग रहा है, और अगर हम ज़रा सा भी 'ना' कहते हैं तो वह हम पर लगातार चिल्लाता रहता है और भयानक गालियां देता है। जब महाराज भोर होने तक भी बाहर नहीं आए तो वह इतना हताश हो गया कि उसने द्वारों पर हमला करना शुरू कर दिया।"
“इन्हें मत खोलो,” दानव राजा ने कहा। “जाओ और उससे पूछो कि वह कहाँ से आया है और उसका नाम क्या है। जितनी जल्दी हो सके मुझे बता दो।”
वे छोटे शैतान जल्दी से फाटकों के अंदर से पूछने के लिए दौड़ पड़े, "आप कौन हैं, जो हमारे द्वार पर दस्तक दे रहे हैं?"

"मैं तुम्हारा दादा हूँ, जिसे पुरपुरिया ने स्वर्ण रानी को उसके अपने देश वापस ले जाने के लिए भेजा है," बंदर ने उत्तर दिया।
जब उन छोटे शैतानों ने यह सुना तो उन्होंने इसकी सूचना दानव राजा को दी, जो हमलावर के आने का कारण जानने के लिए रानी से पूछताछ करने के लिए पीछे के निवास कक्ष में वापस चला गया।
रानी अभी उठी ही थी और उसने अभी अपने बाल भी नहीं संवारे थे और न ही स्नान किया था कि दासी लड़कियां रिपोर्ट करने के लिए अंदर आ गईं।
"महामहिम यहाँ हैं।" रानी ने जल्दी से अपने कपड़े ठीक किए और अपने काले बालों

को खुला छोड़ दिया और उनका अभिवादन करने के लिए बाहर चली गईं।
वह अभी बैठा ही था और उसने उससे कोई सवाल नहीं पूछा था कि तभी नन्हे शैतानों की आवाजें फिर से सुनाई देने लगीं।
"वहाँ से ग्रैंड पार ने सारे गेट तोड़ दिए हैं।"
"महाराज, आपके देश में कितने अधिकारी हैं?" राक्षस राजा ने मुस्कुराते हुए पूछा।
"महल के अंदर घुड़सवार और पैदल सेना की अड़तालीस टुकड़ियाँ और एक हजार कुशल अधिकारी हैं; और सीमाओं पर असंख्य मार्शल और कमांडर तैनात हैं," रानी ने उत्तर दिया।
“क्या उनमें से किसी का नाम ग्रैंड पार है?” राक्षस राजा ने पूछा। “जब मैं महल में थी, तो मुझे केवल भीतरी कमरों में महाराज की सेवा करने और हर सुबह-शाम रानियों और रखैलियों को निर्देश देने का ही काम आता था,” रानी ने कहा। “बाहर तो अनगिनत घटनाएँ घट रही थीं। भला मैं उनके नाम कैसे याद रख सकती थी?”
“यह खुद को ग्रैंड पार कहता है,” दानव राजा ने उत्तर दिया। “मुझे सौ उपनामों की किताब में ऐसा कोई नाम याद नहीं आ रहा। आप बहुत बुद्धिमान और उच्च कुल की महिला हैं, महोदया, और आप एक शाही महल में रह चुकी हैं। आपने बहुत सारी किताबें पढ़ी होंगी। क्या आपको उनमें से किसी में यह नाम याद है?”
"हजार शब्दों के क्लासिक ग्रंथ में एक अंश है, जिसमें लिखा है, 'महान शिक्षा प्राप्त की'," रानी ने उत्तर दिया। "मुझे लगता है कि यह उन्हीं के बारे में है।"
"मुझे पूरा यकीन है कि तुम सही हो," दानव राजा ने प्रसन्नता से कहा, "मुझे पूरा यकीन है कि तुम सही हो।" फिर वह उठा, रानी से विदा ली, खाल उतारने वाले मंडप में गया, अपना कवच ठीक से पहना, अपने दानव सैनिकों को इकट्ठा किया, द्वार खुलवाए और अपने फूल बिखेरने वाले युद्ध-कुल्हाड़ी को हाथ में लेकर सीधे बाहर चला गया।
"पुरपुरिया का ग्रैंड पार कौन है?" उसने अपनी पूरी आवाज में चिल्लाते हुए कहा।
अपने दाहिने हाथ में सोने की पट्टी वाली गदा पकड़े और बाएं हाथ से इशारा करते हुए बंदर ने उत्तर दिया, "भतीजे, तुम मुझ पर क्यों चिल्ला रहे हो?" उसे देखकर राक्षस राजा क्रोधित हो उठा।
"तुम्हें धिक्कार है!" उसने चिल्लाकर कहा।
तुम्हारा चेहरा बिल्कुल बंदर जैसा है;

तुम बंदर जैसे दिखते हो।
भूत का रूप ऐसा होता है जैसे आप दिखते हों;
मुझे पीछे धकेलने की कोशिश मत करो।
अध्याय 71
988
पश्चिम की यात्रा
"बेशर्म शैतान," बंदर हँसते हुए बोला, "अपने से बड़ों को धमकाने और अपने मालिक को धौंस जमाने की कोशिश कर रहे हो। तुम अंधे हो। मुझे याद है जब मैंने पाँच सौ साल पहले स्वर्ग में तबाही मचाई थी, तब नौं स्वर्ग के सेनापति मुझसे बड़े सम्मान से बात करने की हिम्मत करते थे। अगर मैं तुम्हें दादाजी कहने पर मजबूर करूँ, तो मैं तुम्हें आसानी से छोड़ दूँगा।"
"तुरंत अपना नाम बताओ," दानव राजा चिल्लाया। "तुम्हारे पास कौन से युद्ध कौशल हैं जो तुम्हें यहाँ उत्पात मचाने की हिम्मत देते हैं?"
"तुम्हारे लिए अच्छा होता कि तुम मुझसे मेरा नाम न पूछते," बंदर ने उत्तर दिया। "लेकिन चूंकि तुम मुझसे नाम जानने की जिद कर रहे हो, मुझे डर है कि तुम एक बड़ी मुसीबत में पड़ जाओगे। इधर आओ और स्थिर खड़े रहो जब तक मैं तुम्हें बताता हूँ:
स्वर्ग और पृथ्वी मेरे माता-पिता थे जिन्होंने मुझे जन्म दिया;
मेरे गर्भ का निर्माण सूर्य और चंद्रमा के सार से हुआ था।
वह जादुई पत्थर अनगिनत वर्षों तक गर्भवती रहा;
उस चमत्कारी जड़ का विकास वास्तव में विचित्र था।
जब मेरा जन्म हुआ था तब तीनों सकारात्मक तत्व अपने चरम पर थे;
अब मेरा धर्म परिवर्तन हो चुका है, सब कुछ सामंजस्य में है।
एक बार मुझे सभी राक्षसों का मुखिया घोषित कर दिया गया था,
जिसने लाल चट्टान के किनारे मुझे राक्षसों का वध करने वाले के रूप में प्रणाम किया।
जेड सम्राट ने एक समन जारी किया।
और वह विशाल श्वेत ग्रह इस फरमान के साथ आया,
मुझे स्वर्ग में अपना पदभार ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करते हुए,
लेकिन घोड़ों के रक्षक के रूप में मुझे कोई खुशी नहीं मिली।
जब मैंने पहली बार अपनी पहाड़ी गुफा में विद्रोह की योजना बनाई थी

मैंने साहसपूर्वक अपनी सेनाओं का नेतृत्व करते हुए जेड सम्राट के विरुद्ध आक्रमण किया।
पैगोडा को धारण किए हुए स्वर्ग के राजा और राजकुमार नेझा
जब उन्होंने मुझसे लड़ाई की तो वे पूरी तरह से असहाय थे।
फिर व्हाइट प्लेन्स ने एक नया सुझाव दिया,
और एक और फरमान लेकर आया जिसमें मुझसे शांति स्थापित करने का आग्रह किया गया था।
मुझे स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि बनाया गया था।
और इसे राज्य के स्तंभों में से एक घोषित किया गया।
अध्याय 71
989
पश्चिम की यात्रा
क्योंकि मैंने आड़ुओं की दावत में खलल डाला था
और नशे में धुत होकर मैंने अमृत चुरा लिया, जिसके कारण मुझे विपत्ति का सामना करना पड़ा।
लॉर्ड लाओ ज़ी ने स्वयं एक ज्ञापन प्रस्तुत किया।
और पश्चिम की महारानी ने सिंहासन को सम्मानपूर्वक प्रणाम किया।
यह जानते हुए कि मैं कानून का उल्लंघन कर रहा था,
उन्होंने दिव्य शक्तियों को एकत्रित किया और आगे बढ़ने के आदेश जारी किए।
एक लाख दुष्ट तारे और दुष्ट ग्रह
वे अपनी तलवारों और भालों के साथ घनी पंक्ति में खड़े थे।
आकाश और पृथ्वी के जाल पर्वत पर फैले हुए थे।
जैसे ही सभी सैनिकों ने एक साथ अपने हथियार उठाए।
भीषण लड़ाई के बाद किसी भी पक्ष को जीत नहीं मिली।
इसलिए गुआनयिन ने योद्धा एरलांग की सिफारिश की।
हम दोनों ने वर्चस्व हासिल करने के लिए एक साथ संघर्ष किया;
प्लम हिल से आए सात भाइयों ने उनकी मदद की।
हममें से प्रत्येक ने नायक की भूमिका निभाई और अपना-अपना रूपांतरण किया:
स्वर्ग के द्वार पर स्थित तीनों ऋषियों ने बादलों को खोल दिया।

तब लॉर्ड लाओ ज़ी ने अपना हीरे का फंदा नीचे गिरा दिया।
और देवता मुझे एक कैदी की तरह सिंहासन-कक्ष की सीढ़ियों तक ले गए।
उन्होंने विस्तृत अभियोग तैयार करने की जहमत ही नहीं उठाई:
सजा हजार टुकड़ों में काटकर मौत देने की थी।
कुल्हाड़ी और हथौड़ा मुझे जोत नहीं सके।
और मुझे तलवार या कृपाण से कोई चोट नहीं आई।
न तो यहाँ आग थी और न ही वहाँ बिजली गिर रही थी;
उनके पास मेरे अमर शरीर को नष्ट करने का कोई तरीका नहीं था।
मुझे सुरक्षाकर्मियों के साथ तुशिता हेवन ले जाया गया।
और मुझे भट्टी में शुद्ध करने के लिए सब कुछ व्यवस्थित किया गया था।
अध्याय 71
990
पश्चिम की यात्रा
पूरा समय समाप्त होने पर ही उन्होंने बर्तन खोला।
और मैं उस भट्टी के बीचोंबीच से उछलता हुआ बाहर आया।
मेरे हाथों में यह 'जैसा चाहो' वाला डंडा था।
जैसे ही मैं कलाबाजी करते हुए जेड सम्राट के सिंहासन तक पहुंचा।
सभी तारे और तारामंडल छिप गए।
और मैं स्वर्ग के महलों में विध्वंसक की भूमिका निभा सकता था।
चमत्कारिक अन्वेषक ने बुद्ध को आमंत्रित करने के लिए तुरंत कदम बढ़ाया।
तब शाक्यमुनि और मैंने दोनों ने अपनी शक्तियों का प्रदर्शन किया।
मैं उसकी हथेली पर कलाबाजियां करतब दिखा रहा था
वापस लौटने से पहले मैंने पूरे आकाश में विचरण किया।
फिर बुद्ध ने दूरदर्शिता और छल दोनों का प्रयोग करते हुए,
मुझे कुचलकर आकाश के छोरों पर थाम लिया।
पांच सौ वर्षों से अधिक की अवधि के बाद
मेरा शरीर वापस मिल गया और मैं एक बार फिर से खुलकर खेल सकता था।
पश्चिम की यात्रा पर तांग पुजारी की रक्षा करते हुए,
भाई सन वुकॉन्ग बहुत बुद्धिमान हैं।

मैं पश्चिम की ओर जाने वाले मार्ग पर राक्षसों को वश में करता हूँ:
हर दुष्ट आत्मा भयभीत हो जाती है।
जब दानव राजा ने सुना कि वह सुन वुकॉन्ग है, तो उसने कहा, "तो तुम वही हो जिसने स्वर्ग में उत्पात मचाया था। अगर तुम्हें तांग पुजारी की पश्चिम यात्रा में रक्षा के लिए भेजा गया था, तो तुम्हें वहीं होना चाहिए था। तुम क्यों बेवजह मेरे मामलों में दखल दे रहे हो और मेरे लिए मुसीबत खड़ी कर रहे हो? तुम तो मानो पुरपुरिया के गुलाम हो। यहाँ आकर तुमने अपना जीवन व्यर्थ कर दिया है।"
“चोर, दुष्ट राक्षस!” बंदर चिल्लाया। “तुम्हें कुछ पता नहीं। मुझे पुरपुरिया के राजा ने विनम्रतापूर्वक मदद के लिए बुलाया था। उन्होंने मुझसे बहुत सम्मानपूर्वक बात की और मेरा भला किया। मैं उस राजा से हज़ार गुना ऊँचा हूँ। उन्होंने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया मानो मैं उनके माता-पिता या कोई देवता हूँ। तुम कैसे कह सकते हो कि मैं गुलाम की तरह व्यवहार कर रहा हूँ? मैं तुम्हें सबक सिखाऊँगा, राक्षस, अपने बड़ों को धमकाने और अपने मालिक को धौंस जमाने की कोशिश करने के लिए। यहीं रहो और अपने दादाजी से यह लो।” फिर राक्षस ने अपने हाथ-पैर जितनी तेज़ी से चला सकता था, चलाए, लाठी के वार से बचा और अपने फूल बिखेरने वाली कुल्हाड़ी से भाई बंदर के चेहरे पर वार किया। यह एक ज़बरदस्त लड़ाई थी। बस देखते रहो!
अध्याय 71
991
पश्चिम की यात्रा
सोने की पट्टी वाली 'जैसा चाहो' लाठी,
फूल बिखेरने वाली कुल्हाड़ी और उसका हवा से तेज होने वाला ब्लेड।
एक ने भयंकर क्रूरता से अपने दांत पीसे;
दूसरे ने अपने दाँत पीसे और अपनी ताकत का प्रदर्शन किया।
उनमें से एक थे स्वर्ग के समान महान ऋषि, जो पृथ्वी पर अवतरित हुए थे।
दूसरा एक दुष्ट दानव राजा है जो पाताल लोक में आया है।
दोनों ने बादलों और चमकदार धुंध को बाहर निकाला जिसने स्वर्गिक महल को रोशन कर दिया।
उसने पत्थर और रेत उड़ाकर भेजे जिससे सप्तम तारामंडल दिखाई नहीं दिया।
वे अनेक आंदोलनों में आए और चले गए।

मुड़ते-घूमते हुए और सुनहरी रोशनी बिखेरते हुए।
प्रत्येक ने अपनी सभी प्रतिभाओं का भरपूर उपयोग किया;
दोनों ने अपनी पूरी जादुई शक्ति दांव पर लगा दी।
एक व्यक्ति रानी को वापस राजधानी ले जाना चाहता था;
दूसरी लड़की खुशी-खुशी उसके साथ गुफा में ही रहना चाहती थी।
इस संघर्ष का कोई गहरा कारण नहीं था:
वह राजा की खातिर अपनी जान देने को तैयार था।
जब दोनों के बीच पचास दौर तक कोई नतीजा नहीं निकला, तो दानव राजा को एहसास हुआ कि बंदर उससे कहीं अधिक शक्तिशाली योद्धा है और वह उसे हरा नहीं सकता। लोहे के डंडे को कुल्हाड़ी से रोकते हुए दानव ने कहा, "रुको, नौसिखिए सूर्य। मैंने आज नाश्ता नहीं किया है। मुझे खाने दो, फिर मैं तुमसे मुकाबला करूँगा।"
बंदर भली-भांति जानता था कि उसे घंटियाँ लानी हैं, इसलिए उसने अपना डंडा एक तरफ रख दिया और कहा, "एक नायक थके हुए खरगोश का पीछा नहीं करता। जाओ। अच्छा भोजन करो, और वापस आकर मरने के लिए तैयार हो जाओ।"
राक्षस झट से मुड़ा और अंदर की ओर भागा, जहाँ उसने रानी से कहा, "मुझे मेरा खजाना तुरंत लाकर दो।"
"किसलिए?" उसने पूछा।
“आज सुबह मुझे युद्ध के लिए चुनौती देने वाला व्यक्ति उस भिक्षु का शिष्य था जो धर्मग्रंथ लाने जा रहा है,” उसने कहा। “उसका नाम सन वुकॉन्ग है, या सन द नोविस, और ग्रैंड पार तो बस उसका उपनाम था। मैं इतने समय से उससे लड़ रहा हूँ, लेकिन अभी तक कोई नतीजा नहीं निकला है। बस इंतज़ार करो, मैं अपने खजाने निकालता हूँ और उस बंदर को जलाने के लिए धुआँ और आग लगाता हूँ।” इन शब्दों ने रानी को बहुत बेचैन कर दिया। अगर वह अध्याय 71 नहीं पढ़ती तो...

घंटियाँ लाने के लिए, उसे डर था कि कहीं उसे शक न हो जाए, लेकिन अगर उसने ऐसा किया तो उसे डर था कि नौसिखिया सन मारा जाएगा। जब वह हिचकिचा रही थी, तभी दानव राजा ने उसे फिर से कहा: "जल्दी करो और उन्हें ले आओ।" उसके पास ताला खोलने, तीनों घंटियाँ बाहर लाने और दानव राजा को सौंपने के अलावा

कोई चारा नहीं था। राजा ने घंटियाँ लीं और गुफा के बाहर चला गया। रानी भीतरी कक्ष में बैठी रही, उसकी आँखों से बारिश की तरह आँसू बह रहे थे, क्योंकि वह सोच रही थी कि बंदर शायद ही अपनी जान बचा पाएगा। उन दोनों को यह एहसास नहीं था कि घंटियाँ केवल नकली थीं।

गुफा से बाहर निकलते ही राक्षस हवा की दिशा में खड़ा हो गया और चिल्लाया, "वहीं रहो, नौसिखिया सूर्य। देखो, मैं ये घंटियाँ बजाता हूँ।"

“तुम्हारे पास घंटियाँ हैं, तो मेरे पास क्यों नहीं होनी चाहिए?” बंदर ने उत्तर दिया। “तुम अपनी घंटियाँ बजा सकते हो, तो मैं अपनी क्यों नहीं बजा सकता?”

"तुम्हारे पास कौन-कौन सी घंटियाँ हैं?" राक्षस राजा ने पूछा। "मुझे दिखाओ।" बंदर ने अपने लोहे के डंडे को दबाकर कढ़ाई की सुई बना ली और उसे अपने कान में फंसा लिया, फिर अपनी कमर से तीन असली खजाने निकाले।

"ये रही मेरी बैंगनी सोने की घंटियाँ," उसने दानव राजा से कहा। उन्हें देखकर दानव को गहरा सदमा लगा।

"ये तो अजीब बात है," उसने सोचा, "बहुत अजीब। उसकी घंटियाँ बिल्कुल मेरी घंटियों जैसी क्यों हैं? अगर उन्हें एक ही साँचे में ढाला भी गया होता, तो भी उन्हें ठीक से चिकना नहीं किया गया होता: कुछ अतिरिक्त निशान या घुंडी गायब होने की उम्मीद तो होती ही। ये इतनी हूबहू एक जैसी कैसे हो सकती हैं?"

"तुम्हें ये घंटियाँ कहाँ से मिलीं?" उसने दोबारा पूछा।

"तुम्हारे भतीजे, तुम कहाँ से हो?" बंदर ने उत्तर दिया।

ईमानदारी से, दानव राजा ने उत्तर दिया, "मेरी ये घंटियाँ, परम पवित्रता के अमर मार्ग की गहराई से आती हैं।"

ये आठ त्रिकोण भट्टी में लंबे समय तक परिष्कृत किए गए सोने से बने हैं।

घंटियों के रूप में गढ़ा गया, जो परम खजाने के रूप में प्रसिद्ध हैं।

"लॉर्ड लाओ ज़ी द्वारा छोड़ी गई यह धरोहर आज तक मौजूद है।"

"मेरी घंटियाँ भी वहीं से आती हैं," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

"इन्हें कैसे बनाया गया?" राक्षस राजा ने पूछा।

"ये मेरी घंटियाँ हैं," बंदर ने कहा।

"ये भट्टी में परिष्कृत सोने से बने थे।"

अध्याय 71

जब भगवान लाओ ज़ी ने तुशिता महल में अमृत बनाया।
वे चक्रीय खजाने हैं।
दो तीन मिलकर छह होते हैं:
मेरे वाले मादा हैं और तुम्हारे वाले नर हैं।"
"ये घंटियाँ सुनहरे अमृत के खजाने हैं," दानव राजा ने कहा, "ये पक्षी या जानवर नहीं हैं। ये नर या मादा नहीं हो सकते।"
जब तक उन्हें बजाने पर उनसे कोई कीमती चीज मिलती है, तब तक वे अच्छे हैं।"
“शब्दों से कुछ सिद्ध नहीं होता,” बंदर ने कहा। “कर्मों से सिद्ध करो। पहले अपनी घंटी बजाकर दिखाओ।” तब राक्षस राजा ने अपनी पहली घंटी तीन बार बजाई। आग नहीं निकली। उसने दूसरी घंटी तीन बार बजाई। धुआँ नहीं निकला। उसने तीसरी घंटी तीन बार बजाई, और रेत भी नहीं निकली।
"बहुत अजीब," उसने बेतहाशा इशारे करते हुए कहा, "बहुत अजीब। दुनिया बदल गई है। ये घंटियाँ ज़रूर किसी महिला के दबाव में चलती होंगी।"
जब नर मादाओं को देखते हैं तो वे अपनी हरकतें करने की हिम्मत नहीं करते।
“रुको, भतीजे,” बंदर ने कहा। “अब मैं अपनी घंटियाँ हिलाकर तुम्हें दिखाता हूँ कि क्या होता है।” उस शानदार बंदर ने तीनों घंटियाँ एक हाथ में पकड़ीं और उन्हें एक साथ बजाया। देखो, लाल लपटों, काले धुएँ और पीली रेत के बादल उमड़ पड़े, जिससे पेड़ और पहाड़ आग की लपटों में घिर गए। फिर बंदर ने एक और मंत्र बोला और दक्षिण-पूर्व की ओर “हवा!” चिल्लाया; और सचमुच एक हवा चली जिसने लपटों को और भड़का दिया। हवा की शक्ति से लपटें और धुआँ आकाश में भर गए, धधकते लाल और गहरे काले रंग में, और धरती पीले रेत के तूफान से ढक गई। दुष्ट तारा गूंथने वाले की आत्माएँ भय से उसके शरीर से निकल गईं, लेकिन उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी: उस आग के बीच अपनी जान बचाकर भागने का कोई रास्ता नहीं था।
तभी आकाश में एक तीखी आवाज सुनाई दी: "सन वुकॉन्ग, मैं यहाँ हूँ।" बंदर ने झट से ऊपर देखा और पाया कि बोधिसत्व गुआनयिन अपने बाएं हाथ में शुद्ध जल का कलश और दाएं हाथ में विलो की एक टहनी लिए खड़ी थीं, जिससे वे मीठी ओस

छिड़ककर आग बुझा रही थीं। घबराकर बंदर ने अपनी कमर में बंधी घंटियाँ छुपा लीं, हथेलियों को जोड़कर प्रणाम किया। बोधिसत्व ने विलो की टहनी से मीठी ओस की कुछ बूँदें छिड़कीं और पल भर में आग और धुआँ दोनों गायब हो गए, और पीली रेत का कोई नामोनिशान नहीं बचा।

“हे परम दयालु, मुझे यह एहसास नहीं था कि आप नश्वर संसार में आ रहे हैं,” बंदर भाई ने प्रणाम करते हुए कहा, “और आपसे दूर न रहना मेरी गलती थी। क्या मैं यह पूछने का साहस कर सकता हूँ कि आप कहाँ जा रहे हैं, बोधिसत्व?”

बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "मैं विशेष रूप से इस दुष्ट राक्षस को ढूंढकर पकड़ने के लिए यहाँ आया हूँ।"

"उस राक्षस का इतिहास क्या है, और वह आपको इतनी तकलीफ क्यों दे रहा है कि आप अपने इस प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के बावजूद उसे पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं?" बंदर ने पूछा।

बोधिसत्व ने उत्तर दिया, “वह सुनहरे बालों वाला एक विशालकाय कुत्ता है जिस पर मैं सवारी किया करता था। उसकी देखभाल करने वाला लड़का सो गया और उसकी ठीक से रखवाली नहीं कर पाया, जिसके कारण उस दुष्ट जानवर ने लोहे की जंजीरों को काटकर भाग निकला और पुरपुरिया के राजा को विपत्ति से बचाया।”

यह सुनकर बंदर ने जल्दी से झुककर कहा, "बोधिसत्व, आप बात को गलत समझ रहे हैं। वह राजा और उसकी रानी के साथ दुर्व्यवहार कर रहा है, जिससे जन नैतिकता को ठेस पहुँच रही है। तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि उसने राजा को विपत्ति से बचाया है, जबकि वास्तव में उसने ही राजा पर विपत्ति लाई है?"

बोधिसत्व ने उत्तर दिया, "तुम्हें यह ज्ञात नहीं होगा कि जब पुरपुरिया का पूर्व राजा शासन कर रहा था और वर्तमान राजा युवराज था तथा उसने अभी सिंहासन ग्रहण नहीं किया था, तब वह एक उत्कृष्ट धनुर्धर और शिकारी था।"

एक बार राजा अपने आदमियों और घोड़ों को बाज़ और शिकारी कुत्ते के साथ शिकार पर ले गए। वे गिरे हुए फीनिक्स ढलान पर पहुँचे, जहाँ पश्चिम में बुद्ध की माता, बोधिसत्व मौर्य विद्या रानी के दो बच्चे, एक युवा मोर और मोरनी विश्राम कर रहे थे।

राजा ने जब धनुष से तीर चलाया तो मोर घायल हो गया, जबकि मोरनी तीर लगने से मर गई। बुद्ध की माता को जब अपनी गलती का एहसास हुआ तो उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए आदेश दिया कि राजकुमार को तीन साल के लिए अपनी पत्नी से अलग कर दिया जाए और उसे उसी तरह कष्ट सहना पड़े जैसे पक्षी अपने साथी से बिछड़ने पर सहते हैं। उस समय मैं उस शिकारी कुत्ते पर सवार था और हम दोनों ने उन्हें यह कहते हुए सुना। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह जानवर इसे याद रखेगा और रानी के साथ दुर्व्यवहार करने के लिए वापस आएगा और इस प्रकार राजा को विपत्ति से बचाएगा।

यह तीन साल पहले की बात है, और अब जब उस अपराध का प्रायश्चित हो चुका है, तो सौभाग्यवश आप राजा का इलाज करने के लिए आ गए। मैं यहाँ उस दुष्ट और दुष्ट प्राणी को वापस लाने आया हूँ।

“बोधिसत्व,” बंदर ने कहा, “ऐसा हो सकता है, लेकिन उसने रानी को अपवित्र किया है, सार्वजनिक नैतिकता को ठेस पहुँचाई है, नीतिशास्त्र का उल्लंघन किया है और कानून तोड़ा है। आप उसे मृत्युदंड के अलावा किसी और सजा से नहीं छोड़ सकते। मुझे उसे बीस कोड़े मारने दीजिए, फिर मैं उसे आपके हवाले कर दूंगा ताकि आप उसे वापस ले जा सकें।”

बोधिसत्व ने कहा, "वुकोंग, जैसा कि तुम जानते हो कि मैं यहाँ हूँ, तुम्हें वास्तव में मुझे वह सम्मान देना चाहिए जिसका मैं हकदार हूँ और उसे पूरी तरह से बख्श देना चाहिए। यह अभी भी एक राक्षस को वश में करने में तुम्हारी सफलताओं में से एक है। अगर तुम उसे अपने गदा से मारोगे तो वह मर जाएगा।"

बंदर अवज्ञा करने का साहस नहीं कर सका, इसलिए उसने झुककर कहा, "यदि आप उसे अपने साथ समुद्र में वापस ले जा रहे हैं, बोधिसत्व, तो उसे भागने और फिर से मानवलोक में आने न दें। यह एक बहुत बड़ी आपदा होगी।"

तभी बोधिसत्व ने पुकार कर कहा, "दुष्ट राक्षस! अपने असली रूप में लौट आओ! किस बात का इंतज़ार कर रहे हो?" राक्षस लुढ़कते हुए अपने असली रूप में लौट आया। फिर उसने बोधिसत्व को अपनी पीठ पर सवार होने के लिए अपने बाल झटक दिए। बोधिसत्व ने अपनी गर्दन पर नज़र डाली तो पाया कि तीन सोने की घंटियाँ गायब थीं। "वुकोंग," उसने कहा, "मेरी घंटियाँ वापस दे दो।"

"मुझे नहीं पता वे कहाँ हैं," मंकी ने कहा।

बोधिसत्व चिल्लाए, "चोर बंदर! अगर तुमने वो घंटियाँ न चुराई होतीं तो दस सन वुकॉन्ग भी उसके पास जाने की हिम्मत नहीं करते, एक की तो बात ही छोड़ो। उन्हें तुरंत लौटा दो।"
"मैंने उन्हें सचमुच नहीं देखा है," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
"तो फिर मुझे बंधन कसने वाला मंत्र पढ़ना पड़ेगा," बोधिसत्व ने कहा।
इससे बंदर डर गया और बस इतना ही कह सका, "ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो। घंटियाँ यहाँ हैं।" यह वाकई एक अजीबोगरीब स्थिति थी।
उस विशालकाय कुत्ते के गले से घंटियाँ कौन खोल सकता था?
यह जानने के लिए, उस व्यक्ति से पूछें जिसने उन्हें सबसे पहले बांधा था।
फिर बोधिसत्व ने विशालकाय कुत्ते के गले में घंटियाँ बाँध दीं और अपने ऊँचे सिंहासन पर उड़ गईं। देखिए कैसे...
अध्याय 71
995
पश्चिम की यात्रा
चार डंठलों वाले कमल के फूल आग की लपटों से जगमगा उठे;
उसका पूरा शरीर सोने के कपड़े से मोटा ढका हुआ था।
हम इस बारे में और कुछ नहीं कहेंगे कि महान दयालु ईश्वर दक्षिणी महासागर में कैसे लौट गए।
महान ऋषि सन वुकॉन्ग ने अपने वस्त्र समेटे और लोहे का डंडा लहराते हुए सींग वाले राक्षस गेव पर टूट पड़े और जी भर कर राक्षसों को मारते चले गए। उन्होंने महल के भीतरी कक्ष तक पहुँचते-पहुँचते सभी राक्षसों का सफाया कर दिया और स्वर्ण रानी से अपने देश लौटने का अनुरोध किया। रानी ने उनके सामने लंबे समय तक प्रणाम किया।
बंदर ने उसे बताया कि बोधिसत्व ने राक्षस को कैसे पराजित किया और वह अपने पति से क्यों अलग हो गई थी। फिर उसने कुछ मुलायम घासें इकट्ठा कीं और उन्हें आपस में मोड़कर एक लंबा सा अजगर बना दिया।
“महाराज, इस पर बैठिए और अपनी आँखें बंद कर लीजिए। डरिए मत। मैं आपको आपके स्वामी से मिलवाने के लिए दरबार ले जा रहा हूँ।” रानी ने उनके निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन किया, जबकि उन्होंने अपनी जादुई शक्ति का प्रयोग किया।

उनके कानों में हवा की सीटी की आवाज़ गूंज रही थी।
एक घंटे बाद वह उसे शहर में ले आया। अपना बादल नीचे लाते हुए उसने कहा, "अपनी आँखें खोलिए, महारानी।" जब रानी ने अपनी आँखें खोलीं और देखा तो उसने फीनिक्स की इमारतें और ड्रैगन के टावर पहचान लिए। वह बहुत खुश हुई और भूसे के ड्रैगन से उतरकर सिंहासन कक्ष की सीढ़ियाँ चढ़ गई। जब राजा ने उसे देखा तो वह सीधे अपने ड्रैगन सिंहासन से नीचे आया और रानी का जेड का हाथ थाम लिया।
वह उसे यह बताने ही वाला था कि उसने उसे कितना याद किया, तभी अचानक वह गिर पड़ा और चिल्लाने लगा: "मेरे हाथ में दर्द हो रहा है, मेरे हाथ में दर्द हो रहा है।"
"उस बेवकूफ को देखो," सुअर हंसते हुए बोला, "उसकी किस्मत खराब है। उसके लिए कोई खुशी नहीं है। जैसे ही वह उससे दोबारा मिलेगा, उसे डंक लग जाएगा।"
बंदर ने कहा, "बेवकूफ, क्या तुम उसे पकड़ने की हिम्मत करोगे?"
"अगर मैंने ऐसा किया तो क्या होगा?" सुअर ने पूछा।
“रानी का पूरा शरीर ज़हरीले कांटों से ढका हुआ है,” बंदर ने जवाब दिया, “और उसके हाथों पर भी ज़हर लगा हुआ है। तीन साल तक वह माउंट यूनिकॉर्न में दुष्ट तारा मिलानकर्ता के साथ रही, लेकिन उस राक्षस ने कभी उसे अपने वश में नहीं किया। अगर उसने किया होता, तो उसका पूरा शरीर पीड़ा से तड़प रहा होता। उसे छूने मात्र से ही उसके हाथ में दर्द होने लगता था।”
“तो फिर अब क्या किया जाए?” अधिकारियों ने पूछा। बाहरी महल में सभी अधिकारी असमंजस में थे और भीतरी महल में रानियाँ और रखैलें दहशत में थीं, तभी जेड और सिल्वर क्वीन ने अपने राजा को उठने में मदद की।
चारों ओर मची अफरा-तफरी के बीच आकाश में एक आवाज सुनाई दी, "महान ऋषि, मैं यहाँ हूँ।" बंदर भाई ने ऊपर देखा, और उसे यह दृश्य दिखाई दिया:
आकाश में उड़ते सारस की चीख,
फिर सीधे राजा के महल की ओर उड़ान भरते हुए।
अध्याय 71
996
पश्चिम की यात्रा
शुभ प्रकाश की किरणें चारों ओर फैल गईं;
चारों ओर पवित्र वाष्प के बादल छाए हुए थे।

उसके शरीर को ढकने वाले नारियल के आवरण से धुंध निकल रही थी:
वह जिन भूसे की चप्पलों पर चल रहा था, वे दुर्लभ थीं।
उसके हाथ में जो मक्खी भगाने वाला पंखा था, वह अजगर की मूंछों से बना था।
और रेशमी झालरें उसकी कमर के चारों ओर लटक रही थीं।
उन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी पर मनुष्यों के भाग्य को एक साथ जोड़ा, क्योंकि वे पूरी दुनिया में स्वतंत्र रूप से विचरण करते थे।
वह दलुओ स्वर्ग के बैंगनी बादलों के अमर थे।
आज धरती पर उतरें और एक जादू को तोड़ें।
बंदर उसके पास जाकर उससे बोला, "ज़ियांग संप्रदाय के झांग बोडुआन, आप कहाँ जा रहे हैं?"
ज़ियांग का सच्चा पुरुष हॉल के सामने आया, झुककर प्रणाम किया और उत्तर दिया, "महान ऋषि, विनम्र अमर झांग बोडुआन आपको प्रणाम करता है।"
"तुम कहाँ से आए हो?" बंदर ने उत्तर दिया।
“तीन साल पहले मैं बुद्ध सभा में जाते समय इस रास्ते से गुजरा था,” सच्चे पुरुष ने कहा। “जब मैंने देखा कि पुरपुरिया का राजा अपनी पत्नी से बिछड़ने के दर्द से पीड़ित है, तो मुझे चिंता हुई कि कहीं राक्षस रानी को अपवित्र न कर दे। यह नैतिकता का घोर अपमान होता और रानी के लिए बाद में राजा से फिर से मिलना मुश्किल हो जाता। इसलिए मैंने एक पुराने नारियल के आवरण को रंग-बिरंगे नए वस्त्र में बदल दिया और उसे राक्षस राजा को दे दिया। उसने रानी को उसे शादी के वस्त्र के रूप में पहना दिया। जैसे ही उसने उसे पहना, उसके पूरे शरीर पर जहरीले कांटे उग आए। वे नारियल का आवरण ही थे। अब जब आप सफल हो गए हैं, हे महान ऋषि, मैं जादू को हटाने आया हूँ।”
“तो फिर,” बंदर ने कहा, “इतनी दूर आने के लिए धन्यवाद। कृपया तुरंत कांटे हटा दें।” सच्चे पुरुष ने आगे बढ़कर रानी की ओर इशारा किया और नारियल का आवरण हटा दिया। रानी का शरीर एक बार फिर अपने मूल रूप में आ गया।
सच्चे पुरुष ने लबादा झटककर अपने कंधों पर डाला और बंदर से कहा, "हे महान ऋषि, यदि मैं अब जाऊं तो कृपया मुझे क्षमा कर देना।"
बंदर ने कहा, "अभी मत जाओ। राजा के धन्यवाद कहने तक प्रतीक्षा करो।"
"मैं उसे परेशान नहीं करूँगा," सच्चे पुरुष ने मुस्कुराते हुए कहा, फिर अपने हाथ

जोड़कर प्रणाम किया, आकाश में ऊपर उठे और चले गए। राजा, रानी और सभी उच्च-निम्न अधिकारी इतने चकित हुए कि उन्होंने आकाश को प्रणाम किया।

अध्याय 71

997

पश्चिम की यात्रा

प्रणाम करने के बाद राजा ने महल के पूर्वी भाग को खुलवाने का आदेश दिया ताकि चारों भिक्षुओं को धन्यवाद दिया जा सके। राजा ने अपने सभी अधिकारियों को उनके सामने घुटने टेककर प्रणाम करने का आदेश दिया और पति-पत्नी का पुनर्मिलन हुआ।

उत्सव भोज के बीच में बंदर ने कहा, "गुरुजी, युद्ध की घोषणा प्रकट कीजिए।"

आदरणीय बुजुर्ग ने उसे अपनी आस्तीन से निकाला और बंदर को सौंप दिया, जिसने उसे राजा को दे दिया।

"यह वह पत्र था जिसे राक्षसों ने उसके लेफ्टिनेंट को देने के लिए भेजा था," बंदर ने कहा। "यह वही अधिकारी था जिसे मैंने मारा था और एक ट्रॉफी के रूप में यहाँ लाया था। फिर मैंने खुद को उस अधिकारी के रूप में बदल लिया और रिपोर्ट करने के लिए गुफा में वापस चला गया। इसी तरह मैंने महारानी को देखा और सोने की घंटियाँ चुरा लीं। वह लगभग मुझे पकड़ने ही वाला था, लेकिन मैंने फिर से अपना रूप बदला, घंटियाँ दोबारा चुराईं, उन्हें बाहर निकाला और उससे लड़ाई की। यह उसके लिए सौभाग्य की बात थी कि बोधिसत्व गुआनयिन उसे लेने आईं और मुझे बताया कि आप और महारानी अलग क्यों हुए।"

उन्होंने पूरी कहानी शुरू से अंत तक विस्तार से सुनाई। देश में हर कोई—चाहे शासक हो या मंत्री, चाहे महल के अंदर हो या बाहर—ने प्रशंसा और कृतज्ञता व्यक्त की।

तांग पुरोहित ने कहा, "पहली बात तो यह है कि यह महाराज के सौभाग्य से संभव हुआ है, और दूसरी बात यह है कि यह मेरे शिष्य के प्रयासों का परिणाम है। आज के इस भव्य भोज के लिए हम आपके अत्यंत आभारी हैं, और अब हमें आपसे विदा लेनी होगी। कृपया पश्चिम की तीर्थयात्रा पर जा रहे हम जैसे गरीब भिक्षुओं को विलंबित न करें।"

जब राजा को यह अहसास हुआ कि उन्हें वहाँ रोकने के उनके प्रयास व्यर्थ होंगे, तो उन्होंने पासपोर्ट की जाँच की और उसे लौटा दिया तथा शाही रथों का एक भव्य जुलूस निकाला। तांग पुरोहित को उनके अपने ड्रैगन रथ में बैठने के लिए आमंत्रित

किया गया, जबकि राजा, उनकी रानियाँ और उनकी पत्नियाँ स्वयं रथ को धक्का देते हुए उनके विदा लेते गए। वास्तव में:
उसकी उदासी पूरी तरह से धुल जाने के लिए नियत थी:
जब विचार और चिंताएं समाप्त हो जाती हैं, तभी मन को शांति मिलती है।
यदि आपको नहीं पता कि आगे चलकर उनके लिए क्या अच्छा या बुरा होने वाला है, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 72
सात भावनाएँ नाजुक गुफा में बुनियादी बातों को भ्रमित करती हैं
गंदगी साफ करने के वसंत में सुअर खुद को भूल जाता है
कथा बताती है कि कैसे संज़ंग ने पुरपुरिया के राजा से विदा ली, सारी तैयारी की, घोड़े पर काठी कसी और पश्चिम की ओर चल पड़े। उन्होंने कई पर्वत और नदियाँ पार कीं। देखते ही देखते पतझड़ और सर्दी का मौसम बीत गया और वसंत की चमक और सुंदरता लौट आई। गुरु और शिष्य हरियाली से भरे रास्ते पर चलते हुए नज़ारों का आनंद ले रहे थे, तभी अचानक उनकी नज़र पेड़ों के बीच एक इमारत पर पड़ी। संज़ंग घोड़े से उतरे और मुख्य मार्ग के किनारे खड़े हो गए।
"गुरुजी," बंदर भाई ने पूछा, "रास्ता आसान है और कोई बुराई भी नहीं है, तो आपने क्यों रुक गए हैं?"
अध्याय 72

"भाई, तुम बिलकुल भी समझदार नहीं हो," पिग ने कहा। "इतनी देर घोड़े पर सवार रहने के बाद मालिक को नींद आ रही है। तुम्हें उन्हें नीचे उतरने और आराम करने देना चाहिए।"
"ऐसा नहीं है," संजांग ने कहा। "मुझे वहाँ एक घर दिखाई दे रहा है। मैं खुद वहाँ जाकर कुछ खाने की भीख मांगने की सोच रहा था।"
“गुरुजी ने बड़ी बड़ी बात कही,” बंदर मुस्कुराते हुए बोला। “अगर आपको खाना चाहिए तो मैं आपके लिए भीख माँगने चला जाऊँगा। कहावत है ना, ‘एक दिन का गुरु जीवन भर का पिता होता है।’ आपके शिष्य के रूप में मेरे लिए यहाँ यूँ ही बैठे रहना और गुरुजी को भीख माँगते देखना सरासर अन्याय होगा।”

"ऐसा कहने की कोई ज़रूरत नहीं है," संज़ंग ने जवाब दिया। "आम तौर पर तुम तीनों को खाना मांगने के लिए बहुत दूर तक जाना पड़ता है। आज एक घर इतना पास है कि आवाज़ लगाकर ही बुलाया जा सकता है, तो इस बार मुझे भीख मांगने दो।"
"परन्तु, गुरुजी, आपको तो पता ही नहीं होगा कि क्या करना है," सुअर ने कहा। "कहावत है कि जब तीन लोग यात्रा पर जाते हैं तो सबसे छोटा ही कठिन काम करता है। आप सबसे बड़े हैं और हम सब तो शिष्य मात्र हैं। जैसा कि पुरानी किताब में लिखा है, 'जब कोई काम करना होता है तो शिष्य ही उसे करता है।' मुझे जाने दीजिए।"
“शिष्यों, आज मौसम सुहाना है। उन दिनों जैसा बिल्कुल नहीं जब आप सबको तेज हवा और बारिश में दूर-दूर तक जाना पड़ता था। मुझे इस घर में जाने दीजिए। चाहे मुझे भोजन मिले या न मिले, मैं जल्दी वापस आ जाऊँगा और हम अपने रास्ते पर चलेंगे।”
उनके बगल में खड़े साधु सैंड मुस्कुराए और बोले, "भाई, इतनी बहस मत करो। गुरु ने अपना फैसला कर लिया है, इसलिए तुम्हें उनकी अवज्ञा नहीं करनी चाहिए। अगर तुमने उन्हें नाराज किया तो वो तुम्हारे द्वारा भीख मांगकर दिया गया कोई भी भोजन नहीं खाएंगे।"
पिग ने यह सुझाव मान लिया और भीख का कटोरा और मालिक के लिए टोपी और चोगा बदल कर लाया। मालिक सीधे फार्म की इमारत को देखने चला गया। वह सचमुच एक शानदार जगह थी। उसने देखा: एक ऊँचा पत्थर का पुल,
प्राचीन वृक्ष एक दूसरे के बहुत करीब उग रहे हैं।
जहां पत्थर का पुल ऊंचा उठता था
एक कलकल करती छोटी नदी एक लंबी धारा में मिल गई;
घनी आबादी वाले प्राचीन वृक्षों के बीच
दूर पहाड़ी पर छिपे हुए पक्षी मधुर गीत गा रहे थे।
पुल के उस पार कई फूस की छत वाले मकान थे।
किसी अमर व्यक्ति के आश्रम की तरह पवित्र और सुरुचिपूर्ण।
वहाँ एक फूस की झोपड़ी भी थी।
इतना शुद्ध और सफेद कि एक ताओवादी मंदिर भी शर्मिंदा हो जाए।

झोपड़ी दिखाई देने से पहले ही चार सुंदरियाँ
सभी लोग फीनिक्स पक्षी के डिजाइन की कढ़ाई करने में व्यस्त हैं।
वहाँ केवल ये चार लड़कियाँ ही थीं, कोई पुरुष नहीं था, इसलिए आदरणीय सज्जन अंदर जाने की हिम्मत नहीं कर पाए और ऊँचे पेड़ों के नीचे छिपकर वहीं स्थिर खड़े हो गए। उन्होंने देखा कि हर लड़की अपनी शालीनता में एकदम दृढ़ थी।
और वे अपने ऑर्किड स्वभाव में वसंत ऋतु की तरह प्रसन्न हैं।
लालिमा से उनके कोमल गाल और भी निखर रहे थे;
उनके होठों पर गहरे लाल रंग का मेकअप लगाया गया था।
उनकी भौहें पतंगे जैसी पतली थीं, जैसे कि अर्धचंद्र।
उनके बालों के गुच्छे टिड्डे के पंखों की तरह ढेर हो गए थे।
यदि उनमें से कोई फूलों के बीच खड़ा होता
भटकती हुई मधुमक्खियाँ उन्हें फूल समझ बैठी होंगी।
वह वहाँ एक घंटे तक खड़ा रहा। सन्नाटा छाया हुआ था, कुत्ते या मुर्गे की बांग की आवाज़ भी नहीं सुनाई दे रही थी। उसने सोचा, "अगर मैं भोजन की भीख भी नहीं माँग सकता, तो मेरे शिष्य मुझ पर हँसेंगे। अगर गुरु भोजन की भीख नहीं माँग सकता, तो उसके शिष्यों को बुद्ध के दर्शन की क्या उम्मीद होगी?"
उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, लेकिन वहाँ और रुकना ठीक नहीं लग रहा था, इसलिए वह पुल की ओर वापस चला गया, तभी उसकी नज़र फूस की झोपड़ियों के परिसर के अंदर एक मंडप पर पड़ी। मंडप में तीन और लड़कियाँ अपने पैरों से गेंद उछाल रही थीं। उन्हें देखो। वे बाकी चार से अलग थीं: उनकी फ़िरोज़ी रंग की आस्तीनें लहरा रही थीं।
और उनकी कढ़ाईदार स्कर्ट लहरा रही हैं।
लहराती हुई फ़िरोज़ी आस्तीनें
उनकी कोमल, सुंदर बांस जैसी उंगलियों को ढक लें,
लहराती कढ़ाईदार स्कर्ट
उनमें से कुछ अपने छोटे सुनहरे कमल जैसे पैर दिखाते हैं।

उनके चेहरे और शरीर एकदम परिपूर्ण हैं।
उनकी चप्पलों की एड़ियों की हरकतें अंतहीन थीं।
जब वे सिर पकड़ने की कोशिश करते हैं तो उनकी ऊंचाई अलग-अलग होती है;
वे गेंद को बेहद सहजता से एक-दूसरे को पास करते हैं।
एक व्यक्ति मुड़कर दीवार के ऊपर खिले फूल को लात मारता है।
फिर वह "समुद्र पार करना" नामक एक पीछे की ओर कलाबाजी करता है।
मिट्टी के ढेले की तरह हल्के से गुजरने के बाद
एक भाला दो लाठियों के सामने कमजोर पड़ जाता है।
बुद्ध के सिर पर एक चमकता हुआ मोती रखा जाता है।
और उन्होंने उसे अपनी उंगलियों के सिरों के बीच पकड़ रखा था।
वे कुशलतापूर्वक गेंद को एक पतली ईंट की तरह पकड़े रहते हैं।
वे सोते हुए मछली की मुद्रा में अपने पैरों को मरोड़ रहे थे।
अपनी पीठ सीधी रखते हुए, वे घुटने मोड़कर बैठते हैं;
वे अपनी गर्दन घुमाकर अपनी एड़ियों को हवा में उछालते हैं।
वे बेंचों को हवा में उड़ा सकते हैं;
उनके कंधों पर लिपटे हुए लबादे बेहद स्टाइलिश हैं।
उनकी पतलून के पैरों को टेप से बांधा गया है ताकि वे हिल-डुल सकें।
जब वे झूमती हैं तो उनके हार भी झूलते हैं।
वे गेंद को ऐसे मारते हैं जैसे पीली नदी उल्टी दिशा में बह रही हो।
या फिर समुद्र तट से खरीदी गई सुनहरी मछली।
जब आप उनमें से किसी एक को नेता समझ लेते हैं
दूसरा खिलाड़ी गेंद को लेकर आगे बढ़ जाता है।
वे सभी अपनी पिंडलियों को हवा में इतनी खूबसूरती से उठाए रखते हैं,
गेंद को पकड़ने के लिए वे अपने पैर की उंगलियों को आगे की ओर उठाते हैं।
वे भूसे की चप्पलें घुमाने के लिए अपनी एड़ियाँ ऊपर उठाते हैं।
उन्हें उल्टा करके लगाना और फिर पलटकर उठा लेना।

जैसे ही वे पीछे हटते हैं, उनके कंधों पर लिपटे हुए वस्त्र फैल जाते हैं।
केवल एक हुक से बांधा जाता है।
फेरीवाले की टोकरी लंबी और नीची लटकती है,
फिर वे गोल की ओर लपकते हैं।
उनकी शानदार फुटवर्क को देखकर वाकई हैरानी होती है।
सभी सुंदरियां प्रशंसा से चिल्ला उठती हैं।
सभी के रेशमी वस्त्र पसीने से भीग चुके हैं;
थकान और आराम महसूस करते हुए उन्होंने अपना खेल समाप्त कर दिया।
वर्णन अंतहीन हो सकता है। एक और कविता है जो इससे भी अधिक बताती है:
अप्रैल के मौसम में गेंद को लात मारना,
जादुई हवा के झोंकों से बहती हुई सुंदरियाँ।
पसीने से सने उनके पाउडर लगे चेहरे ओस की बूंदों की तरह फूल पर दागदार हो गए थे;
उनकी भौहों पर जमी धूल धुंध की तरह थी जो विलो वृक्षों को छुपा रही थी।
उनकी फ़िरोज़ी रंग की आस्तीनें नीचे लटक रही थीं और उन्होंने हरे रंग की उंगलियों को ढक रखा था;
कढ़ाईदार लंबी स्कर्टों पर सुनहरे कमल के पैर दिखाई दे रहे थे।
कई बार गेंद को किक मारने के बाद वे मनमोहक रूप से थक गए थे;
उनके बाल बिखरे हुए थे और उनके बालों की चोटी टेढ़ी-मेढ़ी थी।
काफी देर तक देखने के बाद संजांग पुल पर जाकर जोर से पुकारने लगा, "बोधिसत्वों, भाग्य मुझे यहाँ एक गरीब भिक्षु के रूप में भोजन का वरदान मांगने के लिए लाया है।"
जैसे ही महिलाओं ने उसकी आवाज सुनी, वे प्रसन्नतापूर्वक अपने कढ़ाई के काम और गेंदों को एक तरफ रखकर मुस्कुराते और खिलखिलाते हुए द्वार से बाहर आकर उसका स्वागत करने लगीं।
“माननीय महोदय,” उन्होंने कहा, “हमें खेद है कि हमने आपका स्वागत पहले नहीं किया। चूंकि आप हमारे छोटे से खेत में आए हैं, इसलिए रास्ते में आपका भोजन कराना हमारे लिए संभव नहीं था। कृपया अंदर आइए और बैठिए।”

जब संज़ंग ने यह सुना तो उसने सोचा, "वाह, यह तो बहुत बढ़िया है। पश्चिम सचमुच बुद्ध की भूमि है। यदि ये महिलाएं भी भिक्षुओं को भोजन कराने में इतनी तत्पर हैं, तो पुरुष भी निश्चित रूप से बुद्ध के धर्मनिष्ठ अनुयायी होंगे।"

अध्याय 72

1002

पश्चिम की यात्रा

संज़ंग महिलाओं का अभिवादन करने के लिए आगे बढ़ा और उनके पीछे-पीछे फूस की झोपड़ियों में चला गया। जब वह मंडप के पास से गुजरा और उसने देखा कि उसके दूसरी ओर कोई इमारत नहीं थी। वहाँ केवल ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर ही दिखाई दे रहे थे।

पृथ्वी की दूरस्थ पर्वत श्रृंखलाएँ।
ऊंचे-ऊंचे पर्वतों की चोटियां बादलों को छूती हैं;
पृथ्वी की दूरस्थ पर्वत श्रृंखलाएँ समुद्र में स्थित चोटियों तक जाती हैं।
द्वारों के पास पत्थर के पुल से
एक धारा को देखा जाता है जो नौ बार मुड़ती है;
बगीचे में आड़ू और बेर के पेड़
फूलों की बहुतायत में प्रतिस्पर्धा करें।
तीन-चार पेड़ों से लताएँ और लताएँ लटकी हुई हैं;
हजारों फूलों के जरिए ऑर्किड की सुगंध फैलती है।
दूर से देखने पर यह एकांत स्थान पेंगलाई के परीलोक जैसा लगता है;
पहाड़ के करीब से देखने पर यह ताई और हुआ पहाड़ों से बेहतर दिखता है।
यह वास्तव में दानव अमर प्राणियों के लिए एक विश्राम स्थल है।
एक एकांत घर जिसके आसपास कोई पड़ोसी नहीं है।

एक महिला ने आगे बढ़कर पत्थर के द्वार खोले और तांग पुजारी को अंदर आकर बैठने के लिए आमंत्रित किया। पुजारी को बस अंदर जाना पड़ा। जब उन्होंने ऊपर देखा तो पाया कि सारी मेजें और कुर्सियाँ पत्थर की बनी थीं और वातावरण बेहद ठंडा था। इससे आदरणीय पुजारी घबरा गए और सोचने लगे, "यह तो बहुत ही भयावह जगह है। मुझे यकीन है कि यहाँ बुराई का साया है।"

"कृपया बैठ जाइए, आदरणीय बुजुर्ग," सभी महिलाओं ने बनावटी मुस्कान के साथ

कहा। उनके पास बैठने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। थोड़ी देर बाद उन्हें कंपकंपी महसूस हुई।

"आप किस मठ से हैं, पूज्यवर?" महिला ने पूछा। "आप किसलिए भिक्षा मांग रहे हैं?" क्या आप सड़कें और पुलों की मरम्मत करवा रहे हैं, मठों की स्थापना कर रहे हैं, पैगोडा में पूजा-अर्चना कर रहे हैं, या बुद्ध की मूर्तियाँ बनवा रहे हैं और सूत्र छपवा रहे हैं? क्या आप हमें अपनी दान पुस्तिका नहीं दिखाएंगे?

"मैं दान इकट्ठा करने वाला भिक्षु नहीं हूँ," आदरणीय बुजुर्ग ने उत्तर दिया।

"अगर आप भीख मांगने नहीं आए हैं तो फिर क्यों आए हैं?" महिलाओं ने पूछा। "हमें पूर्व में स्थित महान तांग ने पश्चिमी स्वर्ग में स्थित थंडर मठ में धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है," संजांग ने उत्तर दिया।

अध्याय 72

1003

पश्चिम की यात्रा

"इस विशिष्ट स्थान से गुजरते समय हमारा पेट खाली था, इसलिए मैं आपकी कृपा से आपसे शाकाहारी भोजन की भीख मांगने आया हूँ। इसके बाद हम जैसे गरीब भिक्षु अपने रास्ते पर फिर से चल पड़ेंगे।"

"बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया," सभी महिलाओं ने कहा। "जैसा कि कहावत है, दूर से आए भिक्षुओं को शास्त्र पढ़ना बहुत पसंद होता है। बहनों! हमें उनका अच्छे से ख्याल रखना चाहिए। आइए, हम उन्हें जल्द से जल्द शाकाहारी भोजन दें।"

तीन औरतें उसका साथ देती रहीं और प्राथमिक और द्वितीयक कारण जैसे विषयों पर बातें करती रहीं, जबकि बाकी चार रसोई में चली गईं, जहाँ उन्होंने अपने कपड़े समेटे, आस्तीनें चढ़ा लीं, आग को हवा दी और खाना पकाने के बर्तनों को साफ किया। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने क्या तैयार किया? वे मानव वसा में तल रही थीं, और जो उन्होंने पकाया वह मानव मांस था, जिसे गेहूं के ग्लूटेन की तरह काले पेस्ट में पका दिया गया था, और मानव मस्तिष्क के टुकड़े टोफू की तरह तलने के लिए रखे गए थे। फिर उन्होंने दोनों व्यंजन एक पत्थर की मेज पर रखे और संजांग से कहा, "खा लो। हम जल्दी में थे इसलिए कुछ अच्छा नहीं बना पाए, इसलिए इसी से काम चला लो। इससे भूख मिट जाएगी। अभी और भी व्यंजन आएंगे।"

जैसे ही संजांग ने अपनी नाक से मांस की दुर्गंध सूंघी, उसने भोजन नहीं किया, बल्कि

अपने हाथों को छाती पर जोड़कर प्रणाम किया और कहा, "बोधिसत्वों, मैं जन्म से ही शाकाहारी हूँ।"
"लेकिन यह शाकाहारी भोजन है, महोदय," सभी महिलाओं ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।
"अमिताभ बुद्ध!" संजांग ने विस्मय से कहा। "अगर मैं भिक्षु होते हुए इस तरह शाकाहारी भोजन करता, तो मुझे बुद्ध के दर्शन करने या सुर्रा लाने की कोई उम्मीद नहीं रहती।"
"आदरणीय महोदय," महिलाओं ने कहा, "एक भिक्षु होने के नाते आपको दी जाने वाली चीजों के बारे में इतना नखरे नहीं करने चाहिए।"
"मैं कभी ऐसा नहीं हो सकता," संज़ंग ने कहा, "मैं कभी ऐसा नहीं हो सकता। मुझे महान तांग सम्राट का आदेश है कि मैं किसी भी छोटे से छोटे जीव को भी हानि न पहुँचाऊँ, जो भी मुझे दुख में दिखे उसे बचाऊँ, मुझे जो भी अनाज मिले उसे उंगलियों से खाऊँ और जो भी रेशम के धागे मेरे पास आएँ उन्हें अपने शरीर पर ओढ़ लूँ। मैं अपने उपकारियों के उपहारों में से कभी भी चुन-चुनकर उपहार लेने की हिम्मत नहीं करूँगा।"
"भले ही आप चुन-चुनकर नहीं खा रहे हों, फिर भी लगता है आप शिकायत करने ही आए हैं। कृपया थोड़ा खाना खा लीजिए और अगर यह थोड़ा दरदरा और बेस्वाद हो तो कोई आपत्ति न कीजिएगा।"
"ऐसा नहीं है कि मैं इसे खाना नहीं चाहता," संजांग ने कहा, "बल्कि मुझे डर है कि मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दूंगा। मुझे आशा है कि आप बोधिसत्व यह याद रखेंगे कि जीवों को अपने पास रखने से बेहतर है उन्हें मुक्त करना और मुझे जाने देंगे।"
जब संज़ैंग बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था, तो महिलाओं ने गेट रोक दिया और उसे जाने से मना कर दिया। "काम खुद हमारे दरवाजे पर आ गया है!" वे सब बोलीं। "यहाँ से भागने का तुम्हारा कोई चांस नहीं है, जैसे हाथों से पाद छुपाने का। तुम कहाँ जा रहे हो?"
वे सभी मार्शल आर्ट में काफी कुशल और फुर्तीले भी थे। संज़ंग को पकड़ने के बाद, उन्होंने उसे भेड़ की तरह घसीटा और ज़मीन पर पटक दिया। फिर उन सभी ने उसे पकड़कर बांध दिया और छत की कड़ियों से लटका दिया। उसे इस तरह लटकाने का एक विशेष नाम है: "अमर मार्गदर्शक"। उसका एक हाथ रस्सी से इस तरह बांधा गया

था कि वह आगे की ओर रहे। दूसरा हाथ एक और रस्सी से उसकी कमर से बंधा था, जो उसे ऊपर उठाए हुए थी, और उसके दोनों पैर पीछे से एक तीसरी रस्सी से बंधे थे। तीनों रस्सियों से वह एक बीम से इस तरह लटका हुआ था कि उसकी पीठ ऊपर और पेट नीचे की ओर था।

अध्याय 72

1004

पश्चिम की यात्रा

सान्ज़ांग दर्द से कराहते हुए और अपने आँसू रोकते हुए बड़े अफसोस से सोचने लगा, "मेरी किस्मत कितनी बुरी है। मैंने सोचा था कि मैं भले लोगों से शाकाहारी भोजन माँगने आया हूँ। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं आग के गड्ढे में गिर जाऊँगा। शिष्यों! अगर मुझे फिर से आपसे मिलना है तो मुझे जल्द से जल्द बचाओ। अगर तुम चार घंटे के भीतर यहाँ नहीं पहुँचे तो मैं मर जाऊँगा।"

अपनी पीड़ा के बावजूद, संज़ंग महिलाओं पर पैनी नज़र रखे हुए था। जब उन्होंने उसे कसकर बांधकर लटका दिया, तो वे अपने कपड़े उतारने लगीं। इससे आदरणीय बुजुर्ग घबरा गए और सोचने लगे, "ये मुझे पीटने के लिए अपने कपड़े उतार रही होंगी। शायद ये मुझे खा भी जाएँगी।" महिलाओं ने केवल अपने जालीदार ब्लाउज़ के बटन खोले, जिससे उनका पेट दिखने लगा। फिर उनमें से प्रत्येक ने अपनी नाभि से बत्तख के अंडे जितनी मोटी रेशमी रस्सी निकाली। उन्होंने खेत के द्वार बंद करते समय इसे ऐसे हिलाया जैसे चमकता हुआ जेड पत्थर या उड़ता हुआ चाँदी हो।

हम उन्हें वहीं छोड़कर मंकी, पिग और फ्रायर सैंड के पास वापस चले गए, जो सभी अभी भी मुख्य सड़क के किनारे इंतजार कर रहे थे। जबकि बाकी दोनों घोड़े को चरा रहे थे और सामान की देखभाल कर रहे थे, मंकी पेड़ों पर कूद-कूद कर और डालियों पर चढ़कर पत्तियां तोड़ते और फल ढूंढते हुए अपना मनोरंजन कर रहा था। अचानक वह मुड़ा और उसे प्रकाश की एक चादर दिखाई दी।

यह देखकर वह इतना घबरा गया कि पेड़ से कूदते हुए चिल्लाया, "यह तो भयानक है! भयानक! मालिक की किस्मत खराब हो गई है!" उसने इशारा करते हुए कहा, "खेत को देखो। क्या सोचते हो?" जब पिग और फ्रायर सैंड दोनों ने देखा तो उन्हें बर्फ जैसी कोई चीज की चादर दिखाई दी, जो उससे कहीं ज्यादा चमकदार और चांदी जैसी थी।

"बस हो गया," सुअर ने कहा, "बस हो गया। मालिक बुरी आत्माओं के चंगुल में फंस

गया है। हमें तुरंत जाकर उसे बचाना चाहिए।"
"चिल्लाना बंद करो, भाई," बंदर ने कहा। "तुम दोनों में से कोई भी यह नहीं देख सकता कि वहाँ क्या है। रुको, मैं जाकर देखता हूँ।"
"भाई, सावधान रहना," फ्रायर सैंड ने कहा।
"मैं संभाल लूंगा," बंदर ने जवाब दिया।
महान संत ने अपनी बाघ की खाल की बनी स्कर्ट कसी, सोने की पट्टी वाली गदा निकाली और कुछ कदम आगे बढ़कर देखा कि रेशम की रस्सियों ने हजारों धागों का जाल बना रखा है। जब उन्होंने उसे हाथों से छुआ तो वह कुछ नरम और चिपचिपा था। यह न जानते हुए कि यह क्या है, बंदर ने अपनी गदा उठाई और कहा, "हजारों धागों की चिंता मत करो। यह गदा तो दसियों हजार धागों को तोड़ सकती है।"
वह वार करने ही वाला था कि रुककर सोचने लगा, "अगर वे सख्त होते तो मैं उन्हें ज़रूर चकनाचूर कर देता, लेकिन नरम वाले तो बस गिरकर चपटे हो जाएँगे, और अगर मैंने राक्षसों को सचेत कर दिया और खुद पकड़ा गया तो यह एक बड़ी मुसीबत होगी। वार करने से पहले मुझे कुछ पूछताछ कर लेनी चाहिए।"
आपको क्या लगता है उसने किससे पूछा होगा? उसने हाथों से मंत्र पढ़ा, उसके शब्द बोले और एक पुराने स्थानीय देवता को बुलवाया, जो अपने मंदिर में चक्की चलाने की तरह गोल-गोल दौड़ने लगा। उसकी पत्नी ने पूछा, "बूढ़े, आप इस तरह क्यों गोल-गोल घूम रहे हैं? आपको ज़रूर दौरा पड़ रहा होगा।"
"तुम समझते नहीं हो," स्थानीय देवता ने उत्तर दिया। "यहाँ स्वर्ग के समान एक महान ऋषि विराजमान हैं। मैं उनसे मिलने नहीं गया था। लेकिन वे मुझे बुला रहे हैं।"
"तो जाओ और उससे मिलो," उसकी पत्नी ने जवाब दिया, "बस बात खत्म। यहाँ बेवजह चक्कर क्यों लगा रहे हो?"
अध्याय 72
1005
पश्चिम की यात्रा
"लेकिन अगर मैं जाकर उससे मिलूं तो उसकी लाठी बहुत जोर से लगती है," स्थानीय देवता ने कहा। "उसे इस बात की परवाह नहीं होती कि तुम कैसे हो—वह बस तुम्हें मारता है।"
"तुम्हारी उम्र देखकर वो तुम्हें बिल्कुल नहीं मारेगा," उसकी पत्नी ने जवाब दिया।

स्थानीय देवता ने कहा, "वह पूरी जिंदगी मुफ्त में शराब मांगता रहा है, और उसे बूढ़े लोगों को पीटना बहुत पसंद है।"

अपनी पत्नी से कुछ देर बात करने के बाद स्थानीय देवता के पास बाहर जाकर सड़क किनारे कांपते हुए घुटने टेकने और पुकारने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा, "महान ऋषि, स्थानीय देवता आपको प्रणाम करते हैं।"

"उठो," बंदर भाई ने जवाब दिया, "और इतना उत्सुक होने का नाटक करना बंद करो। मैं तुम्हें मारने वाला नहीं हूँ। मैं बस यहाँ से गुजर रहा हूँ। मुझे बताओ यह जगह कहाँ है।"

"हे महान ऋषि, आप किस रास्ते से आए हैं?" स्थानीय देवता ने पूछा।

"मैं पूरब से आया हूँ और पश्चिम की ओर जा रहा हूँ," मंकी ने कहा।

"पूर्व से अपनी यात्रा के दौरान आप किस पर्वत पर पहुँचे हैं?" स्थानीय देवता ने पूछा।

"वो पहाड़ी," बंदर ने जवाब दिया। "हमारा सामान और घोड़ा वहीं हैं, है ना?"

"यह गॉसमर रिज है," स्थानीय देवता ने उत्तर दिया। "इस रिज के नीचे एक गुफा है जिसे गॉसमर गुफा कहते हैं, जहाँ सात बुरी आत्माएँ रहती हैं।"

"नर या मादा?" बंदर ने पूछा।

"शैतान औरतें," स्थानीय देवता ने उत्तर दिया।

"उनकी जादूई शक्ति कितनी है?" बंदर ने पूछा।

“मैं इतना कमज़ोर और तुच्छ हूँ कि यह जान नहीं सकता,” स्थानीय देवता ने उत्तर दिया। “मैं तुम्हें बस इतना ही बता सकता हूँ कि यहाँ से एक मील दक्षिण में एक प्राकृतिक गर्म पानी का झरना है जिसे ‘गंदगी साफ करने वाला झरना’ कहते हैं,” स्थानीय देवता ने कहा, “जहाँ स्वर्ग से आई सात परियाँ स्नान करती थीं। जब सात दुष्ट आत्माएँ यहाँ आकर बस गईं और ‘गंदगी साफ करने वाले झरने’ पर कब्ज़ा कर लिया, तो अच्छी आत्माओं ने उनसे इसके लिए लड़ने की कोशिश नहीं की। उन्होंने आत्माओं को इसे मुफ्त में दे दिया। मेरा मानना है कि अगर स्वर्ग से आई अच्छी आत्माएँ भी उन्हें नाराज़ करने की हिम्मत नहीं करतीं, तो दुष्ट आत्माओं के पास तो अपार शक्तियाँ होंगी।”

"उन्होंने झरने पर कब्जा क्यों किया है?" बंदर ने पूछा।

"जब से मैंने स्नान कुंड पर कब्ज़ा किया है, तब से राक्षस दिन में तीन बार वहाँ स्नान करने आते हैं," स्थानीय देवता ने उत्तर दिया। "ग्यारह बज चुके हैं। वे दोपहर तक आ

जाएँगे।"
यह सब सुनकर बंदर बोला, "अब वापस जाओ, स्थानीय देवता, और तब तक प्रतीक्षा करो जब तक मैं उन्हें पकड़ न लूँ।" बूढ़े स्थानीय देवता ने उसके सामने सिर झुकाया और कांपते हुए अपने मंदिर में वापस चले गए।
फिर महान ऋषि ने अपनी जादुई शक्तियों का एकल प्रदर्शन किया, खुद को झटककर एक मक्खी में बदल गए और रास्ते के किनारे घास के एक तिनके पर उतरकर प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने रेशम के कीड़ों द्वारा पत्तियां खाने या समुद्र की लहरों के आने जैसी सरसराहट और फुफकार की आवाज सुनी। आधी कप चाय पीने में जितना समय लगता है, उतने समय में रेशम की सारी रस्सियां गायब हो गईं और खेत पहले जैसा ही दिखने लगा। फिर बेंत का फाटक खुलने की चरमराहट की आवाज आई और सातों महिलाएं हंसती-हंसती जोर-जोर से बातें करती हुई बाहर आईं। बंदर जहां छिपा था, वहां से ध्यान से देख रहा था और उसने उन्हें एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए बातें करते और हंसते हुए देखा। (अध्याय 72)

उन्होंने हाथ पकड़कर कंधे से कंधा मिलाकर पुल पार किया। वे सचमुच बेहद खूबसूरत थीं: उनकी तुलना जेड से करें तो वे उससे कहीं अधिक सुगंधित थीं;
वे फूलों की तरह थे लेकिन बोल सकते थे।
उनकी पतली-दुबली भौंहें दूर की पहाड़ियों जैसी थीं;
चंदन की सुगंध से सराबोर मुंह चेरी से फूट रहे थे।
बालों के आभूषण जेड पत्थर के बने थे;
लाल रंग की स्कर्ट के नीचे सुनहरे कमल जैसे पैर तेजी से बाहर निकले।
वे मानो चंद्रमा की देवी का धरती पर अवतरित अवतार थीं।
अमर कन्याएं संसार में अवतरित हो रही हैं।
"इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि मालिक खाना मांगने आया होगा," बंदर हंसते हुए सोचने लगा, "यहाँ इतनी सारी सुंदरियाँ हैं। अगर इन सातों सुंदरियों ने उसे पकड़ लिया है तो वो उनके एक बार के खाने के लिए भी काफी नहीं होगा। वो उसे दो दिन भी नहीं खिला पाएंगी। और अगर वो बारी-बारी से उसके साथ ऐसा करती रहीं तो उसे मार ही डालेंगी। मुझे जाकर सुनना चाहिए कि वे क्या योजना बना रही हैं।"

वह तेजस्वी महान ऋषि तेज भिनभिनाहट के साथ उड़ते हुए आए और आगे चल रही महिला के बालों की चोटी पर जा गिरे। जब वह पुल पार कर गई, तो उसके पीछे चल रही महिलाओं ने उसका पीछा किया और पुकारा,
"बहन, चलो उस मोटे साधु को भाप में पकाकर खाने से पहले नहा लेते हैं।"
“ये राक्षस बिल्कुल भी किफायती नहीं हैं,” बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा। “अगर वे उसे उबाल दें तो बहुत सारी लकड़ी बच जाएगी। भाप में क्यों पका रहे हैं?” औरतें दक्षिण की ओर फूल तोड़ती और एक-दूसरे पर घास फेंकती हुई चलीं और जल्द ही स्नान कुंड पर पहुँच गईं, जहाँ एक बहुत ही भव्य दीवार और द्वार दिखाई दिया, जिसके चारों ओर सुगंधित फूल, जिनमें ऑर्किड के फूल भी शामिल थे, उगे हुए थे। उसके पीछे चल रही औरतों में से एक आगे बढ़ी और सीटी बजाते हुए दोहरे द्वार को धक्का देकर खोल दिया, जिससे अंदर प्राकृतिक रूप से गर्म पानी का कुंड दिखाई दिया। इस पानी की बात करें तो,
जब स्वर्ग और पृथ्वी पहली बार अलग हुए थे
आकाश में दस सूर्य थे
टिल यी, कुशल धनुर्धर,
नौ सूर्य-कौवों को मार गिराया,
केवल एक सुनहरा कौवा तारा शेष रह गया,
सूर्य की सच्ची अग्नि।
अध्याय 72
1007
पश्चिम की यात्रा
स्वर्ग और पृथ्वी में नौ गर्म झरने
क्या बाकी नौ कौवे रूपांतरित हो गए हैं?
ये नौ गर्म पानी के झरने हैं
वसंत ऋतु की मनमोहक खुशबू
पर्वतीय साथी वसंत ऋतु
गर्म वसंत,
डोंगहे स्प्रिंग,
माउंट हुआंग स्प्रिंग,

शियाओआन स्प्रिंग,
गुआंगफेन स्प्रिंग,
गर्म पानी का झरना,
और यह गंदगी को साफ करने वाली वसंत ऋतु।
इस विषय पर एक कविता है, जो इस प्रकार है:
वही जीवन शक्ति चारों ऋतुओं में प्रवाहित होती है;
वसंत ऋतु शरद ऋतु तक जारी रहती है।
खौलता पानी कड़ाही की तरह उबल रहा है;
बर्फ से ढकी सफेद लहरें उबलती हुई गर्म हैं।
यदि पानी को फैला दिया जाए तो इससे फसलों को बढ़ने में मदद मिलती है;
जहां वे हैं वहीं रह जाने पर वे सांसारिक धूल को धोकर साफ कर देते हैं।
छोटे-छोटे बुलबुले मोतियों की तरह फैल गए,
लुढ़कते हुए टुकड़े जेड के टुकड़ों की तरह ऊपर उठते हैं।
यह गाढ़ा और चिकना है, हालांकि यह वाइन नहीं है।
स्पष्ट, शांत और स्वाभाविक रूप से गर्मजोशी से भरपूर।
यह पूरा स्थान शुभ संकेत की अपनी आभा से समृद्ध है:
यह सौभाग्य और प्राकृतिक सत्य लाता है।
जब सुंदरियों को धोया जाता है तो उनकी त्वचा बर्फ की तरह चिकनी हो जाती है;

जैसे-जैसे मिट्टी धुलती जाती है, उनके जेड जैसे शरीर नए रूप में ढल जाते हैं।
स्नान कुंड लगभग पचास फीट चौड़ा, सौ फीट लंबा और चार फीट गहरा था। पानी शुद्ध और पारदर्शी था, और उसकी तलहटी से बुलबुले निकलते थे जो लुढ़कते मोतियों या तैरते जेड जैसे लगते थे। कुंड के चारों ओर छह या सात पाइप थे जिनसे पानी बहता था, और एक मील दूर तक खेतों तक पहुँचने पर भी गर्म रहता था। कुंड के बगल में तीन कमरों वाला एक मंडप था, जिसकी पिछली दीवार के पास आठ टांगों वाली एक बेंच थी। मंडप के दोनों सिरों पर रंगीन वार्निश से रंगे हुए कपड़े टांगने के स्टैंड थे। यह सब देखकर बंदर मन ही मन बहुत खुश हुआ, और वह सीधे एक स्टैंड

पर उड़कर बैठ गया।
जब महिलाओं ने देखा कि पानी कितना साफ और गर्म है, तो वे उसमें नहाना चाहती थीं, इसलिए उन्होंने अपने कपड़े उतारकर स्टैंड पर टांग दिए और फिर एक साथ पूल में उतर गईं। बंदर ने यही देखा: उन्होंने अपने कपड़ों के बटन खोल दिए।
उन्होंने अपनी पतली कमरबंदों की गांठें खोल दीं।
उनके मलाई जैसे स्तन चांदी जैसे सफेद थे।
उनके शरीर बर्फ से ढके हुए थे जो देखने में जेड पत्थर जैसे लगते थे।
उनकी बांहें और कोहनियां बर्फ की तरह ठंडी थीं।
और सुगंधित कंधे पाउडर लगे कंधों से कहीं अधिक सुंदर लगते हैं।
उनके पेट की त्वचा मुलायम और कोमल होती है।
उनकी पीठें चमकदार और साफ थीं।
उनके घुटने और कलाई गोल और मुलायम थे;
उनके सुनहरे कमल जैसे पैर केवल तीन इंच लंबे थे।
और जहाँ तक बीच में आने वाली चीज़ों का सवाल है,
उन्होंने आनंद की गुफा की एक झलक दिखाई।
सभी स्त्रियाँ पानी में कूद गईं और लहरों में मस्ती करते हुए आनंद लेने लगीं। बंदर ने सोचा, "अगर मैं उन्हें मारना चाहूँ, तो मुझे बस अपनी गदा से पानी को हिलाना होगा। यह चूहों के घोंसले पर उबलता पानी डालने जैसा होगा: मैं उन सबको मार सकता हूँ। कितना अफ़सोस! अगर मैं उन्हें मारूँ तो वे मर जाएँगी, लेकिन इससे मेरी प्रतिष्ठा को कोई फ़ायदा नहीं होगा। जैसा कि कहते हैं, असली मर्द औरतों से नहीं लड़ता। मेरे जैसे मर्द का इन लड़कियों को मार देना बेकार होगा। अगर मैं उन्हें मार नहीं सकता, तो मुझे उनके लिए मुश्किलें खड़ी करनी होंगी ताकि वे हिल भी न सकें।" महान ऋषि ने अपने हाथों से एक मंत्र पढ़ा, उसके शब्द बोले, खुद को झटका दिया और एक भूखे चील में बदल गए।
अध्याय 72
1009
पश्चिम की यात्रा
उसके पंख पाले या बर्फ की तरह थे।
उसकी आंखें चमकते तारों जैसी थीं।

दुष्ट लोमड़ियों ने जब उसे देखा तो उनकी आत्माएं भयभीत हो गईं;
और चालाक खरगोश दहशत से कांप उठे।
उसके लोहे जैसे मजबूत पंजे भाले की नोक की तरह तेज थे;
उनका अंदाज़ राजसी और उग्र दोनों था।
उसने अपने पंजों का इस्तेमाल करके अपना भोजन पकड़ा।
और वह अपने उड़ते हुए शिकार को खुद पकड़ने के लिए तैयार था।
वह ठंडे आसमान में ऊँचाई और नीचाई दोनों ओर उड़ सकता था।
वह बादलों को चीरते हुए अपनी मर्जी से अपने शिकार पर झपट्टा मारता था।
अपने पंखों की फड़फड़ाहट के साथ वह उनकी ओर उड़ा, अपने नुकीले पंजों से स्टैंड पर टंगे सातों कपड़ों के सेट पकड़ लिए और उन्हें लेकर सीधे पहाड़ी की ओर वापस उड़ गया। वहाँ पहुँचकर वह अपने असली रूप में आ गया और उसने पिग और फ्रायर सैंड को देखा।
उस मूर्ख को देखो, वह भाई बंदर के पास आता है और मुस्कुराते हुए कहता है, "मालिक को किसी साहूकार के पास ले जाया गया होगा।"
"आपको कैसे पता चला?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"क्या तुम्हें वो सारे कपड़े नहीं दिख रहे जो हमारे भाई ने हथिया लिए हैं?" सुअर ने जवाब दिया।
"ये बुरी आत्माओं के कपड़े हैं," बंदर ने उन्हें नीचे रखते हुए कहा।
"आखिर तुम्हें इतने सारे कहाँ से मिले?" सुअर ने पूछा।
"सात पोशाकें हैं," मंकी ने कहा।
"तुमने उन्हें इतनी आसानी से कैसे नंगा कर दिया, और वो भी पूरी तरह नग्न?" सुअर ने पूछा।
“मुझे उन्हें नंगा करने की ज़रूरत नहीं पड़ी,” बंदर ने कहा। “इस जगह का नाम गॉसमर रिज है और इस खेत का नाम गॉसमर गेव है। वहाँ रहने वाली सात शैतान औरतों ने मालिक को पकड़ लिया, उसे अपनी गुफा में लटका दिया और सब गंदगी साफ़ करने वाले झरने में नहाने चली गईं। यह एक प्राकृतिक गर्म पानी का झरना है। उनकी योजना थी कि पहले नहाएँ, फिर मालिक को भाप में पकाएँ और खा जाएँ। मैं उनके साथ वहाँ गया और उन्हें कपड़े उतारकर पानी में जाते देखा। मेरा मन किया कि उन्हें मारूँ, लेकिन मुझे डर था कि इससे मेरा डंडा गंदा हो जाएगा और मेरी इज़्ज़त

मिट्टी में मिल जाएगी, इसलिए मैंने नहीं मारा। मैंने खुद को एक भूखे चील में बदल लिया और अपने पंजों से उनके कपड़े पकड़ लिए। अब वे सब पानी में बैठी हैं, बाहर आने में बहुत शर्म महसूस कर रही हैं। चलो मालिक को बचाते हैं और जितनी जल्दी हो सके यहाँ से निकल चलते हैं।”

"भाई," सुअर मुस्कुराया, "तुम हमेशा कुछ न कुछ अधूरा छोड़ देते हो। तुम्हें पता था कि वे दुष्ट आत्माएँ हैं, तो तुमने पहले उन्हें मारकर फिर मालिक को क्यों नहीं बचाया? भले ही अब वे बाहर आने में शर्म महसूस कर रहे हों, फिर भी..." अध्याय 72

1010

पश्चिम की यात्रा

वे रात ढलने के बाद ज़रूर निकलेंगे। उनके घर में इतने पुराने कपड़े ज़रूर होंगे कि वे एक-एक करके कपड़े पहनकर हमारे पीछे आ सकें। अगर वे हमारे पीछे नहीं भी आते, तो भी वे यहाँ स्थायी रूप से रहते हैं और धर्मग्रंथ लाने के बाद हमें इसी रास्ते से वापस आना पड़ेगा। कहावत है ना, सफ़र में लड़ाई करने से बेहतर है कर्ज़ लेना। जब वे हमें रोककर हंगामा करेंगे, तो वे सचमुच हमसे बदला लेना चाहेंगे।

"तो आपका क्या सुझाव है?" बंदर ने पूछा।

"अगर मुझसे पूछो तो हमें पहले राक्षसों को मारना चाहिए और फिर स्वामी को बचाना चाहिए," सुअर ने कहा। "इसे ही कहते हैं खरपतवार को जड़ से उखाड़ फेंकना।"

"मैं उन्हें नहीं मारूंगा," बंदर ने जवाब दिया। "अगर तुम उन्हें मारना चाहते हो तो खुद जाकर मार लो।"

फिर सुअर ने हिम्मत जुटाई और अत्यंत प्रसन्न होकर अपने रेक को ऊपर उठाए सीधे वहीं दौड़ पड़ा। जैसे ही उसने अचानक फाटक खोलकर अंदर देखा, उसे सातों औरतें पानी में बैठी हुई बाज को कोसती हुई दिखाई दीं।

वे कह रहे थे, "पंखों वाला जानवर, बिल्ली के सिर वाला राक्षस। अब हम क्या कर सकते हैं जब तुमने हमारे कपड़े उतार दिए हैं?"

सुअर हँसे बिना नहीं रह सका और उसने उनसे कहा, "बोधिसत्वों, आप स्नान जारी रखिए। क्या आपको कोई आपत्ति होगी अगर मैं भी आपके साथ शामिल हो जाऊं?"

“हे भिक्षु, तुम कलंक हो,” शैतानों ने उसे देखकर क्रोधित होकर कहा। “हम गृहस्थ महिलाएं हैं और तुम धर्म के पुरुष हो। प्राचीन ग्रंथ में लिखा है, ‘सात वर्ष की आयु से लड़के-लड़कियां एक ही चटाई पर नहीं सोते।’ तुम हमारे साथ एक ही कुंड में स्नान

नहीं कर सकते।”
"लेकिन गर्मी इतनी भीषण है कि मेरे पास कोई चारा नहीं है," सुअर ने कहा। "तुम्हें यही सहना होगा और मुझे नहाने देना होगा। चटाई बाँटने के बारे में किताबों से जो ज्ञान मिला है, वो दिखाने का क्या मतलब है?"
और बहस करते हुए उस मूर्ख ने अपना फावड़ा गिरा दिया, सूती कुर्ता उतार दिया और छप-छप करते हुए पानी में कूद गया। इससे राक्षस क्रोधित हो उठे और उसे मारने के लिए उस पर टूट पड़े। उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि पिग पानी में कितना माहिर था। तालाब में उतरते ही उसने खुद को झटककर एक मछली के रूप में रूपांतरित कर लिया। राक्षसों ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन पकड़ने के बाद भी वे उसे मजबूती से पकड़ नहीं पाए। अगर वे उसे पूरब की ओर पकड़ते, तो वह अचानक पश्चिम की ओर चला जाता, और अगर वे उसे पश्चिम की ओर पकड़ने की कोशिश करते, तो वह पूरब की ओर चला जाता। मज़ेदार बात यह थी कि वह उनके अंडकोषों के बीच छटपटाता रहा। पानी लगभग छाती तक था, और कुछ देर सतह पर और फिर तालाब के तल पर तैरने के बाद उसने सारा पानी नाप लिया और हांफते-हांफते थक गया था।
तभी सुअर उछलकर बाहर आया, वापस अपने असली रूप में आ गया, अपनी कमीज़ वापस पहन ली, अपना फावड़ा उठाया और चिल्लाया, "तो मैं कौन हूँ? तुमने सोचा था कि मैं एक कैटफ़िश की आत्मा हूँ!"
उसे देखते ही सारे राक्षस भय से कांप उठे और सुअर से बोले, "जब तुम पहली बार यहाँ आए थे, तब तुम एक भिक्षु थे, फिर पानी में तुम एक मछली बन गए और हम तुम्हें पकड़ नहीं पाए। अब तुमने ये वस्त्र पहन रखे हैं।"
आप कहां से आए हैं? आपको अपना नाम बताना होगा।
"अरे शैतानो, तुम सच में नहीं जानते कि मैं कौन हूँ," सुअर ने कहा। "मैं पूज्य तांग पुजारी का शिष्य हूँ, जिसे पूर्वी तांग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा गया है। मेरा नाम मार्शल तियान पेंग है और मुझे झू वुनेन्ग या सुअर कहते हैं। तुमने मेरे गुरु को अपनी गुफा में लटका रखा है और उन्हें पकाकर खाने की योजना बना रहे हो।"
क्या मेरा स्वामी तुम्हारे लिए सिर्फ एक भोजन है जिसे तुम पकाओगे? तुरंत अपने सिर बाहर निकालो। मैं तुम सबको अपने रेक से कुचल दूंगा और तुम सबको मिटा दूंगा।

यह सुनकर राक्षस बुरी तरह डर गए। वे पानी में घुटनों के बल गिर पड़े, उनके सामने सिर झुकाकर बोले, "कृपा करके कृपा कीजिए, पूज्यवर। हम अंधे थे और गलती से आपके स्वामी को पकड़ लिया। हमने उन्हें लटका तो दिया, लेकिन यातना नहीं दी। हम आपसे दयापूर्वक विनती करते हैं कि हमारी जान बख्श दें। हम यात्रा के लिए आपको कुछ पैसे खुशी-खुशी दे देंगे और आपके स्वामी को पश्चिमी स्वर्ग की ओर विदा कर देंगे।"

"ये सब बकवास बंद करो," सुअर ने हाथ हिलाते हुए कहा। "ये कहावत बिल्कुल सही है: 'एक बार मिठाई बनाने वाले के झांसे में आ जाओ तो मीठी-मीठी बातें करने वालों पर भरोसा नहीं करोगे।' मैं तुम्हें अपने रेक से मारूंगा, फिर हम सब अपने-अपने रास्ते चले जाएंगे।"

वह मूर्ख बेहद अशिष्ट और बदतमीज़ था और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहता था। उनकी मनमोहक स्त्री सौंदर्य से उसे कोई फर्क नहीं पड़ा। उसने अपना रेक उठाया और उन पर टूट पड़ा, बेपरवाही से वार करते हुए, उसे अपने किए की परवाह नहीं थी। राक्षसों ने हताशा में प्रतिक्रिया दी। अपनी लज्जा को भूलकर, उन्होंने केवल अपनी जान बचाने की चिंता की और अपने गुप्तांगों को हाथों से ढककर पानी से बाहर कूदकर मंडप की ओर भागे।

वहाँ खड़े होकर उन्होंने जादू से अपनी नाभिओं से रेशम की मोटी रस्सियाँ निकालीं, जिससे आकाश में रेशम की एक विशाल छतरी बन गई, जिसके नीचे सुअर फँस गया। जब उस मूर्ख ने ऊपर देखा तो उसे आकाश में सूर्य दिखाई नहीं दिया।

उसने बाहर भागने की कोशिश की, लेकिन उसके पैर ज़मीन पर बिछी रेशमी रस्सियों में उलझे हुए थे, इसलिए वह उन्हें उठा नहीं पा रहा था। जब उसने पैर हिलाने की कोशिश की तो वह लड़खड़ा गया। उसने बाईं ओर जाने की कोशिश की, लेकिन उसका सिर ज़मीन पर जा टकराया, फिर दाईं ओर जाने की कोशिश की और बुरी तरह गिर पड़ा। इसलिए वह जितनी जल्दी हो सके मुड़ा और ज़मीन को चूमा, फिर से अपने पैरों पर खड़ा हुआ और एक बार फिर सिर के बल गिर पड़ा। न जाने कितनी बार वह ठोकर खाकर गिरा, जब तक कि उसका पूरा शरीर सुन्न नहीं हो गया, पैर

दुखने लगे, सिर में दर्द होने लगा और आँखें धुंधली हो गईं।
वह रेंगने में भी असमर्थ हो गया था, और ज़मीन पर कराहता पड़ा था। फिर राक्षसों ने उसे बांध दिया। उन्होंने न तो उसे पीटा और न ही उसे घायल किया, बल्कि रेशमी चंदवा को दिन के उजाले में छिपाकर, वे झट से बाहर निकलकर अपनी गुफा की ओर भाग गए।
पत्थर के पुल पर पहुँचकर वे रुक गए और एक मंत्र का जाप किया। पल भर में रेशमी चंदवा हट गया, और वे सभी नग्न अवस्था में गुफा में घुस गए, अपने गुप्तांगों को हाथों से ढकते हुए वे हँसते हुए तांग पुजारी के पास से गुजरे।
चट्टान को काटकर बनाई गई अपनी चारदीवारी में प्रवेश करने के बाद उन्होंने पुराने कपड़े पहने और सीधे गुफा के पिछले दरवाजे पर चले गए, जहाँ वे खड़े होकर पुकारने लगे, "तुम कहाँ हो, बच्चों?"
अब हर दुष्ट स्त्री का एक बच्चा था, जन्म से नहीं, बल्कि गोद लिया हुआ बच्चा जिसने उसे माँ मान लिया था। उनके नाम मधुमक्खी, बर्र, तिलचट्टा, स्पैनिश मक्खी, टिड्डा, मोम कीट और ड्रैगनफ्लाई थे। दुष्ट आत्माओं ने आकाश में अपने जाल बिछाए, इन सात कीड़ों को पकड़ा और उन्हें खाने ही वाली थीं। लेकिन जैसा कि पुरानी कहावत है, "पक्षियों की भाषा पक्षियों की होती है और जानवरों की भाषा जानवरों की।"
कीड़ों ने अपनी जान की भीख मांगी थी और आत्माओं को अपनी माँ मानने के लिए स्वेच्छा से आगे आए थे। तब से वे वसंत और गर्मियों में दुष्ट आत्माओं के लिए फूल इकट्ठा करते आ रहे थे, और जैसे ही उन्हें चीखें सुनाई देतीं, वे प्रकट होकर पूछते, "माताओं, हमारे लिए आपके क्या आदेश हैं?"
“पुत्रों,” राक्षसों ने उत्तर दिया, “आज सुबह हमसे एक गलती हो गई और हमने तांग के भिक्षु को उकसा दिया। उनके शिष्यों ने हमें तालाब में फंसा लिया और हमारा अपमान किया। हम लगभग मर ही गए थे। तुम्हें अपनी पूरी ताकत लगानी होगी। बाहर जाओ और उन्हें भगा दो। जब तुम उन्हें हरा दो, तो अपने चाचा के घर आकर हमसे मिलो।” तब राक्षसनियां अपनी जान बचाकर भाग गईं और अपने गुरु के वरिष्ठ शिष्य के घर गईं, जहां उनकी दुष्ट ज़ुबानों से और भी विपत्तियां आने वाली थीं, लेकिन उस बारे में हम अभी बात नहीं करेंगे। देखो, कीड़े अपनी मुट्ठियां रगड़ते हुए अपने शत्रुओं का सामना करने के लिए निकल पड़ते हैं।
अध्याय 72

इस बीच, सुअर, जिसका सिर बार-बार गिरने से चकरा रहा था, ने ऊपर देखा और अचानक पाया कि रेशमी चंदवा और रस्सियाँ सब गायब हो गई थीं। उसने टटोलते हुए खुद को उठाया और दर्द के बावजूद उसी रास्ते से वापस चल पड़ा। बंदर को देखते ही उसने उसे पकड़ लिया और बोला, "भाई, क्या मेरा सिर बाहर निकल आया है? क्या मेरा चेहरा नीला पड़ गया है?"

"तुम्हें क्या हुआ?" बंदर ने पूछा।

"उन दुष्ट प्राणियों ने मुझे रेशमी जाल में फंसा लिया और न जाने कितनी बार रेशमी रस्सियों से मुझे ठोकर मारी," सुअर ने जवाब दिया। "मेरी कमर मुड़ गई थी, मेरी पीठ टूटी हुई लग रही थी और मैं एक इंच भी हिल नहीं पा रहा था। फिर रेशमी छत और रस्सियाँ सब गायब हो गईं, जिससे मैं बच निकला और वापस आ गया।"

"भूल जाओ," साधु सैंड ने उसे देखकर कहा, "भूल जाओ। तुमने खुद मुसीबत मोल ली है। मुझे यकीन है कि सारे राक्षस गुरु को नुकसान पहुंचाने के लिए गुफा में वापस चले गए हैं। हमें तुरंत जाकर उन्हें बचाना होगा।"

यह सुनकर बंदर तुरंत अपनी पूरी ताकत से खेत की ओर भागा, जबकि सुअर घोड़े को आगे-आगे ले जा रहा था। वहाँ सातों छोटे शैतान पुल पर खड़े दिखाई दिए, उनका रास्ता रोकते हुए और कह रहे थे, "इतनी जल्दी नहीं, इतनी जल्दी नहीं। हम यहाँ हैं।"

"ये तो मज़ाक है!" सुअर ने उन्हें देखकर कहा। "ये तो बस कुछ बच्चे हैं। इनकी लंबाई दो फुट पाँच इंच या छह इंच है, तीन फुट से भी कम, और इनका वज़न भी केवल आठ या नौ पाउंड होगा, दस पाउंड भी नहीं।"

"तुम कौन हो?" उसने चिल्लाकर कहा।

“हम सात अमर देवियों के पुत्र हैं,” उन छोटे शैतानों ने उत्तर दिया। “तुमने हमारी माताओं का अपमान किया है, और अब तुम हम पर हमला करने की हिम्मत कर रहे हो, तुम अज्ञानी मूर्ख हो। जहाँ हो वहीं रहो, और सावधान रहो।” इसके बाद उन शानदार राक्षसों ने सूअर पर तीखा हमला बोल दिया, जो बार-बार गिरने के कारण भयंकर क्रोध में था।

कीड़ों के आकार को देखकर उसने उन पर जोरदार प्रहार करने के लिए अपना रेक उठाया।

जब उन नन्हे शैतानों ने उस मूर्ख की क्रूरता देखी, तो वे सब अपने मूल रूप में लौट आए, हवा में उड़ गए और चिल्लाए, "बदलो!" पल भर में उनमें से प्रत्येक दस बन गया, प्रत्येक दस सौ बन गया, प्रत्येक सौ हज़ार बन गया और प्रत्येक हज़ार दस हज़ार बन गया। हर एक अनगिनत संख्या बन गया। यही देखा जा सकता था:
आकाश मोम की मक्खियों से भरा हुआ था।
ड्रैगनफ्लाईज़ पूरे इलाके में नाच रही थीं।
मधुमक्खियाँ और ततैया सिर पर टूट पड़े।
तिलचट्टे आंखों पर हमला कर रहे थे।
स्पैनिश मक्खियाँ आगे और पीछे से काटती हैं।
जबकि टिड्डे ऊपर और नीचे डंक मार रहे थे।
उसका चेहरा काला था और उस पर कीड़े रेंग रहे थे:
उनकी गति देखकर तो राक्षस या देवता भी भयभीत हो जाते।
अध्याय 72
1013
पश्चिम की यात्रा
"भाई," सुअर ने घबराकर कहा, "शास्त्रों को लाना कितना भी आसान क्यों न हो, लेकिन पश्चिम की ओर जाने वाले इस रास्ते पर तो कीड़े-मकोड़े भी तुम्हें परेशान करते हैं।"
"डरो मत भाई," बंदर ने कहा। "उन पर हमला करो।"
"लेकिन वे मेरे सिर, चेहरे और पूरे शरीर पर उड़ रहे हैं," सुअर ने जवाब दिया। "वे कम से कम दस परतों तक फैले हुए हैं और मुझे डंक मार रहे हैं। मैं उन तक कैसे पहुँच सकता हूँ?"
"कोई बात नहीं," बंदर ने कहा, "कोई बात नहीं। मुझे एक तरकीब पता है।"
“भाई, जो भी हो,” साधु सैंड ने कहा, “इसे अभी इस्तेमाल करो। उसके मुंडे हुए सिर पर उन काटने के निशानों से पल भर में सूजन आ गई है।” महान ऋषि ने मुट्ठी भर बाल खींचे, उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में चबाया और फूंक मारकर बाहर निकाल दिया, और उन्हें सुनहरे चीलों, बाज़ों, चीलों, सफेद चीलों, गिद्धों, मछली पकड़ने वाले पक्षियों और गौरैयाओं की ओर मोड़ने को कहा। “भाई,” सुअर ने कहा, “सुनहरे चीलों और इन सब के बारे में ये सब क्या तकनीकी बातें हैं?”

"एक ऐसी बात जो तुम नहीं जानते," बंदर ने जवाब दिया। "सुनहरे बाज, बाज़, चील, सफेद बाज, गिद्ध, मछली पकड़ने वाले पक्षी और गौरैया, ये सात शिकारी पक्षी हैं जिनमें मेरे बाल बदल गए। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि शैतान औरतें..."
बच्चे कीड़े-मकोड़े हैं।" पक्षी कीड़े पकड़ने में इतने माहिर थे कि चोंच खोलते ही, पंजे से पकड़ते ही या पंखों से प्रहार करते ही उन्हें एक कीड़ा मिल जाता था। वे पल भर में सारे कीड़ों को खत्म कर देते थे, आसमान में उनका कोई निशान नहीं बचता था। ज़मीन पर एक फुट से भी ज़्यादा गहरे उनके शवों का ढेर लग गया था।
तभी तीनों भाई पुल पार करके गुफा में घुस सके, जहाँ उन्होंने अपने गुरु को हवा में लटकते हुए कराहते और सिसकते हुए पाया। "गुरुजी," सुअर ने उनके पास जाकर कहा, "क्या आप यहाँ मजे के लिए लटके हुए हैं? मुझे नहीं पता कि आपकी वजह से मुझे कितनी बार गिरना पड़ा है।"
"इससे पहले कि हम इस बातचीत को आगे बढ़ाएं, मालिक को खोल दो," फ्रायर सैंड ने कहा। फिर ब्रदर मंकी ने रस्सियाँ तोड़ दीं और मालिक को मुक्त करते हुए पूछा, "बुरी आत्माएँ कहाँ गईं?"
तांग पुजारी ने उत्तर दिया, "वे सातों बिल्कुल नग्न अवस्था में पीछे की ओर भागे। वे अपने बेटों को पुकार रहे थे।"
"उनके पीछे जाओ, भाइयों!" बंदर ने कहा। "मेरे पीछे आओ!"
तीनों, हर एक के हाथ में हथियार था, वे पीछे के बगीचे में खोजने गए, लेकिन उनका कोई निशान नहीं मिला। उन्होंने सभी आड़ू और बेर के पेड़ों के नीचे भी उन्हें ढूंढा, लेकिन सफलता नहीं मिली। "वे चले गए हैं," सुअर ने कहा।
"वो चले गए हैं।"
“अब हम उन्हें ढूंढना बंद कर सकते हैं,” साधु सैंड ने कहा। “मैं गुरुजी को यहाँ से निकलने में मदद करने जा रहा हूँ।” फिर तीनों भाई मोर्चे पर वापस गए, जहाँ उन्होंने तांग पुजारी से घोड़े पर सवार होने को कहा। “तुम दोनों गुरुजी की रास्ते में मदद करो,” पिग ने कहा। “मैं इन इमारतों को अपने फावड़े से तोड़ कर रख दूँगा। फिर जब वे वापस आएँगे तो उनके पास रहने की कोई जगह नहीं होगी।”
“उस जगह को तोड़ना बहुत मेहनत का काम होगा,” बंदर ने कहा। “उनकी जड़ों को काटने का सबसे अच्छा तरीका कुछ लकड़ियाँ ढूँढ़ना है।” फिर उस मूर्ख बंदर ने कुछ सूखी चीड़ की टहनियाँ, टूटे हुए बाँस, सूखी विलो और मुरझाई लताएँ इकट्ठा कीं और

उनमें आग लगा दी। भयंकर आग ने सब कुछ जलाकर राख कर दिया। तभी गुरु और शिष्यों को अपने रास्ते पर जाने की हिम्मत मिली।
अगर आपको नहीं पता कि राक्षस उनके साथ क्या अच्छा या बुरा करने वाले थे, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 72
1014
पश्चिम की यात्रा
अध्याय 73
भावनाएँ द्वेष पालती हैं और तबाही मचाती हैं
जब हृदय का स्वामी राक्षसों से मिलता है तो वह प्रकाश को नष्ट कर देता है।
कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि सूर्य ने तांग पुरोहितों को सहारा दिया, जब वे सुअर और साधु सैंड के साथ पश्चिम की ओर मुख्य सड़क पर तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। कुछ ही घंटों में वे कई ऊँचे टावरों और भव्य इमारतों वाले एक परिसर के पास पहुँच गए। "शिष्य," संज़ंग ने अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए कहा, "वह जगह क्या है?"
बंदर ने ऊपर देखा और उसे यह दृश्य दिखाई दिया।
पहाड़ियों से घिरे ऊंचे टावर,
मंडपों के चारों ओर घूमती हुई धाराएँ।
द्वार के सामने का जंगल घना था।
और इमारतों के बाहर फूलों की मनमोहक खुशबू फैली हुई थी।
सफेद बगुले विलो पेड़ों के बीच बैठे थे।
जैसे कोहरे में आधा छिपा हुआ दोषरहित जेड पत्थर;
सुनहरे ओरिओल पक्षी आड़ू के पेड़ों पर गा रहे थे।
चमकीले फूलों में सोने की चमक।
जंगली हिरणों के जोड़े
हरियाली के बीचोंबीच दुनिया से बेखबर होकर कदम रखा;
पर्वतीय पक्षियों के जोड़े
लाल पेड़ों की चोटियों के बीच उड़ते हुए वे गीत गा रहे थे।
यह लियू और रुआन की तियानताई गुफा की तरह थी।
और यह परियों की दुनिया में अमर लोगों के घर को टक्कर देता था।

“गुरुजी,” बंदर भाई ने बताया, “यह कोई राजमहल या अमीर आदमी का महल नहीं है। यह किसी ताओवादी मंदिर या बौद्ध मठ जैसा दिखता है। वहाँ पहुँचकर हमें पक्का पता चल जाएगा।” यह सुनकर संज़ंग ने अपने घोड़े को चाबुक मारा, और जब गुरुजी और शिष्य द्वार पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि द्वार के ऊपर एक पत्थर की पट्टिका लगी हुई थी जिस पर 'पीले फूलों का मंदिर' लिखा था। संज़ंग घोड़े से उतर गए।
पिग ने कहा, "पीले फूल का मंदिर मतलब यह एक ताओवादी स्थान है, इसलिए हमारे लिए अंदर जाकर उन्हें देखना ठीक है।"
"भले ही हम अलग-अलग कपड़े पहनते हों, लेकिन हमारा आचरण एक ही तरीके से होता है।"
अध्याय 73
1015
पश्चिम की यात्रा
“आप सही कह रहे हैं,” फ्रायर सैंड ने कहा। “हम अंदर जाकर चारों ओर देख सकते हैं, और साथ ही घोड़े को चारा भी खिलाया जा सकता है। अगर सब ठीक लगा तो हम मालिक के लिए भोजन का इंतजाम कर सकते हैं।”
गुरुजी ने उनके सुझाव मान लिए और वे चारों अंदर चले गए। भीतरी द्वारों के दोनों ओर एक-एक दोहा चिपकाया गया था:
अमरों का महल: पीली कोंपलें और सफेद बर्फ।
उड़ने की क्षमता रखने वाले पुरुषों का घर: दुर्लभ और अद्भुत फूल।
"तो यहाँ का ताओवादी नशीले पदार्थों को परिष्कृत करता है, भट्टी से खेलता है और एक भट्टी ढोता है," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा।
"अपनी ज़बान संभालो," संज़ंग ने उसे चुटकी काटते हुए कहा, "अपनी ज़बान संभालो। हम उन्हें नहीं जानते और वे हमारे रिश्तेदार भी नहीं हैं। यह महज़ एक क्षणिक मुलाक़ात है। वे जैसे भी हों, चिंता मत करो।" इतना कहने से पहले ही वह भीतरी द्वार से अंदर चला गया, जहाँ उसने मुख्य हॉल के दरवाज़े कसकर बंद पाए और एक ताओवादी गुरु एक ढके हुए रास्ते के नीचे बैठकर औषधि बना रहे थे। ज़रा उनके पहनावे को देखो: उनके सिर पर सोने से जड़ी एक चमकीली लाल टोपी थी।
उनके शरीर पर एक गहरे काले रंग का ताओवादी वस्त्र था।
उसके पैरों में गहरे हरे रंग के बादलों पर चलने वाले जूते थे।

उनकी कमर पर चमकीले पीले रंग का लू डोंगबिन सैश बंधा हुआ था।
उसका चेहरा सुनहरे तरबूज की तरह गोल था।
उसकी आंखें चमकते तारों जैसी थीं।
उसकी नाक मुसलमानों की नाक जितनी बड़ी और ऊंची थी।
और उसके होंठ किसी तातार के होंठों की तरह पीछे की ओर मुड़ गए।
मार्ग पर दृढ़ संकल्पित उसका हृदय, एक छिपी हुई गर्जना के समान था;
वह वास्तव में एक अमर व्यक्ति था, जिसने बाघों और ड्रैगनों को वश में किया था।
जैसे ही उसने उसे देखा, संजांग ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "आदरणीय ताओवादी गुरु, मेरा सादर प्रणाम।" ताओवादी चौंककर ऊपर देखने लगा और जो कुछ उसने देखा उससे इतना भयभीत हो गया कि उसके हाथ से वह औषधि गिर गई जिस पर वह काम कर रहा था।
फिर उन्होंने अपने बालों की पिन और कपड़े ठीक किए, सीढ़ियों से नीचे उतरे और संज़ंग का अभिवादन करते हुए कहा: "आदरणीय महोदय, आपसे मिलने में देरी के लिए क्षमा करें। कृपया अंदर आइए और बैठिए।" आदरणीय बुजुर्ग प्रसन्न होकर अध्याय 73 में चले गए।
1016
पश्चिम की यात्रा
मुख्य हॉल में प्रवेश करते ही उन्होंने तीन पवित्र पुरुषों की मूर्तियाँ और एक वेदी देखी, जिस पर धूपदान और धूप रखी थी। उन्होंने धूपदान में कुछ अगरबत्तियाँ जलाईं और ताओवादी गुरु को प्रणाम करने से पहले तीन बार तीनों पवित्र पुरुषों को प्रणाम किया। फिर वे अतिथि सीटों पर गए और अपने शिष्यों के साथ बैठ गए। अमर बालकों को तुरंत चाय लाने के लिए कहा गया, जिसके बाद दो बालक चाय की थाली लाने, चाय के प्याले धोने, चाय के चम्मच पोंछने और चाय के साथ खाने के लिए कुछ नाश्ता तैयार करने के लिए अंदर गए। उनकी इस भागदौड़ से तीर्थयात्रियों के शत्रु जल्द ही विचलित हो गए।
अब गोसामर गुफा के सात राक्षस यहाँ के ताओवादी गुरु के सहपाठी थे, और यहीं वे अपने पुराने कपड़े पहनकर और अपने बेटों को बुलाकर जल्दी से आए थे। वे मंदिर के पीछे अपने लिए नए कपड़े बना रहे थे जब उन्होंने लड़कों को चाय बनाते देखा और पूछा,

"कौन से मेहमान आए हैं, लड़कों? इतनी जल्दी किस बात की है?"
लड़कों ने जवाब दिया, "चार बौद्ध भिक्षु अभी-अभी आए हैं, और गुरु ने हमें उनके लिए चाय तैयार करने को कहा है।"
"क्या भिक्षुओं में से कोई पीला और मोटा है?" उन राक्षसी महिलाओं ने पूछा।
"हाँ।"
"क्या उनमें से किसी का थूथन लंबा और कान बड़े हैं?" उन्होंने फिर पूछा।
"हाँ।"
"तो जितनी जल्दी हो सके चाय अंदर ले आओ," उन शैतान औरतों ने कहा, "और अपने मालिक को यहाँ आने के लिए आँख मारो।"
हमें उनसे कुछ बहुत जरूरी बात कहनी है।
लड़के ताओवादी गुरु के लिए चाय के पाँच प्याले लेकर गए। गुरु ने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर पहले संज़ंग को, फिर सुअर, साधु रेत और भाई बंदर को दोनों हाथों से एक-एक प्याला दिया। चाय पीने के बाद प्याले समेट लिए गए और लड़कों ने अपने गुरु को देखा। गुरु ने झुककर कहा, "कृपया बैठ जाइए, सज्जनों। बच्चों, ट्रे नीचे रख दो और उनके साथ बैठो। मुझे बाहर जाना है। मैं वापस आता हूँ।" संज़ंग और उनके शिष्य एक लड़के के मार्गदर्शन में हॉल से बाहर घूमने चले गए।
जब ताओवादी गुरु मठाधीश के आवास पर वापस गए तो सातों महिलाएं घुटनों के बल गिर पड़ीं और बोलीं,
"भाई, भाई, कृपया हमारी बात सुनो।"
ताओवादी गुरु ने उन्हें उठने में मदद की और कहा, "आज सुबह जब तुम यहाँ आए थे तो मुझसे कुछ कहना चाहते थे, लेकिन मैं जो औषधि बना रहा था, उसके कारण मैं किसी महिला को देख नहीं पा रहा था। इसीलिए मुझे मना करना पड़ा। अभी मेरे कुछ आगंतुक बाहर हैं, तो तुम मुझे बाद में बता सकते हो।"
"बड़े भाई, हमें आपको बताना होगा कि हम आपसे इसलिए बात कर रहे हैं क्योंकि यहाँ अजनबी हैं। अगर अजनबी चले गए तो आपको बताने का कोई मतलब नहीं रह जाएगा।"
“बहनो, तुम ये क्या बात कर रही हो?” ताओवादी गुरु ने कहा। “अजनबी यहाँ हैं, ऐसे में मुझसे बात करने की क्या ज़रूरत है? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? मैं शांति और सुकून से अमरता की साधना करता हूँ, लेकिन अगर मैं पत्नी, बच्चों और

पारिवारिक ज़िम्मेदारियों वाला एक आम आदमी भी होता, तो भी मैं अपने मेहमान के जाने का इंतज़ार करता। तुम इतनी बदतमीज़ी कैसे कर सकती हो और मुझे शर्मिंदा कैसे कर सकती हो? अब मुझे जाने दो।"

सभी शैतान औरतों ने उसे पकड़ लिया और कहा, "कृपया अपना आपा न खोएं, बड़े भाई। हमें बताएं कि ये आगंतुक कहां से आए हैं।" ताओवादी गुरु ने मुंह फुला लिया और उनकी बात अनसुनी कर दी। "जब लड़के अध्याय 73 के लिए अंदर आए..."

1017

पश्चिम की यात्रा

"अभी चाय पीते हुए उन्होंने हमें बताया कि आगंतुक चार बौद्ध भिक्षु हैं," उन शैतान औरतों ने कहा।

ताओवादी गुरु ने क्रोधित होकर कहा, "वे भिक्षु हैं, तो इसमें क्या बड़ी बात है?"

"क्या उन चार भिक्षुओं में से एक का चेहरा पीला और मोटा है?" उन राक्षसी महिलाओं ने पूछा, "और क्या उनमें से एक की थूथन लंबी और कान बड़े हैं? क्या तुमने उनसे पूछा कि वे कहाँ से आए हैं?"

"जी हां," ताओवादी ने कहा, "उनमें से दो ऐसे हैं। आपको कैसे पता चला? मुझे लगता है कि आपने उन्हें कहीं देखा होगा।"

“भाई, तुम्हें पता नहीं है कि कितनी भयानक घटनाएँ घटी हैं,” शैतानों ने कहा। “उस भिक्षु को तांग दरबार ने पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा था। वह आज सुबह हमारी गुफा में भोजन की भीख माँगने आया था। हमने उसे पकड़ लिया क्योंकि हमने उस तांग पुजारी के बारे में सुना था।”

"तुमने उसे क्यों पकड़ा?" ताओवादी ने पूछा।

“हम तो बहुत पहले से जानते हैं कि तांग पुरोहित का शरीर शुद्ध है क्योंकि उन्होंने दस जन्मों तक निरंतर अपने आचरण का अभ्यास किया है,” राक्षसों ने उत्तर दिया। “जो कोई भी उनके मांस का एक टुकड़ा खाएगा, वह अमर हो जाएगा। इसीलिए हमने उन्हें बंदी बनाया। बाद में लंबे थूथन और बड़े कानों वाले भिक्षु ने हमें अशुद्धता-शुद्धिकरण के झरने में रखा।”

पहले उसने हमारे कपड़े चुरा लिए और फिर अपनी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करके हमारे साथ नहाने की ज़िद की। वह पानी में कूद गया और खुद को एक मछली में बदल लिया। जिस तरह से वह हमारी जांघों के बीच तैरता रहा, उससे साफ था कि

उसके इरादे बहुत ही अनुचित थे। वह बेहद शर्मनाक था। फिर वह पानी से बाहर कूद गया और वापस अपने असली रूप में आ गया। चूंकि हम उसे ऐसा करने नहीं देने वाले थे, इसलिए उसने अपने नौ दांतों वाले रेक से हम सबको मारने की कोशिश की। अगर हमें कुछ पता न होता तो वह हम सबको मार डालता। हम डर और कांपते हुए भाग गए और आपके भतीजों को युद्ध में भेज दिया। हमें नहीं पता कि वे जीवित हैं या मर गए हैं। हम यहां आपकी दया की भीख मांगने आए हैं और आपसे विनती करते हैं कि आप बहुत पहले मारे गए अपने साथी छात्रों का बदला लें।

यह सुनकर ताओवादी क्रोधित हो उठा, उसके बदले हुए चेहरे से यह स्पष्ट था। "ये भिक्षु कितने बदतमीज़ हैं!" वह चिल्लाया। "ये कितने गुंडे हैं! चिंता मत करो: मैं इन्हें सबक सिखाऊंगा।"

"अगर तुम उनसे लड़ने जा रहे हो," उन शैतान औरतों ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा, "तो तुम्हें हमें तुम्हारी मदद करने देना होगा।"

ताओवादी ने कहा, "लड़ने की कोई ज़रूरत नहीं होगी, बिलकुल नहीं। जैसा कि कहावत है, किसी से लड़ने के लिए आपको खुद को नीचा दिखाना पड़ता है। मेरे साथ आइए।"

महिलाएँ उसके साथ उसके कमरे में गईं, जहाँ उसने बिस्तर के पीछे एक सीढ़ी रखी हुई थी, छत की कड़ियों तक चढ़ गया और एक छोटा सा चमड़े का डिब्बा नीचे ले आया। वह आठ इंच ऊँचा, एक फुट लंबा और चार इंच चौड़ा था और उस पर एक छोटा सा पीतल का ताला लगा हुआ था। उसने अपनी आस्तीन से हंस के पीले रंग के रेशम का एक चौकोर रूमाल निकाला, जिसके किनारों पर एक छोटी सी चाबी बंधी हुई थी। डिब्बा खोलकर उसने उसमें से एक पैकेट निकाला जिसमें एक दवा थी। यह दवा थी: एक हजार पाउंड गोबर।

सभी प्रकार के पर्वतीय पक्षियों से,

तांबे के कड़ाहे में उबाला गया,

समान आंच पर कम किया गया,

जब तक हजार पाउंड सिर्फ एक चम्मच रह गए

फिर उसे घटाकर एक तिहाई कर दिया गया।
इसे और भी ज्यादा देर तक तला गया।
एक बार फिर परिष्कृत और स्मोक्ड किया गया।
जहरीली दवा बनाने के लिए,
खजाने या रत्नों से भी अधिक कीमती।
यदि आप इसका स्वाद चखकर देखें,
इसका एक बार स्वाद चखने से ही तुम सीधे नरक में जाओगे।
“बहनो,” ताओवादी गुरु ने कहा, “जो भी मनुष्य मेरे इस अनमोल खजाने का एक दाना भी खाएगा, पेट में पहुँचते ही उसकी मृत्यु हो जाएगी। किसी देवता या अमर प्राणी को मारने के लिए केवल तीन दाने ही काफी होंगे। इन भिक्षुओं ने शायद मार्ग का कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया है, इसलिए उन्हें तीन दानों की आवश्यकता होगी। मेरा तराजू लाओ।” एक महिला तुरंत तराजू ले आई।
“बारह दाने तोलो,” उसने कहा, “और उसे चार भागों में बाँट लो।” फिर उसने बारह लाल बेर लिए, उनमें छेद किए, प्रत्येक में एक-एक दाना औषधि भरकर उन्हें चार चाय के प्यालों में रख दिया। फिर इन प्यालों को पाँचवें प्याले के साथ, जिसमें दो काले बेर थे, एक ट्रे पर रख दिया गया।
“मुझे उनसे पूछताछ करने दीजिए,” उसने कहा। “अगर वे तांग राजवंश के नहीं हैं, तो बात यहीं खत्म; लेकिन अगर वे तांग राजवंश के हैं, तो मैं ताज़ी चाय मंगवाऊँगा और आप ये चाय लड़कों को दे दीजिए। जैसे ही वे इसे पिएंगे, वे सब मर जाएंगे और आपका बदला पूरा हो जाएगा। इससे आपका मन प्रसन्न हो जाएगा।” सातों महिलाएं कृतज्ञता से फूली नहीं समा रही थीं।
ताओवादी ने दूसरा वस्त्र धारण किया और दिखावटी विनम्रता का ढोंग करते हुए फिर बाहर आ गया। उसने तांग पुजारी और अन्य लोगों से अतिथि सीटों पर फिर से बैठने का आग्रह किया। ताओवादी ने कहा, "कृपया मुझे क्षमा करें, आदरणीय महोदय। अभी आपसे न मिलने का कारण यह था कि मैं पीछे अपने शिष्यों से आपके लिए शाकाहारी भोजन बनाने हेतु कुछ साग और मूली चुनने को कह रहा था।"
"हम बौद्ध भिक्षु खाली हाथ आए हैं," संजांग ने कहा। "हम आपसे भोजन के लिए परेशान नहीं कर सकते।"
ताओवादी गुरु ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "हम सब धर्मनिष्ठ लोग हैं। जब भी हम

किसी मठ या मंदिर में जाते हैं, हमें तीन पाइंट चावल मिलते हैं, तो खाली हाथ होने की बात क्यों? क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ, पूज्यवर, आप किस मठ से हैं और आप यहाँ क्यों आए हैं?"

"मुझे महामहिम तांग सम्राट ने पश्चिमी स्वर्ग में स्थित महान गर्जन मठ से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा है," संज़ंग ने उत्तर दिया। "हम आपके ताओवादी मंदिर के पास से गुजर रहे थे, इसलिए हम यहां दर्शन करने आए हैं।"

यह खबर सुनकर ताओवादी का चेहरा खुशी से चमक उठा और उसने कहा, "मैं आपसे मिलने के लिए इतनी दूर से नहीं आ सका, क्योंकि मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि आप परम गुणी बुद्ध के प्रति इतने निष्ठावान हैं। कृपया मुझे क्षमा करें।"

कृपया मुझे क्षमा करें।" फिर उन्होंने लड़कों से तुरंत ताज़ी चाय लाने और जल्द से जल्द खाना तैयार करने को कहा, जिस पर लड़के चाय लेने के लिए सीधे अंदर चले गए।

“ये लो, बढ़िया चाय तैयार है,” महिलाओं ने उन्हें पुकारा। “इसे पी लो।” लड़कों ने सचमुच पाँचों प्याले पी लिए, और ताओवादी गुरु ने जल्दी से तांग पुजारी को लाल बेर की चाय का एक प्याला थमा दिया। अध्याय 73 में सुअर के बारे में बताया गया है।

1019

पश्चिम की यात्रा

इतना बड़ा कि ताओवादी ने उसे अपना वरिष्ठ शिष्य समझ लिया और सोचा कि साधु सैंड उससे अगला वरिष्ठ है। बंदर को कनिष्ठ समझकर ताओवादी ने उसे चौथी बार प्याला दिया। जब तक तेज नजर वाले बंदर भाई ने अपना प्याला लिया, तब तक उसने देख लिया था कि ट्रे पर रखे प्याले में दो काले बेर थे।

“चलिए कप बदल लेते हैं, महोदय,” उसने कहा। “सच कहूँ तो,” ताओवादी ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “यहाँ जंगल में रहने वाला एक गरीब ताओवादी होने के नाते, मेरे पास इस समय चाय और भोजन की कमी है। मैं अभी पीछे फल ढूँढ रहा था और मुझे केवल ये बारह लाल बेर ही मिले, जिन्हें मैंने चार कप चाय में डालकर आपको भेंट किया। क्योंकि मुझे आपके साथ कुछ ले जाना था, इसलिए मैंने इन कम गुणवत्ता वाले बेरों से एक और कप चाय बना ली, ताकि आप भी इसका आनंद ले सकें। यह केवल सम्मान का एक संकेत है।”

“ये सब बकवास है,” बंदर मुस्कुराते हुए बोला। “पुराने समय में लोग कहते थे, ‘घर पर रहकर कभी गरीबी नहीं होती; लेकिन यात्रा में गरीबी जानलेवा होती है।’ तुम तो यहाँ घर पर हो, तो फिर गरीबी की ये सारी बातें क्यों? असल में गरीब तो हम जैसे घुमंतू भिक्षु होते हैं। मैं तुमसे अदला-बदली कर लूँगा। मैं ज़ोर देता हूँ।”

यह सुनकर संजांग ने कहा, "वुकोंग, यह अमर सज्जन तो बहुत ही मेहमाननवाज हैं। आपका प्याला आपके पास है। अदला-बदली की कोई ज़रूरत नहीं है।" बंदर के पास कोई विकल्प नहीं था। उसने अपने बाएं हाथ से प्याला उठाया और उसे अपने दाहिने हाथ से ढककर उन्हें देखने लगा।

लेकिन सुअर, जिसे भूख और प्यास तो लग ही रही थी, लेकिन वैसे भी बहुत भूख लगती थी, उसने प्याले में से तीनों लाल बेर देखते ही उठा लिए और शोर मचाते हुए निगल गया। गुरु ने भी अपने बेर खा लिए, और साधु सैंड ने भी। उसी क्षण सुअर का चेहरा पीला पड़ गया, साधु सैंड की आँखों से आँसू बहने लगे और तांग पुजारी के मुँह से झाग निकलने लगा। सीधे बैठने में असमर्थ, तीनों बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े।

जब महान ऋषि को पता चला कि उन्हें ज़हर दिया गया है, तो उन्होंने अपने हाथों में चाय का प्याला उठाया और उसे ताओवादी गुरु के चेहरे पर फेंक दिया। ताओवादी ने अपनी आस्तीन से उसे रोक लिया और वह ज़मीन पर गिरते ही ज़ोरदार आवाज़ के साथ टूट गया। ताओवादी ने क्रोध में कहा, "अरे भिक्षु, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरा प्याला तोड़ने की?"

बंदर ने गुस्से से कहा, "जानवर, देखो तुमने उन तीनों का क्या हाल कर दिया! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि तुम मेरे लोगों को जहरीली चाय पिला रहे हो?"

ताओवादी गुरु ने कहा, "राक्षस, तुमने खुद ही यह मुसीबत मोल ली है। क्या तुम्हें इसका एहसास नहीं है?"

"हम अभी-अभी यहाँ आए हैं और हमने बैठने की जगह और हम कहाँ से आए हैं जैसी बातों पर चर्चा की है," मंकी ने कहा। "हमने कोई बड़ी-बड़ी बातें नहीं कीं। आप कैसे कह सकते हैं कि हमने खुद मुसीबत मोल ली है?"

"क्या तुमने रेशमी गुफा में भोजन के लिए भीख मांगी थी?" ताओवादी गुरु ने पूछा। "क्या तुमने गंदगी साफ करने वाले झरने में स्नान किया था?"

“गंदगी साफ करने वाले झरने में सात राक्षसी थीं,” बंदर ने उत्तर दिया। “तुम्हारी बातों से तो लगता है कि तुम उनसे मिले हुए हो। मुझे यकीन है कि तुम खुद भी एक दुष्ट

आत्मा हो। यहीं रहो और यह लो!" महान संत ने अपने कान में सोने की पट्टी वाली गदा टटोली निकाली, उसे चावल के कटोरे जितना मोटा बनाया और ताओवादी गुरु के चेहरे पर प्रहार किया। ताओवादी ने तेजी से मुड़कर वार से खुद को बचाया और फिर एक उत्तम तलवार निकालकर पलटवार किया।

उनकी गाली-गलौज और लड़ाई ने अंदर मौजूद सातों शैतान औरतों को परेशान कर दिया था, जो सब चिल्लाते हुए बाहर भाग आईं।

"बड़े भाई, आप झंझट में न पड़ें। चलिए, हम उसे पकड़ लेते हैं।" उन्हें देखते ही बंदर पहले से भी ज़्यादा क्रोधित हो गया। उसने अपने लोहे के डंडे को दोनों हाथों से घुमाते हुए अपना बचाव छोड़ दिया और उन पर टूट पड़ा, बेतहाशा वार करने लगा। तब सातों महिलाओं ने अपने कपड़े उतार दिए, जिससे उनके सफेद पेट दिखाई देने लगे, और अपनी नाभि से जादू से रेशम की मोटी रस्सियाँ निकालीं जो इतनी अधिक मात्रा में निकलीं कि उनसे एक चंदवा बन गया जिसके नीचे भाई बंदर को कैद कर लिया गया।

अध्याय 73

1020

पश्चिम की यात्रा

हालात बिगड़ते देख बंदर उठा, मंत्र बोला, कलाबाजी की, छत तोड़कर भाग निकला। फिर वह हवा में उदास खड़ा रहा, अपने गुस्से को काबू में रखते हुए, चमकती रेशमी रस्सियों को करघे पर ताने-बाने की तरह एक-दूसरे को काटते हुए देखता रहा। पल भर में पीले फूल मंदिर के सारे बुर्ज और हॉल पूरी तरह से छिप गए। "भयानक," बंदर ने कहा, "ये बहुत भयानक हैं। मैंने पहले कभी ऐसी किसी चीज का सामना नहीं किया। इसीलिए तो सुअर इतनी बार गिर जाता था। अब मैं क्या करूँ? गुरु और मेरे भाइयों को जहर दे दिया गया है। शैतानों का ये गिरोह सब एक-दूसरे के साथ मिले हुए हैं, और मुझे इनके बारे में कुछ नहीं पता। मैं वापस जाकर उस स्थानीय देवता से पूछताछ करूँगा।"

महान ऋषि ने अपने बादल को धरती पर उतारा, उंगलियों से मंत्र पढ़ा, पवित्र अक्षर ओम का उच्चारण किया और पुराने स्थानीय देवता को अपने पास वापस आने के लिए विवश कर लिया। बूढ़ा देवता डर से कांपते हुए रास्ते के किनारे घुटनों के बल बैठ गया और प्रणाम करते हुए बोला, "महान ऋषि, आप अपने स्वामी को बचाने गए थे। आप वापस क्यों आ गए हैं?"

“मैंने आज सुबह उसे बचाया,” बंदर ने जवाब दिया, “और वहाँ से थोड़ी दूर आगे हम एक पीले फूल के मंदिर में पहुँचे। जब मैं गुरु के साथ अंदर देखने गया, तो मंदिर के मुख्य ताओवादी ने हमारा स्वागत किया, और हमारी बातचीत के बीच में ही उसने मेरे गुरु और बाकी दोनों को ज़हर मिली चाय पिलाकर बेहोश कर दिया। सौभाग्य से मैंने चाय नहीं पी, लेकिन जब मैं उसे अपने डंडे से मारने ही वाला था, तो वह रेशमी गुफा में भीख माँगने और गंदगी साफ करने वाले झरने में नहाने की बातें करने लगा, इसलिए मैं समझ गया कि वह एक राक्षस है। जैसे ही उसने पलटवार करने के लिए हाथ उठाया, सातों औरतें बाहर आईं और अपनी रेशमी रस्सियाँ खोल दीं। अच्छा हुआ कि मुझे वहाँ से भागने का तरीका पता था। मुझे लगता है कि आप यहाँ रहने वाले देवता हैं, इसलिए आपको उनके बारे में ज़रूर पता होगा। वे किस तरह की बुरी आत्माएँ हैं? अगर मार नहीं खाना चाहते तो मुझे सच बता दो।”

स्थानीय देवता ने प्रणाम करते हुए कहा, "उन दुष्ट आत्माओं के यहाँ आए हुए दस साल से भी कम समय हुआ है। तीन साल पहले जब मैं निरीक्षण कर रहा था, तब मैंने देखा कि वे वास्तव में क्या हैं: सात मकड़ी आत्माएँ। उनसे निकलने वाली रेशमी रस्सियाँ मकड़ियों के जाले हैं।"

यह खबर सुनकर बंदर बेहद खुश हुआ और बोला, "तुम्हारे बताए अनुसार तो कोई समस्या नहीं है। ठीक है। तुम वापस जा सकते हो, मैं जादू से उसे वश में कर लेता हूँ।" स्थानीय देवता ने सिर झुकाया और चला गया।

फिर बंदर पीले फूल वाले मंदिर के बाहर गया, अपनी पूंछ से सत्तर बाल निकाले, उन पर जादुई साँस फूँकी और चिल्लाया, "बदलो!" बाल सत्तर छोटे बंदरों में बदल गए। फिर उसने अपने सोने की पट्टी वाले डंडे पर जादुई साँस फूँकी, "बदलो!" कहा और उसे बहत्तर दो मुँह वाले काँटों में बदल दिया, जिनमें से एक-एक उसने हर छोटे बंदर को दे दिया। बंदर ने खुद बाहर खड़े होकर एक काँटे से रेशमी रस्सियों को मरोड़ा, फिर वे सब एक धुन की ताल पर एक साथ टूट पड़े, रस्सियों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, हर एक ने दस पाउंड से ज़्यादा रस्सी फाड़ दी। वे अंदर से सात मकड़ियों को बाहर खींच लाए। हर एक मकड़ी टोकरी के आकार की थी। उन सभी ने अपने हाथ-पैर एक साथ बाँध रखे थे और उनके गले में रस्सियाँ थीं।

"हमें छोड़ दो, हमें छोड़ दो," उन्होंने कहा। तब सत्तर छोटे बंदरों ने सातों मकड़ियों को ज़मीन पर दबा दिया और उन्हें छोड़ने से इनकार कर दिया।

"उन पर हमला मत करो," बंदर ने कहा। "हम बस इतना चाहते हैं कि वे मेरे मालिक और मेरे भाइयों को वापस दे दें।"
"बड़े भाई," राक्षसों ने अपनी पूरी ताकत से चीखते हुए कहा, "तांग पुजारी को वापस दे दो और हमारी जान बचाओ।"
ताओवादी गुरु दौड़कर बाहर गए और बोले, "बहनों, मैं तांग पुजारी को खाने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें नहीं बचा सकता।"
इससे बंदर भाई क्रोधित हो गया। "अगर तुम मेरे मालिक को वापस नहीं दोगे तो देखो तुम्हारी बहनों का क्या हाल होता है।"
महान संत ने अपना कांटा लहराया, उसे लोहे के डंडे में बदल दिया, जिसे उन्होंने दोनों हाथों से उठाया और सात मकड़ी आत्माओं को चूर-चूर कर दिया। फिर उन्होंने अपनी पूंछ को दो-तीन बार झटक दिया, उस पर बाल वापस लगा दिए और अकेले ही अंदर घुस गए, अपने डंडे को घुमाते हुए ताओवादी गुरु से लड़ने के लिए।
अध्याय 73
1021
पश्चिम की यात्रा
जब ताओवादी गुरु ने बंदर को अपने सात साथी शिष्यों की हत्या करते देखा, तो यह उनके लिए असहनीय था। क्रोधित होकर उन्होंने जवाबी कार्रवाई के लिए अपनी तलवार उठाई। इस युद्ध में उनमें से प्रत्येक क्रोध से उबल रहा था और अपनी दिव्य शक्तियों का पूर्ण प्रयोग कर रहा था। यह एक शानदार युद्ध था।
दुष्ट आत्मा ने एक तेज तलवार चलाई;
महान ऋषि ने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी उठाई।
दोनों तांग राजवंश के संजांग के लिए लड़ रहे थे।
जिनके कारण सात महिलाओं की हत्या की गई थी।
अब वे हर तरह के कौशल से लड़ रहे थे।
वे अपने हथियारों से अपनी अपार शक्ति का प्रदर्शन कर रहे हैं।
महान ऋषि की आभा अत्यंत शक्तिशाली थी।
और दुष्ट अमर के साहस के विरुद्ध।
उनकी जोशीली चालें ब्रोकेड की तरह ही समृद्ध थीं।
और दोनों हाथ चरखे की तरह तेजी से चलने लगे।

तलवार और लाठी की तेज आवाज सुनाई दी।
और तैरते हुए बादल भयावह रूप से पीले थे।
उन्होंने बहुत कम शब्द बोले।
उन्होंने अपनी चालाकी का इस्तेमाल किया,
किसी चित्रकारी में ब्रश की रेखाओं की तरह आगे-पीछे हिलना।
उनके द्वारा उड़ाई गई हवा और धूल ने भेड़ियों और बाघों को डरा दिया;
तारे गायब हो गए और आकाश और पृथ्वी में अंधेरा छा गया।
जब ताओवादी गुरु ने महान ऋषि के साथ पचास-साठ दौर तक लड़ाई लड़ी, तो उन्हें अपने हाथ कमजोर और नसें ढीली पड़ने लगीं। इसलिए उन्होंने अपनी बेल्ट खोली और ज़ोरदार फड़फड़ाहट के साथ अपना काला वस्त्र उतार दिया। महान ऋषि ने हंसते हुए कहा, "मेरे शिष्य, अगर तुम मुझे हरा नहीं पाए, तो वस्त्र उतारने के बाद भी नहीं हरा पाओगे।"
ताओवादी गुरु ने अपने वस्त्र उतारते ही अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और अपनी पसलियों के नीचे हजारों आंखें दिखाईं जिनमें सुनहरी रोशनी चमक रही थी। यह भयानक था:
घना पीला धुआँ,

पश्चिम की यात्रा
चमकीला सुनहरा प्रकाश।
घना पीला धुआँ
उसकी पसलियों के नीचे से बादलों की तरह पानी उमड़ पड़ा;
चमकीली सुनहरी रोशनी
हजारों आंखों से आग की तरह निकली।
बाईं और दाईं ओर वे सोने की बाल्टियों की तरह प्रतीत हो रहे थे;
पूर्व और पश्चिम दोनों ओर से देखने पर वे पीतल की घंटियों के समान प्रतीत होते थे।
इस प्रकार एक दुष्ट अमर प्राणी ने अपनी जादुई शक्ति का प्रयोग किया।
एक ताओवादी गुरु ने दैवीय क्षमता का प्रदर्शन किया।
आँखों को चकाचौंध कर देने वाला, सूर्य, चंद्रमा और आकाश को ढक देने वाला,

लोगों को तीखी गंध वाली वाष्प से ढक देना।
महान ऋषि स्वर्ग के समतुल्य
सुनहरी रोशनी और पीले धुएं में समा गया।
बंदर अपने हाथों और पैरों से बेताब होकर छटपटाने लगा, लेकिन सुनहरी रोशनी में बस गोल-गोल घूमता रहा, न आगे बढ़ सका और न पीछे हट सका। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी बाल्टी में गोल-गोल घूम रहा हो। स्थिति निराशाजनक थी। उसे असहनीय गर्मी लग रही थी। घबराहट में वह हवा में उछला, सुनहरी रोशनी से टकराया और सिर के बल ज़मीन पर जा गिरा। उसके सिर में चोट लगी थी और दर्द हो रहा था, साथ ही सिर के ऊपरी हिस्से में भी दर्द महसूस हो रहा था।
"कितनी बुरी किस्मत है," उसने सोचा, "कितनी बुरी किस्मत है। आज तो मेरा सिर किसी काम का नहीं है। आमतौर पर तलवारें और कुल्हाड़ियाँ इसे चोट नहीं पहुँचा सकतीं, तो फिर सुनहरी रोशनी ने इसे क्यों घायल कर दिया? थोड़ी देर में तो इसमें संक्रमण हो ही जाएगा, और अगर ठीक भी हो गया तो मुझे टिटनेस हो सकता है।" उसे अभी भी असहनीय गर्मी लग रही थी। "मैं न आगे बढ़ सकता हूँ, न पीछे," उसने एक योजना बनाते हुए सोचा, "न बाएँ, न दाएँ, और न ही ऊपर जाकर रास्ता तोड़ सकता हूँ। अब क्या करूँ? मुझे नीचे जाकर ही निकलना होगा।"
महान संत ने मंत्रोच्चार किया, स्वयं को झटककर पैंगोलिन नामक एक खुरदरे, खुरदरे जीव में रूपांतरित हो गए। सचमुच:
लोहे के पंजों के चार सेट
पहाड़ को खोदते हुए, चट्टानों को चूर-चूर कर पाउडर बना दिया।
उसके शरीर को ढकने वाली परतें
अध्याय 73

पहाड़ियों और चट्टानों को इस तरह तराशा गया जैसे प्याज को काटा जा रहा हो।
उसकी आँखें उतनी ही चमकदार थीं
दो चमकते तारों की तरह;
उसका मुंह और भी तीखा था
स्टील की ड्रिल या पीतल के बरमे की तुलना में।

वह एक पपड़ीदार पहाड़ी छेदक था जिसका उपयोग चिकित्सा में किया जाता था।
पैंगोलिन नामक प्राणी।
उसे देखो, वह अपना सिर ज़मीन में गाड़ता जा रहा है, और छह मील से ज़्यादा का सफ़र तय करने तक बाहर नहीं निकल रहा है। सुनहरी रोशनी लगभग तीन मील तक ही फैल पाई। जब वह बाहर निकला और वापस अपने असली रूप में आया, तो वह पूरी तरह थक चुका था। उसकी मांसपेशियों में दर्द हो रहा था, उसका पूरा शरीर पीड़ा से भरा था, और वह रोने से खुद को रोक नहीं पा रहा था। अचानक वह फूट पड़ा, "मालिक,
पहाड़ छोड़कर धर्म में शामिल होने के बाद
पश्चिम की ओर जाते हुए मैंने बहुत मेहनत की है।
समुद्र की लहरों से डरने की कोई बात नहीं है।
लेकिन इस सूखे मैदान में मैं दूसरे नंबर पर ही रहा हूं।"
सुंदर बंदर राजा अभी दुखी ही था कि अचानक पहाड़ के दूसरी ओर से सिसकने की आवाज़ सुनाई दी। आगे झुककर अपने आँसू पोंछते हुए उसने मुड़कर देखा। एक स्त्री गहरे शोक के वस्त्र पहने हुए, हर कदम पर सिसकती हुई पहाड़ के दूसरी ओर से आती हुई दिखाई दी। उसके बाएँ हाथ में ठंडे चावल के दलिया की एक थाली थी और दाएँ हाथ में मृतकों को जलाने के लिए पीले रंग के कुछ नोट थे। बंदर ने आह भरी और सिर हिलाते हुए मन ही मन कहा, "यह तो मानो एक रोती हुई आँख दूसरी रोती हुई आँख से मिल रही हो।"
एक टूटा हुआ दिल दूसरे टूटे हुए दिल से मिलता है।
मुझे आश्चर्य है कि यह महिला किस बात पर रो रही है। मैं उससे पूछूंगा। थोड़ी देर बाद वह महिला रास्ते से उसकी ओर आने लगी।
"देवी बोधिसत्व," बंदर भाई ने झुककर पूछा, "आप किसके लिए रो रही हैं?"
अध्याय 73
1024
पश्चिम की यात्रा
आंसू भरी आंखों से महिला ने उत्तर दिया, "मेरे पति की हत्या पीले फूल मंदिर के स्वामी ने जहरीली चाय पिलाकर कर दी क्योंकि बांस के कुछ खंभों की खरीद को लेकर उनका उससे झगड़ा हो गया था।"

मैं उसके प्रति अपने प्यार के प्रतीक के रूप में इन कागज़ी नोटों को जला दूँगा।
यह देखकर बंदर की आँखों से आंसू बहने लगे। यह देखकर महिला गुस्से से बोली, "अरे मूर्ख! मैं अपने पति के निधन पर शोक मना रही हूँ, तुम्हें रोने और इतना दुखी दिखने का क्या हक है? क्या तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो?"
"बोधिसत्व, कृपया क्रोधित न हों," बंदर ने झुककर कहा। मैं सन वुकॉन्ग हूं, जो पूर्वी तांग सम्राट के छोटे भाई तांग सान्ज़ांग का वरिष्ठ शिष्य हूं। पश्चिमी स्वर्ग की ओर जाते समय जब हम पीले फूल मंदिर से गुज़रे, तो हमने विश्राम करने के लिए रुकने का फैसला किया, लेकिन वहां के ताओवादी गुरु एक दुष्ट आत्मा हैं, जो सात मकड़ी आत्माओं के सगोत्र हैं। जब मकड़ी आत्माओं ने जालिका गुफा में मेरे गुरु को मारना चाहा, तो मैंने और मेरे शिष्य भाई सुअर और साधु रेत ने उन्हें बचा लिया। मकड़ी आत्माएं ताओवादी के पास भाग गईं और हम पर धमकाने का झूठा आरोप लगाया, जिसके कारण ताओवादी ने मेरे गुरु और भाइयों को बेहोश कर दिया। वे तीनों और घोड़ा अब उनके मंदिर में कैदी हैं। मैं अकेला था जिसने चाय नहीं पी थी। मैंने प्याला तोड़ दिया और उसने मुझ पर हमला कर दिया। शोर सुनकर सात मकड़ी आत्माएं बाहर दौड़ीं और अपने रेशमी धागे फैलाकर मुझे अपने जाले में फंसाने की कोशिश की। मैं जादू से ही बच पाया।
जब मुझे पता चला कि वे असल में कौन थे, तो मैंने अपने शरीर को और बढ़ाने की शक्ति का इस्तेमाल करके रेशमी रस्सियों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, राक्षसों को बाहर घसीटा और पीट-पीटकर मार डाला। ताओवादी गुरु बदला लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने तलवार से मुझ पर हमला कर दिया। जब साठ दौर चले, तो वे हारकर भाग गए, अपने कपड़े उतार दिए और अपनी पसलियों के नीचे मौजूद हज़ार आँखों से अनगिनत सुनहरी रोशनी की किरणें निकालीं। मैं उनके नीचे दब गया, न आगे न पीछे हिल पा रहा था, इसलिए मैं एक पैंगोलिन में बदल गया और ज़मीन के नीचे सुरंग खोदकर बाहर निकल आया। जब मैं पूरी तरह से उदास था, तब मैंने तुम्हें रोते हुए सुना, इसीलिए मैंने तुमसे वे सवाल पूछे थे। जब मैंने देखा कि तुम्हारे पास अपने पति को देने के लिए कागज़ी नोट हैं, तो मुझे बहुत बुरा लगा क्योंकि मेरे पास अपने गुरु के मरने के बाद देने के लिए कुछ भी नहीं है। तुम्हारा मज़ाक उड़ाना तो मेरे दिमाग में आखिरी बात थी!
दलिया और कागज़ी नोट नीचे रखकर, स्त्री ने भाई बंदर को धनुष लौटाते हुए कहा,

"मुझे क्षमा करें। मुझे एहसास नहीं था कि आप भी पीड़ित हैं। आपने अभी जो कहा उससे लगता है कि आप उस ताओवादी को नहीं जानते। वह वास्तव में सौ आँखों वाला दानव राजा है, जिसे अनेक आँखों वाला राक्षस भी कहा जाता है। आपके पास असाधारण जादुई शक्तियाँ होनी चाहिए तभी आप उस सुनहरी रोशनी से बच निकले और इतनी देर तक लड़ते रहे, लेकिन आप उसके पास नहीं पहुँच सके। मैं आपको एक ऐसे ऋषि के बारे में बताऊँगी जिन्हें आप बुला सकते हैं, जो उस सुनहरी रोशनी को नष्ट करके उस ताओवादी को पराजित कर सकते हैं।"

बंदर ने तुरंत आदरपूर्वक "ना-आ-आ" का उच्चारण किया और कहा, "यदि आप ऋषि के बारे में जानती हैं, हे बोधिसत्व देवी, तो क्या मैं आपको इसके बारे में बताने की कृपा कर सकता हूँ? यदि ऐसा कोई ऋषि है, तो मैं उसे अपने स्वामी को बचाने और आपके पति का बदला लेने के लिए लाऊंगा।"

"मैं तुम्हें बताऊंगी," महिला ने कहा, "और तुम उस ऋषि को बुला सकते हो, जो ताओवादी को वश में कर लेगा, लेकिन इससे केवल प्रतिशोध ही आएगा। मुझे डर है कि ऋषि तुम्हारे स्वामी को नहीं बचा पाएंगे।"

“क्यों नहीं?” बंदर ने पूछा। “उसका ज़हर सचमुच जानलेवा है,” स्त्री ने उत्तर दिया। “जब लोग इससे बीमार पड़ते हैं तो तीन दिनों के भीतर उनकी हड्डियों का मज्जा तक गल जाता है। मुझे डर है कि जब तक तुम ऋषि से मिलने जाओगे और वापस आओगे, तब तक उसे बचाना बहुत देर हो चुकी होगी।”

"मुझे यात्रा करना आता है," बंदर ने जवाब दिया। "दूरी चाहे जितनी भी हो, मुझे आधा दिन ही लगेगा।"

"अगर आप यात्रा कर सकते हैं तो यह सुनिए," महिला ने कहा। "यहाँ से लगभग तीन सौ मील दूर बैंगनी बादलों का पर्वत नामक एक पर्वत है, और उस पर्वत में एक हजार फूलों की गुफा है जहाँ वैराम्भ नामक एक ऋषि रहते हैं जो उस राक्षस को पराजित करने में सक्षम होंगे।"

"पहाड़ कहाँ है?" बंदर ने पूछा। "मुझे किस दिशा में जाना चाहिए?"

अध्याय 73

1025

पश्चिम की यात्रा

"यह यहाँ से ठीक दक्षिण की ओर है," महिला ने इशारा करते हुए उत्तर दिया; और

जब तक ब्रदर मंकी ने मुड़कर उसे देखा, तब तक वह गायब हो चुकी थी।
बंदर ने तुरंत प्रणाम किया और बोला, "वह कौन से बोधिसत्व थे? इतनी मेहनत करने के बाद भी शिष्य आपको पहचान नहीं पाया। कृपया अपना नाम बताइए ताकि मैं आपका धन्यवाद कर सकूँ।" तभी आकाश में एक आवाज़ आई, "महान ऋषि, मैं हूँ।"
बंदर ने तुरंत ऊपर देखा तो पाया कि वह ली पर्वत की वृद्धा थीं। आकाश में उनके पास पहुँचकर उसने धन्यवाद देते हुए कहा, "आप मुझे ये निर्देश देने कहाँ से आई हैं?"
"ड्रैगन फ्लावर असेंबली से लौटते समय मैंने देखा कि आपके स्वामी मुसीबत में हैं," बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया। "उनकी जान बचाने के लिए ही मैंने पति की मृत्यु पर शोक मना रही स्त्री होने का नाटक किया। जल्दी करो और ऋषि को बुला लाओ। लेकिन उन्हें यह मत बताना कि मैंने तुम्हें भेजा है: वह थोड़ी नखरीली हैं।"
उसे धन्यवाद देते हुए, बंदर ने विदा ली और तुरंत अपने कलाबाज़ी करने वाले बादल पर सवार होकर चल पड़ा। बैंगनी बादलों के पर्वत पर पहुँचकर उसने अपना बादल नीचे उतारा और हजार फूलों की गुफा देखी। गुफा के बाहर: नीले चीड़ के पेड़ों ने शानदार दृश्य को ढक रखा था।
अमर व्यक्ति के घर के चारों ओर फ़िरोज़ी रंग के सरू के पेड़ थे।
पहाड़ी रास्तों के किनारे हरे-भरे विलो के पेड़ घनी आबादी वाले थे।
जलधाराओं में दुर्लभ फूल खिले हुए थे।
पत्थर की इमारतों के चारों ओर ऑर्किड के पौधे उगते थे।
और सुगंधित फूलों ने चट्टानों को रंगत प्रदान की।
बहते पानी ने हरी-भरी घाटियों को आपस में जोड़ दिया।
बादलों ने पेड़ों के खालीपन को घेर लिया था।
जंगली पक्षी शोर मचाते हुए गा रहे थे।
हिरण धीरे-धीरे टहल रहा था।
बांस बहुत ही सुंदर ढंग से उगा,
और सारे लाल बेर खिल चुके थे।
प्राचीन जंगलों में कौवे बैठे हुए थे,
वसंत ऋतु में स्वर्ग के वृक्ष पर पक्षी चहचहा रहे थे।
ग्रीष्मकालीन गेहूं की फसल एकड़ो में फैली हुई थी।
और शरद ऋतु में उगने वाली बाजरा की फसल पूरे देश में फैल गई।

चारों ऋतुओं में एक भी पत्ता नहीं गिरा।
अध्याय 73
1026
पश्चिम की यात्रा
और साल भर फूल खिलते रहते थे।
शुभ गुलाबी चमक आकाशगंगा के साथ मिल गई,
और शुभ संकेतों के बादल महान शून्यता से जुड़े हुए थे।
महान ऋषि अंदर जाते ही असीम सुंदरता देखकर प्रसन्न हो उठे। वे सीधे आगे बढ़े, लेकिन वहाँ सन्नाटा पसरा था। न मुर्गी की आवाज़ आ रही थी, न कुत्ते की। बंदर ने सोचा, "लगता है ऋषि बाहर गए होंगे।" एक-दो मील आगे जाने पर उन्होंने एक ताओवादी भिक्षुणी को सोफे पर बैठे देखा। वह कुछ इस तरह दिखती थीं:
उसने ब्रोकेड की पांच फूलों वाली टोपी पहन रखी थी।
और सुनहरे रेशम का एक वस्त्र।
उसके बादलों पर चलने वाले जूतों पर फीनिक्स पक्षियों के चित्र बने हुए थे।
और उसकी कमर पर दो लटकनों वाला एक कमरबंद बंधा हुआ था।
उसका चेहरा पाले के बाद शरद ऋतु की तरह बूढ़ा लग रहा था।
लेकिन उसकी आवाज वसंत ऋतु में चिड़ियों की तरह मनमोहक थी।
उसने बहुत समय पहले ही तीन वाहनों के धर्म में महारत हासिल कर ली थी।
और वह सदा चारों सत्यों के प्रति सचेत रहती थी।
वह सच्ची उपलब्धि को जानती थी, कि खालीपन तो खाली ही होता है।
और अपने प्रशिक्षण के माध्यम से उसने बहुत स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी।
वह हजार फूलों की गुफा की बुद्ध थीं।
विख्यात वैरामभ।
बंदर बिना रुके सीधे उसके पास गया और बोला, "बोधिसत्व वैराम्भ को नमस्कार।"
तब बोधिसत्व अपने पलंग से नीचे उतरीं, उनके अभिवादन का उत्तर देने के लिए हाथ जोड़े और बोलीं,
"हे महान ऋषि, आपसे मिलने के लिए बाहर न आना मेरी गलती थी। आप कहाँ से आए हैं?"
"तुम्हें कैसे पता कि मैं ही महान ऋषि हूँ?" बंदर ने पूछा।

वैरम्भा ने उत्तर दिया, "जब तुमने पिछले साल स्वर्ग में उत्पात मचाया था, तब तुम्हारी तस्वीर हर जगह फैल गई थी। इसीलिए हर कोई तुम्हें पहचान सकता है।"

अध्याय 73

1027

पश्चिम की यात्रा

"यह कितना सच है," बंदर ने कहा, "कि

जबकि अच्छे कर्म घर पर ही रह जाते हैं

बुरे कर्म दूर-दूर तक जाने जाते हैं।

उदाहरण के तौर पर, मेरे बौद्ध धर्म में परिवर्तित होने को ही ले लीजिए। आपको इसके बारे में पता नहीं था।

"बधाई हो," वैरामभा ने कहा। "यह कब हुआ?"

“कुछ समय पहले ही मेरी जान बच गई थी जब मैं अपने गुरु, तांग पुजारी को, शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग की यात्रा पर ले जा रहा था,” बंदर ने उत्तर दिया। “पीले फूल मंदिर के ताओवादी ने मेरे गुरु को जहरीली चाय पिलाकर बीमार कर दिया है। जब मैं उससे लड़ रहा था, तो उसने मुझे अपने सुनहरे प्रकाश में जकड़ लिया, और मुझे जादू का इस्तेमाल करके भागना पड़ा। मैं यहाँ आपको प्रणाम करने आया हूँ, बोधिसत्व, और आपकी सहायता माँगने आया हूँ क्योंकि मैंने सुना है कि आप उसके सुनहरे प्रकाश को नष्ट कर सकते हैं।”

"तुम्हें यह किसने बताया?" बोधिसत्व ने पूछा। "मैं तीन सौ साल पहले उल्लंबना सभा के बाद से यहीं हूँ। मैं पूरी तरह गुप्त रूप से रहा हूँ और किसी ने मेरे बारे में नहीं सुना, तो तुम्हें मेरे बारे में कैसे पता चला?"

"मैं एक भूमिगत शैतान हूँ," बंदर ने जवाब दिया, "और मैं कहीं भी अपनी खुद की पूछताछ कर सकता हूँ।"

"कोई बात नहीं," वैराम्भ ने कहा, "कोई बात नहीं। मुझे वास्तव में नहीं जाना चाहिए, लेकिन हे महान ऋषि, आपने मुझे दर्शन देकर सम्मानित किया है, और शास्त्रों को लाने का महान कार्य विफल नहीं होना चाहिए, इसलिए मैं आपके साथ चलूंगा।"

बंदर ने उसे धन्यवाद दिया और कहा, "तुम्हें इस तरह जल्दी करने के लिए कहना मेरी बहुत बड़ी नादानी थी। मुझे आश्चर्य है कि तुम कौन सा हथियार इस्तेमाल करती हो।"

बोधिसत्व ने कहा, "मेरे पास एक कढ़ाई की सुई है जिससे उस शापित प्राणी का अंत

हो जाएगा।"
यह सब बंदर के लिए हद से ज़्यादा था। उसने कहा, "बुढ़िया, आपने मेरा समय बर्बाद किया है। अगर मुझे पता होता कि यह कढ़ाई की सुई है तो मुझे आपको परेशान करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। मैं तो एक सौ किलो सुइयाँ ला सकता था।"
बोधिसत्व ने उत्तर दिया, “तुम्हारी कढ़ाई की सुइयाँ सब लोहे, इस्पात या सोने की बनी हैं। इनका कोई उपयोग नहीं है। मेरा खजाना न तो लोहा है, न इस्पात और न ही सोना। इसे मेरे पुत्र ने सूर्य की रोशनी में सुखाकर बनाया है।”
"वह कौन है?" बंदर ने पूछा। "वह अयाल का तारा स्वामी है," वैराम्भ ने उत्तर दिया।
यह देखकर बंदर चौंक गया। उसने सुनहरी रोशनी को देखा और फिर वैरम्भा की ओर मुड़कर कहा, "पीले फूल के मंदिर से ही यह सुनहरी रोशनी आ रही है।" वैरम्भा ने अपने गाउन के कॉलर से एक कढ़ाई की सुई निकाली, जो भौंह के बाल जितनी मोटी और आधा इंच लंबी थी। उसने उसे उंगलियों के बीच पकड़कर हवा में उछाल दिया। कुछ ही क्षणों में एक ज़ोरदार आवाज़ हुई और सुनहरी रोशनी चकनाचूर हो गई।
"वाह, बोधिसत्व, यह तो अद्भुत है!" एक प्रसन्न बंदर ने कहा। "चलिए अब आपकी सुई ढूंढते हैं।"
अध्याय 73
1028
पश्चिम की यात्रा
"क्या यह वही है?" वैरामभा ने पूछा, जो उसे अपने हाथ में पकड़े हुए थी। भाई बंदर ने अपना बादल उसके बादल के पास उतारा और मंदिर में चला गया, जहाँ उसने ताओवादी को आँखें बंद किए, हिलने-डुलने में असमर्थ पाया। "अंधे होने का नाटक बंद करो, दुष्ट राक्षस," उसने गुस्से से कहा और अपने कान से लाठी निकालकर ताओवादी को मारने के लिए तैयार हो गया।
वैरम्भ ने कहा, "हे महान ऋषि, उसे मत मारो। जाओ और अपने गुरु से मिलो।"
पीछे वाले स्वागत कक्ष में सीधे जाते ही बंदर ने देखा कि वे तीनों फर्श पर लेटे हुए बलगम और थूक उगल रहे थे। "मैं क्या करूँ?" बंदर रोते हुए बोला। "मैं क्या करूँ?"
“शोक मत कीजिए, हे महान ऋषि,” वैराम्भा ने कहा। “चूंकि मैं आज बाहर आई हूँ, तो क्यों न मैं आपको ये तीन गोलियां देकर पुण्य अर्जित कर लूँ जो इस विष का प्रतिकार हैं।” बंदर मुड़कर उनके सामने झुककर गोलियां मांगने लगा, तभी वैराम्भा ने

अपनी आस्तीन से फटा हुआ कागज का पैकेट निकाला जिसमें तीन लाल गोलियां थीं। उन्होंने बंदर को गोलियां देते हुए कहा कि एक-एक गोली उनके मुंह में डाल दे। बंदर ने ऐसा ही किया और उनके दांत तोड़ दिए। कुछ ही क्षणों में, जैसे ही दवा उनके पेट में पहुंची, विष बाहर आ गया और वे सब होश में आ गए, और उन्हें उल्टी होने लगी। सुअर सबसे पहले उठ खड़ा हुआ।

"मुझे घुटन महसूस हो रही है," उसने कहा। संजांग और फ्रायर सैंड दोनों को भी होश आया और उन्होंने कहा कि उन्हें बहुत चक्कर आ रहे हैं।

"तुम्हारी चाय में जहर मिला दिया गया था," बंदर भाई ने समझाया। "बोधिसत्व वैराम्भ ने ही तुम्हें बचाया।"

जल्दी करो और धन्यवाद के रूप में उन्हें प्रणाम करो।" संजांग ने अपने कपड़े ठीक करते हुए कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उन्हें प्रणाम किया।

"भाई," सुअर ने कहा, "वह ताओवादी कहाँ है? मुझे उससे कुछ सवाल पूछने हैं कि उसने मुझे मारने की कोशिश क्यों की।" तब बंदर ने उसे मकड़ी की आत्माओं के बारे में सब कुछ बताया।

"अगर मकड़ी की आत्माएं उसकी बहनें हैं तो वह शापित प्राणी भी एक बुरी आत्मा ही होगा," सुअर ने क्रोध से कहा।

"वह मुख्य हॉल के बाहर खड़ा होकर अंधे होने का नाटक कर रहा है," मंकी ने इशारा करते हुए कहा।

पिग ने अपना रेक उठाया और ताओवादी पर वार करने ही वाला था कि वैराम्भ ने उसे रोककर कहा, "अपने गुस्से पर काबू रखो, मार्शल तियान पेंग। जैसा कि महान ऋषि जानते हैं, मेरी गुफा में कोई सेवक नहीं है। मैं इसे अपना द्वारपाल नियुक्त करने जा रहा हूँ।"

बंदर ने उत्तर दिया, "हम आपकी महान शक्ति के अत्यंत ऋणी हैं, और हम निश्चित रूप से आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। लेकिन हम चाहते हैं कि आप उसे उसके असली रूप में वापस बदल दें ताकि हम उसे देख सकें।"

“आसानी से हो गया,” वैराम्भा ने आगे बढ़ते हुए ताओवादी की ओर इशारा किया, जो धूल में गिर पड़ा और अपने असली रूप में लौट आया - सात फुट लंबा एक विशालकाय कनखजूरा। वैराम्भा ने उसे अपनी छोटी उंगली से उठाया और अपने शुभ बादल पर सवार होकर सीधे हजार फूलों की गुफा में वापस चली गई। “वह बुढ़िया तो

सच में आतंक मचाने वाली है," सुअर ने ऊपर देखते हुए कहा। "उसने उस दुष्ट प्राणी को कैसे वश में किया?"

"जब मैंने उससे पूछा कि उसके पास उस सुनहरी रोशनी को नष्ट करने के लिए कौन सा हथियार है," बंदर ने जवाब दिया, "उसने मुझे अपनी एक सुनहरी कढ़ाई की सुई के बारे में बताया जिसे उसके बेटे ने धूप में सुखाकर तैयार किया था। जब मैंने उससे पूछा कि उसका बेटा कौन है, तो उसने बताया कि वह अयाल का तारा स्वामी है। जहाँ तक मुझे याद है, अयाल तारा एक मुर्गा है, इसलिए उसकी माँ एक मुर्गी होनी चाहिए। मुर्गियाँ कनखियों से निपटने में बहुत माहिर होती हैं, इसीलिए वह उसे वश में कर सकी।"

यह सुनकर संजांग ने खूब प्रणाम किया। उन्होंने आदेश दिया, "शिष्यों, जाओ और तैयारी करो।"

इसके बाद फ्रायर सैंड चावल लाने और शाकाहारी भोजन तैयार करने के लिए अंदर गए, ताकि वे सभी भरपेट भोजन कर सकें।

फिर उन्होंने घोड़े को आगे बढ़ाया, कंधे पर डंडा रखा और स्वामी से चलने को कहा। बंदर ने रसोई में आग लगा दी जिससे पल भर में पूरा मंदिर जलकर राख हो गया। फिर वह अपने रास्ते पर चल पड़ा। वास्तव में: अध्याय 73

1029

पश्चिम की यात्रा

तांग पुरोहित ने वैरामभा को अपना जीवन बचाने के लिए धन्यवाद दिया;

भावनाओं को समाप्त कर दिया गया और अनेक आँखों वाले राक्षस को हटा दिया गया।

आगे क्या हुआ, इसके बारे में पूरी जानकारी अगली कड़ी में मिलेगी।

अध्याय 74

ली चांगगेंग ने राक्षसों के क्रूर स्वभाव की रिपोर्ट दी

नौसिखिए ने अपनी रूपांतरण क्षमता का प्रदर्शन किया

भावनाएँ और इच्छाएँ मूल रूप से एक ही होती हैं;

भावनाएं और इच्छाएं दोनों ही पूरी तरह से स्वाभाविक हैं।

कई सज्जन बौद्ध धर्म में स्वयं को परिष्कृत करते हैं;

जब इच्छा और भावनाएं भुला दी जाती हैं, तब ध्यान उत्पन्न होता है।

अधीर मत बनो; दृढ़ निश्चयी रहो;
आकाश में चंद्रमा की तरह धूल रहित बनो।
अपने परिश्रम और प्रगति में कोई गलती न करें;
जब आपके प्रयास पूरे हो जाएंगे, तब आप एक प्रबुद्ध अमर व्यक्ति बन जाएंगे।
कहानी बताती है कि कैसे संज़ंग और उनके शिष्यों ने इच्छाओं के जाल को तोड़कर और भावनाओं के कारागार से मुक्त होकर घोड़े को पश्चिम की ओर जाने दिया। उनके चलने के कुछ ही समय बाद ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो गई और शरद ऋतु की नई ठंडक उनके शरीरों को तरोताज़ा कर रही थी। उन्होंने जो देखा वह यह था: मूसलाधार बारिश आखिरी बची हुई गर्मी को बहा ले जा रही थी।
छतरीनुमा पेड़ की पत्ती को डराना।
शाम के समय जुगनू घास के मैदान के रास्ते से उड़ते हुए दिखाई देते थे।
चांदनी रात में झींगुर गा रहे थे।
अध्याय 74
1030
पश्चिम की यात्रा
ओस में सुनहरे मालवा के फूल खिल उठे;
लाल रंग की जंगली घास रेतीले टीलों को ढके हुए थी।
सबसे पहले सरकंडे और विलो के पेड़ों के पत्ते झड़ गए।
ठंडी हवा में झींगुर एक सुर में गा रहे थे।
जब संज़ंग यात्रा कर रहा था, तभी उसके सामने एक ऊँचा पर्वत प्रकट हुआ। उसकी चोटी नीले आकाश में इतनी ऊँची उठी हुई थी कि तारों को छू रही थी और सूर्य को ढक रही थी। घबराकर उस आदरणीय बुजुर्ग ने बंदर से कहा, "देखो हमारे सामने वह पर्वत कितना ऊँचा है। मुझे नहीं पता कि रास्ता हमें पार ले जाएगा या नहीं।"
“क्या बात कही आपने, स्वामी जी,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। “जैसा कि पुरानी कहावत है, पहाड़ कितना भी ऊंचा क्यों न हो, उसे पार करने का रास्ता जरूर होता है; नदी कितनी भी गहरी क्यों न हो, वहां हमेशा कोई न कोई नाविक जरूर मिल जाएगा। इसे भुलाने में कोई बुराई नहीं है। चिंता करना छोड़ो और आगे बढ़ो।" यह सुनकर संजांग के चेहरे पर मुस्कान खिल उठी और उसने अपने घोड़े को चाबुक मारकर ऊँची चट्टान पर चढ़ना शुरू कर दिया।

एक-दो मील चलने के बाद एक बूढ़ा आदमी दिखाई दिया। उसके सफेद बाल उलझे हुए थे और हवा में उड़ रहे थे, जबकि उसकी हल्की दाढ़ी चांदी के धागों की तरह लहरा रही थी। उसने गले में प्रार्थना की माला पहनी हुई थी और हाथ में अजगर के सिर वाली छड़ी पकड़ी हुई थी। वह ढलान की चोटी पर दूर खड़ा होकर चिल्ला रहा था, "पश्चिम की ओर यात्रा कर रहे आदरणीय सज्जन, अपने उत्तम घोड़े को रोकें। लगाम कस लें। इस पर्वत पर राक्षसों का एक झुंड है जिसने जंबू महाद्वीप के सभी लोगों को खा लिया है। आगे न बढ़ें!"

यह देखकर संजांग भय से पीला पड़ गया, और चूंकि घोड़ा स्थिर नहीं था और वह स्वयं नक्काशीदार काठी में ठीक से बैठा नहीं था, इसलिए वह जमीन पर गिर पड़ा और घास में कराहता हुआ पड़ा रहा, लेकिन हिलने-डुलने में असमर्थ था।

बंदर उसके पास जाकर उसे उठने में मदद करने लगा और कहने लगा, "डरो मत, डरो मत। मैं यहाँ हूँ।"

"क्या तुमने उस चट्टान पर बैठे बूढ़े आदमी को यह कहते सुना कि इस पहाड़ पर राक्षसों का एक झुंड है जिसने जांबू महाद्वीप में सभी को खा लिया है?" संजांग ने कहा। "कौन हिम्मत करेगा उससे पूछने की कि आखिर यह सब क्या है?"

"तुम यहीं बैठो, मैं जाकर उससे पूछता हूँ," बंदर ने जवाब दिया।

"मुझे डर है कि तुम्हारे बदसूरत चेहरे और अभद्र भाषा से वह चौंक जाएगा," संजांग ने कहा, "इसलिए तुम्हें उससे सच्चाई नहीं मिलेगी।"

"उससे पूछताछ करने से पहले मैं खुद को थोड़ा और बेहतर बना लूंगा," भाई बंदर हँसते हुए बोला।

अध्याय 74

1031

पश्चिम की यात्रा

"मुझे अपना रूप बदलकर दिखाओ," संज़ंग ने कहा, और उस तेजस्वी महान ऋषि ने अपनी उंगलियों से एक मंत्र पढ़ा, खुद को झटका दिया और एक बेहद साफ-सुथरे, निर्मल आँखों वाले, सुडौल माथे वाले, गोल सिर वाले और सुव्यवस्थित चेहरे वाले छोटे भिक्षु में रूपांतरित हो गए। उनका व्यवहार अत्यंत शालीन था और जब भी वे बोलते, कोई अभद्र शब्द नहीं बोलते थे।

अपनी जटाधारी कुर्ती को झाड़ते हुए वह आगे बढ़ा और तांग पुजारी से बोला,

"गुरुजी, क्या मुझमें कोई अच्छा बदलाव आया है?"
"हां," प्रसन्न होकर संजांग ने कहा।
"शानदार," सुअर ने कहा, "लेकिन इसके मुकाबले हम सब तो भद्दे दिखते हैं। चाहे मैं दो-तीन साल तक लगातार इधर-उधर लुढ़कता रहूँ, मैं भी खुद को इतना सुंदर नहीं बना पाऊँगा।"
महान संत उन्हें पीछे छोड़कर सीधे उस बूढ़े व्यक्ति के पास गए, उन्हें प्रणाम किया और कहा,
"प्रणामस्वरूप, आदरणीय महोदय।" उनकी युवा और सुसंस्कृत छवि देखकर, वृद्ध व्यक्ति ने भी अभिवादन किया और लापरवाही से उनके सिर पर हाथ फेरा।
"छोटे भिक्षु," बूढ़े व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम कहाँ से आए हो?"
“हम पूर्व में स्थित महान तांग वंश से आए हैं,” बंदर ने उत्तर दिया, “बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए। जब हम यहाँ आए और आपने हमें बताया कि यहाँ राक्षस हैं, तो मेरे स्वामी भयभीत हो गए। उन्होंने मुझे आपसे उनके बारे में पूछने के लिए भेजा। किस प्रकार की दुष्ट आत्माएँ इस प्रकार का अपराध करने का साहस करेंगी? हे पूज्यवर, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप मुझे सारी जानकारी दें ताकि मैं उन्हें सबक सिखा सकूँ और उन्हें उनके रास्ते से भगा सकूँ।”
“तुम अभी बहुत छोटे हो, नन्हे भिक्षु,” बूढ़े ने मुस्कुराते हुए कहा, “तुम्हें यह जानने की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है। तुम्हारी बातें किसी काम की नहीं हैं। उन दुष्ट आत्माओं के पास अपार जादुई शक्तियाँ हैं। तुममें उन्हें उनकी औकात दिखाने और उन्हें भगाने की बात करने की हिम्मत कैसे हुई?”
बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "तुम्हारी बातों से तो ऐसा लगता है कि तुम उनकी रक्षा करने की कोशिश कर रहे हो। तुम उनके रिश्तेदार, पड़ोसी या दोस्त ही होगे। वरना तुम उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने और उनका मनोबल बढ़ाने की कोशिश क्यों कर रहे हो, और उनके बारे में जो कुछ भी जानते हो, उसे बताने से इनकार क्यों कर रहे हो?"
“तुम तो वाकई बोलने में माहिर हो, भिक्षु,” बूढ़े ने सिर हिलाते और मुस्कुराते हुए कहा। “मुझे लगता है कि तुमने अपने गुरु के साथ यात्रा करते हुए कुछ जादुई कलाएँ सीखी होंगी। शायद तुम भूतों को भगाना और पकड़ना जानते हो, या लोगों के घरों से बुरी आत्माओं को भगाने का काम करते हो। लेकिन तुम्हारा सामना कभी किसी सचमुच खूंखार राक्षस से नहीं हुआ।”

"किस तरह की क्रूरता?" बंदर ने कहा।
“अगर वे दुष्ट आत्माएं गिद्ध पर्वत को पत्र भेजें तो पांच सौ अर्हत उनसे मिलने आ जाते हैं,” बूढ़े ने कहा। “अगर वे स्वर्ग महल को संदेश भेजें तो दस तेजस्वी देवता भी उन्हें प्रणाम करने आ जाते हैं। चारों महासागरों के ड्रैगन उनके मित्र थे और वे अक्सर आठ गुफाओं के अमर प्राणियों से मिलते हैं। पाताल लोक के दस राजा उन्हें भाई कहते हैं; स्थानीय देवता और नगर देवता उनके अच्छे मित्र हैं।”
यह सुनकर महान ऋषि अपनी हंसी नहीं रोक पाए और जोर से हंस पड़े। उन्होंने बूढ़े आदमी को पकड़ते हुए कहा, "बोलना बंद करो, बोलना बंद करो। भले ही वह राक्षस उन सभी नौजवानों, मेरे जूनियरों का दोस्त हो, इसमें कोई खास बात नहीं है। अगर उसे पता होता कि मैं आ रहा हूं तो वह उसी रात भाग जाता।"
“तुम बकवास कर रहे हो, नन्हे भिक्षु,” बूढ़े आदमी ने कहा। “वे ऋषि तुम्हारे सामने कैसे कनिष्ठ और अनुभवहीन हो सकते हैं?”
अध्याय 74
1032
पश्चिम की यात्रा
"सच कहूँ तो," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मेरी जाति कई पीढ़ियों से आओलाई देश में फूलों और फलों के पहाड़ पर स्थित जल परदे की गुफा में रहती आई है। मेरा नाम सन वुकॉन्ग है। पुराने समय में मैं भी एक दुष्ट आत्मा हुआ करता था और मैंने कई बड़े-बड़े कारनामे किए थे। एक बार दूसरे राक्षसों के साथ एक दावत में बहुत ज़्यादा शराब पीने के बाद मैं सो गया और सपने में देखा कि दो आदमी मुझे घसीटकर अंधकार लोक ले जा रहे हैं। मुझे इतना गुस्सा आया कि मैंने अपने सोने की पट्टी वाले डंडे से राक्षस न्यायाधीशों को घायल कर दिया। पाताल लोक के राजा भयभीत हो गए और मैंने लगभग सेनलुओ महल को तहस-नहस कर दिया। मामले के प्रभारी न्यायाधीश इतने डर गए कि वे दस राजाओं से हस्ताक्षर करवाने के लिए कुछ कागज़ ले आए। उन्होंने वादा किया कि अगर मैं उन्हें मार न डालूँ तो वे मुझे अपना वरिष्ठ मानेंगे।"
यह सुनकर बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "अमिताभ बुद्ध! अगर तुम इस तरह की बड़ी-बड़ी बातें करोगे तो कभी बूढ़े नहीं हो पाओगे।"
"मैं काफी बूढ़ा हो चुका हूँ, दोस्त," बंदर ने कहा।

“तो तुम्हारी उम्र कितनी है?” बूढ़े आदमी ने पूछा। “अंदाज़ा लगाओ,” बंदर ने जवाब दिया।

"छह या सात," बूढ़े आदमी ने कहा। "मैं उससे दस हजार गुना बूढ़ा हूँ," बंदर हँसते हुए बोला, "मैं तुम्हें अपना बूढ़ा चेहरा दिखाऊँगा, तब तुम मेरी बात मानोगे।"

"तुम्हारा दूसरा चेहरा कैसे हो सकता है?" बूढ़े आदमी ने पूछा।

"इस छोटे भिक्षु के बहत्तर चेहरे हैं," बंदर ने उत्तर दिया।

बंदर के पास सचमुच ये शक्तियां हैं, इस बात से अनजान बूढ़ा आदमी उससे सवाल पूछता रहा, जब तक कि बंदर ने अपना चेहरा रगड़कर अपना असली रूप नहीं ले लिया। उसके उभरे हुए दांत, बड़ा मुंह, लाल जांघें और कमर पर बाघ की खाल का लबादा था। चट्टानी ढलान के नीचे खड़े होकर, सोने की पट्टी वाली गदा पकड़े हुए, वह मानो गर्जन देवता का साक्षात रूप था। उसे देखकर बूढ़ा आदमी डर से पीला पड़ गया और उसके घुटने इतने कांपने लगे कि वह सीधा खड़ा नहीं रह सका और जमीन पर गिर पड़ा। जब वह दोबारा उठा तो उसका संतुलन फिर बिगड़ गया।

“हे वृद्ध पुरुष,” महान ऋषि ने उसके पास जाकर कहा, “इतनी चिंता मत करो। मैं भले ही दुष्ट दिखता हूँ, पर मेरा हृदय अच्छा है। डरो मत! तुमने अभी हमें यह बताकर कृपा की कि यहाँ राक्षस हैं।”

क्या आप मुझे बता सकते हैं कि वे कितने हैं? यदि आप बता देंगे तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा। बूढ़ा आदमी कांप रहा था, बोलने में असमर्थ था और बहरे होने का नाटक कर रहा था। उसने एक शब्द भी नहीं कहा।

उससे कोई जवाब न मिलने पर बंदर वापस ढलान से नीचे चला गया।

"तो तुम वापस आ गए, वुकॉन्ग," संज़ंग ने कहा। "तुमने क्या पता लगाया?"

बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "कुछ नहीं, कुछ भी नहीं। पश्चिमी स्वर्ग के रास्ते में अगर एक-दो बुरी आत्माएं हों भी तो यहां के लोग उनकी ज्यादा परवाह नहीं करते क्योंकि वे बहुत डरपोक हैं। कोई बात नहीं!"

मैं यहाँ हूँ!"

"क्या तुमने उससे पूछा कि यह कौन सा पहाड़ है और कौन सी गुफा है," संजांग ने कहा, "यहां कितने राक्षस हैं, और थंडर मठ का रास्ता कौन सा है?"

"मालिक, अगर मैं खुलकर बोलूं तो मुझे माफ कर दीजिएगा," सुअर ने कहा। "रूप बदलने, छल-कपट और धोखे की बात हो, तो हम चार-पांच लोग भी भाई बंदर का

मुकाबला नहीं कर सकते। लेकिन ईमानदारी के मामले में बंदरों की पूरी टोली भी मेरी बराबरी नहीं कर सकती।"
"जी हां," तांग पुजारी ने कहा, "जी हां, तुम ईमानदार हो।"
अध्याय 74
1033
पश्चिम की यात्रा
"पता नहीं क्यों," पिग ने कहा, "लेकिन वह बिना सोचे समझे अंदर घुस गया, कुछ सवाल पूछे और बुरी तरह लहूलुहान होकर वापस भाग आया। मैं सच्चाई का पता लगाकर रहूंगा।"
तांग पुजारी ने कहा, "वुनेन्ग, सावधान रहना।"
उस मूर्ख ने अपना रेक कमर में लगाया, अपनी कमीज़ सीधी की और अकड़ते हुए सीधे ढलान पर चढ़कर बूढ़े आदमी को पुकारा, "आदरपूर्वक नमस्कार, महोदय।" बंदर के चले जाने के बाद बूढ़ा आदमी अपनी छड़ी के सहारे किसी तरह खड़ा हो पाया था और अभी भी कांप रहा था तथा जाने ही वाला था कि अचानक सुअर प्रकट हो गया।
"महाराज," उसने पहले से कहीं अधिक हैरान होकर कहा, "मैं किस तरह के बुरे सपने में फंसा हुआ हूँ? पहला भिक्षु बदसूरत तो था, लेकिन कम से कम थोड़ा-बहुत इंसान जैसा दिखता था। लेकिन इसकी थूथन मूसल जैसी है, कान सरकंडे के पंखे जैसे हैं, चेहरा लोहे की थालियों जैसा है और गर्दन पर बाल ही बाल हैं। यह बिल्कुल भी इंसान जैसा नहीं दिखता।"
"बुजुर्ग, मुझे इस तरह बुरा-भला कहने के लिए तुम्हारा मूड बहुत खराब होगा," सुअर हँसते हुए बोला। "क्या तुम मुझे इसी नज़र से देखते हो?"
मैं बदसूरत हो सकता हूँ, लेकिन अगर आप मुझे थोड़ी देर तक देखने की हिम्मत कर लें तो आपको पता चलेगा कि मैं काफी आकर्षक हो जाता हूँ।
जब बूढ़े व्यक्ति ने सुअर को मानवीय भाषा बोलते सुना, तभी उसने उससे पूछा, "तुम कहाँ से हो?"
"मैं तांग पुजारी का दूसरा शिष्य हूँ," पिग ने उत्तर दिया, "और मेरा बौद्ध नाम वुनेन्ग या बाजी है। जो अभी आकर आपसे प्रश्न पूछ रहा था, वह वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग था। मेरे गुरु ने मुझे आपको प्रणाम करने के लिए भेजा है क्योंकि वे सन वुकॉन्ग से नाराज़ हैं, जिसने आपका अपमान किया और सच्चाई का पता नहीं लगाया। क्या आप कृपया

मुझे बता सकते हैं, महोदय, यह कौन सा पर्वत है, इस पर कौन सी गुफाएँ हैं, उनमें कौन से राक्षस रहते हैं, और पश्चिम की ओर जाने वाला मुख्य मार्ग कौन सा है?"
"क्या तुम ईमानदार हो?" बूढ़े आदमी ने पूछा।
"मैंने अपने पूरे जीवन में कभी झूठ नहीं बोला," सुअर ने उत्तर दिया। "तुम्हें अभी उस दूसरे भिक्षु की तरह इतनी बड़ी-बड़ी बातें नहीं करनी चाहिए," बूढ़े व्यक्ति ने कहा।
"मैं उसके जैसा नहीं हूँ," पिग ने जवाब दिया।
अपनी छड़ी पर झुकते हुए बूढ़े व्यक्ति ने पिग से कहा, "यह लायन रिज है, और यह 250 मील लंबा है। इसमें एक लायन गुफा है जहाँ तीन राक्षस सरदार रहते हैं।"
"बुढ़िया, तुम बेवजह चिंता कर रहे हो," सुअर ने थूकते हुए कहा। "सिर्फ तीन राक्षसों के बारे में बताने के लिए इतनी मेहनत क्यों कर रहे हो?"
"क्या तुम्हें डर नहीं लगता?" बूढ़े आदमी ने कहा।
"सच कहूँ तो," सुअर ने जवाब दिया, "मेरा बड़ा भाई एक को अपनी लाठी के एक ही वार से मार डालेगा, मैं दूसरे को अपने रेक के एक ही प्रहार से मार डालूँगा, और दूसरा शिष्य तीसरे को अपने राक्षस-नाशक डंडे से मार डालेगा। और उन तीनों के मर जाने के बाद हमारा गुरु पहाड़ी पार कर सकेगा। कोई समस्या नहीं!"
“तुम्हें पूरी कहानी नहीं पता, भिक्षु,” बूढ़े ने मुस्कुराते हुए कहा। “उन तीनों दानव सरदारों के पास सबसे ज़बरदस्त जादुई शक्तियाँ हैं। जहाँ तक उनके अधीन छोटे दानवों की बात है, तो पहाड़ी के दक्षिणी छोर पर पाँच हज़ार, उत्तरी छोर पर पाँच हज़ार, पूर्वी मार्ग पर दस हज़ार, पश्चिमी मार्ग पर दस हज़ार, चार-पाँच हज़ार पहरेदार और द्वारों पर दस हज़ार और हैं। फिर रसोई में काम करने वाले और लकड़ियाँ इकट्ठा करने वाले भी अनगिनत हैं। कुल मिलाकर 47,000 या 48,000 होंगे। उन सभी के नाम और पहचान पत्र हैं, और उनका काम सिर्फ़ इंसानों को खाना है।”
अध्याय 74
1034
पश्चिम की यात्रा
यह जानकर वह मूर्ख कांपता हुआ वापस भागा। तांग पुजारी के पास पहुँचते ही उसने अपना फावड़ा नीचे रख दिया और वापस सूचना देने के बजाय शौच करने लगा।
"रिपोर्ट देने के बजाय तुम यहाँ क्यों बैठे हो?" बंदर ने उस मूर्ख को देखकर चिल्लाकर कहा।

"क्योंकि मैं बहुत डरा हुआ हूँ," सुअर ने जवाब दिया। "अभी बात करने का समय नहीं है। हम सब जितनी जल्दी अपनी जान बचाकर भाग जाएं, उतना ही अच्छा है।"
"बेवकूफ," बंदर ने कहा। "जब मैंने उससे सवाल किया तो मैं डरा नहीं था, तो तुम इतनी बेवकूफी भरी घबराहट में क्यों हो?"
"स्थिति क्या है?" संजांग ने पूछा।
“बूढ़े आदमी का कहना है कि यह शेर पर्वत है,” सुअर ने उत्तर दिया, “और इसमें शेर गुफा है। वहाँ तीन मुख्य राक्षस रहते हैं, और उनके अधीन 48,000 छोटे शैतान हैं। वे केवल मनुष्यों को खाते हैं। इसलिए यदि हम उनके पर्वत पर कदम रखेंगे तो हम स्वयं को उनके भोजन के रूप में परोस देंगे। चलो इस बारे में सोचना छोड़ देते हैं।” यह सुनकर संजांग कांप उठा, उसके रोंगटे खड़े हो गए।
"वुकोंग, अब हम क्या करें?" उसने पूछा।
"चिंता मत करो, स्वामी," बंदर ने कहा। "कुछ खास नहीं होगा। यहाँ कुछ बुरी आत्माएँ तो होंगी ही।"
बात बस इतनी सी है कि यहाँ के लोग इतने डरपोक हैं कि वे राक्षसों की संख्या और उनकी शक्ति के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बातें करते हैं। वे खुद को बेवजह परेशान कर लेते हैं। मैं तो इसे संभाल सकता हूँ।
"भाई, तुम बकवास कर रहे हो," सुअर ने कहा। "मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूँ। मैंने जो पता लगाया वो सच था। मैंने कुछ भी मनगढ़ंत नहीं कहा था। पहाड़ियाँ और घाटियाँ राक्षसों से भरी पड़ी हैं। हम आगे कैसे बढ़ेंगे?"
"तुम बेवकूफों जैसी बातें कर रहे हो," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। बेवजह डरो मत। चाहे पहाड़ और घाटियाँ राक्षसों से भरी हों, मुझे उन सबको अपने डंडे से खत्म करने में आधी रात ही लगेगी।"
"तुम बेशर्म हो," सुअर ने कहा, "बिल्कुल बेशर्म। इतनी बड़ी-बड़ी बातें करना बंद करो। हाजिरी लगाने में ही सात-आठ दिन लग जाएंगे। तुम उन सबको कैसे मिटा सकते हो?"
"मुझे बताओ तुम इसे कैसे करोगे," बंदर हँसते हुए बोला।
"चाहे आप उन्हें किसी भी तरह से पकड़ें, बांधें या जादू से उन्हें वहीं पर स्थिर कर दें, आप इसे इतनी जल्दी कभी नहीं कर पाएंगे," पिग ने कहा।
"मुझे उन्हें पकड़ने या बांधने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी," बंदर ने कहा। "मैं अपने डंडे को

दोनों सिरों से खींचकर ही काम चला लूंगा।"
'बढ़ो!', और इसे चार सौ फीट से भी ज़्यादा लंबा बना दो। फिर मैं इसे लहराऊंगा, कहूंगा 'मोटा करो!', और इसे अस्सी फीट चौड़ा बना दूंगा। मैं इसे दक्षिणी ढलान पर लुढ़काऊंगा और इससे उनमें से पाँच हज़ार मर जाएंगे। मैं इसे उत्तरी ढलान पर लुढ़काऊंगा और पाँच हज़ार और मर जाएंगे। फिर मैं इसे पूर्व से पश्चिम की ओर पहाड़ी की चोटी पर लुढ़काऊंगा, और चाहे उनमें से चालीस या पचास हज़ार ही क्यों न हों, मैं उन सबको कुचलकर खून से लथपथ कर दूंगा।
"भाई," सुअर ने कहा, "अगर तुम उन्हें उस तरह से मारोगे, जैसे नूडल्स के लिए आटा बेलते हैं, तो तुम इसे चार घंटे में कर सकते हो।"
"गुरुजी," फ्रायर सैंड ने हंसते हुए कहा, "चूंकि मेरे बड़े भाई के पास ऐसी दिव्य शक्तियां हैं, इसलिए हमें डरने की कोई जरूरत नहीं है।"
कृपया तैयार हो जाइए ताकि हम आगे बढ़ सकें।" बंदर की शक्तियों के बारे में उनकी चर्चा सुनकर संजांग निश्चिंत होकर तैयार हो गया और अपने रास्ते पर चल पड़ा।
जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, वह बूढ़ा आदमी गायब हो गया। "वह स्वयं एक दुष्ट आत्मा रहा होगा," फ्रायर सैंड ने कहा।
"जानबूझकर धूर्तता और धमकियों से हमें डराने के लिए आए हैं।"
अध्याय 74
1035
पश्चिम की यात्रा
“आराम से,” बंदर ने कहा। “मैं जाकर देखता हूँ।” महान ऋषि एक ऊँची चोटी पर उछल पड़े, लेकिन चारों ओर देखने पर उन्हें बूढ़े का कोई निशान नहीं मिला। तभी अचानक उन्होंने पीछे मुड़कर आकाश में एक झिलमिलाती रंगीन रोशनी देखी, वे अपने बादल पर सवार होकर देखने लगे और पाया कि वह महान श्वेत ग्रह था। बंदर चलकर उसके पास पहुँचा और उसे पकड़कर उसके नाम से पुकारने लगा: “ली चांगगेंग! ली चांगगेंग! बदमाश! अगर तुम्हें कुछ कहना था तो मेरे सामने कह देते। तुमने जंगल के बूढ़े होने का नाटक क्यों किया और मुझे मूर्ख क्यों बनाया?”
वह ग्रह उन्हें सम्मान देने के लिए तुरंत पहुंचा और बोला, "महान ऋषि, आपको सूचना देने में देरी के लिए क्षमा मांगता हूं। उन दानव सरदारों के पास वास्तव में अद्भुत जादुई क्षमताएं हैं और उनकी शक्तियां विशाल हैं।"

अपने रूपान्तरण कौशल और धूर्तता के बल पर आप शायद इस बाधा को पार कर सकें, लेकिन यदि आपने उन्हें नजरअंदाज किया तो यह बहुत मुश्किल होगा।"
"मैं आपका बहुत आभारी हूँ," बंदर ने धन्यवाद देते हुए कहा, "बहुत आभारी हूँ। अगर मैं सचमुच इस पहाड़ी को पार नहीं कर पाया, तो मुझे उम्मीद है कि आप स्वर्ग जाकर जेड सम्राट से बात करेंगे ताकि वे मुझे कुछ दिव्य सैनिक भेज सकें जो मेरी मदद कर सकें।"
"जी हां, जी हां," महान श्वेत ग्रह ने कहा। "बस एक शब्द कह दीजिए और अगर आप चाहें तो आपको एक लाख दिव्य सैनिक मिल जाएंगे।"
तब महान ऋषि ने ग्रह से विदा ली और अपने बादल को नीचे लाकर संजांग से मिलने गए और कहा, "जिस बूढ़े व्यक्ति को हमने अभी देखा, वह वास्तव में महान श्वेत ग्रह था जो हमें एक संदेश देने आया था।"
"शिष्य," संजांग ने अपनी छाती के सामने हाथ जोड़ते हुए कहा, "जल्दी से उसके पास जाओ और उससे पूछो कि कोई दूसरा रास्ता है जिससे हम घूमकर जा सकें।"
“कोई और रास्ता नहीं है,” बंदर ने जवाब दिया। “यह पहाड़ 250 मील चौड़ा है, और न जाने इसे पूरा चक्कर लगाने में कितना समय लगेगा। भला हम कैसे ऐसा कर सकते हैं?” यह सुनकर संजांग खुद को रोने से नहीं रोक सका।
उन्होंने कहा, "शिष्य, अगर यह इतना कठिन होने वाला है तो हम बुद्ध की पूजा कैसे करेंगे?"
"रो मत," बंदर ने कहा, "रो मत। अगर रोओगे तो तुम कमीने कहलाओगे। मुझे यकीन है कि वह बढ़ा-चढ़ाकर बोल रहा है। हमें बस सावधान रहना है। जैसा कि कहते हैं, पहले से चेतावनी मिलने पर तैयारी हो जाती है। अभी के लिए घोड़े से उतरकर यहीं बैठ जाओ।"
"अब तुम किस बारे में बात करना चाहते हो?" सुअर ने पूछा।
“कुछ नहीं,” बंदर ने जवाब दिया। “तुम यहीं रहो और मालिक का ध्यान रखो, जबकि साधु सैंड सामान और घोड़े पर कड़ी नज़र रखेगा। मैं इलाके का जायज़ा लेने पहाड़ी पर जा रहा हूँ। मैं पता लगाऊँगा कि इस क्षेत्र में कितने राक्षस हैं, एक को पकड़ूँगा, उससे सारी जानकारी लूँगा और उससे उन सभी के नाम लिखवाऊँगा। मैं उनमें से हर एक की जाँच करूँगा, चाहे वह बूढ़ा हो या जवान, और उनसे कहूँगा कि गुफा के द्वार बंद कर दें और हमारा रास्ता न रोकें। फिर मैं मालिक से शांतिपूर्वक और चुपचाप

पहाड़ पार करने की अनुमति माँग सकता हूँ। इससे लोगों को मेरी शक्ति का पता चलेगा।”

"सावधान रहो," फ्रायर सैंड ने कहा, "बहुत सावधान रहो!"

"मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है," बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "इस यात्रा में मैं पूर्वी महासागर को अपने लिए रास्ता बनाने पर मजबूर कर दूंगा, और चाहे वह लोहे से ढका चांदी का पहाड़ ही क्यों न हो, मैं उसे तोड़कर अंदर घुस जाऊंगा।"

महान संत अपनी कलाबाज़ी करते बादल के सहारे सीटी बजाते हुए सीधे शिखर तक गए। लताओं और लताओं को पकड़े हुए उन्होंने पर्वत का अवलोकन किया, लेकिन वह शांत और निर्जन पाया। "मैं गलत था," उन्होंने कहा। (अध्याय 74)

अनजाने में ही, "मैं गलत था। मुझे उस बूढ़े विशाल श्वेत ग्रह को जाने नहीं देना चाहिए था। वह तो बस मुझे डराने की कोशिश कर रहा था। यहाँ कोई बुरी आत्माएँ नहीं हैं। अगर होतीं तो वे हवा में उछल-कूद कर रही होतीं, अपने भाले और लाठियों से वार कर रही होतीं या अपने युद्ध कौशल का अभ्यास कर रही होतीं। यहाँ एक भी क्यों नहीं है?"

जब वह इस बारे में सोच ही रहा था कि तभी घंटी बजी और तालियां बजने की आवाज़ आई। वह तुरंत मुड़ा तो उसने देखा कि एक छोटा शैतान लड़का अपने कंधे पर 'आदेशानुसार' लिखा हुआ बैनर लिए, कमर पर घंटी और हाथों में तालियां लिए खड़ा था जिन्हें वह बजा रहा था। वह उत्तर दिशा से आ रहा था और दक्षिण की ओर जा रहा था। ध्यान से देखने पर पता चला कि उसकी लंबाई लगभग बारह फीट थी।

"वह ज़रूर कोई संदेशवाहक होगा," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा, "संदेश और रिपोर्ट पहुँचा रहा होगा। मैं भी सुन लेता हूँ कि वह क्या कह रहा है।" महान ऋषि ने अपने हाथों से एक मंत्र पढ़ा, जादुई शब्द बोले, खुद को झटका दिया और एक मक्खी में बदल गए जो शैतान की टोपी पर हल्के से बैठ गई और ध्यान से सुनने के लिए अपना सिर झुका लिया।

मुख्य सड़क पर चलते हुए, अपने क्लैपर बजाते और घंटी झपकाते हुए, वह छोटा शैतान मन ही मन यही कह रहा था: "हम सभी पर्वतीय गश्ती दल को सावधान रहना चाहिए और नौसिखिया सन से सतर्क रहना चाहिए। वह तो मक्खी भी बन सकता है!"

यह सुनकर बंदर चुपचाप हैरान रह गया। "उस फलां ने मुझे पहले ज़रूर देखा होगा। वरना उसे मेरा नाम कैसे पता होगा और यह कैसे पता होगा कि मैं मक्खी बन सकता हूँ?" दरअसल, उस छोटे शैतान ने उसे पहले नहीं देखा था। किसी कारणवश दानव सरदार ने उसे ये निर्देश दिए थे जिन्हें वह बिना देखे दोहरा रहा था। बंदर, जिसे यह बात पता नहीं थी, सोच रहा था कि शैतान ने उसे ज़रूर देखा होगा और उसे मारने के लिए लाठी निकालने ही वाला था कि वह रुक गया।

"मुझे याद है, पिग को बताया गया था," उसने सोचा, "जब उसने ग्रह से सवाल किया था कि वहाँ तीन दानव सरदार और इस जैसे 47,000 या 48,000 छोटे शैतान हैं। अगर इस जैसे दसियों हज़ार और भी छोटे शैतान होते तो कोई समस्या नहीं होती। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि तीनों नेताओं की शक्तियाँ कितनी महान हैं। मैं पहले उससे सवाल करूँगा।"

उनसे निपटने का समय बाद में मिलेगा।

हे महान ऋषि! क्या आप जानते हैं कि उन्होंने राक्षस से कैसे पूछताछ की? वे शैतान की टोपी से कूदकर एक पेड़ की चोटी पर उतरे और छोटे शैतान को कुछ कदम आगे जाने दिया। फिर बंदर ने तुरंत मुड़कर एक और छोटे शैतान का रूप धारण कर लिया, और असली वाले की तरह ही ताली बजाई, घंटी बजाई और कंधे पर झंडा उठाए रखा। उसके कपड़े भी बिल्कुल वैसे ही थे। फर्क सिर्फ इतना था कि वह कुछ इंच लंबा था।

वह भी दूसरे की तरह ही कुछ बुदबुदा रहा था और उसके पास पहुँचते हुए चिल्लाया, "अरे, जो आगे चल रहे हो, मेरा इंतजार करो।"

पीछे मुड़कर, उस छोटे शैतान ने पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?"

मंकी ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम तो बड़े अच्छे आदमी हो, अपने ही लोगों में से एक को भी नहीं पहचानते।"

"तुम हमारे लोगों में से नहीं हो," राक्षस ने कहा।

"तुम्हारा क्या मतलब है?" बंदर ने पूछा। "देखो और पहचान पाओ कि मैं कौन हूँ।"

"मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा," राक्षस ने कहा। "मैं तुम्हें नहीं जानता।"

"इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि आप मुझे नहीं जानते," मंकी ने कहा। "मैं रसोई में काम करता हूँ। हमारी मुलाकात बहुत कम हुई है।"

"तुम्हारा चेहरा तुम्हारे जैसा नुकीला नहीं है," राक्षस ने सिर हिलाते हुए कहा। "तुम्हारा

चेहरा खाना बनाने वाले भाइयों में से किसी का भी नहीं है।"
अध्याय 74
1037
पश्चिम की यात्रा
"जब मैंने अपना रूप बदला, तो शायद मेरा चेहरा कुछ ज्यादा ही नुकीला हो गया था," बंदर ने सोचा, इसलिए उसने अपने हाथों से अपना चेहरा रगड़ा और कहा, "यह नुकीला नहीं है।" सचमुच, यह नुकीला नहीं था।
"लेकिन अभी तो यह नुकीला था," उस नन्हे शैतान ने कहा। "तुमने इसे रगड़कर नुकीला होना कैसे बंद कर दिया? तुम तो बड़े ही संदिग्ध हो। मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि तुम कौन हो। तुम हममें से नहीं हो। मैं तुमसे कभी नहीं मिला।"
बहुत ही संदिग्ध। हमारे राजा घर-परिवार को बहुत सख्ती से चलाते हैं। रसोई के कर्मचारी केवल रसोई में काम करते हैं और पर्वतीय गश्ती दल पहाड़ों पर ही गश्त करते रहते हैं। भला आप एक ही समय में रसोइया और गश्ती दल कैसे हो सकते हैं?
"कुछ ऐसा है जो तुम नहीं जानते," बंदर ने चतुराई से जवाब देते हुए कहा। "मुझे गश्ती दल में पदोन्नत किया गया क्योंकि राजाओं ने देखा कि मैंने रसोई में कितना अच्छा काम किया था।"
“अच्छा, तो,” नन्हे शैतान ने कहा। “हम गश्ती दल चालीस-चालीस सदस्यों की दस टुकड़ियों में बँटे हुए हैं, यानी कुल चार सौ। हम सब अपनी उम्र, शक्ल-सूरत, नाम और विवरण से पहचाने जाते हैं। महाराज व्यवस्था को सुव्यवस्थित और हाजिरी को सुविधाजनक बनाए रखने के लिए हम सबको पास दिए हैं। क्या तुम्हारे पास एक है?”
बंदर ने शैतान का रूप-रंग देख लिया था और उसकी बातें सुन ली थीं, इसलिए वह शैतान के हमशक्ल में बदल गया था। लेकिन शैतान का पास न देख पाने के कारण उसके पास खुद का पास नहीं था। पास न होने की बात कहने के बजाय, महान ऋषि ने दावा किया कि उसके पास पास है।
"बेशक मेरे पास एक है," उसने कहा। "लेकिन यह एक नई है जो मुझे अभी-अभी जारी की गई है। मुझे अपनी दिखाओ।"
बंदर की चाल को न भांपते हुए, उस छोटे शैतान ने अपने कपड़े ऊपर उठाए और अपनी त्वचा से चिपके हुए एक सुनहरे रंग के पास को दिखाया, जिसमें रेशम की डोरी बंधी हुई थी। बंदर ने देखा कि उसके पीछे "राक्षस-दमनकारी" लिखा था, जबकि

सामने "जूनियर पवन-भेदी" हाथ से लिखा हुआ था।
“यह तो ज़ाहिर सी बात है,” बंदर भाई ने सोचा, “पहाड़ी गश्ती दल में सभी के नाम के अंत में ‘वायु’ लगा होता है। अब अपने कपड़े उतारो,” उसने कहा, “और इधर आओ, मैं तुम्हें अपना पास दिखाता हूँ।” इतना कहकर वह मुड़ गया, अपना हाथ नीचे करके अपनी पूंछ के सिरे से एक छोटा सा बाल निकाला, उसे उंगलियों के बीच रगड़ा, “बदलो!” कहा और उसे एक और सुनहरे रंग के पास में बदल दिया, जो हरे रेशमी धागे पर लगा था और जिस पर हाथ से “वरिष्ठ पवन-भेदी” लिखा था।
चीजों को हद से ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की अपनी आदत और सही समय पर सही बात कहने की अपनी प्रतिभा के साथ, बंदर ने टिप्पणी की,
"ऐसी बात है जो आप नहीं जानते। जब महामहिमों ने रसोई में इतना अच्छा काम करने के लिए मुझे गश्ती दल में पदोन्नत किया, तो उन्होंने मुझे एक वरिष्ठ गश्ती दल के रूप में एक नया पास दिया और मुझे इस कंपनी में आप चालीस जवानों का प्रभारी बना दिया।"
इस पर राक्षस ने तुरंत आदरपूर्वक "ना-आ-आ" की आवाज निकाली और कहा, "महोदय, मैंने आपको पहचाना नहीं क्योंकि आपकी नियुक्ति अभी-अभी हुई है। यदि मेरी किसी बात से आपको ठेस पहुंची हो तो कृपया मुझे क्षमा करें।"
"मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ," बंदर ने शिष्टाचार का जवाब देते हुए कहा। "बस एक बात है। हमारी पहली मुलाकात की याद में मुझे तुम सब से कुछ पैसे चाहिए: हर एक को पाँच औंस चाँदी।"
"कृपया धैर्य रखें, महोदय," उस नन्हे शैतान ने उत्तर दिया। "जब मैं पहाड़ी के दक्षिणी छोर पर अपने बाकी साथियों से मिलने वापस आऊंगा, तो हम सब मिलकर आपको जवाब देंगे।"
"तो फिर मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूँ," बंदर ने कहा और वह राक्षस के पीछे-पीछे चलने लगा।
एक-दो मील चलने के बाद एक लेखन-ब्रश जैसी चोटी दिखाई दी। इसे लेखन-ब्रश जैसी चोटी क्यों कहा जाता था? क्योंकि पहाड़ की चोटी पर लगभग चालीस-पचास फीट ऊँची एक शिखर थी जो देखने में बिल्कुल एक ब्रश स्टैंड पर खड़ी लेखन-ब्रश जैसी लगती थी।
अध्याय 74

उस पर चढ़ते हुए बंदर ने अपनी पूंछ उठाई, शिखर पर छलांग लगाई, बैठ गया और पुकारा, "तुम सब इधर आओ।"
सभी युवा पवन-भेदी उनके सामने झुक गए और बोले, "हम आपकी सेवा में हैं, महोदय।"
"क्या आप जानते हैं कि महाराज ने मुझे क्यों नियुक्त किया?" बंदर ने पूछा।
"नहीं," उन्होंने उत्तर दिया।
"महाराज तांग पुजारी को खाना चाहते हैं," बंदर ने कहा, "लेकिन वे नौसिखिए सन की असाधारण जादुई शक्तियों से चिंतित हैं। उन्होंने सुना है कि वह रूप बदल सकता है और उन्हें डर है कि कहीं वह किसी युवा पवन-भेदक का रूप धारण करके यहाँ आ न जाए और पता लगाए कि क्या हो रहा है। इसीलिए उन्होंने मुझे वरिष्ठ पवन-भेदक बनाकर आप पर नज़र रखने और यह पता लगाने के लिए भेजा है कि आप में से कोई धोखेबाज़ तो नहीं है।"
"हम सब असली हैं, महोदय," जूनियर विंड-पियर्सर्स ने एक साथ जवाब दिया।
"अगर आप सब सच्चे हैं तो क्या आप जानते हैं कि महामहिम के पास क्या-क्या शक्तियां हैं?" बंदर ने पूछा।
"हां," युवा विंड-पियर्सर्स में से एक ने कहा।
"तो फिर," बंदर ने कहा, "मुझे उनके बारे में तुरंत बताओ। अगर तुम्हारी बातें मेरी जानकारी से मेल खाती हैं, तो तुम सच्चे हो। अगर ज़रा भी गलत है, तो तुम धोखेबाज़ हो, और मैं तुम्हें दंड के लिए महाराज के पास ले जाऊँगा।"
उसे ऊँचाई पर बैठे, उन पर चिल्लाते हुए बुद्धिमान और धूर्त बनने का दिखावा करते देख, युवा शैतानों के पास उसे सच बताने के अलावा कोई चारा नहीं था। युवा शैतानों में से एक ने उत्तर दिया, "महाराज के पास अपार जादुई क्षमताएँ और असीम शक्तियाँ हैं। उन्होंने एक बार एक लाख स्वर्गीय योद्धाओं को एक ही बार में निगल लिया था।"
यह सुनकर बंदर ने गुस्से से कहा, "तुम धोखेबाज हो।"
"महोदय, मैं असली हूँ। आप मुझे धोखेबाज कैसे कह सकते हैं?" उस नौजवान शैतान ने घबराकर कहा।
"अगर तुम सच कह रहे हो तो तुमने ऐसी बकवास क्यों की?" बंदर ने जवाब दिया।

"महाराज चाहे कितने भी बड़े क्यों न हों, वे एक ही बार में एक लाख स्वर्गदूतों को नहीं निगल सकते थे।"
"महाराज, आपको इसके बारे में जानकारी नहीं है," उस युवा शैतान ने उत्तर दिया। "महाराज रूप परिवर्तन कर सकते हैं।"
वह अपने आप को इतना लंबा बना सकता है कि आकाश को थाम ले या फिर गोभी के बीज जितना छोटा। कुछ साल पहले जब महारानी ने सभी अमर प्राणियों को आड़ू की दावत में आमंत्रित किया, तो उन्होंने उसे निमंत्रण नहीं भेजा, इसलिए महाराज ने स्वर्ग से युद्ध करने का निश्चय किया। जेड सम्राट ने महाराज को वश में करने के लिए एक लाख स्वर्गीय सैनिकों को भेजा, स्वयं को एक जादुई शरीर दिया और अपना मुँह खोला जो एक शहर के द्वार जितना बड़ा था। उसने ऐसा दिखाया जैसे वह कुछ निगल रहा हो, जिससे स्वर्गीय सैनिक इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने युद्ध करने का साहस नहीं किया, और स्वर्ग का दक्षिणी द्वार बंद हो गया। इस प्रकार वह एक ही बार में एक लाख स्वर्गीय सैनिकों को निगल सकता था।
बंदर मन ही मन मुस्कुराया और सोचने लगा, "सच कहूँ तो, मैंने भी ऐसा ही किया है। महामहिम के पास कौन-कौन सी शक्तियाँ हैं?" उसने पूछा।
"महामहिम द्वितीय तीस फीट लंबे हैं, उनकी भौहें सोते हुए रेशम के कीड़ों जैसी हैं, आंखें फीनिक्स जैसी हैं, आवाज किसी सुंदर स्त्री जैसी है, उनके दांत किसी डंडे जैसे हैं और नाक अजगर जैसी है। अगर वे किसी लड़ाई में हों, तो उन्हें सिर्फ अपनी नाक सिकोड़ने की जरूरत है और उनका दुश्मन डर से कांप उठता है, चाहे वह कांसे और लोहे से ढका हो।"
अध्याय 74
1039
पश्चिम की यात्रा
"बुरी आत्माएं जो लोगों को अपनी नाक से पकड़ लेती हैं, उन्हें पकड़ना काफी आसान है," बंदर ने कहा, और फिर पूछा, "और उनके तीसरे महाराज के पास कौन सी शक्तियां हैं?"
"वह नश्वर दुनिया का कोई राक्षस नहीं है," युवा शैतान ने उत्तर दिया। "उसका नाम 'दस हज़ार मील का बादल रॉक' है। जब वह चलता है तो हवा को समेट लेता है और लहरों को हिला देता है, उत्तर को हिलाते हुए दक्षिण की ओर बढ़ता है।"

वह अपने साथ एक अनमोल वस्तु रखता है जिसे 'पुरुष और स्त्री के जीवन तत्व का पात्र' कहा जाता है। जो भी उस पात्र में डाला जाता है, वह कुछ ही क्षणों में तरल बन जाता है।

उस खबर ने बंदर को चिंता में डाल दिया। उसने सोचा, "मैं राक्षसों से नहीं डरता, लेकिन मुझे उसके घड़े से सावधान रहना होगा।" फिर उसने ज़ोर से कहा, "महाराजों की शक्तियों के बारे में आपका वर्णन बुरा नहीं है—यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा मैं जानता हूँ। लेकिन उनमें से कौन तांग पुजारी को खाना चाहता है?"

"क्या आपको नहीं पता, महोदय?" युवा पवन-भेदी ने कहा।

"जैसे कि मैं तुमसे बेहतर नहीं जानता!" बंदर चिल्लाया। "मुझे तुम्हें पूछताछ के लिए भेजा गया है क्योंकि उन्हें चिंता है कि तुम्हें सारी बातें पता नहीं हैं।"

"हमारे वरिष्ठ राजा और द्वितीय राजा लंबे समय से सिंह पर्वत पर स्थित सिंह गुफा में रहते हैं," युवा राक्षस ने उत्तर दिया।

लेकिन तीसरा राजा यहाँ नहीं रहता। वह यहाँ से सौ मील से भी अधिक पश्चिम में लियोनिया नामक देश की राजधानी में रहता था। पाँच सौ वर्ष पूर्व उसने उस देश के राजा, उसके नागरिक और सैन्य अधिकारियों और शहर के सभी लोगों को, जवान-बूढ़े, पुरुष-स्त्री, खा डाला। इस प्रकार उसने उस देश पर कब्ज़ा कर लिया, और अब वहाँ के सभी लोग दुष्ट राक्षस बन गए हैं। मुझे नहीं पता कि किस वर्ष उसे यह खबर मिली कि तांग दरबार ने शास्त्रों को लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग में एक पुजारी को भेजा है। कहते हैं कि यह पुजारी एक नेक इंसान है जिसने दस जन्मों तक अपने आचरण को सुधारा है, और जो कोई भी उसके मांस का एक टुकड़ा खाएगा वह अमर हो जाएगा और कभी बूढ़ा नहीं होगा।

लेकिन तीसरे राजा को पुजारी के शिष्य सन नामक नौसिखिए से चिंता है, जो वास्तव में एक आतंक है, इसलिए वह हमारे दोनों राजाओं के साथ भाईचारे की शपथ लेने आया है, अब तीनों मिलकर तांग पुजारी को पकड़ने के लिए काम कर रहे हैं।"

“धिक्कार है इस बदतमीज़ राक्षस पर,” बंदर भाई ने बड़े क्रोध से सोचा। “मैं तांग पुजारी की रक्षा कर रहा हूँ जबकि वह अपने असली लक्ष्य की प्राप्ति के लिए काम कर रहा है। उनकी हिम्मत कैसे हुई मेरे आदमी को खाने की साज़िश रचने की?” क्रोध से भरी एक घुरघुराहट के साथ उसने अपने लोहे के दांत पीसे और लोहे का डंडा लहराते हुए ऊँची चोटी से नीचे छलांग लगाई और उस बेचारे नौजवान का सिर

फोड़कर मांस का लोथड़ा बना दिया। जब बंदर ने देखा कि उसने क्या किया है तो उसे पछतावा हुआ।

"अरे बाप रे," उसने सोचा, "उसने तो अच्छे इरादे से ही मुझे घर के बारे में सब कुछ बताया था। मैंने अचानक उसे इस तरह क्यों मार डाला? चलो कोई बात नहीं! चलो कोई बात नहीं! बस हो गया।" महान ऋषि को ऐसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि उनके गुरु का आगे का रास्ता अवरुद्ध हो गया था। उन्होंने उस छोटे शैतान से पास छीन लिया, उसे अपनी कमर में बांध लिया, "आदेशानुसार" झंडा अपने कंधे पर रख लिया, घंटी को अपनी कमर से लटका लिया और हाथ से उसकी खड़खड़ाहट बजा दी।

फिर उसने हवा में हाथ से एक मंत्र पढ़ा, एक मंत्र बोला, खुद को झटका दिया, कनिष्ठ पवन-भेदी के हूबहू रूप में परिवर्तित हो गया, और तीन दानव सरदारों के बारे में पता लगाने के लिए गुफा की तलाश में सीधे उसी रास्ते वापस चला गया जिससे वह आया था। वास्तव में:

सुंदर बंदर राजा के हजार रूप परिवर्तन थे।

और जादू की असली शक्ति दस हजार बदलाव लाने की है।

बंदर पहाड़ों में तेज़ी से आगे बढ़ रहा था, तभी अचानक उसे चीखने और हिनहिनाने की आवाज़ें सुनाई दीं। उसने ऊपर देखा तो पाया कि हज़ारों छोटे शैतान अपने भाले, कृपाण, तलवारें, हथौड़े, झंडे और बैनर लिए शेर गुफा के प्रवेश द्वार के बाहर जमा थे। बंदर बहुत खुश हुआ।

अध्याय 74

1040

पश्चिम की यात्रा

"ग्रह ली चांगगेंग सच कह रहा था," उसने सोचा। "वह बिलकुल झूठ नहीं बोल रहा था।" शैतानों को व्यवस्थित ढंग से खड़ा किया गया था, प्रत्येक 250 की एक टुकड़ी बनाई गई थी, जिससे हवा में लहराते हुए रंग-बिरंगे चालीस झंडों को देखकर वह बता सकता था कि वहाँ दस हजार पैदल और घुड़सवार सैनिक मौजूद थे।

"अगर मैं एक छोटे पवन-भेदी के वेश में गुफा में जाऊं और कोई दानव सरदार मुझसे मेरी पर्वतीय गश्त के बारे में सवाल करे," बंदर ने सोचा, "तो मुझे तुरंत ही मनगढ़ंत जवाब देने पड़ेंगे। जैसे ही मैंने कुछ भी गलत कहा, उसे मेरी पहचान पता चल जाएगी

और मैं भाग नहीं पाऊंगा। द्वार पर खड़ी सेना मुझे रोक देगी और मैं कभी बाहर नहीं निकल पाऊंगा। अगर मुझे दानव राजाओं को पकड़ना है तो मुझे पहले द्वार पर मौजूद शैतानों से छुटकारा पाना होगा।"

क्या आप जानते हैं कि वह यह कैसे करने वाला था? "पुराने राक्षसों ने मुझे कभी नहीं देखा," उसने सोचा, "उन्होंने केवल मेरी प्रतिष्ठा के बारे में सुना है। मैं बड़ी-बड़ी बातें करूँगा और अपनी प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा से उन्हें डराऊँगा। यदि यह सच है कि मध्य भूमि में रहने वाले सभी प्राणियों को शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होना नियत है, तो मुझे बस एक नायक की तरह बोलना है और द्वार पर बैठे उन राक्षसों को भगा देना है। लेकिन यदि उन्हें शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होना नियत नहीं है, तो मैं पश्चिम की इस गुफा के द्वार से उन आत्माओं को कभी नहीं भगा पाऊँगा, चाहे मैं कमल के फूल खिलने तक बोलता रहूँ।" इस प्रकार वह अपनी योजनाओं के बारे में सोचता रहा, उसका मन उसके मुख से प्रश्न करता रहा और उसका मुख उसके मन से प्रश्न करता रहा, जैसे ही उसने ताली बजाई और घंटी बजाई।

इससे पहले कि वह शेर गुफा के प्रवेश द्वार से अंदर घुस पाता, उसे आगे के शिविर के कनिष्ठ शैतानों ने रोक लिया और कहा, "तुम वापस आ गए, युवा पवन-भेदी।" बंदर ने कुछ नहीं कहा, बस सिर झुकाए आगे बढ़ता रहा।

जब वह दूसरे शिविर में पहुंचा तो और भी युवा शैतानों ने उसे पकड़ लिया और कहा, "तुम वापस आ गए हो, युवा पवन-भेदी।"

"हाँ," बंदर ने उत्तर दिया। "क्या आज सुबह गश्त के दौरान आपकी मुलाकात नौसिखिया सन से हुई?" उन्होंने पूछा।

"हाँ," बंदर ने जवाब दिया। "वह अपनी छड़ी चमका रहा था।"

"वह कैसा है?" भयभीत शैतानों ने पूछा। "वह किस तरह के खंभे को पॉलिश कर रहा था?"

“वह एक धारा के किनारे बैठा था,” बंदर ने उत्तर दिया। “वह उन देवताओं में से एक लग रहा था जो मार्ग प्रशस्त करते हैं। अगर वह खड़ा होता तो मुझे यकीन है कि वह सैकड़ों फीट लंबा होता, और उसके हाथ में जो लोहे का डंडा था वह चावल के कटोरे जितना मोटा था। उसने एक चट्टानी निशान पर मुट्ठी भर पानी डाला और उस पर डंडे को चमकाते हुए बुदबुदा रहा था, 'पोल, तुम्हें अपनी जादुई शक्तियाँ दिखाने के लिए निकाले हुए सदियाँ बीत गईं: इस बार तुम मेरे लिए सभी राक्षसों को मार डालो, चाहे

वे एक लाख ही क्यों न हों। फिर मैं तुम्हारे लिए बलि के रूप में तीनों राक्षस सरदारों को मार डालूँगा।' वह इसे तब तक चमकाएगा जब तक यह चमकने न लगे, फिर द्वार पर मौजूद तुम दस हज़ार लोगों को मारना शुरू करेगा।"

यह सुनकर वे छोटे शैतान दहशत में आ गए और उनकी आत्माएं घबराहट में बिखर गईं। "सज्जनों,"

बंदर ने आगे कहा, "उस तांग पुजारी के शरीर पर बस कुछ ही किलो मांस बचा है। हमें उसका हिस्सा नहीं मिलेगा। तो हम उनके लिए क्यों ज़िम्मेदारी उठाएं? हमारे लिए बेहतर होगा कि हम इधर-उधर भाग जाएं।"

"तुम सही कह रहे हो," राक्षसों ने कहा। "चलो हम सब अपनी जान बचाकर भागते हैं।" अगर वे सभ्य सैनिक होते तो वहीं रुककर जान की बाजी लगा देते, लेकिन असल में वे सब भेड़िये, बाघ और तेंदुए थे, दौड़ते हुए जानवर और उड़ते हुए पक्षी थे, इसलिए वे सब एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ गायब हो गए। सच में, ऐसा नहीं था कि महान ऋषि सूर्य ने सिर्फ़ बड़ी-बड़ी बातें की हों: यह ठीक वैसा ही था जैसे जियांग यू की आठ हज़ार सैनिकों की सेना, जो कभी उनके साथी रहे दुश्मनों से घिरी हुई थी, गायब हो गई थी।

"शानदार," बंदर ने आत्मसंतुष्टि से मन ही मन कहा, "ये बूढ़े शैतान तो अब मरे ही समझो। अगर ये लोग मेरी आवाज सुनकर भाग भी गए तो फिर कभी मेरी आंखों में आंखें डालने की हिम्मत नहीं करेंगे। मैं अध्याय 74 में भी यही कहानी दोहराऊंगा।"

1041

पश्चिम की यात्रा

"अगर मैंने कुछ और कहा होता और एक-दो बदमाश अंदर घुसकर मुझे सुन लेते तो सारा भेद खुल जाता।" देखिए कैसे वह सावधानी से प्राचीन गुफा की ओर बढ़ता है और साहसपूर्वक अंदर गहराई तक चला जाता है।

यदि आपको नहीं पता कि दानव सरदारों से क्या अच्छा या बुरा परिणाम निकलेगा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 75

माइंड-एप नर और मादा जार में छेद कर देता है

दानव राजा लौट आया है और मार्ग सुरक्षित है

कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि सूर्य गुफा के प्रवेश द्वार से अंदर गए और दोनों

ओर देखा।
उसने यही देखा:
कंकालों के पहाड़,
हड्डियों के जंगल,
मानव सिर और बाल फेल्ट में कुचले गए,
मानव की खाल और मांस सड़कर कीचड़ बन गए।
नसें पेड़ों के चारों ओर लिपटी हुई थीं।
सूखा हुआ और चांदी की तरह चमक रहा है।
सचमुच वहां लाशों का पहाड़ था, खून का सागर था।
भ्रष्टाचार की असहनीय दुर्गंध।
पूरब के छोटे शैतान
उन्होंने मानव पीड़ितों के शरीर से जीवित मांस के टुकड़े-टुकड़े कर दिए;
पश्चिम में दुष्ट राक्षस
उबला और तला हुआ ताजा मानव मांस।
वीर सुंदर बंदर राजा के अलावा
कोई भी आम इंसान अंदर जाने की हिम्मत नहीं करता।
वह जल्द ही दूसरे द्वार के अंदर पहुँच गया, और जब उसने चारों ओर देखा तो पाया कि चीजें बाहर से अलग थीं। यहाँ पवित्रता, शांत सुंदरता और सुकून था। बाएँ और दाएँ दुर्लभ और अद्भुत पौधे थे; चारों ओर ऊँचे चीड़ के पेड़ और हरे रंग के बांस थे। दो-तीन मील और चलने के बाद वह तीसरे द्वार पर पहुँचा, अध्याय 75

मैंने चुपके से अंदर झाँका और देखा कि तीन बूढ़े राक्षस ऊपर बैठे हैं। वे बेहद दुष्ट लग रहे थे। बीच वाला राक्षस।
उनके दांत छेनी और आरी जैसे थे।
गोल सिर और चौकोर चेहरा।
उसकी आवाज बिजली की तरह गरज उठी;
उसकी आंखें बिजली की तरह चमक उठीं।
ऊपर की ओर उठी हुई नाक की नथुने आकाश की ओर थीं;

लाल भौहें आग की तरह धधक रही थीं।
वह जहाँ भी चलता था
जानवर भयभीत हो गए थे;
अगर वह बैठ गया
सभी राक्षस कांप उठे।
वह पशुओं का राजा था।
नीले बालों वाला शेर राक्षस।
उसके बाईं ओर बैठा व्यक्ति कुछ इस प्रकार था:
सुनहरी पुतलियों वाली फीनिक्स की आंखें,
पीले दांत और शक्तिशाली जांघें।
लंबी नाक से उगते हुए चांदी जैसे बाल,
उसका सिर पूंछ जैसा दिख रहा था।
उसकी भौंहें गोल और झुर्रीदार थीं।
उसका शरीर अत्यधिक भारी था।
उनकी आवाज किसी खूबसूरत महिला की तरह कोमल थी।
लेकिन उसका चेहरा बैल के सिर वाले राक्षस के चेहरे की तरह भयानक था।
अध्याय 75
1043
पश्चिम की यात्रा
प्राचीन पीले दांत वाले हाथी ने अपने दांतों को संजोकर रखा और कई वर्षों तक अपने व्यक्तित्व का संवर्धन किया।
दाहिनी ओर वाले के पास था
सुनहरे पंख और एक विशालकाय जीव का सिर,
तारों जैसी पुतलियों वाली तेंदुए जैसी आंखें।
जब वह दक्षिण की ओर बढ़ा तो उसने उत्तर को हिलाकर रख दिया।
उग्र, बलवान और साहसी।
जब उसने उड़ान भरने की ओर रुख किया
बटेरें हंस रही थीं लेकिन ड्रैगन भयभीत थे।
जब उसने अपने फीनिक्स पंख फड़फड़ाए तो सभी पक्षियों ने अपने सिर छिपा लिए।

और जब उसने अपने पंजे फैलाए तो सभी जानवर घबरा गए।
वह बादलों के बीच से तीस हजार मील की उड़ान भर सकता था।
द माइटी रॉक।
इन दोनों के नीचे एक सौ दस उच्च-निम्न कमांडर पूरी तरह कवच में सजे-धजे खड़े थे, जो बेहद प्रभावशाली और खूंखार दिख रहे थे। यह दृश्य देखकर ब्रदर मंकी बेहद प्रसन्न हुआ और निडर होकर अंदर चला गया, अपने क्लैपर और घंटी नीचे रख दी और पुकारा, "महाराज।"
तीनों बूढ़े राक्षस खिलखिलाकर हँसे और बोले, "तो तुम वापस आ गए, युवा पवन-भेदी।"
"हाँ," बंदर ने जवाब दिया। "जब तुम गश्त कर रहे थे, तब तुम्हें पता चला कि सन नाम का नौसिखिया कहाँ है?"
"महाराज," बंदर ने उत्तर दिया, "मैं आपको बताने की हिम्मत नहीं करता।"
"क्यों नहीं?" वरिष्ठ दानव सरदार ने पूछा।
"महाराज के आदेशों का पालन करते हुए मैं अपने क्लैपर बजाते और घंटी बजाते हुए चल रहा था, तभी अचानक मैंने ऊपर देखा और किसी को वहाँ एक खंभे को चमकाते हुए देखा। वह मार्ग प्रशस्त करने वाले देवताओं में से एक लग रहा था। अगर वह खड़ा होता तो उसकी ऊँचाई सौ फीट से भी अधिक होती। उसने अपने हाथ में थोड़ा पानी लिया हुआ था और चट्टानी निशान पर अपनी लोहे की छड़ को चमका रहा था। वह मन ही मन कह रहा था कि उसकी गदा को अभी यहाँ अपनी जादुई शक्तियाँ दिखाने का मौका नहीं मिला है और जब वह इसे चमका लेगा तो महाराज पर हमला करने आएगा। तब मुझे पता चला कि वह नौसिखिया सूर्य है और यहाँ रिपोर्ट करने आया है।"
अध्याय 75
1044
पश्चिम की यात्रा
यह सुनकर वरिष्ठ दानव सरदार पसीने से तरबतर हो गया और कंपकंपी से उसके दांत बजने लगे। उसने कहा, "भाइयों, मुझे नहीं लगता कि हमें तांग पुजारी से कोई पंगा लेना चाहिए। उसके शिष्य के पास अपार जादुई शक्तियां हैं और वह हम पर हमला करने के लिए अपनी लाठी चमका रहा है। हम क्या करें?"

“बच्चों,” उसने चिल्लाकर कहा, “गुफा के बाहर खड़े सभी लोगों को, चाहे वे ऊंचे हों या नीचे, अंदर बुलाओ और द्वार बंद कर दो। उन्हें अंदर जाने दो।”

"महामहिम," घटना की जानकारी रखने वाले अधीनस्थ अधिकारियों में से एक ने कहा, "बाहर मौजूद सभी छोटे शैतान तितर-बितर हो गए हैं।"

"क्यों?" वरिष्ठ दानव ने पूछा।

"उन्होंने उसकी भयानक प्रतिष्ठा के बारे में जरूर सुना होगा। तुरंत द्वार बंद करो! तुरंत!" राक्षसों की सेना ने शोर मचाते हुए आगे और पीछे के सभी द्वारों को मजबूती से बंद कर दिया।

"अब जब उन्होंने द्वार बंद कर दिए हैं, तो वे मुझसे यहाँ की चीजों के बारे में तरह-तरह के सवाल पूछ सकते हैं," बंदर ने घबराते हुए सोचा। "अगर मुझे सही जवाब नहीं पता होंगे तो मेरा भेद खुल जाएगा और वे मुझे पकड़ लेंगे। बेहतर होगा कि मैं उन्हें एक और बार डराऊँ और द्वार खुलवाकर मुझे बाहर जाने दूँ।"

"महाराज," उसने आगे बढ़ते हुए कहा, "उसने कुछ और भी बुरी बातें कही थीं।"

"और क्या?" वरिष्ठ दानव सरदार ने पूछा।

“उसने कहा कि वह महाराज की खाल उतार देगा, महाराज की हड्डियाँ काट डालेगा और उनके नसें नोच डालेगा। अगर आप फाटक बंद कर दें और बाहर जाने से मना कर दें तो वह रूप बदल सकता है। वह मक्खी बनकर फाटकों के बीच की दरार से अंदर घुस सकता है और हम सबको पकड़ सकता है।”

तब तो हमारा काम तमाम हो जाएगा।"

"भाइयों, बहुत सावधान रहना," वरिष्ठ दानव ने कहा। "यहां सालों से कोई मक्खी नहीं आई है, इसलिए जो भी मक्खी अंदर आएगी, वह नौसिखिया सन होगी।"

"तो मैं मक्खी का रूप धारण कर लूँगा और उन्हें डराकर द्वार खुलवा दूँगा," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा। तभी महान ऋषि एक तरफ हट गए, अपने सिर के पीछे से एक बाल निकाला, उस पर जादुई साँस फूंकी, "रूप बदलो!" कहा और उसे एक सुनहरी मक्खी में बदल दिया जो सीधे बूढ़े राक्षस के चेहरे पर जा गिरी।

"भाइयों," बूढ़े राक्षस ने घबराकर कहा, "यह तो भयानक है! वह अंदर घुस गया है!" सभी छोटे-बड़े राक्षस इतने भयभीत हो गए कि वे अपने रेक और झाड़ू से मक्खी को मारने के लिए आगे दौड़ पड़े।

महान ऋषि अपनी हंसी नहीं रोक पाए, जो उन्हें नहीं करनी चाहिए थी क्योंकि इससे

उनका असली चेहरा सामने आ गया। तीसरे दानव सरदार ने आगे बढ़कर उन्हें पकड़ लिया और कहा, "भाइयों, वह लगभग हमें बेवकूफ बना ही चुका था।"
"किसने किसको मूर्ख बनाया?" वरिष्ठ दानव ने पूछा।
"अभी-अभी जिस नौजवान शैतान ने सूचना दी, वह कोई जूनियर विंड-पियर्सर नहीं था," तीसरे सरदार ने जवाब दिया, "बल्कि खुद सन द नोविस था। वह ज़रूर किसी जूनियर विंड-पियर्सर से टकरा गया होगा और किसी न किसी तरह उसकी हत्या करके हमें धोखा देने के लिए यह रूप बदल लिया होगा।"
"उसने मेरी पोल खोल दी," बंदर ने घबराकर सोचा और अपना चेहरा मलने लगा।
"आपका क्या मतलब है, मैं नौसिखिया सूर्य हूँ?" बंदर ने वरिष्ठ दानव सरदार से कहा।
"मैं तो एक कनिष्ठ पवन भेदक हूँ। महाराज को गलतफहमी हुई है।"
अध्याय 75
1045
पश्चिम की यात्रा
"भाई," वरिष्ठ दानव ने कहा, "वह सचमुच एक जूनियर विंड-पियर्सर है। दिन में तीन बार उसकी हाजिरी लगती है। मैं उसे जानता हूँ। क्या तुम्हारे पास पास है?" उसने बंदर से पूछा।
"हाँ," बंदर ने अपने कपड़े फाड़कर उसे दिखाते हुए उत्तर दिया। यह देखकर कि वह असली लग रहा था, वरिष्ठ राक्षस ने कहा, "भाई, इसके साथ बुरा बर्ताव मत करो।"
"बड़े भाई," तीसरे दानव सरदार ने उत्तर दिया, "क्या आपने अभी उसे चुपके से एक तरफ हटकर हंसते हुए नहीं देखा? मैंने उसका चेहरा देखा: वह किसी गर्जन देवता जैसा था। जब मैंने उसे पकड़ा तो वह वापस अपने वर्तमान रूप में आ गया। बच्चों," उसने पुकारा, "रस्सियाँ लाओ!" तब अधिकारियों ने रस्सियाँ लाकर दीं।
तीसरे राक्षस सरदार ने बंदर को गिरा दिया और उसके हाथ-पैर बांध दिए। जब उसके कपड़े उतारे गए तो वह स्पष्ट रूप से घोड़ों का रक्षक निकला। बंदर बहत्तर रूपों में रूप बदल सकता था, और जब वह पक्षी, जानवर, पौधा, पेड़, पात्र या कीट में रूप बदलता था तो उसका पूरा शरीर बदल जाता था। लेकिन जब वह किसी दूसरे व्यक्ति में रूप बदलता था, तो वह केवल अपना सिर और चेहरा बदल सकता था, शरीर नहीं। वास्तव में, उसका शरीर अभी भी भूरे बालों से ढका हुआ था और उसकी जांघें और पूंछ लाल रंग की थीं।

"यह नौसिखिया सन का शरीर है," वरिष्ठ दानव सरदार ने यह देखकर कहा, "और एक कनिष्ठ पवन-भेदक का चेहरा। यह वही है! बच्चों," उसने आदेश दिया, "शराब लाओ और तीसरे महाराज को बधाई देने के लिए एक प्याला दो।"
अब जब हमने नौसिखिया सन को पकड़ लिया है, तो तांग पुजारी हमारे लिए भोजन के समान ही है।"
"हमें अभी शराब नहीं पीनी चाहिए," तीसरे दानव सरदार ने कहा। "नौसिखिया सूर्य बहुत चालाक है और जादू से भागने में माहिर है। मुझे डर है कि वह भाग सकता है। कनिष्ठों से कहो कि घड़ा बाहर लाएँ और उसे उसमें डाल दें।"
फिर हम पी सकते हैं।
"जी हाँ," वरिष्ठ दानव सरदार ने मुस्कुराते हुए कहा, और फिर छत्तीस छोटे दानवों को अंदर जाकर भंडारगृह खोलने और कलश बाहर लाने का आदेश दिया। क्या आप जानते हैं कि कलश कितना बड़ा था? वह केवल दो फुट चार इंच ऊँचा था। तो फिर उसे उठाने के लिए छत्तीस लोगों की आवश्यकता क्यों थी? क्योंकि कलश में दो प्राणिक शक्तियों, पुरुष और स्त्री का खजाना था, और उसमें सात अनमोल वस्तुएँ, आठ त्रिग्राम और वर्ष की चौबीस अवधियाँ समाहित थीं, इसलिए छत्तीस वाहकों की आवश्यकता थी ताकि सप्तर्षि मंडल के तारों की संख्या के बराबर संख्या हो सके।
कुछ ही देर में वह कीमती घड़ा बाहर लाया गया, तीसरे द्वार के बाहर रखा गया, साफ किया गया और खोला गया। बंदर को खोल दिया गया, उसके सारे कपड़े उतार दिए गए और घड़े से निकली जादुई भाप ने उसे फुफकारते हुए घड़े के अंदर खींच लिया।
फिर ढक्कन को वापस लगा दिया गया और उस पर एक लेबल चिपकाकर सील कर दिया गया, जिसके बाद राक्षस पीने के लिए चले गए और कहने लगे,
"अब जब वह बंदर हमारे जार में है, तो वह पश्चिम की अपनी यात्रा को भूल सकता है। अब बुद्ध को प्रणाम करने और शास्त्रों को प्राप्त करने का एकमात्र तरीका यही है कि वह भाग्य के पहिये को पीछे धकेलकर पुनर्जन्म ले।" देखो कैसे सभी छोटे-बड़े राक्षस हंसते हुए जश्न मनाने चले जाते हैं। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।
घड़े के अंदर पहुँचकर, जो बहुत तंग जगह में था, महान ऋषि ने खुद को बदलने का फैसला किया और बीच में बैठ गए, जहाँ उन्हें बहुत ठंडक महसूस हुई। "ये दुष्ट आत्माएँ अपनी बदनामी के लायक नहीं हैं," उन्होंने मन ही मन हँसते हुए कहा। "वे लोगों को क्यों बताते हैं कि इस घड़े में डाले गए किसी भी व्यक्ति का कुछ ही पलों में

मवाद और खून में बदल जाएगा। यहाँ इतनी ठंडक है कि यहाँ सात-आठ साल बिताना कोई बड़ी बात नहीं होगी।"

हाय! महान ऋषि को इस खजाने के बारे में पता नहीं था। इसमें रखे गए किसी भी व्यक्ति को, जो एक वर्ष तक चुप रहता, एक वर्ष तक शांति मिलती; लेकिन जैसे ही कोई आवाज सुनाई देती, आग भड़क उठती। बंदर के बोलने से पहले ही पूरा घड़ा आग से भर गया। सौभाग्य से, वह घड़े के बीच में निडर होकर बैठा था और अपने हाथों से आग को दूर भगाने का जादू कर सकता था। जब उसने एक घंटे तक आग सहन की, तो चालीस सांप चारों ओर से उसे काटने के लिए निकल आए। बंदर ने अपनी भुजाएँ घुमाते हुए उन सभी को पकड़ लिया, अपनी पूरी ताकत से मरोड़ा और उन्हें अस्सी टुकड़ों में तोड़ दिया। थोड़ी देर बाद तीन अग्नि ड्रैगन (अध्याय 75)

वह बंदर के ऊपर और नीचे चक्कर लगाता हुआ प्रतीत हुआ, जो वास्तव में असहनीय था।

इससे बंदर बेबस और हताश हो गया, जिसका उसे भली-भांति एहसास था। उसने कहा, "बाकी सब तो आसान था, लेकिन ये तीन अग्नि-जादूगर तो सच में मुसीबत हैं। अगर मैं जल्दी नहीं निकला तो आग मेरे दिल पर हमला कर देगी, और फिर क्या होगा? मैं खुद को बड़ा करूँगा," वह सोचने लगा, "और अपना रास्ता खुद बना लूँगा।" महान ऋषि ने अपने हाथों से एक मंत्र पढ़ा, मंत्र के शब्द बोले और पुकारा, "बड़ा हो जाओ!" उसने खुद को एक दर्जन फीट से भी अधिक लंबा कर लिया, लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, घड़ा भी उसके साथ बढ़ता गया और उसे कसकर जकड़ लिया। जब उसने खुद को छोटा किया, तो घड़ा भी सिकुड़ गया।

“यह तो भयानक है,” बंदर भाई ने घबराकर सोचा, “भयानक। यह मेरे बढ़ने पर बढ़ता है और मेरे छोटे होने पर सिकुड़ जाता है। क्यों? मैं क्या करूँ?” उसके बोलने से पहले ही उसके टखने में दर्द होने लगा। उसने तुरंत हाथ नीचे करके देखा तो पाया कि वह इतना बुरी तरह जल गया था कि नरम पड़ गया था। “मुझे नहीं पता क्या करूँ,” उसने चिंता से कहा, “मेरा टखना बुरी तरह जल गया है। मैं अब अपाहिज हो गया हूँ।” वह अपने आँसू रोक नहीं पा रहा था। सचमुच:

राक्षसों के हाथों पीड़ा सहते हुए उसने अपने स्वामी के बारे में सोचा;

जानलेवा खतरे का सामना करते हुए उसे तांग पुजारी की चिंता सता रही थी।
“गुरुजी,” उसने कहा, “बोधिसत्व गुआनयिन द्वारा परिवर्तित होकर और अपने स्वर्गीय दंड से मुक्त होने के बाद से हम दोनों ने कई पर्वतों पर परिश्रम किया है। मैंने बहुत से राक्षसों को हराया और उनका नाश किया है, सूअर और रेत भिक्षु को वश में किया है, और अनगिनत कष्ट सहे हैं। यह सब पश्चिम पहुँचने और साथ मिलकर सच्ची सिद्धि प्राप्त करने की आशा में किया था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि आज इन दुष्ट राक्षसों से सामना होगा। अब मैंने यहाँ आकर अपनी जान गंवाने की मूर्खता कर दी है और आपको पहाड़ों के बीच में फंसा छोड़ दिया है। मेरे जैसे कभी इतने प्रसिद्ध व्यक्ति के लिए यह कितनी बड़ी मुसीबत है!”
जब वह बेहद दुखी महसूस कर रहा था, तभी उसे अचानक याद आया, "वर्षों पहले बोधिसत्व ने मुझे कुंडलित नाग पर्वत पर तीन जीवनरक्षक बाल दिए थे। मुझे आश्चर्य है कि क्या वे अभी भी मेरे पास हैं। मुझे उन्हें ढूंढना चाहिए।"
उसने अपने पूरे शरीर को टटोला और अपने सिर के पिछले हिस्से पर तीन बहुत सख्त बाल पाए।
"मेरे शरीर के बाकी सारे बाल मुलायम हैं, सिवाय इन तीन के जो भाले की तरह सख्त हैं," उसने प्रसन्नता से कहा।
"ये मेरे जीवनरक्षक ही होंगे।" दर्द से कराहते हुए उसने दांत पीसते हुए तीनों बाल खींचे, उन पर जादुई सांस फूंकी और कहा, "बदलो!" उनमें से एक स्टील की ड्रिल में, एक बांस की पट्टी में और एक रेशमी डोरी में बदल गया। उसने बांस की पट्टी से धनुष बनाया और उसमें ड्रिल लगा दी। जार के तल में ज़ोर-ज़ोर से ड्रिल करने के बाद उसने एक छेद किया जिससे रोशनी अंदर आई। "मैं भाग्यशाली हूँ," उसने खुशी से कहा, "मैं भाग्यशाली हूँ। अब मैं बाहर निकल सकता हूँ।" जैसे ही उसने भागने के लिए खुद को बदला, जार फिर से ठंडा हो गया। ऐसा क्यों हुआ? यह इसलिए ठंडा हुआ क्योंकि उसने जो छेद किया था उससे नर और मादा ऊर्जाएं बाहर निकल गईं।
महान संत ने अपने बाल समेटे, स्वयं को एक नन्हे से कीड़े में बदल लिया, एक बेहद नाजुक प्राणी जो मूंछ जितना पतला और भौंह के बाल जितना लंबा था, और छेद से बाहर निकल गए। बंदर भागने के बजाय सीधे वरिष्ठ दानव सरदार के सिर पर जा गिरा। वरिष्ठ दानव, जो शराब पी रहे थे, ने अपना प्याला पटक दिया और पूछा, "तीसरे भाई, क्या नौसिखिया सूर्य द्रवीकृत हो गया है?"

"क्या समय समाप्त हो गया है?" तीसरे दानव सरदार ने पूछा। वरिष्ठ दानव ने अपने दूतों को घड़ा अंदर लाने का आदेश दिया। जब छत्तीस युवा दानवों ने घड़ा उठाया तो उन्होंने पाया कि वह पहले से कहीं हल्का था।

अध्याय 75

1047

पश्चिम की यात्रा

उन्होंने घबराकर कहा, "महाराज, जार का लाइटर।"

"बकवास!" वरिष्ठ दानव चिल्लाया। "इसमें नर और मादा दोनों की जीवन शक्ति समाहित है। यह हल्का हो ही नहीं सकता।"

एक छोटे शैतान ने, जिसे दिखावा करना पसंद था, जार को उठाया और कहा, "देखो। यह हल्का है, है ना?"

जब वरिष्ठ राक्षस ने अंदर देखने के लिए ढक्कन हटाया तो उसने पाया कि अंदर काफी रोशनी थी।

“यह खाली है,” वह ज़ोर से चिल्लाए बिना नहीं रह सका, “इसमें से पानी रिस रहा है।” और उसके सिर पर बैठा बंदर भी चिल्लाए बिना नहीं रह सका, “ढूंढो, मेरे साथियों! वह भाग गया है।”

"वह भाग गया है," सभी राक्षस चिल्लाए, "वह भाग गया है!" फिर फाटकों को बंद करने का आदेश दिया गया।

इतना कहकर बंदर ने खुद को झटका दिया, अपने ऊपर से उतारे गए कपड़े वापस लिए, अपने असली रूप में वापस आया और गुफा से बाहर कूद गया। "अच्छी तरह पेश आओ, दुष्ट आत्माओं," उसने अपमानजनक लहजे में पीछे मुड़कर कहा। "मैंने घड़े में छेद कर दिया है और अब तुम इसमें किसी को नहीं रख सकते। तुम्हें इसे बाहर ले जाकर इसमें शौच करना होगा।"

खुशी से चिल्लाते और शोर मचाते हुए वह सीधे अपने बादल पर सवार होकर तांग पुजारी के पास वापस चला गया। वहाँ उसने देखा कि आदरणीय पुजारी एक चुटकी मिट्टी से प्रतीकात्मक धूपबत्ती बना रहे थे और आकाश की ओर प्रार्थना कर रहे थे। बंदर ने उनकी बात सुनने के लिए अपना बादल रोक दिया। संजांग ने अपने हाथ छाती के सामने जोड़ रखे थे और स्वर्ग से प्रार्थना कर रहे थे,

"बादलों में विराजमान सभी अमर प्राणियों,

डिंग और जिया और प्रत्येक देवी-देवता,
मेरे शिष्य की रक्षा करो, जिसकी शक्तियां अपार हैं।
और जादू असीम है, भला सूर्य तो नौसिखिया है।"
जब महान ऋषि ने यह सुना तो उन्होंने अपने प्रयासों को दोगुना करने का निर्णय लिया। अपना बादल हटाकर वे संजांग गए और पुकार कर कहा, "गुरुजी, मैं वापस आ गया हूँ।"
संज़ंग ने उसे पकड़ते हुए कहा, "वुकोंग, तुमने बहुत बड़ी मुसीबत मोल ली है। मैं बहुत चिंतित था क्योंकि तुम इतने ऊंचे पहाड़ों में इतनी दूर चले गए थे और इतने लंबे समय तक वापस नहीं आए। वास्तव में यह पहाड़ कितना खतरनाक है?"
“गुरुजी,” बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “अभी जो यात्रा हुई, वह सर्वप्रथम पूर्व के सभी प्राणियों के सौभाग्य पर, द्वितीयतः आपकी असीम उपलब्धि और महान सद्गुण पर, और तृतीयतः आपके शिष्य की जादुई शक्तियों पर निर्भर थी।” फिर उसने पूरी कहानी सुनाई कि कैसे उसने वायु भेदक होने का नाटक किया, घड़े में फँस गया और बच निकला।
"अब जब मैंने आपका चेहरा फिर से देख लिया है, गुरुजी, तो ऐसा लग रहा है जैसे मुझे दूसरा जीवन मिल गया हो।"
संजांग ने अंतहीन धन्यवाद व्यक्त किया और फिर पूछा, "क्या तुमने इस बार बुरी आत्माओं से लड़ाई नहीं की?"
"नहीं, मैंने नहीं किया," भाई बंदर ने उत्तर दिया।
अध्याय 75

"तो फिर तुम मुझे इस पहाड़ के पार सुरक्षित नहीं ले जा पाओगे," संजांग ने कहा, जिस पर बंदर, जो अपनी हार स्वीकार करने से नफरत करता था, चिल्लाया, "तुम्हारा क्या मतलब है, मैं तुम्हें सुरक्षित नहीं ले जा पाऊंगा?"
"यदि आप और वे अभी तक आपस में बात नहीं कर पाए हैं और आप मुझे केवल टालमटोल वाले जवाब दे सकते हैं तो मैं कभी भी आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं करूंगा," आदरणीय बुजुर्ग ने उत्तर दिया।
“गुरुजी,” महान ऋषि हँसे, “आप सचमुच नहीं समझते। जैसा कि कहावत है, रेशम

के एक धागे से दूसरा धागा नहीं बुना जा सकता, और न ही एक हाथ से ताली बजाई जा सकती है। तीन दानव सरदार और हजारों छोटे शैतान हैं। मैं अकेले उन सभी से कैसे लड़ सकता हूँ?"

"अगर आपकी संख्या इतनी कम है तो अकेले यह काम करना वाकई मुश्किल होगा," संज़ंग ने जवाब दिया। "पिग और फ्रायर सैंड भी कुशल हैं। मैं उनसे कहूंगा कि वे आपके साथ चलें ताकि वे पहाड़ के पार का रास्ता साफ करने में आपकी मदद करें और मुझे भी उस रास्ते से पार करा दें।"

“आपकी बात बिलकुल सही है, स्वामी,” बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “फ्रायर सैंड से कहिए कि वह आपकी रक्षा करें, जबकि सुअर मेरे साथ आता है।”

"भाई," सुअर ने घबराते हुए कहा, "तुम सही निर्णय नहीं कर पाते। मैं खुरदुरा हूँ और कुछ खास नहीं कर सकता। चलते-चलते मैं बस रास्ते में ही खड़ा रहूँगा। मैं तुम्हारे किस काम का हूँ?"

"भाई, तुम भले ही उतने काबिल न हो, पर तुम भी कोई खास हो। कहावत है ना, एक पाद भी हवा को फुला सकता है। तुम्हें पाकर मुझे थोड़ा और साहस मिलेगा।"

"ठीक है," सुअर ने कहा, "ठीक है। तुम मुझे अपने साथ ले जा सकते हो। लेकिन जब हालात मुश्किल हों तो मुझ पर कोई चाल मत चलना।"

"यह मत भूलना कि मैं और साधु सैंड यहीं तुम्हारा इंतजार कर रहे होंगे," संजांग ने कहा।

उस मूर्ख ने हिम्मत जुटाई और बंदर के साथ एक तेज़ हवा का झोंका चलाया, जो उन्हें बादलों के सहारे पहाड़ की चोटी तक ले गया, जहाँ गुफा का प्रवेश द्वार था। उन्होंने तुरंत देखा कि द्वार कसकर बंद थे। आस-पास कहीं भी कोई दिखाई नहीं दे रहा था। बंदर अपने लोहे के डंडे को हाथों में लिए आगे बढ़ा और ज़ोर से चिल्लाया, "दरवाजा खोलो, दुष्ट राक्षसों! अभी बाहर आओ और बंदर से लड़ो!" जब गुफा में मौजूद युवा राक्षस अंदर जाकर खबर देने गए, तो वरिष्ठ राक्षस डर से कांपते हुए बोला,

"मैंने सालों से उस बंदर की क्रूरता के बारे में सुना है;
अब मैं इस कहानी की सत्यता की पुष्टि कर सकता हूँ।"

"बड़े भाई, आपका क्या मतलब है?" दूसरे दानव सरदार ने पूछा।

जब उस नौसिखिए सूर्य ने मक्खी का रूप धारण करके यहाँ घुसपैठ की, तो हमारे तीसरे भाई के अलावा किसी को भी उसकी पहचान का पता नहीं चला, जिसने उसे

जार में बंद कर दिया। उसने अपनी कुशलता का इस्तेमाल करते हुए जार में छेद किया, अपने कपड़े उठाए और बाहर निकल गया। अब वह बाहर है और हमें युद्ध के लिए चुनौती दे रहा है। कौन इतना बहादुर है जो सबसे पहले उससे मुकाबला करने की हिम्मत करेगा?

किसी ने जवाब नहीं दिया। वरिष्ठ राक्षस ने फिर पूछा; फिर भी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। सब लोग बहरे और गूंगे होने का नाटक कर रहे थे।

अध्याय 75

1049

पश्चिम की यात्रा

“पश्चिम में हमारी बदनामी पहले से ही बहुत ज़्यादा है,” वरिष्ठ दानव सरदार ने क्रोध में कहा। “आज जब नौसिखिए सन ने हमारे साथ इतना अपमानजनक व्यवहार किया है, तो अगर हम उससे नहीं लड़े तो हमारी प्रतिष्ठा और भी गिर जाएगी। मैं वहाँ जाकर उससे तीन दौर की लड़ाई में अपनी जान जोखिम में डालने जा रहा हूँ। अगर मैं उन तीन दौरों तक टिक पाया, तो तांग पुजारी हमारे मुँह का खाना होगा। अगर मैं नहीं टिक पाया, तो द्वार बंद कर दो और उन्हें जाने दो।” फिर उसने अपना कवच पहना, द्वार खुलवाए और बाहर चला गया। जब बंदर और सुअर द्वार के पास से उसे देख रहे थे, तो उन्होंने पाया कि वह एक शानदार राक्षस था।

लोहे के माथे और पीतल के सिर पर एक अनमोल हेलमेट

हवा में लहराते हुए गुच्छे चमक रहे थे।

उसकी दोनों आंखें बिजली की तरह चमक उठीं।

और उसकी कनपटी के बाल लालिमा लिए हुए चमक रहे थे।

उसके चांदी जैसे पंजे नुकीले और तेज थे।

और उसके आरी जैसे दांत पास-पास और करीने से लगे हुए थे।

उसका कवच सोने का था, बिना किसी जोड़ के।

एक ऐसे ड्रैगन के आकार के कमरबंद से बंधी हुई जो भविष्य देख सकता था।

उसके हाथ में लोहे की तलवार चमक रही थी।

विश्व में ऐसी युद्ध शक्ति दुर्लभ है।

गरजती हुई आवाज में उसने पूछा,

"मेरे दरवाजे पर कौन दस्तक दे रहा है?"

"तुम्हारे दादा, भगवान सूर्य, स्वर्ग के समान महान ऋषि," बंदर ने द्वार की ओर मुड़ते हुए कहा।
"क्या तुम नौसिखिया सूर्य हो?" राक्षस ने हंसते हुए पूछा। "तुम्हारी धृष्टता तो देखो, बंदर। मैंने तुम्हें कभी कोई परेशानी नहीं दी, तो फिर तुम मुझे युद्ध के लिए चुनौती क्यों दे रहे हो?"
“बिना हवा के लहरें नहीं उठतीं; बिना ज्वार के पानी स्थिर रहता है,” बंदर ने उत्तर दिया। “अगर तुमने मुझे परेशान न किया होता तो क्या मैं तुम्हें ढूंढने आता? मैं यहाँ लड़ने इसलिए आया हूँ क्योंकि तुम्हारे लोमड़ियों और कुत्तों का गिरोह मेरे मालिक को खाने की साजिश रच रहा है।”
"जिस तरह से तुम इतने उग्र होकर हमारे द्वारों पर चिल्ला रहे हो, उससे तो यही लगता है कि तुम लड़ाई करना चाहते हो," बूढ़े राक्षस ने उत्तर दिया।
"हाँ," बंदर ने कहा। "तो फिर ये सब बकवास बंद करो," राक्षस ने कहा। "यह बहुत अन्याय होगा अगर मैं अपने शैतानी सैनिकों को निकाल लाऊं और उन्हें युद्ध की तैयारी में खड़ा कर दूं, झंडे लहराऊं और ढोल बजाऊं, और फिर भी अपने ही इलाके में तुमसे लड़ूं। मैं तुमसे अकेले ही लड़ूंगा, बिना किसी की मदद के।"
अध्याय 75
1050
पश्चिम की यात्रा
यह सुनकर बंदर चिल्लाया, "सूअर, रास्ते से हट जाओ, और देखते हैं कि वह मुझसे कैसे निपटता है।" वह मूर्ख सचमुच रास्ते से हट गया।
"इधर आओ," वरिष्ठ राक्षस चिल्लाया, "और मेरे लिए एक कटघरे की तरह तैयार हो जाओ। मुझे अपनी नंगी खोपड़ी पर तलवार से तीन बार पूरी ताकत से वार करने दो। उसके बाद मैं तुम्हारे तांग पुजारी को जाने दूंगा। अगर तुम इसे सहन नहीं कर सकते तो अपने तांग पुजारी को तुरंत मेरे हवाले कर दो। वह हमारे चावल के साथ खाने के लिए एक स्वादिष्ट निवाला होगा।"
"अगर तुम्हारे पास अपनी गुफा में ब्रश और कागज हैं तो उन्हें निकाल लाओ और मैं तुम्हें एक जमानत दूंगा। तुम आज से लेकर अगले साल तक मुझ पर वार कर सकते हो, लेकिन मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"
तब उस बूढ़े राक्षस ने अपनी पूरी शक्ति जुटाई, पैर फैलाकर एक विशेष मुद्रा में खड़ा

हुआ, दोनों हाथों से अपनी तलवार उठाई और महान ऋषि के सिर पर प्रहार किया। महान ऋषि ने अपना सिर उठाया, और हालांकि एक जोरदार धमाका हुआ, लेकिन उनकी खोपड़ी पर जरा भी लालिमा नहीं आई।

"उस बंदर का सिर सचमुच बहुत कठोर है," बूढ़े राक्षस ने हैरानी से कहा।

"तुम्हें तो पता भी नहीं चलेगा," बंदर ने हंसते हुए कहा। "मैं तो पीतल और लोहे की खोपड़ी के साथ पैदा हुआ था।"

पूरी दुनिया में किसी और के जैसा नहीं।
हथौड़ा और कुल्हाड़ी मुझे कभी नहीं तोड़ पाएंगे;
मैं बचपन में लॉर्ड लाओ ज़ी की भट्टी में गया था।
चारों सप्तर्षि मंडलों के तारा स्वामियों ने मुझे आकार देने में मदद की।
उन अट्ठाईस नक्षत्रों ने अपनी-अपनी कुशलता का इस्तेमाल किया।
मैं अक्सर पानी में भीग जाता हूं लेकिन मुझे कभी कोई नुकसान नहीं हुआ।
और मेरे पूरे शरीर की नसें गांठदार हो गई हैं।
तांग पुरोहित को डर था कि मैं दृढ़ नहीं रहूंगा,
मेरे सिर पर सोने की अंगूठी पहना दी गई।"

"बंदर, अपनी ये गुस्ताखी बंद करो," वरिष्ठ राक्षस ने कहा, "और मेरी तलवार के ये दो वार सहो। मैं तुम्हारी जान बख्शने वाला नहीं हूँ।"

"कोई बात नहीं," बंदर ने जवाब दिया। "अगर आप चाहें तो ऐसा ही एक और कट ले सकते हैं।"

"अरे बंदर," बूढ़े राक्षस ने कहा, "तुम्हें इस तलवार के बारे में कुछ नहीं पता।"

अध्याय 75

1051

पश्चिम की यात्रा

धातु और आग की भट्टियों में निर्मित,
दिव्य शिल्प कौशल द्वारा सौ गुना परखा गया।
इसका तेज ब्लेड तीन रणनीतियों का अनुसरण करता है।
और यह उतना ही शक्तिशाली है जितना कि छह योजनाओं में वर्णित है।
इसका सिरा मक्खी की पूंछ जितना पतला है।
और सफेद अजगर के शरीर की तरह लचीला।

जब यह पहाड़ों की ओर जाता है तो घने बादल छा जाते हैं;
अगर यह समुद्र में गिरता है तो बड़ी-बड़ी लहरें उठती हैं।
इसे अनगिनत बार चमकाया जा चुका है।
इसे सैकड़ों बार गर्म और परिरक्षित किया गया है।
इसे पहाड़ों की गहराई में गुफाओं में रखा जाता है;
युद्ध में इसने जो गौरव प्राप्त किया है, वह महान है।
अगर मैं इसका इस्तेमाल तुम्हारे साधु जैसे सिर पर वार करने के लिए करूं तो...
मैं इसे लौकी के दो चम्मचों में काट लूंगा।
“अंधे हो, दुष्ट आत्मा,” महान ऋषि हँसे, “अगर तुम सोचते हो कि मेरा सिर सिर्फ लौकी के चम्मच हैं। अगर तुम इतने मूर्ख हो कि ऐसा करना चाहते हो, तो मैं तुम्हें मुझ पर वार करने दूंगा। एक बार फिर कोशिश करो और देखो क्या होता है।”
वरिष्ठ दानव ने एक और वार करने के लिए अपनी तलवार उठाई, जिसका सामना करने के लिए महान ऋषि ने अपना सिर आगे बढ़ाया।
एक जोरदार धमाके के साथ उसका सिर दो टुकड़ों में फट गया, जिसके बाद महान ऋषि जमीन पर लुढ़क गए और उन्होंने अपना दूसरा शरीर धारण कर लिया। यह दृश्य देखकर राक्षस इतना भयभीत हो गया कि उसने अपनी तलवार नीचे कर दी।
यह सब दूर से देखते हुए पिग हंसते हुए बोला, "उसे दो-तीन बार और मारो, बूढ़े शैतान, फिर तो उसके चार रूप हो जाएंगे।"
वरिष्ठ दानव ने भाई बंदर की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैंने सुना था कि तुम आत्मविभाजन जादू का इस्तेमाल कर सकते हो। अब मुझे यह क्यों दिखा रहे हो?"
"यह कैसा स्व-विभाजन जादू है?" बंदर ने पूछा।
“पहली बार जब मैंने तुम पर वार किया तो कोई असर नहीं हुआ, लेकिन इस बार मैंने तुम्हें दो टुकड़ों में क्यों काट दिया?” वरिष्ठ राक्षस ने पूछा। “चिंता मत करो, दुष्ट आत्मा,” महान ऋषि ने मुस्कुराते हुए कहा। “अगर तुम मुझे दस हजार बार काटोगे तो मेरे बीस हजार टुकड़े हो जाएंगे।”
"अरे बंदर," राक्षस ने कहा, "तुम अपने आप को विभाजित तो कर सकते हो, लेकिन फिर से जोड़ नहीं सकते। अगर कर सको, तो मुझे अपने डंडे से मारो।"

पश्चिम की यात्रा

“बकवास मत करो,” महान ऋषि ने कहा। “तुमने मुझसे तीन वार करने को कहा था, लेकिन तुमने सिर्फ़ दो ही किए। अब तुमने मुझे एक वार करने के लिए उकसाया है। अगर मैं तुम्हें डेढ़ वार करूँ तो मैं बंदर नहीं हूँ।”

"बहुत खूब," वरिष्ठ दानव ने कहा।

महान संत ने अपने दोनों शरीरों को आपस में सटाकर, लुढ़ककर फिर से एक शरीर बन गए और अपने गदा से राक्षस के सिर पर प्रहार किया। बूढ़े राक्षस ने वार रोकने के लिए अपनी तलवार उठाई। "धिक्कार है बंदर," उसने कहा।

"तुम्हारी गुस्ताखी तो देखो! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम मातम मनाने वाले की लाठी लेकर मुझ पर हमला करने आए?"

"अगर तुम मुझसे मेरी इस लाठी के बारे में पूछोगे," महान ऋषि ने गरजते हुए कहा, "तो स्वर्ग और पृथ्वी में हर किसी ने इसके बारे में सुना है।"

"यह किस लिए प्रसिद्ध है?" वरिष्ठ राक्षस ने पूछा। इस पर बंदर ने उत्तर दिया:

"यह लाठी नौ चक्रों से संसाधित गढ़े हुए लोहे से बनी है।"

स्वयं भगवान लाओ ज़ी द्वारा अपनी भट्टी में पकाया गया।

राजा यू ने इसे प्राप्त करते समय इसे दिव्य खजाना कहा था।

आठ नदियों और चार महासागरों को स्थिर रखने के लिए।

इसके मध्य में तारामंडलों को गुप्त रूप से स्थापित किया गया है।

और दोनों सिरों पर पीले सोने की पट्टी लगी हुई है।

भूत-प्रेत और देवता इसकी जटिल सजावट को देखकर चकित रह जाते हैं।

ड्रैगन के पैटर्न और फीनिक्स के चिन्ह।

दिव्य पुरुष गदा के रूप में जाना जाता है,

यह समुद्र की तलहटी में इतनी गहराई में स्थित था कि वहां पहुंचना असंभव था।

इसका आकार बदल सकता है और यह उड़ना जानता है।

कई रंगों के बादल हवा में तैरते हुए।

जब यह मेरा हो गया तो मैं इसे वापस अपने पहाड़ पर ले गया।

जहां मैंने इसके अनंत परिवर्तनों को जाना।

जब मुझे साइज चाहिए होता है तो यह एक बड़े बर्तन जितना मोटा होता है।

या फिर यह लोहे के तार जितना पतला भी हो सकता है।

पहाड़ जितना विशाल या सुई जितना छोटा,
इसकी लंबाई को अपने दिल की इच्छाओं के अनुरूप ढालना।
अध्याय 75
1053
पश्चिम की यात्रा
मैं इसे हल्के से उठाता हूँ और रंगीन बादल फूट पड़ते हैं।
या फिर यह आकाश में उड़ता है और बिजली की तरह चमकता है।
इससे निकलने वाली ठंडी हवा हर किसी को कंपकंपा देती है जो इसे महसूस करता है।
और आकाश में अशुभ धुंध छा जाती है।
मैंने इसे अपने साथ ड्रैगन और बाघों को हराने के लिए रखा है।
दुनिया के कोने-कोने तक यात्रा करना।
एक बार मैंने इसी लाठी से स्वर्ग में तबाही मचा दी थी।
और उसने अपनी अपार शक्ति का प्रयोग करके आड़ू की दावत को तहस-नहस कर दिया।
स्वर्ग के राजा भी मुझे हरा नहीं सके।
और नेझा के लिए युद्ध में मेरा मुकाबला करना बहुत मुश्किल था।
इस हथियार के सामने देवताओं के पास कोई सुरक्षित शरण नहीं थी;
एक लाख दिव्य सैनिक तितर-बितर हो गए और भाग गए।
गरज के देवता चमत्कारी धुंध के हॉल की रक्षा करते थे।
जब लाठी ने सार्वभौमिक प्रकाश के महल पर हमला किया
दरबार में मौजूद सभी देवदूत घबरा गए थे।
और जेड सम्राट के मंत्री दहशत में आ गए।
मैंने सप्तर्षि के महल को पलटने के लिए अपना डंडा उठाया।
फिर वह वापस मुड़कर दक्षिणी ध्रुव परिसर को हिलाने-डुलाने लगा।
उसके सुनहरे द्वारों पर मेरी भयानक लाठी देखकर
जेड सम्राट ने बुद्ध को मुझसे मिलने के लिए आमंत्रित किया।
सैनिक हार और जीत दोनों को सहजता से स्वीकार करता है;
दुख और आपदा के बीच चुनाव करने जैसा कुछ नहीं है।

मैंने पूरे पाँच सौ साल तक इसे सहन किया।
जब तक बोधिसत्व गुआनयिन द्वारा मेरा धर्म परिवर्तन नहीं हुआ था।
फिर तांग में एक पवित्र भिक्षु प्रकट हुए।
जिसने स्वर्ग की कसम खाई,
अध्याय 75
1054
पश्चिम की यात्रा
अन्यायपूर्वक मारे गए लोगों के शहर में आत्माओं को बचाने के लिए
और गिद्ध पर्वत पर आयोजित सभा में सूत्रों को ले आओ।
पश्चिम की यात्रा में अनेक दुष्ट राक्षस हैं।
जिनके कार्यों से उन्हें बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न होगी।
इसलिए, यह जानते हुए कि मेरी लाठी दुनिया में बेजोड़ है,
उसने मुझसे यात्रा में उसका साथी बनने की विनती की।
जब इसने दुष्ट आत्माओं पर प्रहार किया तो उन्हें पाताल लोक भेज दिया गया, उनका मांस लाल धूल में बदल गया और उनकी हड्डियाँ चूर्ण बन गईं।
हर जगह दुष्ट आत्माओं को लाठी से मार डाला गया।
हजारों-हजारों की संख्या में, जिनकी गिनती करना असंभव है।
ऊपर से गुजरते हुए इसने सप्तर्षि और बैल महल को तहस-नहस कर दिया।
और इसके नीचे नरक में स्थित सेनलुओ दरबार नष्ट हो गया।
इसने स्वर्ग के उन सेनापतियों में से नौ तेजस्वी योद्धाओं को पराजित किया।
और इसने पाताल लोक के सभी न्यायाधीशों को घायल कर दिया।
हवा से गिराए जाने पर यह पहाड़ों और नदियों को हिला देता है;
यह दुष्ट तारे की तलवार से भी अधिक शक्तिशाली है।
मैं केवल इसी लाठी से तांग पुजारी की रक्षा करता हूँ।
और दुनिया के सभी दुष्ट राक्षसों को मार डालो।
यह सुनकर राक्षस कांप उठा, उसने अपनी तलवार उठाई और पूरी ताकत से वार किया। बंदर हंसते हुए अपने लोहे के डंडे से वार रोक दिया। पहले तो दोनों गुफा के सामने जूझते रहे, फिर दोनों उछल पड़े और हवा में ही लड़ने लगे। यह एक शानदार लड़ाई थी।

एक समय उस दिव्य छड़ी ने स्वर्ग की नदी के तल को स्थिर किया था:
ऐज़-यू-विल लाठी दुनिया की सबसे बेहतरीन लाठी है।
उसकी शक्तियों की प्रशंसा सुनकर दानवों का सरदार क्रोधित हो गया।
जिसकी शक्तिशाली तलवार महान जादू से भरी हुई थी।
अध्याय 75
1055
पश्चिम की यात्रा
जब वे द्वार के बाहर लड़ रहे थे तो वे तर्क के लिए खुले थे, लेकिन आकाश में उनके युद्ध में कोई दया नहीं दिखाई गई।
कोई व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार अपना रूप बदल सकता था;
दूसरा व्यक्ति मौके पर ही खुद को बड़ा कर सकता था।
लड़ाई इतनी भीषण थी कि आसमान बादलों से भर गया।
और सारा मैदान कोहरे से ढक गया था।
किसी ने अक्सर भिक्षु संजांग को खा जाने का निश्चय किया था;
दूसरे ने अपनी जादूई शक्ति का इस्तेमाल तांग पुजारी की रक्षा के लिए किया।
यह सब इसलिए संभव हुआ क्योंकि भगवान बुद्ध ने शास्त्रों का प्रसार किया।
बुराई और अच्छाई के बीच भयंकर संघर्ष चल रहा था।
वरिष्ठ राक्षस और महान ऋषि ने बीस से अधिक दौर तक लड़ाई लड़ी, लेकिन कोई भी विजयी नहीं हुआ। सुअर नीचे से उनकी शानदार लड़ाई को देखता रहा। तभी, खुद को रोक न पाने के कारण, उसने अपना रेक उठाया और हवा में उछलकर उस दुष्ट राक्षस के चेहरे पर वार करने के लिए हवा के सहारे आगे बढ़ा। राक्षस घबरा गया, उसे यह एहसास नहीं था कि सुअर में सहनशक्ति नहीं थी, वह केवल लापरवाही से हमला कर लोगों को डरा सकता था। राक्षस को बस इतना ही दिखाई दिया कि सुअर की थूथन लंबी थी, कान बड़े थे और वह अपने रेक को बेरहमी से चला रहा था, इसलिए उसने लड़ाई छोड़ दी, अपनी तलवार फेंक दी, मुड़ा और भाग गया।
“उसके पीछे जाओ,” महान ऋषि चिल्लाए, “उसके पीछे जाओ!” मूर्ख ने अपना फावड़ा उठाया और पूरी ताकत से राक्षस के पीछे दौड़ पड़ा। सूअर को अपने इतने करीब देखकर बूढ़ा राक्षस पहाड़ के सामने स्थिर खड़ा हो गया, हवा की ओर मुँह किया, खुद को झटका दिया, अपना असली रूप धारण किया और सूअर को निगलने

के लिए अपना मुँह खोल दिया। इससे सूअर इतना डर गया कि वह जितनी तेज़ी से हो सकता था झाड़ियों में भाग गया, इस बात की परवाह किए बिना कि कंटीली झाड़ियाँ उसके सिर को चीर रही थीं। वह वहाँ काँपता हुआ बैठा रहा और लाठी की आवाज़ सुनने का इंतज़ार करता रहा। जब बंदर उसके पास पहुँचा तो राक्षस ने बंदर को भी खाने के लिए अपना मुँह खोल दिया। बंदर का यही इरादा था। अपनी लाठी एक तरफ रखकर वह सीधे राक्षस की ओर बढ़ा, जिसने उसे एक ही झटके में निगल लिया।

झाड़ियों में छिपे उस मूर्ख को इतना डर लगा कि वह मन ही मन बड़बड़ाने लगा, "घोड़ों के रक्षक, तुममें ज़रा भी अक्ल नहीं है। जब वह राक्षस तुम्हें खाना चाहता था, तो भागने के बजाय तुम उसकी तरफ क्यों गए? अब उसने तुम्हें निगल लिया है। आज तो तुम साधु हो, पर कल तुम गोबर बन जाओगे।" राक्षस के विजयी होकर चले जाने के बाद ही सुअर झाड़ियों से निकला और उसी रास्ते से वापस चला गया जिससे वह आया था।

संज़ंग और साधु सैंड अभी भी पहाड़ की तलहटी में पिग का इंतज़ार कर रहे थे, तभी उन्होंने उसे हाँफते हुए उनकी ओर दौड़ते देखा। संज़ंग ने घबराकर कहा, "पिग, तुम इस दयनीय हालत में क्यों हो? वुकॉन्ग यहाँ क्यों नहीं है?"

"मेरे भाई को दुष्ट आत्मा ने एक ही झटके में निगल लिया," पिग ने सिसकते हुए उत्तर दिया, जिसे सुनकर संज़ंग भय से गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद उसने पैर पटकते हुए और सीना पीटते हुए कहा, "शिष्य, मैंने सोचा था कि तुम राक्षसों को वश में करने में निपुण हो और मुझे पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध के दर्शन कराने ले जाओगे। किसने सोचा था कि आज तुम इस राक्षस के हाथों मर जाओगे? हाय! हाय! मेरे शिष्यों के सारे प्रयास अब व्यर्थ हो गए हैं।" (अध्याय 75)

"धूल में मिल गया।" मालिक बेहद दुखी था।

इस मूर्ख को देखो। अपने स्वामी को सांत्वना देने के बजाय, वह पुकारता है, "फ्रायर सैंड, सामान ले आओ।"

चलो इसे हम दोनों आपस में बांट लेते हैं।

“क्यों, भाई?” साधु रेत ने पूछा। “इसे बाँट लो,” सुअर ने उत्तर दिया, “और हम सब अपने-अपने रास्ते जा सकते हैं। तुम बहती रेत की नदी पर वापस जाकर लोगों को

खाना जारी रख सकते हो। मैं गाओ गाँव वापस जाकर अपनी पत्नी से मिलूँगा। हम सफेद घोड़े को बेचकर मालिक के लिए दफनाने के लिए एक ताबूत खरीद सकते हैं।”
यह सुनकर मालिक इतना दुखी हुआ कि वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।
हम उन्हें छोड़कर वरिष्ठ राक्षस सरदार के पास लौटेंगे।
जब उसने बंदर को निगल लिया तो उसे लगा कि वह जीत गया है, इसलिए वह सीधे अपनी गुफा में वापस चला गया, जहां बाकी सभी राक्षस उससे यह पूछने के लिए बाहर आए कि लड़ाई कैसी रही।
"मेरे पास उनमें से एक है," वरिष्ठ दानव ने कहा।
"वह कौन सा है?" दूसरे राक्षस ने प्रसन्नता से पूछा।
"नौसिखिए सूर्य," वरिष्ठ दानव ने उत्तर दिया।
"तुमने उसे कहाँ से पकड़ा है?" दूसरे दानव सरदार ने कहा।
वरिष्ठ राक्षस ने कहा, "मैंने उसे अपने पेट में निगल लिया।"
"बड़े भाई," तीसरे दानव सरदार ने भयभीत होकर कहा, "मैं आपको यह बताना भूल गया था कि नौसिखिया सन खाने लायक नहीं था।"
राक्षस के पेट के अंदर से महान ऋषि ने कहा, "मैं स्वादिष्ट हूँ, और मैं तुम्हें फिर कभी भूखा नहीं रहने दूँगा।"
इससे कनिष्ठ शैतानों को इतना बड़ा झटका लगा कि उन्होंने कहा, "यह तो भयानक है, महाराज। नौसिखिया सूर्य आपके पेट के अंदर बातें कर रहा है।"
"इससे मुझे डर नहीं लगता," वरिष्ठ राक्षस ने कहा। "अगर मैं उसे पकड़ने में इतना चतुर हूँ, तो क्या तुम्हें लगता है कि मैं उससे निपटने में इतना चतुर नहीं हूँ? मुझे तुरंत कुछ गर्म नमकीन पानी दो। मैं उसे अपने पेट में डालूँगा, उसे उल्टी करके बाहर निकाल दूँगा, और फिर आराम से उसे तलकर कुछ पेय के साथ नाश्ते के रूप में खाऊँगा।"
छोटे शैतानों ने जल्द ही आधा कटोरा गर्म नमकीन पानी तैयार कर लिया, जिसे बूढ़े राक्षस ने एक ही बार में पीकर अपना मुंह भर लिया। फिर उसने सचमुच उल्टी कर दी, लेकिन उसके पेट में जड़ जमा चुके महान ऋषि जरा भी नहीं हिले।
फिर उस राक्षस ने अपना गला दबाया और तब तक उल्टी करता रहा जब तक उसका सिर चकराने लगा, आँखें बेसुध हो गईं और पित्ताशय फट गया, लेकिन फिर भी बंदर टस से मस नहीं हुआ। अब तक वह बूढ़ा राक्षस साँस लेने के लिए हाँफ रहा था।

"सन द नोविस," उसने पुकारा, "क्या तुम बाहर नहीं आओगे?"
"अभी नहीं," बंदर ने जवाब दिया। "मैं अभी बाहर नहीं आना चाहता।"
"क्यों नहीं?" बूढ़े राक्षस ने पूछा।
अध्याय 75
1057
पश्चिम की यात्रा
“तुम सच में नहीं समझते, दुष्ट आत्मा,” बंदर ने कहा। “जब से मैं भिक्षु बना हूँ, मुझे बहुत कम खाना और कपड़े मिले हैं। हालाँकि अब पतझड़ का मौसम है और ठंड बढ़ रही है, फिर भी मैंने सिर्फ़ एक पतला सा कुर्ता पहना हुआ है। लेकिन तुम्हारे पेट में गर्मी है और यहाँ हवा का झोंका भी नहीं आता। मुझे लगता है कि मैं यहाँ सर्दी बिताऊँगा और फिर बाहर आऊँगा।”
जब दुष्ट आत्माओं ने यह सुना तो वे सब कहने लगे, "महाराज, नौसिखिया सूर्य आपके पेट में शीतकाल बिताना चाहता है।"
"अगर वह वहां सर्दी बिताना चाहता है तो मैं ध्यान लगाकर जादू से उसे वहां से हटा दूंगा," वरिष्ठ दानव ने कहा। "मैं पूरी सर्दी कुछ नहीं खाऊंगा। घोड़ों का रक्षक भूख से मर जाएगा।"
“तुम समझते नहीं हो, मेरे बालक,” महान ऋषि ने कहा। “मैं तांग पुरोहित के साथ यात्रा शुरू करते समय ग्वांगझोऊ से होकर आया था और मेरे पास एक तह करने वाला खाना पकाने का बर्तन है जिसे मैं यहाँ अपने लिए मिश्रित ग्रिल पकाने के लिए लाया था। मैं तुम्हारे जिगर, आंतों, पेट और फेफड़ों का बड़े चाव से आनंद लूंगा। ये वसंत तक मेरा पेट भरने के लिए काफी होंगे।”
दूसरे दानव सरदार ने हैरानी से कहा, "भाई, वह बंदर भी ऐसा ही करता।"
तीसरे राक्षस ने कहा, "भाई, शायद वह कुछ टुकड़े खा सकता है, लेकिन मुझे नहीं पता कि वह अपना बर्तन कहाँ रखेगा।"
"कॉलर बोन एक आदर्श स्टैंड है," बंदर ने जवाब दिया।
"यह तो भयानक है," तीसरे राक्षस ने कहा। "अगर वह अपना बर्तन रखकर आग जलाएगा तो क्या धुआं तुम्हारी नाक में नहीं जाएगा और तुम्हें छींक नहीं आएगी?"
"इसमें कोई दिक्कत नहीं होगी," बंदर ने हंसते हुए कहा। "मैं अपने सोने की पट्टी वाले डंडे से उसकी खोपड़ी में छेद कर दूंगा। वो मेरे लिए रोशनदान का काम करेगा और

चिमनी का भी।"
यह सुनकर बूढ़ा राक्षस बहुत घबरा गया, हालांकि उसने कहा था कि उसे डर नहीं है। वह बस इतना ही कर सका कि हिम्मत जुटाकर बोला, "भाइयों, डरो मत। मुझे वह नशीली शराब ला दो। जब मैं उसके कुछ गिलास पी लूँगा, तो वह शराब बंदर को मार डालेगी।"
यह सुनकर बंदर मन ही मन मुस्कुराया और सोचने लगा, "पांच सौ साल पहले जब मैंने स्वर्ग में उत्पात मचाया था, तब मैंने जेड सम्राट की शराब पी थी, भगवान लाओ ज़ी का अमृत, महारानी माँ के आड़ू, फीनिक्स की हड्डियों का मज्जा और ड्रैगन के जिगर खाए थे। मैंने सब कुछ खा लिया था। भला किस तरह की मादक शराब मुझे नुकसान पहुंचा सकती है?"
तब तक कनिष्ठ शैतानों ने मादक शराब से भरे दो घड़े छान लिए थे, जिनमें से एक प्याला उन्होंने वरिष्ठ दानव सरदार को सौंप दिया, जिसने उसे अपने हाथों में ले लिया। बंदर, जो राक्षस के पेट के अंदर से उसकी गंध सूंघ सकता था, चिल्लाया, "इसे मत दो!" तब महान ऋषि ने अपना सिर पीछे झुकाया और उसे तुरही की घंटी में बदल दिया, जिसे उन्होंने राक्षस के गले के नीचे पूरी तरह खोल दिया। राक्षस ने शोर मचाते हुए शराब पी ली और बंदर ने भी शोर मचाते हुए उसे पी लिया। राक्षस ने दूसरा प्याला भी पी लिया और बंदर ने उसे भी शोर मचाते हुए पी लिया। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक कि बंदर ने राक्षस द्वारा पी गई सात-आठ प्याले शराब पूरी तरह से पी नहीं ली।
“बस करो,” राक्षस ने प्याला नीचे रखते हुए कहा। “आम तौर पर इस शराब के दो प्याले पीने के बाद मेरा पेट जलने लगता है,” उसने कहा, “लेकिन इस बार सात-आठ प्याले पीने के बाद भी मेरा चेहरा लाल नहीं हुआ है।”
महान ऋषि अधिक शराब नहीं पीते थे, इसलिए सात-आठ प्याले पीने के बाद वे राक्षस के पेट में नशे में धुत होने का नाटक करने लगे। वे कभी सहारा लेकर मुंह के बल गिरते, कभी लात मारते, कभी राक्षस के जिगर पर झूलते, कभी शीर्षाभिमान और कलाबाजियां करते और बेतहाशा नाचने लगे। इससे राक्षस को इतना असहनीय दर्द हुआ कि वह बेहोश हो गया।

अगर आपको नहीं पता कि वह जीवित था या मर गया, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को सुनें।

अध्याय 76

जब हृदय की आत्मा घर में रहती है तो दुष्ट आत्माएं आत्मसमर्पण कर देती हैं

लकड़ी की माँ राक्षसों को सच्चाई के सामने लाने में मदद करती है

कहानी बताती है कि कैसे महा ऋषि के पेट में कुछ देर तक तड़पने के बाद, वरिष्ठ राक्षस धूल में गिर पड़ा। वह न तो कोई आवाज कर रहा था और न ही सांस ले रहा था। चूंकि उसने कुछ नहीं कहा, इसलिए बंदर ने सोचा कि राक्षस मर गया है, और उसने उसे मारना बंद कर दिया। जब राक्षस सरदार ने सांस ली, तो उसने पुकारा, "परम दयालु और परम करुणामय बोधिसत्व, स्वर्ग के समान महा ऋषि।"

यह सुनकर बंदर ने कहा, "मेरे बेटे, अपना प्रयास व्यर्थ मत करो। मुझे दादा सूर्य कहकर बुलाने से तुम्हारे कुछ शब्द बच जाएंगे।"

अपनी जान बचाने के लिए बेताब उस दुष्ट राक्षस ने सचमुच पुकारा, "दादाजी! दादाजी! मुझसे गलती हो गई। मुझे आपको नहीं खाना चाहिए था, और अब आप मुझे नष्ट कर रहे हैं। हे महान ऋषि, मैं आपसे विनती करता हूँ, अपनी दया और करुणा से मेरे चींटी जैसे लालच पर तरस खाएँ और मुझे बख्श दें। यदि आप ऐसा करेंगे तो मैं आपके स्वामी को पर्वत पार करा दूँगा।"

हालांकि महान ऋषि एक कठोर नायक थे, फिर भी वे तांग पुजारी की यात्रा में मदद करने के लिए बहुत उत्सुक थे, इसलिए दुष्ट राक्षस की दयनीय विनती और चापलूसी सुनकर उन्होंने एक बार फिर दयालु होने का फैसला किया।

"दुष्ट राक्षस," वह चिल्लाया, "मैं तुम्हारी जान बख्श दूंगा। तुम मेरे मालिक को कैसे ले जाओगे?"

"हमारे पास उसे देने के लिए यहाँ कोई सोना, चांदी, मोती, जेड, अगेट, मूंगा, क्रिस्टल, एम्बर, कछुए की खोल या ऐसे अन्य खजाने नहीं हैं, लेकिन मेरे दोनों भाई और मैं उसे बेंत की कुर्सी में बिठाकर पहाड़ के पार ले जाएंगे।"

"अगर तुम उसे कुर्सी पर बिठाकर ले जा सको तो वो खजाने से भी बेहतर होगा," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "मुँह खोलो: मैं बाहर आ रहा हूँ।"

फिर राक्षस ने अपना मुंह खोला, जिसके बाद तीसरा सरदार उसके पास गया और

उसके कान में फुसफुसाया, "भाई, जैसे ही वह बाहर निकले, उसे काट लेना। बंदर के टुकड़े-टुकड़े कर देना और उसे निगल जाना। तब वह तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचा पाएगा।"

अब बंदर को यह सब अंदर से सुनाई दे रहा था, इसलिए सीधे बाहर आने के बजाय उसने परीक्षण के तौर पर अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी आगे बढ़ा दी। राक्षस ने सचमुच उस पर एक वार किया, जिससे उसका एक सामने का दांत जोर से टूट गया।

"तुम बड़े अच्छे राक्षस हो, है ना!" बंदर ने अपना डंडा पीछे खींचते हुए कहा। "मैंने तुम्हारी जान बख्श दी और बाहर आने के लिए तैयार हो गया, लेकिन तुमने मुझे काटकर जान से मारने की कोशिश की। अब मैं बाहर नहीं आऊंगा। मैं तुम्हें मार डालूंगा। मैं बाहर नहीं आऊंगा! मैं नहीं आऊंगा!"

“भाई,” वरिष्ठ दानव सरदार ने तीसरे से शिकायत करते हुए कहा, “तुमने जो किया है, उससे तुमने अपने ही एक साथी को मार डाला है। मैंने उसे बाहर आने के लिए मना लिया था, लेकिन तुम्हें मुझे उसे काटने के लिए कहना पड़ा। अब मेरा दांत टूट गया है और मैं दर्द से तड़प रहा हूँ। अब हम क्या करें?”

वरिष्ठ दानव सरदार की शिकायतों के मद्देनजर, तीसरे दानव सरदार ने शत्रु को क्रोधित करने की विधि अपनाई।

"सन द नोविस," उसने अपनी पूरी आवाज़ में चिल्लाते हुए कहा, "तुम्हारी ख्याति बहुत ज़बरदस्त है। लोग बताते हैं कि अध्याय 76

हे महान! तुम स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के बाहर और चमत्कारी धुंध के हॉल में बहुत शक्तिशाली थे। मैंने सुना था कि तुम पश्चिमी स्वर्ग की ओर जाते हुए रास्ते में राक्षसों को पकड़ते रहे हो। लेकिन अब मुझे पता चला है कि तुम तो बस एक मामूली बंदर हो।

"मुझे मामूली अपराधी क्या बनाता है?" बंदर ने पूछा।

"एक नायक जो केवल तीन सौ मील के दायरे में घूमता है, वह अपनी प्रसिद्धि को गूंजने देने के लिए तीन हजार मील तक जाएगा।"

तीसरे सरदार ने जवाब दिया, "अगर तुम सच में बहादुर हो तो बाहर आकर मुझसे लड़ो। किसी और के पेट में हाथ डालने का क्या मतलब है? अगर तुम मामूली गुंडे

नहीं हो तो क्या हो?"

“हाँ, हाँ, हाँ,” यह सुनकर बंदर ने मन ही मन सोचा। “इस राक्षस की आँतें चीर-फाड़ करना, उसका जिगर नोचकर उसे मार डालना मेरे लिए ज़रा भी मुश्किल नहीं होगा,” महान ऋषि चिल्लाए। “लेकिन इस प्रक्रिया में मेरी अपनी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाएगी। मुझे यह विचार छोड़ना होगा। अपना मुँह खोलो, मैं बाहर आकर तुमसे लड़ूँगा। समस्या बस इतनी है कि तुम्हारी यह गुफा मेरे हथियारों के इस्तेमाल के लिए बहुत तंग है। हमें कहीं और जाना होगा जहाँ ज़्यादा जगह हो।”

यह सुनकर तीसरे दानव सरदार ने चारों ओर से सभी वृद्ध-युवा दानवों को इकट्ठा किया। तीस हज़ार से अधिक दानव बेहतरीन और धारदार हथियारों से लैस होकर गुफा से बाहर आए और स्वर्ग, पृथ्वी और मानव जाति का प्रतीक एक युद्ध पंक्ति बनाई। वे सभी बंदर के वरिष्ठ दानव के मुख से बाहर आने का इंतज़ार कर रहे थे ताकि उस पर टूट पड़ें। फिर दूसरे दानव सरदार ने वरिष्ठ दानव को गुफा के प्रवेश द्वार से बाहर निकाला और चिल्लाकर कहा, "नवदीन सूर्य! अगर तुम इतने बहादुर हो, तो बाहर आ जाओ। यहाँ हमारे लिए लड़ने का अच्छा मैदान है।"

महान ऋषि को राक्षस के पेट में कौवों, मैनाओं और सारसों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जिनसे उन्हें पता चल गया कि यह एक खुला इलाका है। उन्होंने सोचा, "अगर मैं बाहर नहीं निकला तो मैं उनसे किया वादा तोड़ दूंगा। लेकिन अगर मैं निकला तो ये राक्षस अपने मानवीय मुखौटे के पीछे छिपे हुए जानवर हैं। इन्होंने गुरु को पहाड़ी के पार ले जाने का वादा किया था, लेकिन मुझे बाहर बुलाकर काटने की कोशिश की। अब इनकी सेना यहाँ आ गई है। चलो ठीक है! मैं इन्हें दोनों तरह से सबक सिखाऊंगा। मैं बाहर तो निकलूंगा, लेकिन इसके पेट में एक जड़ भी छोड़ जाऊंगा।"

इतना कहकर उसने अपना हाथ पीछे किया और अपनी पूंछ से एक छोटा सा बाल निकाला, उस पर जादुई सांस फूंकी और पुकारा।

"बदलो!" और उसने उसे बाल के बराबर पतली लेकिन लगभग चार सौ फीट लंबी डोरी में बदल दिया। जैसे ही डोरी बाहर आई, हवा में वह मोटी होती गई। बंदर ने उसका एक सिरा दुष्ट राक्षस के दिल के चारों ओर एक ढीली गाँठ से बाँध दिया, जिसे उसने कसकर नहीं बाँधा—अगर वह बाँधता तो उसे बहुत दर्द होता। दूसरा सिरा उसने हाथ में पकड़े हुए मन ही मन कहा, "अगर वे इस बार मेरे बाहर आने पर मेरे मालिक को पहाड़ी पार कराने के लिए मान जाते हैं, तो मैं इसे यहीं छोड़ दूँगा। लेकिन अगर वे

इनकार करते हैं और अपने हथियारों से मुझ पर इतनी ज़ोर से हमला करते हैं कि मैं उनका सामना नहीं कर सकता, तो मुझे बस इस रस्सी को खींचना होगा। मुझे वही परिणाम मिलेगा जो मुझे अंदर रहने पर मिलता।"

फिर उसने अपना आकार छोटा कर लिया और रेंगते हुए गले तक पहुँच गया, जहाँ से वह देख सकता था कि दुष्ट आत्मा ने अपना मुँह चौड़ा खोल रखा था। मुँह के ऊपर और नीचे लोहे के दाँतों की कतारें तेज़ चाकुओं की तरह सजी हुई थीं। "यह ठीक नहीं है," उसने तुरंत सोचा, "बिल्कुल भी ठीक नहीं है। अगर मैं इस रस्सी को उसके मुँह से निकालूँ और वह दर्द सहन न कर पाए तो वह इसे एक ही बार में काट देगा। मुझे ऐसी जगह जाना होगा जहाँ दाँत न हों।" महान ऋषि ने रेंगते हुए राक्षस के ऊपरी तालू से होते हुए उसकी नाक में रस्सी डाल दी, जिससे उसकी नाक में खुजली होने लगी। राक्षस ने ज़ोर से "अछू" की आवाज़ करते हुए छींका और बंदर को बाहर निकाल दिया।

जैसे ही उसे हवा का झोंका महसूस हुआ, बंदर झुक गया और तीस फीट से भी अधिक लंबा हो गया, एक हाथ में रस्सी और दूसरे हाथ में लोहे का गदा थामे हुए। दुष्ट राक्षस ने बंदर को प्रकट होते ही अपनी लोहे की तलवार उठाई और उसके चेहरे पर वार किया। महान ऋषि ने एक हाथ से गदा से वार को रोका। फिर दूसरे राक्षस सरदार ने अपने भाले से और तीसरे सरदार ने अपने भाले से उस पर भयंकर आक्रमण किया। महान ऋषि ने रस्सी पर अपनी पकड़ ढीली कर दी, लोहे का गदा एक तरफ रख दिया और बादल के सहारे तेजी से भाग निकले, क्योंकि उन्हें डर था कि इतने सारे युवा राक्षसों से घिरे होने पर वे ठीक से लड़ नहीं पाएंगे। राक्षसों के शिविर से बाहर निकलते ही उन्होंने अपने बादल को एक विशाल और खाली पर्वत शिखर पर उतारा और दोनों हाथों से रस्सी को पूरी ताकत से खींचा। (अध्याय 76)

जितना हो सका, उसने कोशिश की। इससे वरिष्ठ राक्षस के हृदय में तीव्र पीड़ा हुई। राक्षस दर्द से कराहते हुए ऊपर की ओर छटपटाने लगा, तभी महान ऋषि ने उसे वापस नीचे खींच लिया।

जब वे सभी दूर से देख रहे थे, तो सभी कनिष्ठ राक्षस चिल्लाए: "उसे उकसाओ मत, महाराज! उसे जाने दो।"

उस बंदर को यह समझ ही नहीं है कि काम कब करना चाहिए। वह अप्रैल की शुरुआत से पहले ही पतंग उड़ा रहा है।

जब महान ऋषि ने यह सुना तो उन्होंने जोर से पैर पटका, जिससे वरिष्ठ राक्षस चरखे की तरह आकाश से नीचे गिरते हुए धूल में जा टकराया और पर्वत की तलहटी में कठोर धरती में लगभग दो फीट गहरा गड्ढा बना दिया।

इससे दूसरे और तीसरे राक्षस सरदारों को इतना भय लगा कि वे अपने बादलों को एक साथ नीचे लाए और रस्सी पकड़ने के लिए दौड़ पड़े तथा पर्वत के चरणों में घुटने टेक दिए। “हे महान ऋषि,” उन्होंने विनती की, “हमने सोचा था कि आप असीम उदारता वाले अमर देवता हैं। हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि आप चूहे या घोंघे की तरह संकीर्ण मानसिकता वाले होंगे। यह सच है कि हमने आपको युद्ध के लिए उकसाया था, लेकिन हमने कभी उम्मीद नहीं की थी कि आप हमारे बड़े भाई के दिल में रस्सी बांध देंगे।”

“तुम लोग सरासर शर्मनाक हो, शैतानों के शापित गिरोह,” बंदर हंसते हुए बोला। “पिछली बार तुमने मुझे बाहर बुलाने के लिए छल किया ताकि तुम मुझे काट सको और इस बार तुमने मुझे युद्ध के लिए तैयार सेना के सामने खड़ा कर दिया है। साफ है कि तुमने अकेले में ही मुझ पर हमला करने के लिए हजारों सैनिकों को यहाँ तैनात कर रखा है। बिलकुल बेतुका है। मैं इसे खींचकर ले जाऊंगा। मैं इसे घसीटकर अपने मालिक के पास ले जाऊंगा।”

"हे महान ऋषि, यदि आप अपनी दया और करुणा से हमारे जीवन पर कृपा करें," सभी राक्षसों ने एक साथ प्रणाम करते हुए कहा।

"हम आपके स्वामी को इस पर्वत के पार ले जाने का वचन देते हैं।"

"अगर तुम जीना चाहते हो तो तुम्हें बस अपनी तलवार से रस्सी काटनी होगी," बंदर ने हंसते हुए कहा।

"मेरे स्वामी," वरिष्ठ राक्षस ने कहा, "मैं बाहर रस्सी काट सकता हूँ, लेकिन मेरे दिल के चारों ओर बंधी हुई रस्सी का कोई फायदा नहीं है। यह मेरे गले में इतनी असहज रूप से अटक जाती है कि मुझे उल्टी जैसा महसूस होता है।"

“तो फिर,” बंदर ने कहा, “अपना मुंह खोलो और मैं रस्सी खोलने के लिए अंदर चला जाता हूँ।” इससे वरिष्ठ राक्षस घबरा गया और बोला, “अगर तुम इस बार अंदर जाकर बाहर नहीं आए तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाऊँगा, सचमुच बहुत बड़ी मुसीबत

में।”
"मुझे पता है कि तुम्हारे अंदर फंसी रस्सी के सिरे को बाहर से कैसे खोलना है," बंदर ने जवाब दिया। "लेकिन जब मैं इसे खोल दूंगा, तो क्या तुम सचमुच मेरे मालिक को पार ले जाओगे?"
"जैसे ही तुम इसे खोलोगे, हम कर देंगे," वरिष्ठ दानव सरदार ने उत्तर दिया। "मैं इस बारे में झूठ बोलने की हिम्मत नहीं करूँगा।" अब जब उसे यकीन हो गया कि दानव सच कह रहा है, तो बंदर ने खुद को झटका दिया और बालों को वापस अपने शरीर पर लगा लिया, जिसके बाद राक्षस के दिल का दर्द बंद हो गया। असल में, महान ऋषि सूर्य के रूपांतरण जादू ने ही बालों को उसके दिल के चारों ओर बांध दिया था, इसीलिए जैसे ही बालों को वापस बंदर के शरीर पर लगाया गया, दर्द गायब हो गया।
तब तीनों दानव सरदारों ने हवा में उड़कर उनका धन्यवाद करते हुए कहा, "हे महान ऋषि, कृपया अब वापस जाइए और अपना सामान पैक कर लीजिए। हम उन्हें लाने के लिए एक कुर्सी नीचे ले जाएंगे।" इसके बाद दानवों का पूरा समूह अपने हथियार नीचे रखकर गुफा में वापस चला गया।
अपनी रस्सी को एक तरफ रखकर महान ऋषि सीधे पहाड़ी की पूर्वी तरफ वापस चले गए, और जब वे काफी दूर पहुँच गए तो उन्होंने तांग पुजारी को जमीन पर पड़ा हुआ, कराहते और चिल्लाते हुए देखा। पिग और फ्रायर सैंड ने सामान के बंडल खोल दिए थे और उन्हें आपस में बाँट रहे थे।
"कहीं ऐसा तो नहीं," बंदर ने एक गहरी आह भरते हुए सोचा। "ज़रूर सुअर ने मालिक को बता दिया होगा कि मुझे बुरी आत्माओं ने खा लिया है। मालिक फूट-फूटकर रो रहा होगा क्योंकि वह मेरे बिना नहीं रह सकता और वह बेवकूफ हम सबके अलग होने के लिए सामान बाँट रहा होगा। हे भगवान! मैं पक्का नहीं कह सकता, इसलिए बेहतर होगा कि मैं नीचे जाकर अध्याय 76 पढ़ लूँ।

चिल्लाने में महारत हासिल करो।"
अपने बादल को नीचे लाते हुए बंदर चिल्लाया, "मालिक!" जैसे ही साधु सैंड ने यह सुना, वह सूअर से शिकायत करने लगा।
"तुम्हें बस लोगों को मरा हुआ देखना है, जैसे कोई ताबूत रखने का स्टैंड हो," उसने

कहा। "हमारे बड़े भाई की हत्या नहीं हुई थी, लेकिन तुमने कहा कि उसकी हत्या हुई है और तुमने ही यहाँ यह धंधा शुरू किया है। ज़ाहिर है, वह हंगामा करेगा ही।"

"लेकिन मैंने अपनी आँखों से देखा कि दुष्ट आत्मा उसे एक ही झटके में निगल गई," सुअर ने जवाब दिया। "मुझे यकीन है कि हम उस बंदर की आत्मा को देख रहे हैं क्योंकि आज का दिन अशुभ है।"

फिर बंदर सुअर के पास गया और उसके चेहरे पर एक जोरदार थप्पड़ मारा जिससे सुअर लड़खड़ा गया। "बेवकूफ!" उसने कहा। "क्या यही मेरी आत्मा है जो तुझे दिखाई दे रही है?"

अपना चेहरा मलते हुए उस मूर्ख ने जवाब दिया, "लेकिन उस राक्षस ने सचमुच तुम्हें खा लिया था, भाई। तुम—तुम कैसे वापस ज़िंदा हो गए?"

“बेकार का गम्बोइल!” बंदर बोला। “मुझे खाने के बाद मैंने उसकी आँतें पकड़ीं, उसके फेफड़े मरोड़ दिए, उसके दिल में रस्सी बाँधी और उसे तब तक नोचा जब तक वह भयानक पीड़ा से तड़पने नहीं लगा। फिर सबने मेरे सामने सिर झुकाया और गिड़गिड़ाए, इसलिए मैंने उसकी जान बख्श दी। अब वे मालिक को पहाड़ के पार ले जाने के लिए एक कुर्सी ला रहे हैं।”

जैसे ही संजांग ने यह सुना, वह झट से खड़ा हो गया, बंदर को प्रणाम किया और बोला, "शिष्य, मैंने तुम्हें बहुत बड़ी मुसीबत में डाल दिया है। अगर मैंने वुनेन्ग की बात मान ली होती तो हमारा काम तमाम हो गया होता।"

"भूसा खाने वाले मूर्ख," बंदर ने गुस्से से कहा और मुक्के से सुअर पर वार करते हुए बोला, "तू एकदम आलसी है और नामुमकिन ही इंसान है। लेकिन परेशान मत होइए, स्वामी। राक्षस आपको पहाड़ के उस पार ले जाने आ रहे हैं।"

फ्रायर सैंड को भी गहरी शर्मिंदगी महसूस हुई, और जल्दी से इसे छुपाने की कोशिश करते हुए उन्होंने सामान पैक किया और घोड़े को सड़क पर इंतजार करने के लिए लाद दिया।

कहानी फिर से तीन दानव सरदारों पर लौटती है, जो अपनी शैतानी सेना को गुफा में वापस ले गए। "बड़े भाई,"

दूसरे राक्षस ने कहा, "मैंने सोचा था कि नौसिखिया सूर्य के नौ सिर और आठ पूंछें होंगी, लेकिन वह तो बस एक छोटा सा बंदर निकला। तुम्हें उसे निगलना नहीं चाहिए था। तुम्हें उससे लड़ना चाहिए था।"

वह हमारा मुकाबला नहीं कर सकता था। हमारे हजारों गोब्लिन उसे अपनी लार में डुबो सकते थे। लेकिन उसे निगलकर तुमने उसे अपनी जादूई शक्तियों का इस्तेमाल करने और तुम्हें पीड़ा पहुँचाने का मौका दिया, ताकि तुम उससे भिड़ने की हिम्मत न कर सको। जब मैंने अभी कहा कि हम तांग पुजारी को पहाड़ों के पार ले जाएँगे, तो मेरा मतलब वो नहीं था। यह तो बस उसे बाहर निकालने का एक तरीका था क्योंकि तुम्हारी जान खतरे में थी। मैं तांग पुजारी को किसी भी कीमत पर सुरक्षा नहीं दूँगा।
"क्यों नहीं, भले भाई?" वरिष्ठ दानव सरदार ने पूछा।
"अगर तुम और मैं तीन हजार युवा शैतानों को युद्ध के लिए तैयार कर लें तो मैं उस बंदर को पकड़ सकता हूँ," दूसरे राक्षस ने उत्तर दिया।
"तीन हज़ार की चिंता छोड़ो," वरिष्ठ दानव सरदार ने कहा। "हमारी पूरी सेना तुम ले लो। अगर हम उसे पकड़ लेते हैं तो यह हम सबके लिए गौरव की बात होगी।"
दूसरे दानव सरदार ने फिर तीन हजार कनिष्ठ दानवों को इकट्ठा किया और उन्हें मुख्य सड़क के किनारे एक स्थान पर ले जाकर युद्ध की तैयारी करवाई। उसने एक दूत को नीले झंडे के साथ संदेश लेकर भेजा।
"सन द नोविस," उद्घोषक ने कहा, "तुरंत बाहर आओ और महामहिम से लड़ो।"
अध्याय 76
1062
पश्चिम की यात्रा
यह सुनकर सुअर हंसते हुए बोला, "जैसा कि कहावत है, भाई, झूठे लोग घर वालों को बेवकूफ नहीं बना सकते।"
जब तुम वापस आए तो तुमने हमसे झूठ बोला, धोखेबाज़! तुमने कहा था कि तुमने दुष्ट आत्माओं को हरा दिया है और वे स्वामी को पार ले जाने के लिए एक कुर्सी लाएंगे। लेकिन अब वे तुम्हें युद्ध के लिए चुनौती दे रहे हैं। क्यों?
“वरिष्ठ राक्षस ने मेरे सामने आत्मसमर्पण कर दिया,” बंदर ने उत्तर दिया, “और वो अपना चेहरा दिखाने की हिम्मत भी नहीं कर रहा। मेरा नाम सुनते ही उसका सिर दर्द करने लगता है। दूसरा राक्षस सरदार मुझे युद्ध के लिए चुनौती दे रहा होगा, तभी तो वो हमें पार ले जाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा। सुनो भाई, वो तीनों दुष्ट आत्माएँ भाई हैं और उनमें सम्मान की भावना है। हम तीनों भाई हैं, पर नहीं। मैंने वरिष्ठ राक्षस को हरा दिया है, इसलिए दूसरा राक्षस बाहर आ गया है। तुम्हारे लिए उससे लड़ने में

कोई हर्ज नहीं है।”
"मैं उससे नहीं डरता," पिग ने कहा। "मैं जाकर उससे मुकाबला करूंगा।"
"अगर तुम चाहो तो कर सकते हो," बंदर ने जवाब दिया।
"भाई," सुअर ने हंसते हुए कहा, "मैं जाऊंगा, लेकिन मुझे वह रस्सी उधार दे देना।"
"तुम्हें इसकी क्या ज़रूरत है?" बंदर ने पूछा। "तुम्हें न तो उसके पेट में घुसना आता है और न ही इसे उसके दिल से बांधना, तो यह तुम्हारे किस काम आएगा?"
"मैं इसे अपनी कमर पर जीवन रेखा की तरह बांधना चाहता हूँ," पिग ने जवाब दिया। "तुम और फ्रायर सैंड इसे पकड़े रहना और मुझे उससे लड़ने के लिए रस्सी छोड़ देना। अगर तुम्हें लगे कि मैं उसे हरा रहा हूँ, तो और रस्सी छोड़ देना और मैं उसे पकड़ लूँगा, लेकिन अगर वह मुझे हरा रहा है, तो मुझे पीछे खींच लेना। उसे मुझे घसीट कर ले जाने मत देना।"
यह देखकर बंदर मन ही मन मुस्कुराया और सोचने लगा, "इस मूर्ख को बेवकूफ बनाने का एक और मौका मिल गया।" फिर बंदर ने सूअर की कमर में रस्सी बांधी और उसे युद्ध में भेज दिया।
उस मूर्ख ने अपना फावड़ा उठाया और चिल्लाते हुए खड़ी ढलान पर चढ़ गया। "निकल आओ, दुष्ट आत्मा! आओ और अपने पूर्वज सुअर से लड़ो!" नीले झंडे वाला दूत दौड़कर वापस आया और सूचना दी, "महाराज, यहाँ एक लंबी थूथन और बड़े कानों वाला भिक्षु है।" दूसरा दानव सरदार शिविर से बाहर आया, सुअर को देखा और बिना कुछ कहे अपना भाला सीधे सुअर के चेहरे पर दे मारा। उस मूर्ख ने अपना फावड़ा उठाया और वार रोकने के लिए आगे बढ़ा। दोनों पहाड़ की ढलान के सामने युद्ध में उलझ गए, और सात-आठ दौर के युद्ध से पहले ही वह मूर्ख कमजोर पड़ने लगा। वह दुष्ट आत्मा को रोक नहीं पा रहा था।
“भाई,” वह जल्दी से पीछे मुड़ते हुए चिल्लाया, “जीवन रेखा खींचो, जीवन रेखा खींचो!” जब महान ऋषि ने यह सुना, तो उन्होंने रस्सी पर अपनी पकड़ ढीली कर दी और उसे छोड़ दिया। अब जब वह हार गया था, तो वह मूर्ख वापस भागने लगा। पहले तो उसने अपने पीछे लटकती रस्सी पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब वह पीछे मुड़ा और रस्सी का तनाव कम किया, तो वह उसके पैरों में उलझने लगी। वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा, फिर उठा और फिर गिर गया। पहले तो वह केवल डगमगाया, लेकिन फिर वह मुंह के बल धूल में गिर पड़ा। दुष्ट आत्मा ने उसका पीछा किया, अजगर जैसी

अपनी सूंड खोली, उसे सुअर के चारों ओर लपेटा और उसे विजय के साथ गुफा में वापस ले गया। शैतानी सेना ने वापस लौटते हुए विजय गीत गाए।
जब संज़ंग ने ढलान के नीचे से यह सब देखा तो वह बंदर पर क्रोधित हो गया। उसने कहा, "वुकोंग, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वुनेन्ग चाहता है कि तुम मर जाओ। तुम दोनों भाई-शिष्य एक-दूसरे से बिल्कुल भी प्रेम नहीं करते। तुम सब में केवल ईर्ष्या है। उसने तुम्हें अपनी जीवन रेखा खींचने को कहा था, तो तुमने क्यों नहीं खींचा? तुमने रस्सी क्यों छोड़ दी? अब हम क्या करें जब तुमने उसे मरवा दिया है?"
“मालिक, आप फिर से उसका बचाव कर रहे हैं, और पक्षपात भी दिखा रहे हैं। मैं तंग आ गया हूँ। जब मुझे पकड़ा गया था, तब आपको ज़रा भी परवाह नहीं थी। आप मुझे बेकार समझते थे। लेकिन जब वह मूर्ख पकड़ा गया, तो आप सारा दोष मुझ पर डाल रहे हैं। उसे भुगतने दो। इससे उसे सबक मिलेगा कि शास्त्रों को लाना कितना मुश्किल होता है।”
अध्याय 76
1063
पश्चिम की यात्रा
"शिष्य," संज़ंग ने कहा, "जब तुम गए थे, तो क्या मैं चिंतित नहीं था? मुझे याद था कि तुम दूसरे रूपों में रूप बदल सकते हो, इसलिए मुझे पूरा भरोसा था कि तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन वह मूर्ख जन्म से ही अनाड़ी है और खुद को रूप नहीं बदल सकता, इसलिए यह बहुत खतरनाक काम है। तुम्हें जाकर उसे बचाना होगा।"
"शिकायत करना बंद करो, स्वामी जी," बंदर भाई ने कहा। "मैं जाकर उसे बचा लूंगा।" बंदर गुस्से से मन ही मन सोचते हुए पहाड़ पर चढ़ गया, "अगर वो मूर्ख मुझे मारना चाहता है, तो मैं उसकी जिंदगी आसान नहीं करने वाला। मैं जाकर देखता हूँ कि दुष्ट आत्माएँ उसके साथ क्या कर रही हैं। उसे बचाने से पहले, मैं उसे थोड़ा तड़पाऊँगा।" फिर उसने अपने हाथों से जादू किया, एक मंत्र बोला, खुद को झटका दिया, एक छोटे से कीड़े में बदल गया और गुफा में उड़ गया, जहाँ वो सुअर के एक कान के नीचे उतरा ताकि उसे दुष्ट आत्मा के साथ अंदर ले जाया जा सके। दूसरे दानव सरदार ने अपने तीन हज़ार छोटे शैतानों को तुरही और ढोल बजाते हुए गुफा तक पहुँचाया, जहाँ वे रुक गए।
फिर वह सुअर को अंदर ले गया और बोला, "मेरे पास एक है, बड़े भाई।"

"मुझे दिखाओ," वरिष्ठ राक्षस ने उत्तर दिया।
अपनी सूंड खोलते हुए दूसरे दानव सरदार ने सुअर को जमीन पर पटक दिया और कहा, "वह रहा।"
"वह तो बेकार है," वरिष्ठ दानव ने कहा।
यह सुनकर सुअर ने कहा, "महाराज, अगर मैं किसी काम का नहीं हूँ तो मुझे जाने दीजिए और मैं किसी और अधिक उपयोगी व्यक्ति को पकड़ने के लिए ढूंढ लूँगा।"
तीसरे दानव सरदार ने कहा, "हो सकता है कि वह किसी काम का न हो, लेकिन वह तांग पुजारी का शिष्य झू बाजी है। उसे बांधकर पीछे वाले तालाब में भिगो दो। जब उसके बाल पूरी तरह भीग जाएं, तो हम उसका पेट चीरकर उसमें नमक डालकर धूप में सुखा देंगे। बरसात के दिन शराब के साथ वह अच्छा लगेगा।"
“बस हो गया!” सुअर ने भयभीत होकर कहा। “मैं एक ऐसे राक्षस के चंगुल में फंस गया हूँ जो नमकीन सूअर का मांस बेचता है।” राक्षसों का झुंड उस पर टूट पड़ा, उसके हाथ-पैर बांध दिए, उसे पीछे बने तालाब तक ले गए, उसमें धकेल दिया और वापस चले गए।
जब महान ऋषि वहां देखने के लिए उड़े, तो उन्होंने उस मूर्ख को देखा जिसके चारों अंग ऊपर की ओर और थूथन नीचे की ओर थे; वह आधा तैर रहा था और आधा डूब रहा था, और थूथन से गुर्रा रहा था। वह सचमुच एक हास्यास्पद दृश्य था, जैसे कोई बड़ा काला, पाले से जमा हुआ कमल का फूल जिसके बीज सितंबर या अक्टूबर में झड़ गए हों।
उसका चेहरा देखकर महान ऋषि को उसके प्रति घृणा और दया दोनों का भाव उत्पन्न हुआ।
"मैं क्या करूँ?" उसने सोचा। "आखिरकार, वह ड्रैगन फ्लावर असेंबली का एक और सदस्य है। काश वह सामान बाँटने, हमारे दल को तोड़ने और गुरु को दल कसने वाला मंत्र बोलने के लिए उकसाने की कोशिश न करता रहे। पिछले दिन मैंने फ्रायर सैंड को कहते सुना कि उसने अपने लिए कुछ पैसे छिपा रखे हैं। मुझे शक है कि यह सच है या नहीं। मैं उसे डराकर पता लगाऊँगा।"
महान संत उड़कर उनके कान के पास आए और छद्म स्वर में पुकारा, "झू वुनेन्ग, झू वुनेन्ग।"
"यह तो भयानक है," पिग ने घबराकर सोचा, "वुनेन्ग मेरा वो नाम है जो बोधिसत्व

गुआनयिन ने मुझे दिया था। तांग पुजारी के साथ रहते हुए मुझे हमेशा झू बाजी ही कहा गया है। यहाँ ऐसा कोई कैसे हो सकता है जो मेरा नाम वुनेन्ग जानता हो?" इसलिए वह खुद को रोक नहीं पाया और उसने पूछा, "मेरा बौद्ध नाम कौन पुकार रहा है?"

"मैं," बंदर ने कहा।

"तुम कौन हो?" उस मूर्ख ने पूछा।

अध्याय 76

1064

पश्चिम की यात्रा

"मैं कैचर हूँ," बंदर ने जवाब दिया।

"कहां से, महोदय?" सुअर ने डरते हुए पूछा।

"पाताल लोक के पांचवें राजा ने मुझे तुम्हें लाने के लिए भेजा है," बंदर ने कहा।

"तो कृपया वापस जाइए और पाँचवें राजा से विनती कीजिए, क्योंकि वे मेरे वरिष्ठ शिष्य सन वुकॉन्ग के बहुत अच्छे मित्र हैं, कि वे मुझे एक दिन की मोहलत दे दें। आप कल मुझे लेने आ सकते हैं।"

“तुम बकवास कर रहे हो,” बंदर ने जवाब दिया। “अगर नरक के राजा यम ने फैसला किया कि तुम्हारी मृत्यु तीसरे पहर में होगी, तो कोई भी तुम्हें चौथे पहर तक नहीं रखेगा। अगर तुम नहीं चाहते कि मैं तुम्हारे गले में रस्सी डालकर तुम्हें घसीट कर ले जाऊं, तो तुरंत मेरे साथ चलो।”

"मुझ पर एक एहसान करो," उस मूर्ख ने कहा। "मेरे जैसे चेहरे के साथ भी मैं जीना चाहता हूँ। अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं मर भी जाऊँगा, लेकिन मुझे एक दिन का समय दो जब तक ये दुष्ट आत्माएँ मेरे मालिक और हम सबको पकड़ न लें, ताकि हम सबके मरने से पहले मैं उनसे फिर मिल सकूँ।"

“ठीक है,” बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा। “मुझे यहाँ आस-पास लगभग तीस लोगों को पकड़ना है। जब मैं उन्हें पकड़ लूँगा, तो तुम्हारे पास वापस आऊँगा। इससे तुम्हें एक दिन का समय मिल जाएगा। मुझे कुछ पैसे दे दो। मुझे यकीन है कि तुम्हारे पास होंगे।”

"अरे बाप रे," सुअर ने कहा, "हम भिक्षुओं के पास पैसे नहीं हैं।"

"अगर तुमने नहीं किया तो मैं तुम्हें घसीटकर ले जाऊंगा," बंदर भाई ने कहा। "मेरे

साथ आओ।"
"इतने अधीर मत होइए, महोदय," उस मूर्ख ने घबराते हुए कहा। "मुझे पता है कि आपकी वह रस्सी जानलेवा रस्सी कहलाती है। एक बार वह आपके गले में पड़ गई तो आप मर जाएंगे। हाँ, मेरे पास कुछ पैसे हैं। थोड़े से हैं, लेकिन ज़्यादा नहीं।"
"यह कहाँ है?" बंदर ने पूछा। "मुझे अभी दो।"
"अरे बाप रे, कितना अफ़सोस!" सुअर ने कहा। "जब से मैं भिक्षु बना हूँ, तब से लेकर अब तक भिक्षुओं को भोजन कराने वाले दयालु लोग मुझे दूसरों से ज़्यादा दान देते आए हैं, क्योंकि मेरा पेट बहुत बड़ा है। मैंने चाँदी के छोटे-छोटे टुकड़े जमा करके लगभग आधा औंस कर दिए थे। उन्हें संभाल कर रखना मुश्किल था, इसलिए कुछ समय पहले जब हम एक शहर में थे, तो मैंने एक सुनार से उन सबको पिघलाने को कहा। उस दुष्ट ने उसमें से कुछ दाने चुरा लिए, इसलिए जो सिल्लियाँ बनीं उनका वज़न केवल छियालीस सौवाँ औंस ही था। इसे ले लो।"
"उस बेवकूफ ने तो अपनी पैंट भी नहीं पहनी है," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा, "तो उसने इसे कहाँ छिपाया होगा? अरे, तुम्हारा चांदी का सिक्का कहाँ है?"
"यह मेरे बाएं कान के अंदर फंसा हुआ है," पिग ने जवाब दिया। "मैं खुद इसे नहीं निकाल सकता क्योंकि मैं बंधा हुआ हूँ, इसलिए इसे खुद ही निकाल लो।"
यह सुनकर बंदर ने अपना हाथ बढ़ाया और सुअर के कान के अंदर से चांदी निकाल ली। वह सचमुच एक काठी के आकार की सोने की ईंट थी जिसका वजन मात्र पैंतालीस या छियालीस औंस था। उसे हाथों में पकड़ते ही बंदर जोर-जोर से हंसने लगा।
बंदर की आवाज पहचानते ही उस मूर्ख ने पानी से ही उसे बेतहाशा गालियां देना शुरू कर दिया: "घोड़ों के रक्षक, तुम पर लानत हो, जब मैं इतनी मुसीबत में हूँ तब मुझसे पैसे वसूलने आए हो।"
"अब तो मैंने तुम्हें पकड़ लिया, निकम्मे!" बंदर बोला। "भगवान ही जाने मैंने मालिक की रक्षा के लिए क्या-क्या सहा है, जबकि तुम अपनी दौलत कमाते रहे।"

"बकवास!" सुअर ने पलटकर जवाब दिया। "इसे दौलत कहते हो? ये तो बस वो है जो

मैंने अपने दांतों से खुरच कर निकाली है। मैंने इसे अपने पेट पर खर्च करने से खुद को रोका, इसलिए मैंने इसे बचाकर अपने लिए कपड़ा खरीदा ताकि एक कुर्ता सिलवा सकूं। तुमने इसे मुझसे धमकाकर निकलवाया है। तुम्हें इसे मेरे साथ बाँटना चाहिए।"
"तुम्हें इसमें से एक पैसा भी नहीं मिलेगा," बंदर ने जवाब दिया।
"मैंने तुम्हें मेरी जान बख्शने के लिए पैसे दिए हैं," सुअर ने कहा, "तो अब तुम्हें मुझे बचाना ही होगा।"
“इतने अधीर मत हो,” बंदर ने कहा। “मैं तुम सबको सही समय पर बचा लूँगा।” चाँदी को एक तरफ रखकर वह वापस अपने असली रूप में आ गया और अपने डंडे से सुअर को इतना पास खींच लाया कि उसके पैर पकड़कर उसे किनारे पर घसीटकर ले आए और उसके बंधन खोल दिए। फिर सुअर उछलकर उठा, अपने कपड़े उतारे, निचोड़े, झाड़े और गीले कपड़ों को अपने कंधों पर डाल लिया।
"भाई," उसने कहा, "पीछे के दरवाजे खोलो। चलो चलते हैं।"
"पीछे के रास्ते से चुपके से निकलने में कोई शान नहीं है," बंदर ने जवाब दिया। "हम सामने वाले गेट से निकलेंगे।"
"बंधे रहने के बाद से मेरे पैर अभी भी सुन्न हैं," पिग ने कहा। "मैं दौड़ नहीं सकता।"
"हिम्मत जुटाओ और मेरे साथ चलो," बंदर ने कहा।
महान संत ने अपना गदा घुमाते हुए रास्ता साफ करते हुए तेजी से आक्रमण किया। मूर्ख के पास दर्द सहने और उनके साथ रहने के अलावा कोई चारा नहीं था। जब उसने दूसरे द्वार के पास रखा हुआ रेक देखा, तो वह उसके पास गया, छोटे शैतानों को एक तरफ धकेल कर रेक उठाया और बेतहाशा वार करते हुए आगे बढ़ गया। वह और उसका भाई बंदर तीन-चार द्वारों से होकर गुजरे, और न जाने उन्होंने कितने छोटे शैतानों को मार डाला।
जब वरिष्ठ राक्षस सरदार ने यह सब सुना तो उसने दूसरे सरदार से कहा, "तुमने एक शानदार व्यक्ति को पकड़ा है! सचमुच शानदार! देखो! नौसिखिए सूर्य ने सुअर को बचा लिया है और उन्होंने द्वार पर तैनात कनिष्ठों को घायल या मार डाला है।" दूसरा राक्षस तुरंत अपने पैरों पर खड़ा हुआ और भाला लहराते हुए द्वार से बाहर निकल भागा।
“धिक्कार है उस बंदर पर!” वह ज़ोर से चिल्लाया। “कितनी हिम्मत है तुम्हारी! हमारा इतना अपमान करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!” महान ऋषि ने यह सुनते ही थम

गए। राक्षस ने बिना कोई तर्क दिए अपना भाला सीधे उन पर तान दिया। एक कुशल बंदर ने बड़ी फुर्ती से लोहे का डंडा उठाकर राक्षस के चेहरे पर वार किया। गुफा के प्रवेश द्वार के बाहर दोनों के बीच एक ज़बरदस्त लड़ाई हुई: पीले दांतों वाला हाथी मानव रूप में

उसने शेर राजा के साथ भाईचारे की शपथ ली थी।

वरिष्ठ राक्षस के बहकावे में आकर

उन्होंने मिलकर तांग पुजारी को खाने की साजिश रची।

महान ऋषि, जो स्वर्ग के समतुल्य थे, उनकी शक्तियाँ विशाल थीं।

किसने बुराई के विरुद्ध अच्छाई की सहायता की और राक्षसों का नाश किया?

उस अक्षम सुअर का बुरा हाल हो गया था।

अध्याय 76

1066

पश्चिम की यात्रा

इसलिए बंदर ने उसे बचाया और उसे बाहर ले गया।

जब दानव राजा ने अत्यंत क्रूरता से उनका पीछा किया

भाले और लाठी दोनों ने अपनी-अपनी ताकत का प्रदर्शन किया।

भाला जंगल में सांप की तरह सरकता था;

लाठी समुद्र से निकले अजगर की तरह प्रकट हुई।

जहां से अजगर प्रकट हुआ, वहां घने बादल थे;

जहां से सांप जंगल से गुजर रहा था, वहां घना कोहरा छाया हुआ था।

यह सब तांग पुजारी के हित में था।

उन्होंने एक-दूसरे से क्रूरता और घृणा के साथ लड़ाई की।

जब उसने महान ऋषि को दुष्ट आत्मा से लड़ते देखा, तो सुअर घोड़े की एड़ी पर खड़ा हो गया, उसका फावड़ा सीधा था। मदद करने के बजाय, वह विस्मय से देखता रहा। बंदर का गदा इतना शक्तिशाली था और उसके युद्ध कौशल इतने त्रुटिहीन थे कि दुष्ट आत्मा ने अपने भाले से बंदर के वारों को रोका और साथ ही अपनी सूंड को घुमाकर उसे जकड़ लिया। बंदर इस चाल को जानता था, इसलिए उसने अपने सोने की पट्टी वाले गदा को दोनों हाथों में क्षैतिज रूप से फैलाकर ऊपर उठाया। दुष्ट आत्मा की सूंड ने बंदर की कमर पर वार किया, लेकिन उसके हाथों को नहीं। देखिए कैसे बंदर अपने

गदा से दुष्ट आत्मा की सूंड पर प्रहार करता है।
जब सुअर ने यह देखा तो उसने अपनी छाती पीटते हुए कहा, "अरे बाप रे! उस राक्षस की किस्मत तो बिल्कुल खराब है। जब उसने मुझे पकड़ा तो मेरी बांहें भी पकड़ लीं क्योंकि मैं बहुत अनाड़ी हूँ, लेकिन उस चालाक राक्षस को पकड़ते समय उसने ऐसा नहीं किया। उसके दोनों हाथों में लाठी है, और उसे बस इतना करना है कि उसे उस राक्षस की सूंड में घुसा दे ताकि उसकी नाक में इतना दर्द हो कि उसकी नाक बहने लगे। वह राक्षस उसे फिर कभी पकड़ नहीं पाएगा।"
सुअर के कहने से पहले बंदर ने इस बारे में सोचा भी नहीं था, लेकिन अब उसने अपनी लाठी को इतना मोटा और दस फीट से भी ज़्यादा लंबा बना लिया कि वह सचमुच राक्षस की सूंड में ज़ोर से घुसा दी। इससे उस दुष्ट आत्मा को इतना ज़ोर का झटका लगा कि उसने अपनी सूंड को सरसराहट की आवाज़ के साथ खोल दिया। बंदर ने अपना हाथ घुमाकर सूंड को पकड़ लिया और उसे ज़बरदस्ती अपनी ओर खींच लिया। और ज़्यादा तकलीफ़ से बचने के लिए राक्षस बाहर निकला और बंदर के हाथ के साथ चलने लगा। तभी सुअर ने हिम्मत करके पास आने की कोशिश की और अपना रेक उठाकर राक्षस के बगलों पर बेतहाशा वार करने लगा।
“नहीं,” बंदर भाई ने कहा, “यह ठीक नहीं है। तुम्हारे रेक के कांटे इतने नुकीले हैं कि उससे उसकी चमड़ी फट सकती है। अगर उसे बहुत ज़्यादा खून बहने लगा और मालिक ने देख लिया तो वह कहेगा कि हमने फिर से किसी को मार डाला है। बेहतर होगा कि तुम इसे घुमाकर उसके डंडे से मारो।”
फिर उस मूर्ख ने अपने फावड़े का हैंडल उठाया और हर कदम पर राक्षस पर प्रहार किया, जबकि बंदर उसे सूंड से घसीटता रहा। वे दोनों हाथी के बच्चों की तरह लग रहे थे, जब वे उसे पहाड़ की तलहटी तक ले गए, जहाँ संजांग उन दोनों को शोर मचाते हुए अपनी ओर आते देख एकाग्रता से निहार रहा था।
"वुजिंग," उसने फ्रायर सैंड से कहा, "वुकोंग किसका नेतृत्व कर रहा है?"
जब साधु सैंड ने उन्हें देखा तो उसने उत्तर दिया, "गुरुजी, बड़ा भाई एक दुष्ट आत्मा को उसकी नाक से घसीटकर यहाँ लाया है। उसे वध करने में सचमुच आनंद आता है।"
अध्याय 76
1067
पश्चिम की यात्रा

"वाह, वाह!" संज़ंग ने कहा। "कितना बड़ा दुष्ट आत्मा है, और कितनी लंबी नाक! जाओ और उससे पूछो कि क्या वह खुश है और हमें पहाड़ पार ले जाने के लिए तैयार है। अगर वह तैयार है तो उसे बख्श देना चाहिए, मारना नहीं चाहिए।"

फ्रायर सैंड तुरंत उनकी ओर दौड़ते हुए चिल्लाया, "गुरुजी कहते हैं कि अगर राक्षस सचमुच उसे पहाड़ पार ले जाने को तैयार है, तो तुम्हें उसे मारना नहीं चाहिए।" यह सुनते ही राक्षस घुटनों के बल गिर पड़ा और बहुत ही नाक से निकलने वाली आवाज़ में ऐसा करने का वादा किया। उसकी आवाज़ ऐसी इसलिए थी क्योंकि मंकी ने अपनी नाक के नथुने कसकर बंद कर रखे थे, जिससे ऐसा लग रहा था मानो उसे ज़ुकाम हो गया हो।

"हे भगवान तांग," उसने कहा, "यदि आप मेरी जान बख्श दें तो मैं आपको कुर्सी पर बिठाकर पार करा दूंगा।"

“मेरे गुरु और हम शिष्य अच्छे लोग हैं,” बंदर ने उत्तर दिया। “चूंकि आपने ऐसा कहा है, इसलिए हम आपकी जान बख्श देंगे।”

कुर्सी तुरंत लाओ। अगर तुमने दोबारा अपना वचन तोड़ा तो अगली बार पकड़े जाने पर हम तुम्हारी जान बिलकुल नहीं बख्शेंगे।” मुक्त हुआ राक्षस सिर झुकाकर चला गया। बंदर और सुअर तांग पुजारी को अपने साथ हुई सारी घटना बताने गए। सुअर शर्म से लाल हो गया और इंतज़ार करते हुए उसने अपने कपड़े धूप में सुखाने के लिए फैला दिए।

दूसरा दानव सरदार कांपता हुआ गुफा में लौटा। उसके लौटने से पहले ही कुछ कनिष्ठ दानवों ने वरिष्ठ और तीसरे दानव सरदारों को बता दिया था कि बंदर उसे सूंड से खींचकर ले गया था। घबराहट में वरिष्ठ दानव अपने दल को तीसरे दानव के साथ बाहर ले गया, तभी उन्होंने देखा कि दूसरा सरदार अकेला लौट रहा है। जब वे उसे अंदर लाए और उससे पूछा कि उसे क्यों छोड़ा गया था, तो दूसरे सरदार ने उन्हें संजांग के दया और भलाई के शब्दों के बारे में सब कुछ बता दिया। वे एक-दूसरे को देखते रह गए, कुछ बोल नहीं पा रहे थे।

दूसरे दानव सरदार ने कहा, "बड़े भाई, क्या हम संजांग को पार ले चलें?"

“भाई, ये कैसी बात है!” वरिष्ठ सरदार ने जवाब दिया। “सन द नोविस बंदर तो अत्यंत दयालु और न्यायप्रिय है। अगर वो मेरे पेट में रहते हुए मुझे मारना चाहता तो ज़रूर मार सकता था। उसने तो बस तुम्हारी सूंड पकड़ी है। वो तुम्हें घसीटकर ले जा सकता था

और जाने नहीं देता। उसने बस तुम्हारी सूंड को चुटकी से दबाया और उसकी चमड़ी फाड़ दी, जिससे तुम डर गए। उन्हें तुरंत पार ले जाने के लिए तैयार हो जाओ।"
तीसरे दानव सरदार ने मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ, हाँ, हाँ!"
"जिस तरह से तुम बात कर रहे हो, मेरे भले भाई," वरिष्ठ दानव ने कहा, "ऐसा लगता है कि तुम तांग पुजारी को जाने देने के लिए अनिच्छुक हो। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो हम उसे पार ले जाएंगे।"
तीसरे दानव सरदार ने फिर मुस्कुराते हुए कहा, "बड़े भाइयों, उन भिक्षुओं के लिए यह अधिक सौभाग्य की बात होती यदि उन्होंने हमसे साथ चलने का अनुरोध न किया होता और चुपचाप निकल जाते। हमसे साथ चलने का अनुरोध करके वे पहाड़ से बाघ को नीचे लाने की हमारी योजना में फंस गए हैं।"
"पहाड़ से बाघ को लुभाने का क्या मतलब है?" वरिष्ठ राक्षस ने पूछा।
"हमारी गुफा में मौजूद सभी राक्षसों को बुलाओ," तीसरे राक्षस सरदार ने आगे कहा। "उनमें से दस हजार में से एक हजार चुनो, फिर एक हजार में से सौ, फिर सौ में से सोलह और तीस चुनो।"
"तुम्हें सोलह और तीस क्यों चाहिए?" वरिष्ठ राक्षस ने पूछा।
“ये तीस लोग अच्छे रसोइये होने चाहिए,” तीसरे दानव सरदार ने उत्तर दिया। “उन्हें बेहतरीन चावल और आटा, बांस की कोंपलें, चाय, गलफड़े, छोटे मशरूम, टोफू और गेहूं का ग्लूटेन दो। उन्हें रास्ते में सात से दस मील दूर एक आश्रय बनाने के लिए भेजो और तांग पुजारी के लिए भोजन की व्यवस्था करने को कहो।”
अध्याय 76
1068
पश्चिम की यात्रा
"और तुम्हें सोलह किसलिए चाहिए?" वरिष्ठ दानव ने पूछा।
"आठ लोग कुर्सी उठाएंगे और आठ लोग रास्ता साफ करने के लिए चिल्लाएंगे," तीसरे राक्षस ने उत्तर दिया। "हम भाई उनके सफर के एक पड़ाव तक उनके साथ चलेंगे। यहाँ से लगभग 150 मील पश्चिम में मेरा शहर है, और वहाँ उनका स्वागत करने के लिए मेरे पास पर्याप्त सैनिक हैं। जब वे शहर पहुँचेंगे तो हम ऐसा-ऐसा करेंगे... तांग पुजारी और उनके शिष्य यह नहीं देख पाएंगे कि उनके साथ क्या हो रहा है। हम तांग पुजारी को पकड़ पाएंगे या नहीं, यह पूरी तरह से उन सोलह राक्षसों पर

निर्भर करता है।"
यह सुनकर वरिष्ठ राक्षस आनंद से फूला नहीं समा रहा था। मानो वह नशे के नशे से जागा हो या किसी स्वप्न से बाहर आया हो। "बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया," उसने कहा और फिर राक्षसों को इकट्ठा किया, तीस को भोजन दिया और सोलह को बेंत की कुर्सी उठाने के लिए कहा। जब वे चल पड़े तो वरिष्ठ राक्षस ने बाकी राक्षसों को ये निर्देश दिए: "तुममें से कोई भी पहाड़ पर मत जाना। नौसिखिया सूर्य बहुत सतर्क बंदर है, और अगर वह तुममें से किसी को भी आसपास देख लेगा तो उसे शक हो जाएगा और वह हमारी योजना को भांप लेगा।"
इसके बाद वरिष्ठ राक्षस अपने साथियों को मुख्य सड़क के किनारे एक स्थान पर ले गया, जहाँ उसने जोर से पुकारा, "हे भगवान तांग, आज अशुभ दिन नहीं है, इसलिए कृपया सीधे पहाड़ पार करके आ जाइए।"
"वुकोंग, मुझे कौन बुला रहा है?" यह सुनकर संजांग ने पूछा।
"मैंने जिन राक्षसों को हराया है, वे तुम्हें ले जाने के लिए कुर्सी ला रहे हैं," बंदर ने जवाब दिया। "वे तुम्हें ले जाने के लिए कुर्सी ला रहे हैं।"
अपने हाथों को छाती के सामने जोड़कर, संजांग ने आकाश की ओर देखा और कहा, "शानदार, शानदार!"
लेकिन मेरे योग्य शिष्य की असाधारण क्षमताओं के कारण ही मैं अपनी यात्रा पर आगे बढ़ सका। फिर वह आगे बढ़कर राक्षसों का अभिवादन करते हुए बोला, "आप सज्जनों द्वारा दिखाई गई कृपा के लिए मैं अत्यंत आभारी हूँ। जब मैं और मेरे शिष्य चांगआन लौटेंगे, तो हम आपकी सराहनीय उपलब्धियों की प्रशंसा करेंगे।"
"हे स्वामी, कृपया इस कुर्सी पर बैठ जाइए," राक्षसों ने प्रणाम करते हुए कहा। नश्वर आँखों और शरीर वाले संज़ंग को यह समझ नहीं आया कि यह एक चाल थी। सर्वोच्च एकात्म के स्वर्णिम अमर और निष्ठावान स्वभाव वाले महान ऋषि सूर्य ने सोचा कि राक्षसों को पकड़ने और छोड़ने के कारण वे अब उनके वश में हो गए हैं।
उसे कभी यह कल्पना भी नहीं हुई कि उनके मन में कोई और योजना है, इसलिए उसने गहराई से छानबीन नहीं की और अपने स्वामी के विचारों का अनुसरण किया। उसने सुअर को घोड़े पर सामान बांधने और स्वामी के पास रहने के लिए कहा, जबकि वह अपने लोहे के डंडे से रास्ता साफ करता रहा और देखता रहा कि सब ठीक है या नहीं। आठ शैतान कुर्सी को उठाकर ले जा रहे थे और आठ बारी-बारी से रास्ता साफ

करने के लिए चिल्ला रहे थे, तभी तीन दानव सरदारों ने कुर्सी के डंडों को स्थिर रखा। स्वामी उसमें सीधा बैठकर मुख्य मार्ग से ऊंचे पहाड़ पर चढ़ने के लिए बहुत खुश था, उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि इस खुशी के बीच ही भीषण दुख लौट आएगा;
प्रसिद्ध कहावत है, "अतिवादी स्थितियाँ अपने निषेध को जन्म देती हैं।"
उनके भाग्य में विपत्ति आना लिखा था।
विनाश का प्रतीक एक अशुभ तारा।
राक्षसों का वह समूह एकमत होकर उनकी सुरक्षा करने और हर समय उनकी सेवा करने के लिए एकजुट था। दस मील बाद उन्हें शाकाहारी भोजन मिला और पंद्रह मील बाद एक और। उन्हें देर होने से पहले आराम करने के लिए आमंत्रित किया गया था, और उनके रास्ते में सब कुछ साफ-सुथरा था। हर दिन उन्हें तीन अत्यंत संतोषजनक भोजन मिलते थे और अध्याय 76
1069
पश्चिम की यात्रा
उन्होंने स्वादिष्ट भोजन किया और एक आरामदायक रात बिताई जिसमें वे अच्छी नींद ले सके।
लगभग 150 मील पश्चिम की ओर यात्रा करने के बाद वे एक किलेबंद शहर के पास पहुँचे। लोहे का डंडा उठाते हुए महान ऋषि, जो पालकी से केवल एक तिहाई मील आगे थे, शहर का दृश्य देखकर इतने भयभीत हो गए कि गिर पड़े और फिर उठ नहीं पाए। क्या आप जानते हैं कि उनके जैसे महान साहस वाले व्यक्ति को यह दृश्य देखकर इतना डर क्यों लगा? क्योंकि उन्होंने शहर पर एक बहुत ही भयावह वातावरण मंडराता हुआ देखा।
दुष्ट राक्षसों और दानवों की भीड़,
चारों द्वारों पर भेड़ियों की आत्माएं विराजमान हैं।
धारीदार बाघ सेनापति होते हैं;
सफेद चेहरे वाली बाघ-बिल्लियाँ वरिष्ठ अधिकारी हैं।
सींग वाले हिरण अपने साथ दस्तावेज लेकर घूमते हैं;
चालाक लोमड़ियाँ सड़कों पर घूमती हैं।
हजार फुट लंबे अजगर दीवारों के चारों ओर रेंगते हैं;
सड़कों पर बीस मील लंबे घुमावदार रास्ते बने हुए हैं।

ऊंचे टावरों की नींव पर भूरे भेड़िये आदेश चिल्लाते हैं;
मंडपों के पास तेंदुए इंसानी आवाजों में बात करते हैं।
ध्वजवाहक और ढोल बजाने वाले—सभी राक्षस हैं;
पर्वतीय आत्माएं गश्त लगाती हैं और पहरा देती हैं;
चतुर खरगोश व्यापार के लिए दुकानें खोलते हैं;
जंगली सूअर अपना सामान ढोकर शौच के लिए जाते हैं।
जो कभी एक दिव्य राजवंश की राजधानी हुआ करती थी
अब यह भेड़ियों और बाघों का शहर बन गया है।

जैसे ही वह भय से व्याकुल होने लगा, महान ऋषि ने अपने पीछे से हवा की आवाज सुनी और तेजी से मुड़कर देखा तो तीसरा दानव सरदार एक आकृतिबद्ध हैंडल वाला आकाश-वर्गाकार भाला उठाकर उसके सिर पर प्रहार करने के लिए तैयार था।

अपने पैरों पर उछलते हुए, महान ऋषि ने अपने सोने की पट्टी वाले गदा से राक्षस के चेहरे पर जोरदार प्रहार किया। दोनों क्रोध और रोष से भरे हुए थे, दांत पीसते हुए बिना बोले एक-दूसरे से लड़ रहे थे। तभी बंदर ने देखा कि वरिष्ठ राक्षस सरदार आदेश दे रहा है और उसने अपनी लोहे की तलवार उठाकर सुअर पर वार करने की तैयारी की। सुअर इतनी जल्दी में था कि उसे घोड़े को छोड़ना पड़ा और उसने अपना रेक घुमाकर बेतहाशा पलटवार किया। इसी बीच, दूसरा राक्षस सरदार अपने भाले से साधु सैंड पर वार कर रहा था, जिसे साधु ने अपने राक्षस-नाशक डंडे से रोक दिया।

तीनों दानव सरदार और तीनों भिक्षु अब एक-दूसरे से आमने-सामने लड़ रहे थे, अपनी जान कुर्बान करने को तैयार थे। सोलह कनिष्ठ दानवों ने उनके आदेशों का पालन किया, प्रत्येक ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए सफेद घोड़े और सामान को पकड़ लिया और संज़ंग के चारों ओर जमा हो गए, उनकी कुर्सी उठाकर उन्हें सीधे शहर की ओर ले गए।

"महामहिम, कृपया निर्णय लें कि अब हमें क्या करना चाहिए, हमने तांग पुजारी को पकड़ लिया है," उन्होंने चिल्लाकर कहा। शहर की दीवारों पर तैनात हर श्रेणी के सभी राक्षस नीचे दौड़ पड़े और शहर के द्वार खोल दिए। प्रत्येक बटालियन को आदेश दिया

गया कि वे अपना झंडा फहरा दें, अपने ढोल बंद कर दें और किसी भी हालत में युद्धघोष न करें या घंटे न बजाएं।

"महामहिम ने आदेश दिया है कि तांग पुजारी को भयभीत नहीं होना है। वह भय सहन नहीं कर सकता। यदि वह भयभीत हुआ, तो उसका मांस सड़ जाएगा और खाने योग्य नहीं रहेगा।" सभी राक्षस संजांग का स्वागत करते हुए प्रसन्न हुए, उन्हें प्रणाम किया और महल के सिंहासन कक्ष में ले गए, जहाँ उन्हें सम्मान के स्थान पर बैठने के लिए आमंत्रित किया गया।

उनके चारों ओर चहल-पहल करते हुए वे उन्हें चाय और भोजन भेंट करने लगे। आदरणीय बुजुर्ग को चक्कर आने लगा और वे भ्रमित हो गए क्योंकि उन्होंने चारों ओर देखा और उन्हें कोई परिचित चेहरा दिखाई नहीं दिया।

अगर आपको नहीं पता कि वह अपनी जान बचाकर भाग पाया या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 77

दानवों का समूह मूल प्रकृति के साथ दुर्व्यवहार करता है

एक शरीर बुद्ध को श्रद्धांजलि अर्पित करता है

अब हम आदरणीय तांग एल्डर के कष्टों के बारे में नहीं, बल्कि शहर के बाहर पूर्व की ओर स्थित पहाड़ियों में महान ऋषि और उनके दो शिष्य भाइयों के साथ तीन दानव सरदारों के भयंकर युद्ध के बारे में बताएंगे। यह वास्तव में एक कठिन और ज़ोरदार लड़ाई थी, जैसे लोहे का ब्रश तांबे के पलंग पर रगड़ा जा रहा हो: छह प्रकार के शरीर, छह प्रकार के हथियार।

छह शारीरिक रूप, छह भावनाएँ।

छह बुराइयाँ छह इंद्रियों और छह इच्छाओं से उत्पन्न होती हैं; निर्वाण के छह द्वार और पुनर्जन्म के छह मार्ग विजय के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

छत्तीस दिव्य महलों में वसंत ऋतु स्वतः ही आ जाती है;

छह गुना छह रूपों का नाम नहीं बताया जाना चाहिए।

यह व्यक्ति सोने की पट्टी वाली लाठी पकड़े हुए है।

हजार तरह की हरकतें करता है;

वह व्यक्ति जो स्वर्ग के आकार का वर्गाकार भाला धारण किए हुए है।

यह हर मायने में असाधारण है।

पिग अपने रेक से और भी ज्यादा हिंसक हो जाता है;
अध्याय 77
1071
पश्चिम की यात्रा
दूसरे राक्षस का भाला चलाने का कौशल उत्कृष्ट और प्रभावी है।
युवा फ्रायर सैंड के कर्मचारियों में कुछ भी सामान्य नहीं है।
जब वह घातक प्रहार करने का प्रयास करता है;
तेज धार वरिष्ठ दानव की तलवार है
जिसे वह निर्दयतापूर्वक उठाता है।
ये तीनों सच्चे पुजारी के अजेय अंगरक्षक हैं;
अन्य तीन दुष्ट और विद्रोही आत्माएं हैं।
शुरुआत में लड़ाई उतनी बुरी नहीं होती,
लेकिन बाद में यह और भी हिंसक हो जाता है।
जादू से सभी छह हथियार ऊपर उठ खड़े होते हैं।
ऊपर बादलों में घूमना और मुड़ना।
वे पल भर में ऐसे बादल उगल देते हैं जो आकाश को काला कर देते हैं।
और चारों ओर केवल दहाड़ने और चीखने की आवाजें ही सुनाई देती हैं।
छहों के बीच लंबे समय तक लड़ाई चलने के बाद शाम ढलने लगी और हवा के साथ बादल आने से अंधेरा जल्दी ही छा गया। सुअर को देखने में कठिनाई हो रही थी क्योंकि उसके बड़े कान उसकी पलकों को ढक रहे थे। उसके हाथ-पैर इतने धीमे थे कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को रोक नहीं पा रहा था, इसलिए वह लड़ाई से भाग गया और अपना रेक घसीटता चला गया। वरिष्ठ दानव सरदार ने उस पर तलवार से वार किया जिससे वह लगभग मर ही गया था। सौभाग्य से सुअर ने अपना सिर बचा लिया, जिससे तलवार की धार से उसके कुछ बाल ही कटे। फिर दानव ने सुअर का पीछा किया, अपना मुंह खोला, उसे कॉलर से पकड़ा, शहर में ले गया और उसे कनिष्ठ दानवों के हवाले कर दिया ताकि वे उसे बांधकर सिंहासन कक्ष में ले जाएं। फिर वरिष्ठ दानव सरदार बादल के सहारे वापस हवा में उड़ गया और बाकी दो की मदद करने के लिए चला गया।
हालात बिगड़ते देख साधु सैंड ने अपनी लाठी से छलावा किया और भागने के लिए

मुड़ा, लेकिन तभी दूसरे राक्षस ने अपनी सूंड खोली और शोर मचाते हुए उसे उसके चारों ओर लपेट दिया और उसे हाथों समेत पकड़ लिया। राक्षस उसे भी शहर में ले गया और अपने कनिष्ठ राक्षसों को महल में उसे बांधने का आदेश दिया, फिर वह आकाश में उड़ गया और दूसरों को बंदर को पकड़ने का तरीका बताया। अपने दोनों शिष्यों को पकड़े जाते देख बंदर समझ गया कि वह अकेले मुकाबला नहीं कर पाएगा। सच ही है: दो मुट्ठियाँ एक अच्छे हाथ को हरा सकती हैं।

लेकिन क्या सक्षम चौकड़ी इसका सामना नहीं कर सकती?

अध्याय 77

1072

पश्चिम की यात्रा

एक चीख के साथ, भाई बंदर ने तीनों राक्षसों के हथियारों को एक तरफ धकेल दिया, अपनी कलाबाजी वाली बादल को सक्रिय किया और भाग गया।

जब तीसरे दानव सरदार ने बंदर को कलाबाजी करते हुए जाते देखा, तो उसने खुद को झटककर अपना असली रूप धारण किया, अपने पंख फैलाए और महान ऋषि का पीछा किया। आप सोच रहे होंगे कि दानव भला उसका पीछा कैसे कर पाया? जब बंदर ने स्वर्ग में उत्पात मचाया था, तब भी एक लाख स्वर्गीय सैनिक उसे पकड़ने में नाकाम रहे थे। क्योंकि वह अपने बादल की एक कलाबाजी में 36,000 मील की दूरी तय कर सकता था, इसलिए कोई भी देवता उसका पीछा नहीं कर पाया था। लेकिन यह दुष्ट आत्मा अपने पंखों की एक फड़फड़ाहट में 30,000 मील की दूरी तय कर सकता था, इसलिए उसने दो फड़फड़ाहट में ही बंदर को पकड़ लिया और जकड़ लिया। बंदर चाहे कितनी भी कोशिश करे या भागने की कितनी भी तमन्ना करे, दानव के चंगुल से नहीं निकल सका। यहां तक कि जब उसने अपना रूप बदलने का जादू इस्तेमाल किया, तब भी वह हिल नहीं पाया। अगर वह खुद को बड़ा करता, तो दानव अपनी पकड़ ढीली कर देता, लेकिन फिर भी उसे मजबूती से पकड़े रहता; और अगर वह छोटा होता, तो दानव अपनी पकड़ और कस लेता। राक्षस उसे वापस शहर के अंदर ले गया, अपने पंजे छोड़े, उसे धूल में पटक दिया और दुष्टों के समूह को आदेश दिया कि उसे बांधकर सुअर और साधु रेत के साथ रख दें। वरिष्ठ और द्वितीय राक्षस सरदार दोनों तीसरे सरदार का स्वागत करने के लिए बाहर आए, जो उनके साथ सिंहासन कक्ष में वापस चला गया। अफसोस! इस बार वे बंदर को बांध नहीं रहे थे

बल्कि उसे उसके रास्ते पर भेज रहे थे।

रात का दूसरा पहर हो चुका था, और सभी राक्षसों के अभिवादन के बाद तांग पुजारी को सिंहासन कक्ष से बाहर धकेल दिया गया। जब अचानक उनकी नज़र दीपक की रोशनी में ज़मीन पर बंधे हुए अपने तीनों शिष्यों पर पड़ी, तो आदरणीय गुरु ने भाई बंदर के पास झुककर आँसुओं के बीच कहा, "शिष्य, जब भी हम पर कोई विपत्ति आती है, तुम आमतौर पर जाकर अपनी जादुई शक्तियों का उपयोग करके उन राक्षसों को वश में करते हो जो विपत्ति उत्पन्न कर रहे हैं। अब जब तुम भी बंदी बना लिए गए हो, तो क्या मैं बच पाऊँगा, बेचारा भिक्षु?" जैसे ही सुअर और साधु रेत ने अपने गुरु की पीड़ा सुनी, वे भी एक साथ रोने लगे।

“चिंता मत करो, स्वामी,” बंदर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, “और रोओ मत, भाइयों। वे चाहे कुछ भी कर लें, हमें नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगे। जब दानव सरदार शांत होकर सो जाएंगे, तब हम अपने रास्ते पर निकल सकते हैं।”

“भाई, तुम फिर से मुसीबत खड़ी कर रहे हो,” सुअर ने जवाब दिया। “हम भांग की रस्सियों से बंधे हुए हैं। अगर हम किसी तरह उन्हें थोड़ा ढीला करने में कामयाब भी हो जाते हैं, तो वे उन पर पानी छिड़ककर उन्हें फिर से सिकोड़ देते हैं। तुम शायद इतने पतले हो कि तुम्हें पता ही न चले, लेकिन मैं, जो मोटा हूँ, बहुत बुरी हालत में हूँ। अगर तुम्हें यकीन नहीं होता, तो मेरी बांहें देख लो। रस्सी उनमें दो इंच गहरी धंस गई है। मैं कभी भाग नहीं पाऊँगा।”

बंदर हंसते हुए बोला, "भांग की रस्सियों की तो बात ही छोड़ो, चाहे वो चावल के कटोरे जितनी मोटी नारियल की रस्सियाँ ही क्यों न हों, मेरे लिए तो वो पतझड़ की हल्की हवा से ज्यादा कुछ नहीं होंगी। भला इसमें इतनी क्या बात है?"

जब गुरु और शिष्य बात कर रहे थे, तभी वरिष्ठ दानव को यह कहते हुए सुना जा सकता था, "तीसरे भाई, तुम सचमुच बलवान और बुद्धिमान हो। तांग पुजारी को पकड़ने की तुम्हारी योजना शानदार थी और वह सफल रही।"

“बच्चों,” उसने पुकारा, “तुममें से पाँच पानी लाओ, सात बर्तन साफ़ करो, दस आग जलाओ और बीस लोहे का तवा लाओ। जब हम मेरे और मेरे भाइयों के लिए चारों भिक्षुओं का कोमल मांस पका लेंगे, तो हम तुम छोटों को एक-एक टुकड़ा देंगे ताकि तुम सब अमर हो जाओ।”

"भाई," यह सुनकर सुअर कांपते हुए बोला, "सुनो। वह दुष्ट आत्मा हमें भाप में

पकाकर खाने की योजना बना रही है।"
"डरो मत," बंदर ने कहा। "मैं पता लगाऊंगा कि वह कोई अनुभवहीन दुष्ट आत्मा है या कोई माहिर खिलाड़ी।"
“भाई,” साधु सैंड सिसकते हुए बोला, “इतनी बड़ी-बड़ी बातें मत करो। हम नरक के राजा के ठीक बगल में हैं। ऐसे समय में तुम कैसे यह कह सकते हो कि वह अनुभवहीन है या अनुभवी?” उसके मुंह से शब्द पूरे भी नहीं हुए थे कि दूसरे दानव सरदार की आवाज़ सुनाई दी, “सूअर को भाप में पकाना मुश्किल है।”
"अमिताभ बुद्ध!" सूअर ने प्रसन्नता से कहा। "पता नहीं कौन यह कहकर अच्छा कर्म अर्जित कर रहा है कि मैं अच्छी तरह से भाप नहीं लूंगा।"
अध्याय 77
1073
पश्चिम की यात्रा
तीसरे सरदार ने कहा, "अगर यह भाप में अच्छे से नहीं पकेगा, तो भाप में पकाने से पहले इसकी खाल उतार दो।" यह सुनकर सुअर घबरा गया और ज़ोर से चिल्लाया, "मेरी खाल मत उतारो। मैं भले ही खुरदुरा हूँ, लेकिन उबालने पर नरम हो जाऊँगा।"
"अगर वह ठीक से भाप में नहीं पकेगा," वरिष्ठ दानव सरदार ने कहा, "तो उसे स्टीमर की निचली ट्रे पर रख दो।"
"चिंता मत करो, सुअर," बंदर ने हंसते हुए कहा, "वह अभी अनुभवहीन है। उसे कोई पुराना अनुभव नहीं है।"
"आपको कैसे पता चला?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"आम तौर पर भाप में पकाते समय ऊपर से शुरू करना चाहिए," बंदर ने जवाब दिया। "जिस चीज़ को भाप में पकाना सबसे मुश्किल हो, उसे सबसे ऊपर वाली ट्रे में रखें। आग में थोड़ा और ईंधन डालें, अच्छी भाप बनने दें और काम हो जाएगा।"
लेकिन अगर आप इसे नीचे रख दें और भाप को कम कर दें, तो चाहे आप इसे छह महीने तक पकाते रहें, भाप ऊपर नहीं उठेगी।
अगर वह कहता है कि सुअर को नीचे वाली ट्रे में रखना चाहिए क्योंकि उसे पकाना मुश्किल है, तो वह जरूर अनुभवहीन होगा।
"भाई," सुअर ने जवाब दिया, "अगर उसने तुम्हारी सलाह मानी तो मैं जिंदा ही कट जाऊंगा। जब उसे भाप उठती हुई नहीं दिखेगी, तो वह ढक्कन हटाकर मुझे पलट देगा

और आग को और तेज़ कर देगा। मैं दोनों तरफ से पक जाऊंगा और बीच में आधा कच्चा रह जाऊंगा।"

जब वे बात कर रहे थे, तभी एक छोटा शैतान आकर बताने लगा कि पानी उबल रहा है। वरिष्ठ मुखिया ने भिक्षुओं को अंदर लाने का आदेश दिया, और सभी राक्षसों ने मिलकर पिग को स्टीमर के सबसे निचले पायदान पर और फ्रायर सैंड को दूसरे पायदान पर पहुँचा दिया।

यह अनुमान लगाते हुए कि अब वे उसके पीछे ही आएंगे, बंदर भाई ने स्वयं को मुक्त कर लिया और कहा, "यह दीपक की रोशनी कुछ करने के लिए बिल्कुल सही है।" फिर उसने एक बाल खींचा, उस पर जादुई साँस फूंकी, "बदलो!" कहा और उसे एक दूसरे बंदर में बदल दिया। उसने उसे भांग की रस्सी से बांध दिया और अपने असली स्वरूप को आत्मा के रूप में प्रकट करते हुए हवा में उछल पड़ा, नीचे देखकर सब कुछ देखने लगा। उसकी चाल को न समझते हुए, राक्षसों की भीड़ ने उस नकली बंदर को उठाया और उसे स्टीमर के तीसरे ट्रे में, ऊपर की ओर ले गए। तभी उन्होंने तांग पुजारी को ज़मीन पर घसीटा, बांधा और चौथे ट्रे में डाल दिया। जैसे ही सूखी लकड़ियाँ ढेर की गईं, एक भयंकर आग भड़क उठी।

बादलों में विराजमान महान ऋषि ने आह भरते हुए कहा, "मेरे सुअर और साधु सैंड दो-चार बार उबलने को सहन कर सकते हैं, लेकिन मेरा वह स्वामी पानी उबलते ही पककर गल जाएगा। अगर मैं उसे जादू से नहीं बचा सका तो वह पल भर में मर जाएगा।"

महान संत ने आकाश में हाथ से मंत्रोच्चार किया, जादुई शब्द कहे "ॐ, नीले शुद्ध धर्म जगत; स्वर्ग की शाश्वत कृपा सत्य है," और उत्तरी सागर के ड्रैगन राजा को अपने पास बुलाया।

अन्य बादलों के बीच एक काला बादल प्रकट हुआ, और उसमें से तुरंत एक उत्तराभास की आवाज आई, "उत्तरी महासागर के विनम्र ड्रैगन, आओ शुन, सम्मानपूर्वक प्रणाम करता है।"

"उठो, उठो," बंदर बोला। "मैंने तुम्हें व्यर्थ परेशान करने का जोखिम नहीं उठाया होता। मैं अपने गुरु, तांग पुजारी के साथ यहाँ तक पहुँच गया हूँ। उन्हें क्रूर राक्षसों ने पकड़ लिया है और पकाने के लिए लोहे के तवे में डाल दिया है।"

जाओ और मेरी तरफ से उसकी रक्षा करो और भाप से उसे नुकसान मत होने देना।"

ड्रैगन राजा ने तुरंत खुद को एक ठंडी हवा में बदल लिया जो खाना पकाने के बर्तन के नीचे बह गई और आग की सारी गर्मी से उसे बचाने के लिए उसके चारों ओर लिपट गई।

इस प्रकार वे तीनों मृत्यु से बच गए।

जैसे ही तीसरी पहर समाप्त होने वाली थी, वरिष्ठ दानव सरदार ने एक निर्णय की घोषणा की। "मेरे आदमियों," उसने कहा,

"तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों को पकड़ने के लिए हमने अपनी बुद्धि और शारीरिक शक्ति दोनों का इस्तेमाल कर लिया है। उन्हें लाने-ले जाने में हमने जो परेशानी उठाई है, उसके कारण हम चार दिन और चार रात सोए नहीं हैं। मुझे नहीं लगता कि अब वे भाग पाएंगे, क्योंकि उन्हें बांधकर भाप दी जा रही है। आप सभी उनकी सावधानीपूर्वक रक्षा करें। अध्याय 77 के दस कनिष्ठ सदस्य।"

जब हम थोड़ा आराम करने के लिए अपने रहने के कमरों में चले जाएंगे, तब शैतान बारी-बारी से आग जलाए रखेंगे।

पांचवीं पहर तक, जब उजाला होने वाला होगा, तब तक वे अच्छी तरह पक चुके होंगे। लहसुन का पेस्ट, नमक और सिरका तैयार रखो और हमें जगा दो; फिर हम उन्हें बड़े चाव से खा सकेंगे।" शैतानों ने आदेशानुसार काम किया और तीनों दानव सरदार अपने-अपने सोने के कमरों में लौट गए।

बादलों में बैठे बंदर भाई ने स्पष्ट रूप से ये निर्देश सुने, इसलिए उसने अपने बादल को नीचे उतार लिया।

स्टीमर के अंदर से कोई आवाज़ न आने पर उसने सोचा, "आग तो ज़ोरों से जल रही है और उन्हें गर्मी लग रही होगी। वे डरे हुए क्यों नहीं हैं? वे कुछ बोल क्यों नहीं रहे हैं? हम्म... क्या वे भाप से मर गए होंगे? चलो पास जाकर सुनते हैं।" महान ऋषि ने अपने बादल पर खड़े होकर खुद को झटका दिया और एक काली मक्खी में बदल गए। जब वे सुनने के लिए लोहे के स्टीमर की ट्रे के बाहर उतरे, तो उन्होंने अंदर से सुअर को कहते सुना, "कितनी बुरी किस्मत! कितनी बुरी किस्मत! पता नहीं हमें बंद भाप से पकाया जा रहा है या खुली भाप से।"

"भाई, 'बंद' और 'खुला' से आपका क्या तात्पर्य है?" फ्रायर सैंड ने पूछा।

"क्लोज्ड स्टीमिंग तब होती है जब स्टीमर को ढक दिया जाता है और ओपन स्टीमिंग तब होती है जब उन्हें ढका नहीं जाता," पिग ने जवाब दिया।
"शिष्यों," संजांग ने ऊपर वाली ट्रे से कहा, "ढक्कन हटा दिया गया है।"
"हमारी किस्मत अच्छी है!" सुअर ने कहा। "आज रात हम मारे नहीं जाएँगे। हमें खुले में भाप में पकाया जा रहा है।" उन तीनों की बातें सुनकर बंदर को एहसास हुआ कि वे अभी भी जीवित हैं, इसलिए वह उड़ गया, लोहे के स्टीमर का ढक्कन लाया और उसे हल्के से स्टीमर पर रख दिया।
संजांग ने घबराकर कहा, "शिष्यों, उन्होंने हमें ढक दिया है।"
"बस हो गया," पिग ने कहा।
"इसका मतलब है कि स्टीमिंग बंद कर दी जाएगी। आज रात हमारी मौत निश्चित है।" फ्रायर सैंड और आदरणीय बुजुर्ग रोने लगे।
"रोओ मत," पिग ने कहा। "रसोइयों की एक नई टीम काम पर आ गई है।"
"आपको कैसे पता चला?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"जब वे मुझे यहाँ लाए तो पहले तो मुझे बहुत खुशी हुई," सुअर ने जवाब दिया। "मुझे हल्का बुखार और ठंड लग रही है और मैं गर्म होना चाहता था। लेकिन अभी तो बस ठंडी हवा ही मिल रही है। अरे! श्रीमान कुक! आप और लकड़ी डालने को लेकर इतना हंगामा क्यों कर रहे हैं? क्या मैं आपसे कुछ माँग रहा हूँ?"
यह सुनकर बंदर खुद पर हँसे बिना नहीं रह सका। "बेवकूफ," उसने सोचा। "ठंड सहना तो मुमकिन है। अगर गर्मी हो गई तो मर जाओगे। अगर ये बोलता रहा तो राज खुल जाएगा। मुझे इसे बचाना चाहिए... नहीं!"
मुझे उन्हें बचाने के लिए वापस अपने असली रूप में आना होगा, और अगर मैंने ऐसा किया तो दस रसोइये मुझे देख लेंगे और चिल्लाना शुरू कर देंगे। इससे पुराने राक्षस परेशान हो जाएंगे और मैं और भी बड़ी मुसीबत में पड़ जाऊंगा। मुझे पहले रसोइयों पर कुछ जादू का इस्तेमाल करना होगा।" तभी उसे एक बात याद आई।
"पुराने समय में जब मैं महान ऋषि था, तब मैंने एक बार स्वर्ग के उत्तरी द्वार पर स्वर्ग के राजा लोकपाला के साथ एक अनुमान लगाने का खेल खेला था और उनसे कुछ नींद लाने वाले कीड़े जीत लिए थे। मेरे पास अभी भी कुछ बचे हैं जिनका इस्तेमाल मैं उन पर कर सकता हूँ।" उन्होंने अपनी कमर में बेल्ट के अंदर हाथ डालकर देखा तो पाया कि उनके पास बारह कीड़े बचे हैं।

"मैं उन्हें दस दूंगा और दो को प्रजनन के लिए रखूंगा," बंदर ने सोचा। फिर उसने उन दस छोटे शैतानों के चेहरों पर कीड़े फेंक दिए, जो उनकी नाक में घुस गए, जिससे वे सभी सुस्त महसूस करने लगे, लेट गए और सो गए। हालाँकि, उनमें से एक, जिसके हाथ में आग जलाने वाला कांटा था, बहुत बेचैनी से सो रहा था, अपना सिर और चेहरा रगड़ता रहा, नाक पकड़ता रहा और लगातार छींकता रहा। "वह फलां-फलां तो एक-दो तरकीबें जानता है," अध्याय 77 ने सोचा।

बंदर। "मुझे उसे दुगुनी खुराक देनी होगी।" उसने अपने बचे हुए कीड़ों में से एक को राक्षस के चेहरे पर फेंक दिया।

“दो कीड़ों के साथ, बायां वाला अंदर जा सकता है और दायां वाला बाहर आ सकता है, और इसका उल्टा भी हो सकता है,” बंदर ने सोचा। “इससे वह शांत रहेगा।” इतना कहकर उस छोटे राक्षस ने दो-तीन बड़ी जम्हाई लीं, अंगड़ाई ली, कांटा नीचे गिरा दिया और गहरी नींद में सो गया। वह फिर कभी नहीं उठा।

"क्या अद्भुत जादू है; यह सचमुच काम करता है," बंदर ने अपने असली रूप में लौटते हुए कहा। फिर वह स्टीमर के पास गया और "मालिक" कहकर पुकारा।

"वुकोंग, मुझे बचाओ," तांग पुजारी ने उसकी आवाज सुनकर कहा।

"क्या आप बाहर से हमें बुला रहे हैं?" फ्रायर सैंड ने पूछा।

"अगर मैं यहां बाहर नहीं होता तो क्या तुम चाहते कि मैं तुम्हारे साथ अंदर कष्ट भोग रहा होता?" बंदर ने जवाब दिया।

"भाई," सुअर ने कहा, "तुम चुपके से निकल गए और हमें इस मुसीबत में फंसा दिया। अब हमें यहाँ बंद कर दिया जाएगा—भाप में पकाया जाएगा।"

"चिल्लाना बंद करो, बेवकूफ," बंदर ने हंसते हुए कहा। "मैं तुम्हें बचाने आया हूँ।"

“भाई,” सुअर ने कहा, “अगर तुम हमें बचाना चाहते हो तो ठीक से बचाओ। हमें दोबारा यहाँ भाप में मत डालो।” फिर बंदर ने ढक्कन हटाया, मालिक को आज़ाद किया, उसके नकली बंदर जैसे बालों को झटक कर वापस उसके शरीर पर लगाया, फिर एक-एक करके थाली उठाते हुए साधु सैंड और सुअर को छोड़ा। जैसे ही वह आज़ाद हुआ, वह मूर्ख भाग जाना चाहता था।

“इतनी जल्दी मत करो!” बंदर ने कहा और एक मंत्र पढ़ा जिससे अजगर मुक्त हो

गया। फिर उसने सुअर से कहा, “पश्चिमी स्वर्ग की ओर जाने वाले हमारे रास्ते में अभी भी ऊंचे पहाड़ और खड़ी चोटियाँ हैं। स्वामी के लिए यह रास्ता बहुत कठिन है—वह चलने में सक्षम नहीं है। जब तक मैं घोड़ा न ले आऊं, तब तक प्रतीक्षा करो।”
उसे हल्के कदमों से सिंहासन कक्ष की ओर जाते हुए देखो, जहाँ उसने देखा कि सभी राक्षस, जवान और बूढ़े, सो रहे थे। उसने घोड़े की लगाम से बंधी रस्सी को खोला, और भी ज़्यादा सावधानी बरती ताकि घोड़ा घबरा न जाए। अब घोड़ा एक ड्रैगन घोड़ा था, इसलिए अगर बंदर अजनबी होता तो वह उसे दो-तीन लात मारता और हिनहिनाता। लेकिन बंदर घोड़ों का रखवाला था और घोड़ों के रक्षक का पद संभालता था, और यह घोड़ा उनके अपने घोड़ों के अलावा था। इसीलिए जानवर न तो उछला और न ही हिनहिनाया। बंदर घोड़े को बहुत धीरे से ले गया, लगाम कसी और सब कुछ तैयार कर लिया, फिर अपने स्वामी को सवार होने के लिए आमंत्रित किया। कांपते-कांपते हुए, तांग पुजारी ने ऐसा किया। वह भी जाना चाहता था।
"तुम भी इतनी जल्दी मत करो," बंदर ने कहा। "पश्चिम की ओर हमारी यात्रा में और भी कई राजा मिलेंगे और वहाँ पहुँचने के लिए हमें पासपोर्ट की ज़रूरत पड़ेगी। हमारे पास और कौन से पहचान पत्र हैं? मैं सामान ढूंढने वापस जा रहा हूँ।"
तांग पुजारी ने कहा, "मुझे याद है कि जब हम अंदर आए थे तो राक्षसों ने सामान सिंहासन कक्ष के बाईं ओर रख दिया था। सामान अभी भी वहीं होगा।"
“समझ गया,” बंदर ने कहा और तुरंत सिंहासन कक्ष की ओर उसे खोजने के लिए दौड़ पड़ा। जब उसने अचानक कई रंगों की झिलमिलाती रोशनी देखी, तो बंदर भाई समझ गया कि यह सामान से आ रही है। उसे कैसे पता चला? क्योंकि रोशनी तांग पुजारी के चोगे पर लगे रात में चमकने वाले मोती से आ रही थी। वह उसकी ओर दौड़ा और पाया कि उनका सामान अभी तक खोला नहीं गया था, इसलिए उसने उसे बाहर निकाला और भिक्षु रेत को ले जाने के लिए दे दिया। जब सुअर घोड़े को राह दिखा रहा था, तब महान ऋषि आगे-आगे चल रहे थे।
वे दक्षिणी मुख्य द्वार से सीधे बाहर निकलने की जल्दी में थे कि तभी उन्हें पहरेदारों की घंटियों और तालियों की आवाज सुनाई दी। उन्होंने देखा कि द्वार बंद थे और तालों पर कागज की मुहरें लगी हुई थीं।

"अगर यहाँ इतनी कड़ी सुरक्षा है तो हम बाहर कैसे निकलेंगे?" बंदर ने सोचा।
"चलो पीछे वाले दरवाजे से बाहर निकलते हैं," सुअर ने कहा। बंदर के आगे-आगे चलने पर वे सीधे पीछे के गेट की ओर दौड़ पड़े।
"मुझे पीछे के दरवाज़ों के बाहर भी तालियाँ और घंटियाँ सुनाई दे रही हैं, और वे भी बंद हैं," बंदर ने कहा। "हम क्या करें? अगर तांग पुजारी का नश्वर शरीर न होता तो हम तीनों को कोई परेशानी न होती: हम बादल और हवा के सहारे भाग सकते थे। लेकिन तांग पुजारी तीन लोकों से नहीं निकल पाए हैं और अभी भी पंच तत्वों के भीतर ही फंसे हुए हैं। उनकी सारी हड्डियाँ वही अशुद्ध हड्डियाँ हैं जो उन्हें अपने माता-पिता से मिली हैं। वे हवा में नहीं उड़ सकते और कभी भाग नहीं पाएंगे।"
"अभी बात करने का समय नहीं है, भाई," सुअर ने कहा: "चलो कहीं ऐसी जगह चलते हैं जहाँ कोई घंटियाँ, खड़खड़ाहट या पहरेदार न हों, मालिक को ऊपर उठाएँ और दीवार फांदकर निकल जाएँ।"
"यह ठीक नहीं है," बंदर ने कहा। "हम उसे अभी उठाकर ले जा सकते हैं क्योंकि हमें ऐसा करना ही होगा, लेकिन तुम्हारा मुंह इतना बड़ा है कि जब हम धर्मग्रंथ वापस ले जा रहे होंगे तो तुम हर जगह लोगों को बता दोगे कि हम ऐसे भिक्षु हैं जो लोगों की दीवारों पर चढ़कर घुसपैठ करते हैं।"
"लेकिन अब हमें ठीक से व्यवहार करने की चिंता नहीं करनी चाहिए," सुअर ने जवाब दिया। "हमें अपनी जान बचानी है।" बंदर के पास उसकी बात मानने के अलावा कोई चारा नहीं था, इसलिए वे दीवार पर चढ़ गए और उसे पार करने का तरीका सोचने लगे।
ओह! अब तो यही होना था: संज़ंग अभी भी अपने दुर्भाग्य से मुक्त नहीं हुआ था। अपने कमरों में गहरी नींद में सो रहे तीनों दानव सरदार अचानक जाग उठे और यह सोचकर कि तांग पुजारी भाग गया है, उठ खड़े हुए, जल्दी से कपड़े पहने और महल के सिंहासन कक्ष की ओर दौड़ पड़े।
"तांग पुजारी को कितनी बार भाप में पकाया गया है?" उन्होंने पूछा। आग की रखवाली कर रहे सभी छोटे शैतान नींद में इतने गहरे सो रहे थे कि नींद के कीड़ों के कारण उन्हें जगाना भी मुश्किल था।
प्रमुखों ने ड्यूटी पर न मौजूद कुछ अन्य लोगों को जगाया, जिन्होंने जल्दबाजी में

जवाब दिया, "स...स...सात बार।" फिर वे स्टीमर की ओर दौड़े और देखा कि स्टीमर की ट्रे फर्श पर बिखरी पड़ी हैं और रसोइये अभी भी सो रहे हैं।
घबराकर वे वापस भागे और सूचना दी, "महाराज, वे...वे...भाग गए हैं।"
तीनों दानव सरदार सिंहासन कक्ष से बाहर आकर कड़ाही का बारीकी से निरीक्षण करने लगे। उन्होंने देखा कि भाप निकालने वाली ट्रे सचमुच फर्श पर बिखरी पड़ी थीं, पानी एकदम ठंडा था और आग पूरी तरह बुझ चुकी थी। आग की देखभाल करने वाले रसोइये अभी भी इतनी गहरी नींद में सो रहे थे कि वे ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहे थे।
वे सभी राक्षस इतने चौंक गए कि वे सब चिल्लाने लगे, "तांग पुजारी को पकड़ो! तुरंत! तांग पुजारी को पकड़ो!"
उनकी चीखों से आसपास के सभी वरिष्ठ और कनिष्ठ राक्षस जाग उठे। वे अपनी तलवारें और भाले लिए भीड़ के रूप में मुख्य द्वार की ओर दौड़ पड़े।
यह देखकर कि सीलबंद तालों को छुआ तक नहीं गया था और रात के पहरेदार अभी भी अपने क्लैपर और घंटियाँ बजा रहे थे, उन्होंने पहरेदार से पूछा, "तांग पुजारी किस तरफ गए?"
“कोई बाहर नहीं आया,” सभी पहरेदारों ने जवाब दिया। वे महल के पिछले दरवाज़ों की ओर दौड़े, लेकिन वहाँ भी मुहरें, ताले, कुंडी और घंटियाँ सामने वाले दरवाज़ों जैसी ही थीं। शोर मचाते हुए उन्होंने लालटेन और मशालें उठा लीं, जिससे आसमान लाल हो गया और पूरा स्थान दिन के उजाले की तरह रोशन हो गया। दीवार फांदते समय वे चारों रोशनी से जगमगा रहे थे।
"तुम कहाँ जा रहे हो?" वरिष्ठ दानव सरदार चिल्लाया और उनकी ओर दौड़ते हुए आया, जिससे आदरणीय सज्जन इतना भयभीत हो गए कि उनके पैरों की मांसपेशियां नरम और सुन्न पड़ गईं और वे दीवार से नीचे गिर पड़े। (अध्याय 77)

वरिष्ठ राक्षस ने उन्हें पकड़ लिया। दूसरे राक्षस सरदार ने साधु सैंड को पकड़ लिया और तीसरे ने सुअर को गिराकर उसे भी पकड़ लिया। बाकी राक्षस सामान और सफेद घोड़े को लेकर भाग गए। केवल बंदर ही बच निकला।
"भगवान उसे मार डाले," सुअर ने बंदर के बारे में बुदबुदाते हुए कहा। "मैंने कहा था कि अगर वह हमें बचाने आया है तो उसे यह काम पूरी ईमानदारी से करना चाहिए।

अब तो हमें वापस स्टीमर में डालकर फिर से यात्रा करनी पड़ेगी।"
राक्षस तांग पुजारी को सिंहासन कक्ष में ले गए, लेकिन उन्हें दोबारा भाप नहीं दी। दूसरे दानव सरदार ने आदेश दिया कि सुअर को कक्ष के सामने की छत को सहारा देने वाले एक स्तंभ से बांध दिया जाए और तीसरे सरदार ने भिक्षु रेत को पीछे की छत को सहारा देने वाले एक स्तंभ से बांध दिया। वरिष्ठ सरदार तांग पुजारी से लिपटा रहा और उन्हें छोड़ने को तैयार नहीं था।
“बड़े भाई, आप इसे किसलिए रखे हुए हैं?” तीसरे राक्षस ने पूछा। “ज़रूर आप इसे ज़िंदा नहीं खा जाएँगे। यह बिल्कुल भी दिलचस्प नहीं होगा। यह कोई साधारण मूर्ख नहीं है जिसे आप पेट भरने के लिए निगल जाएँ। यह एक श्रेष्ठ देश का दुर्लभ व्यंजन है। हमें इसे तब तक अपने पास रखना चाहिए जब तक किसी बरसात के दिन हमें कुछ खाली समय न मिल जाए, फिर इसे निकालकर सावधानी से पकाएँ और पेय-खेल और बढ़िया संगीत के साथ इसका आनंद लें।”
"बहुत अच्छा सुझाव है, भाई," वरिष्ठ दानव ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "लेकिन नौसिखिया सूर्य आकर उसे फिर से चुरा लेगा।"
तीसरे राक्षस ने कहा, “हमारे महल में रेशमी सुगंध का एक मंडप है, और उस मंडप में एक लोहे का संदूक है। मेरा विचार है कि हम तांग पुजारी को उस संदूक में डाल दें, मंडप को बंद कर दें, यह अफवाह फैला दें कि हमने उसे आधा कच्चा ही खा लिया है और शहर के सभी छोटे राक्षसों में इसके बारे में चर्चा शुरू कर दें। वह नौसिखिया सन ज़रूर वापस आएगा यह जानने के लिए कि क्या हो रहा है, और जब वह यह सुनेगा तो इतना निराश होगा कि चला जाएगा। अगर वह अगले चार-पाँच दिनों तक कोई गड़बड़ नहीं करता है, तो हम तांग पुजारी को बाहर लाकर आराम से आनंद ले सकते हैं। आपका क्या विचार है?”
वरिष्ठ और द्वितीय दानव सरदार दोनों प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "जी हाँ, भाई, तुम सही कह रहे हो।" उसी रात बेचारे तांग पुजारी को महल के अंदर ले जाया गया, संदूक में बंद कर दिया गया और मंडप में कैद कर दिया गया।
हम यह नहीं बताएंगे कि अफवाह कैसे फैली और पूरे शहर में चर्चा का विषय बन गई। इसके बजाय कहानी बताती है कि कैसे बंदर उस रात बादल के सहारे भाग निकला, क्योंकि वह तांग पुजारी की देखभाल नहीं कर पा रहा था। वह सीधे सिंह गुफा गया जहाँ उसने अपनी गदा से हजारों छोटे राक्षसों का पूरी तरह से सफाया कर दिया। जब

तक वह शहर वापस लौटा, पूर्व में सूरज उग रहा था। उसने राक्षसों को युद्ध के लिए चुनौती देने की हिम्मत नहीं की क्योंकि
एक ही धागे से कोई सूत नहीं काता जा सकता;
कोई भी एक हाथ से ताली नहीं बजा सकता।
इसलिए उसने अपना बादल नीचे उतारा, खुद को झटककर एक छोटे दानव में बदल लिया और गलियों और संकरी रास्तों से खबरें इकट्ठा करने के लिए फाटकों से अंदर घुस गया। "रात में वरिष्ठ राजा ने तांग पुजारी को कच्चा ही खा लिया," शहर में हर कोई यही कह रहा था, जहाँ भी वह जाता। इससे बंदर भाई बहुत चिंतित हो गया। जब वह महल के सिंहासन कक्ष में देखने गया तो उसने देखा कि बहुत से प्रेत लगातार आ-जा रहे थे। उन्होंने चमड़े और धातु के हेलमेट और पीले सूती वस्त्र पहन रखे थे। उनके हाथों में लाल रंग से रंगे डंडे थे और उनकी कमर पर हाथीदांत के वस्त्र लटके हुए थे।
अध्याय 77
1078
पश्चिम की यात्रा
"ये ज़रूर बुरी आत्माएँ होंगी जिन्हें महल के भीतरी कमरों में जाने की इजाज़त है," बंदर ने सोचा। "मैं खुद को उनमें से एक बना लूँगा, अंदर जाऊँगा और देखूँगा कि क्या पता चलता है।"
उस महान संत ने स्वयं को राक्षसों के समान रूप में प्रस्तुत किया और महल के भीतरी द्वार से प्रवेश किया। चलते-चलते उन्होंने सिंहासन कक्ष के एक स्तंभ से बंधे हुए सूअर को कराहते हुए देखा।
"वुनेन्ग," बंदर ने उसके पास जाते हुए कहा।
"क्या तुम हो भाई?" उस मूर्ख ने उसकी आवाज़ पहचानते हुए पूछा। "मुझे बचाओ!"
"मैं तुम्हें बचा लूँगा," बंदर ने कहा। "क्या तुम्हें पता है कि मालिक कहाँ है?"
“उसका काम तमाम हो गया,” सुअर ने जवाब दिया। “बुरी आत्माओं ने उसे कल रात कच्चा ही खा लिया।” यह सुनकर बंदर फूट-फूटकर रोने लगा और उसके आँसू झरने के पानी की तरह बहने लगे।
"रो मत भाई," सुअर ने कहा। "मैंने तो बस छोटे शैतानों की गपशप सुनी है। मैंने अपनी आँखों से नहीं देखा।"
अब और समय बर्बाद मत करो। जाओ और और जानकारी जुटाओ।" तभी बंदर ने

अपने आंसू पोंछे और महल के भीतरी हिस्से में खोजबीन करने चला गया।
महल के पीछे एक खंभे से बंधे हुए साधु सैंड को देखकर वह उनके पास गया, उनकी छाती को छुआ और कहा,
"वुजिंग।"
फ्रायर सैंड ने भी उसकी आवाज पहचान ली और कहा, "भाई, क्या तुम यहाँ भेस बदलकर आए हो? मुझे बचाओ! मुझे बचाओ!"
बंदर ने कहा, "तुम्हें बचाना आसान होगा, लेकिन क्या तुम्हें पता है कि मालिक कहाँ है?"
"भाई!" फ्रायर सैंड ने रोते हुए कहा। "दुष्ट आत्माओं को गुरु को भाप में पकाने का भी इंतजार नहीं हुआ। उन्होंने उसे कच्चा ही खा लिया।"
अब जब उन दोनों ने उसे एक ही कहानी सुनाई, तो महान ऋषि को गहरा आघात लगा। पिग और फ्रायर सैंड को बचाने के बजाय, वह सीधे आकाश में उड़ गया और शहर के पूर्व में स्थित पहाड़ पर चला गया, जहाँ उसने अपने बादल को उतारा और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।
"बेचारे मालिक," उसने कहा:
मैंने स्वर्ग के विरुद्ध लड़ाई लड़ी, और उसी के जाल में फंस गया।
जब तक आप आकर मुझे मुक्ति नहीं दिला देते, हे स्वामी।
बुद्ध की उपासना करना मेरी महत्वाकांक्षा बन गई;
मैंने भयानक आपदा को समाप्त करने का प्रयास किया।
मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि अब तुम्हारी हत्या कर दी जाएगी।
और अगर मैं तुम्हें अपने पास रखने की कोशिश करता, तो तुम्हारी इस यात्रा में मैं असफल हो जाता।
अध्याय 77
1079
पश्चिम की यात्रा
पश्चिम की भूमि तुम्हारे भाग्य के लिए बहुत अच्छी थी।
आपका जीवन समाप्त होने वाला है: मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ?
गहरे दुःख में डूबे बंदर ने मन ही मन कहा, "यह सब हमारे बुद्ध तथागत बुद्ध की गलती है, जिनके पास अपने स्वर्ग में तीन भंडार शास्त्रों को बनाने के अलावा और कोई काम

नहीं था। अगर वे सचमुच लोगों को अच्छे कर्मों की ओर मोड़ना चाहते तो उन्हें स्वयं उन्हें पूर्व की ओर भेजना चाहिए था। तब वे शास्त्रों का प्रसार सदा के लिए कर लेते। लेकिन वे उन्हें देने के लिए तैयार नहीं थे। उन्हें हमें उन्हें लाने के लिए भेजना पड़ा। किसने सोचा होगा कि हज़ारों पर्वतों को पार करने के बाद गुरु आज यहाँ प्राण त्याग देंगे? खैर! मैं अपने कलाबाज़ी करने वाले बादल पर सवार होकर तथागत बुद्ध से मिलने जाऊँगा और उन्हें सब कुछ बताऊँगा। अगर वे मुझे शास्त्र पूर्व की ओर ले जाने के लिए तैयार हो जाते हैं तो यह पुण्य कार्य फैल जाएगा और हम अपना वचन पूरा कर पाएँगे। अगर वे मुझे शास्त्र नहीं देते तो मैं उनसे बंधन तोड़ने का मंत्र पढ़वाऊँगा। तब मैं बंधन तोड़कर उन्हें लौटा दूँगा और अपनी गुफा में वापस जाकर राजा की तरह मौज-मस्ती करूँगा।"

महान संत तुरंत उठ खड़े हुए और कलाबाज़ी करते हुए अपने बादल पर सवार होकर सीधे भारत की ओर चल पड़े। दो घंटे से भी कम समय में उन्हें निकट ही गिद्ध शिखर दिखाई देने लगा, और पलक झपकते ही उन्होंने अपना बादल उतारा और सीधे शिखर की तलहटी की ओर बढ़ गए। उन्होंने ऊपर देखा तो चारों वज्रपाणि उनका रास्ता रोककर उनसे पूछ रहे थे कि वे कहाँ जा रहे हैं।

"मैं तथागत से किसी बात पर मिलना चाहता हूँ," बंदर ने झुककर उत्तर दिया।

इसके बाद उसका सामना कुनलुन पर्वत पर स्थित स्वर्णिम प्रकाश पर्वत के अविनाशी राजा वज्रपानी योंगझू से हुआ, जिन्होंने गरजते हुए कहा, "मकाक, तुम तो हद ही कर रहे हो! जब बैल दानव राजा तुम्हें इतना परेशान कर रहा था, तब हम सबने तुम्हारी मदद की थी, लेकिन आज जब तुम हमसे मिलने आए हो, तो बिलकुल भी शिष्टाचार नहीं दिखा रहे हो। अगर तुम यहाँ किसी काम से आए हो, तो पहले एक ज्ञापन प्रस्तुत करो और आगे बढ़ने से पहले बुलाए जाने का इंतजार करो।"

यह स्वर्ग के दक्षिणी द्वार जैसा नहीं है, जहाँ आप अपनी मर्जी से आ-जा सकते हैं। हट जाओ! रास्ते से हट जाओ!

जब बंदर इतना उदास महसूस कर रहा था, तब इस तरह से डांट सुनने पर वह क्रोध से भड़क उठा और उसकी अनियंत्रित चीख-पुकार ने जल्द ही तथागत को परेशान कर दिया।

तथागत बुद्ध अपने नौ स्तरीय कमल सिंहासन पर विराजमान थे और अपने अठारह अर्हतों को सूत्रों का उपदेश दे रहे थे, तभी उन्होंने कहा, "सन वुकॉन्ग यहाँ हैं। आप

सभी को उनका स्वागत करने के लिए बाहर जाना चाहिए।" बुद्ध के आदेश का पालन करते हुए अर्हत अपने ध्वजों और छतरियों के साथ दो पंक्तियों में बाहर गए।
उन्होंने अभिवादन करते हुए कहा, "महान ऋषि सूर्य, तथागत ने हमें आपको अपने समक्ष आमंत्रित करने का आदेश दिया है।"
तभी मठ के द्वार पर खड़े चारों वज्रपाणियों ने बंदर को अंदर आने दिया। अर्हत उसे कमल सिंहासन के चरणों में ले गए, जहाँ तथागत के दर्शन करते ही वह झुककर प्रणाम करने लगा। वह सिसक-सिसक कर रो रहा था।
बुद्ध ने कहा, "वुकोंग, तुम इतनी बुरी तरह क्यों रो रहे हो?"
“आपके शिष्य को आपके उपदेशों का भरपूर लाभ मिला है,” बंदर भाई ने उत्तर दिया, “और उसने स्वयं को भगवान बुद्ध के मार्ग पर समर्पित कर दिया है। सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के बाद से मैंने तांग पुरोहित को अपना गुरु मान लिया है और यात्रा के दौरान उनकी रक्षा कर रहा हूँ। हमने जो कष्ट सहे हैं, उन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।”
हम अब लायन माउंटेन पर लायन केव के पास लियोनिया शहर पहुँच गए हैं, जहाँ तीन क्रूर राक्षसों, लायन किंग, एलिफेंट किंग और ग्रेट रॉक ने मेरे गुरु को पकड़ लिया था। हम सभी उनके शिष्य भी बहुत बुरी हालत में थे, बंधे हुए और एक स्टीमर में आग और उबलते पानी की पीड़ा सहने के लिए डाल दिए गए थे। सौभाग्य से मैं बच निकलने में कामयाब रहा और दूसरों को बचाने के लिए एक ड्रैगन किंग को बुलाया। लेकिन हम अपने दुष्ट सितारे से नहीं बच सके: गुरु (अध्याय 77)।

और बाकी लोगों को पिछली रात चुपके से बाहर निकालने की कोशिश करते समय फिर से पकड़ लिया गया। आज सुबह जब मैं यह पता लगाने के लिए शहर लौटा कि क्या हुआ था, तो मुझे पता चला कि उन बेहद दुष्ट और क्रूर राक्षसों ने रात में मेरे गुरु को कच्चा ही खा लिया। उनके शरीर और हड्डियों का कुछ भी नहीं बचा है। इसके अलावा, मेरे साथी शिष्य वुनेन्ग और वुजिंग भी वहीं बंधे हुए हैं और जल्द ही उनकी भी मृत्यु हो जाएगी। मैं बहुत हताश हूँ। इसीलिए आपका शिष्य तथागत से मिलने आया है। मैं आपसे आपकी अपार दया से विनती करता हूँ कि आप बंधन मुक्त करने वाला मंत्र पढ़ें ताकि मैं अपने सिर से बंधन उतारकर आपको वापस दे सकूँ। अपने

शिष्य को पुष्प और फल पर्वत पर वापस जाने दें और वहाँ आनंद लें।" यह कहते-कहते ही उसकी आँखों में फिर से आँसू भर आए। उसके दुख का कोई अंत नहीं था।
तथागत ने मुस्कुराते हुए कहा, "वुकोंग, इतना परेशान मत हो। तुम उन दुष्ट आत्माओं को हरा नहीं सकते। उनकी जादुई शक्तियाँ तुम्हारी क्षमता से परे हैं। इसीलिए तुम इतने दुखी हो।"
बंदर बुद्ध के नीचे घुटने टेककर बैठ गया और अपनी छाती पीटते हुए बोला, "सचमुच, तथागत, मैंने इतने वर्षों पहले स्वर्ग में उत्पात मचाया था और मुझे महान ऋषि कहा गया था। इन दुष्ट राक्षसों से मिलने से पहले मुझे अपने पूरे जीवन में कभी इतनी मार नहीं पड़ी थी।"
तथागत ने कहा, "अपने लिए इतना दुख मनाना बंद करो। मैं उन दुष्ट आत्माओं को जानता हूँ।"
"तथागत!" बंदर अचानक बोल पड़ा। "लोग कहते हैं कि वे दुष्ट आत्माएं आपके रिश्तेदार हैं।"
तथागत ने कहा, "दुष्ट बंदर! भला कोई दुष्ट आत्मा मेरी रिश्तेदार कैसे हो सकती है?"
"अगर वे तुम्हारे रिश्तेदार नहीं हैं तो तुम उन्हें कैसे जानते हो?" बंदर ने मुस्कुराते हुए पलटवार किया।
"मैं उन्हें जानता हूँ क्योंकि मैं उन्हें अपनी सर्वदृष्टि से देखता हूँ," बुद्ध ने उत्तर दिया। "वरिष्ठ राक्षस और द्वितीय राक्षस के स्वामी हैं। आनंद, कश्यप, यहाँ आओ। तुममें से एक वुताई पर्वत पर और दूसरा एमेई पर्वत पर बादल से जाए। मंजुश्री और समंतभद्र को बुलाओ कि वे मुझसे मिलने आएँ।" दोनों अर्हत आदेशानुसार तुरंत चले गए। "वे प्रथम और द्वितीय राक्षस सरदारों के स्वामी हैं। परन्तु तीसरे राक्षस का मुझसे कुछ संबंध है।"
"अपनी माँ की तरफ से या अपने पिता की तरफ से?" बंदर ने पूछा।
बुद्ध ने उत्तर दिया, "जब आदिम अराजकता पहली बार अलग हुई, तो चूहे के समय आकाश खुल गया और बैल के समय पृथ्वी खुल गई।" "मानव जाति का जन्म बाघ के जन्मकाल में हुआ। तब स्वर्ग और पृथ्वी फिर से एक हो गए और सभी जीवित प्राणियों का जन्म हुआ, जिनमें चलने वाले जानवर और उड़ने वाले पक्षी भी शामिल हैं। एक सींग वाला सींग चलने वाले जानवरों में सबसे श्रेष्ठ है और फीनिक्स उड़ने वाले पक्षियों में सबसे श्रेष्ठ है। जब फीनिक्सों ने अपनी मूल आत्मा को मिलाया तो उन्होंने

मोर और विशाल रॉक को जन्म दिया। जब मोरनी दुनिया में आई तो वह सबसे दुष्ट प्राणी और नरभक्षी थी। वह अपने आस-पास के पंद्रह मील के सभी लोगों को एक ही बार में निगल सकती थी। जब मैं बर्फीले पहाड़ की चोटी पर अपने सोलह फुट लंबे सुनहरे शरीर का विकास कर रहा था, तब उसने मुझे भी निगल लिया। मैं उसके पेट में चला गया। मैं उसके पिछले हिस्से से भागना चाहता था, लेकिन अपने शरीर को गंदा होने के डर से मैंने उसकी रीढ़ की हड्डी काटकर अपना रास्ता बनाया और गिद्ध शिखर पर चढ़ गया। मैं उसे मार डालता, लेकिन सभी बुद्ध अनुयायियों ने मुझे रोका: मोरनी को मारना अपनी माँ को मारने जैसा होता। इसलिए मैंने उसे अपनी सभा में रखा।" गिद्ध शिखर पर उन्होंने उसे बुद्ध-माता, महान प्रख्यात मोरनी बोधिसत्व के रूप में नियुक्त किया। महान रोक का जन्म भी उसी माता से हुआ था जिससे वह हुई थी। इसीलिए हम एक प्रकार के रिश्तेदार हैं।

यह सुनकर बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "इस तर्क के हिसाब से, तथागत, तुम तो दुष्ट आत्मा के भतीजे हो।"

तथागत ने कहा, "मुझे स्वयं जाकर उस राक्षस को वश में करना होगा।" बंदर ने प्रणाम करते हुए आदरपूर्वक उत्तर दिया, "आपसे विनती है कि कृपया हमें अपनी दिव्य उपस्थिति प्रदान करें।"

अध्याय 77

1081

पश्चिम की यात्रा

तब तथागत अपने कमल सिंहासन से उतरकर सभी बुद्धों के साथ मठ के द्वार से बाहर निकले, ठीक उसी समय आनंद और कश्यप मंजुश्री और समंतभद्र को लेकर वहाँ पहुँचे। इन दोनों बोधिसत्वों ने तथागत को प्रणाम किया, जिन्होंने उनसे पूछा, "बोधिसत्वों, आपके पशु कितने समय से अपने पहाड़ों से दूर हैं?"

"सात दिन," मंजुश्री ने कहा।

तथागत ने उत्तर दिया, "आपके पर्वतों पर मात्र सात दिन बिताना नश्वर संसार में कई हजार वर्षों के बराबर है।"

"पता नहीं उन्होंने वहां कितने जीवों को नष्ट कर दिया है। मेरे साथ आओ, हम उन्हें तुरंत वापस लाते हैं।"

जब बुद्ध अपने अनुयायियों के साथ वायु में उड़ रहे थे, तब दोनों बोधिसत्व उनके बाएं

और दाएं हाथ की ओर चल रहे थे।
यह देखा जा सकता था:
भगवान बुद्ध के लिए आशीर्वाद के झिलमिलाते बादल छंट गए।
अपनी महान करुणा के कारण वे अपने मंदिर से नीचे उतरे।
उन्होंने सृष्टि के आरंभ से ही सभी प्राणियों के बारे में सत्य का उपदेश दिया।
यह समझाते हुए कि समय के साथ सब कुछ कैसे बदल गया था।
उनके आगे पांच सौ पवित्र अर्हत चल रहे थे;
उनके पीछे धर्म के तीन हजार संरक्षक थे।
आनंद और कश्यप दोनों ही वहां निकट उपस्थित थे;
समंतभद्र और मंजुश्री राक्षसों पर विजय प्राप्त करने आए थे।
महान ऋषि को यह कृपा प्राप्त हुई और वे भगवान बुद्ध और उनके दल को अपने साथ लाने में सफल रहे। जल्द ही नगर दिखाई देने लगा। बंदर ने कहा, "तथागत, वह लियोनिया है, जहाँ से काली धुआँ निकल रही है।"
तथागत ने कहा, “पहले तुम नगर में जाओ और दुष्ट आत्माओं से युद्ध शुरू करो। जीतना मत। तुम्हें हारकर वापस ऊपर आना होगा। उन्हें पकड़ने का काम हम पर छोड़ दो।”
तब महान ऋषि ने अपने बादल को सीधे शहर की दीवार पर उतारा, जहाँ वे प्राचीर पर खड़े होकर अपशब्दों से चिल्लाए, "दुष्ट प्राणियों! बाहर आओ और मुझसे तुरंत लड़ो!" इससे दीवार पर बने बुर्जों में छिपे छोटे राक्षसों में इतनी दहशत फैल गई कि वे सीधे शहर में कूद पड़े और सूचना दी, "महाराज, नौसिखिया सूर्य दीवार पर है और हमें युद्ध के लिए चुनौती दे रहा है।"
“वह बंदर दो-तीन दिन से यहाँ नहीं था,” वरिष्ठ राक्षस ने उत्तर दिया। “अब वह वापस आकर हमें युद्ध के लिए चुनौती दे रहा है। क्या वह कुछ अतिरिक्त सैनिकों को साथ ले आया है?”
“उससे डरने की कोई बात नहीं है,” तीसरे दानव सरदार ने कहा। “चलो सब मिलकर देखते हैं।” तीनों सरदार, अपने-अपने हथियार लिए, उस दीवार की ओर तेज़ी से बढ़े जहाँ उन्होंने बंदर को देखा। बिना कुछ कहे उन्होंने अपने हथियार उठा लिए। अध्याय 77

बंदर ने हथियार लेकर उस पर हमला किया। बंदर ने लोहे की लाठी घुमाकर उन्हें रोके रखा। सात-आठ दौर की लड़ाई के बाद बंदर ने हार का नाटक किया और भाग गया।
"तुम कहाँ जा रहे हो?" राक्षस राजा ने ज़ोर से चिल्लाते हुए पूछा, और बंदर कलाबाज़ी करते हुए हवा में उछल गया। तीनों आत्माएँ बादलों पर सवार होकर उसके पीछे गईं, लेकिन बंदर एक तरफ हट गया और भगवान बुद्ध की सुनहरी आभा में पूरी तरह से गायब हो गया।
वहाँ केवल भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमानकाल के तीन बुद्धों की छवियाँ, पाँच सौ अर्हत और धर्म के तीन हज़ार रक्षक ही दिखाई दे रहे थे, जो चारों ओर फैले हुए थे और तीनों राक्षस राजाओं को इतनी घनी तरह से घेरे हुए थे कि पानी की एक बूँद भी रिस नहीं सकती थी।
"यह तो बहुत बुरा हुआ, मेरे भाई," वरिष्ठ दानव सरदार ने गुस्से में कहा, "वह बंदर तो सचमुच बहुत चालाक है। वह मेरे स्वामी को यहाँ कैसे ले आया?"
“बड़े भाई, डरो मत,” तीसरे राक्षस ने कहा। “अगर हम सब मिलकर हमला करें तो हम तथागत को अपनी तलवारों और भालों से मार गिरा सकते हैं और उनके गर्जन मठ पर कब्जा कर सकते हैं।” शिष्टाचार का कोई ज्ञान न रखने वाले उन राक्षसों ने सचमुच अपनी तलवारें उठाकर आगे बढ़ने का फैसला किया और बेतहाशा वार करने लगे।
मंजुश्री और समंतभद्र ने मंत्रोच्चार किया और चिल्लाकर कहा, "क्या अब तुम पश्चाताप नहीं करोगे, दुष्ट प्राणियों?"
तुम और क्या उम्मीद करते हो?" वरिष्ठ और द्वितीय दानव सरदारों ने संघर्ष छोड़ दिया, अपने हथियार फेंक दिए, लोट-पोट हुए और अपने असली रूप में लौट आए। दोनों बोधिसत्वों ने अपने कमल सिंहासन दानवों की पीठ पर फेंक दिए और उड़कर उन पर बैठ गए। तब दोनों दानवों ने भी हार मान ली और आत्मसमर्पण कर दिया।
अब जब नीले शेर और सफेद हाथी को पकड़ लिया गया था, तो केवल तीसरा दुष्ट राक्षस ही अब तक काबू में नहीं आया था। अपने पंख फैलाकर उसने अपना आकाश-वर्गाकार भाला नीचे गिरा दिया और सीधे ऊपर उठकर अपने नुकीले पंजों से वानर राजा को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन चूंकि महान ऋषि सुनहरे आभा में विराजमान थे, इसलिए राक्षस उनके पास आने की हिम्मत नहीं कर सका। जब

तथागत को पता चला कि वह क्या करने की कोशिश कर रहा है, तो उन्होंने अपनी सुनहरी आभा को चमकाया और अपना सिर हिलाया, हवा में सर्वोच्च ध्यानमग्न, जिससे वह प्राणी खून से लथपथ मांस के चमकीले लाल ढेर में बदल गया। दुष्ट आत्मा ने अपने नुकीले पंजों से उसे झट से पकड़ लिया, जिस पर भगवान बुद्ध ने अपने हाथ से ऊपर की ओर इशारा किया, जिससे राक्षस के पंखों की मांसपेशियां नष्ट हो गईं। वह न तो उड़ सका और न ही बुद्ध के सिर के ऊपर से दूर जा सका, और वह अपने असली रूप में एक सुनहरे पंखों वाले गिद्ध के रूप में लौट आया।

अपनी चोंच खोलकर उसने बुद्ध से कहा, "तथागत, आपने अपनी महान धर्म शक्तियों का उपयोग मुझे इस तरह पकड़ने के लिए क्यों किया?"

तथागत ने उत्तर दिया, “तुम यहाँ बहुत बुराई कर रहे हो। मेरे साथ आओ, तुम्हें अच्छे कर्मों का फल मिलेगा।”

दुष्ट आत्मा ने उत्तर दिया, “तुम अपने यहाँ घोर गरीबी और कष्ट में शाकाहारी भोजन करते हो, परन्तु यहाँ मैं मनुष्य का मांस खा सकता हूँ और असीम विलासिता में रह सकता हूँ। यदि तुम मुझे भूख से मारोगे तो तुम पाप के दोषी होगे।”

बुद्ध ने उत्तर दिया, “चारों महाद्वीपों में मैं असंख्य प्राणियों को नियंत्रित करता हूँ जो मेरी पूजा करते हैं, और जब भी वे मेरी सेवा करने आते हैं, मैं उनसे कहता हूँ कि वे पहले आपको बलिदान अर्पित करें।” महान रोक यदि संभव होता तो भाग जाता। लेकिन उसके पास धर्म परिवर्तन स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

तभी बंदर तथागत के सामने झुककर प्रणाम करने के लिए प्रकट हुआ और बोला, "भगवान बुद्ध, आज आपने दुष्ट आत्माओं को वश में कर लिया है और एक बड़े अभिशाप को दूर कर दिया है, लेकिन मेरे स्वामी की मृत्यु हो गई है।"

इस पर विशालकाय रोक ने दांत पीसते हुए कड़वाहट से कहा, "धिक्कार है बंदर! तूने मुझे सताने के लिए इन खूंखार आदमियों को यहाँ क्यों लाया? मैंने तेरे उस बूढ़े भिक्षु को कभी नहीं खाया। वह अब रेशमी सुगंध मंडप में है, है ना?" यह सुनकर बंदर ने भगवान बुद्ध को धन्यवाद देने के लिए तुरंत प्रणाम किया। अध्याय 77

पश्चिम की यात्रा

महान रोक को मुक्त करने के लिए, बुद्ध ने उसे अपने तेजस्वी प्रभामंडल में धर्म का रक्षक बनाया और फिर अपने दल को बादलों पर बिठाकर अपने मठ में वापस ले गए।

बंदर ने अपना बादल उतारा और सीधे शहर में चला गया, जहाँ एक भी छोटा राक्षस नहीं बचा था। सचमुच:
सिर के बिना सांप हिल नहीं सकता;
पक्षी अपने पंखों के बिना उड़ नहीं सकता।
जब उन्होंने बुद्ध को अपने दुष्ट राजाओं को पकड़ते हुए देखा तो वे सभी अपनी जान बचाने के लिए भाग गए।
फिर बंदर ने सुअर और साधु सैंड को मुक्त किया, सामान और घोड़े को ढूंढा और अपने साथी शिष्यों से कहा, "गुरु को खाया नहीं गया है। मेरे साथ आओ।" वह उन दोनों को सीधे भीतरी परिसर में ले गया जहाँ उन्हें ब्रोकेड सुगंध मंडप मिला। दरवाजा खोलकर अंदर देखने पर उन्हें एक लोहे का संदूक दिखाई दिया जिसमें से संज़ंग के रोने की आवाज सुनाई दे रही थी।
फ्रायर सैंड ने अपनी दानव-नाशक छड़ी का उपयोग करके संदूक के ऊपर लगे लोहे के पिंजरे को खोला और उसका ढक्कन उठाया। "स्वामी," उसने पुकारा।
उन्हें देखकर संज़ंग ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा और बोला, "शिष्यों, राक्षसों को कैसे हराया गया? तुम मुझे यहाँ कैसे ढूँढ पाए?" बंदर ने उसे शुरू से अंत तक सारी घटना विस्तार से बताई और संज़ंग ने असीम कृतज्ञता व्यक्त की। फिर गुरु और शिष्यों को महल में चावल मिले और उन्होंने पेट भरकर खाए, फिर अपना सामान समेटकर पश्चिम की ओर मुख्य सड़क से शहर छोड़ दिया। सचमुच: केवल सच्चा व्यक्ति ही सच्चे शास्त्रों को पा सकता है;
इच्छा की पुकार और हृदय के परिश्रम व्यर्थ हैं।
यदि आपको नहीं पता कि इस यात्रा के किस पड़ाव पर उन्हें तथागत से मिलना था, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 78
भिक्षुभूमि में गुप्त देवताओं को दया के कार्य पर भेजा जाता है
महल में राक्षस का खुलासा हुआ और उसके मार्ग पर चर्चा हुई।
एक ही विचार सौ राक्षसों को झकझोर देता है;
सारे प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं।

पश्चिम की यात्रा
धूल के हर कण को केवल धोकर ही हटाया जा सकता है।
सब कुछ साफ-सुथरा करके अच्छी तरह से पॉलिश कर लें।
सभी कारणों को दूर करके निर्वाण प्राप्त करें;
समय बर्बाद न करें और हजार राक्षसों का नाश करें।
आप निश्चित रूप से बाधाओं से मुक्त हो जाएंगे।
और जब आपके कर्म पूरे हो जाएं, तो आप दलुओ स्वर्ग में उठ खड़े हों।
कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि सूर्य ने अपनी सारी चतुराई का इस्तेमाल करते हुए तथागत को राक्षसों को वश में करने और संज़ंग और अन्य दो शिष्यों को बचाने के लिए बुलाया, जिसके बाद वे लियोनिया शहर छोड़कर पश्चिम की ओर चल पड़े। कई महीनों की यात्रा के बाद सर्दी का मौसम आ गया, और उस समय यह दृश्य दिखाई दे रहा था: पहाड़ी पर लगा बेर का पेड़ टूटे हुए जेड की तरह था।
जैसे-जैसे तालाब का पानी धीरे-धीरे बर्फ में बदलता गया।
शरद ऋतु के सभी लाल पत्ते झड़ चुके थे।
और चीड़ के पेड़ों की हरियाली पहले से कहीं अधिक ताज़ी लग रही थी।
फीके और तेजी से भागते बादल बर्फबारी के कगार पर थे;
पहाड़ियों पर सूखी घास सपाट पड़ी थी।
जहां तक नज़र जाती थी, ठंडी चमक ही दिखाई देती थी।
जैसे ही अदृश्य ठंड हड्डियों तक पहुंच गई।
गुरु और शिष्य ठंड का सामना करते हुए, बारिश में भीगते हुए और ठंडी हवा में भोजन करते हुए आगे बढ़ते रहे, तभी उन्हें एक और किलेबंद और खाई से घिरा शहर दिखाई दिया। "वह सामने कैसा शहर है, वुकॉन्ग?" संज़ांग ने बंदर से पूछा, जिसने जवाब दिया, "वहाँ पहुँचकर पता चल जाएगा। अगर वह किसी पश्चिमी राज्य की राजधानी है, तो हमें अपना पासपोर्ट दिखाना होगा, जिसकी जाँच करके हमें वापस कर दिया जाएगा। अगर वह कोई प्रांत या काउंटी शहर है, तो हम सीधे अंदर चले जाएँगे।" गुरु और शिष्य अपनी बात पूरी करने से पहले ही शहर के द्वार पर पहुँच गए। संज़ंग घोड़े से उतरा और वे चारों फाटक के बाहर बनी दीवार से अंदर चले गए। दक्षिण की ओर वाली दीवार के नीचे हवा से सुरक्षित सो रहे एक बूढ़े सैनिक को देखकर, बंदर भाई उसके पास गया, उसे हिलाया और बोला, "महोदय!"

जब बूढ़ा सिपाही नींद से जाग उठा और अपनी धुंधली आँखें खोलकर बंदर को देखा तो वह घुटनों के बल गिर पड़ा और प्रणाम करते हुए बोला, "मेरे स्वामी!"

अध्याय 78

1085

पश्चिम की यात्रा

"घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है," बंदर ने कहा। "मैं कोई दुष्ट देवता नहीं हूँ, तो मुझे अपना स्वामी क्यों कहते हो?"

"क्या आप ही भगवान गर्जन के देवता नहीं हैं?" बूढ़े सिपाही ने फिर से प्रणाम करते हुए पूछा।

“यह कैसी बात है,” बंदर ने उत्तर दिया। “हम पूरब से आए भिक्षु हैं जो पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने जा रहे हैं। हम अभी-अभी यहाँ पहुँचे हैं। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि इस जगह का नाम क्या है?” इस उत्तर से अंततः बूढ़े सैनिक को राहत मिली।

जम्हाई लेते हुए वह वापस खड़ा हुआ, अंगड़ाई ली और बोला, "कृपया मुझे क्षमा करें, आदरणीय महोदय। इस देश को पहले भिक्षुलैंड कहा जाता था, लेकिन इसका नाम बदलकर बॉयटाउन कर दिया गया है।"

"क्या तुम्हारा कोई राजा है?" बंदर ने पूछा।

"जी हां," बूढ़े सैनिक ने जवाब दिया।

फिर बंदर ने तांग पुजारी को बताया, "इस देश को पहले भिक्षुलैंड कहा जाता था, लेकिन इसका नाम बदलकर बॉयटाउन कर दिया गया है, हालांकि मुझे नहीं पता कि इस बदलाव का क्या मतलब है।"

"अगर पहले यह भिक्षुभूमि थी तो अब यह बॉयटाउन क्यों है?" तांग पुजारी ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"मुझे लगता है कि एक राजा भिक्षु थे जिनकी मृत्यु हो गई थी," पिग ने कहा, "और जब एक लड़के ने उनका स्थान लिया तो उन्होंने इसका नाम बदलकर बॉयटाउन कर दिया।"

तांग पुजारी ने कहा, "असंभव, असंभव। चलो अंदर चलते हैं और गली में कुछ पूछताछ करते हैं।"

“बिल्कुल सही,” फ्रायर सैंड ने कहा। “बूढ़े सिपाही को वैसे भी पता नहीं होता, और ऊपर से उसके बड़े भाई ने उसे इतना डरा दिया कि वह बकवास करने लगा। हम शहर

में जाकर कुछ और सवाल पूछेंगे।”
जब वे तीसरे द्वार से गुजरे तो वे एक मुख्य सड़क पर स्थित एक विशाल बाजार में पहुँचे। लोग अच्छे कपड़े पहने हुए थे और उनका व्यवहार विशिष्ट था।
बार और म्यूजिक हॉल से कई आवाजों का कोलाहल सुनाई दिया;
शानदार दुकान और चायघर के बाहर ऊँचे-ऊँचे पर्दे लटके हुए थे।
हजारों कंपनियों में कारोबार अच्छा चल रहा था;
खरीदारी की गलियों और बाजारों में धन का प्रवाह बेरोक-टोक था।
धातु और रेशम के व्यापारी चींटियों की तरह झुंड बनाकर घूम रहे थे।
प्रसिद्धि और धन के लिए संघर्ष करते हुए केवल पैसे की परवाह करना।
इन नेक शिष्टाचारों और शानदार दृश्यों के साथ
और शांत जल, वह समृद्धि का समय था।
अध्याय 78
1086
पश्चिम की यात्रा
गुरु और उनके तीन शिष्य, जो घोड़े को आगे ले जा रहे थे और सामान ढो रहे थे, कुछ देर गलियों में घूमते रहे और चारों ओर फैली समृद्धि को निहारते रहे। हर घर के प्रवेश द्वार पर हंसों को रखने के लिए इस्तेमाल होने वाला टोकरीनुमा पिंजरा बना हुआ था।
संजांग ने कहा, "शिष्यों, यहाँ सब लोग अपने प्रवेश द्वारों पर पिंजरे क्यों बनाते हैं?"
इस पर सुअर ने चारों ओर देखा और पाया कि वाकई कई रंगों के रेशमी पर्दों से ढके पिंजरों की कतारें लगी हुई थीं। मूर्ख सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा, "गुरुजी, आज शादियों और उत्सवों का शुभ दिन होना चाहिए। हर जगह शादी हो रही है।"
"बकवास," बंदर ने कहा। "हर परिवार में शादी कैसे हो सकती है? इसके पीछे कोई और वजह जरूर होगी। मैं जाकर देखता हूँ।"
"तुम्हें नहीं जाना है," संजांग ने उसे पकड़ते हुए कहा। "तुम इतने बदसूरत दिखते हो कि लोग नाराज़ हो सकते हैं।"
"मैं कुछ और बनकर जाऊंगा," भाई बंदर ने जवाब दिया।
महान ऋषि ने अपने हाथों से मंत्र बनाते हुए मंत्र के शब्द कहे, खुद को झटका दिया, मधुमक्खी में परिवर्तित हो गए, अपने पंख फैलाए, एक मुर्गीघर की ओर उड़े और पर्दों के बीच से अंदर झाँकने लगे। अंदर एक छोटा लड़का बैठा था। बंदर ने दूसरे परिवार

के मुर्गीघर में भी देखा और वहाँ भी एक बच्चा था। उसने आठ-नौ घरों का निरीक्षण किया और सभी में एक-एक बच्चा था। सभी लड़के थे: एक भी लड़की नहीं थी। कुछ अपने मुर्गीघरों में बैठे खेल रहे थे और कुछ रो रहे थे; कुछ फल खा रहे थे और कुछ सो रहे थे।

निरीक्षण पूरा होने पर, बंदर अपने सामान्य रूप में लौट आया और तांग पुजारी को बताया, "मुर्गियों के बाड़े में छोटे लड़के हैं। सबसे बड़ा छह साल से कम उम्र का है और सबसे छोटा केवल चार साल का। मुझे नहीं पता कि वे यहाँ क्यों हैं।" संज़ंग सोचने लगा कि इसका क्या कारण हो सकता है।

एक मोड़ मुड़ते ही उन्हें एक सरकारी इमारत का प्रवेश द्वार दिखाई दिया। यह सोने के मंडपों वाला एक सरकारी छात्रावास था। आदरणीय बुजुर्ग अत्यंत प्रसन्न हुए।

उन्होंने कहा, "शिष्यों, हम इस छात्रावास में चलेंगे। हम पता लगा सकते हैं कि हम कहाँ हैं, घोड़े को आराम दे सकते हैं और रात यहीं बिता सकते हैं।"

"जी हां, बिल्कुल सही," फ्रायर सैंड ने कहा। "चलिए सीधे अंदर चलते हैं।" चारों ने खुशी-खुशी ऐसा ही किया, जिसकी सूचना वहां मौजूद अधिकारियों ने छात्रावास के अधीक्षक को दी।

जब अधीक्षक उन्हें अंदर ले गए, अभिवादन का आदान-प्रदान हुआ और वे सभी बैठ गए, तब अधीक्षक ने पूछा, "आप कहाँ से आए हैं, महोदय?"

"मैं पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश द्वारा भेजा गया एक भिक्षु हूँ, जो पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने आया हूँ," संज़ंग ने उत्तर दिया। "अब जब हम इस उत्कृष्ट स्थान पर पहुँच गए हैं, तो मैं अपना पासपोर्ट जाँच के लिए प्रस्तुत करूँगा। क्या हम आज रात आपके यहाँ ठहर सकते हैं?"

अधीक्षक ने चाय मंगाई, और चाय पीने के बाद उन्होंने उनके मनोरंजन का ध्यान रखा और ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों को तीर्थयात्रियों की देखभाल करने का निर्देश दिया। इसके लिए धन्यवाद देने के बाद संज़ंग ने पूछा, "क्या हम आज महल जाकर महाराज से मिल सकते हैं और अपने पासपोर्ट की जाँच करवा सकते हैं?"

“आज शाम यह संभव नहीं होगा,” अधीक्षक ने उत्तर दिया। “इसके लिए कल सुबह तक इंतजार करना पड़ेगा। मुझे आशा है कि आप इस साधारण से छात्रावास में आराम से रात बिताएंगे।”

कुछ देर बाद, जब सारी तैयारियाँ हो गईं, तो छात्रावास के अधीक्षक ने चारों यात्रियों

को अपने साथ शाकाहारी भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने अपने कर्मचारियों को भी निर्देश दिया कि वे उनके रात बिताने के लिए कमरों की सफाई कर दें।

संज़ंग ने असीम कृतज्ञता व्यक्त की। जब वे सब बैठ गए, तो आदरणीय बुजुर्ग ने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि क्या मैं आपसे किसी ऐसे विषय पर जानकारी मांग सकता हूँ जिसे मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। आप अपने अध्याय 78 में बच्चों का पालन-पोषण कैसे करते हैं?"

देश?"

“पूरी दुनिया में लोग एक जैसे ही होते हैं, जैसे आकाश में दो सूर्य कभी नहीं होते,” अधीक्षक ने उत्तर दिया। “बच्चे तब पैदा होते हैं जब पिता का वीर्य माता के रक्त से मिल जाता है और गर्भ में दस महीने बीत जाते हैं। जन्म के बाद वे तीन साल तक दूध पीते हैं और उनका शरीर धीरे-धीरे बढ़ता है। यह बात तो सभी जानते हैं।”

"तुम जो मुझे बता रहे हो, वह मेरे साधारण से देश में उनके पालन-पोषण से अलग नहीं है," संज़ंग ने उत्तर दिया। "लेकिन जब हम शहर में आए तो हमने गली के हर घर के सामने एक हंसों का पिंजरा देखा, जिसके अंदर एक छोटा लड़का था। यह बात मेरी समझ से परे है, इसीलिए मैंने यह सवाल पूछने का साहस किया।"

"उसे भूल जाइए, महोदय," छात्रावास अधीक्षक ने संज़ंग के कान में फुसफुसाते हुए कहा। "उसके बारे में मत पूछिए। उसे अपने दिमाग से निकाल दीजिए। उसका ज़िक्र तक मत कीजिए। क्या आप कल सुबह अपनी यात्रा शुरू करने से पहले आज रात आराम करना चाहेंगे?" संज़ंग ने जवाब में अधीक्षक को पकड़ लिया और उनसे स्पष्टीकरण मांगा।

"अपनी ज़बान संभालकर बोलो," अधीक्षक ने सिर हिलाते और उंगली हिलाते हुए जवाब दिया, लेकिन संज़ंग मामले को छोड़ने वाला नहीं था। उसने सारी जानकारी जानने पर ज़ोर दिया। अधीक्षक के पास ड्यूटी पर मौजूद सभी कर्मचारियों को बर्खास्त करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

जब वे दीपक की रोशनी में अकेले थे, तो उसने संजांग से फुसफुसाते हुए कहा, "जिन हंसों के दड़बों के बारे में तुमने पूछा था, वे इसलिए हैं क्योंकि हमारा राजा एक बुरा

शासक है। तुम्हें इसके बारे में बार-बार पूछने की क्या ज़रूरत है?"
"वह बुरा शासक कैसे है?" संजांग ने पूछा। "जब तक आप मुझे स्पष्टीकरण नहीं देंगे, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।"
"इस देश का असली नाम भिक्षुलैंड है," अधीक्षक ने उत्तर दिया। "लड़कों का शहर तो बस एक नाम है जो लोगों ने इसे देना शुरू कर दिया है। तीन साल पहले एक बूढ़ा आदमी ताओवादी के वेश में यहाँ आया था, साथ में उसकी उम्र सिर्फ पंद्रह साल थी।" वह बोधिसत्व गुआनयिन की तरह अत्यंत सुंदर थीं। उन्होंने उन्हें हमारे वर्तमान राजा के समक्ष प्रस्तुत किया, जो उनके आकर्षण से इतने मोहित हो गए कि वे उनकी सभी स्त्रियों की प्रिय बन गईं। उन्हें सौंदर्य रानी की उपाधि से नवाजा गया।
कुछ समय से उसकी नज़र अपनी किसी भी रानी या संगिनी पर नहीं है। उसकी अतृप्त इच्छा इतनी बढ़ गई है कि वह दिन-रात इसी काम में लगा रहता है। इसका परिणाम है मानसिक थकावट और शारीरिक कमजोरी। वह न के बराबर खाता-पीता है। उसकी मृत्यु किसी भी क्षण हो सकती है। राजसी चिकित्सा महाविद्यालय ने हर संभव दवा आजमाई है, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। जिस ताओवादी ने उस लड़की को राजा के सामने पेश किया था, उसे राष्ट्र के वरिष्ठजन की उपाधि से सम्मानित किया गया। उसके पास लोगों को बहुत अधिक उम्र देने का एक गुप्त विदेशी नुस्खा है। उसने इसके लिए आवश्यक सामग्री जुटाने के लिए दस महाद्वीपों और तीन जादुई द्वीपों की यात्रा की है। सब कुछ तैयार है। एकमात्र समस्या यह है कि इसे एक भयानक सहायक पदार्थ की आवश्यकता है - 1,111 छोटे लड़कों के दिलों से बना एक औषधि। जब वह इसे ग्रहण करेगा, तो उसके सामने एक हजार साल का स्वस्थ और ऊर्जावान जीवन होगा। पिंजरे में रखे गए सभी छोटे लड़के चुने हुए हैं। उनके माता-पिता राजा से इतने भयभीत हैं कि उनमें से कोई भी रोने की हिम्मत नहीं करता। इसीलिए उन्होंने यह कहानी फैलाई है कि इस जगह को अब बॉयटाउन कहा जाता है। जब आप कल सुबह महल जाएँगे, महोदय, तो आपको केवल अपना पासपोर्ट दिखाना होगा, जिसकी जाँच करके आपको वापस कर दिया जाएगा। इस बारे में किसी को कुछ मत कहना।" यह सब कहकर वे वहाँ से चले गए।
जो कुछ उसने सुना, उससे संजंग इतना भयभीत हो गया कि उसकी हड्डियाँ काँप उठीं और मांसपेशियाँ सुन्न पड़ गईं। वह अपने चेहरे से बहते आँसुओं को रोक नहीं सका और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। "मूर्ख राजा!" उसने कहा।

"मूर्ख राजा। तुम्हारी कामुकता ने तुम्हारा स्वास्थ्य खराब कर दिया है, और अब तुम उन सभी युवा जिंदगियों को नष्ट करने की योजना बना रहे हो।"
तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? कितना दुख! इस सब का दर्द मुझे मार रहा है।" इस बारे में एक कविता है: दुष्ट राजा की मूर्खता उसे सत्य भुला देती है;

उसकी बेलगाम वासनाओं के कारण उसका स्वास्थ्य खराब हो गया है।
छोटे बच्चों की हत्या करके शाश्वत जीवन की प्राप्ति करना,
वह स्वर्ग के दंड से बचने के लिए अपनी प्रजा का नरसंहार करता है।
यह सब दयालु भिक्षु के लिए असहनीय है:
वह अधिकारी के सांसारिक ज्ञान को स्वीकार नहीं कर सकता।
दीपक की रोशनी में रोते हुए उसकी आहें लंबी होती जाती हैं;
शोक से व्याकुल बुद्ध का उपासक है।
"मालिक," सुअर उनके पास जाकर बोला, "क्या बात है? आप जो कर रहे हैं, वह किसी अजनबी का ताबूत अपने घर लाकर उस पर रोने जैसा है। इस तरह परेशान मत होइए। जैसा कि कहावत है, जब कोई राजा अपनी प्रजा को मरने के लिए मजबूर करता है, तो
जीवन के प्रति निष्ठावान कोई भी व्यक्ति आकांक्षा नहीं करेगा;
जब एक पिता अपने ही बच्चे को मरने का आदेश देता है
कोई भी कर्तव्यनिष्ठ पुत्र निश्चित रूप से मृत्यु को प्राप्त होगा।
जिन लोगों को वह मारने जा रहा है, वे उसकी अपनी ही प्रजा हैं। वे तुम्हारे लिए क्या मायने रखते हैं? अपने कपड़े उतारो, सो जाओ और 'पुराने लोगों की चिंता मत करो'।
"शिष्य," संज़ंग ने आँसू बहाते हुए कहा, "तुममें ज़रा भी करुणा नहीं है। हम भिक्षुओं के लिए अच्छे कर्म करते समय सबसे महत्वपूर्ण बात दूसरों की मदद करना है। यह भ्रमित राजा अपनी दुष्टता में इतना अडिग कैसे हो सकता है? मैंने कभी नहीं सुना कि मानव हृदय खाने से जीवन लंबा हो सकता है। इतनी भयानक बात मुझे दुखी क्यों नहीं करती?"
“महाराजा जी, इतना दुःख मत कीजिए,” फ्रायर सैंड ने कहा। “कल जब आप हमारा

पासपोर्ट राजा के सामने पेश करेंगे और उनसे इस बारे में बात करेंगे, तो आप उनसे इस विषय पर चर्चा कर सकते हैं। भले ही वे आपकी सलाह न मानें, तब भी आपको पता चल जाएगा कि राष्ट्र के बुजुर्ग कैसे दिखते हैं। शायद वह कोई दुष्ट आत्मा है जिसने ये सब इसलिए रचा है क्योंकि वह इंसानों के दिल खाना चाहता है।"

"वुजिंग सही कह रहा है," बंदर भाई ने कहा। "अब सो जाइए, स्वामी जी, और कल सुबह मैं आपके साथ दरबार में जाकर देखूंगा कि यह राष्ट्र का बुजुर्ग कैसा है। अगर वह इंसान है तो शायद वह कोई विधर्मी होगा जो रूढ़िवादी तरीकों का पालन नहीं करता बल्कि नशे में विश्वास रखता है, और मैं उसे आंतरिक प्रकृति की मूलभूत शिक्षाओं से परिवर्तित कर दूंगा। अगर वह कोई दुष्ट आत्मा है तो मैं उसे पकड़ लूंगा, राजा को उसकी असलियत दिखाऊंगा, और राजा से आग्रह करूंगा कि वह अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखे और अपनी शक्ति बढ़ाए। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं उसे उन बच्चों को मारने नहीं दूंगा।"

यह सुनते ही संजांग ने बंदर को अत्यंत विनम्रता से प्रणाम किया और कहा, "कितना उत्तम सुझाव है! लेकिन जब हम भ्रमित राजा से मिलें तो हमें इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह हमें दोषी समझे।" (अध्याय 78)

अपनी सीमा न जानने और बदनामी फैलाने के बारे में। अगर ऐसा हुआ तो हम क्या कर सकते थे?

"मेरे पास जादुई शक्तियां हैं," बंदर ने जवाब दिया। "सबसे पहले मैं छोटे लड़कों को शहर से दूर उनके बाड़ों में बंद कर दूंगा ताकि कल उनके दिल निकालने के लिए कोई न बचे। स्थानीय अधिकारी इसकी सूचना जरूर देंगे और राजा को या तो राष्ट्र के वरिष्ठ से बात करने का आदेश देना होगा या फिर और जानकारी मांगनी होगी। इससे हमें बिना किसी परेशानी के अपनी याचिका प्रस्तुत करने का मौका मिल जाएगा।" संजांग बहुत प्रसन्न हुआ।

"अब तुम बच्चों को कस्बे से बाहर कैसे निकालोगे?" उसने पूछा। "अगर तुम सचमुच उन्हें बचा लेते हो, तो हे मेरे शिष्य, तुम सबसे बड़ा नेक काम करोगे। लेकिन जल्दी करो, क्योंकि अगर तुमने समय गंवाया तो बहुत देर हो जाएगी।"

अपनी पूरी ताकत जुटाकर बंदर खड़ा हुआ और सुअर और साधु सैंड को विदाई के

निर्देश दिए: "जब तक मैं अपना काम कर लेता हूँ, तब तक आप यहाँ गुरु के साथ बैठे रहें। अगर आपको कोई जादुई हवा चलती हुई दिखाई दे, तो समझ लेना कि लड़के शहर छोड़कर जा रहे हैं।"

Sanzang and the other two disciples said, "We invoke the Saviour Bhaisajya – guru Buddha. We invoke the Saviour Bhaisajya – guru Buddha."

जैसे ही महान ऋषि द्वार के बाहर निकले, उन्होंने सीटी बजाई, हवा में उठे, अपने हाथों से एक मंत्र बनाया और जादुई शब्द बोले, "ओम शुद्ध धर्म जगत" का उच्चारण किया और नगर देवता, स्थानीय देवताओं, अनुष्ठान करने वाले अमर प्राणियों, चारों दिशाओं और केंद्र के धर्म के रक्षकों, चार कर्तव्य देवताओं, छह डिंग और छह जिया और शिक्षा के संरक्षकों का आह्वान किया।

वे सभी उनके पास आए, जहां वे हवा में थे, उन्हें प्रणाम किया और कहा, "हे महान ऋषि, आपने हमें आधी रात में किस अत्यावश्यक कार्य के लिए बुलाया है?"

“मेरी यात्रा मुझे भिक्षुभूमि ले आई है,” बंदर ने उत्तर दिया, “जहाँ का राजा दुष्ट है और बुरी मान्यताओं में विश्वास रखता है। वह छोटे लड़कों के दिल निकालकर उन्हें एक औषधि में मिलाना चाहता है, जिससे उसे अमरता प्राप्त करने की आशा है। मेरे गुरु को यह अत्यंत घृणित लगा और उन्होंने मुझे लड़कों को बचाने और राक्षस का नाश करने के लिए कहा है। इसीलिए मैंने आप सभी सज्जनों को यहाँ बुलाया है। मैं चाहता हूँ कि आप अपनी जादुई शक्तियों का उपयोग करके सभी छोटे लड़कों को, उनके पिंजरों समेत, शहर की दीवार के ऊपर से उठाकर किसी पर्वत की घाटी या घने जंगल में ले जाएँ।”

उन्हें एक-दो दिन वहीं रखना। उन्हें फल खिलाना और भूखा मत रहने देना। छुपकर उन पर नज़र रखना और उन्हें डराना या रुलाना मत। जब मैं बुराई को खत्म कर दूं, देश में सुशासन स्थापित कर दूं और राजा को सुधार के लिए मना लूं और जाने लगूं, तब तुम्हें उन्हें मेरे पास वापस लाना होगा।

सभी देवताओं ने उनके आदेश सुने और फिर अपने बादलों को धरती पर उतारा ताकि वे अपनी जादुई शक्तियों का प्रयोग कर सकें। शहर में एक तेज़ नकारात्मक हवा चलने लगी, जिसके साथ ही एक सर्वव्यापी और भयावह कोहरा छा गया।

तेज हवा के कारण आकाश के सभी तारे धुंधले पड़ गए थे;

जादुई कोहरे के कारण कई मील तक चंद्रमा दिखाई नहीं दे रहा था।
शुरू में हवा बहुत तेज चल रही थी।
और फिर अचानक तेज आंधी चलने लगी।
जब तेज हवाएं चल रही थीं
अध्याय 78
1090
पश्चिम की यात्रा
सभी अपने बच्चों को बचाने के लिए द्वार की ओर दौड़े;
फिर तूफान में
वे अपने ही खून के रिश्तों को पिंजरे में बचाना चाहते थे।
हवा इतनी ठंडी हो गई थी कि किसी ने भी अपना सिर बाहर निकालने की हिम्मत नहीं की;
ठंड इतनी तेज थी कि कपड़े लोहे की तरह जम गए।
माता-पिता ने व्यर्थ ही चारों ओर देखा;
सभी परिवार शोक से व्याकुल थे।
भयावह हवा पूरे भूभाग पर बह निकली।
जैसे ही देवता टोकरियों में बैठे लड़कों को अपने साथ ले गए।
हालांकि वह शोक और दुःख की रात थी।
अगले दिन सभी को खुशी मिलने वाली थी।
इस विषय पर एक और कविता है जो इस प्रकार है:
शाक्यमुनि धर्म में करुणा का भाव हमेशा से ही प्रबल रहा है;
अच्छाई की प्राप्ति ही महान वाहन की व्याख्या करती है।
अनेक पवित्र जन अच्छाई का संचय करते हैं;
तीन शरणों और पांच उपदेशों के लिए सामंजस्य आवश्यक है।
भिक्षु की भूमि को उसके राजा द्वारा नष्ट नहीं किया जाना था।
जब एक हजार छोटे लड़कों को अपनी जान गंवानी पड़ी।
बंदर और उसका मालिक उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले आए थे।
जिससे महान ज्ञान से भी अधिक पुण्य प्राप्त होता है।
रात के तीसरे पहर तक देवताओं ने सभी मुर्गियों के पिंजरों को उठाकर सभी सुरक्षित

स्थानों पर छिपा दिया था।
इसके बाद बंदर ने अपना शुभ प्रकाश उतारा और सीधे सरकारी छात्रावास में वापस चला गया, जहाँ उसे गुप्त रूप से यह सुनकर आनंद हुआ कि बाकी तीनों अभी भी "हम उद्धारकर्ता भैषज्यगुरु बुद्ध का आह्वान करते हैं" का जाप कर रहे थे।
"गुरुजी," वह उनके पास जाते हुए बोला, "मैं वापस आ गया हूँ। नकारात्मक हवा कैसी थी?"
अध्याय 78
1091
पश्चिम की यात्रा
"शानदार," पिग ने कहा।
"बच्चों को बचाने का काम कैसा रहा?" संजांग ने पूछा।
“उनमें से हर एक को बचा लिया गया है,” बंदर ने जवाब दिया। “जब हम दोबारा यात्रा शुरू करेंगे तो उन सभी को वापस ले आएंगे।” स्वामी ने सोने से पहले बार-बार उसका धन्यवाद किया।
जब संजांग भोर में जागा तो उसने अपने सबसे अच्छे वस्त्र पहने और कहा, "वुकोंग, मैं सुबह की सभा में अपना पासपोर्ट प्रस्तुत करने जा रहा हूँ।"
“अगर आप अकेले जाएंगे, स्वामी जी,” बंदर ने उत्तर दिया, “मुझे डर है कि आप संभाल नहीं पाएंगे। मुझे आपके साथ चलने दीजिए। इससे मुझे इस देश में फैली बुराई के बारे में पता चल सकेगा।”
"अगर तुम जाओगे तो तुम सम्मान देने से इनकार कर दोगे," संजांग ने कहा, "और राजा इसे बुरा मान सकता है।"
"मैं दिखाई नहीं दूंगा," बंदर ने कहा। "मैं तुम्हारे साथ छुपकर जाऊंगा और तुम्हारी रक्षा करूंगा।" यह सुनकर संजांग बहुत प्रसन्न हुआ।
उसने पिग और फ्रायर सैंड को सामान और घोड़े की देखभाल करने के लिए कहा था और जैसे ही वह निकलने वाला था, तभी छात्रावास का अधीक्षक उससे मिलने आया। अधीक्षक उसके द्वारा आज पहने गए वस्त्रों और कल पहने गए वस्त्रों में अंतर देखकर आश्चर्यचकित रह गया।
उनका चोगा जटाधारी कपड़े का था, जिस पर विदेशी रत्न जड़े हुए थे;
उन्होंने अपने सिर पर सोने की नोक वाला वैरोचना मुकुट पहन रखा था।

उन्होंने नौ छल्लों वाली एक मठवासी छड़ी पकड़ रखी थी।
और उसने अपने हृदय में एक दिव्य प्रकाश छिपा रखा था।
पासपोर्ट उसके शरीर से कसकर बंधा हुआ था।
ब्रोकेड में लिपटा हुआ, और उसके अंदर एक और कपड़ा।
वह धरती पर उतरे अर्हत की तरह चल रहा था;
उनका चेहरा सचमुच एक जीवित बुद्ध जैसा था।
जब अधीक्षक ने सान्ज़ांग का विनम्रतापूर्वक अभिवादन किया, तो उन्होंने उनके कान में धीरे से सलाह दी कि वे उन मामलों में दखल न दें जो उनके काम के नहीं हैं। सान्ज़ांग ने सिर हिलाकर सहमति दी। महान ऋषि चुपके से द्वार के पास एक जगह पर गए, मंत्र का उच्चारण किया, खुद को झटका दिया और एक छोटे से कीड़े में बदल गए जो तेज भिनभिनाहट के साथ सान्ज़ांग के मुकुट की ओर उड़ गया।
संजांग ने सरकारी छात्रावास छोड़ा और सीधे महल की ओर चल पड़ा।
महल के द्वार पर पहुँचकर संज़ंग ने एक हिजड़ा अधिकारी को देखा, जिसके सामने उन्होंने झुककर कहा, "पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश ने मुझे पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए भेजा है। अब मेरे पास अध्याय 78 है।"

"आपके प्रतिष्ठित देश में पहुँचकर मुझे अपना पासपोर्ट जाँच और वापसी के लिए प्रस्तुत करना होगा। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इसकी सूचना महामहिम को दें।" हिजड़े ने ऐसा ही किया।
राजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "दूर से आया भिक्षु अवश्य ही पवित्र पुरुष होगा," और उन्होंने संज़ंग को अंदर बुलाने का आदेश दिया। जब आदरणीय भिक्षु ने सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों पर प्रणाम किया, तो उन्हें अंदर आने और बैठने के लिए आमंत्रित किया गया। संज़ंग ने राजा को धन्यवाद दिया और बैठ गए। राजा कमजोर और थके हुए लग रहे थे।
जब उन्होंने अभिवादन करने के लिए हाथ उठाए तो वे ठीक से ऐसा नहीं कर पाए, और वे लगातार बोलने में असमर्थ थे। उनकी दाहिनी दृष्टि इतनी कमजोर हो गई थी कि संजांग द्वारा दिए गए दस्तावेज़ को पढ़ने के लिए उन्हें कई बार प्रयास करने पड़े, उसके बाद ही वे उस पर हस्ताक्षर कर सके, मुहर लगा सके और उसे तांग पुजारी को

लौटा सके, जिन्होंने उसे फिर से रख दिया।
राजा अभी यह पूछने ही वाले थे कि वे धर्मग्रंथ क्यों ला रहे हैं, तभी उनके एक सहायक ने सूचना दी, "महामहिम राष्ट्राध्यक्ष यहाँ आए हैं।" अपने एक युवा हिजड़े सेवक का सहारा लेकर राजा सिंहासन से नीचे उतरे और राष्ट्राध्यक्ष का अभिवादन किया। संज़ंग जल्दी से उठे, एक तरफ खड़े हुए और पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि राष्ट्राध्यक्ष एक वृद्ध ताओवादी थे जो शान से सिंहासन की सीढ़ियों की ओर बढ़ रहे थे।
उसने अपने सिर पर हंस के पीले रंग की रेशमी टोपी पहन रखी थी।
उसके शरीर के चारों ओर रेशम और सारस के पंखों से बना एक सुगंधित लबादा था।
और उनकी कमर पर नीले मखमल की तिहरी पट्टी बंधी हुई थी।
उसके पैरों में भांग और घास के कपड़े से बनी चप्पलें थीं;
उसकी बेंत की छड़ी के शीर्ष पर एक अजगर कुंडली मारकर बैठा था।
उसकी छाती पर बनी थैली पर अजगर, फीनिक्स और फूलों की कढ़ाई की गई थी।
उनके रत्न जैसे चेहरे से खुशहाली झलक रही थी;
उसकी ठुड्डी के चारों ओर भूरे रंग की दाढ़ी लहरा रही थी।
सुनहरी पुतलियों से लपटें निकलीं
उसकी आंखें उसकी भौहों से भी लंबी थीं।
बादल उसके कदमों के निशान का पीछा करते रहे
जब वह अगरबत्ती की खुशबू से भरी धुंध में भटक रहा था।
सीढ़ियों के नीचे खड़े अधिकारियों ने उन्हें प्रणाम करके उनका स्वागत किया।
राष्ट्र के वरिष्ठजन की उपस्थिति की घोषणा।
जब वह सिंहासन कक्ष में पहुँचे तो राष्ट्र के वरिष्ठजन ने कोई प्रणाम नहीं किया, बल्कि अभिमानपूर्वक सीधे अंदर चले गए। राजा ने झुककर प्रणाम किया और कहा, "हम अत्यंत भाग्यशाली हैं कि आपने यहाँ आने की कृपा की, राष्ट्र के वरिष्ठजन।" उन्होंने आदेश दिया कि अध्याय 78 के लिए उनके बाईं ओर एक कढ़ाईदार स्टूल रखा जाए।

बैठने के लिए बड़ा व्यक्ति।
एक कदम आगे बढ़कर संजांग ने झुककर कहा, "राष्ट्र के वरिष्ठजन को प्रणाम।"

वरिष्ठजन अपने आसन पर शान से बैठ गए, लेकिन संजांग के अभिवादन का उत्तर देने के बजाय उन्होंने राजा की ओर मुड़कर पूछा, "यह भिक्षु कहाँ से आया है?"
राजा ने उत्तर दिया, "उसे पूर्व में स्थित तांग दरबार द्वारा पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा गया है, और वह यहां अपने पासपोर्ट की जांच कराने आया है।"
राष्ट्र के वरिष्ठजन ने मुस्कुराते हुए कहा, "पश्चिम की ओर जाने वाला रास्ता अंधकारमय और निराशाजनक है। उसमें कुछ भी अच्छा नहीं है।"
"पश्चिम हमेशा से सुख-सुविधाओं की भूमि रही है," संजांग ने उत्तर दिया। "यह अच्छा क्यों नहीं होगा?"
“हमने एक पुरानी कहावत सुनी है कि भिक्षु बुद्ध के शिष्य होते हैं,” राजा ने कहा। “मुझे आश्चर्य है कि क्या यह सच है कि भिक्षु बनकर और बुद्ध की शरण में आकर कोई अमर हो सकता है।” यह सुनकर संजांग ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया:
जो भिक्षु बन जाता है, वह हर प्रकार के कारण-कार्य से मुक्त हो जाता है। प्रकृति को समझकर वह जान जाता है कि सभी धर्म निरर्थक हैं। महान ज्ञान आकस्मिक है और निर्जीव में विचरण करता है। सच्चा रहस्य छिपा हुआ है; वह क्षीणता में भटकता है। जब तीनों लोक खाली हो जाते हैं, तो सभी उत्पत्ति व्यवस्थित हो जाती हैं; जब छह इंद्रियां शुद्ध हो जाती हैं, तो सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं। दृढ़, एकाग्रचित्त और प्रबुद्ध होने के लिए हृदय को समझना आवश्यक है। जब हृदय शुद्ध हो जाता है, तो वह अकेला ही प्रकाशमान हो सकता है; जब हृदय सच्चा होता है, तो सभी क्षेत्र उससे ओतप्रोत हो जाते हैं। सच्चा स्वरूप न तो अपूर्ण है और न ही अतिरेक से युक्त है और उसे जीवन में देखा जा सकता है। माया के चित्र सदा क्षीण होते हैं।
जो हमारे बस में नहीं है, उसे पाने की चाह क्यों? ध्यान में प्रवेश करने का मार्ग पुण्य कर्मों और मौन बैठने से ही संभव है; अपने आचरण को सुधारने का मूल वास्तव में दान और दया है। महान कौशल अनाड़ीपन के रूप में प्रकट होता है और जानता है कि सभी कर्म निष्क्रियता से ही सिद्ध होते हैं। उत्तम योजना में कोई गणना शामिल नहीं होती; सब कुछ यथावत छोड़ देना चाहिए। प्रत्येक क्रिया के परिपूर्ण होने के लिए केवल एक हृदय का स्थिर रहना ही पर्याप्त है। स्त्री से शक्ति प्राप्त करके पुरुष को बलवान बनाने का प्रयास करना और औषधियों का सेवन करके आयु बढ़ाने का प्रयास करना वास्तव में मूर्खतापूर्ण है।
एकमात्र आवश्यक बात यह है कि धूल के प्रत्येक कण के सभी कारणों को त्याग

दिया जाए और प्रत्येक प्रकार का पदार्थ शून्य हो जाए। सरल और पवित्र जीवन जियो; अपनी इच्छाओं को कम रखो। तब स्वाभाविक रूप से तुम अनंत काल तक जीवन का आनंद उठाओगे।

जब राष्ट्र के वरिष्ठ ने यह सुना तो वे हँस पड़े। उन्होंने तांग पुजारी की ओर इशारा करते हुए कहा, "छी!"

"छी! तुम सरासर बकवास कर रहे हो, साधु। तुम प्रकृति को समझने की बात कर रहे हो, और तुम उस धर्म के अनुयायी हो जो निर्वाण का उपदेश देता है। तुम्हें प्रकृति के स्रोत का कोई ज्ञान नहीं है। ध्यान में लीन होने के लिए एक मृत वृक्ष की तरह स्थिर बैठे रहना आत्म-साधना और आत्म-संतोष के लिहाज से व्यर्थ प्रयास है। कहावत के शब्दों में,

बैठो, बैठो, बैठो;

तुम्हारी पीठ फट गई है।

आग बहुत तेज है;

अच्छा, ऐसा नहीं है।

आपको इस बात का बिल्कुल भी एहसास नहीं है:

"अमरता का अभ्यास करने वाले की हड्डियां मजबूत होती हैं; जो मार्ग को प्राप्त कर लेता है उसकी आत्मा सबसे जादुई होती है।"

अपना कटोरा और करछुल लेकर वह अपने मित्रों से मिलने पहाड़ों में जाता है; वह मानवता के कल्याण के लिए हर प्रकार की जड़ी-बूटियाँ चुनता है। वह अमर फूलों से एक टोपी बनाता है, अपना पलंग बनाने के लिए सुगंधित ऑर्किड तोड़ता है। वह गाता है, ताली बजाता है और नाचता है, फिर सो जाता है। मार्ग का उपदेश देते हुए वह परमेश्वर के सिद्धांतों का प्रचार करता है; वह पवित्र जल से मानव जगत की बुराई का नाश करता है। वह स्वर्ग और पृथ्वी की सबसे उत्तम साँस लेता है, सूर्य और चंद्रमा का सार समेटता है। नकारात्मक और सकारात्मक शक्तियों को नियंत्रित करके वह अमृत की रचना करता है; अग्नि और जल पर महारत हासिल करके भ्रूण का निर्माण होता है। महीने के सोलहवें दिन नकारात्मकता धुंधले और अस्पष्ट रूप से समाप्त हो जाती

है। शीत ऋतु के सत्ताईसवें दिन सकारात्मकता अंधेरे और रहस्यमय रूप से बढ़ने लगती है। वह चारों ऋतुओं की जड़ी-बूटियाँ एकत्र करता है, नौ रूपांतरणों को पोषित करने के लिए अपने अमृत को परिष्कृत करता है। अपने नीले फीनिक्स पर सवार होकर वह बैंगनी महल में आरोहण करता है; अपने सफेद सारस पर सवार होकर वह जैस्पर की राजधानी जाता है। वह स्वर्ग के समस्त वैभवों का दर्शन करता है और अद्भुत मार्ग की शक्ति का प्रमाण देता है। इसकी तुलना अपने शाक्यमुनि के ध्यान उपदेशों, आत्मा के उन्मूलन और निर्वाण से कीजिए, जो आपको इस नश्वर शरीर से मुक्ति दिलाता है। इनमें से कोई भी आपको सांसारिक धूल से ऊपर नहीं उठा सकता। तीनों शिक्षाओं में यह सर्वोच्च है; केवल यही मार्ग सदा से पूजनीय रहा है।

यह व्याख्या सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुए और दरबार के सभी अधिकारियों ने प्रशंसा करते हुए कहा, "वाह, यह तो अद्भुत है, 'केवल यही मार्ग सर्वत्र श्रेष्ठ रहा है'।" अपने प्रतिद्वंद्वी को इतनी प्रशंसा मिलते देख संजांग को बहुत अपमान महसूस हुआ। तब राजा ने अपने विदेश मामलों के विभाग को आदेश दिया कि जब दूर देश से भिक्षु पश्चिम की यात्रा के लिए प्रस्थान करें तो उनके लिए शाकाहारी भोजन का भोज आयोजित किया जाए।

संज़ंग ने राजा की दयालुता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और चले गए। जैसे ही वे सिंहासन कक्ष से निकलकर महल से बाहर जा रहे थे, तभी एक बंदर उनके मुकुट के ऊपर से उड़कर उनके कान में फुसफुसाया, "स्वामी, राष्ट्र के वरिष्ठ एक दुष्ट आत्मा हैं और राजा पर जादू कर दिया गया है। आप वापस अपने छात्रावास में जाकर भोजन की प्रतीक्षा कीजिए, मैं यहाँ से कुछ जानकारी जुटाता हूँ।"

संजांग यह बात समझ गया और महल के मुख्य द्वार से बाहर निकल गया।

हम उनके बारे में और कुछ नहीं कहेंगे। बंदर को देखिए, वह सिंहासन कक्ष में लगे जेड के पर्दे की ओर सीधा उड़ता है और उस पर उतरता है। अधिकारियों की कतारों में से राजधानी के सैन्य कमांडरों ने आगे बढ़कर सूचना दी, "महाराज, कल रात एक ठंडी हवा शहर के हर वार्ड के हर घर से हंसों के पिंजरों में बंद छोटे लड़कों को उड़ा ले गई। वे पिंजरों समेत गायब हो गए हैं।"

इस खबर ने राजा को भयभीत और क्रोधित कर दिया। उन्होंने राष्ट्र के वरिष्ठजन से कहा, "ज़रूर स्वर्ग ही हमारा विनाश कर रहा है। महीनों तक गंभीर बीमारी से जूझने के बाद, जिसे शाही चिकित्सक ठीक नहीं कर पाए थे, हमें सौभाग्य से आपके अमृत का

सूत्र प्राप्त हुआ। आज दोपहर को हम लड़कों का विच्छेदन करके उनके हृदय निकालकर अमृत में मिलाने की तैयारी कर रहे थे। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि एक ठंडी हवा उन सबको उड़ा ले जाएगी। अगर यह स्वर्ग का विनाश नहीं है, तो और क्या है?"

राष्ट्र के वरिष्ठजन ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "चिंता मत कीजिए। उन्हें नष्ट करके स्वर्ग महाराज को शाश्वत जीवन प्रदान कर रहा है।"

"जब स्वर्ग के लोग अभी-अभी नष्ट हो चुके हैं, तो आप यह दावा कैसे कर सकते हैं कि स्वर्ग मुझे शाश्वत जीवन दे रहा है?" राजा ने पूछा।

“आज सुबह जब मैं दरबार में आ रहा था,” राष्ट्र के वरिष्ठजन ने उत्तर दिया, “मैंने एक अद्वितीय और चमत्कारी औषधि देखी जो 1,111 छोटे बच्चों के दिलों से कहीं अधिक श्रेष्ठ होगी। वे केवल महाराज के जीवन को एक हजार वर्ष तक बढ़ा सकते हैं, लेकिन यदि आप मेरी औषधि को इस दूसरी औषधि के साथ लें तो आप एक सौ मिलियन वर्ष तक जीवित रह सकते हैं।”

राजा को यह समझ नहीं आ रहा था कि यह सहायक कौन हो सकता है, लेकिन बार-बार पूछने पर ही राष्ट्र के वरिष्ठ ने उत्तर दिया, "पूर्व से शास्त्र लाने के लिए भेजे जा रहे भिक्षु के अंग शुद्ध हैं और चेहरे की बनावट सुस्पष्ट है। उनका शरीर ऐसे व्यक्ति का है जिसने दस जन्मों तक अपने आचरण का अभ्यास किया है। वे एक भिक्षु रहे हैं।"

(अध्याय 78)

उन्होंने बचपन से ही अपनी मर्दाना पवित्रता को बरकरार रखा है, जो उन्हें उन छोटे लड़कों से दस हजार गुना बेहतर बनाता है। अगर आप उनके हृदय से काढ़ा बनाकर मेरे अमृत के साथ पिला सकें, तो मैं आपको अत्यंत दीर्घायु की गारंटी दे सकता हूँ।

जब भ्रमित राजा ने यह सुना तो उसने इस पर पूरी तरह विश्वास कर लिया। उसने राष्ट्र के वरिष्ठ से कहा, "आपने हमें पहले क्यों नहीं बताया? यदि यह उतना ही अच्छा है जितना आप कह रहे हैं, तो हमें उसे अभी यहीं रोक लेना चाहिए था और उसे जाने नहीं देना चाहिए था।"

“इससे कोई समस्या नहीं होगी,” राष्ट्र के वरिष्ठ ने कहा। “आपने विदेश मामलों के विभाग को पहले ही उनके लिए शाकाहारी भोज आयोजित करने का आदेश दे दिया

है। भोजन किए बिना वे शहर छोड़कर नहीं जा सकते। तत्काल आदेश जारी करके द्वारों को पूरी तरह बंद कर दिया जाए। सरकारी छात्रावास को घेरने के लिए सेना भेजें और उस भिक्षु को यहाँ लाएँ। पहले हम उनके साथ विनम्रतापूर्वक व्यवहार करके उनका दिल जीतने की कोशिश करेंगे। यदि वे मान जाते हैं, तो हम उनका अंग काटकर उन्हें राजसी अंतिम संस्कार देंगे, उनके लिए एक मंदिर बनवाएँगे और उन्हें भेंट चढ़ाएँगे। यदि वे नहीं मानते, तो हम कठोर तरीके अपनाएँगे। हम उन्हें बाँधकर उनका अंग काट सकते हैं। कोई समस्या नहीं होगी।" भ्रमित शासक ने यह सुझाव मान लिया और सभी द्वारों को बंद करने का आदेश दिया। फिर उसने राजरक्षक बल के अधिकारियों और सैनिकों को छात्रावास को घेरने के लिए भेजा।

यह सब पता चलने पर बंदर सीधे छात्रावास की ओर भागा, अपने असली रूप में लौट आया और तांग पुजारी से बोला, "गुरुजी, कुछ भयानक हुआ है, बहुत भयानक।" संजांग ने अभी-अभी सुअर और साधु सैंड के साथ राजा का शाकाहारी भोज शुरू ही किया था कि इस अचानक घोषणा से उसकी तीनों शारीरिक शक्तियाँ बिखर गईं और उसके सातों छिद्रों से धुआँ निकलने लगा। वह पसीने से तरबतर होकर धूल में गिर पड़ा, और उसे न तो कुछ दिखाई दे रहा था और न ही वह कुछ बोल पा रहा था।

फ्रायर सैंड इतना घबरा गया कि वह उसे वापस अपने पैरों पर खड़ा करने में मदद करने के लिए आगे आया और पुकारने लगा, "जाग जाओ, गुरुजी, जाग जाओ।"

"इतनी बुरी बात क्या है?" सुअर ने पूछा। "इतनी बुरी बात क्या है? तुम्हें मालिक को इतना डराने के बजाय, प्यार से बताना चाहिए था।"

“जब स्वामीजी महल से चले गए, तो मैं निगरानी करने के लिए वापस आ गया,” बंदर ने उत्तर दिया। “वह राष्ट्र का बुजुर्ग एक दुष्ट आत्मा है। थोड़ी देर बाद ही शहर की सेना ने आकर बताया कि ठंडी हवा छोटे लड़कों को उड़ा ले जा रही है। इससे राजा परेशान हो गया, लेकिन राष्ट्र के बुजुर्ग ने यह कहकर उसे शांत किया कि यह स्वर्ग द्वारा उसे अमर जीवन प्रदान किया जा रहा है। हे स्वामीजी, वह आपके हृदय को अमरता के अमृत में सहायक के रूप में उपयोग करना चाहता है। भ्रमित राजा ने इस दुष्ट सुझाव को मान लिया है और अपने सर्वश्रेष्ठ सैनिकों को इस सराय को घेरने का आदेश दिया है। उसने एक सहायक को भी आपसे आपका हृदय मांगने के लिए भेजा है, हे स्वामीजी।”

"तुम तो बड़े दयालु और करुणामय हो," सुअर ने हंसते हुए कहा। "तुमने लड़कों की

जान बचाई और हवा को भी ठीक से चलने दिया, लेकिन अब तुमने हमें इस भयानक मुसीबत में डाल दिया है।"
कांपते-कांपते हुए, संजांग घिसटते हुए अपने पैरों पर खड़ा हुआ, बंदर को पकड़ लिया और विनती भरे स्वर में बोला,
"हे शिष्य, हम इससे कैसे बाहर निकलेंगे?"
"अगर तुम इससे बाहर निकलना चाहते हो," बंदर ने कहा, "तो एक स्विच लगाना पड़ेगा।"
"स्विच से आपका क्या मतलब है?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
बंदर ने उत्तर दिया, "यदि तुम जीवित रहना चाहते हो, तो शिष्य को गुरु बनना होगा और गुरु को शिष्य। ऐसा करो और हम सुरक्षित रहेंगे।"
"मेरी जान बचाओ," संजांग ने कहा, "और मैं खुशी-खुशी तुम्हारा शिष्य बन जाऊंगा या तुम्हारे शिष्य का भी शिष्य बन जाऊंगा।"
अध्याय 78
1096
पश्चिम की यात्रा
“तो फिर संकोच नहीं करना चाहिए,” बंदर ने जवाब दिया और आगे कहा, “सूअर, तुरंत थोड़ी मिट्टी मिलाओ।” उस मूर्ख ने अपने रेक से थोड़ी मिट्टी ढीली की, फिर पानी लाने के लिए बाहर जाने की हिम्मत न करते हुए, खुद पानी बनाने के लिए अपना कुर्ता उठाया। इससे उसने बदबूदार मिट्टी का एक ढेर बनाया और बंदर को दे दिया। बंदर के पास उसे पीटकर चपटा करने और अपने चेहरे पर इस तरह लगाने के अलावा कोई चारा नहीं था कि वह बंदर के चेहरे जैसा दिखे। फिर उसने अपने मालिक से खड़े होने और न हिलने-डुलने को कहा, जबकि उसने अपने चेहरे पर मुखौटा लगाया, एक मंत्र पढ़ा, एक जादुई साँस फूँकी और कहा, “बदल जाओ!”
आदरणीय बुजुर्ग अब बिल्कुल बंदर जैसे दिख रहे थे। उन्होंने अपने कपड़े उतारकर बंदर के कपड़े पहन लिए, जबकि बंदर ने अपने गुरु के कपड़े पहनकर हाथों से मंत्र पढ़ा, जादुई शब्द बोले, खुद को हिलाया और बिल्कुल तांग पुजारी जैसा दिखने लगा। यहां तक कि सुअर और साधु सैंड भी यह नहीं बता पाए कि वह वास्तव में तांग पुजारी नहीं थे।
जैसे ही उन्होंने अपना वेश बदला, घंटियों और ढोलों की आवाज़ सुनाई दी और भाले

और तलवारों का एक घना जंगल प्रकट हुआ। शाही अंगरक्षकों के कमांडरों ने अपने तीन हज़ार सैनिकों के साथ छात्रावास को घेर लिया था। एक शाही सहायक छात्रावास के मुख्य हॉल में आकर पूछने लगा, "पूर्व में स्थित तांग दरबार के आदरणीय महोदय कहाँ हैं?"

छात्रावास का अधीक्षक घबराकर घुटनों के बल गिर पड़ा और इशारा करते हुए बोला, "वहाँ उस अतिथि कक्ष में।"

इसके बाद सहायक कमरे में गया और बोला, "तांग राजवंश के आदरणीय बुजुर्ग, महाराज ने आपको बुलवाया है।"

पिग और फ्रायर सैंड नकली बंदर की रक्षा के लिए उसके दोनों ओर खड़े थे, जबकि नकली तांग पुजारी दरवाजे से बाहर निकला, झुककर बोला, "महामहिम, महाराज मुझसे क्या कहना चाहते हैं?"

उन्होंने मुझे क्यों बुलवाया है?" सहायक ने आगे बढ़कर उन्हें पकड़ लिया और कहा, "हम दोनों महल जा रहे हैं। महाराज को आपकी कोई ज़रूरत होगी।" अफसोस!

दुष्टता अच्छाई और दया से कहीं अधिक शक्तिशाली थी;

अच्छाई और दया ने केवल तबाही को जन्म दिया।

अगर आपको नहीं पता कि वे इस प्रस्थान से बचेंगे या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 79

गुफा में खोजबीन करते हुए वे उस राक्षस से मिलते हैं जिसकी उम्र दीर्घायु है।

राज करने वाले सम्राट ने छोटे लड़कों को बचाया

कहानी बताती है कि कैसे शाही सहायक ने नकली तांग पुजारी को सरकारी छात्रावास से घसीटकर बाहर निकाला और शाही अंगरक्षकों से घिरे हुए उसे सीधे महल के द्वार तक ले गया, जहाँ उसने हिजड़े द्वारपाल से कहा, "कृपा करके महाराज को सूचित कर दीजिए कि हम तांग पुजारी को ले आए हैं।" हिजड़ा द्वारपाल जल्दी से महल के अंदर गया और यह सूचना भ्रमित राजा को दी, जिसने उन्हें अंदर लाने का आदेश दिया।

सभी अधिकारी सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों के नीचे घुटने टेककर बैठ गए, जबकि नकली तांग पुजारी उनके बीच में अकेला खड़ा रह गया।

"भिक्षुलैंड के राजा," वह चिल्लाया, "आपने मुझे यहाँ क्या कहने के लिए बुलाया है?"

अध्याय 79

“हम एक ऐसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं जो कई दिनों से बिना किसी सुधार के बनी हुई है,” राजा ने उत्तर दिया। “अब सौभाग्य से राष्ट्र के वरिष्ठ ने हमें एक उपचार विधि दी है। अब केवल एक सहायक औषधि की आवश्यकता है। आदरणीय महोदय, हमने आपको इसलिए बुलाया है ताकि आपसे वह सहायक औषधि प्राप्त कर सकें। यदि हम स्वस्थ हो जाते हैं, तो हम आपके लिए एक मंदिर बनवाएंगे जिसमें चारों ऋतुओं में भेंट चढ़ाई जाएगी और हमारे देश द्वारा आपके लिए शाश्वत रूप से धूप जलाई जाएगी।”

"मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूँ," नकली तांग पुजारी ने उत्तर दिया, "और मैं अपने साथ कुछ भी नहीं लाया हूँ। मुझे नहीं पता कि राष्ट्र के वरिष्ठ ने आपको किस सहायक वस्तु की आवश्यकता बताई है।"

"आपका हृदय, आदरणीय महोदय," भ्रमित सम्राट ने उत्तर दिया।

"महाराज, मैं आपसे खुलकर बात करूंगा," नकली तांग पुजारी ने कहा। "मेरे कई दिल हैं। मुझे नहीं पता कि आप कौन सा चाहते हैं।"

राजा के बगल में खड़े राष्ट्र के वरिष्ठ नेता ने कहा, "भिक्षु, मुझे तुम्हारा काला हृदय चाहिए।"

“ठीक है,” नकली तांग पुजारी ने उत्तर दिया। “तुरंत अपना चाकू निकालो और मेरा सीना खोल दो। अगर वहाँ काला हृदय मिला तो मैं उसे आज्ञापूर्वक तुम्हें अर्पित कर दूंगा।”

भ्रमित राजा ने प्रसन्नतापूर्वक उसका धन्यवाद किया और उपस्थित एक अधिकारी को गाय के कान के आकार की धार वाला एक छोटा चाकू लाने का आदेश दिया, जिसे नकली तांग पुजारी को सौंप दिया गया। चाकू लेकर, नकली तांग पुजारी ने अपने कपड़े उतारे, अपनी छाती फुलाई, अपना बायां हाथ अपने पेट पर दबाया और अपने दाहिने हाथ में मौजूद चाकू से अपने पेट की त्वचा को चीर दिया। एक ज़ोरदार आवाज़ हुई और दिलों का पूरा ढेर बाहर लुढ़क गया। सभी नागरिक अधिकारी भय से पीले पड़ गए; सैन्य अधिकारी सुन्न पड़ गए।

जब राष्ट्र के वरिष्ठ ने सिंहासन कक्ष के अंदर से यह देखा तो उन्होंने कहा, "यह भिक्षु संशयवादी स्वभाव का है। इसके मन में बहुत सारे विचार हैं।"

नकली तांग पुजारी ने फिर एक-एक करके खून से लथपथ दिलों को सबके सामने उठाया। उनमें एक वफादार लाल दिल, एक शुद्ध सफेद दिल, एक पीला दिल, एक लालची दिल, एक यश-लोभी दिल, एक ईर्ष्यालु दिल, एक चालाक दिल, एक अति-प्रतिस्पर्धी दिल, एक महत्वाकांक्षी दिल, एक अभिमानी दिल, एक हत्यारा दिल, एक दुष्ट दिल, एक डरा हुआ दिल, एक सतर्क दिल, एक विधर्मी दिल और एक अवर्णनीय उदासी से भरा दिल शामिल था। काले दिल को छोड़कर हर तरह का बुरा दिल मौजूद था। भ्रमित शासक भयभीत हो गया, वह कुछ बोल नहीं पाया और कांपती हुई आवाज़ में बोला, "इन्हें हटाओ! इन्हें हटाओ!"

नकली तांग पुजारी ने जितना हो सकता था उतना ले लिया था, इसलिए उसने अपना जादू त्याग दिया और वापस अपने असली रूप में आकर भ्रमित राजा से कहा, "महाराज, आप बिल्कुल भी समझदार नहीं हैं। हम सभी भिक्षुओं का हृदय अच्छा है। केवल आपके इस राष्ट्र के बुजुर्ग का हृदय काला है। उनका हृदय औषधि में सहायक हो सकता है। यदि आपको विश्वास नहीं है तो मैं उनका हृदय निकालकर आपको दिखाऊंगा।"

जब राष्ट्र के वरिष्ठ ने यह सुना तो उन्होंने आँखें चौड़ी करके ध्यान से देखा। उन्होंने देखा कि भिक्षु का चेहरा बिल्कुल बदल गया था। हे भगवान! पाँच सौ वर्ष पूर्व प्रसिद्ध महान ऋषि बंदर को पहचानकर वे बादल में छिपकर भाग निकले। बंदर ने कलाबाजी की और हवा में उछलकर चिल्लाया, "तुम कहाँ जा रहे हो? मुझसे यह लो!" वरिष्ठ ने अपने सिर पर अजगर वाली छड़ी से बंदर के वार को रोका। दोनों ने आकाश में एक ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी।

जैसा आप चाहें वाला डंडा

अध्याय 79

1098

पश्चिम की यात्रा

और ड्रैगन स्टिक

आकाश में बादल बनाना।

राष्ट्र का वरिष्ठ व्यक्ति वास्तव में एक दुष्ट आत्मा था।

अपनी दुष्ट बेटी के मोहक आकर्षण का उपयोग करते हुए।

राजा ने अपनी वासना के कारण स्वयं को बीमार कर लिया था;

वह राक्षस लड़कों का कत्ल करना चाहता था।
महान ऋषि की दिव्य शक्तियों से कोई बच नहीं सकता था।
राक्षसों को पकड़ने और उनके पीड़ितों को बचाने के लिए।
सिर पर लाठी के प्रहार वास्तव में बहुत क्रूर थे;
जिस तरह से लाठी ने उनका सामना किया, वह शानदार था।
उन्होंने इतनी भीषण लड़ाई लड़ी कि आकाश धुंध से भर गया।
शहर और लोगों को अंधकार और भय में धकेलना।
नागरिक और सैन्य अधिकारियों की आत्माएं हवा में उड़ गईं;
रानियों और उपपत्नियों के चेहरे पीले पड़ गए।
भ्रमित राजा ने छिपने की हर संभव कोशिश की।
कांपते-कांपते हुए, कुछ भी करने में असमर्थ।
वह लाठी पहाड़ों के बाघ की तरह भयंकर थी;
कर्मचारी ऐसे घूम उठे जैसे कोई अजगर समुद्र से बाहर निकल रहा हो।
अब उन्होंने भिक्षुलैंड में उत्पात मचा दिया।
क्योंकि अच्छाई और बुराई को स्पष्ट रूप से अलग किया गया था।
जब दुष्ट आत्मा ने बंदर के साथ बीस से अधिक कठिन दौर तक लड़ाई लड़ी, तो उसका अजगर वाला डंडा सोने की पट्टी वाले डंडे के सामने टिक नहीं पाया। डंडे से छल करते हुए, आत्मा ने स्वयं को ठंडी रोशनी की किरण में बदल लिया और महल के भीतरी कक्ष में उतर गया ताकि वह उस राक्षसी रानी को अपने साथ ले जा सके जिसे उसने राजा को भेंट किया था। वह भी ठंडी रोशनी में बदल गई और गायब हो गई।
अपने बादल को नीचे लाते हुए, महान ऋषि महल में उतरे और अधिकारियों से कहा, "आपके पास एक उत्कृष्ट राष्ट्र-प्रमुख हैं!" सभी अधिकारियों ने पवित्र भिक्षु को धन्यवाद देते हुए उनके सामने सिर झुकाया।
"इसकी कोई ज़रूरत नहीं है," बंदर ने कहा। "जाओ और देखो कि तुम्हारा भ्रमित राजा कहाँ है।"
अध्याय 79
1099
पश्चिम की यात्रा
अधिकारियों ने जवाब दिया, "जब हमारे सम्राट ने लड़ाई देखी तो वे डर के मारे छिप

गए। हमें नहीं पता कि वे किस महल में हैं।"
“उसे तुरंत ढूंढो,” बंदर ने उन्हें आदेश दिया। “शायद सुंदरी रानी उसे ले गई हो।” अधिकारियों ने यह सुनते ही बंदर के साथ सीधे सुंदरी रानी के कमरों की ओर दौड़ पड़े, इस बात की परवाह किए बिना कि ये भीतरी कमरे थे। कमरे खाली थे और राजा का कोई निशान नहीं था। सुंदरी रानी भी कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। मुख्य, पूर्वी और पश्चिमी महलों की रानियाँ और छह परिसरों की रानियाँ सभी महान ऋषि को धन्यवाद देने के लिए प्रणाम करने आईं।
"उठो," बंदर ने कहा। "अभी धन्यवाद देने का समय नहीं है। जाओ और अपने स्वामी को खोजो।"
कुछ देर बाद, चेतावनी कक्ष के पीछे से चार-पाँच हिजड़े प्रकट हुए, जो भ्रमित राजा का समर्थन कर रहे थे। सभी मंत्री ज़मीन पर लेट गए और एकमत होकर पुकारने लगे, "महाराज! महाराज!"
हम आभारी हैं कि यह पवित्र भिक्षु यहाँ धोखेबाज का पर्दाफाश करने आया। राष्ट्र का वरिष्ठ व्यक्ति एक दुष्ट आत्मा था और रानी सौंदर्य भी गायब हो गई है।" यह सुनकर राजा ने बंदर को महल के भीतरी कक्ष से सिंहासन कक्ष में बुलाया और वहाँ उसने बंदर को धन्यवाद देते हुए प्रणाम किया।
“आदरणीय महोदय,” उन्होंने कहा, “जब आप आज सुबह दरबार में आए थे तो आप बहुत सुंदर लग रहे थे। अब आपने अपना रूप क्यों बदल लिया है?”
"महाराज, मैं आपको यकीन से कह सकता हूँ कि आज सुबह जो आया था, वह मेरे गुरु सान्ज़ांग थे, जो तांग सम्राट के छोटे भाई थे। मैं उनका शिष्य सन वुकॉन्ग हूँ। हम दो और शिष्य हैं, झू वुनेन्ग, जिन्हें सुअर भी कहा जाता है, और शा वुजिंग, जिन्हें रेत भिक्षु भी कहा जाता है, जो दोनों इस समय सरकारी छात्रावास में हैं। मैंने अपने गुरु का रूप धारण कर लिया और राक्षस को हराने के लिए यहाँ आया हूँ क्योंकि मुझे पता था कि आप उसकी बुरी सलाहों के बहकावे में आ गए थे और मेरे गुरु का हृदय निकालकर अपने अमृत में मिलाने वाले थे।"
जब राजा ने यह सुना तो उन्होंने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे तुरंत छात्रावास जाकर बंदर के गुरु और साथी शिष्यों को बुला लाएँ। यह खबर सुनकर कि भाई बंदर अपने असली रूप में लौट आया है और उसने हवा में ही दुष्ट आत्मा से लड़ाई लड़ी है, संज़ंग इतना भयभीत हो गया कि उसकी आत्माएं बिखर गईं। सौभाग्य से सुअर और

साधु रेत ने उसे संभाल लिया। उसका चेहरा अभी भी बदबूदार कीचड़ से सना हुआ था और वह पूरी तरह से उदास और दुखी था, तभी उसने किसी को पुकारते सुना, "धर्मगुरु, हम भिक्षुभूमि के राजा द्वारा भेजे गए सेवक हैं, जो आपको महाराज का धन्यवाद ग्रहण करने के लिए दरबार में आमंत्रित करने आए हैं।"

"महोदय, डरो मत," सुअर ने कहा, "डरो मत। इस बार वह तुम्हारा दिल निकालने के लिए तुम्हें नहीं बुला रहा है।"

मुझे पूरा यकीन है कि बड़े भाई को सफलता मिल गई है और वे आपको धन्यवाद देने के लिए वहां आमंत्रित कर रहे हैं।"

"भले ही वे मुझे वहां आमंत्रित करने आए हों क्योंकि वह सफल हो गया है, मैं इस बदबूदार मुखौटे के साथ किसी का भी सामना नहीं कर सकता," संजांग ने जवाब दिया।

"हमारे पास कोई विकल्प नहीं है," पिग ने कहा। "हमें अपने बड़े भाई से मिलने जाना ही होगा। उनके पास कोई न कोई समाधान जरूर होगा।"

आदरणीय बुजुर्ग के पास वास्तव में कोई विकल्प नहीं था सिवाय इसके कि वे पिग और फ्रायर सैंड के साथ सामान ढोते और घोड़े को आगे ले जाते हुए छात्रावास के मुख्य हॉल में जाएँ। जब मंत्रियों ने उन्हें देखा तो वे सब भयभीत हो गए।

उन्होंने कहा, "मेरे स्वामी, उन दोनों के सिर राक्षसों जैसे हैं।"

"कृपया हमारी कुरूपता पर आपत्ति न करें," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया। "हम दोनों के शरीर पिछले जीवन के अवशेष हैं। अगर मेरे स्वामी मेरे बड़े भाई को देख लें तो वे तुरंत सुंदर बन जाएंगे।"

जब वे तीनों महल पहुँचे तो बिना बुलाए ही सीधे सिंहासन कक्ष में चले गए। बंदर ने उन्हें देखते ही मुड़कर उनसे मिलने के लिए नीचे आ गया। (अध्याय 79)

उसने अपने गुरु के चेहरे से मिट्टी का मुखौटा हटाया और जादुई साँस से उन पर फूँक मारकर "परिवर्तन!" कहा, जिससे तांग पुजारी वापस अपने असली रूप में आ गए। संज़ंग अब बेहतर मूड में थे। राजा सिंहासन कक्ष से नीचे आकर उन्हें "धर्म के स्वामी" और "प्राचीन बुद्ध" कहकर उनका अभिवादन किया। गुरु और शिष्यों ने घोड़े को बाँधा और सिंहासन कक्ष में प्रवेश किया।

"महाराज, क्या आपको पता है कि ये राक्षस कहाँ से आए हैं?" बंदर ने पूछा। "मैं जाकर उन दोनों को पकड़ लेता हूँ। इससे भविष्य में आने वाली विपत्तियाँ टल जाएँगी।"

तीनों महलों और छह परिसरों की सभी रानियों, पत्नियों और रखेलों ने, जो चमकीले हरे जेड के पर्दे के पीछे थीं, जब बंदर को यह कहते सुना कि वह भविष्य की विपत्ति को समाप्त करने जा रहा है, तो उन्होंने एक बाहरी व्यक्ति, और वह भी एक पुरुष, के सामने प्रकट होने की अपनी सभी झिझक को त्याग दिया और बाहर आकर उसे प्रणाम किया और कहा, "हे पवित्र भिक्षु और आदरणीय बुद्ध, हम आपसे विनती करते हैं कि आप अपनी धर्म शक्तियों से उन्हें जड़ से नष्ट कर दें। यह सबसे बड़ा अनुग्रह होगा, और हम निश्चित रूप से आपको भरपूर पुरस्कार देंगे।" उनके प्रणाम का तुरंत जवाब देते हुए बंदर ने राजा से पूछा कि राक्षस कहाँ रहते हैं।

“हमने उनसे तीन साल पहले यहाँ आने पर पूछा था,” राजा ने लज्जित होकर उत्तर दिया, “उन्होंने हमें बताया कि यह शहर से लगभग बीस मील दक्षिण में, विलो स्लोप पर स्थित प्योर स्प्लेंडर ग्रेंज में है। राष्ट्र के बुजुर्ग बूढ़े थे और उनका कोई पुत्र नहीं था, केवल उनकी दूसरी पत्नी की एक पुत्री थी। वह मात्र पंद्रह वर्ष की अविवाहित थी। उन्होंने उसे हमें भेंट करने की पेशकश की, और क्योंकि हम उस लड़की को पसंद करते थे, हमने उसे स्वीकार कर लिया। वह महल की सभी महिलाओं में प्रिय थी। हमने कभी नहीं सोचा था कि हम इतने बीमार पड़ जाएँगे कि रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियंस के सभी नुस्खे भी बेकार हो जाएँगे। फिर उन्होंने हमें बताया कि उनके पास एक अमृत का सूत्र है जिसके लिए उबले हुए छोटे लड़कों के दिलों के काढ़े की आवश्यकता होती है। अपनी मूर्खता में हमने उनकी बात मान ली और आम लोगों में से कुछ लड़कों को चुन लिया। आज दोपहर हम ऑपरेशन करके उनके दिल निकालने वाले थे। हमने कभी नहीं सोचा था कि आप हमारे पास आएँगे, पवित्र भिक्षु, और ठीक उसी क्षण सभी लड़के अपने पिंजरों में गायब हो जाएँगे। फिर उन्होंने कहा कि जैसे आप एक ऐसे पवित्र भिक्षु थे जिन्होंने दस जन्मों तक सत्य का अभ्यास किया और अपनी मूल पुरुषत्व शक्ति को अभी तक नहीं खोया था; आपका हृदय उन छोटे लड़कों के हृदय से दस हजार गुना अधिक शक्तिशाली होगा। अपने क्षणिक भ्रम में हम यह नहीं समझ पाए कि आप उस दुष्ट राक्षस को पहचान लेंगे, हे पवित्र भिक्षु। हम आशा करते हैं कि आप अपने महान धर्म का पूर्ण उपयोग करके भविष्य में आने वाली

किसी भी विपत्ति को दूर करेंगे। राष्ट्र की समस्त संपत्ति आपको पुरस्कार के रूप में दी जाएगी।

“मैं तुम्हें सच बताता हूँ,” बंदर ने जवाब दिया। “मेरे मालिक को पिंजरे में बंद छोटे बच्चों पर दया आ गई, इसलिए उसने मुझे उन्हें छिपाने को कहा। हमें धन देने की बात मत करो। जब मैं उन दुष्ट राक्षसों को पकड़ लूँगा, तो यह मेरे लिए एक अच्छा काम साबित होगा। मेरे साथ आओ, सुअर।”

“आप जो भी कहें, बड़े भाई,” सुअर ने उत्तर दिया। “बात सिर्फ इतनी है कि मेरा पेट खाली है: मैं थोड़ा कमजोर महसूस करूँगा।” तब राजा ने विदेश मामलों के विभाग को तुरंत शाकाहारी भोजन तैयार करने का आदेश दिया। कुछ ही देर में भोजन आ गया।

पेट भर खाने के बाद, सुअर ने हिम्मत जुटाई और बंदर के साथ बादल पर सवार होकर ऊपर उठ गया। राजा, रानियाँ, रानियाँ और सभी नागरिक एवं सैन्य अधिकारी इतने चकित थे कि उन्होंने आकाश की ओर प्रणाम किया और कहा, "ये सचमुच अमर हैं और बुद्ध पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं।" महान ऋषि सुअर को बीस मील दक्षिण की ओर ले गए, उनकी हवा और बादल को रोक दिया और राक्षसों के घर की खोज शुरू कर दी। उन्हें केवल एक स्वच्छ धारा दिखाई दी जो किनारों के बीच बह रही थी, जिन पर हजारों विलो के पेड़ उगे थे: उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि शुद्ध वैभव का फार्म कहाँ हो सकता है। वास्तव में:

उनकी निगाहों के सामने अनंत विस्तार फैला हुआ था;
तटबंध विलो पेड़ों और धुंध के बीच गायब हो गया था।

अध्याय 79

1101

पश्चिम की यात्रा

जब उन्हें फार्महाउस नहीं मिला तो महान ऋषि सूर्य ने अपने हाथों से एक मंत्र बनाया और जादुई शब्द "ओम" का उच्चारण किया।

और उन्होंने स्थानीय देवता को बुलाया, जो कांपते हुए पास आए, घुटनों के बल गिर पड़े और पुकार कर बोले, "महान ऋषि, विलो बैंक के स्थानीय देवता आपको प्रणाम करते हैं।"

"डरो मत," बंदर ने कहा, "मैं तुम्हें नहीं मारूंगा। मुझे बस इतना बताओ: क्या विलो हिल पर कोई प्योर स्प्लेंडर ग्रेंज है? और वह कहाँ है?"

स्थानीय देवता ने उत्तर दिया, "यहाँ एक शुद्ध वैभव गुफा है, लेकिन शुद्ध वैभव का कोई बाड़ा कभी नहीं रहा। मेरा मानना है कि आप भिक्षुभूमि से आए हैं, महान ऋषि।"
“जी हाँ,” बंदर ने उत्तर दिया। “भिक्षुलैंड के राजा को एक दुष्ट आत्मा ने धोखा दिया था, जब तक कि मैं वहाँ नहीं पहुँचा। मैंने उस राक्षस की असलियत जान ली, उसे पराजित किया और भगा दिया। वह ठंडी रोशनी की किरण में बदल गया और मुझे नहीं पता कि वह कहाँ गया। जब मैंने भिक्षुलैंड के राजा से इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने मुझे बताया कि जब उस राक्षस ने तीन साल पहले पहली बार उस लड़की को उनके सामने पेश किया था, तो उन्होंने उस आत्मा से उसके बारे में पूछा था। राक्षस ने कहा कि वह शहर से बीस मील दक्षिण में विलो हिल पर स्थित प्योर स्प्लेंडर ग्रेंज में रहता है। मुझे यह जगह, इसकी जंगल वाली पहाड़ी, तो मिल गई है, लेकिन मुझे कहीं भी प्योर स्प्लेंडर ग्रेंज नहीं दिख रहा है। इसीलिए मैंने आपसे इसके बारे में पूछा था।”
स्थानीय देवता ने प्रणाम करते हुए कहा, "हे महामहिम, मैं क्षमा चाहता हूँ। यह भिक्षुलैंड के राजा के राज्य का हिस्सा है, और मुझे यहाँ कड़ी निगरानी रखनी चाहिए थी। लेकिन उस दुष्ट आत्मा के पास इतनी भयानक जादुई शक्तियाँ थीं कि अगर मैंने उसके कारनामों का खुलासा कर दिया होता, तो वह आकर मुझे बहुत परेशान करता। इसीलिए वह कभी पकड़ा नहीं गया। अब जब आप यहाँ हैं, महामहिम, तो आपको बस दक्षिणी तट पर स्थित नौ शाखाओं वाले विलो वृक्ष के चरणों में जाना है, उसके चारों ओर तीन बार बाईं ओर और तीन बार दाईं ओर चक्कर लगाना है, दोनों हाथों से वृक्ष पर प्रहार करना है और तीन बार 'खुल जाओ' का उच्चारण करना है। तब शुद्ध वैभव गुफा महल प्रकट हो जाएगा।"
यह जानकर महान ऋषि ने स्थानीय देवता को फिर से विदा कर दिया, सुअर को लेकर नदी पार की और उस विलो वृक्ष की खोज में निकल पड़े। वहाँ सचमुच एक ऐसा वृक्ष था जिसके एक ही तने पर नौ शाखाएँ थीं। "काफी दूर हट जाओ,"
बंदर ने सुअर को आदेश दिया, "जब तक मैं द्वार खोलता हूँ, तब तक तुम मेरी मदद करना।"
इस आदेश के जवाब में सुअर पेड़ से लगभग तीन सौ गज की दूरी पर खड़ा हो गया, जबकि महान ऋषि ने स्थानीय देवता की सलाह का पालन करते हुए पेड़ के चारों ओर तीन बार बाईं ओर और तीन बार दाईं ओर चक्कर लगाया और फिर दोनों हाथों से उस पर प्रहार करते हुए चिल्लाया, "खुल जाओ! खुल जाओ!" एक पल बाद, दो दरवाजे

ज़ोरदार आवाज़ के साथ खुल गए और पेड़ कहीं दिखाई नहीं दिया। दरवाजों के अंदर कई रंगों की तेज़ रोशनी थी, लेकिन मानव जीवन का कोई निशान नहीं था। अपनी दिव्य शक्ति पर विश्वास करते हुए, बंदर अंदर घुस गया। उसने देखा कि यह एक सुंदर जगह थी: टिमटिमाते बादल, जिनमें से
सूर्य और चंद्रमा ने उनकी चमक छीन ली।
गुफाओं से सफेद बादल उमड़ रहे थे,
आंगन में चमकीले हरे रंग की लाइकेनें बेतहाशा उग रही हैं।
रास्ते में जगह-जगह दुर्लभ फूल अपनी सुंदरता से प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।
सीढ़ियों पर लगे पौधे सुगंधित फूलों से एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।
अध्याय 79
1102
पश्चिम की यात्रा
हवा गर्म थी
जहां हमेशा वसंत ऋतु रहती थी।
यह बिल्कुल परीलोक जैसा था।
या पेंगलाई, अमर लोगों का स्वर्ग।
बेंचों पर लताएँ उग आई थीं;
पुल पर बेलें बेतहाशा फैली हुई थीं।
मधुमक्खियाँ फूल लेकर गुफा में उड़ गईं;
पत्थर की दीवार के पास से गुजरते हुए तितलियाँ ऑर्किड के फूलों के साथ छेड़छाड़ कर रही थीं।
करीब से देखने के लिए तेजी से आगे बढ़ते हुए बंदर ने देखा कि पत्थर की जाली पर 'अमर महल' खुदा हुआ था।
बेहद भव्य। खुद को रोक न पाने के कारण, वह पत्थर की दीवार फांदकर अंदर गया और उसने देखा कि बूढ़ा राक्षस एक खूबसूरत औरत को गले लगाए हुए है और हांफते हुए उसे भिक्षुभूमि में घटी सारी घटना बता रहा है।
"यह हमारा मौका था," उन्होंने एक साथ कहा। "तीन साल की मेहनत का फल आज मिलना चाहिए था, लेकिन उस बंदर ने सब कुछ बर्बाद कर दिया।"
बंदर अपनी लाठी लहराते हुए और चिल्लाते हुए उनकी ओर दौड़ा, "मैं तुम्हें देख लूँगा,

मूर्खों। तुम्हारा क्या मतलब है, यह तुम्हारा मौका था? ले लो!" महिला को एक तरफ धकेलते हुए, बूढ़े राक्षस ने अपनी अजगर के सिर वाली छड़ी को लाठी के वार को रोकने के लिए घुमाया। गुफा के सामने उन दोनों के बीच एक ज़बरदस्त लड़ाई हुई, जो पिछली लड़ाई से बिल्कुल अलग थी।
उठी हुई लाठी से सुनहरी रोशनी निकली;
छड़ी के हिलने से विषैली वाष्प निकल रही थी।
राक्षस ने कहा,
"तुम्हारी अज्ञानता में मेरे घर आने की हिम्मत कैसे हुई?"
बंदर ने उत्तर दिया,
"मैं दुष्ट राक्षसों को वश में करने का इरादा रखता हूँ।"
अध्याय 79
1103
पश्चिम की यात्रा
राक्षस ने कहा,
"राजा के प्रति मेरा प्रेम तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं था।"
तो तुम यहाँ दादागिरी करने और दखलंदाजी करने क्यों आए हो?
बंदर ने उत्तर दिया,
"दयालु भिक्षु को कुशासन का अंत करना चाहिए।"
हम बच्चों के इस नरसंहार को सहन नहीं कर सके।
जैसे-जैसे वे एक-दूसरे पर शब्दों की बौछार करते गए, शत्रुता बढ़ती गई:
कर्मचारियों ने लाठी के वार को रोक दिया जब वार दिल पर पड़ रहे थे।
कीमती फूल अपने जीवन के लिए संघर्ष करते हुए नष्ट हो गए; हरी काई पैरों तले रौंदने पर फिसलन भरी हो गई।
जैसे-जैसे वे संघर्ष करते गए, गुफा में रोशनी कम होती गई:
चट्टानों पर खिले सुगंधित फूल कुचल गए थे।
उनके हथियारों की टक्कर से पक्षी उड़ने की हिम्मत नहीं कर पाए;
उनकी चीखों से सारी सुंदरियां दहशत में भाग गईं।
अब सिर्फ राक्षस और बंदर ही बचे थे।
एक ऐसा तूफान खड़ा करना जो धरती पर गर्जना करते हुए आगे बढ़े।

धीरे-धीरे लड़ाई उन्हें गुफा से बाहर ले गई।
जहां वुनेन्ग ने अपने अनियंत्रित क्रोध को खुलकर प्रकट किया।
अंदर मचे शोर-शराबे की आवाज़ से बाहर इंतज़ार कर रहा सुअर इतना उत्तेजित हो गया कि उसका दिल खुजली करने लगा। खुजली से राहत न मिलने पर उसने अपना रेक उठाया, नौ शाखाओं वाले विलो पेड़ को ज़मीन पर पटक दिया, फिर उस पर इतनी ज़ोर से कई बार मारा कि लगभग न सुनाई देने वाली आवाज़ के साथ खून बह निकला। "यह पेड़ एक आत्मा बन गया है," उसने कहा, "यह पेड़ एक आत्मा है।" सुअर ने अभी एक और प्रहार के लिए अपना रेक उठाया ही था कि उसने बंदर को राक्षस को अपने पीछे खींचते हुए देखा। बिना कुछ कहे वह मूर्ख आगे बढ़ा, अपना रेक उठाया और अध्याय 79

हमला हुआ। बूढ़ा राक्षस पहले से ही बंदर से निपटना मुश्किल पा रहा था, इसलिए सुअर के हमले ने उसे और भी हताश कर दिया। लड़ाई छोड़कर उसने खुद को झटका दिया, ठंडी रोशनी की किरण में बदल गया और फिर से पूर्व की ओर चल पड़ा। वे दोनों राक्षस को जाने नहीं देना चाहते थे, बल्कि उसका पीछा करते हुए पूर्व की ओर बढ़ गए।
युद्ध के शोर के बीच उन्हें फीनिक्स और सारस की आवाज़ सुनाई दी और उन्होंने ऊपर देखा तो पाया कि यह आकाश के दक्षिणी ध्रुव से आया दीर्घायु का तारा था। ठंडी रोशनी को ढकते हुए बूढ़े ने पुकारा, "इतनी जल्दी मत कीजिए, महान ऋषि; अब उसका पीछा करना बंद कीजिए, मार्शल तियान पेंग। यह बूढ़ा ताओवादी आपको प्रणाम करता है।"
बंदर ने भी शिष्टाचार का जवाब देते हुए पूछा, "मेरे भाई, दीर्घायु, तुम कहाँ से आए हो?"
"तुमने ठंडी रोशनी को रोक दिया है, तो तुमने राक्षस को पकड़ लिया होगा, बूढ़े मोटे आदमी," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा।
"ये रहा, ये रहा," दीर्घायु के सितारे ने मुस्कुराते हुए कहा। "मुझे उम्मीद है कि आप दोनों सज्जन उसकी जान बख्श देंगे।"
"भाई, उस बूढ़े शैतान का तुमसे कोई लेना-देना नहीं है," बंदर ने कहा, "तो तुम उसके

लिए विनती करने क्यों आए हो?"
"वह मेरा दूत है," तारे ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "मैंने लापरवाही से उसे भागने दिया ताकि वह यहाँ एक राक्षस बन जाए।"
"चूंकि वह तुम्हारा है, इसलिए उसे उसके असली रूप में वापस बदल दो ताकि हम उसे देख सकें," बंदर ने कहा।
दीर्घायु के तारे ने ठंडी रोशनी छोड़ी और चिल्लाया, "दुष्ट प्राणी! अगर तुम मृत्युदंड से बचना चाहते हो तो तुरंत अपने असली रूप में लौट आओ।" राक्षस ने पलटकर देखा तो पता चला कि वह वास्तव में एक सफेद हिरण था। दीर्घायु के तारे ने अपना डंडा उठाते हुए कहा, "दुष्ट प्राणी, तुमने मेरा डंडा भी चुरा लिया है।" हिरण समर्पण भाव से लेट गया, कुछ बोल नहीं पा रहा था, बस सिर झुकाकर रो रहा था। उसे देखो: जेड की शिला की तरह चित्तीदार।
और सात शाखाओं वाले सींगों का एक जोड़ा धारण किए हुए।
जब उसे भूख लगती थी तो वह जड़ी-बूटी के बगीचे में जाया करता था;
जब सुबह उसे प्यास लगती थी तो वह धुंध से भरी धारा से पानी पीता था।
अपने बढ़ते वर्षों में उन्होंने स्वयं को उड़ना सिखा लिया था।
और कई दिनों के परिश्रम से उसने रूपांतरण की कला में महारत हासिल कर ली थी।
अब जब उसने अपने स्वामी की पुकार सुन ली थी
उसने अपना सामान्य रूप धारण किया और धूल में लेट गया।
बंदर को धन्यवाद देते हुए, दीर्घायु के सितारे ने अपने हिरण पर सवार होकर जाना शुरू ही किया था कि बंदर ने उसे पकड़ लिया और कहा, "इतनी जल्दी नहीं, भाई। अभी कुछ और काम बाकी हैं।"
अध्याय 79
1105
पश्चिम की यात्रा
"कौन सी नौकरियां?" स्टार ने पूछा।
“लड़की अभी तक पकड़ी नहीं गई है और मुझे नहीं पता कि वह किस तरह की राक्षसी है,” बंदर ने जवाब दिया। “हमें भिक्षुलैंड वापस जाकर उस भ्रमित शासक से मिलना होगा और उसे दिखाना होगा कि वे असल में क्या हैं।”
"तो फिर मैं धैर्य रखूंगा," सितारे ने जवाब दिया। "आप और मार्शल तियान पेंग गुफा में

जाकर लड़की को पकड़ सकते हैं और उसे वापस लाकर राजा को दिखा सकते हैं कि वह वास्तव में क्या है।"

"बस थोड़ी देर रुकिए," बंदर ने कहा। "हम जल्द ही वापस आ जाएंगे।"

फिर सुअर ने अपनी हिम्मत जुटाई और बंदर के साथ सीधे परम वैभव के अमर महल में चला गया।

"दुष्ट आत्मा को पकड़ो," वह चिल्लाया, "दुष्ट आत्मा को पकड़ो।" इस जोरदार गर्जना को सुनकर, भय से कांपती हुई और भागने में असमर्थ सुंदरी पत्थर की दीवार के पीछे भागी, लेकिन पीछे निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

"तुम कहाँ जा रहे हो?" सुअर चिल्लाया। "मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, तुम आदमखोर, तुम वेश्या आत्मा। मेरे रेक से कोशिश करो!"

क्योंकि वह सुंदरी निहत्थी थी, इसलिए वह पलटवार नहीं कर सकी। उसने वार से बचते हुए खुद को ठंडी रोशनी की किरण में बदल लिया और भाग गई। तभी महान ऋषि ने उसे रोक लिया और अपने डंडे से दो जोरदार प्रहार करके उसे ज़मीन पर गिरा दिया। वह अपने असली रूप में लौट आई - एक सफेद चेहरे वाली लोमड़ी। खुद को रोक न पाने पर उस मूर्ख ने अपना रेक उठाया और उसके सिर पर वार कर दिया। कई मुस्कानों वाली वह महान सुंदरी अब एक बालों वाली लोमड़ी बन गई थी।

"उसे चूर-चूर मत कर दो," बंदर ने कहा, "उसे इसी हालत में रखो ताकि उसे उस भ्रमित राजा को दिखा सको।" उस मूर्ख ने गंदगी की परवाह किए बिना उसकी पूंछ पकड़ ली और उसे बंदर के साथ गुफा के प्रवेश द्वार से बाहर खींच ले गया।

यहां उसने दीर्घायु के तारे को हिरण के सिर पर हाथ फेरते और उसे फटकार लगाते हुए देखा।

"दुष्ट प्राणी," वह कह रहा था, "तुम मुझसे भागकर यहाँ आकर आत्मा क्यों बन गए? अगर मैं न आता तो महान ऋषि सूर्य तुम्हें अवश्य मार डालते।"

"भाई, तुम क्या कह रहे हो?" बंदर ने गुफा से बाहर निकलते हुए पूछा।

"मैं हिरणों को डांट रहा था," स्टार ने बताया।

हिरण के सामने मरी हुई लोमड़ी का शव फेंकते हुए सुअर ने कहा, "शायद तुम्हारी बेटी है।"

हिरण ने सिर हिलाया, फिर अपना सिर बढ़ाकर शव को सूंघा और शोक में सिसकने लगा, मानो किसी अपने को खोने का दुख मना रहा हो। तभी दीर्घायु के देवता ने

उसके सिर पर एक थप्पड़ मारा और कहा, "दुष्ट प्राणी। किस्मत से बच गए। उसे क्यों सूंघ रहे हो?" फिर उन्होंने अपने वस्त्र के चारों ओर बंधी कमरबंद उतारी, उसे हिरण की गर्दन में बांधा और यह कहते हुए उसे अपने साथ ले गए, "महान ऋषि, चलिए भिक्षुलोक चलते हैं।"

"एक पल रुको," बंदर ने कहा, "मुझे ऐसा लग रहा है कि मुझे इस पूरी जगह को साफ कर देना चाहिए ताकि कोई और दुष्ट प्राणी फिर कभी यहां न रह सके।"

जब सुअर ने यह सुना तो उसने अपना फावड़ा उठाया और विलो के पेड़ को बेतहाशा तोड़ने लगा। तभी बंदर ने जादुई शब्द "ओम" का उच्चारण किया और स्थानीय देवता को एक बार फिर आमंत्रित किया। बंदर ने उसे आदेश दिया, "कुछ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठा करो और एक भयंकर आग जलाओ जो तुम्हारे इस स्थान से बुराई को दूर कर दे। फिर तुम्हें कोई परेशान नहीं कर पाएगा।"

फिर स्थानीय देवता मुड़े और एक प्रचंड नकारात्मक हवा के साथ अपने आत्मिक सैनिकों को पिछले वर्ष से सूख चुकी सभी प्रकार की मुरझाई हुई वनस्पतियों को इकट्ठा करने के लिए ले गए: पाले से जमी घास, पतझड़ की घास, नॉटवीड घास, पहाड़ी घास, ड्रैगनबोन घास, सरकंडे और नरकट। आग लगते ही वे तेल या घी की तरह जलने लगे।

अध्याय 79

1106

पश्चिम की यात्रा

“सूअर, पेड़ गिराने की कोई ज़रूरत नहीं है,” बंदर ने कहा। “गुफा के मुँह को इससे भर दो और आग लगा दो: इससे पूरी जगह जलकर राख हो जाएगी।” और सचमुच, आग लगते ही दुष्ट राक्षसों का शुद्ध वैभव का घर एक धधकती भट्टी में बदल गया। तभी बंदर ने स्थानीय देवता को विदा किया और दीर्घायु के तारे के साथ लोमड़ी को सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों तक घसीटते हुए ले गया, जहाँ उसने राजा से कहा, “ये रही आपकी सुंदर रानी। क्या आप अब इसके साथ मौज-मस्ती करना चाहते हैं?”

इससे राजा को गहरा सदमा लगा। महान ऋषि बंदर को सफेद हिरण के साथ दीर्घायु तारा लाते देख सिंहासन कक्ष में राजा, मंत्री, रानियाँ और सभी राजा के सामने झुक गए। बंदर राजा के पास गया और उन्हें उठाकर बोला, "मेरे सामने मत झुको। यह हिरण राष्ट्र का मुखिया है। तुम्हें तो इसके सामने झुकना चाहिए।"

राजा लज्जा से इतना व्याकुल हो गया कि वह केवल इतना ही कह सका, "हे पवित्र भिक्षु, मेरे राज्य के लड़कों को बचाने के लिए आपका धन्यवाद। यह वास्तव में दिव्य कृपा का कार्य था।" इसके बाद उसने विदेश मामलों के विभाग को शाकाहारी भोज तैयार करने का आदेश दिया, महल के पूर्वी भाग को खुलवाया और दक्षिणी ध्रुव के प्राचीन संत, तारामंडल के स्वामी को तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों के साथ धन्यवाद भोज में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।

संजांग ने दीर्घायु के तारे को प्रणाम किया, जैसा कि फ्रायर सैंड ने भी किया।

"यदि सफेद हिरण आपके प्राणियों में से एक है, हे दीर्घायु के सितारे," उन दोनों ने पूछा, "तो वह यहाँ आकर इतना उपद्रव कैसे बन गया?"

"कुछ समय पहले पूर्वी वैभव के स्वामी मेरे पर्वत पर आए थे," दीर्घायु के तारे ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "और मैंने उन्हें शतरंज खेलने के लिए राजी कर लिया। वह दुष्ट प्राणी हमारे पहले खेल के समाप्त होने से पहले ही भाग गया। जब मेरे आगंतुक के जाने के बाद वह नहीं मिला, तब मैंने उंगलियों पर गिनकर अनुमान लगाया कि वह यहीं आया होगा। मैं उसकी तलाश में यहाँ पहुँचा ही था कि मेरी मुलाकात महान ऋषि सूर्य से हुई, जो अपनी अपार शक्तियों का प्रयोग कर रहे थे। अगर मुझे थोड़ी भी देर हो जाती तो वह राक्षस मर चुका होता।" उनके अपनी बात पूरी करने से पहले ही घोषणा हो गई कि भोज तैयार है। यह एक शानदार शाकाहारी दावत थी: कमरा रंगों से जगमगा रहा था;

हॉल में अनोखी सुगंध फैली हुई थी।

कढ़ाई से सजे पर्दों ने मेजों को भव्य बना दिया;

फर्श पर बिछे लाल कालीन भोर की रोशनी की तरह जगमगा रहे थे।

बत्तख के आकार के धूपदानों से

ईगलवुड की सुगंधित धुएं ने घुमावदार आकार ले लिया;

राजा के स्थान से पहले

वे सुगंधित सब्जियां थीं।

देखो फलों के ढेर कितने ऊंचे थे;

चीनी के ड्रेगन और शिकार की तलाश में घूमने वाले जानवर।

सांचे में ढाली गई मंदारिन बत्तखें,

1107
पश्चिम की यात्रा
लायन कन्फेक्शन्स,
देखने में बिल्कुल सजीव लग रहा है।
तोते के आकार के प्याले,
जलकौवा के चम्मच,
बिल्कुल असली जैसा दिखता है।
हर प्रकार के फल बहुतायत में उपलब्ध हैं।
प्रत्येक उत्कृष्ट व्यंजन एक विलक्षण प्रतिभा है।
विशाल लोंगन्स और कोमल बांस की कोंपलें,
ताज़ी लीची और आड़ू।
बेर और खजूर के केक से मीठी खुशबू आ रही थी;
पाइन नट्स और अंगूर शराब से भी ज्यादा सुगंधित थे।
शहद से बने कई मीठे व्यंजन,
विभिन्न प्रकार की भाप में पकाई गई पेस्ट्री,
चीनी में डूबे डोनट्स
फूलों के गुलदस्ते की तरह ढेर लगे हुए,
सुनहरी थालियों पर रखे हुए रोल के पहाड़,
चांदी के कटोरे में सुगंधित चावल के ऊंचे-ऊंचे ढेर लगे हुए थे।
गरम मिर्च के सूप में लंबी बीन्स के नूडल्स।
एक के बाद एक स्वादिष्ट व्यंजन परोसे गए।
बटन मशरूम की कोई कमी नहीं थी।
"वृक्ष-कान" कवक,
कोमल बांस की कोंपलें,
सीलवॉर्ट,
अनेक स्वादों वाली सब्जियां,
सौ प्रकार के दुर्लभ आनंद।
वे लगातार आते-जाते रहे।
अध्याय 79

भोज में परोसे गए सभी स्वादिष्ट व्यंजन।
बैठने की व्यवस्था मौके पर ही की गई थी, सर्वोच्च स्थान दीर्घायु के सितारे को दिया गया और उसके बाद सबसे उपयुक्त स्थान तांग पुजारी को। राजा उनके बीच में बैठे थे जबकि बंदर भाई, सुअर और रेत भिक्षु अगल-बगल बैठे थे। उनके साथ तीन वरिष्ठ मंत्री भी उपस्थित थे, और दरबारी रंगमंच के संगीतकारों और गायकों को प्रस्तुति देने का आदेश दिया गया था। अपने बैंगनी बादल के प्याले को पकड़े हुए, राजा ने बारी-बारी से सभी को टोस्ट किया।
केवल तांग पुजारी ही थे जिन्होंने शराब नहीं पी। सूअर ने बंदर से कहा, "भाई, मैं फल तुम्हारे लिए छोड़ देता हूँ, लेकिन मुझे सूप, रोटी और चावल भरपेट खाने को देना।" बिना सोचे-समझे उस मूर्ख ने सब कुछ एक ही बार में खा लिया। जो कुछ भी लाया गया, उसने सब चट कर लिया और कुछ भी नहीं छोड़ा।
जब भोज समाप्त होने वाला था, तब दीर्घायु के तारे ने उनसे विदा ली। राजा उनके पास गए, घुटने टेके, प्रणाम किया और तारे से रोग निवारण और दीर्घायु का रहस्य बताने की विनती की। दीर्घायु के तारे ने उत्तर दिया, "मैं कोई औषधि नहीं लाया हूँ क्योंकि मैं यहाँ अपने हिरण की खोज में आया हूँ। मैं आपको आत्म-साधना की तकनीक सिखाना चाहता हूँ, लेकिन आप शरीर से इतने दुर्बल और मन से इतने क्षीण हैं कि आप औषधि को ग्रहण नहीं कर पाएंगे। मेरे पास केवल ये तीन बेर हैं जो मैं पूर्वी वैभव के देवता को चाय के साथ अर्पित करने वाला था। चूंकि ये अभी तक खाए नहीं गए हैं, इसलिए मैं इन्हें अब आपको अर्पित कर सकता हूँ।"
राजा ने उन्हें निगल लिया, और जैसे-जैसे बीमारी ठीक होती गई, उसका शरीर धीरे-धीरे हल्का होता गया। यही उसकी अमरता प्राप्त करने की सफलता का मूल कारण था। जैसे ही सुअर ने यह देखा, उसने पुकारा, "दीर्घायु, मेरे पुराने मित्र, अगर तुम्हारे पास कुछ अग्नि बेर हों तो मुझे भी दे दो।"
“मैं कुछ नहीं लाया,” तारे ने उत्तर दिया, “लेकिन अगली बार मैं तुम्हें कई पौंड दूंगा।” फिर दीर्घायु का तारा पूर्वी मंडप से बाहर निकला, धन्यवाद व्यक्त किया, सफेद हिरण को पुकारा, उसकी पीठ पर सवार हुआ और बादल में विलीन हो गया। हम यह वर्णन नहीं करेंगे कि महल में राजा, रानियाँ और उनकी रानियाँ तथा शहर के आम लोग

सभी ने धूप जलाई और प्रणाम किया।
“शिष्यों,” संज़ंग ने कहा, “आइए हम अपना सामान समेटकर महाराज से विदा लें।” राजा ने उनसे रुकने और उन्हें उपदेश देने का अनुरोध किया। “महाराज,” बंदर ने कहा, “अब से आप अपनी यौन इच्छाओं के प्रति कम लालची हों और अधिक पुण्य अर्जित करें। आप जो भी करें, अपनी कमजोरियों की भरपाई के लिए अपनी खूबियों का इस्तेमाल करें। यही आपके रोग से मुक्ति पाने और आपकी आयु बढ़ाने का तरीका है। यही हम आपको बताएंगे।” फिर तीर्थयात्रियों को उनकी यात्रा के खर्च में सहायता के लिए सोने और चांदी के छोटे-छोटे टुकड़ों से भरी दो थालियाँ भेंट की गईं, लेकिन तांग पुजारी ने एक पैसा भी लेने से इनकार कर दिया। तब राजा के पास कोई विकल्प नहीं बचा था सिवाय इसके कि वह शाही रथ को आदेश दें और तांग पुजारी को अजगर और फीनिक्स वाले रथ में बैठने के लिए आमंत्रित करें जबकि वह, उनकी रानियाँ और उनकी पत्नियाँ पहिए धकेलें। इस प्रकार वे उन्हें महल से बाहर ले गए। सड़कों और बाजारों में आम लोग भी शुद्ध जल के कटोरे और धूपदान लेकर शहर से विदा लेने आए।
अचानक आकाश में हवा की आवाज सुनाई दी और सड़क के दोनों ओर 1,111 हंसों के पिंजरे आ गिरे।
उनमें मौजूद छोटे लड़के रो रहे थे। आकाश में अदृश्य रूप से वे देवता विराजमान थे जो उनकी देखभाल कर रहे थे: नगर और स्थानीय देवता, वेदियों के देवता, सच्चे अधिकारी, चारों दिशाओं और केंद्र के संरक्षक, चार कर्तव्य देवता, छह डिंग और छह जिया, धर्म के रक्षक और अन्य सभी, जिन्होंने एक ज़ोरदार स्वर में उत्तर दिया, "हे महान ऋषि, आपके पूर्व निर्देशों पर हम लड़कों को हंसों के पिंजरों में ले गए थे। अब जब हमें आपके कार्य में सफलता और आपके प्रस्थान का पता चला है, तो हम उन सभी को वापस ले आए हैं।" राजा, उनकी रानियाँ, उनकी रानियाँ, उनके सभी मंत्री और प्रजा घुटने टेककर प्रणाम करने लगे।
अध्याय 79
1109
पश्चिम की यात्रा
"आप सभी के प्रयासों के लिए धन्यवाद, सज्जनों," बंदर ने आकाश की ओर चिल्लाते हुए कहा। "कृपया अब आप सभी अपने-अपने मंदिरों में लौट जाएं।"

मैं लोगों से कहूँगा कि वे आपको धन्यवाद भेंट चढ़ाएँ।" एक सरसराहट की आवाज़ के साथ जादुई हवा फिर उठी और चली गई।

फिर बंदर ने शहरवासियों से कहा कि वे आकर अपने बच्चों को ले जाएँ। यह खबर तुरंत फैल गई और सभी लोग टोकरियों में रखे बच्चों को लेने आ गए। वे सचमुच बहुत खुश थे। बच्चों को अपनी बाहों में लिए वे उन्हें प्यारे और दुलारे कहकर पुकार रहे थे। नाचते-हँसते उन्होंने अपने बच्चों से कहा कि वे तांग के सरदारों को पकड़कर घर ले आएँ ताकि वे बच्चों के बचाव के लिए उनका आभार व्यक्त कर सकें। कोई भी, चाहे जवान हो या बूढ़ा, पुरुष हो या स्त्री, शिष्यों के बदसूरत चेहरों से नहीं डरा, क्योंकि वे सभी सुअर, साधु रेत, बंदर और तांग के पुजारी को भीड़ के बीच से शहर वापस ले जा रहे थे, जो अपना सामान भी लादकर घोड़े को आगे-आगे खींच रहे थे। राजा उन्हें रोक नहीं सका। एक के बाद एक परिवार ने भोज का आयोजन किया और जो लोग आतिथ्य सत्कार नहीं कर सकते थे, उन्होंने भिक्षुओं की टोपियाँ, जूते, कुर्ते, सूती मोज़े और अन्य विभिन्न आकारों के भीतरी और बाहरी वस्त्र बनाकर तीर्थयात्रियों को भेंट किए। लगभग एक महीने तक इस तरह से सत्कार किए जाने के बाद ही यात्री शहर से निकल सके। उनके चित्र बनाए गए और उनके नाम अंकित पट्टिकाएँ स्थापित की गईं; लोग इनके सामने सिर झुकाकर प्रणाम करते, धूप जलाते और भेंट चढ़ाते थे। वास्तव में: उनकी अपार दयालुता के लिए लोगों में बहुत कृतज्ञता थी।

हजारों शिशुओं की जान बचाने में।

अगर आपको नहीं पता कि आगे क्या हुआ, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।

अध्याय 80

युवती पुरुष को सशक्त बनाने के लिए साथी की तलाश करती है

अपने स्वामी की रक्षा करते हुए, बुद्धिमान वानर एक दानव के भेद को पहचान लेता है।

कहानी बताती है कि कैसे भिक्षुलैंड के राजा, मंत्री और आम लोग तांग पुरोहित और उनके तीन शिष्यों को शहर से बाहर ले गए। सात मील चलने के बाद भी वे तीर्थयात्रियों से अलग नहीं होना चाहते थे, लेकिन संज़ंग ने गाड़ी से उतरकर घोड़े पर सवार होने और उनसे विदा लेने पर ज़ोर दिया। उन्हें विदा करने आए लोग तब तक शहर नहीं लौटे जब तक कि यात्री नज़रों से ओझल नहीं हो गए।

जब चारों ने काफी देर तक यात्रा की, तब तक सर्दी और बसंत दोनों बीत चुके थे। चारों ओर जंगली फूलों और पहाड़ी वृक्षों की कोई कमी नहीं थी; सुगंधित कलियाँ चारों ओर फैली हुई थीं। तभी संजांग को अचानक एक और विशाल पर्वत उनके सामने दिखाई दिया, जिससे वह घबरा गया।

उन्होंने पूछा, "हे शिष्यों, क्या हमारे सामने इस ऊंचे पहाड़ को पार करने का कोई रास्ता है? हमें सावधान रहना चाहिए।"

“गुरुजी,” बंदर भाई हँसते हुए बोला, “एक अनुभवी यात्री को ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। आप तो किसी बिगड़े हुए राजकुमार की तरह लग रहे हैं जो कुएँ की तलहटी में बैठकर पूरे आकाश को देखने की कोशिश कर रहा हो। पुरानी कहावत है कि पहाड़ रास्ता नहीं रोक सकता: वह अपना रास्ता खुद बना लेता है। तो फिर रास्ता है या नहीं, यह क्यों पूछ रहे हो?”

"भले ही यह पहाड़ रास्ता न रोक पाए," संजांग ने उत्तर दिया, "मुझे डर है कि पहाड़ की खड़ी चट्टानों पर राक्षस और उसकी गहरी दरारों से बुरी आत्माएं निकल सकती हैं।"

अध्याय 80

1110

पश्चिम की यात्रा

“चिंता मत करो,” सुअर ने कहा, “चिंता मत करो। हम स्वर्ग से ज़्यादा दूर नहीं हैं। मैं गारंटी देता हूँ कि सब कुछ अच्छा और शांतिपूर्ण होगा—कोई परेशानी नहीं होगी।” उनकी बातें सुनते-सुनते गुरु और शिष्य बिना ध्यान दिए ही पहाड़ की तलहटी तक पहुँच गए। सोने की पट्टी वाली लाठी निकालकर बंदर चट्टान पर चढ़ गया।

“गुरुजी,” उसने पुकारा, “पहाड़ के चारों ओर एक रास्ता है। चलना बहुत आसान है। जल्दी करो!” तांग पुजारी ने अपनी चिंताएँ एक तरफ रख दीं और घोड़े को आगे की ओर चाबुक मारा। “भाई, थोड़ी देर के लिए सामान उठा लो,” साधु सैंड ने सुअर से कहा, जिसने ऐसा ही किया जबकि साधु सैंड ने घोड़े की लगाम पकड़ी हुई थी और स्वामी नक्काशीदार काठी पर बैठे थे।

वे बंदर के पीछे-पीछे खड़ी ढलान पर मुख्य रास्ते से तेज़ी से आगे बढ़े। पहाड़ कुछ इस तरह दिख रहा था: चोटी बादलों से घिरी हुई थी;

तेज धाराएँ खाइयों से नीचे बहती थीं।

रास्तों पर फूलों की खुशबू फैली हुई थी।
और असंख्य वृक्ष घने रूप से उग रहे थे।
नीले रंग के बेर थे, सफेद रंग के बेर।
हरे रंग के विलो वृक्ष और लाल रंग के आड़ू।
जहां कोयल गाती थी, वहां वसंत ऋतु लगभग समाप्त हो चुकी थी;
जब नन्ही अबाबीलों ने चहचहाना शुरू किया तो उत्सव समाप्त हो गया।
ऊबड़-खाबड़ चट्टानें,
नीले-हरे रंग के चीड़ के पेड़ जो छतरी के आकार के होते हैं।
पहाड़ी की चोटी से होकर जाने वाला रास्ता
चट्टानों की एक घुमावदार श्रृंखला पर ऊँचाई तक चढ़ गया;
भृंगता हुआ कगार
वह स्थान लताओं, घास और पेड़ों से पूरी तरह आच्छादित था।
भाले की कतार की तरह दिखने वाली चोटियाँ सुंदरता में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रही थीं;
समुद्र से दूर, घाटियों में लहरों की धाराएँ आपस में प्रतिस्पर्धा कर रही थीं।
जब गुरुजी पहाड़ों के मनोरम दृश्य को धीरे-धीरे निहार रहे थे, तभी एक पक्षी के चहचहाने की आवाज़ सुनकर उन्हें घर की याद सताने लगी। उन्होंने कहा, "शिष्यों,"
"महामहिम का आदेश प्राप्त करने के बाद"
अध्याय 80
1111
पश्चिम की यात्रा
मुझे मेरा पासपोर्ट जटाधारी पर्दे के सामने दिया गया था।
पंद्रहवीं रात को लालटेन देखते हुए मैंने पूर्वी भूमि को छोड़ दिया, और फिर तांग सम्राट से विदा हो गया।
ठीक उसी समय जब ड्रैगन और टाइगर दोनों हवाएँ मिलीं
मुझे और मेरे शिष्यों को घोड़े से जूझना पड़ा।
माउंट वू की चोटियों की संख्या बारह हो सकती है;
लेकिन मैं तुमसे दोबारा कब मिल पाऊंगा और तुम्हें देख पाऊंगा?'
“गुरुजी,” बंदर ने कहा, “आप हमेशा घर की याद में उदास रहते हैं। आप बिल्कुल भी

साधु जैसे नहीं हैं। चिंता करना छोड़िए और आगे बढ़ते रहिए: इतना परेशान मत होइए। जैसा कि पुरानी कहावत है, अगर आप अमीर और सफल बनना चाहते हैं तो आपको कड़ी मेहनत करनी होगी।”

"शिष्य, तुम्हारी बात बिल्कुल सही है," संजांग ने कहा, "लेकिन मुझे नहीं पता कि पश्चिम की ओर जाने वाला रास्ता कहाँ जाता है।"

"गुरुजी," सुअर ने कहा, "यह सब इसलिए है क्योंकि हमारे तथागत बुद्ध उन शास्त्रों को देने के लिए तैयार नहीं हैं।"

उसने रास्ता इसलिए हटाया होगा क्योंकि उसे पता है कि हम उन्हें लेने आ रहे हैं। वरना हम यात्रा के अंत तक क्यों नहीं पहुँच पा रहे हैं?

"ऐसी बकवास मत करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "बस बड़े भाई के साथ चलते रहो। जब तक हम उनके साथ रहेंगे, अंत में हम ज़रूर मंज़िल तक पहुँच जाएँगे।"

जब वे बातें कर रहे थे, तभी गुरु और शिष्यों को घने, अंधेरे चीड़ के जंगल का एक विशाल विस्तार दिखाई दिया। भयभीत होकर तांग पुजारी ने पुकारा, "वुकोंग, जैसे ही हमने पहाड़ पर वह खड़ी पगडंडी पकड़ी, हम इस घने, अंधेरे चीड़ के जंगल में आ गए। ऐसा क्यों? हमें सावधान रहना चाहिए।"

"डरने की कोई बात नहीं है," बंदर ने कहा।

"बकवास," संज़ंग ने कहा। "जो बिल्कुल सही लगे उस पर कभी भरोसा मत करो, और अच्छाई का भेस बनाकर आने वाली बुराई से सावधान रहो। मैं तुम्हारे साथ कई चीड़ के जंगलों से गुज़रा हूँ, लेकिन इतना विशाल और गहरा जंगल पहले कभी नहीं देखा। ज़रा पेड़ों को देखो:

पूर्व और पश्चिम दोनों ओर घनी आबादी वाला क्षेत्र।

उत्तर और दक्षिण की ओर जाने वाली रेखाओं में।

पूर्व और पश्चिम में घनी तरह से सिमटी हुई ये बादल अंत तक पहुँचती हैं; उत्तर और दक्षिण में रेखाओं में ये नीले आकाश को छूती हैं।

चारों ओर कांटे और झाड़ियाँ घनी तरह से उलझी हुई उगती हैं;

नॉटवीड शाखाओं के चारों ओर लिपट जाती है।

लता कुडज़ू की बेल के चारों ओर लिपट जाती है।
कुडज़ू लता के चारों ओर लिपट जाती है।
जहां लता कुडज़ू के चारों ओर लिपट जाती है
यात्री पूर्व और पश्चिम के बीच आवागमन नहीं कर सकते;
जहां कुडज़ू लताओं के चारों ओर लिपट जाती है
व्यापारी उत्तर और दक्षिण के बीच व्यापार नहीं कर सकते।
इस जंगल में
आप आधा साल बिता सकते हैं,
यह न जानते हुए कि सूर्य निकला है या चंद्रमा,
या फिर मीलों की यात्रा करें
और कभी तारे न देख पाएं।
उत्तर दिशा की ओर देखने पर दृश्य असीमित होता है;
दक्षिणी ढलानों पर झाड़ियाँ फूलों से लदी हुई हैं।
यहां हजार साल पुराने बबूल के पेड़ हैं।
दस हजार साल पुराने जुनिपर के पेड़,
वे चीड़ के पेड़ जो सर्दियों की ठंड सहन कर सकते हैं,
पहाड़ी आड़ू जो फल देते हैं,
जंगली पेओनी
और हिबिस्कस,
सभी घनी आबादी में उग रहे हैं,
इतना विचित्र कि देवता भी इसका चित्र नहीं बना सकते।
पक्षियों का चहचहाना सुनाई दे रहा था:
तोते चीख रहे हैं,
कोयल की आवाज,
पेड़ों की शाखाओं पर बैठी मैगपाई चिड़ियाएँ,

कौवे अपनी मां को खाना खिला रहे हैं,

ओरियोल पक्षी अपने हवाई नृत्य के साथ,
जैसे-जैसे मैना पक्षी अपनी आवाज को समायोजित करते हैं।
बटेर गा रही हैं,
अबाबील चहचहा रही हैं,
मैना पक्षी मनुष्यों की नकल करते हैं,
और ऐसे श्रश पक्षी जो सूत्र सुना सकते थे।
फिर ये लोग थे:
विशालकाय जानवर अपनी पूंछ हिलाते हुए,
बाघ अपने दांत पीस रहे हैं।
बूढ़ी लोमड़ियाँ और रैकून-कुत्ते जो महिलाओं के वेश में थे,
प्राचीन भूरे भेड़िये जिनकी दहाड़ से जंगल कांप उठता था।
यदि पैगोडा धारण करने वाला स्वर्ग का राजा यहाँ आया होता
राक्षसों को वश में करने की उसकी शक्ति व्यर्थ हो जाती।
महान ऋषि सूर्य भयभीत नहीं थे। उन्होंने अपने गदा से आगे का रास्ता साफ किया और तांग पुजारी को जंगल की गहराई में ले गए।
वे कई घंटों से इसी बेफिक्री से जंगल से बाहर निकलने का कोई रास्ता देखे बिना यात्रा कर रहे थे, तभी तांग पुजारी ने पुकारा, "शिष्यों, पश्चिम की ओर अपनी यात्रा में हम अनगिनत ऊबड़-खाबड़ और खतरनाक पहाड़ी जंगलों से गुज़रे हैं। शुक्र है कि हमें यह पवित्रता, सुंदरता और सुगम रास्ता मिल गया। यहाँ के दुर्लभ और अनोखे फूल सचमुच मनमोहक हैं। मैं यहाँ थोड़ी देर बैठना चाहता हूँ ताकि घोड़े को आराम मिल सके। वैसे भी, मुझे बहुत भूख लगी है। जाओ और कहीं से मेरे लिए कुछ मांस रहित भोजन ले आओ।"
“गुरुजी,” बंदर ने कहा, “कृपया घोड़े से उतर जाइए, मैं भीख मांगने जाता हूँ।” आदरणीय बुजुर्ग ने वैसा ही किया। जब सुअर ने घोड़े को एक पेड़ से बाँधा, तब साधु सैंड ने सामान नीचे रखा, भीख का कटोरा निकाला और बंदर को दे दिया।
“मालिक, यहीं चुपचाप बैठे रहिए,” बंदर ने कहा, “और ‘डर’ शब्द का एक शब्द भी मत बोलना। मैं एक पल में वापस आता हूँ।” जब संज़ंग चीड़ के पेड़ों की छाँव में सीधा बैठा था, तब सुअर और साधु सैंड फूल और फल ढूँढ़ते हुए अपना मनोरंजन कर रहे थे।

आइए उस महान ऋषि की कहानी सुनें, जिन्होंने हवा में कलाबाजी करते हुए अपने बादल को एक हॉल में उतारा और पीछे मुड़कर देखा। उन्हें चीड़ के जंगल से केवल शुभ बादल और आभाएं ही दिखाई दीं, जो कुंडली बनाकर चारों ओर फैल रही थीं।
"अच्छा, अच्छा," उसने खुद से कहा। जानते हो क्यों? वह तांग पुजारी के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त कर रहा था, जो आदरणीय स्वर्ण झींगुर का पुनर्जन्म थे और एक ऐसे पवित्र व्यक्ति थे जिन्होंने दस जन्मों तक अपने आचरण को उत्तम बनाए रखा था, और इसी कारण उनके सिर के ऊपर शुभ संकेत का ऐसा आभामंडल था।
अध्याय 80
1114
पश्चिम की यात्रा
“पांच सौ साल पहले, जब मैंने स्वर्ग में उत्पात मचाया था,” बंदर ने सोचा, “मैं सागरों के कोने-कोने तक भटकता रहा और आकाश के छोर तक उत्पात मचाता रहा। मैंने कई आत्माओं का नेतृत्व किया और खुद को स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि कहा। हमने अजगरों और बाघों को वश में किया और हमने मृत्यु के नाम पर अपना नाम लिखवाया। मैं तीन गुना सोने का मुकुट और सोने का कवच पहनता था, और हाथों में सोने की पट्टी वाली गदा और पैरों में बादलों पर चलने वाले जूते पहने, मेरे अधीन 47,000 राक्षस थे। वे सब मुझे भगवान महान ऋषि कहते थे। उन दिनों मैं सचमुच बहुत बड़ा था। लेकिन स्वर्ग के दंड से बचाए जाने के बाद से मैं उनका एक मामूली शिष्य बनकर रह गया हूँ। मुझे लगता है कि गुरु के सिर पर शुभ बादलों की ऐसी आभा है, इसलिए पूर्व की ओर हमारी वापसी यात्रा में सब कुछ अच्छा ही होगा और मुझे सच्ची सफलता अवश्य मिलेगी।”
जब बंदर भाई इसी तरह खुद को बधाई दे रहा था, तभी उसने जंगल के दक्षिण से काले धुएं का एक स्तंभ उठता देखा। "यह काला धुआं ज़रूर किसी बुरी चीज़ का संकेत है," उसने घबराकर सोचा। "हमारे सुअर या साधु सैंड से ऐसा काला धुआं नहीं आ सकता।"
जब महान ऋषि अभी भी यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि ये वाष्प वास्तव में कहाँ से आ रही है, तब संजांग जंगल में बैठकर अपने मन को शांत कर रहे थे और महाप्रज्ञापारमिता हृदय सूत्र का पाठ करते हुए बुद्ध-प्रकृति का चिंतन कर रहे थे, तभी अचानक उन्हें "मदद करो!" की एक तीखी आवाज सुनाई दी।

"यह सब तो ठीक है," संजांग ने आश्चर्य से कहा, "लेकिन जंगल के इतने गहरे हिस्से में कौन फोन कर रहा होगा?"
लगता है कोई भेड़िये, बाघ, तेंदुए या किसी और जंगली जानवर से डरता होगा। मैं जाकर देखता हूँ।
आदरणीय बुजुर्ग उठे और हज़ार साल पुराने सरू और उससे भी पुराने चीड़ के पेड़ों के बीच से लताओं और लताओं को पकड़ते हुए आगे बढ़े। वे पास पहुँचे और एक विशाल वृक्ष से बंधी एक स्त्री को देखा। उसके शरीर का ऊपरी भाग लताओं से तने से बंधा हुआ था और निचला भाग ज़मीन में धंसा हुआ था। संज़ंग रुककर बोले, "हे बोधिसत्व जी, आप यहाँ क्यों बंधी हैं?"
यह स्पष्ट था कि वह दुष्ट प्राणी एक दुष्ट राक्षस था, लेकिन सांसारिक शरीर में अपनी नश्वर आँखों के कारण संज़ंग इसे देख नहीं पा रहा था। प्रश्न के उत्तर में राक्षस ने फूट-फूटकर रोना शुरू कर दिया। उसके गुलाबी गालों से बहते आँसुओं को तो देखो। वह इतनी सुंदर थी कि उसे देखकर मछलियाँ डूब जातीं और जंगली हंस आकाश से गिर पड़ते; उसकी शोकग्रस्त और चमकती आँखों की सुंदरता चाँद को भी ढक लेती और फूलों को भी लज्जित कर देती। संज़ंग उसके पास जाने की हिम्मत नहीं कर पाया और उसने मुँह खोलकर पूछा, "हे बोधिसत्व देवी, आपने क्या अपराध किया है? मुझे बताइए ताकि मैं आपकी रक्षा कर सकूँ।"
तब उस दुष्ट आत्मा ने झटपट झूठ का पुलिंदा बुनते हुए उत्तर दिया, "स्वामी, मेरा घर पिनपो देश में है, जो यहाँ से लगभग सत्तर मील दूर है। मेरे माता-पिता दोनों घर पर हैं और वे बहुत ही नेक और धर्मपरायण हैं। उन्होंने जीवन भर अपने रिश्तेदारों से अच्छे संबंध बनाए रखे और अपने मित्रों के प्रति समर्पित रहे। निर्मल और प्रकाशमय उत्सव में उन्होंने अपने सभी रिश्तेदारों और परिवार के सदस्यों को पूर्वजों की कब्रों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने और उनकी सफाई करने के लिए आमंत्रित किया था। कुर्सियों और घोड़ों से भरा एक पूरा जुलूस शहर के बाहर जंगल में स्थित कब्रों तक गया। वहाँ हमने अपनी भेंटें रखीं और घोड़ों के कागज़ के मॉडल जलाए ही थे कि ढोल-घंटियों की आवाज़ के साथ डाकुओं का एक गिरोह हम पर टूट पड़ा। वे 'मार डालो!' चिल्लाते हुए हम पर टूट पड़े।" मेरे माता-पिता और रिश्तेदार सब घोड़े और कुर्सियाँ लेकर जान बचाकर भाग गए। मैं इतनी छोटी थी कि डर के मारे भाग भी नहीं सकी: मैं वहीं गिर पड़ी और डाकू मुझे उठाकर पहाड़ों पर ले गए। सबसे बड़ा सरदार मुझे अपनी रखैल

बनाना चाहता था, दूसरे नंबर का सरदार मुझे अपनी रखैल बनाना चाहता था, और तीसरे और चौथे दोनों मेरे रूप-रंग पर मोहित थे। सत्तर-अस्सी लोग मेरे लिए आपस में लड़ रहे थे और कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। इसलिए उन्होंने मुझे यहाँ जंगल में बाँध दिया और गिरोह को तितर-बितर कर दिया। मैं यहाँ पाँच दिन और पाँच रात से हूँ और बस किसी तरह ज़िंदा हूँ। मैं जल्द ही मर जाऊँगी। ईश्वर ही जाने कि कितनी ही पीढ़ियों पहले किस पूर्वज ने वह पुण्य अर्जित किया होगा जिसके कारण आप आज मेरे पास आए हैं, आदरणीय महोदय। मैं आपसे आपकी अपार दया की भीख माँगती हूँ। मैं आपकी इस कृपा को कभी नहीं भूलूँगी, चाहे मैं पाताल लोक के नौ झरनों के नीचे ही क्यों न पड़ी रहूँ।" जब उसने बोलना समाप्त किया तो उसके आँसू बारिश की तरह बहने लगे।

अध्याय 80

1115

पश्चिम की यात्रा

क्योंकि संज़ंग का हृदय वास्तव में दयालु था, इसलिए वह स्वयं भी रोने और सिसकने से खुद को रोक नहीं पाया। "शिष्यों!" उसने पुकारा। पिग और फ्रायर सैंड अभी भी जंगल में फूल और फल खोज रहे थे, तभी अचानक उन्होंने अपने गुरु की पीड़ा भरी पुकार सुनी।

"फ्रायर सैंड," उस मूर्ख ने कहा, "गुरुजी को यहाँ एक रिश्तेदार मिला है।"

"क्या बकवास है भाई," फ्रायर सैंड ने मुस्कुराते हुए कहा। "इतने समय से हम यहाँ हैं, हमें एक भी अच्छा इंसान नहीं मिला, तो उसका कोई रिश्तेदार कहाँ से आया होगा?"

"अगर ये रिश्तेदार नहीं हैं तो मालिक इनके लिए क्यों रो रहे हैं?" पिग ने पूछा और आगे कहा, "हमें जाकर देखना चाहिए।" फ्रायर सैंड वाकई उसी जगह वापस चले गए जहाँ वे पहले थे। घोड़े को आगे बढ़ाते हुए और सामान उठाते हुए वे मालिक के पास गए और पूछा, "क्या बात है, मालिक?"

तांग पुजारी ने पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, "सूअर, इस बोधिसत्व देवी को खोलकर उनकी जान बचाओ।" यह सही था या गलत, इसकी परवाह किए बिना, उस मूर्ख ने तुरंत काम शुरू कर दिया।

इस बीच, महान ऋषि ने आकाश में ऊपर से देखा कि घने काले धुएं ने शुभ प्रकाश को पूरी तरह से ढक लिया है। उन्होंने कहा, "यह बुरा है, यह बुरा है। यदि काला धुआं

शुभ प्रकाश को ढक रहा है, तो इसका मतलब है कि कोई बुरी शक्ति मेरे गुरु को धमका रही है। भोजन मांगने की चिंता छोड़ो—मैं गुरु से मिलने वापस जा रहा हूँ।" उन्होंने अपना बादल वापस मोड़ा और जंगल में उतरे, जहाँ उन्होंने सूअर को लापरवाही से रस्सियाँ खोलते देखा।

बंदर उसके पास पहुंचा और उसका कान पकड़कर उसे ज़मीन पर पटक दिया। "मालिक ने मुझे उसे बचाने के लिए कहा था," उस मूर्ख ने विरोध करते हुए कहा, और बंदर को अपने पैरों पर वापस खड़े होते हुए देखकर बोला, "तो तुमने मुझे इस तरह धक्का क्यों दिया? तुम बस अपनी धौंस जमा रहे हो।"

"भाई," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "उसे मत खोलो। वह एक दुष्ट आत्मा है जो हमें बेवकूफ बनाने के लिए नाटक कर रही है।"

"अरे बंदर," संज़ंग चिल्लाया, "फिर से बकवास कर रहा है। भला तुम इस जैसी लड़की को बुरी आत्मा कैसे समझ सकते हो?"

"मालिक, आपको कुछ पता नहीं है," बंदर ने जवाब दिया। "पुराने दिनों में, जब मुझे इंसानी मांस चाहिए होता था, तो मैंने खुद ये सारे तरीके आजमाए थे। आप ये बता ही नहीं सकते कि वो क्या है।"

"मालिक," सुअर ने रूठते हुए मुंह फुलाकर कहा, "घोड़ों की उस रक्षक को अपने जाल में मत फँसाइए। वह यहीं की रहने वाली है। पूरब से अपनी लंबी यात्रा में हमारा उससे पहले कभी कोई वास्ता नहीं पड़ा और वह हमारी रिश्तेदार या ससुराल की भी नहीं है, तो आप उसे बुरी आत्मा कैसे कह सकते हैं? वह हमें आगे भेजकर हमसे छुटकारा पाना चाहता है ताकि वह जादू से पलटी मारकर वापस यहाँ आ सके। फिर वह उसके साथ मजे करेगा और हमारी इज्जत मिट्टी में मिला देगा।"

“अरे मूर्ख! ऐसी बकवास बंद करो। पश्चिम की हमारी पूरी यात्रा में मैंने कभी ऐसा घिनौना काम नहीं किया। मुझे लगता है कि यह तुम्हारे जैसे किसी अय्याश ने किया होगा जिसने मौका देखकर अपने उसूल भुला दिए। मुझे लगता है कि तुमने किसी परिवार को धोखा देकर अपना दामाद बना लिया और उसे यहाँ बाँध दिया।”

"बस करो," संज़ंग ने कहा, "बस करो। अब, बाजी। तुम्हारा बड़ा भाई आमतौर पर चीजों को बहुत स्पष्ट रूप से देखता है। उसकी बातों पर ध्यान मत दो। चलो हम चलते हैं।"

“बहुत बढ़िया,” बंदर ने बड़े हर्ष से कहा, “आपका भाग्य शुभ है, स्वामी जी। कृपया

सवार हो जाइए। चीड़ के जंगल से बाहर निकलते ही हमें एक घर मिलेगा जहाँ हम आपके लिए भोजन की भीख मांग सकते हैं।" फिर वे चारों राक्षस को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ गए।

अध्याय 80

1116

पश्चिम की यात्रा

कहानी बताती है कि कैसे राक्षसी पेड़ से बंधी हुई वहीं पड़ी रहने पर क्रोध से दांत पीस रही थी। उसने कहा, "मैंने सालों से सन वुकॉन्ग की अद्भुत जादुई शक्तियों के बारे में सुना है, और आज जब मैंने उसे देखा है तो मुझे पता चल गया है कि उसकी ख्याति नितांत है। उस तांग पुजारी ने बचपन से ही अपने आचरण को सुधारा है और उसने अपनी मूल मर्दानगी का एक अंश भी नहीं खोया है। मैं उससे संभोग करना चाहती थी ताकि मैं परम शक्ति की स्वर्णिम अमर बन सकूं। मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि वह बंदरिया मेरे जादू को पहचान लेगी और उसे बचा लेगी। अगर मुझे खोल दिया जाता तो मैं जब चाहूं उसे अपने साथ ले जा सकती थी और वह मेरा होता।"

अब जब सन वुकॉन्ग ने वो अपमानजनक बातें कह दी हैं और तांग पुजारी को अपने साथ ले गया है, तो मेरी सारी मेहनत बेकार हो गई है। देखते हैं, जब मैं उसे कुछ और बार चिल्ला कर सुनाऊंगा तो क्या होगा।

अपनी रस्सियों को हिलाए बिना, दुष्ट आत्मा ने हवा के अनुकूल दिशा का पूरा फायदा उठाते हुए तांग पुजारी के कानों में नैतिकता के कुछ तीखे शब्द पहुंचा दिए। क्या आप जानते हैं कि वह क्या चिल्ला रही थी? "गुरुजी," उसने पुकारा, "यदि आप अपनी अंतरात्मा को भूलकर किसी जीवित प्राणी का जीवन बचाने से इनकार करते हैं, तो बुद्ध से शास्त्र लाने का क्या लाभ?"

जब तांग पुजारी ने यह पुकार सुनी तो उसने घोड़े की लगाम खींची और कहा, "वुकोंग, जाओ और उस लड़की को बचाओ।"

“आपने अपना रास्ता शुरू कर दिया है, स्वामी,” बंदर ने उत्तर दिया। “आपको उसकी याद दोबारा क्यों आई?”

तांग पुजारी ने कहा, "वह वहां फिर से चिल्ला रही है।"

"सुनने में क्या दिक्कत है, सुअर?" बंदर ने पूछा।

"मेरे बड़े-बड़े कान मेरे कानों को ढके हुए हैं," सुअर ने जवाब दिया, "और मैंने कुछ

नहीं सुना।"
"क्या आपने सुना, फ्रायर सैंड?"
"मैं सामान से लदी छड़ी लेकर आगे चल रहा था," फ्रायर सैंड ने जवाब दिया। "मैं ध्यान नहीं दे रहा था और मैंने कुछ सुना भी नहीं।"
"मैंने भी नहीं सुना," बंदर ने कहा। "उसने क्या कहा, स्वामी? केवल आपने ही सुना।"
तांग पुजारी ने कहा, "उसने जो कहा वह बिल्कुल सही था। उसने पूछा कि अगर मैं अपनी अंतरात्मा को भुलाकर किसी जीव का जीवन बचाने से इनकार कर दूं, तो बुद्ध के दर्शन के लिए शास्त्र लाने का क्या लाभ? किसी मनुष्य का जीवन बचाना सात मंजिला शिवालय बनाने से कहीं बेहतर है। उसे तुरंत बचाना तो बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ होगा।"
“अगर आप दयालु बनना चाहते हैं, स्वामी,” बंदर ने उत्तर दिया, “तो आप ठीक नहीं हो सकते। ज़रा सोचिए, पूरब से पश्चिम की ओर अपनी यात्रा में आपने जितने भी पहाड़ पार किए हैं, उनमें आपको कितने-कितने राक्षस मिले हैं। वे अक्सर आपको अपनी गुफाओं में ले गए हैं और मुझे आपको बचाना पड़ा है। मैंने अपनी इस लोहे की लाठी से उनमें से हज़ारों को मार डाला है। तो फिर आप आज एक भी राक्षस को मरने क्यों नहीं दे सकते? आपको उसे क्यों बचाना है?”
तांग पुजारी ने उत्तर दिया, "शिष्य, एक पुरानी कहावत है, 'छोटा सा अच्छा काम करने से पीछे मत हटो; छोटा सा बुरा काम करने से भी पीछे मत हटो।' तुम्हें अभी भी जाकर उसे बचाना है।"
“अगर आपका यही रवैया रहेगा, स्वामी जी, तो मैं यह ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकता,” बंदर ने जवाब दिया। “आप उसे बचाने पर अड़े हैं और मैं आपको समझाने की ज़्यादा कोशिश नहीं कर सकता। जब मैंने थोड़ी सी कोशिश की, तो आप फिर से भड़क गए। अगर आप चाहें तो जा सकते हैं और उसे बचा सकते हैं।”
"अपनी ज़बान संभालो, बंदर," संज़ंग ने पलटकर जवाब दिया। "तुम यहीं बैठो, मैं और बाजी उसे बचाने जाते हैं।"
अध्याय 80
1117
पश्चिम की यात्रा
तांग पुजारी जंगल में वापस गए और सुअरनी को अपने शरीर के ऊपरी हिस्से के चारों

ओर बंधी रस्सियों को खोलने और अपने फावड़े से निचले हिस्से को खोदने के लिए कहा। राक्षसी ने अपने पैर पटके, अपनी स्कर्ट कसी और खुशी-खुशी तांग पुजारी के पीछे चीड़ के जंगल से बाहर निकल गई। जब वह बंदर से मिली तो उसने केवल एक व्यंग्यात्मक मुस्कान बिखेरी।

तांग पुजारी ने अपशब्दों से कहा, "बेशर्म बंदर, तुम किस बात पर मुस्कुरा रहे हो?"

"मैं तुम पर हंस रहा हूँ," बंदर ने जवाब दिया:

"जब आपका भाग्य अच्छा चल रहा होता है, तब आपको अच्छे दोस्त मिलते हैं; और जब भाग्य खराब चल रहा होता है, तब आपको कोई सुंदरी मिल जाती है।"

"बेशर्म बंदर!" संज़ंग ने फिर से अपशब्द कहते हुए कहा। "क्या बकवास है! मैं जन्म से ही भिक्षु हूँ। मैं महाराज के आदेश पर बुद्ध की उपासना करने और शास्त्र लाने के नेक इरादे से पश्चिम की यात्रा कर रहा हूँ। मुझे धन-दौलत और पद की परवाह नहीं है, तो मेरे दुर्भाग्य का क्या मतलब है?"

“गुरुजी,” बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “आप भले ही बचपन से भिक्षु रहे हों, और सूत्र पढ़ने और बुद्ध का आह्वान करने में निपुण हों, लेकिन आपने राजसी कानूनों का अध्ययन कभी नहीं किया। यह लड़की जवान और सुंदर है। अगर हम जैसे भिक्षु उसके साथ यात्रा करते हैं, तो हो सकता है कि हमारा सामना दुष्ट लोगों से हो जो हमें गिरफ्तार करके अधिकारियों के हवाले कर दें। उन्हें बुद्ध की पूजा या शास्त्र लाने की परवाह नहीं होगी। वे इसे अवैध यौन संबंध का मामला मानेंगे, और भले ही यह साबित न हो, फिर भी हमें अपहरण का दोषी ठहराया जाएगा। गुरुजी, आपका दीक्षा लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा और आपको अधमरा कर दिया जाएगा। सुअर को देश निकाला दे दिया जाएगा और साधु सैंड को कठोर कारावास की सजा दी जाएगी। मैं भी बच नहीं पाऊंगा। चाहे मैं कितनी भी कोशिश कर लूं, मुझे फिर भी दोषी ठहराया जाएगा।”

"ऐसी बकवास मत करो," संज़ंग चिल्लाया। "आखिर मैंने उसकी जान बचाई है। कोई परेशानी नहीं होगी। हम उसे अपने साथ ले जा रहे हैं। जो भी होगा, मैं उसकी ज़िम्मेदारी लूंगा।"

"आप भले ही कहें कि आप ज़िम्मेदार होंगे, स्वामी," बंदर ने उत्तर दिया, "लेकिन आप यह नहीं समझते कि आप उसे बचाने के बजाय उसे नष्ट कर रहे हैं।"

"मैंने उसे जंगल से बचाकर उसकी जान बचाई," संजांग ने कहा, "तो मैं उसे कैसे नष्ट

कर सकता हूँ?"
“अगर उसे तीन-पाँच दिन, दस दिन या यहाँ तक कि आधा महीना भी बिना भोजन के जंगल में बाँधकर भूख से मर जाने दिया जाता, तो कम से कम उसका शरीर सही-सलामत पाता। लेकिन अब तुम उसे वहाँ से ले आए हो। तुम तेज़ घोड़े पर सवार होकर हवा की तरह उड़ रहे हो। हम सबको तुम्हारे पीछे आना होगा। वो अपने छोटे-छोटे पैरों पर कैसे चल पाएगी? वो मुश्किल से चल पाती है। अगर वो पीछे छूट गई और कोई भेड़िया, बाघ या तेंदुआ उसे खा गया, तो तुम उसे मार डालोगे।”
"आप सही कह रहे हैं," संज़ैंग ने कहा। "इसके बारे में सोचने के लिए धन्यवाद। अब हम इसके बारे में क्या करें?"
"उसे उठाओ और अपने साथ घोड़े पर बिठाकर ले जाओ," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
"मैं उसके साथ एक ही घोड़े पर सवार नहीं हो सकती," संजांग ने विलाप करते हुए कहा।
“तो फिर वो कैसे सफ़र करेगी?” बंदर ने पूछा। “बाजी उसे अपनी पीठ पर ले जा सकता है,” संजांग ने जवाब दिया।
अध्याय 80
1118
पश्चिम की यात्रा
"तुम्हारी किस्मत अच्छी है, बेवकूफ," बंदर ने कहा।
"लंबी यात्रा में बोझ हल्का नहीं होता," सुअर ने जवाब दिया। "उसे ढोना कोई सौभाग्य की बात नहीं है।"
"अपनी लंबी थूथन की मदद से तुम उसे घुमाकर उससे चुपके से बातें कर पाओगे, जब तुम उसे गोद में लिए होगे।"
बंदर ने जवाब दिया, "जो आपके लिए बहुत सुविधाजनक होगा।"
यह सुनकर सुअर ने गुस्से में अपनी छाती पीटते हुए उछल-कूद शुरू कर दी। उसने कहा, "यह तो बहुत बुरा है, बहुत बुरा। इससे बेहतर तो मैं मालिक से कोड़े खाना पसंद कर लूँ। अगर मैं उसे ढोऊँगा तो मैं कभी भी बेदाग नहीं बच पाऊँगा। तुम हमेशा से चुगली करने वाले रहे हो। मैं उसे नहीं ढोऊँगा।"
"ठीक है," संज़ंग ने कहा, "ठीक है। मैं थोड़ा और आगे चल सकता हूँ। मैं नीचे आकर

आपके साथ धीरे-धीरे चलूँगा। बाजी घोड़े को बिना किसी के सवार हुए भी आगे ले जा सकता है।"

"तुम्हें तो बढ़िया सौदा मिल गया, बेवकूफ," बंदर हंसते हुए बोला। "मालिक ने तुम्हें घोड़ा चलाने की इजाजत देकर तुम पर एहसान किया है।"

“तुम फिर से बकवास कर रहे हो, बंदर,” संज़ंग ने कहा। “जैसा कि पूर्वजों ने कहा है, ‘जब घोड़े को तीन सौ मील की यात्रा करनी हो तो वह अकेले नहीं कर सकता।’ अगर मैं धीरे चलूँ तो क्या तुम मुझे पीछे छोड़ दोगे? जब मैं धीरे चलूँ तो तुम्हें भी धीरे चलना होगा। हम सब मिलकर देवी बोधिसत्व को पर्वत से नीचे ले जाएँगे। हम उन्हें रास्ते में मिलने वाले किसी भी मठ, मंदिर, आश्रम या घर में छोड़ सकते हैं। तब भी हम उन्हें बचा लेंगे।”

“आप सही कह रहे हैं, स्वामी जी,” बंदर ने उत्तर दिया। “चलिए जल्दी से आगे बढ़ते हैं।”

संज़ैंग आगे-आगे चल रहा था, जबकि साधु सैंड सामान ढो रहा था, सुअर बिना सवार के घोड़े और लड़की को आगे ले जा रहा था, और बंदर अपनी लोहे की लाठी लिए हुए था। वे सब साथ-साथ आगे बढ़ते रहे। सात से दस मील के भीतर ही शाम ढलने लगी और एक ऊंची इमारत नज़र आने लगी।

"शिष्य," संज़ंग ने कहा, "यह किसी प्रकार का मंदिर होना चाहिए। हम यहाँ रात बिताने की अनुमति मांगेंगे और कल सुबह सबसे पहले निकल जाएंगे।"

“आपकी बात सही है, स्वामी जी,” बंदर ने कहा। “चलिए, हम सब जल्दी चलें।”

वे जल्द ही द्वार पर पहुँच गए, जहाँ संज़ांग ने उनसे कहा, "तुम लोग एक तरफ हटकर खड़े रहो, मैं पहले अंदर जाकर पूछता हूँ कि क्या हम रात भर रुक सकते हैं। अगर सब ठीक लगा तो मैं किसी को तुम्हें बुलाने के लिए भेज दूँगा।" इस तरह वे सब चिनार के पेड़ों की छाया में खड़े हो गए, जबकि बंदर अपने लोहे के डंडे को हाथ में लिए लड़की पर नज़र रखे हुए था।

आदरणीय बुजुर्ग आगे बढ़े तो देखा कि द्वार टेढ़े लटके हुए थे और टूटकर गिर रहे थे। द्वार को धक्का देकर खोलने पर जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनका हृदय भयभीत हो गया।

मठ सुनसान थे।

प्राचीन तीर्थस्थल वीरान पड़ा था।

आंगन में काई बहुत ज्यादा उग आई थी;
झाड़ियों और कंटीली झाड़ियों ने रास्तों को अवरुद्ध कर दिया था।
अध्याय 80
1119
पश्चिम की यात्रा
केवल जुगनुओं से ही रोशनी आ रही थी।
जबकि मेंढकों की टर्राहट ने जल-घड़ी की जगह ले ली थी।
आदरणीय बुजुर्ग रोने लगे। सचमुच:
वीरान गलियारे ढह रहे थे।
एकांत मठ ढह रहे हैं।
टूटी हुई ईंटें और टाइलें दर्जनों ढेरों में पड़ी थीं।
और सारे खंभे और बीम टेढ़े-मेढ़े थे।
चारों ओर घास उग रही थी;
रसोईघर जर्जर अवस्था में थे और धूल से ढके हुए थे।
खंडहर हो चुके टावरों में ड्रमों की खालें उतर चुकी थीं;
कांच का दीपक टूट गया था।
बुद्ध की स्वर्ण प्रतिमा का रंग फीका पड़ गया था;
अर्हतों की आकृतियाँ ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं।
तेज बारिश में गुआनयिन कीचड़ में तब्दील हो गई थी।
उसका साफ-सुथरा फूलदान, जिसमें विलो की एक टहनी गिरी हुई थी, जमीन पर पड़ा था।
दिन के समय वहां कोई भिक्षु दिखाई नहीं देता था।
और वहां रात में केवल लोमड़ियां ही सोती थीं।
गरजती हुई हवा के साथ बिजली की गड़गड़ाहट की आवाज गूंज रही थी।
यह बाघ और तेंदुए के आश्रय स्थल था।
आस-पास की दीवारें ढह गई थीं।
और इसकी सुरक्षा के लिए कोई द्वार बंद नहीं किया जा सकता था।
इस विषय पर एक कविता है जो इस प्रकार है:
कई वर्षों से मंदिर की मरम्मत नहीं हुई थी;

अपनी जर्जर अवस्था में इसकी हालत बद से बदतर होती जा रही थी।
अध्याय 80
1120
पश्चिम की यात्रा
तेज हवाओं ने मंदिर के रक्षकों के चेहरे बिगाड़ दिए थे।
और तेज बारिश ने बुद्ध की मूर्तियों के सिर बहा दिए थे।
वज्रपानी ढह गया था और पूरी तरह से भीग गया था।
स्थानीय देवता का मंदिर खो गया था और वह रात में बाहर ही रहता था।
दो अन्य बातें तो और भी अधिक निराशाजनक थीं:
घंटियाँ और ढोल मीनारों में लटकने के बजाय जमीन पर पड़े थे।
हिम्मत जुटाकर संज़ंग भीतरी द्वार से अंदर गया, जहाँ उसने देखा कि घंटाघर और ढोलघर दोनों ढह चुके थे, केवल एक पीतल की घंटी ज़मीन में गड़ी हुई थी, जिसका निचला आधा हिस्सा नीले रंग का था। वर्षों बीतने के साथ-साथ बारिश में घंटी का ऊपरी आधा हिस्सा फीका पड़ गया था, जबकि धरती की भाप ने निचले हिस्से को हरा कर दिया था।
"घंटी," संजांग ने उसे छूते हुए जोर से पुकारा।
"एक बार तुमने मीनार की ऊँचाई से दहाड़ लगाई थी,
जिस रंगी हुई बीम पर तुम लटके थे, वहां से दूर से पुकारते हुए।
मुर्गे की बांग के साथ ही तुम भोर की घंटी बजाते थे।
और शाम को तुमने सूर्यास्त की घोषणा कर दी।
अब वे आम भाई कहाँ हैं जिन्होंने तांबे के लिए विनती की थी?
या फिर वह कारीगर जिसने इसे ढालकर आपको आकार दिया?
मुझे लगता है कि वे दोनों अब पाताल लोक में हैं;
वे बिना किसी निशान के चले गए और आप चुप रह गए।"
आदरणीय भिक्षु की तेज़ आहों से मठ में मौजूद किसी की भी व्याकुलता हो गई थी। धूप जला रहे एक भिक्षु ने आवाज़ सुनी, उठ खड़ा हुआ, एक टूटी हुई ईंट उठाई और घंटी पर फेंक दी। घंटी की तेज़ आवाज़ से आदरणीय भिक्षु इतना भयभीत हो गए कि वे गिर पड़े, फिर भागने के लिए जल्दी से उठे, लेकिन एक पेड़ की जड़ से टकराकर फिर से गिर पड़े।

जमीन पर लेटे हुए संजांग ने अपना सिर उठाया और कहा, "बेल, मैं तो बस तुम्हारे भाग्य पर शोक व्यक्त कर रहा था।"

अध्याय 80

1121

पश्चिम की यात्रा

तभी अचानक तुमने खटखटाया।

पश्चिम की ओर जाने वाले इस सुनसान रास्ते पर

इन वर्षों में तुम एक आत्मा में बदल गए हो।"

एक भिक्षु संज़ंग के पास आया और उसे सहारा देते हुए बोला, "कृपया उठिए, पूज्यवर। घंटी भूत नहीं बन गई है। अभी मैंने ही इसे बजाया था।" संज़ंग ने ऊपर देखा और दूसरे के काले और बदसूरत रूप को देखकर कहा, "मुझे लगता है कि तुम कोई जिन्न या कोई और दुष्ट प्राणी हो। मैं कोई साधारण मनुष्य नहीं हूँ। मैं महान तांग वंश से आया हूँ और मेरे शिष्य हैं जो अजगरों और बाघों को वश में कर सकते हैं। अगर तुम उनसे टकराओगे तो तुम्हारी जान चली जाएगी।"

“महोदय, भयभीत न हों,” आम भिक्षु ने घुटनों के बल बैठते हुए उत्तर दिया। “मैं कोई दुष्ट प्राणी नहीं हूँ। मैं यहाँ धूप जलाने का काम करने वाला एक आम भिक्षु हूँ। अभी आपने जो अच्छी बातें कही थीं, उन्हें सुनकर मेरा मन हुआ कि मैं बाहर आकर आपका स्वागत करूँ, लेकिन मुझे डर था कि कहीं कोई राक्षस द्वार पर दस्तक न दे रहा हो। इसीलिए मैंने घंटी पर ईंट फेंककर अपने भय को शांत करने तक बाहर आने की हिम्मत नहीं की। कृपया उठें, महाराज।”

तभी संजांग ने खुद को इतना शांत किया कि वह जवाब दे सका, "भाई, उस डर ने लगभग मेरी जान ही ले ली थी।"

मुझे अंदर ले चलो।" गृहस्थ भाई संज़ंग को सीधे तीसरे द्वार से अंदर ले गया। तांग पुजारी ने अंदर जो देखा वह बाहर से बिल्कुल अलग था:

नीली ईंटों से बनी बादल के पैटर्न वाली दीवार,

हरे रंग की चमकदार टाइलों से ढकी छत वाले गलियारे।

पवित्र प्रतिमाओं को सोने से ढका गया था।

शुद्ध सफेद जेड पत्थर से बनी सीढ़ियाँ।

बुद्ध के हॉल में नीली रोशनी नाच रही थी;

वैरोचना चैपल से महीन वाष्प उठ रही थी।
मंजुश्री हॉल के ऊपर
वे उड़ते बादलों की सजावट थे;
धर्मग्रंथों के पुस्तकालय में
उनमें फूलों और हरी पत्तियों के पैटर्न थे।
तिहरे छज्जे के ऊपर छत पर एक कीमती कलश रखा था;
पांच आशीर्वादों के टावर में कढ़ाईदार कवर बिछे हुए थे।
ध्यान आसन के ऊपर हजारों चमकीले बांस लहरा रहे थे;
अध्याय 80
1122
पश्चिम की यात्रा
दस हजार नीले रंग के चीड़ के पेड़ों ने द्वारों पर अपनी रोशनी बिखेरी।
इस महल पर हरे रंग के बादलों की सुनहरी रोशनी पड़ रही थी;
बैंगनी धुंध से भरे जंगलों के चारों ओर शुभ बादल मंडरा रहे थे।
हर सुबह चारों ओर सुगंधित हवा की महक महसूस की जा सकती थी; शाम को ऊँची पहाड़ियों पर रंगीन ढोलों की आवाज सुनाई देती थी।
फटे हुए वस्त्रों की मरम्मत के लिए सुबह की धूप होनी चाहिए;
चंद्रमा के प्रकाश में सूत्र कैसे पूर्ण हो सकता है?
पीछे का आंगन आधी दीवार पर लगे लैंपों से रोशन है;
हॉल में सुगंधित धुएं का एक स्तंभ चमक रहा है।
संज़ंग ने यह देखा लेकिन अंदर जाने की हिम्मत नहीं की। "गृहस्थ," उसने पुकारा, "मठ का सामने का हिस्सा इतना जर्जर क्यों है जबकि पीछे का हिस्सा इतना साफ-सुथरा है?"
“मेरे स्वामी,” भिक्षु ने मुस्कुराते हुए कहा, “ये पहाड़ दुष्ट प्राणियों और डाकुओं से भरे पड़े हैं। साफ दिनों में वे पहाड़ों पर लूटपाट करने के लिए घूमते हैं और धुंधले दिनों में मठ में शरण लेते हैं। वे बुद्ध की मूर्तियों को तोड़कर बैठने के लिए इस्तेमाल करते हैं और लकड़ी के खंभों को जलाकर ईंधन बना लेते हैं। यहाँ के भिक्षु उनसे बहस करने में असमर्थ हैं, इसीलिए उन्होंने आगे के टूटे-फूटे भवनों को डाकुओं के रहने के लिए छोड़ दिया है।”

उन्होंने अपने लिए नया मठ बनवाने के लिए कुछ नए दानदाता ढूंढ लिए हैं। अब एक शुद्ध लोगों के लिए है और एक अशुद्ध लोगों के लिए। पश्चिम में हम इसी तरह काम करते हैं।

"तो बात कुछ ऐसी है," संजांग ने कहा।

आगे बढ़ते हुए संजांग ने द्वार के ऊपर बड़े अक्षरों में लिखा देखा: समुद्र की रक्षा करने वाला मठ

ध्यानमग्न अवस्था में। तभी वह द्वार से अंदर दाखिल हुआ, जहाँ एक भिक्षु उसकी ओर आता हुआ दिखाई दिया। ज़रा देखिए वह भिक्षु कैसा दिखता था:

मखमल और ब्रोकेड से बनी उसकी टोपी एक पिन से टिकी हुई थी।

और उनके कानों में पीतल की दो बालियां लटकी हुई थीं।

उसका कुर्ता ऊनी कपड़े का बना था।

और उसकी आंखें सफेद और चांदी की तरह चमकदार थीं।

उसके हाथ में एक स्वत: बजने वाला ढोल था।

वह एक अज्ञात भाषा में धर्मग्रंथों का पाठ कर रहा था।

संज़ैंग को पहले से पता नहीं था

अध्याय 80

1123

पश्चिम की यात्रा

वह पश्चिम की ओर जाने वाले मार्ग पर एक लामा था।

जैसे ही लामा बाहर आए, उन्होंने देखा कि संज़ंग कितने सुंदर और आकर्षक थे: उनकी भौंहें सुस्पष्ट थीं, आँखें सुंदर थीं, माथा चौड़ा था और खोपड़ी का ऊपरी भाग समतल था, कान कंधों तक लटके हुए थे और बाँहें इतनी लंबी थीं कि घुटनों से भी नीचे तक जाती थीं। वे किसी अर्हत (धार्मिक गुरु) की तरह लग रहे थे जो धरती पर अवतरित हुए हों। लामा, जिनके चेहरे पर मुस्कान थी, प्रसन्नता से हंसते हुए संज़ंग के पास गए और उन्हें गले लगा लिया, उनके हाथों और पैरों को छुआ, उनकी नाक सहलाई और उनके कानों को खींचकर अपनी मित्रता का प्रदर्शन किया।

संजांग को मठाधीश के आवास में ले जाने और अभिवादन की रस्मों को पूरा करने के बाद लामा ने उससे पूछा,

"आप कहाँ से आए हैं, आदरणीय पिता?"

“पूर्व में स्थित महान तांग सम्राट ने मुझे बुद्ध की पूजा करने और पश्चिम में भारत के थंडर मठ से शास्त्र लाने के लिए भेजा है,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “अंधेरा होने पर हम इस रास्ते से गुजर रहे थे, इसलिए मैं कल सुबह जल्दी निकलने से पहले आज रात आपके प्रतिष्ठित मठ में ठहरने आया हूँ। कृपया मेरी शीघ्र सहायता करें।”

“आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए,” लामा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए। हम वास्तव में भिक्षु बनना नहीं चाहते थे। हम सभी को हमारे माता-पिता ने जीवन दिया था और हमने उनसे संबंध केवल इसलिए तोड़े क्योंकि हमारा भाग्य दुर्भाग्यपूर्ण था और हमारे परिवार हमें पालने-पोसने में असमर्थ थे। भले ही हम अब बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं, आपको व्यर्थ की बातें नहीं करनी चाहिए।”

"मैंने पूरी ईमानदारी से बात की," संजांग ने उत्तर दिया।

“पूरब से पश्चिम के स्वर्ग तक का सफर कितना लंबा है?” भिक्षु ने कहा। “रास्ते में पहाड़ हैं, पहाड़ों में गुफाएँ हैं और गुफाओं में आत्माएँ हैं। मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे जैसी नाजुक दिखने वाली अकेली यात्री धर्मग्रंथ लाने वाली तीर्थयात्री हो सकती है।”

"आप बिलकुल सही कह रहे हैं, मठाधीश," संज़ंग ने उत्तर दिया। "मैं अकेले यहाँ कभी नहीं पहुँच सकता था। मेरे तीन शिष्य हैं जो पहाड़ों को पार करने में मेरी मदद करते हैं और नदियों पर पुल बनाते हैं। उन्हीं की रक्षा के कारण मैं आपके मठ तक पहुँच पाया हूँ।"

"आपके तीनों विशिष्ट शिष्य कहाँ हैं?" लामा ने पूछा।

"मठ के द्वार के बाहर प्रतीक्षा कर रहा हूँ," संजांग ने उत्तर दिया।

“पिताजी,” लामा ने घबराते हुए कहा, “आपको यह एहसास नहीं है कि यहाँ खतरनाक बाघ, भेड़िये, दुष्ट डाकू, भूत और राक्षस रहते हैं। हम दिन में भी दूर जाने की हिम्मत नहीं करते और रात होने से पहले ही द्वार बंद कर देते हैं। इतनी रात को आप लोगों को बाहर कैसे छोड़ सकते हैं?” फिर उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि उन्हें तुरंत अंदर बुला लें।

दो युवा लामा जल्दी से बाहर भागे। बंदर को देखते ही वे गिर पड़े, और फिर सूअर को देखकर दोबारा गिर पड़े। जल्दी से उठकर वे जितनी तेजी से हो सके वापस अंदर भागे और बोले, "मेरे स्वामी, आपका भाग्य साथ नहीं दे रहा है।"

तुम्हारे शिष्य गायब हो गए हैं। द्वार के बाहर केवल तीन या चार दुष्ट राक्षस खड़े हैं।

"वे कैसे दिखते हैं?" संजांग ने पूछा।

युवा लामाओं ने उत्तर दिया, "एक का चेहरा गर्जन देवता जैसा है, एक का चेहरा हथौड़े जैसा है, और एक का चेहरा हरा है और उसके भयानक नुकीले दांत हैं। उनके साथ एक लड़की भी है - उसके बाल तेल से सने हैं और चेहरे पर पाउडर लगा है।"

अध्याय 80

1124

पश्चिम की यात्रा

"तुम नहीं जानते कि वे कौन हैं," संज़ंग ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "वे तीनों बदसूरत मेरे शिष्य हैं और वह लड़की वह है जिसे मैंने चीड़ के जंगल से बचाया था।"

"मेरे स्वामी," लामा ने कहा, "आप जैसे सुंदर गुरु को इतने बदसूरत शिष्य कैसे मिल गए?"

"भले ही वे बदसूरत हों," संज़ंग ने उत्तर दिया, "लेकिन वे सभी उपयोगी हैं। उन्हें तुरंत अंदर बुला लो। अगर तुम और देर करोगे तो जो गर्जन देवता जैसा दिखता है, वह थोड़ा उपद्रवी है। वह माता-पिता का पुत्र नहीं है और वह किसी भी तरह से अंदर घुसने की कोशिश करेगा।"

फिर युवा लामा जल्दी से बाहर भागे और कांपते हुए घुटनों के बल गिर पड़े और बोले, "मेरे स्वामी, भगवान तांग आपको अंदर आने का निमंत्रण देते हैं।"

"भाई," सुअर ने कहा, "अगर उसने हमें आमंत्रित किया है, तो बात अलग है। ये लोग क्यों कांप रहे हैं?"

"वे इसलिए डरते हैं क्योंकि हम बहुत बदसूरत हैं," बंदर ने जवाब दिया।

"बकवास," सुअर ने कहा। "हम तो ऐसे ही पैदा हुए हैं। हममें से कोई भी अपनी मर्जी से बदसूरत नहीं है।"

"थोड़ा कम बदसूरत दिखो," बंदर ने कहा, और उस मूर्ख ने सचमुच अपनी थूथन को अपने कुर्ते में दबा लिया और अपना सिर नीचे करके घोड़े को आगे ले जाने लगा, जबकि साधु सैंड डंडा लिए हुए था और भाई बंदर सबसे पीछे-पीछे चल रहा था, हाथ में लाठी लिए हुए और लड़की को घसीटते हुए। वे खंडहर हो चुकी इमारतों और मठों से गुज़रते हुए द्वारों के तीसरे भाग से अंदर गए। घोड़े को बांधने के बाद वे मठाधीश के आवास में लामा से मिलने और वरीयता क्रम में बैठने के लिए गए। फिर लामा अंदर गए और सत्तर-अस्सी युवा लामाओं को उनका अभिवादन करने, उनके कमरे साफ करने, उन्हें शाकाहारी भोजन देने और उनकी देखभाल करने के लिए ले गए। सचमुच:

उपलब्धियों को संचित करते समय दयालुता का ध्यान रखें;
जब बुद्ध का धर्म फलता-फूलता है तो भिक्षु एक दूसरे की प्रशंसा करते हैं।
यदि आपको नहीं पता कि वे मठ से कैसे निकले, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 81
द माइंड-एप रिकॉग्नाइज़ेज़ अ मॉन्स्टर इन मॉन्स्टर
तीनों ब्लैक पाइन के जंगल में अपने गुरु की तलाश करते हैं
कहानी बताती है कि कैसे संज़ंग और उनके शिष्य ध्यान मठ में आए, जहाँ उनकी मुलाकात लामाओं से हुई और उन्हें शाकाहारी भोजन दिया गया। जब चारों ने भोजन कर लिया, तो उस लड़की को भी भोजन कराया गया। अब धीरे-धीरे रात होने लगी थी और मठाधीश के कमरे में दीपक जलाया गया। लामा, जो तांग पुजारी से यह पूछना चाहते थे कि वे शास्त्र क्यों ला रहे हैं और उस लड़की को देखने के लिए भी उत्सुक थे, दीपक के नीचे कतारों में खड़े हो गए। संज़ंग ने सबसे पहले मिले लामा से कहा, "मठाधीश, जब हम कल आपके मठ से निकलेंगे तो पश्चिम की ओर जाने वाला रास्ता कैसा होगा?" उत्तर देने से पहले ही लामा घुटनों के बल गिर पड़े। संज़ंग ने जल्दी से उन्हें उठाया और कहा, "कृपया खड़े हो जाइए। जब मैं आपसे रास्ते के बारे में पूछता हूँ तो आप इस तरह क्यों अभिवादन करते हैं?"
अध्याय 81

पश्चिम की यात्रा
“हे पूज्यवर, जब आप कल पश्चिम की ओर यात्रा करेंगे, तो आपको सड़क समतल मिलेगी,” लामा ने उत्तर दिया। “चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। फिलहाल बस एक बात थोड़ी अटपटी है। मैं आपके आते ही आपको इसके बारे में बताना चाहता था, लेकिन मुझे डर था कि इससे आपकी गरिमा को ठेस पहुँचेगी। भोजन समाप्त होने के बाद ही मैं आपको यह बताने का साहस कर रहा हूँ कि पूर्व से आपकी लंबी और कठिन यात्रा के बाद युवा लामाओं के कमरे में रात बिताने के लिए आपका हार्दिक स्वागत है। लेकिन देवी बोधिसत्व के लिए ऐसा करना उचित नहीं होगा। मुझे नहीं पता कि मैं उन्हें कहाँ सोने के लिए आमंत्रित करूँ।”
"मठाधीश जी, आपके संदेह निराधार हैं," संज़ंग ने उत्तर दिया, "और आपको यह नहीं

सोचना चाहिए कि मेरे और मेरे शिष्यों के मन में बुरे विचार हैं। आज सुबह जब हम काले चीड़ के जंगल से गुज़र रहे थे, तो हमें यह लड़की एक पेड़ से बंधी मिली। मेरे शिष्य सन वुकॉन्ग ने उसे बचाने से इनकार कर दिया, लेकिन अपने प्रबुद्ध हृदय से मैंने उसे बचाया और आपके ठहरने के लिए उसे यहाँ ले आया हूँ, मठाधीश जी।"

"हे पूज्य पिता जी, आपने इतनी उदारता दिखाई है, इसलिए हम देवराज हॉल में देवराजों के पीछे उनके सोने के लिए एक पुआल का गद्दा बिछा सकते हैं।"

"यह बहुत बढ़िया है," संज़ंग ने कहा, "बहुत बढ़िया।" इसके बाद युवा लामा उस लड़की को हॉल के पीछे वाले हिस्से में सुलाने के लिए ले गए, जबकि मठाधीश के आवास में संज़ंग ने मठ के अधिकारियों से कहा कि वे आराम से बैठें, जिसके बाद वे सभी चले गए।

“आज का दिन बहुत कठिन रहा,” संज़ंग ने बंदर भाई से कहा। “हमें जल्दी सोना चाहिए और सुबह जल्दी उठना चाहिए।” वे सभी एक ही कमरे में सो गए, स्वामी की रक्षा करते हुए और उन्हें छोड़ने की हिम्मत न करते हुए। उस रात बाद में, चाँद ऊँचा चढ़ गया और सब कुछ शांत था;

स्वर्ग की गली में सन्नाटा पसरा हुआ था और कोई हलचल नहीं थी।

चांदी की नदी चमकीली थी; तारे स्पष्ट रूप से जगमगा रहे थे;

मीनार में बजने वाले ढोल ने पहरेदारी बदलने की प्रक्रिया को तेज कर दिया।

हम रात के बारे में और कुछ नहीं कहेंगे। जब बंदर सुबह तड़के उठा तो उसने सुअर और साधु सैंड को सामान और घोड़ा तैयार करने को कहा और फिर मालिक को चलने के लिए कहा। लेकिन संजांग और सोना चाहता था और जागना नहीं चाहता था, इसलिए बंदर उसके पास जाकर "मालिक" कहकर पुकारा।

स्वामी ने सिर उठाया लेकिन फिर भी कोई उत्तर नहीं दे सका। "आप क्या कहेंगे, स्वामी?" बंदर ने पूछा।

"मेरा सिर क्यों घूम रहा है?" संजांग ने उत्तर दिया, "मेरी आंखें क्यों सूजी हुई हैं, और मेरी त्वचा से लेकर हड्डियों तक पूरे शरीर में दर्द क्यों हो रहा है?"

यह सुनकर सुअर ने अपना हाथ बढ़ाकर स्वामी के शरीर को छुआ। उसका शरीर बुखार से ग्रस्त था। "अब मुझे समझ आया।"

उस मूर्ख ने मुस्कुराते हुए कहा, "उसने कल रात मुफ्त में मिले चावल के कई कटोरे ज़रूरत से ज़्यादा खा लिए और सिर नीचे करके सो गया। उसे बदहज़मी हो गई है।"

"बकवास!" बंदर चिल्लाया, "मुझे मालिक से पूछने दो कि असल में क्या बात है।"
"जब मैं आधी रात को शौच के लिए उठा," संजांग ने उत्तर दिया, "मैंने अपनी टोपी नहीं पहनी थी। मुझे लगता है कि हवा के झोंके से मुझे ठंड लग गई होगी।"
अध्याय 81
1126
पश्चिम की यात्रा
"मुझे यकीन है कि तुम सही कह रहे हो," बंदर ने कहा, "क्या तुम अभी यात्रा कर सकते हो?"
"मैं तो बैठ भी नहीं सकती," संजांग ने उत्तर दिया, "घोड़े पर चढ़ना तो दूर की बात है। यात्रा को अभी स्थगित करना पड़ेगा।"
“क्या बात है, गुरुजी,” बंदर ने कहा, “जैसा कि कहावत है, 'एक दिन का गुरु जीवन भर का पिता होता है।'”
आपके शिष्य होने के नाते हम आपके पुत्रों के समान हैं। एक और कहावत है कि पुत्र को चांदी या सोना ही नहीं देना चाहिए;
जब तक वह आवश्यक कार्य कर सकता है, तब तक वह ठीक रहेगा।
अगर आपकी तबीयत ठीक नहीं है तो यात्रा में देरी की चिंता न करें। कुछ दिनों तक इंतजार करने में कोई दिक्कत नहीं होगी।” तीनों शिष्य भाई अपने गुरु की देखभाल करते रहे। सुबह के बाद दोपहर और शाम हुई, और एक अच्छी रात के बाद भोर हो गई। समय तेजी से बीत गया और तीन दिन देखते ही देखते गुजर गए।
उसके अगले दिन सुबह संजांग ने उठकर बैठने की कोशिश की और पुकारते हुए कहा, "वुकोंग, चूंकि मैं पिछले कुछ दिनों से बहुत बीमार थी, इसलिए मैंने आपसे पहले नहीं पूछा: क्या लोग उस महिला बोधिसत्व को भोजन दे रहे हैं जिसे हमने बचाया था?"
"तुम उसके बारे में इतना परेशान क्यों हो रहे हो?" बंदर हँसते हुए बोला। "तुम्हें तो अपनी बीमारी की चिंता करनी चाहिए।"
"जी हां," संजांग ने कहा। "मुझे उठने में मदद करो और मेरे लिए कागज, ब्रश और स्याही लाओ। मठ में एक स्याही की बोतल उधार ले लो।"
"तुम्हें ये किसलिए चाहिए?" बंदर ने पूछा।
"मैं एक पत्र लिखना चाहता हूँ," संज़ंग ने उत्तर दिया। "मैं इसे अपने पासपोर्ट से सील कर दूंगा और आपसे अनुरोध करूंगा कि आप इसे चांगआन में महामहिम सम्राट

ताइज़ोंग को पहुँचा दें।"
“आसान है,” बंदर ने कहा, “वैसे तो मैं बाकी कामों में उतना अच्छा नहीं हूँ, लेकिन चिट्ठियाँ पहुँचाने में तो मैं दुनिया का बादशाह हूँ। तो चिट्ठी लपेटकर मुझे दे दो। मैं एक ही कलाबाजी में चांगआन पहुँच जाऊँगा, तांग सम्राट को दूँगा और तुम्हारी कलम और स्याही सूखने से पहले ही एक और कलाबाजी में वापस आ जाऊँगा। लेकिन तुम चिट्ठी क्यों लिखना चाहते हो? मुझे बताओ कि तुम चिट्ठी में क्या कहना चाहते हो—तुम बाद में लिख लेना।”
"मैं यही लिखूंगी," संजांग ने रोते हुए कहा:
"आपका प्रजाजन अपना सिर तीन बार जमीन पर पटकता है, 'महाराज अमर रहें' के तीन बार जयकारे के साथ, मैं अपने स्वामी को प्रणाम करता हूँ।"
नागरिक और सैन्य अधिकारी सभी उपस्थित थे।
और चारों सौ दरबारी सब कुछ ध्यान से सुन रहे थे।
अध्याय 81
1127
पश्चिम की यात्रा
कई साल पहले मैंने आपके आदेश पर पूर्वी क्षेत्र छोड़ दिया था।
गिद्ध शिखर पर बुद्ध की प्रतिमा देखने की आशा है।
लेकिन अपनी यात्रा में मुझे कई बाधाओं का सामना करना पड़ा है;
और रास्ते में अप्रत्याशित आपदा के कारण इसमें देरी हुई है।
मेरी बीमारी गंभीर है; मैं एक कदम भी नहीं चल सकता;
बुद्ध तक पहुँचने का द्वार उतना ही दूर है जितना स्वर्ग का द्वार।
मैं धर्मग्रंथों को वापस लाने के लिए जीवित नहीं रहूंगा;
मैं आदरपूर्वक निवेदन करता हूं कि एक नया दूत भेजा जाए।"
यह सुनकर बंदर अपनी हंसी नहीं रोक पाया और जोर से हंसने लगा, "आप तो बिलकुल निकम्मे हैं, मालिक।"
उन्होंने कहा, "मामूली सी बीमारी के बाद इस तरह की बातें सोचना। अगर आप गंभीर रूप से बीमार होते, तो आपको बस मुझसे पूछना होता कि आप जीवित रहेंगे या मर जाएंगे। मेरे पास इससे निपटने का अपना खास तरीका है। मैं पूछता,
'पाताल लोक के किस राजा ने ऐसा करने की हिम्मत की? किस न्यायाधीश ने यह

आदेश जारी किया? कौन सा राक्षस दूत उसे लेने आ रहा है?' अगर उन्होंने मुझे क्रोधित किया तो मैं वैसे ही क्रोधित हो जाऊँगा जैसे स्वर्ग में तबाही मचाते समय हुआ था, अपने डंडे से पाताल लोक में घुसकर दस राजाओं को पकड़ लूँगा और उन सबकी नसें नोच डालूँगा। मैं उन पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा।'

"शिष्य, अपनी शेखी बघारना बंद करो," संजांग ने उत्तर दिया। "मैं बहुत बीमार हूँ।"

"भाई," सुअर उसके पास जाकर बोला, "मालिक कह रहा है कि उसकी हालत खराब है और तुम कह रहे हो कि ऐसा नहीं है, ये बहुत अजीब बात है। चलो, मामले को जितनी जल्दी हो सके सुलझा लेते हैं, घोड़ा बेच देते हैं, सामान गिरवी रख देते हैं, मालिक को दफनाने के लिए एक ताबूत खरीद लेते हैं और फिर अलग हो जाते हैं।"

“तुम फिर से बिना सोचे-समझे बोल रहे हो, मूर्ख,” बंदर ने जवाब दिया। “तुम्हें यह एहसास नहीं है कि गुरुजी हमारे तथागत बुद्ध के दूसरे शिष्य हुआ करते थे। उनका मूल नाम आदरणीय स्वर्ण झींगुर था। उन्हें यह घोर कष्ट सहना पड़ रहा है क्योंकि उन्होंने एक बार बुद्ध के धर्म का अपमान किया था।”

"लेकिन भाई," सुअर ने उत्तर दिया, "भले ही गुरु ने बुद्ध के धर्म का अपमान किया हो, फिर भी उन्हें पूर्व में निर्वासित कर दिया गया और उन्हें सही-गलत के सागर और ज़ुबानों के युद्धक्षेत्र में एक नए शरीर में जन्म लेना पड़ा। उन्होंने पश्चिमी स्वर्ग जाने, बुद्ध की पूजा करने और शास्त्रों को लाने की शपथ ली। जब भी उनका सामना किसी दुष्ट आत्मा से हुआ, उन्हें बांध दिया गया; और जब भी उनका सामना किसी राक्षस से हुआ, उन्हें लटका दिया गया। उन्हें हर तरह की पीड़ा सहनी पड़ी है। इतना काफी होना चाहिए था। फिर उन्हें बीमार क्यों होना पड़ा?"

"यह ऐसी बात है जो तुम्हें पता नहीं होगी," बंदर ने उत्तर दिया। "एक बार गुरु बुद्ध के धर्मोपदेश को सुनने के बजाय सो गए, और सोते-सोते उन्होंने अपने बाएं पैर से चावल के एक दाने पर पैर रख दिया।"

इसीलिए उसे निम्न लोक में तीन दिन तक बीमार रहना पड़ता है।"

"तो भगवान ही जाने मेरे जैसे गंदे तरीके से खाने वाले को कितने साल बीमार रहना पड़ेगा," एक हैरान सुअर ने जवाब दिया।

“भाई,” बंदर ने उत्तर दिया, “बुद्ध तुम्हारे जैसे साधारण प्राणियों को बख्श देंगे। एक और बात है जो तुम नहीं जानते। जैसा कि कवि ने कहा है,

दोपहर की तेज धूप में बाजरे की निराई करना;
बाजरे के नीचे जमीन पर पसीने की बूंदें गिर रही हैं।
कटोरे में जो खाना है, उसे कौन समझता है?
क्या हर एक दाना भीषण परिश्रम से प्राप्त किया गया था?
मालिक आज ही बीमार हैं। कल वे ठीक हो जाएंगे।
"आज मेरी तबीयत कल से अलग है," संजांग ने कहा। "मेरा गला बिल्कुल सूख गया है। जाओ और मेरे लिए कहीं से थोड़ा ठंडा पानी लाओ।"
“ठीक है,” बंदर ने जवाब दिया। “अगर आपको पानी चाहिए, स्वामी जी, तो इसका मतलब है कि आप बेहतर स्थिति में हैं। मैं जाकर थोड़ा पानी ले आता हूँ।”
बंदर ने तुरंत भिक्षापात्र उठाया और मठ के पीछे स्थित रसोई में चला गया, जहाँ उसने सभी भिक्षुओं को लाल आँखों से शोक में सिसकते हुए पाया। अंतर केवल इतना था कि वे ज़ोर से रोने की हिम्मत नहीं कर रहे थे।
“इतने छोटे भिक्षुओं, इतनी कंजूसी मत करो,” बंदर भाई ने कहा। “जाने से पहले हम यहाँ बिताए दिनों के लिए आपका धन्यवाद करेंगे, और खाना पकाने के ईंधन और रोशनी का खर्च हम प्रतिदिन के हिसाब से चुका देंगे। आपको इतना कंजूस नहीं होना चाहिए।”
लामाओं ने एक साथ घुटने टेकते हुए कहा, "हम इसे स्वीकार करने की हिम्मत नहीं करेंगे, हम हिम्मत नहीं करेंगे।"
"तुम्हारा मतलब क्या है, तुम हिम्मत नहीं करोगे?" बंदर ने कहा। "ज़रूर वह हमारे लंबे थूथन वाले साधु की वजह से होगा, जिसकी भूख बहुत ज़्यादा है। वह तुम्हें खाकर तुम्हारा सारा घर-बार लूट लेगा।"
“महाराज,” लामाओं ने उत्तर दिया, “इस मठ में सौ से अधिक वरिष्ठ और कनिष्ठ लामा हैं। यदि हममें से प्रत्येक एक दिन के लिए आपकी देखभाल करे, तो हम सौ दिनों से अधिक समय तक आपका भरण-पोषण कर सकते हैं। हम कंजूस नहीं हैं जो आपके भोजन पर होने वाले खर्च का हिसाब लगाएं।”
"अगर तुम लागत का हिसाब नहीं लगा रहे हो तो रो क्यों रहे हो?" बंदर ने पूछा।
“हे प्रभु,” लामाओं ने उत्तर दिया, “मठ में एक दुष्ट राक्षस है। हमें नहीं पता कि वह

किस पर्वत से आया है।”
कल रात हमने दो कनिष्ठ लामाओं को घंटी बजाने और ढोल बजाने के लिए भेजा था। हमें घंटी और ढोल की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन लामा वापस नहीं लौटे। अगले दिन जब हमने उनकी तलाश की, तो हमें पीछे के आंगन में उनकी भिक्षु टोपी और जूते पड़े मिले, साथ ही उनके कंकाल भी। उन्हें खा लिया गया था। आपके यहाँ आने के तीन दिनों में ही मठ से छह लामा गायब हो चुके हैं। इसीलिए हम भयभीत और दुखी हैं। जब हमें पता चला कि आपके पूज्य गुरुजी बीमार हैं, तो खबर को गुप्त रखने के बावजूद भी हमारी आँखों से आँसू बहने लगे।
"बस करो," बंदर भाई ने कहा, जो सुनी हुई बात से हैरान और खुश दोनों था। "ज़रूर कोई दुष्ट राक्षस यहाँ लोगों को मार रहा होगा। मैं उसे तुम्हारे लिए खत्म कर दूंगा।"
“हे प्रभु,” लामाओं ने उत्तर दिया, “हर दुष्ट आत्मा में जादुई शक्तियाँ होती हैं। वह बादलों पर सवार हो सकती है, पाताल लोक से निकलकर फिर गायब हो सकती है। जैसा कि प्राचीन काल में बहुत अच्छे से कहा गया है, 'सीधे से सीधे व्यक्ति पर भी भरोसा मत करो; अमानवीय मनुष्य से सावधान रहो।' कृपया बुरा न मानें, हे प्रभु, जब हम कहते हैं कि यदि आप हमारे मठ को इस विपत्ति से मुक्त कर दें तो यह हमारे लिए बहुत बड़ी खुशी होगी। लेकिन यदि आप इसे पकड़ नहीं सकते... अध्याय 81

हालात काफी मुश्किल होंगे।"
"मुश्किल हालात होने का क्या मतलब है?" बंदर ने पूछा।
“हम आपसे ईमानदारी से बात करेंगे, महाराज,” लामाओं ने उत्तर दिया। “यद्यपि इस मठ में हम लामाओं की संख्या केवल सौ के आसपास है, हम सभी बचपन में ही भिक्षु बन गए थे।”
जब हमारे बाल बढ़ते हैं तो हम उन्हें मुंडवा लेते हैं;
हमारे कपड़े चिथड़ों से पैच लगाकर सिले हुए हैं।
हम सुबह उठकर अपना चेहरा धोते हैं।
फिर हाथ जोड़कर प्रणाम करें।
महान मार्ग के प्रति समर्पण में।
रात को हम साफ-सफाई करते हैं, अगरबत्ती जलाते हैं,

और श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करें,
अमिताभ के नाम का जाप करना।
जब हम ऊपर देखते हैं तो हमें बुद्ध दिखाई देते हैं।
अपने नृगुणित कमल सिंहासन पर
तीनों वाहनों में भलीभांति पारंगत,
उनकी कृपा से धर्म के बादलों पर सवार होकर,
और हम जेत उद्यान में शाक्यमुनि के दर्शन करने के लिए तरस रहे हैं।
नीचे देखने पर हमें अपने दिल की झलक मिलती है।
पांच निषेधों को स्वीकार करें,
हजारों युगों से गुजरो,
और प्रत्येक जीवन को असंख्य धर्मों के बीच जीएं।
शून्यता और पदार्थ की अनित्यता को समझने की आशा में।
जब दानदाता आते हैं,
बूढ़ा, जवान, लंबा, छोटा, मोटा, पतला,
हम सबने लकड़ी की मछलियों को पीटते हुए ने
अध्याय 81
1130
पश्चिम की यात्रा
पीतल की घंटियाँ बजाएँ,
धीरे-धीरे और सोच-समझकर,
कमल सूत्र के दो पन्नों के साथ
और लियांग सम्राट की संक्षिप्त प्रार्थना।
जब परोपकारी लोग नहीं आते,
नया, पुराना, अजीब, परिचित, देहाती, स्मार्ट,
हमने अपने हाथ एक साथ जोड़े,
आंख बंद,
चुपचाप,
घास की चटाइयों पर ध्यान में प्रवेश करते हुए,
चांदनी रात में द्वारों को मजबूती से बंद करते हुए।

ओरिओल पक्षियों को गाने दो और अन्य पक्षियों को व्यर्थ की कलह में चहचहाने दो:
वे हमारे अभियानों और धर्म के करुणामय रथ को आगे नहीं बढ़ा सकते।
इसीलिए हम बाघों और ड्रैगनों को वश में नहीं कर सकते।
या फिर राक्षसों और आत्माओं को पहचानें।
हे प्रभु, यदि आपने उस दुष्ट राक्षस को उकसाया,
जिसमें हम सौ से अधिक लामा एक ही भोजन के समान होंगे, हम सभी जीवित प्राणी पुनर्जन्म के चक्र में फंस जाएंगे, ध्यान का यह प्राचीन मठ नष्ट हो जाएगा।
और अंत में तथागत की सभा में कोई प्रकाश नहीं होगा।
इससे बड़ी मुसीबतें खड़ी हो जाएंगी।
जब भाई बंदर ने लामाओं को यह कहते सुना तो उसके हृदय में क्रोध और उसके पित्त में घृणा का भाव उमड़ आया।
"तुम लामा लोग कितने मूर्ख हो!" वह ज़ोर से चिल्लाया। "क्या तुम्हें सिर्फ़ उन बुरी आत्माओं के बारे में ही पता है? क्या तुम्हें मेरे किए हुए कामों के बारे में कुछ भी नहीं पता?"
"सचमुच नहीं," लामाओं ने बहुत धीमी आवाज़ में उत्तर दिया।
"तो मैं आपको इसके बारे में संक्षेप में बताता हूँ," बंदर ने कहा।
अध्याय 81
1131
पश्चिम की यात्रा
"मैं फूलों और फलों के पर्वत पर बाघों और अजगरों को वश में किया करता था; मैं एक बार स्वर्ग गया और उसके महल में भारी तबाही मचाई।"
जब मुझे भूख लगती थी तो मैं बस दो या तीन ही खा लेता था।
भगवान लाओ ज़ी की अमृत गोलियों में से;
जब मुझे प्यास लगती थी तो मैं छह या सात कप पानी पीता था।
जेड सम्राट की स्वयं की शराब।
जब मैं अपनी सुनहरी आँखों से घूरता हूँ, जो न काली हैं न सफेद, तो आकाश भयानक पीला पड़ जाता है।
जब चंद्रमा बादलों में छिपा हुआ हो।
जब मैं अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी चलाता हूँ जो सही लंबाई की है,

यह अदृश्य रूप से हमला करता है
और अपने पीछे कोई निशान नहीं छोड़ता।
मुझे बड़े या छोटे राक्षसों से क्या लेना-देना है?
चाहे वे कितने भी क्रूर या हिंसक क्यों न हों?
एक बार मैं उनके लिए जाता हूँ
वे भाग सकते हैं, फुर्ती से इधर-उधर भाग सकते हैं, छिप सकते हैं या घबरा सकते हैं।
जब भी मैं एक उठाता हूँ
उन्हें घिसकर छोटा किया जाएगा, पकाया जाएगा, बारीक पीसा जाएगा या ओखली में पीसकर चूर्ण बनाया जाएगा।
मैं उन आठ अमर लोगों में से एक हूं जो समुद्र पार कर रहे हैं।
इनमें से प्रत्येक अपनी जादुई शक्तियों का अनूठा प्रदर्शन करता है।
लामास, मैं उस दुष्ट आत्मा को पकड़कर तुम्हें दिखाऊंगा:
तब आपको पता चलेगा कि यह बंदर किस तरह का व्यक्ति है।
जब लामाओं ने यह सुना तो उन्होंने सिर हिलाया और धीरे से कहा, "जिस तरह से यह गंजे आदमी बकवास कर रहा है और बड़ी-बड़ी बातें कर रहा है, उससे तो यही लगता है कि इसके पीछे कोई न कोई साजिश जरूर है।"
अध्याय 81
1132
पश्चिम की यात्रा
सभी ने विनम्रतापूर्वक सहमति जताते हुए कुछ शब्द कहे, सिवाय उस बुजुर्ग लामा के, जिन्होंने कहा, "रुको। तुम्हारे गुरु जी बीमार हैं, और बुरी आत्मा का संक्रमण होना इतना महत्वपूर्ण नहीं है। जैसा कि कहावत है, जब कोई युवक किसी दावत में जाता है, तो
वह या तो शराब पीकर नशे में धुत हो जाता है या फिर पेट भरकर खाता है।
जब कोई शक्तिशाली योद्धा युद्ध में जाता है
या तो वह घायल हो जाता है या फिर खुद को मार डालता है।
अगर तुम दोनों यहीं लड़ोगे तो तुम्हारे मालिक भी मुसीबत में पड़ सकते हो। यह अच्छा विचार नहीं है।
"तुम सही कह रहे हो," बंदर ने कहा, "तुम सही कह रहे हो। मैं अपने मालिक के लिए

ठंडा पानी लेकर आता हूँ और तुरंत वापस आ जाता हूँ।"
भिक्षापात्र उठाकर उसने उसमें ठंडा पानी भरा, मठ की रसोई से बाहर निकला और मठाधीश के आवास पर वापस जाकर पुकारा, "गुरुजी, आपके लिए ठंडा पानी।" उस समय प्यास से व्याकुल संजांग ने अपना सिर उठाया, दोनों हाथों से कटोरा पकड़ा और पानी का केवल एक घूंट पिया। यह सचमुच एक अनोखा मामला था।
प्यास लगने पर एक बूंद पानी की मीठी ओस के समान होती है;
सही दवा लें और आप बिल्कुल तरोताजा महसूस करेंगे।
आदरणीय बुजुर्ग को धीरे-धीरे स्वस्थ होते और कम चिंतित देखकर बंदर ने पूछा, "क्या आप कुछ सूप और अन्य भोजन का इंतजाम कर सकते हैं, स्वामी जी?"
"वह ठंडा पानी जादुई इलाज साबित हुआ," संज़ंग ने जवाब दिया। "मैं अपनी बीमारी से लगभग आधा ठीक हो चुका हूँ। अगर कुछ खाने को हो तो मुझे कुछ चाहिए।"
“गुरुजी ठीक हैं,” बंदर ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा। “उन्हें सूप और कुछ और खाना चाहिए।” उसने लामाओं को तुरंत कुछ लाने को कहा। उन्होंने चावल धोकर उबाले, नूडल्स बनाए, पैनकेक पकाए, ब्रेडरोल भाप में पकाए और सेवई का सूप तैयार किया। खाने की चार-पाँच थालियाँ लाई गईं, लेकिन तांग पुजारी ने चावल का दलिया आधा ही खाया, जबकि बंदर और साधु सैंड ने मिलकर भी एक थाली भर खाया। सूअर ने बाकी सारा खाना चट कर लिया। फिर खाना बाहर निकाला गया, दीपक जलाया गया और लामा चले गए।
"हम यहां कब से हैं?" संजांग ने पूछा।
"पूरे तीन दिन," बंदर ने जवाब दिया। "कल शाम तक चार दिन हो जाएंगे।"
"हम तीन दिनों में काफी दूरी तय कर सकते थे," संजांग ने जवाब दिया।
“दूरी की चिंता मत करो, स्वामी जी,” बंदर ने कहा। “हम कल निकल पड़ेंगे।”
अध्याय 81
1133
पश्चिम की यात्रा
"हां," संजांग ने कहा, "भले ही मेरी तबीयत अभी भी थोड़ी खराब है, लेकिन इसके लिए कुछ नहीं किया जा सकता।"
"अगर हम कल निकल रहे हैं तो मुझे आज रात ही उस बुरी आत्मा को पकड़ने दो," बंदर ने कहा।

"कौन सी बुरी आत्मा?" संजांग ने आश्चर्य से पूछा। "इस मठ में एक बुरी आत्मा है जिसे मैं उनके लिए पकड़ने जा रहा हूँ," बंदर ने जवाब दिया।
"लेकिन मेरी बीमारी से पूरी तरह ठीक होने से पहले ही तुम ऐसे विचार कैसे रख सकते हो?" संजांग ने पूछा। "अगर उस राक्षस के पास जादुई शक्तियां हैं और तुम उसे पकड़ने में नाकाम रहते हो, तो वह मुझे मार डालेगा, है ना?"
“तुम हमेशा लोगों को नीचा दिखाते रहते हो,” बंदर ने जवाब दिया। “हम जहाँ भी जाते हैं, मैं दुष्ट प्राणियों को वश में कर लेता हूँ। क्या तुमने कभी मुझे हारते हुए देखा है? ऐसा तभी हो सकता है जब मैं कुछ न करूँ। अगर मैं कुछ करूँ तो मेरी जीत निश्चित है।”
"शिष्य," संजांग ने उसे पकड़ते हुए कहा, "यह कहावत बिल्कुल सही है: जब भी संभव हो, लोगों की भलाई करो;
यदि संभव हो तो उनके साथ दयालुतापूर्ण व्यवहार करें।
चिंता करना सच्ची दयालुता के बराबर नहीं हो सकता;
श्रेष्ठता के लिए प्रयास करने से बेहतर है धैर्य रखना।
अपने स्वामी की भावुक विनतियों और राक्षस को वश में करने की अनुमति न देने के बावजूद, बंदर केवल खुलकर बोल सका।
"मैं आपसे सच कहूंगा, गुरुजी," उसने कहा। "यहाँ दुष्ट आत्मा लोगों को खा रही है।"
"इसने किसे खाया है?" संजांग ने हैरानी से पूछा।
"यहां तीन दिनों में इसने इस मठ के छह युवा लामाओं को खा लिया है," बंदर ने कहा, जिस पर संजांग ने जवाब दिया:
"खरगोश की मृत्यु पर लोमड़ियाँ शोक मनाएँगी।"
सभी जीव अपने ही समूह के जीवों की देखभाल करते हैं।
चूंकि इसने इस मठ के भिक्षुओं को खा लिया है और मैं भी एक भिक्षु हूं, इसलिए मैं तुम्हें जाने दूंगा, लेकिन सावधान रहना।"
"मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है," बंदर ने कहा, "जैसे ही यह मेरे हाथ लगेगा, मैं इसे मिटा दूंगा।"
उसे देखो जब वह दीपक की रोशनी में सुअर और साधु रेत को गुरु की रक्षा करने के लिए कहता है। जब वह खुशी-खुशी मठाधीश के आवास से बाहर निकला और बुद्ध हॉल में वापस गया तो उसने देखा कि अध्याय 81 में तारे थे।

आकाश में अभी चाँद नहीं उगा था और हॉल के अंदर अँधेरा था। उसने अपनी जादुई अग्नि का कुछ अंश निकालकर चमकदार दीपक को जलाया, फिर पूरब में रखे ढोल को बजाया और पश्चिम में घंटी बजाई। इतना करने के बाद, उसने खुद को झटककर ग्यारह या बारह साल के एक युवा लामा का रूप धारण कर लिया, जिसने पीली रेशमी कमीज़ और सफेद सूती कुर्ता पहना हुआ था और सूत्र पढ़ते हुए अपने हाथ से लकड़ी की मछली पर प्रहार कर रहा था। उसने पहले पहर तक इंतज़ार किया, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। घटता हुआ चाँद दूसरे पहर में ही उगा। फिर तेज़ हवा की आवाज़ सुनाई दी। यह एक शानदार हवा थी।

काले कोहरे ने आकाश को अंधेरे में ढक लिया;
घने बादलों ने धरती को धुंध से ढक लिया है।
हर तरफ गहरा काला रंग,
सब कुछ नीले रंग में लिपटा हुआ है।
पहले हवा धूल और मिट्टी उड़ाती है;
फिर यह पेड़ों को गिरा देता है और जंगलों को तबाह कर देता है।
धूल और गंदगी के बीच भी तारे चमकते हैं;
जब पेड़ कट जाते हैं और जंगल तबाह हो जाते हैं तो चांदनी धुंधली हो जाती है।

इतनी तेज हवा चल रही है कि चंद्र देवी साला वृक्ष को कसकर पकड़ लेती है और जेड खरगोश औषधि के पात्र की तलाश में चारों ओर भटकता है।

नौ चमकीले तारामंडल के स्वामियों ने अपने द्वार बंद कर लिए;
चारों समुद्रों के ड्रैगन राजा अपने द्वार बंद कर लेते हैं।
शहर का देवता अपने मंदिर में छोटे शैतानों की तलाश करता है;
आकाश में रहने वाले अमर प्राणी अपने बादलों पर सवार नहीं हो सकते।

पाताल लोक के राजा अपने घोड़े के चेहरे वाले राक्षसों की तलाश कर रहे हैं, जबकि घबराए हुए न्यायाधीश अपनी पगड़ियों को उलझा रहे हैं।

हवा इतनी तेज चलती है कि कुनलुन पर्वत की चट्टानें हिलने लगती हैं।
और नदियों और झीलों में लहरों को उत्हलित करता है।

हवा के गुजरते ही कस्तूरी और अगरबत्ती की खुशबू और लटकनों की झंकार सुनाई

देने लगी।
जब बंदर ने ऊपर देखा तो उसे एक अत्यंत सुंदर स्त्री बुद्ध हॉल की ओर जाती हुई दिखाई दी। बंदर ने अपनी पूरी शक्ति से एक सूत्र का जाप किया। स्त्री उसके पास आई, उसे गले लगाया और पूछा, "तुम कौन सा सूत्र पढ़ रहे हो?"
अध्याय 81
1135
पश्चिम की यात्रा
"एक वादा जो मैंने किया था," बंदर ने कहा।
"लेकिन जब बाकी सब सो रहे हैं तो तुम अभी भी इसका पाठ क्यों कर रहे हो?" उसने जोर देकर कहा।
"मैंने कसम खाई थी, तो मैं क्यों न करूँ?" बंदर ने जवाब दिया।
उसे कसकर पकड़े हुए, महिला ने उसके होठों को चूमा और कहा, "चलो थोड़ा मज़ा करने के लिए पीछे चलते हैं।"
बंदर ने जानबूझकर अपना सिर एक तरफ घुमाते हुए जवाब दिया, "इतनी शरारत करना बंद करो।"
"क्या आप लोगों के चेहरों को देखकर उनका भविष्य बता सकते हैं?" महिला ने पूछा।
"मुझे इसके बारे में थोड़ी जानकारी है," बंदर ने जवाब दिया।
"तुम मेरे बारे में क्या बता सकते हो?" उसने आगे कहा। "तुम मुझे कुछ-कुछ ऐसी लगती हो जैसे तुम्हें उसके सास-ससुर ने अजनबियों के साथ संबंध रखने के कारण घर से निकाल दिया हो।"
"तुम गलत हो," उसने जवाब दिया, "तुम गलत हो।"
मुझे मेरे सास-ससुर ने घर से नहीं निकाला है।
और न ही मैंने अजनबियों के साथ संबंध बनाए हैं।
मेरे पिछले जन्म के दुर्भाग्य के कारण
मेरी शादी एक ऐसे पति से हुई है जो मुझसे बहुत छोटा है।
और वह मोमबत्ती की रोशनी वाले बेडरूम में अपने कर्मचारियों के साथ ऐसा नहीं कर सकता:
इसी वजह से मैंने अपने पति को छोड़ दिया है।
आज रात तारे और चाँद इतने चमकीले हैं और हमारी नियति है कि हम सैकड़ों मील

दूर से एक-दूसरे से मिलने आए हैं, तो चलिए पीछे वाले बगीचे में चलते हैं और प्रेम करते हैं।

जब बंदर भाई ने यह सुना तो उसने मन ही मन सिर हिलाया और सोचा, "तो वे सारे मूर्ख लामा कामवासना के बहकावे में आकर मर गए। अब वह मुझे लुभाने की कोशिश कर रही है। हे देवी," उसने जवाब में कहा, "मैं एक भिक्षु हूँ और अभी बहुत छोटा हूँ। मुझे प्रेम-संबंधों के बारे में कुछ नहीं पता।"

"मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें सिखा दूंगी," महिला ने जवाब दिया।

"ठीक है फिर," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा, "मैं उसके साथ चलता हूँ और देखता हूँ कि वह चीजों को कैसे ठीक करती है।"

कंधे से कंधा मिलाकर और हाथ में हाथ डाले वे दोनों बुद्ध हॉल से निकले और सीधे पीछे वाले बगीचे में चले गए। वहाँ राक्षस ने बंदर को ठोकर मारकर गिरा दिया। भयानक चीखों के साथ...

"मेरे प्यारे!" उसने उसके गुप्तांग को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया।

"तो तुम सचमुच मुझे खा जाना चाहती हो, मेरी बच्ची," उसने उसका हाथ पकड़कर उसे इस तरह पटका कि वह लड़खड़ाकर जमीन पर गिर पड़ी।

अध्याय 81

1136

पश्चिम की यात्रा

"तो तुम अपनी प्रेमिका को जमीन पर पटक सकते हो, है ना, मेरे प्यारे?" उसने कहा।

"अगर मैं इस मौके का फायदा उठाकर उसे खत्म नहीं कर देता, तो आखिर किस बात का इंतज़ार कर रहा हूँ?" उसने सोचा। "कहते हैं, पहले वार करो तो जीत, दूसरे वार में हार।" वह कमर पर हाथ रखकर आगे झुका, फिर उछलकर खड़ा हुआ और अपने असली रूप में लौट आया। सोने की पट्टी वाले लोहे के डंडे से उसने राक्षस के सिर पर वार किया।

आश्चर्य से उसने सोचा, "यह युवक कितना भयानक है!" जब उसने ध्यान से देखने के लिए अपनी आँखें खोलीं, तो उसे पता चला कि वह तांग पुजारी का शिष्य बंदर था, लेकिन वह उससे डरी नहीं। आप सोच रहे होंगे कि आखिर वह किस प्रकार की दुष्ट आत्मा थी।

एक सुनहरी नाक,

बर्फीली सफेद फर।
वह एक सुरंग में अपना घर बनाती है।
जहां वह पूरी तरह सुरक्षित है।
तीन सौ साल पहले, अपनी जीवन शक्ति को प्रशिक्षित करने के बाद,
उसने गिद्ध शिखर की कई यात्राएँ कीं।
फूलों और मोमबत्तियों से भरा हुआ सामान ले जा रही है।
तथागत ने उसे स्वर्ग से नीचे भेजा था।
वह शिवालय धारण करने वाले स्वर्ग के राजा की प्रिय पुत्री थी; राजकुमार नेझा उसे अपनी बहन की तरह मानते थे।
वह कोई ऐसी चिड़िया नहीं थी जो समुद्र को भर देती हो।
और न ही वह कोई कछुआ थी जो अपनी पीठ पर पहाड़ ढो रही हो।
वह लेई हुआन की तलवारों से नहीं डरती थी।
और न ही वह लू कियान की तलवार से डरती थी।
वह आई और चली गई
शक्तिशाली हान और यांग्त्से नदियों की तरह बहती हुई;
ऊपर-नीचे हिलता रहा,
यहां तक कि ताइशान और हेंग जैसे ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर भी।
उसके चेहरे की मनमोहक सुंदरता को देखकर
आपको कभी पता नहीं चलेगा कि वह एक चूहे की आत्मा थी जिसके पास महान शक्तियां थीं।
अध्याय 81
1137
पश्चिम की यात्रा
अपनी अपार जादुई शक्तियों के घमंड में उसने दो तलवारें उठाईं, जो उसके दाएं-बाएं वार करने और पूरब-पश्चिम की ओर बढ़ने पर गूंज उठीं। हालांकि बंदर उससे कहीं अधिक शक्तिशाली था, फिर भी वह उसे हरा नहीं सका। तभी चारों ओर से जादुई हवाएं चलने लगीं, जिससे घटता हुआ चंद्रमा धुंधला हो गया। पीछे के बगीचे में उनके बीच एक भयंकर युद्ध हुआ: जमीन से बुरी हवाएं चलने लगीं;
घटते चंद्रमा का प्रकाश मंद था।

ब्रह्मा राजाओं का महल वीरान पड़ा था।
और शैतानों का मठ स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा था।
पिछवाड़े के बगीचे में योद्धा सूर्य और उसके साथियों के बीच युद्ध छिड़ा।
स्वर्ग में एक ऋषि, और वह रोएंदार लड़की,
महिलाओं में एक रानी,
दोनों ही जादुई शक्तियों में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और हार मानने से इनकार कर रहे हैं।
एक ने गुस्से में आकर उस सांवले रंग के गंजे व्यक्ति से अपना दिल फेर लिया;
दूसरे ने अपनी सर्वव्यापी दृष्टि से उस उत्तम वस्त्रधारी महिला को घूरकर देखा।
हाथों में तलवारें लिए,
वह कोई महिला बोधिसत्व नहीं है।
लाठी के प्रहार
वे जीवित वज्रपाणि के समान भयंकर थे।
सुनहरी पट्टी बिजली की तरह चमक उठी;
एक पल के लिए लोहा तारे की तरह सफेद चमक उठा।
उन्होंने आलीशान इमारतों में छिपे कीमती जेड पत्थर को हथिया लिया;
सुनहरे हॉल में मंदारिन बत्तख की मूर्तियां तोड़ दी गईं।
जब बंदरों ने जोर से आवाज निकाली तो चंद्रमा छोटा सा दिखाई देने लगा;
आकाश विशाल था और जंगली हंस चहक रहे थे।
अठारह अर्हत
गुप्त रूप से तालियाँ बजाई गईं;
अध्याय 81
1138
पश्चिम की यात्रा
बत्तीस देवों में से प्रत्येक
घबराहट से ग्रस्त हो गया।
महान ऋषि बंदर इतने उमंग में था कि उसका डंडा कभी नहीं चूकता था। यह महसूस करते हुए कि वह उसका मुकाबला नहीं कर सकती, दुष्ट आत्मा अचानक भौंहें चढ़ाकर खड़ी हो गई और एक योजना सोचने लगी, तभी वह खुद को छुड़ाकर भाग गई।
"तुम कहाँ जा रहे हो, आवारा?" बंदर चिल्लाया। "तुरंत आत्मसमर्पण करो।"

दुष्ट आत्मा ने कोई ध्यान नहीं दिया और भाग गई। जब बंदर उसका पीछा करने लगा तो उसने अपने बाएं पैर से कढ़ाई वाला जूता उतारा, उस पर जादुई सांस फूंकी, मंत्र के शब्द बोले और पुकारा,

"बदलो!" और उसने खुद को एक ऐसे रूप में बदल लिया जो तलवारें लहराते हुए उसकी ओर वापस आया। इसी बीच उसने अपने असली शरीर को झटके से हवा के झोंके में बदल दिया और चली गई।

यह संज़ंग के लिए विपत्ति का कारण बना। वह सीधे मठाधीश के कक्ष की ओर बढ़ी, संज़ंग को एक बादल में उठा लिया, और पल भर में, किसी के कुछ देखने से पहले ही, वह माउंट पिटफॉल पर और अथाह गुफा के अंदर वापस आ गई, जहाँ उसने अपने अधीनस्थों को शाकाहारी विवाह भोज तैयार करने का आदेश दिया।

कहानी फिर से बंदर भाई पर लौट आती है, जो हताशा और बेचैनी से लड़ता रहा, जब तक कि उसे मौका नहीं मिला और उसने एक ही वार में दुष्ट आत्मा को ज़मीन पर पटक दिया, लेकिन उसे पता चला कि वह वास्तव में एक कढ़ाईदार जूता था। यह समझकर कि वह एक चाल में फंस गया है, वह सीधे गुरु से मिलने वापस गया। लेकिन क्या गुरु वहाँ थे? वहाँ केवल मूर्ख और साधु सैंड आपस में कुछ बुदबुदा रहे थे। क्रोध से उसका सीना फूल रहा था, बंदर ने इस बात के सारे विचार त्याग दिए कि उसे क्या करना चाहिए और अपना डंडा उठाकर उस पर हमला करने के लिए तैयार हो गया।

"मैं तुम दोनों को मार डालूंगा," वह चिल्लाया, "मैं तुम दोनों को मार डालूंगा।"

वह मूर्ख हताश था, लेकिन उसके पास बचने का कोई रास्ता नहीं था। हालाँकि, जादुई पर्वत के एक सेनापति, जिसने बहुत कुछ देखा था, फ्रायर सैंड ने बहुत ही सौम्य और सुलहपूर्ण रवैया अपनाते हुए आगे बढ़कर घुटने टेके और कहा, "बड़े भाई, मैं समझता हूँ। मुझे यकीन है कि हम दोनों को मारने के बाद आप स्वामी को बचाने के बजाय सीधे घर वापस जाने का इरादा रखते हैं।"

"तुम दोनों को मारने के बाद मैं खुद उसे बचा लूंगा," बंदर ने पलटवार किया।

"आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?" फ्रायर सैंड ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "हम दोनों के बिना तो ऐसा लगेगा जैसे एक धागे से दूसरी धागा नहीं बुना जा सकता।"

या फिर एक हाथ की हथेली से ताली बजाएं।

आपके सामान या घोड़े की देखभाल कौन करेगा? हमारे लिए यह कहीं बेहतर होगा

कि हम अपने मतभेदों को भुलाकर गुआन झोंग और बाओ शुया की तरह कंधे से कंधा मिलाकर लड़ें, बजाय इसके कि हम सुन बिन और पांग जुआन की तरह बुद्धि की लड़ाई लड़ें। जैसा कि पुरानी कहावत है,

बाघ को मारने के लिए आपको अपने भाइयों की मदद की जरूरत होगी;

पिता और पुत्रों को युद्ध में एक साथ लड़ने दें।

मुझे उम्मीद है कि आप हमें बख्श देंगे, भाई, ताकि कल सुबह हम सब मिलकर एकमत होकर गुरु की खोज में जुट सकें।" हालाँकि उसकी जादुई शक्तियाँ अपार थीं, फिर भी मंकी जानता था कि उस समय क्या सही और ज़रूरी था, इसलिए फ्रायर सैंड की विनतियों ने उसे अपना इरादा बदलने पर मजबूर कर दिया।

"उठो, सुअर और साधु सैंड," उसने कहा। "लेकिन कल जब हम मालिक की तलाश करेंगे तो तुम्हें सच में बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।" वह मूर्ख इतना खुश था कि उसे छोड़ दिया गया था कि वह बंदर को आधा आसमान देने का वादा भी कर सकता था।

“भाई,” फ्रायर सैंड ने कहा, “सब कुछ मुझ पर छोड़ दो।” तीनों शिष्य भाई इतने चिंतित थे कि उनमें से कोई भी सो नहीं सका। वे चाहते थे कि सिर हिलाते ही वे पूरब से सूर्य उगा सकें और एक ही साँस में आकाश के सारे तारे बुझा सकें।

भोर तक वहीं बैठे रहने के बाद, तीनों ने अपना सामान समेटा और बाहर निकलने ही वाले थे कि तभी उन्होंने देखा कि एक लामा ने द्वार को अवरुद्ध कर दिया है और पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं, सज्जनों?"

“यह तो बहुत शर्मनाक है,” बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “कल मैंने सभी भिक्षुओं के सामने शेखी मारी थी कि मैं उनके लिए उस दुष्ट आत्मा को पकड़ लूँगा। लेकिन पकड़ने के बजाय उसने मेरे गुरु को गायब कर दिया है। हम उन्हें ढूंढने जा रहे हैं।”

“मेरे स्वामी,” लामाओं ने भयभीत होकर कहा, “हमारी मामूली समस्या में आपके गुरु का भी दखल हो गया है। आप उन्हें कहाँ ढूँढेंगे?”

"मुझे पता है मैं कहाँ ढूँढूँगा," बंदर ने जवाब दिया।

"भले ही आप जा रहे हैं, कृपया इतनी जल्दी मत कीजिए," लामाओं ने कहा। "पहले

नाश्ता कर लीजिए।" गरमा गरम दलिया के दो-तीन कटोरे लाए गए, जिसे सुअर ने बड़े चाव से चट कर दिया।
उन्होंने कहा, "कितने उत्तम भिक्षु हैं! जब हमें गुरु मिल जाएंगे, तो हम आपसे दोबारा मिलने यहाँ आएंगे।"
"तुम्हारा मतलब है कि वापस आकर उनका खाना खाओगे," बंदर ने कहा। "जाकर देखो कि क्या वह लड़की अभी भी देवराजों के पास है।"
बड़ा कमरा।"
“वह चली गई हैं, महाराज,” लामाओं ने कहा, “वह चली गई हैं। उन्होंने वहाँ केवल एक रात बिताई और अगली सुबह चली गईं।” बंदर ने प्रसन्नतापूर्वक लामाओं से विदा ली और सुअर और साधु सैंड को घोड़े को आगे ले जाने और सामान उठाने का आदेश दिया, क्योंकि वे पूर्व की ओर वापस चल पड़े।
"भाई," सुअर ने कहा, "तुम गलत हो। हम पूरब की ओर क्यों जा रहे हैं?"
“तुम्हें पता नहीं होगा,” बंदर ने कहा। “वो लड़की जिसे कुछ दिन पहले काले चीड़ के जंगल में बांधकर रखा गया था—मैंने अपनी तेज आँखों और सुनहरी पुतलियों से उसे पहचान लिया था, लेकिन तुम सबने उसे अच्छा समझा। और अब उसी ने भिक्षुओं को खा लिया है और उसी ने गुरु को अगवा कर लिया है। तुम सबने उस ‘बोधिसत्व देवी’ को बचाकर बहुत अच्छा काम किया। क्योंकि वही गुरु को अगवा करके ले गई है, इसलिए हम उसी रास्ते से वापस जा रहे हैं जिससे हम आए थे, उसे ढूंढने के लिए।”
"शाबाश, शाबाश," बाकी दोनों ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा। "तुम दिखने में जितने लगते हो उससे कहीं ज्यादा होशियार हो। चलो चलते हैं।"
अध्याय 81
1140
पश्चिम की यात्रा
वे तीनों जल्दी से जंगल में वापस चले गए, जहाँ उन्हें केवल बादलों के ढेर दिखाई दिए।
घना कोहरा,
चट्टान की कई परतें,
एक घुमावदार रास्ता।
लोमड़ियों और खरगोशों के पदचिह्न एक दूसरे को काटते हैं;

बाघ, तेंदुआ, सियार और भेड़िया झाड़ियों के बीच से आते-जाते रहते हैं।
जंगल में किसी राक्षस का कोई निशान नहीं दिखाई दे रहा था।
उन्हें नहीं पता कि संजांग कहाँ मिल सकता है।
घबराहट में बंदर ने अपना गदा निकाला, खुद को झटका दिया और ऐसा दिखने लगा जैसे उसने स्वर्ग में तबाही मचाई हो, तीन सिर, छह भुजाएँ और छह हाथों से तीन गदाएँ चलाते हुए। इन्हीं गदाओं से वह पेड़ों पर उग्रता और शोर मचाते हुए प्रहार करने लगा।
यह देखकर सुअर ने कहा, "साधु सैंड, गुरु को न पाकर पागल हो गया है।" दरअसल, बंदर पेड़ों के बीच से रास्ता बनाते हुए दो बूढ़े आदमियों - पर्वत देवता और स्थानीय देवता - को बाहर ले आया था। वे उसके पास आए, घुटने टेके और बोले, "महान ऋषि, इस पर्वत के देवता और स्थानीय देवता आपको प्रणाम करते हैं।"
"वह छड़ी वाकई कारगर है," पिग ने कहा। "वह उससे रास्ता साफ करता है और पहाड़ के देवता और स्थानीय देवता को बाहर निकाल देता है। अगर वह एक और रास्ता साफ करे तो वह एक दुष्ट तारे को भी बाहर निकाल देगा।"
"पर्वत देवता, स्थानीय देवता," बंदर ने कहा, "आप कलंक हैं। आप यहाँ के डाकुओं के साथ मिले हुए हैं।"
जब उन्हें अच्छा माल मिलता है, तो वे तुम्हारे लिए सूअर और भेड़ें बलि के रूप में खरीदते हैं। इसके अलावा, तुम उस दुष्ट आत्मा के साथी हो। तुमने मेरे मालिक का अपहरण करने और उसे यहाँ लाने में उसकी मदद की। उसे कहाँ छिपाया गया है? अगर मार से बचना चाहते हो तो अभी सच बताओ।
“हे महान ऋषि,” दोनों देवताओं ने चिंता से कहा, “आप हमें गलत समझ रहे हैं। दुष्ट आत्मा हमारे पर्वत पर नहीं रहती और न ही हमारे अधिकार क्षेत्र में आती है। लेकिन रात में जब हवा चलती है तो हमने उसके बारे में कुछ सुना है।”
"मुझे वह सब कुछ बताओ जो तुम जानते हो," बंदर ने कहा।
“दुष्ट आत्मा तुम्हारे स्वामी को यहाँ से तीन सौ मील से भी अधिक दक्षिण में ले गई,” स्थानीय देवता ने उत्तर दिया। “वहाँ एक पर्वत है जिसका नाम माउंट पिटफॉल है और उसमें एक गुफा है जिसे अथाह गुफा कहते हैं। उसे उस गुफा से एक भेस बदले दुष्ट आत्मा द्वारा वहाँ ले जाया गया था।” यह खबर सुनकर बंदर को गहरा सदमा लगा, जिसे उसने किसी को नहीं बताया।

पर्वत देवता और स्थानीय देवता को उन्हें विदा करने के लिए चिल्लाते हुए, उसने अपना जादुई रूप त्याग दिया, वापस अपने असली रूप में आ गया और पिग और फ्रायर सैंड से कहा, "गुरु यहाँ से बहुत दूर हैं।"

अध्याय 81

1141

पश्चिम की यात्रा

"अगर दूरी ज्यादा है तो बादल से चलते हैं," पिग ने जवाब दिया।

वह महान मूर्ख तेज हवा में आगे बढ़ गया, उसके पीछे-पीछे बादल पर सवार साधु सैंड चल रहा था। चूंकि सफेद घोड़ा मूल रूप से एक अजगर का पुत्र था, इसलिए वह भी हवा और कोहरे के साथ आया और अपनी पीठ पर सामान लादे हुए था। महान ऋषि ने कलाबाजी करते हुए दक्षिण की ओर प्रस्थान किया, और थोड़ी ही देर में एक ऊँचा पर्वत दिखाई दिया जो बादलों का रास्ता रोक रहा था।

उन तीनों ने घोड़े को पकड़ा और बादलों को रोक दिया। पहाड़ कुछ इस तरह दिख रहा था: शिखर नीले आकाश को छू रहा था।

इसकी चोटियाँ आकाश के नीले रंग से मिल गईं।

चारों ओर लाखों पेड़ उग रहे थे।

चारों ओर उड़ते हुए पक्षी जोर-जोर से गा रहे थे।

बाघ और तेंदुए झुंड में चलते थे।

पानी के हिरण और रोबक झाड़ियों के बीच से गुजर रहे थे।

दक्षिणी ढलानों पर दुर्लभ सुगंधित फूल खिले;

उत्तरी तरफ की बर्फ कभी नहीं पिघली।

इसकी चोटियाँ खड़ी और चट्टानी थीं।

इसके किनारे और चट्टानी सतहें बेहद खड़ी थीं।

शिखर सीधे ऊपर की ओर उठे

और चारों ओर गहरी खाइयाँ फैली हुई थीं।

यह चीड़ के पेड़ों के बीच गहरे हरे रंग का था।

और चट्टानें नुकीली थीं।

इससे यात्री के मन में भय उत्पन्न हो गया।

लकड़हारों का कोई निशान नहीं दिखाई दे रहा था।

और जड़ी-बूटियां चुनने वाले अमर लड़के गायब हो गए थे।
यहां के बाघ और तेंदुए कोहरा पैदा कर सकते हैं।
और सभी लोमड़ियों ने हवाओं को गर्जनापूर्ण बना दिया।
अध्याय 81
1142
पश्चिम की यात्रा
"भाई," सुअर ने कहा, "यह पहाड़ इतना ऊंचा और सीधा है कि इस पर जरूर कोई बुरी शक्ति रहती होगी।"
“यह तो ज़ाहिर सी बात है,” बंदर ने जवाब दिया। “ऊँचे पहाड़ों पर तो राक्षस होते ही हैं; ऐसी कोई खड़ी चोटी नहीं जहाँ आत्माएँ न हों। साधु सैंड,” उसने पुकारा, “हम दोनों यहीं रुकेंगे, जबकि हम सुअर को पहाड़ों की गुफाओं में भेजेंगे ताकि वह आस-पास खोजबीन करे और हमारे लिए सबसे अच्छा रास्ता खोज निकाले। अगर सच में कोई गुफा महल है, तो उसे प्रवेश द्वार ज़रूर ढूँढ़ना होगा। सब कुछ पता कर लो ताकि हम साथ में अंदर जाकर स्वामी को ढूँढ़ सकें और उसे बचा सकें।”
"मेरी बदकिस्मती ही ऐसी है कि मुझे पहले जाना पड़ा और सारा बोझ उठाना पड़ा," सुअर ने कहा।
"कल रात तुमने कहा था कि हम सब कुछ तुम पर छोड़ सकते हैं," बंदर ने जवाब दिया, "तो अब तुम इससे क्यों पल्ला झाड़ने की कोशिश कर रहे हो?"
"मुझ पर चिल्लाना बंद करो," सुअर ने कहा। "मैं जा रहा हूँ।" उस मूर्ख ने अपना फावड़ा नीचे रखा, अपने कपड़े खींचे और खाली हाथ पहाड़ से नीचे कूद गया ताकि रास्ता ढूंढ सके।
अगर आपको नहीं पता कि यह विदाई अच्छी थी या बुरी, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 82
लड़की लड़के की तलाश में है
आदिम देवता मार्ग की रक्षा करते हैं
कहानी बताती है कि कैसे सुअर पहाड़ की ढलान से नीचे कूदा और उसे एक संकरा रास्ता मिला। लगभग दो मील चलने के बाद वह दो राक्षसी महिलाओं के पास पहुँचा जो कुएँ से पानी भर रही थीं। उसे कैसे पता चला कि वे दोनों राक्षसी थीं? क्योंकि

दोनों के सिर पर बेहद अजीबोगरीब हेयरस्टाइल थी, जिसे एक फुट दो या तीन इंच ऊँची बांस की पतली डंडियों से टिकाया गया था।
"दुष्ट राक्षस," पिग ने उनके पास जाते हुए कहा।
दोनों ने एक-दूसरे को देखा और कहा, "यह साधु कितना घिनौना है! हम इसे जानते नहीं और न ही इससे हमारी कभी कोई बातचीत हुई है। फिर इसने हमें दुष्ट राक्षस क्यों कहा?" क्रोधित होकर राक्षसों ने वह डंडा उठाया जिससे वे पानी ढोने वाले थे और उससे सूअर के सिर पर प्रहार किया।
निहत्था होने के कारण कुछ वारों को रोकने में असमर्थ रहने पर, वह मूर्ख अपने दोनों हाथों से अपना सिर ढककर चिल्लाते हुए पहाड़ पर वापस भागा, "भाई! वापस जाओ! राक्षस बहुत क्रूर हैं।"
"उनमें ऐसी क्या बुरी बात है?" बंदर ने पूछा।
"खोखले इलाके में कुएं से दो दुष्ट आत्माएं पानी निकाल रही थीं," पिग ने कहा, "और उन्होंने मुझे सिर्फ इसलिए तीन-चार बार अपनी डंडी से मारा क्योंकि मैंने उनसे बात की थी।"
"तुमने उन्हें क्या नाम दिया?" बंदर ने पूछा।
"दुष्ट राक्षस," सुअर ने उत्तर दिया।
"तो फिर तुम तो बाल-बाल बच गए," बंदर हंसते हुए बोला।
अध्याय 82
1143
पश्चिम की यात्रा
"आपकी चिंता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद," सुअर ने जवाब दिया। "मेरे सिर पर जहां चोट लगी है, वहां सूजन आ गई है, और आप कह रहे हैं कि मुझे मामूली चोट लगी है।"
"मीठे शब्दों से आप दुनिया में कहीं भी पहुँच सकते हैं; कठोर व्यवहार करोगे तो एक कदम भी नहीं बढ़ पाओगे," बंदर ने उत्तर दिया।
"क्योंकि वे यहीं के बदमाश हैं और हम दूर से आए साधु हैं, इसलिए तुम्हें थोड़ा तो विनम्र होना ही चाहिए था, चाहे तुम्हारे पूरे शरीर पर मुट्ठियाँ ही क्यों न उग आई हों। क्या तुम्हें लगता है कि उन्हें तुम्हारी जगह मुझे मारना चाहिए था? तुमने ही तो उन्हें दुष्ट राक्षस कहा था। शिष्टाचार सबसे पहले!"

"मुझे कभी एहसास ही नहीं हुआ," पिग ने कहा।
बंदर ने कहा, "तुम बचपन से ही पहाड़ों में इंसानी मांस खाकर जीते आए हो, तो क्या तुम दो तरह के पेड़ों को पहचान सकते हो?"
"मुझे नहीं पता," सुअर ने कहा। "कौन से दो पेड़?"
“विल्लो और चंदन,” बंदर ने उत्तर दिया। “विल्लो बहुत कोमल होता है, इसलिए कारीगर उससे पवित्र मूर्तियाँ तराशते हैं या तथागत की प्रतिमाएँ बनाते हैं। उस पर सोने का पानी चढ़ाया जाता है, रंगा जाता है, रत्न जड़े जाते हैं, फूलों से सजाया जाता है, और कई भक्त उसकी पूजा करते हैं। उसे असीम आशीर्वाद प्राप्त होता है। लेकिन चंदन इतना कठोर होता है कि उसे तेल निकालने की मशीन में लोहे के छल्लों से दबाकर इस्तेमाल किया जाता है, और उस पर लोहे के हथौड़े भी मारे जाते हैं। उसे इस तरह कष्ट सहना केवल इसलिए पड़ता है क्योंकि वह बहुत कठोर होता है।”
"तुम्हें यह सब मुझे पहले ही बता देना चाहिए था," सुअर ने कहा, "तब मेरी पिटाई नहीं होती।"
"अब वापस जाओ और सच्चाई का पता लगाओ," भाई बंदर ने कहा।
"लेकिन अगर मैं दोबारा वहां गया तो वे मुझे पहचान लेंगे," पिग ने जवाब दिया।
"तो फिर किसी और चीज में बदल जाओ," बंदर ने कहा।
"लेकिन अगर मैं किसी और चीज में बदल भी जाऊं, भाई, तो मैं उनसे सवाल कैसे कर पाऊंगा?" सुअर ने पूछा।
"जब आप अलग दिखें तो उनके पास जाकर उन्हें प्रणाम करें," बंदर ने जवाब दिया। "उनकी उम्र देखें। अगर वे हमारी ही उम्र की हों तो उन्हें 'मिस' कहकर पुकारें, और अगर वे हमसे काफी बड़ी हों तो उन्हें 'लेडी' कहकर पुकारें।"
"यह तो सरासर पतन है: जब वे इतनी दूर से आए अजनबी हैं तो हमें उन्हें अपने रिश्तेदार क्यों मानना चाहिए?" सुअर ने कहा।
"यह उन्हें रिश्तेदार नहीं मान रहे हैं," बंदर ने जवाब दिया। "यह तो बस उनसे सच उगलवाने का एक तरीका है। अगर उन्होंने हमारे मालिक को पकड़ा है तो हम कार्रवाई कर पाएंगे; और अगर उन्होंने नहीं पकड़ा है तो हम कहीं और जाकर लड़ने में जरा भी देर नहीं करेंगे।"
"तुम सही कह रहे हो," सुअर ने कहा। "मैं वापस जा रहा हूँ।"
उस मूर्ख ने अपना रेक अपनी कमर में दबाया, खोखले में उतरा, खुद को झटककर

एक गहरे रंग के साधु में बदल गया। वह अकड़ते हुए राक्षसों के पास गया, सम्मान में ज़ोर से "ना-आ-आ" का उच्चारण किया और बोला, "आदरपूर्वक नमस्कार, देवियों।"
“यह भिक्षु तो बहुत ही बढ़िया है,” दोनों राक्षसों ने प्रसन्नता से कहा। “यह सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है और जानता है कि हमसे उचित ढंग से कैसे बात करनी है।” फिर उन्होंने उससे पूछा, “आदरणीय बुज़ुर्ग, आप कहाँ से आए हैं?”
"कहीं से," सुअर ने जवाब दिया।

उन्होंने पूछा, "और आप कहाँ जा रहे हैं?"
"कहीं न कहीं," सुअर ने जवाब दिया।
उन्होंने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"
"यह क्या है," सुअर ने फिर जवाब दिया।
"हो सकता है वो बेहतर हो," राक्षसों ने हंसते हुए कहा, "लेकिन वो अपने बारे में कुछ नहीं बताता। वो बस हमारे सवालों को दोहराता है।"
"महिलाओं," सुअर ने पूछा, "आप पानी क्यों ला रही हैं?"
“तुम्हें पता नहीं होगा, भिक्षु,” राक्षसों ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “हमारी स्वामिनी कल रात एक तांग पुजारी को गुफा में लाई हैं और उनकी अच्छी देखभाल करना चाहती हैं। हमारी गुफा का पानी उतना साफ नहीं है, इसलिए उन्होंने हम दोनों को यिन और यांग के मिलन से उत्पन्न इस स्वच्छ जल को लाने के लिए भेजा है। उन्होंने तांग पुजारी के लिए शाकाहारी भोज का भी आयोजन किया है; आज शाम उनकी उनसे शादी होने वाली है।”
यह सुनते ही वह मूर्ख चिल्लाते हुए सीधे पहाड़ पर वापस भागा। "फ्रायर सैंड, सामान तुरंत यहाँ लाओ। हम इसे आपस में बाँट रहे हैं।"
"क्यों, भाई?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"जब हम इसे बाँट लेंगे, तो तुम वापस बहती रेत की नदी में नरभक्षी बनने जा सकते हो," सुअर ने उत्तर दिया। "मैं अपनी पत्नी से मिलने गाओ गाँव लौटूँगा, बड़ा भाई फूलों और फलों के पहाड़ पर ऋषि की भूमिका निभा सकता है, और सफेद अजगर फिर से समुद्र में अजगर बन सकता है। स्वामी की शादी इस बुरी आत्माओं की गुफा

में हो रही है।"
चलिए हम सब जाकर आराम करें।
"तुम फिर से बकवास कर रहे हो, बेवकूफ," भाई बंदर ने जवाब दिया।
"मैं बिलकुल भी नहीं हूँ," सुअर ने पलटकर जवाब दिया। "पानी ढोने वाले उन दो दुष्ट आत्माओं ने अभी-अभी कहा था कि मालिक के लिए शाकाहारी शादी की दावत का आयोजन किया जा रहा है।"
"तुम ऐसी बातें कैसे कह सकते हो, जबकि दुष्ट आत्माएं स्वामी को गुफा में बंदी बनाकर रखे हुए हैं और वह चाहता है कि हम अंदर जाकर उसे बचाएं?" बंदर ने कहा।
"हम उसे कैसे बचा सकते हैं?" सुअर ने पूछा।
"तुम दोनों घोड़ा और सामान ले आओ, हम इन दो राक्षसी महिलाओं को मार्गदर्शक बनाकर चलते हैं," बंदर ने उत्तर दिया। "प्रवेश द्वार पर पहुँचकर हम मिलकर कार्य कर सकते हैं।"
वह मूर्ख बंदर के साथ ही चल सका, क्योंकि बंदर उन दोनों राक्षसों का पीछा करते हुए पहाड़ों में पाँच-छह मील अंदर तक चला गया, और फिर अचानक गायब हो गया।
"तो गुरु को दिन दहाड़े एक शैतान ने पकड़ लिया।"
सुअर ने आश्चर्य से कहा।
बंदर ने कहा, "तुम्हारी नज़र बहुत तेज़ है। फिर भी तुम कैसे बता सकते हो कि वे असल में क्या थे?"
"वे दोनों राक्षस पानी को बहाकर ले जा रहे थे कि अचानक गायब हो गए। वे दिनदहाड़े शैतान ही होंगे।"
बंदर ने कहा, "मुझे लगता है वे किसी गुफा में गए हैं। रुको, मैं जाकर देखता हूँ।"
अध्याय 82
1145
पश्चिम की यात्रा
महान संत ने अपनी सुनहरी पुतलियों वाली तेजस्वी आँखें खोलीं और पूरे पर्वत का अवलोकन किया। उन्हें कोई हलचल नहीं दिखी, लेकिन चट्टान के सामने एक भव्य मेहराब दिखाई दिया, जो कई फूलों और रंगों से अत्यंत जटिल ढंग से बना था, जिसमें तीन छज्जे और चार प्रकार की सजावट थी। पिग और फ्रायर सैंड के साथ पास जाकर उन्होंने उस पर चार बड़े शब्द लिखे देखे:

बंदर ने कहा, "भाइयों, यह दुष्ट आत्माओं का द्वार है, लेकिन मुझे अभी भी नहीं पता कि प्रवेश द्वार कहाँ है।"

“ज़्यादा दूर नहीं होगा,” फ्रायर सैंड ने कहा, “ज़्यादा दूर नहीं होगा। चलो इसे अच्छी तरह से ढूंढते हैं।” जब वे मुड़कर देखने लगे तो उन्होंने मेहराब के नीचे पहाड़ की तलहटी में तीन मील से भी ज़्यादा चौड़ी एक विशाल चट्टान देखी। उसके बीचोंबीच एक पानी के कुंड के आकार का छेद था, जो बार-बार चढ़ने के कारण बहुत फिसलन भरा हो गया था।

"भाई," सुअर ने कहा, "दुष्ट आत्माएं अपनी गुफा में यहीं से आती-जाती हैं।"

"यह तो बहुत अजीब है," बंदर ने कहा। "सच कहूँ तो, जब से मैंने तांग पुजारी की सुरक्षा शुरू की है, तब से मैंने कई बुरी आत्माओं को पकड़ा है, लेकिन मैंने पहले कभी इस तरह का गुफा महल नहीं देखा। सुअर, तुम पहले नीचे जाओ और पता लगाओ कि यह कितना गहरा है। फिर मैं अंदर जाकर गुरु को बचा लूँगा।"

"यह मुश्किल होगा," सुअर ने सिर हिलाते हुए कहा, "बहुत मुश्किल। मैं बहुत अनाड़ी हूँ। अगर मैं ठोकर खाकर गिर गया तो मुझे तल तक पहुँचने में दो या तीन साल लग सकते हैं।"

"तो फिर यह कितना गहरा है?" बंदर ने पूछा।

"देखो," सुअर ने उत्तर दिया, और जब महान ऋषि ने ध्यान से देखने के लिए गड्ढे के किनारे पर झुककर देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह वास्तव में बहुत गहरा था और उसकी लंबाई सौ मील से भी अधिक रही होगी।

"यह बहुत ही गहरा मामला है, भाई," उसने मुड़कर कहा।

"तो फिर वापस जाओ," सुअर ने जवाब दिया। "मालिक को बचाना अब संभव नहीं है।"

“क्या बात है!” बंदर ने पलटकर कहा। “आलस्य के बारे में सोचना भी मत; आलस्य को अपने मन से निकाल दो। सामान नीचे रखो और घोड़े को मेहराब के एक खंभे से बाँध दो। तुम और साधु सैंड अपने रेक और लाठी से प्रवेश द्वार को बंद कर दो, जबकि मैं अंदर जाकर जाँच करता हूँ। अगर मालिक सचमुच अंदर है तो मैं अपनी लोहे की लाठी से बुरी आत्माओं को भगा दूँगा, और जब वे प्रवेश द्वार तक पहुँचें तो तुम उन्हें बाहर मत निकलने देना। हम बुरी आत्माओं को तभी मार सकेंगे और मालिक को बचा

सकेंगे जब हम मिलकर काम करेंगे।" बाकी दोनों ने उनके आदेश मान लिए।
बंदर छेद में कूद गया, और उसके पैरों के नीचे हज़ारों रंग-बिरंगे बादल दिखाई दिए, जबकि शुभ धुंध की हज़ारों परतों ने उसे ढक लिया। वह जल्द ही तल पर पहुँच गया, जो बहुत गहरा था। अंदर सब कुछ उज्ज्वल था; ऊपर की दुनिया की तरह ही वहाँ भी धूप, हवाएँ, फूल, फल और पेड़ थे।
"कितनी सुंदर जगह है," बंदर ने सोचा। "यह मुझे उस जल-परदे वाली गुफा की याद दिलाती है जो स्वर्ग ने मुझे मेरे जन्मस्थान पर दी थी। यह भी एक गुफाओं का स्वर्ग है।" चारों ओर देखते हुए उसने दोहरी छत वाला एक द्वार-मीनार देखा, जिसके चारों ओर चीड़ और बांस के कई झुंड उगे हुए थे। अंदर कई इमारतें थीं।
"यहीं पर दुष्ट आत्मा का वास होना चाहिए," उसने सोचा। "मैं अंदर जाकर पता लगाता हूँ कि क्या चल रहा है। नहीं, रुको। अगर मैं ऐसे ही अंदर गया तो वह मुझे पहचान लेगी। बेहतर होगा कि मैं अपना रूप बदल लूँ।" एक झटके और हाथ के मंत्र से उसने अपना रूप बदल लिया।

वह उड़कर हल्के कदमों से द्वार-मीनार पर उतरा और छुपकर सुनने लगा। यहाँ से उसने देखा कि राक्षसी घास-फूस की बनी एक झोपड़ी में आराम से बैठी है। वह चीड़ के जंगल में उसे बचाने के समय या मठ में बंदर को पकड़ने की कोशिश करते समय की तुलना में कहीं अधिक सुंदर ढंग से सजी हुई थी: उसके बाल कौवे के काले रंग के केशविन्यास में बंधे हुए थे;
उसने हरे रंग की मखमली जैकेट पहनी हुई थी।
उसके पैर सुनहरे कमलों की तरह घुमावदार थे;
उसकी उंगलियां वसंत ऋतु में खिलने वाले बांस के अंकुरों की तरह नाजुक थीं।
उसका पाउडर लगा चेहरा चांदी की थाली जैसा था।
और उसके लाल होंठ चेरी की तरह चमकदार थे।
वह बेहद खूबसूरत थी।
चांद पर बैठी महिला से भी अधिक सुंदर।
उस सुबह तीर्थयात्री भिक्षु को पकड़ने के बाद
वह उसके साथ बिस्तर साझा करने का सुख जानने वाली थी।

बंदर चुपचाप उसकी बात सुनने लगा। थोड़ी देर बाद उसके होंठों की लाली खुल गई और उसने बड़े हर्ष से कहा, "मेरे प्यारे बच्चों, जल्दी से शाकाहारी दावत का इंतज़ाम करो। इसके बाद मैं और मेरे प्रिय तांग पुजारी पति-पत्नी बनने वाले हैं।"

“तो यह सच है,” बंदर भाई ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा। “मुझे लगा था कि सुअर मज़ाक कर रहा था। मुझे उड़कर अंदर जाना चाहिए और गुरुजी को ढूँढना चाहिए। पता नहीं उनका क्या हाल है। अगर वे भटक गए हैं तो मैं उन्हें यहीं छोड़ रहा हूँ।” जब उसने अपने पंख फैलाए और अंदर देखने के लिए उड़ा तो उसने देखा कि तांग पुजारी एक गलियारे में बैठे हैं, जिसके नीचे अपारदर्शी लाल कागज़ से ढकी जाली है और ऊपर का हिस्सा खुला है।

जालीदार कागज में छेद करते हुए बंदर तांग पुजारी के गंजे सिर पर उतरा और "गुरुजी" कहकर पुकारा।

"मुझे बचाओ, शिष्य," सान्ज़ांग ने जवाब दिया, जिसने मंकी की आवाज पहचान ली थी।

“आप किसी काम के नहीं हैं, गुरुजी,” बंदर ने कहा। “दुष्ट आत्मा दावत दे रही है, और जब आप दोनों उसे खा लेंगे तो आपकी शादी हो जाएगी। मुझे उम्मीद है कि आपको एक बेटा या बेटी होगी जिससे भिक्षुओं और भिक्षुणियों की एक और पीढ़ी शुरू होगी।”

आपको इतना गुस्सा क्यों आ रहा है?

जब आदरणीय बुजुर्ग ने यह सुना तो वे दांत पीसते हुए बोले, "शिष्य, चांगआन छोड़ने के बाद से, जब मैंने तुम्हें दोहरी सीमा पर्वत पर अपना अनुयायी बनाया और पश्चिम की ओर अपनी यात्रा शुरू की, तब से मैंने कभी मांस नहीं खाया और न ही कभी कोई बुरा विचार किया? अब दुष्ट आत्मा ने मुझे जकड़ लिया है, वह मुझसे संभोग करने की ज़िद कर रही है। यदि मैं अपना सच्चा पुरुषत्व खो दूं, तो मैं पुनर्जन्म के चक्र से गिर जाऊं और हमेशा के लिए अंधकार पर्वतों के पीछे स्थिर हो जाऊं, फिर कभी उठ न पाऊं।"

अध्याय 82

1147

पश्चिम की यात्रा

बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "कोई शपथ लेने की जरूरत नहीं है। अगर तुम सचमुच

पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाना चाहते हो, तो मैं तुम्हें वहां ले जाऊंगा।"
"मुझे याद नहीं आ रहा कि मैं किस रास्ते से अंदर आया था," संजांग ने जवाब दिया।
“भूलने की चिंता मत करो,” बंदर ने कहा। “तुम यहाँ से उतनी आसानी से नहीं निकल पाओगे जितनी आसानी से अंदर आए थे, यानी ऊपर से नीचे की ओर। अगर मैं तुम्हें अभी बचा भी लेता हूँ तो तुम्हें नीचे से ऊपर की ओर जाना होगा। अगर तुम्हारी किस्मत बहुत अच्छी रही तो तुम प्रवेश द्वार से निकलकर भाग जाओगे। लेकिन अगर तुम्हारी किस्मत साथ नहीं दी तो तुम निकल भी नहीं पाओगे और देर-सवेर दम घुटकर मर जाओगे।”
"यह बहुत भयानक है," संजांग ने कहा, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। "अब हम क्या करें?"
"कोई बात नहीं," बंदर ने कहा, "कोई बात नहीं। दुष्ट आत्मा तुम्हारे लिए शराब तैयार करवा रही है। तुम्हें चाहे या न चाहे, एक प्याला पीना ही पड़ेगा। लेकिन तुम्हें इसे जल्दी से उड़ेल देना होगा ताकि इसमें खूब झाग बने।"
फिर मैं खुद को एक छोटे से कीड़े में बदल लूंगा और बुलबुलों के नीचे उड़ जाऊंगा। जब वह मुझे निगल जाएगी, तो मैं उसके दिल और जिगर के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा और उसकी आंतें फाड़ दूंगा। एक बार जब मैं उसे मार डालूंगा, तो तुम बच निकलोगे।
"लेकिन शिष्य, ऐसा करना अमानवीय होगा," संजांग ने कहा।
"अगर तुम्हारी एकमात्र रुचि दयालुता दिखाने में है, तो तुम्हारा काम तमाम हो गया," बंदर ने जवाब दिया। "वह दुष्ट आत्मा हत्यारी है। तुम्हें उसकी इतनी परवाह क्यों है?"
"खैर," संज़ंग ने कहा, "कोई बात नहीं। लेकिन आपको मेरे साथ रहना होगा।"
सचमुच: महान ऋषि सूर्य ने तांग संज़ंग की अच्छी तरह रक्षा की;
तीर्थयात्री पुजारी सुंदर बंदर राजा पर निर्भर था।
गुरु और शिष्य की चर्चा अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि दुष्ट आत्मा, जिसने सब कुछ व्यवस्थित किया था, गलियारे से अंदर आई, दरवाजे खोले और "आदरणीय महोदय" कहकर पुकारा। तांग पुजारी उत्तर देने का साहस नहीं कर सके।
उसने उससे दोबारा बात की, और फिर भी वह जवाब देने की हिम्मत नहीं कर पाया।
ऐसा क्यों था? वह सोच रहा था कि खुले मुंह से दिव्य ऊर्जा बिखर जाती है;
समस्या तब शुरू होती है जब जीभ हिलने लगती है।
वह मन ही मन सोच रहा था कि अगर उसने हठपूर्वक मुंह खोलने से इनकार कर दिया

तो वह दुष्ट आत्मा क्रोधित होकर पल भर में उसकी हत्या कर सकती है। जब वह असमंजस में था, यह सोच रहा था कि कौन सा विकल्प चुने और क्या करे, तभी उस दुष्ट आत्मा ने तीसरी बार उसे "आदरणीय महोदय" कहकर संबोधित किया।
तांग पुरोहित के पास "मैं यहाँ हूँ, महोदया" कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उनके लिए यह उत्तर देना मानो उनके शरीर के सारे मांस के टुकड़े-टुकड़े कर देने जैसा था। अब सब कहते हैं कि तांग पुरोहित एक सच्चे भिक्षु हैं, तो वे उस स्त्री को कैसे जवाब दे सकते थे जो बुद्ध की पूजा करने और पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने जा रही थी?

आपको शायद इस बात का एहसास नहीं होगा कि यह एक ऐसा संकट था जिसमें उसका अस्तित्व ही दांव पर लगा था, उसके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था; और यद्यपि उसने जवाब देने का दिखावा किया, लेकिन भीतर से वह वासना से रहित था। लेकिन जब दुष्ट आत्मा ने उसका जवाब सुना, तो उसने दरवाजा खोल दिया, तांग पुजारी को उठने में मदद की, उसका हाथ पकड़ा, उसके बगल में खड़ी हो गई और उसके कान में फुसफुसाया, "देखो उसे, वह कैसे अपने आकर्षण से सबको मोहित कर रही है और हर संभव तरीके से खुद को आकर्षक बना रही है।" उसे इस बात का एहसास नहीं था कि संजांग घृणा से भरा हुआ था।
"जिस तरह से वह खुद को इतना मोहक बना रही है," बंदर ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा, "मुझे चिंता है कि कहीं वह मालिक को आकर्षित न कर ले।" सचमुच:
राक्षसों के संकट में फंसे भिक्षु की मुलाकात एक सुंदर लड़की से हुई;
उस शैतान औरत की खूबसूरती वाकई अद्भुत थी।
उसकी पतली, हरे रंग की भौहें दो विलो के पत्तों की तरह थीं;
उसके गोल चेहरे पर आड़ू के फूल खिले हुए थे, जिससे उसका चेहरा और भी खूबसूरत लग रहा था।
कढ़ाई वाले जूते देखने में दो फीनिक्स पक्षियों की तरह लग रहे थे;
उसके कौवे जैसे काले बाल कनपटी पर ऊंचे गुच्छे में बंधे हुए थे।
मुस्कुराते हुए वह गुरु का हाथ पकड़कर उन्हें आगे ले गई।

उनके चोगे में ऑर्किड और कस्तूरी की खुशबू मिली हुई थी।
अपनी बाहों में उसे लपेटे हुए, उस शैतान औरत ने स्वामी को एक फूस की झोपड़ी में ले जाकर कहा, "आदरणीय महोदय, मैंने आपके साथ पीने के लिए एक पेय मंगवाया है।"
तांग पुजारी ने कहा, "देवी, एक भिक्षु होने के नाते मैं कोई भी अशुद्ध भोजन नहीं ग्रहण कर सकता।"
"मुझे पता है," दुष्ट आत्मा ने उत्तर दिया। "चूंकि गुफा का पानी साफ नहीं है, इसलिए मैंने पहाड़ पर यिन और यांग के मिलन से प्राप्त शुद्ध जल मंगवाया है और फलों और सब्जियों का भोज तैयार करवाया है।"
उसके बाद हम दोनों खूब मजे करेंगे।" जब तांग पुजारी उसके साथ मंडप में गए तो यह दृश्य दिखाई दिया:
सभी द्वार के भीतर
वह रेशम और कढ़ाई वाले वस्त्रों से सजी हुई थी;
पूरे हॉल में
सोने के शेर के आकार के धूपदानों से अगरबत्ती की सुगंध उठ रही थी।
काले रंग से रंगी हुई जड़ाऊ मेजें पंक्तियों में सजी हुई थीं।

जिस पर गहरे रंग से लेपित बांस की प्लेटें रखी थीं।
जड़ाऊ मेजों पर
वहाँ हर तरह के स्वादिष्ट व्यंजन थे;
बांस के बर्तनों में
शाकाहारी व्यंजन बेहद स्वादिष्ट थे:
जंगली सेब, जैतून, कमल के बीज, अंगूर, तोरेया नट्स
हेज़लनट, पाइन नट्स, लीची, लोंगान, चेस्टनट, वाटर कैल्ट्रॉप्स, जुजुबे, पर्सिमोन, अखरोट, जिन्को नट्स, कुमक्वेट और संतरे।
वहाँ वह फल था जो हर पहाड़ी पर उगता है।
प्रत्येक मौसम की ताजी सब्जियां;

टोफू, गेहूं का ग्लूटेन, ट्री-ईयर फंगस, ताजे बांस के अंकुर, बटन मशरूम, गिल फंगस, शकरकंद, सीलवर्ट, अगर, डे लिली को वनस्पति तेल में तला हुआ।
हाइसिंथ बीन्स और लोबिया को पके हुए सॉस के साथ तैयार किया गया है।
खीरे, लौकी, जिन्को, शलजम के पत्ते।
छिले हुए बैंगन को बटेर की तरह पकाया गया था;
बीजयुक्त मोम लौकी
तारो को नरम होने तक पकाया गया और उस पर चीनी छिड़की गई।
सिरके में उबली हुई शलजम।
तीखी मिर्च और अदरक ने इसे और भी स्वादिष्ट बना दिया;
सभी व्यंजन फीके और नमकीन का संतुलित मिश्रण थे।
अपनी सुंदर उंगलियों के सिरों को दिखाते हुए उसने एक चमकदार सोने का प्याला उठाया और उसे उत्तम शराब से भर दिया।
"प्रिय महोदय," उसने उसे देते हुए कहा, "मेरे प्रियतम, हमारे सुखद मिलन का जश्न मनाने के लिए एक घूंट पीजिए।" शराब लेते समय संजांग शर्म से लाल हो गया।
उन्होंने मौन प्रार्थना करते हुए हवा में जल उंडेल दिया, “धर्म के रक्षक देवों, चारों दिशाओं और केंद्र के संरक्षकों, चारों कर्तव्य देवताओं: आपके शिष्य चेन शुआनज़ैंग को बोधिसत्व गुआनयिन द्वारा भेजे गए आप सभी देवताओं की गुप्त सुरक्षा प्राप्त हुई है। मैं थंडर मठ में दर्शन करने, बुद्ध के दर्शन करने और शास्त्रों की खोज करने के लिए यात्रा पर था। रास्ते में एक दुष्ट आत्मा ने मुझे पकड़ लिया है। वह मुझसे विवाह करने के लिए विवश कर रही है और उसने मुझे पीने के लिए यह मदिरा का प्याला दिया है। यदि यह वास्तव में शुद्ध मदिरा है, तो मैं इसे पीकर भी सफल हो सकता हूँ और बुद्ध के दर्शन कर सकता हूँ। परन्तु यदि यह अशुद्ध मदिरा है, तो मैं अपने वचन तोड़ दूँगा और पुनर्जन्म के चक्र की कड़वाहट में सदा के लिए गिर जाऊँगा।”
अध्याय 82
1150
पश्चिम की यात्रा
महान ऋषि सूर्य ने स्वयं को छोटा कर लिया और अपने गुरु के कान के पीछे एक गुप्त मुखबिर की तरह छिप गए। जब वे बोलते थे, तो केवल संज़ंग ही उन्हें सुन पाता था। यह जानते हुए कि उनके गुरु को आमतौर पर अंगूर की शुद्ध शराब पसंद थी,

उन्होंने संज़ंग को प्याला खाली करने को कहा। संज़ंग के पास ऐसा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, उसने जल्दी से प्याला फिर से भरा और दुष्ट आत्मा को वापस दे दिया। जैसे ही उसने प्याला भरा, शराब की सतह पर खुशी के बुलबुले बनने लगे। भाई बंदर ने स्वयं को एक छोटे से कीड़े में बदल लिया और बुलबुलों के नीचे हल्के से उड़ने लगा। लेकिन जब आत्मा ने प्याला लिया, तो उसने उसमें से पीने के बजाय उसे नीचे रख दिया, तांग पुजारी को दो बार प्रणाम किया और मनमोहक शर्म के साथ उनसे प्रेम भरे शब्द कहे। जब तक उसने प्याला उठाया, तब तक बुलबुले फूट चुके थे और कीड़ा प्रकट हो गया था। यह न जानते हुए कि यह बंदर का बदला हुआ रूप है, दुष्ट आत्मा ने उसे असली कीड़ा समझ लिया, अपनी छोटी उंगली से उसे उठाया और दूर फेंक दिया।

जब उसे एहसास हुआ कि चीजें उसकी योजना के अनुसार नहीं हो रही हैं और वह उसके गर्भ में प्रवेश नहीं कर पाएगा, तो बंदर ने खुद को एक भूखे बाज में बदल लिया।

वास्तव में:

जेड के पंजे, सोने की आंखें और लोहे के पंख;

वह अपनी अगाध शक्ति से बादलों के ऊपर उठ गया।

चालाक खरगोश और लोमड़ियाँ तो इसे देखते ही बेहोश हो गईं।

और सैकड़ों मील के दायरे में पहाड़ों और नदियों के बीच छिपा हुआ था।

भूख लगने पर यह छोटी चिड़ियों को हवा की दिशा में भगा देता था।

और जब वह तृप्त हो गया, तो स्वर्ग के द्वार पर पहुँच गया।

उसके लोहे के पंजे जानलेवा थे;

विजय के समय में यह बादलों में अलग-थलग रहता था।

बंदर ऊपर उड़ा, अपने सुंदर पंजों को घुमाया और शोर मचाते हुए मेजों को उलट दिया, सारे फल, सब्जियां और बर्तन चकनाचूर कर दिए, और तांग पुजारी को वहीं अकेला छोड़कर उड़ गया। यह इतना भयानक था कि उस दुष्ट आत्मा का दिल और पित्त फट गया, और तांग पुजारी का मांस और हड्डियां चूर-चूर हो गईं। कांपते हुए, उस दुष्ट आत्मा ने तांग पुजारी को अपनी बाहों में भर लिया और कहा, "प्रिय पूज्यवर, यह सब कहाँ से आया?"

"मुझे नहीं पता," संजांग ने जवाब दिया।

"मैंने तुम्हारे लिए इस शाकाहारी दावत का इंतज़ाम करने में बहुत मेहनत की," उस शैतान औरत ने कहा। "भगवान ही जाने वह पंखों वाला जानवर कहाँ से उड़कर आया और हमारे बर्तन तोड़ दिए।"

"बर्तन टूटने से कोई खास फर्क नहीं पड़ता," छोटे दानवों ने कहा, "लेकिन सारा खाना फर्श पर गिर गया है। अब यहाँ खाना खाने लायक नहीं है।" संज़ांग को अब समझ आ गया था कि यह सब बंदर के जादू का नतीजा है, लेकिन उसने यह कहने की हिम्मत नहीं की।

अध्याय 82

1151

पश्चिम की यात्रा

“बच्चों,” उस राक्षसी ने कहा, “अब मुझे समझ आ गया है। ज़रूर स्वर्ग और पृथ्वी ने ही उस चीज़ को यहाँ भेजा होगा क्योंकि वे मेरे द्वारा तांग पुजारी को बंदी बनाकर रखने को बर्दाश्त नहीं कर सकते। सारे टूटे हुए बर्तन हटा दो और एक और भोज लगाओ। चाहे वह शाकाहारी हो या नहीं, कोई बात नहीं। स्वर्ग हमारा रिश्ता तय करेगा और पृथ्वी हमारी गारंटी देगी। उसके बाद तांग पुजारी और मैं पति-पत्नी बन जाएँगे।” हम उसके बारे में और कुछ नहीं कहेंगे क्योंकि वह तांग पुजारी को पूर्वी गलियारे में ले जाकर बैठा दिया।

इसके बजाय कहानी बताती है कि कैसे बंदर उड़कर बाहर निकला, फिर से अपने असली रूप में आ गया, गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुंचा और चिल्लाया, "खुल जाओ!"

"फ्रायर सैंड," पिग चिल्लाया, "हमारे बड़े भाई यहाँ हैं।" जैसे ही उन दोनों ने अपने हथियार हटाए, मंकी उछलकर बाहर आ गया।

"क्या अंदर कोई बुरी आत्मा है?" पिग ने उसे पकड़ते हुए पूछा। "क्या मालिक अंदर है?"

"हां, हां," बंदर ने कहा।

"मालिक को अंदर बहुत मुश्किल हो रही होगी," पिग ने कहा। "क्या उसके हाथ पीछे बंधे हैं? या उसे पूरी तरह से रस्सियों से जकड़ा गया है? क्या वह उसे भाप में पकाएगी या उबालेगी?"

"उनमें से कोई नहीं," बंदर ने जवाब दिया। "उसने अभी-अभी शाकाहारी भोजन किया था और वह उसके साथ ही करने वाली थी।"

"तो फिर तुम भाग्यशाली रहे हो," सुअर ने कहा। "तुमने शादी का जश्न मनाया होगा।"
"बेवकूफ!" बंदर ने पलटकर कहा, "शादी की पार्टी की चिंता छोड़ो। मैं तो उसे मुश्किल से ही ज़िंदा रख पाता हूँ।"
"तो फिर तुम यहाँ क्यों हो?" सुअर ने पूछा।
बंदर ने बताया कि उसने गुरु को कैसे देखा था और कैसे रूपांतरित हुआ था, और अंत में कहा, "भाइयों, अपने डर को अपने ऊपर हावी मत होने दो। गुरु यहीं हैं, और जब मैं इस समय में वापस जाऊंगा तो मैं उन्हें अवश्य बचाऊंगा।"
अंदर लौटकर, बंदर एक मक्खी में बदल गया और सुनने के लिए द्वार-मीनार पर उतर गया। वह मंडप के अंदर निर्देश देते हुए उस राक्षसी के क्रोध से गुर्राने की आवाज़ सुन सकता था।
"बच्चों, जो कुछ भी मिले, ले आओ, चाहे शाकाहारी हो या मांसाहारी, और देवताओं को अर्पण के रूप में कागज जलाओ। मैं स्वर्ग और पृथ्वी से प्रार्थना करूंगी कि वे हमारा रिश्ता तय करें। मैं उससे जरूर शादी करूंगी।"
यह सुनकर बंदर मन ही मन मुस्कुराया और सोचने लगा, "वह दुष्ट औरत तो बिलकुल बेशर्म है। उसने एक भिक्षु को अपने घर में कैद कर रखा है और अब दिन दहाड़े उसके साथ छेड़छाड़ करने जा रही है। लेकिन जल्दी मत करो। मुझे अंदर जाकर देखने का समय दो।" भिनभिनाते हुए वह गलियारे में उड़ गया और देखा कि गुरुजी अंदर बैठे हैं और उनकी आँखों से आंसू बह रहे हैं।
बंदर अंदर घुस आया, संज़ंग के सिर पर गिरा और "मालिक" कहकर पुकारा। आवाज़ पहचानते ही संज़ंग उछलकर खड़ा हो गया और दाँत पीसते हुए गुस्से से बोला, "बंदर! दूसरे लोग तो बड़े साहस से हिम्मत जुटाते हैं, लेकिन उन्हें उसे अपने शरीर से लपेटना पड़ता है। तुम्हारा साहस इतना बड़ा है कि तुमने उसे अपने शरीर से लपेटा है। तुमने अपनी रूप बदलने की जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करके बर्तन तोड़े, लेकिन उसका क्या फायदा? उस शैतान औरत से लड़कर तुमने उसे और भी कामुक बना दिया है। वह शाकाहारी और अशुद्ध भोजन मिलाकर दावत का आयोजन कर रही है और मुझसे संबंध बनाने पर तुली हुई है। यह सब कहाँ जाकर खत्म होगा?"
बंदर ने फिर से मन ही मन मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "मुझ पर गुस्सा मत कीजिए, स्वामी जी। मेरे पास आपको बचाने का एक तरीका है।"
अध्याय 82

"तुम मुझे कैसे बचाओगे?" तांग पुजारी ने पूछा।
बंदर ने कहा, "जब मैं अभी ऊपर उड़ा, तो मैंने देखा कि उसके पीछे एक बगीचा है। तुम्हें उसे बगीचे में बुलाकर उसके साथ मस्ती करनी होगी और मैं तुम्हें वहाँ से बचा लूँगा।"
"तुम मुझे बगीचे से कैसे बचाओगे?" तांग पुजारी ने पूछा।
"उसे लेकर बगीचे में लगे आड़ू के पेड़ों के पास जाओ और वहीं रहो। तब तक इंतज़ार करो जब तक मैं आड़ू के पेड़ की एक शाखा पर उड़कर लाल आड़ू में न बदल जाऊं। जब तुम्हें आड़ू खाने का मन करे तो सबसे पहले लाल वाला तोड़ लेना—वह मैं ही होऊंगी। वह भी एक तोड़ लेगी। तुम्हें उसे लाल वाला ही देना होगा। जैसे ही वह उसे निगल लेगी, मैं उसके पेट में पहुंच जाऊंगी। जब मैं उसका पेट फाड़ दूंगी और उसकी आंतें चीर-फाड़ कर दूंगी, तब वह मर जाएगी और तुम आज़ाद हो जाओगे।"
"तुम्हारी शक्तियों के साथ तुम्हें उससे लड़ना चाहिए," संजांग ने कहा। "तुम उसके पेट में क्यों घुसना चाहते हो?"
“आप समझते नहीं हैं, स्वामी,” बंदर ने उत्तर दिया। “अगर उसकी गुफा में आना-जाना आसान होता तो मैं उससे लड़ पाता। लेकिन इस जगह में आना-जाना बहुत मुश्किल है: बाहर निकलने का रास्ता पेचीदा और कठिन है। अगर मैंने उससे लड़ाई शुरू कर दी तो उसके अड्डे के सारे राक्षस, जवान और बूढ़े, मुझ पर हावी हो जाएँगे। फिर क्या होगा? अगर हम सबको सुरक्षित निकलना है तो हमें बहुत सावधानी से काम लेना होगा।”
संजांग ने बंदर की कही सारी बातों पर विश्वास करते हुए सिर हिलाया और केवल इतना कहा, "तुम्हें मेरे साथ रहना होगा।"
बंदर ने कहा, "मुझे पता है, मुझे पता है। मैं तुम्हारे सिर पर चढ़ जाऊंगा।"
जब गुरु और शिष्य ने अपनी योजना तय कर ली, तो संजांग आगे झुकी, गलियारे के फाटकों की सलाखों को पकड़ लिया और पुकारा, "देवी, देवी।"
जैसे ही उसने यह सुना, दुष्ट आत्मा मुस्कुराते हुए उसके पास दौड़कर आई और बोली, "मेरी प्यारी जान, तुम्हें मुझसे क्या कहना है?"
"देवी," संज़ंग ने उत्तर दिया, "चांगआन छोड़ने और पश्चिम की यात्रा शुरू करने के बाद

से मुझे हर दिन पहाड़ और नदियाँ पार करनी पड़ी हैं। पिछली रात जब मैं झेनहाई मठ में रुका था, तो मुझे ज़ुकाम हो गया और आज मुझे बहुत पसीना आ रहा है। आज थोड़ा बेहतर महसूस होने ही लगा था कि हे देवी, आपने कृपा करके मुझे अपने महल में बुला लिया। आज सारा दिन यहीं बैठे रहने से मेरा मन फिर से उदास हो गया है। क्या आप मुझे कहीं ले जा सकती हैं जहाँ मेरा मन बहल जाए और मैं थोड़ा आनंद ले सकूँ?"

दुष्ट आत्मा अत्यंत प्रसन्न हुई। "तो तुम्हें थोड़ी दिलचस्पी है, है ना, मेरे प्यारे?" उसने कहा। "चलो हम बगीचे में कुछ मस्ती करने चलते हैं। बच्चों," उसने पुकारा, "चाबी लाओ, बगीचे के द्वार खोलो और बगीचे के रास्तों को साफ करो।" सभी राक्षस जल्दी से द्वार खोलने और जगह को साफ करने के लिए चले गए।

इसी बीच दुष्ट आत्मा पर्दा खोलकर तांग पुजारी की मदद कर रही थी। ज़रा देखिए, अनेकों युवतियाँ—सुंदर, छरहरे बालों और चूर्ण से सजे चेहरों वाली—तांग पुजारी के चारों ओर घेरा बनाकर बगीचे की ओर जा रही हैं। वह कितना अद्भुत भिक्षु था, जो इन सुंदरियों के बीच, उनके जालीदार वस्त्रों और जरीदार वस्त्रों में, केवल बहरे और गूंगे होने के उद्देश्य से चल रहा था। यदि बुद्ध के प्रति दृढ़ निष्ठा रखने के बजाय वह कोई साधारण मनुष्य होता, जो शराब और स्त्रियों के प्रति आकर्षित होता, तो वह कभी भी शास्त्रों को लाने में सफल नहीं होता।

जब वे बगीचे के प्रवेश द्वार पर पहुँचे तो दुष्ट आत्मा ने मोहक स्वर में फुसफुसाया, "मेरे प्यारे, चलो यहाँ थोड़ा मज़ा करें—इससे तुम्हारा मन प्रसन्न हो जाएगा।" वे हाथ में हाथ डालकर बगीचे में चले गए, और जब उन्होंने ऊपर देखा तो पाया कि वह वास्तव में एक शानदार जगह थी। यह वह दृश्य था जो दिखाई दे रहा था: अध्याय 82

1153

पश्चिम की यात्रा

घुमावदार रास्तों पर हर जगह
नीले रंग की लाइकेन उगती हैं।
एकांत जालीदार खिड़कियाँ
कढ़ाई वाले पर्दों से अंधेरा बना रहता है।
जब हवा चलती है
रेशम और ब्रोकेड हवा में लहरा रहे हैं।

जब हल्की बारिश रुक जाती है
चिकनी सफेद त्वचा और जेड जैसी कोमल मांसल त्वचा दिखाई देती है।
धूप से झुलसा हुआ खुबानी
क्या यह लाल रंग किसी अमर व्यक्ति के इंद्रधनुषी कपड़ों की तरह है जिन्हें सूखने के लिए फैलाया गया हो;
चांदनी में केला
यह पंखा लहराती हुई लेडी ताइज़ेन से भी अधिक नीला है।
सफेदी की हुई दीवारें घेरे हुए हैं
दस हजार विलो वृक्षों में गाने वाले सुनहरे ओरिओल पक्षी।
खाली गलियारों के भीतर
आंगन में बेगोनिया के पौधों के बीच तितलियाँ मंडरा रही हैं।
क्रिस्टलीकृत इत्रों के हॉल को देखिए,
ग्रीन मॉथ हॉल,
नशे से उबरने का हॉल
लालसा का हॉल,
प्रतिभाओं को एक के बाद एक समेटते हुए।
लाल पर्दों पर
हुक लटकन को झींगा मछली की मूंछों की तरह पकड़े रखते हैं।
अब दर्द से राहत देने वाले मंडप को देखिए
सादगी का मंडप,
थ्रश पक्षियों का मंडप,

चार वर्षाओं का मंडप,
सभी ऊंचे और भव्य,
और अलंकृत पट्टियों पर अंकित
उनके नाम पुरातन लिपि में लिखे गए थे।
उस तालाब को भी देखो जहाँ सारस नहाते हैं।

प्याला धोने का कुंड,
चंद्रमा में आनंद का कुंड,
झालरों को शुद्ध करने का कुंड,
जहां जलीय घास और शैवाल के बीच सुनहरे रंग की परतें चमकती हैं।
फिर वहां इंक फ्लावर्स का कियोस्क है,
अजीबोगरीब बक्सों का कियोस्क,
दिलचस्प कियोस्क,
बादलों को निहारने के लिए कियोस्क
जहां हरे रंग की चींटियों जैसे बुलबुले जेड के करछुल और प्यालों में परोसी गई शराब पर तैरते हैं।
तालाबों और मंडपों के आसपास
ताइहू झील से लाए गए चट्टानी ढांचे।
बैंगनी क्रिस्टल की चट्टानें,
यिंगलुओ चट्टानें,
जिन नदी की चट्टानें,
हरे रंग का और बाघ की मूंछों जैसी सरकंडों से ढका हुआ।
कियोस्क और गेंदों के पूर्व और पश्चिम में पाए जाते हैं
एक लकड़ी का पहाड़,
एक फ़िरोज़ी रंग का पर्वतीय दृश्य,
एक गरजती हवा वाला पहाड़,
एक जेड मशरूम पर्वत,
सभी फीनिक्स-पूंछ वाले बांस से ढके हुए हैं।
अध्याय 82
1155
पश्चिम की यात्रा
झाड़ीनुमा गुलाबों की लताओं पर बनी जालीदार संरचनाएँ,
और बगीचे के गुलाब,
झूलते हुए बढ़ रहा है,
रेशम और ब्रोकेड के पर्दे की तरह।

एक पाइन मंडप,
एक मैग्नोलिया पैवेलियन,
सौसुरिया मंडप के सामने,
कढ़ाईदार पर्दों से सजी जेड पत्थर की दीवार बनाना।
शाकीय और वृक्षीय पेओनी बहुतायत में एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी हैं;
रात में खिलने वाले मैगनोलिया और चमेली
ये हर साल मनमोहक होते हैं।
बैंगनी कलियाँ ओस की बूंदों से भीगी हुई हैं:
इन्हें चित्रित या रेखाचित्रित किया जाना चाहिए।
लाल हिबिस्कस के फूल आकाश को अपनी ज्वलंत चमक से भर देते हैं।
कविता के लिए एक अद्भुत विषय।
जब बात खूबसूरत दृश्यों की आती है
इसलिए लैंग गार्डन या पेंगलाई का जिक्र करना भी उचित नहीं है;
और जहाँ तक फूलों की बात है,
लुओयांग के सबसे बेहतरीन पेओनी फूल भी इनके सामने कुछ मायने नहीं रखते।
वसंत ऋतु के अंत में फूलों की लड़ाई में
इस बगीचे में केवल हरे रंग के फूलों की कमी है।
आदरणीय बुजुर्ग ने उस शैतान कुतिया का हाथ पकड़कर उसे बगीचे में घुमाया और वहाँ खिले हुए दुर्लभ और अनोखे फूलों की सुंदरता का आनंद लिया। कई हॉल और मंडपों से गुज़रते हुए उन्हें सचमुच ऐसा लगा जैसे वे किसी खूबसूरत जगह पर पहुँच रहे हों। ऊपर देखते ही उन्हें एहसास हुआ कि वे आड़ू के बाग के पास हैं। बंदर ने अपने स्वामी के सिर को चुटकी काटकर उन्हें याद दिलाया।
एक आड़ू के पेड़ की शाखा पर उड़ते हुए, बंदर भाई ने खुद को झटका दिया और एक लाल आड़ू में बदल गया, और वह भी बेहद आकर्षक लाल रंग का। "देवी," आदरणीय बुजुर्ग ने दुष्ट आत्मा से कहा, "कितने सुंदर सुगंधित फूल हैं!" अध्याय 82

और इस बगीचे में पके हुए फल हैं।
इन फूलों की सुगंध इतनी अच्छी होती है कि मधुमक्खियां इनके रस के लिए आपस में

प्रतिस्पर्धा करती हैं;
सभी पक्षी शाखाओं पर लगे फलों के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं।
पेड़ों पर लगे कुछ आड़ू लाल और कुछ हरे क्यों होते हैं?
दुष्ट आत्मा ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “अगर आकाश में यिन और यांग न होते तो सूर्य और चंद्रमा इतने चमकदार न होते। अगर धरती पर यिन और यांग न होते तो पेड़-पौधे न उगते। और अगर मनुष्यों में यिन और यांग न होते तो लैंगिक भेद न होता। इन पेड़ों की दक्षिणी यांग शाखा पर लगे आड़ू लाल हैं क्योंकि वे सूर्य की गर्मी में सबसे पहले पकते हैं। उत्तरी यिन शाखा पर लगे आड़ू हरे हैं क्योंकि उन्हें सूर्य की रोशनी नहीं मिलती और वे अभी कच्चे हैं। यह सब यिन और यांग के कारण ही है।”
"आपकी जानकारी के लिए धन्यवाद, महोदया," संज़ंग ने उत्तर दिया। "मुझे यह पता नहीं था।" फिर उसने हाथ बढ़ाकर एक लाल आड़ू उठाया, जबकि दुष्ट आत्मा ने भी एक हरा आड़ू उठाया।
संजांग ने झुककर लाल आड़ू को आदरपूर्वक दुष्ट आत्मा को सौंपते हुए कहा, "देवी, आपको आकर्षक चीजें पसंद हैं, तो क्या आप यह लाल आड़ू लेकर मुझे हरा वाला दे देंगी?"
उस दुष्ट स्त्री ने मन ही मन प्रसन्न होते हुए यह अदला-बदली की, "कितना अच्छा भिक्षु है! सचमुच एक नेक इंसान है। पति-पत्नी बनने से पहले ही वह मेरे प्रति इतना प्रेम दिखा रहा है।" बड़े हर्ष से उसने उसे स्नेहपूर्वक प्रणाम किया। जैसे ही तांग पुरोहित ने हरा आड़ू खाना शुरू किया, दुष्ट आत्मा भी प्रसन्न होकर लाल आड़ू को काटने के लिए मुँह खोलने लगी। जब उसने अपने लाल होंठ खोले और अपने चाँदी जैसे दाँत दिखाए, तो अधीर बंदर ने उसे काटने का समय ही नहीं दिया और सीधे उसके गले से नीचे उसके पेट में चला गया।
भयभीत दुष्ट आत्मा ने कहा, "आदरणीय महोदय, वह आड़ू तो बहुत भयानक था। वह सीधा नीचे क्यों लुढ़क गया और मुझे उसे काटने क्यों नहीं दिया?"
"महामहिम," संजांग ने उत्तर दिया, "बगीचे के पहले पके फल बहुत स्वादिष्ट होते हैं। इसीलिए वे इतनी जल्दी गले से उतर गए।"
"लेकिन इससे पहले कि मैं पत्थर थूक पाता, वह सीधे नीचे गिर गया," दुष्ट आत्मा ने उत्तर दिया।
"क्योंकि तुम उत्तम और सुंदर चीजों के इतने प्रेमी हो और उनका इतना आनंद लेते

हो," संजांग ने कहा, "तुमने पत्थर को बाहर निकालने से पहले ही उसे निगल लिया।"
उसके पेट में प्रवेश करते ही बंदर वापस अपने असली रूप में आ गया। "मालिक," उसने पुकारा, "अब उससे बहस करने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं सफल हो गया हूँ।"
"उस पर ज्यादा सख्ती मत करो, शिष्य," संजांग ने जवाब दिया।
यह सुनकर दुष्ट आत्मा ने पूछा, "तुम किससे बात कर रही हो?" संजांग ने उत्तर दिया, "मैं अपने शिष्य सन वुकॉन्ग से बात कर रही हूँ।"
"वह कहाँ है?" दुष्ट आत्मा ने पूछा।
अध्याय 82
1157
पश्चिम की यात्रा
"तुम्हारे पेट में," संजांग ने जवाब दिया। "वह वही लाल आड़ू था जिसे तुमने अभी खाया है।"
"मेरा तो काम तमाम हो गया," दुष्ट आत्मा ने भयभीत होकर कहा। "अगर वह बंदर मेरे पेट में घुस गया तो मैं मर गया। नौसिखिए सूर्य, तुमने मेरे पेट में घुसने के लिए इतनी मशक्कत क्यों की?"
"कोई खास वजह नहीं," बंदर ने उसके भीतर से जवाब दिया। "मैं बस तुम्हारे जिगर और फेफड़ों के छह पत्ते और तुम्हारे दिल को उसके तीन बालों और सात छिद्रों के साथ खाना चाहती थी। मैं तुम्हारे अंदरूनी अंगों को पूरी तरह से साफ कर दूंगी और तुम्हें एक कंकाल आत्मा के रूप में छोड़ दूंगी।"
इससे दुष्ट आत्माओं के भूत भय से इधर-उधर बिखर गए और कांपते हुए वह तांग पुजारी से लिपट गई और बोली, "आदरणीय महोदय, मैंने सोचा था कि
हमारे भाग्य पिछले जन्मों से एक लाल धागे से जुड़े हुए थे;
हमारा प्यार पानी और मछली की तरह घनिष्ठ था।
मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम प्रेमी जोड़े अलग हो जाएंगे।
या फिर फीनिक्स पक्षी पूरब और पश्चिम की ओर उड़ जाएंगे।
जब लैन ब्रिज के नीचे पानी का स्तर बढ़ गया तो मुलाकात का कार्यक्रम विफल हो गया;
धुंध से घिरे मंदिर में हुई बैठक का कोई नतीजा नहीं निकला।
क्षणिक सुख के बाद हम एक बार फिर बिछड़ गए;

मैं आपसे दोबारा किस साल मिलूंगा?
जब बंदर ने ये सब बातें उसके पेट के अंदर से सुनीं, तो उसे डर लगा कि आदरणीय बुजुर्ग फिर से दयालु हो जाएँगी और उसे अपनी बातों से समस्या से निकलने देंगी। तभी उसने मुक्के और लात चलाना शुरू कर दिया, युद्ध की मुद्रा में वार करते हुए अपने आस-पास की हर चीज़ को तहस-नहस कर दिया। उसने उसके पेट पर इतने ज़ोर से घूंसे मारे कि वह लगभग चूर-चूर हो गया। दर्द सहन न कर पाने के कारण, दुष्ट आत्मा धूल में गिर पड़ी और कुछ देर तक एक शब्द भी नहीं बोल पाई। जब वह कुछ नहीं बोल रही थी, तो बंदर ने सोचा कि वह मर गई होगी और उसने आराम किया।
फिर उसने थोड़ी सी साँस ली और पुकार कर कहा, "छोटे बच्चों, तुम कहाँ हो?" बगीचे में पहुँचकर सभी जीव समझदारी से फूल तोड़ने, घास में खेलने और मौज-मस्ती करने में लग गए थे, और उस दुष्ट आत्मा को तांग पुजारी के साथ प्रेम प्रसंग के लिए अकेला छोड़ दिया था। जैसे ही उन्होंने उसकी पुकार सुनी, वे दौड़कर वहाँ पहुँचे और देखा कि वह दुष्ट आत्मा ज़मीन पर पड़ी है, उसका चेहरा भयानक रंग का हो गया है और वह कराह रही है, हिल भी नहीं पा रही है।
वे जल्दी से उसे उठाने में मदद करने लगे, उसके चारों ओर जमा हो गए और पूछने लगे, "क्या हुआ है, महोदया? क्या आपको दिल का दौरा पड़ा है?"
"नहीं, नहीं," दुष्ट आत्मा ने उत्तर दिया। "कोई सवाल मत पूछो। मेरे अंदर कोई है। अगर मेरी जान बचाना चाहते हो तो साधु को बाहर ले जाओ।"

छोटे शैतान सचमुच तांग पुजारी को उठाने लगे, जिस पर बंदर ने अपने पेट के अंदर से चिल्लाया।
"तुममें से कोई भी उसे उठाने की हिम्मत न करे। मेरे मालिक को तुम्हें खुद बाहर ले जाना होगा। मैं तुम्हारी जान तभी बख्शूंगा जब तुम उसे बाहर ले जाओगे।"
इससे दुष्ट आत्मा के पास कोई विकल्प नहीं बचा, क्योंकि उसे सिर्फ अपनी जान बचाने की चिंता थी। झट से वह उठी, तांग पुजारी को अपनी पीठ पर उठाया और बाहर की ओर चल पड़ी, उसके पीछे-पीछे छोटे शैतान पूछते हुए चल रहे थे, "आप कहाँ जा रही हैं, महोदया?"

इस पर उस दुष्ट आत्मा ने उत्तर दिया,
जब तक झीलें और चमकीला चाँद बने रहेंगे
मैं अपना सुनहरा हुक लगाने के लिए कोई न कोई जगह जरूर ढूंढ लूंगा।'
इस नीच को बाहर निकालने के बाद मैं अपने लिए कोई दूसरा आदमी ढूंढ लूंगी।"
वह भयानक दुष्ट आत्मा सीधे बादल पर सवार होकर गुफा के प्रवेश द्वार तक गई, जहाँ हथियारों की खनक और कर्कश चीखें सुनाई दे रही थीं।
"शिष्य," संजांग ने कहा, "मुझे बाहर हथियारों की आवाज क्यों सुनाई दे रही है?"
"सूअर अपना रेक रगड़ रहा है," बंदर ने जवाब दिया। "उसे आवाज़ दो।"
"बाजी!" सानज़ैंग चिल्लाया।
यह सुनकर पिग ने कहा, "फ्रायर सैंड, गुरुजी बाहर गए हैं।" उन दोनों ने अपने रेक और लाठी को पीछे खींच लिया, और दुष्ट आत्मा को तांग पुजारी को बाहर ले जाने दिया। सचमुच:
माइंड एप ने भीतर से ही एक राक्षस को वश में कर लिया था;
पृथ्वी और लकड़ी के द्वारपालों ने पवित्र भिक्षु का स्वागत किया।
अगर आपको नहीं पता कि दुष्ट आत्मा की जान बच पाई या नहीं, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 83
द माइंड-एप रिकॉग्नाइज़ेज़ द रिफाइनर ऑफ़ सिनबार
लड़की अपने असली स्वरूप में लौट आती है
कहानी बताती है कि जब दुष्ट आत्मा संजांग को गुफा से बाहर ले गई, तो साधु सैंड उसके पास गए और पूछा, "गुरुजी, अब जब आप बाहर आ गए हैं, तो मेरा सबसे बड़ा भाई कहाँ है?"
अध्याय 83

"उसे पता होगा कि वह क्या कर रहा है," सुअर ने कहा। "मुझे लगता है कि उसने मालिक को छुड़ाने के लिए खुद को उसके हवाले कर दिया है।"
"तुम्हारा भाई उसके पेट में है," संजांग ने दुष्ट आत्मा की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया।

"यह बहुत गंदा है," पिग ने कहा। "तुम अंदर क्या कर रहे हो? बाहर आओ।"
"अपना मुंह खोलो," बंदर ने अंदर से कहा, "मैं बाहर आ रहा हूँ।" राक्षसी ने सचमुच अपना मुंह चौड़ा खोल दिया। बंदर ने खुद को बहुत छोटा कर लिया, उसके गले में घुस गया, और जैसे ही वह बाहर निकलने वाला था, उसे चिंता हुई कि कहीं वह धोखा देकर उसे काट न ले। तब उसने अपना लोहे का डंडा निकाला, उस पर जादुई साँस फूंकी, "बदलो!" कहा और उसे बेर के पत्थर में बदल दिया, जिससे उसने उसका जबड़ा खोल दिया। एक ही छलांग में वह लोहे का डंडा लेकर बाहर कूद गया, अपने असली रूप में वापस आने के लिए प्रणाम किया और उसे मारने के लिए अपना डंडा उठाया। तुरंत ही उसने दो सुंदर तलवारें निकालीं और एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ उसके वार को रोक दिया। पहाड़ की चोटी पर दोनों के बीच एक शानदार लड़ाई हुई।
दो नाचती-उड़ती तलवारें उसके चेहरे की रक्षा कर रही थीं;
सोने की पट्टी वाली लाठी उसके सिर पर लगी।
उनमें से एक स्वर्ग से जन्मा बंदर था, जिसे माइंड-एप कहा जाता था;
दूसरे में एक ऐसी लड़की की हड्डियाँ थीं जो धरती पर जन्मी थी और बाद में आत्मा बन गई थी;
वे दोनों ही क्रोध से ग्रस्त थे:
उत्सव के दौरान नफरत का माहौल बन गया; पार्टी समाप्त कर दी गई।
एक व्यक्ति आदिम पुरुषत्व के साथ संभोग करने के लिए तरसता था,
दूसरा व्यक्ति स्त्री के अवतार को हराना चाहता था।
जब लाठी को आकाश की ओर उठाया गया तो ठंडी धुंध छा गई;
तलवारों ने धरती की काली मिट्टी को छलनी की तरह हिला दिया।
क्योंकि बुजुर्ग व्यक्ति बुद्ध से मिलने जाया करते थे।
वे भयंकर युद्ध में उलझे हुए थे, और दोनों ही अपनी-अपनी असाधारण वीरता का प्रदर्शन कर रहे थे।
जब पानी और आग के बीच टकराव होता है, तो मातृत्व का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता;
जब यिन और यांग का संयोजन संभव नहीं होता, तो प्रत्येक अपनी-अपनी राह पर चल पड़ता है।
दोनों के बीच काफी लंबे समय से लड़ाई चल रही थी।

धरती कांप उठी, पहाड़ हिल गए और पेड़ नष्ट हो गए।
अध्याय 83
1160
पश्चिम की यात्रा
उनकी लड़ाई देखकर सुअर बंदर के बारे में नाराज़गी से बड़बड़ाने लगा। उसने साधु सैंड की ओर मुड़ते हुए कहा, "भाई, हमारा बड़ा भाई मज़ाक कर रहा है। अभी जब वह उसके पेट में था, तो वह अपने मुक्कों से उसका पेट खून से लाल कर सकता था, उसे फाड़कर बाहर आ सकता था। इससे उसका हिसाब चुकता हो जाता। उसे उसके मुंह से बाहर आकर उससे लड़ने की क्या ज़रूरत थी? उसने उसे बेकाबू क्यों होने दिया?"
“आप सही कह रहे हैं,” फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया, “लेकिन उन्हीं की बदौलत गुरुजी गुफा की गहराई से बच निकले, भले ही अब वे उससे लड़ रहे हों। चलिए गुरुजी से कहते हैं कि वे यहाँ अकेले बैठें, जबकि हम दोनों अपने हथियारों से अपने भाई को दुष्ट आत्मा को हराने में मदद करते हैं।”
"नहीं, नहीं," सुअर ने हाथ हिलाते हुए कहा। "उसके पास जादुई शक्तियां हैं। हम उसके सामने कुछ भी नहीं कर पाएंगे।"
"यह कैसी बात है," फ्रायर सैंड ने पलटवार किया। "यह हम सबके हित में है। हम भले ही ज्यादा उपयोगी न हों, लेकिन एक पाद भी हवा को ताकत दे सकता है।"
अब जब उस मूर्ख का गुस्सा भड़क उठा तो उसने अपना रेक लहराया और चिल्लाया, "आओ!" मालिक की बात अनसुनी करते हुए, वे हवा के सहारे उड़ते हुए दुष्ट आत्मा की ओर बढ़े और अपने रेक और लाठी से उस पर बेतहाशा वार करने लगे। दुष्ट आत्मा, जिसे पहले से ही भाई बंदर से निपटना मुश्किल लग रहा था, समझ गई कि वह दो और लोगों का सामना नहीं कर पाएगी। उसने तुरंत मुड़कर भाग गई।
“उसके पीछे आओ, भाइयों!” बंदर चिल्लाया। यह देखकर कि वे उसके पीछे तेज़ी से भाग रहे हैं, दुष्ट आत्मा ने अपने दाहिने पैर से कढ़ाई वाला जूता उतार लिया, उस पर जादुई साँस फूंकी, “बदलो!” मंत्र बोला और उसे तलवार लहराते हुए अपने ही जैसे दिखने वाले प्राणी में बदल दिया। फिर उसने खुद को झटका दिया, हवा के झोंके में बदल गई और सीधे वापस चली गई। वहाँ वह अपनी जान बचाने के लिए भाग रही थी क्योंकि वह उनका मुकाबला नहीं कर सकती थी। आगे जो हुआ वह बिल्कुल

अप्रत्याशित था: संज़ांग का बुरा तारा अभी भी नहीं गया था। जैसे ही दुष्ट आत्मा गुफा के प्रवेश द्वार के सामने मेहराब के पास पहुँची, उसने तांग पुजारी को वहाँ अकेले बैठे देखा, इसलिए वह उसके पास गई, उसे गले लगाया, सामान छीन लिया, लगाम को दांतों से काट दिया और उसे घोड़े समेत वापस अंदर ले गई।

यह कहानी उसकी नहीं बल्कि सुअर की है, जिसने एक अवसर का फायदा उठाकर अपने रेक के एक ही वार से दुष्ट आत्मा को मार गिराया, लेकिन बाद में पता चला कि वह वास्तव में एक कढ़ाईदार जूता थी।

"तुम दोनों मूर्ख हो," बंदर ने उसे देखकर कहा। "तुम्हें मालिक की देखभाल करनी चाहिए थी। किसी ने तुमसे मदद नहीं मांगी थी।"

"तो फिर, फ्रायर सैंड, इसके बारे में क्या?" पिग ने कहा। "मैंने कहा था कि हमें यहाँ नहीं आना चाहिए। उस बंदर को कुछ अजीबोगरीब विचार आ गया है।"

हमने उसके लिए उस राक्षस को हराया और वह हमसे नाराज हो गया।"

“सचमुच राक्षस को हरा दिया!” बंदर ने कहा। “कल जब मैं उससे लड़ रहा था, तो राक्षस ने अपना जूता पीछे छोड़कर मुझे धोखा दिया। पता नहीं अब मालिक का क्या हाल होगा, जब तुम उसे छोड़कर चली गई हो। चलो सीधे वापस चलते हैं और देखते हैं।”

तीनों जल्दी से वापस लौटे तो देखा कि स्वामी गायब हो चुका था: न तो उसका कोई निशान था, न सामान का, न ही सफेद घोड़े का। सुअर घबराकर इधर-उधर भागने लगा और साधु रेत भी उसके साथ खोजने लगा। महान ऋषि सूर्य भी बहुत चिंतित थे। खोजते हुए उन्होंने देखा कि लगाम की आधी रस्सी रास्ते के किनारे टेढ़ी पड़ी है।

उसे उठाते ही वह अपने आँसू नहीं रोक सका और ऊँची आवाज़ में बोला, "मालिक! जब मैं गया था तो आप तीनों और घोड़े से विदा ली थी, और लौटने पर मुझे बस यह रस्सी मिली।" यह सचमुच ऐसा मामला था जैसे काठी को देखकर घोड़े की याद आ गई हो।

अध्याय 83

1161

पश्चिम की यात्रा

आंसुओं के बीच प्रियजन की याद आना।

बंदर के आंसू देखकर सुअर को अपना सिर पीछे करके जोर से हंसने की अनियंत्रित

इच्छा हुई।
"बेवकूफ," मंकी ने गुस्से से कहा। "क्या तुम चाहते हो कि हम फिर से अलग हो जाएं?"
"मेरा मतलब वो नहीं है," सुअर हंसते हुए बोला। "मालिक को वापस गुफा में ले जाया गया है। जैसा कि कहावत है, 'तीसरी बार किस्मत साथ देती है'। तुम पहले ही दो बार गुफा में जा चुके हो, इसलिए अगर तुम दोबारा जाओगे तो मालिक को बचा ही लोगे।"
"ठीक है," बंदर ने अपने आंसू पोंछते हुए कहा, "हालात ऐसे हैं कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। मुझे वापस अंदर जाना होगा। तुम दोनों को अब सामान या घोड़े की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, इसलिए गुफा के प्रवेश द्वार की ठीक से रखवाली करो।"
महान संत ने मुड़कर गुफा में छलांग लगा दी। इस बार उन्होंने कोई रूप परिवर्तन नहीं किया, बल्कि अपने धर्म स्वरूप में प्रकट हुए। वे इस प्रकार थे:
उसके गाल अजीब लग रहे थे लेकिन उसका दिल मजबूत था;
बचपन से ही एक राक्षस होने के कारण उसकी जादूई शक्तियां बहुत शक्तिशाली थीं।
एक विकृत चेहरा जो घोड़े की काठी जैसा दिखता था;
सुनहरी रोशनी से दमकती आंखें।
उसके बाल लोहे की सुई से भी ज्यादा सख्त थे।
और उनकी बाघ की खाल से बनी स्कर्ट का पैटर्न बेहद आकर्षक था।
वह आकाश में असंख्य बादलों को बिखेर सकता था;
वह समुद्र में हजारों गुना लहरें उत्पन्न कर सकता था।
एक बार उसने अपनी शक्ति से स्वर्ग के राजाओं से युद्ध किया।
एक लाख आठ हजार योद्धाओं को भगा दिया।
उनकी उपाधि थी 'स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि';
वह सोने की पट्टी वाली लाठी चलाने में माहिर था।
आज पश्चिम में वह अपनी शक्तियों का प्रयोग कर रहा था।
गुफा में वापस जाकर संजांग को बचाना।
अध्याय 83
1162
पश्चिम की यात्रा

बंदर को देखिए, वह अपने बादल को रोककर सीधे दुष्ट आत्मा के निवास की ओर बढ़ता है, जहाँ उसे द्वार-स्तंभों के नीचे के द्वार बंद मिलते हैं। यह परवाह किए बिना कि यह सही है या नहीं, उसने अपने गदा के एक ही वार से उन्हें तोड़ दिया और अंदर घुस गया। अंदर पूरी तरह सन्नाटा और सुनसान था, और गलियारे में तांग पुजारी कहीं भी दिखाई नहीं दे रहा था। मंडप में रखी मेजें, कुर्सियाँ और सारे बर्तन गायब हो चुके थे। गुफा सौ मील से भी अधिक लंबी थी, इसलिए दुष्ट आत्मा ने उसमें कई छिपने की जगहें बना रखी थीं। पिछली बार वह तांग पुजारी को यहीं लाई थी, लेकिन बंदर ने उसे ढूंढ लिया था, इसलिए इस बार उसे पकड़ने के बाद उसने उसे कहीं और छिपा दिया था ताकि बंदर दोबारा उसे ढूंढने न आए।

पता नहीं वे कहाँ चले गए, बंदर ने गुस्से में पैर पटका और सीना पीटते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, "गुरुजी! आप दुर्भाग्य से बने तांग सान्ज़ांग हैं, विपत्ति से गढ़े गए तीर्थयात्री भिक्षु हैं। हम्म... मुझे रास्ता अच्छी तरह पता है। वह यहाँ क्यों नहीं है? मुझे उसे कहाँ ढूँढना चाहिए?"

जब वह अधीरता और चिंता से चीख रहा था, तभी उसकी नाक में अगरबत्ती की तेज़ सुगंध आई, जिससे वह होश में आ गया। उसने सोचा, "यह अगरबत्ती का धुआँ पीछे से आ रहा है, तो मुझे लगता है कि वे वहीं होंगे।" वह अपने हाथ में लाठी लिए पीछे की ओर बढ़ा, लेकिन उसे जीवन का कोई संकेत नहीं मिला। उसे तीन कमरे दिखाई दिए। पीछे की दीवार के पास एक लाख से बनी भेंट चढ़ाने की मेज थी जिस पर ड्रैगन की नक्काशी थी और उस पर सोने का अगरबत्ती जलाने वाला पात्र रखा था। इससे अगरबत्ती का धुआँ बहुत सुगंधित हो रहा था। मेज पर सोने के अक्षरों में खुदी एक पट्टिका थी जिस पर भेंट चढ़ाई जा रही थी। अक्षरों में लिखा था, "आदरणीय पिता, स्वर्ग के राजा ली।" थोड़ा नीचे लिखा था, "आदरणीय बड़े भाई, तीसरे राजकुमार नेझा।"

यह नज़ारा देखकर बंदर आनंद से भर उठा। उसने राक्षस और तांग पुजारी की तलाश छोड़ दी, अपनी लाठी को उंगलियों के बीच रगड़कर कढ़ाई की सुई जितना छोटा कर लिया, उसे कान में छिपा लिया, तख्ती और धूपदान को एक झटके में उठाया और बादलों पर सवार होकर सीधे द्वार से बाहर निकल गया। गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँचते ही वह खुशी से खिलखिला रहा था।

जब पिग और फ्रायर सैंड ने उसकी आवाज सुनी तो उन्होंने गुफा का प्रवेश द्वार खोल

दिया और उसका अभिवादन करते हुए कहा, "आप बहुत खुश दिख रहे हैं, आपने गुरु को बचा लिया होगा, बड़े भाई।"
"हमें उसे बचाने की कोई ज़रूरत नहीं है," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "हम उसके लिए यह पट्टिका मांग सकते हैं।"
"लेकिन वह पट्टिका कोई बुरी आत्मा नहीं है और वह बोल भी नहीं सकती," सुअर ने कहा, "तो तुम उससे उसके लिए कैसे प्रार्थना कर सकते हो?"
"इसे देखो," बंदर ने तख्ती को ज़मीन पर रखते हुए कहा। जब साधु सैंड देखने के लिए आगे बढ़ा तो उसने देखा
उस पर "आदरणीय पिता, स्वर्ग के राजा ली" और "आदरणीय बड़े भाई, तीसरे राजकुमार नेझा" लिखा हुआ था।
"इसका क्या मतलब है?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
“दुष्ट आत्मा इसे भेंट चढ़ाती है,” बंदर ने उत्तर दिया। “जब मैं उसके स्थान पर पहुँचा तो वहाँ कोई नहीं था, केवल यह पट्टिका थी। मुझे लगता है कि वह स्वर्ग के राजा ली की पुत्री और राजकुमार नेझा की छोटी बहन होगी, जिसे पाताल लोक की इतनी लालसा थी कि उसने दुष्ट आत्मा होने का नाटक किया और हमारे स्वामी को अगवा कर लिया। तो स्वामी को वापस माँगने के लिए इससे बेहतर और कौन हो सकता है? तुम दोनों यहाँ पहरा दो, मैं इस पट्टिका को स्वर्ग ले जाकर जेड सम्राट से शिकायत दर्ज कराता हूँ और उन स्वर्ग के राजाओं को हमारे स्वामी को वापस देने के लिए मजबूर करता हूँ।”
"भाई," सुअर ने कहा, "एक कहावत है, 'मौत का मुकदमा दायर करो और अपनी जान देकर उसकी कीमत चुकाओ।' तुम ऐसा तभी कर सकते हो जब तुम सही हो। इसके अलावा, स्वर्ग की अदालत में मामला हल्के में शुरू नहीं किया जा सकता। बेहतर होगा कि तुम मुझे बताओ कि तुम किस तरह का मुकदमा दायर करने जा रहे हो।"
"मुझे पता है मैं क्या करने वाला हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "मैं इस पट्टिका और धूपदान को सबूत के तौर पर पेश करूँगा और साथ ही एक लिखित बयान भी दूँगा।"
"तुम अपने बयान में क्या लिखोगे?" पिग ने उससे पूछा। "क्या तुम मुझे बताओगे?"

इस पर बंदर भाई ने उत्तर दिया, "शिकायतकर्ता सुन वुकॉन्ग, जिनकी आयु इस दस्तावेज़ में बताई गई है, भिक्षु तांग सान्ज़ांग के शिष्य हैं, जो पूर्व में स्थित तांग दरबार से पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने जा रहे हैं। उनकी शिकायत है कि एक नकली दुष्ट आत्मा ने उनका अपहरण कर लिया है। शिवालय धारण करने वाले स्वर्ग के राजा ली जिंग और उनके पुत्र राजकुमार नेझा ने अपने स्त्री-कक्षों पर नियंत्रण में ढिलाई बरती है। उन्होंने अपनी पुत्री को भाग जाने दिया और वह गड्ढा पर्वत की अथाह गुफा में एक दुष्ट आत्मा बन गई, जहाँ उसने अनगिनत भ्रमित लोगों को मृत्यु के घाट उतार दिया। अब वह मेरे गुरु को एक सुनसान कोने में ले गई है जहाँ उनका पता नहीं चल पा रहा है। यदि मैंने यह शिकायत न की होती तो मुझे इस बात की गहरी चिंता होती कि स्वर्ग के राजा और उनके पुत्र ने अपनी दुष्टता में जानबूझकर अपनी पुत्री को दुष्ट आत्मा बनने और व्यापक आपदा लाने के लिए उकसाया है। मैं आपसे दयापूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि आप स्वर्ग के राजा को सुनवाई के लिए बुलाएँ, उस दुष्ट आत्मा को वश में करें और मेरे गुरु को छुड़ाएँ। मैं अत्यंत आभारी रहूँगा। महामहिम, यदि आप इस अपराध के लिए उचित दंड निर्धारित करें तो मैं आपका आभारी रहूंगा। यह मेरा विनम्र निवेदन है।

जब पिग और फ्रायर सैंड ने यह सुना तो वे प्रसन्न होकर बोले, "भाई, अगर तुम इतनी वाजिब शिकायत दर्ज कराओगे तो तुम्हारी जीत निश्चित है। जल्दी करो। अगर तुमने ज़रा भी समय गंवाया तो दुष्ट आत्मा को हमारे स्वामी की हत्या करने से रोकने में बहुत देर हो जाएगी।"

"मैं जल्दी करूंगा," बंदर भाई ने कहा, "मैं जल्दी करूंगा। मैं चावल पकने में लगने वाले अधिकतम समय में या अगर मैं जल्दी करूं तो एक कप चाय बनाने में लगने वाले समय में वापस आ जाऊंगा।"

एक ही छलांग में, उस महान संत ने पट्टिका और धूपदान को शुभ बादलों के सहारे सीधे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के बाहर तक पहुँचा दिया, जहाँ राष्ट्र के शक्तिशाली और रक्षक स्वर्ग के राजाओं ने झुककर उनका स्वागत किया और उन्हें अंदर आने दिया, उनका रास्ता रोकने का साहस नहीं किया।

वह सीधे सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में गए, जहाँ चार दिव्य गुरु झांग, गे, जू और किउ ने उनका बहुत सम्मान किया और पूछा, "आप यहाँ क्यों आए हैं, महान ऋषि?"

"मुझे एक शिकायत है," बंदर ने जवाब दिया। "मैं कुछ लोगों के खिलाफ शिकायत

दर्ज कराना चाहता हूं।"
“यह बदमाश,” भयभीत स्वर्गिक शिक्षकों ने सोचा, “आखिर किस पर मुकदमा करना चाहता है?” उनके पास उसे चमत्कारिक धुंध के हॉल में ले जाने और जेड सम्राट को अपनी रिपोर्ट सौंपने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। सम्राट ने बंदर को अपने समक्ष बुलाने का आदेश दिया। बंदर ने तब पट्टिका और धूपदान नीचे रख दिया, सम्राट को प्रणाम किया और अपनी शिकायत प्रस्तुत की। यह शिकायत प्राचीन अमर गे ने ली और सम्राट की मेज पर फैला दी। जब सम्राट ने इसे शुरू से पढ़ा और जो कुछ हुआ था, उसे जान लिया, तो उन्होंने शिकायत को मंजूरी दे दी, उस पर एक शाही फरमान लिखा और महान श्वेत ग्रह, धातु ग्रह चांगगेंग को बादल टॉवर महल में भेजा ताकि शिवालय धारण करने वाले स्वर्गिक राजा ली को शाही उपस्थिति में बुलाया जा सके।
तब बंदर आगे बढ़ा और उसने यह याचिका प्रस्तुत की: "मैं प्रार्थना करता हूं कि स्वर्ग के सर्वशक्तिमान ईश्वर उसे प्रभावी ढंग से दंडित करें, अन्यथा और अधिक परेशानी होगी।"
"शिकायतकर्ता को भी जाने दो," जेड सम्राट ने आदेश दिया।
"क्या, मैं?" बंदर ने कहा।
"महामहिम ने अपना फरमान जारी कर दिया है, इसलिए तुम धातु ग्रह के साथ जाओ।" चारों दिव्य गुरुओं ने कहा।
फिर बंदर बादल के सहारे ग्रह के साथ चला गया। वे जल्द ही स्वर्ग के राजा के निवास स्थान, क्लाउड टॉवर पैलेस पहुँच गए। मेटल स्टार ने महल के द्वार पर एक सेवक को खड़ा देखा।
अध्याय 83
1164
पश्चिम की यात्रा
उस ग्रह को पहचानते ही लड़का अंदर जाकर बोला, "महान श्वेत ग्रह यहाँ है।"
तब स्वर्ग के राजा ने ग्रह का स्वागत करने के लिए बाहर आए। यह देखकर कि ग्रह जेड सम्राट का आदेश लेकर आया है, स्वर्ग के राजा ने धूप जलाने का आदेश दिया और फिर मुड़कर देखा तो बंदर भी वहाँ आ गया था, जिससे वे क्रोधित हो उठे। आपको क्या लगता है कि वे क्रोधित क्यों हुए? जब वर्षों पहले बंदर ने स्वर्ग में भारी उत्पात मचाया था, तब जेड सम्राट ने स्वर्ग के राजा को दानव-निरोधक उच्च सेनापति

और राजकुमार नेझा को तीन समुद्र वेदियों का महान देवता नियुक्त किया था ताकि वे स्वर्ग की सेनाओं का नेतृत्व करके बंदर को वश में कर सकें।
उन्हें युद्ध में बार-बार परास्त होना पड़ा था। पांच सौ साल पहले मिली उस हार के प्रति आक्रोश ने ही उन्हें क्रोधित कर दिया था।
"बूढ़े चांगगेंग," उसने ग्रह से झुंझलाहट दिखाते हुए कहा, "तुम यहाँ किस तरह का फरमान लेकर आए हो?"
"यह मामला महान ऋषि सूर्य ने आपके खिलाफ दायर किया है," ग्रह ने उत्तर दिया।
इससे पहले भी स्वर्ग के राजा का मिजाज काफी खराब था, लेकिन "मामला" शब्द ने उन्हें क्रोध के प्रचंड विस्फोट के लिए उकसा दिया: "उसके पास मेरे खिलाफ क्या मामला है?"
"वह आप पर दुष्ट आत्मा का रूप धारण करके अपहरण करने का आरोप लगाता है," ग्रह ने कहा। "कृपया अगरबत्ती जलाकर इसे स्वयं पढ़ लें।"
क्रोध से उग्र होकर, स्वर्ग के राजा ने एक धूपदानी स्थापित करवाई, आकाश की ओर देखते हुए सम्राट को उनकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया, प्रणाम किया, फरमान खोला और उसे पूरा पढ़ा।
जब उसने देखा कि उसमें क्या है, तो उसने अगरबत्ती की मेज पर हाथ पटका और चिल्लाकर कहा, "उस बंदर ने झूठ का पुलिंदा बना दिया है।"
"कृपया अपना गुस्सा काबू में रखें," ग्रह ने उत्तर दिया। "महामहिम को सबूत के तौर पर एक पट्टिका और एक धूपदान प्रस्तुत किया गया है। उनका कहना है कि यह आपकी बेटी ने किया है।"
“मेरे पास केवल मेरे तीन पुत्र और एक पुत्री हैं,” स्वर्ग के राजा ने कहा। “मेरा बड़ा पुत्र जिंझा तथागत बुद्ध की सेवा में धर्म के अग्रणी संरक्षक के रूप में कार्यरत है। मेरा दूसरा पुत्र मोक्ष दक्षिणी सागर में गुआनयिन का शिष्य है। मेरा तीसरा पुत्र नेझा हर समय मेरे साथ रहता है। मेरी पुत्री झेनयिंग केवल छह वर्ष की है और एक निर्दोष बच्ची है। वह दुष्ट आत्मा नहीं बन सकती। यदि आपको मुझ पर विश्वास नहीं है तो मैं उसे लाकर आपको दिखाऊंगा। यह बंदर सचमुच एक कलंक है। कोई बात नहीं कि मैं स्वर्ग के सबसे प्रतिष्ठित वरिष्ठ राजनेताओं में से एक हूं और मुझे सिंहासन को रिपोर्ट करने से पहले सिर काटने का अधिकार दिया गया है: यहां तक कि निम्न लोक में एक साधारण नागरिक पर भी झूठा आरोप नहीं लगाया जाना चाहिए। जैसा कि विधि

संहिता कहती है।”
"झूठे आरोप लगाने की सजा कथित अपराध से तीन गुना अधिक होती है।"
फिर उसने अपने अधीनस्थों को राक्षस-बंधन की रस्सी लाने और बंदर को बांधने का आदेश दिया। दरबार के बाहर मौजूद शक्तिशाली चमत्कारिक देवता, जनरल फिशबेली और जनरल यक्ष ने बंदर पर झपट्टा मारा और उसे बांध दिया।
"हे स्वर्गिक राजा ली," धातु ग्रह ने विनती की, "कृपया विपत्ति को आमंत्रित न करें। मैं महाराज के आदेश पर शाही दरबार से उनके साथ आपको बुलाने आया हूँ। आपकी वह रस्सी भारी है, और वह बहुत जल्दी उन्हें बुरी तरह घायल कर सकती है या उनका गला घोंट सकती है।"
स्वर्ग के राजा ने उत्तर दिया, "मेटल स्टार, मैं उसके झूठे, मनगढ़ंत आरोप को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करने वाला।"
जब तक मैं इस बंदर को मारने के लिए अपनी दानव-शाप तलवार लाता हूँ, तब तक क्या आप बैठेंगे? मैं आपके साथ महाराज को सूचना दूंगा।
अध्याय 83
1165
पश्चिम की यात्रा
"तुमने बहुत बड़ी गलती की है," उसने बंदर से कहा। "सम्राट के समक्ष किसी मामले की शुरुआत हल्के में नहीं करनी चाहिए।"
आपने तथ्यों की सही जानकारी न जुटाकर खुद ही यह विपत्ति मोल ली है और इसके लिए आपको मरना पड़ेगा। यह बहुत भयानक है।"
बंदर बिल्कुल भी नहीं डरा। "चिंता मत करो, बूढ़े आदमी," उसने हंसते हुए कहा, "यह कुछ भी नहीं है। मेरा व्यापार करने का तरीका हमेशा से यही रहा है: मैं पहले नुकसान उठाता हूं और अंत में जीत जाता हूं।"
उसके मुंह से शब्द पूरे होने से पहले ही स्वर्ग के राजा की तलवार बंदर के सिर की ओर नीचे की ओर झूल गई।
लेकिन राजकुमार नेझा पहले से ही बंदर के सामने थे, उन्होंने अपनी उस विशाल तलवार से वार को रोका, जिसका इस्तेमाल वे पुरुषों को कमर से दो हिस्सों में काटने के लिए करते थे, और पुकारते हुए कहा, "कृपया अपना गुस्सा शांत करें, पिता जी।"
इससे स्वर्ग के राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। कितना अजीब! अगर कोई बेटा अपने

पिता की तलवार को रोकने के लिए अपनी ही तलवार का इस्तेमाल करे तो उसे खूब डांट पड़नी चाहिए, तो फिर नेझा के पिता सदमे से पीले क्यों पड़ गए?

जब स्वर्ग के राजा का पुत्र जन्म हुआ, तो उसके बाएं हाथ की हथेली पर 'ने' और दाहिने हाथ की हथेली पर 'झा' लिखा हुआ था, इसीलिए उसका नाम नेझा रखा गया। मात्र तीन दिन की आयु में ही उस नन्हे राजकुमार ने समुद्र में डुबकी लगाकर खूब हंगामा मचाया। उसने जल-क्रिस्टल महल को लात मारकर गिरा दिया, एक अजगर को पकड़ लिया और उसकी नसें खींचकर कमरबंद बनाने की जिद की। यह जानकर स्वर्ग के राजा को इसके भयानक परिणामों की इतनी चिंता हुई कि उन्होंने उस लड़के को मार डालने का निश्चय कर लिया।

इससे नेझा इतना क्रोधित हुआ कि उसने तलवार उठाई, अपना मांस काटकर अपनी माता को लौटा दिया, फिर अपनी हड्डियों को साफ करके अपने पिता को दे दिया। अपने पिता का बीज और माता का रक्त लौटाकर वह सीधे पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध से प्रार्थना करने चला गया। जब बुद्ध, जो सभी बोधिसत्वों को सूत्रों का उपदेश दे रहे थे, ने अपने पर्दों और रत्नों से जड़े मंडप के भीतर से "सहायता!" की पुकार सुनी, तो उन्होंने अपनी ज्ञान भरी दृष्टि से देखा कि यह नेझा की आत्मा थी। उन्होंने नेझा की हड्डियों को हरे कमल की जड़ से और वस्त्रों को कमल के पत्तों से बनाया, फिर मृतकों को पुनर्जीवित करने का मंत्र पढ़ा।

इस प्रकार नेझा का पुनर्जन्म हुआ। उसने अपनी दिव्य शक्ति और महान जादुई सामर्थ्य का उपयोग करके धर्म के मार्ग से छियानवे गुफाओं के राक्षसों को वश में कर लिया था। इसके बाद नेझा अपने पिता को मारने की इच्छा रखता था क्योंकि उसके पिता को उसकी हड्डियों से मांस नोचना पड़ा था, जिससे स्वर्ग के राजा के पास तथागत बुद्ध से सहायता मांगने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। सद्भाव बनाए रखने के लिए बुद्ध ने स्वर्ग के राजा को एक जटिल रूप से निर्मित स्वर्णिम अवशेष-स्तंभ भेंट किया, जिसकी प्रत्येक मंजिल पर वैभव से जगमगाते बुद्धों की प्रतिमाएं थीं। बुद्ध ने नेझा से इन बुद्धों को अपने पिता के समान मानने का आग्रह किया, जिससे उनके बीच की घृणा समाप्त हो गई। इसीलिए स्वर्ग के राजा ली को 'स्तंभ-वाहक' कहा जाता है। उस दिन स्वर्ग के राजा अवकाश पर घर पर थे और उनके पास पटंभ नहीं था, इसलिए उन्हें डर था कि नेझा बदला लेने पर तुला हुआ है। इसीलिए वे भय से पीले पड़ गए।

इसलिए उसने अपना हाथ पीछे मोड़कर सोने के शिवालय को उसके स्टैंड से उठाया और उसे पकड़ते हुए नेझा से पूछा, "बेटे, तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो? तुमने मेरी तलवार को अपनी चौड़ी तलवार से क्यों रोका?"
अपनी तलवार नीचे फेंकते हुए, नेझा ने अपने पिता के सामने झुककर प्रणाम किया और उत्तर दिया, "पिताजी, महाराज, हमारे परिवार की एक पुत्री परलोक में है।"
स्वर्ग के राजा ने उत्तर दिया, "मेरे पुत्र, मेरे तो केवल तुम चार ही बच्चे हैं। मुझे एक और पुत्री कहाँ से मिलती?"
“महाराज, आप भूल गए हैं,” नेझा ने उत्तर दिया। “वह लड़की कभी एक दुष्ट आत्मा थी। तीन सौ वर्ष पूर्व वह एक राक्षस बन गई। उसने गिद्ध शिखर पर तथागत के कुछ धूप, फूल और मोमबत्तियाँ चुराकर खा लीं, और तथागत ने हमें दिव्य सैनिकों के साथ उसे पकड़ने के लिए भेजा। जब उसे पकड़ा गया तो उसे पीट-पीटकर मार डालना चाहिए था, लेकिन तथागत ने कहा,

'मछलियों को गहरे पानी में पालें लेकिन उन्हें कभी न पकड़ें;'
'अनन्त जीवन की आशा में पहाड़ों की गहराई में हिरणों को चारा खिलाओ।'
इसलिए हमने उसकी जान बख्श दी। कृतज्ञता में उसने आपको अपने दत्तक पिता के रूप में और मुझे अपने बड़े भाई के रूप में प्रणाम किया। उसने हमारे लिए पाताल लोक में धूप जलाने के लिए एक पट्टिका स्थापित की। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह फिर से दुष्ट आत्मा बन जाएगी और तांग पुजारी को बर्बाद करने की कोशिश करेगी। अब नौसिखिए सन ने उसका पीछा करते हुए उसके ठिकाने तक जाकर वह पट्टिका यहाँ ऊपर ला दी है ताकि जेड सम्राट के समक्ष हमारे खिलाफ मुकदमा दायर कर सके। वह आपकी दत्तक पुत्री है, मेरी सगी बहन नहीं।
यह सुनकर स्वर्ग के राजा को बहुत बड़ा झटका लगा। उन्होंने कहा, "पुत्र, मैं सचमुच भूल गया था। उसका नाम क्या है?"
“उसके तीन नाम हैं,” राजकुमार ने उत्तर दिया। जहाँ से वह आई थी, वहाँ उसे स्वर्ण-नाक वाली श्वेत-बालों वाली चूहा आत्मा कहा जाता था। फिर उसे अर्ध-बोधिसत्व-गुआनयिन कहा जाने लगा क्योंकि उसने धूप, फूल और मोमबत्तियाँ चुराई थीं। जब

उसे क्षमा कर दिया गया और पाताल लोक में भेज दिया गया, तो उसने अपना नाम फिर से बदल लिया और धरती-उछलने वाली देवी बन गई।" तभी स्वर्ग के राजा को होश आया। उसने अपना शिवालय नीचे रखा और स्वयं बंदर को खोलने लगा। इस पर बंदर ने नाटक करना शुरू कर दिया।

"मुझे खोलने की हिम्मत मत करना!" उसने कहा। "अगर तुम कुछ करना ही चाहते हो तो मुझे रस्सी से बांधकर सम्राट के पास ले जाओ। तब मैं अपना मामला जीत जाऊंगा।" स्वर्ग का राजा भय से कांप उठा और राजकुमार कुछ बोल नहीं सका। सब पीछे हट गए।

इस बीच महान ऋषि लोटपोट हो रहे थे और नाटक कर रहे थे, और ज़ोर देकर कह रहे थे कि स्वर्ग के राजा उन्हें सम्राट के पास ले जाएं। स्वर्ग के राजा के पास धातु ग्रह से उनके लिए सिफारिश करने की विनती करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

"एक पुरानी कहावत है," ग्रह ने उत्तर दिया, "कि हमेशा नरमी बरतनी चाहिए। तुमने हद पार कर दी: तुमने उसे बांध दिया और उसे जान से मारने की कोशिश की। बंदर तो कुख्यात उपद्रवी है। तुम मुझसे उससे निपटने की उम्मीद कैसे करते हो? तुम्हारे नेक बेटे ने जो कहा है, उससे तो यही लगता है कि वह तुम्हारी बेटी है, भले ही गोद ली हुई हो, और गोद लिया हुआ बच्चा तो विशेष रूप से प्रिय होता है। चाहे कोई चाहे जो तर्क दे, तुम दोषी हो।"

"हे आदरणीय ग्रह, निश्चित रूप से आप मेरे लिए कुछ अच्छा कहने और मुझे इस मुसीबत से निकालने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लेंगे," स्वर्ग के राजा ने कहा।

"मैं तुम्हारे बीच का झगड़ा खत्म करना चाहता हूँ, लेकिन मैंने उसका कभी कोई भला नहीं किया है जिसकी याद मैं उसे दिला सकूँ।"

स्वर्ग के राजा ने कहा, "उसे बताओ कि तुमने ही तो यह प्रस्ताव रखा था कि उसे क्षमादान दिया जाए और एक आधिकारिक पद दिया जाए।"

तब धातु ग्रह आगे बढ़ा, भाई बंदर को सहलाया और बोला, "महान ऋषि, क्या आप सम्राट से मिलने जाने से पहले हमें रस्सी हटाने नहीं देंगे, सिर्फ मेरे लिए?"

"चिंता मत करो, बूढ़े आदमी," बंदर ने जवाब दिया। "मैं अच्छी तरह से लुढ़क सकता हूँ और लुढ़कते हुए वहाँ तक पहुँच सकता हूँ।"

"तुम्हारे अंदर ज़रा भी इंसानियत नहीं है, बंदर," ग्रह ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैंने पुराने दिनों में तुम्हारे लिए कई अच्छे काम किए थे, लेकिन तुम मेरे लिए यह छोटा सा काम

भी नहीं करोगे।"
अध्याय 83
1167
पश्चिम की यात्रा
"तुमने मेरा क्या भला भला किया?" बंदर ने पूछा।
"जब तुम फूलों और फलों के पहाड़ पर एक राक्षस थे, तब तुमने बाघों और ड्रैगनों को वश में किया, खुद को मृत्यु के रजिस्टर से जबरदस्ती हटा दिया और राक्षसों की भीड़ को इकट्ठा किया ताकि वे बेकाबू होकर तबाही मचा सकें।"
स्वर्ग तुम्हें गिरफ्तार करना चाहता था। मेरी ज़ोरदार पैरवी के कारण ही क्षमादान और भर्ती का फरमान जारी हुआ और तुम्हें घोड़ों का रक्षक नियुक्त करने के लिए स्वर्ग बुलाया गया। तुमने जेड सम्राट की अमरता की मदिरा पी ली, और मेरी फिर से ज़ोरदार पैरवी के कारण ही तुम्हें स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि की उपाधि दी गई। लेकिन तुमने अपनी सीमा को नहीं पहचाना। तुमने आड़ू और मदिरा चुरा ली और भगवान लाओ ज़ी से उनका अमृत भी छीन लिया, और यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक तुम ऐसी स्थिति में नहीं पहुँच गए जहाँ न जन्म न मृत्यु हो। अगर मैं न होता तो तुम आज इस मुकाम पर कभी नहीं पहुँच पाते।
“पुराने समय में लोग कहते थे,” बंदर ने उत्तर दिया, “मरने के बाद किसी बूढ़े के साथ कब्र में मत दफनाओ: वो तो बस शिकायत ही करेगा। मैं तो बस घोड़ों का रक्षक था जिसने स्वर्ग में खूब उत्पात मचाया था: इसके अलावा और कुछ खास नहीं था। खैर, कोई बात नहीं। आप इतने बूढ़े हैं, तो मैं आपको थोड़ी दया दिखा देता हूँ। आप मुझे खुद खोल सकते हैं।” तभी स्वर्ग के राजा ने हिम्मत करके आगे बढ़कर रस्सी खोली और भाई बंदर को कपड़े पहनने और सम्मान की गद्दी पर बैठने के लिए कहा, जबकि सभी बारी-बारी से उन्हें प्रणाम करने लगे।
"बूढ़े आदमी," बंदर ने धातु ग्रह से कहा, "तो फिर क्या हुआ? मैंने तुमसे कहा था कि मैं पहले हारता हूँ और बाद में जीतता हूँ। यही मेरा काम करने का तरीका है। उसे जल्दी से सम्राट से मिलवाओ: देरी मेरे स्वामी के लिए विनाशकारी हो सकती है।"
"जल्दी करो, अधीर मत हो," मेटल प्लैनेट ने कहा। "जो कुछ भी हुआ है उसके बाद हमें एक कप चाय पीनी चाहिए।"
"अगर तुम उसकी चाय पीते हो, उससे एहसान स्वीकार करते हो, किसी अपराधी को

भागने देने के लिए रिश्वत लेते हो, और शाही फरमानों का अनादर करते हो, तो मुझे आश्चर्य है कि तुम पर क्या आरोप लगाए जाएंगे," बंदर ने जवाब दिया।
धातु ग्रह ने उत्तर दिया, "मैं चाय के लिए नहीं रुकूँगा। मैं चाय के लिए नहीं रुकूँगा। तुम तो मुझे फंसाने की कोशिश कर रहे हो। जल्दी करो, स्वर्ग के राजा ली, हमें चलना होगा।" स्वर्ग के राजा को डर था कि बंदर कोई मनगढ़ंत कहानी बनाकर उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करेगा, इसलिए वे जाने की हिम्मत नहीं कर पाए। अगर बंदर बेबुनियाद बातें करने लगा तो स्वर्ग के राजा उसका बचाव नहीं कर पाएंगे। इसलिए स्वर्ग के राजा ने एक बार फिर धातु ग्रह से उनके लिए सिफारिश करने का अनुरोध किया।
"मेरे पास एक सुझाव है," ग्रह ने बंदर से कहा। "क्या तुम इसे मानोगे?"
"मैं पहले ही बंधने और काट-छांट करवाने के लिए तैयार हो चुका हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "तुम्हें और क्या कहना है? बताओ! बताओ! अगर यह अच्छा विचार है तो मैं मान लूँगा; और अगर नहीं है, तो मुझे दोष मत देना।"
"एक दिन मुकदमा लड़ोगे तो दस दिन चल जाएगा," धातु ग्रह ने कहा। "तुम सम्राट के सामने यह दावा लेकर आए हो कि दुष्ट आत्मा स्वर्ग के राजा की पुत्री है और स्वर्ग के राजा का कहना है कि वह नहीं है। तुम दोनों महाराज के सामने अंतहीन बहस करोगे, लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि स्वर्ग में एक दिन पाताल लोक में एक वर्ष के बराबर होता है। उस वर्ष में दुष्ट आत्मा तुम्हारे स्वामी को गुफा में अपने वश में कर लेगी, और वह उससे केवल विवाह ही नहीं करेगी। तब तक शायद कोई शुभ अवसर आ चुका होगा और उसका एक नन्हा भिक्षु बच्चा भी हो चुका होगा। तब तुम्हारा महान कार्य बर्बाद हो जाएगा।"
"हाँ," बंदर ने सिर झुकाते हुए सोचा, "जब मैं सुअर और साधु सैंड को छोड़कर गया था, तो मैंने कहा था कि मैं उनके चाय बनाने से पहले, खाना पकाने में लगने वाले सबसे लंबे और सबसे तेज़ समय में वापस आ जाऊँगा। मुझे बहुत समय हो गया है और शायद बहुत देर हो चुकी है। बूढ़े आदमी," उसने ज़ोर से कहा, "मैं आपकी सलाह मानूँगा। हम इस शाही फरमान का पालन कैसे करें?"
"स्वर्गीय राजा ली को अपनी सेना जुटाने और आपके साथ राक्षस को वश में करने के लिए नीचे जाने को कहें," धातु ग्रह ने उत्तर दिया, "जबकि मैं सम्राट को रिपोर्ट वापस भेज देता हूँ।"
अध्याय 83

"तुम क्या कहोगे?" बंदर ने पूछा।
"मैं यह रिपोर्ट करूंगा कि वादी फरार हो गया है और इसलिए प्रतिवादी को बरी कर दिया गया है," ग्रह ने जवाब दिया।
"यह तो बहुत बढ़िया है," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं तुम्हारा ख्याल रखता हूँ और तुम मुझ पर भागने का आरोप लगाते हो। उससे कहो कि वह अपनी सेना इकट्ठा करे और स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के बाहर मेरा इंतज़ार करे, जबकि तुम और मैं अपने मिशन की रिपोर्ट वापस भेज दें।"
"अगर वह वहां रहते हुए कुछ भी कहेगा तो मुझ पर राजद्रोह का आरोप लग जाएगा," स्वर्ग के राजा ने भयभीत होकर कहा।
"तुम मुझे समझते क्या हो?" बंदर ने पूछा। "मैं एक सच्चा मर्द हूँ। एक बार वचन दे देने पर घोड़ों की एक पूरी टीम भी उसे तोड़ नहीं सकती। मैं कभी तुम्हारी बदनामी नहीं करूँगा।"
स्वर्ग के राजा ने बंदर को धन्यवाद दिया, जो धातु ग्रह के साथ उनके मिशन की रिपोर्ट देने गया था, जबकि स्वर्ग के राजा ने अपनी दिव्य सेनाओं को एकत्रित किया और सीधे स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के बाहर चले गए।
जब धातु ग्रह और बंदर ने जेड सम्राट से मुलाकात की, तो उन्होंने कहा, "तांग पुजारी को फंसाने वाली सुनहरी नाक वाली सफेद बालों वाली चूही है जो आत्मा बन चुकी है। उसने धोखे से स्वर्ग के राजा और उनके पुत्र को एक पत्र भेजा है। जैसे ही स्वर्ग के राजा को इसका पता चला, उन्होंने अपनी सेना को इकट्ठा करके उस राक्षस को वश में करने का आदेश दिया। हम आपसे, हे प्रभु, उन्हें क्षमा करने की विनती करते हैं।"
जब जेड सम्राट को घटना का पता चला, तो उन्होंने अपनी दिव्य दया से अभियोग वापस ले लिया। फिर बंदर अपने बादल पर सवार होकर स्वर्ग के दक्षिणी द्वार के बाहर वापस चला गया, जहाँ उसने स्वर्ग के राजा और राजकुमार को अपने दिव्य सैनिकों के साथ परेड करते हुए उसका इंतजार करते हुए पाया। तेज हवाओं और घने कोहरे के बीच दिव्य सेनापतियों ने महान ऋषि से मुलाकात की, फिर वे सभी अपने-अपने बादलों को लेकर सीधे पिटफॉल पर्वत की ओर नीचे उतर गए।
पिग और फ्रायर सैंड, ब्रदर मंकी के साथ स्वर्गदूतों को नीचे आते देख अचंभित रह

गए।
स्वर्ग के राजा को उचित शिष्टाचार के साथ प्रणाम करते हुए उस मूर्ख ने कहा, "आपको यहाँ आने में बहुत परेशानी हुई है।"
“आपको एहसास नहीं है, मार्शल तियान पेंग,” स्वर्ग के राजा ने उत्तर दिया, “कि मेरे बेटे और मैंने उससे अगरबत्ती ली थी, जिसके कारण उसकी दुष्ट आत्मा ने आपके स्वामी को वश में कर लिया। कृपया हमें इतनी देर करने के लिए नाराज़ न करें। क्या यह गड्ढा पर्वत है? गुफा का प्रवेश द्वार कहाँ है?”
“अब तो मुझे रास्ता अच्छी तरह से पता है,” बंदर ने कहा। “इस गुफा को अथाह गुफा कहते हैं और यह सौ मील से भी अधिक लंबी है। दुष्ट आत्मा ने इसमें बहुत सारे छेद कर रखे हैं। पिछली बार मेरे स्वामी को दोहरी छत वाले द्वार-शिखर में रखा गया था, लेकिन अब वहाँ सन्नाटा पसरा है। किसी राक्षस का नामोनिशान भी नहीं है। मुझे नहीं पता कि वह उन्हें कहाँ ले गई है।” इस पर स्वर्ग के राजा ने उत्तर दिया,
चाहे वह कितनी भी चालें चलने की कोशिश करे
वह आकाश के जालों से कभी नहीं बच पाएगी।'
गुफा के प्रवेश द्वार पर पहुँचने पर हम कुछ और सोच लेंगे।"
अध्याय 83
1169
पश्चिम की यात्रा
फिर वे सब चल पड़े, और तीन-चार मील चलने के बाद वे उस विशाल चट्टान पर पहुँच गए। "यही वह चट्टान है,"
बंदर ने उस प्रवेश द्वार की ओर इशारा करते हुए कहा जो एक बड़े जार के मुंह से बड़ा नहीं था।
"जब तक तुम बाघ की मांद में नहीं जाओगे, तब तक तुम बाघ के बच्चे को कभी नहीं पकड़ पाओगे," स्वर्ग के राजा ने कहा। "सबसे पहले कौन जाने की हिम्मत करता है?"
"मैं जाऊंगा," बंदर ने कहा।
"नहीं, मैं पहले जाऊंगा," राजकुमार नेझा ने आपत्ति जताई। "सम्राट ने मुझे ही राक्षस को पकड़ने का आदेश दिया था।"
फिर उस बेवकूफ ने अकड़ दिखाते हुए चिल्लाना शुरू कर दिया, "पहले तो मुझे होना चाहिए था।"

“शोर मचाना बंद करो,” स्वर्ग के राजा ने कहा। “मैं फैसला करता हूँ। महान ऋषि सूर्य और राजकुमार सैनिकों के साथ नीचे जाएंगे जबकि हम तीनों प्रवेश द्वार पर पहरा देंगे। फिर हम अंदर और बाहर समन्वित कार्रवाई करेंगे, जिससे उसके लिए स्वर्ग तक पहुंचना या और आगे भूमिगत जाना असंभव हो जाएगा। इससे उसे हमारी शक्तियों का थोड़ा सा अंदाजा हो जाएगा।”

"जी सर," उन सभी ने सहमति जताते हुए कहा।

देखिए कैसे बंदर और राजकुमार नेझा अपनी सेना के साथ गुफा में प्रवेश करते हैं। बादलों पर सवार होकर उन्होंने चारों ओर देखा और पाया कि यह वास्तव में एक सुंदर गुफा थी।

सूर्य और चंद्रमा की जोड़ी पहले जैसी ही है;
नदियों और पहाड़ियों का एक ऐसा नजारा मानो किसी दूसरी दुनिया में हो।
गर्म धुंध मोती के तालाबों और कुओं पर फैल जाती है;
यहां नीचे देखने लायक और भी बहुत कुछ है।
लाल रंग के घर, रंगे हुए हॉल,
लाल चट्टानें, हरे-भरे खेत,
वसंत ऋतु में विलो के पेड़ और शरद ऋतु में कमल के फूल;
एक दुर्लभ और शानदार गुफाओं का स्वर्ग।

एक पल में ही उन्होंने अपने बादलों को रोक दिया और सीधे उस हवेली की ओर चल पड़े जहाँ दुष्ट आत्मा पहले रहती थी। वे खोज में एक द्वार से दूसरे द्वार तक गए, चिल्लाते-चिल्लाते हुए अंदर तक जाते रहे, एक के बाद एक जगह तलाशते रहे। सौ मील तक की सारी घास रौंदी जा चुकी थी। लेकिन दुष्ट आत्मा कहाँ थी? संज़ंग कहाँ थी?

“वह दुष्ट राक्षसी,” सब कह रहे थे, “वह तो सदियों पहले इस गुफा से निकल गई होगी। अब तक तो बहुत दूर चली गई होगी।” उन्हें यह नहीं पता था कि गुफा के दक्षिण-पूर्व में एक अंधेरे कोने के नीचे एक और छोटी गुफा थी, जहाँ दो छोटे दरवाजों के पीछे एक छोटी सी कुटिया थी, जिसमें गमलों में फूल लगे थे और छज्जे के पास कुछ बांस के डंडे थे। वातावरण अंधकारमय और सुगंध से भरा हुआ था। यह अध्याय 83 था।

जहां दुष्ट आत्मा संजांग को ले गई थी और उसे उससे शादी करने के लिए मजबूर करने वाली थी। उसे पूरा यकीन था कि बंदर उन्हें कभी नहीं ढूंढ पाएगा; उनमें से किसी को भी यह एहसास नहीं था कि उनका यह मिलन असंभव होने वाला था।

छोटे राक्षस आपस में शोर मचा रहे थे, तभी उनमें से एक साहसी राक्षस गुफा से बाहर झाँकने के लिए झुकी और उसका सिर एक दिव्य सैनिक से टकरा गया, जिसने चिल्लाकर कहा, "वे आ गए हैं!" यह सुनकर बंदर क्रोधित हो उठा, उसने सोने की पट्टी वाली गदा पकड़ी और सीधे गुफा में घुस गया। गुफा छोटी थी और बड़ी गुफा के सभी राक्षस उसमें मौजूद थे, इसलिए जब राजकुमार नेझा ने अपने दिव्य सैनिकों को आक्रमण के लिए भेजा, तो एक भी राक्षस छिप नहीं सका।

बंदर को तांग पुजारी, ड्रैगन घोड़ा और सामान मिल गया। वरिष्ठ दानव महिला हताश हो गई। वह केवल राजकुमार नेझा के सामने घुटने टेककर अपनी जान बख्शने की भीख मांग सकती थी।

"हम जेड सम्राट के आदेश पर आपको गिरफ्तार करने आए हैं," राजकुमार नेझा ने उत्तर दिया, "यह कोई मामूली बात नहीं है। आपके कारण मेरे पिता और मैं लगभग बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ गए थे।"

फिर उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "स्वर्गीय सैनिकों, राक्षस-बंधन की रस्सी लाओ। इन सभी दुष्ट आत्माओं को बांध दो।" वरिष्ठ राक्षस को भी कुछ देर तक कष्ट सहना पड़ा। वे सभी एक साथ बादल पर सवार होकर गुफा से बाहर निकल गए।

बंदर खुशी से खिलखिला रहा था जब स्वर्ग के राजा ने गुफा के मुँह से अपने रक्षक को हटा लिया और बंदर का अभिवादन करते हुए कहा, "अब मैं तुम्हारे स्वामी से मिल सकता हूँ।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद," बंदर ने कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद," और उसने संजांग को स्वर्ग के राजा और राजकुमार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए झुकने के लिए प्रेरित किया।

साधु सैंड और पिग उस वरिष्ठ शैतान के टुकड़े-टुकड़े करने के पक्ष में थे, लेकिन स्वर्ग के राजा ने कहा, "उसे जेड सम्राट के आदेश पर गिरफ्तार किया गया है, और उसके साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। हमें अपने मिशन की रिपोर्ट देने के लिए जाना होगा।"

स्वर्ग के राजा और राजकुमार नेझा अपनी दिव्य सेनाओं और दैवीय अधिकारियों के साथ दुष्ट आत्मा को बंदी बनाकर स्वर्ग के दरबार में ले गए ताकि सम्राट का फैसला सुन सकें। इस बीच, बंदर भाई ने तांग पुजारी की रक्षा की, जबकि रेत भिक्षु ने सामान इकट्ठा किया और सुअर घोड़े के पास जाकर स्वामी को सवारी के लिए आमंत्रित किया। फिर वे सभी अपने-अपने रास्ते पर चल पड़े। सचमुच: रेशमी जाल कट चुका था, सुनहरा सागर सूख चुका था।

वह अनमोल ताला खुल गया, और सारी परेशानियां पीछे छूट गईं।

यदि आपको नहीं पता कि आगे चलकर उनके लिए क्या होने वाला है, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को ध्यान से सुनें।

अध्याय 84

बुद्ध के अविनाशी शिष्यों का पूर्ण ज्ञानोदय: धर्मराज अपने स्वभाव के माध्यम से सत्य तक पहुँचते हैं

अध्याय 84

1171

पश्चिम की यात्रा

यह कहानी बताती है कि कैसे तांग सान्ज़ांग ने अपने पुरुषत्व को बरकरार रखा और कोहरे और फूलों के भयानक जाल से बच निकले। जब वह अपने भाई बंदर के साथ पश्चिम की ओर जा रहे थे, तो उन्हें पता ही नहीं चला कि गर्मी का मौसम आ चुका था: गर्म हवाएं चलने लगी थीं और गर्मी की पहली बारिश हो रही थी। यह एक सुंदर दृश्य था:

कोमल हरी पत्तियों के नीचे गहरा रंग होता है;

हल्की हवा में अबाबीलें अपने बच्चों को लेकर चलती हैं।

तालाबों में कमल के नए पत्ते खिल रहे हैं;

सुंदर बांस धीरे-धीरे पुनर्जीवित हो रहा है।

सुगंधित पौधे अपने नीले रंग को आकाश में मिला देते हैं;

पर्वतीय फूल पूरी जमीन को कालीन की तरह ढक लेते हैं।

नदी के किनारे सरकंडे तलवारों की तरह फैले हुए हैं;

अनार का चमकीला फूल इस तस्वीर को और भी भव्य बना देता है।

गुरु और उनके तीन शिष्य भीषण गर्मी सहते हुए आगे बढ़ रहे थे कि अचानक उन्हें

लंबे विलो पेड़ों की दो कतारें दिखाई दीं, जिनकी छाया में से एक बूढ़ी औरत एक छोटे लड़के का सहारा लिए निकली। उसने पुकारा, “हे भिक्षु, आगे मत जाइए। अपने घोड़े को रोकिए और जितनी जल्दी हो सके पूरब की ओर लौट जाइए। पश्चिम की ओर जाने वाला रास्ता कहीं नहीं जाता।”

इससे संजांग इतना भयभीत हो गया कि वह घोड़े से कूद गया, अभिवादन का इशारा किया और बोला,

आदरणीय बोधिसत्व, प्राचीनों के शब्दों में,

'समुद्र की विशालता मछलियों को उछलने की अनुमति देती है;'

आकाश का खालीपन पक्षियों को उड़ने की अनुमति देता है।'

पश्चिम की ओर जाने का कोई रास्ता भला कैसे हो सकता है?” इस पर बूढ़ी औरत ने पश्चिम की ओर इशारा करते हुए कहा, “अगर आप उस तरफ जाएँगे तो कुछ ही मील में आपको धर्माद्गठिया की राजधानी मिल जाएगी। राजा ने पिछले जन्म में बौद्ध धर्म से घृणा की थी और इस जन्म में वह बिना किसी कारण के उसे दंडित कर रहा है। दो साल पहले उसने दस हजार बौद्ध भिक्षुओं को मारने की भयानक प्रतिज्ञा ली थी। इस दौरान उसने 9,996 भिक्षुओं को मार डाला है।

वह एक के बाद एक अज्ञात भिक्षुओं से मिल रहा है। वह बस चार प्रसिद्ध भिक्षुओं के आने का इंतजार कर रहा है ताकि उसके दस हजार भिक्षुओं की संख्या पूरी हो जाए और वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सके। अगर तुम शहर जाओगे तो व्यर्थ ही अपनी जान गंवा दोगे।

यह सुनकर संजांग इतना भयभीत हो गया कि वह कांपने लगा और उसने उत्तर दिया, "आदरणीय बोधिसत्व, मैं आपकी महान कृपा से अत्यंत प्रभावित और आपका असीम आभारी हूँ। लेकिन, कृपया मुझे बताइए, क्या कोई ऐसा उपयुक्त मार्ग है जिससे मैं शहर में प्रवेश न कर सकूँ?"

"इसका कोई रास्ता नहीं है," बूढ़ी औरत ने हंसते हुए जवाब दिया, "कोई रास्ता नहीं है। इसे पार करने का एकमात्र तरीका यही है कि आप उड़ सकते हैं।"

इस पर सुअर उनके बगल में खड़े-खड़े ही बड़बड़ाने लगा: "हमें रोकने की कोशिश मत

करो। हम सब उड़ सकते हैं।"
बंदर की सुनहरी पुतलियों वाली तेज आंखें सचमुच अच्छे और बुरे में फर्क कर सकती थीं, और उसने देखा कि वह बूढ़ी औरत और वह छोटा लड़का जिस पर वह झुकी हुई थी, वास्तव में बोधिसत्व गुआनयिन और सेवक सुधना थे। वह जल्दी से जमीन पर गिर पड़ा और प्रणाम करते हुए पुकारने लगा, "बोधिसत्व, आपके शिष्य ने आपका स्वागत नहीं किया। मुझे खेद है।"
फिर बोधिसत्व धीरे-धीरे अपने रंग-बिरंगे बादल पर विराजमान हुईं, जिससे आदरणीय बुजुर्ग इतने चौंक गए कि उनके पैर लड़खड़ा गए और वे पूरी शक्ति से घुटने टेककर प्रणाम करने लगे। पिग और फ्रायर सैंड भी भयभीत होकर घुटने टेककर स्वर्ग को प्रणाम करने लगे। क्षण भर बाद वे शुभ बादलों के बीच दक्षिणी सागर की ओर वापस चल पड़ीं।
तब बंदर उठा और अपने स्वामी को सहारा देते हुए बोला, "कृपया उठिए। बोधिसत्व पहले ही अपने द्वीप पर लौट चुकी हैं।"
"वुकोंग," संजांग ने कहा, "अगर तुम्हें पता था कि वह बोधिसत्व है तो तुमने पहले क्यों नहीं बताया?"
"तुम बहुत ज्यादा सवाल पूछते हो," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "जब मैंने सिर झुकाना शुरू किया था, क्या वह समय काफी जल्दी नहीं था?"
"यह सौभाग्य की बात है कि बोधिसत्व ने हमें बताया कि धर्मविनाश, जहाँ भिक्षुओं को मार डाला जाता है, हमारे आगे है," सुअर और साधु सैंड ने बंदर से कहा। "अब हम क्या करें?"
“डरो मत, मूर्ख,” बंदर ने जवाब दिया। “हम अब तक जिन दुष्ट राक्षसों और शैतानों से मिले हैं, या बाघों की गुफाओं और अजगरों के तालाबों में गए हैं, उनसे हमें कोई नुकसान नहीं हुआ है। यह तो आम लोगों का देश है। डरने की क्या बात है? बस एक ही बात है कि हम यहाँ नहीं रुक सकते। दिन ढल रहा है और कुछ ग्रामीण कस्बे के बाज़ार से लौट रहे हैं। अगर उन्हें पता चल गया कि हम भिक्षु हैं और वे शोर मचाने लगे तो अच्छा नहीं होगा। बेहतर होगा कि हम गुरु को मुख्य सड़क से दूर किसी शांत और एकांत जगह पर ले चलें जहाँ हम आपस में विचार-विमर्श कर सकें।” संज़ंग ने बंदर का सुझाव मान लिया और वे मुख्य सड़क से हटकर ज़मीन में बने एक गड्ढे में चले गए जहाँ वे बैठ गए।

बंदर ने कहा, "भाई, तुम दोनों मालिक का ख्याल रखना, मैं अपना रूप बदलकर शहर जाकर थोड़ा घूम लेता हूँ। मैं कोई ऐसी गली ढूंढ लूंगा जहाँ से हम आज रात निकल सकें।"
"शिष्य," संजांग ने कहा, "इसे हल्के में मत लो। राज कानून अटल है। तुम्हें सावधान रहना होगा।"
बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "चिंता मत करो, चिंता मत करो। मैं सब संभाल लूंगा।"
यह कहते ही महान ऋषि सीटी बजाते हुए हवा में उछल पड़े। यह बहुत अजीब था:
ऊपर पकड़ने के लिए कोई रस्सी नहीं थी।
नीचे उसे सहारा देने के लिए कोई खंभा नहीं है।
बाकी सभी अपने माता-पिता की तरह हैं।
अध्याय 84
1173
पश्चिम की यात्रा
लेकिन उसकी हड्डियों का वजन कम था।
बादलों में खड़े होकर नीचे देखते हुए उसने पाया कि शहर अत्यंत सुखमय और शुभ वातावरण से भरा हुआ था। "कितनी सुंदर जगह है!" बंदर ने कहा। "यहाँ धर्म को नष्ट करने की कोशिश क्यों की जा रही है?" उसने कुछ देर चारों ओर देखा, और शाम ढलते समय उसने देखा:
चौराहे पर तेज रोशनी,
नौ गुना हॉल में धूप और घंटियाँ।
नीले आकाश में सात सबसे चमकीले तारे चमक रहे थे।
और यात्री आठों दिशाओं में चलना बंद कर दिए।
सेना की बैरक से
चित्रित बिगुल की आवाज मुश्किल से सुनाई दे रही थी;
ड्रम टावर में
तांबे की जल घड़ी से पानी टपकने लगा।
चारों ओर शाम का घना कोहरा छाया हुआ था;
बाजारों में ठंडी धुंध छाई हुई थी।
दो-दो करके जोड़े अपने-अपने बिस्तरों पर चले गए।

जैसे ही पूर्व दिशा में चमकीला चंद्रमा उदय हो रहा था।
"अगर मैं इस चेहरे के साथ गलियों में रास्ता खोजने निकला," उसने सोचा, "तो मुझे देखने वाला हर कोई यही सोचेगा कि मैं एक साधु हूँ। बेहतर होगा कि मैं अपना रूप बदल लूँ।" उसने अपने हाथों से एक मंत्र पढ़ा, जादुई शब्द बोले, खुद को झटका दिया और एक पतंगे में बदल गया, उस तरह का पतंगा जो लालटेन में उड़कर चला जाता है।
एक नन्हा सा शरीर, नाजुक पंखों की एक जोड़ी,
प्रकाश की तलाश में कौन दीपक बुझाकर मोमबत्ती की ओर उड़ता है?
अपने मूल शरीर में परिवर्तन करके निर्मित,
यह सड़ती हुई घास में अपनी जादुई प्रतिक्रिया दिखाता है।
मोमबत्ती की लौ की जलती हुई रोशनी से प्रेम करते हुए,
अध्याय 84
1174
पश्चिम की यात्रा
बिना रुके लगातार उसके चारों ओर उड़ते रहना,
सुगंधित पंखों वाला बैंगनी रंग का पतंगा जुगनुओं को भगा देता है; उसे सबसे ज्यादा पसंद है रात की हवा रहित शांति।
उसे देखो, वह कैसे फड़फड़ाता हुआ सीधे मुख्य सड़कों और बाजारों की ओर उड़ता है, और रास्ते में आने वाली इमारतों की छतों और कोनों के करीब से उड़ता हुआ जाता है। उड़ते हुए उसने एक कोने पर तिरछी कतार में बने घरों को देखा, जिनके हर दरवाजे के ऊपर एक लालटेन लटकी हुई थी।
"यहाँ ज़रूर लालटेन उत्सव मनाया जा रहा होगा," उसने सोचा। "नहीं तो वहाँ जलती हुई लालटेनों की वह कतार क्यों होती?" अपने पंखों को समेटकर और करीब से देखने के लिए ऊपर उड़ते हुए, उसने देखा कि बीच वाले घर के बाहर एक चौकोर लालटेन पर "व्यापारिक यात्रियों के लिए आवास" लिखा था, और उसके नीचे "वांग द्वितीय का सराय" लिखा था।
तभी बंदर को एहसास हुआ कि यह एक सराय है। उसने अपना सिर आगे बढ़ाकर करीब से देखा तो अंदर आठ-नौ आदमी थे जिन्होंने अपना खाना खा लिया था, अपने कपड़े और टोपी उतार दी थी, हाथ-पैर धो लिए थे और सोने चले गए थे।

"मालिक बच जाएगा," बंदर ने मन ही मन खुशी से सोचा। उसे यह कैसे पता चला? क्योंकि उसके मन में एक शरारती विचार चल रहा था: वह सबके सो जाने का इंतज़ार करेगा, फिर उनके कपड़े और टोपियाँ चुरा लेगा ताकि वह और उसके साथी आम लोगों के वेश में शहर में जा सकें।

अरे बाप रे! ये तो उन चीजों में से एक थी जो आपकी इच्छा के अनुसार नहीं होतीं। जब मंकी अभी अपनी योजना के बारे में सोच ही रहा था कि वांग द्वितीय व्यापारियों के पास गया और बोला, "कृपया सावधान रहें, सज्जनों।"

यहां बदमाश भी हैं और भले लोग भी। आप सभी को अपने कपड़ों और सामान के प्रति सावधान रहना चाहिए।

जैसा कि आप समझ सकते हैं, यात्रा करने वाले व्यापारी बहुत सतर्क थे, और सराय मालिक की सलाह ने उन्हें पहले से कहीं अधिक सावधान कर दिया। इसलिए वे सब बिस्तर से उठे और बोले, "आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, स्वामी जी। हम यात्रियों को बहुत परेशानी होती है। हमें हमेशा यह डर सताता रहता है कि अगर सोते समय कोई आपात स्थिति आ जाए तो हम शायद जाग न पाएं; और अगर कुछ गड़बड़ हो जाए तो हम मुसीबत में पड़ जाएंगे। बेहतर होगा कि आप हमारे सारे कपड़े, टोपियाँ और थैले अंदर ले जाकर हमारे लिए संभाल कर रख दें। कल सुबह उठने पर आप उन्हें हमें वापस दे देना।"

इसके बाद वांग द्वितीय ने अपने कमरे में जितने भी कपड़े मिले, सब ले लिए। बंदर बेचैनी से अपने पंख फैलाकर अंदर उड़ गया और टोपी रखने वाले स्टैंड पर बैठ गया। वहाँ से उसने देखा कि वांग द्वितीय ने दरवाजे से लालटेन उतारी, पर्दे गिराए और दरवाजा-खिड़की बंद कर दी। तभी वह अपने शयनकक्ष में गया, कपड़े उतारे और लेट गया।

अब वांग द्वितीय की पत्नी और दो बच्चे रो रहे थे और शोर मचा रहे थे, उन्हें सोने की कोई जल्दी नहीं थी।

वांग की पत्नी फिर एक फटे हुए कपड़े की मरम्मत करने लगी, ताकि वह भी जागती रहे। बंदर ने सोचा, "अगर मुझे उस औरत के काम बंद करके सोने तक इंतजार करना पड़ा, तो मैं मालिक को भी इंतजार करवाता रहूंगा।"

फिर उसे चिंता होने लगी कि अगर वह इसे बहुत देर तक टालता रहा तो शहर के द्वार बंद हो जाएंगे, इसलिए उसका धैर्य टूट गया और वह दीपक की लौ में उड़कर चला

गया। यह सचमुच एक अजीब घटना थी।
जब वह आग बुझाने के लिए कूदा तो वह मरने के लिए तैयार था।
और आग से झुलसे माथे के साथ उसने अपने बाकी दिन बिताए।
अध्याय 84
1175
पश्चिम की यात्रा
दीपक बुझाकर उसने खुद को झटका दिया और एक चूहे में बदल गया। चूहा दो-चार चीं-चीं करके नीचे कूदा, टोपी और कपड़े उठाए और बाहर चला गया। "बूढ़े आदमी," महिला ने घबराकर कहा, "यह तो भयानक है। एक चूहा आत्मा बन गया है।"
यह सुनकर बंदर ने एक और चाल चली, दरवाजे को रोककर जोर-जोर से चिल्लाने लगा।
"वो औरत बकवास कर रही है, वांग द्वितीय। उसकी बातों पर ध्यान मत दो। मैं कोई चूहा बनकर भूत नहीं बन गया हूँ। एक भले इंसान के तौर पर मैं कोई कुटिल काम नहीं करता। मैं स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि हूँ जो धरती पर तांग पुजारी की रक्षा के लिए आया हूँ, जब वो पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने जा रहे हैं। मैंने ये कपड़े अपने स्वामी के लिए भेष बदलने के लिए उधार लिए हैं क्योंकि तुम्हारा राजा बहुत दुष्ट है। शहर से निकलते ही मैं इन्हें वापस कर दूंगा।"
यह सुनते ही वांग द्वितीय बिस्तर से झट से उठ खड़ा हुआ और अंधेरे में फर्श पर टटोलने लगा।
वह इतनी जल्दी में था कि जब उसने अपनी पतलून पकड़ी तो उसे लगा कि वह उसकी कमीज है: लाख कोशिश करने के बावजूद भी वह उसे पहन नहीं पा रहा था।
तब तक महान ऋषि ने जादुई शक्ति का प्रयोग करके अपने बादल पर सवार होकर पलायन कर लिया था, जिसे उन्होंने घुमाकर सीधे सड़क के किनारे स्थित खोखले स्थान की ओर रुख किया। संजांग चंद्रमा और तारों की तेज रोशनी में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, और जैसे ही उसने बंदर को पास आते देखा, उसने पुकार कर कहा, "क्या हम धर्माद्गठिया की राजधानी से होकर गुजर सकते हैं, शिष्य?"
बंदर पास आकर उसके सामने कपड़े रखते हुए बोला, "गुरुजी, आप भिक्षु बनकर धर्माद्गठन से नहीं गुजर पाएंगे।"
"भाई," सुअर ने कहा, "तुम किसके लिए मुश्किल खड़ी कर रहे हो? साधु बनना

छोड़ना बहुत आसान है। बस छह महीने तक अपने सिर के बाल मुंडवाना बंद कर दो और बाल बढ़ने दो।"

"हम छह महीने इंतजार नहीं कर सकते," बंदर ने जवाब दिया। "हम अभी से आम आदमी बनने जा रहे हैं।"

"लेकिन यह कहना तो बिलकुल बेतुका है," हैरान पिग ने कहा। "हम सब अब साधु हैं, और अगर हम तुरंत आम इंसान बन गए तो टोपी नहीं पहन पाएंगे। अगर हम किनारों से टोपी को कसकर बांध भी लें, तो भी हमारे पास बाल नहीं हैं जिनसे ऊपर की डोरी बांध सकें।"

"मजाक करना बंद करो," संजांग चिल्लाया, "गंभीर हो जाओ। तुम्हारे मन में वास्तव में क्या चल रहा है?"

“मैंने इस शहर को अच्छी तरह देख लिया है, गुरुजी,” बंदर ने उत्तर दिया, “और यद्यपि राजा दुष्ट है और भिक्षुओं को मारता है, फिर भी वह स्वर्ग का सच्चा पुत्र है। शहर के ऊपर एक शुभ आभा और खुशनुमा वातावरण है। अब मैं गलियों से भली-भांति परिचित हूँ और स्थानीय भाषा समझ और बोल सकता हूँ। मैंने अभी-अभी एक सराय से ये टोपियाँ और कपड़े उधार लिए हैं ताकि हम आम लोगों की तरह कपड़े पहन सकें। हम शहर में जाएँगे, रात वहीं बिताएँगे, चौथे पहर में उठेंगे और सराय के मालिक से हमारे लिए कुछ शाकाहारी भोजन बनाने को कहेंगे। पाँचवें पहर में हम द्वार से बाहर निकलेंगे और मुख्य सड़क पर पश्चिम की ओर चलेंगे। अगर कोई हमें रोकने की कोशिश करे तो हम अपनी बातों से उसे बचा लेंगे। मैं उसे बता दूँगा कि हमें उनके अधिपति राज्य के शासक ने भेजा है। धर्माद्गठिया का राजा हमें रोकने की हिम्मत नहीं करेगा। वह हमें जाने देगा।”

"हमारे बड़े भाई ने सब कुछ बहुत अच्छे से व्यवस्थित किया है," फ्रायर सैंड ने कहा। "आइए, हम उनके सुझाव के अनुसार ही करें।"

आदरणीय बुजुर्ग के पास अपने मठवासी वस्त्र और टोपी उतारकर आम आदमी के कपड़े और टोपी पहनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। फ्रायर सैंड ने भी कपड़े बदले, लेकिन पिग का सिर इतना बड़ा था कि वह टोपी नहीं पहन सकता था।

बंदर सुई और धागा लाया, दो टोपियाँ फाड़कर उन्हें एक टोपी में सिल दिया। फिर उसने वह टोपी सुअर के सिर पर रख दी और अपने लिए एक बड़ा कपड़ा ढूँढा। अंत में उसने खुद भी कपड़े पहने और कहा,

"सज्जनों, हमें इस यात्रा में 'गुरु' और 'शिष्य' शब्दों का प्रयोग प्रतिबंधित करना होगा।"
अध्याय 84
1176
पश्चिम की यात्रा
"हम एक-दूसरे को और क्या कहकर पुकारें?" सुअर ने पूछा। "हमें उन लोगों की तरह बात करनी चाहिए जो एक-दूसरे को भाई कहते हैं।"
बंदर ने जवाब दिया, "मालिक खुद को सबसे बड़ा तांग कह सकते हैं। तुम तीसरे हॉग बन सकते हो, और साधु सैंड चौथे सैंड बन सकते हैं। मैं दूसरा सन बनूंगा। लेकिन जब हम सराय में हों तो तुममें से कोई कुछ नहीं बोलेगा।"
सारी बातें मुझ पर छोड़ दो। जब वे पूछेंगे कि हमारा धंधा क्या है, तो मैं कहूँगा कि हम घोड़े बेचते हैं। मैं दिखावा करूँगा कि सफेद घोड़ा सिर्फ एक नमूना है और हम कुल दस लोग हैं, जिनमें से हम चार लोग सराय में कमरे बुक कराने और इस घोड़े को बेचने के लिए आगे आए हैं। तब सराय का मालिक हमारा अच्छे से ख्याल रखेगा। हमारी अच्छी तरह से देखभाल की जाएगी, और जाने से पहले मैं एक टूटी हुई टाइल ढूंढकर उसे चांदी में बदल दूँगा और उसे भुगतान कर दूँगा। फिर हम अपने रास्ते जा सकेंगे।”
हालाँकि तांग पुजारी को यह पसंद नहीं था, फिर भी उसे यह बात माननी पड़ी।
वे चारों घोड़े को आगे बढ़ाते हुए और सामान ढोते हुए शहर की ओर तेज़ी से बढ़े। यह एक बहुत ही शांत जगह थी, इसलिए रात हो जाने के बावजूद शहर के द्वार खुले हुए थे। वे सीधे शहर में दाखिल हुए और जैसे ही वे वांग द्वितीय के सराय के द्वार से गुज़रे, उन्हें अंदर से चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी।
लोग चिल्ला रहे थे, "मेरी टोपी गायब हो गई!" और "मेरे कपड़े चले गए!" यह जताते हुए कि उसे कुछ पता नहीं है, बंदर उन्हें सड़क के दूसरी ओर थोड़ी दूर पर एक सराय में ले गया। उस सराय में अभी भी लालटेन जल रही थी, इसलिए बंदर द्वार तक गया और पुकारा, "क्या सराय के मालिक, हमारे लिए कोई कमरा खाली है?"
"जी जी, जी," अंदर से एक महिला ने जवाब दिया। "कृपया ऊपर आइए, सज्जनों।" उसके बोलने से पहले ही एक आदमी घोड़ा लेने बाहर आया। मंकी ने उसे घोड़ा अंदर ले जाने के लिए सौंप दिया। फिर वह मालिक को दीपक की रोशनी में इमारत के अंदर ले गया। ऊपर मेजें और कुर्सियाँ करीने से लगी हुई थीं, और खिड़की खुलने पर वे सभी साफ चाँदनी में बैठ गए।

जब कोई जलता हुआ दीपक लेकर आया तो बंदर ने दरवाजे को रोक दिया, दीपक बुझा दिया और कहा, "ऐसी चमकदार रात में दीपक की कोई जरूरत नहीं है।"
दीपक लिए हुए आदमी के नीचे जाते ही एक नौकरानी चाय के चार कटोरे लेकर आई। मंकी ने उससे कटोरे ले लिए, और तभी उसके पीछे-पीछे लगभग छप्पन या सत्तावन वर्ष की एक महिला सीढ़ियों से ऊपर आती हुई दिखाई दी।
बंदर के बगल में खड़ी होकर उसने पूछा, "आप लोग कहाँ से आए हैं? आपके पास कौन-कौन सी बढ़िया वस्तुएँ हैं?"
"हम उत्तर से हैं," बंदर ने जवाब दिया, "और हमारे पास बेचने के लिए कुछ बेचारे घोड़े हैं।"
"घोड़ों का व्यापार करने के लिए तुम्हारी उम्र बहुत कम है," महिला ने कहा।
"ये सज्जन तांग सबसे बड़े हैं," बंदर ने समझाया, "ये हॉग तीसरे हैं, और ये सैंड चौथे हैं।"
मैं सन द सेकंड हूं, एक प्रशिक्षु।
"लेकिन आप सबके उपनाम अलग-अलग हैं," महिला ने मुस्कुराते हुए कहा। "जी हां," मंकी ने जवाब दिया, "हमारे उपनाम अलग-अलग हैं, लेकिन हम सब साथ रहते हैं। हम कुल दस भाई हैं, और हम चार लोग अपने खाने-पीने का इंतजाम करने के लिए आगे आ गए हैं। बाकी छह ने आज रात शहर के बाहर रहने की जगह ढूंढ ली है। उनके लिए शहर में आना मुश्किल होता क्योंकि उनके पास घोड़ों का झुंड है। वे कल सुबह आएंगे जब हम उनके लिए कोई रहने का इंतजाम कर लेंगे। हम तब तक घर नहीं जाएंगे जब तक हम घोड़े बेच नहीं देते।"
"तुम्हारे झुंड में कितने घोड़े हैं?" महिला ने पूछा।
"सभी उम्र के सौ से ज़्यादा हैं," बंदर ने जवाब दिया। "वे सभी हमारे उस बंदर की तरह हैं, बस फर्क इतना है कि वे अलग-अलग रंगों में आते हैं।"
अध्याय 84
1177
पश्चिम की यात्रा
"श्रीमान सन," महिला हंसते हुए बोली, "आप यात्रा करना बखूबी जानते हैं। आपको सीधे यहीं आना चाहिए था: कोई और सराय आपको ठहरा नहीं पाती। हमारे पास एक बड़ा आंगन है जिसमें पर्याप्त चारागाह और घोड़ों को बांधने के खंभे हैं और भरपूर

चारा भी है। हम यहां सैकड़ों घोड़ों को खिला सकते हैं। बस एक बात बताना चाहती हूं। मैं कई सालों से यह सराय चला रही हूं और यह काफी मशहूर है। मेरे स्वर्गीय पति का नाम झाओ था, लेकिन अफसोस, उनका निधन बहुत पहले हो गया था, इसलिए अब इसे विधवा झाओ की सराय कहा जाता है। हमारे यहां मेहमानों के लिए तीन तरह के मनोरंजन की व्यवस्था है। चलिए पहले पैसों के झंझटों को निपटा लेते हैं, फिर बाद में हम सभ्य तरीके से बात कर सकते हैं। सबसे पहले, हम किराए पर चर्चा कर लें और एक पर सहमति बना लें ताकि हिसाब-किताब के समय हमें पता रहे कि हमारी स्थिति क्या है।"

"बिल्कुल सही," बंदर ने जवाब दिया। "मनोरंजन के आपके तीन वर्ग क्या हैं? जैसा कि कहावत है, आपके शुल्क कम भी हो सकते हैं, आपके शुल्क महंगे भी हो सकते हैं।"

लेकिन हम सभी के साथ एक जैसा व्यवहार करें, चाहे हम दूर से आएं या पास से। आपके शुल्क में क्या-क्या शामिल है? क्या आप मुझे इसके बारे में समझा सकते हैं?

"हमारे पास प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी के टैरिफ हैं," बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया। "प्रथम श्रेणी में पाँच प्रकार के फलों और पाँच अलग-अलग व्यंजनों से भरा भोज होता है। मेजों पर मिठाई से बने शेर और लड़ते हुए योद्धाओं की आकृतियाँ सजी होती हैं।" दो सज्जन एक मेज पर बैठते हैं, और उनके लिए गाने और सोने के लिए युवतियाँ मौजूद होती हैं। प्रति व्यक्ति आधा औंस चांदी का खर्च आता है, जिसमें कमरे का किराया भी शामिल है।

"मैं इससे सहमत हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "जहाँ से हम आते हैं, वहाँ आधे औंस से एक लड़की का खर्च भी नहीं निकल पाता।"

"दूसरे दर्जे के शुल्क के लिए," महिला ने आगे कहा, "आप सभी एक ही थाली में खाना खाते हैं और हम फल और गर्म शराब उपलब्ध कराते हैं जिसे आप अपने पीने के खेलों में अपनी इच्छानुसार ले सकते हैं। कोई युवती उपलब्ध नहीं कराई जाती है और इसकी कीमत प्रति व्यक्ति एक औंस चांदी का पांचवां हिस्सा है।"

"मैं भी इससे सहमत हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "तीसरे दर्जे के बारे में क्या?"

"मैं आप जैसे प्रतिष्ठित सज्जनों के साथ इस विषय पर चर्चा करना पसंद नहीं करूंगी," उसने उत्तर दिया।

"इसके बारे में हमें बताने में कोई हर्ज नहीं है," बंदर ने जवाब दिया, "ताकि हम अपने

लिए सबसे उपयुक्त विकल्प चुन सकें।"
"तीसरे दर्जे में आपकी सेवा करने वाला कोई नहीं है," उसने कहा, "और हम आपके लिए चावल का एक बड़ा बर्तन उपलब्ध कराते हैं, जिसमें से आप अपनी इच्छानुसार खा सकते हैं। जब आपका पेट भर जाए, तो आपके लिए पुआल बिछाकर उस पर आराम से सो सकते हैं। सुबह होते ही आप हमें चावल के लिए कुछ सिक्के दे दीजिएगा और मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि हम इस बात पर कोई बहस नहीं करेंगे कि कितना देना है।"
"हमारी किस्मत अच्छी है," सुअर ने कहा, "हमारी किस्मत अच्छी है। मुझे तो यही सौदा पसंद है। मैं कड़ाही से जी भरकर खाऊंगा और फिर चूल्हे के सामने आराम से सोऊंगा।"
"क्या बकवास है भाई," बंदर ने कहा। "हमने अपनी यात्राओं में एक-दो औंस चांदी कमाई है। हमें प्रथम श्रेणी का सत्कार दो।"
"अच्छी चाय बनाओ," महिला ने बड़े हर्ष के साथ कहा, "और रसोई को कहो कि खाना जल्दी तैयार कर दें।"
फिर वह नीचे गई और चिल्लाते हुए बोली, "मुर्गियों और हंसों को मार डालो और उनके लिए चावल के साथ खाने के लिए कुछ अचार वाला मांस उबाल लो।"
अध्याय 84
1178
पश्चिम की यात्रा
फिर वह चिल्लाई, "एक सुअर और एक भेड़ को मार डालो। जो आज नहीं खाया जा सकता, उसे कल परोसा जा सकता है। कुछ अच्छी शराब ले आओ। सबसे बढ़िया सफेद चावल का इस्तेमाल करो और सफेद आटे से कुछ पैनकेक बनाओ।"
जब संज़ंग ने ऊपर से यह सब सुना तो उसने कहा, "हे द्वितीय सन, हम क्या करें? वे मुर्गियाँ, हंस, सूअर और भेड़ काटने वाले हैं। अगर वे ये सब हमारे पास लाएँगे तो हम इन्हें खा नहीं पाएँगे क्योंकि हम सब शाकाहारी हैं।"
"मेरे पास एक विचार है," बंदर ने कहा और दरवाजे पर पैर पटकते हुए पुकारा, "श्रीमती झाओ, ऊपर आइए।"
"श्रीमान, आपके पास मेरे लिए क्या निर्देश हैं?" उसने पूछा।
"आज किसी भी जीवित प्राणी को मत मारो। आज हम शाकाहारी भोजन करेंगे," बंदर

ने उत्तर दिया।
"क्या आप लोग स्थायी शाकाहारी हैं, या सिर्फ इस महीने के लिए शाकाहारी हैं?" महिला ने आश्चर्य से पूछा।
"दोनों में से कोई नहीं," बंदर ने जवाब दिया। "हम गेंगशेन दिनों में शाकाहारी होते हैं। आज एक गेंगशेन दिन है, इसलिए हमें मांस रहित भोजन करना होगा। लेकिन आज रात तीसरे पहर के बाद शिन्यौ दिन होगा और ये प्रतिबंध लागू नहीं होंगे। उन्हें कल मार देना। आज कुछ शाकाहारी भोजन तैयार करो, और वो भी बेहतरीन।"
इससे वह महिला पहले से कहीं अधिक खुश हो गई। "कुछ भी मत काटो," वह जल्दी से सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए बोली, "कुछ भी मत काटो। कुछ ट्री-ईयर मशरूम, फुजियान बांस के अंकुर, टोफू और गेहूं का ग्लूटेन ले आओ। बगीचे से कुछ हरी सब्जियां तोड़ लो, सेवई का सूप बनाओ, कुछ ब्रेड रोल भाप में पकाओ, और सफेद चावल उबाल लो और सुगंधित चाय बना लो।"
रसोइये खाना बनाने में माहिर थे क्योंकि वे हर दिन खाना बनाते थे, इसलिए ऊपर परोसने के लिए सब कुछ झटपट तैयार हो जाता था। उनके पास शेरों और देवताओं की कुछ मिठाइयाँ भी थीं जो चारों यात्रियों के लिए पहले से ही तैयार थीं ताकि वे उन्हें भरपेट खा सकें।
जब पूछा गया, "क्या आप थोड़ी सी शराब पीना चाहेंगे?" तो बंदर भाई ने जवाब दिया, "बड़े भाई तांग नहीं पिएंगे, लेकिन हम बाकी लोग कुछ प्याले पी लेंगे।" तब विधवा महिला गर्म शराब का एक घड़ा ले आई।
जब तीनों के लिए पेय परोसे जा चुके थे, तब उन्हें लकड़ी के तख्तों पर जोर से टकराने की आवाज़ सुनाई दी। "क्या नीचे कोई फर्नीचर गिर गया है, मैडम?" बंदर ने पूछा।
“नहीं,” महिला ने उत्तर दिया, “ये मेरे खेत के कुछ नौकर हैं जो आज शाम किराए के चावल लेकर आए हैं। हमने उन्हें नीचे सोने दिया। जब आप लोग आए तो हमारे पास नौकर कम थे, इसलिए मैंने उनसे कहा कि वे पालकी लेकर वेश्यालय जाएं और आपके साथ कुछ युवतियों को ले आएं। लगता है पालकी के डंडों से फर्श के नीचे कुछ टकरा गया होगा।”
"तुमने पहले भी इसका ज़िक्र किया था," बंदर ने कहा। "लेकिन अभी उन्हें मत बुलाओ। आज उपवास का दिन है, और वैसे भी, हमारे भाई अभी तक नहीं आए हैं। वे कल ज़रूर आ जाएँगे। तब हम सब कुछ वेश्याओं को बुलाकर तुम्हारे शानदार अड्डे

पर खूब मज़े करेंगे, फिर अपने घोड़े बेचकर चले जाएँगे।"
"कितने अच्छे आदमी हैं," उस महिला ने कहा, "कितने अच्छे आदमी हैं। इस तरह तुम सब दोस्त बने रहोगे और तुम्हारी ऊर्जा भी बर्बाद नहीं होगी।" फिर उसने आदेश दिया कि पालकी वापस लाई जाए क्योंकि वेश्याओं को नहीं बुलाया जाना था।
उन चारों ने अपनी शराब और खाना खत्म कर लिया, बर्तन हटा दिए गए और भोजन समाप्त हो गया।
"हम कहाँ सोएंगे?" संजांग ने बंदर के कान में फुसफुसाते हुए पूछा।
"ऊपर," बंदर ने जवाब दिया।
अध्याय 84
1179
पश्चिम की यात्रा
"बहुत खतरनाक," संज़ंग ने जवाब दिया। "हम सबने इतनी कठिन यात्रा की है कि हम गहरी नींद में सो सकते हैं। अगर सराय के लोग सफाई करने आएं और हमारी टोपियां गिर जाएं तो वे हमारे गंजे सिर देखकर समझ जाएंगे कि हम भिक्षु हैं और हंगामा मचा देंगे। यह तो बहुत बड़ी मुसीबत हो जाएगी।"
"तुम सही कह रहे हो," बंदर ने कहा और फिर से अपना पैर पटकने के लिए बाहर चला गया।
"इस बार आपके पास क्या निर्देश हैं, श्रीमान सूर्य?" महिला ने एक बार फिर ऊपर आते हुए पूछा।
"हम कहाँ सोएंगे?" बंदर ने पूछा।
"ऊपर रहना सबसे अच्छा है," उसने जवाब दिया। "वहाँ मच्छर नहीं हैं और दक्षिण दिशा से हवा आती है। खिड़कियाँ पूरी तरह खोल दो, तुम्हें बहुत अच्छी नींद आएगी।"
“हम नहीं सो पाएंगे,” बंदर ने कहा। “हमारे श्री हॉग तृतीय को गठिया की हल्की बीमारी है, श्री सैंड चतुर्थ के कंधे में गठिया है, भाई तांग केवल अंधेरे में सो सकते हैं, और मुझे खुद भी रोशनी पसंद नहीं है। इसलिए यह हमारे सोने के लिए उपयुक्त जगह नहीं है।”
जब महिला रेलिंग पर झुककर आहें भरते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरी, तो उसकी बेटी, जिसने अपनी गोद में एक बच्चा ले रखा था, उसके पास आई और बोली, "माँ, जैसा कि कहावत है, 'दस दिन तक रेत के टीले पर फंसे रहो, फिर एक ही दिन में नौ रेत के

टीले पार कर लो।' अभी बहुत गर्मी है, इसलिए ज्यादा काम करना मुश्किल है, लेकिन जैसे ही पतझड़ शुरू होगा, हमारे पास इतना काम होगा कि हम संभाल नहीं पाएंगे। आप इस तरह आहें क्यों भर रही हैं?"

“बेटी, ऐसा इसलिए नहीं है कि धंधा मंदा है,” बूढ़ी औरत ने जवाब दिया। “मैं आज शाम को सराय बंद करने ही वाली थी कि तभी चार घोड़े के व्यापारी आए और एक कमरा ले लिया। वे प्रथम श्रेणी का किराया मांग रहे थे। मुझे उनसे कुछ पैसे मिलने की उम्मीद थी, लेकिन अब मुझे अफसोस हो रहा है क्योंकि हमें ज्यादा कमाई नहीं होगी: वे उपवास कर रहे हैं।”

बेटी ने जवाब दिया, "क्योंकि वे पहले ही खाना खा चुके हैं, इसलिए वे किसी और सराय में नहीं जा सकते। और कल जब हम उन्हें मांस और शराब परोसेंगे तो हम उनसे पैसे कमा सकेंगे।"

"वे सब बीमार हैं," बूढ़ी औरत ने जवाब दिया, "और उन्हें सोने के लिए कोई अंधेरी जगह चाहिए क्योंकि उन्हें ठंडी हवा और रोशनी पसंद नहीं है। सराय के सभी कमरों में टाइलें टूटी हुई हैं, तो मैं उनके लिए कोई अंधेरी जगह कहाँ ढूँढूँगी? बेहतर होगा कि खाने का खर्च माफ कर दिया जाए और उन्हें कहीं और ठहरने के लिए कह दिया जाए।"

"लेकिन घर में एक अंधेरी जगह तो है, माँ," बेटी ने जवाब दिया, "जहाँ न तो हवा आती है और न ही रोशनी। वो ठीक रहेगी।"

"कहाँ?" बुजुर्ग महिला ने पूछा।

“वह बड़ा संदूक जो पिताजी ने अपने जीवित रहते बनवाया था,” बेटी ने उत्तर दिया। “वह चार फीट चौड़ा, सात फीट लंबा और तीन फीट ऊंचा है, और उसमें सात लोग आराम से सो सकते हैं। उनसे कहो कि वे संदूक में सो जाएं।”

"मुझे नहीं पता कि यह ठीक रहेगा या नहीं," बूढ़ी औरत ने कहा। "मैं उनसे पूछ लेती हूँ। श्रीमान सन, अगर आप हमारे इस छोटे से तंग कमरे में नहीं सो सकते, तो यहाँ हमारे बड़े से ट्रंक से ज़्यादा अँधेरी जगह और कोई नहीं है। यह रोशनी और हवा को रोक देगा। तो आप ट्रंक में ही क्यों नहीं सो जाते?"

"शानदार," बंदर ने जवाब दिया। फिर उसने अपने कुछ सेवकों को संदूक बाहर ले जाकर ढक्कन खोलने का आदेश दिया और अपने मेहमानों को नीचे आने के लिए आमंत्रित किया। बंदर स्वामी के साथ आगे-आगे चल रहा था और साधु सैंड सामान

लेकर संदूक की ओर बढ़े, वे लालटेन की रोशनी में पीछे-पीछे चल रहे थे। लापरवाह सुअर सबसे पहले अंदर चढ़ा। साधु सैंड ने सामान उठाया और फिर तांग पुजारी को अंदर जाने में मदद की, उसके बाद वह खुद भी अंदर चला गया।

"हमारा घोड़ा कहाँ है?" बंदर ने पूछा।

"पीछे अस्तबल में बंधे हुए हैं और घास खा रहे हैं," उनकी सेवा कर रहे नौकर ने उत्तर दिया।

“इसे यहाँ लाओ,” बंदर ने कहा, “और चारा-पानी का बर्तन भी लाओ। जानवर को पेड़ के तने के पास बाँध दो।” तभी वह खुद अंदर गया और पुकारा, “श्रीमती झाओ, ढक्कन बंद कर दो, कुंडी लगा दो और ताला लगा दो। और हमारे लिए इसे देख लो। जहाँ से रोशनी आती है, वहाँ कागज चिपका दो। कल सुबह जल्दी इसे फिर से खोल देना।”

"तुम बहुत ज्यादा नखरे वाली हो," विधवा ने कहा। उसके बाद दरवाजे बंद कर दिए गए और सब लोग सोने चले गए।

कहानी अचानक संदूक में बंद उन चारों पर केंद्रित हो जाती है। बेचारे! उन्होंने टोपियाँ पहन रखी थीं, मौसम बहुत गर्म था और अंदर हवा नहीं थी, घुटन थी। पंखे न होने के कारण उन्होंने अपनी टोपियाँ और कपड़े उतार दिए और अपनी मठवासी टोपियों से हवा करने लगे। वे सब एक-दूसरे से सटकर बैठे थे और दूसरी सुबह तक सो नहीं पाए। लेकिन बंदर शरारत करना चाहता था, इसलिए वह जागता रहा। उसने हाथ बढ़ाया और सुअर के पैर पर चुटकी काट ली।

उस बेवकूफ ने अपना पैर अंदर खींच लिया और बुदबुदाया, "सो जाओ। हमारा दिन बहुत कठिन रहा है। तुम लोगों के हाथ-पैर नोचकर क्यों समय बर्बाद करना चाहते हो?"

"हमने पांच हजार औंस चांदी बिछाकर शुरुआत की," बंदर ने जानबूझकर शरारत करते हुए जोर से कहा।

"और हमने उन घोड़ों को कुछ दिन पहले तीन हज़ार में बेच दिया। हमारे पास दो बोरियों में चार हज़ार के घोड़े हैं, और हम घोड़ों के इस झुंड को भी तीन हज़ार में बेच

देंगे। इसका मतलब है कि हमारी पूंजी दोगुनी हो जाएगी। यह बुरा नहीं है।"
नींद में डूबे सुअर ने जवाब देना जरूरी नहीं समझा।
अब रेस्तरां के कर्मचारी, पानी लाने वाले और रसोई के कुली डाकुओं के साथ मिल गए थे। जब उन्होंने भाई बंदर को अपने पास मौजूद धन-दौलत के बारे में बात करते सुना, तो उनमें से कई चुपके से बीस या उससे अधिक हथियारबंद डाकुओं को मशालें लेकर लाने चले गए ताकि वे चार घोड़े व्यापारियों को लूट सकें। जैसे ही वे फाटक से अंदर घुसे, उन्होंने विधवा झाओ और उसकी बेटी को इतना डरा दिया कि वे कांपते-कांपते अपने कमरे के दरवाजे बंद कर लिए और लुटेरों को बाहर जो कुछ भी चाहिए था ले जाने दिया। अब डाकू सराय की संपत्ति नहीं, बल्कि मेहमानों की तलाश में थे। जब वे ऊपर गए और उन्हें वहां कोई नहीं मिला, तो उन्होंने अपनी मशालें जलाईं और चारों ओर देखने लगे। उन्हें आंगन में केवल एक बड़ा संदूक दिखाई दिया, जिसके तल पर एक सफेद घोड़ा बंधा हुआ था। ढक्कन कसकर बंद था और उसे खोला नहीं जा सका।
“घूमने-फिरने वाले व्यापारी तो सब जानते हैं कि उन्हें क्या करना है,” डाकुओं ने कहा। “यह संदूक इतना मजबूत दिखता है कि इसमें पर्स, कीमती सामान और रेशम भरा होगा। चलो घोड़ा चुराते हैं, संदूक को शहर से बाहर ले जाते हैं, उसे खोलते हैं और अंदर जो कुछ भी है उसे आपस में बाँट लेते हैं। यही सबसे अच्छा होगा, है ना?”
फिर डाकुओं को एक रस्सी मिली जिससे उन्होंने संदूक को उठाया और उसे झूलते-झूलते हुए ले गए।
"भाई," इस आवाज से जागकर सुअर ने कहा, "सो जाओ। हमें क्यों झुला रहे हो?"
"चुप रहो," बंदर ने जवाब दिया। "हमें कोई हिला नहीं रहा है।"
संजांग और फ्रायर सैंड भी अचानक जाग गए थे, और उन्होंने पूछा, "हमें कौन ले जा रहा है?"
बंदर ने कहा, "चुप रहो, चुप रहो। उन्हें हमें ले जाने दो। अगर वे हमें पश्चिमी स्वर्ग तक ले जाएंगे तो हमें पैदल चलने की परेशानी से मुक्ति मिल जाएगी।"
लेकिन सफल डाकू पश्चिम की ओर नहीं जा रहे थे। इसके बजाय वे शहर के पूर्व की ओर बढ़े, शहर के द्वार पर तैनात सैनिकों को मार डाला, द्वार खोला और खुद बाहर निकल गए। इससे सड़कों और बाजारों में सनसनी फैल गई, जहां सभी दुकानों के पहरेदारों ने इसकी सूचना शहर के सैन्य बल के कमांडर-इन-चीफ और पूर्वी शहर के

आयुक्त को दी। चूंकि यह उनकी जिम्मेदारी थी, इसलिए कमांडर-इन-चीफ और पूर्वी शहर के आयुक्त ने... अध्याय 84

1181

पश्चिम की यात्रा

आयुक्त ने पैदल सेना, घुड़सवार सेना और धनुर्धारियों की एक टुकड़ी जुटाई, जो डाकुओं का पीछा करने के लिए शहर से निकल पड़ी।

इतनी शक्तिशाली सरकारी सेना का प्रतिरोध व्यर्थ देखकर, डाकुओं ने संदूक और सफेद घोड़े को वहीं छोड़ दिया, झाड़ियों में छिप गए और गायब हो गए। सरकारी सेना एक भी डाकू को नहीं पकड़ पाई: उन्होंने केवल संदूक और सफेद घोड़ा ही पकड़ा, जिसके साथ वे विजयी होकर लौट आए। सेनापति ने दीपों की रोशनी में घोड़े का निरीक्षण किया और पाया कि वह एक उत्तम घोड़ा था: उसकी गर्दन के बाल चांदी के रेशों की तरह चमक रहे थे;

उसकी पूंछ में जेड के तार लटके हुए थे।

आठ घोड़ों और ड्रैगन घोड़ों के बारे में भूल जाओ;

यह महान सुशुआंग की तुलना में अधिक स्थिर था;

इसकी हड्डियाँ मात्र ही एक हजार औंस चांदी में बिक सकती थीं; यह हवा के साथ तीन हजार मील तक सरपट दौड़ सकता था।

जब वह पहाड़ पर चढ़ी तो बादलों में विलीन हो गई;

जब वह चांद को देखकर हिनहिनाया तो वह बर्फ की तरह सफेद था।

यह सचमुच किसी समुद्री द्वीप से आया हुआ अजगर था।

मानव जगत में जेड का एक यूनिकॉर्न।

सेनापति ने अपने घोड़े के बजाय सफेद घोड़े पर सवार होकर अपने सैनिकों को वापस शहर में ले गया।

उस संदूक को उनके मुख्यालय ले जाया गया, जहाँ उन्होंने और पूर्वी नगर आयुक्त ने कागज़ की पट्टियों से उसे सील कर दिया, जिन पर उन्होंने लिखा था, और सुबह तक उसकी सुरक्षा के लिए पहरा बिठा दिया। सुबह वे राजा को एक ज्ञापन सौंपेंगे और संदूक के संबंध में निर्णय का अनुरोध करेंगे। इसके बाद अन्य सैनिकों को छुट्टी दे दी गई।

अब कहानी बताती है कि कैसे आदरणीय तांग पुजारी संदूक के अंदर बंदर पर बड़बड़ा

रहे थे। उन्होंने कहा, "बंदर।"
"इस बार तो तुमने मुझे मार ही डाला। अगर मुझे बाहर गिरफ्तार करके धर्माद्गठिया के राजा के पास ले जाया जाता, तो शायद मैं अपने बचाव में अच्छी दलीलें दे पाता। लेकिन अब मैं यहाँ इस संदूक में बंद हूँ। मुझे डाकुओं ने अगवा कर लिया था और फिर सेना ने पकड़ लिया। कल जब हमें राजा के सामने पेश किया जाएगा, तो हम सब तैयार होंगे ताकि वह हमें तलवार से मार डाले और अपने दस हज़ार सैनिकों की सूची पूरी करे।"
“बाहर लोग हैं!” बंदर चिल्लाया। “अगर वे गाड़ी खोलकर तुम्हें बाहर निकाल लेंगे तो या तो तुम्हें बांध दिया जाएगा या लटका दिया जाएगा। अगर तुम बंधना या लटकाया जाना नहीं चाहते तो थोड़ा सब्र रखो। कल जब हमें उस सनकी राजा से मिलने ले जाया जाएगा तो मैं अपनी बातों से ज़रूर बच निकलूँगा। मैं गारंटी देता हूँ कि तुम्हारे एक बाल को भी नुकसान नहीं होगा। इसलिए चिंता करना छोड़ो और वापस सो जाओ।”
तीसरी घड़ी में बंदर ने अपनी एक जादुई शक्ति का प्रयोग किया। उसने अपना डंडा निकाला और उस पर "बदलो!" कहते हुए जादुई साँस फूंकी, जिससे वह एक तिहरे बरमे में बदल गया। उसने बरमे को वापस रख दिया, खुद को झटका दिया, एक चींटी में बदल गया और अध्याय 84
1182
पश्चिम की यात्रा
वह रेंगकर बाहर निकला। फिर वह अपने असली रूप में लौट आया और अपने बादल पर सवार होकर सीधे महल के द्वार तक पहुँच गया। उस समय राजा गहरी नींद में सो रहा था, इसलिए बंदर ने अपनी सर्वशक्तिमान शरीर-विभाजन जादू का प्रयोग किया। उसने अपने बाएँ हाथ के सारे बाल नोच लिए और उन पर जादुई साँस फूँकते हुए "बदलाव!" कहा, जिससे वे छोटे बंदरों में बदल गए। फिर उसने अपने दाहिने हाथ के सारे बाल नोच लिए, उन पर जादुई साँस फूँकते हुए "बदलाव!" कहा, जिससे वे नींद लाने वाले कीड़ों में बदल गए। इसके बाद उसने जादुई शब्द 'ओम' का जाप किया और उस स्थान के देवता से कहा कि वे उन छोटे बंदरों को महल में ले जाकर सभी सरकारी कार्यालयों और विभागों के सभी अधिकारियों में बाँट दें। प्रत्येक उच्च पदस्थ अधिकारी को एक नींद लाने वाला कीड़ा दिया गया ताकि वह चैन से सोए और उठे नहीं। फिर

बंदर ने अपने सोने की पट्टी वाली लाठी को हाथों में लिया, उसे दबाया, लहराया और "बदलाव, खजाना!" कहा, जिससे वह सिर मुंडवाने के लिए इस्तेमाल होने वाले एक हजार से अधिक रेज़र में बदल गई। उसने खुद एक रेज़र लेकर सभी छोटे बंदरों से कहा कि वे एक-एक रेज़र लें और महल के भीतरी कमरों और सभी सरकारी विभागों और कार्यालयों में सभी के सिर मुंडवा दें। यह वास्तव में एक ऐसा मामला था:
जब धर्म का राजा इसे नष्ट करेगा, तब धर्म अनंत होगा;
धर्म स्वर्ग और पृथ्वी से होकर गुजरता है, जो महान मार्ग का द्वार खोलता है।
दस हजार धर्मों की उत्पत्ति एक ही धर्म से हुई है;
तीनों वाहनों की विशेषताएं मूलतः एक जैसी हैं।
उसने खबर जानने के लिए कार की डिग्गी में छेद किया।
उसने अपने सुनहरे बालों को भ्रम को चकनाचूर करने के लिए बिखेर दिया।
धर्मराज को सच्ची सिद्धि तक पहुंचाने के लिए दृढ़ संकल्पित,
उस शाश्वत शून्यता की ओर जो न जन्म लेती है और न मरती है।
उस रात जब सिर मुंडवाने का काम पूरा हो गया, तो बंदर ने स्थानीय देवता को विदा करने के लिए एक और मंत्र पढ़ा, अपने शरीर को झटककर सारे बाल वापस अपनी बाहों में ले आया, फिर सारे रेज़रों को छूकर उन्हें उनके असली रूप में, सोने की पट्टी वाली गदा में बदल दिया, जिसे उसने छोटा कर दिया और फिर से अपने कान में छिपा लिया। अंत में वह एक चींटी बन गया, वापस पेड़ के तने में घुस गया और खतरे के समय तांग पुजारी की रक्षा करने लगा।
अगली सुबह भोर से पहले जब महल के भीतरी कमरों में रहने वाली महिलाएं नहाने और बाल संवारने के लिए उठीं तो उन्होंने पाया कि उनके बाल गायब हो गए थे। महल में घूमने वाले सभी हिजड़ों, वरिष्ठ और कनिष्ठ, के साथ भी यही हुआ था। वे सभी शाही शयनकक्ष के बाहर जमा हो गए, जहाँ उन्होंने राजा को जगाने के लिए संगीत बजाया, सभी अपने आँसू रोक रहे थे लेकिन बोलने की हिम्मत नहीं कर रहे थे। कुछ ही देर में महल में रानी भी जाग उठीं तो उन्होंने पाया कि उनके बाल भी गायब हैं। जब वह लालटेन लेकर ड्रैगन पलंग की ओर दौड़ीं तो उन्होंने देखा कि एक भिक्षु रेशमी रजाई में सो रहा है, जिसे देखकर वह अपनी ज़बान पर काबू नहीं रख सकीं और इस तरह राजा को जगा दिया।
जब राजा ने अचानक अपनी आँखें चौड़ी करके खोलीं और रानी का गंजा सिर देखा तो

वह तुरंत बिस्तर से उठ खड़ा हुआ और बोला, "आप इस हालत में क्यों हैं, मेरी रानी?"
"महाराज, आप वही हैं," उसने उत्तर दिया। तब राजा ने अपना सिर रगड़ा, जिससे वह इतना भयभीत हो गया कि उसके शरीर में मौजूद तीनों आत्माएं कराह उठीं और उसकी सात आत्माएं हवा में उड़ गईं।
अध्याय 84
1183
पश्चिम की यात्रा
"मेरे साथ क्या हो गया है?" उसने हैरानी से कहा।
जब वह इस घबराहट भरी अवस्था में था, तभी शाही पत्नियां, महल की महिलाएं और सभी युवा और वृद्ध हिजड़े अपने सिर मुंडवाकर घुटनों के बल गिर पड़े और बोले, "हे प्रभु, हम सब भिक्षु बन गए हैं।"
उन्हें देखकर राजा रो पड़ा। उसने कहा, "हमें लगता है कि यह उन सभी भिक्षुओं के कारण हुआ है जिन्हें हमने मार डाला है।"
फिर उन्होंने ये आदेश दिए: "तुममें से कोई भी हमारे बाल झड़ने के बारे में कुछ न कहे, क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया तो नागरिक और सैन्य अधिकारी हमारे देश को बदनाम कर सकते हैं और कह सकते हैं कि इस पर कुशासन रहा है। अब हम सिंहासन कक्ष में सभा करें।"
अब सरकार के सभी विभागों और कार्यालयों के सभी उच्च-निम्न अधिकारी भोर से पहले श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए अदालत गए। पता चला कि इन सभी लोगों के बाल भी रात में झड़ गए थे, और उन सभी ने इस तथ्य की सूचना देते हुए ज्ञापन प्रस्तुत किए। जो कुछ सुनाई दिया वह यह था:
राजमहल में तीन बार मौन की घंटी बजी; सभी ने बताया कि उनके सिर मुंडवा दिए गए हैं।
यदि आपको यह नहीं पता कि सेनापति द्वारा पुनः प्राप्त किए गए संदूक में रखे लूट के माल का क्या हुआ और क्या तांग पुजारी और उनके तीन शिष्य जीवित रहेंगे या मर जाएंगे, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 85
मन-बंदर लकड़ी की माँ से ईर्ष्या करता है

दानवों का सरदार ध्यान के स्वामी को निगलने की साजिश रचता है।
कहानी बताती है कि जब राजा ने सुबह-सुबह सभा की, तो सभी नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने ज्ञापन लिए हुए थे। उन्होंने कहा, "हे प्रभु, हम आपसे विनती करते हैं कि आप अपने सेवकों के असभ्य व्यवहार के लिए क्षमा मांगें।"
"सज्जनों," राजा ने उत्तर दिया, "आप सभी हमेशा की तरह शिष्ट हैं। आप किस प्रकार की असभ्यता प्रदर्शित कर रहे हैं?"
“महाराज,” उन्होंने कहा, “हमें नहीं पता क्यों, लेकिन कल रात आपके सभी सेवकों के बाल झड़ गए।” बालों के झड़ने से संबंधित इन पत्रों को हाथ में लिए राजा अपने ड्रैगन सिंहासन से नीचे उतरे और अधिकारियों से कहा, “सचमुच, हमें भी नहीं पता क्यों, लेकिन महल में सभी के, जवान और बूढ़े, कल रात बाल झड़ गए।”
राजा और मंत्री सभी रोते हुए बोले, "अब से हम किसी भी भिक्षु को मारने का साहस नहीं करेंगे।" राजा अपने सिंहासन पर लौट गए और अधिकारी अपने-अपने स्थान पर आ गए। फिर राजा ने कहा, "जिनका यहाँ कोई काम है, वे आगे आकर अपनी रिपोर्ट दें। यदि कोई और काम न हो तो पर्दा गिरा दिया जाए और सभा समाप्त हो जाए।"
राजधानी की चौकी के कमांडर-इन-चीफ तब सैन्य अधिकारियों की कतारों से आगे बढ़े और पूर्वी शहर के आयुक्त नागरिक अधिकारियों की कतारों से आगे बढ़कर सिंहासन की सीढ़ियों पर प्रणाम करते हुए रिपोर्ट करने लगे, "हम कल रात महाराज के आदेश पर शहर में गश्त कर रहे थे जब हमने अध्याय 85 पर पुनः कब्जा कर लिया।"
1184
पश्चिम की यात्रा
डाकुओं के लूटे हुए माल से भरा संदूक और एक सफेद घोड़ा। चूंकि हम इन पर अनधिकृत कार्रवाई करने का साहस नहीं करते, इसलिए हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप एक आदेश जारी करें। राजा प्रसन्न हुए।
"इसे ट्रंक समेत यहाँ लाओ," उसने आदेश दिया।
फिर दोनों अधिकारी अपने-अपने दफ्तरों में लौट गए, सैनिकों की पूरी टुकड़ी इकट्ठा की और संदूक को बाहर निकलवाया। संदूक के अंदर मौजूद संज़ंग को ऐसा लगा जैसे उसकी आत्मा शरीर से निकल रही हो। उसने कहा, "शिष्यों, राजा के पास पहुँचकर हम अपनी रक्षा में क्या कहेंगे?"

"चुप रहो," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैंने सब कुछ ठीक कर दिया है। जब संदूक खुलेगा तो राजा हमें अपने गुरु मानकर प्रणाम करेगा। बस एक बात का ध्यान रखना है कि सुअर वरीयता को लेकर झगड़ा न करे।"

"अगर वे मुझे नहीं मारेंगे तो यह स्वर्ग होगा," सुअर ने जवाब दिया। "मैं किस बात पर झगड़ा करना चाहूंगा?" उसके मुंह से ये शब्द पूरी तरह निकले भी नहीं थे कि वे महल के प्रवेश द्वार तक पहुंच गए और पांच फीनिक्स के टावर से होते हुए सिंहासन की सीढ़ियों के नीचे रख दिए गए।

दो अधिकारियों के कहने पर जब राजा ने संदूक खुलवाकर अंदर देखने का आदेश दिया, तो उसने ऐसा ही करने को कहा। जैसे ही ढक्कन उठा, सुअर, जो खुद को रोक नहीं पाया, बाहर कूद पड़ा, जिससे सभी अधिकारी इतने भयभीत हो गए कि वे कांपने लगे और कुछ बोल नहीं पाए। इसके बाद, भाई बंदर को तांग पुजारी को बाहर निकालने में मदद करते हुए देखा गया, जबकि साधु सैंड ने सामान बाहर निकाला।

जब सुअर ने देखा कि सेनापति सफेद घोड़े को पकड़े हुए है, तो वह उसके पास गया, गुस्से में चिल्लाया और बोला, "यह मेरा घोड़ा है। इसे मुझे सौंप दो!" इससे वह अधिकारी इतना भयभीत हो गया कि वह सिर के बल गिर पड़ा।

चारों तीर्थयात्री सीढ़ियों के बीचोंबीच सीधे खड़े हो गए, और जब राजा ने देखा कि वे भिक्षु हैं, तो वह तुरंत अपने ड्रैगन सिंहासन से नीचे उतर आया, भीतरी कक्षों से अपनी रानी और पत्नियों को बुलवाया, सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों से नीचे उतरा, अपने सभी अधिकारियों के साथ उन्हें प्रणाम किया और पूछा, "आप आदरणीय सज्जन यहाँ क्यों आए हैं?"

"मुझे महामहिम तांग सम्राट द्वारा पश्चिम में भारत के महान थंडर मठ में जीवित बुद्ध की पूजा करने और सच्चे धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा गया है," संजांग ने उत्तर दिया।

“आदरणीय गुरुदेव,” राजा ने कहा, “आप बहुत दूर से आए हैं। लेकिन कल रात आप इस संदूक में क्यों सोए थे?”

"मुझे पता था कि महाराज ने बौद्ध भिक्षुओं को मारने की शपथ ली है," संज़ंग ने उत्तर दिया, "इसीलिए मैंने आपके गौरवशाली देश में खुलेआम आने का साहस नहीं किया, बल्कि एक आम आदमी का वेश धारण करके देर रात आपके किसी सराय में ठहरने की व्यवस्था की। हम संदूक में सोए क्योंकि हमें डर था कि हमारी असली पहचान उजागर हो जाएगी। दुर्भाग्य से संदूक डाकुओं द्वारा चुरा लिया गया, जिसे सेनापति

वापस यहाँ ले आए। अब जब मैंने महाराज का ड्रैगन जैसा चेहरा देख लिया है, तो बादल छंट गए हैं और सूरज निकल आया है। मुझे आशा है कि महाराज मुझे क्षमा कर देंगे और मुझे रिहा कर देंगे, क्योंकि मैं एक तपस्वी भिक्षु हूँ।" मेरी कृतज्ञता सागर की गहराई जितनी गहरी होगी।"

“आदरणीय गुरुदेव,” राजा ने उत्तर दिया, “आप हमारे परम आधिपत्य वंश के एक प्रतिष्ठित भिक्षु हैं। आपका स्वागत करने के लिए बाहर न जाना हमारी गलती थी। वर्षों से हम भिक्षुओं को मारने की प्रतिज्ञा का पालन कर रहे हैं क्योंकि एक भिक्षु ने एक बार हमारी निंदा की थी। हमने स्वर्ग से दस हजार भिक्षुओं को मारने की प्रतिज्ञा की थी ताकि एक पूर्ण संख्या पूरी हो जाए। हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि आज हम सत्य की ओर लौटेंगे और हम सभी भिक्षु बन जाएंगे। अब हम सभी, राजा, अधिकारी, रानी और रानियाँ, ने अपने बाल मुंडवा लिए हैं। आदरणीय गुरुदेव, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपने उच्च गुणों के कारण हम पर दया करें और हमें अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करें।”

अध्याय 85

1185

पश्चिम की यात्रा

यह सुनकर सुअर जोर-जोर से हंसने लगा: "अगर तुम हमारे शिष्य बनने वाले हो तो हमारे लिए तुम्हारे पास क्या शुरुआती उपहार हैं?"

"हे स्वामी, यदि आप हमें अपना अनुयायी स्वीकार करेंगे, तो हम आपको अपने राज्य की सारी संपत्ति भेंट कर देंगे," राजा ने उत्तर दिया।

“हमसे धन-दौलत की बातें मत करो,” बंदर भाई ने कहा, “हम तो सच्चे भिक्षु हैं। बस आप हमारे पासपोर्ट की जाँच करके हमें लौटा दें और हमें शहर से बाहर तक पहुँचा दें, मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि आपका राज-काल अमर रहेगा और आप दीर्घायु और सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे।” यह सुनकर राजा ने अपने विदेश मामलों के कार्यालय को एक भव्य भोज आयोजित करने का आदेश दिया, जिसमें राजा और अधिकारी सब मिलकर एक ही सत्य पर लौट आए। पासपोर्ट की तुरंत जाँच करके उसे लौटा दिया गया, जिसके बाद संज़ंग को देश का नाम बदलने के लिए कहा गया।

"महामहिम के देश के नाम में 'धर्म' शब्द उत्तम है," बंदर ने कहा, "पर 'विनाश' शब्द निरर्थक है। अब जब हम यहाँ आ ही गए हैं, तो आपको नाम बदलकर 'धर्मारिस्पेक्टिया'

कर देना चाहिए। इससे हज़ार पीढ़ियों तक स्वच्छ जल और विजय की गारंटी मिलेगी।"

समय पर हवा और बारिश आए और सर्वव्यापी शांति बनी रहे।

राजा ने उनकी उदारता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, शाही रथ तैयार करवाया और तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों को पश्चिम की ओर शहर से बाहर ले गए।

हम इस बारे में और कुछ नहीं कहेंगे कि राजा और प्रजा ने अब सच्चे धर्म का पालन कैसे किया, बल्कि यह बताएंगे कि धर्मरेस्पेक्टिया के राजा को विदा करने के बाद, आदरणीय बुजुर्ग ने अपने घोड़े से प्रसन्न होकर कहा, "वुकोंग, तुमने कितना उत्कृष्ट जादू किया। यह बहुत कारगर साबित हुआ।"

"बड़े भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "आपको एक ही रात में इतने सारे सिर मुंडवाने के लिए इतने सारे नाई कहाँ से मिले?"

फिर बंदर ने उन सबको बताया कि उसने अपनी चमत्कारी शक्तियों का इस्तेमाल कैसे किया था, जिसे सुनकर वे सब इतना हंसे कि उनकी हंसी रुक ही नहीं रही थी।

जब वे बेहद प्रसन्न थे, तभी अचानक एक विशाल पर्वत उनके सामने आ गया और उनका रास्ता रोक दिया। घोड़े की लगाम खींचते हुए तांग पुजारी ने कहा, "शिष्यों, देखो वह पर्वत कितना ऊँचा है। तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा।"

बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "चिंता मत करो, चिंता मत करो। मैं वादा करता हूँ कि कुछ भी गलत नहीं होगा।"

"ऐसा मत कहो," संज़ंग ने जवाब दिया। "मुझे वो उभरी हुई चोटियाँ दिखाई दे रही हैं, और दूर से भी वो काफी डरावनी लग रही हैं। उनसे तूफ़ानी बादल निकल रहे हैं, और मुझे डर लगने लगा है। मेरा पूरा शरीर सुन्न हो रहा है और मेरा मन विचलित है।"

"तुम तो पहले ही हृदय सूत्र भूल चुके हो जो तुम्हें कौवे के घोंसले के साधु ने सिखाया था," भाई बंदर ने कहा।

"मुझे वह बात अभी भी याद है," संजांग ने कहा।

"भले ही तुम्हें वह अभी भी याद हो," बंदर ने कहा, "एक चौपाई ऐसी है जिसे तुम भूल गए हो।"

"कौन सी चौपाई?" संजांग ने पूछा, जिस पर बंदर ने उत्तर दिया, अध्याय 85

गिद्ध शिखर पर बुद्ध की खोज में दूर मत जाओ;
वल्चर पीक आपके दिल में बसा है।
हर किसी के पास वल्चर पीक स्तूप है
जिसके तहत आचरण विकसित किया जा सके।"
"बेशक मैं जानता हूँ, शिष्य," संज़ंग ने कहा। "उस चौपाई के अनुसार, हज़ारों शास्त्रों का सार हृदय को संवारने में निहित है।"
"यह तो स्पष्ट है," बंदर ने जवाब दिया।
"जब हृदय शुद्ध हो जाता है तो वह अकेले ही प्रकाशमान हो सकता है।"
जब हृदय शुद्ध रहता है तो सभी अनुभूतियाँ शुद्ध होती हैं।
यदि कोई गलती हो जाए तो आलस्य हावी हो जाता है।
और सफलता मिलने में कई साल नहीं लगेंगे।
जब तक आपकी इच्छा सच्ची है, थंडर पीक आपकी आंखों के सामने है।
लेकिन अगर तुम इतने डरे हुए, सहमे हुए और परेशान हो, तो महान मार्ग बहुत दूर है, और थंडर पीक तो बहुत ही दूर है। अपने उन भयानक डरों को भूल जाओ और मेरे साथ आओ।" यह सुनकर आदरणीय बुजुर्ग का मनोबल बढ़ा और उनकी सारी चिंताएँ दूर हो गईं।
वे चारों कुछ ही कदम आगे बढ़े थे कि वे पहाड़ पर पहुँच गए। जब उन्होंने ऊपर देखा तो उन्हें यह दृश्य दिखाई दिया:
एक सुंदर पर्वत,
अनेक रंगों से सना हुआ।
सफेद बादल शिखर के चारों ओर मंडरा रहे थे।
और चट्टान के सामने पेड़ों की छायाएँ ठंडी थीं।
पक्षी पत्तों में सरसराहट कर रहे थे।
वे जानवर बेहद खूंखार थे।
अध्याय 85
1187
पश्चिम की यात्रा
जंगलों के बीचोंबीच हजारों चीड़ के पेड़ थे।
पहाड़ी की चोटी पर कुछ बांस के पेड़ थे।

भूरे भेड़ियों के अपने शिकार को पकड़ने पर जोर-जोर से चिल्लाने की आवाजें सुनाई दीं।
और भोजन के लिए लड़ रहे भूखे बाघों की दहाड़ें।
जंगली बंदर फल की तलाश में जोर-जोर से चिल्ला रहे थे;
डेविड का हिरण फूलों के बीच से होते हुए हरे-भरे कोहरे में चढ़ गया।
हवा चल रही थी।
पानी कलकल कर रहा था।
और सुनसान दर्रे में छिपे पक्षी गीत गा रहे थे।
जगह-जगह विस्टेरिया की लताएं चढ़ रही थीं
नदी किनारे ऑर्किड के बीच दुर्लभ फूल खिल रहे थे।
वे चट्टानें जटिल आकृतियों वाली और विचित्र थीं।
और चट्टानें एकदम सीधी खड़ी हो गईं।
लोमड़ियाँ और रैकून-कुत्ते झुंड में दौड़ते थे;
बिज्जू और बंदर समूहों में खेल रहे थे।
यात्री इतने ऊंचे और खड़ी ढलान वाले पहाड़ को देखकर चिंतित थे:
प्राचीन मार्ग इतना टेढ़ा-मेढ़ा क्यों था?
गुरु और शिष्य डरते-डरते आगे बढ़ रहे थे कि उन्हें हवा के चलने की आवाज़ सुनाई दी। "हवा चल रही है,"
संजांग ने डरते हुए कहा।
"वसंत ऋतु में हल्की हवाएँ चलती हैं," बंदर ने उत्तर दिया, "गर्मी में गर्म हवाएँ, शरद ऋतु में सुनहरी हवाएँ और शीत ऋतु में उत्तर दिशा से हवाएँ चलती हैं। चारों ऋतुओं में हवाएँ चलती हैं। हवा से इतना डरने की क्या बात है?"
"यह हवा बहुत तेज़ चल रही है," संज़ंग ने उत्तर दिया। "यह निश्चित रूप से स्वर्ग से आने वाली हवा नहीं है।"
“लेकिन हवाएँ तो हमेशा धरती से आती हैं और बादल पहाड़ों से,” बंदर ने उत्तर दिया, “तो फिर आकाश से हवा कैसे आ सकती है?” उसके बोलने से पहले ही एक धुंध छा गई। वह धुंध वास्तव में अंधकार का आकाश से मिलन थी।

पश्चिम की यात्रा
अंधकार ने पूरी पृथ्वी को अंधकारमय कर दिया है।
सूर्य पूरी तरह से दृष्टि से ओझल हो चुका था।
और किसी पक्षी ने गीत नहीं गाया।
सब कुछ आदिम अराजकता की तरह अस्पष्ट था।
और ऐसा लग रहा था मानो हवा उड़ती हुई धूल से भरी हो।
पहाड़ पर मौजूद पेड़ दिखाई नहीं दे रहे थे।
जड़ी-बूटी इकट्ठा करने वाले कहाँ चले गए थे?
"वुकोंग," संजांग ने डरते हुए कहा, "जब हवा अभी भी चल रही है तो यह कोहरा क्यों है?"
"परेशान मत होइए," बंदर ने जवाब दिया। "मालिक, अपने घोड़े से उतर जाइए। मैं जाकर देखता हूँ कि कहीं कुछ खतरनाक तो नहीं है, आप दोनों भाई पहरा देते रहिए।"
महान संत को हवा में उड़ने के लिए केवल प्रणाम करने की आवश्यकता थी। माथे पर छाया के लिए हाथ रखकर, उन्होंने अपनी प्रचंड आँखें चौड़ी करके नीचे देखा तो उन्हें एक भयानक घाव के चरणों में एक दुष्ट आत्मा बैठी हुई दिखाई दी।
बस देख लो कि वह कैसा था:
एक शक्तिशाली, आकर्षक शरीर
अत्यंत जोशपूर्ण और वीर भाव से भरपूर।
उसके मुंह से निकले हुए नुकीले दांत स्टील की ड्रिल की तरह थे;
उसकी नाक बीच में जेड के हुक की तरह लटकी हुई थी।
उसकी सुनहरी आंखों की गोल पुतलियां देखकर जानवर भी डर जाते थे;
उसके घने चांदी जैसे बालों से राक्षस और देवता दोनों ही भयभीत थे।
वह भयानक शक्ति के साथ चट्टान के किनारे सीधा बैठा था।
अपनी योजना बनाते समय वह कोहरा और हवा उत्पन्न कर रहा था।
उसके दोनों ओर लगभग तीस-चालीस छोटे राक्षस दिखाई दे रहे थे, सभी एक कतार में खड़े होकर पूरी ताकत से कोहरा और हवा उड़ा रहे थे। बंदर यह देखकर मुस्कुराया और सोचने लगा, "तो मेरा स्वामी भविष्य देख सकता है। उसने कहा था कि यह कोई दिव्य हवा नहीं है, बल्कि यह एक दुष्ट आत्मा की चाल है जो हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रही है। अब अगर मैं सीधे नीचे जाकर उसे 'लहसुन तोड़ने वाले यंत्र' से

मारूँ, तो वह निश्चित रूप से मर जाएगा, लेकिन इससे मेरी प्रतिष्ठा धूमिल हो जाएगी।" बंदर जीवन भर एक सच्चा नायक रहा था और ऐसी गंदी चाल चलने में वह बिल्कुल असमर्थ था।

अध्याय 85

1189

पश्चिम की यात्रा

"मुझे वापस जाकर पिग पर थोड़ा ध्यान देना चाहिए। मैं उससे कहूंगा कि वह पहले दुष्ट आत्मा पर प्रहार करे। अगर पिग दुष्ट आत्मा को मारने में सक्षम रहा तो हमारी किस्मत अच्छी होगी। अगर वह ऐसा नहीं कर पाया और दुष्ट आत्मा उसे पकड़ ले तो मैं वापस आकर उसे बचा लूंगा और थोड़ी प्रसिद्धि हासिल कर लूंगा। वह हमेशा ऐसा नाटक करता है और इतना आलसी है कि कोई मेहनत नहीं करता।"

फिर भी, वह बहुत लालची है और अच्छे भोजन का शौकीन है। मुझे लगता है कि मैं उस पर एक तरकीब आजमाऊंगा और देखूंगा कि वह काम करती है या नहीं।

तुरंत ही उसने अपने बादल को संजांग के सामने उतारा, जिसने पूछा, "क्या हवा और कोहरा अशुभ हैं या नहीं?"

"अब सब स्पष्ट हो गया है," बंदर ने उत्तर दिया। "वे चले गए हैं।"

"हां," संजांग ने कहा, "उन्होंने थोड़ी नरमी बरती है।"

"गुरुजी," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "मेरी दृष्टि आमतौर पर बहुत अच्छी होती है, लेकिन इस बार मैं गलत था। मुझे लगा था कि उस हवा और धुंध के पीछे शायद कोई राक्षस होगा, लेकिन वहां कोई नहीं था।"

"तो फिर उनका कारण क्या था?" संजांग ने पूछा।

“आगे थोड़ी ही दूर एक गाँव है,” बंदर ने उत्तर दिया, “जहाँ के लोग इतने धर्मनिष्ठ हैं कि वे भिक्षुओं को खिलाने के लिए सफेद चावल और सफेद ब्रेड रोल पका रहे हैं। मुझे लगता है कि वह धुंध उनके स्टीमर से निकलती भाप ही होगी। यह उनकी अच्छाई का ही परिणाम था।”

जब सुअर ने यह सुना तो उसे लगा कि बंदर सच कह रहा है, इसलिए उसने उसे पकड़ लिया और फुसफुसाते हुए कहा, "क्या तुमने वापस आने से पहले उनका खाना खा लिया था?"

"बस थोड़ा सा," बंदर ने जवाब दिया। "सब्जी के व्यंजन बहुत नमकीन थे—मैं ज्यादा

खाना नहीं चाहता था।"
"छोड़ो ये सब," सुअर ने कहा। "मैं इसे जी भर के खाऊंगा, चाहे यह कितना भी नमकीन क्यों न हो। अगर इससे मुझे बहुत प्यास लगेगी तो मैं पानी पीने वापस आऊंगा।"
"क्या आप कुछ लेना चाहेंगे?" बंदर ने पूछा।
"ज़रूर," सुअर ने जवाब दिया। "मुझे भूख लगी है और अभी कुछ चाहिए। आपका क्या ख्याल है?"
“इसके बारे में ज़रा भी बात मत करो,” बंदर ने कहा। “जैसा कि प्राचीन ग्रंथ में लिखा है, ‘पिता की उपस्थिति में पुत्र को अपने आप कुछ नहीं करना चाहिए।’ हमारे स्वामी, जो तुम्हारे लिए पिता समान हैं, यहाँ मौजूद हैं, इसलिए हममें से किसी को भी आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए।”
"अगर तुम इस बारे में कुछ नहीं कहोगे, तो मैं जा रहा हूँ," सुअर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
"देखते हैं तुम कैसे करते हो," बंदर ने जवाब दिया। "मैं कुछ नहीं कहूंगा।" खाने के मामले में उस मूर्ख को कुछ न कुछ तो पता था।
वह अपने गुरु के पास गया, आदरपूर्वक ज़ोर से "ना-आ-आ" की आवाज़ निकाली और बोला, "गुरुजी, बड़े भाई ने अभी मुझे बताया है कि हमारे आगे एक गाँव में कुछ लोग हैं जो भिक्षुओं को भोजन कराते हैं। ज़रा उस घोड़े को देखिए। ऐसा लग रहा है जैसे वह उछल-कूद करने लगेगा। अगर हमें उसके लिए घास और चारा माँगना पड़ा तो हमें बहुत परेशानी होगी।"
सौभाग्यवश अब हवा और बादल थम गए हैं, तो क्यों न आप सब थोड़ी देर यहीं बैठ जाएं, मैं कुछ नरम घास ले आता हूँ? घोड़े को खाना खिला देने के बाद हम उस घर से खाना माँगने जा सकते हैं।
तांग पुजारी ने प्रसन्नता से कहा, "बहुत बढ़िया! मुझे आश्चर्य हो रहा था कि आज तुम इतने मेहनती क्यों हो गए हो। जितनी जल्दी हो सके, काम पूरा करो।"
अध्याय 85
1190
पश्चिम की यात्रा
मन ही मन मुस्कुराते हुए वह मूर्ख चल पड़ा। "भाई," बंदर ने उसका पीछा करते हुए

और उसे पकड़ते हुए कहा, "भिक्षुओं को खाना तो मिलता है, लेकिन सिर्फ सुंदर दिखने वाले भिक्षुओं को।"
"तो फिर मुझे दोबारा बदलना पड़ेगा," पिग ने कहा।
"हां," बंदर भाई ने कहा, "तुम बदलते हो।"
वह विलक्षण मूर्ख, जो छत्तीस रूपान्तरण कर सकता था, पर्वत की ढलान पर एक खोखले स्थान में गया, अपने हाथों से एक मंत्र पढ़ा, जादुई शब्द बोले, खुद को झटका दिया और खुद को एक छोटे, दुबले-पतले भिक्षु में बदल लिया, जो अपने हाथ से लकड़ी के मछली के आकार के ड्रम को पीट रहा था और बुदबुदा रहा था, "हे महान, हे महान।"
क्योंकि उसे पाठ करने के लिए कोई धर्मग्रंथ ज्ञात नहीं थे।
हवा और कोहरे को हटाने के बाद, दुष्ट आत्मा ने अपने सभी शैतानों को मुख्य सड़क के चारों ओर घेरा बनाने का आदेश दिया, ताकि वे किसी भी यात्री के लिए तैयार रहें। मूर्ख का भाग्य साथ नहीं दे रहा था, और वह जल्द ही जाल में फंस गया और शैतानों से घिर गया, जिन्होंने उसके कपड़े और रेशमी कमरबंद को पकड़ लिया क्योंकि वे सभी उस पर टूट पड़े थे।
"खींचो मत," सुअर ने कहा। "तुम मुझे बारी-बारी से अपने-अपने घरों में खाने दे सकते हो।"
"तुम क्या खाना चाहते हो, भिक्षु?" शैतानों ने पूछा। "यहाँ भिक्षुओं को भोजन कराया जाता है," सुअर ने उत्तर दिया, "और मैं भोजन पाने आया हूँ।"
“तो, भिक्षु, तुम भोजन की उम्मीद कर रहे हो?” राक्षसों ने कहा। “तुम्हें शायद यह एहसास नहीं है कि यहाँ हमें सबसे ज़्यादा भिक्षुओं को खाना पसंद है। हम सब दुष्ट अमर प्राणी हैं जिन्होंने पहाड़ों में मार्ग पा लिया है, और हम बस यही चाहते हैं कि हम तुम्हें पकड़ें, अपने साथ घर ले जाएँ, भाप में तब तक पकाएँ जब तक तुम नरम न हो जाओ और फिर तुम्हें खा जाएँ। और तुम अब भी शाकाहारी भोजन की उम्मीद कर रहे हो!”
यह सुनकर सूअर का दिल दहशत से भर गया और वह बंदर की शिकायत करने लगा। "घोड़ों का वह रक्षक तो बदमाश है। उसने मुझसे झूठ बोला कि वे इस गाँव में भिक्षुओं को भोजन कराते हैं। यहाँ कोई ग्रामीण नहीं है और न ही कोई भिक्षुओं को भोजन कराता है। ये सब दुष्ट आत्माएँ हैं।" उस मूर्ख को इतनी ज़ोर से खींचा जा रहा था कि

वह वापस अपने असली रूप में आ गया, अपनी कमर से रेक निकाला और बेतहाशा वार करते हुए सभी छोटे शैतानों को पीछे धकेल दिया।
वे वरिष्ठ दानव को सूचना देने के लिए वापस दौड़े और बोले, "महाराज, विपत्ति आ गई।"
"कौन सी आपदा?" वरिष्ठ राक्षस ने पूछा।
उन्होंने उत्तर दिया, "पहाड़ के सामने एक सुसजग दिखने वाला भिक्षु आया, इसलिए हमने उसे पकड़कर भाप में पकाने का फैसला किया। हम जो अभी नहीं खा सकते थे उसे किसी बुरे दिन के लिए बचाकर रखने वाले थे। फिर हमें आश्चर्य हुआ कि उसने अपना रूप बदल लिया।"
"उसने खुद को किस रूप में बदल लिया?" वरिष्ठ दानव ने पूछा।
“इंसानों में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी,” उन्होंने जवाब दिया। “उसकी थूथन लंबी थी, कान बड़े थे और पीठ पर घने बाल थे। उसने दो हाथों से रेक चलाकर हम पर भयंकर हमला किया। उसने हमें इतना डरा दिया कि हम सीधे महाराज को सूचना देने वापस भाग आए हैं।”
“डरो मत,” वरिष्ठ दानव ने कहा। “मुझे जाकर देखने दो।” लोहे की गदा घुमाते हुए वह करीब से देखने गया और पाया कि वह मूर्ख सचमुच बदसूरत था। उसका चेहरा कुछ ऐसा था: अध्याय 85
1191
पश्चिम की यात्रा
एक थूथन जो तीन फीट से अधिक लंबी, छिलके उतारने वाले हथौड़े जैसी थी;
उसके मुंह से चांदी के नाखूनों जैसे नुकीले दांत निकले हुए थे।
दो गोल आंखें जो बिजली की तरह चमकती थीं;
कानों की एक जोड़ी जो फड़फड़ाने पर तेज हवा की आवाज पैदा करती थी।
उसके सिर के पीछे के बाल लोहे के तीरों की पंक्तियों जैसे थे;
उसकी पूरी खाल खुरदरी, हरी और पपड़ीदार थी।
उसके हाथों में एक अद्भुत वस्तु थी:
एक नौ दांतों वाला रेक जिससे हर कोई डरता था।
हिम्मत जुटाकर उस दुष्ट आत्मा ने चिल्लाकर कहा, "तुम कहाँ से आए हो? तुम्हारा नाम क्या है? मुझे तुरंत बताओ, मैं तुम्हारी जान बख्श दूंगा।"

इस पर सुअर ने हंसते हुए जवाब दिया, "तो तुम अपने पूर्वज सुअर को भी नहीं पहचान सकते, मेरे बच्चे। पास आओ, मैं तुम्हें बताता हूँ:
मेरे विशाल मुख, दांतों और शक्तिशाली शक्तियों के लिए
मुझे जेड सम्राट द्वारा मार्शल तियान पेंग बनाया गया था।
स्वर्ग की नदी पर अस्सी हजार नौसैनिकों की कमान संभालते हुए,
और स्वर्ग के महल के सभी सुखों के बीच प्रसन्न।
क्योंकि नशे में मैंने एक महल की महिला के साथ बांसुरी बजाई थी।
मैंने कुछ समय के लिए हीरो बनने का फैसला किया।
मेरी थूथन से निकले एक ही वार ने डिपर और बुल पैलेस को नष्ट कर दिया;
मैंने पश्चिम की महारानी माँ के जादुई मशरूम खाए।
स्वयं जेड सम्राट ने मुझे दो हजार हथौड़ों से प्रहार किए।
मुझे स्वर्ग लोक से निर्वासित कर दिया गया।
इससे मुझे अपनी आत्मा को पोषित करने का दृढ़ संकल्प मिला।
और वह निम्न लोक में एक दुष्ट राक्षस बन जाता है।
ठीक उसी समय जब मैंने गाओ गांव में एक अच्छी शादी कर ली थी

भाग्य ने मुझे मेरे भाई मंकी के सामने ला खड़ा किया।
उसने मुझे अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी से वश में कर लिया;
मुझे सिर झुकाकर बौद्ध धर्म में प्रवेश करने के लिए विवश किया गया था।
मैं भारी काम करता हूँ, घोड़े पर काठी कसता हूँ और सामान ढोता हूँ:
मुझे लगता है कि पिछले जन्म में मैं तांग पुजारी का ऋणी रहा हूँगा।
कठोर इरादों वाले मार्शल तियान पेंग के रूप में मेरा उपनाम झू था;
बौद्ध धर्म में मेरा नाम झू बाजी है।
जब उस दुष्ट आत्मा ने यह सुना तो वह चिल्लाया, "तो तुम तांग पुजारी के शिष्य हो। मैंने बहुत पहले सुना था कि उसका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है। तुम उन लोगों में से एक हो जिन्हें मैं सबसे पहले पकड़ना चाहता हूँ। अब जब तुम मेरे चंगुल में आ गए हो, तो मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। यहीं रहो, और मेरी गदा से यह लो।"

"दुष्ट जानवर," सुअर ने जवाब दिया। "तुम पहले रंगसाज़ रहे होगे।"
"तुम्हारा क्या मतलब है, मैं जरूर एक रंगसाज़ रहा होऊंगा?" दुष्ट आत्मा ने पूछा।
"अगर तुम रंगसाज़ नहीं थे, तो तुम्हें मूसल चलाना कैसे आता है?" सुअर ने पलटवार किया, और बिना किसी और बहस के राक्षस उस पर टूट पड़ा और बेरहमी से वार करने लगा। उन्होंने पहाड़ की घाटी में एक ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी: एक नौ दाँतों वाला रेक,
लोहे का गदा।
जैसे ही रेक ने अपनी हरकतें कीं, वे एक गरजते हुए तूफान की तरह थीं; गदा के कुशल प्रहार बारिश की तरह तेज और घने थे।
उनमें से एक अज्ञात राक्षस था जिसने पहाड़ी रास्ते को अवरुद्ध कर रखा था;
दूसरा व्यक्ति वह अपराधी तियान पेंग था जो अब अपने वास्तविक स्वरूप के स्वामी की रक्षा कर रहा था।
जब किसी व्यक्ति का स्वभाव सही होता है तो राक्षस भय उत्पन्न नहीं करते;
जब पहाड़ ऊँचा होता है तो धातु से पृथ्वी नहीं बन सकती।
एक व्यक्ति तालाब से अजगर की तरह अपने गदा से लड़ रहा था;
दूसरे का रेक पानी से निकले हुए अजगर जैसा था।
उनकी क्रोधित चीखों से पहाड़ और नदियाँ कांप उठीं;

उनकी भीषण गर्जना ने नरक में दहशत फैला दी।
प्रत्येक नायक ने अपनी वीरता का प्रदर्शन किया।
उसने अपनी जादुई शक्तियों पर अपना जीवन दांव पर लगा दिया।
हम आगे यह नहीं बताएंगे कि कैसे सुअर ने दुष्ट आत्मा से लड़ते हुए एक तेज हवा चलाई, जिसने अपने साथी शैतानों को सुअर को चारों ओर से घेरने का आदेश दिया था। इसके बजाय, कहानी बताती है कि कैसे बंदर भाई ने अचानक तांग पुजारी की पीठ पीछे कड़वी हंसी हंसी।
"बड़े भाई, आप इस तरह क्यों हंस रहे हैं?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"सूअर सचमुच बेवकूफ है," बंदर ने जवाब दिया। "जैसे ही उसने सुना कि वहाँ भिक्षुओं

को खाना खिलाया जाता है, वह मेरी चाल में फंस गया।"
वह बहुत दिनों से दूर है। अगर उसने एक ही वार में दुष्ट आत्मा को हरा दिया होता, तो अब तक वह विजयी होकर लौट आया होता और अपनी बड़ी जीत का बखान कर रहा होता। लेकिन अगर राक्षस उस पर भारी पड़ा और उसे पकड़ लिया, तो मेरी किस्मत खराब है। भगवान ही जाने उसने मेरे पीठ पीछे घोड़ों के रक्षक को कितनी बार कोसा होगा। जब तक मैं आस-पास देख लेता हूँ, तब तक कुछ मत कहना, वूजिंग।
इसके साथ ही, महान संत, जो आदरणीय बुज़ुर्ग को यह सब पता नहीं चलने देना चाहते थे, चुपचाप अपने सिर के पीछे से एक बाल खींचे, उस पर जादुई साँस फूँकी, "बदलो!" कहा और उसे अपने ही प्रतिरूप में बदल दिया ताकि वह साधु सैंड के साथ गुरु के पास रहे। फिर उनका असली रूप गायब हो गया और वे चारों ओर देखने के लिए हवा में उछल पड़े। उन्होंने देखा कि वह मूर्ख अपने रेक से उन शैतानों पर बेतहाशा वार कर रहा था जो उसे घेरे हुए थे और धीरे-धीरे उस पर हावी हो रहे थे।
यह मंकी के असहनीय था। उसने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया,
"शांत रहो, सुअर। बंदर यहाँ है।" बंदर की आवाज़ पहचानते ही उस मूर्ख को पहले से कहीं ज़्यादा आक्रामक होने का मौका मिल गया और उसने बेंत से बेतहाशा आगे वार किया। वह दुष्ट आत्मा उसका मुकाबला नहीं कर पाई।
"पहले तो तुम कुछ खास नहीं थे, भिक्षु," उसने कहा, "तो अब तुम इतने उग्र कैसे हो गए?"
“अब मुझे तंग करना बंद करो, मेरे लड़के,” सुअर ने जवाब दिया। “मेरा एक आदमी यहाँ है।” एक पल बाद ही वह फिर से बेंत से वार करने लगा। दुष्ट आत्मा वारों को रोक नहीं पाई और हार मानकर अपने शैतानों को लेकर चली गई। जैसे ही बंदर ने देखा कि शैतान हार गए हैं, वह पास नहीं आया, बल्कि सीधे अपने बादल पर वापस चला गया, बाल झटककर उन्हें अपने शरीर पर फिर से लगा लिया। अपनी नश्वर, सांसारिक आँखों से तांग पुजारी ने इस पर ध्यान नहीं दिया।
कुछ देर बाद एक विजयी सुअर भी लौटा, इतना थका हुआ कि उसकी नाक से बलगम टपक रहा था, मुंह से झाग निकल रहा था और वह जोर-जोर से हांफ रहा था।
"मालिक!" उसने पुकारा।
जब तांग पुजारी ने उसे देखा तो आश्चर्य से बोला, "सूअर, तुम घोड़े के लिए घास लाने

गए थे। इतनी बुरी हालत में वापस क्यों आए? क्या पहाड़ पर पहरेदार थे जिन्होंने तुम्हें घास काटने नहीं दी?"
उस मूर्ख ने अपना फावड़ा नीचे फेंक दिया, अपनी छाती पीटी और पैर पटकते हुए जवाब दिया, "इस बारे में मुझसे मत पूछो, मालिक। अगर मुझे आपको बताना पड़ा तो मैं शर्म से मर जाऊंगा।"
"तुम्हें किस बात पर इतनी शर्म आएगी?" संजांग ने पूछा।
अध्याय 85
1194
पश्चिम की यात्रा
"बड़े भाई ने मुझे धोखा दिया," सुअर ने जवाब दिया। "उसने मुझसे कहा कि उस हवा और धुंध के पीछे कोई बुरी आत्मा नहीं है। उसने कहा कि इसमें कुछ भी बुरा नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे गाँव से है जहाँ के लोग इतने धार्मिक हैं कि वे भिक्षुओं को खिलाने के लिए सफेद चावल और सफेद आटे से बनी रोटियाँ पका रहे हैं। मैंने उसकी बात मान ली। क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी थी, मैंने सोचा कि मैं भीख मांगने चला जाऊँ। घोड़े के लिए घास लाना तो बस एक बहाना था। मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि मैं बुरी आत्माओं के झुंड से घिर जाऊँगा। उन्होंने मुझसे कड़ी टक्कर ली, और अगर बंदर ने अपनी शोक छड़ी से मेरी मदद न की होती तो मेरे बचने और यहाँ वापस आने की कोई उम्मीद नहीं होती।"
उनके बगल में खड़ा बंदर मुस्कुराते हुए बोला, "यह बेवकूफ बकवास कर रहा है। अगर तुमने चोरी का रास्ता चुना है तो तुम जेल के सारे लोगों को मुसीबत में डाल रहे हो। मैं यहाँ मालिक की देखभाल कर रहा हूँ। मैंने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा।"
"यह सच है," संजांग ने कहा, "वुकोंग ने कभी मेरा साथ नहीं छोड़ा।"
फिर वह मूर्ख चिल्लाते हुए खड़ा हो गया, "आप समझते नहीं हैं, मालिक। उसका एक हमशक्ल है।"
"क्या सचमुच वहाँ कोई राक्षस है, वुकॉन्ग?" संज़ांग ने पूछा। बंदर अब और धोखा नहीं दे सकता था।
“कुछ शरारती बच्चे हैं,” बंदर ने झुककर मुस्कुराते हुए जवाब दिया, “पर वे हमें परेशान करने की हिम्मत नहीं करेंगे। इधर आओ, सुअर। मैं तुम्हारा ख्याल रखूंगा। हम इस ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्ते पर मालिक को ऐसे ले जाएंगे जैसे कोई सेना मार्च कर

रही हो।”
"कैसे?" सुअर ने पूछा।
"तुम अग्रिम पंक्ति के सेनापति बनोगे, आगे जाकर रास्ता साफ़ करोगे। अगर दुष्ट आत्मा दोबारा प्रकट नहीं होती है तो बात खत्म; लेकिन अगर वह प्रकट होती है, तो तुम उससे लड़ोगे। जब तुम दुष्ट आत्मा को हरा दोगे, तो यह तुम्हारे लिए गर्व की बात होगी।"
यह मानते हुए कि दुष्ट आत्मा की शक्तियाँ लगभग उसकी अपनी शक्तियों के समान थीं, सुअर ने कहा, "ठीक है। मैं उसके हाथों मरने के लिए तैयार हूँ। मैं नेतृत्व करूँगा।"
बंदर ने कहा, "बेवकूफ, अगर तुम ऐसी अशुभ बातें कहकर शुरुआत करोगे तो कभी कुछ हासिल नहीं कर पाओगे।"
"जैसा कि आप जानते हैं, भाई," पिग ने जवाब दिया।
जब कोई सज्जन भोज में जाता है
वह या तो नशे में धुत हो जाता है या फिर उसका पेट पूरी तरह भर जाता है;
जब कोई नायक युद्ध में जाता है
या तो वह घायल हो जाता है या मारा जाता है।
"पहले कुछ अशुभ कहकर मैं बाद में खुद को मजबूत बना लूंगा।" यह सुनकर बंदर प्रसन्न हुआ और उसने घोड़े पर काठी कसी और मालिक को सवारी के लिए आमंत्रित किया, जबकि साधु सैंड ने सामान उठाया और वे सभी सुअर के पीछे पहाड़ों में चले गए।
अध्याय 85
1195
पश्चिम की यात्रा
इस बीच, दुष्ट आत्मा अपने कुछ साथियों को, जो हार से बच गए थे, सीधे अपनी गुफा में ले गया, जहाँ वह एक चट्टानी कगार के ऊपर चुपचाप बैठकर सोच-विचार कर रहा था। उसके घर के काम-काज संभालने वाले कई छोटे शैतान उसके पास आए और पूछा, "महाराज, आज आप इतने दुखी क्यों हैं? आप आमतौर पर लौटते समय बहुत खुशमिजाज होते हैं।"
“बच्चों,” राक्षस राजा ने कहा, “आम तौर पर जब मैं पहाड़ों पर गश्त के लिए निकलता हूँ, तो मैं तुम्हारे लिए कुछ लोगों या जानवरों को पकड़कर घर ला सकता हूँ।

आज मेरी किस्मत खराब थी: मुझे अपने जैसा ही एक प्रतिद्वंद्वी मिल गया है।”
"कौन?" छोटे शैतानों ने पूछा।
“एक भिक्षु,” राक्षस राजा ने उत्तर दिया, “पूर्व से आए तांग पुजारी का शिष्य, जो शास्त्र लाने जा रहा है। उसका नाम झू बाजी है। उसने अपने कुदाल से मुझ पर इतनी ज़ोर से हमला किया कि मेरी पिटाई हो गई। मुझे भागना पड़ा। मैं पूरी तरह से तंग आ चुका हूँ। सदियों से मैंने सुना है कि तांग पुजारी एक अर्हत हैं जिन्होंने दस जन्मों तक अपने आचरण का अभ्यास किया है। जो कोई भी उनके मांस का एक टुकड़ा खाएगा, वह अमर हो जाएगा। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह आज मेरे पर्वत पर आया है, और उसे पकड़ने, पकाकर खाने का यह बिल्कुल सही समय होता। मुझे कभी पता नहीं था कि उसका ऐसा शिष्य भी होगा।”
उसके ऐसा कहने से पहले ही एक छोटा शैतान अपने साथियों में से आगे आ गया। पहले उसने दानव राजा के सामने तीन बार सिसकी ली, फिर तीन बार हँसा।
"तो फिर रोने के बाद हंसने की क्या जरूरत है?" राक्षस राजा चिल्लाया।
छोटा शैतान घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "क्योंकि महाराज ने अभी कहा कि आप तांग पुजारी को खाना चाहते हैं। उसका मांस खाने लायक नहीं है।"
"लेकिन सब कहते हैं कि उसके मांस का एक टुकड़ा खाने से तुम्हारी उम्र आकाश के बराबर हो जाएगी," दानव राजा ने कहा।
"आप यह कैसे कह सकते हैं कि यह खाने लायक नहीं है?"
"अगर वह खाने में इतना अच्छा होता," छोटे शैतान ने जवाब दिया, "तो वह इतनी दूर तक कभी नहीं पहुँच पाता। दूसरे राक्षस उसे खा जाते। और उसके साथ तीन शिष्य भी हैं।"
"क्या तुम जानते हो कौन?" राक्षस राजा ने पूछा।
"वरिष्ठ शिष्य सन द नोविस हैं," कनिष्ठ शैतान ने कहा, "और तीसरा शिष्य फ्रायर सैंड है। जिससे तुम मिले थे, वह उनका दूसरा शिष्य झू बाजी रहा होगा।"
"फ्रायर सैंड की तुलना झू बाजी से कैसे की जा सकती है?" राक्षस राजा ने पूछा।
"वह काफी हद तक पहले जैसा ही है," छोटे शैतान ने कहा।
“नौसिखिए सूर्य के बारे में क्या?” दानव राजा ने पूछा, जिस पर उस छोटे दानव ने भयभीत होकर अपनी जीभ बाहर निकाल दी और उत्तर दिया, “मैं तुम्हें बताने की हिम्मत नहीं करता। उस बंदर के पास अपार जादुई शक्तियाँ हैं और वह हर तरह का

रूप बदल सकता है। पाँच सौ वर्ष पहले उसने स्वर्ग में भयंकर उत्पात मचाया था। अट्ठाईस नक्षत्रों, नौ तेजस्वी नक्षत्रों के स्वामियों, बारह शाखाओं के देवताओं, पाँच अधिकारियों और चार मंत्रियों, पूर्व और पश्चिम के सूर्यों, उत्तर और दक्षिण के देवताओं से लेकर पाँच चोटियों और चार नदियों तक, स्वर्ग के किसी भी योद्धा ने उसे चुनौती देने की हिम्मत नहीं की। तुममें तांग पुजारी को खाने की इच्छा रखने की हिम्मत कैसे हुई?"

"तुम्हें उसके बारे में इतनी जानकारी कैसे है?" राक्षस राजा ने पूछा।

अध्याय 85

1196

पश्चिम की यात्रा

"मैं लायन रिज पर स्थित दानव राजा की लायन गुफा में रहता था," उस छोटे दानव ने उत्तर दिया। "वह इतना निर्दयी था कि तांग पुजारी को खाना चाहता था, और तभी नौसिखिए सन ने अपने सोने की पट्टी वाले डंडे से द्वार तोड़कर अंदर प्रवेश किया। यह भयानक था। वे सब मारे गए। सौभाग्य से, मुझे समझदारी थी और मैं पिछले दरवाजे से भाग निकला और यहाँ आ गया, जहाँ महाराज ने मुझे रहने की अनुमति दी। इसी से मुझे उसकी शक्तियों के बारे में पता चला।"

यह सुनकर वरिष्ठ दानव सदमे से पीला पड़ गया: यह तो वही मामला था जब सेनापति भविष्यवक्ता की बातों से डर गया था। भला वह अपने ही किसी व्यक्ति से यह सब सुनकर चिंतित हुए बिना कैसे रह सकता था? जब वे सब भयभीत हो रहे थे, तभी एक कनिष्ठ दानव आगे आया और बोला, "महाराज, इतना परेशान और भयभीत न हों। जैसा कि कहावत है, शांत रहना ही सबसे अच्छा है। यदि आप तांग पुजारी को पकड़ना चाहते हैं, तो मैं आपको उसे पकड़ने की योजना बनाकर देता हूँ।"

"क्या योजना है?" वरिष्ठ दानव ने पूछा।

"मेरे पास बेर के फूल की पंखुड़ियों को विभाजित करने की योजना है।"

"तुम्हारा मतलब 'बेर के फूल की पंखुड़ियों को अलग करने' से क्या है?" राक्षस राजा ने पूछा।

"गुफा में मौजूद सभी शैतानों के नाम पुकारो," छोटे शैतान ने जवाब दिया। "उनमें से सबसे अच्छे सौ चुनो, फिर उन सौ में से सबसे अच्छे दस, और अंत में उन दस में से सबसे अच्छे तीन। वे रूप बदलने में सक्षम और कुशल होने चाहिए। उन सभी को

महाराज के हमशक्ल बनने को कहो, महाराज का हेलमेट और कवच पहनाओ, महाराज का गदा उठाओ, और तीन अलग-अलग जगहों पर घात लगाकर बैठो। पहले एक को झू बाजी से लड़ने के लिए भेजो, फिर एक को नौसिखिए सन से लड़ने के लिए और अंत में एक को साधु सैंड से लड़ने के लिए। इस तरह आपको तीन शिष्यों को दूर ले जाने के लिए केवल तीन छोटे शैतानों की आवश्यकता होगी। फिर महाराज अपने बादल पकड़ने वाले हाथ से हवा में से नीचे आकर तांग पुजारी को पकड़ लेंगे। वह आसानी से पकड़ा जाएगा। यह मछली के रस से भरी थाली में मक्खियाँ पकड़ने जितना आसान होगा। इसमें कुछ भी मुश्किल नहीं है।"

इस सुझाव से दानव राजा प्रसन्न हुआ और बोला, "वाह, क्या शानदार योजना है! अगर इस तरह से तांग पुजारी नहीं मिला तो बात खत्म। लेकिन अगर मिला तो मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि तुम्हें भरपूर इनाम मिलेगा। मैं तुम्हें अग्रिम पंक्ति का सेनापति बना दूँगा।" कनिष्ठ दानव ने उनकी कृपा के लिए प्रणाम किया और दानवों की उपस्थिति दर्ज करने चला गया। गुफा में मौजूद सभी राक्षसों की सावधानीपूर्वक जाँच के बाद, तीन योग्य कनिष्ठ दानवों को चुना गया। वे वरिष्ठ दानव के हमशक्ल बन गए और लोहे के गदाओं के साथ तांग पुजारी की प्रतीक्षा में घात लगाकर बैठ गए।

इस बीच, आदरणीय तांग बुजुर्ग बेफिक्र होकर पिग के पीछे-पीछे चल रहे थे। कुछ देर चलने के बाद, रास्ते के किनारे से एक ज़ोरदार आवाज़ आई और एक छोटा शैतान उछलकर बाहर आया और सीधे उनकी ओर दौड़ा, ज़ाहिर तौर पर संज़ांग को पकड़ने के लिए। "बुरी आत्मा यहाँ है, पिग! उसे पकड़ो!" बंदर चिल्लाया।

धोखे में आ चुके उस मूर्ख ने अपने रेक से शैतान पर बेतहाशा वार किए। दुष्ट आत्मा ने सूअर के वारों को अपने गदा से रोकते हुए हमले का सामना किया। पहाड़ की ढलान पर उन दोनों के बीच लड़ाई चल रही थी, तभी झाड़ियों में से एक और राक्षस निकला और तांग पुजारी पर टूट पड़ा।

“यह तो बुरा हुआ, स्वामी,” बंदर ने कहा। “सूअर को ठीक से दिखाई नहीं दे रहा। उसने राक्षस को भागने दिया ताकि वह आपको पकड़ सके। मैं उससे लड़ूंगा।” पलक झपकते ही उसने अपना डंडा निकाला और राक्षस के पास जाकर चिल्लाया, “तुम कहाँ जा रहे हो? यह लो!”

बिना कुछ कहे उस दुष्ट आत्मा ने हमले का सामना करने के लिए अपना गदा उठा लिया। लेकिन जब वे दोनों एक-दूसरे पर वार करते हुए युद्ध में उलझे हुए थे, तभी

पहाड़ के दूसरी ओर से एक तेज़ हवा चली और अध्याय 85
1197
पश्चिम की यात्रा
एक तीसरा दुष्ट आत्मा प्रकट हुआ और वह भी सीधे तांग पुजारी की ओर दौड़ा। जब साधु सैंड ने उसे देखा तो वह घबराकर बोला, "गुरुजी, बड़े भाई और छोटे भाई दोनों को ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है। उन्होंने दुष्ट आत्मा को आपको पकड़ने के लिए भागने दिया है। आप घोड़े पर ही रहें, मैं उसे पकड़ लेता हूँ।"
फ्रायर सैंड भी इसमें फंस गया। अपनी लाठी लहराते हुए उसने दुष्ट आत्मा के लोहे के गदा को रोक दिया और एक भयंकर लड़ाई शुरू कर दी। यह चीख-पुकार और भयानक चिल्लाहट से भरी एक भयंकर लड़ाई थी, और वे एक-दूसरे से दूर होते चले गए। जब दानव राजा ने आकाश से देखा कि तांग पुजारी घोड़े पर अकेला है, तो उसने अपने पांच पंजों वाले लोहे के हुक से उसे पकड़ लिया। दुष्ट आत्मा उसे हवा के झोंके में उड़ा ले गई और स्वामी ने घोड़ा और रकाब दोनों खो दिए। हाय! यह एक ऐसा मामला था...
जब ध्यान-प्रकृति का सामना एक राक्षस से हुआ तो सच्ची उपलब्धि प्राप्त करना कठिन था; नदी की धारा के भिक्षु का सामना एक बार फिर विपत्ति के तारे से हुआ।
अपनी वायु शक्ति को जमीन पर लाते हुए, दानव राजा तांग पुजारी को गुफा में ले गया और पुकारा, "अग्रदूत सेनापति!"
योजना बनाने वाला छोटा शैतान आगे आया, घुटने टेककर बोला, "मैं इसके योग्य नहीं हूँ।"
“तुम ऐसा कैसे कह सकते हो?” दानव राजा ने उत्तर दिया। “सेनापति के बोल देने के बाद, सफेद काला हो जाता है। मैंने पहले कहा था कि अगर मैं तांग पुजारी को पकड़ने में असफल रहा, तो बात यहीं खत्म हो जाएगी; लेकिन अगर मैं सफल हुआ तो मैं तुम्हें अग्रिम पंक्ति का सेनापति बना दूंगा। तुम्हारी शानदार योजना आज सफल हो गई है, इसलिए तुम्हारे साथ विश्वासघात करने का कोई कारण नहीं है। तांग पुजारी को यहाँ लाओ और अपने साथियों को पानी लाने, खाना पकाने का बर्तन साफ करने, कुछ लकड़ियाँ लाने और आग जलाने का आदेश दो। जब वह भाप में पक जाएगा, तो हम दोनों उसके मांस का एक-एक टुकड़ा खाएंगे और अमर हो जाएंगे।”
अग्रिम पंक्ति के कमांडर ने उत्तर दिया, "महाराज, उसे अभी नहीं खाया जाना

चाहिए।"
"क्यों नहीं?" दानव राजा ने पूछा। "हमने उसे पकड़ लिया है।"
"महाराज, अगर आप उसे खा भी लें तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा," अग्रिम पंक्ति के सेनापति ने कहा, "झू बाजी और साधु सैंड के मामले में तो वे समझदार ही रहेंगे। लेकिन मुझे उस नौसिखिए सन की चिंता है: वह बहुत क्रूर हो जाएगा। अगर उसे पता चला कि हमने तांग पुजारी को खा लिया है तो वह हमसे सीधे लड़ने नहीं आएगा। वह बस अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी पहाड़ की ढलान में घुसा देगा और इतना बड़ा छेद कर देगा कि पूरा पहाड़ ढह जाएगा। हम बेघर हो जाएंगे।"
"अग्रणी सेनापति, आपका क्या सुझाव है?" दानव राजा ने पूछा।
सेनापति ने उत्तर दिया, "मेरी राय में, हमें तांग पुजारी को पीछे के बगीचे में भेज देना चाहिए, उसे एक पेड़ से बांध देना चाहिए और दो-तीन दिन तक भूखा रखना चाहिए। इससे उसका आंतरिक स्वास्थ्य सुधर जाएगा और हम यह सुनिश्चित कर लेंगे कि तीनों शिष्य उसे ढूंढने यहाँ न आएँ। एक बार जब हमें पता चल जाए कि वे घर चले गए हैं, तो हम तांग पुजारी को बाहर ला सकते हैं और आराम से उसके साथ मजे कर सकते हैं। यह बेहतर होगा, है ना?"
"जी हां," वरिष्ठ दानव ने हंसते हुए कहा। "आप सही कह रहे हैं, अग्रिम पंक्ति के सेनापति।"
एक आदेश जारी किया गया और तांग पुजारी को पीछे के बगीचे में ले जाकर एक पेड़ से बांध दिया गया, जबकि सभी कनिष्ठ राक्षस पहरा देने के लिए आगे चले गए। देखो, आदरणीय बुजुर्ग कैसे बंधनों में जकड़े हुए पीड़ा सह रहे हैं। अध्याय 85

उसने अपने गाल कसकर बंद कर लिए और वह अपने गालों से बहते आँसुओं को रोक नहीं पा रहा था।
“शिष्यों,” उसने पुकारा, “पहाड़ों में जाकर उन राक्षसों का पीछा करते हुए तुम कहाँ भाग गए? मुझे एक दुष्ट राक्षस ने पकड़ लिया है और मेरा बहुत बुरा हाल हो गया है। मैं तुमसे दोबारा कब मिल पाऊँगा? दर्द से मेरी जान निकल रही है।”
जब दोनों आंखों से आंसू एक धारा में मिल रहे थे, तभी उसने सामने वाले पेड़ से किसी की आवाज सुनी, "आदरणीय बुजुर्ग, आप भी यहां हैं।"

खुद पर काबू पाते हुए, तांग पुजारी ने पूछा, "तुम कौन हो?"
दूसरे ने जवाब दिया, "मैं एक लकड़हारा हूँ जो इस पहाड़ पर रहता हूँ। मुझे यहाँ तीन दिनों से बाँधकर रखा गया है। मुझे लगता है कि वे मुझे खा जाएँगे।"
तांग पुजारी ने आँखों में आँसू लिए कहा, "लकड़हारे, अगर तुम मर जाओगे तो सिर्फ तुम ही रहोगे। तुम्हें और किसी बात की चिंता नहीं करनी। लेकिन अगर मैं मर गया तो यह शांतिपूर्ण अंत नहीं होगा।"
"आपका क्या मतलब है, यह शांतिपूर्ण अंत नहीं होगा, आदरणीय बुजुर्ग?" लकड़हारा ने पूछा। "आपके माता-पिता, पत्नी या बच्चे नहीं हैं, इसलिए यदि आपकी मृत्यु हो जाती है तो बस यही अंत होगा।"
तांग पुजारी ने उत्तर दिया, "मैं पूर्व से आया हूँ और पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने जा रहा था।"
मैं तांग राजवंश के सम्राट ताइज़ोंग के आदेश पर जीवित बुद्ध की पूजा करने और सच्चे शास्त्र लाने जा रहा था। यह उन सभी अकेली आत्माओं को बचाने के लिए था जो पाताल लोक में भटकती हैं और जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। अगर आज मेरी जान चली गई तो व्यर्थ का इंतज़ार मेरे सम्राट को मार डालेगा और मैं उनके मंत्रियों को निराश करूँगा। अन्याय से मारे गए लोगों के नगर में अनगिनत पीड़ित आत्माएँ घोर निराशा का शिकार होंगी और जीवन के चक्र से कभी मुक्त नहीं हो पाएँगी। सच्ची उपलब्धि हवा में धूल में मिल जाएगी। भला इसे कैसे एक सुखद अंत माना जा सकता है?
यह सुनकर लकड़हारा की आँखों से आँसू बहने लगे और उसने कहा, "अगर तुम मर जाओ तो बस बात खत्म। लेकिन मेरी मृत्यु मेरे लिए और भी असहनीय होगी। मैंने बचपन में ही अपने पिता को खो दिया था और अब मैं अपनी माँ के साथ अकेला रहता हूँ। हमारे पास कोई संपत्ति नहीं थी इसलिए मुझे लकड़हारा बनकर ही अपना जीवन यापन करना पड़ा। मेरी बूढ़ी माँ इस साल 82 साल की हो गई हैं और मैं ही उनका सहारा हूँ। अगर मैं मर गया तो उन्हें दफनाने वाला कौन होगा? यह सहना बहुत मुश्किल है: इस दर्द से मैं मर रहा हूँ।"
जब आदरणीय बुजुर्ग ने यह सुना तो वे जोर-जोर से विलाप करने लगे, "हे भगवान, हे भगवान, पहाड़ का आदमी भी अपनी माँ के बारे में सोचता है;
मैं व्यर्थ ही सूत्रों का पाठ कर रहा हूँ।

अपने सम्राट की सेवा करना और अपने माता-पिता की सेवा करना सिद्धांत रूप में एक ही बात है। आप अपनी माँ की कृपा से प्रेरित हैं और मैं अपने प्रभु की कृपा से। यह सचमुच एक ऐसी स्थिति थी जहाँ एक रोती हुई आँख दूसरी रोती हुई आँख को देख रही थी।

अध्याय 85

1199

पश्चिम की यात्रा

एक दुखी व्यक्ति दूसरे दुखी व्यक्ति को विदा करता है।

लेकिन अब हम संज़ांग के कष्टों के बारे में और कुछ नहीं कहेंगे, क्योंकि हम बंदर की ओर लौट रहे हैं, जिसने छोटे शैतान को घास के मैदान से नीचे भगाने के बाद वापस रास्ते पर दौड़ लगाई, लेकिन पाया कि उसका गुरु गायब हो चुका था। वहाँ केवल सफेद घोड़ा और सामान ही बचे थे। घबराहट में उसने घोड़े को आगे बढ़ाया और कंधे पर डंडा रखकर गुरु की तलाश में पहाड़ की चोटी की ओर चल पड़ा। हे भगवान! सचमुच: नदी की धारा के धीरज रखने वाले भिक्षु को एक और कष्ट का सामना करना पड़ा; राक्षसों को वश में करने वाले महान ऋषि का सामना एक राक्षस से हो गया।

यदि आपको नहीं पता कि अपने स्वामी की खोज का अंत कैसे हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 86

वन की माता ने राक्षस को हराने में अपनी शक्ति का योगदान दिया।

धातु के स्वामी ने अपनी जादूई शक्ति का उपयोग करके राक्षस का सफाया कर दिया।

कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि बंदर घोड़े को आगे ले जा रहा था और सामान ढो रहा था, और वह अपने स्वामी को पुकारते हुए पूरे पहाड़ की चोटी पर घूम रहा था। अचानक सूअर हांफता हुआ उसके पास दौड़ता हुआ आया और पूछा, "भाई, तुम इस तरह क्यों चिल्ला रहे हो?"

“गुरुजी गायब हो गए हैं,” बंदर भाई ने जवाब दिया। “क्या तुमने उन्हें देखा है?”

"जब मैं तांग पुजारी के साथ एक अच्छा भिक्षु बन रहा था, तब तुमने मेरे साथ यह चाल क्यों चली?" पिग ने पूछा।

"मुझे अग्रिम पंक्ति का कमांडर बनाए जाने का क्या मतलब था? उस दुष्ट आत्मा को हराने और सही सलामत वापस आने से पहले मुझे अपनी जान की बाजी लगानी पड़ी।

आप और साधु सैंड गुरु की देखभाल कर रहे थे, तो मुझसे इसके बारे में क्यों पूछ रहे थे?"

"भाई, मैं तुम्हें दोष नहीं देता," बंदर ने कहा। "किसी न किसी तरह तुम्हारी नज़र कमज़ोर हो गई होगी—तुमने दुष्ट आत्मा को भागने दिया और वह फिर से स्वामी को पकड़ने के लिए लौट आई। जब मैं उससे लड़ने गया था, तो मैंने साधु सैंड को स्वामी का ध्यान रखने के लिए कहा था, और वह भी गायब हो गया है।"

"मुझे लगता है कि वह मालिक को कहीं शौच कराने ले गया होगा," पिग ने मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन उसके बोलने से पहले ही फ्रायर सैंड वहाँ आ गया।

"गुरु सैंड कहाँ हैं?" बंदर ने पूछा।

"तुम दोनों अंधे होगे, दुष्ट आत्मा को भागने दे रहे हो ताकि वह वापस आकर मालिक को नुकसान पहुंचा सके।"

जब मैं दुष्ट आत्मा से लड़ने गया तो स्वामी घोड़े पर अकेला ही रह गया था।"

यह सुनकर बंदर क्रोध से उछल पड़ा और चिल्लाने लगा, "इसने मुझे बेवकूफ बनाया! इसने मुझे बेवकूफ बनाया!"

अध्याय 86

1200

पश्चिम की यात्रा

"उसने तुम्हें कैसे बेवकूफ बनाया?" फ्रायर सैंड ने पूछा।

बंदर ने जवाब दिया, "यह तो बेर के फूल की पंखुड़ियों को अलग करने जैसा एक खेल था, ताकि वह हम तीनों को अपनी ओर खींच सके और फिर दिल पर वार करके मालिक को अगवा कर सके। भला हम क्या करें?"

उसके गालों से आंसू बहना बंद नहीं हो रहे थे, जिस पर सुअर ने कहा, "रो मत। अगर रोओगे तो फोड़ा हो जाओगे। वह ज्यादा दूर नहीं होगा। वह जरूर इसी पहाड़ पर होगा। चलो उसे ढूंढते हैं।" उन तीनों के पास पहाड़ पर उसे ढूंढने के अलावा कोई और योजना नहीं थी। जब वे लगभग छह-सात मील चल चुके थे, तो उन्हें एक खड़ी चट्टान के नीचे एक गुफा महल दिखाई दिया।

साफ-सुथरे शिखर प्रकाश को रोक रहे हैं,

विशालकाय और विचित्र आकार की चट्टानें।

दुर्लभ और अद्भुत फूलों की सुगंध,

लाल खुबानी और हरे आड़ू की सुंदरता।
खाई के सामने के प्राचीन वृक्ष,
चालीस हाथ की परिधि में, और जिसकी छाल पाले और बारिश से क्षतिग्रस्त हो गई है;
द्वार के बाहर खड़े नीले रंग के चीड़ के पेड़,
दो हजार फीट की हरी-नीली पट्टी आसमान तक फैली हुई है।
जंगली सारसों के जोड़े
गुफा के प्रवेश द्वार पर हवा में वह नृत्य;
पर्वतीय पक्षी जोड़े में
दिन के समय शाखाओं के सिरों पर चहचहाते हुए।
रस्सियों की तरह दिखने वाली पीली लताओं के गुच्छे,
धुंध से ढकी विलो वृक्षों की कतारें, जिनकी पत्तियां लटकते सोने की तरह लग रही थीं।
वर्गाकार कुंडों में पानी भरा हुआ है;
पूरे पहाड़ पर गहरी गुफाएं फैली हुई हैं।
उन कुंडों में जो वर्गाकार हैं
ड्रैगन अपनी त्वचा पर बिना किसी बदलाव के छिपे रहते हैं।
पहाड़ की गहरी गुफाओं में
ऐसे राक्षस निवास करते हैं जो लंबे समय से मनुष्यों को खाते आ रहे हैं।
अध्याय 86
1201
पश्चिम की यात्रा
इसकी तुलना अमर लोगों की भूमि से की जा सकती है।
एक ऐसी गुफा जहाँ हवाएँ और वाष्प संग्रहित होते हैं।
जब बंदर ने यह देखा तो वह दो-तीन कदम आगे बढ़ा, फाटकों की ओर कूदा और पाया कि वे कसकर बंद थे। उनके ऊपर एक क्षैतिज पत्थर की पट्टिका थी जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा था: लिंक्ड रिंग गुफा।
ब्रोकन रिज:
छिपे हुए कोहरे वाला पहाड़।

"अड़चन डालो, सुअर," बंदर ने कहा। "यहीं पर दुष्ट आत्मा निवास करती है। स्वामी यहीं होना चाहिए।"
यह देखकर वह मूर्ख क्रोधित हो उठा, उसने अपना फावड़ा उठाया और पूरी ताकत से फाटकों पर वार किया, जिससे उनमें एक बड़ा छेद हो गया। वह चिल्लाया, "राक्षस, अगर तुम नहीं चाहते कि मैं तुम्हारे फाटक तोड़ दूं और तुम सबको खत्म कर दूं, तो मेरे स्वामी को तुरंत बाहर भेजो।" यह सुनकर फाटकों पर तैनात छोटे शैतान दौड़कर अंदर आ गए और बोले, "महाराज, विपत्ति आ गई है।"
"कौन सी आपदा?" वरिष्ठ राक्षस ने पूछा।
"किसी ने सामने के गेट में छेद कर दिया है और चिल्ला रहा है कि उसे अपना मालिक चाहिए," छोटे शैतानों ने जवाब दिया।
"मुझे आश्चर्य है कि कौन उसे ढूंढने आया है," राक्षस राजा ने अत्यधिक घबराहट की स्थिति में कहा।
अग्रिम पंक्ति के कमांडर ने कहा, "डरो मत। मुझे बाहर जाकर देखने दो।" वह सीधे सामने के द्वारों की ओर दौड़ा, अपना सिर एक तरफ घुमाया और उनमें बने छेद से झाँका। उसने एक लंबे थूथन और बड़े कानों वाले किसी व्यक्ति को देखा।
"महाराज, चिंता मत कीजिए," वह मुड़ा और ज़ोर से चिल्लाया, "यह झू बाजी है। वह कुछ खास नहीं है और हम पर कोई चाल चलने की हिम्मत नहीं करेगा। अगर उसने ऐसा किया तो हम द्वार खोलकर उसे भी अंदर खींचकर स्टीमर में डाल देंगे। चिंता की बात तो बस उस बालदार गालों वाले भिक्षु से है जिसका चेहरा गरजते देवता जैसा है।"
बाहर से यह सुनकर सुअर बोला, "भाई, वह मुझसे नहीं डरता, लेकिन तुमसे डरता है। मालिक ज़रूर अंदर है। जल्दी इधर आओ।"
"दुष्ट जानवर," बंदर ने गुस्से से कहा। "तेरा दादा बंदर यहाँ है। मेरे मालिक को बाहर भेज दे, मैं तेरी जान बख्श दूँगा।"
"महाराज, यह तो बहुत बुरा हुआ," अग्रिम पंक्ति के सेनापति ने सूचना दी। "नौसिखिया सूर्य भी उसे ढूंढते हुए यहाँ आया है।" इस पर दानव राजा शिकायत करने लगा, "यह सब तुम्हारी 'पंखुड़ी-विभाजन' या जो भी तुमने इसे नाम दिया है, उसी की वजह से हुआ है। तुमने हम पर विपत्ति ला दी है। इसका अंत कैसे होगा?"

"महाराज, चिंता मत कीजिए," अग्रिम पंक्ति के सेनापति ने उत्तर दिया, "और अभी बड़बड़ाना शुरू मत कीजिए। वह नौसिखिया सन तो बड़े ही उदार स्वभाव का बंदर है। हालाँकि उसके पास इतनी अपार जादुई शक्ति है, फिर भी वह चापलूसी का शौकीन है। हम एक नकली मानव सिर लेकर उसे बेवकूफ बनाने जाएंगे, उसकी कुछ चापलूसी करेंगे और उसे बताएंगे कि हमने उसके गुरु को खा लिया है। अगर हम उसे पकड़ लेते हैं, तो तांग पुजारी हमारा हो जाएगा। अगर नहीं, तो हमें फिर से सोचना पड़ेगा।"
"लेकिन हमें नकली मानव सिर कहाँ से मिलेगा?" राक्षस राजा ने पूछा।
अग्रिम पंक्ति के कमांडर ने जवाब दिया, "मैं देखता हूँ कि क्या मैं एक बना सकता हूँ।"
फिर उस भव्य राक्षस ने शुद्ध इस्पात की कुल्हाड़ी से विलो की जड़ का एक टुकड़ा काटकर मानव सिर का आकार दिया, उस पर अपने मुंह से थोड़ा मानव रक्त छिड़का ताकि वह चिपचिपा हो जाए, और एक छोटे शैतान को उसे लाख की थाली में रखकर द्वार तक ले जाने के लिए कहा, और पुकारा, "हे मेरे प्रभु महान ऋषि, कृपया अपना क्रोध त्याग दें और मुझे आपसे बात करने की अनुमति दें।"
बंदर भाई को चापलूसी बहुत पसंद थी, और जब उसने खुद को "मेरे प्रभु महान ऋषि" कहकर संबोधित होते सुना, तो उसने सुअर को पकड़ लिया और कहा, "इसे मारो मत। चलो सुनते हैं कि इसे क्या कहना है।"
इस पर थाली लिए हुए छोटे शैतान ने उत्तर दिया, "जब मेरे राजा तुम्हारे स्वामी को गुफा में ले गए, तो छोटे शैतान शरारती थे और उन्होंने बहुत बुरा व्यवहार किया। उन्होंने सब कुछ कुतर-कुतर कर खाया, छीना-झपटी की और तुम्हारे स्वामी का सिर छोड़कर पूरा शरीर खा गए, जो मेरे पास यहाँ है।"
“अगर तुमने उसे खा लिया है, तो बस बात खत्म,” बंदर ने जवाब दिया। “सिर बाहर लाओ और मुझे देखने दो कि यह असली है या नकली।” छोटे शैतान ने सिर को फाटक के छेद से बाहर फेंक दिया, जिसे देखकर सुअर चीखने लगा और बोला, “यह तो भयानक है। मालिक एक तरह से अंदर गया था और अब इस हालत में बाहर आया है।”
बंदर ने कहा, "बेवकूफ, रोने से पहले एक बार देख लो और पता लगा लो कि यह असली है या नहीं।"

"तुम तो बेशर्म हो," सुअर ने कहा, "नकली इंसानी सिर जैसी कोई चीज भला कैसे हो सकती है?"
"यह नकली है," भाई बंदर ने जवाब दिया।
"तुम्हें कैसे पता चला?" सुअर ने पूछा। "जब तुम असली इंसान का सिर फेंकते हो तो वो चुपचाप गिरता है," बंदर ने समझाया, "लेकिन जब तुम नकली सिर फेंकते हो तो उससे लकड़ी के दो क्लैपर जैसी तेज़ आवाज़ आती है। अगर तुम्हें यकीन नहीं है, तो मैं तुम्हें फेंक कर दिखाता हूँ। सुनो!" उसने सिर उठाया और एक पत्थर पर फेंक दिया, जहाँ से खोखली सी आवाज़ आई।
"बहुत शोर था, भाई," फ्रायर सैंड ने कहा।
“इसका मतलब है कि यह नकली है,” बंदर ने कहा। “मैं इसे वापस असली रूप में बदल दूंगा ताकि तुम्हें दिखा सकूं।” पलक झपकते ही उसने अपनी सोने की पट्टी वाली लाठी निकाली और उसका सिर फोड़ दिया। जब सुअर ने देखा तो पाया कि वह विलो की जड़ का एक टुकड़ा था। यह देखकर वह मूर्ख दंग रह गया और गालियां बकने लगा।
"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, तुम सब बालदार लोग," उसने कहा, "तुमने मेरे स्वामी को अपनी गुफा में छिपा लिया होगा और अपने पूर्वज सुअर को विलो की जड़ के एक टुकड़े से मूर्ख बना दिया होगा, लेकिन यह मत सोचो कि मेरा स्वामी केवल भेस में विलो के पेड़ की आत्मा है।"
ट्रे पकड़े हुए छोटा शैतान इस घटना से इतना घबरा गया कि वह डर से कांपते हुए वापस भागा और बोला, "यह बहुत भयानक है, बहुत भयानक है, बहुत भयानक है।"
"तो फिर इतनी भयानक बात क्या है?" वरिष्ठ दानव ने पूछा।
अध्याय 86
1203
पश्चिम की यात्रा
"झू बाजी और साधु सैंड तो बहक गए, लेकिन बंदर तो किसी प्राचीन वस्तु विक्रेता की तरह है—उसे अपने काम की अच्छी जानकारी है," छोटे दानव ने जवाब दिया। "वह पहचान गया कि यह नकली सिर है। काश हम उसे असली इंसान का सिर दे पाते तो शायद वह चला जाता।"
"लेकिन हमें एक मिलेगा कैसे?" वरिष्ठ राक्षस ने आश्चर्य से पूछा, फिर आगे कहा,

"चमकदार शेड से एक ऐसा मानव सिर लाओ जिसे हमने अभी तक नहीं खाया हो।" तब राक्षस शेड में गए और एक ताजा सिर चुना, जिसके बाद उन्होंने उसकी सारी खाल कुतर कर उतार दी जब तक कि वह बिल्कुल चिकनी न हो गई और उसे एक थाली में रखकर बाहर ले आए।

“महाराज, मुझे खेद है कि पिछली बार वह नकली सिर था। लेकिन यह वास्तव में स्वामी तांग का सिर है। हमारे राजा ने इसे हमारी गुफा के लिए सौभाग्य लाने के उद्देश्य से रखा था, लेकिन अब वे इसे विशेष भेंट के रूप में अर्पित कर रहे हैं।” फिर उसने सिर को द्वार के छेद से बाहर फेंक दिया, वह धड़ाम से गिरा और खून से लथपथ होकर जमीन पर लुढ़क गया।

यह देखकर कि यह मानव सिर असली था, बंदर रोने लगा, और सूअर और साधु सैंड भी उसके साथ रोने लगे।

"रोना बंद करो भाई," सुअर ने अपने आँसू रोकते हुए कहा। "यह बहुत गर्म मौसम है, और सिर जल्दी ही सड़ जाएगा। मैं इसे अभी ताजा ही लाकर दफना देता हूँ। उसके बाद हम उसके लिए रो लेंगे।"

"तुम सही कह रहे हो," बंदर ने कहा, और उस मूर्ख ने गंदगी की परवाह किए बिना, सिर को अपनी छाती से लगा लिया और चट्टान पर तेजी से चढ़ गया जब तक कि उसे दक्षिण की ओर मुख वाली एक ऐसी जगह नहीं मिल गई जहाँ हवाएँ और प्राकृतिक शक्तियाँ एकत्रित थीं।

यहाँ उसने अपने रेक से एक गड्ढा खोदा, सिर को उसमें गाड़ दिया और उसके ऊपर एक टीला बना दिया। तभी उसने साधु सैंड से कहा, "आप और बड़े भाई उसके ऊपर शोक मनाइए, मैं कुछ भेंट की व्यवस्था करता हूँ।"

एक नाले के किनारे जाकर उसने विलो की कुछ शाखाएँ तोड़ीं और कुछ कंकड़ इकट्ठा किए। उन्हें वापस मकबरे पर लाकर उसने विलो की शाखाओं को दोनों ओर लगा दिया और कंकड़ों को उसके सामने ढेर कर दिया। "यह सब क्या है?" बंदर ने पूछा।

"मालिक की कब्र को फिलहाल छाया देने के लिए सरू के पेड़ों के बजाय विलो की शाखाओं का इस्तेमाल किया जा रहा है," पिग ने उत्तर दिया, "और केक के बजाय कंकड़ उन्हें भेंट किए जा रहे हैं।"

"बेवकूफ!" बंदर चिल्लाया। "वह तो पहले ही मर चुका है। तुम उसे पत्थर क्यों चढ़ाना चाहते हो?"

"जीवित लोगों की भावनाओं को दर्शाने के लिए," सुअर ने उत्तर दिया, "और शोक और सम्मान के प्रतीक के रूप में।"

“ये बकवास बंद करो,” बंदर ने जवाब दिया। “फ्रायर सैंड को यहाँ बुलाओ। वो मकबरे की रखवाली करेगा और घोड़े व सामान पर नज़र रखेगा, जबकि हम दोनों जाकर गुफा महल को तोड़ देंगे, राक्षस को पकड़ेंगे और उसके शरीर के दस हज़ार टुकड़े कर देंगे। तब हम अपने मालिक का बदला ले लेंगे।”

"आप बिलकुल सही कह रहे हैं, बड़े भाई," फ्रायर सैंड ने आँसुओं के बीच कहा। "आप दोनों सावधान रहना। मैं यहाँ नज़र रखूँगा।"

तब उस शानदार सुअर ने अपना काला जटा उतारा, अपनी कमीज़ को कसकर बाँधा, अपना फावड़ा उठाया और बंदर के पीछे चल दिया। दोनों सीधे पत्थर के फाटकों की ओर दौड़े और बिना देर किए उन्हें तोड़ दिया और इतनी ज़ोर से चिल्लाए कि आकाश काँप उठा, "हमारे तांग पुजारी को ज़िंदा वापस दो!" इससे गुफा में मौजूद सभी युवा और बूढ़े राक्षसों की आत्माएँ उड़ गईं, जिन्होंने शिकायत की कि अग्रिम पंक्ति के सेनापति ने उनके साथ अन्याय किया है। "अब हम इन भिक्षुओं से कैसे निपटेंगे, जो फाटकों से लड़ते हुए अंदर आ गए हैं?" राक्षस राजा ने पूछा।

अग्रिम पंक्ति के सेनापति ने उत्तर दिया, “पुराने समय में लोग कहते थे, ‘मछलियों से भरी टोकरी में हाथ डालो, तो उसमें से बदबू जरूर आएगी।’ अब हम इस स्थिति में हैं, तो हमें इसे पार करना ही होगा। हमें अपनी सेना को युद्ध में उतारना ही होगा।” (अध्याय 86)

इन भिक्षुओं के साथ।" जब राक्षस ने यह सुना तो उसके पास आदेश देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा, "मेरे बच्चों, एक साथ खड़े हो जाओ। अपने सबसे अच्छे हथियार साथ लेकर मेरे साथ आओ।" फिर वे एक जोरदार युद्धघोष करते हुए गुफा के प्रवेश द्वार से बाहर निकल आए।

महान ऋषि और सुअर कुछ कदम पीछे हट गए और पहाड़ की ढलान पर एक समतल जगह पर शैतानी हमले को रोकते हुए चिल्लाने लगे, "तुम्हारा सबसे प्रसिद्ध स्वामी कौन है? वह राक्षस कौन है जिसने हमारे स्वामी को बंदी बनाया है?"

शैतानों ने अब अपनी जगह को घेर लिया था, जिसके ऊपर एक रंग-बिरंगा कढ़ाईदार

झंडा लहरा रहा था, और दानव राजा ने लोहे की गदा पकड़े हुए सीधे चिल्लाकर कहा, "धिक्कार है भिक्षुओं! क्या तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ? मैं दक्षिणी पर्वतों का महान राजा हूँ, और मैं यहाँ सैकड़ों वर्षों से आतंक मचा रहा हूँ। मैंने तुम्हारे तांग पुजारी को खा लिया है। अब तुम इसके बारे में क्या करोगे?"

“तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, ओ रोएंदार जानवर!” बंदर ने गुस्से से जवाब दिया। “तुम्हारी उम्र कितनी है, जो खुद को दक्षिणी पर्वतों का राजा कहने की हिम्मत करते हो? भगवान लाओ ज़ी वे पूर्वज थे जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी के द्वार खोले, लेकिन वे भी परम पवित्र के दाहिने हाथ पर बैठते हैं। तथागत बुद्ध वे पूज्य हैं जो संसार पर राज करते हैं, और वे महान रोक पर्वत के नीचे बैठते हैं। कन्फ्यूशियस ऋषि कन्फ्यूशियस संप्रदाय के पूज्य हैं, और उन्हें केवल गुरु कहा जाता है। तो तुम खुद को दक्षिणी पर्वतों का महान राजा कहने और सैकड़ों वर्षों तक मनमानी करने की बात करने की हिम्मत कैसे करते हो? हिलना मत, और अपने दादाजी की लाठी से यह लो!”

दुष्ट आत्मा लाठी से बचने के लिए एक तरफ मुड़ गई, जिसे उसने अपने लोहे के गदा से रोक दिया। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे इस तरह नीचा दिखाने की, बंदर जैसे चेहरे वाले," राक्षस ने गुस्से से घूरते हुए कहा। "तुम्हारे पास किस तरह की शक्तियां हैं, मेरे द्वार पर पागलों की तरह व्यवहार कर रहे हो।"

"मैं तुम्हें पकड़ लूंगा, तुम बेनाम जानवर," बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "ज़ाहिर है तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ, इसलिए बस वहीं खड़े रहो और हिम्मत जुटाओ, मैं तुम्हें बताता हूँ:

मेरा पैतृक घर पूर्वी महाद्वीप में है।
जहां स्वर्ग और पृथ्वी ने हजारों वर्षों तक मेरा पालन-पोषण किया।
फूलों और फलों के पहाड़ पर एक जादुई पत्थर का अंडा था;
जब अंडा फूटा तो उसके अंदर मेरी जड़ें थीं।
मेरा जन्म साधारण प्राणियों के जन्म जैसा नहीं था:
मेरे शरीर का निर्माण सूर्य और चंद्रमा के मिलन से हुआ था।
मैंने अपने आप को बेहद प्रभावी ढंग से विकसित किया;
ईश्वर ने मुझे एक समझदार और सिंदूरी दिमाग दिया।
महान ऋषि के रूप में मैं बादलों में स्थित महल में निवास करता था।
डिपर और बुल पैलेस के खिलाफ लड़ाई में अपनी ताकत का इस्तेमाल करना।

एक लाख स्वर्गीय सैनिक भी मेरे पास नहीं पहुँच सकते;
अध्याय 86
1205
पश्चिम की यात्रा
आकाश के सभी तारे आसानी से मंद पड़ गए।
मेरी प्रसिद्धि पूरे ब्रह्मांड में गूंजती है;
मुझे धरती और आकाश के बीच की हर चीज के बारे में सब कुछ पता है।
शाक्यमुनि की शिक्षाओं को अपनाने के बाद से
मैं अपने स्वामी को पश्चिम की यात्रा में सहायता कर रहा हूँ।
जब मैं पहाड़ों के बीच से रास्ता बना लेता हूं तो मुझे कोई नहीं रोक सकता;
नदियों पर पुल बनाने की मेरी कुशलता राक्षसों को परेशान करती है।
जंगलों में मैं अपनी शक्ति का प्रयोग बाघों और तेंदुओं को पकड़ने के लिए करता हूँ;
मैं खड़ी चट्टानों के सामने नंगे हाथों से जंगली जानवरों को पकड़ता हूँ।
पूर्व की सच्ची उपलब्धि के लिए मैं पश्चिमी क्षेत्रों में आया हूँ; कौन सा दुष्ट राक्षस स्वयं को प्रकट करने का साहस करेगा?
मुझे उन दुष्ट दरिंदों से घृणा है जिन्होंने मेरे स्वामी की हत्या की है;
इस क्षण उन सभी का जीवन समाप्त हो जाएगा।"
इन टिप्पणियों से राक्षस चौंक गया और क्रोधित भी हो उठा। उसने दांत पीसते हुए आगे बढ़कर भाई बंदर पर लोहे की गदा से प्रहार किया। बंदर ने अपनी गदा से आसानी से उसे रोक दिया और कुछ और कहने ही वाला था कि सूअर, खुद को और रोक न पाने के कारण, राक्षस राजा के अग्रिम दस्ते के सेनापति पर बेतहाशा हमला करने लगा। अग्रिम दस्ते के सेनापति ने अपनी पूरी सेना को युद्ध में उतार दिया, और पहाड़ की ढलान पर उस समतल मैदान पर एक भयंकर और शानदार युद्ध छिड़ गया:
पूर्व के महान और श्रेष्ठ देश का भिक्षु
मैं पश्चिमी स्वर्ग से सच्चे धर्मग्रंथ लाने जा रहा था।
दक्षिणी पहाड़ों के विशाल तेंदुए ने हवा और बादल उगलकर पहाड़ों के बीच से उनका रास्ता रोक दिया और अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।
चालों के साथ
और धोखा

उसने मूर्खतापूर्वक ग्रेट टैंग के पुजारी को बंदी बना लिया था।
फिर उसकी मुलाकात बंदर से हुई, जिसके पास अपार शक्तियां थीं।
अध्याय 86
1206
पश्चिम की यात्रा
साथ ही प्रसिद्ध झू बाजी भी।
जबकि राक्षस पहाड़ों में समतल भूमि पर लड़ रहे थे।
धूल के बादल उठे और आकाश में अंधेरा छा गया।
इस अफरा-तफरी के बीच नन्हे शैतानों की दहाड़ें गूंज उठीं।
वे भाले और तलवार लेकर बेतहाशा हमला कर रहे थे।
दूसरी ओर भिक्षुओं ने पलटकर जवाब दिया,
एक साथ रेक और लाठी से लड़ना।
महान ऋषि एक अद्वितीय नायक थे।
और सुअर अपनी पूर्णता में अपनी ताकत का आनंद ले रहा था।
दक्षिण का प्राचीन राक्षस,
और उसका अग्रिम पंक्ति का कमांडर
तांग पुजारी के मांस के एक टुकड़े के लिए
वे अपनी जान तक कुर्बान करने को तैयार थे।
ये दोनों उनसे इसलिए नफरत करते थे क्योंकि उन्होंने उनके मालिक की हत्या कर दी थी:
अन्य दो लोग तांग पुजारी के कारण हत्या करने पर तुले हुए थे।
संघर्ष लंबे समय तक इधर-उधर डगमगाता रहा।
झड़पों और हमलों में कोई भी विजेता नहीं निकला।
जब बंदर ने देखा कि छोटे शैतान इतनी ज़ोरदार लड़ाई लड़ रहे हैं कि बार-बार हमले भी उन्हें पीछे नहीं हटा पा रहे हैं, तो उसने शरीर को विभाजित करने वाले जादू का इस्तेमाल किया, बालों का एक गुच्छा नोचा, उसे अपने मुँह में चबाया, टुकड़ों को थूक दिया, "बदलो!" कहा और उन सभी को अपने ही जैसे दिखने वाले दोगुने में बदल दिया। हर एक के हाथ में सोने की पट्टी वाला डंडा था और वे गुफा के बाहर से लड़ते हुए अंदर घुस गए। एक-दो सौ छोटे शैतान, चारों ओर से हो रहे हमलों का सामना न

कर पाने के कारण, अपनी जान बचाने के लिए गुफा में वापस भाग गए। फिर बंदर और सुअर अंदर से दुश्मन की सेना को चीरते हुए बाहर निकल आए। जिन दुष्ट आत्माओं में अक्ल नहीं थी, उन्होंने डंडे का सामना करने की कोशिश की और खुद को नौ घावों से लथपथ पाया, या डंडे का विरोध किया और उनके मांस और हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं। दक्षिणी पहाड़ों का महान राजा इतना भयभीत हो गया कि वह बादलों और हवा पर सवार होकर अपनी जान बचाने के लिए भाग गया। अग्रिम पंक्ति का कमांडर, जिसे रूप परिवर्तन करना नहीं आता था, पहले ही मंकी के क्लब के हाथों मारा जा चुका था और उसका असली रूप सामने आ गया था: एक लोहे की पीठ वाला भूरा भेड़िया राक्षस।

सुअर उसके पास गया, उसे टांग से पकड़कर पलट दिया और बोला, "भगवान ही जाने इस फलां व्यक्ति ने कितने ही सुअर के बच्चे और मेमने खाए होंगे।"

अध्याय 86

1207

पश्चिम की यात्रा

इसी बीच बंदर ने खुद को झटका दिया, अपने शरीर पर बाल समेटे और बोला, "समय बर्बाद मत करो, मूर्ख। राक्षस राजा के पीछे जाओ! उसे स्वामी के जीवन का बदला चुकाने दो।" सुअर पीछे मुड़ा, लेकिन सारे छोटे बंदर गायब हो चुके थे।

"भाई, तुम्हारे सारे जादुई शरीर गायब हो गए हैं," उसने हैरानी से कहा।

"मैंने उन्हें वापस ले लिया है," बंदर ने जवाब दिया।

"शानदार," सुअर ने कहा, "शानदार।" वे दोनों बेहद प्रसन्न होकर विजयी भाव से वापस लौट गए।

जब वरिष्ठ राक्षस गुफा में वापस भागा, तो उसने अपने साथियों को सामने के द्वार को बंद करने के लिए पत्थर और मिट्टी लाने का आदेश दिया। बचे हुए कनिष्ठ राक्षस भय से कांपते हुए द्वार को बंद कर रहे थे: अब वे दोबारा सिर बाहर निकालने की हिम्मत नहीं कर सकते थे। बंदर, सुअर को द्वार तक ले गया और चिल्लाया, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। सुअर के रेक का उन पर कोई असर नहीं हुआ।

स्थिति को भांपते हुए बंदर ने कहा, "अपना प्रयास व्यर्थ मत करो, सुअर। उन्होंने फाटकों पर अवरोधक लगा दिए हैं।"

"तो फिर हम मालिक का बदला कैसे लेंगे?" सुअर ने पूछा।

"चलो उसकी कब्र पर वापस चलते हैं और फ्रायर सैंड को देखते हैं," ब्रदर मंकी ने जवाब दिया।

जब वे वापस वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि फ्रायर सैंड अभी भी रो रहे थे, जिसे देखकर पिग पहले से कहीं अधिक दुखी हो गया, उसने अपना रेक फेंक दिया, समाधि के टीले पर लेट गया और ज़मीन पर हाथ पटकते हुए चिल्लाया, "बेचारे गुरुजी। इतनी दूर से आए गुरुजी! मैं आपको फिर कभी नहीं देख पाऊँगा!"

“भाई, चिंता मत करो,” बंदर ने कहा। “दुष्ट आत्मा ने भले ही अपने घर के सामने का द्वार बंद कर दिया हो, लेकिन उसके पास अंदर-बाहर आने-जाने के लिए पीछे का कोई न कोई रास्ता ज़रूर होगा। तुम दोनों यहीं इंतज़ार करो, मैं जाकर उसे ढूंढता हूँ।”

"ध्यान रखना भाई," सुअर ने आँसुओं के बीच कहा। "कहीं तुम भी न फँस जाओ। अगर हमें बारी-बारी से मालिक और तुम्हारे लिए रोना पड़ा तो हम संभाल नहीं पाएंगे। बहुत बड़ी गड़बड़ हो जाएगी।"

"कोई बात नहीं," बंदर ने कहा। "मेरे पास काम करने के अपने तरीके हैं।"

अपना गदा एक तरफ रखकर महान ऋषि ने अपनी स्कर्ट कसी, बाहर निकले और पहाड़ के ऊपर से वापस चले गए। रास्ते में उन्हें बहते पानी की आवाज सुनाई दी। जब उन्होंने मुड़कर देखा तो पाया कि उनके ऊपर से एक छोटी सी धारा बह रही थी, और उस धारा के किनारे एक फाटक था, जिसके बाईं ओर एक नाली थी जिससे लाल पानी निकल रहा था।

"यह तो कहने की ज़रूरत ही नहीं है," उसने सोचा। "यह ज़रूर पीछे का दरवाज़ा होगा। अगर मैं अपने असली रूप में जाऊँगा तो दरवाज़ा खोलते ही छोटे राक्षस मुझे पहचान लेंगे। बेहतर होगा कि मैं पानी के साँप में बदल जाऊँ। नहीं, रुको।"

अगर गुरु की आत्मा को पता चल गया कि मैं जल सर्प बन गया हूँ, तो वे मुझ पर एक भिक्षु होने के नाते इतना लंबा रूप धारण करने के लिए क्रोधित होंगे। बेहतर होगा कि मैं एक छोटा केकड़ा बन जाऊँ। नहीं, यह भी ठीक नहीं है। गुरु मुझ पर नाराज़ होंगे क्योंकि एक भिक्षु के लिए मेरे पास बहुत सारे पैर हैं। इसलिए वह एक जल चूहे में बदल गया जो सरसराहट की आवाज़ के साथ पानी में फिसल गया और नाली के रास्ते सीधे भीतरी आँगन में चला गया। वहाँ उसने चारों ओर देखने के लिए अपना सिर बाहर निकाला और कुछ छोटे शैतानों को धूप में मानव मांस के टुकड़े सुखाने के लिए रखते हुए देखा।

"हे भगवान!" बंदर बोला। "मालिक के शरीर से जो बचा हुआ मांस होगा, वही तो होगा। शायद वे उसे सुखाकर रख रहे होंगे ताकि ज़रूरत पड़ने पर काम आ सके। अगर मैं अभी अपने असली रूप में लौटकर उनके पास जाऊं और अपनी लाठी के एक ही वार से उन्हें मार गिराऊं, तो मैं बहादुर तो दिखूंगा, पर मूर्ख भी। मैं फिर से रूप बदलूंगा, अध्याय 86 ढूंढने जाऊंगा।"

1208

पश्चिम की यात्रा

सबसे बड़े शैतान से मिलो, और पता लगाओ कि असलियत क्या है।" इतना कहकर वह नाले से बाहर कूद गया, खुद को झटका दिया और एक पंख वाली चींटी में बदल गया। सचमुच:

कमजोर और छोटे, जिन्हें काले बछड़े के रूप में जाना जाता है,

वे कई दिनों तक छिपे रहते हैं जब तक कि उनके पंख नहीं आ जाते और वे उड़ने में सक्षम नहीं हो जाते।

वे लापरवाही से पुल के किनारे से गुजरते हुए अपनी कतारें खड़ी कर लेते हैं;

उन्हें बिस्तर के नीचे उच्च स्तरीय रणनीति की लड़ाइयाँ लड़ने में मज़ा आता है।

क्योंकि उन्हें पता होता है कि बारिश कब आने वाली है, इसलिए वे अपने छेद बंद कर लेते हैं।

और वे धूल के ढेर बनाते हैं जो राख में बदल जाते हैं।

वे हल्के, नाजुक और फुर्तीले होते हैं।

बेंत के गेट से गुजरते समय उन्हें शायद ही कभी देखा जाता है।

उसने अपने पंख फैलाए और बिना किसी को दिखाई दिए और बिना किसी की आवाज़ सुने सीधे भीतरी कक्ष में उड़ गया। वहाँ वरिष्ठ दानव सम्मान की सीट पर अत्यंत क्रोधित अवस्था में बैठा दिखाई दिया, जबकि एक कनिष्ठ दानव पीछे से दौड़कर आया और बोला, "महाराज, आपको बहुत-बहुत बधाई।"

"किस पर?" वरिष्ठ दानव ने पूछा।

"मैं अभी-अभी पिछले दरवाजे के बाहर नाले के पास पहरा दे रहा था," छोटे शैतान ने जवाब दिया, "तभी अचानक मुझे ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई दी। मैं देखने के लिए पहाड़ की चोटी पर भागा और वहाँ झू बाजी, नौसिखिए सन और साधु सैंड तीनों एक कब्र पर झुककर फूट-फूटकर रो रहे थे। मुझे लगता है कि उन्होंने तांग पुजारी का

सिर समझकर उसे दफना दिया होगा, एक टीला बनाया होगा और उसके लिए शोक मनाया होगा।"

जब बंदर ने यह सुना तो वह प्रसन्न होकर मन ही मन बोला, "उसने जो कहा उससे लगता है कि मालिक अभी भी यहीं है और उन्होंने उसे अभी तक खाया नहीं है। मैं एक बार आस-पास देख लेता हूँ और पता लगाता हूँ कि वह अभी भी जीवित है या नहीं, फिर उससे बात करूँगा।"

महान संत ने मुख्य हॉल में प्रवेश किया और चारों ओर देखा, तभी उन्हें एक तरफ एक छोटा सा दरवाज़ा दिखाई दिया। वह दरवाज़ा बहुत मज़बूती से बंद था, और जब वे दरवाज़ों के बीच की संकरी जगह से अंदर घुसे तो उन्होंने खुद को एक बड़े बगीचे में पाया जहाँ उन्हें सिसकने की हल्की-सी आवाज़ सुनाई दी। और अंदर उड़ते हुए उन्होंने ऊँचे पेड़ों का एक झुंड देखा, जिसके नीचे दो आदमी बंधे हुए थे। इनमें से एक तांग पुरोहित था। जैसे ही बंदर ने उसे देखा, उसके दिल में एक अजीब सी बेचैनी हुई जिसे वह खुजा नहीं सका।

वह खुद को वापस अपने असली रूप में आने से नहीं रोक सका, और संजांग के पास जाकर "गुरुजी" कहकर पुकारा।

जब तांग पुजारी ने देखा कि वह कौन है, तो वह रोने लगा और कहने लगा, "क्या तुम हो, वुकॉन्ग? मुझे जितनी जल्दी हो सके बचाओ, वुकॉन्ग।"

"मेरा नाम बार-बार मत लीजिए, स्वामी," बंदर ने उत्तर दिया। "मोर्चे पर लोग हैं और राज़ खुल सकता है। चूंकि आप अभी भी जीवित हैं, मैं आपको बचा सकता हूँ। राक्षसों ने कहा कि वे आपको पहले ही खा चुके हैं और उन्होंने मुझे धोखा दिया है।"

(अध्याय 86)

मानव सिर की नकल। अब हम उनसे भयंकर संघर्ष कर रहे हैं। चिंता की कोई बात नहीं, स्वामी जी। बस थोड़ी देर और धैर्य रखिए, जब तक मैं उस दुष्ट आत्मा को हरा न दूं, फिर मैं आपको बचा लूंगा।

महान ऋषि ने मंत्र के शब्द कहे, खुद को झटका दिया, फिर से चींटी में बदल गए और वापस हॉल में उड़ गए, जहाँ वे मुख्य बीम पर उतरे। यहाँ से उन्होंने बचे हुए छोटे शैतानों को धक्का-मुक्की और चिल्लाते हुए देखा। उनमें से एक भीड़ से बाहर निकला

और बोला, "महाराज, अब जब उन्हें पता चल गया है कि हमने मुख्य द्वार बंद कर दिया है और वे अंदर घुस नहीं पाएंगे, तो उन्होंने उम्मीद छोड़ दी है। उन्होंने तो गलत सिर के लिए मकबरा भी बना दिया है।"

उन्होंने आज का दिन उनके लिए शोक मनाने में बिताया, और वे कल और परसों भी ऐसा ही करेंगे। मुझे यकीन है कि उसके बाद वे चले जाएंगे। जैसे ही हमें पता चलेगा कि वे अलग हो गए हैं, हम तांग पुजारी को बाहर लाएंगे, उसके छोटे-छोटे टुकड़े करेंगे और सौंफ के साथ तलेंगे। फिर हर कोई गरमागरम उसका एक टुकड़ा खा सकेगा, और हम सब अमर हो जाएंगे।

इस पर एक और छोटे शैतान ने ताली बजाते हुए कहा, "नहीं, नहीं, भाप में पका हुआ तो कहीं ज्यादा स्वादिष्ट लगेगा।"

"उसे उबालने से कुछ लकड़ी बच जाएगी," दूसरे ने कहा।

किसी और ने कहा, "वह इतना दुर्लभ और अद्भुत प्राणी है कि हमें उसे नमक लगाकर धीरे-धीरे खाना चाहिए।"

जब बंदर ने ऊपर से ये सब सुना तो वह क्रोध से भर उठा, "मेरे स्वामी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुम उसे खाने की ये योजनाएँ क्यों बना रहे हो?" उसने मुट्ठी भर बाल निकाले, उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में चबाया, हल्के से मुँह से बाहर निकाला और चुपचाप उस मंत्र का जाप किया जिससे सारे टुकड़े नींद लाने वाले कीड़ों में बदल गए। उसने उन्हें सभी राक्षसों के चेहरों पर फेंक दिया, और कीड़े उनकी नाक में घुस गए, जिससे धीरे-धीरे राक्षसों को नींद आने लगी। थोड़ी ही देर में सारे छोटे राक्षस गहरी नींद में लेट गए।

राक्षस राजा ही अकेला ऐसा प्राणी बचा था जो अधूरी नींद में था और लगातार अपना चेहरा और सिर रगड़ रहा था, छींक रहा था और अपनी नाक दबा रहा था।

"शायद उसे नींद में आने वाले कीड़ों से निपटने का तरीका पता हो," बंदर ने सोचा। "मुझे उसे दुगनी खुराक देनी चाहिए।" उसने एक बाल खींचा, पहले की तरह दो और नींद में आने वाले कीड़े बनाए और उन्हें राक्षस के चेहरे पर फेंक दिया ताकि वे उसकी नाक में रेंग सकें, एक बाईं नाक में और एक दाईं नाक में। राक्षस राजा उछलकर खड़ा हो गया, अंगड़ाई ली, दो बार जम्हाई ली और गहरी साँसें लेते हुए सो गया।

बंदर मन ही मन प्रसन्न हुआ और छत से कूदकर वापस अपने असली रूप में आ गया। उसने अपने कान से लाठी निकाली और उसे तब तक हिलाता रहा जब तक वह बत्तख

के अंडे जितनी मोटी नहीं हो गई, फिर ज़ोरदार धमाके के साथ बगल का दरवाज़ा तोड़कर पीछे वाले बगीचे में भागा और पुकारा, "मालिक!"
"शिष्य, मुझे जल्दी खोल दो," आदरणीय बुजुर्ग ने कहा। "इस तरह बंधे रहना बहुत कष्टदायक रहा है।"
“प्रभु, धैर्य रखिए,” बंदर ने कहा। “जब मैं दुष्ट आत्मा को मार डालूँगा, तब आकर आपको खोल दूँगा।” फिर वह जल्दी से वापस हॉल में गया, अपनी लाठी उठाई और वार करने ही वाला था कि रुक गया और सोचने लगा, “नहीं, यह ठीक नहीं है। मुझे दुष्ट आत्मा को मारने से पहले स्वामी को मुक्त कर देना चाहिए।” वह वापस बगीचे में गया, जहाँ उसने फिर से अपना इरादा बदल दिया: “नहीं, मैं पहले राक्षस को मार डालूँगा।” ऐसा दो-तीन बार हुआ, और अंत में वह नाचता हुआ बगीचे में वापस आया, जहाँ उसे देखकर उसके स्वामी का दुःख प्रसन्नता में बदल गया।
“अरे बंदर,” उसने कहा, “मुझे लगता है कि मुझे अभी भी जीवित देखकर तुम खुशी से पागल हो रहे हो, इसीलिए इस तरह नाच रहे हो।” तभी बंदर उसके पास गया, उसे खोला और उसे वहाँ से जाने में मदद की।
दूसरे पेड़ से बंधे उस व्यक्ति ने तब पुकार कर कहा, "हे मेरे प्रभु, अपनी महान दया से मुझे भी बचा लीजिए।"
आदरणीय बुजुर्ग रुक गए और बोले, "वुकोंग, इसे भी खोल दो।"
"ये कौन है?" बंदर ने पूछा।
अध्याय 86
1210
पश्चिम की यात्रा
"उसे मुझसे एक दिन पहले पकड़ा गया और यहाँ लाया गया," संज़ंग ने उत्तर दिया। "वह लकड़हारा है। उसने मुझे बताया कि उसकी माँ बहुत बूढ़ी है और वह उसकी बहुत चिंता करता है। वह बहुत आज्ञाकारी पुत्र है। आपको उसे भी बचाना होगा।"
आदेश का पालन करते हुए, मंकी ने दूसरे आदमी को खोल दिया और उन दोनों को पिछले द्वार से बाहर निकालकर, ढलान से होते हुए खाई के पार ले गया। "हे योग्य शिष्य, इस आदमी और मुझे बचाने के लिए धन्यवाद," संज़ंग ने कहा। "वुनेन्ग और वुजिंग कहाँ हैं?"
"वहाँ तुम्हारे लिए शोक मना रहे हैं," बंदर ने जवाब दिया, "उन्हें आवाज़ दो।"

फिर संज़ंग ने ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा, "बाजी! बाजी!" वह मूर्ख, जो इतना रो रहा था कि उसका सिर चकरा रहा था, उसने नाक से निकले आँसू पोंछे और पुकारा, "फ्रायर सैंड, गुरुजी भूत बनकर वापस आ गए हैं।"
उसका फोन आ रहा है, है ना?
"बेवकूफ," बंदर चिल्लाते हुए उसके पास गया, "वह कोई भूत नहीं है। वह तो स्वयं स्वामी हैं।"
जब साधु सैंड ने ऊपर देखा और पाया कि कौन है, तो वह संजांग के सामने घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "गुरुजी, आपने बहुत कष्ट सहा है। बड़े भाई ने आपको कैसे बचाया?" तब बंदर ने उन्हें सारी घटना बताई।
यह सब सुनकर सुअर ने अपने दांत पीसे और खुद को रोक नहीं पाया। उसने एक ही वार में कब्र के टीले को पलट दिया, सिर को खोदकर निकाल दिया और उसे चूर-चूर कर दिया। "तुम इसे क्यों मार रहे हो?" तांग पुजारी ने पूछा।
"मालिक," सुअर ने कहा, "भगवान ही जाने वह किस तरह का नीच व्यक्ति था, लेकिन हम सबने उसके लिए शोक मनाया।"
“उन्हीं की कृपा से मैं आज भी जीवित हूँ,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “जब तुम्हारे शिष्यों ने उनके द्वार पर आक्रमण किया और मुझे माँगने लगे, तो उन्होंने तुम्हें बहलाने के लिए उसे बाहर निकाल लिया। अन्यथा वे मुझे मार डालते। मुझे लगता है कि हमें मठवासी सम्मान के प्रतीक के रूप में उसे विधिवत दफना देना चाहिए।” जब उस मूर्ख ने अपने गुरु को यह कहते सुना, तो उसने मांस और हड्डियों के उस ढेर को, जिसे पीट-पीटकर चूर-चूर कर दिया गया था, दफना दिया और उसके ऊपर एक मकबरा बना दिया।
"गुरुजी," बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या आप थोड़ी देर यहाँ नहीं बैठेंगे, जब तक मैं जाकर उन्हें खत्म कर देता हूँ?"
इतना कहकर वह चट्टान से नीचे कूदा, खाई पार की, गुफा में गया और उन रस्सियों को ले आया जिनसे तांग पुजारी और लकड़हारा हॉल में बंधे हुए थे। उसने उन्हीं रस्सियों का इस्तेमाल करके सो रहे दानव राजा के हाथ-पैर बांध दिए। फिर उसने अपनी गदा से दानव को अपने कंधे पर उठाया और पिछले दरवाजे से बाहर ले गया।
"भाई, तुम्हें अपने लिए मुश्किलें खड़ी करना अच्छा लगता है," पिग ने उसे दूर से आते हुए देखकर कहा।
"आप उसके साथ संतुलन बनाने के लिए किसी और को क्यों नहीं ढूंढ लेते?"

फिर बंदर ने दानव राजा को सुअर के सामने रख दिया। सुअर ने अपना फावड़ा उठाया और उसे मारने ही वाला था कि बंदर ने कहा, "एक पल रुको। हमने अभी तक गुफा में छिपे छोटे शैतानों को पकड़ा नहीं है।"

"अगर उनमें से कोई बचा हो," पिग ने कहा, "तो मुझे भी अपने साथ ले चलो ताकि मैं उन्हें कुचल सकूँ।"

"उन्हें कुचलना बहुत झंझट का काम होगा," बंदर ने जवाब दिया। "सबसे अच्छा तरीका होगा कि कुछ लकड़ियाँ ढूँढ़कर उन्हें नष्ट कर दिया जाए।"

जब लकड़हारा ने यह सुना, तो वह सुअर को पूर्व दिशा में एक खोखले स्थान पर ले गया, जहाँ उसे बांस के टूटे हुए सिरे, पत्तियाँ झड़ चुके चीड़ के पेड़, विलो के खोखले ठूंठ, जड़ों से उखड़ी लताएँ, मुरझाई हुई आर्टेमिसिया, पुराने सरकंडे, सरकंडे और सूखे शहतूत मिले। वे इनमें से बहुत सी सामग्री पिछले द्वार से अंदर ले गए, जहाँ बंदर ने आग लगा दी और सुअर ने अपने दोनों कानों से आग को हवा दी। तभी महान ऋषि उछल पड़े, खुद को झटककर अध्याय 86 को आगे बढ़ाया।

1211

पश्चिम की यात्रा

नींद में ही उसके शरीर पर कीड़े जैसे बाल वापस आ गए थे। जब छोटे शैतान जागे तो वे सब आग की चपेट में थे। बेचारे! उनमें से किसी के भी बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। जब पूरी गुफा जलकर राख हो गई तो शिष्य गुरु से मिलने वापस गए।

जब संज़ंग ने देखा कि वरिष्ठ राक्षस जाग गया है और चिल्ला रहा है, तो उसने पुकारा, "शिष्यों, दुष्ट आत्मा लौट आई है।" पिग ने जाकर अपने रेक के एक ही प्रहार से उसे मार डाला, जिसके बाद वह राक्षस अपने असली रूप में लौट आया और एक तेंदुए की आत्मा बन गया, जिसका शरीर मगवर्ट के फूलों की तरह पैटर्न वाला था।

“फूलों के पैटर्न वाले तेंदुए बाघों को खा सकते हैं,” बंदर ने कहा, “और यह तो इंसान भी बन सकता था। इसे मारकर हमने भविष्य में होने वाली कई गंभीर मुसीबतों को टाल दिया है।” आदरणीय बुज़ुर्ग अपनी कृतज्ञता को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सके और फिर घोड़े पर सवार हो गए। “महोदय, मेरा घर यहाँ से दक्षिण-पश्चिम में ज़्यादा दूर नहीं है,” लकड़हारे ने कहा। “मैं आपको वहाँ आने का निमंत्रण देता हूँ, मेरी माँ से मिलने और मेरी जान बचाने के लिए मेरे धन्यवाद के रूप में प्रणाम स्वीकार करने के लिए। फिर रास्ते में आप दोनों से मुलाक़ात होगी।”

संज़ंग ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और घोड़े पर सवार होने के बजाय अपने तीन शिष्यों और लकड़हारे के साथ पैदल ही वहाँ पहुँचे। थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम दिशा में घुमावदार रास्ते पर चलने के बाद उन्हें यह दृश्य दिखाई दिया।
पत्थर की पट्टियों से बने रास्ते पर उगती हुई लाइकेन,
विस्टेरिया की लताएं बेंत के गेट के पार फैली हुई हैं,
चारों ओर पर्वतों की श्रृंखलाएँ, और चहचहाते पक्षियों से भरा जंगल।
चीड़ और बांस का घना झुरमुट,
दुर्लभ और अद्भुत फूल बहुतायत में खिले हुए हैं।
यह स्थान दूरस्थ है और बादलों के बीच गहराई में स्थित है।
बांस की बाड़ से घिरी एक फूस की झोपड़ी।
जब वे अभी भी कुछ दूरी पर थे, तो उन्होंने एक बूढ़ी औरत को बेंत के फाटक पर झुके हुए देखा, जिसकी आँखों से आंसू बह रहे थे, वह रो रही थी और अपने बेटे के लिए स्वर्ग और पृथ्वी से प्रार्थना कर रही थी।
जैसे ही लकड़हारा ने अपनी माँ को देखा, वह तांग पुजारी को पीछे छोड़कर सीधे द्वार की ओर भागा, घुटने टेककर बोला, "माँ, मैं वापस आ गया हूँ।"
उसे गले लगाते हुए महिला ने कहा, "मेरे बेटे, जब तुम कई दिनों तक घर नहीं लौटे तो मुझे लगा कि पहाड़ के सरदार ने तुम्हें पकड़ लिया होगा और मार डाला होगा। मुझे बहुत दुख हुआ है। अगर तुम मारे नहीं गए तो पहले वापस क्यों नहीं आए? तुम्हारा डंडा, रस्सियाँ और कुल्हाड़ी कहाँ हैं?"
लकड़हारा प्रणाम करते हुए बोला, "माँ, पर्वत स्वामी ने मुझे पकड़ लिया था और एक पेड़ से बाँध दिया था। इन सज्जनों की कृपा से मैं सौभाग्य से अपनी जान बचा पाया। ये अर्हत हैं जिन्हें तांग दरबार ने पूर्व से शास्त्र लाने के लिए भेजा था। इस सज्जन को भी पर्वत स्वामी ने पकड़ लिया था और एक पेड़ से बाँध दिया था। उनके तीन शिष्यों के पास अपार जादुई शक्तियाँ हैं। उन्होंने एक ही प्रहार में पर्वत स्वामी को मार डाला: वह एक तेंदुए के समान था जिस पर मगवर्ट के फूल के धब्बे थे और जो एक आत्मा बन गया था। उन्होंने सभी कनिष्ठ राक्षसों को जलाकर राख कर दिया।" (अध्याय 86)

मृत्यु ने पहले उस बुजुर्ग सज्जन को मुक्त किया और फिर मुझे भी। मैं उनका बहुत

आभारी हूँ: उनके बिना आपका बेटा निश्चित रूप से मर चुका होता। अब जब पहाड़ पूरी तरह सुरक्षित है, तो मैं रात में बिना किसी खतरे के घूम सकूँगा।
यह सुनकर वह बूढ़ी औरत संजांग और उसके शिष्यों का अभिवादन करने के लिए आगे आई और हर कदम पर प्रणाम करती रही।
फिर वह उन्हें बेंत के फाटक से अंदर ले गई और छप्पर वाली कुटिया में बैठा दिया। माँ और बेटे ने कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए बार-बार प्रणाम किया और फिर जल्दी-जल्दी और हड़बड़ी में उनके लिए कुछ शाकाहारी भोजन तैयार किया।
"भाई," सुअर ने लकड़हारे से कहा, "मुझे पता है कि तुम यहाँ तंगी में हो। बस हमारे लिए कुछ साधारण सा बना दो।"
ज्यादा झंझट और मेहनत मत करो।
"सच कहूँ तो, महोदय," लकड़हारा ने उत्तर दिया, "हमारे पास यहाँ बहुत गरीबी है। हमारे पास न तो गिल फंगस है, न बटन मशरूम, न मिर्च, न सौंफ। हम आपको केवल कुछ जंगली सब्जियां ही दे सकते हैं।"
"हम तुम्हें बहुत परेशानी में डाल रहे हैं," सुअर ने कहा। "जितनी जल्दी हो सके, जल्दी करो। हम भूखे मर रहे हैं।"
"यह जल्द ही तैयार हो जाएगा," लकड़हारा ने उत्तर दिया, और थोड़ी ही देर में एक मेज और कुर्सियाँ लगाई गईं और उन्हें साफ किया गया, और जंगली सब्जियों के कई व्यंजन परोसे गए:
कोमल झुलसे हुए दिन के लिली,
अचार वाले हरे प्याज के सफेद टुकड़े,
नॉटवीड और पर्सलेन,
शेफर्ड्स पर्स और "गूजगट ब्लॉसम"।
"स्वैलोज़ स्टे अवे" स्वादिष्ट और मुलायम था;
अंकुरित बीन्स की छोटी-छोटी मुट्ठियाँ कुरकुरी और हरी थीं।
नील के सिरों को उबालकर नरम कर दिया गया,
सफेद रंग के उबले हुए "कुत्ते के पदचिह्न,"
"बिल्ली के कान,"
जंगली शलजम,
सभी नूडल्स मुलायम और स्वादिष्ट ग्रे रंग के हैं।

कैंची के शाफ्ट,
"ऑक्सपूल सहायता,"
झाड़ू के पौधे के साथ गमले में उलटी हुई घास।
टूटे हुए दाने वाली पर्सलेन,
अध्याय 86
1213
पश्चिम की यात्रा
और लेट्यूस पर्सलेन,
पूरी तरह हरा, स्वादिष्ट और मुलायम।
तेल में तला हुआ "बर्डफ्लावर",
बेहतरीन सिंघाड़ा,
नरकट की जड़ें और जंगली चावल के तने,
चार प्रकार के उत्कृष्ट जलीय पौधे।
"गेहूं की माँ,"
नाजुक और उत्तम स्वाद वाला;
"फटे-पुराने धब्बे"
आप इसे कभी नहीं पहन सकते।
तिल के कड़वे खेत के नीचे एक बाड़ लगी हुई है।
गौरैया इधर-उधर घूमती रहती हैं।
मकाक बंदर अपने पदचिह्न छोड़ जाते हैं।
गरमागरम तलने के बाद इसे पूरा खाने के लिए उत्सुक।
ढलानदार वर्मवुड और हरी आर्टेमिसिया क्राउन डेज़ी गुलदाउदी को घेरे हुए हैं; पतंगे बकव्हीट के चारों ओर उड़ रहे हैं।
गंजा "बकरी का कान"
वुल्फबेरी फल,
गहरे नीले रंग के साथ मिलाने पर उन्हें तेल की आवश्यकता नहीं होती है।
हर तरह की जंगली सब्जियों से बना भोजन
लकड़हारे की श्रद्धापूर्वक कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में।
गुरु और शिष्यों के भरपेट भोजन करने के बाद, वे अपना सामान समेटकर फिर से

चलने के लिए तैयार हो गए। उन्हें रोकने की हिम्मत न करते हुए, लकड़हारे ने अपनी माँ से बाहर आकर उन्हें फिर से प्रणाम करने का अनुरोध किया। फिर उसने भी प्रणाम किया, बेर की लकड़ी का एक गदा उठाया, अपने कपड़े कसकर बांधे और उन्हें विदा करने के लिए बाहर आया।

फ्रायर सैंड घोड़े के आगे-आगे चल रहा था, पिग कंधे पर डंडा लिए हुए था, और मंकी उनके ठीक पीछे-पीछे चल रहा था, जबकि मालिक ने घोड़े की पीठ पर हाथ रखकर कहा, "भाई लकड़हारा, क्या आप कृपया हमें मुख्य मार्ग तक ले जा सकते हैं? हम आपसे वहीं विदा लेंगे।" फिर वे सब मिलकर ऊँचाई पर चढ़े, ढलानों से नीचे उतरे,

अध्याय 86

1214

पश्चिम की यात्रा

गहरी खाइयों से बचते हुए और ढलानों को पार करते हुए। "शिष्य," आदरणीय बुजुर्ग ने घोड़े पर सवार होते हुए विचारपूर्वक कहा।

"अपने राजा को छोड़कर पश्चिम आने के बाद से"

मैंने एक लंबी यात्रा तय की है, जो बहुत दूर तक फैली हुई है।

हर नदी और पहाड़ पर मुझे विपत्ति का सामना करना पड़ा है।

राक्षसों और शैतानों से बाल-बाल बचते हुए।

मेरा मन धर्मग्रंथों के तीन भंडारों पर केंद्रित है।

और मेरे सारे विचार स्वर्ग की ओर ही केंद्रित हैं।

मेरी मेहनत और परिश्रम कब समाप्त होगा?

मैं कब घर लौट पाऊंगा, मेरी यात्रा कब पूरी होगी?

जब लकड़हारे ने संजांग को यह कहते सुना तो उसने कहा, "इतने निराश मत होइए, महोदय। इस सड़क से पश्चिम की ओर केवल तीन सौ मील की दूरी पर ही भारत है, जो स्वर्ग की भूमि है।"

जैसे ही संजांग ने यह सुना, वह घोड़े से उतरा और बोला, "हमें यहाँ तक लाने के लिए धन्यवाद। अब जब हम मुख्य मार्ग पर आ गए हैं, तो कृपया घर जाइए, भाई लकड़हारे, और अपनी पूजनीय माता को हमारा प्रणाम कहिएगा।"

हम जैसे गरीब भिक्षुओं के पास अभी-अभी आपने हमें जो शानदार भोजन कराया है, उसके लिए आपको पुरस्कृत करने का कोई तरीका नहीं है, सिवाय इसके कि हम

सुबह-शाम सुर्रा का पाठ करें ताकि आपकी और आपकी माता की रक्षा हो और आप दोनों सौ वर्ष की आयु तक जीवित रहें।"
लकड़हारा उनसे विदा लेकर उसी रास्ते से वापस चला गया जिससे वह आया था। फिर गुरु और शिष्य एक साथ पश्चिम की ओर चल पड़े।
वास्तव में:
राक्षस को वश में कर लिया गया और उसके साथ हुए अन्याय का निवारण कर दिया गया, जिससे वह अपने खतरे से बच निकला; इस दयालुता को देखकर वह अत्यंत सावधानी से अपने रास्ते पर चल पड़ा।
यदि आपको नहीं पता कि उन्हें पश्चिमी स्वर्ग तक पहुँचने में कितना समय लगा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 87
जब फेंगज़ियान में स्वर्ग नाराज होता है तो बारिश रुक जाती है
महान ऋषि ने अच्छाई का आग्रह किया और मूसलाधार बारिश लाई
अध्याय 87
1215
पश्चिम की यात्रा
महान मार्ग गहरा और रहस्यमय है;
इस बारे में क्या खबर है?
जब इसका खुलासा होगा तो इससे भूत-प्रेत और दिव्य प्राणी भयभीत हो जाएंगे।
यह ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है।
अंधकार और प्रकाश को अलग करता है;
सच्ची खुशी की दुनिया में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती।
गिद्ध शिखर से पहले
मोती और रत्न निकलते हैं,
हर रंग से जगमगाता हुआ।
यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच रहने वाले सभी प्राणियों को प्रकाशित करता है;
जो लोग इसे समझते हैं, वे पहाड़ों और समुद्रों के समान दीर्घायु होते हैं।
कहानी बताती है कि कैसे संज़ंग और उनके तीन शिष्यों ने छिपे बादलों के पर्वत पर लकड़हारे से विदा ली और मुख्य सड़क पर तेज़ी से आगे बढ़े। कई दिनों तक चलने के

बाद, अचानक उन्हें अपने सामने कुछ ही दूरी पर एक चारदीवारी और खाई से घिरा शहर दिखाई दिया।

"वुकोंग," संजांग ने कहा, "क्या आपको लगता है कि भारत से आगे वह शहर है?"

"नहीं, नहीं," बंदर ने सिर हिलाते हुए कहा। "तथागत भले ही स्वर्ग में रहते हों, लेकिन वहां कोई शहर नहीं हैं।"

यह एक विशाल पर्वत है, गिद्ध शिखर, जिस पर गर्जन मठ की ऊंची इमारतें और हॉल बने हुए हैं। भले ही हम अब भारत की धरती पर आ गए हैं, लेकिन बुद्ध यहाँ नहीं रहते। मुझे नहीं पता कि गिद्ध शिखर से भारत कितनी दूर है। संभवतः यह शहर भारत के सीमावर्ती प्रांतों में से एक है। वहाँ पहुँचने पर हमें पता चल जाएगा।

जल्द ही वे शहर से बाहर निकल आए, जहाँ संज़ंग घोड़े से उतरकर तीन फाटकों से अंदर गया। वहाँ उन्होंने लोगों को निर्धन और सड़कों को सुनसान पाया। जब वे बाज़ार पहुँचे तो वहाँ काले वस्त्र पहने कई सरकारी कर्मचारी, अपने पदचिह्नों और टोपी पहने कई अधिकारियों के दोनों ओर कतार में खड़े थे, जो एक इमारत की छत के नीचे खड़े थे। जैसे ही चारों यात्री सड़क पर आगे बढ़े, इन लोगों ने रास्ता देने से इनकार कर दिया, तो पिग ने अपने रूखे अंदाज़ में थूथन उठाकर चिल्लाया, "रास्ते से हटो! रास्ते से हटो!"

जब उन आदमियों ने चौंककर ऊपर देखा और उसका चेहरा देखा तो उनकी हड्डियाँ काँप उठीं, उनकी नसें सुन्न पड़ गईं और वे चिल्लाते हुए गिर पड़े, "बुरी आत्माएँ! बुरी आत्माएँ!"

इससे छज्जे के नीचे खड़े अधिकारियों में इतना दहशत फैल गई कि वे कांपते हुए झुके और पूछा, "आप कहाँ से हैं?"

संजांग को चिंता थी कि उसके शिष्य परेशानी खड़ी कर देंगे, इसलिए वह आगे बढ़ा और उन लोगों से बोला,

मैं महामहिम तांग सम्राट द्वारा भारत देश के महान गर्जन मठ में भगवान बुद्ध की उपासना करने और शास्त्रों को लाने के लिए भेजा गया एक भिक्षु हूँ। हमारी यात्रा हमें इस विशिष्ट स्थान पर ले आई है, लेकिन चूंकि हम इसका नाम नहीं जानते और अभी तक रहने के लिए कोई जगह नहीं मिली है, इसलिए हमें आशा है कि आप सज्जन अध्याय 87 में हमारी सहायता करेंगे।

यदि आपके शहर में प्रवेश करते समय हमने आपकी परंपराओं का उल्लंघन किया हो तो हमें क्षमा करें।"
तभी अधिकारियों ने शिष्टाचारवश उनका अभिवादन किया और कहा, "यह फेंगज़ियान प्रांत है, जो भारत के सीमावर्ती प्रांतों में से एक है। क्योंकि हम वर्षों से सूखे से पीड़ित हैं, इसलिए मार्क्विस ने हमें यहां एक सूचना लगाने के लिए भेजा है जिसमें धर्म के विद्वानों से वर्षा के लिए प्रार्थना करने और लोगों को बचाने का आह्वान किया गया है।"
यह सुनकर बंदर ने पूछा, "सूचना कहाँ है?"
अधिकारियों ने कहा, "यह लीजिए। आर्केड की अभी-अभी सफाई हुई है: हमने अभी तक इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी है।"
“इसे यहाँ लाओ और मुझे दिखाओ,” बंदर भाई ने कहा। अधिकारियों ने तब नोटिस खोला और उसे छज्जे के नीचे टांग दिया। बंदर और अन्य लोग उसे पढ़ने के लिए ऊपर गए, और उस पर यह लिखा था: महान भारत के फेंगज़ियान प्रांत के मार्क्विस शांगगुआन, धर्म के प्रबुद्ध शिक्षकों और महान गुरुओं को आमंत्रित करने के लिए यह नोटिस जारी करते हैं। समृद्ध सैनिकों और जनता वाला यह देश वर्षों से सूखे से पीड़ित है। सैन्य और नागरिक भूमि दोनों ही तबाह हो गई हैं; नदियाँ सूख गई हैं और नालियाँ खाली हैं। कुओं में पानी नहीं है, और झरने सूख गए हैं। जहाँ अमीर लोग किसी तरह अपना जीवन यापन कर रहे हैं, वहीं गरीब लोग जीवित नहीं रह सकते। एक बुशेल गेहूँ की कीमत सौ चाँदी के सिक्के है; एक गठरी की कीमत पाँच औंस है। दस साल की लड़कियों को तीन पाइंट चावल में बेचा जा रहा है; पाँच साल के लड़कों को जो भी उन्हें लेना चाहे, उसे दे दिया जा रहा है। शहरवासी कानून से डरते हैं, इसलिए वे जीवित रहने के लिए आवश्यक वस्तुएँ खरीदने के लिए अपने कपड़े गिरवी रखते हैं; लेकिन ग्रामीण इलाकों में गुंडे अपना पेट भरने के लिए लोगों को लूटते और खाते हैं। इसलिए मैंने यह सूचना इस आशा से जारी की है कि चारों ओर के बुद्धिमान और नेक लोग लोगों की जान बचाने के लिए बारिश की प्रार्थना करेंगे। उनकी इस दयालुता के लिए उन्हें हज़ारों चांदी के सिक्के दिए जाएंगे। यह कोई खोखला वादा नहीं है। जो लोग इसे स्वीकार करना चाहें, वे इस सूचना को पढ़ें।
जब उसने इसे पढ़ लिया तो बंदर ने अधिकारियों से पूछा, "शांगगुआन क्या है?"
उन्होंने उत्तर दिया, "शांगगुआन हमारे मार्क्विस का उपनाम है।"

"यह बहुत ही दुर्लभ उपनाम है," मंकी ने हंसते हुए कहा।
"भाई, तुम कभी स्कूल नहीं गए," पिग ने कहा। "द हंड्रेड सरनेम्स नामक किताब के अंत में एक जगह है जहाँ लिखा है 'ओयांग और शांगगुआन'।"
“शिष्यों, यह व्यर्थ की बातें बंद करो,” संज़ंग ने कहा। “यदि तुममें से कोई वर्षा के लिए प्रार्थना करना जानता है, तो समय पर वर्षा कराओ और लोगों को इस विपत्ति से बचाओ: यह वास्तव में बहुत अच्छा कार्य होगा। यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते, तो हमें चलना चाहिए और समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।”
"बारिश के लिए प्रार्थना करने में क्या मुश्किल है?" बंदर ने पूछा। "मैं नदियों को उलट सकता हूँ, समुद्र को हिला सकता हूँ, तारों और नक्षत्रों को इधर-उधर कर सकता हूँ, आकाश को लात मार सकता हूँ, कुओं में पानी को मथ सकता हूँ, कोहरा और बादल निकाल सकता हूँ, पहाड़ों को उठा सकता हूँ, चाँद को चला सकता हूँ और हवा और बारिश बुला सकता हूँ। ये सब तो बच्चों का खेल है। कुछ भी मुश्किल नहीं!"
जब अधिकारियों ने यह सुना तो उन्होंने अपने दो साथियों को सीधे प्रीफेक्चरल कार्यालयों में यह रिपोर्ट करने के लिए भेजा, "महामहिम, वास्तव में कुछ बहुत ही शानदार हुआ है।"
उस समय अगरबत्ती जलाकर चुपचाप प्रार्थना कर रहे मार्क्विस ने जब सुना कि कोई अद्भुत घटना घटी है, तो पूछा कि क्या हुआ है। अधिकारियों ने उत्तर दिया, "हम बाजार के प्रवेश द्वार पर नोटिस लगाने जा रहे थे, तभी चार भिक्षु आए और उन्होंने बताया कि उन्हें पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश ने भारत के महान थंडर मठ में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए भेजा है। जैसे ही वे... अध्याय 87

मैंने नोटिस पढ़ा, जिसमें लिखा था कि वे समय पर बारिश ला सकते हैं, इसीलिए हम यहां रिपोर्ट करने आए हैं।"
पालकी, घोड़े या बड़े दल-बल को लेने से इनकार करते हुए, मार्क्विस अपने आधिकारिक वस्त्रों में पैदल ही सीधे बाजार के प्रवेश द्वार तक गए ताकि अजनबियों को अत्यंत विनम्रता से बारिश के लिए प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित कर सकें।
"महामहिम मार्क्विस यहाँ हैं," अचानक घोषणा हुई, और सभी लोग रास्ते से हट गए।
तांग पुरोहित को देखते ही, अपने भयंकर शिष्यों से ज़रा भी भयभीत न होने वाले

मार्क्विस ने सड़क के बीचोंबीच लेटकर कहा, "मैं फेंगज़ियान प्रांत का मार्क्विस शांगगुआन हूँ, और मैंने स्नान और इत्र लगाकर आप गुरुओं से प्रार्थना की है कि आप लोगों को बचाने वाली वर्षा के लिए प्रार्थना करें। मैं आपसे आपकी अपार दया से विनती करता हूँ कि आप अपनी दिव्य शक्तियों का प्रयोग करें और हमें मुक्ति दिलाएँ।"

उनकी शिष्टाचारात्मक टिप्पणी का जवाब देते हुए, संजांग ने कहा, "यह बातचीत का स्थान नहीं है। हम मठ में जाकर ही कार्रवाई कर पाएंगे।"

"कृपया मेरे साथ मेरे साधारण महल में आइए," मार्क्विस ने उत्तर दिया। "वहाँ हमारा एक पवित्र स्थान है।"

गुरु और शिष्य घोड़े को आगे ले गए और सामान लेकर सीधे महल पहुँचे, जहाँ सबने एक-दूसरे का अभिवादन किया और मार्क्विस ने चाय और शाकाहारी भोजन का आदेश दिया। थोड़ी देर बाद जब खाना आया तो पिग भूखे बाघ की तरह जी भर के खाने लगा, जिससे वेटर डर गए। वे काँपते हुए बार-बार सूप और चावल लाते-ले जाते रहे। वे किसी घूमते हुए लालटेन पर बनी आकृतियों जैसे लग रहे थे, और वे उसे तब तक भोजन परोसते रहे जब तक कि उसका पेट भर नहीं गया। तभी वह रुका।

भोजन समाप्त होने पर तांग पुजारी ने धन्यवाद व्यक्त किया और फिर पूछा, "महामहिम, यहाँ सूखा कितने समय से चल रहा है?" इस पर मार्क्विस ने उत्तर दिया, "यह भारत की महान भूमि का एक हिस्सा है।"

मैं फेंगज़ियान प्रांत का राज्यपाल हूँ।

हम लगातार तीन वर्षों से सूखे की मार झेल रहे हैं:

घास नहीं उग रही है और सारा अनाज मर गया है।

व्यापार करना अमीर और गरीब दोनों के लिए कठिन है;

लगभग सभी परिवार शोक से व्याकुल हैं।

अब तक दो तिहाई लोग भुखमरी से मर चुके हैं;

बाकी बचे हुए लोग किसी तरह हवा में जलती मोमबत्ती की लौ की तरह जीवित रहते हैं।

मैंने योग्य व्यक्तियों के लिए नोटिस जारी किया है

और मैं भाग्यशाली हूं कि आप भिक्षु हमारी भूमि पर आए हैं।

अगर आप लोगों के लिए एक इंच बारिश भी ला दें

आपको एक हजार चांदी के सिक्के इनाम में मिलेंगे।
अध्याय 87
1218
पश्चिम की यात्रा
यह सुनकर बंदर के चेहरे पर खुशी झलक रही थी और वह खिलखिलाते हुए बोला, "ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो। अगर तुम हमें एक हजार चांदी के सिक्कों का इनाम देने का वादा करोगे तो बारिश की एक बूंद भी नहीं गिरेगी। लेकिन अगर तुम इसे पुण्य संचय के रूप में कहोगे तो मैं तुम्हें खूब बारिश दूंगा।"
मार्क्विस, जो एक अत्यंत ईमानदार और नेक इंसान थे और अपनी प्रजा की बहुत परवाह करते थे, ने बंदर को सम्मान की सीट पर बैठने के लिए आमंत्रित किया, फिर उसे प्रणाम किया और कहा, "गुरुजी, यदि आप वास्तव में हम पर इतनी दया दिखा सकते हैं, तो यह विनम्र अधिकारी नैतिकता के विरुद्ध कोई अपराध नहीं करेगा।"
बंदर ने कहा, "कृपया उठ जाइए, बस जब तक मैं काम कर रहा हूँ, मेरे मालिक का अच्छे से ख्याल रखिएगा।"
"भाई, तुम यह कैसे करोगे?" फ्रायर सैंड ने पूछा।
"तुम्हें और सुअर को यहाँ आकर बाहर मेरे सहायक के रूप में काम करना होगा, जबकि मैं बारिश कराने के लिए एक ड्रैगन को बुलाता हूँ।"
बंदर ने जवाब दिया। सुअर और साधु सैंड ने वैसा ही किया जैसा उसने उन्हें कहा था, और जब वे तीनों बाहर गए तो मार्क्विस ने अगरबत्ती जलाई और प्रार्थना की। संजांग वहीं बैठकर सूत्र पढ़ रहा था।
जब बंदर मंत्र पढ़ रहा था और जादुई शब्द बोल रहा था, तभी पूर्व दिशा में एक काला बादल प्रकट हुआ और धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए हॉल के सामने आ गया: यह पूर्वी सागर का प्राचीन ड्रैगन, आओ गुआंग था। फिर आओ गुआंग ने अपने बादल जैसे पैर हटाए और मानव रूप धारण करके बंदर के पास गया, पूरे आदर के साथ उसे प्रणाम किया और पूछा, "हे महान ऋषि, आपने इस विनम्र ड्रैगन को किसलिए भेजा है?"
“कृपया उठिए,” बंदर ने उत्तर दिया। “मैंने आपको इतनी लंबी यात्रा करने के लिए इसलिए परेशान किया है क्योंकि फेंगज़ियान प्रांत में कई वर्षों से सूखा पड़ा हुआ है। मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि क्या आप थोड़ी बारिश भेज सकते हैं।”
“हे महान ऋषि, मुझे आपको सूचित करना होगा,” अजगर ने उत्तर दिया, “कि यद्यपि

मैं वर्षा करा सकता हूँ, मैं केवल स्वर्ग के आदेशों पर ही कार्य कर सकता हूँ। मैं स्वर्ग के निर्देशों के बिना कभी भी अपने दम पर यहाँ वर्षा कराने का साहस नहीं करूँगा।"
"हमारी यात्रा हमें इस रास्ते पर ले आई, इसलिए मैंने आपसे विशेष रूप से यहां आकर बारिश कराने और लोगों को बचाने का अनुरोध किया था।"
बंदर ने कहा, "तो तुम इससे बाहर निकलने की कोशिश क्यों कर रहे हो?"
"मैं ऐसा करने की हिम्मत कभी नहीं करूँगा," ड्रैगन राजा ने उत्तर दिया। "मैं इसलिए आया हूँ क्योंकि आपने मुझे जादुई शब्दों से बुलाया है, हे महान ऋषि, और मैं इससे पीछे हटने की हिम्मत कभी नहीं करूँगा। पहली बात तो यह है कि मुझे स्वर्ग से कोई आदेश नहीं मिला है, और दूसरी बात यह है कि मैं अपने साथ बारिश कराने वाले जादुई सेनापतियों को नहीं लाया हूँ। मैं कैसे ला सकता हूँ, हे महान ऋषि? यदि आप उद्धारक बनना चाहते हैं, तो आपको मुझे समुद्र में वापस जाकर अपनी सेना जुटाने देना होगा, जबकि आप स्वर्ग के महल में जाकर बारिश के लिए शाही आदेश प्राप्त करें और जल के प्रभारी अधिकारियों से हम ड्रैगनों को मुक्त करने का अनुरोध करें, ताकि मैं आदेशित मात्रा में बारिश करा सकूँ।"
उसके तर्क की शक्ति को स्वीकार करते हुए, बंदर भाई को बूढ़े अजगर को वापस समुद्र में जाने देना पड़ा। फिर उसने तांग पुजारी को बताया कि अजगर राजा ने क्या कहा था।
"तो बेहतर होगा कि तुम जाकर वही करो," तांग पुजारी ने कहा। "लेकिन झूठ मत बोलना।"
फिर बंदर ने सुअर और साधु रेत को गुरु की देखभाल करने के लिए कहा, जबकि वह स्वर्गिक महल में गया। महान ऋषि के जाने की घोषणा करते ही वह दृष्टि से ओझल हो गए।
"सूर्य देवता कहाँ चले गए?" मार्क्विस ने सदमे से कांपते हुए पूछा।
अध्याय 87
1219
पश्चिम की यात्रा
"वह बादल पर सवार होकर स्वर्ग चला गया है," सुअर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। फिर मार्क्विस ने अत्यंत श्रद्धापूर्वक एक तत्काल आदेश जारी किया कि शहर की सभी छोटी-बड़ी गलियों के लोग, चाहे वे कुलीन हों, उच्च अधिकारी हों, संभ्रांत हों, आम

नागरिक हों, सैनिक हों या नागरिक हों, ड्रैगन-राजा की मूर्तियों की पूजा करें और अपने द्वारों के सामने विलो की टहनियों से भरे जल पात्र रखें। उन्हें धूप जलाकर स्वर्ग से प्रार्थना भी करनी थी।

एक बार कलाबाजी करते हुए बादल पर सवार बंदर सीधे स्वर्ग के पश्चिमी द्वार पर गया, जहाँ स्वर्ग के राजा लोकपाला शीघ्र ही अपने दिव्य सैनिकों और योद्धाओं के साथ प्रकट हुए और उनका अभिवादन करते हुए कहा, "महान ऋषि, क्या आप अभी तक शास्त्रों को ले आए हैं?"

“बस कुछ ही देर में,” बंदर ने जवाब दिया। “हम भारत की सीमा पर स्थित फेंगज़ियान नामक एक सीमावर्ती प्रांत में पहुँच गए हैं। वहाँ तीन साल से बारिश नहीं हुई है और लोग बहुत कष्ट झेल रहे हैं। मैं उनके लिए बारिश की प्रार्थना करना चाहता हूँ। मैंने ड्रैगन राजा को बुलवाया था, लेकिन उन्होंने कहा कि वे बिना किसी दिव्य आदेश के अपने दम पर ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए मैं जेड सम्राट से एक आदेश का अनुरोध करने आया हूँ।”

“मुझे नहीं लगता कि वहाँ बारिश होनी चाहिए,” स्वर्ग के राजा ने कहा। “मैंने अभी-अभी सुना है कि फेंगज़ियान के सरदार ने अपमानजनक व्यवहार किया है और स्वर्ग और पृथ्वी दोनों को नाराज़ किया है। महाराज को यह बात बुरी लगी और उन्होंने तुरंत चावल का पहाड़, आटे का पहाड़ और एक विशाल सोने का ताला लगवा दिया। जब तक ये तीनों गिर न जाएँ या टूट न जाएँ, तब तक बारिश नहीं होगी।” यह सब समझ न पाने के कारण, बंदर ने जेड सम्राट से मिलने की ज़िद की, और स्वर्ग के राजा ने उसे रोकने की हिम्मत न करते हुए उसे अंदर जाने दिया।

सीधे सर्वव्यापी प्रकाश के हॉल में जाते हुए, भाई बंदर का स्वागत चार स्वर्गीय शिक्षकों ने किया, जिन्होंने पूछा, "आप यहाँ किसलिए आए हैं, महान ऋषि?"

"तांग पुजारी के साथ यात्रा करते हुए मैं भारत की सीमा पर स्थित फेंगज़ियान प्रांत पहुँच गया हूँ, जहाँ सूखा पड़ा है," बंदर ने उत्तर दिया। "वहाँ के सरदार ने जादूगरों से बारिश के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया है। मैंने ड्रैगन राजा को बारिश कराने का आदेश देने के लिए बुलवाया, लेकिन उन्होंने कहा कि जेड सम्राट के आदेश के बिना वे ऐसा नहीं कर सकते। अब मैं लोगों की पीड़ा दूर करने के लिए आदेश का अनुरोध करने आया हूँ।"

"लेकिन वहां बारिश नहीं होनी चाहिए," चारों दिव्य शिक्षकों ने कहा।

बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "बारिश होने की संभावना है या नहीं, इस बारे में क्या आप मुझे एक याचिका प्रस्तुत करने के लिए अपने साथ ले जा सकते हैं ताकि मैं यह पता लगा सकूं कि क्या मेरा कोई काम अभी भी हो सकता है?"
इस पर दिव्य गुरु गे जियानवेंग ने उत्तर दिया, "जैसा कि कहावत है, 'एक मक्खी जिसे अपने चेहरे को ढकने के लिए जाल की जरूरत हो - कितनी धृष्टता है!'"
"बकवास मत करो," जिंगयांग के जू ने कहा। "बस उसे अंदर ले जाओ।"
किउ होंगजी, झांग दाओलिंग, गे और जू बंदर को चमत्कारी धुंध के हॉल के बाहर ले गए, जहाँ उन्होंने सूचना दी, "महाराज, सन वुकॉन्ग भारत के फेंगज़ियान प्रांत में पहुँच गया है और बारिश चाहता है।"
वह एक आदेश जारी करवाने आया है।
“तीन वर्ष पूर्व,” जेड सम्राट ने उत्तर दिया, “बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन, जब हम असंख्य आकाशों का निरीक्षण कर रहे थे और तीनों लोकों में यात्रा कर रहे थे, तब हम उसके नगर में पहुँचे। हमने देखा कि शांगगुआन अत्यंत दुष्ट था; उसने स्वर्ग को अर्पित की गई शाकाहारी भेंटों को कुत्तों को खिला दिया, अपशब्द बोले और राजद्रोह का दोषी था। इसीलिए हमने सुगंध कक्ष में वे तीन वस्तुएँ स्थापित कीं। सन वुकॉन्ग को उन्हें देखने के लिए ले जाओ। जब वे तीनों वस्तुएँ पूर्ण हो जाएँगी, तब हम अपना आदेश जारी करेंगे; परन्तु यदि वे पूर्ण न हों, तो जो विषय तुमसे संबंधित नहीं है, उसमें तुम हस्तक्षेप न करो।”
अध्याय 87
1220
पश्चिम की यात्रा
जब चार दिव्य गुरुओं ने बंदर भाई को सुगंध के हॉल में पहुँचाया, तो उसने लगभग सौ फीट ऊँचा चावल का पहाड़ और लगभग दो सौ फीट ऊँचा आटे का पहाड़ देखा। चावल के पहाड़ के पास मुट्ठी के आकार की एक मुर्गी चावल खा रही थी, कभी तेज़ी से तो कभी धीरे-धीरे। आटे के पहाड़ के पास सुनहरे बालों वाली एक पेकिनीज़ कुतिया आटा चाट रही थी, कभी लंबी चाट से तो कभी छोटी चाट से। उसके बाईं ओर एक लोहे के फ्रेम से लगभग एक फुट तीन या चार इंच लंबा एक सुनहरा ताला लटका हुआ था।
ताले की क्रॉसबार उंगली की मोटाई के बराबर थी, और उसके नीचे एक लैंप था,

जिसकी लौ बार को गर्म कर रही थी।
यह सब क्या हो रहा है, यह न समझ पाने के कारण, बंदर ने वापस मुड़कर दिव्य शिक्षकों से पूछा, "इसका क्या मतलब है?"
“जब उस दुष्ट ने स्वर्ग को नाराज किया, तो जेड सम्राट ने ये तीन चीजें स्थापित करवाईं,” स्वर्ग के शिक्षकों ने उत्तर दिया। “उस स्थान पर तभी वर्षा होगी जब मुर्गी सारे चावल खा जाएगी, कुत्ता सारा आटा चाट लेगा और दीपक ताले की छड़ को पिघला देगा।”
यह सुनकर बंदर सदमे से पीला पड़ गया और उसने सिंहासन पर कोई और ज्ञापन करने की हिम्मत नहीं की। वह शर्मिंदगी से चूर होकर महल से बाहर चला गया। चारों दिव्य गुरुओं ने मुस्कुराते हुए कहा, "हे महान ऋषि, इसे इतना बुरा मत मानिए। यह ऐसी समस्या है जिसका समाधान सद्गुण से हो सकता है। एक बार एक दयालु विचार स्वर्ग को भी प्रभावित कर दे तो चावल और आटे के पहाड़ ढह जाएंगे और ताला टूट जाएगा। यदि आप मार्क्विस को सद्गुण की राह पर लौटने के लिए मना लें तो आशीर्वाद अपने आप बरसेंगे।"
बंदर ने उनकी सलाह मान ली और जेड सम्राट से विदा लेने के लिए चमत्कारिक धुंध के हॉल में वापस जाने के बजाय, वह सीधे निचले लोक और वहाँ के साधारण मनुष्यों के पास चला गया। पल भर में वह स्वर्ग के पश्चिमी द्वार पर पहुँच गया, जहाँ उसकी मुलाकात स्वर्ग के राजा लोकपाल से फिर हुई, जिन्होंने पूछा, "क्या तुम्हें वह आदेश मिल गया जो तुम चाहते थे?" बंदर ने उन्हें चावल और आटे के पहाड़ों और धातु के ताले के बारे में बताया।
“आपने जो कहा वो बिलकुल सही था,” उसने आगे कहा। “जेड सम्राट कोई फरमान जारी करने से इनकार कर रहे हैं। अभी-अभी स्वर्ग के गुरुओं ने मुझे विदा करते हुए बताया कि आशीर्वाद का रहस्य उस अमुक व्यक्ति को अच्छे मार्ग पर लौटने के लिए राजी करने में निहित है।” इतना कहकर बंदर ने विदा ली और अपने बादल पर सवार होकर पाताल लोक की ओर चला गया।
जब मार्क्विस, संज़ंग, पिग, फ्रायर सैंड और सभी उच्च-स्तरीय अधिकारियों ने उसका स्वागत किया, तो वे उसके चारों ओर जमा होकर प्रश्न पूछने लगे। तब बंदर ने मार्क्विस पर चिल्लाते हुए कहा, "तीन साल पहले बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन तुमने स्वर्ग और पृथ्वी को नाराज़ किया था, इसीलिए लोग कष्ट भोग रहे हैं, हे दुष्ट।

इसीलिए अब बारिश नहीं हो रही है।"
यह सुनकर मार्क्विस इतना घबरा गया कि वह घुटनों के बल गिर पड़ा, जमीन पर लेट गया और पूछा, "शिक्षक, आपको तीन साल पहले हुई घटना के बारे में कैसे पता चला?"
"तुमने स्वर्ग में चढ़ाए गए शाकाहारी प्रसाद को कुत्तों को खिलाने के लिए क्यों फेंक दिया?" बंदर ने कहा, "बेहतर होगा कि तुम मुझे सच बताओ।"
कुछ भी छुपाने का साहस न करते हुए, मार्क्विस ने कहा, "तीन साल पहले बारहवें महीने की पच्चीस तारीख को मैं महल में स्वर्ग को भेंट चढ़ा रहा था। मेरी पत्नी दुष्ट थी, इसलिए हमारा झगड़ा हुआ और हमने एक-दूसरे को बुरा-भला कहा। क्रोध के आवेश में आकर मैंने भेंट से भरी मेज उलट दी और शाकाहारी भोजन बिखेर दिया। यह सच है कि मैंने कुत्तों को उसे खाने के लिए बुलाया था। मुझे कभी एहसास नहीं हुआ कि स्वर्ग को इस बात का बुरा लगेगा और वह आम लोगों को नुकसान पहुंचाएगा। पिछले कुछ वर्षों से यह बात मेरे मन में घर कर गई है। मेरे विचार अशांत हैं, और मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि ऐसा क्यों हो रहा है। मुझे कभी यह एहसास नहीं हुआ कि स्वर्ग के नाराज होने के कारण ही वह आम लोगों पर यह विपत्ति ला रहा है। अब जब आप हमसे मिलने आए हैं, गुरुजी, तो मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे यह बताएं कि स्वर्ग क्या करने वाला है।"
अध्याय 87
1221
पश्चिम की यात्रा
"संयोगवश, उसी दिन जेड सम्राट पाताल लोक में आए हुए थे," बंदर ने उत्तर दिया। "जब उसने तुम्हें शाकाहारी भोजन कुत्तों को खिलाते हुए देखा और तुम्हारी गंदी भाषा सुनी, तो जेड सम्राट ने तुम्हें याद रखने के लिए तीन चीजें स्थापित कीं।"
"भाई, वे तीन चीजें क्या हैं?" सुअर ने पूछा।
सुगंध के हॉल में उसने लगभग सौ फीट ऊँचा चावल का पहाड़ और लगभग दो सौ फीट ऊँचा आटे का पहाड़ खड़ा कर रखा था। चावल के पहाड़ के पास मुट्ठी के आकार की एक मुर्गी है जो उसे कभी तेज़ तो कभी धीमी चोंच से खा रही है। आटे के पहाड़ के पास सुनहरे बालों वाला एक पेकिनीज़ कुत्ता है जो आटे को कभी लंबी तो कभी छोटी चाट से चाट रहा है। और बाईं ओर एक लोहे का फ्रेम है जिससे उंगली की

मोटाई के एक पतले लोहे के ताले पर एक सुनहरा ताला लटका हुआ है जिसके नीचे एक दीपक जल रहा है और ताले की छड़ को गर्म कर रहा है। यहाँ बारिश तभी होगी जब मुर्गी सारे चावल खा जाएगी, कुत्ता सारा आटा चाट लेगा और दीपक ताले की छड़ को पिघला देगा।

"कोई बात नहीं," सुअर ने कहा, "कोई बात नहीं। अगर तुम मुझे अपने साथ ले जाओगे, भाई, तो मैं रूप बदल सकता हूँ, सारा चावल और आटा एक ही बार में खा जाऊँगा और ताला तोड़ दूँगा। मैं बारिश की गारंटी दे सकता हूँ।"

"बकवास मत करो, बेवकूफ," बंदर ने कहा। "यह स्वर्ग की योजना है। तुम कभी वहाँ नहीं पहुँच पाओगे।"

"आपकी बातों से मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं," संजांग ने कहा।

"यह आसान है," बंदर ने कहा, "बहुत आसान। जब मैं जा रहा था तो चारों दिव्य गुरुओं ने मुझसे कहा कि इसका समाधान केवल अच्छाई के माध्यम से ही हो सकता है।"

इसके बाद मार्क्विस ने एक बार फिर जमीन पर लेटकर विनती भरे स्वर में कहा, "शिक्षक, मैं ठीक वैसा ही करूंगा जैसा आप मुझे कहेंगे।"

“अगर तुम्हारा हृदय फिर से अच्छाई की ओर मुड़ जाए,” बंदर ने उत्तर दिया, “तो मुझे आशा है कि तुम तुरंत बुद्ध का आह्वान और शास्त्रों का पाठ करना शुरू कर दोगे। तब मैं तुम्हारी सहायता कर पाऊँगा। यदि तुम सुधार करने से इनकार करते रहे तो मैं तुम्हें बचाने के लिए कुछ नहीं कर पाऊँगा। स्वर्ग तुम्हें जल्द ही मृत्युदंड दे देगा और तुम्हारा जीवन बचाना असंभव हो जाएगा।”

मार्क्विस ने प्रणाम करते हुए धर्म में लौटने की शपथ ली। उन्होंने तुरंत शहर के सभी बौद्ध और ताओवादी पुरोहितों को बुलाया और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए एक स्थान तैयार करने का आदेश दिया। उन्हें तीन दिनों तक दस्तावेज़ और ज्ञापन लिखने थे। मार्क्विस ने अपने अनुयायियों के साथ अगरबत्ती जलाकर और पूजा-अर्चना की, स्वर्ग और पृथ्वी का आभार व्यक्त किया और अपने पापों का पश्चाताप किया। संज़ंग ने उनकी ओर से सुर्रा पढ़े। उसी समय तत्काल सूचनाएँ भेजी गईं, जिसमें शहर के अंदर और बाहर के सभी घरों में रहने वाले सभी पुरुषों और महिलाओं, युवाओं और वृद्धों को अगरबत्ती जलाने और बुद्ध का आह्वान करने का आदेश दिया गया। उस क्षण से सभी कानों में पुण्य की आवाज़ें गूंजने लगीं। तभी भाई बंदर को प्रसन्नता का अनुभव

हुआ।
"तुम दोनों मालिक का ख्याल रखना," उसने पिग और फ्रायर सैंड से कहा, "जब तक मैं उसे लेने वापस जाता हूँ।"
"भाई, इस बार तुम कहाँ जा रहे हो?" सुअर ने पूछा।
"मार्क्विस ने सचमुच मेरी बात पर विश्वास किया और वह आदरपूर्वक, अच्छे और दयालु भाव से पेश आ रहे हैं," बंदर ने उत्तर दिया, "और वे पूरी श्रद्धा से बुद्ध का नाम जप रहे हैं। इसलिए मैं जेड सम्राट से बारिश के लिए एक और निवेदन करने जा रहा हूँ।"
"अगर तुम जा रहे हो, तो समय बर्बाद मत करो, भाई," फ्रायर सैंड ने कहा। "इससे हमारी यात्रा में रुकावट आ रही है। लेकिन बारिश जरूर करवा लो: यह हमारे लिए एक और बड़ी उपलब्धि होगी।"
अध्याय 87
1222
पश्चिम की यात्रा
महान संत ने एक बार फिर अपने बादल को रवाना किया और सीधे स्वर्ग के द्वार की ओर चल दिए, जहाँ उनकी मुलाकात स्वर्ग के राजा लोकपाल से फिर हुई।
"तुम अब किसलिए आए हो?" लोकपाला ने पूछा।
“मार्क्विस ने अपना व्यवहार सुधार लिया है,” बंदर ने उत्तर दिया, जिससे स्वर्ग के राजा प्रसन्न हुए। जब वे बात कर रहे थे, तभी ताओवादी और बौद्ध धर्मगुरुओं द्वारा लिखे गए पत्र और दस्तावेज़ देने के लिए सीधे मंत्र का दूत स्वर्ग के द्वार पर पहुँचा।
जब दूत ने बंदर को देखा तो उसने झुककर कहा, "हे महान ऋषि, यह सब आपके सफल धर्म परिवर्तन का परिणाम है।"
"तुम ये चिट्ठियाँ कहाँ ले जा रहे हो?" बंदर ने पूछा।
दूत ने उत्तर दिया, "सीधे सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में ले जाओ, ताकि इसे स्वर्गीय शिक्षकों को दिया जा सके, जो इसे महान स्वर्गीय पूज्य, जेड सम्राट तक पहुंचा सकें।"
“तो फिर आप पहले जाइए, मैं आपके पीछे आऊंगा,” बंदर ने कहा। फिर दूत स्वर्ग के द्वार से अंदर चला गया। “महान ऋषि,” स्वर्ग के राजा लोकपाला ने कहा, “आपको जेड सम्राट से मिलने जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपको नौवें स्वर्ग में स्थित प्राथमिक प्रतिक्रिया कार्यालय से कुछ गर्जन देवता उधार लेने जाना चाहिए, फिर गरज

और बिजली उत्पन्न करनी चाहिए। उसके बाद निश्चित रूप से बारिश होगी।”
बंदर ने यह सुझाव स्वीकार कर लिया और स्वर्ग के द्वार से अंदर चला गया। चमत्कारिक धुंध के हॉल में जाकर कोई आदेश मांगने के बजाय, उसने तुरंत अपने बादलों पर चलने वाले कदम नौवें स्वर्ग में स्थित प्राथमिक प्रतिक्रिया कार्यालय की ओर मोड़ दिए, जहाँ गर्जन द्वार के दूत, अभिलेखों के संशोधक और सत्यनिष्ठा के निरीक्षक प्रकट हुए और झुककर बोले, "हे महान ऋषि, आप यहाँ क्यों आए हैं?"
"मैं परम पूज्य से किसी बात पर मिलना चाहता हूँ," बंदर ने उत्तर दिया, और तीनों दूतों ने यह बात परम पूज्य को एक ज्ञापन में बता दी, जिसके बाद परम पूज्य लाल बादलों और नौ फीनिक्स पक्षियों के अपने आवरण के पीछे से पूरी दरबारी पोशाक में नीचे आए।
अभिवादन का आदान-प्रदान करने के बाद बंदर ने कहा, "मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहता हूँ।"
"वह क्या हो सकता है?" परम पूज्य ने पूछा।
"तांग भिक्षु के साथ यात्रा करते हुए मैं फेंगज़ियान प्रांत में पहुँच गया हूँ," बंदर भाई ने कहा, "वहाँ लंबे समय से सूखा पड़ा हुआ है, इसलिए मैंने उन्हें बारिश कराने का वादा किया था। मैं यहाँ इसलिए आया हूँ ताकि बारिश के लिए प्रार्थना करने के लिए आपके कुछ अधीनस्थ अधिकारियों और जनरलों की मदद ले सकूँ।"
"मुझे पता है कि वहाँ के मार्क्विस ने स्वर्ग को नाराज किया था, इसलिए तीन चीजें स्थापित की गई हैं," स्वर्ग के परम पूज्य ने उत्तर दिया, "लेकिन मैंने अभी तक यह नहीं सुना है कि वहाँ बारिश होने वाली है।"
"कल जब मैं जेड सम्राट से एक आदेश मांगने गया था," बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "उन्होंने स्वर्ग के शिक्षकों को मुझे सुगंध कक्ष में तीन चीजें दिखाने के लिए कहा: चावल का पहाड़, आटे का पहाड़ और सोने का ताला। जब तक ये तीनों चीजें गिराई या तोड़ी नहीं जातीं, तब तक बारिश नहीं होगी। जब मैं बहुत परेशान था क्योंकि यह बहुत मुश्किल था, तब स्वर्ग के शिक्षकों ने मुझे सलाह दी कि मैं मार्क्विस और उसके लोगों को अच्छे कर्म करने के लिए प्रेरित करूं क्योंकि स्वर्ग अच्छे विचार रखने वाले किसी भी व्यक्ति की मदद करने के लिए बाध्य है। इसलिए स्वर्ग को अपना निर्णय बदलने और उन्हें इस विपत्ति से बचाने के लिए राजी करने की अच्छी संभावना है। अब हर जगह अच्छे विचार आ रहे हैं, और सभी कानों में अच्छी आवाजें

गूंज रही हैं। कुछ समय पहले ही स्ट्रेट स्पेल मैसेंजर जेड सम्राट को पत्र लेकर गया था जिसमें दिखाया गया था कि उन्होंने अपने रास्ते सुधार लिए हैं और अच्छाई की ओर मुड़ गए हैं, इसलिए मैं आपके शानदार महल में आपके अध्याय 87 की सहायता मांगने आया हूं।"

1223

पश्चिम की यात्रा

"गर्ज अधिकारी और गर्जनाशील सेनापति।"

"तो फिर," परम पूज्य ने उत्तर दिया, "मैं डेंग, शिन, झांग और ताओ को मदर लाइटनिंग को लेकर आपके साथ फेंगज़ियान प्रांत में गर्जना करने के लिए भेजूंगा, महान ऋषि।"

कुछ ही देर में चारों सेनापति और महान ऋषि फेंगज़ियान की सीमा तक पहुँच गए और हवा में ही अपना जादू दिखाने लगे। ज़ोरदार गड़गड़ाहट सुनाई दी और बिजली की तेज़ चमक दिखाई दी। सचमुच:

बिजली बैंगनी सोने के सांपों की तरह थी;
गरज की आवाज ऐसी थी मानो सोते हुए कीड़े जाग गए हों।
उड़ती हुई आग की तरह प्रकाश की चमक,
पहाड़ों में भूस्खलन जैसी गड़गड़ाहट।
टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं ने पूरे आकाश को रोशन कर दिया;
उस भीषण शोर के कारण धरती स्वयं हिल उठी।
जब लाल रेशम पौधों की कोंपलों की तरह चमक उठा
तीन हजार मील तक नदियाँ और पहाड़ कांपते रहे।

फेंगज़ियान शहर के अंदर और बाहर, चाहे कोई उच्च अधिकारी हो या कोई आम नागरिक, तीन साल से किसी ने भी गड़गड़ाहट नहीं सुनी थी और न ही बिजली देखी थी; और अब जब गड़गड़ाहट गूंज रही थी और बिजली चमक रही थी, तो वे सब घुटनों के बल गिर पड़े, अपने सिर पर धूपदान रखे, हाथों में विलो की टहनियाँ पकड़ीं और बोले, "हम अमिताभ बुद्ध को प्रणाम करते हैं। हम अमिताभ बुद्ध को प्रणाम करते हैं।"

इन नेक विचारों ने सचमुच स्वर्ग को भी प्रभावित कर दिया था, जैसा कि एक पुरानी शैली की कविता से सिद्ध होता है:

जब मनुष्य के मन में विचार उत्पन्न होते हैं

आकाश और पृथ्वी दोनों को इसकी जानकारी होगी।
यदि बुराई और अच्छाई को उनका उचित दंड नहीं मिलता
वहां के सत्ताधारियों ने अपना पक्ष ले लिया है।
फिलहाल हम महान ऋषि बंदर को फेंगज़ियान प्रांत पर बिजली और गरज बरसाने वाले गर्जन सेनापतियों का नेतृत्व करते हुए छोड़ देते हैं, जहाँ सभी लोग फिर से अच्छाई की ओर लौट आए थे, और यह बताते हैं कि कैसे सीधे मंत्र दूत ने ताओवादी और बौद्ध ग्रंथों को सीधे सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल में पहुँचाया, जहाँ चार स्वर्गीय शिक्षकों ने उन्हें चमत्कारिक हॉल अध्याय 87 में जेड सम्राट को सौंप दिया।
1224
पश्चिम की यात्रा
कुहासा।
जब जेड सम्राट ने उन्हें देखा तो उन्होंने कहा, "उस दुष्ट के मन में कुछ नेक विचार तो आए ही होंगे, देखो इन तीनों चीजों का क्या हाल हो गया है।" उनके बोलते ही सुगंध कक्ष के प्रभारी अधिकारी ने आकर सूचना दी, "चावल और आटे के पहाड़ ढह गए हैं: चावल और आटा पल भर में गायब हो गए। ताला भी टूट गया है।"
इससे पहले कि वह अपनी प्रार्थना पूरी कर पाता, उपस्थित दिव्य अधिकारी स्थानीय देवता, नगर देवता और फेंगज़ियान के वेदियों के देवताओं को लेकर आए, जिन्होंने सभी ने प्रणाम किया और कहा, "हमारे प्रांत के स्वामी और प्रत्येक परिवार के सभी सदस्य, चाहे वे उच्च वर्ग के हों या निम्न वर्ग के, सच्चे ज्ञान की प्राप्ति कर चुके हैं और बुद्ध एवं स्वर्ग की उपासना कर रहे हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि अपनी करुणावश आम जनता को बचाने के लिए समय पर व्यापक वर्षा भेजें।"
जब जेड सम्राट ने यह सुना तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने एक आदेश जारी किया: "वायु, बादल और वर्षा विभाग आदेशानुसार पाताल लोक में जाएँ। इस समय, इस दिन बादल छा जाएँ, गरज उठे और बयालीस बयालीस बूँदें वर्षा हो।" तुरंत ही चारों दिव्य गुरुओं ने मौसम विभागों को यह आदेश भेजा और उन्हें पाताल लोक में जाकर अपनी शक्तियाँ प्रदर्शित करते हुए एक साथ कार्य करना था।
बंदर आकाश में डेंग, शिन, झांग और ताओ के साथ आनंद ले रहा था, जो बिजली की देवी को आदेश दे रहे थे, तभी अन्य सभी देवताओं के आगमन से आकाश उनकी सभा से भर गया। हवा और बादलों के मिलन से ही समय पर बारिश होने लगी।

घने, भारी बादल,
नीचे उतरता हुआ काला कोहरा,
गरजते रथ की गड़गड़ाहट,
बिजली की तेज चमक,
एक भयंकर आंधी,
मूसलाधार बारिश।
वास्तव में, जब किसी का विचार स्वर्ग की ओर जाता है
दस हजार आशाएँ पूरी हो गईं।
क्योंकि महान ऋषि ने अपनी शक्तियों का प्रयोग किया है
हजारों मील तक का परिदृश्य अंधेरे में डूबा हुआ है।
अद्भुत वर्षा नदियों और समुद्रों की तरह बरसती है,
देश और आकाश को दृष्टि से छिपाना।
छत से पानी तेजी से नीचे बह रहा है।
अध्याय 87
1225
पश्चिम की यात्रा
खिड़कियों के बाहर ज़ोर-ज़ोर से बारिश की आवाज़ आ रही थी।
जबकि हर घर बुद्ध का आह्वान करता है
सभी सड़कें और बाजार जलमग्न हो गए हैं।
पूर्व और पश्चिम की ओर हर मार्ग भरा हुआ है;
घुमावदार धाराएँ उत्तर और दक्षिण की ओर बहती हैं।
सूखे हुए अंकुरों को नमी मिलती है।
सूखे पेड़ फिर से हरे-भरे हो जाते हैं।
खेतों में भांग और गेहूं की फसल अब खूब फल-फूल रही है;
ग्रामीण इलाकों में फलियां और अन्य अनाज उगाए जाते हैं।
व्यापारी खुशी-खुशी अपना सामान बेचने के लिए यात्रा करते हैं;
प्रसन्न किसान काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं।
इसके बाद बाजरा अच्छी तरह से उगेगा।
और फसलों की बंपर पैदावार होना तय है।

जब हवा और बारिश समय पर आती हैं तो लोग संतुष्ट रहते हैं;
जब नदियाँ और समुद्र शांत होते हैं, तब दुनिया में शांति होती है।
उस दिन तीन फुट और बयालीस बयालीस बूँदें बारिश हुई, जिसके बाद सभी देवता अपना सामान समेटकर जाने लगे।
“चारों विभागों के देवताओं,” महान ऋषि ने ऊँचे स्वर में कहा, “अपने बादल अनुयायियों के साथ कुछ क्षण वहीं ठहरिए, मैं मार्क्विस से कहता हूँ कि वह आप सभी को प्रणाम करे और धन्यवाद व्यक्त करे। आप बादल हटाकर अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो सकते हैं ताकि यह नश्वर आपको अपनी आँखों से देख सके। यही एकमात्र तरीका है जिससे वह विश्वास करेगा और भेंट चढ़ाएगा।” जब देवताओं ने यह सुना तो वे सभी बादलों में ही ठहर गए।
फिर बंदर ने अपने बादल को ज़मीन पर उतारा और सीधे प्रादेशिक महल में चला गया, जहाँ संज़ांग, सुअर और साधु सैंड ने उसका स्वागत किया। मार्क्विस ने हर कदम पर झुककर धन्यवाद दिया।
“मुझे धन्यवाद देना बंद करो,” बंदर ने कहा। “मैंने चारों विभागों के देवताओं से रुकने का अनुरोध किया है। क्या आप सबको यहाँ आकर उन्हें प्रणाम करने और धन्यवाद देने के लिए कह सकते हैं ताकि वे भविष्य में ठीक से बारिश करें?” मार्क्विस ने तुरंत आदेश जारी कर सबको धन्यवाद देने के लिए बुलाया, और सबने हाथों में अगरबत्ती लेकर प्रणाम किया। तब चारों विभागों के देवता—बारिश, गरज, बादल और हवा—ने बादलों को हटाकर अपने असली रूप में प्रकट हुए।
ड्रैगन राजा प्रकट हुआ।
अध्याय 87
1226
पश्चिम की यात्रा
गरजते हुए सेनापतियों का पर्दाफाश हो गया।
बादलों में लड़के दिखाई दिए,
हवा के देवता नीचे आ गए।
ड्रैगन राजा प्रकट हुआ:
चांदी जैसी मूंछों और नीले रंग के चेहरे के साथ वह वास्तव में अद्वितीय था।
गर्जना करने वाले सेनापतियों का पर्दाफाश हो गया

उनके चेहरे अतुलनीय शक्ति से परिपूर्ण थे और उनके मुंह टेढ़े-मेढ़े थे।
बादल के लड़के दिखाई दिए
जेड जैसे चेहरों पर सोने के मुकुट पहने हुए।
हवा के स्वामी नीचे आ गए
माथे पर शिकन और आंखें बाहर निकली हुई थीं।
ये सभी नीले बादलों पर प्रदर्शित थे।
वे अपने पवित्र चेहरों के साथ पंक्तियों में खड़े थे।
तभी फेंगज़ियान के लोग आश्वस्त हुए।
उन्होंने प्रणाम किया, अगरबत्ती जलाई और बुराई को अस्वीकार किया।
आज उन्होंने स्वर्ग के सेनापतियों की ओर देखा।
उनके हृदयों को शुद्ध किया गया क्योंकि वे सभी अच्छाई की ओर मुड़ गए।
देवता दो घंटे तक वहीं खड़े रहे और लोग लगातार उनके सामने सिर झुकाते रहे। बंदर बादलों में फिर से ऊपर उठा और सभी देवताओं को प्रणाम करते हुए बोला, "मैंने आपको बहुत कष्ट दिया है। आप सभी सज्जन अब वापस जा सकते हैं।"
मैं इस प्रांत के सभी लोगों से उचित समय पर आपको धन्यवाद देने हेतु शुद्ध और उच्च कोटि की भेंट चढ़ाने का आग्रह करूँगा। अब से आप सभी सज्जनों को हर पाँच दिन में हवा और हर दस दिन में बारिश भेजनी होगी ताकि उनकी सहायता हो सके।”
उनकी बात सुनकर सभी देवता सहमत हो गए और अपने-अपने विभागों में लौट गए।
अपने बादल को जमीन पर उतारते हुए, बंदर ने संजांग से कहा, "अब जब काम पूरा हो गया है और लोगों को शांति मिल गई है, तो हम अपना सामान पैक कर सकते हैं और फिर से अपने रास्ते पर चल सकते हैं।"
यह सुनकर मार्क्विस ने तुरंत झुककर कहा, "हे सूर्यदेव, आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? आज जो कुछ हुआ है वह असीम कृपा का कार्य है। मैंने लोगों को आपकी महान कृपा के लिए धन्यवाद हेतु एक छोटा भोज तैयार करने भेजा है। फिर मैं लोगों से कुछ भूमि खरीदकर आपके लिए एक मठ बनवाऊंगा, हे मेरे स्वामियों, जिसमें आपके लिए शिलालेखों से सुसज्जित एक मंदिर होगा, जहां चारों ऋतुओं में चढ़ावा चढ़ाया जा सकेगा।"
अगर मैं अपनी हड्डियाँ और दिल भी काट कर निकाल लूँ, तो भी तुम्हारे एहसान का दस हज़ारवाँ हिस्सा चुकाना मुश्किल होगा। तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकते।

अध्याय 87

1227

पश्चिम की यात्रा

"महामहिम जो कह रहे हैं वह बहुत अच्छा है," संज़ंग ने उत्तर दिया, "लेकिन हम तीर्थयात्री भिक्षु हैं जो पश्चिम की यात्रा के दौरान केवल एक रात के लिए ही ठहर सकते हैं। हम यहाँ अधिक समय तक नहीं रुक सकते। हमें एक-दो दिन में अवश्य निकलना होगा।" मार्क्विस ने उन्हें जाने देने से इनकार कर दिया और उन्होंने कई लोगों को उसी रात भोज तैयार करने और मठ का निर्माण शुरू करने का आदेश दिया।

अगले दिन एक भव्य भोज का आयोजन हुआ जिसमें तांग पुरोहित को मुख्य स्थान दिया गया, जबकि महान ऋषि बंदर उनके बगल में सुअर और साधु सैंड के साथ बैठे थे। मार्क्विस और उनके उच्च-निम्न अधिकारियों ने उन्हें शराब के प्याले और भोजन के व्यंजन परोसे, जबकि मधुर संगीत बजाया गया, और इस प्रकार उनका पूरे दिन मनोरंजन किया गया। यह एक अत्यंत खुशी का अवसर था, और इसे प्रमाणित करने वाली एक कविता है: लंबे सूखे के बाद खेतों को मीठी बारिश मिली;

व्यापारी सभी जलमार्गों से यात्रा कर रहे थे।

वे शहर में आए भिक्षुओं से बहुत प्रभावित हुए थे।

और उस महान ऋषि द्वारा जो स्वर्ग चले गए थे।

अब तीनों कार्य पूरे हो चुके थे;

एक विचार ने सभी को वापस अच्छाई की ओर मोड़ दिया।

अब से सभी एक नए स्वर्ण युग की कामना करने लगे।

सदा के लिए आदर्श मौसम और अच्छी फसल के साथ।

भोज और धन्यवाद समारोह कई दिनों तक चलते रहे, यहाँ तक कि लगभग आधा महीना बीत चुका था। अब केवल मठ और मंदिर का निर्माण पूरा करना बाकी था। एक दिन मार्क्विस ने चारों भिक्षुओं को उनका निरीक्षण करने के लिए आमंत्रित किया।

"आपने इतनी बड़ी परियोजना को इतनी जल्दी कैसे पूरा कर लिया?" तांग पुजारी ने आश्चर्य से पूछा।

"मैंने मजदूरों को दिन-रात बिना रुके काम करने के लिए मजबूर किया और उनसे अत्यंत आग्रह किया कि वे इसे जल्दी पूरा करें," मार्क्विस ने उत्तर दिया। "अब मैं

चाहता हूं कि आप सज्जन आकर इसका निरीक्षण करें।"
"आप वाकई एक बहुत अच्छे और योग्य मार्क्विस हैं," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। तब तक वे सभी नए मठ में पहुँच चुके थे, जहाँ वे विशाल हॉल और भव्य प्रवेश द्वार को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए। बंदर ने संज़ांग से मठ का नाम रखने को कहा।
"बहुत अच्छा," संजांग ने कहा, "मैं इसका नाम 'समय पर हुई बारिश से मुक्ति का मठ' रखता हूँ।"
"शानदार," मार्क्विस ने कहा, "शानदार।" फिर उन्होंने दूर-दूर से भिक्षुओं को वहाँ धूप जलाने के लिए एक सुनहरा निमंत्रण भेजा। बुद्ध हॉल के बाईं ओर चार तीर्थयात्रियों का एक मंदिर था, जहाँ हर साल चारों ऋतुओं में चढ़ावा चढ़ाया जाता था। गर्जन देवता और ड्रैगन देवता के लिए भी मंदिर बनाए गए थे, ताकि उनके दिव्य प्रयासों के लिए उन्हें धन्यवाद दिया जा सके। यात्रा समाप्त होने पर संज़ंग ने जल्दी प्रस्थान का आदेश दिया।
अध्याय 87
1228
पश्चिम की यात्रा
जब स्थानीय लोगों को एहसास हुआ कि भिक्षुओं को अब और रुकने के लिए राजी नहीं किया जा सकता, तो उन्होंने विदाई उपहार तैयार किए, लेकिन यात्रियों ने उनमें से कुछ भी स्वीकार नहीं किया। तब प्रांत के सभी अधिकारियों ने बैंड बजाते हुए और झंडों और शामियानों का भव्य प्रदर्शन करते हुए उन्हें दस मील तक विदा किया। यात्रियों को जाने देने के लिए अनिच्छुक अधिकारी, उनकी आंखों में आंसू भरे तब तक देखते रहे जब तक वे दृष्टि से ओझल नहीं हो गए। तभी अधिकारी शहर लौटे।
वास्तव में:
उस गुणी और पवित्र भिक्षु ने मोक्ष मठ को पीछे छोड़ दिया; स्वर्ग के समान महान ऋषि ने बड़ी कृपा बरसाई।
यदि आपको यह नहीं पता कि इस प्रस्थान के कितने दिनों बाद उन्हें अंततः तथागत बुद्ध के दर्शन हुए, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 88
जब ध्यान युहुआ तक पहुँचता है तो जादू का प्रदर्शन किया जाता है।
द माइंड-एप और द मदर ऑफ वुड अपने शिष्यों को ले जाते हैं

कहानी बताती है कि मार्क्विस से खुशी-खुशी विदा लेने के बाद, तांग पुजारी ने घोड़े पर सवार बंदर की ओर मुड़कर कहा, "हे योग्य शिष्य, यह अच्छा परिणाम भिक्षुभूमि में शिशुओं को बचाने से भी बेहतर था, और यह सब तुम्हारी ही उपलब्धि है।"
"भिक्षुलैंड में तुमने सिर्फ 1,111 छोटे लड़कों की जान बचाई," साधु सैंड ने कहा। "यह उस भारी बारिश के सामने कुछ भी नहीं है जिसने हजारों जिंदगियां बचाई हैं। मैं चुपचाप अपने बड़े भाई की उन जादुई शक्तियों की प्रशंसा कर रहा हूँ जो स्वर्ग तक पहुँचती हैं, साथ ही उनकी उस दया की भी जो पूरी पृथ्वी पर फैली हुई है।"
"हमारा बड़ा भाई भले ही दयालु और अच्छा हो," सुअर ने हंसते हुए कहा, "लेकिन यह तो बस दिखावटी दयालुता है। अंदर से वह एक उपद्रवी है। जब वह मेरे साथ होता है तो वह मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव करता है।"
"मैंने तुम्हें कब इतना बुरा बर्ताव किया है?" बंदर ने विरोध किया। "अक्सर," सुअर ने जवाब दिया। "तुम हमेशा यही करते हो कि मुझे बांधा जाए, लटकाया जाए, उबाला जाए और भाप में पकाया जाए। फेंगज़ियान में उन हज़ारों लोगों पर इतनी मेहरबानी करने के बाद तुम्हें वहीं आधा साल रुक जाना चाहिए था और मुझे कुछ और अच्छे, पेट भरने वाले भोजन करने देना चाहिए था। हमें यहाँ से जाने की क्या ज़रूरत थी?"
जब आदरणीय बुजुर्ग ने यह सुना तो वे चिल्लाए, "अरे मूर्ख! क्या तुम्हें अपने लालच के सिवा कुछ नहीं सूझता? झगड़ा बंद करो और जाओ।" और कुछ कहने की हिम्मत न करते हुए, सुअर ने अपना थूथन आगे बढ़ाया, सामान कंधे पर रखा और जोर-जोर से हंसते हुए गुरु और उनके साथी शिष्यों के पीछे-पीछे चल दिया।
समय शटल की गति से बीतता गया, और जल्द ही शरद ऋतु का अंत हो गया। जो दिखाई दे रहा था, वह था पानी पर लहरों का अंत।
पहाड़ों की हड्डियाँ दुबली-पतली दिख रही हैं।
अध्याय 88
1229
पश्चिम की यात्रा
लाल पत्ते इधर-उधर उड़ रहे हैं।
फूल पीले पड़ने के समय।
स्वच्छ और बर्फीले आकाश के नीचे रातें लंबी प्रतीत होती हैं;
खिड़कियों से चांद की सफेद रोशनी आ रही है।

शाम के उजाले में कई घरों में आग जलती हुई दिखाई देती है;
झील का पानी हर जगह ठंडा और चमकीला दिखाई देता है।
क्लोवर फर्न अब सफेद हो गया है।
जबकि नॉटवीड के फूल लाल रंग के होते हैं।
मंदारिन हरे होते हैं और संतरे पीले;
विलो के पेड़ मुरझा रहे हैं और बाजरा पक गया है।
सुनसान गांव के पास जंगली हंस नरकुलों के बीच आकर बैठ जाते हैं;
जब फलियों की कटाई हो रही होती है, तब देहाती सराय के पास मुर्गे बांग देते हैं।
जब वे चारों काफी देर तक यात्रा करते रहे तो उन्हें एक विशाल शहर की दीवार दिखाई दी।
"वुकोंग," संजांग ने अपनी चाबुक लहराते हुए कहा, "तुम देख सकते हो कि वहाँ एक और शहर है। मुझे आश्चर्य है कि वह कहाँ है।"
"हम दोनों में से कोई भी पहले कभी यहाँ नहीं आया है," बंदर ने जवाब दिया, "तो मुझे कैसे पता चलेगा? चलो, हम पूछ ही लेते हैं।"
उसके मुंह से शब्द निकलने से पहले ही कुछ पेड़ों के बीच से एक बूढ़ा आदमी प्रकट हुआ। वह एक छड़ी के सहारे खड़ा था, हल्के वस्त्र पहने हुए था, पैरों में नारियल की चप्पलें थीं और कमर पर एक कमरबंद बंधा हुआ था। तांग पुजारी जल्दी से घोड़े से उतरा और बूढ़े आदमी का अभिवादन करने के लिए उसके पास गया।
अपनी छड़ी पर झुकते हुए, उस बूढ़े व्यक्ति ने अभिवादन का जवाब देते हुए पूछा, "आप कहाँ से हैं, आदरणीय महोदय?"
"मैं पूर्वी तांग दरबार द्वारा भेजा गया एक गरीब भिक्षु हूँ, जो थंडर मठ में बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने आया हूँ," तांग पुजारी ने अपने हाथ छाती के सामने जोड़ते हुए उत्तर दिया। "अब जब मैं इस विशिष्ट स्थान पर आ गया हूँ, तो मुझे आश्चर्य होता है कि दूर दिखाई देने वाला वह शहर कौन सा है, और मैं आपसे, आदरणीय उपकारक, इसके बारे में जानकारी देने का अनुरोध करता हूँ।"
यह सुनकर बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, “ध्यान के प्रबुद्ध गुरु, हमारा यह साधारण सा स्थान भारत के एक प्रांत में स्थित युहुआ नगर है। हमारे नगर के स्वामी भारत के राजा के शाही परिवार के सदस्य हैं, जिन्हें युहुआ का राजकुमार बनाया गया है। वे एक अत्यंत योग्य राजकुमार हैं जो बौद्ध और ताओवादी दोनों धर्मगुरुओं का आदर करते हैं

और आम जनता की बहुत परवाह करते हैं। यदि आप उनसे मिलने जाएँगे तो वे निश्चित रूप से आपका बहुत सम्मान करेंगे।" संजांग ने बूढ़े व्यक्ति को धन्यवाद दिया और वे जंगल की ओर चल पड़े।

फिर संज़ंग ने अपने शिष्यों को घटना बताने के लिए पीछे मुड़ा। तीनों शिष्य खुशी-खुशी गुरु को घोड़े पर वापस बिठाने जा रहे थे कि तभी संज़ंग ने कहा, "ज़्यादा दूर नहीं है। सवारी करने की ज़रूरत नहीं है।" (अध्याय 88)

1230

पश्चिम की यात्रा

फिर वह शहर की दीवार के पास वाली एक गली में देखने के लिए चले गए। यह व्यापारियों का इलाका था; यहाँ काफी भीड़ थी और व्यापार अच्छा चल रहा था। यहाँ के लोग दिखने और बोलने में चीन के लोगों से अलग नहीं थे। "शिष्यों, सावधान रहो," संज़ंग ने कहा। "किसी भी हालत में उग्र व्यवहार मत करो।"

यह सुनकर सुअर ने अपना सिर झुका लिया और साधु सैंड ने अपना चेहरा ढक लिया, केवल बंदर ही गुरु का सहारा बनकर रह गया। सड़क के दोनों ओर लोग उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़े और चिल्लाने लगे, "यहाँ तो केवल वही प्रख्यात भिक्षु आते हैं जो अजगरों और बाघों को वश में करते हैं। हमने पहले कभी ऐसे भिक्षु नहीं देखे जो सुअरों और बंदरों को वश में करते हों।" यह सब सुअर के लिए असहनीय था।

अपनी थूथन उनकी ओर बढ़ाते हुए उसने कहा, "क्या तुमने अपने पूरे जीवन में कभी किसी ऐसे भिक्षु को देखा है जिसने सूअरों के राजा को वश में किया हो?" यह सुनकर सड़क पर मौजूद सभी लोग इतने भयभीत हो गए कि वे लड़खड़ाते हुए और ठोकर खाते हुए उनके दोनों ओर गिरने लगे और भागने की कोशिश करने लगे।

"अपना मुंह तुरंत अंदर करो, बेवकूफ," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "और खुद को सुंदर दिखाने की कोशिश मत करो।"

पुल पार करते समय बस ध्यान रखना।" उस मूर्ख ने अपना सिर नीचे कर लिया और मुस्कुराता रहा। पुल पार करते ही वे शहर में प्रवेश कर गए, जहाँ मुख्य सड़कें बार और मनोरंजन स्थलों से गुलजार और समृद्ध थीं। यह वास्तव में एक दिव्य क्षेत्र का शहर था, और इसे प्रमाणित करने वाली एक कविता है, "शानदार ब्रोकेड की तरह एक शाश्वत रूप से लोहे की तरह मजबूत शहर।"

ताजे रंगों से भरपूर, पहाड़ों के पास एक नदी के किनारे स्थित,

माल की आवाजाही के लिए झीलों से नावों द्वारा जुड़ा हुआ है।
पर्दों के पीछे हजारों शराब की दुकानें आपका इंतजार कर रही हैं।
हर जगह ऊंची-ऊंची इमारतों से धुआं उठ रहा है;
हर सुबह गलियां व्यापारियों की चहल-पहल से भर जाती हैं।
शहर का नजारा काफी हद तक चांगआन जैसा था:
मुर्गे की बांग और कुत्तों का भौंकना, सब कुछ एक जैसा ही था।
"मैंने पश्चिम के विदेशियों के बारे में सुना है," संज़ंग ने मन ही मन प्रसन्नता से सोचा, "पर मैं यहाँ पहले कभी नहीं आया। गौर से देखने पर यह हमारे महान तांग साम्राज्य से बिल्कुल अलग नहीं है। यही तो स्वर्ग है।" जब उसे पता चला कि एक बुशेल छिले हुए चावल की कीमत केवल चार-दसवें औंस चांदी है और एक पौंड तिल के तेल की कीमत केवल आठ-हज़ारवें औंस चांदी है, तो उसे एहसास हुआ कि यह सचमुच एक ऐसी जगह है जहाँ फसलें प्रचुर मात्रा में उगती हैं।
काफी देर तक चलने के बाद वे युहुआ के राजकुमार के महल में पहुँचे। महल के द्वारों के दोनों ओर स्मरणकर्ता का कार्यालय, कानून अदालतें, राजकुमार की रसोई और सरकारी छात्रावास स्थित थे।
"शिष्यों," संजांग ने कहा, "यह रहा महल। मैं अंदर जाकर राजकुमार से हमारे पासपोर्ट की जाँच करवाता हूँ और फिर हमें जाने की अनुमति दिलवाता हूँ, तब तक प्रतीक्षा कीजिए।"
"मालिक, जब आप अंदर जाएंगे तो हम द्वार पर खड़े नहीं रह सकते," सुअर ने कहा।
अध्याय 88
1231
पश्चिम की यात्रा
"क्या तुम्हें उस द्वार पर 'सरकारी छात्रावास' लिखा हुआ नहीं दिख रहा?" संज़ंग ने पूछा। "जाओ और वहाँ बैठो और देखो कि क्या तुम घोड़े के लिए कुछ चारा खरीद सकते हो। अगर राजकुमार मुझे अपने दर्शन के दौरान भोजन कराते हैं, तो मैं तुम्हें भी बुला लूँगा।"
"अंदर आ जाइए, गुरुजी, चिंता मत कीजिए," भाई बंदर ने कहा। "मैं संभाल लूंगा।" साधु सैंड सामान लेकर छात्रावास में गए, जहाँ उनके भयानक चेहरों को देखकर कर्मचारी इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने उनसे कोई प्रश्न पूछने या उन्हें भगाने की

हिम्मत नहीं की, बल्कि उन्हें बैठने के लिए आमंत्रित किया।
इसी बीच गुरु ने अपना वस्त्र और टोपी बदली और पासपोर्ट हाथ में लेकर सीधे राजकुमार के महल में प्रवेश किया। थोड़ी देर बाद वहाँ एक प्रोटोकॉल अधिकारी ने उनसे मुलाकात की और पूछा, "आप कहाँ से हैं, महोदय?"
"मैं पूर्व में महान तांग राजवंश द्वारा भगवान बुद्ध की पूजा करने और महान गर्जन मठ से शास्त्र लाने के लिए भेजा गया एक भिक्षु हूँ," संज़ंग ने उत्तर दिया। "अब जब मैं इस विशिष्ट स्थान पर पहुँच गया हूँ, तो मैं अपना पासपोर्ट जाँच करवाना और वापस पाना चाहता हूँ, इसीलिए मैं महामहिम से मिलने आया हूँ।" प्रोटोकॉल अधिकारी ने यह बात आगे पहुँचा दी, और राजकुमार वास्तव में एक प्रबुद्ध व्यक्ति थे, इसलिए उन्होंने तुरंत संज़ंग को बुलवाया।
संज़ंग ने राजकुमार के दरबार में प्रणाम किया और राजकुमार ने उन्हें अंदर आकर बैठने का निमंत्रण दिया। जब राजकुमार ने संज़ंग द्वारा दिए गए पासपोर्ट को पढ़ा और उस पर लगे अनेक देशों की मुहरें और हस्ताक्षर देखे, तो उन्होंने भी उस पर हस्ताक्षर कर दिए, उसे मोड़कर अपनी मेज पर रख दिया। उन्होंने कहा, "राष्ट्र के आदरणीय गुरु, आप महान तांग काल से यहाँ तक आने के रास्ते में अनेक देशों से होकर गुजरे हैं। आपकी यात्रा में कितना समय लगा?"
"मैंने दूरी का कोई रिकॉर्ड नहीं रखा है," संज़ंग ने कहा, "लेकिन कुछ साल पहले बोधिसत्व गुआनयिन मुझे दर्शन दिए और उन्होंने मुझे छंदों में एक संदेश दिया जिसमें कहा गया था कि यह मार्ग साठ हज़ार मील लंबा होगा। मैं अपनी यात्रा में चौदह सर्दियाँ और गर्मियाँ देख चुका हूँ।"
"इसका मतलब चौदह साल है," राजकुमार ने उत्तर दिया। "मुझे लगता है कि इस दौरान कई बार देरी हुई होगी।"
"उन सभी के बारे में बताना मुश्किल होगा," संज़ंग ने कहा। "हज़ारों राक्षस थे और मुझे नहीं पता कि यहाँ तक पहुँचने से पहले मुझे कितना कष्ट सहना पड़ा।" राजकुमार अपने आगंतुक से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपने रसोईघरों को उसके लिए शाकाहारी भोजन तैयार करने का आदेश दिया।
"महामहिम, मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि मेरे तीन शिष्य हैं," संज़ंग ने कहा। "वे बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं, इसलिए भोजन स्वीकार करके मैं अपनी यात्रा में देरी नहीं कर सकता।" इसके बाद राजकुमार ने अपने सहायकों को आदेश दिया कि वे तुरंत

बाहर जाकर पूज्य गुरु के तीनों शिष्यों को महल में भोजन के लिए आमंत्रित करें।
जब सहायक इस निमंत्रण के साथ बाहर गए तो उन्होंने कहा, "हम उन्हें नहीं देख सकते, हम उन्हें नहीं देख सकते।"
उनके एक कर्मचारी ने कहा, "छात्रावास में तीन बदसूरत भिक्षु बैठे हैं। ज़रूर वही होंगे।"
इसके बाद सहायक और उनके कर्मचारी छात्रावास गए, जहाँ उन्होंने प्रभारी लोगों से पूछा, "महान तांग के उस भिक्षु के कौन से शिष्य हैं जो शास्त्रों को लाने जा रहे हैं? महामहिम ने उन्हें भोजन पर आमंत्रित किया है।"
वहाँ ऊंघते हुए बैठे सुअर ने जैसे ही "भोजन" शब्द सुना, वह उछल पड़ा और चिल्लाया, "हम हैं, हम हैं!" यह देखकर महल के सेवकों की आत्माएं कांप उठीं और वे थरथराते हुए बोले, "एक सुअर राक्षस! एक सुअर राक्षस!"
यह सुनकर बंदर ने सुअर को पकड़ लिया और बोला, "भाई, थोड़ा सभ्य व्यवहार करो और इतना जंगली मत बनो।" जब अधिकारियों ने बंदर को देखा तो सबने कहा, "बंदर की आत्मा! बंदर की आत्मा!"
अध्याय 88
1232
पश्चिम की यात्रा
"डरने की कोई ज़रूरत नहीं है," साधु सैंड ने विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर अभिवादन करते हुए कहा। "हम सब तांग पुजारी के शिष्य हैं।"
"चूल्हे के देवता, चूल्हे के देवता!" अधिकारियों ने उन्हें देखकर यही प्रतिक्रिया दी। फिर बंदर ने सुअर को घोड़े का नेतृत्व करने और साधु रेत को डंडा कंधे पर उठाने के लिए कहा, क्योंकि वे अधिकारियों के कर्मचारियों के पीछे युहुआ के राजकुमार के महल में गए। सहायकों ने आगे जाकर उनका स्वागत किया।
जब राजकुमार ने ऊपर देखा और उनकी कुरूपता को पहचाना तो वह भी भयभीत हो गया। "महाराज, घबराइए मत," संजांग ने अपने हाथ छाती के सामने जोड़ते हुए कहा। "हालांकि मेरे ये शिष्य देखने में भद्दे हैं, लेकिन उनका हृदय अच्छा है।"
सुअर ने आदरपूर्वक एक आवाज निकाली और कहा, "आप कैसे हैं?" इससे राजकुमार और भी ज्यादा चिंतित हो गया।
"मेरे सभी अभद्र शिष्य वन और पर्वतों से आए हैं और उन्हें शिष्टाचार नहीं आता,"

संज़ंग ने समझाया, "इसलिए कृपया उन्हें क्षमा कर दीजिए।" अपने भय पर काबू पाते हुए, राजकुमार ने अपने रसोईघर के अधीक्षक को भिक्षुओं को गॉज़ मंडप में भोजन कराने के लिए कहा।

संज़ंग ने राजकुमार को धन्यवाद दिया, हॉल से नीचे उतरकर अपने शिष्यों के साथ मंडप की ओर बढ़े, फिर पिग पर बड़बड़ाते हुए बोले, "अरे मूर्ख, तुममें ज़रा भी तमीज़ नहीं है। अगर तुम चुप रहते तो ठीक था, लेकिन तुम्हें इतना बदतमीज़ क्यों होना पड़ा? तुम्हारी एक टिप्पणी ही पहाड़ गिराने के लिए काफी थी।"

"मैंने सम्मानसूचक मंत्र न बोलकर बेहतर किया," बंदर ने कहा, "और मैंने अपनी थोड़ी सी सांस भी बचा ली।"

"तुमने मंत्र का उच्चारण भी ठीक से नहीं किया," साधु सैंड ने सुअर से कहा। "सबसे पहले तो तुमने अपनी थूथन बाहर निकाली और दहाड़ मारी।"

"मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है," सुअर ने कहा। "परसों मालिक ने मुझसे कहा था कि किसी से मिलते समय शिष्टाचार के तौर पर 'आप कैसे हैं?' कहना चाहिए। मैंने आज ऐसा किया और आप मुझे गलत बता रहे हैं। आप मुझसे कैसा व्यवहार करने की उम्मीद करते हैं?"

“मैंने तुमसे कहा था कि लोगों से मिलते समय ‘आप कैसे हैं?’ कहो,” संजांग ने उत्तर दिया, “लेकिन किसी राजकुमार से मिलते समय खुद को इतना मूर्ख मत बनाओ। जैसा कि कहावत है, चीजें और लोग, दोनों ही श्रेणीबद्ध होते हैं। तुम सामाजिक स्तर के अंतर को क्यों नहीं समझ पाते?” जब वह ये बातें कह ही रहा था, तभी रसोई के अधीक्षक ने नौकरों को मेज-कुर्सियाँ लगाने और शाकाहारी भोजन परोसने के लिए बुलाया। फिर भिक्षुओं ने बातें करना बंद कर दिया और भोजन करने लगे।

जब राजकुमार महल के हॉल से अपने रहने के कमरे में लौटे तो उनके तीनों बेटों ने उनका पीला चेहरा देखा और पूछा, "आज आपको इतना डर किस बात से लगा है, पिताजी?"

“एक अत्यंत विलक्षण भिक्षु आए हैं,” राजकुमार ने उत्तर दिया। “उन्हें पूर्व में स्थित महान तांग राजवंश ने बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए भेजा है, और वे अपना पासपोर्ट दिखाने आए हैं। जब मैंने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया, तो उन्होंने बताया कि महल के बाहर उनके कुछ शिष्य हैं, इसलिए मैंने उन्हें अंदर बुलाया। थोड़ी देर बाद जब वे अंदर आए, तो उन्होंने मुझे प्रणाम नहीं किया, बल्कि केवल

इतना कहा, 'आप कैसे हैं?' यह काफी निराशाजनक था। फिर जब मैंने उन्हें देखा, तो पाया कि वे सभी राक्षसों की तरह बदसूरत थे, जिससे मुझे गहरा सदमा लगा। इसीलिए मेरा चेहरा पीला पड़ गया है।"

अब वे तीनों युवा राजकुमार साधारण लड़के नहीं थे। वे सभी मार्शल आर्ट के शौकीन थे, इसलिए उन्होंने अपने हाथ फैलाए, अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाईं और कहा, "वे पहाड़ों से आए दुष्ट आत्माएं ही होंगे जो अध्याय 88 के रूप में भेस बदलकर आए हैं।"

1233

पश्चिम की यात्रा

मनुष्यो। रुको, हम अपने हथियार लाते हैं और उनकी जांच कर लेते हैं।

हे शानदार राजकुमारो! सबसे बड़े राजकुमार ने माथे तक ऊंची छड़ी, दूसरे ने नौ दांतों वाला रेक और तीसरे ने काले रंग से रंगा हुआ डंडा पकड़ा हुआ था, और तीनों बड़े शौर्य और जोश के साथ महल से बाहर निकले, चिल्लाते हुए,

"यह भिक्षुओं द्वारा धर्मग्रंथ लाने की बात क्या है? वे कहाँ हैं?"

रसोई के अधीक्षक और घुटनों के बल बैठे अन्य लोगों ने उत्तर दिया, "युवा राजकुमार, वे जालीदार मंडप में भोजन कर रहे हैं।"

फिर युवा राजकुमार बिना सोचे-समझे सीधे अंदर घुस गए और चिल्लाते हुए बोले, "तुम इंसान हो या राक्षस? हमें तुरंत बताओ, हम तुम्हारी जान बख्श देंगे।"

इससे संजांग इतना भयभीत हो गया कि उसका चेहरा पीला पड़ गया, उसने अपना कटोरा गिरा दिया, उन्हें प्रणाम किया और उत्तर दिया, "मैं महान तांग से शास्त्र लेने आया हूँ। मैं मनुष्य हूँ, राक्षस नहीं।"

राजकुमारों ने कहा, "तुम देखने में तो काफी हद तक इंसान जैसे लगते हो, लेकिन वे तीनों बदसूरत तो पक्के राक्षस हैं।"

सुअर खाता रहा और उसने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया, जबकि साधु रेत और बंदर ने झुककर कहा, "हम सब इंसान हैं। हमारे चेहरे भले ही बदसूरत हों, लेकिन हमारे दिल अच्छे हैं, और हमारे शरीर भले ही भद्दे हों, लेकिन हमारा स्वभाव अच्छा है। तुम तीनों कहाँ से आए हो, और इतनी बेतुकी बातें क्यों कर रहे हो?"

"ये तीनों सज्जन महामहिम के पुत्र हैं," रसोई के अधीक्षक और मंडप के किनारे खड़े अन्य लोगों ने स्पष्ट किया।

"तो महाराज," सुअर ने अपना कटोरा नीचे फेंकते हुए कहा, "आप ये हथियार

किसलिए ले जा रहे हैं? क्या आप हमसे लड़ना चाहते हैं?"
दूसरे राजकुमार ने दोनों हाथों में अपना रेक लहराते हुए सुअर पर प्रहार करने के लिए आगे कदम बढ़ाया, जिस पर सुअर ने हंसते हुए कहा, "तुम्हारा यह रेक तो सिर्फ मेरे रेक के पोते के लायक है।" इतना कहकर उसने अपने कपड़े उतार दिए, अपनी कमरबंद से अपना रेक निकाला और उसे घुमाते हुए दस हजार सुनहरी रोशनी की किरणें निकालीं, फिर कुछ हरकतें कीं जिससे हजारों शुभ वाष्प के गुबार उठे। दूसरा राजकुमार इतना भयभीत हो गया कि उसके हाथ कांपने लगे, मांसपेशियां सुन्न पड़ गईं और उसमें और दिखावा करने की हिम्मत नहीं बची।
जब बंदर ने देखा कि युवा राजकुमारों में सबसे बड़ा राजकुमार माथे तक ऊँची छड़ी लेकर उछल-कूद कर रहा है, तो उसने अपने कान से सोने की पट्टी वाली लाठी निकाली और उसे हिलाकर कटोरे जितनी मोटी और बारह-तेरह फुट लंबी बना दी। उसे ज़मीन में गाड़कर उसने लगभग तीन फुट गहरा गड्ढा बनाया जिसमें लाठी सीधी खड़ी रही, फिर मुस्कुराते हुए बोला, "मैं तुम्हें यह लाठी दे रहा हूँ।"
जैसे ही राजकुमार ने यह सुना, उसने अपनी छड़ी नीचे फेंक दी और गदा उठाने के लिए आगे बढ़ा, पर उसने पूरी ताकत से उसे खींचा, फिर भी वह एक बाल बराबर भी नहीं हिली। फिर वह सीधा खड़ा हुआ और उसे हिलाया, पर ऐसा लगा जैसे वह जड़ जमा चुकी हो। इस पर तीसरा राजकुमार उग्र हो गया और अपनी काली रंगी गदा से हमला करने के लिए आगे बढ़ा। साधु सैंड ने वार से खुद को बचाया, फिर अपनी राक्षस-नाशक छड़ी निकाली और जैसे ही उसने उसे छुआ, उसमें से तेज रोशनी और चमकते रंगीन बादल निकले, जिससे रसोई के अधीक्षक और बाकी सभी लोग अवाक रह गए। तब तीनों युवा राजकुमारों ने प्रणाम करते हुए कहा, "हे दिव्य गुरु, हे दिव्य गुरु, हम जैसे साधारण मनुष्य आपको पहचान नहीं पाए। हम आपसे विनती करते हैं कि हमें अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करके दिखाएं।"
बंदर उनके पास गया, बड़ी आसानी से अपना डंडा उठाया और बोला, "यहाँ मेरे लिए अपना काम करने के लिए बहुत तंग जगह है। मैं ऑटो प्ले अराउंड में कूद रहा हूँ और आपको कुछ दिखाऊंगा।"
अध्याय 88
1234
पश्चिम की यात्रा

महान संत सीटी बजाते हुए कलाबाजी करते हुए ऊपर उठे और लगभग तीन सौ फीट की ऊंचाई पर, रंग-बिरंगे शुभ बादल पर खड़े हो गए। फिर वे ऊपर-नीचे और दाएं-बाएं घूमते हुए, अपने स्वर्ण-पट्टी वाले गदा से "फूलों से भरा छत्र" और "मुड़ता हुआ अजगर" का प्रदर्शन करने लगे। पहले तो वे और उनका गदा दोनों ऐसे गतिमान हुए मानो रेशमी वस्त्र पर फूल जड़े जा रहे हों, लेकिन बाद में वे अदृश्य हो गए क्योंकि पूरा आकाश घूमते हुए गदा से भर गया था।

नीचे से अपनी सहमति की गर्जना करते हुए सुअर शांत नहीं रह सका, और "मैं भी थोड़ा मज़ा लेने जा रहा हूँ!" की ज़ोरदार आवाज़ के साथ वह मूर्ख हवा के झोंके पर सवार होकर ऊपर उड़ गया और अपना रेक घुमाने लगा। वह तीन बार ऊपर, चार बार नीचे, पाँच बार बाईं ओर, छह बार दाईं ओर, सात बार आगे और आठ बार पीछे गया, जैसे वह अपने सभी ज्ञात करतब दिखा रहा हो, और हवा में एक भयंकर आंधी जैसी आवाज़ गूंज रही थी।

जब वह पूरी तरह से तैयार हो चुका था, तभी फ्रायर सैंड ने संजांग से कहा, "गुरुजी, मुझे भी ऊपर जाकर एक प्रदर्शन करने दीजिए।"

दोनों पैरों से हवा में उछलते हुए, तेजस्वी भिक्षु ने अपनी गदा को हवा में घुमाया, जो सुनहरी रोशनी से जगमगा रही थी। अपने दानव-वश में करने वाले डंडे को चलाते हुए, उन्होंने सूर्य का सामना करते लाल फीनिक्स और अपने शिकार को पकड़ते भूखे बाघ की तरह हमला किया, और अचानक आगे बढ़ने के लिए मुड़ते हुए समय रहते बचाव किया। तीनों शिष्य भाइयों ने अपनी जादुई शक्तियों का अत्यंत प्रभावशाली प्रदर्शन किया। यह वास्तव में अद्भुत था।

ध्यान की एक ऐसी छवि, जो आम तौर पर देखने को नहीं मिलती;
इस महान मार्ग के कारण ही संपूर्ण ब्रह्मांड व्याप्त हो गया।
धातु और लकड़ी अपनी शक्ति से धर्म जगत को परिपूर्ण कर देते हैं;
अमृत की एक चुटकी पूर्ण एकता उत्पन्न करती है।
इन जादुई योद्धाओं की गुणवत्ता अक्सर प्रदर्शित की जाती है;
उनके हथियारों की भव्यता की व्यापक रूप से प्रशंसा की जाती है।
भारत भले ही कितना भी महान क्यों न हो,
युहुआ के राजकुमार अब केंद्रीय सत्य की ओर लौटते हैं।

यह सब देखकर तीनों युवा राजकुमार इतने भयभीत हो गए कि वे धूल में घुटने

टेककर गिर पड़े; और गॉज़ पवेलियन के सभी कर्मचारी, उच्च और निम्न, अपने महल में वरिष्ठ राजकुमार सहित, सभी सैनिक, नागरिक, पुरुष और महिलाएं, बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियां, ताओवादी पुरोहित, आम लोग—वास्तव में सभी—बुद्ध का आह्वान करने लगे, प्रणाम करने लगे, अगरबत्ती जलाने लगे और पूजा करने लगे। सचमुच: सभी भिक्षुओं ने वास्तविक मूर्तियों को देखते ही अपना धर्म परिवर्तन कर लिया। मानवजाति के लिए आशीर्वाद और शांति के आनंद लाना।

यहीं से ज्ञानोदय के मार्ग पर उपलब्धि प्राप्त हुई; अध्याय 88

सभी ने ध्यान में भाग लिया और बुद्ध की पूजा की।

जब उन तीनों ने अपनी वीरतापूर्ण शक्तियों का प्रदर्शन कर दिया, तो उन्होंने अपने शुभ बादलों को जमीन पर उतारा, अपने हथियार रख दिए, तांग पुजारी के प्रति श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़े, उन्हें धन्यवाद दिया और फिर से अपने-अपने स्थानों पर बैठ गए। तीनों युवा राजकुमार महल में वापस दौड़े और अपने पिता को खबर दी, "पिताजी, आज एक बहुत ही अद्भुत घटना घटी है। आज का दिन बहुत ही सफल रहा। क्या आपने अभी आकाश में वह प्रदर्शन देखा?"

“कुछ देर पहले जब मैंने आकाश में रंगीन बादलों को चमकते देखा, तो मैंने, तुम्हारी माँ ने और महल के भीतरी हिस्से में मौजूद सभी लोगों ने अगरबत्ती जलाकर पूजा-अर्चना की,” उनके पिता, राजकुमार ने उत्तर दिया। “मुझे नहीं पता कि वहाँ एकत्रित हुए देवता या अमर प्राणी कहाँ से आए थे।”

"वे कहीं और से आए हुए देवता या अमर प्राणी नहीं थे," युवा राजकुमार ने कहा। "वे उस भिक्षु के तीन भयानक शिष्य थे जो धर्मग्रंथ लाने जा रहा था। उनमें से एक सोने की पट्टी वाली लोहे की गदा का इस्तेमाल करता है, एक नौ दांतों वाला डंडा और एक राक्षस-नाशक छड़ी, ये सभी बिल्कुल हमारे तीन हथियारों के समान हैं।"

जब हमने उनसे प्रदर्शन करने का अनुरोध किया, तो उन्होंने कहा कि यहाँ बहुत कम जगह है, इसलिए वे आकाश में जाकर प्रदर्शन करेंगे। फिर वे सभी बादलों पर सवार होकर आकाश को शुभ बादलों और वाष्पों से भर दिया। वे अभी कुछ देर पहले ही नीचे आए हैं और अब वे गॉज़ पवेलियन में बैठे हैं। हम सभी उनसे बहुत प्रभावित हैं और हम उन्हें अपना गुरु बनाना चाहते हैं और देश की रक्षा के लिए उनसे कौशल

सीखना चाहते हैं। यह वास्तव में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। महाराज, इस बारे में आपका क्या विचार है? जब उनके पिता, राजकुमार ने यह सुना, तो वे आश्वस्त हो गए और सहमत हो गए।

पिता और पुत्र फिर सीधे गॉज़ पवेलियन की ओर चल पड़े, रथ के बजाय पैदल ही, और बिना किसी छाते के। चारों यात्रियों ने अपना सामान पैक कर लिया था और भोजन के लिए राजकुमार को धन्यवाद देने और अपनी यात्रा फिर से शुरू करने के लिए महल जाने ही वाले थे कि उन्होंने युहुआ के राजकुमार और उनके पुत्रों को पवेलियन में आते और उनके सामने प्रणाम करते देखा। आदरणीय बुजुर्ग ने तुरंत उठकर शिष्टाचार का जवाब देते हुए स्वयं भी प्रणाम किया, जबकि बंदर और बाकी लोग व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ एक तरफ हट गए। प्रणाम समाप्त होने पर चारों यात्री महल में आमंत्रित किए जाने पर प्रसन्न हुए और सम्मान के पदों पर बैठ गए।

तब वरिष्ठ राजकुमार उठे और बोले, "तांग गुरु, मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ, लेकिन मुझे नहीं पता कि आपके तीनों प्रख्यात शिष्य इसे स्वीकार करेंगे या नहीं।"

"मेरे शिष्य आपके द्वारा दिए गए किसी भी निर्देश का पालन करेंगे," संजांग ने उत्तर दिया।

“जब मैंने पहली बार आप दोनों को देखा,” राजकुमार ने कहा, “तो मैंने आपको दूर के तांग राजवंश से आए तीर्थयात्री भिक्षु समझा था, और क्योंकि मैं एक साधारण मनुष्य हूँ और मेरी आँखें नश्वर हैं, इसलिए मैंने आपके साथ बहुत ही लापरवाही भरा व्यवहार किया। जब मैंने गुरु सन, गुरु झू और गुरु सैंड को आकाश में चक्कर लगाते देखा, तब मुझे एहसास हुआ कि आप अमर और बुद्ध हैं। मेरे तीनों अभागे पुत्रों को जीवन भर मार्शल आर्ट से प्रेम रहा है और अब वे पूरी श्रद्धा से आपके शिष्य बनना चाहते हैं और आपसे कुछ कौशल सीखना चाहते हैं। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपने हृदय की महानता से मेरे पुत्रों के उद्धार के लिए सहमत हों। मैं आपको शहर की सारी संपत्ति से पुरस्कृत करूँगा।”

जब बंदर भाई ने यह सुना तो वह हँसे बिना नहीं रह सका और बोला, "महाराज, आप सचमुच नहीं समझते। भिक्षु होने के नाते हमें शिष्य पाकर बहुत खुशी होती है, और आपके उत्तम पुत्रों का हृदय सदाचार में लगा हुआ है। लेकिन आपको भौतिक लाभों की बात नहीं करनी चाहिए। जब तक वे हमारे साथ अच्छे से रह सकते हैं, हम..."

(अध्याय 88)

"उनका ख्याल रखना।" यह सुनकर राजकुमार प्रसन्न हुए और उन्होंने महल के मुख्य हॉल में एक भव्य भोज का आदेश दिया। यह आश्चर्यजनक था: आदेश देते ही सब कुछ तैयार हो गया। जो कुछ दिखाई दे रहा था वह यह था: लहराते रेशमी आभूषण,
गहरे रंग का सुगंधित अगरबत्ती का धुआँ।
सोने की जड़ाई वाली मेजें जिन पर रेशम की गांठों से बने पर्दे लटके हुए थे,
आँखों को चकाचौंध कर देने वाला;
वार्निश की हुई कुर्सियाँ जिन पर ब्रोकेड के कुशन लगे हों,
जिससे वे और भी शानदार बन जाते हैं।
ताजा फल,
सुगंधित चाय।
शुद्ध मिठाई के तीन या चार व्यंजन,
एक या दो सर्विंग स्वादिष्ट और शुद्ध ब्रेडरोल।
कुरकुरे भाप में पके हुए हनीकेक तो और भी लाजवाब थे;
तली हुई मिठाइयाँ सचमुच बहुत स्वादिष्ट थीं।
वहाँ हल्के चावल की शराब के घड़े थे।
जब इसे पानी में डाला जाता है तो यह अमृत से भी बेहतर होता है;
अमर लोगों के लिए उपयुक्त यांगज़ियान चाय की परोसी जाने वाली मात्रा।
हाथों में पकड़ने पर यह कैसिया से भी अधिक सुगंधित होता है।
यहां हर संभव व्यंजन उपलब्ध कराया जाता है;
जो कुछ भी पेश किया जाता है वह उत्कृष्ट है।
इस बीच, उनके मनोरंजन के लिए गायन, नृत्य, वाद्य संगीत, कलाबाजी और ओपेरा का आयोजन किया गया। गुरु, शिष्य, राजकुमार और उनके पुत्रों ने आनंदमय दिन बिताया और रात होते ही वे सब चले गए। राजकुमारों ने मंडप में पलंग और पर्दे लगवाए और अपने गुरुओं को रात के लिए आराम करने को कहा; अगली सुबह वे श्रद्धापूर्वक धूप जलाएंगे और उनसे फिर से मिलने आएंगे और उन्हें युद्ध कौशल सिखाने का अनुरोध करेंगे। इन आदेशों का पालन किया गया और यात्रियों के स्नान के लिए गर्म, सुगंधित जल लाया गया, जिसके बाद सभी लोग सो गए। उस समय

अध्याय 88

1237

पश्चिम की यात्रा

पक्षी ऊंचे पेड़ों पर बैठे थे और चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था;
कवि अपने सोफे से नीचे उतरकर अपना मंत्रोच्चार समाप्त करने लगा।
आकाशगंगा का प्रकाश अब आकाश में फैल गया था।
और झाड़ियों से भरे रास्ते के किनारे घास और भी घनी हो गई।
दूसरे आंगन से कपड़े धोने की छड़ी की आवाज आई;
दूर स्थित पहाड़ों और दर्रों को देखकर घर की याद सताने लगती थी।
झींगुरों की चहचहाहट ने लोगों की भावनाओं को व्यक्त किया।
बिस्तर के पास चहचहाहट की आवाज से सपनों में खलल पड़ा।

यह उस रात का वर्णन है। अगली सुबह राजकुमार और उनके तीनों बेटे फिर से उस आदरणीय बुजुर्ग से मिलने आए। पिछले दिन उन्होंने राजकुमारों के योग्य शिष्टाचार के साथ एक-दूसरे का अभिवादन किया था, लेकिन आज का अभिवादन शिक्षकों के योग्य था।

तीनों युवा राजकुमारों ने बंदर, सुअर और साधु रेत के सामने सिर झुकाया और फिर झुककर पूछा, "आदरणीय गुरुजनों, क्या आप अपने शिष्यों को अपने हथियार देखने देंगे?" सुअर ने यह अनुरोध सुनते ही खुशी से अपना लोहे का रेक निकाला और उसे ज़मीन पर फेंक दिया, जबकि साधु रेत ने अपनी लाठी दीवार पर दे मारी। दूसरे और तीसरे युवा राजकुमार उन्हें उठाने के लिए उछल पड़े, लेकिन वे मानो किसी पत्थर के खंभे को हिलाने की कोशिश कर रही मक्खियों की तरह थे: दोनों ने इतनी मेहनत की कि उनके चेहरे लाल हो गए, फिर भी हथियार ज़रा भी नहीं हिले। जब उनके बड़े भाई ने यह देखा तो उन्होंने कहा, "भाइयों, अपनी मेहनत व्यर्थ मत करो। हमारे गुरुओं के सभी हथियार जादुई हैं। भगवान ही जाने वे कितने भारी होंगे।"

"मेरा रेक इतना भारी नहीं है," पिग ने मुस्कुराते हुए कहा। "इसका वजन केवल कुछ टन है—हैंडल सहित 5,048 पाउंड।"

फिर तीसरे राजकुमार ने साधु सैंड से पूछा कि उनकी छड़ी का वजन कितना है। साधु सैंड ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "इसका वजन भी 5,048 पाउंड है।"

फिर युवा राजकुमारों में सबसे बड़े ने भाई बंदर से सोने की पट्टी वाली गदा दिखाने को

कहा। बंदर ने अपने कान से सुई निकाली, उसे हवा में हिलाकर चावल के कटोरे जितनी मोटी कर दी, और उसे अपने सामने ज़मीन पर सीधा खड़ा कर दिया, जिससे सभी राजकुमार और अधिकारी घबरा गए। तीनों युवा राजकुमारों ने फिर से प्रणाम किया और कहा, "गुरु झू और गुरु सैंड अपने हथियार अपने कपड़ों के नीचे रखते हैं जहाँ से वे उन्हें निकाल सकते हैं। गुरु सन, आप अपनी सुई कान से क्यों निकालते हैं? आप उसे हवा में कैसे बढ़ाते हैं?"

"तुम्हें यह एहसास नहीं होगा कि यह कोई साधारण नश्वर वस्तु नहीं है," बंदर ने जवाब दिया।

"जब अराजकता पहली बार छंट गई, तब लोहा ढाला गया।"

यू द ग्रेट ने यह काम स्वयं करवाया था।

अध्याय 88

1238

पश्चिम की यात्रा

जब उन्होंने नदियों, झीलों और समुद्रों की गहराइयों को एकीकृत किया

इस लाठी का इस्तेमाल नापने की छड़ी के रूप में किया जाता था।

पर्वतों और समुद्रों के व्यवस्थित होने के बाद समृद्धि आई।

यह पूर्वी महासागर के द्वार तक तैरता हुआ पहुंचा।

वर्षों बीतने के साथ-साथ इससे एक रंगीन चमक निकलने लगी।

सिकुड़ना, बढ़ना और शुद्ध प्रकाश से चमकना सीख लिया।

इस छड़ी को वापस पाना मेरी नियति थी।

जब मैं मंत्र बोलता हूँ तो यह लगातार बदलता रहता है।

जब मैं इसे बढ़ने के लिए कहता हूं तो यह ब्रह्मांड को भर देता है।

लेकिन यह सुई की नोक जितना छोटा भी हो सकता है।

इसे ऐज़-यू-विल के नाम से जाना जाता है और इसे गोल्ड-बैंडेड कहा जाता है;

स्वर्ग में और पृथ्वी पर यह बिल्कुल अनोखा है।

इसका वजन तेरह हजार पांच सौ पाउंड है;

चाहे यह गाढ़ा हो या पतला, यह जीवन या मृत्यु ला सकता है।

एक बार इसने मुझे स्वर्ग में तबाही मचाने में मदद की थी।

और जब मैंने पाताल लोक पर हमला किया तो उन्होंने भी हिस्सा लिया।

यह ड्रैगन और बाघों को वश में करने में हमेशा सफल रहता है।
हर जगह राक्षसों और दानवों का सफाया हो जाता है।
यदि यह ऊपर की ओर इंगित करता है तो सूर्य अंधकारमय हो जाता है;
स्वर्ग, पृथ्वी, देवता, शैतान, सब भयभीत हैं।
समय की उत्पत्ति से ही जादू के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता आ रहा है, यह कोई साधारण लोहे का टुकड़ा नहीं है।"
जब युवा राजकुमारों ने यह सुना तो वे सभी लगातार प्रणाम करने लगे, बार-बार सिर झुकाकर मार्गदर्शन के लिए विनती करने लगे।
"तुम तीनों कौन-कौन से युद्ध कौशल सीखना चाहते हो?" बंदर ने पूछा।
अध्याय 88
1239
पश्चिम की यात्रा
युवा राजकुमारों ने उत्तर दिया, "हममें से जो छड़ी का उपयोग करता है, वह उसे सीखना चाहता है; जो रेक से लड़ता है, वह रेक चलाना सीखना चाहता है; और लाठी चलाने वाला लाठी चलाना सीखना चाहता है।"
बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "सिर्फ इसलिए कि तुम सब हमारे हथियार चलाने के लिए बहुत कमजोर हो, तुम उन्हें सीख नहीं पाओगे। 'एक खराब तरीके से बनाया गया बाघ कुत्ते जैसा दिखता है।' पुराने जमाने में कहा जाता था, 'अगर शिक्षा सख्त न हो तो शिक्षक आलसी है; अगर छात्र न सीखे तो यह उसकी अपनी गलती है।' अगर तुम सचमुच गंभीर हो तो बेहतर होगा कि तुम अगरबत्ती जलाओ और स्वर्ग-पृथ्वी को प्रणाम करो। मैं तुम्हें युद्ध सिखाने से पहले कुछ जादुई शक्ति दूंगा।"
तीनों युवा राजकुमार यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और तुरंत एक धूपदानी लेकर आए, अपने हाथ धोए, अगरबत्ती जलाई और स्वर्ग को प्रणाम किया। इसके बाद उन्होंने अपने गुरुओं से मार्गदर्शन मांगा।
बंदर नीचे उतरा और तांग पुजारी को प्रणाम करते हुए बोला, "हे आदरणीय गुरुदेव, कृपया अपने शिष्य को क्षमा करें। आपने अपनी कृपा से मुझे द्विसीमा पर्वत पर बचाया था और मैं बौद्ध बन गया था, तब से हम पश्चिम की ओर यात्रा कर रहे हैं। हालाँकि मैंने आपकी कृपा का कोई बड़ा प्रतिफल नहीं दिया, फिर भी मैंने कई नदियाँ और पर्वत पार किए हैं और अपनी ओर से हर संभव प्रयास किया है। अब जब हम बुद्ध की इस

भूमि पर आ गए हैं और इन तीन युवा राजकुमारों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, तो उन्होंने हमें मार्शल आर्ट का अपना शिक्षक बना लिया है। हमारे शिष्य होने के नाते, वे आपके शिष्यों के शिष्य होंगे, इसलिए हे गुरुदेव, मैं आपसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि हमें उन्हें प्रशिक्षण देने की अनुमति दें।"

संज़ंग बहुत प्रसन्न हुआ, और जब सुअर और साधु सैंड ने बंदर को उसके सामने झुकते देखा तो उन्होंने भी प्रणाम किया और कहा, "गुरुजी, हम मूर्ख हैं और शब्दों के साथ इतने अनाड़ी हैं कि चीजों को ठीक से समझा नहीं सकते। कृपया अपना धर्म आसन ग्रहण करें और हममें से प्रत्येक को एक शिष्य दें। यह मजेदार होगा, और पश्चिम की हमारी यात्रा की याद दिलाएगा।"

संजांग इस बात से सहमत होकर खुश था।

इसके बाद बंदर तीनों युवा राजकुमारों को मंडप के पीछे एक शांत कमरे में ले गया, जहाँ उसने सप्तम नक्षत्र का एक तारा-चार्ट बनाया और उनसे कहा कि वे अपनी आँखें बंद करके और अपने मन को शांत करते हुए उसके अंदर लेट जाएँ।

इसी बीच उसने चुपचाप मंत्रोच्चार किया, एक मंत्र पढ़ा और उन तीनों के हृदयों में जादुई श्वास फूँकी। उसने उनकी आदिम आत्माओं को उनके मूल स्थान पर लौटा दिया, उन्हें जादुई मंत्र सिखाए, उनमें से प्रत्येक को अपार शक्ति प्रदान की, उचित ऊष्मा का प्रयोग किया और एक ऐसा जादू किया जिससे उनके पुराने शरीर और हड्डियाँ नए शरीर और हड्डियों से बदल गईं। जब ऊष्मा उनके शरीरों में चारों ओर फैल गई, तो तीनों युवा राजकुमार होश में आए, खड़े हुए, अपने चेहरे मले, अपनी आत्माओं को जगाया और पाया कि वे पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो गए हैं। उनमें से सबसे बड़ा सोने की पट्टी वाली गदा उठा सकता था, दूसरा नौ दाँतों वाला रेक चला सकता था और तीसरा राक्षस-नाशक छड़ी उठा सकता था।

यह देखकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों के लिए एक और शाकाहारी भोज का आयोजन किया। भोज के सामने प्रत्येक राजकुमार को उसकी अपनी कला सिखाई गई: छड़ी सीखने वाले ने छड़ी का अभ्यास किया, रेक सीखने वाले ने रेक का अभ्यास किया और लाठी सीखने वाले ने लाठी का अभ्यास किया। यद्यपि युवा राजकुमार कुछ चालें और व्यायाम करने में सफल रहे, लेकिन इसमें बहुत मेहनत लगी और लगातार अभ्यास करने से उनकी सांस फूलने लगी, जिसके कारण वे आगे नहीं बढ़ सके। इसके अलावा, उनके हथियारों में रूपांतर की

शक्ति थी, जिसके कारण राजकुमारों के आगे बढ़ने, पीछे हटने, आक्रमण करने और हथियार उठाने पर हथियार अपने आप सिकुड़ते, बढ़ते और आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तित होते रहे। लेकिन राजकुमार अंततः मनुष्य ही थे और अपने हथियारों की गति का मुकाबला नहीं कर सके। उसी दिन बाद में भोज समाप्त हो गया।

अगले दिन तीनों राजकुमार एक बार फिर धन्यवाद व्यक्त करने और यह कहने के लिए वापस आए, "हे दिव्य गुरुओं, हमें यह शक्ति प्रदान करने के लिए हम आपके बहुत आभारी हैं, लेकिन जब हम आपके दिव्य हथियारों को घुमाने का प्रयास करते हैं तो उन्हें घुमाना हमारे लिए बड़ी मुश्किल हो जाती है। हम लोहारों से इनकी हल्की प्रतियां बनवाना चाहते हैं, लेकिन हमें नहीं पता कि आप इसके लिए सहमत होंगे या नहीं, गुरुओं।"

अध्याय 88

1240

पश्चिम की यात्रा

“वाह वाह,” सुअर ने कहा। “बात करने का यही तरीका है। तुम्हें अपने हथियार खुद बनवाने चाहिए क्योंकि तुम हमारे हथियार इस्तेमाल नहीं कर सकते, और वैसे भी हमें धर्म की रक्षा करने और राक्षसों को हराने के लिए इनकी ज़रूरत है।” तब राजकुमारों ने लोहारों को बुलवाया, जिन्होंने दस हज़ार पौंड लोहा और इस्पात खरीदा, राजकुमार के महल के सामने वाले आँगन में भट्टी के साथ एक कार्यशाला स्थापित की और हथियार बनाने का काम शुरू कर दिया। पहले दिन इस्पात तैयार हो गया, और दूसरे दिन बंदर और बाकी दो को अपने सोने की पट्टी वाले डंडे, नौ दाँतों वाले रेक और राक्षस-नाशक लाठी को बाहर लाने और चटाई के नीचे नकल के लिए रखने को कहा गया। काम दिन-रात बिना रुके चलता रहा।

ये हथियार उनके लिए अनमोल धरोहर थे, जिन्हें वे हमेशा अपने साथ रखते थे और एक पल के लिए भी उनसे अलग नहीं हो सकते थे। आम तौर पर वे इन्हें अपने शरीर में छुपा कर रखते थे। अब इन हथियारों को रंगीन प्रकाश से सुरक्षित कर दिया गया था, जिससे जब इन्हें कार्यशाला के आंगन में कई दिनों तक रखा गया, तो प्रकाश की कई किरणें आकाश तक पहुंचीं और पृथ्वी पर हर प्रकार की शुभ वाष्प छा गई। उस रात, एक दुष्ट आत्मा, जो शहर से लगभग पच्चीस मील दूर स्थित माउंट लेपर्ड हेड नामक पर्वत पर टाइगरमाउथ गुफा नामक गुफा में रात की पहरेदारी कर रही थी, ने

उस चमक और शुभ वाष्प को देखा।
जांच करने के लिए अपने बादल पर सवार होकर वह ऊपर गया और उसने देखा कि प्रकाश शहर से आ रहा है, जिसके बाद उसने अपना बादल नीचे उतारा और बेहतर ढंग से देखने के लिए पास गया। यह देखकर कि प्रकाश हथियारों से आ रहा है, वह प्रसन्नता और लालसा से भर उठा, "कितने अद्भुत हथियार हैं, कितने शानदार खजाने हैं। मुझे आश्चर्य है कि ये किसके हैं और इन्हें यहाँ क्यों छोड़ा गया है। यह मेरा सुनहरा अवसर होना चाहिए। मैं इन्हें ले लूँगा, मैं इन्हें ले लूँगा।" उसकी लालसा अब और बढ़ गई, उसने एक शक्तिशाली हवा उत्पन्न की, तीनों हथियारों को उठा लिया और उन्हें अपनी गुफा में वापस ले गया। वास्तव में: मार्ग को एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ा जाना चाहिए;
जो बचा रह सकता है वह सच्चा मार्ग नहीं है।
साधना और समाधि दोनों व्यर्थ होंगी
जब ईश्वरीय शस्त्र छीन लिए गए हों।
अगर आपको नहीं पता कि ये हथियार कैसे मिले, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 89
भूरे शेर की आत्मा ने व्यर्थ में अय्याशी की दावत का आयोजन किया
माउंट लेपर्ड हेड पर धातु, लकड़ी और मिट्टी ने तबाही मचा दी है।
कहानी बताती है कि कई दिनों की कड़ी मेहनत के बाद उस रात सभी लोहार सो गए, लेकिन भोर होते ही जब वे दोबारा काम शुरू करने के लिए उठे तो उन्होंने पाया कि चटाई से बने आश्रय के नीचे से तीनों हथियार गायब हो गए थे।
भयभीत होकर वे उन्हें हर जगह खोजने लगे, और जब तीनों युवा राजकुमार भीतरी कक्ष से बाहर देखने आए, तो सभी लोहारों ने उनके सामने सिर झुकाकर कहा, "युवा स्वामियों, हमें नहीं पता कि दिव्य गुरुओं के तीनों हथियार कहाँ चले गए हैं।"
जब युवा राजकुमारों ने यह खबर सुनी तो वे कांप उठे और बोले, "हमें लगता है कि हमारे स्वामियों ने उन्हें कल रात कहीं छिपा दिया होगा।" वे दौड़कर गॉज़ पवेलियन पहुंचे, जहाँ उन्होंने देखा कि सफेद घोड़ा अभी भी गलियारे में बंधा हुआ है और वे चिल्लाए बिना नहीं रह सके, "गुरुजी, क्या आप अभी भी सो रहे हैं?"
अध्याय 89

"हम उठ गए हैं," फ्रायर सैंड ने जवाब दिया और युवा राजकुमारों को अंदर आने देने के लिए उनके कमरे का दरवाजा खोल दिया।
जब उन्होंने देखा कि हथियार वहां नहीं हैं, तो उन्होंने घबराकर पूछा, "मालिकों, क्या आपने अपने हथियार रख दिए हैं?"
"नहीं," बंदर उछलते हुए बोला।
राजकुमारों ने बताया, "तीनों हथियार रात के दौरान गायब हो गए।"
"क्या मेरा रेक अभी भी वहीं है?" पिग ने उठते हुए पूछा।
“अभी थोड़ी देर पहले जब हम बाहर आए तो हमने देखा कि सब लोग उन्हें ढूंढ रहे थे,” राजकुमारों ने उत्तर दिया। “जब उन्हें वे नहीं मिले तो हमें लगा कि शायद आपने उन्हें कहीं छिपा दिया है, इसीलिए हम पूछने आए हैं। क्योंकि आपके खजाने घट या बढ़ सकते हैं, हमें लगता है कि शायद आपने उन्हें अपने आसपास छिपाकर हम पर चाल चली है।”
"सच कहूं तो, हमने नहीं ढूंढा है," मंकी ने कहा। "चलो हम सब मिलकर खोज शुरू करते हैं।"
जब वे आंगन में बने चटाई वाले आश्रय में गए और देखा कि वहाँ हथियारों का कोई निशान नहीं है, तो पिग ने कहा, "तुम लोहारों ने इन्हें चुरा लिया होगा। इन्हें तुरंत बाहर लाओ। अभी लाओ वरना मैं तुम्हें मार डालूँगा। मैं तुम्हें मार डालूँगा, मैं कहता हूँ।"
लोहारों ने गिड़गिड़ाते हुए घुटने टेके और रोते हुए कहा, "महामहिम, हम कल रात इसलिए सो गए थे क्योंकि हम कई दिनों से लगातार काम कर रहे थे। जब हम आज सुबह उठे तो वे जा चुके थे। हम तो साधारण मनुष्य हैं। हम उन्हें हिला भी नहीं सकते थे। कृपया हमारी जान बख्श दें, महाराज, हमारी जान बख्श दें।"
बंदर ने बड़े अफसोस के साथ कहा, "यह हमारी गलती है। उन्हें नकल करने के लिए दिखाने के बाद हमें उन्हें वहीं पड़े रहने देने के बजाय अपने पास रखना चाहिए था। मुझे लगता है कि हमारे खजानों के चमकते बादलों और रोशनी ने किसी राक्षस को सचेत कर दिया होगा जो रात में आया और उन्हें चुरा ले गया।"
“बकवास है भाई,” सुअर ने जवाब दिया। “यह एक शांत, व्यवस्थित जगह है, कोई जंगली या पहाड़ी इलाका नहीं। यहाँ कोई राक्षस आ ही नहीं सकता। मुझे यकीन है

कि हमारे हथियार उन दुष्ट लोहारों ने चुराए हैं। उन्हें उनमें से निकलने वाली रोशनी से पता चल गया होगा कि वे खजाने हैं। वे कल रात महल से निकले होंगे और अपने साथ एक गिरोह बनाकर उन्हें घसीटकर लाए होंगे। उन्हें यहाँ लाओ! मैं उन्हें मारूंगा।" लोहारों ने सिर झुकाया और अपनी बेगुनाही की कसम खाई।

इस सारी अफरा-तफरी के बीच वरिष्ठ राजकुमार बाहर आए, और जब उन्होंने पूछा कि क्या हुआ है, तो उनके चेहरे का रंग भी उड़ गया। कुछ देर तक धीमी आवाज़ में खुद से कुछ बुदबुदाने के बाद उन्होंने कहा, "हे दिव्य गुरुओं, आपके हथियार साधारण मनुष्यों के हथियार नहीं थे। सौ या उससे भी अधिक लोग होते तो भी वे उन्हें हिला नहीं पाते। इसके अलावा, मेरा परिवार पाँच पीढ़ियों से इस नगर पर शासन कर रहा है। मैं शेखी नहीं बघार रहा हूँ, लेकिन मेरी एक अच्छे इंसान के रूप में प्रतिष्ठा है। यहाँ रहने वाले सैनिक, नागरिक और कारीगर मेरे कानूनों से डरते हैं, और मुझे पूरा विश्वास है कि वे कभी भी ऐसा दुष्ट विचार नहीं कर सकते थे। मुझे आशा है कि आप दिव्य गुरु इस पर पुनर्विचार करेंगे।"

"अब इसके बारे में और सोचने की ज़रूरत नहीं है," बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "और लोहारों को उस चीज़ के लिए सज़ा देने की भी ज़रूरत नहीं है जो उनकी गलती नहीं है। मैं महाराज से पूछना चाहता हूँ कि क्या शहर के आसपास के पहाड़ों और जंगलों में कोई दुष्ट राक्षस हैं?"

“यह तो बहुत अच्छा सवाल है,” राजकुमार ने उत्तर दिया। “शहर के उत्तर में एक पहाड़ है जिसे माउंट लेपर्ड हेड कहते हैं, और उसमें टाइगरमाउथ गुफा है। लोग अक्सर कहते हैं कि वहाँ अमर प्राणी, या बाघ और भेड़िये, या बुरी आत्माएँ रहती हैं। चूंकि मैं सच्चाई जानने के लिए कभी वहाँ नहीं गया, इसलिए मुझे पक्का नहीं पता कि वहाँ किस तरह के जीव रहते हैं।”

अध्याय 89

1242

पश्चिम की यात्रा

“अब और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं,” बंदर ने हंसते हुए जवाब दिया। “ज़रूर कोई दुष्ट व्यक्ति होगा जो जानता था कि ये खजाने हैं और रात में इन्हें चुराने आया होगा। सुअर, साधु सैंड,” उसने आदेश दिया, “मालिक और शहर की रखवाली के लिए यहीं रुको, मैं चारों ओर देखने जाता हूँ।” फिर उसने लोहारों को भट्टी जलाए रखने और नए

हथियार बनाने का काम जारी रखने को कहा।
शानदार बंदर राजा ने संज़ंग से विदा ली और सीटी बजाते हुए आँखों से ओझल हो गए। जल्द ही वे माउंट लेपर्ड हेड पर पहुँच गए, जो शहर से केवल दस मील की दूरी पर था, इसलिए वहाँ पहुँचने में उन्हें एक पल भी नहीं लगा। जैसे ही वे शिखर पर चढ़कर चारों ओर देखने लगे, उन्होंने पाया कि वहाँ बुराई का साया छाया हुआ था। वास्तव में, यह पहाड़ियों की एक लंबी, अजगरनुमा श्रृंखला थी।
एक शक्तिशाली संरचना।
आकाश में उभरी नुकीली चोटियाँ,
गहरी दरारों के साथ-साथ तेज़ गति से बहती धाराएँ।
पहाड़ के सामने दुर्लभ पौधों के गुच्छे उगते हैं;
पहाड़ के पीछे विचित्र फूल रेशमी वस्त्र की तरह दिखते हैं।
ऊंचे देवदार के पेड़ और प्राचीन सरू के पेड़,
पुराने पेड़ों में बांस ढूंढें।
कौवे और मैना उड़ते समय गाते हैं।
सारस पुकारते हैं और गिब्बन चीखते हैं।
भृंग के निशान के नीचे
डेविड के हिरण दो-दो के समूह में चलते हैं;
सामने खड़ी चट्टान के मुखौटे पर
ये बेजर और लोमड़ियों के जोड़े हैं।
दूर से कुछ क्षणों के लिए पानी से ड्रैगन निकलते हुए दिखाई देते हैं।
जमीन के बहुत नीचे बहने वाली उस घुमावदार धारा के बारे में।
यह पर्वत श्रृंखला युहुआ के बिल्कुल किनारे तक फैली हुई है।
एक ऐसा स्थान जो हजारों युगों से सौंदर्य का केंद्र रहा है।
जैसे ही वह दृश्य का जायजा ले रहा था, बंदर ने पहाड़ के दूसरी ओर से कुछ आवाजें सुनीं, वह तुरंत मुड़कर देखने लगा और उसने देखा कि भेड़ियों के सिर वाले दो राक्षस उत्तर-पश्चिम की ओर चढ़ रहे थे और जोर-जोर से बातें कर रहे थे (अध्याय 89)।

गए थे।

"पहाड़ पर गश्त लगा रहे राक्षस ही होंगे," बंदर ने अनुमान लगाया। "मैं उनकी बातें सुनने जा रहा हूँ।"
अपने हाथों से जादू करते हुए और मंत्र के शब्द बोलते हुए, बंदर ने खुद को झटका दिया, तितली में बदल गया, अपने पंख फैलाए और उनके पीछे फड़फड़ाने लगा। यह एक बहुत ही सजीव रूपांतरण था: पाउडर जैसे पंखों का एक जोड़ा,
चांदी के दो एंटीना।
हवा में यह बहुत तेजी से उड़ता है;
धूप में यह एक इत्मीनान से नाचने वाले की तरह लगता है।
यह पलक झपकते ही नदियों और दीवारों को पार कर जाता है।
उसे सुगंध चुराना और कैटकिन्स के साथ खेलना अच्छा लगता है।
इस नाज़ुक प्राणी को ताज़े फूलों का स्वाद बहुत पसंद होता है।
यह अपनी सुंदरता और भव्यता को इच्छानुसार प्रदर्शित करता है।
वह उड़कर दुष्ट आत्माओं के सिर के ठीक ऊपर एक स्थान पर पहुंचा, जहां वह तैरता रहा और उनकी बातें सुनता रहा।
"भाई," उनमें से एक अचानक चिल्लाया, "हमारे सरदार की किस्मत तो मानो चमक ही रही है। पिछले महीने उसने एक बेहद खूबसूरत स्त्री को अपने साथ गुफा में रहने के लिए पा लिया, और वह इससे बहुत खुश था। फिर कल रात उसे तीन हथियार मिले, जो सचमुच अनमोल खजाने हैं। कल जश्न मनाने के लिए एक दावत है, तो हम सभी को उसमें हिस्सा मिलेगा।"
“हम भी काफी भाग्यशाली रहे हैं,” दूसरे ने जवाब दिया, “हमें सूअर खरीदने और सोने के लिए ये बीस औंस चांदी मिली है। कियानफांग बाजार पहुँचकर हम शुरुआत में कुछ घड़े शराब पी सकते हैं, और फिर हिसाब-किताब में हेराफेरी करके दो-तीन औंस चांदी और बना लेंगे जिससे हम सर्दियों के लिए गद्देदार जैकेट खरीद लेंगे। बढ़िया है ना?” हंसते-हंसते दोनों राक्षस बड़ी तेज़ी से मुख्य रास्ते पर चल पड़े।
जब बंदर ने अय्याश के जश्न में आयोजित भोज के बारे में सुना तो वह मन ही मन प्रसन्न हुआ। वह उन राक्षसों को मारना चाहता था, पर यह उनकी गलती नहीं थी और इसके अलावा, उसके पास कोई हथियार भी नहीं था। इसलिए वह उड़ता हुआ उनके सामने आ गया, फिर अपने असली रूप में लौट आया और रास्ते के एक मोड़ पर खड़ा हो गया। जैसे-जैसे राक्षस धीरे-धीरे पास आते गए, उसने उन पर जादुई लार का एक

घूंट फूँका, ओम हमकारा का जाप किया और एक मंत्र पढ़ा जिससे दोनों भेड़िये के सिर वाले राक्षस वहीं रुक गए। उनकी आँखें एकटक टकटकी लगाए खड़ी थीं, वे अपना मुँह नहीं खोल पा रहे थे और दोनों पैर अकड़े हुए सीधे खड़े थे। फिर बंदर ने उन्हें गिरा दिया, उनके कपड़े उतार दिए और उनकी तलाशी ली, तो उसे उनमें से एक के स्कर्ट में बंधी थैली में बीस औंस चाँदी मिली।

उनमें से प्रत्येक के पास एक सफेद वार्निश किया हुआ पास भी था। इनमें से एक पर "विली फ्रीक" लिखा था और दूसरे पर...

"फ्रीकी वाइल।"

उनकी चांदी लेकर और उनके पास रद्द करके, महान संत सीधे शहर लौट गए, जहां उन्होंने राजकुमारों, तांग पुजारी, उच्च और निम्न स्तर के अधिकारियों और लोहारों को बताया कि क्या हुआ था।

अध्याय 89

1244

पश्चिम की यात्रा

"मुझे लगता है कि मेरा खजाना ही सबसे ज्यादा चमका है," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा। "इसीलिए वे जश्न मनाने के लिए शानदार दावत के लिए सुअर और भेड़ खरीद रहे हैं। लेकिन हम इसे वापस कैसे लाएंगे?"

“हम तीनों चलेंगे,” बंदर ने कहा। “यह चांदी सूअर और भेड़ खरीदने के लिए थी। हम इसे लोहारों को दे देंगे: महाराज हमें कुछ जानवर दे सकते हैं। सूअर, तुम चालाक सनकी बन जाओ, मैं सनकी सनकी बन जाऊंगा, और साधु सैंड सूअर और भेड़ बेचने वाला व्यापारी बन जाएगा। हम टाइगरमाउथ गुफा में जाएंगे, और जब हमें ठीक लगेगा, हम अपने हथियार उठाएंगे, सभी राक्षसों को मारेंगे, वापस यहाँ आकर सामान समेटेंगे और फिर अपने रास्ते पर निकल जाएंगे।”

“बहुत बढ़िया,” फ्रायर सैंड ने कहा। “समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है। चलो चलें।” वरिष्ठ राजकुमार योजना से सहमत हो गए और उन्होंने अपने प्रबंधक को सात-आठ सूअर और चार-पाँच भेड़ें खरीदने का आदेश दिया।

उन तीनों ने अपने स्वामी को छोड़ दिया और शहर से बाहर निकलते ही अपनी जादुई शक्तियों का शानदार प्रदर्शन किया।

"भाई," सुअर ने कहा, "मैंने उस चालाक सनकी को कभी नहीं देखा, तो मैं भला खुद

को उसका हमशक्ल कैसे बना सकता हूँ?"
"मैंने उस पर जादू किया है ताकि वह कहीं वहीं रुका रहे," बंदर ने कहा, "और वह कल तक नहीं आएगा। मुझे उसका चेहरा याद है, इसलिए तुम वहीं खड़े रहो जब तक मैं तुम्हें कपड़े बदलने का तरीका न बता दूं। हां, ऐसे...नहीं, थोड़ा और ऐसे...बस। यही है वो।"
जब वह मूर्ख मंत्र बोल रहा था, तभी ब्रदर मंकी ने उस पर जादुई साँस फूंकी, उसे वाइली फ्रीक का हमशक्ल बना दिया और उसकी कमर में लगाने के लिए एक सफेद पास दे दिया। फिर मंकी ने भी अपनी कमर में पास लगाकर खुद को फ्रीकी वाइल में बदल लिया, और फ्रायर सैंड ने खुद को सूअर और भेड़ों के व्यापारी जैसा बना लिया। फिर वे सूअर और भेड़ों को लेकर पश्चिम की ओर पहाड़ की घाटी में चल पड़े। थोड़ी ही देर में वे एक पहाड़ी घाटी में पहुँच गए, जहाँ उनकी मुलाकात एक और छोटे शैतान से हुई। उसका चेहरा बेहद भयानक था। ज़रा देखिए: गोल और उभरी हुई आँखों का एक जोड़ा।
लालटेन की तरह चमकते हुए;
लाल और घने बालों वाला एक सिर,
आग की तरह धधक रहा है।
एक लाल नाक,
एक मुड़ा हुआ मुंह,
नुकीले और तेज दांत;
उभरे हुए कान,
एक ऐसी भौंहें जो मानो किसी तराशे हुए आकार में गढ़ी गई हों,
और एक हरा और फूला हुआ चेहरा।
उसने हल्के पीले रंग का कुर्ता पहना हुआ था।
और सरकंडे की लकड़ी से बनी चप्पलें।

वह बेहद भयावह लग रहा था, मानो कोई दुष्ट देवता हो।
वह एक क्रूर राक्षस की तरह तेजी से आगे बढ़ रहा था।

यह शैतान अपनी बाईं बांह के नीचे रंगीन लाख से बना निमंत्रण पत्र लिए हुए था और उसने मंकी और बाकी दोनों का अभिवादन करते हुए कहा, "फ्रीकी वाइल, आप दोनों को देखकर अच्छा लगा। क्या आप हमारे लिए कुछ सूअर और भेड़ लाए हैं?"
"क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि हम उन्हें भगा रहे हैं?" बंदर ने जवाब दिया।
"ये सज्जन कौन हैं?" शैतान ने फ्रायर सैंड की ओर देखते हुए पूछा।
"वो सूअर और भेड़ों का व्यापारी है," बंदर ने जवाब दिया। "हमें अभी भी उसे कुछ औंस चांदी देनी है, इसलिए हम उसे अपने साथ घर ले जा रहे हैं ताकि वो उसे वापस ले आए। तुम कहाँ जा रहे हो?"
"कल सुबह महामहिम को भोज में आमंत्रित करने के लिए बांस के पहाड़ पर चलते हैं," शैतान ने कहा।
शैतान के बोलने के लहजे से अंदाजा लगाते हुए, बंदर ने पूछा, "कुल कितने मेहमान होंगे?"
शैतान ने उत्तर दिया, "महामहिम को सम्मान का स्थान मिलेगा, और हमारे अपने राजा, सरदारों और बाकी सभी को मिलाकर चालीस से अधिक लोग होंगे।"
जब वे बात कर रहे थे तभी सुअर ने पुकारा, "जल्दी करो! सुअर और भेड़ें हर जगह भाग रही हैं।"
“तुम जाओ और उन्हें आमंत्रित करो, मैं इस निमंत्रण को देख लेता हूँ,” बंदर ने कहा, और शैतान ने उसे अपने ही जैसा समझकर डिब्बा खोला, निमंत्रण निकाला और बंदर को दे दिया। बंदर ने जब उसे खोला तो उसमें यह लिखा था:
कल सुबह उस बदमाश की गिरफ्तारी का जश्न मनाने के लिए एक भोज का आयोजन किया जा रहा है, और यदि आप कृपा करके पर्वत पार कर लें, हे आदरणीय पूर्वज, नौ गुना दिव्यता के आदिम ऋषि, तो मैं आपका अत्यंत आभारी रहूंगा।
सौ बार प्रणाम करते हुए,
आपका पोता,
भूरा शेर
जब बंदर ने इसे पढ़ लिया तो उसने इसे शैतान को वापस सौंप दिया, जिसने इसे वापस इसके डिब्बे में रख दिया और दक्षिण-पूर्व की ओर आगे बढ़ गया।
"भाई," फ्रायर सैंड ने पूछा, "निमंत्रण पत्र पर क्या लिखा था?"
"यह रेक भोज का निमंत्रण था," बंदर ने उत्तर दिया। "इस पर 'सौ प्रणाम के साथ,

आपका पोता टॉनी लायन' लिखा था, और यह निमंत्रण नौ गुना दिव्यता के आदिम ऋषि को भेजा जा रहा था।"

अध्याय 89

1246

पश्चिम की यात्रा

"टॉनी लायन एक सुनहरे बालों वाला शेर होना चाहिए जो आत्मा बन गया है," फ्रायर सैंड ने मुस्कुराते हुए कहा, "लेकिन मुझे आश्चर्य है कि नौ गुना दिव्यता का आदिम ऋषि कौन है।"

पिग की प्रतिक्रिया हंसने और यह कहने की थी, "यह मेरा है।"

"वह तुम्हारा ही क्यों होना चाहिए?" बंदर ने पूछा।

“एक पुरानी कहावत है, ‘एक बूढ़ी, बीमार सूअरनी भी सोने के शेर को भगा सकती है,’” सूअर ने जवाब दिया। “इसीलिए मुझे पता है कि वह मेरा है।” बातें करते और हंसते-हंसते वे तीनों सूअरों और भेड़ों को तब तक हांकते रहे जब तक कि उन्हें टाइगरमाउथ गुफा के द्वार दिखाई नहीं दिए। द्वार के बाहर चारों ओर हरे-भरे पहाड़ थे।

पर्वत श्रृंखलाएं एक विशाल दीवार का निर्माण करती हैं।

लताएँ खड़ी चट्टानों की सतहों से चिपकी हुई थीं।

ऊँची-ऊँची चट्टानों से कांटे लटक रहे थे।

जंगल के चारों ओर से पक्षियों के गीत सुनाई दे रहे थे।

प्रवेश द्वार पर फूलों से स्वागत किया गया।

यह गुफा पीच ब्लॉसम स्प्रिंग के समान थी।

दुनिया की परेशानियों से बचने की जगह।

जैसे ही वे गुफा के मुहाने के पास पहुँचे, उन्होंने देखा कि हर उम्र और प्रकार की दुष्ट आत्माओं की भीड़ खिले हुए पेड़ों के नीचे खेल रही थी। जब उन्होंने सूअर की "हे! हे!" की चीखें सुनीं, जो सूअरों और भेड़ों को भगा रहा था, तो वे सभी उससे मिलने के लिए बाहर आ गए। सूअरों और भेड़ों को पकड़कर बांध दिया गया। शोर से अंदर बैठा दानव राजा अब तक परेशान हो चुका था, जो दस या उससे अधिक छोटे दानवों के साथ बाहर आकर पूछने लगा, "क्या तुम दोनों वापस आ गए हो?"

आपने कितने जानवर खरीदे?

"आठ सूअर और सात भेड़ें—कुल पंद्रह," बंदर ने उत्तर दिया। "सूअरों की कीमत

सोलह औंस चांदी थी और भेड़ों की नौ। हमें केवल बीस औंस ही दिए गए, इसलिए हमें अभी भी पाँच औंस देने हैं। यह वही व्यापारी है जो चांदी लेने हमारे साथ आया है।"

यह सुनकर दानव राजा ने आदेश दिया, "छोटे बच्चों, पाँच औंस चाँदी लाओ और उसे उसके रास्ते भेज दो।"

"लेकिन व्यापारी सिर्फ चांदी लेने ही नहीं आया है," बंदर ने जवाब दिया। "वह भोज देखने भी आया है।"

"कितनी हिम्मत है तुम्हारी, सनकी वाइल!" क्रोधित राक्षस ने गाली देते हुए कहा। "तुम्हें सामान खरीदने भेजा गया था, दावतों के बारे में बात करने नहीं।"

"जब आपके पास इतने अद्भुत खजाने हैं, महाराज," सुअर ने आगे बढ़ते हुए कहा, "तो उसे एक नज़र डालने देने में क्या हर्ज है?"

अध्याय 89

1247

पश्चिम की यात्रा

"तुम्हें भी धिक्कार है, धूर्त सनकी," राक्षस ने गुस्से से गुर्राते हुए कहा। "मैंने ये खजाने युहुआ शहर के अंदर से हासिल किए हैं। अगर इस अजनबी ने इन्हें देख लिया और शहर में इनके बारे में बात की तो बात फैल जाएगी और राजकुमार इन्हें मांगने आ जाएगा। तब हम क्या करेंगे?"

“मालिक,” बंदर ने जवाब दिया, “यह व्यापारी कियानफांग बाजार के दूसरी तरफ से आया है। यह शहर से बहुत दूर है, और यह शहर का आदमी भी नहीं है, तो फिर ये कहाँ जाकर चुगली करेगा? इसके अलावा, ये भूखा है, और हम दोनों ने भी कुछ नहीं खाया है। अगर यहाँ खाने-पीने का सामान हो तो क्यों न हम इसे विदा करने से पहले थोड़ा सा दे दें?”

उसके बोलने से पहले ही एक छोटा शैतान पाँच औंस चाँदी लेकर आया और उसने वह चाँदी बंदर को दे दी, जिसने बदले में वह चाँदी साधु सैंड को देते हुए कहा, "अपनी चाँदी ले लो, अजनबी, फिर हमारे साथ कुछ खाने के लिए पीछे आ जाओ।"

हिम्मत जुटाकर साधु सैंड, सुअर और बंदर के साथ गुफा में चले गए। जब वे अंदर दूसरे कक्ष में पहुँचे, तो उन्होंने बीचोंबीच एक मेज पर नौ दाँतों वाला लोहे का रेक देखा, जो अपनी पूरी चमक के साथ भेंट स्वीकार करने के लिए रखा हुआ था। मेज के

पूर्वी छोर पर सोने की पट्टी वाला डंडा रखा था, और पश्चिमी छोर पर राक्षस-नाशक छड़ी।
"अजनबी," उनके पीछे आ रहे दानव राजा ने कहा, "बीच में जो इतना चमक रहा है, वह वही रेक है।"
आप चाहें तो देख सकते हैं, लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, इसके बारे में किसी को मत बताना।" फ्रायर सैंड ने प्रशंसा में सिर हिलाया।
अरे बाप रे! ये तो वही बात हो गई कि "मालिक को अपनी चीज़ दिख जाए तो वो उसे उठा ही लेता है।" सुअर तो हमेशा से ही गुस्सैल था, और जैसे ही उसने अपना रेक देखा, उसने मामले की सच्चाई बताने से परहेज किया, बल्कि दौड़कर आया, उसे नीचे गिराया और जैसे ही वह अपने असली रूप में लौटा, उसे घुमाकर वार करने लगा। उसने सीधे दुष्ट आत्मा के चेहरे पर वार किया, अब उसे अपने हथियार के सही इस्तेमाल की परवाह नहीं थी। बंदर और साधु सैंड दोनों मेज के एक छोर पर दौड़े और अपना-अपना हथियार उठाकर अपने असली रूप में लौट आए। जैसे ही तीनों भाई बेतहाशा वार करने लगे, दानव राजा को जल्दी से उनके रास्ते से हटना पड़ा, पीछे की ओर जाना पड़ा और अपना चार चमकीला भाला लाना पड़ा, जिसका लंबा हैंडल और नुकीला सिरा था।
आंगन में घुसते हुए, उसने इसका इस्तेमाल तीनों हथियारों को रोकने और अपनी पूरी आवाज में चिल्लाने के लिए किया, "तुम खुद को क्या समझते हो, भेष बदलकर मेरे खजाने को मुझसे छीनने की कोशिश कर रहे हो?"
"मैं तुम्हें देख लूँगा, ओ रोएँदार जानवर," बंदर ने गुस्से में कहा। "तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ। मैं पूरब के पवित्र भिक्षु तांग सान्ज़ांग का शिष्य हूँ। जब हम युहुआ में अपना पासपोर्ट दिखाने आए थे, तो राजकुमार ने अपने तीनों बेटों को हमें युद्ध कौशल सिखाने के लिए कहा था। वे हमारे हथियारों की नकल करवा रहे थे। इसीलिए हमने अपने हथियार आँगन में छोड़ दिए थे ताकि तुम रात के अंधेरे में चुपके से शहर में घुसकर उन्हें चुरा सको। और तुम हम पर आरोप लगा रहे हो कि हमने तुम्हारा रूप धारण करके उन्हें धोखा दिया! यहीं रुको और हमारे तीन हथियारों का स्वाद चखो।"
दुष्ट आत्मा ने तुरंत पलटवार करने के लिए अपना भाला उठा लिया। वे आंगन से लेकर सामने के द्वार तक लड़ते रहे, तीन भिक्षु एक अकेले राक्षस का पीछा कर रहे थे। यह एक शानदार लड़ाई थी: भाला हवा की तरह सीटी बजा रहा था।

रेक के वार बरसने लगे।
राक्षस-निरोधक छड़ी ने आकाश को चमकती धुंध से भर दिया;
चार चमकीली भाले से बादल निकले।
अध्याय 89
1248
पश्चिम की यात्रा
वे अमृत सृजित करने वाले तीन अमर देवताओं के समान थे।
ऐसी चकाचौंध भरी रोशनी उत्पन्न करना जिससे देवता और भूत भी भयभीत हो जाएं।
बंदर अपनी ताकत दिखाने में माहिर था;
दुष्ट आत्मा ने खजाने चुराकर बहुत बड़ी गलती की।
मार्शल तियान पेंग ने अपनी दिव्य शक्तियों का प्रदर्शन किया।
जबकि महान सेनापति सैंड वीर और शानदार थे।
तीनों भाई कुशलता और एकमत होकर लड़ रहे थे।
टाइगरमाउथ गुफा में एक भीषण युद्ध हुआ।
वह राक्षस शक्ति और धूर्तता से परिपूर्ण था।
चारों नायकों के लिए एक उपयुक्त मुकाबला।
वे पश्चिम में सूरज डूबने तक लड़ते रहे।
जब राक्षस कमजोर पड़ गया और अब और टिक नहीं सका।
माउंट लेपर्ड हेड पर लंबी लड़ाई के बाद, दुष्ट आत्मा ने फ्रायर सैंड पर चिल्लाते हुए कहा, "इस भाले से सावधान रहो!" जैसे ही फ्रायर सैंड वार से बचने के लिए पीछे हटे, दुष्ट आत्मा उनके द्वारा छोड़े गए छेद से निकलकर हवा के सहारे दक्षिण-पूर्व में स्थित शुन क्षेत्र की ओर भाग गई।
सुअर उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ने लगा, लेकिन बंदर ने कहा, "उसे जाने दो। जैसा कि पुरानी कहावत है, 'हताश लुटेरे का पीछा कभी मत करो।' चलो उसे वापस आने के लिए कुछ भी न छोड़ें।"
सुअर मान गया, और वे तीनों गुफा के प्रवेश द्वार पर वापस गए, जहाँ उन्होंने सौ से अधिक छोटे-बड़े दुष्ट आत्माओं को मार डाला। पता चला कि वे सब वास्तव में बाघ, भेड़िये, बाघिन, तेंदुए, लाल हिरण और बकरियाँ थीं। बंदर ने अपनी एक शक्ति का

उपयोग करके सभी कीमती सामान और कपड़े, साथ ही मारे गए सभी जानवरों, सुअरों और भेड़ों के शवों को गुफा से बाहर निकाला। साधु सैंड ने कुछ सूखी लकड़ी का उपयोग करके आग जलाई, जिसे सुअर ने अपने दोनों कानों से हवा दी। गुफा जल्द ही जलकर राख हो गई, और वे अपने साथ जो कुछ भी लाए थे, उसे लेकर शहर लौट गए।

शहर के द्वार खुले हुए थे; लोग अभी सोए नहीं थे। वरिष्ठ राजकुमार और उनके पुत्र अभी भी जालीदार मंडप में प्रतीक्षा कर रहे थे। तीनों शिष्यों ने सभी मरे हुए जंगली जानवरों और भेड़ों के साथ-साथ कीमती सामान को ज़ोर से पटकते हुए आँगन में फेंक दिया, जिससे आँगन भर गया। वे पुकारते हुए बोले, "गुरुजी, हम वापस आ गए हैं। हमने जीत हासिल कर ली है।"

इसके बाद वरिष्ठ राजकुमार ने उन्हें धन्यवाद दिया, तांग पुजारी प्रसन्न हुए और तीनों युवा राजकुमार घुटनों के बल बैठकर प्रणाम करने लगे।

"हमें धन्यवाद मत दीजिए," फ्रायर सैंड ने उन्हें उठने में मदद करते हुए कहा। "आइए और देखिए कि हमारे पास क्या है।"

"वे कहाँ से आए हैं?" वरिष्ठ राजकुमार ने पूछा।

अध्याय 89

1249

पश्चिम की यात्रा

"बाघ, भेड़िये, बाघिनें, तेंदुए, लाल हिरण और बकरियाँ, ये सभी राक्षस थे जिन्होंने आत्माओं का रूप धारण कर लिया था। जब हमें हमारे हथियार वापस मिल गए, तो हम लड़ते हुए फाटकों से बाहर निकल आए। उनका दानव राजा सुनहरे बालों वाला शेर है जो चार चमकीले भाले से लड़ता है। उसने सूर्यास्त तक हमसे लड़ाई की, फिर दक्षिण-पूर्व की ओर भाग गया। उसका पीछा करने के बजाय, हमने यह सुनिश्चित किया कि उसके पास वापस आने का कोई रास्ता न रहे, इसलिए हमने इन सभी राक्षसों को मार डाला और उसकी सारी चीजें वापस ले लीं।"

इस खबर ने वरिष्ठ राजकुमार को प्रसन्न और चिंतित दोनों कर दिया: वह उनकी विजयी वापसी से प्रसन्न थे; लेकिन इस बात से चिंतित थे कि राक्षस बाद में अपना बदला लेगा।

“चिंता मत कीजिए, महाराज,” बंदर ने कहा। “मैंने इस बारे में बहुत सोच-विचार

किया है, और मैं इसे ठीक से निपटाऊँगा। मैं वादा करता हूँ कि जाने से पहले मैं सभी राक्षसों का पूरी तरह सफाया कर दूँगा। हम आपको ऐसी कोई परेशानी नहीं देंगे जो बाद में फिर से सामने आए। जब हम दोपहर में वहाँ गए, तो हमें एक छोटा सा हरे चेहरे वाला, लाल बालों वाला शैतान मिला, जिसके पास एक निमंत्रण पत्र था। उस पर लिखा था: 'कल सुबह उस अय्याश को पकड़ने के उपलक्ष्य में एक भोज दिया जा रहा है, और यदि आप कृपा करके पर्वत पार कर लें, आदरणीय पूर्वज, नौ गुना दिव्यता के आदिम ऋषि, तो मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।' उस पर हस्ताक्षर थे: 'सौ प्रणामों के साथ, आपका पोता, भूरा शेर'। अभी जब दुष्ट आत्मा पराजित हुई, तो वह अपने दादा से बात करने गया होगा। वे कल सुबह हमसे बदला लेने के लिए ज़रूर आएँगे, और जब ऐसा होगा, तो मैं उन सभी का सफाया कर दूँगा।" वरिष्ठ राजकुमार ने उनका धन्यवाद किया और रात्रि भोज का प्रबंध करवाया। जब गुरु और शिष्यों ने भोजन कर लिया, तो सब लोग सोने चले गए।

अब कहानी बताती है कि कैसे दुष्ट आत्मा सचमुच दक्षिण-पूर्व दिशा में बांस पर्वत की ओर बढ़ी, जहाँ नौ-मोड़ वाली घुमावदार गुफा नामक एक गुफा थी, जिसमें दुष्ट आत्मा के दादा, नौ गुना दिव्यता के आदिम ऋषि रहते थे। उस रात वह दानव तब तक हवा में चलता रहा जब तक कि वह अंतिम पहर में गुफा के प्रवेश द्वार तक नहीं पहुँच गया।

जब उसने द्वार पर दस्तक दी और अंदर गया तो एक छोटे शैतान ने उसका स्वागत करते हुए कहा, "महाराज, ग्रीनफेस कल रात निमंत्रण लेकर आया था, और उस बूढ़े सज्जन ने उसे आज सुबह तक आपके अय्याशी भोज में साथ चलने के लिए आमंत्रित किया है। आप इतनी सुबह खुद उसे आमंत्रित करने क्यों आए हैं?"

"मुझे यह कहते हुए बहुत दुख हो रहा है, लेकिन भोज रद्द हो गया है," दुष्ट आत्मा ने उत्तर दिया।

जब वे बातें कर रहे थे, तभी ग्रीनफेस गुफा के भीतरी हिस्से से बाहर आकर बोला, "महाराज, आप यहाँ क्या कर रहे हैं? जैसे ही वरिष्ठ महाराज उठेंगे, वे मेरे साथ उत्सव में शामिल होंगे।" दुष्ट आत्मा इतनी व्याकुल हो गई कि वह कुछ बोल नहीं सकी, बस अपने हाथ हिलाती रही।

थोड़ी देर बाद बूढ़ा राक्षस उठा और दुष्ट आत्मा को पुकारा, जिसने अपना हथियार गिरा दिया और जमीन पर लेटकर प्रणाम किया, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। "योग्य पोते," बूढ़े राक्षस ने कहा।

"आपने मुझे कल निमंत्रण भेजा था, और आज सुबह मैं समारोह में शामिल होने के लिए निकल रहा हूँ। तो आप खुद इतने दुखी और परेशान क्यों दिख रहे हैं?"
"परसों रात मैं चांदनी रात में टहल रहा था," दुष्ट आत्मा ने झुकते हुए उत्तर दिया, "तभी मैंने युहुआ शहर से आकाश की ओर एक चकाचौंध भरी रोशनी उठते हुए देखी। मैं जल्दी से वहाँ देखने गया और पाया कि वह राजकुमार के महल में रखे तीन हथियारों से आ रही थी: सोने से जड़ा नौ दाँतों वाला एक रेक, एक लाठी और सोने की पट्टी वाली एक गदा। मैंने अपने जादू से उन्हें वहाँ से हटा लिया और जश्न मनाने के लिए एक रेक भोज आयोजित करने का फैसला किया। मैंने अपने कुछ अधीनस्थों को दावत के लिए सूअर, भेड़ और फल खरीदने भेजा, जिसमें मैंने आपको, दादाजी, आमंत्रित किया था। लेकिन कल जब मैंने ग्रीनफेस को निमंत्रण देकर भेजा, तो वाइली फ्रीक और दूसरा, जिसे सूअर और भेड़ खरीदने के लिए कहा गया था, कुछ चांदी के लिए एक व्यापारी, एक अजनबी, के साथ वापस आ गए। वह अजनबी भोज देखने के लिए बहुत उत्सुक था। मैंने मना कर दिया क्योंकि मुझे डर था कि वह खबर फैला देगा। फिर उन्होंने कहा कि उन्हें भूख लगी है और खाने के लिए कुछ मांगा, इसलिए मैंने उन्हें पीछे की ओर जाने के लिए कहा..." खाना। जब वे अंदर गए और उन्होंने हथियार देखे तो अध्याय 89
1250
पश्चिम की यात्रा
उन्होंने कहा कि ये उनके हैं। उन्होंने एक-एक करके छीन लिया और अपने असली रूप में लौट आए। एक भिक्षु था जिसका चेहरा बालों से भरा था और मुँह गर्जन देवता जैसा था, एक भिक्षु था जिसकी थूथन लंबी और कान बड़े थे, और एक भिक्षु था जिसका चेहरा सचमुच भयावह था। तीनों मुझ पर चिल्लाए और हमला करने लगे: उन्हें ज़रा भी परवाह नहीं थी।
मैं किसी तरह अपना चमकीला भाला लेकर बाहर आया और उन्हें रोकने की कोशिश की। जब मैंने उनसे पूछा कि वे कौन हैं और उन्होंने भेष बदलकर ऐसा करने की हिम्मत कैसे की, तो उन्होंने बताया कि वे तांग पुजारी के शिष्य हैं, जिन्हें पूर्व में महान तांग ने पश्चिमी स्वर्ग भेजा है। जब वे शहर से गुजरते हुए अपना पासपोर्ट दिखाने गए, तो राजकुमारों ने उन्हें रुकने और मार्शल आर्ट सिखाने के लिए दबाव डाला। उन्होंने कहा कि उनके तीनों हथियार महल के प्रांगण में उनकी नकल बनवाने के लिए रखे

गए थे, और मैंने उन्हें चुरा लिया है। फिर वे भयंकर क्रोध से मुझ पर टूट पड़े। मुझे उन तीनों भिक्षुओं का नाम नहीं पता था, लेकिन वे सभी बहुत कुशल योद्धा थे। चूंकि मैं अकेले उनका मुकाबला नहीं कर सकता था, इसलिए मुझे भागकर यहां आना पड़ा। यदि आपको अपने पोते से जरा भी स्नेह है, तो मैं आपसे विनती करता हूं कि मुझे उन भिक्षुओं से बदला लेने के लिए अपनी सेना में सहायता दें।

कुछ क्षण मौन चिंतन के बाद बूढ़े राक्षस ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "तो ये वही हैं। हे योग्य पोते, तुमने उसे उकसाकर बहुत बड़ी गलती की है।"

"दादाजी, क्या आप जानते हैं कि वे कौन हैं?" दूसरे ने पूछा।

“लंबी थूथन और बड़े कानों वाला झू बाजी है,” बूढ़े राक्षस ने कहा, “और भयानक चेहरे वाला साधु सैंड है। वे ज़्यादा बुरे नहीं हैं। लेकिन बालों वाले चेहरे और गरजते देवता जैसे मुँह वाला नौसिखिया सन कहलाता है। उसके पास सचमुच ज़बरदस्त जादुई शक्तियाँ हैं। जब उसने पाँच सौ साल पहले स्वर्ग में तबाही मचाई थी, तब एक लाख स्वर्गीय सैनिक भी उसे पकड़ नहीं पाए थे। और वह एक बेहद दृढ़ शिकारी है। वह एक पुलिसवाले की तरह है जो पहाड़ों और समुद्रों में खोजबीन करेगा, गुफाओं को तोड़ेगा, शहरों पर धावा बोलेगा और हर तरह की मुसीबत खड़ी करेगा। तुमने उसे क्यों उकसाया? कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और उन अमुकों और युहुआ के राजकुमार को पकड़कर तुम्हारा बदला लूँगा।”

यह सुनकर दुष्ट आत्मा ने फिर से धन्यवाद में सिर झुकाया। वरिष्ठ राक्षस ने तुरंत अपने पोतों बंदर शेर, बर्फीला शेर, लियो, ग्रिफॉन, रैकून-कुत्ता शेर और हाथी-योद्धा को इकट्ठा किया, जिनमें से प्रत्येक के पास एक धारदार हथियार था। भूरे शेर के नेतृत्व में, उन सभी ने एक शक्तिशाली आंधी चलाई जो उन्हें सीधे माउंट लेपर्ड हेड तक ले गई, जहाँ धुएँ और आग की व्यापक गंध फैली हुई थी और केवल रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। जब उन्होंने करीब से देखा तो उन्हें वाइली फ्रीक और फ्रीकी वाइल अपने स्वामी के लिए रोते हुए दिखाई दिए।

"क्या तुम असली फ्रीक और वाइल हो या धोखेबाज़?" दुष्ट आत्मा चिल्लाते हुए उनके पास गई।

घुटनों के बल गिरकर और आंखों में आंसू लिए हुए प्रणाम करते हुए दोनों शैतानों ने उत्तर दिया, "हम कोई धोखेबाज नहीं हैं।"

कल जब हमें सूअर और भेड़ खरीदने के लिए चांदी दी गई, तो पहाड़ के पश्चिम में

स्थित विशाल घाटी में हमारी मुलाकात एक ऐसे भिक्षु से हुई जिसका चेहरा बालों से भरा था और मुंह गर्जन देवता जैसा था। जब उसने हम पर थूका, तो हमारे पैर कांपने लगे, मुंह जम गया, हम बोल नहीं पा रहे थे और हिल भी नहीं पा रहे थे। उसने हमें धक्का देकर गिरा दिया, हमारी चांदी चुरा ली और हमारे पास छीन लिए। हम तब तक अचेत रहे जब तक अभी-अभी हमें होश नहीं आया। जब हम घर पहुंचे तो देखा कि घर में अभी भी आग लगी हुई है और सारी इमारतें जलकर राख हो गई हैं। हम बहुत रो रहे थे क्योंकि हे प्रभु, आप और सभी सरदार गायब हो गए थे। हमें नहीं पता कि आग कैसे लगी।

जब उस दुष्ट आत्मा ने यह सुना तो वह क्रोध से अपने पैर पटकते हुए अपने आँसू नहीं रोक सका, उसने ज़ोरदार दहाड़ लगाई और घृणा और क्रोध में चिल्लाया, "धिक्कार है गंजे लोगों! दुष्ट दरिंदों! तुम इतने दुष्ट कैसे हो सकते हो? तुमने मेरे गुफा महल को नष्ट कर दिया और मेरी सुंदरी को जलाकर मार डाला। तुमने घर के सभी लोगों को, जवान और बूढ़े, मार डाला। मैं इतना क्रोधित हूँ कि मर सकता हूँ!"

तब बूढ़े राक्षस ने बंदर शेर को भूरे शेर को पकड़ने के लिए कहा और बोला, "पोते, जो हो गया सो हो गया।"

परेशान होने से आपको कोई फायदा नहीं होगा। अब आपको अपनी सारी ऊर्जा जुटाकर शहर में उन भिक्षुओं को पकड़ना होगा।

अध्याय 89

1251

पश्चिम की यात्रा

दुष्ट आत्मा अभी भी रो रही थी जब उसने उत्तर दिया, "दादाजी, मेरा यह पहाड़ी महल एक दिन में नहीं बना था।"

अब उन गंजे लोगों ने सब कुछ बर्बाद कर दिया! मेरी जिंदगी जीने लायक नहीं रही!" इतना कहकर वह खुद को छुड़ाकर चट्टान पर सिर पटकने के लिए झपटा, लेकिन बर्फीले शेर और बंदर शेर के बड़े प्रयासों के बाद ही रुका। फिर वे गुफा से निकलकर शहर की ओर चल पड़े।

तेज हवा और घने कोहरे के बीच वे शहर की ओर बढ़े, जिससे शहर की दीवार के बाहर रहने वाले सभी लोग इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने अपना सामान छोड़ दिया और अपने बच्चों को घसीटते या गोद में उठाकर शहर के अंदर भाग गए। जैसे ही

सभी लोग अंदर पहुँच गए, द्वार बंद कर दिए गए। फिर महल को सूचना दी गई कि उन पर विपत्ति आ पड़ी है। जब राजकुमार, जो तांग पुजारी और अन्य लोगों के साथ गॉज़ मंडप में शाकाहारी नाश्ता कर रहे थे, ने यह सूचना सुनी तो वे इसके बारे में पूछताछ करने के लिए बाहर गए।

"रेत के तूफान, उड़ते पत्थरों, कोहरे और तेज हवाओं के साथ दुष्ट आत्माओं का पूरा झुंड शहर की ओर बढ़ रहा है।"

"अब हम क्या करें?" राजकुमार ने अत्यंत भयभीत होकर पूछा।

“सब चिंता करना बंद करो,” बंदर भाई ने कहा, “सब चिंता करना बंद करो। यह टाइगरमाउथ गुफा का दुष्ट आत्मा है जो कल पिटाई के बाद भाग गया था। वह दक्षिण-पूर्व में नौ गुना दिव्यता के आदिम ऋषि या जो भी उसका नाम है, उसके साथ साजिश रचने गया था और अब वह यहाँ है। हम भाई लोग बाहर जा रहे हैं। उनसे कहो कि शहर के सभी द्वार बंद कर दें और शहर की दीवार पर पहरा देने के लिए सैनिक भेजें।”

राजकुमार ने शहर के द्वार बंद करने का आदेश दिया, दीवार पर सैनिक भेजे और अपने बेटों और तांग पुजारी के साथ निरीक्षण करने चला गया। सेना के झंडों ने सूरज को ढक लिया और तोपों की गूँज आसमान तक पहुँच गई, जब बंदर, सुअर और साधु सैंड हवा और बादलों के बीच युद्ध करने के लिए शहर से निकले। सचमुच:

उनकी लापरवाही के कारण हथियार खो गए।

जिसके कारण शैतानी सेना द्वारा हमले हुए।

यदि आपको युद्ध का परिणाम नहीं पता है, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को सुनें।

अध्याय 90

देने और लेने से स्वामी और सिंह एक हो जाते हैं

मार्ग अवरुद्ध करने और ध्यान में बाधा डालने के बाद नौ गुना दिव्यता शांत हो जाती है। कथा बताती है कि कैसे महान ऋषि सूर्य, सुअर और साधु रेत के साथ शहर छोड़कर निकले और राक्षसों का सामना किया तो पाया कि वे सभी विभिन्न प्रकार के शेर थे। भूरा सिंह आत्मा सबसे आगे था, उसके बाईं ओर सिंह और हाथी-योद्धा सिंह, दाईं ओर ग्रिफॉन और रैकून-कुत्ता सिंह और उसके पीछे बंदर सिंह और बर्फीला सिंह थे। इन सबके बीच में नौ सिर वाला शेर था। नौ सिर वाले शेर के ठीक पीछे, हरे चेहरे वाला राक्षस फूलों से सजी जकूज़ी की छतरी पकड़े हुए था; जबकि चालाक सनकी

और सनकी सनकी लाल झंडे लिए हुए थे। वे सभी एक खोखले स्थान पर इकट्ठा हुए थे।

अपने रूखे अंदाज में सुअर उनके पास जाकर गाली-गलौज करते हुए चिल्लाया, "राक्षसों! चोरों! खजाना चुराने वालों! तुम वहाँ जाकर उन बालों वाले लोगों के साथ गिरोह क्यों बना रहे हो?"

इस पर भूरे शेर की आत्मा ने क्रोध से दांत पीसते हुए उत्तर दिया, "दुष्ट गंजे लोग! जब मैं अकेला था..." अध्याय 90

1252

पश्चिम की यात्रा

कल तुम तीनों ने मुझे पीटा और मुझे भागना पड़ा। तुम्हें सही काम करना चाहिए था, मेरी गुफा वाले महल को जलाने, मेरे पहाड़ी घर को नष्ट करने और मेरे परिवार की हत्या करने के बजाय। तुम्हारे लिए मेरी नफरत सागर जितनी गहरी है। यहीं रहो और मेरी भाले से यह वार सहो!

शानदार सुअर ने वार रोकने के लिए अपना रेक उठाया। जब दोनों के बीच लड़ाई शुरू ही हुई थी और कोई भी जीत नहीं पा रहा था, तभी बंदर शेर ने अपने नुकीले लोहे के गदा से हमला बोल दिया, और बर्फीले शेर ने भी अपने तीनधारी गदा से हमला किया।

"स्वागत है," पिग चिल्लाया। देखो, वह कैसे सीधे आगे बढ़कर उन सभी के आक्रमण का सामना करने और उनसे लड़ने के लिए दौड़ पड़ा। फ्रायर सैंड ने तुरंत अपनी दानव-नाशक छड़ी किनारे से निकाली और पिग की मदद के लिए आगे बढ़ा, तभी लियो स्पिरिट, ग्रिफॉन स्पिरिट, एलिफेंट-फाइटर स्पिरिट और रैकून-डॉग स्पिरिट भी उसके पीछे दौड़ पड़े। महान ऋषि बंदर ने अपने सोने की पट्टी वाले डंडे से दुष्ट आत्माओं को रोके रखा। लियो ने गदा से, स्नोई ने कांसे के हथौड़े से, एलिफेंट-फाइटर ने स्टील के भाले से और रैकून-डॉग ने कुल्हाड़ी से लड़ाई की।

सात सिंह आत्माओं और तीन भयंकर भिक्षुओं के बीच का युद्ध एक शानदार युद्ध था:
गदा, हथौड़ा, भाला, कुल्हाड़ी और तीनधारी गदा।
नुकीली गदा, गेंद के आकार का डंडा और चार चमकीले रंग का भाला:
सात घातक हथियारों से लैस सात शेर,
वे तीन भिक्षुओं को घेरते हुए युद्धघोष कर रहे थे।
महान ऋषि की सोने की पट्टी वाली लाठी बहुत शक्तिशाली थी;

फ्रायर सैंड की छड़ी दुनिया में लगभग बेजोड़ थी।
सुअर बवंडर की शक्ति से इधर-उधर भाग रहा था।
जैसे ही उसके चमकते रेक से अशुभ प्रकाश निकला।
सभी ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए आगे और पीछे से अवरोध उत्पन्न कर दिया।
उन्होंने साहस और बहादुरी से हमलों को विफल कर दिया।
शहर की दीवारों से राजकुमार ने समर्थन दिया।
जहां उनके सैनिक ढोल और घंटे बजाते हुए अधिक साहसी महसूस कर रहे थे।
फेंकते और धकेलते हुए, सभी ने अपना जादू दिखाया।
आकाश और पृथ्वी दोनों को अंधकारमय और उलट-पुलट कर देना।
दुष्ट आत्माओं ने महान ऋषि और दो अन्य लोगों से आधे दिन तक लड़ाई की, फिर रात हो गई। सुअर के मुंह से लार टपक रही थी और उसके पैर कमजोर पड़ रहे थे, इसलिए उसने अपने रेक से वार करने का नाटक किया और हार मानकर भाग गया।
अध्याय 90
1253
पश्चिम की यात्रा
"तुम कहाँ जा रहे हो?" बर्फीले शेर और बंदर शेर चिल्लाए। "यह लो!"
वह मूर्ख उनसे बच नहीं सका, और गदा का जोरदार प्रहार उसकी रीढ़ की हड्डी पर पड़ा जिससे वह जमीन पर गिर पड़ा और चिल्लाने लगा, "मैं तो गया काम से, मैं तो गया काम से!"
दो शेर आत्माओं ने सुअर को उसकी गर्दन के बालों और पूंछ से पकड़कर नौ सिर वाले शेर के पास ले गए और बताया, "दादाजी, हमने उनमें से एक को पकड़ लिया है।"
उनके मुंह से शब्द निकलने से पहले ही साधु रेत और बंदर को भी हार मानकर पीछे हटना पड़ा। जब दुष्ट आत्माएं उन पर टूट पड़ीं, तो बंदर ने मुट्ठी भर बाल खींचे, उन्हें चबाकर चूर-चूर कर दिया, थूक दिया, चिल्लाया, "बदल जाओ!" और उन्हें सौ से अधिक छोटे बंदरों में बदल दिया जो गोल-गोल घूमते हुए स्नोई, लियो, हाथी-योद्धा, रैकून-कुत्ता और भूरे शेर को घेर लिया। तब साधु रेत और बंदर फिर से लड़ाई में शामिल होने के लिए आगे आए। उसी रात उन्होंने लियो और ग्रिफॉन को पकड़ लिया

और रैकून-कुत्ता और हाथी-योद्धा को भगा दिया।
जब भूरे शेर ने बूढ़े राक्षस को बताया कि दो शेर खो गए हैं, तो राक्षस ने आदेश दिया, "सूअर को बांध दो, लेकिन उसे मारो मत। जब वे हमारे शेर वापस कर देंगे, तो हम सूअर को उन्हें लौटा देंगे। अगर वे उन्हें मारने की मूर्खता करते हैं, तो हम सूअर से उसकी जान ले लेंगे।" उस शाम सभी राक्षस शहर के बाहर सो गए।
अब कहानी महान ऋषि सूर्य की ओर मुड़ती है, जो दो शेर आत्माओं को शहर की दीवार के पास ले गए, जहाँ से वरिष्ठ राजकुमार ने उन्हें देखा और द्वार खोलने का आदेश दिया। बीस-तीस अधिकारियों को रस्सी के साथ भेजा गया ताकि शेर आत्माओं को बाँधकर शहर के भीतर ले जाया जा सके। फिर महान ऋषि ने अपने जादुई बाल समेटे और सीधे भिक्षु सैंड के साथ दीवार के बुर्ज की ओर चले गए, जहाँ उन्होंने तांग पुजारी को देखा।
"यह तो बहुत ही भयानक मामला है," तांग पुजारी ने कहा। "क्या वुनेन्ग अभी भी जीवित है?"
“कोई बात नहीं,” बंदर भाई ने जवाब दिया। “हमने कुछ दुष्ट आत्माओं को पकड़ लिया है, इसलिए वे उसे नुकसान पहुंचाने की हिम्मत नहीं करेंगी। उन्हें कसकर बांध दो। मैं कल सुबह उन्हें सुअर के बदले दे दूंगा।”
तब तीनों युवा राजकुमारों ने बंदर के सामने प्रणाम किया और कहा, "गुरुजी, जब आप उनसे लड़ रहे थे, तब आप अकेले थे। फिर जब आपने भागने का नाटक किया और वापस आए, तो आप सौ से अधिक लोग थे। यह कैसे हुआ? जब आप दुष्ट आत्माओं को पकड़ने के बाद शहर की दीवार पर वापस आए, तो आप फिर से अकेले रह गए थे। आपने ऐसा करने के लिए किन जादुई शक्तियों का प्रयोग किया?"
“मेरे शरीर पर 84,000 बाल हैं,” बंदर ने उत्तर दिया। “इनमें से प्रत्येक दस बन सकता है, और दस मिलकर सौ बन सकते हैं, इसलिए मैं लाखों-करोड़ों रूप बदल सकता हूँ। यह शरीर की अतिरिक्त जादुई शक्ति है।” सभी राजकुमारों ने प्रणाम किया क्योंकि उनके लिए मीनार में शाकाहारी भोज लाया गया था। प्राचीरों पर लालटेन और झंडे प्रदर्शित किए गए थे। पहरेदारी बदलने, तीर आगे बढ़ाने, तोपों की सलामी देने और युद्धघोष करने के साथ ही तालियों, घंटियों, घंटों और ढोलों की आवाजें गूंज रही थीं।
जल्द ही भोर हो गई, और बूढ़े राक्षस ने कार्ययोजना बनाने के लिए टॉनी लायन

स्पिरिट को बुलाया: "तुम सबको अपनी बुद्धि का प्रयोग करके सन द नोविस और फ्रायर सैंड को पकड़ना होगा, जबकि मैं चुपके से दीवार पर चढ़कर उनके स्वामी, बूढ़े राजकुमार और उनके बेटों को पकड़ लूँगा। मैं उन्हें नाइन-बेंड ट्विस्टी गुफा में वापस ले जाऊँगा और तुम्हारे विजयी होकर लौटने का इंतजार करूँगा।"

इस योजना को स्वीकार करते हुए, टॉनी लायन, मंकी लायन, स्नोई लायन, एलिफेंट-फाइटर और रैकून-डॉग को अपने साथ शहर की दीवार के पास ले गया, सभी अपने हथियार लिए हुए थे और हवाओं और कोहरे के बीच युद्ध की मांग कर रहे थे।

अध्याय 90

1254

पश्चिम की यात्रा

दूसरी ओर, बंदर और साधु सैंड दीवार पर कूद पड़े, जहाँ बंदर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए बोला, "चोर दुष्ट राक्षसों! मेरे भाई सुअर को अभी इसी वक्त वापस दे दो, मैं तुम्हारी जान बख्श दूँगा। अगर नहीं दिया तो तुम्हारी हड्डियाँ चूर-चूर कर दूंगा और तुम सबको छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दूँगा।" बिना कोई और बहस किए, सभी दुष्ट आत्माएँ हमला करने के लिए टूट पड़ीं। महान ऋषि और साधु सैंड को पाँचों शेरों को रोकने के लिए अपनी कुशलता और चतुराई का इस्तेमाल करना पड़ा। यह लड़ाई पिछले दिन की लड़ाई से बिल्कुल अलग थी।

एक भयानक हवा पूरे देश में गरजती हुई बह रही थी
काले कोहरे ने आसमान को ढक लिया था।
हिलते हुए पत्थर और उड़ती हुई रेत ने देवताओं और राक्षसों दोनों को भयभीत कर दिया;
जंगल में पेड़ गिरने से बाघ और भेड़िये डर गए।
लोहे का भाला भयंकर था और कुल्हाड़ी चमकीली थी।
निर्दयी छड़ी, भाला और पीतल का हथौड़ा।
वे चाहते थे कि वे बंदर को पूरा निगल जाएं।
और फ्रायर सैंड को जीवंत और सक्रिय अवस्था में कैद करें।
महान ऋषि का "जैसा आप चाहें" वाला डंडा
चमत्कारिक प्रभाव के साथ आक्रमण और बचाव कर सकता था।
फ्रायर सैंड की दानव-नाशक छड़ी

इसने हॉल ऑफ मिरेकुलस मिस्ट के बाहर अपनी प्रसिद्धि हासिल की थी।
अब जब यह अपनी जादुई शक्तियों से चलने लगा था,
यह राक्षसों का सफाया करके पश्चिम में प्रसिद्धि प्राप्त करेगा।
विभिन्न रंगों के वस्त्र पहने पाँच शेर आत्माएँ बंदर और साधु रेत से ज़बरदस्त लड़ाई लड़ रही थीं, तभी एक बूढ़ा राक्षस काले बादल पर उड़कर सीधे दीवार के बुर्ज पर पहुँचा। वहाँ उसने अपने सिर हिलाए, जिससे सैन्य और नागरिक अधिकारी, संज़ंग, वरिष्ठ राजकुमार और दीवार की रखवाली कर रहे सैनिक इतने भयभीत हो गए कि वे सब गिर पड़े। फिर राक्षस बुर्ज में घुस गया, अपने मुँह खोले, संज़ंग, वरिष्ठ राजकुमार और उनके बेटों को एक-एक करके अपने मुँह में ले लिया और वापस खोखली ज़मीन पर चला गया, जहाँ उसने सूअर को अपने नौ सिरों में से एक मुँह में ले लिया। एक मुँह में तांग पुजारी, एक में सूअर, एक में वरिष्ठ राजकुमार, एक में उनका सबसे बड़ा बेटा, एक में दूसरा बेटा और एक में तीसरा बेटा था।
छह लोगों से भरे छह मुँह होने के बावजूद, उसके तीन मुँह अभी भी खाली और चौड़े खुले हुए थे, और वह दहाड़ते हुए बोला, "मैं आगे जा रहा हूँ।" अपने दादा की विजय देखने के बाद, पाँचों नन्हे शेर आत्माओं ने पहले से कहीं अधिक बहादुरी से लड़ाई लड़ी।
अध्याय 90
1255
पश्चिम की यात्रा
जैसे ही बंदर ने दीवार से आती चीखें सुनीं और उसे एहसास हुआ कि वह एक चाल में फंस गया है, उसने साधु रेत को जल्दी से चेतावनी दी कि सावधान हो जाओ। फिर उसने अपनी बाहों के सारे बाल खींच लिए, उन्हें अपने मुंह में डाला, चबाया और थूक दिया। इसके साथ ही एक हजार से अधिक छोटे बंदर भी हमला करने के लिए टूट पड़े। उन्होंने बंदर शेर को गिरा दिया, बर्फीले को जिंदा पकड़ लिया, हाथी-योद्धा को पकड़ लिया, रैकून-कुत्ते शेर को नीचे गिरा दिया और भूरे शेर को मार डाला; लेकिन जब वे शोर मचाते हुए शहर की दीवार पर लौटे तो उन्होंने हरे चेहरे वाले, चालाक सनकी और सनकी को भागने दिया। जब दीवार पर तैनात अधिकारियों ने यह सब देखा तो उन्होंने द्वार खोल दिए, पांचों शेर आत्माओं को रस्सियों से बांध दिया और उन्हें शहर में ले गए।

लेकिन इससे पहले कि वे उनसे निपट पाते, राजकुमारी सिसकते-सिसकते प्रकट हुईं और बोलीं, "पवित्र गुरुओं, महाराज, हमारे पुत्र और आपके गुरु सभी मर चुके हैं। यह एकांत नगर कैसे बचेगा?"

अपने जादुई बालों को समेटते हुए, बंदर ने उन्हें प्रणाम किया और कहा, "राजकुमारी, परेशान मत होइए। मैंने उसके सात शेर आत्माओं को पकड़ लिया था, इसीलिए उस बूढ़े राक्षस ने जादू से मेरे स्वामी, महाराज और आपके पुत्रों को अगवा कर लिया। मुझे पूरा विश्वास है कि उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। मेरा भाई-शिष्य और मैं कल सुबह सबसे पहले उसके पर्वत पर जाएंगे, और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम उस बूढ़े राक्षस को पकड़कर आपके चारों राजकुमारों को वापस आपके पास ले आएंगे।"

जब राजकुमारी और उनकी सहेलियों ने यह सुना तो वे सब बंदर को प्रणाम करके बोलीं, "हम प्रार्थना करते हैं कि महाराज और उनके पुत्र सब सुरक्षित रहें और हमारा वंश निश्चिंत रहे।" प्रणाम करने के बाद सभी सहेलियाँ आँसू बहाते हुए महल लौट गईं।

"हमने जिस भूरे शेर की आत्मा को मारा है, उसकी खाल उतार दो," भाई बंदर ने अधिकारियों को निर्देश दिया, "और जो पाँच लोग अभी जीवित हैं, उन्हें सुरक्षित रूप से बांधकर ताला लगा दो। सोने से पहले हमें कुछ शाकाहारी भोजन ला दो। चिंता मत करो: मैं वादा करता हूँ कि कुछ भी गलत नहीं होगा।"

अगली सुबह महान ऋषि साधु सैंड को एक शुभ बादल पर बिठाकर ऊपर ले गए। कुछ ही देर में वे बांस पर्वत की चोटी पर पहुँच गए, और जब उन्होंने नीचे आकर देखा तो पाया कि वह पर्वत भव्य था: उभरी हुई चोटियों की कतारें,

खड़ी और ऊबड़-खाबड़ चोटियाँ।
गहरे गलफड़ों में पानी धीरे-धीरे बहता है;
ऊबड़-खाबड़ चट्टान के सामने फूल एक सुगंधित रेशमी चादर बुनते हैं।
जहां पहाड़ियाँ मुड़कर वापस पीछे की ओर मुड़ जाती हैं,
प्राचीन घुमावदार रास्तों से घिरा हुआ।
जब सारस आता है तो चीड़ के पेड़ को एक साथी मिल जाता है।
और बादल के दूर चले जाने पर चट्टान अकेली रह जाती है।
फल की तलाश करते समय काला बंदर चमकीली चीजों की ओर जाता है;
हिरण धूप की गर्मी का आनंद लेते हुए फूलों की तलाश करते हैं।
हरा फीनिक्स मधुर गीत गाता है

और उस सुनहरे पक्षी के मधुर गीत कभी बंद नहीं होते।
वसंत ऋतु में आड़ू के फूल बेर के फूलों से प्रतिस्पर्धा करते हैं;
गर्मी के मौसम में विलो और बबूल के पेड़ एक-दूसरे के प्रतिद्वंदी होते हैं।
शरद ऋतु में चारों ओर गुलदाउदी के फूलों की चादर बिछी होती है।
और सर्दियों में चारों ओर बर्फ उड़ती रहती है।
यहां साल भर खूबसूरती बनी रहती है।
जहां के नजारे यिंगझोऊ की जादुई भूमि से तुलना करने लायक हैं।
जब वे दोनों पहाड़ पर खड़े होकर नज़ारे का आनंद ले रहे थे, तभी अचानक चट्टानों के बीच एक खाई में ग्रीनफेस प्रकट हुआ। उसके हाथ में एक छोटी लाठी थी। "तुम कहाँ जा रहे हो?" बंदर चिल्लाया।
"मैं यहाँ हूँ।"
इससे उस नन्हे शैतान को इतना डर लगा कि वह भागता हुआ खाई में गिर पड़ा। बंदर और साधु सैंड उसके पीछे दौड़े, लेकिन उन्हें उसका कोई सुराग नहीं मिला। जब वे आगे गए और चारों ओर खोजबीन की, तो उन्हें चित्तीदार पत्थर के दोहरे द्वार वाला एक गुफा महल मिला, जो मजबूती से बंद था। द्वारों के ऊपर एक पत्थर की पट्टिका लगी थी, जिस पर बड़े अक्षरों में लिखा था: नौ-मोड़ वाली घुमावदार गुफा।
शक्तिशाली बांस पर्वत
जब छोटा शैतान गुफा के अंदर भागा तो उसने अपने पीछे द्वार मजबूती से बंद कर दिए। अंदर पहुँचकर उसने बूढ़े दानव को बताया, "मेरे स्वामी, वे दोनों भिक्षु बाहर हैं।"
"क्या तुम्हारे स्वामी, बंदर शेर, बर्फीला शेर, हाथी योद्धा और रैकून-कुत्ता वापस आ गए हैं?" बूढ़े राक्षस ने पूछा।
"मैंने उन्हें नहीं देखा है," छोटे दानव ने उत्तर दिया।
"चोटी पर काफी ऊंचाई से दो भिक्षु इधर-उधर देख रहे थे। जैसे ही मैंने उन्हें देखा, मैं मुड़ा और भाग गया। जैसे ही वे मेरे पीछे आए, मैंने द्वार बंद कर दिए।"
यह खबर सुनकर बूढ़ा राक्षस चुपचाप सिर झुकाए बैठा रहा। कुछ देर बाद उसकी आँखों से आंसू बहने लगे और वह पुकारने लगा,

"यह बहुत भयानक है। मेरा पोता टॉनी लायन मर गया है। मेरे पोते मंकी लायन और बाकी सभी को उन भिक्षुओं ने पकड़ लिया है और शहर ले गए हैं। मैं अपना बदला कैसे लूँ?"

पिग को पास ही बांधकर, तांग पुजारी और राजकुमारों के साथ ठूंस-ठूंस कर रखा गया था। वह भयभीत और दुखी था, तभी उसने बूढ़े राक्षस को यह कहते सुना कि उसके पोतों को पकड़ लिया गया है और शहर में ले जाया गया है। यह सुनकर उसने शांत प्रसन्नता से कहा, "भयभीत न हों, स्वामी जी। हिम्मत रखिए, महाराज। मेरे बड़े भाई ने जीत हासिल कर ली है।" (अध्याय 90)

उसने सारे शैतानों को पकड़ लिया है और वह हमें बचाने के लिए यहाँ आ गया है।"

यह कहते ही बूढ़े राक्षस के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी, "बच्चों, इस जगह की अच्छी तरह रखवाली करो, मैं बाहर जाकर उन दो भिक्षुओं को पकड़ लेता हूँ। फिर हम उन सबको एक साथ दंडित करेंगे।"

उसे देखो, वह बिना कवच या हथियारों के ही आगे बढ़ रहा है। बंदर की चीख सुनकर उसने गुफा के द्वार खोल दिए और जवाब देने की ज़हमत भी नहीं उठाई। बंदर ने लोहे का डंडा उठाकर उसके सिर पर वार करने की कोशिश की, वहीं साधु सैंड ने भी अपनी लाठी से उस पर वार किया। जैसे ही राक्षस ने अपना मुख्य सिर हिलाया, उसके बाईं और दाईं ओर के आठों सिरों ने अपने मुँह खोल दिए और बंदर और साधु सैंड को धीरे से उठाकर गुफा के अंदर ले गए।

"रस्सी लाओ," उसने आदेश दिया; और विली फ्रीक, फ्रीकी वाइल और ग्रीनफेस, जो पिछली रात भागने के बाद वापस आए थे, दो रस्सियाँ लाए जिनसे उन्होंने उन दोनों को बहुत मजबूती से बांध दिया। "बेशर्म बंदर,"

बूढ़े राक्षस ने कहा, "तुमने मेरे सात पोतों को बंदी बना लिया था। लेकिन अब मैंने तुम चारों भिक्षुओं और चारों राजकुमारों को पकड़ लिया है, मेरे पास उन्हें छुड़ाने के लिए पर्याप्त धन है। बच्चों, कुछ कांटे और विलो की छड़ें ले आओ और मेरे पोते टॉनी लायन का बदला लेने के लिए इस बंदर को पीट दो।"

फिर तीनों छोटे शैतानों ने बंदर को बेंत की छड़ियों से पीटा, लेकिन बंदर का शरीर इतना कठोर हो चुका था कि छड़ियों से उसकी खुजली ही छिल रही थी। उसने कोई

आवाज़ नहीं निकाली और उसे ज़रा भी तकलीफ़ नहीं हुई, चाहे कितनी भी ज़ोर से उसे मारा गया हो। लेकिन यह देखकर सूअर, तांग पुजारी और राजकुमारों के रोंगटे खड़े हो गए। थोड़ी देर में छड़ियाँ टूटने लगीं, लेकिन राक्षस शाम तक मारते रहे, उन्होंने मार की गिनती भी नहीं की।

भिक्षु सैंड बंदर को इतनी देर तक कोड़े खाते देखकर बहुत दुखी हुए, इसलिए उन्होंने कहा, "मुझे उसके लिए लगभग सौ कोड़े खाने दो।"

"इतने अधीर मत हो," बूढ़े राक्षस ने उत्तर दिया, "कल तुम्हारी पिटाई होगी। बारी-बारी से सबका काम तमाम हो जाएगा।"

"इसका मतलब है कि परसों मेरी बारी होगी," पिग ने घबराते हुए कहा। रात धीरे-धीरे होने लगी और पिटाई कुछ देर तक जारी रही।

“बच्चों,” बूढ़े राक्षस ने पुकारा, “अभी रुक जाओ। दीपक जलाओ और कुछ खाने-पीने जाओ। मैं अपने रेशमी बादलों के अड्डे में थोड़ी देर आराम करने जा रहा हूँ। तुम तीनों ने बहुत मेहनत की है, इसलिए इन पर कड़ी नज़र रखना। कल फिर मार-पिटाई करेंगे।” तीनों छोटे शैतानों ने एक दीपक खिसकाया और अपनी बेंत की छड़ियों से बंदर के सिर पर और वार किए, टिक-टिक-टॉक, टॉक-टॉक-टॉक, जैसे लकड़ी के वाद्य यंत्र की ताल हो, कभी तेज़ तो कभी धीमी। तब तक बहुत रात हो चुकी थी और वे सब सो गए।

अब बंदर ने जादू का इस्तेमाल करते हुए खुद को छोटा कर लिया, अपने बंधनों से बाहर निकला, अपने फर को झटका दिया, अपने कपड़े ठीक किए, अपने कान से लाठी निकाली और उसे तब तक हिलाया जब तक कि वह कुएं की बाल्टी जितनी मोटी और लगभग बीस फीट लंबी नहीं हो गई।

फिर उसने तीनों छोटे शैतानों से कहा, "तुम जानवरों, तुमने मुझे बहुत बार मारा है, अब मैं तुम्हें इसका बदला चुकाने जा रहा हूँ। मैं इसे तुम्हारे ऊपर मारता हूँ और देखता हूँ कि तुम्हें कैसा लगता है।" लाठियों के एक हल्के धक्के से तीनों शैतान कीमा किए हुए सूअर के मांस के तीन टुकड़ों में बदल गए। फिर बंदर ने दीपक जलाया और साधु सैंड को छोड़ दिया।

बंधे होने से बेहद परेशान सुअर खुद को जोर-जोर से चिल्लाने से रोक नहीं सका।

"मेरे हाथ-पैर इतनी कसकर बंधे हैं कि सूज गए हैं। आप आकर मुझे क्यों नहीं खोलते?"

उस मूर्ख की चीख ने बूढ़े राक्षस को तुरंत जगा दिया, जो बिस्तर से लुढ़क कर उठा और चिल्लाया, "इन्हें कौन आज़ाद कर रहा है?" जैसे ही बंदर ने यह सुना, उसने दीपक बुझा दिया और अध्याय 90 के कई सेट तोड़ते हुए आगे बढ़ गया।

1258

पश्चिम की यात्रा

उसने अपने डंडे से दरवाज़े तोड़ दिए और भाग गया, फ्रायर सैंड और बाकी लोगों की उसे कोई परवाह नहीं थी, जबकि बूढ़ा राक्षस मुख्य हॉल में चिल्लाते हुए गया, "बच्चों, यहाँ रोशनी क्यों नहीं है? उन्हें भागने मत दो!" उसने एक बार चिल्लाया लेकिन कोई जवाब नहीं मिला, फिर दोबारा चिल्लाया, और फिर भी कोई जवाब नहीं मिला।

जब उसने लालटेन लाकर देखा तो उसे ज़मीन पर मांस के तीन लहूलुहान टुकड़े ही दिखाई दिए। राजकुमार, उसके बेटे, तांग पुजारी और सुअर तो वहीं थे, लेकिन बंदर और साधु सैंड गायब हो गए थे। उसने मशाल जलाई, आगे-पीछे सब जगह तलाशा, लेकिन उसे सिर्फ़ साधु सैंड ही मिला, जो गलियारे की दीवार से सटा खड़ा था। राक्षस ने उसे नीचे गिराया, पहले की तरह बाँध दिया और बंदर को ढूँढ़ने लगा। जब उसने देखा कि उसके सारे दरवाज़े टूटे पड़े हैं, तो उसे समझ आया कि बंदर ने भागते समय उन्हें तोड़ दिया है। उसका पीछा करने के बजाय उसने दरवाज़ों की मरम्मत की और उन्हें बंद कर दिया और अपने घर की रखवाली करने लगा।

अब कहानी बताती है कि कैसे बंदर ने नौ-मोड़ वाली घुमावदार गुफा को छोड़ा और शुभ बादल पर सवार होकर सीधे युहुआ शहर वापस चला गया, जहां सभी स्थानीय देवी-देवता और आत्माओं के साथ-साथ शहर के देवता भी हवा में झुककर उसका अभिवादन करते हुए देखे जा सकते थे।

“तुम आज ही मुझसे मिलने क्यों आए हो?” बंदर ने पूछा। “जब हमें पता चला कि आदरणीय राजकुमार युहुआ में आपका स्वागत कर रहे हैं, हे महान ऋषि,” उन्होंने उत्तर दिया, “तो हमने आपसे मिलने का साहस नहीं किया। लेकिन अब जब राजकुमारों को राक्षसों ने पकड़ लिया है और आपने उन राक्षसों को परास्त कर दिया है, तो हम प्रणाम करके आपका स्वागत करने आए हैं।” जब बंदर उन्हें गालियां दे रहा था, तभी स्वर्ण सिर वाले रक्षक और छह डिंग और छह जिया सेनापति एक स्थानीय देवता को अंदर लाए और उन्हें जमीन पर घुटने टेकने के लिए मजबूर किया।

उन्होंने कहा, "महान ऋषि, हमने इस जमीन के शैतान को गिरफ्तार कर लिया है।"

"बांस के पहाड़ पर मेरे मालिक की रखवाली करने के बजाय तुम यहाँ शोर क्यों मचा रहे हो?" बंदर चिल्लाया।

“महामहिम,” डिंग और जिया देवताओं ने उत्तर दिया, “दुष्ट आत्मा ने पर्दा उठाने वाले सेनापति को पकड़ लिया और आपके भाग निकलने के बाद उसे फिर से बांध दिया। उसकी जादुई शक्तियों की महानता को देखते हुए, हम बांस पर्वत के स्थानीय देवता को यहाँ लाए हैं। वह उस दुष्ट आत्मा के बारे में सब कुछ जानते हैं, इसलिए हम आपसे निवेदन करते हैं, महामहिम, कि आप उनसे पूछताछ करें और पता लगाएं कि उससे निपटने और पवित्र भिक्षुओं और योग्य राजकुमारों को उनके कष्टों से मुक्ति दिलाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है।” यह सुनकर बंदर अत्यंत प्रसन्न हुआ।

"पिछले से पिछले साल वह बूढ़ा राक्षस बांस पर्वत पर आया था," स्थानीय देवता ने कांपते हुए और सिर झुकाते हुए कहा। "नौ मोड़ वाली टेढ़ी-मेढ़ी गुफा कभी छह शेरों की मांद हुआ करती थी। जब वह बूढ़ा राक्षस आया, तो उन छहों शेरों ने उसे अपना दादा मान लिया। वह नौ सिर वाला शेर है जिसे नौ गुना दिव्यता का आदिम ऋषि कहा जाता है। यदि आप उससे निपटना चाहते हैं, तो आपको सुदूर पूर्व में स्थित अद्भुत चट्टानी महल में जाना होगा और उसके स्वामी को यहाँ लाकर उसे वश में करना होगा। उसके अलावा कोई और यह नहीं कर सकता।"

यह सुनकर बंदर ने बहुत देर तक सोचा और फिर बोला, "पूर्व दिशा में स्थित अद्भुत चट्टानी महल में महान एकेश्वरवाद के परम पूजनीय उद्धारकर्ता निवास करते हैं। जी हाँ, उनके सिंहासन के नीचे ठीक ऐसा ही नौ सिर वाला शेर है। हे रक्षक, जियास," उसने आदेश दिया, "स्थानीय देवता के साथ वापस जाओ और गुरु, मेरे भाई शिष्य, नगर के राजकुमार और उनके पुत्रों पर गुप्त रूप से नज़र रखो। नगर के देवता को दीवार और खाई की रक्षा करनी चाहिए। तुम जाओ।" सभी देवताओं ने निर्देशानुसार पहरा देना शुरू कर दिया।

महान ऋषि ने अपना कलाबाज बादल उड़ाया और रात भर यात्रा करते रहे जब तक कि लगभग अंतिम पहर नहीं हो गया, तब वे स्वर्ग के पूर्वी द्वार पर पहुँचे, जहाँ उनकी मुलाकात स्वर्ग के राजा विरुपाक्ष और उनके साथ आए स्वर्गीय सैनिकों और योद्धाओं से हुई, जो रुक गए, हाथ जोड़कर अभिवादन किया और पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं, महान ऋषि?"

अध्याय 90

1259

पश्चिम की यात्रा

"मैं अद्भुत चट्टानी महल जा रहा हूँ," बंदर ने अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा। "पश्चिमी स्वर्ग जाने के बजाय तुम पूर्वी स्वर्ग क्यों आ गए?" विरुपाक्ष ने पूछा। "जब हम युहुआ नगर पहुँचे," बंदर ने उत्तर दिया, "नगर के राजकुमार ने हमारा स्वागत किया और अपने तीनों पुत्रों को हमें मार्शल आर्ट का शिक्षक बनाने के लिए कहा। हमें एक बहुत ही अप्रिय आश्चर्य हुआ: हमारा सामना शेर राक्षसों के एक गिरोह से हुआ। अब मैं महान मोनड के परम पूजनीय उद्धारकर्ता, जो इस राक्षस के मुखिया हैं, से प्रार्थना करने जा रहा हूँ कि वे इसे वश में करें और मेरे स्वामी को बचाएँ।"

“शिक्षक बनने की चाहत में ही तुमने शेरों के साथ वो झगड़ा छेड़ा था,” स्वर्ग के राजा ने कहा। “बिल्कुल सही,” बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “बिल्कुल सही।” स्वर्ग के सभी सैनिकों और योद्धाओं ने हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया और फिर उन्हें रास्ता देने के लिए एक तरफ हट गए। बंदर स्वर्ग के पूर्वी द्वार से अंदर गया और जल्द ही अद्भुत चट्टानी महल में पहुँच गया। वहाँ से ये दृश्य दिखाई दे रहा था: रंग-बिरंगे बादलों के पीछे रंग-बिरंगे बादल।

बैंगनी धुंध और घनी हरी वनस्पति।

छत की टाइलें सुनहरी लौ की लहर की तरह हैं।

और द्वारों पर जेड पत्थर से बने भव्य पशु विराजमान हैं।

द्वार स्तंभों के बीच फूल उगते हैं, जिनके चारों ओर लाल धुंध छाई रहती है; जंगलों से उठती हुई फ़िरोज़ी रंग की भाप पर सूरज की रोशनी पड़ती है।

सभी अमर आत्माएं अपना सम्मान व्यक्त करती हैं।

और हजारों ऋषि मिलकर सब कुछ फलने-फूलने में मदद करते हैं।

महल के गलियारे रेशमी कपड़े की परतों की तरह हैं;

खिड़कियाँ और मंडप सभी दिशाओं में खुलते हैं।

नीले रंग के ड्रैगन पवित्र बादलों से जगमगाते हैं;

जादुई धुंध से चमकीली सुनहरी किरणें निकलती हैं।

यह वैभव और शाश्वत आनंद की भूमि है।

सुदूर पूर्व में स्थित अद्भुत चट्टानी महल।

महल के द्वार पर इंद्रधनुषी रंग का वस्त्र पहने एक अमर बालक खड़ा था। जैसे ही

उसने महान ऋषि को देखा, वह अंदर जाकर बोला, "हे प्रभु, स्वर्ग में प्रलय मचाने वाले स्वर्ग के समान महान ऋषि यहाँ आए हैं।" जब महान ऋषि ने यह सुना, तो उन्होंने अपने सभी सेवकों को बंदर का स्वागत करने और उसे महल में लाने का आदेश दिया। वहाँ, महान ऋषि अनगिनत शुभ प्रकाश की किरणों के बीच नौ रंगों के कमल सिंहासन पर विराजमान थे। बंदर को देखकर वे सिंहासन से नीचे उतर आए और उसका अभिवादन किया। बंदर ने नीचे से उन्हें प्रणाम किया।

अध्याय 90

1260

पश्चिम की यात्रा

"महान ऋषि," स्वर्ग के पूजनीय व्यक्ति ने प्रणाम करते हुए कहा, "मैंने आपको वर्षों से नहीं देखा, लेकिन मैंने सुना है कि आपने बौद्ध धर्म के लिए मार्ग त्याग दिया है और तांग पुरोहित को पश्चिमी स्वर्ग से शास्त्र लाने के लिए ले जा रहे हैं। मेरा मानना है कि अब आप सफल हो गए हैं।"

“अभी नहीं,” बंदर ने उत्तर दिया, “लेकिन लगभग हो ही गया है। मैं तांग पुजारी को युहुआ तक ले गया था, जहाँ राजकुमार ने अपने तीन बेटों को मुझे और बाकी दो को मार्शल आर्ट का शिक्षक बनाने के लिए कहा और हमारे तीन जादुई हथियारों की प्रतियाँ बनवाईं। हमें आश्चर्य हुआ कि एक रात वे हथियार चोरी हो गए। अगले दिन जब मैंने उनकी तलाश की तो पता चला कि उन्हें माउंट लेपर्ड हेड पर टाइगरमाउथ गुफा से एक सुनहरे बालों वाले शेर द्वारा परिवर्तित आत्मा ने चुराया था। मैंने चतुराई से उन्हें उससे वापस ले लिया, जिसके बाद उस आत्मा ने कुछ अन्य शेर आत्माओं के साथ मिलकर मुझे भयंकर लड़ाई दी। उनमें से एक नौ सिर वाला शेर था जिसके पास अपार जादुई शक्तियाँ थीं, जो मेरे गुरु, सुअर, राजकुमार और उसके तीन बेटों को माउंट बैम्बू पर नाइनबेंड ट्विस्टी गुफा में ले गया। अगले दिन जब फ्रायर सैंड और मैं उन्हें खोजने गए तो हमें भी अगवा कर लिया गया। उसने मुझे बांध दिया और इतनी बार मारा कि मैं गिन भी नहीं पाया। सौभाग्य से मैं जादू से बच निकलने में कामयाब रहा, लेकिन वे अभी भी वहाँ कष्ट झेल रहे हैं।” जब मैंने स्थानीय देवता से पूछताछ की तो मुझे पता चला कि आप ही उसके स्वामी हैं, हे परम पूज्य, इसीलिए मैं यहाँ आपसे शेर को वश में करने और उन्हें बचाने की विनती करने आया हूँ।"

जैसे ही परम पूज्य भगवान ने यह सुना, उन्होंने अपने अमर अधिकारियों को शेर के

घर भेजा और अपने शेर रक्षक दास को बुलाकर उससे पूछताछ करने को कहा। शेर रक्षक दास इतनी गहरी नींद में सो रहा था कि अधिकारियों को उसे धक्का देकर और हिलाकर जगाना पड़ा, तब जाकर वे उसे मुख्य हॉल में घसीटकर लाए। वहाँ परम पूज्य भगवान ने उससे पूछा, "शेर कहाँ है?"

गुलाम बस इतना ही कर सकता था कि वह रोते हुए उसके चेहरे से आंसू बह रहे थे और वह गिड़गिड़ाते हुए कह रहा था, "मुझे बख्श दो, मुझे बख्श दो।"

“महान ऋषि सूर्य यहाँ उपस्थित हैं,” स्वर्ग के परम पूज्य ने उत्तर दिया, “इसलिए मैं तुम्हें अभी पराजित नहीं होने दूँगा। तुम्हें इसी वक्त नौ सिर वाले शेर को भागने देने की अपनी लापरवाही का स्पष्टीकरण देना होगा।”

"मेरे स्वामी," शेरपाल ने उत्तर दिया, "मैंने महान चिलियोकोस्म के स्वीट ड्यू पैलेस में शराब का एक घड़ा चुराकर पी लिया। मुझे पता भी नहीं चला कि क्या हुआ और मैं बुरी तरह नशे में धुत हो गया। लगता है वह अपनी जंजीरों से छूटकर भाग गया।"

“वह मदिरा मुझे परम सत्ता के भगवान लाओ ज़ी ने दी थी,” स्वर्ग के पूजनीय व्यक्ति ने उत्तर दिया। “इसे चक्रीय अमृत कहते हैं, और इसे पीने के बाद आप तीन दिन सो जाते। शेर को गए कितने दिन हो गए हैं?”

"स्थानीय देवता ने बताया कि वह पिछले साल से एक साल पहले वहां गया था, जिसका मतलब दो साल या उससे अधिक होगा," महान ऋषि ने कहा।

“जी हाँ,” परम पूज्य ने मुस्कुराते हुए कहा, “स्वर्ग के महलों में एक दिन नश्वर संसार में एक वर्ष के बराबर होता है। उठो,” उन्होंने शेर को काबू करने वाले से कहा। “मैं तुम्हारी जान बख्श दूँगा। महान ऋषि और मेरे साथ पाताल लोक में आओ और उसे वापस ले आओ। तुम सब अमर हो जाओ। तुममें से किसी को भी हमारे साथ आने की ज़रूरत नहीं है।”

परम पूज्य, शेर-पालक दास और महान ऋषि तीनों बादल पर सवार होकर सीधे बांस पर्वत पर गए, जहाँ चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षक, छह डिंग, छह जिया और पर्वत के स्थानीय देवता सभी ने घुटने टेककर उनका स्वागत किया।

"क्या आप लोगों द्वारा मेरे स्वामी की रक्षा करने के दौरान उन्हें कोई नुकसान पहुँचा है?" भाई बंदर ने पूछा।

देवताओं ने उत्तर दिया, “दुष्ट आत्मा इतनी क्रोधित हुई कि वह सो गई। उसने उन्हें और कष्ट नहीं दिया।”

“मेरे वे आदिम ऋषि एक सच्चे आत्मा हैं जिन्होंने लंबे समय तक मार्ग का अभ्यास किया है,” परम पूज्य ने कहा। “उनकी एक पुकार तीनों ऋषियों तक और पाताल लोक तक पहुँच जाएगी। वह अध्याय 90

1261

पश्चिम की यात्रा

किसी को भी आसानी से मत मारो। हे महान ऋषि सूर्य, उसके द्वार पर जाओ, उसे युद्ध के लिए चुनौती दो और उसे बाहर खींच लाओ ताकि हम उसे पकड़ सकें।"

जैसे ही बंदर ने यह सुना, वह अपनी लाठी लहराते हुए और जोर-जोर से अपशब्द कहते हुए गुफा के मुँह की ओर दौड़ पड़ा, "अरे दुष्ट आत्मा, मेरे लोगों को वापस दे! अरे दुष्ट आत्मा, मेरे लोगों को वापस दे!" उसने कई बार चिल्लाया, लेकिन बूढ़ा राक्षस गहरी नींद में सो रहा था और किसी ने जवाब नहीं दिया। बंदर का धैर्य टूट गया, उसने अपनी लाठी घुमाई और कोसते हुए गुफा के अंदर घुस गया।

तभी बूढ़ा राक्षस जाग उठा, अपने पैरों पर खड़ा हुआ और भयंकर क्रोध से चिल्लाया, "मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ!" उसने अपना सिर हिलाया और बंदर को उठाने के लिए अपना मुंह खोला।

जैसे ही बंदर मुड़ा और भागने लगा, दुष्ट आत्मा उसका पीछा करते हुए गुफा के बाहर तक गई और चिल्लाने लगी, "तुम्हें क्या लगता है कि तुम कहाँ जा रहे हो, चोर बंदर?"

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतना बुरा बर्ताव करने की!" बंदर ने ऊँची चट्टान की चोटी पर खड़े होकर मुस्कुराते हुए कहा। "तुम्हें यह भी समझ नहीं है कि तुम्हारी जान खतरे में है। क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि तुम्हारा मालिक यहाँ है?"

जब दुष्ट आत्मा बंदर का पीछा करते हुए चट्टान तक पहुँची, तब तक परम पूज्य ने एक मंत्र पढ़ा और चिल्लाकर कहा, "मैं यहाँ हूँ, मेरे नन्हे आदिम ऋषि।" अपने स्वामी को पहचानते ही राक्षस ने संघर्ष छोड़ दिया और चारों पैर जमीन पर रखकर प्रणाम किया।

तब शेरपाल दौड़कर उसके पास गया, उसकी गर्दन पकड़ी और सैकड़ों घूंसे मारते हुए अपशब्दों से बोला, "भाग क्यों गए, जानवर? तुमने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया।"

शेर चुप रहा और कुछ नहीं बोला, हिलने की हिम्मत भी नहीं की, और शेरपाल ने तब तक मारना बंद नहीं किया जब तक उसकी मुट्ठी थक नहीं गई। जब शेर की पीठ पर जकूज़ी का कपड़ा डाल दिया गया, तब परम पूज्य ने उस पर सवार होकर उसे चलने का आदेश दिया। फिर वे रंगीन बादलों पर सवार होकर सीधे अद्भुत चट्टानी महल की

ओर चल दिए।

आकाश की ओर धन्यवाद अर्पित करने के बाद, महान ऋषि गुफा में गए और सबसे पहले युहुआ के राजकुमार, फिर संज़ंग, फिर सुअर, साधु रेत और तीनों युवा राजकुमारों को मुक्त किया। इसके बाद उन्होंने गुफा की आराम से तलाशी ली और सभी को बाहर ले आए। सुअर कुछ सूखी झाड़ियाँ लाया, उन्हें आगे और पीछे ढेर किया और आग जला दी, जिससे नौ-मोड़ वाली घुमावदार गुफा एक खंडहर, जले हुए भट्ठे जैसी दिखने लगी। बंदर ने सभी देवताओं को मुक्त कर दिया, स्थानीय देवता को गुफा की रखवाली करने का आदेश दिया और सुअर और साधु रेत को अपनी जादूई शक्तियों का उपयोग करके चारों राजकुमारों को वापस शहर ले जाने के लिए कहा, जबकि वह तांग पुजारी की मदद कर रहा था। वे जल्द ही शहर पहुँच गए, जहाँ राजकुमारी और सभी अधिकारी उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए। अब अंधेरा हो रहा था, और सभी के लिए शाकाहारी भोजन का आयोजन किया गया। आदरणीय बुजुर्ग और उनके शिष्य एक बार फिर जालीदार मंडप में सो गए, और राजकुमार महल के आवास में सो गए। उस रात के बारे में और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

अगले दिन राजकुमार ने एक और भव्य शाकाहारी भोज आयोजित करने का आदेश दिया। महल के सभी उच्च-स्तरीय अधिकारियों ने आभार व्यक्त किया, और बंदर ने कसाइयों को बुलाया कि वे जीवित बचे छह शेरों को मारकर उनकी खाल भूरे शेर की तरह उतारें और उनका मांस खाने के लिए तैयार करें। राजकुमार इस प्रस्ताव से प्रसन्न हुए और उन्होंने शेरों को मारने का आदेश दिया। एक शेर महल के अंदर और बाहर के कर्मचारियों के लिए रखा गया, एक शेर मुख्य प्रशासक और महल के अन्य अधिकारियों को दिया गया, और बाकी पाँच शेरों के मांस को एक या दो औंस के टुकड़ों में काटकर अधिकारियों ने शहर की दीवार के अंदर और बाहर सैनिकों और नागरिकों में बाँट दिया ताकि सभी को थोड़ा-थोड़ा मिल सके। इस प्रकार लोग स्वाद चख सके और अपना भय दूर कर सके। हर घर इससे बहुत प्रभावित हुआ।

अध्याय 90

1262

पश्चिम की यात्रा

तब तक लोहारों ने तीनों हथियार बना लिए थे और वे बंदर के सामने झुककर कह रहे थे, "मेरे स्वामी, हमने अपना काम पूरा कर लिया है।"

"ये कितने भारी हैं?" बंदर ने पूछा।
"सोने की पट्टी वाली लाठी का वजन एक हजार पाउंड है," लोहारों ने उत्तर दिया, "और नौ दांतों वाला रेक और राक्षस-नाशक लाठी, दोनों का वजन आठ सौ पाउंड है।"
“बस इतना ही काफी है,” बंदर ने कहा और फिर तीनों राजकुमारों को बाहर आने का आदेश दिया। जैसे ही प्रत्येक ने अपना हथियार उठाया, उन्होंने वरिष्ठ राजकुमार से कहा, “महाराज, हमारे हथियार अब तैयार हैं।”
“उन्होंने लगभग तुम्हारे पिता और तुम दोनों की जान ले ली थी,” वरिष्ठ राजकुमार ने उत्तर दिया। “हमारे दिव्य गुरुओं की कृपा से,” युवा राजकुमारों ने कहा, “हम सब बच गए और दुष्ट आत्माओं का नाश हो गया। अब हमें उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। अब यह सचमुच एक शांत दुनिया है, जहाँ समुद्र शांत हैं और नदियाँ निर्मल बह रही हैं।”
इसके बाद चारों राजकुमारों ने लोहारों को पुरस्कार दिया और गुरुओं को धन्यवाद देने के लिए गॉज़ पवेलियन गए।
संज़ंग ने महान ऋषि और अन्य दो को कुछ और युद्ध कलाएँ शीघ्रता से सिखाने को कहा ताकि उनकी यात्रा में देरी न हो। तीनों ने महल के प्रांगण में अपने हथियार चलाए और एक-एक करके रहस्य सिखाए। कुछ ही दिनों में तीनों युवा राजकुमार कुशल कलाकार बन गए। उन्होंने आक्रमण, पीछे हटने और तेज एवं धीमी गति से लड़ने की सभी बहत्तर विधियों में महारत हासिल कर ली। इसका पहला कारण यह था कि राजकुमार पूरी तरह से दृढ़ निश्चयी थे, और दूसरा यह कि महान ऋषि सूर्य ने उन्हें पहले ही दिव्य शक्ति प्रदान कर दी थी जिससे वे हजार पाउंड का गदा और आठ सौ पाउंड का रेक और लाठी उठा और हिला सकते थे। उनकी वर्तमान कुशलता और पहले की कुशलता में ज़मीन-आसमान का अंतर था, और इस पर एक कविता है:
जब उन्होंने दिव्य शिक्षकों को पाने के अपने सौभाग्य का जश्न मनाया
उन्हें कभी उम्मीद नहीं थी कि उनकी पढ़ाई से शेर की आत्मा जागृत हो जाएगी।
बुराई के नाश होने के बाद देश में शांति स्थापित हो गई;
सीमावर्ती क्षेत्र में व्यवस्था स्थापित हो गई क्योंकि सभी एक ही के प्रति समर्पित थे।
सत्ता। नौ गुना दिव्यता की शक्तियाँ उनके अनेक संघर्षों के दौरान तब तक बनी रहीं जब तक कि सर्वांगीण विशेषज्ञता के साथ मार्ग प्राप्त नहीं हो गया।
यह उत्कृष्ट शिक्षा सदा के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रहेगी।
और युहुआ को शाश्वत शांति और आनंद प्राप्त हो।

राजकुमार ने तीनों गुरुओं को धन्यवाद देने के लिए एक और भव्य भोज का आयोजन किया, और पुरस्कार के रूप में सोने-चांदी से भरा एक विशाल बर्तन लाया गया। बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "इसे सीधे अंदर ले जाओ, सीधे अंदर ले जाओ। हम भिक्षु हैं, और यह हमारे किसी काम का नहीं है।"

"हम सचमुच सोना या चांदी नहीं ले जा सकते," उसके बगल में खड़े सुअर ने कहा, "लेकिन शेर की आत्माओं ने हमारे कपड़े फाड़ डाले हैं। अगर आप हमें बदलने के लिए कपड़े दे दें तो यह आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी होगी।" राजकुमार (अध्याय 90)

1263

पश्चिम की यात्रा

उन्होंने अपने दर्ज़ियों को नीले, लाल और भूरे रंग के ब्रोकेड के कुछ थान लाने और उन तीनों के लिए उनके पुराने वस्त्रों के शैली और रंगों के अनुसार एक-एक वस्त्र बनाने का आदेश दिया। तीनों ने प्रसन्नतापूर्वक अपने नए ब्रोकेड कुर्ते स्वीकार किए और पहन लिए, जिसके बाद उन्होंने अपना सामान समेटा और फिर से अपने रास्ते पर चल पड़े। शहर के अंदर और बाहर, युवा और वृद्ध, सभी ने कहा कि वे अर्हत और पृथ्वी पर अवतरित साक्षात बुद्ध हैं। ढोल और संगीत की ध्वनि से सड़कें भीड़ से भर गईं और झंडे लहराने लगे। वास्तव में: हर घर के द्वार से अगरबत्ती का धुआँ उठ रहा था;

हर घर के दरवाजे पर रंगीन लालटेनें कतारों में लटकी हुई थीं।

लोगों ने उन्हें अपनी यात्रा के दौरान दूर-दूर तक देखने के बाद ही वापस लौटना शुरू किया। तभी चारों यात्री शहर छोड़कर पश्चिम की ओर चल पड़े। शहर छोड़कर उन्होंने सभी विचारों को त्याग दिया और अपना पूरा ध्यान सच्ची उपलब्धि में लगा दिया। वास्तव में:

वे विचारों और चिंताओं से मुक्त होकर बुद्ध की भूमि की खोज करते हैं।

पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ गिद्ध शिखर की ओर बढ़ते हुए।

यदि आपको यह नहीं पता कि यात्रा कितनी आगे जानी थी या यह कब समाप्त होगी, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 91

जिनपिंग में चंद्र महोत्सव की लालटेनें निहारते हुए

तांग पुजारी ने अंधकारमय सार गुफा में अपना अपराध स्वीकार किया

ध्यान का अभ्यास करने के लिए व्यक्ति को कहाँ प्रयास करना चाहिए?

विचार-घोड़े और मन-बंदर के कुकर्मों को शीघ्रता से जड़ से उखाड़ फेंकना।
जब वे मजबूती से बंधे होते हैं तो वे प्रकाश उत्सर्जित करते हैं।
लेकिन जो कोई भी रुक जाता है, वह दुख के तीन मार्गों पर गिर पड़ता है।
यदि कोई दिव्य अमृत को बहने देता है,
प्रकृति का वह शुद्ध स्वरूप, जो जेड रत्न के समान है, शिथिल होने पर मुरझा जाएगा।
क्रोध, खुशी और चिंता, इन सभी भावनाओं को दूर भगाना होगा:
जब उस अद्भुत रहस्य का पता चल जाता है तो वह कुछ भी नहीं लगता।
अध्याय 91
1264
पश्चिम की यात्रा
यह कहानी बताती है कि कैसे तांग पुरोहित और उनके तीन शिष्य युहुआ शहर से निकले और उन्होंने स्वर्ग जैसी भूमि में बड़ी सहज यात्रा की। पाँच-छह दिन की यात्रा के बाद उन्हें एक और शहर दिखाई दिया।
"यह कहाँ है?" तांग पुजारी ने भाई बंदर से पूछा।
“यह एक शहर है,” बंदर ने जवाब दिया, “लेकिन शहर की दीवार के ऊपर खंभों पर कोई झंडा नहीं है और मैं इस इलाके को नहीं जानता, इसलिए पास पहुँचकर पूछ लूँगा।” जब वे पूर्वी उपनगर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ बार और चाय की दुकानों की भरमार थी और चावल का बाज़ार और तेल की दुकानें चहल-पहल से भरी हुई थीं। कुछ आवारा लोग जो सड़कों पर घूम रहे थे और जिनके पास करने को कुछ नहीं था, सूअर की लंबी थूथन, साधु सैंड का काला चेहरा और बंदर की लाल आँखें देखकर उन्हें करीब से देखने के लिए जमा हो गए, लेकिन यात्रियों से सवाल करने की हिम्मत नहीं कर पाए। तांग पुजारी इस चिंता से पसीना बहा रहे थे कि कहीं वे कोई मुसीबत न खड़ी कर दें, क्योंकि वे कई और गलियाँ पार कर चुके थे और अभी तक शहर की दीवार तक नहीं पहुँचे थे। तभी उन्होंने एक मठ का द्वार देखा जिसके ऊपर “बादलों” शब्द लिखे थे।
करुणा मठ।
"घोड़े को आराम देने और भोजन करने के लिए अंदर क्यों न चलें?" तांग पुजारी ने सुझाव दिया, जिस पर बंदर ने उत्तर दिया, "शानदार, शानदार।" फिर वे चारों अंदर गए, और उन्होंने यह देखा: शानदार, विशाल इमारतें।

मूर्तियों के लिए चमकदार आधार...
बुद्ध का महल बादलों से भी ऊपर उठता है;
भिक्षुओं की कोठरियाँ चाँदनी रात के सन्नाटे में स्थित हैं।
लाल धुंध स्तूपों को घेरे हुए है;
हरे-भरे पेड़ों की छाया में शास्त्र-चक्र शीतल रहता है।
यह वास्तव में एक पवित्र भूमि है।
एक और नाग महल,
जहां महावीर हॉल को बैंगनी धुंध ने घेर रखा है।
इन मठों में दर्शनीय स्थलों का आनंद लेने वाले लोगों की हमेशा भीड़ रहती है।
और पर्यटक उस पैगोडा पर चढ़ते हैं जो हमेशा खुला रहता है।
स्टैंड में हर क्षण अगरबत्ती जलती रहती है।
और रात भर वेदी पर दीपक जगमगाते रहते हैं।
मठाधीश के आवास में एक सुनहरी घंटी लयबद्ध ढंग से बजती है।
भिक्षु सूत्र पढ़कर बुद्ध की उपासना करते हैं।
अध्याय 91
1265
पश्चिम की यात्रा
जब वे चारों चारों ओर देख रहे थे, तभी एक भिक्षु मठ में आया और तांग पुजारी से विनम्रतापूर्वक अभिवादन करते हुए कहा, "गुरुजी, आप कहाँ से आए हैं?"
"चीन के तांग दरबार से," तांग पुजारी ने उत्तर दिया, जिस पर भिक्षु घुटनों के बल बैठकर प्रणाम करने लगा, लेकिन तांग पुजारी ने उसे तुरंत उठा लिया और पूछा, "हे आदरणीय मठाधीश, आप यह महान शिष्टाचार क्यों निभा रहे हैं?"
"यहाँ मौजूद सभी सत्त्व प्रेमी, जो सूत्रों का पाठ करते हैं और बुद्ध का नाम जपते हैं, आपके देश चीन में पुनर्जन्म प्राप्त करने की आशा रखते हैं। इसलिए जब मैंने आपको आपके भव्य मुकुट और वस्त्रों में आते देखा, तो मुझे विश्वास हो गया कि आपकी वर्तमान भव्यता आपके पिछले जन्मों की सफल साधना का परिणाम है। इसीलिए आपके समक्ष प्रणाम करना उचित है।"
“मुझे तो चिंता हुई,” तांग पुजारी ने मुस्कुराते हुए कहा, “मुझे तो चिंता हुई। मैं तो बस एक घुमंतू भिक्षु हूँ, वैभव-आराम से मेरा कोई वास्ता नहीं है। हे मठाधीश, आपके

जैसा आराम और सुख-सुविधा में जीवन जीना सचमुच आनंद है।" इसके बाद भिक्षु तांग पुजारी को मुख्य हॉल में बुद्ध प्रतिमाओं की पूजा करने ले गए। तभी संजांग ने अपने शिष्यों को बुलाया। अपने गुरु को भिक्षु से बात करते देख, बंदर और बाकी दो शिष्य अपना चेहरा दूसरी तरफ करके, घोड़े की लगाम पकड़े और सामान की देखभाल करते हुए एक समूह में खड़े थे, ताकि भिक्षु उन्हें देख न सकें।

लेकिन जब तांग पुजारी की पुकार सुनकर वे मुड़े तो उन्हें देखकर भिक्षु इतना भयभीत हो गया कि उसने पुकार कर कहा, "मेरे स्वामी, आपके ये विशिष्ट शिष्य इतने बदसूरत क्यों हैं?"

तांग पुजारी ने उत्तर दिया, "भले ही वे बदसूरत हों, लेकिन उनमें कुछ जादुई शक्तियां हैं। पूरी यात्रा के दौरान उनकी सुरक्षा के लिए मैं बहुत आभारी रहा हूँ।"

जब वे बात कर रहे थे, तभी और भिक्षु उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए। आगंतुकों का सबसे पहले स्वागत करने वाले भिक्षु ने अन्य भिक्षुओं को समझाया, "यह गुरु चीन के महान तांग राजवंश से आए हैं, और ये तीनों सज्जन उनके विशिष्ट शिष्य हैं।"

अन्य लोगों ने मिली-जुली खुशी और आशंका के साथ कहा, "शिक्षक, आप महान चीन से यहाँ क्यों आए हैं?"

“तांग सम्राट ने मुझे बुद्ध की उपासना करने और पश्चिमी स्वर्ग में शास्त्रों की खोज करने का आदेश दिया है,” संज़ंग ने उत्तर दिया। “मैं इस रास्ते से गुजर रहा था, इसलिए मैं आपके मठ में यह पूछने आया हूँ कि हम कहाँ हैं और आगे बढ़ने से पहले शाकाहारी भोजन कर लूँ।” सभी भिक्षु प्रसन्न हुए और उन्होंने आगंतुकों को मठाधीश के आवास में आमंत्रित किया, जहाँ कुछ और भिक्षु दानदाताओं की ओर से अनुष्ठान कर रहे थे।

सबसे पहले उनसे मिलने वाले भिक्षु ने बाकी लोगों को समझाते हुए कहा, "आओ और देखो कि चीन के लोग कैसे होते हैं: कुछ सुंदर होते हैं और कुछ बदसूरत। सुंदर लोगों की सुंदरता को किसी चित्र या रेखाचित्र में नहीं दर्शाया जा सकता, और बदसूरत लोग सचमुच अजीब दिखते हैं।" भिक्षु और दानदाता सभी उनका अभिवादन करने आए, जिसके बाद सभी लोग बैठ गए।

चाय पीने के बाद तांग पुजारी ने पूछा, "इस खूबसूरत देश का नाम क्या है?"

भिक्षुओं ने उत्तर दिया, "यह जिनपिंग है, जो भारत के बाहरी प्रांतों में से एक है।"

“इस प्रांत से गिद्ध शिखर कितनी दूर है?” तांग पुजारी ने पूछा। “यहाँ से राजधानी तक लगभग सात सौ मील की दूरी है,” भिक्षुओं ने उत्तर दिया, “और हम इतनी दूरी पैदल चलकर तय कर चुके हैं। चूंकि हम इससे आगे नहीं गए हैं... अध्याय 91

1266

पश्चिम की यात्रा

गिद्ध शिखर के पश्चिम में कितनी दूरी है, यह हम नहीं जानते और न ही हम कोई अंदाज़ा लगाना चाहेंगे।" तांग पुजारी ने उन्हें धन्यवाद दिया।

कुछ देर बाद शाकाहारी भोजन परोसा गया, जिसके बाद तांग पुजारी जाने के लिए उत्सुक थे, लेकिन भिक्षुओं और दानदाताओं ने उन्हें रुकने के लिए प्रेरित किया और कहा, "गुरुजी, आपको कुछ दिनों के लिए यहाँ अवश्य रुकना चाहिए।"

अपनी यात्रा शुरू करने से पहले पूर्णिमा उत्सव का आनंद लें।

तांग पुजारी ने उत्तर दिया, "अपनी यात्रा में मुझे केवल पहाड़ों और नदियों का ही ज्ञान रहा है और राक्षसों या दानवों से सामना होने का ही खतरा रहा है, और मैंने समय का बोध खो दिया है। मुझे नहीं पता कि पूर्णिमा कब होती है।"

“हे गुरु, आपका मन बुद्ध की उपासना और ज्ञान प्राप्ति में इतना मग्न है कि आपने इस बारे में सोचा ही नहीं,” भिक्षुओं ने उत्तर दिया। “आज पहले महीने की तेरहवीं तिथि है और आज रात लालटेनें जलाकर देखी जाएँगी। परसों पंद्रहवीं तिथि है, जब उत्सव शुरू होगा और अठारहवीं या उन्नीसवीं तिथि तक चलेगा, जब लालटेनें हटा दी जाएँगी। हम यहाँ उत्सव मनाते हैं और हमारे प्रधान, जो लोगों की देखभाल करते हैं, हर जगह लालटेनें लगवाते हैं और रात भर संगीत बजता रहता है। हमारे पास स्वर्ण दीपों का पुल भी है—यह एक प्राचीन परंपरा है जो आज भी फल-फूल रही है। यदि आप कुछ दिनों के लिए रुकेंगे, तो हमारा मठ निश्चित रूप से आपका सत्कार कर सकता है।”

तांग पुरोहित के पास रुकने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। जैसे ही बुद्ध हॉल में घंटी और ढोल की गूंज आसमान तक पहुँची, श्रद्धालु सड़कों से लालटेनें लेकर बुद्ध को भेंट करने के लिए आने लगे। तांग पुरोहित और बाकी लोग लालटेन देखने के लिए मठाधीश के आवास से बाहर आए, जिसके बाद सभी लोग अंदर चले गए।

अगले दिन, जब उन्होंने मठ के भिक्षुओं द्वारा लाया गया शाकाहारी नाश्ता कर लिया, तो वे पीछे के बगीचे में टहलने लगे। यह वास्तव में एक सुंदर जगह थी: यह साल का पहला महीना था,

वसंत ऋतु का आरंभ।
पेड़ों से घिरा यह बगीचा शांत और सुंदर है;
दृश्य की सुंदरता फीकी पड़ गई।
चारों मौसमों में फूल और पेड़ आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं;
फिरोजी रंग की चोटियाँ एक दूसरे के पीछे उठती हुई दिखाई देती हैं।
सीढ़ियों के सामने सुगंधित फूल उग रहे हैं।
और बेर के पेड़ की शाखाओं से सुगंध आती है।
जहां लाल रंग होता है, वहां वह कोमल आड़ू के फूल से मिल जाता है;
जहां हरियाली है, वहां यह विलो वृक्षों की ताजी हरी पत्तियों के साथ मिल जाती है।
गोल्ड वैली गार्डन की भव्यता को भूल जाइए;
वांग वेई द्वारा चित्रित वांग नदी के परिदृश्यों की तो बात ही क्या है।
बहती धारा में
अध्याय 91
1267
पश्चिम की यात्रा
जंगली बत्तखें ऊपर-नीचे होती हैं;
हजारों की संख्या में बांसों के बीच
कवि अपने शब्दों के चयन पर विचार करते हैं।
वृक्ष और शाकीय पेओनी, मर्टल, क्षणिक मुस्कान वाले फूल,
जो अपने नियत समय पर जाग जाते हैं;
कैमेलिया, लाल बेर के फूल, शीतकालीन चमेली और डैफ्ने।
सभी अपनी सुंदरता को प्रकट करने के लिए शीघ्र ही जुट जाते हैं।
छिपी हुई चट्टान के किनारे जमा बर्फ अभी भी पूरी तरह से जमी हुई प्रतीत होती है;
दूर के पेड़ों के ऊपर से गुजरते बादल वसंत ऋतु के शुरुआती संकेत लेकर आते हैं।
हिरण तालाब के किनारे अपनी परछाई देखता है;
चीड़ के पेड़ों के नीचे सारस वीणा की ध्वनि सुनने आते हैं।
पूर्व और पश्चिम की ओर कुछ हॉल और मंडप,
जहां यात्री ठहर सकते हैं;
उत्तर और दक्षिण की ओर इमारतें और पैगोडा

जहां भिक्षु शांतिपूर्वक ध्यान कर सकें।
फूलों के बीच
क्या एक या दो घर व्यक्ति के स्वभाव को पोषित करने के लिए पर्याप्त हैं?
जहां दोहरी छज्जे एक दूसरे के ऊपर उठते हैं।
पहाड़ियों और झरनों के बीच
क्या तीन या चार कक्ष हैं जिनमें जादू को पुनः स्थापित किया जा सकता है, जो शांतिपूर्ण और प्रकाशमय हैं?
यह वास्तव में एकांतवासी के लिए एक प्राकृतिक स्थान है:
धरती पर स्वर्ग की तलाश कहीं और क्यों करें?
दिनभर बगीचे में घूमने के बाद उन्होंने बुद्ध हॉल में लगी लालटेनें देखीं और फिर लालटेन उत्सव देखने चले गए। उन्होंने ये सब देखा:
अध्याय 91
1268
पश्चिम की यात्रा
अगेट पत्थरों का एक शानदार शहर,
काँच की एक जादुई दुनिया;
क्रिस्टल और अभ्रक से बने महल,
जैसे जटाओं की परत दर परत,
जालीदार नक्काशी के पीछे जालीदार नक्काशी।
तारों के उस जगमगाते पुल ने आकाश और पृथ्वी को मंत्रमुग्ध कर दिया।
जबकि आग के पेड़ों ने लाल रंग की लहरें बनाईं
सड़कों पर बांसुरी और ढोल बज रहे थे।
हजारों द्वारों के ऊपर जेड की अंगूठी के समान एक चंद्रमा लटका हुआ था;
दस हजार घरों में सुगंधित हवाएं बह रही थीं।
वहाँ विशाल कछुए के आकार की चोटियाँ ऊँचाई पर फैली हुई थीं,
समुद्र से मछलियाँ और अजगर निकलते हुए,
आकाश में आनंदित होते फीनिक्स पक्षी।
सभी लोग चांद और लालटेन की प्रशंसा कर रहे थे।
वातावरण सौहार्दपूर्ण था।

बेहतरीन रेशमी वस्त्रों से सजे लोगों की भीड़ के बीच
सभी ने गीतों और बांसुरी वादन का आनंद लिया।
गाड़ियाँ सरपट दौड़ती हुई आगे बढ़ रही थीं।
खूबसूरत चेहरों की कोई कमी नहीं थी।
शानदार वीर पुरुष, और अद्भुत दृश्य।
जब संजांग और अन्य लोगों ने मठ में लालटेन देख लीं, तो वे पूर्वी उपनगर की गलियों में घूमने लगे और आधी रात के दूसरे पहर तक बिस्तर पर वापस नहीं गए।
अगले दिन संज़ंग ने भिक्षुओं से कहा, "मैंने पैगोडा की सफाई करने की प्रतिज्ञा ली थी, और आज रात के चंद्र उत्सव के अवसर पर मैं आदरणीय मठाधीश से पैगोडा के द्वार खोलने का अनुरोध करता हूँ ताकि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकूँ।" भिक्षुओं ने द्वार खोल दिए, और जब साधु सैंड अपना चोगा लेकर भूतल पर उनके पास आए, तो उन्होंने उसे अपने कंधों पर डाल लिया और बुद्ध से प्रार्थना की। फिर उन्होंने झाड़ू से भूतल की सफाई की, चोगा उतारकर साधु सैंड को वापस दे दिया। इसके बाद उन्होंने दूसरी मंजिल की सफाई की, और इसी तरह एक-एक करके ऊपर तक सफाई करते गए। हर मंजिल पर एक बुद्ध की प्रतिमा थी, और उन्होंने हर एक में सभी खिड़कियाँ खोल दीं। (अध्याय 91)

उसने फर्श साफ किया और शानदार नज़ारों का आनंद लिया। जब तक उसने झाड़ू लगाना समाप्त किया और नीचे आया, तब तक काफी रात हो चुकी थी और सभी दीपक जल चुके थे।
अब पूर्णिमा की रात थी। भिक्षुओं ने कहा, "आदरणीय गुरुजी, कल रात आपने केवल हमारे साधारण मठ और शहर के बाहरी इलाकों में ही दीपक देखे थे। आज मुख्य त्योहार है, तो क्यों न हम शहर जाकर वहाँ के सुनहरे दीपक देखें?" तांग पुरोहित को यह सुझाव अच्छा लगा और वे अपने तीन शिष्यों और मठ के भिक्षुओं के साथ लालटेन देखने शहर चले गए। सचमुच: पंद्रहवीं पूर्णिमा की रात को
वसंत ऋतु का सामंजस्य पहली पूर्णिमा के साथ शुरू होता है।
व्यस्त बाजारों में सजे हुए लालटेन लटके हुए हैं।
क्योंकि सभी शांतिपूर्ण दुनिया के गीत गा रहे हैं।

सड़कों और बाजारों में लालटेन की रोशनी के ऊपर
आकाश में चंद्रमा का गोलाकार दर्पण उगता है।
चांदी की थाली की तरह, जिसे सारथी पिंग यी चला रहा हो।
लालटेनें परियों द्वारा बुने गए रेशमी कालीन की तरह थीं;
लालटेन की रोशनी चंद्रमा की रोशनी में प्रतिबिंबित हो रही थी।
इसकी चमक दोगुनी हो गई;
चांद की रोशनी लालटेनों पर पड़ रही थी।
उन्हें तेजस्वी बनाना।
लोहे की श्रृंखला वाले तारामंडल पुलों का कोई अंत नहीं था।
लालटेन के फूल और आग के पेड़।
बर्फ के टुकड़ों के आकार की लालटेन,
बेर के फूलों से बनी लालटेनें,
जैसे वसंत ऋतु में बर्फ के टुकड़े;
कढ़ाईदार स्क्रीन लालटेन,
चित्रित स्क्रीन लालटेन,
हर रंग से बना हुआ।
अखरोट की लकड़ी से बनी लालटेन,

कमल के आकार की लालटेन,
लालटेन टावरों पर ऊँचाई पर लटका हुआ;
नीले शेर के आकार के लालटेन,
सफेद हाथी के आकार की लालटेनें,
ऊंचे ढांचों पर स्थापित।
झींगा लालटेन,
टेरापिन लालटेन,
शामियानों के सामने रखा गया;
बकरी के आकार की लालटेन,

खरगोश लालटेन,
छज्जे को जीवंत बनाना।
ईगल लालटेन,
फीनिक्स लालटेन,
एक दूसरे के बगल में कतार में खड़े;
बाघ लालटेन,
घोड़े के आकार की लालटेन,
साथ-साथ आगे बढ़ते जाना।
लाल मुकुट वाले सारस की लालटेनें,
सफेद हिरण के आकार की लालटेन,
दीर्घायु का सितारा धारण किए हुए;
गोल्डफिश लालटेन,
व्हेल लालटेन,
जिस पर कवि ली बाई सवार थे।
विशालकाय कछुए के आकार के पहाड़ी लालटेन,
जहां देवता और अमर प्राणी एकत्रित होते थे;
घूमने वाले घोड़े के आकार के लालटेन

जिस पर योद्धाओं ने युद्ध में भाग लिया।
हजारों घरों पर लालटेन की मीनारें
कई मील तक बादलों और धुएं का एक विशाल जाल छा गया।
एक तरफ, चमकती हुई लगाम और उड़ती हुई जेड की काठी;
दूसरी ओर, गड़गड़ाती गाड़ियाँ अपने पीछे सुगंध छोड़ जाती हैं।
लाल बालकनी पर,
रेलिंग के सहारे झुकते हुए,
पर्दों के पीछे,
कंधे से कंधा मिलाकर,

हाथों में हाथ,
सुंदरियों के जोड़े मौज-मस्ती के लिए उत्सुक थे।
हरे पानी पर बने पुल के पास,
कोलाहलयुक्त,
कई रंगों वाला,
नशे में धुत,
हँसना
दंपतियों ने शानदार नजारों का आनंद लिया।
शहर के सभी बांसुरी और ढोल बज रहे थे;
पूरी रात बांसुरी की धुनें और गीत बजते रहे।
इसके प्रमाण के रूप में यह कविता भी मौजूद है:
कमल के सुंदर रेशमी वस्त्रों के बीच गीत गूंज रहे थे;
शांति से परिपूर्ण यह पवित्र भूमि अनेक जनसमूहों से भरी हुई थी।
इस उत्सवपूर्ण रात में लालटेन और चंद्रमा की रोशनी
अनुकूल बारिश और हवा चलने के बाद भरपूर फसल होने की भविष्यवाणी की गई थी।
अध्याय 91
1272
पश्चिम की यात्रा
यह वह रात थी जब कर्फ्यू में ढील दी गई थी, जिसके कारण भारी भीड़ और अफरा-तफरी मची हुई थी। लोग नाच रहे थे, ऊंचे डंडों पर चल रहे थे, मुखौटे पहने हुए थे और हाथियों पर सवार होकर पूरब और पश्चिम की ओर धक्का-मुक्की करते हुए चारों ओर देख रहे थे। जब वे सुनहरे दीपों के पुल पर पहुँचे, तो तांग पुरोहित और भिक्षु आगे बढ़कर देखने लगे और उन्होंने पाया कि इसमें तीन सुनहरे दीप थे, जिनमें से प्रत्येक पानी के पात्र के आकार का था और दो मंजिला मंडप के आकार का था, जिसमें जटिल सोने और चांदी की नक्काशी से प्रकाश निकल रहा था।
लैंप के अंदर लगी चमकदार सिरेमिक टाइलें उनकी रोशनी को प्रतिबिंबित करती थीं। वे इतनी चमकदार थीं कि चंद्रमा को भी मात दे देती थीं, और उनका तेल बहुत सुगंधित था।

तांग पुरोहित ने भिक्षुओं से पूछा, "इन दीयों में किस प्रकार का तेल जलता है? और इसकी खुशबू इतनी अद्भुत क्यों है?"
"आपको यह पता नहीं होगा, गुरुजी," भिक्षुओं ने उत्तर दिया। "इस प्रांत के पास मिंटियन नाम का एक काउंटी है।"
पूरे ज़िले में 240 वार्ड हैं, और जब हमें राज्य के लिए वार्षिक कार्य सौंपे जाते हैं, तो 240 परिवारों को तेल उपलब्ध कराना पड़ता है। ज़िले या ज़िले द्वारा सौंपे गए अन्य सभी कार्य तो उचित होते हैं, लेकिन इन तेल की आपूर्ति करने वाले परिवारों को बहुत कठिनाई होती है। प्रत्येक परिवार को एक वर्ष के लिए तेल की आपूर्ति करनी पड़ती है, और इसमें उन्हें 200 औंस से अधिक चांदी खर्च करनी पड़ती है। यह तेल साधारण तेल नहीं बल्कि सुगंधित परिष्कृत मक्खन का तेल है। एक औंस की कीमत 2 औंस चांदी और एक पौंड की कीमत 32 औंस है। प्रत्येक दीपक में 500 पौंड तेल आता है, यानी तीनों दीपकों में 1,500 पौंड तेल आता है, जिसकी कीमत 48,000 औंस चांदी होती है। अन्य विविध खर्चों को मिलाकर कुल लागत 50,000 औंस से अधिक हो जाती है। और यह तेल केवल तीन रातों के लिए ही पर्याप्त होता है।
"तीन रातों में इतना सारा तेल कैसे खत्म हो सकता है?" बंदर ने पूछा।
"प्रत्येक दीपक में अंडे के आकार की उनतालीस बड़ी बत्तियाँ होती हैं जो रेशम के धागे से लिपटी सरकंडे की बनी होती हैं।"
भिक्षुओं ने समझाया, "जब ये दीपक एक रात तक जलते हैं तो भगवान बुद्ध प्रकट होते हैं, सारा तेल गायब हो जाता है और दीपक बुझ जाता है।"
एक तरफ खड़े सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा, "मुझे लगता है कि भगवान बुद्ध सारा तेल ले लेते हैं।"
“जी हाँ,” भिक्षुओं ने उत्तर दिया, “शहर में प्राचीन काल से ही यही कहा जाता आया है। उनका मानना है कि अगर तेल सूख जाता है तो बुद्धों ने तेल ले लिया है और फसलें भरपूर होंगी; लेकिन अगर एक बार भी तेल नहीं सूखता तो उस वर्ष अकाल, सूखा और खराब मौसम आएगा। इसीलिए सब लोग यह भेंट चढ़ाते हैं।”
जब वे बातें कर रहे थे तभी अचानक तेज़ हवा चलने लगी, जिससे लालटेन निहार रहे सभी लोग डर के मारे भागने लगे। भिक्षु भी अपनी जगह पर टिक नहीं पाए। "चलिए वापस चलते हैं, आदरणीय गुरुजी,"
उन्होंने कहा, "हवा आ गई है। भगवान बुद्ध आशीर्वाद लेकर आए हैं। वे लालटेन देखने

आए हैं।"
"तुम्हें यह कैसे पता चला?" तांग पुजारी ने पूछा।
भिक्षुओं ने उत्तर दिया, "हर साल ऐसा ही होता है। तीसरे पहर से पहले हवा चलने लगती है। सब लोग रास्ता छोड़ देते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि भगवान बुद्ध आशीर्वाद लेकर आ रहे हैं।"
“मैं बुद्धों का ध्यान करता हूँ, उनका आह्वान करता हूँ और उनकी पूजा करता हूँ,” तांग पुजारी ने कहा। “यदि बुद्ध इस उत्सव के अवसर पर अपनी उपस्थिति से हमें सम्मानित कर रहे हैं, तो उनकी पूजा करना कितना अद्भुत होगा।” उन्होंने भिक्षुओं के बार-बार वापस जाने के आग्रह को अस्वीकार कर दिया, और थोड़ी देर बाद हवा में तीन बुद्धों की आकृतियाँ प्रकट हुईं और दीपों की ओर बढ़ीं। तांग पुजारी इतने उत्साहित हो गए कि वे दीपों के पुल के ऊपर दौड़े और पूजा करने के लिए नीचे गिर पड़े।
अध्याय 91
1273
पश्चिम की यात्रा
बंदर भाई घबराकर आगे बढ़ा और उसे उठाकर खड़ा किया और बोला, "ये अच्छे नहीं हैं, गुरुजी। मुझे यकीन है कि ये दुष्ट हैं।" उसके मुंह से शब्द निकलने से पहले ही सारे दीपक बुझ गए और एक ज़ोरदार हवा के झोंके से तांग पुजारी उड़ गए। यह भयानक था! कौन जाने किस पर्वत की किस गुफा से कौन से दुष्ट राक्षस बुद्ध बनकर सुनहरे दीपकों की रखवाली कर रहे थे?
सुअर और साधु सैंड इतने घबरा गए कि वे अपने स्वामी को ढूंढने और पुकारने के लिए इधर-उधर भागने लगे। बंदर ने पुकारा, "भाइयों, यहाँ चिल्लाने का कोई फायदा नहीं है। स्वामी का सुख विपत्ति में बदल गया है। उन्हें दुष्ट आत्माएँ ले गई हैं।"
"आप यह कैसे कह सकते हैं, मेरे स्वामी?" भयभीत भिक्षुओं ने पूछा।
“तुम तो बस कुछ आम इंसान हो,” बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, “इसलिए तुम्हें पता ही नहीं चला कि इतने सालों से क्या हो रहा है। दुष्ट आत्माओं ने तुम्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि वे सच्चे बुद्ध हैं जो दीपक की भेंट स्वीकार करने आए हैं। अभी हवा चलने पर जो बुद्ध प्रकट हुए, वे तीन दुष्ट आत्माएँ थीं। मेरे गुरु को पता नहीं चला कि वे कौन हैं, इसलिए वे उनकी पूजा करने के लिए पुल के ऊपर चले गए।

उन्होंने सारी बत्तियाँ बुझा दीं और उन्हें दीपकों के तेल समेत उठा ले गए। क्योंकि मैं थोड़ा देर से पहुँचा, इसलिए वे तीनों हवा के साथ उड़ गए।”
"भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "अब हम क्या करें?"
बंदर ने कहा, "एक पल भी बर्बाद करने का समय नहीं है। तुम दोनों भिक्षुओं के साथ मठ वापस जाओ और घोड़े और सामान की देखभाल करो। मैं इस हवा के चलते ही उनके पीछे जा रहा हूँ।"
फिर महान ऋषि ने कलाबाजी करते हुए बादल से आकाश में छलांग लगाई, हवा की दुर्गंध को महसूस किया और उत्तर-पूर्व दिशा में उसका पीछा करते हुए आगे बढ़े, और तब तक चलते रहे जब तक कि अचानक भोर में हवा थम नहीं गई। एक विशाल पर्वत दिखाई दिया, एक बेहद ऊँचा, विशाल और शानदार पर्वत।
कई पहाड़ियाँ और खाइयाँ,
धाराएँ मुड़ती और घूमती हुई।
लताएँ खड़ी चट्टान से लटक रही हैं।
एकांत चट्टान से चीड़ और सरू के पेड़ उगते हैं।
सुबह की धुंध में सारस चिल्लाते हैं।
भोर के समय बादलों के बीच जंगली हंसों की आवाज सुनाई देती है।
भाले की कतार की तरह उभरी हुई चोटियाँ,
आपस में जुड़ी चट्टानों की ऊबड़-खाबड़ चोटियाँ।
इन चोटियों की ऊंचाई अस्सी हजार फीट तक है।
और खड़ी दीवारों वाली चोटियाँ हजारों कोण बनाती हैं।
वसंत ऋतु में जंगली फूल और भव्य वृक्ष सभी खिल उठते हैं;

कोयल और ओरिओल पक्षी अपने गीत के माध्यम से आसपास के वातावरण पर प्रतिक्रिया देते हैं।
भव्य सुंदरता,
भव्यता का उत्कृष्ट उदाहरण,
खड़ी, विचित्र चट्टानें जिन पर चढ़ना कठिन है।

कोई व्यक्ति वहां लंबे समय तक मौन बैठा रहेगा:
वहाँ सिर्फ बाघों और तेंदुओं के सांस लेने की आवाज सुनाई दे रही है।
नदी के किनारे रहने वाले हिरण और सफेद हिरण इधर-उधर घूमते रहते हैं;
हरे रंग के खरगोश और भूरे भेड़िये आते-जाते रहते हैं।
गहरी खाई में बहने वाली धारा दस लाख मील तक बहेगी;
घुमावदार जलधाराएं चट्टानों से टकराकर जोर से आवाज करती हैं।
जब महान ऋषि एक पहाड़ी की चोटी पर रास्ता खोज रहे थे, तभी उन्होंने पश्चिमी ढलानों से तीन बकरियों को हांकते हुए चार लोगों को आते देखा और सभी "नए साल" चिल्ला रहे थे। मंकी की सुनहरी पुतलियों वाली तेज आंखों में चमक आ गई जब उसने करीब से देखा तो पाया कि वे वर्ष, माह, दिन और घंटे के चार कर्तव्य देवता भेस बदलकर आए हुए थे।
तब महान ऋषि ने अपनी लोहे की लाठी निकाली, उसे तब तक हिलाया जब तक वह चावल के कटोरे जितनी मोटी और लगभग बारह फीट लंबी नहीं हो गई और चट्टान से नीचे कूदते हुए चिल्लाए, "तुम लोग इस तरह कहाँ दुबक कर अपना चेहरा छुपाने की कोशिश कर रहे हो?"
जब चारों कर्तव्य देवताओं को यह एहसास हुआ कि उसने उन्हें भेद दिया है, तो वे तुरंत अपने सामान्य रूप में लौट आए, रास्ते के किनारे प्रणाम किया और कहा, "हे महान ऋषि, हमें क्षमा करें, हमें क्षमा करें।"
"सिर्फ इसलिए कि हाल ही में मेरे पास तुम्हारे लिए कोई काम नहीं था, तुम्हें लगा कि मैं लापरवाह हो गया हूँ और इसीलिए तुम सब बहुत बेपरवाह हो गए हो," बंदर ने कहा। "तुमने मुझे नमस्कार तक नहीं किया। ये तो हद है! तुम मेरे मालिक को अपनी गुप्त सुरक्षा क्यों नहीं दे रहे हो? तुम कहाँ जा रहे हो?"
“क्योंकि आपके गुरु जिनपिंग प्रांत के करुणा बादलों के मठ में आनंद लेने के चक्कर में अपना ध्यान कुछ हद तक भूल गए थे, इसलिए वैभव के चरम पर उन्हें बुराई का सामना करना पड़ा, उनका आनंद विपत्ति में तब्दील हो गया और वे दुष्ट आत्माओं के वश में आ गए। इस समय धर्म के रक्षक उनकी देखभाल कर रहे हैं। हमें पता चला कि आप आज रात उनके पीछे आ रहे होंगे, हे महान ऋषि, इसलिए हम आपको सूचना देने यहाँ आए हैं, कहीं ऐसा न हो कि आप यहाँ के पहाड़ों और जंगलों से परिचित न हों।”

"अगर तुम यहाँ रिपोर्ट करने आए थे," भाई बंदर ने कहा, "तो तुमने अपनी पहचान क्यों छिपाई, तुम तीन बकरियों को क्यों चला रहे थे, और तुम किसलिए चिल्ला रहे थे?"

"साल की शुरुआत में तीन बकरियां सौभाग्य के लिए रखी जाती थीं।"

उन्हें उस बुराई को दूर भगाना है जो आपके स्वामी के रास्ते में बाधा बन रही है।

अध्याय 91

1275

पश्चिम की यात्रा

बंदर उन्हें हराने के लिए पूरी तरह दृढ़ था, लेकिन यह स्पष्टीकरण सुनकर उसने उन्हें छोड़ दिया और अपना डंडा एक तरफ रख दिया, उसका क्रोध प्रसन्नता में बदल गया। "क्या इस पहाड़ पर बुरी आत्माएं हैं?" उसने पूछा। “जी हां,” उन्होंने उत्तर दिया, “जी हां। इस पर्वत को हरित ड्रैगन पर्वत कहते हैं और इसमें एक गुफा है जिसे अंधकारमय सार गुफा कहते हैं, जहां तीन दुष्ट आत्माएं रहती हैं। सबसे बड़ी को शीत-अवरोधक राजा, दूसरी को ताप-अवरोधक राजा और तीसरी को धूल-अवरोधक राजा कहा जाता है। वे यहां एक हजार वर्षों से रह रही हैं और बचपन से ही उन्हें शुद्ध मक्खन का बहुत शौक रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जब से वे आत्मा बनी हैं, तब से वे बुद्ध होने का नाटक करके जिनपिंग के अधिकारियों और लोगों को धोखा दे रही हैं ताकि वे हर महीने के पहले महीने के मध्य में शुद्ध मक्खन से भरे उन सुनहरे दीपकों को जलाएं जिन्हें वे बुद्ध के वेश में अपने साथ ले जाती हैं। इस बार जब उन्होंने आपके गुरु को देखा तो उन्हें पता चला कि वे एक पवित्र भिक्षु हैं और वे उन्हें भी गुफा में ले गईं। किसी भी दिन वे उनका मांस काटकर शुद्ध मक्खन में तलने वाली हैं। आपको अपनी कुशलता का उपयोग करके उन्हें जल्द से जल्द बचाना होगा।”

यह सुनकर बंदर ने चारों कर्तव्य देवताओं को चिल्लाकर विदा कर दिया और गुफा की तलाश में पहाड़ के चारों ओर घूमने लगा। एक-दो मील के भीतर ही उसे एक नाले के किनारे एक चट्टान दिखाई दी, जिसके तल पर एक पत्थर की इमारत थी, जिसके दो पत्थर के दरवाजे खुले हुए थे। दरवाजों के बगल में एक पत्थर की पट्टिका थी जिस पर 'हरा ड्रैगन पर्वत' लिखा हुआ था।

डार्क एसेंस केव

बिना बुलाए अंदर जाने की हिम्मत न करते हुए, बंदर रुक गया और पुकारा, "राक्षस,

मेरे स्वामी को तुरंत वापस दे दो।" ज़ोरदार आवाज़ के साथ दरवाजे खुल गए, और बैल के सिर वाले राक्षसों की भीड़ बाहर निकल आई, जिन्होंने घूरते हुए पूछा, "तुम कौन हो, यहाँ इस तरह चिल्ला रहे हो?"

“मैं पवित्र भिक्षु तांग सान्ज़ांग का वरिष्ठ शिष्य हूँ, जो पूर्व के महान तांग से धर्मग्रंथ लाने आया हूँ,” बंदर ने उत्तर दिया। “रास्ते में जिनपिंग में वह लालटेन देख रहा था, तभी तुम्हारे मुख्य राक्षस उसे यहाँ ले आए। अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी जान बख्श दूँ, तो उसे तुरंत वापस कर दो। अगर नहीं, तो मैं हमारी गुफा को तहस-नहस कर दूँगा और तुम सभी राक्षसों को मवाद और खून में बदल दूँगा।”

जैसे ही छोटे राक्षसों ने यह सुना, वे अंदर दौड़कर बोले, "हे महाराज, विपत्ति आ गई!" तीनों बूढ़े दुष्ट आत्माएं संजांग को गुफा की गहराई में ले गए थे और बिना देर किए अपने अधीनस्थों को उसे नंगा करने और झरने के पानी से धोने का आदेश दे रहे थे। वे उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर मक्खन में तलने ही वाले थे कि उन्हें बाहर से विपत्ति की खबर सुनाई दी। सबसे बूढ़े राक्षस राजा ने घबराकर पूछा कि क्या हुआ है।

"बाहर एक दाढ़ीदार चेहरे वाला साधु है जो किसी गर्जन देवता जैसा दिखता है," छोटे शैतानों ने जवाब दिया। "वह चिल्ला रहा है कि महाराज उसके स्वामी को यहाँ लाए हैं और अगर हमारी जान बचानी है तो उसे तुरंत वापस कर दें। नहीं तो वह हमारी गुफा को तहस-नहस कर देगा और हम सबको मवाद और खून में बदल देगा।"

इस खबर से राक्षस राजा चौंक गए और सबने कहा, "हमने अभी-अभी उस दुष्ट को पकड़ा है और उससे उसका नाम और पृष्ठभूमि भी नहीं पूछी है। बच्चों, उसे फिर से कपड़े पहनाओ और पूछताछ के लिए यहाँ लाओ। हमें पता लगाना होगा कि वह कौन है और कहाँ से आया है।"

शैतानों की भीड़ ने तांग पुजारी के बंधन खोल दिए, उसके कपड़े वापस पहना दिए और उसे सिंहासनों के सामने धकेल दिया, जहाँ वह भय से कांपते हुए घुटनों के बल गिर पड़ा और गिड़गिड़ाया, "हे महाराज, मेरी जान बख्श दीजिए, मेरी जान बख्श दीजिए।"

अध्याय 91

1276

पश्चिम की यात्रा

"तुम कहाँ से आए हो, भिक्षु?" तीनों दुष्ट आत्माओं ने एक साथ बोलते हुए कहा, "और

तुमने बुद्ध प्रतिमाओं से बचने के बजाय हमारे बादलों के रास्ते में क्यों दौड़ लगाई?"
"मुझे पूर्व के महान तांग सम्राट ने भगवान बुद्ध की पूजा करने और भारत के महान गर्जन मठ से शास्त्र लाने के लिए भेजा है," संज़ंग ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया। "जब मैं करुणा के बादलों वाले मठ में शाकाहारी भोजन के लिए गया, तो वहाँ के भिक्षुओं ने मुझे चंद्र उत्सव में जलते लालटेन देखने के लिए रुकने का आग्रह किया। सुनहरे दीपों के पुल से आप दोनों को बुद्ध के रूप में प्रकट होते देख, मैंने आपको प्रणाम किया क्योंकि मेरी नश्वर आँखों ने आपको वास्तविक बुद्ध समझ लिया था। इसीलिए मैं आपके बादलों के मार्ग में आ गया, महाराज।"
दुष्ट आत्माओं ने पूछा, "पूर्व में स्थित तुम्हारे देश से यहाँ तक का सफर कितना लंबा था? तुम्हारे साथ कितने लोग हैं? उनके नाम क्या हैं? हमें सच-सच बताओ, हम तुम्हारी जान बख्श देंगे।"
तांग पुरोहित ने उत्तर दिया, "मेरा सांसारिक नाम चेन ज़ुआनज़ैंग था, और मैं बचपन से जिनशान मठ में भिक्षु था। बाद में मुझे चांगआन के होंगफू मठ में भिक्षु का आधिकारिक पद दिया गया। जब मंत्री वेई झेंग ने अपने सपने में जिंग नदी के ड्रैगन राजा का सिर काट दिया और तांग सम्राट पाताल लोक की यात्रा के बाद पुनर्जीवित हुए, तो आत्माओं के पुनर्जन्म के लिए एक विशाल भूमि और जल समारोह आयोजित किया गया।"
तांग सम्राट ने मुझे इस समारोह में मुख्य भूमिका निभाने और महान सिद्धांतों की व्याख्या करने के लिए चुना। बोधिसत्व गुआनयिन प्रार्थना सभा के दौरान प्रकट हुईं और उन्होंने मुझे बताया कि पश्चिमी स्वर्ग में स्थित गर्जन मठ में सच्चे धर्मग्रंथों के तीन भंडार हैं जो मृतकों को स्वर्ग तक ले जा सकते हैं। मुझे उन्हें लाने के लिए भेजा गया और मुझे संज़ंग, यानी "तीन भंडार" की उपाधि दी गई। चूंकि मैं तांग उपनाम का उपयोग करता हूं, इसलिए लोग मुझे तांग संज़ंग कहते हैं। मेरे तीन शिष्य हैं। पहले शिष्य का नाम सन वुकॉन्ग है, जो एक नवोदित शिष्य हैं और वे स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि हैं जिन्होंने सत्य को स्वीकार कर लिया है।
यह खबर दुष्ट आत्माओं के लिए एक झटके के रूप में आई, जिन्होंने पूछा, "क्या स्वर्ग के समान इस महान ऋषि ने पांच सौ साल पहले स्वर्ग में भारी तबाही मचाई थी?"
"जी हां," तांग पुजारी ने कहा। "दूसरे का नाम झू वुनेन्ग या झू बाजी है। वह मार्शल तियान पेंग का धरती पर अवतार है। तीसरे का नाम शा वुजिंग या फ्रायर सैंड है, जो

पर्दे को हटाने वाले जनरल का नश्वर पुनर्जन्म है।"
“अच्छा हुआ कि हमने उसे अभी तक नहीं खाया,” दुष्ट आत्माओं ने भयभीत होकर कहा। “बच्चों, तांग पुजारी को पीछे लोहे की जंजीरों में बांध दो। जब हम उसके तीनों शिष्यों को पकड़ लेंगे, तो हम उन्हें एक साथ खा जाएंगे।” फिर उन्होंने सशस्त्र याक, भैंस और बैल आत्माओं की एक सेना को इकट्ठा किया और बिगुल बजाते, झंडे लहराते और ढोल पीटते हुए बाहर भेज दिया।
तीनों दुष्ट आत्माओं ने जब अपने कवच पूरी तरह पहन लिए, तो वे बाहर निकले और चिल्लाए, "यहाँ आकर इस तरह चिल्लाने की हिम्मत कौन कर रहा है?" बंदर ने घाव के पीछे से झाँककर अच्छी तरह देखा, और दुष्ट आत्माएँ कुछ इस तरह थीं:
बहुरंगी चेहरे, गोल आँखें,
विशाल सींग।
चार नुकीले कान,
साफ-सुथरा और चमकदार।
शरीरों पर चित्रकारी की तरह आकृतियां बनी हुई थीं,

ब्रोकेड से ढका हुआ जो जुगनुओं की तरह चमकता है।
पहले वाले ने लोमड़ी की खाल से बनी टोपी पहन रखी थी।
और उसके चेहरे के लंबे बालों से गर्म भाप उठ रही थी।
दूसरे ने सबसे हल्के जालीदार कपड़े का धधकता हुआ लबादा पहन रखा था।
और उसके चार चमकीले, जेड जैसे खुर थे।
तीसरे की दहाड़ बिजली की तरह जोरदार थी;
उसके नुकीले और तेज दांत चांदी की सुइयों की तरह थे।
हर कोई बहादुर और साहसी था।
वे अपने तीनों हथियार लेकर चल रहे थे;
एक ने युद्ध कुल्हाड़ी का इस्तेमाल किया,
उनमें से एक तलवार चलाने में माहिर था।
और तीसरे व्यक्ति के कंधों पर एक गांठदार कोड़ा रखा हुआ था।

अन्य दुष्ट आत्माएँ, लंबी और छोटी, मोटी और पतली, बड़ी और छोटी, सभी बैल के सिर वाले राक्षस थे जिनके हाथों में भाले या गदाएँ थीं। तीन बड़े झंडे थे जिन पर स्पष्ट रूप से "शीत से बचने वाला राजा", "गर्मी से बचने वाला राजा" और "धूल से बचने वाला राजा" लिखा हुआ था। कुछ देर तक यह सब देखते-देखते बंदर का धैर्य टूट गया और वह चिल्लाते हुए उनके पास गया, "क्या तुम बंदर को पहचान सकते हो, हे शापित चोरों!"

"क्या तुम वही सन वुकॉन्ग हो जिसने स्वर्ग में तबाही मचाई थी?" दुष्ट आत्माओं ने पलटकर पूछा। "यह तो सच में ऐसा मामला है कि मैंने तुम्हारा चेहरा देखने से पहले तुम्हारा नाम सुना था।"

उस दृश्य को देखकर देवताओं का भी अपमान होगा।

तो तुम बस एक बंदर हो।"

“मैं तुम्हें पकड़ लूँगा, दीपक के तेल के चोरों,” बंदर ने भयंकर क्रोध से कहा। “ऐसी बकवास मत करो, चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले राक्षसों। मेरे मालिक को तुरंत वापस कर दो।” इतना कहकर वह आगे बढ़ा और अपनी लोहे की लाठी घुमाई, जिसे बूढ़े राक्षसों ने अपने हथियार उठाकर वार से बचा लिया। पहाड़ की घाटी में एक शानदार लड़ाई छिड़ गई।

युद्ध कुल्हाड़ी, कटार और कोड़ा

अध्याय 91

1278

पश्चिम की यात्रा

बंदर राजा के इकलौते डंडे से सामना हुआ।

सर्दी से बचने वाला, गर्मी से बचने वाला और धूल से बचने वाला

मैंने उस महान ऋषि के बारे में सुना था जो स्वर्ग के समान थे।

जब लाठी उठी तो उसने राक्षसों और देवताओं को भी डरा दिया;

कुल्हाड़ी और तलवार से वार हुए और वे हवा में उड़ने लगे।

सच्ची शून्यता की एक आदिम धर्म छवि

बुद्धों का वेश धारण किए तीन राक्षसों को रोकना।

उनकी नाकें इस साल चुराए गए तेल से पूरी तरह से चिकनी हो गई हैं।

उन्होंने सम्राट द्वारा भेजे गए भिक्षु को अगवा करने की कोशिश की।

एक व्यक्ति अपने स्वामी की खातिर लंबे रास्ते से नहीं डरता था;
अन्य लोग अपने लालच में आकर हर साल दीपक चढ़ाते थे।
दाढ़ी के अलावा और कुछ नहीं हो सकता था, सिवाय कुल्हाड़ी और तलवार की टक्कर के।
और लाठी की तेज आवाज।
झड़पों और हमलों के बीच तीन लोगों ने एक के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
प्रत्येक ने ब्लॉक और पैरी करने में अपना कौशल दिखाया।
वे सुबह से लेकर लगभग रात होने तक लड़ते रहे।
और इस संघर्ष में अभी तक कोई विजेता सामने नहीं आया था।
जब तक बंदर ने तीनों राक्षसों पर 150 बार लाठी चलाई, तब तक लगभग शाम हो चुकी थी और परिणाम अभी भी अनिश्चित था। तभी धूल से बचने वाला राक्षस अपने डंडे को घुमाते हुए आगे बढ़ा और झंडा लहराया, जिसके बाद मवेशी के सिर वाले राक्षसों की भीड़ बंदर के चारों ओर टूट पड़ी, उसे घेर लिया और अपने हथियारों से उस पर बेतहाशा वार करने लगी। स्थिति बिगड़ती देख बंदर ने अपना कलाबाजी वाला बादल बनाया और तेज़ी से भाग गया। राक्षस उसके पीछे नहीं गए बल्कि अपने साथियों को वापस बुला लिया ताकि सभी लोग शाम का भोजन कर सकें। उन्होंने छोटे साथियों से कहा कि वे संज़ंग के लिए भी भोजन का एक कटोरा ले जाएं: जब तक बंदर पकड़ा नहीं जाता, तब तक उससे निपटा नहीं जाना था। चूंकि स्वामी जीवन भर शाकाहारी था और दुखी भी था, इसलिए वह रोने लगा और उसने भोजन को अपने होठों से छूने भी नहीं दिया।
कहानी बताती है कि कैसे बंदर अपने बादल पर सवार होकर करुणा के बादलों के मठ में वापस आया और पुकारा,
"भाई बंधु।"
अध्याय 91
1279
पश्चिम की यात्रा
यह सुनकर पिग और फ्रायर सैंड, जो उसका इंतजार कर रहे थे और आगे क्या करना है इस पर चर्चा कर रहे थे, दोनों एक साथ बाहर आकर उसका अभिवादन करते हुए बोले, "भाई, सारा दिन बाहर रहने के बाद तुम अभी क्यों लौटे? मालिक को क्या हुआ

था?"
"मैं रात भर हवा की गंध का पीछा करता रहा जब तक कि हम एक पहाड़ पर नहीं पहुंच गए और वह गंध गायब हो गई।"
बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। सौभाग्य से चारों कर्तव्य देवताओं ने मुझे बताया कि इस पर्वत का नाम हरित ड्रैगन पर्वत है और इस पर एक अंधकारमय सार गुफा है जहाँ तीन दुष्ट आत्माएँ रहती हैं: शीत-अवरोधक राजा, ताप-अवरोधक राजा और धूल-अवरोधक राजा। वे वर्षों से यहाँ से तेल चुराते आ रहे हैं, बुद्ध का वेश धारण करके जिनपिंग प्रांत के अधिकारियों को धोखा देते हैं। इस वर्ष जब वे हमारे सामने आए तो उन्होंने दुष्टतापूर्वक हमारे गुरु को अपने साथ ले गए। मैंने कर्तव्य देवताओं और बाकी सभी से कहा कि वे गुरु को गुप्त रूप से सुरक्षा प्रदान करें, जबकि मैं उनके द्वार के बाहर से उन्हें अपशब्द कहता रहा। जब तीनों राक्षस बाहर आए तो वे सभी बैल के सिर वाले राक्षसों जैसे दिख रहे थे। उनमें से पहला कुल्हाड़ी से, दूसरा कटार से और तीसरा कोड़ा लेकर लड़ रहा था। उनके साथ मवेशी के सिर वाले राक्षसों का एक पूरा गिरोह था, जो झंडे लहरा रहे थे और ढोल बजा रहे थे। लड़ाई पूरे दिन चलती रही और जब एक राक्षस राजा ने झंडा लहराया तब भी स्थिति अनिश्चित थी। सभी जूनियर खिलाड़ियों को आगे लाने के लिए। चूंकि काफी देर हो चुकी थी और मुझे चिंता थी कि मैं उन्हें हरा नहीं पाऊंगा, इसलिए मैं कलाबाजी करते हुए वापस आया।
"मुझे लगता है कि फेंगडू का दानव राजा ही तुम्हारे लिए मुसीबत खड़ी कर रहा है," सुअर ने कहा।
"तुम्हें ऐसा कैसे लगा?" फ्रायर सैंड ने पूछा। "मुझे इसलिए पता है क्योंकि हमारे बड़े भाई ने कहा था कि वे सभी मवेशी के सिर वाले राक्षस थे," पिग ने हंसते हुए जवाब दिया।
"नहीं, नहीं," बंदर ने कहा। "मैंने उन्हें देखा था और वे सभी गैंडे की आत्माएं थीं।"
पिग ने कहा, "अगर ये गैंडे हैं तो हमें बस इन्हें पकड़ना होगा और इनके सींग काट देने होंगे। इनसे काफी चांदी मिलेगी।"
बातचीत के दौरान सभी भिक्षुओं ने बंदर से पूछा कि क्या उसने रात का खाना खा लिया है। "अगर कोई परेशानी न हो तो मैं कुछ खा लूँगा," बंदर भाई ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं बिना खाए भी रह सकता हूँ।"
भिक्षुओं ने कहा, "हे स्वामी, दिन भर युद्ध करने के बाद आपको भूख जरूर लगी

होगी।"
"एक दिन में भूख नहीं लगती," बंदर हँसते हुए बोला। "मैं तो एक बार पाँच सौ साल तक बिना भोजन के रहा था।"
भिक्षुओं को समझ नहीं आ रहा था कि वह सच कह रहा है या मज़ाक कर रहा है। थोड़ी देर बाद खाना लाया गया जिसे बंदर ने खाया और फिर बोला, "सफाई करो और सो जाओ। हम कल फिर उनसे लड़ने जाएंगे और दानव राजाओं को पकड़कर गुरु को बचाएंगे।"
“क्या बकवास है भाई,” एक तरफ खड़े साधु सैंड ने कहा। “जैसा कि कहावत है, ‘देरी से समझदारी आती है।’ अगर वह राक्षस आज रात जागता रहा और गुरु की हत्या कर दी तो बहुत बुरा होगा। बेहतर होगा कि हम अभी वहाँ जाएँ और इतना हंगामा करें कि वह कुछ भी न कर सके। अगर हमने एक पल भी गंवाया तो बहुत बुरा हो सकता है।”
यह सुनकर सुअर ने हिम्मत जुटाई और बोला, "फ्रायर सैंड सही कह रहे हैं। चलो चलते हैं और उन राक्षसों को मार गिराते हैं। चाँद की रोशनी काफी है।" उनकी सलाह मानकर बंदर ने मठ के भिक्षुओं को निर्देश दे दिए।
"सामान और घोड़े का ध्यान रखना। जब हम दुष्ट आत्माओं को पकड़ लेंगे, तो हम उन्हें यहाँ वापस लाएँगे ताकि प्रीफेक्ट को साबित कर सकें कि वे धोखेबाज़ हैं। तब वह तेल कर समाप्त कर सकता है और आम लोगों को इस कठिनाई से मुक्ति दिला सकता है। यह अच्छी बात होगी, है ना?" सभी भिक्षुओं ने अपने आदेश स्वीकार कर लिए और वे तीनों शुभ बादल पर सवार होकर शहर से निकल गए। सचमुच:
अध्याय 91
1280
पश्चिम की यात्रा
आलस्य और असंयम
ध्यान में भ्रम उत्पन्न हो गया;
खतरा और आपदा
मार्ग दिखाया—दिल को भ्रम में डाल दिया।
अगर आपको नहीं पता कि इस मुकाबले में कौन जीतने वाला था, तो अगली कड़ी में दी गई व्याख्या को सुनें।

तीन भिक्षुओं ने ग्रीन ड्रैगन पर्वत पर भीषण युद्ध लड़ा

चार सितारे: गैंडे के राक्षसों को पकड़ें

कहानी बताती है कि कैसे महान ऋषि बंदर अपने दो शिष्य भाइयों को आंधी और बादलों के सहारे उत्तर-पूर्व की ओर ले गए और जल्द ही वे हरे ड्रैगन पर्वत पर स्थित अंधकारमय सार गुफा के प्रवेश द्वार पर अपना बादल उतारने लगे। सुअर दरवाज़े तोड़ने ही वाला था कि बंदर ने कहा, "एक पल रुको। मैं अंदर जाकर पता लगाता हूँ कि गुरुजी अभी जीवित हैं या नहीं, इससे पहले कि हम उनसे भिड़ें।"

"लेकिन दरवाजे बहुत कसकर बंद हैं," फ्रायर सैंड ने कहा। "आप अंदर कैसे जाएंगे?"

"मेरे अपने तरीके हैं," बंदर ने जवाब दिया।

उस महान संत ने अपना गदा एक तरफ रख दिया, अपनी उंगलियों से मंत्र पढ़ा और "बदलो!" जैसे जादुई शब्द बोले और जुगनू में बदल गए। वे सचमुच बहुत फुर्तीले थे। उन्हें देखिए: उनके पंख टूटते तारे की तरह चमक रहे थे।

प्राचीन काल के लोग कहते हैं कि जुगनू सड़े हुए पौधों से उगते हैं।

उनकी रूपांतरण क्षमता वास्तव में महान है।

और उसे इधर-उधर घूमना बहुत पसंद है।

जब वह अंदर देखने के लिए पत्थर के दरवाजों की ओर उड़ता है

उसके बगल की दरार से ठंडी हवा का झोंका अंदर आता है।

एक छलांग और वह अंधेरे आंगन में है।

बुरी आत्माओं की गतिविधियों पर नजर रखना।

जैसे ही वह अंदर आया, उसने देखा कि कुछ मवेशी ज़मीन पर बेसुध पड़े हैं, गहरी नींद में सो रहे हैं और ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहे हैं। मुख्य हॉल में कुछ भी हिल नहीं रहा था, और सभी दरवाजे बंद थे। यह न जानते हुए कि वे तीनों दुष्ट आत्माएँ कहाँ सो रही हैं, वह हॉल से होते हुए पीछे की ओर गया और अपनी रोशनी डाली, जहाँ उसे सिसकियाँ सुनाई दीं। तांग पुजारी पीछे की ओर छज्जे के नीचे एक खंभे से जंजीरों में बंधा हुआ रो रहा था। बंदर छिपकर सुनता रहा कि वह किस बात पर रो रहा है, और

उसने जो सुना वह यह था:
"लगभग दस साल पहले जब मैंने चीन के चांगआन को छोड़ा था, तब से मुझे उन सभी नदियों और पहाड़ों को पार करने में बहुत कष्ट सहना पड़ा है।"
मैं पश्चिम की ओर एक बहुत ही सुखद समय में आया था।
लालटेन उत्सव के लिए शहर में आगमन।
मैं यह समझने में असफल रहा कि बुद्ध धोखेबाज थे।
यह सब इसलिए क्योंकि ऐसा लगता है कि मेरा भाग्य मुझे दुखों की ओर धकेल रहा है।
मेरे शिष्यों ने उनका पीछा किया और वे अपनी अपार शक्तियों का प्रयोग करेंगे:
मैं प्रार्थना करता हूं कि वे बड़ी सफलता प्राप्त कर सकें।
यह सुनकर बंदर प्रसन्न हुआ और अपने पंख फैलाकर अपने स्वामी के पास उड़ गया। स्वामी ने अपने आँसू पोंछे और कहा, "वाह, पश्चिम तो वाकई कितना अलग है! अभी तो साल का पहला महीना ही है, जब सुप्त कीड़े-मकोड़े जागने लगे हैं। अभी जुगनू देखना कितना अद्भुत है!"
"गुरुजी," बंदर भाई ने कहा, अब और चुप नहीं रह सकता था, "मैं यहाँ हूँ।"
"मैं तो बस यही सोच रहा था कि साल के इस समय जुगनू कैसे हो सकता है, और वो आप हैं," तांग पुजारी ने प्रसन्नता से उत्तर दिया।
“गुरुजी,” बंदर ने अपने असली रूप में लौटते हुए कहा, “यात्रा में इतना समय लग गया और इतनी मेहनत व्यर्थ हो गई क्योंकि आप सच और झूठ में फर्क नहीं कर सकते। मैंने आपको शुरू से ही बताया है कि राक्षस अच्छे नहीं होते, लेकिन आप उनके सामने झुकते हैं। जब उन शैतानों ने शुद्ध मक्खन का तेल चुराने के लिए दीयों को ढक दिया, तो वे आपको भी ले गए। मैंने सुअर और साधु रेत को मठ में वापस जाकर हमारे सामान पर नज़र रखने के लिए कहा, जबकि मैं हवा की गंध का पीछा करते हुए यहाँ आ गया। मुझे इस जगह का नाम नहीं पता था, लेकिन सौभाग्य से चारों कर्तव्य देवताओं ने मुझे बताया कि यह हरे ड्रैगन पर्वत पर स्थित डार्क एसेंस गुफा है। मैंने दिन भर राक्षसों से लड़ाई की और शाम को वापस आकर अपने भाई-शिष्यों को पूरी कहानी सुनाई और सोने जाने के बजाय उनके साथ यहाँ वापस आ गया। चूंकि मुझे लगा कि रात बहुत हो चुकी है और लड़ने का समय नहीं है, और मुझे नहीं पता था कि आप कहाँ हैं, इसलिए मैंने अपना रूप बदलकर अंदर आने और पता

लगाने का फैसला किया कि क्या हो रहा है।”
"क्या पिग और फ्रायर सैंड बाहर हैं?" प्रसन्न तांग पुजारी ने पूछा।
"जी हां," बंदर ने जवाब दिया। "मैंने अभी चारों ओर देखा है और पाया है कि सभी दुष्ट आत्माएं सो रही हैं। मैं ताला खोलकर दरवाजे तोड़ दूंगा और आपको बाहर निकाल दूंगा।" तांग पुजारी ने कृतज्ञतापूर्वक सिर हिलाया।
अध्याय 92
1282
पश्चिम की यात्रा
अपनी जादुई शक्ति का इस्तेमाल करते हुए, बंदर ने छूते ही ताला खोल दिया। वह अपने स्वामी को गुफा के सामने ले ही जा रहा था कि तभी दानव राजाओं के अपने शयनकक्षों से चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी, "बच्चों, दरवाज़े कसकर बंद कर लो और आग से सावधान रहो। हमें पहरेदारों की आवाज़ क्यों नहीं सुनाई दे रही? घंटियाँ और तालियाँ कहाँ हैं?"
दिनभर की भीषण लड़ाई के बाद सभी युवा राक्षस थककर सो गए थे; और वे तभी जागे जब उन्होंने एक चीख सुनी। खड़खड़ाहट और घंटियों की आवाज़ के साथ उनमें से कई हथियार लिए और घंटे बजाते हुए पीछे से बाहर आए, और संयोग से वे बंदर और उसके स्वामी से टकरा गए।
“अब ताले तोड़कर कहाँ जा रहे हो मेरे प्यारे भिक्षुओं?” सभी छोटे शैतान एक साथ चिल्लाए, और बिना किसी और बहस के बंदर ने अपना डंडा निकाला, उसे चावल के कटोरे जितना मोटा बनाने के लिए हिलाया और वार किया, जिससे उनमें से दो एक ही झटके में मारे गए। बाकी सबने अपने हथियार गिरा दिए, केंद्रीय हॉल में गए, दरवाजों पर जोर-जोर से दस्तक दी और चिल्लाए, “महाराज, विपत्ति! विपत्ति! बालदार चेहरे वाला भिक्षु अंदर घुस गया है और लोगों को मार रहा है।”
जैसे ही तीनों राक्षसों ने यह सुना, वे अपने बिस्तरों से उछल पड़े और चिल्लाए, "पकड़ो उन्हें! पकड़ो उन्हें!" इससे तांग पुजारी इतना भयभीत हो गया कि उसके हाथ-पैर कांपने लगे। बंदर उसे छोड़कर अपनी लाठी लहराते हुए आगे बढ़ गया।
छोटे शैतान उसे रोक नहीं सके, क्योंकि उसने दो-तीन को इधर-उधर धकेलते हुए और दो-तीन को वहाँ गिराते हुए कई दरवाजों को तोड़ दिया और सीधे बाहर निकलकर चिल्लाने लगा, "भाइयों, तुम कहाँ हो?"

पिग और फ्रायर सैंड ने हाथ में रेक और लाठी उठाकर, कार्रवाई के लिए तैयार मुद्रा में उनका अभिवादन किया और पूछा, "क्या हाल है भाई?"
बंदर ने उन्हें विस्तार से बताया कि कैसे उसने अपने स्वामी को बचाने के लिए अपना रूप बदल लिया था, कैसे आत्माओं के जागने पर उसने उसे ढूंढ लिया था, और कैसे उसे स्वामी को छोड़कर खुद लड़कर बाहर निकलना पड़ा था।
तांग पुजारी को दोबारा पकड़ने के बाद, दानव राजाओं ने उसे फिर से जंजीरों में जकड़ लिया और तेज रोशनी में तलवार और कुल्हाड़ी लहराते हुए उससे पूछताछ की। उन्होंने पूछा, "ताला कैसे खोला, और वह बंदर अंदर कैसे घुस गया? अभी कबूल करो, वरना हम तुम्हारी जान बख्श देंगे।"
इससे तांग पुजारी इतना भयभीत हो गया कि वह कांपते हुए घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "महाराजों, मेरा शिष्य सन वुकॉन्ग बहत्तर प्रकार के रूप बदल सकता है। अभी-अभी वह जुगनू बनकर मुझे बचाने आया था। हमें जरा भी अंदाजा नहीं था कि महाराज जाग जाएंगे या हम उनके कनिष्ठ महाराजों से टकरा जाएंगे। मेरे दुष्ट शिष्य ने उनमें से कुछ को घायल कर दिया, और जब वे सब चिल्लाते हुए हथियारों और मशालों से हमारी ओर बढ़ने लगे, तो वह मुझे छोड़कर भाग गया।"
"अगर हम पहले जाग गए होते तो वह कभी भाग नहीं पाता," तीनों राक्षस राजाओं ने जोर से हंसते हुए कहा। फिर उन्होंने अपने अधीनस्थों को आगे और पीछे के दरवाजे मजबूती से बंद करने और चिल्लाना बंद करने का आदेश दिया।
"चूंकि उन्होंने दरवाजे बंद कर दिए हैं और चिल्लाना बंद कर दिया है, मुझे लगता है कि वे मास्टर की हत्या करने जा रहे होंगे," फ्रायर सैंड ने कहा। "हमें कुछ करना होगा।"
"तुम सही कह रहे हो," सुअर ने कहा। "चलो दरवाज़े तोड़ देते हैं।" उस मूर्ख ने अपनी जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करते हुए अपने रेक से पत्थर के दरवाज़ों को चकनाचूर कर दिया और फिर ज़ोर से चिल्लाया, "चोर, तेल चुराने वाले राक्षसो! मेरे मालिक को अभी बाहर भेजो!"
इससे दरवाजे के अंदर छिपे हुए नन्हे शैतानों में इतना डर फैल गया कि वे लड़खड़ाते हुए अंदर भागे और बोले, "महाराज, आपदा! भिक्षुओं ने सामने के दरवाजे तोड़ दिए हैं।"

“ये तो सरासर अत्याचारी हैं, धिक्कार है इन पर,” तीनों दानव राजाओं ने भयंकर क्रोध में कहा, और अपने कवच मंगवाकर पहन लेने के बाद उन्होंने अपने हथियार उठाए और अपने साथियों को युद्ध में नेतृत्व किया। रात के लगभग तीसरे पहर का समय था, और आकाश के मध्य में स्थित चंद्रमा ने सब कुछ दिन के उजाले जैसा रोशन कर दिया था। अपनी सेनाओं को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने एक शब्द भी व्यर्थ नहीं कहा और सीधे युद्ध शुरू कर दिया। बंदर ने युद्ध-कुल्हाड़ी को रोका, सुअर ने कटार को अवरुद्ध किया, और साधु रेत ने कोड़े का सामना किया।

लाठी, डंडा और कुदाल लिए तीन भिक्षु;
तीन दुष्ट राक्षस, जो बहादुर और क्रोधित दोनों हैं।
युद्ध कुल्हाड़ी, कटार और कोड़ा
तेज हवाएं चलीं और रेत उड़ने लगी।
अपने पहले संघर्षों में उन्होंने अशुभ धुंध फैलाई,
फिर जैसे ही वे उड़ने लगे, उन्होंने रंगीन बादल बिखेर दिए।
कीलों से जड़ा रेक शरीर के चारों ओर अपनी नियमित क्रियाएं करता रहा।
लोहे का डंडा तो और भी अधिक शानदार ढंग से वीरतापूर्ण था।
और राक्षसों को शांत करने वाली छड़ी पृथ्वी पर शायद ही कभी देखी जाने वाली चीज थी; लेकिन पश्चाताप न करने वाले राक्षस एक इंच भी पीछे हटने को तैयार नहीं थे।
चमकीले ब्लेड वाली कुल्हाड़ी का पिछला सिरा नुकीला था।
घूमते हुए डंडे से फूलों की आकृति बन रही थी।
और चमकती हुई कटार एक चित्रित दरवाजे की तरह झूल रही थी;
लेकिन भिक्षु उनके बराबर के थे।
एक पक्ष अपने स्वामी के जीवन की रक्षा के लिए उग्रता से लड़ रहा था;
दूसरे ने तांग पुजारी को न छोड़ने के लिए उनके चेहरों पर वार किया।
वर्चस्व की लड़ाई में कुल्हाड़ी से वार किए गए और लाठी से बचाव किया गया; लड़ाई के दौरान रेक चलाया गया और कटार से प्रहार किए गए;
गांठदार कोड़ा और राक्षस-नाशक लाठी,
शानदार प्रदर्शन के साथ आना-जाना।

जब तीनों भिक्षु और तीनों राक्षस काफी देर तक लड़ते रहे और किसी भी पक्ष को जीत नहीं मिली, तो शीत-विरोधक राजा चिल्लाया, "आओ, नन्हे बच्चों!" सभी राक्षस सूअर पर टूट पड़े, उसे जल्दी से गिरा दिया और ज़मीन पर पटक दिया। कई भैंसों की आत्माओं ने उसे घसीटते हुए गुफा के अंदर ले जाकर बांध दिया। जब साधु रेत ने देखा कि सूअर गायब हो गया है और सभी मवेशियों की आवाज़ सुनी, तो उसने अपनी लाठी उठाई, धूल-विरोधक राजा पर हमला किया और भागने की कोशिश की, लेकिन आत्माओं के एक और समूह ने उस पर झपट्टा मारा और उसे खींच लिया, जिससे वह लड़खड़ा गया। उसने कितना भी संघर्ष किया, वह उठ नहीं सका और उसे भी बांधने के लिए ले जाया गया। अपनी असंभव स्थिति को समझते हुए, बंदर कलाबाजी करते हुए बादल से बच निकला।

जब पिग और फ्रायर सैंड को घसीटकर उसके पास लाया गया, तो तांग पुजारी ने उन्हें देखकर आँखों में आँसू भरते हुए कहा, "बेचारे! तुम दोनों भी पकड़े गए। वुकॉन्ग कहाँ है?"

"जब उसने देखा कि हम पकड़े गए हैं तो वह भाग गया," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया।

“वह जहाँ भी गया होगा, ज़रूर मदद लेने गया होगा,” तांग पुजारी ने कहा। “पर कौन जाने कि हमें कब मुक्ति मिलेगी?” गुरु और शिष्य बेहद दुखी थे।

कहानी बताती है कि कैसे भाई बंदर अपने कलाबाज बादल पर सवार होकर करुणा के बादलों के मठ में वापस आया, जहाँ भिक्षुओं ने उससे यह प्रश्न पूछा, "क्या आप भगवान तांग को बचाने में सक्षम हुए हैं?"

"यह मुश्किल है," बंदर ने कहा। "बहुत मुश्किल। उन तीनों दुष्ट आत्माओं के पास अपार जादुई शक्तियां हैं, और जब हम तीनों ने उनसे लंबे समय तक लड़ाई की, तो उन्होंने अपने साथियों को बुलाकर सुअर और साधु सैंड को पकड़वा लिया। मैं सौभाग्य से बच निकला।"

भिक्षुओं ने भयभीत होकर कहा, "मेरे स्वामी, यदि आप जैसे कोहरे और बादलों पर सवार होने में सक्षम व्यक्ति भी उन्हें नहीं पकड़ सकता, तो आपके स्वामी का मारा जाना निश्चित है।"

“कोई बात नहीं,” बंदर ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं। मेरे स्वामी रक्षकों, संरक्षकों,

डिंग और जिया की गुप्त सुरक्षा में हैं। उन्होंने घास में बदलने वाला सिंदूर भी खा लिया है। मुझे पूरा यकीन है कि उनकी जान सुरक्षित रहेगी। बस दिक्कत ये है कि वो राक्षस अपने काम में माहिर हैं। तुम लोग घोड़े और सामान का ध्यान रखना, मैं स्वर्ग जाकर कुछ सैनिक लाता हूँ।"

"क्या आप स्वर्ग जा सकते हैं, मेरे प्रभु?" भयभीत भिक्षुओं ने पूछा।

“मैं पहले वहीं रहता था,” बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “जब मैं स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि था, तब मैंने आड़ू भोज को बर्बाद कर दिया था, इसलिए हमारे बुद्ध ने मुझे वश में कर लिया, और अब मेरे पास अपने अपराधों का प्रायश्चित करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। मुझे तांग पुजारी की रक्षा करनी है जब वे शास्त्रों को लेने जाते हैं। पूरी यात्रा के दौरान मैं अच्छाई की मदद करता रहा और बुराई से लड़ता रहा। आप लोग यह नहीं समझते कि गुरु के भाग्य में ये मुसीबतें लिखी हैं।” यह सुनकर भिक्षुओं ने प्रणाम किया, जबकि बंदर सीटी बजाते हुए बाहर चला गया और गायब हो गया।

महान संत शीघ्र ही स्वर्ग के पश्चिमी द्वार के बाहर पहुँच गए, जहाँ धातु ग्रह, स्वर्ग के राजा विरुधका और चार आत्मा अधिकारी यिन, झू, ताओ और जू आपस में बातचीत कर रहे थे। बंदर को आते देख उन्होंने तुरंत उसे प्रणाम किया और कहा, "हे महान संत, आप कहाँ जा रहे हैं?"

"भारत की पूर्वी सीमा पर स्थित जिनपिंग प्रांत के मिंटियन काउंटी पहुंचने के बाद," बंदर ने उत्तर दिया।

"मेरे गुरु, तांग पुरोहित, जिनके साथ मैं चल रहा हूँ, पूर्णिमा उत्सव के अवसर पर करुणा के बादल मठ के भिक्षुओं द्वारा मनोरंजन कर रहे थे। जब हम स्वर्ण दीपों के पुल पर गए, तो वहाँ तीन स्वर्ण दीप थे जिनमें पचास हजार औंस से अधिक चांदी के मूल्य का सुगंधित शुद्ध घी भरा हुआ था, जिसे बुद्ध हर साल लेने आते थे। जब हम दीपों की प्रशंसा कर रहे थे, तभी बुद्ध की तीन प्रतिमाएँ प्रकट हुईं।" (अध्याय 92)

ज़मीनी हकीकत से परे, और मेरा स्वामी इतना भोला था कि उनकी पूजा करने के लिए पुल पर चला गया। मैंने उसे बताया कि वे बुरे लोग हैं, लेकिन तब तक दीपक ढक दिए गए थे और स्वामी तेल के साथ हवा में उड़ गया था। जब मैं भोर तक हवा का पीछा करता रहा, तो मैं एक पहाड़ पर पहुँचा, जहाँ सौभाग्य से चार कर्तव्य

देवताओं ने मुझे बताया कि इसे हरित ड्रैगन पर्वत कहा जाता है, जिसमें एक अंधकारमय सार गुफा है जहाँ तीन राक्षस रहते हैं: शीत-अवरोधक राजा, ताप-अवरोधक राजा और धूल-अवरोधक राजा। मैं स्वामी को वापस लाने के लिए उनके दरवाज़े पर पहुँचा और उनसे कुछ देर तक बिना सफलता के लड़ा, इसलिए मैंने अपना रूप बदलकर अंदर प्रवेश किया और पाया कि स्वामी कैद था लेकिन सुरक्षित था। मैंने उसे रिहा कर दिया और उसे बाहर ले जा ही रहा था कि वे जाग गए और मुझे फिर से भागना पड़ा। बाद में मैंने सुअर और साधु रेत के साथ उनसे जमकर लड़ाई की, लेकिन वे दोनों पकड़े गए और बाँध दिए गए। इसीलिए मैं जेड सम्राट को सूचित करने, राक्षसों की पृष्ठभूमि के बारे में पता लगाने और उनसे उन्हें दबाने का आदेश देने का अनुरोध करने आया हूँ।"

इस पर मेटल प्लैनेट जोर से हंस पड़ा और बोला, "अगर तुम राक्षसों से लड़ रहे हो तो तुम्हें यह क्यों नहीं पता कि वे कहां से आए हैं?"

"मैं समझ सकता हूँ," बंदर ने जवाब दिया। "वे गैंडों की आत्माओं का एक समूह हैं। लेकिन उनके पास इतनी अपार जादुई शक्तियाँ हैं कि मैं उन्हें हरा नहीं सकता और मैं हताश हूँ।"

"वे तीन गैंडे की आत्माएं हैं," मेटल प्लैनेट ने समझाया। "क्योंकि उनका रूप स्वर्ग में दिखाई देता है, इसलिए उन्होंने कई वर्षों तक अपनी चेतना का विकास किया और सच्ची आत्माएं बन गईं जो बादलों पर उड़ने और कोहरे में चलने में सक्षम हैं।"

ये राक्षस स्वच्छता के प्रति बेहद सजग हैं और अपने शरीर की बनावट से घृणा करते हैं, इसलिए वे हमेशा स्नान करने के लिए पानी में जाते रहते हैं। उनके अनेक नाम हैं: मादा गैंडे, नर गैंडे, बधिया गैंडे, चित्तीदार गैंडे, हुमाओ गैंडे, डुओलुओ गैंडे और स्वर्ग से जुड़े चितकबरे गैंडे। इन सभी की एक ही नाक होती है, तीन प्रकार के बाल होते हैं और दो सींग होते हैं। वे नदियों और समुद्रों में घूमते हैं और पानी में यात्रा कर सकते हैं। ऐसा लगता है मानो शीत-अवॉइडर, ताप-अवॉइडर और धूल-अवॉइडर के सींगों में कुलीनता झलकती है, इसीलिए वे खुद को राजा कहते हैं। यदि आप उन्हें पकड़ना चाहते हैं, तो वे लकड़ी तत्व से संबंधित चार राक्षसी नक्षत्रों के समक्ष आत्मसमर्पण कर देंगे।

"वे कौन से चार लकड़ी के तारे हैं?" बंदर ने पूछा। "क्या आप, आदरणीय महोदय, मुझे उनके नाम बता सकते हैं?"

"वे तारे सप्तर्षि और बैल महल के बाहर अंतरिक्ष में फैले हुए हैं," ग्रह ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "यदि आप जेड सम्राट को एक निवेदन प्रस्तुत करते हैं, तो वे आपको विस्तृत निर्देश देंगे।" धन्यवाद व्यक्त करते हुए अपने हाथ ऊपर उठाते हुए, बंदर सीधे स्वर्ग के द्वार से अंदर चला गया।

वह जल्द ही सार्वभौमिक प्रकाश के हॉल के बाहर था, जहाँ उसने स्वर्गीय गुरु गे, किउ, झांग और जू को देखा, जिन्होंने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

“हम अभी-अभी जिनपिंग प्रांत पहुँचे हैं,” बंदर ने उत्तर दिया, “जहाँ मेरे गुरु चंद्र उत्सव की लालटेनें देखने के लिए ध्यान में लीन हो गए थे और दुष्ट राक्षस उन्हें अगवा कर ले गए। मैं उन्हें स्वयं वश में नहीं कर सकता, इसलिए मैं जेड सम्राट से उन्हें बचाने की विनती करने आया हूँ।” इसके बाद चारों दिव्य गुरु बंदर को चमत्कारी धुंध के हॉल में ले गए ताकि वह अपनी याचिका प्रस्तुत कर सके। सभी रस्में पूरी होने के बाद उसने अपना कारण बताया। फिर जेड सम्राट ने पूछा कि वह किन दिव्य सैनिकों की टुकड़ियों से सहायता चाहता है।

“अभी-अभी जब मैं स्वर्ग के पश्चिमी द्वार पर पहुँचा,” बंदर ने उत्तर दिया, “धातु ग्रह ने मुझे बताया कि वे गैंडे की आत्माएँ हैं जिन्हें केवल लकड़ी तत्व से संबंधित चार राक्षस तारों द्वारा ही वश में किया जा सकता है।” तब जेड सम्राट ने स्वर्गीय गुरु जू को बंदर के साथ सप्तर्षि और बैल महल में जाकर उन चार राक्षस तारों को लाने और उन्हें निचले लोक में ले जाकर उन्हें वश में करने का आदेश दिया।

जब वे सप्तर्षि और बैल महल के बाहर पहुँचे, तब तक अट्ठाईस नक्षत्र उनका स्वागत करने के लिए वहाँ मौजूद थे। "हम शाही आदेश से यहाँ आए हैं ताकि लकड़ी तत्व से संबंधित चार राक्षसी तारों को महान ऋषि सूर्य के साथ निचले लोक में जाने का आदेश दे सकें," दिव्य शिक्षक ने समझाया। सींग नक्षत्र का लकड़ी का छोटा ड्रैगन, सप्तर्षि का लकड़ी का यूनिकॉर्न, स्ट्राइडर का लकड़ी का भेड़िया, और अध्याय 92

कुएं के लकड़ी के लकड़बग्घे सभी किनारे से आगे बढ़कर पूछने लगे, "हे महान ऋषि, आप हमें राक्षसों को वश में करने के लिए कहाँ भेज रहे हैं?"

"तो तुम ही हो," भाई बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "उस बूढ़े धातु ग्रह ने तुम्हारे नाम गुप्त रखे थे, और मुझे समझ नहीं आया कि उसका इरादा क्या था। अगर उसने मुझे

पहले ही बता दिया होता कि तुम अट्ठाईस नक्षत्रों के चार लकड़ी के जानवर हो, तो मैं खुद तुम्हें आमंत्रित करने यहाँ आ जाता: मुझे महाराज से आदेश लेने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती।"

"हे महान ऋषि, आपने क्या कहा?" चारों लकड़ी के जानवरों ने उत्तर दिया। "शाही आदेश के बिना हम अपनी मर्जी से जाने की हिम्मत कभी नहीं करते। वे कहाँ हैं? चलिए, अभी चलते हैं।"

"वे जिनपिंग प्रांत के उत्तर-पूर्व में स्थित ग्रीन ड्रैगन माउंटेन की डार्क एसेंस गुफा में रहने वाली गैंडे की आत्माएं हैं।"

"अगर वे सचमुच गैंडे की आत्माएं हैं," डिपर के लकड़ी के यूनिकॉर्न, स्ट्राइडर के लकड़ी के भेड़िये और हॉर्न के लकड़ी के छोटे ड्रैगन ने कहा, "तो आपको केवल वेल नक्षत्र से लकड़ी के लकड़बग्घे की आवश्यकता होगी।"

वह पहाड़ों पर बाघों को खा सकता है और समुद्र में गैंडों को पकड़ सकता है।"

“लेकिन ये साधारण गैंडे नहीं हैं जो चाँद को निहारते हैं,” बंदर ने उत्तर दिया। “इन्होंने अपने आचरण को सुधारा है, मार्ग को पा लिया है और ये हज़ार वर्ष पुराने हैं। आप चारों सज्जनों को आना ही होगा: कोई बहाना नहीं चलेगा। अगर आप में से कोई एक इन्हें अकेले नहीं पकड़ सकता, तो यह प्रयास व्यर्थ होगा।”

“तुम लोग बकवास कर रहे हो,” स्वर्ग के गुरु ने आगे कहा। “शाही आदेश है कि तुम चारों जाओ, इसलिए तुम्हें जाना ही होगा। तुरंत वहाँ उड़कर जाओ, मैं तुम्हें सूचना देता हूँ।” इसके बाद स्वर्ग के गुरु ने बंदर से विदा ली और चले गए।

"अब और देर मत कीजिए, हे महान ऋषि," चारों लकड़ी के बंदरों ने कहा। "आप उन्हें युद्ध के लिए चुनौती दीजिए और उन्हें बाहर निकालिए ताकि हम आपके पीछे से आकर उन्हें पकड़ सकें।" फिर बंदर गुफा में गया और अपशब्दों से चिल्लाया।

"तेल चुराने वाले राक्षसों! मेरे मालिक को वापस करो!" जिन दरवाजों को पिग ने तोड़कर खोला था, उन्हें कुछ छोटे शैतानों ने कुछ तख्तों से बंद कर दिया था, और जब उन्होंने उसकी गालियां सुनीं तो वे अंदर जाकर रिपोर्ट करने के लिए दौड़ पड़े।

"महाराजों, भिक्षु सूर्य फिर से बाहर हमारा अपमान कर रहा है।"

"हमने उसे पीटा और वह भाग गया," डस्ट-अवॉइडर ने कहा, "तो वह आज फिर वापस क्यों आ गया? मुझे लगता है कि उसे कहीं से कुछ मदद मिल गई होगी।"

"हमें उसके द्वारा भेजी जाने वाली किसी भी अतिरिक्त सहायता से डर नहीं है," शीत-

अवॉइडर और ताप-अवॉइडर ने तिरस्कारपूर्वक कहा। "चलो, तुरंत अपने कवच पहन लेते हैं। बच्चों, उसे सावधानी से घेर लो और उसे भागने मत दो।" अपनी जान की परवाह न करते हुए, दुष्ट आत्माएँ भाले और तलवारें लिए, झंडे लहराते और ढोल बजाते हुए गुफा से बाहर आ गईं। "फिर से आ गए, बंदर?" उन्होंने भाई बंदर पर चिल्लाते हुए कहा। "एक और मार से नहीं डरते?"

बंदर को "मकाक" शब्द से ज़्यादा गुस्सा किसी और बात पर नहीं आता था, और वह गुस्से से दांत पीसते हुए उन्हें मारने के लिए अपना डंडा उठा रहा था। तीनों राक्षस राजाओं ने अपने छोटे शैतानों को लाकर उसे घेर लिया, जिस पर एक तरफ इंतज़ार कर रहे चार लकड़ी के जानवरों ने "हिलो मत, जानवरों!" चिल्लाते हुए अपने हथियार चला दिए।

चारों तारों को देखकर तीनों दानव राजा सबसे ज्यादा घबरा गए और सबने कहा, "यह तो भयानक है, बहुत भयानक। उसे ऐसे लोग मिल गए हैं जो हमें हरा सकते हैं। अपनी जान बचाकर भागो, बच्चों!" इसके साथ ही, पहाड़ पर चारों ओर दौड़ते हुए सभी छोटे दानव याक, भैंस और बैल की आत्माओं के रूप में अपने मूल स्वरूप में लौट आए और जोर-जोर से दहाड़ने, रंभाने, हांफने और आहें भरने लगे। तीनों दानव राजा भी अपने असली रूप में लौट आए, अपने हाथ नीचे करके लोहे की तोपों जैसे चार खुरों वाले प्राणी बन गए और उत्तर-पूर्व की ओर सरपट दौड़ पड़े। उनके पीछे-पीछे महान ऋषि कुएँ के लकड़ी के लकड़बग्घे और लकड़ी के अध्याय 92 का नेतृत्व करते हुए तेजी से चल रहे थे।

1287

पश्चिम की यात्रा

सींग का छोटा ड्रैगन। वे एक पल भी आराम नहीं करने वाले थे, जबकि डिपर का लकड़ी का यूनिकॉर्न और स्ट्राइडर का लकड़ी का भेड़िया पूर्वी पर्वत की खोखली जगहों, चोटियों, खाइयों और घाटियों में सभी पशु आत्माओं का सफाया कर रहे थे। कुछ मारे गए और कुछ को जीवित पकड़ लिया गया। फिर वे तांग पुजारी, सुअर और फ्रायर सैंड को मुक्त करने के लिए डार्क एसेंस गुफा में गए।

उन दोनों सितारों को पहचानते हुए, फ्रायर सैंड ने धन्यवाद देते हुए उन्हें प्रणाम किया और पूछा, "आप दोनों सज्जन हमें बचाने के लिए यहाँ क्यों आए हैं?"

"हम आपको बचाने आए हैं क्योंकि महान ऋषि बंदर ने जेड सम्राट से अनुरोध किया

था कि हमें भेजा जाए," दोनों तारों ने उत्तर दिया।
"मेरा शिष्य वुकॉन्ग अभी तक अंदर क्यों नहीं आया?" तांग पुजारी ने आंखों में आंसू लिए पूछा।
"तीनों पुराने राक्षस गैंडे हैं," तारों ने समझाया, "और जब उन्होंने हमें देखा तो वे अपनी जान बचाने के लिए उत्तर-पूर्व की ओर भाग गए। महान ऋषि सूर्य, कुएँ के लकड़ी के लकड़बग्घे और सींग के लकड़ी के छोटे अजगर के साथ उनके पीछे गए हैं। हम दोनों ने बैलों का सफाया किया और फिर आपको बचाने के लिए यहाँ आए, हे पवित्र भिक्षु।"
तांग पुजारी ने एक बार फिर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए प्रणाम किया और फिर स्वर्ग की ओर प्रणाम किया।
"गुरुजी," सुअर ने कहा, "अत्यधिक विनम्रता पाखंड है। हर समय चापलूसी करना बंद करो। चार सितारा अधिकारी जेड सम्राट के आदेश पर और बड़े भाई पर एहसान के तौर पर आए हैं। साधारण राक्षसों का तो सफाया हो चुका है, लेकिन हमें अभी भी नहीं पता कि वरिष्ठ राक्षसों को कैसे हराया जाए। चलो गुफा से सभी कीमती सामान निकाल लेते हैं, जगह को तहस-नहस कर देते हैं ताकि उनकी जड़ें उखाड़ सकें, फिर मठ में वापस जाकर बंदर का इंतजार करते हैं।"
"मार्शल तियान पेंग, आपका सुझाव सही है," स्ट्राइडर के लकड़ी के भेड़िये ने कहा। "आप और पर्दा उठाने वाले जनरल अपने स्वामी को वापस मठ में सोने के लिए छोड़ दें, जबकि हम उत्तर-पूर्व की ओर दुश्मन से लड़ने के लिए आगे बढ़ते हैं।"
"हाँ, हाँ," पिग ने कहा। "तुम दोनों की मदद से तुम उन सबको ज़रूर खत्म कर दोगे। फिर तुम अपने मिशन की रिपोर्ट दे पाओगे।" दोनों स्टार अधिकारी तुरंत पीछा करने में जुट गए। पिग और फ्रायर सैंड को गुफा में बहुत सारा कीमती सामान मिला - जिसमें मूंगा, अगेट, मोती, एम्बर, कीमती सीपियाँ, जेड और सोना था - वे उसे बाहर ले आए और गुरु को एक चट्टान की चोटी पर बैठने के लिए आमंत्रित किया, जबकि उन्होंने आग जलाई जिससे पूरी गुफा राख हो गई। तभी वे गुरु को जिनपिंग प्रांत के क्लाउड्स ऑफ कम्पैशन मठ में वापस ले गए।
प्रसिद्ध कहावत है, "सफलता के चरम पर ही विपत्ति आती है।"
वास्तव में, सुख में भी बुराई का सामना करना पड़ सकता है।
लालटेन के प्रति प्रेम के कारण ध्यान की प्रकृति विचलित हो गई;

उस मार्ग पर चलने का दृढ़ निश्चय रखने वाला हृदय एक सुंदर दृश्य को देखकर कमजोर पड़ गया।
इस महान अमृत की हमेशा से ही निरंतर सुरक्षा करनी पड़ती रही है;
एक बार खो जाने पर हमेशा दुःख होता है।
इसे अच्छी तरह बंद कर दो; इसे कसकर बांध दो; कभी बेकार मत रहो।
एक पल की लापरवाही भी इंसान को गुमराह कर सकती है।
अध्याय 92
1288
पश्चिम की यात्रा
हम यह नहीं बताएंगे कि वे तीनों कैसे अपनी जान बचाकर मठ वापस लौटे, बल्कि यह बताएंगे कि कैसे सप्तर्षि मंडल का लकड़ी का यूनिकॉर्न और पर्साइडर मंडल का लकड़ी का भेड़िया बादलों पर सवार होकर उत्तर-पूर्व दिशा में राक्षसों का पीछा कर रहे थे, तभी वे हवा में ही उनसे ओझल हो गए। पश्चिमी महासागर तक पहुँचने पर उन्होंने दूर समुद्र के किनारे महान ऋषि बंदर को चिल्लाते हुए देखा।
“हे महान ऋषि, राक्षस कहाँ गए?” उन्होंने अपने बादल नीचे लाते हुए पूछा। “तुम दोनों उनके पीछे जाकर उन्हें मारने में मदद क्यों नहीं करते?” बंदर ने उत्तर दिया।
“तुम्हारी यह सवाल पूछने की हिम्मत कैसे हुई?”
“हे महान ऋषि, जब हमने देखा कि आपने और कुएँ और सींग से निकले तारों ने राक्षसों को परास्त कर दिया है और उनका पीछा कर रहे हैं, तो हमें पूरा विश्वास था कि आप उन्हें पकड़ लेंगे, इसलिए हम दोनों ने बाकी बचे राक्षसों का सफाया कर दिया, आपके गुरु और उनके साथी शिष्यों को गुफा से बचाया, पहाड़ की खोज की, गुफा को जला दिया और आपके गुरु को आपके दोनों साथी शिष्यों को सौंप दिया ताकि वे उन्हें शहर में स्थित करुणा के बादलों के मठ में वापस ले जा सकें। हम आपका पीछा इस तरह तभी कर पाए जब आप इतने लंबे समय से अनुपस्थित थे।”
“तो फिर तुमने बहुत अच्छा किया,” बंदर भाई ने कहा, उसका क्रोध अब प्रसन्नता में बदल गया था। “इतनी मेहनत करने के लिए धन्यवाद। बस बात ये है कि जब हम तीनों राक्षसों का यहाँ तक पीछा कर रहे थे, तो वे समुद्र में कूद गए। कुएँ और सींग से निकले दोनों तारे उनके पीछे-पीछे चले गए, जबकि मैं किनारे पर रुका रहा ताकि उनका रास्ता रोक सकूँ। अब तुम यहाँ हो, तुम किनारे पर उनका रास्ता रोक सकते

हो, जबकि मैं वहाँ जाता हूँ।”

फिर उस महान ऋषि ने अपनी गदा घुमाई और अपनी उंगलियों से मंत्र पढ़ते हुए पानी में रास्ता बनाया और लहरों में गहराई तक गोता लगाया, जहां तीनों राक्षस कुएं के लकड़ी के लकड़बग्घे और सींग के लकड़ी के छोटे अजगर के साथ जीवन-मरण के संघर्ष में उलझे हुए थे।

"बंदर यहाँ है!" वह चिल्लाते हुए आगे बढ़ा। दुष्ट आत्माएँ दोनों स्टार अधिकारियों को मुश्किल से रोक पा रही थीं, इसलिए संकट के इस क्षण में बंदर की ज़ोरदार चीख सुनकर वे मुड़ीं और अपनी जान बचाने के लिए समुद्र के बीचोंबीच भाग गईं। उनके सींग पानी को चीरने में माहिर थे, और उन्होंने ज़ोरदार आवाज़ के साथ समुद्र में अपना रास्ता बनाया, दोनों स्टार अधिकारी और महान ऋषि बंदर उनके पीछे दौड़ पड़े।

पश्चिमी महासागर में एक कवचधारी योद्धा के साथ गश्त कर रहे एक यक्ष ने दूर से देखा कि गैंडे पानी को चीरते हुए आगे बढ़ रहे हैं। उसने बंदर और दो तारों को पहचान लिया और घबराकर क्रिस्टल महल लौटकर ड्रैगन राजा को सूचना दी, "महाराज, स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि और आकाश के दो तारे तीन गैंडों का पीछा करते हुए इस ओर आ रहे हैं।" जब वृद्ध ड्रैगन राजा आओ शुन ने यह सुना, तो उन्होंने अपने उत्तराधिकारी, राजकुमार मोआंग से कहा, "हमारी जल सेना को तुरंत इकट्ठा करो। मुझे पूरा विश्वास है कि ये तीन गैंडे आत्माएं शीत-विरोधक, ताप-विरोधक और धूल-विरोधक ही हैं जिन्होंने नौसिखिए सूर्य को उकसाया है। चूंकि वे अब समुद्र में हैं, इसलिए हमें उनकी सहायता करनी चाहिए।" आदेश मिलते ही आओ मोआंग ने अपनी सेना को इकट्ठा करने में तेजी दिखाई।

कुछ ही क्षणों में, कछुओं, नरम खोल वाले कछुओं, मगरमच्छों, ब्रीम, मैकेरल, मंदारिन मछली, कार्प और झींगा व केकड़े सैनिकों की एक पूर्णतः सशस्त्र सेना क्रिस्टल महल से निकलकर गैंडों की आत्माओं को रोकने के लिए एक साथ युद्धघोष करते हुए उमड़ पड़ी। आगे बढ़ने में असमर्थ, गैंडों ने जल्दबाजी में पीछे हटना शुरू कर दिया, लेकिन उनका रास्ता कुएं और सींग के तारों के साथ-साथ महान ऋषि द्वारा अवरुद्ध कर दिया गया। घबराहट में वे समूह में नहीं रह सके और अपनी जान बचाने के लिए भागते हुए तितर-बितर हो गए। धूल से बचने वाले को जल्द ही बूढ़े ड्रैगन राजा के आदमियों ने घेर लिया।

प्रसन्न बंदर चिल्लाया, "रुको! रुको! इसे जिंदा पकड़ो! इसे मारो मत!" जब मोआंग ने

यह आदेश सुना तो वह तेजी से आगे बढ़ा, डस्ट-अवॉइडर को जमीन पर गिरा दिया, उसकी थूथन में एक लोहे का हुक डाला और उसके सभी खुरों को एक साथ बांध दिया।

अध्याय 92

1289

पश्चिम की यात्रा

इसके बाद बूढ़े ड्रैगन राजा ने अपनी सेना को दो भागों में बांट दिया ताकि वह स्टार अधिकारियों को अन्य दो राक्षसों को पकड़ने में मदद कर सके।

जैसे ही युवा ड्रैगन राजकुमार अपने आदमियों को आगे ले गया, कुएं का लकड़ी का लकड़बग्घा अपने असली रूप में वापस आ गया और उसने शीत-अवॉइडर को पकड़कर उसे छोटे-बड़े टुकड़ों में खाना शुरू कर दिया।

"अच्छा तारा!" मोआंग चिल्लाया। "उसे मत मारो! महान ऋषि बंदर उसे जिंदा चाहता है, मरा हुआ नहीं।" मोआंग ने कई बार चिल्लाया, लेकिन तब तक लकड़बग्घा राक्षस का गला कुतर चुका था।

मोआंग ने अपने झींगा और केकड़ा सैनिकों को मृत गैंडे को क्रिस्टल महल में वापस ले जाने का आदेश दिया, फिर कुएं के लकड़ी के लकड़बग्घे के साथ उसका पीछा करने में शामिल हो गया। ऊष्मा-अवॉइडर, जिसे सींग के लकड़ी के छोटे ड्रैगन द्वारा उनकी ओर धकेला जा रहा था, सीधे कुएं के तारे की ओर भागा, जिस पर मोआंग ने अपने कछुओं, नरम खोल वाले कछुओं और मगरमच्छों को पंखे के आकार में फैलकर राक्षस को घेरने का आदेश दिया।

"मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो!" राक्षस गिड़गिड़ाया। कुएँ का लकड़ी का लकड़बग्घा आगे बढ़ा, राक्षस का कान पकड़ा, उसकी तलवार छीन ली और चिल्लाया, "मैं तुम्हें नहीं मारूंगा। मैं तुम्हें नहीं मारूंगा। मैं तुम्हें महान ऋषि बंदर के पास ले जाऊंगा ताकि वह तुमसे निपट सकें।"

फिर सैनिक क्रिस्टल महल में वापस गए और वहाँ उन्होंने सूचना दी, "हमने उन दोनों को पकड़ लिया है।" बंदर ने देखा कि एक का सिर कटा हुआ और खून से लथपथ जमीन पर पड़ा था, जबकि दूसरे को कुएँ के लकड़ी के लकड़बग्घे ने कान मरोड़कर घुटनों के बल बैठने के लिए मजबूर किया था।

"उस सिर को किसी हथियार से नहीं काटा गया था," मंकी ने करीब से देखने के लिए

आगे बढ़ते हुए कहा।
"अगर मैं इतनी ज़ोर से न चिल्लाता तो कुएँ का सबसे शक्तिशाली अधिकारी उसे पूरा निगल जाता," मोआंग ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "ठीक है," बंदर ने कहा।
"तो बेहतर होगा कि तुम एक आरी लेकर उसके सींग काट दो और उसकी खाल उतार लो ताकि हम उसे ले जा सकें। उसका मांस हम तुम्हारे आदरणीय पिता, ड्रैगन राजा और तुम्हारे लिए छोड़ देंगे।" फिर डस्ट-अवॉइडर की नाक में एक जंजीर डाल दी गई ताकि सींगों वाला लकड़ी का छोटा ड्रैगन उसे खींचकर ले जाए, और हीट-अवॉइडर के साथ भी ऐसा ही किया गया ताकि कुएं वाला लकड़ी का लकड़बग्घा उसे ले जा सके।
"इन्हें जिनपिंग के प्रीफेक्ट के पास ले जाओ," बंदर ने कहा। "इनकी जांच करो, इनसे उन सभी वर्षों के बारे में पूछताछ करो जब उन्होंने बुद्ध बनकर लोगों को नुकसान पहुंचाया, फिर इनके सिर काट दो।"
फिर उन सभी ने बंदर के कहे अनुसार किया, ड्रैगन राजा और उसके पुत्र से विदा ली और गैंडों को साथ लेकर पश्चिमी महासागर से बाहर निकले। जब वे स्ट्राइडर और डिपर के अन्य दो तारों से मिले, तो वे बादलों के सहारे सीधे जिनपिंग प्रांत लौट गए।
यहां बंदर शुभ प्रकाश की किरण पर हवा में खड़े होकर पुकारा, "श्रीमान प्रीफेक्ट, अधीनस्थ अधिकारियों, सैनिकों और जिनपिंग के नागरिकों, मेरी बात ध्यान से सुनो। हम पवित्र भिक्षु हैं जिन्हें पूर्व में महान तांग राजवंश द्वारा पश्चिमी स्वर्ग से धर्मग्रंथ लाने के लिए भेजा गया है। इस प्रान्त और इसके जिलों में आपको हर साल इन गैंडे जैसे राक्षसों को सोने के दीपक अर्पित करने पड़ते थे जो स्वयं को पृथ्वी पर अवतरित बुद्ध बताते हैं। जब हम यहां आए और चंद्र उत्सव में दीपकों की प्रशंसा कर रहे थे, तब ये राक्षस तेल और हमारे गुरु को एक साथ ले गए। मैंने स्वर्ग से कुछ देवताओं से उन्हें पकड़ने का अनुरोध किया। हमने उनकी गुफा को साफ कर दिया है और राक्षसों का सफाया कर दिया है। वे अब आपको और परेशान नहीं कर पाएंगे। आपको यहां सोने के दीपक अर्पित करने में जनता का पैसा बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं है।"
जब पिग और फ्रायर सैंड, जो गुरु को वापस क्लाउड्स ऑफ कम्पैशन मठ में ले जा रहे थे, ने आसमान से बंदर को बात करते सुना, तो उन्होंने अपने गुरु को वहीं छोड़ दिया, सामान गिरा दिया और राक्षसों को कैसे हराया गया, यह पूछने के लिए बादल के सहारे हवा में उड़ गए।
अध्याय 92

"उनमें से एक को कुएं से निकले तारे ने चबा-चबाकर मार डाला," बंदर ने जवाब दिया, "और उसके कटे हुए सींग और खाल हमारे पास हैं। बाकी दो को हम जिंदा वापस ले आए हैं।"
"इन दोनों को शहर में फेंक दो," सुअर ने कहा, "ताकि अधिकारी और बाकी सब लोग देख सकें। तब उन्हें पता चलेगा कि हम देवता और ऋषि हैं। मैं तुम चारों सितारा अधिकारियों को कहूँगा कि अपने बादल हटाकर ज़मीन पर उतरो और हमारे साथ प्रांतीय अदालत में आकर इन राक्षसों को फाँसी दो। तथ्य स्पष्ट हैं और सज़ा उचित है। और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।"
"मार्शल तियान पेंग सही हैं, और उन्हें कानूनों की भी अच्छी जानकारी है," चारों सितारों ने कहा।
"मैंने भिक्षु के रूप में अपने वर्षों के दौरान थोड़ा बहुत सीखा है," पिग ने उत्तर दिया।
फिर देवताओं ने गैंडों को धकेल दिया, जो रंगीन बादलों से घिरे हुए प्रादेशिक प्रांगण में गिर पड़े। प्रादेशिक अधिकारियों और शहर के अंदर और बाहर मौजूद सभी लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ। सभी ने अपने घरों के बाहर धूपदान जलाए और स्वर्ग से आए देवताओं की पूजा करने के लिए सिर झुकाया। कुछ देर बाद करुणा के बादलों के मठ के भिक्षु आदरणीय बुजुर्ग को पालकी में प्रादेशिक प्रादेशिक प्रांगण में ले आए। जब संजांग मंकी से मिला तो उसने बार-बार उसका शुक्रिया अदा किया और कहा, "हमें बचाने के लिए मैंने जो भी मुसीबतें उठाईं, उसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। हे मेरे योग्य शिष्य, जब मैं आपसे नहीं मिला तो मैं बहुत चिंतित था, लेकिन अब आप विजयी होकर लौट आए हैं। मुझे आश्चर्य है कि राक्षसों को पकड़ने से पहले आपको उनका पीछा कहाँ-कहाँ करना पड़ा होगा।"
"परसों जब मैं तुमसे विदा लेकर गया था," बंदर ने उत्तर दिया, "मैं कुछ पूछताछ करने के लिए स्वर्ग गया था।"
धातु ग्रह जानता था कि राक्षस गैंडे थे, इसलिए उसने मुझे लकड़ी तत्व से संबंधित चार राक्षस तारों को मांगने के लिए कहा। इसलिए मैंने जेड सम्राट को एक ज्ञापन प्रस्तुत किया और उन्होंने उन्हें सीधे गुफा के प्रवेश द्वार पर भेज दिया, जहाँ उन्होंने युद्ध किया। जब दानव राजा भाग गए, तो सप्तर्षि और पराक्रमी तारों ने आपको बचाया, हे

गुरु, मैंने कुएँ और सींग तारों के साथ राक्षसों का पीछा करते हुए उन्हें सीधे पश्चिमी महासागर तक पहुँचाया, जहाँ ड्रैगन राजा ने अपने पुत्र को अपनी सेना के साथ हमारी सहायता के लिए भेजा। इस प्रकार राक्षसों को पकड़ा गया और पूछताछ के लिए यहाँ लाया गया।" आदरणीय बुजुर्ग ने अंतहीन प्रशंसा और धन्यवाद दिया। प्रांत और काउंटी के अधिकारियों और उनके अधीनस्थों ने सभी ने कीमती मोमबत्तियाँ और अगरबत्तियों के पूरे पात्र जलाए और सम्मान में सिर झुकाया।

कुछ देर बाद सुअर क्रोधित हो गया, उसने अपनी साधु की छुरी निकाली और पहले धूल से बचने वाले का, फिर गर्मी से बचने वाले का, एक ही वार में सिर काट दिया। फिर उसने आरी से उनके चारों सींग काट दिए। तब महान ऋषि बंदर ने एक और सुझाव दिया: "तुम चारों सितारा अधिकारियों को ये चारों गैंडे के सींग ऊपरी लोक में ले जाकर जेड सम्राट को अपनी यात्रा की रिपोर्ट देते समय भेंट के रूप में अर्पित करने होंगे।" समुद्र से लाए गए दो सींगों के बारे में उसने कहा, "हम एक सींग यहाँ प्रांतीय महल के भंडारगृहों की रक्षा के लिए और इस बात के प्रमाण के रूप में छोड़ देंगे कि अब से कभी भी दीपक का तेल नहीं लिया जाएगा। दूसरा सींग हम गिद्ध शिखर पर भगवान बुद्ध को अर्पित करेंगे।" चारों सितारा अधिकारी प्रसन्न हुए और महान ऋषि को प्रणाम करके विदा लेने के बाद रंगीन बादलों से उड़कर जेड सम्राट को रिपोर्ट देने चले गए।

प्रांतीय और काउंटी अधिकारियों ने गुरु और उनके शिष्यों के लिए एक भव्य शाकाहारी भोज का आयोजन किया, जिसमें सभी ग्रामीण अधिकारियों को भी आमंत्रित किया गया था। सैन्य और नागरिक आबादी को यह सूचित करने के लिए नोटिस जारी किए गए कि अगले वर्ष सोने के दीपक नहीं जलाए जाने हैं, और तेल खरीदने वाले परिवार के रूप में सेवा करने का कर्तव्य हमेशा के लिए समाप्त कर दिया गया है। इस बीच, कसाइयों को गैंडों की खाल को निकालकर उसे सॉल्टपीटर में भिगोकर और धुएँ में सुखाकर कवच बनाने का निर्देश दिया गया, जबकि मांस अधिकारियों में वितरित किया जाना था। उसी समय, निर्दोष लोगों पर लगाए गए अनुचित जुर्माने से एकत्रित धन और अनाज का उपयोग निजी स्वामित्व वाली एक खाली भूमि खरीदने के लिए किया गया। इस पर राक्षसों का वध करने वाले चार सितारों के लिए एक मंदिर, साथ ही तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों के लिए एक मंदिर का निर्माण किया जाना था। कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में उनके कार्यों को

हमेशा के लिए दर्ज करने के लिए प्रत्येक के लिए शिलालेखों वाली पत्थर की पट्टियाँ स्थापित की जानी थीं।

अध्याय 92

1291

पश्चिम की यात्रा

गुरु और शिष्य विश्राम करते हुए प्रसाद का आनंद ले रहे थे। उन्हें अपने लिए एक पल भी नहीं मिलता था क्योंकि 240 दीपक-तेल वाले घरों से इतने निमंत्रण आए थे। सुअर इतना अधिक भोजन पाकर प्रसन्न था, और वह गुफा में एकत्रित किए गए खजानों में से कुछ हमेशा अपनी आस्तीन में रखता था ताकि अपने सभी मेजबानों को उनके भोज के लिए धन्यवाद के रूप में दे सके। जब वे वहाँ एक महीने तक रहे और फिर भी वहाँ से नहीं निकल पाए, तो तांग पुजारी ने बंदर को आदेश दिया।

"वुकोंग, बची हुई सारी कीमती चीज़ें करुणा के बादल मठ के भिक्षुओं को दे दो। भोर होने से पहले यहाँ से निकल चलते हैं, यहाँ के धनी परिवारों को पता भी नहीं चलता। अगर हम यहाँ मौज-मस्ती करने में इतने मशगूल हो गए कि शास्त्र लाने में देरी कर दी, तो हम भगवान बुद्ध को नाराज़ कर सकते हैं और कोई विपत्ति आ सकती है। यह बहुत भयानक होगा।" फिर बंदर ने सारी चीज़ें ठिकाने लगा दीं।

अगली सुबह जब वे पाँचवें पहर जल्दी उठे तो सुअर को घोड़े को तैयार करने के लिए जगाया गया। उस मूर्ख ने इतना खा-पी लिया था कि वह अभी भी आधी नींद में था और बोला, "घोड़े को इतनी जल्दी तैयार क्यों करना है?"

"मालिक ने कहा है कि हमें चलना होगा," बंदर चिल्लाया।

“वो पादरी साहब ठीक से काम नहीं करते,” उस बेवकूफ ने आंखें मलते हुए कहा। “हमें सभी 240 बड़े परिवारों से निमंत्रण मिले हैं, लेकिन अभी तक हमें सिर्फ तीस-चार अच्छे शाकाहारी भोजन ही मिले हैं। भला वो मुझे फिर से भूखा कैसे रख सकते हैं?”

जब आदरणीय बुजुर्ग ने यह सुना तो उन्होंने अपशब्दों से जवाब दिया, "गंदगी पीने वाले मूर्ख! ऐसी बकवास करना बंद करो!"

तुरंत उठो! अगर तुम इसी तरह बहस करते रहे तो मैं वुकॉन्ग को आदेश दूंगा कि वह अपने सोने की पट्टियां लगे डंडे से तुम्हारे दांत तोड़ दे।

पिटाई की बात सुनते ही वह मूर्ख बेतहाशा हाथ-पैर हिलाते हुए बोला, "मालिक बदल

गया है। आमतौर पर वह मेरा पक्ष लेता है, मुझे पसंद करता है और मेरी रक्षा करता है क्योंकि मैं इतना बेवकूफ हूँ। जब तुम मुझे मारना चाहते हो, भाई, तो वह आमतौर पर तुम्हें रोक देता है। तो आज वह तुम्हें मुझे मारने के लिए क्यों कह रहा है?"

“मालिक तुमसे बहुत नाराज़ हैं क्योंकि तुम इतने लालची हो और हमारी यात्रा में रुकावट डाल रहे हो। अगर तुम नहीं चाहते कि मैं तुम्हें मारूँ, तो सामान पैक करो और घोड़े को तैयार करो।”

क्योंकि वह मूर्ख सचमुच मार खाने से डर गया था, इसलिए वह बिस्तर से कूदकर उठा, कपड़े पहने और साधु सैंड को चिल्लाकर बोला, "अभी उठो! वह मारना शुरू करने वाला है।" साधु सैंड भी तुरंत उठ खड़ा हुआ और दोनों ने मिलकर सारा सामान पैक कर लिया।

तांग पुजारी ने हाथ हिलाते हुए कहा, "चुप रहो, और भिक्षुओं को परेशान मत करो।" वह जल्दी से घोड़े पर सवार हो गए, जिसके बाद उन्होंने मठ का द्वार खोला और बाहर निकल गए। वास्तव में, यह प्रस्थान

फीनिक्स पक्षी को जेड पत्थर के पिंजरे से भागने देना;

चुपके से ताले खोलकर अजगर को मुक्त करना।

अगर आपको नहीं पता कि जिन परिवारों ने फिर भी उन्हें धन्यवाद देना चाहा, उन्होंने सुबह होते ही क्या किया, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 92

1292

पश्चिम की यात्रा

अध्याय 93

भिक्षादाता के उद्यान में प्राचीनता और कारणों पर चर्चा की गई है।

भारत के दरबार में राजा भिक्षुओं से मिलते हैं

जब विचार उत्पन्न होते हैं तो इच्छा अवश्य उत्पन्न होती है।

लालसा निश्चित रूप से विनाश की ओर ले जाती है।

बुद्धि ही कुलीन वर्ग की तीनों श्रेणियों को क्यों अलग करती है?

जब यह क्रिया पूरी हो जाती है तो यह स्वाभाविक रूप से आदिम सागर में लौट जाती है।

चाहे आप अमर बनें या बुद्ध,

सभी व्यवस्थाएं भीतर से ही करनी होंगी।
पूर्णतया शुद्ध, सारी धूल हटा दी गई हो,
सभी लक्ष्य प्राप्त हो जाएंगे और व्यक्ति स्वर्ग में पहुंच जाएगा।
कहानी बताती है कि जब भोर होते ही संज़ंग और उनके शिष्य कहीं नज़र नहीं आए, तो करुणा के बादल मठ के सभी भिक्षुओं ने कहा, "हम उन्हें रोक नहीं सके, हम उन्हें विदाई नहीं दे सके और हम उनसे कुछ भी नहीं मांग सके। हमने उन जीवित बोधिसत्वों को हमेशा के लिए खो जाने दिया।"
जब वे बातें कर रहे थे, तभी शहर के दक्षिणी बाहरी इलाके से कुछ प्रतिष्ठित परिवार निमंत्रण लेकर आए। यह सुनकर भिक्षुओं ने खेद व्यक्त करते हुए ताली बजाई और कहा, "कल रात हम संशय में थे: वे सब बादल में सवार होकर चले गए।" तब सभी ने कृतज्ञतापूर्वक आकाश की ओर प्रणाम किया। यह खबर शहर के सभी अधिकारियों तक पहुंची, जिन्होंने प्रतिष्ठित परिवारों को धन्यवाद के रूप में मंदिरों में अर्पित करने के लिए पांच प्रकार के बलि के पशु, फूल और फल तैयार करने को कहा।
कहानी बताती है कि कैसे तांग पुरोहित और उनके तीन शिष्य लगभग एक महीने तक हवा पर निर्भर रहकर और खुले में सोकर बिना किसी घटना के यात्रा करते रहे। एक दिन अचानक उन्हें एक ऊँचा पर्वत दिखाई दिया। तांग पुरोहित ने डरते हुए कहा, "शिष्यों, हमारे सामने की चोटी बहुत खड़ी है। आपको बहुत सावधान रहना होगा।"
"चूंकि हमारी यात्रा हमें बुद्ध की भूमि के इतने करीब ले आई है, इसलिए यहां निश्चित रूप से कुछ भी बुरा नहीं होगा।"
बंदर ने कहा, "चिंता मत करो, स्वामी जी।"
तांग पुजारी ने उत्तर दिया, "शिष्य, यद्यपि हम बुद्ध की भूमि से ज्यादा दूर नहीं हैं, मठ में भिक्षुओं ने हमें दूसरी भूमि के बारे में बताया था और उन्हें नहीं पता था कि उसके बाद कितनी दूर है।"
"क्या आप फिर से हृदय सूत्र भूल गए हैं, जो आपको रूक नेस्ट के साधु ने सिखाया था, गुरुजी?" बंदर ने पूछा।
"प्रज्ञा-पारमिता हृदय सूत्र मेरे साथ निरंतर रहता है, जैसे मेरा वस्त्र और भिक्षापात्र," संजांग ने उत्तर दिया।
"जब से रूक्स नेस्ट हर्मिट ने मुझे यह सिखाया है, तब से एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब मैंने इसे न सुनाया हो। मैं इसे एक पल के लिए भी नहीं भूला। मैं इसे उल्टे क्रम

में भी सुना सकता हूँ। भला मैं इसे कैसे भूल सकता हूँ?"
अध्याय 93
1293
पश्चिम की यात्रा
“गुरुजी, आप इसे केवल सुना सकते हैं,” बंदर ने कहा। “आपने कभी साधु से इसका अर्थ नहीं पूछा।”
"बंदर!" संजांग ने पलटकर जवाब दिया। "तुम कैसे कह सकते हो कि मुझे समझ नहीं आता? क्या तुम्हें समझ आता है?"
"हां," बंदर ने उत्तर दिया, "मैं करता हूँ।"
उसके बाद न तो संजांग और न ही बंदर ने कोई आवाज निकाली। यह देखकर सुअर हंसते-हंसते लोटपोट हो गया, जबकि साधु सैंड इतना मजे में था कि उसे चोट लग रही थी।
"बकवास," पिग ने कहा। "हम सब जन्म से ही राक्षस थे। हम ध्यान भिक्षु नहीं हैं जिन्होंने सूत्रों की व्याख्या सुनी हो या बौद्ध पुजारी नहीं हैं जिन्हें धर्म की शिक्षा दी गई हो। वह सिर्फ दिखावा कर रहा है, नाटक कर रहा है।"
आप कैसे कह सकते हैं कि आपको समझ आ गया है? तो फिर आप कुछ बोल क्यों नहीं रहे हैं? हम सुन रहे हैं। कृपया समझाएं।
"दूसरे भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "उसे छोड़ दो। बड़ा भाई गुरु को भड़काने के लिए ही ऐसी बड़ी-बड़ी बातें कर रहा है। उसे तो बस लाठी चलाना आता है। सूत्रों की व्याख्या के बारे में उसे क्या पता?"
"वुनेन्ग और वुजिंग, ऐसी बकवास करना बंद करो," संज़ंग ने कहा। "वुकोंग बिना शब्दों की भाषा समझता है। यही सही व्याख्या है।"
गुरु और शिष्य बातें करते-करते काफी दूर तक चले गए और पहाड़ी को पीछे छोड़ गए। उन्होंने सड़क के किनारे एक बड़ा मठ देखा। "वुकोंग," संजांग ने कहा। "आगे एक मठ है। ज़रा देखो तो सही।"
यह न तो बहुत बड़ा है और न ही बहुत छोटा।
लेकिन इसमें हरे रंग की चमकदार टाइलें लगी हैं;
न तो बहुत नया और न ही बहुत पुराना,
और एक लाल दीवार के साथ।

नीले रंग के चीड़ के पेड़ों की झुकी हुई छतरियां मुश्किल से दिखाई दे रही हैं:
कौन जाने ये कितने हजार साल पुराने हैं?
नहर में बहते पानी की कलकल ध्वनि सुनो,
असंख्य राजवंशों पहले, इसे पहाड़ से काटकर निकाला गया था।
द्वार के ऊपर लिखा है,
'स्प्रेड गोल्ड ध्यान मठ';
पट्टिका पर यह अंकित है,
'प्राचीन अवशेष।'
अध्याय 93
1294
पश्चिम की यात्रा
बंदर ने देखा कि इसे स्प्रेड गोल्ड ध्यान मठ कहा जाता है, और सुअर ने भी यही कहा। "स्प्रेड गोल्ड,"
अपने घोड़े पर बैठे हुए संजांग ने सोचा, "'सोना फैलाओ'... क्या हम श्रावस्ती देश में हो सकते हैं?"
"यह तो बहुत ही अद्भुत है, स्वामी जी," सुअर ने कहा। "जितने वर्षों से मैं आपके साथ हूँ, आपने पहले कभी रास्ता नहीं जाना, लेकिन अब ऐसा लगता है कि आप इसे जानते हैं।"
“नहीं,” संज़ंग ने उत्तर दिया, “मैंने शास्त्रों में अक्सर पढ़ा है कि बुद्ध श्रावस्ती नगर के जेतवन उद्यान में थे। पूज्य भिक्षादाता सुदत्त ने बुद्ध के प्रवचन हेतु उस उद्यान को राजकुमार से खरीदने का प्रयास किया। राजकुमार ने उद्यान बेचने से इनकार कर दिया और कहा कि वह इसे तभी बेचेंगे जब इसे सोने से ढक दिया जाए। जब पूज्य भिक्षादाता ने यह सुना, तो उन्होंने सोने की ईंटें बनवाकर पूरे उद्यान को सोने से ढक दिया और उसे खरीद लिया। फिर उन्होंने बुद्ध को धर्मोपदेश देने के लिए आमंत्रित किया। मुझे पूरा विश्वास है कि स्प्रेड गोल्ड मॉनेस्ट्री नाम इसी कहानी से संबंधित है।”
"हमारी किस्मत अच्छी है," सुअर ने मुस्कुराते हुए कहा, "अगर यह कहानी सच है तो हम अपने लिए एक ईंट ढूंढ सकते हैं जिसे हम लोगों को उपहार में दे सकें।" सब लोग हंस पड़े, जिसके बाद संजांग घोड़े से उतर गया।
जैसे ही वे मठ के द्वार से अंदर गए, उन्होंने लोगों को कंधों पर लादकर या पीठ पर

बोझ ढोते हुए, गाड़ियाँ धकेलते हुए या भरी हुई गाड़ियों में बैठे हुए देखा। कुछ लोग सो रहे थे या बातें कर रहे थे। गुरु, जो इतने सुंदर थे, और उनके तीन बदसूरत शिष्यों को देखकर वे भयभीत हो गए, इसलिए उन्होंने रास्ता बनाने के लिए पीछे हट गए।
अपने शिष्यों द्वारा उपद्रव मचाने की आशंका से चिंतित संज़ंग बार-बार कह रहे थे, "संभलकर रहो! संभलकर रहो!" वे सभी अत्यंत संयमित थे। जब वे वज्र हॉल का चक्कर लगा रहे थे, तभी अत्यंत अलौकिक रूप वाले एक ध्यान भिक्षु उनसे मिलने के लिए बाहर आए:
एक चेहरा जो चमकते हुए पूर्णिमा के चंद्रमा जैसा था,
बोधि वृक्ष के समान शरीर।
हवा उसकी छड़ी की आस्तीन से होकर गुजरी।
जैसे ही उसकी चप्पलें पथरीले रास्ते पर पड़ीं।
जब संजांग ने उन्हें भिक्षु की तरह अभिवादन किया तो भिक्षु ने भी शिष्टाचारवश पूछा, "आप कहाँ से हैं, गुरुजी?"
"मैं चेन ज़ुआनज़ैंग हूँ," सानज़ैंग ने उत्तर दिया, "पूर्व में महान तांग सम्राट के आदेश पर बुद्ध की पूजा करने और शास्त्र लाने के लिए पश्चिमी स्वर्ग भेजा गया हूँ। मेरी यात्रा मुझे यहाँ ले आई है, इसलिए मैं कल अपनी यात्रा जारी रखने से पहले आपसे एक रात ठहरने का अनुरोध करने के लिए यह जल्दबाज़ी में मुलाकात कर रहा हूँ।"
“हमारा यह मठ सभी दिशाओं से आने वाले लोगों का स्वागत करता है,” भिक्षु ने उत्तर दिया। “सभी का यहाँ स्वागत है, और हम विशेष रूप से आपके जैसे परम पूज्य पूर्व के भिक्षु के सत्कार में प्रसन्न होंगे।” संज़ंग ने उन्हें धन्यवाद दिया और अपने तीनों शिष्यों को अपने साथ आने का आह्वान किया। वे मठ और भोजन कक्ष पार करके मठाधीश के आवास की ओर चल पड़े। शिष्टाचार का आदान-प्रदान करने के बाद वे मेज़बान और अतिथि की तरह बैठ गए। बंदर और अन्य दो शिष्य भी बैठ गए, उनके हाथ बगल में थे।
कहानी बताती है कि कैसे, जब यह पता चला कि पूर्व में स्थित महान तांग से धर्मग्रंथ लाने वाले भिक्षु आ गए हैं, तो मठ में सभी, युवा और वृद्ध, चाहे वे स्थायी निवासी हों या भ्रमणशील भिक्षु, अध्याय 93

बड़े-बुजुर्ग या नौसिखिए उनसे मिलने आए। चाय पीने के बाद शाकाहारी भोजन परोसा गया। जब संज़ंग भोजन से पहले प्रार्थना कर ही रहे थे कि सूअर ने अधीरता में आकर उबले हुए बन, शाकाहारी व्यंजन और सूप नूडल्स झटपट खा लिए। मठाधीश के भीड़भाड़ वाले कमरे में, जो लोग समझदार थे वे संज़ंग के राजसी व्यवहार की प्रशंसा कर रहे थे, जबकि जो लोग मजे ले रहे थे वे सूअर को खाते हुए देख रहे थे।
जब फ्रायर सैंड ने चारों ओर नजर घुमाई और देखा कि क्या हो रहा है, तो उसने पिग को धीरे से चुटकी काटी और बुदबुदाया,
"अपने आप से व्यवहार करें!"
इस पर सुअर दर्द से कराहते हुए चिल्लाने लगा, "ये सब 'ठीक से पेश आओ, ठीक से पेश आओ!' मैं भूख से मर रहा हूँ!"
“भाई, तुम समझते नहीं हो,” साधु सैंड ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “पेट की बात करें तो दुनिया के सभी सभ्य लोग हम दोनों की तरह ही होते हैं।” तभी सुअर ने खाना बंद किया। सान्ज़ांग द्वारा भोजन समाप्त होने की प्रार्थना करने के बाद सेवकों ने मेजें साफ कीं और सान्ज़ांग ने धन्यवाद व्यक्त किया।
जब भिक्षुओं ने उनसे पूछा कि वे पूर्व से क्यों आए हैं, तो संजांग की बातचीत प्राचीन स्थलों की ओर मुड़ गई और उन्होंने उनसे स्प्रेड गोल्ड मठ के नाम के बारे में पूछा।
भिक्षुओं ने उत्तर दिया, "यह श्रावस्ती देश में पूज्य भिक्षादाता का मठ हुआ करता था।" इसे पहले जेतवन के नाम से भी जाना जाता था और पूज्य भिक्षादाता द्वारा जमीन को सोने की ईंटों से ढकने के बाद इसका नाम बदलकर वर्तमान नाम रखा गया। उन दिनों पूज्य भिक्षादाता श्रावस्ती देश में रहते थे और हमारा मठ उनका जेतवन था, इसीलिए इसका नाम बदलकर भिक्षादाता का सोने से ढका मठ रख दिया गया। जेतवन का स्थान मठ के पीछे है। हाल के वर्षों में जब भी मूसलाधार बारिश हुई है, सोने और चांदी के छोटे-छोटे टुकड़े बहकर आ गए हैं, और कुछ लोगों को सौभाग्य से वे मिल जाते हैं।
"तो यह कहानी सच है," संजांग ने कहा और आगे पूछा, "जब मैं आपके मठ के द्वार से अंदर आया तो मैंने यहाँ इतने सारे यात्रा करने वाले व्यापारियों को घोड़ों, खच्चरों, गाड़ियों और लाठियों के साथ आराम करते हुए क्यों देखा?"
“इस पर्वत का नाम सौ फुट का पर्वत है,” भिक्षुओं ने उत्तर दिया। “हम यहाँ शांति और समृद्धि से रहते थे, लेकिन प्राकृतिक शक्तियों के चक्र के कारण कुछ अज्ञात

कारणों से कई कनखजूरे प्रकट हो गए हैं। वे सड़कों पर लोगों पर हमला करते हैं और यद्यपि कोई मरता नहीं है, फिर भी लोग यात्रा करने की हिम्मत नहीं करते। पर्वत की तलहटी में एक मुर्गे की बांग का दर्रा है जिसे लोग मुर्गे की बांग के बाद ही पार करने की हिम्मत करते हैं। चूंकि ये सभी अजनबी देर से आए हैं, इसलिए उन्हें डर है कि यह सुरक्षित नहीं होगा और वे आज रात यहीं ठहर रहे हैं। वे मुर्गे की बांग के समय निकलेंगे।" जब गुरु और शिष्य बात कर रहे थे, तभी शाकाहारी भोजन लाया गया जिसे उन्होंने खाया।

संजांग और मंकी उगते हुए अर्धचंद्र के प्रकाश में टहल रहे थे, तभी एक गृहस्थ ने आकर घोषणा की,

"हमारे प्राचीन गुरु चीन से आए सज्जनों से मिलना चाहेंगे।"

संजांग ने तुरंत मुड़कर देखा तो एक प्राचीन भिक्षु बांस की छड़ी पकड़े हुए आगे आया और उसका अभिवादन करते हुए पूछा, "क्या आप चीन से आए हुए गुरु हैं?"

"आपने मुझे बहुत सम्मान दिया है," संजांग ने अभिवादन का जवाब देते हुए कहा। बूढ़ा भिक्षु उसके प्रति प्रशंसा से भर उठा और उससे उसकी उम्र पूछी।

"मैंने पैंतालीस साल बर्बाद कर दिए हैं," संजांग ने उत्तर दिया। "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपकी उम्र कितनी है?"

"आपसे सिर्फ साठ साल बड़ा हूँ, शिक्षक," दूसरे ने उत्तर दिया।

"तो इस साल तुम्हारी उम्र एक सौ पाँच साल हो गई है," बंदर भाई ने कहा। "तुम्हें क्या लगता है मेरी उम्र कितनी है?"

"गुरुजी," बूढ़े भिक्षु ने उत्तर दिया, "आपका रूप इतना प्राचीन और आपकी आत्मा इतनी पवित्र प्रतीत होती है कि मैं जल्दी में यह नहीं बता सकता, विशेषकर चांदनी रात में मेरी कमजोर आँखों से।" थोड़ी देर बात करने के बाद वे पीछे के गलियारे में चारों ओर देखने के लिए चले गए।

"आपने अभी जिस भिक्षादाता उद्यान का जिक्र किया था, वह कहाँ स्थित है?" संजांग ने पूछा।

"पीछे के द्वार के बाहर," दूसरे ने उत्तर दिया। पीछे का द्वार तुरंत खोलने का आदेश दिए

जाने पर, केवल एक पत्थर की दीवार का टूटा हुआ आधार ही दिखाई दिया। हाथ जोड़कर, संज़ंग ने आह भरी और कहा,

मैं परोपकारी सुदत्ता के बारे में सोचता हूँ
जिसने जरूरतमंदों की मदद के लिए अपना खजाना दान कर दिया
जेतवन की प्रसिद्धि दीर्घकालिक है;
वह अब प्रबुद्ध अर्हत के साथ कहाँ है?

चांदनी में इत्मीनान से टहलने के बाद वे कुछ देर के लिए एक चबूतरे पर बैठ गए, जहाँ उन्हें रोने की आवाज़ सुनाई दी। संज़ंग ने शांत मन से सुना तो उन्हें पता चला कि रोने वाली लड़की इसलिए दुखी थी क्योंकि उसके माता-पिता को उसके दुख के बारे में पता नहीं था। यह सुनकर वह भी दुखी हो गया और उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने भिक्षुओं की ओर मुड़कर पूछा, "कौन इतना दुखी है और कहाँ?" यह सुनकर उस बुजुर्ग भिक्षु ने बाकी सभी को चाय बनाने के लिए भेज दिया और जब वहाँ कोई नहीं था, तो उसने तांग पुजारी और बंदर भाई को प्रणाम किया।

"आदरणीय मठाधीश," संजांग ने उन्हें फिर से उठने में मदद करते हुए कहा, "आप मुझे यह शिष्टाचार क्यों दिखा रहे हैं?"

“चूंकि मेरी उम्र सौ वर्ष से अधिक है,” वृद्ध भिक्षु ने उत्तर दिया, “मैं संसार के कुछ नियमों से अवगत हूँ; और ध्यान और एकांतवास के बीच मैंने कुछ चीजें देखी हैं। हे मेरे स्वामी, मैं आपके और आपके शिष्यों के बारे में कुछ जानता हूँ, और आप अन्य लोगों से भिन्न हैं। इस अत्यंत पीड़ादायक मामले का विश्लेषण करने में सक्षम एकमात्र शिक्षक आप ही हैं।”

"मुझे बताओ कि यह सब क्या है," बंदर ने कहा।

“आज से एक वर्ष पहले,” उस प्राचीन भिक्षु ने उत्तर दिया, “मैं चंद्रमा के स्वरूप पर ध्यान केंद्रित कर रहा था, तभी अचानक मुझे हवा का एक झोंका और किसी के विलाप करने की आवाज़ सुनाई दी। मैं बिस्तर से उठा, जेतवन में गया और वहाँ एक सुंदर कन्या को देखा। मैंने उससे पूछा, ‘तुम किसकी पुत्री हो? तुम यहाँ क्यों हो?’ कन्या ने उत्तर दिया, ‘मैं एक राजकुमारी हूँ, भारत के राजा की पुत्री। चाँदनी रात में फूल देखते समय हवा मुझे यहाँ ले आई।’ मैंने उसे एक खाली कमरे में बंद कर दिया, जिसे मैंने ईंटों से एक जेल कोठरी की तरह बंद कर दिया, बस दरवाजे में इतना ही छेद छोड़ा कि उसमें से एक कटोरा निकाला जा सके। उस दिन मैंने अन्य भिक्षुओं को

बताया कि वह एक दुष्ट आत्मा है जिसे मैंने बंदी बना लिया है।"
लेकिन हम भिक्षु दयालु हैं, इसलिए मैं उसे मार नहीं सका, और उसे जीवित रखने के लिए प्रतिदिन दो बार सादा भोजन और पेय दिया जाता है। वह लड़की इतनी समझदार है कि मेरी बात समझ जाती है, और अन्य भिक्षुओं द्वारा कलंकित होने से बचने के लिए उसने पागल होने का नाटक किया है और अपने ही पेशाब और मल में सोई है। दिन में वह निरर्थक बातें करती है या चुपचाप बैठी रहती है, लेकिन रात के सन्नाटे में वह अपने माता-पिता की याद में रोती है। मैं राजकुमारियों के बारे में पूछताछ करने के लिए कई बार शहर गया हूँ, लेकिन उनमें से एक भी लापता नहीं है। इसलिए मैंने उसे और भी मजबूत ताले में बंद कर दिया है, और अब मैं उसे जाने नहीं देने के लिए और भी दृढ़ संकल्पित हूँ। अब जब आप यहाँ आए हैं, गुरुजी, तो मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप राजधानी जाएँ और अपनी धार्मिक शक्तियों का उपयोग करके सच्चाई का पता लगाएँ।
अध्याय 93
1297
पश्चिम की यात्रा
इस प्रकार आप अच्छे लोगों को बचाने के साथ-साथ अपनी जादुई शक्तियों का प्रदर्शन भी कर सकेंगे।"
जब संजांग और बंदर ने यह सुना तो उन्होंने इसे बहुत ध्यान से नोट कर लिया। जब वे बात कर रहे थे तभी दो कनिष्ठ भिक्षु उन्हें चाय पीने और सोने के लिए आमंत्रित करने आए, इसलिए वे वापस अंदर चले गए।
मठाधीश के आवास में वापस आकर पिग और फ्रायर सैंड बड़बड़ा रहे थे, "हमें कल मुर्गे की बांग के साथ ही निकलना होगा, तो तुम अभी तक बिस्तर पर क्यों नहीं गए हो?"
"तुम क्या कह रहे हो, बेवकूफ?" बंदर ने पूछा।
"जाओ सो जाओ," सुअर ने जवाब दिया। "इतनी देर रात तक खिले हुए नज़ारों की तारीफ़ क्यों कर रहे हो?" इतना कहकर बूढ़ा भिक्षु उन्हें छोड़कर चला गया, और तांग पुजारी भी सोने चला गया।
चांदनी रात की खामोशी में फूलों के मीठे सपने;
खिड़की की जाली से गर्म हवाएं अंदर आ रही थीं।

जैसे-जैसे क्लेप्सीड्रा में पानी टपकता है और तीन भाग भर जाते हैं,
आकाशगंगा की रोशनी महल की भव्यता को और भी निखारती है।
उस रात वे ज़्यादा देर सोए नहीं थे कि उन्हें मुर्गों की बांग सुनाई दी। मठ के सामने के सभी व्यापारी शोर मचाते हुए उठे और दीपक की रोशनी में अपना नाश्ता तैयार करने लगे। आदरणीय भिक्षु ने सुअर और साधु सैंड को घोड़े की लगाम कसने और सामान समेटने के लिए जगाया, जबकि बंदर ने दीपक जलाने का आदेश दिया। मठ के भिक्षु, जो पहले से ही उठ चुके थे, उन्होंने चाय, सूप और नाश्ता परोसा और उनकी सेवा की। सुअर ने बड़े चाव से उबले हुए बन्स की एक थाली खाई, फिर सामान और घोड़े को बाहर ले गया, जबकि संज़ंग और भाई बंदर ने सभी भिक्षुओं से विदा ली।
"कृपया उस बेहद दुखद घटना को मत भूलिएगा," वृद्ध भिक्षु ने कहा।
“मैं इस पर पूरा ध्यान दूंगा,” बंदर ने उत्तर दिया, “पूरा ध्यान। शहर में पहुँचते ही मैं जो कुछ सुनूंगा और देखूंगा, उससे सच्चाई का पता लगा लूंगा।” व्यापारी शोर मचाते हुए एक साथ चल पड़े। रात के आखिरी पहर तक वे मुर्गे की बांग वाले दर्रे को पार कर चुके थे, और सुबह दस बजे तक शहर की दीवारें दिखाई देने लगीं। यह सचमुच एक शक्तिशाली शहर था, लोहे के कड़ाहे जितना मजबूत, एक दिव्य क्षेत्र की स्वर्गीय राजधानी। यह शहर ऊँची भूमि पर बैठे हुए घात लगाए बैठे बाघ या कुंडली मारे हुए अजगर जैसा था।
अपने फीनिक्स टावरों और यूनिकॉर्न हॉल के साथ रंगीन।
शाही खाई का पानी इसे एक बेल्ट की तरह घेरे हुए था;
उनके पर्वतीय स्वर्ग में अनेक स्मारक थे।
सुबह की धूप से राजमार्ग के किनारे लगे बैनर जगमगा उठे;

बसंत की हवा पाइपों और ढोलों की आवाज़ को पुलों के पार ले गई।
बुद्धिमान राजा वस्त्र और मुकुट पहने हुए थे।
फसलें भरपूर थीं और वैभव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।
उस दिन वे पूर्वी बाज़ार की गलियों में पहुँचे, जहाँ सभी व्यापारी सराय में ठहरे हुए थे। जब संज़ंग और उनके शिष्य शहर में घूम रहे थे, तो वे एक सरकारी छात्रावास के पास

पहुँचे और अंदर चले गए। छात्रावास प्रबंधक ने छात्रावास अधीक्षक को सूचना दी कि बाहर चार अजीब दिखने वाले भिक्षु एक सफेद घोड़े के साथ आए हैं। घोड़े के बारे में सुनकर अधीक्षक समझ गए कि वे किसी आधिकारिक कार्य पर आए होंगे, इसलिए वे उनका स्वागत करने के लिए बाहर गए।

"मुझे पूर्व में स्थित तांग दरबार द्वारा गिद्ध शिखर पर स्थित महान गर्जन मठ में बुद्ध के दर्शन और शास्त्रों की खोज के लिए भेजा गया है," संज़ंग ने झुककर उत्तर दिया। "मेरे पास दरबार में निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करने हेतु पासपोर्ट है। यदि मुझे आपके प्रतिष्ठित छात्रावास में रात्रि विश्राम करने की अनुमति मिले तो मैं आभारी रहूंगा। अपना कार्य पूरा होने पर मैं प्रस्थान करूंगा।"

"यह छात्रावास दूतों और यात्रियों के ठहरने के लिए स्थापित किया गया है," अधीक्षक ने झुककर अभिवादन करते हुए उत्तर दिया, "इसलिए यह उचित ही है कि हम आपका स्वागत करें। कृपया अंदर आइए, कृपया अंदर आइए।"

प्रसन्न होकर संजांग ने अपने शिष्यों को अधीक्षक से मिलने के लिए बुलाया, जो उनके भयानक चेहरों को देखकर चुपचाप भयभीत हो गया। उसे पता नहीं था कि वे मनुष्य हैं या राक्षस, इसलिए उसने कांपते हुए उनके लिए चाय और शाकाहारी भोजन का इंतजाम किया। उसकी घबराहट देखकर संजांग ने कहा, "महामहिम, भयभीत न हों। मेरे तीनों शिष्य दिखने में भयानक हैं, लेकिन हृदय से अच्छे हैं। जैसा कि कहावत है, चेहरे बदसूरत होते हैं, लेकिन मनुष्य दयालु होते हैं।"

उनसे डरने की कोई बात नहीं है।

यह सुनकर छात्रावास अधीक्षक की चिंता दूर हो गई। "राष्ट्र के शिक्षक, आपका तांग दरबार कहाँ है?"

"जांबू महाद्वीप में चीन की भूमि में," संजांग ने उत्तर दिया।

अगला सवाल था, "तुमने घर कब छोड़ा?"

"झेंगुआन के तेरहवें वर्ष में, चौदह वर्ष पहले," सान्ज़ांग ने उत्तर दिया। "यहाँ पहुँचने के लिए मुझे हज़ारों नदियों और पहाड़ों को पार करना पड़ा था - यह बहुत कठिन था।"

"आप एक पवित्र भिक्षु हैं," छात्रावास अधीक्षक ने कहा।

"तुम्हारा महान राजवंश कितने वर्ष पुराना है?" संजांग ने पूछा।

“यह भारत की महान भूमि है,” अधीक्षक ने उत्तर दिया, “और हमारे परम पूर्वज के समय से यह राजवंश पाँच सौ वर्षों से अधिक समय से विद्यमान है। हमारे वर्तमान

शासक, जो प्रकृति और फूलों के प्रेमी हैं, सुखी सम्राट के नाम से जाने जाते हैं। उनके शासनकाल को जिंगयान कहा जाता है और यह अब अपने अट्ठाईसवें वर्ष में है।"
"मैं आज महामहिम से मिलना चाहता हूँ ताकि पासपोर्ट की जाँच हो सके और वह मुझे वापस मिल जाए," संजांग ने कहा। "उनका दरबार कब लगता है?"
"शानदार," अधीक्षक ने कहा, "बेहद शानदार। आज महारानी का बीसवाँ जन्मदिन है, जो राजा की पुत्री हैं। चौराहे पर एक भव्य मीनार बनाई गई है, जहाँ राजकुमारी जा रही हैं।" (अध्याय 93)
1299
पश्चिम की यात्रा
एक कढ़ाईदार गेंद फेंककर स्वर्ग को यह तय करने देना कि उसका पति कौन होगा। आज का दिन बहुत चहल-पहल भरा है, और मुझे लगता है कि महाराज ने अभी तक अपनी सुबह की सभा समाप्त नहीं की होगी। यदि आप अपना पासपोर्ट जांच करवाना और वापस पाना चाहते हैं तो यह जाने का अच्छा समय होगा। संजांग खुशी-खुशी जाने ही वाला था कि खाना लाया गया, इसलिए उसने अधीक्षक, बंदर और अन्य दो लोगों के साथ खाना खाया।
अब दोपहर हो चुकी थी, और संजांग ने कहा, "मुझे अब जाना चाहिए।"
"मैं आपको साथ ले चलूँगा, स्वामी जी," बंदर भाई ने कहा। "मैं भी," सुअर ने कहा।
"नहीं, भाई, ऐसा मत करो," फ्रायर सैंड ने कहा। "तुम्हारा चेहरा देखने लायक नहीं है, इसलिए महल के द्वार के बाहर प्रभावशाली दिखने का कोई मतलब नहीं है। बेहतर होगा कि हम अपने बड़े भाई को जाने दें।"
"वुजिंग सही कह रहा है," संजांग ने टिप्पणी की। "वह मूर्ख अशिष्ट और बेवकूफ है। वुकॉन्ग अधिक चतुर और चालाक है।"
उस मूर्ख ने अपनी थूथन बाहर निकाली और कहा, "मालिक, आपके अलावा हमारे तीनों चेहरों में से चुनने के लिए कुछ खास नहीं है।"
फिर संज़ंग ने अपना चोगा पहन लिया। बंदर ने पासपोर्ट का डिब्बा ले लिया जो उसके साथ आया था। सड़कों पर हर कोई—सज्जन, किसान, कारीगर, व्यापारी, विद्वान, लेखक, मंदबुद्धि या आम आदमी—कह रहा था, "चलो कढ़ाई वाली गेंद को फेंके जाते हुए देखते हैं।"
संज़ंग सड़क के किनारे खड़ी होकर बंदर से बोली, "यहाँ के लोग, कपड़े, इमारतें,

भाषा और बोली सब हमारे महान तांग राजवंश की तरह ही हैं। मुझे याद है कि मेरी दिवंगत माँ ने अपने भाग्य में लिखे जीवनसाथी को पाने के लिए कढ़ाई वाली गेंद फेंककर शादी की थी, और यहाँ भी यही रिवाज है।"

"क्या हम भी जाकर देख सकते हैं?" बंदर ने पूछा।

"नहीं, नहीं," संजांग ने जवाब दिया। "हमने इस अवसर के लिए सही कपड़े नहीं पहने हैं। हम पर शक हो सकता है।"

“गुरुजी,” बंदर ने कहा, “आप भूल गए हैं कि स्प्रेड गोल्ड मठ के प्राचीन भिक्षु ने हमें क्या बताया था। हम सजे हुए टावर को ध्यान से देखते हुए पता लगा सकते हैं कि वह असली है या नकली। इस सारी चहल-पहल में राजा को राजकुमारी की खुशखबरी जरूर सुनने को मिलेगी। वह दरबार के कामों में समय नहीं देंगे। चलिए चलते हैं।” यह सुनकर संजांग सचमुच बंदर के साथ चल पड़ा। कढ़ाईदार गेंद फेंकने का नजारा देखने के लिए हर तरह के लोग वहाँ जमा थे। अरे बाप रे! उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि वहाँ जाकर वे मछुआरे की तरह मुसीबत मोल ले रहे हैं।

अब कहानी बताती है कि दो साल पहले भारत के राजा अपनी रानी, पत्नियों और बेटी को शाही बगीचे में चांदनी रात का आनंद लेने के लिए ले गए थे, क्योंकि उन्हें प्राकृतिक दृश्य और फूल बहुत पसंद थे। इससे एक दुष्ट आत्मा क्रोधित हो गई, जिसने राजकुमारी को अगवा कर लिया और खुद को उसकी हमशक्ल बना लिया। जब उसे पता चला कि तांग पुरोहित इसी समय, दिन, महीने और वर्ष में आ रहे हैं, तो उस दुष्ट आत्मा ने राज्य की संपत्ति का उपयोग करके एक सजावटी मीनार का निर्माण करवाया, इस उम्मीद में कि वह उन्हें अपना साथी बना लेगी और उनकी सच्ची मर्दाना मूल शक्ति को आत्मसात करके खुद को महान एकेश्वरवादी श्रेष्ठ अमर बना लेगी।

दोपहर के तीसरे घंटे पर, जब संज़ांग और बंदर भीड़ में शामिल होकर मीनार की ओर बढ़ रहे थे, राजकुमारी ने कुछ अगरबत्ती जलाई और स्वर्ग-पृथ्वी से प्रार्थना की। वह पाँच-छह दर्जन बेहद सजी-धजी सुंदरियों से घिरी हुई थी, जो उसकी सेवा कर रही थीं और उसकी कढ़ाई वाली गेंद को पकड़े हुए थीं। मीनार में चारों ओर कई खिड़कियाँ थीं। जैसे ही राजकुमारी ने चारों ओर देखा, उसने तांग पुजारी को आते हुए देखा, इसलिए उसने कढ़ाई वाली गेंद उठाई और अपने हाथों से तांग पुजारी के सिर पर फेंक दी। इससे उसका वैरोचना मुकुट टेढ़ा हो गया, जिससे वह इतना चौंक गया कि उसने तुरंत दोनों हाथों से अध्याय 93 की ओर हाथ बढ़ाया।

उसने गेंद को संभाला, जो उसकी आस्तीन से नीचे लुढ़क गई थी।
तभी मीनार पर मौजूद सभी लोग जोर-जोर से चिल्लाने लगे, "उसने एक भिक्षु को टक्कर मार दी! उसने एक भिक्षु को टक्कर मार दी!"
अरे बाप रे! चौराहे पर खड़े सभी व्यापारी धक्का-मुक्की और शोर मचाते हुए कढ़ाईदार गेंद को हथियाने के लिए दौड़ पड़े। तभी बंदर ने चीखते हुए और दांत दिखाते हुए आगे झुककर तीस फीट की विशाल ऊंचाई हासिल कर ली। उसके भयानक चेहरे को देखकर वे सब इतने डर गए कि गिर पड़े और रेंगने लगे, किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उसके पास जा सकें। एक पल बाद वे सब तितर-बितर हो गए और बंदर अपने असली रूप में लौट आया।
शिविर के दौरान मीनार में मौजूद दासियों, महल की सुंदरियों और वरिष्ठ एवं कनिष्ठ हिजड़ों ने तांग पुजारी के सामने सिर झुकाकर कहा, "महाराज, हम आपसे विनती करते हैं कि आप बधाई स्वीकारने के लिए महल में आएं।"
संजांग ने तुरंत उनका अभिवादन लौटाया और उन सभी को वापस उठने में मदद की। फिर वह बंदर की ओर मुड़कर बड़बड़ाने लगा, "बंदर! तुमने फिर से मुझे मूर्ख बनाने की कोशिश की है।"
"कढ़ाई वाली गेंद तुम्हारे सिर पर गिरी थी," बंदर ने हंसते हुए जवाब दिया, "और तुम्हारी आस्तीन में घुस गई थी। मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं है, तो तुम मुझसे क्यों शिकायत कर रहे हो?"
"हम क्या करेंगे?" संजांग ने पूछा।
“चिंता मत कीजिए, गुरुजी,” बंदर ने कहा। “आप जब तक महल जाकर राजा से मिलते हैं, मैं वापस छात्रावास जाकर सुअर और साधु रेत को रुकने के लिए कह देता हूँ। अगर राजकुमारी आपसे शादी नहीं करना चाहती, तो बात वहीं खत्म। आप पासपोर्ट जमा कर दीजिए और हम चल पड़ेंगे। अगर राजकुमारी शादी के लिए ज़िद करती है, तो आपको राजा से कहना, ‘कृपया मेरे शिष्यों को बुलवाएँ ताकि मैं उनसे विदा ले सकूँ।’ जब हम तीनों को दरबार में बुलाया जाएगा, तब मैं बता पाऊँगा कि राजकुमारी असली है या धोखेबाज़। इसे ही ‘शादी के ज़रिए राक्षस को वश में करना’ कहते हैं।” बंदर के मुड़कर छात्रावास वापस जाने पर तांग पुजारी के पास कहने के

लिए कुछ नहीं था।
महल की सुंदरियों और बाकी लोगों ने आदरणीय बुजुर्ग को मीनार की तलहटी तक पहुंचाया, जहां से राजकुमारी नीचे उतरीं और अपने सुंदर हाथ से उन्हें सहारा दिया, जिसके बाद वे दोनों शाही रथ में सवार हो गए। फिर सभी का दल जुलूस बनाकर महल के द्वार की ओर लौट गया।
किन्नर द्वारपाल ने तुरंत राजा को सूचना दी, "महाराज, राजकुमारी मध्याह्न द्वार के बाहर एक भिक्षु का हाथ पकड़े हुए हैं और बुलावे की प्रतीक्षा कर रही हैं। मुझे लगता है कि उन्होंने उसे अपनी कढ़ाई वाली गेंद से मारा है।"
यह सुनकर राजा को बहुत खेद हुआ और वह भिक्षु को भगा देना चाहता था, लेकिन चूंकि वह राजकुमारी के मन की बात नहीं जानता था, इसलिए उसने अपने आवेगों को नियंत्रित किया और उन्हें अंदर बुलाया। राजकुमारी और तांग पुजारी सिंहासन कक्ष के नीचे आकर खड़े हो गए।
पति और उसकी होने वाली पत्नी दोनों ने राजा का ज़ोर से अभिवादन किया;
अच्छे और बुरे, सभी ने अत्यंत आदर के साथ सिर झुकाया।
जब यह समारोह संपन्न हो गया तो उन्हें सिंहासन कक्ष में बुलाया गया, जहाँ राजा ने यह पूछकर शुरुआत की, "तुम कहाँ से आए हो, भिक्षु? क्या हमारी बेटी ने तुम्हें अपनी गेंद से मारा था?"

अध्याय 93

1301

पश्चिम की यात्रा

तांग पुजारी ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया, "मुझे जांबू महाद्वीप के महान तांग सम्राट द्वारा पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध की आराधना करने और महान गर्जन मठ में शास्त्रों की खोज करने के लिए भेजा गया है। इस लंबी यात्रा के लिए मेरे पास पासपोर्ट है और मैं इसे महाराज के प्रातः दर्शन के दौरान निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करने आ रहा था, तभी चौराहे पर एक अलंकृत मीनार के पास से गुजरते समय मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि राजकुमारी महाराज एक कढ़ाईदार गेंद फेंकेंगी जो मेरे सिर पर लगेगी। चूंकि मैं एक भिक्षु हूं और दूसरे धर्म का अनुयायी हूं, इसलिए मैं आपकी सुंदर पुत्री से विवाह नहीं कर सकता, अतः मैं आपसे विनती करता हूं कि मुझे मृत्युदंड से मुक्त करें और मेरा पासपोर्ट लौटा दें। फिर मैं अपने मार्ग पर आगे बढ़ सकूंगा और शीघ्र ही गिद्ध

शिखर पहुंचूंगा, बुद्ध के दर्शन करूंगा, शास्त्रों की खोज करूंगा और अपने देश लौट जाऊंगा, जहां महाराज की दिव्य कृपा सदा के लिए अंकित रहेगी।"

“तो आप पूर्व से आए एक पवित्र भिक्षु हैं,” राजा ने उत्तर दिया। “सचमुच, ‘एक धागा हज़ार मील दूर से भी भाग्य का बंधन जोड़ सकता है।’ हमारी राजकुमारी उन्नीस वर्ष की हो चुकी हैं और अभी तक अविवाहित हैं। चूंकि आज का समय, दिन, महीना और वर्ष सभी शुभ हैं, इसलिए उनके लिए एक सजावटी मीनार बनवाई गई है ताकि वे उसमें से गेंद फेंककर एक अच्छा पति चुन सकें। संयोगवश, गेंद आपको लग गई है। हालांकि यह हमें प्रसन्न नहीं करता, फिर भी हम राजकुमारी के विचार जानना चाहेंगे।”

"महाराज, मेरे पिता," राजकुमारी ने प्रणाम करते हुए उत्तर दिया, "कहावत है, 'मुर्गे से विवाह करो तो मुर्गे का पीछा करो; कुत्ते से विवाह करो तो कुत्ते का पीछा करो।' मैंने पहले ही प्रतिज्ञा ली थी, गेंद फेंकी थी और स्वर्ग, पृथ्वी और देवताओं से कहा था कि स्वर्ग मेरे पति के रूप में उस व्यक्ति को चुनेगा जिसे मेरी गेंद लगेगी। आज जब गेंद पवित्र भिक्षु को लगी, तो यह शायद पिछले जन्म से ही तय था, इसीलिए आज हमारी मुलाकात हुई है। मैं अपना मन बदलने की हिम्मत कभी नहीं करूंगी। मैं आपसे निवेदन करती हूं कि आप उन्हें अपने दामाद के रूप में स्वीकार करें।"

तभी राजा प्रसन्न हुए और उन्होंने राजकवि के मुख्य ज्योतिषी को एक दिन चुनने का आदेश दिया। दहेज की व्यवस्था करते समय राजा ने विश्व के लिए घोषणाएँ जारी कीं। जब संजांग ने यह सुना, तो राजा की दयालुता के लिए धन्यवाद देने के बजाय, उन्होंने विनती की, "मुझे क्षमा करें, मुझे क्षमा करें।"

"तुम बिलकुल ही अनुचित हो, भिक्षु," राजा ने उत्तर दिया। "हम तुम्हें अपना दामाद बनने के लिए राष्ट्र की सारी संपत्ति भेंट करते हैं।"

आप यहीं क्यों नहीं रुकते और आनंद क्यों नहीं लेते? आपके दिमाग में बस शास्त्र लाने का ही ख्याल है। अगर आप मना करते रहे तो हम महल के पहरेदारों से आपको बाहर निकलवाकर आपका सिर कलम करवा देंगे।

यह सुनकर आदरणीय भिक्षु इतने भयभीत हो गए कि उनकी आत्मा शरीर से निकल गई। उन्होंने कांपते हुए प्रणाम किया और कहा, "महामहिम, मैं आपकी दिव्य कृपा के लिए आभारी हूं, लेकिन हम चार भिक्षु पश्चिम की यात्रा पर जा रहे हैं। मेरे तीन शिष्य बाहर हैं। यदि अब मुझे आपका दामाद माना जाए, तो मैं आपसे निवेदन करता हूं कि

उन्हें अंदर बुला लें, क्योंकि मैंने अभी तक उनसे विदा नहीं ली है। फिर आप पासपोर्ट लौटाकर उन्हें तुरंत जाने दें, ताकि पश्चिम की उनकी यात्रा का उद्देश्य विफल न हो।"
राजा ने इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए पूछा, "तुम्हारे शिष्य कहाँ हैं?"
"सरकारी विदेशियों के छात्रावास में," संज़ंग ने उत्तर दिया, और अधिकारियों को तुरंत पवित्र भिक्षु के शिष्यों को पासपोर्ट लेने और रवाना होने के लिए भेजा गया, ताकि वे राजकुमारी के पति के रूप में पवित्र भिक्षु को वहीं छोड़ सकें। आदरणीय बुजुर्ग केवल खड़े होकर उनकी सेवा में तत्पर रहे।
महान अमृत के रिसने से बचने के लिए त्रिगुण पूर्णता आवश्यक है; यदि तपस्वी मार्ग कठिन हो तो उसे बुरे भाग्य का दोष दें।
सही रास्ता ऋषि परंपराओं में है; साधना स्वयं पर निर्भर करती है; अच्छाई लोगों द्वारा संचित की जाती है, लेकिन आशीर्वाद स्वर्ग से आते हैं।
अध्याय 93
1302
पश्चिम की यात्रा
छह इंद्रियों और उनकी अनेक इच्छाओं को वश में न करें; अपने मूल और प्राथमिक स्वरूप को खोलें।
जब आसक्ति या विचार नहीं होते, तो पवित्रता स्वतः ही प्रकट होती है; मुक्ति के लिए प्रयास करो और पारलौकिक अवस्था प्राप्त करो।
हम इस बारे में और कुछ नहीं कहेंगे कि कैसे अधिकारियों को संजांग के तीन शिष्यों को लाने के लिए छात्रावास भेजा गया था।
इसके बजाय कहानी बताती है कि बंदर, सजे हुए टावर के नीचे संज़ांग से विदा लेने के बाद, हंसते-हंसते खुशी-खुशी छात्रावास लौट गया। सुअर और साधु सैंड ने उसका अभिवादन करते हुए पूछा, "भाई, तुम इतनी खुशी से क्यों हंस रहे हो, और गुरुजी कहाँ गायब हो गए?"
“गुरुजी को सुख मिल गया है,” बंदर ने उत्तर दिया। “कैसा सुख?” सुअर ने पूछा। “उन्होंने अभी तक अपनी यात्रा पूरी नहीं की है, उन्होंने बुद्ध के दर्शन नहीं किए हैं और न ही वे शास्त्रों को ला पाए हैं।”
"मैं और गुरुजी चौराहे पर स्थित एक सजे-धजे टावर की तलहटी तक ही पहुँच पाए थे," भाई बंदर ने उत्तर दिया।

"तभी राजा की बेटी ने कढ़ाई वाली गेंद से उस्ताद को मारा, जिसके बाद महल की सुंदरियों, आकर्षक लड़कियों और हिजड़ों ने उसे मीनार के सामने तक घसीटा, जहाँ से वह राजकुमारी के साथ महल जाने के लिए एक रथ में चढ़ गया। उसे राजा का दामाद बनने का निमंत्रण मिला है। क्या यह खुशी की बात नहीं है?"

जब पिग ने यह सुना तो वह पैर पटका, अपनी छाती पीटी और बोला, "अगर मुझे पहले से पता होता, तो मैं भी चला जाता। सारी गड़बड़ फ्रायर सैंड की वजह से हुई थी। मैं सीधे सजे हुए टावर के नीचे भाग जाता, कढ़ाई वाली गेंद मुझे पहली बार में ही लग जाती, और राजकुमारी मुझे अपना पति बना लेती। यह कितना शानदार, कितना बढ़िया होता। मैं सुंदर और आकर्षक हूँ: मैं बिल्कुल सही आदमी होता। हम सब खुशकिस्मत होते और खूब मजे करते। कितना मजा आता।"

साधु सैंड, पिग के पास गए, अपना चेहरा रगड़ा और बोले, "बेशर्म, तुम तो बिल्कुल बेशर्म हो! सच में, तुम्हारा चेहरा देखने में बहुत सुंदर है। तुम उस आदमी की तरह हो जिसने तीन औंस चांदी में एक बूढ़ा गधा खरीदा और शेखी मारी कि वह उस पर सवारी कर सकेगा। अगर उसने तुम्हें पहली बार में ही मार दिया होता, तो वह तुम्हें भगाने के लिए आज रात तक जादू-टोना करने का इंतज़ार नहीं करती। क्या तुम्हें लगता है कि वह तुम्हारे जैसे मुसीबत को महल में आने देती?"

"तुम बड़े बदतमीज़ी से पेश आ रहे हो, काले!" सुअर ने जवाब दिया। "भले ही मैं बदसूरत हूँ, पर मुझमें तमीज़ है। जैसा कि पुरानी कहावत है, 'चमड़ी और मांस भले ही खुरदुरे हों, हड्डियाँ मज़बूत हो सकती हैं: हर कोई किसी न किसी चीज़ में माहिर होता है।'"

"बकवास बंद करो, बेवकूफ," बंदर ने पलटकर जवाब दिया, "और सामान पैक करो। मुझे लगता है मालिक चिंतित हो जाएगा और हमें बुलवाएगा, इसलिए हमें दरबार में उसकी रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए।"

“भाई, तुम फिर से गलत हो,” सुअर ने कहा। “अगर मालिक राजा का दामाद बन गया है और राजा की बेटी के साथ अय्याशी करने चला गया है, तो वह अब न तो पहाड़ चढ़ेगा, न ही सड़कों पर घूमेगा, और न ही राक्षसों से टकराएगा। तो फिर उसे किससे अपनी रक्षा करने की ज़रूरत होगी? वह इतना बड़ा हो गया है कि उसे पता है कि बिस्तर के नीचे क्या होता है। उसे तुम्हें सहारा देने की ज़रूरत नहीं होगी।”

बंदर ने सुअर का कान पकड़ा, मुक्का मारा और अपशब्दों से बोला, "तुम पहले की

तरह ही गंदी सोच वाले हो, मूर्ख! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसी बकवास करने की!"
जब वे आपस में झगड़ रहे थे, तभी छात्रावास अधीक्षक ने आकर सूचना दी, "महामहिम ने आप तीनों पवित्र भिक्षुओं से उपस्थित होने का अनुरोध करते हुए एक अधिकारी को यहाँ भेजा है।"
अध्याय 93
1303
पश्चिम की यात्रा
वह हमसे असल में क्या करने को कह रहा है?
अधीक्षक ने उत्तर दिया, "वरिष्ठ भिक्षु को राजकुमारी की सुनहरी गेंद से चोट लगने और उनके पति के रूप में स्वीकार किए जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसीलिए अधिकारी आपके लिए निमंत्रण लेकर आए हैं।"
"अधिकारी कहाँ है?" बंदर ने पूछा। "उसे अंदर भेजो।"
इसके बाद अधिकारी ने बंदर को प्रणाम किया, फिर बंदर की ओर सीधे देखने की हिम्मत नहीं की और मन ही मन बुदबुदाया, "क्या यह भूत है? राक्षस है? गर्जन का देवता है? यक्ष है?"
"अधिकारी, आप अपनी बात कहने के बजाय बुदबुदा क्यों रहे हैं?" बंदर ने पूछा।
भय से कांपते हुए, अधिकारी ने शाही फरमान को दोनों हाथों से ऊपर उठाया और उसके शब्द असंतुलित होकर लड़खड़ाते हुए निकले: "महामहिम– –निमंत्रण– –उनके नए रिश्तेदारों से मिलें– –महामहिम– –उनके रिश्तेदारों से मिलें– –निमंत्रण...."
पिग ने कहा, "हमारे पास यहां यातना देने का कोई उपकरण नहीं है और हम तुम्हें पीटने वाले नहीं हैं, इसलिए डरो मत और हमें बताने के लिए अपना समय लो।"
"क्या तुम्हें लगता है कि वह तुमसे हारने से डरा हुआ है?" बंदर ने कहा। "वह तो तुम्हारे बदसूरत चेहरे से डरा हुआ है। सामान ढोने वाली डंडी को तुरंत पैक करो। हम घोड़े को लेकर दरबार में मालिक से मिलने और बात करने जा रहे हैं।" सचमुच:
संकरी राह पर मिलने वाले किसी एक व्यक्ति से बचना मुश्किल होता है;
दृढ़ संकल्प प्रेम को घृणा में बदल सकता है।
यदि आपको नहीं पता कि राजा से मुलाकात के दौरान क्या बातचीत हुई थी, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 94
महल के बगीचों में चारों भिक्षु संगीत की धुन पर भोजन करते हैं।
एक दानव व्यर्थ प्रेम करता है और आनंद की लालसा रखता है।
कहानी बताती है कि कैसे भाई बंदर और उनके दो अन्य शिष्य निमंत्रण लेकर आए अधिकारी के साथ महल के मध्याह्न द्वार के बाहर गए, जहाँ हिजड़े द्वारपाल ने तुरंत उनके आने की सूचना दी और उन्हें अंदर आने का निमंत्रण पत्र लौटा दिया। वे तीनों एक पंक्ति में खड़े रहे, बिना झुके।
"क्या आप तीनों सज्जन पवित्र भिक्षु के प्रख्यात शिष्य हैं? आपके नाम क्या हैं? आप कहाँ रहते हैं? आप भिक्षु क्यों बने? आप कौन से धर्मग्रंथ लाने जा रहे हैं?" फिर बंदर सिंहासन कक्ष में प्रवेश करने के इरादे से और करीब आया।
राजा के अंगरक्षकों में से एक ने चिल्लाकर कहा, "हिलो मत। अगर तुम्हें कुछ कहना है, तो वहीं खड़े होकर कहो।"
"हम भिक्षु जब भी कोई अवसर मिलता है, आगे बढ़ने में खुशी महसूस करते हैं," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, जिस पर सुअर ने अध्याय 94 में अपनी प्रतिक्रिया दी।
1304
पश्चिम की यात्रा
और साधु सैंड भी राजा के पास पहुँचे। उनके कठोर व्यवहार से राजा भयभीत हो सकते हैं, इस बात से चिंतित होकर संज़ंग आगे बढ़े और पुकार कर बोले, "शिष्यों, महाराज ने आपसे पूछा है कि आप यहाँ क्यों आए हैं। आपको अपना उत्तर देना होगा।"
अपने स्वामी को राजा के बगल में सेवा करते देख बंदर खुद को रोक नहीं पाया और जोर से बोला, "महाराज, आप अपना सम्मान तो कर रहे हैं, लेकिन दूसरों का अपमान। यदि आप मेरे स्वामी को अपना दामाद मान रहे हैं, तो उन्हें अपने बगल में क्यों खड़ा रखते हैं? सामान्य रिवाज यह है कि राजा अपने दामाद को 'महामहिम' कहकर संबोधित करें, और वास्तव में एक महामहिम को तो बैठना चाहिए।"
इससे राजा इतना भयभीत हो गया कि उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह सिंहासन कक्ष छोड़कर जाना चाहता था। लेकिन ऐसा करना बहुत बुरा होता, इसलिए उसने हिम्मत जुटाई और अपने सेवकों को एक कढ़ाईदार चौकी लाने का आदेश दिया, जिस पर उसने तांग पुजारी को बैठने के लिए आमंत्रित किया। तभी बंदर भाई ने मौखिक

रूप से यह निवेदन किया: "मेरा पैतृक घर पूर्वी महाद्वीप में स्थित आओलाई देश के पुष्प और फल पर्वत में जल परदे की गुफा में है।"
मेरे पिता स्वर्ग थे, मेरी माता धरती थीं।
और मेरा जन्म तब हुआ जब एक चट्टान फट कर खुल गई।
मैंने एक ताओवादी विशेषज्ञ को अपना गुरु बनाया।
और महान मार्ग में महारत हासिल कर ली।
फिर मैं अमर लोगों की अपनी भूमि पर लौट आया,
जहां मैंने हम सभी को इकट्ठा करके अपनी गुफाओं के स्वर्ग में रहने का इंतजाम किया था।
मैंने सागर की गहराइयों में ड्रैगनों को वश में किया।
फिर जंगली जानवरों को पकड़ने के लिए पहाड़ों पर चढ़ गए।
मैंने हमारा नाम मृत्यु अभिलेखों से हटा दिया।
हमें जीवितों की सूची में शामिल कर लो।
और उन्हें स्वर्ग के समतुल्य महान ऋषि के रूप में नियुक्त किया गया।
मुझे उन शानदार महलों का आनंद मिला।
और उन्होंने भव्य इमारतों का भ्रमण किया।
मैं स्वर्ग के अमर लोगों से मिला
दैनिक मौज-मस्ती में;
पवित्र क्षेत्रों में रहते थे,
हर दिन शुभ हो।
अध्याय 94
1305
पश्चिम की यात्रा
लेकिन क्योंकि मैंने पीच बैंक्वेट में बाधा डाली,
और उन्होंने स्वर्ग के महलों में विद्रोह खड़ा कर दिया।
मुझे भगवान बुद्ध ने मोहित कर लिया था।
और पंच तत्वों के पर्वत के नीचे कैद कर लिया गया।
जब मुझे भूख लगती थी तो मुझे लोहे की गोलियां खिलाई जाती थीं।
प्यास लगने पर मैंने पिघला हुआ तांबा पिया:

मैंने पांच सौ वर्षों तक न तो भोजन का स्वाद चखा और न ही चाय का।
सौभाग्यवश मेरे गुरु पूर्व से आए थे।
पश्चिम में पूजा-अर्चना करना।
गुआनयिन ने उससे कहा कि वह मुझे स्वर्गिक आपदा से बचाए।
मुझे मेरी पीड़ा से मुक्ति मिल गई।
योगाचारिन संप्रदाय में परिवर्तित होना।
मेरा पुराना नाम वुकॉन्ग था;
अब मुझे नौसिखिए के रूप में जाना जाता है।
जब राजा को बंदर के महत्व का एहसास हुआ, तो वह तुरंत अपने ड्रैगन सिंहासन से नीचे उतरे और आदरणीय बुजुर्ग को हाथ से सहारा देते हुए बोले, "दामाद जी, यह ईश्वरीय कृपा ही थी कि आप जैसे व्यक्ति को विवाह के माध्यम से हमारा रिश्तेदार बनाया।" संजांग ने राजा की कृपा के लिए उनका हार्दिक धन्यवाद किया और उनसे अपने सिंहासन पर लौटने का आग्रह किया। राजा ने पूछा, "कौन सा सज्जन दूसरा शिष्य होने का गौरव प्राप्त कर रहा है?" सूअर ने अपनी थूथन बाहर निकालकर खुद को और अधिक प्रभावशाली दिखाने की कोशिश की और उत्तर दिया:
"पिछले जन्मों में बूढ़ा सुअर हुआ करता था
सुख-सुविधाओं और आलस्य में लिप्त।
मैं असमंजस में जी रहा था।
मेरा स्वभाव अव्यवस्थित है और मेरा हृदय भ्रमित है।
मुझे नहीं पता था कि आकाश कितना ऊंचा है और पृथ्वी कितनी गहरी है;
मैं समुद्र की चौड़ाई या पहाड़ों की दूरी का अंदाजा नहीं लगा सकता था।
फिर मेरी निष्क्रियता के बीच में
अध्याय 94
1306
पश्चिम की यात्रा
अचानक मेरी मुलाकात एक सच्चे अमर व्यक्ति से हुई।
आधे वाक्य में
उसने बुराई के जाल को खोल दिया;
दो या तीन टिप्पणियों के साथ

उसने तबाही का द्वार तोड़ दिया।
तब मुझे यह बात समझ में आई,
मैंने उसे तुरंत अपना स्वामी मान लिया।
उन्होंने डबल एट की कलाओं का लगन से अध्ययन किया।
ट्रिपल थ्री के क्रम को सम्मानपूर्वक परिष्कृत किया गया।
प्रशिक्षण पूरा होने पर मैं विमान उड़ाने में सक्षम हो गया।
और स्वर्गिक महल में आरोहण करें।
जेड सम्राट अपनी परोपकारिता में
मुझे मार्शल तियान पेंग के रूप में नियुक्त किया गया।
स्वर्ग की नदी के नौसैनिकों की कमान संभालने के लिए,
और महल के द्वारों के भीतर निश्चिंत होकर विचरण करें।
फिर जब मैं पीच बैंक्वेट में नशे में था
मैंने चंद्र देवी के साथ दुर्व्यवहार किया।
मेरी कमीशन छीन ली गई।
और उन्हें नश्वर संसार में निर्वासित कर दिया गया।
क्योंकि मैं गलत गर्भ में आया था
मेरा जन्म सूअर की शक्ल के साथ हुआ था।
आशीर्वाद के पर्वत पर रहना
मैंने असीम बुराई की।
जब मैं बोधिसत्व गुआनयिन से मिला
उसने मुझे अच्छाई का मार्ग दिखाया।
मैंने बौद्ध धर्म अपना लिया।
अध्याय 94
1307
पश्चिम की यात्रा
तांग पुजारी को ले जाने के लिए
पश्चिमी स्वर्ग की अपनी यात्रा पर,
अद्भुत धर्मग्रंथों की खोज।
मेरा धर्म नाम वुनेन्ग है।

और लोग मुझे बाजी कहकर बुलाते हैं।
यह सुनकर राजा भय से कांप उठा और उसकी ओर देखने की हिम्मत भी नहीं कर पाया। इससे वह मूर्ख पहले से भी अधिक उत्तेजित हो गया, अपना सिर हिलाते हुए, होंठ सिकोड़ते हुए, कान खड़े करते हुए और जोर-जोर से हंसने लगा।
संजांग को चिंता हुई कि सुअर राजा को डरा रहा है, इसलिए वह चिल्लाया, "संयम रखो, बाजी।" तभी सुअर ने अपने हाथ जोड़कर शांत रहने का नाटक किया।
"और तीसरे विशिष्ट शिष्य ने धर्म परिवर्तन क्यों किया?" राजा ने तब पूछा। हाथ जोड़कर, फ्रायर सैंड ने कहा:
मैं मूल रूप से एक नश्वर मनुष्य था,
जो पुनर्जन्म के चक्र के भय से इस मार्ग की ओर मुड़ गए।
मैं बादल की तरह समुद्र के कोनों तक विचरण करता रहा।
आकाश के छोर तक विचरण किया।
मैं हमेशा चोगा पहनता था और भिक्षापात्र पकड़े रहता था।
और मैंने अपना सारा ध्यान शरीर के भीतर ही केंद्रित रखा।
मेरी ईमानदारी के कारण
मैं अमर लोगों के साथ मिल गया,
बच्चे का पालन-पोषण किया,
उसका विवाह उस सुंदर लड़की से कराने के लिए।
जब तीन हजार कार्य पूरे हो गए
इन चारों छवियों में सब कुछ समाहित था।
मैं आकाश की सीमा से ऊपर उठ गया,
आकाश के अंधकारमय गुंबद के सामने नतमस्तक,

और उन्हें कार्यवाहक जनरल नियुक्त किया गया।
1 व्यक्ति फीनिक्स और ड्रैगन रथ पर उपस्थित था।
और मेरा पद जनरल था।
क्योंकि पीच बैंक्वेट में

1. गलती से एक क्रिस्टल का कटोरा टूट गया
1 को फ्लोइंग सैंड्स नदी में निर्वासित कर दिया गया था।
मेरे चेहरे का रूप बदल दिया गया था।
और मैं एक क्रूर हत्यारा बन गया।
सौभाग्यवश बोधिसत्व ने पूर्व की यात्रा की।
मुझे आस्था की ओर मुड़ने के लिए राजी करने के लिए
और तांग वंश से बुद्ध के पुत्र की प्रतीक्षा करें।
पश्चिमी स्वर्ग में शास्त्रों की खोज में कौन जाएगा?
मैं उनका अनुयायी बन गया और मैंने एक नई शुरुआत की।
अपनी महान जागरूकता को एक बार फिर परिष्कृत करते हुए।
मैंने अपना उपनाम सैंड नदी से लिया है;
मेरा बौद्ध नाम वूजिंग है।
और मेरी उपाधि है साधु।
यह सुनकर राजा अत्यंत भयभीत और प्रसन्न दोनों हुए। प्रसन्न इसलिए कि उनकी पुत्री को साक्षात बुद्ध मिल गए थे, और तीन साक्षात दुष्ट देवताओं के नाम से भयभीत। जब राजा भय और प्रसन्नता के बीच उलझे हुए थे, तभी मुख्य ज्योतिषी ने यह ज्ञापन प्रस्तुत किया: "विवाह इस महीने की बारहवीं तिथि को, यानी जल-चूहे के दिन, निर्धारित किया गया है। यह एक शुभ समय है, जिस पर विवाह के लिए सभी अनुकूल परिस्थितियाँ होंगी।"
"आज कौन सा दिन है?" राजा ने पूछा।
“आज आठवां दिन है, पृथ्वी-बंदर का दिन,” ज्योतिषी ने उत्तर दिया, “वह दिन जब गिब्बन फल भेंट करते हैं, और योग्य व्यक्तियों को पदोन्नत करने और उनके सुझाव स्वीकार करने का उचित दिन है।” यह सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने अधिकारियों को शाही उद्यान के सभी हॉल और मंडपों की सफाई करवाने के लिए भेजा। यहाँ उन्होंने अपने भावी दामाद और उनके तीन विशिष्ट शिष्यों को विवाह भोज की प्रतीक्षा में ठहरने के लिए आमंत्रित किया, जिसमें राजकुमारी उनसे विवाह करेंगी। सभी अधिकारियों ने अपने निर्देशों का पालन किया, राजा ने मुलाकात समाप्त की और अधिकारी चले गए।
अध्याय 94

अब कहानी बताती है कि जब संज़ंग और उनके शिष्य शाही उद्यान पहुँचे तो रात हो रही थी। शाकाहारी भोजन परोसा गया। सुअर ने प्रसन्नता से कहा, "आज तो हमें वाकई अच्छा भोजन मिलना चाहिए।" प्रभारी लोग डंडे पर लादकर सादा चावल और पास्ता लाए। सुअर एक कटोरा भरकर खाता रहा और फिर भरता रहा। उसने तब तक खाना नहीं छोड़ा जब तक उसका पेट पूरी तरह भर नहीं गया। थोड़ी देर बाद दीपक जलाए गए और बिस्तर बिछाए गए, जिसके बाद सभी लोग सो गए। जैसे ही पूज्य बुजुर्ग ने देखा कि आसपास कोई नहीं है, वे बंदर पर क्रोधित होकर चिल्लाने लगे और उसे फटकारने लगे।

"अरे बंदर, वुकॉन्ग! तुम मुझे बार-बार परेशान कर रहे हो। मैंने कहा था कि हम सिर्फ पासपोर्ट दिखाने जा रहे हैं और तुम्हें उस सजे हुए टावर के पास जाने से मना किया था। फिर भी तुम मुझे वहाँ ले जाकर देखने की ज़िद क्यों कर रहे थे? क्या तुमने ठीक से देख लिया? अब हम इस मुसीबत का क्या करें जिसमें तुमने हमें फंसा दिया है?"

"गुरुजी," बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "आपने ही कहा था, 'मेरी दिवंगत माता ने अपने भाग्य में लिखे विवाह के लिए कढ़ाई वाली गेंद फेंकी थी।' मैं आपको वहाँ इसलिए ले गया क्योंकि आप अतीत का आनंद लेना चाहते थे। इसके अलावा, मुझे भिक्षादाता के स्वर्ण मठ में रहने वाले प्राचीन भिक्षु की कही बात याद आ गई, इसलिए मैं यहाँ यह पता लगाने आया हूँ कि वह धोखेबाज है या नहीं। अभी जब मैंने राजा को देखा तो उनके हाव-भाव में कुछ रहस्यमय सा लगा, लेकिन मैंने अभी तक राजकुमारी को नहीं देखा है।"

"राजकुमारी को देखकर क्या होगा?" आदरणीय बुजुर्ग ने पूछा।

"मेरी सुनहरी पुतलियों वाली तेज आंखें बता सकती हैं कि कोई सच्चा है या झूठा, अच्छा है या बुरा, अमीर है या गरीब।"

बंदर ने जवाब दिया, "मुझे पता होगा कि क्या करना है और मैं सही-गलत में फर्क कर पाऊंगा।"

"बड़े भाई, तुमने पिछले कुछ दिनों में चेहरे की बनावट का अध्ययन करना सीख लिया है," फ्रायर सैंड और पिग ने मुस्कुराते हुए कहा।

"चेहरे की विशेषताओं का अध्ययन करने वाले तो बस मेरे पोते हैं," भाई बंदर ने जवाब

दिया।
"मज़ाक बंद करो," संज़ैंग चिल्लाई। "वह अब निश्चित रूप से मुझे चाहता है। हम इसके बारे में क्या कर सकते हैं?"
"बारह तारीख को उस शुभ अवसर पर राजकुमारी अपने माता-पिता को सम्मान देने अवश्य आएंगी।"
बंदर ने कहा, "मैं किनारे खड़े होकर उसे देख लूंगा। अगर वह सचमुच स्त्री है, तो तुम उसके पति बन सकते हो और राज्य की शान-शौकत का आनंद ले सकते हो।" यह सुनकर संजांग पहले से भी ज्यादा क्रोधित हो गया।
“तू तो बड़ा चालाक बंदर है,” उसने गुस्से से कहा, “अभी भी मुझे बर्बाद करने की कोशिश कर रहा है। जैसा कि वुनेन्ग ने कहा, हम यात्रा का सत्तानवे या अट्ठानवे सौवां हिस्सा पूरा कर चुके हैं। तू अपनी चालाक ज़ुबान से फिर से मुझे बर्बाद करने की कोशिश कर रहा है। चुप हो जा! अपना वो बदबूदार मुँह फिर कभी मत खोल। अगली बार अगर तूने कोई बदतमीज़ी की तो मैं फिर से वही मंत्र पढ़ूँगा, और वो तेरी सहनशक्ति से परे होगा।”
मंत्रोच्चारण का जिक्र सुनते ही बंदर सीधे संजांग के सामने घुटनों के बल गिर पड़ा और गिड़गिड़ाने लगा।
"ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो! अगर वह सचमुच औरत है तो हम सब शादी समारोह के दौरान महल में हंगामा करेंगे और तुम्हें बाहर निकाल देंगे।" गुरु और शिष्य बात कर रहे थे, उन्हें पता ही नहीं चला कि अब रात हो चुकी है। वास्तव में:
क्लेप्सीड्रा से धीरे-धीरे बूंदें टपक रही थीं;
फूलों की सुगंध चारों ओर फैली हुई थी।
भव्य दरवाजों पर मोतियों के पर्दे लटके हुए थे;

शांत आंगन में न तो आग दिखाई दे रही थी और न ही कोई रोशनी।
सुनसान झूले की छाया खाली थी;
बांसुरी की धुन थमने के साथ ही चारों ओर सन्नाटा छा गया।
कमरा फूलों से घिरा हुआ था और चांदनी से जगमगा रहा था, उन नुकीले तारों की

रोशनी से रोशन था जिन्हें किसी पेड़ ने नहीं रोका था।
कोयल ने गाना बंद कर दिया;
तितली का सपना लंबा था।
रिवर वे आकाशीय गुंबद के ऊपर से गुजरता था।
सफेद बादल अपने घर की ओर चल पड़े।
ठीक उसी समय जब वे भावनाओं के मामले में सबसे करीब थे
हवा में लहराते विलो के पेड़ पहले से कहीं अधिक निराशाजनक लग रहे थे।
“गुरुजी, बहुत देर हो गई है,” सुअर ने कहा। “कल सुबह बहस जारी रखेंगे। अब सो जाइए, सो जाइए!” तब गुरुजी और शिष्यों को चैन की नींद आई।
कुछ ही देर में सुनहरा मुर्गा सूर्योदय का स्वागत करने लगा और राजा अपने दरबार में उपस्थित होने के लिए सिंहासन कक्ष में दाखिल हुए। वहाँ से जो दृश्य दिखाई दे रहा था, वह कुछ इस प्रकार था:
खुले हुए महल के ऊपर एक बैंगनी आभा उठ रही थी
जैसे हवाएं शाही संगीत को नीले आकाश में ले गईं।
बादलों के मंडराते रहने के दौरान, तेंदुए की पूंछ वाले झंडे लहराते रहे;
छत पर बनी दानव आकृतियों पर सूर्य की रोशनी पड़ रही थी और जेड के लटकन झनझना रहे थे।
एक सुगंधित धुंध ने महल के हरे-भरे विलो वृक्षों को धीरे से छुआ।
ओस की बूंदों ने बगीचे के फूलों को हल्का सा नम कर दिया था।
एक हजार अधिकारियों ने सम्मान में जयकारे लगाए और नृत्य किया:
समुद्र और नदियाँ शांत थीं और राज्य एकजुट था।
अध्याय 94
1311
पश्चिम की यात्रा
जब सभी नागरिक और सैन्य अधिकारियों ने राजा को सम्मानपूर्वक प्रणाम कर दिया, तो राजा ने घोषणा की, "विदेश संबंध विभाग बारहवें के लिए विवाह भोज का आयोजन करेगा। आज वसंत की शराब तैयार की जाएगी, और हमारे भावी दामाद का शाही उद्यानों में स्वागत किया जाएगा।" प्रोटोकॉल कार्यालय को तीनों योग्य भावी राजकुमारों को राजकीय छात्रावास में ले जाने का निर्देश दिया गया, जबकि विदेश

संबंध विभाग ने उनके लिए शाकाहारी भोज का आयोजन किया। दोनों विभागों ने दरबारी ऑर्केस्ट्रा के संगीतकारों को संगीत बजाने और उनकी देखभाल करने की व्यवस्था की, ताकि वे वसंत की सुंदरता का आनंद लेते हुए दिन बिता सकें।

जैसे ही सुअर ने यह सुना, उसने कहा, "महाराज, हम हमेशा अपने स्वामी के साथ रहते हैं: हम उन्हें एक पल के लिए भी नहीं छोड़ते। चूंकि वे महल के बगीचों में दावत और भोज करने वाले हैं, इसलिए अगर हमारे स्वामी आपके दामाद बनने वाले हैं, तो हमें भी दो दिन मौज-मस्ती के लिए उनके साथ चलना चाहिए। अन्यथा सौदा रद्द।" सुअर की बदसूरत और कर्कश बोली, सिर और गर्दन मरोड़ना, थूथन बाहर निकालना और कान हिलाना—जिससे वह काफी डरावना लग रहा था—को देखकर राजा को इतना डर लगा कि कहीं सुअर शादी बिगाड़ न दे, इसलिए उन्हें अनुरोध स्वीकार करना पड़ा।

"हमारे दामाद और हमारे लिए शाश्वत शांति के चीन-बर्बर हॉल में दो लोगों के लिए एक भोज तैयार करें।"

"लिंगरिंग स्प्रिंग के मंडप में बाकी तीन सज्जनों के लिए भोजन तैयार कीजिए। हमें डर है कि गुरु और शिष्यों का एक साथ बैठना असुविधाजनक हो सकता है।" तभी उस मूर्ख ने राजा को प्रणाम किया और धन्यवाद दिया। इसके बाद सभी लोग चले गए, जिसके बाद राजा ने भीतरी महल के अधिकारियों को भोज तैयार करने का आदेश दिया और तीनों महलों और छह परिसरों की रानियों और पत्नियों को बारहवीं तिथि को होने वाले विवाह के लिए राजकुमारी को काँटे के आभूषण, केक और अन्य वस्तुएँ देने को कहा।

अब सुबह के लगभग दस बज रहे थे, और राजा ने तांग पुजारी और अन्य लोगों को महल के बगीचे दिखाने के लिए एक रथ तैयार रखा था। बगीचे बहुत ही सुंदर थे:

रंगीन पत्थरों से जड़े रास्ते,
मैंने बलस्ट्रेड्स पर नक्काशी और छेनी का काम किया है।
रंगीन पत्थरों से जड़े रास्तों के किनारे
चट्टानों पर विचित्र फूल फैले हुए हैं;
नक्काशीदार और तराशी हुई रेलिंग के बाहर,
और उनमें भी, फूल बहुत कम खिलते हैं।
शुरुआती आड़ू के पेड़ मनमोहक फ़िरोज़ी रंग के होते हैं।

और सुनहरे ओरिओल पक्षी विलो वृक्षों के बीच फुदकते हैं।
पैदल चलने वाले व्यक्ति को अपनी आस्तीन में उस सुगंध का संचार महसूस होता है।
और उनके कपड़ों में कई तरह की शुद्ध सुगंध समाई हुई है।
फीनिक्स टेरेस और ड्रैगन पूल,
बांस का लॉज और पाइन का मंडप।
फीनिक्स टेरेस पर
अध्याय 94
1312
पश्चिम की यात्रा
फीनिक्स पक्षी को प्रकट होने के लिए लुभाने के लिए बांसुरी बजाई जाती है;
ड्रैगन पूल में
मछलियों को पालकर उन्हें अजगर बनाया जाता है और फिर वे वहां से चले जाते हैं।
बांस की झोपड़ी में कविताएँ हैं
जिनके सुविचारित शब्द "व्हाइट स्नो मेलोडी" से मेल खाते हैं।
पाइन मंडप में रखी किताबें
क्या नीले आवरण वाली पुस्तकों में मोती और जेड हैं?
कृत्रिम पहाड़ियों के चारों ओर चट्टानें और जेड पत्थर लिपटे हुए हैं;
घुमावदार धारा का नीला-हरा जल गहरा है।
पियोनी के मंडप,
गुलाब के मंडप,
प्राकृतिक ब्रोकेड बनाएं।
चमेली की लताओं की जाली,
बेगोनिया के फूलों की क्यारियाँ,
ये सूर्यास्त के बादलों या रत्नजड़ित मोज़ाइक की तरह हैं।
शाकीय पेओनी के फूल अद्भुत रूप से सुगंधित होते हैं;
सिचुआन के मालवा के फूल अपनी दुर्लभ सुंदरता के लिए जाने जाते हैं।
सफेद नाशपाती और लाल खुबानी के फूल सुगंध में प्रतिस्पर्धा करते हैं;
बैंगनी ऑर्किड और सुनहरी डे लिली अपनी भव्यता में प्रतिस्पर्धा करते हैं।
मक्का खसखस,

लिली मैगनोलिया की कलियाँ,
अज़ालिया के फूल,
ये बेहद चमकीले रंगों के हैं।
मैगनोलिया के फूल,
गार्डन बालसम,
केले के फूल,
अध्याय 94
1313
पश्चिम की यात्रा
कांपो।
हर जगह सौंदर्य प्रसाधनों की समृद्धि के बीच लाल रंग की चमक दिखाई देती है।
स्क्रीन के चारों ओर बिछे ब्रोकेड कपड़े से तीव्र सुगंध आ रही है।
पूर्वी हवा के साथ लौट रही गर्माहट का खुशी से स्वागत किया जाता है;
बगीचे की सभी सुंदरताएँ अपनी चमक बिखेर रही हैं।
राजा और उनके साथी काफी देर तक फूलों का आनंद लेते हुए घूमते रहे। थोड़ी देर बाद प्रोटोकॉल कार्यालय के अधिकारी बंदर और अन्य दो को दीर्घकालीन मंडप में आमंत्रित करने आए, जबकि राजा तांग पुजारी का हाथ पकड़कर चीनी-बर्बर हॉल में ले गए ताकि वे सब मिलकर दावत कर सकें। ये भव्य अवसर थे जिनमें गायन, नृत्य और वाद्य संगीत का आनंद लिया गया। वास्तव में: राजसी महल के द्वारों से सूर्य की रोशनी छनकर आ रही थी;
शाही इमारतों में सकारात्मक ऊर्जा व्याप्त थी।
वसंत ऋतु ने फूलों की कढ़ाई जैसी छटा बिखेर दी।
और दूर से स्वर्ग का प्रकाश दरबार के वस्त्रों पर चमक रहा था।
बांसुरी और गायकों का संगीत मानो अमर लोगों की दावत में गूंज रहा था; प्याले हवा में उड़ रहे थे, जिनमें हरे रंग का पेय भरा था।
गुरु और प्रजा दोनों को समान आनंद प्राप्त होता था।
चीन-बर्बर शांति ने समृद्धि लाई।
राजा द्वारा अपने प्रति दिखाए जा रहे आदर को देखकर, उस आदरणीय बुजुर्ग के पास उत्सव में शामिल होने के अलावा कोई चारा नहीं बचा। वास्तव में, उन्होंने केवल खुशी

का दिखावा किया: भीतर से वे दुखी थे। जब वे वहाँ बैठे थे, तो उन्होंने दीवार पर लटके चार सुनहरे पर्दे देखे, जिन पर चारों ऋतुओं के दृश्य चित्रित थे।
प्रत्येक चित्र पर एक प्रसिद्ध शिक्षाविद की कविता लिखी हुई थी। वसंत ऋतु के दृश्य पर लिखी कविता में कहा गया था: स्वर्ग की जीवन शक्तियाँ सृष्टि को गति प्रदान करती हैं;
दुनिया खुशहाल है और सब कुछ नया हो गया है।
आड़ू और बेर के फूल अपनी भव्यता में प्रतिस्पर्धा करते हैं;
अबाबीलें रंगीन छत की कड़ियों पर उड़ती हैं और अगरबत्ती की धूल झाड़ती हैं।

ग्रीष्म ऋतु के दृश्य पर लिखी कविता इस प्रकार थी:
गर्म और उमस भरी हवा में सभी विचार धीमे पड़ जाते हैं।
महलनुमा मालवा और अनार के पेड़ सूर्य की चमक को प्रतिबिंबित करते हैं।
जेड बांसुरी का संगीत दोपहर के स्वप्नदोष को भंग कर देता है;
पर्दों से छनकर कांटेदार पौधों की खुशबू आ रही है।
शरद ऋतु के दृश्य पर लिखी कविता इस प्रकार थी:
कुएं के पास स्थित छातानुमा पेड़ का एक पत्ता पीला है;
पाले की रात में मोतियों का पर्दा नहीं लपेटा जाता।
शरद ऋतु के बलिदान के बाद अबाबील पक्षी अपना घोंसला छोड़ देते हैं;
जब सरकंडे के फूल मुरझा जाते हैं, तो जंगली हंस दूसरे देश की ओर चले जाते हैं।
सर्दियों के दृश्य पर लिखी कविता इस प्रकार थी:
बारिश से भरे आसमान में बादल उड़ रहे हैं, सब कुछ काला और ठंडा है;
उत्तर से आने वाली हवा बर्फ को हजारों टीलों में उड़ा ले जाती है।
महल के भीतरी हिस्से में चूल्हा धीमी आंच पर जल रहा है;
उनका कहना है कि जेड पत्थर की रेलिंग के पास बेर का पेड़ खिल गया है।
जब राजा ने देखा कि तांग पुजारी कविताओं को कितनी तल्लीनता से निहार रहे हैं, तो उन्होंने कहा, "आप कविताओं का इतना आनंद ले रहे हैं, तो आप स्वयं भी एक कुशल कवि होंगे, दामाद जी। यदि आपको अपने अनमोल रत्नों से कोई आपत्ति न हो, तो

हम आपको प्रत्येक कविता के लिए एक समान कविता रचने के लिए आमंत्रित करते हैं, जिसमें तीन पंक्तियों के अंत में एक ही शब्द हो। क्या आप सहमत होंगे?"
आदरणीय बुजुर्ग ऐसे व्यक्ति थे जो किसी दृश्य में इतने मग्न हो जाते थे कि परिस्थितियों को भूल जाते थे, एक प्रबुद्ध व्यक्ति जो अपने स्वयं के स्वभाव को भलीभांति समझते थे, इसलिए जब अध्याय 94

राजा ने उसे इतनी गंभीरता से छंदों का मिलान करने के लिए कहा कि उसने खुद को यह पंक्ति कहते हुए पाया, "सूर्य की गर्मी दुनिया भर की बर्फ को पिघला देती है।"
इससे राजा अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने साथ उपस्थित अधिकारियों से कहा, "अध्ययन कक्ष के चारों खजाने लाओ, ताकि हमारा दामाद हमारे लिए फुर्सत के समय में आनंद लेने के लिए अपनी रचना के अनुरूप छंद लिख सके।"
आदरणीय बुजुर्ग ने सहर्ष सहमति दी। ब्रश उठाकर उन्होंने मिलती-जुलती पंक्तियाँ बनाईं। वसंत ऋतु के दृश्य पर आधारित कविता इस प्रकार थी:
सूर्य की गर्मी से दुनिया भर की बर्फ पिघल जाती है;
महल के बगीचे में फूल फिर से खिल उठते हैं।
हल्की हवाएं और बारिश लोगों को समृद्ध बनाती हैं;
नदियाँ और समुद्र शांत हैं; सांसारिक धूल पूरी तरह से गायब हो गई है।
ग्रीष्म ऋतु के दृश्य पर आधारित संबंधित कविता इस प्रकार थी:
सप्तर्षि मंडल अब दक्षिण की ओर इंगित करता है; दिन धीरे-धीरे बीतता है;
टिड्डी और अनार के पेड़ चमक के मामले में प्रतिस्पर्धा करते हैं।
सुनहरे ओरिओल और बैंगनी अबाबील विलो के पेड़ों में गाते हैं।
उनकी सुरीली आवाजें लाल पर्दों से होकर गूंज रही थीं।
शरद ऋतु पर लिखी गई मिलती-जुलती कविता इस प्रकार है:
हरे संतरे की सुगंध; संतरा पीले रंग में बदल जाता है।
नीले चीड़ और सरू के पेड़ पाले के आने का स्वागत करते हैं।
आधे खिले हुए गुलदाउदी के फूल जाली पर एक सुंदर दृश्य बनाते हैं;
बादलों से ढकी, जलमग्न भूमि पर बांसुरी की धुनें और गीत गूंजते हैं।
सर्दियों के दृश्य पर आधारित कविता इस प्रकार थी:

अध्याय 94

1316

पश्चिम की यात्रा

बर्फ गिरने के बाद आसमान साफ होने पर हवा ठंडी हो जाती है;

विचित्र आकृतियों वाली चट्टानें और बड़े-बड़े पत्थर हरे रंग की पहाड़ियों की पहचान हैं।

चूल्हे में कोयला जलकर दही को गर्म कर रहा है

हाथों को आस्तीनों में छिपाकर गाते हुए वे जेड पत्थर की रेलिंग पर झुक जाते हैं।

राजा उन मिलते-जुलते छंदों से अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने प्रशंसा करते हुए कहा, "'हाथ आस्तीन में डाले गाते हुए वे जेड की रेलिंग पर झुकते हैं' सचमुच बहुत अच्छा है," और शाही ऑर्केस्ट्रा को नए छंदों को संगीतबद्ध करने का आदेश दिया। भोज दिन भर चलता रहा।

भाई बंदर और बाकी दो बंदर भी स्प्रिंग पैवेलियन में शानदार भोजन कर रहे थे। कुछ प्याले पीने के बाद वे सब काफी खुश थे और उन्होंने अपने मालिक से मिलने जाने का फैसला किया, जो राजा के साथ दूसरे भवन में थे। यह देखकर सुअर ने अपनी मूर्खता भरी हरकतें फिर से शुरू कर दीं।

"वाह, क्या बात है!" वह तुरंत चिल्लाया। "हम यहाँ बहुत मज़े कर रहे हैं। आज हमने खूब आनंद लिया। लेकिन अब हमारा पेट भर गया है, तो हमें सो जाना चाहिए।"

"भाई, तुम सचमुच बदतमीज़ हो," साधु सैंड ने मुस्कुराते हुए कहा। "इतना पेट भरा होने पर भला तुम सो कैसे सकते हो?"

"तुम्हें पता नहीं होगा," सुअर ने कहा। "एक कहावत है, जब तक तुम खाना खाने के बाद झपकी लेने के लिए लेट नहीं जाते।"

चर्बी से भरा पेट अच्छी तरह से कैसे ढका हो सकता है?

तांग पुरोहित ने राजा से विदा लेने के बाद मंडप में वापस जाकर सूअर को डांटा: "मूर्ख!"

तुम पहले से भी ज्यादा बदतमीजी कर रहे थे। तुम्हें क्या लगता है ये कैसी जगह है, जहाँ तुम इस तरह चिल्ला रहे हो? अगर तुमने राजा को गुस्सा दिलाया होता तो वो तुम्हें मरवा देता।

"चिंता मत करो," सुअर ने उत्तर दिया, "चिंता मत करो। हमारे साथ उसके ससुराल वालों जैसा व्यवहार किया जा रहा है, इसलिए उसके लिए हमसे नाराज़ होना बहुत

अजीब होगा। जैसा कि कहावत है,
यदि आप रिश्तेदार हैं तो मारपीट भी उसे तोड़ नहीं सकती;
अगर आप पड़ोसी हैं तो गाली-गलौज करने से बात खत्म नहीं होगी।
हम तो बस मजाक कर रहे थे। उससे डरने की कोई बात नहीं है।
अध्याय 94
1317
पश्चिम की यात्रा
इस पर आदरणीय बुजुर्ग चिल्लाए, "उस मूर्ख को यहाँ लाओ। उसे ध्यान की छड़ी से बीस प्रहार करो।"
फिर बंदर ने सुअर को पकड़कर नीचे गिरा दिया, जबकि संजांग ने उसे पीटने के लिए लाठी उठा ली।
"स्वामी, राज दामाद," उस मूर्ख ने चिल्लाकर कहा, "मुझे बख्श दो! मुझे बख्श दो!"
भोज में उपस्थित अधिकारियों में से एक ने संज़ंग को सुअर को न मारने के लिए राजी किया, जिस पर सुअर बड़बड़ाते हुए अपने पैरों पर खड़ा हो गया, "आप बड़े ही अच्छे महाराज हैं; आप एक अच्छे राजसी दामाद हैं। शादी से पहले ही राजसी कानून लागू कर रहे हैं!"
बंदर ने मुंह बनाते हुए कहा, "ये बकवास बंद करो! ये बकवास बंद करो! तुरंत सो जाओ।" फिर उन्होंने लिंगरिंग स्प्रिंग पवेलियन में एक और रात बिताई। अगली सुबह उन्होंने पहले की तरह दावत की।
कुछ ही समय में वे तीन-चार दिन आनंद मना चुके थे, और तभी बारहवां दिन आ गया। विदेश संबंध विभाग के तीनों विभागों के अधिकारियों ने एक ज्ञापन प्रस्तुत किया जिसमें लिखा था, "आठ तारीख को आदेश प्राप्त होने के बाद से राज दामाद के लिए महल का निर्माण हो चुका है, और अब हम केवल दहेज के सामान के आने का इंतजार कर रहे हैं। विवाह भोज तैयार है, जिसमें पांच सौ से अधिक मेहमानों के लिए मांसाहारी और शाकाहारी भोजन शामिल है।"
इससे राजा अत्यंत प्रसन्न हुए। वे अपने भावी दामाद को भोज में आमंत्रित करने ही वाले थे कि महल के भीतरी कक्ष से एक हिजड़े ने उन्हें सूचना दी, "महाराज, महारानी आपको आमंत्रित कर रही हैं।" तब राजा महल के भीतरी कक्ष में चले गए, जहाँ तीनों महलों की रानियाँ और छह परिसरों की रानियाँ राजकुमारी को सूर्य के प्रकाश महल में

ले आईं, जहाँ वे आपस में बातचीत और हंसी-मजाक कर रही थीं। वह स्थान सचमुच फूलों या रेशम से लदा हुआ था। उसकी भव्यता और सुंदरता स्वर्ग के महलों या चंद्रमा के मंडपों से कहीं अधिक थी; और न ही वह अमर लोगों के जेड महलों से कम थी।
"हैप्पी गैदरिंग एंड स्प्लेंडिड वेडिंग" गाने में इसके बारे में चार नए बोल हैं। "हैप्पी" बोल इस प्रकार हैं: हैप्पी! हैप्पी!
आनंद और परमानंद!
शादी का जश्न मनाया जाता है
अपने प्रेम और सुंदरता के साथ।
सुरुचिपूर्ण दरबारी पोशाकें
जिसकी बराबरी चंद्रमा की देवी कभी नहीं कर सकती थी;
ड्रैगन और फीनिक्स हेयरपिन,
उड़ते हुए सोने के शानदार धागे।
चेरी जैसे होंठ, सफेद दांत और लाल गाल
अप्सराएँ जिनका रूप फूलों की तरह कोमल है।
ब्रोकेड पर ब्रोकेड,
अध्याय 94
1318
पश्चिम की यात्रा
रंगों की भरमार,
सुगंध से भरपूर,
राजकुमारियों का एक समूह।
गीत के बोल "गैदरिंग" इस प्रकार हैं:
सभा! सभा!
मोहक आकर्षण,
अतीत की महान सुंदरताओं को टक्कर देते हुए,
किसी शहर या राज्य को गिराने के लिए काफी है,
फूलों या जेड पत्थर की तरह।
उन्हें और भी सुंदर बनाने के लिए उन्हें सजाया गया है,
अपने परिधानों में और भी अधिक आकर्षक लग रहे थे,

और उनके गहनों की भव्यता।
उनके हृदय और स्वभाव दोनों ही शुद्ध और उदात्त थे;
उनके चेहरे पाउडर की तरह सफेद और त्वचा बर्फ की तरह चिकनी थी, जो उनकी महानता को दर्शाती थी।
उनकी रंगी हुई भौहों की रेखाएं दूर स्थित पहाड़ियों की तरह लग रही थीं;
वे पतले-दुबले, आकर्षक लोगों का एक समूह बन गए।
गीत के बोल "स्प्लेंडिड" इस प्रकार हैं:
शानदार! शानदार!
जेड की लड़कियाँ, परियों जैसी युवतियाँ,
बेहद प्यारा,
वास्तव में प्रशंसनीय।
उत्तम सुगंधों से महका हुआ,
अध्याय 94
1319
पश्चिम की यात्रा
सौंदर्य प्रसाधनों से सजी हुई।
हालांकि यह तियानताई के स्वर्ग से बहुत दूर है,
यह महज़ किसी राजा का महल नहीं था।
उनके मुस्कुराते हुए शब्द मधुर थे।
चारों ओर बांसुरी और गीतों की ध्वनि गूंज रही थी।
हजारों सुंदरियां, फूलों का समूह, एक शानदार ब्रोकेड:
दुनिया में इसका जैसा दूसरा विकल्प कैसे मिल सकता है?
गीत के बोल "वेडिंग" इस प्रकार हैं:
शादी! शादी!
ऑर्किड की खुशबू,
परी कन्याओं की पंक्तियाँ,
सुंदरियों की भीड़।
राजसी रखैलें नए वैभव में सज गई हैं;
राजकुमारियों ने नए वस्त्र पहने हैं।

काले बालों के घने बादल,
फीनिक्स स्कर्ट के ऊपर इंद्रधनुषी गाउन।
अमर आत्माओं का मधुर संगीत,
बैंगनी और लाल रंग की दो पंक्तियाँ।
अतीत में उन्होंने एक ही फीनिक्स रथ पर सवार होने की प्रतिज्ञा की थी;
आज सुबह एक शुभ अवसर है और एक शानदार शादी का दिन है।
जब राजा पहुंचे तो उनकी रानियां और रानियां राजकुमारी और महल की अन्य महिलाओं को उनसे मिलने के लिए बाहर ले गईं।
प्रसन्न राजा उन्हें सूर्य के प्रकाश महल में ले गए और बैठने को कहा। जब रानियों, रानियों और अन्य ने प्रणाम किया, तो राजा ने कहा, "राजकुमारी, मेरी प्यारी बेटी, हमें लगता है कि जब तुमने आठ तारीख को सजे हुए टावर से गेंद फेंककर पवित्र भिक्षु को पाया, तो तुम्हारी दिली इच्छा पूरी हो गई। सभी विभागों के अधिकारियों ने हमारी इच्छाओं को बहुत अच्छे से समझा है, इसलिए अध्याय 94
1320
पश्चिम की यात्रा
अब सब कुछ तैयार है। आज का दिन शुभ है, तो आइए विवाह भोज में जल्दी चलें और देर न करें।
राजकुमारी आगे बढ़ी, प्रणाम किया और यह निवेदन किया: "हे मेरे पिता, मैं आपसे विनती करती हूँ कि अपनी पुत्री के दुस्साहस के लिए क्षमा करें, परन्तु मेरी एक विनती है। पिछले कुछ दिनों से महल के भीतरी इलाकों में यह खबर फैली है कि तांग पुरोहित के तीन अत्यंत कुरूप शिष्य हैं। मैं उन्हें देखने की हिम्मत नहीं कर पा रही हूँ: मुझे डर है कि उन्हें देखकर मैं भयभीत हो जाऊँगी। इसलिए, हे पिता, मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि उन्हें शहर से बाहर भेज दें। अन्यथा, यह मेरे स्वास्थ्य के लिए बहुत बड़ा आघात हो सकता है और विपत्ति का कारण बन सकता है।"
"अगर तुमने उनका जिक्र न किया होता, बालक," राजा ने उत्तर दिया, "तो हम उन्हें लगभग भूल ही गए होते।"
वे सचमुच काफी बदसूरत हैं, और पिछले कुछ दिनों से हमने उन्हें लिंगरिंग स्प्रिंग पवेलियन में मनोरंजन कराया है। आज सुबह जब हम सिंहासन कक्ष में जाएंगे तो हम उनका पासपोर्ट लौटा देंगे और उन्हें शहर छोड़ने के लिए कहेंगे ताकि हम अपना भोज

आयोजित कर सकें।" इसके बाद राजकुमारी ने धन्यवाद में फिर से प्रणाम किया, जिसके बाद राजा अपनी रथ में बैठकर सिंहासन कक्ष में गए और अपने दामाद और अन्य तीन सज्जनों को भोज में आमंत्रित करने का फरमान जारी किया।

तांग पुरोहित तारीखों को उंगलियों पर गिनकर देख रहे थे, इसलिए जब वे बारहवीं तारीख पर पहुँचे तो उन्होंने भोर से पहले अपने तीन शिष्यों से चर्चा की। उन्होंने कहा, "आज बारहवीं तारीख है। हम इससे कैसे निपटेंगे?"

“मैंने राजा के बारे में कुछ अशुभ संकेत पहले ही महसूस कर लिए हैं,” बंदर भाई ने उत्तर दिया, “लेकिन बुराई ने वास्तव में उन्हें प्रभावित नहीं किया है और न ही कोई बड़ा नुकसान पहुँचाया है। बस बात यह है कि मैंने अभी तक राजकुमारी को नहीं देखा है। अगर वह बाहर आती है और मुझे उसे देखने देती है, तो मुझे पता चल जाएगा कि वह धोखेबाज है या नहीं, फिर मैं कुछ करूँगा। चिंता मत करो। वह अब हमें बुलाएगा और हम तीनों को शहर से दूर भेज देगा। निमंत्रण स्वीकार करो और डरो मत। मैं चुपके से वापस आकर तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारे पास रहूँगा।” जब गुरु और शिष्य बात कर रहे थे, तभी प्रोटोकॉल कार्यालय के अधिकारियों के साथ एक शाही दरबारी निमंत्रण लेकर आया।

"चलो चलते हैं," बंदर ने कहा, "चलो चलते हैं। मुझे यकीन है कि वे रास्ते में हम तीनों को देख लेंगे और आपको यहीं रोक लेंगे, स्वामी जी, शादी के लिए।"

"अगर वे हमें विदा कर रहे हैं, तो वे हमें सैकड़ों-हजारों औंस सोना और चांदी जरूर देंगे," सुअर ने कहा। "हम घर ले जाने के लिए कुछ उपहार खरीद पाएंगे। जब मैं अपने ससुराल वापस जाऊंगा, तो मैं फिर से थोड़ा आनंद ले पाऊंगा।"

"चुप रहो, दूसरे भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "और ऐसी बकवास करना बंद करो। हम वही करेंगे जो बड़े भाई कहेंगे।"

इसके बाद वे अपने सामान और घोड़े को साथ लेकर अधिकारियों के पीछे-पीछे सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों के नीचे तक गए।

राजा ने उनका अभिवादन करने के बाद बंदर और बाकी दो को आगे आने का आदेश दिया। उन्होंने कहा, “अपना पासपोर्ट ऊपर दीजिए, हम उस पर मुहर लगाएंगे, हस्ताक्षर करेंगे और आपको लौटा देंगे। आप तीनों सज्जनों को यात्रा के लिए भरपूर धन दिया जाएगा और गिद्ध शिखर पर बुद्ध के दर्शन के लिए आपको सुरक्षित ले जाया जाएगा। यदि आप शास्त्रों के साथ लौटते हैं तो आपको उदार पुरस्कार भी मिलेंगे। हम

अपने दामाद को यहीं रखेंगे: आपको उसकी चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।”

बंदर ने राजा को धन्यवाद दिया और फिर साधु सैंड को पासपोर्ट निकालकर देने को कहा। राजा ने उसे पढ़ा, उस पर मुहर लगाई और हस्ताक्षर किए, फिर दस सोने की और बीस चांदी की ईंटें निकालीं जो वह अपने ससुराल वालों को उपहार के रूप में देना चाहता था। सुअर, जिसे हमेशा से ही धन और कामुकता का बहुत शौक था, उन्हें लेने के लिए आगे बढ़ा।

फिर बंदर ने आदरपूर्वक एक मंत्रोच्चार किया और कहा, "हमने आपको परेशान किया है।"

जैसे ही मंकी जाने के लिए मुड़ा, संजांग झट से अपने पैरों पर खड़ा हो गया, उसे पकड़ लिया और दांत भींचते हुए बोला, "तुम सब मुझे छोड़ रहे हो।"

अध्याय 94

1321

पश्चिम की यात्रा

भाई बंदर ने संज़ंग के हाथ की हथेली को चुटकी से दबाया, उसे एक अर्थपूर्ण नज़र से देखा और कहा, "जब तक हम शास्त्र लेने जाते हैं, तब तक आप यहाँ आराम करें और आनंद लें। लौटते समय हम आपसे मिलेंगे।" इस बात पर विश्वास न कर पाने के कारण, आदरणीय बुजुर्ग ने उसे जाने नहीं दिया। जब सभी अधिकारियों ने यह देखा तो उन्होंने इसे एक वास्तविक विदाई समझ लिया। जल्द ही राजा ने अपने दामाद को सिंहासन कक्ष में वापस बुलाया और अधिकारियों को तीनों सज्जनों को शहर से बाहर ले जाने का आदेश दिया, जिसके बाद संज़ंग को बंदर को छोड़ना पड़ा और कक्ष में प्रवेश करना पड़ा।

जब भाई बंदर और बाकी दो लोग महल के द्वार से बाहर निकले तो उन्होंने एक-एक करके विदा ली।

"क्या हम सचमुच जा रहे हैं?" सुअर ने पूछा। बंदर ने कुछ नहीं कहा और वापस छात्रावास की ओर चल दिया, जहाँ अधीक्षक ने उनका स्वागत किया और उन्हें चाय और भोजन दिया।

"तुम दोनों यहीं रहो," बंदर ने सुअर और साधु सैंड से कहा, "और चाहे कुछ भी हो जाए, अपना चेहरा मत दिखाना। अगर छात्रावास अधीक्षक पूछे कि क्या हो रहा है, तो

उसे गोलमोल जवाब देना। कुछ मत बोलना। मैं मास्टर को देखने जा रहा हूँ।"
महान संत ने अपने बालों में से एक बाल खींचा, उस पर जादुई सांस फूंकी, "बदलो!" कहा और उसे अपने ही जैसे दिखने वाले एक दूसरे में बदल दिया ताकि वह पिग और फ्रायर सैंड के साथ छात्रावास में रह सके, जबकि वह स्वयं पलक झपकते ही हवा में उछल पड़े और एक मधुमक्खी में बदल गए।
पीले पंख, मीठा मुंह और नुकीली पूंछ,
वह हवा में बेतहाशा नाचता है,
फूलों से सुगंध चुराने वाला कुशल चोर
जो विलो वृक्षों और फूलों के बीच से झूमता हुआ गुजरता है।
अपनी परेशानियों के लिए उसे कई बार भीगना पड़ा।
वह इधर-उधर उड़ता रहता है, लेकिन सब व्यर्थ।
वह जिस गाढ़े आनंद का अनुभव करता है, उसका स्वाद वह कभी नहीं चख पाता;
वह बस अपनी प्रसिद्धि को पीछे छोड़ सकता है।
उसे हल्के से उड़ते हुए महल में प्रवेश करते हुए देखें, जहाँ उसने राजा के बाईं ओर एक कढ़ाईदार चौकी पर बैठे तांग पुजारी को देखा, जो चिंतित और परेशान दिख रहे थे। अपने स्वामी के वैरोचना मुकुट तक उड़कर, बंदर चुपके से उनके कान के पास गया और बोला, "मैं यहाँ हूँ, स्वामी, इसलिए चिंता न करें।" ये शब्द केवल तांग पुजारी ने ही सुने थे, किसी भी आम इंसान को इन्हें सुनने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसलिए उन्हें अंततः राहत मिली।
कुछ ही देर बाद एक हिजड़ा निमंत्रण लेकर आया: "महाराज, जय महल में विवाह भोज की व्यवस्था की गई है।"
"महारानी और राजकुमारी भीतरी कक्ष में आपका इंतज़ार कर रही हैं। वे महाराज और महाराज को विवाह समारोह में आमंत्रित करती हैं।" प्रसन्नता से अभिभूत होकर राजा अपने दामाद के साथ भीतरी कक्ष में चले गए। सचमुच:
अध्याय 94
1322
पश्चिम की यात्रा
दुष्ट राजा का फूलों के प्रति प्रेम विपत्ति का कारण बना;
जब ध्यानमग्न मन सोचने लगता है, तो प्रत्येक विचार दुख लाता है।

यदि आपको नहीं पता कि महल के भीतरी कक्ष में पहुँचने के बाद तांग पुजारी कैसे बच निकला, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 95

जेड खरगोश के पकड़े जाने पर असत्य और सत्य रूप आपस में मिल जाते हैं

सच्ची नारी का रूपांतरण होता है और वह आध्यात्मिक उत्पत्ति से मिलती है।

कहानी बताती है कि कैसे तांग पुरोहित राजा के साथ भीतरी कक्ष में जाते समय अत्यंत दुखी थे, जहाँ से ढोल और संगीत की गूँज सुनाई दे रही थी और मनमोहक सुगंध फैली हुई थी। उन्होंने अपना सिर झुकाए रखा, ऊपर देखने की हिम्मत नहीं की। बंदर, मन ही मन बहुत प्रसन्न होकर, वैरोचना के मुकुट पर बैठ गया था, जहाँ से वह अपनी जादुई रोशनी से अपनी प्रज्वलित आँखों और सुनहरी पुतलियों से चारों ओर देख रहा था। वहाँ दरबारी महिलाओं की दो पंक्तियाँ थीं, जिससे वह महल फूलों या अमर लोगों के महल जैसा लग रहा था, और रेशमी पर्दे से होकर बहने वाली वसंत की हवा से भी अधिक सुंदर था। वास्तव में, वे बहुत ही सुंदर थीं।

सुंदर और आकर्षक,

जेड की तरह चमकीला और बर्फ जैसी चिकनी त्वचा वाला।

चू की लड़की से भी अधिक मनमोहक जोड़ी,

दो-दो सुंदरियां, लेडी शी शी को टक्कर दे रही थीं।

उनके बाल उड़ते हुए फीनिक्स पक्षियों की तरह ऊंचे-ऊंचे कुंडलित थे;

उनकी भौहें मुश्किल से दिखाई दे रही थीं, दूर की पहाड़ियों की नीची रेखाओं की तरह।

उन्होंने बड़ी ही खूबसूरती से बांसुरी और शॉम बजाया;

बांसुरी और ढोल की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

सुरों के सभी स्वर गूंज उठे।

ऊपर उठना और फिर साथ-साथ नीचे गिरना।

वे नाचते-गाते हुए बेहद आनंददायक लग रहे थे।

फूलों की चादर बिछी हुई थी, और हर फूल बेहद खूबसूरत था।

यह देखकर कि उसका स्वामी इससे जरा भी विचलित नहीं हुआ, बंदर ने चुपचाप प्रशंसा में अपने होंठों को चाटा और कहा, "कितना उत्तम भिक्षु! कितना उत्तम भिक्षु!"
वैभव के बीच निवास करते हुए भी, उसका हृदय किसी भी प्रकार के लगाव से रहित है;
भव्यता के बीच चलते हुए, उसका मन भ्रमित नहीं होता।
कुछ देर बाद राजकुमारी रानियों और रानियों से घिरी हुई जय महल से बाहर आईं और "राजा अमर रहें! राजा अमर रहें!" के नारों के साथ राजा का स्वागत किया। यह देखकर आदरणीय बुजुर्ग इतने भयभीत हो गए कि वे कांपने लगे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।
अब तक बंदर ने राजकुमारी के सिर के ऊपर मंडराते आभा मंडल में राक्षसी शक्ति का कुछ अंश देख लिया था—हालांकि वह बहुत भयावह नहीं था। बंदर तेजी से रेंगकर संजांग के कान के पास गया और बोला, "गुरुजी, यह राजकुमारी नकली है।"
"अगर वह नकली है," आदरणीय बुजुर्ग ने उत्तर दिया, "तो हम उसे उसके असली रूप में कैसे वापस लाएंगे?"
"मैं अपने लिए एक जादुई शरीर बना लूंगा और उसे यहीं पकड़ लूंगा," बंदर ने कहा।
"इससे महाराज भयभीत हो जाएंगे," संजांग ने कहा। "जादू का प्रयोग करने से पहले उनके और उनकी रानियों के चले जाने का इंतजार करो।"
बंदर स्वभाव से ही अधीर था, इसलिए वह खुद को रोक नहीं पाया। एक ज़ोरदार और गुस्से भरी दहाड़ के साथ वह अपने असली रूप में लौट आया, दौड़ा और राजकुमारी को पकड़ लिया। "तू एक घटिया, दुष्ट जानवर है," उसने गाली देते हुए कहा। "तूने यहाँ खूब ऐशो-आराम किया है, धोखेबाज़, लेकिन फिर भी तुझे संतुष्टि नहीं मिली। तू इतनी कामुक है कि तूने मेरे स्वामी को धोखा देने और उसकी मर्दानगी को नष्ट करने की कोशिश की।" यह सुनकर राजा भय से अवाक रह गया और रानियाँ व रानियाँ इधर-उधर गिरने लगीं। महल की सभी सुंदरियाँ अपनी जान बचाने के लिए भागकर छिप गईं। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसे...
वसंत ऋतु में एक तूफानी हवा,
शरद ऋतु की तूफानी हवाएँ।
जब वसंत ऋतु में गरजती हवा जंगल से होकर बहती है
हजारों फूल हिल गए;

जब शरद ऋतु की तेज़ आंधी पार्क से टकराती है
दस हजार पत्ते एक साथ घूमते और उड़ते हैं।
बालस्ट्रेड के नीचे लगा हुआ ट्री पीनी का पौधा टूट गया है;
बालकनी के किनारे लगे शाकीय पेओनी के पौधे गिर जाते हैं।
अध्याय 95
1324
पश्चिम की यात्रा
तालाब के किनारों पर उगे गुड़हल के फूल चारों ओर हिल रहे हैं।
जबकि छज्जे के फूलों के ढेर छत के निचले हिस्से में बिखरे पड़े हैं।
नाजुक बेगोनिया का पौधा धूल में गिर जाता है;
सुगंधित गुलाब अब जंगल में सो रहा है।
बसंत की हवा कैल्ट्रॉप, कमल और नाशपाती को चूर-चूर कर देती है;
सर्दियों की बर्फ बेर के पेड़ के कोमल फूलों को झुका देती है।
अनार की पंखुड़ियाँ
भीतरी आंगन के चारों ओर बिखरे हुए हैं;
विलो की शाखाएँ
शाही महल के भीतर हवा के झोंकों से वे एक तरफ लुढ़क जाते हैं।
सुंदर फूल खिले, और फिर तेज हवा और बारिश से भरी रात:
असंख्य लाल पंखुड़ियाँ जमीन को रेशमी कालीन की तरह ढक देती हैं।
संजांग ने जल्दी से कांपते हुए हाथों से राजा को गले लगाया और कहा, "महाराज, डरिए मत। यह तो बस मेरा दुष्ट शिष्य है जो अपनी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल करके यह पता लगाने की कोशिश कर रहा है कि वह धोखेबाज है या नहीं।"
अपनी बुरी हालत देखकर, दुष्ट आत्मा ने खुद को मुक्त कर लिया, अपने कपड़े फाड़ डाले, अपने गहने और बालों के आभूषण फेंक दिए और महल के बगीचे में स्थित स्थानीय देवता के मंदिर की ओर भागी। वहाँ से उसने हथौड़े के सिर के आकार का एक छोटा डंडा निकाला और बंदर की ओर मुड़ते हुए उस पर बेतहाशा वार करने लगी। बंदर, जो तुरंत उसके पास पहुँच गया था, ने अपने लोहे के डंडे से उसके चेहरे पर वार किया। एक-दूसरे पर चिल्लाते और दहाड़ते हुए, दोनों महल के बगीचे में लड़ने लगे। फिर दोनों ने अपनी जादुई शक्तियों का ज़बरदस्त प्रदर्शन किया और हवा में लड़ते हुए

बादलों पर सवार हो गए। इस लड़ाई में सोने की पट्टी वाले डंडे की प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई;
किसी ने भी हैमरहेड क्लब के बारे में नहीं सुना था।
उनमें से एक व्यक्ति सच्चे धर्मग्रंथों को लाने के लिए वहां गया था;
दूसरा व्यक्ति दुर्लभ फूलों के प्रति प्रेम के कारण वहीं रुका हुआ था।
उस दानव को पवित्र तांग पुजारी के बारे में बहुत पहले से ही जानकारी थी।
और वह उसके आदिम वीर्य-रस के साथ संभोग करने के लिए तरस रही थी।
अध्याय 95
1325
पश्चिम की यात्रा
पिछले साल ही वह असली राजकुमारी का अपहरण कर चुकी थी।
और उसने राजा की असली बेटी का रूप धारण कर लिया।
जब उसकी मुलाकात महान ऋषि से हुई, जिन्होंने उसकी बुरी आभा को देख लिया,
वह सच और झूठ में फर्क कर सकता था क्योंकि वह एक जान बचाने आया था।
घातक लाठी सिर पर मारी गई;
शक्तिशाली लोहे के डंडे ने पलटवार करते हुए उसके चेहरे पर प्रहार किया।
वे चीखते-चिल्लाते और दहाड़ते हुए आपस में संघर्ष कर रहे थे।
आकाश को भरते हुए और सूर्य को ढकते हुए।
जब वे दोनों हवा में लड़ रहे थे, तो उन्होंने शहर के आम लोगों को भयभीत कर दिया और दरबार के सभी अधिकारियों में दहशत पैदा कर दी। आदरणीय बुजुर्ग राजा का समर्थन करते हुए कहते रहे, "घबराइए मत, और कृपया महारानी और अन्य सभी को बता दीजिए कि वे भयभीत न हों। आपकी राजकुमारी एक धोखेबाज है जो उनका रूप धारण किए हुए है। जब मेरा शिष्य उसे पकड़ लेगा, तब आप देख पाएंगे कि वह अच्छी है या बुरी।" कुछ साहसी रानियाँ रानी को दिखाने के लिए कपड़े और गहने लेकर आईं।
“ये वही वस्त्र हैं जो राजकुमारी ने पहने थे। उसने इन्हें फाड़ दिया और अब वह आकाश में उस भिक्षु से नग्न अवस्था में लड़ रही है। वह अवश्य ही कोई दुष्ट आत्मा होगी।” तभी राजा, रानियाँ और उनकी रानियाँ होश में आईं और आकाश की ओर देखने लगीं।

जब दुष्ट आत्मा और महान ऋषि आधे दिन तक लड़ते रहे और कोई भी विजयी नहीं हुआ, तो बंदर ने अपना गदा उछाला और "बदलाव!" पुकारा। एक दस में बदल गया, दस सौ में और सौ हज़ार में। आधा आकाश रेंगते हुए साँपों और अजगरों से भर गया जो दुष्ट आत्मा पर बेतहाशा प्रहार कर रहे थे। अपने हाथों और पैरों को तेज़ी से हिलाते हुए वह शुद्ध हवा में बदल गई और नीले आकाश में उड़ गई। बंदर ने एक मंत्र पढ़ा, सभी लोहे के गदाओं को एक गदा में समेट लिया और सीधे उसके जादुई प्रकाश की ओर चल पड़ा।

जैसे ही बंदर स्वर्ग के पश्चिमी द्वार के पास पहुँचा और उसने जगमगाते झंडे और बैनर देखे, वह ज़ोर से चिल्लाया, "स्वर्ग के द्वारपालों, उस दुष्ट आत्मा को रोको और उसे भागने मत दो।" द्वार पर स्वर्ग के राजा लोकपाला अपने चार महान सेनापतियों पांग, लियू, गौ और बी के साथ तैनात थे, जिन्होंने वास्तव में अपने हथियारों से रास्ता रोक दिया। आगे न बढ़ पाने पर वह तुरंत पीछे मुड़ी और अपनी छोटी गदा से बंदर से लड़ने लगी।

जैसे ही उन्होंने अपनी लोहे की गदा घुमाई, महान ऋषि ने उसे ध्यान से देखा और पाया कि उसकी गदा का एक सिरा मोटा और दूसरा पतला था, ठीक वैसे ही जैसे ओखली से तोड़े जाने वाले हथौड़े का सीसा होता है। इसलिए उन्होंने क्रोधित होकर दहाड़ लगाई और चिल्लाए, "अंगूर! यह कौन सा औजार है जो तूने पकड़ रखा है? तेरी हिम्मत कैसे हुई मुझसे इससे लड़ने की? तुरंत आत्मसमर्पण कर दे वरना मैं अपनी गदा के एक ही वार से तेरा सिर चकनाचूर कर दूंगा।"

दांत पीसते हुए उस दुष्ट आत्मा ने उत्तर दिया, "तुम मेरे इस हथियार के बारे में नहीं जानते, इसलिए ध्यान से सुनो, मैं तुम्हें बताती हूँ:

इसकी अमर जड़ भेड़ की चर्बी से बने जेड पत्थर का एक टुकड़ा थी।

अध्याय 95

1326

पश्चिम की यात्रा

जिसे साकार रूप देने में अनगिनत साल लग गए।

जब अराजकता ने अलगाव को समाप्त किया, तब यह पहले से ही मेरा था;

जब मूल अव्यवस्था दूर हो गई तो मुझे प्राथमिकता दी गई।

इसकी उत्पत्ति की तुलना नश्वर वस्तुओं से नहीं की जा सकती;

इसका स्वरूप हमेशा से सर्वोच्च स्वर्ग से संबंधित रहा है।
सुनहरी रोशनी और चार छवियों को समाहित करते हुए
पंच तत्वों और तीन प्राथमिक तत्वों की शुभ वाष्पों के साथ।
यह लंबे समय तक मेरे साथ चंद्र महल में रहा।
कैसिया हॉल में मेरे बगल में ठहरना।
फूलों के प्रेम के कारण ही मैं नश्वर संसार में अवतरित हुआ।
एक खूबसूरत धोखेबाज के रूप में भारत आना।
मैंने राजा के सुखों में केवल इसी कारण से हिस्सा लिया।
ऐसा इसलिए था क्योंकि मैं तांग पुजारी के साथ अपना नियत विवाह करना चाहती थी।
तुम इतने निर्दयी कैसे हो सकते हो कि इस बेहतरीन मिलन को बर्बाद कर दो?
मेरा पीछा कर रहे हो और अपनी दुष्ट प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहे हो?
मेरे इस उपकरण की प्रसिद्धि महान है।
जो आपके सोने की पट्टियों वाले डंडे से भी पुराना है।
यह चंद्र महल में औषधियों को कूटने वाला मूसल था:
इसके एक ही वार से किसी की जान जा सकती है।"
यह सुनकर बंदर ने उपहास भरी हंसी के साथ जवाब दिया, "दुष्ट जानवर! अगर तू मेंढक महल में रहता था तो तूने मेरी शक्तियों के बारे में जरूर सुना होगा। तेरी हिम्मत कैसे हुई मुझसे बहस करने की! अगर मुझे तेरी जान बख्शनी है तो अपने असली रूप में लौट आ और तुरंत आत्मसमर्पण कर दे।"
“मैं तुम्हें जानती हूँ,” राक्षस ने उत्तर दिया। “तुम घोड़ों की रक्षक हो जिसने पाँच सौ वर्ष पहले स्वर्ग के महलों में भारी तबाही मचाई थी। न्यास के अनुसार मुझे तुम्हारे सामने झुक जाना चाहिए, लेकिन क्योंकि तुमने मेरा विवाह बर्बाद कर दिया है, इसलिए मैं तुमसे उतनी ही घृणा करती हूँ जितनी कि मानो तुमने मेरे माता-पिता को मार डाला हो। यह मेरे लिए असहनीय है। मैं तुम्हें मार डालूँगी, घोड़ों की रक्षक, स्वर्ग के नियमों को तोड़ने के लिए।” घोड़ों की रक्षक शब्द महान ऋषि को हमेशा क्रोधित कर देता था, इसलिए जैसे ही उन्होंने ये शब्द सुने, वे भयंकर क्रोध में आ गए, उन्होंने अपना लोहे का डंडा उठाया और उसके चेहरे पर प्रहार किया। दुष्ट आत्मा ने जवाब में अपना मूसल चलाया। फिर स्वर्ग के पश्चिमी द्वार के सामने एक भयंकर युद्ध छिड़

गया। इस युद्ध में
अध्याय 95
1327
पश्चिम की यात्रा
सोने की पट्टी वाली लाठी,
औषधि कूटने वाला मूसल,
दो अमर लोगों के हथियार, एक योग्य मुकाबला।
एक व्यक्ति विवाह के लिए पृथ्वी पर आया था;
दूसरा व्यक्ति तांग पुजारी की रक्षा के लिए वहां मौजूद था।
इसका कारण यह था कि राजा धर्मी नहीं था।
और उसे फूल इतने प्रिय थे कि वह दुष्ट आत्मा को आकर्षित करता था।
आज के इस भयंकर संघर्ष का कारण
क्योंकि उनमें से दो ने अपने हठधर्मिता को अमल में लाने का मौका दिया।
एक दूसरे पर हमला करते और झपटते हुए वे जीत के लिए संघर्ष कर रहे थे;
उन्होंने तीखे शब्दों में अपनी ज़ुबान से लड़ाई जारी रखी।
औषधि के मूसल की युद्धकला संबंधी कुशलता दुर्लभ थी।
लेकिन लोहे के डंडे की ताकत उससे भी कहीं अधिक उत्कृष्ट थी।
स्वर्ग के द्वारों पर एक शक्तिशाली सुनहरी रोशनी चमकी;
चमकीले रंगों की धुंध सीधे धरती तक उतर गई।
एक दर्जन दौर की लड़ाई के बाद
दुष्ट आत्मा प्रतिरोध करने के लिए बहुत कमजोर हो गई।
जब दुष्ट आत्मा ने भाई बंदर के साथ लगभग एक दर्जन और दौर तक लड़ाई लड़ी, तो उसने देखा कि उसके वार कितने तेज़ और लगातार आ रहे थे, और उसे एहसास हुआ कि वह जीत नहीं सकती। अपने मूसल से वार करने का नाटक करते हुए, उसने खुद को झटका दिया और दस हज़ार सुनहरी रोशनी की किरणों के साथ दक्षिण की ओर भाग गई, महान ऋषि उसका पीछा कर रहे थे। अचानक वे एक विशाल पर्वत पर पहुँचे, जहाँ दुष्ट आत्मा ने अपनी सुनहरी रोशनी डाली और एक गुफा में गायब हो गई। बंदर, जिसे चिंता थी कि कहीं वह भाग न जाए, भारत लौटकर तांग पुजारी को कोई गुप्त नुकसान न पहुँचा दे, उसने सुनिश्चित किया कि वह पर्वत को पहचान ले, फिर

उसने अपने बादल को घुमाया और सीधे राजधानी की ओर वापस चला गया।
अब दोपहर के लगभग चार बज रहे थे। राजा संज़ंग से लिपटा हुआ था, कांप रहा था और बार-बार कह रहा था, "हे पवित्र भिक्षु, मुझे बचाओ!"
जब महान ऋषि बादलों से नीचे उतरे और बोले, "हे स्वामी!", तो सभी रानियाँ और रानियाँ घबरा गईं।
अध्याय 95
1328
पश्चिम की यात्रा
"शांत खड़े रहो, वुकॉन्ग," संज़ंग ने कहा। "महाराज को मत डराओ। अब, मैं तुमसे पूछ रहा हूँ कि नकली राजकुमारी के साथ वास्तव में क्या हुआ था।" जय महल के बाहर खड़े होकर, बंदर ने अपने हाथ छाती के सामने जोड़कर कहा, "नकली राजकुमारी एक दुष्ट आत्मा थी। पहले तो मैंने उससे आधे दिन तक लड़ाई की, लेकिन वह मुझे हरा नहीं सकी, इसलिए वह शुद्ध हवा में परिवर्तित हो गई और सीधे स्वर्ग के द्वार की ओर भाग गई। मैंने देवताओं से उसका रास्ता रोकने के लिए प्रार्थना की। वह अपने असली रूप में वापस आ गई और मुझसे लगभग एक दर्जन बार और लड़ी।"
फिर वह सुनहरी रोशनी में बदल गई और हारी हुई दक्षिण दिशा में एक पहाड़ की ओर भाग गई। मैंने पूरी ताकत से उसका पीछा किया और पहाड़ तक पहुँच गया, लेकिन वह मुझे कहीं नहीं मिली। फिर मैं वापस आ गया क्योंकि मुझे डर था कि कहीं वह यहाँ आकर तुम्हें नुकसान न पहुँचा दे।
जब राजा ने यह सुना तो उसने तांग पुजारी को पकड़ लिया और पूछा, "यदि वह झूठी राजकुमारी एक दुष्ट आत्मा थी, तो मेरी असली राजकुमारी कहाँ है?"
"जब मैं नकली राजकुमारी को पकड़ लूंगा, तो तुम्हारी असली राजकुमारी खुद ही आ जाएगी," बंदर ने तुरंत जवाब दिया।
जब रानियों और उनकी रानियों ने यह सुना तो उनका भय दूर हो गया, और उनमें से प्रत्येक आगे आकर झुककर बोली,
"हे पवित्र भिक्षु, हम आपसे विनती करते हैं कि हमारी असली राजकुमारी को बचाएं और अंधकार से प्रकाश को अलग करें। आपको भरपूर पुरस्कार मिलेगा।"
“यह हमारे लिए बात करने का स्थान नहीं है,” बंदर ने कहा। “महाराज, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मेरे स्वामी के साथ भीतरी कक्ष से सिंहासन कक्ष में जाएँ।

महारानी और बाकी सभी लोग भीतरी महल में लौट जाएँ, और मेरे साथी शिष्य सुअर और साधु सैंड को मेरे स्वामी की रक्षा के लिए बुलाया जाए ताकि मैं जाकर राक्षस को वश में कर सकूँ। इससे महल के भीतरी और बाहरी कक्षों के बीच उचित भेद बना रहेगा और मुझे चिंता करने से मुक्ति मिलेगी। मैं अपनी निष्ठा दिखाने के लिए इस समस्या का समाधान करने जा रहा हूँ।"

राजा ने सुझाव स्वीकार कर लिया और अत्यंत कृतज्ञ हुए। उन्होंने तांग पुजारी को भीतरी कक्ष से बाहर निकाला और सीधे सिंहासन कक्ष में ले गए। सभी रानियाँ और रानियाँ भीतरी महल में लौट आईं। शाकाहारी भोजन का आदेश दिया गया और सुअर और साधु सैंड को बुलवाया गया। वे दोनों शीघ्र ही आ गए। बंदर ने उन दोनों को सारी घटना समझाई और उन्हें स्वामी की सावधानीपूर्वक रक्षा करने का निर्देश दिया। महान ऋषि ने बादल कलाबाजी करते हुए उड़ान भरी और आकाश में उड़ गए। सिंहासन कक्ष के सामने खड़े सभी अधिकारियों ने आकाश की ओर देखा और प्रणाम किया।

महान ऋषि बंदर सीधे दक्षिण दिशा में स्थित पर्वत की ओर गया। जब दुष्ट आत्मा पराजित होकर पर्वत पर भाग गई और अपनी मांद में छिप गई, तो उसने पत्थरों से प्रवेश द्वार अवरुद्ध कर दिया और भयभीत होकर वहीं छिपी रही। कुछ देर तक चारों ओर देखने पर भी जब उसे जीवन का कोई संकेत नहीं मिला, तो बंदर बहुत अधीर हो गया, इसलिए उसने अपने हाथों से मंत्र पढ़ा और स्थानीय देवता और पर्वत देवता को प्रश्न पूछने के लिए पुकारा।

कुछ ही क्षण बाद दोनों देवता आए, प्रणाम किया और बोले, "हमें पता नहीं था, हमें पता नहीं था। अगर हमें पता होता तो हम आपसे मिलने के लिए बहुत दूर तक यात्रा करते। हम आपसे क्षमा मांगते हैं।"

"मैं अभी तुम्हें नहीं मारूंगा," बंदर ने कहा। "मुझे बताओ इस पहाड़ का नाम क्या है? यहाँ कितनी बुरी आत्माएँ हैं? मुझे सच बताओ और मैं तुम्हारे सारे अपराध माफ कर दूंगा।"

“हे महान ऋषि,” दोनों देवताओं ने उत्तर दिया, “इस पर्वत का नाम माउंट हेयरट्रिप है। इस पर्वत में तीन बिल हैं, लेकिन प्राचीन काल से यहाँ कभी कोई बुरी आत्मा नहीं रही है। यह पाँच सुखों से परिपूर्ण पवित्र भूमि है। हे महान ऋषि, यदि आप किसी बुरी आत्मा को खोजना चाहते हैं, तो पश्चिमी स्वर्ग की ओर चलें।”

मैं पश्चिमी स्वर्ग में स्थित भारत के राज्य में पहुँच गया हूँ, जहाँ राजा की एक

राजकुमारी है जिसे एक दुष्ट आत्मा अगवा करके जंगल में छोड़ गई थी। उस दुष्ट आत्मा ने राजकुमारी का रूप धारण कर लिया ताकि राजा को धोखा देकर एक सजावटी मीनार बनवा सके, जहाँ से वह कढ़ाईदार गेंद फेंककर अपने लिए पति ढूँढ सके। जब मैं तांग पुजारी के साथ मीनार के नीचे पहुँचा, तो उसने जानबूझकर तांग पुजारी पर प्रहार किया क्योंकि वह उसके साथ संभोग करना चाहती थी और उसकी आदिम मर्दानगी को बाहर निकालना चाहती थी। जब मैंने उसकी असलियत जान ली, तो मैं महल में वापस अपने असली रूप में आ गया ताकि उसे पकड़ सकूँ। उसने अपने मानवीय वस्त्र और गहने उतार दिए और आधे दिन तक एक छोटी सी लाठी से मुझसे लड़ती रही जिसे वह औषधि कूटने का मूसल कहती थी। फिर उसने... अध्याय 95

1329

पश्चिम की यात्रा

वह एक शुद्ध हवा में विलीन हो गई और गायब हो गई। जब मैंने उसका पीछा करते हुए स्वर्ग के पश्चिमी द्वार तक गया और उससे एक दर्जन से अधिक लोगों से लड़ाई की, तो उसे एहसास हुआ कि वह मुझे हरा नहीं सकती, उसने खुद को सुनहरे रंग में बदल लिया और यहाँ भाग गई। तुमने उसे क्यों नहीं देखा!

जब दोनों देवताओं ने यह सुना, तो वे भाई बंदर को तीनों बिलों की खोज में ले गए। जब उन्होंने सबसे पहले पहाड़ की तलहटी में स्थित बिल के पास देखा, तो कुछ डरे हुए खरगोश चौंककर भाग गए। जब उनकी खोज पहाड़ की चोटी पर स्थित गुफा तक पहुँची, तो उन्होंने देखा कि गुफा का प्रवेश द्वार दो बड़े पत्थरों से अवरुद्ध था।

स्थानीय देवता ने कहा, "जब तुम उसका इतनी जोर से पीछा कर रहे थे, तब दुष्ट आत्मा तुम्हारे अंदर घुस गई होगी।"

फिर बंदर ने अपने लोहे के डंडे से पत्थरों को अलग किया। दुष्ट आत्मा, जो वास्तव में वहीं छिपी हुई थी, एक झटके के साथ बाहर निकली और अपना औषधि का मूसल उठाकर उस पर प्रहार करने लगी। जैसे ही बंदर ने अपने डंडे से उसके प्रहार को रोका, पर्वत की देवी भय से पीछे गिर पड़ी और स्थानीय देवता भाग गया।

राक्षस के मुख से अपशब्द निकले: "तुम्हें किसने कहा था कि उसे यहाँ मुझे ढूँढ़ने के लिए लाओ?" वह लोहे के डंडे को रोकते हुए हवा में उछलकर पीछे हटती रही।

संकट के ठीक क्षण में, जब दिन ढलने लगा था, बंदर पहले से कहीं अधिक क्रूर हो गया और उसके वार और भी कठोर हो गए। वह चाहता था कि एक ही वार में उसे

समाप्त कर दे। तभी नौ गुना नीले आकाश से एक आवाज़ आई, "हे महान ऋषि, प्रहार मत करो! प्रहार मत करो! अपने गदा से दया करो।"

जब बंदर ने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि चंद्रमा के तारा देवता अपनी सुंदरियों और अमर देवियों को लेकर रंग-बिरंगे बादलों पर सवार होकर उसके सामने खड़े हैं। घबराए हुए बंदर ने तुरंत अपना लोहे का डंडा एक तरफ रख दिया, प्रणाम किया और बोला, "आप कहाँ जा रहे हैं, बूढ़े? मुझे खेद है कि मैं आपके रास्ते से नहीं हटा।"

“तुम्हारे साथ संघर्ष करने वाली दुष्ट आत्मा जेड हेयर है, जो मेरे महल में रहस्यमयी ओस का अमर अमृत कूटती है,” चंद्रमा ने उत्तर दिया। “एक वर्ष पहले उसने चुपके से जेड द्वारों पर लगे सुनहरे ताले खोल दिए और महल से भाग गई। चूंकि मुझे लगा कि उसकी जान को खतरा है, इसलिए मैं उसकी जान बचाने के लिए यहां आया हूं। हे महान ऋषि, कृपया मुझ पर दया करके उसकी जान बख्श दें।”

बंदर ने सहमति जताते हुए कहा, "मैं उसे नुकसान पहुंचाने की हिम्मत नहीं करूंगा, बिलकुल नहीं। इसीलिए तो वह औषधि कूटने वाले मूसल में इतनी माहिर है। वह जेड हेयर है। लेकिन बूढ़े चाँद, तुम्हें यह नहीं पता कि उसने भारत के राजा की बेटी का अपहरण कर लिया है, राजकुमारी का रूप धारण कर लिया है और मेरे स्वामी की मर्दानगी को चूर-चूर करना चाहती है, जबकि वह एक पवित्र भिक्षु हैं। यही सच है। हम ऐसे अपराधों को बर्दाश्त नहीं कर सकते। तुम उसे इतनी आसानी से कैसे छोड़ सकते हो?"

"ऐसी कई बातें हैं जो तुम नहीं जानते," चंद्रमा ने उत्तर दिया। "वह राजा की पुत्री कोई साधारण मनुष्य नहीं थी। वह चंद्र महल की श्वेत सुंदरी थी। अठारह वर्ष पूर्व उसने जेड खरगोश को थप्पड़ मारा था, जिसके बाद उसे मानवलोक की तीव्र इच्छा हुई और वह जादुई प्रकाश की किरण के रूप में राजा की वरिष्ठ रानी के गर्भ में आ गई।"

उसका जन्म तब हुआ था। जेड हेयर पिछले साल महल से भागकर व्हाइट ब्यूटी को जंगल में फेंककर उस थप्पड़ का बदला ले रही थी। लेकिन तांग पुजारी से शादी करने की उसकी चाहत गलत थी। यह एक ऐसा अपराध है जिसकी उसे सज़ा मिलनी चाहिए। अच्छा हुआ कि आपने समय रहते उसे पहचान लिया, इससे पहले कि वह आपके स्वामी को बर्बाद कर देती। लेकिन मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरी खातिर उसे माफ कर दें और मुझे उसे वापस ले जाने दें।

"अगर यही वजह है तो," बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मैं कोई आपत्ति

करने की हिम्मत नहीं करूंगा।"
लेकिन अगर आप जेड हेयर को वापस ले जाते हैं, तो मुझे डर है कि राजा शायद इस पर विश्वास न करें, इसलिए मैं आपसे और अमर बहनों से अनुरोध करता हूँ कि आप जेड हेयर को वहाँ ले जाकर राजा को यह साबित करें। फिर मैं अपनी शक्तियों का प्रदर्शन कर सकूँगा और समझा सकूँगा कि व्हाइट ब्यूटी पृथ्वी पर कैसे आई। मैं राजा से राजकुमारी व्हाइट ब्यूटी को लाने के लिए कहूँगा ताकि प्रतिशोध की सच्चाई साबित हो सके।
अध्याय 95
1330
पश्चिम की यात्रा
चंद्रमा मान गया, इसलिए उसने दुष्ट आत्मा की ओर इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा, "पश्चाताप करो और आत्मसमर्पण करो, दुष्ट प्राणी!" जेड खरगोश जमीन पर लोटने लगा और अपने असली रूप में लौट आया। वास्तव में, उसके होंठ फटे हुए थे और उसके दांत नुकीले थे।
लंबे कान और कम मूंछें।
उसका शरीर हरे रंग के फर से ढका हुआ था;
जब उसने अपने पैर फैलाए तो वह पहाड़ों के ऊपर से उड़ गई।
उसकी सीधी नाक दही जैसी थी।
फेस क्रीम और पाउडर से भी ज्यादा चमकदार।
दो आंखें लाल रंग से चमक उठीं।
बर्फ पर बिखरे लाल रंग के धब्बों से भी अधिक चमकदार।
जमीन पर दुबके हुए
वह शुद्ध सफेद रेशम का ढेर थी;
जब उसने अपने आप को फैलाया
वह चमकदार चांदी के तार की एक संरचना थी।
अक्सर वह ऐसा करती थी
स्वर्गिक भोर की सबसे शुद्ध ओस का आनंद लें,
वह अपने जेड पत्थर के मूसल से अमृत को कूट रही थी।
जब महान ऋषि ने यह देखा तो वे प्रसन्न हुए, और बादलों और प्रकाश पर विचरण

करते हुए उन्होंने मार्ग का नेतृत्व किया, क्योंकि चंद्र देव सभी सुंदरियों और अमर प्राणियों को अपने साथ लेकर आए थे, और वे अपने साथ जेड खरगोश को भी ले गए, और वे सीधे भारत की ओर चल पड़े।

अब शाम ढल रही थी और चाँद धीरे-धीरे उग रहा था। जब वे राजधानी की दीवारों तक पहुँचे तो उन्होंने पहरेदार मीनारों पर ढोल बजने की आवाज़ सुनी। राजा और तांग पुरोहित अभी भी सिंहासन कक्ष के अंदर थे, जबकि पिग, साधु सैंड और अधिकारी सीढ़ियों के सामने खड़े थे। वे अभी इस बात पर चर्चा ही कर रहे थे कि क्या राजा को पीछे हट जाना चाहिए, तभी दक्षिण दिशा में दिन के उजाले की तरह चमकीला रंगीन बादल दिखाई दिया।

जब उन सभी ने सिर उठाकर देखा तो उन्हें महान ऋषि बंदर की तेज आवाज सुनाई दी।

"महाराज, भारत के राजा, अपनी रानियों और पत्नियों को बाहर आकर देखने के लिए कहें। इस छत्र के नीचे चंद्र महल के तारा देवता विराजमान हैं, और उनके दोनों ओर बैठी अमर बहनें चंद्र की सुंदरियाँ हैं। यह जेड खरगोश आपकी नकली राजकुमारी थी जो अब अपने असली रूप में लौट आई है।" राजा ने तुरंत अपनी रानी, पत्नियों, महल की सुंदरियों और दासियों को बुलाया, और वे सभी आकाश की ओर प्रणाम करने लगीं। राजा, तांग पुजारी और अधिकारियों ने भी कृतज्ञतापूर्वक आकाश को प्रणाम किया। पूरे शहर में कोई भी घर ऐसा नहीं था जिसने धूप जलाने, प्रणाम करने और नाम जपने के लिए वेदी न बनाई हो। (अध्याय 95)

1331

पश्चिम की यात्रा

बुद्ध का।

जब सब लोग ऊपर देख रहे थे, तभी पिग को बेकाबू इच्छा का ज्वार उठा, वह हवा में उछला और इंद्रधनुषी रंग के कपड़े पहने एक अमर लड़की को गले लगा लिया। "हम पुराने मेंड्स हैं, डार्लिंग," उसने कहा। "चलो थोड़ा मज़ा करते हैं।" बंदर पिग के पास गया, उसे पकड़ लिया, दो-तीन थप्पड़ मारे और उसे कोसते हुए बोला, "अरे गांव के बेवकूफ। ये कैसी जगह है अय्याशी करने की?"

पिग ने कहा, "मैं तो बस थोड़ी मस्ती के लिए उससे बातचीत करने जा रहा था।"

चंद्रदेव ने अपना दिव्य आवरण घुमा दिया और जेड खरगोश को उसकी सभी सुंदरियों

के साथ सीधे चंद्र महल में वापस ले गए। भाई बंदर ने सुअर को धूल में पटक दिया, जिसके बाद सिंहासन कक्ष में राजा ने उनका धन्यवाद किया।

जब राजा को सारी घटना बताई गई तो उन्होंने कहा, "हे पवित्र भिक्षु, नकली राजकुमारी को पकड़ने के लिए अपनी महान जादुई शक्तियों का उपयोग करने के लिए हम आपके बहुत आभारी हैं। लेकिन हमारी असली बेटी कहाँ है?"

“वह भी कोई साधारण इंसान नहीं है,” बंदर ने उत्तर दिया, “बल्कि चंद्र महल की अमर कन्या श्वेत सौंदर्य है। अठारह वर्ष पहले उसने जेड खरगोश को थप्पड़ मारा था, इसलिए वह पाताल लोक की लालसा में नीचे आई, महाराज की वरिष्ठ रानी की कोख में जन्मी और यहीं जन्म लिया। जेड खरगोश ने अपने पुराने द्वेष को पाले रखा था, इसलिए उसने चुपके से जेड द्वार का सुनहरा ताला खोला, यहाँ नीचे आई, श्वेत सौंदर्य को जंगल में छोड़ दिया और आपको धोखा देने के लिए खुद श्वेत सौंदर्य का रूप धारण कर लिया। स्वयं चंद्र स्वामी ने मुझे इन सभी घटनाओं के बारे में बताया है। आज हमने धोखेबाज को पकड़ लिया है, और कल मैं महाराज को आपके शाही रथ में असली श्वेत सौंदर्य को लाने के लिए आमंत्रित करूँगा।”

यह सुनकर राजा को गहरा सदमा लगा और आँखों से आंसू बहते हुए बोला, "बेटी! जब से हम बच्चे थे और सिंहासन पर बैठे हैं, तब से हम कभी शहर के द्वार से बाहर भी नहीं निकले। हम तुम्हें कहाँ ढूँढ़ें?"

बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "चिंता मत करो। तुम्हारी बेटी अब भिक्षादाता के स्वर्ण-प्रसारित मठ में पागल होने का नाटक कर रही है। अब सब लोग घर जा सकते हैं। कल सुबह मैं तुम्हारी असली राजकुमारी को तुम्हारे पास वापस ले आऊंगा।"

"महाराज, चिंता करना बंद कीजिए," सभी अधिकारियों ने प्रणाम करते हुए कहा। "ये सभी पवित्र भिक्षु बुद्ध हैं जो बादलों और कोहरे पर सवार हो सकते हैं: वे भविष्य और अतीत के सभी कर्मों और कर्मों के बारे में भली-भांति जानते हैं। यदि हम कल इन पवित्र भिक्षुओं को अपने साथ उसकी खोज में चलने के लिए कहें, तो हमें सत्य का पता चल जाएगा।"

उनके सुझाव को स्वीकार करते हुए, राजा ने भिक्षुओं को लिंगरिंग स्प्रिंग पवेलियन में आमंत्रित किया, जहाँ उन्हें शाकाहारी भोजन परोसा गया और उन्हें रात वहीं बितानी थी। अब लगभग दूसरा पहर हो चुका था। सचमुच: चाँद की तेज रोशनी में तांबे की जल घड़ी से पानी टपक रहा था;

सुनहरी घंटी की ध्वनि हवा के साथ गूंजती है।
जब कोयल गाती है तो वसंत ऋतु आधी बीत चुकी होती है;
जैसे-जैसे तीसरा पहर नजदीक आता है, फूल बेतरतीब ढंग से गिरने लगते हैं।
सुनसान शाही उद्यानों में झूला छाया डालता है;
अध्याय 95
1332
पश्चिम की यात्रा
चांदी जैसी नदी नीले आकाश के विशाल विस्तार पर विचरण करती है।
बाजारों और सड़कों पर कोई यात्री नजर नहीं आ रहा है;
तारामंडलों से रात्रि आकाश जगमगा उठता है।
उस रात वे सब सोने चले गए, और इसके बारे में और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।
रात के दौरान राजा की राक्षसी आभा क्षीण हो गई और उनकी आत्मा में तीव्र शक्ति का संचार हुआ, जिससे पाँचवें पहर के तीन मिनट बाद वे एक बार फिर सभा करने के लिए भीतरी कक्ष से बाहर आए। सभा समाप्त होने पर उन्होंने राजकुमारी की खोज पर चर्चा करने के लिए तांग पुरोहित और उनके तीन शिष्यों को बुलाने का आदेश दिया।
इसके बाद संजांग ने आकर राजा को प्रणाम किया, वहीं महान ऋषि और अन्य दो भिक्षुओं ने भी सम्मान व्यक्त किया। राजा ने उन्हें प्रणाम करते हुए कहा, "कल आपने हमारी पुत्री राजकुमारी के बारे में बात की थी। क्या हम आप दिव्य भिक्षुओं से उसे ढूंढने और बचाने का अनुरोध कर सकते हैं?"
“परसों हम पूर्व दिशा से शाम तक पैदल चल रहे थे,” आदरणीय बुजुर्ग ने उत्तर दिया। "जब हमने भिक्षादाता का स्प्रेड गोल्ड मठ देखा। हम अंदर जाकर रहने की जगह माँगी और सौभाग्य से वहाँ के भिक्षुओं ने हमारा सत्कार किया। रात के खाने के बाद मैंने पूर्व स्प्रेड गोल्ड गार्डन में चाँदनी रात में सैर की, और जब मैं अवशेषों को देख रहा था तो मुझे विलाप की आवाज़ सुनाई दी। जब मैंने पूछा कि यह सब क्या है, तो सौ वर्ष से अधिक आयु के एक वृद्ध भिक्षु ने मुझे बताने से पहले सभी को वहाँ से भेज दिया, 'अब, उस विलाप के बारे में, पिछले साल वसंत के अंत में मैं चाँदनी का आनंद ले रहा था कि अचानक हवा का एक झोंका और किसी के शोक करने की आवाज़ सुनाई दी।

मैं बिस्तर से उठा, जेतवन में गया और वहाँ एक लड़की को देखा। जब मैंने उससे पूछा तो लड़की ने कहा, "मैं एक राजकुमारी हूँ, भारत के राजा की पुत्री हूँ। चांदनी रात में फूल निहारते हुए हवा मुझे यहाँ ले आई। प्राचीन भिक्षु उचित व्यवहार के बारे में बहुत कुछ जानते थे, इसलिए उन्होंने राजकुमारी को एक शांत, एकांत कोठरी में बंद कर दिया। उन्हें डर था कि मठ के भिक्षु उसे अपवित्र न कर दें, इसलिए उन्होंने यह अफवाह फैला दी कि उन्होंने एक दुष्ट आत्मा को कैद कर लिया है। राजकुमारी, जो उनकी चाल समझ गई थी, दिन भर बड़बड़ाती और चिल्लाती रही और भोजन और चाय की मांग करती रही। केवल देर रात को, जब आसपास कोई नहीं होता था, तब वह अपने माता-पिता के बारे में सोचती और उनके लिए रोती थी। प्राचीन भिक्षु कई बार पूछताछ करने के लिए राजधानी आए, लेकिन जब उन्हें पता चला कि राजकुमारी ठीक है और महल में है, तो उन्होंने कुछ भी कहने या शिकायत दर्ज करने की हिम्मत नहीं की। जब प्राचीन भिक्षु ने देखा कि मेरी शिष्या के पास कुछ जादुई शक्तियाँ हैं, तो उन्होंने बार-बार जोर दिया कि हम यहाँ जाँच करने आएँ। मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि वह चंद्र महल की जेड खरगोश निकलेगी जिसने असली शरीर की नकल करके खुद को राजकुमारी जैसा बना लिया था। वह मेरी छवि खराब करने पर भी तुली हुई थी। आदिम पुरुषत्व। सौभाग्य से मेरे शिष्य ने अपनी शक्तिशाली जादूगरी का प्रदर्शन किया और धोखे का पर्दाफाश कर दिया। जेड हेयर को अब मून लॉर्ड ने पुनः पकड़ लिया है। आपकी योग्य राजकुमारी अब स्प्रेड गोल्ड मॉनेस्ट्री में पागल होने का नाटक कर रही है।

पूरी कहानी विस्तार से सुनने के बाद राजा ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। इससे तीनों महलों और छह परिसरों की रानियाँ और रानियाँ घबरा गईं और सब बाहर आकर पूछने लगीं कि ऐसा क्यों हो रहा है। सब फूट-फूटकर रोने लगीं और काफी देर बाद राजा ने पूछा, "स्प्रेड गोल्ड मॉनेस्ट्री शहर से कितनी दूर है?"

"सिर्फ बीस मील," संजांग ने जवाब दिया।

तब राजा ने ये आदेश जारी किए: "पूर्वी और पश्चिमी महलों की रानियाँ दरबार की देखरेख करें, जबकि प्रधान मंत्री देश के कामकाज का कार्यभार संभालें। हम अपनी वरिष्ठ रानी, अपने अधिकारियों और चार पवित्र भिक्षुओं के साथ राजकुमारी को लाने के लिए मठ जा रहे हैं।"

तुरंत रथ तैयार किए गए और रथों की एक कतार महल से निकल पड़ी। देखिए, भाई बंदर हवा में उछला और अपनी पीठ झुकाकर सबसे पहले मठ पहुंचा। सभी भिक्षुओं ने जल्दी से घुटने टेककर उसका अभिवादन किया।
उन्होंने कहा, "जब आप चले गए थे, महोदय, तो आप दूसरों के साथ चले गए थे, तो आज आप आकाश से नीचे क्यों आए?"
इस पर बंदर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "तुम्हारे प्राचीन गुरु कहाँ हैं? उनसे कहो कि वे तुरंत बाहर आएं और महाराज के स्वागत के लिए धूपदानी लगाएं। भारत के राजा और रानी, अधिकारी और मेरे गुरु सभी आ रहे हैं।" भिक्षु उसकी बात समझ नहीं पाए, इसलिए उन्होंने प्राचीन भिक्षु को बाहर बुलाया।
जब प्राचीन भिक्षु ने बंदर को देखा तो उसने उसके सामने प्रणाम करते हुए कहा, "राजकुमारी के बारे में क्या हुआ है, महाराज?" बंदर ने उसे सब कुछ बताया कि कैसे नकली राजकुमारी ने कढ़ाई वाली गेंद फेंकी, तांग पुजारी के साथ संभोग करना चाहा, उसका पीछा किया गया, उसने लड़ाई लड़ी और अंत में चंद्र देवता ने उसे जेड खरगोश के रूप में पकड़ लिया। प्राचीन भिक्षु ने कृतज्ञतापूर्वक उसे फिर से प्रणाम किया।
बंदर ने उसे उठाते हुए कहा, "कृपया प्रणाम करना बंद करो, कृपया रुक जाओ। जल्दी करो और महाराज का स्वागत करने के लिए तैयार हो जाओ।" तभी भिक्षुओं को एहसास हुआ कि पीछे के बगीचे में एक लड़की बंद थी। आश्चर्यचकित और प्रसन्न होकर, वे सभी मठ के द्वार के बाहर धूपदानों की कतार लगाकर खड़े हो गए, अपने वस्त्र पहने और घंटी और ढोल बजाना शुरू कर दिया। इसके तुरंत बाद राजा का रथ आ गया। सचमुच: आकाश पवित्र धूप के बादलों से भर गया है;
मठ में अचानक आशीर्वाद आता है।
इंद्रधनुष हजार वर्षों तक बहता रहता है; नदियाँ और समुद्र निर्मल रहते हैं।
वह शाश्वत वसंत ऋतु जिसके चारों ओर बिजली चमकती है, यू और तांग के वसंत ऋतुओं से कहीं अधिक सुंदर है।
शाही कृपा के कारण पौधों के रंग पहले से कहीं अधिक सुंदर हैं; इस उदारता के कारण जंगली फूलों में अतिरिक्त सुगंध है।
विशिष्ट व्यक्तित्व वाले लोग हमेशा अपने पीछे अपनी छाप छोड़ जाते हैं;

आज सभी एक प्रबुद्ध राजा के आगमन पर खुशी मना रहे हैं।
जब राजा मठ के द्वार पर पहुँचे तो सभी भिक्षु व्यवस्थित पंक्तियों में घुटनों के बल बैठे हुए थे और प्रणाम कर रहे थे। बंदर बीच में खड़ा था। राजा ने पूछा, "हे पवित्र भिक्षु, आप सबसे पहले कैसे पहुँच गए?"
"यहाँ पहुँचने के लिए मुझे बस अपनी कमर को थोड़ा सा मोड़ना पड़ा," बंदर ने जवाब दिया।
"इतनी देर से क्यों आए?" इसके बाद तांग पुजारी और बाकी सब आ गए। उन्होंने शाही रथ को पीछे वाले भवन की ओर ले गए, जहाँ राजकुमारी अभी भी बड़बड़ा रही थी और पागल होने का नाटक कर रही थी।
प्राचीन भिक्षु घुटनों के बल बैठ गया, उसकी ओर इशारा करते हुए बोला, "यह महारानी राजकुमारी हैं जिन्हें पिछले वर्ष हवा यहाँ उड़ाकर ले आई थीं।" राजा ने कोठरी खोलने का आदेश दिया। जब लोहे के ताले खोले गए... अध्याय 95
1334
पश्चिम की यात्रा
दरवाजा खुल गया और राजा और रानी ने राजकुमारी को देखा और पहचान लिया।
गंदगी की परवाह न करते हुए, वे उसके पास गए और उसे गले लगा लिया। "हमारी बेचारी बच्ची," उन्होंने कहा।
“तुम्हें ये कष्ट कैसे सहने पड़े और यहाँ इतना बुरा समय कैसे बिताना पड़ा?” यह कितना सच है कि माता-पिता और बच्चे का मिलन अन्य लोगों के मिलन जैसा नहीं होता। तीनों एक-दूसरे के सिर पर हाथ रखकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। जब वे कुछ देर रो चुके और बिछड़ने के बाद जो कुछ हुआ था, वह एक-दूसरे को बता चुके, तब सुगंधित गर्म पानी मंगवाया गया। राजकुमारी ने स्नान किया और कपड़े बदले, फिर वे सभी राजधानी वापस जाने के लिए गाड़ियों में सवार हो गए।
तब बंदर ने राजा को प्रणाम करते हुए अपने हाथ जोड़े और कहा, "महाराज, मुझे आपसे कुछ और कहना है।"
"हे पवित्र भिक्षु, जो भी कहना हो कहिए," राजा ने अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा, "और हम वैसा ही करेंगे जैसा आप कहेंगे।"
“उनका यह पहाड़,” बंदर ने उत्तर दिया, “सौ फुट का पहाड़ कहलाता है। मुझे बताया गया है कि यहाँ हाल ही में कनखजूरे आत्माओं में परिवर्तित होकर रात में लोगों को

नुकसान पहुँचा रहे हैं। यह यात्रा करने वाले व्यापारियों के लिए बहुत असुविधाजनक है। मेरी समझ में, केवल मुर्गियाँ ही कनखजूरों से निपट सकती हैं, इसलिए एक हज़ार बड़े मुर्गों को चुनकर पहाड़ की ढलान पर फैला देना चाहिए ताकि इन विषैले कीड़ों से छुटकारा मिल सके। पहाड़ का नाम बदला जा सकता है और राजकुमारी की देखभाल करने के लिए इन भिक्षुओं को धन्यवाद के रूप में भूमि अनुदान दिया जा सकता है।"
यह सुझाव राजा को अत्यंत प्रसन्न हुआ और उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। इसके बाद अधिकारियों को मुर्गे लाने के लिए शहर वापस भेजा गया, जबकि पर्वत का नाम बदलकर माउंट स्प्लेंडर रख दिया गया। लोक निर्माण विभाग को मठ के पुनर्निर्माण के लिए सामग्री उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया, और पर्वत का वर्णन करते हुए एक जागीरदारी विलेख लिखा गया।
"माउंट स्प्लेंडर, भिक्षादाता के फैले हुए स्वर्ण मठ को प्रदान किया गया," और उस प्राचीन भिक्षु को राष्ट्रीय परोपकारी धर्माध्यक्ष की उपाधि दी गई, जो उनके उत्तराधिकारियों को शाश्वत रूप से मिलती रहेगी, साथ ही छत्तीस बुशेल अनाज का वजीफा भी दिया गया। सभी भिक्षुओं ने राजा को उनकी दयालुता के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें राजधानी वापस जाते समय विदा किया। यहाँ राजकुमारी महल के भीतरी भाग में लौटीं और सभी महिलाओं ने बारी-बारी से उनका स्वागत किया। फिर राजकुमारी का उत्साह बढ़ाने और उनकी मुक्ति पर उन्हें बधाई देने के लिए एक भोज का आयोजन किया गया। रानी और उनकी बेटी का पुनर्मिलन हुआ; राजा और मंत्री एक साथ थे। हम उस रात के भोज का वर्णन नहीं करेंगे।
अगली सुबह राजा ने चित्रकारों को आदेश दिया कि वे चारों पवित्र भिक्षुओं के चेहरे बनाएँ और उन्हें चीन-बर्बर महल में रखें। राजकुमारी को भी अपने नए वस्त्रों में सिंहासन कक्ष से बाहर आने का निमंत्रण दिया गया ताकि वह तांग पुजारी और अन्य तीन भिक्षुओं को अपने कष्टों से मुक्ति दिलाने के लिए धन्यवाद दे सके। धन्यवाद देने के बाद तांग पुजारी पश्चिम की ओर अपनी यात्रा जारी रखने के लिए राजा से विदा लेने चले गए। राजा ने उन्हें जाने नहीं दिया, बल्कि भव्य भोज का आदेश दिया जिसमें उन्होंने पाँच-छह दिनों तक दावतें खाईं। मूर्ख भिक्षु को सचमुच खूब आनंद मिला और उसने पेट भरकर जितना हो सके उतना खाया। जब राजा ने देखा कि वे बुद्ध से मिलने के लिए कितने दृढ़ हैं, तो उन्हें एहसास हुआ कि चाहे वे कितनी भी कोशिश कर लें, वे उन्हें रोक नहीं पाएंगे। उन्होंने कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए दो सौ सोने-चांदी की

सिल्लियाँ और प्रत्येक के लिए गहनों से भरी एक थाली मंगवाई। गुरु और शिष्यों ने कुछ भी स्वीकार करने से इनकार कर दिया। फिर राजा ने राजसी रथ तैयार करने का आदेश दिया, स्वामी को उसमें बैठने के लिए आमंत्रित किया और अधिकारियों को उन्हें दूर तक ले जाने का निर्देश दिया। रानियाँ, रानियाँ, अधिकारी और आम लोग सभी कृतज्ञता में अंतहीन प्रणाम करते रहे। रास्ते में उनके सभी भिक्षु विदाई में उन्हें प्रणाम करने के लिए बाहर आए; उनमें से कोई भी यात्रियों से अलग होने का दुख सहन नहीं कर पा रहा था। यह देखकर कि उन्हें विदा करने वाले लोग वापस लौटने को तैयार नहीं थे, बंदर के पास अपने हाथों से एक मंत्र बनाने और वायु के त्रिग्राम, शुन की दिशा में एक जादुई साँस छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, जिससे एक काली हवा ने सभी अंगरक्षकों को उन्हें देखने से रोक दिया। तभी यात्री वहाँ से निकल पाए। यह वास्तव में एक अनोखी घटना थी।

कृतज्ञता की लहरों को बहाकर वे अंत में अपने मूल स्वभाव में लौट आए; अध्याय 95

1335

पश्चिम की यात्रा

सोने के सागर को छोड़कर उन्हें सच्चे खालीपन का एहसास हुआ।

यदि आपको आगे की यात्रा में क्या हुआ, यह नहीं पता है, तो अगले अध्याय में दी गई व्याख्या को सुनें।

अध्याय 96

स्क्वाइर कौ ने उच्च कोटि के भिक्षु का मनोरंजन किया

तांग पुरोहित धन और सम्मान की लालसा नहीं करते।
सभी प्रकार के पदार्थ वास्तव में पदार्थहीन होते हैं;
कोई भी खालीपन वास्तव में खाली नहीं होता।
शांति और शोर, वाणी और मौन, सब एक समान हैं:
सपने में बात करने की क्या ज़रूरत है?
उपयोगी में अनुपयोगिता भी समाहित होती है;
सफलता असफलता के भीतर ही छिपी होती है।
फल पकने पर अपने आप लाल हो जाता है;
यह मत पूछो कि बीज कैसे उगाया जाता है।

कथा में बताया गया है कि कैसे तांग पुरोहित और उनके शिष्यों ने अपनी जादुई

शक्तियों का प्रयोग करके स्प्रेड गोल्ड मठ के भिक्षुओं को रोका। जब काली हवा थम गई और भिक्षुओं ने देखा कि गुरु और उनके शिष्य गायब हो गए हैं, तो उन्होंने सोचा कि उनके आगंतुक पृथ्वी पर अवतरित जीवित बुद्ध ही होंगे, इसलिए उन्होंने प्रणाम किया और वापस चले गए। उनके बारे में हम और कुछ नहीं बताते। जैसे-जैसे गुरु और शिष्य पश्चिम की ओर यात्रा करते गए, वसंत ऋतु धीरे-धीरे ग्रीष्म ऋतु में परिवर्तित हो रही थी।

हवा साफ, हल्की और ताजगी भरी थी;
तालाब में सिंघाड़ा और कमल के फूल उग रहे थे।
बारिश के बाद बेर पक रहे थे;
हवा चलने के साथ ही गेहूं के दाने बनने लगे थे।
पेड़ों से गिरने वाले फूलों में सुगंध थी;
विलो के हल्के शाखाओं के बीच ओरिओल पक्षी थक गया।

अध्याय 96

1336

पश्चिम की यात्रा

नदी के ऊपर उड़ती अबाबील चिड़ियों ने अपने बच्चों को उड़ना सिखाया;
तीतर अपने चहचहाते चूजों को खाना खिला रहे थे।
सूर्य सप्तर्षि मंडल के दक्षिण में हमेशा दिखाई देता था;
समस्त सृष्टि प्रकाश से जगमगा उठी।

हम पूरी तरह से यह वर्णन नहीं कर सकते कि कैसे उन्होंने भोर में भोजन किया, शाम को आश्रय पाया, घाटियों को पार किया और पहाड़ियों पर चढ़े, और बिना किसी घटना के दो सप्ताह तक अपना रास्ता तय किया। फिर उनके सामने एक और शहर की दीवार दिखाई दी। जैसे ही वे उसके करीब पहुँचे, संज़ंग ने पूछा, "यह कैसी जगह है, शिष्य?"

"मुझे नहीं पता," बंदर भाई ने उत्तर दिया, "मुझे नहीं पता।"

"तुम पहले भी यहाँ आ चुके हो, तो तुम कैसे कह सकते हो कि तुम्हें पता नहीं है? मुझे लगता है कि तुम चालाकी कर रहे हो और हमें बेवकूफ बनाने के लिए जानबूझकर अनजान होने का नाटक कर रहे हो।"

"तुम बिलकुल बेतुकी बातें कर रहे हो, बेवकूफ," बंदर ने कहा। "हालांकि मैं कई बार

इस रास्ते से गुजरा हूँ, लेकिन हमेशा आसमान में ऊँचे बादलों के सहारे ही आया और गया हूँ। मैं कभी यहाँ उतरा नहीं। मुझे इस जगह में कोई दिलचस्पी नहीं थी, तो मैं इसे क्यों देखता? इसीलिए मुझे पता नहीं था। मैं चालाकी नहीं कर रहा हूँ, और न ही तुम्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा हूँ।"

बातचीत करते-करते वे शहर के करीब पहुँच गए, उन्हें पता भी नहीं चला। संजांग घोड़े से उतरा, पुल पार किया और सीधे फाटकों से अंदर चला गया। मुख्य सड़क पर चलते हुए उन्हें एक बरामदे के नीचे दो बूढ़े आदमी बैठे बातें करते दिखाई दिए।

संज़ंग ने कहा, "शिष्यों, सड़क के बीचोंबीच खड़े रहो, सिर झुकाए रखो और इधर-उधर मत भागो। मैं उस बरामदे के नीचे जाकर पूछूंगा कि हम कहाँ हैं।"

बंदर और बाकी सब वहीं खड़े रहे, जैसा उन्हें कहा गया था। आदरणीय बुजुर्ग उन दोनों आदमियों के पास गए, हाथ जोड़कर बोले, "प्रणाम, उपकारकों!" वे दोनों बुजुर्ग ऐन-ऐसे विषयों पर बातें कर रहे थे जैसे समृद्धि और पतन, सफलता और असफलता, ऋषि-मुनि और भले लोग, प्राचीन काल में उनके वीरतापूर्ण कार्य और वे लोग अब कहाँ हैं। उन्होंने कहा, सच में, ये बातें सुनकर आह निकल जाती है।

जब उन्होंने अचानक संजांग का अभिवादन सुना तो उन्होंने भी अभिवादन किया और पूछा, "हे पूज्यवर, आप हमसे क्या कहना चाहते हैं?"

"मैं भगवान बुद्ध की उपासना करने के लिए दूर-दूर से आया एक भिक्षु हूँ," संज़ंग ने उत्तर दिया, "मैं अभी-अभी यहाँ पहुँचा हूँ। मुझे आश्चर्य है कि इस जगह का नाम क्या है, और क्या यहाँ कोई धर्मनिष्ठ व्यक्ति है जिससे मैं भोजन माँग सकूँ।"

“यह ब्रेज़ेंटॉवर का प्रान्त है,” एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा, “और यह ब्रेज़ेंटॉवर शहर के पास स्थित डिलिंग काउंटी है। यदि आप शाकाहारी भोजन चाहते हैं, आदरणीय महोदय, तो आपको भीख मांगने की आवश्यकता नहीं होगी। इस मेहराब से आगे उत्तर-दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क पर जाइए। वहाँ पूर्व की ओर मुख किए हुए बैठे हुए बाघ के आकार का एक द्वार-मीनार है, और वह स्क्वाइर कौ का घर है। उसके सामने एक तख्ती लगी है जिस पर लिखा है 'सभी भिक्षुओं का स्वागत है'। आप जैसे दूर से आए भिक्षु को आपकी हर इच्छा पूरी की जाएगी। जाइए, और हमारी बातचीत में दखल देना बंद कीजिए।”

संजांग ने उन्हें धन्यवाद दिया, मंकी की ओर मुड़ा और कहा, "यह ब्रेज़ेंटॉवर प्रांत का डिलिंग काउंटी है।"

दोनों बूढ़े व्यक्तियों ने कहा कि इस मेहराब के आगे उत्तर-दक्षिण दिशा में जाने वाली सड़क पर एक द्वार-मीनार के आकार का एक ढाँचा है (अध्याय 96)।

1337

पश्चिम की यात्रा

स्क्वाइर कौ का घर एक बैठे हुए शेर की तरह है। उसके सामने एक बोर्ड लगा है जिस पर लिखा है 'सभी भिक्षुओं का स्वागत है'। उन्होंने मुझे वहां शाकाहारी भोजन के लिए जाने को कहा।

“पश्चिम बौद्धों की भूमि है,” फ्रायर सैंड ने कहा, “और वे सचमुच भिक्षुओं को भोजन कराते हैं। चूंकि यह केवल स्थानीय सरकार का मुख्यालय है, इसलिए हमें अपना पासपोर्ट दिखाने की आवश्यकता नहीं है। चलो, भीख मांगकर भोजन प्राप्त कर लेते हैं; यात्रा के दौरान यह और भी अच्छा रहेगा।” गुरु और उनके तीन शिष्य मुख्य सड़क पर धीरे-धीरे चलने लगे, जिससे बाजार में मौजूद सभी लोग घबरा गए और संदेह करने लगे, क्योंकि वे अजनबियों को देखने के लिए उत्सुकता से उनके चारों ओर जमा हो गए।

संज़ंग ने अपने शिष्यों को चुप रहने का आदेश देते हुए कहा, "संभलकर रहो! संभलकर रहो!" तीनों ने सिर झुकाए रखा और ऊपर देखने की हिम्मत नहीं की। फिर वे एक मोड़ पर मुड़े और सचमुच उत्तर-दक्षिण दिशा में जाती हुई एक मुख्य सड़क देखी।

जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, उन्हें एक द्वार-मीनार दिखाई दी जो बैठे हुए बाघ की तरह लग रही थी। द्वार के अंदर एक दीवार पर एक बड़ा सा चिन्ह लटका हुआ था जिस पर लिखा था, "सभी भिक्षुओं का स्वागत है।"

"पश्चिम सचमुच बुद्ध की भूमि है," संज़ंग ने कहा। "कोई भी, चाहे कितना भी चतुर या मूर्ख क्यों न हो, बेईमान नहीं होता। मैंने उन दो बूढ़े आदमियों की बातों पर विश्वास नहीं किया था। अब मुझे पता चल गया है कि यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा उन्होंने कहा था।" अपने असभ्य स्वभाव के कारण, पिग सीधे अंदर जाना चाहता था।

"बस एक पल रुको, बेवकूफ," बंदर ने कहा। "किसी के बाहर आने का इंतज़ार करो ताकि हम अंदर जाने से पहले पूछ सकें कि क्या करना है।"

“बड़े भाई सही कह रहे हैं,” फ्रायर सैंड ने कहा। “अगर हम उनकी निजता का सम्मान नहीं करेंगे तो हम दानदाता को नाराज़ कर सकते हैं।” उन्होंने घोड़े को आराम करने

दिया और सामान फाटक के बाहर रख दिया। थोड़ी देर बाद एक गुलाम लोहे का डंडा और टोकरी लिए बाहर आया, लेकिन अजनबियों को अचानक देखकर वह घबराकर टोकरी गिरा बैठा।

"गुरुजी," वह अंदर दौड़ते हुए बोला, "बाहर चार अजीब से दिखने वाले भिक्षु हैं।" उस समय वह सज्जन भीतरी प्रांगण में छड़ी लेकर टहल रहे थे और बुद्ध का नाम जप रहे थे। जब उन्होंने यह सूचना सुनी तो उन्होंने अपनी छड़ी छोड़ दी और उनका स्वागत करने के लिए बाहर चले गए। उनकी कुरूपता से उन्हें डर नहीं लगा।

"अंदर आइए, अंदर आइए," उन्होंने कहा। सान्ज़ांग ने पूरी विनम्रता दिखाते हुए उनके साथ अंदर चली गईं।

वह सज्जन उन्हें एक गलियारे से होते हुए एक घर में ले गए, जहाँ उन्होंने कहा, "ऊपरी इमारत में एक बुद्ध हॉल, एक सुर्रा पुस्तकालय और आप सज्जनों के लिए एक भोजन कक्ष है। निचली इमारत में आपके शिष्य का परिवार रहता है।" संज़ंग ने असीम प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने बुद्ध की पूजा करने के लिए अपना चोगा निकाला और पहना, फिर हॉल में देखने के लिए ऊपर गए। उन्होंने जो देखा वह था: अगरबत्ती के धुएँ के बादल,

चमकीली मोमबत्तियाँ।

गेंद फूलों की गद्दी से भरी हुई थी;

चारों ओर सोना और अनेक रंग थे।

लाल फ्रेम से

बैंगनी सोने की घंटी लटका दी;

वार्निश किए हुए स्टैंड पर

एक मैचिंग डेकोरेटेड ड्रम रखा गया था।

बैनरों के कई जोड़े

उन पर आठ रत्नों की कढ़ाई की गई थी;

एक हजार बुद्ध प्रतिमाएँ

वे सभी सोने से ढके हुए थे।

प्राचीन कांसे के धूपदान,
प्राचीन कांसे के फूलदान,
नक्काशीदार लाख की मेजें,
नक्काशीदार लाख के डिब्बे।
प्राचीन कांसे के धूपदानों में
हमेशा ईगलवुड की अगरबत्ती ही इस्तेमाल होती थी;
प्राचीन कांसे के फूलदानों में
वे कमल के फूलों के रंग थे।
नक्काशीदार लाख की मेजों पर
ताजे फल थे;
नक्काशीदार लाख के बक्सों में
सुगंधित पंखुड़ियों का ढेर लगा हुआ था।
कांच के कटोरे में
पानी एकदम शुद्ध और साफ था;
क्रिस्टल लैंप में
सुगंधित तेल चमक रहा था।
एक धातु की घंटी
इसकी गूंज लंबी और धीमी थी।
यह दुनिया से अछूता एक खजाने के घर जैसा था।
एक पारिवारिक बुद्ध समाधि जो किसी मठ को टक्कर देती है।
अध्याय 96
1339
पश्चिम की यात्रा
आदरणीय बुजुर्ग ने अपने हाथ धोए, एक चुटकी अगरबत्ती ली, प्रणाम किया और पूजा की, फिर सज्जन का अभिवादन करने के लिए वापस मुड़ गए।
श्री कौ ने उत्तर दिया, "एक पल रुकिए। चलिए सूत्र पुस्तकालय में एक-दूसरे का परिचय करा लेते हैं।" वहाँ उन्होंने जो देखा वह यह था:
एक चौकोर स्टैंड और सीधी अलमारियां,
जेड के बक्से और सोने के ताबूत।

चौकोर स्टैंड पर और सीधी अलमारियों में
असंख्य धर्मग्रंथ एकत्रित थे;
जेड के बक्सों और सोने के संदूकों में
वहां कई पांडुलिपियां संग्रहित थीं।
लाख से रंगी हुई मेजों पर
क्या वहाँ कागज, स्याही, ब्रश और स्याही के पत्थर थे?
अध्ययन कक्ष के सभी बेहतरीन खजाने।
सुगंधित स्क्रीन से पहले
क्या वहां सुलेख, चित्रकला, वीणा और शतरंज थे?
यह सब अत्यंत परिष्कृत हितों के लिए है।
सोने से ढकी हुई हल्की जेड की जादुई झंकार,
और हवा में और चांदनी रात में एक तांबे का तिपाई।
स्वच्छ हवा मन को तरोताजा कर देती है;
शुद्ध हृदय सचेत रहता है; मार्ग पर लगा मन शांत रहता है।

जब आदरणीय बुजुर्ग पुस्तकालय पहुँचकर उन्हें प्रणाम करने वाले थे, तभी श्री कौ ने उन्हें रोक लिया और कहा, "क्या आप अपना वस्त्र नहीं उतारेंगे?" तब संजांग ने अपना वस्त्र उतार दिया और श्री कौ को प्रणाम किया। फिर उन्होंने मंकी और बाकी दोनों को भी प्रणाम करने को कहा। घोड़े को चारा खिलाने और सामान को गलियारे में रखने का आदेश दिया गया। उस सज्जन ने उनके बारे में जानकारी मांगी।

"मुझे पूर्व में स्थित महान तांग सम्राट ने आपके शानदार देश में स्थित गिद्ध शिखर पर भगवान बुद्ध के दर्शन करने और सच्चे शास्त्रों की माँग करने के लिए भेजा है। मैं यहाँ भोजन का अनुरोध करने आया हूँ क्योंकि..." (अध्याय 96)

मैंने सुना है कि आपके प्रतिष्ठित परिवार में भिक्षुओं का आदर किया जाता है। इसके बाद हम अपने रास्ते पर निकलेंगे।

उस सज्जन का चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा और उन्होंने खिलखिलाते हुए उत्तर दिया, "मेरा नाम कौ होंग है, मेरा दूसरा नाम कौ डाकुआन है, और मैंने चौंसठ वर्ष व्यर्थ ही जी लिए हैं। चालीस वर्ष की आयु में मैंने दस हजार भिक्षुओं को भोजन कराने

का संकल्प लिया था, और आप इस संख्या को पूरा करेंगे। इन चौबीस वर्षों में, जब से मैं भिक्षुओं को भोजन करा रहा हूँ, मैंने उनके नाम दर्ज किए हैं। हाल के दिनों में मेरे पास करने के लिए कुछ और नहीं था, इसलिए मैंने उन सभी भिक्षुओं के नाम गिने जिन्हें मैंने भोजन कराया है, और अब संख्या 9,996 है। पूरी संख्या पूरी करने के लिए मुझे केवल चार भिक्षुओं की कमी थी। तो आज स्वर्ग ने आप चार गुरुओं को मेरे पास भेजा है ताकि दस हजार की संख्या पूरी हो सके। क्या आप कृपा करके मुझे अपने नाम बताएँगे? मुझे आशा है कि आप एक महीने या उससे अधिक समय तक मेरे साथ रहेंगे जब तक मैं इस संकल्प की पूर्ति का उत्सव नहीं मना लेता, जिसके बाद मैं आप गुरुओं को कुर्सी पर या घोड़ों पर बिठाकर पर्वत पर भेज दूँगा। गिद्ध शिखर यहाँ से केवल 250 मील दूर है, बिल्कुल भी दूर नहीं है।" यह सुनकर संजांग बेहद प्रसन्न हुआ और उसने तुरंत सहमति दे दी।

कई युवा और वृद्ध नौकर लकड़ियाँ ला रहे थे, पानी भर रहे थे और उनके लिए भोजन बनाने के लिए चावल, आटा और सब्जियाँ घर में ला रहे थे। यह सब देखकर सज्जन की पत्नी परेशान हो गईं और बोलीं, "ये भिक्षु कहाँ से आ गए हैं, और सब लोग इतने व्यस्त क्यों हैं?"

“चार प्रख्यात भिक्षु अभी-अभी आए हैं,” नौकरों ने उसे बताया, “जब गुरुजी ने उनसे पूछा कि वे कहाँ से आए हैं, तो उन्होंने बताया कि उन्हें पूर्व में स्थित महान तांग सम्राट ने गिद्ध शिखर पर भगवान बुद्ध की पूजा करने के लिए भेजा है। भगवान ही जाने यहाँ से कितनी दूरी है। गुरुजी ने कहा कि वे स्वर्ग से भेजे गए हैं और हमें उनके लिए जल्दी से शाकाहारी भोजन लाने को कहा।”

यह सुनकर बुढ़िया बहुत प्रसन्न हुई, इसलिए उसने एक नौकरानी को अपने कपड़े लाने को कहा ताकि वह भी उन्हें देखने जा सके। नौकरानी ने कहा, "महाराज, उनमें से केवल एक ही सुंदर है। बाकी तीन देखने लायक नहीं हैं। वे सचमुच बदसूरत हैं।"

"तुम लोग यह नहीं समझते," बूढ़ी औरत ने जवाब दिया, "कि अगर वे बदसूरत, अजीब और विचित्र दिखते हैं, तो वे ज़रूर स्वर्ग से आए हुए प्राणी होंगे। जल्दी करो और अपने स्वामी को तुरंत बताओ।"

नौकर दौड़कर सीधे सुर्रा हॉल में गया और वहाँ उसने उस सज्जन से कहा, "वृद्ध महिला यहाँ पूर्व से आए स्वामियों को प्रणाम करने आई हैं।" यह सुनकर संज़ंग अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ। उसके पूरे शब्द कहे जाने से पहले ही वृद्ध महिला हॉल के

सामने पहुँच चुकी थी, जहाँ उसने तांग पुजारी के राजसी चेहरे और भव्य आचरण को देखने के लिए अपनी आँखें उठाईं। जब उसने बंदर और अन्य दो लोगों के असाधारण रूप को देखा तो वह कुछ भयभीत हो गई, हालाँकि वह जानती थी कि वे स्वर्ग से आए हुए प्राणी हैं; वह घुटनों के बल गिर पड़ी और प्रणाम किया।

संजांग ने तुरंत शिष्टाचार का जवाब देते हुए कहा, "बोधिसत्व, आप मुझे जो सम्मान दे रहे हैं, वह अयोग्य है।" तब उस बूढ़ी औरत ने अपने पति से पूछा कि चारों आदरणीय सज्जन एक साथ क्यों नहीं बैठे हैं।

"हम तीनों शिष्य हैं," सूअर ने अपना थूथन आगे बढ़ाते हुए कहा। हे भगवान! उसकी आवाज़ पहाड़ों की गहराई में दहाड़ते बाघ जैसी थी। बूढ़ी औरत डर से कांप उठी।

जब वे बातें कर रहे थे, तभी एक और नौकर ने आकर घोषणा की, "दोनों युवा गुरु भी यहाँ हैं।" जब संज़ंग ने मुड़कर देखा, तो उन्होंने पाया कि वे दो युवा विद्वान थे, जिन्होंने सूत्र कक्ष में प्रवेश करने के बाद आदरणीय गुरु को प्रणाम किया। संज़ंग ने भी तुरंत उनका सम्मान किया। तभी श्री कौ ने आकर उन्हें पकड़ लिया और कहा, "ये मेरे दो पुत्र हैं। इनके नाम कौ लियांग और कौ डोंग हैं।"

वे अभी-अभी अपने स्कूल से लौटे हैं और उन्होंने अभी तक अपना दोपहर का भोजन नहीं किया है। वे यहां अपना सम्मान व्यक्त करने आए हैं क्योंकि उन्होंने सुना है कि आप शिक्षक ज़मीन पर आ गए हैं।

"कितने उत्तम पुत्र हैं," संज़ंग ने प्रसन्नता से कहा, "कितने उत्तम पुत्र हैं। सचमुच:

यदि आप एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते हैं तो आपको अच्छे कार्य करने होंगे:

आपके बेटों और पोतों की सफलता पढ़ाई पर निर्भर करती है।"

तब दोनों विद्वानों ने अपने पिता से पूछा, "ये स्वामी कहाँ से आए हैं?"

श्री कौ ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "बहुत दूर से। जांबू के दक्षिणी महाद्वीप के पूर्व में स्थित महान तांग सम्राट ने उन्हें भगवान बुद्ध की पूजा करने और शास्त्रों को लाने के लिए गिद्ध शिखर पर भेजा है।"

विद्वानों ने कहा, "हमने तथ्यों के विशाल भंडार में पढ़ा है कि दुनिया में चार महाद्वीप

हैं। हमारा यह महाद्वीप पश्चिमी महाद्वीप है, जो पशुओं के देन का महाद्वीप है। एक पूर्वी महाद्वीप भी है, जो श्रेष्ठ शरीर का महाद्वीप है। आपको यहाँ तक पहुँचने में कितने साल लगे?"

"मैं लंबे समय से इस यात्रा पर हूँ, कई क्रूर राक्षसों और दानवों से मिला हूँ और बहुत कष्ट झेला हूँ। मैं अपने तीनों शिष्यों का उनकी रक्षा के लिए बहुत ऋणी हूँ।"

आपके इस शानदार देश तक पहुँचने में मुझे कुल चौदह सर्दियाँ और गर्मियाँ लग गईं।

जब विद्वानों ने यह सुना तो उन्होंने असीम प्रशंसा के साथ कहा, "आप सचमुच पवित्र भिक्षु हैं, आप सचमुच हैं।"

उनकी बात पूरी होने से पहले ही एक नौकर उन्हें खाने के लिए बुलाने आया: "शाकाहारी भोज तैयार है, तो क्या आप भोजन करेंगे, महाराज?" तब उस सज्जन ने अपनी पत्नी और बेटों को घर वापस भेज दिया, जबकि वे चार भिक्षुओं के साथ भोजन कक्ष में भोजन करने चले गए। सब कुछ बहुत ही करीने से सजाया गया था। सोने की परत चढ़ी मेजें और काले रंग की कुर्सियाँ थीं। सामने कई रंगों के बढ़िया केक रखे थे जिन्हें कुशल रसोइयों ने आधुनिक शैली में बनाया था। दूसरी पंक्ति में पाँच प्रकार के ऐपेटाइज़र थे, तीसरी पंक्ति में फलों के पाँच व्यंजन थे और चौथी पंक्ति में पाँच बड़े आकार के स्नैक्स थे। सब कुछ स्वादिष्ट, देखने में सुंदर और सुगंध में लाजवाब था। सब्जी का सूप, चावल और उबले हुए ब्रेडरोल सभी मसालेदार, गरमागरम और बेहद स्वादिष्ट थे। पेट भरने के लिए पर्याप्त भोजन था। सात-आठ नौकर उनकी सेवा में इधर-उधर भाग रहे थे, जबकि चार-पाँच रसोइये लगातार व्यस्त थे। बस देखते रहिए, कुछ लोग सूप परोस रहे थे और कुछ चावल के कटोरे भर रहे थे, मानो टूटते तारे चाँद का पीछा कर रहे हों। पिग एक ही निवाले में कटोरे चट कर रहा था, मानो आंधी बादलों को उड़ा ले जा रही हो। इस तरह गुरु और शिष्यों ने तृप्ति से भोजन किया। फिर संजांग ने श्री कौ को भोजन के लिए धन्यवाद दिया और फिर चल दिए।

उस सज्जन ने उनका रास्ता रोकते हुए कहा, "गुरुजी, क्या आप कुछ दिन यहाँ रुककर आराम नहीं करेंगे? कहते हैं ना, यात्रा शुरू करना आसान है, पर उसे समाप्त करना कठिन। जब हम मेरी प्रतिज्ञा पूरी होने का जश्न मना लेंगे, तब मैं आपको विदा करूँगा।" उनकी ईमानदारी और दृढ़ निश्चय को देखकर, संज़ंग के पास रुकने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।

पांच से सात दिन जल्दी ही बीत गए, फिर श्री कौ ने प्रतिज्ञा पूर्ति का जश्न मनाने के लिए चौबीस स्थानीय बौद्ध भिक्षुओं को सामूहिक प्रार्थना करने के लिए बुलाया। भिक्षुओं ने तीन-चार दिन पाठ लिखने में बिताए और बौद्ध अनुष्ठान शुरू करने के लिए एक शुभ दिन चुना। उन्होंने यह अनुष्ठान महान तांग काल की तरह किया। वहाँ झंडों का भव्य प्रदर्शन हुआ।

अध्याय 96

1342

पश्चिम की यात्रा

जहां स्वर्णिम मुखमंडल को दर्शाया गया था;
मोमबत्तियों की कतारें
और भेंट के रूप में धूप जलाई गई।
ढोल और घंटे बजाए गए।
पाइप और शॉम बजाए गए।
बादल-झांझ,
शुद्ध स्वर वाली बांसुरी,
सुर में सुनाई दिया;
ढोल की थाप पर,
और वुडविंड के सुर,
सूत्रों के शब्द एक साथ पढ़े गए।
सबसे पहले स्थानीय देवता को शांत किया गया,
फिर आध्यात्मिक सेनापतियों को आमंत्रित किया गया।
दस्तावेज भेज दिए गए थे।
और उन्होंने बुद्ध प्रतिमाओं के सामने सिर झुकाया।
मयूर सूत्र का पाठ करते हुए,
जिसका प्रत्येक शब्द आपदाओं को दूर कर सकता है,
भैषज्यगुरु के लिए दीपों का एक स्टैंड जलाया गया।
चकाचौंध भरी चमक की लपटों से जगमगाना।
उन्होंने जल समारोह का आयोजन किया।
किसी भी प्रकार की शिकायत को समाप्त करने के लिए।

फिर उन्होंने अवतामसाका सूत्र का पाठ किया।
मानहानि को दूर करने के लिए।
अद्भुत कानून के तीनों वाहन बहुत ही उत्तम हैं:
अलग-अलग भिक्षु सब एक जैसे ही होते हैं।
अध्याय 96
1343
पश्चिम की यात्रा
प्रार्थना सभा तीन दिन और तीन रातों तक चली और फिर समाप्त हुई। थंडर मठ जाने की तीव्र इच्छा के कारण तांग पुरोहित अपने मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ थे, इसलिए उन्होंने उनसे विदा ली और धन्यवाद दिया।
श्री कौ ने कहा, "शिक्षक जी, आप अलविदा कहने के लिए बहुत उत्सुक हैं। मुझे लगता है कि आपको बुरा लगा होगा क्योंकि कई दिनों से हम अपनी सेवा में इतने व्यस्त थे कि हमने आपके साथ बहुत ही लापरवाही से व्यवहार किया।"
“हमने आपके कुलीन परिवार को बहुत कष्ट दिया है,” संज़ंग ने उत्तर दिया, “और मुझे नहीं पता कि हम आपका एहसान कैसे चुकाएँगे। भला हमसे कोई नाराज़गी कैसे हो सकती थी? लेकिन जब मेरे बुद्धिमान राजा ने मुझे इतने साल पहले दर्रों से विदा किया था, तो उन्होंने मुझसे पूछा था कि मैं कब लौटूँगा। मैंने उन्हें गलती से कह दिया था कि मैं तीन साल में लौट आऊँगा, मुझे यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि यात्रा इतनी लंबी खिंच जाएगी कि चौदह साल हो जाएँगे। मुझे यह भी नहीं पता कि मैं शास्त्रों को लाने में सफल हो पाऊँगा या नहीं, और मुझे वापस आने में बारह या तेरह साल और लग जाएँगे। मैं अपने राजा के ऋषि आदेश का उल्लंघन करने का दंड कैसे भुगतूँ? मैं आपसे विनती करता हूँ, महोदय, मुझे शास्त्र लाने और फिर लौटने की अनुमति दें। अगली बार जब मैं आपके महल में आऊँगा, तो मैं और अधिक समय तक ठहर सकूँगा।”
पिग के लिए यह असहनीय था। "गुरुजी, आपको हमारी कोई परवाह नहीं है," वह ज़ोर से चिल्लाया। "आप ज़रा भी हमदर्दी नहीं दिखा रहे हैं। वह बूढ़ा आदमी बहुत अमीर है, और उसने भिक्षुओं को भोजन कराने का अपना वादा पूरा कर दिया है। इसके अलावा, वह हमें यहाँ रखना चाहता है। अगर हम यहाँ एक साल या उससे ज़्यादा रुक जाएँ तो कोई नुकसान नहीं होगा। जाने की इतनी ज़िद क्यों? इतना अच्छा

खाना छोड़कर कहीं और भीख माँगने क्यों जा रहे हैं? क्या आगे आपके माता-पिता का घर है?"

"तुम्हें सिर्फ खाने की फ़िक्र है, बेवकूफ़!" संज़ंग गुस्से से चिल्लाया। "तुम्हें कारण और परिणाम के नियम की ज़रा भी परवाह नहीं है। सचमुच, तुम इतने जानवर हो कि पेट भरने के लिए नाद से भी खा लोगे। अगर तुम लोग इतने लालची और मूर्ख ही रहोगे तो मैं कल अकेले ही चला जाऊँगा।"

मालिक का रवैया बदलते देख बंदर ने सुअर को पकड़ लिया और उसके सिर पर घूंसा मारा। "तुम्हें अक्ल नहीं है, बेवकूफ," उसने गुस्से से कहा। "तुमने मालिक को हमसे भी नाराज़ कर दिया है।"

"उसे यही मिलना चाहिए था," फ्रायर सैंड ने मुस्कुराते हुए कहा, "उसे यही मिलना चाहिए था। वो चुप रहकर भी काफी घिनौना है, लेकिन उसे बीच में टोकना ही था।" भारी साँस लेते हुए, वह मूर्ख एक तरफ खड़ा हो गया, और कुछ भी बोलने की हिम्मत नहीं कर रहा था।

गुरु और शिष्य के गुस्से को देखकर श्री कौ ने मुस्कुराते हुए कहा, "गुरुजी, इतना जल्दी गुस्सा मत कीजिए। आज का दिन आराम से बिताइए। कल मैं यहाँ झंडे और ढोल भिजवाऊँगा और कुछ रिश्तेदारों और पड़ोसियों को आपको विदाई देने के लिए बुलाऊँगा।"

जब वे बातें कर रहे थे तभी बुढ़िया फिर बाहर आकर बोली, "आदरणीय गुरुदेव, चूंकि आप हमारे घर आए हैं, इसलिए ज्यादा ज़िद न करें। आप यहां कितने दिन बिता चुके हैं?"

"पखवाड़ा बीत चुका है," संजांग ने जवाब दिया।

"ये दो सप्ताह मेरे सज्जनों की उपलब्धि है," बूढ़ी औरत ने कहा। "मेरे पास थोड़े से पैसे हैं जिनसे मैं आप सज्जनों का अगले दो सप्ताह तक मनोरंजन करना चाहूंगी।"

उसके बोलने से पहले ही कौ डोंग और उसका भाई फिर बाहर आकर बोले, "हे चारों स्वामियों, हमारे पिता ने बीस से अधिक वर्षों तक भिक्षुओं को भोजन कराया है और इस दौरान उन्होंने आप जैसे उत्तम भिक्षु कभी नहीं देखे। अब जब आपकी कृपा से आप सब मिलकर संख्या पूरी कर चुके हैं, तो आपने हमारी झोपड़ी को सचमुच गौरवान्वित किया है। हम दोनों अभी कारण और परिणाम को समझने के लिए बहुत छोटे हैं, लेकिन हमने अक्सर यह कहावत सुनी है,

पति को उसके कर्मों का फल मिलता है।
पत्नी को वही मिलता है जिसकी वह हकदार होती है;
जब तक कोई योग्यता प्राप्त न हो, तब तक कुछ भी प्राप्त नहीं होता।
हमारे माता-पिता दोनों ही विनम्रतापूर्वक दान देना चाहते हैं ताकि उनमें से प्रत्येक को इसका फल मिले, तो आप इतनी ज़िद से मना क्यों कर रहे हैं? और चूंकि हम दोनों भाइयों ने अपनी स्कूल फीस में से कुछ पैसे बचा लिए हैं, इसलिए हमें उम्मीद है कि आप दोनों सज्जनों को विदा करने से पहले दो सप्ताह तक आपका खर्च उठाने की अनुमति मिल जाएगी।
“मैं तो आपकी माता जी की आदरणीय बोधिसत्व की भव्य मेहमाननवाज़ी भी स्वीकार नहीं कर सकता,” संज़ंग ने उत्तर दिया, “तो मैं आप भाइयों की उदारता कैसे स्वीकार कर सकता हूँ? यह संभव ही नहीं है। मुझे आज ही निकलना होगा। कृपया, कृपया नाराज़ न हों। अगर मैं अभी नहीं गया तो सम्राट द्वारा निर्धारित समय सीमा से अधिक समय तक रुकने के कारण मुझे मृत्युदंड से नहीं बचाया जा सकेगा।”
जब बूढ़ी औरत और उसके दोनों बेटों को यह एहसास हुआ कि संजांग रुकने के लिए दृढ़ संकल्पित है, तो उनका धैर्य टूटने लगा।
“हम आपको बड़े प्यार से रुकने का न्योता देते हैं,” उन्होंने कहा, “लेकिन आप जाने पर अड़े हुए हैं। अगर जाना ही है तो जाइए और ये बकवास बंद कीजिए।” फिर माँ और बेटे घर वापस चले गए। सुअर अब और चुप नहीं रह सका।
“गुरुजी,” उसने तांग पुजारी से कहा, “जल्दी मत कीजिए। कहावत है, ‘अगर रह सकते हो तो मत जाइए।’ आइए एक महीने और यहीं रुकें ताकि माता और पुत्रों की इच्छाएं पूरी हो सकें। इतनी जल्दी में क्या है?” तांग पुजारी ने फिर गुस्से में आवाज निकाली और चिल्लाया।
फिर उस मूर्ख ने अपने चेहरे पर दो बार थप्पड़ मारा और बोला, "छी, छी, छी। बीच में मत बोलो। तुमने फिर से बोल दिया।"
एक तरफ खड़े भाई बंदर और साधु रेत जोर-जोर से हंसने लगे। तांग पुजारी बंदर पर फिर से क्रोधित हो गए।

"तुम किस बात पर हंस रहे हो?" उसने पूछा और हाथ से जादू करते हुए पट्टी कसने का मंत्र पढ़ने के लिए तैयार हो गया।

यह देखकर बंदर इतना भयभीत हो गया कि वह तुरंत घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला, "मैं हँसा नहीं, स्वामी जी। आप कुछ भी कर लें, मंत्र का उच्चारण न करें! उच्चारण न करें!"

गुरु और शिष्यों के बीच बढ़ते झगड़े को देखकर श्री कौ ने उनके रुकने पर ज़ोर देना छोड़ दिया। उन्होंने कहा, "विद्वानों, झगड़ा मत करो, कल सुबह तुम्हें ज़रूर विदा करूंगा।" फिर वे सूत्र कक्ष से निकल गए और अपने सचिव को आदेश दिया कि वे अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों को लगभग सौ निमंत्रण पत्र लिखें ताकि वे कल सुबह तांग पुजारी को पश्चिम की ओर विदाई दे सकें। उन्होंने रसोइयों को विदाई भोज का आयोजन करने को कहा और अपने प्रबंधक को निर्देश दिया कि वे बीस जोड़ी रंगीन झंडे बनवाएं, संगीतकारों का एक बैंड किराए पर लें और दक्षिण के मठ से बौद्ध भिक्षुओं का एक समूह और पूर्वी शिखर मंदिर से ताओवादी पुजारियों का एक समूह बुलाएं। सुबह दस बजे तक सब कुछ तैयार और व्यवस्थित होना था।

सभी कर्मचारी अपने-अपने आदेशों का पालन करने चले गए। जल्द ही शाम हो गई और रात के खाने के बाद सभी लोग सोने चले गए। यही वह समय था जब

घर लौटते हुए कौवों के छोटे-छोटे झुंड सुनसान गांव से गुजरते हैं;

एक दूसरे के दूर स्थित टावरों से ढोल और घंटी की आवाज सुनी जा सकती है।

अध्याय 96

1345

पश्चिम की यात्रा

सड़कों और बाजारों में चहल-पहल थम सी गई है;

सभी घरों में दीपक मंद रोशनी से जगमगा रहे हैं।

हवा में लहराते फूल चांदनी में छाया बनाते हैं;

आकाशगंगा के बीच तारे खूब चमक रहे हैं।

जहां कोयल गाती है, वहां रात और भी गहरी प्रतीत होती है;

पृथ्वी भर में सभी प्राकृतिक ध्वनियाँ शांत हो गई हैं।

रात के तीसरे और चौथे पहर में, विभिन्न कार्यों के प्रभारी सभी घरेलू नौकर सुबह जल्दी उठकर अपने-अपने कामों में जुट गए। ज़रा देखिए। भोज की तैयारी कर रहे

रसोइये रसोई में व्यस्त थे। रंगीन झंडे खरीदने वाले लोग हॉल के सामने चहल-पहल कर रहे थे। बौद्ध और ताओवादी भिक्षुओं को बुलाने वाले लोग अपनी पूरी ताकत से इधर-उधर भाग रहे थे। संगीतकारों को बुलाने वाले लोग बड़ी हड़बड़ी में थे।
निमंत्रण देने वाले संदेशवाहक इधर-उधर दौड़ रहे थे, जबकि कुर्सियाँ और घोड़े तैयार करने वाले नौकर एक-दूसरे को पुकार रहे थे। वे सब आधी रात से लेकर सुबह तक शोर मचाते रहे, और लगभग दस बजे तक सब कुछ तैयार हो गया था। यह सब इसलिए संभव हुआ क्योंकि परिवार धनी था।
कहानी बताती है कि कैसे तांग पुरोहित और उनके शिष्य सुबह जल्दी उठ गए ताकि सेवकों की उस भीड़ द्वारा उनकी सेवा की जा सके। आदरणीय पुरोहित ने उनसे सामान पैक करने और घोड़े पर काठी कसने को कहा। जब उस मूर्ख ने सुना कि वे जाने वाले हैं, तो उसने मुँह बनाया, मुंह फुलाया और बड़बड़ाया, लेकिन उसे कपड़े और भिक्षापात्र पैक करने थे और फिर डंडा ढूंढने जाना था। साधु सैंड ने घोड़े को साफ किया, उस पर काठी कसी और लगाम कसी, और इंतज़ार करने लगा। भाई मंकी ने नौ छल्ले वाला मठ का डंडा अपने गुरु के हाथ में रख दिया और पासपोर्ट को अपनी छाती के सामने एक थैले में लटका दिया। अब वे सब जाने के लिए तैयार थे।
श्री कौ ने उन्हें पीछे के बड़े हॉल में आमंत्रित किया, जहाँ एक ऐसा भोज लगा हुआ था जो भोजनालय में खाए गए भोज से भी कहीं बेहतर था।
ऊपर से पर्दे लटके हुए थे;
चारों ओर स्क्रीन लगी हुई थीं।
बीच में एक तस्वीर थी:
दीर्घायु का पर्वत और आशीर्वादों का सागर।
दोनों दीवारों पर प्रदर्शित किया गया था।
वसंत, ग्रीष्म, शरद और शीत ऋतु के ग्रंथ।
ड्रैगन के पैटर्न वाले तिपाई से अगरबत्ती के धुएं के बादल निकल रहे थे;
मैगपाई की पूंछ वाले बर्नर के ऊपर से शुभ वाष्प उठ रही थी।
कटोरों में रंगों के गुच्छे थे,
बेहद खूबसूरत आकार के ताजे और चमकीले फूल।

पश्चिम की यात्रा
मेजों पर सोने का ढेर लगा हुआ था:
शेरों और अमर देवताओं के आकार की मिठाइयों की कतारें।
नृत्य से पहले संगीत और नृत्य में पूर्ण सामंजस्य था;
हॉल में रखे बर्तन रेशमी कपड़े की तरह सजे हुए थे।
स्वादिष्ट सूप और चावल, दोनों में मांस नहीं मिलाया गया है;
बेहतरीन चाय और सर्वोत्तम वाइन।
हालांकि वे केवल आम लोग थे
उनका घर किसी राजकुमार के रहने लायक शानदार था।
चारों ओर केवल खुशी की आवाजें ही सुनाई दे रही थीं।
इतनी तेज आवाज हुई कि आकाश भी चौंक गया और धरती कांप उठी।
आदरणीय बुजुर्ग श्री कौ से शिष्टाचार का आदान-प्रदान कर ही रहे थे कि एक सेवक ने आकर सूचना दी, "सभी अतिथि आ चुके हैं।" ये वही लोग थे जिन्हें आमंत्रित किया गया था—पड़ोसी, वैवाहिक संबंध और उनके कुछ धर्मनिष्ठ मित्र जो भिक्षुओं को भोजन कराते थे और बुद्ध का नाम जपते थे—और उन सभी ने आदरणीय बुजुर्ग को प्रणाम किया। अभिवादन के बाद सभी लोग बैठ गए। सभागार के बाहर वीणा और बांसुरी बज रही थी, जबकि सभागार के अंदर भोज में वीणा और गीतों की संगत हो रही थी। पिग इस भव्य भोज पर विशेष ध्यान दे रहा था।
"भाई," उसने फ्रायर सैंड से कहा, "आराम करो और जितना चाहो उतना खा लो। कू के घर से निकलने के बाद इससे स्वादिष्ट कुछ भी खाने को नहीं मिलेगा।"
"बकवास," फ्रायर सैंड ने हंसते हुए जवाब दिया। "जैसा कि कहावत है, आप चाहे कितना भी शानदार भोज क्यों न करें,
यह आपको केवल कुछ समय के लिए ही तृप्त रख सकता है।
आपकी बचत से सड़क का खर्च पूरा हो सकता है।
लेकिन बचत को कभी पेट में नहीं रखा जा सकता।
"तुम तो बिलकुल बेकार हो," सुअर ने कहा, "बिल्कुल बेकार। अगर मैं आज पेट भर खा लूँ तो अगले तीन दिन तक मुझे भूख नहीं लगेगी।"
"बेवकूफ," यह सुनकर बंदर बोला। "अपना पेट इतना मत भरो कि फट जाए। हमें अब चलना शुरू करना होगा।"

वे अभी भी बातें कर रहे थे, और लगभग दोपहर हो चुकी थी जब संज़ंग ने अपनी चॉपस्टिक उठाई और प्रार्थना की। पिग ने एक कटोरा पकड़ा, उसे तेज़ी से भरा, और एक के बाद एक पाँच-छह कटोरे खा लिए, एक बार में पूरा कटोरा गटक गया। बिना किसी झिझक के उसने अपनी दोनों आस्तीनों को उबली हुई रोटी, ट्विस्ट से भर लिया, अध्याय 96

1347

पश्चिम की यात्रा

अपने गुरु के साथ उठने से पहले संज़ंग ने पैनकेक और पके हुए व्यंजन खाए। संज़ंग ने उस सज्जन और बाकी सभी को धन्यवाद दिया, फिर वे सब एक साथ बाहर चले गए। बाहर लगे रंगीन बैनर, भव्य शामियाने, ढोल बजाने वाले और वाद्य यंत्र बजाने वाले तो देखिए। तभी बौद्ध और ताओवादी धर्मगुरुओं के दो समूह वहाँ पहुँचे।

श्री कौ ने कहा, "सज्जनों, आप देर से आए हैं। हमारे गुरुजी को जल्दी जाना है, इसलिए मैं आपको भोजन नहीं करा पाऊंगा। लौटने पर मैं आपका आभार व्यक्त करूंगा।" तब सभी ने उनके लिए रास्ता खोल दिया, कुर्सियाँ लिए हुए लोग, घोड़ों पर सवार और पैदल चलने वाले सभी ने संज़ंग और उनके तीन शिष्यों को पहले जाने दिया। आकाश ढोल और संगीत से गूंज उठा, झंडे और बैनरों ने सूर्य को ढक लिया, भीड़ उमड़ पड़ी, और गाड़ियाँ और घोड़े सब एक-दूसरे से सटकर खड़े थे, क्योंकि सभी श्री कौ को तांग पुजारी को विदा करते देखने आए थे। चारों ओर की भव्यता मोतियों या जेड से भी अधिक शानदार थी, और वसंत ऋतु को छुपाने वाले रेशमी पर्दों से कम सुंदर नहीं थी।

बौद्ध भिक्षु बौद्ध धुनें बजाते हुए और ताओवादी पुजारी ताओवादी संगीत प्रस्तुत करते हुए यात्रियों को प्रांत से विदा करने गए। जब वे तीन मील लंबे मंडप पर पहुँचे, तो भोजन की टोकरियाँ और पेय के घड़े रखे गए, प्याले उठाए गए और सभी ने विदाई के लिए टोस्ट किया।

श्री कौ, उन्हें जाने देने के लिए अनिच्छुक थे, और आँसू रोकते हुए बोले, "गुरुजी, मेरी इच्छा पूरी करने के लिए आपको शास्त्रों के साथ वापस जाते समय हमारे साथ कुछ और दिन बिताने होंगे।" कृतज्ञता से अभिभूत होकर, संजांग ने उन्हें बहुत धन्यवाद दिया।

“अगर मैं गिद्ध शिखर पहुँच जाऊँ और भगवान बुद्ध के दर्शन करूँ, तो सबसे पहले मैं

आपके महान गुणों की प्रशंसा करूँगा। वापसी में हम निश्चित रूप से आपको प्रणाम करेंगे।" बात करते-करते वे एक मील से ज़्यादा का सफ़र तय कर चुके थे और उन्हें इसका एहसास भी नहीं हुआ। तभी आदरणीय बुजुर्ग ने विदा लेने की ज़िद की, जिस पर श्री कौ रोते हुए वापस मुड़ गए। सचमुच:
जिस व्यक्ति ने पुरोहितों को भोजन कराने की प्रतिज्ञा की थी, उसे ज्ञान प्राप्त हुआ:
उन्हें तथागत बुद्ध के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं था।
हम यह नहीं बताएंगे कि श्री कौ यात्रियों को तीन मील के मंडप तक विदा करने के बाद सबके साथ घर कैसे गए, बल्कि यह बताएंगे कि गुरु और उनके तीन शिष्य लगभग बारह या पंद्रह मील तक आगे कैसे गए।
अब अंधेरा होने लगा था।
"काफी रात हो गई है," संजांग ने कहा। "हम रात कहाँ बिताएँगे?"
पोल उठाए हुए सुअर ने मुँह बनाते हुए कहा, "अगर हमें जाना है तो तुम्हें तैयार खाना छोड़ना पड़ेगा और अच्छे ठंडे ईंट के घर में रहने से मना करना पड़ेगा। ये तो मुसीबत को न्योता देना है। अब बहुत रात हो चुकी है। अगर बारिश शुरू हो गई तो हम क्या करेंगे?"
"दुष्ट, उद्दंड जानवर," संज़ंग ने शाप देते हुए कहा, "फिर से शिकायत कर रहा है। जैसा कि कहावत है, राजधानी देखने में बहुत सुंदर हो सकती है,"
लेकिन हम यहां बहुत देर तक नहीं रुक सकते।
अध्याय 96
1348
पश्चिम की यात्रा
अगर हमारी किस्मत में भगवान बुद्ध से मिलना, सच्चे शास्त्र लाना, महान तांग लौटकर सम्राट को सूचना देना लिखा है, तो मैं तुम्हें सालों तक शाही रसोई में खाना खिलाऊँगा। फिर, हे दुष्ट जानवर, तुम फूलकर फट जाओगे। तब तुम्हें सबक मिलेगा ऐसे लालची शैतान बनने का।" वह मूर्ख मन ही मन धीरे से हँसा, लेकिन एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं कर पाया।
जब बंदर भाई ने चारों ओर देखने के लिए अपनी आँखें उठाईं तो उसने सड़क के किनारे कुछ इमारतें देखीं और अपने स्वामी से जल्दी से पूछा, "क्या हम यहाँ रात बिता सकते हैं? क्या हम बिता सकते हैं?" संज़ांग उस जगह पर गया, जहाँ उसने एक

खंडहर हो चुका स्मारक मेहराब देखा जिस पर कुछ लिखा हुआ था।

THE VIHARA OF PADMAPRABHA

“बोधिसत्व पद्मप्रभा बुद्ध सिखिन के शिष्य थे,” संज़ंग ने घोड़े से उतरते हुए कहा। “जहर अग्नि के दानव राजा का वध करने के कारण उन्हें पद से हटा दिया गया और पंच स्वरूपों के आध्यात्मिक अधिकारी बना दिया गया। यहाँ अवश्य ही कोई मंदिर होगा।” फिर वे सब एक साथ अंदर गए। गलियारा पूरी तरह ढह चुका था, दीवारें गिर चुकी थीं, और आसपास किसी का कोई निशान नहीं था, बस जंगली वनस्पति ही वनस्पति थी। वे बाहर निकलना चाहते थे, लेकिन आकाश काले बादलों से भर गया था और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई थी। उनके पास खंडहरों में ऐसी जगह ढूंढने के अलावा कोई चारा नहीं था जहाँ वे तूफान से बच सकें। वे पूरी तरह चुप रहे, किसी दुष्ट दानव के सुनने के डर से ज़ोर से बोलने की हिम्मत नहीं कर रहे थे। इस प्रकार उन्होंने वहाँ बैठे-बैठे या खड़े-खड़े एक रात बिना सोए बिताई। हे भगवान! यह कितना सच है कि विजय के चरम पर ही विपत्ति आती है;

सुख के समय में ही दुख का साया आता है।

अगर आपको नहीं पता कि जब उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी तो क्या हुआ, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 97

भिक्षुओं और उनके समर्थकों पर राक्षसी हमला हुआ

ऋषि ने आदिम सत्ता को बचाने के लिए आत्मा को पुनः प्रकट किया।

हम यहाँ यह नहीं बताएँगे कि तांग पुरोहित और अन्य लोगों ने पद्मप्रभा के जर्जर महल में किस प्रकार एक कठिन रात बिताई, बल्कि हम दिलिंग काउंटी के ब्राज़ेंटॉवर प्रांत में रहने वाले दुष्टों के एक गिरोह के बारे में बताएँगे जिन्होंने वेश्यावृत्ति, शराबखोरी और जुए में अपनी सारी पारिवारिक संपत्ति लुटा दी थी। उनके पास गुज़ारा करने के लिए कुछ भी नहीं बचा था, इसलिए उन्होंने एक दर्जन से अधिक सदस्यों का एक आपराधिक गिरोह बना लिया था और वे आपस में चर्चा कर रहे थे कि शहर में सबसे अमीर परिवार कौन सा है और दूसरा सबसे अमीर कौन सा है। उनका इरादा था कि वे उनका सोना-चांदी लूट लें और इस तरह कुछ पैसे जुटा लें।

उनमें से एक ने कहा, "इधर-उधर पूछताछ करने या विस्तार से योजना बनाने की कोई ज़रूरत नहीं है। आज तांग भिक्षु को विदा करने वाले श्री कौ के पास बहुत पैसा है। चलो आज रात बारिश में ही काम शुरू कर देते हैं। सड़कों पर कोई हमारा इंतज़ार नहीं कर रहा होगा और पुलिस भी गश्त नहीं कर रही होगी। जब हम उसका सामान चुरा लेंगे, तो हम लड़कियों के साथ जा सकेंगे, जुआ खेल सकेंगे और फिर से मौज-मस्ती कर सकेंगे। कितना बढ़िया होगा, है ना?"

अन्य सभी लुटेरे इस सुझाव से बहुत खुश हुए और एकमत होकर बारिश में खंजर, नुकीले डंडे, लाठी, रस्सियाँ और मशालें लेकर निकल पड़े। कौ के घर का मुख्य द्वार खोलकर वे अंदर घुस गए, चिल्लाते हुए और अंदर मौजूद सभी लोगों को, जवान और बूढ़े, पुरुष और स्त्री, छिपने के लिए मजबूर कर दिया। बूढ़ी औरत पलंग के नीचे छिप गई और बूढ़ा आदमी द्वार के पीछे चला गया, जबकि कौ लियांग, कौ डोंग और उनके परिवार अपनी जान बचाने के लिए चारों दिशाओं में भाग गए। हाथों में चाकू और मशालें जलाकर, डाकुओं ने घर के सभी संदूक खोल दिए और जितना सोना, चांदी, गहने, बालों के आभूषण, कपड़े, बर्तन और अन्य घरेलू सामान चाहते थे, उतना लूट लिया। श्री कौ यह सब खोना सहन नहीं कर सके, इसलिए अपनी जान जोखिम में डालकर वे द्वार के पीछे से बाहर आकर लुटेरों से विनती करने लगे।

“जितना चाहो ले लो, महान राजाओं,” उसने कहा, “परन्तु मुझे दफ़नाने के लिए कुछ कपड़े छोड़ देना।” लुटेरे बहस करने के मूड में नहीं थे। वे उस पर झपटे, उसे ठोकर मारी और लात मारकर ज़मीन पर गिरा दिया। अफसोस, उसकी तीनों आत्माएं पाताल लोक में विलीन हो गईं;

उनकी सात आत्माओं ने मनुष्यलोक को त्याग दिया।

सफल लुटेरे कौ परिवार के घर से निकले, शहर की दीवार के नीचे से एक रस्सी की सीढ़ी लगाई, बारी-बारी से उस पर चढ़कर बारिश में पश्चिम की ओर भाग गए। जब कौ परिवार के नौकरों ने देखा कि लुटेरे जा चुके हैं, तभी उन्होंने हिम्मत करके अपना सिर बाहर निकाला। जब उन्होंने बूढ़े श्री कौ को ढूंढा और उन्हें फर्श पर मृत पाया, तो वे जोर-जोर से रोने लगे। "हे भगवान! मालिक की हत्या कर दी गई!" वे सब रोते हुए बोले, शव को गले लगाया और दुख से सिसकते रहे।

लगभग चौथा पहर बीतने ही वाला था कि तांग पुजारी और उनके अनुयायियों द्वारा

उनके आतिथ्य को ठुकराए जाने से नाराज़ श्रीमती कौ, और साथ ही उनके विदाई समारोह की फिजूलखर्ची से इस विपत्ति के कारण दुखी होकर, उन चारों को बर्बाद करने का फैसला कर लिया। कौ लियांग को सहारा देते हुए उन्होंने कहा, "रो मत, मेरे बेटे। तुम्हारे पिता दिन-रात भिक्षुओं को भोजन कराते थे। किसने सोचा होगा कि वे भिक्षुओं के एक ऐसे गिरोह को भोजन कराकर अपनी इस गिनती को पूरा करेंगे जो उनकी हत्या कर देंगे?"

“माँ,” भाइयों ने पूछा, “उन भिक्षुओं ने उसकी हत्या कैसे की?”

"वे डाकू इतने दुस्साहसी और क्रूर थे कि जब उन्होंने हमला किया तो मैं बिस्तर के नीचे छिप गई," उसने जवाब दिया।

"हालाँकि मैं काँप रहा था, फिर भी मैंने मशालों की रोशनी में उन्हें ध्यान से देखा। क्या तुम जानते हो कि वे कौन थे? तांग पुरोहित मशालें जला रहा था, सुअर चाकू पकड़े हुए था, साधु सैंड सोना-चाँदी ले रहा था, और बंदर ने तुम्हारे पिता को मार डाला।" दोनों बेटों ने यह सब सच मान लिया।

“माँ, अगर आपने सब कुछ साफ़-साफ़ देखा है, तो आप सही ही होंगी,” उन्होंने कहा। “वे हमारे घर में दो सप्ताह तक रहे, इसलिए उन्हें सभी दरवाज़े, दीवारें, खिड़कियाँ और रास्ते पता थे। वे हमारी दौलत के लालच में आकर बारिश और अंधेरे का फ़ायदा उठाकर यहाँ वापस आ गए होंगे। कितनी बुरी बात है! उन्होंने हमारी संपत्ति चुरा ली और हमारे पिता की हत्या कर दी। उजाला होते ही हम स्थानीय पुलिस स्टेशन जाकर उनके खिलाफ़ शिकायत दर्ज कराएँगे।”

"हमें किस तरह का वांछित नोटिस लिखना चाहिए?" कौ डोंग ने पूछा।

अध्याय 97

1350

पश्चिम की यात्रा

"हम वही लिखेंगे जो हमारी माँ ने कहा था," कौ लियांग ने उत्तर दिया, और उसने लिखा: तांग पुजारी ने मशालें जलाईं, पिग ने हत्या के लिए उकसाया, साधु सैंड ने सोना और चांदी चुराया और नौसिखिए सन ने हमारे पिता की हत्या कर दी।

पूरे घर में इतना शोरगुल था कि देखते ही देखते दिन निकल आया। रिश्तेदारों को निमंत्रण भेजे जा रहे थे और ताबूत का ऑर्डर दिया जा रहा था, तभी कौ लियांग और उसका भाई शिकायत दर्ज कराने के लिए स्थानीय सरकारी दफ्तर गए। अब ब्रेज़ेंटॉवर

का प्रीफेक्ट: हमेशा ईमानदार रहा था,
स्वभाव से अच्छा था।
बचपन में वह बर्फ की रोशनी में पढ़ाई करता था;
जब वह छोटा था तब उसने राजमहल की परीक्षाएं दी थीं।
उनका दिल हमेशा वफादारी और न्याय के प्रति समर्पित था।
और दयालुता और परोपकार के विचारों से परिपूर्ण।
उनका नाम हजार वर्षों तक इतिहास में दर्ज रहेगा।
जैसे कोई गोंग सुई या हुआंग बा फिर से जीवित हो गया हो;
उनकी प्रसिद्धि दस हजार युगों तक राजकक्षों में गूंजती रहेगी, मानो झूओ माओ और लू गोंग का पुनर्जन्म हुआ हो।
जब वे हॉल में अपनी सीट पर बैठ गए और यह घोषणा कर दी कि सभी मामलों का निपटारा हो चुका है, तो उन्होंने शिकायत मांगने वाले पोस्टर को बाहर ले जाने का आदेश दिया। तब कौ लियांग और उनके भाई पोस्टर लेकर अंदर आए, घुटने टेककर जोर से बोले, "माननीय महोदय, हम कुछ डाकुओं को चोर और हत्यारा बताकर उनकी शिकायत करने आए हैं।" प्रिफेक्ट ने उनकी शिकायत स्वीकार कर ली और उसे पढ़कर सुनाया।
"मुझे कल बताया गया था कि आपके परिवार ने भिक्षुओं को भोजन कराने का अपना व्रत पूरा किया," प्रीफेक्ट ने कहा, "पूर्व में तांग राजवंश के चार प्रतिष्ठित अर्हतों को भोजन कराकर। आपने ढोल और संगीत के साथ उन्हें विदाई देकर भव्य प्रदर्शन किया। तो फिर ऐसा कैसे संभव हो सकता है?"
"महामहिम," कौ लियांग ने प्रणाम करते हुए कहा, "हमारे पिता कौ होंग चौबीस वर्षों से भिक्षुओं को भोजन कराते आ रहे थे। दूर से आए ये चार भिक्षु संयोगवश दस हजार भिक्षुओं की संख्या पूरी कर रहे थे, इसीलिए उन्होंने इस कार्य की पूर्ति के उपलक्ष्य में एक समारोह आयोजित किया और उन्हें दो सप्ताह तक वहीं रखा। वे सभी गलियारों, दरवाजों और खिड़कियों से भली-भांति परिचित हो गए। उन्हें दिन में विदा किया गया और वे कल शाम को वापस आ गए।"
अंधेरी और तूफानी रात में वे मशालें और हथियार लेकर हमारे सोने को चुराने के लिए घर में घुस आए। अध्याय 97

चांदी, गहने, कपड़े और बालों के आभूषण। उन्होंने हमारे पिता को पीट-पीटकर मार डाला और उन्हें जमीन पर पड़ा छोड़ दिया। हम आपसे हमारी रक्षा करने की विनती करते हैं।" यह सुनकर प्रिफेक्ट ने पैदल सेना, घुड़सवार सेना और सक्षम नागरिक सैनिकों को इकट्ठा किया, कुल मिलाकर 150 लोग, जो तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों का पीछा करने के लिए तेज हथियारों से लैस होकर सीधे पश्चिमी द्वार से बाहर निकल आए।

अब कहानी बताती है कि गुरु और शिष्य पद्मप्रभा के छोटे महल के खंडहरों में भोर तक रुके रहे, फिर वे बाहर निकले और पश्चिम की ओर तेज़ी से बढ़ने लगे। डाकू, जो कौ परिवार को लूटकर शहर छोड़कर रात भर मुख्य सड़क से पश्चिम की ओर भागते रहे थे, पद्मप्रभा के महल को पार कर गए थे और पश्चिम में लगभग छह-सात मील दूर पहाड़ों में छिप गए थे। वहाँ वे सोने-चांदी को आपस में बाँट ही रहे थे कि तांग पुजारी और उनके तीन अनुयायी भी पश्चिम की ओर सड़क पर आते हुए दिखाई दिए।

जिन डाकुओं का लालच अभी शांत नहीं हुआ था, उन्होंने तांग पुजारी की ओर इशारा करते हुए कहा, "देखो! क्या ये वही भिक्षु नहीं हैं जिन्हें कल विदा किया गया था?"

"और आपका आगमन भी बहुत स्वागत योग्य है," अन्य डाकुओं ने हंसते हुए कहा, "चलो अपना कुछ और गंदा धंधा करते हैं।"

सड़क से आ रहे वे भिक्षु कौ के घर में काफी देर तक रुके। पता नहीं उनके पास कितना सामान होगा। चलो उन्हें रोककर उनका यात्रा भत्ता और सफेद घोड़ा छीन लेते हैं और सब आपस में बाँट लेते हैं। इससे हमें बहुत फायदा होगा।” फिर लुटेरे अपने हथियार लहराते हुए और युद्धघोष करते हुए सड़क की ओर दौड़ पड़े और एक पंक्ति बना ली।

“वहीं ठहरो, भिक्षुओं,” वे चिल्लाए। “कुछ चंदा दे दो, हम तुम्हारी जान बख्श देंगे। अगर तुम्हारे मुंह से ज़रा सा भी ‘ना’ निकला, तो तुम सबको बेरहमी से मार डाला जाएगा।” तांग पुरोहित अपने घोड़े पर बैठे-बैठे भय से कांप रहे थे।

"अब हम क्या करें?" सुअर और साधु सैंड ने घबराकर भाई बंदर से पूछा। "अब हम क्या करें? बारिश में हमारी रात बहुत खराब गुज़री, और आज सुबह फिर से निकलने के बाद हमें डाकुओं ने लूट लिया। यह बात कितनी सच है कि मुसीबतें कभी अकेली नहीं आतीं।"

"घबराइए मत, स्वामी जी," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "और भाइयों, चिंता करना बंद करो। मैं जाकर उनसे कुछ सवाल पूछता हूँ, तब तक रुकिए।"
महान संत ने बाघ की खाल से बनी अपनी स्कर्ट पहनी, सूती और कड़क वस्त्रों से बने अपने वस्त्रों को सीधा किया, उनके पास गए, अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ा और पूछा, "आप लोग क्या कर रहे हैं?"
"तुम्हें अपनी जान की परवाह नहीं, सूअर!" लुटेरों ने चिल्लाते हुए जवाब दिया। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई हमसे सवाल करने की! क्या तुम्हारी आंखों में आंखें नहीं हैं? क्या तुम्हें पता नहीं कि हम कितने बड़े राजा हैं? अपना टोल तुरंत हमें दे दो, हम तुम्हें जाने देंगे।"
यह सुनकर बंदर के चेहरे पर मुस्कान आ गई और उसने जवाब दिया, "तो तुम लोग सड़क पर लोगों को लूटने वाले डाकू हो।"
"उसे मार डालो!" डाकुओं ने क्रोध से चिल्लाते हुए कहा।
“महाराज,” बंदर ने बनावटी भय का भाव दिखाते हुए कहा, “महाराज, मैं तो बस गाँव का एक भिक्षु हूँ। मुझे सही बातें बोलना नहीं आता। अगर मैंने आपको ठेस पहुँचाई हो तो कृपया नाराज़ न हों, प्लीज़ नहीं। अगर आपको टोल का पैसा चाहिए तो बस मुझसे पूछ लीजिए: बाकी तीनों से पूछने की ज़रूरत नहीं है। मैं हिसाब-किताब रखने वाला हूँ। सूत्रों का पाठ करने और भिक्षा के रूप में जो भी पैसा मिलता है, जो भी हम माँगते हैं और जो भी हमें मिलता है, सब गठ्ठों में जमा होता है, और मैं उसे खर्च करने का ज़िम्मेदार हूँ। घोड़े पर सवार व्यक्ति मेरा गुरु है। वह बस सूत्रों का पाठ कर सकता है। उसे अध्याय 97 से कोई लेना-देना नहीं है।”

और कुछ नहीं। वह धन-दौलत और कामुकता के बारे में सब कुछ भूल चुका है, और उसके पास कुछ भी नहीं है। काले चेहरे वाला एक जूनियर है जिसे मैंने यात्रा के दौरान अपने साथ लिया था। वह बस घोड़े की देखभाल कर सकता है। और लंबी थूथन वाला एक मजदूर है जिसे मैंने काम पर रखा था। वह सिर्फ डंडा ढोने के लायक है। इन तीनों को जाने दो, मैं यात्रा का पैसा, वस्त्र और भीख मांगने के कटोरे ले आता हूँ। मैं तुम्हें जो चाहो दे दूँगा।
“तुम तो सीधे-सादे साधु लगते हो,” लुटेरों ने कहा, “इसलिए हम तुम्हारी जान बख्श

देंगे। बाकी तीनों को कह दो कि वे अपना सामान वहीं छोड़ दें, हम उन्हें जाने देंगे।”
बंदर ने पीछे मुड़कर उन्हें देखा। साधु सैंड ने सामान से लदी डंडी नीचे रख दी और स्वामी के घोड़े को लेकर पश्चिम की ओर चल दिए। बंदर ने झुककर गठ्ठा खोला, ज़मीन से एक चुटकी धूल उठाई और मंत्र पढ़ते हुए उसे गठ्ठे पर छिड़क दिया।
यह शरीर को स्थिर करने वाला जादू था, इसलिए जैसे ही उसने "रुको!" चिल्लाया, तीस से अधिक डाकू सब स्थिर खड़े हो गए, दांत पीसते हुए, घूरते हुए, हाथ फैलाए। उनमें से कोई भी बोल या हिल नहीं सकता था।
"वापस आ जाओ, स्वामी," बंदर चिल्लाया, "वापस आ जाओ!"
"ये तो बहुत बुरा हुआ," सुअर घबराकर बोला, "ये तो बहुत बुरा हुआ। बड़े भाई ने हमारी शिकायत कर दी है। उसके पास कोई पैसा नहीं है, और गठरी में सोना-चांदी भी नहीं है। वो मालिक को वापस फोन करके अपना घोड़ा वापस देने के लिए कह रहा होगा। वो हमारे कपड़े छीन लेगा।"
“ऐसी बकवास मत करो, भाई,” साधु सैंड ने हंसते हुए कहा। “बड़े भाई को पता है वो क्या कर रहे हैं। वो अब तक खूंखार राक्षसों और शैतानों को हराते आए हैं, तो हमें कुछ मामूली चोरों से क्या डरना चाहिए? वो हमें इसलिए बुला रहे होंगे क्योंकि उन्हें हमसे कुछ कहना है। चलो सीधे वहीं चलते हैं और पता लगाते हैं।”
यह सुनकर आदरणीय बुजुर्ग प्रसन्न होकर अपना घोड़ा मोड़कर वापस चले गए। उन्होंने पुकारा, "वुकोंग!"
आपने हमें दोबारा क्यों बुलाया?
"सुनो ये लुटेरे खुद क्या कहना चाहते हैं," ब्रदर मंकी ने कहा।
सुअर उनके पास गया, उन्हें धक्का दिया और पूछा, "डाकुओं, हिलते क्यों नहीं?" डाकू पूरी तरह बेहोश पड़े रहे और कुछ नहीं बोले।
"वे मोटे दिमाग के हैं, और मूर्ख भी हैं," पिग ने कहा।
"मैंने उन्हें जादू से ठीक कर दिया," बंदर ने हंसते हुए कहा।
"अगर तुमने इन्हें ठीक भी कर दिया," सुअर ने कहा, "तो तुमने इनके मुंह तो ठीक नहीं किए, तो फिर ये आवाज क्यों नहीं निकाल रहे हैं?"
“मालिक, कृपया घोड़े से उतरकर बैठ जाइए,” बंदर भाई ने कहा। “कहावत है, ‘लोग गलती से ही गिरफ्तार होते हैं; गलती से रिहा नहीं होते।’ भाई, सभी लुटेरों को गिरा दो और उन्हें बांध दो। फिर हम उनसे बयान दिलवाएंगे। पता लगाएंगे कि वे नौसिखिए

हैं या पुराने खिलाड़ी।”
“मेरे पास रस्सी नहीं है,” साधु सैंड ने कहा। तभी बंदर ने अपने कुछ बाल निकाले, उन पर जादुई साँस फूँकी और उन्हें तीस लंबी रस्सियों में बदल दिया। फिर बंदर ने उन सभी को एक साथ बांध दिया, लुटेरों को गिरा दिया और उनके हाथ-पैर बाँध दिए। इसके बाद बंदर ने वे शब्द कहे जिनसे जादू टूट गया और लुटेरे धीरे-धीरे होश में आ गए।
बंदर ने तांग पुजारी को सम्मान की सीट पर बैठने के लिए आमंत्रित किया, जबकि वह और अन्य दो अपने हथियार पकड़े हुए चिल्ला रहे थे, "बालों वाले डाकुओं! तुम कुल कितने हो, और कितने वर्षों से इस धंधे में हो? तुमने कितनी चीजें चुराई हैं? क्या तुमने किसी की हत्या की है? क्या यह तुम्हारा पहला अपराध है?"
अध्याय 97
1353
पश्चिम की यात्रा
या आपका दूसरा? या आपका तीसरा?
"हमारी जान बख्श दीजिए, महाराज," लुटेरों ने विनती की।
"चिल्लाना बंद करो," बंदर ने कहा, "और सच बताओ।"
उन्होंने कहा, "हम शातिर लुटेरे नहीं हैं, महाराज।" हम सब अच्छे परिवारों से हैं। हमारी बुरी आदतों के कारण हमने विरासत में मिली सारी दौलत शराब पीने, जुआ खेलने, अय्याशी करने और अय्याशी में उड़ा दी। हमने कभी काम नहीं किया और अब हमारे पास पैसे भी नहीं हैं। हमें पता चला कि श्री कौ का परिवार ब्रेज़ेंटॉवर प्रांत के सबसे अमीर परिवारों में से एक है, इसलिए कल रात हम सब अंधेरे और बारिश का फायदा उठाकर उन्हें लूटने के लिए इकट्ठा हुए। हमने कुछ सोना, चांदी, कपड़े और गहने चुराए और सड़क के उत्तर में एक पहाड़ी घाटी में उन्हें आपस में बांट ही रहे थे कि हमने आप लोगों को आते देखा। हममें से कुछ ने आपको श्री कौ द्वारा विदा किए गए भिक्षुओं के रूप में पहचान लिया, इसलिए हमें यकीन था कि आपके पास कुछ सामान जरूर होगा। फिर हमने देखा कि आपका सामान कितना भारी था और सफेद घोड़ा कितनी तेजी से दौड़ रहा था। हमारे लालच ने ही हमें आपको रोकने की कोशिश करने पर मजबूर किया। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि आपके पास इतनी दिव्य शक्तियां होंगी और आप हमें बांध सकेंगे। हम आपसे हम पर दया करने की विनती करते हैं। जो

कुछ हमने चुराया है, वह हमें वापस दे दीजिए और हमारी जान बख्श दीजिए।
सान्ज़ांग को यह सुनकर गहरा सदमा लगा कि उनका सारा माल कौ परिवार से चोरी हो गया है। वह तुरंत खड़ा हो गया और बोला, "श्री कौ तो बहुत अच्छे आदमी थे, वुकॉन्ग, तो उन्होंने अपने ऊपर ऐसी विपत्ति कैसे मोल ले ली?"
"यह सब इसलिए हुआ क्योंकि रंगीन पर्दे, सुंदर छतरियां और बड़ी संख्या में ढोल बजाने वाले और संगीतकार जब हमें विदा कर रहे थे, तो उन्होंने बहुत ध्यान आकर्षित किया," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "इसीलिए बदमाशों के इस गिरोह ने उसके घर पर हमला किया। सौभाग्य से वे हमसे टकरा गए, और हम सारा सोना, चांदी, कपड़े और गहने वापस ले आए हैं।"
“हमने श्री कौ को पूरे दो सप्ताह के लिए बाहर रखा,” संज़ंग ने कहा, “इसलिए हम उनके बहुत ऋणी हैं, जिसका कर्ज हम अभी तक नहीं चुका पाए हैं। क्या यह अच्छा काम नहीं होगा कि हम यह संपत्ति उनके घर लौटा दें?” बंदर मान गया और वह सुअर और साधु सैंड के साथ लूट का माल लाने के लिए पहाड़ी घाटी में गया। उन्होंने माल लादकर घोड़े पर लाद दिया। उसने सुअर को सोने-चांदी का बोझ उठाने को कहा, जबकि साधु सैंड ने अपना सामान उठाया। बंदर अपने डंडे से सभी डाकुओं को मारने ही वाला था कि उसे यह चिंता सताने लगी कि कहीं तांग पुजारी उस पर हत्या करने के लिए क्रोधित न हो जाए। इसलिए वह बस खुद को झटक कर अपने सारे बाल वापस खींच सका। अब जब उनके हाथ-पैर खुल गए थे, तो चोर उठ खड़े हुए और अपनी जान बचाने के लिए झाड़ियों में भाग गए। तांग पुजारी फिर उसी रास्ते से वापस मुड़ गया जिससे वह आया था, ताकि श्री कौ को लूट का माल लौटा सके। इस यात्रा में वह उस पतंगे की तरह था जो आग की लपटों में उड़कर तबाही को गले लगा लेता है। इस पर एक कविता है:
दूसरों के प्रति दयालुता का फल अक्सर दयालुता के रूप में ही नहीं मिलता;
दयालुता अक्सर नफरत और शत्रुता की ओर ले जाती है।
डूबते हुए व्यक्ति को बचाने के लिए पानी में कूदना? आपको भुगतना पड़ेगा।
कोई भी काम करने से पहले सोच-समझ लें और अनावश्यक दुख से खुद को बचाएं।
संज़ंग और उनके शिष्य सोना, चांदी, कपड़े और गहने लेकर वापस लौट ही रहे थे कि भाले और तलवारों से लैस लोगों की भीड़ वहाँ आ गई। संज़ंग ने घबराकर कहा, "शिष्यों, देखो ये सारे हथियारबंद लोग यहाँ आ रहे हैं। आखिर हो क्या रहा है?"

अध्याय 97

1354

पश्चिम की यात्रा

"यह तो एक आपदा है," पिग ने कहा, "एक आपदा। ये वही लुटेरे हैं जिन्हें हमने आज़ाद कर दिया था। उन्हें हथियार मिल गए हैं और उन्होंने कुछ और लोगों के साथ मिलकर गिरोह बना लिया है। अब वे वापस आ गए हैं और हमें मार डालेंगे।"

"भाई, ये डाकू जैसे नहीं दिखते," फ्रायर सैंड ने कहा। "बड़े भाई, ज़रा ध्यान से देखो।"

“गुरुजी फिर से बड़ी मुसीबत में फंस गए हैं,” मंकी ने फुसफुसाते हुए साधु सैंड से कहा। “ये सैनिक डाकुओं को पकड़ने आए होंगे।” उसके इतना कहने से पहले ही सैनिक गुरुजी और उनके शिष्यों के पास पहुँच गए और उन्हें घेर लिया।

“तुम लोग बड़े ही शानदार भिक्षु हो,” उन्होंने कहा, “घर लूटकर यहाँ इस तरह इतरा रहे हो।” फिर वे उन पर टूट पड़े, तांग पुजारी को घोड़े से नीचे खींचकर बांध दिया। इसके बाद उन्होंने भाई बंदर और बाकी लोगों को भी बांध दिया और उन्हें खंभों से लटकाकर ले गए, हर एक के साथ दो आदमी थे। घोड़े को हांकते हुए और सामान छीनकर वे वापस प्रांतीय शहर चले गए। वहाँ जो कुछ दिखाई दे रहा था वह यह था:

तांग पुजारी,

कांपते और थरथराते हुए,

रोते हुए और कुछ बोल न पाने की स्थिति में।

झू बाजी,

बड़बड़ाते और शिकायत करते हुए,

शिकायतों से भरा हुआ।

फ्रायर सैंड,

बातें करते-करते,

हालांकि मन ही मन अनिश्चितता महसूस हो रही थी।

सन द नोविस,

खिलखिलाते हुए,

अपनी शक्तियों का उपयोग करने के लिए तैयार।

सैनिकों द्वारा घसीटते और ले जाते हुए, वे जल्द ही शहर में वापस आ गए, जहां सैनिकों ने उन्हें सीधे प्रीफेक्ट के दरबार में पहुँचा दिया।

“माननीय न्यायाधीश,” उन्होंने सूचना दी, “पुलिसकर्मियों ने लुटेरों को पकड़ लिया है और उन्हें वापस ले आए हैं।” अदालत में अपनी जगह पर बैठे प्रीफेक्ट ने पुलिसकर्मियों को इनाम दिया, लूटे गए माल का निरीक्षण किया और कौ परिवार को उसे लेने के लिए बुलवाया। फिर उन्होंने संजांग और अन्य लोगों को अदालत में पेश किया।

“तुम भिक्षु दावा करते हो कि तुम पूर्व में बहुत दूर से आए हो और पश्चिमी स्वर्ग में बुद्ध की उपासना करने जा रहे हो,” उसने उनसे पूछताछ करते हुए कहा। “लेकिन वास्तव में तुम सेंधमार हो जिन्होंने गंदी चालें चलीं, इसलिए अध्याय 97”

ताकि आप वहां के रास्तों से परिचित हो सकें।"

“माननीय न्यायाधीश महोदय,” संज़ंग ने उत्तर दिया, “हम लुटेरे नहीं हैं। मैं आपको धोखा देने की हिम्मत नहीं करूँगा। हमारे पास प्रमाण स्वरूप पासपोर्ट है। श्री कौ के परिवार ने हमें दो सप्ताह तक भोजन कराया था, इसलिए हम उनके प्रति अत्यंत आभारी थे। रास्ते में जब हमारी मुलाक़ात लुटेरों से हुई, तो हमने उनके द्वारा कौ के घर से चुराया गया सामान वापस ले लिया। हम अपना आभार व्यक्त करने के लिए वह सामान कौ के घर वापस ले जा रहे थे, तभी हमें आश्चर्य हुआ कि पुलिसकर्मियों ने हमें लुटेरे समझकर गिरफ्तार कर लिया। हम वास्तव में लुटेरे नहीं हैं, और मैं माननीय न्यायाधीश महोदय से निवेदन करता हूँ कि मामले की गहन जांच करें।”

“तुमने सैनिकों द्वारा गिरफ्तार किए जाने पर ही कृतज्ञता का कर्ज चुकाने की झूठी बातें गढ़ी हैं,” प्रीफेक्ट ने जवाब दिया। “अगर तुम सच में दूसरे लुटेरों से मिले थे तो उन्हें पकड़कर पुलिस के हवाले करके अपनी कृतज्ञता क्यों नहीं दिखाई? यहाँ सिर्फ तुम चारों ही क्यों हो? कौ लियांग द्वारा जमा किया गया वांछित नोटिस देखो। उसने तुम्हारा नाम लेकर आरोप लगाया है। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस पर विवाद करने की!” यह सुनकर संजांग को लगा जैसे वह समुद्र में तूफान में फंसी नाव हो और उसकी सारी आत्मा उड़ गई हो।

"वुकोंग," उसने कहा, "तुम आगे आकर हमारी रक्षा में बहस क्यों नहीं करते?"

"लूट का माल ही इसका सबूत है," बंदर ने कहा। "बहस करने से कोई फायदा नहीं होगा।"

“बिल्कुल सही,” प्रीफेक्ट ने कहा। “सब कुछ यहीं सबूत के तौर पर मौजूद है। क्या अब भी तुम इसे नकारने की हिम्मत करोगे? सिर पर फंदा लाओ,” उसने अपने मातहतों को निर्देश दिया, “और उसे गंजे लुटेरे के सिर पर लगा दो। फिर उसे दोबारा पीटो।”

बंदर अब बहुत चिंतित था। उसने मन ही मन सोचा, "भले ही मेरे स्वामी को यह कष्ट सहना पड़े, लेकिन मुझे उसे ज्यादा तकलीफ नहीं होने देनी चाहिए।" यामेन के रस्सियों को सिर पर बांधने वाले यंत्र को कसते देख उसने बोलने के लिए मुंह खोला। "कृपया उस भिक्षु का सिर मत दबाइए, महाराज। कल रात जब हमने कौ के घर में लूटपाट की थी, तब मैंने ही मशालें जलाई थीं, तलवार उठाई थी, सामान चुराया था और उस आदमी को मारा था। मैं ही सरगना था। अगर आप किसी को यातना देना चाहते हैं, तो मुझे यातना दीजिए। उनका इससे कोई लेना-देना नहीं है। बस इतना ध्यान रखिए कि आप मुझे जाने न दें।"

यह सुनकर पुलिस अधिकारी ने आदेश दिया, "पहले इसे जकड़ो।" फिर सभी अधीनस्थ बंदर पर टूट पड़े, उसके सिर पर जकड़ लगाई और इतनी ज़ोर से कसी कि रस्सी झनझनाहट के साथ टूट गई। जकड़ लगाई गई, कसी गई और फिर झनझनाहट के साथ टूट गई। उन्होंने ऐसा तीन-चार बार किया, लेकिन उसके सिर की त्वचा पर एक शिकन तक नहीं आई।

जब वे रस्सी बदल रहे थे और उसे कस रहे थे, तभी किसी के अंदर से यह सूचना आने की आवाज सुनाई दी, "माननीय महोदय, राजधानी से सहायक संरक्षक चेन आ रहे हैं। क्या आप कृपया शहर के बाहर उनका स्वागत करने आएंगे?"

फिर प्रिफेक्ट ने मुख्य यातना अधिकारी को आदेश दिया, "डाकुओं को जेल में डाल दो और उन पर कड़ी नज़र रखो। मेरे वरिष्ठ अधिकारी से मिलने के बाद यातना और पूछताछ जारी रहेगी।" इसके बाद मुख्य यातना अधिकारी तांग पुजारी और बाकी तीन लोगों को जेल में ले गया। पिग और फ्रायर सैंड उनका सामान अपने साथ ले गए।

"शिष्य," संजांग ने कहा, "हमें क्या करना चाहिए?"

“अंदर जाओ, मालिक,” बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, “अंदर जाओ। अंदर कोई कुत्ते नहीं भौंक रहे हैं। बहुत मज़ा आएगा।” फिर उन चारों को अंदर ले जाया गया और एक-एक करके उन्हें यातना देने वाले रैक पर धकेल दिया गया, जिससे उनके पेट, सिर और छाती को कसकर बांध दिया गया। इसके बाद पहरेदारों ने उन्हें फिर से

पीटना शुरू कर दिया।
पीड़ा असहनीय पाते हुए, संजांग ने पुकार कर कहा, "वुकोंग, मैं क्या करूँ? मैं क्या करूँ?"
अध्याय 97
1356
पश्चिम की यात्रा
"वे हमें इसलिए पीट रहे हैं क्योंकि उन्हें पैसा चाहिए," भाई बंदर ने जवाब दिया। "जैसा कि कहावत है, जब चीजें अच्छी चल रही हों तो वहीं डटे रहो;
जब हालात खराब हों तो पैसा खर्च करें।
अगर आप उन्हें कुछ पैसे देंगे तो वे रुक जाएंगे।
"लेकिन मुझे पैसे कहाँ से मिलेंगे?" संजांग ने पूछा।
"अगर तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं," बंदर ने जवाब दिया, "तो कपड़े भी चलेंगे। उन्हें अपना पादरी का चोगा दे दो।"
इन शब्दों ने संजांग के दिल को चीर दिया, लेकिन यह महसूस करते हुए कि मार उसके असहनीय थी, वह केवल इतना ही कह सका, "जैसा तुम चाहो, वुकॉन्ग।"
“सज्जनों,” बंदर ने पुकारा, “हमें और पीटने की कोई ज़रूरत नहीं है। हम जो दो बंडल लाए हैं, उनमें से एक में जकूज़ी का एक कीमती चोगा है। इन्हें खोलकर ले जाइए।”
यह सुनकर पहरेदार सब एक साथ बंडलों को खोलने और उनकी तलाशी लेने में जुट गए। उनमें कुछ सूती कपड़े और एक दस्तावेज़ों का बक्सा था, लेकिन इनमें से किसी की कोई कीमत नहीं थी। तेल लगे कागज़ की कई परतों के अंदर कुछ चमकता हुआ देखकर पहरेदार समझ गए कि यह ज़रूर कोई खजाना है। जब उन्होंने उसे खोलकर देखा, तो वह कुछ इस तरह दिखाई दिया:
चमकदार मोतियों से खूबसूरती से सजा हुआ,
इसमें बुद्ध की कुछ अद्भुत कलाकृतियाँ शामिल हैं।
कढ़ाई किए हुए अजगर चारों ओर लिपटे हुए थे;
उड़ते हुए फीनिक्स पक्षियों की आकृतियाँ ब्रोकेड के किनारों को सुशोभित करती थीं।
जब वे सब देखने के लिए संघर्ष कर रहे थे, तो उन्होंने मुख्य जेलर को परेशान कर दिया, जो उनके पास आया और चिल्लाया, "तुम सब किस बात पर इतना हंगामा कर रहे हो?"

घुटनों के बल गिरते हुए, जेलर ने उत्तर दिया, "महामहिम ने अभी-अभी चार भिक्षुओं के विरुद्ध एक मामला शुरू किया है और उन्हें यहाँ भेजा है। जब हमने उनसे थोड़ी मारपीट की, तो उन्होंने हमें ये दो बंडल दिए। जब हमने उन्हें खोला, तो हमें यह मिला, और हम नहीं जानते कि इसका क्या करें। इसे फाड़कर आपस में बाँटना बहुत दुख की बात होगी, लेकिन अगर यह हममें से किसी एक के पास रह जाए, तो बाकी सभी के लिए मुश्किल हो जाएगी। सौभाग्य से आप आ गए हैं, महोदय: आप हमें फैसला दे सकते हैं।" मुख्य जेलर ने देखा कि यह एक चोगा था। फिर उसने अन्य कपड़ों और दस्तावेज़ों के बक्से का निरीक्षण किया, और पासपोर्ट पढ़ने के लिए बक्सा खोलते ही उसने देखा कि उस पर कई राज्यों की मुहरें और हस्ताक्षर थे।

“अच्छा हुआ मैंने इसे समय रहते देख लिया,” उन्होंने कहा। “अगर मैंने नहीं देखा होता, तो आप लोग बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी कर देते। ये भिक्षु लुटेरे नहीं हैं। किसी भी हालत में इनकी चीज़ों को मत छूना। जब महामहिम कल उनसे फिर पूछताछ करेंगे... अध्याय 97

1357

पश्चिम की यात्रा

हम सच्चाई का पता लगाएंगे।" इसके बाद वार्डरों ने लपेटने वाले कपड़े कैदियों को वापस दे दिए, जिन्होंने उन्हें दोबारा पैक किया और सुरक्षित रखने के लिए मुख्य जेलर को सौंप दिया।

शाम ढलने लगी थी। बुर्ज से ढोल की आवाज़ सुनाई दे रही थी और अग्नि रक्षक गश्त पर निकल पड़े थे। चौथे पहर के तीसरे घंटे तक मंकी ने देखा कि बाकी सब कराहना बंद कर चुके थे और गहरी नींद में सो रहे थे। उसने सोचा, "मालिक की किस्मत में एक रात जेल में गुजारना लिखा था। इसीलिए मैंने अपनी रक्षा में कुछ नहीं कहा और अपनी जादुई शक्तियों का इस्तेमाल नहीं किया। लेकिन अब चौथा पहर लगभग खत्म हो चुका है और उनकी तकलीफें भी लगभग थम गई हैं। अगर हमें सुबह जेल से निकलना है तो मुझे अब जल्दी से काम निपटाना शुरू कर देना चाहिए।"

बस देखते रहिए कि कैसे वह अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करके खुद को छोटा कर लेता है, रैक से उतरता है, खुद को झटकता है और एक मक्खी में बदल जाता है जो छज्जे के ऊपर लगी टाइलों के बीच की दरार से उड़कर जेल से बाहर निकल जाती है। शांत, खामोश रात के आकाश में तारों और चंद्रमा की रोशनी में, वह देख सकता था

कि वह कहाँ जा रहा है, और वह चुपचाप सीधे कौ घर के द्वार की ओर उड़ गया। सड़क के पश्चिम की ओर एक घर था जहाँ एक दीपक तेज़ी से जल रहा था, और जब वह बेहतर ढंग से देखने के लिए पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह टोफू बनाने वालों का घर था। एक बूढ़ा आदमी आग की देखभाल कर रहा था जबकि एक बूढ़ी औरत टोफू का रस निचोड़ रही थी।

"पत्नी," बूढ़े आदमी ने अचानक पुकारा, "श्री कौ धनवान और पुत्रवान थे, लेकिन उनकी आयु कम हो गई। जब हम लड़के थे, तब हम दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे। मैं उनसे पाँच साल बड़ा था। उनके पिता का नाम कौ मिंग था।"

उन दिनों उनके पास 150 एकड़ से भी कम ज़मीन थी। वे अपना बकाया किराया भी वसूल नहीं कर पाते थे। बूढ़े कौ मिंग का निधन तब हुआ जब उनका बेटा उन्नीस साल का था, और जब उस नौजवान ने घर की ज़िम्मेदारी संभाली तो सब कुछ बहुत अच्छा हो गया। उन्होंने झांग वांग की बेटी से शादी की—बचपन में उसे 'थ्रेडनीडल' के नाम से जाना जाता था, लेकिन उसने अपने पति को अमीर बना दिया। उसके घर आने के बाद उनकी फसलें अच्छी हुईं और उनके सारे कर्ज़ चुक गए। उन्होंने जो कुछ भी खरीदा, उससे उन्हें लाभ हुआ, और उन्होंने जिस भी काम में हाथ डाला, उससे उन्हें खूब पैसा मिला। अब उनके परिवार की संपत्ति एक लाख है। चालीस साल की उम्र में वे धार्मिक हो गए और उन्होंने दस हज़ार भिक्षुओं को भोजन कराया। सोचिए, कल रात लुटेरों ने उन्हें पीट-पीटकर मार डाला! बेचारा। वे केवल चौंसठ साल के थे। किसने सोचा होगा कि इतने अच्छे इंसान को इतना बुरा अंजाम भुगतना पड़ेगा और ठीक उस समय उनकी हत्या कर दी जाएगी जब सब कुछ उनके लिए अच्छा चल रहा था?

कितना अफसोस की बात है! कितना अफसोस की बात है!

जब तक बंदर ने यह सब सुना, तब तक पाँचवें पहर का पहला समय हो चुका था। फिर वह कौ के घर में उड़कर गया, जहाँ मुख्य कमरे में एक ताबूत रखा था। ताबूत के सिरहाने एक दीपक जल रहा था, और उसके चारों ओर अगरबत्ती, मोमबत्तियाँ और फल रखे थे। उसकी पत्नी उसके पास रो रही थी, और दोनों बेटे भी प्रणाम करने और रोने के लिए आए, जबकि उनकी पत्नियाँ भेंट के रूप में चावल के दो कटोरे लाईं। बंदर ताबूत के सिरहाने पर उतरा और खाँसा। इससे दोनों बहुएँ इतनी डर गईं कि वे अपने हाथ हिलाते हुए बाहर भाग गईं।

कोउ लियांग और उसका भाई डर के मारे ज़मीन पर लेटे हुए थे, हिल भी नहीं पा रहे

थे और चिल्ला रहे थे, "ओह, पिताजी, ओह!" उनकी माँ, जो ज़्यादा साहसी थीं, ने ताबूत के सिरहाने पर प्रहार किया और बोलीं, "क्या आप फिर से जीवित हो गए हैं, बूढ़े?"

"नहीं," बंदर ने श्री कौ की आवाज की नकल करते हुए उत्तर दिया, जिससे दोनों बेटे बहुत घबरा गए और लगातार सिर झुकाकर रोने लगे और बार-बार कहने लगे, "ओह, पिताजी, ओह!"

उनकी मां ने और भी अधिक साहस जुटाकर पूछा, "पतिदेव, अगर आप जीवित नहीं हुए हैं तो आप बात क्यों कर रहे हैं?"

"यमराज ने मुझे आपसे बात करने के लिए यहां लाने के लिए राक्षसों को भेजा है," बंदर ने उत्तर दिया। "उन्होंने मुझे बताया कि थ्रेडनीडल झांग झूठ बोल रहा था और निर्दोष को फंसाने की कोशिश कर रहा था।"

उसे बचपन के नाम से पुकारते सुनकर वह बूढ़ी औरत आश्चर्यचकित रह गई और तुरंत घुटनों के बल गिर पड़ी, प्रणाम किया और बोली, "आप बड़े ही अच्छे बूढ़े आदमी हैं! इस उम्र में मुझे मेरे बचपन के नाम से पुकारना तो बड़ी बात है!"

मैंने कौन-कौन से झूठ बोले हैं? मैंने किन निर्दोष लोगों को फंसाया है?

अध्याय 97

1358

पश्चिम की यात्रा

“क्या ऐसा कुछ नहीं था कि ‘तांग पुजारी ने मशालें जलाईं, सुअर ने हत्या के लिए उकसाया, साधु सैंड ने सोना-चांदी चुराई, और नौसिखिए सूर्य ने हमारे पिता की हत्या की?’” बंदर ने उत्तर दिया। “तुम्हारे झूठ ने उन भले लोगों को भयानक मुसीबत में डाल दिया है। असल में हुआ ये था कि तांग पुजारी और बाकी तीन गुरुओं ने कुछ डाकुओं से मुलाकात की और हमारी संपत्ति वापस लाकर हमें धन्यवाद दिया। कितना अच्छा काम किया उन्होंने! लेकिन तुम्हें एक फर्जी नोटिस जारी करवाना था और हमारे बेटों को अधिकारियों के पास उनकी शिकायत करने के लिए भेजना था। अदालत ने बिना ठीक से जांच किए उन्हें जेल में डाल दिया। जेल के देवता, स्थानीय देवता और नगर के देवता सभी इतने चिंतित और परेशान हो गए कि उन्होंने इसकी सूचना यमराज को दे दी, और उन्होंने राक्षसों को मुझे घर वापस लाने का आदेश दिया। मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि उन्हें जल्द से जल्द रिहा करवाओ। अगर तुमने ऐसा नहीं किया,

तो मुझे यहाँ एक महीने तक तबाही मचानी पड़ेगी। घर में कोई भी, जवान हो या बूढ़ा —यहाँ तक कि कुत्ते और मुर्गियाँ भी—नहीं बचेंगे।"

कोउ लियांग और उसके भाई ने फिर से सिर झुकाकर विनती की, "हे पिता, कृपया वापस चले जाइए और हम सबको कोई नुकसान मत पहुँचाइए। भोर होते ही हम उनकी रिहाई के लिए अदालत में याचिका दायर करेंगे और उनके खिलाफ लगाए गए आरोप वापस ले लेंगे। हम बस जीवित और मृत दोनों के लिए शांति चाहते हैं।"

यह सुनकर बंदर चिल्लाया, "बलिदान के कागज़ी नोट जला दो। मैं जा रहा हूँ।" उसके पूरे परिवार ने कागज़ी नोट जलाना शुरू कर दिया। फिर बंदर अपने पंखों पर सवार होकर सीधे प्रान्त अधिकारी के निवास की ओर उड़ गया। झुककर देखने पर उसने पाया कि शयनकक्ष में रोशनी थी: प्रान्त अधिकारी पहले ही उठ चुके थे। जब बंदर मुख्य कमरे में पहुँचा, तो उसने पीछे की दीवार पर एक चित्र देखा। उसमें एक अधिकारी चितकबरे घोड़े पर सवार था, जिसके साथ कई नौकर नीली छतरी पकड़े और एक तह वाली कुर्सी लिए खड़े थे। बंदर को चित्र का विषय समझ नहीं आया, लेकिन वह उसके बीचोंबीच उतर गया। अचानक प्रान्त अधिकारी शयनकक्ष से बाहर आए और झुककर कंघी करने और नहाने लगे। बंदर ने ज़ोर से खाँसा, जिससे प्रान्त अधिकारी घबरा गए और जल्दी से अपने शयनकक्ष में वापस चले गए। जब उन्होंने अपने बाल कंघी कर लिए, नहा लिया और औपचारिक वस्त्र पहन लिए, तो प्रान्त अधिकारी चित्र के सामने धूप जलाने और प्रार्थना करने के लिए बाहर आए।

"आदरणीय चाचा जी, दिव्य जियांग कियानयी, आपका आज्ञाकारी भतीजा जियांग कुनसान अब ब्राज़ेंटॉवर का प्रमुख है, यह आपके पूर्वजों के सद्गुणों से प्राप्त वंशानुगत विशेषाधिकार और परीक्षाओं में मेरी सफलता के कारण संभव हुआ है। मैं सुबह-शाम निरंतर धूप जलाता हूँ। आज आपने क्यों बात की? मैं आपसे विनती करता हूँ कि हमें परेशान न करें और घरवालों को भयभीत न करें।"

"तो ये उसके पूर्वज की पवित्र तस्वीर है," बंदर भाई ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा, और इस मौके का फायदा उठाते हुए पुकारा, "भतीजे कुनसान, तुम्हें पैतृक विशेषाधिकार से जो पद मिला है, उसमें तुम हमेशा ईमानदार रहे हो। कल तुम इतने मूर्ख कैसे हो गए? तुमने चार पवित्र भिक्षुओं को चोर समझकर जेल में डाल दिया, बिना यह जाने कि वे क्यों आए थे। जेल के देवता, स्थानीय देवता और नगर के देवता सभी इससे इतने परेशान हुए कि उन्होंने नरक के राजा को इसकी सूचना दे दी। उन्होंने

दानव दूतों को मुझे यहाँ लाने का आदेश दिया ताकि मैं तुमसे बात कर सकूँ और तुम्हें सलाह दे सकूँ कि परिस्थितियों पर विचार करो, सच्चाई का पता लगाओ और उन्हें तुरंत रिहा कर दो। अन्यथा, मामले को सुलझाने के लिए तुम्हें मेरे साथ पाताल लोक वापस जाना पड़ेगा।"

जब पुलिस अधिकारी ने यह सुना तो उसने घबराकर कहा, "कृपया अभी वापस जाइए, बैठिए। आपका भतीजा सीधे अदालत में जाएगा और उन्हें तुरंत रिहा करवा देगा।"

“ठीक है,” बंदर ने कहा। “कुछ कागजी मुद्रा जला दो। मैं यमराज को सूचना देने जा रहा हूँ।” अधिकारी ने अगरबत्ती जलाई, कागजी मुद्रा जलाई और धन्यवाद में सिर झुकाया। जब बंदर दोबारा उड़कर चारों ओर देखने लगा तो उसने पाया कि पूरब का इलाका पहले ही सफेद हो रहा था। फिर वह डिलिंग काउंटी कार्यालय की ओर उड़ा, जहाँ सभी काउंटी अधिकारी अदालत में मौजूद थे।

"अगर मैं मच्छर बनकर बात करने लगूं," उसने सोचा, "और कोई मुझे देख ले तो मेरा भेद खुल जाएगा। ऐसा नहीं होना चाहिए।"

इसलिए उसने हवा में ही एक विशाल जादुई शरीर धारण कर लिया और अपना एक पैर इतना फैलाया कि पूरा दरबार भर गया। "मेरी बात सुनो, अधिकारियों," वह चिल्लाया। "मैं घुमंतू देवता हूँ, जिसे जेड सम्राट ने भेजा है। उनका कहना है कि बुद्ध के पुत्र शास्त्रों को लाने जा रहे थे, तभी उन्हें यहाँ की जेल में पीटा गया, जिससे तीनों लोकों के देवता विचलित हो गए हैं। उन्होंने मुझे आप सभी को उन्हें तुरंत रिहा करने के लिए कहा है। अगर कुछ भी गड़बड़ हुई तो मैं अपने दूसरे पैर से आप सभी काउंटी और प्रीफेक्चर अधिकारियों को लात मारूंगा।" (अध्याय 97)

"फिर उन्हें मौत के घाट उतार दो, यहाँ के सभी लोगों को कुचल दो और पूरे शहर को धूल और राख में मिला दो।" यह सुनकर काउंटी मजिस्ट्रेट और अन्य सभी अधिकारी घुटनों के बल गिर पड़े और श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया।

“हे परम पूज्य, कृपया अब वापस चले जाइए,” उन्होंने विनती की। “हम अब प्रादेशिक कार्यालय जा रहे हैं ताकि महामहिम से हमें तुरंत रिहा करने का अनुरोध कर सकें। हम आपसे निवेदन करते हैं कि आप अपने कदम न हिलाएं और हमें डराकर

मौत के घाट न उतारें।" तभी बंदर ने उस जादुई शरीर को त्याग दिया, फिर से एक मक्खी का रूप धारण किया और छज्जे की टाइलों के बीच की दरार से उड़कर वापस जेल में चला गया, अपनी कोठरी में चढ़ गया और सो गया।

अब कहानी बताती है कि जैसे ही पुलिस अधिकारी अपने दरबार में दाखिल हुआ और लोगों से लिखित निवेदन करने का नोटिस बाहर ले जाने का आदेश दिया, कौ लियांग और उसका भाई नोटिस को हाथों में लिए प्रवेश द्वार पर घुटनों के बल गिर पड़े। पुलिस अधिकारी ने उन्हें अंदर आने का आदेश दिया, और जब पुलिस अधिकारी ने उन दोनों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज़ पढ़ा, तो उसने क्रोध में कहा, "कल तुमने मुझे एक वांछित नोटिस सौंपा था। चोर गिरफ्तार हो गए और तुम्हें लूटा हुआ माल वापस मिल गया। तो आज तुम उन्हें रिहा करने की गुहार क्यों लगा रहे हो?"

"महामहिम," दोनों भाइयों ने आँसू बहाते हुए उत्तर दिया, "कल रात हमारे पिता की आत्मा हमें दर्शन देकर बोली, 'तांग के पवित्र भिक्षुओं ने डाकुओं को पकड़ लिया, उनसे हमारी संपत्ति वापस ले ली, उन्हें रिहा कर दिया और कृतज्ञता दिखाने के लिए कृपापूर्वक सामान हमें लौटा रहे हैं। आपने उनके साथ लुटेरों जैसा व्यवहार कैसे किया, उन्हें कैसे पकड़ा और जेल में कैसे तड़पाया? जेल में विराजमान स्थानीय देवता और नगर देवता इतने भयभीत और बेचैन हो गए कि उन्होंने इसकी सूचना यमराज को दे दी। यमराज ने राक्षसों को आदेश दिया कि वे मुझे वापस आपके पास भेजें ताकि मैं आपको बता सकूँ कि आप प्रांतीय न्यायालय में जाकर तांग के पुजारी की रिहाई के लिए एक और याचिका दायर करें और इस प्रकार विपत्ति को टालें।'"

अन्यथा घर के सभी लोग मारे जाएंगे। इसीलिए हम उनकी रिहाई के लिए यह निवेदन लेकर आए हैं। माननीय न्यायाधीश महोदय, हम आपसे हमारी सहायता करने की विनती करते हैं।

यह सुनकर पुलिस अधिकारी ने सोचा, "उनके पिता एक नए भूत हैं जिनका शरीर अभी भी गर्म है, इसलिए जो कुछ हुआ उसके बाद उनका उनके सामने प्रकट होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन मेरे चाचा तो पांच-छह साल पहले ही मर चुके हैं। फिर वो आज सुबह-सुबह मेरे सामने क्यों प्रकट हुए और मुझे जांच करने और उन्हें रिहा करने के लिए क्यों कहा? ऐसा लगता है जैसे सच में अन्याय हुआ है।"

जब प्रीफेक्ट सोच-विचार कर रहा था, तभी दिलिंग काउंटी के मजिस्ट्रेट और अन्य अधिकारी घबराकर अदालत कक्ष में आ भागे और बोले, "महामहिम, विपत्ति आ गई!

जेड सम्राट ने अभी-अभी घुमंतू देवदूत को पृथ्वी पर भेजा है और आपसे कहा है कि इन भले लोगों को तुरंत जेल से रिहा कर दें। कल पकड़े गए भिक्षु लुटेरे नहीं थे: वे बुद्ध के शिष्य हैं जो शास्त्र लेने जा रहे थे। अगर ज़रा भी देरी हुई तो वे हम सभी अधिकारियों को पीट-पीटकर मार डालेंगे, फिर पूरे शहर और उसमें रहने वाले सभी लोगों को धूल-मिट्टी में मिला देंगे।" इस नए सदमे से प्रीफेक्ट का चेहरा पीला पड़ गया, फिर उन्होंने मुख्य जेलर को रिहाई का आदेश लिखकर उन्हें अदालत में लाने को कहा। जेल के दरवाजे तुरंत खोले गए और उन्हें बाहर ले जाया गया।

"भगवान ही जाने आज हमारी कैसी पिटाई होने वाली है," पिग ने उदास स्वर में कहा।

"मैं गारंटी देता हूँ कि वे तुम्हें एक लात भी नहीं मारेंगे," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैंने सब कुछ तैयार कर दिया है। जब तुम अदालत में जाओ तो तुम्हें बिल्कुल भी घुटने नहीं टेकने हैं। वह अदालत में आकर हमें सबसे अच्छी सीटें लेने के लिए कहेगा। फिर हम उससे अपना सामान और घोड़ा वापस मांगेंगे। अगर कुछ भी गायब हुआ तो मैं तुम्हारी मौज-मस्ती के लिए उसकी पिटाई कर दूंगा।"

उनके बोलने से पहले ही वे अदालत के प्रवेश द्वार पर पहुँच गए, जहाँ प्रिफेक्ट, काउंटी मजिस्ट्रेट और अन्य सभी अधिकारी उनका स्वागत करते हुए बाहर आए और बोले, "कल जब आप पवित्र भिक्षु आए थे, तब हम अपने वरिष्ठों से मिलने के लिए बहुत दबाव में थे। इसके अलावा, हमने चोरी का सामान भी देखा था। इसीलिए हम सच्चाई का पता नहीं लगा पाए।" तांग पुजारी ने अपने हाथ छाती के सामने जोड़कर प्रणाम किया और जो कुछ भी हुआ था, उसका विस्तृत वर्णन किया।

अध्याय 97

सभी अधिकारियों ने खुलकर स्वीकार किया, "हम गलत थे, हम गलत थे। कृपया, कृपया हमसे नाराज न हों।"

फिर उन्होंने पूछा कि क्या भिक्षुओं का जेल में कुछ खो गया है। बंदर आगे बढ़ा, गुस्से से आँखें चौड़ी करके चिल्लाया, "हमारा सफेद घोड़ा दरबारी अधिकारियों ने ले लिया है, और जेलर हमारा सामान ले गए हैं। इसे अभी लौटा दो। अब हमारी बारी है तुम्हें यातना देने और पूछताछ करने की। निर्दोष लोगों को डाकू बताकर गलत तरीके से गिरफ्तार करने की सजा क्या होनी चाहिए?"

उसके इस घिनौने व्यवहार को देखकर प्रांत और काउंटी के अधिकारी भयभीत हो गए। उन्होंने घोड़े को ले जाने वालों से घोड़ा लौटाने को कहा और सामान ले जाने वालों से उसका एक-एक सामान लौटाने को कहा। देखिए, तीनों शिष्य कितने क्रूर तरीके से व्यवहार करने लगे, जबकि अधिकारी अपनी गलती छिपाने के लिए कोऊ परिवार को ही दोषी ठहराने के अलावा और कुछ नहीं कर सके।

"शिष्यों," संज़ंग ने उन्हें शांत करने की कोशिश करते हुए कहा। "चलिए, हम कौ परिवार के घर जाकर उनसे पूछताछ करें और उनसे बहस करके सब कुछ स्पष्ट कर लें। फिर हमें पता चल जाएगा कि हमें लुटेरा किसने समझा था।"

"अच्छा विचार है," बंदर भाई ने कहा। "मैं मरे हुए आदमी को वापस फोन करके पूछूंगा कि उसे किसने मारा।"

पादरी सैंड ने दरबार में ही तांग पुजारी को घोड़े पर बिठाया और फिर शोर मचाते हुए उन्हें बाहर ले गए। सभी प्रादेशिक और काउंटी अधिकारी उनके साथ कौ के घर तक गए, जिससे कौ लियांग और उनके भाई इतने घबरा गए कि उन्होंने द्वार के सामने बार-बार प्रणाम किया और फिर उन्हें हॉल में ले गए। यहीं पर बूढ़े श्री कौ का ताबूत रखा था और पूरा परिवार उसके चारों ओर लिपटे शोक वस्त्रों के भीतर रोता हुआ दिखाई दे रहा था।

“चिल्लाना बंद करो, झूठी बुढ़िया,” बंदर चिल्लाया। “तुमने निर्दोष लोगों को मरवाने की कोशिश की। रुको, मैं तुम्हारे पति को वापस बुलाता हूँ। हम देखेंगे कि वह हत्यारा कौन है, इस बारे में क्या कहता है। इससे उसे शर्म आएगी।” सभी अधिकारियों को लगा कि बंदर मज़ाक कर रहा है, लेकिन फिर उसने कहा, “कृपया मेरे स्वामी के साथ थोड़ी देर रहें, महोदय, सुअर, साधु सैंड, उनकी अच्छी तरह रक्षा करें। मैं जा रहा हूँ। मैं जल्दी वापस आऊंगा।”

महान संत ने छलांग लगाई और आकाश में उड़ गए।

रंग-बिरंगे बादल चारों ओर से घर को ढके हुए थे।

आदिम देवता की रक्षा के लिए आकाश में शुभ आभा छा गई।

तभी सबको पता चला कि बंदर एक अमर प्राणी था जो बादलों और कोहरे पर सवार हो सकता था, और एक ऐसा ऋषि था जो मृतकों को जीवित कर सकता था। हम यह नहीं बताएंगे कि कैसे उन सबने अगरबत्ती जलाई और पूजा-अर्चना की।

महान ऋषि कलाबाजी करते हुए सीधे बादल के सहारे पाताल लोक में गए और

सेनलुओ महल पर धावा बोल दिया, जिससे इतनी दहशत फैल गई कि:
पाताल लोक के दस राजाओं ने अभिवादन के रूप में अपनी टुकड़ियाँ उठाईं; पाँचों लोकों के राक्षस न्यायाधीशों ने स्वागत में सिर झुकाया।
अध्याय 97
1361
पश्चिम की यात्रा
हजारों चाकूओं के पेड़ एक तरफ झुक गए;
तलवारों के दस हजार पहाड़ स्वतः ही समतल हो गए।
अन्यायपूर्वक मारे गए लोगों के शहर में दुष्ट आत्माओं का रूपांतरण हुआ;
दंड नदी पर बने पुल के नीचे मृत लोग फिर से जीवित हो उठते हैं।
वह दिव्य प्रकाश स्वर्ग की कृपा के समान था।
और अंधकार के महलों में हर जगह तेज रोशनी फैल गई।
दस राजाओं ने महान ऋषि का स्वागत किया, उन्हें प्रणाम किया और उनसे पूछा कि वे क्यों आए हैं। बंदर ने कहा, "किसके पास कौ होंग का भूत है जो ब्राज़ेंटॉवर प्रांत के दिलिंग काउंटी में भिक्षुओं को भोजन कराया करता था?"
"उसे ढूंढो और तुरंत मुझे सौंप दो।"
"कोउ होंग बहुत ही नेक इंसान है," दस राजाओं ने उत्तर दिया। "वह स्वयं यहाँ आया था। किसी राक्षस को उसे अपने कांटों से घसीटकर यहाँ लाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह राजा क्षितिगर्भ के स्वर्ण वस्त्रधारी बालक से मिला, जो उसे क्षितिगर्भ से मिलवाने ले गया।"
फिर बंदर ने उनसे विदा ली और सीधे फ़िरोज़ी बादल महल की ओर चला गया, जहाँ उसने बोधिसत्व राजा क्षितिगर्भ को देखा। जब बोधिसत्व ने उसका अभिवादन किया, तो बंदर ने उसे सारी घटना बताई।
बोधिसत्व ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "लियांग होंग का निर्धारित जीवनकाल पूरा हो चुका था, और उनका जीवन समाप्त हो गया था।"
इसीलिए उन्होंने संसार त्याग दिया और बिना बिस्तर छुए यहाँ आ गए। वे इतने अच्छे व्यक्ति थे कि उन्होंने भिक्षुओं को भोजन कराया, इसलिए मैंने उन्हें अच्छे कर्मों का लेखा-जोखा रखने का मुख्य अधिकारी नियुक्त किया है। परन्तु हे महामहिम, क्योंकि आप उन्हें लेने यहाँ आए हैं, इसलिए मैं उन्हें बारह वर्ष का जीवन विस्तार देता हूँ। उन्हें

महामहिम के साथ जाने दीजिए।
फिर स्वर्ण वस्त्रधारी लड़के ने कौ हांग को बाहर निकाला, जिसने बंदर को देखकर बार-बार कहा, "शिक्षक, मुझे बचाओ!"
अध्यापक!"
“तुम्हें लुटेरों ने पीट-पीटकर मार डाला,” बंदर ने कहा, “और अब तुम पाताल लोक में बोधिसत्व राजा क्षितिगर्भ के स्थान पर हो। मैं तुम्हें लेने और इस मामले को सुलझाने के लिए तुम्हें सजीवों की दुनिया में ले जाने आया हूँ।”
बोधिसत्व आपको वापस जाने देंगे और उन्होंने आपको बारह साल का और जीवन दिया है, जिसके बाद आप यहाँ वापस आएँगे।" बूढ़े सज्जन ने उनके सामने अंतहीन प्रणाम किया।
बोधिसत्व को धन्यवाद देकर और उनसे विदा लेकर, बंदर ने कौ होंग पर फूँक मारी, उन्हें भाप में बदल दिया, अपनी आस्तीन में रखा और पाताल लोक से वापस जीवितों की दुनिया में लौट आया। वह अपने बादल पर सवार होकर कौ के घर लौटा, सुअर को ताबूत का ढक्कन खोलने को कहा और कौ होंग की आत्मा को वापस शरीर में डाल दिया।
कुछ क्षण बाद कौ होंग ने सांस लेना शुरू कर दिया और उसे होश आ गया। ताबूत से बाहर निकलकर उसने तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों को प्रणाम करते हुए कहा, "गुरुजी, गुरुजी, मुझे अन्यायपूर्वक मार डाला गया था, लेकिन मेरे गुरु मुझे जीवनदान देने के लिए पाताल लोक गए। मैं उनका आभारी हूँ कि वे मुझे बचा पाए।"
उनका आभार अंतहीन था। जब वे मुड़े और सभी अधिकारियों को पंक्ति में खड़े देखा तो उन्होंने फिर से प्रणाम किया और पूछा, "आप सभी लॉर्डशिप मेरे घर में क्यों हैं?"
"आपके बेटों ने पहले वांछित सूचना दी," प्रीफेक्ट ने उत्तर दिया, "और पवित्र भिक्षुओं पर नाम लेकर आरोप लगाया। मैंने उन्हें गिरफ्तार करने के लिए आदमी भेजे, यह जाने बिना कि पवित्र भिक्षुओं की मुलाकात आपके घर पर छापा मारने वाले लुटेरों से हुई थी, उन्होंने उनसे लूटा हुआ माल ले लिया था और उसे आपके घर लौटा रहे थे। उन्हें गिरफ्तार करना मेरी गलती थी, और मैंने उन्हें अध्याय 97 में डाल दिया।"
1362
पश्चिम की यात्रा
बिना विस्तृत जांच किए आपको जेल में डाल दिया गया। कल रात आपकी आत्मा

प्रकट हुई, मेरे दिवंगत चाचा मुझसे शिकायत दर्ज कराने आए, और घुमंतू देवता का अवतार काउंटी कार्यालयों में प्रकट हुआ। इतने सारे अवतारों के बाद मैंने पवित्र भिक्षुओं को रिहा किया, और उन्होंने आपको पुनर्जीवित कर दिया।

श्री कौ घुटनों के बल बैठकर बोले, "माननीय महोदय, इन चारों पवित्र भिक्षुओं के साथ सचमुच अन्याय हुआ है। उस रात तीस से अधिक लुटेरों ने मशालें और हथियार लेकर मेरे घर को लूट लिया। क्योंकि मैं उन सब चीजों को खोने का दर्द सहन नहीं कर सका, इसलिए मैंने लुटेरों से तर्क करने की कोशिश की, लेकिन मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि उन्होंने मुझे पीट-पीटकर मार डाला। इन चारों सज्जनों का इससे क्या लेना-देना है?"

फिर उन्होंने अपनी पत्नी को बुलाया। “आप लोगों ने मेरे हत्यारे के बारे में झूठी रिपोर्ट क्यों फैलाई? कृपया उन्हें सजा सुनाइए, माननीय न्यायाधीश।” परिवार के सभी सदस्य, युवा और वृद्ध, सभी ने सिर झुकाकर उनका अभिवादन किया।

अपनी उदारता दिखाते हुए, प्रान्ताध्यक्ष ने उन्हें दंड से मुक्त कर दिया। इसके बाद कौ होंग ने प्रान्त और काउंटी अधिकारियों की उदारता के लिए धन्यवाद हेतु एक भोज का आयोजन किया। सभी अधिकारी भोज में बैठे बिना ही अपने कार्यालयों में लौट गए। अगले दिन भिक्षुओं को भोजन कराया जाएगा, यह सूचना देने वाला चिन्ह फिर से लगाया गया और संज़ंग को वहाँ रोकने का एक और प्रयास किया गया। संज़ंग ने वहाँ रुकने से साफ इनकार कर दिया। श्री कौ ने एक बार फिर अपने मित्रों और रिश्तेदारों को आमंत्रित किया, झंडे और शामियाने की व्यवस्था की और पहले की तरह उन्हें विदा किया। सचमुच: चाहे स्थान कितना भी दूर क्यों न हो, बुरे कर्म किए जा सकते हैं;

स्वर्ग भले ही ऊँचा हो, लेकिन वह अच्छे लोगों को नहीं छोड़ता।

वे धीरे-धीरे तथागत की ओर बढ़ते चले गए।

जब तक वे गिद्ध शिखर पर स्थित आनंद के द्वार तक नहीं पहुँच जाते।

यदि आपको नहीं पता कि बुद्ध से मिलने पर क्या हुआ था, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 98

जब बंदर और घोड़े को वश में कर लिया जाता है, तो वे अपने खोल उतार देते हैं; जब सारे कर्म पूरे हो जाते हैं, तब वास्तविकता सामने आती है।

कहानी में बताया गया है कि जीवन में वापस आने के बाद श्री कौ ने एक बार फिर संज़ंग को विदाई देने के लिए छतरियाँ, झंडे, ढोल बजाने वाले, संगीतकार, बौद्ध भिक्षु, ताओवादी पुजारी, अपने मित्र और रिश्तेदार जुटाए। लेकिन इसका वर्णन करने के बजाय, हम तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों के मुख्य मार्ग से यात्रा करने की कहानी सुनाएँगे। पश्चिम वास्तव में बुद्ध की भूमि थी, अन्य किसी स्थान से बिल्कुल अलग। उन्होंने बहुमूल्य फूल, दुर्लभ घास, प्राचीन सरू और सफ़ेद चीड़ के पेड़ देखे। जिन स्थानों से वे गुज़रे, वहाँ हर परिवार धर्मनिष्ठ था और भिक्षुओं को भोजन कराता था। हर पहाड़ के नीचे लोग अपने आचरण को सुधारते थे; सभी जंगलों में यात्री सूत्र पढ़ते थे। गुरु और शिष्य हर रात आश्रय लेते और भोर में निकल पड़ते, जब तक कि छह या सात दिन बाद अचानक ऊँची इमारतों और भव्य महलों का एक समूह दिखाई देने लगा। वे सचमुच थे:

आकाश में सौ फीट की ऊंचाई तक प्रवेश करते हुए,

आकाश में आकाशगंगा को छूते हुए।
अपना सिर नीचे झुकाओ और डूबते सूरज को देखो;
अपना हाथ आगे बढ़ाएं और एक टूटता तारा तोड़ लें।
विशाल खिड़कियों में ब्रह्मांड समाहित है;
छत की विशाल कड़ियाँ बादलों से मिल जाती हैं।
शरद ऋतु में जब पेड़ बूढ़े हो जाते हैं, तो पीले सारस पत्र लेकर आते हैं;
रंग-बिरंगे फीनिक्स पक्षियों के पत्र शाम की ताजी हवा में उड़ते हुए आते हैं।
ये पवित्र और अनमोल महल और द्वार हैं।
रत्नों से सजे, जटिल इमारतों और आंगनों से सुसज्जित।
पवित्र कक्षों में इस मार्ग पर चर्चा की जाती है;
सूत्रों का प्रसार संपूर्ण ब्रह्मांड में होता है।
वसंत ऋतु की ओर बढ़ते हुए फूल बेहद खूबसूरत लगते हैं;
बारिश में चीड़ के पेड़ हरे-भरे दिखते हैं।
बैंगनी कवक और अमर लोगों के फल सदा फलते-फूलते रहते हैं;

सभी प्राणी लाल फीनिक्स पक्षियों की तरह उड़ान भरते हुए प्रतिक्रिया करते हैं।
संजांग ने अपना चाबुक उठाया और उससे इशारा करते हुए कहा, "कितनी बढ़िया जगह है, वुकॉन्ग।"
“गुरुजी,” बंदर ने कहा, “जब आप उन भ्रामक स्थानों में थे जहाँ आपको बुद्ध की झूठी प्रतिमाएँ दिखाई देती थीं, तब आप उनके सामने प्रणाम करने पर अड़े रहते थे। लेकिन आज, जब आप उस वास्तविक स्थान पर पहुँच गए हैं जहाँ बुद्ध की सच्ची प्रतिमा है, तो आप घोड़े से उतरना भी नहीं चाहते। आपका क्या तात्पर्य है?” यह सुनते ही संज़ंग घोड़े की काठी से उछलकर द्वार की ओर चल पड़ा।
मठ के द्वार के एक किनारे खड़े एक युवा भिक्षु ने पुकारा, "आप ही पूरब से आए हुए लोग होंगे जो धर्मग्रंथ लेने आए हैं।" आदरणीय भिक्षु ने तुरंत अपने कपड़े समेटे और चारों ओर देखने के लिए अपना सिर उठाया। उन्होंने देखा कि लड़का...
सुनहरे ब्रोकेड के वस्त्र पहने हुए,
जेड के हैंडल वाली व्हिस्क को लहराते हुए।
सुनहरे ब्रोकेड के वस्त्र पहने हुए
अध्याय 98
1364
पश्चिम की यात्रा
उन्होंने जैस्पर पूल के किनारे बने मंडपों में दावतें कीं;
जेड के हैंडल वाली व्हिस्क लहराते हुए
उसने बैंगनी रंग के महलों की सीढ़ियों से धूल झाड़ी।
उसके बगल में एक अमर व्यक्ति की स्मृति पट्टिका लटकी हुई थी;
और उसके पैरों में सैंडल थे।
वह वास्तव में एक कुशल पंखधारी था।
बेहद खूबसूरत और उल्लेखनीय।
अमरत्व प्राप्त करने के बाद वह एक अद्भुत देश में रहने लगा।
शाश्वत जीवन की साधना करना और सांसारिक धूल से मुक्ति पाना।
पवित्र पुजारी ने गिद्ध शिखर पर उस अजनबी को नहीं पहचाना, जो अतीत का स्वर्ण मुकुटधारी अमर था।
लेकिन महान ऋषि बंदर ने उसे पहचान लिया। बंदर ने कहा, "गुरुजी, ये महान स्वर्ण

मुकुटधारी अमर हैं जो गिद्ध शिखर की तलहटी में स्थित जेड सत्य मंदिर में निवास करते हैं। ये हमसे मिलने आए हैं।" तभी संजांग को पता चला कि वह कौन है और उसने आगे बढ़कर उन्हें प्रणाम किया।

“आखिरकार तुम इस साल यहाँ आ ही गए,” महान अमर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “बोधिसत्व गुआनयिन ने मुझे धोखा दिया था। दस साल पहले वह बुद्ध के आदेश पर शास्त्रों को लाने वाले तीर्थयात्री को खोजने के लिए पूर्व की ओर गई थीं। उन्होंने तब मुझसे कहा था कि वह दो-तीन साल में यहाँ आ जाएगा। मैं वर्षों से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था, पर तुम्हारी कोई खबर नहीं मिली। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि हमारी मुलाकात इस साल होगी।”

अपने हाथों को छाती के सामने जोड़कर संज़ंग ने उत्तर दिया, "हे महान अमर, आपकी कृपा के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ, बहुत आभारी हूँ।" संज़ंग और उनके तीन शिष्य घोड़े को आगे ले गए और सामान लेकर ताओवादी मंदिर में प्रवेश किया, जहाँ उनका परिचय वहाँ उपस्थित सभी महान अमरों से कराया गया। फिर चाय और शाकाहारी भोजन का प्रबंध किया गया, और ताओवादी लड़कों को पवित्र भिक्षुओं के लिए सुगंधित जल गर्म करने के लिए कहा गया ताकि वे बुद्ध भूमि पर जाने से पहले उसमें स्नान कर सकें।

जब उपलब्धियां पूरी हो जाएं तो स्नान करना उचित है;

मूल स्वभाव को सहज सत्य के रूप में प्रशिक्षित किया गया है।

हजारों मुसीबतें और आज:

नौ निषेध और त्रिक समर्पण नवजीवन की ओर ले जाते हैं।

सभी राक्षसों का सफाया हो जाने के बाद, वे बुद्ध भूमि की ओर चढ़ जाते हैं;

आपदाओं के समाप्त होने पर वे श्रमण देखते हैं।

अब सारी गंदगी और मैल धुल गए हैं, वे पूरी तरह से शुद्ध हैं;

मूल तथ्य पर लौटते हुए, उनके शरीर अविनाशी हैं।

जब तक गुरु और शिष्यों ने स्नान किया, तब तक दिन ढलने लगा था। उन्होंने रात जेड ट्रुथ टेंपल में बिताई।

अगली सुबह तांग पुरोहित ने अपना जटाधारी वस्त्र पहना, वैरोचना मुकुट धारण किया और अपने हाथ में अपनी मठवासी छड़ी पकड़ी और मुख्य हॉल की सीढ़ियाँ चढ़कर महान अमर से विदा ली।

“कल तो तुम फटे-पुराने कपड़ों में थे,” महान अमर ने मुस्कुराते हुए कहा, “पर आज तुम वैभवशाली वस्त्रों में सजे हो। तुम्हारे रूप-रंग से ही स्पष्ट है कि तुम सचमुच बुद्ध के पुत्र हो।” तब संजांग ने विदाई में सिर झुकाया।

"एक पल रुकिए," महान अमर ने कहा। "मैं आपको विदा करता हूँ।"

"आपको हमें विदा करने की ज़रूरत नहीं है," बंदर ने जवाब दिया। "मुझे रास्ता पता है।"

“तुम जो जानते हो,” महान अमर ने कहा, “वह बादलों से होकर जाने का मार्ग है। पवित्र भिक्षु ने कभी बादलों से यात्रा नहीं की है। उसे ज़मीनी मार्ग से ही जाना होगा।”

"तुम सही कह रहे हो," बंदर ने जवाब दिया। "हालांकि मैं यहां कई बार आ चुका हूं, लेकिन मैं हमेशा बादल के जरिए ही आया और गया हूं।"

मैं यहाँ कभी पैदल नहीं आया। अगर कोई ज़मीनी रास्ता हो तो कृपया हमें उस रास्ते से ले चलें। मेरे गुरु बुद्ध की उपासना को लेकर बहुत गंभीर हैं, इसलिए अगर आप जल्दी कर दें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा।” महान अमर ने मुस्कुराते हुए तांग पुजारी का हाथ पकड़ा और उन्हें धर्म के द्वार तक ले गए। रास्ता मंदिर के सामने वाले प्रवेश द्वार से नहीं, बल्कि मुख्य हॉल से होते हुए पीछे वाले द्वार से बाहर निकलता था। गिद्ध शिखर की ओर इशारा करते हुए महान अमर ने कहा, "पवित्र भिक्षु, क्या आप आकाश में अनेक रंगों का शुभ प्रकाश और समृद्ध आभा देख रहे हैं? वह गिद्ध शिखर है, भगवान बुद्ध का पवित्र क्षेत्र।" इसे देखते ही तांग पुजारी ने प्रणाम किया।

"गुरुजी," बंदर भाई ने मुस्कुराते हुए कहा, "अभी हमें प्रणाम करने की जगह तक नहीं पहुंचना है। जैसा कि कहावत है,

'पहाड़ भले ही नज़र आ रहा हो, लेकिन वहाँ पहुँचने से पहले ही तुम्हारा घोड़ा गिर जाएगा।' हम अभी भी उस जगह से काफी दूर हैं, तो अभी से झुकना क्यों शुरू करें? अगर तुम यहाँ से शिखर तक पूरे रास्ते झुकते रहोगे, तो तुम्हें कितनी बार अपना सिर ज़मीन पर पटकना पड़ेगा?'

“हे पवित्र भिक्षु,” महान अमर ने कहा, “आप, महान ऋषि, मार्शल तियान पेंग और पर्दा उठाने वाले सेनापति अब पवित्र भूमि पर पहुँच चुके हैं और गिद्ध शिखर देख चुके

हैं। मैं अब वापस जा रहा हूँ।" सान्ज़ांग ने महान अमर से विदा ली और अपने मार्ग पर चल पड़ा।

महान ऋषि ने तांग पुजारी और अन्य लोगों को धीरे-धीरे गिद्ध शिखर की ओर अग्रसर किया। कुछ ही मील की दूरी पर वे लगभग तीन मील चौड़ी, प्रचंड लहरों वाली एक नदी पर पहुँचे। आसपास कहीं भी किसी के होने का कोई आभास नहीं था।

"वुकोंग," संज़ंग ने घबराते हुए कहा, "हम गलत रास्ते पर आ गए हैं। मुझे लगता है कि महान अमर ने हमें गलत रास्ता दिखाया है। यह नदी इतनी चौड़ी है और लहरें इतनी ऊंची हैं, और कहीं कोई नाव भी नज़र नहीं आ रही है। हम इसे कैसे पार करेंगे?"

अध्याय 98

1366

पश्चिम की यात्रा

"उसने हमें गलत रास्ते पर नहीं भेजा," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "वहाँ देखो। वह एक पुल है, है ना?"

"जब हम इसे पार कर लेंगे, तभी हमारी असली उपलब्धि पूरी होगी।" जब आदरणीय बुजुर्ग और अन्य लोग पास जाकर देखने लगे, तो उन्होंने उसके बगल में एक पट्टिका देखी जिस पर 'बादल को छूना' शब्द लिखे हुए थे।

पार करना। यह पुल मात्र एक ही लकड़ी का बना था। वास्तव में:

दूर से देखने पर यह शून्य को पार करते हुए जेड की किरण की तरह प्रतीत होता था;

करीब से देखने पर पुल पानी के ऊपर से गुजरता हुआ एक सूखा हुआ खंभा मात्र प्रतीत होता था।

नदी को बांधना और समुद्र को घेरना आसान है।

किसी एक पेड़ के तने पर चलने की तुलना में।

असंख्य इंद्रधनुषों की चमक चारों ओर फैल गई;

हजारों लंबे महीन सफेद रेशम के टुकड़े आकाश के छोर तक फैले हुए थे।

यह संकरा, फिसलन भरा और पार करना मुश्किल था।

जब तक कि कोई ऐसा देवता न हो जो रंगीन बादलों पर चल सके।

"वुकोंग," संजांग ने भयभीत और कांपते हुए कहा, "कोई भी मनुष्य उस पुल को पार नहीं कर सकता। चलो रास्ता खोजने के लिए कहीं और देखें।"

"लेकिन यही रास्ता है," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "यही रास्ता है।"
"सही रास्ता होने पर भी कोई उसे पार करने की हिम्मत नहीं करेगा," पिग ने घबराते हुए कहा। "नदी इतनी चौड़ी है, और वहाँ भयानक लहरें हैं, और वहाँ बस एक संकरा, फिसलन भरा पेड़ का तना है। हम एक कदम भी नहीं रख सकते।"
"आप सब वहीं खड़े रहिए, मैं इस पर चढ़कर आपको दिखाता हूँ," बंदर ने जवाब दिया।
महान संत ने आगे बढ़कर एक ही खंभे वाले पुल पर छलांग लगाई। वे तेज़ी से दूसरी ओर दौड़ पड़े, दौड़ते हुए लड़खड़ा रहे थे, और पुकार कर बोले, "आ जाओ, आ जाओ।" तांग पुरोहित ने इनकार में हाथ हिलाया, जबकि सुअर और साधु सैंड ने अपनी उंगलियां चबाते हुए कहा, "यह बहुत कठिन है।"
फिर बंदर दूसरी तरफ से दौड़कर वापस आया और सुअर को खींचने लगा। "मेरे साथ आओ, बेवकूफ," उसने कहा, "मेरे साथ आओ।"
"यह बहुत फिसलन भरा है, बहुत फिसलन भरा है," सुअर ने ज़मीन पर लेटते हुए कहा। "मैं इसे कभी पार नहीं कर सकता। कृपया मुझे इससे बचाएँ और मुझे हवा और कोहरे के सहारे पार करने दें।"
बंदर ने उसे पकड़ रखा था और जवाब दिया, "यह वह जगह नहीं है जहाँ तुम्हें हवा और कोहरे पर सवार होकर जाने की अनुमति दी जाए। तुम इस पुल को पार करके ही बुद्ध बन सकते हो।"
"भाई," सुअर ने कहा, "मैं कभी नहीं पहुँच पाऊँगा। सच कहूँ तो, मैं पैदल पार नहीं कर सकता।"
अध्याय 98
1367
पश्चिम की यात्रा
जब वे दोनों एक-दूसरे को खींच रहे थे और लड़ रहे थे, तब साधु सैंड उन्हें समझाने के लिए उनके पास गए। तभी उन्होंने एक-दूसरे को छोड़ा। तभी संज़ैंग ने पीछे मुड़कर देखा तो एक आदमी नदी के नीचे से उनकी ओर नाव ला रहा था और चिल्ला रहा था, "नाव! सवार हो जाओ।"
“शिष्यों, मज़ाक करना बंद करो,” एक प्रसन्न बुजुर्ग ने कहा। “एक नौका आ रही है।” बाकी तीनों उछलकर खड़े हो गए और सब एक साथ नौका को पास आते देखने

लगे। वह एक अथाह नौका थी।
बंदर ने अपनी तेज आंखों में सुनहरी पुतलियों से पहले ही पहचान लिया था कि यह स्वागत करने वाले भगवान बुद्ध हैं, जिन्हें रत्नध्वज, प्रकाश के राजसी बुद्ध के रूप में भी जाना जाता है, लेकिन इसे प्रकट करने के बजाय वह बस पुकारता रहा, "इधर आओ, इधर आओ, इधर आओ।"
कुछ ही देर में नाविक ने अपनी नाव किनारे पर लाकर फिर से चिल्लाना शुरू कर दिया, "नाव! सवार हो जाओ!" यह देखकर संज़ंग एक बार फिर घबरा गया। उसने कहा, "तुम्हारी नाव में तल ही नहीं है, तो तुम किसी को पार कैसे ले जाओगे?"
बुद्ध ने कहा, "यह मेरी नाव है।"
"जब से कैओस का विभाजन हुआ है, तब से यह प्रसिद्ध है।"
और मैंने इसे बिना किसी बदलाव के वापस भेज दिया है।
यह हवा और लहरों दोनों में स्थिर रहता है।
असीम शांति का आनंद लेना, जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत।
छह प्रकार की धूल से अछूता, यह एक में लौट आता है।
वह हर तरह की विपत्ति में भी शांत भाव से अपना काम करता रहता है।
एक अथाह नाव के लिए महासागरों को पार करना बहुत कठिन है।
लेकिन प्राचीन काल से ही यह सभी प्राणियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता रहा है।"
महान ऋषि बंदर ने अपने हाथ छाती के सामने जोड़कर धन्यवाद देते हुए कहा, "मेरे स्वामी का स्वागत करने के लिए आने की आपकी उदारता के लिए मैं आपका आभारी हूँ। आइए, स्वामी जी। उनकी नाव भले ही बिना तली की हो, लेकिन स्थिर है और हवा और लहरों में भी नहीं पलटेगी।" आदरणीय बुजुर्ग अभी भी बहुत संशय में थे, लेकिन बंदर ने उन्हें बांहों से पकड़कर आगे धकेल दिया। अपने पैरों पर खड़े न रह पाने के कारण स्वामी पानी में गिर पड़े, जहाँ नाविक ने तुरंत उन्हें पकड़ लिया और नाव पर खड़ा कर दिया।
मालिक ने अपने कपड़े झटक दिए और पैर पटकते हुए बंदर के बारे में शिकायत की, जिसने साधु रेत और सुअर को सामान और घोड़े के साथ जहाज पर खड़ा कर दिया था।
बुद्ध ने कोमलता और दृढ़ता से नाव को आगे बढ़ाया, जिससे एक शव नदी में बहता

हुआ आया और आदरणीय गुरुजी भयभीत हो गए। बंदर ने कहा, "भयभीत न हों, गुरुजी। यह आप ही हैं।"

"तुम हो, तुम हो," पिग ने कहा। फ्रायर सैंड ने ताली बजाते हुए कहा, "तुम हो, तुम हो!"

नाविक ने आवाज़ लगाई, फिर खुद भी बोला, "तुम हो! बधाई हो! बधाई हो!" तीनों ने एक साथ बधाई दी, और नाविक ने नाव को तेज़ी से और स्थिर गति से उस अमर बादल-स्पर्शी पुलिया के ऊपर से गुज़ार दिया। संज़ंग मुड़ा और हल्के कदमों से दूसरी तरफ के किनारे पर कूद गया। इस पर एक कविता है:

जब गर्भ से जन्मा मांस और रक्त से बना शरीर त्याग दिया जाता है,
आदिम आत्मा को आत्मीयता और प्रेम मिलता है।
आज सुबह जब कर्म पूर्ण हो गए और बुद्धत्व प्राप्त हो गया
अतीत की छत्तीस प्रकार की धूल धुल कर बह जाती है।

यही तो वास्तव में महान ज्ञान का अर्थ है, दूसरे किनारे पर जाने का असीम धर्म। जब वे चारों किनारे पर चढ़े और पीछे मुड़कर देखा तो वह अथाह नाव पहले ही गायब हो चुकी थी, पता नहीं कहाँ। जब भाई बंदर ने समझाया कि वह स्वागत करने वाले बुद्ध थे, तभी संज़ंग को ज्ञान प्राप्त हुआ। तुरंत ही वह मुड़कर अपने तीनों शिष्यों को धन्यवाद देने लगा।

“चलो धन्यवाद का आदान-प्रदान न करें,” बंदर ने कहा। “हमने एक-दूसरे की मदद की है। हे गुरुदेव, आपने हम तीनों की रक्षा की और हमें पुण्य कमाने का मार्ग दिखाया ताकि हम सच्ची उपलब्धि प्राप्त कर सकें। और हमने भी आपकी रक्षा की, हे गुरुदेव, आस्था बनाए रखते हुए और आपको अपना नश्वर शरीर त्यागने में खुशी-खुशी सहायता की। हे गुरुदेव, आगे के भव्य दृश्य को देखिए। फूल, घास, चीड़ और बांस, साथ ही फीनिक्स, सारस और हिरण। इसकी तुलना उन स्थानों से कीजिए जहाँ दुष्ट प्राणियों ने रूप परिवर्तन के माध्यम से भ्रम पैदा किया है। अपने आप से पूछिए कि कौन सा सुंदर और अच्छा है, और कौन सा बदसूरत और बुरा है।” संजांग कृतज्ञता से भरा हुआ था। वे सभी अब हल्के शरीर वाले और प्रसन्न होकर गिद्ध शिखर की ओर

चल पड़े। जल्द ही प्राचीन गर्जन मठ दिखाई देने लगा: उसकी छतें आकाश को छू रही थीं।
इसकी जड़ें सुमेरु पर्वतमाला से जुड़ती थीं।
अद्भुत चोटियाँ कतारबद्ध रूप से फैली हुई हैं;
ऊबड़-खाबड़ चट्टानों ने आपस में जुड़ी हुई आकृतियाँ बनाईं।
लटकते हुए निशान के नीचे अद्भुत पौधे और फूल थे;
घुमावदार रास्ते के किनारे जादुई मशरूम और ऑर्किड उग रहे थे।
अमर बंदर आड़ू के पेड़ों से फल तोड़ रहे थे।
जैसे जलती हुई लपटों के बीच सोना;
सफेद सारस चीड़ के पेड़ों की शाखाओं पर बैठे हुए थे।
मानो वे धुएं के बीच जेड रंग के जीव हों।
अध्याय 98
1369
पश्चिम की यात्रा
रंगीन फीनिक्स पक्षी जोड़े में,
हरे रंग के फीनिक्स पक्षी दो-दो करके।
रंगीन फीनिक्सों के जोड़े
उन्होंने सूर्य को पुकार कर संसार पर आशीर्वाद बरसाया;
हरे रंग के फीनिक्स पक्षी दो-दो करके
हवा में नाचते हुए, एक दुर्लभ और अद्भुत दृश्य।
चमकीली सुनहरी टाइलों पर मंदारिन बत्तखों की आकृतियाँ बनी हुई थीं;
शानदार पैटर्न वाली ईंटों में अगेट जड़े हुए थे।
पूरब और पश्चिम की ओर
वे महलों के फूल और द्वारों के मोती थे;
उत्तर और दक्षिण की ओर
वहाँ अनगिनत अनमोल मंडप और ऊँची इमारतें थीं।
देवराज हॉल रंगीन रोशनी से जगमगा रहा था;
लोकपाल कक्ष के सामने बैंगनी रंग की लपटें उठ रही थीं।
स्तूप सबसे अलग दिखते थे।

और उदुंबरा वृक्ष के फूल सुगंधित थे।
सचमुच यह इतनी सुंदर जगह थी मानो स्वर्ग से आई हो, जहाँ मंद बादलों के नीचे दिन लंबे लगते थे।
नश्वर संसार से दूर, सभी भाग्य का अंत हो गया;
धर्मगृह के भीतर सभी कल्प पूर्ण हो गए थे।
गुरु और शिष्य जब सहजता से गिद्ध शिखर की चोटी तक गए, तो हरे चीड़ के पेड़ों के नीचे आम लोग और हरे रंग के सरू के पेड़ों के बीच श्रद्धालु पुरुष और महिलाएं दिखाई दिए। आदरणीय गुरु ने विनम्रतापूर्वक उन्हें प्रणाम किया, जिस पर सभी आम पुरुष और महिलाएं, भिक्षु और भिक्षुणियां हाथ जोड़कर उनसे बोले, "हे पवित्र भिक्षु, हमें प्रणाम न करें। शाक्यमुनि के दर्शन करने के बाद हमसे बात करने आइए।"
"अभी इसके लिए थोड़ा जल्दी है," बंदर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "चलो, मालिक की पूजा करने चलते हैं।"
अध्याय 98
1370
पश्चिम की यात्रा
आदरणीय बुजुर्ग ने अपनी भुजाएँ लहराईं और एक अनुष्ठानिक नृत्य किया, और बंदर के पीछे-पीछे सीधे थंडर मठ के द्वार तक गए, जहाँ चार महान वज्रपाणियों ने उनका स्वागत करते हुए कहा, "क्या आप अब पहुँच गए हैं, पवित्र भिक्षु?"
"जी हां," संजांग ने झुककर उत्तर दिया, "आपका शिष्य ज़ुआनज़ैंग आ गया है।" यह उत्तर देकर वह द्वार से अंदर जाने ही वाला था।
“हे पवित्र भिक्षु, कृपया एक क्षण प्रतीक्षा करें,” वज्रपाणियों ने कहा। “आपके अंदर आने से पहले हमें सूचना दे दीजिए।” वज्रपाणियों ने मध्य द्वारों पर स्थित चार महान वज्रपाणियों को तांग पुजारी के आगमन की सूचना भेजी, जिन्होंने बदले में भीतरी द्वारों को सूचना दी, जहाँ दिव्य भिक्षु भेंट चढ़ा रहे थे।
तांग पुजारी के आगमन की खबर सुनते ही वे सभी महावीर हॉल की ओर दौड़े, जहाँ उन्होंने तथागत शाक्यमुनि बुद्ध को सूचित किया, "तांग दरबार के पवित्र भिक्षु आपके महान मठ में शास्त्रों को लेने आए हैं।"
भगवान बुद्ध अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने आठ बोधिसत्वों, चार वज्रपाणियों, पाँच सौ अर्हतों, तीन हज़ार रक्षकों, ग्यारह दिव्य प्रकाशकों और अठारह संरक्षकों को

बुलाया, जो दो पंक्तियों में खड़े होकर बुद्ध के उस आदेश को आगे बढ़ा रहे थे जिसमें तांग पुरोहित को अंदर आने के लिए कहा गया था। इस प्रकार निमंत्रण एक स्तर से दूसरे स्तर तक भेजा गया: "पवित्र भिक्षु अंदर आएँ।" विधि-विधान का पालन करते हुए, तांग पुरोहित वुकॉन्ग और वुजिंग के साथ द्वार से अंदर गए, जो घोड़े को आगे ले जा रहे थे और सामान ढो रहे थे।

अतीत में उन्हें अपने दायित्व को पूरा करने में काफी संघर्ष करना पड़ा था।
सम्राट को सिंहासन की सीढ़ियों पर छोड़ने के बाद।
भोर होते ही वह कोहरे और ओस से भीगे पहाड़ों पर चढ़ गया था;
शाम ढलते ही वह बादलों के बीच चट्टानों पर सो गया था।
वह अपनी लाठी लेकर तीन हजार नदियों को पार कर चुका था।
और उन्होंने अपने मठवासी डंडे के साथ अनगिनत चट्टानों पर चढ़ाई की।
उनका हर विचार सच्ची उपलब्धि पर केंद्रित था।
और आज अंततः उन्हें तथागत के दर्शन होने वाले थे।

जब वे चारों महावीर हॉल के सामने पहुँचे, तो उन्होंने तथागत को प्रणाम किया और फिर अपने बाएँ और दाएँ ओर प्रणाम किया। तीन-तीन फेरे पूरे करने के बाद, वे बुद्ध के सामने घुटने टेककर अपना पासपोर्ट प्रस्तुत करने लगे। तथागत ने ध्यानपूर्वक पढ़कर उसे संज़ंग को लौटा दिया, जिसने सिर झुकाकर कहा, "आपके शिष्य शुआनज़ंग ने महान तांग सम्राट के आदेश पर आपके पवित्र मठ तक लंबी यात्रा की है, ताकि वे उन सच्चे शास्त्रों की याचना कर सकें जो सभी प्राणियों का उद्धार करेंगे। मैं भगवान बुद्ध से उनकी कृपा से प्रार्थना करता हूँ कि वे उन्हें तुरंत प्रदान करें ताकि मैं अपने देश लौट सकूँ।"

अध्याय 98

1371

पश्चिम की यात्रा

तब तथागत ने करुणा से भरे मुख से अपने हृदय की अपार दया से संजंग से कहा, "आपका पूर्वी देश जंबु के दक्षिणी महाद्वीप में है। वहाँ आकाश विशाल है, मिट्टी गहरी है, उपज प्रचुर है और जनसंख्या असंख्य है, फिर भी वहाँ लोभ, हत्या, व्यभिचार, झूठ, छल और बेईमानी व्याप्त है। वे बौद्ध शिक्षाओं का पालन नहीं करते, अच्छे भाग्य की ओर नहीं मुड़ते, सूर्य, चंद्रमा और तारों का आदर नहीं करते और पाँच अनाजों को

महत्व नहीं देते। वे निष्ठावान, माता-पिता के प्रति आदरशील, धर्मी और दयालु नहीं हैं। अपने हृदय के भ्रम में वे स्वयं को गुमराह करते हैं, वजन और माप में हेराफेरी करते हैं, जीवन लेते हैं और पशुओं को मारते हैं, इस प्रकार वे असीम बुरे कर्म और पाप और बुराई की इतनी अधिकता उत्पन्न करते हैं कि वे अपने ऊपर नरक का प्रकोप लाते हैं। इसीलिए उन्हें हमेशा के लिए अंधकारमय पाताल लोक में गिरना पड़ता है, जहाँ उन्हें हथौड़े से पीटने, कुचलने, पीसने और कूटने की यातनाएँ सहनी पड़ती हैं, या वे पशुओं के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं। उनमें से कई अपने पिछले जन्मों के ऋणों को चुकाने और दूसरों को अपना मांस खिलाने के लिए सींग वाले, रोएँदार प्राणियों का रूप धारण करते हैं।"

इन्हीं कारणों से कुछ लोग अविची नरक में गिर जाते हैं, जहाँ से वे कभी पुनर्जन्म नहीं ले पाते। यद्यपि कन्फ्यूशियस ने परोपकार, धर्म, सही आचरण और ज्ञान का सिद्धांत स्थापित किया, और यद्यपि बाद के सम्राटों ने कारावास, निर्वासन, गला घोंटना और सिर कलम करने जैसी सजाएँ दीं, फिर भी इन मूर्ख, अज्ञानी, स्वार्थी और बेलगाम लोगों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। क्यों? मेरे पास तीन शास्त्र भंडार हैं जो दुख से मुक्ति और विपत्ति से छुटकारा दिलाते हैं। इन तीन भंडारों में से एक धर्म भंडार है जो स्वर्ग से संबंधित है; एक शास्त्र भंडार है जो पृथ्वी से संबंधित है, और एक सूत्र भंडार है जो प्रेतों को मुक्ति दिला सकता है। कुल मिलाकर पैंतीस शास्त्र हैं, जो 15,144 ग्रंथों में संकलित हैं। ये वास्तव में सत्य का मार्ग और अच्छाई का द्वार हैं। इनमें विश्व के चारों महाद्वीपों के खगोल विज्ञान, भूगोल, व्यक्तित्व, पक्षी, पशु, वृक्ष, फूल, उपयोगी वस्तुएँ और मानवीय मामलों से संबंधित सभी जानकारी शामिल है। अब जब आप दूर से आए हैं, तो मैं इन सभी को आपको सौंपना चाहता था ताकि आप इन्हें अपने साथ ले जा सकें, लेकिन आपके देश के लोग मूर्ख और असभ्य हैं। वे सत्य के निंदक हैं जो हमारी शिक्षाओं के रहस्यों को नहीं समझ सकते। आनंद, कश्यप," उन्होंने पुकारा, "इन चारों को रत्न मीनार के चरणों में ले जाओ और उन्हें शाकाहारी भोजन कराओ। भोजन के बाद मंडप खोलो, मेरे तीन भंडारों में रखे पैंतीस शास्त्रों में से प्रत्येक में से कुछ अंश चुनो और उनसे कहो कि वे इन शास्त्रों का पूर्व में प्रचार करें, जहाँ वे शाश्वत रूप से अपनी महान कृपा प्रदान करें।"

बुद्ध के आदेशानुसार, दोनों अर्हतों ने चारों तीर्थयात्रियों को मीनार के तल तक ले गए, जहाँ दुर्लभ और अद्भुत रत्नों और खजानों का भंडार था। यहाँ देवताओं ने भेंट चढ़ाकर

एक शाकाहारी भोज का आयोजन किया, जिसमें अमर भोजन, अमर व्यंजन, अमर चाय, अमर फल और हर प्रकार के ऐसे व्यंजन थे जो नश्वर संसार में नहीं मिलते। गुरु और शिष्यों ने बुद्ध की कृपा के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सिर झुकाया और तृप्त भोजन किया। वास्तव में, कीमती ज्वालाएँ और सुनहरी रोशनी आँखों को चकाचौंध कर रही थीं।

हालांकि दुर्लभ अगरबत्ती और व्यंजन बेहद उत्तम थे।

हजार मंजिला स्वर्ण मंडप अत्यंत सुंदर था।

और कानों को दिव्य ध्वनि देने वाला अमर संगीत सुनाई दिया।

मांस रहित भोजन और धरती पर दुर्लभ जादुई फूल, सुगंधित चाय और ऐसे अनोखे व्यंजन जो अमर जीवन प्रदान करते हैं।

हजारों प्रकार के कष्टों को सहने के लंबे काल के बाद, आज उस मार्ग की पूर्णता का गौरवशाली सुख प्राप्त हुआ है।

अध्याय 98

1372

पश्चिम की यात्रा

यह सुअर के लिए सौभाग्य की बात थी, और भिक्षु सैंड के लिए भी बड़ा लाभ था, क्योंकि उन्होंने बुद्ध की भूमि में भरपूर भोजन किया, जो पुराने को नया मांस और हड्डियाँ और मांस प्रदान करने वाला शाश्वत जीवन देता है। दोनों अर्हत भोजन समाप्त होने तक उन चारों के साथ रहे, जिसके बाद वे खजाने के मंडप में गए, जहाँ उनके लिए द्वार खोल दिए गए ताकि वे अंदर जाकर देख सकें। चारों ओर रंगीन प्रकाश और शुभ वाष्पों का हजार गुना आवरण था, जबकि चारों ओर चमकदार धुंध और शुभ संकेत देने वाले बादल मंडरा रहे थे। शास्त्रों की अलमारियों और बक्सों के बाहर लाल लेबल चिपके हुए थे, जिन पर शास्त्रों के शीर्षक साफ-सुथरे ढंग से लिखे हुए थे। वे थे...

निर्वाण सूत्र 748 रोल

बोधिसत्व सूत्र 1,021 रोल

आकाशगर्भ सूत्र 400 रोल

सुरंगमा सूत्र 110 रोल

कृपा के अर्थ पर आधारित सूत्रों का संग्रह (50 रोल)

दृढ़ संकल्प सूत्र 140 रोल
Ratnagarbha sutra 45 rolls
अवतामसाका सूत्र 500 रोल
भूततथाता की पूजा पर सूत्र (90 पृष्ठ)
Mahaprajnaparamita sutra 916 rolls
Mahaprabhasa sutra 300 rolls
Adbhuta – dharma sutras 1,110 rolls
विमलकीर्ति सूत्र 170 रोल
तीन शास्त्र 270 रोल
हीरा सूत्र 100 रोल
Saddharma sastra 120 rolls
Buddhacaritakavya sutra 800 rolls
पैनकनागा रेशम के 32 रोल
बोधिसत्व-विनय सूत्र 116 पृष्ठ
Mahasamnipata sutras 130 rolls
मकर सूत्र 350 रोल
अध्याय 98
1373
पश्चिम की यात्रा
Saddharma – pundarika sutra 100 rolls
योग सूत्र 100 रोल
कीमती शाश्वतता सूत्र 220 रोल
पश्चिमी स्वर्ग पर सूत्र, 130 पृष्ठ
Samghika sutra 157 rolls
Samyukta – Buddhadesa sutra 1,950 rolls
महायान-श्रद्धोतपादसा सूत्र 1,000 रोल
महान ज्ञान सूत्र 1,080 रोल
Ratna – prabhava sutra 1,280 rolls
ओरिजिनल पवेलियन सूत्र 850 रोल

प्रधान विनय सूत्र 200 रोल

आनंद और कश्यप ने तांग पुजारी को सभी धर्मग्रंथों के शीर्षक पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने उससे कहा, “हे पवित्र भिक्षु, आप पूर्व से आए हैं। क्या आप हमारे लिए कोई उपहार लाए हैं? उन्हें अभी हमें सौंप दीजिए, फिर हम आपको धर्मग्रंथ दे देंगे।”

जब संजांग ने यह सुना तो उसने कहा, "आपका शिष्य ज़ुआनज़ैंग बहुत दूर से आया है, और मैं अपने साथ किसी को नहीं लाया।"

“यह तो ठीक है,” दोनों अर्हत हंसते हुए बोले। “अगर हम शास्त्र मुफ्त में दे देंगे, तो वे पीढ़ियों तक चलते रहेंगे और हमारी आने वाली पीढ़ियां भूख से मर जाएंगी।” बंदर को उनकी इस तरह की कठोर बातें और शास्त्र देने से इनकार सुनना बर्दाश्त नहीं हुआ, इसलिए वह चिल्लाया, “चलिए, गुरुजी, तथागत से इनकी शिकायत करते हैं। हम उनसे शास्त्र स्वयं दिलवा लेंगे।”

"चुप रहो!" कश्यप ने कहा। "तुम खुद को क्या समझते हो, ऐसे नखरे क्यों कर रहे हो? इधर आओ और शास्त्र लो।" पिग और फ्रायर सैंड, जो अपने गुस्से पर काबू रख रहे थे, उन्होंने बंदर को शांत किया।

वे शास्त्रों को स्वीकार करने के लिए वापस मुड़े, जिन्हें एक-एक करके सामान में पैक किया जा रहा था। कुछ शास्त्र घोड़े की पीठ पर रखे गए, और शेष को दो डंडों पर बांधकर पिग और फ्रायर सैंड ने अपने कंधों पर उठाया। फिर वे सभी बुद्ध के सिंहासन पर लौट आए, प्रणाम किया, तथागत को धन्यवाद दिया और सीधे बाहर चले गए। उन्होंने रास्ते में मिले प्रत्येक बुद्ध और प्रत्येक बोधिसत्व को दो बार प्रणाम किया। मुख्य द्वार पर पहुँचकर उन्होंने भिक्षुओं, भिक्षुणियों, गृहस्थ पुरुषों और गृहस्थ महिलाओं को प्रणाम किया और सभी से विदा ली। फिर वे जल्दी से पहाड़ से नीचे उतर गए।

यह कथा उनकी नहीं, बल्कि प्राचीन बुद्ध दीपमकरा की है, जो पुस्तकालय में चुपचाप सुन रहे थे जब शास्त्र सौंपे गए थे। वे भली-भांति समझ गए थे कि आनंद और कश्यप ने निराकार शास्त्र सौंपे हैं। उन्होंने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा, "पूर्व के उन मूर्ख भिक्षुओं को यह एहसास नहीं हुआ कि ये निराकार शास्त्र हैं। पवित्र भिक्षुओं की उन सभी पर्वतों और नदियों को पार की यात्रा पूरी तरह व्यर्थ हो जाएगी। यहाँ कौन उपस्थित है?" उन्होंने पुकारा, और अर्हत सुकलाविरा आगे आए।

अध्याय 98

1374

पश्चिम की यात्रा

"अपनी दिव्य शक्ति का प्रयोग करो," दीपमकारा ने उन्हें निर्देश दिया, "और टूटते तारे की तरह तांग पुजारी का पीछा करो। उससे निराकार शास्त्र ले लो और उसे कहो कि वह सच्चे शास्त्र लेने वापस आए।" इसके बाद अर्हत सुकलाविरा अपनी दिव्य शक्ति का भव्य प्रदर्शन करते हुए गरजते हुए तूफानी हवा पर सवार होकर गर्जन मठ से दूर उड़ गए। वह शानदार हवा सचमुच अद्भुत थी।

बुद्ध की उपस्थिति से आया एक योद्धा,
शुन क्षेत्र के दो पवन देवताओं से भी महान।
उसके दिव्य छिद्रों से निकलने वाली क्रोधित गर्जनाएँ
वे एक युवती के धुएं के झोंकों से कहीं अधिक शक्तिशाली थे।
इस हवा ने
मछलियाँ और ड्रैगन अपने घोंसले खो देते हैं।
जबकि नदियों और समुद्रों में लहरें विपरीत दिशा में बहती थीं।
काले बंदर अपने साथ लाए फल को प्रस्तुत नहीं कर सके;
पीले सारस अपने घोंसलों की तलाश में बादलों की ओर मुड़ गए।
लाल फीनिक्स का गीत भद्दा लग रहा था;
रंग-बिरंगे तीतरों की कर्कश आवाजें सुनाई दे रही थीं।
सफेद चीड़ के पेड़ की शाखाएँ टूट गई थीं
जैसे ही उदुंबरा के फूल हवा में उड़ गए।
हरे बांस की हर डंडी नीचे झुकी हुई थी;
सुनहरे कमल के सभी फूल झूम रहे थे।
घंटी की आवाज़ हज़ार मील दूर तक सुनाई दी।
सूत्रों के मंत्रों की मधुर ध्वनि घाटियों में गूंज रही थी।
चट्टान के नीचे खिले फूलों की सुंदरता नष्ट हो गई थी;
रास्ते के किनारे पौधों की कोमल कोंपलें गिरी पड़ी थीं।
चमकीले फीनिक्स पक्षी मुश्किल से अपने पंख फैला पा रहे थे;
सफेद हिरण चट्टानों के नीचे छिपे हुए थे।

आकाश सुगंध से भरा हुआ था।

अध्याय 98

1375

पश्चिम की यात्रा

साफ हवा बादलों को चीरते हुए बह रही थी।

तांग पुरोहित टहल रहे थे तभी उन्हें सुगंधित हवा का आभास हुआ, पर उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया, इसे भगवान बुद्ध का शुभ संकेत समझकर। तभी एक आवाज सुनाई दी, मानो हवा में से किसी ने हाथ नीचे करके घोड़े की पीठ से शास्त्रों को हल्के से उठा लिया हो। इससे संजांग इतना चौंक गया कि उसने अपनी छाती पीटते हुए जोर से चीख मारी। सुअर उसका पीछा करने लगा, भिक्षु रेत शास्त्रों से लदे डंडों की रखवाली करने लगा और बंदर भाई अर्हत के पीछे दौड़ पड़ा। जब उसने देखा कि बंदर लगभग उसके पास पहुँच गया है, और इस डर से कि निर्दयी गदा उसे बुरी तरह घायल करने में जरा भी संकोच नहीं करेगी, अर्हत ने शास्त्रों के बंडल को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और धूल में फेंक दिया। जब बंदर ने देखा कि बंडल सुगंधित हवा में बिखरते हुए टुकड़ों में गिर रहा है, तो उसने अर्हत का पीछा करना छोड़ दिया और शास्त्रों की देखभाल के लिए अपना बादल नीचे ले आया। अर्हत सुकलाविरा ने हवा और बादलों को दूर कर दिया, फिर दीपमकारा को सूचना देने के लिए वापस चला गया।

जब सुअर, जो उनका पीछा कर रहा था, ने धर्मग्रंथों को गिरते देखा तो उसने बंदर की मदद से उन्हें उठाया और तांग पुजारी के पास वापस ले गया। तांग पुजारी ने आँखों से आँसू बहाते हुए कहा, "शिष्यों, इस सुखमय संसार में भी दुष्ट राक्षस लोगों को धोखा देते हैं।" बिखरे हुए धर्मग्रंथों को अपनी बाहों में समेटने के बाद, साधु सैंड ने उनमें से एक को खोला और देखा कि वह बर्फ की तरह सफेद था: उस पर एक भी शब्द नहीं लिखा था।

उसने झट से वह पांडुलिपि संज़ंग को देते हुए कहा, "गुरुजी, इस पांडुलिपि में कुछ भी नहीं है।" बंदर ने एक और पांडुलिपि खोली तो उसमें भी कुछ नहीं लिखा था। सुअर ने एक और पांडुलिपि खोली तो उसमें भी कुछ नहीं था।

"इन सभी को खोलकर हमें जांचने दो," संजांग ने कहा। हर एक पांडुलिपि खाली कागज थी।

“हम पूर्वी लोगों की किस्मत वाकई बदकिस्मत है,” उसने आह भरते और कराहते हुए

कहा। “इन जैसे निरर्थक ग्रंथों को लाने का क्या फायदा? मैं तांग सम्राट का सामना कैसे कर पाऊंगा? अपने सम्राट से झूठ बोलने के जुर्म में मुझे फांसी से बचने का कोई रास्ता नहीं होगा।”

बंदर, जो पहले ही समझ चुका था कि क्या हुआ है, उसने तांग पुजारी से कहा, "गुरुजी, और कुछ मत कहिए।"

आनंद और कश्यप ने हमें ये खाली कागज़ के पन्ने इसलिए दिए क्योंकि जब उन्होंने हमसे उपहार मांगे थे तो हमारे पास उन्हें देने के लिए कुछ नहीं था। चलो वापस चलते हैं, तथागत को इनकी सूचना देते हैं और इन पर जबरन वसूली का आरोप लगवाते हैं।

"बिल्कुल सही," सुअर चिल्लाया, "बिल्कुल सही। चलो इनकी शिकायत करते हैं।"

फिर वे चारों तेज़ी से पहाड़ पर चढ़ गए, और कुछ कदम चलने के बाद वे थंडर मठ की ओर वापस दौड़ पड़े।

कुछ ही देर में वे एक बार फिर मठ के द्वार के बाहर थे, जहाँ सभी ने अभिवादन में अपने हाथ जोड़े। मुस्कुराते हुए उन्होंने पूछा, "क्या आप पवित्र भिक्षु अपने धर्मग्रंथों का आदान-प्रदान करने आए हैं?"

संज़ंग ने सिर हिलाकर धन्यवाद व्यक्त किया। वज्रपाणियों ने उन्हें नहीं रोका, बल्कि उन्हें सीधे महावीर हॉल में प्रवेश करने दिया।

“तथागत,” बंदर ने गरजते हुए कहा, “हमारे स्वामी और हम सभी को पूर्व से यहाँ तक आने के लिए अनगिनत राक्षसों, दानवों, मुसीबतों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ताकि हम आपकी पूजा कर सकें। आपने शास्त्रों को सौंपने का आदेश दिया था, लेकिन आनंद और कश्यप ने ऐसा नहीं किया क्योंकि वे हमसे कुछ छीनने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने साजिश रचकर जानबूझकर हमें बिना एक भी शब्द लिखे हुए खाली कागज़ के शास्त्र ले जाने दिए। लेकिन उन्हें ले जाने का क्या फायदा? मैं आपसे विनती करता हूँ, तथागत।”

“चिल्लाना बंद करो,” भगवान बुद्ध ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। “मुझे पहले से ही पता है कि उन्होंने तुमसे उपहार मांगे हैं। लेकिन शास्त्रों को यूं ही यूं ही नहीं सौंपा जा सकता। न ही उन्हें मुफ्त में ले जाया जा सकता है। अतीत में भिक्षु और पवित्र भिक्षु पर्वत से नीचे उतरकर अध्याय 98 की भूमि में रहने वाले बड़े झाओ के परिवार को इन शास्त्रों का पाठ करते थे।

श्रावस्ती। इससे जीवितों की शांति और सुरक्षा तथा परिवार के मृत सदस्यों की मुक्ति सुनिश्चित हुई। बस तीन बुशेल और तीन पेक दानेदार सोना मांगा गया था। मैंने कहा कि उन्होंने शास्त्रों को बहुत सस्ते में बेच दिया है, इसलिए मैंने यह सुनिश्चित किया कि झाओ के पुत्र और पोते गरीब रहें। तुम्हें खाली हाथ आने के कारण खाली ग्रंथ दिए गए हैं। खाली ग्रंथ सच्चे, शब्दहीन शास्त्र हैं, और वे वास्तव में अच्छे हैं। लेकिन चूंकि तुम पूर्व के प्राणी इतने भ्रमित हो और ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाए हो, इसलिए हमें तुम्हें ये देने पड़ेंगे। आनंद, कश्यप," उसने पुकारा, "शब्दों वाले सच्चे शास्त्र तुरंत ले आओ।"
उन्हें देने के लिए प्रत्येक शीर्षक से कुछ रोल चुनें, फिर यहां वापस आकर मुझे बताएं कि आपने कितने रोल दिए।
फिर दोनों अर्हत चारों तीर्थयात्रियों को पुस्तकालय भवन के नीचे ले गए और एक बार फिर तांग पुजारी से भेंट मांगी। भेंट करने के लिए कुछ और न होने पर, उन्होंने भिक्षु सैंड को बैंगनी सोने का भिक्षापात्र लाने का आदेश दिया और उसे दोनों हाथों से भेंट किया। उन्होंने कहा, “आपका शिष्य गरीब है और बहुत दूर से आया है, और मैं अपने साथ कोई भेंट नहीं लाया। यह भिक्षापात्र मुझे तांग सम्राट ने अपने हाथों से दिया था ताकि मैं अपनी यात्रा में भोजन की भीख मांग सकूं। अब मैं इसे अपनी हार्दिक भावनाओं के प्रतीक के रूप में आपको अर्पित करता हूं। मैं आप अर्हतों से विनती करता हूं कि आप इसे तुच्छ न समझें बल्कि इसे संभाल कर रखें। जब मैं अपने दरबार में लौटूंगा तो मैं इसकी सूचना तांग सम्राट को दूंगा, जो निश्चित रूप से आपको भरपूर पुरस्कार देंगे। मैं आपसे केवल इतना ही अनुरोध करता हूं कि मुझे वे सच्चे धर्मग्रंथ दें जिनमें ऐसे शब्द हों जो मुझे मेरे राजसी मिशन में असफल होने और इस लंबी, कठिन यात्रा को व्यर्थ होने से बचा सकें।”
आनंद ने हल्की सी मुस्कान के साथ कटोरा स्वीकार कर लिया। बहुमूल्य पुस्तकालय भवन की रक्षा कर रहे योद्धा, मसालों के लिए जिम्मेदार रसोई कर्मचारी और पुस्तकालय के प्रभारी अर्हत एक-दूसरे के चेहरे सहला रहे थे, पीठ थपथपा रहे थे, उंगलियों से एक-दूसरे को चिढ़ा रहे थे और मुंह बना रहे थे।
“यह तो शर्मनाक है,” वे सब हंसते हुए बोले, “यह तो शर्मनाक है। शास्त्रों को लेने आए तीर्थयात्रियों से उपहार मांग रहे हो!” कुछ ही देर में आनंद शर्म से भौंहें चढ़ाए खड़ा था, लेकिन कटोरा पकड़े हुए था और उसे छोड़ नहीं रहा था। तभी कश्यप

पुस्तकालय में गए और एक-एक करके शास्त्रों की जाँच करके उन्हें संजांग को सौंप दिया।

संज़ंग ने पुकारा, "शिष्यों, इन्हें ध्यान से देखो, पिछली बार की तरह नहीं।" उन तीनों ने पांडुलिपियाँ लीं और एक-एक करके उनकी जाँच की। सभी के मन में कुछ न कुछ विचार था। कुल 5,048 पांडुलिपियाँ सौंपी गईं, जो एक ही भंडार में थीं। उन्हें करीने से पैक करके घोड़े पर लाद दिया गया, और बची हुई पांडुलिपियों को पिग के लिए एक डंडे पर लादकर ले जाने के लिए रख दिया गया। साधु सैंड ने अपना सामान स्वयं उठाया, और जब भाई मंकी घोड़े को आगे ले जा रहा था, तब तांग पुजारी ने अपनी छड़ी ली, अपने वैरोचना मुकुट को ठीक से पहनाया, अपने जटाधारी वस्त्र को झाड़ा और प्रसन्नतापूर्वक तथागत के समक्ष चले गए। सचमुच:

महान भंडार के सच्चे धर्मग्रंथों का स्वाद मधुर है।

तथागत द्वारा निर्मित, उत्तम और भव्य।

याद रखिए, इस पर्वत पर चढ़ने के लिए शुआनज़ैंग को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था:

आनंद का लालच हद से ज्यादा था।

जो बात वे पहले नहीं समझ पाए, उसे दीपमकारा ने उन्हें समझाने में मदद की; बाद में शास्त्रों ने उन्हें सच्चाई का एहसास कराया और तब उन्हें शांति मिली।

अब सफल होने पर वे धर्मग्रंथों को पूर्व की ओर ले जाएंगे;

जहां सभी उनकी जीवनदायिनी समृद्धि से तरोताजा हो सकें।

अध्याय 98

1377

पश्चिम की यात्रा

आनंद और कश्यप ने तांग पुजारी को तथागत के दर्शन कराने के लिए नेतृत्व किया, जो अपने कमल सिंहासन पर आसीन हुए और दो महान अर्हतों, ड्रैगन-निरोधक और बाघ-वश में करने वाले को, बादलों को झकझोर देने वाली पत्थर की घंटियों को बजाने का निर्देश दिया, जिससे सभी तीन हजार बुद्ध, तीन हजार रक्षक, आठ वज्रपाणि, चार बोधिसत्व, पांच सौ अर्हत, आठ सौ भिक्षु, गृहस्थ पुरुषों, भिक्षुणियों, गृहस्थ महिलाओं और प्रत्येक गुफा, प्रत्येक स्वर्ग, पवित्र भूमि और जादुई पर्वतों के महान और छोटे सम्मानित व्यक्तियों और पवित्र भिक्षुओं का आह्वान हुआ।

जो लोग बैठने वाले थे, उन्हें अपने-अपने सिंहासनों पर बैठने के लिए कहा गया, और जो लोग खड़े रहने वाले थे, वे दोनों ओर खड़े हो गए। अचानक दूर से दिव्य संगीत की गूंज सुनाई दी और जादुई ध्वनियाँ चारों ओर फैल गईं। वातावरण अनगिनत शुभ प्रकाश की किरणों और अपार आभा से भर गया, क्योंकि सभी बुद्ध तथागत को प्रणाम करने के लिए एकत्रित हुए थे।

तथागत ने पूछा, “आनंद और कश्यप, तुमने उन्हें शास्त्रों की कितनी प्रतियाँ दी हैं? कृपया मुझे एक-एक करके संख्याएँ बताएँ।”

तब दोनों अर्हतों ने सूचना दी, "हम अब तांग दरबार को निर्वाण सूत्र सौंप रहे हैं—400 प्रतियाँ।"

बोधिसत्व सूत्र – – 360 पृष्ठ

आकाशसागर सूत्र – – 20 रोल

सुरंगमा सूत्र – – 30 रोल

कृपा के अर्थ पर सूत्रों का संग्रह – – 40 पन्ने

निर्धारण सूत्र – – 40 रोल

Ratnagarbha sutra – – 20 rolls

अवतमासक सूत्र – – 81 रोल्स

भूततथाता की पूजा पर सूत्र – – 30 पन्ने

Mahaprajnaparamita sutra – – 600 rolls

Mahaprabhasa sutra – – 50 rolls

Adbhuta – dharma sutras – – 550 rolls

विमलकीर्ति सूत्र – – 30 रोल

तीन शास्त्र—42 रोल

हीरा सूत्र – – 1 रोल

Saddharma sastra – – 20 rolls

अध्याय 98

1378

पश्चिम की यात्रा

Buddhacaritakavya sutra – – 116 rolls

पंचानागा रेशम - 20 रोल

बोधिसत्व-विनय सूत्र-60 पृष्ठ
Mahasamnipata sutras – –30 rolls
मकर सूत्र – –140 रोल
Saddharma – pundarika sutra – –10 rolls
योग सूत्र – –30 रोल
अनमोल शाश्वतता सूत्र – –170 रोल
पश्चिमी स्वर्ग पर सूत्र—30 पन्ने
Samghika sutra – –110 rolls
Samyukta – Buddhadesa sutra – –1,638 rolls
महायान – श्रद्धोतपादसा शास्त्र – –50 रोल्स
महान ज्ञान सूत्र – –90 रोल
Ratna – prabhava sutra – –140 rolls
मूल पैवेलियन सूत्र – –56 रोल
प्रधान विनय सूत्र – – 10 रोल
Mahamayuri – vidyarajni sutra – –14 rolls
व्याप्तिमात्रा – तसिद्धि शास्त्र – –10 रोल्स
अभिधर्म – कोस शास्त्र – –10 रोल्स
सभी भंडारों में मौजूद पैंतीस धर्मग्रंथों में से हमने पवित्र भिक्षु को देने के लिए 5,048 रोल चुने हैं। इन्हें तांग में सुरक्षित रखा जाएगा और पीढ़ियों को सौंपा जाएगा। इन्हें अब बड़े करीने से पैक करके घोड़े पर लाद दिया गया है या डंडों पर लादकर ले जाया जा रहा है। तीर्थयात्री केवल अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।
इसके बाद संजांग और उनके तीन अनुयायियों ने घोड़े को बांधा, बोझ नीचे रखा, अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ा और प्रणाम किया।
तथागत ने तांग पुरोहित से कहा, “इन शास्त्रों की उपलब्धि अतुलनीय है। यद्यपि ये मेरे संप्रदाय के लिए पूर्वज्ञान और चिंतन का स्रोत हैं, वास्तव में ये तीनों संप्रदायों के मूल हैं। यदि ये आपके दक्षिणी महाद्वीप जंबूद्वीप तक पहुँचें, तो इन्हें सभी प्राणियों को दिखाते समय अनादर नहीं करना चाहिए। जिसने स्नान नहीं किया है, मांसाहार नहीं किया है और निषेधों का पालन नहीं किया है, उसका अनादर नहीं होना चाहिए।” (अध्याय 98)

"उन ग्रंथों को खोलें। उन्हें संजोकर रखें। उनका आदर करें। उनमें अमरत्व के मार्ग के गूढ़ रहस्य और सभी रूपांतरणों को जानने की अद्भुत विधियाँ शामिल हैं।" कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम करते हुए, संजांग ने इन निर्देशों को पूर्णतः स्वीकार किया और उनका पालन करने का निश्चय किया। उन्होंने भगवान बुद्ध के तीन और परिक्रमाएँ कीं, फिर कर्तव्यपरायणता और निष्ठा से शास्त्रों को ग्रहण किया और मठ के तीसरे द्वार से बाहर निकल गए, जहाँ उन्होंने सभी पवित्र प्राणियों को एक-एक करके फिर से धन्यवाद दिया। उनके बारे में हम और कुछ नहीं कहेंगे।

तांग पुरोहित को विदा करने के बाद तथागत ने शास्त्रों का प्रसार करने के लिए बुलाई गई सभा को भंग कर दिया। तब बोधिसत्व गुआनयिन एक तरफ से आगे आईं, हाथ जोड़कर भगवान बुद्ध से प्रार्थना की, “आपके शिष्य के उस वर्ष पूर्व में शास्त्र लाने वाले व्यक्ति को खोजने जाने से लेकर आज उसकी सफलता तक चौदह वर्ष बीत चुके हैं। यानी 5,040 दिन। हे विश्व पूज्य, पवित्र भिक्षुओं को आठ दिनों के भीतर पश्चिम से पूर्व लौटने की अनुमति दें, ताकि एक भंडार में सभी प्रतियों की संख्या पूरी हो जाए, और फिर आपका शिष्य अपने मिशन की पूर्णता की सूचना दे सके।”

तथागत ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, “आपकी बात बिल्कुल सही है। आपको अपने मिशन की पूर्णता की सूचना देने की अनुमति है।” इसके साथ ही उन्होंने आठ वज्रपाणियों को निर्देश दिया, “आप अपनी दिव्य शक्ति का प्रयोग करके पवित्र भिक्षुओं को पूर्व की ओर वापस ले जाएं, जहां वे सच्चे शास्त्रों को वहां सुरक्षित रखने के लिए सौंप देंगे। पवित्र भिक्षुओं को वापस ले जाने के बाद, आप पश्चिम लौट सकते हैं। एक भंडार में ग्रंथों की संख्या के बराबर रखने के लिए यह कार्य आठ दिनों के भीतर पूरा किया जाना चाहिए। किसी भी प्रकार की अवज्ञा या विलंब नहीं होना चाहिए।” वज्रपाणियों ने तांग पुरोहित का पीछा किया। उन्होंने पुकारा, “हमारे साथ आइए, शास्त्र लाने वालों!” और तांग पुरोहित और अन्य वज्रपाणियों के पीछे बादलों पर सवार होकर हल्के और बलवान हो गए। वास्तव में: प्रकृति प्रकट हुई और मन निर्मल हुआ, उन्होंने बुद्ध से दर्शन किए;

सभी कार्य पूरे हो जाने और लक्ष्य प्राप्त हो जाने के बाद, वे आसमान में उड़ गए।

यदि आपको नहीं पता कि पूर्व में लौटने के बाद उन्होंने धर्मग्रंथों को कैसे आगे बढ़ाया,

तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।
अध्याय 99
जब नौ-नौ पूरे हो जाते हैं तो सभी राक्षस नष्ट हो जाते हैं।
त्रिक मंत्रों की पूर्ति के बाद मार्ग अपनी जड़ों की ओर लौटता है। कहानी आगे बताती है कि कैसे आठ वज्रपाणियों ने तांग पुजारी को उनके देश वापस पहुंचाया, लेकिन हम अभी उस पर चर्चा नहीं करेंगे।
द्वार के बाहर चारों दिशाओं और केंद्र के रक्षक, चारों कर्तव्य देवता, छह डिंग, छह जिया और धर्म के संरक्षक बोधिसत्व गुआनयिन के पास गए और बोले, "हम, आपके शिष्य, ने आपके धर्म आदेश का पालन करते हुए पवित्र भिक्षु को गुप्त सहायता प्रदान की है, हे बोधिसत्व। अब जब उन्होंने अपने कर्म पूरे कर लिए हैं और आपने भगवान बुद्ध को अपने मिशन की सफलता की सूचना दे दी है, तो हम भी अपने मिशन की सफलता की सूचना देना चाहते हैं।"
"अनुमति प्रदान की गई।" बोधिसत्व ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, "अनुमति प्रदान की गई।" इसके बाद बोधिसत्व ने पूछा, "अपनी यात्रा के दौरान तांग पुजारी और उनके तीन शिष्यों के विचार और कार्य क्या थे?"
अध्याय 99

“वे सचमुच धर्मपरायण और दृढ़ निश्चयी थे,” सभी देवताओं ने उत्तर दिया, “जैसा कि हमें पूरा विश्वास है कि आपकी गहरी समझ से परे नहीं होगा। लेकिन तांग पुरोहित के कष्टों का वर्णन करना वास्तव में असंभव है। आपके शिष्यों ने उनकी यात्रा में झेली गई विपत्तियों और कठिनाइयों का सावधानीपूर्वक विवरण रखा है। यह उनके कष्टों का वृत्तांत है।” बोधिसत्व ने इसे शुरू से अंत तक पढ़ा, और उसमें यह लिखा था:
"हम रक्षकों को बोधिसत्व के आदेश पर भेजा गया था।"
तांग पुरोहित की पीड़ाओं का विस्तृत रिकॉर्ड रखने के लिए।
गोल्डन सिकाडा का निर्वासन पहली कठिन परीक्षा थी;
जन्म लेना और लगभग मौत के मुंह से बच जाना दूसरी कठिन परीक्षा थी;
पूर्णिमा की रात में नदी में परित्याग तीसरी परीक्षा थी; अपनी माँ को ढूँढ़ना और बदला लेना चौथी परीक्षा थी;

शहर छोड़ने के बाद जिन बाघों से उसका सामना हुआ, वे उसकी पांचवीं परीक्षा थी; गड्ढे में गिरना उसकी छठी परीक्षा थी;
डबल फोर्क्ड पीक सातवीं चुनौती थी;
डबल बाउंड्री माउंटेन आठवीं चुनौती थी;
खाई में घोड़ों को बदलना नौवीं कठिन परीक्षा थी;
रात में लगी आग दसवीं विपत्ति थी;
पादरी के वस्त्र का खो जाना ग्यारहवीं परीक्षा थी;
सूअर को वश में करना बारहवीं परीक्षा थी;
पीली हवा के राक्षस द्वारा उत्पन्न बाधाएँ तेरहवीं परीक्षा थीं; लिंगजी की मदद मांगना चौदहवीं परीक्षा थी;
फ्लोइंग सैंड्स नदी को पार करना पंद्रहवीं चुनौती थी; फ्रायर सैंड को जीतना सोलहवीं चुनौती थी;
चार पवित्र व्यक्तियों का प्रकट होना सत्रहवीं परीक्षा थी; वूझुआंग मंदिर में अठारहवीं परीक्षा थी;
मानव-फल को पुनर्जीवित करने की कठिनाई उन्नीसवीं परीक्षा थी; मन-बंदर को बर्खास्त करना बीसवीं परीक्षा थी;
अध्याय 99
1381
पश्चिम की यात्रा
ब्लैक पाइन फॉरेस्ट में खो जाना इक्कीसवीं परीक्षा थी; एलिफेंटिया को पत्र पहुँचाना बाईसवीं परीक्षा थी; महल के हॉल में बाघ में परिवर्तित होना तेईसवीं परीक्षा थी; फ्लैट-टॉप माउंटेन पर राक्षसों से मिलना चौबीसवीं परीक्षा थी; लोटस फ्लावर गुफा में लटकना पच्चीसवीं परीक्षा थी।
वूजी के राजा का बचाव छब्बीसवीं परीक्षा थी;
राक्षसों द्वारा रूपांतरित होना सत्ताईसवीं परीक्षा थी; हाओ पर्वत के राक्षस से सामना अट्ठाईसवीं परीक्षा थी; पवित्र भिक्षु का हवा द्वारा उड़ा ले जाना उनतीसवीं परीक्षा थी; मन-बंदर पर हमला तीसवीं परीक्षा थी।
शैतान को वश में करने के लिए पवित्र व्यक्ति को आमंत्रित करना इकत्तीसवीं परीक्षा थी; काली नदी में डूबना बत्तीसवीं परीक्षा थी;

टैरीकार्ट में स्थानांतरण तैंतीसवीं कठिन परीक्षा थी;
यह भारी भरकम शर्त चौंतीसवीं परीक्षा थी;
ताओवादियों को निष्कासित करना और बौद्धों को बढ़ावा देना पैंतीसवीं परीक्षा थी; रास्ते में मिलने वाली महान नदी छत्तीसवीं परीक्षा थी;
स्वर्ग की नदी में गिरना सैंतीसवीं परीक्षा थी; मछली की टोकरी के साथ प्रकट होना अड़तीसवीं परीक्षा थी; जिंदौ पर्वत पर राक्षस से मिलना उनतीसवीं परीक्षा थी; स्वर्ग के सभी देवताओं का उसे वश में न कर पाना चालीसवीं परीक्षा थी; बुद्ध से उनके मूल के बारे में पूछना इकतालीसवीं परीक्षा थी; पानी पीने से विषैला होना बयालीसवीं परीक्षा थी; शादी के लिए पश्चिमी लियांग के स्त्रीभूमि में रखा जाना तैंतालीसवीं परीक्षा थी; पीपा गुफा की पीड़ाएँ चौवालीसवीं परीक्षा थीं।
माइंड-एप की दूसरी बर्खास्तगी पैंतालीसवीं परीक्षा थी;
बंदरों की पहचान करना छियालीसवीं चुनौती थी;
अध्याय 99
1382
पश्चिम की यात्रा
अग्नि पर्वतों द्वारा रोके जाना सैंतालीसवीं परीक्षा थी; केले के पत्ते का पंखा प्राप्त करना अड़तालीसवीं परीक्षा थी;
राक्षस राजा को बांधना उनतालीसवीं परीक्षा थी;
जिसाई शहर में स्थित पैगोडा की सफाई करना पचासवीं चुनौती थी;
खजाने की बरामदगी और भिक्षुओं का बचाव इक्यावनवीं परीक्षा थी; काँटेदार जंगल में कविता पाठ करना बावनवीं परीक्षा थी; छोटे गर्जन मठ में मुसीबत आना तिरपनवीं परीक्षा थी; स्वर्गीय देवताओं को पकड़ना चौवनवीं परीक्षा थी;
गंदी रनी पर्सिमोन लेन द्वारा रोका जाना पचपनवीं परीक्षा थी; पुरपुरिया में उपचार छप्पनवीं परीक्षा थी;
दुर्बलता से बचाव करना सत्तावनवीं परीक्षा थी;
दुष्ट आत्माओं को वश में करना और रानी को बचाना अट्ठावनवीं परीक्षा थी; सात वासनाओं द्वारा भ्रमित होना उनसठवीं परीक्षा थी;
अनेक आँखों वाले राक्षस को घायल करना साठवीं परीक्षा थी; शेर द्वारा ऊपर उठाया जाना इकसठवीं परीक्षा थी;

राक्षसों को तीन श्रेणियों में विभाजित करना बासठवीं परीक्षा थी; शहर में आपदा का सामना करना तिरसठवीं परीक्षा थी;
बुद्ध से राक्षस को वश में करने की प्रार्थना करना चौंसठवीं परीक्षा थी; भिक्षुलैंड में लड़कों को बचाना पैंसठवीं परीक्षा थी; सत्य और अत्य में अंतर करना छियासठवीं परीक्षा थी;
चीड़ के जंगल में राक्षस को बचाना सड़सठवीं परीक्षा थी; मठ की कोठरी में बीमार पड़े रहना अड़सठवीं परीक्षा थी;
अथाह गुफा में कैद होना उनसठवीं परीक्षा थी;
धर्माद्विनाश में हुई देरी सत्तरवीं परीक्षा थी;
हिडन क्लाउड्स माउंटेन पर राक्षस से मिलना इकहत्तरवीं परीक्षा थी; फेंगज़ियान में बारिश के लिए भीख मांगना बहत्तरवीं परीक्षा थी;
अध्याय 99
1383
पश्चिम की यात्रा
हथियारों का खोना तिहत्तरवीं विपत्ति थी;
रेक भोज चौहत्तरवीं परीक्षा थी;
बैम्बू माउंटेन पर आई मुसीबतें पचहत्तरवीं परीक्षा थीं;
डार्क एसेंस केव में कष्ट भोगना 76वीं परीक्षा थी;
गैंडे को पकड़ना सतहत्तरवीं चुनौती थी;
भारत में विवाह करने की बाध्यता अठहत्तरवीं परीक्षा थी; पीतल के टावर में कैद होना उनहत्तरवीं परीक्षा थी;
लिंग्युन क्रॉसिंग पर शव को डालना अस्सीवीं परीक्षा थी; यह यात्रा 36,000 मील की थी।
और उस पवित्र भिक्षु की सारी पीड़ाएँ स्पष्ट रूप से दर्ज हैं।"
अभिलेख पर सरसरी नज़र डालते हुए बोधिसत्व ने तुरंत कहा, "बुद्ध के दर्शन में सत्य को प्राप्त करने के लिए नौ नौ परीक्षाएँ आवश्यक हैं। पवित्र भिक्षु ने जो अस्सी परीक्षाएँ सहन की हैं, वे पूर्ण संख्या से एक कम हैं।" उन्होंने एक रक्षक को आदेश दिया, "वज्रपाणियों के पीछे जाओ और उनसे एक और परीक्षा उत्पन्न करने को कहो।" आदेश मिलते ही रक्षक बादलों के सहारे पूर्व दिशा की ओर चल पड़ा और एक

दिन-रात बाद वह आठ वज्रपाणियों से मिला। उसने उनके कानों में फुसफुसाते हुए समझाया, "बात ऐसी है, इसलिए तुम्हें बोधिसत्व के आदेश का पालन करना चाहिए और अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।" जब आठ वज्रपाणियों ने यह सुना, तो उन्होंने सरसराहट की आवाज़ के साथ हवा रोक दी और उन चारों को घोड़े, शास्त्रों और सब कुछ सहित ज़मीन पर उतार दिया।

अरे बाप रे! यह तो एक मामला था
नौ नौ के माध्यम से सत्य तक पहुंचने का मार्ग कठिन है;
उस रहस्यमय दर्रे पर खड़े रहने के अपने दृढ़ संकल्प को बनाए रखें।
केवल अथक प्रयासों से ही राक्षसों को खदेड़ा जा सकता है;
सच्चे धर्म की वापसी के लिए दृढ़ता आवश्यक है।
शास्त्रों को आसानी से प्राप्त होने वाली वस्तु समझने की गलती न करें;
उस पवित्र भिक्षु को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
इस अद्भुत मिलन को हासिल करना हमेशा से ही कठिन रहा है:
जरा सी भी गलती हुई तो अमृत का निर्माण नहीं हो पाएगा।

अध्याय 99

1384

पश्चिम की यात्रा

जैसे ही संज़ैंग के पैर ज़मीन पर पड़े, वह घबरा गया। "अद्भुत," सुअर ज़ोर से हंसते हुए बोला, "सचमुच अद्भुत! यह तो 'जल्दबाजी में काम बिगड़ने' का उदाहरण है।"

"यह सचमुच अद्भुत है," फ्रायर सैंड ने कहा। "इतनी तेज़ गति से चलने के बाद वे हमें यहाँ आराम करने का मौका दे रहे हैं।"

महान ऋषि ने कहा, "जैसा कि कहावत है, 'दस दिन रेत के टीले पर प्रतीक्षा करो, फिर एक ही दिन में नौ पार करो।'"

"तुम तीनों बहस करना बंद करो," संजांग ने कहा। "पता लगाओ कि हम किस रास्ते से आए हैं और कहाँ हैं।"

"हम यहाँ हैं!" फ्रायर सैंड ने चारों ओर देखने के बाद कहा, "हम यहाँ हैं! पानी की आवाज़ सुनो, गुरुजी।"

"पानी की आवाज़ से तो मुझे लगता है कि यह आपका पारिवारिक घर होगा," भाई बंदर ने कहा।

"उसका घर बहती रेत की नदी है," पिग ने कहा।
"नहीं, ऐसा नहीं है," फ्रायर सैंड ने उत्तर दिया। "यह स्वर्ग की नदी है।"
“शिष्य, दूसरी तरफ ध्यान से देखो,” संज़ंग ने कहा, जिस पर बंदर हवा में उछला, अपने हाथों से अपनी आँखों को ढँका और चारों ओर ध्यान से देखा। “गुरुजी,” नीचे आने के बाद उसने कहा, “यह स्वर्ग नदी का पश्चिमी किनारा है।”
"मुझे अब याद आ गया," संज़ंग ने कहा। "पूर्वी तट पर चेन परिवार का गाँव है। जब हम पिछले साल यहाँ आए थे, तो उन्होंने अपने बेटे और बेटी को बचाने के लिए हमारा इतना आभार व्यक्त किया था कि वे हमें नदी पार कराने के लिए नाव बनवाना चाहते थे, लेकिन सफेद मुलायम खोल वाले कछुए ने हमें पार करा दिया। जहाँ तक मुझे याद है, पश्चिमी तट पर कहीं भी इंसानी ज़िंदगी का कोई निशान नहीं था। अब हम क्या करें?"
पिग ने कहा, "लोग कहते हैं कि आम इंसान भी पापी हो सकते हैं, लेकिन बुद्ध की सेवा करने वाले वज्रपाणि भी पापी हैं। बुद्ध ने उन्हें हमें पूर्व की ओर वापस ले जाने का आदेश दिया था, तो उन्होंने हमें आधे रास्ते में क्यों छोड़ दिया? हम यहाँ फंस गए हैं। अब हम यहाँ से कैसे निकलेंगे?"
"शिकायत करना बंद करो, भाई," फ्रायर सैंड ने कहा। "हमारे गुरु को मार्ग मिल गया है। उन्होंने बादल को छूने वाले मोड़ पर अपना नश्वर शरीर त्याग दिया है, इसलिए अब वे पानी में नहीं गिरेंगे। हम दोनों, हमारा बड़ा भाई और हम सब, हवा में उड़ने का जादू कर सकते हैं, इसलिए हम गुरु को उठाकर पार ले जा सकते हैं।"
बंदर मन ही मन हँसते हुए बोला, "हम नहीं कर सकते, हम नहीं कर सकते।" आपको क्या लगता है उसने ऐसा क्यों कहा? अगर वह अपनी दिव्य शक्तियों का प्रयोग करने और उड़ने का रहस्य बताने को तैयार होता, तो गुरु और शिष्य हज़ारों नदियाँ पार कर लेते। लेकिन वह समझ गया था कि तांग पुजारी ने अभी तक नौ नौ का चक्र पूरा नहीं किया था, इसलिए उन्हें एक और कठिन परीक्षा से गुज़रना था, और इसीलिए उन्हें यहाँ रोक रखा गया था।
धीरे-धीरे चलते हुए बातें करते हुए गुरु और शिष्य सीधे नदी के किनारे की ओर बढ़े, जहाँ अचानक उन्हें किसी की आवाज़ सुनाई दी, "इस तरफ, तांग पुजारी, इस तरफ!" वे सभी चौंक गए, और जब उन्होंने ऊपर देखा तो आसपास कोई भी नहीं था, न ही कोई नाव।

किनारे पर केवल एक बड़ा, सफेद, खुरदरे सिर वाला नरम खोल वाला कछुआ अपना सिर उठाकर आवाज लगा रहा था।
"गुरुजी, मैं इतने वर्षों से आपका इंतजार कर रहा था। आप अभी-अभी क्यों लौटे?"
"हमने तुम्हें अतीत में परेशान किया था, बूढ़े कछुए," बंदर ने मुस्कुराते हुए कहा, "और इस साल हम फिर से मिल रहे हैं।" संजांग, सुअर और साधु सैंड सभी बहुत खुश हुए।
अध्याय 99
1385
पश्चिम की यात्रा
“अगर तुम सचमुच हमारी देखभाल करना चाहते हो, तो किनारे आ जाओ,” बंदर ने कहा, जिस पर कछुआ उछलकर नदी से बाहर आ गया। बंदर ने घोड़े को कछुए से बांध रखा था और सुअर घोड़े की पूंछ के पीछे बैठा था। तांग पुजारी घोड़े की गर्दन के बाईं ओर और साधु सैंड दाईं ओर खड़ा था, जबकि बंदर एक पैर कछुए की गर्दन पर और दूसरा उसके सिर पर रखे खड़ा था।
“आराम से और धीरे-धीरे चलो,” उन्होंने कहा। कछुआ पानी पर ऐसे चला जैसे उसके चारों पैर समतल ज़मीन पर चल रहे हों, और वह गुरु और उनके तीन शिष्यों को, घोड़े सहित कुल पाँचों को, सीधे पूर्वी तट पर वापस ले गया। यह सचमुच ऐसा ही था:
इस अद्वितीय संप्रदाय के भीतर धर्म का रहस्य:
जब सभी राक्षस पराजित हो जाते हैं, तब मनुष्य और स्वर्ग का ज्ञान प्रकट होता है।
अब जाकर उसका असली चेहरा देखा जा सकता है।
और एक ही शरीर के सभी कारण पूर्ण हों।
तीनों वाहनों का उपयोग अपनी इच्छानुसार आने-जाने के लिए करें;
इस औषधि के नौ रूपांतरणों के बाद आप जो चाहें कर सकते हैं।
अपना बोझ उठाओ, अपने कर्मचारियों को उड़ने दो, और अवर्णनीय को समझो;
सौभाग्य से वे प्राचीन कछुए से मिलने के लिए वापस लौट रहे थे।
उन्हें अपनी पीठ पर लादकर, प्राचीन नरम खोल वाला कछुआ लगभग पूरे दिन लहरों पर चलता रहा।
लगभग शाम हो चुकी थी जब, जैसे ही वे पूर्वी तट के पास पहुँचे, उसने अचानक पूछा, "आदरणीय गुरुदेव, कुछ वर्ष पहले जब आप पश्चिम पहुँचे और हमारे तथागत बुद्ध के दर्शन किए, तो मैंने आपसे विनती की थी कि आप उनसे पूछें कि मेरा धर्म परिवर्तन

कब होगा और मैं कितने समय तक जीवित रहूँगा।"

जब से पूज्य बुजुर्ग पश्चिमी स्वर्ग पहुँचे, जेड सत्य मंदिर में स्नान किया, बादल-स्पर्श चौराहों पर अपना नश्वर शरीर त्यागा और गिद्ध शिखर पर चढ़े, तब से उनका मन केवल बुद्ध की उपासना में लगा रहा; और जब भी वे सभी बुद्धों, बोधिसत्वों, पवित्र भिक्षुओं और अन्य लोगों से मिले, उनका पूरा ध्यान शास्त्रों को प्राप्त करने में लगा रहा। उन्होंने किसी और बात पर ध्यान नहीं दिया, और इसलिए उन्होंने यह नहीं पूछा कि प्राचीन कछुआ कितने समय तक जीवित रहेगा। कुछ कह पाने के कारण, और कछुए से झूठ बोलने या उसे धोखा देने का साहस न होने के कारण, संजांग लंबे समय तक चुप रहे और कोई उत्तर नहीं दिया। जब कछुए को एहसास हुआ कि संजांग ने उसकी ओर से प्रश्न नहीं पूछे हैं, तो उसने अपना सिर हिलाया और ज़ोरदार छपछपाहट के साथ पानी में डूब गया, जिससे वे चारों, घोड़ा, शास्त्र और सब कुछ पानी में गिर गए।

अरे बाप रे! लेकिन सौभाग्य से तांग पुजारी ने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया था और मोक्ष प्राप्त कर लिया था। अगर वे पहले जैसे ही होते तो डूबकर समुद्र तल में चले जाते। यह भी सौभाग्य की बात थी कि सफेद घोड़ा एक अजगर था, कि सुअर और साधु रेत तैर सकते थे, और भाई बंदर ने मुस्कुराते हुए अपनी महान जादुई शक्तियों का शानदार प्रदर्शन करते हुए तांग पुजारी को पानी से बाहर निकाला और पूर्वी तट पर ले आए। बस इतना ही था कि धर्मग्रंथों की गठरियाँ, कपड़े और काठी सब भीग गए थे।

गुरु और शिष्य नदी के किनारे चढ़कर अपना इंतज़ाम कर रहे थे कि अचानक तेज़ हवा चलने लगी, आसमान काला हो गया और गरज के साथ-साथ पत्थर और रेत चारों ओर उड़ने लगे। यही अध्याय 99 हो सकता है।

1386

पश्चिम की यात्रा

देखा गया:

एक हवा

आसमान और ज़मीन में अफरा-तफरी मचाते हुए;

गड़गड़ाहट

चट्टानी पहाड़ और नदियाँ;

बिजली चमकना
बादलों के बीच आग की तरह उड़ते हुए;
धुंध
पूरी पृथ्वी को कवर करते हुए।
हवा जोर से चल रही थी;
तेज गर्जना के साथ बिजली कड़की।
बिजली की लकीरें लाल रंग की थीं।
बादलों ने चांद और तारों को ढक लिया।
हवा से उड़ती धूल चेहरे पर जा लगी।
और बाघ और तेंदुए भय से छिप गए।
बिजली की चमक से पक्षी कांव-कांव करने लगे।
और घने कोहरे में सारे पेड़ गायब हो गए।
हवा ने स्वर्ग की नदी की लहरों को उग्र कर दिया;
गरज से स्वर्ग की नदी में मछलियाँ और अजगर भयभीत हो गए; बिजली से स्वर्ग की नदी पूरी तरह से जगमगा उठी;
धुंध ने स्वर्ग की नदी के किनारों को अंधेरे में ढक लिया था।
शानदार हवा!
पहाड़ ढह गए; चीड़ और बांस के पेड़ गिर पड़े।
शानदार गर्जना!
इसकी भव्यता ने कीड़ों को भयभीत कर दिया और आतंक फैला दिया।
अध्याय 99
1387
पश्चिम की यात्रा
शानदार बिजली!
यह आकाश में विचरण करता हुआ सुनहरे सांपों की तरह जंगलों को रोशन करता हुआ आगे बढ़ा।
शानदार धुंध!
संपूर्ण अंतरिक्ष को अंधकारमय कर देना, नौ आकाशों को ढक लेना।
इससे संजांग घबरा गया और उसने धर्मग्रंथों के बंडलों को दबा दिया, जबकि साधु सैंड

ने उन्हें उठाने वाली छड़ी को थामे रखा और सुअर सफेद घोड़े से चिपका रहा। वहीं, बंदर अपने लोहे के डंडे को दोनों हाथों से घुमाते हुए दाएं-बाएं पहरा दे रहा था।

हवा, कोहरा, गरज और बिजली, ये सब दुष्ट राक्षसों के संकेत थे जो लाए गए धर्मग्रंथों को चुराना चाहते थे। उन्होंने भोर तक पूरी रात उन्हें हथियाने की कोशिश की; तभी वे रुके।

आदरणीय बुजुर्ग, जिनके कपड़े पूरी तरह भीग चुके थे, कांपते हुए बोले, "यह सब कैसे शुरू हुआ, वुकॉन्ग?"

“गुरुजी,” बंदर भाई ने क्रोध से फुफकारते हुए उत्तर दिया, “आप इस आंतरिक सत्य को नहीं समझते। इन शास्त्रों को लाने के लिए आपको साथ ले जाकर हमने स्वर्ग और पृथ्वी की महान उपलब्धि प्राप्त की है। आप शाश्वत यौवन का आनंद लेंगे और आपका धर्म शरीर कभी क्षय नहीं होगा। यह ऐसी बात है जिसे स्वर्ग और पृथ्वी सहन नहीं कर सकते और राक्षस और देवता घृणा करते हैं। वे अंधेरे में आकर इन्हें चुराना चाहते थे। लेकिन क्योंकि शास्त्र पूरी तरह से भीगे हुए थे और आपका सच्चा धर्म शरीर उन्हें थामे हुए था, इसलिए गरज उन पर प्रहार नहीं कर सकी, बिजली उन्हें प्रकाशित नहीं कर सकी और कोहरा उन्हें छिपा नहीं सका। यह इसलिए भी संभव हुआ क्योंकि मैंने अपने लोहे के डंडे को घुमाकर उसकी शुद्ध सकारात्मक प्रकृति से उनकी रक्षा की। भोर से ही सकारात्मकता फिर से प्रबल हो गई है, इसीलिए वे अब इन्हें नहीं ले जा सकते।”

तभी संज़ंग, पिग और फ्रायर सैंड को समझ आया कि क्या हुआ था और सभी ने असीम कृतज्ञता व्यक्त की। थोड़ी देर बाद, जब आकाश में सूरज चमक रहा था, वे धर्मग्रंथों को एक ऊँची चट्टान की चोटी पर ले गए, बंडलों को खोला और उन्हें सूखने के लिए रख दिया। जिन चट्टानों पर धर्मग्रंथ धूप में सुखाए गए थे, वे आज भी वहीं मौजूद हैं। फिर उन्होंने अपने कपड़े और जूते चट्टान के किनारे सुखाने के लिए फैला दिए, जबकि वे वहाँ खड़े रहे, बैठे रहे या उछल-कूद करते रहे। सचमुच:

शुद्ध सकारात्मक शरीर धूप में प्रसन्न था।

जब नकारात्मक राक्षस अपनी शक्ति का प्रयोग करने का साहस नहीं कर पाए।

जल की प्रबलता होने पर भी सच्चे धर्मग्रंथों की ही विजय होगी।

हवा, गरज, बिजली, कोहरे या प्रकाश से न डरना।

इस स्पष्टीकरण के बाद उन्हें सही तथ्य का पता चलता है;

अब से वे शांतिपूर्वक अमरलोक पहुँचेंगे।
जिन चट्टानों पर धर्मग्रंथ सुखाए गए थे, उन पर उनके निशान आज भी शेष हैं; अध्याय 99
1388
पश्चिम की यात्रा
अब कभी कोई राक्षस इस जगह पर वापस नहीं आएगा।
जब वे चारों एक-एक करके धर्मग्रंथों की जांच कर रहे थे और उन्हें धूप में सुखा रहे थे, तभी नदी किनारे से गुजर रहे कुछ मछुआरों ने अपना सिर ऊपर उठाया और उन्हें वहां देखा।
मछुआरों में से एक ने उन्हें पहचान लिया और कहा, "आदरणीय गुरुजनों, क्या आप पिछले साल इसी नदी को पार नहीं कर रहे थे जब आप पश्चिमी स्वर्ग की ओर शास्त्रों को लाने जा रहे थे?"
"जी हां," सुअर ने कहा, "बिल्कुल सही। आप कहां से हैं? आपको कैसे पता चला कि हम कौन हैं?"
"हम चेन गांव से हैं," मछुआरे ने जवाब दिया।
"चेन गांव यहां से कितनी दूर है?" पिग ने पूछा।
"यह इस घाटी से सात मील दक्षिण में है," मछुआरे ने कहा।
"चलो इन ग्रंथों को चेन गाँव ले चलते हैं और वहाँ सुखाते हैं," सुअर ने कहा। "वहाँ रहने की जगह है और खाने को भी मिल जाएगा। इसके अलावा, हम उनके परिवार से अपने कपड़े धुलवा सकते हैं। यही सबसे अच्छा रहेगा, है ना?"
"हम वहां नहीं जाएंगे," संजांग ने कहा। "जब हम यहां सब कुछ सुखा लेंगे, तब हम अपना सामान पैक करके वापस जाने का रास्ता ढूंढ लेंगे।"
दक्षिण की ओर घाटी पार कर रहे मछुआरों की मुलाकात संयोगवश चेन चेंग से हुई।
"आप दोनों बुजुर्ग सज्जनों,"
उन्होंने पुकारा, "जो शिक्षक पिछले साल आपके बच्चों के बदले बलिदान होने गए थे, वे वापस आ गए हैं।"
"आपने उन्हें कहाँ देखा?" चेन चेंग ने पूछा।
मछुआरों ने जवाब दिया, "वे अपनी धार्मिक पुस्तकों को चट्टानों पर धूप में सुखा रहे हैं।"

इसके बाद चेन चेंग अपने कुछ किरायेदारों को लेकर खाई के उस पार गया, तीर्थयात्रियों को देखा और उनके पास जाकर घुटने टेककर बोला, "हे मेरे स्वामियों, अब जब आप अपने धर्मग्रंथों के साथ लौट रहे हैं, आपकी उपलब्धि पूरी हो चुकी है और आपके कर्म संपन्न हो चुके हैं, तो आप मेरे घर क्यों नहीं आते? आप यहाँ क्यों रुके हुए हैं? क्या आप कृपया सीधे घर नहीं आएंगे?"

"जब हम अपने धर्मग्रंथों को धूप में सुखा लेंगे, तब हम आपके साथ चलेंगे," बंदर ने उत्तर दिया।

"मेरे स्वामियों, आपके शास्त्र और वस्त्र सब कैसे भीग गए?" चेन चेंग ने पूछा।

"पिछले साल सफेद मुलायम खोल वाले कछुए ने कृपा करके हमें नदी के पश्चिम की ओर पहुँचाया था," संज़ंग ने उत्तर दिया, "और इस साल वह हमें पूर्व की ओर ले गया। हम नदी के किनारे पहुँचने ही वाले थे कि उसने मुझसे भगवान बुद्ध से यह पूछने के बारे में कुछ सवाल पूछे कि वे कितने दिन जीवित रहेंगे। मैंने यह पूछताछ नहीं की, इसलिए उसने हम सबको पानी में भिगो दिया। इस तरह वे भीग गए।"

इसके बाद संज़ंग ने पूरी कहानी विस्तार से सुनाई, और चेन चेंग के आग्रह पर संज़ंग ने अपने निमंत्रण को स्वीकार कर लिया, जिसके चलते वह शास्त्रों को समेटने के अलावा कुछ नहीं कर सका। यह बात ध्यान में नहीं आई कि बुद्धचरितकाव्य सूत्र के कई पन्नों के सिरे गीले होने पर चट्टान से चिपक गए थे, इसलिए उन्हें फाड़ दिया गया। यही कारण है कि बुद्धचरितकाव्य सूत्र आज तक अधूरा है और जिन चट्टानों पर शास्त्रों को धूप में सुखाया गया था, उन पर आज भी लेखन के निशान मौजूद हैं।

अध्याय 99

1389

पश्चिम की यात्रा

"हम लापरवाह थे," संजांग ने खेद व्यक्त करते हुए कहा। "हमने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया।"

“तुम गलत हो,” बंदर हँसते हुए बोला, “तुम गलत हो। स्वर्ग और पृथ्वी अपूर्ण हैं और यह ग्रंथ कभी पूर्ण था। अब अपूर्णता के रहस्य को पूरा करने के लिए इसे भिगोकर और फाड़कर नष्ट कर दिया गया है। यह मानवीय प्रयासों से संभव नहीं है।” गुरु और शिष्यों ने जब सुर्रा (धार्मिक वस्त्र) समेट लिए तो वे चेन चांग के साथ उसके गाँव लौट गए।

गाँव में एक व्यक्ति ने दस को बताया, दस ने सौ को, और सौ ने हज़ार को, और इस तरह सभी, जवान और बूढ़े, तीर्थयात्रियों का स्वागत करने और उन्हें देखने के लिए बाहर आ गए। चेन किंग को जैसे ही यह खबर मिली, उसने द्वार के सामने उनका स्वागत करने के लिए अगरबत्ती की मेज सजा दी; उसने ढोल बजाने वालों और वाद्य यंत्र बजाने वालों को भी प्रदर्शन करने का आदेश दिया।

कुछ देर बाद यात्री आ गए और उनका स्वागत किया गया और उन्हें अंदर ले जाया गया। चेन किंग अपने पूरे परिवार को साथ लेकर बाहर आए और उन्होंने झुककर उनका अभिवादन किया और अपने बेटे और बेटी की जान बचाने में उनकी दयालुता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

इसके बाद चाय और शाकाहारी भोजन मंगवाया गया; लेकिन भगवान बुद्ध के अमर भोजन और स्वादिष्ट पकवानों को ग्रहण करने और अपना नश्वर शरीर त्यागकर बुद्ध बनने के बाद से, संज़ंग का नश्वर भोजन के प्रति कोई लालसा नहीं रह गई थी। दोनों वृद्ध पुरुषों के आग्रह के कारण, उसने कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में कुछ भोजन ग्रहण कर लिया।

महान ऋषि बंदर को पका हुआ खाना खाने की आदत नहीं थी, इसलिए उसने कहा, "इतना ही काफी होगा।"

फ्रायर सैंड ने भी कुछ नहीं खाया, और पिग भी पहले जैसा नहीं रहा: उसने जल्द ही अपना कटोरा नीचे रख दिया।

"क्या तुम भी अब कुछ नहीं खा रहे हो, बेवकूफ?" बंदर ने पूछा।

“पता नहीं क्यों,” पिग ने कहा, “लेकिन अचानक मेरा पेट कमजोर हो गया है।”

शाकाहारी भोज समाप्त होने के बाद, वृद्धों ने उनसे पूछा कि वे शास्त्र कैसे लाए थे। तब संज़ंग ने उन्हें विस्तृत विवरण दिया, जिसकी शुरुआत जेड सत्य मंदिर में स्नान और बादल-स्पर्श चौराहा पर उनके शरीर के प्रकाशमान होने से हुई। उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने थंडर मठ में तथागत के दर्शन किए, रत्नजड़ित मीनार में भोज का आनंद लिया, बहुमूल्य पुस्तकालय में शास्त्र प्राप्त किए—शुरू में शब्दहीन शास्त्र, क्योंकि जब दो अर्हतों ने उपहार मांगे थे तो उन्होंने मना कर दिया था—तथागत को फिर से प्रणाम करने गए, जहाँ उन्हें एक ही भंडार में रखे रोल की संख्या दी गई, सफेद कोमल खोल वाले कछुए ने उन्हें पानी में डुबो दिया, और अंधेरे में दुष्ट आत्माओं द्वारा शास्त्र लगभग चुरा लिए गए थे। यह सब बताने के बाद संज़ंग विदा हो गए।

लेकिन उन दोनों बूढ़े लोगों का पूरा परिवार उन्हें जाने देने को बिल्कुल तैयार नहीं था। उन्होंने कहा, “आपने हमारे बच्चों की जान बचाई है, जिसके लिए हम आपके बहुत ऋणी हैं और अभी तक आपका कर्ज नहीं चुका पाए हैं। हमने यहाँ मुक्ति का मंदिर बनवाया है, जहाँ तब से लगातार धूप जलाई जाती है।” फिर उन्होंने उन बच्चों को बुलाया, जिनकी जगह बंदर और सूअर की बलि दी गई थी, चेन गुआन और सोने का पात्र, ताकि वे धन्यवाद में प्रणाम करें और उन्हें मंदिर में दर्शन करने के लिए आमंत्रित करें। इसके बाद संजांग ने धर्मग्रंथों की गठरियाँ उनके घर के हॉल के सामने रख दीं और उन्हें अनमोल शाश्वतता सूत्र का एक भाग पढ़कर सुनाया। फिर वे मंदिर गए, जहाँ चेन परिवार ने स्वादिष्ट भोजन परोसा था। तीर्थयात्रियों के बैठने से पहले ही लोगों का एक और समूह उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित करने आ गया, और उनके चॉपस्टिक उठाने से पहले ही एक और समूह तीसरे निमंत्रण के साथ आ गया। यह सिलसिला बिना रुके चलता रहा, जिससे उन्हें ठीक से भोजन करने का मौका ही नहीं मिला। सान्ज़ांग, जो निमंत्रणों को अस्वीकार करने का साहस नहीं कर सका, उसे खाने का इशारा करना पड़ा। वास्तव में, मंदिर बहुत ही सुंदर ढंग से निर्मित था।
प्रवेश द्वार पर गाढ़ा लाल रंग किया गया था।
उदार दानदाताओं का धन्यवाद।
वहाँ एक मीनार खड़ी हो गई
अध्याय 99
1390
पश्चिम की यात्रा
जहां अब दो गलियारों वाले घर बनाए गए थे।
दरवाजे लाल रंग के थे।
और सातों खजाने बड़ी खूबसूरती से तराशे गए थे।
अगरबत्ती की सुगंध बादलों तक उड़ गई;
शुद्ध प्रकाश से अंतरिक्ष का विशाल आकाश भर गया।
कुछ कोमल सरू के पौधों को अभी भी पानी दिया जा रहा था;
कई चीड़ के पेड़ों ने अभी तक एक छोटा सा जंगल नहीं बनाया था।
जीवनदायी जल एक दूसरे से सामने मिले
जहां स्वर्ग की नदी की लहरें उमड़ रही थीं;

पीछे ऊँची-ऊँची चट्टानें थीं
जहां पर्वतों की एक के बाद एक श्रृंखलाएं पृथ्वी के अजगर से मिलती थीं।
जब संज़ंग ने सब कुछ देख लिया, तो वह उस ऊँचे टावर पर चढ़ गया, जहाँ चारों तीर्थयात्रियों की मूर्तियाँ स्थापित थीं। "बिल्कुल तुम्हारे जैसे दिखते हो, भाई," सूअर ने बंदर को खींचते हुए कहा, जब उसने उन्हें देखा।
"दूसरे भाई," फ्रायर सैंड ने कहा, "तुम्हारी मूर्ति भी बिलकुल तुम्हारे जैसी ही है। फर्क सिर्फ इतना है कि गुरु की मूर्ति कुछ ज्यादा ही सुंदर है।"
"यह बहुत अच्छा है," संज़ंग ने कहा, "यह बहुत अच्छा है।" फिर वे नीचे आए, जहाँ लोग अभी भी प्रतीक्षा कर रहे थे, और उन्होंने उनसे हॉल और उसके पीछे के गलियारे में रखे शाकाहारी भोजन को खाने का आग्रह किया।
"यहाँ पहले जो महान राजा का मंदिर हुआ करता था, उसका क्या हुआ?" भाई बंदर ने पूछा।
“उस साल इसे ध्वस्त कर दिया गया था,” बूढ़े लोगों ने उत्तर दिया। “महाराजों, इस मठ की स्थापना के बाद से हर साल हमारी फसल अच्छी हुई है, यह सब आपकी कृपा और संरक्षण के कारण संभव हुआ है।”
बंदर मुस्कुराते हुए बोला, “यह तो स्वर्ग का उपहार था, इसमें हमारा कोई हाथ नहीं है। लेकिन इस बार हमारे जाने के बाद मैं गारंटी देता हूँ कि आपके गाँव के परिवारों में बहुत सारे बेटे और पोते होंगे, खूब पशु-संपत्ति होगी, हर साल सही समय पर हवा और बारिश होगी, और हर साल सही समय पर बारिश और हवा होगी।” सभी लोगों ने धन्यवाद में सिर झुकाया।
फिर जो नजारा देखने को मिला, वह यह था कि अनगिनत लोग एक दूसरे के पीछे कतार में खड़े होकर फल और अन्य शाकाहारी भोजन पेश कर रहे थे। "मैं तो हैरान रह गया," सुअर ने हंसते हुए कहा। "पुराने दिनों में, जब मैं खा सकता था, तो कोई मुझसे दस बार भी खाने के लिए नहीं कहता था। लेकिन अब, जब मैं नहीं खा सकता, तो एक परिवार दूसरे के खत्म होने का इंतजार किए बिना ही मुझे खाना दे देता है।"
पेट भरा होने के बावजूद भी उसने थोड़ा और खाना शुरू किया और आठ-नौ शाकाहारी व्यंजन खा लिए; और पेट में दर्द होने के बावजूद उसने बीस-तीस उबले हुए ब्रेडरोल भी चट कर लिए। जब सब लोग भरपेट खा चुके, तो और लोग खाने के निमंत्रण लेकर आ गए। "आपके अपार स्नेह के लिए मैं आभारी हूँ," संज़ंग ने कहा,

"मैं अध्याय 99 के योग्य नहीं हूँ।"

1391

पश्चिम की यात्रा

मुझे उम्मीद है कि आज रात हमें आराम करने की अनुमति मिल जाएगी। कल सुबह हम कुछ और आराम स्वीकार करेंगे।

अब रात काफी ढल चुकी थी। सान्ज़ांग, जो सच्चे धर्मग्रंथों की रक्षा कर रहे थे और उन्हें एक पल के लिए भी नहीं छोड़ते थे, निगरानी रखने के लिए मीनार के नीचे ध्यान में बैठे थे। जैसे ही रात का तीसरा पहर नजदीक आया, उन्होंने धीरे से कहा, "वुकोंग, यहाँ के लोग जानते हैं कि हमने मार्ग पा लिया है और अपना कार्य पूरा कर लिया है।" जैसा कि पुरानी कहावत है, 'सच्चा सिद्ध पुरुष अपना चेहरा नहीं दिखाता; जो अपना चेहरा दिखाता है वह सच्चा सिद्ध पुरुष नहीं होता।' मुझे डर है कि अगर हम यहाँ बहुत देर तक रुके रहे तो हम अपने मुख्य उद्देश्य में असफल हो सकते हैं।

“आपकी बात सही है, गुरुजी,” बंदर ने उत्तर दिया। “चलो, जब ये सब गहरी नींद में सो रहे हों, तो चुपके से आधी रात को निकल चलते हैं।” सुअर भी समझ गया, साधु सैंड को भी अच्छी तरह समझ आ गया, और सफेद घोड़े को भी उसका मतलब समझ आ गया। तो वे उठे, चुपचाप थैले लादे, डंडे कंधों पर उठाए और मठ के रास्ते से बाहर निकल गए। जब वे मुख्य द्वार पर पहुँचे और उसे बंद पाया, तो बंदर ने ताला खोलने के जादू का इस्तेमाल करके भीतरी और मुख्य द्वार खोल दिए। वे पूर्व की ओर बढ़े, तभी उन्हें आठ वज्रपाणियों की आवाज़ सुनाई दी। “हमारे साथ आओ, भागने वालों।” फिर आदरणीय बुजुर्ग ने हवा में उठते हुए धूप की सुगंध महसूस की।

यह वास्तव में एक ऐसा मामला था:

जब अमृत बनता है तो व्यक्ति को मूल चेहरा दिखाई देता है;

जब शरीर स्वस्थ हो जाता है, तब व्यक्ति अपने स्वामी के दर्शन कर सकता है।

यदि आपको नहीं पता कि उन्होंने तांग सम्राट को कैसे देखा, तो अगली कड़ी में इसका स्पष्टीकरण सुनें।

अध्याय 100

पूर्व की ओर वापसी की यात्रा शुरू हो गई है

पांचों अमरों ने निर्वाण प्राप्त किया

हम यह नहीं बताएंगे कि कैसे चारों यात्री बच निकले और वज्रपाणियों के साथ हवा में

उड़ गए, बल्कि चेन गांव के मुक्ति मंदिर में मौजूद कई लोगों के बारे में बताएंगे। भोर होते ही जब वे प्रसाद चढ़ाने के लिए और फल और व्यंजन तैयार करने उठे, तो वे मीनार के भूतल पर पहुंचे और पाया कि तांग पुजारी वहां नहीं हैं। कुछ ने सवाल पूछे और कुछ ने खोजबीन की। वे सब घबरा गए और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।

"हमने उन सभी जीवित बुद्धों को बेदाग जाने दिया," वे विलाप करते हुए आसमान तक चीखने लगे। चूंकि वे इसके बारे में कुछ और नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने अपना सारा तैयार भोजन टावर के भूतल पर भेंट के रूप में रख दिया और नकली कागजी मुद्रा जला दी। तब से हर साल चार प्रमुख यज्ञ और चौबीस लघु यज्ञ आयोजित किए जाने लगे। इसके अलावा, स्वास्थ्य लाभ या सुरक्षा की प्रार्थना करने वाले, विवाह की कामना करने वाले, मन्नतें मांगने वाले और धन या पुत्र प्राप्ति की कामना करने वाले लोग दिन के हर घंटे धूप जलाने और भेंट चढ़ाने आते थे। वास्तव में:

सोने के चूल्हे में हजार वर्षों तक अगरबत्ती का धुआं निकलता रहा;

जेड से बने दीपों में अनंत काल तक प्रकाश जलता रहा।

अध्याय 100

1392

पश्चिम की यात्रा

हम इसके बारे में और कुछ नहीं कहेंगे, बल्कि यह बताएंगे कि कैसे आठ वज्रपाणियों ने एक दूसरी सुगंधित हवा का उपयोग करके चारों तीर्थयात्रियों को वापस उनके गंतव्य तक पहुँचाया। कुछ दिनों बाद वे पूर्व दिशा में पहुँचे और धीरे-धीरे चांगआन दिखाई देने लगा। अब, तेन गुआन के तेरहवें वर्ष के नौवें महीने के बारहवें दिन तांग पुरोहित को नगर से विदा करने के बाद, सम्राट ताइज़ोंग ने सोलहवें वर्ष में अपने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को चांगआन नगर के बाहर शास्त्रों की प्रतीक्षा में एक मीनार बनवाने के लिए भेजा था। ताइज़ोंग स्वयं प्रतिवर्ष यहाँ जाते थे। संयोगवश, जिस दिन सम्राट मीनार पर गए, उसी दिन पश्चिमी आकाश शुभ प्रकाश और सुगंधित हवा के झोंकों से भर गया था।

“हे पवित्र भिक्षु,” वज्रपाणियों ने हवा में रुकते हुए कहा, “यह चांगआन नगर है। हम नीचे नहीं उतर सकते क्योंकि यहाँ के लोग बहुत चालाक हैं: हमें डर है कि वे हमारी पहचान बता देंगे। महान ऋषि बंदर और अन्य दो सज्जन भी वहाँ नहीं जा सकते।

आपको स्वयं वहाँ जाकर अपने राजा को शास्त्र सौंपने होंगे और फिर वापस यहाँ आना होगा। हम बादलों में आपका इंतज़ार करेंगे और आपके मिशन की सूचना देने के लिए तैयार रहेंगे।"

"यद्यपि आप आदरणीय सज्जनों की बात सही है," महान ऋषि ने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी शास्त्रों को ले जाने वाले डंडे को अपने कंधों पर कैसे उठा सकते हैं? और वे इस घोड़े को कैसे ले जा सकते हैं? हमें उन्हें वहाँ ले जाना होगा।"

क्या आप थोड़ी देर ऊपर हवा में रुक सकते हैं? हम आपको इंतज़ार नहीं करा सकते। वज्रपाणियों ने उत्तर दिया, "पिछले दिनों बोधिसत्व गुआनयिन ने तथागत को सूचित किया था कि त्रिपिटक में शास्त्रों की संख्या पूरी करने के लिए वापसी यात्रा में केवल आठ दिन लगेंगे। हम पहले ही चार दिन से अधिक समय बिता चुके हैं, और हमें चिंता है कि सुअर आशीर्वाद और सम्मान के लिए इतना लालची हो जाएगा कि वह हमें समय सीमा से आगे बढ़ा देगा।"

"गुरु अब बुद्ध बन चुके हैं," सुअर ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "और मैं भी बुद्ध बनना चाहता हूँ। तो फिर मुझे लालच क्यों करना चाहिए? बड़े ही धूर्त मूर्ख! यहीं रुको, हम तुम्हें शास्त्र सौंप देते हैं, फिर हम तुम्हें वापस ले जाने के लिए लौटेंगे।" इसके बाद उस मूर्ख ने एक डंडा अपने कंधे पर उठाया, जबकि साधु सैंड ने घोड़े को संभाला और भाई बंदर ने पवित्र भिक्षु का नेतृत्व किया, और वे अपने बादल को शास्त्रों की निगरानी करने वाले टॉवर के पास उतारने लगे।

जब ताइज़ोंग और उनके सभी अधिकारियों ने यह देखा तो वे यात्रियों का स्वागत करने के लिए नीचे आए और बोले, "आप वापस आ गए हैं, शाही छोटे भाई।"

तांग पुजारी प्रणाम करते हुए जमीन पर गिर पड़े, लेकिन ताइज़ोंग ने उन्हें सहारा देकर वापस खड़ा किया और पूछा,

"ये तीनों कौन हैं?"

"ये वे शिष्य हैं जिन्हें मैंने रास्ते में अपने साथ लिया," संजांग ने उत्तर दिया। ताइज़ोंग प्रसन्न हुआ।

"हमारे शाही रथ में घोड़ों को जोत दो," उन्होंने अपने सहायकों को आदेश दिया, "और शाही छोटे भाई को अपने घोड़े पर सवार होकर हमारे साथ महल लौटने के लिए आमंत्रित करो।" तांग पुजारी ने उन्हें धन्यवाद दिया और अपने घोड़े पर सवार हो गए। महान ऋषि उनके पीछे-पीछे चल रहे थे, अपनी सुनहरी लाठी घुमाते हुए। पिग और

फ्रायर सैंड घोड़े को आगे-आगे ले जा रहे थे और डंडा कंधे पर उठाए हुए सम्राट के पीछे चांगआन की ओर चल पड़े। सचमुच: शांति और बढ़ती समृद्धि के उस वर्ष में।
नागरिक और सैन्य अधिकारी शांत और गरिमामय हैं।
भूमि और जल के एक विशाल समूह में पुरोहितों ने धर्म का प्रदर्शन किया;
अध्याय 100
1393
पश्चिम की यात्रा
राजमहल के सिंहासन कक्ष में सम्राट अपने मंत्रियों को आदेश देते हैं।
तांग सानजांग को पासपोर्ट दिया गया था;
शास्त्रों के मूल कारण को पंच तत्वों के अनुरूप बताया गया है।
कष्टदायी प्रशिक्षण के माध्यम से सभी राक्षसों का नाश किया गया है;
अब वह विजयी होकर राजधानी लौटता है।
तांग पुरोहित और उनके तीन शिष्य शाही रथ के पीछे-पीछे महल लौट आए। राजधानी में सभी को पता था कि धर्मग्रंथ लाने गया तीर्थयात्री अब लौट आया है।
जब चांगआन के होंगफू मठ के युवा और वृद्ध भिक्षुओं ने, जहाँ तांग पुरोहित रहते थे, देखा कि कई देवदार के पेड़ों की चोटियाँ पूर्व दिशा की ओर झुकी हुई हैं, तो वे आश्चर्य से विस्मयचकित रह गए।
"अजीब बात है, बहुत अजीब! आज हवा बिल्कुल नहीं चली, तो इन पेड़ों की चोटियाँ क्यों झुकी हुई हैं?"
"हमारे वस्त्र तुरंत ले आओ," उनमें से एक ने कहा, जो संजांग का पूर्व शिष्य था। "शास्त्र लाने गए गुरु वापस आ गए हैं।"
"तुम्हें कैसे पता?" बाकी सभी भिक्षुओं ने पूछा।
“जब गुरुजी कई साल पहले चले गए थे,” पूर्व शिष्य ने उत्तर दिया, “उन्होंने कहा था कि उनके जाने के तीन, चार, छह या सात साल बाद जब चीड़ के पेड़ की शाखाएँ और चोटियाँ पूर्व की ओर मुड़ जाएँगी, तब वे लौटेंगे। मेरे गुरुजी बुद्ध की पवित्र वाणी में बोलते हैं: इसी से मुझे पता चलता है।” वे जल्दी से अपने वस्त्र पहनकर बाहर चले गए।
जब वे पश्चिमी सड़क पर पहुँचे, तो संदेशवाहक आ चुके थे और उन्होंने बताया, "शास्त्रों की खोज में गए तीर्थयात्री अभी-अभी लौटे हैं, और महाराज उन्हें नगर में ला

रहे हैं।" यह सुनकर सभी भिक्षु उनसे मिलने के लिए दौड़ पड़े। शाही रथ को देखकर वे पास आने की हिम्मत नहीं कर पाए, बल्कि उसके पीछे-पीछे महल के द्वार तक गए, जहाँ तांग पुरोहित रथ से उतरे और अपने शिष्यों के साथ अंदर चले गए।

तांग पुरोहित, ड्रैगन घोड़े, सूत्रों के भार, बंदर, सुअर और साधु सैंड के साथ सिंहासन कक्ष की सीढ़ियों के नीचे खड़े थे। सम्राट ताइज़ोंग ने तब छोटे भाई को सिंहासन कक्ष में प्रवेश करने के लिए बुलाया और उन्हें बैठने का निमंत्रण दिया, जिसे तांग पुरोहित ने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लिया। फिर उन्होंने धर्मग्रंथों को ऊपर ले जाने का आदेश दिया।

बंदर और अन्य लोगों ने उन ग्रंथों को खोला, जिन्हें निजी तौर पर उपस्थित अधिकारियों ने सम्राट को सौंप दिया।

सम्राट ने पूछा, "कितने ग्रंथ हैं? और आप उन्हें कैसे लाए?"

"जब आपका पुरोहित शिष्य गिद्ध शिखर पर पहुँचा और उसने भगवान बुद्ध को देखा," संज़ंग ने उत्तर दिया, "उन्होंने अर्हत आनंद और कश्यप को हमें पहले एक कीमती मीनार में ले जाने के लिए कहा, जहाँ हमें मांसाहारी भोजन दिया गया, फिर पुस्तकालय में, जहाँ हमें शास्त्र दिए गए। अर्हतों ने उपहार मांगे, लेकिन चूंकि हम कोई उपहार नहीं लाए थे, इसलिए हमारे पास देने के लिए कुछ नहीं था। तब उन्होंने हमें शास्त्र दिए। जब हमने बुद्ध की कृपा के लिए उनका धन्यवाद किया और पूर्व की ओर यात्रा कर रहे थे, तो एक भयानक आंधी ने शास्त्रों को छीन लिया। सौभाग्य से मेरे शिष्यों ने जादुई शक्तियों का उपयोग करके उन्हें वापस प्राप्त कर लिया, लेकिन वे चारों ओर बिखर गए थे। जब हमने उन्हें खोलकर देखा, तो हमने पाया कि वे सभी खाली, शब्दहीन संस्करण थे। हम इतने स्तब्ध रह गए कि हम वापस बुद्ध के पास गए और असली शास्त्रों के लिए विनती की। भगवान बुद्ध ने कहा, 'जब इन शास्त्रों की रचना हुई, तो भिक्षु और पवित्र भिक्षु पर्वत से नीचे गए और उन्होंने इन्हें बड़े झाओ के परिवार को सुनाया।' अध्याय 100"

1394

पश्चिम की यात्रा

श्रावस्ती की भूमि में। इससे जीवितों के लिए शांति और सुरक्षा तथा परिवार के मृत सदस्यों के लिए मुक्ति सुनिश्चित हुई। बस तीन बुशेल और तीन पेक दानेदार सोना मांगा गया था। मुझे लगा कि वे शास्त्रों को बहुत सस्ते में बेच रहे हैं, इसलिए मैंने यह

सुनिश्चित किया कि झाओ के पुत्र और पोते गरीब रहें। जब हमें पता चला कि दोनों अर्हत भेंट मांग रहे हैं और भगवान बुद्ध को इसके बारे में सब पता है, तो हमारे पास बैंगनी सोने से भरा अपना भिक्षापात्र उन्हें देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। तभी उन्होंने सच्चे शास्त्र शब्द सहित हमें सौंपे।

इनकी संख्या पैंतीस है, और इनमें से प्रत्येक से कुछ रोल चुनकर हमें दिए गए हैं, जिससे कुल रोल की संख्या बनती है। यह संख्या एक स्टोर में मौजूद रोल की संख्या के बराबर है।

यह देखकर ताइज़ोंग पहले से कहीं अधिक प्रसन्न हुए। उन्होंने आदेश दिया, "प्रोटोकॉल कार्यालय पूर्वी हॉल में धन्यवाद भोज का आयोजन करे।" तभी उन्होंने देखा कि तीन शिष्य सीढ़ियों के नीचे खड़े हैं, जो बेहद विचित्र लग रहे थे। उन्होंने पूछा, "क्या आपके ये विशिष्ट शिष्य विदेशी हैं?"

“मेरे वरिष्ठ शिष्य का उपनाम सन है,” आदरणीय बुजुर्ग ने झुककर उत्तर दिया, “उनका बौद्ध नाम वुकॉन्ग है, और मैं उन्हें सन नौसिखिया भी कहता हूँ। वे मूल रूप से पूर्वी महाद्वीप के आओलाई देश में पुष्प और फल पर्वत पर स्थित जल परदे की गुफा से आए थे। पाँच सौ वर्ष पूर्व स्वर्ग के महलों में भीषण उत्पात मचाने के कारण, भगवान बुद्ध ने उन्हें पश्चिमी सीमा पर स्थित द्विसीमा पर्वत की एक पत्थर की कोठरी में कैद कर दिया था। बोधिसत्व गुआनयिन द्वारा उनके मार्ग में सुधार लाने के लिए प्रेरित किए जाने पर उन्होंने धर्म परिवर्तन स्वीकार कर लिया, इसलिए जब मैं वहाँ पहुँचा तो मैंने उन्हें बचाया। मैं अपनी रक्षा के लिए उनका बहुत ऋणी हूँ। मेरे दूसरे शिष्य झू का बौद्ध नाम वुनेन्ग है, और मैं उन्हें सुअर भी कहता हूँ। वे आशीर्वाद पर्वत पर स्थित बादल पथ गुफा से आए थे, और स्टुबेट देश के गाओ गाँव में एक राक्षस थे, जब तक कि बोधिसत्व द्वारा उनका धर्म परिवर्तन नहीं हुआ और वुकॉन्ग द्वारा उन्हें वश में नहीं किया गया। उन्होंने बहुत प्रयास किए हैं, पूरे रास्ते बोझ ढोते हुए।” और नदियों को पार करने में बहुत उपयोगी रहा है। मेरे तीसरे शिष्य का उपनाम शा है और उसका बौद्ध नाम वूज़िंग है। वह रोइंग सैंड्स नदी में एक राक्षस हुआ करता था। बोधिसत्व द्वारा उसका भी धर्म परिवर्तन हुआ और अब वह बौद्ध धर्म में विश्वास करता है। यह घोड़ा वह नहीं है जो मेरे स्वामी ने मुझे दिया था।

"ऐसा कैसे?" ताइज़ोंग ने पूछा। "इसके निशान बिल्कुल एक जैसे हैं।"

“जब आपका शिष्य कुंडलित सर्प पर्वत के पास से ईगल के दुख की घाटी के जल को

पार करने जा रहा था, तब मेरे मूल घोड़े को इस घोड़े ने खा लिया," संज़ंग ने उत्तर दिया। "शिष्य सन ने मेरी कृपा करते हुए बोधिसत्व से घोड़े के इतिहास के बारे में पूछा। यह मूल रूप से पश्चिमी सागर के ड्रैगन राजा का पुत्र था, जिसे किसी अपराध के कारण वहाँ भेजा गया था। उसे भी बोधिसत्व ने बचाया और उसे मेरे लिए काम करने को कहा और उसे मूल घोड़े के समान चिह्नों वाले घोड़े में बदल दिया। यह पर्वतों पर चढ़ने, चोटियों को पार करने, नदियों को पार करने और कठिन रास्तों को तय करने में बहुत सहायक रहा है। जाते समय मैं इस पर सवार था और लौटते समय इसने शास्त्रों को ढोया: मैं इसके प्रयासों पर बहुत निर्भर रहा हूँ।"

यह जानकर ताइज़ोंग ने आपकी जमकर प्रशंसा की। उन्होंने पूछा, "पश्चिम की ओर आपकी यात्रा वास्तव में कितनी लंबी थी?"

"मुझे याद है बोधिसत्व ने कहा था कि यह 36,000 मील की दूरी है," संज़ंग ने उत्तर दिया, "लेकिन मैंने रास्ते में तय की गई दूरियों का कोई रिकॉर्ड नहीं रखा। मुझे बस इतना पता है कि हमने चौदह सर्दियाँ और गर्मियाँ देखीं। हर दिन कोई न कोई पहाड़ या पहाड़ी मिलती थी। जंगल विशाल थे और नदियाँ चौड़ी। मैं कई राजाओं से भी मिला जिन्होंने मेरे पासपोर्ट की जाँच की और उस पर मुहर लगाई। "शिष्यों," उन्होंने आदेश दिया, "पासपोर्ट लाओ और महाराज को सौंप दो।"

ताइज़ोंग ने जब पासपोर्ट की जाँच की तो पाया कि यह झेन गुआन के तेरहवें वर्ष के नौवें महीने के बारहवें दिन जारी किया गया था। उन्होंने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "आपने वाकई एक लंबी और कष्टदायक यात्रा की है। अब झेन गुआन का सत्ताईसवाँ वर्ष चल रहा है।" पासपोर्ट पर एलिफेंटिया, वूजी, टैरीकार्ट, पश्चिमी लियांग के महिला क्षेत्र, जिसाई, पुरपुरिया, लियोनिया, भिक्षु क्षेत्र और धर्माद्रठिया के सम्राटों की मुहरें थीं; साथ ही फेंगज़ियान, युहुआ और जिनपिंग के प्रमुख अधिकारियों की मुहरें भी थीं। पासपोर्ट को पढ़ने के बाद ताइज़ोंग ने उसे रख दिया।

अध्याय 100

कुछ ही देर में सम्राट के निजी सेवक उन्हें भोज में आमंत्रित करने आए, जिस पर ताइज़ोंग ने संज़ंग का हाथ पकड़कर उन्हें सिंहासन कक्ष से बाहर ले जाते हुए पूछा, "क्या आपके विशिष्ट शिष्यों को व्यवहार करना आता है?"

"मेरे शिष्य सभी पर्वतीय गांवों और जंगलों से आए राक्षस थे," संजांग ने उत्तर दिया, "इसलिए वे चीन के पवित्र दरबार के शिष्टाचार को नहीं समझते। महाराज, मैं आपसे उनके किसी भी अपराध के लिए क्षमा चाहता हूँ।"

“हम उन्हें दोष नहीं देंगे,” ताइज़ोंग ने मुस्कुराते हुए कहा, “हम उन्हें दोष नहीं देंगे। उन सभी को पूर्वी मंडप में आयोजित भोज में हमारे साथ आमंत्रित किया गया है।” एक बार फिर उनका धन्यवाद करते हुए, संज़ंग ने अपने तीन शिष्यों को बुलाया और वे सभी पूर्वी मंडप देखने चले गए। यह वास्तव में चीन की महान भूमि थी, कोई साधारण स्थान नहीं। बस देखिए;

दरवाजों से रंगीन रेशमी कपड़े लटके हुए थे।
फर्श पर लाल कालीन बिछाए गए थे।
तीव्र, दुर्लभ सुगंध,
ताज़ा और अनोखे व्यंजन।
एम्बर कप,
चमकदार बर्तन,
सोने और नेफ्राइट से जड़ा हुआ;
पीले सोने की प्लेटें,
सफेद जेड के कटोरे,
इसमें पैटर्न जड़े हुए हैं।
नरम, धीमी आंच पर पके हुए शलजम,
चीनी में लिपटे तारो
अद्भुत मीठे मशरूम,
उत्तम ताजा समुद्री शैवाल,
अदरक के साथ बांस के अंकुर की कई सर्विंग्स,
शहद के साथ मार्शमैलो की कई परतें,
गेहूं का ग्लूटेन, स्वर्ग के वृक्ष के पत्तों के साथ।
वृक्ष कवक और टोफू की पतली पट्टियाँ,

अगर और एस्टर,
फर्न और सूखे गुलाब की पंखुड़ियों से सजे नूडल्स,
मूली के साथ पकी हुई शिमला मिर्च।
सरसों के साथ कटा हुआ खरबूजा।
सब्जियों के व्यंजन काफी अच्छे थे।
लेकिन वह दुर्लभ और अद्भुत फल असाधारण था:
अखरोट और खजूर के केक,
लोंगान और लीची,
शुआनझोउ से शाहबलूत और शेडोंग से बेर,
यांग्त्से नदी के दक्षिण से जिन्को फल और हरे-सिर वाले नाशपाती,
हेज़लनट, पाइन नट्स और कमल के बीज, सभी अंगूर जितने बड़े।
टोरेया नट्स और तरबूज के बीज जो सिंघाड़े के आकार के होते हैं।
जैतून और जंगली सेब,
पिप्पिन और केकड़े,
कमल की जड़ और तीर का सिरा,
कुरकुरे बेर और लाल बेबफेनी।
कुछ भी गायब नहीं था।
सब कुछ पूरा हो गया था।
वहाँ भाप में पकाई गई शहद से बनी पेस्ट्री और अन्य मिठाइयाँ थीं।
बेहतरीन वाइन, सुगंधित चाय और कुछ असाधारण चीजें।
शब्दों में उन अनगिनत स्वादिष्ट व्यंजनों का वर्णन करना असंभव है:
चीन की महान भूमि पश्चिमी बर्बरता नहीं थी।
गुरु और उनके तीन शिष्य, साथ ही नागरिक और सैन्य अधिकारी, सम्राट ताइज़ोंग के मध्य में बैठने पर बाएँ और दाएँ खड़े हो गए। वहाँ गायन, नृत्य और वाद्य संगीत चल रहा था, और उत्सव पूरे दिन व्यवस्थित और गंभीर बना रहा। (अध्याय 100)

सम्राट का भोज प्राचीन तांग और यू युग के भोजों से कहीं अधिक उत्तम था; प्राप्त सच्चे धर्मग्रंथों का आशीर्वाद भी महान था।

यह एक ऐसी कहानी थी जिसे गौरव के साथ सदा के लिए सुनाया जाएगा:
बुद्ध का प्रकाश शाही राजधानी में व्याप्त है।
उस शाम उन्होंने सम्राट को उनकी दयालुता के लिए धन्यवाद दिया, जिसके बाद ताइज़ोंग महल के आवास में लौट गए और अधिकारी अपने-अपने घर चले गए। तांग पुरोहित अपने अनुयायियों के साथ हांगफू मठ लौट गए, जहाँ भिक्षुओं ने प्रणाम करके उनका स्वागत किया।
जैसे ही वह द्वार से अंदर दाखिल हुए, भिक्षुओं ने बताया, "गुरुजी, आज सुबह अचानक इन सभी वृक्षों की चोटियाँ पूरब की ओर झुक गईं। हमें आपकी कही बात याद आई और हम आपसे मिलने शहर से बाहर गए, और आप सचमुच आ गए थे।" प्रसन्नता से भर उठे, आदरणीय भिक्षु मठाधीश के कक्ष में प्रवेश कर गए। इस बार सुअर ने न तो चाय-खाने के लिए चिल्लाया और न ही कोई शोर मचाया। बंदर भाई और रेत भिक्षु भी दोनों ने अच्छा व्यवहार किया।
उपलब्धि पूरी हो जाने के कारण वे स्वाभाविक रूप से शांत थे। सूर्यास्त होते ही वे सोने चले गए।
अगली सुबह तड़के ताइज़ोंग ने अपने अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा, "जब हमने अपने छोटे भाई की उस अत्यंत महत्वपूर्ण और महान उपलब्धि के बारे में सोचा, जिसके लिए हमारे पास उन्हें पुरस्कृत करने का कोई तरीका नहीं है, तो हम पूरी रात सो नहीं पाए। हमने धन्यवाद व्यक्त करने के लिए कुछ बोलचाल के वाक्य तैयार किए, लेकिन उन्हें लिख नहीं पाए। सचिवालय के अधिकारियों," उन्होंने आदेश दिया, "इन्हें लिख लीजिए, जबकि हम इन्हें आपको पढ़कर सुनाते हैं।" यह वही पाठ है जो उन्होंने लिखवाया था:
यह सर्वविदित है कि स्वर्ग और पृथ्वी के स्वरूप यह दर्शाते हैं कि वे जीवन को आश्रय और सहारा प्रदान करते हैं, जबकि चारों ऋतुएँ अदृश्य हैं, जो उन शीत और ताप को छुपाती हैं जिनसे सभी प्राणी रूपांतरित होते हैं। इस प्रकार, स्वर्ग का अध्ययन और पृथ्वी का अवलोकन करके मूर्ख भी उनकी उत्पत्ति के बारे में जान सकते हैं, परन्तु बुद्धिमान लोग बहुत कम हैं जो ऋणात्मक और धनात्मक तत्वों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
आकाश और पृथ्वी, जो नकारात्मक और सकारात्मक से घिरे हुए हैं, उनके स्वरूपों के कारण आसानी से समझ में आ जाते हैं, परन्तु नकारात्मक और सकारात्मक निराकार

होने के कारण उन्हें समझना कठिन है। यदि स्वरूप स्पष्ट और समझने योग्य हों तो मूर्ख भी भ्रमित नहीं होगा; यदि स्वरूप छिपे और अदृश्य हों तो बुद्धिमान भी असमंजस में पड़ जाएगा।

बुद्ध का मार्ग शून्यता का सम्मान करता है, रहस्य पर सवार होता है और मौन को नियंत्रित करता है, फिर भी सभी प्राणियों का उद्धार करता है और सभी लोकों पर प्रभुत्व रखता है। जब यह दिव्यता को जागृत करता है, तो इससे ऊँचा कुछ नहीं होता; जब यह अपनी दिव्य शक्ति को दबाता है, तो इससे नीचा कुछ नहीं होता। जब यह विशाल होता है, तो यह पूरे ब्रह्मांड में विलीन हो जाता है; जब यह छोटा होता है, तो यह एक इंच के अंश में समा सकता है। यह न मरता है और न जन्म लेता है; यह हजारों युगों तक विद्यमान रहता है और शाश्वत है।

आधा छिपा हुआ और आधा प्रकट, यह सभी आशीर्वादों को नियंत्रित करता है और उन्हें शाश्वत बनाए रखता है। यह अद्भुत मार्ग रहस्यमय है; इसका अनुसरण करने वालों में से कोई भी इसकी सीमा नहीं जानता। धर्म का प्रवाह मौन है: इसे समझने वालों में से कोई भी इसके स्रोत को नहीं पा सकता। तो फिर मूर्ख मनुष्य अपनी मूर्खता में संशय या भ्रम के बिना इसका अनुसरण कैसे कर सकते हैं?

पश्चिम में महान शिक्षा का उदय हुआ। बाद में हान दरबार में एक अद्भुत स्वप्न आया, जिसने अपनी चमक और परोपकार को पूर्व में फैला दिया। प्राचीन काल में, जब बुद्ध के स्वरूप और निशान चारों ओर साझा किए गए, तो लोगों ने दूर-दूर तक वाणी फैलने से पहले ही उनका रूपांतरण कर दिया। उस युग में जब वे कभी दृश्य तो कभी अदृश्य होते थे, लोग उनका आदर करते थे और उनका अनुसरण करते थे। लेकिन बाद में छवि धुंधली हो गई और निर्वाण प्राप्त हो गया, वे दूर चले गए और संसार को छोड़ दिया, स्वर्णमय मुखमंडल छिप गया और अब तीन हजार लोकों में अपनी चमक नहीं बिखेरता रहा। उस सुंदर छवि के चित्र व्यर्थ ही बनाए गए। (अध्याय 100)

बुद्ध के बत्तीस पवित्र चिह्नों को दर्शाने का प्रयास किया गया। इसके बाद उनके सूक्ष्म वचनों का व्यापक प्रचार हुआ, जिससे जीवन के तीन मार्गों पर पक्षियों का उद्धार हुआ; उनके द्वारा छोड़े गए उपदेश दूर-दूर तक फैले, और सभी जीवों को विकास के दस चरणों में मार्गदर्शन प्रदान किया। बुद्ध के ग्रंथों को दो भागों में विभाजित किया जा

सकता है: महायान और लघुयान। इसमें जादू-टोना भी शामिल है, जो भ्रम फैलाने और सही को गलत बनाने की कला है।

अब हमारे पुरोहित शुआनज़ैंग, धर्म के गुरु, धर्म के अगुवा हैं। अपनी युवावस्था में वे इतने सजग और समझदार थे कि उन्होंने शीघ्र ही तीन शून्यों का महत्व जान लिया। जैसे-जैसे वे बड़े हुए, उनके मन की स्पष्टता ने उनके आचरण में चार प्रकार के धैर्य को समाहित कर लिया। हवा में लहराता चीड़ का पेड़ या पानी में प्रतिबिंबित चंद्रमा भी उनकी पवित्रता के आगे फीका पड़ जाता है; अमरों की ओस और चमकीले मोती भी उनकी तेजस्वी चमक के आगे कुछ नहीं हैं। उनका ज्ञान बिना किसी बाधा के सब कुछ समाहित करता है; उनका मन निराकार को भी समझ लेता है। छह अशुद्धियों से बहुत ऊपर उठकर, वे अपनी सुगंध को हजारों युगों तक फैलाते हैं। जब उन्होंने अपना मन अंतर्मन पर केंद्रित किया, तो वे सच्चे धर्म द्वारा झेली गई पीड़ाओं से दुखी हुए; जब उन्होंने अपने विचार रहस्य के द्वार पर केंद्रित किए, तो वे गहन ग्रंथों के विकृति से व्याकुल हुए। वे उन्हें पुनः व्यवस्थित करने के लिए तरसते थे ताकि अतीत की शिक्षाओं का पुनः प्रसार हो सके। और अपुष्ट ग्रंथों को जड़ से उखाड़ फेंकना, ताकि सच्चे ग्रंथ प्रचलन में बने रहें और आने वाले विद्वानों के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। इसीलिए उन्होंने अपना हृदय पवित्र भूमि की ओर उठाया और पश्चिम की ओर धर्म यात्रा पर निकल पड़े, अकेले ही दूर-दराज के खतरों का सामना करते हुए, अपने डंडे का सहारा लेते हुए। भोर में जब बर्फ़बारी होती तो धरती पल भर में गायब हो जाती; और शाम को जब धूल उड़ने लगती तो आकाश ढक जाता। वे कोहरे में हज़ार मील तक फैले पहाड़ों और नदियों को पार करते हुए आगे बढ़े, सौ ऋतुओं के बदलावों के पाले और बारिश में अपना रास्ता बनाते हुए। पूर्ण एकाग्रता के साथ और अपने प्रयासों को तुच्छ समझते हुए, वे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अत्यंत तड़पते रहे। वे चौदह वर्षों तक पश्चिम में विचरण करते रहे, सच्चे उपदेश की खोज में उन सभी अनूठे देशों का भ्रमण करते रहे। उन्होंने जुड़वां वृक्षों और आठ नदियों का दर्शन किया, मार्ग का आनंद लिया और हवा का सामना किया। हिरण पार्क और गिद्ध शिखर पर उन्होंने अद्भुत दृश्यों का अवलोकन किया। उन्होंने प्राचीन ऋषियों से शुभ वचन और श्रेष्ठ विद्वानों से सच्ची शिक्षा प्राप्त की, अद्भुत द्वारों की गहराई में जाकर रहस्यों का गहन अध्ययन किया। तीन नौकाओं और छह साधनाओं का मार्ग उनके हृदय में प्रज्वलित है; उनके वाक्पटुता के सागर में सौ ग्रंथों का भंडार लहरों की तरह उमड़ता है। उन्होंने

असंख्य देशों की यात्रा की है; और असंख्य शास्त्रों का संग्रह किया है।
उन्होंने महायान के सभी पैंतीस महत्वपूर्ण ग्रंथों की 5,048 प्रतियां प्राप्त की हैं, जिनका अनुवाद करके चीन में प्रचार-प्रसार किया जाएगा, ताकि इस अद्भुत कार्य को बढ़ावा दिया जा सके। पश्चिम से लाए गए दया के बादल पूर्व में धर्म की वर्षा करेंगे। जो पवित्र शिक्षाएं अपूर्ण थीं, वे अब फिर से पूर्ण हो गई हैं; पाप करने वाले आम लोगों को आशीर्वाद प्राप्त हो गया है। अग्नि की प्रचंड ज्वालाएं शांत हो गई हैं, और सभी को भ्रम के मार्ग से मुक्ति मिल गई है; ज्ञान के जल में मैली लहरें फिर से साफ हो गई हैं, क्योंकि सभी दूसरे किनारे पर एकत्रित हो गए हैं। इससे यह सीखा जा सकता है कि दुष्ट अपने कर्मों के कारण गिरते हैं, जबकि अच्छे अपने भाग्य के कारण उठते हैं। इन उत्थान और पतन का कारण व्यक्ति के अपने कर्मों में निहित है। इसकी तुलना एक ऊंचे पहाड़ पर उगने वाले कैसिया के फूल से की जा सकती है, जहां केवल बादल और ओस ही उसके फूल को पोषण दे सकते हैं, या हरे पानी से खिलने वाले कमल से, जिसके पत्ते उड़ती धूल से अछूते रहते हैं। ऐसा नहीं है कि कमल स्वभाव से शुद्ध है और कैसिया निर्मल: वे अच्छे इसलिए हैं क्योंकि एक उच्चतर से जुड़ा रहता है, जहाँ तुच्छ और मामूली बातें उसे बांध नहीं सकतीं, जबकि दूसरा पवित्र से जुड़ा रहता है, जहाँ गंदगी उसे दूषित नहीं कर सकती। अब यदि कुछ न जानने वाले पौधे भी अच्छाई के माध्यम से अच्छे बन सकते हैं, तो विवेकशील लोग शुभ कर्मों के फल से कितना अधिक आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। अब आशा है कि सच्चे शास्त्र सूर्य और चंद्रमा के चक्र की तरह अनंत काल तक प्रसारित होते रहेंगे; और यह आशीर्वाद स्वर्ग और पृथ्वी के समान शाश्वत रूप से बना रहेगा।
यह लिखे जाने के तुरंत बाद, महल के द्वार के बाहर धन्यवाद व्यक्त करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे पवित्र भिक्षु को बुलाया गया। बुलावा सुनते ही, संज़ंग ने तुरंत प्रणाम किया। फिर ताइज़ोंग ने उन्हें सिंहासन कक्ष में आमंत्रित किया और उन्हें दस्तावेज़ सौंप दिया। संज़ंग ने उसे पूरा पढ़ा, एक बार फिर धन्यवाद देते हुए प्रणाम किया और यह निवेदन किया: "महाराज का लेखन उदात्त और प्राचीन शैली में है; यह तर्कपूर्ण, गहन और सूक्ष्म है। लेकिन मुझे इसका शीर्षक नहीं पता।"
अध्याय 100

“कल रात हमने मौखिक रूप से जो मसौदा तैयार किया था,” ताइज़ोंग ने उत्तर दिया, “हम उसे ‘पवित्र शिक्षा की प्रस्तावना’ कहेंगे। क्या यह स्वीकार्य होगा?” आदरणीय बुजुर्ग ने प्रणाम किया और बहुत देर तक धन्यवाद व्यक्त किया।

तब ताइज़ोंग ने कहा, "हमारी प्रतिभा जेड की शिलाओं पर अंकित ग्रंथों के सामने हमें लज्जित करती है; हमारे शब्द धातु या पत्थर पर उत्कीर्ण ग्रंथों के योग्य नहीं हैं। जहाँ तक आंतरिक शास्त्रों की बात है, हम उनके बारे में और भी अज्ञानी हैं। हमने मौखिक रूप से जो पाठ तैयार किया है, वह वास्तव में एक घटिया और भद्दा रचना है जो सोने की शिलाओं को ब्रश और स्याही से गंदा करता है, और मोतियों के जंगल में कंकड़ रखने जैसा है। जब हम इस पर विचार करते हैं तो हम लज्जा से भर जाते हैं। यह अत्यंत निंदनीय है; हमने आपको व्यर्थ ही धन्यवाद देने का कष्ट दिया है।"

सभी अधिकारियों ने बधाई व्यक्त की और पवित्र शिक्षा पर शाही ग्रंथ के सामने सिर झुकाया, जिसे राजधानी और प्रांतों में हर जगह प्रकाशित किया जाना था।

"छोटे भाई, क्या आप हमारे लिए कुछ सच्चे धर्मग्रंथों का पाठ करने को तैयार होंगे?" ताइज़ोंग ने पूछा।

"महाराज," संजांग ने उत्तर दिया, "यदि सच्चे शास्त्रों का पाठ करना है तो वह बुद्ध की भूमि में ही किया जाना चाहिए।"

सिंहासन कक्ष शास्त्रों के पाठ के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है।

ताइज़ोंग ने इसे स्वीकार करते हुए अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने अपने उपस्थित अधिकारियों से पूछा, "चांगआन शहर में सबसे पवित्र मठ कौन सा है?" इस पर शिक्षाविद शियाओ यू ने आगे बढ़कर अपना उत्तर दिया।

"शहर में स्थित जंगली हंस स्तूप का मठ उन सभी में सबसे पवित्र है।"

तब ताइज़ोंग ने अपने अधिकारियों को आदेश दिया, "आपमें से प्रत्येक आदरपूर्वक सच्चे धर्मग्रंथों की कुछ प्रतियाँ लेकर हमारे साथ जंगली हंस स्तूप के मठ में चलें, जहाँ हम अपने छोटे भाई को धर्मग्रंथों पर प्रवचन देने के लिए आमंत्रित करेंगे।" सभी अधिकारी धर्मग्रंथों की कुछ प्रतियाँ लेकर ताइज़ोंग के साथ मठ गए, जहाँ एक ऊँचा चबूतरा बनाया गया था और सब कुछ सुव्यवस्थित ढंग से सजाया गया था।

“सुअर, साधु सैंड,” आदरणीय बुजुर्ग ने आदेश दिया, “अपने साथ अजगर घोड़े को लाओ और सामान व्यवस्थित करो। बंदर मेरे पास रहेगा।” फिर उन्होंने सम्राट को संबोधित करते हुए कहा, “महाराज, यदि आप सच्चे धर्मग्रंथों को विश्वभर में फैलाना

चाहते हैं, तो प्रकाशन से पहले उनकी प्रतियां बनानी होंगी। मूल ग्रंथों को अनमोल खजाने की तरह सुरक्षित रखना होगा। उनका किसी भी प्रकार से अनादर या अपमान नहीं किया जाना चाहिए।"

"छोटे भाई," ताइज़ोंग ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "आप जो कह रहे हैं वह बिल्कुल सही है, एकदम सही।" फिर उन्होंने हानलिन अकादमी और महल सचिवालय के अधिकारियों को मूल धर्मग्रंथों की नकल करने का आदेश दिया और शहर की दीवार के पूर्व में एक और मठ, नकल मठ, की स्थापना करवाई।

आदरणीय बुजुर्ग अपने हाथों में कई धर्मग्रंथ लिए मंच पर चढ़े। वे उनका पाठ शुरू करने ही वाले थे कि तभी सुगंधित हवा चलने लगी और आठ महान वज्रपाणि प्रकट होकर जोर से बोले, "धर्मग्रंथ पाठ करने वाले, इन धर्मग्रंथों को नीचे रख दो और हमारे साथ पश्चिम की ओर वापस चलो।" मंकी और अन्य दो, जो संजांग के नीचे खड़े थे, सफेद घोड़े के साथ जमीन से ऊपर उठ गए।

संज़ंग ने धर्मग्रंथों को नीचे रख दिया और बादलों के नौवें स्तर तक ऊपर उठ गया, फिर उन्हें लेकर हवा में उड़ गया। ताइज़ोंग और उसके सभी अधिकारी इतने भयभीत हो गए कि उन्होंने आकाश के सामने सिर झुका लिया। यह वास्तव में एक असाधारण घटना थी।

पवित्र भिक्षु ने शास्त्रों को लाने के लिए लंबे समय तक प्रयास किया;
वह चौदह वर्षों तक पश्चिम में भटकता रहा।
उन्होंने कठिन यात्रा की और कई विपत्तियों का सामना किया;

अध्याय 100

1400

पश्चिम की यात्रा

पहाड़ों और नदियों के रास्ते, जो लंबे समय से रुके हुए थे।
आठ गुना नौ और एक नौ और पूरा करने पर,
उनके कार्यों की संख्या अनगिनत है और वे संसारों को भर देते हैं।
वह सूत्र लेकर अपने देश लौट गया।
पूर्वी क्षेत्र के लोग इसे हमेशा संजोकर रखेंगे।

जब ताइज़ोंग और सभी अधिकारियों ने पूजा-अर्चना पूरी कर ली, तो प्रतिष्ठित भिक्षुओं को जंगली हंस स्तूप के मठ में एक भव्य भूमि और समुद्र प्रार्थना सभा आयोजित

करने के लिए चुना गया, जिसमें पवित्र ग्रंथों का पाठ किया जाना था, और जिसके द्वारा पाताल लोक में सभी दुष्ट आत्माओं का उद्धार होगा और चारों ओर अच्छाई का प्रसार होगा। हम इस बात का वर्णन नहीं करेंगे कि ग्रंथों की प्रतियां कैसे बनाई गईं और पूरे साम्राज्य में कैसे प्रकाशित की गईं।

कथा के अनुसार, आठ वज्रपाणियों ने पूज्य गुरु, उनके तीन शिष्यों और घोड़े सहित पाँचों को गिद्ध शिखर तक वापस पहुँचाया। चांगआन तक जाने और वापस आने में आठ दिन लगे थे। ठीक उसी समय जब गिद्ध शिखर के सभी देवता बुद्ध के उपदेश सुन रहे थे, आठ वज्रपाणियों ने गुरु और शिष्यों को अंदर ले आए।

"स्वर्ण आज्ञा का पालन करते हुए," उन्होंने तथागत को सूचना दी, "आपके शिष्यों ने पवित्र भिक्षुओं को तांग देश में वापस पहुँचा दिया है, जहाँ उन्होंने शास्त्रों को सौंप दिया है। अब हम अपना मिशन पूरा होने की सूचना देने आए हैं।" इसके बाद तांग पुजारी और उनके शिष्यों को आगे आने और अपने-अपने कार्य सौंपे जाने का आदेश दिया गया।

तथागत ने कहा, "हे पवित्र भिक्षु, पिछले जन्म में आप मेरे दूसरे शिष्य थे और स्वर्ण झींगुर गुरु कहलाते थे। परन्तु क्योंकि आपने मेरे धर्मोपदेश को नहीं सुना और मेरी महान शिक्षा का अनादर किया, इसलिए मैंने आपकी आत्मा को पूर्व में पुनर्जन्म के लिए भेज दिया। अब, सौभाग्य से, आपने धर्म अपना लिया है और हमारे समर्थन पर निर्भर हैं; और हमारी शिक्षाओं का पालन करते हुए आपने सच्चे शास्त्रों को प्राप्त करने में बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल की है। आपका पुरस्कार चंदन-पुण्य बुद्ध के रूप में उच्च पद पर पदोन्नत होना होगा। सुन वुकॉन्ग, जब आपने स्वर्ग के महलों में भारी उत्पात मचाया, तो मुझे शक्तिशाली जादू का प्रयोग करके आपको पंच तत्व पर्वत के नीचे कुचलना पड़ा, जब तक कि सौभाग्य से, आपका स्वर्ग से भेजा गया दंड पूरा नहीं हो गया और आप शाक्यमुनि धर्म में परिवर्तित नहीं हो गए। यह भी सौभाग्य की बात थी कि आपने अपने बुरे पक्ष को दबा दिया और अपने अच्छे पक्ष को फलने-फूलने दिया, क्योंकि आपने यात्रा के दौरान राक्षसों और दानवों को पराजित करके यश प्राप्त किया। जो कुछ भी आरंभ हुआ था, वह अब पूर्ण हो गया है और आपको भी विजयी योद्धा बुद्ध के रूप में उच्च पद से सम्मानित किया जाएगा।" झू वुनेन्ग; आप मार्शल तियान पेंग के रूप में स्वर्ग की नदी में जल देवता हुआ करते थे। आड़ू भोज में एक अमर कन्या के साथ नशे में व्यभिचार करने के कारण आपको निम्न लोक में एक

जानवर के रूप में जन्म लेने के लिए भेज दिया गया था।
मानव शरीर के प्रति अपने प्रेम के कारण तुमने आशीर्वाद पर्वत पर स्थित बादल मार्ग गुफा में पाप किया, इससे पहले कि तुम महान धर्म को अपनाकर हमारे बौद्ध संप्रदाय में प्रवेश करो। तुमने पवित्र भिक्षु की यात्रा में उनकी रक्षा की, परन्तु तुम्हारा हृदय अभी भी शुद्ध नहीं हुआ है, और तुम अभी तक अपनी वासना से मुक्त नहीं हुए हो। परन्तु क्योंकि तुमने सामान ढोकर पुण्य अर्जित किया है, इसलिए तुम्हें वेदी शुद्ध करने वाले के पद पर पदोन्नति मिलेगी।
"उन दोनों को बुद्ध बना दिया गया है," सुअर चिल्लाया, "तो मैं ही क्यों केवल वेदी शुद्ध करने वाला हूँ?"
तथागत ने उत्तर दिया, “क्योंकि तुम्हारी भूख बहुत तीव्र है, शरीर आलसी है और पेट बहुत बड़ा है। अब दुनिया के चारों महाद्वीपों में बहुत से लोग हमारी शिक्षाओं में विश्वास करते हैं। मैं तुमसे सभी बौद्ध अनुष्ठानों के बाद वेदियों की सफाई करने को कहूंगा: तुम्हारा पद ऐसा है जिसमें तुम्हें भरपूर भोजन मिलता है। इसमें क्या बुराई है?”
अध्याय 100
1401
पश्चिम की यात्रा
"शा वुजिंग, तुम एक समय पर्दा उठाने वाले सेनापति थे, लेकिन आड़ू भोज में एक क्रिस्टल का कटोरा तोड़ने के कारण तुम्हें पाताल लोक में निर्वासित कर दिया गया। तुम बहती रेत की नदी में गिर पड़े, जहाँ तुमने लोगों को मारकर और खाकर पाप किया, लेकिन सौभाग्य से, तुमने हमारी शिक्षाओं को अपनाया, हमारे समर्थन पर पूरी निष्ठा से भरोसा किया और पवित्र भिक्षु की रक्षा करके तथा घोड़े को पहाड़ पर चढ़ाकर पुण्य अर्जित किया। तुम्हारा पुरस्कार स्वर्ण अर्हत के रूप में उच्च पद पर पदोन्नति होगा।"
फिर उसने सफेद घोड़े से कहा, “तुम मूल रूप से पश्चिमी सागर के ड्रैगन राजा गुआंगजिन के पुत्र थे। अपने पिता की अवज्ञा करने के कारण तुम्हें तब तक दंड दिया गया जब तक कि तुम भी धर्म और हमारे विश्वास में परिवर्तित नहीं हो गए। तुम प्रतिदिन पवित्र भिक्षु को पश्चिम की ओर ले जाते थे और उसके बाद पवित्र ग्रंथों को पूर्व की ओर वापस लाते थे। इन उपलब्धियों के लिए तुम्हें आठ श्रेणियों के स्वर्गीय ड्रैगन के रूप में पुरस्कृत किया जाएगा।”

आदरणीय गुरु और उनके तीनों शिष्यों ने धन्यवाद व्यक्त करते हुए प्रणाम किया, और घोड़े ने भी अपनी कृतज्ञता प्रकट की। फिर एक रक्षक को आदेश दिया गया कि वह घोड़े को सीधे गिद्ध शिखर के पीछे स्थित चट्टानी किनारे पर स्थित ड्रैगन-रूपांतरण कुंड तक ले जाए और उसे कुंड में धकेल दे। तुरंत ही घोड़ा सीधा हो गया, उसके सारे बाल झड़ गए और उसके सींग निकल आए। उसके पूरे शरीर पर सुनहरे शल्क उग आए और उसके गालों और ठोड़ी पर चांदी जैसी दाढ़ी आ गई। फिर, शुभ आभा से जगमगाते हुए और अपने प्रत्येक पंजे में शुभ संकेतों के बादल लिए हुए, वह ड्रैगन-रूपांतरण कुंड से उड़कर स्वर्ग को सहारा देने वाले पंख वाले स्तंभ के चारों ओर लिपट गया। सभी बुद्धों ने तथागत की इस अद्भुत शक्ति के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त की।

“गुरुजी,” बंदर ने तांग पुजारी से कहा, “अब जब मैं आपकी ही तरह बुद्ध बन गया हूँ, तो मुझे यह सोने की पट्टी पहनने की ज़रूरत नहीं है। क्या आप इसे मेरे सिर पर कसने के लिए कोई और मंत्र पढ़ने की योजना बना रहे हैं? जितनी जल्दी हो सके, एक मंत्र पढ़कर इसे ढीला कीजिए और इसे चूर-चूर कर दीजिए। उस बोधिसत्व या जो भी वह है, उसे इससे किसी और का जीवन दुखमय न करने दीजिए।”

"उन दिनों तुम इतने अनियंत्रित थे कि तुम्हें नियंत्रण में रखने के लिए इस जादू की जरूरत थी।"

संजांग ने उत्तर दिया, "अब जब तुम बुद्ध बन चुके हो, तो यह जा सकता है। अब इसे तुम्हारे सिर पर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब वहाँ महसूस करो।" जब बंदर ने अपने हाथ उठाकर महसूस किया, तो उसने पाया कि यह वास्तव में जा चुका था।

चंदन-पुण्य बुद्ध, विजयी योद्धा बुद्ध, वेदी शुद्ध करने वाले बुद्ध और स्वर्ण अर्हत सभी ने सच्ची सिद्धि प्राप्त कर ली थी और अपने उचित स्थान पर पहुँच गए थे। दिव्य ड्रैगन अश्व भी अपने वास्तविक स्वरूप में लौट आया था। इसे प्रमाणित करने वाली एक कविता है: समस्त वास्तविकता धूल में मिल जाती है;

जब चारों रूप आपस में मिल जाते हैं तो शरीर का नवीनीकरण हो जाता है।

पंच तत्वों का सार पूर्णतः शून्य है;

दुष्टों की क्षणिक प्रसिद्धि के बारे में भूल जाओ।

चंदना-पुण्य के साथ महान जागृति आती है;

जब उनके कर्तव्य पूरे हो जाते हैं तो वे कष्टों से मुक्ति पा लेते हैं।

दूर-दूर तक फैले धर्मग्रंथों का आशीर्वाद बहुत बड़ा है;

उस एकमात्र द्वार के भीतर पांच ऋषि उच्च स्थान पर निवास करते हैं।
अध्याय 100
1402
पश्चिम की यात्रा
जब पाँचों पवित्र व्यक्तियों ने अपने-अपने स्थान ग्रहण कर लिए, तब सभी बुद्ध, बोधिसत्व, पवित्र भिक्षु, अर्हत, रक्षक, भिक्षु, गृहस्थ, देवता और हर गुफा और हर पर्वत से आए अमर प्राणी, महान देवता, डिंग और जिया देवता, कर्तव्य देवता, संरक्षक, स्थानीय देवता, और वे सभी शिक्षक और अमर प्राणी जिन्होंने मार्ग प्राप्त कर लिया था—वे सभी जो मूल रूप से उपदेश सुनने आए थे—अपने-अपने स्थानों पर लौट गए। ज़रा देखिए: रंगीन धुंध गिद्ध शिखर को घेरे हुए है;
आनंदमय संसार में शुभ बादल एकत्रित हैं।
सुनहरे ड्रैगन शांति से लेटे हुए हैं।
जेड बाघ सभी शांत हैं।
काले खरगोश अपनी मर्जी से आते-जाते हैं;
कछुए और सांप चारों ओर कुंडली मारकर बैठे हैं।
लाल और हरे रंग के फीनिक्स पक्षी बेहद खुश हैं;
काले बंदर और सफेद हिरण खुश हैं।
पूरे साल अद्भुत फूल खिलते हैं;
अमर फल चारों मौसमों में उगता है।
ऊंचे देवदार के पेड़ और प्राचीन जुनिपर के पेड़,
नीले-हरे सरू और पतले बांस।
हर रंग के बेर, चाहे उन पर फूल लगे हों या फल लगे हों।
सदाबहार आड़ू, कभी पके हुए तो कभी ताज़े।
हजारों प्रकार के फल और फूल सुंदरता में प्रतिस्पर्धा करते हैं;
सारा आकाश शुभ धुंध से भरा हुआ है।
उन सभी ने अभिवादन के रूप में अपने हाथों को अपनी छाती के सामने जोड़ा और एक साथ पाठ किया:
प्राचीन दीपमकारा बुद्ध को श्रद्धांजलि।
Homage to Bhaisajya – guru – vaiduryaprabhasa Buddha.

शाक्यमुनि बुद्ध को श्रद्धांजलि.
अतीत, वर्तमान और भविष्य के बुद्धों को नमन।
पवित्र और आनंदित बुद्ध को नमन।
अध्याय 100
1403
पश्चिम की यात्रा
Homage to Vairocana Buddha.
Homage to Ramadhvaja – raja Buddha.
मैत्रेय बुद्ध को नमन।
अमिताभ बुद्ध को नमन।
अमिताभ बुद्ध को नमन।
सत्य की ओर ले जाने वाले बुद्ध को नमन।
अविनाशी वज्र बुद्ध को नमन।
Homage to Ratnaprabhasa Buddha.
Homage to the Nagaraja Buddha.
उत्साहपूर्ण अच्छाई के बुद्ध को नमन।
दिव्य चंद्रप्रकाश बुद्ध को नमन।
मूर्खता से मुक्त बुद्ध को श्रद्धांजलि।
वरुण बुद्ध को नमन।
नारायण बुद्ध को नमन।
Homage to Punyapuspa Buddha.
असाधारण प्रतिभा के धनी बुद्ध को नमन।
ईश्वर के प्रति श्रद्धा और श्रद्धा के साथ विचरण करने वाले बुद्ध को श्रद्धांजलि।
बुद्ध से संबंधित तेजस्वी चंदन को नमन।
मणिध्वज बुद्ध को श्रद्धांजलि।
ज्ञान की मशाल धारण करने वाले बुद्ध को नमन।
महान गुणों वाले बुद्ध को नमन।
महान करुणा के प्रकाशमान बुद्ध को नमन।
मैत्रीबाला-राजा बुद्ध को श्रद्धांजलि।

बुद्धिमान और नेक नेता बुद्ध को नमन।
व्युहाराज बुद्ध को नमन।
स्वर्णमय वैभव वाले बुद्ध को नमन।
अध्याय 100
1404
पश्चिम की यात्रा
विलक्षण प्रतिभा के बुद्ध को श्रद्धांजलि
ज्ञान के बुद्ध को नमन।
विश्व के शांत प्रकाश के बुद्ध को नमन।
सूर्य और चंद्रमा की रोशनी में विराजमान बुद्ध को नमन।
सूर्य और चंद्रमा की रोशनी से जगमगाते मोतीनुमा बुद्ध को नमन।
ज्ञान के ध्वज के सर्वोच्च बुद्ध राजा को नमन।
सुघोष बुद्ध को नमन।
शाश्वत प्रकाश के ध्वजवाहक बुद्ध को नमन।
जगत-दर्शन करने वाले दीपक वाले बुद्ध को नमन।
सर्वोच्च धन्ना राजा बुद्ध को नमन।
सुमेरु प्रकाश के बुद्ध को नमन।
Homage to the Buddha Prajnabala King.
स्वर्णिम सागर के तेजस्वी बुद्ध को नमन।
सार्वभौमिक प्रकाश के बुद्ध को नमन।
असाधारण प्रतिभा के धनी बुद्ध को नमन।
Homage to Candana – punya Achievement Buddha.
विजयी योद्धा बुद्ध को नमन।
बोधिसत्व गुआनयिन को नमन।
बोधिसत्व महास्थामा को नमन।
बोधिसत्व मंजुश्री को श्रद्धांजलि
बोधिसत्व समंतभद्र को नमन।
पवित्रता के सागर के बोधिसत्वों को नमन।
कमल कुंड सभा के बुद्धों और बोधिसत्वों को नमन।

परम आनंदमय पश्चिमी स्वर्ग के सभी बोधिसत्वों को नमन।
तीन हजार संरक्षक बोधिसत्वों को नमन।
पांच सौ अर्हत बोधिसत्वों को नमन।
अध्याय 100
1405
पश्चिम की यात्रा
Homage to the Bhiksu, Bhiksuni, Upasaka and Upasaka Bodhisattvas.
असीम धर्म के बोधिसत्वों को नमन।
पवित्र वज्र बोधिसत्वों को नमन।
वेदी को शुद्ध करने वाले बोधिसत्व को नमन।
अष्ट रत्नों के स्वर्णिम अर्हत बोधिसत्व को नमन।
आठ श्रेणियों के बोधिसत्व दिव्य ड्रैगन को नमन।
इस प्रकार, सभी लोकों के सभी बुद्धों का यही हाल है।
इस उपलब्धि से संतुष्ट हैं
बुद्ध के पवित्र लोक को सुशोभित करने के लिए।
ऊपर हम चार गुना कृपा का प्रतिफल दे सकते हैं,
नीचे हम जीवन के तीनों मार्गों में पीड़ित लोगों की मदद करते हैं।
जो कोई भी देखे या सुने
प्रबुद्ध मन का सम्मान करें।
सभी को आनंद की भूमि में पुनर्जन्म प्राप्त हो।
प्रतिशोध के इस वर्तमान जीवन को समाप्त करने के लिए।
दस लोकों में विद्यमान भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल के सभी बुद्ध, सभी बोधिसत्व और महासत्व, महाप्रज्ञापारमिता।
पश्चिम की यात्रा यहीं समाप्त होती है।
अध्याय 100
1406

***** समाप्त *****

sjeet